

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की वानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी॥'

प्रथम संस्करण— १९९१ ई०

आकार — डिमाई — १/१६

पृष्ठसंख्या— ११९४+२४

मूल्य— १५०.०० रुपया

मुद्रक:—
वाणी प्रेस
मौसम बाग (सीतापुर रोड), लखनऊ—२२६ ०२०

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

सब भारतीय लिपियां सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientif

भारतीय लिपियों की विशेषता ।

‘ संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है’, यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है, लिपि का ध्वन्यात्मक होना। स्वरों-व्यंजनों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक ‘अ’ के आधार पर उच्चरित करना। [‘अ’ अक्षर-स्वर, सकल अक्षरों का इस भाँति मूल आधार। सकलविश्व का जिस प्रकार ‘भगवान्’ आदि है जगदाधार।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर। स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूपा नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का

ओड़िया - देवनागरी वर्णमाला

ଅ अ ଆ आ ଇ इ ଈ ई ଉ उ

ଊ ऊ ଋ ऋ ୠ ॠ ଏ ए ଐ ऐ

ଓ ओ ଔ औ ଅଂ अं ଅଃ अः

କ क ଖ ख ଗ ग ଘ घ ଙ ङ

ଚ च ଛ छ ଜ ज ଝ झ ଞ ञ

ଟ ट ଠ ठ ଡ ड ଢ ढ ଣ ण

ତ त ଥ थ ଦ द ଧ ध ନ न

ପ प ଫ फ ବ ब ଭ भ ମ म

ଯ य ୟ य़ ର र ଳ ळ ଲ ल

ଵ व ଶ श ଷ ष ସ स ହ ह

କ୍ଷ क्ष ଡ଼ ड़ ଢ଼ ढ़

कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठाते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं, जो अभारतीय लिपियों मे एकत्न, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अत: वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' है। सब ब्राह्मी-लिपि से उद्भूत है। ताड़पत्न और भोजपत्न की लिखाई तथा देश-काल-पात्न के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों के रूप में यत्न-तत्न परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोवेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्नों तक सीमित है। वही यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत हिन्दी (खड़ी बोली) का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अत: समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्नीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक की विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) तो है आतमा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुत: यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि देशी-विदेशी अन्य सभी लिपियों को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सब का सब कभी लिप्यन्तरित नही हो सकता। अत: अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्न के ही रह जाने से विश्व की समस्त अ-लिप्यन्तरित ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी, जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश, सुरयानी आदि का वाङ्मय रह गया। जगत् तो दूर राष्ट्र का ही प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मो की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाव में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है अथवा बंगाल का है, इसलिए हम उसको नही लेंगे, तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नही होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को 'भी' अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा निर्धारित नही है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव-मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता, युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम अनादि से चल रहे इस जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया ? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नही। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था ? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नही होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र है। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर, उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी ? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नही है। बे, काफ़, पे और के, पी जैसे ही रूप रख सकते है, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करे। और यदि एक बनी-बनाई चीज को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, गैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते है। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजो निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते है कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नही रखती। उनको लिपि में कहाँ तक और कैसे समाविष्ट किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अल्बत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे है जो नागरी में नही है— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़, फ़ ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही है। दुःख

है कि आजादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे है। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अरबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यन्जन है, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में, अनिवार्यत: रखना आवश्यक नही। विशिष्ट भाषाई कार्यों में, जरूरी मानकर, उन विशिष्ट भाषाई स्वर-व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

अंग्रेज़ी—व्यामोह भी ! आदर्श भी !

अंग्रेजी की लिपि-जैसी पंगु लिपि शायद ही संसार में कोई हो। 'डब्लू'— तीन अक्षर, चार मात्राएँ, किन्तु वास्तविक ध्वनि (व) का लोप ! शब्दावली इतनी निरीह कि उसमें ८०% से अधिक शब्द विदेशी भाषाओं के है। अपनी छोटी सी धरती पर यह ग़रीब भाषा, फ्रेंच शाहंशाही के आ-धमकने पर, अपने फ्रेच-भक्त अंग्रेज बन्धुओं ही द्वारा लताड़ी गई, जैसे हमारे अंग्रेजी-भक्त भारतीय उसी शान में राष्ट्रभाषा का तिरस्कार करते है। वे अंग्रेजी से नसीहत ले कि दुर्दशाग्रस्त, पंगु लिपि पर आधारित, शब्द-निर्धन होकर भी कैसे हौसला कायम रखकर उसने विश्व-साम्राज्य स्थापित किया। उस हौसले को आदर्श मानकर अपनी समृद्ध राष्ट्रलिपि और राष्ट्रभाषा को और अधिक समृद्ध करके विश्वसम्मान दिलायें।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नही। नितान्त अपरिवतनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अरबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते है। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अिल्म चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर (स०) का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों–च, प, ग आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक— चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अरबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्त:स्फुट चार अक्षरों को भी अरबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते है, उनको परेशानी क्या है ? फिर नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके है, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके है। नागरी लिपि मे कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा निष्ठा, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं-- अ, इ, उ— उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिफ्थांग) आदि बनते है। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु संवृत, विवृत आदि विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते है। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक है। वे स्वतंत्र स्वर नहीं है, प्रयत्न हैं,

लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक विहार प्रदेश को छोड़कर कही भी "पहले" का शुद्ध उच्चारण सुनने को नही मिलेगा। पंजाव, वंगाल, मद्रास के अंग्रेज़ी के उद्भट विद्वान् अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते है। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेज़ी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार को वरीयता (तर्जीह)।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्य पदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस शोध-समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। परस्पर एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र में एक सम्पर्क लिपि का प्रयोग ही आज की सर्वोपरि आवश्यकता है।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी वर्णमालाओं में एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ—दोनों मात्राएँ हिन्दी में बोलते हैं, किन्तु पृथक् लिखते नहीं। जहाँ आवश्यकता हो, उन्हें पृथक् दर्शाइये। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। भारतीय लिपि मानव के पूर्वजों की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से यूरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारो से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तैसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, ग्रीक, अपभ्रंश आदि का एक-जैसा है—(आइ, आउ)। किन्तु खड़ी बोली हिन्दी-उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत-जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नि, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—वस इतने में भारतीय संगीत वँधा है। उनमें भी कुछ तो अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र है। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का उनके ही बीच में अनंत विभाजन

हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड में लाकर संगीत कायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण तो 'ब्रह्म' ही है। "बैस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् अनिमी ऑफ़् गुड्।" शगूल-शोब्दों की आड़ न ले। भारतीय लिपियों की प्रतिनिधि नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्र-लिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते है तो गुजराती लिपि की भाँति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नही रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "सस्कृत" राष्ट्रभाषा होने पर, भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। संस्कृत देश-काल-पात्र के प्रभाव से मुक्त, अव्यय (कभी न बदलनेवाली), सदाबहार भाषा है। अन्य सब भाषाएँ देश-काल-पात्र के प्रभाव से नहीं बचतीं।

आज क्या करना है?

किन्तु संस्कृत राष्ट्रभाषा न होने पर अब "हिन्दी" ही सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है, जो देश के हर स्थल में कमोवेश प्रविष्ट है।

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादो की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर, नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नही बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

(स्व०) नन्दकुमार अवस्थी (पद्मश्री)

(भू० पू०) मुख्यन्यासी समापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-२०।

प्रकाशकीय

इस विशाल भारत राष्ट्र में प्रायः सभी भाषाओं में सदियों से भिन्न-भिन्न प्रकार के गद्य-पद्य साहित्य की रचना होती रही। उल्लेखनीय है कि इन विभिन्न भाषाओं और उनमें सृजित साहित्य में शब्द, भाव, विचार, लय और छन्दों में यदि वैभिन्य है तो साम्य भी। बहुधा एक ही विषय पर सन्तों एवं विद्वानों ने अपनी-अपनी शैली में भावों की अभिव्यक्ति कर साहित्य-सृजन का पुनीत कार्य किया। परन्तु यह स्पष्ट है कि विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध वाङ्मय-संरचना के पीछे मूल प्रवृत्ति, मूल मान्यता अथवा मूलाधार एक है। वेद, रामायण, महाभारत में समग्र भारतीय समाज की अटूट आस्था है। पुण्य सलिला भागीरथी के प्रति भारतवासी श्रद्धादृष्टि रखते हैं, पंचदेवताओं को हम अपना आराध्य स्वीकार करते हैं।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम और लीला-पुरुषोत्तम नीतिनिष्णात योगेश्वर श्रीकृष्ण की स्मृति से हम सभी भारतीयों के हृदय-मेधा-धाम आह्लादित, गौरवान्वित और कर्मप्रेरित होते है। भगवान् राम की गाथा तो भारतीय चेतना की संजीवनी बूटी ही है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि से लेकर आधुनिक युगीन अनेक संस्कृत, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के कवियों ने राम-कथा का गायन करके अपनी प्रतिभा को निखारा है, लोचनों को मणिकान्त किया है, हृदयों को भावविभोर किया है और जीवन-गति को निर्माणोन्मुख किया है। राम-कथा में मानव के विराट् जीवन के सर्वतोमुखी आयामों की अभिराम झाँकियाँ मिल जाती हैं। इस कथा के इतने विविध अध्याय हैं कि उनमें भारतीय जन-जीवन की ही नहीं, वरन् समग्र विश्वमानव की विकास यात्रा की अनेकशः शुभ्र सम्भावनाओं के स्रोत विद्यमान हैं। उसमें अतीत का कल्पनातीत गौरव भी झलकता है और वर्तमान समस्याओं का समाधान भी अन्तर्निहित है, जो उज्ज्वलकान्त भविष्य के आगमन का सन्देश देता है। इसीलिए युगों पुरानी होते हुए भी राम-कथा चिरनूतन बनी हुई है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता हमारे देश में सदैव रही है, सम्प्रति तो

वह अनिवार्यतया प्रयोज्य हो गयी है। यदि हम विभिन्न भारतीय वाङ्मय में व्यक्त भाव-विचार-निधि का परस्पर आदान-प्रदान कर सकें, तो हमें अपनी सांस्कृतिक एकता का वोध सहज सम्भाव्य है।

इस उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु भारतीय कवियों में व्यास, वाल्मीकि, तुलसी और रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं को विश्वव्यापी सम्मान और यश प्राप्त हुआ है। लिपि और भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण के इस पुनीत उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने भुवन वाणी ट्रस्ट के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों के मूलपाठ को देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरित करके उन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी में गद्यार्थ अथवा पद्यार्थ-समेत प्रकाशित करने का मार्ग अपनाया है।

जिस प्रकार समग्र विश्वमानव-समुदाय एक ही आद्यपूर्वज मनु (आदम) और शतरूपा (हव्वा) का वंश वृक्षविकास है, उसी प्रकार सभी भारतीय भाषाओं का भी मूलस्रोत एक ही है। हिन्दी, गुरमुखी, सिन्धी, राजस्थानी, ओड़िआ, बँगला, असमिया, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, आदि विभिन्न भाषाओं और उनकी लिपियों में घनिष्ठ सम्बन्ध और साम्य है। इनकी वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण आदि वहुत कुछ मिलती-जुलती है, जिससे हमें यह आभास हो जाता है कि ये सभी एक ही वृहत् परिवार की है। वस्तुत: ये प्राचीन संस्कृत की पौत्रियाँ और भारतीय जनपदों में शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीय आदि प्राकृत अथवा उनके अपभ्रंशों की पुत्रियाँ हैं।

दक्षिणी भारत की भाषाओं, मलयाळम, तेलुगु, कन्नड और तमिऴ का तो शेष भारतीय भाषाओं और लिपियों से भेद होने के वावजूद उनके अक्षरों का वर्गीकरण देवनागरी वर्णमाला के समान है। इसके अलावा संस्कृत के शब्द तत्सम और तद्‌भव रूप में इतने अधिक दक्षिणी भाषाओं में घुल-मिल गये है कि उनका अन्य भारतीय भाषाओं से तादात्म्य प्रत्यक्ष है, भले ही कलेवर पृथक् दिखाई दे।

भाषाई पक्ष के अतिरिक्त सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से भी समग्र भारत परस्पर ऐसा गुथ गया है कि उसमें एकात्मभाव सर्वत्र परिलक्षित होता है। अत: अपने-अपने क्षेत्र में सभी भाषाओं के अपनी लिपियों में फलते-फूलते रहने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि राष्ट्र में सर्वाधिक सुपरिचित और व्याप्त देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा के सत्साहित्य को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाया जाय, भारतभूमि के हर कोने में प्रस्फुटित वाङ्मय को हर भारतवासी तक पहुँचाया जाय। लिपि और भाषा के सेतुकरण द्वारा सारे राष्ट्र का एकीकरण ही 'भुवन वाणी ट्रस्ट' का उद्देश्य है, जो सम्प्रति अपरिहार्य युगीन आवश्यकता है।

आसेतु-हिमालय, सारे देश के साहित्य, संस्कृति, आचार-विचार और सन्तों की वाणी को, किसी एक क्षेत्र अथवा समुदाय तक सीमित न रखकर, सभी भारतीयों की सामूहिक सम्पत्ति बनाना ही राष्ट्रीय एकीकरण है, जिसकी साधना के लिए हम कृतसंकल्प और दृढ़व्रत होकर लगे हुए हैं। इस महान् कार्य में भारत के कोने-कोने के अधिकारी विद्वान्, समर्थ लेखक और उत्कृष्ट कविजन हमें सहयोग प्रदान कर रहे हैं, यदर्थ हम उन सभी के आभारी हैं। इन्हीं सदाशय विद्वानों में हैं श्री योगेश्वर त्रिपाठी 'योगी' जी जिन्होंने ओड़िआ भाषा की परमोत्कृष्ट कृति 'जगमोहन रामायण' को देवनागरी लिपि में सानुवाद प्रस्तुत किया है, जो उनकी विदग्धता और शब्द-विवेक का सुन्दर प्रतिफल है। 'जगमोहन रामायण' ज्ञानमार्गीय सन्त-वर बलरामदास जी की समादृत रचना है। लोकेश्वर जगन्नाथ जी की आज्ञानुसार यह रामायण श्री मन्दिर के जगमोहन में बैठकर लिखी गयी, इसलिए 'जगमोहन रामायण' इसका स्वतः सिद्ध नाम चलित और प्रचलित हुआ। दाण्डि वृत्त में इसका प्रणयन हुआ है, अतः इसे दाण्डि रामायण की संज्ञा भी दी गयी है।

भाषाई सेतुकरण के ओड़िआ-स्तम्भ में सर्वप्रथम उपेन्द्रभञ्ज-कृत 'वैदेहीश-विलास' डा० सुरेशचन्द्र नन्द द्वारा देवनागरी-लिप्यन्तरित होकर इस ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया गया, यदुपरान्त श्री योगेश्वर त्रिपाठी 'योगी' द्वारा लिप्यन्तरित और अनूदित 'विलंका रामायण' और 'विचित्र रामायण' भी भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित होकर रामकथानुरागी भक्तों और साहित्यिकों के करकमलों तक पहुँचाये जा चुके हैं। ओड़िआ स्तम्भ की अगली कड़ी के रूप में श्री 'योगी' द्वारा लिप्यन्तरित-अनूदित 'जगमोहन रामायण' को भी आध्यात्मिक और साहित्यिक आलोक के विहरणमोदी सुधी-वृन्द को अर्पित करते हुए हम यथार्थ मनःप्रसाद और कृतकृत्यता की उपलब्धि कर रहे हैं। इस पुण्यकार्य को पूरा करने में श्री 'योगी' जी ने अपने अथक परिश्रम से हमें तो चिरकृति कर ही लिया है, हमारे प्रिय पाठक भी इससे भाव-विभोर, गौरव-निविष्ट, लाभान्वित और उपकृत होंगे और यही इस प्रयास की प्रफुल्ल सफलता होगी।

विनय कुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट,

लखनऊ—२०

ओड़ीसा के पंचसखा साधक मत्त बलरामदास और उनकी जगमोहन अथवा दाण्डि रामायण

जिस प्रकार उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास के "रामचरितमानस" का घर-घर में प्रचार है। वही स्थिति ओड़ीसा में भक्त शिरोमणि बलरामदास जी की जगमोहन रामायण की है। रामचरित मानस की रचना १५७४ ई० में हुई, जबकि भक्त बलरामदास-कृत जगमोहन रामायण की रचना पन्द्रहवीं शताब्दी के शेषार्द्ध में हो चुकी थी। उन्होंने विश्व विख्यात् पुरुषोत्तम क्षेत्र के श्री जगन्नाथ मंदिर के जगमोहन में बैठकर उनकी ही आज्ञा से इसकी रचना की। इसी कारण से इसका नाम जगमोहन रामायण पड़ा। यद्यपि रामायण के आराध्य देव श्री रामचन्द्र जी हैं। परन्तु इस कवि ने सर्वप्रथम अपने इष्ट श्री जगन्नाथ जी की वन्दना करते हुये रामायण की रचना की। मत्त बलरामदास केवल ओड़ीसा के सिद्ध साधकों द्वारा सम्मानित ही नहीं हुए, अपितु उस समय के अन्य धर्म मतावलम्बी प्रेमावतार श्री चैतन्य महाप्रभु के द्वारा अभिनंदित भी हुए थे। मध्ययुगीन ओड़िआ साहित्य में सिद्धसाधक तथा साहित्यिक पंचसखाओं में वयोवृद्ध एवं ज्ञान मार्ग के समर्थ साधक श्री बलरामदास जी थे। श्री शारलादास की महाभारत अथवा श्री जगन्नाथ दास की भागवत के समान ही ओड़ीसा में जगमोहन रामायण सर्वत्र सुपरिचित है। यद्यपि इसमें शारलादास-कृत महाभारत के महासागर में उठती हुई उत्ताल तरंगों के दर्शन नहीं होते या फिर जगन्नाथदास की भागवत् का तत्व मार्मिक गाम्भीर्य भी नहीं है। किन्तु सरल भाषा में लीलाओं की तरंग मालाओं का दर्शन पाठकों को हो जाता है। इसी कारण मध्ययुगीन ओड़िआ साहित्य में इसका स्वतन्त्र स्थान है।

परमब्रह्म परमात्मा भगवान विष्णु के दस अवतारों में श्रीराम का अवतार अनन्यतम है। त्रेतायुग में राक्षसों के उपद्रवों से मुनियों की यज्ञ-रक्षा करने के लिये तथा दुष्टों का विनाश करके साधु-सन्तों की रक्षा करते हुये लोक में धर्म की स्थापना के लिये श्री राम का अवतार हुआ था। इस पावन रामचरित्र को महर्षि वाल्मीकि ने नारद के मार्गदर्शन में पद्यबद्ध किया था। कहा जाता है कि इन घटनाओं के घटने के पूर्व ही वाल्मीकि ने यह ग्रन्थ लिख डाला था। इसी कारण से इसे भविष्य पुराण भी कहा जाता है। भारत की विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में कवियों ने वाल्मीकि रामायण को अनूदित करके यश प्राप्त किया। पन्द्रहवीं शताब्दी में जिस समय महाराज प्रताप रुद्रदेव ओड़ीसा के सिंहासन पर अभिषिक्त थे। उस समय

श्री चैतन्य महाप्रभु पुरी में रहते थे। उनका सान्निध्य पाकर भक्तप्रवर बलराम दास भक्ति की चरमसीमा पर पहुँच चुके थे। वह ज्ञानी शूद्र सन्त थे। सत्यवादिता निष्कपटता एवं प्रेम की मूर्ति थे। उनमें केवल एक ही दोष था। वह इतने गुणों के भण्डार होते हुए भी वेश्यासक्त थे। कहा जाता है कि एक दिन वह रात्रि में वेश्या के घर में ही सो गये और अगले दिन अधिक देर तक सोते रहे। उस दिन महाप्रभु जगन्नाथ जी की रथयात्रा थी। घंटा तथा शंखों की तुमुल ध्वनि जब उनके कानों में पड़ी तो वह उसी अशौच अवस्था में भागते हुए आये और जगन्नाथ जी के रथ पर चढ़ गये। वह विह्वल होकर महाप्रभु की स्तुति करने लगे। यह देखकर भगवान के सेवकों ने उन्हें धक्का मारकर रथ से नीचे गिरा दिया। और नाना प्रकार से अपमानित किया। रोते-रोते वह समुद्र के किनारे जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने बालू में तीन रथ बनाकर महाप्रभु से उन्हीं रथों पर विराजमान रहने की प्रार्थना की। भक्तराज का मान रह गया। नाना प्रकार के प्रयासों के पश्चात् भी जगन्नाथ पथ पर तीनों रथ नही हिले। अन्त में महाराज प्रताप रुद्रदेव को भाव समाधि में जगन्नाथ जी ने भक्त बलरामदास को सम्मानपूर्वक लाने की आज्ञा दी। उनके आने पर ही रथ चल पड़े। सबने उनसे क्षमा प्रार्थना की। इसके पश्चात् से उनकी ख्याति बढ़ गयी। फिर उन्होंने जगन्नाथ मंदिर के जगमोहन में बैठकर महाप्रभु का दर्शन करते हुए दाण्डि रामायण की रचना की। वह जो भी लिखते थे उसका पाठ विद्वानों की सभा 'मुक्ति मण्डप' में नित्य होता था। उन पंडितों द्वारा स्वीकृति के पश्चात् ही किसी धार्मिक ग्रन्थ का ओड़ीसा में प्रचलन होने का नियम था। एक दिन उनकी रामायण का पाठ हो रहा था। उसमें कवि ने लिखा था कि रावण के द्वारा एकघ्नी शक्ति के प्रहार से लक्ष्मण के वक्षस्थल पर गाड़ी के पहिए की नाभि के समान छिद्र हो गया। पंडितों ने इस पाठ को अशुद्ध बताते हुये उपहास करते हुये कहा कि छाती मे इतना स्थान कहाँ था कि बैलगाड़ी के पहिए की नाभि के समान उसमें छिद्र हो गया। रात्रि में समस्त पंडितों ने स्वप्न देखा कि महाप्रभु श्रीरामचन्द्र दर्शन देकर उन पंडितों से कह रहे हैं कि त्रेतायुग में बलरामदास दशकाल वृद्ध नामक सेनापति थे। वह मशाल लेकर लक्ष्मण के घाव को दिखा रहे थे। उनके लेख को अशुद्ध बताने वाले तुम लोग कौन होते हो ? वैसे तो बैलगाड़ी की चक्रनाभि मात्र चार अंगुल व्यास की होती है। तुम उसे पहिए के आकार का छिद्र समझ रहे हो। इसके उपरान्त दूसरे दिन सभी पंडित आपस में स्वप्न की बातें करने लगे। तब सबने बलरामदास को बुलाकर उनका विविध प्रकार से सम्मान किया।

तदुपरान्त बलरामदास की रामायण का पाठ घर-घर में होने लगा। उनकी भाषा अत्यन्त सरल है। पद दो पंक्तियों में पूरे होते हैं, और अंतिम शब्द तालमेल की तुक के होते हैं। पदों के अक्षरों की संख्या सर्वत्र समान नहीं होती। इसके अतिरिक्त भी पाठ करने पर माधुर्य की कमी नहीं रहती। पहले यह ग्रन्थ ताड़ के पत्ते पर लिखे जाते थे। अतः पाठान्तर तथा अशुद्धियाँ जहाँ-तहाँ देखने को मिलती हैं।

ओड़ीसा के वैष्णव धर्म में विष्णु अथवा जगन्नाथ अवतारी तथा श्रीराम, कृष्ण आदि अवतार के रूप में परिकल्पित हैं। इस धर्म में ब्रह्म आराध्य हैं। अतः जगन्नाथ में इसी ब्रह्मत्व का आरोपण हुआ है। जगन्नाथ को बलरामदास ने सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान तथा समस्त अवतारों के जन्मदाता के रूप में वर्णन किया है।

सर्वदा नीलाद्रिरे स्थिति। एथु सकळ जात होन्ति।
समस्त अवतार मान। जात होइण पशे पुण।

(वेदान्तसार गुप्त गीता)

ओड़िआ रामायण के प्रथम सृष्टा बलरामदास का जन्म एवं उनके वंश के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्य नहीं मिलता। श्री अच्युतानंद दास की "उदयकाहाणी" के अनुसार बलरामदास का जन्म सन् १४८४ ई० में हुआ था। उनके पिता का नाम सोमनाथ तथा माता का नाम यमुना देवी था। छत्तीस गुप्त गीता में बलरामदास ने लिखा है कि उनके पिता महाराज प्रताप रुद्रदेव के सभासद थे। रामायण के लंकाकांड में उल्लेख मिलता है:—

सोमनाथ महापात्र कोळे होइलि सम्भूत,
जहूँ पिता मोर विष्णुर भकति।
तेणु जगन्नाथ मोते दयाकले,
रामायण ग्रन्थ मो बखाणिले।
× × × × ×
महामंत्रीवर सोमनाथ महापात्र,
बलरामदास मूँ जे तहांकर पुत्र।

वह शूद्र जाति के थे। अतः वह शूद्र मुनि के नाम से विख्यात थे। शूद्र होते हुए भी उन्होंने शारलादास की महाभारत के समान रामायण की रचना की थी। जिससे उन्हें बहुत अपमान तथा संकटों का सामना करना पड़ा था। कुछ लोगों का मत है कि इनका जन्म जाजपुर के निकट चन्द्रपुर में हुआ था। कुछ लोग एरवंग को इनका जन्म स्थान बताते हैं। जो भी हो— यह अपने कुटुम्ब के सहित जगन्नाथपुरी में निवास करते थे। उन

दिनों पुराण संस्कृत भाषा में थे। ओड़ीसा के पंचसखाओं ने इन्हें क्षेत्रीय भाषा में लिखा। अच्युतानंद दास ने "दशपटळ" में उल्लेख किया है कि यह पंचसखा, श्रीदाम, सुदाम, वसुदाम, नन्द-नन्द एवं सुनन्द थे। सतयुग में यह मारकण्ड, कृपाजन गार्गव, स्वयंभू, तथा नारद हुए। त्रेतायुग में श्रीराम के सखा नल, नील, सुषेण, जामवंत तथा हनुमान हुए। द्वापरयुग में कृष्ण के सखा सुबळ, सुबाहु, दाम, सुदाम तथा श्रीवत्स ने पंचसखाओं के रूप में जन्म धारण किया था। बलरामदास ने अपनी दाण्डि रामायण में लिखा है:—

> मूँ बळरामदास रामायण अबतारे थिलि,
> दिहुड़ि धरिणमुँ समस्त देखिलि।
> मते आज्ञा देले मर्त्यपुरकु जिबु,
> कळिजुगे शूद्रमुनि होइण जनमिबु।
> जन्महुँ बर्ण कथा सुमरिबु तुहि,
> जगन्नाथ प्रभु जे मोहर गोसाइँ॥

प्राकृत भाषा में रचना करने के कारण इन्हें नाना प्रकार की परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। लोगों की मान्यता थी कि शूद्र होने के नाते उन्हें वेद-चर्चा का अधिकार नहीं है। ब्राह्मणों की ब्राह्मणेतर व्यक्तियों के प्रति हीनभावना मध्ययुग में विप्लव का संकेत देने लगी थी। उस समय बलरामदास का आह्वान सामाजिक जन-जागरण के रूप में सामने आया। मुक्तिमण्डप में उन्हें देखकर तत्कालीन पण्डितसमाज राजा प्रताप रुद्रदेव के कान भरकर उन्हें ताड़ना दिलाने का प्रयास करने लगा। उन्होंने राजा से कहकर बलरामदास से एक मूर्ख शूद्र के मुख से वेदचर्चा कराने को कहा। सभा आयोजित हुई! मूर्ख अन्त्यज हरिदास वहाँ लाया गया। परन्तु आश्चर्य हुआ कि बलरामदास के उसके सिर पर हाथ फेरते ही वह धारा-प्रवाह वेदपाठ करने लगा। उपस्थित जन समुदाय आश्चर्यचकित रह गया। ब्राह्मण लोगों के चेहरे उतर गये। समस्त मध्यकालीन साहित्य में बलराम दास का साहित्य समाज के विप्लव की प्रेरणा का संकेत था। भगवत् गीता, वेदान्त सार, गुप्त गीता, छत्तीस गुप्त गीता, वट अवकाश, ब्रह्माण्ड भूगोल आदि ग्रन्थों में साहित्यिक उपादान न होते हुये भी आध्यात्मिक तत्व की सरल व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक विप्लव का संकेत दिखाई देता है। उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनाओं में जगमोहन रामायण, ब्रह्मपुराण, महाभारत, चंडीपुराण, लक्ष्मीपुराण, पुराक पुराण, नाम रत्न गीता, मृगुणी स्तुति, दुर्गा स्तुति, कांत कोइलि, कमल लोचन चौतीसा, बारहमासी, भावसमुद्र, वट अवकाश, भक्ति रसामृत सिन्धु,

सभा विनोद, राम विभा, कृष्ण लीला, रसकेलि, ब्रह्माण्ड भूगोल, शरीर भूगोल, वेढ़ा परिक्रमा, अर्जुन गीता, गजनिस्तारण गीता, भगवत् गीता, अमरकोष गीता, गुप्त गीता, छत्तीस गुप्त गीता, गरुड़ गीता, विराट गीता, गणेश विभूति गीता, गीतासार, नील सुन्दर गीता, कलिभारत, बउला अध्याय तथा पणस चोरी आदि छत्तीस ग्रन्थ हैं।

उपर्युक्त ग्रन्थों में जगमोहन रामायण साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि का ग्रन्थ है। अन्य ग्रन्थों में गूढ़ तत्वों की चर्चा की गई है। दाण्डि-वृत्त में रचना होने के कारण इसे दाण्डि रामायण कहा जाता है। यह वाल्मीकि रामायण का अक्षरशः अनुवाद न होकर इसमें उनकी मौलिक प्रतिभा तथा कविता के माध्यम से अभिनव रूप में रामकथा का सृजन हुआ है। उसमें लोक में प्रचलित नाना प्रकार की कहानियों तथा किम्बदन्तियों, समाज के विभिन्न आचार-व्यवहार तथा उत्कल प्रदेश के पहाड़, पर्वत, वन, नदी-नालों आदि का बड़ा ही सुन्दर वर्णन हुआ है। बलरामदास ने इसमें लोक चरित्रों का सफल वर्णन किया है। दाण्डि रामायण का लंकाकांड वाल्मीकि के लंकाकांड से चौगुना है। इसमें नाना प्रकार के रहस्यपूर्ण तथ्यों का वर्णन किया गया है। दशरथ के विवाहों का वर्णन, पार्वती के द्वारा शंकर जी की रोग मुक्ति का कारण पूंछने का सविस्तार वर्णन है। गोस्वामी तुलसीदास के समान इसमें भी स्वतन्त्र विषयों का समावेश पाया जाता है। सीता स्वयंवर में रावण-वाणासुर के उपस्थित होने का वर्णन भी इसमें प्राप्त है। सहस्रार्जुन का वध करने के लिये परशुराम का इक्कीस बार सम्पूर्ण भूमि में पर्यटन, शृंगी ऋषि का जीवन चरित्र, अगस्त्य का चरित्र आदि नाना प्रकार की नूतन गाथाओं का अद्‌भुत समावेश है। इस रामायण की मूल प्रेरणा का स्रोत अध्यात्म रामायण है। इसमें महाभारत, देवी भागवत एवं विभिन्न पुराणों की कथाएँ ली गयी है। इसमें विभिन्न प्रकार के आंचलिक चित्र स्थान-स्थान पर देखने को मिलते हैं। इसमें वर्णित कथानकों में ओड़ीसा प्रदेश की मिट्टी और पानी की भी भीनी सुगन्ध प्राप्त होती है। कपिलास पर्वत की तुलना न केवल कैलाश से की गयी है। अपितु उसे कैलाश का परवर्ती रूप दिया गया है। जाजपुर के निकट विरजा क्षेत्र में रावण का तपस्या करके वर प्राप्त करना तथा वानर सेनापतियों का जन्म कोणार्क, धवलगिरि, विरजा क्षेत्र बड़ाम्बारणपुर, उदयगिरि तथा शतशृंग पर्वत आदि स्थानों को दिखाना उनकी व्यक्तिगत कल्पना का परिचायक है। इस प्रकार की कथावस्तु तथा घटनाओं का सामंजस्य एवं जनभाषा में रामायण लिखना कवि की मौलिक विशेषता है।

गुप्त गीता में उन्होंने व्यास देव की भगवत्‌गीता का सरल ओड़िआ

अनुवाद किया है। इसमें कविता की अपेक्षा गीता का तत्वज्ञान अधिक प्राप्त है। श्रीकृष्ण और अर्जुन के कथोपकथन के बहाने कवि ने पिंड और ब्रह्माण्ड तथा तत्व और ज्ञान योग का विशद् वर्णन किया है। शरीर में ही उन्होंने सम्पूर्ण तीर्थों की स्थिति दिखाई है।

ब्रह्माण्ड भूगोल ग्रन्थ में अर्जुन के कथोपकथन के माध्यम से उन्होंने समग्र भारत के दर्शन को विशेष तौर से दर्शाया है। वेदान्तसार गुप्त गीता में एक मूर्ख शूद्र के मुख से वेद की चर्चा करवाकर अभिमानी पंडितों के मान-मर्दन का वर्णन किया गया है। वट अवकाश नामक ग्रन्थ में कवि के जगन्नाथ जी के साथ लंकापुरी दर्शन का तथा सुनहले पीताम्बर की चोरी से दंडित होना एवं जगन्नाथ जी द्वारा स्वप्न देकर राजा से उनको मुक्ति दिलाने का रोचक वर्णन मिलता है। 'कांतकोइलि' में सीता हरण के समय का शोक-पूर्ण वर्णन है। इसी प्रकार मध्ययुगीन प्रचलित परम्पराओं के विविध दृश्य उनके अन्य ग्रन्थों में देखने को मिलते है।

जिस सन्त के हृदय में भक्ति रूपी मणि स्थापित रहती है उसके अन्तर का दिव्य प्रकाश फूटकर बाहर निकलने लगता है। वह छिपाने से भी नहीं छिपता और अज्ञानी जनों के लिये एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। उस प्रकाश में भूले भटके यात्री सत्पथ पर चलकर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। सिद्ध सन्त पुरुषों में भक्त बलरामदास जी का अनन्यतम स्थान रहा है। भगवान भी उनकी भक्ति के वशीभूत होकर उनके बनकर रह गये। महाप्रभु जगन्नाथ जी ने उन्हें कई बार दर्शन देकर कृतार्थ किया था। एक बार उनके हृदय में लंका देखने की लालसा जाग्रत हुई। उन्होंने अपनी इच्छा जगन्नाथ जी से व्यक्त की। रात्रि में महाप्रभु जगन्नाथ जी ने उनसे लंका [illegible]ने को कहा। इस प्रस्ताव से उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। भगवान ने अपना स्वर्णिम दुपट्टा उन्हे पकड़ा दिया और अपने साथ उन्हें लंका [illegible] [illegible]। वह भगवान का "स्वर्णिम पीताम्बर" लेकर चल रहे थे। उनके लंका पहुँचने पर विभीषण ने सबका अपूर्व स्वागत किया। उन्होंने जगन्नाथ जी तथा बलभद्र जी को काले रंग के बेला के फूलों की आजानुलम्बित मालाएँ पहनाकर उनकी आरती पूजा की। कुछ देर वहाँ ठहर कर यह सभी नीलांचल धाम लौट आये। बलरामदास जी के निवास के समीप आकर भगवान ने उन्हें वहीं रुक जाने को कहा और स्वयं मन्दिर में चले गये। प्रातःकाल मन्दिर का पट खुलने पर भगवान का रत्नजटित पीताम्बर न देखकर पण्डे-पुजारी आश्चर्यचकित रह गए। इधर-उधर खोज की गयी पर वह न मिला। तब उन्होंने यह सूचना

तत्कालीन पुरी महाराज प्रताप रुद्रदेव को दी। वह भी इस घटना से आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने पण्डे-पुजारियों को अपशब्द कहकर भगा दिया तथा उन्हें ही चोरी का दोष लगाया। इधर जव प्रातःकाल बलरामदास जी उठे तो उनके कानों तक भी दुपट्टे की चोरी की वात पहुँची, उन्हें बड़ा दुःख हुआ। वह दुपट्टा लेकर सीधे महाराज रुद्रदेव के निकट जा पहुँचे और उन्हें दुपट्टा सौंप दिया। महाराज अवाक् रह गये। उन्होंने बलरामदास को तुच्छ दृष्टि से देखते हुए कहा कि चोरी करना जघन्य कार्य है। बलरामदास ने वड़ी ही शान्त मुद्रा में रात्रि के लंका गमन की बात कही किन्तु महाराज को फिर भी विश्वास तथा सन्तोष नहीं हुआ। अन्त में बलरामदास जी ने विभीषण द्वारा काले रंग के बेला की माला पहनाने की वात कही और परीक्षा के लिए महाराज से हठ करने लगे। महाराज बलरामदास को लेकर श्री मन्दिर पहुँचे। उन्होंने देखा कि काले रंग के बेला की मालाएँ अभी भी महाप्रभु के वक्षस्थल पर शोभा पा रही थीं। आस-पास कहीं भी मीलों तक उस रंग के पुष्प देखने को नहीं मिले। अन्त में महाराज ने बलरामदास जी से क्षमा माँगी तथा भक्तिभाव से प्रभावित होकर उन्होंने उनका बहुत ही सम्मान किया।

श्री जगन्नाथ जी के अनन्य उपासक बलरामदास जी भगवान के मुँह-लगे भक्त थे। नित्यप्रति वे श्री मन्दिर जाकर महाप्रभु जगन्नाथ के दर्शन किया करते थे। लक्ष्मी जी को वह इतना सम्मान न दे पाते थे। एक दिन लक्ष्मी जी के कुछ कहने पर वह उनसे भी उलझ गये। और व्यंग में उन्हें चंचला कह दिया। लक्ष्मी जी ने उनके व्यवहार से क्षुब्ध होकर शाप दिया कि तुम्हारी मृत्यु अन्धे कुएँ में गिरकर होगी और अंत समय तुम्हें श्रीक्षेत्र-लाभ भी न मिल सकेगा। उनका अभिशाप निष्फल कैसे जाता? वह वृद्धावस्था में पुरी में न रह सके। उन्हें परिस्थितियों मे पड़कर अपने गाँव एरवंग मे रहना पड़ा। वही वह जगन्नाथ जी का चिन्तन तथा ध्यान करते और महाप्रभु जगन्नाथ प्रत्यक्ष रूप से उनके घर पहुँच जाया करते थे। उनका जब अन्तिम समय आने लगा तो उनके मन में श्रीक्षेत्र जाकर देहत्याग करने की इच्छा जाग्रत हुई। अतः वह पुरी की ओर चल दिये। जाते समय लक्ष्मी जी के अभिशाप के कारण मार्ग में ही एक अन्धे कुएँ में गिर पड़े। शरीर शिथिल हो चुका था, वाहर निकलने की शक्ति नहीं थी। उन्होंने मन ही मन अपने भगवान का स्मरण किया। महाप्रभु उस समय लक्ष्मी जी के साथ वार्तालाप कर रहे थे। भक्त की गुहार सुनकर वह उठ खड़े हुए और चलने को उद्यत हुए तभी लक्ष्मी जी भी वलरामदास को अपने अभिशाप की स्मृति दिलाने के लिए साथ चल पड़ीं। उनके वहाँ पहुँचने पर वह स्थान

दिव्य प्रकाश से भर गया। दर्शन पाकर भक्त बलरामदास कृतार्थ हो गये। लक्ष्मी जी ने हँसते हुए अन्धे कुएँ में गिरने और श्रीक्षेत्र-लाभ न प्राप्त हो सकने वाले शाप की याद दिलाई। बलरामदास ने बड़ी सौम्यता के साथ हँसकर कहा, अरे! यह कैसा अन्धकूप है, जहाँ स्वयं महाप्रभु के साथ आप विराजमान हैं। मेरे लिए तो यह स्थान ही इस समय श्रीक्षेत्र के समान है। उनके शरीर से एक दिव्य प्रकाश निकलकर सदा के लिये महाप्रभु में लीन हो गया। उनके पार्थिव शरीर को वहीं पर समाधि दे दी गई। उस स्थान पर आज भी भक्त बलरामदास जी की गद्दी है। भक्त-समुदाय वहाँ पर रहकर आज भी साधना, भजन करते पाये जाते है।

ओड़ीसा के कतिपय विद्वानों ने ताड़-पत्र पर लिखी हुई जगमोहन रामायण को बड़े परिश्रम के साथ खोज निकाला, कालान्तर में इसका प्रकाशन धर्म ग्रन्थ स्टोर के माध्यम से हुआ। बलरामदास जी ने उत्कल भूमि में जगमोहन रामायण जैसा अनुपम प्रसून प्रदान करके समाज को सुवासित किया है। वह राम भक्तों के हृदय का हार बन गये है।

अपनी ओर से—

काव्य केवल बौद्धिक अभिव्यक्ति न होकर संवेदना की अभिव्यक्ति है। इसमें सत्य विचार अनुभव ज्ञान के सम्प्रेषण की प्रक्रिया होती है। लय का माधुर्य नाद के समावेश से अधिकाधिक हृदयग्राही हो जाता है। तुलसी के शब्दों में—

"कवित सरल कीरति विमल तेहि आदरहिं सुजान"

—रामचरित मानस

काव्य सरल हो पर उसकी कीर्ति विमल हो तभी वह विद्वानों के द्वारा आदृत होता है। उसका प्रचार-प्रसार भी तीव्र गति से होकर जन समाज के हृदय का हार बन जाता है।

जगमोहन रामायण पंचसखाओं में वयोवृद्ध ज्ञानमार्गीय साधक बलरामदास जी की श्रेष्ठ रचना है। महाप्रभु जगन्नाथ जी के आदेश पर यह ग्रन्थ श्री मन्दिर के जगमोहन में बैठकर प्रणीत हुआ इसी कारण इसका नाम जगमोहन रामायण प्रसिद्ध हुआ। दाण्डि वृत्त में काव्य होने के कारण इसे दाण्डि रामायण से भी जाना जाता है। विद्वान से लेकर साधारण कृषकों तक इसका आदर है। भक्त कवि की भक्ति की भजस्रधारा, ज्ञान की तरंगों से लहराती हुई दुखी संतप्त जीवों के हृदय को शान्त करने में सक्षम है। वैसे तो यह मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की गौरव गाथा है। परन्तु इसका प्रारम्भ महाप्रभु जगन्नाथ की वन्दना से आरम्भ होता है जो कवि के इष्ट प्रेम का परिचायक है। मध्ययुगीन ओड़िआ साहित्य में इसका अपना विशिष्ट

स्थान है। इस ग्रन्थ की रचना पन्द्रहवीं शताब्दी के शेष भाग में हुई थी। अन्यान्य मतावलम्बियों ने इस रामायण को आदर की द्रष्टि से देखा। यहाँ तक कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी इस ग्रन्थ की प्रशंसा की है। बलरामदास जी ने लगभग छत्तीस ग्रन्थों की रचना की है परन्तु उन सब में जगमोहन रामायण साहित्यिक रस पुष्टि की दृष्टि से उच्चकोटि का ग्रन्थ है। उनके अन्य ग्रन्थ अन्यान्य गूढ़ तत्वों के भण्डार हैं। लोकचरित्र का सफल वर्णन, लोक में प्रचलित नाना प्रकार की कथाओं, किंवदंतियों, समाज में प्रचलित आचार-विचारों का पूर्णरूपेण समन्वय इनकी अपनी विशेषता तथा मौलिकता है। तुलसी की भाँति इस ग्रन्थ में कवि के स्वतन्त्र विचार जहाँ देखने को मिलते हैं। वाल्मीकि रामायण का मुख्य आधार होते हुए भी यह ग्रन्थ उसका अनुगामी नहीं। इसमें अपनी मौलिकता के कारण यह ग्रन्थ बड़ा मनोरम बन गया है। विभिन्न कथाओं के समायोजन से इसका आकार अवश्य ही वृहद् हो गया है।

भाषाई सेतुकरण के ओड़िआ स्तम्भ में वैदेहीश विलास, विलंका रामायण, विचित्र रामायण के पश्चात् जगमोहन रामायण या दाण्डि रामायण अगली कड़ी के रूप में भक्तजनों को समर्पित करते हुए मैं परमानन्द का अनुभव कर रहा हूँ। भुवन वाणी ट्रस्ट के संस्थापक स्व० पद्मश्री पं० नन्दकुमार जी अवस्थी की प्रेरणा तथा आग्रह से इस विशाल ग्रन्थ के अनुवाद का कार्य मैंने लिया। इसकी पूर्ति के लिए वह मुझे सदा ही उत्साहित करते रहे। परन्तु विशदकलेवर वाले इस ग्रन्थ के समापन के पूर्व ही अवस्थी जी ब्रह्मलीन हो गए। उनके योग्य पुत्र श्री विनय कुमार जी अवस्थी ने उनका कार्य बखूबी सम्हाल लिया। वह बड़े लगनशील उद्यमी तथा जागरूक हैं। उनकी मंगलकामना हेतु मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। इस पुस्तक की पाण्डु-लिपि तैयार करने में चि० राजेश पाण्डेय तथा चि० गोपाल त्रिपाठी ने बड़ी लगन से कार्य किया। परमात्मा उनका कल्याण करे। इस ग्रन्थ का रस हिन्दी के माध्यम से भक्तजनों को प्राप्त हो। यदि यह भक्तजनों के हृदय में आनन्द की किंचित भी बौछार कर सके तो मैं अपने श्रम को सार्थक मानूंगा।

गुरुचरणाश्रित
योगेश्वर त्रिपाठी "योगी"

१७/१३ शंकर सदन
महात्मा गांधी मार्ग
कानपुर—२०८००१ (उ० प्र०)

विषय-सूची





सन्तकवि बळरामदास विरचित

जगमोहन रामायण

वा

दाण्डि रामायण

आद्यकाण्ड

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं,
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकं।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्त्ति,
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुळतिळकं राघवं रावणारिम् ॥ १ ॥
दक्षिणे लक्ष्मणो धन्वी बामेत जानकी-शोभा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं नमामि रघूत्तमं ॥ २ ॥
रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ३ ॥

रघुकुल में श्रेष्ठ, लक्ष्मण के अग्रज, सीता के स्वामी, काकुत्स्थवंशीय करुणामय, गुणों के भंडार, ब्राह्मणों के प्रिय, धर्मज्ञ, राजाओं में इन्द्र के समान, सत्य पर चलनेवाले, श्यामल-शान्ति-मूर्ति, दशरथ-नन्दन, रघुकुलतिलक, रावण का हनन करनेवाले तथा लोक को आनन्द प्रदान करनेवाले सुन्दर राघव राम की मैं वन्दना करता हूँ। १ जिनके दाहिनी ओर धनुर्धारी लक्ष्मण तथा वाम भाग में जानकी जी शोभा पा रही हैं। जिनके समक्ष वायुपुत्र हनुमान विराजमान हैं। उन रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीराम को नमस्कार कर रहा हूँ। २ जो राम, रामचन्द्र तथा रामभद्र के नाम से विख्यात हैं, उन रघुवंश के नाथ तथा सीताजी के पति को मैं नमस्कार कर रहा हूँ। ३

गणेश-बन्दना

बन्दइ गणनाथ हे गउरीनन्दन । कपाळे शोभित जार श्रीखण्डि चन्दन १
अयोनिसम्भूते जाकु दुर्गा कले जात । सदाशिब तात जे पार्बती देबी मात २
नमो गणनाथ मोर घेनिबाकु सेबा । प्रसन्न होइण मोते पद कहि देबा ३

जगन्नाथ-बन्दना

बन्दइ जे जगन्नाथ कमळादेबी पति । नीळगिरिरे बिजय अपूर्ब मूरति ४
सुन्दर श्रीमुख जे निळेन्दि जळ जिणि । पाखे उभा गरुड़ किंकर खगमणी ५
सुन्दर दिशइ जे चकोर नेत्र गोटि । श्रीअंगकु सुन्दर काछटि बेश गोटि ६
नरगण निस्तारण देबगणकु साहा । सुद्ध सुबर्ण शंख चक्र चउबाहा ७
सबांगरे चन्दन लेपन दइतारि । पवित्र झीन बास परिहरण करि ८
शिररे मुकुट जे दिशे शोभाबन । बिराजन्ति मणिरत्न दिशइ छम्र छम्र ९
ललाटरे शोहइ जे कस्तुरी भालचिता । हृदयरे हार पद सुबर्ण पइता १०
गगने हृदय जेन्हे चन्द्रर किरण । बैजयन्ति माळ गोटि दिशे शोभाबन ११

गणेश-वन्दना

हे गिरिजा के पुत्र ! गणों के नाथ ! जिनके मस्तक पर श्रीखण्ड चंदन सुशोभित है, उनकी मैं वन्दना करता हूँ। १ जिस अयोनिज को दुर्गा देवी ने उत्पन्न किया। सदाशिव महादेव जिनके पिता और देवी पार्वती जिनकी माता हैं। २ हे गणों के नाथ ! आपको नमस्कार है। मेरी सेवा को स्वीकार करके प्रसन्न होकर मुझे पदों का स्मरण करा दीजिएगा। ३

जगन्नाथ-वन्दना

नीलगिरि पर विराजमान अभूतपूर्व मूर्ति लक्ष्मी जी के पति संसार के स्वामी जगन्नाथ जी की मैं वन्दना करता हूँ। जिनके सुन्दर श्रीमुख की कान्ति ने सागर की नीलिमा को जीत लिया है। निकट ही पक्षियों में मणि के समान श्रेष्ठ गरुड़ जी दास-भाव से खड़े हैं। ४-५ उनके नेत्र चकोर के समान सुन्दर तथा श्रीअंग में पीताम्बर परिधानयुक्त शृंगार मनोहर दिखायी दे रहा है। ६ शुद्ध सुन्दर वर्ण वाले शंख-चक्रधारी चतुर्भुज भगवान प्राणियों को मोक्ष प्रदान करनेवाले तथा देवताओं के आश्रय हैं। ७ दैत्यों के शत्रु के सम्पूर्ण अंग में चन्दन लगा हुआ है। उन्होंने पवित्र झीने परिधान पहन रखे हैं। ८ चमचमाता हुआ रत्न तथा मणियों से जड़ा हुआ मुकुट शिर पर शोभायमान दिखायी दे रहा है। ९ मस्तक पर कस्तूरी का तिलक शोभित है। हृदय में स्वर्णिम पदकयुक्त हार और सुनहरा यज्ञोपवीत पड़ा है। १० आकाश में उदित चन्द्र-किरण के समान उनके हृदय में वैजयन्ती माला शोभनीय दिखायी दे रही

अळका पंति पंति जे मुकुता झरा। जेसने चन्द्रकु जे बेढ़िछन्ति तारा १२
गण्डस्थले मण्डित जे सिन्दुर चारुचिता। चन्द्रहारा मणिमये गळारे जगज्जिता १३
सुन्दर अधर पुण दिव्य अळका शिखा। जळधारा मध्यरे कि बिजुळिर रेखा १४
सुसञ्च नासिकाकु कि पटान्तर अछि। आपे निर्माण से जे घटण होइछि १५
त्रैलोक्यर नाथ जे भकत जन साइँ। करुणा'सागर से जे त्रैलोक्य गोसाइँ १६
कटिरे कटि मेखळा शोभा दिव्य कान्ति। बामे जमदाढ़ जे प्रचण्ड दिव्य ज्योति १७
रत्न चका उपरे हंसुलि तुळि पड़ि। बिजये जगन्नाथ बड़िमा पण बाढ़ि १८
ब्रह्मा शिब इन्द्रादि जे छामुरे अनुक्षणे। से प्रभु अबतार जे मानबर जन्मे १९
अभय रूप पुण स्वरूप जार काया। अबनी अदिति कि अगोचर माया २०
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड एकइ शरीर। प्रत्यक्षे बिजय प्रभु दक्षिण सिन्धुतीर २१
दन्त सिंहासन जे चामर दण्ड छत्र। जे राजाधिराजेश्वर नृपति तिळक २२
पाट महादेई जे रुक्मणी सत्यभामा। संगते बिजय जे प्रभू बळरामा २३
दुर्गा सुभद्रा जे सम्भाळे अर्थ बित्त। आबर संचन्ति पुणि अपूर्ब पदार्थ २४
बिजये सिंहासने पाषाण नबरे। ध्वज शंख चक्र जे पातांग चक्राकारे २५

है। ११ जिस प्रकार चन्द्रमा तारकदल से घिरा रहता है, उसी प्रकार आपकी अलकावली में मुक्ता झिलमिलाते रहते हैं। १२ आपका गण्डस्थल सुन्दर सिन्दूर के तिलक से सुशोभित है। ग्रीवा में पड़े मणिमय चन्द्रहार ने संसार की शोभा को जीत लिया है। १३ मनोहर अधर तथा सुन्दर अलकों की शिखा जलधारा में विद्युत्-रेखा के समान लगती है। १४ सुगठित नासिका का कोई जोड़ नहीं है। लगता है, इसका निर्माण स्वयं ही हुआ हो। १५ आप तीनों लोकों के नाथ, भक्तों के स्वामी, दया के सागर तथा त्रिलोकों के ईश्वर हैं। १६ कमर में पड़ी हुई मेखला की छवि मनोहर है तथा बायीं ओर यमराज के दाँत के समान प्रखरतम दिव्य ज्योतिमंत दण्डाकार सुदर्शन शोभित है। १७ श्रीचक्र के ऊपर दिव्य रत्नवेदी पर श्री जगन्नाथ के विराजमान होने से उसकी महत्ता और बढ़ गयी है। १८ जिनके समक्ष प्रति-क्षण ब्रह्मा, शंकर जी तथा इन्द्र आदि उपस्थित रहते हैं, उन्हीं परमात्मा ने मानव-अवतार ग्रहण किया है। १९ जिनका शरीर तथा रूप मूर्तिमान अभय ही है। जिनकी :माया पृथ्वी तथा सूर्य के लिए भी अगोचर है। २० उनके एक शरीर में अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड स्थित हैं। वही प्रभु दक्षिण सागर के तट पर विराजमान हैं। २१ हाथी-दाँत के सिंहासन पर चामर, दण्ड तथा छत्र से युक्त राजाधिराज राजराजेश्वर राजाओं में सिरमौर जगन्नाथ उसी पर विराजमान हैं। २२ पट्टमहिषी रुक्मिणी तथा सत्यभामा के साथ भगवान बलदेव जी साथ में विराजमान हैं। २३ दुर्गा-रूपी कल्याणकारिणी सुभद्रा अर्थ-सम्पत्ति का साज-सम्हार करती हुई अपूर्व पदार्थों का संचयन करती हैं। २४ प्रस्तरनिर्मित मन्दिर में आप सिंहासन पर विराजमान हैं। शंख और चक्र को धारण किये हैं। मन्दिर के ऊपर गोलाकार सुदर्शन

आपणे द्वारपाळ जे विनितार वत्स । दक्षिण पारुशरे कळप नामे बट २६
लवणसिन्धुजल अछिकि अकळणा । लाभकेश्वर लिंग पश्चिम दिग ठणा २७
से पुर नाम गोटि श्रीपुरुषोत्तम । शंख नाभि मण्डळ आकार उत्तम २८
उत्तर दिगरे जे मारकण्डेश्वर । दक्षिण दिगरे जे जमेश्वर मूळ २९
पूर्वदिगरे नीळकण्ठ पंचानन । कपाळमोचन पश्चिम दिगर मध्येण ३०
चारि पाशे अटइ जे चारिघाट जाण । मुकति पसरा बोलि ताहांकु मण पुण ३१
सुवर्णमयपुर किरण दिशे शोभा । जहिँरे न भेदइ जे कळिकाळ प्रभा ३२
छयाणोइ सस्त्रधर अष्टादश जाति । समस्ते चतुर्भुज जे स्वर्गकु दिशन्ति ३३
भाळिण देबताए पूछन्ति पितामह । एथिर संशय पिता आम्भंकु जे कह ३४
मृत्युपुर भितरे जम्बोद्वीप भ्रथ खण्ड । उत्कळ देशरे जे अभिनव मण्ड ३५
दक्षिण सिन्धु तीररे जेबण जे पुर । नीळ सुन्दर गिरिरे बिजय चक्रधर ३६
नगर परिमळ जे बहुत लोक सेथि । समस्ते दिशन्ति प्रत्यक्ष जे श्रीबत्सि ३७
शंख चक्र गदा जे दिशन्ति चतुर्भुज । किरीटि कुण्डळ शोहे बसन्त बर्ण तेज ३८
सेथिरे बिजय करि अछन्ति जगन्नाथ । के मनरे से कथाकु पारिब कळित ३९
वेदवर बोले तुम्भे देबताए शुण । पुरुषोत्तम लोके समस्ते नारायण ४०

चक्र पर ध्वजा लहराती रहती है। २५ विनतानन्दन गरुड़ आपके द्वारपाल हैं। दक्षिण पार्श्व में कल्प नाम का वटवृक्ष है। २६ अथाह लवण-सिन्धु भरा है तथा पश्चिम की ओर लाभकेश्वर शिवलिंग विराजमान है। २७ उस क्षेत्र का नाम श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र है, जिसका आकार श्रेष्ठ शंख की नाभि के तुल्य है। २८ उसके उत्तर दिशा में मार्कण्डेश्वर महादेव तथा दक्षिण में यमेश्वर महादेव है। २९ पूर्व दिशा में पंचानन नीलकण्ठ तथा पश्चिम में कपालमोचन महादेव जी विराजमान हैं। ३० चारों ओर चार घाट हैं, जिन्हें मुक्ति की खान ही समझो। ३१ स्वर्णमयपुर की दिव्य शोभा को कलिकाल की प्रभा वहाँ भेद नही पाती है। ३२ अठारह जातियों के लोग हजारों घरों में सभी स्वर्ग के चतुर्भुजधारी के समान दिखायी देते है। ३३ यह सोचकर देवताओं ने पितामह ब्रह्मा से पूछा, हे पिता ! इसमें हमें शंका हो रही है। इसके विषय में आप हमसे बताइये। ३४ मृत्युलोक के जम्बूद्वीप के भरतखण्ड में उत्कल प्रदेश में यह अभिनव मण्डन है। ३५ दक्षिण सागर के तट पर स्थित नगर के नीलगिरि पर चक्रधारी भगवान विराजमान है। ३६ उस सुवासित नगर में रहनेवाले सभी व्यक्ति प्रत्यक्ष ही श्री विष्णु भगवान के समान दिखायी पड़ते है। ३७ वह शंख, चक्र, गदा एवं सुवर्ण के किरीट तथा कुण्डलों से युक्त तेजस्वी चतुर्भुज भगवान जैसे ही दिखायी देते है। ३८ वहीं पर संसार के स्वामी श्री जगन्नाथ विराजमान हैं। इस बात की कल्पना अपने मन में कौन कर सकता है ? ३९ वेदवर ब्रह्मा जी ने कहा, हे देवताओं ! सुनो। पुरुषोत्तम क्षेत्र के सभी प्राणी नारायण ही हैं। वहाँ पर परब्रह्म परमात्मा नारायण प्रत्यक्ष नर के रूप में रहते हैं।

सेथिरे निदाबिष्णु प्रत्यक्षे नरहरि । चर्मलोचनरे जाकु देखिले निस्तरि ४१
से पुरलोक जहुँ होइले चतुर्भुज । आपे नीळगिरि नाथ होइलेक भाज ४२
पाद कर न बहिले तुम्भर जे हिते । गुपत कले नासा श्रबण सहिते ४३
आजहुँ हेतु कर सर्ब सुरे पुणि । आनन्द होइले सर्बे देबगणे शुणि ४४
ब्रह्मा सहितरे अइले देबताए देखि । चक्षु सुफळ हुए जे से देबंकु देखि ४५
कटिरे पीत बसन पिन्धि काछि करि । सेबाकारी निमन्ते चतुर्धा रूप धरि ४६
आरत भंजन जार महिमा जे सिद्धि । सुगन्ध कुसुम नाना बर्णरे जे बिधि ४७
फूल चन्दन अगरु चन्दन सुबास । रत्न आभरण अंगे कमळा बिळास ४८
देखिण देबताए जे होइले तृपति । जाणिले बासुदेब बासना प्रकृति ४९
देबंकु दुर्लभ अटे मानबे प्रकाश । जय जय देब तुम्भे परम पुरुष ५०
अनन्त पुरुषोत्तम अनन्त मूरति । सहस्रे फणा तु जे सहस्रे मूरति ५१
सहस्रे फणा पुण सहस्रलोचन । सहस्रे कोटि जाग कले बिमोचन ५२
सहजेत सहस्रे मूरति पीतबास । दश दिगे दिशन्ति शान्त शीळ रूप ५३
मन्त्रंकर सारस्वत अटुना गोसाइँ । भावग्राही नाथ अटु नाना अर्थ तुहि ५४

जिनका दर्शन चर्मचक्षुओं से करने पर मोक्ष मिलता है । ४०-४१ जब उस नगर के लोग चतुर्भुज हो गये तो स्वयं नीलाचलेश्वर भी उसके ही अनुरूप हो गये । ४२ तुम्हारे कारण उन्होंने हाथ और पैर धारण नहीं किये । उन्होंने नासिका तथा कानों को भी गुप्त कर लिया । ४३ परन्तु वह आज भी समस्त देवताओं के लिए हितकारी हैं । यह सुनकर सारे देवता प्रसन्न हो गये । ४४ ब्रह्माजी के साथ सभी देवता उनके दर्शन के लिए आये और उस देवता का दर्शन करके उन सबके नेत्र सफल हो गये । ४५ उन्होंने कमर में पीताम्बर वस्त्र पहना, कछनी भी कसी और सेवा के निमित्त ही उन्होंने चार रूपों को धारण किया । ४६ जिनकी महिमा आर्त पुरुषों के दुःख दूर करने के लिए प्रसिद्ध है, जिनकी पूजा नाना प्रकार के सुवासित पुष्पों से होती रहती है, उन कमलारमण नारायण के श्रीअंग सुवासित चन्दन, अगरु तथा पुष्पों से सजे तथा रत्नाभरणों से युक्त हैं । ४७-४८ देवता उनके दर्शन से तृप्त हो गये । इससे वह वासुदेव जगन्नाथ के स्वभाव तथा प्रकृति से परिचित हो गये । ४९ जो देवताओं के लिए दुर्लभ हैं, वह ही मानव के लिए प्रत्यक्ष विराजमान हैं । हे देव ! आप परमपुरुष हैं । आपकी जय हो ! जय हो । ५० हे अनन्त पुरुष ! आपके अनन्त रूप हैं । आप हजारों फणों से युक्त हजारो रूप धारण करनेवाले है । ५१ आपके हजारों शिर तथा हजारों नेत्र हैं । हजारों, करोड़ों यज्ञ करने से आप प्रत्यक्ष होते हैं । ५२ हे पीताम्बरधारी प्रभु ! आप शान्तशील वाले हजारों रूप सहज ही दसों दिशाओं में दिखायी देते हैं । ५३ हे नाथ ! आप मंत्रों के सार तत्त्व हैं । हे नाथ ! आप नाना प्रकार के अर्थों से भाव को ग्रहण करनेवाले हैं । ५४ आपकी महिमा अपार

अपार महिमा तोर बिचित्र अटे केळि । जाणि त भार्जन तोते नोहे देव शूळी ५५
दासवत्सळ तुम्भे करुणामय सिन्धु । धैर्ज्य लोकर मेरु दुःखि लोकर बन्धु ५६
सुरगणंकर सखा दइत कुळ काळ । जय नारायण तुम्भे गोबिन्द गोपाळ ५७
नमस्ते नारायण शंख चक्रधारी । नमस्ते नारायण सुरंग मधुहारी ५८
नमस्ते नारायण जगतजन आत्मा । उतपत्ति प्रळय करुणा महातमा ५९
सृष्टि सर्जन तोर दुःख जे सुखदानी । संसार पाळक नाथ दयालू दाता पुणि ६०
जाहाकु सुदया तु करु ब्रह्मराशि । से तोहर चरणे शरणे पशे आसि ६१
इहलोकरे मुक्ति शान्तिरे स्वर्ग पाइ । देवंकर संगतरे जुगे जुगे थाइ ६२
तुम्भे जे नारायण शरण रखन्ता । कीटू जे ब्रह्मजाए समस्त देखन्ता ६३
धनि निर्धनी पुरुषे निर्बल बळ नाहिँ । तोहर आगरे प्रभु जप मन्त्र काहिँ ६४
वेद पुराणरे तुम्भे अट गो अधिपति । तोहर आगरे नाहिँ आन जे जुकति ६५
ब्रह्मा तटस्थ होन्ति शुणि तोर नाम । इन्द्र समान नुहइ जोग साधि पुण ६६
सर्ब देव निस्तारण सर्व अन्तर्जामी । बन्दइ नारायण परम देब स्वामी ६७
मुं तोहर शरण पोशिलि जगन्नाथ । उद्धरि धर मोते शंख चक्र हस्त ६८

है । आपकी लीलाएँ विचित्र हैं, जिन्हें भगवान शूलधारी शंकर भी नहीं समझ पाते हैं । ५५ हे करुणासागर ! आप दासवत्सल हैं । आप धीर लोगों के लिए मेरु पर्वत तथा दुखी जनों के बन्धु हैं । ५६ आप देवताओं के मित्र तथा दैत्यों के शत्रु हैं । हे नारायण ! आप गोविन्द तथा गोपाल हैं । आपकी जय हो । ५७ हे शंख, चक्रधारी नारायण ! आपकी जय हो । कुपित होकर मधु दैत्य के विनाशकर्ता ! आपकी जय हो । ५८ हे प्राणिमात्र की आत्मा ! आपकी जय हो । दया करके सृष्टि करनेवाले तथा कुपित होकर संहार करनेवाले प्रभु ! आपकी जय हो । ५९ यह सृष्टि आपकी ही सर्जना है । आप दुखी जीवों को सुख प्रदान करनेवाले हैं । आप संसार का पालन करनेवाले दयालु और दाता हैं । ६० हे ब्रह्मन् ! आप जिस पर दया करते हैं । वह ही आपकी चरण-शरण ग्रहण कर पाता है । ६१ वह व्यक्ति इस लोक में मुक्ति पाकर शान्तिपूर्वक स्वर्ग में जाकर युग-युग तक देवताओं के साथ रहता है । ६२ हे नारायण ! आप शरण में आये व्यक्ति के रक्षक है । कीड़े से लेकर ब्रह्मा तक सभी पर दृष्टि रखनेवाले हैं । ६३ धनी व्यक्ति हो अथवा निर्धनी, बलवान हो या निर्बल आपके सामने जप और मंत्र क्या हो सकता है । ६४ आप वेद तथा पुराणों के अधीश्वर हैं । आपके समक्ष कोई भी युक्ति काम नही देती । ६५ आपका नाम सुनकर ब्रह्मा भी तटस्थ हो जाते हैं । योगसाधन से इन्द्र भी समता को प्राप्त नहीं कर सकते । ६६ आप सभी देवताओं का निस्तार करनेवाले सर्वान्तर्यामी हैं । हे देवताओं के देव ! हे नाथ ! हे नारायण ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ । ६७ हे जगत् के नाथ ! मैं आपकी शरण में आ गया हूँ । आप मेरा उद्धार करके अपनी

तु मोते उद्धर तोते भजिलि मुँ पुण। भय न करि चित्ते पशिलि शरण ६९
जाहा मुँ पुराणरे शुणिलि ऋषिमुखे। तोते सेबा मुहिँ जे करुछि मोर सुखे ७०
तोहर आज्ञारे पुण सुरगण दळि। तोते हिंसा करिण असुरे गले तरि ७१
स्वर्ग मर्त्य पाताळ जे चउद भुबन। तोते आश्रे करि जे तरे सर्ब जन ७२
तोते सेबिण मुहिँ जे अछइ गोसाइँ। ब्रह्माण्ड भितरे आन सरिसम नाहिँ ७३
अक्षय नाम तोहर श्रीबत्स मुरारी। कउस्तुभ भूषण तु अटु दइतारि ७४
पुराण पुरुष कमळा पति प्रत्यक्ष। प्रसन्न हुअ मोते परमज्ञान बत्स ७५
बळरामदास मुँ जे अटइ तोहर। तू देब हृदयरे पश जे मोहर ७६
श्रीराम ठाकुर जे जानकी देबीपति। समस्ते अबतार होइले मंचरेटि ७७
धरणी उश्वासे से दुष्टकु मारि पुण। सन्थकु रखिबाकु छाड़िले निजस्थान ७८
से चरित्र बालमिके उच्चारिले मन। पार्बतींक आगे बखाणिले पंचानन ७९
बालमिक ऋषि मने मने भाळिबारू। जशोबन्तर जुगरे नारद थिबारू ८०
से कथाकु नारद जाणिले जोगबळे। प्रबेश होइले बालमिक आश्रमरे ८१
देखिण बालमिक जे पादपूजा कले। मृगछाल नेइण जे नारदंकु देले ८२
मृगछाल उपरे बसिले मुनिबर। बालमिके कहिले बचन सधीर ८३

शंख-चक्र धारण करनेवाली भुजा मुझ पर रख दें। ६८ आप मेरा उद्धार करें। मैं आपका बार-बार भजन करता हूँ। मैं हृदय में भय नहीं करता, क्योंकि आपकी शरण प्राप्त की है। ६९ मैंने जो पुराणों में ऋषियों के मुख से सुना है। मैं अपने सुख के लिए आपकी सेवा कर रहा हूँ। ७० आपकी ही आज्ञा से देवताओं का दलन करनेवाले असुरगण आप से वैर करके तर गये। ७१ स्वर्ग-लोक, मृत्युलोक तथा पाताललोक एवं चौदह भुवनों के सभी लोग आपका आश्रय ग्रहण करके तर गये। ७२ हे नाथ ! मैं आपकी सेवा कर रहा हूँ। इस ब्रह्माण्ड में मेरे समान कोई अन्य नहीं है। ७३ हे मुर दैत्य के शत्रु श्रीवत्स ! आपका नाम अक्षय है। आप कौस्तुभ मणि को धारण करनेवाले, दैत्यों के शत्रु हैं। ७४ आप प्रत्यक्ष पुराणोक्त पुरुष तथा लक्ष्मी के पति हैं। हे परम ज्ञानी प्रभु ! आप मुझ पर प्रसन्न हों। ७५ मैं आपका ही बलरामदास हूँ। हे देव ! आप हमारे हृदय में विराजमान हों। ७६ देवी सीता के स्वामी, भगवान श्रीराम के समस्त अवतार इस मृत्युलोक में हुए हैं। ७७ दुष्टों का संहार करके पृथ्वी का भार-हरण तथा सन्तों की रक्षा करने के लिए ही आपने अपने स्थान का परित्याग किया है। ७८ उस चरित्र का गायन वाल्मीकि ने किया है तथा भगवान शंकर ने वही चरित्र पार्वती से वर्णन किया है। ७९ वाल्मीकि ऋषि अपने मन में ही सोचते थे। तभी यशवन्तरपुर में नारद जी ने उसे योगबल से जाना और वाल्मीकि-आश्रम में प्रविष्ट हुए। ८०-८१ उनका दर्शन करके महर्षि वाल्मीकि ने उनके चरण-कमल की पूजा की तथा उन्होंने नारद जी को मृगछाला दी। ८२ मुनिश्रेष्ठ नारद मृगछाला पर बैठ गये। तब धीर भाव से वाल्मीकि

नारायण जन्म जहुँ मर्त्त्यपुरे हेले। असुर मारिवाकु देवे जात कले ८४
तांकर चरित्र मुँ बर्णिबाकु जे मन। शुणिण नारद जे बोलन्ति वचन ८५
जानकी तोर दुहिति श्रीराम अटे ज्वाइँ। बिभूषण बिडम्बण अनेक से होइ ८६
से कथारे बिचार न कर मुनिबर। बालमिक बोले किछि वर्णिबि निकर ८७
नारद बोइले जेवे र्बणिबाकु मन। रामायण आद्यकाण्ड कर हे वर्णन ८८
बेद नाटक श्लोक सातश पंचाशरे। एहि काण्ड वर्णन कर हे मुनिवरे ८९
एथिरू बळि पड़िले नरक दरशन। निश्चय तुम्भंकु जे हेव हे मुनि जाण ९०
शामबेदरु जात करि एक श्लोक। पंचाश सस्र श्लोक कर हे तुम्भे ठिक ९१
शामबेदरू जात चारि नाटक हेव। देव नाटक सुनाटक अटे भाव ९२
नब नाटक श्लोक लेखारे चारि जाति। शामबेद मध्यरू हेला उत्पत्ति ९३
प्रथमरे तुम्भर आद्यकाण्ड जे पुण। द्वितीये चारि काण्ड करिब जेउँ जाण ९४
लंकार द्विजबर नयन केश्वरी।अजोध्या आरण्यक किष्किन्ध्या सिन्धुरा जे करि ९५
सु नाटके श्लोक सातश पंचस्तरि। पंचश सस्र श्लोक करिव ठूळकरि ९६
सेठाबरू पबननन्दन हनुमन्त। लंकाकाण्डकु पुण करिव से जे जात ९७
महानाटक श्लोक सातश पंचाशरे। तेतिस सस्र पद सम्पूर्ण सेहू करे ९८

ने उनसे कहा। ८३ असुरोंका नाश करने के लिए देवताओं की विनय के अनुसार भगवान ने मृत्युलोक में मानव-रूप में अवतार ग्रहण किया। ८४ उनके चरित्र का वर्णन करने के लिए मेरे मन में इच्छा उत्पन्न हुई है। यह सुनकर नारद ने कहा। ८५ जनक की पुत्री तुम्हारी भी पुत्री है और श्रीराम तुम्हारे दामाद हैं। उन पर नाना प्रकार के सुख-दुःख पड़े। ८६ हे मुनिश्रेष्ठ ! उस पर ध्यान न दो। वाल्मीकि ने कहा उनके चरित्रों का कतिपय वर्णन करूँगा। ८७ देवर्षि नारद ने कहा, यदि तुम्हें वर्णन करने की इच्छा है तो रामायण के आद्यकाण्ड का वर्णन करो। ८८ हे मुनिश्रेष्ठ ! चरित्र को वेद तथा नाटक से समझकर सात सौ पचास श्लोकों में इस चरित्र का वर्णन करो। ८९ इसमें त्रुटि होने से हे महर्षि ! तुम्हें निश्चय ही नर्क का दर्शन करना पड़ेगा। ९० सामवेद से एक श्लोक को निर्मित करके तुम पचास हजार श्लोकों का सृजन करो। ९१ सामवेद से चार नाटक उत्पन्न होंगे। देव-नाटक सुन्दर भावपूण नाटक होगा। ९२ सामवेद के नव नाटक के श्लोक के अनुसार चार जातियाँ उत्पन्न हुई। ९३ प्रथम से आदिकाण्ड और द्वितीय से चार काण्डों का सृजन करना। ९४ लंका के द्विजश्रेष्ठ नयनकेश्वरी के अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा और सुन्दरकाण्ड तथा सुन्दर नाटक के सात सौ पचहत्तर श्लोकों को एकत्रित करके पचास हजार श्लोकों का सृजन करना। ९५-९६ पवनपुत्र हनुमान वहाँ से लंकाकाण्ड का निर्माण करेंगे। ९७ हनुमन्नाटक के सात सौ पचास श्लोकों से तेंतीस हजार पदों में वह पूर्ण होगा। ९८ वहाँ से नवनाटक के सात सौ पचास

सेठारू ऋषिश्‍रृङ्ग करिबे बर्णना ।सातश पंचाश नब नाटक श्लोक सिना ९९
से सातश पंचाशरे सतर सस्र पद । शामबेद भितरू जे समस्ते सम्भब १००
सेठारू रामायण समापत हेब ।चारि श्लोकरू चारि ऋषि करिबे सम्भब १०१
शुणिण बालमिक हरष होइले । नारद कहिण जे स्वर्गकु चळि गले २
से चारि ऋषि बर्णिबार जे बिधान । पार्बती आगे एहा कहन्ति त्रिलोचन ३
से चरित्र बर्णिबाकु मोर मन पुण । तेणु करि नारायण चरणे शरण ४
चारि रावण असुरकु ध्वंसिले केमन्ते । से कथा उच्चारण कले जे शिब चित्ते ५
ईश्वर कहुछन्ति शुणन्ति पार्बती । से कथा बर्णिबाकु अटे मोर मति ६
स्वामींकर अज्ञारे जे प्रमाण शिरे धरि । ग्रन्थ करिबाकु मुँ जे मनरे बिचारि ७
शुणिण श्रीरामर चरित्र महिमा । सदाशिब अग्रते जे कहे बेद ब्रह्मा ८
प्रसन्न होइण जे कहिले शूळपाणि । मुँ ताहा पण्डितंक मुखरू अछि शुणि ९
नीळगिरि जगन्नाथ प्रसन्नरे पुण । कहिबि रामायण अमृत बचन ११०
कपिळास कन्दरे बिजय बिश्वनाथ । एसनक समये मिळिले चउमाथ १११
संगरे त्रिदश जे देबता पुण छन्ति । दश दिगपाळ जाइ मिळिलेक सेठि १२
बरुण कुबेर जे नइऋत पुण । कपिळास कन्दरे बिजय सर्बे जण १३
सदाशिब देह जे ब्याधिरे पीड़ित । देखिबाकु सकळ देवता उपगत १४

श्लोकों में श्रृंगी ऋषि का वणन होगा। ९९ उन सात सौ पचास श्लोकों से सत्रह हजार पद सम्भूत होंगे। सामवेद के भीतर इन समस्त पदों का सम्भाव्य होगा। १०० यहाँ पर रामायण समाप्त होगी। चार श्लोकों से उसे चार ऋषि सम्पादित करेंगे। १०१ यह सुनकर वाल्मीकि प्रसन्न हो गये और नारद जी यह कहकर स्वर्ग को चले गये। २ जो चार ऋषियों के कहने की बात थी सो पार्वती से भगवान त्रिनेत्रधारी शिव ने कहा। ३ उसी चरित्र का वर्णन करने की मेरी इच्छा हो रही है। इसीलिए मैंने भगवान विष्णु के चरणों की शरण ग्रहण की है। ४ उन चार असुर रावणों का विनाश कैसे हुआ, यह कथा भगवान शंकर ने वर्णित की। ५ जिसे शंकर जी ने पार्वती को सुनाया। वही चरित्र वर्णन करने की मेरी इच्छा है। ६ अपने स्वामी की आज्ञा को प्रत्यक्ष रूप से शिरोधार्य करके मैंने ग्रन्थ निर्माण करने का विचार मन में किया है। ७ श्रीराम के चरित्र की महिमा सुनकर वेदपति ब्रह्मा जी ने शंकर के समक्ष उसका वर्णन किया। भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर जिसका बखान किया। उसे ही मैंने पण्डितों के मुख से सुना है। ८-९ नीलाचलबिहारी श्री जगन्नाथ जी के प्रसन्न होने से मैं रामायण की अमृतमयी कथा का वर्णन करूँगा। ११० कैलास पर्वत की कन्दरा में भगवान शंकर विराजमान थे। इसी समय चतुर्मुख ब्रह्मा वहाँ पधारे। १११ उनके साथ में देवता तथा दश दिग्पाल भी वहाँ पधारे। १२ वरुण, कुबेर, नैर्ऋत्य आदि सभी कैलास की कन्दरा में उपस्थित थे। १३ भगवान शंकर का शरीर व्याधि से पीड़ित था। समस्त देवता उन्हें देखने वहाँ पर आये

सदानन्दर　देह जे पापरू पीड़ित। दक्ष प्रजापति कि जेणु से कले बध　१५
तेणु करि शरीरे व्यापिला आसि व्याधि।पिता बध दोष जे सदाशिव अंगे लागि　१६
पार्बतींक तात जे अटन्ति प्रजापति।जोगी बोलि नबरिले सदाशिबंकु सेथि　१७
पार्वती शुणिण कोप करिण बेगे गले। अभिमान करि जागकुण्डे झास देले　१८
जाणिण ईश्वर जे गलेक सेहू स्थान।प्रजापति गण्डि मुण्ड कलेक भिन्न भिन्न　१९
गण्डि रखि मुण्ड जे कुण्डरे नेइ भरि। अग्निदेबता तांकु जे देले भस्म करि　१२०
देखिण देबता ऋषि भयरे पळाइले। प्रजापति घरणी शिबर आगे मिळे　१२१
स्तुति करन्ते दया कले जे पंचानन। छागळर मुण्ड नेइ लगाए बहन　२२
जीबन न्यास करिण प्राण जे तांकु देले। जीब पाइ प्रजापति स्तुति आरम्भिले　२३
शान्ति होइ सदाशिव कपिळास आसि। सहस्रे बरष गंगाकूळे तप करि बसि　२४
तप सिद्ध हेबारू जे जनम पार्बती। हेमबन्त घरणी गर्भरु उत्तपति　२५
काळेण सदाशिब ताहांकु हेले बिभा। आनन्दे भोग कले बिळसे दुर्ल्लभा　२६
से लीळा देखि बिष्णु मनरे बिरस। क्षीरसागर मन्थिले घेनिण त्रिदश　२७
प्रथमे तहिँरू जात हेलेक कमळा। बिष्णुंक गळारे नेइ लम्बाइले माळा　२८

थे। १४ दक्ष प्रजापति का वध कर देने से सदा आनन्द में स्थित रहनेवाले भगवान शंकर का शरीर पाप से पीड़ित था। १५ इसी कारण से शरीर में रोग आकर लग गया था। पिता-वध का दोष उनके शरीर से लग गया था। १६ प्रजापति पार्वती के पिता थे। उन्होंने शिव को योगी-रूप में वहाँ वरण नहीं किया। १७ पार्वती ने यह सुनकर क्रोध करके शीघ्र ही अभिमानवश यज्ञकुण्ड में छलाँग लगा दी। १८ यह जानकर भगवान शंकर उस स्थान पर पहुँचे। उन्होंने प्रजापति दक्ष का शिर धड़ से अलग कर दिया। १९ धड़ को रखकर उन्होंने उनका शिर यज्ञकुण्ड में डाल दिया। अग्निदेव ने उसे भस्म कर डाला। १२० यह देखकर यज्ञस्थल में विराजमान समस्त देवता तथा ऋषि भय से भाग गये। प्रजापति दक्ष की स्त्री शिव के पास आकर स्तुति करने लगी। तव कृपा करके पाँच मुख वाले शंकर जी ने शीघ्र ही बकरे का सिर लेकर उनके लगा दिया। १२१-१२२ उन्होंने जीवन का न्यास करके उनमें प्राणों का संचार किया। जीवित होकर प्रजापति दक्ष प्रार्थना करने लगे। २३ सदाशिव भगवान शंकर शान्त होकर कैलास पर आ गये और उन्होंने गंगा के तट पर बैठकर एक हजार वर्ष तपस्या की। २४ तपस्या के सिद्ध होते-होते हिमवान की पत्नी के गर्भ से पार्वती जी का जन्म हो गया। २५ कालक्रम के अनुसार सदैव कल्याण करनेवाले महादेव ने उनके साथ विवाह करके आनन्दपूर्वक विलास के दुर्लभ भोग भोगे। २६ यह लीला देखकर भगवान विष्णु ने देवताओं को लेकर खिन्न होकर क्षीरसागर का मन्थन किया। २७ सर्वप्रथम उससे लक्ष्मी उत्पन्न हुईं, जिन्होंने विष्णु के गले में माला पहना दी। २८ कुछ समय बाद वासुदेव

काळेण बासुदेब ताहांकु बिभा हेले। हरषरे कमळा संगरे लीळा कले २९
द्वितीय मन्थनरे अमृत जात हेला। त्रिदश देबतांकु श्रीहरि नेइ देला १३०
देबताए अमृत भक्षिण अमर। तृतीय मन्थनरे उपुजे बिष घोर १३१
देखिण ताहा सदाशिबरे जे देले। क्रोधरे सदाशिब बिष जे पान कले ३२
से बिषपानरू ब्याधि हेला जे उत्तपति। सेथिर सकाशे चिन्ता पार्बतींक पति ३३
क्षीण हेबारू बेदबर देबंकु संगे घेनि। पंचाननंकु सर्बे करन्ति दयिनि ३४
देखिण कृतकृत होइले त्रिपुरारि। उठिण बिधाता जे कोळाग्रत करि ३५
प्रीत होइण सर्बे बसिले मेळ होइ। बेदबरंकु देखिण आनन्द उमासाइँ ३६
एक आरकरे जे पचारे कुशल। पृथ्वीर कथा धाता कहिले सकळ ३७
सदाशिब बोइले शुण हे पितामह। बळ क्षीण भग्न जे होइला मोर देह ३८
पार्बती मोहर कष्ट देखिण बड़ दुःखी। केबण आकारए बूझ हे अष्टआखि ३९
बेदबर बोइले जे से कथा अछि जाणि। तेणु मुँ अइलि जे त्रिदश देब घेनि १४०
धर्म न थापि महाजाग जे भांगिल। श्वसुर दक्ष प्रजापतिकि गंजिल १४१
से दोषरू शरीर तोहर सुस्थ नाहिँ। तुहि जाग भिआणकलु जे उमासाइँ ४२
पाप पुण्य बोलिण बिचार जे न कलू। एड़े महाधर्म जे हेलेण झिगासिलु ४३

भगवान विष्णु ने उनसे विवाह करके प्रसन्नतापूर्वक लक्ष्मी के साथ विहार किया। २९ फिर दुबारा मथने से अमृत पैदा हुआ जिसे लेकर भगवान ने देवताओं को प्रदान किया। १३० देवता सुधापान करके अमर हो गये। तीसरी बार मथने से प्रचंड हलाहल उत्पन्न हुआ। १३१ यह देखकर उन्होंने उसे भगवान शंकर को दे दिया जिसे क्रोध से उन्होंने पान कर लिया। ३२ उस विष-पान से व्याधि उत्पन्न हो गयी, जिससे पार्वती के स्वामी शिवजी चिन्ता में पड़ गये। ३३ दुर्बल हो जाने के कारण वेदवर ब्रह्मा देवताओं को लेकर शंकर जी के समक्ष दीनता दिखाने लगे। ३४ यह देखकर त्रिपुरासुर दैत्य के शत्रु भगवान शंकर कृतकृत्य हो गये और उठकर ब्रह्माजी का आलिंगन करके प्रेमपूर्वक सबके साथ बैठ गये। ब्रह्माजी को देखकर उमापति महादेव प्रसन्न थे। ३५-३६ वह एक-दूसरे से कुशलता का समाचार पूछने लगे। ब्रह्माजी ने भूमण्डल की सभी बातें उनसे निवेदित कीं। ३७ सदा कल्याणकारी शिवजी ने ब्रह्माजी से कहा कि बल क्षीण होने से मेरा शरीर टूट गया है। ३८ मेरा कष्ट देखकर पार्वती बहुत दुःखी हैं। हे आठ आँखों वाले ब्रह्मा ! अब इसका निदान आप ही सोचें। ३९ वेदवर ब्रह्माजी ने कहा कि यह बात मुझे ज्ञात हैं। इसीलिए मैं देवताओं को लेकर आया हूँ। १४० आपने धर्म की स्थापना न करके अपने श्वसुर दक्षपति की हत्या करके उनके महान यज्ञ को भंग किया। १४१ उसी अपराध से आपका शरीर स्वस्थ नहीं है। हे उमानाथ ! आपने ही यज्ञों का सृजन किया है। ४२ आपने पाप और पुण्य का विचार नहीं किया। इतने महान धर्म को आपने खेल-खेल में ही नष्टकर दिया। ४३ उसी पाप से यह

सेथिर पापरू जे वढ़िला तो रोग। शरीर भितरे से रहिकरे भोग ४४
एवे जे सदाशिव मोर बोल कर। तारक महामन्त्र रामनाम जे उच्चार ४५
लक्षे पद राम नाम कर तु सुमरणा। तेबे ब्याधि मुकत होइव देहुँ सिना ४६
नाम ब्रह्म नाम ब्रह्म संसारू जे तरि। राम नाम सुमरणा कले त्रिपुरारी ४७
विष्णु पदवाक्य जे अनुष्टुप छन्द। जेणु राम नाम पद हृदरे जे बान्ध ४८
हेउ परापत तोते राम नाम गोटि। क्लेश बिनाश हेउ तोहर देहरूटि ४९
एते बोलिण ब्रह्मा जे चतुर्बेद घोषि। चन्द्रशेबरंकु जे कहिले मन तोषि १५०
कृतांजळि होइण देव सदाशिव। ब्रह्मार सुकल्याण शिररे घेनि देब १५१
अनेक सन्तोष जे होइण शूळपाणि। त्रिदश देबतांकु जे ब्रह्मा घेनि पुणि ५२
सदाशिबंकु कहिण मेलाणि बेदबर। जे जाहा पुरकु जे गले देबासुर ५३
सदाशिव मनरे हेजिले राम बाणी। श्रीराम नाम गोटिकु जप कले पुणि ५४
नित्य सदाशिव जे सारिण नित्यकर्म। जप करन्ति बेनि अक्षर राम नाम ५५
दिनकु दिन तांक शरीर हेला सुस्थ। शरीर सुस्थ हेबारू आनन्द बिश्वनाथ ५६
क्षणेहें न पाशोरन्ति श्रीरामर नाम। सताइश दिने लक्षे पद कले सम्पूर्ण ५७
हृदपद्मे सुमरणा कले राम नाम। निष्कळंक हेले देहूँ गला रोग तम ५८

रोग वढ़ गया और आपके शरीर के भीतर रहकर भोग भोग रहा है। ४४ हे सदाशिव ! इस समय हमारा कहना मानकर आप श्रीराम-तारक महामन्त्र का जप करें। ४५ श्रीराम नाम का एक लक्ष जाप करने से रोग से मुक्त हो जायेंगे। ४६ नाम-ब्रह्म संसार से तारनेवाला है। तब त्रिपुरासुर के शत्रु शंकरजी ने श्री राम नाम का जाप कि या। ४७ अनुष्टुप छन्द में विष्णुपद वाक्य द्वारा श्रीराम नाम पद को अपने हृदय में स्थिर करो। ४८ श्रीराम का नाम तुम्हें उपलब्ध हो, जिससे तुम्हारे शरीर से कष्ट का विनाश हो जाए। ४९ ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने चारों वेदों के मंत्रों को प्रसन्न मन से शंकरजी के समक्ष उच्चारण किया। १५० भगवान शंकर ने हाथ जोड़कर ब्रह्मा के आशीर्वाद को सिर पर धारण किया। १५१ त्रिशूलधारी भगवान शंकर बहुत संतुष्ट हुए। ब्रह्माजी तथा सभी देवासुर शंकर जी से विदा होकर अपने-अपने लोकों को चले गये। ५२-५३ सदाशिव श्रीराम की नाम-धुन हृदय में धारण करके श्री राम नाम का जप करने लगे। ५४ शिवजी नित्य अपने नित्यकर्मों से निपटकर दो अक्षरों का राम-नाम जपते थे। ५५ दिन-प्रतिदिन उनका शरीर स्वस्थ होता गया। विश्व के नाथ भगवान शंकर शरीर के स्वस्थ होने से प्रसन्न थे। ५६ वह एक क्षण के लिए भी श्रीराम को नहीं भूलते थे। एक लक्ष पद का जाप उन्होंने सत्ताईस दिनों में पूरा कर लिया। ५७ हृदय-कमल से श्रीराम नाम का स्मरण करने से वह निष्पाप हो गये और कठिनतम रोग उनके शरीर

एमन्ते बेनि मास काळ बहि गला । पार्बतींक संगे सर्ब सुखे बिळसिला ५९
पूर्ब पराये लीळा करन्ति बेनिजन । रति रंगे तोष जे पार्बती हेले पुण १६०
एक दिने सदाशिब पार्बती कोळे घेनि । पार्बती बनरे जे प्रबेश हेले पुणि १६१
पार्बती सदानन्द तृपति बिहाररे । आनन्दे बिहार से करन्ति बनरे ६२
आनन्दरे पार्बती पचारे पंचानने । मास परिजन्ते तुम्भर एकान्त आसने ६३
केउँ देवता भज तुम्भ उपरे के बड़ । काहाकु ध्यान तुम्भे कर हे जोगारूढ़ ६४
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगबती । ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर आम्भे तिनि मूर्त्ति ६५
अणाकार पुरुष हृदरू हेलु जात । ब्रह्मा सृष्टि पाले बिष्णु संचरे जगत ६६
मुहिँ पढ़ि दिअइ सकळ जीबे पुण । एमन्ते तिनि देब पाळु आम्भे जाण ६७
निराकार बिष्णु क्षीरसागरे शयन । अनन्त मूरति होइ सेठारू मुँ पुण ६८
मोर परे शयन करन्ति बासुदेब । से रूपरू ए रूप प्रकाश मोर भाब ६९
बासुदेब प्रकाश नारायण देहू । नाभि कमळरू ब्रह्मा जात हेले सेहू १७०
देबतांकु पाळिण देब जे परंब्रह्म । मृत्युपुर गोटि जे बिष्णुर अटे भाब १७१
पाताळपुर मुहिँ पाळइ जे पुण । एमन्ते तिनि पुर बांटिण नेलु जाण ७२

से समाप्त हो गया । ५८ इस प्रकार दो महीने व्यतीत हो गये । वह पार्वती के साथ सुखपूर्वक विहार करने लगे । ५९ दोनों व्यक्ति पहले की ही भाँति विहार करते थे और पार्वती रति रंग से सन्तुष्ट हो गई । १६० एक दिन सदाशिव पार्वती को अंक में लिये पार्वतीवन में जा पहुँचे । १६१ पार्वती और सदा आनन्द में रहनेवाले शिव विहार से तृप्ति प्राप्त करने के लिए प्रसन्नता से वन में विहार कर रहे थे । ६२ तभी प्रसन्नतापूर्वक पार्वती ने पंचानन शिवजी से पूछा कि एक मास पर्यन्त एकान्त में आसन जमाकर आप किस देवता का भजन कर रहे थे ? आपसे बड़ा और कौन है ? आप योग में आरूढ़ होकर किसका ध्यान करते हैं ? ६३-६४ शिव ने कहा, हे भगवती ! सुनो । ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर हम तीन रूप में है । ६५ हम निराकार ब्रह्म के हृदय से उत्पन्न हुए । ब्रह्मा सृष्टि करते हैं और विष्णु संसार का पालन करते हैं । ६६ मै समस्त प्राणियों का संहार करता हूँ और इस प्रकार हम तीनों देवता अपने कर्तव्य का पालन करते हैं । ६७ निराकार मूर्ति विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं । मैं वहाँ पर अनन्त नाग के रूप में उपस्थित रहता हूँ । ६८ वासुदेव नारायण मेरे ऊपर शयन करते हैं । उसी रूप से मेरा यह रूप भाव से प्रकाशित है । ६९ वासुदेव नारायण के रूप में प्रकाशित हुए । उनके नाभिकमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए । १७० वह वासुदेव ब्रह्मा के भाव से देवताओं का पालन करते और मृत्युलोक में विष्णु के भाव से पालन करते हैं । १७१ मैं पाताललोक का पालन करता हूँ और इस प्रकार हमने तीनों लोकों को बाँट लिया है । ७२

ब्रह्मार नन्दन जे दक्ष प्रजापति । ताहार दुहिता मोते विभा हेला स्वति ७३
सेहि प्रजापति जे जाग पुण कला। आम्भंकु न लोड़िबारू दुहिता तांक गला ७४
जज्ञकुण्डरे झास देला सेहू सती । ताहार छळे मुँ जे माइलि प्रजापति ७५
गंगाकूळे तप करि तोते मुँ पाइलि । एबे मन मोहर जे संतोष त कलि ७६
प्रजापति बध दोष मो अंगे परापत । तेणु मो देहरे रोग होइला संजात ७७
जाणिण देबंकु घेनि बिधाता अइला । तारक मन्त्र कहि स्वर्गकु पुण गला ७८
ए मन्त्र पढ़न्ते मोर देह जे सुस्थ हेला । रोग व्याधि मोर जे देहरू पळाइला ७९
पार्बती बोइले से मंत्र नाम किस । ईश्वर बोइले राम नाम जे बिशेष १८०
असुर मारिबा पाइँ बासुदेव पुण । चतुर्धा मूर्ति धरि मानबे जन्म जाण १८१
तपनर कुळरे दशरथर घरे । जम्बोद्वीप मण्डले अजोध्या नगरे ८२
श्रीराम लक्ष्मण जे भरत शत्रुघन । तिनि मातांक ढारू चारि भाइ जाण ८३
जन्म होइण सेहू असुर नाश कले । स्वर्गरे देबतांकु उद्धरि धइले ८४
पार्बती बोइले जे तांक मन्त्र सार । तांकर मन्त्र धइले व्याधि हेला दूर ८५
केउँ असुर मारिबाकु जात बासुदेव । से कथा मोर आगे कह हे महादेब ८६
लक्षे नाम सुमरणा कल जेबे तुम्भे । राम राम लक्षे पद शुणाअ मोते हादे ८७

ब्रह्मा के पुत्र दक्ष प्रजापति है। उनकी पुत्री ने स्वयं मेरे साथ विवाह किया। ७३ उन प्रजापति ने यज्ञ किया। उनकी लड़की मुझे खोजने वहाँ गयी। ७४ हमें न पाकर वह सती यज्ञकुण्ड में कूद गयी। उसी के कारण मैंने दक्ष प्रजापति को मार डाला। ७५ मैंने गंगा-तट पर तपस्या करके तुम्हें प्राप्त किया। अब मेरा मन संतुष्ट हो गया। ७६ प्रजापति के वध का दोष मुझे प्राप्त होने के कारण मेरे शरीर में रोग उत्पन्न हो गया। ७७ यह जानकर देवताओं को लेकर ब्रह्मा आये और मुझसे तारक मंत्र कहकर स्वर्ग को चले गये। ७८ इस मंत्र के जाप करने से मेरा शरीर स्वस्थ हो गया। रोग और व्याधि मेरी देह से चले गये। ७९ पार्वती ने कहा कि इस मंत्र में नाम किसका है ? शंकर जी ने कहा कि इसमें विशेष नाम राम का है। १८० असुरों का विनाश करने के लिए भगवान वासुदेव ने चार रूपों में मानव-जन्म धारण किया। १८१ जम्बूद्वीप के अयोध्या नगर में सूर्यवंशी राजा दशरथ के घर में तीनों माताओं से श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न चारों भाइयों ने जन्म लिया। ८२-८३ उन्होंने अवतार लेकर राक्षसों का विनाश किया तथा स्वर्ग के देवताओं का उद्धार करके उनकी रक्षा की। ८४ पार्वती ने कहा कि उनका मंत्र ही सार है। उनके मंत्र को धारण करने से ही व्याधि दूर हो गयी। ८५ हे महादेव ! वह कौन से राक्षस का वध करने के लिए उत्पन्न हुए ? यह कथा आप हमसे कहें। ८६ जब आपने एक लक्ष नाम का जप किया है तो आप मुझे राम-नाम के एक लाख पद सुनाइये। ८७

ईश्वर बोइले तु गो मन देइ शुण । जेउँ नाम शुणिले पातक जिब पुण ८८
राम नाम गोटि जे तारक मंत्र जाण । जेउँ नाम धइले न दण्डे काल जम ८९
आद्य अबतारे माइले शंखासुर । मीन रूपे अबतार से काले ताहार १९०
द्वितीय अबतार होइले देब हरि । कूर्मरूपरे मन्दर गिरिकि सम्भाळि १९१
तृतीय अबतार शूकर रूप हेले । बासुकी धरणी छाड़ि दन्तरे धइले ९२
कश्यप असुरकु माइले दन्ते चिरि । से दइत संगरे बहुत हेले दळि ९३
चतुर्थ अबतार नृसिंह मूरति हेले । हरिण्य दैत्यकु जे नखरे बिदारिले ९४
ताहार नन्दन जे प्रहलाद बीर । बासुदेब चरण भकति अंशे सार ९५
से कुमर स्वर्गरे इन्द्र से नेइ कले । देवता न मानि मर्त्यपुररे रखिले ९६
ताहर कुमर जे बइलोचन बीर । धरणी रूपरे ताकु माइले चक्रधर ९७
पंचम अबतारे जनम ऋषिकुळे । दान देला बलिकि जे चापिले पाताळे ९८
अनेक असुर मारि शान्ति कले मही । तेबे से धरणी जे रहिला स्थिर होइ ९९
एथु उत्तारू जे सतर जुग गला । अनेक राजा दुष्ट होइले राज्ये परा २००
नररूपरे जे पर्शुराम मुनि जात । तांक ठारे बिष्णु जे हेले उपगत २०१
अनेक असुर दुष्ट राजा मान मारि । शते बार परिजन्ते बुलिले तिनि पुरी २

शंकर जी ने कहा कि तुम ध्यान लगाकर सुनो। जिस नाम के सुनने से पाप नष्ट हो जाते हैं। ८८ केवल राम को ही तुम तारक मंत्र समझो। जिस नाम को जपने से यमराज दण्ड नहीं देते हैं। ८९ आदिकाल में उन्होंने मीन-रूप धारण करके शंखासुर का संहार किया। १९० उन परमात्मदेव ने दूसरा अवतार कछुए का धारण करके मंदराचल पर्वत को धारण किया था। १९१ तृतीय अवतार में उन्होंने शूकर का रूप धारण करके वासुकि द्वारा छोड़ी पृथ्वी को अपने दाँतों पर धारण किया। ९२ उन्होंने कश्यप असुर को दाँतों से चीरकर उसका संहार किया। उस दैत्य के साथ अनेक दैत्यों का विनाश हुआ। ९३ चतुर्थ, अवतार में नृसिंह का रूप रखकर दैत्य हिरण्यकशिपु को नखों से विदीर्ण किया। ९४ उसके पुत्र पराक्रमी प्रह्लाद हुए जिनके लिए वासुदेव के चरणों की भक्ति ही सार थी। ९५ उसे लेकर स्वर्ग का इन्द्र बना दिया गया, पर उसे देवता न मानकर मृत्युलोक में रखा गया। ९६ उसका पुत्र पराक्रमी विरोचन था, जिसे चक्रधारी भगवान ने धरणी का रूप धारण करके नष्ट कर दिया। ९७ पाँचवें अवतार में उन्होंने ऋषिकुल में जन्म लेकर दान देते हुए बलि को पाताल में दबा दिया। ९८ अनेक असुरों का विनाश करके उन्होंने पृथ्वी को शान्त कर दिया। तब वह पृथ्वी स्थिर रह सकी। ९९ इसके उपरान्त सतयुग समाप्त हो गया। राज्यों के अनेक राजा लोग दुष्ट हो गये। २०० तब महात्मा परशुराम ने नररूप धारण किया। उन्हें विष्णु तेज प्राप्त हो गया। २०१ सैकड़ों बार तीनों लोकों में घूम-घूमकर उन्होंने अनेकानेक राक्षसों तथा दुष्ट राजाओं का संहार किया। २ भय से राजागण स्त्रियों का

नृपतिगण भयरे स्तिरीरूप धरि। पाटराणी गणंक संगरे बिहरि ३
गरिष्ठ असुरंकु न पारे ऋषि मारि। पाताळ समुद्ररे रहिले जाइ करि ४
शुणिण पार्बती जे बोलन्ति बचन। गरिष्ठ असुरंकु किम्पा न मारे ऋषि पुण ५
केउँ माने गरिष्ठ असुर पुण जात। एहार हातरे केहू मरिब नियत ६
ए कथा मो आगरे फेड़ि कह पुण। रामायण ग्रन्थ जे केतेक प्रमाण ७
ईश्वर बोइले राम नाम लक्षे पद। से नाम शुणिबाकु मनरे तोर भाव ८
सात काण्ड रामायण पुराण अटइ। सातकाण्डरे सम्पूर्ण लक्षे नाम होइ ९
सप्तम अबतार होइले नारायण। असुरगण मारिण धरणी स्थापि पुण २१०
पार्बती बोइले जेबे हुअन्ति अबतार। निज स्थाने बिचारि किम्पा नमारे असुर २११
चउद ब्रह्माण्ड जे तिनि पुर कला। धरणी स्थापिण जेउँ देबंकु रखिला १२
से देब निरंजन किम्पाइँ होन्ति जात। एकथामान मोते लागइ आचम्बित १३
ईश्वर बोइले तु गो शुण भगबती। देबतामानंकर जेणु हेला गर्ब मति १४
तेणु सेहि रामायण भिआण से कले। असुर बल प्रबल कराए से हेळे १५
असुर बल प्रबल होइ जिणिले स्वर्ग पुर। जूर करि निअन्ति साइता द्रव्य सार १६
तेबे देवताए बासुदेबंकु कले स्तुति। देबंक निमन्ते जात कमलांक पति १७

वेष बनाकर पटरानियों के साथ विहार करते रहे। ३ विशिष्ट राक्षसों का संहार परशुराम न कर सके और वह पाताल समुद्र में जाकर रहने लगे। ४ यह सुनकर पार्वती ने कहा कि विशिष्ट दैत्यों को ऋषि परशुराम ने क्यों नहीं मारा ? ५ उस समय विशिष्ट असुर कौन पैदा हुए थे ? इनके हाथों किसकी मृत्यु नियत थी ? ६ यह कथा आप हमसे खोलकर कहें। इस रामायण ग्रन्थ में ऐसे कितने प्रमाण है ? ७ महादेव जी ने कहा कि श्रीराम-नाम के लक्ष पदों को सुनने की तुम्हारे मन में प्रीति है। ८ यह सात काण्डों वाली रामायण पुराण है। इन सातों काण्डों में नाम के एक लाख पद सम्पूण होंगे। ९ सातवें अवतार में उन्होंने नारायण का रूप धारण करके असुरों का संहार तथा पृथ्वी की स्थापना की। २१० पार्वती ने कहा कि जब वह अवतरित होते हैं तो वह अपने स्थान से ही विचार मात्र से असुरों का वध क्यों नहीं करते ? २११ जिसने चौदह ब्रह्माण्ड तथा तीन पुरों की रक्षा की तथा पृथ्वी को स्थापित करके जिन्होंने देवताओं की रक्षा की। १२ वह निरंजन देव किसलिए अवतार ग्रहण करते हैं। यह बात हमें आश्चर्य में डाल देती है। १३ शिवजी बोले, हे पार्वती ! सुनो। जब देवताओं की बुद्धि अभिमान से भर गई तभी उन्होंने रामायण (राम चरित) की रचना की तथा राक्षसों को अनायास ही प्रचण्ड बलवान बना दिया। १४-१५ राक्षसों का बल प्रचण्ड होने से उन्होंने स्वर्ग को जीत लिया और उनको संचित सम्पत्ति तथा बहुमूल्य सामग्री बलपूर्वक छीन ली। १६ तब देवताओं ने वासुदेव की स्तुति की। देवताओं के लिए लक्ष्मीपति प्रकट हो गये। १७ लक्ष्मी तथा अनन्त शेष को साथ लेकर लीला

कमळांकु अनन्त संगरे घेनि पुण। लीळा करिबा निमन्ते जनम नारायण १८
लीळा करिण से जे मारन्ति असुर। तिनि पुरे बिख्यात हुअइ नाम तार १९
तेबे से देबता जे स्वर्गरे सुख पान्ति। असुरंक गर्ब नारायण जे भांगन्ति २२०
शुणिण पार्बती देबी पचारन्ति पुण। सप्तम अबतार कथा कह हे पंचानन २२१
कहन्ति त्रिपुरारी शुण गो गउरी। आद्यकाण्ड कथा तुम्भे शुण हेतु करि २२
अष्ट अबतार उत्तारू षोळ जुग पुण। एथि देबंकु बिपत्ति होइलाक जाण २३
बृत्र असुर अंशरे मेघासुर जात। समस्तंकु जिणि क्षीरसागरे उपगत २४
बासुदेब संगे रण करिबाकु गला। द्वारी क्षेत्रपाळ जे ताहाकु नाशिला २५
ताहार दुहिता जे अटइ सुरेखा। ताहार गर्भरू जात सुमेघा रूपरेखा २६
से कुमरकु नाश कले नन्दि जे भृकुटि। ताहार दुहिता जे बिशाखा नाम गोटि २७
तार ठारू जात जे सहस्र रावण। बिलंका देशरे जे तार घर पुण २८
सात जुग परिजन्ते असुर तप कला। तेबे से मोहठारू बर जे पाइला २९
सहस्रे बदन जे कलइँ मुहिँ तार। नर बानरे असुरे सुरे बळिआर २३०
पाताळपुर आबर मर्त्यपुर जिणि। स्वर्गपुर भितरे पशिला बीरमणि २३१
देबतांकु जिणिण धरि जे घेनि गला। चउद जुग परिजन्ते नेइण बन्दीकला ३२

करने के लिए नारायण ने जन्म ग्रहण किया। १८ लीला करके वह राक्षसों का विनाश करने लगे। उनका नाम तीनों लोकों में प्रसिद्ध हो गया। १९ जब राक्षसों के अभिमान को भगवान तोड़ देते हैं तभी देवता लोग स्वर्ग में सुख की प्राप्ति करते हैं। २२० यह सुनकर पार्वती ने पुनः पूछा, हे पंचानन! आप सातवें अवतार की कथा का वर्णन करें। २२१ त्रिपुरारि शिव ने कहा, हे गौरी! तुम आदिकाण्ड की कथा प्रेम से श्रवण करो। २२ अष्टम अवतार के उत्तरकाल में सोलह युग तक देवता विपत्ति से ग्रस्त रहे। २३ वृत्रासुर के अंश से मेघासुर का जन्म हुआ जो सबको जीतकर क्षीरसागर में जा पहुँचा। २४ वह वासुदेव के साथ युद्ध करनें गया था। द्वारी क्षेत्रपाल ने उसका वध कर दिया। २५ उसकी पुत्री सुरेखा के गर्भ से रूप की रेख सुमेघ का जन्म हुआ। २६ कुपित होकर नन्दी ने उसे मार डाला। उसके विशाखा नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। जिससे सहस्रकण्ठ रावण उत्पन्न हुआ। बिलंका प्रदेश उसका निवासस्थान था। २७-२८ उस दैत्य ने सात युगों तक तपस्या की और मुझसे वर की प्राप्ति की। २९ मैंने उसके हजार शिर कर दिये। वह नर, वानर, असुर तथा देवताओं से बलवान था। २३० वह वीरमणि पाताल और मृत्युलोक को जीतकर स्वर्गलोक में घुस गया। २३१ वह देवताओं को जीतकर पकड़ ले गया और चौदह युग पर्यन्त उन्हें बन्दी बना कर रख दिया। ३२ देवताओं को लेकर ब्रह्माजी ने मेरा नाम लेकर बहुत

त्रिदश देवतांकु घेनिण बेदबर। मोर नाम धरि स्तुति कलाक अपार ३३
वृषभ चढ़िण आम्भे कपिळासु गलू। सहस्रमुखा आगरे प्रवेश जाइ हेलु ३४
देखिण दैत्यबीर नमिला चरण। प्रसन्न होइण ताकु कहिलू बचन ३५
बोइलुँ देबगणंकु किम्पा बन्दी कलु। हारिले देबताए मनरे न बिचारू ३६
आम्भर बोल करि छाड़ि दिअ तांकु। बोल न कले जिबु जे रसान्तळकु ३७
आम्भर वचने सस्रानन कर जोड़ि। त्रिदश देबतांकु बन्धनु देला फेड़ि ३८
पुणि मोर चरणे शोइला दैत्यबीर। बोइला पुत्र नाति अमर मोर कर ३९
मुँ बोइलि बीरमणि नुहइ उचित। तोते अमर कलि प्रसन्न मोर चित्त २४०
पुत्र नाति अमर होइबे जे तोहर। जन्तुपति देबतांकु मनाइँ माँग बर २४१
एते कहि देवगण संगरे घेनि करि। प्रबेश होइलु आम्भे कपिळास गिरि ४२
देवता माने आम्भंकु कहिण स्वर्ग गले। जे जाहार निज स्थाने जाइण रहिले ४३
पार्वती बोइले दैत्य किस कला पुण। पुत्र नाति केमन्ते अमर हेले जाण ४४
ईश्वर बोइले दैत्य संजीवनि कि गला। पंचाक्षर मंत्रे शनि देवता ध्याइला ४५
निश्चल आसनरे बसिण बीरमणि। शनि देबतांकु सुमरे मनरे पुणि ४६
सहस्रे बरषरे प्रसन्न जन्तुनाथ। बोइले प्रसन्न हेलि बर माँग दैत्य ४७

स्तुति की। ३३ हम वृषभारूढ़ होकर कैलास से चल पड़े तथा सहस्रकण्ठ रावण के समक्ष जा पहुँचे। ३४ हमें देखकर पराक्रमी दैत्य चरणों में झुक गया। मैंने प्रसन्न होकर उससे कहा। ३५ तुमने देवताओं को बन्दी क्यों बना लिया? तुमने अपने मन में यह नहीं सोचा कि वह लोग हार गये हैं। ३६ हमारे कहने से तुम उन्हें मुक्त कर दो। कहना न मानने से तुम रसातल को चले जाओगे। ३७ हमारे कहने से सहस्रकण्ठ रावण ने हाथ जोड़े और समस्त देवताओं को बन्धन-मुक्त कर दिया। ३८ फिर उस पराक्रमी दैत्य ने मेरे चरणों में प्रणाम करके कहा कि आप मेरे पुत्र तथा नातियों को अमर कर दें। ३९ मैंने कहा, हे वीरश्रेष्ठ! यह उचित नहीं है। मैंने प्रसन्न होकर तुझे अमर कर दिया है। २४० यमदेव को प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त करो, जिससे तेरे पुत्र तथा नाती अमर हो जाएँगे। २४१ इस प्रकार कहकर देवताओं को साथ लेकर हम कैलास पर्वत पर लौट आये। ४२ देवता लोग हमसे आज्ञा लेकर स्वर्ग चले गये तथा अपने-अपने लोकों में जाकर रहने लगे। ४३ पार्वती बोली, फिर दैत्य ने क्या किया? उसके पुत्र-नाती कैसे अमर हुए? ४४ शंकर जी ने कहा कि वह दैत्य यम-लोक में जा पहुँचा। उसने पंचाक्षर मंत्र से शनि देवता का ध्यान किया। ४५ वह वीरमणि अचल आसन में बैठकर मन ही मन शनिदेव का जाप करने लगा। ४६ जन्तुपति एक हजार वर्ष में प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, हे दैत्य! मैं प्रसन्न हो गया! वर माँगो। ४७ सहस्रकण्ठ ने कहा

सत्यमाथ बोले पुत्र नाति मो अमर होन्तु। अमर होइण बहु जुगे जुगे थान्तु ४८
जन्तुनाथ बोइले एकथा अस्तु हेउ। बिना शत्रु संगरे जे न जुझिब आउ ४९
मोहर बचन जे मेन्टिण जिब पुण। निश्चय नाश जिब कहिलि ए प्रमाण २५०
ए कथा गोटिक जे मनरे रखिथिबु। पर बोले बिना शत्रु पाशकु नजिबु २५१
एमन्त बचन शुणि जन्तुपति ठारू। ओलग मेलाइ जे गलाक सेठाबरू ५२
विलंका कटकरे होइला परबेश। एमन्त प्रकारे जे से दइत्य भविष्य ५३
पार्वती बोइले सेथि उत्तारू किस हेला। ताहा मोते संचपि कह हे देब परा ५४
शते मुखा रावण जे केमन्ते हेला जात। काहार नन्दन से जे होइला प्रापत ५५
ईश्वर बोइले से जे सनन्त ऋषि बंशे। जइन्त ऋषि जे जनम तांक अंशे ५६
जइन्त ऋषि तपरे होइले निर्जित। अग्नि महा ऋषि दुहिताकु बिभाहेले सेत ५७
ताहांक ढारू काळ बिकाळ दुइ पुत्र। जनम होइ स्वर्गकु चलिले त्वरित ५८
दिगपालंक मेळ रे रहिले शून्य पुरे। गोपने रहिण तहिं कहिले बिनयरे ५९
मंषासुर दइतर दुहिता एथि थिले। जइन्त ऋषि कि जाइ सेथि से बरिले २६०
ताहार गुर्भ जात होइले शतेग्रीव। अर्क तीर्थरे जाइ कलाक तप भाव २६१
तिनि जुगे प्रसन्न हेले मरुत देबता। बोइले बर माँग देबइँ आरे पूता ६२

कि हमारे पुत्र व नाती अमर हो जायँ। वह अमर होकर चिरकाल पर्यन्त रहें। ४८ जन्तुपति ने कहा कि ऐसा ही हो। बिना शत्रुता के किसी से युद्ध न करें। ४९ यदि मेरे वचनों को ध्यान न दोगे तो निश्चित रूप से उनका नाश हो जाएगा। यह प्रामाणिक बात है। २५० इस एक बात का मन में ध्यान रखना। किसी के कहने पर बिना शत्रुता के किसी के पास न जाना। २५१ जन्तुपति के इन वचनों को सुनकर प्रणाम करते हुए बिदा लेकर वह वहाँ से चल दिया। ५२ वह बिलंका नगर में आ पहुँचा। उस दैत्य का भविष्य इस प्रकार निर्धारित हुआ। ५३ पार्वती ने कहा कि इसके पश्चात क्या हुआ? हे देव! वह मुझे संक्षेप में बताइये। ५४ सौ शिर वाला रावण कैसे उत्पन्न हुआ? वह किसे पुत्र-रूप में प्राप्त हुआ? ५५ शंकर जी बोले कि वह सनत् ऋषि के वंश में जयन्त ऋषि के अंश से उत्पन्न हुआ। ५६ जयन्त ऋषि तप से तेजवन्त हो गये। उन्होंने अग्नि ऋषि की पुत्री से विवाह किया। ५७ उससे काल और विकाल दो पुत्र उत्पन्न हुए। जो पैदा होते ही स्वर्ग को शीघ्रता से चल पड़े। ५८ दिग्पालों से मिलकर वह शून्य-लोक में छिपकर रहते हुए विनयपूर्वक बातें करने लगे। ५९ इधर मंशासुर दैत्य की पुत्री ने जाकर जयन्त ऋषि को वरण कर लिया। २६० उसके गर्भ से शतग्रीव उत्पन्न हुआ। उसने अर्क तीर्थ में जाकर तपस्या की। २६१ तीन युगों में मरुतदेव उस पर प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, हे पुत्र! वर माँगो। मैं तुम्हें वर प्रदान करूँगा। ६२

शतेग्रीव बोइला मुँ अमर होइबि। जुद्धकले काहार हस्तरे न मरिबि ६३
अमर वर ताकु देले मरुत देवता। अतूट बिमानेक नेइ देलेक पाशेता ६४
वज्र अंग करिण अतूट ताकु कले। समस्तंकु जिणिवु बोलिण बर देले ६५
वोइले काहारि बोल न करिवु बला। तोर मने तो रणतु जिणिवु होइ तोर ६६
नारायण मानवरूपे जात हेव। तार संगे शत्रु हेले वंश क्षय जिब ६७
एते कहि मरुत ताहाकु घेनि गले। अलंकागढ़रे नेइ ताहाकु राजा कले ६८
से गढ़रे रहि दैत्य असुर संगे रण। सात द्वीप असुरंकु जिणिला दैत्यराण ६९
पुणि सात द्वीप जे वूलि रण कला। सात लक्ष राजा घरू कन्या से आणिला २७०
से कन्या मानंकु नित्य होइलाक बिभा। पातालरे पशिण जिणिला दैत्यग्रीवा २७१
स्वर्ग पुरकु जाइ देवतांकु जिणिला। जिणिण देबतांकु धरिण घेनिगला ७२
सातजुग परिजन्ते रखि जे वन्दी करि। पवन देवतांकु देबे सुमरणा करि ७३
मरुत देबता आसि दैत्यकु कहिले। देबतांकु वन्दिरू मकुळाइ देले ७४
पार्वती बोइले वेनि रावण कथा शुणि। आबर बेनि रावण कि कले कह पुणि ७५
ईश्वर बोइले दशमुखा जे रावण। पिता तार बिश्रवा ऋषि जे हेब जाण ७६

शतकण्ठ ने कहा कि मैं अमर हो जाऊँ तथा युद्ध करने पर किसी के हाथों न मरूँ। ६३ मरुतदेव ने उसे अमरत्व का वर प्रदान किया और साथ ही उसको एक अक्षय-विमान प्रदान किया। ६४ उन्होंने उसके शरीर को वज्र का वनाकर अक्षय कर दिया तथा तुम सव पर जय प्राप्त करोगे, इस प्रकार का वर प्रदान कर दिया। ६५ उन्होंने कहा, हे पुत्र! तुम किसी के कहने में न आना। जो युद्ध तुम अपने मन से करोगे। उसमें तुम्हारी विजय होगी। ६६ नारायण मानव के रूप में अवतार ग्रहण करेंगे। उनके साथ शत्रुता करने से तुम्हारा वंश नष्ट हो जायेगा। ६७ इस प्रकार कहकर मरुतदेव उसे ले गये और उन्होंने उसे अलंकागढ़ का राजा बना दिया। ६८ उस गढ़ में रहकर उसने दैत्यों के साथ युद्ध किया। उस दैत्यराज ने सप्तद्वीपों के राक्षसों को जीत लिया। ६९ उसने पुनः सात द्वीपों में घूम-घूमकर युद्ध किया और वह सात लाख राजाओं के घरों से कन्याएँ ले आया। २७० उन कन्याओ से वह नित्य विवाह करता था। उसने पाताल में घुसकर दैत्यग्रीव को पराजित कर दिया। २७१ स्वर्गलोक में जाकर उसने देवताओं पर विजय प्राप्त की। उन्हें जीतकर वह पकड़ ले गया। ७२ सात युगों तक उसने उन्हें वन्दी वनाकर रखा। तव देवताओं ने पवनदेव का स्मरण किया। ७३ पवनदेव ने आकर दैत्य से कहकर देवताओं को वन्धन से मुक्त करा दिया। ७४ पार्वती ने कहा कि दो रावणों की कथा तो मैंने सुनी। अन्य दो रावणों ने क्या किया? यह आप हमसे कहिए। ७५ शंकर जी वोले, हे पार्वती! दशकंठ रावण के पिता विश्रवा ऋषि थे। ७६ उसकी माता

माता तार राक्षसी नउकेशा पुणि। सुमालि दइतर से अटइ दुलणी ७७
ताहार गर्भरू तिनि पुत्र जे दुहिता। जात होइ तपरे होइले निर्जिता ७८
बेदबर आसिण अमर बर देला। नारायण बनिता कमला अटे परा ७९
ताहाकु हरिलेक मरिबु जाण तुहि। ऋषि कुलरे जात जे कमला देबि होइ २८०
मानब कुलरे जात जेते बेले हेब। सीता बोलि नाम जे ताहार बोलाइब २८१
ताहाकु न हरिले निश्चिन्ते थिबु तुहि। हरिले निश्चे मरिबु कहिलि जाण मुहि ८२
शुणिण दशग्रीव बेगे चळि गला। चित्त पट्टे लेखन जे करिण रखिला ८३
स्वर्ग मञ्च बेनिपुर जिणिला भुजबले। गो ब्राह्मण परजा खाइला धरि बले ८४
पाताळ जिणि देबपुरकु अइला। देबतांकु जिणि धरिकरि घेनि गला ८५
सेबाकारी करिण रखिला सुरगण। रावणकु बेदबर कहु छन्ति पुण ८६
बेदब्रह्मा बचन शुणिण क्रोध हेला। देबतांक संगे धाता रह जे बोइला ८७
मोर द्वारे चारि बेद पढ़िबु तु पुण। शुणि बेदबर गले देबतांक संगेण ८८
आम्भे शुणि लंकापुरे हेलु परबेश। आम्भकु बोइला तुम्भे मासके थरे आस ८९
से बचन शुणि आम्भे दैत्यकु बुझाइलु। देबता मानंकु छाड़ि दिअरे बोइलु २९०

नउकशा नाम की राक्षसी थी। वह सुमाली दैत्य की पुत्री थी। ७७ उसके गर्भ से तीन पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न हुई। वे पैदा होते ही तपस्या के लिए चले गये। ७८ वेदवर ब्रह्मा ने आकर उनसे अमरत्व का वर प्रदान करते हुए कहा कि नारायण की स्त्री लक्ष्मी है। ७९ वह लक्ष्मीदेवी ऋषिकुल में उत्पन्न हुई है। उसका हरण करने से तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। २८० मानव-कुल में जब वह उत्पन्न होगी तो उसे सीता नाम से बुलाया जाएगा। २८१ उनका हरण न करने पर तुम निश्चिन्त रहोगे। हरण करने से तुम निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होगे, ऐसा मैंने कह दिया है। ८२ यह सुनकर दशग्रीव वेग से चला गया और उसने इस बात को हृदय में धारण कर लिया। ८३ उसने अपने बाहुबल से स्वर्ग तथा मृत्यु दोनों लोकों को जीत लिया। वह बलपूर्वक गौ, ब्राह्मण तथा प्रजा को पकड़कर खाने लगा। ८४ पाताल पर विजय प्राप्त करके वह देवलोक में गया और देवताओं को जीतकर उन्हें पकड़ ले गया। ८५ उसने देवताओं को अपना दास बनाकर रखा। तब ब्रह्मा ने आकर रावण से कहा। ८६ ब्रह्मा के वचनों को सुनकर उसने क्रोध से कहा, हे विधाता ! तुम भी देवताओं के साथ यही रहो। ८७ मेरे द्वार पर तुम चारों वेदों का पाठ करना। यह सुनकर ब्रह्माजी देवताओं के साथ चल दिये। ८८ ऐसा सुनकर मैं लंका में जा पहुँचा। उसने हमसे कहा कि आप भी महीने में एक बार यहाँ आएँगे। ८९ इन वचनों को सुनकर मैंने दैत्य को समझाया और उससे कहा कि तुम देवताओं को छोड़ दो। २९० रावण ने कहा कि आप हमसे यह बात न कहें।

रावण बोइला तुम्भे न कह से कथा। मोठारे कुट तुम्भे एते सामरथा २९१
छाड़िले मोर परे विपत्ति देब आणि। शुणि करि आम्भे जे कहिलु तारे वाणी ९२
जेवे तु देवतांकु रुन्धिलु दैत्य राये। बरष के तिनिमास धर्म एबे होए ९३
तिनि मास छाड़ि देबु जिबे जेझा स्थान। सन्मत कला जे शुणिण से रावण ९४
बोइला केउँ केउँ मासरे जिबे एहू। आम्भे ताकु बोइलु शुण दैत्य राहू ९५
प्रथमे माघ मास द्वितीये बइशाख। तृतीये धर्म मास जे अटइ कार्तिक ९६
रावण बोइला जे ए तिनि मास पुण। केबण केबण धर्म कह त्रिलोचन ९७
शुणिण ताहाकु आम्भे कहिलु ए बाणी। पाहन्ति स्नान हुअइ माघ मासे पुणि ९८
बइशाख मासरे हविष्य एक बेले। अग्निर झासकु से घेनन्ति विरोले ९९
कार्तिक मासरे जे पुजन्ति दामोदर। तेबे सिना देवतांकर शुद्ध जे शरीर ३००
शुणि असुर बोइला देलि मुँहि छाड़ि। आउ नब मास देबे सेबा करिबे बेढ़ि ३०१
देवतांकु छाड़ि देला गले निज बास। से ठारू आम्भे आसि मिळिलु कपिळास २
पार्बती बोइले देब सेठारू किस हेला। देवताए किस कले कह मोते भला ३
ईश्वर बोइले देवदैत्यर पुरे पुण। नब मास रावणकु सेवा कले जाण ४

आप इतने सामर्थ्यवान होकर हमसे छल कर रहे हैं। २९१ छोड़ने से यह हमारे ऊपर विपत्ति ढा देंगे। यह सुनकर मैंने उससे कहा। ९२ हे दैत्यराज! जब तुमने देवताओं को बन्दी बना रखा है तो वर्ष में तीन महीने धर्म के होते है। ९३ तुम तीन माह के लिए उन्हें छोड़ दो। सब अपने-अपने लोकों में चले जाएँ। यह सुनकर उस रावण ने अपनी सम्मति दे दी। ९४ उसने पूछा कि यह लोग कौन-कौन से महीने में जाएँगे? तब मैंने उससे कहा, हे दैत्य राहु! सुनो। ९५ पहला महीना माघ का, दूसरा वैशाख और तीसरा धर्म मास कार्तिक है। ९६ रावण ने पूछा, हे त्रिलोचन! इन तीन महीनों में कौन-कौन सा धर्म होता है? यह हमें बताइए। ९७ यह सुनकर मैंने उससे कहा कि माघ मास में स्नान होता है। ९८ वैशाख मास में एक समय हविष्य करके अग्नि की ऊष्मा को ग्रहण किया जाता है। ९९ कार्तिक मास में दामोदर की पूजा होती है। तब देवताओं का शरीर शुद्ध रहता है। ३०० यह सुनकर असुर ने कहा कि मैं देवताओं को छोड़ दे रहा हूँ। परन्तु अन्य नौ महीनों में यह हमें घेरकर हमारी सेवा करेंगे। ३०१ उसने देवताओं को छोड़ दिया। सभी अपने घर चले गये और मैं कैलाश को लौट आया। २ पार्वती बोली, हे देव! फिर वहाँ क्या हुआ? हे भोलेनाथ! हमें यह बताइये कि फिर देवताओं ने क्या किया? ३ शंकर जी बोले कि उन देवताओं ने फिर दैत्यपुर में जाकर नौ मास रावण की सेवा की। ४ इस प्रकार अट्ठाईस युग बीत गये। राक्षस के नगर

एमन्ते सात गण्डा जुग बहिगला। असुर पुरे रहि देबता दुःखी भला ५
कान्दिण बेदबर आगरे कहिले। बिधाता पुरुष मोते सुमरणाकले ६
देबतांक मेलेमुँ मिळिलि जाइ करि। मोते देखि देबता जे बिकळे मने भालि ७
मायारे त्रिदशरूप भिआण आम्भे कलुँ। मायारूप असुर पुरे जे भेदि देलु ८
असुर पुरे जे मायारूप परबेश। देब बोलि जाण दैत्य मनरे हरष ९
बेद ब्रह्मा मुँहि जे सकळ देब घेनि। बिजय कलु आम्भे रम्य द्वीपे पुणि ३१०
जोग लय करिबाकु आम्भर हेला मूळ। देबताए जाणिले आसिब असुर ३११
शुणि करि बेदबर नारदकु डकाइ। लंकाकु चल बोलि देलेक पठि आइ १२
रावणर आगरे कहिबु छन्द बाणी। बोलिबु तोते मारिबाकु आसे समानन पुणि १३
उच्चाट करि कलि लगाइ बेगे आस। शुणिण कलहप्रिय होइले हरष १४
लंका गढ़े नारद प्रवेश हेले जाइँ। दशग्रीबर नबरे मिळिलेक तहिँ १५
देखिण दशग्रीव हरष मन हेला। मुनिक चरण तले नमस्कार कला १६
बोइला मुनिबर कि कार्य्य आगमन। नारद बोइले तु शुण मो बचन १७
अलंका गढ़कु बुलि आम्भे जाइथिलु। शतेमुखा रावणर आगरे मिळिलु १८
अनेक मान्य धर्म नृपति आसि कला। देबेकि कुशलरे अछन्ति बोइला १९

में रहकर देवता दुःखी थे। ५ उन्होंने रोते हुए ब्रह्माजी से कहा। ब्रह्मा ने मुझे स्मरण किया। ६ मैं देवताओं के पास जा पहुँचा। मुझे देखकर देवता दुखी मन से सोचने लगे। ७ हमने माया से देवताओं का रूप निर्मित किया और उन मायारूपी देवताओं को दैत्य के महल में भेज दिया। ८ दैत्य-नगरी में माया रूपी देवताओं के प्रविष्ट होने पर उन्हें देवता समझकर दैत्य मन में प्रसन्न हो गया। ९ ब्रह्माजी और मैं सब देवताओं को साथ लेकर रम्यक द्वीप में आ पहुँचा। ३१० हम लोगों ने योग में लय होना निश्चित किया। देवता समझ गये कि राक्षस आ जायेगा। ३११ यह सुनकर ब्रह्मा ने नारद को बुलाकर उन्हें लंका में भेज दिया। १२ उन्होंने नारद से रावण के आगे छलयुक्त बात कहने को कहा कि आपको मारने के लिए सौ मुख वाला रावण आ रहा है। १३ हे नारद! तुम उच्चाट करके झगड़ा लगाकर शीघ्र ही चले आओ। यह सुनकर कलहप्रिय नारद मन में प्रसन्न हो गये। १४ वह लंका दुर्ग में जा पहुँचे और उन्होंने दशकंठ के महलों में उससे भेंट की। १५ उन्हें देखकर दशानन का मन प्रफुल्लित हो गया। उसने मुनि के चरणों में नमस्कार किया। १६ उसने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ! किस कार्य के लिए आपका आगमन हुआ है? नारद ने कहा कि तुम हमारी बात सुनो। १७ मैं अलंका दुर्ग में घूमने गया था, वहाँ मैं शतकंठ रावण से मिला। १८ राजा ने आकर हमारा बहुत आदर-सत्कार किया और उन्होंने देवताओ का कुशल-समाचार पूछा। १९ यह सुनकर मैंने उससे कहा,

शुणिण ताकु आम्भे बोइलु दण्डधारी । दशग्रीव रावण देवंकु नेला धरि ३२०
सताइश जुग हेला रखिछि तार पाश।शुणि अति क्रोध हेला जइन्ता मुनि शिष्य ३२१
तारे संगरे संग्राम करिबाकु मन । सैन्य बळ ताहार जे साधइ राजन २२
शुणि दशग्रीव जे होइला क्रोधानल । मोते जिणिबाकु कि अटइ तार बळ २३
साधिलाक सैन्य जे होइला मतुआल । देवतांकु बोइला जाअ जा स्वर्गपुर २४
शताननकु जिणिले मो पुरे तुम्भे आस । एते बोलि आज्ञा देला बिश्रवार शिष्य २५
शुणि करि माया देबे निजपुर गले । जे जाहा अंगरू जात से स्थाने रहिले २६
नारद चलि गले अलंका गढ़ पुर । शते मुखा रावणकु देखिले नवर २७
नारदंकु देखि दैत्य आनन्द मन हेला । चरण धोइ देइ आसने बसाइला २८
नारद बोइले तोरे विबादी दशग्रीव । तो पुरे आसु अछि करिब से बाद २९
शुणिण शतग्रीव साधिला तार बळ । कहिण नारद जे चळिले स्वर्ग पुर ३३०
बेदबर आगरे जाइण कहिले । शतग्रीव दशानन कळह निश्चे कले ३३१
माया देव माने सर्बे आसिले निजपुर । शुणि करि सन्तोष हेले बेदबर ३२
क्षीर सागर बैकुण्ठ पुररे प्रबेश । उत्तर द्वाररे देब रहिले बिशेष ३३

हे दण्डधारी! दशकठ रावण ने देवताओ को पकड़ लिया है। ३२० सत्ताईस युग हो गये, उसने देवताओं को अपने पास रख छोड़ा है। यह सुनकर जयंत मुनि का पुत्र अत्यन्त कुपित हो गया। ३२१ उसकी इच्छा तुमसे युद्ध करने की है। वह अपनी सैन्यवाहिनी को सजा रहा है। २२ यह सुनकर दशकंठ क्रोध से प्रज्वलित हो उठा। वह बोला, क्या मुझे जीतने की उसके पास शक्ति है? २३ उसने प्रमत्त होकर सेना सजायी और देवताओं से स्वर्ग जाने को कह दिया। २४ विश्रवा के पुत्र ने उन्हें आज्ञा दी कि शतकंठ को मेरे द्वारा जीतने पर तुम पुनः हमारे महलों में आ जाना। २५ यह सुनकर माया के देवता अपने लोकों में चले गये और जो जिसके अंग से उत्पन्न हुआ था उसी में लीन हो गया। २६ नारद अलंका दुर्ग में जा पहुँचे। उन्होंने महल में शतकंठ रावण को देखा। २७ नारद को देखकर दैत्य का मन प्रसन्न हो गया। उसने चरणों को धोकर उन्हें आसन पर बैठाया। २८ नारद ने कहा कि दशग्रीव तुम्हारा वैरी है। वह युद्ध करने के लिए तुम्हारे नगर में आ रहा है। २९ यह सुनकर शतग्रीव ने अपनी सेना सजा ली। नारद इस प्रकार कहकर स्वर्गलोक को चल पड़े। ३३० उन्होंने ब्रह्माजी के पास जाकर सब बता दिया कि अब निश्चय ही शतकण्ठ के साथ दशकण्ठ का युद्ध होगा। ३३१ माया के सभी देवता अपने-अपने लोकों में आ गये है। यह सुनकर ब्रह्मजी सन्तुष्ट हो गये। ३२ देवताओं को साथ लेकर हम और ब्रह्मा वैकुण्ठपुर स्थित क्षीरसागर में जा पहुँचे। विशेषकर देवता लोग उत्तरी द्वार पर रह गये। हमने ब्रह्मा के साथ मिलकर उस स्थान पर सामवेद का गान

देवगण घेनि बेदबर आम्भे पुण । शामबेद गायन कलु जे से स्थान ३४
सहस्रे बरष वासुदेवंकु स्तुति कलु । तेबे अनन्त शयन भांगि न पारिलु ३५
अनेक दुःखरे आम्भे स्तुति कलु पुण । अंगिरा ऋषि जाइ मिळिले से स्थान ३६
पचारिले निराकार निदकि न भांगइ । देबंक बचन तांक कानकु न शुभइ ३७
एेते बोलि मुनि जे भितरे जाइ मिळि । मुनिंकि देखिण जे कमला मने भाळि ३८
सरस्वती घेनि आड़ होइ गले । आखिर तेरछ नेइ तहुँ चळिगले ३९
पांञ्च सात डाके जे निद्रा तेजिलेहरि । उठिण मुनिंकि जे नमस्कार करि ३४०
अंगिरा बोइले प्रभु देवे बड़ कष्टि । सहस्रे बरष हेला तोते सुमरन्ति ३४१
शुणिण बासुदेव बोलन्ति बेगे चल । सदाशिव ब्रह्मांकु कहिब चंचल ४२
बोलिब बासुदेव जे देखिबार पाइँ । देवगण घेनिण बेगे चल ताहिं ४३
शुणिण अंगिरा ऋषि बेगे चलि गले । देवगणंक आगरे जाइण मिलिले ४४
बेदबरंकु चाहिण बोलन्ति महामुनि । उठिले नारायण दर्शन कर पुणि ४५
शुणिण बेदबर हरष होइले । सकल देवंकु घेनि भितरकु गले ४६
देखिले बेदबर अनन्त नारायण । अनन्त शैय्या तेजि बिजय आपण ४७
बैदूर्य सिंहासने बिजय जाइँ करि । श्यामल सुन्दर रूप नव जलद परि ४८

किया। ३३-३४ एक हजार वर्षों तक हम लोगों ने वासुदेव भगवान की स्तुति की। फिर भी नारायण के अनन्तशयन को हम तोड़ न सके। ३५ बहुत दुखी होकर हमने पुनः स्तुति की। तभी वहाँ पर अंगिरा ऋषि आ पहुँचे। ३६ उन्होंने पूछा, क्या निराकार ब्रह्म की निद्रा भंग नहीं हो रही ? देवताओं के वचन उनके कानों में सुनाई नहीं देते। ३७ इतना कहकर मुनि अंगिरा भीतर चले गये। मुनि को देखकर लक्ष्मी मन में कुछ सोचकर सरस्वती को लेकर आड़ में हो गयीं और तिरछी नजरों से देखते हुए वहाँ से चली गयीं। ३८-३९ पाँच-सात बार बुलाने पर भगवान ने निद्रा त्याग दी। उन्होंने उठकर मुनि को नमस्कार किया । ३४० अंगिरा ने कहा, हे प्रभु ! देवता बड़े कष्ट में हैं। एक हजार वर्षो से वह आपका स्मरण कर रहे है। ३४१ यह सुनकर वासुदेव ने कहा, तो शीघ्र ही चले जाइए और शंकर तथा ब्रह्मा से कहिये कि वह अविलम्ब ही देवताओं को लेकर मुझ वासुदेव से मिलने यहाँ आ जायँ। ४२-४३ यह सुनकर महर्षि अंगिरा शीघ्रतापूर्वक गये तथा देवताओं से जाकर मिले। ४४ ब्रह्मा की ओर देखकर महामुनि ने कहा कि भगवान उठ गये हैं, आप चलकर दर्शन करें। ४५ यह सुनकर ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गये और समस्त देवताओं को लेकर भीतर चल पड़े। ४६ ब्रह्मा जी ने अनन्त नारायण को अनन्त शय्या त्यागकर विराजमान देखा। ४७ वह जाकर वैदूर्य मणि के सिंहासन पर विराजमान थे। उनका सुन्दर श्यामल स्वरूप नव घन के समान था। ४८ प्रभु के अंग में किरीट तथा कुण्डल शोभा

किरीटि कुण्डल जे स्वामीर अंगे शोभा। शंख चक्र गदा पद्म चारि भुजे प्रभा ४९
अलंकार हार मान कर्णकु शोभा पाइ। बक्षर स्थले मणिमाल बिराजइ ३५०
बाहुटि कंकण जे विराजे चारि भुजे। कटिरे कटि मेखला जेसने चक्र तेजे ३५१
अमलान वस्त्र जे अंगरे परिधान। अग्नि ज्योतिर्तिन्ता जे श्री अंगेलाइपुण ५२
अंगुष्ठिरे अंगिष्टमान जे शोभावन। नेपुर बाजेणि जे पयरे वितपन ५३
सुवर्णर पादुका दुइ जे पादे साजि। नव दल शरीरकु साजिण शोभा दिशि ५४
तेजरे मोहूछन्ति जगत जाक पुण। चउदब्रह्माण्डकु घोटिछि किरण ५५
नीलवर्ण सिंहासन उपरे विजे करि। शिरपर सप्तफणी अछइ तांकरि ५६
सदाशिव वेदवर दर्शन कले जाइ। देखिण आनन्दजे मनरे देव होइ ५७
वेदवर स्तुति जे पढ़िण कर जोड़ि। नमस्ते देवादि नाथनमस्ते नर हरि ५८
नमस्ते करुणा कर नमस्ते बारानिधि। नमस्ते त्रैलोक्यनाथ नमस्ते दयानिधि ५९
नमस्ते देवाधिदेव कमलार पति। नमस्ते शरण रक्षण दाशरथि ३६०
नीलाञ्चले शयन क्षीरसागर मध्ये। तोते आश्रे करि आम्मे दुःखी हेलु एबे ३६१
चउद ब्रह्माण्डरे न मिले स्थान आउ। सबुठारे असुर प्रबल हेले प्रभु ६२

पा रहे थे। उनकी चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा और पद्म प्रकाशित हो रहे थे। ४९ कानों में अलंकार तथा वक्षस्थल पर हार तथा मणियों की मालाएँ सुशोभित थी। ३५० चारों भुजाओं में बाजूवन्द तथा कंकण विराजमान थे। तेजवन्त चक्र के समान उनकी कमर में मेखला पड़ी थी। ३५१ उनके श्रीअङ्ग के अम्लान परिधान अग्नि की ज्योति में डूबे से लग रहे थे। ५२ उँगलियों में अँगूठियाँ तथा चरणों में बजनेवाले नूपुर शोभा पा रहे थे। ५३ सुन्दर वर्ण की पादुकाएँ दोनों पैरो में शोभा पा रही थीं। उनके नवदल शरीर की शोभा देखते ही बनती थी। ५४ अपने तेज से वह सारे संसार को मोहित कर रहे थे। चौदह ब्रह्माण्ड उनकी प्रकाश-किरणों से आच्छादित थे। ५५ नीलवर्ण के सिंहासन पर वह विराजमान थे। उनके सिर पर सात फन वाले अनन्त नाग विराजमान थे। ५६ सदा कल्याणकारी शङ्कर जी तथा वेदवर ब्रह्मा ने जाकर उनके दर्शन किये और देवता लोग उन्हें देखकर मन में प्रसन्न हो गये। ५७ ब्रह्मा जी हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। हे आदिदेव! आपको नमस्कार है। हे नर-हरि! आपको नमस्कार है। ५८ हे दयासागर तथा तीनों लोको के स्वामी! आपको नमस्कार है। हे करुणा के करनेवाले तथा संसार-सागर से पार करनेवाले! आपको नमस्कार है। ५९ हे देवताओं के देवता! आपको नमस्कार है। हे दशरथनन्दन! शरणागत के रक्षक! आपको नमस्कार है। ३६० आप क्षीरसागर के नील अंचल में शयन करने

चारि रावण त अटन्ति बलि आर। तांक बले असुर दहिले तिनिपुर ६३
एते बोलि स्तुति जे बेदबर कला। कर जोड़ि आगरे बिजय ब्रह्महेला ६४
श्री हरि आगरे पंचानन हेले उभा। कर जोड़ि जणाण करन्ति त्रयप्रभा ६५
नमस्ते बासुदेव नमस्ते देब हरि। समस्त रचना कलु बिचारि संचरि ६६
आद्यरे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जातकलु। द्वितीये त्रिदश देवता संचरिलु ६७
तृतीये नाग बल कलु तु रचना। चतुर्थे नर बानर जातकलु किना ६८
पंचमे उड़न्ता जे बुड़न्ता सर्जिलु। चलन्ति अचलन्ति मनरू जातकलु ६९
ए गिरि कन्दररे छतिश कोटि जीव। समस्तंक पछरे असुर जन्म भाव ३७०
जाहाकु जेउँ भाव से भाव देलु हरि। समस्ते तोर आज्ञा शिररे छन्ति धरि ३७१
जाहाकु जेउँ बाटे जेउँ धर्म देलु। सेबाट धर्मरे देब अछन्ति सबु ७२
नर असुर माने जे तो आज्ञा मेंन्टिले। शरीरे हिंसा करि प्रबल एबे हेले ७३
असुरे देवतांकु बले जे धरि नेइ। तपि प्रजा मारिण रुधिर मांस खाइ ७४

वाले है। आपके आश्रित होकर इस समय हम कष्ट में पड़ गये हैं। ३६१ चौदह ब्रह्माण्डों में कहीं भी स्थान नहीं मिल रहा है। हे प्रभु ! सभी स्थानों में राक्षसों की प्रबलता बढ़ गयी है। ६२ चार रावण बलवान हो गये हैं। उनके बल से राक्षसों ने तीनों लोकों को जला डाला है। ६३ ब्रह्मा जी ने उनके समक्ष जाकर हाथ जोड़कर स्तुति की। ६४ फिर भगवान के सामने तीन प्रभाओं से युक्त पाँच मुख वाले शंकर जी ने खड़े होकर हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना की। ६५ हे वासुदेव ! हे विष्णुदेव ! आपको नमस्कार है। आपने सबकी रचना करके विचारपूर्वक उनका पालन किया है। ६६ प्रारम्भ में आपने ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर को उत्पन्न किया। फिर दूसरे चरण में आपने देवताओं का सृजन किया। ६७ तीसरे चरण में आपने नागों की रचना की और चौथे चरण में आपने नर और वानरों को उत्पन्न किया। ६८ पाँचवें चरण में आपने उड़नेवाले नभचरों तथा जलचरों की सर्जना की। फिर आपने अपने मन से जड़ और चेतन पदार्थों की सृष्टि की। ६९ यह पर्वत, कन्दराएँ छत्तीस करोड़ जीवों की रचना के पश्चात् सबसे पीछे आपने राक्षसों को उत्पन्न किया। ३७० जिसको जैसे स्वभाव की आवश्यकता थी, हे भगवन् ! आपने उसे वैसा ही स्वभाव दिया। सभी ने आपकी आज्ञा को शिरोधार्य किया। ३७१ आपने जिसको जैसा धर्म दिया, उसने वैसा ही धर्म स्वीकार कर आचरण किया। ७२ मनुष्यों तथा राक्षसों ने आपकी आज्ञा का उल्लंघन कर दिया है। उनके शरीर से अब हिंसा की प्रबलता बढ़ गयी है। ७३ राक्षस लोग बलपूर्वक देवताओं को पकड़ लेते हैं और तपस्वी तथा प्रजा को मारकर उनका रक्त-मांस खा-पी जाते

तिनिपुर चउद भुवन हेला भये ।एथिर सकाशु आम्भे तुम्भरि पाशेथाए ७५
एते बोलि सदाशिव कर जोड़ि उभा । त्रिदश देबतांकर बढ़िलाक शोभा ७६
नमस्ते त्रैलोक्य नाथ ब्रह्माण्ड ठाकुर । तोहर रखिबारे अटे तिनिपुर ७७
एबे से दैत्य राजा नमिला देवगण । प्रवल होइण नाशकले त्रिभुवन ७८
तांकर दाउरे परजा बड़ दुःखी । असुरंक भयरे ऋषि जे पलावन्ति ७९
देबतांकु दण्ड जे दिअन्ति दैत्य वल । स्वंगकु जिणिला दिनु दहिलातिनि पुर ३८०
एते बोलि देबताए कर जोड़ि उभा । शुणिण नारायण विचारि कले प्रभा ३८१
बोइले सदा शिव जे तांकुदेल वर । दश दिगपाले जोड़िले बेनि कर ८२
तुम्भर भरसासे सकल देवरहि । भयरू निस्तार एबे फर भावग्राही ८३
तुम्भे न रखिले आम्भे होइलु अनाथ । एते बोलि कर जोड़ि आगरे उभा सेत ८४
शुणिण नारायण वेदबवरंकु चाहिं । बोइले काहा कोले जनम दया होइ ८५
विधाता बोइले देब शुण मो बचन । सुमेघासुरर पुत्र सहस्रानन पुण ८६
मेघासुर दुहिता विशाखा नामे वाली ।ताहाठारू जात हेला सउरोभ दैत्यवली ८७
एबे से बिलंका गढ़े जाइण राजा हेला । सदाशिवंकु मनाइ वर जे पाइला ८८

हैं। ७४ तीनों लोक और चौदह भुवन भयभीत हो गये। इसी कारण से हम लोग आपके पास उपस्थित हुए हैं। ७५ इतना कहकर शंकर जी हाथ जोड़कर खड़े हो गये, जिससे देवताओं की शोभा बढ़ गयी। ७६ देवताओं ने कहा, हे तीनों लोकों के नाथ! हे ब्रह्माण्ड के स्वामी! आपको नमस्कार है। आपके रक्षा करने से ही तीनों लोक स्थित है। ७७ इस समय दैत्यराज ने देवताओं को नीचा दिखा दिया। उन्होंने प्रचंड होकर तीनों भुवनों को नष्ट कर डाला है। ७८ उनके उत्पीड़न से प्रजा अत्यन्त दुःखी है। राक्षसों के भय से ऋषि लोग भाग रहे हैं। ७९ दैत्यों का दल देवताओं को दण्ड दे रहा है। उन्होंने स्वर्ग को जीतने के दिन से तीनों लोकों को जला डाला है। ३८० इतना कहकर देवता हाथ जोड़कर खड़े हो गये। यह सुनकर वासुदेव विचार करने लगे। ३८१ उन्होंने शंकर जी से कहा कि आपने ही उन्हें वर दिया है। दस दिग्पालों ने हाथ जोड़कर कहा। ८२ हे देव! समस्त देवता लोग आपके ही सहारे हैं। हे भावग्राही! अब आप ही भय से मुक्ति दिलाइये। ८३ आपके रक्षा न करने पर हम अनाथ हो गये। इतना कहकर हाथ जोड़कर वह लोग उनके समक्ष खड़े हो गये। ८४ यह सुनकर भगवान वासुदेव ने ब्रह्मा की ओर देखकर कहा कि उसका जन्म किसकी कोख से हुआ है। ८५ ब्रह्मा ने कहा, हे देव! मेरी बात सुनिए। सुमेधासुर का पुत्र सहस्रकंठ रावण है। ८६ मेघासुर की पुत्री जिसका नाम विशाखा है, उससे महाबली सौरभ दैत्य उत्पन्न हुआ। ८७ इस समय वह बिलंकागढ़ में जाकर राजा बन गया है। उसने

सहस्रेक मुख जे मागिला त्रिलोचने । सहस्रेक मुख हेला ततक्षणे ८९
निजपुरे पशिण रहिला बेनि जुग । नाति जे नाश गला ताहार दुर्जोग ३९०
सेथिर सकाशरे क्रोध मने हेला । नाश कर देवता आगरे मिलिला ३९१
बोइला सदाशिब मोते देले बर । अमर बर देले त्रैलोक्य ईश्वर ९२
तु किम्पा मोहर नाति कि धरि आणि । पिण्ड रखि प्राण जेहरिनेलु पुणि ९३
शुणिण नाशकर डरिण बर देला । तोर कुलरे केहू न मरू बोइला ९४
बिनाशत्रुरे परबोले न करिबु रण । पर बोले रण कले बंशक्षय पुण ९५
एते बोलि नातिकु ताहार आणिदेला । सहस्रानन नाति घेनि निजपुर गला ९६
तिनि जुग अन्तरे स्वर्गकु धाड़ि देला । सकल देबतांकु धरिण घेनि गला ९७
चउद जुग जाए बन्दि कला नेइ । सदाशिव कहन्ते दैत्य देबंकु छाड़इ ९८
बेदबरंकु पुणि पचारिले चक्रधर । काहार हस्तरे मृत्यु होइब दैत्य बीर ९९
सदाशिव बर देला बेलरे ताकु कहि । कमला मारिब तोते शुणि जे थाअ तुहि ४००
श्री हरि मानव रूपरे तोबंश नाशिबे । तपनकुलरे बासुदेब जन्म हेबे ४०१
शुणिण असुर जे मनरे हेतु कला । नारायण संगे रण करिबि बोइला २

शंकर जी को प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त किया । ८८ उसने शंकर जी से सहस्र मुख की याचना की और उसी क्षण उसके एक हज़ार मुख हो गये । ८९ वह अपने महल में दो युग तक रहा । दुर्योग के कारण उसका नाती नष्ट हो गया । ३९० इसके लिए उसका मन क्रोध से भर गया और वह नाश करनेवाले देवता यमराज के समक्ष जा पहुँचा । ३९१ उसने कहा कि तीनो लोकों के स्वामी शंकर ने मुझे अमरत्व का वर प्रदान किया । ९२ तू कैसे मेरे नाती को पकड़ लाया और तूने शरीर को छोड़कर उसके प्राण हरण कर लिये । ९३ यह सुनकर यमराज ने भयभीत होकर उसे वर दिया कि तुम्हारे कुल में किसी की भी मृत्यु न हो । ९४ बिना शत्रुता के किसी अन्य के कहने से युद्ध न करना । यदि किसी के बहकावे में आकर युद्ध करोगे तो तुम्हारा वंश नष्ट हो जाएगा । ९५ इतना कहकर उन्होंने उसके नाती को लाकर दे दिया । सहस्रकण्ठ अपने नाती को लेकर घर चला गया । ९६ तीन युगों के बाद उसने स्वर्ग की ओर लाइन लगा दी । वह सभी देवताओं को पकड़कर ले गया । ९७ उसने उन्हें ले जाकर चौदह युग पर्यन्त बन्दी बनाकर रखा । सदाशिव के कहने से उस दैत्य ने देवताओं को मुक्त किया । ९८ चक्रधारी भगवान ने तब ब्रह्माजी से पूछा । उस वीर की मृत्यु किसके हाथों से होगी ? ९९ शंकर ने वर देते समय उससे कहा था कि तेरा वध लक्ष्मी करेगी । यह तुम सुन लो । ४०० भगवान नारायण मानव-रूप धारण करके तुम्हारे वंश का विनाश करेंगे । भगवान सूर्यवंश में जन्म लेंगे । ४०१ यह सुनकर असुर ने अपने मन में नारायण के साथ युद्ध करने

इन्द्रकु नारायण पचारिले पुण । शतेमुखा रावण काहार कोले जन्म ३
वज्रधर बोइले देव शुण मो बचन । अनुराधा असुरी गर्भरू जातपुण ४
जइन्त महामुनि ताहाठारे स्नेह कले । ताहाकु हरिबाकु जनम असुरे ५
चेता पाइण असुर अनेक तप कला । काले पवन देबतांकु से मनाइला ६
मरुत देबता ताहाकु देले बर । बोइले सबुदिने हुअ तु अमर ७
वासुदेव संखासुर रूप हेले जात । तेते बेले तोते से मारिबे नियत ८
असुर बोइला मोर हेउ शतेमुख । अतुट बिमान मोते दिअहे मरुत ९
अतुट शरीर मोर होइब प्रमाण । जल पबन अग्निरे न तुटिब पुण ४१०
समुद्रभितरे मोते देब एक स्थान । शुणि मरुत बोले अस्तु हेउ जाण ४११
एते बोलि अतुट बिमान ताकुं देले । अलंकागढ़रे नेइ राजा कराइले १२
शुणिण वासुदेव जे सदाशिवंकु चाहिं । बोइले ए असुर देबंकु किस करइ १३
सदाशिव बोइले देबंकु हेला काल । तिनिपुर जिणिला घेनिण दैत्य बल १४
देवलोकंकु नेइ बन्दिरे रखिला । गो ब्राह्मण परजा धरिण खाइला १५
पवन देवतांकु कहिले सर्बदेब । मरुत देवता कहिला दैत्य आग १६
तेबे से देवतांकु छाड़ि देला से रिपु । शुणिण बासुदेब मनरे कले बपु १७

का विचार किया । २ फिर भगवान ने इन्द्र से पूछा कि शतकण्ठ रावण किसके कुल में उत्पन्न हुआ ? ३ वज्रधारी इन्द्र ने कहा हे देव ! मेरी बात सुनिये । वह अनुराधा नाम की राक्षसी से उत्पन्न हुआ है । ४ महामुनि जयन्त ने उससे प्रेम कर लिया । उनके रमण से उस असुर का जन्म हुआ । ५ ज्ञान आने पर उस दैत्य ने बहुत तपस्या की । समय पर उसने पवन देवता का ध्यान किया । ६ मरुत देवता ने उसे वर देते हुए कहा कि तुम सदा के लिए अमर हो जाओ । जब वासुदेव शंखासुर के लिए जन्म लेंगे तभी वह तेरा वध करेंगे । यह निश्चित है । ७-८ असुर ने कहा कि हमारे सौ मुख हो जायँ । हे पवनदेव ! आप हमें अक्षय विमान प्रदान करें । ९ मेरा शरीर भी प्रामाणिक रूप से अक्षय हो जाय । वह जल, पवन तथा अग्नि से नष्ट न हो । ४१० हमें सागर के मध्य में एक स्थान प्रदान कीजिए । यह सुनकर पवनदेव ने तथास्तु कह दिया । ४११ इतना कहकर उन्होंने उसे अक्षय विमान दिया तथा अलंका दुर्ग में ले जाकर उसे राजा बना दिया । १२ यह सुनकर वासुदेव भगवान ने शिव की ओर देखकर पूछा कि यह असुर देवताओं का क्या करता है ? १३ शंकर जी ने कहा कि यह देवताओं के लिए काल हो गया है । उसने अपनी असुरवाहिनीको लेकर तीनो लोकों को जीत लिया है । १४ देवताओं को लेकर उसने बन्दा बना लिया है तथा गऊ, ब्राह्मण तथा प्रजा को पकड़कर खा गया है । १५ सभी देवताओं ने पवनदेव से अपना दुःख कहा, तब उन्होंने दैत्य से कहा । १६ तब उस शत्रु ने देवताओं को मुक्त किया । यह सुनकर भगवान

दश मुखारावण जे काहा ढारू जात। से कथा मोह आगे कह हे त्रिअम्बेक १८
ईश्वर बोइले देब शुण बासुदेब। नउ केशि राक्षसीर तिनि जे तनुज १६
रावण कुम्भकर्ण विभीषण जाण। बिश्रबा ऋषिकर रेतरू जात पुण ४२०
असुरणीर शोभा देखि पौलस्तिर पुत्र। ताहाकु शुभ्र देखि भावरे हेले रत ४२१
ऋषिर बीर्जे जात होइण ज्ञान पाइ। जोगलय कले से नर्बदाकूले जाइ २२
अनेक काल तप कले से बसिण। शिर कमल काटि अग्निरे सर्मपिण २३
देखिण बेदबर से ठाबकु गले। जचिण कुशध्वज बर तांकु देले २४
बोइले काले काले अमर होइ थाअ। सीतांकु हरिले निश्चे मरण तुम्भेपाअ २५
शुणिण दशमुख कुम्भकर्ण गले। कुबेर तड़िदेइ लंकारे राजा हेले २६
बिभीषण नगला करइ तप घोर। बेदबर प्रसन्नरे ताकु देले बर २७
बोइले चन्द्र सुर्ज्य थिबा जाए थाअ। बिष्णुठारे भाब जे भकति तुहि बह २८
शुणिण असुर जे सेठारू चलिगला। भाइंक संगरे जाइ लंकारे रहिला २९
अनेक अन्याय कले रावण कुम्भकर्ण। गो ब्राह्मण हत्या कलेक प्रति दिन ४३०
पाताल मंचपुर पशिण पुर कले। परजार धन हरि लंकारे ठूल कले ४३१

मन में चिन्ता करने लगे। १७ उन्होंने फिर पूछा कि यह दशमुख रावण किससे उत्पन्न हुआ है ? हे त्रिलोचन! यह बात मुझे बताइये। १८ शंकर जी ने कहा, हे वासुदेव ! सुनिये। नौकेशी राक्षसी के तीन पुत्र हुए। १९ विश्रवा ऋषि के वीर्य से रावण, कुम्भकर्ण तथा विभीषण का जन्म हुआ। ४२० पुलस्त्य ऋषि के पुत्र विश्रवा ने उस राक्षसी के सौन्दर्य को देखकर उससे समागम किया। ४२१ ऋषि के वीर्य से उत्पन्न तीनों ने चेतना पाते ही नर्मदा तट पर जाकर अपने को योग में लीन कर लिया। २२ उन्होंने बैठकर बहुत काल पर्यन्त तपस्या की। अपने कमल जैसे शिर काटकर अग्नि में डाल दिये। २३ यह देखकर ब्रह्मा जी वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने समझकर उन्हें वर प्रदान किये। २४ उन्होंने कहा कि चिरकाल के लिए तुम अमर हो जाओ। परन्तु सीता को हरण करने पर निश्चय ही तुम्हारी मृत्यु हो। २५ यह सुनकर रावण तथा कुम्भकर्ण चले गये और कुबेर को निष्कासित करके लंका के राजा बन गये। २६ विभीषण न जाकर घोर तपस्या में लीन रहा। ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर उसे वर प्रदान किया। २७ उन्होंने कहा कि जब तक चन्द्रमा तथा सूर्य हैं तब तक भगवान नारायण की भक्ति में अनुरक्त होकर तुम स्थित रहो। २८ यहसुनकर असुर विभीषण वहाँ से चला गया और अपने भाइयों के साथ जाकर लंका में रहने लगा। २९ रावण और कुम्भकर्ण ने नाना प्रकार के अन्याय किये। वह प्रतिदिन गऊ तथा ब्राह्मणों का वध करने लगा। ४३० पाताल तथा मृत्युलोक में घुसकर उसने राज्य का विस्तार किया तथा प्रजा का धन हरण करके लंका

ताहाकुले अनेक कुमर जात हेले। ब्रह्माकु मनाइ सर्ब्बवर से पाइले ३२
स्वर्गपुरे पशिण अनेक रण कला। धरिनेइ देबतांकु सेवाकारी कला ३३
बेदबर कहिबाकथाकु न मनिला। मोर द्वारे बेद पढ़ जे बोइला ३४
देबतांक संगरे मोर पुरे थिबु। मोर पुरु गले निश्चे मृत्यु तु पाइबु ३५
शुणिण बेदबर डरिण ताकु पुण। देबताँक संगरे रहिले से पुण ३६
शुणिण बिराट पुरुष चाहिँ जाण। सुर राजाकु पचारि कुम्भकर्ण गुण ३७
सुरदेब बोइले साधिण तिनि पुर। मनरे बिचार जे कला दैत्यवीर ३८
पांचिण मने जे अनन्त शयन करिबइँ। बासुदेब संगे समान हेबि मुँहि ३९
नर बानर असुर देबता जेते जीब। समस्तंक उपरे मोर अधिकार थिब ४४०
अनन्त शयनरे निश्चिन्त होइ शोइ। श्री हरि अनन्त शयन करिछन्ति तहिं ४४१
देबंकर उपरे से होइ अछि बड़। असुरंक भितरे मुँ हेबि जोगारूढ़ ४२
मुहिँ पलंके शयन करिबि एथिरे। एते बिचारि वीर शोइला शैय्यारे ४३
आपणा नारीमानंकु संगरे रखिला। सप्तस्वर कर बोलि नारींकि कहिला ४४
बिष्णुकु एक नारी दिअइ शुनाशिर। एक नारी चरण जे मंचाले ताहार ४५
सप्तम नारी मोर सुर जे करन्तु। नउ सहस्र नारी मोर पाद मंञ्चालन्तु ४६

में जमा कर लिया। ४३१ उसके कुल में अनेक पुत्र उत्पन्न हुए। उन्होंने ब्रह्मा को प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त किये। ३२ स्वर्गलोकमें घुसकर उसने बहुत युद्ध किया और देवताओं को पकड़कर उन्हें दास बना लिया। ३३ ब्रह्मा के कथन को भी उसने नहीं सुना और उनसे बोला कि तुम मेरे द्वार पर वेदपाठ किया करो। ३४ तुम देवताओं के साथ मेरे महल में रहना। मेरा घर छोड़ने पर निश्चय ही अपनी मृत्यु समझना। ३५ यह सुनकर ब्रह्मा उससे भयभीत होकर देवताओं के साथ वहीं रहने लगे। ३६ यह सुनकर विराट पुरुष नारायण ने देवताओं के राजा इन्द्र से कुम्भकर्ण के गुणों के विषय में पूछा। ३७ सुरेन्द्र ने कहा कि उस पराक्रमी दैत्य ने तीनों लोकों को जीतकर मन में विचार किया कि मैं भी अनन्त शयन करके वासुदेव की समानता करूँगा। ३८-३९ नर, वानर, असुर तथा देवता आदि जितने भी जीव है, उन सब पर मेरा ही अधिकार होगा। ४४० जैसे नारायण अनन्त शयन करते है, वैसे मैं भी निश्चिन्त होकर अनन्त शयन करूँगा। ४४१ जैसे देवताओं में वह सर्वाधिक महानतम है, उसी प्रकार असुरों में मै भी होकर योग में आरूढ़ हो जाऊँगा। ४२ मैं यहाँ पलंग पर शयन करूँगा। ऐसा विचार कर वह शैय्या पर सो गया। ४३ अपनी स्त्रयों को साथ रखकर उसने उन्हें सप्त स्वरों को बजाने की आज्ञा दी। ४४ विष्णु को एक नारी स्वर प्रदान करती है। एक नारी उनके चरण दबाती है। ४५ मेरी सात नारियाँ सप्त स्वर वादन करें और मेरी नौ हजार स्त्रियाँ मेरे चरण दबाएँ। ४६ मेरे ऊपर सात वक्षस्थल टिके रहें और सातों नारियाँ

सपत छाति मोर उपरे हेउ टेका । सपत नारी धरि बसन्तु निशंका ४७
अनन्त नारायणरू हेबि मुहिँ बड़ । ताहार सपतफणिकु सपत छति मोर ४८
अनन्त शयन जे से असुर बिचारिला । अचिन्ता होइण से असुर निद्रा गला ४९
तिनिपुरे जेते असुरुणि थिले । तांकर कुल प्रभु जे ताँकु बिचारिले ४५०
शुणि बासुदेब जे द्रहसिण होइ । मोर नामकु बदल कला राबणर भाइ ४५१
बासुदेब बोइले शुण सुर ब्रह्म । एक मुखा रावण जे काहार कुले जन्म ५२
बासब बोइले से राबणर सुत । मोते जिणिण से बोलाए सक्राजित ५३
ताहार कुमर महीराबण बीर । अग्निरे पशि तप कलाक अपार ५४
सातसस्र बरषरे अग्नि होइले प्रसन्न । बैश्वानर देबता ताकु अमर कले पुण ५५
तेजबन्त बिमान ताकु आणि देले । ए बिमाने थिबा जाक अतुट हुअभले ५६
तपन कुले जेबे अनन्त जात हेबे । तेबे से पुरुष निश्चे तोते जे मारिबे ५७
से बोइला जगत जिणिला मोर बाप । केउँ ठारे राजा मुँ होइबि जाण त ५८
बैश्वानर बोले तोते अछि तिनिपुर । मोतिलंका, सुलंका जे समुद्र भितर ५९
से राज्यरे जुद्धकरि से राजाकु मारि । से राज्यरे राजा तु होइबु दण्डधारी ४६०
शुणिण महीराबण बेगे चलि गला । दुइ राजा मारि दुइ राज्ये राजा हेला ४६१

मुझे लेकर नि:शंक होकर बैठें । ४७ मैं अनन्त नारायण से भी बड़ा हो जाऊँगा । उसके सप्तफनों के लिए मेरे सात छत्र होंगे । ४८ उस दैत्य ने अनन्त शयन के विषय में विचार किया और निश्चिन्त होकर वह सो गया । ४९ तीनों लोकों में जितनी राक्षसियाँ थीं वे उसे अपने कुलों का स्वामी मानने लगीं । ४५० यह सुनकर भगवान ने हँसते हुए कहा कि रावण के भाई ने मेरे नाम को बदल दिया । ४५१ वासुदेव ने कहा, हे सुरेन्द्र ! एक मुख वालारावण किसके कुल में उत्पन्न हुआ ? ५२ इन्द्र ने कहा कि वह रावण का पुत्र है । मेरे ऊपर विजय प्राप्त करने के कारण उसे इन्द्रजित् कहा जाता है । ५३ उसका पुत्र पराक्रमी महिरावण है । जिसने अग्नि में घुसकर घोर तपस्या की । ५४ सात हजार वर्ष में अग्निदेव प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अमरत्वप्रदान किया । ५५ फिर उन्होंने उसे एक तेजोमय विमान लाकर दिया औरकहा कि जब तक इस विमान में रहोगे तब तक तुम नष्ट नहीं होगे । ५६ सूर्य-कुल में जब अनन्त शेष उत्पन्न होंगे, तब वह व्यक्ति निश्चय ही तुम्हारा वध करेगा । ५७ उसने कहा कि मेरे पिता ने संसार को जीत लिया है । अब मैं कहाँ का राजा बनूँगा ? ५८ वैश्वानर अग्निदेव ने कहा कि तुम्हारे लिए तीनों लोक तथा सागर के भीतर मोती लंका एवं सुलंका है । ५९ उसराज्य में युद्ध करके उन राजाओं को मारकर तुम वहाँ के राजा बन जाना । ४६० यह सुनकर महिरावण वहाँ से वेग से चल दिया । दोनोंराजाओं को मारकर वह वहाँ का राजा बन गया । ४६१

शुणिण वासुदेव बोइले तुम्भे शुण। पन्दर जुग भितरे असुर जपि पुण ६२
बालिकि पातालरे रखिबार जे मोर। तपन कुले हेला नाहिँ मो अबतार ६३
बृहस्पति कि बोइले देव गुरु पुण। एथि राजामाने केमन्ते दुष्ट पुण ६४
बृहस्पति बोइले अनेक दुष्ट छन्ति। राजाकु राजामाने हिंसा जे करन्ति ६५
बलबन्त पणकरि करन्ति समर।शान्ति राजा मानंकु करन्ति नार खार ६६
ऋषिमाने डरिण न रहे तांक पाश। शुणिण नारायण जे मनरे हरष ६७
बोइले देवताए मोर बोलकर। सकल देवताए मर्त्यपुरे चल ६८
बानरंक संगरे कर जाइ लीला। भालूमानंकर श्रृंगार कर परा ६९
नउ सागर जे देवता गण तुम्भे। भालु बानरंक संगे रमण कर वेगे ४७०
से मानंकठारू पुत्र जेउँ रूपे होइ। तेमन्ते विचार तुम्भे कर वेगे जाइ ४७१
षाठिए सागर जे बानर जात हेबे। शंख चक्र दुइ जे आयुध मोर जिबे ७२
तेबे से असुर बल होइब निधन। अन्यरूपरे तांकर नाहिँ जे मरण ७३
रघुराजा पुत्र जे अज नाम तार। अजोध्या कटकरे अटइ तार घर ७४
चारि सहस्र बरष कुमरकु होइ। षड़ सहस्र बरष बंचिव हादे सेहि ७५
ताहार नन्दन जे होइब दशरथ। अज राजा जिबारू जे हेब नृपनाथ ७६
नब सत्र बरष जे से भोग करिब। आण्ठकुड़ा दोषरे दिन तार जिब ७७

यह सुनकर वासुदेव ने कहा कि तुम लोग सुनो। पन्द्रह युगों के भीतर असुरों को जीतकर मुझे बलि को पाताल में रखना पड़ा। सूर्यकुल में मेरा अवतार नहीं हुआ है। ६२-६३ उन्होंने देवगुरु बृहस्पति से पूछा कि पृथ्वी के राजा लोग कैसे दुष्ट हैं ? ६४ बृहस्पति ने कहा कि अनेक दुष्ट राजा हैं जो अन्य राजाओं को मारकर हिंसा करते रहते हैं। ६५ शक्ति से उन्मत्त होकर वह युद्ध करते हैं और शान्त राजाओं को नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। ६६ उनके पास ऋषि लोग भय के कारण नहीं रहते। यह सुनकर नारायण मन में प्रसन्न हो गये। ६७ उन्होंने कहा, हे देवताओ ! हमारी आज्ञा मानकर तुमलोग मृत्युलोक में चलो। ६८ तुम लोग वानरों के साथ जाकर लीला करो और भालुओं का श्रृंगार करो। ६९ हे देवताओ ! तुम सब जाकर भालू और वानर-स्त्रियों के साथ रमण करो। ४७० तुम वैसा ही विचार करो जिससे उन वानर और भालू-पत्नियों के बच्चे उत्पन्न हो जायें। ४७१ इस प्रकार साठ सागर (गणना-परिमाण) वानर उत्पन्न होंगे। शंख और चक्र मेरे यह दोनों आयुध भी जायेंगे। ७२ तब इन असुरों का निधन होगा। किसी और प्रकार से उनका मरण नहीं होगा। ७३ महाराज रघु के पुत्र का नाम अज है। उनका घर अयोध्या दुर्ग में है। ७४ चार हजार वर्ष उस राजकुमार के व्यतीत हो गये हैं। वह और छः हजार वर्ष तक रहेंगे। ७५ महाराज अज के स्वर्गवासी होने पर उनके पुत्र दशरथ राजा बनेंगे। ७६ वह नौ हजार वर्षों तक भोग करेंगे।

लोमपाद राजा संगे से राजा हेब मित। बिभाण्डेक पुत्र ऋष्यशृंङ्ग जात ७८
चम्पावती देश राजा ताहाकु अणाइब। दशरथ राजार जे दुहिताए थिब ७९
से ऋषिकि बिभा देइ करिब संतोष। ऋष्य जज्ञ चरूरू होइबु संम्भूत ४८०
पंचदश बरष गले जे जन्म हेबु। एगार सत्र बरष पर्ज्यन्ते दुष्ट बिनाशिबु ४८१
आज मोते शयनरू उठाइल पुण। मोर अंशु जात हेबे नर देह जाण ८२
जमदग्नि देहे संम्भव हेबि जाण। रेणुका गर्भरे जात हेबि मुहिँ पुण ८३
पर्शुराम अबतार होइब से अंश। अनेक दुष्ट राजांकु मु करिबि बिनाश ८४
शते बार तिनि पुर निछत्र करिबि। दुष्टंकु निबारि पुणि सन्थंकु पालिबि ८५
जाअ देब गणे तुम्भे मर्त्यपुरकु एबे। सहस्र बरष लीला करिबि मुं एबे ८६
शुणिण देबता जे शिरे कर देले। मेलाणि होइण जे जाहापुरे गले ८७
जे जाहा स्थानरे जे निश्चिन्तरे रहि। एथु अनन्तरे तु गो शुण महामाई ८८
अनन्त शय्याकु जे तेजिले नारायण। कमला संगते जे लीला करन्ति देब पुण ८९
अनन्त लीला करि अटे नारी संगे। सेहि लीला करिण नाशिबे दुष्ट तेबे ४९०
जमदग्निङ्कर जे रेणुका घरणी। तार कोले जात हेले तिनि पुत्र पुणि ४९१

नपुंसक दोष से उनका समय व्यतीत होगा। ७७ फिर लोमपाद राजा के साथ उनकी मित्रता होगी। विभाण्डक मुनि की सन्तान शृंगी ऋषि को चम्पावती के राजा लोमपाद बुलवाकर महाराज दशरथ की कन्या (शान्ता) का विवाह उनके साथ करके उन्हें सन्तुष्ट करेंगे। उन शृंगी ऋषि के द्वारा किये गये यज्ञ से प्राप्त चरु (खीर) से मेरा प्रादुर्भाव होगा। ४७८-४८० पन्द्रह वर्ष बाद में जन्म लेकर ग्यारह हजार वर्षों तक दुष्टों का विनाश करता रहूँगा। ४८१ आज मुझे तुम लोगों ने सोते से उठा दिया है। इसलिए मेरे अंश से एक नर शरीर उत्पन्न होगा। ८२ मैं यमदग्नि के शरीर से रेणुका के गर्भ से जन्म लूँगा। ८३ उस अंश से परशुराम का अवतार होगा। तब मैं अनेकानेक दुष्ट राजाओं का विनाश करूँगा। ८४ सौ बार तीनों लोकों को निछत्र कर दूंगा। दुष्टों का नाश करके सन्तों का पालन करूँगा। ८५ हे देवगण! इस समय आप लोग मृत्युलोक को जायें। मैं इस समय एक सहस्र वर्ष की लीला करूँगा। ८६ यह सुनकर देवताओं ने अपने हाथ सिर से लगा लिये और विदा लेकर अपने-अपने घरों को चले गये। ८७ वह सभी अपने-अपने स्थानो पर निश्चिन्त होकर रहने लगे। हे महामाया! इसके अनन्तर की कथा सुनो। ८८ भगवान वासुदेव ने अनन्त शय्या का परित्याग करके लक्ष्मी के साथ विहार किया। ८९ उन्होंने अपनी पत्नी के साथ अनेक प्रकार से विहार किया और उसी लीला से दुष्टों का नाश होगा। ४९० यमदग्नि की पत्नी रेणुका की कोख से तीन पुत्र उत्पन्न हुए। ४९१ इसी

एमन्त समयरे श्री हरि बिजेकले । जमदग्नि शरीर रे जाइण मिलिले ९२
रेणुका संगरे ऋषि करन्ति विहार । रेणुकार गर्भरे रहिले चक्रधर ९३
दशमास उत्तारू जनम हेले पुण । ऋषि देखि बिचारिले एहि त नारायण ९४
सहस्रे बरषत एथिरे बहिगला । कार्तिकेश्वर नन्दन सस्रार्जुन थिला ९५
जमदग्नि ऋषिकि अकाले कला नाश । पर्शुराम न थिला माइला नर ईश ९६
बनस्ते पर्शुराम आसन्ते देखिला । सातदिने सहस्रा अर्जुन नाश कला ९७
राजांकु उपरे हिंसा कले पर्शुधर । दुष्ट राजा मान धरि माइला कुठार ९८
आण्ठुकुड़ा राजा माने नारि बेश हेले । पाटराणी मानंकर संगरे लुचिले ९९
जेणु से दुष्टगण कलाक बध पुण । तिनिपुर लोके भय पाइले सेहू जाण ५००
तार नाम शुणिण देबता भय कले । पाताल नाग लोके डरिण रहिले ५०१
मर्त्यपुर राजामाने डरिले ताकु पुण । शते बार परिअन्ते निछत्र कले जाण २
पार्वती बोइले देव शुण त्रिलोचन । असुरकु किम्पा वध न कले पर्शुराम ३
ईश्वर बोइले असुरे ताहारे न मरि । दुष्टजन मारिबाकु अबतार हरि ४
पर्शुरामे अबतारे दुष्टंकु नाश कले । असुरे जाणि पर्शुरामंकु भय कले ५
पर्शुराम आगरे न मिलिले असुर । जेउँ दैत्य मारे ताकु मिले पर्शुधर ६

समय भगवान वासुदेव यमदग्नि के शरीर में लीन हो गये। ९२ रेणुका के साथ ऋषि यमदग्नि रमण कर रहे थे। तभी चक्रधारी नारायण रेणुका के गर्भ में स्थित हो गये। ९३ दस महीने के पश्चात् उनका जन्म हुआ। ऋषि ने देखकर यह विचार किया कि यह तो नारायण है। ९४ इसमें एक हजार वर्ष व्यतीत हो गये। उसी समय कार्तिकेश्वरनन्दन सहस्रार्जुन था, जिसनेयमदग्नि ऋषि को अकाल ही नष्ट कर डाला था। परशुराम की अनुपस्थिति में राजा ने उन्हें मार डाला। ९५-९६ वन से परशुराम ने आकर यह देखा। उन्होंने सात दिन में ही सहस्रार्जुन का वध कर दिया। ९७ परशुधारी परशुराम राजाओं के ऊपर कुपित हो गये। उन्होंने दुष्ट राजाओं को पकड़-पकड़कर फरसे से मार डाला। ९८ नपुंसक राजा लोग स्त्रियों का वेश धारण करके पटरानियों के साथ छिप गये। ९९ जब उन्होंने दुष्ट लोगों का संहार किया तब तीनों लोकों के लोग उनसे भयभीत होने लगे। ५०० उनका नाम सुनकर देवता डरने लगे। पाताल में नाग लोग डरकर रहने लगे। ५०१ मृत्युलोक के राजा लोग उनसे डर गये थे, क्योंकि उन्होंने सौ बार पृथ्वी को निछत्र कर दिया था। २ पार्वती ने कहा, हे देव त्रिलोचन! सुनिये। परशुराम ने राक्षसों का वध क्यों नहीं किया? ३ शंकर जी बोले कि राक्षस उनसे नहीं मर सकते थे। वह तो दुष्टजनों को मारने के लिए ही भगवान का अवतार हुआ था। ४ परशुराम-अवतार में उन्होंने दुष्टों का नाश किया। यह जानकर राक्षस लोग भी उनसे भय करने लगे। ५ राक्षस परशुराम के आगे नहीं पड़े। उनके सामने जो भी दैत्य आता

पार्वती बोइले पर्शुधर किस कले। से कथा मोर आगे कह हे देब भले ७
ईश्वर बोइले से बैकुण्ठे करे लीला। सहस्रे बरष जे एथिरे वहि गला ८
अनन्त शयनकु मने जे कले हरि। आगरे कमला जे कहन्ति कर जोड़ि ९
बोइले भोदेब तुम्भे मोर बोल घेन। प्रतिदिन सदाशिव पार्वती घेनिपुण ५१०
गायत्री साबित्री जे ब्रह्माकु घेनि लीला। देबता माने देबिकि न छाड़े देबसिना ५११
शयन करिबारू मुँ एकाहोइ रहि। एबे मोर संगे लीला कर हे भावग्राही १२
देबंकु कहिला मुँ जे होइबि जनम। पन्दर सस्र बरष रे जन्म हेब पुण १३
मोर संगे एते दिन तुम्भे लीला कल। मानव जन्म तुम्भे होइब चक्रधर १४
शुणि करि बासुदेब हरष होइले। कमलांकु कोले धरि निश्चिन्ते लीला कले १५
पार्बती बोइले देब शुण मो उत्तर। बासुदेब आज्ञारे कि कले बेदबर १६
तुम्भे पुण किस कल देबे कले किस। बानर भल्लुंक संगे कले जे बिश्वास १७
से कथा मोर आगे कह हे त्रिलोचन। शुणिण ईश्वर जे कहन्ति बचन १८
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण हे भगबती। कमलांकु घेनि लीला कलेक दाशरथि १९
बेदबर मुहिँ जे बैकुण्ठपुर बासि। कपिलास कन्दरे मिलिलि मुहिं आसि ५२०
बिधाता पुरुष जे जशोबन्ति पुर गले। केते दिन उत्तारे ब्रह्मंकु ठूल कले ५२१

था। वह उसे मार देते थे। ६ पार्वती बोली, हे भोलेनाथ! फिर परशुराम ने क्या किया? यह कथा आप हमसे कहें। ७ शंकर जी बोले कि वैकुण्ठ में लीला करते-करते एक हजार वर्ष व्यतीत हो गये। ८ भगवान वासुदेव ने पुनः अनन्त शयन की इच्छा की। तब देवी लक्ष्मी ने उनसे हाथ जोड़कर कहा। ९ हे देव! आप मेरा कहना सुनिये। प्रतिदिन महादेव जी पार्वती को लेकर और ब्रह्मा गायत्री तथा सावित्री को लेकर विहार करने लगे। सभी देवता देवियों को नहीं छोड़ते। ५१०-५११ आपके शयन करने से मैं अकेली रह जाती हूँ। हे भावग्राही! अब आप हमारे साथ विहार करें। १२ आपने देवताओं से कहा है कि मैं जन्म धारण करके पन्द्रह हजार वर्षों में अवतरित होऊँगा। १३ आपने इतने दिनों मेरे साथ लीलाएँ कीं, हे चक्रधारी। आपको मनुष्य का जन्म धारण करना होगा। १४ यह सुनकर भगवान प्रसन्न हो गये। फिर उन्होंने लक्ष्मी को गोद में लेकर निश्चिन्त होकर अनेक लीलाएँ की। १५ पार्वती ने कहा, हे देव! मेरी बात सुनकर हमें यह बताइये कि भगवान की आज्ञा से ब्रह्मा ने क्या किया? १६ आपने और देवताओं ने वानर व भालुओं से प्रीति करके क्या किया। १७ हे त्रिनेत्रधारी शंकर! आप यह कथा हमें सुनाएँ। यह सुनकर शंकर जी ने कहा। १८ हे भगवती! तुम सुनो। दशरथ-नन्दन ने लक्ष्मी को लेकर लीलाएँ कीं। १९ वैकुण्ठवासी ब्रह्मा तथा हम कैलास की कन्दरा में आ गये। ५२० ब्रह्मा यशोवन्तीपुर चले गये। कुछ दिनों बाद उन्होंने

बोइले बासुदेव कहिणछन्ति जाहा। से कथाकु पाशोरिल असुरे करि दया २२
जाअ एबे मर्त्यपुरे मायारूप धरि। शुणिण देवताए चलिले वेग करि २३
षाठिए सागर बानरंक संगे मेल। तिरिश सागर भल्लुंक संगरे बिहार २४
केहू पांञ्चदिन केहू सात दिन रहि। बीर्ज्य नेइण गर्भ बलास्थित कले तहिं २५
नउ सागर बानर भल्लुंक नारी संगे। निश्चिन्ते रमण तांकु कले स्वर्ग देबे २६
पुत्रमान जनम हेले जेते बेलरे पुण। मुकुट कुण्डल नेइ बर जे देले जाण २७
बानर भल्लुंक जे भूषण कराइले। हरष कराइ जे स्वर्गपुर गले २८
गिरि कन्दरे थाइ बढ़िले पुत्रमाने। देबकार्ज्य रे बाल जे हेले अप्रमाणे २९
बिहरन्ति पुत्रमाने संगते शार्दूल। एमन्ते देबताए कले पुत्र सार ५३०
पार्बती बोइले देब पुत्र जात कले। दिगपाल माने किस कले कह भले ५३१
ईश्वर बोइले जे मर्त्यपुर गले। श्रद्धायुक्ते बानरीकि रमण सेहू कले ३२
दिगपाले गोटिके दुइ जे तिनि मेल। अनेक पुत्र जात कले जे दिगपाल ३३
मुकुट कुण्डल जे अनेक अलंकार। देइ पुत्रमानंकु मन जे कले भोल ३४
सुर राजार संगे बिजे होइ गले। पार्बती बनरे जाइ प्रवेश होइले ३५

देवताओं को एकत्रित किया। ५२१ वह कहने लगे कि वासुदेव भगवान ने जैसा कहा था, सो असुरों पर दया करके क्या आप लोग भूल गये ? २२ अब जाकर मृत्युलोक में माया के रूप धारण करो। यह सुनकर देवता लोग वेगपूर्वक चल दिये। २३ वह साठ सागर (गणना-परिमाण) वानरों से तथा तीस सागर (गणना-परिमाण) भालुओ के साथ विहार करने लगे। २४ किसी ने पाँच दिनो में और किसी ने सात दिनों में रमण करके गर्भ में वीर्य को स्थापित किया। २५ स्वर्गलोक के देवताओं ने नौ सागर (गणना-परिमाण) वानर तथा भालू-स्त्रियों के साथ निश्चिन्त भाव से रमण किया। २६ जब उनके पुत्र उत्पन्न हुए तब देवताओं ने उन्हें मुकुट तथा कुण्डल देते हुए वर प्रदान किये। २७ उन्होंने वानर तथा भालुओं को अलंकारों से मण्डित किया और फिर सब देवता स्वर्ग को लौट गये। २८ बालक पर्वत की कन्दराओं में बढ़ने लगे। देवताओं के कारण वह सभी पुत्र अपरिमित बलशाली हो गये। २९ देवताओं ने उन्हे इतना शक्तिशाली बना दिया था कि वह सिंहो के साथ क्रीड़ा करते रहते थे। ५३० पार्वती ने कहा कि देवताओं ने तो पुत्र उत्पन्न कर दिये, परन्तु हे भोलेनाथ ! दिग्पालों ने क्या किया ? आप हमें यह वता दीजिए। ५३१ शंकर जी वोले कि उन्होंने भी मृत्युलोक में जाकर श्रद्धापूर्वक वानरियों के साथ रमण किया। ३२ एक-एक दिग्पाल ने दो या तीन वानरियों के साथ रति-प्रसंग करके वहुत से पुत्र उत्पन्न किये। ३३ उन्होंने मुकुट, कुण्डल तथा अलंकार प्रदान करके पुत्रों का मन हर लिया। ३४ फिर वह देवताओं के राजा इन्द्र

खड़द नृपति जे से बने जाइ थिला। से बनकु जिबारू स्तिरी रूप हेला ३६
से स्तिरीकु देखिबारू इन्द्रदेब पुण। बिर्ज्य तेज्या करिबारू पड़िला उपरेण ३७
इन्द्रंकर बिर्ज्य जाइ बालरे पड़िला। बानर रूप धरि पुत्रेक जन्मिला ३८
रबिर बिर्ज्य जाइ शरीरे तार पड़ि। शरीरे छुअन्ते जे पुत्रेक अबतरि ३९
बेनिपुत्र घेनिण से नारी चलि गला। गउतम ऋषिकर आश्रमे मिलिला ५४०
ऋषिकि से ठारे देखिण नारी पुण। पूर्ब कथा कहन्ते पाइला कारण ५४१
बालक कोले घेनि किष्किन्ध्याकु गला। आपणा घरणीर कोले नेइ देला ४२
पालिबारू कुमरे होइले बलियार। बालि सुग्रीबर नाम होइला तांकर ४३
सेहि दुइ गोटि पुत्र बलरे बलिष्ठ। बानर भालु सबु होइले आयत ४४
बल निर्बल माने सबुंकु साध्यकले। बानर भल्लुंक परे नृपति होइले ४५
सकल बानर भालु जे आसि पुण। बालि राजा चरणे खटिले सर्बे जाण ४६
बालिकि राजा करि सुग्रीव जुबराज। दुइंकि राज्य देइ खड़द राज्य कले तेज्य ४७
केते दिन अन्तरे स्वर्गकु सेहू गले। मर्त्यपुरे बालि जे बलियार हेले ४८
शत्रुतापण लोकंकु सेहि हादे जिणि। एमन्त बलिष्ठपण तिनिपुरे बखाणि ४९

के साथ पार्वतीवन में जा पहुँचे। ३५ खड़द नरेश भी उसी वन में गया था उस वन में पहुँचते ही उसका रूप स्त्री का हो गया। ३६ उस स्त्री को देखकर देवराज इन्द्र का वीर्य स्खलितहोकर उसके ऊपर जा पड़ा। ३७ इन्द्र का वीर्य उसके बालों में गिरने से उससे वानर के रूप में एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ३८ सूर्य का भी वीर्य उसके शरीर पर जा गिरा। उस वीर्य का स्पर्श शरीर से होते ही उससे एक पुत्र पैदा हुआ। ३९ दोनों पुत्रों को लेकर वह स्त्री गौतम ऋषि के आश्रम में जा पहुँची। ५४० उस स्त्री ने वहाँ पर ऋषि को देखकर अपनी पूर्व-कथा कही, तव उसका रूप पूर्ववत् हो गया। ५४१ फिर वह राजा दोनों पुत्रों को लेकर किष्किन्धापुर को चला गया। उसने उन दोनों पुत्रों को अपनी स्त्री को दे दिया। ४२ उन कुमारों का पालन करने से वह दोनों बड़े बलवान हो गये। उन दोनों का नाम बालि और सुग्रीव पड़ा। ४३ वह दोनों पुत्र शक्ति में महान बलशाली हो गये। समस्त वानर तथा भालु उनके वश में हो गये। ४४ बलवान तथा निर्बल सभी को जीतकर वह दोनों वानर और भालुओं के राजा वन गये। ४५ समस्त वानर तथा भालु आकर राजा बालि की चरण-सेवा में जुट गये। ४६ खड़द नरेश ने बालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज बनाकर राजपाट छोड़ दिया। ४७ कुछ दिनों के पश्चात उनका स्वर्गवास हो जाने पर मृत्युलोक में बालि और अधिक शक्तिमन्त हो गया। ४८ उसने सरलता से ही अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली। उसके बल की चर्चा तीनों लोकों में होने लगी। ४९ पार्वती ने कहा, हे ईशान

पार्वती बोइले देव शुण हे ईशान । से वाली विभा हेला केउँ ठारे पुण ५५०
ईश्वर बोइले तुम्भे से कथा गो शुण । ताराक्ष राजा दुहिता अटइ तारा जाण ५५१
ताकु बिभा हेले बाली जे बनराजा । से तारा सुन्दरी तिनि पुरे जे तरिजा ५२
सती ब्रतपालिला तारक्ष राजा झिअ । सेहि बाली राजार होइले एक प्रिय ५३
ताहार कनिष्ठ जे सुग्रीव नामे बीर । रूमाकु बिभा हेला देखिण सुन्दर ५४
से रूमार पिता नाम अटे कउरोब । दुहिता बिभा हेबारू पितार सद्‌भाव ५५
से वाली राजार एक भग्नीए पुणथिला । प्रभंजनि बोलि ताकु पिता नाम देला ५६
से कन्या बिभा हेला केशरी कपि पुण । एमन्ते खड़द नृपतिर अंश जाण ५७
पार्वती बोइले देव कपि भालु मेले । सरदार वानर के ताहांक उपरे ५८
डालर मांकड़ सिना बनस्तरे थान्ति । फल मूल खाइकरि दिन से बंञ्चन्ति ५९
ईश्वर बोइले देव शुण शाकम्वरी । खड़द नृपति भालु वानर साध्य करि ५६०
वानर भालु जाक जहूँ साध्य हेले । खड़द नृपति जे मनरे विचारिले ५६१
जम्बूद्वीप मण्डलरे लक्षेक नृपति । बांटिकरि राजांकु से देइण अछन्ति ६२
बिधाता पुरुष जे आसिण बांण्टि देला । लक्षपुर करिण जम्बुद्वीपकु संचरिला ६३
मुहिँ अटे एबे लक्षेराजा कपिनृप । नगर राज्य हेउ कपिंकि परापत ६४

दिशा के स्वामी महादेव जी ! सुनिये। फिर उस वालि का विवाह कहाँ हुआ ? ५५० शंकर जी वाले कि तुम वह कथा सुनो। राजा ताराक्ष की एक पुत्री थी, जिसका नाम तारा था। ५५१ वन के राजा वालि ने उससे विवाह किया। वह तारा तीनों लोकों की स्त्रियों से अधिक सुन्दर थी। ५२ राजा ताराक्ष की पुत्री ने सती-व्रत का पालन किया। केवल बालि राजा ही उसे प्रिय लगे। ५३ वालि के छोटे भाई पराक्रमी सुग्रीव ने रूमा के सौन्दर्य को देखकर उससे विवाह कर लिया। ५४ रूमा के पिता का नाम कौरव था। पुत्री का विवाह हो जाने पर पिता का भी सद्‌भाव उन पर हो गया। ५५ उस वालि राजा के एक बहन थी, जिसका नाम पिता ने प्रभंजनि रखा था। ५६ उस कन्या का विवाह केशरी नाम के वानर से हुआ। खड़दराज के अंश का वर्णन ऐसा ही समझ लो। ५७ पार्वती ने कहा कि हे देव ! वानर तथा भालुओं के समुदाय के ऊपर कौन सा वानर उत्पन्न हुआ ? ५८ डालों पर घूमनेवाले वानर वनों में रहते हैं और फल-मूल खाकर अपने दिन व्यतीत करते हैं। ५९ शंकर जी ने कहा, हे शाकम्वरी ! सुनो। खड़द महाराज ने वानर तथा भालुओं को जहाँ तक सम्भव हुआ प्राप्त करके अपने मन में विचार किया। ५६०-५६१ जम्बूद्वीप में एक लाख राजा लोग थे। वह सभी राजा-गण आपस में बँटवारा चाहते थे। ६२ ब्रह्मा जी ने आकर उन्हें बाँट दिया। उन्होंने जम्बूद्वीप में एक लाख नगर बसाकर सँवार दिया। ६३ इस समय मैं एक लाख वानर राजाओं का अधीश हूँ। अब यह नगर और राज्य वानरों

एमन्त बिचारि से दिग बिजे कला । गोटिए राज्यरे गोटिए नृपति कराइला ६५
सरदार मल्ल जे महामल्ल पुण । एमन्त पात्र मंत्री कलेक भिआण ६६
एहि रूपे भालु अंशे नृपति भिआइला । पात्र मंत्री संचिण जे आकट कराइला ६७
ताहांकर मूले सैन्य सबु समर्पिला । एहि रूपे अनेक नृपति भिआइला ६८
लक्षेक राज्यरे नउ सागर भालु कपि । नउ सागर भालु जे ताहार अटन्ति ६९
नारींकर संगे जे देबे लीला करे । बल बीर्ज्य देइण पुत्रंकु संचरिले ५७०
दिगपाल नवग्रह अष्ट बसुर मेले । से माने कपिराण संगरे बिहरिले ५७१
बल बीर्ज्य देइण पुत्र जे कले जात । से पुत्र मान सबु तेजरे अकलित ७२
बानर भालु शरीर देबंकर बल । तेणुकरि कपि माने हेले बलीयार ७३
पार्बती बोइले देब तुम्भे किस कल । केउँ बानरी संगे लीला भिआइल ७४
ईश्वर बोइले तुम्भे से कथा जे शुण । सेते बेले तोर मोर बनकु गमन ७५
तेते बेले बानर बानरींकर लीला । ताहा देखि तोहर जे शरधा बलिला ७६
तुहि हेलु बानरी मुँ हेलि बानर । तोर संगे रति लीला बानर प्रकार ७७
श्रृंगार करन्ते जे खसिला बल बीर्ज्य । तोहर गर्भरे रेत होइला संजोग ७८
से बीर्ज्य उछुलन्ते ताहा मुँ धइलि । मरुत देबता हस्तरे नेइ देलि ७९

को प्राप्त हो। ६४ इस प्रकार का विचार करके उसने दिग्विजय की। उसने एक राज्य में एक राजा बना दिया। ६५ उसने सरदार, मल्ल योद्धा, सभासद तथा मंत्रियों का निर्माण किया। ६६ इस प्रकार भालुओं को राजा बनाकर उनके भी मंत्री, सभासद आदि का निर्माण किया। ६७ उन सभी लोगों को सेना समर्पित की और इसी रूप से उसने बहुत से राजा बना दिये। ६८ एक लाख राज्यों में नौ सागर परिमाण वानर और लगभग इतने ही भालू उसके पास थे। ६९ देवता लोग स्त्रियों के साथ विहार करके उन्हें अपना शक्तिशाली वीर्य देकर उनसे पुत्र उत्पन्न करने लगे। ५७० दिग्पाल, नवग्रह तथा आठों वसु मिलकर कपिपति के साथ विहार करने लगे। ५७१ शक्तिशाली वीर्य देकर उन्होंने जो पुत्र उत्पन्न किये, वह सभी अपरिमित तेज से युक्त थे। ७२ उन वानर और भालुओं के शरीर में देवताओं का बल होने के कारण वह लोग महान शक्तिशाली हो गये। ७३ पार्वती ने कहा, हे देव ! आपने क्या किया ? आपने कौन सी वानरी के साथ लीला रची ? ७४ महादेव जी बोले, तुम वह कथा सुनो। उस समय हम और तुम वन में गये थे। ७५ वहाँ पर वानर तथा वानरियों की लीला देखकर तुम्हारी भी इच्छा होने लगी। ७६ तुम वानरी तथा मैं वानर बना और वानरों की ही भाँति मैंने तुम्हारे साथ रति-प्रसंग किया। ७७ क्रीड़ा करते समय मेरा शक्तिशाली वीर्य तथा तुम्हारे गर्भ से गिरा हुआ रज संयुक्त हो गया। ७८ उस उछलते हुए वीर्य को मैंने लेकर वायु देवता के हाथों में दे दिया। ७९

देखिण मरुत जे संतोष होइला। ब्रह्माण्ड करता वीर्ज्य बोलिण विचारिला ५८०
ए वीर्ज्य रखिले मुं जे होइबि बलवन्त। एते बोलि भक्षिला मरुत धातु सेत ५८१
गर्भरे पड़न्तेण उन्माद हेला गाढ़। कामरे बिह्वलित होइला से बड़ ८२
निजपुरकु से जे करन्ते गमन। केशरी नारी जे प्रभञ्जनि पुण ८३
पाकस्परस जे होइ थिला नारी। शुद्ध स्नान निमन्ते जे पुष्कर तीरे मिलि ८४
सुगन्ध लगाइ जे करुछि तहिँ स्नान। पवन देवता जे मिलिले से स्थान ८५
से नारीकि बुझाइण शृंङ्गार रति कला। कामक्रीड़ा सरिबारु बिन्दु जे खसिला ८६
प्रभञ्जनि गर्भरे प्रवेश हेला जाइ। वीर्ज्य स्खलित हेबारु मरुत चलिजाइ ८७
से कालरे प्रभञ्जनि होइला गर्भ बास। बार बरष पर्ज्यन्ते नोहिला प्रसव त ८८
आकुलरे प्रभञ्जनि गर्भकु पचारि। केउँ पुरुष मो गर्भे अछ अवतरि ८९
आलुअकु न आसि किपाँ अन्धारे अछ रहि।पापी जन होइले तु जाअ भस्म होइ ५९०
गर्भरे थाइ बालक भितरू डाक देला। जनम हेले दोषी होइबि बोइला ५९१
मातृ हरण दोषकु डर जे मोहर। तुम्भे जननी वारे सुदया मोते कर ९२
मरुत देबतांकु सुमर मनरे। से तुम्भर पति जे अटन्ति बिभारे ९३

यह देखकर पवनदेव संतुष्ट हो गये और वह अपने मन में विचार करने लगे कि यह ब्रह्माण्ड के निर्माण करनेवाले का वीर्य है। इसे धारण करने से मैं शक्तिशाली हो जाऊँगा। ऐसा कहकर पवनदेव ने उस धातु को खा लिया। ५८०-५८१ पेट में जाने के साथ ही साथ उनमें प्रचंड उन्माद भर गया। वह अत्यन्त काम से विह्वल हो गये। ८२ अपने घर को जाते समय उन्होंने केशरी की पत्नी प्रभंजनि को देखा। ८३ वह रजस्वला नारी शुद्ध-स्नान के लिए पुष्कर के किनारे आयी थी। ८४ वह सुगन्धित द्रव्यों को लगाकर स्नान कर रही थी, तभी पवन देवता उस स्थान पर आ पहुँचे। ८५ उन्होंने उस स्त्री को समझाकर उसके साथ रति-प्रसंग किया। रति-क्रीड़ा समाप्त होने पर उनका वीर्य स्खलित हो गया। ८६ वह प्रभंजनि के गर्भ में चला गया। वीर्य स्खलित हो जाने पर पवनदेव चले गये। ८७ उस समय प्रभंजनि गर्भवती हो गई। बारह वर्ष तक उसका प्रसव नहीं हुआ। ८८ व्याकुल होकर प्रभंजनि ने अपने गर्भ से पूछा कि मेरे गर्भ से कौन पुरुष अवतार ले रहा है? ८९ तुम प्रकाश में न आकर अन्धकार में क्यों रह रहे हो? यदि तुम कोई पापी हो तो भस्म हो जाओ। ५९० गर्भ में स्थित बालक ने भीतर से आवाज दी कि मैं जन्म लेते ही दोषी हो जाऊँगा। ५९१ मुझे मातृ-हरण का दोष लगने का डर है। हे माता! तुम एक बार मेरे ऊपर दया करो। ९२ तुम मरुतदेव का स्मरण अपने मन में करो, क्योंकि वह आपके विवाहित पति हैं। ९३ वह जाकर शंकर जी से वज्र का लँगोट लेकर आवें।

से जाइ ईश्वरंकठारू बज्रकाछटा आणु । से काछटा गिलिले मुँ जनम हेबितेणु ९४
से काछटा मोर हेब डोर जे कौपुनि । तेबे तोर गर्भरू मुँ जनमिबि पुणि ९५
शुणिण प्रभञ्जनि मरुत सुमरिला । तत्क्षणे मरुत देबता पाशे मिलिला ९६
प्रभञ्जनि बोइला शुणिमा हे देब । मोते जे बिडम्बन कल हे सुलभ ९७
तो बीर्य्ये देबता मो गर्भरे रहिला । बार बरष जे एथिरे बहिगला ९८
जनम नोहिला जे कुमर एबे पुण । गर्भकु आरततरे कहिलि मुँहि जाण ९९
से गर्भर भितरे पुरुषेक थाइ । बोइला बज्र काछटा गिलिले जन्म होइ ६००
सेथिपाइँ तुम्भंकु मुँकलि सुमरणा।तुम्भेजाइईश्वरंकठारूबज्रकाछटा आणकिना६०१
शुणि करि मरुत अइला बेग होइ । सकल चरित्र मोर आगे सेहू कहि २
शुणि करि मुँ ताहाकु बज्र काछटा देइ । से बज्र काछटा घेनिण चलि जाइ ३
प्रभञ्जनि पाशरे होइला परबेश । बोइला आरे सखीरे बेगकरि ग्रास ४
नेइण प्रभंञ्जनि गर्भकु क्षेपि देला । गर्भरे थाइ बालक काछटा पिन्धिला ५
मरुत देबता जे गलाक निजपुर । एहि समयरे जे जन्मिला कुमर ६
मेष संक्रान्ति दिन उदय बेलरे । जात होइ कुमर बसिला आगरे ७
माताकु बोइला मोते खाइबाकु दिअ । माता बोइला रे तु शुण कुमर प्रिय ८
पूर्बदिगे रंग सुरंग फल देख । से फल ग्रास कले हरण हेब भोक ९

उसे निगलने पर ही मैं जन्म लूंगा। ९४ वही लँगोट मेरा कौपीन होगा। तभी मैं तुम्हारे गर्भ से निकलूँगा। ९५ यह सुनकर प्रभंजनि ने पवनदेव का स्मरण किया। उसी समय पवनदेव वहाँ आ गये। ९६ प्रभंजनि ने कहा, हे देव! सुनिये। आपने मुझे विडम्बना प्रदान की है। ९७ तुम्हारे वीर्य से देवता मेरे गर्भ में रह गया है और इस प्रकार बारह वर्ष बीत गये। ९८ उस कुमार का अभी भी जन्म नहीं हुआ। मैंने व्याकुल होकर गर्भ से कहा। ९९ उस गर्भ के भीतर स्थित पुरुष नेकहा कि वज्र का लँगोट निगलने से ही उसका जन्म होगा। ६०० मैंने इसीलिए आपका स्मरण किया। आप जाकर भगवान शंकर से वज्र का लँगोट ले आयें। ६०१ यह सुनकर पवनदेव वेग से आये और उन्होंने सारी बात मुझसे बतायी। २ यह सुनकर मैंने उसे वज्र की काछिनी प्रदान की, जिसे लेकर वह चले गये। ३ वह प्रभंजनि के पास पहुँचे और बोले, हे सखी! शीघ्र ही इसे ग्रास करो। ४ प्रभंजनि ने उसे गर्भ में डाल लिया। गर्भ में स्थित बालक ने कछोटा पहन लिया। ५ पवनदेव अपने घर चले गये। इसी समय उस बालक का जन्म हुआ। ६ मेष संक्रान्ति के दिन निकलने पर वह बालक जन्म लेकर आगे बैठ गया। ७ उसने माता से कहा कि मुझे खाने को कुछ दीजिए। माता ने कहा, मेरे प्यारे बेटे! सुनो। ८ पूर्व दिशा की ओर यह लाल-लाल फल देखो। वह फल खाने से तुम्हारी क्षुधा शान्त हो जाएगी। ९

शुणिण कुमर जे शुन्यरे चलिगला । आदित्यङ्क रथपरे जाइण वसिला ६१०
सात सरि करि जे लांगुड़े बान्धे ताकु । आकुलरे आदित्य चिन्तिले इन्द्रंकु ६११
वज्रधरिण देव बेगे चलि गले । हनुकु देखिण वज्रशर प्रहारिले १२
वज्रशरे मोह जे होइला मारुति । देखिण पिता मरुत रुन्धिला चउकति १३
समस्ते आरत हेले पवन न बहिबारू । ब्रह्मांक ठारे जाइ कहिले देवगुरु १४
बोइले सृष्टिदेव सरिला आज त । पुत्र नाश जिवारू रून्धिला मरुत १५
शुणिण देब त्रिदश देवता अइले । मारूति आगरे जाइ प्रवेश होइले १६
मारुति किजिआइँ अनेक वल देले । चेता पाइ मारुति उठिण वसिले १७
वोइला शचीपतिरे किस मोर हेला । अकारणे किपां मोते माइलु वोइला १८
वेदवर बोइले अन्याय हेला तार । वालक कुमरकु से मारे वज्रशर १९
ए दोषरू दुइ मास इन्दपद तुटि । दुइ मास गले इन्द्र हेबु जे तुहिटि ६२०
अदोषरे आसिण वान्धिलु तुहि पुण । लंकागढ़े वन्धा परे हेबु तु जे जाण ६२१
एते कहि सर्ब देबे तांकर वल देले । बेदवर मुकुट कुण्डल समर्पिले २२
बोइले जनम होइ बल तो अप्रमित । जेणु सदाशिबर बीर्ज्यु हेलु जात २३

यह सुनकर वालक शून्य में चला गया और जाकर सूर्य के रथ पर वैठा । ६१० उसने सूर्य को अपनी पूँछ के सात लपेटों में बाँध लिया । तब व्याकुल होकर सूर्य ने इन्द्र का स्मरण किया । ६११ देवराज इन्द्र वज्र लेकर शीघ्र ही चल पड़े । उन्होने हनुमान को देखकर उन पर वज्र बाण का प्रहार किया । १२ वज्र के आघात से पवनात्मज चेतनाशून्य हो गये । यह देखकर पिता वायुदेव ने चारों ओर से अपने को रोक लिया । १३ पवन के न चलने से सभी लोग दुखी हो गये । तब देवगुरु ने ब्रह्मा के समक्ष जाकर निवेदन किया । १४ उन्होंने कहा, हे देव ! आज से आपकी सृष्टि समाप्त हो गई । पुत्र के मर जाने से पवन रुक गया है । १५ यह सुनकर ब्रह्मा-सहित सभी देवता जाकर पवनदेव के सामने प्रविष्ट हुए । १६ उन्होंने पवन के पुत्र को जीवनदान देकर वहुत शक्ति प्रदान की । चेतना पाकर पवननन्दन उठकर बैठ गये । १७ उन्होंने कहा, अरे शची के स्वामी इन्द्र ! मुझे क्या हो गया था ? विना कारण ही आपने मुझे क्यों मारा ? १८ ब्रह्मा जी ने कहा कि यह तो उनका अन्याय था जो उन्होंने एक कुमार वालक पर वज्र का प्रहार किया । १९ इस दोष के कारण तुम इन्द्रपदवी से दो महीने के लिए च्युत हो जाओगे । दो महीने वीतने पर तुम पुनः इन्द्रपद पर आसीन होगे । ६२० और तुमने (हनुमान ने) विना दोष के आकर सूर्य को वाँध लिया, इसलिए लंका दुर्ग में तुम भी एक वार वाँधे जाओगे । ६२१ इतना कहकर सभी देवताओं ने उन्हे वर प्रदान किये । ब्रह्मा जी ने उन्हे मुकुट और कुण्डल समर्पित किये । २२ उन्होंने कहा कि तुम शंकर के वीर्य से उत्पन्न हुए हो, इसी कारण से जन्म लेते ही तुम

निर्बल होइण तु किछि दिन थिबु। श्री रामकु देखिले तु बलबन्त हेबु २४
रामायण जुद्धरे होइबु कबाट त। एते कहि बेदबर गलेक तुरित २५
देबताए गले जे अइला मारुति। शुणिकरि पार्बती हेले शान्ति मुर्ति २६
पार्बती पचारिले शुण देब शूली। बेदबर केउँ कपि संगरे बिहरि २७
से कथा मोर आगे कह फेड़ि करि। शुणिले प्रतेजिबि मनरे मोहरि २८
ईश्वर बोइले शुण देवी शाकम्बरी। एक दिन बेदबर बिचार मने करि २९
साबित्री कन्याकु संगे घेनिण बेदबर। बदरि बनरे जाइ प्रबेश हेले पुण ६३०
भालू पल देखि करि मनरे बिचारिले। साबित्री कर जोड़ि जणाण आगे कले ६३१
ए बोइले ए भालूरूप तुम्भर हुअन्ता। भालूनारी रूप जे मोहर सम्भबन्ता ३२
तेबे यांङ्कपरि जे शृङ्गार रतिलीला। एमानंक शृङ्गारकु चित्त मो बलिला ३३
शुणिण बेदबर होइले भालू पुण। साबित्री रूप गोटिक गला बदलिण ३४
रतिरसे बेनि जन लीला तहिं कले। बेदबर बीर्ज्यकु साबित्री सम्भालिले ३५
ततक्षणे पुत्रेक जे जात हेला पुण। दिबस नुहइ जे रजनी समयेण ३६
चन्द्रदेबता तेजरे दिशइ निर्मल। देखिण साबित्री जे धरिण निज शरीर ३७

अपरिमित बलवान हो गये हो। २३ तुम कुछ दिन निर्बल होकर रहो। श्रीराम के दर्शन से तुम पुनः बलवान हो जाओगे। २४ रामायणकालीन युद्ध में तुम (द्वार होगे) मुख्यता प्राप्त करोगे। इतना कहकर ब्रह्मा वहाँ से तुरन्त चले गये। ६२५ देवताओं के चले जाने पर पवननन्दन आ गये। यह कथा सुनकर पार्वती शांत हो गई। २६ फिर पार्वती ने कहा, हे शूलधारी शंकर ! सुनिये। ब्रह्मा जी ने कौन-से कपि के साथ विहार किया है। २७ यह कथा हमारे समक्ष आप खोलकर कहें जिसे सुनकर मेरे मन में विश्वास हो जाये। २८ शंकर जी बोले, हे देवी शाकम्बरी ! सुनो एक दिन ब्रह्मा ने मन में विचार करके सावित्री को साथ लेकर बदरीवन में प्रवेश किया। २९-६३० उन्होंने भालुओं के दल को देखकर मन में विचार किया। तभी सावित्री ने हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करते हुये कहा ! ६३१ यदि आपका रूप भालू का हो जाता और मैं भी भालू नारी के रूप में हो जाती तो मैं भी इन्हीं लोगों के समान रति क्रीड़ा करती। इन लोगों के समागम को देखकर हमारी भी इच्छा जाग्रत हो रही है। ३२-३३ यह सुनकर ब्रह्मा जी भालू और सावित्री भालूपत्नी के रूप में बदल गये। ३४ उन दोनों ने मिलकर वहाँ संभोग किया। ब्रह्मा जी के वीर्य को सावित्री ने सम्भाला। ३५ उसी समय एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह दिन नहीं था, रात्रि का समय था। ३६ चन्द्रमा की चाँदनी में वह निर्मल दिखाई दे रहा था। उसे देखकर सावित्री ने अपना रूप धारण कर लिया। ३७

वेदबर निजर स्वरूप धइले। शशधरंकु डाकि जे आज्ञा तहिँ देले ३८
बोइले ए पुत्रकु तुम्भे जे सम्भाल। रामायण जुद्धरे होइब एहू सार ३९
ए जम्बूबती ठारे पुत्रकु तू देबु। जम्बेबर नाम याकु आमेदेलु बाबु ६४०
एते कहि साबित्री संगे घेनि देब। यशोवंतीपुर रे प्रवेश हेले बेग ६४१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी। जम्बोबती नारी जे सेठारे जाइ मिलि ४२
बालक रोदन देखि चन्द्रकु पचारे। से दिन शुद्धस्नान होइछि ताहारे ४३
ताहार पति संगरे नाहिं सेहि दिन। मुकुत नारायणंकु दर्शन करे पुण ४४
जम्बोबती बोले एहि कुमर काहार। भालूर शरीरत अटइ बलीयार ४५
चन्द्रदेबता बोले बिधाता जात कले। मोते देइ ए पुत्रकु निजस्थाने गले ४६
एहि पुत्र नामकू जम्बोव देइछन्ति। सबु दिने अमर एहि देह स्थित ४७
बोइले एहि पुत्रकु जम्बोबतीकु देब। ताहाकु देले सेहि जत्नरे पालिब ४८
शुणि करि जमुना जे आनन्द होइला। बिधाता पुरुष जे मो ठारे दया कला ४९
मोहर शुद्ध स्नान पालि आज दिन। तुम्भठारे शशिधर बलिला मोर मन ६५०
मोर संगे तुमे आज करिब श्रृंगार। मो गर्भरे तुम्भ बीर्ज्य पुत्र जात कर ६५१
शुणिण शशीधर देबता तोष हेले। जम्बू नारी संगरे रमण रति कले ५२

ब्रह्मा जी ने अपना स्वरूप धारण करके चन्द्रमा को आज्ञा दी। ३८ उन्होंने कहा कि तुम इस पुत्र का पालन करो। रामायण के युद्ध में यह मुख्य योद्धा होगा। ३९ इस पुत्र को तुम जम्बूवती को दे देना। हमने इसका नाम जामवंत रख दिया है। ६४० इतना कहकर सावित्री को साथ लेकर ब्रह्मा जी यशोवंती नगर में जा पहुँचे। ६४१ हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात की कथा सुनो। वह जम्बूवती स्त्री उस स्थान पर जा पहुँची। ४२ बालक को रोते हुये देखकर उसने चन्द्रमा से पूँछा। उस दिन उसका शुद्ध स्नान हुआ था। ४३ उसके पति उस दिन साथ नही थे। वह मुक्ति नारायण के दर्शन के लिये गये थे। ४४ जम्बूवती ने कहा कि यह पुत्र किसका है। इसका शरीर तो बलवान भालू का है। ४५ चन्द्रदेव ने कहा कि ब्रह्मा जी ने इसे पैदा किया है और इस पुत्र को मुझे देकर वह अपने स्थान को चले गये है। ४६ उन्होंने इस पुत्र का नाम जामवंत रखा है। यह चिरकाल तक अमर होकर इसी शरीर में स्थित रहेगा। ४७ उन्होने इस पुत्र को जम्बूवती को देने के लिये कहा है जो इसका यत्न से पालन-पोषण करेगी। ४८ यह सुनकर जमुना प्रसन्न हो गई कि ब्रह्मा जी ने मेरे ऊपर दया की है। ४९ आज मेरा शुद्ध स्नान का दिन था। हे चन्द्रदेव ! आज मेरा मन तुममें रम गया है। ६५० आज तुम मेरे साथ रमण करके अपने वीर्य से मेरे गर्भ से पुत्र उत्पन्न करो। ६५१ यह सुनकर चन्द्रदेव संतुष्ट हो गये और उन्होंने जम्बूनारी के साथ रति-क्रीड़ा की। ५२ संभोग की समाप्ति पर चन्द्रमा का वीर्य स्खलित होकर

रमण सरिबारू चन्द्र बीर्य्य टलि। जम्बू नारी गर्भरे तत्‌क्षणे जाइ मिलि ५३
तत्‌क्षणे जम्बूठारू पुत्र जात हेला। भालूर शरीर गोटि अंगदिशे तोरा ५४
देखिण चन्द्र देबता आकाशरे रहि। जम्बू दुइ पुत्रकु आनन्दे क्षीर देइ ५५
ताहार स्वामी जे जम्बेब नामे भालू। बदरि नारायण जे दर्शन करिबारू ५६
नारायण प्रसन्न होइण ताकु कहि। दुइगोटि कुमर प्रापत तोते होइ ५७
ब्रह्मांकर एक पुत्र चन्द्रंक नन्दन। साबित्री रोहिणीठारू जनम हेले पुण ५८
भालू रूप धरि जे कुमर जात कले। तोर घरिणी से कुमर नेइ देले ५९
से दुइ कुमरकु पालू तो जुबती। तोते सुमरइ तुहि जाअरे तड़ति ६६०
देबंकर उपकारि हेब ए कुमर। जतनरे पालिबु तु बहु धर्म तोर ६६१
शुणिण आनन्द जे जम्बेब नामे भालू। सेठारू शीघ्ररे चलिला बेलु बेलु ६२
जुबती पाशरे जाइ हेला परबेश। बालकंकु देखिण होइला हरष ६३
जुबती पुत्र देखिण निज स्थाने गला। बेनि पुत्रंकु जतने से नारी पालिला ६४
शुणिण पार्वती जे मनरे तोष हेले। नारायण बइकुण्ठे किस लीला कले ६५
ईश्वर बोइले अनन्त नारायण। कमलाकु घेनि संगे बिलसे आपण ६६
मासके देवतापरे करन्ति दरशन। पक्षके ऋषिमाने देखन्ति जाइ पुण ६७

जम्बूनारी के गर्भ में जा पहुँचा। ५३ उसी समय उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका शरीर भालू का था और वह अत्यन्त बलवान था। ५४ यह देखकर चन्द्रदेवता आकाश में स्थित हो गये और जम्बू ने दोनों पुत्रों को आनन्द से दूध पिलाया। ५५ उसका स्वामी जम्बे नाम का भालू था। बद्रीनारायण के दर्शन करने के कारण भगवान उससे प्रसन्न होकर बोले कि तुम्हें दो पुत्र प्राप्त होंगे। ५६-५७ एक पुत्र ब्रह्मा का और एक चन्द्रमा का सावित्री तथा रोहिणी से उत्पन्न हुये हैं, ५८ उन्होंने भालू रूप धारण करके पुत्र उत्पन्न किये और उन्हें तुम्हारी पत्नी को दे दिया है। ५९ तुम्हारी पत्नी उन दोनों कुमारों का पालन करें। तुम शीघ्र ही जाओ। वह तुम्हारा स्मरण कर रही है। ६६० यह बालक देवताओं के लिये उपकारी होंगे तुम यत्न से उनका पालन करना। इसमें तुम्हें बहुत धर्म मिलेगा। ६६१ जाम्बें नाम का भालू यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और वहाँ से शीघ्रता से चलकर अपनी स्त्री के पास जा पहुँचा। वह बालकों को देखकर प्रसन्न हो गया। ६२-६३ स्त्री तथा पुत्र को देखकर वह अपने स्थान पर चला गया। उस स्त्री ने दोनों पुत्रों को यत्न से पाला। ६४ यह सुनकर पार्वती के मन में संतोष हो गया। उन्होंने फिर पूछा कि नारायण ने बैकुण्ठ में क्या लीला की। ६५ शंकर जी ने कहा, कि अनन्तनारायण लक्ष्मी को साथ लेकर स्वयं बिहार में लग गये। ६६ महीने में एक बार देवता तथा पन्द्रह दिनों में एक

तिनि दिने बेदबर देखइ नेत्ररे । पाँञ्चदिनरे मुहिँ मिलइ पाशरे ६८
श्री हरि पाटणारे जेतेक छन्ति बासी । रात्रदिने दर्शन करन्ति सर्बे आसि ६९
एहिरूपे षड़सत्र जुग बहिगला । आनन्दरे श्रीहरि बैकुण्ठे बिहरिला ६७०
पार्वती बोइले जे जुगेक बहिगला । रावण देबतांकु किम्पाइँ न लोढ़िला ६७१
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण प्राण सही । शतमुखा रावण संगरे जुझे जाइ ७२
सत्यजुगरे से जे चउद सहस्र । एते दिन परिजन्ते जुझिला दशईश ७३
शतेमुखा जिणिण धरिण घेनि गला । निज मन्दिरे ताकु नेइण बन्दि कला ७४
बालि जे बलरे होइला बलबन्त । चारि समुद्रे तर्पण करइ जाइ नित्य ७५
रणगोल बालि जे कर्णरे शुणिला । अलंका गढ़रे जे प्रवेश जाइ हेला ७६
देखिण शतेमुखा पचारे खर करि । किरे बानर किपाँ तु अइलु ए पुरी ७७
से बलि बोइला तु रे न जाण कि मोते । तोर बल कलिबाकु आसि अछि एथे ७८
शुणिण शतेमुखा धइला जाइ बले । से बालि डेणामेलान्ते पड़िलाक तले ७९
उठिण कर जोड़ि कहइ शतानन । बोले तो बलकु मो बल होइला निउन ६८०
शुणिण बालिबीर सन्तोष होइला । एमन्त समयरे बिश्वबार बला ६८१

बार ऋषि लोग जाकर उनके दर्शन करते थे । ६७ तीसरे दिन ब्रह्मा जी उन्हें अपनी आँखों से देखते थे । और मैं पाँच दिनों में उनके पास जाकर मिलता था । ६८ जो भगवान के लोक निवासी थे वह आकर रात-दिन उनके दर्शन करते थे । ६९ इस प्रकार छै हजार युग व्यतीत हो गये । वासुदेव आनन्द से वैकुण्ठ में विहार कर रहे थे । ६७० पार्वती ने कहा कि एक युग बीत गया फिर भी रावण ने देवताओं की खोज क्यों नहीं की । ६७१ महादेव जी बोले, हे प्राण संगिनि ! तुम सुनो । वह जाकर शतकण्ठ रावण के साथ युद्ध करने लगा । ७२ सतयुग में चौदह हजार वर्षों तक दसकण्ठ युद्ध करता रहा । ७३ शतकण्ठ जीतकर उसे पकड़कर ले गया और अपने महल में उसे ले जाकर वन्दी बना लिया । ७४ बालि भी शक्ति में अत्यन्त बलवान हो गया था । वह नित्य प्रति चारों समुद्रों में जाकर तर्पण किया करताथा । ७५ वालि ने अपने कानों से युद्ध का कोलाहल सुना । वह अलंका दुर्ग में जा पहुँचा । ७६ देखते ही शतकण्ठ प्रखरभाव से पूछने लगा । अरे वानर ! इस नगर में तू किसलिये आया है । ७७ उसने क्रोध करते हुए कहा, क्या तू मुझे नहीं पहचानता । मैं तेरी शक्ति की थाह लेने यहाँ आया हूँ । ७८ ऐसा सुनकर शतकण्ठ ने वलपूर्वक उसे जाकर पकड़ लिया । बालि के बाहु की पकड़ से वह पृथ्वी पर गिर पड़ा । ७९ फिर शतकण्ठ ने उठकर हाथ जोड़ते हुए कहा कि तुम्हारे बल से मेरा बल कम हो गया है । ६८० यह सुनकर पराक्रमी बालि सन्तुष्ट हो गया । इसी समय सतयुग समाप्त हो गया

सत्यजुग शेष जाइ त्रेता जुग हेला। दशानन रोदन बालि जे शुणिला ८२
शतेग्रीबकु पचारे बानर राजन। बोइला तोर पुरे के करइ रोदन ८३
शतेग्रीब बोइला से त्रिश्रबार सुत। मोर संगे रण से कलाक बहुत ८४
मोते से दशग्रीब युद्धरे हारिला। बन्धने रखिछि शुण-शुण हेबालिभला ८५
शुणिण बालि बीर से ठारे मिलिला। रावणकु बन्धनु मुकुलाइ देला ८६
मइत्र करिण सेहि मेल कराइला। सेठारू रावण जे लंकापुर गला ८७
बालि जाइ प्रबेश किष्किन्ध्या कटकरे। शुणि भगवती कहे ईश्वर आगरे ८८
एरूपे सहस्रेक बरष बहि गला। स्वर्गरे देवताए निश्चिन्ते रहे परा ८९
भगवती बोइले शुण हे ईशान। स्वर्गरे देवताए विचार कले पुण ६९०
कि रूपे नारायणंकु जन्म कराइले। कि रूपे दैत्य मराइ निश्चिन्ते से हेले ६९१
त्रिपुरारी बोइले देब बिचारिले कूट। प्रतिदिन बिचार करन्ति सभारेत ९२
मासकरे थरे बासुदेवंक आगे कहि। फेरिण आसि निज नबरे देबे रहि ९३
तपन कुलरे जे रघुराज पुण। शते जाग करिबाकु होइले भाजन ९४
अगस्ति ऋषिकि जे बरण करि नेले। जाग शाल शोधाइण निर्मल जे कले ९५
लक्षणबन्त घोड़ाकु ता पुत्र हस्ते देला। स्वर्गरे इन्द्र देखि से घोड़ा अटकिला ९६

और त्रेता युग लग गया। तभी बालि को विश्रवानन्दन दशानन का रुदन सुन पड़ा। ६८१-८२ बानर राज बालि ने शतकण्ठ से पूछा कि तुम्हारे महल में कौन रुदन कर रहा है?। ८३ शतकण्ठ ने उत्तर दिया कि वह विश्रवा का पुत्र रावण है। उसने मेरे साथ बहुत युद्ध किया। दश-कण्ठ मुझसे युद्ध में पराजित हो गया। हे बालि ! मैंने उसे बाँध कर रख लिया है। ८४-८५ यह सुनकर पराक्रमी बालि वहाँ गया और उसने रावण को बन्धन से मुक्त करवा दिया। ८६ उसने उससे मित्रता करवाकर मेल करवा दिया। तब रावण वहाँ से लंका चला गया। ८७ बालि किष्किन्धा दुर्ग में जा पहुँचा। यह सुनकर भगवती पार्वती शंकर जी से बोलीं। ८८ इस प्रकार हजार वर्ष व्यतीत हो गए। स्वर्ग में देवता लोग निश्चिन्त होकर रह रहे थे। ८९ देवी पार्वती ने कहा हे महादेव ! सुनिये। स्वर्ग में देवताओं ने फिर क्या विचार किया। ६९० उन्होंने किस प्रकार से भगवान को अवतरित कराया और किस प्रकार से दैत्यों का वध कराकर निश्चिन्त हुये। ६९१ त्रिपुरासुर के शत्रु शंकर जी बोले कि देवता लोगों ने एक षडयन्त्र रचा जिस पर वह प्रतिदिन सभा में विचार करते थे। ९२ महीने में एक बार जाकर उन्होंने भगवान के समक्ष सब कुछ बता दिया और लौटकर अपने लोकों में आकर रहने लगे। ९३ सूर्य वंश के महाराज रघु ने सौ यज्ञ किये। ९४ उन्होंने अगस्त ऋषि को वरण करके यज्ञशाला का शोधन कराकर उसे निर्मल करवा दिया। ९५ लक्षणवान् घोड़े को उन्होंने अपने पुत्र के हाथों सौंप दिया। स्वर्ग में इन्द्र ने देखकर वह

धनु धरिण आगे जे जुझइ बाल पोइ । देबता गण घेनिण इन्द्र जुझे जाइ ९७
बरषे परिजन्ते ता संगे जुद्ध कला । इन्द्रंकु बान्धिनेइ रथरे पकाइला ९८
देबंकु मारन्ते से पलान्ति देब गण । दशदिगपाले जाइ हारि गले पुण ९९
इन्द्र देवता जे अजकु कहे वाणी । स्वर्गरे इन्द्र जाइ हुअरे पुत्रमणि ७००
दुहें जाइ मिलि आम्भे होइबा नृपति । एते बोलि दुइ जण स्वर्गरे मिलन्ति ७०१
दुइ जण सलारे स्वर्गरे इन्द्र हेले । बरषक अन्ते इन्द्र अज जे होइले २
पितार आगरे पुत्र जाइण कहिला । बरषके मुँ इन्द्र हेलि बोलिण बोइला ३
अनेक जुद्ध कले मिलिण देबगण । समस्ते हारिण जे गले निज स्थान ४
इन्द्र हारिबारू जे संगरे मोते नेला । अर्द्धक इन्द्रपद मोते जे समर्पिला ५
तोते देखिबा निमन्ते अइलुँ एथि पिता । शुणिण रघुराजा होइला अचिन्ता ६
कुशतिल पाणि जे करे धरि पुण । इन्द्रकु दान करि देले शते जाग जाण ७
दान घेनि इन्द्र जे स्वर्गपुर गला । सुर राजा पणरे जाइण बसिला ८
सेठारे रघुराज शतेक जाग कले । दुइ शत बरषरे जाग निर्भा हेले ९
देबताए हविखाइ हेले तोषमान । बाहुड़िण ऋषिकि जे देले बहूदान ७१०
मुनिंकि मेलाणि देइ सन्तोष कराइले । दुःखी दरिद्रमानंकु अनेक धन देले ७११

घोड़ा पकड़ लिया । ९६ धनुष धारण करके उस बालक ने आगे जाकर युद्ध किया । देवताओं को लेकर इन्द्र ने जाकर युद्ध किया । ९७ एक वर्ष तक युद्ध के उपरान्त उसने इन्द्र को बाँधकर रथ में गिरा दिया । ९८ देवताओं को मारने पर वह सब भाग गये । दसों दिग्पाल भी जाकर हार गये । ९९ देवराज इन्द्र ने राजकुमार अज से कहा, हे पुत्रश्रेष्ठ ! तुम जाकर स्वर्ग में इन्द्र वनो । ७०० हम दोनों मिलकर स्वर्ग के राजा बनेंगे । ऐसा कहकर दोनों स्वर्ग पहुँच गये । ७०१ परामर्श से दोनों व्यक्ति स्वर्ग में इन्द्र पद पर बैठे । उस वर्ष में अज इन्द्र बनें । २ फिर पुत्र ने जाकर पिता से कहा कि मैं एक वर्ष के लिये इन्द्र वन गया । ३ देवताओ ने मिलकर बहुत युद्ध किया परन्तु सभी हारकर अपने स्थान को चले गये । ४ हार जाने के कारण इन्द्र मुझे साथ ले गया और उसने आधा इन्द्रासन मुझे समर्पित कर दिया । ५ हे पिता ! मैं आपके दर्शन करने के लिए आया हूँ । यह सुनकर महाराज रघु चिन्ता से मुक्त हो गये । ६ उन्होंने हाथ में कुश, तिल और जल लेकर सौ यज्ञ इन्द्र को दान कर दिये । ७ दान लेकर इन्द्र स्वर्ग लोक चले गये तथा देवराज के पद पर जा बैठे । ८-९ वहाँ पर महाराज रघु ने सौ यज्ञ किये । दो सौ वर्षो में उनके यज्ञ समाप्त हुए । हवि का भक्षण करके देवतागण सन्तुष्ट हो गये । महाराज रघु ने लौटकर ऋपियों को वहुत दान दिया । ७१० उन्होंने मुनि को सन्तुष्ट करके विदा दी । दुखियों तथा दरिद्रों को प्रचुर मात्रा में धन प्रदान

पुत्रकु राजा करि चलिले रघुराज। बनस्ते तपकरि चले जमुना तटभाग १२
एक दिने रावण अश्वरे बुलिगला। रघुतपिकि देखि से जीबने माइला १३
रघुराज बोइले शुणरे असुर। निर्दोषिकि माइलु दोष जे हेला तोर १४
मोर बंशर हस्ते नाश हेबे तोर बंश। निर्मूल होइबे तोर न रहिबे अंश १५
एते कहि राजन जे स्वर्गपुर गला। देखिण इन्द्र देबता गउरब कला १६
अमराबतीपुररे नेइण स्थान देला। भाग्यरथि मानधाता संगरे रहिला १७
पार्बती बोइले तार पुत्र जे राजा हेले। पितार कथाशुणि किस से बोइले १८
ईश्वर बोइले अज नृपतिकर्णे शुणि। अनेक सैन्य बल से सजकला पुणि १९
नारद आसिण जे अजकु देखाइले। तोर हाते तार मृत्यु नाहिं से बोइले ७२०
गले तु अकारण होइब तोर जुद्ध। पिता शाप देइण गले स्वर्गपुर मध्य ७२१
शुणिण अजराजा शान्त होइ रहि। पितार क्रिया सारि अनेक दान देइ २२
शतेक राणी से जे बिभा हेला पुण। सेहि जाग करिथिले पुत्र नथिबारेण २३
हर्बिभाग्य खाइदेब संतोष होइले। विप्र ऋषि मानंकु अनेक धन देले २४
दुःखी दरिद्र अनेक धन रत्न नेले। पात्र मंत्री अमनात्य आनन्द होइले २५
अनेक प्रशंसा जे करन्ति सर्ब जन। दश सस्र बरष राज्य कला से राजन २६

किया। ७११ वह पुत्र को राज्य देकर यमुना तट पर जाकर तपस्या करने लगे। १२ एक दिन रावण अश्व पर बैठकर घूमने निकला। उसने रघु को तपस्या करते देखकर उन्हें जान से मार दिया। १३ महाराज रघु ने कहाकि रे दैत्य ! सुन ! तूने निर्दोषी को मारकर अपराध किया है। १४ मेरे वंश के हाथों तुम्हारा वंश नष्ट होगा। तुम निर्मूल हो जाओगे। तेरा कोई अंश भी नहीं बचेगा। १५ इतना कहकर राजा स्वर्ग लोक को चले गये। उन्हें देखकर इन्द्र ने उनका सत्कार किया। १६ उन्हें ले जाकर इन्द्र ने अमरावतीपुर में स्थान दिया। वह भाग्यरथी मान्धाता के साथ रह गये। १७ पार्वती बोली कि उनका पुत्र जो राजा बना था उसन पिता के समाचार सुनकर क्या कहा ?। १८ महादेव जी ने कहा महाराज अज ने कानों से सुनकर अपनी अनेक सैन्य वाहिनी सजाई। १९ महर्षि नारद ने आकर उनसे कहाकि रावण की मृत्यु तुम्हारे हाथों से नहीं है। ७२० तुम्हारे पिता शाप देकर स्वर्ग को चले गये हैं। तुम्हारे जाने पर तुम्हारा युद्ध व्यर्थ ही होगा। ७२१ यह सुनकर महाराज अज ने शान्त होकर पिता की क्रिया सम्पूर्ण की और बहुत-सा दान दिया। २२ फिर उन्होंने सौ रानियों से विवाह किया ! पुत्र न होने के कारण उन्होंने यज्ञ किया। २३ हवि का भाग खाने से देवता सन्तुष्ट हो गये। राजा ने विप्र तथा ऋषियों को प्रचुर धन प्रदान किया। २४ दुखी तथा दरिद्रों को प्रचुर रत्न तथा धन प्राप्त हुआ। पात्र मन्त्री अमात्य आदि सभी प्रसन्न हो गए। २५ सभी लोग उनकी बहुत प्रशंसा करते थे। उस राजा न दस हजार

देबगण स्वर्गरे विचार कले पुण । राजार पुत्र हेले प्रजार कारण २७
एमन्त बिचारि देवे बहुत स्तुति कले । वेदवर सेठारे आसिण मिलिले २८
देवताए बोले अज राजार हेले पुत्र । अनेक से उपकार करिव आम्भन्त २९
वेदवर देबंकु घेनिण चलि गले । कश्यप ऋषि पुरे प्रवेश जाइ हेले ७३०
ऋषिंकि देखि सर्बे कले नमस्कार । सुकल्याण करि ऋषि आनन्दे हेले भोल ७३१
सकल देबतांकु पचारे पितामह । केवण कारणे अइल मोर गृह ३२
बेदबर बोइले आम्भे जे बड़ कष्टि । दैत्य वल आम्भंकु धरिण घन्ति शास्ति ३३
देबाधि देवराज जे बोलन्ति चक्रधर । क्षीर सागर भितरे शयन तांकर ३४
सहस्र बरष परिजन्ते जे सुमरिलु । चित्त निश्चल करि जे मनंरे ध्यायिलु ३५
तेवे हे निद्राभंग नोहिला देवंकर । अंगिरा ऋषि जाइ मिलिले सेठार ३६
अनन्त शयन जे पाशकु चलि गले । ॐकार शवदरे श्रीहरी उठिले ३७
आम्भर ध्यायिवार जाणिण देबहारी । सेऋषिर आगरे कहिले विस्तारि ३८
बोइले से मानंकु आगकु तुम्भे आण । शुणिण मुनिवर कहिले जे पुण ३९
आज्ञा पाइ देवता सकल आम्भे गलु । आम्भर वेदना जे ताहांकु जणाइलु ७४०
बोइले बानर भालू रूपे पुत्र कर जात । तेवे से असुरेटि मरिबे नियत ७४१

वर्ष राज्य किया । २६ फिर स्वर्ग में देवताओं ने विचार किया कि राजा के पुत्र होने से प्रजा का निस्तार होगा । २७ ऐसा सोचकर देवताओं के बहुत स्तुति करने पर वहाँ पर वेदवर ब्रह्मा जी आ गए । २८ देवताओं ने कहाकि अज राजा के पुत्र हो जाने से वह हम लोगों का बहुत उपकार करेगा । २९ ब्रह्मा जी देवताओ को लेकर चल दिये तथा कश्यप ऋषि के आश्रम में जा पहुँचे । ७३० महर्षि को देखकर सभी ने उन्हें नमस्कार किया । ऋषि ने आशीर्वाद देकर प्रसन्नता प्राप्त की । ३१ बाबा ने सभी देवताओं से पूंछा कि आप लोग किस कारण से हमारे निवास पर पधारे है । ३२ ब्रह्मा जी ने कहा कि हम बड़े कष्ट में है । दैत्य लोग बलपूर्वक हमें पकड़ कर त्रास दे रहे है । ३३ देवाधिदेव, जिन्हे चक्रधारी कहा जाता है, वह क्षीरसागर में शयन कर रहे है । हम लोगों ने एक हजार वर्ष पर्यन्त उनका स्मर्ण किया । चित्त को एकाग्र करके हृदय में उनका ध्यान किया । ७३४-७३५ फिर भी देव की निद्रा भंग नही हुई । तव तक अंगिरा ऋषि वहाँ जा पहुँचे । ३६ वह अनन्त-शायी भगवान के पास चले गए । तव श्री भगवान ओंकार शव्द से उठ पड़े । ३७ प्रभु ने हम लोगों के ध्यान के विषय में जानकर उन्होंने ऋषि के समक्ष विस्तार से कहा । ३८ उन्होंने देवताओं को अपने सामने लाने के लिए उनसे कहा । यह सुन कर अंगिरा मुनि ने कहा । ३९ आज्ञा पाकर हम तथा सभी देवता वहाँ गए और अपना दुःख उन्हें सुना दिया ७४० उन्होंने कहा कि तुम लोग वानर और भालू के रूप में पुत्रउत्पन्न करो । तभी वह राक्षस

आम्भे जात होइबुटि तपनर कुले । अजोध्या नग्नरे जे दशरथंक घरे ४२
दैत्यंकु मारि आम्भे करिबु निश्चिन्त । एते बोलि आज्ञा देले कमलार कान्त ४३
ताहांकर आज्ञारे समस्ते आम्भे गलुँ । बानर भालुंक संगे जाइण प्रीति कलुँ ४४
नउ सागर कुमर जात जे कराइलुँ । वसुदेबर आज्ञारे से कथा आम्भे कलुँ ४५
एबे तुम्भंकु जणाण करूछुँ जे पुण । मर्त्यपुरे तुम्भे जात होइब जे जाण ४६
अज राजा कोलरे तुम्भे जात हेब । दशरथ नाम जे तुम्भर बोलाइब ४७
तुम्भर कोले जात होइबे बासुदेव । दुइ नारी घेनि तुम्भे मर्त्यपुरे जिब ४८
कश्यप बोइले आम्भर जिबा हेला मूल । तेबे बासुदेव जन्म होइबे मोर कोल ४९
एते बोलि ऋषि जे देबंकु कहिले । जाअ तुम्भे आम्भे जिबुँ बोलि जे बोइले ७५०
एते बोलि मुनि जे हकारि बेनि नारी । अदिति प्रहेति जे मिलिले जाइ करि ७५१
कर जोड़ि आगे जे उभा देब नारी । मुनि बोइले तुम्भे शुण गो सुन्दरी ५२
देब कार्ज्य निमन्ते जिबा जे मर्त्यपुरी । तिनि ठाब होइ जन्म हेब जे आम्भरि ५३
ककेइ राजा घर कउशिक राजा घरे । तुम्भे दुहें जात हेब जाइण सत्वरे ५४
तपन कुलरे जे अजोध्या नग्नरे । मुहिँ जात हेबि जे अज राजा कोले ५५
सुर्ज बशं मंण्डल नृपति कालराहू । मोर नाम दशरथ होइब जे तहुँ ५६

निश्चित रूप से मरेंगे । ७४१ हम अयोध्या नगर में सूर्यवंशी दशरथ के घर में जन्म लेंगे । ४२ दैत्यों को मारकर हम निश्चिन्त कर देंगे इस प्रकार लक्ष्मी के पति ने उनसे कहा । ४३ उनकी आज्ञा से हम सभी गए और वानर तथा भालुओं के साथ प्रीति की । ४४ भगवान की आज्ञा के अनुसार हमने वैसा ही करके नौसागर (गणना में) पुत्र उत्पन्न किये । ४५ इस समय हम लोग आपसे विनय कर रहे हैं कि आप मृत्यु लोक में जाकर जन्म ग्रहण करें । ४६ महाराज अज के अंक से आप जन्म ग्रहण करें। वहाँ आप दशरथ नाम से ख्यात होंगे । ४७ आपकी ही गोद से भगवान नारायण उत्पन्न होंगे । दोनों पत्नियों को लेकर आप मृत्यु लोक में जाइये । ४८ कश्यप ने कहा कि हमारा जाना ही मूलकारण हुआ । तभी तो वासुदेव मेरे अंक से उत्पन्न होंगे । ४९ इतना कहकर ऋषि ने देवताओं से कहा कि आप लोग जाइये और हम अवश्य ही चले जाएँगे । ७५० इतना कहकर मुनि ने अपनी दोनों स्त्रियों को बुलाया । तब अदिति तथा प्रहेति दोनों ही वहाँ जा पहुँची । ७५१ वह दोनों देवियाँ हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं । मुनि ने कहा, हे सुन्दरियो ! सुनो । ५२ देवताओं के कार्य के लिये हम मृत्युलोक में चलेंगे । हम लोग तीन स्थानों में जन्म लेंगे । ५३ कैकय नरेश तथा कौशिक राजा के यहाँ तुम दोनों शीघ्र ही जाकर जन्म ग्रहण करो । ५४ अयोध्या नगर के सूर्य वंशी महाराज अज के अंक से मैं जन्म धारण करूँगा । सूर्य वंश में राजा लोगों के लिये काल राहु के समान मेरा नाम दशरथ होगा । ५५-५६

कैकेइ राजा कोलरे प्रहेति जात हेउ। चन्द्रदेइ उदरे जन्म हेवे तहुँ ५७
काले मोते प्रापति होइवु तहिँ पुण। वड़ पाट मोहर होइवु तु जाण ५८
तोहर समाने जे चारि शत नारी। समस्ते मोते जे खटिवे सम सरि ५९
समस्तंकु विभाहेवि हेवः मोर पाट। तांकपरे तुमे जे होइव पुणि श्रेष्ठ ७६०
शोभापणे चन्द्रर रोहिणी संगे सरि। तेवे मोर मन जे मोहिवु सुन्दरी ७६१
अधे अंश तोहर जे लीलावति हेव। गिरिजा मण्डलरे जात जे होइव ६२
अत्यन्त सुन्दर जे होइव से नारी। सेहि कन्या कोले पुण मोते हेव वरि ६३
मुहिँ विभा होइण जे आणिवि नवर। चारि शत नारी रे श्रेष्ठ हेव मोर ६४
एते वोलि प्रहेतीकि मणाइ कहिले। मुहिँ जाउ अछि तुमे पच्छे आसभले ६५
शुणि करि प्रहेती मनरे सन्तोष। वोइला मुहिँ जिवि गले पद्मास ६६
एक अंश गोटि मोर दुइ भाग हेव। अधे ककेया अधे लीलावती भाव ६७
चारि शत दासी जे अछन्ति मोहर। मोहर अंशे जात ह्वन्तु से मर्त्यपुर ६८
पंचविंश प्रजा घरे जनम होइव। तुम्भंकु वरण करि सेहि विभा हेव ६९
मोहर सपतणी होइवे से माने। मोर संगे सुखभोग करिवेक तेणे ७७०
शुणिण कश्यप ऋषि संतोष होइले। अदितिकि चाहिँ पुण वचन वोइले ७७१
तुम्भे जात हुअ कउशिक राजा कोले। कउरव पुर राजा अटइ कुशले ७२

प्रहेति कैकय राजा के अंक से चन्द्रदेवी के उदर से जन्म धारण करे। ५७ समय वीतने पर तुम हमें प्राप्त करोगी। और तुम हमारी वड़ी पटरानी होगी। ५८ तुम्हारे समान चार सौ स्त्रियाँ जो हमजोली की होंगी सव हमारी सेवा करती रहेंगी। ५९ मैं सवके साथ विवाह करूँगा। मेरा रनिवास होगा। उन सवके ऊपर तुम्हारा श्रेष्ठ पद रहेगा। ७६० जैसे चन्द्रमा के साथ रोहणी शोभित होती उसी प्रकार हे सुन्दरी! तुम मेरे मन को मोहित करना। ७६१ तुम्हारे आधे अंश से गिरजामण्डल में लीलावती उत्पन्न होगी ६२ वह स्त्री अत्यन्त सुंदर होगी। समय पर वह कन्या भी मुझसे विवाह करेगी। ६३ मैं विवाह करके उन्हें अपने महल में ले आऊँगा। तव मेरी चार सौ श्रेष्ठ रानियाँ हो जायेगी। ६४ इतना कहकर उन्होंने प्रहेति को समझाकर कहा कि मैं जा रहा हूँ। तुम भी पीछे से आओ। ६५ यह सुनकर प्रहेति का मन प्रसन्न हो गया। उसने कहा कि छै मास व्यतीत होने पर मैं भी आऊँगी। ६६ मेरा एक अंश दो भागो में विभक्त होगा। आधे अंश से कैकेयी तथा आधे अंश से लीलावती का रूप होगा। ६७ हमारी जो चार सौ दासियाँ है वह लोग भी मेरे अंश से मृत्युलोक में जन्म धारण करें। ६८ प्रजा के पचीस घरों में उनका जन्म होगा। वह लोग भी तुम्हें वरण करके विवाह करेगी। ६९ वह लोग मेरी सौतें होगी और हमारे साथ सुख पूर्वक भोग करेंगी। ७७० यह सुनकर कश्यप ऋषि संतुष्ट हो गये। उन्होंने अदिति की ओर देखकर कहा। ७७१ तुम महाराज कौशिक

एक अंश गोटि तोर दुइ भाग हेब। × × × × ×
अर्द्धेक अंश तोर सुमन्त पुरे जिब। चन्द्रावती गर्भरे जाइण जात हेब ७३
सुमित्रा बोलिण जे होइब तार नाम। काले मोते बरिबु होइण परसन ७४
तेबे तोते बिभा होइ अजोध्या आसिबि। शोभारे तु सन्दर होइबु बान्धबी ७५
तोर अंशे जात हेबे तिनि शत नारी। समस्ते सुन्दर त होइबे शोभाकारी ७६
अदिति बोइले मोर तिनिश पञ्चाश। मोहर अंशरे हुअन्तु एहू जात ७७
ए जन्मे दासी मोर होइछन्ति पुण। से जन्मे सपतणी होइबे मोर जाण ७८
दितिशि राजा घरे जाइण जन्म हेबे। कालेण तुम्भंकु जे बरण लभिबे ७९
मोर अंश गोटि हेब दुइ जे शरीर। मोर कोले जात हेबे कमलार बर ७८०
आर अंशरे मोर अनन्त जात हेबे। शुणिण कश्यप जे होइले सदभावे ७८१
प्रहेती बोइले जेबे अनन्त नारायण।तोर कोले जात हेले मुँहोइबि अकारण ८२
कश्यप बोइले तोते कारण बाट अछि। एका नारायण जे होइबे तिनि मुर्ति ८३
तोर गर्भ अंशेजे सुमित्रा गर्भे जात। तिनिकर कोले बासुदेब जे संजाते ८४
शुणिण दुइ नारी संतोष होइले। देबतांकु चाहिंण ऋषि जे कहिले ८५
बोइले निजपुर चल भले एबे। आज आम्भे मर्त्यपुर जिबु सद्भावे ८६

जो कौरवपुर का कुशल शासक है। उसके अंक से जन्म धारण करो। ७२ तुम्हारा एक अंश दो भागों में विभक्त हो जायेगा। तुम्हारा आधा अंश सुमन्तपुर जाकर चन्द्रावती के गर्भ से उत्पन्न होगा। ७३ उसका नाम सुमित्रा होगा जो कालक्रम के अनुसार प्रसन्न होकर मेरा वरण करोगी। ७४ तब मैं तुमसे विवाह करके अयोध्या लौट आऊँगा। तुम हमारी अत्यन्त शोभनीय सहचरी बनोगी। ७५ तुम्हारे अंश से तीन सौ स्त्रियाँ पैदा होंगी। सभी सुन्दर और शोभायमान होंगी। ७६ अदिति ने कहा मेरी तीन सौ पचास दासियाँ भी मेरे अंश से जन्म लें। ७७ इस जन्म में तो यह मेरी दासियाँ है। परन्तु अगले जन्म में यह हमारी सौतें होंगी। ७८ बत्तिस राजाओं के घरों में जाकर यह लोग जन्म लेंगी और समय पर तुम्हें वरण करके प्राप्त करेंगी। ७९ मेरे एक अंश से दो शरीर बनेंगे। मेरी कोख से लक्ष्मी के पति उत्पन्न होंगे। ७८० दूसरे अंश से हमारे अनन्त देव उत्पन्न होंगे। यह सुनकर कश्यप भाव-विभोर हो गये। ७८१ प्रहेति ने कहा कि जब अनन्त और नारायण तुम्हारी कोख से उत्पन्न होंगे तो मै कारण से शून्य हो जाऊँगी। ८२ कश्यप ने कहा तुम्हारी श्रेष्ठता का मार्ग है। अकेले नारायण तीन शरीरों में उत्पन्न होंगे। तुम्हारे गर्भ का अंश सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न होगा और इस प्रकार तीनो की कोख से नारायण जन्म लेंगे! ८३-८४ यह सुनकर दोनों स्त्रियाँ संतुष्ट हो गई। ऋषि ने देवताओं की ओर देखकर कहा कि आप लोग भली प्रकार से अपने लोकों को प्रस्थान करें। मैं आज ही सद्भावना के साथ मृत्यु लोक जाऊँगा। ८५-८६

ऋषिगण कहिवारू जे देवता गण गले । सुधर्मा सभारे जाइ समस्ते ठूल हेले ८७
एथु अनन्तरे तुगो शुण भगवती ।दुइराणी कि कहिण कश्यप ऋषि जान्ति ८८
मर्त्यपुरे अजोध्या नग्ररे परवेश । ज्योती रुपधरि राजा देहरे परकाश ८९
ताहार भारिजा जे ललिता नामे नारी । शते महादेई परे सेहू श्रेष्ठ नारी ७९०
से नारी पाकस्परश आगे होइथिला । तेवे ताहार शुद्ध स्नान जे होइला ७९१
रात्ररे पाटराणी सुसंच वेश होइ । नाना अलंकार जे मण्डिले अंगे नेइ ९२
नाना वर्णरे पुष्प जे आभरण कला । गन्ध चन्दन नेइ अंगरे लगाइला ९३
देबांग पतनि जे हृद पद्मे तार ।इन्द्र गोविन्द पाटे जे पिन्धिला नारीवर ९४
काप मलकढ़ि जे अलका मथामणि । ताड़बिद वाहूटि झुम्पा जे लाए पुणि ९५
कम ताड़ पाहुड़ वाजेणि नुपुर । एमन्त प्रकारे जे भूषण अलंकार ९६
देब्रराणी पराए जे भूषण पाटराणी । स्वामीर छामुरे प्रवेश हेला जाणि ९७
ओलगि भेलाए से स्वामींकु देखिण । चरण तलरे वसिला जाइ पुण ९८
तार संगे जेते जे दासी जाइ थिले । राजार पाशे छाड़िण वाहुड़ि अइले ९९
देखिण अज राजा नेइण कोल कला । मुखरे चुम्वन देइ कुच मरदिला ८००

ऋषियों के कहने से देवता लोग चले गये और स्वर्ग की सुधर्मा सभा में समस्त जाकर एकत्रित हो गये । ८७ हे भगवती ! सुनो ! इसके पश्चात् दोनों स्त्रियों से कहकर कश्यप ऋषि चल दिये । ८८ वह मृत्युलोक में अयोध्या नगर में जाकर ज्योति रूप धारण करके राजा के शरीर में प्रकाशित हुए । ८९ उनकी पत्नी जिनका नाम ललिता था वह सौ महारानियों में श्रेष्ठ महारानी थी । ७९० वह स्त्री पहले रजस्वला हो चुकी थी । इसलिये उन्हें शुद्ध स्नान कराया गया । ७९१ रात्रि में पटरानी ने अपना वेश सुसज्जित किया । उसने अपने शरीर में नाना प्रकार के आभूषण सजा लिये । ९२ अनेक प्रकार के पुष्पों के आभरण बना कर पहन लिए । उसने सुगन्धित चन्दन लेकर अपने अंगों में लगा लिया । ९३ उसके हृदय कमल पर सुझीन चूनर तथा रेशमी लहँगा उस श्रेष्ठ स्त्री ने पहन रक्खे थे । ९४ अलकों पर मल्ली की कलियों के गुच्छे तथा चूड़ामणि लगा था । तारो से विने हुए गुच्छे वाले वाजूवन्द पहन रक्खे थे । ९५ कमर में तागड़ी तथा पैरों में रुनझुन करते हुए नूपुरों से इस प्रकार उसने अपने को आभूषणों से अलंकृत किया । ९६ देवताओं की रानी (शची) के समान वह पटरानी अलकृत होकर स्वामी के समक्ष जा पहुँची । ९७ उसने स्वामी को देखकर उन्हें प्रणाम किया और फिर जाकर उनके चरणों में बैठ गई । ९८ उसके साथ जितनी भी दासियाँ गई थी । वह सब उसे राजा के पास छोड़कर लौट गई । ९९ उसे देखकर महाराज अज ने उन्हें अपनी गोद में लेकर मुख को चूमते

निबिबन्ध फिटाइण कलाक रतिरण। खसिलाक बीर्ज्य जे होइण तानमान ८०१
ललिता पाट राणी गर्भरे सम्भूत। कश्यप राणी गर्भ होइले थाइत्व २
कश्यप ज्योति राजा निसत हेला। राणी गर्भ रहिबारु हरष कराइला ३
कोलाग्रत होइण शुतिले बेनि जण। पाहान्ति निशि हेबारू अइले दासी गण ४
कबाट फिटाइ से राणी कि उठाइले। पहण्ड मणाइ भितर पुरे नेले ५
मर्दनमाजणा जे कलेक बेढ़ि पुण। सुबासित जलरे कराइले स्नान ६
नित्य कर्म बिधि जे कराइ दासीगण। अमृत भोजन राणी कलेक जाइण ७
से दिन राणी देह अलस होइला। पलंक सुपातिरे जाइण बिजे कला ८
बिड़िया भुंजिण जे शयन राणी करि। दासी माने चरण धरिण मंचालि ९
पार्वती बोइले देब कथाए रहिला। राणीर संगे राजा स्नेह करिथिला ८१०
से पुणि किस कले कह त्रिलोचन। ईश्वर बोइले तुम्भे शुण से बचन ८११
राणी जिबारू राजा शयनरू उठिला। बाहारे अबकाश जाइ पुण हेला १२
मर्दन माजणा जे होइण स्नान कले। देबार्चन बिधि सारि बिप्रे दान देले १३
भूरि भोजन देइण बिप्रंकु कले तोष। दुखी दरिद्र मानंकु देले अन्न बस्त्र १४
महेश्वर देवता जेतेक स्थाने थिले। तांक पच्छे गोधन जे क्षीर निउड़िले १५

हुये उसके कुचो का मर्दन किया। ८०० उन्होने उसका नाड़ा खोलकर उसके साथ रति क्रीड़ा की। उत्तेजित होकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। ८०१ उस वीर्य के पटरानी ललिता के गर्भ में जाने से कश्यप गर्भ में स्थित हो गये।२ कश्यप की ज्योति से राजा शिथिल हो गये परन्तु रानी का गर्भ रुक जाने के कारण उन्हें प्रसन्नता हुई। ३ दोनों लोग एक दूसरे को अंक में लपेट कर सो गये। रात्रि समाप्त होनें पर वहाँ दासियाँ आ गई। ४ उन्होंने द्वार खोलकर रानी को उठाया और उन्हें पैदल ही अंत:पुर में ले गई। ५ सबने घेरकर उनकी मालिश तथा उबटन करके उन्हें सुगन्धित जल से स्नान कराया। ६ दासियों ने उनकी नित्य नैमित्तिक कार्य-विधि को सम्पादित करके उन्हें अमृतमय भोजन कराया। ७ उस दिन रानी के शरीर में आलस्य भर गया। वह गद्दे बिछे हुये पंलग पर जा बैठी। ८ रानी पान खाकर सो गयी और दासियाँ उसके चरण पकड़कर दबाने लगी। ९ पार्वती बोली हे देव ! एक बात रह गई। राजा ने रानी के साथ स्नेह किया था। ८१० हे त्रिनेत्रधारी शंकर ! हमें बताइये कि फिर उन्होंने क्या किया शंकर जी बोले कि तुम उसे सुनो। ८११ रानी के जाने के बाद राजा सोकर उठे और वह अवकाश से बाहर निकल आये। १२ उन्होंने शरीर मर्दन तथा उबटन लगाकर स्नान किया और देवपूजन समाप्त करके ब्राह्मणों को दान दिया। १३ प्रचुर मात्रा में भोजन देकर ब्राह्मणों को अन्न तथा वस्त्र देकर दु:खी दरिद्रो को संतुष्ट किया। १४ जितने भी शिवालय

बिष्णु मूर्ति जेतेठारे थिलेक छाया रूप । अमृत मणोहि तांकु कराइले नृप १६
जेते ठारे ग्राम देवती माने थिले । बोदा छागल देइण ताहांकु तोपिले १७
बिरंचि नारायण अटन्ति इष्ट पुण । ताहांकु दर्शन जाइ कलाक राजन १८
शीतल पदार्थ मान से जे भोग देला । निउन होइण राजा छामुरे जणाइला १९
मोर ठारू अंश हेउ जे अछि शुन्य । पुत्र दान दिअ मोते बिरंचि नारायण ८२०
एते कहि राजा प्रसाद सेबा कला । निज मन्दिरकु से लेउटिण गला ८२१
अमृत समानरे भोजन राजा करि । बिड़िया भुंजिण जे पलंके पहुड़ि २२
निद्रारे अचेतन होइले राजन । स्वप्नरे देखिला से विरंचि नारायण २३
मस्तक परे बसिण नारायण जे कहि । ललिता राणी गर्भरे आज जे स्थित होइ २४
देबकीर तात जे कश्यप ऋषि पुण । ताहार कोलरे होइबे से उतपन्न २५
स्वर्गपुर तेजिण कालि से अइले । तोहर शरीरे ज्योति पुरुष पशिले २६
से ज्योति बीर्ज्य रूप होइला तोहर । पाटराणी गर्भरे विजय मुनिवर २७
दशमास दशदिने कुमर हेब जात । से कुमर तोहर कोलकु पवित्र २८
दुइ गोटि चरण जे अष्ट गोटि हस्त । सेहि पुत्र गोटि तोर होइब श्री मन्त २९
एते कहि नारायण अन्तर्ध्यान हेले । चेता पाइ अजराज निद्रारू उठिले ३०

थे वहाँ गायों का दूध चढ़वाया । १५ जितने वैष्णव मन्दिर थे उनमें अमृत के समान राजा ने प्रसाद चढ़वाया । १६ जो ग्राम देवियों के स्थान थे उनमें पाड़ा (भैंसा) और बकरे देकर उन्हें संतुष्ट किया । १७ उनके इष्ट विरंचि-नारायण थे । राजा ने जाकर उनके दर्शन किये । १८ ठण्डे पदार्थों का भोग लगाकर राजा ने अपनी दीनता दिखाते हुये विनय की । १९ हे विरन्चि-नारायण ! मेरी गोद सूनी है । आप कृपा करके मुझे पुत्र प्रदान करें । ८२० इतना कहकर राजा ने भोग अर्पित किया और फिर वह अपने महल में लौट आये । ८२१ राजा ने अमृत के समान भोजन करके पान खाया और पलंग पर लेट गये । २२ राजा नीद में चेतनाशून्य हो गये । उन्होंने स्वप्न में विरन्चि नारायण को देखा । २३ उनके सिराहने बैठकर भगवान ने कहा कि मैं महाराणी ललिता के गर्भ में आज स्थित हो गया हूँ । २४ देवकी के पिता जो कश्यप ऋषि है वह उसकी कोख से उत्पन्न होंगे । २५ वह कल ही स्वर्ग को छोड़कर आये और ज्योति पुरुष के रूप में तुम्हारे शरीर में प्रविष्ट हो चुके हैं । २६ वह ज्योति तुम्हारे वीर्य के रूप में परिर्वातित हो गई । वह मुनिश्रेष्ठ पटरानी के गर्भ में स्थित हो गये । २७ दस मास और दस दिन में कुमार का जन्म होगा तो तुम्हारी गोद पवित्र हो जायेगी । २८ उसके दो पैर तथा आठ हाथ होगें और तुम्हारा वह पुत्र श्री से सम्पन्न होगा । २९ इतना कह कर भगवान अन्तर्ध्यान हो गए । ज्ञान पाकर महाराज अज निद्रा से उठ गये । ८३०

किम्भूत कथा निद्रारे देखिलि बिचारि । सतेकि मोर कुल रखिवे नरहरी ८३१
एमन्त विचारि राजा बाहारे अबकाश । बशिष्ठ बामदेव मिलिलेक पाश ३२
ताहांकु देखि राजा नमस्कार कला । बसिबाकु नेइ दिव्य आसन जे देला ३३
आसने बसाइ जे कहइ कर जोड़ि।निद्रारे स्वपन जे मुँ देखिलि आज फेरि ३४
मस्तक परे मोर एकइ द्विज बर । चतुर्भुज प्रकारे निलेन्दि रूप तार ३५
मोते बोइले राजन चिन्ता तु न कर । आजहुँ दश मासरे होइब कुमर ३६
दुइ गोटि चरण अष्टभुज तार । क्षत्रीपणे अर्चागल हेब से कुमर ३७
एते कहि अन्तर्धान होइण से गले । बशिष्ठ बोइले जे से कथाहेब भले ३८
तोर इष्ट देवता जे अटइ द्विजबर । काहारि आगरे तु जे प्रकाश न कर ३९
शुणिण अज राजा जे संतोष होइला । बेबार्चन मांगिराजा भितर पुरेगला ८४०
अन्त:पुर भितरे दासी कि जाइ कहि । महादेई अणाइ खेलरे भोल होइ ८४१
पांच मासरे राजार आगे दासी कहि । बद्र पाट तुम्भर गर्भबास होइ ४२
आजकु पांञ्च मास जे होइला देब पुण । अशकत हेले राणी एथर तुम्भे जाण ४३
शुणिण अजराजा आनन्द मन हेला । नारायणंकु मनरे सुमरणा कला ४४
अष्ट मास हुअन्ते जे गर्भ दान करि ।ऋषि ब्राह्मण मानंकु अनेक दान भरि ४५

स्वप्न में कैसा देखा वह इस पर विचार करने लगे। क्या सचमुच भगवान नर रूप लेकर हमारे कुल की रक्षा करेंगे। ८३१ ऐसा विचार कर राजा अवकाश के समय में बाहर आकर बशिष्ठ तथा वामदेव ऋषियों से मिले। ३२ उन्हें देख राजा ने नमस्कार किया तथा उन्हें बैठने के लिये दिव्य आसन प्रस्तुत किये। ३३ आसन पर बिठाकर राजा ने हाथ जोड़कर कहा कि आज फिर मैंने नींद में स्वप्न देखा है। ३४ मेरे सिरहाने एक चार भुजाओं तथा नीलवर्ण वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण ने मुझसे कहा कि हे राजन्! तुम चिन्ता न करो। आज से दस महीने पर तुम्हारे यहाँ एक पुत्र होगा। ३५-३६ उसके दो पैर आठ हाथ होंगे और वह कुमार योद्धापन में अश्चर्यजनक होगा। ३७ इतना कहकर वह अन्तर्ध्यान हो गए। वशिष्ठ ने कहा कि तब तो यह बात निश्चित रूप से घटित होगी। ३८ वह श्रेष्ठ ब्राह्मण आपके इष्ट देव थे। यह बात आप अन्य किसी से प्रकाशित न करें। ३९ यह सुन कर महाराज अज सन्तुष्ट हो गए। वार्ता समाप्त करके राजा अन्त:पुर को चले गए। ८४० अन्त: पुर में जाकर दासी से पटरानी को बुलवाकर वह खेल में मस्त हो गए। ८४१ पाँचवें महीने दासी ने राजा से कहा कि आपकी बड़ी रानी गर्भवती हो गई हैं। ४२ हे देव ! आज से पाँच महीने पूरे हो गये हैं। इस समय रानी शिथिल हो गई हैं, यह आप समझ लें। ४३ यह सुनकर महाराज अज का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने मनही मन ईश्वर का ध्यान किया। ४४ आठ महीने पूर्ण होने पर गर्भ-दान

भूरि भोजन अमृत समाने पुण देले। दरिद्र लोकंकु जे धन विलसिले　४६
हाट बाट जूर करि धोवा तूठ जूर। समस्तंकु धन लेखि देला नृपवर　४७
एमन्ते दशमास दस दिन गला। ललिता पाट राणी पेट जे बथाइला　४८
राजार आगरे दासी जाइण जे कहि। रागीर देहे शूल प्रास त गोसाइँ　४९
एमन्त समयरे आर दासी आसि। पुत्र जन्म हेला बोलि कहिलाक हसि　८५०
आरेक दासी आसि राजार आगे कहि। कुमरे जात हेला जे असम्भाल होइ　८५१
दुइ गोटि चरण जे अष्ट गोटि हस्त। तले पड़िवारू पुत्र दिशे तेजवन्त　५२
शुणिण राजन जे धाईकि कहे वाणी। हेला न करि जतन कर कुमर मणि　५३
राणीकि उत्तम करि जाइण प्रतिपाल। से मानंकु बधाइ देलाक महीपाल　५४
पाञ्चदिने पञ्चुआति विधि जे राजा कले। पंचामृतरे स्नाहान राजा कराइले　५५
राजार कोले राणी देलेक नन्दन। कोले धरि आनन्द जे होइले राजन　५६
अलंकार आभरण राजन पुत्र कले। ऋषि माने पद धूलि अर्घ्य नेइ देले　५७
बशिष्ठ बोइले राजा पुत्र नाम दिअ। राजन बोइले गुरु किम्पाँ मोते कह　५८
बशिष्ठ बोइले देख दुइ जे चरण। अष्ट गोटि हस्त अटे पुत्रर एवे जाण　५९
आउ जेबे चारि गोटि मुण्ड जार थान्ता।तेबे ए कुमर गोटि मानव ब्रह्मा हुन्ता　८६०

करके उन्होंने ऋषियों तथा ब्राह्मणों को वहुत दान दिया। ४५ फिर उन्होंने उन सबको प्रचुर मात्रा में अमृतोपम भोजन प्रदान किया और दरिद्र लोगों को धन वितरित किया। ४६ हाट बाट घाट सभी स्थानों में राजा ने प्रचुर मात्रा में धन हव्य लुटाये। ४७ इस प्रकार दस महीने और दस दिन वीत गये। पट्टमहिषी ललिता का पेट व्यथा करने लगा। ४८ राजा के समक्ष दासी ने जाकर कहा, हे नाथ ! रानी के उदर में व्यथा उठ रही है। ४९ इसी समय अन्य दासी ने आकर हँसते हुए पुत्र जन्म की सूचना दी। ८५० फिर एक अन्य दासी ने आकर राजा से कहा कि जो पुत्र उत्पन्न हुआ है उसे सम्हालते नहीं वनता। ८५१ उसके दो चरण तथा आठ हाथ हैं। नीचे गिरने पर बालक वड़ा ही तेजस्वी दिखाई दे रहा है। ५२ यह सुन कर राजा ने धाई से कहा कि विना प्रमाद किये श्रेष्ठ बालक की यत्न पूर्वक देख रेख करो। ५३ तुम जाकर अच्छी प्रकार से रानी का प्रतिपालन करो। इस प्रकार कहकर राजा ने उन्हें वधाई दी। ५४ पाँचवें दिन राजा ने पंचमी विधि सम्पादित की तथा पंचामृत से स्नान कराया। ५५ रानी ने पुत्र को राजा की गोद में दे दिया। गोद में उसे लेकर राजा प्रसन्न हो गये। ५६ राजा ने पुत्र को अलंकार तथा आभूषणों से भूषित किया। ऋषियों की पद धूलि लेकर उन्हें अर्घ्य प्रदान किया। ५७ वशिष्ठ ने कहा, हे राजन् ! पुत्र का नामकरण करो। राजा ने कहा, हे गुरुदेव ! आप हमसे किसलिये कह रहे है। ५८ वशिष्ठ ने कहा देखो इसके दो पैर है और आठ हाथ हैं। ५९ यदि इसके चार सिर होते तो यह पुत्र मानव रूप में ब्रह्मा

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तिनि आङ्कु न पाइला।तेणु करि ए पुत्र नाम दशरथ हेला ८६१
नृपति बोइले देबा दशरथ नाम। शुणिकरि आनन्द होइले ऋषि पुण ६२
ऋषि मान बिचार जे करन्ति मनरे। नारायण जात हेबे ए पुत्र कोलरे ६३
एथुँ अनन्तरे आगो शुण भगबती। राणीर कोले जे पुत्र देलाक नृपति ६४
शउच होइण बाहारे अबकाश। ऋषि मानंकु दान देलेक बहुत ६५
ऋषिकर मन तोषि रघुराज सुत। बिप्रे डाकि दान सेहू देलेक बहुत ६६
भण्डार घर फेड़ि अनेक धन देले। ऋषि ब्राह्मणंकु जे सन्तोष कराइले ६७
दुःखी दरिद्रंकु जे तोषन्ति बस्त्र देइ। अमृत समाने भरि भोजन कराइ ६८
हाट बाट धोबा तूठ जूर हेला जाण।थेन्दुआ जुरिआ मिशि जूर कले जाण ६९
जूर गला धन जे भण्डारु आणि देले। ऋषि बिप्रबर जे मेलाणि होइ गले ८७०
पात्र मंत्री मानंकु देले सेहू साढ़ी। सेनापति मानंकु संतोष राजा करि ८७१
बन्धुजन मानंकु बे भार देइ बोधि। समस्तंकु मेलाणि कलेक नृप निधि ७२
निश्चिन्तरे राज्य करे परजा तार सुखी। दिनुदिन आनन्द पुत्रकु राजा देखि ७३
पार्वती बोइले देब कश्यप जात हेब। दुइ भारिजा तांकर किस पुण कले ७४
ईश्वर बोइले स्वामी तांकर गले। षड़ मास उत्तारे से नारी चलिगले ७५

होता। ८६० ब्रह्म विष्णु तथा महेश्वर इन तीनों की स्थिति को इसने नहीं प्राप्त किया। इसलिये इस पुत्र का नाम दशरथ हुआ। ८६१ राजा ने कहा इसका नाम दशरथ रखेंगे। यह सुनकर महर्षि प्रसन्न हो गये। ६२ ऋषि लोग अपने मन में विचार करने लगे कि इस पुत्र की गोद से भगवान उत्पन्न होंगे। ६३ हे भगवती! इसके पश्चात् सुनो। राजा ने पुत्र को रानी की गोद में दे दिया। ६४-६५ फिर वह पवित्र होकर बाहर आये और उन्होंने ऋषियों को बहुत दान दिया। महाराज रघु के पुत्र ने ऋषियों का मन संतुष्ट करके ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें भी बहुत दान दिया। ६६ उन्होने भण्डारघर खोलकर प्रचुर धन देकर ऋषियों और ब्राह्मणों को संतुष्ट किया। ६७ दुःखी दरिद्रों को वस्त्र देकर और अमृत के समान भोजन कराकर उन्हें संतुष्ट किया। ६८ हाट, बाट और घाट पर खूब लूट हुयी। दीन, दरिद्र, तथा कंगालों ने खूब धन लूटा। ६९ लूट में चले गये धन की पूर्ति भण्डार से की गयी। ऋषि और ब्राह्मण विदा होकर चले गये। ८७० सभासदों तथा मंत्रियों को उन्होंने सरोपे भेट किये और राजा ने सेनापतियों को भी संतुष्ट किया। ८७१ बन्धु बान्धवों को व्यवहार देकर उन्हें संतुष्ट किया और इसके वाद श्रेष्ठ राजा ने सबको विदा किया। ७२ राजा निश्चिन्त होकर राज्य करने लगे। उनकी प्रजा सुखी थी और वह प्रतिदिन पुत्र को देखकर प्रसन्न होते थे। ७३ पार्वती ने कहा हे देव! कश्यप ने तो जन्म ले लिया परन्तु उनकी दोनों पत्नियों ने क्या किया। ७४ शंकर जी ने कहा कि उनके पति देव के जाने के छै महीने

मर्त्यपुरे प्रबेश होइले जाइ करि। हेतिर शरीरकु बिभाग कले नारी ७६
अर्द्धक अंश तार चन्द्र देइ पुरे गले। अर्द्धक अंश गिरिजा मण्डले मिलिले ७७
ककेइ रजा पुररे हेले परबेश। ज्योति रूपे ककेइ देहरे परबेश ७८
पद्मावती राणी जे ताहार अटे ज्येष्ठ। से राणीर शुद्ध जे स्नाहान पालि श्रेष्ठ ७९
दासीकि घेनिण बेश भूषण होइला। निशिरे राजा पाशे प्रबेश जाइ हेला ८८०
पलंक सुपातिर उपरे बसे जाइ। एमन्त समयरे राजन मिले तहिं ८८१
हास्य रस करिण राणिंकि तोष कले। निबि वन्ध फिटाइ रति रण कले ८२
ज्योति बीर्ज्य खसि राणी गर्भे उपगत। से दिन राणी गर्भे होइला थाइत्व ८३
बीर्ज्य खसिबारू राजार बल तुटिगला। राणी कि कोले धरि महीपाल शोइला ८४
रजनी शेषरे दासी गण मिलि। राणीकि शैय्यारू तोलि नेले अन्तःपुरी ८५
मर्दन माजणा सारि स्नान कराइले। छड़ रसे भोजन राणी पुण कले ८६
राणी गर्भ बास हेबा जाणिले नृपति। दासी मानंकु कहि सद्भाव से करन्ति ८७
अष्टमासे गर्भ दान राजन पुण कला। ऋषि ब्राह्मण डकाइ अनेक दान देला ८८
दशमास हेबारू दुहिता गर्भु जात। दासी माने राजा आगे कहिले तुरित ८९
पञ्चुअति षष्ठिधर उठि आरि सारि। बारजात्रा एकोइशा कलेक दुलाली ८९०

बाद वह नारियाँ भी चली गयी। ७५ मृत्युलोक में जाकर हेति के शरीर के दो भाग हो गये। ७६ उसका आधा अंश चन्द्रदेई के नगर में गया और अन्य आधा अंश गिरजामण्डल जा पहुँचा। ७७ वह कैकय राजा के महल में पहुँचकर ज्योति रूप से उनके शरीर में प्रविष्ट हो गया। ७८ उसकी बड़ी रानी पद्मावती थी। उस दिन महारानी का शुद्ध स्नान था। ७९ दासी को लेकर श्रृंगार करके भूषणों से सुसज्जित होकर वह रात्रि में राजा के समक्ष उपस्थित हुयी। ८८० वह गद्देपर जा बैठी। इसी समय वहाँ राजा आ गये। ८८१ उन्होंने हँसी मसखरी करके रानी को संतुष्ट किया और नाड़ा खोलकर उनके साथ प्रसंग किया। ८२ ज्योति रूपी वीर्य रानी के गर्भ में पहुँचा। उस दिन रानी गर्भवती हो गई। ८३ वीर्य के स्खलन से राजा निर्बल हो गये। वह रानी को गोद में लेकर सो गये। ८४ रात्रि समाप्त होने पर दासियाँ रानी को शैया से उठाकर अंतःपुर ले गयी। ८५ शरीर दबाकर उबटन लगाकर उन्हे स्नान कराया। फिर रानी ने षडरस भोजन किये। ८६ राजा ने रानी को गर्भवती हुई समझ लिया। दासियों से कहकर उन्होंने सद्भावना-पूर्वक देखरेख की। ८७ राजा ने आठ महीने पर गर्भदान करके ऋषि और ब्राह्मणो को बुलाकर उन्हें बहुत दान दिया। ८८ दस माह होने पर गर्भ से पुत्री का जन्म हुआ। दासियों ने राजा को समाचार बताया। ८९ पंचमी पूजा, षष्ठी पूजा, सोर की उठावनी समाप्त करके बरहो तथा पुत्री का इक्कीसवें

मासिकिआ दिन नामकरण ताकु देले। कैकया नाम हेउ बोलिण बोइले ८९१
ऋषि ब्राह्मणरे भरि भोजन राजा देले। धन रत्न देइण ताहांकु तोष कले ९२
एथु अनन्तरे जे शुण गो भगवती। हेतिर अर्द्ध अंश गला जे तड़ति ९३
गिरिजा मण्डले जे जाजपुर नग्रे। नील नामे राजा जे अटइ तेज भागे ९४
ताहार पाट राणी चम्पा जे बोलि जाण। बाउन नारिए से अटइ श्रेष्ठ पुण ९५
नील राजा अंगरे हेतिर ज्योति मिलि। सेहि नील राणी जे होइला रजस्थली ९६
पञ्च दिनरे राणी शुद्ध स्नान कला। सुबेश होइण राणी मनरे सुखी हेला ९७
रजनीरे राजा पाशे होइला परबेश। राणीकि धरि राजा खेलइ हरष ९८
खेल सारि राजा जे कोलरे बसाइला। मुखरे चुम्बन देइण कुच मर्दन कला ९९
निबि बन्ध फिटाइण कलाक रति रंग। शरीररू ज्योति बीर्य्य खसिलाक बेग ९००
चम्पाबती गर्भरे होइला परबेश। राणीर गर्भे बीर्य्य होइला स्थकित ९०१
से दिन चम्पाबती होइला गर्भ बास। पाञ्चमास अन्तेदासी कहिले सन्देश २
शुणिण राजन जे हरष मन हेला। अष्ट मास हुअन्ते जे गर्भ दान देला ३
ऋषि बिप्र डाकिण अनेक दान देला। अमृत समानरे भोजन चरचिला ४
दुःखी दरिद्रंकु जे देलाक अन्न वस्त्र। एमन्ते दुहिता जे जनम दश मास ५

दिन का उत्सव मनाया। ८९० महीना पूरा होने पर उसका नामकरण करते हुये उन्होंने कहा कि इसका नाम कैकेयी होगा। ८९१ राजा ने ऋषि तथा ब्राह्मणों को प्रचुर भोजन कराकर उन्हें रत्न और धन देकर सन्तुष्ट किया। ९२ हे भगवती ! सुनो ! इसके पश्चात् हेती का अन्य आधा अंश गिरजा मण्डल के याजपुर नगर में वेग से जा पहुँचा। वहाँ पर नील नामक प्रतापी राजा था। ९३-९४ उसकी पटरानी का नाम चम्पा था। वह उनकी बावन रानियों में श्रेष्ठ थी। ९५ हेती की ज्योति राजानील के शरीर में लीन हो गई। नील की वह रानी रजस्वला हुई थी। ९६ पाँचवें दिन रानी ने शुद्ध स्नान किया। फिर श्रृंगार करके रानी का मन प्रसन्न हो गया। ९७ वह रात्रि में राजा के निकट गई। रानी को पकड़ कर राजा प्रसन्न होकर क्रीड़ा करने लगा। ९८ क्रीड़ा की समाप्ति पर राजा ने उसे गोद में बिठा लिया। उसने उसका मुख चूमकर कुच मर्दन किये। ९९ उन्होंने कटि बन्धन खोलकर उसके साथ रमण किया। उनके अंग से ज्योति वीर्य वेग से स्खलित होकर चम्पावती के गर्भ में प्रविष्ट हुआ और गर्भ में स्थित हो गया। ९००-९०१ उस दिन चम्पावती गर्भवती हो गई। पांच महीने के पश्चात् दासी ने राजा को सन्देश दिया। २ यह सुन कर राजा का मन प्रसन्न हो गया। आठ महीने बीतने पर उन्होंने गर्भ-दान किया। ३ राजा ने ऋषि ब्राह्मणों को बुलाकर अनेक दान दिया तथा अमृतोपम भोजन देकर उन्हें सन्तुष्ट किया। ४ दुःखी-दरिद्रों को उन्होंने अन्न तथा वस्त्र प्रदान किये। इस प्रकार दस महीने पर पुत्री का

पाञ्चदिने पंचु आति कले जे दासीश्रोता।षड़ दिने षष्ठी घर लिहिले हरषिता ६
सातिदिने उठिआरि सेहू जे करिले। बार दिने बारजात्रा भिआण पुण कले ७
मासकरे नग्ररे उत्सव कराइले। ऋषि ब्राह्मण डकाइ दान पुण्य कले ८
दुःखी दरिद्रंकु जे धन वस्त्र देले। भूरि भोजन ऋषि ब्राह्मणरे देले ९
विष्णु प्रतिमांकु वेश कराइले। शिव प्रतिमा मानंकु क्षीर निउड़िले ९१०
ग्राम देवता मानंकु छागल देइ देले। × × × × × ×
समस्तंकु तोषकले नील जे राजन। कौमुद ऋषिकि घेनि वसि भितरेण ९११
होम कराइण दुहिता नाम देला। आपणार नामरे जे ताहा नाम हेला १२
लीलाबती नाम जे होइला ताहार। वाहारे विजे कला हरष मनर १३
हाट बाट जूर जे कराए राजन। धोवा तूठ जूर जे कलाक राजन १४
लेखिबा द्रव्य जूर राजन पुण देला। पात्र मंत्री समस्तंकु पेष कराइला १५
पुत्र समानरे परजा पाले राजा। समस्तंक कुशलकु मणे सेहि राजा १६
पार्बती बोइले देब शुण मो वचन। हेतिर अंशे चारि सत्र जे जनम १७
जात हेले टिकि हे कह देब मोते। से कथा शुणिले मोर मने हेव प्रते १८
बासुदेबर जननी समस्ते होइबे।नारायण जन्म होइ माता वोलिण डाकिबे १९

जन्म हुआ। ५ दासियों ने पाँचवे दिन पंचमी विधि, छै दिनों में षष्ठी पूजा प्रसन्नता पूर्वक समाप्त की। ६ सात दिनों में सोर उठाई गई तथा बारहवें दिन बरहो मनाया गया ७ एक माह तक नगर में उत्सव आयोजित किये गए। ऋषि और ब्राह्मणों को बुलाकर दान पुण्य किये गए। ८ उन्होने दुखी दरिद्रों को धन तथा वस्त्र दिये। ऋषि और ब्राह्मणों को नाना प्रकार के भोजन प्रदान किये गये। ९ उन्होंने विष्णु की मूर्तियों के शृंगार कराये और शिवलिंगों का क्षीराभिषेक किया। ९१० ग्रामदेवताओं को बकरे भेंट किये तथा महाराज नील ने सभी को सन्तुष्ट किया। फिर कुमुद ऋषि को लेकर भीतर बैठ गए। ९११ हवन कराकर पुत्री का नामकरण हुआ उनके नाम के अनुसार ही उसका नाम पड़ा। १२ उसका नाम लीलावती हो गया। फिर राज' प्रसन्नचित्त होकर बाहर निकल आए। १३ हाट बजार गली-घाट सभी स्थानां पर राजा ने धन लुटाया। १४ जो भी द्रव्य लूट में गया था। राजा ने उसकी क्षति पूर्ति राज-कोष से की उन्होंने सभासद तथा मंत्री आदि सभी को सन्तुष्ट किया। १५ वह राजा पुत्र के समान प्रजा का पालन करता था। वह राजा सभी के कुशल मंगल का इच्छुक रहता था। १६ पार्वती ने कहा, हे देव मेरी बात सुनो। हेती के अंश से जिन चार सौ अंशों का जन्म हुआ ! वह सभी उत्पन्न हुईं। उनकी कथा आप मुझसे कहे। वह कथा सुनने से हमें प्रतीति होगी। १७-१८ वह सभी भगवान की मातायें होंगी। भगवान जन्म धारण

ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती। बरषके चारिशत नारि जे उत्पत्ति ६२०
सताइश राजा घरे जनम लभिले। शोभापणे सुन्दर जे जगत मोहिले ६२१
दिनुंदिन बढ़न्ति जे राजार कुमारी। शुकलपक्षे जेन्हे बढ़इ राहू ऐरी २२
पार्बती बोइले कश्यप मुनिकर। दुइ नारी तांकर अटन्ति पुण सार २३
एक नारी चारिशत अंशरे जात हेला। आर नारी किस कला किरूपे जन्मिला २४
से कथा मोर आगे कह त्रिलोचन। बासुदेव माता कथा शुणिबाकु मन २५
ईश्वर बोइले प्रहेति कथा शुण। मर्त्य पुरकु प्रहेति चलिला बहन २६
सबु दिने देबतांक माता से अटइ। दश दिगपालंकु जे जात कला सेहि २७
जेते बेले स्वर्गरू अइला ओल्हाइ। दश दिगपाले जे पच्छरे गोड़ाइ २८
मरुत कुबेर जे बरुण अग्नि पुण। चन्द्र सूर्ज केतु जे बृहस्पति जाण २९
मंगल अश्विनीकुमार संगे मिलि। देखिण कश्यप नारी मनरे बिचारि ६३०
पुत्र माने मोर जे कि कार्ज्ये आउ आस। बिचारि मोते मर्त्य पुरकु जे पेषि ६३१
आगे स्वामी गले पच्छे गले सपतणी। मर्त्यपुरे जनम होइले सेहू पुणि ३२
सपतणी संगरू चारिशत नारी। सताइश राजा घरे जाइ अबतरि ३३

करके उन्हें माता कहकर सम्बोधित करेंगे। १९ भगवान शंकर ने कहा, हे भगवती ! सुनो। एक वर्ष के भीतर चार सौ कन्याओं का जन्म हुआ। ६२० उन लोगों ने सत्ताइस राजाओं के घरों में जन्म लिया। सुन्दरता में उन्होंने संसार का मन मोहित कर लिया। ६२१ वह राजकुमारियाँ दिनोंदिन बढ़ने लगीं। जिस प्रकार शुक्लपक्ष में राहु का शत्रु चन्द्रमा वृद्धि को प्राप्त होता है। २२ पार्वती ने कहा कि कश्यप ऋषि की दोनों स्त्रियाँ उनमें मुख्य थीं। २३ एक स्त्री ने चार सौ अंशों के साथ जन्म लिया। अन्य स्त्री ने क्या किया और उसका जन्म किस प्रकार से हुआ। २४ हे त्रिनेत्रधारी शिव ! वह कथा आप हमसे कहें। हमें भगवान की माताओं की कथा सुनने की इच्छा है। २५ शंकर जी बोले कि तुम अब प्रहेति की कथा सुनो। प्रहेति शीघ्र ही मृत्युलोक की ओर चल पड़ी। २६ वह सदैव से देवताओं की माता थीं। उन्होंने ही दसों दिग्पालों को जन्म दिया था। २७ जिस समय वह स्वर्ग से उतर कर नीचे आई तभी सभी दिग्पाल उनका पीछा करते हुए दौड़ने लगे। २८ मरुत कुबेर वरुण अग्नि चन्द्र सुर्य केतु वृहस्पति मंगल तथा अश्विनी कुमार को एक साथ देख कर कश्यप की पत्नी प्रहेति ने अपने मन में विचार किया। ६२९-३० अरे मेरे पुत्रो ! तुम लोग और किस काम से आ रहे हो। विचार विमर्श के पश्चात् ही तो मुझे मृत्युलोक में भेजा गया है। ६३१ पहले स्वामी और उनके पीछे सपत्नी (सौत) ने मृत्युलोक में जाकर जन्म धारण कर लिया है। ३२ सौत के साथ में चार सौ स्त्रियों ने सत्ताइस राजाओं के घरों में जाकर अवतार ग्रहण

स्वामी मोर तपन कुलरे अवतरि। दशरथ रूप ऋषि रूप तेज्याकरि ३४
एमन्त बिचारि नारी पुत्रंकु चाहि ले। किम्पा आसुछ बोलि वचन कहिले ३५
देबताए बोइले जननी एवे शुण। आम्भे माने तोर दासी होइलुं जे पुण ३६
आम्भर सकाशे मोर दुःख हेला एबे। हृदरे क्रोध न धरि जाअ सद्‌भावे ३७
प्रहेति बोइला मोर अनेक सुख हेला। जेबे अनुग्रह मोते वासुदेव कला ३८
गर्भ धरि जेबे मुहिं करिबइँ जात। ए पाप नेत्ररे मुहिं चाहिबि पद्ममुख ३९
कोलरे थाइ माता से बोलिबाक मोते। एते सुख एते काले मिलिलारे पुत्र ६४०
बैकुण्ठे ठाकुरे जे अनन्त नारायण। मोहर गर्भरे से जात हेबे शुण ६४१
एते सुख तुम्भर सकाशुँ मोते हेला। सृष्टिर करता जेबे होइबे मोर बला ४२
तुम्भंकु अर्जिबारू सुख मोते देले। मूल जोगे पुत्र माने जनम होइले ४३
एतेकहि अदिति देबंकु सन्तोष। बोइले देबे जाअ नारायण पाश ४४
त्रैलोक्य ठाकुरंकु जाइण अनुसर। महिमा सागर जे अटन्ति चक्रधर ४५
दुःखी लोकर बान्धव सुखी लोकर प्रीति। दुष्ट लोक मानंकर शत्रु जे अटन्ति ४६
भकत भाव ग्राही बोलन्ति नरहरि। लीला करिबा निमन्ते अछन्ति अवतरि ४७
बैकुण्ठ पुररे बिचारन्ते पुण। दैत्यगण छार कि रहिबे राज्येण ४८

किया है। ३३ हमारे स्वामी ने ऋषि का रूप त्याग कर सूर्यवंश में दशरथ के रूप में अवतार ग्रहण किया है। ३४ इस प्रकार का विचार करके प्रहेति ने पुत्रों की ओर देखकर कहा कि तुम लोग किसलिये आ रहे हो। ३५ देवताओं ने कहा कि हे माता! अब सुनिए हम लोग आपके सेवक हैं। ३६ हम लोगों के कारण से ही आपको दुःख हुआ है। अतः आप हृदय में क्रोध न करके सद्‌भाव से जायें। ३७ प्रहेति ने कहा कि मुझे वहुत सुख हुआ है क्योंकि भगवान ने मेरे ऊपर कृपा की है। ३८ जव मैं उन्हें गर्भ में धारण करके उन्हें जन्म दूंगी तो मैं अपने इन पापी नेत्रों से उनके मुखकमल का दर्शन करूँगी। ३९ वह मेरी गोद में रहकर मुझे माँ कहकर पुकारेगें। अरे पुत्रों! कितने समय बाद मुझे ऐसा सुख मिलेगा। ६४० तुम लोग सुनो। बैकुण्ठ के स्वामी अनन्त नारायण मेरे गर्भ से उत्पन्न होगें। ६४१ तुम्हारे कारण ही मुझे इतना सुख मिलेगा कि सृष्टिकर्ता मेरे पुत्र वनेगें। ४२ तुमने मुझे यह सुख कमाकर दिया है। तुम लोग अच्छे योग में जन्मे थे। ४३ इतना कहकर अदिति ने देवताओं को संतोष प्रदान करते हुये भगवान के पास जाने को कहा। ६४४ वह बोली की चक्रधारी वासुदेव तीनों लोको के स्वामी तथा महिमा के समुद्र हैं। तुम लोग जाकर उनका अनुसरण करो। ४५ वह दुःखी पुरुषों के बन्धु सुखी लोगों के प्रेमी तथा दुष्टों के शत्रु है। ४६ वह भक्तों के भावों को ग्रहण करने वाले है। उन्होंने नर रूप में लीला करने के लिये अवतार ग्रहण किया है। ४७ वैकुण्ठ लोक में उन्होंने विचार किया कि तुच्छ

चउद ब्रह्माण्ड जार गर्भरे अछि जाण। तिनि द्वीप नव खण्ड मेदिनीरे पुण ४९
स्थिति उतपत्ति पुण जाहा ठारू हेला। सेकिम्पा जनम हेबाकु भाबिला ६५०
दुष्ट सिनाताकु अटन्ति बलियार। दुष्ट मारिबाकु जात मानब शरीर ६५१
तुम्भर भाग्य अछि मोहर बहू जोग। अमृत बेलरे जात कश्यप द्विज अज ५२
एते बोलि देबतांकु प्रबोधि कहिले। झटक बिजुलि प्राये अन्तरीक्षरे गले ५३
चन्द्रदेइ पुररे जाइ होइले प्रबेश। कौशिक राजार शरीरे प्रकाश ५४
ज्योतिरूपरे से जे प्रकाश हेबारू। तेजबन्त राजा दिशिला सेठारू ५५
कउशिक राजार शतेक पाटराणी। ज्येष्ठ पाटराणी साबित्री ठाकुराणी ५६
पांच दिने शुद्ध स्नान कलाक जाइ पुणि। अष्टरत्ने भूषण होइलाक राणी ५७
बिद चूड़ि मूदिजे हृदयरे हार पुणि। दिव्य अलंकार अंगे होइला मण्डणि ५८
नाना रंगे पुष्प आभरण कला। चन्दन अगुरु कस्तूरी लगाइला ५९
गन्ध सुबासरे हृदय तार बासि। बेश देखिले मोहि होइ जिबे ऋषि ६६०
रजनी सात घड़ी ठारे राणी गला चलि। स्वामीर पाशरे मिलिला मनोहारी ६६१
देखिण राजन हरष होइला। पाट राणीकि नेइ कोलरे बसाइला ६२
मुखरे चुम्बन देइ हरष मनरे। निबिबन्ध फिटाइ रति कला हरषरे ६३
रति रंग करिबारू खसिला बलबीर्य्य। राणी गर्भरे स्थित होइला तनुज ६४

राक्षस लोग इस राज्य में कैसे रह सकते हैं। ४८ जिसके गर्भ में चौदह ब्रह्माण्ड तथा तीन द्वीप-नौ खन्ड पृथ्वी है। जिससे उत्पत्ति तथा स्थिति होती है। उसने जन्म लेने के लिये क्यों विचार किया। ४९-६५० दुष्ट उनसे बलवान पड़ते हैं। अतः उन दुष्टों का विनाश करने के लिये उन्होंने मानव का शरीर धारण किया। ६५१ हमारा अत्यन्त सुयोग तथा तुम्हारा भाग्य है कि अमृत वेला में ब्रह्मण कश्यप महाराज अज के यहाँ उत्पन्न हुये। ५२ इतना कहकर देवताओं को समझाते हुये वह विद्युत गति से अन्तरिक्ष में चली गयी। ५३ वह चन्द्रदेवी पुर में जाकर महाराज कौशिक के शरीर में प्रकाशित हुयी। ५४ ज्योति रूप में प्रकाशित होने के कारण राजा वहाँ तेजवान दिखाई देने लगे। ५५ महाराज कौशिक के एक सौ पटरानियाँ थीं। जिनमें महाराणी सावित्री बड़ी थीं। ५६ उसने पाँचवें दिन शुद्ध स्नान किया तथा अष्टरत्न के आभूषण पहन लिये। ५७ बिन्दी, चूड़ी, अगूंठी, गले में हार तथा दिव्य आभूषणों से उसने अपने शरीर को अलंकृत किया। ५८ नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों के आभरण पहन कर उसने चन्दन अगुर तथा कस्तूरी लगायी। ५९ उसका वक्षस्थल सुगन्ध से महक रहा था। उसका सुन्दर वेश देखकर ऋषि भी मोहित हो जाते। ६६० सात घड़ी रात्रि में वह मन को हरण करने वाली रानी पति के पास जा पहुँची। ६६१ उसे देखकर राजा प्रसन्न हो गये उन्होंने पटरानी को लेकर गोद में बिठा लिया। ६२ प्रसन्न मन से मुख को चूमते हुये उन्होंने कटि ग्रन्थि को खोलकर हर्ष से रानी के साथ रमण किया। ६३ रति-क्रीड़ा करने से बल-वीर्य

राजार सरस मन निरस होइला। राणीर शरीर अचेष्टा होइला ६५
रणीकि कोलरे घेनि शोइला राजन। निशि पाहिबारू अइले दासीगण ६६
राणीकि घेनिण आनपुरकु गले। मर्दन माजणा करि स्नान कराइले ६७
अमृत भोजन कराइले पुण। आचमन करिण बिड़िआ भुञ्जिण ६८
रत्न पलंकरे राणी निद्रागले। दासीगणे अलट चामर विंचिले ६९
चरण मंचालन्ति बसिण धाइ गण। अदिति हेला जाइ राणी गर्भें जाण ९७०
पार्वती बोइले देव राजनकि कले। पलंक उपरे राजा शोइथिले ९७१
ईश्वर बोइले राणी जिबारू सेठारू। राजन उठिण गले पलंकरू ७२
बाहारे अवकाश होइले राजन। सेबाकारी लोके आसिमिलिले पाशेण ७३
माजणा मर्दन करि स्नान कराइले। अमलान बस्त्र नेइ पिन्धाइले ७४
माल चूल भूषण कराइले पुण। देबार्चन मण्डपरे बिजय राजन ७५
देबार्चन बिधि सारि बाहरे अबकाश। धर्म पुरुष तार हृदरे परकाश ७६
ऋषि ब्राह्मण अणाँइ राजन दान देला। दुःखी दरिद्र मानंकु धन बिकसिला ७७
हाट बाट घोबालूढ होइलाक जूर। पात्र मंत्री मानंकु देले धन सार ७८
जूर गला धन भण्डारू नेइ देले। अमनात्यगणंकु जाचिण बिलोहिले ७९

स्खलित होकर रानी के गर्भ में स्थित हो गया। ६४ राजा का सरस मन विरस हो गया और रानी का शरीर भी शिथिल हो गया। ६५ राजा रानी को गोद में लेकर सो गया। रात्रि व्यतीत होने पर दासियाँ आ गयीं। ६६ वह रानी को लेकर दूसरे महल में चली गयी और उन्होंने उसके शरीर को दबाकर उबटन लगाकर स्नान कराया। ६७ फिर अमृत के समान भोजन कराया। मुखमार्जन करके पान खाकर रानी रत्नजड़ित पलंग पर सो गयी और दासियाँ पंखा तथा चँवर डुलाने लगीं। ६८-६९ दासियाँ चरण दबा रही थीं। उनके गर्भ में अदिति स्थित हो चुकी थी। ९७० पार्वती ने कहा हे देव ! राजा ने क्या किया। राजा तो पलंग पर सो रहे थे। ९७१ शंकर जी ने कहा कि रानी के वहाँ से चले जाने पर राजा पलंग से उठ गये। ७२ उनके बाहर निकलने पर सेवा करने वाले दास उनके पास आ गये। ७३ उन्होंने अंग-मर्दन तथा उबटन लगाकर राजा को स्नान कराया और उन्हें स्वच्छ वस्त्र पहना दिये। ७४ बालों को सँवार कर तथा आभूषणों को धारण करके राजा पूजा-स्थल में जा पहुँचे। ७५ देव-पूजन समाप्त करके वह बाहर आये। उनके हृदय में धार्मिक पुरुषों का प्रकाश जाग्रत हो गया। ७६ राजा ने ऋषि और ब्राह्मण को बुलाकर दान दिया। दुःखी और दरिद्रों को धन बाँटा। ७७ बाजार, गली, घाट सब जगह लूट मच गई। सभासद तथा मंत्रियों को उन्होंने प्रचुर धन दिया। ७८ लूट में गये धन की क्षति भण्डार से पूरी की गई। अधिकारियों से समझाकर कह

बिष्णु प्रतिमा मानंकु नाना बर्णे भोग । ईश्वर देवतांकु क्षीर लागि जोग ६८०
देबी मानंकु बोदा पोटुअ नेइ देला । बिप्र ऋषि मानंकु भूरि भोजन देला ६८१
मेलाणि होइण समस्ते चलि गले । एमन्ते किछि दिन गलाक तहिं भले ८२
पंच मासे गर्भ होइला राणी जेणु । नृपति आगरे दासी कहिले तेणु ८३
बड़ पाटराणी गर्भ पांच मास हेला । दिनकु दिन राणी तेज प्रकाशिला ८४
शुणिण महाराजा आनन्द मनरे । पुर्णमी चन्द्र प्राये बिकाश मुख तारे ८५
षष्ठ मासरे राजा गर्भ दान देला । बन्धु जन मानंकु बरिण आणिला ८६
ऋषि ब्राह्मण जे बरण कला जाण । होम कराइण दान देलाक राजन ८७
देबतामानंकु बेश कराइला । अमृत समान भोग बिलसिला ८८
बन्धुजनमानंकु संगरे घेनि पुण । संन्तोषे भोजन कला जाइण राजन ८९
समस्तंकु संतोषरे मेलाणि राजा देले । जे जाहार पुरकु समस्ते चलि गले ६९०
आनन्दे राज्य कथा बुझाइ राजन । मासके काहाणेकर निए सेहु पुण ६९१
मासके थरे राजा पुणि जोगी होइ । हरि गोविन्द मुणि धरिण बुलि जाइ ९२
नगर बुलिण से मागइ भिक्षा पुण । से भिक्षा भोजन करइ सेहि दिन ९३
एक दिने राजन शयन करि थिला । निद्रा बेले आसिण नारद कहिला ९४

भी दिया गया । ७९ विष्णु प्रतिमाओं को नाना प्रकार के भोग राग तथा शिवलिंगों का क्षीराभिषेक किया गया । ६८० देवियों को भैंसे और पाढ़े लेकर दिये गए । राजा ने ऋषियों तथा ब्राह्मणों को बहुतायत में भोजन दिया । ६८१ विदा होकर सभी लोग चले गए । इस प्रकार कुछ दिन भली प्रकार से बीत गए । ८२ जब रानी का गर्भ पाँच महीने का हुआ तो दासी ने राजा से जाकर बता दिया । ८३ हे राजन् ! बड़ी पटरानी का गर्भ पाँच माह का हो गया है और दिन पर दिन रानी का तेज प्रकाशित होता जाता है । ८४ यह सुनकर महाराज का मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान आनन्द से विकसित हो गया । ८५ छठवें महीने राजा ने गर्भदान दिया । बन्धु-बान्धवों को निमंत्रित करके बुलवा लिया । ८६ राजा ने ऋषि और ब्राह्मणों को वरण करके हवन करवा कर उन्हें बहुत दान दिया । ८७ देवी देवताओं का श्रृंगार कराकर अमृतोपम प्रसाद वितरित किया । ८८ राजा ने फिर बन्धु-बान्धवों को साथ लेकर संतोष पूर्वक भोजन किया । ८९ राजा ने सभी लोगों को सन्तुष्ट करके विदा दी और सब अपने-अपने घर चले गए । ६९० वह राजा राज्य के आनन्द की बात समझाकर कर लेता था । ६९१ महीने में एक बार राजा योगी का वेष धारण करके गोविन्द हरि की राम नामी तथा भिक्षा पात्र लेकर नगर में घूम फिर कर भिक्षामाँगते तथा उस दिन वही भिक्षा ग्रहण करते थे । ९२-९३ एक

बोइले मुनिबर शुण तु राजन। तोर घरे जात हेबे कश्यप नारी जाण ९५
कश्यप जात हेले अज राजा घरे। तपन कुलरे सुर्ज्यंर बंशरे ९६
तांक नाम दशरथ होइलाक पुण। तो दुहिता बिभा ताकु करिबु राजन ९७
तोर दुहिता कोलरे श्री हरि हेबे जन्म। तेबे से असुर बल होइबे निधन ९८
नर देब बानरंक भय जिब जाण। तुम्भर बहुत सुफल हेब पुण ९९
एते बोलि नारदे अन्त रीक्षे गले। चेतिण राजन निद्रारू उठिले१०००
बिचारन्ति मोर कर्म सुफल एबे हेला। नारायण पुरुष सुदया मोते कला१००१
निश्चय कर्म मोर होइब उज्ज्वल। मो दुहिता गर्भे जात हेबे रघुबाल २
एते बिचारि राजन हरष होइले। पलंक सुपाति तेजि दासींकू डाकिले ३
चन्द्रदीप आलोकरे दासींक संगे खेल। करि तूलरे रजनी बढ़ाए नृपबर ४
रजनी शेषरे दासी माने गले। बाहारे अबकाश राजन होइले ५
दश मास दुइ दिन राणीर गर्भ हेला। दुइघड़ि समयरे पेट बथाइला ६
पञ्चघड़ि समयरे दुहिता हेला जात। शोभा सुन्दरी पणरे रोहिणीं संजात ७
राजार आगरे दासी माने कहि। पाटराणी गर्भरू दुहिता जात होइ ८
सेहु दुहिता गोटि अति मनोहर। कोले पड़ि बासुदेब सुमरणा तार ९

दिन राजा शयन कर रहे थे। तभी निद्रा में ही महर्षि नारद ने आकर कहा, हे राजन् सुनो! कश्यप-पत्नी का जन्म तुम्हारे घर में होगा। ९४-९५ भानुकुल में सूर्यवंशी महाराज अज के घर में कश्यप का जन्म हो चुका है। ९६ उनका नाम दशरथ पड़ा है। हे राजन्! तुम अपनी राजकुमारी का विवाह उन्हीं से करना। ९७ तुम्हारी पुत्री के गर्भ से भगवान जन्म लेंगे और तभी राक्षसों का विनाश होगा। ९८ तभी मनुष्यों देवताओं तथा वानरों का भय जाएगा और आपको बहुत पुण्य का लाभ होगा। ९९ इतना कहकर नारद अन्तरिक्ष को चले गए और राजा निद्रा को छोड़कर उठ बैठे। १००० वह विचार करने लगे कि अब मेरे सुकर्म फलीभूत हुए हैं इसीलिये भगवान ने मेरे ऊपर कृपा की है। १००१ निश्चय ही मेरे कर्म उज्ज्वल होंगे जो रघुकुल का बालक मेरी पुत्री के गर्भ से उत्पन्न होगा। २ ऐसा विचारते हुए राजा ने प्रसन्न होकर पलंग तोषक छोड़कर दासी को बुलाया। ३ चन्द्रदीप के आलोक में दासियों के साथ क्रीड़ा करके राजा ने रात्रि व्यतीत की। ४ रात्रि समाप्त हो जाने पर दासियाँ चली गयी और राजा भी बाहर निकल आए। ५ दस माह तथा दो दिन का गर्भ हो जाने पर दो घड़ी में रानी का पेट दर्द करने लगा। ६ पाँच घड़ी के समय पर पुत्री उत्पन्न हुयी। सौन्दर्य में लगता था जैसे रोहिणी ही अवतरित हो गई हो। ७ दासियों ने राजा के समक्ष जाकर कहा कि पटरानी के गर्भ से पुत्री उत्पन्न हुयी है। ८ वह पुत्री अत्यन्त मनोहर है और गोद में आते ही उसने भगवान

दुइ चरण अलतारंग प्राये दिशे। पद्मनाड़ पराये बाहु ता बिकाशे१०१०
मुख गोटि चन्द्रमा पराए तार जाण। मृग नयन पराए नेत्र अटे जाण१०११
उलट कदली बृक्ष तार जानु। चित्र पटे लेखन के करि पारिब तनु १२
एमन्त स्वरूप तार राजाकु दासी कहि। शुणिण नृपति मनरे तोष होइ १३
एमन्त प्रकारे अदिति हेला जन्म। राजार नगर दिशिला शोभावन १४
श्री हरि चरणरे बलराम दास। पार्बती सदा शिब दुहिँकि करि आश १५
एथु अनन्तरे कहन्ति भगबती। एठारू किस हेला कह प्राण पति १६
ईश्वर बोइले देबी शुण साबधाने। राजा आगे दासी कहे जन्म हेला जेन्हे १७
एमन्त समयरे दासिए आसि मिलि। कर जोड़ि राजा आगे कहे पुर सरि १८
बोइला देब एबे बिचित्र कथा शुण। मर्त्यपुरे ए कथा देखा नाहिं पुण १९
तुम्भर ए दुहिता राणी ठारू जात। सुन्दर पणे से जे मोहइ जगत१०२०
दश पाञ्च थरे से जे एकोइर बला। निबर्त होइण एबे बचन कहिला१०२१
बोइला मो पितांकु अणाअ मोर पाश। शुणिण तुम्भ पाशकु अइलि हरष २२
शुणिण राजन परम तोष हेला। दासीर संगतरे भितर पुर गला २३
दुहितार पाशे होइला परबेश। कुमारीकि देखि राजा मनरे हरष २४

का नाम स्मरण किया। ९ उसके दोनों चरणों में महावर जैसा रंग दिखाई दे रहा है और कमलनाल के समान उसकी भुजायें विकसित हैं। १०१० उसका मुख चन्द्रमा के समान और उसके नेत्र हिरन के समान हैं। १०११ उलटे केले के वृक्ष की भाँति उसकी जाँघें है। उसके शरीर को चित्रपट में कोई भी नहीं उतार सकता। १२ दासी ने राजा से उसके इस प्रकार का रूप वर्णन किया जिसे सुनकर महाराज के मन में संतोष हो गया। १३ इस प्रकार अदिति का जन्म हुआ। राजा का नगर सुहाना दिखाई दे रहा था। १४ बलराम दास भगवान के चरणों में पड़ा है और पार्वती तथा शंकर जी दोनों ही से उसकी आशायें बँधी हुयी हैं। १५ भगवती ने इसके पश्चात् कहा हे प्राणेश्वर ! फिर यहाँ क्या हुआ। आप ये कथा हमसे कहिए। १६ शंकर जी बोले हे देवी ! सावधान होकर सुनो। जिस समय दासी राजा के समक्ष बालिका के जन्म की सूचना दे रही थी। उसी समय एक दासी ने राजा के आगे हाथ जोड़कर कहा। १७-१८ हे देव ! एक विचित्र बात सुनिये। मृत्युलोक में ऐसी बात देखी नहीं गई। १९ रानी से उत्पन्न हुयी आपकी पुत्री सौन्दर्य में संसार को मोहित कर रही है। १०२० उस बालिका ने दस-पाँच बार रुक-रुक कर यह वचन कहे। १०२१ मेरे पिता को मेरे पास बुलाओ। यह सुनकर मैं प्रसन्नता से आपके पास आ गयी। २२ यह सुनकर राजा को महान संतोष हुआ और वह दासी के साथ अन्त:पुर में चले गये। २३ वह पुत्री के पास जा पहुँचे और कुमारी को देखकर उनका मन प्रसन्न

दुहिता बोइला पिता सावधाने शुण। देबंकर काय्र्ये मु तोर घरे जन्म २५
तपन कुलरे अजोध्या मण्डलरे। रघुबंशे जात दशरथ नृपवरे २६
इन्द्रंकु जिणि स्वर्गे इन्द्र से होइला। देबतांकर दया ताहा ठारे हेला २७
तेणुकरि तार घरे जनम कश्यप। से पुत्रर नाम एवे होइला दशरथ २८
से मोहर स्वामी पूर्बरू एहा जाण। ताहांकु बिभा मोते देव नर राण २९
एमन्त बचन दुहिता कहे पुणि। अचेत होइला पितांकु कहि वाणी१०३०
दुहिता बचन शुणि राजा सेठारू गला। एथुं अनन्तरे कथा केमन्त होइला१०३१
पाञ्च दिने पञ्चुआति आनन्दे पिता करि।षडदिने षष्ठिघर कलेक परिबारी ३२
सातदिने उठिआरी जातरा करिले।बार दिने बार जावा विधि से सारिले ३३
एमन्ते मासेक गला तहिँ बहि। चन्द्राबती पुरे राजा उतसब कराइ ३४
रम्भाबृक्ष पूर्ण कुम्भ चूतपत्र सबु द्वारे। आनन्दे उत्सव राजा आनन्दरे करे ३५
ऋषि विप्र राजांकु अणाए डकाइ। लक्षेक ब्राह्मण जे मिलिले तहिं जाइ ३६
बेनि कोटि ऋषि जे सेठारे हेले मेल। राजार नबरे लागिला चहल ३७
ऋषिमाने होमकरे बिप्र पढ़े बेद। आनन्द उतसब लागिला जे सेहु नग्र ३८
होम सारि बिप्रमाने दुहिता नाम देले। कौशल्या नाम हेउ बोलिण ऋषिकले ३९
तीर्थजले ऋषिगण कराइ स्नाहान। तीर्थजले पञ्चामृते पवित्र कले पुण१०४०

हो गया। २४ बालिका बोली पिताजी ! सावधान होकर सुनिये। देवताओं के कार्य के लिये मैंने तुम्हारे घर में जन्म लिया है। २५ अयोध्या मंडल में सूर्य वंशीय रघुकुल में नृपश्रेष्ठ दशरथ ने जन्म लिया। २६ वह इन्द्र को जीतकर स्वर्ग में इन्द्र हो गये। देवताओं की दया उन पर हुयी। २७ इसीलिये उनके घर में कश्यप ने जन्म लिया। उस पुत्र का नाम दशरथ विख्यात हुआ। २८ वह पूर्वकाल के मेरे स्वामी है। हे राजन् ! मेरा विवाह उनसे ही करना। २९ इस प्रकार पुत्री ने पिता से कहा और अचेत हो गई। १०३० पुत्री के वचन सुनकर राजा वहाँ से चला गया। इसके पश्चात् फिर क्या हुआ। १०३१ पिता ने पाँच दिनों में पंचमी पूजा की तथा परिवारी लोगों ने छठे दिन छठी मनाई। ३२ सात दिनों में सोर उठाने का उत्सव मनाया गया तथा बारह दिनों में बरहों किया गया। ३३ चन्द्रावती पुर में राजा के द्वारा उत्सव मनाते हुए इस प्रकार एक माह व्यतीत हो गया। ३४ राजा ने सभी द्वारों पर केले के वृक्ष, भरे हुए कलश तथा आम्र पल्लवों को लगाकर हर्षोल्लासपूर्ण उत्सव मनाए। ३५ ऋषियों तथा ब्राह्मणों को राजा ने बुलाया। एक लाख ब्राह्मण वहाँ आकर एकत्रित हो गए। ३६ दो करोड़ ऋषियों का वहाँ जमाव लग गया। और राजमहल में चहल पहल मच गई। ३७ ऋषि बृन्द हवन कर रहा था। ब्राह्मण वेद पाठकर रहे थे। सम्पूर्ण नगर में आनन्दोत्सव हो रहे थे। ३८ ब्राह्मणों ने हवन समाप्त करके पुत्री का नाम कौशल्या रक्खा। ३९ ऋषियो ने कन्या को तीर्थ जल में

सेठारू राजन जे बेगे चलि गले । बाहारे अबकाश जाइण होइले १०४१
ऋषि ब्राह्मणंकु जे अनेक दान देले । दुःखी दरिद्रमानंकु संतोष कराइले ४२
मागन्ता लोकंकु देले बहु धन । हाट बाट घोबातूठ जुर हेलापुण ४३
जूर हेबा पदार्थ भण्डारू नेइ देले । समस्ते मेलाणि होइ सन्तोषरे गले ४४
बन्धुजन मानंकु मेलाणि राजा कला । मुकुट कुण्डल हारमान आणि देला ४५
सन्तोष होइण मुनि बन्धु माने गले । कउशिक राजा पुर चहल भोगे भले ४६
पार्वती बोइले देब शुण हे ईशान । अदिति अंशरू केते जात हेले पुण ४७
प्रहेति अंशरू चारि शत नारी । अर्ध अंश नीलाबती जन्म हेला फेरि ४८
अदिति जनम कौशल्या स्वरूपे । अंग अंग केमन्ते से कह बिश्वनाथे ४९
ईश्वर बोइले तुम्मे शुण भगबती । अदिति अंगे तीनि शत पंचाश जुबती १०५०
बतिश राजा घरे जनम ऐहू हेले । पछंन्ते शुणिब राजा मानंक नाम भले १०५१
अदिति अंशर कथा एबे शुण । चन्द्रकला बोलि एक नग्र अटे पुण ५२
से देशर राजा नाम अटइ सुमन्त । चउषठि राणी तार अटन्ति शोभाबन्त ५३
बड़ राणी नाम अटे चन्द्रमणि पुण । से राणी पुष्पबती होइलाक जाण ५४
पाञ्चदिने राणी शुद्ध स्नान कला । शउच निर्मल तार शरीर होइला ५५

स्नान कराने के बाद तीर्थ जल के पंचामृत से उसे पवित्र किया । १०४० फिर वहाँ से अवकाश पाकर राजा बाहर निकल आए । १०४१ उन्होंने ऋषियों और ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और दुःखी तथा दरिद्रों को सन्तुष्ट किया । ४२ उन्होंने भिक्षुकों को प्रचुर धन दिया तथा हाट बाट तथा घाट में प्रभूत द्रव्य और पदार्थ लुटाये गए । ४३ लूट में गये पदार्थों की क्षतिपूर्ति भण्डार से लेकर की गई फिर सभी बिदा होकर सन्तोष से चले गए । ४४ राजा ने बंधु-बान्धवों को मुकुट कुण्डल हार आदि देकर विदा किया । ४५ संतोष के साथ मुनि तथा बन्धुजन चले गए । कौशिक राजा के नगर में चहल पहल मची हुई थी । ४६ पार्वती जी ने कहा हे ईशान दिशा के स्वामी ! शिवजी ! सुनिये ! अदित्ति के अंग से और कितनी स्त्रियाँ उत्पन्न हुई । ४७ प्रहेति के अंश से चार सौ स्त्रियाँ और अन्य आधे अंश से नीलावती का जन्म हुआ । ४८ कौशल्या के स्वरूप में अदिति का जन्म हुआ । हे विश्वनाथ ! उसका अंग-अंग कैसा था ? आप हमें बताइये । ४९ भगवान शंकर ने कहा, हे भगवती ! सुनो । अदिति के अंग से तीन सौ पचास स्त्रियों का बत्तीस राजाओं के घरों में जन्म हुआ । पीछे उन राजाओं के नाम सुनना । १०५०-१०५१ इस समय तो अदिति के अंश की कथा सुनो । चन्द्रकला नामक एक नगर है । ५२ उस देश के राजा का नाम सुमन्त था ! उसकी चौंसठ रूपवान रानियाँ थीं । बड़ी रानी का नाम चन्द्रमणि था ! वह रानी ऋतुमती हुई । ५३-५४ रानी ने पाँचवें दिन शुद्ध स्नान किया ।

दासीगण घेनि राणी सुबेश होइला । जूड़ा बान्धि मथामणि झुम्पा लगाइला ५६
मस्तकरे अलका कर्णरे मल्लि कड़ि ।चन्द्र फासिआ संगरे कुण्डल कर्णे जड़ि ५७
नासारे सिन्धु फल संगरे पद्मपुष्प । हृदरे पद्ममाला विकाश प्रकाश ५८
बेनिभुजे रत्न चूड़ि बाहुटि बिदताड़ । कटिरे कटि मेखला दिशइ शोभाकर ५९
नूपुर पाहुड़ जे झुण्टिया पादे शोहे । कांचुला पहिरण राणी करे देहे१०६०
बेश होइ राणी संगरे दासी घेनि । नृपतिर पाशरे बिजय कला पुणि१०६१
देखिण राजन परसन हेला । राणिकि नेइण कोलरे वसाइला ६२
मुखरे चुम्बदेइ फिटाए निबिबन्ध । रतिरस कला नृपति कुल चन्द्र ६३
रति रस सारिण कोलरे घेनि शोइ । राजनी शेषरे राणी चलि जाइ ६४
राजांहि निद्रा तेजि पलंकु उठिला । वाहर जगति उपरे बिजे कला ६५
सेबाकारी लोकमाने माजणा बिधिकले। सुबासित जलरे स्नान कराइले ६६
देबार्चन सारि षडरसरे भोजन । कले एथु अन्ते आन चरितकु शुण ६७
चन्द्रमणि राणी जे भितर पुरे गला ।मर्दन माजणा होइ स्नान बिधि कला ६८
षडरसरे भोजन कला राणी पुण । अशकते पलंकरे करिला शयन ६९

उसका शरीर स्वच्छ तथा पवित्र हो गया । ५५ दासियों को लेकर रानी ने शृंगार किया । उसने जूड़ा बाँधकर माथे पर झूमरदार बेंदा लगाया । ५६ उसने मस्तक में सिन्दूर लगाकर कानों में चन्द्रलरी तथा बेला की कलियों के साथ कुण्डल पहन लिये । ५७ नासिका में कमल के फूल जैसा मोतियों से जड़ा अलंकार धारण करके हृदय में कमल का हार पहन लिया था जो बड़ा सुन्दर लग रहा था । ५८ दोनों हाथों में रत्नजटित चूड़ियाँ तथा वाजूवन्द और कमर में तागड़ी सुन्दर दिखाई दे रही थी । पैरों में रुनझुन बजने वाली पायलें शोभा पा रही थी । रानी ने लंहगा तथा ओढ़नी पहन रक्खी थी । १०५९-६० शृंगार करके रानी दासियों को साथ लेकर राजा के पास जा पहुँची । १०६१ राजा उसे देखकर प्रसन्न हो गया और उसने रानी को लेकर गोद में विठा लिया । ६२ नृपकुल में चन्द्रमा के समान राजा ने रानी का मुख चूमकर कटि ग्रन्थि को खोलकर उससे रति क्रीड़ा की । ६३ रमण के उपरान्त राजा रानी को गोद में लेकर सो गया । रात्रि बीत जाने पर रानी चली गई । ६४ राजा भी निद्रा का त्याग करके पलंग से उठ बैठा और वाहर जगती पर जा पहुँचा । ६५ सेवाकारी दासों ने मार्जन विधि सम्पादित करके राजा को सुगन्धित जल से स्नान कराया । ६६ फिर राजा ने षड्रस व्यंजन खाये । इसके पश्चात् अन्य कथा को सुनो । ६७ चन्द्रमणि रानी ने अन्तःपुर में जाकर मर्दन मार्जन विधि से स्नान किया । ६८ षड्रस भोजन करके रानी पलंग के ऊपर शिथिलता के कारण सो

सेहि दिन गर्भबास होइलाक राणी । पाञ्च मासरे दासी राजांक आगे भणि१०७०
शुणिण नृपति हरष मन हेला । अष्ट मासरे राजन गर्भदान कला१०७१
ऋषि ब्राह्मण बरिण बहुत दान कला । बिनय होइ राजा बचन कहिला ७२
दश मासे पांञ्च दिने दुहिता जन्म हेला।चन्द्रंक किरण प्राये ज्योति बिकासिला ७३
पाँञ्चदिने पंचुआति षष्ठिघर करि । सप्त दिने उठि आरी कले दासी घेरि ७४
बार जात्रा सारि किछि दिनगला पुण । मासक संम्पूर्ण दिन बिचारि राजन ७५
ऋषि ब्राह्मण डकाइ पवित्र होमकला । दुहितार नाम सेहि दिन देला ७६
सुमित्रा बोलि नाम देले जे ताहार । आनन्द होइला मनरे नृपबर ७७
ऋषि ब्राह्मणंकु भूरि भोजन देला । धन रत्न देइण मेलाणि कराइला ७८
हेति प्रहेति बंशु सातश पंञ्चाश नारी जात।शुणिण तुम्भ मनकि होइला संतोष ७९
उमादेबी बोइले सेठारू किस हेला । से कथा मोर आगे कह देब भला१०८०
त्रिलोचन बोइले से कथा एबे शुण । नारी मानंक जनम देखिण देबगण१०८१
स्वर्गरे मेल होइ विचार देब कले ।कौशल्या कैकया सुमित्रा गर्भे प्रभु जात हेले ८२
चारि रावण दुष्ट मारिबे जात होइ । तेबे से स्थिर होइ रहिब ए मही ८३
एमन्त बिचार देबता कले पुण । जेउँ प्राये राम मारिबे दुष्ट जन ८४

गई । ६९ उसी दिन रानी गर्भवती हो गई । पाँच महीना बीतने पर दासी ने यह राजा को बताया जिसे सुनकर राजा का मन प्रसन्नता से भर गया । आठवें महीने में राजा ने गर्भ-दान किया । १०७०-१०७१ राजा ने ऋषियों तथा ब्राह्मणों का वरण करके प्रचुर दान देते हुए उनसे विनती की । ७२ दस महीना पाँच दिन पर बालिका का जन्म हुआ उस समय चन्द्रिका के समान आभा छिटक गई । ७३ पाँचवें दिन पंचिमी विधि तथा छठे दिन छठी करके सातवें दिन दासियों ने सोर उठाने की विधि सम्पादित की । ७४ बरहों करने के बाद कुछ दिन बीत गए महीने के सारे दिनों को ध्यान में रखकर राजा ने ऋषियों तथा ब्राह्मणों को बुलाकर पवित्र-हवन किया और उसी दिन बालिका का नामकरण हुआ । ७५-७६ उसका नाम उन्होंने सुमित्रा रक्खा । यह सुनकर राजा का मन प्रसन्न हो गया । ७७ राजा ने ऋषियों और ब्राह्मणों को बहुतायत में भोजन तथा धनरत्न आदि देकर बिदा किया । ७८ हेती तथा प्रहेती के अंश से सात सौ पचास नारियाँ उत्पन्न हुई । सब कुछ सुन क्या तुम्हारा मन सन्तुष्ट हुआ ? ७९ देवी उमा ने कहा, हे देव ! भोले नाथ ! फिर क्या हुआ ? यह कथा आप हमसे बताइये । १०८० त्रिनेत्रधारी शंकर ने कहा कि अब वह कथा सुनो । स्त्रियों का जन्म देखकर देवताओं ने स्वर्ग में एकत्रित होकर विचार किया कि कौशल्या कैकेयी तथा सुमित्रा के गर्भ से भगवान के उत्पन्न होने पर चारों दुष्ट रावण मारे जायेंगे । तभी यह पृथ्वी स्थिरता को प्राप्त होगी । १०८१-८२-८३ देवताओं ने इस प्रकार का विचार किया जिस प्रकार से राम दुष्टजनों का संहार करेंगे । ८४

जे रूपे दशरथ कैकया सत्य हेब। जेउँ रूपे श्रीराम लक्ष्मण वन जिव ८५
एमान भिआइबाकु करिबा उपाए। एते बोलि कालदेवंकि राइ सुरराए ८६
इन्द्र सुमरणारे अइला सेहू नारी। देखिण देवराजा कहिला विचारि ८७
मर्त्य मण्डलकु गो चल आम्भ बोले। जम्बूद्वीप मण्डलरे भरत खण्डरे ८८
चन्द्र देइ पुरकु चल जा सत्वरे। सुदीर्घरे जात हेबु जाइण सखिरे ८९
कैकयी राणीर होइबु दासी पुण। कौशल्या उदरे जन्मिवे नारायण१०९०
देबंकर कार्य्य तुहि सेठारे करिबु। खल भाषा कहि कैकयीकु बुझाइबु१०९१
कैकया दशरथंकु सत्य कराइव। श्री राम लक्ष्मणंकु वनकु पेषिब ९२
श्री रामंक घरणी महालक्ष्मी जाण। श्री रामंक संगे से गमिबे कानन ९३
तेवे से दैत्यबल करिबे निशोधन। चारि रावण मले निश्चिन्त देवगण ९४
शुणिण कालदेवी बहन चलिगले। चन्द्रदेइ पुररे बिजये से कले ९५
मदनरे जेमा घरे प्रवेश होइला। ज्योतिरूप धरिण अंगे प्रवेश हेला ९६
से जेमा रमणी नाम अर्णपुर्णा जाण। शुद्ध स्नान पालि ताहार सेहि दिन ९७
स्वामी पाशरे प्रवेश रात्ररे होइला। रतिरस करिण रजनी पुहाइला ९८
दइब बशरे से होइला गर्भबास। दिनुं दिन गर्भतार होइला प्रकाश ९९
दशमास संपूर्णरे दुहिता हेला जात। तिनिभंग तिनिकुज दुहिता सम्भूत११००

जिस प्रकार दशरथ और कैकेयी की प्रतिज्ञा रहेगी तथा श्रीराम लक्ष्मण जिस प्रकार वनवास को जायेंगे। ८५ इस प्रकार के गुप्त आयोजन के सफल होने के उपाय के लिये देवराज इन्द्र ने काल देवी को बुलाया। ८६ इन्द्र के स्मरण करते ही वह स्त्री आ गई। उसे देखकर देवेन्द्र ने विचार कर उससे कहा। ८७ तुम हमारे कहने से मृत्युलोक के जम्बू द्वीप में स्थित भरत खंड के चन्द्रदेवी नगर को शीघ्र ही चली जाओ और हे भद्रे! वहाँ पर जाकर तुम जन्म ग्रहण करो। ८८-८९ तुम महारानी कैकेयी की दासी बनना। कौशल्या के उदर से भगवान जन्म ग्रहण करेंगे। १०९० तुम वहाँ पर कैकेयी को कपटपूर्ण बातें सिखा कर देवताओं का कार्य करना। १०९१ जिससे कैकेयी दशरथ से प्रतिज्ञा कराकर श्रीराम और लक्ष्मण को वन में भेज देगी। ९२ श्रीराम की पत्नी जो महालक्ष्मी हैं वह भी श्रीराम के साथ वन को जायेगी। ९३ तब वह दैत्यदल का संहार करेंगे और चारों रावण मरने से देवता लोग निश्चिन्त हो जायेंगे। ९४ यह सुनकर काल देवी शीघ्र ही चली गयी और चन्द्रदेवीपुर में जा पहुँची। ९५ वह कामवश कुमारी के घर में प्रविष्ट हुयी और ज्योति रूप धारण करके उसके अंग में समा गयी। ९६ उस कुमारी स्त्री का नाम अन्नपूर्णा था। उस दिन उसका शुद्ध स्नान पड़ रहा था। ९७ वह रात्रि में स्वामी के पास गयी और उसने रति-क्रीड़ा करते हुये रात्रि व्यतीत की। ९८ भाग्यवश वह गर्भवती हो गई और दिन-प्रतिदिन उसका गर्भ बढ़ता गया। ९९ दस महीने पूरे होने पर पुत्री उत्पन्न हुयी

देखि पिता माता ताकु कले अनादर। बीर केते नाम देले मन्थड़ि ताहार११०१
एथु अनन्तरे बरष दश गला। दइब जोगरे जे से नारी बढ़िला २
कैकेय राजकुमारी कैकया नामे नारी। नब जुबा तनु धइला सुकुमारी ३
पाट महादेई कहिला राजा आगे। दुहिता बिभा कर राजन एबे बेगे ४
शुणिण राजन हरस मन हेला। पात्र मंत्रींकि बचन बोइला ५
कुमारी पाइँ मोर बर बेशकर। अजोध्या नगरकु चल हे सत्वर ६
शुणिण पात्र मंत्री बेगे चलि गले। अजोध्या नगरे परबेश हेले ७
अज राजांक आगरे कहिले जाइण। शुण देब अजोध्या देश नर राण ८
चन्द्रदेइ पुर राजा नाम जे कैकयी। करुणाकर अंशरे जनम तार देही ९
दुहिता गोटिए अछइँ तार जाण। कैकयी बोलि तार नामटि अटे जाण१११०
नब जुबा रूपे से सुन्दरपणे जित। तुम्भ पुरकु पेशिले करिण मध्यस्थ११११
तुम्भर कुमरंकु से कन्या बिभादेबे। बरण करिबाकु आसिअछु आम्भे १२
शुणिण राजन परम तोष हेले। जउतिष डकाइ मेलक बुझिले १३
बरकन्यांकर जोग मेलक होइला उत्तम। बिभा घर निश्चय कलाक राजन १४
दिन बार बुझिण सामन्त पात्र गले। चन्द्रदेइ पुरे परबेश हेले १५
राजन आगरे सकल कथा कहि। शुणिण राजन नग्रकु मण्डाइ १६

जो टेढ़ी-मेढ़ी तथा कुबड़ी थी। ११०० पिता-माता ने उसे देखकर उसका अनादर किया और कुछ भाइयों ने उसका नाम मन्थरा रखा। इसके पश्चात् दस वर्ष बीत गये और वह बालिका दैवयोग से बढ़ने लगी। ११०१-२ महाराज कैकय की कैकेयी नामक राजकुमारी नवयौवना तथा सुकुमार शरीर वाली हो गई थी। ३ महाराज की पटरानी ने उनसे कहा हे राजन ! अब शीघ्र ही पुत्री का विवाह कीजिये। ४ यह सुनकर राजा ने प्रसन्न मन से सभासद तथा मंत्रियों से कहा। ५ हमारी राजकुमारी को वर तलाश करने के लिये आप लोग शीघ्र ही अयोध्या को जायें। ६ यह सुनकर सभासद और मंत्री शीघ्रता से अयोध्या नगर में जा पहुँचे। ७ उन्होंने महाराज अज के समक्ष जाकर कहा हे अयोध्या देश के नर सम्राट् ! सुनिये। ८ चन्द्रदेवीपुर के राजा कैकय के अंश से भगवान की कृपा से एक पुत्री का जन्म हुआ है जिसका नाम कैकेयी है। ११०९-१११० उसने सौन्दर्य को जीतकर नवयौवन अवस्था में प्रवेश किया है। राजा ने हमें मध्यस्थ बनाकर आपके नगर में भेजा है। ११११ आपके पुत्र से वह कन्या का विवाह करेंगे। हम लोग उनका वरण करने के लिये आये हैं। १२ यह सुनकर राजा अत्यन्त संतुष्ट हुये। उन्होने ज्योतिषियों को बुलाकर जन्मांक समझी। १३ वर कन्या का योग उत्तम रूप से मिल गया। राजा ने विवाह निश्चित कर दिया। १४ दिन और तिथि समझकर सभासद और मंत्री चले गये और वह लोग चन्द्रदेवीपुर जा पहुँचे। १५ उन्होंने राजा के समक्ष सब बातें कह सुनायीं जिसे

नाना विचित्ररे कटक मण्डाइला। धाड़ि धाड़ि सुवर्ण कलश वसाइला १७
दूर देशकु निमंत्रण वंन्धुवर्ग लोढ़ि। अठर सस्र राजा अणाएँ दण्डधारी १८
समस्ते आसि अजोध्या नग्ररे रुण्ड हेले। वाद्यर शवदरे कूरुम उछुलिले १६
चतुरंग वल जे सारेणि वल अश्व। कि कहिवा ता सम्पत्ति कुवेर सदृश११२०
रत्न बेदी अट्टालि जगति वड़ उच्च।दुइ कोटि ऋषि जे मिलिले सेहि राज्य११२१
वाटुआ हाटुआ बजार दोकान। दुइ लक्ष ब्राह्मण मिलिले तहिँ पुण २२
स्वर्गपुररे देवताए परशंसा कले। एथु अनन्तरे कथा शुण भले २३
गउरि बोइले शुण हे ईशान। कंकयी राज्ये उत्सव हेलात एसन २४
तपन कुले राजा अज नरपति। दशरथ अटन्ति तांकर सन्तति २५
से पुणि केमन्ते कले विभार उत्सव। सेथिर कथा मोते कहिवा हेउदेव २६
ईश्वर बोइले शुण भगवती। पुत्र विभा निमन्ते आनन्द नृपति २७
साठिए सहस्र राजा वरण करि आणि। पाँञ्च कोटि राणिकि वरिले नृपमणि २८
दुइ लक्ष विप्रवर डकाइ आणिले। वतिश क्षउणी वल तक्षणे साधिले २६
पचिश क्षउणी तार अटन्ति सरदार। रथी सारथी सात कोटि जे ताहार११३०
हस्ती तार दुइ लक्ष्य सारेणी पाँञ्चलक्ष। अश्व तार नव लक्ष अटन्ति वराक्ष११३१

सुनकर राजा ने नगर को सुसज्जित किया। १६ दुर्ग को अद्भुत रीति से सजाया गया। पंक्ति की पंक्ति सोने के कलश रख दिये गये। १७ दण्डधारी महाराज ने वन्धु वान्धव सम्वन्धियों को दूर देश में निमंत्रण भिजवाकर अट्ठारह हजार राजागणों को बुलवा लिया। १८ सभी अयोध्या नगर में आकर एकत्रित हो गए। वाद्य नाद से कच्छप कसमसा उठा। १६ चतुरंगिनी सेना विशेषतयः अश्वारोही दल तथा कुवेर के समान सम्पत्ति का क्या कहना ! रत्न वेदी तथा विशाल अट्टालिका तथा जगती जिस राज्य में थीं, उसी राज्य में दो करोड़ ऋषि आ पहुँचे। ११२०-११२१ राहगीर तथा हाट में जाने वाले दो लाख ब्राह्मण वाजार तथा दुकानों में इकट्ठे हो गए। २२ स्वर्ग में देवता लोग भी प्रशंसा करने लगे। अव इसके वाद की कथा सुनो। २३ देवी पार्वती ने कहा, हे शिवजी ! सुनिये ! महाराज कैकय के राज्य में इस प्रकार के उत्सव मनाये गए। २४ सूर्य वंश में राजा अज थे। जिनकी सन्तान राजा दशरथ थे। उन्होंने किस प्रकार से परिणयोत्सव मनाया। हे देव ! वह कथा आप मुझसे कहिए। २५-२६ शंकर जी ने कहा, हे भगवती ! सुनो ! पुत्र के विवाह के लिए राजा प्रसन्न थे। २७ साठ हजार राजाओं को वरण करके लाकर नृपश्रेष्ठ ने पाँच करोड़ रानियों का वरण किया। २८ दो लाख ब्राह्मण बुलवा मँगाए। वत्तीस छावनी सेना उसी क्षण सजाई गई। २६ उनके सरदारों की पच्चीस छावनियाँ थी तथा रथी और सारथी सात करोड़ थे। ११३० उनके पास दो लाख हाथी पाँच लाख रथ तथा

बाजन्तरी बल जे बतिश लक्ष जाण। पुरोहित गुरु जे बशिष्ठ ऋषि पुण ३२
कटकरे उत्सव कलेक नृपवर। सुवर्णर कलश चिराल अपार ३३
चित्रकार डकाइ चित्र कराइला। चित्र पट लेखिबारू भुवन दिशे त्वरा ३४
छामुण्डिया सबुठारे कटकरे करि। चूतपत्र नारिकेल माल माल भरि ३५
सबु द्वारे पूर्ण कुम्भ राज हंस पंति। अजोध्या पुर गोटि शोभारे झटकन्ति ३६
श्वेत पारू आगरे शोभारे झिकच्चन्ति। चाँदुआ टणाइले विविध पन्ति पन्ति ३७
बाद्य निशाणरे पुरइ जगत। अति सम्भवेरे बाहारे नरनाथ ३८
सैन्य बलंकु आज्ञा देले नृपराण। चन्द्रदेइ पुरकु चल सर्वे पुण ३९
एमन्त समयरे बन्धुजने मिलि। देखिण राजा तांकु गउरब करि११४०
षडरसे भोजन कलेक बन्धुगण। समस्ते भोजन सारि बाहारिले पुण११४१
कुमर दशरथकु अनुकूल कराइ। विष्णु प्रतिमा शिव प्रतिमा दर्शन कराइ ४२
देवी मानंकु दर्शन कले जाइ पुण। मंगल आरोपण कलेक राजन ४३
वर बेश जे नाना बिधि कराइले। मस्तकरे जरीपाग नेइण बान्धिले ४४
झलका हीरा झुम्पा नाना बर्णे जत्न। शिर परे देले नेइण त्वरित ४५
वीर बल्ली मुकुता कर्णरे लगाइले। झलका फिरिफिरा तापरे खंजिले ४६
चन्द्र फासिआ फूल कर्ण परे पुण। खंजिबारू रूप गोटि दिशे शोभाबन ४७

नौ लाख तीव्रगामी घोड़े थे। ११३१ उनके बाजा बजाने वालों का समूह बत्तिस लाख था। महर्षि वशिष्ठ उनके पुरोहित तथा गुरु थे। ३२ नृपश्रेष्ठ ने सुवर्ण के असंख्य कलश और पताका लगाकर दुर्ग में उत्सव मनाया। ३३ चित्रकारों को बुलाकर चित्रकारी कराई जिससे नगर अधिक सुन्दर दिखने लगा। ३४ दुर्ग के कगूरों पर आम्र पल्लव नारियल तथा मालाओं की लड़ियाँ लगी थीं। ३५ सभी द्वारों पर जल पूरित कुम्भ तथा राजहंसों की पंक्तियों से सम्पूर्ण अयोध्या नगर की शोभा छिटक रही थी। ३६ विविध प्रकार के चँदोवा पंक्ति की पंक्ति में लगा दिये गये। जिन पर सुहावने सफेद कपोत शब्द कर रहे थे। ३७ वाद्य निशानों से सारा मण्डल भर गया था। अत्यन्त गौरव के साथ राजा ने बाहर निकल कर सैन्यवाहिनी को चन्द्रदेवीपुर चलने की आज्ञा दी। ३८-३९ इसी समय बन्धु बान्धव आ गए। राजा ने उन्हें देखकर उनका सम्मान किया। ११४० बन्धुजनों ने षड्रसयुक्त भोजन समाप्त किया और बाहर आ गए। ११४१ राजकुमार दशरथ को विष्णु प्रतिमा तथा शिवलिंग के दर्शन कराकर सुयोग में बाहर निकाला गया। ४२ फिर राजा ने देवियों के दर्शन करके मांगलिक कार्य किये। ४३ अनेक प्रकार से वर का शृंगार किया गया! मस्तक पर जरी की पगड़ी लेकर बाँध दी गई। ४४ यत्नपूवक झलमलाने वाले हीरों के गुच्छे लेकर शीघ्र ही शिर पर लगा दिये गये। ४५ वीर के कानों में मुक्तावती लगा कर जगमगाने वाले कुण्डल सजा दिये। ४६ चन्द्र फाँसिया कर्णफूल लगा देने से

हस्तरे सुवर्ण कंकण लगाइले। वाहारे बाहुटिमान शोभादिशे भले ४८
हृदयरे पदक आबर चन्द्रलूले। चापसरि कण्ठमाल हेम शोभाकरे ४९
बक्षस्थले नीलमणि करइ तहिं लीला। जेसने चन्द्रकु बेढ़िरहे तारा११५०
अंगुष्ठिरे बस्त्रमुदि दिशे शोभावन। कटिरे सुना सुता दिशइ शोभन११५१
पाठ अंगुष्ठिरे अंगुष्ठा शोभापाए। हृदरे कांचुला जरि शशि प्राये ५२
रत्नर पादुका लगाइ बेनि पादे। जेमन्ते शोभापाए कुमरर अंगे ५३
बेनि कर प्रसारिण उठिला कुमर। दासी माने करे नेइ देलेक तंडुल ५४
दुइ कर पुरन्ते उपरे गुआ देले। जननीर अंचलरे दिअ से बोइले ५५
शुणिण दशरथ जननी पाशे गले। जननी अंचलरे तंडुलकु देले ५६
जननींकि नमस्कार होइण कुमर। मनरे हरष होइला जननीर ५७
बेनि नयनरे अंजन राणी देले। सिन्दुर ठिआ चिता मस्तके लगाइले ५८
भालरे चन्दन बोलिले राणी पुण। पंचवर्ण पुष्पमाल जूड़ारे खंजिण ५९
कण्ठरे दुइगोटि माल लम्बाइला। कुमर मेलाणि होइ जननी पाशुं गला११६०
पितार पाशरे प्रबेश हेला जाइ। अज नरपति गुरु मुख चाहि११६१

उनका रूप और अधिक सुन्दर दिखाई देने लगा। ४७ हाथों में सोने के कंकण पहना दिये। बाँहों में बाजूबन्द शोभा दे रहे थे। ४८ वक्ष पर पड़ा हुआ पदक अन्य चन्द्रमा के समान लग रहा था। सोने का कंण्ठा तथा हँसली सुशोभित हो रही थी। ४९ वक्षस्थल में नीलमणि इस प्रकार शोभा पा रही थी जैसे मानों चन्द्रमा को तारा मण्डल ने घेर लिया हो। ११५० उँगली में मुद्रिका तथा कमर में सोने की तागड़ी शोभा पा रही थी। ११५१ पैर के अँगूठे में अँगूठा-आभरण शोभायमान था। हृदय पर चन्द्रमा के समान जरी का परिधान पहना हुआ था। ५२ दोनों पैरो में रत्न जटित पादुकाएँ इस प्रकार पहनी गई थीं जिससे कुमार के अंग में वे शोभा पा रही थी। ५३ राजकुमार दोनों हाथ फैलाकर उठ गये। दासियों ने हाथों में लेकर उन्हें चावल दिये। ५४ अंजलि में भर जाने पर उसके ऊपर सुपारी रख दी और उन्होने उसे माता के अंचल में डालने को कहा। ५५ यह सुनकर दशरथ माता के निकट गये और उन्होंने वह चावल माता के अंचल में डाल दिए। ५६ माता को नमस्कार करते हुए कुमार को देखकर उनके मन में प्रसन्नता हुई। ५७ रानी ने उसके दोनों नेत्रों में अंजन लगा दिया और मस्तक पर सिन्दूर का तिलक कर दिया। ५८ फिर रानी ने मस्तक पर चन्दन लगाया और पाँच रंग के पुष्पा की माला से उसका जूड़ा सजा दिया। ५९ रानी ने उसके कण्ठ में दो मालाएँ डाल दी। फिर राजकुमार दशरथ माता के पास से विदा हो गए। ११६० फिर वह पिता के पास जा

बोइले कुमरकु बिधिमत करि। मोहर समानरे हेउ मो कुमारी ६२
शुणिण बशिष्ठ सामन्त सैन्य घेनि। मंगल आलति कलेक ततक्षणि ६३
आक जे सारिण आढ़े धराइले। आलट चामर आगरे ढ़लाइले ६४
धीर धीर होइण कुमर मणि चलि। आगरे कयेबार उच्चरे डाक करि ६५
सर्व मंगल दुर्गा नृसिंह माधव। मत्स्य कूर्म नृसिंह शुक्र बामनदेव ६६
एमन्त बचन मान उच्चरे उच्चारइ। कुमर चलि जाइ सिंह द्वारे होइ ६७
खुण्टिया प्रतिहारी मणाइँ घेनि गले। कनक ध्वज रथरे नेइ बसाइले ६८
सिंहासन उपरे बिजये दशरथ। देखिण समस्ते हेले तोषचित्त ६९
छामुरे आलट चामर विञ्चणी। आढ़ेणि पंखा खदी आगरे घेनि पुणि११७०
रथि बसे रथरे सेनापति नगरे। सर्दारमाने बसिले अश्वर पिठिरे११७१
सारेणि मानंकरे सामन्त पात्रगण। राजा माने बसिले रथ उपरेण ७२
ऋषि माने बिजेकले चउदोल परे। आगपच्छे पदाति शस्त्र धरि करे ७३
देखिण अज नृपति रथरे बिजे कले। सिंहद्वार बलि जान्ते हुल हुलि देले ७४
पांञ्च दिने चन्द्र देइ पुररे परबेश। बाटरू पाछोटि राजा नेले जे हरष ७५
राजांक सिंहद्वारे होइले प्रबेश। कैकयी राजन रथे होइले परबेश ७६

पहुँचे। महाराज अज ने गुरुदेव का मुख देखते हुए विधान के मतानुसार कुमार से बोले कि मेरे ही समान मेरा कुमार हो। ११६१-११६२ यह सुनकर वशिष्ठ ने सैन्य सामंत लेकर उसी समय मंगल पाठ किया। ६३ मंगल पाठ समाप्त होने पर विधि सम्पादित करायी और उसके आगे व्यजन तथा चामर, चालन करवाया। ६४ धीर भाव से श्रेष्ठ राजकुमार चल पड़े। आगे-आगे मागध सेवक गण उच्च स्वर में सर्व मंगला दुर्गा, नृसिंह-माधव, मत्स्य, कूर्म नृसिंह, बामन इस प्रकार के नामों का उच्चारण कर रहे थे। राजकुमार चलकर सिंहद्धार पर जा पहुँचे। ६५-६६-६७ प्रतिहारी द्वाररक्षक सेवक नेग लेकर चले गये और उन्हें कनक-ध्वज रथ पर ले जाकर बैठा दिया। ६८ सिंहासन पर विराजमान दशरथ को देखकर सभी लोगों के मन संतुष्ट हो गये। ६९ सामने दासीगण व्यजन, चामर, पंखा आदि लेकर उपस्थित थीं। ११७० रथी लोग रथ पर, सेनापति हाथी पर, तथा सरदार लोग घोड़ों की पीठ पर बैठ गये। ११७१ सारणी बहलों पर सामंत तथा सभासद और राजा लोग रथों पर बैठ गये। ७२ डोलियों पर ऋषि लोग बैठ गये। आगे और पीछे शस्त्र धारण किये हुये पैदल सिपाही थे। ७३ यह देखकर महाराज अज रथ पर विराजमान हो गये और सिंह द्वार से प्रस्थान करने पर मांगलिक शब्द किये गये। ७४ पाँच दिनों में यह लोग चन्द्रदेवीपुर में प्रविष्ट हुये। मार्ग में ही कैकयराज ने प्रसन्नतापूर्वक उनकी अगवानी की। ७५ राजा के सिंह द्वार पर प्रविष्ट होने पर कैकय नरेश रथ पर

जुआइँ कर धरि उठाइ घेनि गले। अन्तःपुर भितरे जाइण पशिले ७७
दासीमाने सेठारू भितरपुर नेले। सुवर्ण सिंहासन उपरे वसाइले ७८
सकल नारी हुंस देखिण आसे पुण। दशरथंकु देखिण हेले तोषमन ७९
मंगल कृत बिधान से रात्रे कले। ग्राम देबी मंदिररे पाणि तोलाइले११८०
बर आड़ु सात घर कन्या आड़ु सात घर। चउद घरर पाणि एक जे ठावर११८१
बर कन्या दुहिंकि स्नान कराइले। हलदी लेपनरे रजनी वंचिले ८२
एथु अनन्तरे शुण भगवती। समस्तंकु चरचा कलाक नृपति ८३
अन्न व्यंजन कले घृत दधि दुग्ध। लवणी मन्था दहि संचार विधि भाव ८४
अन्न वस्त्र सदावर्त्त कलाक बहुत।पाणि पणा सवु स्थाने देला विधिमत ८५
जाआन्ता जाउछन्ति आसन्ता आसुछन्ति। चतुरंग वल सवु घेरि रहिछन्ति ८६
राजांक नबर पात्रंक उआसरे। राउत माहुन्त जे रहिले सेठारे ८७
सातटि घर भितरे सेनापति रहि। ब्राह्मण माने ऋषि संगतरे रहि ८८
समस्तंकु भोजन देलाक नृपवर। मंगल कृत सरिला हेला विभा वेल ८९
पाट जउतिष माने आसि कहि। अनुकूल वेल होइला नर साइँ११९०
शुणिण राजन भितर पुरे गले। वरकु वेश करि वहन आणिले११९१
रत्न बेदी उपरे बर जाइ मिलि। रत्न पिढ़ा दुइ गोटि देले नेइ करि ९२

जा पहुँचे। ७६ जामाता का हाथ पकड़कर उन्हें लेकर अंतःपुर में जा पहुँचे। ७७ वहाँ से दासियाँ उन्हे घर के भीतर ले गयीं और उन्हें सोने के सिंहासन पर बैठाया। ७८ रनिवास की सारी स्त्रियाँ देखने के लिये वहाँ आ गयीं और दशरथ को देखकर उन सबका मन संतुष्ट हो गया। ७९ रात्रि में उन्होंने विधिपूर्वक मांगलिक कृत्य किये। ग्राम देवी के मंदिर में जल चढ़ाया। ११८० वर की ओर से सात घरों का और कन्या की ओर से सात घरों का कुल मिलाकर चौदह घरों का पानी एक स्थान पर एकत्रित करके वर-कन्या दोनों को स्नान कराया गया और हरिद्रा-लेपन में रात्रि व्यतीत हो गई। ११८१-११८२ हे पार्वती ! इसके अनन्तर राजा ने सबका स्वागत-सत्कार किया। ८३ अन्न के व्यंजन बनाकर घी, दूध, दही मक्खन, मट्ठा आदि भावपूर्वक चलाये गये। ८४ अन्न, वस्त्र, शीतल पेय सभी स्थानों में भाव सहित बँटवाये गये। ८५ जाने वाले जा रहे थे। आने वाले आ रहे थे। चतुरंगिनी सेना सबको घेरकर खड़ी थी। ८६ राजा के महल में तथा सभासदों के घरो में योद्धा तथा हाथी चालक वीर रह गये। ८७ सात घरों के भीतर सेनापति ठहरे। ब्राह्मण लोग ऋषियों के साथ टिक गये। ८८ राजा ने सभी लोगों को भोजन दिया। मांगलिक कृत्य समाप्त होने पर विवाह की बेला आई। ८९ प्रधान ज्योतिषी ने आकर कहा कि हे नरनाथ ! प्रस्थान का शुभ मुहूर्त हो गया है। ११९० यह सुनकर राजा महल के भीतर गये और वर का शृंगार करके उन्हें शीघ्र ही ले आये। ११९१ वर रत्न

पिढ़ार उपरे बसिले पिता पुत्र । बरुण पूजा कले ऋषि जे बशिष्ठ ९३
बरुण पूजा सारि पांञ्चि मंतुरिले । बारिक नेइ पांञ्चि बरकु पिन्धाइले ९४
लवण चउँरी कले कन्याकु आणि पुणि । फेराइण भितरकु कन्याकु नेले पुणि ९५
झुम्पी चउँरी भुण्डी जोड़ाकु घेर करि ।पञ्च बर्ण फूलमाल जोड़ा उपरे भरि ९६
मस्तकरे मथामणि अलकाशिरे बान्धि । अति जतनरे भिड़ा तार परे बान्धि ९७
तथिपरे लोटणीं उपरे फूलमाल । देइण दासी माने कलेक मंजुल ९८
कर्णरे कर्णफूल काप मल्ली कढ़ी ।फिरि फिरा संगरे चन्द्र फासिआ जड़ि ९९
रत्न चाप सरिभाल गलारे खंजिले । कण्ठरे रत्न माल नेइण दासी देले१२००
नूपुर पाहुड़ झुंण्टिआ संगे खञ्जि । मस्तकरे सिन्दूर बिन्दु जे बिराजि१२०१
चन्दन पाटि दुइ कपोले लेखि देले । नयने अंजन जतने रंजिले २
इन्द्र गोविन्द साढ़ी पिन्धाइ जतन ।इन्द्र गोविन्द ओढ़णी पतनी देले पुण ३
बेश करि कैकया कन्याकु घेनि गले । रतन बेदीर उपरे बसाइले ४
बैशाल्यो रोपण सारि रूषि जे ब्राह्मण । बर कन्यांक कर कले कुशरे बन्धन ५
हस्त गंण्ठी पकाइ साम बेद पढ़ि ।बिवाहित झिअटिकु डाकिण कुशफेड़ि ६
ब्राह्मण जउतिष रुषि जे तहूँ पुण । होमकले तहिं बेदकु पढ़िण ७
लाजा होम सारिण पूर्ण आहुति कले ।अग्नि कि सन्तोष करि शीतल करिले ८

बेदी के ऊपर जा पहुँचा । दो रत्नजड़ित पीढ़े उन्हें दिये गये । ९२ पीढ़ा के ऊपर पिता और पुत्र बैठ गये । महर्षि वशिष्ठ ने वरुण की पूजा की । ९३ वरुण-पूजा समाप्त करके उन्होंने पवित्री को अभिमंत्रित किया । नाई ने उसे लेकर वर को पहना दिया । ९४ कन्या को लाकर लवण-चउँरी विधान कराया गया और फिर से कन्या को भीतर लिवा ले गए । ९५ झौंरे वालों पर जोड़ा को लगाकर उन पर पाँच रंगों की पुष्प मालाएँ-सुन्दरता से सजा दीं । ९६ शिर पर अलकों को बाँधकर माथे पर बेन्दा लगा दिया और उसे भिड़ाकर अति यत्न से बाँध दिया । ९७ उसके ऊपर वेणी में फूलमालाएँ लगाकर दासियों न सजा दिया । ९८ कानों में कर्णफूल वेला कलिका के आकार वाले फिरफिरे के साथ चन्द्र फासिया (आभूषण) जड़ दिये । ९९ गले में रत्नजड़ित हँसली पहना दी । दासियों ने गले में रत्नों की माला लेकर डाल दी । १२०० पैरों में रुनझुन करने वाले नूपुर पहना दिये तथा मस्तक पर सिन्दूर की बिन्दी लगा दी । १२०१ दोनों गालों पर चन्दन से चित्रकारी कर दी । आँखों में यत्नपूर्वक अंजन लगा दिया । २ यत्नपूर्वक रेशमी सुन्दर साड़ी पहनाकर पाट का दुपट्टा तथा चूनर ओढ़ा दी । ३ शृंगार करके कैकयी-कन्या को ले जाकर रत्न वेदी पर बैठा दिया । ४ धान रोपाई के बाद ऋषि ब्राह्मण ने वर कन्या के हाथ कुश से बाँध दिये । ५ हस्त ग्रन्थि लगाकर सामवेद का पाठ करके एक सुहागिन स्त्री को बुलाकर कुश खुलवा दिये । ब्राह्मण ज्योतिषी तथा ऋषियों ने वेद पाठ के साथ हवन

रत्न वेदी उपरू वर कन्या गले। भितर अन्तःपुरे प्रवेश होइले ६
रत्न सिंहासनरे वसि वर कन्या। राणी हंसमाने करन्ति वन्दापना १०
अनेक धन रत्न पाटराणी देले। आवर राणी माने धन बिलोहिले१२११
लक्षेक पाणि हव्य आणि देले पुण। वन्दा पना करिण खेलान्ति जुअ जाण १२
जुअ खेल सरन्ते वर कन्याकु नेले। पञ्च ग्रासि भोजन विधाने कराइले १३
एमन्त समयरे रजनी मध्येण। मधु शैय्या घरकु नेलेक वेनि जण १४
पात्र मंत्री राजा गण जेते जाइथिले। चतुरंग बल सहिते भरि भोजन कले १५
आर दिन हरिद्रा विधि कले जाण। हलदी चन्दनरे समस्ते बिलेपन १६
दुइ कूलरथी चतुरंग सेनापति। पात्र मंत्री सहिते जेतेक नृपति १७
समस्ते वसन्त वर्ण कुकुम लेपनरे। स्नान करि षड़रसे भोजन सारिले १८
द्वितीय दिन जान्ते तृतीय दिन हेला। चन्द्र देइ पुर बूलि देखिले से त्वरा १६
चतुर्थ दिन लाजा होम विधि मान कले। वेद धारा प्रमाणरे दोष छड़ाइले१२२०
पलंक सुपातिरे विजय दशरथ। कैकयांकु वेश करि आणिले दासी जूथ१२२१
वर कन्या दुहिंकु एक मेल करि। चामर आलट जे कैकया करे धरि २२

किया। ६-७ लाजा होम समाप्त करके पूर्णाहुति दी। फिर अग्नि को सन्तुष्ट करके उसे ठण्डा किया। ८ रत्नवेदी से उठकर वर कन्या अन्तःपुर में चले गये। ६ वर-कन्या को रत्न सिंहासन पर बैठाकर रनिवास की रानियाँ आरती उतारने लगी। १२१० पट्महिषी ने प्रचुर धन-रत्न प्रदान किये। अन्य रानियों ने भी धन-द्रव्य दिए। १२११ नाना प्रकार के पेय पदार्थ लाकर दिये और आरती पूजा करके द्यूत-क्रीड़ा करायी। १२ द्यूतक्रीड़ा की समाप्ति पर वर-कन्या को ले जाकर पंचग्रास भोजन की विधि पूर्ण की गयी। १३ इसी समय अर्धरात्रि को दोनों को मधु शैय्या घर में ले जाया गया। १४ जितने भी सभासद मंत्री तथा राजागण गये थे। उन्होंने चतुरंगिनी सेना के सहित भरपेट भोजन किया। १५ अगले दिन हरिद्रा विधि सम्पादित की गयी। हल्दी और चन्दन सबके ऊपर छिड़के गये। १६ दोनों ओर के रथी, चतुरंग सेनापति, सभासद मंत्री तथा राजागण आदि सभी जितने थे। उन सबको वसन्ती कुमकुम से रंग दिया गया। उनके वर्ण वसन्ती रंग के हो गये। फिर उन्होंने स्नान करके षड्रस भोजन किया। १७-१८ दूसरे दिन की समाप्ति पर तीसरा दिन आया। चन्द्रदेवी पुर घूमकर देखने से सुहावना लगता था। १६ चौथे दिन लाजा-होम की विधि पूरी करके वेद धारा प्रमाण से दोष को छुड़ाया गया। १२२० दशरथ सेज पर विराजमान थे। दासीगण कैकेयी को शृंगार करके ले आयी। १२२१ वर-कन्या दोनों का सम्मेलन हो गया कैकेयी ने हाथों में चामर और व्यजन पकड़ रखे

पलंकरू दशरथ उठिण बसिले। कैकयांकु धरि नेइ कोलरे बसाइले २३
मुखरे चुम्बन देइ कुच मर्दन कले। देखिण दासी माने अन्तर होइ गले २४
दासी माने जिबारू राजार कुमर। नाना परिबन्धरे सुरभि रसे भोल २५
रति रंगरे से रजनी पुहाइले। प्रभात हुअन्ते शैय्या त्याग कले २६
बिबसन बसन सम्भालि सुन्दरी। स्वामीङ्कु चरण तले प्रणिपात करि २७
एमन्ते समयरे दासी गणे मिलि। कैकेयींङ्कु घेनि अन्तःपुरे गले चलि २८
दश बिंश दासी प्रबेश आसि हेले। हास परिहासरे से दशरथंकु नेले २९
बाहार जगती उपरे बसाइ। सुबासित जल देले दासी माने नेइ१२३०
श्री मुख पखालिले राजाङ्कु कुमर। एथु अनन्तरे शुण कथा सार१२३१
दासी माने कैकयाङ्कु कलेक माजणा। मर्दन माजणा सारि बेशरे फुलणा ३२
राज कुमारङ्कु घेरि दासी परिबारी। मर्दन माजणा सारि सुभूषण करि ३३
बर कन्याङ्कु एक स्थाने बसाइले नेइ। अमृत रसाबली भोजन तांकु देइ ३४
पार्वती बोइले कह हे ईशान। बर कन्या एक अंग रजनीरे पुण ३५
के ऊँरूपे समस्तंकु मेलाणि राजा कला। अनेक धन रत्न भण्डारू आणि देला ३६
दुखी दरिद्र लोकंङ्कु देला धन पुण। चतुरङ्गबलङ्कु कला सनमान ३७
सेनापति रथीङ्कि अनेक धन देला। कोटिआ सुनिआँ लेखारे माल देला ३८

थे। २२ दशरथ पलँग से उठकर बैठ गये। उन्होंने कैकेयी का हाथ पकड़कर उन्हें गोद में बैठा लिया। २३ उन्होंने उनके मुख को चूमकर कुचों को मसला। यह देखकर दासियाँ हट गयीं। २४ दासियों के जाने पर राजकुमार अनेक प्रकार के काम-क्रीड़ा-रस में लीन हो गये। २५ उन्होंने रात्रि काम-कला की रंगीनियों में बितायी और प्रातःकाल होने पर शैय्या का त्याग कर दिया। २६ वस्त्र-विहीना सुन्दरी ने वस्त्र सँभाल कर स्वामी के चरणों में प्रणाम किया। २७ इसी समय दासियाँ आयीं और कैकेयी को लेकर अंतःपुर में चली गयीं। २८ दस-बीस दासियाँ आकर हास-परिहास करते हुये दशरथ को ले गयीं। २९ उन्हें बाहर जगती पर बिठाकर दासियों ने सुगन्धित जल लाकर दिया। १२३० राजकुमार ने अपना मुख धो लिया। अब इसके बाद की कथा सुनो। १२३१ दासियों ने कैकेयी को मर्दन तथा उबटन से मार्जन कराकर फूलों से उनका शृंगार किया। ३२ दासियों तथा परिवार के लोगों ने राजकुमार को मर्दन, उबटन, स्नान कराकर उन्हें आभूषणों से सुसज्जित किया। ३३ वर कन्या को एक स्थान बैठाकर उन्हें सुधा-रस से युक्त भोजन प्रदान किया। ३४ पार्वती ने कहा हे ईशान दिशा के स्वामी शंकर जी ! बताइये। कि वर-कन्या रात्रि में पुनः मिले। ३५ राजा ने कैसे सबको विदा किया ? भण्डार से बहुत धन और रत्न लाकर दिये। ३६ दुःखी तथा दीन-दरिद्रों को धन प्रदान किया और चतुरंगिनी सेना का सम्मान किया। ३७ सेनापति तथा रथियों को प्रभूत धन प्रदान किया। करोड़ों का सोना

राजामानङ्कु देला मुकुट कुण्डल। जणके लक्षे स्वर्ण देला महीपाल ३९
समस्तंकु मेलाणि करिण नृपबर। मंत्रीङ्कि कहइ होइ हर्ष भर१२४०
लक्षेक रथ से बेगे अणाइला। पाणि द्रव्य नेइण तहिँरे भरिला१२४१
कोटि एक पदाति लक्षेक सेनापति। लक्षेक रथ संगरे देलाक नृपति ४२
लक्षेक मइँषि गोधन पल लक्षे। अभिषेक सुनिआँ देलाक नेइ लक्षे ४३
एहि परकारे मेलाणि राजा कला। रूषि ब्राह्मण मेलाणि होइ गले परा ४४
राजामाने मेलाणि होइण चलि गले। जउतुक पदार्थ राजन आणि देले ४५
झिअ जुआइँङ्कि राजा कहिलेक पुण। बिनय होइण सधीर वचन ४६
दोषकले न घेनिब मोर दुहितार। एमन्त कहिले जुआइँ आगर ४७
ज्वाइंङ्कि प्रबोधि राजा सेठारू चलिगला।
कैकेयी नृपति अजोध्या राजाङ्कु बोधिला ४८
झिअज्वाइंङ्कि रथरे बसाइले नेइ। सहस्रेक दासी जे संगरे चलिजाइ ४९
दासीङ्कर मध्यरे मन्थड़ि दासी सार। मन्थड़ि कि मणाइ कहे नृपवर१२५०
से बोइले मोहर दुहिता तोते लगा। राजपुत्रकु जेमन्ते करिथिबु सेबा१२५१
क्रोध हेले शान्ति जे कराउथिबु पुण। गरमकु शीतल करिबु प्रतिदिन ५२
जे रूपे दुहिता मोर सदभावे थिब। राजकुमार संगरे प्रीति जे करिब ५३

तथा पदार्थ प्रदान किये गये। ३८ राजाओं को महाराज ने मुकुट और कुण्डल के साथ एक-एक को एक-एक लाख भरी सोना प्रदान किये। ३९ श्रेष्ठ राजा ने सबको विदा देकर प्रसन्नता से गदगद् होकर मंत्री से कहा। १२४० उसने शीघ्रता से एक लाख रथ मँगाये और उनमें पेय पदार्थ भर दिये। १२४१ राजा ने एक करोड़ पैदल सिपाही तथा एक लाख रथो के साथ एक लाख सेनापति प्रदान किये। ४२ एक लाख भैसें तथा एक लाख गायें स्वर्ण से मंडित करके प्रदान की। ४३ इस प्रकार राजा ने विदा दी। ऋषि और ब्राह्मण भी विदा होकर चले गये। ४४ राजाओं के विदा होकर चले जाने पर महाराज ने दहेज सामग्री लाकर प्रदान की। ४५ राजा ने विनीत होकर पुत्री तथा दामाद मे धैर्यपूर्वक कहा। ४६ वह दामाद से बोले कि मेरी पुत्री द्वारा किये गये अपराधों पर ध्यान न देना। ४७ जामाता को प्रबोध प्रदान करके महाराज कैकय वहाँ से चले गये और उन्होने जाकर अयोध्या नरेश महाराज अज से बोधयुक्त वचन कहे। ४८ उन्होने पुत्री तथा दामाद को लेकर रथ पर बैठा दिया। उनके साथ एक हजार दासियाँ भी चल पडी। ४९ दासियो के बीच मन्थरा मुख्य थी। राजा ने उसे समझाते हुए कहा कि मेरी पुत्री तुमसे हिली है। ऐसा करना जिससे वह राजकुमार की सेवा करती रहे। १२५०-१२५१ क्रोध होने पर तुम उसे शान्त करती रहना दिन प्रति दिन गरम को ठण्डा करती रहना। ५२ जिससे मेरी पुत्री

शुणिकरि मन्थड़ि कहइ कर जोड़ि । बोइला मो बोल जेबे दुहिता तोरकरि ५४
तेबे मुँ राजाकु बश कराइबि दण्डधारी। जाहा बोलिबे दुहिता स्वामी ताहाकरि ५५
शुणणि नृपति परम तोष हेले । बसन्त बर्ण पदक माल ताकु देले ५६
माल नेइ मन्थड़ि होइलाक बेशपुण । जरि लगा काञ्चुला पिन्धिला तक्षण ५७
बेनि हस्ते काच ताड़ि नेइण लगाइला । गलारे चापसरि पदक लम्बाइला ५८
बाहुटि ताड़बिद बाहुरे खंञ्जिण । नासारे रत्न गुणा खञ्जिला जत्नेण ५९
केश बान्धिबेणी तिनिशाखारे लम्बाइ। सातगोटि चउँरीमंण्डि देला तहिँ १२६०
आर बेणी उपरे सात झुम्पि देला । आर बेणी परे फिरि फिराकु खंजिला १२६१
तिन गोटि माला जे लम्बाए पुण नेइ । मन्दार अरख हिंजल फुल तहिँ ६२
मस्तक उपरे पोलांग नामे फूल । लगाइ हरषरे मन्थड़ि चाले गेल ६३
बेनि गोड़े नूपुर अंगुष्ठिरे मुदि । गालरे चुनकला खंजिला मरदि ६४
तुण्डरे पानखिले मुण्डरे सिन्दूर । नयरे अञ्जन रंजिला सत्वर ६५
रंग साढ़ी गोटिए पिन्धिला जत्नकरि । तिनि बांङ्कु तिनि कुज दिशइ ताहारि ६६
तमालि गीतगाइ चालइ गेल गेल । तिनिबाङ्के चालिबारे दिशे अमंजुल ६७
राजांकर नबरू से बाहार होइला । ढग सहड़ी से बहुत बखाणिला ६८

का सद्‌भाव बना रहे और वह राजकुमार से प्रीति करती रहे । ५३ यह सुनकर मन्थरा ने हाथ जोड़कर कहा कि यदि आपकी पुत्री मेरा कहना मानती रहेगी तो हे राजन् ! मैं राजा को उसके वश में करा दूँगी । फिर जो भी पुत्री कहेगी स्वामी वहीं करेंगे । ५४-५५ यह सुनकर राजा को परम सन्तोष हुआ । उन्होंने उसे पदक लगी हुई बसन्ती रंग की माला प्रदान की । ५६ माला लेकर मन्थरा ने अपना श्रृंगार किया उसने उसी समय जरीदार सलूका पहन लिया । ५७ दोनों हाथों में काँच की चूड़ियाँ लेकर पहल लीं । गले में पदक वाली हँसली पहन ली । ५८ भुजाओं पर तार वाले बाजूबन्द पहन कर नाक में यत्नपूर्वक रत्न जटित कील पहनी । ५९ उसने बालों को बाँधकर तीन चोटियाँ बनाई और सात बार घुमाकर जूड़ा बना लिया । १२६० एक चोटी पर उसने सात झूमर लगाये और दूसरी चोटी पर अन्य अलंकार मंडित किया । १२६१ फिर उसने मंन्दार अर्क तथा हिंजल पुष्पों की तीन मालायें धारण कीं । ६२ मस्तक पर पुलांग का फूल लगाकर प्रसन्न होकर मन्थरा लाड़ से चलने लगी । ६३ दोनों पैरों में उसने नूपुर तथा उँगलियों में अँगूठी पहनकर गालों पर श्वेत चूर्ण मसलकर लगाया । ६४ सिर में सिन्दूर लगाकर मुख में पान का बीड़ा दबाकर शीघ्र ही उसने आँखों में अंजन लगाया । ६५ फिर उसने यत्नपूर्वक लाल रंग की साड़ी पहनी जिसमें उसके तीनों कूबड़ दिखाई दे रहे थे । ६६ बड़े लाड़ से गीत गाती हुई वह चल रही थी । तीन स्थानों से टेढ़ी होकर चलने से वह असुन्दर दिख रही थी । ६७ राजा के महल से बाहर निकल कर वह कहावतें आदि चिकनी चुपड़ी बातें करने

सिंह द्वारु बाहार हेबारू सर्वे देखि। मुखरे लूगा देइ हसिले नाशा टेकि ६९
रथरे जाइण उठिला दासी बेगे। ढग सहड़ी बोलि आनन्द सरागे १२७०
ताकु देखि दशरथ हास्यभाव कले। कैकयाङ्कु कोले धरि बचन कहिले १२७१
एहि नारी वड़ प्रबल पण करि। तिनि कुज ताहार शरीरे अछिधरि ७२
वेश गोटि विड़म्बन छलरे अछि होइ। निर्लज्जपणरे याकु सरि केहि नाहिं ७३
राजार घरे जेवे एरूपे नारी थाइ। मुखकु चाहिंले अमंगल होइ ७४
खदि चामर आलट पंखाधरि जाण। केहू स्वर्ण झारीरे गंगाजल धरि पुण ७५
विड़िआ मुख वास धरे के आगरे। एमन्ने दासी माने जे जाहा सेवा करे ७६
मन्थड़ि मिलिकरि देला हुलहुलि। पहड़ी पढ़िला देइण कर तालि ७७
पुष्प डाल गोटिए धरिण कर रे। नाचिला मन्थड़ी दशरथङ्कु आगरे ७८
एथु अनन्तरे सारेणी हस्ति अश्व। पुञ्जि पुञ्जि होइण मिलिले त्वरित ७९
रथि सेनापति माने मिलिले से बेल। सकल रुषिमाने होइले वाहार १२८०
दुन्दभि बीर बाजा आगरे बाजे टाण। शब्दरे मेरु गिरि कम्पु अछि जाण १२८१
मध्यरे राजागण आगरे दशरथ। चलिला अनेक जौतुक पदार्थ ८२
पच्छरे पदातिरथि सेनापति। अनेक सम्भर्वरे वाहार नृपति ८३

लगी। ६८ सिंह द्वार से वाहर निकलने पर सभी लोग उसे देखकर मुख में कपड़ा लगाकर नाक उठाकर हँसने लगे। ६९ दासी जाकर शीघ्रता से रथ पर चढ़ गई और आनन्द से कहावतें और लोक गीत राग से गाने लगी। १२७० उसे देखकर दशरथ को हँसी आ गई। उन्होंने कैकेयी का आलिंगन करके उससे कहा। १२७१ यह स्त्री वड़ी ढीठ है। इसके शरीर में तीन कूवड़ हैं। ७२ इसने विडम्वना पूर्ण छल से अपना श्रृंगार किया है। निर्लज्जता में इसकी वरावरी का कोई नहीं है। ७३ राजा के घर में यदि इस रूप की स्त्री हो तो उसके मुख को देखने मात्र से अमंगल घटित हो जाय। ७४ खदि चामर, व्यजन तथा पंखा को कुछ दासियाँ लिये थी। कोई सोने के पात्र में गंगाजल लिये थी। ७५ कोई पान तथा मुख-वास को सामने लिये थी। इस प्रकार से दासियाँ अपनी-अपनी सेवा में लगी थी। ७६ मन्थरा ने मिलकर मांगलिक शब्द किया और ताली वजाकर गीत गाने लगी। ७७ मन्थरा हाथ में फूलों की डाल लेकर दशरथ के सामने नाचने लगी। ७८ इसके पश्चात् पालकियाँ, हाथी, घोड़ों के समूह के समूह वेग से वहाँ आकर एकत्रित हो गये। ७९ उसी समय रथी और सेनापति लोग आ गये। समस्त ऋषि मंडल वाहर निकल आया। १२८० दुन्दुभि तथा वीर-वाद्य वड़ी जोर से वज रहे थे। उस शब्द से सुमेर पर्वत भी काँप उठता था। १२८१ राजाओं के आगे दशरथ चल रहे थे और वीच में दहेज की नाना प्रकार की सामग्री जा रही थी। ८२ उसके पीछे सेनापति रथी तथा पैदल सैनिक थे। इस प्रकार

चन्द्रदेइ पुर राजा पच्छरे गोड़ाइ। पाँच दिन परिजन्ते संगरे से जाइ ८४
अज राजाङ्कु चाहिँ बिनयरे कहि। मो दुहिता दोष न घेनिब केहि ८५
एते कहि मेलाणि होइले नृपबर। निज नबरकु फेरि अइले सत्वर ८६
पाञ्चदिने दशरथ अजोध्या प्रबेश। देखिण नग्र लोके होइले सन्तोष ८७
सिंह द्वारे रथ जे प्रबेश हेला जाण। अज राजा पाट राणी अइले तक्षण ८८
शतेक सपतणी सहस्त्रे दासी घेनि। पुत्रबधू रथपरू ओल्हाइले पुणि ८९
निउछालि करिण घरकु घेनि गले। अन्तःपुर भितरे समस्ते मिलिले१२९०
कैकया ओलगिले समस्त शाशुंकु। समस्ते कल्याण बांच्छिले-बधूंकु१२९१
शोभा पणे कैकया समस्तंकु बोधिला। अन्धार रजनीकु आलोक कराइला ९२
एथु अनन्तरे शुण भगवती। रुषि ब्राह्मण राजा मेलाणि हेउछन्ति ९३
अनेक धन आणि भन्डाररू देले। हरष होइण रुषि ब्राह्मण चलिगले ९४
राजा मानंकु मेलाणि कले महीपाल। धन रत्न पाइण चलिले राजबल ९५
चतुरंग बलंकु राजा शाढ़ी देला। रथि सेनापतिंकु माल बिलोहिला ९६
समस्तंकु मेलाणि देइण नृपबर। मंत्रीङ्कि चाहिँण आज्ञा देलाक सत्वर ९७
सामन्त पात्र मंत्रींकि अनेक धन देले। जउतुक धनमान भण्डारे रखाइले ९८

राजा बड़ी मान-मर्यादा के साथ चल पड़े। ८३ चन्द्रदेवीपुर के राजा उनके पीछे-पीछे चले आ रहे थे। वह पाँच दिनों तक साथ-साथ चलते रहे। ८४ उन्होंने महाराज अज की ओर देखकर विनीत भाव से कहा कि मेरी पुत्री के अपराधों पर कोई भी ध्यान न दीजियेगा। ८५ इतना कहकर श्रेष्ठ राजा शीघ्र ही अपने महल में लौट आये। ८६ पाँच दिनों में दशरथ अयोध्या जा पहुँचे उन्हें देखकर नगरवासी संतुष्ट हो गये। ८७ रथ सिंहद्वार में प्रविष्ट होते ही महाराज अज की पटरानी उसी क्षण आ पहुँची। ८८ सौ सह-पत्नियों तथा हजार दासियों को लेकर उन्होंने बहू को रथ से उतारा। ८९ न्यौछावर करके उसे घर में ले गयीं। सभी नारियाँ अंतःपुर में जमा हो गयीं। १२९० कैकेयी ने सभी सासुओं को चरण छूकर प्रणाम किया और सभी ने बहू को आशीर्वाद दिया। १२९१ सौन्दर्य में कैकेयी ने सभी को संतुष्ट कर दिया। अँधेरी रात को प्रकाश में बदल दिया। ९२ हे भगवती! इसके पश्चात् सुनो। ऋषि और ब्राह्मण राजा से विदा लेने लगे। ९३ भण्डार से बहुत सा धन लाकर उन्हें दिया गया। फिर वह लोग प्रसन्न होकर चले गये। ९४ महाराज ने फिर राजागणों को विदा किया। धन तथा रत्न पाकर राजाओं का दल चला गया। ९५ राजा ने चतुरंगिनी सेना को पगड़ी प्रदान की और रथी और सेनापतियों को हार दिए। ९६ श्रेष्ठ राजा ने सबको विदा देकर मंत्री की ओर देखकर शीघ्र ही आज्ञा दी। ९७ उन्होंने सामंत सभासद और मंत्रियों को प्रचुर धन दिया और

निश्चिन्तरे राजन रहिले निजपुरी। दुःखी लोकंकु अन्न देले डाकि करि ९९
एमन्ते चउद दिवस वहिगला। कंकया संगे दशरथ बिलसिला१३००
कउशिक पुररे कउशल्या जात। कउशिक राजांकर अटन्ति ज्येष्ठ सेत१३०१
नवम बरषरे नब जुग होइ। एगार वर्ष छ मास सुताकु अटइ २
अन्नपूर्णा राणी जे राजाङ्कु जणाईंला। दुहिता गोटि आम्भर नव जुवा हेला ३
सम्भालि नोहिब असम्भाल से दुहिता। सुन्दर शोभा पणरे अटइ जग जिता ४
जनम बेलरे से कहुअछि पुण। मोर स्वामी जात हेले अजोध्या नग्रेण ५
अजराजा कुमर अटन्ति दशरथ। अष्ट बाहू प्रमाण चरण दुइत ६
एमन्त रूप देखिले बरण करिब। एपरि न देखिले वरण न करिब ७
कहिण अज्ञान होइला दुहिता। से कथामान पाशोर न कर किम्पा चेता ८
कौशिक राजा बोइले ए अटे प्रमाण। कालि पात्र मंत्रीङ्कि पेशिवा सेहि स्थान ९
मोर मने न थिला चेताइ देला मोते। एते बोलि राजन् चलिला त्वरिते१३१०
बाहार जगती उपरे बिजेकला। पात्र मंत्री समस्तंङ्कु डकाइ आणिला१३११
बोइले अजोध्याकु जाअ हे वहन। अजराजा नन्दन जे दशरथ जाण १२
तपन कुले जात अटइ सुर्ज्यवंशी। निष्कण्टक राजा से कलंक नाहिं किछि १३

दहेज के धन तथा द्रव्य को भण्डार में रखवा दिया। ९८ राजा अपनी नगरी में निश्चिन्त भाव से रहने लगे और दीन-दुखियों को उन्होंने बुला-बुलाकर अन्न दिया। ९९ इस प्रकार चौदह दिन व्यतीत हो गये। दशरथ कैकेयी के साथ विहार करते रहे। १३०० कौशिकपुर में कौशल्या उत्पन्न हुई। वह महाराज कौशिक की ज्येष्ठ पुत्री थी वह नवें वर्ष में नवयौवन में प्रविष्ट हुई। फिर ग्यारह वर्ष छै मास बीतने पर महारानी अन्नपूर्णा ने राजा से निवेदित किया कि हमारी पुत्री नवयौवना हो गई है। १३०१-२-३ अब उस पुत्री का सम्हालना दुस्तर हो गया है। सौन्दर्य एवम् छवि में उसने संसार को जीत लिया है। ४ उसने जन्म के समय में ही कहा था कि मेरे स्वामी अयोध्या नगर में उत्पन्न हुए है। ५ महाराज अज के पुत्र दशरथ है जिनकी आठ भुजाएँ तथा दो चरण है। ६ ऐसा रूप देखने पर उनका वरण कर लेगी और ऐसा न देखने पर वरण नहीं करेगी। ७ ऐसा कह कर वह पुत्री ज्ञानशून्य हो गई थी। वह बात भूल कर आप चिन्ता क्यों नही कर रहे हैं ?। ८ महाराज कौशिक ने कहा कि यह बात प्रामाणिक है। मै कल ही सभासद तथा मंत्री को उस स्थान पर प्रेषित करूँगा। ९ हमें तो विस्मरण हो गया था। तुमने भला स्मरण करा दिया। ऐसा कह कर राजा शीघ्र ही चलकर बाहर जगती पर विराजमान हो गया। उसने सभासद् तथा मंत्री आदि सभी को बुलवा लिया। १३१०-१३११ उन्होंने कहा कि शीघ्र ही तुम लोग अयोध्या को जावो। महाराज अज के पुत्र दशरथ है। १२ वह सूर्यवंशी दिनकर-कुल में उत्पन्न हुए है। वह राजा निष्कण्टक हैं और उनमें

उपर बंशरे तार सागर खोलाइले । सपत सागर करि से राजा स्वर्ग गले १४
बरुण कुलरे कुम्भरुषि जात हेले । कल्परुषि दुहिताकु सेहि बिभा हेले १५
से रुषि कुमारीकि घेनिण तप कले । दक्षिण महोदधि कूलरे सन्तोषरे १६
बन गिरि पर्वत अटइ परिमल । से गिरिर नाम जे अटइ सीमांचल १७
लक्षे बरष पर्ज्यन्ते सेठारे तप कले । महोदधिरे स्नाहान पड़िला जोगबले १८
सेते बेले नारी तांकर गर्भ होइ थिला । से स्नाहान दिने अछि प्रसब होइला १९
छूतिकिआ हेबारु न गले मुनिबर । सकल रुषि स्नान कले से तीर्थरे१३२०
एक बिंश दिनरे रुषिङ्कि सुमरिले । बेनि कोटि रुषि आसि प्रबेश होइले१३२१
फल मूल देइण रुषिंकि बोध कले । पुत्रर नाम सेठारे रुषिमाने देले २२
अगस्ति बोलिकरि देले पुत्र नाम । सन्तोषे रुषिमाने गले जे ज्ञा स्थान २३
सहस्रे बरष एथिरे बहिगला । तप बले निर्जित अगस्ति रुषि हेला २४
जशोबन्ती पुररु अइले बेदबर । श्रेष्ठ करि ब्रह्मरुषि कले तांङ्कु सार २५
कामधेनु गोटिए देइण धाता गला । धाता गला बेले रुषि बर मनासिला २६
बोइला जेबे मोर तप सिद्ध मूल । जाहा मुँ बिचारिबि नोहिब अन्तर २७
अस्तु कहि बेदबर निजपुर गला । एथि मध्ये पन्दर बरष बहिगला २८

किसी प्रकार का कलंक भी नहीं है। १३ उनके पूर्वजों ने समुद्र का उत्खनन कराया था। सात समुद्रों का निर्माण करके वह स्वर्ग सिधारे थे। १४ वरुण के कुल में महर्षि कुम्भ उत्पन्न हुए। उन्होंने महर्षि कल्प की पुत्री से विवाह किया। १५ उन महर्षि ने कुमारी को साथ लेकर तपस्या की। वह दक्षिण सागर महोदधि के तट पर सन्तोषपूर्वक रहने लगे। १६ वह वन का अंचल पर्वतों से व्याप्त था। सुगन्ध से भरे हुए उस पर्वत का नाम सीमाचल है। १७ उन्होंने एक लाख वर्ष पर्यन्त वहाँ तपस्या की। योग बल से महोदधि में एक स्नान पड़ा। १८ उस समय उनकी स्त्री गर्भवती थी। उसी स्नान के दिन उसका प्रसव हो गया। १९ अशौच होने के कारण मुनि श्रेष्ठ नहीं गए। अन्य सभी ऋषियों ने उस तीर्थ में स्नान किया। १३२० इक्कीसवें दिन उन्होंने ऋषियों का स्मरण किया। तभी दो करोड़ ऋषि वहाँ आ पहुँचे। १३२१ उन्होंने फल-मूलादि देकर ऋषियों को सन्तुष्ट किया। ऋषियों ने वहाँ पर पुत्र का नामकरण किया। २२ उन्होंने पुत्र का नाम अगस्त्य रक्खा और सन्तोषपूर्वक सभी अपने-अपने स्थानों को लौट गए। २३ इस प्रकार एक हजार वर्ष व्यतीत हो गए। तपस्या के बल से अगस्त्य ने ऋषि पदवी प्राप्त की। २४ ब्रह्मलोक से ब्रह्मा ने आकर उन्हें ऋषियों में श्रेष्ठ ब्रह्मर्षि बना दिया। २५ वह उन्हें एक कामधेनु देकर चले गए। ब्रह्मा के प्रस्थान करते समय ऋषि ने वर की याचना की। २६ उसने कहा कि यदि मेरी तपस्या सिद्ध हो गई हो तो जो मैं विचार करूँ वह झूठा न निकले। २७ ब्रह्माजी तथास्तु कह कर अपने लोक को चले गए। इसी

पुणि कल्प रुषि दुहिता गर्भ हेला। दशमास सम्पूर्णे पुत्रेक जात कला २९
एक बिंश दिबसे रुषिङ्कि सुमरि। पाञ्च कोटि रुषि आसि मिलिले वेग करि १३३०
फल मूल भोजन देले मुनि पुण। भोजन कले रुषि सन्तोष होइण १३३१
द्वितीय पुत्र नाम बशिष्ठ पुण देले। मेलाणि होइ रुषि जे ज्ञा स्थाने गले ३२
से पुत्र सिन्धु कूले जाइ तप कला। सहस्रे वरष तहिंरे वहि गला ३३
जशोवन्ती पुररू अइले विधाता। तप सिद्ध हेला उठरे ब्रह्मवेत्ता ३४
शुणि करि बशिष्ठ उठिले कर जोड़ि। बेदबर बोइले जाअ निज पुरी ३५
ब्रह्ममुनि बोइले न कर मने छळ। मोर वोल एवे कर रे कुमर ३६
एते बोलि सुरभिकि सुमरणा कले। गोमाता जाणिण सेठारे प्रवेशिले ३७
सुरभि पाइण बशिष्ठ तोष हेले। दइब विधाताङ्कु नमस्कार कले ३८
तोष होइ कुशधर गले निजपुर। बशिष्ठ मिळिले जाइ पिता सन्निधिर ३९
देखिण जननी मनरे तोष हेले। सन्तोषरे पिता बहू प्रशंसा कले १३४०
एमन्त बार बरष सेठारे गला बहि। महोदधिरे स्नान पड़िला शुद्ध होइ १३४१
फाल्गुन मासरे गोविन्द द्वादशी। शुकल पक्षरे जोग हेला आसि ४२
दुइ पुत्र घरणी घेनि संगे चलि। महोदधि तीररे तुरिते जाइ मिलि ४३

बीच पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गए। २८ कल्प ऋषि की पुत्री पुनः गर्भवती हो गई। दस माह पूरे हो जाने पर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। २९ इक्कीसवें दिन ऋषियों का स्मरण किया गया। तब वहाँ पर शीघ्र ही पाँच करोड़ ऋषि आ पहुँचे। १३३० मुनि ने पुनः उन्हें फलमूल भोजन के लिए प्रदान किये। ऋषियों ने सन्तुष्ट होकर भोजन किया। १३३१ उन्होंने दूसरे पुत्र का नाम वशिष्ठ रक्खा और विदा लेकर सब अपने-अपने स्थानों को लौट गए। ३२ उस पुत्र ने सागर तट पर जाकर तपस्या की। इसमें एक हजार वर्ष व्यतीत हो गए। ३३ यशोवन्तीपुर से आकर ब्रह्माजी ने कहा, हे ब्रह्मवेत्ता! उठो। तुम्हारी तपस्या सिद्ध हो गई। ३४ यह सुनकर वसिष्ठ हाथ जोड़कर उठ बैठे। ब्रह्माजी ने उन्हें अपने घर जाने को कहा। ३५ ब्रह्मर्षि वसिष्ठ ने कहा कि मन में छल मत कीजिये। तब ब्रह्माजी ने कहा, हे पुत्र! मेरा कहना मानो। ३६ इतना कह कर उन्होंने सुरभि का स्मरण किया। गोमाता ऐसा समझ कर वहाँ आ पहुँची। ३७ सुरभि गाय को पाकर वसिष्ठ संतुष्ट हो गये। उन्होंने ब्रह्मा जी को नमस्कार किया। ३८ कुशधारी ब्रह्मा जी अपने लोक को चले गये और वसिष्ठ अपने पिताजी के पास चले गये। ३९ उन्हें देखकर माता जी वहुत संतुष्ट हुयीं और पिता जी ने संतुष्ट होकर वहुत प्रशंसा की। १३४० इस प्रकार वहाँ बारह वर्ष व्यतीत हो गये। फिर महोदधि सागर में पवित्र स्नान पड़ा। १३४१ फाल्गुन मास की गोविन्द द्वादशी के शुक्ल पक्ष में शुभ योग आ गया। ४२ ऋषिपत्नी दोनों पुत्रों को साथ लेकर चल पड़ी और शीघ्र ही महोदधि के तट

मंत्र सुमरि संकल्प करि स्नान कले । दुइ पुत्र भारिजा आसि कूलरे मिळिले ४४
ए माने आसिबारू गलेक कुम्भऋषि । स्नाहान करन्ति से लवण जले पशि ४५
तरंग मंत्री फेन ऋषिङ्कि घेनि गला । नेइण गभीर जलरे बुड़ाइला ४६
तिनि दिन जाएँ पुत्र भारिजा कूळे रहि । पितार शव जाइ कूळरे लागे तहिं ४७
शव देखि तिनिहें कारुण्य कूळे कले । दुइ पुत्रंकु जननी बुझाइ कहिले ४८
बोइले स्वामी मोर गले स्वर्गपुर । मुहिं जाउ अछि बाबु निरोध न कर ४९
एते बोलि अगस्ति माता जले झासदेले । दुइ पुत्र कूळे बसि कारुण्य पुण कले१३५०
माता शब कूळरे लागिला आसि पुण । पिता मातांकु कुमर कलेक दहन१३५१
क्रोधरे जर जर अगस्ति महामुनि । मंत्र सुमरणा मने कले ततक्षणि ५२
सपत समुद्रकु चलू करि धरि । पिअन्ते गर्भरे ठूळ हेला जाइ करि ५३
मंत्र पढ़ि अगस्ति जीर्ण करि देले । शुखि गला सागर धरणी दिशिले ५४
नाव बोइत जाहाज जलचर गण । ठावे ठावे धरणीरे रहिले से जाण ५५
सात द्वीप जाक एक द्वीप हेला । चउद ब्रह्माण्ड जाक मेळजे होइला ५६
नव खण्ड मेदिनी होइला समतुल । नर असुर समस्ते हेले एक मेळ ५७
रम्यक द्वीपरे अनन्त शय्या थिला । सागर शुखन्त तिनि पुरकु दिशिला ५८

पर जा पहुँची । ४३ उन्होने मंत्र का स्मरण करते हुये संकल्प करके स्नान किया और दोनों पुत्र तथा भार्या किनारे आ गयीं । ४४ इन लोगो के आने पर कुम्भ ऋषि भी गये तथा खारे जल में घुसकर वह स्नान करने लगे । ४५ समुद्र फेन के साथ तरंगों द्वारा ऋषि खिच गये और गहरे जल में डूब गये । ४६ तीन दिन पर्यन्त पुत्र और भार्या किनारे पर रहे । तभी पिता का शव किनारे पर आकर लगा । ४७ शव देखकर तीनों ने करुण क्रन्दन किया । माता ने दोनों पुत्रों को समझाकर कहा । ४८ मेरे स्वामी स्वर्ग लोक को चले गये है । अरे पुत्रो ! मैं भी जा रही हूँ । मुझे रोकना नही । ४९ इतना कहकर अगस्त्य की माता ने जल में छलाँग लगा दी । दोनों पुत्र किनारे पर बैठकर रुदन करने लगे । १३५० फिर माता का शव किनारे पर आ लगा । पुत्रों ने माता-पिता का दाह-संस्कार किया । १३५१ महर्षि अगस्त्य क्रोध से तमतमा उठे । उन्होंने उसी क्षण मन में मंत्र-जाप किया । ५२ सातों समुद्रों को उन्होने अंजलि में लेकर पान कर लिया जो उनके पेट में जाकर एकत्र हो गये । ५३ अगस्त्य ने मंत्र पढ़कर के उसे हजम कर लिया । समुद्र के सूख जाने से पृथ्वी दिखाई देने लगी । ५४ नाव, बेड़े जहाज तथा जलचर जीव स्थान-स्थान पर पृथ्वी पर पड़े रह गये । ५५ सातों द्वीप मिलकर एक द्वीप हो गये । चौदह ब्रह्माण्ड आपस में मिल गये । ५६ नौ खंड पृथ्वी समतल हो गयी । मानव और राक्षस सभी एक में मिल गये । ५७ रम्यक द्वीप में अनन्त शय्या थी जो समुद्र के सूखने पर तीनों लोकों को दिखाई

गरुड़ छाया नवेकोटि घेनि सैन्यवळ । श्वेत द्वीप जगि रहिला बिनतार बाळ ५९
एहि मते लक्षे वरष वहिगला । स्वर्गरे देबगणे बिचार कले परा१३६०
कूटरे जात कले कुमर भागीरथी । तपन कुलरे से होइला चक्रबर्ती१३६१
देवता आसिण भागीरथींकि कहि । तोहर उपर बंशे सागर कीर्ति होइ ६२
कुम्भरुषि सेथिरे मरिवारु डूबि । पुत्र तार अगस्ति चळुकला रागि ६३
सपत सागरकु चळुरे धइले । गर्भकु क्षेपन्ते सागर शुखिले ६४
तुम्भे जेबे गंगाकु आणिपारिब जाइ । तुम्भरि कीरति सिना सबु जुगे रहि ६५
शुणिण भागीरथी इन्द्रंङ्कु पचारिले । कि रूपे गंगा आसिबे से कथा कह भले ६६
वासव बोइले तुम्भे विष्णुङ्कु सुमर । तोह ठारे दया करिबे चक्रधर ६७
शुणिण भागीरथी विष्णुङ्कु सुमरिले । तप करन्ते श्री हरिप्रसन्न होइले ६८
बोइले सदा शिबंङ्कु जाइ करि आण । शुणि कपिळासकु भागीरथी गलेपुण ६९
दश सहस्र वरष से ठारे तप कले । तेबे से सदा शिब प्रसन्न होइले१३७०
सदा शिबङ्कु घेनि बैकुण्ठ पुर गले । बिष्णु पादुँ गंगा हर शिररे धइले१३७१
आसन्ते से मेरु ठारे बिजय पाञ्चानन । मस्तक हरषरे हलन्ते हर पुण ७२
खसिण गंगा माता मेरु क्रोटे पड़ि । मेरुर घरणी गुपते ताकु धरि ७३

देने लगी । ५८ विनतानन्दन गरुड़ छानवे करोड़ सेना लेकर श्वेत द्वीप की रक्षा करने लगे । ५९ इस प्रकार एक लाख वर्ष व्यतीत होने पर स्वर्ग में देवताओं ने विचार किया । १३६० उन्होने छल से भगीरथ को उत्पन्न किया । वह सूर्यकुल में चक्रवर्त्ती राजा हुये । १३६१ देवताओं ने आकर भगीरथ से कहा कि तुम्हारे पूर्वजो से समुद्र की महिमा बढ़ी थी । ६२ कुम्भ ऋषि के डूब कर मर जाने पर उनके पुत्र अगस्त्य ने क्रोध से समुद्रों को अंजलि में भर लिया और पी गये । ६३ सातों समुद्रों को अंजलि में रखकर पेट में डालने पर समुद्र सूख गये । ६४ यदि तुम जाकर गंगा को ला सको तो तुम्हारी कीर्ति युग-युग के लिये रह जायेगी । ६५ यह सुनकर भगीरथ ने इन्द्र से पूछा कि गंगा कैसे आयेगी । यह बात आप हमसे भली प्रकार बताइये । ६६ इन्द्र ने कहा कि तुम विष्णु का स्मरण करो । चक्रधारी तुम्हारे ऊपर दया करेंगे । ६७ यह सुनकर भगीरथ ने विष्णु का स्मरण करते हुये तपस्या की, जिससे श्री वासुदेव भगवान प्रसन्न हो गये । ६८ उन्होंने जाकर शंकर जी को लाने के लिये कहा । यह सुनकर भगीरथ कैलास जा पहुँचे । ६९ उन्होंने वहाँ दस हजार वर्ष तपस्या की । तव भगवान शंकर उन पर प्रसन्न हुये । १३७० वह शंकर जी को लेकर वैकुठ लोक को गये । शकर जी ने विष्णु के चरणों से गंगा को लेकर अपने सिर पर धारण किया । १३७१ पाँच मुख-वाले शंकर जी आकर सुमेर पर्वत पर विराजमान हो गये । प्रसन्नता के कारण उनका मस्तक हिल रहा था । ७२ गंगामाता खिसक कर मेरु पर्वत की गुफा में आ गिरीं । तव

मस्तकु गंगा जिबारू हर कहे बाणी । गंगा पिताघर देखि खसि गला पुणि ७४
मेरुकु तपे तोषे प्रसन्न तोते हेउ । मर्त्यपुरकु गंगा संतोष होइ जाउ ७५
शुणिण भागीरथी मेरुंङ्कु ध्यान कले । सहस्रे बरष से प्रसन्न होइले ७६
गंगाङ्कु मेरु राजा कहन्ति बचन । भागीरथी तप करे जिबु तु मंत्र्येण ७७
गंगा बोइले पिता मोठारू एबे शुण । भागीरथी कि जाइ कह जा बहन ७८
बोलिब स्वर्ग पुरे चंचळ चळि जाअ । अइराबत गजकु एठाकु अणाअ ७९
से चउदन्त जेबे मारिब तोर देहे । मर्त्यपुरे बहिवि कहिली पिता हे१३८०
शुणिण मेरु राजा शीघ्र चळि गले । भागीरथीङ्कि सबु बुझाइ कहिले१३८१
बोइले महाराजा बेगे चल स्वर्गे । ऐराबत गज आसिले फिटिब ए मार्ग ८२
शुणिण भागीरथी तहूँ चळिगले । ऐरावत गजकु बिनये जणाइले ८३
सहस्रे बरषे गज अइला तार संगे । ताङ्कु आगे भागीरथी समस्त कहि बेगे ८४
शुणिण ऐराबत क्रोधरे चळि गला । चउदन्त नेइ मेरु अंगरे माइला ८५
मारिण चउदन्त आणन्ते उटारि । देन्तेक भाँगिण रहिला मेरुगिरी ८६
तिनि दन्ते बाहारन्ते बाहार हेले गंगा । कोपानले आसइ करिण प्रतिज्ञा ८७
भागीरथी कि बोइले बेगे तुम्भे चळ । सागर कीर्ति तोर देखाअ मही पाल ८८

मेरु की पत्नी ने गुप्त रूप से उन्हें रख लिया । ७३ मस्तक से गंगा जी के गिर जाने पर शंकर जी ने कहा कि पिता का घर देखकर गंगा खिसक गई । ७४ अब तुम सुमेरु को तपस्या से तुष्ट करो जिससे वह प्रसन्न हो जायँ और गंगा सन्तुष्ट होकर मृत्युलोक में जाए । ७५ यह सुनकर भगीरथ ने सुमेरु का ध्यान किया । एक हजार वर्षों में वह प्रसन्न हो गये । ७६ मेरु राजा ने गंगा से कहा कि भगीरथ तप कर रहा है । तुम मृत्युलोक में चली जावो । ७७ गंगा ने पिता से कहा कि तुम शीघ्र ही जाकर भगीरथ से मेरी बात कहो । ७८ उससे कहो कि वह स्वर्ग में जाकर शीघ्र ही ऐरावत हाथी को यहाँ ले आए । ७९ वह जब चारों दाँतों से आपके शरीर पर प्रहार करेगा तब हे पिता ! मैं बहकर मृत्युलोक में जाऊँगी । १३८० यह सुनकर राजा सुमेरु शीघ्र ही चले गए । उन्होंने भगीरथ को सब कुछ समझा दिया । १३८१ उन्होंने कहा कि महाराज भगीरथ आप शीघ्रता से स्वर्ग को जाइये । ऐरावत हाथी के आने पर ही यह मार्ग खुलेगा । ८२ यह सुनकर भगीरथ वहाँ से चल पड़े । उन्होंने विनय-पूर्वक ऐरावत हाथी से कहा । ८३ एक हजार वर्षों में ऐरावत गज उनके साथ आया । भगीरथ ने उसको सब कुछ समझा दिया । ८४ सब सुनकर ऐरावत क्रोध से चल पड़ा । उसने मेरु पर्वत के शरीर पर चारों दाँतों से प्रहार किया । ८५ चारों दाँतों से मेरु को उखाड़ते समय उसका एक दाँत टूटकर मेरु पर्वत में ही उलझ गया । ८६ तीन दाँत निकालने पर गंगा बाहर निकली । वह कुपित हुयी, प्रतिज्ञा करके चली । ८७ उन्होने भगीरथ से शीघ्र चलकर

शुणिण भागीरथी आगरे चळिजाइ। रम्यक द्वीपरे प्रवेश हेले जाइ ८९
प्रथमे क्षीर सागरे होइले प्रबेश। लक्षे बर्षे क्षीर सिन्धु पुरिला विशेष१३९०
मध्यरे रम्यक द्वीप रहिला लक्षे जूण। लर्क्षे बर्षे दधि समुद्र हेला पूर्ण१४९१
देखिण भागीरथी से ठारु अइला। कुशद्वीप छाड़ि घृत समुद्र पुर्ण कला ९२
घृत समुद्र सुरा समुदर भरि। बहू क्लेशरे जाइ हिमाल ठार मिळि ९३
हेमाल जिबारू मधुर सिन्धु हेला। मधुर उत्तारू जे लबण प्रकाशिला ९४
एमन्ते सप्त सागर भरि भागीरथी। सात लक्ष बरषरे पूर्ण हेला सेथि ९५
सात द्वीप सात सिन्धु जहूँ से देखिला। हरषरे भागीरथी गंगाकु कहिला ९६
कपिळ ऋषि मोर बंशकु दहिज्य कले। सेमानङ्कु शीतळ करतु जाइ भले ९७
गंगा बोइले कुमर आग होइ चल। शुणिकरि भागिरथी चळइ सागर ९८
पितृलोक दहिज्य अग्निरे देला झास। गंगा जाइ सेठारे होइले प्रवेश ९९
शापरू मुक्त हइ सगर नन्दन। तत्क्षणे पितृ लोक गले स्वर्ग स्थान१४००
पुष्पक जाने बसि आनन्द होइ गले। अचिन्ता नबररे जाइण वसिले१४०१
एड़े कुल निर्मळ अटइ सुर्ज्य बंशी। शुणिण पात्र मंत्री बचन पुणि भाषि २
बोइले से राजार थिले टिकि पुत्र। कउशिक बोइले दिल्लीपि तार सुत ३

अपने समुद्रों की कीर्ति को दिखाने को कहा। ८८ यह सुनकर भगीरथ आगे-आगे चलते हुये रम्यक द्वीप में जा पहुँचे। ८९ सर्वप्रथम वह क्षीरसगार में प्रविष्ट हुये। एक लाख वर्ष में क्षीर समुद्र भर गया। १३९० बीच में एक लाख योजन का रम्यक द्वीप रह गया और एक लाख वर्ष में दधि समुद्र भर गया। १३९१ यह देखकर भगीरथ वहाँ से आये और फिर कुश द्वीप को छोड़कर उन्होने घृत समुद्र पूर्ण किया। ९२ घृत समुद्र तथा सुरा-समुद्र भरकर वह वहुत कष्ट से हिमालय पर जा पहुँचे। ९३ हिमालय जाने पर मधु सागर पूर्ण हुआ और उसके पश्चात् लवण सिन्धु प्रकाशित हुआ। ९४ भगीरथ को इस प्रकार से सातों समुद्रों को पूर्ण करने में सात लाख वर्ष का समय लगा। ९५ भगीरथ ने प्रसन्नता-पूर्वक सात द्वीप तथा सात समुद्रों को देखकर गंगा से कहा। ९६ कपिल ऋषि ने मेरे वंश को भस्म कर दिया है। आप जाकर उन्हें शीतलता प्रदान करें। ९७ गंगा ने कहा हे पुत्र ! आगे-आगे चलो। यह सुनकर भगीरथ सागर की ओर चल पड़। ९८ जहाँ उनके पूर्वज भस्म हुये थे। वहीं पर उन्हे।ने छलाँग लगा दी। गंगा वहीं पर जाकर प्रवेश कर गयीं। ९९ सगर के पुत्र पितृगण शाप से मुक्त होकर उसी क्षण स्वर्ग लोक में चले गये। १४०० वह लोग पुष्पक विमान पर चढ़कर आनन्द से जाकर चिन्तारहित लोक में जा बसे। १४०१ यह सूर्यवंश का कुल इतना निर्मल है। यह सुनकर सभासद तथा मंत्रियों ने पुनः कहा। २ राजा के कितने पुत्र थे ? कौशिक वोले कि उनके पुत्र का नाम दिलीप था। ३

दिल्लीपिर नन्दन अटे शिबराजा। राज्य परजा धन मनरू कला तेज्या ४
शिवराजा तनुज जानुघण्ट पर्शुराम। अभ्यागत दीक्षारे से राजा नेला दिन ५
ताङ्क ठारु जात हेले आरण्यक पुण। रावण संगत से कले घोर रण ६
असुर जिणिकरि ताहाङ्कु मारि गला। ताहाङ्क ठारु हरिचन्दन जात हेला ७
दातापणे ताहाकु केहि नुहें सरि। भार्जा पुत्र बिकि अभ्यागत सेबा करि ८
ताहार नन्दन शिबदाता हेला। सेणा पक्षी मागन्ते शरीरू मांस देला ९
ताहार कुमर अटे मान्धाता। ताहाकु गर्भवास कलेक बिधाता १४१०
तिनिपुर साध्य करि लक्षे बरष बञ्चिले।सहस्रे बरष पर्यन्ते देव सभारे बसिले ११
ताहार कुमर बरुण राजा हेला। रण करि बरुण राजाङ्कु जिणिला १२
ताहार कुमर रघुनाथ राजा होइ। श्वेत जाग करिण स्वर्गपुर जाइ १३
दश दिगपालङ्कु जिणिला रणरे। सेहि ठारु रघुबंशी बोलन्ति बंशरे १४
ताहांङ्क ठारु जात होइले कश्यप। सेहि बंशे बढ़ाइ धार्मिक हेले नृप १५
ताहाठारु जात अज नामरे नृपति। इन्द्र संगे रणकरि स्वर्ग रे हेला सुरपति १६
ताहाङ्क ठारू जनम दशरथ होइ। दुइ गोटि चरण ताहार अटइ १७
अष्ट गोटि भुजजे एक गोटि मुख। सुर्ज्यङ्क प्रज्योति ताङ्कर प्रकाश १८
से पुरकु जाइण ताहाङ्कु बेगे बर। आम्भ दुहिताकु सेहि हेबे बर १९

दिलीप के पुत्र महाराज शिविराज हुये। उन्होंने राज्य प्रजा तथा धन का अपने मन से त्याग कर दिया था। ४ महाराज शिविराज के पुत्र जानुघंट परशुराम अभ्यागत की सेवा में दिन व्यतीत करते रहे। ५ उनसे आरण्यक उत्पन्न हुये जिन्होंने रावण के साथ घोर संग्राम किया। ६ असुर ने उन्हें जीतकर मार डाला और वहाँ से चला गया। उनसे फिर हरिचन्दन की उत्पत्ति हुयी। ७ उनकी दानवीरता की बराबरी में कोई नही था। उन्होंने अपनी स्त्री तथा पुत्र को बेचकर अभ्यागत की सेवा की थी। ८ उनके पुत्र दानवीर शिवि हुये। जिन्होंने बाज पक्षी के माँगने पर अपने शरीर का मांस प्रदान किया था। ९ उनके पुत्र मान्धाता हुए जिन्हें ब्रह्माजी ने उत्पन्न किया था। १४१० उन्होंने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की। वह एक लाख वर्ष पर्यन्त जीवित रहे और एकहजार वर्ष तक वह देवताओं की सभा में बैठते रहे। १४११ उनसे महाराज वरुण हुए जिन्होंने संग्राम करके वरुणदेव को जीत लिया था। १२ उनके पुत्र रघुनाथ राजा हुए जो श्वेत यज्ञ करके स्वर्ग लोक को गए। उन्होंने दशों दिग्पालों को संग्राम में जीत लिया। तभी से उनके वंश को रघुवंश की ख्याति प्राप्त हुई। १३-१४ उनसे कश्यप की उत्पत्ति हुई। उस राजा ने धर्म को साध कर वंशवृद्धि की। १५ उनसे महाराज अज उत्पन्न हुए जो इन्द्र से युद्ध करके स्वर्ग के देवराज वने। १६ उनसे दशरथ का जन्म हुआ जिनके दो चरण एक मुख तथा आठ भुजायें हैं। उनका प्रकाश सूर्य की ज्योति के समान है। १७-१८ उनके नगर में जाकर

सामन्त पात्र मंत्री बोइले कर जोड़ि। अगस्ति रूषिङ्क कथा कह दण्डधारी१४२०
मातपिता ताङ्कर समुद्रे बूड़ि मले। केउँ स्थाने बेनिभाई कि रूपे रहिले१४२१
कउशिक बोइले शुण तुम्भे माने। अगस्ति बशिष्ठ जे रहिले तप स्थाने २२
शिबाळयरे बसि सेहि तपकले। दश सहस्र बरष एथिरे गला भले २३
मेरू संगतरे मन्दर गिरि वाद। बोइले मुहि मेरुरे होइवि प्रसिद्ध २४
दिनके सहस्रे जुण वढ़े गिरिवर। शते दिने सुर्ज्यङ्कु कलाक ओहाड़ २५
अस्तगिरि जिवाकु रवि न पाइले बाट। पक्षे पर्ज्यन्ते सुर्ज्य होइले आकट २६
देखिण समस्त देबता चळि गले। मन्दर गिरि कि प्रवोधि कहिले २७
केबेहें न मानिले मन्दर गिरि पुण। बोइला मुँहि मेरु रे होइवि प्रमाण २८
शुणिण देवताए रणरंग कले। वरषे परिज्यन्ते ता संगे लागिले २९
तेबेहें न जिणिले भाजिले देवगण। सेहि ठारू रवि फेरि आसिलेक पुण१४३०
तेणिकि राज्य जाक अन्धार मय दिशि। विधाता पुरुष जे मन रे हुए त्रासि१४३१
सदाशिबंङ्कु घेनि आसिले मर्त्यपुर।अगस्ति थिवा स्थाने मिळिले बेदवर ३२
शते बरष पर्ज्यन्ते से ठारे बिजे कले। अगस्तिङ्क तपभांगि न पारिले ३३
सदाशिव बेदबर चिन्तारे अस्थिर। तपवले जाणिले अगस्ति मुनिवर ३४

उनका वरण करो। हमारी पुत्री के लिये वह ही वर होंगे। १९ सामन्त सभासद तथा मंत्रियों ने हाथ जोड़कर कहा, हे दण्डधारी ! आप हमसे अगस्त्य ऋषि की कथा कहिए। १४२० उनके माता-पिता समुद्र में डूबकर मर गए। फिर दोनों किस प्रकार से कहाँ रहे। १४२१ राजा कौशिक ने कहा कि आप लोग सुनिए। अगस्त्य तथा वसिष्ठ तप के स्थान पर रह गए। २२ शिवालय में बैठकर उन्होंने तपस्या की। इस प्रकार दस हजार वर्ष व्यतीत हो गए। २३ उसी समय सुमेरु पर्वत के साथ मन्दराचल का विवाद हो गया। वह कहने लगा कि हम मेरु गिरि से अधिक ख्याति प्राप्त करेंगे। २४ वह श्रेष्ठ पर्वत प्रतिदिन एक योजन बढ़ने लगा। सौ दिनो में उसने सूर्य को आच्छादित कर लिया। २५ सूर्य अस्ताचल जाने को मार्ग न पा सके। एक पक्ष पर्यन्त सूर्य अटके रह गए। २६ यह देखकर समस्त देवताओं ने जाकर मन्दराचल को समझाया। २७ परन्तु मन्दराचल ने उसे नहीं माना। वह कहने लगा कि मैं भी मेरु पर्वत से अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करूँगा। २८ यह सुनकर देवताओं ने उसके साथ एक वर्ष पर्यन्त युद्ध किया। २९ फिर भी उसे न जीत पाने से देवता लोग भाग गए। सूर्य उसी स्थान से पुनः लौट आए। १४३० इसके कारण सम्पूर्ण राज्य अन्धकारमय दिखाई देने लगा। ब्रह्माजी भी मन में डर गए। १४३१ वह शंकर को लेकर मृत्युलोक में आए। जहां पर अगस्त्य थे वहीं पर ब्रह्माजी आ पहुँचे। ३२ वह वहाँ पर सौ वर्षो तक रहे परन्तु अगस्त्य की तपस्या भंग नहीं कर पाए। ३३ सदाशिव तथा ब्रह्मा की चिन्तापूर्ण अस्थिरता को महर्षि अगस्त्य तपस्या के

नयन फेड़िण चाहिँले स्थिर करि। देखिण अगस्ति नमस्कार करि ३५
ईश्वर बोइले अगस्ति तुम्भे शुण। तुम्भर निमन्ते कन्याए जात पुण ३६
से कन्याकु बिबाह होइब मुनिबर। नोहिले से कन्याटि झासिब अग्निर ३७
अगस्ति बोइले से काहार दुहिता। ईश्वर बोइले से रबीर पुत्री जिता ३८
छाया देवीर गर्भरु होइछि सम्भूत। शोभापणरे दुहिता मोहइ जगत ३९
शुणिण अगस्ति प्रसन्नमन हेले। ईश्वरंङ्क संगरे स्वर्ग पुरे गले१४४०
बाटरे कुशधर कहिले अगस्तिङ्कि। बोइले मुनि जाअ देखिण बन टिकि१४४१
मन्दर मनरे बिचार जे कला। मेरु हेबि बोलि शुन्यरे बढिला ४२
रबि अस्त हेबाकु न मिळिला बाट। देबताङ्कु पड़िला संकट ४३
शुणिण अगस्ति मुनि कहन्ति बचन। कि रूपे मन्दर जे होइब निउण ४४
ईश्वर बोइले सेठाकु तुम्भे चळ। चरणे नमिबा बेळे कहिब ताकु धीर ४५
बोलिब मन्दर तु शोइण थाअ भले। आम्भङ्कु देखिले तु उठिबु तेते बेळे ४६
एते कहि तांङ्कु स्वर्ग पुरकु आसिब। रबिर दुहिताकु तेबे से बिभा हेब ४७
ईश्वर बोइले कथाए तेबे शुण। बाटरे असुर दुइ गोटि पुण ४८
पथुकी जनमानंकु मारिण खाआन्ति। मायारे मेण्ढाटिए पोषिण अछन्ति ४९
मेण्ढाकु मारि मांस खुआन्ति से जाण। जे खाए से मांस तार पेट फाटे पुण१४५०

बल से जान गए। ३४ उन्होंने स्थिर होकर नेत्र खोल दिये तथा शिव और ब्रह्मा को देखकर उन्होंने नमस्कार किया। ३५ शिव जी ने कहा, हे अगस्त्य ! सुनो। तुम्हारे लिये एक कन्या उत्पन्न हुई है। ३६ हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम उससे विवाह करो, अन्यथा वह अग्नि में कूद पड़ेगी। ३७ अगस्त्य ने पूछा कि वह किसकी कन्या है। शिव ने कहा कि वह सूर्य की पुत्री जिता है। ३८ वह छाया देवी के गर्भ से उत्पन्न हुयी है। सौन्दर्य में वह पुत्री संसार को मोहित करने वाली है। ३९ यह सुनकर अगस्त्य प्रसन्न हो गये और शिव जी के साथ स्वर्गलोक को चल पड़े। १४४० मार्ग में कुशधारी ब्रह्मा जी ने अगस्त्य से कहा, हे मुनि ! इस वन को भी थोड़ा देखते चलो। १४४१ मन्दराचल ने मन में विचार किया कि हम भी सुमेरु बनेंगे। इस प्रकार सोचकर वह शून्य में बढ़ने लगा। ४२ सूर्य को अस्त होने के लिए मार्ग नहीं मिला, जिससे देवताओं को बड़ा कष्ट हुआ। ४३ यह सुनकर अगस्त्य ऋषि ने कहा कि मन्दराचल कैसे घटेगा। ४४ शंकर जी बोले कि तुम वहाँ चलो। चरणों में झुकने के समय उसे शान्तिपूर्वक समझा देना। ४५ तुम उससे कहना कि तुम ऐसे ही लेटे रहो। फिर हमें देखने पर ही तुम उठना। ४६ इतना कहकर तुम स्वर्गलोक में आ जाना और तब सूर्य की पुत्री से विवाह करना। ४७ शंकर जी बोले, एक बात और सुनो। मार्ग में दो राक्षस है, जो पथिकों को मार कर खा जाते हैं। उन्होंने एक माया का मेढ़ा पाल रखा है। ४८-४९ वह मेढ़े को मारकर मांस खिलाते हैं। जो कोई

से मानंकु भस्म करि आस मुनिबर । शुणिण अगस्ति रुषि चळिले सत्वर१४५१
सेहि बनस्तरे होइले प्रबेश । आतापि बातापिदेखि होइले हरष ५२
बोइले मुनिबर एठारे आज रह ।अमृत भोजन करि सन्तोष होइ थाअ ५३
शुणिण अगस्ति रुषि सेठारे रहिले ।आतापि भेण्ढा गोटिए होइला मायारे ५४
तिअण करि रुषिङ्कि भरि भोजन देले । जल मंत्री पिइण अगस्ति भस्म कले ५५
बोइले असुररे मन्द बुद्धि कलु ।जाणु जाणु आम्भङ्कु ए मांस खु आइलु ५६
गर्भरे पड़न्ते से भस्म होइ गला । तुहि भस्म हुअ एबे शाप मोर हेला ५७
ततक्षणे असुर गला भस्म होइ । दुहिङ्कि भस्म करि मुनि चळि जाइ ५८
मन्दर निकटरे प्रबेश होइले । देखि करि मन्दर नमिला पादतळे ५९
अगस्ति बोइले मन्दर एबे शुण ।आम्भे जाउ अछुँ जे पश्चिम दिगे पुण१४६०
आसिबा परिजन्ते शोइण थिबु तुहि । उठिले भस्म हे बुकहि गलि मुँहि१४६१
मन्दरकु कहि मुनि सेठारू चळि गले । पश्चिम मुख होइ स्वर्गरे मिळिले ६२
तेतिश कोटि देबता आसि ठूळ हेले । हर बेदबर जाइ से ठारे मिळिले ६३
रबिर दुहिता अटइ रूपकान्ति । तेज छाया बोलिण ताहार नामटि ६४
से कन्याकु अगस्ति रुषिङ्कु बिभाकले । ताहाङ्कु घेनि रुषि मढ़िआकु गले ६५

उसका मांस खाता है, उसका पेट फट जाता है। १४५० हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम उन्हें भस्म कर आओ। यह सुनकर अगस्त्य ऋषि वेग से चल पड़े। १४५१ वह उसी वन्य अंचल में प्रविष्ट हुये। आतापी तथा बातापी उनको देखकर प्रसन्न हो गये। ५२ उन्होंने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ ! आज यहीं रहिये और सुधामय भोजन करके संतोष प्राप्त करिये। ५३ यह सुनकर अगस्त्य ऋषि वहाँ रह गये। आतापी माया से एक मेढ़ा बन गया। ५४ उसने तैयार करके ऋषि को खूब भोजन दिया। अगस्त्य ने अभिमंत्रित जल को पीकर उसे भस्म कर दिया। ५५ उन्होंने कहा, अरे दैत्य ! तूने बहुत नीच कर्म किया है। समझ-बूझकर तूने हमें यह मांस खिला दिया है। ५६ पेट में जाते ही वह तो भस्म हो गया और अब तुम मेरे शाप से भस्म हो जाओ। ५७ उसी समय वह दैत्य भस्म हो गया और दोनों को भस्म करके ऋषि चल दिये। ५८ वह जाकर मन्दराचल के पास पहुँचे। उन्हें देखकर मन्दराचल ने उनके चरणों में प्रणाम किया। ५९ अगस्त्य ने कहा, हे मन्दर ! अब सुनो। मैं पश्चिम दिशा की ओर जा रहा हूँ। १४६० मेरे आने तक तुम इसी प्रकार से पड़े रहना और उठने से तुम भस्म हो जाओगे। मैं ऐसा कहे जा रहा हूँ। १४६१ मन्दराचल को ऐसा कहकर वहाँ से चलकर मुनि पश्चिमाभिमुख होकर स्वर्ग को चले गये। ६२ वहाँ तैंतीस करोड़ देवता आकर एकत्रित हो गये। वेदवर ब्रह्मा तथा शंकर जी भी वहाँ आ पहुँचे। ६३ रवि की पुत्री अति सुन्दर थी। तेजछाया उसका नाम था। ६४ अगस्त्य ऋषि ने उस कन्या से विवाह किया

पर्वत शिषरे गोटिए मठ करि। कुम्भ रुषि नन्दन प्रतिज्ञा अटेभारि ६६
शुणिण पात्र मंत्री हरष होइले। राजाकु नमस्कार करिण बाहारिले ६७
निमंत्रण जोगाड संगरे घेनिपुण। रथर उपरे रहिले पाञ्चजण ६८
अजोध्या नगरे प्रबेश होइले। राजार सिंह द्वारे जाइण मिळिले ६९
द्वार पालकु कहिले राजाङ्कु कह जाइ। कउशिक राजा पात्र मंत्री पठिआइ१४७०
शुणि करि द्वारपाल प्रतिहारी कि कहि। जाइण प्रतिहारी राजाङ्कु जणाइ१४७१
कर जोड़ि राजाङ्कु कहइ बचन। कउशिक राजा पात्र मंत्री जे द्वारेण ७२
शुणि राजन डकाइ घेनि गले। पात्र मंत्रीङ्कि देखिण हरष मन हेले ७३
बोइले कि कार्य्यरे पेशिले राजन। मोर ठारे सुदया अछि ताङ्कर पुण ७४
अज राजा बचन शुणिण पात्र मंत्री। बोइले तुम्भठारे बहूत तांङ्क प्रीति ७५
तांङ्कर दुहिता गोटिए जात हेले।कोटि स्त्री सुन्दरी पणे समान नोहिले ७६
से कन्या बिभा देबाकु मनरे चिन्ता कले। नारद रुषि जाइ राजाङ्कु कहिले ७७
बोइले अजोध्या नृपति अज राज शिष्य। दशरथ नाम रूपरे सरस ७८
गुणबन्त सूरबन्त अटन्ति से पुण।ताङ्कु बिबाह कर तोर दुहिताकु जाण ७९

और उसे साथ लेकर वह अपने आश्रम को चले गये। ६५ पर्वत के शिखर पर एक मठ वनाकर कुम्भ ऋषि के पुत्र रहने लगे। उनकी प्रतिष्ठा बहुत अधिक थी। ६६ यह सुनकर सभासद और मंत्री प्रसन्न हो गये और राजा को नमस्कार करके निकल पड़े। ६७ निमंत्रण की सामग्री साथ लेकर पाँच व्यक्ति रथ के ऊपर चढ़ गये। ६८ वह अयोध्या नगर में प्रविष्ट होकर राजद्वार पर जा पहुँचें। ६९ उन्होंने द्वारपाल से कहा कि राजा से जाकर कहो, कौशिक महाराज ने सभासद तथा मंत्रियों को भेजा है। १४७० यह सुनकर द्वारपाल ने प्रतिहारी से कहा, उसने जाकर महाराज से निवेदित किया। १४७१ उसने हाथ जोड़कर राजा से कहा कि कौशिक राज के सभासद और मंत्री द्वार पर हैं। ७२ यह सुनकर राजा ने उन्हें बुलाया और साथ ले गये। सभासद और मंत्रियों को देखकर उनका मन प्रसन्न हो गया। ७३ उन्होंने कहा कि उनकी मेरे ऊपर बहुत कृपा है। किस कार्य से राजा ने आप लोगों को भेजा है। ७४ महाराज अज के वचन सुनकर सभासद और मंत्रियों ने कहा कि आपके प्रति उन्हें अत्यधिक स्नेह है। ७५ उनके एक पुत्री उत्पन्न हुई थी। जिसके समान करोड़ों स्त्रियों का सौन्दर्य भी नही हो सकता। ७६ उस कन्या के लिये उनके मन में चिन्ता हुई। उसी समय महर्षि नारद ने आकर राजा से कहा। ७७ अयोध्या के राजा महाराज अज के पुत्र का नाम दशरथ है, जो रूप में वहुत सुन्दर हैं। ७८ वह गुणवान तथा शौर्यवान हैं। तुम अपनी पुत्री का उनसे विवाह करो। ७९ यह सुनकर महाराज प्रसन्न हो गये और उन्होंने आपके पुत्र का वरण कर लिया। १४८० उन्होंने हमें

शुणिण नरपति हरष होइले। तुम्भर कुमरङ्क वरण करिले१४८०
आम्भङ्कु भेजिले तुम्भर पाशकु। बोइले कहिब अजोध्या रजाङ्कु१४८१
मोहर दुहिताकु ताङकर पुत्र मेळ। मुनिङ्क बचन सत्य जे निर्मल ८२
वरण करिण बेगे घेनि आस। ताङ्कर आज्ञारे आसिलुं तुम्भपाश ८३
शुणिण अज राजा सन्तोष होइले। पात्र मंत्री सामन्तङ्कु डकाइ आणिले ८४
वोइले कउशिक राजाङ्क कथा शुण। दुहिता गोटिए ताङ्कर अछि जाण ८५
मोहर पुत्रकु वरण से कले। नारद कहि वारु राजा प्रते गले ८६
शुणिण पात्र मंत्री होइले हरष। पाट जउतिषङ्कु डकाइले पाश ८७
वर राशि कन्या राशि बुझिले से जाण। दइब घटण जे करिछि मिआण ८८
दश मेलक बुझि समस्ते तोषहेले। कटकरे उत्सव राजन कराइले ८९
सुवर्णर कळस चिराळ पन्ति पन्ति। जाण परिमल उपरे छाइ गोटि१४९०
इन्द्र गोविन्द चान्दुआ सबु ठारे टणा। बिबिध प्रकारे वाजइ वाजणा१४९१
नटकारी माने बुलन्ति पन्था पन्था। अपसरीङ्कि नृत्य रे उल्लसे कलिजा ९२
हाण बाट दोकान होइला चहळ। चतुरङ्ग वल जे डकाइ महीपाल ९३
हाती रथि सेनापति अश्व जे सारेणी। एमानङ्कु वेश कराइ नृपमणी ९४
वन्धु कुटुम्बंङ्कु राजा वरण करि आणि। पाञ्च सहस्र राजा ठूळ हेले पुणि ९५

आपके पास भेजकर कहा है कि अयोध्या के महाराज से कह देना कि मेरी पुत्री आपके पुत्र का मेल ठीक रहेगा। मुनि के सत्य एवं छलहीन वचनों से उन्हें शीघ्र ही वरण करके ले आओ। उनकी आज्ञा से हम लोग आपके पास आए हैं। १४८१-८२-८३ यह सुनकर महाराज अज सन्तुष्ट हो गये। उन्होंने अपने सभासद, मंत्री तथा सामन्तों को बुला लिया। ८४ फिर उन्होंने कहा कि राजा कौशिक का वार्ता सुनो। उनकी एक पुत्री है। ८५ नारद के कहने से राजा ने विश्वास करके मेरे पुत्र का वरण कर लिया। ८६ यह सुनकर सभासद् मंत्री प्रसन्न हो गये। उन्होंने प्रधान ज्योतिषी को अपने निकट बुला लिया। ८७ फिर उन्होने वर तथा कन्या की राशि समझी। भाग्य के अनुकूल इस घटना का समावेश हुआ था। ८८ दश घरों के गुणों को समझ कर सभी सन्तुष्ट हो गये। राजा ने दुर्ग में उत्सव आयोजित किये। ८९ स्वर्ण कलशों पर पंक्ति की पंक्ति पताकायें सजाकर उन पर सुवासित रंगविरंगे चँदोवे स्थान-स्थान पर तनवा दिये। नाना प्रकार के वाद्य वजने लगे। १४९०-१४९१ गली-गली में नट लोग घूमने लगे। अप्सराओं के नृत्य से हृदय उल्लसित होने लगा। ९२ वाजार, मार्ग तथा दुकानों में चहल-पहल हो गई। महाराज ने चतुरंगिनी सेना को बुलवा लिया। ९३ नृप श्रेष्ठ ने हाथी घोड़े रथी सेनापति तथा वहलों को सुसज्जित करवाया। ९४ राजा ने वन्धु-वान्धवों तथा कुटुम्बियों को निमंत्रित करके बुलवा लिया। पाँच हजार

दुइ कोटि राजा दुइ कोटि जे ब्राह्मण। एमानङ्कु बरि आणिले नृपराण ९६
हाट बाजार लक्षेक अटइ दोकान। सगड़ बळद जे सज कले पुण ९७
सकळ सम्भार करिले राजन। अन्तः पुररे प्रबेश हेले जाइ पुण ९८
अनेक नारीगण आसिण पाशे मिळि। चरणे ओलगिले जे होइलेक बाळी ९९
शतेक सपतणी संगरे घेनि पुण। बन्दापना कले राजाङ्कु मन हरषेण१५००
कर जोड़ि बोइले शुणिबा हेउ बाणी। गहळ उत्सवरे कटक पुरे पुणि१५०१
राजन बोइले शुण सेहि कथा। कउशिक राजाङ्कर एकइ दुहिता २
आम्भर कुमर कु बरण कले जाण। बिभा करिबा निमन्ते पेशिले मंत्रीपुण ३
शुणिण पाटराणी हरष होइला। केउँ दिन बिबाह बोलिण पचारिला ४
राजन बोइले कालि सकाळू अनुकूळ। बार दिनर बाट जिबाकु बहू दूर ५
चउद दिन आजकु रहिला बिभाधर। शुणिण सकळ राणी हरष मनर ६
अन्तःपुर भितरे लागिलाचहळ। पुत्रर बिभाघर बोलि उत्साह सकळ ७
कैकया मन्थड़ि कि डाकिण पचारि। शाशुङ्क अन्तःपुर चहळत भारि ८
मन्थड़िबोइला जे कौशिक राजा बरि। तुम्भर स्वामी कालि सकाळू जिबे चळि ९
राजार कुमरकु कि करिबा निरोध। कैकया बोइले नुहइ कथा सिद्ध१५१०

राजागण आकर एकत्रित हो गये। ९५ महाराज ने दो करोड़ राजाओं तथा दो करोड़ ब्राह्मणों को निमंत्रित करके बुलवा लिया। ९६ हाट बाजार में एक लाख दुकानें खुलवा दीं। उन्होंने गाड़ियाँ तथा बैल भी सजवा लिये। ९७ इस प्रकार सारा प्रबन्ध करके राजा अंतःपुर में जा पहुँचे। ९८ अनेक स्त्रियों ने उनके पास आकर उनकी पत्नियों सहित राजा के चरणो में प्रणाम किया। ९९ सौ सहपत्नियों के साथ प्रसन्न मन से उन्होंने राजा की आरती की। १५०० उन्होंने हाथ जोड़कर कहा कि आप हमारी बात सुनिये। चहल-पहल भरे उत्सव दुर्ग में भर गये है। १५०१ राजा ने कहा कि यह बात सुनो। कौशिक महाराज के एक पुत्री है। २ हमारे पुत्र को उन्होंने वरण कर लिया है और विवाह करने के लिए उन्होंने मन्त्री को भेजा है। ३ यह सुनकर पटरानी प्रसन्न हो गयी और उसने प्रश्न किया कि विवाह किस दिन होगा। ४ राजा ने कहा कि कल प्रातःकाल प्रस्थान करना है। बहुत दूर जाने के लिए बारह दिन का मार्ग है। ५ आज से विवाह के चौदह दिन रह गये हैं। यह सुनकर सभी रानियाँ प्रसन्न हो गयीं। ६ अन्तःपुर के भीतर चहल-पहल मच गयी। पुत्र के विवाह से सभी उत्साह में भरे थे। ७ कैकेयी ने मन्थरा को बुलाकर पूंछा कि सास जी के अंतःपुर में तो बहुत कोलाहल हो रहा है। ८ मन्थरा ने कहा कि कौशिक महाराज ने राजा का वरण किया है। तुम्हारे स्वामी कल प्रातःकाल चले जायेंगे। ९ राजकुमार को क्या मैं रोक दूं ? कैकेयी ने कहा यह बात ठीक नहीं है। १५१० हमारे अभी तक पुत्र नहीं हुआ है और रोकने से नृपश्रेष्ठ के

आम्भर पुत्र पुण नाहिं एबे भले। कहिले रोष मन होइबे नृपवरे१५११
बोलिबे दुष्टमति अटइ राजा झिअ। राजार पुअ हेले अनेक करे प्रिय १२
शुणिण मन्थड़ि हरष मन कला। पुर्ब जन्म कथाकु मनरे स्मरिला १३
विप्रङ्कु भूरि भोजन रुषिङ्कु फळमूळ।चतुरङ्ग वलङ्कु राजा सञ्चा देले ठूळ १४
राजामानङ्कु अमृत सम भुञ्जाइले। शिवलिङ्ग रे गोधनक्षीर नेइ देले १५
विष्णु प्रतिमाङ्कु वेश कराइले। उत्तम पदार्थ रे माजणा मानकले १६
पोड़ुअ वोदा छागळ देवीङ्कि से देले। मंगळ उत्सव करि वेश कराइले १७
जूड़ा बान्धि पञ्चवर्ण फुल से खञ्जिले। × +× +×+×+×+× १८
बीर बल्ली मुकुता कर्णरे देले खञ्जि।झलका चन्द्र फासिया उपरे तार रञ्जि१९
रत्न कंकण वाहूटि हस्तमाने देले। गलारे चापसरि जतने खञ्जिले१५२०
चन्द्रहास पदक मोति माळ मान। रतन माळमान निविड़ जतन१५२१
जरिलगा कांञ्चला पिन्धिण कुमर। कटिरे कटिमेखळा चरणे नुपुर २२
अंगुष्ठि मानङ्करे मुद्रिका शोभावन। सुवर्ण पादुका दुइ चरणे लगाइण २३
चित्रपट सदृश् नृपति नन्दन। देखिले जगज्जन होइबे मोहन २४
तन्दुळ आंञ्जुळिपरे गुबाकु थोइले। आपणा जननीर पणन्ते नेइ देले २५

मन में क्रोध उत्पन्न हो जायेगा। ११ वह कहेगे कि राजा की पुत्री दुष्ट स्वभाव की है। राजा का पुत्र होने पर वह नाना प्रकार से प्यार करता है। १२ यह सुनकर मन्थरा का मन प्रसन्न हो गया। उसने पूर्वजन्म की वात को अपने मन में सोचा। १३ राजा ने ब्राह्मणों को नाना प्रकार के भोजन, ऋषियों को फलमूल तथा चतुरंगिनी सेना के लिये समस्त पदार्थ भर दिये। १४ राजाओं को उन्होंने अमृत के समान भोजन कराया और शिवलिंग पर गाय का दूध चढ़वाया। १५ विष्णु की प्रतिमाओं का श्रृंगार कराके उत्तम भोग राग की व्यवस्था की। १६ देवी को पाड़ा, भैंसे तथा वकरे प्रदान किये और मंगल-उत्सव करके उनका श्रृंगार करवाया। १७ उनका जूड़ा वाँधकर उन्हे पाँच रंग के फूलों से सजा दिया। १८ उनके कान में मुक्ताओं की लड़ियाँ सजा दी गयीं और उसके ऊपर चमचमाती हुई चन्द्रिका लगा दी। १९ रत्नकंकण तथा वाजूबन्द हाथों में पहना दिये। गले में यत्नपूर्वक कंठ का आभूषण पहना दिया गया। १५२० मोतियों तथा रत्नों की चन्द्रमणि पदको से युक्त मालाय वड़ी विधि से पहना दी गयी। १५२१ राजकुमार ने जरीदार सलूका पहनकर कमर में तागड़ी और पैरों मे नूपुर पहन लिये। २२ उँगलियों में अँगूठियाँ शोभायमान थीं। दोनों पैरों में उन्होने सुन्दर वर्ण की पादुकाये पहन रखी थीं। २३ राजकुमार चित्र के समान लग रहे थे। उन्हें देखने से संसार के सभी लोग मोहित हो जाते। २४ अंजलि में चावल भरकर उस पर एक सुपारी रखकर उन्होंने अपनी माता जी के आँचल में डाल दिया। २५ सभी माताओं ने उनकी

समस्त मातामाने बन्दापना कले। फेरिण कुमर पिता पाशरे मिळिले २६
नमस्कार करिण छामुरे उभा हेले। देखिण राजन सन्तोष होइले २७
कनक रथपर नेइण बसाइले। बेश होइ राजन रथरे बसिले २८
सकळ नृपति माने रथर उपरे। दिव्य बेश होइण बसिले हरषरे २९
बेनि कोटि रथि जे आगरे सजपुण। लक्षेक सारेणि संगरे गले पुण १५३०
दुइ लक्ष हस्ती जे संगरे गले चळि। हस्तीङ्कर उपरे माहुन्त बसि चाळि १५३१
बार लक्ष सिपाही घोड़ा परे बसि। तिनि लक्ष बाजणा मेरु झड़े कम्पि ३२
कोड़िए लक्ष छति आगरे छाइ हेला। आलट बिञ्चणी जे आलट दिशेत्वरा ३३
पदाति माने जेह्ना आयुध धइले। रुषिमाने जानर उपरे बिजेकले ३४
नाटकारी अपसरी आगरे चळिले। बाजाकारी माने ताङ्क सङ्गरे गमिले ३५
शगड़ बळद जे हटारि बजारी। सकळ पदार्थ घेनि करि चळि ३६
अनेक शाढ़ीमान सारेणी परे गला। सम्भर्बरे बाहार रघुराज बळा ३७
देखणाहारी लोके हुळ हुळि देले। चउदोळ परे कश्यप बशिष्ठ बिजे कले ३८
बार दिने प्रबेश कउशिक पुरे। पात्र मंत्री जाइण कहिले राजारे ३९
पात्र मंत्री आसिबादिनुं राजानग्र मण्डाइथिला।
बारस्वती पुर प्राये चित्र बिचित्र कला १५४०

आरती उतारी। फिर राजकुमार दशरथ पिता के पास जा पहुँचे। २६ नमस्कार करके वह उनके समक्ष खड़े हो गये। महाराज अज उन्हें देखकर संतोष को प्राप्त हुए। २७ उन्होंने उन्हें लेकर स्वर्णरथ पर बैठा दिया और फिर राजा भी श्रृंगार करके रथ पर बैठ गये। २८ सारे राजा लोग दिव्य वेश धारण करके प्रसन्नतापूर्वक रथों पर चढ़ गये। २९ दो करोड़ रथी आगे सजे हुये थे। एक लाख बहलें भी साथ में गयीं। १५३० दो लाख हाथी साथ में चले और उन हाथियों पर महावत बैठकर चले जा रहे थे। १५३१ बारह लाख सिपाही घोड़ों पर सवार थे। तीन लाख वाद्यों से मेरु पर्वत काँप कर गिरा पड़ रहा था। ३२ आगे बीस लाख छत्र चल रहे थे। व्यजन डुलाने वालों के पंखे बड़े दिव्य लग रहे थे। ३३ पैदल सिपाहियों ने अपने-अपने आयुध धारण कर रखे थे। ऋषि लोग भी यानों के ऊपर विराजमान हो गये। ३४ नाटक करनेवाली नृत्यांगनाएँ आगे-आगे चलने लगीं और बाजा बजानेवाले उन्हीं के साथ चल रहे थे। ३५ हाट बाजार वाली बैलगाड़ियाँ समस्त पदार्थों को लिये चली जा रही थीं। ३६ अनेक पगड़ीधारी बहलों पर चल दिये। इस प्रकार रघुपुत्र अज बड़ी मानमर्यादा से चल पड़े। ३७ दर्शकों ने मांगलिक शब्द किये। कश्यप तथा वशिष्ठ पालकी पर चल पड़े। ३८ बारह दिनों में यह लोग कौशिक नगर में जा पहुँचे। सभासद तथा मंत्रियों ने जाकर राजा को समाचार दिये। ३९ सभासद तथा मंत्रियों के आगमन के दिन से ही राजा ने नगर को सजवा दिया था। वह नगर इन्द्रपुरी के समान विचित्र प्रकार की चित्रकारियों

मंगल उत्सब कराइ अछि पुण । चतुरङ्ग बळ सज होइण छन्ति जाण १५४१
कटकर शोभाजे कहिले न सरइ । जेसनेक निशिरे आकाशे चान्द उइँ ४२
श्वेत हस्ती उपरे चढ़िण कउशिक । नटकारी अपसरी आगरे लक्ष लक्ष ४३
आलम्ब पाट छत्र आगरे अप्रमित । वाट वरण निमन्ते चळिले त्वरित ४४
भाट कएबार करन्ति आगे हूरि । दशसहस्र राजा संगरे छन्ति पूरि ४५
रथी हस्ती पदाति रथ जे सारेणी । आग पच्छे धीरे धीरे सर्वे चळे पुणि ४६
वाटरे भेटाभेटि होइले जाइ करि । कउशिक नृपति जाइ बरकु बरि ४७
सकळ राजाङ्कु से निमंत्रण कला । वरण करि राजाङ्कु संगे घेनि गला ४८
राजाङ्कु नबर पात्र मानंङ्कु उआस । ऋषिमानङ्कु वृक्ष मूळरे देले वास ४९
चतुरङ्ग बळंङ्कु बसामान देले । सकळसामग्री रखि राजन चळिले १५५०
चरचा करिबापाइँ पात्र मंत्री चार । समस्तङ्कु चर्चा कला जे वेभार १५५१
एथु अनन्तरे शुणभगवती । वरकु घेनिण गले कौशिक नृपति ५२
अन्त:पुर भितरे नेइ प्रवेशिले । राणी माने आसिण वरकु देखिले ५३
शोभा सुन्दर देखि राणी तोष हेले । मंगळ कृत्य वेभार रजनीरे कले ५४
रजनी शेषरे माजणा करि पुण । वरकु वरवेश कराइ तक्षण ५५

से सज गया था। १५४० उन्होंने मंगलमय उत्सव आयोजित किये थे और अपनी चतुरंगिनी सेना को सजा रक्खा था। १५४१ दुर्ग की शोभा कहते नहीं वन रही थी। मानो रात्रि में आकाश में चन्द्रमा उदय हो गया हो। ४२ सफेद हाथी पर चढ़कर महाराज कौशिक मार्ग वरण के लिए शीघ्रता से चल दिये। उनके आगे-आगे कौतुक करने वाली अप्सरायें लाखों की संख्या में थीं और अगणित रेशमी छत्र तथा पाथेय भी आगे ही चला जा रहा था। ४३-४४ भाट तथा विरदावली का वखान करने वाले आगे जमाव लगाये थे और साथ-साथ दस हजार राजागण भर गये थे। ४५ रथी, हाथी, पैदल सिपाही, रथ तथा बहलें आगे-पीछे होकर सभी धीरे-धीरे चले जा रहे थे। ४६ उन्होने मार्ग मे ही जाकर उनकी अगवानी की। महाराज कौशिक ने जाकर वर का वरण किया और सभी राजाओं को निमंत्रित करके उनका वरण करके वह अपने साथ ले गये। ४७-४८ उन्होंने राजाओं को महलों में, सभासदों को घरों में तथा ऋषियों को वृक्षों के नीचे वास दिया। ४९ चतुरंगिनी सेना को भी उन्होंने ठहरने का स्थान दिया और सारी सामग्री रखकर राजा चल दिये। १५५० उन्होंने सेवा-सत्कार के लिए सभासदों, मंत्रियों तथा परिचारकों को छोड़ दिया, जिन्होंने व्यवहार के अनुसार सबके सत्कार की व्यवस्था की। ५१ हे भगवती ! इसके पश्चात् की कथा सुनो। वर को लेकर महाराज कौशिक रनिवास में जा पहुँचे। रानियों ने आकर वर के दर्शन किये। ५२-५३ शोभा और सौन्दर्य को देखकर रानियां संतुष्ट हो गयी। उन्होनें रात्रि में विधि के अनुसार मांगलिक कृत्य सम्पादित किये। ५४ रात्रि की समाप्ति पर उन्होंने उसी समय मार्जन

कन्याकु सुबेश दासी माने कले। चरण अंगुष्ठिरे झुंण्टिआ खंजिले ५६
पाहुड़ नूपुर खंजिले नेइ पुण। कटी रे कटी मेखळा खंजिले जत्नेण ५७
बेनि भुजे बिज मूदि बाहुटि जे ताड़। बक्षस्थळे कंञ्चुला पिन्धाइले दृढ़ ५८
पदक चन्द्रहार मुकुता माळ मान। चापसरि कण्ठरे दिशइ शोभाबन ५९
नासारे सिन्धुफल रत्नगुणा नोथ। कर्णरे मल्ली कड़ी झलका रत्न काप १५६०
मथारे मथामणि अळका बान्धिले। जूड़ा परे तथापि झिझिरे खंजिले १५६१
एमन्त बेशकरिण पतनो पिन्धाइले। इन्द्रगोबिन्द पतनी पहरण कले ६२
चन्दन कर्पूर अंगरे बोळि तार। नाना बर्ण बेश कले पिन्धाइ फूलमाळ ६३
रत्न पादुका नेइ पादरे पिन्धाइले। चन्द्रकु बन्दि रूप झटकि दिशे भले ६४
एमन्त बर कन्या बेशकले जाण रत्न बेदी उपरकु कलेक बरण ६५
द्विजबर रुषि बसिण बेद पढ़ि। बरुण पूजा करि बिभा बिधिकरि ६६
कन्याकु अणाइँ लवण चमरी कले। शिला रोहण करि कन्या अणाँइले ६७
बर कन्या हस्त कुशरे बान्धि पुण। शंखरे पाणि देले राजन तोष मन ६८
प्रथमे लक्षे रथ पाणि दृव्य देले। द्वितीये गाई महिषि अश्व बन्दाइले ६९
तृतीये सकळ पदार्थ देइ पुण। चतुर्थे कन्यादान देलाक राजन१५७०

करवाकर वर का दूल्हा-वेश सजाया। ५५ दासियों ने कन्या का शृंगार किया। पैरों की उँगलियों में बिछुए पहना दिये। ५६ फिर उन्होंने बजने वाले नूपुर पहनाकर यत्नपूर्वक कमर में तागड़ी पहना दी। ५७ दोनों भुजाओं में अँगूठियाँ तथा तारों के बाजूबन्द पहनाकर वक्षस्थल पर दृढ़ता से कंचुकी पहना दी। ५८ पदकों वाले चन्द्रहार, मुक्ता की मालायें तथा हँसुली गले में शोभायमान दिखाई दे रही थी। ५९ नासिका में रत्न तथा मोतियों से युक्त नथ थी। कानों में झलमलाते हुये रत्नों के झूमर जंजीर से लटका दिये गये। १५६० मस्तक पर बालों को बाँधकर वेंदा बाँध दिया गया और जूड़े के ऊपर भी आभूषण सजा दिये गये। १५६१ इस प्रकार शृंगार करके उन्हें रंग-बिरंगे रेशमी वस्त्र पहना दिये गये। ६२ फिर उनके अंगों में चन्दन तथा कपूर लगाकर नाना प्रकार के पुष्पहार पहनाकर उनका शृंगार किया गया। ६३ उनके पैरों में रत्नपादुकायें लेकर पहना दी गयीं। उसकी छटा ऐसी दिखाई पड़ रही थी। मानो चन्द्रमा को बन्दी बना लिया गया हो। ६४ इस प्रकार वर-कन्या का शृंगार करके उन्हें रत्नवेदिका पर लाया गया। ६५ श्रेष्ठ ब्राह्मणों तथा ऋषियों ने वेदमंत्र पढ़कर वरुण की पूजा करवाकर विवाह की विधि सम्पादित की। ६६ राई-नोन उतारते हुए शिला-रोहण करके कन्या को बुलाकर वर और कन्या के हाथों को कुश से बाँध दिया और राजा ने प्रसन्न मन से शंख से जल डाला। ६७-६८ सर्वप्रथम एक लाख रथ तथा तरल पदार्थ दिये, फिर दूसरी बार गाय, भैंसें तथा घोड़े अर्पित किये। ६९ तीसरी बार राजा ने समस्त पदार्थ

पञ्चम हस्त ग्रन्थि फेड़िले बर कन्या। बर कन्याङ्क शिररे मुकुट शोभा वना १५७१
अग्निरे होम करि त्रिपुति कराइले। बिभा सारि बर कन्या वेदीरू घेनि गले ७२
अन्तःपुर भितरे प्रबेश नेइ कले। जुअ खेळाइ दासी सन्तोष कराइले ७३
राणी माने बन्दापना कले हरषेण। जउतुक धन देले लक्षेक रतन ७४
दिव्य अळंकार मान हरषे बन्दाइले। पंञ्चग्रासि करिण भोजन कराइले ७५
रजनी शेष होन्ति द्वितीय दिन हेला। उत्सब जात्रा राजा से दिन कराइला ७६
आर दिन बर जात्री फेरिण नग्र देखि। मर्दन मार्जणा करि मणोहिरे सुखी ७७
चतुर्थ दिन राजन चतुर्थी बिधि करि। रुषि बिप्र डकाइ राजा होम करि ७८
बिप्र रुषिङ्कि राजा मेलाणि धन देले। सामन्त पात्र मंत्री मानङ्कु बोध कले ७९
जउतक दृव्यमान चाळिले तोष होइ। कर जोड़ि रघुबंशङ्कु कउशिक कहि १५८०
मोर दुहितार दोष न घेनिब किछि। आजिठारु तुम्भर होइला मोर बत्सि १५८१
एथुअनन्तरे शुणगो शाकम्बरी। बर कन्या दुहिङ्कि दासी भेट करि ८२
मधु शैय्या पलंकरे एकान्त कराइले। कबाट देइण दासी माने गले ८३
चामर धरिण बिञ्चइ कउशल्या। देखिण् दशरथ मनरे त्वरा हेला ८४
बिचारिले उमा संगरे ए सरि। कैकेयीठू शतेगुणे अटे ए सुन्दरी ८५

देकर चौथी बार में कन्यादान किया। १५७० पाँचवी बार में उन्होंने वर-कन्या के हाथों की ग्रन्थि खोल दी। वर और कन्या के सिर पर मुकुट शोभित थे। १५७१ अग्नि में हवन करके त्रिवाचा भराये गये और फिर विवाह समाप्त होने पर वर-कन्या को वेदी से उठा कर अन्तःपुर में ले जाया गया तथा दासियों ने द्यूत-क्रीड़ा करवा कर उन्हें सन्तुष्ट किया। ७२-७३ रानियों ने प्रसन्न चित्त से उनकी आरती उतारी और उन्हें दहेज में धन तथा एक लाख रत्न प्रदान किये, ७४ प्रसन्नता से उन्होंने दिव्य अलंकार समर्पित किये और पंचग्रास विधि करवाकर उन्हें भोजन कराया। ७५ रात्रि व्यतीत होने पर दूसरा दिन आ गया। राजा ने उस दिन उत्सव आयोजित किया। ७६ अगले दिन बरातियों ने घूम फिर कर नगर निरीक्षण किया तथा मर्दन-मार्जन के पश्चात् सुखपूर्वक भोजन किया। ७७ चौथे दिन राजा ने ऋषियों तथा ब्राह्मणों को बुलाकर हवन करके चतुर्थी की विधि पूर्ण की। ७८ राजा ने ऋषियों और ब्राह्मणों को धन देकर बिदाई दी और सामन्त सभासद तथा मन्त्रियों को सन्तुष्ट किया। ७९ दहेज का दृव्य तथा सामग्रियों को चलाकर महाराज कौशिक ने हाथ जोड़कर रघुवंशी नृपाल से कहा कि आप मेरी पुत्री के दोषों पर ध्यान न दीजिएगा। मेरी वेटी आज से आपकी हो गई १५८०-१५८१ हे शाकम्बरी देवी पार्वती ! इसके पश्चात् सुनो। दासियों ने मिलकर वर तथा कन्या को एकान्त में मधु-शैय्या के पर्यंक पर छोड़ा और द्वार बन्द करके सभी दासियाँ वहाँ से चली गईं। ८२-८३ कौशल्या चवँर लेकर डुला रही थी। उन्हे देखते ही दशरथ का मन चंचल हो गया। ८४ उन्होंने विचार किया कि यह तो पार्वती के

मुख गोटि चन्द्र मण्डळ प्राये दिशि । मृग नयनी ए अटइ शुभ्रकेशी ८६
भ्रुलता चाहाणी मोहइ मोर अंग । केमन्त जोगरे मिळिला मोर संग ८७
केते दिने बिधाता एहाकु निर्माकला । सकळ चिन्ता छाड़ि बसिण गढ़िला ८८
एमन्त बिचार दशरथ कले । उठिजाइ राजजेमाकु कोळ कले ८९
कोळरे बसाइ मुखे देलेक चुम्बन । हरष मनरे कले कुच्चकु मर्दन १५९०
नानापरि बन्धरे रति रंग कले । लज्जा भाव गोटि सेठारे त्याग कले १५९१
नाना कउतुक सेठारे पुण कले । हास रस कउतुके रजनी बिञ्चिले ९२
कउशल्याङ्कु कोळ धरि दशरथ शोइ । एमन्त समयरे रजनी गला पाहि ९३
दासीए आसि कौशल्याङ्कु घेनिगले । हास रस करिण माजणा बिधि कले ९४
सुबासित जलरे स्नहान कराइले । नूतन पतनि बाँछिण पिन्धाइले ९५
पहण्ड मड़ाइण पलङ्के बसाइले । से ठारू दासी गणे बेगे चळि गले ९६
दशरथंक पाशे प्रबेश होइले । राजकुमरङ्कु मणाइ आणिले ९७
हास रस कउतुक अनेक कहिले । मर्दन माजणा बिधानरे कले ९८
सुबासित जळरे स्नाहान कराइ । नूतन पतनी पिन्धाइले नेइ ९९
रत्न पलंङ्क उपरे नेइण बसाइले । भुंञ्जिबाकु ठाआ पाणि जतने बाढ़िले १६००

समान है और कैकेयी से सौ गुनी सुन्दर है । ८५ इसका मुख चन्द्रमण्डल के समान दिखाई दे रहा है । यह शुभ्रकेशी मृग के समान नेत्रों वाली है । ८६ इसकी वक्रभृकुटि की चितवन मेरे शरीर को मोहित करनेवाली है । कैसे सुयोग से मुझे इसका साथ प्राप्त हुआ है । ८७ ब्रह्मा ने कितने दिनों तक निर्वाह करते हुए निश्चिन्त होकर बैठकर इसे गढ़ा है । ८८ इस प्रकार विचार करते हुए राजा दशरथ ने उठकर राजकुमारी का आलिंगन किया । ८९ उन्होंने उसे गोद में बिठाकर उसका चुम्बन किया और उन्होंने प्रसन्न मन से उसके वक्षस्थल का मर्दन किया । १५९० उन्होंने नाना प्रकार की मुद्राओं से लज्जा के भावों का परित्याग करके उसके साथ रमण किया । १५९१ उन्होंने अनेक प्रकार के हास-परिहास भरे कौतुक करके रात्रि व्यतीत की । ९२ राजा दशरथ कौशल्या को गोद में लेकर सो गये । इस प्रकार उस समय रात्रि समाप्त हो गई । ९३ दासियाँ आकर कौशल्या को लेकर चली गयी और हास-परिहास करते हुए उन्होंने उन्हें मार्जन कराया । ९४ सुवासित जल से उन्हें स्नान कराकर छाँटकर नये वस्त्र पहनाए । ९५ फिर चलकर उन्हे पलंग पर बिठाकर दासियाँ शीघ्र ही वहाँ से चली गयीं । ९६ फिर राजा दशरथ के निकट पहुँचकर वह राजकुमार को समझा बुझाकर ले आयीं । ९७ उन्होंने उनसे हास-परिहास की बाते करते हुए उन्हें मर्दन और मार्जन कराया । ९८ सुगन्धित जल से उन्हें स्नान कराकर नवीन वस्त्र लेकर पहनाए । ९९ रत्नजटित पर्यङ्क पर उन्हें बिठाकर उन्होंने भोजन के लिए दिव्य पदार्थों की व्यवस्था की । १६०० वर-कन्या ने षड़रस भोजन

षड्रस भोजन कले कन्या बर। आचमन कले सुबास जळर१६०१
राणी माने आसि प्रबोधि कहिले। दुहिता देइ शरण पशिलुँ बोइले २
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। दिनकठारू मेलाणि करि थिले नृपति ३
चतुरंग बळ रूषि विप्र आदि येते। रथी हाती सेनापति राजा से समस्ते ४
सज होइ बाहार होइलेक पुण। से काल सम्भर्भ कहि नुहे पुण ५
बर कन्याङ्कु घेरिण चौपाशे बसिले। खदि चामर आलट बिञ्चणा विचिले ६
सहस्रेक दासी वेश होइ पुण। रथर उपरे बसिले ततक्षण ७
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। चळिले राजन पुत्रबधुङ्कु घेनिकरि ८
संगरे कौशिक राजा गोड़ाइ आसि। रजनीरे नदी कूळे रहिले विशेषि ९
रजनी शेषरे कहिण राजा पुण। कउशिक राजा आसे आपणा राज्येण १६१०
अजोध्या राजा ये चळिले हरषे। बार दिने प्रबेश आपणार देशे १६११
सिंह द्वार निकट रे रहिले से जाण। भितरकु दासी गण अइले तक्षण १२
पुत्र वधू दासीगण संगरे घेनि गले। अन्तःपुरे नेइण बिजे कराइले १३
हुळहुळी शबदरे कम्पइ मेदिनी। राणी माने प्रबेश होइले आसि पुणि १४
भितर पुरकु पुत्र बधूकु घेनि गले। रूप देखि समस्ते मोहित होइले १५
गोटिए नबररे रहिले कउशल्या। सहस्रेक दासी संगरे होइ मेळा १६
येतेक नृपति अणाइँ थिले राजा। मुकुट कुण्डळ धन देइण कले पूजा १७

करके सुवासित जल से मुख प्रक्षालन किया। १६०१ फिर रानियों ने आकर उन्हें समझाते हुए कहा कि हम कन्या को प्रदान करके आपकी शरण में आ गई हैं। २ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् राजा ने सारे दिन विदाई की। ३ ऋषि, ब्राह्मण, चतुरंगिनी सेना, रथी, हाथी, सेनापति तथा राजागण इत्यादि जितने भी थे वह सभी तैयार होकर बाहर निकले। उस समय की बहार कहते नहीं बनती। ४-५ सभी वर-कन्या को घेर कर चारों ओर बैठ गये तथा चामर तथा व्यजनादि डुलाने लगे। ६ फिर उसी समय एक हजार दासियाँ श्रृंगार करके रथ पर बैठ गयीं। ७ हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् राजा पुत्रवधू को लेकर चल दिये। ८ साथ में पीछे-पीछे महाराजा कौशिक भी आए और नदी के तट पर रात्रि में ठहर गये। ९ रात्रि समाप्त होने पर राजा के कहने से महाराज कौशिक अपने राज्य को लौट पड़े। १६१० अयोध्या-नरेश भी बारह दिनों में चलकर अपने राज्य में आ पहुँचे। १६११ वे लोग आकर सिंह द्वार पर ठहर गये। उसी समय दासियाँ भीतर से आ गयीं और पुत्रवधू को साथ लेकर अन्तःपुर में जा पहुँची। १२-१३ मांगलिक शब्दो से पृथ्वी काँप रही थी। तभी रानियाँ वहाँ आ गई। १४ वे पुत्रवधू को महल के भीतर ले गई। उसका रूप देखकर सभी मोहित हो गईं। १५ कौशल्या एक महल में ठहर गईं। उनके साथ एक हजार दासियाँ थीं। १६ राजा ने जितने भी

से दिन रहि राजाए प्रभातु चळि गले । चतुरंग बळकु मेनाणि राजा कले १८
शाढ़ीधन अनेक आणिण बिलोहिले । समस्ते संन्तोषरे हरषमन हेले १६
सेनापति रथीङ्कि धनदेइ तोषि । दुःखी दरिद्रमानंङ्कु अन्न बस्त्रतोषि१६२०
कउशिकर येतेक लोक आसिथिले । सन्तोषरे मेलाणि ताङ्कु राजन कले१६२१
येउतुक हव्यमानमन्त्री बुहाइ घेनिगला । भण्डार घर भितरे नेइण थोइला २२
पात्र मन्त्री सामन्त बशिष्ठंकु पुण । अनेक धन देले अजोध्या राजन २३
लागिला चहळ सकळे गले चळि । एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरो २४
चन्द्र कळा राज्यरे सुमन्त बोलि राजा । सुमित्रा बोलि कर ताहार तनुजा २५
एगार बरष दुइमासे हेला नव जुबा । जेसने चन्द्रकु रोहिणी दिशे शोभा २६
अन्धारे आलोक दिशइ तार रूप । चन्द्रकळा राणी देखि हुए बिकळित २७
राजार आगरे राणी पुण कहि । नव जुबा दुहिताकु घरे रखि नोहि २८
बर देखि बिभा करिबा दुहिताकु । देखिबार चिन्ता आसे मोहर मनकु २६
शुणिण राजन बोलन्ति बचन । तपन कुळरे अजराजा जाण१६३०
ताहार कुमर अटे दशरथ । ताहाङ्कु बिभा देबा आम्भर दुहित१६३१

राजाओं को बुलवाया था, उन्होंने उनकी पूजा करके मुकुट कुण्डल तथा धन प्रदान किया। १७ उस दिन रहकर राजा लोग प्रभातकाल में चले गए। फिर राजा ने चतुरंगिनी सेना की विदाई की। १८ उन्होंने पगड़ी तथा धन लाकर सबको देकर सन्तुष्ट किया जिससे सभी का मन प्रसन्न हो गया। १६ उन्होंने सेनापति तथा रथियों को धन देकर सन्तुष्ट किया और फिर दुखी-दरिद्रों को अन्न-वस्त्र देकर सन्तोष प्रदान किया। १६२० महाराज कौशिक की ओर से जितने लोग आये थे राजा ने उन सबको सन्तुष्ट करके बिदाई की। २१ मंत्री ने दहेज के पदार्थ ले जाकर भण्डारगृह में रखवा दिये। २२ फिर अयोध्यानरेश ने सभासद, मंत्री, सामन्त तथा वसिष्ठ को प्रचुर धन प्रदान किया। २३ वहाँ चहल-पहल होने पर सभी लोग चले गए। हे शाकम्बरी ! इसके बाद की कथा सुनो। २४ चन्द्रकला राज्य में सुमन्त नाम का राजा था। सुमित्रा नाम की उनकी पुत्री थी। २५ ग्यारह वर्ष दो महीने में वह नवयौवना हो गई। जैसे रोहणी नक्षत्र का चन्द्रमा शोभायमान दिखाई देता है। २६ अन्धेरे में भी उसका रूप आलोकित होता था। रानी चन्द्रकला उसे देखकर चिन्तित हो गई। २७ तब रानी ने राजा से कहा कि नवयौवना पुत्री को घर में नहीं रख पाएँगे। २८ वर देख-कर पुत्री का विवाह कर देंगे। इसे देखते ही मेरे मन में चिन्ता हो जाती है। २६ यह सुनकर राजा ने कहा कि सूर्यवंश में राजा अज हैं। १६३० उनका पुत्र दशरथ है। अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर देंगे। १६३१

राजार बचन शुणि राणी कहे पुणि । केउँ दिशे घर तार कह नृप मणि ३२
राजन बोइले तार अजोध्या देशे घर । कल्प रुषि नाति तांङ्क पुरोहित सार ३३
कण्डु रुषि जमनिक तीर्थ रे करि मठ । तप करिबारे से होइले सिद्धन्त ३४
अनन्त बासुदेवरे प्रीति सेहू कला । तेणु करि प्रळये से रूषि बंञ्चिला ३५
चन्द्रकळा बोले देब रूषि कथा कह । केउँ रूषि कुमर से कि रूपे देब प्रिय ३६
सुमन्त राजा बोइले शुण पाटराणी । अग्निर कुमर से बळरे अटे पुणि ३७
सात जुग परिजन्ते तप सेहू कला । निराकार विष्णु ताकु प्रसन्न होइला ३८
बोइले कुमर रे चिन्ता न कर मने । तु याहा मागिबु मुं देबइँ परसन्ने ३९
शुणिण मारकण्डु मनरे तोष हेले । प्रळयरे क्षय मुहिँ नोहिबि बोइले १६४०
हेउ बोलि बासुदेब कहिले तांङ्कु पुण । शुणिण सन्तोष कण्डु रूषि जाण १६४१
जमनिक तीर्थरे रहिले मुनि जाइ । अठर मनु पर्ज्यन्त तपि सेहू होइ ४२
अठर मनु सम्पूर्णरे प्रळय होइले । देबासुर नर बानरे क्षय गले ४३
तिनिपुर घोटिला कारुण्य जलधि । समस्ते लीन हेले शुण स्तिरोनिधि ४४
सेते बेळे मारकाण्डु सुमरे नारायण । डाकन्ते कर्णरे शुणिले प्रभु पुण ४५
आजानु बाहु मेलाइ ताहाकु घेनि गले । मुख बाटे धरि गर्भकु क्षेपि देले ४६

राजा की बात सुनकर रानी बोली, हे नृपश्रेष्ठ ! बताइये उनका घर किस दिशा में है। ३२ राजा ने कहा कि उनका घर अयोध्या प्रदेश में है और कल्प ऋषि के नाती उनके श्रेष्ठ पुरोहित है। ३३ उन्होंने मार्कण्डेय ऋषि के जमनिक तीर्थ में आश्रम बनाकर तपस्या करके सिद्धि-लाभ किया है। ३४ उन्होंने अनन्त नारायण की भक्ति की। इस कारण से प्रलयकाल में भी वह ऋषि बच गए। ३५ चन्द्रकला ने कहा, हे देव ! उन ऋषि की कथा हमसे कहिये। वह किस ऋषि के पुत्र थे और देवता के प्रीतिभाजन कैसे बने। ३६ राजा सुमन्त ने कहा, हे पटरानी ! सुनो ! वह अग्नि का शक्तिमन्त पुत्र था। ३७ उसने सतयुग पर्यन्त तपस्या की। तब निराकार नारायण उससे प्रसन्न हुए। ३८ उन्होंने कहा, हे पुत्र ! तुम मन में चिन्ता मत करो। तुम जो भी माँगोगे मै प्रसन्नता से प्रदान करूँगा। ३९ यह सुनकर मार्कण्डेय मन में प्रसन्न हो गए। मेरा विनाश प्रलय में भी न हो उन्होंने ऐसा कहा। १६४० नारायण ने उनसे तथास्तु कह दिया। यह सुनकर मार्कण्डेय ऋषि सन्तुष्ट हो गए। १६४१ मुनि ने जमनिक तीर्थ में रहकर अठारह मन्वन्तर तक तपस्या की। ४२ अठारह मन्वन्तरों के पूर्ण होने पर प्रलय हुआ। देवता, राक्षस, नर तथा वानर नष्ट हो गये। ४३ तीनों लोकों में प्रलय सागर भर गया। हे स्त्रियों में श्रेष्ठ ! सभी उसमें विलीन हो गये। ४४ उस समय मारकंडेय ने भगवान का स्मरण किया। उनकी पुकार को भगवान ने कानों से सुना। ४५ उन्होंने आजानु भुजाओं से उन्हें उठाकर अपने मुख मार्ग से अपने पेट में डाल

सपत ब्रह्माण्ड नारायण गर्भेपुण । बुलिण मारकण्डु देखिजे सर्वस्थान ४७
मनुए परिजन्ते गर्भरे रहिले । समस्ते क्षय जिबारु से बाहार हेले ४८
देखिले तिनि पुरे आउ केहि नाहिं । न देखि मारकण्डु मनरे चिन्ता होइ ४९
नारायण सुमरणा मुनि मने कले । बासुदेब रूपे प्रसन्न ताङ्कु हेले १६५०
मारकण्डु बोइले शुणिमा देबहरि । देब असुर सकळे गले मरि १६५१
प्रळयरे मेरु गिरि समस्ते लीन हेले । एबे सबु सर्जना करिबु टिकि भले ५२
नारायण बोइले शुण कल्पमुनि । किछि दिन अन्ते बिचारे जे पुणि ५३
एते बोलि हरि शयन स्थाने गले । क्षीर सागर भितरे शयन से कले ५४
नाभि मण्डलरे पद्म जे उत्पत्ति । चर्तुमुख ब्रह्मा सेथिरू उतपत्ति ५५
नारायण कहिबारु ज्ञातप हेला तार । मनरू दुहिता जात कले बेदबर ५६
दुहिता गोटिकि किन्तु रुषिङ्कि बिभाकले ।
देवताङ्कु जातकर बोलिण आज्ञा देले ५७
दुहिता ठारू जात कश्यप रूषि हेले । कश्यप रूषि ठारू देबताए जन्मिले ५८
तंतिश कोटि देबता रूषि कले जात । तेबे स्वर्गपुर होइला सम्भूत ५९
चन्द्राबती बोइले शुणिमा देब हेउ । से कश्यप रूषि कन्या पाइला पुण काहुँ १६६०
सुमन्त राजा बोले शुण पाटराणी । मार्कण्ड हेले भण्डारे अधिपति पुणि १६६१

दिया । ४६ भगवान के गर्भ में सात ब्रह्माण्ड हैं । मारकंडेय ने सभी स्थान घूम कर देखे । ४७ वह एक मन्वन्तर तक गर्भ में रहे । सबके नष्ट होने पर वह बाहर निकले । ४८ उन्होंने देखा कि तीनों लोकों में और कोई नहीं है । किसी को भी न देखकर मारकंडेय के मन में चिन्ता हो गई । ४९ मुनि ने मन में भगवान का स्मरण किया । वासुदेव भगवान उन पर प्रसन्न हो गये । १६५० मारकंडेय बोले, हे प्रभुनारायण ! देवता और दैत्य सभी मर गये है । १६५१ प्रलय में मेरु पर्वत आदि सभी विलीन हो गये हैं । अब सबका अच्छी प्रकार से सृजन कीजिये । ५२ भगवान ने कहा हे कल्प मुनि ! सुनो, कुछ दिनों के बाद विचार करेंगे । ५३ ऐसा कहकर भगवान सोने के स्थान को चले गये । उन्होंने क्षीरसागर के भीतर जाकर शयन किया । ५४ उनके नाभि-प्रदेश से एक कमल प्रकट हुआ । उससे चारमुख वाले ब्रह्मा की उत्पत्ति हुयी । ५५ भगवान के कहने पर उन्हें ज्ञान हुआ । वेदवर ब्रह्मा ने मन से एक पुत्री उत्पन्न की । ५६ उन्होंने उस कन्या का विवाह ऋषि से कर दिया । फिर उन्होंने देवताओं को उत्पन्न करने को आज्ञा दी । ५७ उस पुत्री से कश्यप ऋषि उत्पन्न हुये और कश्यप ऋषि से देवता उत्पन्न हुये । ५८ ऋषि ने तेंतीस करोड़ देवता उत्पन्न किये । तब स्वर्गलोक का निर्माण हुआ । ५९ चन्द्रावती ने कहा, हे देव, सुनिये ! उन कश्यप ऋषि को कन्या कहाँ से मिली । १६६० राजा सुमन्त बोले, हे पटरानी ! सुनो । मारकंडेय तब भाण्डार के अधिपति

अठर मनु पर्ज्यन्ते भण्डारे अधिपति । मर्त्यपुर जीवमाने कले जे अनीति ६२
देवताए बिचारि बेदबरंङ्कु कहि । नर असुर देवता काहाकु न मानइँ ६३
शुणि बेदबर सप्त निधि जात कले । भण्डार अधिपति ताहांङ्कु कराइले ६४
कण्डु रूषिङ्कि कहिले तुम्भे हुअ जन्तुपति ।
शुणिकरि रूषि बोले पड़िला बिपत्ति ६५
संजीबनी पुरे मुनि हेले उपस्थित । प्रति दिन कोटिए जीब मरन्तित ६६
पाप पुण्य बिचारिण ताङ्कु जातकरि । एरूपे अठर मनु गला अपसरि ६७
तिलार्द्ध समय नोहिला रूषिङ्कर । किछि न बुझिले मार्कण्ड मुनिबर ६८
देबताए देखिण हरष मन हेले । हेम आदित्य पुत्रकु जन्तुपति कले ६९
से जंजाळरु रूषि होइले खलास । घरणीकि घेनिण अइले मर्त्य देश१६७०
जमनिक तीर्थरे बसिण तप कले । कालेहें दुहिता गोटिए जात हेले१६७१
से दुहितार्टिकि बिबाह कले रूषि । कुम्भ रूषिङ्क बरिण कन्यादान द्यन्ति ७२
से कन्या सङ्गेण रूषि रतिरस कले । जइन्ता कन्या गर्भरू दुइ पुत्र हेले ७३
अगस्ति बशिष्ठ तांङ्कर नाम पुण । काळे से दुइपुत्र रूषि कुळरे टाण ७४
चन्द्राबती बोइले शुणिमा हेउ देब । हेम आदित्य पुत्र केते कला भोग ७५

हो गये । १६६१ वह अठारह मन्वन्तर पर्यन्त भाण्डार के अधिपति रहे। मृत्युलोक के जीव अन्याय करने लगे। ६२ वह देवता, राक्षस तथा मानव किसी को भी नहीं मानते थे। तब देवताओं ने परामर्श करके ब्रह्मा जी से सब बताया। ६३ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने सात समुद्र उत्पन्न किये और उन्हें भाण्डार का अधिपति नियुक्त कर दिया। ६४ उन्होंने मारकंडेय ऋषि को यमराज बनने के लिये कहा। यह सुनकर ऋषि बोले कि यह तो विपदा आ गयी। ६५ फिर मुनि यमलोक में आ गये। वह प्रतिदिन एक करोड़ जीवों को मारने लगे। ६६ पाप-पुण्य का विचार करके वह उन्हें जन्म देने लगे। इस प्रकार अठारह मन्वन्तर बीत गये। ६७ ऋषि को तिलमात्र भी समय नहीं मिलता था। मुनिश्रेष्ठ मारकंडेय को कुछ समझ में नहीं आया। ६८ देवता लोग यह देखकर मन में प्रसन्न हो गये। उन्होंने हेम आदित्य के पुत्र को यमराज बना दिया। ६९ ऋषि उस जंजाल से मुक्ति पा गये। वह अपनी पत्नी को लेकर मृत्युलोक में आ गये १६७० उन्होंने जमनिक तीर्थ में बैठकर तपस्या की। कुछ काल में उनके एक पुत्री उत्पन्न हुयी। १६७१ ऋषि ने कुम्भ ऋषि का वरण करके उस पुत्री का कन्यादान कर दिया। ७२ उस कन्या के साथ ऋषि ने रमण किया। जयन्ता कन्या के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुये जिनका नाम अगस्त्य और वसिष्ठ था। धीरे-धीरे दोनों पुत्र ऋषि-कुल में प्रतिभावान हो गये। ७३-७४ चन्द्रावती ने कहा, हे देव ! सुनिये। हेम आदित्य के पुत्र ने कितना भोग किया। ७५ महाराज सुमन्त ने पटरानी से कहा कि वह दो सौ

सुमन्त बोइले शुण शुण पाटराणी । एकस्तरी गण्डा जुग भोग कला पुणि ७६
मत्त भरे मर्त्यपुरे बुलिण से गला । पार्वती पुत्रङ्कु कपिळाशरे देखिला ७७
बिजे करिछन्ति गणनाथ प्रथम दुआरे । देखिण जन्तुपति विचारे मनरे ७८
दुइ गोटि चरण दश गोटि भुज । पाञ्च गोटि मुण्ड हस्ती प्राये शुण्ड ७९
देखिण जन्तुपति मने क्रोध हेला । कालपाशकु पार्वती नन्दन देखिला१६८०
पाश अंकुश पेषि काळकु कला नाश । नागपाश शर बिन्धिले शिव शिष्य१६८१
नागपाशे धरिण ताहाकु घेनि गले । तोटिर उपरे एक चरण लदिले ८२
उच्चरे रोदन करे इन्दुर जे जम । तेतिश कोटि देबता होइले अदम्भ ८३
सकळ देबताए होइले एक मेल । हिमगिरीकि बोलि चळिले सकळ ८४
कपिळाश कन्दरे होइले प्रवेश । गण ब्रह्माङ्कु देखि स्तुति करन्ति विशेष ८५
बोइले पार्वती नन्दन रक्षा कर । जन्तुपति न रखिले राज्य होइत क्षार खार ८६
गण ब्रह्मा बोइले ए अटइ बड़ मूढ़ । मत्त गर्व पण जार अटइ बखड़ ८७
काल पाश बिन्धिला मोते मारिबाकु । अन्य लोकंकर कि रखिब बल वपु ८८
मला लोक पाप पुण्य बुझिबाकुपुण । पातक देखि दण्ड देब से कारण ८९
आयुष थिबा लोककु नेब जेबे धरि । नर बानर असुर पकाअ निबारि १६९०

चौरासी युगों तक भोग में लीन रहे । ७६ उन्होंने मदोन्मत्त होकर मृत्युलोक में घूमते हुए कैलास पर्वत पर पार्वती के पुत्र को देखा । ७७ गणों के नाथ गजानन प्रथम द्वार पर विराजमान थे। यह देखकर यमराज ने मन में विचार किया । ७८ इसके दो पैर, दस भुजायें तथा पाँच सिरों में हाथी के समान सूँड़ें हैं । ७९ उन्हें देखकर यमराज के मन में क्रोध उत्पन्न हो गया । पार्वती के पुत्र गणेश ने कालपाश को देखा । १६८० उन्होंने पाश तथा अंकुश का प्रहार करके काल को नष्ट कर दिया । शंकर जी के पुत्र ने उन पर नागपाश का प्रहार किया । १६८१ वह उसे नागपाश से बाँधकर ले गये और उन्होंने उसके पेट को एक पैर से दाब दिया । ८२ वह यमराज चूहे के समान उच्च स्वर में करुण क्रन्दन करने लगा । तैंतीस करोड़ देवताओं का घमंड चूर-चूर हो गया । ८३ सभी देवताओं ने मिलकर हिमालय पर्वत पर जाने का विचार किया । ८४ वह सब कैलास पर्वत की कन्दरा में जा पहुँचे । उन्होंने गणनायक को देखकर विशेष प्रकार से उनकी स्तुति की । ८५ उन्होंने पार्वती के पुत्र से उनकी रक्षा करने के लिये कहा और यह भी कहा कि यमराज को न रखने से राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा । ८६ गणेश ने कहा कि यह तो बड़ा मूर्ख है । यह गर्व से उन्मत्त होकर उच्छृंखल हो गया है । ८७ इसने मुझे मारने के लिए कालपाश का प्रहार किया, फिर अन्य लोगों के बल तथा शरीर को यह क्या रखेगा । ८८ मरे हुए लोगों के पाप-पुण्य समझकर तथा उनके पापों को देखकर ही दण्ड देना चाहिए । ८९ जब यह आयु शेष रहने वाले लोगों को ही नष्ट कर देगा तो

विधाता बोइले यार जम पणा जाउ । तोहर बाहन होइ चरणे खटि थाउ१६६१
शुणिण गण ब्रह्म पेटरु गोड़ काढ़ि । ततक्षणे जम असुर रूप धरि ६२
मुषिक बाहन होइ रहिला कपिळाश । चन्द्रावती बोले शुण राजन विशेष ६३
मारकण्ड रुषि तप करि करि गला । इन्दुर जन्तु पति कैळासे रहिला ६४
संजीबनी पुरे के होइला राजा । से कथा गोटि मोते कह देवराजा ६५
सुमन्त राजा बोइले शुण पाटराणी । तेजबन्त आदित्य कुमर शनि पुणि ६६
ताहाङ्कु घेनि दइब संजीबनी गला । जन्तुपति शाढ़ी देइ मनाइँ कहिला ६७
एमन्ते कल्प रुषि कल्पे पर्य्यन्त बञ्चि । अजोध्या राजकुल निर्मळ अटे अति ६८
शुणिण पाटराणी गड़घालि शोइ । बेगे दुहिताकु बिभाकर प्राण साइँ ६६
शुणिण राजन राणीकि कहे बाणी । निकटरे बिबाह देबा जे दुलणी१७००
एते बोलि राणीकि प्रबोध करि राए । बाहार जगतिरे कलेक बिजये१७०१
प्रति हारी कि डकाइ कहन्ति राजन । पात्र मंत्री सामन्तङ्कु डकाअ बहन २
शुणिण प्रति हारी बेगे चळि गला । पात्र सामन्तु घेनिण मिळिला ३
राजाङ्कु देखिण समस्ते मान्यकले । कर पत्र जोड़िण आगरे उभा हेले ४
राजन बोइले शुण हे मंत्री बर । पात्र सामन्तु घेनि जाअ अजोध्यार ५

फिर नर-वानर तथा असुर को तो समाप्त ही कर देगा। १६६० ब्रह्मा ने कहा कि इसका यमराजत्व समाप्त हो जाय और यह तुम्हारा वाहन होकर तुम्हारी चरण-सेवा में रहे। १६६१ यह सुनकर गणेश ने उसके पेट से पैर हटा लिया। उसी समय यमराज ने देवेतर रूप धारण कर लिया। ६२ वह चूहे के रूप में वाहन बन कर कैलास में रहने लगा। चन्द्रावती ने कहा, हे राजेन्द्र ! मेरी प्रमुख बात को सुनिए। ६३ मार्कण्डेय ऋषि तो तप करते रहे और यमराज चूहा बनकर कैलास में रहने लगा। ६४ फिर यमलोक का राजा कौन बना ? हे नृपराज ! आप वह कथा मुझसे कहिए। ६५ राजा सुमन्त ने पटरानी को सुनाते हुए कहा कि सूर्य का तेजस्वी पुत्र शनि था। ६६ ब्रह्मा जी उन्हें लेकर यमलोक को गये और उन्होंने उसे समझा बुझाकर यमराजत्व का पाग बाँध दिया। ६७ इस प्रकार कल्प ऋषि एक कल्प पर्यन्त रहे। अयोध्या का राजकुल अत्यन्त निर्मल है। ६८ यह सुनकर रानी ने निश्चिन्तता से दण्डवत कर कहा, हे प्राणनाथ ! अब शीघ्र ही पुत्री का विवाह कर दो। ६६ यह सुनकर राजा ने कहा कि निकट भविष्य में ही हम पुत्री का विवाह कर देंगे। १७०० इस प्रकार कहते हुए रानी को बोध प्रदान करके राजा बाहर जगती पर उपस्थित हुए। १७०१ राजा ने प्रतिहारी से शीघ्र ही सभासद, मंत्री आदि सभी लोगों को बुला लाने को कहा। २ यह सुनकर प्रतिहारी चला गया और शीघ्र ही सभासद, मंत्री तथा सामन्तों को लिवा लाया। ३ राजा को देखकर सभी ने आदर के साथ उनके हाथ जोड़े और पास ही खड़े हो गये। ४ राजा ने श्रेष्ठ मंत्री से सभासद तथा सामन्तों को लेकर अयोध्या जाने को कहा। ५ रघुकुल में उत्पन्न महाराज अज है जो देवताओं पर विजय प्राप्त

रघुबंशे जात अज जे नृपति। स्वर्गरे इन्द्र हेले देबातांकु जिति ६
से राजा कुळ निर्मळ सबु दिने जाण। दशरथ नामरे ताङ्कर नन्दन ७
सेहि कुमरकु बरि आण हे सत्वर। सुमित्रा दुहिताकु सेहि अटे बर ८
रत्न माळा गोटिए घेनिण बेगे चळ। सुबर्णर रथनिअ तुम्भ संगतर ९
पिताङ्कु न कहिण पुत्रङ्कु बेगे बर। रत्न माला देब नेइ ताहार गळार१७१०
बरण करि सारिले राजाङ्कु कहिब।पुत्रकु बिभा करिबाकु आस तुम्मे जिब१७११
शुणिण पात्र मंत्री सामन्त बोले हेउ। बर माला आम्भङ्कु दिअ महाबाहू १२
शुणिण राजन बेगे चळि गले।भण्डारू रत्न माला गोटिए अणाइँले १३
दुहिता हस्तरे देले नेइ पुण। बोइले तोर निमन्ते बर करिबा बरण १४
शुणिण पाटराणी आसिण तहिँ मिलि। दुहिताकु बोइले दिअगो करे तोळि १५
शुणिण कुमारी सन्तोष मन हेला। बरिली मुहिँ बर पिताङ्कु कहिला १६
रघुबंशे जात अटन्ति दशरथ। तांक बिनु मोर न बले आने चित्त १७
से राजाङ्कु बरिलि मुँ निश्चे हेबि बिभा।अन्य बर आणिले जीवन मोर तेज्या १८
सुमित्रा बोइले पिता शुण मो बचन। दुर्बासा रुषि आसि थिले जेउँदिन १९
चरणर उदककु पाइला बेळरे। मोते देखि सेहि रुषि कहिले तोषरे१७२०

करके स्वर्ग में इन्द्र बन गये थे। उन राजा का कुल सदा से निर्मल (कलंक रहित) रहा है। दशरथ नाम का उनका पुत्र है। ६-७ आप लोग शीघ्र उस कुमार का वरण करके ले आएँ। बेटी सुमित्रा के लिए वही वर होगा। ८ आप लोग अपने साथ स्वर्ण-रथ तथा एक रत्नों की माला लेकर जायँ। ९ पिता को बिना बताये ही पुत्र के गले में रत्नमाला डालकर शीघ्र ही उसका वरण कर देना। १७१० वरण कर चुकने पर राजा से कह देना कि आप पुत्र का विवाह करने के लिये आइये। १७११ यह सुनकर सभासद मंत्री तथा सामन्तों ने कहा ठीक है। हे महाबाहु ! अब आप हमे वरमाला प्रदान करें। १२ यह सुनकर राजा ने शीघ्र ही जाकर भाण्डार घर से एक रत्न-माला मँगाई। १३ उसे पुत्री के हाथो में देकर कहा कि तुम्हारे लिए वर का बरण करना है। १४ यह सुनकर पटरानी वहाँ आ गयी और उसने राजकुमारी से उसे अपने हाथों से उठाकर देने को कहा। १५ यह सुनकर राजकुमारी का मन सन्तुष्ट हो गया और उसने पिता से कहा कि मैने वर का वरण कर लिया है। १६ रघुवंश में दशरथ उत्पन्न हुए है। उनके अतिरिक्त और कहीं भी मेरी इच्छा नहीं है। १७ उन राजा का बरण करने से मै निश्चित ही विवाह करूँगी और अन्य किसी वर को लाने से मै शरीर का त्याग कर दूँगी। १८ सुमित्रा ने कहा, हे पिता जी ! मेरी बात सुनिये। जिस दिन दुर्वासा ऋषि आए थे। तब उनका चरणोदक लेने के समय उन ऋषि ने मुझे देखकर सन्तोष के साथ कहा था। १९-१७२० हे

बोइले सुकुमारी तोर कर्म भल। अनन्त जात हेबे गर्भरे तोहर१७२१
डाहाणबर्त्त शंख बासुदेबर जाण। तोर गर्भ जात हेबे दुइटि नन्दन २२
मझिआणी सउतुणी कउशल्या जाण। तार गर्भे जात हेबे साक्षाते नारायण २३
ज्येष्ठ सूयतिनी कैकया होइ थिब। तार गर्भे जात हेबे सुदर्शन चक्र देव २४
एमन्ते चतुर्द्धा रूप अबतार हेबे। असुर दुष्टजन नाश से करिबे २५
अजोध्या राजन अज जे नृपति। तार कोळे दशरथ कुमर उत्पत्ति २६
तार कोळे जात हेबे अनन्त बासुदेब। दशरथङ्कु वर कहिलुं तोर आग २७
से दिनु से कथा मोर मने अछि जाण। माता पिता बोइले शुण आम्भ पण २८
जेउँ बर तोर मने करि अछु चिन्ता।सेहि वर बरिबाकु आम्भर अटे इच्छा २९
शुणिण सुमित्रा संतोष मन हेला। रूषि कहिवार कथा घटण हेबपरा१७३०
से जिगारु राजन उत्सब भि आइला। कटक जाक चित्रपट्ट कराइला१७३१
सुवर्ण कळश चिराळ पन्ति पन्ति।नवर जाक छामुण्डिआ पतनी टाणिछन्ति ३२
दाण्ड परिमळ उआस नवर घर। नवर उआस कलेक अपार ३३
नटकारी अपसरी बेशकारी त्वरा। हाट बाट दाण्ड जे गहळ हेला परा ३४
चतुरङ्ग बळ डकाइ नर पति। बाद्य निशाणरे मेरु गिरि कम्पि ३५
पाञ्च सहस्र राजा अटन्ति बन्धु तार। से राजा मानङ्कु अणाएँ नृपबर ३६
बेनि कोटि रुषि अणाएँ राजन। चतुरङ्ग बळ गहळ हेळे पुण ३७

सुकुमारी ! तेरे कर्म-फल के अनुसार अनन्त देव तेरे गर्भ से उत्पन्न होंगे। १७२१ भगवान विष्णु का दक्षिणावर्ती शंख भी तेरे गर्भ से जन्म लेगा। अतः तेरे गर्भ से दो पुत्र जन्म लेंगे। २२ तुम मँझली सौत कौशल्या को समझना, उसके गर्भ से साक्षात् नारायण जन्म लेगे। २३ तुम्हारी बड़ी सौत कैकेयी होगी जिसके गर्भ से सुदर्शन चक्र जन्म लेगे। २४ इस प्रकार चारों मूर्तियाँ अवतार ग्रहण करेंगी और दुष्टों तथा दैत्यों का संहार करेंगी। २५ अयोध्या के राजा महाराज अज है। उनकी गोद में कुमार दशरथ का जन्म होगा। २६ उनके अंश से अनन्त नारायण जन्म लेंगे, इसलिए मैं तुझे दशरथ का वरण करने को कह रहा हूँ। २७ उसी दिन से यह बात मेरे मन में है। माता-पिता ने कहा, तब तो तुम हमारी बात सुनो। २८ तुमने जिस वर के लिए मन में विचार किया है, उसी वर का वरण करने के लिए हमारी भी इच्छा है। २९ यह सुनकर सुमित्रा का मन सन्तुष्ट हो गया कि अब तो ऋषि का कथन रूपायित होगा। १७३० उन लोगों के चले जाने पर राजा ने उत्सव आयोजित किये और सम्पूर्ण दुर्ग को चित्रकारी करवा कर भर दिया। १७३१ पंक्ति की पंक्ति स्वर्ण कलश तथा पताकायें लगवा दी। सारे नगर में झंडियाँ लगा दी गयी। ३२ महकते हुए मार्ग, घर, महल, आवास आदि अनेक की संख्या में निर्मित करवा दिये। ३३ नटों, अप्सराओं तथा बहुरूपियों की हाट बाजार तथा मार्गों में गहमा-गहमी मच

सकळ संम्भवं तिआरि राजन। रत्न बेदी अन्तः पुरे सजाड़ि बहन ३८
नग्नरे घोषणा दिआइला पुण। एथु अनन्तरे भगवती शुण ३९
पात्र मंत्री सामन्तमाने गले चळि। दश दिने अजोध्या नगर रे मिळि१७४०
देखिले सुवर्ण मय अजोध्या नगर। रत्नरे निबाड़ होइ अछि पूर१७४१
देखिण पात्र मंत्री प्रशंसा जे कले। दुइ घड़ि बेळ अछि नग्नरे पशिले ४२
से नग्नर बड़ दाण्ड मुण्डरे जात घर। पात्र मंत्री सामन्त रहिले से ठार ४३
चळन्ति लोक माने कहिले ताङ्कु आगे। बोइले आढ़ होइ रह तुम्भे बेगे ४४
बाटरे गहळ होइब एहि क्षणि। मृगया बिनोदे पुत्र जाइछन्ति पुणि ४५
शुणिण पात्र मंत्री आनन्द होइले। आम्भर शुभ जोग बिचार से कले ४६
सुवर्ण थाळिरे फुल माळ थोइ। आपणार उदबेगे रहिले सज होइ ४६
एमन्त समयरे नृपति कुमर। मृग बेन्ट सारि करि अइले नबर ४८
बाद्य निशाणरे पुरइ जगत। मृग शम्बर आणि अछन्ति बहुत ४९
बोझ भार करिण आणन्ति लोके जाण। नबर भितरे पशिले हर्षण१७५०
अश्वपरे सिपाही माने जान्ति चळि। फरि खण्डा धरि चतुरंग बळ मिळि१७५१

गई। ३४ राजा ने चतुरंगिणी सेना को बुलवा लिया। वाद्ययन्त्रों के निनाद से सुमेरु पर्वत काँपने लगा। ३५ राजा के पाँच हजार सम्बन्धी थे। उन्होंने उन राजाओं को बुलवा लिया। ३६ राजा ने दो करोड़ ऋषि बुलवा लिये। चतुरंगिणी सेना उमड़ पड़ी। ३७ राजा ने सभी महोत्सवों की तैयारी कर ली। अन्तःपुर में उन्होंने रत्नवेदी शीघ्र ही सजवा ली। ३८ फ़िर उन्होंने नगर में घोषणा करवा दी। हे भगवती! इसके बाद की कथा सुनो। ३९ सभासद, मंत्री तथा सामन्त चलकर दस दिनों में अयोध्या पहुँच गये। १७४० उन्होंने सु-वर्ण वाली अयोध्या नगरी को देखा। वह रत्नों से भरपूर जड़ी थी। १७४१ सभासद तथा मंत्रियों ने देखकर उसकी प्रशंसा की और दो घड़ी समय रहने पर वह लोग नगर में प्रविष्ट हुए। ४२ उस नगर के राजमार्ग के ऊपर ठहरने का स्थान था। सभासद, मंत्री तथा सामन्त वहीं रुक गये। ४३ राहगीरों ने उनसे कहा कि आप लोग शीघ्र ही हट जाएँ। ४४ अभी इसी क्षण मार्ग में संकुलता बढ़ जायेगी। राजकुमार आखेट का आनन्द लेने गये हैं। ४५ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री प्रसन्न हो गये। उन्होंने विचार किया कि हमारा शुभ योग आ गया है। ४६ वह लोग स्वर्ण थाल में फूलमाला रखकर बड़े उत्साह से सजकर तैयार हो गये। ४७ इसी समय राजकुमार दशरथ आखेट समाप्त करके नगर में आए। ४८ वाद्य-निशाण से वातावरण भर गया था। वह अनेक मृग तथा साम्हर साथ में ले आये थे। ४९ जिन्हें लोग बोझ के रूप में भारों द्वारा ढोकर ला रहे थे और सभी आनन्दपूर्वक नगर में प्रवेश कर रहे थे। १७५० सिपाही घोड़ों पर चले जा रहे थे। साथ में फरसे-तलवारें लिए चतुरंगिणी सेना

मध्यरे विजये नृपति कुमर। अति आनन्दरे आसन्ति से बीर ५२
पात्र मंत्री सामन्त देखिले तांङ्कु पुण। चारि धनु धरि छन्ति से करेण ५३
सौन्दर्ज्य मनरे जगत जन मोहि। अष्टम बाहू जे बृषाळ बिराजइ ५४
हय उपरे चढ़ि आसन्ति कुमर। बीर बर बेश होइ बळीयार ५५
देखिण पात्र मंत्री ओगाळिले आगे। सैन्य बळ स्थकित होइ रहि बेगे ५६
सामन्त कपाळरे चन्दन जे देला। पात्र शिर परे पुष्प माळकु खंजिला ५७
मंत्री चन्द्र हार गळारे देला नेइ। अश्व परू राज पुत्रङ्कु ओल्हाइ ५८
हस्त धरि मंत्री बेगे चळि गला। सुवर्णर रथपरे नेइण बसाइला ५९
सूबास जळरे चरण पखाळिला। मुख धोइ राज पुत्र निश्चिन्ते वसिला१७६०
अमृत भोजन मंत्री नेइ थिला। से दृब्यमान सबु जो गाड़ सेथि कल१७६१
कर्पूर बिड़िआ भुंजिले राज पुत्र। मनरे हरष होइले दशरथ ६२
एथु अनन्तरे भगबती शुण। चतुरंग बळ संगे रहिलेक पुण ६३
किछि बळ तहूँ जे सेठारू चलि गले। राजाङ्क आगरे सबु जणाइँले ६४
बोइले कुमर पारिधि कि जाइ थिले। बहुत जीव जन्तु मारिण जश कले ६५
फेरि आसि नबरे पशि बार बेळे।केउँ राजा पात्र मंत्री आसि तांङ्कु बरण कले ६६

भी थी। १७५१ राजकुमार मध्य में विराजमान थे। वह वीर अत्यन्त आनन्द से चले आ रहे थे। ५२ सभासद, मंत्री तथा सामन्तों ने उन्हें देखा। वह अपने हाथों में चार धनुष लिये थे। ५३ प्रफुल्लित मन से उनका सौन्दर्य संसारी-जनों को मोहित कर रहा था। उनकी आठ विशाल बाहुएँ शोभा पा रही थीं। ५४ वीर वेश में सजे हुए बलवान राजकुमार घोड़े पर चढ़कर चले आ रहे थे। ५५ यह देखकर सभासद तथा मंत्रियों ने उन्हे आगे से रोक लिया। वेग से आती हुई सेना स्थगित होकर रह गई। ५६ सामन्तों ने उनके मस्तक पर चन्दन लगा दिया। सभासदों ने शिर पर मालायें सजा दी। ५७ मन्त्री ने गले में चन्द्रहार पहना दिया और हाथ पकड़कर राजपुत्र को अश्व से उतार कर शीघ्रता से चलकर उन्हें स्वर्णरथ के ऊपर ले जाकर बैठा दिया। ५८-५९ सुवासित जल से उन्होंने राजपुत्र के चरण धोये। राजकुमार मुख धोकर निश्चिन्त होकर बैठ गए। १७६० मन्त्री अमृतोपम खाद्य सामग्री लिये था। उसने सभी पदार्थों को वहाँ रखकर उन्हें समर्पित किया। १७६१ राजकुमार दशरथ का मन कर्पूरयुक्त पान खाकर प्रसन्न हो गया। ६२ हे भगवती ! इसके बाद की कथा सुनो। उनके साथ चतुरंगिणी सेना रुक गई थी। ६३ थोड़ा सा सैनिक दल वहाँ से चला गया। उसने जाकर राजा से सब कुछ निवेदित कर दिया। ६४ सैनिक ने कहा कि कुमार शिकार पर गये थे। उन्होंने अनेक जीव-जन्तुओं को मार कर कीर्ति स्थापित की। ६५ लौटने पर नगर में प्रवेश करते समय किसी राजा के सभासद तथा मन्त्री ने आकर उनका वरण

फुल चन्दन चन्द्र हार नेइण ताङ्कु देले। हयबर उपरू ओल्हाइ घेनि गले ६७
सुबर्ण रथ परे बसाइले नेइ। निर्मळ शउच करि भोजन कराइ ६८
शुणिण राजन चंचळ मन कले। रथर उपरे बिजय करिण गले ६९
सेहि बळ घेनिण चळिले बड़ दाण्डे। कुमर कु देखिले सम्भर्व होइ चाण्डे१७७०
देखिण पात्र मंत्री ओळग मेलाइले। राजार चिटाउ नेइण समर्पिले१७७१
पाठ करि राजा बधाइ ताङ्कु देले। पाञ्च सात दिन रह जे बोइले ७२
पात्र मंत्री बोइले नुहइ उचित। बरण कला बर गृहकु न जिबेत ७३
शुभ अनुकुळ आज दिन भल। एहि क्षणि जिबुँ आम्भे चन्द्रकलापुर ७४
बशिष्ठ कश्यप बामदेव पुण। तिनि जणङ्कु तिनि रथ देलेक राजन ७५
रथरे बसि तुम्भ पुत्रर संगे जाअ। पच्छे जाउ अछि मुँ बिळम्ब करिथाअ ७६
शुणिण तिनि रुषि तिनि रथ चढ़ि। कुमर संगतरे चळिले शीघ्र करि ७७
कटकर भितरे चळिले से पुण। चन्द्र दीप आलोकरे दिशे भिन्न भिन्न ७८
कटकर मध्यरे पड़िला हाल होळि। कन्या घर लोके बरकु नेउछन्ति धरि ७९
एथु अनन्तरे कथा शुण शाकम्बरी। नबरू बाहारि सरजु कूळेमिळि१७८०
सेहि रजनी सेठारे रहिले से पुण। एथु अनन्तरे भगबती शुण१७८१

कर दिया। ६६ उन्होंने कुमार को फूल चन्दन तथा चन्द्रहार लेकर प्रदान किया तथा श्रेष्ठ घोड़े से उतार कर उनका हाथ पकड़ कर ले जाकर उन्हें स्वर्ण-रथ पर बैठाकर उन्हें स्वच्छ करके भोजन कराया। ६७-६८ यह सुनकर राजा अज का मन चंचल हो उठा। वह रथ पर बैठकर चल दिये। ६९ उसी दल को साथ लिये वह राजमार्ग पर चले जा रहे थे। उन्होंने कुमार का दिव्य सत्कार होते देखा। १७७० उन्हें देखकर सभासद तथा मंत्री ने प्रणाम किया और राजा सुमन्त का पत्र लेकर उन्हें समर्पित किया। १७७१ राजा ने उसे पढ़कर उन्हें बधाई दी तथा उनसे पाँच सात दिन रहने का आग्रह किया। ७२ सभासद तथा मन्त्री ने कहा कि यह उचित नहीं है। वरण करने पर अब वर के घर तो नहीं जा सकते। ७३ आज जाने के लिये शुभ दिन है। हम लोग इसी समय चन्द्रकला पुर चले जाएँगे। ७४ राजा ने वशिष्ठ, कश्यप तथा बामदेव तीनो लोगों को तीन रथ प्रदान करते हुए कहा कि आप लोग रथ पर बैठकर पुत्र के साथ जाएँ। पीछे मैं भी आ रहा हूँ। आप प्रतीक्षा कीजियेगा। ७५-७६ यह सुनकर तीनों ऋषि तीन रथों पर चढ़कर कुमार दशरथ के साथ शीघ्र ही चल पड़े। ७७ वह लोग दुर्ग के भीतर से चले। चन्द्रदीप के प्रकाश में भिन्न-भिन्न दिखाई दे रहा था। ७८ दुर्ग के मध्य में हो-हल्ला मच गया कि कन्या के घर के लोग वर को पकड़ कर ले जा रहे है। ७९ हे शाकम्बरी ! इसके बाद की कथा सुनो। सभी वर यात्री महल से निकलकर सरयू तट पर एकत्रित हुए। १७८० उस रात्रि सब वहीं रहे। हे भगवती

लेउटि राजन मंत्रीङ्कि आज्ञा देले। चतुरंग वळ सजकर से बोइले ८२
शुणिण मंत्रीबर साजिला सैन्यबळ। बाद्य निशाण रे कम्पिला गिरीमाळ ८३
सुमन्तंकु राजन आज्ञा देले पुण। चन्द्र कळाबती पुरे चळ हे बहन ८४
शुणिण सकळ बळ चलन्ति हरषरे। प्रबेश होइले जाइ सरजु कूळरे ८५
समस्तंकु चाळि देइ अज जे राजन। अन्तःपुरे प्रवेश हेले से बहन ८६
सकळ राणीमाने दर्शन आसिकले। केणे गला पुत्र किए नेला पचारिले ८७
राजन बोइले शुण पाटराणी। चन्द्रकळा राज्यरे सुमन्त नृपमणि ८८
ताहार दुहिता गोटिए अछि जाण। बाटरू वरण कला मो पुत्रकु पुण ८९
नबर राज्य सम्भाळि किछि दिन थाअ। पुत्र वधुङ्कु घेनि आसइ मुं स्नेह१७९०
एते कहि राजन अनुकूळ कला। रथपरे चढ़िण बेगे चळिगला१७९१
सरजु नदी तीररे पुत्रकु भेट पाइ।सैन्यबळ घेनि राजा आनन्द मन होइ ९२
गहळरे समस्ते चळिगले पुण। पार्बती पचारिले कह पञ्चानन ९३
ईश्वर बोइले शुण किना ताहा। चित्ररेखा बोइले शुण राजप्रिया ९४
तुम्भर प्राण नाथ मृगया जाइ थिले। बाटरू केउँ राजा वरण करि नेले ९५
कउशल्या बोइले शुण चित्ररेखा। राजाघरे से कथा नाहिँ केबे देखा ९६

इसके पश्चात् सुनो। १७८१ राजा ने लौटकर मन्त्री को चतुरंगिनी सेना सजाने की आज्ञा दी। ८२ यह सुनकर मन्त्री ने सेना सजाई। वाद्य निशानों से पर्वतीय श्रृङ्खलाये कम्पित होने लगी। ८३ राजा ने सुमन्त को शीघ्र ही चन्द्रकला पुर चलने की आज्ञा दी। ८४ यह सुनकर समस्त सैनिक दल चलकर सरयू पुलिन पर जा पहुँचा। ८५ सबका प्रस्थान करा कर महाराज अज शीघ्र ही अन्तःपुर में जा पहुँचे। ८६ समस्त रानियों ने आकर उनके दर्शन किये और पूँछने लगी कि पुत्र कहाँ गया? कौन उसे ले गया? ८७ राजा बोले, हे पटरानी! सुनो। चन्द्रकला राज्य में सुमन्त नामक श्रेष्ठ राजा हैं। ८८ उनके एक पुत्री है। उन्होंने मार्ग में ही मेरे पुत्र का वरण कर लिया। ८९ घर तथा राज्य को सम्हालते हुए तुम कुछ दिनों तक रहो। मैं स्नेहपूर्वक पुत्रवधू को ले आता हूँ। १७९० इतना कहकर राजा ने प्रस्थान किया और रथ पर आरूढ़ होकर शीघ्रता से चल दिये। १७९१ सरयू तट पर पुत्र से उनकी भेंट हो गई। सैन्य दल लेकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। ९२ फिर सभी कोलाहल मचाते हुए चल पड़े। पार्वती ने कहा, हे पंचानन शिवजी! अब आगे कहो। ९३ शंकर जी बोले अरे! वह भी सुनो। चित्ररेखा ने कहा, हे राजप्रिया कौशल्या! सुनो। ९४ तुम्हारे प्राणेश्वर आखेट के लिये गए थे। मार्ग में किसी राजा ने उनका वरण कर लिया। ९५ कौशल्या बोली, अरी चित्र-रेखा! सुनो। राजाओं के घर में यह बात कभी नहीं देखी जाती। ९६

जाहार जेतेक मन तेतेक करे राणी। बरणरे न गले मान हुए पुणि ९७
शुणिण दासी गण हरष मन हेले। मन्थड़ा कैकयार आगरे कहिले ९८
बोइले तोर स्वामी पारिधिकि गले। लेउटि आसिबा बेळे राजा बरण कले ९९
दुहिता बिभादेब बोलिण घेनि जाइ। शुणिण कैकया मंथड़ीकि कहि१८००
बोइला संगातुणी शुण मो बचन। सातशपंञ्चाश सपतणी शुण मोर जाण१८०१
मन्थड़ी बोइला तोते कि रूपे जणा गला। कैकया बोइले मोते रूषि कहि परा २
बाळ काळे पिता घरे खेळू थिलि मुहिँ। अष्टबक्र रूषि मोर पिता घरकु जाइ ३
मोते देखि रूषिबर हरष होइले। दशरथ पाटराणी होइबु बोइले ४
सातशपंञ्चाश सपतणी हेबे तोर। बड़ पाट होइ तु होइ सारो धार ५
एते राणी तिनि राणी होइब तुम्भेभल। तिनि राणी गर्भरू चारि पुत्र जन्मसार ६
से कुमरमाने राज्ये होइबे सारोधार। नर बानर देवंकु करिबे उपकार ७
दैत्य दुष्टस भिङ्कि करिबे से नाश। निरोध न करिबु राजांकु राणी करिबे बिशेष ८
से रूषि कहिछन्ति कथा मोर पुण। से कथा मान मो आगे न कह फुलाइण ९
आउबेळे कहिले तोर जीबन नेबि मुहिँ। एक एक राजार त लक्षे नारी होइ१८१०
मन्थड़ी बोइला जेबे कलु मोते मना। तोर सुख भागिला मोर नोहिला फुलणा१८११

जिसका जितना मन होता है वह उतनी ही रानियाँ कर लेता है। वरण होने के बाद न जाने पर उसका अपमान होता है। ९७ यह सुनकर दासियों का मन प्रसन्न हो गया। मन्थरा ने कैकेयी के आगे कहा कि तुम्हारे स्वामी मृगया के लिये गए थे। लौटकर आते समय राजा ने उन्हें वरण कर लिया। ९८-९९ पुत्री के साथ विवाह करेंगे। इस प्रकार सोचकर उन्हें ले गये हैं। यह सुनकर कैकेयी ने मन्थरा से कहा। १८०० हे सखी मेरी बात सुनो। तुम यह समझ लो कि मेरी सात सौ पचास सौतें होंगी। १८०१ मन्थरा ने कहा कि यह तुम्हें कैसे पता लगा। कैकेयी बोली कि मुझसे ऋषि ने कहा था। २ बाल्यकाल में मैं पिता के घर में खेल रही थी। उसी समय अष्टावक्र ऋषि मेरे पिता के घर पर आये। ३ मुझे देखकर श्रेष्ठ ऋषि प्रसन्न हो गये और उन्होंने मुझसे दशरथ की पटरानी होने को कहा। ४ तुम्हारी सात सौ पचास सहपत्नियाँ होंगी। तुम बड़ी पटरानी होकर श्रेष्ठ बनोगी। ५ इतनी रानियों में तुम तीन रानियाँ श्रेष्ठ होगी। तीनों रानियों के गर्भ से चार श्रेष्ठ पुत्रों का जन्म होगा। ६ राज्य में वह पुत्र सर्व श्रेष्ठ होंगे। वह नर वानर तथा देवताओं का उपकार करेंगे। ७ वह सभी दैत्यों और दुष्टों का विनाश करेंगे तुम राजा को रोकना नहीं। वह विशेषतय: रानियाँ बनायेंगे। ८ उन ऋषि ने हमारी कथा कही थी। उस बात को तुम और बढ़ा-चढ़ाकर मेरे सामने मत कहो। ९ अबकी बार फिर कहने से मैं तेरा जीवन ले लूँगी। एक-एक राजा के तो एक-एक लाख रानियाँ होती हैं। १० मन्थरा बोली कि जब तुमने मुझसे मना कर दिया तो

प्रति दिन स्वामी संगे करिबु तुलिळा ।सेथिर सकासे मोर आगोळ देवा परा १२
कैकया बोइले मोते रूषि छन्ति कहि । मासके दुइ दिन तोर पुरे स्वामी रहि १३
तोर संगे हरषरे करिबे रति रण । दुइ दिने मासके शरधा भांगे पुण १४
शुणिण मन्थड़ी निबर्त्त होइ रहि । एथु अनन्तरे शुण तोष होइ १५
सामन्त पात्र मंत्री अजोध्या आसि पुण । अज राजा कुमरंकु वरि नेले पुण १६
सैन्य बळ घेनि राजा संग होइ गले । चन्द्रकळा राज्यरे प्रवेण होइले १७
आगरे पात्र मंत्री प्रवेश हेले जाइ । सुमन्त राजांकु वारता जणाइँ १८
वोइले दशरथंकु आणिलुँ आम्भे बरि । सैन्य बळ घेनिण पिता आसे तारि १९
शुणिण महाराजा आनन्द होइले । रथपरे बसिराजा वेगे चळिगले१८२०
पाञ्च जूण बाटरू बरण करि आणि । अज नृपबरंङ्कु विनये राजा मणि१८२१
गउरब करि संगरे राजा आणि । समस्तंकु चरचा करि कटके रखे पुणि २२
दशरथंकु घेनिण राजा गले चळि । देखि नग्र नर नारी देले हुळ हुळी २३
ज्वाइँङ्कि घनि राजा अन्तःपुरे गले । देखिण राणी हंस सन्तोष होइले २४
मंगळ बिधि सबु कलेक रजनीरे । ग्रामदेवतींङ्कि पाणि तोळि भले २५
दासीमाने जाइण शुमित्रांकु कहि ।तुम्भर स्वामी आम्भर नवरे छन्ति रहि २६

तेरा सुख नष्ट हो गया। इसमें मेरे कहने का क्या तात्पर्य। ११ तुम प्रति-दिन अपने स्वामी के साथ विलास करोगी। इसीलिये मै तुम्हें आगाह कर रही थी। १२ कैकेयी ने कहा कि मुझसे ऋषि ने कहा है कि तेरे स्वामी महीने में दो दिन तेरे महल में रहेंगे। १३ वह प्रसन्नतापूर्वक तुम्हारे साथ रति क्रीड़ा करेंगे। महीने के दो दिन वाद उनकी श्रद्धा भंग हो जायेगी। १४ यह सुनकर मन्थरा चुप हो गयी। इसके पश्चात् तुम शांत होकर सुनो। १५ सामंत सभासद तथा मन्त्री ने अयोध्या आकर महाराज अज के पुत्र का वरण कर लिया। १६ सैन्य-वाहिनी लेकर राजा उनके साथ गये और चन्द्रकला राज्य में प्रविष्ट हुये। १७ सभासद और मन्त्री पहले ही जा पहुँचे और उन्होंने राजा सुमन्त से सब बाते निवेदित कर दी। १८ उन्होंने कहा कि हम दशरथ को वरण करके साथ ले आये है। उनके पिता सैन्य-वाहिनी लेकर आ रहे है। १९ यह सुनकर महाराज प्रसन्न हो गये और रथ पर बैठकर शीघ्रता से चल दिये। १८२० उन्होंने पाँच योजन मार्ग से विनती करके महाराज दशरथ की अगवानी की। १८२१ राजा उन्हें सम्मान के साथ ले आये और दुर्ग में रखकर उन्होंने सभी का आदर-सत्कार किया। २२ दशरथ को लेकर राजा सुमन्त चले गये। नगर के नर-नारी उन्हें देख मांगलिक शब्द करने लगे। २३ जामाता को लेकर राजा अंतःपुर में जा पहुँचे। सारा रनिवास उन्हें देखकर संतुष्ट हो गया। २४ रात्रि में उन्होंने सारे मांगलिक कृत्य सम्पादित किये। ग्राम देवी पर सुचारू रूप से जल चढ़वाया। २५ दासियों ने जाकर सुमित्रा से कहा कि

शुणिण सुमित्र माता पाशे गले। देखिण जननी हरष मन हेले २७
कोळरे बसाइ कहे पाटराणी। आजिठारू तेज्या कलि गो दुलणी २८
चिन्ता न करिबु हरषमने थिबु। स्वामी ठारे भकति भाब रखिथिबु २९
एमन्ते प्रबोधि कहि दुहिताकु। मंगळ कृत्य कले संगरे घेनिताकु१८३०
तोळा पाणि नबरू तोळिले दासीगण। ग्राम देबतीङ्कि छ्वाइँ ततक्षण१८३१
से पाणिरे दुहितांकु स्नान कराइले। अप्रतिष्ठा अंगतार प्रतिष्ठा कराइले ३२
देखा होइ अन्त:पुरू कुमर चळि आसि। पितार नबरे मंत्री छाड़िला प्रशंसि ३३
रजनी शेष हेला उदय हेले भानु। जउतिष द्विजबर बसिले आसि एणु ३४
मंगळ स्तिरीमाने प्रबेश जाइ हेले। हुळ हूळी शबदरे पुर कम्पाइले ३५
बेदिरे अनुकुळ कले सर्बे मिळि। अज नृपति आगरे कहिले मंत्री फेरि ३६
बोइले बेदिकि अनकुळ कर। कुमरंकु बेश करन्तु बेशकार ३७
शुणिण राजन मंत्रीङ्कि आज्ञा देले। पुत्रकु बेश कराअ बोलिण बोइले ३८
बशिष्ठंकु बोइले बहन तुम्भे चळ। बेदिपरे बसिण बेदाध्यान कर ३९
एते कहि राजन बेश जे होइले। रत्न बेदी उपरे हरषे मिळिले१८४०
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। बर बेश होइण कुमर बाहारि१८४१
बाटरू बरण करि नृपति घेनि गले। रत्न बेदीर उपरे जतने बसाइले ४२

तुम्हारे स्वामी हमारे महल में हैं। २६ यह सुनकर सुमित्रा माता के पास गयी। उसे देखकर माता जी का मन प्रसन्न हो गया। २७ पटरानी ने उसे गोद में बैठाकर कहा कि आज से मैं पुत्री को छोड़ रही हूँ। २८ तुम चिन्ता न करना और मन में प्रसन्न रहना। अपने स्वामी के प्रति प्रेमभाव रखना २९ इस प्रकार पुत्री को प्रबोधित करते हुये उसे साथ लेकर रानी ने मांगलिक कृत्य किए। १८३० उठाया हुआ जल दासियों ने महल से लेकर उसी क्षण ग्रामदेवी को छुलाकर उसी जल से उन्होंने राजकुमारी को स्नान कराया। उसके अप्रतिष्ठित अंग को प्रतिष्ठित कराया। १८३१-३२ दर्शन के बाद राजकुमार अंत:पुर से चलकर पिता के महल में आ गये। मन्त्री ने प्रशंसा करके उन्हें वहाँ छोड़ दिया। ३३ रात्रि की समाप्ति पर सूर्य उदय हो गये। ज्योतिषी ब्राह्मण आकर बैठ गये। ३४ सौभाग्यवती स्त्रियों ने वहाँ पहुँचकर मांगलिक शब्दो से नगर को प्रकम्पित कर दिया। ३५ सब मिलकर वेदी पर जा पहुँचे। फिर मन्त्री ने महाराज अज से कहा कि आप वेदी पर पधारें और शृंगारी लोग राजकुमार का शृंगार करें। ३६-३७ यह सुनकर राजा ने मन्त्री को राजकुमार का शृंगार करवाने के लिये आज्ञा दी। ३८ वशिष्ठ से उन्होंने शीघ्र ही वेदी पर बैठकर वेद पाठ करने को कहा। ३९ इतना कहकर महाराज सजधज कर रत्न वेदी पर प्रसन्नता से जा पहुँचे। १८४० हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् सुनो। राजकुमार वर का वेश धारण करके निकले। १८४१ राजा मार्ग से ही उन्हें वरण

विप्र ऋषिमाने बेदाध्यान कले पुण । बर शिररे मुकुट बान्धिले जतन ४३
लवण चउँरि जे कन्याकु कराइले । घेनि जाइ कन्याकु अन्तःपुरे हेले ४४
केश सामळिण बांन्धिले जुड़ा पुण ।चउँरि मण्डि जराकाठि लगाइले जाण ४५
अळका मथामणि जतने बांन्धिले । सिन्दुर पाटि चन्दन कपोळे रंञ्जिले ४६
पञ्चवर्णरे कुसुम माळमान देइ । मस्तक गोटिकि बेश त्वरा जे दिशइ ४७
नयनरे अंजन रंजिले लांञ्जि सरु । नासारे रत्न गुणा सिन्धुफळ गरू ४८
दण्डि नोथ बिचित्र रत्न देइ रंञ्जि । गळारे चापसरि नानावर्ण संञ्जि ४९
अष्ट रत्ने जड़ित पदक चन्द्रहारा । मुकुता केरि केरी बक्षे साजे त्वरा१८५०
कर्णरे फासिआ फिरि फिरा झुले । काप मल्ली कड़िकी खंजिले कर्णरे१८५१
कर्णफुल कामलता झिंजिरीमान देले । बिदताड़ बाहूटि बाहारे खंजिले ५२
हीरा माणिक्य चूड़ि आगरे रत्न खड़ ।कतुरि दान्तिआ ग्रन्ते हस्तकु लागे गरू ५३
रत्न मुदि दश अंगुळिरे देले । चन्दन अगुरु कर्पूर बोळिले ५४
हेममय कांञ्चुळा लगाइ नेइ करि । नाना बर्ण पुष्प जे आभरण करि ५५
अमळाण पतनि बाछि पिन्धाइले । उपरे कुसुम पहरण कले ५६

करके ले गये और उनको यत्नपूर्वक रत्न वेदी के ऊपर बैठाया। ४२ ब्राह्मणों तथा ऋषियों ने वेद पाठ करते हुये वर के सिर पर यत्नपूर्वक मुकुट बाँध दिया। ४३ कन्या का राई-नून उतार कर उसे अंतःपुर में ले गये। ४४ उसके बालों को सँभालकर जूड़ा बाँधा गया। चोटी बाँधकर काँटे लगा दिये गये। ४५ कटिया तथा वेंदा यत्न से बाँध दिया गया। कपोलों में चन्दन तथा माँग में सिन्दूर लगा दिया गया। ४६ पाँच वर्ण के फूलों की माला लगा देने से मस्तक तथा सुवेश सुन्दर दिखाई देने लगा। ४७ नेत्रों में पतली सलाई से अंजन लगाया गया और नाक में रत्नजटित कील तथा मोती की बुलाक पहना दी। ४८ विचित्र प्रकार के रत्नों से मंडित नथ पहना दी गयी और गले में नाना प्रकार के आभूषणों के साथ सुतिया पहना दी गयी। ४९ आठ रत्नों से जड़े हुये पदक वाला चन्द्रहार तथा गुच्छे के गुच्छे मुक्ताओं से वक्षस्थल शोभायमान होने लगा। १८५० कान में जालीदार झूमर झूल रहा था जिसे कटिया तथा कर्ण फूल से सजाया गया था। १८५१ कर्णफूलों पर झालरदार जंजीर सजायी गयी। भुजाओं में तार के बाजूबन्द शोभा पा रहे थे। ५२ हीरा तथा माणिक्य की चूड़ियाँ और कड़े तथा हाथी दाँत के कड़ों से हाथ भारी लग रहा था। ५३ दस उँगलियों में रत्नों की अगूठियाँ पहनायी गयी थीं और उनके चन्दन अगुरु तथा कपूर लेपन किया गया। ५४ सुनहला सलूका पहनाकर उन्हें अनेक प्रकार के फूलों के आभरणों से सजाया गया। ५५ उन्हें छाँटकर स्वच्छ परिधान पहनाये गये। ऊपर से उन्हे पुष्पमय परिधानों से सजा दिया गया। ५६ इस प्रकार नारियों ने मिलकर उनका श्रृंगार किया और

एमन्ते बेश कले नारीगणे मिळि। तण्डुळ अंजुळिए हस्तरे देले भरि ५७
मुख बास गुआ तण्डुळ परे देइ। धीर करि कन्याकु नेलेक चलाइ ५८
रत्नबेदी उपरे नेइण उभा कले। तण्डुळ अंजळि कन्या थोइण भ्रमिले ५९
रत्नबेदी उपरे बसिलाक जाइ। रत्न मुकुट शिररे बांधिले से नेइ१८६०
बरुण पूजा सारि शिळा बरण कले। कुशरे बर कन्याङ्क हस्तकु बान्धिले१८६१
नानाबर्ण जउतुक राजा पुणि देले। रत्न शंख धरिण पाणि-निउड़िले ६२
लक्षेक गोधन लक्षेक महिषी पुण। रथि हाती अश्व सारेणी देले जाण ६३
दश सत्रे लेखाएँ एथिरू पुण देले। सहस्रेक पाणि दृव्य रथ समर्पिले ६४
सहस्रेक दासी परिबारी पुण। एते दृव्य शंखे पाणि देलेक राजन ६५
हस्त ग्रन्थि फेड देइ बिबादी कुमारी। रत्न आंजोळिए देइ वेगे गला चळि ६६
होम जज्ञ करिले पढ़ि सामबेद। शितळ दृव्य नेइ निबृत्ति कले बेग ६७
कन्या बर घेनिण भितर पुरे गले। बर कन्यांकु बसाइ जुअ खेळाइले ६८
एक ठाबे बसाइ भोजन कराइले। राणी माने आसिण प्रबोधि कहिले ६९
दुहितार करधरि समर्पिले जाण। बोइले कुमारी दोष क्षमाकर पुण१८७०
एते बोलि दुइ लक्ष रत्नदान देले। प्रबोध कराइण भितरे चळि गले १८७१

उनको अंजलि में चावल भर दिये। ५७ चावलों पर मुखवास सुपारी रखकर बड़े धैर्य के साथ कन्या को ले जाकर रत्न वेदी के ऊपर खड़ा कर दिया। फिर कन्या चावल की अंजलि रखकर घूम पड़ी। ५८-५९ वह रत्नवेदी के ऊपर जाकर बैठ गयी। स्त्रियों ने रत्न का मुकुट लेकर उसके सिर पर बाँध दिया। १८६० वरुण पूजा समाप्त करने के बाद शिला वरण करके कुश से वर-कन्या के हाथों को बाँध दिया गया। १८६१ फिर राजा ने अनेक प्रकार का दहेज दिया। फिर उन्होने रत्न-शंख मे जल लेकर ढाल दिया। ६२ उन्होंने एक लाख गायें, एक लाख भैंसें, रथी, हाथी, घोड़े तथा बहलें प्रदान कीं। ६३ यह सब दस हजार की संख्या में देकर पेय पदार्थो के साथ में एक हजार रथ समर्पित किये। ६४ एक हजार दासियाँ नौकर-चाकर तथा इतना द्रव्य रखकर राजा ने शंख के जल से संकल्प कर दिया। ६५ फिर कुमारी कन्या ने हस्त ग्रन्थि को खोल दिया और अंजलि में रत्न लेकर शीघ्रता से चली गयी। ६६ सामवेद का पाठ करते हुये हवन यज्ञ किया गया और फिर शीघ्र ही उसे शीतल द्रव्य से शांत किया गया। ६७ कन्या और वर को भीतर ले जाकर उन्हें बैठाकर द्यूत-क्रीड़ा कराई गयी। ६८ फिर उन्हें एक स्थान पर बैठाकर भोजन कराया गया। रानियों ने आकर उनसे प्रबोधयुक्त वाक्य कहे। ६९ उन्होंने पुत्री का हाथ पकड़कर समर्पित करते हुये उसके दोषों को क्षमा करते रहने के लिये कहा। १८७० इतना कहकर दो लक्ष रत्न दान में देकर उन्हें संतोषित करके वह लोग भीतर चली गयीं। १८७१ राजा ने चतुरंगिनी सेना, सभासद,

चतुरंग बळ जे पात्र मन्त्री पुण। रथी पदाति हस्ती अश्व सारेणी माने जाण ७२
ऋषि बिप्र राजा जे सकळ सैन्य बळ। समस्तंकु चरचा कले महीपाळ ७३
अमृत भोजन षड़ रसरे देले। समस्तङ्क मन सन्तोष कराइले ७४
आर दिन नबर फेरिण सर्बे देखि। स्नाहान भोजन करि हेले सुखी ७५
आर दिन मेलाणि समस्तङ्कु कले। अनेक धन रत्न राजन बिळोहिले ७६
आर दिन हरिद्रा जात्रा कले जाण। चन्दन कुँमुकुम होइले लेपन ७७
रात्ररे चतुर्थी कर्म राजा कराइले। लाज होम कराइ हरष मन हेले ७८
मधुशैय्या शयन दासी माने करि। रत्न पलंङ्क परे सुपाति शैय्या पारि ७९
अगर चुआ चन्दन कर्पूर बिञ्चिण। नाना बर्ण पुष्प शैय्यारे मण्डिण १८८०
शज्या परे बिजय कले दशरथ। चउपाशे माणिक्य दीप जळे सेत १८८१
बिड़िआ भुञ्जि कुमर आउजिण बसि।
दासी परिबारी माने छामुरे मिळे आसि ८२
एथु अनन्तरे शुण भगवती। सुमित्राङ्कु बेशकरि आणिले जुबती ८३
श्वेत चामर धरि आसिले राज हंसी। तळकु मथा करि न्वाइँ मुख शशी ८४
मधु शज्या मन्दिरे होइले प्रबेश। पहण्ड मणाइँ दासी आणिले हरष ८५
स्वामीङ्कि देखि देबीश्वेत चामर ढाळि। देखिण दशरथ मनरे बिचारि ८६

मन्त्री, रथी, पैदल, सिपाही, हाथी, घोड़े, बहल, ऋषि, ब्राह्मण तथा सैनिक आदि सभी लोगों का आदर सत्कार किया। ७२-७३ अमृततुल्य षड़रस भोजन देकर उन्होंने सभी के मन को संतुष्ट कर दिया। ७४ अगले दिन सभी ने घूम फिर कर महलों को देखकर स्नान भोजन करके सुख का अनुभव किया। ७५ अगले दिन प्रचुर धन रत्न देकर राजा ने समस्त लोगों को विदा किया। ७६ उसके अगले दिन चन्दन तथा कुमकुम का लेपन करके हरिद्रा-उत्सव मनाया गया। ७७ रात्रि में राजा ने चतुर्थी कर्म सम्पादित करवाया तथा लाजा होम करने के उपरान्त उनका मन प्रसन्न हो गया। ७८ दासियों ने रत्न पर्यङ्क पर गद्दा, चद्दर बिछाकर उस पर नाना प्रकार के फूल विकीर्ण करके उस पर अगुरु चन्दन चोवा तथा कर्पूर छिड़ककर मधु शैय्या तैय्यार कर दी। ७९-१८८० शैय्या के ऊपर राजा दशरथ विराजमान हो गये। चारों ओर मणियों के दीप जल रहे थे। १८८१ पान खिलाकर कुमार को पकड़ कर बैठा दिया। दासियाँ नौकर चाकर समक्ष में आ गये। ८२ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् युवतियाँ सुमित्रा को श्रृंगार करके ले आयी। ८३ शशिवदनी राजहंसिनी सदृश सुमित्रा मस्तक झुकाये हुए हाथ में श्वेत चामर लिए आई। ८४ वह दासियों के साथ हर्षपूर्वक पैदल चलती हुई मधुशैयागृह में प्रविष्ट हुई। ८५ स्वामी को देखकर सुमित्रा श्वेत चामर चालन करने लगी, सुमित्रा को देखकर दशरथ ने मन मे विचार किया। ८६ यह स्त्री सुलक्षणा सौन्दर्य से युक्त सुकुमारी तथा चतुर है।

बोइले ए नारी लक्षणबन्ती जाण। सुकुमारी सुन्दरी अटइ सुजाण ८७
एमन्त भाषिण राज कुमर उठिले। स्वतिङ्क कोळ करिण भितरकु नेले ८८
पलंङ्क उपरे कोळरे घेनि बसि। मुखरे चुम्बन देइ हेले अति खुसि ८९
कुच मर्दन कले कोळकु आउजाइ। देखिण दासी माने गले अन्तर होइ१८९०
झिलमिल कपाट आउजाइ पुण। बाहार प्राङ्गणरे बसिले दासी गण १८९१
समस्ते जिबा देखि से राजा कुमर। पल्यङ्क परे बाळाकु शुआइले धीर ९२
नाना परिरम्भरे कले रति लीळा। रतिरंग संग्रामरे लागिले राज बळा ९३
क्रीड़ा कउतुक सारि बसिले बेनि जन। पलंङ्क उपरे हास्य रस कले पुण ९४
हासरस सारिण पहूड़ि बेनि जन। रजनी शेष हेला राबिले काक पुण ९५
दासी माने आसिण कपाट फेड़ि देले। सुमित्राङ्क कर धरि मणाइँ घेनि गले ९६
अन्तःपुरे नेइण ताहाङ्कु बसाइले। मर्द्दन माजणा सारि आळस्य छड़ाइले ९७
सुबास जळरे स्नाहान कराइले। पूर्बर बेश पराए अळंकार देले ९८
कुसुम लागि करान्ते दिशिले बड़ त्वरा। चन्द्र रोहिणी पराए बिळसे मुख परा ९९
बेश सरिबारू उठिण बेगे गले। माता मानङ्क चरणे ओळगि होइले१९००
माता माने बोइले शुण सुलक्षणी। चन्द्रमा बदन गोटि लुचिजिब पुणि १९०१
स्वमीङ्क चरणे करिबु भकति। शाशुमानङ्कु सेबा करू थिबु निति २

इस प्रकार कहते हुए राजकुमार दशरथ उसे गोद में उठाकर भीतर ले गये। ८७-८८ उसे गोद में लिये हुए वह पलंग पर बैठकर उसका चुम्बन लेते हुए अत्यन्त प्रसन्न हो गये। ८९ गोद में लिये हुए उसका आलिगन करके कुचमर्दन करने लगे। यह देखकर दासियाँ वहाँ से हट गईं। १८९० झलमलाते हुए द्वार को बन्द करके दासियाँ बाहर प्रांगण में बैठ गयीं। १८९१ सबको गया हुआ देखकर राजकुमार ने धैर्य से युवती को पलंग पर लिटा दिया। ९२ उन्होंने अनेक प्रकार के बन्धों से काम-क्रीड़ा की। राजपुत्र कामकला में निमग्न हो गये। ९३ रमण के उपरान्त दोनों पलंग के ऊपर बैठकर हास-परिहास करने लगे। ९४ हास-परिहास के उपरान्त दोनों लेट गये। रात्रि की समाप्ति पर कौवे बोलने लगे। ९५ दासियों ने आकर द्वार खोला और सुमित्रा को लेकर चली गयीं। ९६ उन्होंने उन्हें अंतःपुर में ले जाकर बैठाया और उनका मर्दन तथा मार्जन करके उनका आलस्य छुड़ाया। ९७ फिर उन्होंने उनको सुगन्धित जल से स्नान कराकर पहले जैसा शृंगार कर दिया और आभूषण पहना दिये। ९८ फूलों से सुसज्जित करने पर उनकी शोभा और भी अधिक दिखाई देने लगी। रोहणी चन्द्रमा के समान उनका मुख शोभायमान था। ९९ शृंगार की समाप्ति पर सुमित्रा ने शीघ्र ही उठकर माताओं के चरणों में प्रणाम किया। १९०० माताओं ने कहा, हे सुलक्षणी ! सुनो। तुम्हारा शशिवदन शीघ्र ही छिप जायेगा। १९०१ तुम स्वामी के चरणों में प्रेम तथा सासुओं

एते कहि दुहिताकु प्रबोध कराइले। अह्म सुलक्षणी पुत्रवती हुअ भले ३
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। अज राजा कुमर पलङ्के पहूड़ि ४
जामिनी शेष हुअन्ते उदय दिनमणि।दासी माने शैय्यारू तोळिले जाइ पुणि ५
सुबासित जळरे मुख पखाळिले। चरण धोइँ देइ मणाइँ घेनिगले ६
वाहार अन्तःपुर जगति परे नेइ। मर्दन माजणा कले दासी तहिँ ७
सुबास जळरे स्नान कराइले। नूतन अमलाण नेइण पिन्धाइले ८
षड़रसे भोजन कराइले पुण। अपूर्व वेश हेले राजाङ्क नन्दन ९
सहस्रेक दासी वेशरे तोर हेले। आलट चामर आयुध धरिले १९१०
आगरे राजा कुमर तहि पच्छे दासी। दिव्यवेशे बाहारिले सुमित्रा षोडसी१९११
सिंह द्वार उपरे जाइण विजे कले। दशरथङ्क कोळरे सुमित्रा वसे भले १२
आलट चामर धूपकाठि धरि दासी। जे जाहार सेवारे समस्ते जाइ वसि १३
झलमलि पतनी आगरे उहाड़। देखिण नृपति होइले तोषवड़ १४
हाती रथि पदाति सेनापति पग्रेकार। सज होइ समस्ते होइले वाहार १५
आगरे सैन्य बळ मध्यरे पुत्र वधू।पच्छरे पात्र मन्त्री सामन्त प्रिय वन्धु १६
तहिँ पच्छे बेनि राजा करन्ति गमन। राजाङ्क संगरे ऋषि विप्र जन १७
पच्छरे हटारि वजारी चाळिले। नग्र नर नारी माने हुळहुळि देले १८

की नित्य सेवा करती रहना। २ हे सुलक्षणी! तुम पुत्रवती हो। इस प्रकार कहकर उन्होंने पुत्री को सांत्वना दी। ३ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् महाराज अज के पुत्र जो पलंग पर लेटे थे। उन्हें रात्रि की समाप्ति पर और सूर्य के निकलने पर दासियाँ शैय्या से उठा ले गईं। ४-५ उन्होंने उनका सुगन्धित जल से मुख प्रच्छालन करके चरण धोये और अन्तःपुर की वाहर की जगत पर ले जाकर उनका मर्दन और मार्जन किया। ६-७ सुगन्धित जल से उन्हें स्नान कराकर नवीन स्वच्छ वस्त्र पहना दिये। ८ दासियों ने उन्हें षड़रस भोजन करवाकर राजपुत्र का अपूर्व वेश सजा दिया। ९ एक हजार दासियाँ श्रृंगार करके व्यजन, चामर तथा आयुध लिये थीं। १९१० आगे-आगे राजकुमार और पीछे से दासियों से घिरी हुई दिव्य वेश में षोड्स वर्षीया सुमित्रा जाकर सिंह-द्वार पर पहुँच गयी और भली प्रकार से दशरथ की गोद में बैठ गयी। ११-१२ पंखा, चामर, धूप लेकर दासियाँ सभी अपनी-अपनी सेवा में जा बैठीं। १३ झीने-झीने परदे की आड़ को देखकर राजा को बड़ा सन्तोष हुआ। १४ हाथी, रथी, पैदल, सिपाही, सेनापति, पायक, प्रधान सभी सजकर बाहर निकल पड़े। १५ आगे-आगे सैनिक दल, मध्य भाग में पुत्रवधू तथा पीछे सभासद मंत्री सामन्त और प्रिय बन्धु-बान्धव थे। १६ उसके पीछे दोनों राजा गमन कर रहे थे। राजा के साथ में ऋषि और ब्राह्मण लोग थे। १७ पीछे से राहगीर तथा बजारी चल दिये। नगर के नरनारी मांगलिक शब्द करने लगे। १८ उस दिन बहुत

से दिन आसिले अनेक पथ माड़ि। रजनीरे रहिले समुद्र कूल माड़ि १६
जउतुक देबा दृब्य पच्छरे जे आसि। एमन्ते से ठाबरे पुहाइले निशि १६२०
सुमन्त राजा कहि फेरिण अइले। चन्द्रकळा राज्यरे प्रवेश होइले १६२१
राजा बन्धुगणंकु मेलाणि देइण।निश्चिन्त होइण राजा रहिले राज्येण २२
एथु अनन्तरे शुण भगबती। अजोध्या पुर राजन चळिले झटति २३
सात दिने आपणा राज्यरे परवेश। देखिण नग्रजने होइले हरष २४
दासीए पुत्रबधुङ्कु अन्तःपुरे नेले। शाशू मानंङ्कु बोहू ओलगि होइले २५
बड़ पटराणीङ्कि ओलगि मेलाइण। निर्मळ नबररे रहिले से पुण २६
एमन्ते तिनि राणी दशरथ बिभा।रोहिणी अहल्या शचिप्राये तांङ्कुशोभा २७
एमन्ते तिनिमास र्ताहि बहिगला। पुत्र बधू देखि राजा हरष मन हेला २८
अंग बंग कलिङ्ग बैधृति अमलाण। काशी गया प्रयाग मगध निबेदन २६
अरुण बरुण करिण मगध। नीळ उत्पळ बिराट स्वर से संम्पद१६३०
एमन्ते पांञ्चश घरर दुहिता। चारिशत कन्या अटन्ति जगज्जिता१६३१
समस्ते नबजुबा बयसे समान। नब बरष ठारु एगार बर्ष जाण ३२
स्वयंबर निमन्ते राजा माने बरि। अठर मउड़मणि संगरे राजा चळि ३३
अजोध्यार राजा जे मउड़मणि पुण। निमंत्रण देले ताङ्कु राजागण ३४

मार्ग तय करके रात्रि में आकर समुद्र तट पर रह गये। १६ पीछे से दहेज का सारा सामान आ गया और इस प्रकार उस स्थान पर उन्होंने रात्रि व्यतीत की। १६२० कहने पर राजा सुमन्त लौट पड़े और चन्द्रकला राज्य में जा पहुँचे। १६२१ राजा बन्धु-बान्धवों को विदा करके निश्चिन्त होकर राज्य में रहने लगे। २२ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् अयोध्या नरेश शीघ्रता से चलकर सात दिनों में अपने राज्य में प्रविष्ट हुए। नगरवासी उन्हें देखकर प्रसन्न हो गये। २३-२४ दासियाँ पुत्रवधू को अंतःपुर ले गयीं। बहू ने सासुओं के चरण स्पर्श किये। २५ बड़ी पटरानी को प्रणाम करके उनसे विदा लेकर वह स्वच्छ महल में रहने लगी। २६ इस प्रकार तीनों रानियों से दशरथ का विवाह हो गया जिनकी शोभा रोहिणी अहिल्या तथा शची के समान थी। २७ इस प्रकार तीन महीने व्यतीत हो गये। पुत्रवधू को देखकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। २८ अंग-बंग, कलिंग, विदर्भ, काशी, गया, प्रयाग, मगध, अरुण, वरुण, नील, उत्पल, विराट आदि सम्पत्तिशाली स्वच्छ राज्यों के पचास घरों की चार सौ कन्यायें सौन्दर्य में जगत को जीतने वाली थीं। २६-१६३०-१६३१ सभी नवयुवतियाँ नौ वर्ष से लेकर ग्यारह वर्ष तक की आयु में समान थीं। ३२ उन राजाओं ने स्वयंवर के लिए अट्ठारह श्रेष्ठ राजाओं का वरण किया। सभी राजागण साथ में चले आ रहे थे। ३३ उन राजाओं ने अयोध्या के श्रेष्ठ राजा को भी निमंत्रण दिया। ३४ किसी राजा का पुत्र किसी का नाती और कोई

केउँ राजा पुत्र केउँ राजा नाति। केउँ राजा गला आगे होइ शान्ति ३५
अजराजा कुमर दशरथ जाण। संतोषरे राजाङ्कु देलेक भेदिण ३६
हरषरे दशरथ सैन्य घेनि चळि। पात्र मन्त्री सामन्त वशिष्ठ जाबाळि ३७
वंग देशे जाइण प्रवेश होइले। सकळ राजा मिळन्ते सभा हेला भले ३८
से राजा चउद भाइ अटन्ति जे पुण। अठा अशि दुहिता अटन्ति जुवा जाण ३९
सभारे कन्यामाने माळा घेनि उठि। दशरथङ्कु गळारे समस्ते लम्वान्ति१९४०
देखिण राजा माने समस्ते उठि गले। अठा अशि कन्या दशरथ बिभा हेले१९४१
सेठारे समस्त राजाङ्कु बरिण। अंगदेशराजा जे नेलाक संगेण ४२
निज राज्ये जाइ हेले परवेश। सभा मण्डाइला नृपति बिशेष ४३
पाञ्चगोटि भाइ पुण राजा अटे जाण। पन्दर दुहिता अटइ जे पुण ४४
से दुहिताङ्कु हस्तरे फुलमाळा। देइण सभाकु पठाइले बाळा ४५
से दुहिता माने दशरथंङ्कु बरिले। रत्नमाळा पुष्पमाळा गळारे नेइ देले ४६
बरण करिबारू उठिले राजा गण। पन्दर कन्याङ्कु बिभा दशरथ पुण ४७
समस्त राजाङ्कु कळिङ्ग देश राजा। बरण करि सेठारू नेला सर्बराजा ४८
आपणा राज्यरे होइले प्रबेश। राजा मानंङ्कु चरचा कले से बिशेष ४९
सभा मण्डपरे बसाइ राजागण। से राजा अटन्ति सतर भाइ जाण १९५०

स्वयं शान्तिपूर्वक आगे से चल दिया। ३५ महाराज अज के राजपुत्र दशरथ राजाओं को संतोष के साथ भेजकर हर्षपूर्वक सैन्यदल लेकर सभासद मंत्री सामन्त वशिष्ठ तथा जाबालि के साथ जाकर वंग देश में प्रविष्ट हुए। सभी राजाओं के मिलने पर एक अच्छा सम्मेलन हो गया। ३६-३७-३८ वह राजा चौदह भाई थे। उनके अट्ठासी युवा राजकुमारियाँ थीं। ३९ सभा में कन्याएँ माला लेकर उठीं और उन सभी राजकुमारियों ने मालायें दशरथ के गले में डाल दीं। १९४० यह देखकर सभी राजागण उठ गये और उन अट्ठासी कन्याओं के साथ दशरथ का विवाह हो गया। १९४१ वहाँ से सभी राजाओं का वरण करके अंग देश के राजा उन्हें साथ लेकर अपने राज्य में जा पहुँचे। राजा ने विशेष प्रकार से अपनी सभा को सुसज्जित किया। ४२-४३ वह राजा पाँच भाई थे। उनके पन्द्रह राजकुमारियाँ थीं। ४४ उन्होंने उन पुत्रियों के हाथ में पुष्प मालाएँ देकर उन्हें सभा में भेजा। ४५ उन राजकुमारियों ने रत्न तथा पुष्पों की मालाएँ दशरथ के गले में डालकर उनका वरण किया। ४६ वरण करने पर राजागण उठ गये। फिर दशरथ ने पन्द्रह राजकुमारियों के साथ विवाह किया। ४७ वहाँ से कलिंग देश के महाराज सभी राजाओं को वरण करके साथ लेकर चल दिये और जाकर अपने राज्य में जा पहुँचे। उन्होंने विशेष प्रकार से सभी राजाओं का आदर सत्कार किया। ४८-४९ उन्होंने सभी राजाओं को सभामण्डप में बिठा दिया। वह

सतर भाइङ्कर सतुरी दुहिता। बरर माळा घेनिण प्रवेश हे जिता १९५१
दशरथङ्कु गळारे समस्ते माळा देले। देखिण सकळ राजा उठिण तहुँ गले ५२
दशरथ बिभा हेले सतुरि कन्या पुण। सेठारु उत्कळ राजा कलेक बरण ५३
सकळ राजा मेल होइण चळि गले। उत्कळ देशे जाइ प्रवेश होइले ५४
राजा मानङ्कु चरचा कला महीपाळ। सभा करि बसिले सकळ भूपाळ ५५
से राजार बार भाइ अटन्ति प्रमाण। षाठिए दुहिता ताङ्कर अटन्ति जाण ५६
षाठिए दुहिता सभाकु आसिले। दशरथङ्कु देखिण बरण माळा देले ५७
देखिण सकळ राजा उठिले सभारु। दशरथ बेदी परे बसिले सेठारु ५८
षाठिए दुहिताङ्कु बिभा दशरथ। देखिण राजा माने होइले आचम्बित ५९
एमन्ते पञ्चाश राजा बरण करि नेले। समस्त राजा रुण्ड होइण सभा कले१९६०
सबु राज दुहिता बरिले दशरथ। चारिशत कन्या बिभा हेले अजसुत१९६१
भाजिला स्वयंबर राजा माने गले। जे जाहार राज्ये प्रवेश होइले ६२
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। कन्याङ्कु संगे घेनि दशरथ आसे फेरि ६३
चारिशत दासी चारिशत राणी। चारि सहस्र रथरे बिजे कले पुणि ६४
जउतुक दृव्य अबा केते के कहिबा। लक्षे रथ जउतुक देले पाणि दृव्य ६५

राजा सत्तह भाई थे। उन सबकी सत्तर कन्याएँ थीं। वह सभी वरमाला लेकर सभा में प्रविष्ट हुयीं। १९५०-१९५१ सभी ने दशरथ के गले में मालायें डाल दीं। यह देखकर सभी राजागण वहाँ से उठ गये। ५२ दशरथ ने तव सत्तर कन्याओं से विवाह किया। वहाँ पर उत्कल के महाराज ने वरण कर लिया। ५३ सभी राजागण मिलकर चल दिये और उत्कल राज्य में जा पहुँचे। ५४ उत्कलनरेश ने उन सभी राजाओं का स्वागत सत्कार किया। सभी राजागण आयोजित सभा में विराजमान थे। ५५ उत्कल नरेश के बारह भाई थे। उनकी साठ कन्यायें थी। ५६ वह साठ कन्यायें वरमाला लेकर सभा में आयीं और उन्होंने दशरथ को देखकर वर मालायें उन्हें पहना दीं। ५७ यह देखकर सभी राजागण सभा से उठ गये। दशरथ वहाँ वेदी पर बैठ गये। ५८ दशरथ ने साठ कन्याओं से विवाह किया। यह देखकर राजागण आश्चर्य से चकित हो गये। ५९ इस प्रकार पचास अन्य राजाओं ने उन राजाओं का वरण किया और उन्हें ले गये। सभी राजागणो ने मिलकर सभा का आयोजन किया। १९६० समस्त कन्याओं ने दशरथ का ही वरण किया। अज-पुत्र दशरथ ने उन चार सौ कन्याओं से विवाह किया। १९६१ स्वयंवर समाप्त होते ही समस्त राजागण अपने-अपने राज्यों में जा पहुँचे। ६२ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् दशरथ कन्याओं को साथ लेकर लौट आए। ६३ चार सौ रानियाँ तथा चार सौ दासियाँ चार हजार रथों पर चल पड़ीं। ६४ दहेज के पदार्थों के विषय में कोई कहाँ तक क्या कहता। एक

बाअने लष अश्व सारेणि चारि लष । गाइ महिषी अइले संगरे असंख्य ६६
समुद्र लहरी प्राये आसे सैन्यबळ । अठर दिने राज्यरे हेले जाइ ठूळ ६७
देखिण राज्य लोके राज्यरे जाइ कहि । नृपति कुमर वड़ सम्भर्वे आसइ ६८
राजाङ्कर आगे चार बारता कहि । सैन्य बळ संगे घेनि कुमर आसइ ६९
चारि शत बधू चारि शत दासी गण । जउतुक दृव्य मान कळि नुहें पुण१९७०
प्रळय सिन्धु प्राय आसन्ति से माड़ि ।
सम्भाळ कर देवताहाङ्कु जाइ करि१९७१
ए कथा शुणिण बळराम दास । नीळ गिरि जगन्नाथ चरणे विश्वास ७२
एथु अनन्तरे शुण भगवती । बळरामकु शरण रखिले दाशरथि ७३
शुणि करि अजोध्या महीपाळ पुण । हरष होइ राजा बाहार तक्षण ७४
सरजू गंगा कूळे पुत्रकु भेट जाइ । देखिले सागर माड़िण आसइ ७५
बोइले पुत्र मणि अद्रष्ट तोर वड़ । अठर मउड़मणिरे तुहि हेलु सार ७६
सुफळरे जन्म होइण अछु तुहि । तपन कुळ उज्ज्वळ प्रायेक दिशइ ७७
एमन्त कहिण राजा पुत्र पाशे गला । पिताकु देखि पुत्र रथरू ओल्हाइला ७८
पिताङ्कु चरणरे करि नमस्कार । कुमर कु राजा नेइ बसाए कोळर ७९

लाख रथों में पेय पदार्थ मिला था । ६५ बावन लाख घोड़े, चार लाख बहलें तथा अनगिनत गाय भैंसें साथ में आईं । ६६ सागर की तरंगों के समान सैन्य-दल चला आ रहा था । जो अट्ठारह दिनों में अयोध्या राज्य में आ पहुँचा । ६७ यह देखकर राज्य-वासियों ने राज्य में जाकर चर्चा की कि राजपुत्र दशरथ बड़ी तड़क-भड़क से आ रहे हैं । ६८ दूत ने जाकर राजा को समाचार दिया कि सैन्य दल साथ लेकर राजकुमार आ रहे है । ६९ चार सौ वधुएँ तथा चार सौ दासियाँ है । दहेज के पदार्थो का आँकलन नहीं हो पा रहा है । १९७० वह प्रलय समुद्र की भाँति उमड़ते चले आ रहे है । हे देव ! आप जाकर उनकी व्यवस्था करे । १९७१ यह कथा सुनकर बलराम दास को नीलाँचल के जगन्नाथ जी के चरणों में विश्वास हो गया । ७२ हे भगवती ! सुनो । इसके पश्चात् दशरथनन्दन श्रीराम ने बलराम दास को शरण में स्वीकार कर लिया । ७३ यह सुनकर अयोध्यापति महाराज अज प्रसन्न होकर उसी क्षण बाहर निकल पड़े । ७४ सरयू तट पर जाकर उन्होने पुत्र से भेट की । उन्होने जन-समुद्र को उमड़ कर आते हुए देखा । ७५ उन्होंने कहा हे पुत्र ! तुम वड़े ही भाग्यशाली हो । अठारह श्रेष्ठ राजाओं में तुम श्रेष्ठतर सिद्ध हुए । ७६ तुम्हारा जन्म सफल हो गया । तुमसे सूर्य वंश उज्ज्वल दिखाई देने लगा । ७७ इस प्रकार कहते हुए राजा अज पुत्र के समीप गये । पिता को देखकर पुत्र ने रथ पर से उतर कर पिता के चरणों में नमस्कार किया । राजा ने कुमार को गोद में बिठा लिया । ७८-७९ धीरता के साथ पिता

सधीरे पिता पुत्र चळि आसन्ति पुण । प्रवेश होइले अजोध्या पुरेण १६८०
सिंह द्वारे रथरु ओल्हाइ नृपबर । बिजये कले जाइ जगती उपर १६८१
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी ।अन्तःपुरे बारता मिळिला जाइ करि ८२
दासीए आसि पुत्रबधूङ्कु घेनि गले । शाशुङ्कु बोहू माने ओलगि होइले ८३
चारिशत बधुङ्कु पंचिश घरे रखि । पंचिश नबर तहिँरे अछि रचि ८४
चारि शत राणी दिशन्ति भिन्न भिन्न ।जे सने शोभा पाए स्वर्गर तारा मान ८५
शान्त शीळ समस्ते नुहन्ति दुष्टमति ।
मासकरे राणी माने बधूङ्कु देखि जान्ति ८६
बधूमानङ्कु एका पराये देखन्ति । दशरथ समस्तङ्कु समान पालन्ति ८७
एथु अनन्तरे गउरी देबी शुण । जौतुक द्रब्य राजा अणाइँ बहन ८८
सबू बधू मानङ्कु बाण्टि देले । उत्तम नबररे नेइण रखाइले ८९
सैन्य बळ हस्ती घोड़ा सारेणी गोधन । एमानङ्कु सइति रखिले राजन १६९०
रथि सेनापति पदाति बळ पुण । उतसव नबर पाशे नबर कले पुण १६९१
नन्दिग्राम बोलि ताहार नाम देले । बार कोटि घर बस्ति सेठारे करिले ९२
समस्तङ्कु रखिले से कटकरे नेइ । अज राजा नन्दि ग्राम कटक भिआइ ९३
एमन्ते बरषे सेथिरे बहिगला । बधूङ्क कुशल राजा राणीङ्कि पचारिला ९४

और पुत्र चलते हुए अयोध्या नगर में प्रविष्ट हुए। १६८० सिंहद्वार पर महाराज रथ से उतरकर जगती पर जाकर विराजमान हो गये। १६८१ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके अनन्तर यह समाचार अन्तःपुर में जा पहुँचा। ८२ दासियाँ आकर पुत्र-वधुओं को ले गयीं। बहुओं ने सासुओं के चरणों में प्रणाम किया। ८३ वहाँ पर पच्चीस महल सजाये गये थे उन्हीं पच्चीस महलों में उन चार सौ बहुओं को रक्खा गया। ८४ जिस प्रकार आकाश में तारागण शोभायमान होते है उसी प्रकार चार सौ रानियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार से छविवन्त दिखाई दे रही थीं। ८५ सभी शान्तिप्रिय तथा शीलवान थीं। कोई भी दुष्ट स्वभाव वाली नहीं थी। महीने में एक बार रानियाँ आकर बहुओं को देख जाती थीं। ८६ वह लोग बहुओं को एक समान देखती थीं। दशरथ सभी का समान भाव से पालन करते थे। ८७ हे देवी गौरी ! सुनो। इसके उपरान्त राजा ने शीघ्र ही दहेज सामग्री मँगाकर सभी बहुओं में बाँट दी तथा उत्तम महलों में रखवा दी। ८८-८९ राजा ने सैन्य-बल, हाथी घोड़े बहलें तथा गोधन को सैंत कर रख लिया। १६९० उन्होंने रथी सेनापति तथा पैदल सैनिकों के घरों के निकट ही अन्य उत्तम घर बनवा दिये। १६९१ वहाँ पर बारह करोड़ घरों की बस्ती बनाकर उसका नाम नन्दिग्राम रख दिया। ९२ महाराज अज ने नन्दिग्राम दुर्ग बनाकर सबको उसी में रख दिया। ९३ इस प्रकार एक वर्ष व्यतीत हो गया। तब राजा ने रानी से बहुओं के कुशल समाचार पूंछे। ९४ एक सौ रानियों ने राजा से कहा कि हम

शतेक राणी आसि राजाङ्क आगे कहि । पुत्र वधू आम्भ निश्चिन्ते छन्ति रहि ९५
पुत्रर सुबुद्धिपण बधूमाने धीरा । शुणिण राजन सन्तोष हेले परा ९६
भाव प्रीति राणी मानङ्क संगे करि । खेळ रस कउतुजे सबुरि मन हरि ९७
दिवसरे राज्यर भल मन्द पुण । बूझिण परजाङ्कु सुखी कले जाण ९८
एमन्ते बेनि बरष काळ बहिगला । पश्चिम दिग राजाङ्क स्वयंबर हेला ९९
पश्चिम गिर राजा हेले एक मेळ । उत्तर दिग राजाङ्कु बरिले महीपाळ २०००
चाळिशि सत्र राजा होइले जाइ ठूळ ।
अनामिका देश राजा बरण कला मूळ २००१
सुनानीळ गण्डुकी भैरव देश राजा । चित्र बिचित्र गुपते रेखारे बिड़ोजा २
एमन्ते बतिश सत्र राजा बरण कले । तिनिशत पंञ्चा दुहिता तांङ्कर भले ३
एथिरु सात उणा शुण भगबती । से नृपति सकळ राजाङ्कु बरण करन्ति ४
अजोध्या नग्ररे प्रदेश आसि पुण । अज नृपतिङ्कि कले से बरण ५
दशरथ कुमरकु डाकि महीपाळ । बोइले स्वयंबर कु बहन तु चळ ६
पितांङ्कर आज्ञारे दशरथ चळि । बशिष्ठ बामदेब सैन्य घेनि करि ७
प्रबेश होइले जाइ राजाङ्कर मेळे । भइर देश राजा समस्ते हेले ठूळे ८
से राजापूरि भोजन देइण रखाइला । आर दिन सभा मण्डाइ बसाइला ९

पुत्रवधुएं निश्चिन्त होकर रह रही हैं। ९५ पुत्र की बुद्धिमत्ता तथा वधुओं के धैर्य को सुनकर राजा सन्तुष्ट हो गए। ९६ वह रानियों से सद्भावपूर्वक प्रीति करते हुए रसमय लीलाओं को करके सबका मन मोह लेते थे। दिन में राज्य की अच्छाई-बुराई को समझकर प्रजा को सुखी बनाते थे। ९७-९८ इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गए। उसी समय पश्चिम दिशा के राजाओं का स्वयंवर हुआ। ९९ पश्चिम दिशा के राजाओं ने एकत्रित होकर उत्तर दिशा के राजाओं का वरण किया। २००० चालीस हजार राजा वहाँ जाकर एकत्रित हो गए। मूलतः अनामिका देश के महाराज ने वरण किया। २००१ स्वर्ण नील गण्डुकी भैरव चित्र विचित्र गुप्तरेख तथा विड़ोजा आदि राज्यों के राजा तथा इसी प्रकार बत्तीस हजार वरण किये गए। राजाओं की तीन सौ पचास राजकुमारियाँ थीं। २-३ हे भगवती ! सुनो। इनमें से पाँच-सात राजा लोग सभी राजाओं का वरण करते फिर रहे थे। ४ उन्होंने अयोध्या नगर में प्रविष्ट होकर महाराज अज को वरण किया। ५ राजा अज ने दशरथकुमार को बुलाकर उन्हें शीघ्र ही स्वयंवर में जाने का आदेश दिया। ६ पिता की आज्ञा से दशरथ वशिष्ठ, बामदेव तथा सेना को लेकर चल दिये और राजसमाज में जा पहुँचे। भैरव देश के सभी राजागण वहाँ एकत्रित हो गए। ७-८ उस राजा ने सबको भोजन देकर तृप्त किया और अगले दिन सभा को सुसज्जित करके सभा बैठायी। ९ उस राजा के नौ भाई थे। उनके

से राजार नब गोटि अटे सहोदर। छतिश कुमारी अछन्ति ताङ्कर २०१०
कुमारी मानंङ्कु बेश कराइ नृपति। रत्नमाला तांङ्कर हस्तरे दिअन्ति२०११
माळमान घेनिण कुमारी माने गले। दशरथङ्क गळारे नेइ लम्बाइले १२
देखिण राजा माने सभारू उठिले। छतिश कन्यांकु दशरथ बिभा हेले १३
गण्डुकी देश राजा बरण करि नेला। सकळ राजाङ्कु से ठूळ कराइला १४
सभारे बसाइण मनरे राजा भाळि। एकोइश भाइ जे अटन्ति ताहारि १५
तेषठि कुमारी तांङ्कर अटे जाण। सेमानङ्कु बेश करि अणाएँ राजन १६
समस्तङ्क हस्तरे कुसुम रत्न माळा। सभारे बिजे कले दिशन्ति से त्वरा १७
दशरथङ्कु देखिण समस्ते बरिले। रत्न पुष्पमाळा गळारे नेइदेले १८
देखिण राजा माने होइले आचम्बित। सभारू उठिण गलेक त्वरित १९
तेषठि कन्याङ्कुदशरथ बिभा हेले।एमन्ते तिरिशि राजा बरण कले भले२०२०
तिनिशत अणचाळिशि ताङ्कर दुहित। समस्ते बरिले अज राजाङ्क सुत २०२१
एतेक कन्या दशरथङ्कु बिभा हेले। देखिण राजा माने मनरे छळ कले २२
बिचित्रपुर राजा पच्छरे बरिला।चारि गोटि कुमारी अटन्ति तार परा २३
नब जुबा बयस रूपरे सुन्दर। समस्त राजा माने आसि हेले ठूळ २४
देखिण नृपति सभा कराइला। खम्भेक सभा तळे पोतिण अनर्गळा २५

छत्तीस राजकुमारियाँ थीं। २०१० राजा ने राजकुमारियो का शृंगार करवाकर उनके हाथों में रत्न की मालाएँ दीं। २०११ कुमारियाँ मालाएँ लेकर चली गई और उन्होंने दशरथ के गले में डाल दीं। १२ यह देखकर राजा लोग सभा से उठ गए। दशरथ ने उन छत्तिस कुमारियों से विवाह किया। १३ तब गण्डुकी देश के राजा ने सब राजाओं का वरण करके उन्हें एकत्रित किया। १४ सभा बैठाकर राजा ने मन में विचार किया। उस राजा के इक्कीस भाई थे। उनके तिरसठ पुत्रियाँ थीं। राजा ने उन्हें शृंगार करके बुलवा लिया १५-१६ सभी के हाथों में रत्न तथा पुष्प की मालायें थीं। सभा में प्रवेश करने पर वह अपूर्व सुन्दर दिख रही थीं। १७ दशरथ को देखकर उन सबने रत्न तथा पुष्पमालायें उनके गले में डालकर उनका वरण कर लिया। १८ यह देखकर राजा लोग आश्चर्य में पड़ गये और सभा से उठकर शीघ्र ही चले गये। १९ उन तिरसठ कन्याओं से दशरथ ने विवाह किया। इस प्रकार तीस राजाओं ने भले भाव से वरण किया। २०२० उनकी तीन सौ उनतालिस पुत्रियाँ थीं। उन सभी ने महाराज अज के पुत्र को वरण किया। २०२१ इतनी कन्याओं का विवाह दशरथ से हो गया। यह देखकर राजाओं ने मन लगाकर छल किया। २२ इसके पीछे विचित्र पुर नरेश ने वरण किया। उसके चार पुत्रियाँ थीं। २३ वह नवयुवा वयसी तथा सुन्दर रूपवाली थी। सभी राजागण वहाँ आकर एकत्रित हो गये। २४ यह देखकर

सेथि परे मुकुता झरिर पिञ्जरा ।पिञ्जरा भितरे राजा सारीए रखिला २६
लाख बिन्धा उपाय करि अछि तहिं । कुराळ चक्र प्राये पिंजरा बुलइ २७
तळरे खोलेणा उपरे कबाट । इन्द्रर धनु गोटि डेरिछि मुराट २८
राजा मानङ्कु बोइला शुण नृपबर । चारि गोटि दुहिता अटन्ति मोहर २९
पद्म प्राये चारि गोटि अटन्ति शोभन ।एकादश बरष कन्याङ्कु हेला जाण२०३०
सेहू दुहिता निमन्ते मुँ लाख निर्मा कलि। सपत बरषरे इन्द्रङ्कु मनाइलि२०३१
से सुर राजा मोते धनु एक देला ।मु बोइलि तुम्भे बिभा हुअ एवे भला ३२
से बोइले विणुङ्कर चरणे भकति। नारायण कळारे जन्मिथिब पृथ्वी ३३
से धनुरे गुण देइ टंकार करिब। पंञ्जरी बक्रिकु से सम्भाळि रखिब ३४
पंञ्जरी सारीकि सेहू शररे मारि पारि।तेबे से चारि कन्याङ्कु बिभा हेब फेरि ३५
शुणिण राजा माने उठिले गळ गाजि । धनुकु केहि तोलि न पारिले गर्जि ३६
काहार उपरे धनु माड़िण बसिला । केहू धनु धरु धरु अचेते पड़िला ३७
केहू देखि डरिला नगला हादे पुण ।
चाळिशि सहस्र राजा धनु तोळि न पारिले जाण ३८
के देखि फेरिला के धरिला बळ कच्छे। गुण देले असम्भाळे पड़े भूमि गते ३९

राजा ने सभा आयोजित की। सभा में एक स्तम्भ निर्मित किया गया था। २५ उसके ऊपर मुक्ताओं की जाली का एक पिजड़ा था। पिंजरे के भीतर राजा ने एक मैना रखी थी। २६ वहाँ उसने लक्ष्यवेध का उपाय कर रक्खा था। कुम्भकार के चाक के समान पिंजड़ा घूम रहा था। २७ नीचे से न खुलने वाला ऊपरी भाग में द्वार था। इन्द्र का एक धनुष वहाँ रक्खा था। २८ उसने राजाओं से कहा, हे नृपश्रेष्ठ! सुनो। मेरे चार पुत्रियाँ है। २९ वह चारों कमल के समान शोभायमान है। तथा ग्यारह वर्ष की हो गई है। २०३० उन पुत्रियों के लिये मैने लक्ष्यवेध की व्यवस्था की है। सात वर्षों में मैने इन्द्र को सन्तुष्ट किया। २०३१ उन देवराज इन्द्र ने मुझे एक धनुष दिया। तब मैने उनसे विवाह करने को कहा। ३२ तब उन्होंने कहा कि विष्णु के चरणों का भक्त नारायण की कला लेकर पृथ्वी पर जन्म ले चुका है। ३३ वह ही धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर टंकार करेगा। पिजड़े तथा धनुष को सम्हालकर रखना। ३४ जब वह पिंजड़े की मैना को बाण से मार पाएगा तभी उससे उन चार कन्याओं का विवाह होगा। ३५ यह सुनकर राजा लोग हुँकार मार कर उठे। वह गरजकर भी कोई धनुष को नहीं उठा सके। ३६ किसी के ऊपर धनुष गिर पड़ा। कोई धनुष पकड़ते-पकड़ते अचेत होकर गिर पड़ा। ३७ कोई उसे देखकर डर कर उसके पास तक नहीं गया। चालिस हजार राजागण धनुष को उठा नहीं पाए। ३८ कोई उसे देखकर ही लौट गया। किसी ने उसे बल से उठा लिया परन्तु प्रत्यञ्चा चढ़ाते समय सम्हल न पाने से भूमि पर पछाड़ खाकर गिर पड़ा। ३९

एमन्ते समस्त राजा भजिण रहिले । आउ थरे डाकि देला नृपति शिखरे २०४०
ज धरिब धनु जे पञ्जरी आदि करि । मारि बाम चरण आणिब ओटारि २०४१
तेबे ताकु बिभा देबी मो चारि कुमारी। एमन्त बोलि राजा उच्चरे राब करि ४२
शुणि करि राजा माने पुणिहिं उठिले । धनु तोलि न पारि समस्ते फाटि गले ४३
आउ थरे महीपाल दिअइ पुण डाक । धनु तोळि गुण देइ जे रखे पंजरीत ४४
सूची मूना द्वार बाटे जे सारीकि धरिब । बाम चरण झिकन्ते सारी मो हजिब ४५
एमन्त बचन शुणि सर्ब राजा गले । सेनापति रथीमाने धनुकु देखिले ४६
सेहि डरि पळाइले न पारिले तोळि । कुराळ चक्र प्राये पिञ्जरी बूले फेरि ४७
समस्ते फेरिवा देखि उठिले दशरथ । बोइले राजा सत्य अटे कि नियत ४८
नृपति बोइले मोर त्रिबार सत्य जाण ।जे विद्धि पारिब ताकु देबि कन्यादान ४९
शुणिण दशरथ सभारु उठि गले । लाखर पटा उपरे वहन चढ़िले २०५०
इन्द्र धनु बाम करे धरि अज सुत ।गुण चढ़ाइबाकु विचार कले चित्त २०५१
बाम चरण अंगुष्ठिरे लगाए धनु हूळ । धनुरे गुण देइण धइले महीपाल ५२
गुण टँकार करि चँहिले सभाकु । काहार शक्ति अछि बिन्ध ए शरकु ५३
शुणिण नृपति माने मुख पोति बसि । दशरथ नृपबर धनुरे शरजोचि ५४

इस प्रकार समस्त राजागण असफल रहे। तब नृप शिरोमणि ने पुनः एक बार घोषणा की । २०४० जो कोई धनुष धारण करके पिंजड़े को लक्ष्य करके मैना को मारकर उसका बाँया पैर ले आयेगा। उसी के साथ मेरी चारों कन्याओं का विवाह होगा। इस प्रकार राजा ने ऊँचे स्वर में कहा। २०४१-४२ यह सुनकर राजागण पुनः उठे। धनुष न उठा पाने के कारण सभी छितरा गए। ४३ राजा ने एक बार पुनः घोषणा की। जो कोई धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा कर पिजड़े पर लक्ष्य करके सुई की नोक के समान द्वार से मैना को पकड़ेगा। उसका बाँया पैर खींचने से मैना मर जाएगी। ४४-४५ इस प्रकार के बचनों को सुनकर सभी राजागण चले गये। सेनापति तथा रथियों ने धनुप को देखा। ४६ वह लोग भी धनुष को उठा नहीं पाए और डर कर भाग गए। कुम्भकार के चाक के समान पिंजड़ा घूम रहा था। ४७ सबको लौटा हुआ देखकर दशरथ ने उठकर कहा, हे राजन! क्या यह आपका निश्चय अटल है। ४८ राजा ने कहा कि यह मेरी त्रिवाचा सत्य है। जो इसे वेध देगा, उसी को कन्यादान करूँगा। ४९ यह सुनकर दशरथ सभा से उठकर शीघ्र ही लक्ष्य-पट्ट पर चढ़ गए। २०५० अजकुमार दशरथ ने इन्द्रधनुष को बाँए हाथ में उठाकर उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाने का मन में विचार किया। २०५१ राजा दशरथ ने धनुष के एक सिरे को बाएँ पैर के अँगूठे में फँसा कर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उठा लिया। ५२ उन्होंने प्रत्यञ्चा पर टंकार मारते हुए सभा की ओर देखकर कहा कि यदि किसी की शक्ति हो तो यह वाण छोड़े। ५३ यह सुनकर राजागण मुख झुकाकर बैठ गए। नृप श्रेष्ठ दशरथ ने वज्रशूची

बज्र सूची शरकु सेथिरे पुराइले। इन्द्रंकु सुमरिण शरकु विन्धि देले ५५
तक्षणे शर चळि गला अदृश्यरे। प्रबेश होइला जाइ पिञ्जरी भितरे ५६
कुराळ चक्रकु से धीरे रखाइला। शारीर बाम गोड़कु वाहारे आणिला ५७
पिठिरे बाजि शर हृदकु चळि गला। सारी जीवन पंजरीरे हराइला ५८
उपर पिढ़कु काटिला शर जाइ। शुन्यरु पिञ्जरी भुमिरे पड़िला जाइ ५९
हाटुआ बाटुआ देखणा हरी माने। समस्ते देखिले जाइण तत्क्षणे२०६०
पादान्ति रथी सारथि सिपाही सरदार। सेनापति माने देखिले सत्वर२०६१
राजा माने उठि जाइ चढ़िले पटारे। देखिले सारी मरिछि पिञ्जरी भितरे ६२
बाम चरण तार बाहारे अछि रहि। कुराळ पिञ्जरी भितरे अछि शोइ ६३
देखिण राजा माने फेरिण अइले। सभारे बसिण बिचार सर्बे कले ६४
बोइले आम्भे एते राजा थाइ पुण। सबुठारे कन्या बरिले एाङ्कु जाण ६५
एहाकु मारिण आम्भे कन्याँकु घेनि जिबा। तेबे से पुरुषार्थ पण अरजिबा ६६
एते बोलि सकळ राजा धनु धरि। आपणार जानमान बसिले आबोरि ६७
दशरथ चारि पाशे घेरि ले पुण जाइ। धनुमानंकरे गुण झंकार कले तहिं ६८
बशिष्ठ जे सभार उपरे बसि थिले। कळिर आगम देखि मंत्रि कि डाकिले ६९
बोइले रथ घेनि जाअ कुमर पाश। राजा माने कळह करिबे बिशेष२०७०

शर को लगाकर धनुष पर बाण चढ़ाया और इन्द्र का स्मरण करके बाण छोड़ दिया ५४-५५ उसी क्षण बाण अदृश्य होकर पिंजरे के भीतर जा घुसा। ५६ वह कुम्भकार के चाक की गति को स्थिर करके मैना के बाँए पैर को बाहर ले आया। ५७ पीठ में लगकर बाण हृदय में चला गया था। पिंजरे में मैना का जीवन समाप्त हो गया। ५८ फिर बाण ने जाकर ऊपरी भाग को काट दिया जिससे पिंजड़ा ऊपर से पृथ्वी पर जा गिरा। ५९ सभी हाट बाजारी दर्शकों ने उसी समय उसे जाकर देखा। २०६० पैदली सैनिक, रथी, सारथी, सिपाही, सरदार तथा सेनापति आदि सभी ने शीघ्र ही उसे देखा। २०६१ राजा लोगों ने पाटे पर चढ़कर मैना को पिजरे में मरा हुआ देखा। ६२ चक्कर लगाते हुए पिंजरे में मैना पड़ी थी और उसका बाँया पैर बाहर आ गया था। ६३ यह देखकर सभी राजागण लौट आए और उन्होंने सभा में बैठकर विचार किया। ६४ वह लोग कहने लगे कि हम इतने राजाओं के रहते हुए सभी स्थानों में कन्याओं ने इसे ही वरण किया। ६५ इसे मारकर हम लोग कन्या ले जाएँगे। तभी हमारी कीर्ति उजागर होगी। ६६ इस प्रकार कहकर सभी राजा धनुष लेकर अपने-अपने यानों पर बैठ गए। ६७ उन्होंने 'दशरथ को चारों ओर घेर लिया तथा अपने धनुषों पर टंकार किया। ६८ सभा में विराजमान वशिष्ठ ने कलह का आगम देखकर मंत्री को बुलाकर कहा कि तुम रथ लेकर कुमार दशरथ के समीप जाओ। लगता है कि राजा लोग विशेष युद्ध करेंगे। २०६९-७०

एहा शुणि मंत्रि बेगे रथ घेनि चळि। दशरथ आगरे जाइण बेगे मिळि२०७१
देखिण दशरथ रथरे बिजे कला। इन्द्रधनु धरिछन्ति हस्ते राज बळा ७२
आउतिनि हस्तरे धनु धरि नेइ। चारि धनु धरि गुण टंकार करइ ७३
राजा माने डाक देले अज राजा बळा। निश्चय तोहर आज काळ जे पूरिला ७४
आम्भ संगे रण करि जिणिबु जेबे पुण। तेबे चारि कन्याकु नेबुरे निश्चे जाण ७५
दशरथ बोइले धर्म जेबे सत। आज तुम्भे सकळ राजाए हेब हत ७६
तिनिबेळ परिजन्ते डाकिले महीपाळ। जे बिन्धिब सूची लाख कन्या नेबमोर ७७
से कथा ताङ्कर शुणि उठिण अइल। धनु तोळि न पारि लेउटि पुणगल ७८
एबे धर्मरे तुम्भे करु अछ कळि। धर्म जेबे सतरे न जिब केहि बळि ७९
एमन्ते कहन्ते राजकुमर तांकु पुण। रिपु धरि राजा माने बिन्धिले शर जाण२०८०
रथी सेनापति जे पादान्ति बळ घेनि। अनेक शर बृष्टि कले तहिं पुणि२०८१
चारि धनु धरि शर छेदइ दशरथ। यूथ यूथ होइण शर बिन्धन्ति अप्रमित ८२
दुइ दिन दुइरात्र बिन्धन्ति जे शर। शुणि बिचारे गण्डुकि देश महीपाळ ८३
बशिष्ठंकु बोइले शुण मो बचन। चाळशि सस्र राजाङ्कु जुटन्ति एका जाण ८४
मोहर सैन्य जाइ करिबे कि रण। शुणि करि बशिष्ठ कहन्ति मणाइण ८५
बोइले एते राजांकु समर्थ नोहू तुहि। तोर संगे रण करि जूझिबे पुण एहि ८६

यह सुनकर मन्त्री सत्वर ही रथ लेकर दशरथ के पास पहुँच गया। २०७१ यह देखकर दशरथ रथ पर आरूढ़ हो गये। राजपुत्र हाथ में इन्द्र-धनुष लिये थे। ७२ अन्य तीन हाथों में धनुष लेकर वह चारों धनुषों पर टंकार मारने लगे। ७३ राजाओं ने कहा, अरे अजनन्दन! आज निश्चय ही तेरा समय पूरा हो गया। ७४ हमारे साथ युद्ध करके हमें जब जीत लोगे तभी कन्या को ले जा सकोगे। ऐसा निश्चय ही जान लो। ७५ दशरथ ने कहा कि यदि धर्म सत्य है तो तुम सभी राजा आज विनाश को प्राप्त होगे। ७६ राजा ने तीन बार घोषणा की थी। जो कोई सूची लक्ष्य का वेधन करेगा वह ही मेरी कन्या प्राप्त करेगा। ७७ उनकी उन बातों को सुनकर तुम लोग उठ आए, परन्तु धनुष न उठा पाने के कारण लौट गए। ७८ अब तुम लोग धर्म से युद्ध कर रहे हो। यदि धर्म सत्य है तो कोई उसे जीत नहीं सकता। ७९ राजकुमार के ऐसा कहने पर राजाओं ने उन्हें शत्रु समझकर उन पर वाण वर्षा की। २०८० रथी, सेनापति, पैदल सिपाहियों के दल को लेकर उन लोगों ने बहुत से वाणों की वर्षा की। २०८१ यूथ के यूथ असंख्य वाण छोड़ रहे थे और दशरथ चार धनुष उठाकर वाणों से उनके अस्त्रों को काट रहे थे। ८२ दो रात और दो दिनों तक वाणों की वर्षा को सुनकर गण्डुकी-महाराज ने विचार करके वशिष्ठ को समझाते हुए कहा कि आप मेरी बात सुनिये। चालिस हजार राजागण एक साथ जुट गए है। ८३-८४ क्या हमारी भी सेना जाकर युद्ध करे। यह सुनकर वशिष्ठ ने उन्हें समझाते हुए कहा

सम्भाळि हुअ राजा न कर तुरे द्वन्द । केते राजा छन्ति जम्बुद्वीपर नरेन्द्र ८७
तुम्भर नबर तुम्भे रखहे जगिण ।देख तुम्भे के हारिब के जिणिव पुण ८८
शुणिण महीपाळ नवर जगाइला । कटक लोकंकु सेहू जवत रखाइला ८९
एथु अनन्तरे तुगो शुण भगवती । अनेक जुद्ध करन्ति सकळ नृपति२०९०
सबुङ्कर शर जे छेदइ दशरथ । देखिण सैन्यबळ होइले आचम्भित२०९१
पाँञ्चदिन पाँञ्च रात्र तहिँरे बहिगला । तेवे से रण गोटि निवर्त्त नोहिला ९२
अज राजा कुमर जे शुन्यकु चाहिँला ।देबतामानंकु चाहिँ साक्ष्य तहिँ देला ९३
अष्ट दिग्पाल जे तुम्भे थाइ बुझ ।पाँच दिन पाँच रात्र राजाए कले जुद्ध ९४
एते बेळे धर्मकु तकेइछि मुहिँ । मुहिँ एकाअटे अनेक नर साईँ ९५
निर्दोषरे मोर संग करन्ति ए रण । धर्मकु एमाने जे लंघुछन्ति पुण ९६
मोहर दोष नाहिँ बिचार तुम्भे कर । सृष्टिरे आतजात जे अटइ तुम्भर ९७
शुणिण देबताए शुन्यरे डाक देले । मार दुष्ट राजाङ्कु मरन्तु एठारे ९८
शुणिण दशरथ धनु टंकार कला । प्रथमे अग्निशरकु धनुरे जोचिला ९९
बोइला एथर रे सम्भाळ महीपाळ । माइलि शर मुहिँ केकर निवार२१००
एते बोलि दुइ बेळ अग्निशर जोचि ।दुइ शर जिबारू राजा हेले भस्म राशि२१०१

कि तुम इतने राजाओं के लिये समर्थ न होगे। तुम्हारे साथ युद्ध करके भी यह लोग जूझेंगे। ८५-८६ तुम सम्हल जाओ और युद्ध मत करो। हे नरेन्द्र! जम्बूद्वीप के जितने भी राजा तुम्हारे महल में है तुम उन पर दृष्टि रक्खो। इसके पश्चात् देखो कौन हारता है और कौन जीतता है। ८७-८८ यह सुनकर राजा ने महलों पर पहरा लगवा दिया तथा दुर्ग के लोगों पर भी दृष्टि रक्खी। ८९ हे भगवती! सुनो। इसके पश्चात् वह राजागण घोर युद्ध कर रहे थे। दशरथ सभी के वाणों को नष्ट कर रहे थे। यह देखकर सैन्यदल आश्चर्य में पड़ गया। २०९०-९१ पाँच दिन और पाँच रातें बीत गई परन्तु फिर भी युद्ध विराम नही हुआ। ९२ तब अजकुमार दशरथ ने आकाश की ओर देखते हुए देवताओं की ओर दृष्टिपात करके साक्षी दी। ९३ हे आठ दिग्पालो! तुम स्थित रहकर समझ लो। इन राजाओं ने पाँच रात्रि तथा पाँच दिन युद्ध किया है। ९४ अब तक मैं धर्म को ताकता रहा। मैं एकाकी हूँ और यह राजे बहुत है। ९५ मुझ निर्दोष के साथ यह लोग युद्ध कर रहे है। इन लोगों ने धर्म का उल्लंघन किया है। ९६ मेरा दोष नही है। आप लोग विचार करिए। संसार में आपका आना जाना होता रहता है। ९७ यह सुनकर आकाश से देवताओ ने कहा कि तुम उन दुष्ट राजागणों को मारो। वह लोग यहाँ मृत्यु को प्राप्त हों। ९८ यह सुनकर दशरथ ने धनुष टंकारा। सर्व प्रथम उन्होंने धनुष पर अग्निवाण का सन्धान किया। ९९ उन्होंने कहा अरे राजाओ! अब सम्हलो। मैने वाण मारा है। कोई हो तो इसका निवारण करे। २१०० ऐसा कहकर उन्होंने दो बार अग्नि वाण छोड़े जिससे

लक्षक शरकु जे बिन्धिला अंक धंक । रथी सेनापतिकि बिन्धिला लक्ष लक्ष २
आबर थरे शर जे टंकारि बिन्धि टाणि । कोड़िए पदान्तिकि पकाइला हाणि ३
आर बेळे बज्रशर माइला तिनि सस्र । तिनि सस्र राजा जे पड़िले भूमि गत ४
पवन शर क्षेपन्ते दश सस्र मले । काळ बिकाळ शर दशरथ धरि मारे ५
रथि सेनापति सबु पादान्ति बळ पुणि । तिनि लक्ष पड़िण लोटिले धरणी ६
पुण आर बेळे जे दशरथ बीर । देबशर कला जे जाणिण अन्धार ७
पाञ्च सस्र राजा जे पकाए सेहू हाणि । मले गरिष्ठ राजा कोटिए सस्र पुणि ८
दश लक्ष पादान्ति दुइ लक्ष सेनापति । तिनि लक्ष रथ जे पड़िले धरित्री ९
बाकि कोटिए सस्र राजा रहिण बुझुथिले। एमाने पड़िबारू पळाइ पुण गले२११०
बन गिरि माड़िण न पान्ति सेहू बाट । आपणार राज्यकु पळान्ति समस्त २१११
जेउँ राजा माने मृत्यु जे पाइले । सैन्य बळ तांकर फेरिण पुर गले १२
बहिला रक्त नदी नाचिले कबन्ध ।खेचरी पिशाच शुणि होइला आसि रुण्ड १३
काळी कराळी चण्डी जे महामाइ । समस्ते रुधिर पान कले सेथिरहि १४
श्वान श्रृगाळ जे गृद्धपक्षी पुण । एमाने आनन्दरे करन्ति भोजन १५
बिच्छुत दिन श्वास छड़ दिवस रण हेला। से राज्यरे गहळ अनेक लागिला १६
स्वर्गरे धन्य धन्य कले देब गण । से राज्यरे निर्भय हेले सर्बे जाण १७

राजागण भस्म हो गए। २१०१ उन्होंने अधाधुन्ध लाखों वाण छोड़े और लाख-लाख रथी तथा सेनापतियों को बेध दिया। २ फिर और एक बार टंकार कर वाण छोड़कर बीस पैदल सैनिकों को मार गिराया। ३ अगली बार बज्र शर मार कर उन्होंने तीन हजार राजाओं को मारकर पृथ्वी पर डाल दिया। ४ पवनास्त्र छोड़ने से दस हजार मर गए। दशरथ काल-विकाल वाणों से वध करने लगे। ५ रथी सेनापति तथा पैदल सेनिकों के दल तीन लाख गिरकर पृथ्वी पर लोट गए। ६ फिर अगली बार पराक्रमी दशरथ ने देवबाण छोड़कर जानबूझकर अन्धकार कर दिया। ७ उन्होंने पाँच हजार राजाओं को काट डाला। करोड़ों प्रतिभाशाली राजा लोग मारे गए। ८ दस लाख पैदल सेना, दो लाख सेनापति तथा तीन लाख रथ पृथ्वी पर पड़े थे। ९ बचे हुए हजार करोड़ राजागण जो रुके थे वह सब इन राजाओं के गिरने से भाग खड़े हुए। २११० वन पर्वतों पर भटकते हुए उन्हें मार्ग नहीं मिल रहा था। सभी अपने-अपने राज्यों को भाग रहे थे। २१११ जो राजा लोग मर चुके थे। उनकी सैन्यवाहिनी अपने राज्य को लौट गई। १२ रक्त की नदी बहने लगो। धड़ नृत्य कर रहे थे। खेचर-पिशाच सुनते ही वहाँ आकर एकत्रित हो गए थे। १३ महामाया कालो करालो तथा चण्डी सभी ने वहाँ रहकर रक्त-पान किया। १४ कुत्ते सियार तथा गीध पक्षी यह सभी आनन्द से भोजन कर रहे थे। १५ कई दिनों तक निरंतर युद्ध होने से राज्य में नाना प्रकार का कोलाहल एवं वितण्डावाद बढ़ा। १६ देवता लोग

गण्डुकि राजन जे मनरे हेले सुखी।
बिचारिला इन्द्र कहिबा कथा फळिला एबे निकि १८
एथु अनन्तरे शुणगो शाकम्वरी।रण तेज्या कला जे दशरथ दण्डधारी १९
चाहिँला चारि दिगरू भाजिला गहळ। देखिण सन्तोष जे नृपति कुमर२१२०
मंत्री कि बोइलारे रथ बेगे घेन।केउँ ठारे नदी अछि करिवा स्नाहान२१२१
शुणिण मंत्रीवर रथकु बोहि नेला। गण्डुकि नदी कूळरे नेइण रखिला २२
रथरू ओल्हाइले दशरथ वीर। गण्डुकि नदीरे स्नान कलेक सत्वर २३
स्नान सारि तर्पण सन्ध्या कले पुण। देवतांकु जळदान देलेक बिचारिण २४
पूजा सारि तिळक लागि सेठारे हेले।एमन्त समय़ रे राजा मन्त्री से मिळिले २५
नूतन राजा देश राजा पाशे देले। देखिण दशरथ वेगे बेश हेले २६
रथ उपरे जे बसिलेक राजपुत्र। बशिष्ठ छामुरे जाइ होइले उपगत २७
देखिण वशिष्ठ जे नमस्कार कले। सुकल्याण ऋषि ताहांकु तहिं कले २८
शिळे मणोहि जे राजन आसि देला।संतोष भोजन कले अज राजा वळा २९
आचमन सारिण विड़िआ लागि हेले। सुपाति पलंकरे जाइण निद्रा गले२१३०
एथु अनन्तरे गो पार्वती शुण एबे। रजनीरे मंगळ कृत्य होइले सम्भर्बे२१३१
चारि कन्याकु मंगुलिण पाणि तोळा कले।
सेहि तोळा पाणिरे चारि कन्याकु गाधोइले ३२

स्वर्ग से धन्य-धन्य करने लगे। उस राज्य में सभी निर्भय हो गए। १७
गण्डुकी नरेश ने मन में प्रसन्न होते हुए विचार किया कि अब इन्द्र की कही बातें फलवती हो गई हैं। १८ हे शाकम्बरी ! इसके अनन्तर सुनो। महाराज दशरथ ने संग्राम बन्द कर दिया। १९ चारों ओर भगदड़ को देखकर राजकुमार दशरथ सन्तुष्ट हो गए। २१२० उन्होने मन्त्री से कहा शीघ्र ही रथ ले चलो। नदी कहाँ है ? हम स्नान करेंगे। २१२१ यह सुनकर श्रेष्ठ मन्त्री ने रथ को ले जाकर गण्डुकी नदी के तट पर खड़ा कर दिया। २२ पराक्रमी दशरथ ने रथ से उतर कर शीघ्र ही गण्डुकी नदी में स्नान किया। २३ स्नान करके उन्होने सन्ध्या तर्पण समाप्त करके देवताओं को विचारपूर्वक जल दान किया। २४ पूजन समाप्त करके उन्होंने तिलक लगाया। इसी समय पर वहाँ राजा के मन्त्री आ पहुँचे। २५ उन्होंने राजा को नए वस्त्र प्रदान किए। यह देखकर दशरथ ने शीघ्र ही सुवेष धारण किया। २६ राजपुत्र दशरथ रथ पर बैठकर वशिष्ठ के निकट जा पहुँचे। २७ वशिष्ठ को देखकर उन्होंने नमस्कार किया और ऋषि ने उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। २८ शील के साथ राजा ने आकर उन्हें भोजन प्रदान किया। अजनन्दन दशरथ ने सन्तोषपूर्वक भोजन किया। २९ आचमन करके पान खाकर वह पलंग के ऊपर विस्तर पर जाकर सो गये। २१३० हे पार्वती ! सुनो। इसके उपरान्त रात्रि में बड़े समारोह के साथ मांगलिक कृत्य हुए। २१३१ चार कन्याओं ने मांगलिक जल

रजनी शेष हुअन्ते उठिले सर्ब जन। कटकरे उत्सब जे कराए राजन ३३
दशरथ सामर्थ पण देखिण राजन।देखिबाकु जिबाकु चहळ पड़िला पुण ३४
स्त्री पुरुष जाइण देखिण सर्वे फेरि। प्रशंसा करन्ति सर्बे जुद्ध देखि करि ३५
रजनी शेषरे बिभा उत्सब कराइले। रत्न बेदी उपरे बर नेइण बसाइले ३६
बरण पूजा सारिण लवण चउँरी। बर उपरे पंच मुकुट बान्धि करि ३७
चारि कन्याकु बेश करि बेदीकि बेगे आणि। शिला बरण करि बेदी उपरे पुणि ३८
दशरथंक करे कन्यांक कर कलेक बन्धन।
बर कन्यांक कर कुश रज्जुरे बांधि पुण ३९
रत्न शंखरे राजा पाणि नेइ देले। अनेक धन रत्न जउतुक देले२१४०
जुआ खेळ खेळाइण भोजन कराइले। एक पत्ररे बर कन्या जे भुंजिले२१४१
एहि रूपे चारि दिन गलाक जे बहि। लज्जा होम कराइले ऋषि बिप्र नेइ ४२
रत्न पलंक उपरे दशरथ बिजे कले। बेश बसन रे चारि कन्या जे आइले ४३
दासी गणे संगरे सर्मपि देले आणि। कबाट देइण जे दासीए गले पुणि ४४
चारि कन्याङ्कु संगे कलेक रतिरण। चारि प्रहर निद्रा अजर नन्दन ४५
रजनी शेष हेबारू चारि कन्या गले। दासी गणे पहण्ड मणाइ घेनि गले ४६

लेकर उससे उन चारों राजकुमारियों को स्नान कराया। ३२ रात्रि व्यतीत होने पर सभी लोग उठ पड़े। राजा ने दुर्ग में उत्सव का आयोजन करवाया। ३३ राजा ने दशरथ के समर्थ वीरत्व को देखा और फिर उनका दर्शन करने के लिये भड़-भड़ मच गया। ३४ समस्त नर-नारी उनका दर्शन करके लौट पड़े और उनका युद्ध देखने के कारण सभी उनकी प्रशंसा करने लगे। ३५ रात बीतने पर विवाहोत्सव कराया गया। वर को ले जाकर रत्न-वेदी पर बैठा दिया गया। ३६ वरुण पूजा समाप्त करके वर के शिर पर मौर बाँधकर राई लोन उतारा गया। ३७ चारों कन्याओं का श्रृंगार करके उन्हें वेदी के निकट लाया गया और शिला वरण के उपरान्त वह सब वेदी के ऊपर आ गईं। ३८ दशरथ के हाथों के साथ कन्याओं के हाथों को रखकर वर-कन्या के हाथ कुशा की रस्सी से बाँध दिये गए। ३९ तब राजा ने रत्न-शंख में पानी लेकर नाना प्रकार के धन रत्न दहेज में दान किया। २१४० द्यूतक्रीड़ा करवाकर उन्हें भोजन कराया गया। वर-कन्या ने एक ही पात्र में भोजन किया। २१४१ इस प्रकार चार दिन व्यतीत हो गए फिर ऋषि और ब्राह्मणों को लेकर लाजा-होम करवाया गया। ४२ दशरथ जाकर रत्न पर्यंक पर विराजमान हो गए। श्रृंगार करके वस्त्रों से सुसज्जित होकर चारों कन्याएँ आ गईं। ४३ दासियाँ उन्हें लेकर आईं और उन्हें समर्पित करके द्वार वन्द करके सभी दासियां लौट गयीं। ४४ चारों कन्याओं के साथ रमण करके अज-पुत्र दशरथ चार प्रहर तक सोते रहे। ४५ रात्रि व्यतीत होने पर दासियाँ

मर्दन माजणा जे कराइ दासी गणे ।स्नाहान सारि सुवेश कराइ ततक्षण ४७
षड़रसरे भोजन कराइ बहन ।विड़िआ लागि कराइ वसाइ पलंकेण ४८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुणगो शाकम्वरी । सुवास पाणिरे स्नान कराइले नारी ४९
नुतन अमलाण नेइण पिन्धाइले । राजनीति विधिरे भोजन कराइले२१५०
रत्न पलंक उपरे नेइण वसाइले ।सुवासित विड़िआ नेइण भुञ्जाइले२१५१
चारि शत दासी जे होइले बेश पुण । बशिष्ठ आज्ञा देले शुण हे राजन ५२
झिअ जुआइँकि तुम्भे रथरे बसाअ । शुणिण राजन जे हरष हेले प्राय ५३
जउतुक पदार्थ सज करि देला ।हाती रथी सेनापति पादान्ति बळ परा ५४
चारिशत रथरे पाणि द्रब्य देला ।गाइ महिषि अश्व जे सारेणी विलोहिला ५५
शाळग्राम सिनारू जीअन्ता बार लक्ष । शतेक रथरे जे नेइ देलेक तुरित ५६
झिअ जुआइङ्क संगरे चारि शत दासी । रथरे बसाइला होइण तोष मति ५७
दश दोष मागिण मेलाणि राजा हेला ।पाञ्च-जूण परिजन्ते गोड़ाइ अइला ५८
सेठारू फेरिण निज पुरे चळिगला । तहूँ दशरथ जे चळिण गले त्वरा ५९
बतिशराजा घरू कन्यामान नेले ।तिनि शत रथ घेनि कन्या माने चले२१६०
तिनि शत दासी कन्या घेनिण दशरथ । अनेक सैन्य बळ घेनिण संगत२१६१
रथी सेनापति जे पादान्ति बळ वहू । गाई महिषी हस्ती सारेणी बळ सेहू ६२

चारों कन्याओं को पैदल लेकर चली गयी और उन्हें उसी समय मर्दन मार्जन तथा स्नान कराकर उनका श्रृंगार किया। ४६-४७ षड़रस भोजन कराकर पान खिलाकर उन्हें शीघ्र ही पलंग पर बैठा दिया गया। ४८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके उपरान्त राजा दशरथ को नारियों ने सुगन्धित जल से स्नान कराकर नये स्वच्छ वस्त्र पहनाये और उन्हें राजोचित विधि से भोजन करवाया। ४९-२१५० उन्हें रत्न पलंग पर बैठाकर सुगन्धयुक्त पान खिला दिया। २१५१ चार सौ दासियाँ श्रृंगार करके सज गयीं। वशिष्ठ ने राजा को आज्ञा दी कि तुम कन्याओं तथा दामाद को रथ पर बैठाओ। यह सुनकर राजा प्रसन्न हुए से लग रहे थे। ५२-५३ हाथी, रथी, सेनापति, पैदलसिपाही आदि नाना प्रकार के पदार्थ सजाकर दहेज में दिये गये। चार सौ रथों में पेय पदार्थ दिये गये। गाय, भैंसे, घोड़े तथा बहलें इत्यादि भी प्रदान कीं। ५४-५५ बारह लाख जीवित शालिग्राम शिलायें तथा सौ रथ शीघ्र ही प्रदान किये। ५६ दामाद और कन्या के साथ चार सौ दासियाँ संतुष्ट होकर रथ पर बैठा दीं। ५७ दस दोषों को माँगकर राजा विदा हुए और पाँच योजन पर्यन्त उनके पीछे-पीछे चले आये। ५८ वहाँ से लौटकर फिर अपने नगर को लौटे और राजा दशरथ वहाँ से शीघ्र ही चल दिये। ५९ बत्तीस राजाओं के घरों से कन्याओं को लेकर तीन सौ रथो पर वह सब चल दिये। २१६० दशरथ के साथ कन्याओं को लिए हुए तीन सौ दासियाँ तथा अनेक सैनिक दल चले जा रहे थे। २१६१ रथी सेनापति, पैदलसिपाही, गाय, भैंस, हाथी, बहल आदि बड़े तड़क-भड़क से

चलन्ते गहळ जे अटइ बड़ टाण । मासे पाञ्च दिने मिळिले राज्ये पुण ६३
राजार आगरे चार कहिले जाइ करि । कुमर अइले तुम्भे शुण हे दण्डधारी ६४
बड़ सम्भर्वरे जे आसन्ति कुमर मणि । एथर स्वयंम्बरे जश कले पुणि ६५
इन्द्र धनु तोळिण नाराच बिन्धिले ।
चाळिशि सस्र राजा तुम्भ पुत्रंङ्क हिंसा कले ६६
छड परिजन्ते कलेक घोर रण ।चालिशि सस्र राजाङ्कु पुत्र जे एकाजाण ६७
सबु राजाङ्क सैन्यकु माइला तो नन्दन। कोड़िए सस्र राजाङ्कु हाणि पुण ६८
आउ जेते राजाए सैन्य बळ थिले । समस्ते पळाइले गोटिए न रहिले ६९
शुणिण नृपति जे परम तोष हेला । अनेक धन आणि बधाइ करि देला२१७०
उतसव मंगळ जे राज्यरे कराइले । अन्तः पुररे राणीमानंङ्कु कहिले२१७१
बेश होइ रथरे बसिला नृपबर । शीतळ गरम जळरे देखिला सैन्यबळ ७२
पुत्रकु देखिण जे परम तोष हेला ।पिताङ्कु देखि पुत्र ओलगि मेलाइला ७३
नन्दी ग्रामरे आसि होइले सैन्यबल । बड़ दाण्ड पुरिण चळिले धीर धीर ७४
सिंहद्वारे प्रवेश होइले जाइ करि ।अन्तः पुरू दासी गणे अइले शुणि करि ७५
सकळ बधु पुत्रकु मणाइ घेनि गले । राणी माने आसिण बन्दापना कले ७६
बतिश नवररे रखिले नेइ करि । आनन्दे बधुमाने दासीङ्कू संगे चळि ७७

चलकर एक माह पाँच दिनों में अपने राज्य में जा पहुँचे। ६२-६३ दूत ने महाराज अज के सामने जाकर समाचार दिया कि हे दण्डधारी आपके पुत्र बड़े वैभव के साथ आ रहे हैं। ६४ इस समय स्वयंवर में यश प्राप्त करके राजकुमार अत्यन्त गरिमा के साथ आ रहे हैं। ६५ उन्होंने इन्द्र धनुष उठाकर बाण छोड़ दिया। चालीस हजार राजा आपके पुत्र के साथ ईर्ष्या करने लगे। उन्होंने युद्ध बन्द होने तक घोर युद्ध किया। चालीस हजार राजाओं पर तुम्हारे पुत्र अकेले ही थे। ६६-६७ आपके पुत्र ने सभी राजाओं के सैनिकों को मार दिया और बीस हजार राजाओं को मार गिराया। ६८ और जितने राजाओं की सन्यवाहिनी थी वह सब भाग गयीं। एक भी नहीं बचा। ६९ यह सुनकर राजा को अत्यन्त संतोष हुआ। उन्होंने प्रचुर धन लाकर उसे बधाई में दिया। २१७० उन्होंने राज्य में मांगलिक उत्सव आयोजित किये और अंतःपुर में रानियों को समाचार दिया। २१७१ श्रेष्ठ राजा सुसज्जित होकर रथ पर बैठ गये। उन्होंने सैन्यदल को पसीने में लथ-पथ देखा। ७२ पुत्र को देखकर उन्हें अत्यन्त संतोष हुआ। पिता को देखकर पुत्र ने उन्हें प्रणाम किया। ७३ सैन्यवाहिनी नन्दीग्राम में जा पहुँची। राजमार्ग को आच्छादित करके धीर स्थिर भाव से चलते हुए वह लोग सिंहद्वार पर जा पहुँचे। सुनते ही अंतःपुर से दासियाँ आ गयीं। ७४-७५ वह सभी वधुओं तथा राजकुमार को सम्मान सहित ले गयीं और रानियों ने आकर उनकी आरती उतारी। ७६ उन्होंने बहुओं को बत्तीस

एमन्ते बेनि वरष सेथिरे बहिगला । पार्बती सदा शिव आगरे बिचारिले ७८
बोइला बेनि बरष उत्तारु कि कले । ईश्वर बोइले तुम्भे शुण देइ चित्त ७९
पूर्व दिगे वैतरणी तटरे एक नग्र ।गिरिजा मण्डल स्थाने बिधाता कले जाग२१८०
गंग बंश राजा जे सेथिरे नृपति ।बतिश पाटराणी ता चरणे खटिछन्ति२१८१
राणी मन बोध करि सेठारु अइला । पञ्चभूत आम्भरे मनरे बिचारिला ८२
बाहार जगति उपरे जाइ मिळि ।पात्र मंत्री सामन्त मिळिले आसि करि ८३
एमन्त समयरे काञ्चन नामे ऋषि । राजार सन्निधरे प्रवेश हेले आसि ८४
देखिण ऋषिङ्कि राजा नमस्कार कला । चरण पखाळि सिंहासने वसाइला ८५
राजार कुशळ जे पचारे मुनिबर । सकळ भल बोलि कहिले नृपबर ८६
गोटिक कथारे देवा मोर नाहिं सुख ।दुइ गोटि दुहिता मो कोळरे नाहिं पुत्र ८७
शुणि करि मुनिबर धीर करि कहि । दुहिता दान देले पुत्र उपुजइ ८८
तुहि एबे दुहिता ए दान दिअ ऐबे बेगे । एबे तोर बेनि पुत्र निश्चय होइबे ८९
राजन वोइले मुं जे तुम्भकु पचारि । स्वयंबर करिवि कि आपे वर वरि२१९०
उत्तर दिगरे जे अजोध्या कटकरे । तपन कुळ राजाङ्कु वंश रे२१९१
अज नामे नृपति राज्य भार सहि । ताहार कोळरे दशरथ जात होइ ९२

मन्दिरों मे ले जाकर रख दिया। वहुयें दासियों के साथ आनन्दपूर्वक चली गयीं। ७७ इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये। पार्वती ने शंकर जी के समक्ष विचार कर कहा कि दो वर्षो के अनन्तर क्या हुआ। शंकर जी ने कहा कि तुम ध्यान देकर सुनो। ७८-७९ पूर्व दिशा में वैतरणी नदी के तट पर एक नगर था। उस गिरिजामण्डल के स्थान में ब्रह्मा ने यज्ञ किया था। २१८० वहाँ के राजा गंग वंश के थे। उनकी वत्तीस पटरानियाँ चरण सेवा में रहती थी। २१८१ रानियों का मन संतुष्ट करके राजा वहाँ से अपने मन में विचार करते हुए बाहर जगती पर जाकर विराजमान हो गया सभासद, मंत्री तथा सामन्त आकर उससे मिले। ८२-८३ इसी समय कांचन नामक ऋषि राजा के निकट आये। ८४ राजा ने ऋषि को देखकर नमस्कार किया और उनके चरण धोकर उन्हें सिहासन पर बैठाया। मुनि श्रेष्ठ ने राजा से कुशलता का समाचार पूंछा। राजा ने कहा कि सब कुछ ठीक है। ८५-८६ केवल एक वात से मुझे सुख नहीं है। मेरे अंक में दो पुत्रियाँ है। पुत्र एक भी नहीं। ८७ यह सुनकर मुनिश्रेष्ठ ने धैर्य देते हुये कहा कि पुत्रियों का दान देने पर पुत्र उत्पन्न होगा। ८८ तुम अव कन्याओं का शीघ्र ही दान करो। तव तुम्हारे निश्चय ही दो पुत्र होंगे। ८९ राजा ने कहा कि मै आपसे पूँछता हूँ कि मैं स्वयंबर करूँ या स्वयं वर का वरण करूँ। २१९० मुनि ने कहा उत्तर दिशा में अयोध्या नगर में सूर्यकुल के राजा रघु के वंश में अज नाम के राजा राज्यभार को वहन कर रहे है। उनके अंक से दशरथ उत्पन्न हुये

धार्मिक सुन्दर जे अटन्ति सेहि पुण। बिभाकर दुहिता तांहाकु बरिण ९३
निष्कळंक सुर्ज्य बंश कळंक तहिं नाहिं। तपन कुळरे जात होइबे भावग्राहो ९४
असुर दुष्ट दळंकु करिबे से नाश। देबताङ्कठारू मुँ शुणिछि बिशेष ९५
एते कहि मुनि जे सेठारू चळि गले। अदृश्य होइण अन्तर्ध्यान हेले ९६
बाण राशि भुबने मिळिले ऋषि जाइ। सिंह द्वार बाटरे भितर पुरे जाइ ९७
सिंहासन परे शिब राजा बसिथिला। ऋषिङ्कि देखिण बहन उठिला ९८
भक्तिभावे मुनिंकु कला नमस्कार। चरण पखाळि देला आणि गंगा नीर ९९
रत्न सिंहासनरे नेइण बसाइले। तळरे कर जोड़ि राजन उभा हेले२२००
मुनि पचारिले राजा सर्ब कि कुशळ।पुत्र दुहिता राणी अछन्ति टिकि भल२२०१
परजा पाळि दुखी दरिद्रङ्कु दान। अन्न बस्त्र सदा बर्त्त देउकि प्रतिदिन २
राजन बोइले देब सबु कथा भल। दुइ बर्ष हेला पितृ दुःखी हेले मोर ३
नब बरष दुहिता दुहें जुबा हेले।तांकु बिभा न करिबारू पितृमो दुखी हेले ४
दुइ गोटि बालक अटन्ति मोर सान। प्रतिदिन मुँ पूजा करइ पंचानन ५
दुहितांकर कथा मनरे मोर चिन्ता। तांकु बिभा देले पितृङ्क सुख होन्ता ६
मुनि बोइले तोते कहिबा एबे शुण। अजोध्यार राजा सुर्ज्य बंशी जाण ७
सेहि राजा कोलरे जन्म दशरथ। दुइ गोटि चरण जे अष्ट गोटि हात ८

हैं। २१९१-९२ वह सुन्दर तथा धर्मशील हैं। उन्हीं को वरण करके पुत्रियों का विवाह कर दो। ९३ निर्मल सूर्यवंश कलंक से रहित है। सूर्य कुल में भावग्राही भगवान जन्म ग्रहण करेंगे। ९४ वह असुरों तथा दुष्टों का नाश करेंगे। यह मैंने देवताओं से सुना है। ९५ इतना कहकर मुनि वहाँ से चल दिये और अदृश्य होकर अन्तर्ध्यान हो गये। ९६ ऋषि वाराणसी राज्य में पहुँचकर सिंहद्वार से भीतर घुसे। ९७ महाराज शिव सिंहासन पर बैठे थे। वह ऋषि को देखकर शीघ्रता से उठ पड़े। ९८ उन्होंने भक्तिभाव से मुनि को नमस्कार किया और गंगाजल लाकर मुनि के चरण प्रच्छालन किये। ९९ उन्हें लेकर रत्न सिंहासन पर बैठाकर राजा नीचे हाथ जोड़कर खड़े हो गये। २२०० मुनि ने पूँछा हे राजन्! सब कुशल तो है। रानी, पुत्र तथा पुत्रियाँ सब ठीक तो हैं। २२०१ प्रजा का पालन करके दुःखी दरिद्रों को अन्न वस्त्र का सदावर्त, प्रतिदिन दान तो दे रहे हो। २ राजा ने कहा हे देव! सब कुछ ठीक है, परन्तु दो वर्ष से मेरे पिताजी दुःखी हैं। ३ नौ वर्ष की दोनों कन्यायें युवा हो गई हैं। उनके विवाह न करने के कारण मेरे पिता दुःखी हैं। ४ मेरे दो छोटे बालक हैं। मै प्रतिदिन पंचानन महादेव की पूजा करता हूँ। ५ पुत्रियों की वात से मेरे मन में भी चिन्ता है। उनका विवाह कर देने से पिताजी को सुख हो जायेगा। ६ मुनि बोले मै तुझसे कह रहा हूँ। उसे सुनो। अयोध्या के राजा सूर्यवंशी हैं। ७ उसी राजा के अंक से दशरथ का जन्म हुआ है। जिनके दो

दशरथ कोळे नारायण जे सम्भूत। चतुर्द्धा मुर्ति धरि श्रीहरि हेबे जात ९
से दशरथकु तोर कुमारी बिभा कर। बइमात्री माता जे होइबे हरिकर२२१०
तोर पितृ लोकंकु उद्धार करिबे। दुर्लभ शुख बुझि बैकुण्ठ पुण जिबे२२११
एते कहि मुनि जे सेठारू चळिगले। स्वर्गपुररे जाइ प्रवेश होइले १२
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। काशी राजा शुणिण हेले हर्षमति १३
विचारिला श्रीहरि जेबे जन्म हेबे। सेठारे दुहिता मुँ बिभादेबि भावे १४
मने बिचारि राजा पात्र मन्त्रीङ्क्कि कहिला। सामन्तमानंकु जे संगरे भेदि देला १५
दुइ गोटि रत्नमाळा अणिण राजा देला। दुइ गोटि रथरे तांकु बसाइला १६
बोइला जेउँ ठारे देखिब दशरथ। सेहिठारे वरण करिब त्वरित १७
शुणिण पात्र मंत्री सामंन्त चळिगले। अजोध्या नगरे जाइ प्रवेश होइले १८
से राजा इष्ट देबता विरंचि नारायण। देवंक सिंह द्वारे रहिले जाइ पुण १९
एमन्त समयरे रजनी परवेश। घड़िमारि चन्द्रमा होइले प्रकाश२२२०
सेते बेळे राजार कुमर दशरथ। नारायण दर्शनरे चळिले त्वरित२२२१
देबंकु दर्शन करि फेरि बार बेळे। मंत्री दुइ माळा नेइ लम्बाइले गळे २२
दशरथ पचारिले केउँ देशे घर। मंत्री बोइले काशी नग्ररे आम्भपुर २३
दशरथ बोइले कि काज्यें माळा देल। मंत्री बोइले शुण हे रघु दुलाळ २४

चरण और आठ हाथ है। ८ दशरथ के कुल में नारायण वासुदेव चार रूपों में जन्म ग्रहण करेंगे। ९ उन्ही दशरथ के साथ तुम अपनी कुमारियों का विवाह करो। वह भगवान की विमातायें होंगी। २२१० वह तुम्हारे पितरों का उद्धार करेंगी और दुर्लभ सुख भोगकर अन्त में स्वर्ग को जायेंगी। २२११ इतना कहकर मुनि वहाँ से चले गये और स्वर्ग लोक में जा पहुँचे। १२ हे भगवती! सुनो। इसके अनन्तर काशीराजा यह सुनकर प्रसन्नचित्त हो गये। १३ उसने विचार किया कि जब श्री भगवान जन्म लेगे तब तो मैं वहीं प्रेम-पूर्वक राजकुमारियों का विवाह करूँगा। १४ मन में विचार कर के राजा ने सभासद तथा मन्त्री से कहा और सामन्तो को उनके साथ भेज दिया। १५ राजा ने लाकर उन्हें दो रत्न मालाये दी और उन्हें दो रथों में बैठा दिया। १६ राजा ने कहा कि जहाँ पर भी दशरथ को देखना। वही उनको शीघ्रता से वरण कर लेना। १७ यह सुनकर सभासद, मंत्री तथा सामन्त चल दिये और अयोध्या नगर मे जा पहुँचे। १८ वह लोग राजा के इष्ट देवता विरंचि-नारायण भगवान के सिंहद्वार पर पहुँच गये। १९ इसी समय रात्रि हो गयी और एक घड़ी के उपरान्त चन्द्रदेव प्रकाशित हुए। २२२० उस समय राजकुमार दशरथ वेग सहित नारायण-दर्शन के लिए आये। २२२१ देव दर्शन करके लौटते समय मंत्री ने दोनो मालाये उनके गले में डाल दी। २२ दशरथ ने पूँछा कि आपका निवास किस देश में है। मंत्री ने कहा कि हमारा घर काशीनगर में है। २३ दशरथ ने कहा कि यह मालाये किस कार्य के लिए मुझे पहनायी हैं। मंत्री बोले

वाणराशि पुररे शिव राजा घर । दुहिता दान देबाकु पेशिले तुम्भपुर २५
सेहि कारणरू बरण आम्भे कलुँ । राजाङ्कठारू एहि आदेश पाइथिलुँ २६
शुणिण दशरथ आनन्द मन हेले । पात्र मंत्रीङ्क संगरे सेठारे रहिले २७
अज राजा आगरे चार जाइ कहि ।काशिराजा मंत्री आसि कुमर बरिनेइ २८
शुणिण राजन जे बशिष्ठ मंत्री घेनि । बिजेकले राजा देबार्चनरे पुणि २९
नाराय़ण दर्शन राजा जाइ कला । लेउटाणि बेळरे पुत्रकु देखिला२२३०
देखिण पुत्र नमिला पिताङ्क पय़रे । पात्र मंत्री सामन्त नमिले राजारे२२३१
बोइले काशी राजा बरिले पुत्रकु । दुइ गोटि दुहिता बिबाह देब तांकु ३२
शुणिण नृपति जे सन्तोष होइले ।प्रभातुँ जिबुँ बोलि मंत्रीङ्कि आज्ञादेले ३३
मंत्रीङ्कि बोइले एमानङ्क कर चर्चा । पुत्रंङ्क संगे रहिबार जेबे इच्छा ३४
एमन्त समय़रे गंग बंश मंत्री । रथरू ओल्हाइ प्रबेश हेले तथि ३५
दुइ गोटि रत्न माळा घेनि करि हस्ते । दशरथंङ्क गळारे लम्बाइ त्वरिते ३६
देखिण अजराजा पचारिले तांकु । केउँ देशरू तुम्भे आसि एठाकु ३७
पात्र मंत्री कहिले बिरजा मण्डळरू । गंग बंश राजा जे सेथिरे महामेरू ३८
दुइ गोटि दुहिता तांकर अछन्ति । तुम्भ पुत्रकु बिवाह देबे भाबिछन्ति ३९

हे रघुवंशी कुमार ! सुनो । २४ वाराणसी राज्य में महाराज शिवराज का घर है। उनकी पुत्रियों का दान करने के लिए उन्होंने हमें आपके नगर में भेजा है। इसी कारण से हमने आपका वरण किया है। हमें राजा से यही आदेश मिला था। २५-२६ यह सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया। वह सभासद और मंत्री के साथ में वही रह गये। २७ दूत ने जाकर महाराज अज से निवेदन किया कि काशिराज के मंत्री ने आकर कुमार का वरण किया है। २८ यह सुनकर महाराज वशिष्ठ तथा मंत्री को लेकर देव-पूजन के लिए उपस्थित हुए। २९ राजा ने जाकर भगवान के दर्शन किये और लौटते समय पुत्र से मिले। २२३० उन्हें देखकर कुमार ने पिता के चरणों में प्रणाम किया और सभासद मंत्री तथा सामन्तों ने भी महाराज को प्रणाम किया। २२३१ उन्होंने कहा कि काशीराजा ने कुमार का वरण किया है। वह दो राजकुमारियों का विवाह राजकुमार के साथ करेंगे। ३२ यह सुनकर महाराज संतुष्ट हो गये और उन्होंने प्रातःकाल चलने की मंत्री को आज्ञा दी। ३३ उन्होंने मन्त्री से कहा यदि इन्हे पुत्र के साथ रहने की इच्छा है। तो इनका स्वागत सत्कार करो। ३४ इसी समय गंग वंश का मंत्री रथ से उतर कर वहाँ आ पहुँचा। ३५ दो रत्न-मालायें हाथ में लेकर उसने शीघ्र ही दशरथ के गले में डाल दीं। ३६ यह देखकर महाराज अज ने पूँछा कि आप लोग यहाँ किस देश से आये हैं। ३७ सभासद तथा मंत्री ने कहा कि हम विरजामण्डल से आये हैं। यहाँ के गंग वंशीय राजा मेरु पर्वत के समान श्रेष्ठ है। ३८ उनके दो पुत्रियाँ है। वह आपके पुत्र से

अज राजा बोइले एठारे तुम्भे रह। काशिराजा रहिला आगे करि स्नेह२२४०
संग होइण जिब काशीपुर जाए। आगे सेठि विवाह होइब हेला थए२२४१
सेठारू बिभा सरिले तुम्भपुरे जिब।तुम्भ राज कन्यांकु विभा होइण आसिब ४२
ताहा शुणि वेनि कुळ हरष होइले। पात्र मंत्री वशिष्ठङ्क संगरे रहिले ४३
राजनीति प्रकारे भोजन तहिं कले। निश्चिन्त भावे तहिं रजनी कटाइले ४४
प्रभातरू स्नाहान शउच होइ पुण। दिव्य रत्न माळा जे अणाइं वहन ४५
ऋषि सामन्त घेनि बसिले रथरे। दशरथ वसिले एइ आसनरे ४६
चतुरंग बळ संगरे घेनि गले। तिनिदिने वाणराशि नग्ररे मिळिले ४७
देखिण काशिराजा हरष होइले। सेहिदिन मंगळ विधान तहिं कले ४८
राज्यरे उत्सव कराइ राजन। अपसरी किन्नरी नृत्य कले पुण ४९
बाद्य निशाणरे पुरिला जगत।दासीगणे आसि पाणि तोळिले त्वरित२२५०
कळावती धेनुवती दुइ कन्या पुण। स्नाहान कराइले रजनी शेषेण२२५१
बिधि विधानरे दशरथ स्नान कले। बर वेश होइ रत्न वेदीरे वसिले ५२
वरण पूजा सारि कन्यांकु अणाइले। लवण चमरी करि कन्या फेरि गले ५३
बेशभूषण करिकन्याकु आणि पुण। रतन वेदीरे वसाइ तक्षण ५४

उनका विवाह करने के लिए सोच रहे है। ३९ महाराज अज ने कहा कि काशी-राजा यहाँ पहले से ही प्रेम के साथ रुके हैं। आप भी यही रह जायें। २२४० काशीनगर तक आप भी साथ चलें। पहले वहाँ विवाह होगा। २२४१ विवाह समाप्त होने पर वहाँ से आपके नगर को चलेंगे और आपकी राजकुमारियो के साथ विवाह करके लौट आयेंगे। ४२ यह सुनकर दोनों लोग प्रसन्न हो गये। सभासद और मंत्री वशिष्ठ के साथ रह गये। उन्होंने वही राजोचित प्रकार से भोजन किया और निश्चिन्त होकर रात्रि व्यतीत की। ४३-४४ प्रातःकाल से ही शौच और स्नान से निवृत्त होकर और शीघ्र ही दिव्य रत्नों की मालायें मँगाकर ऋषि सामन्त को लेकर रथ पर बैठ गये और उसी आसन पर दशरथ भी बैठे। ४५-४६ चतुरंगिनी सेना को साथ में लिये हुए वह तीन दिनों में वाराणसी नगर में जा पहुँच। ४७ यह देखकर काशिराज प्रसन्न हो गये और उन्होंने उसी दिन मांगलिक विधान किया। ४८ राजा ने राज्य में उत्सव आयोजित किये। अप्सराओ तथा किन्नरियों ने नृत्य किये। ४९ नाना प्रकार के वाद्य-नाद से वातावरण गूँज उठा। दासियों ने आकर शीघ्र ही जल उठाया। २२५० रात्रि व्यतीत होने पर उन्होने कलावती तथा धेनुवती दोनों कन्याओं को स्नान कराया। २२५१ फिर वैदिक विधान से दशरथ ने स्नान किया और वरवेश धारण करके रत्न वेदी पर विराजमान हो गये। ५२ वरण पूजा समाप्त हो जाने पर कन्याओ को बुलाया गया और लवण-चमरी विधि को समाप्त करके कन्या लौट गयीं। ५३ फिर श्रृंगार तथा आभूषणों से सुसज्जित कन्याओं को

शिररे मुकुट बान्धि शिलारोहण कले। बर कन्याङ्कर हस्त कुशरे बान्धिले ५५
रतन झरिरे पाणि देलेक राजन। गाई महिषी अश्व सारथि रथी पुण ५६
पाणि द्रव्य दुइसस्र देले सेहि राजा। एमन्ते अनेक धन देइ कले पूजा ५७
हस्त गण्ठि फिटाइण होमबिधि कले। होमसारि बेदीपरू बरकन्या नेले ५८
अन्तःपुरे प्रबेश होइले जाइ करि। बन्दापना कले जे राणी हंसमिळि ५९
दासीमाने जुअ खेळाइ हास्य कले। बसि बर कन्या एकापत्रके भुञ्जिले२२६०
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती। चारिदिने चतुर्थी कलेक नृपति२२६१
लाजाहोम सारिले बिप्र ऋषिगण। से दिन नृपति जे देले बहूदान ६२
बिप्र ऋषिमानंकु भरि भोजन देले। समस्तंकु संतोषरे भोजन कराइले ६३
दुःखी दरिद्रमानंकु देलेक अन्नबस्त्र। तेबे से संतोष होइले नृपईश ६४
एथु अनन्तरे पार्वती देबीशुण। षड़रसे झिअ ज्वाइँ कलेक भोजन ६५
आचमन सारिण दशरथ गले। रतन पळंक उपरे बिजे कले ६६
दुइ कन्यांकु दासीमाने कले बेश। अर्घ्य स्थाली करे घेनिले प्रीति बास ६७
धीरे धीरे कन्या दुहें जान्ति लज्याकरि। दशरथङ्क छामुरे प्रबेश सुन्दरी ६८
दशरथंकु देखिण बन्दापना कले। मान्य धर्म होइण छामुरे उभा हेले ६९

बुलाकर उसी समय उन्हें रत्नवेदी पर बैठाया गया। ५४ सिर में मौर बाँधकर शिलारोहण करके वर-कन्याओं के हाथ कुश से बाँध दिये गये। ५५ तब रत्नझारी से राजा ने जल डालकर गाएँ, भैंसे, घोड़े, सारथी, रथी तथा दो हजार पेय पदार्थ दान किये। इस प्रकार प्रचुर धन देकर राजा ने पूजा की। ५६-५७ हस्तग्रन्थि को खोल कर हवन की विधि सम्पादित की गई। होम की समाप्ति पर वर-कन्या को वेदी से ले जाया गया। ५८ उन लोगों के अन्तःपुर पहुँचने पर रनिवास की रानियों ने मिलकर उनकी आरती उतारी। ५९ दासियों ने हास-परिहास के साथ द्यूतक्रीड़ा कराई। फिर बैठकर वर-कन्याओं ने एक पात्र में भोजन किया। २२६० हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् राजा ने चौथे दिन चतुर्थी विधान पारित किया। २२६१ ऋषि और ब्राह्मणों ने लाजा-होम सम्पादित किया। राजा ने उस दिन बहुत दान दिया। ६२ ऋषियों तथा ब्राह्मणों को अनेक पदार्थ भोजन में दिये और सभी लोगों को सन्तुष्ट होकर भोजन कराया गया। ६३ दुखी-दरिद्रों को अन्न, वस्त्र प्रदान करके राजा सन्तोष को प्राप्त हुए। ६४ हे देवी पार्वती सुनो। इसके अनन्तर दामाद तथा कन्याओं को षड्रस भोजन कराया गया। ६५ आचमन करके राजा दशरथ जाकर रत्न पर्यङ्क पर विराजमान हो गये। ६६ दासियाँ दोनों कन्याओं का शृंगार करके अर्घ्य की थाली प्रेमपूर्वक लेकर चलीं। ६७ धीरे-धीरे दोनों सुन्दरी कन्याएँ लाज से भरी हुई दशरथ के समक्ष पहुँचीं। ६८ दशरथ को देखकर उन्होंने उनकी आरती पूजा की और सम्मान सहित सामने खड़ी हो

आलट पंखा धरि पकान्ति दासी गण । चउपाशे माणिक्यर दीपजळे पुण२२७०
हरषे दशरथ पलंकु उठिले । दुइ कन्यांकु कोळ करिण घेनि गले२२७१
पलङ्कु उपरे नेइण बसाइले । मुखे चुम्बन देइ कुच मर्दन कले ७२
गउरब देखिण दासीए फेरिले । कबाट फेड़िण जे प्रांगणे शोइले ७३
निशवद हेबारू दशरथ पुण । कळाबती निविबन्ध फिटाइ तक्षण ७४
रतिरस कामिनी संगरे पुण कले । बिन्ध्य गिरि शिषरू बिन्दु जे खसिले ७५
कळाबती बसन पिन्धि दृढ़ करि । श्रमपाइ पलंक पहुड़िला नारी ७६
धेनुबती कि कोळे धरि करन्ति क्रीड़ा पुण ।
रजनी शेष होइला काक कले स्वन ७७
दासी माने आसिण कन्याङ्कु घेनि गले। मर्दन माजणा करि स्नान वढ़ाइले ७८
नूतन बसन पिन्धि बेश हेले त्वरा । अमृत भोजन कले होइण तत्परा ७९
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती । रति श्रम पाइ दशरथ शोइछन्ति२२८०
दासी गणे जाइण तोळिलेक पुण । केते बेळ जाएँ निद्रा जाइछ आपण२२८१
शुणिण निद्रा तेजि दशरथ उठि । नारायण सुमरणा प्रभातुँ कलेटि ८२
मर्दन माजणा जे दासो माने कले । सुबासित जळरे स्नान कराइले ८३
नाना रंगे बेश साजि नटबर मूर्तिकले । दिव्य अळंकार रत्न भूषण से हेले ८४

गयीं । ६९ दासियाँ व्यजन तथा पंखे डुलाने लगीं । चारों ओर मणिमय दीप जल रहे थे । २२७० दशरथ प्रसन्न होकर उठे और दोनों कन्याओं को गोद में उठाकर ले गये । २२७१ दशरथ ने उन्हें ले जाकर पलंग पर बिठाया और उनका मुख-चुम्बन करके उनके कुच मर्दन किये । ७२ यह कृत्य देखकर दासियाँ लौट गयीं और द्वार बन्द करके प्रांगण में सो गयी । ७३ एकान्त होने पर दशरथ ने कलावती के कटिबन्ध को खोलकर उसी समय कामिनी के साथ रमण किया । विन्ध्य गिरि शिखर तुल्य दशरथ का वीर्य स्खलित हो गया । ७४-७५ कलावती दृढ़तापूर्वक वस्त्र पहनकर श्रमित होकर पलंग पर लेट गई । ७६ फिर वह धेनुवती को गोद में लेकर उससे रतिक्रीड़ा करने लगे । रात्रि समाप्त हो गई और कौवे कोलाहल करने लगे । ७७ दासियाँ आकर कन्याओं को ले गयी और उन्होंने मर्दन मार्जन करके उन्हें स्नान कराया । ७८ नवीन वस्त्रों को धारण करने से उनका वेश और अधिक निखर आया । फिर उन्होंने तत्पर होकर अमृतमय भोजन किया । ७९ हे पार्वती ! सुनो । इसके पश्चात् रतिक्रीड़ा से श्रमित होकर दशरथ सो गये । २२८० उन्हें दासियों ने जाकर उठाया और कहा कि आप कितनी देर तक सो गये । २२८१ यह सुनकर दशरथ निद्रा को त्याग कर उठ बैठे और प्रभातकाल में भगवान का स्मरण करने लगे । ८२ दासियों ने मर्दन मार्जन करके सुगन्धित जल से स्नान कराया । ८३ नाना प्रकार से उनका शृंगार करके उनका दिव्य वेष सजा दिया और फिर

अन्तः पुरकु दशरथ गले धीर होइ। षड़ रसे भोजन करिलेक तहिं ८५
मुख पखाळन्ते जे बिड़िआ भुञ्जाइ।आड़ उहाड़े राणीमाने देखिलेक जाइँ ८६
सेठारू दशरथ बेगे चळि गले। बशिष्ठ ऋषिङ्कु पाशे प्रबेश होइले ८७
ऋषिङ्कि देखिण जे नमिखे पयरे।ऋषि बोलिले जिबा गिरिजा कटकरे ८८
एमन्त समयरे राजन जाइ मिळि। देखिण दशरथ मान्य धर्म करि ८९
बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण नृपबर।आम्भे जाउ अछुँ जे गिरिजा नामे पुर२२९०
गंग बंश नृपति करिछि बरण।तुम्भ बरण आगे ताङ्क बरण पच्छे पुण२२९१
आग तुम्भ घरे जेमामणि ब्रिभा हेले। तहिँ जाउछूँ बिभाघर हेब भले अ९२
हरषे नृपति मेलाणि तांकु देले। सन्तोषे दशरथ रथरे बसिले ब९२
पात्र मंत्री ऋषि जे बसिले रथे जाइ। चळिलाक रथ जे धीर धीर होइ ९३
बाहार पुर भितरे राजन परबेश। राणी मानंकु कहिले सकळ सन्देश ९४
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। दशरथ प्रबेश गिरिजा नामे पुरी ९५
चार जणाईला जे राजांङ्क आगर।पात्र मंत्री घेनि आसिले देखिलुँ बाटर ९६
शुणिण राजन जे बेश भूषण हेले। रथर परे जाइ बेग से बसिले ९७
बैतरणी कूलरे बरकू भेट पाइ। देखिण दशरथ नमस्कार होइ ९८

उन्होंने दिव्य अलंकार तथा रत्नों के आभूषण धारण किये। ८४ दशरथ धीर भाव से अन्तःपुर को गये और वहाँ उन्होंने षड्रस भोजन किया। ८५ मुख-मार्जन कराकर उन्हें पान खिलाया गया। रानियों ने आड़ में जाकर उनके दर्शन किये। ८६ वहाँ से शीघ्र ही दशरथ चलकर ऋषि वशिष्ठ के पास आ पहुँचे। ८७ ऋषि को देखकर वह उनके चरणों में नतमस्तक हो गये। ऋषि ने उनसे गिरिजाकटक चलने के लिए कहा। ८८ इसी समय राजा उनके निकट आये। यह देखकर दशरथ ने उनका आदर सत्कार किया। ८९ वशिष्ठ ने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! सुनो। हम लोग गिरिजा नामक नगर को जा रहे हैं। २२९० गंग वंश के महाराज ने वरण किया है। पहले आपके यहाँ का वरण मिला। उसके पश्चात् उन्होंने वरण किया। २२९१ पहले आपके घर की राजकुमारियों से विवाह हुआ। अब हम वहाँ जा रहे हैं। वहाँ भी भलीभाँति विवाह होगा। ९२अ प्रसन्नतापूर्वक राजा ने उन्हें विदा दीं। फिर सन्तुष्ट होकर दशरथ रथ पर आसीत हो गए। ९२ब सभासद, मंत्री तथा ऋषि आदि भी रथ पर जा बैठे। धीर स्थिर भाव से रथ चलने लगा। ९३ बाहरी महल के भीतर राजा प्रविष्ट हुए और उन्होंने रानियों से सब कुछ बता दिया। ९४ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके अनन्तर दशरथ गिरिजा नाम की नगरी में प्रविष्ट हुए। ९५ दूत ने जाकर राजा को समाचार दिया कि मैंने मार्ग में सभासद मंत्रियों को साथ लाते हुए दशरथ को देखा है। ९६ यह सुनकर राजा सुसज्जित होकर शीघ्र ही रथ पर जा बैठा। ९७ वैतरणी नदी के तट पर उनकी वर से भेंट हो

बाट वरण राजा सेठारे कराइले । वाद्य निशाण उत्सबे नवरे चळे धीरे ९९
सिंह द्वारे राजा जे होइले प्रवेश । मंत्रीङ्कि डकाइण कहिले सन्देश २३००
बोइले समस्तङ्कु चरचा वेगे कर । अन्तःपुरे प्रवेश कर जा सत्वर२३०१
चित्रपटट नवरर बरकु नेइ रख । सुखरे चरचिवु वर पाइवे सुख २
ऋषि विप्र पात्र सामन्त जेते छन्ति । विपुळ घरे रखिण कर मन शान्ति ३
शुणिण मंत्री वर निश्चिन्ते रखिला । एथु अनन्तरे तुमे शुण गो गोउरा ४
मंगळ उत्सव जे राज्यरे कराइला ।देवता पूजा करि देवी कि वन्दाइला ५
तोळा पाणि अणाइ कन्याकु कले स्नान । रजनी शेष हुअन्ते मंगळ विधि पुण ६
गिरिजा मण्डळरे उत्सब आनन्द । नटकारी अपसरी अइले नारी वृन्द ७
दश रथंकु वेश करि नवरे घेनि गले । रत्न वेदी उपरे नेइण वसाइले ८
ऋषि बिप्रगण जे वेद ध्यान कले ।वरुण पूजा सारि लवण चामरी कले ९
वेनि कन्या वेश करि आणिले वेदी पर । दुइ कन्या बसिले दशरथंक पाशर२३१०
रत्न मुकुट शिरे बांन्धिले तिनि करि । शिळा वरण सारिणवंधन कुशे करि२३११
रत्न शंखरे नीरे देले जे राजन । अनेक धन रत्न हस्ती घोड़ामान १२
गाई मइँषि पादान्ति सारेणि सेनापति । पाणि द्रव्य वतिश सहस्र रथद्रूयन्ति १३

गई । दशरथ को देखकर उन्होंने नमस्कार किया । ९८ राजा ने वहाँ वाट-वरण किया । फिर वह सव वाद्य-निनाद करते हुए समारोह के साथ धीरे-धीरे नगर की ओर चल दिये । ९९ राजा सिंहद्वार पर जा पहुँचे । उन्होंने मंत्री को वुलाकर संदेश कहा कि शीघ्र ही जाकर सबका स्वागत सत्कार करो । अंतःपुर में शीघ्रता से पहुँचकर वर को कलापूर्ण चित्रित महल में ले जाकर रखो । सुख-पूर्वक वर की सेवा करोगे तो उन्हें सुख मिलेगा । २३००-२३०१-२ ऋषि, ब्राह्मण, सभासद और सामन्त आदि जितने भी है । सवको विशाल गृह में रखकर उनका मन शान्त करो । ३ यह सुनकर मंत्री ने निश्चिन्त होकर उन सवों की व्यवस्था की । हे पार्वती ! सुनो । इसके पश्चात् राजा ने मांगलिक उत्सव कराकर देवताओं की पूजा करके देवियों की अर्चना की । ४-५ मांगलिक जल उठाकर उन्होंने कन्याओं को स्नान कराया और रात्रि समाप्त होने पर मांगलिक विधि सम्पादित की । ६ गिरिजामण्डल के आनन्दोत्सव में नृत्य करने वाली अप्सराये आयी । नारियों ने दशरथ का शृंगार किया और उन्हें महल में ले गई । उन्हें ले जाकर रत्नवेदी पर बैठा दिया । ७-८ ऋषि और ब्राह्मणों ने वेद पाठ करके वरुण पूजा तथा लवण-चामरी विधि पूर्ण की । ९ दोनों कन्याओं का शृंगार करके वेदी पर लाकर उन दोनों को दशरथ के पास बैठा दिया । २३१० तीनों के सिरों पर रत्नों के मुकुट वाँध दिये और फिर शिलावरण के उपरान्त कुश द्वारा हस्त वन्धन किया । २३११ राजा ने रत्न-शंख में जल डालकर वहुत सा धन तथा रत्न, हाथी, घोड़े, गाय, भैंसे, पैदल सिपाही, वहल सेनापति तथा वत्तीस हजार रथों में भर कर पेय पदार्थ दान किये । १२-१३ इस प्रकार गंग वंशीय राजा ने द्रव्य

एमन्ते गंग बंश राजन द्रव्य देला ।वर कन्याङ्कर कुश बन्धन फेड़ि देला १४
होम विधि बढ़ाइण बिभा जे सारिपुण। अन्तःपुर भितरकु कले से गमन १५
दासी माने आसिण मणाइ घेनि गले। भितरे पुररे नेइ पशा खेळा इले १६
पश खेळ सरन्ते अइले राणी हंस।झिअ जुआइँ बन्दापना कलेक बिशेष १७
अनेक धन रत्न जउतुक देले।बर कन्या एक स्थाने भोजन कराइले १८
आनन्दरे उत्सब करान्ति प्रतिदिन। एमन्ते चारि दिन गलाक बहि पुण १९
चतुर्थी दिनरे जे लज्जा होम कले। छड़रस भोजन कलेक कन्या बरे२३२०
रत्नघर भितरकु दासीगण गले। रत्न पलंकरे दशरथ जे बसिले२३२१
बिड़िआ मुञ्जिण जे हास्य रस कहि। भितरे प्रबेश हेले दासी माने जाइँ २२
नीळाबती ज्योतिबती दुहिङ्कि बेशकरि। संगरे दासीमाने घेनिण गले चळि २३
दुइ कन्या दुइ जे चामर धरि पुण। स्वामीङ्कर पाशे जाइ प्रबेश होइण २४
चामर मान रखि ओलगि जे हेले। पुण चामर धरिण छामुरे झाळिले २५
दासीमाने आलट बिञ्चणी पंखा बिञ्चि। दशरथ देखिण होइले मने खुसि २६
पलंङ्कपरू उठि कन्याङ्कु कोल कले। आलिंगन करिण पाशरे बसाइले २७
मुखे चुम्बन देइ मर्दिले कुच्च पुण। अन्तर होइगले जाणि दासी गण २८
बाहार प्राङ्गणरे दासीगण शोइ। अन्तर हेबारू दशरथ तोष होइ २९

प्रदान करके वर-कन्या के कुश बन्धन को खोल दिया। १४ हवन की विधि सम्पादित करके विवाह को समाप्त करके वह अन्तःपुर के भीतर चले गये। १५ दासियाँ आकर उन्हें सम्मान के साथ भीतर वाले घर में ले गयीं और उन्हें द्यूतक्रीड़ा करवायी। १६ पाँसे का खेल समाप्त होने पर रनिवास की रानियाँ आ गयीं और उन्होंने विशेष प्रकार से कन्याओं तथा दामाद की आरती पूजा की। १७ नाना प्रकार के रत्न तथा धन दहेज में देकर उन्होंने वर-कन्या को एक स्थान पर बैठाकर भोजन कराया। वह प्रतिदिन आनन्दोत्सव मनाती थीं। इस प्रकार चार दिन व्यतीत हो गये। १८-१९ चतुर्थी के दिन लाजा होम कराकर वर-कन्या को उन्होंने षड्रस भोजन कराया। २३२० दासियाँ रत्न गृह के भीतर गयीं और दशरथ रत्न-पलंग पर बैठ गये। २३२१ उन्हें पान-खिलाकर हास-परिहास करती हुई दासियाँ भीतर चली गयीं। २२ नीलावती तथा ज्योतिवती दोनों का श्रृंगार करके उन्हें साथ लेकर दासियाँ चल पड़ीं। २३ दोनों कन्यायें दो चामर धारण करके पति के पास जा पहुँचीं। २४ चामर रखकर उन्होंने प्रणाम किया और फिर चामर लेकर सामने से उन पर डुलाने लगीं। २५ दासियाँ व्यजन तथा पंखा लेकर डुलाने लगीं। यह देखकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया। २६ उन्होंने पलंग से उठकर कन्याओं को गोद में लेकर आलिंगन किया और अपने पास बैठा लिया। २७ उन्होंने उनका मुख चुम्बन करके उनके कुच-मर्दन किये। यह देखकर दासियाँ छिप गयीं। २८ वह लोग बाहर प्राँगण में जाकर सो गयीं। एकान्त हो जाने पर दशरथ संतुष्ट

नीळाबतीर नीबि बन्ध फिटाइले। रति रंग विविध छन्दरे से कले२३३०
बीर्ज्य खसिबारू तेजिले नारीवर। ज्योतिवतीकि तहुँ स्नेहे कले कोळ२३३१
ज्योति बतीर संगे रति रंग रस। करू करू रजनी होइगला शेष ३२
काक राबिबारू दासीगण गले उठि। नीळावती ज्योतिवतीङ्कु नेले सेटि ३३
अन्तःपुरे नेइण माजणा विधिकले। सुबासित जळरे स्नान कराइले ३४
नित्य कर्म सारिण भोजन से करि। षड़रस भोजनरे तृपति दुइ नारी ३५
रत्न पलंकरे बसिले से जाइ। बिड़िआ भोजन करि अळ्प सेनिद्रा जाइ३६
एथु अनन्तरे शुणगो हैमबंती। दशरथङ्कु घेनि गले दासी पन्ति ३७
मर्दन माजणा करि स्नान कराइले। नूतन वस्त्र पिन्धि तिळक लागि हेले ३८
षड़रसे भोजन कराइले नेइ। आचमन कराइ विड़िआ भुंजाइ ३९
रत्न पलंक उपरे नेइण बसाइले। राजविधि बेश दशरथंकु कराइले२३४०
नानाबिध अळंकार शरीरे खंजिदेले। देवता प्राय़ दशरथ विराजिले२३४१
बेश होइ दशरथ बाहारकु गले। बशिष्ट ऋषिङ्कु नमस्कार हेले ४२
गंगबंश राजाङ्कु कलेक नमस्कार। बशिष्ठ बोइले बेगे चाल रे कुमर ४३
कनक ध्वज रथ उपरे विजे कर। शुणिण दशरथ चळि गले खर ४४

हो गये। २९ उन्होंने नीलावती का कटिवन्धन खोलकर उसके साथ विविध आसनों से रतिक्रीड़ा की। २३३० वीर्य स्खलित होने पर उन्होंने उस श्रेष्ठ रमणी को त्याग दिया और फिर प्रेम से उन्होंने ज्योतिवती को गोद में उठा लिया। २३३१ ज्योतिवती के साथ रमण करते-करते रात्रि समाप्त हो गयी। ३२ कौवों के कोलाहल करने पर दासियाँ उठीं और नीलावती तथा ज्योतिवती को वहाँ से अन्तःपुर में ले जाकर उन्होंने विधि-पूर्वक उनका मार्जन कराकर सुगन्धित जल से स्नान कराया। ३३-३४ नित्यकर्म समाप्त करके दोनों कामिनियाँ षडरस भोजन करके तृप्त हो गयी और रत्न पलंग पर जाकर बैठ गयी। फिर वह लोग पान खाकर थोड़ा सो गयी। ३५-३६ हे हिमांचल-नन्दिनी ! सुनो। इसके पश्चात् दासियाँ दशरथ को ले गयी। उन्होंने उनका मर्दन मार्जन कराकर स्नान कराया तथा नवीन वस्त्र पहनाकर उनके तिलक लगा दिया। ३७-३८ उन्हें षडरस भोजन कराके आचमन करवाया और पान खिला दिया। फिर ले जाकर दशरथ को रत्न पलंग पर बैठाकर राजोचित विधि से उनका शृंगार किया। ३९-२३४० उन्होंने नाना प्रकार के आभूषणों से दशरथ को सुसज्जित किया जिससे वह देवता के समान सुन्दर दिखाई देने लगे। २३४१ दशरथ शृंगार करके बाहर गये और उन्होंने महर्षि वशिष्ठ को नमस्कार किया। ४२ फिर उन्होने गंग वंशीय राजा को नमस्कार किया। वशिष्ठ ने कहा राजकुमार ! शीघ्र ही चलो। ४३ उन्होने दशरथ को कनकध्वज रथ पर बैठने की आज्ञा दी। यह सुनकर वह शीघ्रता से जाकर कनकध्वज

कनक ध्वज रथ उपरे बसिले। गंगबंश राजाङ्कु बशिष्ठ कहिले ४५
बेगे आम्भङ्कु विदाय कर हे राजन। शुणि नरपति चळिले बहन ४६
बेश करि दुहिता समर्पि देले अणि। दुइ शत दासी संगरे देले पुणि ४७
जउतुक पदार्थ सम्भव करि देले। हाती रथी पाइक संगरे गमिले ४८
बाद्यर शबदरे पुरइ जगत। बिरजा मण्डळरु बाहार दशरथ ४९
कोळरे दुइ कन्या आगरे दासीगण। आलट चामर पंखा पकान्ति सेहू पुण२३५०
बैतरणी पार होइ मेळ होइ गले। मेलाणि मागि राजा निज राज्ये गले२३५१
से ठारु दशरथ काशी देशे मिळि। देखिण काशी राजा आनन्द मने भाळि ५२
जउतुक द्रव्यमान बेगे आणि देला। दुहिताङ्कु बेश करि नेइण समर्पिला ५३
बढ़ाइ संम्भर्वरे चळे दशरथ। संगरे गंगा कूळकु अइले काशीनाथ ५४
आपणार राज्यरे प्रबेश सात दिने। चार जणाइले राजा आगरे तक्षणे ५५
अति सम्भर्वरे जे अइले कुमर। प्रवेश होइले आसि सरजु नदी तीर ५६
आनन्दे अज नृपति बहन चळिले। उज्जवल गिरि तळरे पुत्रकु भेटिले ५७
रथरु ओल्हाइण कुमर बेगे आसि। पिताङ्कु चरणे नमिले बिशेषि ५८
देखिण नृपति हरषमन हेले। चतुरंग बळ नन्दिग्रामरे रखिले ५९

रथ पर बैठ गये। तब वशिष्ठ ने गंग वंश राजा से कहा। ४४-४५ हे राजन्! अब हमें शीघ्र ही विदा दें। यह सुनकर राजा द्रुतगति से चल दिये। ४६ उन्होंने श्रृंगार करके दो सौ दासियों के साथ दोनों पुत्रियों को लाकर समर्पित कर दिया। ४७ यथा सम्भव दहेज का सामान भी दिया। हाथी, रथी, दूत सभी साथ में चलने लगे। ४८ वाद्य-निनाद से वायुमण्डल गूँज उठा और दशरथ विरजामण्डल से बाहर निकल पड़े। ४९ आगे-आगे दासियाँ व्यजन चामर मुरछल डुला रहीं थीं। उनकी गोद में दोनों राजकुमारियाँ थीं। २३५० वैतरणी नदी को पार करके सब एकत्रित हो गये और राजा विदा माँगकर अपने राज्य को चले गये। २३५१ वहाँ से दशरथ बनारस जा पहुँचे। उन्हें देखकर काशिराज ने मन में प्रसन्न होकर शीघ्र ही दहेज की सामग्री लाकर दी और कन्याओं को श्रृंगार करके समर्पित कर दिया। ५२-५३ दशरथ बड़े समारोह के साथ चल दिये। काशी महाराज गंगा तट तक साथ में आये। ५४ सात दिनों में वह लोग अपने राज्य में प्रविष्ट हुए उसी समय दूत ने जाकर महाराज अज के समक्ष निवेदन किया। ५५ राजकुमार दशरथ बड़े तड़क-भड़क के साथ सरयू नदी के किनारे पर आ गये है। ५६ राजा अज आनन्दपूर्वक त्वरित गति से चलकर उज्जवल पर्वत के नीचे पुत्र से मिले। ५७ रथ से उतरकर दशरथ कुमार ने शीघ्रता से चलकर पिता के चरणों में प्रणाम किया। ५८ राजा का मन उन्हें देखकर प्रसन्न हो गया। उन्होंने चतुरंगिनी

पुत्र वधु घेनि निज नबरे प्रवेश। दासी गणे भितरकु नेले होइ हर्ष२३६०
दुइ नबरे जाइ रहिले वधू गण। एठारु दशरथङ्क विभा हेले पुण२३६१
पार्वती बोइले देब तुम्भे एबे शुण।दशरथ राजाङ्कर सातश पंचाश राणी जाण६२
बतिश बरष जे दशरथङ्कु पुण। दश सस्र वर्षरु सस्रे वर्ष उणा जाण ६३
दश वर्ष पुरिले मरिबे अजराजा। ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो गिरिजा ६४
पुत्रङ्कु किम्पा राज्यरे न कले से राजा। पुत्रर सामर्थ्य जहूँ देखिले पुण राजा ६५
एथिरे तिनि बरष काळ बहि गला। अजोध्या नग्रे पुत्रकु अभिषेक कला ६६
षड़ मास पर्य्यन्ते रवीर नन्दन। जम्बू द्वीप देखिवाकु कले से गमन ६७
फेरिण शुन्यरे से देखिले सबु स्थान। अजोध्या नगरकु चाहिँले शनि पुण ६८
अज नामे नृपति पशा खेळु थिला। ताठारे काळ देवता नजर पड़िला ६९
चित्रगुपतकु पचारे जन्तुपति। ए राजार अटइ जे वड़ तेज मूर्ति२३७०
चित्रगुप्त कहिले शुण दण्डधारी। तपन कुळर राजा अंश जे तुम्भरि२३७१
सूरबन्त नामरे एकइ रवि पुण। छायावती ठारु पुत्र जात हेला जाण ७२
से पुत्र नाम देला इन्दुर शनि जाण।पाप पुण्य बुझिण प्राणीङ्कि दण्डे जाण ७३
ईश्वरङ्कु पुत्र संगे विमना होइला। काळे गणपतिर वाहन होइला ७४

सेना को नन्दीग्राम में रख दिया। ५९ पुत्रवधुओं को लेकर वह अपने महल में प्रविष्ट हुए जिन्हें दासियाँ हर्ष के साथ भीतर ले गयी। २३६० वहुओं को दो महलों में रख दिया गया। यहाँ दशरथ के विवाह पूर्ण हो गये। २३६१ पार्वती जी बोली, हे देव! अब आप सुनिए। राजा दशरथ के सात सौ पचास रानियाँ हो गयी। ६२ दशरथ के वत्तीस वर्षो तक दस हजार वर्षो में एक हजार वर्ष कम हो गये। ६३ शंकर जी ने कहा, हे पार्वती! सुनो। दस वर्ष पूर्ण होने पर महाराज अज की मृत्यु होनी है। ६४ उन्होंने पुत्र को राज्य का राजा किसी कारण से नहीं वनाया। परन्तु फिर उन्होंने पुत्र की सामर्थ्य देखी। ६५ इसमें तीन वर्ष व्यतीत हो गये। फिर उन्होंने अयोध्या नगर में पुत्र का अभिषेक कर दिया। ६६ रवि पुत्र शनि जम्बूद्वीप में आकर छै माह तक निरीक्षण करते रहे। ६७ आकाश मार्ग में घूमते हुए वह समस्त स्थानों का निरीक्षण करने लगे। तव उनकी दृष्टि अयोध्या नगर पर पड़ी। ६८ महाराज अज पंसासार खेल रहे थे। काल देवता की दृष्टि उन पर पड़ी। ६९ जन्तुपति ने चित्रगुप्त से पूँछा यह राजा तो अत्यन्त तेजवन्त है। २३७० चित्रगुप्त वोले हे महाराज! सुनिए। यह सूर्यवंशी राजा आपके ही अंश का है। २३७१ एकमात्र शौर्य से युक्त सूर्य नारायण हैं। छाया देवी से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ७२ उन्होंने पुत्र का नाम मूषक शनि रक्खा। वह पाप तथा पुण्य को समझकर लोगों को दण्ड दिया करते थे। ७३ वह शंकर जी के पुत्र के साथ वैर करके उस समय गणपति के

सूरबन्त रबि जे मर्त्यकु गला जाण ।वीरधू राजाङ्कु मारि प्रीतिकलापुण ७५
ताठारू जात हेले सगर नृपति ।सपत सागर भिआण सेहि कले स्थिति ७६
सेठारू तपन कुळ बोलाइला । अनेक महिमा जे विख्यात तार हेला ७७
से राजा जाइ इन्द्रकु जिणिला जे बळे । बरषे सुरपुरे राजा से बाहुबळे ७८
तेतिश कोटि देबता ताहाङ्कु सेबा कले।बरष के फेरि से मर्त्यरे रहिले ७९
सात बरष आयुष अछि जे एहार । पूरिले बैकुण्ठकु जिब नृपबर२३८०
जन्तु पति बोइले एहाकु आण धरि ।मंत्री बोइले अबिचार नकर दण्डधारी२३८१
धर्मवन्त राजा जे अटइ सेहू जाण । लंघिले बेळरे तुम्भे हेब आकरण ८२
शुणिण जन्तुपति मनरे क्रोध हेला । मर्त्यपुर राजा किस करिब बोइला ८३
काळपाश शर अज राजा परे पड़ि ।पशा खेळ ठारे राजार प्राण गला छाड़ि ८४
देखिण हाल होळि पड़िला नग्ररे । दशरथ आगरे कहिले जाइ चारे ८५
पिता तुम्भर खेळ खेळुथिले जाण ।अकारणे जन्तुपति हरिला ताङ्क प्राण ८६
शुणिण दशरथ उच्चे रोदन कले । केणे छाड़ि गल पिता बोलिण बोइले ८७
बशिष्ठ ऋषि आसिण ताङ्कु प्रबोधिले। अकारणे रोदन न कर बोइले ८८
दशरथ बोइले कह हे मुनिबर । केते दिन आयुष थिला मो पिताङ्कर ८९

वाहन बन गये थे । ७४ तेजवन्त सूर्य मृत्युलोक को गये और वीरधू राजा को मार कर उन्होंने प्रेम किया । ७५ उससे महाराज सगर का जन्म हुआ जिन्होंने सात समुद्रों का निर्माण करके उन्हें स्थित किया । ७६ तभी से उसे सूर्यकुल कहा जाने लगा । वह अपनी प्रभूत महिमा के लिए विख्यात हुआ । ७७ उस राजा ने जाकर बलपूर्वक इन्द्र को जीत लिया और अपने बाहुबल से एक वर्ष पर्यन्त स्वर्ग के राजा बने रहे । ७८ तैतीस करोड़ देवता उनकी सेवा करते रहे । फिर एक वर्ष के उपरान्त वह आकर मृत्युलोक में रह गये । ७९ सात वर्ष इस राजा की आयु शेष है । सात वर्ष पूरे होने पर यह नृप श्रेष्ठ बैकुंठ लोक को पधारेंगे । २३८० जन्तुपति ने कहा कि इसे पकड़ कर ले आओ । मंत्री बोले हे राजन् ! यह अविवेकपूर्ण कार्य मत करिये । २३८१ यह राजा धार्मिक है । समय के उल्लंघन से आपका कार्य सिद्ध नहीं होगा । ८२ यह सुनकर यमराज के मन में क्रोध भर गया । उन्होंने कहा कि यह मृत्युलोक का राजा क्या करेगा । ८३ कालपाश वाण के लगते ही पंसासार खेलते हुए राजा अज गिर पड़े और उनके प्राण निकल गये । ८४ यह देखकर नगर में हलचल मच गयी । दूत ने जाकर दशरथ के समक्ष कहा कि आपके पिता खेल-खेल रहे थे । तभी बिना किसी कारण के यमराज ने उनके प्राण ले लिये । ८५-८६ यह सुनकर दशरथ उच्चस्वर से रुदन करते हुए कहने लगे, हे पिता ! आप छोड़कर कहाँ चले गये । ८७ वशिष्ठ ऋषि ने आकर उन्हें सांत्वना दी । उन्होंने कहा कि तुम अकारण रुदन न करो । ८८ दशरथ बोले, हे मुनिश्रेष्ठ !

वशिष्ठ बोइले आयुष शेष होइ नाहिं । सपत बरष पिता रहन्ते देह वहि२३९०
दशरथ बोइले होइला कथा मन्द । आयुषन पुरु जेबे जम कला द्वन्द२३९१
तेबे से धर्म एबे लंघिले जन्तु पति । धर्म देबता होई करिला अनीति ९२
बशिष्ठ बोइले से हुअइ जन्तु पति । सबु दिने अधर्म धर्मरे नुहे मति ९३
ताकु लंघिबाकु केहि नुहे बळबान । एहि कारणरू से पाइछि वड़पण ९४
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती । मारकण्ड ऋषि जे प्रबेश हेले तथि ९५
देखिण दशरथ नमिले मुनि पादे । शोक भर होइण कहिले गद गदे ९६
बोइले मो पिता प्राण जम हरि नेला । सपत बरष जे आयु ताङ्कर थिला ९७
मारकण्ड बोइले शुण मो बचन । बिना दोषे दण्ड देला रबिर नन्दन ९८
पारिबुकि संजिबनी पुरकु तु जाइ । जन्तु पतिर प्राणकु पारिबु कि दहि ९९
तेबे तोर पिता जे पाइबे जीबन । शुणिण दशरथ कहिले निउन२४००
से काळ देबता मुँ अटइ मनुष्य । तार संगे जुद्धकले नोहिब मोर जश२४०१
मारकण्ड बोइले तेबे देलुँ आम्भे बर । काळ देबता शरे तोर अतुट शरीर २
बज्र अंग हेउ तोर तुट नोहू बपु । काळ देबताकु जिणि रहू तोर दर्पु ३
दशरथङ्कु मुनि कहिले बचन । बड़ पाटराणी तोर सारथि हेब पुण ४

मेरे पिता की और कितनी आयु शेष थी । ८९ वशिष्ठ ने कहा कि उनकी आयु समाप्त नहीं हुई थी । अभी तुम्हारे पिता सात वर्ष और शरीर धारण करके रहते । २३९० दशरथ ने कहा कि यह बात ठीक नहीं हुई । आयु पूर्ण न होने पर यमराज ने उनसे कलह किया । २३९१ जन्तुपति ने तब तो धर्म का उल्लंघन किया है । धर्मदेवता होकर उन्होंने अन्याय किया है । ९२ वशिष्ठ ने कहा कि वह यमराज हैं । धर्म और अधर्म में सदैव उनकी मति नहीं रहती है । ९३ उनका पार पाने के लिए कोई भी बलवान नहीं है । इसी कारण उसे वड़प्पन मिला है । ९४ हे भगवती ! सुनो । इसके अनन्तर वहाँ मारकंड ऋषि आ पहुँचे । ९५ दशरथ ने मुनि को देखकर उनके चरणों में प्रणाम किया । उन्होंने शोकपूर्ण होकर उनसे कहा कि मेरे पिता के प्राण यमराज ने ले लिये हैं । उनकी आयु सात वर्ष और अधिक थी । ९६-९७ मारकंड ने कहा हमारी बात सुनो । सूर्यपुत्र यम ने विना दोष के दण्ड दिया है । ९८ क्या तुम यमपुरी में जाकर यमराज के प्राणों को दहन कर सकोगे । ९९ तब तुम्हारे पिता को जीवन प्राप्त होगा यह सुनकर दशरथ ने हीनता के साथ कहा कि वह कालदेवता हैं और मैं मनुष्य हूँ । उनके साथ युद्ध करने से मुझे यश प्राप्त नहीं होगा । २४००-२४०१ मारकंड ने कहा कि तब मैं तुम्हें वर दे रहा हूँ कि काल देवता के अस्त्र से तुम्हारा शरीर अजेय रहेगा । २ तुम्हारा शरीर वज्र का हो जाय । अंग विद्ध न हो सके और कालदेव को जीतकर तुम्हारा यश फैल जाये । ३ मुनि ने दशरथ से कहा कि तुम्हारी बड़ी पटरानी सारथी

शुणिण दशरथ भितर पुरे गले। कैकया राणी पाखरे रोदन से कले ५
पाट राणी बोइले शुण हे प्राण नाथ। काहार पिता माता अछइँ जगत ६
दशरथ बोइले आयुष बळ थाउँ। मर्त्यपुर धर्म जे लंघिला जन्तु राहू ७
पाटराणी बोइले कि जुझिब तार संगे। दशरथ बोइले प्रसन्न हुअ एबे ८
कैकया बोइले मुँ सारथी हेबि जेबे। स्तिरी परिबेशटिए साज तुम्भे तेबे ९
शुणिण दशरथ स्तिरी बेश हेले। बिद मुदि बाहूटि हस्तरे लगाइले२४१०
पादे पाद भूषण कटीरे मेखळा। चापसरि माळा मस्तके बेश त्वरा२४११
कैकयी पाटराणी त्वरारे बेशपुण। दशरथ धरिल चारिटि धनु तूण १२
रथर उपरे जाइण बिजे कले। अन्त रीक्षे सातबारू रथरे जोचिले १३
से सात बारूकु बशिष्ठि बज्रकले। प्रसन्न होइण से ताहाङ्कु बर देले १४
बोइले देबता सुरे देब अतुट तुम्भे हुअ। पार्वती बोइले लागिला सन्देह १५
दशरथ मार्कण्ड ऋषिर बोले टाण। सप्त अश्व बशिष्ठ बररे टाण जाण १६
कैकयी राणीकि केहू जे बर देला। राणीर शरीर कि परि बज्र हेला १७
ईश्वर बोइले शुण गो गउरा। अप्राजित ऋषि जे स्तिरीङ्कु गुरुपरा १८

बनेगी। ४ यह सुनकर दशरथ अन्तःपुर में गये और महारानी कैकेयी के पास जाकर रुदन करने लगे। ५ पटरानी ने कहा, हे प्राणेश्वर! सुनिये। इस संसार में किसके माता पिता हैं ?। ६ दशरथ बोले कि आयु शेष रहते यमराज ने मृत्युलोक में धर्म का उल्लंघन किया है। ७ पटरानी ने कहा, क्या आप उसके साथ युद्ध करेंगे। दशरथ ने कहा कि अब तुम प्रसन्न हो जाओ। ८ कैकेयी ने कहा कि जब मैं सारथी बनूँगी तो आपको स्त्री-वेश सजाना होगा। ९ यह सुनकर दशरथ ने स्त्री का साज लिया। उन्होंने हाथों में अंगूठियाँ तथा बाजूबन्द आदि पहन लिये। २४१० पैरों में पाँव के आभूषण और कमर में तागड़ी पहन ली। माला हँसली तथा मस्तक पर खौर वेंदा से उनका रूप निखर उठा। २४११ पटरानी कैकेयी ने भी मनोहर वेश धारण किया। दशरथ ने चार धनुष और चार तरकस धारण कर लिये। १२ [नारी वेश दशरथ] रथ के ऊपर जाकर विराजमान हो गये। उन्होंने अन्तरिक्ष में सात घोड़ों को रथ में जुतवाया। १३ महर्षि वशिष्ठ ने प्रसन्न होकर उन्हें वर प्रदान करते हुए उनके सातों घोड़ों को वज्रमय कर दिया। १४ उन्होंने कहा कि तुम देवताओं तथा असुरों के लिए अक्षय हो जावो। तब पार्वती जी ने कहा, हे देव ! अब तो मुझे सन्देह हो रहा है। १५ महर्षि मारकण्ड के कहने से दशरथ वज्र के समान हो गये और वशिष्ठ के वर से सातों घोड़े वज्रमय हो गये। १६ महाराणी कैकेयी को किसने वर दिया और रानी का शरीर किस प्रकार वज्र का बना। १७ शंकर जी ने कहा, हे पार्वती ! सुनो। महर्षि अपराजित जो स्त्रियों के गुरु हैं उन्हीं का स्मरण कैकेयी ने किया। तब अपरा-

ताहाङ्कु सुमरणा कइकया कले। अप्राजित ऋषि जे आसिण मिळिले १९
ऋषिङ्क देखि कैकया नमस्कार हेले। चित्त जाणि ऋषि जे बर ताङ्कु देले२४२०
बोइले अतुट अमर तु जे हुअ। जेबे इच्छा करिबु तेबे मृत्यु पाअ२४२१
एते कहि ऋषि जे बशिष्ठ पाशे गले। तिनि ऋषि मेळ होइ एकत्र बसिले २२
बोइले आजि कथा होइब भिन्न-भिन्न। शनिङ्क संगे रण करिबे राजन २३
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। नारद महर्षि जे थिले स्वर्गपुरी २४
सुरपतिङ्क आगे कहिले पबन। बोइले देब शनि अन्याय कले जाण २५
धर्मकु लंघिण जे पाप आचरिले। तपन कुळे राजा अज नृपति थिले २६
कौणसि दिने अधर्म नाहिँ ताङ्करिटि। ताहाकु नाश कला कश्यपर नाति २७
सात बरष तार अछइँ आयुष।ताङ्कु धरि नाश कला बिरंचिर शिष्य २८
ताहार कुमर जे दशरथ पुण। बशिष्ठङ्कु पचारि धरिले दुर्गुण २९
मार्कण्ड अप्रचेता ऋषि जाइ मिळि। दशरथङ्कु अतुट बर जे आज्ञाकरि२४३०
शनि संगरे जुद्धकु सज दशरथ। निश्चे संजिबनी पति होइब आजहत२४३१
पबनठारू शुणि बोले शचिपति। अधर्म अनीति जेबे कला जन्तु पति ३२
रबिर नन्दन गर्बता हेला बड़। प्राभब न पाइले न तुटिब हुड़ ३३

जित ऋषि वहाँ पर आ पहुँचे। १८-१९ ऋषि को देखकर कैकेयी ने प्रणाम किया। उनकी मनकामना समझ कर ऋषि ने उन्हें वरदान देते हुए कहा कि तुम अक्षय-अमर हो जाओ। जब भी तुम्हारी इच्छा हो तभी तुम्हारी मृत्यु हो। २४२०-२४२१ इतना कह कर वह ऋषि वशिष्ठ के निकट जा पहुँचे। तीनों ऋषि एकत्रित होकर वहीं बैठ गये। २२ उन्होंने कहा कि आज न जाने क्या क्या होगा। राजा दशरथ शनि के साथ युद्ध करेंगे। २३ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् महर्षि नारद उस समय स्वर्गलोक में थे। २४ उन्होंने देवराज से कहा, तब पवन बोले हे देव! शनि ने अन्याय किया है। २५ उन्होंने धर्म का उल्लंघन करके पाप कार्य किया है। सूर्यकुल के महाराज अज थे। २६ उन्होंने कभी भी किसी दिन अधर्म का कार्य नही किया। कश्यप के नाती ने उनका नाश कर दिया। २७ उनकी आयु सात वर्ष और थी। ब्रह्म तेजस सूर्य के पुत्र ने उनका नाश कर दिया। २८ उनके पुत्र दशरथ ने वशिष्ठ जी से समझ कर यम के दुर्गुण को पकड़ लिया। २९ मारकण्ड तथा अप्रचेता ऋषि ने मिलकर दशरथ को अक्षय वर प्रदान किया। २४३० दशरथ शनि के साथ युद्ध करने के लिए सन्नद्ध हो गये हैं। आज निश्चित रूप से यमलोक के स्वामी मृत्यु को प्राप्त होंगे। २४३१ पवन से सुनकर शची के स्वामी इन्द्र ने कहा यदि जन्तुपति ने अधर्म और अन्याय किया है तो रविपुत्र शनि को अत्यन्त गर्व हो गया है। पराभव न प्राप्त करने से उनका गर्व गंजित न होगा। ३२-३३ उन्होंने नारद

नारदङ्कु बोइले संजिबनीकि जाअ। शनिकि कहिण सजाड़िण दिअ ३४
शुणिण नारद जे बेगे चळि गले। संजिबनी पुरे जाइ प्रबेश होइले ३५
देखिण जन्तुपति मान्य धर्म कला। केणे अइल ऋषि बोलि पचारिला ३६
नारद बोले आम्भे अइलु तोते देखि। कालि तोर संजिबनी पुर हेब दुःखी ३७
क्रोधरे जरजर होइण शनि कहि। मोते मारिबाकु के समर्थ अटइ ३८
नारद बोइले तोर मनकु तु बड़। पिता तोर रबि से नोहिला एते गाढ़ ३९
मत गर्बे दिना केते मत होइ थिला।सिंहिका कुमर राहू त्रिपुति कराइला२४४०
पिता तोर राहुर संगे जुद्ध कला। ताकु धरि राहु गर्भकु क्षेपिला२४४१
बासुदेवङ्कु स्मरण करिबारू जाण। राहूर गर्भू तो पिता बाहरिला पुण ४२
सेहि मत्त गर्ब एबे धरिलुरे बळा। जीबन रखिबु जेबे संजिबनीरु पळा ४३
नोहिले दशरथ करिब प्राण नाश। निश्चय नियति तोर पुरिला अबश्य ४४
दशरथ पिता जे अटइ अज राजा। देबंङ्क उपकारी अटइ से तेजा ४५
इन्द्र एहि रूपरे मत्तगर्व हेले। तार संगे जुझन्ते हारिण पळाइले ४६
बेदबर कहि बारू अज जे नृपति। स्वर्ग पुर इन्द्रकु दान देला सेटि ४७
तेबे से निश्चिन्तरे रहिले सुर राजा। ताहार जीबन तुरे हरि अछु द्विजा ४८

से यमलोक जाकर शनि से बताकर उसे सजाने के लिए कहा। ३४ यह सुनकर नारद शीघ्र ही यमलोक को चल दिये और वहाँ जा पहुँचे। ३५ उन्हें देखकर यमराज ने उनका आदर सत्कार करते हुए ऋषि से पूँछा कि आप किस कारण से आये हैं। ३६ नारद ने कहा कि हम तुम्हें देखने के लिए आये हैं। क्योंकि कल तुम्हारा संजीवनीपुर दुःखी हो जायेगा। ३७ शनि ने क्रोध से तमतमाते हुये कहा कि मुझे मारने में कौन समर्थ है। ३८ नारद ने कहा कि तुम अपने मन से ही बड़े बन रहे हो, तुम्हारे पिता सूर्य वह भी इतने घमंडी नहीं थे। ३९ एक दिन वह गर्व से उन्मत्त हो गये थे। फिर सिंहिका के पुत्र राहु ने उन्हें तृप्ति प्रदान की थी। २४४० तुम्हारे पिता ने राहु के साथ युद्ध किया था। तब उसने उन्हें पेट में डाल लिया था। २४४१ भगवान विष्णु के स्मरण करने से तुम्हारे पिता गर्भ से बाहर निकल पाये थे। ४२ अरे वत्स ! तूने अब वही गर्व धारण कर रखा है। अगर जीवित रहने की इच्छा है तो यमलोक से भाग जाओ। ४३ नहीं तो दशरथ प्राणों का विनाश कर देंगे। आज निश्चित रूप से तुम्हारा भाग्य पूरा हो गया अर्थात् तुम्हारी आयु आज समाप्त हो गई। ४४ दशरथ के पिता महाराज अज थे। वह तेजस्वी देवताओं का उपकार करने वाले थे। ४५ इसी प्रकार से इन्द्र भी अत्यन्त गर्व से उन्मत्त हो गया था। अज के साथ युद्ध करने पर वह हारकर भाग गया। ४६ वेदवर ब्रह्मा के कहने से महाराज अज ने वहीं इन्द्र को स्वर्गलोक दान में दे दिया। ४७ तब से देवराज इन्द्र निश्चिन्त रहने लगे। अरे द्विज !

खण्डिआ होइ तुहि एकइ गुमानि। के रक्षा करिव आज देखिवारे पुणि ४६
वाप तोहर रवि सम्भाळ आसि तोते। दश दिगपाळे आवोरिबेकि तोते२४५०
त्रिदश देवे जेवे फरोइ करिबे। स्वर्गपुरे गोटिए केहि न रहिवे२४५१
शुणिण जन्तुपति क्रोधे पुण कहि। दशरथकु मुनि रख एवे जाइ ५२
नर सिना मुनिङ्कर अटन्ति प्रतिकार। मंत्र धर्म शुणाइ होइण अछ वड़ ५३
एवे जाइ तहाकु सहाय्र तुम्भे हुअ। कि करि पारिव मोते अज राजापुअ ५४
शुणिण नारद जे क्रोध भरे हसि। कि वोलि वोइलु लंकागढ़ दण्डू आसि ५५
शुणि शनिश्चर भय देखाइण चाहिँ। नारद वोइले तु जळूजुळा प्राय्र होइ ५६
एमन्त कहि नारद वेगे उठि गले। अजोध्या नगर रे प्रवेश होइले ५७
नारदङ्कु देखिण दशरथ उठि। चरण तळे पड़ि कान्दिले कुहाटि ५८
नारद वोइले बाबु कि लागि करु कोह।
दशरथ वोइले मो पिताङ्कु मारिला रवि पुअ ५९
तो पिताकु जेवे मारिला मूढ़ात्मा। तु ताकु मारिले त तुटिव सवु चिन्ता२४६०
जाअ एवे बाबुरे शनिकि नाश कर। एमन्त आज्ञा ताकु देले मुनिवर२४६१
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। चित्रगुपतङ्कु डाकि भाळे जन्तुपति ६२

तूने उन्हीं का जीवन हरण कर लिया है। ४८ क्षत-विक्षत होते हुये भी तुम एक ही घमंडी हो। आज देखेंगे कि कौन तुम्हारी रक्षा करता है। ४९ तुम्हारा बाप सूर्य ही आकर तुम्हें सँभाले। क्या दसों दिगपाल भी तुम्हे छिपा सकेंगे। २४५० यदि देवता भी पक्षपात करेंगे तो स्वर्ग में एक भी नहीं बचेंगे। २४५१ यह सुनकर जन्तुपति शनि ने क्रुद्ध होकर कहा अरे मुनि अव आप जाकर दशरथ की ही रक्षा करे। ५२ नर ही मुनियों के कारण बचे हैं। धर्म मन्त्र की दीक्षा देकर आप वड़े वन गये है। ५३ अव आप जाकर उसकी सहायता करें। राजा अज का पुत्र हमारा क्या कर लेगा। ५४ यह सुनकर नारद ने क्रोध की मुस्कान छोड़ते हुये कहा क्या कहा ? कि आकर वह इस दुर्ग को नाश करे। ५५ यह सुनकर शनिश्चर ने उन पर भयानक दृष्टि डाली। नारद ने कहा कि तू जुगनू की भाँति चमक रहा है। ५६ ऐसा कहकर नारद शीघ्रता से उठकर चले गये और अयोध्यापुर में जा पहुँचे। ५७ नारद को देखकर दशरथ उठकर उनके चरणों में गिरकर क्रन्दन करने लगे। ५८ नारद ने कहा, अरे वत्स ! क्यों क्रोध कर रहे हो। दशरथ ने कहा कि सूर्यपुत्र शनि ने मेरे पिता को मार डाला है ५९ उन्होने कहा कि जव उस मूर्ख ने तुम्हारे पिता का वध किया तो तुम्हारे द्वारा उसे मारने पर सारी चिन्तायें दूर हो जायेंगी। २४६० हे वत्स ! जाओ और शनि को नष्ट कर दो। मुनिश्रेष्ठ ने इस प्रकार उनको आज्ञा दी। २४६१ हे भगवती ! सुनो। इसके वाद में चित्रगुप्त को बुलाकर जन्तुपति शनि विचार-विमर्श करने लगा। ६२

चित्र गुपत बोइले शुण दण्डधर। दशसत्र बरष जे परमायु तार ६३
बित्रिशह बर्ष भोग होइछि राजार। जन्तुपति बोले प्राण हरिबि ताहार ६४
मंत्री बोइले एहा नुहइ उचित। बड़पण सरि जिब एकथा निश्चत ६५
धर्मकु लंघिले न रहे केहि चिर। धर्म हीन कर्म कले नाशटि निकर ६६
शनि बोइले मोर संगे तुम्भे चळ। अनर्थ कले सेहू मरिब ए बेळ ६७
चित्र गुपत बोइले आम्भे जिबु नाहिँ। केते जम गलेणि आम्भे अछुँ रहि ६८
सबु जीब ठारे प्रसन्न आम्भे दृश्य। तेणु पाप पुण्य सिना करु परकार ६९
ईश्वर सर्ब देहे बिजय़ करिछन्ति। जीबंकर जीब से ईश्वर अटन्ति२४७०
परमेश्वर जे अटन्ति नाराय़ण। समस्तङ्क शरीरे चेतना से जाण२४७१
जेउँ प्राणीमाने मूर्ख पणे थान्ति। जीब प्रति दया धर्म किछि न करन्ति ७२
अग्नि जे जीबर हृदय़ गते थाइ। भक्षिबारू आहार जीर्ण करि देइ ७३
गंगा जे जीबर हृदये परकाश। तेणु रक्तमांस रिपु परकाश ७४
पंच देबता पंच स्थाने रहि। पचिश प्रकृतिरे ताहाकु चळाइ ७५
तुम्भर जेबे बळ अछि रबिसुत। धर्मकु लंघि ता तुले कर बळ कृत ७६
चित्र गुपत मंत्री दुइ एहा कहि। आम्भे गले संजिबनी पुर न रहइ ७७

चित्रगुप्त ने कहा हे महाराज ! सुनिये। उनकी दस हजार वर्ष आयु है। ६३ राजा का केवल नौ हज़ार नौ सौ तिरानबे वर्ष का काल व्यतीत हुआ है। जन्तुपति ने कहा कि मैं दशरथ के प्राण ले लूँगा। ६४ मंत्री बोला कि यह उचित नहीं है। यह निश्चित है कि आपका बड़प्पन समाप्त हो जायेगा। ६५ धर्म का उल्लंघन करने वाला कोई भी अधिक समय तक नहीं रहता। धर्म के विपरीत कार्य करने से शीघ्र ही नाश हो जाता है। ६६ शनि ने कहा तुम हमारे साथ चलो। अनर्थ करने से वह भी इस बार मारा जायेगा। ६७ चित्रगुप्त ने कहा कि हम नहीं जायेंगे। न जाने कितने यम चले गये और हम ही बच गये। ६८ हमें देखने से सभी जीव प्रसन्न होते हैं। इसीलिये मै पाप और पुण्य को प्रकाशित करता हूँ। ६९ सबके शरीरों में ईश्वर विराजमान है। वही परमात्मा जीवों की आत्मा है। २४७० जो परमेश्वर भगवान है, उन्हीं की चेतना सबके शरीरों में रहती है। २४७१ प्राणी मूखता करते हैं जो जीवों के प्रति दया और धर्म कुछ भी नहीं करते हैं। ७२ अग्नि ही जीव के हृदय में खाये गये आहार को पाचन करता है। ७३ गंगा अर्थात् जल जीव के हृदय में प्रकाशित होने पर रक्त और माँस बनाता है। जो शत्रुओं को दिखाई देता है। ७४ इस प्रकार पंच देवता पाँच स्थानों पर रहकर पचीस प्रकृतियों से उसे चलाते हैं। ७५ हे रविनन्दन ! यदि तुम में बल है, तो धर्म का उल्लंघन करके उसे बलपूर्वक जीत लो। ७६ चित्रगुप्त तथा मंत्री दोनों ने ऐसा कहा कि हम लोगों के जाने पर यमलोक बचेगा नहीं। ७७ यह

एहा शुणि जम शमनकु अणाइला ।काळ बिकाळ दुहिङ्कु डकाइ कहिला ७८
बोइला मर्त्यपुरकु आम्भे जिब्रा पुण । अजीवर जीवरे मोर प्रभुपण ७९
दशरथ राजाकु आणिबा संजीवनी । मोहर उपरे से रागि अछि पुणि अ८०
काळ बिकाळकु जे कहिला ए बाणी । मृत्यु महिषि उपरे चढ़िला जन्तुमणि२४८०
लुहार रथ गोटिए संगतरे नेला । जम्बु द्वीप मध्यरे प्रवेश होइला२४८१
नारद बोइले शुण दशरथ । शनि देवता अइले दिशुछि ता रथ ८२
शुणिण दशरथ चाप धनु धरि । गुण टंकार करिण मुखरे घोषे हरि ८३
एमन्त समय़े जम प्रवेश होइला । दशरथकु वान्ध मृत्यु देवकु कहिला ८४
मृत्युदेबता बोइले धनुरे मोते जोच । तेबे सिना मुहिँ जाइ धरिबि दशरथ ८५
शुणिण शनि बेगे धनुरे नेइ जोचि ।जोचिबारू से शर आसइ पृथ्वी घोटि ८६
देखिण दशरथ अनन्त पाश पेषि । मृत्यु देवताङ्कु वान्धिला आकर्षि ८७
देखिण जम काळ पाशकु जे पेशि । दशरथ वज्रशरे ताहाकु विनाशि ८८
बक्षस्थळ फुटाइ भुमिरे बसि माड़ि । काळ देबता शरीरू जीवगला छाड़ि ८९
देखिण शनि राजा बिकाळ पेषि देला । आसन्ते दशरथ दूररू देखिला२४९०
शिब शक्ति पेषन्ते पशिला बक्षस्थळ ।धरणीरे पकाइ शक्ति वसिला तारपर२४९१
देखिण शनि देवता पिताभ शर पेशि । दशरथ चन्द्र शरे वेगेण ताकु नाशि ९२

सुनकर यम ने शमन को बुलाया। उसने काल और विकाल को बुलाकर कहाकि हम लोग मृत्युलोक पुनः चलेगे। जड़ तथा चेतन सभी जीवों में हमारा प्रभुत्व है ७८-७९ राजा दशरथ को हम यमलोक में ले आयेंगे। वह हमारे ऊपर क्रुद्ध हो गया है। ८० अ काल विकाल से ऐसा कहकर मृत्यु रूपी भैंसें पर चढ़कर जन्तुपति यमराज एक लोहे का रथ साथ में लेकर जम्बू द्वीप के मध्य जाकर पहुँच गये। २४८०-८१ नारद ने कहा हे दशरथ ! सुनो। शनि देवता आ गये है। उनका रथ दिखाई देने लगा है। ८२ यह सुनकर दशरथ धनुप बाण उठाकर प्रत्यञ्चा पर टंकार मारते हुये मुख से भगवान का स्मरण करने लगे। ८३ इसी समय यम वहाँ आ पहुँचे। उसने मृत्यु के देवता को दशरथ को बाँध लेने का आदेश दिया। ८४ मृत्यु देव ने कहा कि आप हमें धनुष पर सन्धान करें तभी तो हम जाकर दशरथ को पकड़ेगे। ८५ यह सुनकर यमराज ने उन्हे धनुष लेकर सन्धान किया। बाण छोड़ने पर वह भूमण्डल को अच्छादित करता हुआ चल पड़ा। ८६ यह देखकर दशरथ ने अनन्तपाश भेजकर मृत्यु देवता को खींचकर बाँध लिया। ८७ यह देखकर यम ने कालपाश प्रेपित किया। दशरथ ने उसे वज्रशर से नष्ट कर दिया। ८८ हृदय के विद्ध हो जाने पर वह पृथ्वी को दवाकर गिर पड़ा और काल देवता के शरीर से प्राण निकल गए। ८९ यह देखकर राजा शनि ने विकाल को भेजा। दशरथ ने उसे आते हुए दूर से देखा। २४९० शिव-शक्ति भेजने से वह उसके हृदय में धँस गई। पृथ्वी पर उसे पटककर शक्ति उसके ऊपर बैठ गई। २४९१ यह देखकर शनिदेव ने पीताभवाण छोड़ा।

देखिण रबिसुत बिन्धिला अग्नि शर । दशरथ जळधारा शरे कलेक निबार ६३
दशरथ राजन नीळबाण मारि । मृत्यु महिषीकि से मोह कले धरि ६४
धरणीर उपरे पड़िला महिषि । पर्बत समानरे शरीर तार दिशि ६५
मृत्यु महिषि पड़न्ते शनि बेगे गला । लौहदण्ड रथरे निश्चिन्ते बसिला ६६
पेषिला अनेक शर रविर नन्दन । दशरथ बसिण पेशइ शर घनघन ६७
एमन्ते सात दिन सात रात्र बहि गला । केभे दशरथङ्कु रबिसुत न पारिला ६८
देखिण दशरथ क्रोधरे जरजर । नारायण शरकु बिन्धिला कोप भर ६६
चळिला नाराच गर्ज्जन नाद करि । शनि देबता अंगरे पड़िला जाइ करि२५००
हृदय फुटिण रथरे जाइ कंण्टि । रथरे उपरे शनि पड़िलाक लोटि२५०१
देखिण सारथि तार रथकु बाहिनेला । जाणिण दशरथ मन भेदि कला २
चउपाश निरोधिला अजर कुमर । बाट न पाइबारु जे रहिला रहूबर ३
देखिण बिरंचि रबि आरते शुन्ये हेला । बेदबरंकु मनरे सुमरणा कला ४
बिधाता जशोबन्ती पुररे थाइ जाणि ।
बारस्ती भुबनरे मिळिला आसि पुणि ५
दश दिगपाळे जे त्रिदश देब घेनि । शितळगिरि उपरे बिजय़ कुश पाणि ६

दशरथ ने शीघ्र ही उसे चन्द्रबाण से नष्ट कर दिया। ६२ यह देखकर सूर्यपुत्र ने अग्नि-बाण छोड़ा। दशरथ ने उसका निवारण जलधारा बाण से कर दिया। ६३ तब राजा दशरथ ने नील-वाण से प्रहार करके मृत्यु महिष को चेतनाशून्य कर दिया। ६४ भैंसा पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसका शरीर पर्वत के समान दिखाई दे रहा था। ६५ मृत्यु महिष के गिरते ही शनि शीघ्रता से चला गया और जाकर लौहदण्ड रथ पर निश्चिन्त होकर बैठ गया। ६६ रवि पुत्र ने नाना प्रकार के बाण छोड़े और दशरथ भी बैठे हुए सनसनाकर बाण चला रहे थे। ६७ इस प्रकार सात दिन सात रातें बीत गईं। सूर्यनन्दन तब भी दशरथ को परास्त न कर सका। ६८ यह देखकर दशरथ क्रोध से तमतमा उठे उन्होंने कुपित होकर नारायण शर का प्रहार किया। ६६ वह वाण गर्जन करता हुआ चल पड़ा और शनि देवता के शरीर पर जा पड़ा। २५०० उस बाण ने रथ पर जाकर शनिदेव का वक्ष विदीर्ण कर दिया तब वह रथ पर लोट गया। २५०१ यह देखकर सारथी उसका रथ हटा ले गया। यह जानकर अंजनन्दन दशरथ ने मन भेदी वाणों से चारों ओर से रोक लगा दी। मार्ग न मिलने के कारण रथ वहीं रुक गया। २-३ यह देखकर अकाश में सूर्यदेव ने आर्त होकर मन में ब्रह्माजी का स्मरण किया। ४ ब्रह्मलोक में स्थित ब्रह्मा यह जानकर स्वर्गलोक जा पहुँचे। ५ दश दिगपालों तथा देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा जी चन्दन गिरि पर उपस्थित

तिनि ऋषि नारद से स्थानरे प्रबेश। षोळह चन्द्र मास बारह आदित्य ७
समस्ते बेदबरंकु कले नमस्कार। रथरू ओल्हाइ गले दशरथ बीर ८
बेद ब्रह्मांकु चरणे शोइले गड़घालि। उठबोलि बिधाता कहिले उच्चकरि ९
दुइ नयनु लोतक जाउ अछि बहि। देखिण बेदबर ताङ्कु निवर्त्ताइ२५१०
बोइले दशरथ तोर तेज हेला। शनिकु जिणिण तु पिता कार्ज्य कलु भला२५११
एबे शर बाड़ जे निबारण कर। शुणिण दशरथ सुमरिला शर १२
त्रोणरे शर जाइ होइला प्रबेश। देखिण बेदबर होइले हरष १३
नारायण शरकु से हृदरू काढ़िले।मृत्यु संजिबनी मंत्रे शनिकि जिआइँले १४
काळ बिकाळ शरीरू काढ़िले शर पुण।जीव न्यास मंत्ररे जिआइँले ताङ्कु जाण १५
दश दिन पड़न्ते शरीर मिळिथिला। बेद वर मंत्रपाणिरेस्नान कराइला १६
पूर्बर शरीर बळ ताहार देहे व्यापि।कर जोड़ि अज राजा देवङ्कु पादे खटि १७
बिधाता बोइले शुण हो रबि पुत्र। धर्मकु नमानुछु एकि तो उचित १८
आबर बेळे धर्मकु नमानु जेबे तुहि। शाप देलि भस्म जे होइब तोर देहि १९
देबतांकु न मानिले जळिब तो शरीर। ऋषिङ्कु न मानिले तु होइबु पथर२५२०
जाअ एबे संजिबनीपुरर न्याय बुझ। जम बोइला देब मोहरे नाहिँ कार्ज्य२५२१

हुए। ६ तीनो ऋषि नारद सोलह चन्द्र तथा बारह महीनों के सूर्य भी वहाँ आ पहुँचे। ७ सबने ब्रह्मा जी को नमस्कार किया। पराक्रमी दशरथ ने रथ से उतरकर ब्रह्मा जी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। विधाता ने उच्च स्वर से उन्हें उठने को कहा। ८-९ उनके दोनों नेत्रों से अश्रु वह रहे थे। यह देखकर ब्रह्मा ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा हे दशरथ! तुम्हारी विजय हो गई। शनि को जीतकर तुमने पिता का कार्य ठीक किया। २५१०-२५११ अब तुम इस शर जाल का निवारण करो। यह सुनकर दशरथ ने वाणों का स्मरण किया। १२ बाण जाकर तरकश में प्रविष्ट हो गया। यह देखकर ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गए। १३ उन्होंने नारायणास्त्र को हृदय से निकाल लिया तथा मृत संजीवनी मन्त्र द्वारा शनि को जीवित किया। १४ फिर उन्होंने काल विकाल के शरीर से वाणों को निकालकर जीव-न्यास मन्त्र द्वारा उन दोनों को जीवित किया। १५ दस दिनों से पड़ा हुआ शरीर मिला था। ब्रह्मा जी ने उसे मन्त्र जल से स्नान कराया। १६ उस शरीर में पूर्व काल जैसा बल व्याप्त हो गया। तब हाथ जोड़ते हुए राजा अज ने देवताओं के चरणों में नमस्कार किया। १७ ब्रह्मा जी ने कहा, हे सूर्यपुत्र! सुनो। तुम धर्म का अवलम्बन नहीं करते हो। तुम्हारे लिए यह क्या उचित है?। १८ यदि अब अगली बार तुम धर्म का अवलम्बन न करोगे तो मैं शाप देता हूँ कि तुम्हारा शरीर भस्म हो जाएगा। १९ देवताओं को न मानने पर तुम्हारा शरीर भस्म हो जाएगा। ऋषियों को न मानने पर तुम पत्थर हो जावोगे। २५२० अब जाकर यमलोक का कार्य न्याय

मत्त गर्व होइलि मुँ जे नोहिबि जन्तुपति। जेबे जन्तुपति हेबि दिअ हे सद्गति २२
चारि द्वारे मोर रहिबे चारि जण। ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर धर्म निरंजन २३
चारि द्वारे लिंग प्रतिमा रूपे थिबे। पचारिला बेळे धर्म अधर्म कहिबे २४
शुणिण बेदबर बोइले एबे हेउ। आउबेळकु तोर उपद्रब नोहू २५
दशरथ राजांकु डाकिले शनि पुण। तु जिणिलु मुँ हारिलि देखिले देबगण २६
माग बर राजन देबइँ तोते मुहिँ। प्रसन्न होइलि तोते जाण हे नर साईँ २७
दशरथ बोइले जेबे देब बर। रोहिणी बृष राशि नक्षत्र अटे मोर २८
ए राशि नक्षत्र न बाधिब तोर रिपु। काळ जुगकु एकथा होइ जे रहू बपु २९
आहूरि कथाए मागुछि रबि सुत। आपणा कुळकु न करिब घात२५३०
तुम्भे रबि सुत आम्भे रबि देब अंश। एथिरे हिंसाकले लागिब जे दोष२५३१
शनिश्चर बोइले एकथा अटे मूळ। लंघिले नाश जिबि शुण हे महीपाळ ३२
सुर्ज्य बंशरे मोहर नोहिब आउघात। रोहिणी बृषकु न भेदिबि कदाश्चित ३३
एते बोलि प्रणाम हेले शनि जहूँ। दशरथ राजन तृपति हेले तहूँ ३४
नारद कहिले सरिला एबे कथा। आम्भ बोल न मानिलु पाइलु तु व्यथा ३५

पूर्वक देखो। यम ने कहा, हे देव ! अब मेरा कार्य नहीं है। २५२१ मैं गर्व से उन्मत्त हो गया हूँ। अब मैं जन्तुपति नहीं बनूँगा। यदि मुझे जन्तुपति बनाना हो तो मुझे सद्गति प्रदान करें। २२ मेरे चारों द्वारों पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा धर्म देव रहेंगे। २३ चारों द्वार पर लिंग प्रतिमाएँ होंगी जो पूँछने पर धर्म तथा अधर्म का विवेचन करेंगे। २४ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने "तथास्तु" कह दिया और समझाते हुए कहा कि अब और तुम्हारा उपद्रव नहीं होना चाहिए। २५ फिर शनिदेव ने राजा दशरथ को बुलाकर कहा कि तुम्हारी विजय तथा मेरी पराजय को देवताओं ने देखा है। २६ हे राजन् ! तुम वर माँगो, मैं तुम्हें प्रदान करूँगा। हे नरेश ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। २७ दशरथ ने कहा कि यदि आप मुझे वर देना चाहते हैं तो रोहिणी नक्षत्र की वृष राशि में मेरा जन्म हुआ है। इस राशि और नक्षत्र वालों पर आपकी कोपदृष्टि न पड़े। यह बात युग-युग तक प्रामाणिक रहे। २८-२९ हे रविनन्दन ! एक बात और माँग रहा हूँ। आप अपने कुल को नष्ट नहीं करेंगे। २५३० आप सूर्य-पुत्र हैं और हम सूर्य देव के अंश हैं। इसमें शत्रुता करने से दोष लगेगा। २५३१ शनिदेव ने कहा कि यह बात तो यथार्थ है। हे महिपाल ! सुनो। इसका उल्लंघन करने से मैं नष्ट हो जाऊँगा। ३२ अब सूर्य वंश पर मेरा आघात नहीं होगा। रोहिणी नक्षत्र की वृष राशि वाले को भी मैं कभी बाधा नहीं पहुँचाऊँगा। ३३ ऐसा कहकर शनिदेव ने जब प्रणाम किया तब दशरथ राजा तृप्त हो गए। ३४ नारद ने कहा कि अब तो बात समाप्त हो गई। हमारा

माड़टि समस्तंकु करइ साधु पण। माड़भये लंकारे दण्ड आसि हेलु जाण ३६
जननी कि मारिबारू होइलु अपंग। दशरथ मारिबारू तेजिलु रिपु अंग ३७
आउवेळे असम्भाळ होइबु जेबे बळा। आम्भर शाप रहिला भस्म तु हेबु परा ३८
शुणिण जमदेब उलगे शतेबार। दोष मोर क्षमाकर हे महर्षि वर ३९
शुणिण नारद जे सन्तोष मन हेले। शनिङ्कि घेनि ब्रह्मा संजिबनी गले२५४०
सकळ देबता गले स्वर्गपुर। जे जाहार स्थानरे रहिले सुरमेळ२५४१
संजिबनी पुरे ब्रह्मा हेलेक प्रबेश। चारि द्वारे चारि लिंग सुवर्ण रूपे सेत ४२
पितुळा लेखिण धाता सजीव ताकु कले। शनि पचारिब धर्म कहिबे से भले ४३
एते कहि कुशकर गले निज पुर। गायत्री सावित्री आसि नमिले पयर ४४
पार्बती बोइले देब सेठारू किस हेला। दशरथ नृपति केबण कृत्य कला ४५
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। सकळ देवताए संतोष कले मति ४६
जे जाहा स्थानकु सेहू कलेक गमन। देखिण दशरथ संतोष कलेमन ४७
कैकया राणी पाशरे प्रबेश दशरथ। बोइले तोर शकासे जिणिलि रविसुत ४८
बर माँग एवे देबइँ तोते मुँहि। शुणिण कैकया जे पादरे ओळगइ ४९

कहना न मानने से ही तुम्हें यह कष्ट प्राप्त हुआ है। ३५ ताड़ना ही सबको सरल बना देती है। मार के भय से ही दुर्ग से आकर तुमने यह दण्ड पाया है। ३६ माता का वध करने से तुम अपंग हो गये थे। दशरथ के द्वारा मारे जाने पर तुमने वैरी शरीर का त्याग किया है। ३७ और यदि फिर वलपूर्वक असावधानी करोगे तो मेरा शाप है कि तुम भस्म हो जावोगे। ३८ यह सुनकर यम देवता सौ बार अर्थात बार-बार प्रणाम करके बोले, हे महर्षि श्रेष्ठ! मेरे अपराध को क्षमा कर दीजिये। ३९ यह सुनकर नारद का मन सन्तुष्ट हो गया। ब्रह्मा जी शनि को लेकर यमलोक चले गए। २५४० समस्त देवता स्वर्ग-लोक में अपने-अपने स्थानों को चले गए। २५४१ ब्रह्मा जी यमपुरी में जा पहुँचे। उन्होंने चार द्वारों पर सुवर्णमय लिंगों की स्थापना करके पुतलों का आकार देकर उन्हें सजीव बना दिया। वह शनि के पूंछने पर धर्म-अधर्म का विचार व्यक्त करेंगे। ४२-४३ इस प्रकार कहकर ब्रह्मा जी अपने लोक को चले गए। गायत्री तथा सावित्री ने आकर उनके चरणों में प्रणाम किया। ४४ पार्वती ने कहा, हे देव! फिर वहाँ क्या हुआ? राजा दशरथ ने क्या कार्य किया? ४५ शंकर जी बोले, हे भगवती! सुनो। समस्त देवताओं के मन में सन्तोष हो गया। ४६ सभी अपने-अपने स्थानों को चले गए। यह देखकर दशरथ का मन सन्तुष्ट हो गया। ४७ फिर दशरथ महारानी कैकेयी के पास जा पहुँचे और उन्होंने उनसे कहा कि मैंने तुम्हारे ही कारण सूर्य पुत्र पर विजय प्राप्त की है। ४८ तुम वर माँगो। मैं तुम्हें प्रदान करूँगा। यह सुनकर कैकेयी ने उनके चरणों में प्रणाम किया और उन्होंने कहा कि हे प्राणेश्वर! आप

बोइले प्राण नाथ तुम्भे मोर स्वामी। तुम्भर कुशळ हेले मुंहि सुखगामी२५५०
आपणंङ्कर जेबे दया मोरे थिब। कौणसि बेळे मोठारे माया न करिब२५५१
मुँ जेबे माया करि कहिबि प्रभु पुण। तिनि पुरे अपकीर्ति मोर हेब जाण ५२
जेते बेळे प्रसन्नरे मागिबि मुँ जाहा। हृदयरे दयाकरि देब मोते ताहा ५३
हेउ बोलि दशरथ राणीङ्कि बर देले। शुणिण पाटराणी सेठारू चळिगले ५४
अन्तःपुरे राणी होइले प्रवेश। एथु अनन्तरे शुण दिव्य रस ५५
दशरथ सेठारू पिताङ्क पाशे गला। शते बार पर्य्यन्त ओळग मेलाइला ५६
पात्र मंत्री सामन्त समस्त छन्ति पुणि। अजराजा बोइले शुण पुत्र मणि ५७
पिताकु जिआइँ तु जे जमकु जिणिलु। काळ जुगकु कथा जगते रखाइलु ५८
इन्द्रकु जिणि मुँ जे स्वर्ग इन्द्र हेलि। पितांक बोलरे स्वर्ग छाड़िण आसिलि ५९
तु एबे शनिकि जिणि मोते जिआँइलु। उत्तम धर्म गोटि संसारे रखिलु२५६०
ए धर्मकु तोते प्राप्त होइबे श्रीहरि। एहि परि अज राजा सुकल्याण करि२५६१
पिता पुत्र बेनि संगरे ऋषि घेनि। नबरकु चळिले हरष मने पुणि ६२
सामन्त पात्र मंत्री सैन्य बळ जाण। सिंह द्वारे प्रवेश समस्ते तक्षण ६३
नबरे पिता पुत्र होइले प्रवेश। पाञ्च मुनि चरणे नमिले अज शिष्य ६४

हमारे स्वामी हैं। आपकी कुशलता में ही मेरा सुख है। ४९-२५५० यदि आपकी मुझ पर कृपा रहेगी तो आप कभी भी हमसे छल नहीं करेंगे। २५५१ हे नाथ ! यदि मैं आपसे छलपूर्वक बात करूँगी तो तीनों लोकों में मेरी अपकीर्ति होगी। ५२ जब कभी मैं प्रसन्नता से जो कुछ भी आपसे माँगूँगी हृदय में आप दयाभाव वहन करते हुए आप मुझे वह दीजियेगा। ५३ ऐसा ही हो कहकर दशरथ ने रानी को वर प्रदान किया। यह सुनकर पटरानी वहाँ से चल पड़ी। ५४ रानी अन्तःपुर में जा पहुँची। अब इसके पश्चात् का दिव्य चरित्र श्रवण करो। ५५ वहाँ से दशरथ पिता के पास गए और उन्होंने बारम्बार उनके चरणों में प्रणाम किया। ५६ सभासद मंत्री तथा सामन्त सभी लोग वहाँ थे। महाराज अज ने कहा, हे पुत्रमणि ! सुनो। ५७ तुमने यम को जीतकर पिता को जीवित किया है। यह बात युग-युग के लिए संसार में तुमने अमर कर दी। ५८ इन्द्र को जीतकर मैं स्वर्ग का इन्द्र हो गया था और पिता के कहने से मैं स्वर्ग का त्याग करके चला आया। ५९ तुमने अब शनि को जीतकर मुझे जिलाया है और संसार में उत्तम धर्म की स्थापना की है। २५६० इस धर्म के कारण तुम्हें नारायण की प्राप्ति होगी। महाराज अज ने उन्हें इस प्रकार का आशीर्वाद प्रदान किया। २५६१ पिता और पुत्र दोनों ऋषियों को साथ लेकर प्रसन्नचित्त होकर महल को चल दिये। ६२ उसी समय सामन्त सभासद मंत्री तथा सैन्यवाहिनी आदि सभी सिंहद्वार में प्रविष्ट हुए। ६३ पिता और पुत्र महल में प्रविष्ट हुए।

धन रत्न देइण मुनिङ्कि सेबा कले। मेलाणि होइण जे मुनि माने गले ६५
पात्र मंत्री सामन्त मेलाणि कले राजा। चतुरंग बळकु शाढ़ी देले तेजा ६६
सकळ लोकंकु मेलाणि देइ पुण। दुःखी दरिद्रंकु देले अन्न बस्त्र दान ६७
स्थाने स्थाने सदावर्त्त देलेक अन्न जळ। उत्सब कराइले नबर नग्रपुर ६८
पार्बती बोइले कह प्रभु एबे। अजराजा केते दिन रहिले सेहि ठाबे ६९
ईश्वर बोइले रहिले सपत बरष। पूर्ण हेबारू अज राजा गले स्वर्गबास२५७०
राजन जिबारू जे राणी हंस तार। पुत्र दशरथंकु कहिले समाचार२५७१
बोइले कुमर मणि शुणरे एबे तुहि। स्वामी संगे आम्भे जिबुँ बिळम्ब किम्पाइँ ७२
शुणिण दशरथ संतोष मन हेला। अग्निरे आरोपण आसिण कराइला ७३
शतेक जननी जे दासीगण घेनि। अग्निरे झास देले सकळ कामिनी ७४
स्वामीर संगे सर्बे स्वर्गकु चळि गले। अचिन्ता नबरे पितृ लोकरे रहिले ७५
दशरथ नृपति जे क्रिया कर्म करि। राज ऋषि ब्राह्मणंकु बरण थिले करि ७६
समस्तंकु संन्तोषे भरि भोजन देला। धन रत्न देइण मेलाणि कराइला ७७
प्रजांकु पुत्र समाने तहूँ राजा पाळि। धर्महिँ बिचार करे पापरे न बळि ७८
पार्बती बोइले देब कथाए रहिला। दशरथ स्तिरी बेश जे होइ थिला ७९

अज पुत्र दशरथ ने पाँचों ऋषियों को नमन किया। ६४ उन्होंने धन तथा रत्न प्रदान करके मुनियों की सेवा की। मुनिगण विदा लेकर चले गये। ६५ राजा ने सभासद मंत्री तथा सामन्तों को विदा दी। उन्होंने चतुरंगिनी सेना को रोबदार सरोपे भेंट किये। ६६ सभी लोगों को विदा देकर राजा ने दुखी-दरिद्रों को अन्न, वस्त्र दान दिये। स्थान-स्थान पर अन्न, जल के सदावर्त्त दिये और महल, नगर और गावों में उत्सव कराये गये। ६७-६८ पार्वती जी बोलीं, हे देव ! अब यह बताइये कि महाराज अज वहाँ और कितने दिनों तक रहे। ६९ शंकर जी ने कहा कि राजा अज सात वर्ष तक रहे और आयु पूर्ण होने पर वह स्वर्गलोक चले गये। २५७० राजा के गत होने पर रनिवास की रानियों ने दशरथ से कहा, हे पुत्रमणि ! अब तुम सुनो, स्वामी के साथ हम सब गमन करेंगी। अब विलम्ब क्यों ?। २५७१-७२ यह सुनकर दशरथ ने सन्तुष्ट चित्त से अग्नि का आरोपण कराकर उन्हें आसीन करवाया। ७३ उनकी सौ मातायें दासियों को साथ लिये यह सभी सुन्दरियाँ अग्नि में कूद गयीं। ७४ स्वामी के साथ सभी स्वर्गलोक को चली गयीं। वह पितृलोक के चिन्ता-रहित नगर में वास करने लगीं। ७५ महाराज दशरथ ने क्रियाकर्म समाप्त करके राजा, ऋषियों तथा ब्राह्मणों का वरण करके सन्तुष्ट होकर सबको भोजन कराया और धनरत्न देकर उन्हें विदा किया। ७६-७७ वह राजा पिता के समान प्रजा का पालन करते थे। धर्म पर ही विचार करते थे और पाप कृत्यों में उनकी अभिरुचि नहीं थी। ७८ पार्वती ने कहा, हे देव ! एक बात रह

से बेश राजन कि रखिला मूळकरि। से कथा फळिला देब कह मोते फेरि२५८०
ईश्वर बोइले शुण गो गउरी। स्तिरी बेश धरि गला जे दशरथ दण्डधारी२५८१
जमदग्नि पुत्रकु डरिण सेहू पुण। स्तिरी बेश धरि जे रहिला राजन ८२
चाळिशि सहस्र राजा स्तिरी बेश होइ। ए राजा मानङ्कर कोळरे पुत्र नाहिँ ८३
कुळ रखिबा पाइँ कि रूप जे बदळ। कार्पुण्य हेबारू न मारे जमदग्नि बाळ ८४
पार्बती बोइले सेठारू किस हेला। देबङ्कु उपकारे नारायण उठिथिला ८५
ईश्वर बोइले से कथा एबे शुण। बासुदेब उठिले चेति सहस्रे बर्षण ८६
कमळाङ्कु संगे लीळा करन्ति हर्षरे। सहस्रे बरष पूरिला शयन अन्तःपुरे ८७
उठिबार सहस्रे बरष पूरिला अन्तःपुरे। × × × × ८८
उठिबार सहस्रे बरष जाण हेला। दशरथंकु सहस्रे बरष पूरिला ८९
शयन करिबाकु सज हेले हरि। अनन्त शज्या कले रहिला आबोरि२५९०
जे जाहार द्वारे रहिला द्वारपाल। देखिण हरष जे होइले आदिमूळ२५९१
लक्ष्मी सरस्वतीङ्कि डकाइले पाश। बोइले मोर आज्ञा कर हे प्रकाश ९२
दुहिङ्कर अधे लेखाएँ अंश रखि। मेरू घरे जन्म अधे अंशरे हुअटि ९३
बेदमति धरामति हेब दुहें जाण। सात सहस्र बरष तपस्या करिब रहिण ९४

गई। दशरथ ने स्त्री का वेश धारण किया था। ७९ क्या राजा मूल रूप से उसी वेश को धारण किये रहे? हे देव! यह कथा आप हमसे खोलकर कहिए। २५८० शंकर जी बोले, हे गौरी! सुनो। राजा दशरथ स्त्री का वेश धरे हुए गये। २५८१ वह यमदग्निनन्दन परशुराम से डरकर स्त्री वेश में बने रहे। ८२ चालीस हजार राजा स्त्री के वेश में बने थे। इन राजाओं के अंक में बेटे नहीं थे। ८३ कुल की रक्षा करने के लिए उन्होंने अपना वेश बदल लिया था। कायर होने के कारण यमदग्निपुत्र उनका वध नहीं कर रहे थे। ८४ पार्वती ने कहा कि देवताओं का हित करने के लिए भगवान उठे थे। फिर वहाँ क्या हुआ। ८५ शंकर जी ने कहा कि अब उस कथा को सुनो। हजार वर्षों में भगवान नारायण उठकर चैतन्य अवस्था में आये। ८६ अंतःपुर में लक्ष्मी के साथ प्रसन्नता-पूर्वक लीलायें करते हुए फिर एक हजार वर्ष तक शयन करके उठने में हजार वर्ष लग गये। ८७-८८ जागने के समय के साथ-साथ दशरथ के भी हजार वर्ष पूरे हो गये। ८९ तब नारायण शयन करने को तैयार हुए और अनन्त शैय्या पर लेट गये। २५९० सब द्वारपाल अपने-अपने द्वार पर स्थित हो गये। यह देखकर संसार के आदि कारण भगवान प्रसन्न हो गये। २५९१ उन्होंने कहा कि मेरी आज्ञा प्रकाशित करके लक्ष्मी तथा सरस्वती को मेरे पास बुलाओ। ९२ उन्होंने कहा कि तुम दोनों आधे-आधे अंश को यहाँ छोड़कर बचे हुए अंर्धांश से सुमेरु के घर में जन्म धारण करो। ९३ वेदमती एवं धरामती नाम से विख्यात होकर तुम दोनों सात

तेबे जे जन्म जे लभिब मर्त्यपुरे। एते बोलि आज्ञा देले ब्रह्माण्ड ठाकुरे ९५
बासुदेव आज्ञारे लक्ष्मी सरस्वती। चारि गोटि मुर्त्ति से जे होइले तड़िति ९६
माया रूप दुइ गोटि मर्त्यपुरे गले। निजरूप बासुदेब संगरे रहिले ९७
अनन्त शज्ज्यारे बासुदेब कलेक शयन। पाद मंञ्चालन्ति जे कमळा वसिण ९८
सरस्वती बीणा जे तिम्बुर धरि बसि। मस्तक परे गाउणा करे शुभ्र केशी ९९
उपरे अनन्त जे सप्त फणा टेकि। जोग निद्रा कले ब्रह्माण्ड ब्रह्मराशि२६००
सकळ देबताए असुर पुर रहि।अनेक कष्टरे दिन बञ्चन्ति कष्ट सहि२६०१
पार्बती बोइले कह प्राण धन। क्षीर सागरे वासुदेव कलेक शयन २
लक्ष्मी सरस्वतीङ्कि आज्ञा देइ थिले। बासुदेब आज्ञारे से चारि मुर्त्ति हेले ३
से पुण किस कले कह हे त्रिपुरारी। ईश्वर बोइले शुण गो शाकम्बरी ४
बासुदेब शयन जहूँ पुण कले। से दुइरूप मर्त्यपुरकु आसिले ५
मेरू नबरे जाइ होइले प्रबेश। मेरूर नारी जे होइछि पाका स्पर्श ६
मेरू देहरे दुहें ज्योति रूपरे पशि। चारि दिन एथिरे बहिगलाक आसि ७
पाञ्चदिनरे शुद्ध होइला तार देह। बेश होइ देबी जे स्वामीरे कले प्रिय ८

हजार वर्ष तपस्या करना। ९४ तदुपरान्त मृत्यु लोक में जन्म धारण करना। ब्रह्माण्ड-नायक ने उन्हें इस प्रकार आज्ञा दी। ९५ भगवान वासुदेव की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मी और सरस्वती ने शीघ्र ही चार स्वरूप धारण किये। ९६ माया के दो रूप मृत्युलोक को चले गये और निजस्वरूप में वह दोनों भगवान के साथ रहीं। ९७ नारायण अनन्त शैय्या में शयन करने लगे और लक्ष्मी बैठकर उनके चरण दबाने लगी। ९८ सुन्दर बालों वाली सरस्वती उनके सिरहाने पर वीणा लेकर बैठकर गायन करने लगी। ९९ उनके ऊपर अनन्त शेष सात फन उठाये थे। ब्रह्माण्ड के ब्रह्म तत्व इस प्रकार योग निद्रा में लीन हो गये। २६०० समस्त देवता राक्षस के महल में रहकर अत्यन्त कष्ट को सहन करके दिन व्यतीत कर रहे थे। २६०१ पार्वती ने कहा हे प्राणधन ! कहिए। क्षीर-सागर में भगवान शयन करने लगे। २ उन्होंने लक्ष्मी और सरस्वती को आज्ञा दी थी जिसके अनुसार उन्होंने चार स्वरूप धारण किये थे। ३ हे त्रिपुर दैत्य के शत्रु ! बताइये कि फिर उन्होंने क्या किया। शंकर जी बोले हे शाकम्बरी ! सुनो। ४ जब भगवान शयन में लीन हो गये तब उनके (लक्ष्मी और सरस्वती) दो रूप मृत्युलोक में आ गये। ५ वह दोनों रूप मेरु के घर में जा पहुँचे। मेरु पत्नी उसी समय ऋतुमती हुई थी। ६ वह दोनों ज्योति रूप में मेरु के शरीर में प्रवेश कर गईं। इस प्रकार चार दिन बीत गए। ७ उसका शरीर पाँच दिनों में शुद्ध हो गया। उस देवी ने श्रृंगार करके स्वामी से प्रीति की। ८

रजनी काळरे स्वामीर पाशे गला। रत्न पलङ्कपरे स्वमीङ्कि भेटिला ९
चामर ढळाइ जे आगरे रहि पुण। देखिण मेरु राजा सन्तोष मनेण२६१०
कोळ करि नेइण पळङ्के बसाइला। अधर चुम्बिण गौरवे प्रीति कला२६११
निबिबन्ध फिटाइण सुरति रसे माति। रति रस करन्ते वळ बीर्ज्य आसि १२
बीर्ज्य तार आसन्ते होइला निर्बळ। दुइ घड़ि अन्तरे पशिला अंगे बळ १३
पुणि राजा संगरे रमण श्रद्धा कला। दुइथर सुरति जे रजनीरे कला १४
से दिन मेरु नारी गर्भ स्थित हेला। दिनु दिन गर्भ जे वृद्धि तार हेला अ१४
दश मास हुअन्ते प्रसब कला नारी। दुइ गोटि दुहिता गर्भरु अबतरि १५
दासी माने जाइण राजा आगरे कहि। दुइ गोटि दुहिता होइले गोसाइँ १६
शुणिण मेरु राजा सन्तोष मन हेला।
दासीमानङ्कु बधाइ धन जे आणि देला १७
पञ्चदिने पञ्चु आति षष्ठि घर करि।
उठिआरी बार रात्र सारिण दण्डधारी १८
मासे हुअन्ते मुनिमानङ्कु सुमरिला। अनेक मुनिमाने मिळिले आसि त्वरा १९
बेद पढ़ि होमकरि पबित्र ताङ्कु कला। बेदमती धारामती नाम ताङ्कु देला२६२०
सेहि राजा बोइले कह हे मुनिबर। ए दुहिता जात हेले केबण प्रकार२६२१
नारद बोइले ए जे बासुदेव नारी। कमळा सरस्वती तोर घरे अबतरि २२

रात्रि के समय वह स्वामी के निकट जाकर उनसे पलंग पर मिली। ९ वह आगे स्थित होकर चामर-चालन करने लगी। यह देखकर राजा मेरु ने सन्तुष्ट चित्त से उसे गोद में लेकर पलंग पर बैठाया। वह उसके अधरों का चुम्बन करके प्यार जताने लगे। २६१०-२६११ कटिबन्धन को खोलकर रति क्रीड़ा में मस्त होकर रमण करने से उनका वीर्य स्खलित हो गया जिससे वह आशक्त हो गए। दो घड़ी रात व्यतीत होने पर उनके शरीर में शक्ति लौटी। १२-१३ उसने राजा के साथ पुनः रमण करने की इच्छा की, रात्रि में दो बार रति क्रीड़ा की।१४ उसी दिन मेरु की स्त्री गर्भवती हो गई। दिन पर दिन उसका गर्भ बढ़ता गया। १४अ दस महीना होने पर उस स्त्री ने दो कन्याओं को जन्म दिया। १५ दासियों ने राजा के समक्ष जाकर दो कन्याओं के जन्म का समाचार दिया। १६ सुनते ही राजा मेरु का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने दासियों को लाकर बधाई का धन प्रदान किया। पाँच दिनों में पंचिमी पूजा तथा छठे दिन षष्ठी पूजा करके राजा ने बरहों को समाप्त किया। १८ एक माह होते-होते उन्होंने मुनियों का स्मरण किया। शीघ्र ही अनेकानेक मुनि लोग वहाँ आ पहुँचे। १९ वेद पाठ के साथ हवन करके उन दोनों को पवित्र करके उनका नाम वेदमती तथा धारामती रक्खा गया। २६२० तब उस राजा ने पूँछा, हे मुनिश्रेष्ठ! यह कन्याएँ किस प्रकार उत्पन्न हुई हैं। २६२१ नारद जी बोले कि यह दोनों भगवान नारायण की पत्नी लक्ष्मी तथा सरस्वती हैं जो तुम्हारे घर में

असुर मरिबा पाइँ हेले अबतार। नाराय़ण हेबे दुइ कन्याङ्कर बर २३
एहि कन्या जाहा तोते कहिबे राजन।
सेहि कन्याङ्कु राजन न बरिबु आन २४
आन न करिले तोहर प्रभुपण जिब। मन्दर उठिण गिरि राजन होइब २५
एमन्त बचन जे मुनि माने कहि। सन्तोष हेला गिरिराजा शुणि तहिँ २६
मुनिमानङ्कू मेलाणि सन्तोषरे कला। शीतळ धन देइ मुनिङ्क मन मोहिला २७
मेलाणि पाइ मुनि जे जाहा स्थाने गले। बेदमति धारामति मेरुघरे रहिले २८
एथिरे नब बरष पुण बहिगला। नब जुबा होइले दुइ दुहिता त्वरा २९
एक दिने मेरु घरणी भाळि पुण। मेरु राजा आगरे कहिला जाइण२६३०
बोइला दुहिता होइले नव जुबा। देबपुरे बर पाइ कह हे देब राजा२६३१
गिरि राजा बोइले शुण आगो राणी। से नारीङ्क बर अटन्ति चक्रपाणि ३२
नर नाराय़ण दुहे हेबे ताङ्क बर। आठ सहस्र बर्ष जे करिबे नारी बर ३३
मेरु नारी बोइले तुम्भे केमन्ते जाणिल।
मेरु राजा कहिले मोते कहिले ब्रह्माङ्क कुमर ३४
राणी बोइले ताङ्कु केमन्ते सम्भाळिबा।
पाणिअबळा नारी अबळा सम्भाळि नुहे भबा ३५
मेरु राजा बोइले तु मनरे न कर चिन्ता। जेउँ स्थानकु गमन करिबे जे सुता ३६

उत्पन्न हुई हैं। २२ राक्षसों का विनाश करने के लिये इनका अवतार हुआ है। इन दोनों पुत्रियों के वर भगवान विष्णु ही होंगे। २३ हे राजन्! यह कन्याएँ तुमसे जो भी कहेंगी तुम उसे ही करना और कुछ नहीं। २४ उनकी इच्छा के विरुद्ध करने से तुम्हारी महिमा समाप्त हो जाएगी और मन्दराचल का उत्थान होकर वह पर्वतराज बन जाएगा। २५ मुनियों के इस प्रकार के वचन सुनकर गिरिराज सन्तुष्ट हो गए। २६ राजा ने सन्तुष्ट होकर मुनियों को धन तथा चन्दन देकर विदा किया और उनका मन मोह लिया। २७ विदा होकर मुनिगण अपने-अपने स्थान को चले गए। वेदमती तथा धारामती मेरु के घर में पलने लगीं। २८ इस प्रकार नौ वर्ष व्यतीत होने पर दोनों कन्याएँ वेग से नवयौवना हो गईं। २९ एक दिन सोच विचार करके मेरु पत्नी ने जाकर महाराज सुमेरु से कहा कि कन्याएँ नवयुवती हो गई हैं। आप स्वर्ग के देवराज इन्द्र से वरण करने के लिये कहें। २६३०-२६३१ पर्वतराज ने कहा, हे रानी! सुनो। इन दोनों बालिकाओं के वर स्वयं चक्रधारी विष्णु हैं। ३२ नर-नारायण दोनों उनके वर होंगे। आठ हज़ार वर्षों में दोनों विवाह करेंगी। ३३ मेरु पत्नी बोली कि आपको यह कैसे ज्ञात हुआ। मेरुराज ने कहा कि यह हमें ब्रह्मा जी के पुत्र ने बताया था। ३४ रानी ने कहा कि उन्हें कैसे सम्हालेंगे। पानी का वेग तथा अबला नारी सम्हाले नहीं सम्हलती। ३५ मेरुराज ने कहा कि तुम मन में

शुणिण मेरुराणी सन्तोष मन होइ। केउँमाने रखिब रख हे बेगे नेइ ३७
शुणिण मेरु राजा दुहिता पाशे गला। बेनि दुहिताङ्कु जाइण पचारिला ३८
बोइला तुम्भ पाइँ कि खोजिबा कि बर।से बोइले आम्भ बर ब्रह्माण्ड ठाकुर ३९
निर्मळ स्थान देखि सेठारे नेइ रख। तपस्या कले दया करिबे श्री मुख२६४०
इंकार उंकार ध्वनि जे आम्भे करूँ। "उँकार" महामंत्र अटइ महामेरु२६४१
एथिर भितरे जेबे अन्य करइ कृत्य। तेबे अग्निरे झास देबुँटि नियत ४२
शुणिण मेरु राजा संतोष मन हेला।
मुनि कहिबा बचन ग्राङ्कु ठारे संम्भबिला ४३
एते बिचारि राजा रथेक अणाइँला। दुइ कुमारि बस बोलिण बोइला ४४
बेदमती बोइला अणाअ तिनि दान। शते शते दासी दिअ आम्भ संगतेण ४५
तिनि पुर द्रव्य जे आणिवे एहू हरि।बिचारिले मन बाँछा पुरिब आम्भरि ४६
चारि बेद पढ़िबे कहिबे न्याय मान।
बयाळिशी काण्डी मंत्र करिबे भिन्न भिन्न ४७
एमन्ते मूळमंत्र एहि प्रकाश करिबे। से नारीमाने आम्भ संगतरे थिबे ४८
तेबे तप सिद्ध जे होइब आम्भर। शुणिण मेरू राजा सुमरे मुनिबर ४९

चिन्ता न करो। पुत्रियाँ स्वस्थान को गमन करेंगी। ३६ यह सुनकर मेरु रानी का मन सन्तुष्ट हो गया। जिनको भी इन्हें रखना हो वह ले जाकर इन्हें रक्खे। ३७ यह सुनकर राजा मेरु कन्याओं के पास गए। उन्होंने दोनों कन्याओं से जाकर पूँछा। ३८ क्या तुम्हारे लिये वर की खोज करें। उन्होंने उत्तर दिया कि हमारे स्वामी ब्रह्माण्डनायक हैं। कोई स्वच्छ स्थान देखकर वहाँ हमें रखिये। तपस्या करने से भगवान दया करेंगे। २६४० हम लोग इंकार तथा उँकार ध्वनि करें। ओंकार मन्त्रों में महामेरु के समान है। २६४१ यदि इसमें कोई अन्य कार्य करेगा तो हम लोग निश्चित रूप से अग्नि में कूद जाएँगी। ४२ यह सुनकर मेरु पर्वत मन में प्रसन्न हो गये। मुनि का कहा हुआ वचन इनके द्वारा सम्भव होगा। ऐसा विचार कर राजा ने एक रथ मँगवाया और उस पर दोनों कुमारियों को बैठने के लिये कहा। ४३-४४ वेदमती ने कहा कि तीन रथ मंगाइये और हमारे साथ सौ-सौ दासियाँ दीजिए। ४५ यह तीनों लोकों की निधि को हरण करके ले आएँगी और इस प्रकार उन्होंने विचार किया कि हमारी मनोकामना पूर्ण होगी। ४६ चार वेदों का पाठ करके जो न्याय की बातें बताएँगी। बयालिस काण्ड के मन्त्रों को जो भिन्न-भिन्न कर देंगी। ४७ इस प्रकार से यह मूल मन्त्र प्रकाशित करेंगी। अस्तु यह नारियाँ हमारे साथ रहेगी। ४८ तब हमारी तपस्या सिद्ध होगी। यह सुनकर मेरु राजा ने मुनि श्रेष्ठ का स्मरण किया। ४९ यह समझ कर महर्षि

जाणिण नारद जे अइले स्वर्गपुरु । देखिण मेरूराजा नमिलाक दुरु२६५०
नारद बोइले किम्पा सुमरणा करू । मेरू राजा बोइले शुण हे महामेरू२६५१
दुहिता दुहें जिबे पाताळपुर जाण । से बोइले तप जे करिबुं आम्भे पुण ५२
तपर मंत्र जंत्र आम्भङ्कु आणिदिअ । चारि बेद शबद जेमन्ते हूए प्रिय़ ५३
नारद तो पुरे अछन्ति दासीगण । जेउँ स्थाने रहिब कर हे गमन ५४
बेदमती धीरामति पाशकु देब गले ।जे उँ स्थाने रहिब से स्थानकु चळ भले ५५
बेदमती धीरामती शुणिण रथे बसि । शते शते दासी जे संगरे घेनि छन्ति ५६
रथर उपरे मेरू नारद बसिले । तिनि रथ गमन्ते पाताळ पुरे गले ५७
रून्धेक नामे बिबर द्वाररे प्रबेश । बारजूण पर्ज्यन्ते नजाए जानत ५८
तिनि जान उपरू ओल्हाइ सर्बे जाण । से बिबर बाटे सर्बे कलेक गमन ५९
सुबर्ण ज्योतिपुरे प्रबेश हेले पुण । निबिड़ अन्धाररे करन्ति गमन२६६०
से जळ मध्यरे पद्म पुष्कर जे होइ । सेथिरे लीळा कले डाहूक हंसरहि२६६१
स्वाद जळ संगरे सरि सेहू जळ । बास करे जळ चन्दन अगर प्रकार ६२
तहिँर मध्यरे अछि एकइ मन्दीर ।
पचाश काळ सेथिरे रहन्ति अपसरा मेळ ६३

नारद स्वर्ग लोक से आ गए। उन्हें देखकर राजा मेरु ने दूर से ही प्रणाम किया। २६५० नारद ने कहा कि मुझे किसलिये स्मरण कर रहे हैं। मेरुराज ने कहा कि हे महान् आत्मन् ! सुनिए। २६५१ दोनों पुत्रियाँ पाताल लोक जाकर तपस्या करेंगी ऐसा यह कह रही है। ५२ यह भी कह रही हैं कि हमें तप का मन्त्र-यन्त्र लाकर दो जिससे चार वेदों का शब्द प्यारा लगने लगे। ५३ नारद ने कहा कि तुम्हारे महल में दासियाँ है। तुम्हें जिस स्थान में रहना हो वहाँ की यात्रा करो। ५४ देवर्षि ने वेदमती और धारामती के निकट जाकर कहा कि तुम्हें जिस स्थान पर रहना है वहाँ चलो। ५५ यह सुनकर वेदमती और धारामती रथ पर बैठ गयीं। उन्होंने सौ-सौ दासियाँ साथ में ले लीं। ५६ राजा मेरु तथा नारद रथ पर बैठ गए और तीन रथों पर चढ़कर पाताल लोक गए। ५७ वह लोग रुन्धक नाम के विवर के द्वार पर जा पहुँचे। बारह योजन पर्यन्त रथ नहीं जा पाए। ५८ सभी लोग रथ से नीचे उतर पड़े और उस विवर मार्ग से गमन करने लगे। ५९ घने अन्धकार में चलते-चलते वह लोग सुवर्ण ज्योतिपुर में जा पहुँचे। २६६० उस जल के मध्य में पद्म सरोवर था। वहाँ डाहुक पक्षी तथा हंस विहार कर रहे थे। २६६१ उसका जल स्वाद के साथ ही साथ चन्दन तथा अगुरु के समान सुगन्धि दे रहा था। ६२ उसी के मध्य भाग में एक मन्दिर था। वहाँ पर पचासों अप्सराएँ मिलकर रहती थीं। ६३

हास रस लीळारे से माने स्नान करि । किछि दिन रहिण जाअन्ति स्वर्गपुरी ६४
सकळ जीवङ्कु गुप्त अटे सेहि स्थान । नर बानर असुर नकरे गमन ६५
पुण लता जंगळ दश सस्र जूण ।
सेथिरे लीळा करन्ति सरसी जीब मान ६६
मृग स्वयंम्बर जे हरिण बाहूटिआ । शंखा गण्डा कस्तुरी कुआद बळिआ ६७
एमन्ते नाना जीव सेथि करन्ति लीळा । से बन जे दिशइ महा शोभा त्वरा ६८
फळबन सेथिरे पन्दर सस्र जूण ।नाना जाति फळ जे सेथिरे फळे जाण ६९
लबंग अळाइच मरिच जाइफळ ।श्रीफळ मुखबास डाळिम्ब सेथि ताळ२६७०
जेउठ करमंगा लेम्बु जे नारंग । टभा आम्ब पणस मल्ली जे पुनांङ्ग२६७१
रम्भा बृक्ष फळ जे सबुरि परे सार । अनेक फळ पाणि जे पड़इ भुमिर ७२
पन्दर जूण पर्ज्जन्ते फळरेशोभाबन । डाळधरि फळ धरणीरे लोटे जाण ७३
फळ बन उत्तारू पुष्प बन जे तहिँ । अनेक जातिरे पुष्प सेथिरे अछइँ ७४
मल्ली मंन्दार जे पारिजात पुण । अरुण बरुण जे पोलाङ्ग शोभाबन ७५
बउळ जाई जुइ सेबती तराट । चम्पक कनिअर सेवति धळाबट ७६
तुळसि दयणा अगस्ति अप्राजिता । अरख गयस जे करुणा रक्त चिता ७७
ए रूपे अनेक पुष्प से बने अछि पुरि । बार जूण परिज्यन्ते पुष्प बन घेरि ७८

वह लोग कुछ दिन हास परिहास करती हुई लीलायें करके स्वर्ग लोक चली जाती थी। ६४ वह स्थान समस्त प्राणियों के लिये गुप्त था। वहाँ पर नर-वानर तथा असुर जा नहीं पाते थे। ६५ वहाँ दस हजार योजन पर्यन्त लताओं का वन था। वहाँ पर तालाब के जीव बिहार कर रहे थे। ६६ मृग, साम्भर, हरिण, गैंडे, कस्तूरी मृग, कौवे आदि नाना प्रकार के जीवों के विहार करने से वह वन अत्यन्त शोभायमान लग रहा था। ६७-६८ पन्द्रह हजार योजन में वहाँ फलों का वन था। जिसमें अनेक प्रकार की जातियों के फल फलते थे। ६९ लौंग, इलाइची, कालो मिर्च, जायफल, नारियल, मुखवास, अनार, ताड, खट्टे-मीठे नींबू, नारंगी, आम, कटहल, मल्ली पुनांग, केले आदि फलों के विशेष वृक्ष थे। अनेक फलों का रस पृथ्वी पर चूता रहता था। २६७०-७१-७२ पन्द्रह योजन पर्यन्त वन शोभा से युक्त था। फलों के कारण शाखायें पृथ्वी पर लोट रही थीं। ७३ फलों के वन के आगे फूलों का वन था जिसमें नाना प्रकार की जातियों के पुष्प थे। ७४ मल्ली, मन्दार, पारिजात, अरुण, वरुण तथा पोलांग शोभायमान थे। ७५ वउल पुष्प जूही, चमेली, सेवती, चम्पा, कनेर, सफेद चाँदनी, तुलसी, अगस्त, अपराजिता, दयण (विशेष प्रकार का पुष्प) लाल रंग के धारीदार फूल अर्क आदि नाना प्रकार के पुष्पों से भरा हुआ वह वन बारह योजन में फैला हुआ था। ७६-७७-७८ चालीस योजन पर्यन्त जमाव दिखाई

चाळिशि जूण परिज्यन्ते मेला दिशे पुण। कोडिए जूण पर्ज्यन्ते नवर अटे जाण ७९
ए रूपे शते जूण से पुर गोटि होइ।चन्द्र सुर्ज्य तेज नाहिँ कनक तेज मही२६८०
हीरा नीळा बैडूर्ज्य मोति जे माणिक्य।रूपा सुना मिश्रित तम्बारे अष्ट रत्न२६८१
एमानङ्कु तेजरे एपुर उज्ज्वळ। जे सनेक चन्द्र सुर्ज्य आकाश मण्डळ ८२
शुणिण पार्वती जे बोलन्ति बचन। चन्द्र सुर्ज्य नाहान्ति नाहिँ जे मेघ पुण ८३
केउँ रूपे नगर सेठारे पुण रहि। बरषा नाहिँ सेथिरे फळ फळे काहिँ ८४
चन्द्र सुर्ज्य न थिले नुहन्ति शस्य जाण। केमन्ते से पुर रहे कह हे त्रिलोचन ८५
ईश्वर बोलन्ति भगवती शुण। से पुर रे जेउँ रूपे फळ फळे जाण ८६
सात दिने चन्द्र सुर्ज्य थरे जान्ति जाण। से पुरे प्रकाश होन्ति रात्र दिवसेण ८७
शस्यसमीर बरदायक करन्ति सेथि रहि। तिनिजूण निर्बन्धेक पुण अछि रहि ८८
पार्वती बोइले जे सेठारू किस हेला। वेदमती धीरामती से पुरकु गला ८९
नारद मेरु राजा अछन्ति संगरे। प्रवेश होइले सेहू सुबर्ण ज्योतिपुरे२६९०
ईश्वर बोइले से कथा एबे शुण। मो पुरे प्रवेश जे हेले चारिजण२६९१
निर्मळ शउच जे देखिण नवर। से दुइस्थान देखिले उत्तम परिमळ ९२
से दुइ सिंहासनरे बसिले दुइ नारी। वेद मंत्र शिखाइले नारद ब्रह्मचारी ९३

पड़ता था। बीस योजन पर्यन्त महल फैला था। ७९ इस प्रकार से वह नगर सौ योजन में फैला था। वहाँ चन्द्र तथा सूर्य प्रकाश नहीं देते थे। वहाँ की पृथ्वी सोने से प्रकाशित होती थी। २६८० हीरा, नीलम, वैंदूर्य, मोती, माणिक्य, सोना, चाँदी, ताँवा तथा मिलेजुले अष्टरत्नों के तेज से यह लोक प्रकाशित होता था। जैसे चन्द्र, सूर्य से आकाश मण्डल प्रकाशित होता है। २६८१-८२ यह सुनकर पार्वती जी वोलीं कि चन्द्र-सूर्य भी नहीं है। वादल भी नहीं है। फिर वह नगर किस रूप से वहाँ स्थित रहा। वर्षा न होने से वहाँ फल कैसे फले। ८३-८४ आप जानते है कि चन्द्र सूर्य के न रहने से फसल नही होती। हे त्रिलोचन! फिर वह नगर किस स्थिति में रहता था। ८५ शंकर जी ने कहा हे भगवती! उस नगर में जिस प्रकार से फल फलते थे, उसे सुनो। ८६ सात दिनों में एक बार वहाँ चन्द्रमा और सूर्य जाकर रात-दिन प्रकाशित होते थे। ८७ तीन योजन तक अबाध गति से वायुदेव वहाँ रहकर फसल को समृद्धि प्रदान करते थे। ८८ पार्वती ने कहा कि फिर वहाँ क्या हुआ। जब वेदमती और धीरामती उस लोक में पहुँची। ८९ नारद तथा मेरु राजा को साथ लिये हुये वह उस सुवर्ण ज्योतिपुर में प्रविष्ट हुयी। २६९० शंकर जी ने कहा कि अब वह कथा सुनो। वह चारों लोग मेरे पुर में प्रविष्ट हुये। २६९१ स्वच्छ और पवित्र नगर को देखकर उसमें उन्हें दो स्थान भले सौरभयुक्त दिखाई दिये। ९२ वह दोनों स्त्रियाँ दो सिंहासनों पर बैठ गयी। ब्रह्मचारी

जाग जज्ञ विधि कर्म ताङ्कु बताइ देले । शते शते दासो ताङ्क संगरे रहिले ९४
बिधि मते रखाइ नारद स्वर्ग गले । जशोबन्ती पुररे प्रवेश होइले ९५
मेरु राजा शान्तिशिळे देइ चालिगले । आपणा नबररे परबेश हेले ९६
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । निश्चळ आसनरे बसिले दुइ नारी ९७
अग्नि आरोपण करि घृत समिध देले । बेद मंत्र पढ़िण अग्निरे होम कले ९८
एमन्ते सप्त सहस्र बर्ष गला बहि । होम सिद्ध हेबारू आसन टळइ ९९
आसन टळिबारू तेजिले सेहू जज्ञ ।मंत्र स्मरण करन्ति आत्म पवित्र जोग२७००
आत्मा पवित्र उत्तारू भजन्ति नारायण। नारायण नाम मनरे करुछन्ति ध्यान२७०१
बिचारन्ति बासुदेब होइबे आम्भ पति । तेबे जे आम्भेमाने पाइबु मुकति २
एमन्त बिचारि से अन्तर्गतरे भाबि । एथु अनन्तरे शुण गो शोभा देबी ३
एक दिनरे बिश्रबा नन्दन राबण । दिगबिजे पाताळकु करिथिला जाण ४
सनमान हरषरे दशानन गला । जेनामणि पाटणारे प्रवेश होइला ५
बउळा केशरी राजा पाशरे प्रवेश । वाणासुर पुत्र सांग मिळिला विशेष अ५
से ठारू शान्ति होइ बेगे चलिगला । शीतळ हेमपुरे प्रवेश होइला ब५
से पुरे राजन जे अटइ सुमाळि । नारायणंकु डरि चारि द्वार पाळि ६
सुमाळिर नाति जे दशानन पुणि ।से जिबारू द्वार जे फेड़िला द्वारी जाणि ७
से बाटरे राबण बेगे चळिगला । सुमाळिर संगतरे सम्भाबना हेला ८

नारद ने उन्हें वेदमंत्र यज्ञ, हवन आदि विधि विधान के कार्य समझा दिये। सौ-सौ दासियाँ उनके साथ रहीं। ९३-९४ इस प्रकार विधिपूर्वक उन्हें रखकर नारद स्वर्ग को गये और यशोवंतीपुर में जाकर प्रविष्ट हुये। ९५ राजा मेरु भी शांति और शील के साथ अपने महलों में जा पहुँचे। ९६ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् वह दोनों नारियाँ निश्चल भाव से आसन पर बैठ गयीं। ९७ उन्होंने अग्नि स्थापित करके घृत-आहुति दी और वेदमन्त्र पढ़कर अग्नि में हवन किया। ९८ इस प्रकार सात हजार वर्ष व्यतीत हो गये। हवन सिद्ध होने के कारण आसन हिलने लगा। ९९ आसन हिलने से उन्होंने यज्ञ का परित्याग कर दिया। वह आत्म पवित्रता के लिये मंत्र का स्मरण करने लगी। २७०० आत्मा को पवित्र करके वह भगवान का भजन करने लगीं और भगवान के नाम का ध्यान मन में करने लगीं। २७०१ उन्होंने विचार किया कि जब भगवान हमारे पति होंगे तभी हमें मुक्ति प्राप्त होगी। २ इस प्रकार का विचार वह अपने हृदय में कर रही थीं। हे सुन्दरी ! सुनो। इसके पश्चात् एक दिन विश्रवानन्दन रावण ने पाताल को जीत लिया। ३-४ दसकंधर गर्व से उन्मत्त होकर जेनामणि नगर में जा पहुँचा। ५ वह बौला केशरी राजा के पास जा पहुँचा। विशेष प्रकार से वाणासुर के पुत्र से उसकी भेंट हुई। अ५ फिर वह वहाँ से शान्तिपूर्वक शीघ्र ही चल दिया और शीतलपुर में पहुँच गया। ब५ सुमाली उस नगर का राजा था। भगवान विष्णु से डरकर

दशग्रीव पचारिला कि कारणे द्वार पाड़। सुमाळि बोइला शुण हन्तकारू ९
वैकुण्ठ पुररे कर्त्ता जे नारायण। मोहर व्रंश सेहू कला निशोधन२७१०
ताहाकु भय़ करि द्वार अछि किळि। एमन्त बोलिण जे कहइ सेहू वळि२७११
राबण बोइला तु नकर किछि भय़। अइले नारायणकु मुँ मारिवि निश्चय़ १२
एते कहि दशानन सेठारू चळि गला। रून्धक बिवर द्वारे प्रवेश होइला १३
रथरू ओल्हाइ बिबर पाशे जाइ। ताकु देखि दुइ कन्या अन्तर होइ रहि १४
बुलिण देखिला सकळ पुर जाइ। से पुर देखिण फेरिला लंक साइँ १५
बिबर बाटे आसि रथरे पुण वसि। बर्षे पाताळरे वुलिला पौळ स्त्यर नाति १६
कुळ जाति समस्त मानंकु शंखोळिला। दुष्ट जन मानंकर संगरे कळि कला १७
वज्र कवच ठारे होइला प्रवेश। ता संगरे रण कला विश्वबार शिष्य १८
बरषे परिजन्ते ता संगे रण कला। हारिण सप्त वरष बन्दीरे रहिला १९
बिश्वबा ऋषि आसि ताकु घेनि गला। सहस्रार्जुन संगे रावण रण कला२७२०
रणरे हारिवारू पड़िला से बन्धन। बासतुरि वर्षरे हेलाक मुकळण२७२१
पौलस्ति ऋषि आसि ताहाकु घेनि गले। दशग्रीव गला जे लंकापुर भले २२
पार्वती पचारिले सेठारू किस हेला। वेदमती धीरा मतीङ्कु कथा कह देव परा २३

उसने चारों द्वारों पर पहरेदार लगा दिये थे। ६ दस सिर सुमाली का नाती था। उसके जाने पर द्वारपाल ने उसे पहचान कर द्वार खोल दिया। ७ उस मार्ग से रावण बड़े वेग से जाकर सुमाली से मिला। ८ दसानन ने पूछा कि आपने किस कारण से द्वार बन्द कर रखे हैं। सुमाली बोला, हे वीर! सुनो। ९ वैकुंठ लोक के कारक नारायण ने हमारे वंश का विनाश कर डाला है। २७१० उन्हीं से डरकर मैंने द्वार बन्द करवा रखे है। उस पराक्रमी वीर ने रावण को इस प्रकार बताया। २७११ रावण बोला, कि तुम किंचित भय न करो। विष्णु भगवान के आने पर मैं उसे निश्चय ही मार डालूंगा। १२ ऐसा कहकर रावण वहाँ से चला गया और रून्धक विवर के द्वार पर जा पहुँचा। १३ रथ से उतर कर विवर के निकट जा पहुँचने पर उसे देखकर दोनों कन्यायें छिप गई। १४ उसने घूम फिरकर सारा महल देखा और उसे देखकर लंकापति लौट गया। १५ विवर के मार्ग से आकर पुलस्त ऋषि का नाती दसग्रीव रथ पर बैठकर एक वर्ष तक पाताल में घूमता रहा। १६ अपने सभी-सजातीय बन्धुओं के साथ उसने मेल-मिलाप किया और दुष्ट लोगों के साथ उसने युद्ध किया। १७ विश्रवानन्दन ने वज्रकवच के यहाँ पहुँचकर उसके साथ युद्ध किया। १८ एक वर्ष पर्यन्त युद्ध करने पर वह हारकर सात वर्ष तक वज्रकवच के यहाँ वन्दी रहा। १९ विश्रवा ऋषि आकर उसे ले गये फिर रावण ने सहस्रार्जुन के साथ युद्ध किया। २७२० रण में पराजित होने के कारण वह वन्धन में पड़ गया और बहत्तर वर्ष में उसे मुक्ति मिली। २७२१ पुलस्त ऋषि आकर उसे ले गये। फिर दससिर रावण लंकापुर चला गया। २२ पार्वती ने पूछा कि वहाँ क्या हुआ। हे देव! वेदमती और धीरामती की कथा सुनाइये। २३ शंकर जी

ईश्वर बोइले शुणरे भगवती । बेदमती धीरामती अन्तर हेले सेथि २४
रावण जिबारू निज आसने जाइ रहि । पन्दर सहस्र बर्ष एथिरे गला बहि २५
धीरामती कि बेदमती कहिले वचन । बोइले मर्त्य पुरकु मुँ करूछि गमन २६
नाराय़कणंकु भेटिबा जाएँ तुहि एथि थिबु।रघुराम दर्शने पर्शुरामंकु बिभा हेबु २७
एते कहि बेदमती तहूँ चळि गला । दासी गण संगे घेनि मर्त्यरे मिळिला २८
बिन्ध्यगिरि निकटरे चन्दन नामे वन । से ठारे प्रबेश जे बेदमती पुण २९
निर्मळ शउच पुष्करिणी देखि । सेठारे रहिला मनरे होइ सुद्धी२७३०
बेदमती रहिबारू स्वर्गरू सुरगण । शुन्यरे थाइण से बिचारन्ति पुण२७३१
बोइले अळप दिने चारि रावण हेबे हत। आम्भ निमन्ते कमळा जन्म होइबेत ३२
एमन्त बिचारि बिश्वकर्माकु डाकन्ति । मर्त्य पुरकु तुम्भे चळ हे तड़ति ३३
त्रैलोक्यर ठाकुराणी अइले मर्त्यपुर । पन्दर सस्र बरष रहिले पाताळर ३४
सहस्रे बर्ष मर्त्य पुररे रहिबे । जीबन्ता सात बरष सेहू तपि हेबे ३५
रावण देखिले जे मृत्युकु लभिबे । मृत शरीररे तिनि शत बरष रहिबे ३६
तेबे से नाराय़ण मर्त्यरे जन्म हेबे । चतुर्धा रूपरे जे जन्मिबे बासुदेबे ३७
तुम्भे मर्त्यपुरे जाइ कार्ज्य जे करिब ।बाचस्पति भुबन चन्दन बनरे तिआरिब ३८
तहूँ से बिश्वकर्मा बहन चळि गला । बिन्ध्यगिरि निकटरे जाइण मिळिला ३९

बोले हे पार्वती ! सुनो। वेदमती और धीरामती वहाँ छिप गई थीं। २४ रावण के जाने पर वह अपने-अपने आसनों पर आ गई। इस प्रकार पन्द्रह हजार वर्ष व्यतीत हो गये। २५ धीरामती से वेदमती ने कहा कि मैं मृत्युलोक जा रही हूँ। २६ मै नारायण से जाकर मिलूँगी तुम यहीं रहो। रघु राम के दर्शन करके तुम परशुराम से विवाह करना। २७ इतना कहकर वहाँ से दासियों को साथ में लेकर चल पड़ी और मृत्यु लोक में जा पहुँची। २८ विन्ध्याचल पर्वत के निकट चन्दन वन है। वेदमती वहाँ प्रविष्ट हुई। २९ स्वच्छ एवं पवित्र सरोवर को देखकर वह विशुद्ध मन से वहाँ ठहर गई। २७३० वेदमती के रहने से स्वर्ग से देवता लोग आकर आकाश में विचार करने लगे कि थोड़े ही दिनों में चार रावणों का संहार होगा। हमारे लिये लक्ष्मी जन्म धारण करेंगी। २७३१-३२ इस प्रकार विचार करके उन्होंने विश्वकर्मा को बुलाकर उन्हें शीघ्र ही मृत्युलोक में जाने को कहा। ३३ तीनों लोको की अधिष्ठात्री पन्द्रह हजार वर्ष पाताल में रहकर मृत्युलोक में आ गई है। ३४ वह एक हजार वर्ष मृत्युलोक में रहेगी। सात वर्ष जीवित रहकर वह तपस्या करेगी। ३५ रावण को देखकर वह मृत्यु को प्राप्त करेगी। मृत शरीर से वह तीन सौ वर्ष रहेगी। ३६ तब नारायण वासुदेव चार रूपों में मृत्युलोक में जन्म धारण करेंगे। ३७ तुम मृत्युलोक में जाकर यह कार्य करोगे कि चन्दन वन में देव सदन का निर्माण करोगे। ३८ विश्वकर्मा वहाँ से चलकर शीघ्र

चन्दन बनरे से होइला प्रवेश। रजनीरे विश्वकर्मा करिला पुर शेष२७४०
पाचेरी गोडिए जूणेक प्रति कला। बिपुळरे रत्नपुर भितरे रचिला२७४१
कूप बाँम्फी सरोवर कलाक भिआण।नाना वर्णे द्रव्यमान रखिला तहिँ पुण ४२
समस्त परिपूर्ण करि विश्वकर्मा। बेदमती आगे मिळिला सहस्र ब्रह्मा ४३
कर जोड़ि आगरे कलाक जणाण। त्रैलोक्य ठाकुराणी हुअ गो प्रसन्न ४४
दुष्ट जन नाश करि सन्थ लोक पाळ। तिनि पुरर शत्रुकु बेगकरि मार ४५
सुर नर नागबळ रख प्रति पाळि। स्थिर होइ जेमन्ते रहिव महीआळि ४६
करुणामयी गो करूणा एवे कर। तोह रचिवार ए सवु संसार ४७
जन्मकला देवता अटन्ति तोर देवी। एमानंकु सम्पादि रक्षा कर भावि ४८
प्रसन्न वदनी गो नारायणी नाम। दश रूपरे नारायणंकु मोहू पुण ४९
प्रथमे कमळा नाम अटइ तोहार। द्वितीय नारायणी मोहिलु चक्रधर२७५०
तृतीय महालक्ष्मी समस्तंकु देउधन। चतुर्थे सागर दुल्लणी नाम पुण२७५१
पंचमे गज वाहिनी तोर नाम सार।षष्ठे अन्नपूर्णा सकळ लोकंकु देउ आहार ५२
सप्तमे सीता रूपरे जात हेउ। दुष्टंकु निबारिण पृथ्वीकु सुख देउ ५३

ही बिन्ध्य गिरि के निकट चन्दन वन में जा पहुँचे और रात भर में उन्होंने देव सदन निर्मित कर दिया। ३९-२७४० प्राचीर के साथ उन्होंने एक योजन का ओसारा बनाया। भीतर नाना प्रकार के रत्नों से महल बना दिया। २७४१ कुएँ, बावली तथा सरोवर का निर्माण किया। वहाँ उन्होंने नाना प्रकार के पदार्थ भर दिये। ४२ विश्वकर्मा समस्त कार्यों को पूर्ण करके वेदमती के आगे जा पहुँचे। ४३ सहस्र ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना करते हुए कहा, हे त्रैलोक्य स्वामिनी! आप प्रसन्न होइये। ४४ आप दुष्टों का विनाश करके सन्त लोगों की रक्षा कीजिये। तथा तीनों लोकों के शत्रु का शीघ्र ही विनाश कीजिये। ४५ सुर, नर, नाग समूह का प्रतिपाल करती हुई आप उनकी रक्षा कीजिये जिससे पृथ्वी स्थिर रह सके। ४६ हे दयामयी! अब कृपा कीजिये। यह सम्पूर्ण संसार आपकी ही सृष्टि है। ४७ हे देवी! आपने ही देवताओं को उत्पन्न किया है। आप सोच-विचारकर इनकी रक्षा कीजिये। ४८ हे प्रसन्नानने! आपका नाम नारायणी है। आप दस रूपों से नारायण को मोहित करनेवाली हो। ४९ आपका पहला नाम कमला है। दूसरा नाम नारायणी है। आपने चक्रधारी विष्णु को मोह लिया है। २७५० आपका तीसरा नाम महालक्ष्मी है। आप सबको सम्पत्ति प्रदान करने वाली हो। आपका चौथा नाम सागर नन्दिनी है। २७५१ आपका पाँचवाँ विशिष्ट नाम गजवाहिनी है। छठा नाम अन्नपूर्णा है। आप सबको भोजन प्रदान करनेवाली है। ५२ सातवें आप सीता के रूप में जन्म धारण करके दुष्टों का संहार करके पृथ्वी को सुख देने वाली है। ५३ आठवें विष्णुप्रिया

अष्टमे बिष्णु बल्लभी क्षीर सागरे रहि । त्रैलोक्य ठाकुरंकु मर्दन करू तुहि ५४
नवमे रुक्मिणी नाम धरिण हेउ जन्म । चौषठि सहस्र कन्या तोहार अंशे पुण ५५
से जन्मे चारि भाग तोहार शरीर । चारि रूप धरि हरि संगरे बिहार ५६
नित्य स्थळ गोप जे पाटणा बृन्दाबन । राधिका रूपरे तोर अंशरे जनम ५७
षोळ सहस्र गोपाळुणीङ्कू उपरे तु श्रेष्ठ ।
बाळ काळे श्री हरिङ्कि मोहिण कलु बश ५८
एगार बर्ष सेथिरे तुहि लीळा कलु । असुर मारिबा पाइँ अंशेक रूप हेलु ५९
द्वितीये जात तोर देब ऋषि कोळे । कश्यपर दुहिता होइलु से काळे२७६०
षोळ सहस्र देबङ्कु दुहिता संगे घेनि । नाम श्रेष्ठ तोहार कुबुजी मालुणी२७६१
मथुरारे तेर बर्ष लीळा कलु रहि ।कुबुजा मालुणी बोलि तो नाम बोलाइ ६२
तेर बर्ष उत्तारू मथुरा तेज्या करि । देब कन्या घेनि तु जे गलु स्वर्ग पुरी ६३
द्वारकारे रुक्मिणी रूपे मोहिलु श्री हरि। अष्ट पाट बंशी जे तो अंशे अबतरी ६४
राजकन्या षोळ सस्र तुम्भर अंश मेळ । लक्ष्ये साठिए सहस्र नन्दन तोहर ६५
बतिश सहस्र कन्या तोठारू जात हेले । सहस्रे देवतांकु बरिण स्बर्गे गले ६६
से जन्म अन्ते होइब दशमरे जन्म । बासुदेब अबतार निराकार जाण ६७

के रूप में क्षीर सागर में रहकर त्रिलोकीनाथ के चरणों को चापने वाली है। ५४ नवम् स्वरूप में रुक्मिणी नाम से आपका जन्म होगा और तुम्हारे अंश से चौसठ हजार कन्याएँ होंगी। ५५ उस जन्म में तुम्हारे शरीर के चार अंश होगे और चार रूप धारण करके तुम नारायण के साथ विहार करोगी। ५६ गोपों की नित्य स्थली वृन्दाबन के ग्राम में तुम्हारे अंश से राधिका रूप में जन्म होगा। ५७ सोलह हजार गोप बालाओं में तुम श्रेष्ठ होगी। वाल्यकाल में ही तुमने श्री हरि का मन मोहित कर लिया। ५८ ग्यारह वर्ष पर्यन्त तुमने वहाँ बिहार किया। असुरों के नाश के लिये एक अंश से तुम्हारा यह रूप हुआ। ५९ दूसरे अंश का जन्म देव ऋषि के घर में हुआ। उस समय तुम कश्यप की पुत्री हुई। २७६० सोलह हजार देव कन्याओं को साथ लेकर तुमने श्रेष्ठ कुब्जा मालिनी नाम से मथुरा में रहकर तेरह वर्षो तक लीलाएँ कीं। उस समय तुम्हारा नाम कुब्जी मालिनी विख्यात था। २७६१-६२ तेरह वर्ष के उपरान्त मथुरा का त्याग करके देव कन्याओं को साथ लेकर स्वर्ग लोक गई। ६३ द्वारका में रुक्मिणी रूप से तुमने श्री हरि को मोहित किया। तुम्हारे अंश ने आठ विशिष्ट राजवंशों में जन्म धारण किया (जो कृष्ण की अष्ट पटरानियाँ थीं)। ६४ तुम्हारे अंश से सोलह हजार राज कन्याओं का मेल हुआ। तुम्हारे एक लाख साठ हजार पुत्र हुये। ६५ तुमसे बत्तीस हजार कन्यायें उत्पन्न हुई जो एक हजार देवताओं का वरण करके स्वर्ग चली गयीं। ६६ उस जन्म के रहते-रहते तुम्हारा दसवाँ जन्म होगा। वासुदेव का वह अवतार

सेहि निराकार जे चतुर्धा मुरति। दारु ब्रह्म रूपे नीळाचळरे हेबे स्थिति ६८
से काळे जन्म तोर परमेश्वर रूप। एहि रूपे दशरूप हेबे जे स्वरूप ६९
एते बोलि सहस्र ब्रह्मा जणाण पुण कला। कर जोड़ि आगरे उभा से होइला२७७०
बेदमती बोइले शुण सहस्र ब्रह्मा। आगे बासुदेबंक हूकुम कर कि ना२७७१
जाअ स्वर्गपुर कह जा सुरराण। शुणिण सहस्र ब्रह्मा चळि गला पुण ७२
स्वर्गरे प्रवेश जाइ होइला तक्षण। बसिथिले इन्द्र आदि सर्व सुर गण ७३
देवंकु बोइले मुं अइलि बोध करि। सकळ मणाइँ जे कहिलि मही आळि ७४
शुणिण सुर गणे होइले सन्तोष। ए रूपे बहिगला सहस्रे बरष ७५
नब सहस्र बरष होइला परबेश। शेषरे चारि राबण होइबे जे नाश ७६
बेदमती बोइले सेठारू किस हेला। विश्वकर्मा रचिवा पुरे वेदमती त रहिला ५७
ईश्वर बोइले शुण गो भगबती। बारस्वती भुबन तप करन्ति बेदमति ७८
एमन्ते सप्त बरष सेथिरे बहिगला। चन्दन बने बेदमतीर तप सिद्ध हेला ७९
एक दिनकरे लंकपति जे रावण। जम्बुद्वीप बुलिबाकु होइला तार मन२७८०
पुष्पक बिमानरे चढ़िण असुर। जम्बुद्वीपरे प्रबेश होइला बीर बर२७८१
केशर फुल बने मिळिलाक जाइ। देखिला पर्शुराम सेठारे अछिरहि ८२
धनु नाराच जे गदाहिँ कुठार। आगरे थोइ तप करन्ति ऋषिबर ८३

निराकार होगा। ६७ वह निराकार ही दारु ब्रह्म के रूप में चार रूपों को धारण करके नीलांचल पर्वत पर स्थित होंगे। ६८ उस समय परमेश्वर के रूप में तुम्हारा जन्म होगा। इस प्रकार आपके दस स्वरूप होंगे। ६९ इतना कहकर सहस्र ब्रह्मा प्रार्थना करके हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े हो गये। २७७० वेदमती ने कहा, हे सहस्र ब्रह्मा! सुनो। पहले भगवान की आज्ञा का पालन करो। २७७१ तुम स्वर्गलोक में जाकर इन्द्र से कहो। यह सुनकर सहस्र ब्रह्मा वहाँ से चले गये और उसी समय स्वर्ग में जा पहुँचे। इन्द्र आदि सभी देवता वहाँ बैठे थे। ७२-७३ उन्होंने देवताओं से कहा कि मैं इस प्रकार से पृथ्वी देवी को सांत्वना देकर आया हूँ। ७४ यह सुनकर देवगण संतुष्ट हो गये और इस प्रकार एक हजार वर्ष व्यतीत हो गये। ७५ नौ हजार वर्षों का प्रारम्भ हो चुका है। उसकी समाप्ति पर चारों रावणों का विनाश होगा। ७६ बुद्धिमती पार्वती ने पूँछा कि फिर वहाँ क्या हुआ। विश्वकर्मा के द्वारा बनाये गये सदन में वेदमती रह रही थीं। ७७ शंकर जी बोले, हे भगवती! सुनो। वेदमती देव सदन में तपस्या कर रही थी। ७८ इस प्रकार सात वर्ष बीतने पर चन्दन वन में वेदमती की तपस्या सिद्ध हो गई। ७९ एक दिन लंकापति रावण का मन जम्बूद्वीप में भ्रमण करने का हुआ। २७८० वीर श्रेष्ठ दशकंधर पुष्पक विमान में चढ़कर जम्बूद्वीप में प्रविष्ट हुआ। २७८१ वह केशर पुष्प के जंगल में जा पहुँचा। वहाँ उसने परशुराम को देखा। ८२ धनुषबाण, गदा तथा कुठार को आगे रखकर ऋषि श्रेष्ठ तपस्या कर रहे थे। ८३

देखिण रावण मनरे क्रोध हेला । ऋषि होइ शस्त्र किम्पा रखिछु बोइला ८४
बिमानुँ ओल्हाइण गलाक बेग होइ । पर्शुराम आगरे मिळिला से जाइ ८५
बोइला ऋषिरे के देला तोते शस्त्र । ब्राह्मण होइ तु जे होइलु बीरबेश ८६
जेबे तु बळबन्त मो संगे रण कर । पर्शुराम बोइले शुण लंकेश्वर ८७
धनु गदा कुठार तिनिकि तोळि दिए । तेबे मो क्षत्रीपण न रहू मो देहे ८८
शुणिण दशानन धनुकु तोळिला । तोळन्ते धनु ताकु माड़िण बसिला ८९
उत्तान होइण जे पड़िला लंका मल्ल । उठिबार शक्ति नाहि हेला कळबळ२७९०
धरणीरे पड़ि गड़ि करे गरजन । देखिण पर्शुराम उठिले बहन२७९१
कुठार घेनिण हाणिले दशमुण्ड । छिड़ि दशमुण्ड पुणि कअँळि हेला रुण्ड ९२
देवताए शुन्यरे थाइण डाक देले । तुम्भर हस्ते मृत्यु नाहिँ से बोइले ९३
तपन कुळर श्रीराम जात हेबे । तांकर हस्तरे तार प्राण जिब तेबे ९४
शुणिण पर्शुराम से ठारू चळिगला । कुठार गदा नेइ जमदग्नि बळा ९५
बरळ बनस्तरे होइला प्रबेश । क्रोधरे जर जर रेणुकार शिष्य ९६
एमन्ते एक बर्ष तहिँरे बहि गला । नारद मुनि लंकारे प्रबेश होइला ९७
मन्दोदरी पुररे हेले परबेश । देखिण मन्दोदरी ओळगे मुनिपाश ९८
चरण धोइदेला सुबासित जळे । बोइला मुनिबर कि कार्य्ये बिजेकले ९९

यह देखकर रावण के मन में क्रोध उत्पन्न हो गया। उसने कहा कि तुम ऋषि होकर अस्त्र-शस्त्र क्यो रखते हो। ८४ वह विमान से उतरकर शीघ्र ही परशुराम के आगे जा पहुँचा। ८५ उसने कहा अरे ऋषि ! तुझे शस्त्र किसने दिये है। ब्राह्मण होकर तूने वीर वेश सजा लिया है। ८६ अगर तू बलवान है तो मेरे साथ युद्ध कर। परशुराम ने कहा अरे लंकेश ! सुन। ८७ यदि तू धनुष, गदा और कुठार तीनों को उठा दे तो मेरे शरीर में शक्ति न रहे। ८८ यह सुनकर दसमुख ने धनुष को उठाया। धनुष को उठाते समय धनुष उसके ऊपर गिर पड़ा। ८९ लंका का वीर चित्त होकर गिर पड़ा। उसे उठने की शक्ति न रही और वह तड़फड़ाने लगा। २७९० वह पृथ्वी पर पड़ा हुआ चीत्कार कर रहा था। यह देखकर परशुराम ने शीघ्र ही उठकर फरसा लेकर उसके दस सिर काट डाले। दस सिर कट जाने पर उसके धड़ से पुन: सिर निकल आये। २७९१-९२ आकाश में स्थित देवताओं ने कहा कि आपके हाथ से इसकी मृत्यु नहीं है। ९३ सूर्य कुल में श्रीराम जन्म लेंगे। उन्ही के हाथों से इसके प्राणों का नाश होगा। ९४ यह सुनकर यमदग्निनन्दन परशुराम कुठार और गदा लेकर वहाँ से चले गये। ९५ रेणुकानन्दन एकान्त वन में जा पहुँचे। वह क्रोध से तमतमा रहे थे। ९६ इस प्रकार वहाँ एक वर्ष व्यतीत हो गया। तब नारद मुनि लंका में प्रविष्ट हुये। ९७ वह मन्दोदरी के महल में गये। उन्हें देखकर मन्दोदरी ने उनके निकट आकर उन्हे प्रणाम किया। ९८ उसने सुगन्धित जल से उनके चरणों को धोकर कहा हे मुनि श्रेष्ठ ! आप किस कार्य से

नारद बोइले जे कथाए राणी शुण । तोहर स्वामी गला जम्बुद्वीपक पुण२८००
पर्शुराम नामे जे एकइ ऋषिवर । तार संगे रण करिबाकु गला खर२८०१
से बोइला मोर धनु तोळरे असुर । शुणिण रावण जे धाइला धातिकार २
तोळि न पारिला जे हृदरे बसे माड़ि । बरषे हेला सेहू पड़िछि महीआळि ३
मन्दोदरी बोइला से केमन्ते आसे पुण ।नारद बोइले पिता आणिब पुत्र जाण ४
मन्दोदरी बोले देब बेगे चळि जाअ । उपाय़ कर स्वामी पाआन्तु निज देह ५
नारद बोइले एबे कथाए सत्य कर ।
जेते बेळे जाहा कहिबिन मेण्टिबु कथा मोर ६
मन्दोदरी बोइला तुम्भे परम गुरु मोर । तुम्भ कथारू मुँ जे नोहिबि बाहार ७
सत्य कराइ नारद सेठारू चळिगले । विश्रबा ऋषिङ्क पाशे प्रबेश होइले ८
देखिण विश्रबा ताङ्कु नमस्कार कले । निस्तरिलि बोलिण मुखे उच्चारिले ९
पचारिले किम्पा बिजे कल मोर पुरे । नारद बोइले शुण हे मुनिबरे२८१०
असुरुणी नौकेशकु देखि बश्य हेलु । ताहाकु बिभा होइण रतिरंगकलु२८११
तिनि पुत्र दुहिता ताठारू हेले जात । से पुण बर पाइ करन्ति उत्पात १२
रेणका कुमर जे अटे पर्शुराम । नाराय़ण अंश घेनि होइला जनम १३

पधारे हैं। ९९ नारद ने कहा हे महारानी ! सुनो। तुम्हारा पति जम्बूद्वीप को गया था। वहाँ परशुराम नाम के एक श्रेष्ठ ऋषि हैं। वह उनसे प्रखर युद्ध करने के लिये गया। २८००-२८०१ उन्होंने असुर से उनके धनुष को उठाने को कहा। सुनते ही रावण धनुष को उठाने के लिये दौड़ा। २ वह उसे उठा नहीं सका और धनुष उसकी छाती पर गिर पड़ा। एक वर्ष हुआ वह वहीं पृथ्वी पर पड़ा है। ३ मन्दोदरी ने कहा कि अब वह कैसे आयेंगे। नारद बोले कि पिता अपने पुत्र को ले आयेंगे। ४ मन्दोदरी ने कहा हे देव ! आप शीघ्र ही जाकर उपाय करिए जिससे स्वामी अपने शरीर को प्राप्त कर सकें। ५ नारद ने कहा कि तब तुम एक प्रतिज्ञा करो। मै तुमसे जिस समय जो भी बात कहूँगा तुम उसे मना न करना। ६ मन्दोदरी ने कहा कि आप हमारे परम गुरु है। मैं आपकी बात से कभी बाहर नही जा सकती। ७ प्रतिज्ञा करवा कर नारद वहाँ से चले गए और विश्रवा ऋषि के समीप जा पहुँचे। ८ यह देखकर विश्रवा ने उन्हें नमस्कार किया और उन्होने अपने मुख से कहा कि मै कृतकृत्य हो गया। ९ फिर उन्होंने पूँछा, कि आप किस कार्य से मेरे वास स्थान में पधारे हैं। तब नारद ने कहा, हे मुनि श्रेष्ठ ! सुनो। २८१० राक्षसी नौकेशी को देखकर आप उसके वश में हो गए। फिर आपने उससे विवाह करके उसके साथ रति क्रीड़ा की। २८११ उससे तीन पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई। वह लोग वर प्राप्त करके उत्पात मचा रहे हैं। १२ रेणुकाकुमार जो परशुराम है उनका जन्म भगवान विष्णु के अंश से हुआ है। १३ उन्होंने बहुत से दुष्टों का संहार किया

बहुत दुष्टगण निबारण कला। पाताळपुरे नागबळङ्कु साधिला १४
सप्त द्वीपरू माइला दुष्ट राजा गण। ता धनु धरिबाकु के नोहिले भाजन १५
स्वर्गरे पशिण से देबङ्कु जिणिला। शते बर्षरे थरे बूलइ ऋषि बळा १६
शते बार पर्ज्यन्त बुलिला तिनिपुर। स्तिरी अंग न छुअँइ ऋषिर कुमर १७
से कथा जाणि राजाए स्तिरी बेश हेले। सप्त पुरे जेते राजा अण्ठ कुड़ा थिले १८
तोहर कुमर लंकारे राजा जाण। जम्बू द्वीपकु से गलाक बुलिण १९
पर्शुरामकु देखिण होइला खण्डिआळि। बोइला मो संगे रण कर जटा धारी२८२०
शुणिण पर्शुराम बोले ताकु बाणि। ए धनु गोटि असुर आण तुरे तोळि२८२१
शुणिण रावण जे धनु तोळि गला। तोळन्ते धनु ताकु माड़िण बसिला २२
बरषे होइला पड़िछि तोर पुत्र। उपरे नारायणी धनु बळबन्त २३
तार बिकळ देखि मुं लंका गढ़ गलि।ताहार घरणी मन्दोदरी कि कहिलि २४
से बोइला श्वसुरङ्कु कहिब तुम्भे जेबे। पुत्रकु मुकुळाइ आणि देबे तेबे २५
शुणिण विश्रबा ऋषि नारद संगे घेनि। बउळ बन भितरे प्रबेश हेले पुणि २६
पर्शुरामङ्कु देखि बहुत स्तुति कले। जयतु नारायण बदळ रूप भले २७
ऋषिङ्कर मध्यरे अटु सरदार। क्षत्रीङ्कर मध्यरे अटु तु नाश कर २८

है। पाताल लोक में जाकर उन्होंने नागों को जीत लिया है। १४ सात द्वीपों के दुष्ट राजाओं का उन्होने विनाश कर दिया। उनके धनुष को पकड़ने में कोई भी समर्थ नहीं हुआ। १५ उन्होंने स्वर्ग में घुसकर देवताओं पर विजय प्राप्त की। सौ वर्ष में एक बार वह ऋषि पुत्र भ्रमण करता है। १६ सौ बार तक वह तीनों लोकों में घूमता रहा परन्तु ऋषि पुत्र स्त्री का अंग नहीं स्पर्श करता था। १७ यह बात जानकर सातों भुवनों के निःसन्तान राजागण जितने भी थे। उन्होंने स्त्री का वेश धारण कर लिया था। १८ तुम्हारा पुत्र जो लंका का राजा है, वह जम्बूद्वीप में घूमने को गया था। १९ परशुराम को देखकर वह उद्धत होकर बोला, हे जटाधारी! मेरे साथ युद्ध करो। २८२० यह सुनकर परशुराम ने उससे कहा, अरे असुर! इस धनुष को तू उठाकर ले आ। २८२१ यह सुनकर रावण धनुष उठाने गया। धनुष उठाते समय रावण उसके नीचे दब गया। २२ एक वर्ष हो गया, तुम्हारा पुत्र उस विशाल नारायण के धनुष के नीचे पड़ा है। २३ उसकी व्याकुलता को देखकर मैं लंका दुर्ग में गया और मैंने उसकी स्त्री मन्दोदरी से सब कुछ बता दिया। २४ वह बोली कि जब तुम श्वसुर से कहोगे तो वह पुत्र को छुड़ा कर ला देंगे। २५ यह सुनकर विश्रवा ऋषि नारद को साथ लेकर केशर पुष्प के वन के भीतर जा पहुँचे। २६ उन्होंने परशुराम को देखकर नाना प्रकार की स्तुति करते हुये कहा कि हे नारायण के प्रतिरूप! आपकी जय हो। २७ आप ऋषियों के मध्य नायक हो और क्षत्रियों के बीच आप उनके नाशकर्त्ता है। २८ देवताओं के

देबङ्क मध्यरे तु काळ देवता । नारायणङ्क मध्यरे अद्भुत जगत्‌जिता २६
ईश्वर परमेश्वर बेदबर तिनि । ए तिनि जण तोर शरीरे छन्ति पुणि२८३०
एमन्ते बिश्रबा ऋषि कले जहुँ स्तुति । पर्शुराम उठिण होइले शान्तमूर्ति२८३१
बोइले कि कार्य्यरे अइल मुनिबर । बिश्रबा बोइले तुम्भे शुण मो उत्तर ३२
रावण नामरे मोर कुमर अटइ । तुम्भर हस्तरे ताहार मृत्यु नाहिँ ३३
छाड़ि दिअ ताकु क्रोध मनरू छाड़ ।अळप दिने नाश जिब किम्पा कर गाढ़ ३४
पर्शुराम बोइले से अटइ बड़ दुष्ट । से रावण मले देवङ्कर जिव कष्ट ३५
नारद बोइले तुम्भे न पार ताकु मारि । बासुदेब अवतार हेबे महीआळी ३६
तेबे से नाश जिब असुर कुळ गोत्र । नउ सागर गरिष्ठ असुर हेबे हत ३७
शुणिण पर्शुराम संतोष मन हेले । मुनिङ्कि घेनिण जे बउळ बने गले ३८
रावणर पाशरे हेले पर बेश । उत्तान होइ पड़िछि नउकेश शिष्य ३९
उपरू धनु तोळि धरिला पर्शुराम । धनु तोळि धरन्ते उठिला रावण२८४०
पितार चरणे से नमस्कार कला । पर्शुरामङ्क चरणे भक्ति से नमिला२८४१
नारदङ्क चरणे ओळगे शत बार । पर्शुराम बोइले शुणरे असुर ४२
आउ जेबे मो संगे करिबु दुष्टपण । निश्चय़े नाश जिबुरे जाणिथाअ पुण ४३
तोर पिता कहिबारू एथर छाड़ि देलि। अमर होइले तु मारन्ति तोते बळि ४४

मध्य आप काल देवता है और नारायण के मध्य आप विश्व विजेता है। २६ ब्रह्मा, विष्णु महेश यह तीनो आपके शरीर में रहते है। २८३० विश्रवा ऋषि के इस प्रकार स्तुति करने पर परशुराम शांत चित्त होकर उठकर बोले, हे मुनि श्रेष्ठ ! आप किस कार्य से आये है। विश्रवा ने कहा कि आप मेरी बात सुनें। २८३१-३२ रावण नाम का मेरा पुत्र है। उसकी मृत्यु आपके हाथों से नही है। ३३ आप अपने मन से क्रोध का त्याग करके उसे छोड़ दें। थोड़े दिनों में वह नष्ट हो जायेगा। आप व्यग्र क्यों हो रहे हैं। ३४ परशुराम ने कहा, वह बड़ा दुष्ट है। उस रावण के मरने से देवताओं का कष्ट दूर हो जायेगा। ३५ नारद ने कहा कि आप उसे मार नही सकेंगे इस पृथ्वी पर भगवान वासुदेव का अवतार होगा तब वह राक्षस कुल समेत नष्ट होगा और बहुत से श्रेष्ठ राक्षस भी मारे जायेगे। ३६-३७ यह सुनकर परशुराम का मन संतुष्ट हो गया। मुनि को लेकर वह केशर वन में गये और रावण के पास जा पहुँचे। नौकेशी का पुत्र रावण चित्त पड़ा हुआ था। ३८-३९ परशुराम ने उसके ऊपर से धनुष उठा लिया। धनुष उठाते ही रावण ने उठकर पिता के चरणों में प्रणाम किया और भक्ति के साथ उसने परशुराम के चरणों में भी प्रणाम किया। २८४०-२८४१ उसने सैकड़ों बार नारद के चरणों में प्रणाम किया। परशुराम ने कहा अरे असुर ! सुन। ४२ यदि तू मेरे साथ और कभी दुष्टता करेगा तो निश्चय ही मारा जायेगा। यह बात तू समझ ले। ४३ तेरे पिता

तोर जार हस्तरे थाआन्ता मृत्यु पुण । ताहाकु डाकिण मुँ आणन्ति जाइण ४५
रथ चढ़ि रावण कलाक गबन । लज्याभरे मुख तार दिशइ मळिन ४६
जम्बु द्वीप भ्रमण करि जाआन्ते पुणि । चन्दन बन भितरे प्रबेश लंकमणि ४७
जाआन्ते बारस्वती भुबन देखिला । पुष्पक बिमान जे सेठारे रहाइला ४८
भितरे पशिला तहिँ दुष्ट जे रावण । बेदमति कि जाइ देखिला से पुण ४९
संसार दहू अछि बेदमतीर से तेज । देखिण रावण जे होइला अधैर्ज्य२८५०
बिचारिला एपरि सुन्दरी केहि नाहिँ । तिनिपुर मुँ न देखलि काहिँ२८५१
बेदमती कि राबण कहिलाक पुण । रति दान देइण रख मोर प्राण ५२
किम्पाइँ ए ठावरे एका होइ रह । त्रैलोक्यरे सारहेतु प्रीति मोते दिअ ५३
तिनिकोटि पंचाश राणीरे हेबु श्रेष्ठ । तोहर चरणे खटिबे समस्त ५४
हसिण कथा कह न बाधु काम मोते । एमन्त बचन कहे बिश्रबार सुते ५५
बेदमती बोले मुँ जे न भजइ तोते । बासुदेवङ्क भजन करे मुँ अन्तर्गते ५६
बासुदेवङ्क बिनु अन्यरे नाहिँ कार्ज्य । बुझिण रावण तु न हुअ अधैर्ज्य ५७
बळात्कारपण तुरे न कर मोठारे । बळवन्त पण कले मरिबु निशाचरे ५८
नारायण संगरे नुह तु भगारी । सचराचर मेदिनी अटइ जाहारि ५९

के कहने से इस बार मैंने तुझे छोड़ दिया। यदि तू अमर भी होता तो भी मैं तुझे बलपूर्वक मार डालता। ४४ तुम्हारी मृत्यु जिसके हाथों से होती मैं उसे जाकर लिवा लाता। ४५ रावण रथ पर चढ़कर चला गया उसका मुख लज्जा से भरकर मलिन दिखाई दे रहा था। ४६ जम्बूद्वीप में भ्रमण करके जाते हुये श्रेष्ठ लंकेश चन्दन वन में जा पहुँचा। ४७ जाते हुये उसने देवसदन देखा। उसने पुष्पक विमान को वहीं रोक दिया। ४८ दुष्ट रावण वहाँ भीतर घुस गया। उसने वहाँ पहुँचकर वेदमती को देखा। ४९ वेदमती का तेज संसार को दग्ध कर रहा था। रावण उसे देखकर अधीर हो गया। २८५० उसने विचार किया कि इस प्रकार की सुन्दरी मैंने तीनों लोकों में कहीं नहीं देखी। २८५१ रावण ने वेदमती से कहा कि मुझे रति दान देकर मेरे प्राणों की रक्षा करो। ५२ तुम इस स्थान पर अकेले क्यों रह रही हो। तुम मुझे प्रीति दान देकर तीनों लोकों में श्रेष्ठ हो जाओगी। ५३ तीन करोड़ पचास रानियों में तुम श्रेष्ठ होगी। सभी तुम्हारे चरणों की सेवा करेंगी। ५४ मुझसे हँसकर बात करो जिससे मुझे कामदेव बाधा न पहुँचाए। विश्रवानन्दन ने इसप्रकार की बात कही। ५५ वेदमती बोली मैं तुझे नहीं चाहती। मैं अपने हृदय से नारायण का भजन कर रही हूँ। ५६ वासुदेव के अतिरिक्त अन्य किसी से मुझे क्या प्रयोजन ? अरे रावण ! यह समझकर तू अधैर्य न हो। ५७ तू मुझसे बलात्कार मत कर। अरे निश्चर बल दिखाने से तू मर जाएगा। ५८ जड़ चेतन पृथ्वी जिस वासुदेव नारायण की है उसके साथ तू बराबरी मत कर। ५९

से वासुदेवंकु मुँ सुमरइ नित्य। पन्दर सहस्र बर्ष हेला रे पापिष्ठ२८६०
भेट न पाइलि से अछन्ति केउँ ठारे। प्रतिदिन भजइ मुँ ताङ्कु चरणरे२८६१
रावण बोइला से मोर प्राय़ होइ। क्षीर सागर भितरे रहि अछि शोइ ६२
जेउँ दिनु तिनि पुरे मोहर प्रभुपण। सकळ देबता खटिले मोते जाण ६३
सेहि दिनुँ प्रभु पण सरिला ताहार। जळर भितरे लुचि रहिछि चक्रधर ६४
मोर हस्ते मरिबाकु भय़ जे तार जाण। डरि करि कूळकु न आसे नाराय़ण ६५
मोर बोल करिण मो संगे प्रीतिकर। त्रैलोक्यरे ठाकुराणी हेबु तु निकर ६६
बेदमती बोइले तु न जाणु असुर। से नाराय़ण बसे सबुरि शरीर ६७
नर बानर देबता जेते जीब जाण। स्थाबर नाग बळ समस्तंकर प्राण ६८
तोहर प्राय़ केते असुर एथि थिले। नाराय़ण संगते अप्रीति होइ मले ६९
एबे तु अळ्पदिनरे जिबु नाश।नाराय़णङ्कु निन्दा करू रे अळ्पायुष२८७०
मन कले प्रळय़ सेहू करि पारे। एका से नाराय़ण सकळ बिस्तारे२८७१
शुणिण रावण मनरे क्रोध हेला। आजि नाराय़ण तोते रखु से बोइला ७२
एते बोळि बळात्कारे धइला ताकु पुण। क्रोधरे बेदमती शाप देला जाण ७३
बोइले पापिष्ठ तु छुइँलु मोते पुण। मोर जोगे तुहि मररे रावण ७४

अरे पापी ! नित्य मै उसी वासुदेव का चिन्तन पन्द्रह हजार वर्षो से कर रही हूँ। २८६० न जाने वह कहाँ है ? उनसे मेरी भेंट नहीं हुई। मैं प्रतिदिन उनके चरणो का चिन्तन करती हूँ। २८६१ रावण ने कहा क्या वह मेरे समान हो सकता है ? वह तो क्षीर सागर में सोता रहता है। ६२ जिस दिन से तीनों लोकों में मेरा प्रभुत्व हो गया तो सभी देवता हमारी सेवा में लग गए। ६३ उसी दिन से उसकी प्रभुता समाप्त हो गई। वह चक्र धारण करने वाला नारायण जल के भीतर छिपकर रह गया। ६४ वह नारायण मेरे हाथों से मृत्यु के भय से किनारे नही आता है। ६५ मेरे कहने से तुम मुझसे प्रेम करो तो तुम तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ स्वामिनी बनोगी। ६६ वेदमती बोली, अरे राक्षस ! सुन। क्या तुझे पता नहीं है कि वह नारायण सबके शरीर में वास करता है। ६७ मानव, वानर, देवता, नाग आदि जड़-चेतन जितने भी जीव है उन सबके प्राण नारायण ही है। ६८ तेरे समान कितने असुर यहाँ थे जो नारायण से वैर करके मृत्यु को प्राप्त हुए। ६९ अरे अल्पायु ! तू नारायण की निन्दा कर रहा है। थोड़े ही दिनों में तेरा नाश हो जाएगा। २८७० उनकी इच्छा होने से वह प्रलय भी कर सकते है। वह एकमात्र नारायण ही सबका सृजन करते है। २८७१ यह सुनकर रावण मन में कुपित होकर कहने लगा कि आज नारायण ही तेरी रक्षा करे। ७२ इतना कहकर उसने उसे बलपूर्वक पकड़ लिया। तब वेदमती ने क्रुद्ध होकर उसे शाप दिया। ७३ उसने कहा, अरे पापी रावण ! तूने मेरा स्पर्श किया है अतः मेरे ही कारण तेरा बिनाश

तोहर बंशरे केहि न रहिबे पुण। शाप देइ बेदमती उठिला तक्षण ७५
जज्ञ कुण्ड अग्निरे पशिला से जाइ। मुख पादादि तक्षणे भस्म हेला तहिँ ७६
निज काय़ा गोटि अग्निरे अछि पुण। अग्नि पाशे रावण मिळिला ततक्षण ७७
बिश हस्तरे अग्नि कि मर्दन कला जाइ। शरीर मझि खण्ड पाइला पुण तहिं ७८
मनदुःखे बिश बाहु घेनिण अइला। पुष्पक जान उपरे नेइण थोइला ७९
मंत्ररे बिचार जे करइ रावण। व्यंजन करि एहाकु खाइबइँ पुण२८८०
सुकुमारी शरीर चिक्कण मांस य़ार। ए मांस भक्षिले पुष्ट हेब मो शरीर२८८१
एमन्त बिचारि जे जान परे बसि। लंकारे प्रबेश हेला बिश्वबार बसि ८२
अमळान बसनरे पुराइ मुर्द्धुनि। बिमानरु ओल्हाइला बीर लंकमणि ८३
मन्दोदरी पुरे जाइँ होइला प्रबेश। देखिण मन्दोदरी होइला संतोष ८४
बोइला सुन्दरी मोर बोल कर। एहि वस्त्र मध्यरे अछि मांस सार ८५
गुपत करिण व्यंञ्जन य़ाकु कर। केहि न जाणिबे मुँ करिबि आहार ८६
एमन्त कहिण तहुँ गला दशानन। बाहार जगतिरे बसिला हर्ष मन ८७
मर्दन माजणा होइण स्नान कला। देबार्चन मंन्दिरे प्रबेश होइला ८८
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। स्वर्ग देबताए बसिले सभाकरि ८९
नारदङ्कु देबताए कलेक स्मरण। प्रबेश होइले जाइ ब्रह्माङ्कु नन्दन२८९०

हो। ७४ तेरे वंश में कोई भी नहीं बचेगा। उसी समय वेदमती शाप देकर उठी और जाकर यज्ञ कुण्ड में प्रविष्ट हो गई। उसका मुख एवं पैर आदि उसी क्षण वहाँ भस्म हो गए। ७५-७६ उसका सम्पूर्ण शरीर अग्नि में था। रावण उसी क्षण अग्नि के निकट पहुँच गया। ७७ उसने बीस हाथों से अग्नि को मसला। वहाँ उसे (वेदमती के) शरीर का मध्य भाग मिला। ७८ दुखी मन से रावण ने उसे लेकर पुष्पक विमान पर रक्खा और साथ लेकर चला गया। ७९ उसने अपने मन में सोच समझकर उसका व्यञ्जन बनाकर उसे खाने का विचार किया। २८८० उसने सोचा कि इस सुकुमारी के शरीर का मांस चिकना है। इसे खाने से मेरा शरीर पुष्ट हो जाएगा। २८८१ विश्रवा-नन्दन ! इस प्रकार विचार करके यान पर बैठकर लंका में प्रविष्ट हुआ। ८२ पराक्रमी श्रेष्ठ लंकापति स्वच्छ वस्त्र में मृत शरीर को लपेटकर विमान से उतरा। वह मन्दोदरी के महल में जा पहुँचा। उसे देखकर मन्दोदरी संतुष्ट हो गई। ८३-८४ रावण ने कहा कि मेरा कहना मानो। इस वस्त्र में उत्तम मांस है। इसके गुप्त रूप से व्यंजन बनाओ। बिना किसी के जाने मैं इसे भक्षण करूँगा। ८५-८६ इस प्रकार कहकर दसमुख वहाँ से प्रसन्नमन बाहर आकर जगती पर बैठ गया। ८७ मर्दन, मार्जन के उपरान्त स्नान करके वह देवता के पूजा मन्दिर में प्रविष्ट हुआ। ८८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् स्वर्ग में देवताओं ने बैठकर सभा की। ८९ उन्होंने नारद का चिन्तन

देवताए बोइले शुण हे मुनिवर। रावणकु बन्धनरू कलत उद्धार२८६१
सेठारु चळिजाइ अनीति बुद्धि कला। वेदमति कन्याकु सुरति मागिला ६२
बळात्कारे धरिबाकु बिचारे असुर। अन्याय़ देखि वेदमती होइले कातर ६३
जज्ञ अग्निरे जाइ तक्षणे पशिले। पशिला वेळे सती राबणे शाप देले ६४
बोइले मो हेतु मररे असुर। शुणि करि रावण होइला कातर ६५
विचारिला ए सतीर शाप जे मोते हेब। काळे काळे ए कथा मेण्टण नोहिब ६६
एमन्त विचारि अग्नि हात भरि। मृत शब अग्निरु आणिला काढ़ि करि ६७
देखिला पाणि पाद मस्तक भस्म होइ। मझि खण्डि खण्ड अछइ जे रहि ६८
व्यंजन करिब बोलि खण्डि कि घेनि जाइ। वस्त्रे गुड़ाइ रथरे जतन करि थोइ ६९
विचारिला एहाकु भक्षिले जिब शाप। भस्म हेले ताहार सरिब सबु धाय२९००
एमन्त बिचारि से रथरे घेनि गला। मन्दोदरी आगरे नेइण ताहा देला२९०१
बोइला व्यंजन तु कररे प्रिय़ सखी। बरषे हेला मुहिँ मांस जे नभक्षि २
एहि क्षणि मन्दोदरी करिब रन्धन। असुर भक्षिले न मरे सेहि पुण ३
व्यग्ररे लंकागड़कु चळ हे मुनिवर। जेमन्ते असुर न भक्षे मांस तार ४

किया और ब्रह्मा के पुत्र नारद वहाँ पहुँच गये। २८९० देवताओं ने कहा हे मुनि श्रेष्ठ! सुनो। तुमने रावण को बन्धन से मुक्त करवा दिया। २८९१ वहाँ से जाकर उसने अनीतियुक्त कार्य किया। कन्या वेदमती से उसने रमण की याचना की। ९२ असुर ने उसे बलपूर्वक पकड़ने का विचार किया। अन्याय को देखकर वेदमती क्षुब्ध हो गई। ९३ वह उसी समय यज्ञ की अग्नि में जाकर प्रविष्ट हो गई। प्रवेश के समय सती ने रावण को शाप दिया। ९४ उसने कहा, अरे असुर! तू मेरे कारण मृत्यु को प्राप्त हो। यह सुनकर रावण दुःखी हो गया। ९५ उसने विचार किया कि यदि इस सती का शाप मुझे लगेगा तो युग-युग तक यह बात अमर रहेगी। ९६ ऐसा विचारकर उसने आग में हाथ डालकर मृत शरीर को आग से बाहर निकाला और देखा कि उसका हाथ, पाँव, मस्तक भस्म हो चुका था। केवल मध्य भाग थोड़ा बचा था। ९७-९८ व्यंजन बनाने के लिये उस पिंड को वह वस्त्र में लपेटकर यत्नपूर्वक रथ में रखकर साथ ले गया। ९९ उसने यह विचार किया कि इसे खाने से शाप समाप्त हो जायेगा। भस्म हो जाने से उसका सारा अनिष्ट समाप्त हो जायेगा। २९०० इस प्रकार विचारकर रथ में ले जाकर उसने मन्दोदरी के आगे उसे देते हुये कहा, हे प्रिय सहचरी! तुम इसका व्यंजन बनाओ। मुझे मांस न खाये हुये एक वर्ष हो गया है। २९०१-२ मन्दोदरी इसी समय उसे पकायेगी और खाकर वह असुर नहीं मरेगा। ३ हे मुनि-श्रेष्ठ! शीघ्रता से लंका दुर्ग को जाइये जिससे राक्षस उसके माँस को न खा

उपाय़ करिण जाइ ताकु रख। तेबे से देबताए पाइबे बेळे सुख ५
एमन्त कहिबारू देबता गणे पुणि। लंकागढ़कु मुनि जे चळिले तत्क्षणि ६
मन्दोदरी आगरे मिळिले जाइ ऋषि। ऋषिङ्कि देखिण नमिला शुभ्रकेशी ७
कि कर्ज्ये मोर पुरे बिजय़ देब कल। तुम्भर सकासुँ मुँ जे पाइलइँ बर ८
नारद बोइले एबे मोर बोल कर। स्वामी ठारे जेबे शरधा अछि तोर ९
तोहर स्वामी एबे अबेभार कला। असुर जाति सिना मन्दरे व्यापिला२९१०
समस्तंक संगरे भगारि होइ लागि।दुष्ट बोलि समस्ते न कहे केहि बेगि२९११
मले समस्तंङ्कर कळङ्क जिब पुण।सेथि शकासे समस्ते करन्ति बिचारण १२
आम्भे तोर हितरे थिबारू एबे जाण। पर्शुराम ठारू जे कलु मुकुलाण १३
सेठारू स्वामी तोर आसिला जान चढ़ि। चन्दन बन भितरे पशिलाक फेरि १४
नाराय़ण बनिता जे बेदमती जाण। तप करुथिला से बनरे रहिण १५
ताहाकु देखिण बलात्कार कला। बलात्कार देखिण सती शाप देला १६
बोइला मोर लागि मर रे रावण। एते बोलि अग्निरे झास देला पुण १७
अग्निरे पशन्ते पाद पाणि भस्म हेला। निमग्न पिण्ड गोटि अतुट रहिला १८
से पिण्ड घेनिण जे तोर स्वामी आसि।
व्यंजन करिबाकु तोते देलारे शुभ्रकेशी १९

सकें। ४ उपाय करके जाकर उसकी रक्षा कीजिये। तभी देवताओं को कभी सुख मिल पायेगा। ५ देवताओं के ऐसा कहने पर नारद मुनि उसी समय लंका गढ़ की ओर चल दिये। ६ ऋषि मन्दोदरी के पास जा पहुँचे। सुन्दर केशों वाली मन्दोदरी ने ऋषि को देखकर प्रणाम किया। ७ उसने पूँछा हे देव! आपने किस कार्य से मेरे महल में प्रवेश किया है। आपके ही कारण मैंने अपने स्वामी को प्राप्त किया है। ८ नारद ने कहा यदि स्वामी से तुझे प्यार है तो अब मेरा कहना मानो। ९ तुम्हारे पति ने अब दुर्व्यवहार किया है। जो असुरों को भी बुरा लगा। २९१० वह दुष्टता से सबका भाग हड़पना चाहता है। उसे दुष्ट समझकर शीघ्र ही उससे कोई भी कुछ नहीं कहता है। २९११ उसके मरने से सबका कलंक दूर हो जायेगा। इसके लिये सभी विचार कर रहे हैं। १२ तुम्हारा हितैषी होने के कारण मैंने परशुराम से उसकी मुक्ति कराई। १३ तुम्हारा पति यान में चढ़कर आया और चन्दन वन के भीतर घुस गया। १४ उस वन में नारायण की पत्नी वेदवती रहकर तपस्या कर रही थी। १५ उन्हें देखकर उसने बलात्कार किया। यह देखकर सती ने शाप देते हुए कहा, ऐ रावण! मेरे कारण तू मरेगा! इस प्रकार कहकर वह अग्नि में कूद गई। १६-१७ अग्नि में घुसते ही उसके हाथ पैर जलकर भस्म हो गए। किन्तु पिण्ड का नाश अग्नि में भी नहीं हुआ। १८ हे सुकेशी! तेरा पति उसे लेकर आया और उसने उसे तुम्हें व्यंजन बनाने के लिये दिया है। १९ यह ज्ञात होने पर हम तुम्हारे महल में आए हैं। यदि

ताहा जाणि आम्भे आसिलुँ तोर पुर। स्वामीरे लोभ जेबे अछइँ तोहर२६२०
तेबे से पिण्डकु न कर व्यञ्जन। से मांसकु खाइ तोर स्वामीर मरण२६२१
गर्भरे पड़िले फाटिब तार पेट। निश्चय मरिबटि एकथा निराट २२
मन्दोदरी कहिला करिबि एबे किस। नारद बोइले व्यंञ्जन कर अन्य मांस २३
स्वामी तोर न जाणिव गुपत करि देबु। पचारिले सेहि मांस बोलिण कहिबु २४
एबे से मुर्द्धनिकि मंजूषरे भर। सुवर्ण मंजूष गोटि वेगे से तिआर २५
शुणिण मन्दोदरी दासीकि घेनि चळि। सुर्वणर मंजुष आणिला वेगिकरि २६
मंजूषा भितरे बेदमतीर मुर्द्धनी। नूतन बसनरे शज्या करि पुणि २७
मुर्द्धनी कि थोइण मंजूष मुदकले। सागर भितरे नेइण मेळि देले २८
पुणि मेष गोटिए मारिण मांस तार। मन्दोदरी व्यंजन कलाक सत्वर २६
मन्दोदरी कि नारद कहिण चळिगले। स्वर्गपुरे जाइण परवेश हेले२६३०
देवार्चन सारि अइला रावण। भोजन करिण से सन्तोष कला मन२६३१
आचमन सारिण से बिड़िआ भुंजिला। रत्न पळंक रे निश्चिन्ते निद्रा गला ३२
कथा एक रहिला पार्बती पचारिले। वेदमती संगरे जेतेक दासी थिले ३३
से माने किस कले कह मो आगेण। तेबे मोर मन संतोष हेव जाण ३४
ईश्वर बोइले बेदमती झास देला। रावणकु शाप देइ अंगकु ध्वंसिला ३५

तुम्हें स्वामी का लोभ है तो तुम उस पिण्ड से व्यंजन मत बनाओ। उस मास के खाने से तुम्हारा पति मर जाएगा। २६२०-२१ गर्भ में वह पड़ने से उसका पेट फट जाएगा और यह बात भी सत्य है कि वह निश्चय ही मर जाएगा। २२ मन्दोदरी ने कहा कि अब क्या करूँ। नारद ने कहा कि अन्य मांस से व्यंजन बनाओ। २३ तुम गुप्त रूप से देना जिससे तुम्हारे पति न जान सके। पूँछने पर कह देना कि यह वही मांस है। २४ इस समय उस मृत पिण्ड को मंजूषा मे भरकर उसे स्वर्ण की मंजूषा में रक्खो। २५ यह सुनकर मन्दोदरी दासी को लेकर गई और शीघ्र ही सुवर्ण-मंजूषा ले आई। २६ उसने नए वस्त्र में वेदमती का मृत शरीर सजाकर मंजूषा में बन्द कर दिया और उसे समुद्र में डाल दिया। २७-२८ फिर एक मेढ़े को मार कर उसके मांस से मन्दोदरी ने शीघ्र ही व्यंजन बनाए। २६ नारद मन्दोदरी से कहकर चले गए और स्वर्गलोक में जा पहुँचे। २६३० देव पूजन करके रावण आया। भोजन करके उसका मन सन्तुष्ट हो गया। २६३१ आचमन करके उसने पान खाया और निश्चिन्त होकर रत्न पर्यङ्क पर सो गया। ३२ पार्वती ने कहा कि एक बात तो रह गई। वेदमती के साथ जितनी दासियाँ थी। उन्होंने क्या किया? आप हमसे यह कथा कहिए। तभी हमारे मन को सन्तोष होगा। ३३-३४ शंकर जी ने कहा वेदमती ने छलांग लगाते हुए रावण को शाप देकर अपने शरीर को नष्ट कर दिया। ३५ वेदमती के मरने से समस्त

बेदमती मरिबारू बिचारि सर्बदासी। अनेक पसिण होइले भस्म राशि ३६
बैधूति मंण्डळरे जनक ऋषि घरे। जनम होइले से जाइण सत्वरे ३७
किछि दिन अनन्तरे जुब्रारूप हेले। पूर्बर पुण्य बळे जनकंक आले ३८
पार्बती बोइले से स्थान किस हेला।ईश्वर बोइले अग्निका महर्षि रहिला ३९
पार्वती बोइले मंजूष किस हेला। लबण समुद्ररे मंजूष भासुथिला२९४०
ईश्वर बोइले शुण गो पार्बती। सागर मध्यरे मंजुष मेलि सेटि२९४१
सप्तदिन पर्ज्यन्त मंजूष भासु थिला। सेहि नारद देबंङ्क आगरे कहिला ४२
देबता माने बसिण बिचारकु कले। माया देबीङ्कु घेनिण बेगे चळिगले ४३
सागर कूळरे प्रबेश होइले। देखिण तरंग मंत्री मंजूष आणि देले ४४
मायादेबी घेनिणि चळिले सेथुँ त्वरा।मिथिळा नग्ररे जाइ जनक जज्ञशाळा ४५
गुप्त करि रखिले छहात गभीररे। सेठारू मायास्तिरी चळि गले खरे ४६
देबतांङ्क आगरे जाइण कहिले। शुणि करि सुर गणे हरष होइले ४७
बेदवरंकु समस्ते सुमरणा कले। देबतांकु स्मरण बिधाता जाणिले ४८
बळराम दास नमे श्री हरि चरण। अनादि नारायण कर हे कारण ४९
पार्बती बोइले देब सेठारू किस हेला। बेदमती गुप्तभावे मिथिळारे रहिला२९५०

दासियाँ विचार पूर्वक अग्नि में घुसकर भस्म हो गई। ३६ मिथला मण्डल में जनक ऋषि के घर में वह जाकर शीघ्र उत्पन्न हुई। ३७ पूर्वकाल के पुण्य-प्रताप से वह जनक के घर में कुछ समय के उपरान्त युवा हो गई। ३८ पार्वती ने कहा कि उस स्थान का क्या हुआ। शंकर जी ने कहा वहाँ अग्निका महर्षि रह गए। ३९ पार्वती ने कहा कि मंजूषा का क्या हुआ ? वह तो लवण समुद्र में तैर रही थी। २९४० शंकर जी बोले, हे पार्वती ! सुनो। सागर में मंजूषा डालने के सात दिनों तक वह मंजूषा तैरती रही। नारद ने यह बात देवताओं के समक्ष कही। २९४१-४२ देवताओं ने बैठ कर विचार किया। वह माया देवी को लेकर शीघ्रता से चल पड़े। ४३ वह सागर तट पर पहुँचे और देखते ही तरंग मंत्री ने मंजूषा लाकर दी। जिसे माया देवी लेकर शीघ्रता से चल पड़ी। उसने मिथिला नगर में जाकर जनक की यज्ञशाला में उसे छः हाथ नीचे गड्ढे में छिपा कर रख दिया और मायादेवी वहाँ से शीघ्र ही चली गयी। ४४-४५-४६ उसने जाकर देवताओं से कहा। यह सुनकर देवतागण प्रसन्न हो गये। ४७ सभी देवताओं ने ब्रह्मा जी का स्मरण किया। ब्रह्मा समझ गये कि देवता हमें बुला रहे हैं। ४८ बलराम दास श्री हरि के चरणों में नमन करता है। हे अनादि भगवान् ! मेरा उद्धार कीजिये। ४९ पार्वती बोलीं, हे देव ! वहाँ फिर क्या हुआ ? वेदमती गुप्त भाव से मिथला में रही। उसके हाथ पैर भस्म हो चुके थे। हे कैलाशवासी !

पाद पाणि ताहार होइला भस्म राशि। केमन्ते हेला कह हे कपिळास वासी२९५१
ईश्वर बोइले शुण गो भगबती। बेदबरंकु स्तुति कले सुर पति ५२
जाणि कुशधर बेगे आसि मिळि। देखिण देवताए आनन्दे मान्यकरि ५३
बेदबर बोइले किस कार्य्य अर्थे। चिन्ता करि अछ कह सुरनाथे ५४
देबताए बोइले शुण हे कुश पाणि। वेदमती कमळा अंशरे जन्म पुणि ५५
पन्दर सहस्र बर्ष सेहू तप कला। तप सिद्ध हेबा बेळे राबण भेटिला ५६
बिडम्बन कहन्ते सती झास देला। अग्निरे पाद पाणि मस्तक लीन हेला ५७
पाद पाणि गला सिना मुर्द्ध नोटि थिला पुण। से मुर्द्ध नीकि घेनि गलाक राबण ५८
मन्दोदरी राणी ठारे देला नेइ करि। व्यंजन कराइबा ए मांस स्वाद भारि ५९
ताहा जाणि नारद मुनिकु पठाइलु। बेदमती पिण्ड गोटि आणजा बोइलुँ२९६०
नारद कहि मंजूष गोटि अणाईले। मंजूष भितरे थोइ सागरे भसाइ देले२९६१
माया देबी पठाइ सेठारू घेनि गलु। मिथिळार जागशाळे नेइण रखाइलु ६२
तुम्भंकु सुमरणा कलुँ जे आम्भे पुण। असुर मरिब जेन्हे कर बिचारण ६३
अनन्त शय्यारे जे अछन्ति नारायण। कि रूपे जन्म हेबे करिब विचारण ६४
बेदबर बोइले आम्भे जाउछुँ मिथिळाकु। निरंजन रूप जे करिबा से काळकु ६५

फिर कैसे क्या हुआ यह आप हमें बताइये। २९५०-५१ शंकर जी बोले, हे भगवती ! सुनो। देवराज इन्द्र ने ब्रह्मा की स्तुति की। ५२ यह जानकर कुशधारी ब्रह्मा वहाँ शीघ्र ही आ पहुँचे। उन्हें देखकर देवताओं ने प्रसन्नता-पूर्वक उनका सत्कार किया। ५३ ब्रह्मा जी ने कहा, हे सुरेन्द्र ! किस कार्य के लिये आपने मेरा स्मरण किया है। वह मुझसे कहो। ५४ देवताओं ने कहा हे ब्रह्मा जी ! सुनिये। लक्ष्मी के अंश से वेदमती का जन्म हुआ था। ५५ उसने पन्द्रह हजार वर्ष तप किया और तपस्या सिद्ध होने के समय रावण मिल गया। ५६ विडम्बना की बात कहने पर सती ने अग्नि में छलांग लगा दी। उसके हाथ पैर तथा मस्तक आग में जल गये। ५७ हाथ पैर जलने पर केवल मृत पिंड बचा था। ५८ जिसे लेकर रावण चला गया और उसे महारानी मन्दोदरी को देते हुये उसने कहा कि इस माँस के व्यंजन बनाओ क्योंकि यह अत्यन्त स्वादिष्ट है। ५९ यह ज्ञात होने पर हमने नारद को भेजकर वेदमती का मृत शरीर लाने को कहा। २९६० नारद ने कहकर एक मंजूषा मँगायी और उसके भीतर मृत शरीर को रखकर उसे समुद्र में प्रवाहित कर दिया। २९६१ माया देवी को भेजकर उसे वहाँ से साथ ले जाकर मिथला की यज्ञशाला में रखा दिया है। ६२ हम लोगों ने फिर आपका स्मरण किया। अब जिस प्रकार से राक्षस का वध हो। उस प्रकार का विचार करें। ६३ अनन्त शैया पर भगवान विष्णु हैं। अब कैसे वह जन्म धारण करेंगे, इस पर विचार करना है। ६४ ब्रह्मा जी ने कहा कि मैं मिथिला को जा रहा हूँ।

ताहार शकासरू मरिब रावण। तुम्भे देवताए जे निश्चिन्ते थाअ पुण ६६
एते कहि बेदबर मिथिळ पुर गले। माया नारी पांचगोटि संगरे देब नेले ६७
रजनी काळरे जाइ होइले प्रवेश। पोतिबार ठावरू काढ़िले से मञ्जूष ६८
से मूर्द्धुनी मर्दिण रूप जे दुइ कले। कनक रत्नरे पितुळा संचयिले ६९
जिब न्यास करिण मंजुषरे भरिले। जतन करिण मंजुष मुदिले२९७०
गुपत करि सेठारे रखिले कुश धारी। से गुपत तत्व न जाणिले तिनि पुरी२९७१
बोइले जेते बेळे श्री हरि जात हेबे। ताहाङ्कर संगरे कमळा आसिबे ७२
कमळा होइबे तिनि अंशरे जात पुण। जानकी सुमाळुणी माळुणी नाम जाण ७३
कुशधर राजार घरणी गर्भे पुण। दुइ अंश जात हेबे जोनि द्वारे पुण ७४
चउद कळा घेनि जानकी जात हेबे। बेदमति शरीररे आसि संम्भाइबे ७५
जाग कला बेळे जनक शोधिबे सेहि स्थान। तेबे से कमळा देबी पाइबे जीवन ७६
दुहिता करि ताकु पाळिबे जनक। शिव धनु भांगिबे श्री रघुनायक ७७
असुर बळ मारि सीतांकु बिभा हेबे। पिता सत्य पाळि श्रीराम बन जिबे ७८
चतुर्द्धा रूप धरि हरि हेबे जात। कमळा होइबे चतुर्द्धा सती स्वरूप ७९
तेबे से चारि रावण हेबे प्राणे नाश। बुझाइ कहिले बेदमती देबी पाश२९८०

उस निरंजन काल को मैं रूपायित करूँगा। ६५ उसके कारण रावण का विनाश होगा। हे देवताओ! निश्चिन्त रहो। ६६ ऐसा कहकर विधाता मिथिलापुर को चले गए। वह अपने साथ पाँच माया-नारियाँ लिये थे। ६७ वह रात्रि के समय वहाँ पहुँचे। गाड़े गए स्थान से उन्होंने वह मंजूषा निकाली। ६८ उस मृत पिण्ड को मसल कर उन्होंने सुवर्ण रत्न पुत्तलिका के दो रूप निर्मित किये। ६९ फिर उनमें जीवन डालकर उसे मंजूषा में भर दिया और यत्नपूर्वक उसे बन्द कर दिया। २९७० कुशधारी ब्रह्मा ने उसे वहाँ छिपाकर रख दिया। इस गुप्त रहस्य को तीनों लोक में कोई भी न जान सका। २९७१ उन्होंने कहा कि जिस समय वासुदेव जन्म ग्रहण करेंगे उस समय उनके साथ लक्ष्मी आएगी। ७२ लक्ष्मी तीन अंशों में जन्म लेगी जिनके नाम जानकी, सुमालुनी तथा मालुणी होंगे। ७३ महाराज कुशधर की पत्नी के गर्भ से योनि द्वार से दो अंश उत्पन्न होंगे। ७४ चौदह कला लेकर वेदमती के शरीर में समाहित होकर जानकी उत्पन्न होगी। ७५ यज्ञ करने के समय जनक उस स्थान का शोधन करेंगे तब देवी कमला को जीवन प्राप्त होगा। ७६ जनक उसका पुत्री के समान पालन करेंगे। श्री रघुनायक जी शिव के धनुष का खण्डन करेंगे। ७७ असुरदल का संहार करके श्री राम सीता के साथ विवाह करेंगे तथा पिता जी की आज्ञा का पालन करते हुए वह वन को जाएँगे। ७८ भगवान चार रूप धारण करके अवतार ग्रहण करेंगे और लक्ष्मी चार सती के स्वरूपों में जन्म लेगी। ७९ तभी चार रावणों के

वेदमतींकु बुझाइ सेठारू चळि गले। गुपत होइथाअ वेदमतींकु कहिले२९८१
श्री हरि जनम हेबे षड्मास गले। तुहि जन्म प्रकाश हेबु सेहि काळे ८२
तुम्भ जन्मर उत्तारू दुइ दिने जाण। पार्वती जात हेबे जनक कोलेण ८३
कुशध्वज ऋषि घरे चारि दिने पुण। दुइ अंशु तार कोळरे हेबे जन्म ८४
एमन्त बुझाइ जे वेदमती कि पुण। सेठारू बेदवर स्वर्गकु गले जाण ८५
सुधर्मा सभारे जाइ होइले प्रवेश। सकळ सुरगण नमिले आसि पाश ८६
देबंकु घेनि सभा कले सुरपति।सभा भांगि बेदबर देवता पाशे जान्ति ८७
देबंकु घेनि रम्यक द्वीपरे, प्रबेश। जेउँ ठारे नाराय़ण करिछन्ति बास ८८
से स्थानरे बसिण सकळ सुरगण। श्री हरिङ्कर नाम कलेक उच्चारण ८९
जोगमाय़ा श्री हरिङ्कि स्वपने चेताकरि। नय़न फेड़िकरि चाहिँले श्री हरि२९९०
सरस्वती बोइले देबता वेदबर। तुम्भंकु सुमरण करन्ति वसि द्वार२९९१
शुणिण वासुदेव शय़न तेज्या कले।कमळा सरस्वतीङ्कि चाहिण आज्ञा देले ९२
बोइले निज पुर चळ बेनि जण। लीळा करिबा सहस्र वर्ष एथि पुण ९३
तेबे मर्त्यपुरे होइबा जाइ जात। एगार सहस्र वर्ष एथिरे लीळा गत ९४
शुणिण दुइ नारो बेगे चळि गले। निज पुरे जाइण प्रवेश होइले ९५

प्राण नष्ट होंगे। उन्होंने वेदमती से सब कुछ समझाकर कह दिया। २९८० वेदमती को समझाकर वह वहाँ से चले गए और उन्होंने उससे गुप्त होकर रहने को कहा। २९८१ छै माह व्यतीत होने पर भगवान जन्म लेंगे और उसी समय तुम्हारा भी जन्म होगा। ८२ तुम्हारे जन्म के दो दिन बाद जनक के घर में पार्वती जन्म लेगी। ८३ चार दिन के पश्चात् कुशध्वज ऋषि के घर में दो अंशों का जन्म होगा। ८४ वेदमती को इस प्रकार समझा कर ब्रह्माजी स्वर्ग को चले गए। ८५ वह देवराज की सुधर्मा सभा में जा पहुँचे। समस्त देवताओं ने उनके समीप आकर उन्हें प्रणाम किया। ८६ देवेन्द्र देवताओं को लेकर सभा कर रहे थे। ब्रह्मा जी ने देवताओं के पास जाकर सभा भंग की और देवताओं को लेकर वह रम्यक द्वीप जा पहुँचे, जहाँ पर नारायण वास करते हैं। ८७-८८ वहाँ पर समस्त देववृन्द बैठकर श्री वासुदेव का नाम जपने लगे। ८९ योगमाया ने भगवान को स्वप्न में ज्ञान कराया। वासुदेव ने आँख खोलकर देखा। २९९० सरस्वती बोलीं कि देवता और ब्रह्मा जी द्वार पर बैठकर आपका चिन्तन कर रहे हैं। २९९१ यह सुनकर भगवान विष्णु ने नींद को छोड़ दिया और लक्ष्मी और सरस्वती की ओर देखकर उन्होंने आज्ञा दी। ९२ उन्होंने कहा कि दोनों अपने महल में चलो। यहाँ हम लोग एक हजार वर्ष लीला करेंगे। ९३ तब मृत्युलोक में जन्म लेंगे। इस प्रकार लीला में ग्यारह हजार वर्ष व्यतीत हो गये। ९४ यह सुनकर दोनों स्त्रियाँ शीघ्रतापूर्वक अपने महल में पहुँच गयीं। ९५ फिर विष्णु भगवान ने अनन्त

अनन्तंकु कहिले बासुदेब पुण ।चळ निज मन्दिरे रहिबा सहस्रे वर्ष जाण ९६
अतुट नारीकि घेनि सुखे तु बिहर । शुणिण अनन्त जे गले निज पुर ९७
गरुड़कु डाकिण बासुदेब कहि । देबता बेदबरंकु अणाअ बेगे जाइँ ९८
शुणिण गरुड़ जे बेगे चळि गला । देबता मानंकु जाइण कहिला ९९
बेगे आस श्री हरि तुम्भंकु आज्ञा देले । शुणि करि देबता मनरे तोष हेले३०००
देबगण बेदबर बेगे चळि गले । बासुदेबंङ्कु चरणे नमस्कार कले३००१
निस्तरिलु बोलिण जे शिरे कर देले । तुण्डरे उच्चार करन्ति देब भले २
बोइले नारायण तुम्भर श्री चरण ।सेबा करि रहिबुँ भय़ कर हे निबारण ३
असुरङ्कु भय़ आम्भंकु होइला बड़ पुण। से ब्याधिरू उद्धार कर कमळा रमण ४
दुःखी जन बान्धब बोलाअ दीनबन्धु ।आपे न मारि किम्पा असुर हाते साधु ५
उत्त्पत्ति स्थिति जे करिण अछु पुण । पुणि शास्ति देबार अटइ कि कारण ६
आम्भर जेबे दोष देखिल श्री हरि । शारङ्ग धनुरे किम्पा निबार न करि ७
पर हस्ते मारिबारू बड़ दुःख पुण ।घर द्वार तेज्या करि खटिलु असुर चरण ८
तुम्भ दास होइण चण्डाळ सेबा करि । ए कथा दूषण हेला हे श्री हरि ९
एबे जे दारुण पण हृदय़रू छाड़ि । देबताकु धरिण रख हे स्वर्ग पुरी३०१०

देव से कहा कि चलो अपने महल में एक हजार वर्ष रहेंगे । ९६ तुम अक्षय नारी को लेकर सुख-पूर्वक विहार करो । यह सुनकर अनन्त देव अपने महल में चले गये । ९७ विष्णु ने गरुड़ को बुलाकर कहा कि तुम जाकर शीघ्र ही देवताओं तथा ब्रह्मा जी को ले आओ । ९८ यह सुनकर गरुड़ ने शीघ्रता से जाकर देवताओं से कहा कि भगवान ने आप लोगों को शीघ्र ही आने की आज्ञा दी है । यह सुनकर देवता मन में संतुष्ट हो गये । २९९९-३००० देवताओं सहित ब्रह्मा जी ने शीघ्रता से जाकर वासुदेव के चरणों में नमस्कार किया । ३००१ देवता अपने मुख से कह रहे थे कि आपने हमारा उद्धार कर दिया और इस प्रकार कहते हुये उन्होंने हाथ सिर से लगा लिये । २ उन्होंने कहा, हे नारायण ! हम आपके श्री चरणों की सेवा करते रहेंगे आप हमारे भय का निवारण करें । ३ हमें राक्षसों का बड़ा डर है । हे कमलारमण ! उस व्याधि से हमारा उद्धार करिये । ४ हे दीनबन्धु ! आपको दीनजनों का बन्धु कहा जाता है । आप स्वयं हमें न मारकर राक्षस के हाथों से क्यों मरवा रहे हैं । ५ आपने उत्पत्ति तथा स्थिति की है फिर दण्ड देने का क्या कारण है । ६ हे प्रभु ! यदि आपने हमारा कोई अपराध देखा है तो आपने शारङ्ग धनुष से निवारण क्यों नहीं किया । ७ दूसरे के हाथों मरने से बड़ा दुःख हो रहा है । हम लोग घर-द्वार छोड़कर राक्षस के चरणों की सेवा कर रहे हैं । ८ आपके दास होकर चांडाल की सेवा करें । हे भगवान ! यह बात तो निकृष्ट है । ९ अब इस निष्ठुरता को हृदय से त्यागकर देवताओं को प्रश्रय देकर स्वर्ग की रक्षा कीजिये । ३०१०

एमन्त बोलि देबे स्तुति कले जहूँ। तृपति होइले जे बासुदेव तहूँ३०११
बोइले किस कले देवगण पुण। सकळ कथा जाहा कहिथिलु जाण १२
देबताए बोइले जाहा से आज्ञा देले। से कथा आम्भे सबु मिआण कलु भले १३
कश्यपंकु जन्म कलु दशरथ करि।हेति प्रहेति हेले कौशल्या कैकयी नारी १४
नउ सागर कपि भालु जन्म कलु। बेदमती कि जाग शाळरे रखिलुं १५
आठ सहस्र बर्षे एथिरे बहि गला। चारि रावण दर्प सहिण नोहिला १६
बासुदेब बोइले आउ सहस्रे बरष। तुम्भंकु कष्ट अछि शुण हे सुरेश १७
नव शत अठषठि बरष मुहिँ पुण। स्वर्ग तेज्या करिवि देबता गणे शुण १८
दशरथ कोळे अजोध्या नवरे।अनन्त शंख चक्रधरि जन्मिवि मर्त्यपुरे १९
तेबे से असुर मरिबे मोर हस्ते। पृथि देवी तेवे रहिवे स्थिर चित्ते३०२०
आजिठारू शय़न मोहर आउ नाहिं। कमळाङ्कु संगरे लीळा मोर होइ३०२१
अळप दिनरे तुटिब तुम्भ दुःख। असुरंक संगरे नोहिब विमुख २२
शुणिण देवताए संतोष मन हेले। मेलाणि होइण से जाहा स्थाने गले २३
कमळाङ्कु संगे लीळा करन्ति श्रीधर।कोटि कोटि दासी जे खटन्ति निरन्तर २४
अनन्त लीळा करे अतुट नारी संगे। सरस्वती लीळा करे बासु देबर आगे २५

जब इस प्रकार देवताओं ने स्तुति की तब भगवान विष्णु ने तृप्त होकर कहा कि हे देवगण ! हमने जो सारी बातें कही थीं उसके विषय में आपने क्या किया। ३०११-१२ देवताओं ने कहा कि आपने जो आज्ञा दी थी हम लोगों ने वह सब कर लिया है। १३ हमने दशरथ बना कर कश्यप का जन्म करवाया और हेती तथा प्रहेती, कौशल्या और कैकेयी नारी हो गई। १४ असंख्य वानर भालुओं को उत्पन्न किया और वेदमती को यज्ञशाला में रख दिया है। १५ इस प्रकार आठ हजार वर्ष व्यतीत हो गए। चार रावणों का दर्प सहन नहीं हो पा रहा है। १६ वासुदेव ने कहा, हे सुरों के ईश इन्द्र ! तुम्हें एक हजार वर्ष और कष्ट है। १७ हे देवगण ! सुनो। मैं नौ सौ अड़सठ वर्ष में स्वर्ग का त्याग करूँगा। १८ फिर मैं अयोध्यानगर में दशरथ के घर में अनन्त देव, शंख तथा चक्र को लेकर मृत्युलोक में जन्म ग्रहण करूँगा। १९ तभी वह राक्षस मेरे हाथों मरेंगे और फिर पृथ्वी देवी शान्तचित्त से रहेगी। ३०२० आज से मैं और नहीं सोऊँगा। अब लक्ष्मी के साथ मेरी लीला होगी। ३०२१ कुछ दिनों में तुम्हारा दुःख दूर हो जायेगा। राक्षसों के साथ में तुम विमुख न होना। २२ यह सुनकर देवताओं का मन संतुष्ट हो गया। वह विदा होकर अपने-अपने स्थानों को चले गये। २३ भगवान विष्णु लक्ष्मी के साथ विहार करने लगे। करोड़ों दासियाँ उनकी सेवा में बराबर लगी रहीं। २४ अनन्त देव अक्षय कामिनी के साथ लीला कर रहे थे। सरस्वती वासुदेव भगवान के समक्ष लीला करती थीं। २५ इस प्रकार रम्यक द्वीप में भगवान की लीला हो रही

एमन्त रम्यक द्वीपरे प्रभु लीळा । श्री हरि पाटणाकु क्षीर साहेर बेढ़ा २६
अनेक सम्भर्वरे चन्दन लीळा करि । बसन्ते सुमेधा जे सुगन्ध बहे धरि २७
पार्वती बोइले देब सेठारे किस हेला । कुम्भ ऋषिर पिता बरुण देब परा २८
तांक कुमर कहिले अगस्ति बशिष्ठ । बरुणर पुत्र पुणि कि रूपे बशिष्ठ २९
ईश्वर बोइले शुणगो शाकम्बरी । लीळार भाबरे रहिले श्री हरी३०३०
सुरगण सेठारू चलिण बेगे गले । अमर पुरे जाइ प्रबेश होइले३०३१
देवतांकु घेनिण इन्द्रहिं बिचारि ।कुशपाणि कि बोइले जज्ञहिँ मुहिँ करि ३२
बेदबर बोइले करिब जेबे जज्ञ । घृत समुद्रकु कह हे जाइ बेग ३३
चारि मेघ बहि अणिबे घृत पुण ।मुषळ धारा प्रमाणे आहूति देब जाण ३४
बशिष्ठंकु आचार्ज्य करिण बरिब । सपत ऋषिकि चरु समिध जे देब ३५
सकळ देबतांकु देब हर्बिभाग । तेबे से संतोष होइबे देब सर्ब ३६
शुणिण देबराजा सर्ब देबंकु बरि । प्रजापति ब्रह्मांकु बरण बेगे करि ३७
सपत समुद्रंकु कलाक बरण । कैळासे सदा शिबंकु बरिले जाइण ३८
घृत समुद्रकु मागिले जाइ घृत । देबि बोलि बोइले सागर तपोबन्त ३९
बिधातांकु घेनिण लंका गढ़ गला । रावण आगरे जाइण कहिला३०४०
बोइला जाग मुं जे करिबि स्वर्गपुर । सकळ देबता रहिबे मो संगर३०४१

थी, वासुदेव के नगर को क्षीर सागर ने घेर रखा था । २६ उन्होंने बड़े समारोह के साथ चन्दन लीला की । बसन्त तथा सुमेधा सुगंध लिये थे । २७ पार्वती ने कहा हे देव ! फिर वहाँ क्या हुआ । वरुण देव तो कुम्भ ऋषि के पिता हैं । २८ उनके पुत्र आपने अगस्त और वशिष्ठ को बताया । फिर वशिष्ठ वरुण के पुत्र कैसे हुये । २९ शंकर जी ने कहा हे शाकम्बरी ! सुनो । नारायण तो लीला में रत हो गये । ३०३० देवतागण वहां से शीघ्रतापूर्वक चलकर स्वर्गलोक जा पहुँचे । ३०३१ देवताओं को साथ लेकर इन्द्र ने विचार-विमर्श करके कुशपाणि ब्रह्मा जी से कहा कि मैं यज्ञ करूँगा । ३२ ब्रह्मा जी बोले, यदि तुम यज्ञ करोगे तो शीघ्र ही जाकर घृत-समुद्र से कहो । ३३ चारों मेघ घृत लेकर आएंगे और मूषलाधार के प्रमाण में आहुति दी जायेगी । ३४ तुम वशिष्ठ को आचार्य के रूप मे वरण करना । सप्त ऋषियों को चरु तथा समिधा देना । ३५ सब देवताओं को हवि का भाग देना । तब सभी देवता संतुष्ट होंगे । ३६ यह सुनकर देवराज इन्द्र ने सब देवताओं का वरण करके शीघ्रता-पूर्वक प्रजापति ब्रह्मा का वरण किया । ३७ उन्होंने सातों समुद्रों को वरण करके कैलाश जाकर भगवान शंकर का वरण किया । ३८ घृत समुद्र से जाकर घृत की याचना की, तपोवंत समुद्र ने घृत देने की स्वीकृति प्रदान की । ३९ ब्रह्मा को लेकर वह लंकागढ़ गये और उन्होंने रावण के समक्ष जाकर कहा कि मैं स्वर्ग लोक में यज्ञ करूँगा सभी देवता मेरे साथ रहेंगे । ३०४०-३०४१ यदि आप बारह वर्ष तक छोड़ देंगे

वार बर्ष पर्य्यन्त देबु जेवे छाड़ि। तेवे मोर जागे गोटि होइब निवाड़ि ४२
वेदवर बोइले एकथा एवे कर। जाग कले तोहर होइब उपकार ४३
रावण बोइला जेवे इन्द्र जागकरि।तुम्भर बोलकु वार वर्ष देलि छाड़ि ४४
तेर बर्ष गले आसिण मो ठारे भटिब। भट नोहिले जागर धर्म न पाइब ४५
सत्य करि इन्द्र जे सेठारू अइला। सपत ऋषिकि वरण आसि कला ४६
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। नारद जणिण चळिले झटति ४७
विराट पुरे जाइ हेले परवेश। देखिले क्षीर नदी वहइ विशेष ४८
से नदीरे पशिण क्षीर पान कले। से राज्यरे राजा जे निमिराजा भले ४९
जीव जन्तु काहाकु न करे पुण घात। नर बानर समस्तंकु पालइ एकमत३०५०
से राजा आगरे मुनि प्रवेश जाइ हेले।देखिण निमि राजा पाद तळरे नमिले३०५१
गंगा जळ आणिण चरण धोइ देले। झीन वसन नेइण चरण पोछिले ५२
रत्न सिंहासनरे वसाइले नेइ। पूजा कले धूप दीप आळती वन्दाइ ५३
पचारिले मुनि हे कि कार्य्य बिजे कल। मुनि वोइले तोर अछि कि कुशल ५४
राजा बोइले तोर प्रसन्ने मोर भल।कौणसि चिन्ता नाहिँ काहारि नाहिँ सल ५५
मुनि बोइले तु जे मोरु बोलकर। जाग गोटिए करि पितृंकु उद्धार ५६
लक्षेराजा ऋषि ब्राह्मणंकु बरि आण। जागर विधान जे कर ततक्षण ५७

तो हमारा यज्ञ निपट जायेगा। ४२ ब्रह्मा जी ने कहा, कि इस बात को मान लो। यज्ञ करने से तुम्हारा भला होगा। ४३ रावण ने कहा यदि इन्द्र यज्ञ करेगा तो आपके कहने से मैं बारह वर्ष के लिये इन्हें छोड़ दूंगा। ४४ तेरह वर्ष होने पर आकर मेरी सेवा करना। यदि तुम न आए तो तुम्हें यज्ञ का फल नहीं मिलेगा। ४५ प्रतिज्ञा करके इन्द्र वहाँ से चला आया और आकर उसने सप्त ऋषियों का वरण किया। ४६ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् नारद सब कुछ समझकर शीघ्र ही चल दिये। ४७ वह विराट पुर में जाकर प्रविष्ट हुये। उन्होंने वहाँ क्षीर नदी बहते हुये देखी। ४८ उन्होंने उस नदी में जल-पान किया। उस राज्य के राजा महाराज निमि थे। ४९ वह किसी जीव-जन्तु को नहीं मारते थे। नर और वानर सभी का एक समान पालन करते थे।३०५० मुनि उस राजा के समक्ष जा पहुँचे। निमि राजा ने देखकर उनके चरणों में प्रणाम किया। ३०५१ गंगाजल लाकर उन्होंने उनके चरण धोकर झीने वस्त्र से उन्हें पोछ दिया और उन्हें ले जाकर सिंहासन पर बैठा दिया। फिर उन्होंने धूप-दीप अक्षत चन्दन से उनकी पूजा की। ५२-५३ उन्होंने मुनि से आने का कारण पूछा। मुनि ने कहा कि तुम कुशलपूर्वक तो हो। ५४ राजा ने कहा कि आपकी प्रसन्नता से हमारा क्षेम है। मुझे किसी प्रकार की चिन्ता और कष्ट नहीं है। ५५ मुनि ने कहा कि तुम हमारे कहने से यज्ञ करके पितरों का उद्धार करो। ५६ एक लाख राजा, ऋषि तथा ब्राह्मणों को वरण करके शीघ्र ही

राजा बोइले तुम्भे आचार्य्य हेबटिकि । मुनि बोइले तुम्भे शुण हे राजाटि ५८
वशिष्ठंकु बर आचार्य्य करिण ।बिद्यावन्त अटन्ति बशिष्ठ ऋषि जाण ५९
प्रथमरे जाइण बरण तुहिकर । नोहिले बशिष्ठ जे जिबे स्वर्गपुर३०६०
एते कहि नारद तहुँ चळिगले । जाग कले आम्भकुं सुभरिबु भले ३०६१
जेउँ कथा तोर नोहिब पूरण । से कथाकु मुहिँ जे देबइँ आणि पुण ६२
शुणिण राजन संतोष मन हेला । नारद अर्न्तधान होइले तहुँ परा ६३
नारदंक बोलरे निमि राजा गला । अजोध्यारे बशिष्ठंकु भेट से पाइला ६४
जागकु बरण कला तांक पुण । बरण सामग्री रखिले ऋषि जाण ६५
एमन्त समयरे स्वर्गरू इन्द्र आसि । जाग कु बरण जे कले ब्रह्मऋषि ६६
बशिष्ठ बोइले मोते बरिले निमि-राजा। इन्द्र बोइले मुं जे स्वर्गरे सुरराजा ६७
बशिष्ठ ऋषि बोइले निमि राजांकु चाहिँ। देबंकर जाग कु सारिबि आगे मुहिँ ६८
से जागकु सारिण तोर पुरे जिबि । तोहर जाग कर्म उत्तम करिबि ६९
शुणिकरि निमि राजा न कहे पुण किछि। लाज भर होइण मिळिले राज्यरेटि३०७०
तळकु मुख करि करन्ति शोक पुण । से कथा जाणि नारद आसिले तक्षण३०७१
नारदंकु देखिण नमस्कार कला । जाग गोटि मोर सिद्ध जे नोहिला ७२
बशिष्ठ ऋषिकि आगे बरण कलि मुहिँ। पच्छे स्वर्ग राज बरिण गला नेइ ७३

यज्ञ का विधान करो। ५७ राजा ने कहा, क्या आप आचार्य बनेंगे ? मुनि ने कहा, हे राजन् ! सुनो। ५८ वशिष्ठ को आचार्य रूप में वरण करो। वशिष्ठ बहुत विद्वान ऋषि हैं। ५९ तुम पहले जाकर उनका वरण करो अन्यथा वह स्वर्गलोक चले जाएँगे। ३०६० इतना कहकर नारद वहाँ से चले गए और कह गए कि यज्ञ करने के समय तुम हमारा स्मरण कर लेना। तुम्हारी जो बात पूरी नहीं होगी उसे मैं लाकर पूरा करूँगा। ३०६१-६२ यह सुनकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। तब नारद वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गए। ६३ नारद के कहने से राजा ने अयोध्या जाकर वशिष्ठ से भेंट की। ६४ राजा ने यज्ञ के लिये उनका वरण कर लिया ऋषि ने वरण की सामग्री रख ली। ६५ इसी समय स्वर्ग से आकर इन्द्र ने ब्रह्मर्षि को यज्ञ के लिये वरण कर लिया। ६६ वशिष्ठ ने कहा मेरा वरण महाराज निमि ने किया है। इन्द्र ने कहा कि मैं स्वर्ग में देवताओं का राजा हूँ। ६७ वशिष्ठ ऋषि ने निमि राजा की ओर देखकर कहा कि मैं पहले देवताओं के यज्ञ को पूरा करूँगा। ६८ उस यज्ञ को पूरा करके मैं तुम्हारे नगर आऊँगा। फिर उत्तम प्रकार से तुम्हारा यज्ञ करूँगा। ६९ यह सुनकर निमि राजा बिना कुछ कहे लज्जित होकर राज्य को लौट गए। ३०७० वह नतमुख होकर शोक करने लगे। यह बात जानकर नारद उसी समय आ गए। ३०७१ उन्होंने नारद को देखकर नमस्कार किया और कहा कि मेरा यज्ञ सिद्ध नहीं हुआ। ७२ मैंने वशिष्ठ ऋषि का पहले

शुणिण नारद जे बोइले चिन्ता छाड़ । गउतम ऋषिकि वरण जाइ कर ७४
सेहि सत्य लंघिले तोहर दोष नाहिँ । अन्य ऋषि वरण कर रे तुहि जाइ ७५
शुणिण निमि राजा बेगे चळिगला । गउतम ऋषिकि वरण जाइ कला ७६
वरण घेनिण ऋषि होइले बाहार । निमि राजा बोइले शुण हे मुनिवर ७७
जम्बू द्वीपरे जेते अछन्ति मुनि गण । समस्तंकु वरिण आण हे संगे पुण ७८
शुणिण गउतम सुमरणा कले । नव कोटि ऋषि आसिण मिळिले ७९
देखिण निमि राजा पेषिला पुण चार । लक्षे राजा वरिण आसिला निजपुर३०८०
बेनि लक्ष ब्राह्मण वरिण आणिला । हटारि वजारींकि एकाठि ठूळ कला३०८१
पुष्कर द्रोण मेघंकु कले सुमरणा । जाणिले मेघमाने राजार स्मरणा ८२
निमिराजा आगरे होइले परसन्न । देखिण चरणे जे नमिला राजा पुण ८३
वरण करिण जे रत्न माळा देला । किस अर्थे वरिलु द्रोण पचारिला ८४
निमि राजा बोइले जाग अर्थे वरि । घृत समुद्रं घृत देव आणि करि ८५
द्रोण मेघ बोइले शुण हे राजन । घृत समुद्रकु मनाअ तुम्भे पुण ८६
शुणिण निमि राजा जान चढ़ि गला । घृत समुद्र कु वहूत स्तुति कला ८७

ही वरण किया था और पीछे से स्वर्ग के राजा इन्द्र उनको वरण करके ले गए। ७३ यह सुनकर नारद ने कहा कि तुम चिन्ता को छोड़ दो और जाकर गौतम ऋषि को वरण कर लो। ७४ उसकी प्रतिज्ञा को भंग करने से तुम्हारा दोष नही होगा। तुम जाकर अन्य ऋषि का वरण कर लो। ७५ यह सुनकर राजा निमि गए और उन्होंने जाकर गौतम ऋषि का वरण कर लिया। ७६ वरण ग्रहण करके ऋषि वाहर निकले। राजा निमि ने कहा, हे श्रेष्ठ मुनि ! सुनिये। ७७ जम्बूद्वीप में जितने भी मुनिवृन्द हैं, आप उन्हें वरण करके अपने साथ ले आएँ। ७८ यह सुनकर गौतम ने स्मरण किया। नौ करोड़ ऋषि आ गये। ७९ यह देखकर राजा निमि ने दूत भेजे जो एक लाख राजाओं का वरण करके अपने नगर को लौट आये। ३०८० वह लोग दो लाख ब्राह्मणों को वरण करके ले आये। हाट, वाजार के लोगों को उन्होंने एकत्रित कर लिया। ३०८१ पुष्कर तथा द्रोण आदि मेघों का उन्होंने स्मरण किया। मेघ राजा के चिन्तन को समझ गये। ८२ वह प्रसन्न होकर राजा के समक्ष आ गये जिन्हे देखकर राजा ने उनके चरणों में प्रणाम किया। ८३ उन्होंने मेघो का वरण करके उन्हें रत्न माला समर्पित की। द्रोण ने पूंछा कि आपने हमें किस कार्य के लिये वरण किया है। ८४ महाराज निमि ने कहा कि मैंने यज्ञ के लिये आप लोगों का वरण किया है। आप लोग घृत समुद्र से घी लाकर देंगे। ८५ द्रोण ने कहा, हे राजन् ! सुनो। आप घृत समुद्र को मना लीजिये। ८६ यह सुनकर महाराज निमि रथ पर चढ़कर गये और उन्होंने घृत समुद्र की बहुत स्तुति की। ८७ समुद्र प्रसन्न हो गया। उसने पूंछा कि

प्रसन्न होइले सागर देव पुण। बोइले कि कार्य्यरे कल सुमरण ८८
निमि राजा बोइले मुँ करिबि जाग पुण। प्रसन्न हुअ मोते सागर निधि जाण ८९
बार वर्ष पर्य्यन्त जागकु घृत देउथिब। घृत देले द्रोण जागे वृष्टि कराइब३०९०
हेउ बोलि घृत समुद्र कलेक प्रमाण। से ठारू निमि राजा अइले ततक्षण३०९१
अगुरु चन्दन काष्ठ जे अणाइला। जागशाळा तोळाइ कुण्ड सजाड़िला ९२
जज्ञशाळ सोधिण कलेक अनुकूळ। जोग लग्न बेळारे शोधिले जागशाळ ९३
लंगळ चालन्ते तहट जे पच्छ। एमन्त समग्ररे नारद परबेश ९४
गउतम आचार्य्य बरण होइले। महा लंगळ परे हस्त जे देइ भळे ९५
गउतम बोइले नारद तुम्भे शुण।फाळ किम्पा स्थकिते रहिला एहि स्थान ९६
नारद बोइले एठारे अछि भल। निमि राजार जाग होइब सफल ९७
ताहार कोळरे पुत्र जेणु नाहिँ। सेथि सकाशे सुदया कले भावग्राही ९८
पुत्र लाभ ताकु कराइबे जाण। सुफळ हेला जज्ञ भूमि जे शोधन ९९
शुणिण गउतम लंगळ कढ़ाइले।कोदाळ साबेळाघेनि से स्थान खोळाइले३१००
देखिले मंजुष गोटिए तहिँ पुण। बाहारकु काढ़ि आणिले तक्षण३१०१
मंजूष मेळा करि भितरे देखिले। पलंक सुपातिरे शोइछि कुमरे २
बसंत वर्ण दिशे शरीर ताहार। सदाशिव अंशरे जन्म अटे तार ३

आपने किस कार्य के लिये मेरा स्मरण किया है। ८८ राजा निमि ने कहा कि मैं यज्ञ करूँगा। हे श्रेष्ठ सागर! आप मुझ पर प्रसन्न हों। ८९ आप बारह वर्ष तक यज्ञ के लिये घी प्रदान करते रहें। घृत देने से द्रोण यज्ञ में उसकी वर्षा करेगा। ३०९० ठीक है कहकर घृत समुद्र ने अपनी स्वीकृति दे दी। ३०९१ महाराज निमि उसी समय वहाँ से आ गये। उन्होंने अगुरु, चन्दन की लकड़ी मँगायी और यज्ञशाला का निर्माण कराकर यज्ञ कुंड सजवा दिये। ९२ यज्ञशाला का शोध करने के लिये शुभ योग लग्न निकालकर उन्होंने यज्ञ-शाला का शोधन किया। ९३ हल चलाते समय उसके पीछे फाल लगा था। इसी समय नारद वहाँ पहुँचे। ९४ गौतम का वरण आचार्य के रूप में हुआ। महान हल पर उन्होंने हाथ लगा दिये। ९५ गौतम ने कहा हे नारद! आप सुनिए। इस स्थान पर फाल क्यों अटक गया। ९६ नारद ने कहा यह अच्छा है। राजा निमि का यज्ञ सफल होगा। ९७ उसके कुल में पुत्र नहीं है। इसलिए भाव को ग्रहण करने वाले भगवान ने दया की है। ९८ उन्हें पुत्र-लाभ होगा। यज्ञ भूमि का शोधन सफल हो गया। ९९ यह सुनकर गौतम ने गैंती तथा साबड़ से वह स्थान खुदवाकर हल बाहर निकलवाया। ३१०० वहाँ एक मंजूषा दिखाई पड़ी जिसे उसी समय बाहर निकाल लिया गया। ३१०१ मंजूषा को खोलकर देखा तो उसके अन्दर पलंग के ऊपर बिछे ये गद्दे पर बालक सो रहा था जिसका शरीर बसन्त के वर्ण सा दिखाई दे

से रूप देखिण समस्त ऋषि बोले। बसन्त बोलि नाम ऋषि जे तार देले ४
नाम देवारु कुमर देलाक रोदन। देखिण चमत्कार हेले सर्व जन ५
नारद बोइले शुण हे राजन। अण्ठुकुड़ा दोष तोर गला एवे पुण ६
ज्येष्ठ राणी पाशे प्रवेश नेइ कर। पाळन्तु कुमरकु आनन्द मनर ७
शुणि करि राजन कोळे धरि चळि। बड़ पाटराणी आगरे जाइ मिळि ८
देखि चन्द्रपाटमहिषि पचारि। काहार कुमर गोटि कोळरे अछ धरि ९
बाळ काळरू से जे दिशइ सुन्दर। केउँ ठारू एहाकु आणिल प्राणेश्वर ३११०
राजन बोइले शुण पाट राणी। क्षीर सागर बासी नारायण पुणि ३१११
से मोते बाळक देले परसन्ने। मोहर मन जाणिले स्वयं भगवाने १२
जागशाळकु मुँ शोधन कला वेळे। लंगळरे मंजूष उकुटिला फाळे १३
काढ़िण देखन्ते एहि कुमर अछि। आण्ठुकुड़ा मोर दोष खण्डिले श्रीबत्सि १४
बसन्त वर्ण देखि ऋषि जे नाम देले। बसन्त नाम एहार हेउ जे बोइले १५
नाम करण करिबारु पुत्र रोदन कला। नारद मुनि मोर कुळ रक्षा कला १६
तांकर शकासुं मुँ जाग इच्छा करि। ए कुमर गोटि सहजे लभिलि १७
चन्द्र पाट महिषि बोले शुण प्राण नाथ। एहि पुत्रकु जेबे देले जगन्नाथ १८
तेबे नारायण सबु दिने सत। जेबे सुदया कले कमळांक कान्त १९

रहा था। उसका जन्म भगवान शंकर के अंश से हुआ था। २-३ समस्त ऋषियों ने उसका रूप देखकर उसका नाम बसन्त रखा। ४ नामकरण हो जाने पर बालक रोने लगा। यह देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये। ५ नारद ने कहा हे राजन्! सुनो। अब तुम्हारा अपुत्रिक दोष समाप्त हो गया। ६ तुम इसे बड़ी रानी के पास ले जाओ। वह प्रसन्नतापूर्वक इस कुमार का पालन करे। ७ यह सुनकर राजा उसे गोद में उठाकर चल दिये और बड़ी रानी के पास जा पहुँचे। ८ उसे देखकर पट्टमहिषी चन्द्रा ने पूँछा कि यह किसका बालक गोद में लिये हैं। ९ यह बाल्यकाल से ही सुन्दर दिखाई दे रहा है। हे प्राणेश्वर! इसे आप कहाँ से ले आये हैं। ३११० राजा ने कहा हे पटरानी! सुनो। क्षीरसागरवासी वासुदेव ने प्रसन्न होकर मुझे बालक दिया है। स्वयं भगवान ने मेरे मन की जान ली। ३१११-१२ मेरे द्वारा यज्ञशाला का शोधन करते समय हल की फाल से मंजूषा निकल पड़ी। १३ उसे खोलकर देखने पर यह बालक मिला। भगवान ने मेरा अपुत्रिक दोष समाप्त कर दिया है। १४ बसन्त वर्ण देखकर ऋषियों ने इसका नाम बसन्त रख दिया है। १५ नामकरण करने पर बालक रोने लगा। महर्षि नारद ने मेरे कुल की रक्षा की। उनके ही कारण मैंने यज्ञ की इच्छा की जिसमें मुझे यह बालक सहज में ही प्राप्त हो गया। १६-१७ पट्टमहिषी चन्द्रा ने कहा हे प्राणनाथ सुनिए। जब इस पुत्र को जगदीश्वर ने दिया है तो भगवान सर्वदा

मोर स्तनरू प्रसरू एबे क्षीर। एते बोलि कुमरकु धइले कोळर३१२०
बोइला नारदंकु डकाअ बेग करि। शुणिण सेठारू गले दण्डधारी३१२१
नारदंक आगे होइले प्रवेश। बोइले अन्तः पुरे देखिबे राणी हँस २२
शुणिण नारद बहन चळि गले। अन्तः पुर मध्यरे प्रबेश होइले २३
निमि राजाङ्कर सपत राणी जाण। मुनिङ्कु चरणे नमिले तक्षण २४
कल्याण कले मुनि हेले बड़ सुखी। अचिन्ता स्वर्गपुर अन्ते पाइबटि २५
शुणिण राणी हँस हरषे कहे बाणी। ए पुत्र गोटि जेबे देल हे मुनि मणि २६
क्षीर सबुं स्तनरू पुत्रकु धरू कोळे। एहि सुदया कर ब्रह्माङ्कु दुलाळे २७
नारद बोइले सपत राणी शुण। समस्तंक स्तनरे क्षीर हेउ पुण २८
कोळरे धरि तोष हेले नारी गण। समस्तंक स्तनरे क्षीर हेला जाण २९
नारदंक चरणे राणीए ओळगिले। जीब दान देल बोलिण बोइले३१३०
एथु अनन्तरे जे नारद चळि गले। जागशाळे जाइण परबेश हेले३१३१
अनुकूळ कारिण बसिले जागशाळ। बरुण पूजा सारि पूजिले बेदबर ३२
सकळ देबंकु पूजारे बरिले। अगुरु चन्दन जागशाळरे संजोगिले ३३
बेद पढ़ि अग्नि आरोपण कले। प्रळय अग्नि प्राय हुताशन जळे ३४

सत्य है। यदि भगवान लक्ष्मीनारायण ने मेरे ऊपर दया की है तो मेरे स्तन से दुग्ध प्रकट हो जाये। इतना कहकर उसने बालक को गोद में उठा लिया। १८-१९-३१२० उसने शीघ्र ही नारद को बुलाने के लिए कहा जिसे सुनकर राजा वहाँ से चले गये। १३२१ उन्होंने नारद के समक्ष पहुँचकर कहा कि रनिवास की रानियाँ आपका दर्शन करेंगी। २२ यह सुनकर नारद शीघ्र ही चल दिये और अंत:पुर में जाकर प्रविष्ट हुये। २३ राजा निमि के सात रानियाँ थीं जिन्होंने मुनि के चरणों में उसी समय प्रणाम किया। २४ मुनि ने आशीर्वाद दिया कि तुम सब चिन्तारहित होकर अत्यन्त सुखी हो और अंत में स्वर्ग की प्राप्ति करो। २५ यह सुनकर रानियों ने प्रसन्नता से कहा हे मुनिश्रेष्ठ! जब आपने यह पुत्र दिया है तो पुत्र को गोद में लेने पर हमारे स्तन से क्षीर निकलने लगे। हे ब्रह्मपुत्र! आप इतनी दया कीजिये। २६-२७ नारद ने कहा तुम सातों रानियों सुनो। तुम सबके स्तनों में दुग्ध प्रकट हो जाये। २८ गोद में लेकर सभी नारियाँ सन्तुष्ट हो गयीं सभी के स्तनों में क्षीर प्रकट हो गया। २९ नारद के चरणों में रानियाँ प्रणाम करती हुई बोलीं कि आपने हमें जीवनदान दिया है। ३१३० इसके पश्चात् नारद वहाँ से चले गये और यज्ञशाला में जा पहुँचे। ३१३१ शुभ योग देखकर यज्ञशाला में बैठ गये। वरुण-पूजा समाप्त करके ब्रह्मा की पूजा की गयी। ३२ उन्होंने समस्त देवताओं का पूजन करके उन्हें वरण किया और यज्ञशाला में अगुरु तथा चन्दन एकत्रित किया। ३३ वेद-पाठ करके अग्नि की प्रतिष्ठा करवायी। प्रलयकालीन अग्नि के समान

द्रोण मेघकु स्मरिले जागशाळे पुण । उच्चारण कले जे मुनि बिप्रगण ३५
समस्तंकु चरचा करइ निमि राजा राजा। नउ सागर गोधन दोहन करे राजा ३६
प्रथमे दोहन कले भूमिरे पड़े क्षीर । धवळ नदी प्राय क्षीर नदी धार ३७
अनेक जीब क्षीर पान करन्ति सेथिरु । सागर सुख पाए संगरे मिशि बारु ३८
जे जाहाइच्छा करइ सेहू ताहा भुंजि । मन इच्छा भोजनरे समस्त मन रंजि ३९
ऋषि बिप्र राजा पात्र मंत्री जेते । चतुरंग बळ जीव जन्तु जे सहिते२१४०
जाआन्ता आसन्ता जे देखणा हारी प्रजा। सस्स्तंकु राजन करे पाद पूजा२१४१
सदाबर्त्त दिअइ ठाबे ठाबे पुण । अन्न बस्त्र दान जे दिअइ अबिच्छिन्न ४२
जेउँ ठारे जाहा लोड़न्ति जेहू पुण । सेठाबरे ताहाकु मिळइ ताहा जाण ४३
कळ्प द्रुम जज्ञ शाळे होइला राजन । कौणसि कथाकु छळ नुहें तार मन ४४
एमन्त प्रकारे जाग सेहू करे । नर बानर असुर देब तोष भरे ४५
समस्तंकु निउन होइण राजा रहि । तेजगोटि प्रकाश न कला जे तहिँ ४६
पार्बती बोइले शुण हे ईशान ।निमिराजा जाग कथा शुणिलिमुं कर्ण ४७
सुर राजा स्वर्गरे जाग कले बसि । केउँ माने सेठारे होइछन्ति तोषि ४८
ईश्वर बोइले अन्न पूर्णा शुण । जेउँ रूपे जज्ञ कले स्वर्गरे मघबान ४९

अनल प्रज्ज्वलित हो गया । ३४ मुनियों तथा विप्रगणो ने मन्त्रोच्चारण करके यज्ञशाला में द्रोण मेघ का स्मरण किया । ३५ महाराज निमि सबकी सेवा-सत्कार कर रहे थे । राजा ने असंख्य गायों का दोहन किया । ३६ सर्व-प्रथम दोहन करने से दूध पृथ्वी पर गिरा । श्वेत नदी के समान दूध की सरिता बहने लगी । उससे नाना प्रकार के जीव दुग्ध पान करने लगे । उसके समुद्र में मिलने से सागर को भी सुख मिला । ३७-३८ जिसकी जो इच्छा होती थी उसको वही भोजन मिलता था । इच्छित भोजन मिलने से सबका मन प्रसन्न था । ३९ ऋषि, ब्राह्मण, राज्य-सभासद मंत्री, राजागण, चतुरंगिनी सेना आने जाने वाली तथा देखने वाली समस्त प्रजा के साथ सभी जीव-जन्तुओं की पाद-पूजा राजा कर रहे थे । ३१४०-३१४१ स्थान-स्थान पर सदावर्त्त दिया जा रहा था और निरन्तर अन्न-वस्त्र का दान हो रहा था । जो कोई जिस स्थान में जिस किसी वस्तु की इच्छा करता था । उसे उसी स्थान पर वह सब मिल जाता था । ४२-४३ यज्ञशाला में राजा कल्पवृक्ष के समान हो गया था । उसके मन में किसी बात के लिये किसी भी प्रकार का छल नहीं था । ४४ इस प्रकार वह यज्ञ कर रहा था । वानर, देवता, दानव और मानव सभी संतुष्ट थे । ४५ राजा सबसे दबकर रह रहा था । उसने वहाँ किसी से किसी भी प्रकार का क्रोध नहीं किया । ४६ पार्वती ने कहा हे ईशान दिशा के स्वामी शंकर जी ! सुनिये । मैंने अपने कानों से महाराज निमि के यज्ञ की कथा सुनी । ४७ स्वर्ग में देवराज इन्द्र यज्ञ में बैठे थे । वहाँ पर कौन लोग संतुष्ट हुये । ४८ शंकर जी ने कहा हे अन्नपूर्णा ! स्वर्ग में इन्द्र ने जिस प्रकार से

त्रिदश देबतांकु बरण करि नेला । देब मुनि ब्रह्म मुनि निमंत्रि आणिला३१५०
ब्रह्मा सदा शिबंकु बरि आणे पुण । वारस्वती भुबन रे जाग शाळ जाण३१५१
नउ सागर देबता से ठारे ठूळ हेले ।अकळित ऋषि आसि कळित से कले ५२
चारि मेघ सप्त ऋषि बार जे आदित्य । षोहळ चन्द्रमा दश दिगपाल समस्त ५३
समस्ते ठूळ होइ बरुण पूजा कले । सुवर्ण लंगळे जाग शाळ जे शोधिले ५४
बशिष्ठ आचार्य्य होइले सुर जागे ।शोधन्ते जाग शाळे ओलटे फाळ रागे ५५
पच्छकु लंगळ जे घुंचिण आसइ ।सप्त ऋषि बोइले किस एथिरे अछइँ ५६
लंगळ काढ़िला बेळे काढ़िले तत्परे । मंजुष गोटिए तहिँर भितरे ५७
सुवर्ण मंजुषकु काढ़िण आनन्दरे । फेड़ि देखिले सर्व देब हरषरे ५८
अमळाण पुष्प जे अमळाण शाढ़ी । कोमळ पत्र संचि सेथिरे अछि भरि ५९
शीतळ जळ अमृत रस फळ मूळ । एमन्त द्रब्यमान मंजुषरे ठूळ३१६०
देखिण बेदबर हरष मन हेले । मर्त्यपुरे सकळ नेइ बृष्टि कले३१६१
चित्रकूट गिरिठारू सुबळया जाएँ । पुष्प फळ मूळ हरषरे बुणि दिए ६२
तहिँर संगतरे शीतळ जळ बुणि । पड़न्ते धरणीरे होइले बृक्ष पुणि ६३
कोमळ पत्र पुष्प जे उपुजे पुण तहूँ । फळ मूळ उपुजिले आबर रस तहूँ ६४

यज्ञ किया। उसके विषय में सुनो। ४९ उसने देवताओं को वरण करके देवर्षियों तथा ब्रह्मर्षियों को निमंत्रित करके बुलवा लिया। ३१५० उसने स्वर्गलोक की यज्ञशाला में ब्रह्मा और शंकर को वरण करके बुलवा लिया। ३१५१ असंख्य देवताओं को वहाँ एकत्रित कर लिया और वहाँ पर असंख्य ऋषि आकर एकत्रित हो गये। चारों मेघ, सप्त ऋषि, बारह आदित्य, सोलह चन्द्रमा तथा दस दिगपाल आदि सभी ने मिलकर वरुण की पूजा की और सोने के हल से यज्ञशाला का शोधन किया गया। ५२-५३-५४ देवताओं की यज्ञ में वशिष्ठ आचार्य बने। यज्ञशाला का शोधन करते समय फाल उलट गया। ५५ हल पीछे की तरफ सरक गया। सप्त ऋषियों ने कहा कि यहाँ पर क्या है। ५६ हल को निकालने के समय तत्परता के साथ वहाँ से एक मंजूषा निकली। ५७ सभी देवताओं ने उस स्वर्ण मंजूषा को आनन्द से निकालकर खोलकर देखा। ५८ एक कोमल पत्ते में लिपटे हुये न मुरझाने वाले फूल तथा कभी मैली न होने वाली पगड़ी उसके भीतर रखी थी। ५९ पेटी के भीतर शीतल जल अमृत के समान रसीले फल-मूल आदि द्रव्य भरे पड़े थे। ३१६० यह देखकर ब्रह्मा जी का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने सब कुछ लेकर मृत्युलोक में उसकी वर्षा कर दी। ३१६१ उन्होंने चित्रकूट पर्वत से लेकर सुबेल पर्वत तक फल,फल तथा मूल प्रसन्नता पूर्वक बो दिये। ६२ उनके साथ ही जल डाल देने से पृथ्वी पर वृक्ष उत्पन्न हो गये। ६३ कोमल पत्ते तथा पुष्प वहाँ उत्पन्न हो गये और वहाँ फल तथा मूल पैदा हो गये जिनमें रस भरा

बनस्तरे रहिण सुललित हेले । श्रीराम बन जिबाकु बिहि एहा कले ६५
नर बानर खाइले होइबे सेथि तोष । आगहूँ बिधाता कलेक प्रकाश ६६
कृतह देबऋर्षिकि बोइले बेदबर ।अमळाण बस्त्रकु तुम्भे सम्भाळनकर ६७
श्रीराम लक्ष्मण सीता आसिबे तोर पुर । ए बस्त्रकु तुहि देबु तांक कर ६८
अमळाण चिक्कण हरषे रखिथिबु । जानकीं कि एहा जतनरे देबु ६९
शुणिण मुनिबर जतन करि रखि । आगहूँ बिधाता जाणिण एहासंचि३१७०
सुवर्ण नळरे चिक्कण अमळाण । कृतित्व महा ऋषि सम्भालिले पुण३१७१
एथु अनन्तरे शुण भगवती । सेहि जाग अनुकूल राजा से करन्ति ७२
पुष्कर मेघ आणि दिअन्ति घृत जाण । मूषळ धारा प्रमाणे वरषन्ति पुण ७३
कुण्डरे न उड़न्ति नेइण से देले । सेठारू अग्नि जे जळइ प्रखरे ७४
मासके एक जाग बरषके बार । सकळ देबे जे करन्ति आहार ७५
एमन्त बार बरष सम्पूर्ण होइला ।शते चउ राळिश जाग सुर राजा कला ७६
पूर्ण आहुति से करिण हरषरे । सेथिरे नारायण आसि दृश्य हेले ७७
धनु कमाण जे धरिण दुइ करे । शान्त शीळ मूर्ति जे नीळन्दी शरीरे ७८
से रूपकु देखि देबे नमस्कार कले । बेदबर सदानन्द स्तुति पाठ कले ७९
बोइले देबाधिदेबराज अट हे चक्रधर । असुर मारिण देबंकु रक्षाकर३१८०

था । ६४ वन में होने से वह अत्यन्त सुन्दर हो गये। विधाता ने श्रीराम के वन-गमन के लिये यह कर दिया था । ६५ आज से ब्रह्मा ने यह प्रकाशित कर दिया कि नर और वानर इन्हें खाने से सन्तुष्ट होंगे । ६६ ब्रह्मा ने देवर्षि कृतह से कहा कि तुम कभी म्लान न होने वाले वस्त्रों को सम्हालकर रक्खो । श्रीराम लक्ष्मण तथा सीता तुम्हारे घर आएँगे । यह वस्त्र तुम उन्हीं के हाथों में दे देना ६७-६८ अम्लान परिधान प्रसन्नतापूर्वक रक्खे रहना और इसे यत्नपूर्वक जानकी को दे देना । ६९ यह सुनकर श्रेष्ठ मुनि ने उसे यत्नपूर्वक रख लिया । ब्रह्मा जी ने समझबूझकर इसे पहले ही रख छोड़ा था । ३१७० उस मृदुल परिधान को महर्षि कृतह ने स्वर्णनलिका में यत्नपूर्वक रख लिया । ३१७१ हे भगवती ! सुनो । इसके पश्चात् शुभ मुहूर्त में वह यज्ञ करने लगे । ७२ पुष्कर मेघ घृत लाकर दे रहे थे और मूषलाधार घी की वर्षा कर रहे थे । ७३ वह घी लाकर कुण्ड में उड़ेल रहे थे ओर वहां पर अग्नि प्रचण्ड रूप से जल रही थी । ७४ महीने में एक यज्ञ और वर्ष में बारह हुए । समस्त देवता भोजन करते थे । ७५ इस प्रकार बारह वर्ष पूरे हो गए । देवराज इन्द्र ने एक सौ चवालिस यज्ञ किये । ७६ उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक पूर्णाहुति की तब वहाँ भगवान वासुदेव आकर दिखाई पड़े । ७७ वह दो हाथों में धनुष और वाण लिए थे । उनका नीलाभ शरीर शान्ति और शील से युक्त था । ७८ उस रूप को देखकर देवताओं ने नमस्कार किया और ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर स्तव पाठ किया । ७९ उन्होंने कहा, हे देवाधिदेव चक्रधारी आप देवताओं के राजा हैं ।

तिनिपुर चउद ब्रह्माण्ड अटे तोर। नब खण्ड मेदिनी सपत सागर३१८१
सचराचर देब तोहर रचना। प्रळय स्थिति तु जे करू देब किना ८२
प्रळय़ कला बेळे एहि जे प्रमाण। पद्म बट पत्र परे करू जे शय़न ८३
स्थिति उत्पत्ति कला बेले सकळ ठाबे रहू। छपन कोटि देबंकु पड़ि तुहि देउ ८४
तेतिश कोटि देबंकु करू भिन्न भिन्न।प्रकृति हे हिंसादार हुअन्ति देबे जाण ८५
नाग बलंक शरीरे तुहि जे पुण रहि। बळ बपु नागंकर तामस बिष होइ ८६
जीव मानसे से जे बहिब हिंसा पुण।छुइँले नाश करन्ति घेनिण अबि गुण ८७
से दोषरू तांक मस्तके भारा देलु। तिनिपुर चउद भुबन उपरे लदिलु ८८
देबे गर्बरे प्रकृति धरि बळबन्त। ताहाकु ब्याधि कलु असुर कुल गोत्र ८९
असुरंकर ब्याधि आगहूँ पुण हेल। अबतार होइ लीळा रंगे नाशकर३१९०
बाहार भितरे सकळ ठाबे तुहि। तुम्भ बिन मुँ अन्य काहाकु न जाणइ३१९१
देबंकर गर्बरे असुरंकर भय़रे। बर देउ तु जे जीबन बिकळरे ९२
बर न देले मोते धरिण मारिबे। जीब रखिबा पाइँ भय़ मोर ह्रिदे ९३
एमन्त बेदबर करइ जणाण। शुणि करि संतोष हेले नारायण ९४

आप राक्षसों को मारकर देवताओं की रक्षा करिये। ३१८० तीन लोक चौदह भुवन आपके ही हैं सातों समुद्र तथा नौ खण्ड पृथ्वी, जड़-चेतन हे देव ! सभी आपकी रचना है। आप ही उनकी स्थिति तथा प्रलय करते हैं। ३१८१-८२ प्रलय करने के समय प्रमाण स्वरूप आप बट पत्र पर शयन करते हैं। ८३ उत्पत्ति तथा स्थिति करने के समय आप सर्वत्र व्याप्त रहते हैं। छप्पन करोड़ देवताओं को आप ही तुष्टि प्रदान करते हैं। ८४ आपने भिन्न-भिन्न करके तेंतीस करोड़ देवताओं को बनाया जो प्रकृति से ईर्ष्यालु होते हैं। ८५ आप ही नागों के शरीर में रहकर उनके शारीरिक बल क्रोध तथा विष होकर जीवों के प्रति जो हिंसा धारण करते हैं। उनके छूने पर स्वभाव के कारण उनका नाश करते हैं। ८६-८७ इस दोष से तीन लोक चौदह भुवनों का भार आपने उनके मस्तक पर लाद दिया है। ८८ देवता बलवान होते हुये भी स्वभाव से अहंकारी होते हैं। अतः उनके लिये आपने राक्षसों के वंश को व्याधि रूप में बना दिया। ८९ असुरों की व्याधि तो पहले से ही चली आ रही है। अब आप अवतार लेकर नाना प्रकार की लीलाएं करके उनका विनाश कीजिये। ३१९० बाहर, भीतर सभी स्थानों में आप ही हैं। आपको छोडकर मैं किसी और को नहीं जानता। ३१९१ देवताओं के गर्व से और राक्षसों के भय से हम व्याकुल जीवन वालों को वर दीजिये। ९२ वर न देने से वह हमें पकड़कर मार डालेंगे। जीवन की रक्षा करने के लिये हमारे हृदय में डर भरा पड़ा है। ९३ इस प्रकार ब्रह्मा जी के द्वारा स्तुति करने पर भगवान विष्णु उसे सुनकर संतुष्ट हो गये। ९४ उन्होंने कहा कि कुछ ही दिनों में राक्षस नष्ट हो

बोइले अळप दिने असुर जिबे नाश। तपन कुळरे जात हेबि मुं अवश्य ९५
एते कहि अर्न्तधान हेले देब हरि। बेदबर सुर राजा जाग संम्पूर्ण करि ९६
सप्त निधि भण्डारू धन अणाइले। सकळ ॠषिकि देइ मन तोष कले ९७
देबता मानंकु देले बहू रत्न पुण। अमळाण वस्त्र देले सकळ देबे जाण ९८
परिजात पुष्प माळ मान देइ। सुर ॠषि समस्तंकु सन्तोष कराइ ९९
अग्निकि निर्वत करि सकळ देबे गले। समस्त ॠषि माने सेठारू चळिले३२००
बेदबर सदाशिव दुहेँ गले पुण। बिराट देशरे प्रबेश तक्षण३२०१
निमि राजा जागशाळ उपरे थाइ देखि। तळकु दृष्टि देइ रहिले देव कृष्टि २
हविभाग निमन्ते उपरे देबे रहि। जार नामे हबि हुए सेहू देब खाइ ३
जागे देवता ॠषि जे बरिथिले राजा। निमित्य निमन्ते सर्व देबे होइतेज्या ४
पार्वती बोइले देब कथा जे रहिला। स्वर्ग राजन स्वर्गरे जाग जे करिला ५
असुरंकु बरिण सकळ देब गण। राबणकु कहिण जाग कले पुण ६
कहिवारू शान्त चारि राबण होइ। देबतांकु घञ्चाळ कले जागठाइँ ७
निमि राजा जाग जे बिराट देशे कला। असुर मानंकु कि सेहू जणाइ थिला ८
एकथा गोटि कहन्तु एकादश रूद्र। मोहर मनकु लागुछि असम्भव ९

जायेंगे। मैं निश्चय ही सूर्य कुल में जन्म ग्रहण करूँगा। ९५ इस प्रकार कहकर भगवान वासुदेव वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गये। ब्रह्मा जी तथा देवराज इन्द्र ने यज्ञ सम्पूर्ण करके सातों समुद्रों के भण्डार से धन मगाया और समस्त ॠषियों को देकर उनके मन को संतुष्ट किया। ९६-९७ उन्होंने देवताओं को प्रचुर रत्न प्रदान किये और सभी देवताओं को कभी न मैले होने वाले वस्त्र दिये। ९८ उन्होंने पारिजात फूलों की माला देकर समस्त ॠषियों और देवताओं को संतुष्ट किया। अग्नि को विसर्जित करके सभी देवता चले गये और सारा ॠषि मंडल भी वहाँ से चल दिया। ३१९९-३२०० ब्रह्मा जी और शंकर जी दोनों चले गये और उसी क्षण विराट देश में जा पहुँचे। ३२०१ उन्होंने राजा निमि को ऊपर से ही यज्ञशाला में देखा। देवता नीचे की ओर दृष्टि किये हुये वहीं स्थित थे। २ हवि भाग के लिये देवता ऊपर खड़े थे। जिसके नाम की आहुति होती थी। वही देवता उसे भक्षण करता था। ३ महाराज निमि ने प्रथम जिन देवताओं और ॠषियों का वरण किया था वह कारणवश छूट गये थे। ४ पार्वती ने कहा हे देव ! एक बात रह गई। स्वग के राजा इन्द्र ने स्वर्गलोक में यज्ञ किया। ५ सारे देवताओं ने असुरों का वरण करके और रावण से कहकर यज्ञ किया था। ६ बता देने से चारों रावणों ने शांत होकर यज्ञ के लिये देवताओं को छोड़ दिया था। ७ राजा निमि ने विराट देश में यज्ञ किया। क्या उन्होंने भी राक्षसों को सूचना दे दी थी ? ८ हे एकादश रुद्र ! यह कथा आप हमसे कहिए। हमारे मन में तो यह असम्भव लग रहा है। ९

ईश्वर बोइले शुण प्राण सही। निमि राजा अटन्ति नारायण देही३२१०
बाळकाळुँ सेहि सुमरे चक्रधर। सप्त घड़ि रात्रठारे बासुदेब नाम जे उच्चार३२११
एमन्ते नउ सहस्र बरष बहि गला। तेबे किछि पुत्र पौत्री ताहार नोहिला १२
अग्निरे झास देबाकु मनरे बिचारि। लिघा करिबारू प्रसन्न चक्रधारी १३
रजनीरे शयन स्थानरे से कहि। भक्तबत्सळ जे अटन्ति भावग्राही १४
बोइले चिन्ता न कर मनरे महीपाळ। नारद कहिला बेळे जाग तुहि कर १५
राजन बोइले दुष्ट लोकंकु मोर डर। केमन्ते जाग मुँ करिबि चक्रधर १६
बासुदेब बोइले जागर अनकुळे। लंगळरे उकुटिब मंजुष गोटि भले १७
से मंजुष भितरे एकइ बाळशिष्य। शयन करिथिब बसंन्त बर्ण रूप १८
से कुमर तोते जे होइब प्रापत। तोहार जाग सेहू रखिब नियत्त १९
एते कहि बासुदेब अर्न्तध्यान हेले। चेतिण निमि राजा सेठारू उठिले३२२०
तिनि दिने नारद होइले प्रबेश। जाग कर बोलि तांकु कहे ब्रह्मा शिष्य३२२१
तिनि पुर बरिण सकळ सम्पादिला। देबता ऋषि ब्राह्मण राजांकु बरिला २२
क्षीर जाह्नबी तटरे जाग आरम्भिला। गौतम ऋषि जे आचार्य्य तहिं हेला २३
लंगळरे उकुटन्ते मंजुष बाहर। फिटाइ देखन्ते बाळ कुमर भितर २४

शंकर जी बोले हे प्राणसहचरी ! सुनो। राजा निमि नारायण के ही अंश थे। बाल्यकाल से ही वह चक्रधारी भगवान के नाम का चिन्तन करते रहते थे। सात घड़ी रात्रि से ही वह भगवान वासुदेव का नाम उच्चारण करने लगते थे। ३२१०-३२११ इस प्रकार नौ हजार वर्ष व्यतीत हो गये। तब भी उनके कोई पुत्र या पुत्री नहीं हुयी। १२ उन्होंने अग्नि में प्रवेश करने का विचार अपने मन में किया। उनके दृढ़ सकल्प को देखकर चक्रधारी भगवान प्रसन्न हो गये। १३ भगवान भक्तवत्सल तथा भावग्राही है। उन्होंने रात्रि में शयन के स्थान पर उनसे कहा, हे महीपाल ! मन में चिन्ता मत करो। नारद के कहने से तुम यज्ञ करो। १४-१५ राजा ने कहा कि मुझे दुष्ट लोगों का भय है। हे चक्रधारी ! मैं यज्ञ कैसे करूँगा। १६ भगवान वासुदेव ने कहा कि यज्ञ के शुभ योग में हल से एक मंजूषा निकलेगी। १७ उस मंजूषा के भीतर वसन्त वर्ण के रूप वाला एक बालक सोया होगा। १८ वह बालक तुम्हें प्राप्त होगा और वह ही तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करेगा। १९ इतना कहकर वासुदेव अन्तर्ध्यान हो गये। महाराज निमि चेतना पाकर वहाँ से उठ गये। ३२२० तीसरे दिन ब्रह्मा के पुत्र नारद वहाँ पहुँचे और उन्होंने राजा से यज्ञ करने को कहा। ३२२१ राजा ने तीनों लोकों के देवताओं, ऋषियों ब्राह्मणों और राजाओं का वरण करके सभी कार्य सम्पादित किया। २२ क्षीर जाह्नवी (दूध नदी) के तट पर उन्होंने यज्ञ आरम्भ किया। वहाँ गौतम ऋषि आचार्य हुये। २३ हल चलाने पर मंजूषा बाहर निकली और उसे खोलकर देखने पर उसमें एक बालक दिखाई दिया। २४

बसन्त रूप देखि बसन्त नाम देले । राणी माने धरन्ते क्षीर स्तनरू हेले २५
सात गोटि माता जे एकइ पिता तार । दिनुँ दिन कुमर होइला बळिआर २६
एकोइश दिनरे क्षीर तेज्या कला । मिष्ट अन्न षड्रसरे भुञ्जिला २७
मासकरे हुंकार शबद पुत्र देला । पाञ्च मासे चालि बुलि करि से डेइँला २८
सप्त मासरे बिद्या पढ़िला कुमर । चारि बिद्या साधिण होइला धर्नुधर २९
दुइ बर्षे अश्व जानरे चढ़ि पुण । पारधि कि गले गिरि कन्दरेण२२३०
तिनि बर्ष दुइ मास सम्पूर्ण जहुँ हेला । एकाम्बर वनकु पुत्र बिजय कला२२३१
सेदिन तोर मोर ग्रीसम काळे जाण । सावित्री अमावस्या अटे सेहि दिन ३२
से कुमर भेटिले बिन्दु सागर परे । सुन्दर रूप देखि शरधा तोर बळे ३३
से कुमर कु चाहान्ते शीतळ तोर देही । चन्दन घेनिला प्राये शीतळ लागइ ३४
मोर देह गोटि जे होइला कोमद । बसन्त पवन जे बहिला सुगन्ध ३५
जीववृक्षमाने सर्बे पल्लबित हेले । शुष्कतरु जीव माने प्राण जे पाइले ३६
ताहा देखि तोर मने हेला जे बिचार । बिचारिलु ए वन त लागिला शीतळ ३७
एमन्त समयरे कुमर मणि आसि । आम्भर चरणतळे ओळगिण बसि ३८
से पुत्रकु देखि तुम्भ मने दया हेला । प्रसन्न होइण ताकु कहिलु तुहि परा ३९

बासन्ती रूप देखकर उसका नाम बसन्त रखा गया। रानियों के द्वारा उसे उठाने पर उनके स्तनों में दूध हो गया। २५ माताएँ सात थीं और पिता एक था। दिन पर दिन कुमार बलवान होता गया। २६ इक्कीस दिन में उसने दूध छोड़कर मिष्ठान्न तथा षड्रस भोजन किये। २७ एक महीने में उस बालक ने बोलना प्रारम्भ कर दिया और पाँच महीने में वह चलने फिरने, उछलने और कूदने लगा। २८ सातवें महीने में कुमार ने विद्याध्ययन किया और चारों विद्याओं को पढ़कर वह धनुर्धारी बन गया। २९ दो वर्षों में वह अश्वयान पर चढ़कर आखेट के लिये पहाड़ों और कन्दराओं में गया। ३२३० जब तीन वर्ष दो महीने पूरे हुए तो वह बालक एकाम्र वन में जा पहुँचा। ३२३१ उस दिन हमारा और तुम्हारा ग्रीष्म-कालीन समय था और वह वरगदाही अमावस्या का दिन था। ३२ वह कुमार बिन्दु-सरोवर पर पहुँचा। उसके सुन्दर रूप को देखकर तुम्हारे मन में प्रेम उमड़ पड़ा। ३३ उस बालक को देखकर तुम्हारा शरीर ठण्डा हो गया चन्दन लगा देने के समान शीतल लग रहा था। ३४ मेरा शरीर भी शान्त हो गया बसन्त का सुगन्धित पवन बहने लगा। ३५ जीव तथा वृक्ष सभी पल्लवित होने लगे। सूखे वृक्षों तथा जीवों को प्राण ही मिल गए। ३६ उसे देखकर तुमने मन में विचार किया कि यह वन तो ठण्डा लगने लगा। ३७ इसी समय वह श्रेष्ठ कुमार आया और हमारे चरणों में प्रणाम करके बैठ गया। ३८ उस बालक को देखकर तुम्हारे मन

केउँ देशे घर तोर किमर्थे बन आसु। सुकुमार तनु तोर किम्पाइँ झिगासु३२४०
कुमर बोइला मोर बिराट देशे घर।मोर नाम बसन्त मुँ निमि राजा कुमर३२४१
से राजार सात राणी जननी मोर अटे। काहार गर्भरू जन्म कहइ सम्भूते ४२
से राजा जाग कले नारदंक बोले। फाळमूने लंगळ उकुटिला बेळे ४३
मंजुष भितरू मुँ जे होइलइँ जात। बसन्त बर्ण देखि बसन्त बर्ण सेत ४४
से कथा शुणि ताकु तुम्भे जे पचारि। केहू तोते मंजुष भितरे रखे भरि ४५
से बोइला सेते बेळे चेता मोर थिला। ब्रह्मा बिष्णु महादेब सुर राजा परा ४६
क्षीर जान्हवी तटरे चारिहेँ मेळ हेले। आनन्दरे चारि देब बिचार पुण कले ४७
एक रूप जात जे बिचारि देबे कले। उत्तम शक्तिमान तहिँरे जोग कले ४८
कुमर जात हेले होइब उपकारी। अनेक जाग से करिब बिचारि ४९
एमन्त बिचारि रत्न मंजुष अणाइले।बिधातांकु बोइले दिब्य पितुळा कर भले३२५०
शुणिण बिधाता क्षीर जान्हबी कि गला। कोमळ मृत्तिका जे सेथिरू आणिला३२५१
रूप गोटि संचिला उत्तम करि जाण। मंजुष भितरे मोते भरिले नेइ पुण ५२
देब बोइले तु थिबु शब्द न करिण। समय होइले करिबु शब्द जाण ५३
जेते बेळे निमि राजा जाग आरम्भिब। शोधन कला बेळे तोते से पाइब ५४

में दया आ गई। तुमने प्रसन्न होकर उससे कहा। ३९ तुम्हारा घर किस देश में है और तुम किस कारण से वन में आए हो। तुम अपने इस कोमल शरीर को क्यों कष्ट दे रहे हो। ३२४० बालक ने कहा कि मेरा घर विराट देश में है। मेरा नाम बसन्त है और मैं राजा निमि का पुत्र हूँ। ३२४१ उस राजा की सात रानियाँ मेरी माताएँ हैं। मैं बता रहा हूँ कि मैं किसके गर्भ से उत्पन्न हुआ हूँ। ४२ उन राजा ने नारद के कहने से यज्ञ किया। हल की फाल से उखड़ी हुई मंजूषा से मैं उत्पन्न हुआ। बसन्त वर्ण होने से मेरा नाम बसन्त हुआ। ४३-४४ यह कथा सुनकर तुमने उससे पूँछा कि तुम्हें मजूषा के भीतर किसने भरा था। ४५ उसने कहा कि उस समय मुझे ज्ञान था। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा देवराज इन्द्र यह चारों क्षीर जाह्नवी (दूध नदी) के तट पर एकत्रित हुए। चारों देवताओं ने आनन्दपूवक विचार किया। ४६-४७ विचार-विमर्श करके देवताओं ने एक रूप उत्पन्न किया और उसमें उत्तम शक्ति संयोजित कर दी। ४८ यह बालक पैदा होकर उपकारी होगा। यह विचारपूर्वक अनेक यज्ञ करेगा। ४९ ऐसा विचार कर उन्होंने रत्न मंजूषा मंगवाई और उन्होंने ब्रह्मा से दिव्य पुतला बनाने को कहा। ३२५० यह सुनकर ब्रह्मा जी क्षीर जाह्नवो नदी पर गये और वहाँ से कोमल मिट्टी लाकर उन्होंने एक उत्तम रूप निर्मित किया और उसे लेकर मंजूषा में भर दिया। ३२५१-५२ ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम मौन होकर रहोगे और समय आने पर बोलना। ५३ जिस समय राजा निमि यज्ञ आरम्भ करेंगे उस समय शोधन करते समय वह तुम्हें

हरषरे तोते जे नाम देब पुण। तेबे तु शबद करिबु प्रमाण ५५
एते बोलि मंजुष सेठारे गुप्त कले। जे जाहार स्थानकु चारि देबे गले ५६
सेठारे सहस्रे बरष परिजन्ते। गुपते रहिलि मुँ धरणी हृदगते ५७
निमि राजा काळे से स्थाने जाग कला।मोते पाइबारू राणीमानंक कोळे देला ५८
एकोइश दिन पर्ज्यन्त क्षीर पान कलि।बरषके चारि विद्या गुरु ठारु शिखिल ५९
तिनि बरष दुइ मासे बनकु अइलि। कर्मर सुजोगरे तुम्भर भेट हेलि३२६०
शुणिण सन्तोष जे होइलु तुहि पुण। वोइलु कुमरबर माग तु वहन३२६१
से बोइला मन इच्छा बर मोते देबु। अक्षय तृण पिनाकी धनु सर्मापिबु ६२
समस्तंकु जिणिबु मुँ न हारिबि काहिँ। जेबे जननी मोते सुदया कलु तुहि ६३
हेउ बोलि बोइलु तु प्रसन्न मनरे। अक्षय त्रोण पिनाकी देलु ता हस्तरे ६४
पश्चान्तरे बोइलु पिताङ्कु माग बर।नमस्कार करि कुमर जोड़िला बेनिकर ६५
पाशुपत शक्ति गदा जे मुद्गर। प्रसन्न होइण मुहिँ देलइँ तार कर ६६
सन्तोष होइ कुमर सेठारू चळिगला। विराट देशरे प्रवेश होइला ६७
निमि राजा जाग कला तिनि जे बरष। चारि रावण से ठारे होइले प्रवेश ६८
अनेक गरिष्ठा असुर आसि मिळि।जागर चारिपाशे रुन्धिले दैत्य मिळि ६९

प्राप्त करेगे। ५४ प्रसन्नतापूर्वक वह तुम्हारा नामकरण करेंगे। तब तुम प्रमाणिक रूप से शब्द करना। ५५ इतना कहकर उन्होंने उस मंजूषा को छिपा दिया और चारों देवता अपने-अपने स्थान को चले गये। ५६ मैं वहाँ पर पृथ्वी के गर्भ में एक हजार वर्ष पर्यन्त छिपा रहा। ५७ समय पर राजा निमि ने उस स्थान पर यज्ञ किया। मुझे प्राप्त करने पर रानियों की गोद में दे दिया। ५८ मैंने इक्कीस दिन तक दुग्ध-पान किया। एक वर्ष में गुरु से चारों विद्याएँ सीखी। ५९ तीन वर्ष और दो महीने में मैं वन में आ गया। कर्मानुसार आपसे भेंट हो गई। ३२६० यह सुनकर तुम संतुष्ट हो गई और तुमन कुमार से शीघ्र ही वर माँगने को कहा। ३२६१ उसने कहा कि आप हमारे मन के अभीष्ट वर को दीजिये। हमें अक्षयत्रोण तथा पिनाक-धनुष प्रदान कीजिये। ६२ हे माता ! जब आपने मुझ पर दया की है तो मैं सब पर विजय प्राप्त करूँ और कहीं भी पराजित न होऊँ। ६३ तुमने प्रसन्नचित्त से उससे कहा कि ऐसा ही हो और यह कहकर अक्षय वाण तथा पिनाक धनुष उसके हाथ में दे दिया। ६४ इसके पश्चात तुमने उसे पिता से (शंकर जी से) वर माँगने को कहा। बालक ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। ६५ मैंने प्रसन्न होकर उसके हाथों में पाशुपत शक्ति, गदा और मुग्दर प्रदान किया। ६६ कुमार सतुष्ट होकर वहाँ से चला गया और विराट देश में जा पहुँचा। ६७ राजा निमि ने तीन वर्ष तक यज्ञ किया। चारों रावण वहाँ पहुँचे। ६८ अनेक महिमामंत राक्षसों ने आकर यज्ञशाला को दैत्यों ने चारों ओर से घेर

देखि करि निमिराजा ताटका होइला । हृद पद्म मध्ये बासुदेबंकु सुमरिला३२७०
शुन्यरे बासुदेब नारदंकु कहि । बसन्त कुमर कु कह बेगे जाइ३२७१
पितार जाग रक्षा कले पुण पुत्र । नोहिले दैत्य सबु करिले निपात ७२
शुणिण नारद जे बेगे चळिगले । बसन्त कुमरकु जाइण कहिले ७३
पितार जाग तोर हेब छार खार । बेढ़िले असुरे करिबे हूर जूर ७४
शुणि करि कुमर बसिला पिता रथे । पिनाकी धनु धरि अक्षय तृण हस्ते ७५
देखिला असुर बळ सागर प्राये घोटि । पिनाकी धनुरे अक्षय तृण जोचि ७६
बिराट नगररे जाग शाळा जाण । क्षीर जाह्नबी सहिते कलाक रुन्धन ७७
देब रहिबा ठावरू भुमिर लगाते । रुन्धिला शर सतुरी जूण परिजन्ते ७८
दीर्घ जे सतुरी प्रति जे सतुरी । एहि रूपे शरबाड़ कलाक बिचारि ७९
देबता ऋषि ब्राह्मण नर बानर जाण ।राजा हटारि बटारी अछन्ति जेते पुण३२८०
चन्द्र सुर्ज्य दशदिगपाळ आदि । समस्ते रहिले जे जाग शाळ जगि३२८१
बाहारे असुर बसन्त नारद । निबिड़ अन्धार होइला दशदिग ८२
पथ न दिशिला असुर हेले बणा । एहि रूपे हरिकर ताठारे करुणा ८३
एहि रूपे सात रात्र जे दिबस । निबिड़ अन्धार जन्तु पान्ति क्लेश ८४

लिया । ६९ यह देखकर राजा निमि आश्चर्य में पड़ गये । उसने अपने हृदय-कमल में भगवान वासुदेव का स्मरण किया । ३२७० भगवान ने आकाशवाणी से नारद को कहा कि तुम वसन्त कुमार से जाकर कहो कि वह पुत्र शीघ्र ही जाकर अपने पिता के यज्ञ की रक्षा करें । अन्यथा राक्षस सब नष्ट-भ्रष्ट कर डालेंगे । ३२७१-७२ यह सुनकर नारद शीघ्र ही चले गये और उन्होंने जाकर वसन्त कुमार से कहा कि राक्षस चारों तरफ से घिर आये हैं । वह लोग उत्पात करके तुम्हारे पिता के यज्ञ को नष्ट-भ्रष्ट कर डालेंगे । ७३-७४ यह सुनकर कुमार अपने हाथों में पिनाक धनुष तथा अक्षय-बाण लेकर पिता के रथ पर बैठ गये । ७५ उसने असुर-दल को समुद्र के समान उमड़ते हुये देखकर पिनाक धनुष पर अक्षय बाण सन्धान किया । ७६ विराट नगर में क्षीर जाह्नवी नदी के तट पर यज्ञशाला थी । जिसे उसने बाणों से रूँध दिया । ७७ देवताओं के रहने के स्थान से लेकर भूमि पर्यन्त उसने सत्तर योजन तक बाणों से रूँध दिया । ७८ सत्तर योजन लम्बा और सत्तर योजन चौड़ा इस प्रकार बाणों का घेरा विचार-पूर्वक बना दिया । ७९ देवता, ऋषि, ब्राह्मण, नर, वानर राजा तथा अन्य लोग जो भी थे, वह सभी और चन्द्रमा, सूर्य, दसों दिगपाल आदि सबके सब यज्ञशाला की देखभाल करने लगे । ३२८०-३२८१ राक्षस, बसन्त कुमार तथा नारद बाहर थे । दसों दिशाएँ घने अन्धकार से भर गयी । ८२ माग न दिखाई देने के कारण राक्षस किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गये । उसके ऊपर भगवान की कुछ ऐसी ही कृपा थी । ८३ इसी प्रकार सात रात और सात दिन

जीब माने समस्ते नारायणंकु भजि । जाणिण पितामह हेले गळ गाजि ८५
शरबाड़ भितरु जळा काटि देले । चन्द्र सुर्ज्यं दुहिंकि बाट छाड़ि देले ८६
तेबे तिनि पुर होइला पुण दृश्य । सकळ जीब जन्तु होइले हरष ८७
जेतेक असुर घोटिण थिले पुण । भय करि समस्ते गले जे आ स्थान ८८
चारि रावण सहिते गरण्ठ माने गले । से स्थानरे गोटिए असुर न रहिले ८९
बिचारिले एहाकु न पारिबे रणे ।चन्द्र सुर्ज्यङ्कु जेहू कलाक एक बाणे३२९०
एहार संगे लागिले कुळक्षय जिब ।सकळ जीब जन्तुङ्क प्राणहिं सरिब३२९१
एमन्त बिचारिण असुरे फेरि गले । जे जाहार भुबनरे जाइण रहिले ९२
पार्वती बोइले शुण त्रिलोचन । बसन्त कुमर माया कला पुण ९३
माया देखि समस्ते आचम्बित हेले । अपघात आउ से ठारे न कले ९४
गरिष्ठ दुष्ट जिबारू बसन्त कुमर ।किस कला मो आगरे कह बिश्वम्भर ९५
ईश्वर बोइले समस्ते पळाइले । समस्ते जिबारू नारद कहिले ९६
बोइले कुमररे समस्ते गले फेरि ।ए माया शर तोते के देला जाचि करि ९७
कुमर बोइला जननी मोर उमा । शर गोटि देले मोते करिण करुणा ९८
सदाशिवंक बामा त्रैलोक्य ठाकुराणी । एकाम्र बनरे देले से जाचि पुणि ९९

तक घना अन्धकार होने से जीव-जन्तु दुःखी हो गये । ८४ समस्त प्राणी भगवान का स्मरण करने लगे ऐसा जानकर ब्रह्माजी ने आतुर होकर वाणों की दीवार में झरोखा बना दिया और चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों को मार्ग दे दिया । ८५-८६ तब तीनों लोक पुनः दिखाई देने लगे और समस्त जीव-जन्तु प्रसन्न हो गए । ८७ जितने भी राक्षस उमड़कर आये थे वह सभी डरकर अपने-अपने स्थानों को चले गए । ८८ चारों रावण के साथ मुख्य और श्रेष्ठ राक्षस चले गये । वहाँ पर एक भी राक्षस नहीं रह गया । ८९ उन्होंने विचार किया कि युद्ध में इससे जीतना कठिन है । इसने एक ही वाण से चन्द्रमा और सूर्य को भी रूंध लिया । ३२९० इसके साथ भिड़ने से कुल नष्ट हो जाएगा । सभी जीव-जन्तुओं के प्राण ही समाप्त हो जाएँगे । ३२९१ इस प्रकार विचार करके राक्षस लौट गए और अपने-अपने नगर में जाकर रहने लगे । ९२ पार्वती ने कहा, हे त्रिनेत्र ! सुनिए । फिर बसन्त कुमार ने माया की । ९३ माया को देखकर समस्त लोग आश्चर्य करने लगे । वहाँ पर किसी ने कोई उत्पात नहीं किया । ९४ तेजस्वी दुष्टों के चले जाने पर बसन्त कुमार ने क्या किया ? विश्व के आश्रयदाता शिवजी ! यह आप हमें बताइये । ९५ शंकर जी ने कहा कि सभी भाग गये । सबके चले जाने पर नारद ने कहा, हे कुमार ! सब लौट गये हैं । यह माया का वाण तुम्हें किसने लाकर दिया था ? । ९६-९७ कुमार ने कहा कि पार्वती मेरी माँ है । उन्होंने दया करके मुझे यह बाण दिया था । ९८ भगवान शंकर की पत्नी तथा तीनों लोकों की अधिष्ठात्री देवी ने

नारद बोइले फिटाअ शर बाड़ । पितार जाग गोटि हेला तोर सार३३००
शुणि करि कुमर तोते सुमरिला ।अनेक स्तुति करि शर बाड़ संहरिला३३०१
अक्षय़ व्रोण जे सम्भाळ हेला पुण । चन्द्र सूर्ज्य आनन्द जे आनन्द देबगण २
राजा पात्र मन्त्री ऋषि पुण जे ब्राह्मण । समस्ते प्रशंसा करन्ति पुत्रेण ३
एमन्ते बार बर्ष संपूर्ण पुण हेला । पूर्ण आहुति कले ऋषि ब्राह्मण परा ४
आहुति बेळे अग्नि दिशिले उज्ज्वळ । देबताए बोइले लभिले स्वर्गपुर ५
पूर्ण आहुति बेळे सकळ देबे दृश्य । र्हबिभाग पाइण समस्ते हेले तोष ६
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर चतुर्द्धा रूपधरि । अग्नि भितरे देखिले गौतम तपचारी ७
नमस्कार करिण अनेक स्तुति कले । जय़ तु नारायण बोलिण बोइले ८
जय़ जय़ जगन्नाथ सागर अटु हेबर्हरि। सकळ कथा तोर हृदरु अबतरि ९
मानिले रखु नोहिले नाश करु पुण । तोर चरणे अटे सकळ देबगण३३१०
एमन्त बोलि स्तुति गउतम कले । अन्तर होइ देबे अदृश्य होइले३३११
एथु अनन्तरे शुण भगबती । पूर्ण आहुति संगे उठिला चरु गोटि १२
शुणिण निमि राजा निज पुरे गला । सपत राणीकु सधीरे पचारिला १३
सपत राणी बोइले नपारु करि निष्ठा । बड़ पाट बोइले मुँ करि अछि काष्ठा १४

एकाम्र कानन में समझ बूझकर मुझे दिया था। ९९ नारद ने कहा कि बाणों के घेरे को हटा दो। तुम्हारे पिता का यज्ञ श्रेष्ठ हुआ है। ३३०० यह सुनकर कुमार ने तुम्हारा स्मरण किया और अनेक विनती करके शरजाल को हटा दिया। ३३०१ वह अक्षय बाण शांत हो गया। चन्द्रमा, सूर्य तथा देवता लोग प्रसन्न हो गये। २ राजा, सभासद मंत्री, ऋषि तथा ब्राह्मण आदि सभी राजपुत्र की प्रशंसा करने लगे। इस प्रकार बारह वर्ष पूर्ण हो गये। ऋषि तथा ब्राह्मणों ने पूर्णाहुति की। ३-४ आहुति देने के समय अग्नि उज्जवल दिखाई देने लगी। देवताओं ने कहा कि स्वर्ग को प्राप्ति हो गई। ५ पूर्णाहुति के समय समस्त देवता दिखाई देने लगे और हवि का भाग प्राप्त करके सब संतुष्ट हो गये। ६ तपस्वी गौतम ने अग्नि के भीतर ब्रह्मा, विष्णु, महेश के चार रूपों के दर्शन किये। ७ उन्होंने नमस्कार करके, हे नारायण! आपकी जय हो, कहकर उनकी नाना प्रकार से स्तुति की। ८ हे जगत के नाथ! हे वासुदेव! आप समुद्र के समान हैं। आपकी जय हो। जय हो। आपके हृदय से ही ब्रह्माण्ड की सारी सृष्टि होती है। ९ प्रसन्न होने से आप रक्षा करते है। अन्यथा नष्ट कर डालते है। सारे देवगण आपके चरणों में है। ३३१० गौतम ऋषि के इस प्रकार स्तुति करने पर भगवान अदृश्य हो गये। ३३११ हे भगवती! सुनो। इसके पश्चात् पूर्णाहुति के साथ चरु प्रकट हुआ। १२ यह सुनकर महाराज निमि अपने महल में गये। उन्होंने धैर्यपूर्वक सातों रानियों से पूँछा। १३ सातों रानियों ने कहा कि हम निष्ठा नहीं कर

शुणिण राजन फेरि करि गला ।वड़ पाटराणी काष्ठा करिछि वोइला १५
गउतम चरु देले नृपति हस्तरे । ए चरु दिअ पाटराणी करे १६
शुणिण नृपति अन्तःपुरे गला । वड पाटराणीकि ड़काइ चरु देला १७
से चरुकु आनन्दे भक्षिला राणी पुण । एथु अनन्तरे गो शाकम्वरी शुण १८
राजन लेउटि अइला जाग शाळे । अग्निकि शीतळ कले सकळ तपशीळे १९
ऋषि ब्राह्मणंकु सन्तोषे धन देले। मनर सन्तोषे राजा सबंकु वोध कले३३२०
राजामानंकु रत्न मुकुट कुण्डळ । नाना रत्न देइण तोषिले नृप वर३३२१
पात्र मन्त्री चतुरंग वळकु तोष कले । हटारि बजारी परिबारे धन देले २२
मागन्ता दुःखी दरिद्रे देले अन्न वस्त्र । समस्तंकु भरि भोजन कराए विशेष २३
समस्ते सन्तोष होइण चळि गले । जाग शाळे गोटिए केहि न रहिले २४
गौतम ऋषिंकि अनेक धन देले । निज मन्दिरकु ऋषि चळि गले २५
नारदंकु घेनि चळिला जज्ञस्थानु ।निज पुरु राणी हँस ड़काइ आणि तेणु २६
बसन्त कुमरकु संगरे घेनि राजा ।क्षीर जान्हवी नदीरे प्रबेश महाराजा २७
जाह्नवी तीरे जाइ सर्बे स्नान कले । पितृ दर्पण करि देबंकु अर्घ्य देले २८
रविंकि बन्दापना कलेक सेठारे । नूतन अमळाण वस्त्र पिन्धिले सकले २९

पायीं । तब बड़ी पटरानी वोली कि मैंने निष्ठापूर्वक अनुष्ठान आचरित किया है । १४ यह सुनकर राजा ने लौटकर बताया कि वड़ी रानी का आचरण निष्ठावान रहा है । १५ गौतम ने राजा के हाथों में चरु देते हुये कहा कि इसे पटरानी के हाथों में प्रदान करो । १६ यह सुनकर राजा अतःपुर गये और उन्होंने बड़ी पटरानी को बुलाकर खीर प्रदान कर दी । १७ रानी ने उस चरु को आनन्द से खाया । हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् सुनो । १८ राजा के यज्ञशाला में लौटने पर समस्त तपस्वियों ने अग्नि को शीतल किया । १९ राजा ने ऋषियों और ब्राह्मणों को धन देकर संतुष्ट किया । मन से संतुष्ट राजा ने सबको सांत्वना दी । ३३२० नृपश्रेष्ठ निमि ने राजाओं को नाना प्रकार के रत्न तथा बहुत से रत्नजड़ित मुकुट और कुण्डल देकर संतुष्ट किया । ३३२१ उन्होंने सभासद मंत्री, चतुरंगिनी सेना, आम जनता तथा परिवार वालो को धन प्रदान किया । २२ दुःखी दरिद्र भिखारियों को अन्न वस्त्र दिय और सभी लोगो को विशेष प्रकार के भोज्य पदार्थ प्रचुर मात्रा मे दिये । २३ सभी सतुष्ट होकर चले गये और यज्ञशाला में कोई भी नहीं बचा । २४ महर्षि गौतम को प्रचुर धन दिया गया जिसे पाकर वह अपने स्थान को चले गये । २५ राजा अपने महल के रनिवास से रानियों को बुलाकर बसन्त कुमार के साथ नारद को साथ लेकर यज्ञ स्थान से चल दिया और क्षीर-जाह्नवी नदी पर जा पहुँचा । २६-२७ जाह्नवी तट पर जाकर सबने स्नान किया और पितरों को तर्पण तथा देवताओं को अर्घ्य प्रदान किया । २८ वहाँ पर सबने सूर्य की पूजा की और नवीन

फूल चन्दन अगुरु कस्तुरी भूषण। नाना जाति अळंकार शरीरे मण्डिण३३३०
रथ मानंकरे बसिण आनन्दरे। बाद्य निशाणरे चउदिग पूरे३३३१
हरषे राजन चळइ धीर धीर। प्रबेश होइले आपणा सिंहद्वार ३२
दाण्डरे रत्नबृष्टि करइ राजन। इष्ट देबतांकु कलाक दरशन ३३
बिष्णु प्रतिमांकु अमृत भोग देला। शिब प्रतिमामानंकु क्षीर शाय़ी कला ३४
ग्राम देवती मानंकु बोदा जे छागळ। देइण तोष कला देबींकि सकळ ३५
नारदंकु अनेक धन रत्न देला। बिनय़ी होइण बहुत स्तुति कला ३६
सन्तोष होइण नारद महामुनि। जशोबन्ती पुरकु चळि गले पुणि ३७
बेदबर आगरे सकळ कहिले। शुणि करि बेदबर सन्तोष होइले ३८
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। बड पाटराणी जे सुखरे मन भरि ३९
नूतन पाक रान्धणा बिधि कले। षडरसे राजन भोजन बिळोहिले३३४०
एसन्ते तिनि दिन सेथिरे बहि गला। बड़ पाटराणी रजस्वळा हेला३३४१
पाञ्च दिनरे राणी सुद्धस्नान कला। सुबेश होइण राजांक पाशे गला ४२
देखिण राजन प्रसन्न होइले। मनर सन्तोषे रहिलीळा कले ४३
सेहि दिन राणी गर्भ स्थिति हेला। जाग सरिबार ठारु बिश दिन गला ४४
बशिष्ठ सुर राजा जागकु जाइ थिले। अजोध्या पुरे जाइ प्रबेश होइले ४५

निर्मल वस्त्र धारण किये। २९ सबने वहाँ पर चन्दन अगुरु कस्तूरी तथा फूलों से सजकर नाना प्रकार के आभूषण अपने शरीर पर धारण किये। ३३३० वह सब वाद्य-निनाद से चारों दिशाओं को गुंजाते हुये रथों पर बैठकर प्रसन्नतापूर्वक धीरभाव से चलकर अपने सिंहद्वार पर जा पहुँचे। ३३३१-३२ राजा मार्ग में रत्नों की वर्षा कर रहे थे। उन्होंने इष्ट देव का दर्शन किया। ३३ विष्णु की प्रतिमा को अमृतमय भोग लगाया गया और शिवलिंगों पर दूध चढ़ाया गया। ३४ ग्रामदेवियों को पाड़ा और बकरे देकर उन सबको संतुष्ट किया गया। ३५ उन्होंने नारद को बहुत धन और रत्न देकर विनीत भाव से उनकी बहुत स्तुति की। ३६ महर्षि नारद संतुष्ट होकर यशोवंतीपुर को चले गये। ३७ उन्होंने ब्रह्माजी के समक्ष सब गाथा कह सुनायी जिसे सुनकर विधाता संतुष्ट हो गये। ३८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् बड़ी पटरानी ने प्रसन्नचित्त से नवीन पाकशाला में रन्धन विधि सम्पादित की और उन्होंने राजा को षड्रस भोजन समर्पित किया। ३९-३३४० इस प्रकार वहाँ तीन दिन बीतने पर बड़ी पटरानी रजस्वला हो गई। ३३४१ पाँचवें दिन रानी शुद्ध स्नान करके शृंगार करके राजा के समीप गयी। ४२ यह देखकर राजा प्रसन्न हो गये और उन्होंने अपने मन की संतुष्टि के लिये रति-क्रीड़ा की। ४३ उसी दिन रानी का गर्भ ठहर गया। यज्ञ समाप्ति के पश्चात् बीस दिन बीत गये। ४४ वशिष्ठ, जो देवराज इन्द्र के यज्ञ में गये

स्वर्ग पुररु जेते धन रत्न नेइ थिले। निज मढ़ि आरे सकळ सम्पादिले ४६
घरणी कि कहिण चळिले बेगे पुण। बिराटर देशरे प्रवेश हेले जाण ४७
निमि राजा पुररे होइले परिबेश। देखिण राजन होइला हरष ४८
वशिष्ठ बोइले मोते बरिलु तु पुण। गौतमंकु जाग करिलु राजन ४९
ऋषि कुळरे मोते लज्या कराइलु। न्याय वन्त राजा होइ अधर्म बिचारिलु३३५०
से दोषरु शाप तोते हेउरे प्रापत। जेबे जाग तुहि करिछू उपगत३३५१
सेतिकि बरष जाए मोर शाप घेनि। नर्क दर्शन जाइ करिबु राजन ५२
शते चउराळिशि जाग करिलु संपूर्ण। तेते वर्ष करजा कुम्भिपाक दर्शन ५३
एमन्त शुणि राजन क्रोधरे बोइले। केउँ नीति बळे शापदेल मोते भले ५४
आ गरे जाइ मुँ तुम्भंकु करिलि बरण। बरण रखि सम्मत कलत आपण ५५
पछे बरण कले स्वर्गरे देवगण। मोर जाग छाड़ि तेणे गल आगे पुण ५६
अधर्म कथा गोटि आगे विचारिलु। केउँ गुणे तुहि तामस बुद्धि कलु ५७
दोष नथिबा लोककु देल शाप पुण। मोहर शाप तुम्भे घेन ऋषि राण ५८
जेते दिन शरीररे थिब तुम्भ प्राण। तेते दिन गजमूर्ख हुअ हे आपण ५९
ए जनम गले तु पुणि जन्म हेबु। चण्डाळर दुहिताकु विवाह होइबु३३६०
तेबे तु शापरु होहबु मुकत। एहि शाप गोटि तोते हेउ परापत३३६१

थे, अयोध्या जा पहुँचे। ४५ स्वर्गलोक से वह जितना धन तथा रत्न लाये थे, वह सब अपने मठ में रखकर स्त्री से कहकर शीघ्र ही चल पड़े और विराट देश में जा पहुँचे। ४६-४७ वह राजा निमि के महल में प्रविष्ट हुये। उन्हें देखकर राजा प्रसन्न हो गये। ४८ वशिष्ठ ने कहा हे राजन् ! तुमने मुझे वरण किया था फिर गौतम से यज्ञ करवायी। ऋषिकुल में मुझे लज्जित करवाया। न्यायशील राजा होकर तुमने अधार्मिक बात की है। ४९-३३५० उस दोष के कारण तुम्हे शाप प्राप्त हो। जब तुमने यज्ञ समाप्त कर दिया। तो उतने वर्षों तक मेरा शाप ग्रहण करो और हे राजन् ! जाकर नर्क का दर्शन करो। ३३५१-५२ तुमने एक सौ चवालीस यज्ञ सम्पादित किये हैं। अतः उतने ही वर्ष जाकर तुम कुम्भीपाक-नर्क के दर्शन करो। ५३ ऐसा सुनकर राजा ने कुपित होकर कहा कि किस नीति के बल पर आपने मुझे शाप दिया है। ५४ मैंने पहले जाकर आपको वरण किया था। आपने वरण-सामग्री रखकर स्वीकृति प्रदान की थी। ५५ तदनन्तर स्वर्ग के देवताओं ने वरण किया। आप मेरा यज्ञ छोड़कर वहाँ पहले चले गये। ५६ पहले आपने ही अधार्मिक विचार किया। फिर कौन से गुण से आप कुपित हो गये। ५७ निर्दोष व्यक्ति को आपने शाप दे दिया। हे ऋषीश्वर ! अब आप मेरा शाप ग्रहण कीजिये। ५८ तुम्हारे शरीर में जितने दिन तक प्राण रहें तब तक आप मूर्ख हो जायें। ५९ इस जन्म के व्यतीत होने पर तुम्हारा पुनर्जन्म होगा। तब तुम चांडाल की कन्या से विवाह करोगे। ३३६० फिर तुम शाप से मुक्त

शुणिण बशिष्ठ स्तम्भीभुत होइ। बिधाता पुरुषंकु सुमरि ले तहिँ ६२
बोइले निश्चे मोते घोटिला आसिकाळ। ए शरीर थिबा जाएँ राजबिधि मोर ६३
तेबे कि कार्ज्य जे शरीर बहि मोर। एते कहि ब्रह्म ऋषि बिकळ अन्तर ६४
बहुत आरतरे सुमरे बेदबर।जशोबन्ती पुरे ताहा जाणिले कुश धर ६५
हँस बाहन छाड़ि अइले धातिकार। परबेश होइले बिराट नगर ६६
देखि निमि राजा चरण तळे नमि। कर जोड़ि स्तुति जे करइ नृपमणि ६७
बोइले मोर दोष शुण बेदबर।जाग करिबाकु मोते कहिले नारद मुनिबर ६८
तांकर बोले जाग आरम्भ मुँ कलि। प्रथमे बशिष्ठंकु आचार्ज्ये बरिलि ६९
द्वितीये सकळ ऋषिकि कलि बरण। तृतीये सर्बदेवंकु देलि निमन्त्रण३३७०
चतुर्थे बिप्रवर पञ्चमे राजा बरि। षष्ठे चारि मेघ घृत समुद्रकु बरि३३७१
सप्पतमे हटारि बजारींकि ठुळकलि। अष्टमे जागशाळ बिधिमते कलि ७२
बशिष्ठंकु डाकन्ते कहिले मुनिबर। एबे निमन्त्रण करिला सुनाशिर ७३
मुँ बोइली धर्म एहु नुहइ तुम्भर। आगे मुँ बरण कलि जिबार बेभार ७४
से बोइले बार बर्ष गले मुहिँ जिबि।मुँ बोइली तेते काळ जाग कि रखिथिबि ७५

होगे। यह शाप तुम्हें प्राप्त हो। ३३६१ यह सुनकर वशिष्ठ अवाक हो गये। उन्होंने वहाँ पर ब्रह्मा जी का स्मरण किया। ६२ उन्होंने कहा कि अब निश्चय ही काल ने आकर मुझे आच्छादित कर लिया है। इस शरीर के रहने तक राजकार्य करना है। तब इस शरीर को रखने से क्या प्रयोजन ? ऐसा कहकर ब्रह्मर्षि का अन्तर व्याकुल हो गया। ६३-६४ अत्यन्त दुःखी होकर वह ब्रह्मा जी का स्मरण कर रहे थे। जिसे यशोवंतीपुर में ब्रह्मा ने समझ लिया। ६५ वह अपने वाहन हंस का त्याग करके दौड़कर आकर विराट नगर में प्रविष्ट हुये। ६६ यह देखकर राजा निमि ने उनके चरणों में प्रणाम किया और नृप शिरोमणि ने हाथ जोड़कर उनकी स्तुति की। ६७ उन्होंने कहा हे ब्रह्मदेव ! सुनिये। मेरा दोष इतना ही था कि नारद मुनि ने मुझसे यज्ञ करने को कहा। मैंने उनके कहने से यज्ञ आरम्भ कर दिया और पहले ही वशिष्ठ को आचार्य पद के लिये वरण किया। ६८-६९ द्वितीय-मैंने सारे ऋषियों का वरण किया। तीसरे-समस्त देवताओं को निमन्त्रण दे दिया। ३३७० चौथे-ब्राह्मणों को और पाँचवें-राजाओं को वरण किया। छठे-चारों मेघों और घृत समुद्र का वरण कर दिया। ३३७१ सातवें मैंने आम जनता को एकत्रित किया। आठवें विधि-विधान से यज्ञशाला का निर्माण किया। ७२ वशिष्ठ को बुलाने पर मुनिश्रेष्ठ ने कहा कि अब इन्द्र ने निमंत्रण दिया है। ७३ मैंने कहा कि यह आपका धर्म नहीं है। मैंने चलने के लिये आपको पहले से ही वरण किया है। ७४ उन्होंने कहा कि बारह वर्ष बीतने पर मैं आऊँगा। तब मैंने कहा कि उस समय तक क्या आपके लिये मैं यज्ञ रक्खे रहूँगा। ७५

समस्तंकु बरिलि अइले मोर पुर । बशिष्ठंक लागि एका हेलि हर बर ७६
बशिष्ठ बोइले देबताए मोते बरि । आगे जिबि स्वर्गपुर धर्म ए मोहरि ७७
मुँ बोइलि अधर्म किम्पाइँ ऋषि कर । जे बरिला आग सेठाकु जिवा चाल ७८
से बोइले स्वर्ग जाग सारिले मुँ जिबि । शुणिण चिन्ता कुळे होइलि मुँ भावि ७९
बहुत भाबि चिन्ति सेठारु चळिलि । गौतम ऋषिंकि बरण करि नेलि३३८०
सेहि ऋषि मोर जागे होइले आचार्ज्य। नारद मुनि मिळि सर्व कले सिद्ध३३८१
जाग अनुकूले प्रापत मोते पुत्र ।सेहि ठारु आनन्द होइला मोर चित्त ८२
द्रोण मेघ घृत आणिण मोते देला। मुषळ धारा प्रमाण कुण्डे निउड़िळा ८३
बार बरषे जाग समापत मोर। पूर्ण आहुति बेळे चरु जे बाहार ८४
से चरु बड़ पाटराणी जे भक्षिला। आजकु सप्तदिन गर्भवास हेला ८५
अनेक असुर आसि अनर्थ जे कले। तिनि बरष कुमर जाग रखे भले ८६
तेते बेळुँ जाण हेला बासुदेब माया ।लक्षे गरिष्ठ असुरे फेरिले करि भया ८७
देबता ब्रह्म ऋषि राज ऋषि जन। मेलाणि होइण गले जे जाहा स्थान ८८
दश दिन उत्तरु ए ऋषि आसि पुण। आग धर्म लघिँण पछरे क्रोधमन ८९
न्यायकु न बिचारि शाप मोते देइ ।बोइले शहे चौरावनश जाग पूर्ण होइ३३९०

मैंने सबका वरण कर दिया सभी लोग मेरे निवास पर आ गए। केवल वशिष्ठ के लिये मैं व्यग्र था। ७६ वशिष्ठ ने कहा कि मुझे देवताओं ने वरण किया है। अतः पहले मैं स्वर्गलोक जाऊँगा। यह मेरा धर्म है। ७७ मैंने कहा है महर्षि ! अधर्म क्यों कर रहे है। जिसने पहले वरण किया है उसी के यहाँ चलिये। ७८ उन्होंने कहा कि मै स्वर्ग का यज्ञ समाप्त करके आऊँगा। यह सुनकर मैं सोच-सोच कर चिन्तित हो गया। ७९ बहुत कुछ सोच-विचार कर चिन्ता से मैं चल दिया और गौतम ऋषि का वरण करके उन्हें ले आया। ३३८० वह ऋषि मेरी यज्ञ के आचार्य बने। महर्षि नारद ने मिल-कर उस यज्ञ को सिद्ध कर दिया। ३३८१ यज्ञ की सिद्धि पर मुझे पुत्र प्राप्त हुआ। तभी मेरा मन प्रसन्न हो गया। ८२ द्रोण मेघ लाकर मुझे घृत देने लगा। कुण्ड में मूसलाधार घृत की वर्षा होने लगी। ८३ बारह वर्षो में मेरी यज्ञ समाप्त हो गई। पूर्णाहुति के समय चरु प्राप्त हुआ। ८४ उस चरु को बड़ी पटरानी द्वारा ग्रहण करने पर आज से सातवें दिन वह गर्भवती हो गई। ८५ अनेक राक्षसों ने आकर यज्ञ में विघ्न डाला। तीन वर्ष पर्यन्त तक कुमार भली प्रकार से यज्ञ की रक्षा करता रहा। ८६ उस समय भगवान वासुदेव की माया के कारण लाखों महत्वपूर्ण राक्षस भय से लौट गए। ८७ देवता ब्रह्मर्षि राजर्षि तथा मुनिजन विदा होकर अपने-अपने स्थानों को चले गए। ८८ दस दिनों के पश्चात् यह ऋषि वशिष्ठ आए। पहले तो इन्होंने धर्म का उल्लंघन किया और फिर पीछे से मन में कुपित होकर न्याय का कुछ भी विचार न करके

तेते दिन पर्ज्यन्त कुम्भिपाक जाअ। जातना पुरे जाइ दर्शनकु पाअ३३९१
अदोषरे शाप मोते देले मुनिबर।सेथि जोगे मुनिंकि मूँ शाप जे देबार ९२
गज मूर्ख हुअ बोलिण बोइले। एहि जन्मटि एहा भोग तु कहिलि ९३
एहि जन्मअन्ते तु जे हेबु बिद्याबन्त। बिद्याबन्त हेले मध्य रहिब कलंक ९४
चण्डाक दुहिताकु बिभा हेबु पुण। मोर शाम अन्यथा नोहिब जे जाण ९५
शुणिण बेद बर राजनकु कहि। अदोषरे मुनिजे तोते शाप देइ ९६
मुनिकर बचन त केबेहें नुहें आन।चारि मास चबिश दिन तु कर नर्क दर्शन ९७
निमि राजा बोइले मुँ केउँ ठाकु जिबि। बेदबर बोइले चळ तुहि बेगि ९८
राणी हंस पुरे तोर जेतेक छन्ति स्तिरी।
से मानंकर श्वेत खाना खट जाइ करि ९९
दिन पूरिले तु जे सेठारु आसिबु। कनक स्नान करि सिंहासनरे बसिबु३४००
नारदंकु सुमरणा करिबु तेते बेळे। पबित्र अंग तोर करिबे मुनि बरे३४०१
राजा कहिले एकथा बढ़ अपमान। निश्चय आज मूहिँ हारिबि जीबन २
बिधाता बोइले तु जाचकपुर जिबु। चउराशि नर्करे जाइण पडिबु ३

इन्होंने मुझे शाप देते हुए कहा कि एक सौ चउवन यज्ञ पूर्ण हो गए हैं अतः उतने दिनों पर्यन्त तुम कुम्भीपाक नर्क में जाओ और नर्क में कुम्भीपाक का जाकर दर्शन करो। ८९-९०-३३९१ बिना किसी दोष के मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ ने मुझे शाप दे दिया। इसी कारण मैंने भी मुनि को शाप दे दिया। ९२ मैंने उन्हें मूर्ख हो जाने के लिये कहा। यह भी कहा कि इस जन्म में तुम इसका भोग करो। ९३ इस जन्म की समाप्ति पर तुम विद्वान होगे परन्तु विद्वान रहते हुए भी तुम कलंकित रहोगे। ९४ फिर तुम चाण्डाल कन्या से विवाह करोगे। तुम यह समझ लो कि मेरा शाप झूँठा नहीं होगा। ९५ यह सुनकर वेदवर ब्रह्माजी ने राजा से कहा कि मुनि ने तुम्हें बिना अपराध के शाप दिया है। ९६ मुनि के वाक्य तो कभी भी अन्यथा नहीं हो सकते। तुम चार महीने चौबीस दिन पर्यन्त नर्क का दर्शन करो। ९७ महाराज निमि ने कहा कि मैं किस स्थान को जाऊँ। ब्रह्मा ने उनसे शीघ्र ही जाने को कहा। ९८ उन्होंने कहा कि तुम्हारे रनिवास की जितनी भी तुम्हारी स्त्रियाँ हैं। उनके कुष्टगृह में तुम काल यापन करो। ९९ समयपूर्ण होने पर तुम वहाँ से आकर स्वर्ण का सिंहासन निर्मित कराकर उसमें बैठना। ३४०० उस समय तुम नारद का स्मरण करना। वह मुनिश्रेष्ठ तुम्हारे अंग को निर्मल पापरहित बना देंगे। ३४०१ राजा ने कहा कि यह तो बड़े अपमान की बात है। मैं निश्चय ही आज जीवन समाप्त कर लूँगा। २ ब्रह्मा ने कहा कि तुम याचकपुर (यमलोक) जाकर चौरासी नरकों

शाप त पार बावु नुहे केतेबेळे ।श्वेत खानाकु जिबु सकाळे संज्ज वेळे ४
जेते बेळे चण्डाळ नेब नर्क जाण । सेते बेळे नर्क तु करिबु दर्शन ५
शुणिण राजन सेठारु चळिगला । श्वेत खाना पाखरे गुपते रहिला ६
जेते बेळे चण्डाळ अटइ श्वेत खाना । सेते बेळे नृपति दर्शन करे किना ७
एमन्ते चारि मास चबिश दिन गला । लेखिबार दिन जे संपूर्ण होइला ८
श्वेत खाना ठारु जे अइले नृपबर । नारदंकु सुमरणा कले हृदय़र ९
तक्षणे मुनिबर प्रबेश आसि हेले ।देखि करि निमिराजा चरणे नमिले३४१०
कनक स्नान जे राजांकु कराइले । गोमय़े पच्चगव्य नेइण पिआइले३४११
शाळग्राम स्नान पाणि पिआइले नेइ । पवित्र अंग कले मुनिबर तहिँ १२
रत्न सिंहासनरे नेइण बसाइले । राजनीति बेभारे दर्शन देवार्च्चन कले १३
पात्र मन्त्री चतुरंग बळ जे भेटिले । बसन्त कुमर आसि चरणे लोटिले १४
छतिश निजोग सेबारे परिपूर्ण । बाद्य निशाण जे दशदिगे स्वन १५
इष्ट देबतांकु दर्शन कले राजा । पर्बत समाने अमृत द्रव्य पूजा १६
शिव लिंग उपरे क्षीर निउड़िले । देवी मानंकु बोदा छागळ पूजा कले १७
क्षीर जाह्नबीकि जाइण दर्शन करि । गोधन मेळरे मिळिले दण्डधारी १८

में गिरोगे । कभी भी शाप व्यर्थ नहीं जाता । हे वत्स ! तुम प्रातःकाल और सायंकाल कुष्टगृह में जाना । ३-४ जिस समय चाण्डाल तुम्हें नर्क ले जायेगा । उस समय तुम्हें नर्क के दर्शन होंगे । ५ यह सुनकर राजा वहाँ से चला गया और गुप्त रूप से कुष्ट ग्रह के निकट रहने लगा । ६ जिस समय चाण्डाल कुष्टगृह में रहता था । उस समय राजा को दिखाई देता था । ७ इस प्रकार चार महीने चौबीस दिन व्यतीत हो गये । निश्चित दिन पूरा होने पर श्रेष्ठ राजा कुष्टगृह से आ गये । उन्होंने अपने हृदय में नारद का स्मरण किया । ८-९ मुनिश्रेष्ठ नारद उसी क्षण वहाँ आ पहुँचे । उन्हें देखकर महाराज निमि ने चरणों में प्रणाम किया । ३४१० उन्होंने स्वर्णमय जल से राजा को स्नान कराकर गाय का पंचगव्य लेकर पिलाया । ३४११ शालिग्राम का चरणामृत लेकर उन्हें पिलाया और मुनि श्रेष्ठ ने वहाँ पर उनका अंग पवित्र करके उन्हे रत्नसिंहासन पर ले जाकर बैठा दिया । राजनीति की विधि से उन्हे देवदर्शन कराकर उनसे देवता का पूजन कराया । १२-१३ सभासद, मंत्री तथा चतुरंगिनी सेना ने उनसे भेंट की और बसन्त कुमार आकर उनके चरणों में लोट गया । १४ छत्तीस सेवकगण सेवा में लग गये । दसों दिशायें वाद्य-निनाद से गूँज उठी । १५ राजा ने इष्ट देवता का दर्शन किया । और पर्वत के सामने अमृततुल्य सामाग्री से उनका पूजन किया । १६ शिवलिंग के ऊपर दूध चढाया और भैंसे तथा बकरों से देवियों का पूजन किया । १७ दण्डधारी राजा ने क्षीर जाह्नवी नदी के तट पर जाकर दर्शन किये और गायों

से दिन गोगोष्ठरे रहिले राजा जाण। गोरज एणे जे पड़िला देहे पुण १९
सकळ पाप राजा देहरु त्याग हेला। निज मन्दिररे जाइण मिळिला३४२०
स्नाहान भोजन कला सन्तोषरे। नारद अछन्ति नृपति संगरे३४२१
सप्त राणी तार अटन्ति शोभाकार। बड पाटराणी हीराबती जे ताहार २२
हीराबती नीळाबती लाबण्यबती जाण।
कोमळणी सुधाराणी बरणी राणी पुण २३
एमन्ते सप्तराणी अटन्ति सारोधार। हिँसाराग नाहिँ काहारि अंगर २४
से दिन माघमास बसन्त पञ्चमी। आनन्द उतसव कले राजा घरे पुणि २५
नारद पचारिले राजांकु जे पुण। चरुरे केउँ राणी गर्भ हेले जाण २६
राजन बोइले ज्येष्ठ राणी मोर। हीराबती बोलिण नामटि ताहार २७
नारद बोइले आजकु केते मास हेला। राजन बोइले पाञ्च मास जे पूरिला २८
नारद बोइले तोते एबे शुभ होइ। एहि क्षणि पुत्र गोटि जनमिब मही २९
राजन बोइले मास होइ नाहिँ पुण। अधा गर्भरे जात हेब कि नन्दन३४३०
एमन्त समय़रे दासी आसि कहि। बड़ पाटराणी ठारु पुत्र जनम होइ३४३१
इन्तुडि इच्छारिण नाभि छेदन कले।
पाञ्च दिने पच्चु आति बिधि जे सारिले ३२
उठि आरी षठिघर बार जात्री सारि। एकोइशा दिन जे होइला आसिकरि ३३

के निकट जा पहुँचे। १८ उस दिन राजा गौशाला में रहे और इस प्रकार उनके शरीर पर गोधूलि पड़ी। १९ राजा के शरीर से सारा पाप छूट गया। तब वह अपने महल में जा पहुँचा। ३४२० उसने सन्तुष्ट होकर स्नान तथा भोजन किया। नारद राजा के ही साथ थे। ३४२१ उसकी सातों रानियाँ सुन्दर थीं। उसकी ज्येष्ठ पटरानी हीरावती थी। २२ हीरावती, नीलावती, लावण्यवती, कोमलिनी, सुधारानी, वरणीरानी इस प्रकार उसकी सात श्रेष्ठ रानियाँ थीं। उनके शरीर में किसी को भी ईर्ष्या तथा द्वेष नहीं था। २३-२४ उस दिन माघ महीने की बसन्त पञ्चमी थी। राजा के घर में आनन्दोत्सव मनाया गया। २५ नारद ने राजा से पूँछा कि चरु से कौन सी रानी गर्भवती हुई। २६ राजा ने कहा कि हमारी बड़ी रानी जिसका नाम हीरावती है, वह ही गभवती हुई है। २७ नारद ने कहा कि आज पर्यन्त कितने महीने हुए है। राजा बोला कि पाँच महीने पूरे हो गए हैं। २८ नारद ने कहा कि अब तुम्हारा कल्याण होगा। इसी क्षण रानी के एक पुत्र जन्म लेगा। २९ राजा ने कहा कि अभी महीने पूरे नहीं हुए हैं। क्या आधे गर्भ में ही पुत्र जन्म लेगा। ३४३० इसी समय दासी ने आकर सूचित किया कि बड़ी पटरानी से पुत्र उत्पन्न हुआ है। ३४३१ उसे स्वच्छ करके नाभि छेदन किया गया और पाँच दिनों में विधिपूर्वक पंचमी पूजा सम्पादित की गई। ३२ सोर की

लक्षे ऋषि छन्ति दुइ लक्ष बिप्रबर । तिरिशि सहस्त्र राज चतुरंग बळ ३४
पात्र मन्त्री अमनात्य अनेक बाद्यकार । नग्ररे उच्छब जे आनन्द सर्वंकर ३५
दान ध्यान पुण्यबन्त अनेक धन देला । हटारी बजारी धोवा तुठ जूर कला ३६
दुःखी दरिद्रंकु देले अन्न बस्त्र । मगन्ता लोकमाने होइले हरख ३७
होम करिण राजा पुत्रर नाम देले । श्वेत बोलि नारद तुण्डरे उच्चारिले ३८
सपत राणी नेइ धइले कुमर । आपणा स्तनरु देउछन्ति क्षीर ३९
पुत्रकु नाम देइण नारद चळिगले । जशोबन्ती पुररे प्रबेश होइले३४४०
पार्बती बोइले शुण मो बचन । निमि राजांकर हेले दुइटि नन्दन३४४१
गोटिए नन्दन फाळरु उकुटिला । गोटिए कुमर पाञ्चमासे जन्म हेला ४२
ए दुइ नन्दन पूर्बरे काहिँ थिले । जन्म होइण एड़े बळबन्त हेले ४३
सदाशिव बोइले शुण भगवती । बसन्त कुमर अटे मान चक्रबर्त्ती ४४
चारि लक्ष बर्ष आयुष अटइ ताहार । सबु दिने अजोनि जनम ताहार ४५
नब सहस्त्र बर्ष जाग से करिब । त्रिदश देबतांकु सन्तोष कराइब ४६
सकळ जीबंकु पाळिब पुत्र परि । सेहि शरीर धरिण जिब स्वर्गपुरी ४७
बसन्त तळरे जे अटइ नन्दन । जोनि द्वारे जन्म हेला श्वेत तारनाम ४८
बेणु राजा नाम पूर्बे अटे तार । दानरे मोहिब से सकळ सुरनर ४९

उठावनी, षष्ठी पूजा तथा बरहों किया गया और फिर इक्कीसवाँ दिन आ गया । ३३ एक लाख ऋषि, दो लाख श्रेष्ठ ब्राह्मण, तीस हजार राजा तथा चतुरंगिनी सेना थी सभासद मंत्री अमात्य तथा वाद्यकार आदि सभी नगर के उत्सव से आनंदित थे । ३४-३५ पुण्यात्माओं को प्रचुर धन-धान्य प्रदान किया गया और रास्ता गली घाट में प्रचुरधन सामाग्री लुटायी गई । ३६ दुःखी तथा दरिद्रों को अन्न वस्त्र दिये गये और भिक्षुक लोग प्रसन्न हो गए । ३७ हवन करके राजा ने पुत्र का नामकरण किया । नारद ने अपने मुख से उसे श्वेत कहकर पुकारा । ३८ उस कुमार को उठाकर सातों रानियाँ अपने स्तनों का दूध पिलाने लगीं । ३९ पुत्र का नामकरण करके नारद जी चले गए और यशोवन्ती पुर में जा पहुँचे । ३४४० पार्वती ने कहा कि मेरी बात सुनिये । राजा निमि के दो पुत्र हुए । ३४४१ एक पुत्र हल की फाल से निकला था और एक पुत्र का जन्म पाँचवें महीने में हो गया था । ४२ यह दोनों पुत्र पूर्वकाल में कहाँ थे जो जन्म लेकर इतने बलशाली हो गए । ४३ सदा कल्याण करने वाले शंकर जी ने कहा, हे भगवती ! सुनो । वसन्त कुमार चक्रवर्त्ती राजा मान हैं उसकी आयु चार लाख वर्ष है । उसका जन्म सदैव से अयोनिज रहा है । ४४-४५ वह नौ हजार वर्ष यज्ञ करेगा और देवताओं को सन्तुष्ट करेगा । ४६ वह समस्त प्राणियों का पुत्रवत पालन करेगा तथा उसी शरीर को धारण करके स्वर्गलोक जायेगा । ४७ वसन्त के बाद वाला जो पुत्र है । जिसका जन्म

चारि लक्ष पञ्चाश सहस्त्र बरषरे । स्वदेह घेनिण से जिब स्वर्गपुरे३४५०
आउ दश सहस्त्र वर्ष निमि जे रहिबे ।स्वदेह घेनिण से स्वर्गरे रहिबे३४५१
शुणिण पार्बती होइले तोषमन । बशिष्ठ ऋषिक कथा कह पञ्चानन ५२
निमिराजा शाप बशिष्ठकु देले । बिधाता आसिण सेठारे मिळिले ५३
बशिष्ठ केउँ रूपे पाइले जे शास्ति ।अगस्तिक भाइ से जे मारकण्ठ नाति ५४
ईश्बर बोइले शुण शाकम्बरी । बशिष्ठंकु चाहिँण कहन्ति कुशधारी ५५
बहन जाइ तुम्भे सागरे झाष दिअ । ए शरीर गोटिक लोन करिदिअ ५६
ज्योतिरूप धरिण बहन चळिजिब । बरुण राजा शरीरे जाइण पशिब ५७
बरुण राजार राणी नाम नीळाबती । ताहार गर्भरे तुम्भे होइब उत्तपत्ति ५८
तेबे से बधिधा तुम्भंकु हेब परापत । अन्याय़ कल तुम्भे आग तपोबन्त ५९
क्रोध हेबार फळ तुम्भंकु मिळिला । ब्रह्मऋषि होइण अनीति कलपरा३४६०
बचन सत्य तुम्भर नोहिलाक जेणु । एहि दण्ड प्रापत होइला आसि तेणु३४६१
बशिष्ठ बोइले मोर दोष क्षमा कर । ए रूप तेजिबि चेता रहिब मोहर ६२
एहि स्वरूप मुहिँ जे होइबि घटण ।समस्ते जाणिबे ऋषि नोहिलेक जन्म ६३
शुणिण बेदबर बोइले अस्तु हेउ । एते भणि कुशपाणि अन्तर हेले तहुँ ६४

योनि से हुआ है तथा जिसका नाम श्वेत है। वह पूर्वकाल में वेणु नाम का राजा था। वह दान से समस्त देव तथा मानवों को मोह लेगा। ४८-४९ वह चार लाख पचास हजार वर्षों में सदेह स्वर्गलोक को जाएगा। ३४५० महाराज निमि और दस हजार वर्ष रहेंगे फिर सदेह जाकर स्वर्ग में निवास करेंगे। ३४५१ यह सुनकर पार्वती का मन सन्तुष्ट हो गया और वह बोलीं, हे पंचानन ! महर्षि वशिष्ठ की कथा कहिये। ५२ राजा निमि को वशिष्ठ ने शाप दिया। ब्रह्माजी वहाँ आ गए। ५३ अगस्त के भाई तथा मारकण्ड के नाती वशिष्ठ को किस रूप से दण्ड मिला। ५४ शंकर जी ने कहा, हे शाकम्बरी ! सुनो। वशिष्ठ की ओर देखकर ब्रह्माजी ने कहा। ५५ तुम शीघ्र ही जाकर समुद्र में छलांग लगाकर इस शरीर को समाप्त कर दो। ५६ फिर ज्योति रूप धारण करके शीघ्र राजा वरुण के शरीर में प्रविष्ट हो जाना। ५७ राजा वरुण की नीलावती नामक पत्नी के गर्भ से तुम्हारी उत्पत्ति होगी। ५८ तब वह चेतना तुम्हें प्राप्त होगी। हे तपस्वी ! तुमने तो पहले ही अन्याय किया है। ५९ तुम्हारे कुपित होने का ही फल तुम्हें मिला है। तुमने ब्रह्मर्षि होकर अन्याय किया है। ३४६० तुमने अपने वचनों पर अमल नहीं किया। इसी कारण से तुम्हें यह दण्ड मिला है। ३४६१ वशिष्ठ ने कहा कि मेरे अपराध को क्षमा करिये। इस रूप का त्याग करने से हमें ज्ञान रहेगा। ६२ मैं इसी रूप में जन्म ग्रहण करूँगा। सभी लोग समझेंगे कि ऋषि का जन्म नहीं हुआ है। ६३ यह सुनकर ब्रह्माजी ने तथास्तु कह

वेदबर जिबारु बशिष्ठ चळिगले। लबण समुद्र पाशे प्रवेश होइले ६५
जळर भितरे से करन्ति गमन। राघब ताहांकु गिळिला बहन ६६
पिण्डरु प्राण गला ज्योति रूपे चळि। बरुण शरीररे पसिलाक गळि ६७
बरुण राजार राणी अटे नीळाबती। शुद्ध स्नान से दिन करिछि जुवती ६८
स्वामीर पाशे हेलाक से पुण। देखिण वरुण राजा सन्तोष होइण ६९
मनर सन्तोषरे रतिलीळा कला।ज्योतिबीर्ज्य आसन्ते गर्भरे स्थित हेला३४७०
भाजिलाक रतिरस मनरु से पुण।रजनी शेष हुअन्ते गला राणी जाणा३४७१
अन्तःपुरे जाइ मर्द्दन माजणा हेला।षड रसरे भोजन द्रब्य से भुञ्जिला ७२
एथु अनन्तरे शुण भगबती। पाञ्च मास गर्भ होइलाक सती ७३
अष्टमास उत्तरु जळधि राजन। गर्भदान कले डाकिण देब गण ७४
दश मास संपूर्ण पुत्र जात हेला। पूर्बरूपे बशिष्ठ स्वरूप से दिशिला ७५
पञ्चुआति षष्ठी घर उठिआरी कले। एकोइश दिनरे नामकरण कले ७६
बेदबर सदाशिव सकळ देब घेनि। बरुण पुत्रकु नाम देले जाणि ७७
पूर्बर कथा बिचारि बरुण नाम देले। सकळ देवता सुकल्याण कले ७८
बेदबर बोइले तोर पूर्बर हेतु हेउ। बेद बिद्यारे तोते जिणन्ता केहि नोहु ७९

दिया। इतना कहकर कुशपाणि ब्रह्माजी वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गए। ६४ ब्रह्माजी के चले जाने पर वशिष्ठ लवणसिंधु के निकट जा पहुँचे। ६५ जल के भीतर गमन करते हुए उन्हें राघव मत्स्य निगल गया। ६६ शरीर से प्राण निकलने पर वह ज्योतिरूप धारण करके जाकर वरुण के शरीर में प्रविष्ट हो गए। ६७ वरुण की रानी नीलावती थी। उस युवती ने उस दिन शुद्ध स्नान किया था। ६८ वह स्वामी के निकट जा पहुँची। उसे देखकर राजा वरुण सन्तुष्ट हो गए। ६९ उन्होंने सन्तोषपूर्वक रति क्रीड़ा की। ज्योति बीर्य निकलकर गर्भ में स्थित हो गया। ३४७० उनके मन से रति की इच्छा समाप्त हो गई और रात्रि की समाप्ति पर रानी चली गई। ३४७१ अन्तःपुर पहुँचने पर उसका मर्दन मार्जन किया गया। फिर उसने षड्रस भोजन ग्रहण किया। ७२ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् उस सती का गर्भ पाँच महीने का हो गया। ७३ आठ महीने व्यतीत होने पर सागर सम्राट वरुण ने देवताओं को बुलाकर गर्भ-दान किया। ७४ दस मास होने पर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका स्वरूप पूर्वकाल के वशिष्ठ के समान ही दिखाई पड़ने लगा। ७५ पञ्चमी-षष्ठी पूजा उठावनी विधि करके इक्कीसवें दिन उसका नामकरण किया गया। ७६ ब्रह्मा तथा शिव ने समस्त देवताओं को साथ लेकर वरुण के पुत्र का नामकरण संस्कार किया। ७७ पूर्वकालिक कथा को जानकर वरुण ने नाम रक्खा और समस्त देवताओं ने उसे आशीर्वाद दिया। ७८ ब्रह्माजी ने कहा कि तुम्हारा शरीर पहले जैसा ही हो जाए और वेद ज्ञान में कोई तुझे

तोहर प्रसादे एबे आम्भे पाउ सुख। एतेक कहिले जे देब चतुर्मुख३४८०
सकळ देब ऋषि ब्रह्म ऋषि थिले। बशिष्ठंकु देखिण प्रसन्न होइले३४८१
समस्त देब गले जे जाहार स्थान। बृहस्पतींकि बोइले चतुर बदन ८२
पूर्बर बशिष्ठ जे एहांकु बिद्या दिअ। जे रूपे बिख्यात हुए बरुणर पुअ ८३
शुणिण बृहस्पती सेठारे रहिले। चतुर बदन जशोबन्ती पुर गले ८४
पूर्बर प्राय़ शिक्षा देलेक बृहस्पति। सकळ शिखिण पुत्र होइलाक जति ८५
सन्तोषे ब्रहस्पती स्वर्ग गले पुण। बशिष्ठ तप कले साहेर तीरेण ८६
सहस्रे बरष तप सेहू कले। बेदबर आसिण तांकु बर देले ८७
होइलु ब्रह्मजति जाअ जम्बू द्वीप। तपन कुळकु तु जे हुअ परापत ८८
शुणिण बशिष्ठ बेगे चळि गले। कृष्णबेणी नदी तीरे प्रबेश होइले ८९
अगस्तिक छामुरे होइले उपगत। नमस्कार कले अगस्ति पादगत३४९०
अगस्ति बोइले अजोध्यापुरे जाअ। अनन्त वासुदेब हेबे दशरथंक पुअ३४९१
नाराय़णंकु साक्षाते देखिबु तु पुण। नाराय़णंकु देखि होइबु कारण ९२
शुणिण बशिष्ठ बेगे चळि गले। दशरथंक पाशे प्रबेश होइले ९३
अजोध्या नृपति उठिण मान्य कले। नमस्कार करिण बचन कहिले ९४

जीत न सके। ७९ तुम्हारे प्रसाद से हमें सुख की प्राप्ति हो। ब्रह्माजी ने उनसे इस प्रकार कहा। ३४८० समस्त देवर्षि तथा ब्रह्मर्षि जो वहाँ पर थे। वह वशिष्ठ को देखकर प्रसन्न हो गये। ३४८१ फिर समस्त देवता अपने-अपने स्थान को चले गए। चतुरानन ने बृहस्पति से कहा कि यह पूर्वकाल का वशिष्ठ है। इसे इस प्रकार की विद्या प्रदान कीजिये जिससे यह वरुण का पुत्र विख्यात हो जाए। ८२-८३ यह सुनकर बृहस्पति वहीं रुक गए और ब्रह्मा जी यशोवन्ती पुर को चले गए। ८४ बृहस्पति ने उन्हें पूर्वकाल जैसी शिक्षा दी। सब कुछ सीखकर वह बालक योगी बन गया। ८५ बृहस्पति के सन्तुष्ट होकर स्वर्ग चले जाने पर वशिष्ठ ने सागर-तट पर तपस्या की। ८६ उन्होंने एक हजार वर्ष तपश्चर्या की। ब्रह्मा जी ने आकर उन्हें वर प्रदान किया। ८७ उन्होंने कहा कि तुम ब्रह्मयोगी हो गए हो। अब जम्बूद्वीप में जाकर सूर्यकुल को प्राप्त हो। ८८ यह सुन वशिष्ठ शीघ्र ही जाकर कृष्णवेणी नदी के तट पर पहुँच गए। ८९ वह अगस्त के समक्ष उपस्थित हुए और उन्होंने अगस्त के चरणों में प्रणाम किया। ३४९० अगस्त ने उन्हें अयोध्यापुर जाने को कहा और यह भी कहा कि अनन्तवासुदेव दशरथ के पुत्र होंगे। ३४९१ तुम्हें नारायण के साक्षात दर्शन होंगे। भगवान के दर्शन से तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। ९२ यह सुनकर वशिष्ठ शीघ्रता से चल दिये और दशरथ के निकट जा पहुँचे। ९३ अयोध्यापति ने उठकर उनकी अभ्यर्थना की और प्रणाम करके उनसे बोले। ९४

केणे गल ऋषि हे एतेकाळ पुण । तुम्भंकु न देखि मोर व्याकुळित मन ९५
ऋषि बोइले आम्भे स्वर्गरु अइलुँ । तप करिवा निमन्ते साहेर कुळे गलुँ ९६
तपसिद्ध होइला अइलुँ तोर पुर । शुणिण दशरथ हरष मनर ९७
जान परे नेइण ऋषिकि बसाइले । नग्र बुलाइ निज आश्रमे छाड़ि देले ९८
अनेक धन रत्न देले नृपवर । आनन्दरे ऋषि रहिले निज पुर ९९
बशिष्ठ ऋषिक जन्म शुणिलु प्रिय़ सही। आउ केउँ कथा कहरे सुमुहिँ ३५००
पार्बती बोइले देव कथाए पचारइ । सकळ कथा जे कहिल तोष होइ ३५०१

जनक ऋषिक उपाख्यान

जनक ऋषि कथा जे पूर्वरे किस पुण ।तांक दुहिता कमळा किम्पा हेवे जाण १
सेहि कथा मोते एवे फेड़ि करि कह । सन्देह दूर कर आहे प्राणप्रिय़ २
ईश्वर बोइले शुण गो गउरी । मिथिळा नबर जे सर्बदिने मोरि ३
जेउँ दिने शतमुखा बेदवर थिले ।सेहि दिने गोलक मर्त्यपुरे आसिथिले ४
सेहि दिन मिथिळारे थिलि जे मुहिँ रहि । से कथा पाशोरिला कि शरतचन्द्र मुहिँ ५
अजनामे मुनि चन्द्रर कुमर । तप कला जाइ से गोमती नदी तीर ६

हे ऋषि ! आप कहाँ चले गए थे । इतने समय तक आपको न देखकर मेरा मन व्याकुल था । ९५ ऋषि ने कहा कि हम स्वर्ग से आ रहे हैं । हम तपस्या करने को सागर तट पर चले गए थे । ९६ तपस्या सिद्ध होने पर तुम्हारे नगर में आए हैं । यह सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया । ९७ उन्होंने रथ पर बैठाकर ऋषि को नगर भ्रमण कराकर उनके आश्रम में छोड़ दिया । ९८ नृप श्रेष्ठ ने उन्हें बहुत सा धन तथा रत्न प्रदान किया । ऋषि वशिष्ठ आनन्द-पूर्वक अपने निवास पर रहने लगे । ९९ शंकर जी ने कहा, हे प्राणप्रिय वशिष्ठ जन्म की कथा तुमने सुन ली । हे सुमुखि ! अब और कौन सी कथा कहूँ ? । ३५०० पार्वती बोली कि आपने सम्पूर्ण कथा प्रसन्नता से कही है । हे देव ! मैं एक कथा पूँछ रही हूँ । ३५०१

जनक ऋषि का उपाख्यान

जनक ऋषि पूर्वकाल में कौन थे ? लक्ष्मी उनकी पुत्री किस कारण से होंगी । १ आप वही कथा मुझसे खोलकर कहिए । हे प्राणप्रिय ! मेरा सन्देह दूर करिये । २ शंकर जी ने कहा हे गौरी सुनो । मिथिला राज्य सदा से हमारा ही रहा है । ३ जिस दिन सौ मुखों वाले ब्रह्मा थे तब गोलोक (विष्णु) मृत्युलोक आए थे । ४ उस दिन मैं मिथिला में था । हे शरदेन्दु वदनी ! वह बात तो मैं भूल ही गया । ५ चन्द्रमा के पुत्र अज नाम के मुनि ने गोमती नदी के तट

तिनि जुग पर्ज्यन्ते बसिण तप कला ।शिव पञ्चाक्षर मन्त्रे मोते से जपिला ७
प्रसन्न होइण मिळिलि तार पाश । देखिलि तार देहे नाहिँ रक्त मांस ८
अस्ति भितरे तार प्राण अछि जाण । मृत्तिका गिरि गोटि तापरे घेरिण ९
सेथि भितरे मुनि बसिछि लुचि करि । केबळ नेत्र तार दुइगोटि फेरि १०
प्रसन्नरे जाणिण होइलि आगे उभा । नेत्ररे नमस्कार कले मुनि राजा ११
निऊन देखि तार प्रसन्न होइलि । कान्हु कन्दर्प हुअ बोलिण बोइलि १२
तक्षणे शरीररे रक्त मांस हेला ।मृत्तिका गिरि भितरु बाहारिले त्वरा १३
बामदेवंकु जिणि दिशिला रूप तार । कळा मेघरे जेन्हे उदये निशाकर १४
कर जोड़िण मोते कला नमस्कार । देखिण सुदया होइला मोहर १५
बोइली बर माग चन्द्रर कुमर । मन इच्छा बर देबिजे निकर १६
से बोइले बर जेबे देव त्रिलोचन ।तोहर बिश्राम स्थान मिथिळा भुबन १७
चउराशि जुण अटइ दीर्घप्रति । से स्थान खण्डि मोते दिअ पशुपति १८
मो बोइलि तोते देलि एहिस्थान । आउ किछि मागु अछु कह बेगे पुण १९
से बोइला जेबे मुहिँ दान बिप्र हेबि । सबु बिप्रंक उपरे श्रेष्ठ बोलाइबि २०
मुँ बोइली बिप्र माग अन्य बर । से बोइला देब मोते देब मन्त्रसार २१

पर जाकर तपस्या की । ६ उसने तीन युग पर्यन्त बैठकर तप किया। वह शिव पंचाक्षर मन्त्र से मेरा स्मरण चिन्तन जाप करने लगा । ७ मै प्रसन्न होकर उसके निकट गया। मैंने उसके शरीर में रक्त और मांस नहीं देखा । ८ हड्डियों के भीतर ही उसके प्राण थे। उसके चारों ओर मिट्टी का पहाड़ घिरा हुआ था । ९ मुनि उसी के भीतर छिपकर बैठे थे। केवल उनके दोनों नेत्र खुले थे। मैं प्रसन्नतापूर्वक सोच समझकर उसके समक्ष जाकर खड़ा हो गया। मुनिराज ने नेत्रों से ही नमस्कार किया । १०-११ मै उसकी नम्रता देखकर प्रसन्न हो गया और मैंने उसे कृष्ण कामदेव हो जाने के लिये कहा । १२ उसी समय उसके शरीर में रक्त और मांस हो गया और वह शीघ्र ही मिट्टी के पर्वत के भीतर से बाहर निकल आये । १३ उसका रूप शंकर जी को भी जीतने वाला हो गया। जैसे काले मेघ मण्डल से चन्द्रमा उदय हो गया हो । १४ उसने हाथ जोड़कर मुझे नमस्कार किया। उसे देखकर मुझे दया आ गई । १५ मैंने चन्द्रमा के पुत्र से कहा कि तुम वर माँगो। मैं तुम्हें इच्छा के अनुरूप वर प्रदान करूँगा । १६ उसने कहा हे देव त्रिलोचन ! यदि आप मुझे वर देना चाहते हैं । तो आपका विश्राम स्थल मिथला भुवन है । १७ यह चौरासी योजन विस्तीर्ण है। हे पशुपति ! उस स्थान से थोड़ा मुझे दे दीजिये । १८ मैंने कहा कि मैंने तुझे वह स्थान दे दिया। यदि और कुछ माँगना हो तो शीघ्र ही माँगो । १९ उसने कहा यदि मैं दान लेने वाला बनूँ। तो समस्त ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कहा जाऊँ । २० मैंने कहा हे विप्र ! कोई अन्य वर माँगो। उसने

ऋषि ब्राह्मण देवता न पारिबे जिणि। अजीवमानंकु मुं जीव देवि पुणि २२
मुँ बोइलि आउइच्छा थिले माग बर। बोइला मन कले तपसिद्ध मो बंशर २३
धन रत्न हेब ब्रह्मा बिष्णु हेबे मोर वन्धु। तु मोहर अंश हेलु माया नकर इन्दु २४
शुणिण मोरमन सन्तोष होइला। हेउ सर्ब कथा तोर निश्चिन्त हुअ बळा २५
पशुपत्र पिनाकी अक्षय त्रोण देलि। अनेक शर देइ से राज्ये राजा कलि २६
शंखे पाणि देइ मुहिँ दान देलि ताकु। सेहि दिनुँ तेज्या कलि मिथिला पुरकु २७
सैन्य बळ धन रत्न सबु छाड़ि देलि। सकळ पदार्थ चन्द्र राजाकु समर्पिलि २८
बोइलि ऋषि क्षत्रीय एमाने वन्धु तोर। सताइश पुरुषे बाद बहे चक्रधर २९
असुर मारि बाकु जन्म हेबे हरि। तुम्भर बंशे जात हेबे मनोहारी ३०
ताहार नाम जे सीतया होइब जे पुण। एक मूर्त्ति होइब चतुर्द्धा रूपरे जाण ३१
बासुदेव चतुर्द्धा रूपरे जात हेबे। से चारि भाइर चारि भउनीकि बिभा हेबे ३२
बासुदेवंक पिता हेबे दशरथ। अजोध्यार भूपति तपन कुले जात ३३
देवंकर ऋषि जे कश्यप ऋषि जाण। सेहि दशरथ रूपरे हेबे जन्म ३४
तोहर बंशरे मिथिळा ऋषि पुण। राजा होइ प्रजा पाळिबे सुस्थेण ३५

कहा हे देव ! मुझे वेदमंत्रों का सार तत्व प्रदान कीजिये। २१ ब्राह्मण, ऋषि, और देवता मुझे जीत न पावें। मैं निर्जीव प्राणियों को भी जीवन प्रदान करूँगा। २२ मैंने कहा और कुछ इच्छा होने से वर माँगो। वह बोला मेरे वंश में इच्छा करने से ही तपस्या सिद्ध हो जाये। २३ हमारे धन और रत्न हो जाये। ब्रह्मा तथा विष्णु मेरे मित्र बन जायें। आप मेरे अंश हो गये। हे इन्दु ! मुझसे माया न करें। २४ यह सुनकर मेरा मन संतुष्ट हो गया। मैंने कहा कि तेरी सब बाते पूर्ण हों। हे पुत्र ! तुम निश्चिन्त हो जाओ। २५ मैंने उसे पाशुपति, पिनाक तथा अनेक बाणों से भरा अक्षय तूणीर देकर उस राज्य का राजा बना दिया। २६ मैंने शंख के पानी को डालकर उसे दान दे दिया और उसी दिन से मैने मिथिलापुर का त्याग कर दिया। २७ सेना धन रत्न सब कुछ छोड़ दिया और समस्त पदार्थ राजा चन्द्र को समर्पित कर दिये। २८ मैंने कहा कि क्षत्रिय ऋषि लोग तुम्हारे वन्धु होंगे। सत्ताइस पीढ़ी के बाद भगवान चक्रधारी को धारण करेंगे। २९ भगवान का जन्म राक्षसों को मारने के लिये होगा। तुम्हारे वंश में मन को हरण करने वाली (लक्ष्मी) का जन्म होगा। ३० उसका नाम सीता होगा। वह एक मूर्ति चार स्वरूपो में प्रकट होगी। ३१ भगवान नारायण भी चार रूपों में अवतरित होंगे। वह चारों भाई चारों बहनों से विवाह करेंगे। ३२ भगवान के पिता दशरथ होंगे। वह अयोध्यापति सूर्यकुल में उत्पन्न होगे। ३३ जो देवर्षि कश्यप है वह दशरथ के रूप में अवतरित होंगे। ३४ तुम्हारे वंश के ऋषि मिथिला के राजा बनकर स्वस्थ रूप से प्रजा का पालन करेंगे। ३५ उसने पुत्र न होने के कारण तप से मुझे सन्तुष्ट

पुत्र नथिबारु तपरे मोते तोषि। पुत्र देइ मोर धनु देलि ताकु जाचि ३६
ताहार कुमर नाम बइधृति ऋषि। चाळिशि सहस्र बर्ष तपे मोते तोषि ३७
ताहार घरणी जे हेमलता जाण। तार गर्भुँ जात हेबे तिनि जे नन्दन ३८
प्रथमरे जनक द्वितीये बालमिक। तृतीये कुश ध्वज अटइ सान पुत्र ३९
बइधृति ऋषि जे अटइ चक्रबर्त्ति।अमराबती राज्यरे शुद्रेक नामे भुपति ४०
से राजा बइधृति संगे बाद करि। शते बरष पर्ज्यन्त संग्राम से करि ४१
काळे से राजबंश हेले निशाधन। से पुरे राजा कले कुश ध्वजकु पुण ४२
मिथिला नबरे राजा जनक ऋषि हेला। जनकंकु कुशध्वज डाकिण कहिला ४३
बोइले शिवधनु अछि आम्भ पुर। प्रसन्नरे देइ छन्ति पञ्चमुख हर ४४
से धनु शकाशे तुम्भे देखिब नारायण। चतुर्द्धा मूरति रूपे बासुदेव जन्म ४५
दुइ भाइंकर चारि दुहिता जन्म हेबे।चारि भाइंकि बिभा करिब तुम्भे शुभे ४६
एते बोलि बैधृति बालमिकंकु घेनि। बनस्ते बसिण राजा तप कले पुणि ४७
काळेण स्वर्गकु गले बिप्रबर। बालमिक तप कले रहिण बनर ४८
काळेण तप सिद्ध हेला से ऋषिर। सुरभि गोटिए तांकु देले बेद बर ४९
अगम्य बनरे से मढिआ करि रहि।अष्ट बक्र ऋषि एक दिने बुलि जाइ ५०
से ऋषिंकि देखिण सन्तोष मन हेले।आपणा दुहिता शोभाकु नेइण बिभा कले ५१

किया, मैंने उसे बुलाकर पुत्र के साथ-साथ धनुष प्रदान किया। ३६ उनके पुत्र वैधृत ऋषि ने चालिस हजार वर्ष तपस्या करके मुझे प्रसन्न किया। ३७ उनकी हेमलता नामक पत्नी के गर्भ से तीन पुत्र होंगे। पहले जनक दूसरे बालमीक और छोटा पुत्र कुशध्वज होगा। ३८-३९ वैधृति ऋषि चक्रवर्ती राजा थे। अमरावती राज्य के शूद्रक नाम के राजा ने वैधृति के साथ सौ वर्ष पर्यन्त युद्ध किया। समयानुसार उसका वंश लुप्त हो गया। तब कुशध्वज को उस राज्य का राजा बनाया। ४०-४१-४२ मिथिला नगर के राजा जनक ऋषि हुए। कुशध्वज तथा जनक को बुलाकर कहा। ४३ हमारे महल में शिव का धनुष है पंचानन शंकर ने प्रसन्न होकर दिया है। ४४ उसी धनुष के कारण तुम्हें भगवान के दर्शन होंगे। भगवान चार स्वरूपों में अवतरित हुए हैं। ४५ दोनों भाइयों के चार कन्याएँ उत्पन्न होंगी। तुम उनका शुभ विवाह चारो भाइयों से कर देना। ४६ इतना कहकर वैधृति ने वाल्मीक को लेकर वन में बैठकर पुनः तपस्या की। ४७ समयानुसार वह श्रेष्ठ विप्र स्वर्ग को चला गया। वाल्मीक ने वन में रहकर तपस्या की। ४८ कुछ समय पर ऋषि वाल्मीक का तप सिद्ध हो गया। ब्रह्मा जी ने उन्हें एक सुरभी गाय प्रदान की। ४९ वह दुर्गम बन में मठ बनाकर रहते थे। एक दिन अष्टावक्र ऋषि घूमते घामते गये। ५० उन ऋषि को देख कर उनका मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने अपनी पुत्री शोभा का विवाह उनसे कर दिया ५१ उस कन्या के साथ ऋषि ने रति क्रीड़ा की। उस कन्या

से कन्या संगरे ऋषिकले रतिकीळा ।दशगोटि से कन्या अटन्ति दासी त्वरा ५२
पार्बती बोइले तुम्भे मिथिळा देश गल। केउँ पुण्य बळरे एमन्त पुण कल ५३
ईश्वर बोइले शुण प्राण सहि । शोणित बनस्तरे रहिलुँ आम्भे जाइँ ५४
केते दिन उत्तर बळिर पुत्र जाण ।पिता माता जिबारु कला से मोते दान ५५
से पुर गोटि वाणासुरकु मुँ देलि । भकति हेबारु प्रसन्न ताकु हेलि ५६
पार्बती बोइले वाणासुरर केहु पिता ।से किम्पा पाताळ गला कह सेहू कथा ५७

बळिर उपाख्यान

ईश्वर बोइले से जे कश्यपर अंश । उपद्रव करिवारु श्रीहरि कले नाश १
ताहार कुमर जे प्रहलाद बीर । नरायणंक ठारे भक्ति भाव तार २
ताहाकु दया कले अनन्त नारायण । स्वर्गरे इन्द्र करि सञ्चिले नेइ पुण ३
प्रहलाद कुमर बैलोचन बीर । पितांकु न मानि से कला अबेभार ४
स्वर्गपुर जिणिण सुरंकु धरि नेला । सहस्र बरष नेइण छिड़ा कला ५
देबताए चिन्ता कले अनन्त माधवंकु ।स्तिरी रूप धरि हरि मोहिले असुरंकु ६
असुरंकु मारिण बैकुण्ठ पुर गले । पार्बती बोइले कथा रहिला एठारे ७

की दस युवा दासियाँ थीं । ५२ पार्वती ने कहा कि आप मिथिला देश को गये और कौन से पुण्य के बल से आपने ऐसा किया । ५३ शंकर जी ने कहा, हे प्राण-सहचरी ! सुनो । मैं जाकर शोणित वन में रह गया । ५४ कुछ दिनों के पश्चात् बलि-पुत्र वाणासुर हुआ । माता-पिता के चले जाने के कारण उन्होंने मुझे दान में दे दिया । ५५ वह एक नगर मैने वाणासुर को दे दिया । भक्ति होने के कारण मैं उससे प्रसन्न हो गया । ५६ पार्वती ने कहा कि वाणासुर का पिता कौन था ? वह किसलिये पाताल गया ? वह कथा आप हमसे कहिए । ५७

बलि का उपाख्यान

शंकर जी ने कहा कि वह जो कश्यप का अंश था । उपद्रव करने के कारण नारायण ने उसका विनाश किया । १ उसका पुत्र पराक्रमी प्रह्लाद था । नारायण के प्रति उसका भक्तिभाव था । २ अनन्त नारायण ने उस पर दया की । उसे स्वर्ग का इन्द्र बनाकर उन्होंने उसकी रक्षा की । ३ प्रह्लाद का पुत्र पराक्रमी विरोचन था । उसने पिता के वचनों को नहीं माना और अव्यवहार करने लगा । ४ उसने स्वर्गलोक को जीतकर देवताओं को पकड़ लिया और उन्हें लेकर हजार वर्ष पर्यन्त खड़ा रक्खा । ५ देवताओं ने अनन्त नारायण का चिन्तन किया । भगवान ने स्त्री का रूप धारण करके असुर को मोहित कर लिया । ६ वह असुरों का विनाश करके वैकुण्ठ लोक को चले गए । पार्वती ने कहा कि यहाँ यह बात रह गई । ७ भगवान तो उसकी पत्नी बने फिर

बासुदेव घरणी ताहार होइले ।आपणार स्वामीकि किपरि नाश कले ८
ताकु मारिबाकु नाराय़ण बिचारिले । ईश्वर पार्बती आगे ए कथा कहिले ९
पार्बती बोइले कह हे फेड़ि करि ।गुपत करिछ किम्पा कथाकु न बिचारि १०
ईश्वर बोइले ताकु मारिबार पाइँ । स्तिरीरूप धइले गुपते भाव ग्राही ११
एक दिने असुर घरणी पाशे बसि । बोइले मोर शुण्डे गभा बान्ध सखी १२
शुणि करि अन्न पूर्णा केश साञ्चोइला। केशर भितरे एक नय़न देखिला १३
नय़न बुजि देबी मनरे बिचारि । ठणा गोटि नेइ करि माइले सुन्दरी १४
प्राण छाड़ि दइत सञ्जिवनी गला । असुरकुमारि बासुदेव हेले त्वरा १५
माय़ा स्तिरी गर्भरु पुत्रेक जन्मि थिला। काळे तार नाम बळी नृपति होइला १६
से कुमर तपरे जीणिला तिनि पुर । प्रहलादकु स्वर्गरु तड़ि देला बीर १७
बारस्वति भुबनरे राजा सेहु हेला । जुगे परिजन्ते स्वर्ग पुरे से रहिला १८
जेतेक स्वर्गरे भण्डार द्रव्य थिला । दानी होइ सकळ भण्डार दान देला १९
देवतांकर बळ नोहिला तार ठारे । एणु जे बिष्णु अंशरे जन्म से पूर्बरे २०
सकळ देबे मिळि बासुदेवंकु कहि । स्वर्गर संपाद जे सरिला भावग्राही २१
तोहर अंशरु कुमर जात हेला । देवंक पाद तळे तार खटाइला २२

उन्होंने अपने स्वामी का नाश कैसे किया। ८ जिस प्रकार नारायण ने उसको मारने का विचार किया। शंकर जी ने वही कथा पार्वती से कही। ९ पार्वती ने कहा कि आप इसे खोल कर कहें। आपने इस पर विचार न करके इस कथा को छिपा क्यों लिया। १० शंकर जी ने कहा कि उसे मारने के लिये भावग्राही नारायण ने छद्मवेश स्त्री का रूप धारण किया। ११ एक दिन असुर पत्नी के निकट बैठकर बोला, हे सखी ! मेरे सिर पर पुष्पालंकार बाँध दो। १२ यह सुनकर अन्नपूर्णा ने उसके केश झाड़े। उसने बालों के बीच में एक नेत्र देखा। १३ नेत्र को बन्द करके देवी ने मन में विचार किया और सुन्दरी ने एक शस्त्र लेकर प्रहार किया। १४ प्राण त्यागकर दैत्य यमलोक को चला गया। असुर को मारकर नारायण निश्चिन्त हो गए। १५ माया-स्त्री के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। समयानुसार उसका नाम राजा बलि हुआ। १६ उस कुमार ने तपस्या से तीनों लोकों को जीत लिया। उस पराक्रमी ने स्वर्ग से प्रह्लाद को भगा दिया। १७ वह स्वर्गलोक का राजा बन गया। वह एक युग पर्यन्त स्वर्ग में रहा। १८ स्वर्ग के भण्डार में जो भी द्रव्य था उसने दानी बनकर सब भण्डार दान में दे दिया। १९ देवताओं का बस उस पर नहीं चला क्योंकि उसका जन्म पहले से ही विष्णु के अंश से हुआ था। २० समस्त देवताओं ने मिलकर वासुदेव भगवान से कहा हे भाव-ग्राही ! स्वर्ग की सारी सम्पदा समाप्त हो गई। २१ आपके अंश से जो कुमार उत्पन्न हुआ था उसने देवताओं को अपने चरणों की सेवा में लगा

एबे भण्डार सबु देइछि दत्त करि। सम्भाळ स्वर्गपुर आहे कुशधारी २३
शुणि करि वासुदेव बेगे चळि गले। मायारे ब्राह्मण वामन रूप हेले २४
दानरे हरिले तार सर्ब शिरी। पूर्बर इन्द्रकु डकाइ राजा करि २५
ताहाकु तिनिपुर तळरे रखिले। सेहि ठारे दीन बन्धु द्वार पाळ हेले २६
ताहाकु कुमर बाणासुर पुण मोते। तप करि तोषिला से पुण जुकते २७
दया करि ताकु जे शोणित नग्र देलि। चित्र उत्पळा नदी तीररे वास देलि २८
एकादश रूप जे सेठारे मुहिँ हेलि। सेठारु जाग बिधि आरम्भ करिलि २९
जाग संपूर्ण दुर्गा जाचिले मोते पुण। बोइले ए रूप मुं जे लभिबि त्रिलोचन ३०
से रूप गोटि ताकु देइण अइलि। एकामर बनरे आसिण वास कलि ३१
भुबनेश्वर लिंग सेठारे बोलाइलि। धवळ रूप गोटि सेठारे बिकाशिलि ३२
अनन्त बासुदेव मोसंगे सँग हेला। तोते सेवा करि मो संगे लीळा कला ३३
देखिण अबिगुण पाइलु सुन्दरी। बोइलु ए स्थान जे जिबा तेज्या करि ३४
बिश्वनाथ स्वरूप सेठारे मुहिँ घेनि। सपतणी से तोहर लभिला मोते पुणि ३५
तांक संगे लीळा मोर हेबारु प्रतिदिन। मनरे मान करि रहिलु तु पुण ३६
तोहर मान जाणि मान तेज्या कलि। नव कोटि माया रूप तांकु देइण आसिलि ३७

लिया। २२ अब उसने सम्पूर्ण भण्डार दान कर दिया है। हे ब्रह्माजी। आप स्वर्गलोक की रक्षा कीजिये। २३ यह सुनकर वासुदेव शीघ्रता से चल पड़े। उन्होंने माया से ब्राह्मण वामन का रूप धारण किया। २४ दान में उन्होंने उसकी सम्पूर्ण श्री का हरण कर लिया। फिर उन्होंने पहले के इन्द्र को बुलाकर राजा बना दिया। २५ उन्होंने वलि को तीनों लोकों के नीचे रक्खा और वहीं दीनबन्धु द्वारपाल बने। २६ फिर उसके पुत्र वाणासुर ने युक्तिपूर्वक तप करके मुझे सन्तुष्ट किया। २७ मैंने दया करके उसे शोणितपुर दिया और उसे चित्रोत्पला नदी के तट पर निवास प्रदान किया। २८ मैंने वहाँ पर ग्यारह रूप धारण करके यज्ञ-विधि आरम्भ की। २९ यज्ञ सम्पूर्ण होने पर दुर्गा ने मुझसे याचना करते हुये कहा कि मैं इस रूप से त्रिनेत्र प्राप्त करूँ। ३० मैं उसे वह रूप देकर आ गया और एकाम्र वन में निवास करने लगा। ३१ वहाँ भुवनेश्वर में मुझे लिंगराज कहा जाने लगा। वहाँ मैं धवल रूप से प्रकाशित हुआ। ३२ अनन्त वासुदेव का मुझसे साथ हो गया। उन्होंने तुम्हारी सेवा करके मेरे साथ लीलाएँ कीं। ३३ यह देखकर हे सुन्दरी! तुम अन्यमनस्क हो गईं। तुमने उस स्थान का त्याग कर चलने के लिये कहा। ३४ मैंने वहाँ विश्वनाथ का स्वरूप धारण किया। तुम्हारी उस सौत ने मुझे पुनः प्राप्त किया। ३५ प्रतिदिन मेरे साथ उनकी क्रीड़ाएँ होने के कारण तुमने अपने मन में मान धारण कर लिया था। ३६ तुम्हारा मान समझकर मैंने अपने मान का त्याग कर दिया और मैं उन्हें नौ करोड़ माया के

कपिळास कन्दररे सुबु दिने मोर । तोते घेनि लीळा मुँ करइ निरन्तर ३८
शुणिण पार्बती बोइले प्रिय़ बाणी । मोह ठारे दय़ा सकळ गुणे पुणि ३९
मिथिला नग्रे जेउँ बिप्रंकु रखाइलि । ताहार उपर बंश चरित्र कहिलि ४०
जनक ऋषि झिअकु नाराय़ण हेबे बिभा। पूर्बे केउँ सुकृत कला से देब राजा ४१
त्रिजटा कुळरे होइला से जात । से कथा मो आगरे कह हे निय़न्त ४२
ईश्वर बोइले से कथा देबा कहि । पूर्बरे जनक ऋषि जेमन्ते थिला रहि ४३
अरुण बरुण तरंग तिनि भाइ । से तिनि जण पूर्बे ब्राह्मण रूप होइ ४४
सहस्रे बर्ष पर्य्यन्ते तपस्या से कले । नाराय़ण सन्तोष तांकु ठारे हेले ४५
ताहांकु बर देले गोलक कृष्ण पुण । जळ राजा होइ हुअ दिगपाळ जाण ४६
सपत सागरे होइब अधिपति । लीळाबतीर तुम्भे होइब जे पति ४७
बिष्णुंकर श्वशुर हेब तुम्भे पुण । कमळा तुम्भ कुळे हेब उत्तपन्न ४८
से दुहिता तुम्भर त्रैलोक्य ठाकुराणी । बासुदेवंक मन मोहिब से पुणि ४९
से बासुदेव तुम्भर होइबे ज्वाइँ पुण । सबु दिने तुम्भर बान्धब से जाण ५०
चउद ब्रह्माण्ड नबखण्ड जे मेदिनी । सेठारे कर्त्ता नाराय़ण अन्तर्य्यामी ५१
सपत द्वीप बासुदेब जे करिब । द्वीप मानंकु जळधि बाड़ देब ५२
भिन्न-भिन्न करिण रखिब पुरमान ।जीव गोटिके स्वभाव देव भिन्न भिन्न ५३

रूप देकर चला आया । ३७ कैलाश की कन्दरा में मैं सदैव तुम्हें लेकर लीलाएँ करता रहा । ३८ यह सुनकर पार्वती ने मधुर वचन में कहा कि आपने सदैव मेरे ऊपर हर प्रकार की दया की । ३९ मिथिला नगर में मैंने जिस ब्राह्मण को रखा था उसके उत्तर वंश के विचित्र चरित्र को मैने कहा । ४० जनक ऋषि की पुत्री से भगवान विवाह करेंगे । पूर्वकाल में देवराजा ने कौन सा पुण्य किया था । ४१ वह त्रिजटा (बामदेव) के कुल में उत्पन्न हुआ था । हे स्वामी ! वह कथा मेरे समक्ष कहिए । ४२ शंकरजी ने कहा कि पहले जनक ऋषि जिस प्रकार रहते थे । वह कथा कहूँगा । ४३ अरुण, वरुण, तरंग तीनों भाइयों ने पहले ब्राह्मण रूप धारण करके एक हजार वर्ष पर्यन्त तपस्या की । भगवान उनसे सन्तुष्ट हो गये । ४४-४५ गोलोकवासी कृष्ण ने उन्हें वर दिया कि तुम जल के राजा होकर दिगपाल बन जाओ । ४६ तुम सात समुद्रों के अधिपति होगे । तुम लीलावती के पति होगे । ४७ फिर तुम विष्णु के श्वसुर बनोगे । तुम्हारे कुल में लक्ष्मी उत्पन्न होगी । ४८ तुम्हारी वह कन्या तीनों लोकों की अधिष्ठात्री होगी और वह भगवान का मन मोहित करेगी । ४९ वह नारायण तुम्हारे दामाद होंगे । वह सदा के लिये तुम्हारे आत्मीय रहेंगे । ५० चौदह ब्रह्माण्ड तथा नव खण्ड पृथ्वी के कर्ता अन्तरयामी भगवान हैं । ५१ भगवान सात द्वीपों का निर्माण करेंगे और उन द्वीपों को समुद्र घेरकर रखेगा । ५२ वह नगरों को पृथक-पृथक करके रखेगा । भिन्न-भिन्न जीवों का

पचिश प्रकृति पाञ्च मन करि। संसार भिआइबे जगत नर हरि ५४
देब असुर नर बानर नाना जाति। उड़न्ति बुड़न्ति चळन्ति अचळन्ति ५५
स्थावर जंगम पाषाण मृत्तिका। एमान सबु रचिला जगत करता ५६
दश दिगपाळ अष्ट बसु मूळे। तेतिश कोटि देबंक रखिला स्वर्गपुरे ५७
मञ्चरे सुर नर छपन कोटि रखि। पाताळे नाग बळ अठर कोटि व्यापी ५८
एमन्ते तिनिपुर रचिले नारायण। तुम्भे एबे मर्त्यपुरकु चळ पुण ५९
तेबे दिगपाळ करिबे बासुदेब। शुणिण तिनि जण अइले तहुँ बेग ६०
नारायण आगरे आसिण भेट हेले। देखिण नारायण प्रसन्न तांकु हेले ६१
सपत सागररे ताहांकु राजाकले। समस्त जळजीव ताहाकु खटिले ६२
काळे दुहिता तांकर कमळा जात हेला। ताहाकु नारायण नेइण पत्नी कला ६३
काळे से कमळा जे लभिले नारायण। अवतारमानंकरे जळधि राजा जाण ६४
एबे अरुण बरुण तिनि भाइ आसि। जनक बालमिक कुशध्वज सेटि ६५
तांकर कोळरे कमळा जात हेबे। एक रूप गोटि चारि प्रकार होइबे ६६
बासुदेव एकरूप चतुर्द्धा मूर्ति हेबे। चारि भाइंकि चारि भगिनिकि बिभा देबे ६७
असुर मारिण पृथिबी करिबे स्थिर। आठ पुत्र चारि दुहिता जनम चारिकर ६८

स्वभाव भी अलग-अलग होगा। ५३ पचीस प्रकृति तथा पाँच मन निर्मित करके नरहरि भगवान संसार की रचना करेंगे। ५४ देव, दानव, मानव, वानर तथा नाना प्रकार के उड़ने वाले, डूबने वाले, चलने वाले तथा स्थिर रहने वाले जड़ चेतन, पाषाण तथा मिट्टी इस प्रकार सब की रचना संसार के कर्त्ता ने की। ५५-५६ दस दिगपाल, आठ बसु तथा आदि में तैंतीस करोड़ देवताओं को उन्होंने स्वर्गलोक में रखा। ५७ मृत्युलोक में छप्पन करोड़ मनुष्य तथा देवता रखकर पाताल में अठारह करोड़ नाग लोगों को स्थापित किया। ५८ भगवान ने इस प्रकार तीनों लोकों की रचना की। तुम अब मृत्युलोक को चलो। ५९ तब भगवान तुम्हें दिग्पाल बनाएँगे। यह सुनकर तीनों लोग वहाँ से शीघ्र ही आ गए। ६० उन्होंने आकर वासुदेव से भेंट की। उन्हें देखकर भगवान प्रसन्न हो गए। ६१ उन्होंने उनको सात समुद्रों का राजा बना दिया। समस्त जल जन्तु उनकी सेवा करने लगे। ६२ समयानुसार उनके कमला नामक पुत्री उत्पन्न हुयी। भगवान ने उसे लेकर अपनी पत्नी बना लिया। ६३ समय पर लक्ष्मी ने भगवान को प्राप्त किया। भगवान के अवतरण का स्थान राजा जलनिधि थे। ६४ इस समय अरुण-वरुण तीनों भाई आ गये हैं। जनक वाल्मीकि और कुशध्वज भी वही हैं। ६५ उनके अंश से लक्ष्मी उत्पन्न होगी जो एक रूप से चारों रूपों में प्रकट होगी। ६६ भगवान वासुदेव एक रूप से चार रूप धारण करेंगे। चारों भाइयों का चारों बहनों के साथ विवाह होगा। ६७ वह असुर को मारकर पृथ्वी को स्थिरता प्रदान करेंगे। आठ पुत्र और चा

अंश रखि बासुदेव निज स्थाने जिबे। दुष्ट जन नाशकले धरणी स्थिर हेब ६९
एरूपे बरुण कश्यप ऋषि जन्म। सतीव्रत पाळिबे चारि दुहिता पुण ७०
पत्नी व्रतरे चारि भाइ दिन नेबे। आउ स्तिरी मानंकु मन न करिबे ७१
शुणि करि पार्बती मनरे तोष हेले। कथा ए पचारिबि रहिला बोइले ७२
निमि राजा बशिष्ठ ऋषिकि शाप देला।चण्डाळ घरे तु बिभा हुअ से बोइला ७३
से कथा बशिष्ठंकु फळिलाकि फळ।चण्डाळ झीअकु बिभा हेलेकि तपशीळ ७४
से कथा मोर आगे कह त्रिलोचन। शुणि करि सन्तोष होइब मोर मन ७५
ईश्वर बोइले कथा एबे शुण। बशिष्ठ ऋषि जे शापकु भेण्टिण ७६
अजोध्या नग्ररे होइले प्रबेश। एमन्ते होइगला केते काळ शेष ७७
एक दिने घरणी तांकर आगे कहि। मोते एबे गर्भदान दिअ प्राण साइँ ७८
बशिष्ठ बोइले तो कर्म नाहिँ पुण। अपुंसक लक्षणे जनम तोर जाण ७९
तोर गर्भरे फळ नोहिब गो नारी। शुणिण मनरे रोष कला सुकुमारी ८०
निल्लज बिधाता मोते किम्पा ए रूप देला।
स्तिरी जनम करिण फळ न लेखिला ८१
एमन्त बिचारि नारी मनरे चिन्तागरु। बोइला ए शरीर होइला मोते गरु ८२

पुत्रियाँ चारों के उत्पन्न होंगी। ६८ भगवान अंशों को रखकर अपने लोक चले जायेंगे। दुष्टों का नाश करने से पृथ्वी स्थिर हो जायेगी। ६९ इस प्रकार वरुण का कश्यप ऋषि का जन्म (चरित्र) है। चारों पुत्रियाँ सतीव्रत का पालन करेंगी। ७० चारों भाई पत्नी व्रत से दिन-यापन करेंगे। वह अन्य स्त्रियों की ओर मन नहीं लगायेंगे। ७१ यह सुनकर पार्वती का मन संतुष्ट हो गया। उन्होंने कहा कि एक बात रह गयी है। मैं उसे पूछूँगी। ७२ राजा निमि ने वशिष्ठ को शाप दिया। उसने कहा था कि तुम चांडाल के घर में विवाह करोगे। ७३ उस बात से वशिष्ठ को क्या फल मिला। क्या उन तपस्वी ने चांडाल कन्या से विवाह किया। ७४ हे त्रिलोचन! आप वह कथा मुझसे कहिए जिसे सुनकर मेरा मन संतुष्ट होगा। ७५ शंकर ने कहा कि अब कथा सुनो। वशिष्ठ ऋषि शाप को भोगकर अयोध्या नगर में प्रविष्ट हुये। इस प्रकार कुछ समय व्यतीत हो गया। ७६-७७ एक दिन पत्नी ने उनके समक्ष कहा, हे प्राणेश्वर ! अब मुझे गर्भ दान दीजिये। ७८ वशिष्ठ ने कहा ऐसा तेरा कर्म नहीं है। तेरा जन्म अपुत्रिक लक्षण से युक्त है। ७९ हे कामिनी तेरे गर्भ से फल नहीं होगा। यह सुनकर सुकुमारी मन में कुपित हो गई। ८० वह बोली कि निर्लज्ज विधाता ने मुझे इस प्रकार का रूप क्यों दिया है। स्त्री का जन्म देकर उसने संतान नहीं लिखी। ८१ ऐसा विचार कर वह स्त्री मन में चिन्ता से बोझिल होकर बोली कि यह शरीर अब मेरे लिये भार

एमन्त बिचारि अग्निरे झास देला। देखिण वशिष्ठ मनरे चिन्ता कला ८३
ए बोइले एकथा होइला प्रमाद। चण्डाळुणी नारी पाइब केऊँ पद ८४
पुत्र नथिबा नारी अनेक छन्ति रहि। ए बुद्धि किम्पाइँ कल प्राण सही ८५
एमन्त बिचारि बशिष्ठ शब दाह कले। क्रिया कर्म सारिण पवित्र अंग हेले ८६
एमन्ते केते काळ तहिँ बहि गला। दशरथकु नव सहस्र वरष हेला ८७
बतिश बरष गला एथिरे जे पुण। बासुदेव जात हेवे ता' कोळरे जाण ८८
देबताए बिचार करन्ति स्वर्ग थाइ। चम्पावती राज्य एबे अपाळक होइ ८९
तेबे सिना ऋष्य श्रृंग अजोध्या आसिबे। ऋष्य श्रृंग अइले बासुदेव जन्म हेबे ९०
एमन्त बिचारि जे देबताए कहि। शुणिण बेदवर विचार कले तहिँ ९१
हेम अपसरि कि डकाइले पाश। बोइले मर्त्यपुरकु जाअ तु हरष ९२
कौशिक नदी तीरे पलाश बन पुण। रोमाञ्च ऋषि तहिं करइ तप पुण ९३
से तप स्थाने जाइ हेबु परबेश। तांकर मन हरिले तप हेब नाश ९४
शुणिण हेमलता हरषे चळि गला। कौशिक नदी तीरे प्रबेश दोइला ९५
रोमाञ्च ऋषि मठ देखिला सेठारे। कौशिक नदी निर्मळ जळ से कूळरे ९६
चन्दन कर्पूर हरिद्रा बोलि होइ। एकेत बारंगना जुबा से अटइ ९७

हो गया है। ८२ इस प्रकार सोचकर वह अग्नि में कूद गई। यह देखकर वशिष्ठ ने मन में चिन्ता करते हुये कहा कि यह वात तो प्रमादपूर्ण हो गई। चांडाल स्त्री को कौन सा पद मिल सकता है। ८३-८४ वंध्या स्त्रियाँ कितनी रह रहीं है! हे प्राणसंगिनी। तुमने ऐसा विचार क्यों किया। ८५ इस प्रकार सोचते हुये वशिष्ठ ने शव का दाह संस्कार किया। क्रिया-कर्म समाप्त करके वह पवित्र हो गये। ८६ इस प्रकार वहाँ कितना ही समय वीत गया। दशरथ को नौ हजार वर्ष हो गये। ८७ इसके पश्चात् बत्तीस वर्ष वीतने पर भगवान वासुदेव उनके अंश से जन्म ग्रहण करेंगे। ८८ स्वर्ग में देवता लोग विचार कर रहे थे कि अब चम्पावती राज्य अकालग्रस्त होगा। तभी तो श्रृंगी ऋषि अयोध्या आयेगे और उनके आने से भगवान जन्म लेगे।। ८९-९० इस प्रकार का विचार देवताओं ने व्यक्त किया। जिसे सुनकर ब्रह्मा जी ने वहाँ पर विचार किया। ९१ उन्होंने हेम अप्सरा को पास बुलाकर हर्ष सहित मृत्युलोक को जाने को कहा। ९२ कौशिक नदी के तट पर पलाश वन था। रोमांच ऋषि वहाँ तपस्या करते है। ९३ उस तपस्या स्थल पर पहुँच जाना। उनका मन हरण करने से तपस्या नष्ट हो जायेगी। ९४ यह सुनकर हेमलता हर्ष-पूर्वक चली गयी और कौशिक नदी के तट पर जा पहुँची। ९५ उसने कौशिक नदी के निर्मल जल के दूसरे तट पर रोमांच ऋषि का मठ देखा। ९६ उसने चन्दन, कपूर तथा हल्दी लगा ली। वह तो वैश्या थी और फिर युवा भी

सर्बांग सुन्दर जे मोहइ तिनिपुर। देवता माने ताकु देखिले अस्थिर ९८
गन्ध लगाइ से नदीरे जळरे स्नान करि।एमन्त समयरे रोमाञ्च ऋषीमिळि ९९
अपसरि कि देखि मनरे ऋषि भाळि। अपूर्ब सुन्दरी ए काहुँ एथि मिळि १००
बिचारिले ए नारी आशा करिब रतिरस।
अबश्य तप मोर करिब एहु नाश १०१
एमन्त बिचारि मुनि नारी पाशे गले। केउँ ठारु अइलु बोलिण पचारिले २
से बोइला मोर घर अमर स्वर्गपुरे। ए बनकु बुलि मुँ आसिलि आनन्दरे ३
मोहर जननी गन्धका अपस्वरी।तार कोले जात आम्भे दुइटि कुमारी ४
हेमलता कुन्दलता दुहिँकि जात कला।
ज्येष्ठ भगनी कुन्दलता सुर राजा पुत्रकु भजिला ५
मोर संगे केहि बिभा नोहि वारु पुण। माता मोते पठाइला मर्त्यपुर जाण ६
से शकासुँ आसि मुँ जे नदीरे करे स्नान। शुणिण रोमाञ्च ऋषि होइले मउन ७
घड़िक उत्तरे ऋषि चेता पाइ उठि।बोइले ए नारी आसि पकाए मोते ध्वंसि ८
अधम नारी एजे एठारे मिळिला। मोर तप भांगिबा निमन्ते अइला ९
एमन्त बिचारि मुनि कहिले ताकु बाणी।
मो आश्रमे पशिलु पापिष्ठा दोचारुणी ११०

थी। ९७ वह सर्वांग सुन्दरी तीनों लोकों को मोहित कर रही थी। उसे देखकर देवता भी चंचल हो जाते थे। ९८ सुगन्धि लगाकर उसने नदी के जल में स्नान किया। इसी समय रोमांच ऋषि आ गये। ९९ अप्सरा को देखकर ऋषि ने मन में विचार किया कि यह अपूर्व सुन्दरी कहाँ से आकर यहाँ मिली है। १०० उन्होंने सोचा कि यह स्त्री रति-क्रीड़ा की आशा करेगी और यह हमारी तपस्या को नष्ट कर देगी। १०१ ऐसा विचार करते हुये मुनि स्त्री के पास गये। उन्होंने पूँछा कि आप कहाँ से आई हैं। २ वह बोली कि मेरा घर देवताओं के स्वर्गपुर में है। मैं आनन्दपूर्वक इस वन में घूमने के लिये आई हूँ। ३ मेरी माँ गन्धका अप्सरा हैं। उसके गर्भ से हम दो पुत्रियाँ पैदा हुई हैं। ४ उसने हेमलता तथा कुंदलता दोनों को जन्म दिया है। बड़ी बहन कुन्दलता देवराज इन्द्र के पुत्र को चाहने लगी। ५ मेरे साथ किसी का विवाह न होने के कारण माता ने मुझे मृत्युलोक में भेजा है। ६ इस प्रकार से मैं आकर नदी में स्नान कर रही हूँ। यह सुनकर रोमांच ऋषि मौन हो गये। ७ एक घड़ी के बाद ऋषि ज्ञान पाकर उठकर बोले कि यह नारी आकर मुझे नष्ट कर देगी। ८ यह अधम नारी यहाँ पर मिली है और मेरी तपस्या भंग करने के लिये आई है। ९ ऐसा विचार कर मुनि ने उससे कहा, अरी दुराचारिणी पापिष्ठे ! तू मेरे आश्रम

मोहर शाप एबे अंगरे तोर वह। मृगुणी होइण तु ए वनरे रह १११
वतिश वर्षरे पुत्रेक जात कर। पुत्र जात करि निज रूपे स्वर्ग चळ १२
शुणिण हेमलता मृगुणी रूप हेला। कंकाशिळ वनरे से कष्ठरे रहिला १३
पार्बती बोइले कह दिगम्वर।वशिष्ठ घरणी तेज्या करिले शरीर १४
से ऋषिआणी पुणि केउँ जन्म हेला। से कथा शुणिले चित्तवोध हेवपरा १५
ईश्वर वोइले शुण भगवती।से स्वती शरीर अग्निरे ध्वंसि लाटि १६
आत्म घातक दोष ताठारे प्रकाश। काल विकाळ नेले जमराजा पाश १७
जन्तुपति देखिण अनेक गाळि देला।आत्म घातिनी मुख चाहिँवा नोहिला १८
चम्पावती पुरे अछि अदिति चण्डाळ। तार पत्नी उदरे एहाकु जातकर १९
शुणिण चित्रगुप्त बेगे घेनि गले। चम्पावती नग्ररे प्रवेश होइले १२०
अदिति चण्डाळ गृहरे नेइ छाड़ि। ज्योति रूप धरिला वशिण्ठर नारी १२१
अदिति चण्डालर हृदरे सम्भाइला।सेदिन चण्डाळ घरणी रजस्वळा हेला २२
चारि दिने शुद्ध स्नान होइला ताहार।
पाञ्चदिने स्वामी पाशे मिळिला नारी बर २३
स्वामीर संगरे रति लीळा कला।जोनिरे बीर्ज्य खसन्ते नारी गर्भ हेला २४

में घुसी है। ११० अब तू अपने शरीर से मेरा शाप वहन कर। तू इस वन में हिरणी होकर रह। १११ बत्तीस वर्ष में तू एक वच्चे को जन्म दे। वच्चा पैदा होने के उपराँत तू अपने स्वरूप में स्वर्ग को चली जायेगी। १२ यह सुनकर हेमलता का रूप हिरणी का हो गया। कंटकाकीर्ण वन में कष्ट से रहने लगी। १३ पार्वती ने कहा हे दिगम्बर ! वशिष्ठ की पत्नी ने अपना शरीर छोड़ दिया था। फिर वह ऋपि पत्नी कहाँ उत्पन्न हुयी। यह कथा सुनने से हमारा मन शाँत होगा। १४-१५ शंकर जो ने कहा हे भगवती ! सुनो। उस सती ने अपना शरीर अग्नि में ध्वंस कर दिया। १६ उस पर आत्महत्या का दोष प्रकाशित हुआ। काल विकाल उसे यमराज के निकट ले गए। १७ यमराज ने उसे देखकर बहुत भर्तस्ना करते हुये कहा कि आत्मघाती का मुख भी देखना ठीक नहीं है। १८ चम्पावतीपुर मे अदिति चाण्डाल है। उसी की पत्नी के पेट से इसका जन्म कराओ। १९ यह सुनकर चित्रगुप्त उसे शीघ्रता से ले गए और चम्पावती नगर मे जा पहुँचे। १२० उसे अदिति चाण्डाल के घर मे छोड़ दिया। वशिष्ठ पत्नी ने ज्योति रूप धारण किया। १२१ वह अदिति चाण्डाल के अन्तर में समाहित हो गई। उस दिन चाण्डाल पत्नी रजस्वला हुई थी। २२ चार दिनों मे उसका शुद्ध स्नान पड़ा। पाँचवें दिन वह श्रेष्ठ नारी स्वामी के निकट पहुँची। २३ उसने स्वामी के साथ रति क्रीड़ा की। योनि मे वीर्य स्खलित होने से पत्नी गर्भवती हो गई। २४

दश मासरे दुहिता जन्म हेला तार । पद्मिनी अंशरे जात चण्डाळर घर २५
आपणार नाम जे चण्डाळी बोलि देला । अदिति कुमारी सेठारे रहिला २६
कर्मरे बिहि तार लेखि देला तहिँ । बशिष्ठ ऋषिंकि बिभा होइबु जे तुहि २७
षोळ बरषरे नवजुबा हेबु । कोड़िए बर्षरे बशिष्ठंकु बिभा हेबु २८
बिधाता लेखिबा कथा के करिब आन । एमन्ते पाञ्चबर्ष बहिगला दिन २९
सुरंग अधर तार दिशे शोभा बन । मुख गोटि विळाशइ पूर्णिमार जन्ह १३०
चाळिले अबेण्ट फुल फुटइ पादरे । कोमळ भाषा कहइ सुरंग अधरे १३१
नग्र लोके देखिण प्रशंसा ताकु करि । चण्डाळुणी गर्भरे माणिक्य जात करि ३२
बनपाद राजार नन्दन लोमपाद । तार आगे पात्र मन्त्री कहिले सम्पाद ३३
आम्भर श्वेतखाना खटिबा माहार । तार घरे दुहिता जन्म अटे सार ३४
शोभा पणरे मोहि पारे तिनिपुर । चन्द्र चकोर मुख गोटि जे ताहार ३५
चालिले अबेण्टा फुल फुटे । हसिले मुकुता झड़े तार ओष्ठे ३६
शुणि करि राजन ताहाकु डकाइले । से कन्या गोटिकि राजन देखिले ३७
सकळ लक्षण अछइँ ताठारे । केवल जन्म तार चण्डाळी जोनिरे ३८
राजन बोइले ए बड़ कुळरे थिला । केउँ दोषरे चण्डाळ घरे जन्म हेला ३९

दस महीने में उसके पुत्री उत्पन्न हुई। वह पद्मिनी के अंश से चाण्डाल के घर में उत्पन्न हुई। २५ अपना नाम उसने चण्डाली रक्खा। अदिति कुमारी वहाँ पर रहने लगी। २६ उसके कर्म फल में विधाता ने लिख दिया कि यह वशिष्ठ ऋषि से विवाह करेगी। २७ सोलह वर्ष में यह नवयुवती होगी और बीस वर्ष की आयु में वशिष्ठ से विवाह करेगी। २८ ब्रह्मा का लेख कौन मिटा सकता है। इस प्रकार पाँच वर्ष का समय व्यतीत हो गया। २९ उसके लाल-लाल अधर दिखाई देने लगे उसका मुख पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान विकसित हुआ। १३० उसके चलने पर पैरों में अम्लान सुमन खिल उठते थे। वह अपने लाल अधरों से कोमल वाणी बोलती थी। १३१ नागरिक उसे देखकर उसकी प्रशंसा में कहते थे कि यह चण्डालिनी के गर्भ से माणिक्य उत्पन्न हुआ है। ३२ वनपाद राजा का पुत्र लोमपाद था। सभासद तथा मन्त्रियों ने उसके समक्ष सूचना दी। ३३ हमारे कुष्ठगृह में सेवा करने वाले चाण्डाल के घर में उस श्रेष्ठ पुत्री ने जन्म लिया है। ३४ वह अपनी शोभा से तीनों लोकों को मोहितकर सकती है। उसका मुख चन्द्र-चकोर की भाँति है। ३५ चलने से नालरहित कुसुम प्रस्फुटित होते है। हँसने से उसके ओंठों से मुक्ता झड़ते है। ३६ यह सुनकर राजा ने उसे बुलवाया और राजा ने उस कन्या को देखा। ३७ उसमें समस्त लक्षण विद्यमान थे। केवल उसका जन्म चाण्डाल योनि से हुआ था। ३८ राजा ने कहा कि यह

चाण्डाळकु बोइले शुण आम्भ वाणी। ए दुहिता गोटिकु अभक्ष नदेवु जाणि १४०
देवनारी एहि तोर घरे हेला जात। आमिष पदार्थ न देवु कदाश्चित १४१
राजा कहिबारु चण्डाळ सनमत कला। प्रतिदिन नूतन हाण्डिरे अन्न देला ४२
घृत सर लवणी मिष्ठ अन्न देइ। एमन्ते से दुहिता चण्डाळ घरे रहि ४३
सपत वर्ष अदिति नग्र बुलि जाइ। धान गछ गोटिए पथरे देखे सेहि ४४
से धान बृक्षकु धरिण हरषरे। प्रवेश हेला जाइ आपणा मन्दिरे ४५
गोमय़ मळ देइ बृक्ष लगाइले। मत्त होइ से गछरे फळ जे फळिले ४६
अडा एक धान अमळ हेला पुण। से धान अन्य स्थाने कला जे रोपण ४७
बेदबर से लक्षे भरण धान हेला। जाणिण नारद मुनि सेठारे मिळिला ४८
अदिति चण्डाळकु डकाइ महामुनि।
बोइले तो घरे जात जे पद्मिनी नारी पुणि ४९
से दुहिता बड़ कुळे होइव विभाघर। लक्षे भरण धान अर्जिछि नारी वर १५०
तार धान काहाकु न देवु तुहि पुण। मेण्टिले आर जन्मे शूकर हेवु जाण १५१
शुणि करि अदिति चण्डाळ सत्य कला। जे कन्याकु विभाहेव देवइँ बोइला ५२
एथु अनन्तरे शुण भगवती। सत्य कराइ नारद चळिले क्षीप्रगति ५३

तो बड़े कुल में थी। पता नहीं किस अपराध से इसका जन्म चाण्डाल के घर में हुआ। ३९ उन्होंने चाण्डाल से कहा कि तुम हमारी बात सुनो। इस पुत्री को जानबूझकर अभक्ष पदार्थ न देना। १४० यह देवनारी तुम्हारे घर में उत्पन्न हुई है। इसे कभी भी आमिष पदार्थ न देना। १४१ राजा के वचनों पर चाण्डाल ने स्वीकृति दे दी। वह प्रतिदिन नवीन भाण्ड से अन्न देने लगा। ४२ घी दूध मलाई मक्खन तथा मिष्ठान्न देने लगा और वह कन्या इस प्रकार से चाण्डाल के घर मे रहने लगी। ४३ सातवें वर्ष में अदिति नगर में भ्रमण करने गयी। उसने मार्ग में धान का पौधा देखा। ४४ वह प्रसन्नतापूर्वक उस धान के पौधे को लेकर अपने घर में प्रविष्ट हुई। ४५ गोबर मिलाकर उसने उस पौधे को लगा दिया। बड़े होने पर उस पेड़ से फल निकलने लगे। ४६ जब वह धान पक गए तो उसने उन धानों को अन्य स्थान में लगा दिया। ४७ विधि विधान से लक्ष भार धान हो गए। यह जानकर नारद मुनि वहाँ पहुँच गए। ४८ महामुनि ने अदिति-चाण्डाल को बुलाकर कहा कि तुम्हारे घर में पद्मिनी स्त्री का जन्म हुआ है। ४९ उस पुत्री का विवाह उत्तम कुल में होगा। उस श्रेष्ठ नारी ने लक्षभार धान अर्जित किए है। १५० उसके धान तुम किसी को न देना यदि न मनोगे तो अगले जन्म में सुअर होगे। १५१ यह सुनकर चाण्डाल ने प्रतिज्ञा की कि यह धान उसी को प्रदान करूँगा जो कन्या से विवाह करेगा। ५२ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् नारद प्रतिज्ञा कराकर शीघ्र ही चले गए। ५३ वह जाकर

स्वर्गपुरे प्रवेश होइले जाइ करि। एणे जे चम्पावती नबर दण्डधारी ५४
से राजार शतेराणी अटइ जुकते। काहारि कोळरे सन्तती नोहिला परापते ५५
एक दिने राजा पारिधि कि बिजे कला। चतुरंग बळ घेनि बनस्तकु गला ५६
मृगया बिनोदरे बुलइ बनलता। एथु अनन्तरे शुण दिव्य कथा ५७
अजोध्या राजन दशरथ पुण। सेहि से दिन मृगयाकु करइ गमन ५८
चतुरंग बळ तार संगरे घेनि पुण। से बनरे प्रवेश हेलाक राजन ५९
दुइ राजांकर भेट पड़िला बनरे। गुळुचि लता तळे बसि ले दुइबीरे १६०
लोमपाद पचारिले दशरथंकु पुण। केउँ नग्रे अट तुम्भर प्रभु पण १६१
प्रजाए कुशळ कि राज्य परिमळ। धन रत्न भण्डार अछि कि कुशळ ६२
सातश पञ्चाश राणी खटन्ति पयर। केबल गोटिए कथा उणा अटे मोर ६३
पुत्र पौत्री मोहर किछि नाहिं पुण। से कथारे अभाब अटइ मोर जाण ६४
नव सहस्र बरष हेला मोते आसि। पुत्र मुख न चाहिँलि पूर्बरू मुँ दोषी ६५
आण्ठुकुड़ा दोषरे दिन गला मोर। दइब देला दशा कहिबि का आगर ६६
शुणिण लोमपाद बोलन्ति बचन। मुहिँत बड़ दुःखी शुण हे राजन ६७
शतेक राणी मोर अटन्ति गरूहंसि। काहार कोळरे पुत्र दुहिता नाहिँटि ६८

स्वर्ग में प्रविष्ट हुए। इधर चम्पावती नगर के महाराज की सौ रानियों में किसी के गर्भ से पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। ५४-५५ एक दिन राजा आखेट को गया। वह चतुरंगिनी सेना लेकर जंगल में जा पहुँचा। ५६ मृगया विनोद में वह लतापूरित वन में घूम रहा था। तुम इसके पश्चात् की दिव्य कथा को श्रवण करो। ५७ अयोध्या नरेश दशरथ भी उसी दिन मृगया के लिये निकले। ५८ वह राजा भी अपनी चतुरंगिनी सेना को साथ में लेकर उसी वन में प्रविष्ट हुए। ५९ वन में दोनों राजाओं की भेंट हो गई। वह दोनों वीर गुर्च की लता के नीचे बैठ गए। १६० लोमपाद ने दशरथ से पूँछा कि आपका राज्य किस नगर में है। १६१ आपके राज्य की प्रजा सुखी और कुशल से तो है। धन रत्न भण्डार सब ठीक तो है। ६२ उन्होंने कहा कि सात सौ पचास रानियाँ मेरे चरणों की सेवा करती हैं किन्तु हमारे पास एक बात की कमी है। ६३ मेरे पुत्र और पुत्री कुछ भी नहीं है। हमें इसी बात का अभाव है। ६४ मैं नौ हजार वर्ष का हो गया हूँ। मैंने पुत्र का मुख नहीं देखा है। पहले से ही मैं इस दोष में आबद्ध हूँ। ६५ अपुत्रिक दोष से ही मेरे दिन व्यतीत हुए हैं विधाता के द्वारा दी गई दशा को मैं किससे कहूँ। ६६ यह सुनकर लोमपाद ने कहा, हे राजन्! सुनो। मैं भी अत्यन्त दुःखित हूँ। ६७ मेरे भी रनिवास में सौ रानियाँ हैं पर किसी की गोद में पुत्र अथवा पुत्री नहीं है। ६८

धन रत्न द्रव्य अनेक अछि मोर। आण्ठुकुड़ा दोषरे विअर्थ ए शरीर ६९
प्रभातकाळरे लोके न चाहाँन्ति मोर मुख। अनुक्षणे चिन्ता जे अन्तर्गते दुःख १७०
सात सहस्त्र वर्ष हेला मोते पुण। न चाहिँलि पुत्र मुख दुःखर कारण १७१
दशरथ बोइले शुण हे नृप वर। भल जोगे भेट पड़िले अरण्यर ७२
मोर घर अजोध्या तुम्भ घर चम्पावती।तुम्भर नहिँ पुत्र मोर नोहिला सन्तती ७३
लोमपाद बोइले शुण हो महीधर। तुम्भर मोहर मइत्र होइवा एठार ७४
एते बोलि दुइजण मइत्र होइले। निर्मळ हृदग्नरे धर्मकु साक्षी कले ७५
सनमाने दुइजण हेले तहिँ मेळ। सेठारू मृगग्रा वेण्ट दुइ राजनर ७६
पारिधि सारि जे जाहापुरे चळिगले। निज मन्दिररे जाइ प्रवेश होइले ७७
मृग स्वग्रम्वर हरिण बाहुटिआ। जुआद खूराण्टि जे कर्पूर वरेहा ७८
चण्डा गग्रळ गुराण्डि झिक शशा जाण। एमन्ते अनेक जीव बनरू मारिपुण ७९
बोझ भार करिण निअन्ति राज्ये बहि। आनन्दरे चतुरंग बळ चळिजाइ १८०
निज नबरे जहुँ हेले परबेश। पारिधि कला जीवंकु बाण्टिले हरष १८१
एथिरे पन्दर दिन एमन्ते बहिगला। लोमपाद राजा चतुरा गहिँ साधिला ८२
नाना वर्णे उपहार मान से भिआण। अण्टरत्न अळंकार संगरे नेले पुण ८३

मेरे धन रत्न तथा अन्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में है। परन्तु अपौत्रिक दोष से यह शरीर व्यर्थ है। ६९ प्रातः काल लोग मेरा मुख नही देखते हैं। प्रतिक्षण की इस चिन्ता से मेरा अन्तर दुःखित रहता है। १७० सात हजार वर्ष वीत गये। मैंने पुत्र का मुख नही देखा है। यह ही मेरे दुख का कारण है। १७१ दशरथ ने कहा हे नृपोत्तम ; सुनिये। इस जंगल में अच्छे योग में आपसे भेंट हो गई। ७२ मेरा घर अयोध्या में और आपका चम्पावती में है। न तुम्हारे पुत्र है और न मेरे ही सन्तति है। ७३ लोमपाद ने कहा हे महीपति ! सुनिये। अब आपकी और मेरी यहीं पर मित्रता होगी। ७४ इतना कहकर दोनों लोग मित्र वन गये। उन्होंने निर्मल हृदय से धर्म को साक्षी बनाया। ७५ सम्मान सहित दोनों का वहाँ मिलाप हुआ। वहाँ से दोनों राजा आखेट पर निकल गए। ७६ आखेट समाप्त करके दोनों अपने-अपने स्थान को चले गए और जाकर अपने-अपने महल में प्रविष्ट हुए। ७७ मृग साम्हर हरिण वाहुटिया (जन्तु विशेष) पशु पक्षियों के दल, खुर वाले जानवर सफेद सुअर, गैण्डा, भैंसे, छुद्र मृग, वन्य जन्तु विशेष खरगोश इस प्रकार के अनेक जीव जन्तुओं को वन में मारकर भार में बोझ लदवा कर राज्य मे ले जा रहे थे चतुरंगिनी सेना आनन्दपूर्वक चली जा रही थी। ७८-७९-१८० जब वह अपने नगर में पहुँचे तो उन्होंने प्रसन्नता से आखेट किये जीव जन्तुओं को बाँट दिया। १८१ इस प्रकार इसमें पन्द्रह दिन व्यतीत हो गए। राजा लोमपाद ने चतुरंगिनी सेना को सजाया। ८२ उसने नाना

चम्पाबती नग्रकु अजोध्या शते जुण ।बाहार होइले राजा अनेक सम्भर्बेण ८४
बाद्यर निशाणरे कम्पइ धरणी। दश दिने अजोध्या नग्ररे मिळे पुणि ८५
दशरथ नृपति आगरे चार कहि ।चम्पाबती देश राजा पाछोटि आसइ ८६
शुणिण दशरथ बेगे सज हेले। चतुरंग बळ साजिण ठुळ कले ८७
पात्र मंत्री अमनात्य सामन्त मान घेनि। रथि सेनापति जे अश्व नाग पुणि ८८
सकळ सैन्य घेनि रथरे बसिण। गंग कूळे लोमपाद राजांकु भेटिण ८९
देखिण लोमपाद रथरु ओह्लाइले। दशरथ राजांकु नमस्कार कले १९०
दशरथ मान्य कले लोमपादंकु पुण। हरष होइ चळिले अजोध्या भुबन १९१
अजोध्या नग्ररे जाइ हेले पर बेंश। देखिण सकळ लोक होइले हरष ९२
निज नग्रे दुहें जाइ प्रबेश होइले। उपहार द्रव्यमान पात्र मंत्री नेले ९३
अलंकार रत्न माळा राजन घेनि गले। अन्तःपुरे राणीगण बाण्टिण जे नेले ९४
कौशल्या कैकय़ा सुमित्रा कहे पुण। ए सर्ब के देला कह हे प्राण धन ९५
दशरथ बोइले मइत्र लोमपाद ।शंखोळिबा निमन्ते आणि छन्ति एहि द्रव्य ९६
कैकय़ा बोइले केउँठारे देखा हेल। बनस्तरे भेट होइले महीपाळ ९७
दशरथ बोइले पारिधि दिन मोर। दुःख सुख शंखोळा पड़िला दुहिंकर ९८

प्रकार के उपहार सजाये। अपने साथ में अष्ट रत्नों के अलंकार ले लिये। ८३ चम्पावती नगर से अयोध्या सौ योजन दूर थी। राजा बहुत समारोह के साथ निकल पड़ा। ८४ वाद्य निशाण से मेदिनी कम्पित हो रही थी। वह दस दिनों में अयोध्या नगर में पहुँच गये। ८५ दूत ने राजा दशरथ के समक्ष कहा कि चम्पावती देश के राजा अतिथि बनकर आ रहे है। ८६ यह सुनकर दशरथ शीघ्र ही तैयार हो गए। उन्होंने चतुरंगिनी सेना को एकत्रित कर लिया। ८७ सभासद मंत्री अमात्य तथा सामन्तों को साथ लेकर रथी सेनापति हाथी-घोड़े समस्त सेना के साथ रथ पर बैठकर राजा दशरथ ने सरयू तट पर राजा लोमपाद से भेंट की। ८८-८९ उन्हें देखकर लोमपाद रथ से उतर पड़े और उन्होंने राजा दशरथ को नमस्कार किया। १९० दशरथ ने लोमपाद का सम्मान किया और प्रसन्न होकर अयोध्या पुर को चल दिये। १९१ फिर वह अयोध्या नगर में प्रविष्ट हुए। उन्हे देखकर नगरवासी प्रसन्न हो गए। ९२ अपने नगर में दोनों जा पहुँचे दरवारी व्यक्तियों तथा मंत्रियों ने उपहार ग्रहण किये। ९३ अलंकार तथा रत्न मालायें राजा ले गये जिसे अन्त:पुर में रानियों ने बाँट लिया। ९४ कौशल्या कैकेयी तथा सुमित्रा ने कहा, हे प्राणधन ! बताइये। यह सब किसने दिया है। ९५ दशरथ ने कहा कि मित्र लोमपाद उपहार में देने के लिये यह सब लाये हैं। ९६ कैकेयी ने पूँछा कि साक्षात्कार कहाँ हुआ। दशरथ ने कहा वह मेरा आखेट का दिन था। जब वन प्रान्त में राजा से भेंट हो गयी। दोनों में दुःख-सुख के बिषय में चर्चा होने लगी थी। ९७-९८

आम्भर नाहिँ सन्तान तांकर नाहिँ सन्तान। एणु करि मइत्र होइलुँ वेनिजन ९९
तांकर शतेराणी मोर सातश पञ्चाश।
तांक राज्य चम्पावती मुँ अजोध्या नरेश २००
सकळ राणी हंस मोर दासी सेहि। वस्त्र अळंकार आणि अछि लिहि २०१
कौशल्या कहिले तार प्रीतिरे सुख पुण। शंखोळि अइले से जे आम्भर पुरेण २
सुमित्रा बोइले आम्भर अटे सुख। परम बन्धु होइले चम्पावती ईश ३
मन सानन्दे द्रव्य कर गो ग्रहण। नीळावती बोइले अछि जे करण ४
कळावती बोइले होइब उपकार। भल जोगे मइत्र होइले प्राणेश्वर ५
शुणिण दशरथ वेगे चळि गले। लोमपाद राजांकु गउरव कले ६
पाञ्च दिन रहि लोमपाद राज्य देखि। प्रशंसा करिले राजा धन्य पुर गोटि ७
देबाळ पुर प्राय़े ए राज्य मोते लागि। बिष्णु देवता प्रसन्न राज्य सउभागी ८
दाण्ड निर्मल जे प्रजाए बड़ सुखो। सुवर्णर चिराळ उड़े पन्ति पन्ति ९
सुबुंकरि द्वारे मंगल उत्सव। नटकारिए नृत्य करन्ति सदभाव २१०
कन्दि बिकन्दि एथिरे कळणा न लाइ। मनरे बिचार करन्ति नर साइँ २११
लोक वर्ग डकाइ निर्मल राज्य कला। भंगा तुटा जाक व़िश्वकर्मा सजाड़िला १२
चिराळ कळश जे बसाइ बिन्धाणी। सुवर्णर चडरा रचिलातहिँ पुणि १३

न मेरे संतान थी और न उसके। इसलिये हम दोनों मित्र वन गये। ९९ उसकी सौ रानियाँ हैं और मेरी सात सौ पचास। उनका राज्य चम्पावती है और मैं अयोध्या का राजा हूँ। २०० सारा रनिवास मेरा दास है। उन्हीं के लिये वस्त्र और अंलकार लाया गया है। २०१ कौशल्या ने कहा कि उनकी प्रीति से सुख मिला है। वह उपहार सामग्री लेकर हमारे घर आये है। २ सुमित्रा ने कहा हमे भी आनन्द हो रहा है। जो कि चम्पावती के स्वामी परम मित्र बन गये हैं। ३ प्रसन्न मन से द्रव्य ग्रहण करो। नीलावती ने कहा इसी में निस्तार है। ४ कलावती बोली कि उपकार होगा क्योंकि प्राणेश्वर ने शुभ योग में मित्रता की है। ५ यह सुनकर दशरथ ने शीघ्रता से जाकर राजा लोमपाद का सम्मान किया। ६ पाँच दिन रहकर लोमपाद ने राज्य का निरीक्षण किया और राजा ने प्रसंसा करते हुये कहा कि आपका नगर धन्य है। ७ राजा ने कहा कि यह राज्य मुझे स्वर्ग लोक के समान लगा। विष्णु देव के प्रसन्न होने से यह राज्य सौभाग्यशाली है। ८ जिसके मार्ग स्वच्छ है और प्रजा अत्यन्त सुखी है। सुन्दर वर्ण की पताकाये पंक्ति की पंक्ति में फहरा रही हैं। ९ सबके द्वार पर मांगलिक उत्सव हो रहे है और नृत्यकार सुन्दर भाव से नृत्य कर रहे हैं। २१० यहाँ पर गली-कूचों का आँकलन नहीं हो पा रहा है। नरपति इस प्रकार अपने मन में विचार कर रहे थे। २११ लोगों को बुला कर राज्य को स्वच्छ कराया गया और टूटे-फूटे भागों को विश्वकर्मा ने सजा दिया। १२ कलश

कन्दि बिकन्दि जे सबुरि द्वारे जाण। मंगळ उत्सव कलाक राजन १४
चित्रपट्ट पितुळामान से लेखाइला।
स्थाने स्थाने छामुण्डिआ चान्दुआटणाइला १५
नग्रर चारि पाशे चतुरंग बळ। जाणिण चरचि देले सबु ठार १६
एथु अनन्तरे पक्षेक बहि गला। दशरथ राजा सैन्य सज कला १७
चतुरंग बळमान संगरे घेनि पुण। चम्पावती राज्यकु कलेक गमन १८
रत्न अळंकार मान सम्भर्वरे नेले। उत्सव आनन्दरे राजन चळिले १६
सामन्त पात्र मन्त्री अमनात्य बळ। बशिण्ठ बामदेव अछन्ति संगतर २२०
हस्ति अश्वरथि जे सेनापति बळ। प्रबेश होइले जाइ चम्पावती पुर २२१
दश दिनरे शते जुण चलि गले। कटकर चार जे राजारे कहिले २२
तो राज्यकु अजोध्या नृपति आसे जाण। शुणिण लोमपाद कलेक गमन २३
बाटरे भेट हेले अजोध्या नरेन्द्र। मान्य धर्म कले राजा लोमपाद २४
अजोध्या राजन मान्य धर्म कले। मेळ होइ सेठारू निजपुरे गले २५
राज्यर नर नारी देखिले दशरथ। दुइ गोटि चरण अण्टगोटि हस्त २६
देखिण सर्बजने चमत्कृत हेले। निज नबरे राजा प्रबेश होइले २७

पताकाएँ बाँधी गयीं। वहाँ पर सोने के चबूतरे बनाये गये। १३ गली कूचा तथा सबके द्वार पर राजा ने मांगलिक उत्सव करवाये। १४ स्थान-स्थान पर शामियाने तनवाये गये और चित्रकारी तथा पुतलियाँ अंकित कर दी गईं। १५ नगर के चारों ओर चतुरंगिनी सेना का सेवा सत्कार सब जगह समझ-बूझ कर किया गया। १६ इसके पश्चात् एक पखवारा बीत गया। राजा लोमपाद के चले जाने पर राजा दशरथ ने अपनी सेना सुसज्जित कर ली। १७ राजा लोमपाद ने चतुरंगिनी सेना साथ लेकर चम्पावती राज्य को प्रस्थान किया। १८ राजा प्रसन्न होकर उत्सव मनाते हुये रत्न अलंकार लेकर धूमधाम से चल दिये। १६ सामन्त, सभासद, मंत्री तथा अमात्यों के दल के साथ वशिष्ठ, वामदेव, आदि को साथ में लिये हुये हाथी, घोड़े रथी तथा सेनापतियों के दल के दल जाकर चम्पावती नामक नगर में प्रविष्ट हुये। २२०-२२१ दस दिनों में वह सौ योजन चले गये। दुर्ग के दूत ने राजा से कहा कि लगता है कि अयोध्या के राजा दशरथ आपके राज्य में आ रहे हैं। यह सुनकर लोमपाद चल दिये। २२-२३ मार्ग में अयोध्या के महाराज से उनकी भेंट हो गई और राजा लोमपाद ने उनका बहुत स्वागत-सत्कार किया। २४ अयोध्या नरेश ने भी उनका सम्मान किया। राजा और अयोध्यापति मिलकर चम्पावती नगर को गए। २५ राज्य के स्त्री पुरुषों ने दशरथ को देखा। उन्होंने उनके दो पैर तथा आठ भुजाओं को देखा। २६ यह देखकर सभी लोक अचम्भे में पड़ गए। राजा अपने महल में प्रविष्ट

आय़े दाय़े अळंकार लोमपाद नेले। अन्तःपुरे राणी हंस पुररे मिळिले २८
देखिण शतेराणी ओळग मेलाइले।रत्न अळंकार राजा सब्बंकु बाण्टि देले २९
कळावती नीळावती बेनि पटराणी।पचारिले ए रत्नकु आणिल काहुँ पुणि २३०
लोमपाद राजा कहे मइत्र दशरथ। अजोध्या नग्रर अटन्ति नरनाथ २३१
शंखोलि आसि छन्ति आय़े दाय़े घेनि। शुणिण राणी माने सन्तोष हेले पुणि ३२
शरधारे रत्न आभरण मण्डि हेले। नूतन वेश हेला प्रायेक दिशिले ३३
नारींक पाशुँ अन्तर हेले दण्डधारी। दशरथंक पाशे मिळिले जाइ करि ३४
लोमपादंक राज्य बुलिण देखिले। मेलाणि होइण दशरथ बाहुड़िले ३५
अजोध्या नग्ररे जाइ होइले प्रबेश। देखिण नर नारी होइले सन्तोष ३६
एथु अनन्तरे शुण भगवती।चम्पावती राजा जे घेनिण पात्र मन्त्री ३७
चतुरंग बळ घेनि पारिधिकि गला। कण्डुक बने जाइ प्रबेश होइला ३८
धर धर मार मार शबद कला टाण।गर्भणी मृगुणी जिआद कस्तुरी जीव पुण ३९
केहु दशमास पेट केहु नब मास। अंळसरे जीवमाने गले दूर देश २४०
शब्द शुणिण सर्बे कात्तर मन हेले।ए दण्डरु धर्मदेव रख बोलिण सुमारिले २४१
अति आरतरे इँकार कले जहुँ। शून्यरे बिचार जे कले प्रभु तहुँ ४२

हुए। २७ उपहार अलंकारों को लोमपाद ने ग्रहण किया और अन्तःपुर के रनिवास में प्रविष्ट हुए। २८ देखते ही सौ रानियों ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने रत्नाभूषण सबको बाँट दिये। कलावती तथा लीलावती दोनों पटरानियों ने पूँछा कि आप यह रत्न कहाँ से लाए है। २९-२३० राजा लोमपाद ने कहा कि मित्र दशरथ अयोध्या नगर के महाराज है। वह उपहार सामग्री लेकर आए हैं। यह सुनकर रानियाँ सन्तुष्ट हो गई। २३१-३२ उन्होंने प्रेम-पूर्वक आभूषण धारण कर लिये। उनका वेश नवीन जैसा दिखने लगा। ३३ राजा रानियों के पास से चले गए और जाकर दशरथ से मिले। ३४ उन्होंने भ्रमण करके लोमपाद के राज्य का निरीक्षण किया और विदा होकर लौट गए। ३५ वह अयोध्या नगर में जाकर प्रविष्ट हुए। नर-नारी उन्हें देखकर सन्तुष्ट हो गए। ३६ हे भगवती ! सुनो इसके पश्चात् चम्पावती नरेश सभासद, मंत्रियों तथा चतुरंगिनी सेना को लेकर आखेट के लिये निकले और कण्डुक वन में जा पहुँचे। ३७-३८ पकड़ो-पकड़ो मारो-मारो का प्रचण्ड कोलाहल होने लगा। गर्भिणी हिरणियाँ, जीव, जन्तु कस्तूरी मृग जिनमे से किसी का गर्भ दस महीने और किसी का नौ महीने का था। सब के सब दूर देश को चले गये। ३९-२४० शब्द सुनकर सभी का मन दुःखी हो गया। उन्होंने धर्मदेव का स्मरण करते हुए कहा कि इस दण्ड से हमारी रक्षा कीजिये। २४१ उन्होंने अत्यन्त कातर होकर आर्त पुकार की तो भगवान ने अंतरिक्ष मे विचार किया। ४२ चारों

चारि मेघकु सुमरणा कले रवि पुण । मिळिले चारि मेघ आसिण ततक्षण ४३
बोइले कि कार्य्यरे सुमरणा कल । बिरञ्चि बोइले धरतिरे बृष्टि कर ४४
चम्पावती नग्रर महीपाळ आस्ति ।कण्टुक बनरे पशि जीवंकु मारु अछि ४५
गर्भणी पशुमाने मोते सुमरिले । बारेक मोते रख बोलिण स्तुति कले ४६
तांकर आरत देखिण तुम्भंकु सुमरिलु । रक्षा करु पशुजीव तुम्भंकु कहिलु ४७
शुणि करि (बन जीव) मेघ माने मने क्रोध कले ।
छाया माया साधिण जळ बृष्टि कले ४८
मूषळ धारा प्रमाणे बर्षा कले जळ । पबन बहिला जे अतिहिँ असम्भाळ ४९
हस्ती अश्व सेनापति रथि जे पादान्ति । समस्ते कातर हेले बर्षा घोर देखि २५०
निबिड़ अन्धकार बर्षा घोर कला । रजनी दिबस जे बारण नगला २५१
रात्र दिबस जे बरषा कले जळ । कातर हेले राजा बनस्त भितर ५२
रजनी शेषरे भांगिला पुणि मेघ । आलोक दिशिला जे पुणि दशदिग ५३
देखिण राजन सैन्यकु चाहिँ कहि । धर्मरे पाळु जे अधर्म किस पाइँ ५४
सैन्य बळ मोर जे अनेक क्षय़ गले ।हस्ती घोड़ा अनेक पादान्ति जे मले ५५
धर्म छाड़ि अधर्म कलरे मेघ माळ । मोर शाप तुम्भर घोटुरे एबे काळ ५६
दिनरे नर्बाष अदिने कर बृष्टि ।आर बेळे कोप मन नोहु जेतोर बृष्टि ५७

मेघ स्मरण करते ही गर्जन करते हुए उसी समय वहाँ आ गए । ४३ उन्होंने कहा कि आपने किस कारण से हमारा स्मरण किया है। विरंचि ने कहा कि पृथ्वी पर वृष्टि करो । ४४ चम्पावती नगर का राजा कण्टुक वन में आकर घुसा हुआ जीवों को मार रहा है । ४५ गर्भ वाले पशुओं ने मेरा स्मरण किया है। "एक बार मेरी रक्षा कीजिये" इस प्रकार उन्होंने स्तुति की है । ४६ उनका दु:ख देखकर मैंने तुम्हें स्मरण किया है और पशुओं की रक्षा करने के लिये आपसे कहा है । ४७ यह सुनकर जल जीव मेघ क्रुद्ध हो गए। उन्होंने छाया माया के साथ जल वृष्टि की । ४८ उन्होंने मूसलाधार वर्षा की। अत्यन्त वेगशील झंझाबात चलने लगा । ४९ हाथी, घोड़े, रथी, सेनापति तथा पैदल सिपाही सभी घनघोर वर्षा देखकर कातर हो गए । २५० घनघोर वर्षा से घना अन्धकार छा गया। पता ही नहीं चलता था कि रात है अथवा दिन । २५१ रात-दिन जल वृष्टि हुई। राजा वन के भीतर दु:खी हो गए । ५२ रात्रि की समाप्ति पर मेघ छितरा गये। दसों दिशाओं में प्रकाश दिखने लगा । ५३ यह देखकर राजा ने सेना से कहा कि धर्म का पालन करते हैं। अधर्म किसलिये हो रहा है । ५४ मेरी बहुत सेना नष्ट हो गयी। बहुत से हाथी, घोड़े तथा पैदल सिपाही मर गए । ५५ अरी मेघमालाओ तुमने धर्म का परित्याग करके अधर्म किया है। अब काल स्वरूप मेरा शाप तुम्हें लग जाए । ५६ तुम समय पर वर्षा न करके कुदिन में वर्षा कर रहे हो अतः

एते बोलिण राजन सैन्य बळ खोजि । रण भग्न होइला राज्यकु गला बेगि ५८
आपणा राज्यरे जाइ हेला पर बेश । मन दुःखे राजन रहिला निज वास ५९
चारि मेघ मेल होइ इन्द्र पुरे गले । मान्य धर्म करि इन्द्रकु कहिले २६०
बोइले जम्बु द्वीपरे चम्पावति पुर । लोमपाद राजा जे सेथिर महीपाळ २६१
मृगया बिनोदरे कण्टुक वन गला । सेथिरे अनेक पशु गर्भणी थिले परा ६२
से स्त्रीमाने रबिकु सुमरिले । गर्भ भारि हेबारु पळाइ न गले ६३
बिरञ्चि सुमरणा कले जे आम्भंकु । आम्भे माने तांक आगरे मिळिलाकु ६४
कश्यप नन्दन कहे शुणहे तुम्भे माने । चम्पावती राजा जे पारिधि करे बने ६५
से जीव माने आकुण हेउण छन्ति वन । गर्भ हेबारु केणिकि न पारे जाइण ६६
शुणि करि आम्भे माने जळ बृष्टि कलु। गर्भणी जीवमानंकु आम्भे उद्धारिलु ६७
लोमपाद राजा आम्भंकु गाळि देला । धिकार बचन जे अनेक बोइला ६८
शुणि करि सुर राजा कहिला बचन । अधर्मी राजा राज्ये नकर बरषण ६९
बार बर्ष पर्जयन्ते से राज्ये न पाळिब । मरन्तु जीब जन्तु नाश होन्तु सर्ब २७०
सेहि पाप राजा शरीरे पुण बहु । गरब झींगास हृदरे पुण बहु २७१
जेते बेळे बिभाण्डक पुत्र ऋष्य शृंग । प्रवेश होइ कहिले बृष्टि जे करिब ७२
शुणिण चारि मेघ जे जाहा स्थाने गले । ईश्वर कहिबारु पार्बती शुणिले ७३

अगली बार कुपित होकर तुम्हारी वृष्टि न हो। ५७ इतना कहकर राजा ने सैन्यदल को खोजकर आखेट रोक दिया और शीघ्र ही राज्य को चला गया। ५८ वह अपने राज्य में जाकर प्रविष्ट हुआ और दुःखित मन से अपने महल में रह गया। ५९ चारों मेघ मिलकर स्वर्गलोक गए। उन्होंने इन्द्र की अभ्यर्थना करके उनसे कहा। २६० जम्बूद्वीप में चम्पावती नगर है। राजा लोमपाद वहाँ का महिपाल है। २६१ वह मृगया करने कण्टुक वन में गया था। वहाँ पर बहुत गर्भधारी पशु थे। ६२ उन पशु पत्नियों ने सूर्य का स्तवन किया। गर्भ भार होने के कारण वह भाग नही सके। ६३ सूर्यदेव ने हमारा स्मरण किया। हम लोग उनसे जाकर मिले। ६४ कश्यप कुमार ने कहा कि तुम लोग सुनो। चम्पावती नरेश वन में आखेट कर रहा है। ६५ वह जीव-जन्तु वन में व्याकुल हो रहे हैं। गर्भ होने के कारण वह कहीं भी नहीं जा पा रहे। ६६ यह सुनकर हम लोगों ने जल की वर्षा की और गर्भ वाले जीव जन्तुओं की रक्षा की। ६७ राजा लोमपाद ने हमें अनेक प्रकार से धिक्कारते हुये अपशब्द कहे। ६८ यह सुनकर देवराज इन्द्र ने कहा कि उस पापी राजा के राज्य में वर्षा मत करो। ६९ बारह वर्ष पर्यन्त उस राज्य का पालन न करना। भले ही सारे जीव जन्तु मर जायें। २७० वही पाप राजा के शरीर से गर्व, व्यंग शब्द के रूप में हृदय में रहें। २७१ जिस समय विभाण्डक के पुत्र शृंगी ऋषि आकर कहें, तब वर्षा करना। ७२ यह

क्षीर सागर जळधि लंकाकु अणाइबि । लवण सिन्धुजळ मुँ वहन कराइबि १३
लंका गड़ जम्बु द्वीप मण्डले जेते ग्रन्थि । समस्ते क्षीर भक्षिण हेवे शान्तिमूर्त्ति १४
नारायणर बनिता कमळाकु मुँ नेबि । तांकु हरिले कमळा कान्त बोलाइबि १५
तेबे मोर मन जे होइब तृपति । एते बोलि रावण हरिला तोर मति १६
धरिण रतिरंग कला से असुर ।नारायणंकु जिणि नारायण हेवा मन तार १७
से छळ गोटि तोर अछि टिकि मने । साप्य देइ अछु असुरकु से दिने १८
से रावण दैत्यकु मारिबु आम्भे कूटे । नारायण जन्म हेबे अल्प दिन अन्ते १९
तुम्भर दुहिता जे दुइ गोटि जाण । स्तम्भन मोहन तु देलु तांक नाम २०
ते दुहिँकि भेदि एवे चम्पावती नग्र । नटकारी घररे जन्म होन्तु वेग २१
मुकुता माणिक्य जे नटकारी बेनि । लोमपाद राजांकर अटन्ति खटणी २२
से दुइ नारी गर्भे ए दुइ जनमिबे । बार वर्ष नव जुबा स्वरूप बहिबे २३
चाहिँले ऋषिमाने होइबे तांकु मोहि ।
वश्य उच्चाटन शिखाइबे तांकर दुइ आई २४
चम्पावती नग्र जे अपाळक हेब ।सुर राजा विप्र शाप से राजा लभिब २५
जरता काम मोहिनी एमानंक नाम हेब।रुष्य श्रृंगकु आणिवाकु जिबे जे उद्वेग २६

गुरु बनेगा। अब मैं वासुदेव जैसा महान महिमावन्त बन जाऊँगा। १२ क्षीर समुद्र को मैं लंका में मँगवा लूंगा। लवण समुद्र से मैं जल वहन कराऊँगा। १३ लंका दुर्ग तथा जम्बूद्वीप मण्डल में जितने भी लोग हैं समस्त क्षीर पान करके तृप्त हो जाएँगे। १४ नारायण पत्नी लक्ष्मी को मैं ले लूंगा। उसका हरण करने पर मैं लक्ष्मी पति कहलाऊँगा। १५ तभी हमारा मन तृप्त होगा। इस प्रकार कहकर रावण ने तुम्हारे मन को फुसलाया। १६ फिर उस राक्षस नें पकड़कर रति क्रीड़ा की। उसका मन भगवान को जीतकर भगवान बनने का था। १७ क्या उसका वह छल तुम्हें याद है। तुमने असुर को उस दिन शाप दिया था। १८ हम उस दैत्य रावण को छल करके मारेंगे। थोड़े ही दिनों में भगवान जन्म गहण करेंगे। १९ तुम्हारे दो पुत्रियाँ हैं जिनका नाम तुमने स्तम्भन तथा मोहन रक्खा है। २० वे दोनों चम्पावती नगर में नटकारी के घर में जाकर जन्म लेंगी। २१ मुक्ता तथा माणिक्य यह दोनों नृत्यांगनाएँ राजा लोमपाद की सेवा में रत हैं। २२ उन्हीं दोनों स्त्रियों के गर्भ से यह दोनों जन्म ग्रहण करेंगी। बारह वर्ष में यह नवयौवन स्वरूप को धारण करेंगी। २३ उन्हें देखने पर ऋषि लोग भी मोहित हो जाएँगे। उनकी दोनों मातायें उन्हें वशीकरण तथा उच्चाटन की शिक्षा देंगी। २४ चम्पावती नगर दुर्भिक्षग्रस्त हो जाएगा। वह राजा देवराज इन्द्र तथा ब्राह्मण का शाप प्राप्त करेगा। २५ इनका नाम जरता तथा काममोहिनी होगा। यह उद्वेग पूर्वक श्रृंगी ऋषि को लाने के लिये जाएँगी। २६ कौशिक वन में इनकी भेंट श्रृंगी ऋषि से

रुष्य शृंगकु भेट हेबे कौशिक बनरे । उच्चाट मोहिनी जे लगाइबे तारे २७
से रुषि शृंगरे करिबे रतिलीळा । दुइ पुत्र दुइ नारी गर्भु जन्म परा २८
बेनि पुत्र बिभाण्डक आश्रमेदेइ पुण । चबिश बर्ष तोर संगरे मिळे जाण २९
तेबे से रावण होइब प्राणे नाश । एते बोलि देवताए कहिले बिशेष ३०
शुणिण रम्भा नारी मनरे तोष हेला । दुइ कुमारींकि डाकिण फांका देला ३१
बोइला मर्त्यपुरे जाअ गो बेग पुण । देवंक कार्ज्य कले मरिब रावण ३२
ए जन्म कथा तुम्भर मनरे चेता थिब । नव जुबा होइण सम्भाळि होइ थिब ३३
ऋष्य शृंगकु देखिले करिब रतिरंग । अन्य संगे रति कले स्वर्ग नोहे भोग ३४
दुहिँकरि गर्भरु दुइ पुत्र हेबे । ऋषि कुमर तपोबन्त बोलाइबे ३५
शुणि करि दुइ कुमारी चळि गले । चम्पावती नग्रजाइ प्रबेश होइले ३६
मोति माणिक्य नटकारी गृहरे प्रबेश । सेदिन सेहु जे हेले पाका जे स्परस ३७
चारि दिने दुइ नारी शुद्ध जे स्नान कले। अगुरु चन्दन कर्पूर लगाइले ३८
अतर चूआ कुंकुम तिनिक बोळि होइ । नव जुबा स्वरूप प्रथमे सेहु होइ ३९
सात दिने दुइ कन्या बिचार कले बसि ।
पञ्च वर्ण पुष्पमाळा धरिण धण्डा रञ्चि ४०

होगी। यह उनमें उच्चाटन तथा मोहन शक्ति लगायेंगी। २७ उन शृंगी ऋषि के साथ यह रति प्रसंग करेंगी। तब दोनों स्त्रियों के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न होंगे। २८ दोनों पुत्रों को विभाण्डक के आश्रम में छोड़कर चौबिस वर्षो में यह तुम्हारे पास पहुँच जाएँगी। २९ तब उस रावण के प्राण का विनाश होगा। देवताओं ने विशेष प्रकार से उससे इस प्रकार कहा। ३० यह सुनकर रम्भा नारी का मन सन्तुष्ट हो गया। दोनों कुमारियों को बुलाकर उसने बिदा दी। ३१ उसने उन्हें शीघ्र ही मृत्युलोक में जाने को कहा और यह भी बोली कि तुम देवताओं का कार्य करो तभी रावण का विनाश होगा। ३२ इस जन्म की बात तुम्हारे ध्यान में रहेगी। नवयुवा होने पर इसका ध्यान रखना। ३३ शृंगी ऋषि को देखने पर उनसे ही रति क्रीड़ा करना। अन्य के साथ समागम करने से तुम्हें स्वर्गसुखभोग प्राप्त न होगा। ३४ दोनों के गर्भ से दो पुत्र होगे। वह दोनों तपस्वी ऋषि कुमार कहे जाएँगे। ३५ यह सुनकर दोनों कुमारियाँ चली गई और जाकर चम्पावती नगर में प्रविष्ट हुई। ३६ वह मोती, माणिक्य नृत्यकारियों के घर में जा पहुँची। उसी दिन वह दोनों ऋतुमती हुई थीं। ३७ चार दिनों पर उन नारियों ने शुद्ध स्नान किया। फिर उन्होंने अगुरु चन्दन तथा कपूर लगाया। ३८ अतर, चोवा तथा कुमकुम तीनों को लगाकर सर्वप्रथम उन्होंने नवयुवा स्वरूप सजाया। ३९ दोनों कन्याओं ने बैठकर सात दिन तक विचार किया फिर आजानु लम्बित पाँच रंगों के पुष्पों की माला बनाकर उसे लेकर उन्होंने कहा कि चलो इस शरीर

बोइले ए अंग गोटि पवित्र अंग करि ।दुइ गोटि विप्रंकु आणिवा चाल वरि ४१
एमन्त बिचारि दुहें बेश भोग हेले । आग्र अळंकारे दुहें भुषण होइले ४२
पाञ्च घड़ि रात्रठारे गले जे नग्रबुलि । नबजुबा स्वरूप दुइ विप्र चळि ४३
दुहें आगोळिण बरण तांकु कले । आम्भर नवरे आज आस हे बोइले ४४
उच्चाट करिवारु दुइ बिप्रे गले ।मोति माणिक्य गृहरे प्रवेश जाइ हेले ४५
पलंक उपरे वसिले दुइ विप्र । एहि समग्ररे रम्भा नारी जे दोहित ४६
जोति रूप धरिण बिप्रंक अंगे पशि ।एमन्त समग्ररे मोति माणिक्य जे आसि ४७
ताहांकु देखि विप्र मोह गले । दुइ नारीकु दुइ विप्र कोळ कले ४८
अधर चुम्बिण कुच मद्र्दन कले । नीविवन्ध फिटाइ रति रे भोळ हेले ४९
ज्योति बीर्ज्य खसिण नारींक गर्भ रहि। से दिन गर्भबास होइले से दुइ ५०
रजनी शेष अन्ते विप्रे चळिगले । शउच होइ निज मन्दिरे मिळिले ५१
मोति माणिक्य जे दुइ नटकरी ।मद्र्दन माजणा सारि वेगे स्नान करि ५२
तिनि दिन उत्तरु राजार सेवाकरि । नृत्यरंग शवदरे राजांकु तोषकरि ५३
दशमास गर्भ जे होइला ताहांकर । दुहिता दुइगोटि जन्म शुभवेळ ५४
पञ्चु आति षठिघर गलाक उठि आरि ।बार जावा दिन से शउच विधि करि ५५

को पवित्र करने के लिये दो ब्राह्मणों को वरण करके ले आएँ। ४०-४१ इस प्रकार विचार करके दोनों अलंकारादि से सुसज्जित होकर पाँच घड़ी रात्रि से ही नगर भ्रमण करने निकलीं। दो नवयुवक ब्राह्मण चले जा रहे थे। ४२-४३ दोनो ने आगे बढ़कर उन्हे वरण कर लिया और आज उन्हें अपने निवास पर आने को कहा। ४४ उच्चाटन कर देने के कारण दोनो ब्राह्मण गए और मोती-माणिक्य के घर में जा पहुँचे। ४५ दोनों विप्र पलंग के ऊपर वैठ गए। इसी समय रम्भा नारी की दोनों पुत्रियाँ ज्योतिरूप धारण करके ब्राह्मणों के अंग मे समा गईं। इसी समय मोती माणिक्य आ गईं। ४६-४७ उन्हें देखकर ब्राह्मण मोहित हो गए। दोनों नारियों को दोनों ब्राह्मणो ने गोद में वैठा लिया। ४८ उन्होने उनका अधर चूम कर कुचों का मर्दन किया। फिर कटिवन्ध को खोल कर रति क्रीड़ा में लीन हो गए। ४९ ज्योति वीर्य स्खलित होकर नारियों के गर्भ मे रह गया। उस दिन वह दोनों गर्भवती हो गईं। ५० रात्रि शेष होने पर दोनो ब्राह्मण चले गए और पवित्र होकर अपने निवास पर जा पहुँचे। ५१ मोती और माणिक्य दोनों नृत्यांगनाओं ने मर्दन मार्जन होकर शीघ्र ही स्नान किया। ५२ तीन दिनों के उपरान्त उन्होंने राजा की सेवा करके नाच रग से युक्त शब्दों से उनका मन सन्तुष्ट कर दिया। ५३ उनके गर्भ दस माह के हो गए। शुभ योग में दो पुत्रियों का जन्म हुआ। ५४ पंचमी पूजा पष्ठी उठिआरी की तथा बरहों के दिन उन्होंने विधिपूर्वक सौच स्नान

ज्योतिष ड़काइ नाम ताकु देले ।जरता काम मोहिनी ज्योतिष बोइले ५६
नाम देइ खडिरत्न निज पुर गला ।दुइ कन्या निश्चिन्ते रहिले तहिँ परा ५७
दिनकु दिन कुमारी बढिले शशीप्राय़ । शोभा सुन्दर पण कहिले न जाए ५८
पार्वती बोइले देव असुर मारि बाकु । केते कूट जे बिचार कले ताकु ५९
ईश्वर बोइले से जे अमर बर पाइ । देला द्रव्यमान जे हस्तकु न असाइ ६०
रोंपिलार बृक्षकु जेन्हे कुण्ढन पाए पुण । थोइलर पदार्थकु चोर निए जाण ६१
हजिला पदार्थ जे लोडिले न पाइ ।जुबा काळर बळ कि बृद्धा काळरे रहि ६२
पार्वती बोइले देब शुण हे ईशान । लोमपाद राजा जे किस कला पुण ६३
ईश्वर बोइले जे राज्यरे तार रहि । बिचारिले देबताए बिपक्ष मोते होइ ६४
मृगय़ा बिनोदरे गलि जे मुहिँ पुण । अकाळ बृष्टिरे नाश गले सैन्य जाण ६५
एते बिचारि राजा जे सामन्त पात्र डाकि ।
बोइले जाग मुँ जे कलेक धर्म अछि ६६
सकळ पदार्थ जे भिआइ आण बेग । राजामानंकु बरण कर हे सदभाव ६७
बन्धुमानंकु मोर निमन्त्रि घेनि आस । दशरथ राजांकु हे आण मोर पाश ६८
शुणिण पात्र मन्त्री बेगे चळिगले ।बन्धुमानंक पाशकु दूत बेगे चळि गले ६९

किया । ५५ ज्योतिषी को बुलाकर उनका नामकरण किया गया । ज्योतिषी ने उनका नाम जरता तथा काम मोहिनी रक्खा । ५६ नाम रखकर ज्योतिषी अपने घर चला गया । दोनों कन्याएँ वहाँ भलीभाँति रहने लगीं । ५७ शशी के समान दिन प्रतिदिन कुमारियाँ बढ़ने लगीं । उनकी छवि तथा सुन्दरता के लिये कहा नहीं जा सकता था । ५८ पार्वती ने कहा हे देव ! राक्षस को मारने के लिये उन्होंने सोच विचार कर कितना षडयन्त्र रचा । ५९ शंकर जी ने कहा उसने अमरता का वर पाया । दी हुई वस्तु उसके हाथों में नहीं समा रही थी । ६० जिस प्रकार लगाया हुआ वृक्ष कट जाता है । संचित पदार्थ चोरी चला जाता है । खोई हुई वस्तु खोजने पर नहीं मिलती और जैसे युवाकाल का बल क्या बुढ़ापे में रहता है । ६१-६२ पार्वती ने कहा, हे ईशान दिशा के स्वामी शंकर जी ! सुनिए । फिर महाराज लोमपाद ने क्या किया । ६३ शंकर जी बोले कि उसने अपने राज्य में रहते हुए विचार किया कि देवगण मेरे विपक्ष में हो गए हैं । ६४ मैं तो आखेट के लिये गया था । हमारे सैनिक अकाल की वर्षा से नष्ट हो गए । ६५ इस प्रकार विचार करते हुए राजा ने सामन्त तथा सभासदों को बुलाकर कहा कि मैं यज्ञ करूँगा । इसी में धर्म है । ६६ आप लोग शीघ्र समस्त पदार्थ का प्रबन्ध करके ले आइये और राजाओं को प्रेम से वरण कर दीजिये । ६७ निमन्त्रित करके हमारे सम्बन्धियों को हमारे पास ले आइये और महाराज दशरथ को मेरे पास ले आइये । ६८ यह सुनकर सभासद तथा मन्त्री शीघ्रता से चल दिये । उन्होंने वन्धु-बान्धवों

दूर देशकु चार भेदिण देले पुण ।सामन्त माने गले अजोध्या देश जाण ७०
पात्र मन्त्री वेगे जे जान चढ़ि गले । कउरव देशरे प्रवेश होइले ७१
सकळ देश राजा नृपति जे वरि । दुहिता स्वयंवर अछइ सम्भाळि ७२
सकळ राजामानंकु निमन्त्रण कराइले । चन्दन गुआ पान नृपति मानंकु देले ७३
चम्पावती राज्यरे लोमपाद राजा । जाग करिवाकु मनकले राजा ७४
सकळ नृपवर होइले सनमान । वोइले स्वयंवर सरिले जिवु पुण ७५
शुणिण पात्र मन्त्री वेगे चळि आसि ।लोमपाद राजा जे देखिण हेले तोषि ७६
सकळ सामग्री जे रखिला स्थाने स्थाने । नग्रे उत्सव कला हरषर मने ७७
पात्रंक पाइँ नवर राजांकु उआस । सैन्य मानंक पाइँ स्थानहिँ विशेष ७८
बृक्ष मूळ मानंकरे वेदी कराइले । फळमूळ चन्दन घृत सम्पादिले ७९
बळराम दास जे बिचारे मनरे । शरण गलि मुँ वसुदेवंक चरणरे ८०
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । लोमपाद राजा सामग्री रखे भरि ८१
हटारी बजारी सामग्री सदावर्त्ती । स्थाने स्थाने सबु रखिला नरपति ८२
बिश्वकर्मा जाइण जाग शाळा निर्माकला ।
दुर्वासा ऋषिकि राजा आनन्दे बरिला ८३
वोइला जागरे मोर हुअ हे आचार्य्य । शुणिण मुनिवर अइले पुण वेग ८४

के पास शीघ्र ही दूत भेज दिये । ६९ सुदूर देशों में सन्देशवाहक भेज दिये गये । सामन्त लोग अयोध्या में जा पहुँचे । ७० सभासद तथा मन्त्री रथ पर चढ़कर कौरव देश में जा पहुँचे । ७१ पुत्री का स्वयंवर है । इसमें उन्होंने समस्त देशों के नरपालों का वरण किया । ७२ समस्त राजाओं को निमंत्रित करके उन्हे चन्दन चोवा तथा ताम्बूल अर्पित किये । ७३ उन्होंने कहा कि चम्पावती के महाराज लोमपाद ने यज्ञ करने का निश्चय किया है । समस्त राजागण सम्मानित होने पर बोले स्वयंवर की समाप्ति पर चले जाएँगे । ७४-७५ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्रतापूर्वक लौटकर आकर राजा लोमपाद से मिले । वह उन्हें देखकर संतुष्ट हो गये । ७६ स्थान-स्थान पर सारी सामग्रियाँ रखी गयी और नगर में प्रसन्न मन से उत्सव मनाये गये । ७७ पात्रों के लिये निवास, राजाओं के लिये अतिथिगृह और सेनापतियों के लिये विशेष स्थान निर्मित किये गये । ७८ वृक्षों के नीचे वेदिकाएँ बनायी गयी । फल, मूल, चन्दन घी आदि रख दिये गये । ७९ बलराम दास ने अपने मन में विचार किया कि मैं भगवान वासुदेव के चरणो की शरण में हूँ । ८० हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् राजा लोमपाद ने सामग्रियाँ भरकर रखवा ली थी । ८१ राजा ने स्थान-स्थान पर सदावर्त की समस्त सामग्री हाट वाजार में रखवा दी थी । ८२ विश्वकर्मा ने जाकर यज्ञशाला का निर्माण किया । राजा ने दुर्वासा ऋषि को आनन्दपूर्वक वरण किया । ८३ उसने कहा कि आप यज्ञ में मेरे आचार्य बनें । यह सुनकर मुनि श्रेष्ठ शीघ्रतापूर्वक आ

चम्पावती कटकरे प्रबेश जाइँ हेले । राजार नबर जाक जाइँण देखिले ८५
स्थाने-स्थाने सबु चिराळ सुबर्णरे । सुबर्णर चउरा दिशइ शोभा कारे ८६
प्रतिद्वार रम्भा वृक्ष पूर्ण कुम्भ अछि । चित्र पितुळामान कान्थरे लेखिछि ८७
नारि केळ चुत पत्र ड़ाळ जे माळमाळ । उपरे छामुण्डिआ होइछि निबाड़ ८८
नृत्यकारी माने नृत्य रंग करि । नटकारी माने बेशरे बिहरि ८९
जुबा स्तिरी माने तहिँरे आनन्द ।वृद्धा स्तिरी माने गायेणी करन्ति गोबिन्द ९०
जुबा पुरुषमाने सात पाञ्च मेळ । अति सुन्दरे बुलन्ति नबर ९१
बृद्ध नरमाने हरिनाम गाबन्ति टाणे ।शुआ शारी पढ़न्ति श्रीकृष्ण नाम तेणे ९२
बाळक बाळिकाए करन्ति खेळरस । एमन्ते आनन्द हेले से नग्रे जेते लोक ९३
देखिण ऋषि माने आनन्द भाब हेले ।धर्मरे अछन्ति बोलि मनरे बिचारिले ९४
नबर बुळिण जे जाग शाळा बुलि । देखिण जागशाळ होइछि बक्रस्थळी ९५
बिचारिले प्रमाद कि होइब ए पुरे । जाग शाळ गोटिए बक्र जे बिहितरे ९६
एमन्त बिचारि मुनि राजांकु ड़काइले ।लोमपाद राजा ऋषि पाशरे मिळिले ९७
दुर्बासा बोइले राजा आम्भ ठारु शुण ।
जागशाळ शोधिबा ऋषि ब्राह्मणंकु आण ९८

गये । ८४ वह चम्पावती दुर्ग में जाकर प्रविष्ट हुये । उन्होंने राजा के महल को घूमकर देखा । ८५ स्थान-स्थान पर सुन्दर वर्ण वाली पताकाएँ लगी थीं । सुवर्ण के चबूतरों की शोभा देखते ही बनती थी । ८६ प्रत्येक द्वार पर केलों के वृक्ष तथा पूर्ण कुम्भ रक्खे थे। दीवारों पर पुत्तलिकाओं के चित्र बने थे । ८७ नारियल तथा आम्रपल्लवों के बन्दनवार लगे थे और उनपर चँदोवा तान दिये गये थे । ८८ नृत्यकार लोग नृत्य करके प्रभाव जमा रहे थे और नट लोग वेशभूषा सुसज्जित करके विचरण कर रहे थे। ८९ युवा स्त्रियाँ वहाँ आनन्द मना रहीं थीं और वृद्ध स्त्रियाँ भजन गा रहीं थीं । ९० युवक पुरुष लोग सात-पाँच के झुण्ड में अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक नगर में घूम रहे थे। वृद्ध लोग उच्चस्वर से भगवान का नाम ले रहे थे। तोता मैना श्रीकृष्ण का नाम रट रहे थे। ९१-९२ बालक बालिकायें खेल-कूद में मग्न थीं । इस प्रकार जितने भी लोग उस नगर में थे । सबके सब आनन्द में मग्न थे । ९३ यह देखकर ऋषिमंडल प्रसन्न हो गया । उन्होंने मन में विचार किया कि यह सब धार्मिक भावनाओं में लीन हैं। ९४ उन्होंने नगर-भ्रमण करके यज्ञशाला का निरीक्षण किया। उन्होंने देखा कि यज्ञशाला टेढ़ी हो गई है। ९५ उन्होंने विचार किया कि इस नगर में कुछ उपद्रव होने वाला है। क्योंकि यज्ञशाला टेढ़ी बनी है। ९६ ऐसा विचार करके मुनि ने राजा को बुलाया। राजा लोमपाद ऋषियों के पास आ गये। ९७ दुर्वासा ने राजा से कहा कि हमारी बात सुनो। ऋषि और ब्राह्मणों को बुलवाओ।

राजन बोइले देव मो ठारु एवे शुण । ऋषि मानंकु तुम्भे अणाअ आपण ९९
द्विज बर मानंकु मुँ अणाउछि पुण । शुणिण दुर्बासा जे सुमरे ऋषिगण १००
दुर्बासा सुमरन्ते सकळ ऋषि जाणि । अइले चम्पावती राज्यकु ऋषि पुणि १०१
नव कोटि ऋषि जे जाइण ठुळ हेले । बृक्ष मूळ मानंकरे सकळ रहिले २
अगुरु चन्दन नेइ घृत संगे देला । कन्दमूळ फळ नेइ ऋषिकि सर्मपिला ३
देखिण ऋषि माने हरषमन हेले । शौच निर्मळ होइ होम विधि कले ४
चारि बेद गायन कले मुनिबर । एथु अनन्तरे राजा डकाइ विप्र बर ५
पाञ्च सात राज्यरु बिप्रवर बरि । दुइ लक्ष ब्राह्मण मिळिले सेहु बरि ६
कुशपात्री तम्बागडु घेनिण द्विजवर । प्रवेश होइले जाइ आनन्द मनर ७
विप्रंकु देखिण राजा नमस्कार कला । आवर बिप्रंकु जे गौरव कराइला ८
बिप्रंकु घेनिण ऋषि जाग शाळ शोधि । जव तीळ धान बुणिले ऋषि रुन्धि ९
तिनि दिने सेठारे उठिले वृक्षमान । स्वरूप दिशिला रुधिर वर्ण पुण ११०
देखिण तपनिधि मनरे विचारिले । हेव उत्पत ए राज्ये बोलिण बोइले १११
जागरे अनुकूळ कले ऋषि गण । मेष जाग आरम्भ कलाक राजन १२
एमन्त समयरे राजागण मिळि । राजार बन्धु माने मिळिले वेग करि १३

हम यज्ञशाला का शोधन करेंगे । ९८ राजा ने कहा हे देव ! आप मेरी बात सुनें । ऋषियों को आप स्वयं बुलायें और ब्राह्मणों को मैं बुलवा रहा हूँ । यह सुनकर दुर्वासा ने ऋषि मंडल का स्मरण किया । ९९-१०० दुर्वासा के स्मरण को समझकर समस्त ऋषिमंडल चम्पावती राज्य में आ गये । १०१ नौ करोड़ ऋषियों का मंडल आकर एकत्रित हो गया और सभी लोग वृक्षों के नीचे टिक गये । २ अगुरु, चन्दन लेकर घृत के साथ दिया गया और कन्दमूल फल ऋषियों को समर्पित किया गया । ३ यह देखकर ऋषि लोगों का मन प्रसन्न हो गया । स्नान करके स्वच्छ पवित्र होकर उन्होंने हवन की विधि सम्पादित की । ४ मुनि श्रेष्ठ ने चारों वेदों का गान किया । इसके पश्चात् राजा ने ब्राह्मण समूह को बुलाया । ५ पाँच-सात राज्यों से श्रेष्ठ ब्राह्मणों को वरण किया गया । दो लाख ब्राह्मण, जो वहाँ मिले उन्हें भी वरण कर लिया । ६ श्रेष्ठ ब्राह्मण प्रसन्नमन से कुश पात्र तथा ताँबे का कमण्डल लिये आ पहुँचे । ७ ब्राह्मणों को देखकर राजा ने नमस्कार किया और ब्राह्मणों का सम्मान करवाया । ८ ब्राह्मणों को लेकर ऋषि ने यज्ञशाला का शोधन करके जौ, तिल तथा धान बो कर रूँध दिये । ९ तीन दिनों में वहाँ अंकुर फूट गये । वहां की छवि रक्त वर्ण की दिखाई देने लगी । ११० यह देखकर तपोनिधि ने मन में विचार किया । और कहा कि इस राज्य में उपद्रव होगा । १११ ऋषियों ने यज्ञ का शुभ मुहूर्त निकाला । राजा ने मेषयज्ञ प्रारम्भ किया । १२ इसी समय में राजागण आ गये और राजा के बन्धु-बान्धव भी त्वरित गति से आ मिले । १३ उन्हें देखकर लोमपाद ने उनकी

देखिण लोमपाद मान्य धर्म कला ।सकळ राजांकु जाइ ओळग मेळाइला १४
राजांकु नबर जे पात्रंकु उआस। सैन्य बळ मानंकु घर जे बिशेष १५
नागबळ अश्व बळ सारथि रथींकि। एमानंकु स्थान देला बनस्तरे ड़ाकि १६
अनेक चार सेथिरे चर्च्चा कले रहि। सनमान पाइण नृपति सर्बे तहिँ १७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी ।जाग शाळारे राजा देखिला जाइ करि १८
ऋषि ब्राह्मण ठुळ होइण जाग कले। चारि बेद उच्चारि अग्निकि बरिले १९
चन्दन अगुरु काठरे लगाइ हुताशन। घृत द्यन्ते अग्नि प्रबळ हेले पुण १२०
आहुति देले जे देबंक नाम धरि। दशरथ राजा जे मिळिले जाइ करि १२१
राजार शाळक गणे आसिण सर्बे मिळि। मान्य धर्म कले से राजांकु जाइकरि २२
दशरथ राजार जे शाळकगण थिले ।दशरथ राजांकु देखिण ओळग मेलाइले २३
कुशळ पुच्छ पुच्छि होइले सकळ। आनन्दरे नृपति जे बिहरे सेहि पुर २४
एथु अनन्तरे एबे भगवती शुण। जागरे बसिले लोमपाद राजा पुण २५
समस्तंकु चर्चा जे पात्र मन्त्री कले। स्थान बुझिण सबु अन्न दान देले २६
सदाव्रत पणरे देलेक भोजन। बिष्णु प्रतिमा मानंकु भोग से देइण २७
शिवाळयरे बेलपत्र चम्पा देले। धेनु क्षीर नेइण शिररे निउड़िले २८

सम्मानपूर्वक अभ्यर्थना की और सभी राजाओं को जाकर प्रणाम किया। १४ राजाओं को महल, सभासदों को भवन और सैनिक दल को विशेष प्रकार के घरों में रखा गया। १५ हाथी घोड़ों के दलों को, सारथी तथा रथियों को बुलाकर उन्हें वन्य अंचलों के स्थानों पर बुलाकर ठहरा दिया गया। १६ बहुत से सेवकों ने वहाँ रहकर उनकी सेवा सुश्रुषा की। वहाँ सभी राजाओं ने सम्मान प्राप्त किया। १७ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् राजा ने जाकर यज्ञशाला का निरीक्षण किया। १८ ऋषियों और ब्राह्मणों ने एकत्रित होकर यज्ञ किया। उन्होंने चार वेदों का पाठ करके अग्नि का वरण किया। १९ चन्दन तथा अगुरु की लकड़ी में आग लगाकर घृत आदि डालने से अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई। १२० उन्होंने देवताओं का नाम लेकर आहुति डाली। तभी राजा दशरथ जाकर उनसे मिले। १२१ राजा के साले सभी एक साथ मिलकर आ गये। उन्होंने जाकर राजा की सम्मानपूर्वक अभ्यर्थना की। २२ राजा दशरथ के जो साले थे उन्होंने दशरथ को प्रणाम किया। आपस में उन लोगों की कुशल वार्ता हुयी। राजा उस नगर में प्रसन्न होकर विचरण करने लगे। २३-२४ हे भगवती सुनो। इसके पश्चात् महाराज लोमपाद यज्ञ में बैठ गये। २५ सभासदों और मंत्रियों ने सबकी आवभगत की। स्थान समझकर सबको अन्नदान दिया। २६ उन्होंने सदावर्त की भाँति भोजन दिया और विष्णु की प्रतिमाओं को भोगराग चढ़वाया। २७ शिवालय में वेलपत्र तथा चम्पा के पुष्प चढ़वाये और गोदुग्ध लेकर सिर पर

देबी मानंकु देले बोदा जे छागळ। देइण तोष कले मन जे तांकर २६
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। राजा मानंकु चार कहिले जाइ करि १३०
शुणिमा नरेन्द्र हे राज्यर अधिकारी। असम्भव कथाए देखिलु दण्ड धारी १३१
चण्डाळ घरे जात पद्मिनी नामे कन्या।से कन्या अरजिला अनेक धन सिना ३२
बेनि लक्ष भरण धान जे गदा करि। मेरु गिरु समाने रखिछि ठुळ करि ३३
ताहार पिता पुणि करिण अछि सत्य।मो दुहिता बिभा हेले मुँ देबइँ निश्चत ३४
शुणिण राजामाने जे चमत्कार हेले। से चण्डाळ दुहिता देखिण बोइले ३५
जागासरू देखिबा अणाइ सबु पुण। एबे ताकु देखिबार नुहइ कारण ३६
एते बोलि बिचार जे कले राजागण। एथु अनन्तरे जे पार्वती देबी शुण ३७
जाग कले से राजा बेनि मास पुणि।सम्पूर्ण होइला जाग बेळ काळ जणि ३८
जाग सम्पूर्ण हेबारु पूर्णाहुति देले। त्रिदश देवताए आसिण मिळिले ३६
समस्ते हबिभाग कलेक भोजन। चारि मेघ सुर राजा न आसे से स्थान १४०
देखिण देवगण बिकळ मन हेले।तुम्भे न भक्ष किम्पा बोलिण पचारिले १४१
सुर राजा बोइला से मोते चाळि देला। अनेक धिकारि मोते बचन बोइला ४२
क्रोधरे मुहिँ ताकु देलि जे शाप पुण।तोर राज्य न पाळिबि बार बर्ष जाण ४३

अभिषेक कराया। २८ देवियों को भैसों और बकरों की वलि देकर उनके मन को संतुष्ट किया। २६ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् दूतों ने जाकर राजाओं से कहा। हे राजनगरों के अधिपति नरेन्द्र ! सुनिये। हे दण्डधारी ! हमने एक असम्भव बात देखी है। १३०-१३१ चाण्डाल के घर में पद्मिनी नाम की कन्या उत्पन्न हुयी। उसने प्रचुरधन अर्जित किया है। ३२ उसने दो लाख भार धान एकत्रित किये हैं और उन्हें सुमेर पर्वत के सामने ढेर लगा रखा है। ३३ चाण्डाल ने कहा है कि जो मेरी पुत्री से विवाह करेगा। उसे यह सब निश्चित रूप से दिया जायेगा। यह सुनकर राजा लोग अचम्भे में पड़ गये। उन्होंने उस चाण्डाल कन्या को देखने को कहा। ३४-३५ यज्ञ की समाप्ति पर उसे बुलाकर देखेंगे। इस समय उसके देखने का कोई प्रयोजन नहीं है। ३६ इस प्रकार कहकर राजाओं ने विचार-विमर्श किया। हे देवी पार्वती ! सुनो। इसके पश्चात् उस राजा ने दो महीने यज्ञ किया और शुभ काल समझकर यज्ञ पूर्ण किया। ३७-३८ यज्ञ की समाप्ति पर पूर्णाहुति दी गयी समस्त देवगण वहाँ पर आ गये। ३६ सबने हवि का भाग ग्रहण किया। चार मेघ तथा देवराज उस स्थान पर नही आये। १४० यह देखकर देवताओं का मन व्याकुल हो गया। उन्होंने प्रश्न किया कि आप लोग भक्षण क्यों नहीं कर रहे हैं। १४१ राजा इन्द्र ने कहा कि इसने मुझे अपशब्द कहे थे। और नाना प्रकार की बातें कहकर मुझे धिक्कारा था। ४२ क्रोध से मैंने उसे शाप दे दिया कि मैं तेरे राज्य में बारह वर्ष तक वर्षा नहीं करूँगा। ४३ तू नर-

केते बळवन्त राजा अटुरे नर देही। मनुष्य होइण तोर एते गर्ब होइ ४४
केमन्ते हबि आउ मुँ करिबि भोजन। शुणिण देवताए होइले मउन ४५
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। दुर्बासा ऋषि जे पूर्णाहुति सारि ४६
तपोबळे ऋषि जे जाणिले ताहा पुण। सुर राजा मेघ माने न कले भोजन ४७
पूर्ण आहुति सारिण राजांकु ऋषि कहि। सकळ देवता हबि भोजन कले रहि ४८
सुर राजा चारि मेघ न कले भोजन। तोते अमान्य कले जे स्वर्ग इन्द्र पुण ४९
राजन बोइले से आगे दुःख देला। अकाळ बृष्टि करि सैन्य मो मराइला १५०
पछे हबि न भुञ्जे मोहर जोगे पुण। निश्चय नाश मोते करिब सुरराण १५१
धार्मिक होइ जेबे अधर्म पण कला। देबता होइ जेबे मनरे क्रोध हेला ५२
जुगान्तरे शाप जे मोहर तारे रहु। समस्तंक मुखरे से जे गाळि निन्दा पाउ ५३
दुर्बासा बोइले तु जे मन्द कृत्य कलु। पाळिबा आधिपतिंकि नजाणि गाळि देलु ५४
राजन बोइले से जे माइले मोर बळ। बर्ष दिन नुहइ अटइ खराकाळ ५५
दुर्बासा बोइले राजा पारिधि बने गलु। ग्रीषम काळरे किम्पा अग्नि लगाइलु ५६
से कण्टुकि बनरे जेतेक जीव जन्तु। जीवंकर नारी माने से थिरे पात्र हेतु ५७
बर्षा शेषरे से गर्भ होन्ति पुण। बिषम तापरे ताब्दारे पिलामान ५८

शरीरधारी कितना बलशाली राजा है। मनुष्य होकर तुझे इतना अभिमान हो गया है। ४४ फिर मै किस प्रकार से हवि ग्रहण करूँ। यह सुनकर देवता मौन हो गए। ४५ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् दुर्वासा ऋषि ने पूर्णाहुति समापन की। ४६ ऋषि ने तपोबल से ज्ञात कर लिया कि देवराज तथा चारों मेघों ने भोजन ग्रहण नहीं किया है। पूर्णाहुति समाप्त करके ऋषि ने राजा से कहा कि समस्त देवताओं ने यहाँ उपस्थित होकर भोजन ग्रहण किया है। ४७-४८ देवराज इन्द्र तथा चारों मेघों ने भोजन ग्रहण नहीं किया है। स्वर्ग के इन्द्र ने तुम्हारी अवमानना की है। ४९ राजा ने कहा कि उसने आगे भी दुःख दिया था। असमय वर्षा करके इन्होंने मेरी सेना को मरवा डाला था। १५० फिर यह मेरे कारण यज्ञ की हवि नहीं ग्रहण कर रहे हैं। देवराज निश्चय ही मेरा विनाश करेंगे। १५१ धार्मिक होकर जब इन्होंने पाप किया तथा देवता होकर भी यदि इनके मन में क्रोध आ गया। ५२ तो युग-युग तक मेरा शाप उनको लगे। वह सभी के मुख से अपशब्द तथा निन्दा प्राप्त करें। ५३ दुर्वासा ने कहा कि तुमने मूर्खतापूर्ण कार्य किया है। पालनकर्त्ता को बिना समझे तुमने अपशब्द कहे। ५४ राजा ने कहा कि उन्होंने मेरी सेना को मारा था। वह तो वर्षा ऋतु न थी। ग्रीष्म का समय था। ५५ दुर्वासा ऋषि ने कहा, हे राजन् ! तुम मृगया करने बन में गये थे। ग्रीष्म ऋतु में तुमने अग्नि क्यों लगाई ? ५६ उस कन्टुक वन में जितने भी जीव-जन्तु थे। उनकी पत्नियों को वहाँ कष्ट मिला। ५७ वर्षा ऋतु की समाप्ति

ग्रीष्म शेषरे आम्भे हेलु जे प्रवेश । से नारी माने देखिलि विपत्ति काळ सेत ५९
आरत होइण से आम्भंकु सुमरिले । सुर राजा जाणिले सुर पुरे ज्ञात परे १६०
विचारिण जळ वृष्टि सेहु पुण कले । अनेक गर्भ स्तिरींकि सेहि उद्धारिले १६१
तु राजन व्याध जे होइण थिलु तांकु । मारन्तु गर्भ स्तिरी हरन्तु तांक वपु ६२
से हेतुकरि जे देवकु दोष देले । न रखिले दोष तो उपरे पडु भले ६३
सेथिर शकासरु उद्धार तांकु कला । तोते कुट होइण शास्ति जे बिहिला ६४
गर्जनरे भार्जन हेलुरे तुहि पुण । व्याध जातिरे हेलु तुहिरे राजन ६५
से हेतु तोर द्रव्य भोजन नकरे । अनेक कष्ट देव सुर राजा तोर ६६
न पाळिब राज्य तोर न देव सेहु शस्य। अनेक कष्ट तोते विहिब सुर राष्ट्र ६७
शुणि करि लोमपाद होइले मउन ।ऋषिकि पचारिला शुण हे सावधान ६८
आउ केउँ ठारे जे उद्धार करे पुण । जीवमानंकु उद्धार करन्ति देवगण ६९
दुर्वासा बोइले सेथिर कथा शुण । हर बनरे हर पार्वती बिश्राम १७०
से बनरे अनेक मृग जे मृगुणी । महादेव प्रसादे से वने थान्ति पुणि १७१
मृगुणीर संगरे मृग जे प्रीतिकला । शृंगार करिवारु मृगुणी गर्भ हेला ७२

पर वह गर्भयुक्त होते है । बच्चे भीषण ताप से उत्तप्त हो जाते हैं । ५८ तुम लोग ग्रीष्म काल की समाप्ति पर वन में प्रविष्ट हुए । उन नारियों ने देखा कि यह तो विपत्ति का समय है । ५९ आरत होकर उन्होंने हमारा स्मरण किया । देवराज इन्द्र ने उसे स्वर्ग ही में समझ लिया । १६० विचार करने के पश्चात् उन्होंने जल की वर्षा की । अनेक गर्भधारी पशु नारियों का उन्होंने उद्धार किया । १६१ हे राजन् ! तू उनके लिये व्याध बन गया था । भले वह गर्भिणी मरे अथवा उनका शरीर नष्ट हो । ६२ उस कारण से देवता को दोष देने पर यदि वह उसकी रक्षा न करे । तो वह शाप तुम्हारे ऊपर पड़ जायेगा । ६३ इसलिये उनके उद्धार करने के लिये देवता ने तुम्हारे साथ छलपूर्ण दण्ड अपनाया । ६४ तुम गर्जन के पात्र बन गये । हे राजन् ! तुम व्याध के स्वभाव में आ गये थे । ६५ इसलिये देवता ने भोजन सामग्री तुम्हारी ग्रहण नही की है । तुमसे देवराज इन्द्र को वहुत कष्ट हुआ है । ६६ न तो वह तुम्हारे राज्य का पालन करेगा और न ही तुम्हें अन्न देगा । सुरेन्द्र तुम्हें नाना प्रकार के कष्ट प्रदान करेगा । ६७ यह सुनकर लोमपाद मौन हो गये । उन्होने ऋषि से कहा कि आप सावधानी से सुनें । ६८ देवतागण प्राणियों का उद्धार करते है और उन्होंने कहाँ उद्धार किया । ६९ दुर्वासा ने कहा कि वह कथा सुनो । हर वन में शंकर तथा पार्वती विश्राम कर रहे थे । उस वन में नाना प्रकार के पशु तथा हिरणियाँ थी । शंकर जी की कृपा से वह सव उस वन में रहा करते थे । १७०-१७१ हिरणी के साथ एक हिरन ने प्यार किया, प्रसंग करने से हिरणी गर्भवती हो गई । ७२ हिरणी का गर्भ

दशमास मृगुणी गर्भ जे पुण हेला। आळस्यरे मृगुणी जे चालि नपारिला ७३
संगरे बेनि बाळ घेनिण मृगुणी। पुष्करणी तटरे रहिला जाइ पुणि ७४
कोमळ तृण आहार अमृत पान कला।
से स्थाने रहिला मृगुणी किछि दिन परा ७५
एक दिने ब्याध जे से स्थानकु गला। तीर कमाय़ण धनु सेहु धरि थिला ७६
देखिला मृगुणी जे अछइ बनरे। जाळ बाड़ देइण निरोध कला तारे ७७
अग्नि लगाइण से श्वान मेलि देला। धर धर बोलिण शबद उच्चे कला ७८
धनु धरि नाराच जे जोचिला त्रोणरे। मारिब बोलि बिचार कलाक मनरे ७९
से हेम हरणी जे देखिण भय़ कला। बेनि बाळकंकु नेइ पाखरे रखिला १८०
नाराय़ण सुमरणा कलाक हृदय़रे। बैकुण्ठे थाइ ताहा जाणिले चक्रधरे १८१
चारि मेघकू चाहिँ बेगे आज्ञा देले। हर बने ब्याधकु नाश करे बोइले ८२
से हर बनरे हरिणी अछि पुण। ताहाकु ब्याध जाइ ओगाळिला जाण ८३
से हरणी मोते जे आरते सुमरिला। मो बिहि मोते एबे संकट पड़िला ८४
ए दण्डरु उद्धार कर हे नाराय़ण। नोहिले पाञ्च जण आम्भे नाश हेलु पुण ८५
तुम्भ बिनु मोर जे अन्यरे नाहिँ आशा।
एते बोलि हरिणी उच्चे कलाक अभाष ८६
एकथा जाणिण मुँ तुम्भंकु सुमरिलि। मृगुणी रखि ब्याधकु नाश हे बेग करि ८७

दस महीने का हो गया। आलस्य से वह हिरणी चल नहीं पा रही थी। ७३ अपने साथ दोनों बच्चों को लेकर वह हिरणी जाकर पुष्करिणी के तट पर रह गयी। ७४ वह कोमल-कोमल घास खाती थी और अमृत के समान जल पीती थी। वह कुछ दिनों तक वहाँ रही। ७५ एक दिन एक व्याध उस स्थान पर आया। वह धनुष बाण लिये हुये था। ७६ हिरणी ने उसे वन में देखा। उसने बाड़ बनाकर जाल फैलाकर उसे रोक रखा था। ७७ आग लगाकर उसने कुत्ता छोड़ दिया और पकड़ो-पकड़ो शब्द उच्च स्वर में किया। ७८ उसने तरकश से बाण निकालकर धनुष पर चढ़ाया और उसे मारने के लिये अपने मन में विचार किया। ७९ उस सुन्दर हिरणी ने देखकर भय किया। उसने अपने दोनों बच्चों को अपने पास में रख लिया। १८० उसने हृदय से भगवान का स्मरण किया। बैकुंठ में भगवान चक्रधर उसे समझ गये। १८१ उन्होंने चारों मेघों को बुलाकर हर-वन में व्याध को नष्ट करने की आज्ञा दी। ८२ उन्होंने कहा कि हर-वन में वह हिरणी है और बहेलिये ने उसे घेर रखा है। ८३ उस हिरणी ने दुखी होकर हमारा चिन्तन किया है। हे देव ! इस समय मेरे ऊपर संकट पड़ा है। हे भगवान ! इस दण्ड से मेरी रक्षा करो। नहीं तो हम पाँच लोग मारे जाएँगे। ८४-८५ तुम्हारे बिना हमारा और कोई सहारा नहीं है। इस प्रकार कहकर वह हिरणी जोर से चिल्लायी। ८६

शुणिण चारि मेघ जे बेगे चळि गले। घोर जळ बरषिण अनळ लिभाइले ८८
वज्रमारि ब्याधकु पुण कले नाश। पबनरे जाल बाड छिण्डाइ तुरित ८९
से स्थानरे सर्प जे अजगर थिला। अचळन्ति जीबमाने न चळिले परा १९०
भय पाइ श्वान ता पाशरे आउजिला। देखिण अजगर ताहाकु भक्षिला १९१
नयन फेड़िण जे सर्प चाहें पुण। आगरे ब्याध गोटि पड़िछि मरिण ९२
हेठ साथ होइण सेठारु चळि गला। मृत्यु मनुष्यकु जाइण भक्षिला ९३
देखिण मृगुणी जे सर्पकु भये कला। बेनि बाळक घेनिण सेठारु चळि गला ९४
से बन उत्तर पार्श्वे पुष्करणी निकटे। नारायणंकु सुमरणा करइ सेहु पथे ९५
केते दिन उपरे प्रसव पुण हेला। दुइ गोटि दुहिता जनम हेले परा ९६
पुत्र पौत्री केते दिन जे पाळिला। पुत्रंकर संगरे पौत्री समर्पिला ९७
काळे तार शरीर होइला जे आन। चळिला स्वर्ग पुर आनन्द भावेण ९८
अचिन्ता स्वर्गपुरे जाइण मिळिला। अपसरींकि संगरे जाइण बिहरिला ९९
लोमपाद बोइले शुण हे मुनिबर। पूर्बरे किस नाम अटे जे ताहार २००
कि दोषे पशु जन्म होइला से पुण। सेथिरे कथा मोते कह हे बिस्तारिण २०१
दुर्बासा बोइले शुण हे लोमपाद। मेनका अपसरीर स्वर्गर सम्बाद २

यह बात जानकर मैंने तुम्हारा स्मरण किया है। तुम शीघ्र ही व्याध को नष्ट करके हिरणी की रक्षा करो। ८७ यह सुनकर चारों मेघ शीघ्रतापूर्वक चल दिये। उन्होंने घनघोर वर्षा करके अग्नि को बुझा दिया। ८८ वज्रपात करके उन्होंने बहेलिये को नष्ट कर दिया और आँधी चलाकर उन्होंने जाल तथा बाड़ को शीघ्र ही छिन्न-भिन्न कर दिया। ८९ उस स्थान पर एक अजगर था। अचल जीव चल नहीं पाते हैं। १९० डरकर कुत्ता उसके पास आकर लिपट गया। उसे देखकर अजगर ने उसे खा लिया। १९१ आँख खोलकर उस अजगर ने आगे बहेलिये को मरा पड़ा देखा। ९२ वह फन नीचे करके वहाँ पहुँचा और मरे हुए उस मनुष्य को खा गया। ९३ हिरणी सर्प को देखकर डर गई। वह दोनों बच्चों को लेकर वहाँ से चली गई। ९४ उस वन के उत्तरी भाग में पुष्करिणी के निकट आते हुए मार्ग में वह भगवान का चिन्तन कर रही थी। ९५ कुछ दिनों बाद फिर उसका प्रसव हुआ। उसने दो मादा बच्चों को जन्म दिया। ९६ पुत्रों तथा पुत्रियों का उसने कुछ दिनों तक लालन-पालन किया फिर पुत्रों के साथ बच्चियों को समर्पित कर दिया। ९७ कुछ समय के उपरान्त उसकी मृत्यु हो गई और वह प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ग को चली गई। ९८ वह चिन्ताशून्य स्वर्गलोक में जा पहुँची तथा अप्सराओं के साथ मिलकर बिहार करने लगी। ९९ लोमपाद ने कहा, हे मुनि श्रेष्ठ सुनिये। पूर्वकाल में उसका नाम क्या था ? २०० किस अपराध से उसे पशु का जन्म लेना पड़ा। आप मुझे उसकी कथा विस्तारपूर्वक सुनाइये। २०१ दुर्वासा ने कहा, हे लोमपाद ! मेनका अप्सरा के स्वर्ग की कथा सुनो। २ वह स्त्री चन्द्रदेव की सेवा करती

चन्द्र देवतांकु खटइ सेहु नारी ।ताहार गर्भरु शोभा कन्याए अबतरी ३
जतनरे पाळिला मेनका ताकु पुण । सपत बरष जे दोहिता हेला जाण ४
से दोहिता एकदिने दाण्डरे खेळु थिला । अष्टबक्र ऋषि जे से स्थानरे गला ५
ऋषिकि असुन्दर देखिण सेहु नारी । दुइ चरण दुइ हस्ते चाळइ गेलकरि ६
खताइ हेला प्राय़े जे ऋषिकि प्रते हेला । क्रोधरे शापतांकु ऋषि जे देला भला ७
बोइले मोते देखितु होइलु मृगुणी । मृगुणीर स्वरूप हुअ एहि क्षणि ८
मर्त्त्यपुर जाइण तु हर बने रह । हेम हरिणी नाम से थिरे बोलाअ ९
प्रथमे गर्भरे बेनि बाळक तोर हेब । द्वितीय़ गर्भ बेळे व्याध जे घोटिब २१०
तेते बेळे नाराय़ण सुमरणा करि ।मृगुणी रूप छाडि निज स्थानरे मिळि २११
से शाप घेनिण मृगुणी होइथिला । नाराय़ण सुमरन्ते निज स्थाने गला १२
लोमपाद बोइला मुँ से कथा शुणिलि ।
श्वान ब्याध किस कले एकथा न जाणिलि १३
दुर्बासा बोइले से कथा एबे शुण । शोणित बनरे उमा महेश्वर पुण १४
माळी ब्राह्मण जे तांकर सेवा कारी । शिव द्रव्य सबु काळरे सेहु भोग करि १५
से दोषरे श्वान जे ब्याध जात हेले ।मृगुणीकि हिंसा करि अमर स्वर्ग गले १६
नाराय़ण शब्द मृगुणी जहुँ कला । से शब्द शुणि दुहेँ मुक्त हेले परा १७

थी। उसके गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई। ३ मेनका ने उसका यत्नपूर्वक पालन किया। उसकी पुत्री सात वर्ष की हो गई। ४ वह कन्या एक दिन मार्ग में खेल रही थी। अष्टावक्र ऋषि उस स्थान पर गये। ५ वह कन्या ऋषि की कुरूपता देखकर दो हाथ तथा दो पैरों से लाड़ से चलने लगी। ६ ऋषि को ऐसा भान हुआ कि वह उनकी हँसी उड़ा रही है। ऋषि ने कुपित होकर उसे शाप दे दिया। ७ उन्होंने कहा कि तू हमें देखकर हिरनी बन गई। तू इसी क्षण हिरनी बन जा। ८ तू मृत्युलोक के हर-वन में जाकर रह। वहाँ तेरा नाम हेम हिरणी होगा। ९ तेरे प्रथम गर्भ से दो बालक होंगे। दूसरे गर्भ के समय व्याध तुम्हें सतायेगा। २१० उस समय भगवान का स्मरण करने से हिरणी का स्वरूप छोड़कर तुम अपने स्थान को चली जाना। २११ उस शाप को लेकर वह हिरणी हो गई थी। वह भगवान का स्मरण करने से अपने स्थान को चली गई। १२ लोमपाद ने कहा कि वह कथा मैंने सुनी है। कुत्ते तथा व्याध ने क्या किया था। यह मुझे ज्ञात नहीं हुआ। १३ दुर्वासा ने कहा कि अब वह कथा सुनो। शोणित वन में शंकर तथा पार्वती थे। माली तथा ब्राह्मण उनके सेवक थे। वह शंकर जी के द्रव्य का सदा उपभोग करते थे। १४-१५ उसी दोष के कारण कुत्ता तथा व्याध उत्पन्न हुए। वह हिरणी की हिंसा करके अमर स्वर्गलोक को चले गए। १६ जब हिरणी ने भगवान को पुकार लगाई तो उसे सुनकर दोनों ही शीघ्र मुक्त हो गए। १७ लोमपाद

लोमपाद कहिले मोर जन्म कह। केउँ दोषु देवतांकु क्रोध मोर हेला १८
दुर्बासा बोइला से कथा एबे शुण। बृता नामे असुर पश्चिम दिगे पुण १९
कुन्तळ असुरी गर्भे जे जात हेला। इन्द्र ताकु समर करिण माइला २२०
मनुराजा रूपरे सेठारू जात होइ। सेहि रूपे नारायणंकु भक्ति होइ २२१
से रूप तेजिबारु होइलु चक्रबर्त्ती। चक्रबर्त्ती रूपधरि होइलु दुष्ट मति २२
से काळे इन्द्र संगे बिबाद तहुँ कलु। चारि लक्ष बरषरे मृत्यु जे पाइलु २३
एबे जात होइला से लोमपाद होइ। चम्पावती कटकरे राजन बोलाइ २४
ए जन्मरे स्वर्ग तोते होइब प्रापत। दशरथ घरे जात होइबे अच्युत २५
चतुर्द्धा मूर्त्ति धरिण प्रभु जात हेबे।
एगार सहस्त्र वर्षरे तोते संगरे घेनि जिबे २६
अचिन्ता बैकुण्ठ पुरे रहिबु जाइ पुण। बन्द हेब तोहर जोनि जन्म पुण २७
ए जन्मरे नारायण सुदया तोते करि। नारायणंक नाम जप हृदे धरि २८
तो ठारु सुर राजा क्रोध तेबे जिब। अनन्त बासुदेव जे सुदया तोते हेब २९
शुणिण लोमपाद सन्तोष मन हेला। दुर्बासा ऋषि चरणे जाइण नमिला २३०
अनेक धन रत्न देला जे आणि पुण। जहुँ से सद्ज्ञान कहिले मुनि जाण २३१

ने कहा कि अब आप मेरे जन्म की कथा कहिए। आप यह भी बताइये कि मेरे किस दोष के कारण इन्द्र से मुझे क्रोध हुआ। १८ दुर्वासा ने कहा कि अब वह बात सुनो। वृत्त नाम का दैत्य पश्चिम में रहता था। वह कुन्तला राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। उससे युद्ध करके इन्द्र ने उसे मार डाला था। १९-२२० फिर वह राजा मनु के रूप में उत्पन्न हुआ और उसने भगवान की भक्ति की। २२१ उस रूप का परित्याग करने पर वह दुष्ट बुद्धि चक्रवर्ती राजा हुआ। २२ उस समय भी उसने इन्द्र के साथ वैर किया था और चार लाख वर्षों में मृत्यु को प्राप्त हुआ था। २३ अब वह ही लोमपाद होकर उत्पन्न हुआ है और चम्पावती का राजा कहा जाता है। २४ इस जन्म में तुम्हें स्वर्ग प्राप्त होगा। दशरथ के घर में अच्युत नारायण अवतरित होंगे। वह चार रूपों में जन्म लेगें। ग्यारह हजार वर्ष में वह तुझे साथ लेकर जाएंगे। तब तुम जाकर चिन्ता शून्य वैकुण्ठ में रहोगे। फिर तुम्हारा योनि-जन्म बन्द हो जाएगा। २५-२६-२७ इस जन्म में भगवान तुम पर दया करेंगे। तुम हृदय में भगवान का चिन्तन करते हुए उनके नाम का जाप करो। २८ तभी तुम्हारे प्रति देवराज इन्द्र का क्रोध समाप्त होगा और अनन्त वासुदेव की कृपा तुम्हारे ऊपर होगी। २९ यह सुनकर लोमपाद का मन सन्तुष्ट हो गया। उसने जाकर दुर्वासा के चरणों में प्रणाम किया। २३० उसने लाकर उन्हें प्रचुर धन-रत्न प्रदान किये। मुनि ने उससे सत् ज्ञान की बातें कहीं। २३१ उसने विनीत होकर समस्त ऋषियों के चरणों में नमन करके

सकळ ऋषिंकि अनेक धन रत्न देला । चरणे नमिण जे बिनय़ भाव हेला ३२
राजा मानंकु मेलाणि सम्भर्बरे कला । मुकुट कुण्डळ जे धन रत्न देला ३३
राजा मानंकर जेतेक बळ थिले । समस्ते मेलाणि होइले सन्तोषरे ३४
दुःखी दरिद्रंकु तहुँ अन्न बस्त्र देला ।
मागन्ता लोक मानंकर जे मनतोष कला ३५
पात्र मंत्री अमनात्य समस्ते जेते थिले । से मानंकु धन रत्न देले नृप बरे ३६
नटकारी नृत्यकारी जेतेक थिले तहिँ । समस्तंकु राजा जे सन्तोष कराइ ३७
बन्धु बर्ग जेतक आसि थिले पुण । समस्ते सन्तोष हेले सम्मान पाइण ३८
ब्राह्मण जे दुइ लक्ष रुण्ड होइ थिले ।समस्ते मेलाणि हेबार से विप्रे देखिले ३९
किछिहिँ न देखिण निर्बत्ति होइ रहि । पात्रर मने नाहिँ राजाहिँ पाशोरइ २४०
जेउँ ब्राह्मण माने आपे से मेलाणि । से मानंक कथा जे पाशोरे नृपमणि २४१
द्विजवर माने जे मनरे क्रोध हेले ।
किस करिब राजा बोलि मने बिचारिले ४२
निश्चय़ शाप देइण जिबा निजपुर । एते बोलि बिचार कलेक बिप्रवर ४३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुणगो भगबती । सबु राजा मिळि लोमपादकु कहन्ति ४४
तुम्भ राज्ये आदित्य चण्डाळ घरे पुण । पद्मिनी कन्या जात देखिबा ताकु आण ४५
शुणिण लोमपाद डकाए माहारकु । राजा माने देखिबे आण तो दुहिताकु ४६

उन्हें अत्यन्त धन तथा रत्न प्रदान किये। ३२ उसने समारोह के साथ राजा लोगों को विदा किया और उन्हें मुकुट कुण्डल तथा धन-रत्न प्रदान किये। ३३ राजाओं की जितनी भी सेना थी वह सब सन्तुष्ट होकर विदा हुई। ३४ तब उसने दुःखी दरिद्रों को अन्न-वस्त्र दिये और भिखारी लोगों का मन सन्तुष्ट किया। ३५ श्रेष्ठ राजा ने जितने भी सभासद मंत्री अमात्य तथा सेनापति थे सभी को धन और रत्न प्रदान किये। ३६ जितने भी नट तथा नृत्यकार वहाँ थे उन सबको राजा ने संतुष्ट किया। ३७ जितने भी बन्धु-बान्धव आये थे वह सब सम्मान पाकर संतुष्ट हुये। ३८ वहाँ पर दो लाख ब्राह्मण एकत्रित हुये थे। सबकी विदाई होते समय वह ब्राह्मण कुछ भी न देखकर लौट आये। सभासदों के मन में भी ध्यान नहीं रहा और राजा भी भूल गये। ३९-२४० जो ब्राह्मण अपने से आये उनकी विदा हुयी परन्तु नृपमणि उन लोगों की बात भूल गये। २४१ वह समस्त श्रेष्ठ ब्राह्मण मन में कुपित हो गये और अपने मन में विचार करने लगे कि अब राजा का क्या किया जाये ? ४२ हम निश्चय ही शाप देकर अपने घर को जायेंगे। श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने इस प्रकार का विचार किया। ४३ हे भगवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् सब राजाओं ने मिलकर लोमपाद से कहा कि तुम्हारे राज्य में आदित्य चाण्डाल के घर में पद्मिनी कन्या उत्पन्न हुयी है। उसे बुलाइये। हम उसे देखेंगे। ४४-४५

ऋषिमाने देखिबे देखन्तु पात्रमन्त्री । शुणिण चण्डाळ जे चळिला झटति ४७
आपणार गृहरे प्रबेश जाइ हेला । आपणार कुमारीकि वेश कराइला ४८
घेनिण अइला सबु राजांकर कति । देखिण सकळ राजा हेले तोष मति ४९
पात्र मन्त्री देखिण हरष मन हेले । सैन्य बळ आचम्बित मने सुमरिले २५०
ऋषि माने देखिण बिचार कले मने ।देवकन्या जात हेला चण्डाळ घरे केन्हे २५१
काळेत एहु नर लभिब देव आळ । एते बोलिण विचार करन्ति सकळ ५२
नृपति माने बोइले चालु जे पथरे । अबेण्ट पद्म केमन्ते फुटइ पादरे ५३
शुणिण चण्डाळ जे आगरे पन्था देखि । झिअर हस्त धरि नेला जे तहिँकि ५४
चालन्ते अबेण्ट पद्म फुटइ पादरे । देखिण समस्त राजा हेले चमत्कारे ५५
चण्डाळकु चाहिँण नृपति पचारिले । जातिरे देबुकि कन्या बोलिण बोइले ५६
चण्डाळ बोइला मुँ जे करिअछि सत्य ।
जातिरे न देवि एकन्या बड़लोकंकु प्रापत ५७
ऋषि ब्राह्मणे अबा देबता राजागण । सामन्त पात्र मन्त्री जे भद्रलोक जाण ५८
एमानंक मन थिले नेबे दुहिता ।
जातिकि जाहांकर मनरे नाहिँ चिन्ता ५९
जेहु त नेब सेहु जाति कुळरे रहिब । वेचाळ हेले सेहु सत्यकु लंघिब २६०

यह सुनकर लोमपाद ने स्वपच को बुलाकर कहा कि तुम अपनी कन्या को ले आओ । उसे राजा लोग देखेंगे । ४६ ऋषि लोग भी देखेंगे और सभासद और मंत्री भी देखेंगे । यह सुनकर चाण्डाल शीघ्र ही चला गया और अपने घर में जा पहुँचा । उसने अपनी पुत्री को सुसज्जित कराया । ४७-४८ वह उसे लेकर सब राजाओं के पास आया । उसे देखकर समस्त राजागण सन्तुष्ट हो गये । सभासद और मन्त्री प्रसन्नचित्त हो गये । सेना के लोग आश्चर्यचकित मन से स्मरण करने लगे । ४९-२५० ऋषियों ने उसे देखकर मन में विचार किया कि यह देव कन्या चाण्डाल के घर में कहाँ से उत्पन्न हो गई । २५१ समय पर यह देवता पुरुष को प्राप्त करेगी । इस प्रकार कहकर सभी विचार करने लगे । ५२ राजाओं ने कहा कि यह जिस मार्ग पर चलती है तो इसके चरणों से किस प्रकार से नालरहित कमल खिलने लगते हैं । ५३ यह सुनकर आगे पीछे देखकर चाण्डाल कन्या का हाथ पकड़कर चल पड़ा । ५४ चलने पर पैरों से नाल-रहित कमल खिलने लगे जिसे देखकर समस्त राजा लोग अचम्भे में पड़ गये । ५५ चाण्डाल की ओर देखकर राजा ने पूँछा कि क्या इस कन्या को अपनी जाति में दोगे । ५६ चाण्डाल ने कहा कि मैंने प्रतिज्ञा की है । इस कन्या को जाति में नहीं देंगे । यह कन्या उत्तम पुरुप को प्राप्त होगी । ऋषि ब्राह्मण देवता राजागण सामन्त सभासद तथा मन्त्री इन्हें भद्र पुरुष समझा जाता है । ५७-५८ इन लोगों का मन होने पर यह पुत्री को लेंगे । जाति की जिस किसी के मन में चिन्ता नहीं है । ५९ जो इसे लेगा वह उसी जाति और कुल में रहेगी ।

शुणिकरि समस्तंक मन तुटि गला।
ऋषि माने चळिले जे जाहा स्थाने परा २६१
राजा माने पात्र मन्त्री बन्धु माने गले। जे जाहा नवरे जाइ प्रवेश होइले ६२
भाजिला चहळ जे चम्पावती पुर। बिप्रमाने बिचारिले समस्ते जिबारु ६३
राजामानंकु कहिले जाइ पुण। समस्ते मेलाणि हेले शुण हे राजन ६४
राजा पात्र मन्त्री जे सामन्त ऋषिगण। दुःखी दरिद्र जे मागन्ता लोक मान ६५
नृत्यकारी नटकारी मागन्ता सर्बजन। समस्ते धन रत्न नेले जे सन्तोषेण ६६
तोहरे द्वारे सिना ब्राह्मणे दोषी हेलु। तुहित ब्राह्मणंकु बरण करिथिलु ६७
आग सिना आम्भंकु करन्तु सन्तोष। आम्भ ठारे गर्ब तुहि बहिलु नरईश ६८
बेदे निश्चे ब्राह्मण देवता सृष्टि जाण।
चन्द्र सूर्ज्य आत जात जेबे होन्ति जाण ६९
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर त्रिदश देवता। सते जेबे धरणी धरिछि नाग माता २७०
बेद बिद्या संसारे अटइ जे सार। आम्भर शाप एबे घेन नृपबर २७१
बार बर्ष परिजन्ते तोहर राज्ये पुण। इन्द्र न पाळिब तु कंकाळ हेबु पुण ७२
आम्भर शाप तोते हेउरे प्रापत। अस्तु होउ बोलि बिप्रे कहिले तुरित ७३
एते कहि बिप्र बर दुःखे चालि गले। शुणि करि लोमपाद ताटका होइले ७४

विपरीत होने से उसकी प्रतिज्ञा भंग हो जायेगी। २६० यह सुनकर सबका मन टूट गया। ऋषि लोग अपने-अपने स्थानों को चले गये। २६१ राजा लोग, सभासद, मन्त्री तथा बन्धु-बान्धव भी जाकर अपने-अपने घरों में प्रविष्ट हुये। ६२ चम्पावती नगर की चहल-पहल समाप्त हो गई। सब ब्राह्मणों ने भी जाने का विचार किया। ६३ उन्होंने जाकर राजा से कहा हे राजन् ! सुनिये। सभी लोग विदा हो गये राजा सभासद मन्त्री, सामन्त, ऋषिगण दुःखी दरिद्र तथा भिखारी लोगों ने और नृत्यकार नट, भिक्षुक आदि सभी लोग धन रत्न लेकर संतुष्ट हो गये। ६४-६५-६६ ब्राह्मण होकर हम लोग तुम्हारे द्वार पर अपराधी बने। तूने ही तो ब्राह्मणों को वरण किया था। ६७ सबसे पहले तुम्हें हमें सन्तुष्ट करना था। अरे नरेश ! हमारे लिये ही तुझे घमण्ड हो गया। ६८ जब तक चन्द्रमा तथा सूर्य का आवागमन होता रहेगा। तब तक वेदों में भी निश्चय ही ब्राह्मण में देवता की श्रेष्ठता बनी रहेगी। ६९ ब्रह्मा, बिष्णु तथा महेश्वर, देवता जब तक रहेंगे। जब तक नागमाता पृथ्वी को धारण किये रहेगी। (तब तक ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ बने रहेंगे)। २७० संसार में वेद विद्या की श्रेष्ठता जब तक रहेगी। तब तक यह श्रेष्ठ राजा हम लोगों का शाप ग्रहण करे। २७१ बारह वर्ष पर्यन्त इन्द्र तेरे राज्य का पालन नहीं करेंगे और तू फिर कंकाल बन जायेगा। ७२ तुझे हम लोगों का शाप प्राप्त हो। ब्राह्मणों ने शीघ्र ही ऐसा ही हो कहकर अस्तु कह दिया। ७३ इतना कहकर ब्राह्मण लोग दुःख से चले गये। यह सुनकर राजा लोमपाद

पात्र मन्त्रींकि पचारे एकथा केमन्ते । विप्रवर मेलाणिकि नोहिले आगत ७५
पात्र मन्त्री बोइले आम्भर मने नाहिँ । जञ्जाळरे रहिलि राजांक पाशे मुहिँ ७६
लोमपाद बोइले मो धर्म नाशगला । राज्य एबे ब्राह्मणंकु शापरे सरिला ७७
एते बोलि राजन जे चळि गला खर । ब्राह्मणंकु ओळगिला न्यून प्रकार ७८
दन्तरे तिरण जे गळारे कुठार । बिप्रंकर चरणे नमिला नृपबर ७९
बोइलाक दोष मोर क्षमाकर एबे । एते कहि प्रार्थना करइ लोमपादे २८०
विप्रवर बोइले शुण तु महीपाळे । आम्भर शापटि तोते फळिब निकर २८१
वार वर्ष प्रान्ते जेबे आणिबु ऋष्यश्रृंग । से अइले तोर राज्ये बरषिब मेघ ८२
राजन बोइले से जे काहार कुमर । द्विजबर बोले बिभाण्ठक मुनिबर ८३
कौशिक नदी तीररे तांकर आश्रम । तांकर कुमार ऋष्य श्रृंग नाम जाण ८४
बार बरषर अन्ते आण तांकु जाइँ । आरत होइले किछि नोहिब नरसाइँ ८५
से आसिले जळबृष्टि पृथ्वीरे तोर हेब । कुल धर्मकु तोहर से ऋषि रखिब ८६
शुणिण लोमपाद मन्त्रींकि आज्ञा देला । बेगेण धन अणाअ बोलिण बोइला ८७
बेगे धन अणाइ राजन बिप्रे देला । सन्तोष कराइण से बिप्रंकु कहिला ८८
धन पाइ विप्रबर सन्तोष होइ गले । जे जाहा आश्रमरे जाइण मिळिले ८९

आवाक हो गये । ७४ उसने सभासद तथा मंत्रियों से प्रश्न किया कि यह क्या बात है। क्या अभ्यागत ब्राह्मणों की विदाई नहीं हुयी । ७५ सभासद तथा मंत्रियों ने कहा कि हम लोग राजाओं के समीप जंजाल में फँसे रहे। हमें ध्यान नही है । ७६ लोमपाद ने कहा कि मेरा धर्म नष्ट हो गया। यह राज्य अब ब्राह्मणों के शाप से समाप्त हो गया । ७७ इतना कहकर राजा प्रखरता से चलकर ब्राह्मणों को प्रणाम करते हुये विनीत भाव से गिड़गिड़ाने लगा । ७८ यह दण्ड तिनके के गले में कुठार के समान है। श्रेष्ठ राजा ने इस प्रकार कहते हुये ब्राह्मणों के चरणों में प्रणाम किया । ७९ उसने कहा कि आप लोग अब मेरे अपराधों को क्षमा करें और इस प्रकार कहते हुये लोमपाद उनकी प्रार्थना करने लगा । २८० श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने कहा, हे महिपाल ! सुनो। हमारा शाप तो तुम्हें अवश्य लगेगा । २८१ बारह वर्ष के उपरान्त जब तुम श्रृंगी ऋषि को लाओगे। तब उनके आने से तुम्हारे राज्य में मेघ वृष्टि करेंगे । ८२ राजा ने कहा कि वह किनके पुत्र है। श्रेष्ठ ब्राह्मण बोले कि वह मुनि श्रेष्ठ विभाण्डक है । ८३ कौशिक नदी के तट पर उनका आश्रम है। उनके पुत्र का नाम श्रृंगी ऋषि है । ८४ बारह वर्षो के पश्चात् उन्हें जाकर लिवा लाओ। हे नरपति ! दुःखी होने से कुछ नही होगा । ८५ उनके आने से तुम्हारी भूमि पर वर्षा होगी। वह ऋषि तुम्हारे कुल और धर्म की रक्षा करेंगे । ८६ यह सुनकर लोमपाद ने शीघ्र ही धन लाने की आज्ञा दी । ८७ शीघ्रता से धन मँगाकर राजा ने ब्राह्मणो को प्रदान किया फिर उसने ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करके विनती की । ८८ धन प्राप्त करके श्रेष्ठ ब्राह्मण लोग सन्तुष्ट होकर अपने-अपने घरों

पार्वती बोइले तुम्भे शुण हे ईशान । निजस्थान गले कि अजोध्या राजन २९०
ईश्वर बोइले तुम्भे शुणगो भगवती । समस्ते गले रहिला अजोध्या नृपति २९१
लोमपाद बोइले शुण आहे मइत्र । बिधाता जे बाम मोते होइला नियत ९२
मोर कर्म बाम जे देवता मोरे बादी । बिप्रे मोते शाप देले मो धर्मकु निन्दि ९३
बार बर्ष पर्ज्यन्ते जे नाहिँ जळ बृष्टि । केमन्ते बञ्चिबे प्रजा नाशगलि मुँटि ९४
दशरथ बोइले जे शुण हे मइत्र । देव लेखन कथा के करे आनत ९५
बिप्रंक तुण्डरु जे मुँ शुणिलि सार । बिभाण्डक कुमर आसिबे तुम्भपुर ९६
ऋष्यश्रृंग आसिले तुम्भर नग्र शान्ति हेब। जळ बरषिब जे सन्तान उपुजिब ९७
बार बर्ष सिना तुम्भे पाइब कष्ट । तेणिकि तुम्भर जे होइब सुख जात ९८
राज्यकु जाग्रत कर फेराअ धेण्डुरा ।कूप बाम्फी पोखरी पुष्करिणी खोळा ९९
नदी सरोवर मान करन्तु आकट । जळ शून्य नोहिब बिचार कर तुत ३००
आहार जाग्रत करि रखन्तु प्रजागण ।
धान सआँ माण्डिआ चिना को द्रूअ जेते जाण ३०१
किणा बिका करिण आणन्तु अन्य राज्ये । जाणि बाकु धेण्डुरा फेराअ बेगे तुजे २
शुणिण लोमपाद सन्तोष मन हेला । पात्र मन्त्रींकि राजन बेगे ड़काइला ३

को चले गए । ८९ पार्वती ने कहा हे ईशान ! आप सुनिये। क्या अयोध्या के राजा भी अपने नगर को लौट गये । २९० शंकर जी बोले, हे भगवती ! तुम सुनो। सब लोग तो चले गये थे परन्तु अयोध्या नरेश वहीं पर थे । २९१ लोमपाद ने कहा हे मित्र सुनिये। निश्चित रूप से विधाता मेरे प्रतिकूल हो गया है । ९२ मेरे दुष्कार्य से देवता मेरे प्रतिकूल हो गए हैं। मेरे धर्म की निन्दा करके ब्राह्मणों ने मुझे शाप दिया है । ९३ बारह वर्ष पर्यन्त जल वृष्टि नहीं होगी। मेरी प्रजा कैसे बचेगी। मैं तो नष्ट हो गया । ९४ दशरथ ने कहा हे मित्र ! सुनो। दैव का लिखा कौन मिटा सकता है । ९५ ब्राह्मणों के मुख से मैंने सार तत्व की बात सुनी है कि विभाण्डक के पुत्र आपके नगर में आएँगे । ९६ शृंगी ऋषि के आने से तुम्हारा नगर शान्त हो जाएगा। जल की वर्षा तथा सन्तान की उत्पत्ति होगी । ९७ आपको बारह वर्ष ही कष्ट मिलेगा। तदुपरान्त आपको सुख प्राप्त होगा । ९८ राज्य में ढोंड़ी पिटवा कर जाग्रति लावो। कुआँ बावली, पुष्करिणी पोखरे खुदवाओ। नदी तथा सरोवरों में बाँध बनवा दो जिससे वह जलशून्य न हों। तुम इस बात पर विचार करो । ९९-३०० प्रजागण खाद्य पदार्थों का संचयन करके रख लें। धान कोदों तथा अन्य शस्य जो भी प्राप्य हों । ३०१ अन्य राज्यों से क्रय विक्रय करके वह ले आएँ। जानकारी के लिये शीघ्र ही तुम इस प्रकार का ढिढोरा फिरा दो । २ यह सुनकर लोमपाद का मन सन्तुष्ट हो गया। राजा ने शीघ्र ही सभासद तथा मंत्रियों को बुलवाया । ३ मंत्री और सभासद राजा

पात्र मन्त्री आसिण मिळिले आगेण । चाहिँण ताँकु आज्ञा देलेक राजन ४
बोइले बिप्रंकर शुणिल निकर । बार बर्ष अपाळक बोले बिप्रबर ५
से कथाकु बिचार कर हे एबे मन । राज्यरे धेण्डुरा दिआअ हे पुण ६
शुणिण पात्र मन्त्री बेगे चळि गले । चारि दिगकु जे चिटाउ लेखिले ७
बिशोइ मानंकु से देलेक खबर । भेदिले दूत माने गले से सत्वर ८
देशपुर पाटणा नग्र जे कटक । सबु ठारे दूते जाइ कलेक अटक ९
जाणिण समस्त प्रजा तबद होइले । घरे थिबा द्रव्यमान निष्ठुरे रखिले ३१०
धन द्रव्य घेनि पर राज्यकु गले चळि । शगड़ बळदरे आणिले लदि करि ३११
ठावे ठावे जळकु कलेक बन्ध पुण । शुभिला चम्पावती राज्यरे घोषण १२
राजार अन्यायरे प्रजा आम्भे मलु । ब्रह्मशापे आम्भेमाने उच्छन्न होइलु १३
एमन्त बिचार जे करन्ति नर-नारी । धान खरिद कलेक पर राज्ये फेरि १४
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती । अजोध्या नरेन्द्र जे कहिण चळि जान्ति १५
निज कटकरे जाइ प्रबेश होइले । लक्ष भरण धान से राज्भे चाळि देले १६
शतेक शाळक जे लोमपादर थिले । से माने शते लक्ष भरण धन देले १७
प्रतिलोक माने शुणिण धान देले । सकळ धन राजा प्रजारे बाण्टि देले १८
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । छड़मास एथिरे गला दिन सरि १९

के पास आकर मिले। राजाने उन्हें देखकर कहा। ४ वह बोले कि आप लोगों ने ब्राह्मणों की बात सुनी। उन्होने बारह वर्ष का अकाल बताया है। ५ इस समय आप लोग उस बात पर मन से बिचार करें और राज्य में ढिंढोरा पिटवा दें। ६ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्र ही चले गए। उन्होंने चारों ओर पत्र लिखे। ७ उन्होंने व्यापारियों को सूचना दी और शीघ्र ही दूतों को प्रेषित किया। ८ पुर, नगर, गाँव तथा गढ़ों में जाकर दूतो ने अनुवन्ध किये। ९ यह जानकर सारी प्रजा स्तब्ध हो गई। घर में प्राप्त वस्तुओं का उन्होंने कठोरता से संचयन किया। ३१० धन दृव्य लेकर वह अन्य राँज्यों को चले गए और बैल गाड़ियों में (अन्नादि) लादकर ले आए। ३११ स्थान-स्थान पर पानी के लिये बाँध बना दिये। चम्पावती राज्य में विज्ञप्ति सुनाई देने लगी। १२ राजा के अन्याय से हम प्रजाजन मर गए। ब्राह्मणों के शाप से हम सब कष्ट में पड़ गए। १३ नर-नारी इस प्रकार विचार करने लगे। दूसरे राज्यों में घूम घूमकर वह धान खरीदने लगे। १४ हे भगवती ! सुनो इसके पश्चात् अयोध्या नरेश समझा कर चले गये। १५ वह जाकर अपने दुर्ग में प्रशिष्ट हुए। फिर उन्होंने एक लाख भार धान्य उस राज्य को भेज दिया। १६ लोमपाद के जो एक सौ साले थे उन्होंने सौ लक्ष भार धान्य प्रदान किया। १७ हर एक व्यक्ति ने यह सुनकर धान्य दिया। राजा ने समस्त धन प्रजा में वितरित कर दिया। १८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात्

चम्पावती नग्ररे न कला वृष्टि मेघ। आकुले प्रजानने सम्भाळ सम्पद ३२०
दशरथर सुभाग्य होइला आसि पुण ।कउशल्या राणी रजस्वळा हेला जाण ३२१
चारि दिने शुद्ध स्नाहान राणी कला। पाञ्च दिने कौशल्या सुबेश होइला २२
रजनीरे स्वामी पाशे हेलाक प्रबेश। देखिण दशरथ मनरे हेले तोष २३
हास्य रस खेळ जे कलेक भिआण। राणींकि नेइ राजा धइले कोळे पुण २४
रज बीर्ज्य खसन्ते प्रबोध राजा होइ ।गर्भ स्थित हेले राणी सेहि दिन जाइँ २५
रजनी शेषरे दासी गण आसि पुण। राणीकु घेनि गले अन्तः पुरकु जाण २६
मर्द्दन माजणा जे सारिण दासी गण। सुबासित जळरे जे कलेक स्नाहान २७
षड़रसे भोजन राणींकि कराइले। रत्न पलंक उपरे नेइ शुआइले २८
कर्पूर ताम्बुळ भुञ्जाइले दासी गण। एमन्ते गला तहिँ बेनि मास पुण २९
पञ्चम मास होइला तहुँ दिन जाण। राजार आगरे जे कहिले दासीगण ३३०
बोइले कौशल्या राणी जे गर्भ होइ। आजकु पाञ्चमास शुण हे नर साइँ ३३१
शुणिण राजन जे परम तोष हेले। बधाइ अणाइण दासींकि राजा देले ३२
एमन्ते अष्टमास होइला आसि पुण ।गर्भदान निमन्ते बिचार कलेक राजन ३३
सामन्त पात्र मन्त्री डकाइ अणाइला ।बशिष्ठंकु कहिण ऋषिंकि अणाइला ३४
बिप्रमानंकु बरिण आणिला राजन। दान पुण्य कला जे अनेक धन रत्न ३५

इसमें छै माह का समय व्यतीत हो गया। १९ चम्पावती राज्य में मेघों ने जल-वृष्टि नही की। प्रजाजन दुःखी तथा उनका धन-धान्य अस्तव्यस्त था। ३२० दशरथ का सौभाग्य आ गया। रानी कौशल्या रजस्वला हो गई। ३२१ रानी ने चार दिनों में शुद्ध स्नान किया तथा उन्होंने पाँचवें दिन श्रृंगार किया। २२ रात्रि में वह पति के समीप गई। उन्हें देखकर दशरथ मन में प्रसन्न हो गए। २३ उन्होंने हास-परिहास का खेल प्रारम्भ कर दिया। फिर राजा ने रानी को पकड़कर गोद में ले लिया। २४ रज-वीर्य के स्खलन से राजा श्रान्त हो गये और उसी दिन रानी के गर्भ ठहर गया। २५ रात्रि समाप्त होने पर दासियाँ आकर रानी को अन्तः पुर में ले गईं। उन्हें मल-मलकर सुबासित जल से स्नान कराया। फिर उन्होंने रानी को षड़रस भोजन करवाए तथा उन्हें रत्न पर्यङ्क पर ले जाकर सुला दिया। २६-२७-२८ दासियों ने उन्हें कर्पूरयुक्त ताम्बूल खिलाया। इस प्रकार वहाँ पर दो मास व्यतीत हो गए। २९ पाँचवें महीने पर दासियों ने राजा को रानी कौशल्या के गर्भवती होने का समाचार देते हुए कहा कि नरपति ! सुनिये। आज पूरे पाँच महीने हो गए हैं। ३३०-३३१ यह सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने दासियों को बधाई दी। ३२ इस प्रकार आठवाँ महीना आ पहुँचा। राजा ने गर्भ दान के विषय में विचार किया। ३३ उन्होंने सामन्त सभासद तथा मन्त्रियों को बुलवा लिया। वशिष्ठ से कहकर ऋषियों को बुलवाया। ३४ राजा

ऋषि ब्राह्मणरे अनेक धन देला । समस्तंकु सन्तोष राजन कराइला ३६
एथु अनन्तरे शुण गो गउरी । दशमास सम्पूर्ण होइला आसि करि ३७
पेट बथाइण जे शूळ तोळाइला । दुहिता गोटिए जे पुण तहिँ हेला ३८
राजार आगरे जाइ दासी गणे कहि ।राणी गर्भु दुहिता गोटिए जन्म होइ ३९
शुणिण राजन जे सन्तोष मन हेले । दासी मानंकु बधाइ उपहार देले ३४०
पञ्चु आति षठिधर उठिआरि सारि । बार जात्रा करन्ते स्नान जाइ करि ३४१
नाम वर्ण करिबाकु राजा बिचारिले । बशिष्ठंकु कहिण ऋषिंकि अणाइले ४२
मन्त्रींकि कहिण अणाइले बन्धु जन । कश्यपंकु कहिण अणाए बिप्रगण ४३
मासक सम्पूर्ण अन्ते दिनके मिळि ।चारिबेद उच्चारण ऋषि ब्राह्मणे करि ४४
पवित्र होम सेठारे कले बिप्र गण । नूतन पलंक परे दुहिता शुआइण ४५
होम बिधि सारिण सकळ ऋषि पुण । दुहितार नाम जे कलेक उच्चारण ४६
सर्बांग सुन्दरी जे देखिले कुमारीर । चित्राएणी रूप पराए सुन्दर ४७
ऋषि माने बिचारिले एकथा अटे सार ।
राजा घरे ए कन्या जन्मिब मुनिवर ४८
पद्मिनी अंशे जात नाहिँ जे एहार । निश्चय बिप्रकुए लभिब नारी बर ४९

ब्राह्मणों को वरण करके ले आए। उन्होंने प्रचुर धन तथा रत्न दान पुण्य में प्रदान किये। ३५ ऋषियों तथा ब्राह्मणों को बहुत धन दिया। राजा ने सभी को सन्तुष्ट कर दिया। ३६ हे गौरी! सुनो इसके बाद में दसवाँ महीना पूर्ण होने को आया। ३७ उनके पेट में पीड़ा प्रारम्भ हो गई और उन्होंने एक पुत्री को जन्म दिया। ३८ दासियों ने जाकर राजा से निवेदन किया कि रानी के गर्भ से एक पुत्री उत्पन्न हुयी है। ३९ यह सुनकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने दासियों को बधाई तथा उपहार दिये। ३४० पंचिमी पूजा, षष्ठी पूजा, तथा सोर उठाने की विधि पूरी करके उन्होंने बरहों का स्नान जाकर कराया। ३४१ राजा ने नामकर्ण करने का विचार किया। उन्होंने वशिष्ठ से कहकर ऋषियों को बुलवाया। ४२ मंत्री से कहकर बन्धु-बान्धवों को और कश्यप से कहकर उन्होंने ब्राह्मणों को बुलवा लिया। ४३ महीने के पूर्ण हो जाने पर एक दिन ऋषियों और ब्राह्मणों ने मिलकर चारों वेदों की ध्वनि की। ४४ ब्राह्मणों ने वहाँ पवित्र हवन किया और नवीन पलंग पर कन्या को लिटा दिया। ४५ फिर समस्त ऋषियों ने विधिपूर्वक होम समाप्त करके कन्या का नाम उच्चारण किया। ४६ कुमारी के सारे अंग सुन्दर दिखाई पड़े। उसका सुन्दर स्वरूप चित्रा नक्षत्र के समान था। अथवा उसका सुन्दर स्वरूप चित्र के समान मनोरम था। ४७ ऋषियों ने विचार किया कि यह बात मुख्य है कि हे मुनिश्रेष्ठ! राजा के घर में इसका जन्म हुआ है। ४८ पद्मिनी के अंश से इसका जन्म नहीं हुआ है। निश्चित रूप से यह श्रेष्ठ

एमन्त बिचार जे मुनि माने कले। मुख गोटि चन्द्रमा आकार देखिले ३५०
बोइले ए कन्या नाम साआन्ता हेउ पुण। शशीधर प्राये ग्नार मुख दिशे जाण ३५१
बिष्णु ऋषि मिळि नाम देलेक एहार। अन्तः पुरे सर्बे जे होइले बाहार ५२
राजन हरषरे मेलाणि बेगे देला। धन रत्न देइण सन्तोष कराइला ५३
बन्धु बर्ग राजनर जेतेक आसि थिले। समस्ते सन्तोषरे जे जाहा पुर गले ५४
कौशिक राजा पुत्न अळंकार आणि थिला। कन्यार अंगरे मण्डिण सेहु कला ५५
लोमपाद राजा जे देले उपहार।समस्तंक ठारे स्नेह दशरथ राजांकर ५६
अनेक भाषामान जे लोमपादकु कहि। मेलाणि होइण जे निज पुरकु जाइ ५७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी।दिनकु दिन कुमारी ब्रढिले शशी परि ५८
पाञ्च बरष जाइण सप्त बरष हेला। बिद्या पढ़ि कुमारी सुजाण होइला ५९
सकळ मातांक पुरे बिहरे दुहिता। सकळ मातांकर ताठारे सुरता ३६०
तोळा डुला कुमारी से एकइ दुहिता। नृत्य रंग गीत जे करइ दुहिता ३६१
नब बर्ष आसिण हेला ताकु पुण। कोमळ बिकशित होइला हृदरेण ६२
रजस्बळा होइला जे सुजोगर बेळे। दासी माने कहिले जे राजन आगरे ६३

कामिनी ब्राह्मण को प्राप्त करेगी। ४९ मुनियों ने इस प्रकार का विचार किया। उन्होंने उसके मुख का आकार चन्द्रमा के समान देखा। ३५० उन लोगों ने कहा कि इस कन्या का मुख चन्द्रमा के समान दिखाई दे रहा है। अतएव इसका नाम शांता हो। ३५१ विष्णु ऋषि ने आकर उसका नामकरण कर दिया और सभी लोग अन्तःपुर से बाहर निकल आये। ५२ राजा ने शीघ्रतापूर्वक प्रसन्नता से सबको संतुष्ट किया और उन्हें धन रत्न देकर विदा किया। ५३ राजा के जितने बन्धु-बान्धव आये थे वह समस्त संतुष्ट होकर अपने-अपने घर चले गये। ५४ राजा कौशिक का पुत्र आभूषण लाया था। उसने उन्हें पुत्री के शरीर में सुसज्जित कर दिया। ५५ राजा लोमपाद ने भी उपहार दिया, राजा दशरथ का प्रेम सब पर था। ५६ उन्होंने राजा लोमपाद से नाना प्रकार की बातें कहकर विदाई दी। फिर वह विदा लेकर अपने नगर को चले गये। ५७ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके अनन्तर दिन-प्रतिदिन वह कन्या चन्द्रमा के समान बढ़ने लगी। ५८ पाँच वर्ष बीतकर सात वर्ष हो गये। विद्या पढ़कर वह कन्या पारंगत हो गई। ५९ कन्या सभी माताओं के महलों में क्रीड़ा करती थी और सभी मातायें उसका ध्यान रखती थीं। ३६० ले देकर वह ही एक कन्या थी। वह गीत गाकर नाचने लगतीथी। ३६१ फिर वह नौ वर्ष की हो गई उसका वक्षस्थल कोमल तथा उभार वाला हो गया। ६२ संयोगवश वह उस समय रजस्वला हो गई। दासियों ने महाराज से वता दिया। ६३ उन्होंने राजा से पुत्री के लिये वर खोजने के लिये

दुहिता निमन्ते बर करहे घटण। शुणि करि राजन चिन्तारे मउन ६४
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। लोमपाद राजा गले जे शंखोळि ६५
अजोध्या कटकरे प्रबेश जाइ हेला। दशरथंकु देखिण मान्य धर्म कला ६६
बोइला विपत्ति मोते होइ लाक बड़। जळ आहार निमन्ते प्रजा मले मोर ६७
कि करिवि बुद्धि मोते न दिशइ पुण। एते बोलि राजन जे कलेक रोदन ६८
दशरथ बोधिले जे शान्ति कथा कहि। समस्तंकु दुःखे शोक लागइ देह वहि ६९
शरीर बहिले विपत्ति होए जाण। राज्यरे राजा हेले शुभइ दूषण ३७०
देवता माने जेणु बड़ से बोलन्ति। अमर पुरे थाइ गर्व से करन्ति ३७१
ताहांकु दण्ड जे पडइ पुण जाण। असुरे ध्वंसन्ति तांकर पुरमान ७२
बासुदेवंकु से माने सुमरण कले। नारायण सुदयारे दुख जाए दूरे ७३
एवे दशमुखा रावण ताकु वादी। सबु देवतांकु धरिण असुर बुद्धि ७४
सेवाकारी परिरे नेइ पाशरे खटाए। धरिण अनेक शास्ति असुर राए दिए ७५
बासुदेवंकु सुमरणा करुछन्ति निति। बसुदेव जन्म हेले असुर निपाति ७६
असुर कुळकु देव करिबे पुण नाश। नारायण पुरुष से सबुरि विश्वास ७७
मानव रूपे अवतार हेबे जाण। तेबे से सकळ दुष्ट नाश हेबे पुण ७८

कहा यह सुनकर राजा चिन्ता से मौन हो गये। ६४ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके अनन्तर राजा लोमपाद कुशल सम्वाद जानने को अयोध्या के दुर्ग में जा पहुँचे। उन्होंने दशरथ को देखकर उनकी अभ्यर्थना की। ६५-६६ उसने कहा कि हम वड़ी विपदा में पड़ गए है। अन्न-जल के अभाव से हमारी प्रजा मर रही है। ६७ क्या किया जाय? मेरी बुद्धि ही काम नहीं कर रही है। इस प्रकार कहते हुए राजा लोमपाद रो पड़ा। ६८ दशरथ ने उन्हें सान्त्वना देते हुए समझाया कि शरीर धारण करके सभी को शोक तथा कष्ट उठाना पड़ता है। ६९ शरीर धारण करने से विपत्ति होती ही है। राज्य का राजा होने से दोष सुनाई पड़ता है। ३७० इसलिये देवता बड़े कहे जाते हैं। वह स्वर्गलोक में रहकर अभिमान करते हैं। ३७१ परन्तु उन्हें भी कष्ट पड़ जाते हैं। राक्षस लोग उनके निवास स्थान को ध्वंस कर डालते हैं। ७२ भगवान का स्मरण करने से उनके भी दुःख प्रभु-कृपा से दूर हो जाते है। ७३ इस समय दशमुख वाला रावण उनका शत्रु है। उसने राक्षस बुद्धि से उन्हें पकड़कर दासों की भाँति अपनी सेवा में नियोजित कर रक्खा है। वह असुरराज उन्हे पकड़कर नाना प्रकार के कष्ट देता है। ७४-७५ वह लोग नित्य ही भगवान नारायण का चिन्तन करते रहते हैं। नारायण के जन्म लेने पर ही राक्षसों का विनाश होगा। ७६ यह सबका विश्वास है कि पुरुपोत्तम भगवान असुर कुल का विनाश करेंगे। ७७ वह मनुष्य के रूप में अवतार ग्रहण करेंगे। तभी वह समस्त दुष्ट नाश को प्राप्त होंगे। ७८ अल्पकाल के लिये आप चिन्ता न करें।

चिन्ता न कर जे अळप दिनकु । तिनि बर्ष कष्ट सह हे देहकु ७९
तुम्भर दुःखकु मोर दुःखे बळि । दुलणा गोटिए जे होइला मोहरि ३८०
से दुहिता नव जुबा जे एबे हेला । उत्तम स्थाने वर घटण नोहिला ३८१
ऋषि माने देखिण कहिले मोते पुण । दुहिताकु मुनिकि करिबु समर्पण ८२
केउँ मुनि बरिब न गला जणा मोते । से कथाकु सुमरि भाळइ मोर चित्ते ८३
शोणित रोग मो देह कले पितृ मोर । धर्मरे हानि मुँ होइछि नृप बर ८४
एमन्त भाळि बारे चिन्ता जे मोर मन । कि बुद्धि करिबि जे नसरे दिन जाण ८५
लोमपाद बोइले कथाए एबे कर । मोहर पुत्र दुहिता नाहिँ हे नृपवर ८६
एक आत्मा बेनि जन भिन्न भिन्न नाहिँ ।
किछि दिन मोर पुरे दुहिता नेबि मुहिँ ८७
दुहिताकु राणीहंस देखिबटि पुण । मनरे सन्तोष जे होइब तुम्भे जाण ८८
राज्य भल मन्द पाशोर मोर जाउ । राणी हंस मानंकर मनरे सुख हेउ ८९
शुणिकरि दशरथ मनरे सन्तोष हेले । राणी हंस पुररे पचारइ बोइले ३९०
एते बिचारि राजन बाहारि चळि गले । भितर पुरे जाइ प्रबेश राजा हेले ३९१
सकळ राणीकि जे डकाइ नृपबर । कौशल्या कैकया सुमित्रा संगतर ९२
बोइला सकळ जे राणी हंस शुण । लोमपाद राजा जे मोर मैत्र जाण ९३

इस शरीर से तीन वर्ष तक कष्ट सहन कीजिये । ७९ तुम्हारे दुख से हमारा दुःख बड़ा है । मेरे एक पुत्री हुयी है । ३८० वह पुत्री अब नवयुवती हो गई है । अच्छे स्थान पर वर नहीं मिला है । ३८१ ऋषियों ने देखकर मुझसे पुत्री को मुनि को समर्पित करने के लिये कहा है । ८२ कौन मुनि विवाह करेगा यह मुझे ज्ञात नहीं हो पाया । उस बात को स्मरण करके मै अपने मन में बिचार कर रहा हूँ । ८३ मेरे पिता ने मेरे शरीर में रक्त का रोग कर दिया है हे नृपश्रेष्ठ ! मै धर्म से च्युत हो गया हूँ । ८४ ऐसा सोचकर मेरा मन चिन्तित रहता है । क्या उपाय करूँ ? दिन रात नही कटते । ८५ लोमपाद ने कहा कि एक बात करो । हे नृप श्रेष्ठ ! मेरे पुत्र अथवा पुत्री नहीं है । ८६ हम दोनों की आत्मा एक ही है, भिन्न नहीं । मैं कुछ दिनों के लिये कन्या को अपने घर ले जाऊँगा । ८७ हमारा रनिवास बेटी को देखेगा और आप समझ लीजिये कि जिससे मन में संतोष होगा । ८८ राज्य की अच्छाई बुराई को मै भूल जाऊँगा और रानियों के मन भी सुखी हो जायेंगे । ८९ यह सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया । उन्होंने कहा कि मैं अपने रनिवास में पूँछ लेता हूँ । ३९० इस प्रकार बिचार करके राजा बाहर निकले और अंतःपुर में जा पहुँचे । ३९१ श्रेष्ठ राजा ने कौशल्या कैकेयी तथा सुमित्रा के साथ समस्त रानियों को बुलवा कर कहा कि समस्त रानियों ! सुनो । राजा लोमपाद हमारे मित्र है । ९२-९३

ब्राह्मण शापरे जे चम्पावती पुर। इन्द्र वृष्टि नकरि बाह समस्ते विकळ ९४
आम्भंकु शंखोळा निमन्ते मैत्र एथे आसि। चिन्ता भरे मैत्र नेत्ररे लोतकटि ९५
अनेक कारुण्य जे मोहर आगे करे। धर्मंकु अनाइ जे मुं निवर्त्त कलितारे ९६
निबर्त्त होइण से जे कहिला मोते पुण। बोइले दुहिताकु नेबि मो भुवन ९७
देखिले राणी हंस पाइबे सुख मोर। मोर दिन सरिब हे शुण नृपवर ९८
तुम्भर मोहर तनु नुहइ बेशाळ। एते बोलि प्रार्थना करइ मैत्र मोर ९९
शुणिण राणी हंस आनन्दमन हेले। तुम्भंकु जोगाइले जाउ से बोइले ४००
राजन बोइले गले से कार्य्य बड़ भले। तिनि वर्ष गले आसिबे मुनि वरे ४०१
बिभाण्डक कुमर जे ऋष्यश्रृंग जाण। चम्पावती नग्रकु आसिबे ऋषि पुण २
जळ वृष्टि करिबे राजार हेब सन्तान। शुणिण राणी हंस कहन्ति वचन ३
तुम्भंकु से कथा कि रूपे जणा गला। दशरथ बोइले जे ब्राह्मणे कहिला ४
राणी हंस बोइले ब्राह्मणे शाप देले। शाप देइ किम्पा सुदया विप्र कले ५
राजन बोइले द्विजंकु जज्ञरे बरे राजा। जज्ञ सरन्ते राजन न कले तांकु पूजा ६
सेहि अबिगुण धरि विप्रे शाप देले। बार बरस इन्द्र जे न पाळु बोइले ७
शाप देइ विप्र जे चळिले निजपुर। गोड़ाइ तांकु आगे ओगाळि नृपवर ८

ब्राह्मण के शाप से चम्पावती राज्य में इन्द्र के वर्षा न करने पर सभी लोग व्याकुल है। ९४ हमारी कुशलता की जानकारी प्राप्त करने के लिये मित्र यहाँ आया है। उसके नेत्रों में आँसू भरे है और मुखाकृति चिन्तापूर्ण है। ९५ उन्होंने मेरे सामने नाना प्रकार से दुःख व्यक्त किया। मैंने धर्म को देखते हुये उन्हें शांत किया। ९६ शांत होकर उसने मुझसे कहा कि मैं पुत्री को अपने घर ले जाऊँगा। ९७ उसे देखकर मेरा रनिवास सुखी हो जायेगा। हे नृपश्रेष्ठ! मेरे दिन भी कट जायेंगे। ९८ तुम्हारा और मेरा शरीर भिन्न नहीं है। ऐसा कहकर मेरे मित्र ने प्रार्थना की है। ९९ यह सुनकर रानियों का मन प्रसन्न हो गया। आपकी अनुमति देने से वह चली जाये इस प्रकार सबने कहा। ४०० राजा ने कहा कि जाने से काम ठीक रहेगा। तीन वर्ष बीतने पर मुनिश्रेष्ठ आयेंगे। ४०१ विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि हैं। वह चम्पावती नगर को आयेंगे। २ वह जल की वर्षा करेंगे और राजा के संतान होगी। यह सुनकर रानियों ने कहा कि आपको यह बात कैसे ज्ञात हुयी। दशरथ ने कहा कि मुझसे ब्राह्मण ने कहा था। ३-४ रानियों ने कहा कि ब्राह्मणों ने तो शाप दिया था। फिर उन्होंने शाप देकर उन पर दया कैसे की। ५ राजा बोले कि लोमपाद ने यज्ञ में ब्राह्मणों का वरण किया था। यज्ञ की समाप्ति पर राजा ने उनकी पूजा नहीं की। ६ इसी अपराध को लेकर ब्राह्मणों ने शाप देते हुए कहा कि बारह वर्ष पर्यन्त इन्द्र पालन न करे और दुर्भिक्ष पड़े। ७ शाप देकर ब्राह्मण अपने घर जाने लगे। राजा

धन रत्न देइण जे बिनयी होइले। सुदयाकर बोलिण चरणे नमिले ९
राजार निउन भाव देखि मुनि बर। बोइले राजन हे शाप नुहे दूर ४१०
अवश्य अपाळक एराज्यरे तोर हेब। ऋष्य शृंग आसिले जे बरषा करिब ४११
सन्तान हेब तोर ऋष्यशृंग देले चरु। एतेक कहिण बिप्र गलेक सेठारु १२
शुणिण राजन जे चिन्ता भरे गला। सकळ प्रजांकु पुण जाइण कहिला १३
नवम बरष आज सरिकि गो पुण।जळ वृष्टि न हेला मोहर राज्ये जाण १४
मोर संगे मइत्र आगहुँ होइ थिले। अनेक जतनरे प्रीतिभाव कले १५
पुत्र पौत्री जे नथिबारु तांकर।आम्भ दुहिताकु पाळिबे तांकर बिचार १६
शुणि करि राणी माने बोइले एबे जाउ। से राजार चिन्ता जे मनरु दूर हेउ १७
लीळावती बोइले नुहइ ए बेभार। सुमरिबा नारद आसन्तु आम्भपुर १८
एते बोलि ब्रह्मसुत सुमरिले गीते। जाणिण नारद मुनि अइले तुरिते १९
नारदंकु देखिण राजन चळि गला।कर जोडि आगरे जाइण छिड़ा हेला ४२०
सकळ राणी माने पादे आसि पड़ि। सुकल्याण करन्ति नारद तपशाळी ४२१
नारद बोइले तुम्भे राणी हंस शुण। राजन संगरे किस भाळु अछ पुण २२
लीळावती बोइले आम्भे अटु नार खार। पुत्र न थिबारु आम्भे होइलु असार २३

ने पीछे से दौड़कर उन्हें आगे से रोक लिया। ८ धन, रत्न प्रदान करके उन्होंने बहुत प्रार्थना की। मेरे ऊपर दया करें, इस प्रकार कहते हुये वह उनके चरणों में झुक गया। ९ मुनिश्रेष्ठ राजा की हीनता को देखकर बोले हे राजन! यह शाप टल नहीं सकता। ४१० तुम्हारा राज्य अवश्य ही दुर्भिक्ष से ग्रस्त होगा शृंगी ऋषि के आने पर वर्षा होगी। ४११ शृंगी ऋषि के चरु प्रदान करने से तुम्हें संतान प्राप्त होगी। इतना कहकर ब्राह्मण वहाँ से चले गये। १२ यह सुनकर राजा चिन्ता से भर गये। उन्होंने जाकर सभी प्रजाजनों से कहा। १३ आज नौ वर्ष बीत गये हैं। मेरे राज्य में जल वृष्टि नहीं हुयी है। १४ मेरे साथ उनकी मित्रता पहले ही हुयी थी। उन्होने अनेक यत्न से प्रेम दिखाया था। १५ उनके पुत्र-पुत्री न होने के कारण वह हमारी पुत्री का पालन करेंगे। उनका ऐसा विचार है। १६ यह सुनकर रानियों ने कहा कि तब वह जाए जिससे उस राजा के मन की चिन्ता समाप्त हो जाये। १७ लीलावती ने कहा कि यह ठीक नहीं है। हम लोग नारद का स्मरण करें जिससे वह हमारे महल में आ जायें। १८ इतना कहकर उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से ब्रह्मा के पुत्र नारद का स्मरण किया। यह जानकर नारद मुनि शीघ्र ही आ पहुँचे। १९ नारद को देखकर राजा चल पड़े और हाथ जोड़कर जाकर उनके समक्ष खड़े हो गये। ४२० सभी रानियों ने आकर उनके चरण छुये। तपस्वी नारद ने आशीर्वाद दिया। ४२१ नारद ने कहा हे महारानी! आप लोग सुनिये। राजा के साथ आप लोग क्या विचार-विमर्श कर रही हैं। २२ लीलावती बोली

वृद्ध काळे गोटिए दुहिता जात हेला ।से झिअ पाइँ वर खोजिले न मिळिला २४
सेहि शकासे राजार मनदु:खे जाण । आम्भ संगरे वसि भाळन्ति अनुक्षण २५
नारद बोइले मागो आम्भ ठारु शुण ।विभाण्डक ऋषि पुत्र ऋष्यश्रृंग जाण २६
एहि कन्या तार पाइँ होइ अछि जन्म । चम्पावती देशकु आसिव से जे पुण २७
से आसिले जळ बृष्टि से राज्ये होइव । तुम्भर दुहिताकु से ऋषि विभा हेव २८
दुइ राजांकु पुत्र देव से ऋषि जाण ।आजुं उज्जळ तुम्भ कुळ होइला जाण २९
राणीहंस बोइले से राज्य महीपाळ । आम्भर संगरे प्रीति जे अटइ तार ४३०
से बोलन्ति दुहिताकु अन्त:पुरे नेवे ।किछि दिन अन्तरे आणिण छाड़ि देवे ४३१
नारद बोइले से राजार संगे पुण ।से राज्यंकु ए दुहिता जाउ ता संगेण ३२
प्रीति हेउ कार्ज्य हेउ कुळ हेउ रक्षा ।शोणित आप्यानरु पितृंकु कर रक्षा ३३
ए कन्या विभा हेले पितृ पक्षरे भल ।
ऋष्यश्रृंग आसिले विभा होइव नारीवर ३४
अल्प दिने तुम्भर आण्ठु कुडा दोष जिव ।
आउ चारि वर्ष अछि दशरथर अभाव ३५
एते कहिण नारद स्वर्गपुर गले । शा एन्ता दुहिताकु राणीहंस कहिले ३६
मउसा माउसी मागे श्रद्धा जेते कले । देखिवाकु तांकपुरे नेवाकु बोइले ३७

कि हम लोग वैसे ही टूटे हैं और संतान के न होने से सारहीन हो गई है। २३ वृद्धावस्था में एक पुत्री पैदा हुयी थी उसके लिये खोजने पर कोई वर नही मिला। २४ उसी के लिये राजा का मन दु:खी है। हर समय पर हमारे साथ बैठकर सोचा करते है। २५ नारद ने कहा माताजी! हमसे सुनिये। विभाण्डक ऋषि के पुत्र श्रृंगी ऋषि है। २६ यह कन्या उन्ही के लिये उत्पन्न हुयी है। वह चम्पावती देश में आयेंगे। २७ उनके आने पर उस राज्य में जल की वर्षा होगी। वह ऋषि तुम्हारी पुत्री से विवाह करेंगे। २८ वह ऋषि दोनों राजाओ को पुत्र प्रदान करेगे। तुम यह समझ लो कि आज से तुम्हारा कुल उज्जवल हो गया। २९ रानियो ने कहा उस महिपाल के साथ हमारी प्रीति है। ४३० वह कह रहे है कि वह पुत्री को अंत:पुर ले जायेगे और कुछ दिन के पश्चात् लाकर छोड़ देंगे। ४३१ नारद ने कहा कि राजा के साथ यह पुत्री उनके राज्य को जाए जिससे प्रेम का निर्वाह हो, कार्य बने तथा कुल की रक्षा हो। शोणित तृप्ति से पितरों की रक्षा करो। ३२-३३ इस कन्या का विवाह होने से पिता के पक्ष के लिये उत्तम है। श्रृंगी ऋषि के आने से श्रेष्ठ नारी (उनसे) विवाह करेगी। ३४ थोड़े ही दिनो में तुम्हारा अपुत्रिक दोष समाप्त हो जाएगा। दशरथ के लिये और चार वर्ष तक अभाव रहेगा। ३५ इतना कहकर नारद स्वर्गलोक को चले गए। रानियों ने पुत्री शान्ता से कहा। ३६ मौसा-मौसी ने वड़े प्यार से तुम्हें उनका नगर देखने के

शाएन्ता बोइला मुं जे जिबु तांक पुर ।
माउसी माआंकु देखिबाकु श्रद्धा जे मोहर ३८
शुणिण माता माने सुबेश कराइले ।रत्न हान्दोळारे दुहिताकु बिजे कराइले ३९
शते जण दासी जे दुहिता संगे गले । चम्पावती देशराज्य आनदरे चळे ४४०
दशरथंकु कहिण निज राज्ये गले । आपणार देशरे से प्रबेश होइले ४४१
चम्पाबती राणीमाने दुहिताकु नेले । शतेक राणीहंस एक ठाबे मिळिले ४२
दुहिताकु देखिण परम तोष हेले । कोळरे बसाइण चुम्बन राणी देले ४३
गोटिका सर लवणी भुञ्जि बाकु देइ । अनेक गउरब कलेक सर्बे तहिँ ४४
पार्बती बोइले देब शुण मो बचन ।चण्डाळ झिअ अदिति किस कला पुण ४५
ईश्वर बोलु छन्ति शुण गो प्राण सही । निर्ज्जळ हेला राज्य जळ नमिळइ ४६
कूप बाम्फी पोखरी शुखिला सबु ठारु । पुष्करणी ह्रद जे अन्तर जळरु ४७
केबळ नदी मात्र सरयु घोटि अछि ।गंगा मिशि बारु सेहि नदी जे बहुछि ४८
से नदीरु सर्बे जळ नेउ छन्ति पुण । अनेक बिकळ जे हेले प्रजानन ४९
दुःखी दरिद्र जे अनेक तहुँ मले ।अपाळक काळरे सम्भाळि न पारिले ४५०
राजार सिंह द्वार रे करन्ति बोबाळि । कटकलुटि करिण कलेक हुरि जुरि ४५१
देखि करि राजन ताटका मन हेला ।अम्बिका चण्डाळकु डकाइ आणिला ५२

लिये साथ ले आने को कहा है। ३७ शान्ता ने कहा कि मैं उनके घर जाऊँगी। मौसी को देखने की हमारी इच्छा है। ३८ यह सुनकर माताओं ने उसका शृंगार करवाया और उन्होंने पुत्री को रत्नजड़ित पीनस में बैठा दिया। ३९ पुत्री के साथ एक सौ दासियाँ गईं। चम्पावती देश के नरेश आनन्दपूर्वक चल दिये। ४४० वह दशरथ से कहकर अपने राज्य को चले गए और अपने देश में जा पहुँचे। ४४१ चम्पावती के रनिवास की सौ रानियों ने एक साथ मिलकर पुत्री का स्वागत किया। ४२ पुत्री को देख उन्हें अत्यन्त आनन्द हुआ। रानी ने उसे गोद में बिठाकर चूम लिया। ४३ उन्होंने उसे मक्खन तथा मलाई खाने को दी। तथा सबने उसका नाना प्रकार से सम्मान किया। ४४ पार्वती ने कहा हे देव ! मेरी बात सुनिये। फिर अदिति चाण्डाल की पुत्री ने क्या किया ? ४५ शंकर जो बोले हे प्राण सहचरी ! सुनो। पानी न मिलने से राज्य निर्जल हो गया। ४६ सब स्थानों पर कुएँ बावलियाँ, ताल सूख गए। पुष्करिणी तथा सरोवरों में जल नहीं रह गया। ४७ केवल एकमात्र सरयू नदी भरी थी। गंगा के मिलने से वह नदी बह रही थी। ४८ सभी लोग उसी नदी से जल लेते थे। प्रजाजन अत्यन्त व्याकुल थे। ४९ वहाँ अनेक दुःखी दरिद्र मर गए। दुर्भिक्ष के समय में वह सँभल न सके। ४५० राजा के सिंहद्वार पर वह गुहार कर रहे थे। उन्होने दुर्ग को लूटकर उपद्रव मचा दिया। ४५१ यह देखकर राजा का मन अवाक् हो गया। उसने अम्बिका चाण्डाल को बुलवा

बोइला तोर धन दिअरे प्रजारे ।रक्षा होन्तु प्रजा माने खाइ ए राज्यरे ५३
चण्डाळ बोइला मुँ धर्मकु न लंघिवि । दुहिता जेहु नेवे ताहाकु धान देवि ५४
दुहिताकु दान निअ धान तुम्भे निअ ।बळात्कार कले तुम्भे स्तिरी हत्या पाअ ५५
अळप अधर्मरे जे एते शास्ति हेला । मुहिँ धर्म लंघिले तुम्भ दोष परा ५६
शुणि पुण राजन जे न कहिला किछि । बोइला मोर जीवन किम्पाइ रहिछि ५७
सकळ सृष्टि सिना विधाता सर्जिला ।जीव जन्तु करिण जे आहार खञ्जिला ५८
स्थावर जंगम कीट पतंगा दिमाने । समस्तंकु जन्म कले से विधाने ५९
से एवे अधर्म कलाक न विचारि । मोहर बुद्धि सिनारे सेहु नेला हरि ४६०
मुहिँ मले ताहा ठारे एणु मोर दोष । एहांक विकळ सहिवा नुहेँ विशेष ४६१
प्राणकु हारिवि आत्मा घातिकि हेवि मुहिँ।एते बोलि एकान्तरे वसे राजा जाइ ६२
तिनि दिन तिनि रात्र बसि से निर्ज्जनरे। विधाता पुरुष जे जाणिले स्वर्गपुरे ६३
जशोबन्त पुरे थाइ होइले विकळ । बोइले राजा मोते देले मही भार ६४
एमन्ते विचार कले चतुर वदन । नारदकु बोइले तु शुणरे नन्दन ६५
जेतेक ब्रह्म ऋषि अछन्ति तिनि पुर । समस्तंकु डाकि आण मोहर नवर ६६
शुणिण नारद जे वेगे चळि गले ।तिनि पुरि ब्रह्म ऋषि डाकिण आणिले ६७

लिया । ५२ उन्होंने उससे उसका धान्य प्रजा को देने को कहा। जिससे आहार करके उस राज्य के प्रजाजनों की रक्षा हो सके । ५३ चाण्डाल ने कहा कि मैं धर्म का उल्लंघन नही करूँगा। जो मेरी पुत्री को ग्रहण करेगा उसी को धान देंगे । ५४ आप पुत्री तथा धान का दान ले लें। बलपूर्वक आहरण करने से आपको स्त्री हत्या लगे । ५५ थोड़े से अधर्म के कारण तो इतना दण्ड मिला मेरे धर्म का उल्लंघन करने से दोष आपका ही होगा । ५६ यह सुनकर राजा ने कुछ भी उत्तर नही दिया। उन्होंने फिर कहा कि हमारा जीवन फिर किस कारण से बचा है । ५७ ब्रह्मा ने समस्त सृष्टि की रचना की। जीव, जन्तुओं का निर्माण करके उनके लिये आहार जुटा दिये । ५८ उन्होंने विधानपूर्वक स्थावर जंगम कीट के साथ पक्षियों आदि सभी को उत्पन्न किया । ५९ उन्होंने अब विना बिचारे ही अधर्म कर दिया। उन्होंने मेरी बुद्धि ही हर ली । ४६० अपने दोष के कारण मैं मर जाता परन्तु इन लोगों का कष्ट सहना विशिष्ट नहीं है । ४६१ प्राण त्याग करने से मैं आत्मघाती हो जाऊँगा। इतना कह कर राजा एकान्त में जाकर बैठ गए । ६२ वह निर्जन में तीन दिन तीन रात बैठे रहे। स्वर्गलोक में विधाता ने इसे जान लिया । ६३ वह यशोवन्तीपुर में व्याकुल हो गए तथा बोले कि राजा ने मुझे बड़ा भार दे दिया है । ६४ चतुरानन ब्रह्माजी ने इस प्रकार विचार करके नारद से कहा, हे तात ! सुनो । ६५ तीनों लोकों में जितने ब्रह्मऋषि हैं। सबको मेरे भवन में ले आओ । ६६ यह सुनकर नारद शीघ्र ही गये और तीनों लोकों के ब्रह्मऋषियों को बुलाकर लाये । ६७ यशोवंतीपुर में समस्त ऋषि एकत्रित हुये और उन्होंने

सकळ ऋषि मिळिले जशोबन्ती पुर। बेद बरंकु देखिण कले नमस्कार ६८
बेद बर बोइले सकळ पुत्रे शुण।चम्पावती नग्रे बृष्टि न कला मेघ जाण ६९
शस्य हानि हेला जेन फळिला फळ। जळहिँ शुखिला जे नमिळे आहार ४७०
नव बर्ष अति कष्टरे प्रजा बञ्चि। क्षुधारे जीव माने होइले बड़ कष्टि ४७१
देश पाटणा पुर नग्र जे कटक। समस्त पुर हेला न हेला अटक ७२
भोजन न मिळि बारु पत्र चोबाइले। लोड़िण जळ जे प्रजामाने न पाइले ७३
सम्भाळि न पारिण राज्य भार राजा। बोइले ए जीवन करिब मुहिँ तेज्या ७४
तृण शज्या करिण शोइछि राजन। निश्चय़ जीवन जे हारिबइँ पुण ७५
से राज्यर चण्डाळ अम्बिका नामे जाण। दुहिता नाम अरुन्धति शुण मुनिजन ७६
से दुहिता पद्मिनी अंशरे जात हेला। दुइ लक्ष भरण धान सम्पादिला ७७
सत्य करि अछि पिता धर्मकु चाहिँण। देवता ब्राह्मण ऋषि राजा नेबे धन ७८
दुहिताकु नेले मोर निश्चय़ मुहिँ देबि। सत्य कलि अलंघित के बेहेँ नोहिबि ७९
सत्य बाणी चण्डाळ ठारे बोइले बळवन्त।
बळबन्त बळपण कले नाश जिब सृष्टित ४८०
पद्मिनी कन्या से जे निश्चे झास देब। शापरे तिनिपुर भष्म से करिब ४८१

ब्रह्माजी को देखकर नमस्कार किया। ६८ ब्रह्मा ने कहा कि समस्त पुत्रो! सुनो। चम्पावती नगर में मेघ ने वर्षा नहीं की है। फल न लगने से फसल की हानि हो गई है। जल भी सूख गया है और आहार भी नहीं मिलता। ६९-४७० नौ वर्षों तक प्रजा ने अत्यन्त कष्ट भोगे। भूख से जीव लोग अत्यन्त कष्ट को प्राप्त हुये। ४७१ देश, कस्बा, पुर, नगर तथा दुर्ग आदि सभी में दुःख व्याप्त था। कहीं भी अटकाव नहीं था। ७२ भोजन न मिलने से लोग पत्ते खा रहे थे। खोजने पर प्रजा को पानी नहीं मिलता था। ७३ राजा राज्य का भार न संभाल पाने के कारण स्वयं अपने जीवन को त्यागने के लिये कह रहे थे। ७४ वह कुश शय्या बनाकर उस पर लेट गये और सोचने लगे कि आज मै निश्चित रूप से जीवन त्याग दूँगा। ७५ उसी राज्य में अम्बिका नाम का चांडाल है। हे मुनिजन! सुनिये। उसकी पुत्री का नाम अरुन्धती है। ७६ वह पुत्री पद्मिनी के अंश से उत्पन्न हुयी है। उसने दो लाख भार धान तैयार किये हैं। ७७ उसके पिता ने धर्म को देखते हुये प्रतिज्ञा की है कि इस धन को देवता ब्राह्मण ऋषि अथवा राजा लेगे। ७८ यह मेरा निश्चय है कि पुत्री को लेने पर ही मै धान दूँगा। मैंने यह प्रतिज्ञा की है। इसका उल्लंघन मैं कभी नहीं करूँगा। ७९ चाण्डाल की प्रतिज्ञा के वाक्य कहने में साहसयुक्त थे। परन्तु बलवान् के द्वारा बल का प्रयोग करने से सृष्टि ही नष्ट हो जायेगी। ४८० वह पद्मिनी कन्या निश्चय ही अग्नि में कूद जायेगी और शाप से तीनों लोकों को भस्म कर देगी। ४८१ हे पुत्रो! अब आप लोग हमारी

पुत्र माने तुम्भे मोर बचन शुण एबे । से कन्याकु बिभा जे हुअ जणे तुम्भे ८२
नारद बोइला जे से कथा नुहँइ । अंगिरा बोइले चण्डाळ जाति सेहि ८३
अगस्ति बोइले ए दूषण कथा । पौलस्ति बोइले एहु नुहइ व्यवस्था ८४
गौतम बोइले अगस्ति कथा सेहु । दुर्बासा बोइले से कथा हेब काहुँ ८५
कपिळ बोइले से नुहइ कदाबारे । सनन्त सनातन से कहे वेदवरे ८६
उज्जळ कुळ किम्पा निउन कुळकु जिव। प्राण न हरि किम्पा अभक्ष भक्षिव ८७
महर्ग काळे बालि पिइले कि जिइ । धन वन्त लोक तप कले कि नभरइ ८८
राजा हेले प्रभु पण से राज्ये बोलाइ ।प्रभु हेले ताहाकु कि पातक न लागइ ८९
जातिकि जाति सिना उपकार जाण । देवे नर लोकंकु जे देवे अमृत पान ४९०
विद्या वन्त लोकंकि सुखकु देव दान ।एक हाण्डि करे कि भुञ्जिवे सर्बजन ४९१
जम्वु द्विप मण्डळरे कले जे राजा पुण ।
से राजांकु साहा किम्पा नोहिले राजागण ९२
आपणार जाति जे हे उछि प्राण तेज्या ।
से कथाकु गुरु किम्पा न कला महाराजा ९३
वेदवर बोइले शुण हे पुत्र मणि । देवंकु दुःख देले जे असुर दुष्ट पुणि ९४
असुरे मारिबाकु जेबे कूट कले । चण्डाळ घरे पद्मिनी कन्या जात कले ९५

वात सुनें तथा आप में से कोई एक उस कन्या के साथ विवाह करे। ८२ नारद ने कहा यह वात तो नहीं हुई। अंगिरा बोले कि वह चाण्डाल जाति की है। अगस्त ने कहा कि यह दोषपूर्ण वात है। पुलस्त ने कहा कि व्यवस्था नही है। ८३-८४ गौतम तथा अगस्त ने भी वैसा ही कहा। दुर्वासा ने कहा कि यह वात कैसे होगी। ८५ कपिल ने कहा यह कभी नहीं होगा। सनत् तथा सनातन ने ब्रह्मा जी से कहा कि उत्तम कुलहीन कुल में कैसे जाएगा। प्राण नष्ट न होने पर वह अभक्ष्य का भक्षण क्यों करेगा। ८६-८७ प्यास समय में वालू पीने कौन जाएगा। धनवान व्यक्ति तपस्या करने से क्या नम्र हो जाता है ? ८८ राजा होने से प्रभुता के उस समय में उस राज्य में उसकी प्रभुता वोलती है। प्रभु हो जाने से क्या उसे पाप नहीं लगता ? ८९ जातीय व्यक्ति से ही जाति का उपकार होता है। देवता क्या मानवों को अमृत पान प्रदान करेंगे। ४९० विद्वान व्यक्ति क्या सुख का दान कर सकता है ? एक हण्डी में पकाने से क्या सभी लोग उसे खायेंगे। ४९१ जम्वूद्वीप में जिसने उन्हें राजा वनाया फिर उन राजागणों ने उस राजा की सहायता क्यों नहीं की। ९२ अपनी ही जाति का वह प्राणों को उत्सर्ग कर रहा है। महाराज ने इस वात को महत्व क्यों नहीं दिया ? ९३ ब्रह्मा ने कहा हे पुत्र मणि ! सुनो। देवताओं को दुष्ट राक्षसों ने घुसकर कष्ट दिया। ९४ तव देवताओं ने राक्षसों का वध करने के लिये षड्यन्त्र रचा। चाण्डाल के घर

चम्पावती देशकु वृष्टि जे नकराइ । बासुदेव जात हेबे अजोध्यारे जाइँ ९६
तेबे असुरे हेबे प्राण नाश । शुणिण कपिळ जे होइले हरष ९७
वासुदेव जेबे अजोध्यारे जात हेबे ।चम्पावती राजा किम्पा पाप कला पूर्बे ९८
ताहांकर राज्य किम्पा न पाळिला इन्द्र। सेथिरे केउँ कथा कह हे सन्देह ९९
बेदबर बोइले शुणरे कुमर । बेळहुँ दोष करिछि लोमपाद वीर ५००
देबंकु गाळि देबारु क्रोध से होइले ।अपाळक तार राज्ये बिचारि कराइले ५०१
लोमपाद हेतुरु आसिबे रुष्यश्रृंग । रुष्य श्रृंग आसिले बासुदेव जन्म हेब २
ऋषि बोइले जेबे देवता भल हेबे ।देव किम्पा बिभा ताहाकु नुहन्ति हे एबे ३
बेदबर बोइले शुणरे नन्दन । देवता माने आगहुँ जन्म हेले पुण ४
नर बानर जे भालु रूप धरि जाण । समस्ते जन्म हेले धरणीरे पुण ५
से कन्याकु बिभा हेबाकु जोग नाहिँ । कमळांक अंशरे से नारी जन्म होइ ६
अंगिरा पचारिले केउँ दोष कला ।चण्डाल जोनिरे से किम्पाइ जन्म हेला ७
बेदबर बोइले शुणरे नन्दन । धर्मकर दुहिता बेळरे से जाण ८
बसन्त देबतांकु बिभा देले पुण ।काळे से कन्याकु बसन्त भोग कले जाण ९
से कन्या बसन्तर बोल नामानिला । सेथि सकासे चण्डाळ घरे जन्म हेला ५१०

में उन्होने पद्मिनी कन्या को उत्पन्न किया। ९५ चम्पावती प्रदेश में उन्होंने वर्षा नहीं करवाई। भगवान विष्णु जाकर अयोध्या में जन्म लेंगे। ९६ तब असुरों का विनाश होगा। यह सुनकर कपिल प्रसन्न हो गए। ९७ उन्होंने कहा कि जब भगवान अयोध्या में जन्म ग्रहण करेंगे तो चम्पावती के राजा ने पूर्वकाल में पाप किसलिये किया। उनके राज्य का पालन इन्द्र ने क्यों नहीं किया ? इस बात का क्या अर्थ है जिससे मुझे सन्देह हो रहा है। ९८-९९ ब्रह्माजी ने कहा हे पुत्र ! सुनो। एक बार पराक्रमी लोमपाद ने अपराध किया था। ५०० देवताओं को अपशब्द कहने के कारण वह उससे कुपित हो गए। उन्होंने उसके राज्य को दुर्भिक्ष से ग्रस्त कर देने का विचार किया। लोमपाद के लिये श्रृंगी ऋषि आयेंगे और उनके आने से भगवान जन्म ग्रहण करेंगे। ५०१-५०२ ऋषि ने कहा यदि देवताओं का भला होगा तो वह ही उससे विवाह क्यों नहीं कर लेते। ३ ब्रह्मा ने कहा हे पुत्र ! सुनो। देवता तो पहले से ही जन्म ले चुके हैं। ४ उन्होंने नर वानर तथा भालुओं का रूप धारण किया है। सबके सब पृथ्वी पर अवतरित हो गए हैं। ५ वह उस कन्या से विवाह करने के योग्य नहीं हैं। वह स्त्री लक्ष्मी के अंश से उत्पन्न हुई है। ६ अंगिरा ने पूँछा कि उसने क्या अपराध किया। चाण्डाल योनि में उसका जन्म क्यों हुआ। ७ ब्रह्मा ने कहा, हे पुत्र ! सुनो। उस धर्म पुत्री से वसन्त देवता ने विवाह किया। समय पर बसन्त देव ने उसका उपभोग किया। उस कन्या ने वसन्त का कहना न माना। इसी कारण से उसका जन्म चाण्डाल के घर में

ए जन्मरे से कन्यात होइब मुकत ।नारद बोइले से काहाकु होइब बिभात ५११
बेदबर बोइले जेबे देल आम्भ भाग । पूर्बर कथा एबे शुण असंभव १२
काळ देवता ए कूट जे विचारिले । बशिष्ठंकु जाग से करिवाकु नेले १३
निमि राजा आगे ताकु बरण करिथिला। सुर राजा उप्रोधरे नन्दन मोर गला १४
तेणु से राजन जे शाप देला पुण । चण्डाळ घरे बिभा हुअरे तु जाण १५
मोते से कथा जे जणा पुण गला । पुत्र कथा जाणिण विकळ मन हेला १६
पद्मिनी कन्याकु मुँ जे जात कलि आणि। पूर्बरे बशिष्ठरे अटइ तरुणी १७
नारद बोइले तोरे जणा जेबे अछि ।
आम्भ मानंकु तुम्भे किम्पा लोड़िल पिता गोछि १८
बेदबर बोइले बशिष्ठ हेबे बिभा । से कथाकु समस्ते प्रतिष्ठा करिबा १९
से पाक कले आम्भे भुञ्जि बाक पुण।चारि बेद पढ़िताकु बिभा करिवा जाण ५२०
नारद बोइले पिता एकथा जथार्थ ।विचारि काज्यं न कले पछे होन्ति रुष्ट ५२१
बेदबर बोइले समस्ते चाल जिवा । से कन्याकु चण्डाळ घररु आणिवा २२
अगस्ति बोइले एक कथा आम्भर मूळ । आम्भर भाइ से जे नोहु से विटाळ २३
शापकु न मेण्टिबा आण चण्डाळुणी । पवित्र कले सिना तिनिपुर जाणि २४
से कन्या हातरे जेहु न भुञ्जिब पुण । निश्चय चण्डाळ से होइब सर्बजन २५

हुआ । ८-९-५१० इस जन्म में उस कन्या की मुक्ति हो जाएगी । नारद ने कहा फिर वह किसके साथ विवाह करेगी । ५११ ब्रह्मा ने कहा कि जब हमारा भाग दे रहे हो तो तुम पूर्व की असम्भव कथा सुनो । १२ काल देव ने यह षड्यत्र रचा था । वह वशिष्ठ को यज्ञ करवाने को ले गए । १३ राजा निमि ने उन्हें पहले से ही वरण किया था । परन्तु मेरा पुत्र वशिष्ठ देवराज इन्द्र के अनुरोध से चला गया । १४ इसलिये उस राजा निमि ने शाप दे दिया कि तुम्हारा विवाह चाण्डाल के घर में हो । १५ यह बात मुझे ज्ञात हुई । पुत्र के समाचार जानकर मेरा मन व्याकुल हो गया । १६ मैंने लाकर पद्मिनी कन्या को उत्पन्न किया पूर्व से ही वह कामिनी वशिष्ठ के लिये है । १७ नारद ने कहा कि जब आपको ज्ञात था तो फिर हे पिता ! आपने हम लोगों को किसलिये बुलवाया । १८ ब्रह्मा ने कहा कि जब वशिष्ठ विवाह करेंगे तो उस बात को सभी सकारेंगे । १९ उसके रसोई बनाने पर हमें खाना होगा । चारों वेद पाठ करके उसका विवाह करेंगे । ५२० नारद ने कहा कि पिता जी यह बात यथार्थ है । बिना विचारपूर्वक कार्य करने से वह पीछे कुपित हो जाते । ५२१ ब्रह्मा ने कहा कि चलो सब लोग चले और उस कन्या को चाण्डाल के घर से ले आएँ । २२ अगस्त ने कहा कि यह बात ही हमारे लिये मुख्य है जिससे हमारा भाई जाति से च्युत न हो । २३ शाप को अन्यथा नही करेंगे । चाण्डालिनी को ले आइये । पवित्र करने पर तीनों लोक जान जाएँगे । २४ उस कन्या के हाथ

शुणिण सकळ ऋषि सन्तोष होइले । पितांकु घेनिण चम्पावती नग्रे गले २६
अम्बिका चण्डाळर नग्रे प्रबेश । देखि करि चण्डाळ नमिला पाद गत २७
कि कार्य्ये नारद मोर पुरकु आगमन । ब्रह्मांक सुत बोइले शुण हे उत्तम २८
तोहर घरे जेते धान अछि पुण । एहि राज्य राजाकु तु दिअरे बहन २९
राजार चिन्ता जाउ प्रजाए खान्तु नेइ । दुर्भिक्षे मरन्ति प्रजा आहार न पाइ ५३०
चण्डाळ बोइला मुँ लंघिबि नाहिँ धर्म । मोहर से धान नुहें दुहितार पुण ५३१
ताहाकु आगे नेले धानकु पछे नेब ।बळे नेले दुहिता मो आत्म घाति हेब ३२
बेदबर बोइले जे सत्य ए बचन ।चण्डाळ बोइला केहु बिभा हेब पुण ३३
नारद बोइले भाइ बशिष्ठ बिभा हेब ।शुणिण चण्डाळ जे होइले तोष भाव ३४
कन्यार हस्तरे नेइ पुष्पमाळ देला । आपणार घरु दुहिताकु अणाइला ३५
बेदबर आगरे उभा कला नेइ । देखिण बेदबर सन्तोष मन होइ ३६
बशिष्ठंकु बोइले आगकु आस बळा ।अरुन्धति कन्या ठारु घेन पुष्पमाळा ३७
शुणि करि बशिष्ठ आगरे उभा हेले । अरुन्धति पुष्पमाळा लम्बाये गळारे ३८
बेदबर बोइले शुणरे कुमारी । केते गदा धान तो कर लगाअ जाइ करि ३९
कुमारी बोइला धान दश गदा मोर । मोर संगे आसि पिता देख हे सकळ ५४०

से जो भोजन ग्रहण नहीं करेंगे। वह सभी निश्चित रूप से चाण्डाल हो जाएँगे। २५ यह सुनकर सभी ऋषि सन्तुष्ट हो गए तथा पिता को लेकर चम्पावती नगर में गए। २६ वह लोग अम्बिका चाण्डाल के घर में जा पहुँचे। उन्हें देखकर चाण्डाल ने उनके चरणों में प्रणिपात किया। २७ हे नारद! किस कार्य से आप हमारे घर पधारे है। ब्रह्मा के पुत्र ने कहा हे भद्र! सुनो। तुम्हारे घर में जितना भी धान है तुम इस राज्य के राजा को शीघ्र ही दे दो। २८-२९ प्रजा के लेकर खाने से राजा की चिन्ता दूर हो जाएगी। आहार न पाकर दुर्भिक्ष से प्रजा मर रही है। ५३० चाण्डाल ने कहा कि मैं धर्म का उल्लंघन नहीं करूँगा। वह धान मेरे नहीं अपितु पुत्री के हैं। ५३१ पहले उसे लेने पर ही पीछे से धान लेना। वलपूर्वक लेने से मेरी पुत्री आत्मघातिनी हो जाएगी। ३२ ब्रह्मा ने कहा कि यह बात सत्य है। चाण्डाल ने कहा क्या कोई विवाह करेगा? ३३ नारद ने कहा कि भाई वशिष्ठ विवाह करेंगे। यह सुनकर चाण्डाल प्रसन्न हो गया। ३४ उसने कन्या के हाथों में लाकर पुष्प की माला दी तथा अपने घर से कन्या को बुलवा लिया। ३५ उसने कन्या को लेकर ब्रह्मा जी के समक्ष खड़ा कर दिया। उसे देखकर ब्रह्मा ने मन से सन्तुष्ट होकर वशिष्ठ से कहा, वत्स! आगे आओ और अरुन्धती कन्या से पुष्पमाला प्राप्त करो। ३६-३७ यह सुनकर वशिष्ठ आगे खड़े हो गये। अरुन्धती ने पुष्पमाला गले में डाल दी। ३८ ब्रह्मा जी ने कहा अरी कुमारी! सुन। तुम्हारे धान के ढेर कितने है जाकर हाथ लगाओ। ३९ कुमारी ने

शुणि करि बेद बर बधू संगे गले। समस्त गदारे हात देला कन्या भले ५४१
बेदबर बोइले धान असरन्ति हेउ। चम्पावतीर कष्ट जे आज ठारु जाउ ४२
कुमारी बोइला पिता सन्तोष हेलि जाण। चम्पावती राज्य अटे चारि शत जुण ४३
ए धानरे ए राज्यर दुर्भिक्ष क्षय़ जाउ। काळ जुग कथा मोहर रहि थाउ ४४
एते बोलि बिधाता संगरे बधू चळि। पुष्पक जान परे वसिला जाइ वाळि ४५
बशिष्ठ कन्याकु घेनि वसिले से जान। बेदबर चढ़िले से हंसक बाहान ४६
मन पवन चढि ऋषिमाने गले। नारदंकु चाहिँ बेदबर आज्ञा देले ४७
लोमपाद राजाकु कह जाइ करि। प्रजांकु बाण्टि देउ धान नेइ करि ४८
कहिण से राजांकु आसिले बहन। शुणिण नारद जे चळिले तत्क्षण ४९
चम्पावती कटकरे प्रबेश होइले। राजार नग्रर अन्तःपुररे मिळिले ५५०
देखिण राणीहंस ओळगि आसि हेले। कर जोड़ि नारदंक आगरे उभा हेले ५५१
महामुनि कहिले राजन काहिँ पुण। राणी हंस बोइले चिन्तारे छन्ति जाण ५२
राज्यर चिन्तारे से निमग्ने छन्ति रहि। शुणि करि नारद कहिले कह जाइँ ५३
बेगे जाइ राजांकु घेनाइ आस जाण। बोलिव नारद बिजय़ कलेक पुण ५४
न आसिले अजय़ निश्चय़ एबे हेव। आसिले चिन्ता जळरु उद्धार होइव ५५

कहा कि मेरे दस ढेर धान हैं। हे पिता ! मेरे साथ आकर उन सबको देखिये। ५४० यह सुनकर ब्रह्मा जी वहू के साथ गये। सभी ढेरों पर कन्या ने भली प्रकार से हाथ लगाया। ५४१ ब्रह्मा ने कहा कि धान कभी समाप्त न हों और आज से चम्पावती नगर का कष्ट दूर हो जाये। ४२ कुमारी ने कहा हे पिता ! मै संतुष्ट हो गई। चम्पावती राज्य चार सौ योजन मे है। इस धान से इस राज्य का अकाल नष्ट हो जाये और युग-युग तक मेरी कथा स्थित रह जाये। ४३-४४ इतना कहकर वधू ब्रह्मा जी के साथ चलकर पुष्पक विमान पर जाकर बैठ गई। ४५ वशिष्ठ उस यान पर कन्या को लेकर बैठ गये। ब्रह्मा जी हंस वाहन पर चढ़ गये। ४६ ऋषि लोग संकल्प वायु पर चढ़कर चले गये नारद को देखकर ब्रह्मा जी ने आज्ञा दी। ४७ तुम जाकर राजा लोमपाद से कहो कि वह धान लेकर प्रजा मे वितरित कर दे। ४८ वह राजा के कहने पर शीघ्र ही आयें। यह सुनकर नारद उसी समय चल दिये। ४९ वह चम्पावती दुर्ग में प्रविष्ट होकर राजमहल के अन्तःपुर में जा पहुँचे। ५५० उन्हें देखकर रनिवास की रानियों ने आकर प्रणाम किया और हाथ जोड़कर नारद के सामने खड़ी हो गई। ५५१ महामुनि ने पूँछा कि राजा कहाँ है। रानिया ने कहा कि वह चिन्ताग्रस्त है। वह राज्य की चिन्ता में निमग्न है। यह सुनकर नारद ने कहा कि उनसे जाकर कहो कि वह शीघ्र ही यहाँ आ जायें। उनसे कहना कि नारद आये है। ५२-५३-५४ न आने पर निश्चय ही पराभव होगा और आने पर चिन्ता के जल से उद्धार हो जायेगा। ५५ यह सुनकर रानियाँ

शुणिण राणी हंस जे बेगे चळि गले। राजा थिबा पुरे जाइ प्रबेश होइले ५६
चरणे ओळगि जे होइले सर्बराणी। कर जोड़ि आगरे कहन्ति मृदुबाणी ५७
बोइले बेदवरंक कुमर नारद। आम्भर पुरे आसिण कहिले प्रमाद ५८
बोइले राजांकु जाइ बेग करि आण। नोहिले ए पुर दहिबिटि आज जाण ५९
एते बोलि क्रोध हेले ब्रह्मांक कुमर।बेगे आस प्राण धन जिबा ता आगर ५६०
शुणिण राजन जे चिन्ता दूर कला। डरिण नारदंकु जे बेगे चळिगला ५६१
अन्तःपुरे मुनि पाशे हेलाक प्रबेश। मुनि चरणे न मिला बनमाळी शिष्य ६२
नारद बोइले तु किम्पाइ चिन्ताकरु। नव बर्ष सरिला मनरे किम्पा भाळु ६३
लोमपाद बोइले मोर प्रजाजन मले। अन्न जळ न पाइ विकळमन हेले ६४
क्षुधारे हुरि जुरि कलेक राज्ये पुण।थिबा न थिबा लोके होइले सम जाण ६५
सम्भाळि न पारि राजा द्वारे हुरि कले। प्राण रख बोलिण उच्चरे डाक देले ६६
से बिकळ देखिण मुँ मनरे हेलि दुःखी।बिचारिलि किम्पाइ जीवन थिबि रखि ६७
एमन्त बिचारन्ते कथाए मन पड़ि। बेदबर सिना जे सकळ जात करि ६८
तिनिपुर चउद ब्रह्माण्ड सञ्चरिला। छपन कोटिए जीव एथिरे रञ्चिला ६९
त्रिदश देवता अठर कोटि नागबळ।समस्तंकु खञ्जिला जे जाहार आहार ५७०

शीघ्रतापूर्वक चली गयीं और राजा के महल में जाकर प्रविष्ट हुयीं। ५६ सब रानियों ने उनके चरणों में प्रणाम करके हाथ जोड़कर मधुर वाणी में कहा। ५७ ब्रह्मा जी के पुत्र नारद ने हमारे महल में आकर कहा है कि शीघ्र ही जाकर राजा को ले आओ। नहीं तो इस नगर को आज भस्म कर देंगे। ५८-५९ ऐसा कहकर ब्रह्मा के पुत्र कुपित हो गये। हे प्राणधन ! शीघ्र ही आइये। उनके समक्ष चलें। ५६० यह सुनकर राजा चिन्ता का त्याग करके भयभीत होकर शीघ्र ही नारद के पास चल दिये। ५६१ वह अन्तःपुर में मुनि के निकट जा पहुँचे। वन माली के पुत्र ने मुनि के चरणों में प्रणाम किया। ६२ नारद ने कहा तू किसलिये चिन्ता कर रहा है। नौ वर्ष बीत गये। मन में क्या सोच रहा है। ६३ लोमपाद ने कहा कि मेरी प्रजा मर चुकी है। अन्न, जल न पाकर उनके चित्त व्याकुल हो गये हैं। ६४ भूख से उन्होंने राज्य में लूटमार की है। रहने व न रहने वाले सभी लोग बराबर हो गये। ६५ स्थिति न सँभलने से उन्होंने राजद्वार पर गुहार लगायी और उच्चस्वर से कहा कि हमारे प्राणों की रक्षा कीजिये। ६६ उन्हें व्याकुल देखकर मै मन में दुःखी हो गया। मैंने विचार किया कि मैं यह जीवन किसलिये रखूँ। ६७ इस प्रकार विचार करते हुये एक बात मेरे मन में आई कि यह सब ब्रह्मा जी की ही सृष्टि है। ६८ उन्होंने तीन लोक चौदह भुवन बनाये। छप्पन करोड़ जीव-जन्तु यहाँ निर्मित किये। ६९ त्रिदश देवता अठारह करोड़ नागों का दल बनाया और सबके लिये अपना-अपना आहार भर दिया। ५७० फिर उन्होंने अन्याय की बात कैसे सोची।

पुणि अन्याय़ कथा किम्पाइ बिचारिला। सकळ राज्यपाळि मोते जे दशा देला ५७१
एते लोक जेवे विकळ होइले। वन जीव माने जेवे वनस्तरे मले ७२
मुँ किस करिवि रहिण एथे पुण।विचारिलि निश्चे मुँ जे छाड़िवि जीवन ७३
ए आत्मा घातकि दोष लागु वेद वरकु जाण।समस्तंकर अटन्ति पिता सेहु पुण ७४
एमन्त विचार जे आहार तेज्या कलि।मरि वार बाञ्छा जे मनरे विचारिलि ७५
नारद वोइले एजे नुहइ भल पण। विपति वेळे किम्पा कातर हेव जाण ७६
आउ तिनि वर्षरे शुभ तोते हेव। विभाण्डक कुमर तो राज्यकु आसिब ७७
उत्तम सन्तान जे होइब तोर जात। राज्यरे मेघमाने पाळिवे तुरित ७८
सकळ कथा तो चित्तरु दूर हेव।अळप दिनकु किम्पाइ करु दुःख भाव ७९
जेउँ दिन दशरथ कुमारी एथे मिळि।सेहि दिनु कष्ट तोर सरिछि महीधारी ५८०
से कन्या थिले तोते वहुत सुख देव। चित्रा एणि कन्या से सबु ठारे शुभ ५८१
राजार दुहिता होइ मुनिकि सेविव। पवित्र मुनिकर से घरणी होइव ८२
शुणिण राणी हंस जे नमिले पाद तळे। वोइले मुनि सुदय़ा कर हे आम्भरे ८३
से मुनि आसिले जे सन्तान हेव जाण।विभाण्डक नन्दन जे ऋष्य श्रृंग जाण ८४
एवे वि जणाइवा ताहाकु पुण जाइ। नारद वोइले से कथा उचित नुहँइ ८५
जन्म हेला ठारु जे ऋष्य श्रृंग जाण। तप करुअछि से वसिण निर्गुण ८६

सभी राज्यों का पालन किया और मुझे दण्ड दिया। ५७१ इतने लोग जव व्याकुल हुये। वन्य जीव वन में मर गये। ७२ मैं यहाँ रहकर क्या करूँगा। इसलिये मैंने निश्चित रूप से अपने जीवन का परित्याग करने का विचार किया। ७३ ब्रह्मा जी को इस आत्मघात का दोष लगे। वह भी तो सबके पिता हैं। ७४ ऐसा विचार कर मैंने भोजन त्याग दिया और अपने मन में मरने की कल्पना करने लगा। ७५ नारद ने कहा कि यह अच्छा नहीं है। विपत्ति के समय दुःखी क्यों हो रहे हो। ७६ और तीन वर्ष में तुम्हारा शुभ होगा। विभाण्डक के पुत्र तुम्हारे राज्य को आएँगे। ७७ तुम्हारे उत्तम सन्तान उत्पन्न होगी। राज्य में शीघ्र ही मेघ वर्षा करेंगे। ७८ सारी वातें तुम्हारे मन से हट जाएँगी। थोड़े दिनों के लिये क्यों दुखी हो रहे हो। ७९ हे महिपाल ! जिस दिन से दशरथ नन्दिनी यहाँ आई है। उसी दिन से तुम्हारा कष्ट समाप्त हो गया है। ५८० वह कन्या रहने पर तुम्हें वहुत सुख देगी। चित्रायणी कन्या तो सवसे शुभ है। ५८१ राज कन्या होकर वह मुनि की सेवा करेगी। वह पवित्र मुनि की भार्या होगी। ८२ यह सुनकर रानियों ने चरणों में प्रणाम किया तथा मुनि से कृपा करने को कहा। ८३ वह कहने लगी कि विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि हैं। उन मुनि के आने से सन्तान होगी। ८४ हम जाकर उससे अभी वता देंगी। नारद ने कहा कि यह वात उचित नहीं है। ८५ जन्म होते ही श्रृंगी ऋषि वैठकर गुणों से रहित होकर तपस्या कर रहे हैं। ८६ पन्द्रह वर्ष में तपस्या

पन्दर बर्षरे तप जे हेब सिद्धि । सेते बेळे तुम्भर पुरकु तार गति ८७
बार बर्ष कुमरकु होइलाक पुण । तिनि बर्ष गले से तपरे निर्बाण ८८
राणी हंस बोइले शुण हे मुनिबर ।से मुनि बिभा हेब कि कह आम्भ आगर ८९
नारद बोइले शुण गो राणी माने तुम्भे।से मुनि दशरथकुमारि कि बिभा हेबे ५९०
तुम्भंकु पुत्रदान देबे जे सेहु पुण । जळ बृष्टि कराइबे ए राज्यरे जाण ५९१
दशरथ दुहिता गले तुम्भंकु अशुभ । एहि ठारे बिभा कले बड से सुलभ ९२
शुणिण राणीहंस हरष मन हेले । भल सुजोग राजा भेट जे होइले ९३
नारद बोइले दिन बेळ जे शुभ पुण ।षष्ठम चन्द्र अटे तुम्भ राजाकु सेदिन ९४
दशरथकु सेदिन एकादश चन्द्र । दुहिँ कि शुभ हेला जोग एका चन्द्र ९५
राणी हंस बोइला शुण हे मुनिबर । रुष्यश्रृंग किस जे अटन्ति तुम्भर ९६
नारद बोइला से जे नारद अटे मोर । बिभाण्डक ऋषि अटे ब्रह्मार कुमर ९७
बेदबर नाति जे अटइ ऋष्य श्रृंग । शुणिण राणी माने होइले आनन्द ९८
राणी हंस पचारिले नारदंकु पुण । तुम्भे ऋषिमाने जे जन्म भिन्न-भिन्न ९९
ब्रह्मार कुमर जे केउँ रूपरे हुअ ।कह हे मुनि से सन्धि सेथिरे आम्भ प्रिय ६००
नारद बोइले शुण गो पाटराणी । तपरे निर्जित से हुअन्ति सेहु पुणि ६०१

सिद्ध होगी। उस समय उनका आगमन तुम्हारे महल में होगा। ८७ युवक को तपस्या करते हुए बारह वर्ष हो गए हैं। तीन वर्ष बीतने पर उनका तप पूर्ण हो जाएगा। ८८ रानियों ने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ! सुनिये। आप पहले हमें यह बताइये कि क्या वह मुनि विवाह करेंगे। ८९ नारद ने रानियों से कहा कि आप लोग सुनिये। वह मुनि दशरथ नन्दिनी के साथ विवाह करेंगे। ५९० वह फिर आप लोगों को पुत्र दान देंगे तथा इस राज्य में जल की वर्षा करायेंगे। ५९१ दशरथ की पुत्री के चले जाने से तुम्हारा अशुभ होगा। इसी स्थान से विवाह करना सुलभ रहेगा। ९२ यह सुनकर रानियों के मन प्रसन्न हो गए। बड़े सौभाग्य से ही राजा की भेंट हुई थी। ९३ नारद ने कहा दिन और तिथि बड़ी शुभ है। उस दिन तुम्हारे राजा का चन्द्रमा षष्टम ग्रह में होगा। ९४ उस दिन दशरथ का चन्द्रमा ग्यारहवें स्थान पर होगा। एक चन्द्रमा ही दोनों के लिये शुभकारी योग का हुआ। ९५ रानियों ने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ! सुनिये। श्रृंगी ऋषि आपके कौन है? ९६ नारद ने कहा कि वह मेरा भतीजा है। विभाण्डक ऋषि ब्रह्मा के पुत्र है। ९७ श्रृंगी ऋषि ब्रह्मा के नाती हैं। यह सुनकर रानियाँ प्रसन्न हो गईं। ९८ रानियों ने नारद से पुनः पूँछा कि आप ऋषियों के जन्म भिन्न-भिन्न प्रकार से हुए हैं। ९९ आप किस रूप से ब्रह्मा के पुत्र लगते हैं। आप हमसे वह रहस्य बताइये। यह हमें प्रिय है। ६०० नारद ने कहा हे पटरानी! सुनो। यह तपस्या से निर्दिष्ट होता है। ६०१ अनेक समय में तप सिद्ध करने पर ब्रह्मा जी उसे एक सुरभि

अनेक काळरे जे तपकु सिद्ध कले । सुरभि गोटिए ताकु दिअन्ति वेदबरे　२
से सुरभि देवता तपसिद्ध जाण । तेणु से बोलावन्ति ब्रह्मार नन्दन　३
तांकर पुत्र माने ब्रह्मार हुअन्ति नाती । तपसिद्ध होइले बोलान्ति ब्रह्मजति　४
पाटराणी बोइले शुण हे मुनिबर । कथाए पचारिबु कह हे बिस्तार　५
ब्रह्ममुनि उत्तरु से किस बोला बन्ति । नारद बोइले कहिबा ताहा बाछि　६
ब्रह्ममुनि होइण से जे तप करि । सिद्ध मुनि संगरे गणिता होइ पारि　७
सिद्ध मुनि हेले पाताळकु जान्ति पुण ।आहार शून्य तांकर पवन भक्ष जाण　८
जाहा बिचारन्ति ताहा हुअइ तक्षण ।जाहाकु जाहा कहन्ति मिळइ अद्भुतेण　९
बिचारिबा कथा जहुँ हुअइ तांकर ।पाताळकु तेज्या करि जान्ति स्वर्गपुर　६१०
स्वर्गपुरे देव ऋषि संगे गणा हुए । देवंकर संगरे अमृत भुञ्जि रहे　६११
प्रळय पर्ज्यन्ते संगरे थान्ति पुण । देवतांक संगरे बन्धु वर्ग जाण　१२
प्रळय बेळे से देवंक संगे नाश । केबळ सदाशिव बिष्णुरे होन्ति शेष　१३
पाटराणी बोइले शुण हे मुनिवर । तिनिपुर राजा पुणि केमन्ते प्रकार　१४
राजा होइ जन्म हेले मरन्ते होन्ति किस। से कथा आम्भ आगे कह हे बिशेष　१५
नारद कहिले से कथा एबे शुण ।राजा माने बिधाता अटन्ति सर्बे जाण　१६
संसार पाळन्ति से जे राजा ब्रह्मा रूपे । अधर्म कले पड़न्ति जाइ कुम्भी पाके　१७

गाय दे देते हैं। २ वह सुरभि देव तप से सिद्ध होती है। इस कारण से वह ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। ३ उनके पुत्रगण ब्रह्मा के नाती हो जाते हैं। तपस्या सिद्ध हो जाने पर उन्हें ब्रह्मर्षि कहा जाता है। ४ पटरानी ने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये। आपसे एक बात पूँछ रही हूँ। आप उसे विस्तारपूर्वक कहिये। ५ ब्रह्मयति के पश्चात् वह क्या कहे जाते हैं। नारद ने कहा कि हम यह खोलकर बतायेंगे। ६ ब्रह्मर्षि होकर जो तपस्या करते हैं उनकी गणना सिद्ध मुनियों में होती है। ७ सिद्ध मुनि होकर वह पाताल को जाते हैं। बिना कुछ आहार किये वह वायु का भक्षण करते हैं। ८ वह जिसको जो कहते हैं वह उसे अद्भुत रूप से प्राप्त हो जाता है। ९ जब उन्हें किसी बात पर विचार करना होता है। तब वह पाताल का त्याग करके स्वर्गलोक में चले जाते हैं। ६१० स्वर्गलोक में उनकी गणना देवर्षियों में होती है। वह देवताओं के साथ अमृत पान करते हुए रहते हैं। ६११ वह प्रलयपर्यन्त उनके साथ रहते हैं। देवताओं के साथ वह उनके बन्धुवर्ग में आ जाते हैं। १२ प्रलय के समय वह देवताओं के साथ समाप्त हो जाते हैं केवल शिव तथा विष्णु शेष रह जाते हैं। १३ पटरानी ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ सुनिये। तीनों लोकों के राजा फिर किस प्रकार होते हैं। १४ राजा होकर जन्म लेने के पश्चात् मरने पर वह क्या होते हैं। १५ नारद ने कहा कि अब वह बात सुनो। राजा लोग सभी ब्रह्मा ही होते हैं। १६ अन्त में राजा ब्रह्मा के रूप में संसार का पालन करते हैं। अधर्म

धर्म कले स्वर्गपुरे पा आन्ति पूजा पुण । अमृत भुञ्जिण से रहन्ति सुखेण १८
राजांकर अमरे सुर राजा होइ । तपंकर अंशे जे बेदबर कहि १९
नागंकर प्रभु जे अटन्ति सदाशिव । जन्तुंकर प्रभु जे प्रजापति हेब ६२०
समस्तंकर परे प्रभु अटन्ति बासुदेव । बासुदेवंकु बिने अन्यत्रे नाहिँ भव ६२१
बासुदेवंकु भजिले सकळ कार्ज्य सार । बासुदेव प्रीति कले संसारु उद्धार २२
अचिन्ता बैकुण्ठरे मिळइ सेहु नर । पाप पुण्य भलमन्द नाहिँ ता मनर २३
दिनके जुगे प्राये मणइ सेहु पुरे । बिष्णु प्रळय जेबे हुअइ जेउँ काळे २४
तेबे से नाश जान्ति बासुदेवर संगे । से बासुदेव जळ हुअइ तरंगे २५
समस्ते ताहार जे शरीरे लीन जान्ति । पुणि संसार कले समस्ते संचरन्ति २६
शुणिण नारी माने सन्तोष मन हेले । नारदंक चरणे समस्ते शोइले २७
नारद बोइले तुम्भंकु सुकल्याण हेउ । पुत्रवती हुअ मान्य धर्म जे रहु २८
उठिण राणी हंस शिरे कर देले । केमन्त हेला कथा बोलिण पचारिले २९
शते राणी आम्भे अटु जे राज्यर । शतेक कुमर जे होइब आम्भर ६३०
नारद बोइले आम्भर प्रसने । पुत्रबती होइब न भाळ तुम्भे मने ६३१
शते राणींकर शतेक पुत्र जात हेब । ऋष्यश्रृंग जागरु चरु जे भक्षिब ३२

करने से जाकर कुम्भीपाक नर्क में गिर जाते हैं। १७ धर्म करने पर स्वर्गलोक में पूजा प्राप्त करते हैं। १८ वही राजा स्वर्ग में देवराज हो जाते हैं। तपस्या के अंश से वह ब्रह्मा कहे जाते हैं। १९ नागों के अधिपति सदा कल्याणकारी शिव हैं। जन्तुपति प्रजापति हो जाते हैं। ६२० सबके स्वामी भगवान वासुदेव हैं। वासुदेव के विना अन्यत्र गति नहीं है। ६२१ वासुदेव का भजन ही सब कार्यों का सार है। भगवान से प्रेम करने पर संसार से उद्धार हो जाता है। २२ वह व्यक्ति फिर चिन्ताशून्य वैकुण्ठ को प्राप्त होता है। उसके मन में पाप-पुण्य अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं रह जाता। २३ उस लोक में एक दिन युग के समान प्रतीत होता है। जिस समय विष्णु प्रलय अर्थात् भगवान की लीला का संवरण होता है तब वह भगवान के साथ ही लीन हो जाते हैं। वह वासुदेव में जल की तरंगों के समान मिल जाते हैं २४-२५ सभी उनके शरीर में लीन हो जाते हैं। पुनः संसार की सृष्टि होने पर वहीं सब निकलते हैं। २६ यह सुनकर सभी नारियों के मन सन्तुष्ट हो गए। उन सबने नारद के चरणों में प्रणिपात किया। २७ नारद ने कहा कि आप लोगों का कल्याण हो। आप लोग पुत्रवती हों और आप लोगों के सम्मान तथा धर्म में वृद्धि हो। २८ रानियों ने उठकर अपने हाथ शिर से लगा लिये। यह कैसे होगा यह पूंछने लगीं। २९ राजा की हम एक सौ रानियाँ है। हम लोगों के सौ पुत्र होंगे। ६३० नारद ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम सब अपने मन में चिन्ता मत करो। तुम सब पुत्रवती होओगी। ६३१ सौ रानियों के सौ पुत्र उत्पन्न होंगे। तुम लोग श्रृंगी

राणी माने बोइले शुण मुनिबर। तुम्भर प्रसन्नरे आम्भर मन स्थिर ३३
पुरुषमाने सिना एमन्त गतिपाइ। स्तिरी माने केमन्ते हुअन्ति गोसाइँ ३४
नारद बोइले जे स्तिरी इष्ट देबी। देबींकर इष्ट जे दुर्गा नाम भजि ३५
दुर्गा जे पार्बती चरणे पुण सेबि। पार्बती दया कले हुअन्ति सदभाबि ३६
परम बैष्णवी बोलन्ति सेहु पुण। समस्तंकर कारण पार्बती तुम्भे जाण ३७
ग्रामदेबी पिचासुणी ड़ांकेणि होन्ति पापी। सुधमरे थिले दासी जे थोके होन्ति ३८
धर्मवन्त स्तिरी माने संगरे थान्ति पुण। प्रळय बेळे लीन शरीरे जान्ति जाण ३९
उत्पति बेळे पुण ताहांकु जन्म करि। संसार पाळइ अतुट देव नारी ६४०
एमन्ते स्थिति उत्पत्ति प्रळय होन्ति जाण। पूर्बरे जेउँ रूपे जन्मइ से रूपेण ६४१
राणी माने बोइले शुणिलु सकळ। अजोध्या महीपाळ मइत्र आम्भर ४२
तांकर पुत्र जात होइबे टिकि पुण। आम्भ प्राये तांक कोळ होइ अछि शून्य ४३
न्याय बन्त राजा जे बिचारबन्त पुणि। धार्मिक पणे राजा अटइ शिरोमणि ४४
टाण पणरे राजा शनिकि जिणिला। नपारि जन्तुपति फेरिण पुण गला ४५
शान्ति पणे शीतळ ताहाकु नाहिँ बड़। सातश पचाश राणी खटन्ति पयर ४६

ऋषि के यज्ञ का चरु भक्षण करोगी। ३२ रानियों ने कहा, हे मुनिश्रेष्ठ! सुनिये। आपके प्रसन्न हो जाने से हमारा मन स्थिर हो गया है। ३३ पुरुष लोग तो इस प्रकार की गति को प्राप्त होते है। हे प्रभु! स्त्रियों की क्या गति होती है ?। ३४ नारद ने कहा कि स्त्रियों की इष्ट देवी तथा देवियों की इष्ट जो दुर्गा है वह उनके नाम का भजन करती है। ३५ फिर वह अर्थात् दुर्गा पार्वती के चरणों की सेवा करती हैं। पार्वती के दया करने पर वह सद्भावशालिनी बन जाती है। ३६ वह फिर परम् भगवती कही जाती हैं। सबके निस्तार की मूल कारण आप लोग पार्वती को ही समझें। ३७ पापिनी स्त्रियाँ ग्राम देवी पिशाचनी तथा डाकिनी हो जाती है। धर्म पर स्थित रहने वाली स्त्रियाँ झुण्ड की झुण्ड दासियाँ हो जाती है। ३८ धर्मवती स्त्रियाँ उनके साथ में रहती हैं और प्रलयकाल में उनके शरीर में लीन हो जाती हैं। ३९ उत्पत्ति के समय पुन: उनको उत्पन्न करके वह अक्षय देवनारी पार्वती संसार का पालन करती हैं। ६४० इस प्रकार उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय होता है और जिस प्रकार पहले के रूप में जन्म हुआ था उसका वही रूप हो जाता है। ६४१ रानियों ने कहा कि हमने सब सुन लिया है। अयोध्या के राजा हमारे मित्र है। ४२ क्या उनके भी पुत्र उत्पन्न होगा। हमारे समान उनकी भी गोद सूनी है। ४३ वह राजा न्यायशील तथा विचारवान है। वह राजा धार्मिकता में शिरोमणि अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है। ४४ वीरता में तो उस राजा ने शनि को जीत लिया था। उनसे भिड़ न पाने के कारण यमराज लौट गया था। ४५ शान्ति में उनसे बड़ा कोई नहीं है। सात सौ पचास रानियाँ उसके चरणों की सेवा करती है। ४६ राजा

समस्तंकु राजन सुखरे अछि पाळि। राजार बचन से न लंघन्ति नारी ४७
नारद बोलन्ति तुम्भे केमन्ते जाणिल। तांकर संगरे संग तुम्भर नाहिँ मूळ ४८
राणीमाने बोइले कथारु जणागला।राजा आम्भर कहि बारु दुहिता से नेला ४९
जेते बिचारन्ति प्रीति हेले अभ्यन्तर।जणे नास्ति कले जणे बोलन्ति हेला भल ६५०
शुणिण नारद बोलन्ति तुम्भे जाण। प्रीतिरे बश्य राजा राणी हेले पुण ६५१
आम्भंकु सुमरि बारे आम्भे से कहिलु।तुम्भ भाव भक्ति देखि सन्तुष्ट होइलु ५२
आम्भर बधू हेब तुम्भर दुहिता।दिअ चम्पावती नग्रे नकर मने चिन्ता ५३
ए दुहिता सकाशे सन्तान तोर हेब।ऋष्य शृंग तोर पुरकु निश्चय़ आसिब ५४
आम्भ ठारु शुणि राज दुहिता चालि देला।नीळावती बोइले एकथा सत्य भला ५५
ज्ञातप नोहिले कि राजन ध्वन्ते छाड़ि।आम्भे बिचारि बाकु आगहुँ अछि पड़ि ५६
राणी माने बोइले शुण हे मुनिवर। आम्भंकु शते कुमर जेबे देल बर ५७
से राजार केते कुमर हेबे कह।अनेक राणी जे अटन्ति राजार प्रिय़ ५८
नारद बोइले राजार हेबे चारि पुत्र। तिनि राणी गर्भरु जे होइबे सम्भुत ५९
त्रैलोक्य ठाकुरे जे अटन्ति बासुदेव। चतुर्द्धा मूत्तिरे सेहु जात हेब ६६०
तेबे गरिष्ठ असुर मरिबे राज्यरु। तेबे सुखी होइबे तांकर कृपारु ६६१

सबका पालन सुखपूर्वक करता है। वह स्त्रियाँ कभी भी राजा के वचनों का उल्लंघन नहीं करती हैं। ४७ नारद ने कहा कि आप लोगों को यह कैसे पता चला। आप लोगों का साथ तो कभी उनसे हुआ नहीं। ४८ रानियों ने कहा कि बातों से पता चला है। हमारे राजा कहकर उनकी पुत्री ले आये। ४९ जितना सोचते हैं। उतनी ही उनकी आंतरिक प्रीति है। एक के मना करने पर दूसरा कहता है कि ठीक है। ६५० यह सुनकर नारद ने कहा कि आप लोग जानती है कि राजा और रानी प्रेम के वश में हो गये हैं। ६५१ हमें स्मरण करने पर हमने उनसे कहा था। हम आप लोगों की भाव-भक्ति देखकर संतुष्ट हो गये थे। ५२ हमने कहा था कि तुम मन में चिन्ता न करते हुये अपनी पुत्री को चम्पावती नगर में भेज दो। यह हमारी वधू होगी। ५३ इस पुत्री के कारण से तुम्हारे संतान होगी। शृंगी ऋषि तुम्हारे घर अवश्य आयेंगे। ५४ हमसे इस प्रकार सुनकर राजकन्या चल दी। नीलावती ने कहा कि यह बात सत्य है। ज्ञात न होने से क्या राजा उसे छोड़ देते। हम तो पहले से ही विचार में पड़े थे। ५५-५६ रानियों ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये। जब आपने हमें सौ पुत्र होने का वरदान दिया है तो उस राजा के कितने पुत्र होंगे, यह हमें बताइये। उस राजा की अनेक प्रिय रानियाँ है। ५७-५८ नारद ने कहा कि उस राजा की तीनों रानियों के गर्भ से चार पुत्र उत्पन्न होंगे। ५९ नारायण जो तीनों लोकों के स्वामी हैं। वह चार रूपों में जन्म ग्रहण करेंगे। ६६० तभी प्रभावशाली राक्षस मरेंगे और राज्य में उनकी कृपा से सुख मिलेगा। ६६१

दुर्ज्जन लोक माने सबु हेबे नाश । मर्त्यपुर राजा माने होइबे बिश्वास ६२
गला बेळे समस्तंकु संगरे प्रभु नेबे ।थिला जाक समस्तंकु भाव करि थिबे ६३
एगार सहस्र बर्ष मारिबे असुर । सन्तान रखिण प्रभु जिबे निज पुर ६४
तांकर संगरे तुम्भेमाने सर्ब जिब ।नाति सिना तुम्भर ए राज्ये राजा हेव ६५
पुत्र बधू समस्ते जिबे एका बेळे । श्रीहरि पाटणारे रहिबे सर्ब काळे ६६
जेबे तांक ठारे बिश्वास तुम्भे हेब । तेबे तुम्भे भवजळ नदीरु पारि हेव ६७
दशरथ कुमर होइबे आदि मूळ । नर बानर देवता खटिबे पाद तळ ६८
नाग बळ आदि सर्ब होइबे किंकर । चेतारख मनरे जे नकर अन्तर ६९
हृदरे भगति हेब मनरे हरष । प्रीति कले तरिब नोहिले जिब नाश ६७०
शुणिण राजा राणी सन्तोष होइले । पाएड़ा पाड़ि समस्ते भुमिरे शोइले ६७१
मुनिक चरण धरि कहन्ति जे बाणी । उत्तम गति आम्भंकु देल मुनि मणि ७२
अज्ञानि जिब आम्भे ज्ञान जे पाइलु । तुम्भर प्रसादरे मुक्त जे लभिलु ७३
मइत्र पुत्र जेबे होइबे बासुदेव । आम्भकु निश्चय देबे सदगति भाव ७४
चिन्ता जळु आम्भकु जे शान्ति कराइल। दावानळ अग्निरे गंगा जळ देल ७५

सभी दुष्ट लोग नष्ट हो जायेंगे। मृत्युलोक में राजा लोग विश्वासपात्र हो जायेंगे। ६२ भगवान जाने के समय सबको साथ ले जायेंगे और जब तक रहेंगे सबसे प्रेम करते रहेंगे। ६३ ग्यारह हजार वर्ष में वह राक्षसों का संहार करेंगे और फिर संतान को छोड़कर भगवान अपने लोक चले जायेंगे। ६४ उनके साथ आप सब चले जायेगे। आपका नाती इस राज्य का राजा होगा। ६५ समस्त पुत्रवधुएँ एक साथ चली जायेंगी। और श्री भगवान के धाम में सदैव निवास करेंगी। ६६ यदि आप लोगों का विश्वास उन पर होगा। तो आप लोग संसाररूपी नदी के जल से पार हो जायेंगे। ६७ दशरथ के पुत्र आदि-ब्रह्म होंगे। नर वानर तथा देवता उनके चरणों की सेवा करेंगे। ६८ नागों का दल आदि सभी उनके दास हो जायेंगे। अपने मन को चैतन्य रखकर उससे उन्हें अलग न करो। ६९ हृदय में भक्ति होने से मन में प्रसन्नता होगी। प्रेम करने से तर जाओगे। अन्यथा नष्ट हो जाओगे। ६७० यह सुनकर राजा और रानी संतुष्ट हो गये और उनके चरणों को पकड़कर सब पृथ्वी पर लेट गये। ६७१ मुनि के चरणो को पकड़कर उन्होंने कहा हे मुनियों में मणि के समान श्रेष्ठ! आपने हमें उत्तम गति प्रदान की है। ७२ ज्ञान पाने से हमारा अज्ञान चला गया। आपके प्रसाद से हमें मुक्ति मिल गई। ७३ जब भगवान हमारे मित्र के पुत्र होंगे तो वह हम लोगों को निश्चित रूप से भावयुक्त सद्गति प्रदान करेंगे। ७४ चिन्ता के जल से आपने हमें शांत कर दिया। दावानल की आग में आपने गंगाजल डाल दिया है। ७५ आज हमारे नगर में

भागिरथी आज जे होइला आम्भपुरे। कूप जळकु गंगा जे कल सुदयारे ७६
शृंगाळकु सिंह कल हे मुनिबर।श्वान आम्भ सिंहासने बसु तुम्भ बोले ७७
शूकरकु कामधेनु कल ऋषि आसि।केउँ शुभ जोगे आम्भे जन्म लभिलुटि ७८
बानरकु पान जे भुञ्जाइल पुण। अन्ध हस्ते बत्स मुदि देल हे आपण ७९
जन्म द्ररिद्रकु कोटिए धन देल।अकळित बारा निधिरे किळा जे पोतिल ६८०
अन्धकु चक्षुदान भल्लु के सुबर्ण पञ्जरो। घुघुरीकि खुआइल पाचिला कदळी ६८१
मुगुनि पथरकु जळरे भसाइल। बेंगंक मेळरे नेइ घृत छत्र देल ८२
काककु मिष्टान्न देलक आपण। एते बोलि नमिले जे मुनिंक चरण ८३
कृत्य कृत्य होइ करि करन्ति दइनि।निश्चये बासुदेवंकु देखिबु आम्भे पुणि ८४
नारद बोइले गो राणी माने शुण।चारि बर्षे देखिब त्रैलोक्य स्वामी पुण ८५
सतर बर्षरे कमळांकु देखिब। बासुदेव संगरे ईश्वर जन्म हेब ८६
तिनिपुर देवंकु देखिब नयनरे। पातक छाडि जिब शरीरु तुम्भरे ८७
नारद बचन शुणि हेले तोषमन। बासुदेव देखिबाकु हर्ष कले मन ८८
राज्यर चिन्ता से जे मनरु छाड़िले। समस्ते उल्लास होइ आनन्द होइले ८९
नारद बेदबर बोलरे गले पुण। राजार दुःखमन कले निबारण ६९०

भगीरथी प्रवाहित हुई है। आपने दया करके कुएँ के जल को गंगाजल बना दिया है। ७६ हे मुनिश्रेष्ठ ! आपने सियार को सिंह बना दिया। आपकी आज्ञा से हमारे सिंहासन पर कुत्ता भी बैठ सकता है। ७७ हे ऋषि ! आपने आकर सूकर को कामधेनु बना दिया है। किस शुभ योग में हमारा जन्म हुआ था। ७८ आपने बन्दर को पान खिलाया है। अन्धे के हाथ आपने रत्नमुद्रिका दे दी है। ७९ जन्म के दरिद्र को करोड़ों का धन दे दिया। अथाह जलधि में आपने खूँटा गाड़ दिया। ६८० अन्धे को नेत्रदान तथा भालू को स्वर्ण का पिंजड़ा दिया है तथा शूकरी को पके केले खिलाये हैं। ६८१ मूँगे के पत्थर को जल में तैरा दिया है। मेढकों के समूह से उसे निकाल कर उसे घृत-भोग प्रदान किया है। ८२ आपने कौवे को मिष्ठान्न प्रदान किया है। इस प्रकार कहते हुए उन्होंने मुनि के चरणों में प्रणाम किया। ८३ वह कृतकृत्य होकर दीनता प्रकाशित करने लगीं तथा कहने लगी कि हम लोग अब निश्चय ही भगवान का दर्शन करेंगी। ८४ नारद ने कहा कि रानियों ! सुनो। चार वर्ष में आप लोग त्रिलोकीनाथ का दर्शन करोगी। ८५ सत्रह वर्ष में आप लक्ष्मी का दर्शन करोगी। भगवान के साथ ही शंकरजी का जन्म होगा। ८६ तीनो लोकों के देवों को आप अपने नेत्रों से देखोगी। आप लोगों के शरीर से पाप दूर हो जाएगा। ८७ नारद के बचन सुनकर उनके मन सन्तुष्ट हो गए तथा भगवान के दर्शन करने के लिये उनके मन प्रसन्न हो गए। ८८ मन से राज्य की चिन्ता निकल गई। सभी उल्लास में भरकर प्रसन्न हो गई। ८९ ब्रह्मा के कथनानुसार नारद चले

चण्डाळर दुहिता जे स्वर्गपुर गला। बशिष्ठ ऋषिकु जहुँ बरण से कला ६९१
पार्बती बोइले तुम्भे शुण हे ईशान। कथाए रहिला एबे कह मोते पुण ९२
से धान किस हेला किए देला पुण। नारद राजांकु कि सेहु देले धान ९३
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। नारद राजा नग्रे प्रबेश जाइ होन्ति ९४
राजा प्रजांक चिन्तारे निमग्न होइ थिला।शीतळ कहि नारद राजांकु मोहिला ९५
कथार सम्पाद जे सरिला जहुँ पुण।राजन बोइले आम्भपुरे रहि आज दिन ९६
नारद बोइले तु शुणरे राजन। पात्र मन्त्रींकि तोर डकाअ बहन ९७
चारि शत जुण जे अटइ तोर स्थान। नग्रपुर पाटणा कटक राज्यमान ९८
सकळ राज्यरे तुम्भे दिआअ घोषण। धान बोहि नेबाकु आसन्तु सर्बजन ९९
वळद कुण्ढाइ जाहार जेउँ सज। समस्ते आसिण धान बोहिन्यन्तु बेग ७००
आज ठारू दुर्भिक्ष भागुं तोर पुर। तिनि बर्षकु धान न्यन्तु प्रजानर ७०१
दुःखी दारिद्र जे चण्डाळ नाना बर्ण। बन्ध शबर आदि जेते छन्ति पुण २
समस्ते आसिण जे धान बोहि न्यन्तु।बिळम्ब नकरि राजा लोक सुख पान्तु ३
राजन बोइले हे केउँ ठारे धान। केउँ ठारु नेब सकळ प्रजाजन ४
नारद बोइले माणिक्य पुरे धान। अम्बिका चण्डाळ जे साधुतमा पुण ५

गये और उन्होंने राजा के मन का दुःख हटा दिया। ६९० चाण्डाल की पुत्री स्वर्ग लोक को चली गई जब उसने वशिष्ठ ऋषि का वरण किया। ६९१ पार्वती ने कहा, हे ईशान दिशा के स्वामी शिव जी ! आप सुनिए। एक बात रह गई है। आप हमसे वह बताइये। ९२ उस धान का क्या हुआ और वह किसे दिया गया। क्या नारद ने वह धान राजा को दिये। ९३ शंकर जी ने कहा, हे भगवती ! सुनो। नारद राजा के नगर में जाकर प्रविष्ट हुए। ९४ प्रजा की चिन्ता में राजा डूबा हुआ था। नारद ने राजा को शान्त करके मोहित कर लिया। ९५ जब बातें समाप्त हो गईं तो राजा ने उनसे उस दिन उनके राज्य में रहने के लिये कहा। ९६ नारद ने राजा से कहा कि तुम सुनो और अपने सभासद तथा मंत्रियों को शीघ्र ही बुला लो। ९७ तुम्हारा स्थान जो चार सौ योजन का है जिसमें नगर, पुरवा, गाँव तथा राज्य आता है। सम्पूर्ण राज्य में तुम घोषणा करा दो कि धान उठाने के लिये सभी लोग आ जाएँ। ९८-९९ बैलों द्वारा तथा जो भी जिसके वाहन हों उससे सब लोग शीघ्र ही आकर धान लादकर ले जाँय। ७०० आज से तुम्हारे राज्य से दुर्भिक्ष चला जाय। प्रजाजन तीन वर्ष के लिये धान ले जाँय। ७०१ दुःखी दरिद्र अनेक जातियों के चाण्डाल कन्ध शवर आदि जितने भी हैं वह सब आकर धान ढो ले जाँय। बिना विलम्ब किये हुए राज्य के सभी लोग सुख प्राप्त करें। २-३ राजा ने कहा कि धान कहाँ हैं। समस्त प्रजा उन्हें कहाँ से ले जाएगी। ४ नारद ने कहा माणिक्यपुर में अम्बिका नामक सज्जन चाण्डाल है। धान उसी के यहाँ हैं। ५ वह धान तुम्हारी प्रजा

से धान तोर प्रजा घेनि बोहि जान्तु । अकट नाहिँ राजन कर मने हेतु ६
राजन बोइले से चण्डाळ सत्य कला । दुहिता नेले धान देबइँ बोइला ७
नारद बोइले से सत्य हेला तार । ताहार दुहिताकु नेले बेदबर ८
से कन्यार धान तोते देले कुश धर । मोते भेदि देले कहिब राजार ९
तांकर बोलरे मुँ तोर पुरे आसि । एबे धान निअन्तु सकळ पुरबासी ७१०
राजन बोइले तुम्भे शुण मुनिबर । चण्डाळ दुहिताकु जे नेले बेद बर ७११
आपे बिभा हेले कि पुत्रंकु बिभा कले । नारद बोइले जे बशिष्ठ बरिले १२
बशिष्ठंकर भारिजा आम्भर भाउज । शुणिण राजन जे होइले आश्चर्ज्य १३
बोइले मोर छार पाइँकि तुम्भे पुण । चण्डाळ झिअकु नेइ तेजिले मान्यधर्म १४
नारद बोइले से धर्मर नन्दिनी । बशिष्ठ ऋषि तांकु बिभा हेले पुणि १५
पद्मिनी अंशरे से सबु दिने जात । बेद ब्रह्मार बधू से अटइ सम्भुत १६
अनेक काळ भोग कले से बशिष्ठ । काळे ताकु आसिण मिळिला पुणि कष्ट १७
निमि राजा जाग जे आरम्भ पुणि कला। बशिष्ठंकु आचार्ज्य बरणे बरिला १८
बरण करिबारु बशिष्ठ तोष हेले । तोहर जोगे जिबि बोलिण बोइले १९
शुणि करि निमि राजा सकळ भिआइला। राजा प्रजा देवता सभिङ्कि बरिला ७२०

ढोकर ले जाए। हे राजन्! आप मन में विचार कर लें। यह अवरोध रहित है। ६ राजा ने कहा कि उस चाण्डाल ने प्रतिज्ञा की है कि जो पुत्री को लेगा, धान उसी को देंगे। ७ नारद ने कहा कि उसकी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई। उसकी पुत्री को ब्रह्माजी ले गये। ८ और उन्होंने उस कन्या का धान आपको दे दिया है तथा हमें आपसे बताने के लिये भेजा है। ९ उनके कहने से मैं आपके यहाँ आया हूँ। अब समस्त पुरवासी धान ले लें। ७१० राजा ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ! आप सुनिये। ब्रह्मा जी चाण्डाल की कन्या को ले गये। उन्होंने स्वयं विवाह किया अथवा पुत्र के साथ विवाह किया। नारद ने कहा कि वशिष्ठ ने उसके साथ विवाह किया है। ७११-१२ वशिष्ठ की पत्नी हमारी भाभी हैं। यह सुनकर राजा आश्चर्य में पड़ गये। १३ उन्होंने कहा मुझ तुच्छ के लिये आपने चाण्डाल की कन्या को लेकर मान तथा धर्म को छोड़ दिया है। १४ नारद ने कहा कि वह धर्म की पुत्री है और वशिष्ठ ऋषि ने उससे विवाह किया है। १५ वह सर्वदा से पद्मिनी के अंश से उत्पन्न हुयी है और वेदवर ब्रह्मा की वधू हो गई है। १६ वशिष्ठ ने चिरकाल तक भोग किया। थोड़े समय पर उन पर कष्ट आ पड़ा। १७ राजा निमि ने यज्ञ आरम्भ किया था। उन्होंने वशिष्ठ को आचार्य के रूप में वरण किया था। १८ वरण करने से वशिष्ठ ने संतुष्ट होकर उनसे उनकी यज्ञ में जाने के लिये वचन दिया था। १९ यह सुनकर राजा निमि ने सारी तैयारियाँ कर लीं और उन्होने राजा प्रजा देवता आदि सबको वरण किया। ७२० ऋषि तथा ब्राह्मण सभी आकर एकत्रित हो गये। यह सुनकर

ऋषि विप्र समस्ते ठुळ हेले आसि। शुणिण सुर राजा बोइले तांकु हसि ७२१
राजार जाग नाश करिबा निमन्ते। जाग आरम्भ जे कलेक सुर नाथे २२
सकळ देवतांकु बरिले तोष मने। सकळ सम्भर्ब जे कलेक भिआणे २३
देब ऋषि नबरि से बशिष्ठंकु बरिले। ओप्रधरे मुनि तांक संगे चळि गले २४
निमि राजा बोइले जे आगे मुं बरिलि। तुम्भर बोलरे मुं सकळ भिआइलि २५
मोर जाग छाडिण गल स्वर्गपुर। बशिष्ठ बोइले देव जाग सुर नर २६
स्वर्गरु अइले तोर जाग करिबा। शुणि निमिराज न कहे किछि पुण २७
बिचारिला देबता मो संगे बादी हेला। बशिष्ठ ऋषि एबे अधर्म आचरिला २८
तिनिपुर सेहि प्रभु कलेक भिआण। मोर धर्म एबे से जाउछि नाश पुण २९
सेहि नारायण पादे पशिबि शरण। से मोते ए कष्टरु उद्धरिबे पुण ७३०
एमन्ते बिचारि जे निरोळा स्थाने गला। क्षीर जान्हवी कूळे एकान्ते बसिला ७३१
बासुदेवंकु चिन्ता करइ मनरे। जान्हवी शब्द जे कलाक सेठारे ३२
नारायणर दया ताठारे हेला पुण। गउतम ऋषिकु करतु बरण ३३
बेग जाग कर सुफळ हेब भल। निमिराजा बोइले मुँ देवंकर सल ३४
मोर संगे सुर राजा कलाक बिबाद। देव अस्त्ररे मोर जाग करिबे निरोध ३५

देवराज इन्द्र ने उनसे हँस कर कहा। ७२१ उन्होंने राजा की यज्ञ को नष्ट करने के लिये यज्ञ प्रारम्भ किया। २२ उन्होंने प्रसन्न मन से सभी देवताओं का वरण किया और महोत्सव की सारी तैयारियाँ कर लीं। २३ देव ऋषि का वरण न करके उन्होंने वशिष्ठ को वरण किया। उनके अनुरोध से मुनि उनके साथ चले गये। २४ राजा निमि ने कहा कि मैंने आपको पहले वरण किया है और आपके कहने से ही मैने सारी तैयारी की है। २५ आप मेरा यज्ञ छोड़कर स्वर्ग को चले गये। वशिष्ठ ने कहा कि वह देवयज्ञ है मनुष्य का नहीं। २६ स्वर्ग से लौट कर तुम्हारी यज्ञ करेंगे। यह सुनकर राजा निमि ने कुछ नहीं कहा। २७ उसने विचार किया कि देवता मेरे साथ प्रतिद्वन्द्वी बन गये। इस समय वशिष्ठ ऋषि ने अधार्मिक कार्य किया। २८ उस परमात्मा ने तीनों लोकों का निर्माण किया है। इस समय मेरा धर्म नष्ट हो रहा है। २९ मैं उसी भगवान के चरणों की शरण ग्रहण करूँगा। वह मुझे इस कष्ट से उबार लेंगे। ७३० इस प्रकार विचार करके वह एकान्त स्थान में गया और क्षीर-जाह्नवी के तट पर एकान्त में बैठ गये। ७३१ वह अपने मन में वासुदेव का चिन्तन करने लगा। तभी वहाँ जाह्नवी का शब्द होने लगा। ३२ उस पर भगवान की दया हो गई। उन्होंने राजा से गौतम ऋषि को वरण करने के लिये कहा। ३३ फिर यह भी कहा कि शीघ्र ही यज्ञ करो। वह भली प्रकार से सफल होगा। तब राजा निमि बोले कि मैं तो देवताओं का प्रतिद्वन्द्वी हूँ। ३४ मेरे साथ देवराज ने विवाद किया है। वह देवता अस्त्रों से मेरे यज्ञ का निरोध करेंगे। ३५ जाह्नवी

जान्हवी बोइले तोते बासुदेव साय़। जागशाळ शोधन्ते उपजिब पुअ ३६
तीनिबर्ष कुमर जाग तो रक्षा करि। सकळ सुर असुर पळाइबे ड़रि ३७
शुणिण निमिराजा बेगे चळिगला। गौतम ॠषिकि बरण जाइ कला ३८
से ॠषि आसिण जे जाग शाळा शोधि। पुत्रेक जात हेला बुष्टिरे बारानिधि ३९
धनु कमाएण धरि पुत्रेक हेले जात। मञ्जसर भितरु बाहार हेले सुत ७४०
ॠषिकि मान्य करि पितांकु नमस्कार। बोइले जागकु तुम्भे भय़ न कर ७४१
गउतम बोइले शुणरे कुमर। असम्भव कथा तु कहरे धनुर्द्धर ४२
तु जेबे जाग रखिबु संप्रते मोते दअ। निमि राजार जेबे तु निश्चे हेलु पुअ ४३
कुमर बोइले मोर संकेत एबे. घेन। राजार संगते राणी अटन्ति जे पुण ४४
नउ सस्त्र बर्ष हेला फळ केबे नाहिँ। नपुंसक लक्षण शरीरे छन्ति बहि ४५
से मानंकर स्तनरु क्षीर एबे झरुँ। मोते क्षीर देले जे मनोरथ पुरुँ ४६
शुणि करि समस्ते आनन्द चित्त हेले। राजन पुत्रकु नेइ राणीरे सर्मापिले ४७
समस्त राणीठारु कुमर कले क्षीर पान। देखिण सन्तोष जे हेले राणी पुण ४८
समस्ते प्रतेगले नाम जे देले तार। बसन्त बोलि नाम प्रकाश ताठार ४९
क्षीर पान करन्ते से जूबा रूप होइ। देखिण निमिराजा जाग जे करइ ७५०

ने कहा कि तुझे नारायण का आश्रय है। यज्ञशाला का शोधन करने पर पुत्र उत्पन्न होगा। ३६ वह कुमार तीन वर्ष तक तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करेगा। समस्त देवता और दैत्य डरकर भाग जाएँगे। ३७ यह सुनकर राजा निमि शीघ्र ही चले गये तथा उन्होंने जाकर गौतम ऋषि को वरण किया। ३८ उन ऋषि ने आकर यज्ञशाला का शोधन किया। तब एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो बुद्धि का सागर था। ३९ वह पुत्र धनुष बाण लिये हुए उत्पन्न हुआ। वह मंजूषा के भीतर से बाहर निकला। ७४० ऋषियों की अभ्यर्थना तथा पिता को नमस्कार करते हुए उसने कहा कि आप यज्ञ के लिये भय न करें। ७४१ गौतम ने कहा, हे कुमार! सुनो। तू धनुर्धर असम्भव बात कर रहा है। ४२ यदि तुम यज्ञ की रक्षा करोगे तो हमें प्रमाण दो। तो तुम निश्चित रूप से निमि-राज के पुत्र हुए। ४३ कुमार ने कहा कि अब मेरे संकेत को ग्रहण करें। राजा के साथ रानी भी है। ४४ नौ सहस्र वर्ष हो गये पर फल कुछ नहीं निकला। यह अपने शरीर से नपुंसकत्व के लक्षण वहन कर रही हैं। ४५ उनके स्तन से अब दूध प्रश्रवित होने लगे। मुझे दुग्धपान कराने से उनके मनोरथ पूर्ण हों। ४६ यह सुनकर सभी के मन प्रसन्न हो गये। राजा ने पुत्र को लेकर रानी को सर्मपित कर दिया। ४७ सभी रानियों से कुमार ने क्षीर पान किया। यह देखकर रानियाँ सन्तुष्ट हो गईं। ४८ सबको प्रतीति हो गई। फिर उन्होंने उसका नामकरण किया। वह बसन्त के नाम से प्रख्यात हुआ। ४९ क्षीरपान करते-करते उसका शरीर युवा हो गया। यह देखकर राजा निमि ने यज्ञ

जाग अनुकूळे देवताए वादी हेले । चारि मेघकु सुर राजा बरि से बोइले ७५१
शुणिण चारि मेघ बरषिले पाणि । देखिण निमिराजा ताटका हेले पुणि ५२
कुमरकु बोइले शुणरे नन्दन । इन्द्र विवाद जे मो ठारे कले पुण ५३
शुणिण कुमर पवनाशर कला । चारि मेघ उडाइ शून्यरु घेनि गला ५४
देखिण देवताए हेले क्रोद्धमन । बोलइ निमि राजाकु ध्वंस करिबा पुण ५५
जाणिण सेठारू जे बेगे चळिगलि । वसन्त कुमर आगरे सत्वर मिळिलि ५६
बोइलि देवताए होइले तोर वादी । शुणिण कुमर जे देवतांकु रुन्धि ५७
नारायण शररे सकळ देबे वन्दी । इन्द्र जाग छाड़ि निमिराजा जागे वन्दी ५८
हविर्भाग देवताए कलेक आहार । तिनिपुर अस्त्ररे गरिष्ठ बळिआर ५९
वार्त्ता पाइण सेहु मिळिलेक जाइ । देखिण बसन्त जे शर बाड़ देइ ७६०
शतेक जुण दैर्घ्य प्रति से शर वाड़ कला । देवता असुर चन्द्र सूर्ज्यंकु रखिला ७६१
बाहारे रहिला जे धनुशर धरि । विजुळि प्राये तेज अटे जे ताहारि ६२
निबिड़ अन्धकार जे हेला दश दिश । चमकि पड़िला जे सेहु राज्य जाग ६३
देखिण नर बानर असुर बळ पुण । भयरे विकळ जे होइले तहिँ पुण ६४
देखिण विधाता शरवाड़ जळाकला ।चन्द्र सूर्ज्य दुहिँ कि जे जळारे छाड़ि देला ६५

प्रारम्भ कर दिया। ७५० यज्ञ के शुभ योग के समय देवता शत्रु बन गए। देवराज ने चार मेघों का वरण करके उन्हें समझाया। ७५१ यह सुनकर चारों मेघों ने जल की वृष्टि की। यह देखकर राजा निमि अवाक् रह गये। ५२ उन्होंने बसन्त कुमार से कहा, हे पुत्र ! सुनो। इन्द्र ने हमारे साथ झगड़ा लगाया है। ५३ यह सुनकर कुमार ने पवनास्त्र छोड़ा जो चारों मेघों को आकाश में उड़ा ले गया। ५४ यह देखकर देवताओं का मन कुपित हो गया। उन्होंने कहा कि हम निमि राजा को नष्ट करदेंगे। ५५ यह जानकर राजा शीघ्र ही बसन्त कुमार के पास जाकर बोले कि देवता तुम्हारे शत्रु बन गये हैं। यह सुनकर कुमार ने देवताओं को रूँध दिया। ५६-५७ उसने नारायणास्त्र से समस्त देवताओं को वन्दी बना लिया। इन्द्र यज्ञ को छोड़कर राजा निमि के यज्ञ में वन्दी हो गए। ५८ देवताओं ने हवि का भाग भक्षण किया। जो लोग अस्त्र में तीनों लोकों में श्रेष्ठ तथा पराक्रमी थे वह लोग भी समाचार पाकर वहाँ पहुँच गए। बसन्त ने उन्हें देखकर बाणों की रक्षा दीवार (बाड़ा) खड़ी कर दी। ५९-७६० उसने एक सौ योजन के दीर्घ विस्तार में बाणों का घेरा बना दिया। देवता राक्षस सूर्य तथा चन्द्रमा को वही रख लिया। ७६१ उसके बाहर वह धनुष बाण लेकर खड़ा हो गया। उसका तेज विद्युत के समान था। ६२ दसों दिशाओं में घनघोर अन्धकार छा गया। उस राज्य का यज्ञ चमकने लगा। ६३ यह देखकर नर, वानर तथा राक्षसों के दल वहाँ भय से व्याकुल हो गये। ६४ यह देखकर ब्रह्मा ने बाणों के घेरे में छेद बना दिया और

तिमिरी तुटि बारु असुरे पळाइले। शर बाड़ हरण कलेक कुमरे ६६
जाग सारि पूर्ण आहुति सारिले। हबि खाइ देवताए स्वर्गपुरे गले ६७
पूर्ण आहुतिरु चरु उपुजिला भले। से चररु श्वेत नामे पुत्रेक होइले ६८
श्वेत बसन्त बोलिण हेले दुइभाइ। तेर बर्षे समस्ते मेलाणि होइ जाइ ६९
जाग भग्न करि निमि राजा नबरे प्रबेश। दुइ पुत्र पाइ राजा होइले सन्तोष ७७०
स्वर्गर जाग सारि बशिष्ठ जाइ मिळि। देखिले निमिराजा जाग गला सरि ७७१
क्रोधरे बशिष्ठ राजांकु शाप देले। कुम्भि पाक नर्करे पड़रे बोइले ७२
निमि राजा बोइला अधर्म किम्पा कलु। पापकु नडरि एबे क्रोधरे शाप देलु ७३
मोहर शापरे तुहि मूर्ख हुअ पुण। ए जन्मरे बिद्या तोर नोहु मुनि पुण ७४
आर जन्मे बिभा हुअ चण्डाळ घरे पुणि।
शुणि करि बशिष्ठ ताटका हेले जाणि ७५
ताहा जाणि बेदबर सेठारे मिळिले। निमि राजाकु शापरु मुक्त पुण कले ७६
देखिण बशिष्ठ जे छाड़िले शरीर। जनम लभिले सेहु बरुणर पुर ७७
घरणी तांकर जे शकुन्तळा नारी। शुणिकरि अग्निरे पशिले बेग करि ७८
अम्बिका चण्डाळ घरे होइलाक जात। पद्मिनीर शरीर से होइला तदन्त ७९

उस छिद्र से उन्होंने चन्द्रमा और सूर्य दोनों को मुक्त कर दिया। ६५ अन्धकार समाप्त हो जाने से राक्षस भाग गये। फिर कुमार ने बाणों के घेरे को हटा लिया। ६६ यज्ञ समाप्त करके पूर्णाहुति दी गई। हवि खाकर देवता लोग स्वर्गलोक चले गये। ६७ पूर्णाहुति से चरु प्रकट हुआ और उस चरु से श्वेत नाम का एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ६८ श्वेत और बसन्त दोनों भाई हो गये। तेरहवें वर्ष में सब विदा होकर चले गये। ६९ यज्ञ समाप्त करके महाराज निमि महल में प्रविष्ट हुये दो पुत्र पाकर राजा संतुष्ट हो गये। ७७० स्वर्ग की यज्ञ समाप्त करके वशिष्ठ उनके पास आये। उन्होंने देखा कि राजा निमि का यज्ञ समाप्त हो गया। ७७१ वशिष्ठ ने क्रोध से राजा को कुम्भी पाक नर्क में जाने का शाप दे दिया। ७२ राजा निमि ने कहा कि आपने अधम क्यों किया है। पाप से न डरकर इस समय क्रोध से शाप दे दिया है। ७३ हमारे शाप से तुम मूर्ख हो जाओ। हे मुनि ! इस जन्म में तुम्हारी विद्या फलित न हो। ७४ अगले जन्म में तुम्हारा विवाह चाण्डाल के घर में हो। यह सुनकर उसे समझ कर वशिष्ठ विस्मित रह गये। ७५ ऐसा जानकर ब्रह्मा जी वहाँ आये और उन्होंने राजा निमि को शाप से मुक्त कर दिया। ७६ यह देखकर वशिष्ठ ने शरीर त्याग दिया और उन्होंने वरुण के घर में जन्म लिया। ७७ उनकी स्त्री शकुन्तला थी। यह सुनकर वह वेग से अग्नि में कूद गई। ७८ फिर वह अम्बिका चांडाल के घर में उत्पन्न हुयी तथा उसका पद्मिनी का शरीर हो

वशिष्ठ बरुणर पुररे जात हेले । जन्म होइ निज शरीर धइले ७८०
बेदबर आसिण जे बिद्या शिखाइले ।पाञ्च दिने सकळ विद्या से शिखिले ७८१
सात दिने सुरभिकि बिहि आणि देले ।सुरभि घेनिण ऋषि अजोध्याकु गले ८२
अजोध्यारे देखिला घरणी गला नाश ।बिचारिला निमिराजा शाप जे प्रापत ८३
दशरथ राजार सभारे बसिला । देखिण राजन जे मान्य धर्म कला ८४
आम्भे से कथा जाणिण अइलु तोर पुर ।माणिक्य पाटणारे मिळिलु हाड़िघर ८५
ताहाकु डकाइण आम्भे जे कहिलु । पद्मिनी कन्या जात तो घरे बोइलु ८६
अशुद्ध लोकंकु तु नदेबु तांक जाण । से कन्या देवलोकरे होइब भूषण ८७
सत्य कराइलु न देबु कन्या काहिँ । ऋषि ब्राह्मण देवता राजा नेले देइ ८८
अनेक धन ए कन्यार होइब पुण । ए चारि जातिरे जेहु नेब कन्यादान ८९
से अर्जिला धन तार संगे समर्पिबु । नोहिले चण्डाळरे निश्चय़ मरिबु ७९०
एते कहिण आम्भे स्वर्गपुर गलु । एगार वर्ष जे एथिरे गला बाबु ७९१
से दुहितार निज अर्जिला धन पुण । कृषिकरि धान कला दुइ लक्ष भरण ९२
धन हेबारु चण्डाळ नाम जे प्रकाश ।पद्मिनी कन्या जात जे जाणिले समस्त ९३

गया । ७९ वशिष्ठ वरुण के घर में उत्पन्न हुये और जन्म लेकर उन्होंने अपना शरीर धारण किया । ७८० ब्रह्मा जी ने आकर उन्हें विद्या की शिक्षा दी और उन्होंने समस्त विद्याएँ पाँच दिनों में सीख लीं । ७८१ सात दिनों में ब्रह्मा ने उन्हें सुरभि लाकर दी । सुरभि को लेकर ऋषि अयोध्या को चले गये । ८२ अयोध्या में उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी । उन्होंने विचार किया कि राजा निमि के शाप से ऐसा हुआ है । ८३ राज-सभा में दशरथ बैठे थे । उन्हें देखकर राजा ने उनकी अभ्यर्थना तथा स्वागत किया । ८४ यह बात समझकर हम तुम्हारे घर आये । फिर माणिक्यपुर में चाण्डाल के घर गये । ८५ उसे बुलाकर हमने उससे कहा कि तुम्हारे घर में पद्मिनी कन्या उत्पन्न हुयी है । ८६ तुम उसे अशुद्ध व्यक्ति को मत देना । वह कन्या देवलोक का भूषण होगी । ८७ उससे हमने प्रतिज्ञा करायी कि वह अन्य किसी को कन्या नही देगा । यदि ऋषि, ब्राह्मण, देवता अथवा राजा उसे माँगेंगे तो उन्हें दे देना । ८८ इन चार जातियों में जो कोई कन्यादान लेगा तो उस कन्या के कारण उसके पास प्रचुर धन हो जायेगा । ८९ उसके द्वारा अर्जित धान्य उसके साथ ही समर्पित करना । अन्यथा अरे चाण्डाल ! तू निश्चय ही मर जायेगा । ७९० इतना कहकर हम स्वर्गलोक चले गये । हे वत्स ! ग्यारह वर्ष इसमें व्यतीत हो गये । ७९१ उस कन्या के द्वारा अर्जित धन से उसने कृषि करके दो लाख भार धान उत्पन्न किये । ९२ धन हो जाने से उस चाण्डाल का नाम प्रसिद्ध हो गया । सबने जान लिया कि उसके घर में पद्मिनी कन्या उत्पन्न

धनदेखि जाति लोक आसि लोभ कले । झिअकु बिभा हेबु बोलिण बोइले ९४
समस्तंकु भांगि देला अम्बिका चण्डाळ ।
जाति बाछि बारु जे मिळिले बिप्रवर ९५
सत्य शुणि बिप्र माने पळाइण गले । महीपाळे मिळिबारु कहिले से भले ९६
नुहँइ बोलिण राजा फेरि गले तेणु । चोर तस्कर से सत्यकु लंघि तेणु ९७
तु राजा ताहाकु जे मणाइ मागिलु । सत्य शुणि तुहि पुण घुञ्चिण अइलु ९८
पूर्बरे इन्द्र तोर अटइ बइरी । से कथा जाणि तोर संगे कला कळि ९९
तोर राज्य अपाळक निर्जळ पुण हेला । बिप्र मानंक हस्तरे शाप जे बिहिला ८००
से शापरे बार बर्ष जळ हेला शून्य । नब बर्ष एथिरे पुण गला दिन ८०१
अनेक कष्टरे प्रजाए तोर जिइँ । देखिण बिकळ जे हेला तोर देही २
प्रजांकु भण्डार धन सकळतु जे देलु । बन्धु कुटुम्ब ठारु मागिण धन नेलु ३
प्रति राजा मानंक ठारु अणाइलु धान । प्रजांकु दबारे न सरे तांक दिन ४
बिकळे दशरथपुरकु तु जे गलु । आकुळरे रोदन बहुत सेठि कलु ५
से राजा अनेक तोते शीतळ कराइला । बेदवरकु सुमर बोलिण बोइला ६
से कथा हेतु कलु मनरे राजन । शान्ता कन्याकु घेनि करि गलु तु निजस्थान ७

हुई है। ९३ धन देखकर जाति के लोग आकर लोभ करने लगे और कन्या से विवाह करने के लिये कहने लगे। ९४ अम्बिका चाण्डाल ने सबको हटा दिया। उसकी जाति जानने के लिये श्रेष्ठ ब्राह्मण आये और मिले। ९५ उसकी प्रतिज्ञा सुनकर श्रेष्ठ ब्राह्मण भाग गए। राजाओं ने भी उससे मिलकर उसे भली प्रकार से समझाया। ९६ उसके मना करने पर राजा भी लौट गए। चोर और तस्कर द्वारा उसकी प्रतिज्ञा का उल्लंघन करने का भय हो गया। ९७ हे राजा ! तुमने भी उसे मनाकर उससे याचना की परन्तु प्रतिज्ञा सुनकर तुम भी लौट आए। ९८ इन्द्र तुम्हारा पहले से ही शत्रु था। यह बात जानकर उसने तुम्हारे साथ झगड़ा लगाया। ९९ तुम्हारे राज्य में जल वृष्टि के अभाव से दुर्भिक्ष पड़ा। तुमने ब्राह्मणों के हाथों से शाप प्राप्त किया। ८०० उस शाप से बारह वर्ष जल का अभाव रहा। इसमें नौ वर्ष का समय व्यतीत हो गया। ८०१ अनेक दुःख से तुम्हारी प्रजा जीवित रह पाई। यह देखकर तुम्हारी आत्मा दुःखी हो गई। २ प्रजा को बहलाने के लिये तुमने सारा धन उन्हें दे दिया। बन्धु-बान्धवों से तुमने धन माँगकर लिया। ३ हर राजा से तुमने धान मँगवाए। प्रजा में वितरित करने पर भी उनका समय नहीं कटा। ४ तब तुम व्याकुल होकर दशरथ के घर गए। वहाँ तुम व्याकुल होकर बहुत रोदन करने लगे। ५ उस राजा ने तुम्हें अनेक प्रकार से शान्त किया। उसने तुम्हें ब्रह्मा जी का स्मरण करने को कहा। ६ हे राजन् ! तुमने वही करने का विचार अपने मन में किया और शान्ता कन्या को लेकर तुम अपने घर

एकान्ते बेदवरकु कलु सुमरण ।आत्माघातकी हेबु बोलि कलु विचारण ८
जाणिण विधाता सकळ ऋषिंकि नेलाडाकि ।
बोइला चण्डाळ झिअकु बिभा हुअरे तपी ६
सकळ मुनि जहुँ नास्ती जे पुण कले । बशिष्ठंकु बेदवर डकाइ कहिले ८१०
निमिराजा शापरे घरणी तोर मला । चण्डाळ घरे आसि जात पुण हेला ८११
से कन्याकु बिभा हुअ एबेरे कुमर । शुणिण वशिष्ठ जे कले सिउकार १२
वशिष्ठ सिउकार करिबा शुणिण । अगस्ति शाप देले विचारि मनेण १३
जेहु मने एकथा अन्तर करिब । नर बानर देवता ऋषि हेले मरिब १४
बेदवर समस्तंकु घेनिण संगतर । माणिक्यपुरे प्रवेश हेले कुशधर १५
सेहि नग्रराजा मनरे बिचारिला । अरुन्धति कन्याकु दिअरे बोइला १६
चण्डाळ बोइला मोहर भाग्य हेला । ब्रह्माण्ड कर्त्ता मोर दुहिताकु नेला १७
एते बोलि दुहिता हस्तरे माळ नेइ । बेदवर छामुरे मिळिले बेगे जाइ १८
बरणमाळा दुहिता काहाकु से देव । विधाता बोइले वशिष्ठंकु वरिब १६
शुणिण पद्मिनी वशिष्ठे माळा देला । बिधाता पुरुष जे चण्डाळे पचारिला ८२०
बोइला ए तोहर केते अछि धान । हरषरे चण्डाळ जे कहइ बचन ८२१
शुणिण चण्डाळ बोले सबु धान पुणि । निअ तोर धान जाहाकु दिअ पुणि २२

लौट आए। ७ तुमने एकान्त में ब्रह्मा जी का चिन्तन किया। फिर तुमने आत्मघात करने का विचार किया। ८ यह जानकर ब्रह्मा जी ने समस्त ऋषियों को बुला लिया। उन्होंने उन तपस्वियों से चाण्डाल कन्या से विवाह करने को कहा। ६ सभी मुनियों ने वहाँ मना कर दिया। तब ब्रह्मा ने वशिष्ठ को बुलाकर कहा। ८१० राजा निमि के शाप से तुम्हारी पत्नी मर गई और फिर वह आकर चाण्डाल के घर में उत्पन्न हुई। ८११ अरे पुत्र ! तुम उस कन्या से विवाह करो। यह सुनकर वशिष्ठ ने स्वीकार कर लिया। १२ वशिष्ठ की स्वीकृति को सुनकर अगस्त ने अपने मन में विचार कर शाप दिया। १३ जो कोई अपने मन से इस बात को हटायेगा वह, चाहे नर, वानर, देवता अथवा ऋषि हो, मर जाएगा। १४ ब्रह्मा जी सबको साथ लेकर माणिक्यपुर जा पहुँचे। १५ उस नगर के राजा ने मन में विचार करके उससे अरुन्धती कन्या को देने के लिये कहा। १६ चाण्डाल ने कहा कि मेरा भाग्योदय हो गया है जो कि ब्रह्माण्ड के सृष्टा ने हमारी कन्या को स्वीकार कर लिया। १७ इतना कहने पर कन्या हाथों में माला लेकर शीघ्र ही ब्रह्मा जी के समक्ष जा पहुँची। १८ कन्या वर माला किसे देगी, कहने पर ब्रह्मा जी ने कहा कि यह वशिष्ठ का वरण करेगी। १६ यह सुनकर पद्मिनी ने वशिष्ठ को माला दे दी। ब्रह्मा जी ने तब चाण्डाल से पूंछा कि तुम्हारा धान कितना है। तब चाण्डाल ने प्रसन्न होकर बताया। ८२०-८२१ यह सब धान हमारा है। आप अब अपना सारा

शुणि करि बिधाता कन्याकु बोइले। केते गदाधान तोर हस्तमार भले २३
शुणिण पद्मिनी जे बेगे चळिगला। दश गदा धानरे से हस्त लगाइला २४
फेरिण आसन्ते बिधाता बेगे चळि। कन्या ऋषि गणंकु संगरे घेनि करि २५
मोते बोइले राजाकु बेग जाइ कह। शुणि करि मुहिँ तोरे कहिलि सन्देह २६
राजन बोइले दयाकल कुशपाणि। मोर लागि चण्डाळ दुहिता नेल पुणि २७
ताहार अर्जिला धान मोते जेबे देले। जळ किम्पाइ न देले मौन होइ गले २८
बृष्टि न करिब सिना मोहर राज्यरे। गंगा किम्पा अन्तर जे होइला ए पुरे २९
गंगारे दोषी हादे नुहइँ मुहिँ पुण। कि कारणे कोप जे मोठारे कले जाण ८३०
नारद बोइले ताकु करिबा सुमरणा। केउँ दोष अन्तर करुछि सेहु सिना ८३१
एमन्त कहि मुनि निश्चळे बसिले। गंगाकु सुमरणा मनरे मुनि कले ३२
प्रसन्न होइला सेहु मेरुर दुलणी। बोइला कि कार्य्यरे भाळिल देव मुनि ३३
नारद बोइले ए राज्यकु किम्पा छाड़ु। धर्मपथ छाड़िण अधर्म किम्पाहुड़ु ३४
गंगा बोइले मोते सुर राजार मना। नारद बोइले पाप जन्मिला तार सिना ३५
परजा मारिबाकु डरिले बेदबर। चण्डाळ दुहिताकु बधू कले तार ३६

धान ले लें और जिसे चाहें उसे दें। २२ ब्रह्मा जी ने यह सुनकर कन्या से कहा कि तुम्हारा धान कितने ढेर है। तुम उसमें हाथ लगा दो। २३ यह सुनकर पद्मिनी शीघ्रतापूर्वक चली गई। उसने धान के दस ढेरों में हाथ लगाया। २४ लौटकर आने पर ब्रह्मा जी कन्या तथा ऋषियों को साथ लेकर शीघ्रतापूर्वक चल दिये। २५ उन्होंने मुझसे कहा कि राजा से शीघ्र ही जाकर कहो। यह सुनकर मैंने उनका सन्देश तुमसे कहा। २६ राजा ने कहा कि कुशपाणि ब्रह्मा जी ने दया की है। मेरे कारण उन्होंने चाण्डाल कन्या को ग्रहण किया है। २७ उसके द्वारा अर्जित धान जब उन्होंने मुझे दिये तो जल किसलिये नहीं प्रदान किया। वह इतना कहकर मौन हो गए। २८ वह मेरे राज्य में वर्षा नहीं करेंगे और फिर गंगा भी इस नगर से कैसे हट गई। २९ गंगा का तो मैं किसी प्रकार से अपराधी नहीं हूँ। पता नहीं वह मुझसे किस कारण से कुपित है। ८३० नारद ने कहा कि उनका चिन्तन किया जाएगा। वह किस अपराध से हट गई है। ८३१ ऐसा कहकर मुनि निश्चल होकर बैठ गए। उन्होंने मन में गंगा का स्मरण किया। ३२ तब मेरु नन्दिनी गंगा प्रसन्न हो गई। उसने कहा हे देवर्षि ! आप किस कार्य से मुझे स्मरण कर रहे हैं। ३३ नारद ने कहा कि आपने इस राज्य का त्याग क्यों कर दिया है। धर्म पथ का परित्याग करके अधर्म का पथ क्यों अपनाया है। ३४ गंगा ने कहा कि मुझे देवराज इन्द्र ने मना कर दिया था। नारद ने कहा कि उसमें पाप प्रकट हो गया है। ३५ प्रजा के मरने पर ब्रह्मा जी भी डर गये। उन्होंने चाण्डाल की

जेतेक धानथिला प्रजारे देइ गला । जळ न मिळिवारु गरु चिन्ता हेला ३७
गंगा बोइले जेबे पाप हेब मोर । देवतांक बोलरे काज्यं किम्पा मोर ३८
बेदबर बोइले मोठारे दया़कला । कुमर हस्तरे मोते डकाइ कहिला ३९
एबे मुं दया़कलि तुम्भर बोले पुर । कूप बाम्फी पोखरी पुष्करणी सरोवर ८४०
एथिरे मोर बोले पडु एबे झर । झर देखि सन्तोष होन्तु प्रजा नर ८४१
सकळ जीव जन्तु करन्तु एबे ग्रास । एते कहि जाह्नवी गंगा अन्तर्गते तोष ४२
सकळ कीर्त्तिस्थान मानंके स्रबिला । कटक नग्रपुर पाटणा जेते थिला ४३
सबु ठारे जळ पूरिला ततक्षण । आनन्द हेले सकळ जीवइँ देखिण ४४
स्नाहान भोजन शीतळे हेले सुखी ।बिचारिले बिधाता दया़कले दुःख देखि ४५
उठिकरि नारद राजारे आज्ञा देले । जळ चिन्ता एबे तोर गला जे बोइले ४६
जान्हवो सुदया़ कलेक एबे पुण । बेण्ट पोखरी कूप देखरे जाइ पुण ४७
शुणिण राणी हंस राजा चळि गले । आपणा नवरे कूप बाम्फीकु देखिले ४८
कूप बाम्फी पोखरी सरोवर मान । निर्मळ शउच जळ भरि जे पूर्ण जाण ४९
देखिण राजा राणी अनेक तोष हेले । नारदंक चरणे ओळगि शोइले ८५०
कर धरि नारदंकु सेठारू घेनि गले । रत्न सिंहासनरे नेइण बसाइले ८५१

पुत्री को अपनी बधू बना लिया। ३६ जितना भी धान था वह सब प्रजा में वितरित करके चले गए। जल न मिलने से उन्हें अत्यन्त चिन्ता हो गई। ३७ गंगा ने कहा यदि मुझे पाप लगेगा तो हमें देवताओं के कथन का क्या प्रयोजन है। ३८ ब्रह्मा जी ने मेरे ऊपर दया की है जो कि उन्होंने अपने पुत्र के हाथों से बुलाकर कहा है। ३९ इस समय मै आपके कहने पर कृपा कर रही हूँ। कुएँ बावली पोखरी तथा सरोवर हमारे कहने से जलपूर्ण हो जाँय। उनमें जल देखकर प्रजाजन सन्तुष्ट हो जायें। ८४०-८४१ अब समस्त जीव जंतु जल ग्रहण करें। इस प्रकार कहते हुए जाह्नवी गंगा के हृदय में संतोष हुआ। ४२ दुर्ग नगर पुर ग्राम आदि में जितने भी कीर्ति के स्थान थे वहाँ पर वह श्रवित हो गई। ४३ उसी क्षण सभी स्थानों में जल भर गया। यह देखकर समस्त जीवगण प्रसन्न हो गये। ४४ वह स्नान और भोजन करके शीतलता प्राप्त करके सुखी हो गए। उन्होंने विचार किया कि ब्रह्मा ने उन्हें दुखी देखकर उन पर दया की है। ४५ नारद ने उठकर राजा से कहा कि अब तुम्हारी जल की चिन्ता दूर हो गई। ४६ अब गंगा ने दया की है। तुम वापी कुएँ तथा पोखरों को जा कर देखो। ४७ यह सुनकर रानियों को लेकर राजा चले गये और उन्होंने अपने नगर के कुएँ तथा वावलियों को देखा। ४८ कुएँ बावली पोखरे सरोवर निर्मल-पावन जल से परिपूर्ण हो गए थे। ४९ राजा तथा रानी देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने नारद के चरणों में गिरकर प्रणाम किया। ८५० वह नारद का हाथ पकड़कर उन्हें वहाँ से ले गये और उन्हें ले

पात्र मन्त्री सामन्त डकाए राजा पुण । बोइले चार भेद सकळ राज्येण ५२
माणिक्य पुर धान निअन्तु सर्बे बहि । अन्नजळ पात्र मोते देले बेद साइँ ५३
शुणि करि धेण्डुरा फेराए राज्यरे । सकळ प्रजा जने जाणिले शबदरे ५४
धेण्डुरा फेराइ जे चार माने कहि । सकळ राज्ये बारता देले नर साइँ ५५
शुणिण पात्र मन्त्री सामन्त राजा पुण । नारदंकु घेनिण चळिले से स्थान ५६
माणिक्य पुररे हेले जे प्रबेश । आस्थान करिण सेथिरे रहिले समस्त ५७
ग्रामे ग्रामे पुरे पुरे पुरुष्टि अणाइले । तिनि बर्षकु ताकु बण्टरा करि देले ५८
धनी लोकमाने शगड़ बळदरे नेले । दुःखी लोक माने बोझ भाररे बोहिले ५९
धान शेष हेला जे राज्य हेला स्थिर । लक्षे भरण धान तहुँ नेले नृपबर ८६०
सामन्त पात्र मन्त्री अनेक बहि नेले ।चारि शत जुण राज्य समस्त तोष हेले ८६१
लक्षेक ग्राम पाटणा नोहिले केहि बणा । समस्ते राजांकु प्रशंसा कले किना ६२
आम्भर आयुष घेनिण बञ्च हो राजन सिना । + × × + ६३
समस्तंकु तोषकरि नारद चळि गले । जशोवन्ती पुरे जाइ प्रबेश होइले ६४
देखिण कुशधर पचारे नारदंकु । चम्पावती देशपुर तोष कलकि प्रजांकु ६५
नारद बोइले तुम्भर कृपारे । समस्ते तोष होइ धान बहि नेले ६६
जळ नथिबारु बिकळ मन कले । गंगाकु सुमरणा कलि मुं जोग बळे ६७

जाकर रत्न सिंहासन पर बैठा दिया । ८५१ राजा ने तब सभासद मन्त्री तथा सामन्तों को बुलाकर कहा कि सम्पूर्ण राज्य में दूत भेज दो । ५२ उनसे कहो कि सभी लोग माक्यिपुर से धान लादकर ले जाँय । ब्रह्मा जी ने हमें अन्न जल प्रदान किया है । ५३ यह सुनकर उन्होंने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया । उनके सन्देश से समस्त प्रजा जान गई । ५४ राजा ने ढिंढोरा पिटवाकर दूतों से कहला कर सम्पूर्ण राज्य में समाचार भिजवा दिया । ५५ यह सुनकर सभासद मंत्री तथा राजा नारद को साथ लेकर उस स्थान को चल दिये । ५६ वह लोग माणिक्यपुर में जा पहुँचे और वहीं विश्रामस्थल बनाकर सब लोग रुक गए । ५७ गाँव-गाँव से तथा खेरों से प्रधान बुलवाकर उन्हें तीन वर्ष के लिये बाँटकर धान दे दिये । ५८ धनी लोग बैलगाड़ियों से ले गये और दुःखी लोग भार में ढोकर ले गये । ५९ धान बँट जाने से राज्य में शांति हो गई । एक लाख भार धान राजा ले गये । ८६० सामंत, सभासद तथा बहुत से मंत्रियों ने धान ढुलवा लिये । चार सौ योजन का सम्पूर्ण राज्य संतुष्ट हो गया । लाखों ग्रामपुर वंचित नहीं रहे और सभी ने राजा की प्रशंसा की और कहने लगे कि हमारी आयु लेकर हमारे राजा जीवित रहें । ८६१-६२-६३ सबको संतुष्ट करके नारद चले गये और यशोवंतीपुर में जा पहुँचे । ६४ उन्हें देखकर ब्रह्मा ने नारद से पूछा । क्या तुमने चम्पावती राज्य की प्रजा को संतुष्ट कर दिया है । ६५ नारद ने कहा कि आपकी कृपा से सब संतुष्ट होकर धान ढोकर ले गये । ६६ जल न

तेवे प्रसन्न जान्हवी से पुरे। कूप बाम्फि पुष्करणी पूरिला गंगा जळे ६८
सकळ प्रशंसा तुम्भंकु सेथि कले। सकळ जीव जन्तु हरष मन हेले ६९
पार्वती बोइले तुम्भे शुणहे त्रिलोचन। चण्डाळ दुहिताकु नेले ब्रह्मांक नन्दन ८७०
वशिष्ठ जिवारु नारी वरण माळा देला। से कन्या जशोवन्ती पुरकु वेग गला ८७१
किस कला से नारी कह बेगकरि। से कथा शुणि वाकु श्रद्धा जे मोहरि ७२
ईश्वर बोइले से कथा देबा कहि। हरषर कथा से जे विरस नुहइ ७३
जशोबन्ती पुरे जे सकळ ऋषि मिळि। तिनि पुर ऋषिकि नेले ब्रह्मा वरि ७४
त्रिदश देवंकु निमन्त्रण करि आणि। दश दिगपाळंकु वरिलेक पुणि ७५
अष्ट वसु सुरनाथ वरण करि नेले। बार आदित्य षोळ चन्द्रमा बरिले ७६
नवग्रहंकु वरि आम्भंकु कले पूजा।
चउद कोटि जीव घेनि मुँ एथु गलि दुर्गा ७७
समस्ते जशोवन्ती पुररे ठुळ हेलु। धर्म निरञ्जनकु डकाइ घेनि गलु ७८
बोइलु तोर नन्दिनी चण्डाळ घरे जात। ए दुहिता पवित्र कर हे निष्ठावन्त ७९
निरञ्जन बोइले शुण हे देवगण। जेउँ ख्यात कल सेहु कर हे कारण ८८०
शुणिण बेदवर पितुळाए लिहि। जीवन्यास कले से जीवन्यास देइ ८८१

होने के कारण उनके मन व्याकुल थे। मैंने योगवल से गंगा का ध्यान किया तब गंगा ने प्रसन्न होकर अपने जल से राज्य के कुएँ, वावली, तथा तालाव भर दिये। ६७-६८ वहाँ सवने आपकी प्रशंसा की। समस्त जीव जन्तु प्रसन्नचित्त हो गये। पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन! आप सुनिये। ब्रह्मा के पुत्र-चाण्डाल कन्या को ले गये। ८६९-८७० वशिष्ठ के जाने पर कामिनी ने उन्हें वरमाला पहनायी और वह कन्या शीघ्र ही यशोवंतीपुर को चली गयी। ८७१ अव आप हमें शीघ्र ही यह बताइये कि उस नारी ने फिर क्या किया। उस चरित्र को सुनने की हमारी इच्छा है। ७२ शंकर जी बोले हम वही कथा कहेंगे। सुख की कथा कभी दुःखान्त नहीं होती। ७३ यशोवंतीपुर में समस्त ऋषियों का मिलाप हुआ ब्रह्मा ने तीनों लोकों के ऋषियों का वरण किया। ७४ उन्होंने देवताओं को निमंत्रित करके बुलवाया और दसों दिगपालों को वरण कर लिया। ७५ अष्टवसु बारह आदित्य सोलह चन्द्रमा तथा देवराज इन्द्र इन सबको वरण करके बुलवा लिया। ७६ नवग्रहों का वरण करके उन्होंने हमारी पूजा की। हे दुर्गा! मैं चौदह करोड़ जीवों को साथ लेकर यहाँ से गया। ७७ सभी लोग यशोवन्तीपुर में एकत्रित हुए। धर्मदेव को भी हम साथ लेते गये थे। ७८ हमने उनसे कहा कि तुम्हारी पुत्री चाण्डाल के घर में उत्पन्न हुई है तुम निष्ठा के साथ इस पुत्री को पवित्र करो। ७९ धर्म निरंजन देव ने कहा हे देवगण! सुनो। आप लोगों ने जो उद्देश्य वनाया है उसकी पूर्ति करो। ८८० यह सुन कर ब्रह्माजी ने एक पुत्तलिका गढ़ी। फिर उसमें प्राणों का संचार करके उसे

अरुन्धतिर प्राण हारि नेले पुण। पितुळार भितरे भिरिले नेइ जाण ८२
अरुन्धतरि पिण्डकु भष्म करि देले। अरुन्धति स्वरूपे से रूपे जात कले ८३
पवित्र जळ घेनि पवित्र कले तार अंग। सकळ तीर्थजळे स्नान कलेक बेग ८४
अगर चन्दन कर्पूर संगे बोळि। सुकुमार तनु कोमळ तार करि ८५
रत्न अळंकार मान भूषण तार अंगे कले।
हीरा माणिक्य चूड़ि हस्तरे तार देले ८६
ताड़ बिद बाहुटि खञ्जिले नेइ करि। गळारे चाप सरि अष्टरत्नरे भरि ८७
पदक चन्द्रहार बिद मुदि देले। रत्न काञ्चला गोटिए शरीरे पिन्धाइले ८८
कटीरे कटी मेखळा खञ्जिले नूपुर। पाहुड़ बळा खञ्जिले तळिपा उपर ८९
अंगुष्ठि मानंकरे झुण्डिआ नेइ देले। पादरे अळता रंग बोलि देले ८९०
नाशारे सिन्धु फळ रत्न गुणा देइ। कर्णरे कापरे जे मल्ल कड़ि लाइ ८९१
चन्द्र फासिआ फिरि फिरा नीळारे घषड़ि।
अळका मथामणि शिररे नेइ भिड़ि ९२
झीञ्जरी झुम्पी लगा चउँरी मुण्डि पुण। अनेक अळंकार भुषण कले जाण ९३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी। से कन्या शोभारे सबुंकु मोह करि ९४
वेश करि कन्याकु बेदवर नेले। गायत्री साबित्री पाशे नेइण समर्पिले ९५

जीवित कर दिया। ८८१ फिर उन्होंने अरुन्धती के प्राण हर लिये और उसे उस पुतली के भीतर स्थापित कर दिया। ८२ अरुन्धती के शरीर को उन्होंने भस्म कर डाला तथा अरुन्धती के स्वरूप को उसी रूप में उत्पन्न किया। ८३ पवित्र जल लेकर उसके अंगों को पवित्र किया और शीघ्रतापूर्वक समस्त तीर्थों के जल में स्नान कराया। कर्पूर के साथ अगुरु तथा चन्दन लगाकर उसके सुकुमार शरीर को कोमलता प्रदान की। ८४-८५ रत्नों के आभूषण उसके अंगों में अलंकृत कर दिये। हीरा तथा मणि जड़ित चूड़ियाँ उसके हाथों में पहना दीं। ८६ जोसन तथा बजुल्ले लेकर पहना दिये। गले में अष्ट रत्नों वाला विशेष आभूषण पहना दिया। ८७ पदक लगा हुआ चन्द्रहार मुद्रिका आदि पहना दी और उसके शरीर में एक रत्नजटित कंचुकी पहनाई। ८८ कमर में कमर की जंजीर तथा पैरों में नूपुर पहनाये तथा अन्य विशेष प्रकार के आभूषण सुसज्जित कर दिये। ८९ उँगलियों में आभूषण पहना दिये और पैरों में आलता और महावर लगा दिया। ८९० नाक में बुलाक तथा रत्न की कील पहना दी। कानों में कर्ण के आभूषण पहना दिये। ८९१ नीलम से जड़ी हुयी खौर तथा बालों में कटिया लगाकर माथा में बेंदा लगा दिया। ९२ झालरदार जंजीरें और फुदनेदार चोटी लगाकर नाना प्रकार के अभूषण भूषित कर दिये। ९३ हे शाकम्बरी ! सुनो इसके पश्चात् उस कन्या ने शोभा से सबको मोहित कर लिया। ९४ ब्रह्मा ने उस कन्या को विभूषित करके ले जाकर

रत्न बेदी गोटिए तिआर कले पुण। बशिष्ठ बसिले जे बेदी उपरेण ९६
बाट बरण सारि बरुण पूजा कले। लवण चउँरी उत्तरु वेद उच्चारिले ९७
बरकन्या एक ठावे बसाइले नेइ। मुकुट बान्धिण शिळ वरुण कराइ ९८
कुशरे हस्तग्रन्थि कलेक बन्धन। वेद अनुगते हस्त ग्रन्थि जे फेडिण ९९
होम सारि शीतळ अग्निकि कराइले। जाउँळि लज्या होम सेथिरे सारिले ६००
बर कन्या उठाइण नेले से नवर। गायत्री सावित्री बोइले ततपर ६०१
जुअ खेळाइण बधूकु नेले पुण। रन्धन पाक कले अरुन्धति जाइण २
देवऋषिमानंकु जोगाड परशे। समस्ते भुञ्जिले जे अरुन्धतिर हस्ते ३
देबताए सन्तोष ऋषि हेले तोष। नाग वळ आदि सर्व होइले सन्तोष ४
बेदवरकु मेलाणि मागि चळि जाइ। समस्ते तोष हेले वशिष्ठंकु चाहिँ ५
सुकल्याण करिण देवता माने गले। जे जाहार स्थानरे प्रबेश होइले ६
नागबळ गले जे गलेक सिद्ध ऋषि। देव ऋषि चळिले जे सुकल्याण वाञ्छि ७
मर्त्यपुर ऋषि जे सकळ चळि भले। वेदवर अगस्तिकि डाकिण कहिले ८
नारद दुर्वासा जे अगस्ति मार्कण्ड। एमान डकाइण कहिले ब्रह्माण्ड ९
बोइले बशिष्ठंकु मर्त्यपुर निअ। अजोध्या पुररे नेइण रखाअ ६१०
अगस्ति बोइले शुणिमा हेउ स्वामी। बशिष्ठ मर्त्यपुर निश्चय जिबे पुणि ६११

गायत्री और सावित्री के पास समर्पित कर दिया। ९५ फिर एक रत्नवेदी तैयार की गई। वशिष्ठ उस पर बैठ गये। ९६ वाट-वरण समाप्त करके उन्होंने वरुण को पूजा की और परछन के बाद वेदध्वनि की गई। ९७ वरकन्या को लेकर एक स्थान पर बैठा दिया और मुकुट बाँधकर शिलावरण किया गया। ९८ कुश से हाथों को बाँधकर गाँठ लगा दी गई और वैदिक रीति से हस्तग्रन्थि को खोला गया। ९९ होम समाप्त करके आग को ठंडा कर दिया। फिर लाजाहोम की विधि सम्पादित की गई। ६०० वर-कन्या को उठाकर भवन में ले गये। गायत्री और सावित्री द्यूतक्रीड़ा कराकर बहू को लेकर आ गई। अरुन्धती ने जाकर रसोई बनाई। ६०१-२ देव ऋषियों को भोजन परोस दिया गया। अरुन्धती के हाथ से सभी ने भोजन किया। ३ देवता संतुष्ट हो गये। ऋषि तथा नागों के दल आदि सभी प्रसन्न और तृप्त हो गये। ४ ब्रह्माजी से विदा लेकर चलते हुये सभी लोग वशिष्ठ को देखकर संतुष्ट हो गये। ५ देवता लोग आशीर्वाद देकर चले गये और अपने-अपने लोको में जा पहुँचे। ६ नागो के दल सिद्ध ऋषि तथा देवर्षि कल्याण की कामना करते हुये चल दिये। ७ मृत्युलोक के सभी ऋषि प्रसन्न होकर चलने लगे। तब ब्रह्माजी ने अगस्त को बुलाकर कहा। ८ नारद, दुर्वासा, अगस्त, मारकण्ड इन सबको बुलाकर ब्रह्माजो ने कहा कि वशिष्ठ को मृत्युलोक में ले जाओ और अयोध्यापुर में ले जाकर रख दो। ९-६१० अगस्त ने कहा हे प्रभु! सुनिये वशिष्ठ निश्चित रूप से मृत्युलोक में जायेंगे। ६११

रेणुका कुमर जे अटइ पर्शुराम। क्षत्री पणरे से जे अटइ उत्तम १२
राजा मानंक संगे खण्डि आळि होन्ते। लागइ पर्शुराम मारिबा निमन्ते १३
पर्शुरामकु बशिष्ठ न कहे किछि पुण। तेबे मर्त्यपुरकु बशिष्ठ जिब जाण १४
बेदबर कहिले शुणरे कुमर। पर्शुराम अटन्ति साक्षाते निराकार १५
जेतेक ऋषि तुम्भे मर्त्यपुरे अछ। पर्शुरामकु भजिले होइब तुमे मोक्ष १६
न भजिले करि पारइ से नाश। देवताए जाहाकु पाउण छन्ति त्रास १७
जाहार भय़रे चारि रावण फेरि जान्ति। जाहाकु नाग राजा करइ मने स्तुति १८
जाहाकु सप्त ब्रह्मा बोलन्ति देब शुण। जाहार देह अटे गोलक नारायण १९
जाकु प्रभातरु मुँ करिण सुमरण। जाहार शकासे नृपति गण सिना ६२०
चाळिश सस्र नृपति स्त्रिरी बेश होइ। राणी मानंक संगरे गुपते छन्ति रहि ६२१
जाहार जोगरु मर्त्यपुर सम्भाळ होइ। से नथिले अस्तिमय़ हुअन्तानि मही २२
जाहाकु सदाशिव करन्ति कल्याण।
पार्बती देखिले जाहाकु करन्ति बन्दाण २३
देवनारी देखिले आनन्द जाकु होन्ति। शची देखिले जाकु अमृत परशन्ति २४
मोहर दुइ नारी गाय़त्री सावित्री। एके दिने मोर पुरे अइले पशुपति २५
बइष्णवा धनु धरिण अछि करे। कोठार अछि तार डाहाण हस्तरे २६

रेणुका का पुत्र परशुराम है। वीरता में वह उत्तम है। १२ राजाओं के साथ वाद-विवाद होने पर परशुराम उन्हें मारने लगता है। १३ वशिष्ठ परशुराम को कुछ नहीं कहते थे। तब वशिष्ठ मृत्युलोक को जायेंगे। १४ ब्रह्माजी ने कहा हे पुत्र ! सुनो। परशुराम साक्षात् निर्गुण ब्रह्म है। १५ तुम जितने भी ऋषि मृत्युलोक में हो। उन सबका मोक्ष परशुराम के भजन करने से होगा। १६ उसकी सेवा न करने से वह नाश कर सकता है। देवता भी जिससे भय पाते हैं। १७ जिसके भय से चारों रावण लौट जाते हैं। नागराज मन में जिसकी स्तुति किया करते है। १८ सप्तब्रह्मा जिसको देव कहते हैं। जो शरीरधारी गोलोकवासी नारायण हैं। १९ जिसका स्मरण मैं प्रातःकाल से ही करता हूँ। चालीस हजार राजा स्त्री का वेश धारण करके जिसके कारण रानियों के साथ गुप्तरूप से रह रहे हैं। ६२०-६२१ जिसके कारण मृत्युलोक की रक्षा हो रही है। यदि वह न होते तो पृथ्वी अस्थियों से भर जाती। २२ सदा कल्याण करने वाले शिवजी ने जिसे आशीर्वाद दिया है। पार्वती जिसे देखकर उनकी बन्दना करती हैं। २३ देव नारियाँ जिसे देखकर आनंदित हो जाती हैं। जिसे देखकर शचीदेवी अमृत प्रदान करती हैं। २४ मेरे दो पत्नियाँ गायत्री और सावित्री हैं। एक दिन मेरे भवन में पशुपति परशुराम जी आए। २५ वह हाथ में वैष्णव धनुष लिये थे। उनके

बाम हस्ते कउमुदि ताहा आछि पुण। बाहान नाहिँ शून्यरे अइला विक्रमिण २७
शीतळ सिंहासन परे अछि वसि। देखिण मोरपुर होइला तमराशि २८
बोइले तोर नाम अटइ बेदब्रह्मा। अचिन्ता होइण जे वसिछ एहि सीमा २९
संसार कर्त्ता अटु परा तुहि। सकळ जीवकु सञ्चरु पुण मही ९३०
मागिले बरतुरे देउ जे असुरकु। केडे पारिबार तुरे अटुरे राज्यकु ९३१
मोहर संगे रण करिवु जेबे आज। तेवे जाणिवारे देवार संजोग ३२
एते बोलि कौमुदी गदा धरि पुण। उत्तान करि मोते पकाए वहन ३३
मोहर हृदरे से गदाकु लदि देला। चन्द्र सूर्ज्य प्राये नेत्र तेते बेळे कला ३४
से गदा अचळ जे कलाक मोते पुण। बोइला आजि तोते करिवि नाश पुण ३५
एते बोलि पर्शुराम हेले बड़रागी। देखिण बेनि नारी विकळ भावे सेवि ३६
तेते बेळे क्रोधरे पर्शुराम पुण। तामस रूप गोटि होइला तार जाण ३७
शून्यरु रुप गोटि मर्त्यपुर घोटि। चन्द्र सूर्ज्य दुहेँ दुइ चक्षु होन्ति ३८
गायत्री सावित्री जे वन्धापना कले। अनेक निवर्त्तो जे करिण कहिले ३९
बोइले पर्शुधररे कुह तुहि रागि। बेदवरंकु नमार वासु देवंकु सेवि ९४०
न्यायरे थिले सिना ताकु बड़ कहि। अन्यायकु गले समस्ते अन्याचार होइ ९४१

दाहिने हाथ में कुठार था। २६ उनके वाएँ हाथ में कौमोदी गदा थी। वह विना वाहन के आकाश में छलांग लगाकर आये थे। २७ वह शान्ति के सिंहासन पर बैठे थे। मेरा भवन देखकर वह कुपित हो गए। २८ उन्होंने कहा कि तुम्हारा नाम वेदवर ब्रह्मा है। तुम यहाँ निश्चिन्त होकर बैठे हो। २९ तुम तो संसार के कर्त्ता हो। तुम पृथ्वी के समस्त प्राणियों का सृजन करते हो। ९३० तुम राक्षस को भी मांगने पर वर प्रदान कर देते हो। तुम राज्य का पालन कैसे करते हो। ९३१ जव आज तुम मेरे साथ युद्ध करोगे तव तुम्हें पता चलेगा। ३२ इतना कहकर कौमोदी गदा को लेकर उन्होंने उठाया और उसे मेरे ऊपर वेग से फेंक दिया। ३३ मेरे हृदय पर उन्होने गदा लाद दी और चन्द्रमा तथा सूर्य के समान आँखे दिखाने लगे। ३४ उस गदा ने मुझे अचल वना दिया। और कहा कि आज तुझे नष्ट कर दूंगा। ३५ इतना कहकर वह वड़े क्रुद्ध हो गए। यह देखकर मरी दोनों स्त्रियाँ व्याकुल होकर उनकी विनती करने लगीं। ३६ उस समय क्रोध के कारण उनका रूप भयदायक हो गया। ३७ आकाश से लेकर मृत्युलोक तक उनका शरीर व्याप्त हो गया चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों उनके नेत्र वन गये। ३८ गायत्री तथा सावित्री ने उनकी पूजा की तथा नाना प्रकार के दीन भावों से उनको स्तुति की। ३९ उन्होने कहा कि हे परशुधर ! आप क्रोधावेश में आकर ब्रह्मा को मत मारिये। वह तो भगवान के भक्त हैं। ९४० न्याय पर चलने वाले को महान कहा जाता है। अन्याय पर चलने से सबके लिये अनाचार हो जाता है। ९४१

माता होइ जेबे करन्ति अबेभार। पितार बचन पुत्र मेण्टान्ति तिनि बार ४२
से माता पुत्रकु पिता करइ निश्चे दूर। तेबे तार धर्म गोटि सुफळरे रहि ४३
से माता रे स्नेह कले चण्डाळ बोलाइ। स्वपुत्र होइले पुण माता पिता मारि ४४
धर्मरे दोष ताकु न लागे सुन्दरी। अधर्म कले ताकु देबे हुअन्ति भगारी ४५
गुरस्त होइ जेबे घरणीरे दया। से पुरुष गोटारे केबे हें नाहिँ माया ४६
सेहु घरणी कि जेबे आगे परे नेइ। ता ठारे स्नेह कले आयूष क्षय जाइ ४७
तिनि पुरे अपख्याति मिळे ताकु पुण। प्रीतिरु सतीपण हुए अकारण ४८
से माता बुद्धिबन्त हुअन्ति जेबे पुण। बोलन्ति ए स्वामीरे नाहिँ मो कारण ४९
प्राण तेज्या करइ स्वामीर स्नेह भांगि। तेबे ताकु धर्म जे हुअइ सौभागी ६५०
त्रैलोकर पिता जे सबुंकु जात कला। काळे बड़सान करिण रखिला ६५१
पुणि बर दिअइ करइ अमर। एहि कथा गोटिए नुहइ बेभार ५२
जात कला कुमर बडसान किम्पा। नुहइ ए बेनीभार शुण अनुकम्पा ५३
दयाळुपण कले आपणे हुए नाश। आपणार घरणी अटइ बिशेष ५४
मागिले घरणीकि देव से पररे। कि कार्य्य लभिला आउ दयाळु भावरे ५५
एथिर शकासुँ मोहर कोपमन। शुणिण साबित्री जे बोलन्ति बचन ५६

माता होकर अव्यवहारिक कार्य करे और पुत्र पिता की आज्ञा की अवहेलना करे। ४२ पिता उस माता तथा पुत्र को निश्चय ही दूर कर देता है। तब उसका धर्म फलित होता है। ४३ यदि वह उस माता से प्रीति करे तो उसे चाण्डाल कहा जाता है। यदि अपना ही पुत्र होकर अपने माता-पिता को मारे। ४४ हे सुन्दरी ! धर्म पर चलने से उसे पाप नहीं लगता। अधर्म करने से देवता उसके शत्रु बन जाते हैं। ४५ पति होकर जब वह स्त्री पर दया करता है। तो उस पुरुष में कभी माया नहीं रहती। यदि उस स्त्री को आगे चलकर अन्य ले जाये तो उससे स्नेह करने से उसकी आयु क्षीण हो जाती है। ४६-४७ तीनों लोकों में उसकी अपकीर्ति होती है। प्रीति से सतीत्व व्यर्थ हो जाता है। ४८ वह माता यदि बुद्धिमान होती हे। तो कहती है कि इस स्वामी से मेरा निस्तार नहीं होगा। ४९ वह स्वामी से स्नेह समाप्त करके प्राण त्याग देती है। तब उसका धर्म सौभाग्यशाली होता है। ६५० तीनों लोकों के पिता ने सबको उत्पन्न किया और समयानुसार बड़ा छोटा करके रख दिया। ६५१ फिर वह वर देकर अमर कर देते हैं। परन्तु यह बात अव्यवहार की नहीं है। ५२ उत्पन्न किया हुआ बालक बड़ा अथवा छोटा किस कारण से होता है। यह दोनों बातें दया में नहीं आतीं। ५३ दयालुता करने से वह स्वयं नष्ट हो जाता है। उसकी स्त्री ही उसके लिये विशेष है। ५४ स्त्री के माँगने पर क्या वह दूसरे को देगा। फिर दयालुभाव से उसका कौन सा कार्य सिद्ध हुआ। ५५ इसी कारण से मेरे मनमें क्रोध है।

शुणरे पर्शुधर आम्भर बाणी पुण । बळबन्त पण करे जेहु जाण ५७
ताकु भबुसि हेब्रार अटइरे बाबु । बिधातार दोष ए नुहइ जे सबु ५८
अबिगुण नधरि बेगे चळिजाअ । बिहिकि दण्ड देबार नुहँइ तोर प्रिय़ ५९
क्षीर सागररे अछन्ति नाराय़ण । ताहांकु पचार जाइ काहार दोष पुण ६६०
शुणिण पर्शुराम राग क्रोध नाभि । कौमुदी गदाकु उपरु काढ़े आसि ६६१
तेते बेळे प्राणकु जे पाइलि मुँ पुण । मोते पचारिला पर्शुधर जाण ६२
बोइला चारि रावण मरिबे काहा हस्ते । मुँ बोइलि मरिबे वासुदेवंक हस्ते ६३
से बोइला बासुदेव केउं ठारे अछि । न मारइ असुर न जाणे से किछि ६४
मुँ बोइलि सबु जाणे सम्भाळि कार्य्यकरे । अवेभार कथा जे नुहँइ ता हस्तरे ६५
पर्शुराम बोइले मुँ जिबइँ से पुर । मुँ बोइलि क्षीरसागर तांक घर ६६
पर्शुराम बोइले तोते जननी आजि रखि । नोहिले सञ्जोवनी देखन्तु जाइ तुटि ६७
मुँ बोइलि मोर दोष नाहिँरे कुमर । सबु सिना भिआइला अभय़ निराकार ६८
सकळ माय़ा जाणन्ति श्रीहरि जे पुण । नाना कथा कूट जे करइ भिआण ६९
पर्शुराम बोइला किम्पाइ कूट करे । उचित कथा नुहइ ब्रह्माण्ड ठाकुरे ६७०
मुँ बोइलि क्षणभंगुर अटइ संसार । उश्वास पाइले से करन्ति जेबे वड़ ६७१

यह सुनकर सावित्री ने कहा । ५६ हे परशुराम ! हमारी बात सुनो । यदि वह बल दिखलाता है। तो उसे नीचा देखना पड़ता है । यह सारा दोष विधाता का नहीं होता । ५७-५८ अविचार छोड़कर शीघ्र ही चले जाओ । तुम्हारा विधि को दण्ड देना श्रेयस्कर नहीं है । ५९ क्षीर सागर में नारायण रहते हैं । उनसे जाकर पूछो । इसमें किसका दोष है । ६६० यह सुनकर परशुराम ने क्रोध शांत कर कौमोदी गदा को आकर हमारे ऊपर से उठा लिया । ६६१ उस समय मुझे प्राण से मिले । फिर परशुधर ने मुझसे पूंछा कि चारों रावण किसके हाथ से मरेंगे । मैने कहा कि उनका संहार भगवान के हाथों से होगा । ६२-६३ उन्होंने कहा कि वह नारायण कहाँ है । न तो वह राक्षसों को मारता है और न वह कुछ जानता ही है । ६४ मैने कहा वह सब जानता है और विचारपूर्वक कार्य करता है । उसके हाथों से अनैतिक कार्य नहीं होता । ६५ परशुराम ने कहा कि मैं उसके निवास पर जाऊँगा मैंने कह दिया कि उनका घर क्षीरसागर में है । ६६ परशुराम ने कहा कि माता ने आज तुम्हारी रक्षा कर दी अन्यथा नष्ट होकर तुम यमलोक का दर्शन करते । ६७ मैंने कहा वत्स ! इसमें मेरा दोष नहीं है । यह सब निराकार परमात्मा ने ही रचा है । ६८ श्रीहरि सब माया जानते हैं और वह नाना प्रकार के रहस्य करते है । ६९ परशुराम ने कहा कि वह छल किसलिये करते है । त्रिलोकीनाथ के लिये यह उचित नहीं है । ६७० मैंने कहा कि यह संसार क्षणभंगुर है । भारहीन होने से वह उसें बड़ा बना देते हैं । भार हरण करने से वह राजा ही कहे जाते है । हम सारे देवता हैं ।

राजाहिँ उश्वासरे बोलन्ति जे पुण । आम्भे देवताए अटु सकळ देवगण ७२
ए दुइ कुळ शकासे असुर जात होन्ति । एमानंकर बळ असुर हरि घ्नन्ति ७३
तेबे से आरत जे हुअन्ति सकळ । तेते बेळे श्रीहरिकि भजन्ति करि सार ७४
भकति पण कले श्रीहरि होन्ति जात । तेबे से असुरकु मारन्ति जगन्नाथ ७५
पर्शुराम बोइले शुणहे पितामह । देवतांक पराक्रम एबे मोते कह ७६
केउँ गुणे देवताए मता से हुअन्ति । केउँ गुणे गर्व बहन्ति श्रीबत्सि ७७
मुँ बोइलि शुणरे गोलक नारायण । देवंक प्रबळरे अटइ जेउ दिन ७८
से दिन देवताए मने बिचारन्ति । आम्भे बिष्णु हेबा बोलि सेहु बिचारन्ति ७९
प्रबळ सरिले हुअन्ति मध्यभाव । तेते बेळे हुअन्ति नारायण सर्ब ९८०
पर्शुराम बोइले प्रबळ कथा कह । केमन्ते प्रबळ जे हुअइ देव देह ९८१
मुँ बोइलि शुणरे रेणुका कुमर । बासुदेव जेते बेले दया तांक ठार ८२
तेते बेळे प्रबळ हुअन्ति देवगण । जेते बेळे निर्दया हुअन्ति नारायण ८३
तेते बेळे निऊन सकळ सुर होन्ति । निऊन हेले निर्बळ होइण भजन्ति ८४
पर्शुराम बोइले एथिर फळ कह । निर्बळ बळवन्त निमन्ते हेले प्रिय ८५
मुँ बोइलि शुणरे जमदग्नि सुत । देवताए प्रबळ हेबार चरित्र ८६
असुर दुष्टजन करन्ति हरि नाश । पृथि उश्वास करि देवंकु दिअइ आयुष ८७

हम दोनों कुलों के कारण राक्षस उत्पन्न होते हैं। राक्षस इन दोनों का बल समाप्त कर देते हैं। ९७१-७२-७३ तब वह सब दुःखी हो जाते हैं। और फिर सब भगवान का चिन्तन करने लगते हैं। ७४ भक्ति करने से भगवान उत्पन्न हो जाते हैं और तब जगत के नाथ राक्षसों का वध करते हैं। ७५ परशुराम ने कहा हे पितामह! सुनो। अब देवताओं के पराक्रम के विषय में आप हमसे कहिए। ७६ किस गुण के कारण देवता उन्मत्त हो जाते है और कौन से गुण के कारण भगवान गर्व का हरण करते हैं। ७७ मैने कहा गोलोक के स्वामी सुनो! देवता जिस दिन प्रबल हो जाते हैं। उस दिन वह भी विष्णु बनने की सोचने लगते हैं। ७८-७९ प्रताप समाप्त होने पर वह मध्यभाव में आ जाते हैं। तब वह सब नारायण हो जाते हैं। ९८० परशुराम ने कहा कि प्रताप की बात कहो। देवताओं का शरीर प्रतापशाली कैसे हो जाता है। ९८१ मैंने कहा हे रेणुका कुमार! सुनो। जिस समय भगवान उन पर दया करते हैं। उस समय देवता प्रबल हो जाते हैं और जब वह उन पर निर्दय होते हैं। तब सारे देवता बलहीन हो जाते है। फिर वह सब निर्बल होकर भगवान का भजन करने लगते हैं। ८२-८३-८४ परशुराम ने कहा इसके फल के विषय में कहिये। वह निर्बलता बलवान के कारण प्रिय हुये है। ८५ मैंने कहा हे यमदग्नि नन्दन! सुनो। देवताओं के प्रबल होने का रहस्य कह रहा हूँ। ८६ असुर तथा दुष्ट जनों का भगवान संहार करते हैं। पृथ्वी को भारमुक्त करके वह देवताओं को

तेते बेळे बळ पाआन्ति देवगण । सदाशिव मोते घेनि मानन्ति पुण ८८
नाना अन्याए करन्ति होइण मता सेहु । बोलन्ति ब्रह्म विष्णु हर जे आम्भे सबु ८९
से प्रबळ देखि आम्भे निबर्त्त पुण हेउ । ज्योति स्वरूपे असुरकु शरीरे रिपुदेउ ९९०
रिपु घेनि असुरे करन्ति तपटाण । तप कले वर तांकु देउ जे आम्भे पुण ९९१
वर पाइ देवंकु करन्ति सेहु साध्य । तेबे से श्रीहरिकि भजन्ति सर्वदेव ९२
तांकर निर्बळ देखि बासुदेवर दया । ध्वंसन्ति असुरंकु करिण नाना माया ९३
पर्शुराम बोइले देवताए एथि मन्द । सकळ कथारे द्वन्द करन्ति देववृन्द ९४
देवतांकु माइले सकळ द्वन्द जाइ । एते बोलि पर्शुराम वेगे गला धाइँ ९५
बोइला स्वर्ग पुर जिबि एहि क्षणि । सकळ देवतांकु मारिबि आजि पुणि ९६
मुँ बोइलो देवताए नाहान्ति स्वर्गपुरे । समस्तंकु धरि नेला लंका मही पाळे ९७
पर्शुराम बोइला से लंकाकु जिबि मुहिँ । देवता असुरंकु मारिबि आज जाइँ ९८
मुँ बोइलि से असुर तोरे नाश नोहे । वासुदेव जात हेले मारिबे स्व देहे ९९
तांक संगे जुद्ध कले हारिबु पर्शुधर । शुण हे जमदग्नि सुत मुँ कहिलि निकर१०००
शुणिण पर्शुराम जे क्रोध शान्ति कला । राजार प्रबळ कथा कहरे बोइला१००१

आयु प्रदान करते है। ८७ उस समय देवताओं को बल मिलता है। वह हमें और शंकर जी को मानने लगते है। ८८ फिर वह मत्त होकर नाना प्रकार के अन्याय करने लगते है और कहने लगते है कि हम लोग ही ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर हैं। ८९ उस प्रताप को देखकर हम लौटकर ज्योति स्वरूप से असुरों के शरीर में शत्रुता देते है शत्रुता से असुर उत्पात मचाते है। तपस्या करने पर हम उन्हें वर प्रदान करते है। ९९०-९९१ वर पाकर वह देवताओं से युद्ध करते है। तब सब देवता भगवान को भजने लगते है। उनकी निर्बलता देखकर भगवान दया करके नाना प्रकार की माया से राक्षसों का विनाश करते हैं। ९२-९३ परशुराम ने कहा कि देवता इतने तुच्छ है। सब बात पर वह लोग झगड़ा ही करते हैं। ९४ देवताओं को मारने से सारा झगड़ा समाप्त हो जायेगा। ऐसा कहकर परशुराम शीघ्रता से चले दिये। उन्होंने कहा कि स्वर्गपुर जाकर आज इसी क्षण मै सारे देवताओ का वध कर डालूंगा। ९५-९६ मैंने कहा कि देवता अभी स्वर्ग में नहीं है। उन सबको लंका के राजा रावण ने वन्दी बना लिया है। ९७ परशुराम बोले तो मै लंका को जाऊँगा और देवता तथा असुरों को आज जाकर मार डालूंगा। ९८ मैंने कहा कि वह असुर तुमसे नष्ट नहीं होगा। भगवान जन्म लेकर स्वयं उसका विनाश करेंगे। ९९ हे परशुधर ! उसके साथ युद्ध करने पर तुम हार जाओगे। हे यमदग्नि नन्दन ! जो मैं कहता हूँ उसे सुनो। १००० यह सुनकर परशुराम ने क्रोध को शात किया और कहा कि राजाओं

मुँ बोइलि शुणरे रेणुका नन्दन। सपत द्वीप पृथ्वी जे अटइ एहि पुण २
सप्त सागर जे अछइ य़ाकु बेढि। द्वीप गोटि के लक्षे राजा अछन्ति जे पूरि ३
षड़ द्वीपे छड लक्ष राजन अछन्ति। प्रथमे जम्बुद्वीपटि अजिले श्रीवत्सि ४
लवण समुद्र जे तहिँकि घेराइला। समुद्र भितरे नव सागर गढ़ कला ५
सेथिरे असुरे रहिले जाइ करि। जम्बु द्वीपकु आबोरि रहिले दैत्य घेरि ६
ए जम्बु द्वीपरे अठर कोटि गिरि। अठर कोटि कन्दर जगत हेतु करि ७
एमान समस्त जे मेरुर बइर। राजा असुरे अटन्ति मोर अनुचर ८
ए द्वीपरे जन्तुपति शनिअटे पुण। धर्मबक सरिले हरइ तांक प्राण ९
ए द्वीपर उत्तरु जे कुशळ द्वीप होइ। से द्वीपे लक्षे जे नृपति छन्ति रहि१०१०
सेहि द्वीपरे जे गिरि कन्दर एतिकि। ताहांकर नृपित अटइ मेरुटिकि१०११
मधुर समुद्र जे से द्वीपकु घेरि। नव सागर टाण अटइ ताकु घेरि १२
से द्वीपे नर बानर अछन्ति असुर। से पुररे पिता मुँ जे अटइ पर्शुधर १३
जम सेथिरे दिति आदित्यर सुत। तार नाम गोटि जे अटइ देव दत्त १४
धर्म अधर्म जे बिचारि कार्ज्य करे। अधर्मरे समस्तंकर प्राण हरे १५
सेथिर उत्तरु जे नोळ नामे द्वीप। दुइ लक्ष राजा गिरि कन्दरे स्वरूप १६
जान्हवी धवळ समुद्र द्वीपकु घेरि। अठर सागर गड़ से मध्यरे पूरि १७

की प्रबलता की बात आप बताइये। १००१ मैंने कहा हे रेणुकानन्दन ! सुनो। यह पृथ्वी सात द्वीपों की है। २ सात समुद्रों ने इसे घेर रखा है। एक-एक द्वीप में एक लाख राजा भरे हुये है। ३ छै द्वीपों में छै लाख राजा हैं। सर्व प्रथम भगवान ने जम्बू द्वीप का सृजन किया। ४ लवण सागर से उन्होंने उसे घिरवा लिया। समुद्र के भीतर नौ सागर की संख्या में दुर्ग बनवाए। राक्षस जाकर वहीं रह गए। जम्बूद्वीप को चारों ओर से घेरकर दैत्य रहने लगे। ५-६ इस जम्बूद्वीप में अट्ठारह करोड़ पर्वत हैं। जगतकर्त्ता ने अट्ठारह करोड़ कन्दर निर्मित किये। ७ यह लोग सभी सुमेरु के शत्रु थे। वह सोचते थे कि राजा तथा राक्षस हमारे अनुचर हैं। ८ इस द्वीप का जन्तुपति (यम) शनि है। धर्म बल समाप्त होने पर वह उन जीवों के प्राण हर लेता है। ९ इस द्वीप के पश्चात् कुशल द्वीप बना। उस द्वीप में एक लाख राजा रहते हैं। १०१० उस द्वीप में जितने पर्वत तथा कन्दरायें हैं उन सबका राजा सुमेरु है। १०११ मधुसागर ने उस द्वीप को घेर रक्खा है। नौ सागर की संख्या में दर्पी लोगों ने उसे घेर रक्खा है। १२ उस द्वीप में नर-वानर तथा असुर हैं। हे परशुधर ! उस स्थान का पालनकर्त्ता मैं हूँ। १३ वहाँ का यम दिति और आदित्य का पुत्र है। उसका नाम देवदत्त है। १४ धर्माधर्म का विचार करके वह कार्य करता है। अधर्म में लगे व्यक्तियों के वह प्राण हर लेता है। १५ उसके उपरान्त नील नाम का द्वीप है। गिरि कन्दर के अनु- रूप वहाँ दो लाख राजा है। जाह्नवी श्वेत सागर से वह द्वीप घिरा है। उसमें अट्ठारह सागर की संख्या में दुर्ग है। १६-१७ उसके मध्य

सेथिर मध्यरे दैत्य छन्ति बास करि। समस्तंकु पाळइ शुण हे पर्शुधारी १८
तृतीय रविरकुमर सेथि पुण। जन्तु पति होइ बुझे धर्म अधर्म जाण १९
धर्मरे थिला लोकर पाशकु न जाइ। अधर्म थिला लोककु नाश से करइ१०२०
तार नाम हय बोलिण सर्बे बोलि। एमन्ते तिनि पुर शुणिलु ब्रह्मचारी१०२१
आरेक पुर कथा तोते जे पुण कहि। से पुरनाम हीरा ज्योति जे बोलइ २२
से पुरे दुइ लक्ष राजांकर घर। अठर कोटि गिरि कन्दर सागर २३
दधि समुद्र से पुरकु घोटि अछि पुण। बार सागर सेथिरे गढ़ अटे जाण २४
से टापुगढ़रे जे असुरे अछन्ति। से असुर दुष्टपण केबेहें न करन्ति २५
से राजा माने दुष्ट नुहँन्ति केबे पुण। काहाकु केहि हिंसा न करन्ति जाण २६
चतुर्थ रबिर नन्दन अटे जम। गला आसिला वेळे हरइ तार प्राण २७
काञ्चिद्वीपकु जे पञ्चाश बोलि कहि। से द्वीपरे तिनि लक्ष नृपति अछइ २८
धर्मरे आत जात सकळ द्वीप पुण। हिंसा तम नाहिँ सेथिरे अबिगुण २९
से द्वीपरे बृहस्पति नन्दन जन्तुपति। ताहार नाम कोटि नवीन नामे मूर्त्ति१०३०
से द्वीपकु घेरिअछि घृत दधि समुद्र। × × ×१०३१
सेथिर मध्ये अछि अपार गढ़ सन्धि। से थिरे असुरे जे अछन्ति बड़ जोद्धि ३२
धर्मरे धरा जे जाहा भागे रहि। धारारु विधारा जे नुहँन्ति पुण केहि ३३

में दैत्य निवास करते हैं। हे धनुर्धर! सुनो। उन सबका पालन मैं करता हूँ। १८ तीसरे आदित्य का पुत्र वहाँ पर यम होकर धर्म और अधर्म का विचार करता है। १९ वह धार्मिक लोगों के समीप नही जाता और पापी लोगों का नाश कर देता है। १०२० सब उसे हय नाम से पुकारते है। हे ब्रह्मचारी! इस प्रकार तुमने तीनों लोकों के विषय में सुन लिया। १०२१ तुमसे मैं एक और सम्भाग की बात बता रहा हूँ। उस लोक का नाम हीरा ज्योति कहा जाता है। २२ उस पुर में दो लाख राजाओं के घर है। वहाँ अट्ठारह करोड़ गिरि कन्दरायें है। २३ वह दधि समुद्र से घिरा है। वहाँ पर बारह सागर की संख्या में दुर्ग है। २४ उसके टापू-दुर्ग में दैत्य है। वह असुर कभी भी दुष्टता नहीं करते। २५ वह राजागण न तो दुष्टता करते हैं और न किसी की हिंसा कभी करते है। २६ चौथे आदित्य का पुत्र वहाँ यमराज है। जाने-आने के समय वह उनके प्राण हरण कर लेता है। २७ पाँचवाँ द्वीप काँची द्वीप है। उस द्वीप में तीन लाख राजा है। २८ सम्पूर्ण द्वीप धर्म से युक्त है। हिंसा क्रोध तथा दुर्गुण वहाँ नही है। २९ उस द्वीप के यमराज बृहस्पति के पुत्र है। उसका नाम नवीन है। १०३० उस द्वीप को घृत-दधि समुद्र ने घेर रखा है। १०३१ उसके मध्य में एक रहस्यपूर्ण दुर्ग है। उसमें अत्यन्त योद्धा राक्षस रहते हैं। ३२ धार्मिक भावना से अपनी-अपनी पृथ्वी पर वह सद्भाव से रहते हैं।

चउषठि कोटि जोग्नी से थिरे छन्ति पुण । क्षीर कन्दर सेथिरे अटइ द्विगुण ३४
से समुद्र उत्तरु द्वीपेक पुण अछि । झटक ज्योति द्वीप नाम तार गछि ३५
से द्वीपरे सात द्वीप अटइ महीधर । बतिश कोटि गिरि जे कलेक अपार ३६
बाआन कोटि पितृ पुणि से द्वीपरे ठुळ । अधर्म धर्म नाहिँ समस्ते एक चाळ ३७
से समुद्र भितरे सकळ देवंकर पुर । × × × ३८
सेथिरे जन्तुपति मण्डुकी नामे अहि । जुग सरिले तार कागज बुझा जाइ ३९
से द्वीप उपरे जे श्रीहरि पाटणा । बार लक्ष जुण जे अटइ दीर्घ ठणा१०४०
से द्वीपर नाम अटइ रम्यक द्वीप जाण । से थिरे बासुदेव शयन स्थान पुण१०४१
से द्वीपरे जन्तुपति बिनता नामे खग । अठर मनुरे जे कागज करे भज ४२
से थिरे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर अनन्त । एमाने पात्र मन्त्री अटन्ति साक्षात ४३
सेथिरे एक राजा बासुदेव पुण । सकळ कथा जाणन्ति रहिण नारायण ४४
षोळ जुगरे थरे निद्रा जे तेजन्ति । सकळ लोकंकर न्याय से बुझन्ति ४५
चउद गोटि रुम देहरु उपाड़िण । सात पुरकु भेदन्ति जीवन्यासरे पुण ४६
सात दिगकु प्रति उत्तर करि जान्ति ।
दुष्ट मारि सन्थ पाळि लेउटि आसन्ति ४७
से माने अइले जे बासुदेव जाण । शयन करन्ति अनन्त उपरेण ४८

कोई वहाँ धर्म से विमुख नहीं होता । ३३ चौसठ करोड़ योगिनी वहाँ रहती हैं। वहाँ दुगनी क्षीर-कन्दरायें हैं। ३४ उस समुद्र के उत्तर में एक द्वीप और है जिसका नाम झटक ज्योति द्वीप है। ३५ उस द्वीप में सात द्वीप पहाड़ों से भरे हैं। बत्तीस करोड़ पर्वत वहाँ पर हैं। ३६ बावन करोड़ पितृगण उस द्वीप में एकत्रित हैं। वहाँ धर्म-अधर्म नहीं है। सभी एक चाल चलते है। ३७ उस समुद्र के भीतर सभी देवताओं के निवास हैं। ३८ वहाँ पर मंडुकी नाम का सर्प यमराज है। युग की समाप्ति पर वहाँ पत्र (कागज) देखा जाता है। ३९ उस द्वीप के ऊपर श्री नारायण का पुर है। वह बारह लक्ष योजन विस्तीर्ण है। १०४० उस द्वीप का नाम रम्यक द्वीप है। वहाँ पर भगवान वासुदेव के शयन का स्थान है। १०४१ उस द्वीप का यमराज बिनता नाम का पक्षी है। अठारह मन्वन्तर बीतने पर वह पत्र (कागज) निकालता है। ४२ वहाँ अनेक ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर हैं। यही लोग साक्षात रूप से वहाँ सभासद तथा मंत्री हैं। ४३ वहाँ के राजा एकमात्र नारायण हैं। वह जल में घर बनाकर रहते हुए सब कुछ जानते हैं। ४४ सोलह युग में एक बार वह निद्रा का त्याग करते हैं तथा सभी लोगों का न्याय विचार करते हैं। ४५ अपने शरीर से चौदह रोम उखाड़कर उन्हें जीवनी शक्ति प्रदान करके सात लोकों में भेज देते हैं वह सातों दिशाओं में घूम फिरकर दुष्टों को मारकर तथा सन्तजनों की रक्षा करके लौट आते हैं। ४६-४७ उनके लौटने पर वासुदेव भगवान अनन्त शेष शैय्या पर शयन

से द्वीपकु क्षीर जे साहेर अछि घेरि। बयालिश सागर टापु सेथि पूरि ४९
सकळ टापुरे अछन्ति पक्षी खग। समस्तंक उपरे गरुड खगराज१०५०
बिष्णुर बाहान से अटइ जुकते। सबु पक्षी परे सार बिनतार सुते१०५१
देव नाशन बट सेथिरे अछि जाण।
देवता माने नाश गले जाआन्ति सेथि जाण ५२
देबी नाशन वट सेथिरे अछि रहि। से वट तळे देवी माने जे नाश होइ ५३
सेहि ठारु प्रळय हुअइ जात पुण। से बट पुटरे शयन नारायण ५४
अठर मनू पर्ज्यन्त घोटइ दावानळ। समस्तंकु भष्म से करइ अनळ ५५
पर्शुराम बोइले सप्त द्वीप सपत सागर। एमानंकर न्याय कह मो आगर ५६
चउद ब्रह्माण्ड जाक कथा एबे कह। वेदवर बोइले शुणहे सन्देह ५७
सात द्वीप सात सिन्धु जाकु बोलि जाण। चउद ब्रह्माण्ड जे अटइ से जाण ५८
पर्शुराम बोइले मेदिनी नवखण्ड। केउँ रूपे पुण लागिला प्रमाद ५९
मुँ बोइलि पर्शुधर सेथिर कथा शुण। पुर के तिनि मेदिनी अटइ जे पुण१०६०
पर्शुराम बोइले मेदिनी के अटइ। सेथर नाम मोते निर्मूल दिअ कहि१०६१
बेदबर बोइले शुण हे पर्शुधर। स्वर्गरे तिनि मेदिनी अटइ प्रकार ६२
बन गिरि लताकु मेदिनी बोलि कहि। प्रजाजन करि मेदिनी एबे होइ ६३
राजा मानंकर मेदिनी अटे पुण। तिनि पुरे नवखण्ड मेदिनी तुले जाण ६४

करते है। ४८ वह द्वीप क्षीर सागर से घिरा है। उसमें बयालिस सागर की संख्या में टापू भरे हैं। ४९ सभी द्वीपों में पक्षी भरे पड़े है। उनके ऊपर गरुड़ पक्षिराज है। १०५० वह प्रारम्भ से विष्णु के वाहन हैं। वह विनतानन्दन समस्त पक्षियों में श्रेष्ठ हैं। १०५१ वहाँ देवनाशन वटवृक्ष है। नष्ट होने पर देवता वही जाते है। ५२ वहाँ देवी नाशन वट भी है। देवियाँ उसी वट के नीचे नष्ट होती हैं। ५३ वहीं से प्रलय का प्रारम्भ होता है। उस वट के पत्र पर नारायण शयन करते है। ५४ अट्ठारह मन्वन्तरों तक दावानल व्याप्त रहता है। वह अग्नि सबको भस्म कर देती है। ५५ परशुराम ने कहा कि आपने हमसे सप्तद्वीप तथा सप्तसागर के न्याय का वर्णन किया। ५६ अब आप चौदह ब्रह्माण्डों के विषय में मुझे बताइये। ब्रह्माजी ने कहा हे जिज्ञासु ! सुनो। ५७ जिसे सात द्वीप तथा सात समुद्र कहकर जाना जाता है वही चौदह ब्रह्माण्ड कहलाता है। ५८ परशुराम ने कहा कि नवखण्ड पृथ्वी में फिर प्रमाद कैसे लग गया। ५९ मैंने कहा हे धनुर्धर उसकी बात सुनो। हे पुत्र एक-एक लोक में तीन प्रकार की मेदिनी है। १०६० परशुराम ने कहा कि कौन कौन मेदिनी है। आप स्पष्ट करके हमें उनके नाम बताइये। १०६१ ब्रह्माजी ने कहा हे धनुर्धर ! सुनो। स्वर्ग में मेदिनी के तीन प्रकार हैं। ६२ वन गिरि तथा लताओं को मेदिनी कहा गया है। फिर प्रजा के लोगों से उनकी पृथ्वी हुई। ६३ फिर राजा लोगों की पृथ्वी है। इस प्रकार लोकों में नौखण्ड पृथ्वी है। ६४

पर्शुराम बोइले जाणिलि एथर। बसुन्धरी तिनिपुरे अटे केते सार ६५
बेदबर बोइले शुण रेणुका कुमर। प्रथमे स्वर्गपुर से जे हेला सार ६६
शुद्रि सम असुरंकु माइले नरहरि। ताहारि मांसरे स्वर्गकु तिआरि ६७
बत्रिश कोटिबसुन्धरी अटइ से पुर। नौसागर देवता कले घर ६८
जाणिण बासुदेब से पुरे कले भज। पर्शुराम बोइले शुण हे देवराज ६९
स्वर्गपुरे सप्त सागर अटे पुण। नदी पोखरी कूप बाम्फी नामहिँ से जाण१०७०
बेदबर बोइले सकळ अछि तहिँ। तिनि गोटि सागर जे तिनि द्वीपे रहि१०७१
नदी पुष्करणी जे सरजू गंगा जाण। कूप बाम्फी पोखरी अछि से सर्ब जाण ७२
पर्शुराम बोइले किसहे तांकर आहार। बेदबर बोइले शुणंतु सेथि सार ७३
अमृत भोजन जे असळाण बस्त्र। असळाण पुष्प भांगि घेनन्ति सेहु दासी ७४
नाना रत्ने अळंकार आभरण होइ। बेश्या माने अप्सर सेथिरे बोलइ ७५
सभा मध्ये सार जे सुधर्मा अटे सार। सकळ देवतारे नरेन्द्र इन्द्र बीर ७६
पर्शुराम बोइले मर्त्यपुरर कथा। आगकु कहिलित शुणिल व्यवस्था ७७
बेदबर बोइले अछि सेथिर कथा। पञ्चाश कोटि बसुन्धर अटे सारस्वत ७८
मधु कैटभ असुरंकु मारि मेद मांस। मर्त्यपुर मेदिनी कलेक बिशेष ७९

परशुराम ने कहा कि अब मैं समझ गया कि तीनों लोकों में यह पृथ्वी कितनी महत्वपूर्ण है। ६५ ब्रह्माजी ने कहा, हे रेणुकानन्दन ! सुनो। प्रथम तो वह स्वर्गलोक है जो महत्वपूर्ण हुआ। ६६ नरहरि ने प्रबल प्रतापी दैत्य का बध करके उसके मांस से स्वर्ग का सृजन किया। ६७ बसुन्धरा के बत्तिस करोड़ पुरों में नौ सागर की संख्या में देवताओं ने घर बना लिये। ६८ यह जानकर वासुदेव उस लोक का पालन करने लगे परशुराम ने कहा हे देवराज ! सुनिये। ६९ स्वर्गलोक में सात समुद्र है। वह नदी, पोखर, कुआँ, बावली के नाम से ख्यात हैं। १०७० ब्रह्माजी ने कहा कि वहाँ पर सब कुछ है। उन तीनों द्वीपों में तीन समुद्र है। १०७१ नदी, पुष्करिणी, सरयू, गंगा, कुएँ, बावलियाँ सभी हैं। ७२ परशुराम ने कहा कि उनका आहार क्या है। ब्रह्माजी ने कहा कि तुम उसके रहस्य को भी सुनो। ७३ उनका भोजन अमृत है। उनके परिधान निर्मल तथा कभी मैले नहीं होते। दासियाँ कभी भी न कुम्हलाने वाले पुष्पों के नाना प्रकार के रत्नाभरणों से सुसज्जित रहती हैं। वहाँ वेश्याओं को अप्सरा कहा जाता है। ७४-७५ सभाओं में श्रेष्ठ वह सुधर्मा सभा महत्वपूर्ण है। समस्त देवताओं का सम्राट् पराक्रमी इन्द्र है। ७६ परशुराम ने कहा कि मृत्युलोक की बात क्या है ? ब्रह्माजी बोले कि वह तो मैंने पहले ही बता दी जिसकी व्यवस्था तुम सुन चुके हो। फिर भी वहाँ की और बातें सुनो। वहाँ पचास करोड़ भूखण्ड महत्वपूर्ण है। ७७-७८ मधु कैटभ दैत्य को मारकर उसकी

सप्त सागरकु सात द्वीप कला । मध्यपुर बोलिण हरिंकि वास देला१०८०
एमन्ते मर्त्यपुर भिआण होइ अछि । शुणि करि पर्शुराम होइलेक तोषि१०८१
बळराम दास से जे श्रीहरि चरणे । अधम जन मुहिँ देवटि कारणे ८२
पार्वती बोइले शुण हे त्रिलोचन । पर्शुरामे वेदवर सम्वाद देल पुण ८३
दुइपुर कथा जे निरोळा जणा गला । तळपुर कथा पुणि केमन्त होइला ८४
से कथा मोर आगे करहे बखाण । शुणिले तोष हेव मोर कान पुण ८५
ईश्बर बोइले शुण भगवती । पर्शुराम पचारिवारु वेदवर कहन्ति ८६
पर्शुराम बोइले शुण हे कुश पाणि । तिनि पुर कथा मोते कह हे बखाणि ८७
वेदबर बोइले शुण हे पर्शुधर । पाताळ पुररे पुणि पञ्चाश सागर ८८
पाञ्च गोटि पुर जे तहिँरे पुण सार । अठर कोटि नाग वळ पाताळरे ठुळ ८९
सदाशिव संगतरे बेदवर पुणि । एमाने पाताळ पुररे छन्ति घेनि१०९०
गोळक बैकुण्ठ जे अछइ भुबन । राधा कृष्ण लीळा जहुँ हेउछि अनुक्षण१०९१
स्मृति उत्पत्ति उदय अस्त नाहिँ तहिँ । दिवस रजनो जहिँ सेठारे भेट नाहिँ ९२
प्रळय संसार जे से ठारे न भेदइ । क्षुधा तृषा सेठारे काहाकु न लगइ ९३
शउच अशउच जे नोहि स्थिति । राधा रमणी गोटिक चन्द्र ज्योति ९४

मेद तथा मांस से मृत्युलोक की मेदिनी का निर्माण हुआ । ७९ सात समुद्र तथा सात द्वीपों का निर्माण हुआ । मध्यपुर कहा जाने वाला विष्णु का निवास हुआ । १०८० इस प्रकार मृत्युलोक का निर्माण किया गया । यह सुनकर परशुराम सन्तुष्ट हो गए । १०८१ वलरामदास श्री भगवान के चरणों की शरण में है । मैं अधम व्यक्ति हूँ । हमारा उद्धार कर दीजिये । ८२ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! सुनो । आपने मुझसे परशुराम तथा ब्रह्माजी का कथोपकथन कहा । ८३ दो लोकों की बात तो स्पष्टरूप से समझ में आ गई । परन्तु पाताललोक की वात का क्या हुआ ? । ८४ आप मेरे समक्ष उस कथा का वर्णन कीजिये जिसे सुनकर मेरे कान सन्तुष्ट हो जॉय । ८५ शंकर जी ने कहा हे भगवती ! सुनो । परशुराम के पूंछने पर जिसे ब्रह्माजी ने कहा है । ८६ परशुराम ने कहा हे कुशपाणि ब्रह्माजी सुनिये । आप मुझसे तीनो लोकों की कथा का वर्णन कीजिये । ८७ ब्रह्माजी बोले हे परशुधर ! सुनो । पाताल लोक में पचास सागर हैं । ८८ वहाँ के पाँच सम्भाग मुख्य हैं । पाताल में अट्ठारह करोड़ नागों के दल भरे पड़े हैं । ८९ शंकर के साथ में ब्रह्मा इन्हें पाताल लोक में ले गये । १०९० जो गोलोक वैकुण्ठधाम है वहाँ प्रतिक्षण राधा कृष्ण की लीलायें होती रहती हैं । १०९१ वहाँ पर उदय-अस्त, दिन रात आदि नहीं होता । वहाँ पर सृष्टि का प्रलय नहीं होता । वहाँ किसी को भूख प्यास नहीं लगती । ९२-९३ वहाँ पवित्रता और अपवित्रता की स्थिति नहीं है ।

गोटिक काम जाण प्राए से रूप बिराजन्ति ।
कृष्णर कीरति गोटि दिशे सूर्ज्य ज्योति ९५
से पुर महिमा सबु पुर ठारु सार । सकळ सारस्वत जे से पुररे ठुळ ९६
पर्शुराम बोले पाञ्चद्वीपर नाम कह । बेदबर बोले शुण नारायण देह ९७
पाताळ पुर गोटि बिस्तार तार मूळ । दुइलक्ष जुण जे अटइ दीर्घतार ९८
लक्षण जुणरे जाण नाग बळ रहि । पाञ्च सस्र जुणरे रहिले देह बहि ९९
गोलक पुरटि पचिश सहस्र पुण । सप्त ब्रह्मांकर स्थान बार सहस्र जुण११००
नाग ऋषि क्रोध ऋषि देबर्षि ब्रह्मर्षि । एमाने तेर सस्र जुणरे अछ बसि११०१
अनेक रत्नपुर सेथिरे अछि पुण । देवंकर दुहिता गिरि पुत्रि स्थान २
बळिराजा सेथिरे भितरे अछि आणि । समस्ते मध्य जे पुणी अटन्ति अवरणी ३
गंगा जमुना जे पुण नाना तीर्थ जळ । नदी जे पुष्करणी कूप बाम्फी माळ ४
एहि रूपरे सचराचर छन्ति घोटि । शुण तुम्भे पर्शुराम से पुर आकृति ५
कर्त्ता सेथिरे पुणि अटइ शदाशिव । से पुरकु घोटि अछि भाद्रव समुद्र ६
बाइशि कोटि गिरि कन्दर बहुत । एमाने अछन्ति दक्षिण दिग तट ७
से दिगरे जन्तुपति अटे सस्र फणि । शतेक बरषरे कागज अछि पुणि ८
धर्मबन्त लोककु धर्मरे रखे पुण । अधर्म कला लोकर हरइ पराण ९

वहाँ चन्द्र ज्योतियुक्त केवल एक राधा कामिनी है। ९४ एकमात्र कामरूप से वह वहाँ विराजमान है। कृष्ण की कीर्ति वहाँ सूर्य की ज्योति के समान दिखाई देती है। ९५ उस लोक की महिमा समस्त लोकों से महत्वपूर्ण है। वहाँ पर समस्त सार भरे पड़े है। ९६ परशुराम ने कहा कि पाँच द्वीपों के नाम बताइये। ब्रह्माजी ने कहा हे देहधारी भगवान सुनो। ९७ मुख्यतः सम्पूर्ण पाताललोक का दीर्घ विस्तार दो लाख योजन विस्तीर्ण है। एक लाख योजन में नागों का दल रहता है। पाँच हजार योजन में देहधारी रहते है। गोलोक पच्चीस हजार योजन का है। सप्त ब्रह्मा का स्थान बारह हजार योजन का है। ९८-११०० नाग ऋषि क्रोध ऋषि देवर्षि ब्रह्मर्षि यह लोग तेरह हजार योजन में बास करते हैं। ११०१ वहाँ अनेक रत्नमय भवन हैं। वहाँ देवकन्या गिरि पुत्री का निवास स्थान है। २ उन्हें राजा बलि उसमें लाया है। वह सबमें अवर्णनीय है। ३ वहाँ गंगा जमुना तथा अनेक जल तीर्थ है। वहाँ पर नदियों, तालाबों, कुओं तथा बावलियों के समूह हैं। ४ इस प्रकार सचराचर भरा पड़ा है। हे परशुराम ! अब तुम उस लोक की आकृति के विषय में सुनो। ५ वहाँ के कर्ता सदा कल्याण को करने वाले शंकर हैं। उस लोक को भद्रव सागर ने घेर रक्खा है। उसमें बाइस करोड़ पर्वत तथा अनेक कन्दरायें हैं। यह सब दक्षिणी किनारे पर है। ६-७ वहाँ का यमराज सहस्र फन वाला शेष है। सौ वर्ष में वह लेखा जोखा करता है। ८ धर्मशील व्यक्तियों की धर्मपूर्वक रक्षा

से द्वीप भितरे नवलक्ष घर। सेथिरे खग मृगे करन्ति बिहार१११०
से द्वीपर उत्तरु सुताल नामे द्वीप। सेथिरे नक्षत्र तारा होन्ति आतजात१११
से द्वीपकु घेरि अछि जमुना सागर। से सागर भितरे अनेक अछि गज १२
पशु पक्षी माने से द्वीपरे वास करि। कौणसि कथारे किछि भय़ न करि १३
भुपळ बोलि द्वीप से सागर उत्तार। सुताळर कथा से अटइ बड़ गुरु १४
नर वानर देवता असुरे एकमेळ। नागवळ सिद्धि वळ सेथिरे अछि ठुळ १५
नव लक्ष राजा जे षाठिए कोटि जीव। आहारे लोभी से पदार्थ बड़ भोग १६
से पुरकु वेढ़ि अछि द्विगन्ध समुद्र। से समुद्र भितरे अतुर सर्व रुत्र १७
कोटिए गड़ जे सेथिरे अछन्ति पूरि। सबु ठारे जय़ जे करिण छन्ति मेळि १८
से सागर उत्तारु रम्यक नामे द्वीप। नाना वर्णरे जीव सेथिरे व्यापित १९
से द्वीपकु घेरि अछि मळय़ सागर। सागरर सेहु वास अटइ जे सार११२०
भ्रमर नीळा जे सेथिरे पुण करि। से सागरर वनस्त लक्षेक जुण पुरि११२१
से सागर उत्तारु वसान्तळ द्वीप। मर्त्त्यपुर प्राय़े जे सेथिरे सर्वलोक २२
सेथिरे तिनि लक्ष राजा सरोधार। वळवन्त पण नाहिँ समस्ते धर्मसार २३
विराट पुरुष जे सेथिरे अछि जाण। मन्दर द्वीपकु आदरे सेहि पुण २४

करता है और अधर्मी लोगों के प्राण ले लेता है। ९ उस द्वीप में नौ लाख घर हैं। वहाँ पशु पक्षी विहार करते हैं। १११० उस द्वीप के उत्तर में सुताल नामक द्वीप है। वहाँ नक्षत्रों का आवागमन होता रहता है। ११११ वह द्वीप यमुना सागर से घिरा है। उस सागर में अनेक हाथी हैं। १२ उस द्वीप में पशु-पक्षी रहते हैं। वह किसी बात से कुछ भी डरते नहीं हैं। १३ उस सागर के उत्तर में भूपल नामक द्वीप है। सुतल की कथा बड़ी गूढ़ है। १४ नर, वानर, देवता तथा असुर एक साथ रहते हैं। नागों का दल तथा सिद्ध लोगों के समूह वहाँ पर भरे पड़े हैं। १५ नौ लाख राजा तथा साठ करोड़ जीव जो आहार के लोभी हैं। उन्हें पर्याप्त भोग के पदार्थ उपलब्ध हैं। १६ उस लोक को द्विगन्ध सागर ने घेर रखा है। उस समुद्र के भीतर सर्वत्र इत्र सुगन्धित तरल पदार्थ व्याप्त हैं। १७ उसमें एक करोड़ दुर्ग भरे हैं। जो सब जगह विजय करने पर मिले हैं। १८ उस समुद्र के उत्तर में रम्यक नाम का द्वीप है। जहाँ नाना प्रकार के जीव मिलते है। वह द्वीप मलय सागर से घिरा है। वह सागर का प्रमुख निवास है। १९-११२० वह भ्रमर के समान नीलम से जड़ित है। उस सागर का विस्तार एक लाख योजन है। ११२१ उस समुद्र के उत्तर में रसातल द्वीप है। वहाँ पर सभी लोग मृत्यु लोक के ही समान हैं। २२ वहाँ के तीन लाख राजा शीर्षस्थ हैं। उन सबमें बल का घमण्ड नहीं है और सबके सब धार्मिक हैं। २३ वहाँ पर विराट पुरुष रहता है। जो मन्दर द्वीप का आदर करता

ताहाकु घेरि अछि बिकर्ण सागर। सेठारु अन्धकार होइछि संसार २५
अन्धार उत्तारु पुण अग्नि जे सागर।
एरूपे तिनिपुर चउद ब्रह्माण्ड कलेसार २६
पर्शुराम बोइले जेबे एसन्त प्रकार। एथिरे अन्त अबा जाणन्ति चक्रधर २७
पर्शुराम बोइले मुँ समस्त द्वीप जिबि। दिअ हंस तोर सेथिरे बसिबि २८
शुणिण बेदबर हंसकु आणि देले। हंस परे बसि राम अनन्त शज्याठाकु गले २९
उत्तर द्वारे जाइ देखिला क्षेत्रपाळ। बाट न छाड़िला से जे दुर्गार बाळ११३०
देखि करि रेणुका नन्दन कोप कला। क्षेत्रपाळ उपरे कोठार मड़ाइला११३१
पूर्ब द्वाररे प्रबेश होइला जाइ करि। गरुड़कु देखिला जे दुआर आबोरि ३२
बाट छाड़ बोलिण ताहाकु बेगे कहि। से बोइला मना अछि भितर न जा तुहि ३३
शुणिण पर्शुधर रागरे प्रज्बळि। कौमुदी गदाकु गरुड़ उपररे भरि ३४
भारा नसहि गरुड़ धरणीरे शोइ। गदा तार उपरे माडिण बसइ ३५
सेठारु पर्शुराम बेगे चळि गला। दक्षिण द्वारे जाइ प्रबेश होइला ३६
सेठारे द्वारपाळ रबि चन्द्रदुइ। तेजारे पर्शुराम बसि न पारइ ३७
बज्ररूप धरिण तांकर पाशे मिळि। से बोइले किम्पाइरे जाउ अछु पेलि ३८
शुणि करि पर्शुराम कोमन कला। बैष्णवा धनु तांकर परे मताइला ३९

है। २४ उसे विकर्ण सागर ने घेर रखा है। वहाँ से संसार में अन्धकार हो गया है। २५ अँधेरे के उत्तर में अग्नि सागर है। इस प्रकार तीन लोक चौदह भुवन मुख्यतः बनाये गये हैं। २६ परशुराम ने कहा कि इस प्रकार इसके अंत को क्या चक्रधारी जानते हैं। २७ उन्होंने कहा कि आप अपना हंस हमें दें। मैं उस पर बैठकर समस्त द्वीपों में जाऊँगा। २८ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने हंस को लाकर दिया उस पर बैठकर परशुराम अनन्त शैया नारायण के पास गये। २९ तब उत्तर द्वार पर जाकर उन्होंने क्षेत्रपाल को देखा। दुर्गा के पुत्र ने मार्ग नहीं छोड़ा। ११३० यह देखकर रेणुका नन्दन ने कुपित होकर क्षेत्रपाल के ऊपर कुठार से प्रहार किया। ११३१ तब वह पूर्व द्वार से जाकर प्रविष्ट हुये। उन्होंने गरुड़ को द्वार रोककर खड़े देखा। ३२ उन्होंने उससे शीघ्र ही मार्ग देने को कहा। वह बोला कि तुम भीतर मत आओ। भीतर जाना मना है। ३३ यह सुनकर परशुधर क्रोध से प्रज्ज्वलित हो गये। उन्होंने कौमोदी गदा से गरुड़ पर प्रहार किया। ३४ भार न सहने के कारण गरुड़ पृथ्वी पर गिर पड़े और गदा के नीचे दब गये। ३५ परशुराम वहाँ से शीघ्र ही चले गये और दक्षिण द्वार से जाकर प्रविष्ट हुये। ३६ वहाँ के द्वारपाल सूर्य और चन्द्रमा दोनों थे। तेज के कारण परशुराम घुस नहीं पा रहे थे। ३७ वह वज्र रूप धारण करके उनके पास गये। उन्होंने कहा कि तू किसलिये निर्भय होकर घुसा जा रहा है। ३८ यह सुनकर परशुराम का मन क्रोध से भर गया। उन्होंने उनके

धनुर घात से जे सम्भाळि न पारिले। द्वारे शोइले धनुशर रहिला उपरे११४०
देखिण पर्शुराम सेठारु चळि गला। पश्चिम द्वारे जाइ प्रवेश होइला११४१
देखिला से दुआर होइ अछि मुद। बिचारिला आज मोते पडिला प्रमाद ४२
हंसपुरू उतुरि पर्शुनामे बीर। बसिला आसन से करिण निबिड़ ४३
राधाकृष्ण नाम जे कला उच्चारण। पर्शुराम नेत्ररु नीर वहे पुण ४४
हृदयरे चिन्ता तार नेतृ बहे बारि। बार बर्ष परिजन्ते तप सेहु करि ४५
अनन्त नारायणर आसन कम्पिला। सरस्वती बीणा जन्त्र तळरे रखिला ४६
कमळा चरणरु काठिले उस्त बेगे। अनन्त फणा मुद्रित कम्पा मान रागे ४७
जाणिण बासुदेव शज्यारु उठि बसि। कमळा बोइले उनेरणे किम्पा उठि ४८
बासुदेव बोइले अइले पर्शुराम। बाट न छाड़ि द्वारपाळ होइले अज्ञान ४९
कमळा बोइले से काहार नन्दन। काहार कोळे जात होइछि सेहु पुण११५०
बासुदेव बोइले से आम अंशे जात। राधा कृष्ण दुहिँकर बळरे बळिष्ठ११५१
मर्त्यपुरे रेणुका गर्भरे जात हेला। जमदग्नि राजाकु खर राजा मारिगला ५२
गोलक ठाकुरंकु मने कला ध्यान। अन्तर्गते भाबिला दृढ़ करि मन ५३

ऊपर वैष्णव धनुष से प्रहार किया। ३९ धनुष के आघात् को वह दोनों सँभाल न सके। वह द्वार पर ही धनुष के नीचे गिर पड़े। ११४० यह देखकर परशुराम वहाँ से चल दिये और जाकर पश्चिम द्वार से प्रविष्ट हुये। ११४१ उन्होंने द्वार बन्द देखा। तब उन्होंने विचार किया कि मेरे साथ आज क्या घटना घट रही है। ४२ पराक्रमी परशुराम हंस पर से उतर कर आसन लगाकर एकान्त में बैठ गए। ४३ राधा कृष्ण नाम का उच्चारण करने लगे। उनके नेत्रों से जल बहने लगा। ४४ उनके नेत्रों में जल तथा हृदय में चिन्ता थी। उन्होंने बारह वर्षो तक तपस्या की। ४५ अनन्त नारायण वासुदेव का आसन डोलने लगा। सरस्वती ने बीणा नीचे रख दी। ४६ लक्ष्मी ने शीघ्रता से चरणों से हाथ हटा लिये। अनन्त शेष क्रुद्ध होकर फन हिलाने लगे। ४७ यह जानकर नारायण शैय्या से उठकर बैठ गए। लक्ष्मी ने कहा कि आप उनींदे में कैसे उठ बैठे ? ४८ वासुदेव ने कहा कि परशुराम आए है। द्वारपाल उन्हें मार्ग न देने के कारण अचेत हो गए है। ४९ लक्ष्मी ने पूंछा कि वह किसके पुत्र है ? वह किस कुल में उत्पन्न हुए है। अथवा वह किसकी कोख से उत्पन्न हुए है। ११५० नारायण ने कहा कि वह हमारे अंश से उत्पन्न हुए है। वह राधा तथा कृष्ण दोनों के बल से बलवान हुये हैं तथा मृत्युलोक में रेणुका के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। एक प्रतापी राजा यमदग्नि को मार गया। ११५१-५२ तब परशुराम ने अपने मन में गोलोक के स्वामी का ध्यान किया। सुदृढ़मन से उन्होंने अपने मन में चिन्तन किया। ५३

गोलक ठाकुर जे ताकु दया कले । निज अंगु अष्ट कन्या नेइ करि गले ५४
सेठारु बर पाइ जमदग्नि सुत । तिनिपुर लोकंकु कले सेहु हत ५५
बेदबरकु आणिण पाञ्चिलाक पुण । मोते से देखिब बोलि करि अछि मन ५६
तिनि द्वार पाळंकु कहिला से आसि । द्वार न छाडिलारु क्रोधे गरु हंसि ५७
कोठार धनु गदा मताइ तांकु देला । पश्चिम द्वारे जाइ प्रवेश होइला ५८
से द्वार किळा जे होइछि देखिला । बिचारिला बासुदेव माया मोते कला ५९
आपणा देवा अंग भिन्न से पचारिले । काहिँ पाइँ मोते जे मर्त्यकुपठाइले११६०
एमन्त बोलिण जे करइ रोदन । ताहार रोदनर कम्पिला मेरु मान११६१
तु जाइण कबाट फिटाइ घेनि आस । मुँ जाहा करुछि देखु रेणुकार शिष्य ६२
दर्शन कला उत्तारु होइबा कथा पुण । एते बोलि शयन कलेक नारायण ६३
अनन्त फेणाकु टेकिले तहिँ पुण । शुणि करि कमळा जे उठिले बहन ६४
पश्चिम द्वार जाइ फेड़िण बेगे देले । पर्शुराम रोदन करुछि देखिले ६५
कमळा बोइले रे नरोवर बळा । बासुदेवंकर तोते सुदया होइला ६६
चाहिँला पर्शुराम कमळांक बदन । कर जोडि भुमिरे शोइला बेगे पुण ६७
कमळा जाइण ताहाकु उठाइले । पर्शुराम कमळार चरण धोइले ६८
पद उदक जे गर्भकु क्षेपि देले । निस्तरिलि बोलिण मनरे चिन्ता कले ६९

बैकुण्ठ पति ने उन पर दया की। वह अपने अंग में आठ कलायें लेकर चले गए। ५४ वहाँ से वर प्राप्त करके यमदग्नि नंदन ने तीनों लोकों में विनाश किया। ५५ उन्होंने ब्रह्मा जी के साथ विचार विमर्श किया और मेरे दर्शन की इच्छा की। ५६ तीनों द्वारपालों से उन्होंने आकर कहा। द्वार न छोड़ने से कुपित होकर वह उनके ऊपर धनुष गदा तथा कुठार से प्रहार करके पश्चिमी द्वार से आ गए हैं। ५७-५८ उन्होंने उस द्वार को बन्द देखकर विचार किया कि भगवान ने मुझसे छल किया है। ५९ अपने देवांश से पृथक होकर वह रुदन करते हुए कहने लगे कि मुझे मृत्युलोक में क्यों भेजा है। उनके रुदन से सुमेरु आदि कम्पित हो रहे हैं। ११६०-११६१ तुम जाकर द्वार खोलकर उन्हें ले आओ। मैं जो कर रहा हूँ उसे रेणुकानन्दन देखे। ६२ दर्शन के उपरान्त उनसे वात करेंगे। इतना कहकर भगवान सो गए। ६३ अनन्त शेष ने फिर से फन उठा लिये। यह सुनकर शीघ्र ही लक्ष्मी उठ गईं। उन्होंने जाकर पश्चिम द्वार को खोलकर परशुराम को रुदन करते हुए देखा। ६४-६५ लक्ष्मी ने कहा ! पुत्रश्रेष्ठ ! रुदन मत करो। तुम्हारे ऊपर भगवान की कृपा हो गई है। ६६ लक्ष्मी के मुख की ओर देखकर परशुराम ने हाथ जोड़कर पृथ्वी पर गिरकर उन्हें शीघ्र ही दण्डवत किया। ६७ लक्ष्मी ने वढ़कर उन्हें उठा लिया। परशुराम ने लक्ष्मी जी के पाद प्रच्छालित किए। ६८ उन्होंने पादोदक पान किया और मन

भगति भाव देखि वरुण दोहित। उठाइण नेले से जे रेणुकार सुत११७०
शयन स्थान ताकु नेइण देखाइले। देखिण पर्शुराम मनरे तोष हेले११७१
चरणरे नमिले शतेक वार पुण। वोइले एथि निस्तार कर हे नारायण ७२
हृदयरे भाव होइला जहुँ पुण। शय्यारु उठिले जे वेग नारायण ७३
वोइले किम्पाइ रोदन कर वळा। पर्शुराम वोइले धर्म छाड़िला एवे परा ७४
आपण शरीरकु आपणे कर माया। किम्पाइ जात कल मोहर एहु काया ७५
पुणि निज रूप मोठारे काहिँ देल। प्रशन होइ किम्पा मोते दूर एवे कल ७६
वासुदेव वोइले शुणरे पर्शुधर। वेदवरंकु किम्पा दण्डिल आरे वीर ७७
पर्शुराम वोइले से सवंकु दुष्ट कला। वर देइ सर्विकि वळवन्त कला ७८
वासुदेव वोइले शुणरे पर्शुधर। असुर जे सेविले ब्रह्मांक पयर ७९
सेथि शकासे ब्रह्मा असुर वर देला। से असुरंक कर्मरे पुणिहिँ लेखिला११८०
तुम्भंकु नारायण करन्तु एवे नाश। शुणिण पर्शुराम वोलाइ सन्देश११८१
एड़े प्रभु होइ किम्पा हे जनम लभिव। आज्ञा देले सुदर्शन तुमर हे जिव ८२
वासुदेव वोइले जे नुहँइ से कथा। जन्म हेले समस्ते जाणिवे मोर कथा ८३
स्थावर जंगम जे सकळ जीव जन्तु। जाणिले तांक देहे रहि वसिना हेतु ८४

में विचार करने लगे कि अव मेरा उद्धार हो गया। ६९ वरुणनन्दिनी ने भक्ति-भाव को देखकर रेणुकाकुमार को उठा लिया। ११७० उन्होंने परशुराम को ले जाकर शयन स्थान को दिखाया जिसे देखकर परशुराम का मन सन्तुष्ट हो गया। ११७१ उन्होंने सौ वार चरणों में प्रणाम करते हुए कहा हे भगवान ! इस समय उद्धार कीजिये। ७२ हृदय में इस प्रकार के भाव आते ही भगवान शीघ्र ही शैय्या से उठ गए। ७३ उन्होंने कहा हे वत्स ! किस कारण से तुम रुदन कर रहे हो। परशुराम ने कहा कि इस समय धर्म का लोप हो गया है। ७४ आप अपने शरीर से स्वयं माया कर रहे हैं। आपने मेरे इस शरीर को क्यों उत्पन्न किया है। ७५ आपने मुझे अपना रूप क्यों दिया ? और फिर पूँछकर हमें अव दूर क्यों कर दिया। ७६ वासुदेव ने कहा, हे परशुधर ! सुनो। हे वीर ! तुमने ब्रह्मा जी को दण्ड क्यों दिया ?। ७७ परशुराम ने कहा कि उन्होंने सभी को दुष्ट वना दिया है। उन्होंने वर देकर सवको वलवान वना दिया है। ७८ वासुदेव ने कहा हे परशु को धारण करने वाले राम ! सुनो। राक्षसों ने ब्रह्मा के चरणों की सेवा की। ७९ इसी कारण से ब्रह्मा ने उन्हें वर प्रदान किए तथा उन्होंने उन राक्षसों के कर्मों को भी लिखा। ११८० अव भगवान तुम लोगों (असुरों) का संहार करे। यह सुनकर परशुराम ने कहा कि आप इतने महान प्रभु होकर जन्म क्यों धारण करेंगे। आपकी आज्ञा मात्र से आपका सुदर्शन ही जाएगा। ११८१-८२ नारायण ने कहा कि ऐसी वात नहीं है। जन्म लेने से सव लोग हमारी लीलाओं को जानेंगे। ८३ जड़ चेतन समस्त प्राणी

पर्शुराम बोइले शुण हे नारायण। केते काळ जन्म लभिब तुम्भे पुण ८५
बासुदेव बोइले अल्प दिने परा। मारिब असुर शुण रेणुकार बळा ८६
पर्शुराम बोइले तुम्भे होइले जन्म। मुँ कारण लभिबि शुण हे नारायण ८७
मोहर अप्राध सबु क्षमा कर। बासुदेव बोइले तु मोहर शरीर ८८
पर्शुराम बोइले मोर अटे जे प्राण। चारि जण मो शरीरे लगाअ चरण ८९
शुणिण नारायण उठिले जे खरे। चरण लगाइले पर्शुरामंक शिरे११९०
कमळांकु ठारि देले उठिले हेब दुलणि। कन्धरे पाद नेइ लगाइले पुणि११९१
अनन्त उठिण हृदरे पाद लदि। सरस्वती कन्धरे लगाए पाद देखि ९२
चारि चरण लागिला ताहार देहे पुण। पर्शुराम बोइले पाइलि कारण ९३
बासुदेव बोइले शुण हे पर्शुधर। गदा कुठार धनु आणरे तोहर ९४
द्वारपाळ मानंकर किछि नाहिँ दोष। तांक दुःखे किम्पा आरे रेणुका शिष्य ९५
एबे जाइ तोहर आयुध घेनिआस। तांहांक संगे आण जमदग्नि सुत ९६
पर्शुराम बोइले शुणिबा देवहरि। से माने बड़ दोषी अटन्ति तुम्भरि ९७
जय़ बिजय़ पश्चिम द्वार पाळ। तोर कमळाकु कलेक दुरान्तर ९८
ए बिचारिले मने आम्भे जे सेबाकारी।
किस जे ठाकुराणीकि कहिबा आग फेरि ९९

उसे जानकर मोक्ष प्राप्त करेंगे। परशुराम बोले हे वासुदेव! सुनिये। आप कितने समय में जन्म धारण करेंगे। ८४-८५ भगवान ने कहा हे रेणुकानन्दन! सुनो। थोड़े ही समय में असुरों का संहार करूँगा। ८६ पशुराम ने कहा हे नारायण! आपके जन्म लेने पर मेरा उद्धार हो जाएगा। ८७ आप हमारे समस्त अपराधों को क्षमा करें। भगवान ने कहा कि तुम मेरे ही अंश हो। ८८ परशुराम बोले कि हमारी इच्छा है। आप चारोजन हमारी देह में चरण छुला दें। ८९ यह सुनकर भगवान प्रखरता से उठे और उन्होंने परशुराम के शिर पर चरण छुला दिया। ११९० इंगित करने पर देवनन्दिनी लक्ष्मी ने उठकर उनके कन्धे पर चरण छुला दिया। ११९१ अनन्त शेष ने उठकर उनके हृदय पर तथा सरस्वती ने शीघ्र ही उनके कन्धों पर चरणों का स्पर्श कर दिया। ९२ उनके शरीर में चारों चरणों का स्पर्श होने पर परशुराम ने कहा कि अब मेरा उद्धार हो गया। ९३ भगवान ने कहा हे परशुधर! सुनो। तुम अपना धनुष कुठार तथा गदा ले आओ। हे रेणुकानन्दन! इसमें द्वारपालों का कोई दोष नहीं है। ९४-९५ हे यमदग्नि नन्दन! तुम अभी जाकर अपने आयुधों को ले आओ और साथ में उन लोगों को भी लाना। ९६ परशुराम ने कहा, हे देव! सुनिये। वह लोग आपके महान अपराधी हैं। ९७ पश्चिम द्वार के द्वारपाल जय तथा विजय ने आपकी लक्ष्मी को दूर कर दिया। ९८ उन्होंने मन में भी विचार नहीं किया कि हम उनके सेवक है। आगे हम स्वामिनी से क्या कहेंगे। ९९ सागर-

दुष्टाचार बाणी शुणि सागर दुलणि। शाप देल असुरतु हुअ बोलिकरि१२००
से बोइले तु जे आम्भर घर जिबु। असुर रिपु कथा कर्णरे शुणिबु१२०१
भय़ न करि शाप देले द्वार पाळ। जन्म होइ एबे दहन्ति तिनिपुर २
कमळा अंगरु अधेक चालि देल। बेदमति करिण ताहाकु जातकल ३
काळे से असुर ताकु लंघिलाक जाइ। से शरीर बेदमति अग्निरे ग्रासदेइ ४
एबे बिचारइ मुहिँ हेबि बासुदेव। सकळ जन्तुरे होइब आदिकन्द ५
दीन बन्धु नाम होइब मोर जेबे। बासुदेव मारि कमळांकु भोग करिबि तेबे ६
लबण समुद्रकु मुँ बदळ करिबि। क्षीर सागर जम्बु द्वीपकु फेराइबि ७
श्रीहरि पाटणा करिबि लंघ गत। तेबे मनोरथ पूर्ण मोहर प्रबळ ८
ताहा शुणिण मुँ जे रणे जर्ज्जर। बिचारिले प्रभुठारे अप्राध एहार ९
एहाकु मारिण मुँ जे करिबि धूळि पांष। तिनिपुर असुरंकु करिबि मुहिँ नाश१२१०
बिधाता पुरुष मोते मनाकला जाइ। बोइला तोर हस्ते मरण तार नाहिँ१२११
शुणिण बासुदेव बोइला गला जणा। सप्तम अवतार तार शकासु सिना १२
शुणिण पर्शुराम बेगे चळिगला। पश्चिम द्वारे जाइ प्रबेश होइला १३
परम हंसकु जे चाहिँला बोलि करि। जाअ जशोवन्तीपुर कह बेदधारी १४

नन्दिनी लक्ष्मी ने उनके कदाचार की बात सुनकर उन्हें राक्षस हो जाने का शाप दे दिया। १२०० उन्होंने कहा कि तुम हमारे घर जाओगी और राक्षस शत्रु की बात कान से सुनोगी। १२०१ द्वारपालों ने विना भय के ऐसा शाप दिया। इस समय वह जन्म लेकर तीनों लोकों को भस्मसात् कर रहे हैं। २ लक्ष्मी के अंग से अर्ध भाग निकलकर वेदमती के रूप में उत्पन्न हुआ। ३ कुछ समय के बाद उस असुर ने जाकर उसे घेरा। वेदमती ने उस शरीर को अग्नि में सर्मपित कर दिया। इस समय वह भगवान बनने की सोच रहा है और उसका विचार है कि मैं समस्त प्राणियों में महान हो जाऊँगा। ४-५ जब हमारा नाम दीनबन्धु हो जायेगा। तब भगवान का वध करके मैं लक्ष्मी का उपभोग करूँगा। ६ मैं लवण सिन्धु को बदल डालूँगा और जम्बूद्वीप को क्षीर सागर लौटा दूंगा। ७ बैकुंठ को पैरों से कुचल दूंगा। तब हमारी प्रबल इच्छा पूर्ण होगी। ८ ऐसा सुनकर क्रोध से भरकर मैंने विचार किया कि इसने भगवान के साथ दोष किया है। ९ इसको मारकर मैं धूल में मिला दूंगा और तीनों लोकों के राक्षसों का मैं विनाश करूँगा। १२१० ब्रह्मा ने मुझे जाकर रोकते हुये कहा कि तुम्हारे हाथों से उसकी मृत्यु नहीं है। १२११ यह सुनकर भगवान ने कहा कि अब पता लगा कि मेरा सातवाँ अवतार उसी के कारण होगा। १२ यह सुनकर परशुराम शीघ्रतापूर्वक चले गये और पश्चिम द्वार से जा पहुँचे। १३ उन्होंने श्रेष्ठ हंस की तरफ देखते हुये उससे यशोवंतीपुर जाने को कहा तथा ब्रह्मा को यह बतलाने के लिये कहा कि परशुराम ने जाकर भगवान से

पर्शुराम भेटिले बासुदेव ठारे। तोते दया कला जे परम निराकारे १५
शुणिण परम हंस बेगे उठि गला। बेदबरंकु जाइ दर्शन बेगे कला १६
बेदबर बोइला केणे गला ऋषि। परम हंस बोले शुण हे देव ध्वंसि १७
अनन्त शयनरे प्रबेश जाइ हेले। कमळा ताकु आदर करिण घेनिण गले १८
बासुदेव संगरे होइले जाइ मेळ। शयन तेजिले देखिण चक्रधर १९
शुणि करि पर्शुधर बेगे चालि देले। नियून होइ तोते अनेक कहिले१२२०
बोइले ए हंसकु बेगे चाळिदिअ। बिनता सुत उपरे बिजे करि जाअ१२२१
बोइला बासुदेवर सुदया तांक ठारे। मोर पाए कोटिएकि मरिथाए रणरे २२
एमन्त बोलिण से कहिला बिनेइ। शुणिण बेदबर तोषभर होइ २३
हंस पचारिला ब्रह्मार मुख चाहिँ। से पर्शुराम पुणि किए से अटइ २४
बिधाता बोइले से गोलक नारायण। मोर प्राएक सुते ब्रह्मा करि पारे पुण २५
शान्त शीळ शकासे मोते से रखिला। बासुदेव ठारु शुणि शीतळ होइला २६
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। पर्शुरामे नमिण द्वारे मिळि धाति २७
चन्द्र सूर्ज्य दुहिंकर उपरु धनु काढ़ि। बोइला बासुदेवंकु देखा जाइकरि २८
से ठारु पूर्ब द्वारे हेलाक प्रबेश। मरुत ठारु काढिला कुठारु सन्देश २९

भेंट की और परमनिर्विकार परमात्मा ने उन पर दया की है। १४-१५ यह सुनकर श्रेष्ठ हंस शीघ्रता के साथ उड़ गया और उसने जाकर शीघ्र ही ब्रह्मा जी के दर्शन किये। १६ ब्रह्मा जी ने उससे कहा कि ऋषि कहाँ गये हैं। श्रेष्ठ हंस ने कहा कि देवताओं का विनाश करने वाले! सुनिये। १७ अब वह अनन्त शयन के लिये पहुँच गये हैं। लक्ष्मी उन्हें आदर के साथ ले गई है। १८ फिर उनका साक्षात्कार भगवान वासुदेव के साथ हुआ। चक्रधारी ने उन्हें देखकर निद्रा का त्याग कर दिया। १९ यह सुनकर परशुराम शीघ्रता से चल दिये। उन्होंने विनम्रतापूर्वक तुमसे बहुत कुछ कहा। १२२० तब वह बोले कि इस हंस को शीघ्र ही जाने दो। तुम विनतानन्दन पर चढ़कर जावो। १२२१ वह बोले कि उस पर नारायण की कृपा है। वह हमारे जैसे करोड़ों को रण में मार सकता है। २२ उसने विनीत होकर इस प्रकार कहा जिसे सुनकर ब्रह्माजी संतुष्ट हो गये। २३ ब्रह्माजी के मुख की ओर देख कर हंस ने पूँछा कि यह परशुराम कौन हैं। २४ ब्रह्माजी बोले कि वह गोलोक-वासी वासुदेव हैं। जो मेरे समान सौ ब्रह्मा का निर्माण कर सकते हैं। २५ शांति तथा शील के कारण नारायण से सुनकर उन्होंने शांत होकर मेरी रक्षा की है। २६ हे भगवती! सुनो। इसके पश्चात् परशुराम नमन करके शीघ्र ही द्वार पर आये और परशुराम ने चन्द्र, सूर्य दोनों के ऊपर से धनुष को उठाकर उनसे जाकर भगवान के दर्शन करने को कहा। २७-२८ फिर वह पूर्व द्वार पर जा पहुँचे और मरुत के ऊपर से कुठार को हटाकर उन्होंने उनसे जाकर

बोइला श्रीहरिकि दर्शन कर जाइ। दया धर्म बासुदेवर अछि पुण तहिँ१२३०
एते कहि सेठारु पर्शुराम गला। उत्तर द्वारे जाइ प्रवेश होइला१२३१
क्षेत्रपाळ अंगरु काढिला गदा पुण। बोइला बासुदेवरे पश जा शरण ३२
शुणिण क्षेत्रपाळ बेगे चळिगला। पर्शुराम ताहार पछरे जे गला ३३
द्वार पाळ माने जाइ दर्शन से कला। देखिण बासुदेव हरष होइला ३४
द्वारपाळ बोइले शुण हे श्रीरंग। पर्शुराम जतिर आम्भ ठारे राग ३५
निरञ्जन बोइले शुणरे द्वारपाळ। गोलक नारायण अछन्ति पर्शुधर ३६
तांकर बोल जहुँ नकल तुम्भे पुण। तेबे से दण्ड देला जाणिण तुम्भ मन ३७
द्वारपाळ बोले आम्भे नोहिबु सम्भाळ। ए रूपे अदिति जेबे करिबे सकळ ३८
बासुदेव बोइले से मोर अंग गोटि। षष्टम अवतारे एरूप होइ छन्ति ३९
पाउँनि अवतार होइबटि पुण। से साइला दुष्टकु मुँ मारिबि दयगण१२४०
शुणि करि द्वार पाळ सन्तोष मन हेला। कर जोड़ि चरण तळरे शोइला१२४१
उठिण शिरे कर देले द्वार पाळ। श्रीहरि बोइले शुण बिनता कुमर ४२
पर्शुरामकु पिठिरे बसाइ घेनि जाअ। तिनि पुर चउद ब्रह्माण्ड जे बुलाअ ४३
नवखण्ड मेदिनी जे सागर पन्दर। देखिण पर्शुरामर मन हेउ स्थिर ४४
शुणिण से पर्शुराम कर पत्र धरि। एते बेळे एकथा नकर नरहरि ४५

भगवान का दर्शन करने को कहा, जहाँ भगवान की दया तथा धर्म स्थिर था। २९-१२३० इतना कहकर परशुराम वहाँ से चलकर उत्तर द्वार पर जा पहुँचे। १२३१ उन्होंने क्षेत्रपाल के शरीर के ऊपर से गदा हटा ली और उन्हें भगवान की शरण में जाने को कहा। ३२ यह सुनकर क्षेत्रपाल शीघ्र ही चले गये और परशुराम भी उनके पीछे चले गये। ३३ द्वारपाल ने जाकर भगवान के दर्शन किये, उन्हें देखकर नारायण प्रसन्न हो गये। ३४ द्वारपाल बोला हे श्री रंगनाथ! सुनिये। परशुराम ने हमसे क्रोध किया था। निरंजन परमेश्वर ने कहा हे द्वारपाल! वह धनुर्धारी परशुराम गोलोकबिहारी नारायण है। ३५-३६ आपने उनका कहना नहीं सुना। इसलिये उन्होंने आपको इच्छानुसार दण्ड दिया। ३७ द्वारपाल ने कहा कि जब देवता इस प्रकार सब करेंगे तो फिर हमारी रक्षा कैसे होगी। ३८ भगवान बोले कि उन्होंने हमारे अंश से छठवाँ अवतार इस प्रकार से ग्रहण किया है। ३९ उनका यह अवतार पावन करने वाला होगा। उसकी समाप्ति पर मैं दुष्ट दैत्यों का संहार करूँगा। १२४० यह सुनकर द्वारपाल का मन सतुष्ट हो गया और वह हाथ जोड़कर उनके चरणों पर गिर पड़ा। १२४१ फिर द्वारपाल ने उठकर अपने हाथ सिर से लगा लिये। भगवान ने कहा हे विनतानन्दन! सुनो। तुम परशुराम को पीठ पर बैठाकर ले जाओ और उन्हें तीन लोक चौदह भुवन में भ्रमण कराओ। ४२-४३ नौखंड पृथ्वी, पन्द्रह समुद्र देखकर परशुराम का मन जिससे शांत हो जाये। ४४ यह सुनकर परशुराम ने उनका करपल्लव

समस्ते बिचारिबे एमन्त कथामान। बोइले पर्शुराम जेबे अटे नारायण ४६
गरुड़ उपरे से बसिण बिहरुछि। बैकुण्ठरे वासुदेव किपरिरे अछि ४७
जेते बेळे दिगबिजे करिबि मुँ पुण। तेते बेळे सुमरिले देवे खगगण ४८
केवळ मोते नेइ जम्बुद्वीपरे शुतु। शुणिण बासुदेव बिचार कले गरु ४९
पर्शुरामकु बोइले षष्ठ अवतार। प्रकाश हेब जमन्ते करिबु बिचार१२५०
जेतेक मेदिनी सकळ ठारे मिळि। निछत्र करिण दुष्ट जनंकु संहारि१२५१
एहा शुणि पर्शुराम बासुदेवंकु नमिला। अनन्त पाद तळे ओळग होइला ५२
लक्ष्मी सरस्वतींकि लावण्य भाषा बाञ्छि। आयुध धरिण पर्शुराम गले बेगि ५३
पश्चिम द्वार रे जाइ हेलेक प्रवेश। गरुड़ उपरे जाइ चळिला तुरित ५४
घड़िकर भितरे सागर लंघि गला। जम्बुद्वीप मण्डळरे प्रवेश होइला ५५
कमळ तार स्थानरे अटइ ध्वजवन। सेठारे मिळिला जाइ रेणुका नन्दन ५६
मरुतर पिठिर उत्तुरु बेगे पुण। गरुड़कु बोइले जाअ हे निज स्थान ५७
शुणि करि गरुड जे बेगे चळिगला। शयनर पूर्ब द्वारे जाइण रहिला ५८
क्षत्रपाळ रबि चन्द्र रहिले बेनि द्वारे। पश्चिम कबाट अनन्त देलाक निबिड़े ५९
सहस्रेक बरष जे बासुदेव भले। चेतारे लीळा कले जे कमळा संगरे१२६०
अतुट नारी संगरे अनन्त लीळा कला। लीळा सरिबारु जे शयन कले परा१२६१

पकड़कर कहा हे नरहरि! इस समय ऐसा न कीजिये। ४५ इससे लोग इस प्रकार कहेंगे कि जब परशुराम ही नारायण हैं और वह गरुड़ के ऊपर बैठकर विचरण कर रहा है तो फिर बैकुंठ में नारायण कैसा होगा। ४६-४७ जिस समय मैं दिग्विजय करूँगा। उस समय स्मरण करने पर आप पक्षीराज को भेज दीजियेगा। ४८ अभी वह केवल मुझे लेकर जम्बूद्वीप में छोड़ देगा। यह सुन कर भगवान ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया। ४९ उन्होंने परशुराम से कहा कि जिस प्रकार छठाँ अवतार प्रकाश में आवे उस पर विचार करना। १२५० भूभाग में सर्वत्र जाकर उसे निछत्र करके दुष्टों का संहार करना। १२५१ यह सुनकर परशुराम ने भगवान तथा अनन्त देव के चरणों में प्रणाम किया। ५२ वह लक्ष्मी तथा सरस्वती से मधुर भाषण करके अस्त्रशस्त्र उठाकर शीघ्रतापूर्वक चल पड़े। ५३ वह पश्चिम द्वार पर जा पहुँचे और शीघ्र ही गरुड़ की पीठ पर चढ़ गये। ५४ एक घड़ी के भीतर समुद्र को लांघ करके वह जम्बूद्वीप मण्डल में प्रविष्ट हुये। ५५ वहाँ पर एक स्थान कमल से भरा पड़ा था। उसी स्थान पर रेणुकानन्दन जा पहुँचे। ५६ वह गरुड़ की पीठ से शीघ्रतापूर्वक उतर पड़े और उन्होंने उससे अपने स्थान को जाने के लिये कहा। ५७ यह सुनकर गरुड़ शीघ्र ही चले गये और शयनगृह के पूर्वद्वार पर जा पहुँचे। ५८ क्षेत्रपाल, चन्द्रमा तथा सूर्य तीनों द्वारों पर स्थित हो गये। अनन्तदेव ने पश्चिम द्वार बन्द कर दिया। ५९ भगवान ने लक्ष्मी के साथ चैतन्य अवस्था में एक हजार वर्ष पर्यन्त लीला की। १२६० अक्षय-कामिनी के साथ अनन्तदेव ने विहार

अनन्त उपरे बासुदेव शुए पुण। फणा टेकि अनन्त रखिले उन्निद्रेण ६२
कमळा बसिण श्रीपयर मञ्चा कले। सरस्वती बीणा शबद तहिँ कले ६३
एमने रूप हादे अटइ पर्शुराम।दुष्टपण कले मारिब से करिछि नियम ६४
माळव कहन्ति से पर्शुराम ऋषि। साक्षात परंब्रह्म नारायण ऋषि ६५
शुणिण सकळ ऋषि तोष भर हेले। बशिष्ठकु घेनिण सेठारु चळिगले ६६
जान परे बसिले सकळ मुनिगण। अरुन्धतिकि घेनिण बशिष्ठ तपोधन ६७
अजोध्या नग्ररे जाइ हेलेक प्रबेश। बशिष्ठंक मढिआरे मिळिले समस्त ६८
मढिआ पवित्र करि मिळिले तपोधन।अरुन्धति पाक कला भुञ्जिले सर्ब पुण ६९
से राज्यर राजा जे दशरथ पुण। बशिष्ठ चरणे जाइ कले मान्य धर्म१२७०
पात्र मन्त्री सामन्त समस्ते मिळे जाइ। समस्ते बसि पाकरे भोजन कले जाइ१२७१
बशिष्ठ नथिबारु मनरे बिरस। देखिण मुनिकि सर्बे कलेक हरष ७२
सकळ ऋषि मेलाणि होइ गले पुण। अगस्ति नारद गले जे जाहार स्थान ७३
निश्चिन्तरे बशिष्ठ जे पुरे रहिले। राजा पात्र मन्त्री सर्बे हरष होइले ७४
पार्बती बोइले शुण हे महेश्वर। केमन्त कला लोमपाद नृपबर ७५
अम्बिका चण्डाळ धान राज्ये बाण्टि देला। नारद प्रसादे जळ ठावे ठाबे हेला ७६

किया। लीला समाप्त होने पर उन्होंने शयन किया। १२६१ अनन्तदेव फन उठाकर ऊँघने लगे तब अनन्त के ऊपर वासुदेव लेट गये। ६२ लक्ष्मी बैठकर भगवान के श्रीचरण दबाने लगीं। सरस्वती वीणा-वादन करने लगीं। ६३ परशुराम का रूप इस प्रकार का था। दुष्टता करने पर वह उस दुष्ट का विनाश कर देते थे। इस प्रकार की उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी। ६४ मालव ने कहा कि इस प्रकार महर्षि परशुराम साक्षात् परमब्रह्म परमेश्वर थे। ६५ यह सुनकर समस्त ऋषि संन्तुष्ट हो गये और वशिष्ठ को लेकर वहाँ से चल दिये। ६६ समस्त मुनिमण्डल यान पर बैठ गया। अरुन्धती को लेकर तपस्वी वशिष्ठ अयोध्यानगर जा पहुँचे। सभी लोग उनके मठ में आकर मिले। ६७-६८ मठ को पवित्र करके तपस्वी बैठ गये। अरुन्धती ने रसोई तैयार की। फिर सबने भोजन किया। ६९ उस राज्य के राजा दशरथ ने जाकर वशिष्ठ के चरणों की अभ्यर्थना की तथा नाना प्रकार से उनका सम्मान-पूर्वक स्वागत किया। १२७० सभासद, मंत्री, सामंत आदि सबने पहुँचकर वहाँ बैठकर भोजन किया। १२७१ वशिष्ठ के न रहने से उनके मन खिन्न थे। अब मुनि को देखकर सब प्रसन्न थे। ७२ फिर सारे ऋषि विदा होकर चले गये। अगस्त और नारद भी अपने-अपने स्थान को चले गये। ७३ निश्चिन्त होकर वशिष्ठ उस मठ में रहने लगे। राजा सभासद तथा मंत्री आदि सब प्रसन्न हो गये। ७४ पार्वती ने कहा कि हे महेश्वर ! सुनिये। फिर नृपश्रेष्ठ लोमपाद ने क्या किया। ७५ अम्बिका चाण्डाल का धान प्रजा में बाँट दिया गया।

राज्य जाक कुशळ होइला ताहार। राज्य प्रजा किस जे करन्ति बिचार ७७
से कथा मोर आगे कह हे त्रिलोचन। ईश्वर बोइले गो भगवती शुण ७८
लोमपाद राज्यरे सकळ प्रजागण। धान नेइ जळखाइ हर्ष हेले पुण ७९
दुःख दारिद्र जे नानादि लोकमान। तिनि बर्षकु से बाण्टि नेले धान१२८०
प्रति घरे उत्सव मंगळ गीत नाद। नृत्य रंग करन्ति जे जाहार शबद१२८१
एमन्ते बेनि बर्ष गला एथि बहि। आवर बर्षके जे काळ अछइ तहिँ ८२
पात्र मन्त्री सामन्त डकाइ राजापुण।बोइला शाप शेष होइला आसि जाण ८३
केउँ ठारे बिभाण्डक करिछि आश्रम। जन्म होइछि जे ऋष्यश्रृंग नाम जाण ८४
पितार पाशे अछिकि जाइछि तप करि। से कथा जाणिले उपाय सिना करि ८५
पात्र मन्त्री बोइले एकथा अटे सत्य। मूळ करि संकेत पाइले बुझिबात ८६
भेदिबाक चार बुळन्तु बनगिरि। केउँठि अछन्ति बिभाण्डक तपचारी ८७
शापर प्रमाण अछइँ जे जाण। ऋष्य श्रृंग आसिले बरषिब घन ८८
नोहिले मेघमाने बरषा नकरि। ऋष्य श्रृंग अटन्ति बर्षारे अधिकारी ८९
एमन्त बिचार समस्ते बसिकले। सहस्रेक लोधा डकाइ आणिले१२९०
अन्न बस्त्र दान देले तांकु पुण। वाटकु धन देले खर्च्च निमन्तेण१२९१

नारद की कृपा से जगह-जगह पर जल हो गया। ७६ उसका सारा राज्य सुखी हो गया। फिर उस राज्य की प्रजा ने क्या विचार किया ?। ७७ हे त्रिलोचन ! वह कथा आप मुझसे कहिये। शंकर भगवान बोले, हे भगवती ! सुनो। ७८ लोमपाद के राज्य की सारी प्रजा खिन्नता के बाद धान लेकर तथा जल पीकर प्रसन्न हो गई। ७९ दुःखी, दरिद्री आदि अनेक लोगों ने तीन वर्ष के लिये धान बाँटकर ले लिये। १२८० प्रत्येक घर में मंगलगीत नृत्य के रंगारंग कार्यक्रम तथा उत्सव मनाये जाने लगे। १२८१ इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत हो गये। अभी एक वर्ष का समय और बच रहा था। ८२ राजा ने सभासद मंत्री तथा सामंतों को बुलाकर कहा कि अब शाप शेष ही समझो। ८३ विभाण्डक ने अपना आश्रम कहाँ बनाया है। उनके श्रृंगी ऋषि नामक (पुत्र) ने जन्म लिया है। ८४ वह पिता के पास है अथवा तपस्या करने गया है। इस बात को जानने का उपाय कीजिये। ८५ सभासद तथा मंत्रियों ने कहा कि यह बात ठीक है। पहले उनका संकेत प्राप्त हो। फिर कार्य किया जाये। ८६ फिर विभाण्डक तपस्वी कहाँ है। यह जानने के लिये खोजकर्ता भेजे जायँ। जो जाकर वन तथा पर्वतों में घूम-घूमकर खोज करें। ८७ शाप के अनुसार श्रृंगी ऋषि के आने पर जल की वर्षा होगी। ८८ अन्यथा बादल वर्षा नहीं करेंगे। श्रृंगी ऋषि वर्षा के अधिकारी हैं। ८९ इस प्रकार सबने बैठकर बिचार किया। उन्होंने एक हजार आखेटकों को बुलाया। १२९० उन्हें अन्न वस्त्र देकर मार्ग के खर्च के लिये धन प्रदान करके कहा कि तुम लोग घूम फिरकर देखो कि विभाण्डक

बोइले केउँठि बिभाण्डक ऋषि अछि। से स्थान तथ्य करि बुलिण देखसि ९२
ताहार कुमर ऋष्य श्रृंग जाण। अछिकि बाप पाखरे देखिवा प्रमाण ९३
थिले से ऋषिकि पचारिब पुण। बोलिब दर्शन आस्भे करिबुँ जे पुण ९४
मनुष्य शरीर दुइ श्रृंग शिरे। बसन्त बर्ण तार जाणिथा निकरे ९५
एमन्त कहिण राजा तांकु बरगिले।लोधा कन्ध जाणिण निज स्थाने गले ९६
टांगी धनु नाराच धरि सज हेले। कोडिए कोड़िए होइ समस्ते बुलिले ९७
गिरि कन्दर बनस्त बुलि जाइ पुण। अनेक राज्यकु कले से गमन ९८
सहस्रेक राजा ऋषि मासे बुलिले। कौशिक बनरे जाइ प्रबेशिले ९९
देखिले नदी कूळ जुणेक छड़ारे। मठेक देखिले अगम्य बनरे१३००
निर्मळ शउच से स्थान अछि होइ। द्वाररे बेल गछ शोभन दिशइ१३०१
कृष्णाजिन मृग छाल उपरे ऋषि बसि। कपाळे भस्म चिता उबुरि बिराजुछि २
बेळ गछकु आउजि बसि छन्ति मुनि।कुश पात्री कमण्डळ पाउछि शोभाबनि ३
देखिण चार गणे ओळग मेलाइले। कर जोडि ऋषिक आगरे उभा हेले ४
ऋषि पचारिले केउँ देशे तुम्भ घर। किम्पा ए बनकु अइल ब्याध बीर ५
कन्ध बोइले देव पारिधिकि आसु। जीव मारिबाकु बनस्तरे बसु ६
ए बनस्तरे पशिण खोजिलु जीवगण। शुभ जोगे भेटिलु आपणंकु पुण ७

मुनि का स्थान कहाँ है। १२९१-९२ उनका पुत्र श्रृंगी ऋषि है। यह पता लगाओ कि क्या वह अपने पिता के पास है। ९३ मिलने पर उन ऋषि से कहना कि हम लोग उनका दर्शन करना चाहते हैं। ९४ उनके मानव शरीर पर सिर के ऊपर दो सींग है। उनका रंग बसन्त के समान है। ९५ इस प्रकार कहकर राजा ने उन्हें भेज दिया। मन्तव्य समझकर वह लोग अपने स्थान को चले गये। ९६ वह आखेटक लोग बीस-बीस के दल में कुल्हाड़ी, धनुष तथा बाणों से सजे हुये निकल पड़े। ९७ पर्वतों की गुफाओं, जंगलों में घूमते हुये वह अनेक राज्यों में गये। एक महीने में वह लोग एक हजार राज्यों में ऋषियों के पास घूमते हुये कौशिक वन में जा पहुँचे। ९८-९९ उन्होंने अगम्य वन में एक योजन दूरी पर नदी के तट पर एक मठ देखा। १३०० वह में स्थान अत्यन्त स्वच्छ तथा पवित्र था। द्वार पर बेल का वृक्ष सुन्दर दिख रहा था। १३०१ काले हिरन की छाल पर ऋषि बैठे थे, उनके मस्तक पर भस्म का तिलक शोभायमान था। २ ऋषि बेल वृक्ष का आलिंगन किये हुये बैठे थे। कुश-पात्र तथा कमण्डल शोभा पा रहा था। ३ यह देखकर दूतों ने उन्हें प्रणाम किया और हाथ जोड़कर ऋषि के समक्ष खड़े हो गये। ४ ऋषि ने पूँछा कि आप लोगों का घर किस देश में है। हे पराक्रमी व्याध ! इस वन में किस कारण से आये हो। उन्होंने कहा कि हम लोग आखेट करने आये हैं और जीवों को मारने के लिये वन में घुसे हैं। ५-६ इस वन में घुसकर हम जीवों को खोज

आम्भ घर चम्पावती राज्यरे अटइ। से देशरे इन्द्र बृष्टि न करइ ८
ब्राह्मण शापरे राज्य लोके दुःखी। अनेक राज्य फेरिण पेट पोषु छन्ति ९
आम्भर कष्ट देब कहिले नसरि। केते लोक अनाहारे गले शिजे मरि१३१०
आज दिन शुभ देखिलुँ तुम्भंकु। तुम्भ नाम कह हे आम्भंकु१३११
ऋषि बोइले एबे ब्याधगण शुण। बिभाण्डक ऋषि अटइ आम्भ नाम १२
मोहर पितांक नाम सुभाण्डक होइ। ए स्थाने मो जनक मढ़िआ करि रहि १३
पिता स्वर्ग जिबारु मुँ ए स्थानरे अछि। सुरभि गोटिए मोते ब्रह्मा देले जाचि १४
से सुरभि प्रसादे सकळ मोर भल। सिंह शार्द्दुळकु भय न थाए मोहर १५
कन्ध बोइले देव अरण्ये बास तोर। दैत्यमाने दुष्ट जे अटन्ति बळिआर १६
दुष्टंकु डरन्ति राजा प्रजा जे समस्ते। से माने कि उपद्रव न करन्ति एथे १७
मुनि बोइले शुण ब्याध बीर। तपी जन मानंकु कि करे दैत्य छार १८
धन द्रव्य नाहिँ आम्भर नेबाकु से बोहि। फळ मूळ खाउ आम्भे अरण्यरे थाइ १९
कन्ध बोइले देव एकासिना तुम्भे। सुरभिटिए त अछि तुम्भ संगे१३२०
दासी परीबारी त ऋषि आणि नाहिँ।
से सञ्चार किछि आम्भे देखिलु त नाहिँ१३२१
ऋषि बोइले तुम्भे शुण आरे कन्ध। से गहळे आम्भर नाहिँ जे शरधा २२

रहे थे। सौभाग्यवश आपसे भेंट हो गई। ७ हमारा घर चम्पावती राज्य में है। उस देश में इन्द्र वर्षा नहीं कर रहे हैं। ८ ब्राह्मण के शाप से राज्य के लोग दुःखी हैं। वह बहुत से राज्यों में घूम-घूमकर उदर पोषण कर रहे हैं। ९ हमारा कष्ट कहते नहीं बनता। निराहार न जाने कितने लोग मर गये। १३१० आज का दिन शुभ है जो आपके दर्शन हुये। आप हमें अपना नाम बताइये। १३११ ऋषि बोले, हे व्याधगण! सुनो। हमारा नाम विभाण्डक है। १२ मेरे पिता का नाम सुभाण्डक था। इस स्थान पर हमारे पिता मठ बनाकर रहते थे। १३ पिता के स्वर्ग जाने पर मैं इस स्थान पर हूँ। ब्रह्माजी ने मुझे जांचकर एक सुरभी (गाय) प्रदान की है। १४ उस सुरभी के प्रसाद से मैं सब प्रकार से सुखी हूँ। मुझे शेर बाघ से भय नहीं लगता। १५ आखेटकों ने कहा कि हे देव! आप जंगल में निवास करते हैं। दैत्य लोग बहुत बलवान तथा दुष्ट हैं। १६ राजा और प्रजा सब दुष्टों से डरते हैं। क्या वह लोग यहाँ उपद्रव नहीं करते। १७ मुनि ने कहा हे पराक्रमी आखेटक! सुनो। तुच्छ दैत्य तपस्वी लोगों का क्या कर सकते हैं। १८ उनके द्वारा ढोने के लिए हमारे पास धन द्रव्य नहीं है। हम फल-मूल खाकर वन में रहते हैं। आखेटक ने कहा हे देव! आप तो अकेले हैं। पर आपके साथ गाय भी तो है। १९-१३२० दासी-दास तो ऋषि नहीं लाये हैं। उस प्रकार का नियोजन तो हमें कुछ भी नहीं दिख रहा है। १३२१ ऋषि ने कहा आखेटक! सुनो। उस चहल-पहल

कुमर गोटिए केबळ अछि मोर। सेहि कुमरकु मोते देले बेदबर २३
देबतांकर साहारे कुमर मुँ पाइ। सेहि पुत्र गोटि मोर बारण अटइ २४
कन्ध बोइले देव घरणी तोर नाहिँ। केमन्ते पुत्र गोटि पाइलु गोसाइँ २५
पुत्र नाम किस अटइ तोहर। केह देला कुमर कह मुनिवर २६
बिभाण्डक बोइले शुण लोधा जाति। मृगुणीर गर्भरु से होइला उत्पत्ति २७
सर्बांग सुन्दर तार मानब सदृश्य। मस्तकरे दुइ शृंग मृगुणी दृश्य २८
से कुमर गोटिक मृगुणी जातकला। क्षीर न देइ मृगुणी स्वर्गगामी हेला २९
से सन्तोष रोदन करइ एथि जाण। रोदन शुणिण मुँ मिळिलि आगेण१३३०
देखिलि से कुमर आश्चर्य्यरे जन्म। मानव शरीर तार मस्तके शृग जाण१३३१
देखिण माळेणी मनरे मोर हेला। आश्चम्बित कथात एठारे देखा गला ३२
एमन्त समयरे त्रिदश सुरगण। स्वर्गरे देवताए डाकिलेक पुण ३३
मोते बोइले तोर कोळे पुत्र नाहिँ। एकुमर पाळिले धर्मर तोर होइ ३४
मुँ बोइलि ए कुमर असम्भब पुण। के पाळिब एाकु मोते देव बिडम्बण ३५
देब इन्द्र बोइले शुण मुनिवर। तोहर कुमरकु किम्पाइ नेब पर ३६
मुँ बोइलि मोहर से किरूपे कुमर। मृगुणी संगते मुँ त करिनि बिहार ३७

से हमें प्रेम नहीं है। २२ केवल एक मेरा पुत्र है। ब्रह्माजी ने वही बालक मुझे दिया है। २३ मैंने देवताओं की सहायता से बालक प्राप्त किया है। वह पुत्र ही मेरा वारण हैं। २४ आखेटक ने पूंछा हे देव ! आपकी पत्नी नहीं है। फिर आपने पुत्र कैसे प्राप्त किया। २५ आपके पुत्र का नाम क्या है। हे मुनि श्रेष्ठ ! वह पुत्र आपको किसने दिया है। विभाण्डक ने कहा हे व्याध जाति के लोगो ! सुनो। उसका जन्म हिरनी के गर्भ से हुआ था। उसके सम्पूर्ण अंग मनुष्य के समान सुन्दर थे। मस्तक पर हिरणी के समान दो सींग दिखाई पड़ते थे। २६-२७-२८ एक हिरनी ने उस बालक को जन्म दिया। बिना दूध पिलाये ही हिरनी स्वर्ग चली गयी। २९ वह बालक यहाँ रो रहा था। रुदन सुनकर मैं उसके सामने जा पहुँचा। १३३० मैंने उस आश्चर्यजनक उत्पन्न हुये बालक को देखा। उसका शरीर मनुष्य का और सिर पर सींग थे। १३३१ उसे देखकर मेरे मन में चिन्ता हुयी कि यह आश्चर्यजनक बात कैसे देखने में आयी। ३२ इसी समय देवताओं ने स्वर्ग से आकाशवाणी की। ३३ उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारी गोद में पुत्र नहीं है। इस कुमार का पालन करने से तुम्हें धर्म की प्राप्ति होगी। ३४ मैंने कहा कि यह बालक तो आश्चर्यजनक है इसका कौन पालन करेगा। यह मुझे मात्र विडम्बना ही देगा। ३५ इन्द्रदेव ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनो। तुम्हारे पुत्र को अन्य कोई क्यों लेगा ?। ३६ मैंने कहा कि यह मेरा पुत्र कैसे हुआ। मैंने तो हिरनी के साथ बिहार नहीं किया। ३७ देवराज बोले हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनो। तुमने स्वर्ग की अप्सरा को

सुर राजा बोइले शुण मुनिबर ।स्वर्ग नायिकाकु देखि बीर्य्य छाड़िलु मुनिबर ३८
से बोर्ज्य तोर पुष्करिणीरे भासु थिला । तृषा तुरे मृगुणी से जळ पिइला ३९
से बीर्ज्य जळ संगे पिइला मृगुणी ।गर्भ बास हेला बीर्ज्य नोहिला हानि पुणि१३४०
मुँ बोइलि से कथा निरोळे मोते कह । मेनका दुहितारे केमन्ते मोर स्नेह१३४१
सुर राजा बोइले शुण मुनि मणि । बिहि लेखनकु के आन करे पुणि ४२
दिनेक मेनका सुगन्धा नामे नारी । नव बर्षरे नब जुबा से कुमारी ४३
श्रृंगार निमन्तरे अनेक बिरही । माताकु बोइला मोते पति दिअ तुहि ४४
जननी बोइला शुण लो दुहिता । तु जेबे कामरे होइलु बिह्वळिता ४५
मर्त्य पुरकु एबे चळ गो त्वरित ।सुभाण्डक ऋषि सुत बिभाण्डक ऋषित ४६
कौशिक बनरे सेहि ऋषि अछि रहि । ताहार निकटकु चळ बेगे होइ ४७
से ऋषि मढिआर निकटे सरोवर । से सरोवरे निज रूपे तु बिहर ४८
से ऋषि संगे मेळ होहण बिहर । बळबन्त पणरे नकरिबु बेभार ४९
जेबे से ऋषि मन नटळिब तोरे । फेरिण आसिण तु कहिबु मोहरे१३५०
एहि परि मेनका दुहिताकु कहि । शुणिण गन्धका मनरे तोष होइ१३५१
पुष्पक जान गोटि बेगे सज कला । उत्तम बेश होइ रथरे बसिला ५२
चूआ चन्दन जे अगर कस्तुरी । कुकुमादि सुगन्ध नब हर धरि ५३

देखकर वीर्य स्खलित कर दिया था। तुम्हारा वह वीर्य पुष्करिणी में उतरा रहा था। प्यासी हिरनी ने वह जल पी लिया। ३८-३९ जल के साथ उस वीर्य को हिरनी पी गयी जिससे वह गर्भवती हो गई। उसका नाश नहीं हुआ। १३४० मैंने कहा कि यह बात खोलकर मुझसे कहें। मेनका की पुत्री से मेरा स्नेह कैसे हुआ। १३४१ देवराज ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये। विधि के विधान को कौन मेंट सकता है। ४२ एक दिन मेनका की सुगन्धा नाम की पुत्री जो नौ वर्ष में नवयौवना हो गई थी। नाना प्रकार के श्रृंगार करके अपनी माता से बोली तुम मुझे पति प्रदान करो। ४३-४४ माता ने कहा हे पुत्री ! सुनो। जब तुम काम से विह्वल हो गई हो तो अब शीघ्र ही मृत्युलोक को चलो। सुभाण्डक ऋषि के पुत्र विभाण्डक ऋषि हैं। ४५-४६ वह कौशिक वन में रहते हैं। तुम शीघ्र ही उनके पास चलो। ४७ उन ऋषि के मठ के पास में एक सरोवर है। उसमें तुम अपने रूप से जलक्रीड़ा करो। ४८ उस ऋषि के साथ मिलकर तुम बिहार करना कोई व्यवहार वलपूर्वक न करना। ४९ यदि तुम्हारे प्रति उन ऋषि का मन नहीं डिगे तो तुम लौटकर मुझसे कहना। १३५० इस प्रकार मेनका ने अपनी पुत्री से कहा जिसे सुनकर सुगन्धा का मन प्रसन्न हो गया। १३५१ उसने पुष्पक विमान शीघ्र ही सजाया और श्रेष्ठ श्रृंगार करके वह रथ पर बैठ गयी। ५२ वह चोवा, चन्दन, कस्तूरी, अगुरु, कुमकुम आदि सुगन्धित पदार्थों को लगाकर उस वन

से बनरे आसि होइला प्रबेश। मोहर पुष्करिणीरे मिळिला हरष ५४
रथरु ओहलाइण पुष्करिणी देखि। निर्मळ जळ देखि मनरे हेला सुखी ५५
सुगन्ध लगाइ जळे करइ सेहु लीळा। जानु जौवन तार दिशइ जे त्वरा ५६
बसन अंगु काढि करइ स्नाहान। देखिण देवता हेले तोषमन ५७
सुन्दर पणे ताकु सरिसम नाहिँ। मन कले क्षण के संसार पारे मोहि ५८
एमन्त समयरे मुनिवर पुण। स्नाहान करिवाकु गले से स्थानेण ५९
कमण्डळु हस्ते घेनिण प्रवेशत। ताकु देखि तुम्भ मन हेला प्रळयत१३६०
पञ्चशर तोर हृदरे पीडिला। मदन शर जे बिह्वळित कला१३६१
जळरे पशिण करन्तेण स्नान। जानु जउवन देखिलु तार पुण ६२
पञ्चशर तोर हृदरे पडिला। कामरस सुरतिरे मनटि बळिला ६३
तेणु करि बीर्ज्य उछुळे तोहर। उछुळिण बीर्ज्य पडिला जळर ६४
बीर्ज्य जिबारु अचेष्ट मत हेलु। जळरु भितरे ढळिण पडिलु ६५
मस्तक रहिला कुळरे आसि तोर। हृदय रहिला जळर भितर ६६
अचेष्टा देखिण सुगन्धा विचारइ। चेता पाइले ऋषि मोते कोप होइ ६७
एमन्त बिचारिण बसन देहे पिन्धि। तिन्तिण जर जर केशहिँ न बान्धि ६८
मनरे बिचारिला एहि देव शाप। एते बोलि रथरे चढिला त्वरित ६९

में आ पहुँची और प्रसन्नतापूर्वक मेरे सरोवर में आ गई। ५३-५४ सरोवर को देखकर वह रथ से उतरी और निर्मल जल को देखकर वह मन में प्रसन्न हो गई। ५५ वह सुगन्धि लगाकर जल क्रीड़ा करने लगी। उसके यौवन का निखार आकर्षक दिखाई दे रहा था। ५६ वह शरीर से वस्त्रों को उतारकर स्नान कर रही थी। उसे देखने पर देवता भी सन्तुष्ट हो जाते। ५७ सौन्दर्य में उसका कोई जोड़ नहीं था। उसकी इच्छा होने पर वह एक क्षण मात्र में संसार को मोहित कर सकती थी। ५८ इसी समय मुनिश्रेष्ठ उस स्थान पर स्नान करने के लिये गए। ५९ कमण्डल हाथ में लेकर वहाँ प्रविष्ट होने पर उसे देखकर तुम्हारे मन में हलचल होने लगी। १३६० पंचवाण से तुम्हारा हृदय आहत हो गया और तुम काम बाण से विह्वल हो गए। १३६१ जल में घुसकर स्नान करते समय तुमने फिर उसके यौवन पर दृष्टिपात किया। ६२ पंचबाण तुम्हारे हृदय पर गिरे और तुम्हारी इच्छा काम क्रीड़ा करने को हो गई। ६३ इसलिये तुम्हारा वीर्य उछाल मारने लगा और स्खलित होकर जल में गिरा। ६४ वीर्य स्खलित होने पर तुम निश्चेष्ट जैसे हो गए और तुम जल के भीतर ही झुक गए। ६५ तुम्हारा मस्तक तट पर आ गया तथा हृदयपर्यन्त शरीर जल में था। ६६ तुम्हें अचेत देखकर सुगन्धा ने विचार किया कि चेतना लौटने पर ऋषि मुझ पर कुपित होंगे। ६७ इस प्रकार विचार करके उसने अपने शरीर पर वस्त्र पहनकर मन में चिन्तित होकर बिना केश बाँधे ही सोचा कि यह मुझे

जान परे बसिण स्वर्गपुरे गला। जननी छामुरे प्रवेश होइला१३७०
बोइला मोते तुहि भेदिलु मर्त्यपुर। मुँ जाइ बिह्वळित कलि मुनिवर१३७१
मोते देखिण से अज्ञान होइला। बीर्ज्य टळिबारु मुनि मोहरे पड़िला ७२
से ऋषि अज्ञान देखि मने बिचारिलि। शाप देव बोलि भय़ मुँ करिलि ७३
जान परे बसिण अइलि पळाइ। किस तोर मनकु अइला गो आई ७४
मेनका बोइला एकथा भल हेला। थिले ऋषि शाप दिअन्ता तोते परा ७५
भल बुद्धि करि तुरे कि अइलु। कर्म तोर सुफळ सेठारु उबुरिलु ७६
ब्रह्ममुनि अटे बिभाण्डक मुनि बर। ताठारे दोषी नोहिलु सुभाग्य तोहर ७७
शुणि करि गन्धका जानरु ओह्लाइला। जननीर चरणे ओळगि होइला ७८
सुबासित जळरे कलाक स्नाहान। बस्त्रकु चुपुडिण पोछिला अंग पुण ७९
नूतन अमळाण बसन आणि पिन्धि। अमृत भोजन कला सन्तोषे सारंगी१३८०
आचमन सारिण बिढ़िआ भुञ्जि पुण। रत्न पलंकरे निद्रा गला अचेतण१३८१
केते बेळ उत्तारे उठिला शुभ्रकेशी। रत्न काञ्चन आभरण कला हृथेबसि ८२
गभा बान्धि पुष्पमाला जले लम्बाइला। समस्त अलंकार शरीरे मण्डिला ८३
बिदमुदि बाहुटि कंकण सुन्दर। अळता झुण्टिआ लगाए पय़र ८४

शाप देंगे ऐसा विचार करके वह शीघ्र ही रथ पर चढ़ गई। ६८-६९ वह रथ पर बैठकर स्वर्गलोक चली गयी और माता के समक्ष जा पहुँची। १३७० उसने कहा कि तुमने हमें मृत्युलोक भेजा था। मैंने जाकर मुनिश्रेष्ठ को विचलित कर दिया। १३७१ मुझे देखकर वह अचेत हो गये। वीर्य के स्खलित हो जाने से मुनि चेतनाशून्य होकर गिर पड़े। ७२ उन ऋषि को अचेत देखकर मैंने मन में विचार किया कि यह मुझे शाप देंगे। इससे मुझे भय लगने लगा। ७३ मैं रथ पर बैठकर भाग आई। हे माता! तुम्हें क्या समझ में आया। ७४ मेनका ने कहा यह अच्छा ही हुआ। तुम्हारे रहने पर ऋषि तुम्हें अवश्य शाप देते। ७५ तूने आकर बुद्धिमानी का कार्य किया। तुम्हारे कर्म अच्छे थे। जो तुम वहाँ से बचकर आ गई। ७६ मुनिश्रेष्ठ विभाण्डक ब्रह्मर्षि हैं। तुम उनकी अपराधिनी नहीं बनी। यह तुम्हारा सौभाग्य था। ७७ यह सुनकर सुगन्धा रथ से उतर पड़ी और उसने माता के चरणों में प्रणाम किया। ७८ उसने सुगन्धित जल से स्नान किया और वस्त्र को निचोड़कर अपने अंगों को पोंछा। ७९ नवीन स्वच्छ वस्त्र लाकर पहने तथा मृगनयनी ने संतोष-पूर्वक अमृततुल्य भोजन किया। १३८० आचमन करके उसने पान खाया और रत्न-पर्यंक पर निश्चेष्ट होकर सो गई। १३८१ कुछ समय पश्चात् वह सुकेशी उठी। फिर उसने बैठकर अपने वक्षस्थल पर रत्नाभरण पहन लिये। ८२ उसने जूड़ा बाँधकर यत्नपूर्वक फूलों की माला पहनी और अपने सम्पूर्ण शरीर को अंलकारों से सजाया। ८३ बेंदा, अगूँठी, बाजूबन्द सुन्दर

वेश होइ सुन्दरी बसे प्रांगणरे। रजनी होइला एमन्त समयरे ८५
अश्विनी कुमार वेश होइ पुण। प्रबेश हेले जाइ ताहार पुरेण ८६
देखिण गन्धका आनन्द मन हेला। जननीर आगरे जाइण जणाईला ८७
बोइला अश्विनीकुमार बिजे कले। शोभा देखाइ मोर मन लोभ कले ८८
मेनका बोइला जेबे तोर मन तोष। स्वामींकर मनकु कर गो हरष ८९
शुणिण गन्धका नारी बेगे चळिगला।अश्विनी कुमारंकर चरणे ओळगिला१३९०
देखिण कुमर मणि ताकु कोळ कले। मुखरे चुम्ब देइ पलंके बसिले१३९१
कुच्च मर्द्दन करि कले आलिंगन। निबिबन्ध फिटाइ रति कले जाण ९२
से नारीर स्वामी हेले अश्विनी कुमार। एयु अनन्तरे शुण कथा सार ९३
से अपसरा जिबारु तुम्भे चेता पाइ। चाहिँला अपसरीकु सेठारे से नाहिँ ९४
न देखि तुम्भ मन होइलाक स्थिर। मनरे बिचार कला मुनिवर ९५
देखा देइ अस्थिर कला मोर मन। जाणिण पळाइला न रहि ए स्थान ९६
थिले शाप दिअन्ति हुअन्ता एयु भष्म। एमन्त बिचार कलु हृदरेता ९७
सेठारे स्नाह्न सउच बेगे सारि। मढिआरे प्रबेश कमण्डळु धरि ९८
तपरे तत्पर होइण बसिलु।बिचळित हेबा कथा मने चिन्ताकलु ९९

कंकण पहने और पैरों में महावर लगाकर विछुए पहन लिये। श्रृंगार करके वह सुन्दरी आँगन में बैठ गई। इसी समय रात्रि हो गई। ८४-८५ इसी समय अश्विनी कुमार श्रृंगार करके उसके महल में प्रविष्ट हुये। ८६ उन्हें देखकर सुगन्धा का मन प्रसन्न हो गया। उसने जाकर माँ के समक्ष कहा कि अश्विनी कुमार आये है। उनकी शोभा देखकर मेरा मन लुब्ध हो गया है।। ८७-८८ मेनका ने कहा कि यदि तुम्हारा मन संतुष्ट है तो तुम अपने स्वामो के मन को प्रसन्न कर दो। ८९ यह सुनकर सुगन्धा शीघ्रता से चली गई। उसने जाकर अश्विनी कुमार के चरणों में प्रणाम किया। १३९० उसे देखकर श्रेष्ठ कुमार ने उसे गोद में ले लिया और उसके मुख को चूमकर पलंग पर बैठ गया। १३९१ उसने उसके स्तनों का मर्दन करते हुये उसका आलिंगन किया और फिर कटिबन्ध खोलकर उसके साथ काम क्रीड़ा की। ९२ उस स्त्री के स्वामी अश्विनी कुमार हो गये। इसके पश्चात् कथा के रहस्य को सुनो। ९३ उस अप्सरा के जाने पर तुम्हारी चेतना लौटी। तुमने उस अप्सरा को देखा पर वह वहाँ नहीं थी। ९४ उसे न देखकर तुम्हारा मन शांत हो गया। तब मुनिश्रेष्ठ (तुमने) मन में विचार किया कि वह दिखाई देकर मेरा मन अशांत कर गई और यह सब जानकर वह इस स्थान पर बिना रुके भाग गयी। ९५-९६ रहने पर मैं उसे शाप देता और वह भस्म हो जाती। तुमने इस प्रकार का विचार अपने मन में किया। ९७ तुम वहाँ शीघ्र ही शौच तथा स्नान करके कमण्डल लेकर मठ में आ गये। ९८ तुम तपस्या में तत्पर होकर बैठ गए और

एथु अनन्तरे शुण मुनिबर। सुशीळा हरणी अइला तो पछर१४००
तृषारे आरत होइण हरिणी।तु जिबारु पुष्करिणी तटरे मिले जाणि१४०१
आरतरे जळ करइ आहार। से जळरे भाषु थिला बीर्ज्य जे तोहर २
सेहि बीर्ज्यक मृगुणी जळ संगे भक्षि। काळे गर्भबास होइला मृगुणीटि ३
ऋषि बोइले जातिरे पशु पुण।मनुष्यर बीर्ज्ये किम्पा जात हेला जाण ४
अण ऋतुरे किम्पा गर्भरे बीर्ज्य रहि। ऋतु हेले स्वामी संगरे रमे सेहि ५
सुर राजा बोइले शुण हे मुनिबर। से मृगुणी अटइ अपसरा कुळर ६
सुशीळा अपसरार अटइ दुहिता। अनंग गन्धर्व जे अटइ तार पिता ७
गन्धर्व कोळे जात हेबारु से कुमारी। सुन्दर पणे ताकु दुर्गा नुहें सरि ८
से सुन्दरीकि बयस सात पाञ्च जाण। कुमारींकि सांगरे खेळइ से पुण ९
पशुंकि प्राय़े अमंगळ बाट चाले।अष्ट बक्र ऋषि जे आसान्ति इन्द्र पुरे१४१०
छेपरा भंगा खण्ड देखिण ताहार। शोइले मोते देखि बाहुने शरीर१४११
अबिगुण बिचारि तांकु जे शाप देले। शुणि करि कुमारी मनरे भाळिले १२
कर जोड़ि कुमारी जे कहइ ऋषिंकि।दोष करि नाहिँ शाप बिहिलु काहिँकि १३
मोर इच्छारे मुं जे खेळु थिलि खेळ।न जाणि किम्पा शाप देल ऋषि बाळ १४

विचलित होने की बात मन में सोचने लगे। ९९ हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनो। इसके पश्चात् वह सुशीला हिरणी तुम्हारे चले जाने पर वहाँ आई। तुम्हारे जाते ही तृषा से आर्त होकर हिरणी पुष्करिणी के तट पर पहुँची थी। १४००-१४०१ आर्त होकर वह जल पीने लगी। उस जल में तुम्हारा वीर्य उतरा रहा था जिसे जल के साथ पी जाने के कारण समय के अनुसार वह मृगी गर्भवती हो गयी। २-३ ऋषि ने कहा कि वह तो जाति में पशु थी। वह फिर मानव वीर्य से जन्मदायिनी कैसे बनी ?। ४ बिना ऋतुकाल के उसके गर्भ में वीर्य कैसे ठहर गया ?। ५ देवराज ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! वह हिरणी अप्सरा कुल की थी। वह सुशीला अप्सरा की पुत्री थी। अनंग गन्धर्व उसका पिता था। ६-७ गन्धर्व कुल में जन्म लेने के कारण सौन्दर्य में दुर्गा भी उसकी समानता में नहीं थी। ८ उस सुन्दरी की अवस्था पाँच-सात वर्ष की थी। वह बालिकाओं के साथ खेल रही थी। पशुवत् उसने अमंगल मार्ग अपनाया। अष्टावक्र ऋषि इन्द्रलोक आ रहे थे। ९-१४१० उनका टेढ़ा मेढ़ा शरीर देखकर लेटी हुई कुमारी की धृष्टता पर विचार करके उन्होंने शाप दे दिया जिसे सुनकर बालिका चिन्तित हो गई। १४११-१२ उस कुमारी ने हाथ जोड़कर ऋषि से कहा कि मैंने तो आपका कोई अपराध नहीं किया फिर आपने शाप क्यों दे दिया ?. मैं अपनी इच्छानुसार खेल-खेल रही थी। हे ऋषिपुत्र ! आपने बिना समझे मुझे शाप क्यों दे दिया। १३-१४ ऋषि ने कहा यदि तुम्हारा दोष नहीं है तो थोड़े

ऋषि बोइले जेबे दोष नाहिँ तोर। अल्पदिने शापरु तुहि हेबु पार १५
नोहिब मोर शाप आउ आन। बार वर्षरे तु जे आस निज स्थान १६
पनशीळा बोइला मुं केउँठाकु जिबि। केउँ रूप होइण मुं वनरे रहिबि १७
बक्र ऋषि बोइले जे कौशिक बने। सरजू नदी कूळे रह जाइ तेणे १८
बिभाण्डक ऋषिर से स्थान आश्रम। सेहि स्थाने जाइण तु कर जा बिश्राम १९
मृगुणी रूप धरि से स्थानरे थिबु। एगार वर्षरे नव जुवा हेबु१४२०
शुद्ध स्नान दिन जे तोते हेब जोग। से ऋषिर घरणी नाहिँ सद्भाव१४२१
पुष्करिणीरे ऋषि स्नान करुथिब। अप्सराकु देखिले बीर्ज्य उच्छुळिब २२
से बीर्ज्य जळ संगे भक्षिबु से दिन। गर्भबास हेबु ऋषिर बीर्ज्य जाण २३
दशमासरे गर्भ प्रसव तोर हेब। से पुत्र गोटि ऋषि स्वरूप होइब २४
तोहर चिन्हमात्र ताहार ठारे रहि। दुइ गोटि श्रृंग मस्तके थिब बहि २५
जन्म करि तुहि आसिबु ए स्थान। से पुत्रकु पाळिब बिभाण्डक तपोधन २६
से कुमर काळे अचिन्ता तपी हेब। देवंक उपकारी बिष्णुंकु जन्माइब २७
ऋष्यश्रृंग नाम होइब ताहार। एमन्त कहि इन्द्र गले निज पुर २८
शुणिण मृगुणी रूप धइला तक्षण। एथि प्रबेश आसि होइला सेहि पुण २९
तोहर बीर्ज्यरे दशमास धरि। पुत्र जात करिण गला निज पुरि१४३०

ही दिनों में तुम शाप से मुक्त हो जाओगी। १५ मेरा शाप तो मिथ्या नहीं हो सकता। बारह वर्ष में तुम अपने स्थान लौट आओगी। १६ बालिका ने कहा कि मैं कहाँ जाऊँगी और वन में किस रूप में रहूँगी। १७ अष्टावक्र ऋषि ने कहा कि कौशिक वन में तुम सरयू नदी के तट पर जाकर रहो। १८ उस स्थान पर विभाण्डक ऋषि का आश्रम है। तुम उसी स्थान पर जाकर विश्राम करो। १९ तुम हिरणी के रूप में उस स्थान पर रहोगी। ग्यारह वर्ष में तुम नवयुवा हो जाओगी। १४२० शुद्ध स्नान के दिन तुम्हारा योग होगा। उन ऋषि के सद्भावशीला पत्नी नहीं है। १४२१ ऋषि पुष्करिणी में स्नान कर रहे होंगे। अप्सरा को देखकर उनका वीर्य उद्वेलित होगा। २२ उस दिन उस वीर्य को जल के साथ तुम पियोगी। ऋषि के वीर्य से तुम गर्भवती होगी। २३ दस महीने में तुम्हारे गर्भ का प्रसव होगा। वह पुत्र ऋषि का स्वरूप होगा। २४ उसके पास तुम्हारे चिह्न के मात्र दो सींग मस्तक पर होंगे। २५ जन्म देने के उपरान्त तुम इस स्थान को वापस चली आओगी। तपस्वी विभाण्डक उस पुत्र का पालन करेंगे। २६ समय पर वह कुमार निश्चित तपस्वी होगा। वह देवताओं के हितकारी विष्णु को उत्पन्न करायेगा। २७ उसका नाम ऋष्यश्रृंग होगा। इस प्रकार कहकर इन्द्र अपने लोक चले गये। ऐसा सुनकर वह उसी क्षण हिरणी का रूप धारण करके यहाँ आ पहुँची। २८-२९ तुम्हारे वीर्य को दस महीने धारण करके पुत्र को जन्म देकर वह अपने स्थान को चली

शुणिण बिभाण्डक मनरे तोष हेले। देवंकु बोइले एबे शुण तुम्भे भले१४३१
मृगुणी दशमास गर्भरे रखिला। छाड़ि जिबारु माता स्नेह से तेजिला ३२
मुँ एबे दशमास पाळिबि जे पुण। दशमासे जुबा हेब कर हे कल्याण ३३
हेउ बोलि देवगणे बोइले उत्तर। बिभाण्डक बोइले शुण हे शबर ३४
कुमरर शरीर कोमळ अटे जाण। बसन्त पवन ग्राकु न छाड़िब क्षण ३५
बार बरषरे जे होइब बळि पुण। बरषके सबु बिद्या शिखिब ए जाण ३६
तप सिद्ध करिण ब्रह्मर्षि होइब। पन्दर बरषे ए बिष्णुंकु जन्माइब ३७
शुणिण बृहस्पति बोइले अस्तु हेउ। बरषके बिद्या पढ़ु न जाणन्तु केहु ३८
बार बरषे मुनिंकि ब्रह्मा बर देउ। ब्रह्म मुनि होइण कामधेनु पाउ ३९
चन्द्रंकु चाहिँण कहिले बिभाण्डक। तोर प्राये शोभा पाउ मोहर बाळक१४४०
शशधर बोइले एकथा हेउ प्राप्त। मोहपरे हेउ मोहर सदृश्यत१४४१
रविंकि चाहिँण बिभाण्डक कहि। अळप तेज तोठारु बहु ग्रार देही ४२
रवि बोइले से कथा ततकाळे हेब। ए कुमर तेजरे जगत मोहिब ४३
एमन्ते बर देइ गले देवगण। से कुमरकु पाळिला सुरभि मोर जाण ४४
कन्ध बोइले देव से पुत्र तोर काहिँ। बिभाण्डक बोइले से मढिआरे अछइँ ४५

गई। १४३० यह सुनकर विभाण्डक का मन संतुष्ट हो गया। उन्होंने देवताओं से कहा कि आप लोग सुनिये। १४३१ हिरणी ने इसे दस महीने गर्भ में रखा। छोड़ जाने के कारण उसका माता का स्नेह छूट गया। ३२ मैं अब दस महीने उसका पालन करूँगा। आप लोग आशीर्वाद दें कि यह दस महीने में युवा हो जाये। ३३ देवताओं ने कहा ऐसा ही हो। विभाण्डक ने कहा हे शवर! सुनो। पुत्र का शरीर कोमल था। बसन्त का पवन इसे क्षण भर के लिये नहीं छोड़ेगा। यह बारह वर्ष में बलवान हो जायेगा और एक वर्ष में समस्त विद्याएँ सीख जायेगा। ३४-३५-३६ यह तपस्या सिद्ध करके ब्रह्मर्षि बनेगा। पन्द्रह वर्षों में यह विष्णु को जन्म ग्रहण करायेगा। ३७ यह सुनकर बृहस्पति ने तथास्तु कहा और यह भी कहा कि एक वर्ष विद्या पढ़े। इसको कोई जान न सके। ३८ बारह वर्ष में मुनि को ब्रह्मा वर दें और यह ब्रह्मर्षि होकर कामधेनु प्राप्त करे। ३९ विभाण्डक ने चन्द्रमा की ओर देखकर कहा कि मेरा बालक तुम्हारे समान शोभा को प्राप्त करे। १४४० चन्द्रमा ने तथास्तु कहते हुये कहा कि यह मेरे समान ही हो। १४४१ विभाण्डक ने सूर्य की ओर देखते हुये कहा कि इसके शरीर में आपका किंचित तेज प्राप्त हो जाये। ४२ सूर्य ने कहा कि यह तत्काल ही हो जाये और यह बालक तेज से संसार को मोहित करेगा। ४३ इस प्रकार वर देकर देवतागण चले गये। मेरी सुरभी ने उस कुमार का पालन किया। ४४ शबर ने पूँछा हे देव! तुम्हारा वह पुत्र कहाँ है? विभाण्डक ने कहा वह कुटिया में है। ४५ शबर ने कहा हम भी उसे एक बार देखें।

कन्ध बोइले देव देखन्तु आम्भे बार । शुणिण बिभाण्ढक बोइले हर्षभरे ४६
देख मोर कुमरकु पातक हेउ क्षय़े । एते वोलि ऋष्यश्रृंगकु अणाएँ ४७
बोइले कुमररे एणे आस किना । मढिआ भितरे वसि हेउछु केते अना ४८
बिभाण्डक ड़ाकिबारु अइले ऋष्यश्रृंग । पितार चरणरे नमिला से बेग ४९
देखि करि जे जोड़िले बेनिकर । ऋष्यश्रृंग चरणे कलेक नमस्कार१४५०
मस्तके दुइ श्रृंग तेजोवन्त रूप । तम्बा नाग प्राय़े देह दिशुछि स्वरूप१४५१
देखिण सकळ कन्ध सन्तोष होइले । सेदिन तांकु देखि छाड़ि न पारिले ५२
रजनीरे सुरभी प्रसादरे जाण । उत्तम अन्न भोजन सर्बे कले पुण ५३
रजनीर शेषरे मुनिक आगे कहि । सकळ चार कन्ध सेठाबरु जाइ ५४
पार्बती बोइले देव कथाए रहिला । से कथारे मोर मन कलिपत होइला ५५
बरषके बिद्या बार बर्ष तप सिद्ध । से कथा हेलाटिकि कह मोर आग ५६
ईश्वर बोइले शुण भगवती । दशमास पाळिले बिभाण्डक जति ५७
क्षीरपान सबु दिन सुरभि ठारु देइ । तप तेज्या कले ऋषि कुमरकु पाइ ५८
दशमास संपूर्ण ऋष्यश्रृंग जुबा । देखिण मुनिमन हरषरे प्रभा ५९
विद्या आरम्भ करि पढ़ाइले पाठ । बर्षके विद्यावन्त होइला पुत्र श्रेष्ठ१४६०

विभाण्डक ने ऐसा सुनकर प्रसन्नतापूर्वक कहा कि तुम मेरे पुत्र को देखो जिससे तुम्हारे पाप नष्ट हो जायें। इस प्रकार कहकर उन्होंने श्रृंगी ऋषि को पुकारते हुये कहा अरे पुत्र! यहाँ आओ। कुटिया के भीतर बैठे हुये तुम कितने अन्यमनस्क हो रहे हो। ४६-४७-४८ विभाण्डक के बुलाने पर श्रृंगी ऋषि ने आकर शीघ्रता से पिता के चरणों में प्रणाम किया। देखते ही दोनों हाथ जोड़कर उन लोगों ने श्रृंगी ऋषि के चरणों में नमस्कार किया। ४९-१४५० उनके मस्तक पर दो सींग थे और उनका रूप तेजस्वी तथा उनके शरीर का सौन्दर्य ताँबे के नाग के समान देदीप्यमान दिखाई दे रहा था। १४५१ उन्हें देखकर सारे शवर संतुष्ट हो गये। उस दिन उन्हें देखकर वह छोड़ नहीं पाये। ५२ गाय की कृपा से रात्रि में उन सबने उत्तम प्रकार के हर भाँति के भोजन किये। ५३ रात्रि व्यतीत होने पर मुनि से आज्ञा लेकर वह दूत चल दिये। ५४ पार्वती ने कहा कि हे देव! एक बात रह गई जिससे मेरे मन में सन्देह हो रहा है। ५५ एक वर्ष में विद्या प्राप्ति तथा बारह वर्ष में तपस्या की सिद्धि के विषय में मुझसे कहिये। ५६ शंकर जी बोले हे भगवती! सुनो। विभाण्डक मुनि ने दस महीने उसका पालन किया। ५७ उन्होंने सुरभी से लेकर नित्य उसे दुग्धपान कराते हुए बालक के लिये दस महीने तक तपस्या का परित्याग कर दिया। ५८ दस मास पूर्ण होने पर ऋष्यश्रृंग को युवा देखकर मुनि के मन में प्रसन्नता झलक उठी, उन्होंने विद्यारम्भ करके पाठ पढ़ाया।

सकळ बिद्यारे हेलेक निपुण ।चारि बिद्या शिखिबारु ज्ञान हेला पुण१४६१
दुइ बर्ष एथिरे दिन बहिगला । पितांकु ऋष्यश्रृंग जाइ जणाइला ६२
बोइला तप मुँ करिबि केउँ स्थाने । बिभाण्डक बोइले शुणरे नन्दने ६३
जेबे तोर मन जपरे प्रसन्न । जमुना तटकु चळ तु बहन ६४
ताहार दक्षिणरे मन्दाकिनी नदी । सेठारे तपकले सकळ कार्य्य सिद्धि ६५
शुणिण कुमर पितार चरणरे । प्रणाम करिण तोष होइला मनरे ६६
पितांकु कहिण बेगे चळिगला । मन्दाग्नि कुळरे प्रबेश होइला ६७
चित्रकुट पर्बत बनस्त भितरे । नदीकूळे आसन करिण बसे धीरे ६८
बार बर्ष पर्य्यन्त तप सेथिरे कला । पवन आहार करि कुमरबञ्चिला ६९
तपरे निर्जित होइला कुमर । बेदबर आसिण देले तांकु बर१४७०
बोइले कुमररे ब्रह्ममुनि हुअ । सकळ पाप हृदरु गला तोर क्षय१४७१
एमन्त बोलि ब्रह्मा कामधेनु देला । शरीरे बळ हेउ बोलिण बोइला ७२
शुणिण कुमर तेज्या कला तप । कामधेनु घेनिण चळिला तनुज ७३
पितार आश्रमरे हेले परबेश । देखिण बिभाण्डक होइले हरष ७४
पिता पुत्र दुहेँ हेले एकठावे ।पिता तप करइ पुत्र आश्रमे थाअ भाबे ७५

वह श्रेष्ठ पुत्र एक वर्ष में विद्वान हो गया। ५९-१४६० वह समस्त विद्याओं में निपुण हो गया और चारों विद्याओं की शिक्षा पाने से वह ज्ञानी बन गया। १४६१ दो वर्ष बीतने पर ऋष्यश्रृंग ने पिता के पास जाकर कहा कि मैं किस स्थान पर जाकर तपस्या करूँ। विभाण्डक बोले हे वत्स ! सुनो। यदि तुम्हारा मन जप से प्रसन्न हो तो तुम शीघ्र ही यमुना के तट पर जाओ। ६२-६३-६४ उसके दक्षिण में मन्दाकिनी नदी है। वहाँ तपस्या करने पर सारे कार्य सिद्ध हो जाएँगे। ६५ यह सुनकर पुत्र ने मन में संतुष्ट होकर पिता के चरणों में प्रणाम किया और पिता से कहकर वह शीघ्र ही चलकर मन्दाकिनी के तटपर जा पहुँचा। ६६-६७ वह चित्रकूट पर्वत के वन में नदी तटपर धीर भाव से आसन जमाकर बैठ गया। उसने वहाँ बारह वर्ष पर्यन्त तपस्या की तथा पवन भक्षण करके कालयापन किया। ६८-६९ तपस्या के कारण बालक को क्षीण देखकर ब्रह्मा ने आकर उसे वर प्रदान किया। १४७० वह बोले हे वत्स ! तुम्हारे हृदय के समस्त पाप नष्ट हो गए हैं। तुम ब्रह्मर्षि हो जाओ। ऐसा कहते हुए ब्रह्मा ने कामधेनु देकर उनके शरीर में बल का संचार होने का आशीर्वाद दिया। १४७१-७२ यह सुनकर उस बालक ने तपस्या का त्याग किया तथा कामधेनु को लेकर चल दिया। फिर पिता के आश्रम पर पहुँचने पर उसे देखकर उसके पिता विभाण्डक प्रसन्न हो गए। ७३-७४ पिता और पुत्र दोनों एक स्थान पर हो गए। पिता के तप करने पर पुत्र सद्भावपूर्वक आश्रम में रहता था। ७५ तीसरे दिन पिता पुत्र के पास आकर दो दिन रहते

तिनि दिने पिता पुत्र पाशे आसि। दुइ दिन रहि चळइ तपे सेटि ७६
एमन्ते चउद वर्ष बहिगला। पन्दर वर्ष ऋष्यश्रृंगकु होइला ७७
पुरुष व्यतीत स्तिरी देखा नाहिँ। विभाण्डक आश्रमरे कुमर चळइ ७८
एमन्त समयरे लोमपाद चार। कौशिक वनरे देखिले मुनि वर ७९
देखिकरि भकति ताहारे होइले। निज आश्रमकु तहुँ से चळि गले१४८०
आपणा राज्यरे जाइ प्रवेश होइले। चम्पावती राजा आगे वारता कहिले१४८१
बोइले ऋष्यश्रृंगंकु देखिलु नृपवरे। कौशिक वनरे सरजू नदीतीरे ८२
आश्रम करिण विभाण्डक ऋषि। कौशिक वनरे निश्चिन्ते रहि अछि ८३
शुणिण लोमपाद हरष होइला। गुप्तरे आणिवाकु विचार पुण कला ८४
नारदंकु सुमरणा कले नृपवर। आसिण मिळिले ब्रह्मांक कुमर ८५
देखि करि लोमपाद नमस्कार कला। गंगाजळ घेनिण चरण पखाळिला ८६
रत्न सिंहासनरे बसाए राजा नेइ। चरण पखाळिण पूजा से कराइ ८७
आरती बन्दापना मुनिंकि कराइला। कर जोड़ि छामुरे उभा से होइला ८८
बोइला भो मुनि सरिला आसि काळ। एगार वर्ष गला वर्षेक अछि बेळ ८९
मुनि बोइले एथिरु एगार मास गले। मासे थिब ऋष्यश्रृंगंकु अणाइबु भले१४९०

और फिर वहाँ से तप करने चले जाते। ७६ इस प्रकार चौदह वर्ष व्यतीत हो गए। ऋष्यश्रृंग पन्द्रह वर्ष के हो चले थे परन्तु उन्होंने पुरुष को छोड़कर स्त्री देखी ही नहीं थी। इस प्रकार विभाण्डक के आश्रम में वह बालक रह रहा था। ७७-७८ इसी समय लोमपाद के दूतों ने कौशिक वन में मुनिश्रेष्ठ को देखा था। ७९ उन्हें देखकर उन सबको श्रद्धा हो गई तथा वह लोग वहाँ से अपने स्थान को लौट गए। १४८० उन लोगों ने अपने राज्य में पहुँचकर चम्पावती के राजा के समक्ष सारा वृत्तान्त कह सुनाया। १४८१ उन्होंने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! हमने कौशिक वन में सरयू तटपर ऋष्य श्रृंग के दर्शन किये। विभाण्डक ऋषि कौशिक वन में आश्रम बनाकर निश्चिन्त रह रहे है। ८२-८३ यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गए और उन्हें गुप्त रूप से लाने के लिये विचार करने लगे। ८४ नृपश्रेष्ठ ने नारद को स्मरण किया। ब्रह्मा के पुत्र आकर उनसे मिले। ८५ उन्हें देखकर लोमपाद ने नमस्कार किया तथा गंगाजल लेकर उनके चरण धोए। ८६ राजा ने उन्हें लेकर रत्न सिंहासन पर बैठाया और पाद प्रक्षालन करके उनकी पूजा की। ८७ उन्होंने धूप, दीप आदि से मुनि की पूजा की और फिर हाथ जोड़कर उनके समक्ष खड़े हो गये। ८८ उन्होंने कहा कि हे मुनि (शाप का) समय समाप्त होने को आया है। ग्यारह वर्ष बीत गये। केवल एक वर्ष का समय शेष रह गया। मुनि ने कहा कि अब ग्यारह महीने बीतने पर जब एक महीना रह जाये तब सद्भावपूर्वक श्रृंगी ऋषि को बुला लेना। ८९-१४९० लोमपाद ने कहा कि उन्हें कैसे बुलवायेंगे। ऋष्यश्रृंग के

लोमपाद बोइले केमन्ते अणाइबि ।न आसिले ऋष्यश्रृंग केमन्ते आणिबि१४९१
नारद बोइले राजा चिन्ता दूर कर। निश्चय़ तो पुरकु आसिबे मुनिवर ९२
लोमपाद बोइले से कथारे मोर चिन्ता। ऋष्यश्रृंग आसिले मो देह हेब सुस्था ९३
नारद बोइले ऋष्यश्रृंग आसिबा कथा शुण।
स्तिरी भिन्न पुरुष जे न पारे आणिण ९४
जाणिले बिभाण्डब छाड़िण न देब ।नाहिँ कले बेदवर हेले आणि न पारिब ९५
गुपते आसिले सिना आसिब पुत्रमणि। पुरुष भेदिले न आसिब सेह पुणि ९६
लोमपाद बोइले होइला कथा छन्द ।केउँ स्तिरी आणिब नोहिब तहिँ मन्द ९७
किछि चिन्ता तुटिला एबे हेला व्यथा। प्रमाद पड़िला प्राय़े लागइ एकथा ९८
नारद बोइले अछइँ भल जोग। दुर्भिक्षरु पारि हेबु सन्तान हेब लाभ ९९
लोमपाद बोइले एथिर कथा कह। केमन्ते आसिबे बिभाण्डक पुअ१५००
नारद बोइले शुण राजा एबे। एगार मास गले शुभ हेब तेबे१५०१
तेते बेळकु राजन करिबु उपाय़े। दाण्डरे रत्न चांगुडा बुलाइबु राए २
जेउँ नारी बोलिब आणिबि मुहिँ जाइ। ताहाकु रत्न चांगुड़ा देबु तोष होइ ३
प्रार्थना करि ताकु कहिबु कोमळ। से स्तिरी गले आसिब ऋषिक दुलाळ ४
जेउँ स्तिरी बचन कहि जाणे जाण। सेहि स्तिरीकि चाळि देबु हे राजन ५

न आने पर उन्हें कैसे लायेंगे। १४९१ नारद ने कहा हे राजन ! चिन्ता दूर करिये। मुनिश्रेष्ठ निश्चय ही तुम्हारे नगर में आयेंगे। ९२ लोमपाद ने कहा मुझे बस इसी बात की चिन्ता है। श्रृंगी ऋषि के आने से हमारा शरीर स्वस्थ हो जायेगा। ९३ नारद बोले कि श्रृंगी ऋषि के लाने की बात सुनो। स्त्री को छोड़कर कोई पुरुष उन्हें नहीं ला सकता। ९४ यदि जान जायेंगे तो विभाण्डक उन्हें नहीं छोड़ेंगे। उनके मना करने पर ब्रह्मा भी उन्हें नहीं ला सकते। ९५ उस श्रेष्ठ बालक को गुप्त रूप से ही लाया जा सकता है। पुरुष को भेजने पर वह नहीं आयेंगे। ९६ लोमपाद ने कहा कि यह बात फिर फँस गई। कौन सी स्त्री के द्वारा लाने पर वहाँ बुराई नहीं होगी। ९७ थोड़ी चिन्ता दूर हुयी थी। अब यह व्यथा आ गई। यह बात तो विपदा के समान लग रही है। ९८ नारद ने कहा कि योग अच्छा है। समाप्त हो जायेगा तथा संतान लाभ होगा। ९९ लोमपाद ने कहा कि अब यह बात बताइये कि विभाण्डक के पुत्र कैसे आयेंगे। १५०० नारद ने कहा हे राजन्! सुनो। ग्यारह महीने बीतने पर तुम्हारा शुभ होगा। १५०१ उस समय तुम उपाय करना। तुम रास्ते में बाँस की टोकरी में रत्न भरकर फिरवा देना। २ जो स्त्री यह कहे कि मैं उन्हें जाकर ले आऊँगी। उसी को प्रसन्न होकर रत्नों से भरी टोकरी दे देना। ३ उससे प्रार्थना करके मधुर शब्दों में कहना कि उस स्त्री के जाने पर ही ऋषि पुत्र आयेंगे। ४ जो स्त्री बोलना जानती होगी, हे

से स्तिरी जाहा मागिब जाचि ताहा देबु। हेळाकले कार्ज्य केबे हेँन पाइबु ६
मोहिनी उच्चाट छन्द जाणइँ जेउँ नारी। सेहि सुन्दरी गले मोहिब तपचारी ७
एते कहि नारद अन्तर्द्धाने गले। राजन शुणिण हरष मन हेले ८
राज्यरे राजन फेरइ प्रतिदिन। अजोध्यार चार जे भेटइ आसि पुण ६
बोलइ अजोध्यारु आसि अछि मुहिँ। दशरथ महाराजा अछन्ति पठिआइ१५१०
वोइले मित्रकु मोर घेनि आस जाइ। ताहा शुणि राजन हरष हुअइ१५११
पात्र मन्त्रींकि ड़काइ राजन कहिला। अजोध्या जिबइँ मुँ सजकर भला १२
शुणि चतुरंग बळ सज हेले पुण। अन्तःपुरे जाइण कहिले राजन १३
बोइले मइत्र भेदि छन्ति दूत। किपाइँ डकाइ छन्ति न जाणे ता तथ्य १४
राणी हँस बोइले जेबे डकाइले। आम्भर सुफळ जिबार तेबे भले १५
रजनीरे राजन भुञ्जिण तुष्टा हेले। राणीमानंक संगे लीळा रंग कले १६
प्रभातु अनकूळ करिण राजा जाइ। दशदिने प्रबेश होइलेक तहिँ १७
एकु स्तिरी बेश लोमपाद राय़े। दशरथ पाछोटि खण्डे दूरे आय़े १८
मान्य धर्म लोमपाद दशरथंकु कले। निज नबरे जाइ प्रबेश होइले १९
जान परु उतुरी मन्दिरे बिजे कले। सेवक दळ आसिण चरण धोइ देले१५२०

राजन उसी को भेज देना। ५ वह स्त्री जो कुछ भी माँगे वह समझकर दे देना। प्रमाद करने से कार्य कभी सिद्ध नहीं होता। ६ जो स्त्री सम्मोहन तथा उच्चाटन के रहस्यों को जानती हो। वही सुन्दरी जाकर उस तपस्वी को मोहित करे। ७ इतना कहकर नारद अन्तर्ध्यान हो गये। राजा यह सुनकर प्रसन्नचित्त हो गये। ८ राजा प्रतिदिन राज्य में चक्कर लगाते रहते थे। अयोध्या के दूत ने आकर उनसे भेंट की और कहा कि मैं अयोध्या से आया हूँ। मुझे महाराज दशरथ ने भेजा है। ६-१५१० उन्होंने मुझसे अपने मित्र को ले आने के लिये कहा है। यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गये। १५११ राजा ने सभासद तथा मंत्री को बुलाकर कहा कि तैयारी करो। हम अयोध्या जायेंगे। १२ यह सुनकर चतुरंगिनी सेना सुसज्जित हुयी। राजा ने जाकर अंतःपुर में सूचना देते हुये कहा कि मित्र ने दूत भेजा है। कुछ समझ में नहीं आता कि उन्होंने किसलिये बुलाया है। १३-१४ रानियों ने कहा कि जब उन्होंने बुलाया है तो यह हमारा सौभाग्य है। हम सब चलेगी। १५ रात्रि में राजा ने संतुष्ट होकर भोजन किया और उन्होंने रानियों के साथ रस-पूर्ण क्रीड़ाएँ कीं। १६ प्रातःकाल राजा ने प्रस्थान किया और दस दिनों में वहाँ पहुँच गये। १७ राजा लोमपाद के साधारण वेश में आने पर राजा दशरथ थोड़ी दूर पर स्वागतार्थ आ गये। १८ राजा लोमपाद ने दशरथ की अभ्यर्थना की। फिर वह सब अपने नगर अयोध्या में प्रविष्ट हुये। १९ रथ से उतरकर वह महल में पहुँचे। सेवकगण ने आकर उनके चरण धोए। १५२० फिर दोनों

सिंहासने दुइ राजा बसिलेक पुण। कुसळ पुछिले तांकु अजोध्या राजन१५२१
लोमपाद बोइले सकळ भल मोर।ब्राह्मणंक जोगे मेण्टिला दुर्भिक्ष काळ २२
अन्न जळ मोते देलेक बेदबर। सुदया कले आसि नारद मुनि बर २३
चण्डाळ दुहिताकु बशिष्ठ बिभा हेले। तेणु से मोर राज्य सम्भाळि होइले २४
एबे दुहिता पाइँ खोजिबा जे बर। लोमपाद बोइले आउ बरषे सम्भाळ २५
जन्म बृहस्पती होइछि कुमारीकि। एबर्ष बर घटणा ताहाकु नोहिबटि २६
शुणिण से कथाकु सम्मत राजा कला।ऋष्य श्रृंग आसिबार बारता पुच्छिला २७
लोमपाद बोइले शुणहे मइत्र। बार बर्ष पूरिले आसिबे ऋषि पुत्र २८
शुणिण दशरथ परम तोष हेले। बशिष्ठंकु देखिबाकु दुइ राजा गले २९
ऋषिक मढिआरे होइले प्रबेश। देखिण बशिष्ठ मने हेले तोष१५३०
मंगुळ आळति दुइ राजांकु कले। आसन देइ राजांकु पाछोटि आणिले१५३१
दशरथ बोइले पाक कर हे तिआर। दुइ राजा भुञ्जिबे चतुरंग बळ ३२
शुणि करि बशिष्ठ बेगे चळि गले। अरुन्धति आगरे संपादि कहिले ३३
बोइले षड रसरे पाक कर पुण।दुइ राजा भुञ्जिबे चतुरांग बळ संगेण ३४
शुणिण अरुन्धति बेगे चळि गले। पाकशाळे बसिण रन्धन बिधि कले ३५
बशिष्ठ जाइण सुरभिकि कहि। सकळ सैन्य भुञ्जिबे चरचा कर तुहि ३६

राजा सिंहासन पर बैठे। अयोध्या नरेश उनसे कुशल-मंगल पूँछने लगे।१५२१ लोमपाद ने कहा कि हमारी सब प्रकार से कुशल है। ब्राह्मण के कारण दुर्भिक्ष का समय समाप्त हो गया। २२ ब्रह्मा जी ने हमें अन्न जल प्रदान किया। महर्षि नारद ने आकर हम पर दया की। २३ वशिष्ठ ने चाण्डाल कन्या से विवाह किया। तभी मेरा राज्य-सँभल पाया। २४ दशरथ बोले कि अब पुत्री के लिये वर खोजेंगे। लोमपाद ने कहा कि एक वर्ष और अपेक्षा कीजिए। कुमारी के जन्म स्थान में बृहस्पति है। इस वर्ष उसे वर प्राप्ति नहीं होगी। २५-२६ यह सुनकर राजा इस बात पर सहमत हो गए। फिर उन्होंने श्रृंगी ऋषि के आने की बात पूँछी। २७ लोमपाद ने कहा हे मित्र! सुनो। बारह वर्ष पूर्ण होने पर ऋषि पुत्र आएँगे। २८ यह सुनकर दशरथ को महान सन्तोष हुआ। फिर दोनों राजा वशिष्ठ से मिलने गए। २९ वह दोनों ऋषि की कुटिया में प्रविष्ट हुए। उन्हें देखकर वशिष्ठ का मन प्रसन्न हो गया। १५३० उन्होंने दोनों राजाओं का मांगलिक पूजन किया तथा आसन देकर उनका स्वागत किया। १५३१ दशरथ ने रसोई तैयार करने को कहा कि दोनों राजा तथा चतुरंगिनी सेना भोजन करेगी। ३२ यह सुनकर वशिष्ठ शीघ्र ही चले गए। उन्होंने अरुन्धती से जाकर कहा कि तुम षड्‌रस भोजन तैयार करो। चतुरंगिनी सेना के साथ दोनों राजा भोजन करेंगे। ३३-३४ यह सुनकर अरुन्धती शीघ्र ही चली गई और उन्होंने पाकशाला में बैठकर रसोई तैयार की। ३५ वशिष्ठ ने

शुणिण सुरभि प्रसन्न मन हेला। सकळ पदार्थ दण्डके सञ्चिला ३७
एथु अनन्तरे शुण भगवती। बशिष्ठ शतेक ऋषिकि सुमरन्ति ३८
नारद अंगिरा दुर्बासा अगस्ति। कपिळ सनातन पराशर आसि ३९
अष्ट बक्र आन श्रेष्ठ मूळरे शते ऋषि। बशिष्ठंक आश्रमे मिळिले सर्वे आसि१५४०
देखिण बशिष्ठ मान्य धर्म कले। विजयमाळ देइ ऋषिकि तोषिले१५४१
कपिळ पचारिले बशिष्ठंकु पुण। कि कार्य्ये आम्भंकु कल सुमरण ४२
बशिष्ठ बोइले अइले दुइ राजा। संगरे पात्र मन्त्री अछन्ति परजा ४३
से मोते मागिले भरि भोजन दिअ। तेणु स्मरणा कलि तुम्भंकु करि प्रिय ४४
से मानंकु मुहिँ देबि भरि जे भोजन। समस्तंक कुशळ कराअ बहन ४५
शुणिण समस्त ऋषि सन्तोष होइले। पात्र मन्त्री सामन्त राजांकु घेनि गले ४६
ताहांक संगे ब्राह्मण कलेक बरण। आसन देइण तांकु बसाइ संगेण ४७
अमृत समानरे भरि भोजन हेले। चतुरंग बळंकु नेइण समर्पिले ४८
समस्ते मिष्ठान्न व्यंजन भुञ्जिपुण। सन्तोष होइले सकळ सैन्य जाण ४९
जिबा आसि बार पथुकी जनथिले। दुःखी दरिद्र मागन्ता लोक केते थिले१५५०
समस्ते भुञ्जिण सन्तोष मन हेले। साधु ब्रह्म ऋषि बोलिण बोइले१५५१

जाकर सुरभी से कहा कि सारी सेना भोजन करेगी। तुम सब प्रबन्ध करो। ३६ यह सुनकर सुरभी प्रसन्नचित्त हो गई। उसने पल भर में सारी सामग्री जुटा दी। ३७ हे भगवती! सुनो। इसके पश्चात् वशिष्ठ ने सौ ऋषियों का स्मरण किया। ३८ नारद, अंगिरा, दुर्वासा, अगस्त, कपिल, सनातन, पाराशर तथा अष्टावक्र आदि समस्त श्रेष्ठऋषि वशिष्ठ के आश्रम में आकर एकत्रित हो गए। ३९-१५४० उन्हें देखकर वशिष्ठ ने उनका स्वागत-सत्कार करके अभ्यागतों को माला पहनाकर ऋषियों को संतुष्ट किया। १५४१ तब कपिल ने वशिष्ठ से पूछा कि आपने किसलिये हमें स्मरण किया है। ४२ वशिष्ठ ने कहा कि दो राजा आए हैं उनके साथ में सभासद मंत्री तथा प्रजा है। उन्होंने मुझसे भोजन की याचना की है। अतएव स्नेहवश हमने आप लोगों का स्मरण किया। ४३-४४ उन लोगों को हम यथेष्ठ भोजन देंगे। आप लोग सबका मंगल करें। ४५ यह सुनकर समस्त ऋषि संतुष्ट हो गए। वह सभासद मंत्री सामन्त तथा राजाओं को साथ में ले गए। उनके साथ में ब्राह्मणों को भी वरण किया। आसन प्रदान करके उन्हें भी उनके साथ बठाया। ४६-४७ उनको तथा चतुरंगिनी सेना को अमृततुल्य भोजन प्रचुर मात्रा में दिया। ४८ सभी ने मिष्ठान्न तथा नाना प्रकार के व्यंजन पाए। सारी सेना भोजन से संतुष्ट हो गई। ४९ जितने भी आने-जाने वाले बटोही, राहगीर, दुखी, दरिद्र तथा भिक्षुक थे वह सभी भोजन करके संतुष्ट हो गए तथा सभी ने ब्रह्मर्षि को साधुवाद दिया। १५५०-१५५१ फिर समस्त ऋषियों ने मिलकर भोजन किया।

सकळ ऋषि मिळिण कलेक भोजन। अरुन्धती पाक अन्ने सर्वे तोष मन ५२
भोजन सारि सेदिन सेठारे रहिले। नृत्य रंग करिण उत्सव कराइले ५३
रजनी शेषरे समस्ते चळिगले। राजार सिंह द्वारे जाइण मिळिले ५४
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी। लोमपाद दशरथ राजांकु पचारि ५५
बशिष्ठ पुरे किम्पाइँ भोजन आम्भर। दशरथ बोइले शुण नृपवर ५६
बशिष्ठ अरुन्धती कन्याकु बिभा हेले।सकळ ऋषि देवता ता हस्ते भुञ्जिले ५७
बोइले सर्व देव बिधाता ठाकु पुण।जे भुञ्जे अरुन्धती हस्ते से लभे कारण ५८
अभ्यन्तर बिचारिले सपत पुरुष। चउराशि नर्करे पडिबे अबश्य ५९
से कथाकु दुर्बासा गले मोते कहि। शुणि तोष हेले चम्पावती नर साइँ१५६०

राजा बेणुंओ पृथुंकर उपाख्यान

लोमपाद बोइलेक शुण हे मइत्र। केउँ जुगे केउँ राजांकु बिप्रे देले शाप १
शुणि थिले देखि थिले कह जे संक्षेप। शुणि करि दशरथ बोले शुण नृप २
सत्य जुगे बेणु राजा थिला महाबळी। तिनि पुर साधिण दुर्गाकु से जे मारि ३
तिनि पुरे प्रभा शीळ से राजा होइ थिला।
देवता ब्राह्मण राजा काहाकु न मानिला ४

अरुन्धती के द्वारा पकाये गए अन्न से सभी संतुष्ट थे। ५२ भोजन समाप्त करके वह सब उस दिन वहीं रह गए। नृत्यादि करके उस दिन उत्सव मनाया गया। ५३ रात्रि व्यतीत होने पर सभी चले गए तथा राजा के सिंहद्वार पर सब जा पहुँचे। ५४ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् लोमपाद ने राजा दशरथ से पूछा कि हम लोगों का भोजन वशिष्ठ के घर पर क्यों हुआ। दशरथ ने उत्तर दिया, हे नृपश्रेष्ठ सुनो। ५५-५६ वशिष्ठ ने अरुन्धती कन्या से विवाह किया। सभी ऋषियों तथा देवताओ ने उनके हाथ का भोजन किया। देवताओं ने ब्रह्मा से यह कहा कि जो कोई अरुन्धती के हाथ का भोजन करे उसका उद्धार हो जाय। ५७-५८ जो इसे अन्त्यज समझेगा उसकी सात पीढ़ी निश्चितरूप से चौरासी नरकों में पड़ेगी। ५९ यह बात हमें दुर्वासा बता गएं थे। यह सुन कर चम्पावती नरेश संतुष्ट हो गए। १५६०

राजा वेणु तथा राजा पृथु का उपाख्यान

लोमपाद ने कहा, हे मित्र! सुनो। किस युग में किस राजा को ब्राह्मणों ने शाप दिया था। १ यदि आपने देखा हो अथवा सुना हो तो उसे संक्षेप में कहिए। यह सुनकर दशरथ बोले, हे राजन्! सुनिए। २ सतयुग में राजा वेणु अत्यन्त पराक्रमी था। तीनों लोकों को युद्ध में परास्त करके उसने दुर्गा से भी लोहा लिया था। ३ वह राजा तीनों लोकों में प्रतापी हो गया था। उसने

काळेण जाग सेहु कलाक नृपवर। देवता विप्र ऋषि लोड़िला जन्नर ५
लक्षेक नृपवर वरण करि आणि। चारि मेघंकु वरण कलाक से पुणि ६
घृत समुद्रकु वरण से कले। से सागर ताहांकु वहुत घृत देले ७
मूषळ धारा प्रमाणे ड़ाळइ घृत धारा। से जागर आचार्य्य होइले अंगिरा ८
वार वर्ष पर्य्यन्ते राजा जाग कला। शते चौराळिश जाग सम्पूर्ण होइला ९
पूर्ण आहुति करिण राजन कल्पद्रुम। जे जाहा मागइ ताकु जाचि दिए पुण १०
बार बर्षकु बार दिन हेला कल्प द्रुम। लक्षेक भण्डारु दान देला पुण ११
शते लक्ष भरण धान देला से त्वरित। कोडिए नागदान देला नर नाथ १२
सात कोटि अश्वदान देला से उधत। दुइ लक्ष सारेणी पाञ्च लक्ष रथ १३
लक्षेक स्तिरी दान देलाक नृपति। ब्राह्मणे दान देला भुमि लक्ष बाटि १४
शतेक शासन तार राज्यरे बसाइला। दानरे राजन गर्बित होइला १५
देवतांकु अनेक बिनय़ी कहिला। स्वर्गरु आणिवा द्रव्य ताहांकु फेराइला १६
राजा मानंकर जेतेक द्रव्य आणि। राजा मानंकु सन्तोषे देला नृपमणि १७
हाटुआ बाटुआ जे देखणा हारि लोक। समस्तंकु धनदेइ तोषे नृपशिख १८
सरन्ति दान बेळे कल्पद्रुम जाण। ए समय़े मिळिला एकइ ब्राह्मण १९

देवता तथा ब्राह्मण किसी को भी नहीं समझा। ४ एक समय उस श्रेष्ठ राजा ने यज्ञ किया। उसमें उसने देवता विप्र तथा ऋषि खोजे। वह एक लाख राजाओं को वरण करके ले आया। फिर उसने चारों मेघों को वरण किया। ५-६ उन्होंने घृतसागर को वरण किया, उस समुद्र ने उसे वहुत घी दिया। ७ वह मूसलाधार घी की वर्षा कर रहे थे। उस यज्ञ के आचार्य अंगिरा वने। ८ राजा ने वारह वर्ष पर्यन्त यज्ञ किया। एक सौ चौवालिस यज्ञ पूर्ण हुए। ९ पूर्णाहुति करके राजा कल्पवृक्ष वन गए। जो कोई जो भी वस्तु माँगता था राजा वह सब उसे देते थे। १० वारह वर्ष में वारह दिन तक कल्पतरु हो गए। उन्होंने भण्डार से लाखों का दान किया। ११ उसने सौ लक्षभार धान तुरन्त दान किया। राजा ने एक करोड़ हाथी दान किए। १२ उसने सात करोड़ उद्धत अश्व दान किए। दो लाख वहलें पाँच लाख रथ दान किए। १३ राजा ने एक लाख स्त्रियाँ दान कीं। एक लाख कट्ठा भूमि ब्राह्मणों को दान में दी। १४ उसने अपने राज्य में सौ अधिकारी वैठा दिये। वह राजा दान से गौरवशाली हो गया। १५ उसने देवताओं से विनम्रतायुक्त वचन कहे तथा स्वर्ग से लाई हुई वस्तुओं को उसने लौटा दिया। १६ राजाओं से वह जितना धन लाया था उसे नृपश्रेष्ठ ने राजाओं को संतुष्ट होकर दे दिया। १७ राजपुत्र ने हाट वाजार के व्यक्तियों को तथा दर्शक लोगों को धन देकर सबको संतुष्ट किया। १८ जब कल्पवृक्ष तुल्य राजा की दानवेला समाप्त होने पर आई, ठीक उसी समय एक ब्राह्मण वहाँ आकर वोला हे राजन् ! अब मुझे दान दो। राजा

बोइला राजन मोते दान दिअ एबे।बेणु राजा बोइला किस मागुछ माग बेगे २०
बोइले ब्राह्मण तु जे होइलु कल्पद्रुम। तोहर पाटराणीकि मोते देबु दान २१
शुणि करि राजन मनरे कोप कला। बन्दी आरकु डकाइ बहुत मड़ि देला २२
क्रोधरे बिप्रवर शाप देला ताकु। कल्पद्रुम हेबारु मागिलि तुम्भंकु २३
सेथि निमन्ते मोते बहुत शास्ति देलु। सकळ धर्म तुहि एठारे नाश कलु २४
एबे मोर शाप घेन नृपबर। हृदय फाटिण प्राण जाउटि तोहर २५
एमन्त शाप जहुँ देले बिप्रवर। शरीर दुइ फाळ हेला राजांकर २६
जीब परम दुहेँ गले स्वर्गपुर। अमर पुरे जाइ रहिले नृपवर २७
जाणि करि तार राणी बाहार होइला। स्वामींकि देखिण बहुत शोक कला २८
दासींकि हतारे नेइ गला धाति। तइळ कुण्डरे पकाइ कला स्थित २९
बसिण चिन्ता भरे भाळइ राणी पुण। शुणिले बिप्रवर राजार मरण ३०
समस्त बिप्रमाने सेठारे हेले रुण्ड। क्रोधरे ब्राह्मण होइले परचण्ड ३१
बोइले सकळ सेहु नाश कला। आम्भर दान बाडि सबु क्षय़े गला ३२
एमन्त बिचारि बिप्रे तैळ भाण्ड मन्थि।कुटिळ शरीर तार मन्थरे रूप व्यापि ३३
काळ पुरुष गोटिए हेले उतपन्न। बिप्रवर मानंकु हेले क्रोध मन ३४

वेणु ने कहा क्या माँगते हो ? जो चाहिए सो शीघ्र ही माँगो। १९-२० ब्राह्मण ने कहा कि तू कल्पतरु हो गया है। तू अपनी पटरानी को मुझे दान कर दे। २१ यह सुनकर राजा कुपित हो गया। उसने अधिकारी को बुलाकर उसकी बहुत मरम्मत करवाई। २२ कुपित होकर ब्राह्मण ने उसे शाप दे दिया। उसने कहा कि तुम्हें कंल्पद्रुम हो जाने के कारण ही मैंने तुमसे याचना की थी। पर उसके कारण तुमने मुझे बहुत दण्ड दिया। अस्तु नृपश्रेष्ठ ! तुम अब मेरा शाप ग्रहण करो। तुम्हारा हृदय विदीर्ण करके तुम्हारे प्राण चले जायँ। २३-२४-२५ जब श्रेष्ठ विप्र ने इस प्रकार शाप दिया तब राजा का शरीर दो भागों में विभक्त हो गया। २६ दोनों जीवात्माएँ स्वर्गलोक जा पहुँची तथा श्रेष्ठराजा स्वर्गलोक में जाकर ठहर गया। २७ यह जानकर उसकी रानी बाहर निकली, उसने स्वामी को देखकर अत्यन्त दुःख प्रकट किया। २८ वह दासियों के हाथों से (अपने पति के) मृत शरीर को उठवा ले गई तथा उसे तेल के कुण्ड में डाल दिया। २९ रानी बैठी हुई चिन्ता कर रही थी। श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने राजा की मृत्यु के विषय में सुना। ३० समस्त ब्राह्मण वहाँ आकर एकत्रित हो गए। ब्राह्मण क्रोध से प्रचण्ड हो गए। ३१ सभी कहने लगे कि उसने (राजा को) नष्ट कर दिया। हमारा दान आदि सब नष्ट हो गया। ३२ इस प्रकार विचार करके ब्राह्मणों ने तैलपात्र का मंथन किया। उसके कटे शरीर का मन्थन करने से एकरूप व्याप्त हुआ। ३३ उससे एक काल पुरुष उत्पन्न हुआ। वह ब्राह्मणों पर कुपित हो गया। ३४ यह देखकर श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने उसे शाप दिया। सबने उसे भस्म

देखि विप्रवर जाकु शाप देले। भष्म होइ जाअ वोलि समस्ते कहिले ३५
तेणु से भष्म हेला बिकाळ पुरुष। आउथरे मन्थन कले विप्रवश ३६
आरते नारायणंकु सुमरणा कले। अनन्त शज्यारे वासुदेव ता जाणिले ३७
ब्राह्मणे वोइले देव आम्भे हेलु नाश। बारेक आसि उधार कमळा विळास ३८
जाणि करि नारायण सेठारे मिळिले। तैळ कुण्डकु ब्राह्मणे पुणि मन्थन कले ३९
कमळांकु घेनिण विजय वासुदेव। तइळकुण्ड भितरे देखिले जे सर्ब ४०
शंख चक्र गदा पद्म अधिकरे। विजय बासुदेव कमळा देवी कोळे ४१
देखि करि बिप्रामाने समस्ते स्तुति कले। अभय वर दिअ वोलिण बोइले ४२
वेणु राजा शरीर अग्निरे जाळि देले। राजा संगे पाटराणी अग्निरे झासिले ४३
से नारायण तक्षणे हेले जुवा रूप। ताहार नाम बिप्रे देले बेदमत ४४
पृथु राजा बोलिण ता नाम बिख्यात। पाळिलाक महि पितार संजात ४५
एमन्ते शते वर्ष एथिरे बिति गला। वेणु राजांक जज्ञरे अग्निकर ब्याधि देला ४६
अनेक घृत जहुँ खाइले बैशानर। तहूँ लुदु वुद्ध ब्याधि घोटिला शरीर ४७
ब्याधि हेवारु बैशानर मनरे बिचारिले। सकळ देवतांकु जाइण कहिले ४८
देवताए बोइले राजांकु जाइ कह। शुणिण बैशानर इन्द्रंकु कले प्रिय ४९

हो जाने के लिये कहा। ३५ तब वह विकाल पुरुष भस्म हो गया। फिर ब्राह्मणो ने उसे एक वार पुनः मथा। ३६ उन्होंने आर्त होकर भगवान का स्मरण किया। वासुदेव ने अनन्त शैय्या में वह जान लिया। ३७ ब्राह्मण वोले हे देव! हम नष्ट हो गए। हे कमलारमण! एक वार आकर हमारा उद्धार कर दीजिये। ३८ यह जानकर भगवान वहाँ आ पहुँचे। ब्राह्मणों ने पुनः उस तैल कुण्ड का मन्थन किया। ३९ भगवान वासुदेव लक्ष्मी को लेकर वहाँ उपस्थित हुए। यह सभी ने तैलकुण्ड के भीतर देखा। ४० उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म थे। वह लक्ष्मी देवी को गोद में लिये प्रकट हुए थे। ४१ यह देखकर समस्त ब्राह्मणों ने उनकी स्तुति की तथा उनसे अभय वर प्रदान करने की प्रार्थना की। ४२ फिर उन्होंने राजा वेणु के शरीर को अग्नि में भस्म कर दिया। राजा के साथ पटरानी सती हो गई। ४३ वह भगवान तव युवक के रूप में हो गए। वैदिक रीति से ब्राह्मणों ने उनका नामकरण किया। ४४ राजा पृथु के नाम से वह विख्यात हुए। उन्होंने पिता द्वारा अर्जित पृथ्वी का पालन किया। ४५ इस प्रकार इसमें एक हजार वर्ष व्यतीत हो गये। राजा वेणु के यज्ञ से अग्निदेव रोगग्रस्त हो गए। ४६ वैश्वानर अग्नि ने उसमें वहुत घी खाया था। तब उनके शरीर में मन्दाग्नि (वदहजमी) की व्याधि उत्पन्न हो गई। ४७ रोगग्रस्त होने पर अग्निदेव ने मन में विचार किया और उन्होंने जाकर सभी देवताओं से कहा। ४८ देवताओं ने उनसे जाकर देवराज से कहने को कहा। यह सुनकर अग्निदेव ने देवराज इन्द्र से निवेदन

इन्द्रंकु बोइले व्याधिरे मो देह पीड़ा। दान दिअ खाण्डव बन गोटा परा ५०
इन्द्र बोइले तुरे अटु बड़ मन्द। लोभरे घृत समुद्र भक्षिलु करि छन्द ५१
घृत खाइ पाक करि न पारु तु जाण। खाण्डव बन तु मोर करिबु दहन ५२
तिनिपुर औषधि सेथिरे अछि पूरि। निष्ठुर तोर हृदय से बन खाउ लोड़ि ५३
अनेक झिगास अग्नि कि गाळि देला। शुणि करि अग्नि देव क्रोधमनरे कला ५४
निजस्थाने रहिण करइ शोक पुण। तिनिपुर तेज जे मळिन हेला जाण ५५
कञ्चा न सिझिला शुखिला न जळिला। तिनिपुर लोकंकर मनरे भय हेला ५६
देखिण बेदबर निर्बिकार हेले। सनान्तन ऋषिकि ड़ाकिण कहिले ५७
बोइले कुमररे मोर बोल कर। तुहि अग्नि देवता पुरकु बेगे चळ ५८
बोलिबु प्रथुराजा संसाररे सार। तु जाइ ताहांकु प्रार्थना बेगे कर ५९
शुणिकरि सनान्तन बेगे चळि गले। बैशानरंक पाशरे प्रबेश होइले ६०
बोइले देवता होइ किस्पाइँ चिन्ता करु। भाइ भगारी बोलेर पडिकरि मरु ६१
अग्नि बोइले मोहर देहरे व्याधि हेला। इन्द्रकु कहिबारु से मोते गाळि देला ६२
बोइला खाण्डव बन न देबि तोहर। मले तु भल हेब जीइँले हेब सल ६३

किया। ४९ उन्होंने इन्द्र से कहा कि मेरा शरीर रोग से पीड़ित है। मुझे आप सम्पूर्ण खाण्डव वन दे दीजिये। ५० इन्द्र ने कहा कि तुम बहुत मूर्ख हो। तुमने षड़यन्त्र करके लोभ से घी का समुद्र पी डाला। ५१ तुम घी खाकर उसे हजम नहीं कर पाये और अब तुम मेरे खाण्डव वन को भस्म करोगे। ५२ उसमें तीनों लोकों की औषधियाँ भरी पड़ी हैं। तुम्हारा हृदय कठोर है जो तुम उस वन को खाने के लिये लालायित हो रहे हो। ५३ उन्होंने अग्नि को बुरा-भला कहकर अनेक प्रकार के कटुवचन कहे जिन्हें सुनकर अग्निदेव का मन क्रोधित हो गया। ५४ वह अपने स्थान पर रहकर शोक करने लगे। तीनों लोकों का तेज मलिन पड़ गया। ५५ कच्चे पदार्थ पकते न थे और सूखे पदार्थ भुंज नहीं पा रहे थे। तीनों लोकों के प्राणियों के मन में भय व्याप्त हो गया। ५६ यह देखकर वेदज्ञ ब्रह्माजी अवाक् रह गये। उन्होंने सनातन ऋषि को बुलाकर कहा। ५७ हे वत्स! हमारा कहना मानकर तुम शीघ्र ही अग्निदेव के लोक में जाकर कहो कि राजा पृथु संसार में भक्तिपूर्ण है। तुम जाकर शीघ्र ही उनसे प्रार्थना करो। ५८-५९ यह सुनकर सनातन शीघ्रही चल दिये और वैश्वानर (अग्नि) के समीप जा पहुँचे। ६० उन्होंने कहा कि तुम देवता होकर चिन्ता क्यों कर रहे हो और अपने बन्धु-बान्धवों की बातों में पड़कर मर रहे हो। ६१ अग्नि देव बोले कि मेरे शरीर में रोग उत्पन्न हो गया है और इन्द्र से कहने पर उन्होंने मुझे बुरा भला कहा। ६२ वह बोले कि मैं तुम्हें खाण्डव वन नहीं दूंगा। तुम मर जाओगे तो अच्छा रहेगा और जीवित रहने पर कष्ट भोगोगे। ६३ खाण्डव वन रहने से सबका भला होगा। तुम्हारे बचने

खाण्डव बन थिले समस्तंकु भल। तुहि बञ्चिले किरे संसार मंगळ ६४
सनातन बोइले भर्त्सना जेवे कला। तु किम्पा ओप्रधरे करुछु एवे परा ६५
अग्नि बोइले मोर साहा केहूँ नाहिँ। बळरे इन्द्रकु जे जिणि न पारइ ६६
बळबन्त पणकरि भक्षिबि जेवे बन। जळ वरषि मोते करिब निउन ६७
सनातन बोइला मोर ठारु शुण। पृथ राजांकु जाइ कहतु बहन ६८
सेहि राजाकु बळरे न पारे सुर राजा। खाण्डव बन तोते देव सेहु राजा ६९
एते कहि सनातन अन्तर्द्धान हेले। जाणिण अग्नि देवता सेठारु चळि गले ७०
बैधृति पुरे अग्नि हेलेक प्रवेश। देखिले प्रथु राजा बसिछि हरष ७१
चारि गोटि भुज जे एक गोटि शिर। वेनि गोटि चरण शुण हे नृपवर ७२
नील श्यामळ वर्ण तनू तार दिशि। चारि भुजरे जे आयुध धरि अछि ७३
बाहार सिंहासने बसिछि बीर वर। आगरे सारंग धनु कोदण्ड शोभाकार ७४
अग्नि देवता जे दूररु देले चाहिँ। विचारिला एत अटइ भाव ग्राही ७५
निज रूप छाड़िण ब्राह्मण रूप हेला। छता, धोती, बेदपोथि काखरे जाके परा ७६
अंगुष्ठिरे कुश वटुतम्बा पात्री हस्ते। कुशतळ अछि जे पात्रोर संगते ७७
नवगुण पइता कन्धरे विराजि। रुद्राक्ष माळ गोटा हृदरे तार साजि ७८

से संसार का क्या भला होगा। ६४ सनातन ने कहा कि जब उसने तुम्हें बुरा-भला कहा तो तुम उनके पक्ष में क्यों बने हो। ६५ अग्नि ने कहा कि मेरी सहायता करने वाला कोई नहीं है और शक्ति से मैं इन्द्र को परास्त नही कर सकता। ६६ यदि मैं बलपूर्वक वन का भक्षण करूँ तो वह जल की वर्षा करके मुझे हेय बना देंगे। ६७ सनातन बोले कि अब मुझसे सुनो। तुम शीघ्र ही जाकर राजा पृथु से कहो। ६८ उस राजा को शक्ति से देवराज इन्द्र परास्त नही कर सकते। राजा पृथु तुम्हें खाण्डव वन दे देंगे। ६९ इतना कहकर सनातन ऋषि अन्तर्ध्यान हो गये। सब कुछ समझकर अग्निदेव वहाँ से चल पड़े। ७० वैधृतिपुर में अग्निदेव ने पहुँचकर राजा पृथु को प्रसन्नतापूर्वक बैठे हुये देखा। ७१ उनके एक सिर तथा चार भुजायें थी। हे नृपश्रेष्ठ! उनके दो चरण थे। ७२ उनकी तन-कांति श्यामल-वर्ण की दिखाई देतो थी। उन्होंने चारों भुजाओं में आयुध ले रखे थे। ७३ वह वीर श्रेष्ठ बाहर सिंहासन पर बैठे थे और आगे सारंग धनुष तथा कोदंड शोभा पा रहे थे। ७४ अग्निदेव ने दूर से ही देख करके विचार किया कि यह तो भाव को ग्रहण करने वाले नारायण ही है। ७५ उन्होंने अपना रूप त्यागकर ब्राह्मण का रूप धारण किया। छाता, धोती तथा वेद की पुस्तक काँख में दबा रखी थी। उँगलियों में कुश की पैंती तथा हाथ मे ताम्रपात्र ले लिया था। अर्घ्यपात्र तथा कुशासन भी ले रखा था। ७६-७७ उनके कंधे पर नौ ताग का यज्ञोपवीत विराजमान था और हृदय

चतुर्बेद मुखरे करुछि गायन। राजार सिंहद्वाररे प्रवेश ब्राह्मण ७६
कुश मशुणिरे आसन बिप्र कला। चरण धोइ विप्र आसने बसिला ८०
श्यामबेद गायन कलेक बिप्रवर। बेद पढ़िबारे चमके नबर ८१
राजांक सिंहासन पात्रंक आसन।सामन्त ऋषि मानंक बसि वार स्थान ८२
भूमि कम्पिला प्राये कम्पुछि सर्बस्थान। स्थम्भीभूत होइला सकळ जने पुण ८३
प्रथु राजा बोइले हो आश्चम्बिता आज। भुमि किम्पा कम्पिला हेबकि प्रमाद ८४
एमन्त समयरे सिंह द्वार पाळ। पृथुराजा आगरे ओळगे सत्वर ८५
कर जोड़ि आगरे करइ जणाण। बिप्रवर गोटाए अइला काहुँ पुण ८६
चारि बेद द्वारे बसिण पढुअछि। तम्बार प्राये तार देह दिशु अछि ८७
पचारिले किछि जे न कहइ पुण। बेनि नयनरु बारि बहुअछि पुण ८८
क्रोधरे जर जर ताहार देह गोटि। सते कि हृदय तार जिब एबे फाटि ८९
शुणिण पृथुराजा मनरे बिचारिले। अग्नि देबता मो ठाकु रथरे अइले ९०
फेड़ि न कहिले से काहार आगर। साक्षात नारायण जन्म जे नारायण ९१
शुणिण बेग होइ सिंहासनु उठि। सिंह द्वारे प्रबेश होइले तड़ति ९२
देखिले बेदवर जे, पढ़इ बेदपुण।किस अर्थे आसिछ हे बेदान्ति ब्राह्मण ९३

में रुद्राक्ष की माला सुसज्जित थी। ७८ वह अपने मुख से चारों वेदों का गान करते हुये राजा के सिंह द्वार में ब्राह्मण वेश में प्रविष्ट हुये। ७९ ब्राह्मण ने कुश का आसन जमाया और उस पर पैर धोकर बैठ गया। ८० श्रेष्ठ ब्राह्मण सामवेद का गान करने लगा। वेदपाठ के कारण महल गूँज उठा। राजा का सिंहासन, सभासदों के आसन तथा सामंत और ऋषियों के बैठने के स्थानों सहित सारी की सारी भूमि कम्पित होने से सभी लोग स्तब्ध हो गये। ८१-८२-८३ राजा पृथु ने कहा कि आज बड़ा आश्चर्य है। पृथ्वी क्यों हिल रही है। क्या कोई उत्पात होने वाला है। ८४ इसी समय सिंहद्वार के रक्षक ने वेग से महाराज पृथु के समक्ष अभिवादन किया। ८५ उसने हाथ जोड़कर राजा के समक्ष विनीत भाव से निवेदन किया कि एक श्रेष्ठ ब्राह्मण कहीं से आया है और द्वार पर बैठकर चारों वेदों का पाठ कर रहा है। उसका शरीर ताँबे के समान दिखाई दे रहा है। ८६-८७ पूँछने पर वह कुछ नहीं कह रहा है। उसके दोनों नेत्रों से जल बह रहा है। ८८ उसका सम्पूर्ण शरीर क्रोध से तमतमा रहा है। लगता है जैसे सच ही उसका हृदय अभी विदीर्ण हो जायेगा। ८९ यह सुनकर महाराज पृथु ने मन में विचार किया कि अग्निदेव हमारे पास रथ से आये हैं। ९० परन्तु यह बात उन्होंने उसके सामने खोलकर नहीं कही। वह साक्षात् भगवान के अवतार थे। ९१ समाचार सुनते ही वह शीघ्र ही सिंहासन से उठकर सिंहद्वार पर पहुँच गये। ९२ उन्होंने श्रेष्ठ ब्राह्मण को वेद पाठ करते हुये देखकर कहा, हे वेदज्ञ ब्राह्मण ! आप किसलिये पधारे हैं। ९३ श्रेष्ठ ब्राह्मण ने

बेदवर बोइले शुण हे नृपति । दान मागि तोर पुरे मुहिँ आसिअछि ९४
माया नकरि सत्यरे देबु दान । देवता होइ मञ्चे जन्मिले मरे पुण ९५
चिर होइ केहि जे नरहे मर्त्यपुर । केवळ धर्मभाग हुअइ बिस्तार ९६
सत्य कले मागिबि नोहिले जिबि फेरि । काळ जुगकु कथा रहिब तुम्भरि ९७
शुणिण पृथुराजा बोइले ताकु पुण । निश्चय नेबु आम्भे कलु जे, सत्यजाण ९८
मन्त्री बोइले देव नुहइ उचित । मायारे केउँ देवता ब्राह्मण स्वरूप ९९
बळिराज मायारे पड़ि मेदिनि तेजिला । सदाशिव मायारे असुरे बर देला १००
बेदबर मायारे पड़ि हेले धन्दि । देवंकर मायारे असुरे करे बन्दी १०१
पृथुराज बोइले कर हे बिचार । मायारे केउँ लोक होइलेणि सार २
बळीकि माया कले बामन नारायण । सम्पद हरिले बिचार करि पुण ३
तार द्वारे द्वारपाळ होइण रहि छन्ति । असुर तपकरि जे, माइले त्रिजटी ४
मायारे सकळ जे, असुरे नाश गले । पार्बतीकं लीळा छाड़ि ईश्वर पळाइले ५
बेदबर संगरे असुरे कले प्रीति । माया करि हरिले कि ब्रह्मार बिभूति ६
देवताए मत्त गर्ब हुअन्ति जे पुण । असुरे गञ्जन्ति तांकु लागिण बादी जाण ७

कहा हे राजन ! सुनिये । मैं आपके नगर में दान माँगने के लिये आया हूँ । ९४ छल न करके आप सत्य ही मुझे दान दें । भले ही देवता हो वह भी मृत्यु लोक में जन्म लेने पर मृत्यु को प्राप्त होता है । ९५ मृत्युलोक में कोई भी सदा के लिये अमर होकर नहीं रहता । केवल धर्म का ही भाग रह जाता है । ९६ प्रतिज्ञा करने पर मैं माँगूँगा अन्यथा लौट जाऊँगा । आपका यश युग-युग तक रहेगा । ९७ यह सुनकर महाराज पृथु ने उससे कहा कि तुम्हें निश्चय ही दान प्राप्त होगा । यह मेरी प्रतिज्ञा है । ९८ मंत्री ने कहा हे देव ! यह उचित नहीं है । छल से यह कोई देवता ब्राह्मण के रूप में है । ९९ राजा बलि को माया में पड़ने के कारण पृथ्वी का त्याग करना पड़ा । सदाशिव शंकर को माया से ही असुरों को वरदान देना पड़ा । १०० ब्रह्मा जी माया में पड़कर उलझन में पड़ गये । माया से ही राक्षसों ने देवताओं को वन्दी बना लिया । १०१ महाराज पृथु ने कहा कि आप लोग विचार करें कि माया के कारण कौन व्यक्ति गौरवशाली हो सका है । २ भगवान बामन ने बलि से छल किया । उन्होंने विचार करके उसकी सम्पति हरण कर ली । ३ इस कारण से वह उसके द्वारपाल बनकर रह रहे हैं । राक्षसों ने तपस्या करके त्रिजटी को मारा । फिर वही माया से सारे राक्षस नष्ट हो गये । पार्वती के साथ लीला को छोड़कर भगवान शंकर भागे । ४-५ ब्रह्मा के साथ राक्षसों ने प्रेम बढ़ाया और माया करके उनके वैभव का हरण कर लिया । ६ जब देवता गर्व से उन्मत्त हो जाते हैं तो राक्षस लोग उनसे शत्रुता करके उनका अभिमान चूर-चूर कर देते

स्वर्गरु बाहारकि देवता होइ छन्ति।
गर्बरु सरिले ताहार जे जाहार स्थाने रहन्ति ८
असुर माने नाहान्ति चिरंजिबि होई। मायारे से माने जे नाशन्ति पुणिहि ९
बिरञ्चि नारायण जे अटन्ति धर्मसुत। धर्मरे पृथिवी जे, हुअइ आत जात ११०
धर्मरे आकाशरे उदय हुअइत।अमृतकु सुख पाए बिष्ठाकु न करइ हित १११
सबु ठारे तेज जे लागइ ताहार। केउँ अंग पबित्र केउँ अंग सार १२
अग्नि जे उत्तम भोग करे जाण। अमेध प्रदार्थकु भक्षइ केन्हे पुण १३
सर्ब कर्म मिथ्या अटे धर्म अटे सत। धर्मरे बासुकी जे धरे रसांगत १४
मन्त्री बोइले देब एकथा मोते कह। सप्त सागर किम्पा अधर्म अटे देह १५
पृथुराजा बोइले शुणरे चेताबीर। सहस्रे बर्ष जे, सागरे तप कर १६
तपरे त्रिपुत नोहे ताहार शरीर। तार हृदे मिळिले मारइ निकर १७
बासुदेव नाम धरि करिब जे तप। दिने तप कले बर्ष कर जाए पाप १८
शते बर्ष बेदरे तपरे निर्ज्जिता। शरीर तेजिण से हुअइ देवता १९
राजा होइ जेबे प्रजा दण्ड करइ। पक्षपात होइ जे, सभारे कहइ १२०
ताहाकु धर्म न सहिब बोलि जाण। चण्डाळ जोनिरे जन्म सेहु हुए पुण १२१
बिप्र होइ जेबे न पठन्ति बेद।किछि न जाणि दान नेले न पड़े प्रमाद २२

हैं। ७ जब देवता स्वर्ग से निकलते हैं। तब उनका गर्व टूट जाने पर फिर वह अपने-अपने स्थानों को चले जाते हैं। ८ राक्षस लोग भी अमर नहीं रहते। माया से उनका भी नाश होता है। ९ ब्रह्मा और विष्णु धर्मवंत हैं। धर्म से इस पृथ्वी का आवागमन होता है। ११० धर्म से आकाश में सूर्य उदय होता है। वह न अमृत से सुखी रहता है और न विष्ठा से घृणा करता है। १११ उसकी किरण सर्वत्र पड़ती है। भले ही कोई अंग पवित्र अथवा अपवित्र हो। १२ अग्नि उत्तम पदार्थ का भक्षण करती है। फिर अभक्ष्य पदार्थ भी ग्रहण करती है। १३ समस्त कार्य मिथ्या है। केवल धर्म ही सत्य है। धर्म से ही शेष नाग पृथ्वी को धारण करते हैं। १४ मंत्री ने कहा हे देव ! आप हमें यह बात बताइये। कि सात सागर के शरीर अधर्ममय क्यों हैं। १५ महाराज पृथु ने कहा हे वीर ! सुनो। सागर एक हजार वर्ष तप करता है। परन्तु उसका शरीर तृप्त नहीं होता। उसके हृदय में पहुँचने पर वह सबको मार देता है। १६-१७ फिर वह वासुदेव के नाम का जप करता है। एक दिन तपस्या करने से एक वर्ष का पाप नष्ट हो जाता है। १८ सौ वर्ष में वैदिक रीति से वह तपस्या का त्याग करता है। फिर शरीर का त्याग करके वह देवता बन जाता है। राजा होकर यदि वह प्रजा को तंग करता है। सभा में जो पक्षपात् की बात करता है। उसे धर्म सहन नहीं कर पाता। तब उसका जन्म चाण्डाल की योनि में होता है। १९-१२०-१२१ ब्राह्मण

देवता होइ जेबे जीवरे निर्दद्या। से देवताकु जेबे जन्तु पति माया २३
वाणिज्य करि जेबें करिब बड़ लोभ। ताहार सम्पत्तिकु हरि निअन्ति देब २४
वैश्य होइ जेबे, कृषि न करइ। मागन्ता जनकु जेबे, मुठिए न दिअइ २५
सेहि प्राणिक जे, मृत्यु हुअइ पुण। गृध्र पक्षी भक्षन्ति, ताहार मांस जाण २६
शुणिकरि पात्र मन्त्री सन्तोष होइले। ब्राह्मणंकु चाहिँण पृथिराजा बोइले २७
कि हो द्विजवर मुँ कलि सत्य पुण। नमागि तुनि किम्पा होइल ब्राह्मण २८
द्विजवर बोइले तु काळेहेँ नदेबु। प्रीति भाव करि जेबे बश्य ताकु हेबु २९
तेबे मोर मागिबार होइब किस पुण। एथिर सकाशुँ से जे बिचारुछिजाण १३०
पृथुराजा बोइले ए शरीरे जीव थिले। सत्य न लंघिबि सञ्ज देबि तो भले १३१
शुणिण अग्नि देवता बोइले बचन। नन्दन बनुकु तुम्भे दिअ हे मोते दान ३२
पृथीराजा बोइले से बने किस कार्ज्य। विप्र बोइले से बने औषधि सर्व ३३
पृथ्वीराजा बोइले औषधि किम्पा नेब। अग्नि बोइले मोर व्याधि मुक्त हेब ३४
पृथ्वीराजा बोइले कि ब्याधि हेला तोर।
अग्नि देवता बोले लुदुबुदु ब्याधिरे अचल ३५
पृथ्वीराजा बोइले कि दोष तुहि कलु। अग्नि बोइले राजा भक्षिलि पुत्र सबु ३६

होकर यदि वह वेद नहीं पढता है। कुछ न जानते हुये दान लेने पर वह विपत्ति में नहीं पड़ता। २२ देवता होकर यदि वह प्राणियों के प्रति निर्दय होता है उस देवता पर यदि यमराज की माया चलती है। व्यापार करके यदि वह लोभ करता है। तो देवता उसकी सम्पति का हरण कर लेते हैं। २३-२४ वैश्य होकर यदि वह खेती नहीं करता। भिखारी को यदि भिक्षा नहीं देता। उस प्राणी की मृत्यु हो जाती है और उसका माँस गीध पक्षी खाते हैं। २५-२६ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री संतुष्ट हो गये। तब ब्राह्मण की ओर देखकर महाराज पृथु ने कहा। हे द्विजश्रेष्ठ ! मैंने प्रतिज्ञा कर ली है। हे ब्राह्मण ! तुम याचना न करके स्तब्ध क्यों हो गये। २७-२८ ब्राह्मण बोला कि पता नहीं आप इस समय देंगे कि नहीं। जब तक आप प्यार से वश में होंगे फिर मेरा माँगना क्या ? मैं इसी कारण से विचार में पड़ गया हूँ। २९-१३० महाराज पृथु बोले कि इस शरीर में जब तक प्राण रहेंगे तब तक मैं प्रतिज्ञा का उल्लंघन किये बिना आपको दान दूंगा। १३१ यह सुनकर अग्निदेव ने कहा कि आप मुझे नन्दन वन दान में दे दीजिए। ३२ राजा पृथु ने पूंछा कि उस वन से आपको क्या कार्य है। ब्राह्मण ने कहा कि उस वन में सब प्रकार की औषधियाँ हैं। ३३ पृथुराज ने कहा कि आप औषधि किसलिये लेंगे। अग्नि ने कहा उससे हमारा रोग दूर हो जाएगा। ३४ राजा पृथु ने प्रश्न किया कि आपको कौन सा रोग लग गया है। अग्निदेव ने कहा कि मैं मन्दाग्नि (अपच) रोग से ग्रस्त हूँ। ३५ राजा ने पूंछा कि आपने क्या दोष किया ? अग्नि ने कहा कि हमने

पृथ्वीराजा बोइले तोते घृत किए देला । अग्नि बोइले बेणु राजा भोग कला ३७
घृत समुद्रक घृत आणि पुण । बार बर्ष पर्य्यन्ते मो सुखे देला जाण ३८
मोहर व्यतर्के ताहा न भक्षे आन जाण । बाक्य करि बास नारे तोष देवगण ३९
अकळित बारानिधि भक्षिलि जे मुहिँ । व्याधि घोटिला जे शरीरे मोर रहि १४०
पृथ्वीराजा बोइले सुर राजाकु न मागिलु। अग्नि बोले मागिले क्रोधरे हेले गरु १४१
धिक्कार बचन से अनेक बोइला । तेणु पिता मोहर देहरे रहिला ४२
पृथी राजा बोइले देखइ निज रूप हुअ । देखन्तु सर्बजने व्याधि केमन्ते देह ४३
शुणिण अग्नि देवता निजरूप हेला । लुदुबुदु व्याधि तार शरीरे रुद्धे परा ४४
देखिण पृथ्वी राजा जे बोइले अग्निकि । निज जान सुमर जिबाहे तहिँकि ४५
शुणिण अग्नि देवता जानकु सुमरिला ।शीतळ बिमान आसि पाशरे मिळिला ४६
से बिमानर उपरे बसिला बैशानर । शीतळ बिमान परे बिजय पृथ्वीधर ४७
शारंग धनुकरे कौमुदकी गदा । बीरबेश होइण बसिले महाराजा ४८
नन्दनबन घासे होइले प्रबेश । अग्नि देवता बोइले शुण मो सन्देश ४९
ए इन्द्र तोर संगे करिब जुद्ध पुण । बर्षा करिबे मेघे शुण हे राजन १५०
त्रिदश देवता धरि मेळि से करिब । अनेक अनर्थ तोर संगे आज हेब १५१

सारा का सारा घी खा लिया है। राजा पृथु ने कहा कि आपको घृत किसने दिया ? अग्नि ने कहा कि राजा बेणु ने मुझे भोग दिया था। उन्होंने घृत समुद्र से घी लाकर बारह वर्ष पर्यन्त मुझे सुख प्रदान किया। ३६-३७-३८ मुझे छोड़कर किसी अन्य ने उसे नहीं खाया। देवगण तो बात करते हुए वासना से तृप्त हो जाते हैं। ३९ मैंने अथाह सागर का भक्षण कर डाला जिससे मेरा शरीर रोगग्रस्त हो गया। राजा पृथु ने कहा कि आपने देवराज से क्यों नहीं माँगा ? अग्निदेव ने कहा कि माँगने पर वह बहुत क्रुद्ध हो गए। १४०-१४१ उन्होंने धिक्कारते हुए बहुत कुछ कहा। अस्तु हमारे शरीर में रोग रह गया। ४२ राजा पृथु ने कहा कि आप अपना रूप धारण करें मैं उसे देखूंगा। सभी लोग देखें कि आपके शरीर में कैसा रोग है। ४३ यह सुनकर अग्निदेव ने निज स्वरूप धारण किया। उनका शरीर मंदाग्नि (अपच) से व्याप्त था। ४४ यह देखकर महाराज पृथु ने अग्निदेव से कहा कि आप अपने यान का स्मरण करें। हम वहीं चलेंगे। ४५ यह सुनकर अग्नि देवता ने अपने यान का स्मरण किया। तभी शीतल विमान उनके पास आ पहुँचा। ४६ अग्निदेव उस विमान पर बैठ गये। महाराज पृथु भी उस पर चढ़ गये। ४७ महाराज हाथों में सारंग धनुष तथा कौमुदी गदा लेकर वीर वेश में सजे हुये बैठे थे। ४८ नन्दनवन में प्रविष्ट होने पर अग्नि देवता ने राजा को अपना सन्देश देते हुये कहा कि यह इन्द्र तुम्हारे साथ युद्ध करेगा। हे राजन ! सुनो। (उसके) मेघ वर्षा करेंगे। ४९-१५० वह समस्त देवताओं को एकत्र करके आज तुम्हारे साथ नाना प्रकार के व्यवधान

पृथ्वीराजा बोइले किम्पाकर तुम्भे चिन्ता ।
द्वन्द कले इन्द्र संगे भांगिवि तार माता ५२
अग्नि देवता बोइले तु धर धनुशर ।अग्निशर बिन्धिले मुँ करिबि आहार ५३
शुणिण पृथ्वीराजा सारंग धनुधरि ।अग्निशर बसाइण बिन्धिले बेग करि ५४
शरर संगरे जे अग्नि चळिगला । नन्दन बने जाइण प्रबेश होइला ५५
जिह्वाकु बुलाइण करइ आहार । मिळिलाक हुताशन तेज महाघोर ५६
देखिण गन्धर्ब खर धाइँलेक खरे ।बोइले अग्नि देवता भक्षु तु किम्पा बळे ५७
बैश्वानर बोइले मोते पृथ्वी राजा देला। बळथिले तार संगे कळिकर परा ५८
शुणिण गन्धर्ब गण धाइँलेक पुण । छेल चक्रकुन्त भालि धरिण बेग पुण ५९
कुहुड़ि प्राय़े बरषा नाराच कले जाइ ।कोन्त भालि छेल चक्र मारन्ति तुहाइ १६०
देखिण पृथ्वीराजा सारंग धनु शर । बैष्णव धनुकु धरिले राजा भिड़ि १६१
दुइ धनुरे त्रोण चढ़ाइले बेग । पूराइण शर बिन्धिले पृथ्वीराज ६२
छेल चक्र कोन्त भालि छेदि पकाइले । नाराच धनु झड़ि पडिलाक तळे ६३
देखिण गन्धर्व जे जाइण घेरिले । पुण जुद्ध कले रहिण आगरे ६४
मारन्ति दुर्भार छेल चक्र जे निर्भर । बिन्धन्ति नाराच जे कोटि कोटिशर ६५

उत्पन्न करेगा । १५१ राजा पृथु बोले कि आप चिन्ता क्यों कर रहे हो। इन्द्र के साथ युद्ध करने पर उसका अभिमान खण्डित हो जायेगा । अग्नि देवता बोले कि तुम धनुष बाण धारण करो। अग्नि बाण मारने पर मैं भोजन प्रारम्भ करूँगा । ५२-५३ यह सुनकर राजा पृथु ने सारंग धनुष पर शीघ्र ही अग्नि बाण चढ़ाकर छोड़ दिया । ५४ बाण के साथ अग्नि चल पड़ी और नन्दन वन में जा पहुँची । ५५ वह जीभ लपलपा कर भोजन कर रही थी। तभी हुताशन का महान तेज उसमें मिल गया । ५६ यह देखकर पराक्रमी गन्धर्व प्रचंड होकर दौड़ कर आये और अग्निदेव से कहने लगे कि तुम बलपूर्वक क्यों भक्षण कर रहे हो । ५७ अग्निदेव बोले कि महाराज पृथु ने यह हमें दिया है। यदि शक्ति हो तो उनके साथ युद्ध करो । ५८ यह सुनकर गन्धर्वो के समूह दौड़ पड़े। उन्होंने शीघ्रता से चक्र भाले कुन्त तथा सेल धारण कर लिये । ५९ वह कोहरे के समान बाणों की वर्षा करने लगे और वह घात लगाकर भाला, बरछा, बल्लम, चक्र तथा धनुष से प्रहार करने लगे । १६० यह देखकर राजा पृथु ने घात लगाकर सारंग तथा विष्णु का धनुष दृढ़ता से उठा लिया और उन्होने दोनों धनुषों पर प्रत्यंचा चढ़ाकर शीघ्र ही तरकश से बाण निकालकर सन्धान कर लिया । १६१-६२ उन्होने सेल चक्र कुन्त तथा भाले काट गिराये जो धनुष से छोड़े हुये बाणों से पृथ्वी पर गिर गये । ६३ यह देखकर गन्धर्वो ने उन्हें जाकर घेर लिया और उनके आगे डट कर युद्ध करने लगे । ६४ वह निरन्तर घोर सेल तथा चक्र को चला रहे थे और करोड़-करोड़बाण छोड़ रहे थे । ६५ जैसे श्रावण के महीने में वर्षा होती है। उसी प्रकार

श्रावण मासरे बर्षा जेन्हे करि। देखिण पृथ्वीराजा छेदइ बेग करि ६६
तेणु दाबानळ भक्षइ घन घन। काहारि कुहिँ उप्रोध न करिण मन ६७
अनेक समर गन्धर्वगण कले। केबे हेँ पृथ्वीराजाकु जिणि न पारिले ६८
दुइ दिन समरे होइण आसकत। से बनरु पळाइले घेनि पिता मात ६९
अन्य स्थाने जाइण सकळ ठुळ हेले। पृथ्वीराजा शररे रहि न पारिले १७०
सेठारे गन्धर्व गण धाइँगले बेगे। सुधर्मा सभारे प्रबेश हेले बेगे १७१
देखिले त्रिदश देवता अछन्ति सेठारे। सभा करिण बसि छन्ति निरन्तरे ७२
गन्धर्वदेव बोइले शुणिजा देवराज। नन्दन बनकु अग्नि करिछि दहिज ७३
पृथ्वीराजा ताहांकु देलाक हे बन। तार बळे दहिर्ज्य करे सेहु पुण ७४
अनेक समर आरम्भे कलु जे जाइ प्रभु। पृथ्वीराजाकु जिणि न पारु जे सबु ७५
अनेक समर कलेक सेहु राजा। बोइला ए बनरु पळाइ एबे जा जा ७६
नोहिले जीबन घेनिबि तुम्भर। एते बोलि गर्ज्जन कला महाबीर ७७
बोइला तुम्भर राजार आगे कह। शुणिण समस्ते पळाउँ घेनि देह ७८
शुणिण सुर राजा मनरे क्रोध हेला। चारि मेघकु डाकिण बेगे आज्ञा देला ७९
बोइला मूषळ धारा पराए बरषिब। बज्र सूची मारि पृथु राजाकु बिनाशिब १८०

आते हुये बाणों तथा अस्त्र शस्त्रों को देखकर महाराज पृथु ने वेग से उन्हें नष्ट कर दिया। ६६ उस समय दावानल प्रबल वेग से मन में किसी का भी अनुरोध न मानकर सब आत्मसात् कर रहा था। ६७ गन्धर्वो के दल ने नाना प्रकार का युद्ध किया परन्तु फिर भी वह राजा पृथु को जीत नहीं पाये। ६८ गन्धर्व लोग दो दिन तक युद्ध करके असक्त हो गये और अपने पिता माता को लेकर उस वन से भाग गये। ६९ वह दूसरे स्थान पर जाकर एकत्रित हुये। वह महाराज पृथु के बाणों के कारण वहाँ ठहर नही सके। १७० फिर वहाँ से गन्धर्व लोग भागकर वेग से इन्द्र की सुधर्मा सभा में जा पहुँचे। १७१ उन्होंने वहाँ समस्त देवताओं को देखा जो लगातार वहाँ सभा करके बैठे थे। ७२ गन्धर्वो ने कहा-हे देवराज ! सुनिये। अग्नि नन्दन वन को भस्म कर रही है। ७३ राजा पृथु ने उसे वह वन प्रदान किया है। उनके बल के कारण वह उसे जला रही है। ७४ हे प्रभु ! हमने वहाँ जाकर वहुत युद्ध किया। परन्तु सब लोग मिलकर भी राजा पृथु को जीत नही सके। ७५ उस राजा ने भी नाना प्रकार का युद्ध करते हुये हम लोगों को वह वन छोड़कर भाग जाने को कहा। ७६ उस महान पराक्रमी राजा ने गर्जन करते हुये हम लोगों को चेतावनी दी कि तुम लोग यहाँ से भाग जाओ अन्यथा मै तुम्हारे प्राण ले लूँगा। वह फिर वोले कि तुम जाकर अपने राजा से निवेदन करो। हम सब लोग यह सुनकर अपनी जान बचाकर भाग आये है। ७७-७८ यह सुनकर देवराज के मन में क्रोध उत्पन्न हो गया। उसने चारों मेघों को बुलाकर मूसलाधार वर्षा करके

शुणिण मेघमाळ बेगे चळिगले । घोर जळ बरषिण गर्जन नाद कले १८१
देखिण पृथुराजा सारंग धनुधरि । काळपाश बसाइ बिन्धिले बेगकरि ८२
सकळ मेघमाळ बान्धिला जत्न करि । देवतामाने सबु पळाइले छाड़ि ८३
सुर देवता आगरे जाइण कहिले ।चारि मेघकु बान्धि नेला बोलिण बोइले ८४
शुणिण सुरराजा सकळ देव घेनि । बाहार जान चड़ि बाहार हेले पुणि ८५
नउसागर देवता घेनिण धनुशर ।काहार बळरे घोर बन दहुछु बैशानर ८६
बैशानर बोइले शुणरे अज्ञान । भरषा न पाइले किरे दहन्ति एबन ८७
पृथीराजा मोते जे देलाक दानकरि । बळ थिले माररे जाइण ताकु घेरि ८८
शुणिण सुरराजा बेगे चळिगला । पृथी राजा आगरे प्रबेश जाइ हेला ८९
बोइला मान वारे एड़े जे गर्ब तोर । मोर नन्दन बने तोर कि अधिकार १९०
आपणा जीवन कि समर्थ पण तोर । केड़े गारिमा तोररे मनुष्य शरीर १९१
पृथीराजा बोइले कहिले किस हेव । नन्दन बन जेबे रखिबु सुरदेव ९२
तोहर शचिकि जेबे बिधवा करि पारि । तेबे से मोर नाम जगते बिस्तारि ९३
जेते देवता तोर संगते छन्ति पुण । समस्ते सज्जिवनी नबरे आज जाण ९४

तथा वज्रपात करके राजा पृथु को विनष्ट करने की आज्ञा दी । ७९-१८० यह सुनकर मेघों का दल शीघ्रता से चल पड़ा तथा उन्होंने घनघोर गर्जन करते हुये जल की वर्षा की । १८१ यह देखकर राजा पृथु ने सारंग धनुष लेकर शीघ्रतापूर्वक उस पर कालपाश चढ़ाकर छोड़ दिया । ८२ उसने सभी मेघों को यत्नपूर्वक बाँध लिया । देवता लोग सब छोड़कर भाग गये । ८३ उन्होंने जाकर देवराज के समक्ष कहा कि उन्होंने चारों मेघों को बाँध लिया है । ८४ यह सुनकर देवराज इन्द्र समस्त देवताओं को साथ लेकर बाहर रथ पर बैठकर निकल पड़े । ८५ सभी देवताओं को धनुष-बाण के साथ लिये हुए उसने कहा, "अरे वैश्वानर ! किसके बल से तुम इस घोर वन को जला रहे हो ?" अग्निदेव ने कहा, "अरे अज्ञानी ! सुनो । प्रश्रय न मिलने से कौन इस वन को जलाता । ८६-८७ राजा पृथु ने इसे मुझे दान दिया है । शक्ति होने के कारण जाकर उसे घेरकर मार डालो । ८८ यह सुनकर देवराज चल दिये और राजा पृथु के पास जा पहुँचे । ८९ उन्होंने कहा "अरे मानव ! तेरा इतना बड़ा गर्व है । मेरे नन्दनवन पर तेरा क्या अधिकार है ? । १९० क्या अपने जीवन पर तुम्हें भरोसा है ? तुझे अपने मानव शरीर पर कितना घमण्ड है । १९१ राजा पृथु ने कहा कि कहने से क्या होगा ? । हे सुरराज ! जब मैं नन्दनवन पर अधिकार कर लूंगा जब तुम्हारी, शचीदेवी को विधवा बना दूंगा, तब मेरा नाम संसार में विख्यात होगा । ९२-९३ तुम्हारे साथ जितने भी देवतागण हैं, वह आज निश्चित रूप से यमलोक को जाएंगे । ऐसा तुम जान लो । ९४ स्वर्ग

आनदेवता आन राजा स्वर्गपुरे हेब । तेबे तु जाणिबु मानव राजा भाव ९५
शुणिण सुरराजा क्रोधरे जर्ज्जर । कोटिए बज्र सूची माइला बेगर ९६
कोटि कोटि चंडचडि तहिँपरे मारि।नब कोटि ब्रह्मशर बिन्धइ तन घाइ करि ९७
स्वर्गपुर गोटि जे तक्षणे हेला छाइ । देखिण अनन्त शर पृथराजा पेषइ ९८
सकळ शर जाक पकाइला ध्वंसि । देखिण सुर गणे बेढिले ताकु आसि ९९
माइले अनेक शर हेला जे अदृश्य । पृथुराजा भेदिले जे सुदर्शन चक्र २००
से चक्र सबु शर कले निबारण । घन घन करिण बिन्धन्ति देवगण २०१
एमन्ते सातदिन अनेक जुद्ध कले । के बेहेँ पृथीराजाकु जिणि न पारिले २
देखिण पृथीराजा हेले क्रोधमन । मोहना शर काढिण बान्धिले बहन ३
सकळ देवतांकु मोहकले पुण । नउसागर देवता मोहरे लोटिण ४
अचेता होइण जे समस्ते शोइले । नागफासे बान्धिला ऐरावतकु बळे ५
चारि मेघंक संगरे चउदन्त रहि । इन्द्रकु मोह शरे अचेत कराइ ६
चौराशी जुण जे नन्दन बन गोटि । बैशानर भक्षइ होइण अचिन्तटि ७
तिनिदिन पर्ज्यन्त पडि रहिले जे देब । बारदिन पर्ज्यन्त भक्षिला अग्नि देब ८

लोक में दूसरे देवता तथा दूसरा इन्द्र होगा। तब मानव राजा का तुझे पता चलेगा। ९५ यह सुनकर देवराज इन्द्र ने क्रोध से तमतमा कर एक करोड़ बज्र बाण शीघ्रतापूर्वक मारे। उन्होंने करोड़ों बज्रपात से उस पर प्रहार किया तथा उनके शरीर को लक्ष्य करके नौ करोड़ ब्रह्म-बाण छोड़े। ९६-९७ सम्पूर्ण स्वर्गलोक उसी क्षण बाणों से आच्छादित हो गया। यह देखकर राजा पृथु ने अनन्त बाण छोड़े। ९८ उसने (पृथु ने) समस्त बाणों को नष्ट करके गिरा दिया। यह देखकर समस्त देवताओं ने आकर उसे घेर लिया। ९९ उनके द्वारा मारे गए अनेक बाणों से वह (राजा) दिखाई नहीं पड़ रहा था। तब महाराज पृथु ने सुदर्शन चक्र छोड़ दिया। २०० उस चक्र ने सभी बाणों को साफ कर दिया। देवगण घनघोर बाणों की वर्षा कर रहे थे। इस प्रकार सात दिनों तक घमासान युद्ध हुआ। परन्तु वह राजा पृथु को जीत नहीं सके। २०१-२ यह देखकर राजा पृथु का मन कुपित हो गया। तब उन्होंने शीघ्र ही मोहन बाण निकालकर उससे प्रहार किया। ३ उन्होंने समस्त देवताओं को मोहित कर दिया। नौ सागर (संख्या परिमाण) देवगण मूर्च्छित होकर लोट गए। ४ सबके सब चेतनाशून्य हुए पड़े थे। फिर राजा ने बलपूर्वक ऐरावत को नागपाश से बाँध दिया। ५ चारों मेघों के साथ चार दाँतों वाला ऐरावत पड़ा था। फिर उन्होंने मोहनशर से इन्द्र को अचेत कर दिया। ६ निश्चिन्त होकर अग्निदेव चौरासी योजन विस्तीर्ण नन्दन वन का भक्षण कर रहे थे। ७ देवगण तीन दिन पर्यन्त पड़े रहे और अग्निदेव बारह

ब्याधि शेष हेबारु तेज जे प्रकाश ।चौराशी जोजन जेहु कलाक सेहु ध्वंस ९
ब्याधिर मुक्त जे होइले बैशानर। बोइला साधु अटुरे मानव नृपवर २१०
बासुदेवकु बोइलेकि मोर कष्ट फेड़ि। एते बोलि बेशानरकर-पत्र जोड़ि २११
चरणे लोटि पडि शोइला बैशानर। बोइला शरण मोते रख हे चक्रधर १२
हेलि मुहिँ मुक्त जे तोहर प्रसादे। वैशानर जणाइला पृथुराजा आगे १३
पृथीराजा बोइलाकि मने हेला तोष। नन्दनबन हेउ पूर्बर सदृश १४
अग्नि देवता बोइले तुम्भर प्रसादरे।

एकस्तर गण्डा जुग ब्याधि खण्डिलि एठारे १५
शुणिण पृथीराजा जे परम तोष होइ। जीवन्यास शर जे धनुरे जोचइ १६
चारि बेद सुमरणा कलेक देबराज। पृथ्वी सर्जिबार जेउँ से मूळ बीज १७
स्थावर जन्म हेबार नाम बार आदि। औषधि नाम करि जेते कले ब्याधि १८
समस्तंकु सुमरणा कलेक नारायण। बोइले सर्बजीव पाइले तक्षण १९
पूर्बर प्राये तुम्भे पल्लवित हुअ। फुल फळ घेनिण तुम्भे आनन्दरे रह २२०
जीवकु जीव सिना देइण अछि मुहिँ। तुम्भंकु जीवदेलि बञ्च हो बेग होइ २२१
एते बोलि सञ्जिवनी मन्त्रकु पढ़िले। जीवन्यास मंत्र बेगे छाड़ि गले २२

दिनों तक भोजन करते रहे। ८ रोग समाप्त होते ही उनका तेज प्रचण्ड हो गया। उन्होंने चौरासी योजन का (नन्दन वन) विध्वंस कर डाला। ९ वैश्वानर अग्निदेव व्याधि से मुक्त हो गए। तब उन्होंने कहा, "हे मानव नृप श्रेष्ठ ! तुम धन्य हो। २१० हे वासुदेव ! मेरे दुःख दूर हो गये।" इतना कह कर अग्निदेव उनके चरणों में लोट गये तथा कहने लगे, हे चक्रधारी ! आप मुझे शरण में ग्रहण कीजिये। २११-१२ मै आपके प्रसाद से मुक्त हो गया। इस प्रकार अग्निदेव ने राजा पृथु के समक्ष निवेदन किया। १३ राजा पृथु ने मन में प्रसन्न होकर कहा कि नन्दन वन फिर पहले जैसा हो जाये। १४ अग्नि देव ने कहा कि मैने आपकी कृपा से दो सौ चौरासी युग की व्याधि यहाँ नष्ट कर दी। १५ यह सुनकर राजा पृथु बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने अपने धनुष पर जीव का न्यास करने वाला वाण चढ़ा लिया। १६ देवराज ने चार वेदों का स्मरण किया जो पृथ्वी के सृजन के मूलवीज मंत्र थे। १७ अचल को उत्पन्न करने के लिये नाम दिन आदि, कितने रोगों की औषधियों के नाम रखकर भगवान ने सबका स्मरण किया। इतना कहने पर उसी समय सबमें प्राणों का संचार हो गया। १८-१९ उन्होंने कहा कि पहले की भाँति तुम पल्लवित हो जाओ तथा फलफूल धारण करके सानन्द स्थिर हो जाओ। २२० मैंने जीवों में प्राणों का संचार किया है। अब तुम्हें भी जीवन-दान दे रहा हूँ। शीघ्र ही तुम जाकर सबके जीवन की रक्षा करो। २२१ इस प्रकार कहते हुए उन्होंने संजीवनी मंत्र पढ़ा और फिर वेग से जीवन्यास मंत्र छोड़ दिया। २२ अन्त में

शेषर सर्ब बृक्ष देहरे छुइँ गले। तहुँ परे बसन्त शरकु पेषिले २३
पूर्बर प्राय़ेक बन पल्लविला आसि। पत्र कअँलिण से जे सुन्दर पुष्प दिशि २४
फळ पुष्परे पूण मूळकु हेला गुरु। स्वर्गपुर जाककु बासना कला दूरु २५
शतु शते गुण जे पल्लविला बन। गोटिए बृद्ध नाहिँ समस्ते नूतन २६
शीतळ होइण बन कोमळ आनन्द। जाहाकु नाराय़ण कराए मन्त्र भेद २७
जेउँ नाराय़ण कहिले सृष्टि जात होइ। बिचारिले प्रळय़ करइ पुण सेहि २८
जार हृदय़रू देवता जात जाण। जहुँ सञ्चरिला सकळ जीव पुण २९
ताहाकु आश्चम्बित अटे कि से कथा। गर्ब न सहइ जे सृष्टिर करता २३०
बिचारिले संहारणे कले एहि क्षणि। निज रूप देइण सञ्चार कले पुण २३१
पृथ्वीराजा बिचारिले देवंक गर्ब गला। मारिब बोलि मोते बिचार होइथिला ३२
एबे त जाणिलि मुँ जे ताहांक बड़पण। कारण करिबा जे केहि नाहिँ पुण ३३
एते बोलि जीवन्यास शरकु बेगे रुन्धि। सकळ देवता जे उठिले कोह तेजि ३४
नौ सागर देवता पाइले जीव जेणु। पळाइले समस्ते न रहिले तेणु ३५
देवता जिबारु जे बिचारि देवराज। गन्धर्ब गणकु जे जिआँइ देले बेग ३६
उठिण गन्धर्ब जे नन्दन बने पशि। जे जाहा स्थान आबोरि रहिले सेहि पाञ्चि ३७

उन्होंने सब वृक्षों के अवयवों को स्पर्श किया तथा इसके उपरान्त उन्होंने बसन्त बाण छोड़ा। २३ वह वन पूर्व जैसा पल्लवित हो गया। उसमें कोमल किसलय तथा सुन्दर पुष्प दिखाई देने लगे। २४ फल तथा पुष्पों से उनकी जड़ें बलिष्ठ हो गईं। सम्पूर्ण स्वर्गलोक दूर से ही सुगन्ध देने लगा। २५ सकड़ों योजन में वह वन पल्लवित हो गया। उसमें कोई भी पुराना नहीं था। सबके सब नवीन थे। २६ वन ठण्डा तथा आनन्ददायक था। भगवान के मंत्र से जिसकी रचना हुई थी। २७ जिन भगवान के संकल्प से सृष्टि उत्पन्न होती है विचार करने पर वह प्रलय भी कर देता है। जिसके हृदय से देवता उत्पन्न हुए हैं, जिसने समस्त जीवों में प्राणों का संचार किया है। २८-२९ उसके लिये इस बात का क्या आश्चर्य ? वह सृष्टिकर्ता गर्व को सहन नहीं करता है। २३० सोचने पर उसने उसी क्षण उनका नाश किया था और फिर अपना रूप देकर उन्हें संचारित कर दिया। २३१ राजा पृथु ने विचार किया कि देवताओं का घमण्ड टूट गया है। उनका विचार हमें मारने का हो गया था। ३२ अब मैं उनका बड़प्पन समझ गया। अब उनका उद्धार करने के लिये कोई नहीं है। ३३ इतना कहकर उन्होंने शीघ्र ही उन्हें जीवन्यास बाण से रूँध दिया। सभी देवता क्रोध त्यागकर उठ बैठे। ३४ जब समस्त देवताओं को जीवन मिल गया तो सभी भाग गए। कोई भी वहाँ नहीं टिका। ३५ देवताओं के चले जाने पर देवाधि देव ने विचार करके गन्धर्व लोगों को शीघ्र ही जीवित कर दिया। ३६ गन्धर्व-गण उठकर नन्दन वन में घुसकर, जिसका जो स्थान था

चारि मेघ दिगपाळंकु बन्धनुं फेड़ि देले । पळाइले मेघमान पृथ्वीराजा डरे ३८
नाग फाश वन्धरु फेड़िले ऐरावत । मुक्त होइ ऐरावत उठिले त्वरित ३९
उत्तर पारु शरे चन्दन बन देखि । दक्षिण पारु शकु चाहिँला नाग त्राशि २४०
पृथ्वी राजा अग्नि नेत्ररे देखिला । पूर्ब दिगकु पुण हस्ति दृष्टि देला २४१
देखिला देवगण नाहान्ति केहि पुण ।
वाहान माने नाहान्ति नाहिँ ध्वज चिह्न ४२
पश्चिम दिगकु चाहिँला निरोळे । गन्धर्बगणे गहळ बनर भितरे ४३
देखिण ऐरावत हृष्टमन हेला । सुर राजा पड़िबार नेत्ररे देखिला ४४
देखिला इन्द्रंक ठारे क्रोध पृथ्वी वीर ।
मुं कहिले मोले पुण मारिबे निश्चे बीर ४५
एमन्त बिचारि नाग सेठारु चळिगला । शचींकि आगरे बारता पुण देला ४६
तो स्वामींकि नाश कला पृथु महीपाळ । पड़ि अछि धरणीरे होइण अचळ ४७
शुणि करि शची देवी आरते चळे पुण । हान्दोळारे चढ़ि जाइ मिळिला पाशेण ४८
नन्दनबन निकटे प्रबेश होइला । शयन करिछि स्वामी नेत्ररे देखिला ४९
दक्षिण दिगकु देवी चाहिँला बेग करि । पृथ्वी राजा बसिछि शीतळ रथ घेरि २५०

उसमें सोच विचार कर अपने-अपने स्थानों में रह गए । ३७ फिर उन्होंने चारों मेघों तथा दिग्पालों के बन्धन खोल दिये । राजा पृथु के डर से मेघ दल भाग गया । ३८ तब उन्होंने ऐरावत को नाग-पाश के बन्धन से मुक्त कर दिया । मुक्त होने पर वह तुरन्त उठ गया । ३९ उत्तर की ओर चन्दन वन को देखकर ऐरावत ने भयभीत होकर दक्षिण की ओर दृष्टि डाली । २४० तो उसे राजा पृथु के अग्नि तुल्य नेत्र दिखे । फिर उसने पूर्व दिशा की ओर देखा तो उसे कोई भी देवगण नहीं दिखाई दिये । न तो वहाँ वाहन थे और न ध्वज के चिह्न ही थे । २४१-४२ उसने ध्यान से पश्चिम दिशा की ओर देखा तो उसे वन के भीतर गन्धर्वों की चहल-पहल दिखाई दी । ४३ यह देखकर ऐरावत का मन प्रसन्न हो गया । फिर उसने अपने नेत्रों से देवराज इन्द्र को पड़े हुए देखा । ४४ उसने इन्द्र के समीप ही क्रुद्ध पराक्रमी पृथु को देखा । मेरे रहने पर यह पराक्रमी मुझे निश्चय ही मार देगा, इस प्रकार विचार करके वह हाथी वहाँ से चला गया । उसने जाकर शची देवी के समक्ष यह सूचना दी । ४५-४६ महाराज पृथु ने तुम्हारे स्वामी का नाश कर दिया है । वह निश्चल होकर पृथ्वी पर पड़े हैं । ४७ यह सुनकर देवी शची दुखी होकर चल दी । वह पीनस में बैठकर उनके पास पहुँची । ४८ वह नन्दन वन के निकट प्रविष्ट हुई । उसने स्वामी को शयन करते हुए अपने नेत्रों से देखा । ४९ उस देवी ने शीघ्र ही दक्षिण की ओर दृष्टि डाली । उसने राजा पृथु को शीतल रथ पर बैठे हुए

तार पाशे बैशानर अछइ केवळ। बेनि धनु धरि अछि बेणुर कुमर २५१
कौमुदी गदा चक्र अछि ता कररे। दुइ गोटि शिर अछि ता कन्धरे ५२
निळेन्दी जळ वर्ण दिशइ चक्षु पुण। कोमळ शरीर गोटि रसाण निर्बाण ५३
सुरंग बर्ण तार अधरटि दिशि। शामळ बर्ण जुड़ा दुइ गोटि अछि ५४
किरीटी कुण्डळ काञ्चन शोभाबन। सुवळित सुबाहु दिशइ शोभन ५५
उलट जानु तार रम्भा बृक्ष निन्दि। बेनि चरणरे चम्पाकड़ि बन्दि ५६
देखिण शची देबी पचारे नागरे। बासुदेव बिजे कले आसिण एठारे ५७
ऐरावत बोइला मुं न जाणइँ पुण। बेणु राजार पुत्र अटइ प्रमाण ५८
शची पचारिला एका राजा कि जुद्ध कला।
नाग बोइला सकळ देवता एथिमेळा ५९
शची पचारिला गोटिए एथि नाहिँ। नाग बोइला ए राजा सबुंकु मारइ २६०
शची बोइले तांकर नाहिँ मृत्यु शव। केवळ पडि अछन्ति सुर देव २६१
नाग बोइला माए समस्ते जीव पाइ। ड़रिण ए राजाकु पळाइ गले सेहि ६२
शची देबी बोइले किम्पाइँ गोळ हेला।
राजा किम्पा शत्रु हेले देवे परा भला ६३
ऐरावत बोइले नन्दन बन पोड़ि। व्याधिरे बैशानर छाड़ु थिले रड़ि ६४

देखा। उनके निकट केवल अग्नि देव थे। वेणुनन्दन दोनों धनुषों को लिये हुए थे। उनके हाथों में कौमोदी गदा तथा चक्र थे। उनके कन्धे पर दो शिर थे। २५०-२५१-५२ उनकी आँखे नीले पानी के वर्ण की तथा शरीर कोमल गदराया एवं निर्वाणदायक अर्थात् मुक्ति देकर संतुष्टि करने वाला था। ५३ उनके अधर लाल रंग के दिखाई दे रहे थे। उनके श्यामल वर्ण के दो जूड़े थे। ५४ सोने के किरीट-कुन्डल शोभायमान थे। पुष्ट भुजदण्ड शोभित हो रहे थे। ५५ उनकी जाँघे उल्टे कदली वृक्ष को निन्दित करनेवाली थीं। दोनों चरणों में चम्पाकली शोभित थी। ५६ शची देवी ने देखकर ऐरावत से पूछा, क्या नारायण यहाँ आकर विराजमान हो गये है। ५७ ऐरावत ने कहा मुझे ज्ञात नहीं। किन्तु यह प्रमाणिक रूप से महाराज वेणु का पुत्र है। ५८ शची ने पूँछा, क्या अकेले ही राजा ने युद्ध किया? हाथी बोला समस्त देवगण यहाँ एकत्रित थे। ५९ शची ने पूँछा कि यहाँ तो एक भी नही है। हाथी ने उत्तर दिया कि इस राजा ने सबको मार दिया है। २६० शची बोली फिर उनके मृत शरीर क्यों नहीं है? केवल सुरराज इन्द्र पड़े हुये हैं। २६१ हाथी ने कहा हे माता! सभी लोगों को जीवनदान मिलने से इस राजा से डरकर सभी लोग भाग गये। ६२ शची ने पूँछा कि यह कलह किस कारण से हुयी और राजा किसलिये देवताओं के शत्रु बन गये। ६३ ऐरावत ने कहा कि अग्नि देव रोग से चीखते

तुम्भ स्वामीकि शते बर्ष परिज्यन्ते । मागिला औषध न देला सुर नाथे ६५
मान करि अग्नि पुथु राजा पाशे गला । देखिण बेणु राजा नन्दन दया कला ६६
नन्दन बनकु ताकु दान करि देला । औषध भक्षन्ते बैशानर भल हेला ६७
देबी बोइले नन्दन बन नुहइत भष्म । किम्पा कळि कले सुर राजा तांक पाश ६८
ऐरावत बोइला होइला बिडम्बण । नन्दन बन गोटि चउराशि जुण ६९
समस्तंकु भक्षिण अनळ कला भस्म । तेणु से बैशानर कन्दर्प सदृश्य २७०
ब्याधि भल हेबारु अग्नि होइले सन्तोष । पृथुराजा भेदिला जीव न्यास सत्र २७१
गतुं शते गुणे एबे हेला पल्लवित । फळ फुल मण्डिण तु खोज जाइ देश ७२
समस्ते जीव पाइ पळाए निज स्थान । ए बनरे गन्धर्व अछन्ति देख पुण ७३
शची देबी बोइला मोर स्वामी दोषी । भाइंकि न पोषिण पररे हुए ह्रासि ७४
बैशानर अटन्ति तांकर निज भाइ । भाइरत हिंसा भाग देवारत होइ ७५
जेउँ बासुदेव स्वर्गरे इन्द्र कला । सेहि नारायण ताकु अग्नि रूप देला ७६
जेउँ बासुदेव दश दिगपाळ करि । नवग्रह अष्ट वसु सकळ तिआरि ७७
त्रिदश देवतांकु भिन्न भिन्न कला । नउ सागर देवतांकु स्वर्गरे रखिला ७८
सेथि उपरे जे इन्द्रकु राजा कला । इन्द्र पण पाइ देबे तामस होइला ७९

हुये नन्दन वन को जला रहे थे । ६४ तुम्हारे पति से उन्होंने सौ वर्ष पर्यन्त औषधि माँगी । परन्तु देवेन्द्र ने उन्हें नहीं दिया । ६५ हठपूर्वक अग्नि देव महाराज पृथु के पास गये । उन्हें देखकर राजा वेणु के पुत्र ने उन पर दया की । ६६ उन्होंने अग्नि देव को नन्दन वन दान कर दिया । औषधि खाने पर अग्नि देव आरोग्य हो गये । ६७ देवी ने कहा कि यह नन्दनवन तो भस्म नहीं हुआ । फिर देवराज इन्द्र ने उनके साथ युद्ध क्यों किया । ६८ ऐरावत बोला यह बड़ा रहस्य है कि चौरासी योजन के विस्तृत सम्पूर्ण नन्दन कानन को अग्नि देव ने भक्षण करके भस्म कर डाला । इसी कारण अग्नि देव कामदेव के समान बन गये । ६९-२७० रोग समाप्त होने पर अग्नि देव संतुष्ट हो गये । फिर राजा पृथु ने हजारों को जीवित किया । २७१ पहले से सौ गुना अधिक यह पल्लवित हुये हैं । तुम जाकर देखो । समस्त प्रदेश फल और फूलों से सुशोभित है । ७२ सब जीवन पाकर अपने स्थान को भाग गये । देखो इस वन में गन्धर्व है । ७३ देवी शची ने कहा कि मेरे स्वामी अपराधी हैं । अपने भाई को न देखकर दूसरे के द्वारा अपमान मिला । ७४ अग्नि देव इनके सगे भाई हैं । भाई के प्रति उन्होंने ईर्ष्या और द्वेष का भाव दिखाया है । ७५ जिस भगवान ने उन्हें स्वर्ग का इन्द्र बनाया उसी भगवान ने उसे अग्नि का रूप दिया । ७६ जिस भगवान ने दस दिगपाल, नव गृह, अष्ट वसु सब बनाये । जिन्होंने समस्त देवताओं को पृथक-पृथक बनाकर समस्त देवगणों को स्वर्ग में स्थापित किया । ७७-७८ उन सबके ऊपर जिसने इन्द्र को राजा बनाया । इन्द्र का पद

अजोग्य तनुरे सिना ताकु लेखा करि । एहाकु मारि बार त उचित्त ताहारि २८०
प्रजा नथिले कि राजा रहिबटि एका । परजार धर्म सिना अटे ताकु साखा २८१
प्रजांकर घर बहन ए राजा दण्डि । राजार जेते धन चोर खान्ति भण्डि ८२
तिनिपुर चउद ब्रह्माण्ड नवखण्ड । एमान भिआइण राजांकु कला रुण्ड ८३
राज्यरे परजा अनेक जात कला । प्रजांक उपरे पुरुष्टि दिआइला ८४
पुरुष्टि उपरे पुणि पात्र मन्त्री होइ । पात्र मन्त्रीं के उपरे राजा जे बोलाइ ८५
राजांक उपरे बिधाता अटे सार । बिधातार उपरे अटइ दिगम्बर ८६
दिगम्बर उपरे कर्त्ता बासुदेव । दुष्टंकु निवारिण पाळइ सन्थ सर्व ८७
भकत भावग्राही सागररे बास । से नारायणंकु बळिबाकु इन्द्रर कि साहस ८८
बैशानर शरीर आरोग्य होइला । पूर्बर भावे नन्दनबन से रखिला ८९
देवतांक दया करि जिआँइण देला । सुर राजा सुर पुरे रखिब नाहिँ कला २९०
भाइत सोदर ठारे किम्पा छन्द । एक आत्मा दुहेँ त किम्पा कला छद्म २९१
एहि राजार मुख केबे हेँ न चाहिँ । बार बर्ष पर्य्यन्ते बनरे रहु एहि ९२
शूकर रूप धरिण नर्क भोग करु । गर्ब तार चुर हेले स्वर्ग पण करु ९३
एमन्त बोलिण जहुँ शाप देले शची । पृथु राजा रथरु ओहलाए तड़िति ९४

पाकर वह देवताओं के प्रति कुपित हो गया । ७९ इसका अयोग्य शरीर समझकर क्या इसे मरवा देना उसके लिये उचित था । २८० प्रजा के न रहने से क्या राजा अकेला रहेगा । वह प्रजा का धर्मपिता है । उसका सहायक है । २८१ यदि राजा प्रजा के धन को दण्ड से ले लेते हैं, तो राजा के सम्पूर्ण धन को चकमा देकर चोर खा जाते हैं । ८२ तीन लोक, चौदह ब्रह्माण्ड तथा नव खण्ड पृथ्वी इन सबको बनाकर राजा एकत्रित किये गये । राज्य में बहुत सी प्रजा उत्पन्न की गयी । प्रजा के ऊपर पार्षद बनाये गये । ८३-८४ पार्षदों के ऊपर सभासद तथा मंत्री बनाये गये । फिर उनके ऊपर राजा को रखा गया । ८५ राजाओं के ऊपर का महत्वपूर्ण स्थान विधाता ने पाया । ब्रह्मा जी के ऊपर दिगम्बर शिवजी हैं । ८६ शंकर जी के ऊपर के कर्त्ता-धर्त्ता भगवान विष्णु हैं, जो दुष्टों को मारकर समस्त संतों का पालन करते हैं । ८७ भक्तों के भावों को ग्रहण करनेवाले नारायण का वास समुद्र में है । उन भगवान को कुछ कहने का साहस इन्द्र को कहाँ ? । ८८ अग्नि देव का शरीर निरोग हो गया । नन्दन वन भी पहले जैसा हो गया । ८९ उन्होंने दया करके देवताओं को जीवित कर दिया । उन्होंने देवराज इन्द्र को स्वर्ग में रखने के लिये मना कर दिया । २९० अपने सगे भाई के साथ उसने वैर क्यों किया ? दोनों की आत्मा एक ही थी फिर इन्होंने अग्नि से छल क्यों किया । २९१ इस राजा का मुख कभी भी न देखूंगी तथा यह बारह वर्ष पर्यन्त वन में रहे । ९२ यह शूकर का रूप धारण करके नर्क भोग करे तथा इसका गर्व चूर हो जाने पर स्वर्ग में प्रविष्ट हो । ९३ जब शची देवी ने इन्द्र को इस प्रकार शाप दिया । तब महाराज पृथु शीघ्र ही रथ

शची देबींक पाशे परबेश हेले। किम्पाइँ क्रोध हेलु बोलिण बोइले ९५
शची देवी बोइले शुण नारायण। ए राजा पद अटे सबु दिने जाण ९६
साक्षाते बासुदेव अटु तुहि पुण। तोहर सञ्चिला धन देलु अन्ये जाण ९७
आस्ति नास्ति करि बाकु तुजे कर्त्ता अटु। तोते न चिह्निनले ए मनरे करि हेतु ९८
देवराजा होइण आउ किस कार्ज्य। ए चण्डाळ अटइ देवंक अकार्ज्य ९९
बार बरष गले होइब सुर राजा। वनस्तरे रहि करि हेउ जे अपूजा ३००
पृथु राजा कहिले सुरंकु के पाळिब। केमन्ते सुरपुर सम्भाळ एबे हेव ३०१
शची देबी बोइले कोटिए इन्द्र छन्ति। जाहाकु मन हेब कर हे नृपति २
तुहि सिना सकळ कथाकु सिआइलु। नृपति करिवा पाइँ मोते पचारिलु ३
पृथु राजा बोइले ए नुहँइ उचित। तोर मन नोहिलेकि हेव नृपनाथ ४
शची देबी बोइले देवंक गर्व गञ्ज। प्रहल्लाद कुमरकु दिअ इन्द्र पद ५
प्रहल्लाद जेबे स्वर्गरे इन्द्र हेब। असुर राजा हेले देवंक गर्व भांगिब ६
प्रहल्लादकु बासुदेव कले सुमरणा। अर्द्ध स्वर्गरु बहन अइले दैत्य राणा ७
पृथु राजा चरणे ओळग हेला पुणि। बासुदेव बोइले शुण कुमर मणि ८
तोते प्रसन्न होइला देव शची। स्वर्गरे इन्द्र होइबु चळतु तड़ति ९

से उतर आये। ९४ वह शची देवी के पास पहुँचकर बोले कि आप किसलिये क्रोध कर रही है। ९५ देवी शची ने कहा, हे वासुदेव! सुनिये। यह सदैव से राजपदवी पर रहे हैं। ९६ आप साक्षात् नारायण हैं। आपने अपने संचित धन को दूसरे को दे दिया है। ९७ उत्पत्ति और प्रलय करनेवाले आप कर्त्ता हैं। तुम्हे न पहचान कर क्या इसकी मनमानी चलेगी। ९८ देवताओं का राजा होकर इसका और कार्य ही क्या है। यह देवताओं का अपकार्य करने वाला चाण्डाल है। ९९ बारह वर्ष व्यतीत होने पर यह देवताओं का राजा वनेगा। तब तक यह जंगल में रहकर अपूज्य बना रहे। ३०० राजा पृथु ने कहा कि फिर देवताओं का पालन कौन करेगा और स्वर्ग लोक किस प्रकार से सँम्हल पायेगा। ३०१ देवी शची ने कहा कि इन्द्र तो करोड़ों हैं। जिसकी इच्छा हो उसे राजा बना दीजिये। २ आपने यह सब रचा है और राजा बनाने के लिये मुझसे क्यों पूँछ रहे हैं। ३ राजा पृथु बोले कि यह उचित नही है। हे राज-राजेश्वर! आपकी इच्छा न होने पर क्या यह देवताओं के राजा बन सकते है। ४ शची देवी ने उनसे कहा देवताओं का गर्व-खण्डन करो तथा प्रह्लाद के पुत्र को इन्द्र पद प्रदान कर दो। ५ जब प्रह्लाद पुत्र स्वर्ग का राजा बन जायेगा तब राक्षस के राजा होने पर देवताओं का गर्व चूर हो जायेगा। ६ भगवान ने प्रह्लाद का स्मरण किया। आधे स्वर्ग में दैत्य-राज आ गया। ७ उन्होंने आकर राजा पृथु के चरणों में प्रणाम किया। वासुदेव ने कहा हे पुत्र श्रेष्ठ सुनों। तुम्हारे ऊपर देवी शची प्रसन्न हो गयी है। तुम शीघ्र ही चलो

देबीर मन तु जे करिबु तोष पुण। देवतांकु जे जाहार धर्मरे रख पुण ३१०
तिनि पुर पाळिबु न देबु जीवे शास्ति। शची देबींकि बोइले जाअ तु तड़ति ३११
देखिण प्रहल्लाद नमस्कार कला। शची देवींक कर जाइण धइला १२
ऐरावत उपरे बसाइले नेइ। कोळरे बसिले शची महामायी १३
बारस्वती भावनंकु बेगे चळिगले। मर्द्दन माजणा करि स्नान विधि कले १४
अमृत भोजन करि तोष कले मन। बिड़िआ भुञ्जिण कलेक शयन १५
देवी संगे प्रहल्लाद स्वर्गरे जे भोळ। नानारंगे लीळा कले ता संगर १६
आर दिन सभा मण्डाइले पुणि। सकळ देवतांकु बरण करि आणि १७
समस्तंकु कहिले जे जाहा भावे रह। नोहिले नाशजिब एकथा निश्चय १८
ए प्रथु राजा निश्चे करिबे प्राण नाश। मर्त्यपुर जीव रूप होइब अवश्य १९
स्वर्गरु इन्द्र ऐबे मर्त्यपुर गला। शूकर रूप धरिण नर्क भोग कला ३२०
तुम्भ मानंकु बेळेक दया कले पुण। शुणिण सकळ देवता होइले कार्पण्य ३२१
लोमपाद बोइले सेठारू किस हेला। दशरथ बोइले स्वर्गे कश्यपर बळा २२
इन्द्रकु जीवन्यास शररे जिआंइ। उठिण सुर राजा आगरे उभा होइ २३

और स्वर्ग में इन्द्र का पद सम्हालो। ८-९ तुम देवी शची का मन सन्तुष्ट करना। देवताओं को अपना-अपना धर्म पालन करने देने के साथ उनकी रक्षा करना। ३१० तीनों लोकों का पालन करना। प्राणियों को दण्ड न देना। उन्होंने देवी शची से भी शीघ्र ही जाने के लिये कहा। ३११ यह देखकर प्रह्लाद ने नमस्कार किया। उसने जाकर देवी शची का हाथ पकड़ लिया। १२ उसने उन्हें लेकर ऐरावत पर बैठाया। महामाया शची उनकी गोद में बैठ गई। १३ वह शीघ्र ही वारस्वतीपुर में (स्वर्ग लोक में) चले गये। मर्दन मार्जन के साथ उन्होंने विधि पूर्वक स्नान किया। अमृतमय भोजन करके उनका मन प्रसन्न हो गया। फिर पान खाकर उन्होंने शयन किया। १४-१५ स्वर्ग में प्रह्लाद देवी शची के साथ नाना प्रकार की लीलायें करते हुए विभोर हो गए। १६ अगले दिन उन्होंने सभा सुसज्जित करवाई। उसमें उन्होंने समस्त देवताओं को आमंत्रित करके बुलवा लिया। १७ उन्होंने सबसे अपने स्थानों पर कार्यरत रहने के लिए कहा। नहीं तो यह निश्चित है कि नष्ट हो जाओगे। १८ यह राजा पृथु निश्चित रूप से प्राण ले लेंगे और आप लोगों को अवश्य ही मृत्युलोक का प्राणी बनना पड़ेगा। १९ इन्द्र स्वर्ग से मृत्युलोक में चला गया है। वह शूकर रूप धारण करके नरक का भोग कर रहा है। ३२० अभी उन्होंने आप लोगों पर दया की है। यह सुनकर समस्त देवता भीरु बन गये। ३२१ लोमपाद ने पूंछा कि फिर वहाँ क्या हुआ। दशरथ ने कहा कि फिर स्वर्ग में कश्यपनन्दन ने इन्द्र को जीवन्यास बाण द्वारा जीवित कर दिया। देवराज इन्द्र उठकर उनके

एमन्त समये घोटिला ताकु शाप। तक्षणे होइला से शूकर स्वरूप २४
इन्द्र बोइला देव एरूप किम्पा हेला।पृथु राजा बोइले तोते शाप जे पड़िला २५
तुम्भर घरणी महामाय़ी शची। तुम्भर न्याय़कु बाछिला एथे बसि २६
अन्याय़ देखिण सेहु शाप देला। शूकर रूप हुअ बोलिण बोइला २७
बार बर्ष गले तु शापरु मुकुळिबु। अन्याय़ कले पुण पशु जन्म हेबु २८
शुणिण इन्द्र जे सेठारु पळाइला। मर्त्य भुवनरे पर वेश हेला २९
दक्षिण दिगरे साहेर कुळरे। कौमुदी चण्डाळ घरे प्रबेश हेला खरे ३३०
से जिबारु पृथु राजा अग्निकि कहिला।जाअ जा निज पुरकु कुश ले रह भला ३३१
शुणिण बैशानर नमस्कार कला। आपणा पुररे परबेश हेला ३२
देखिण बामा बन्दापना कला जाण। बोइला व्याधि खण्डन केहु कला पुण ३३
बैश्वानर बोइले नाराय़ण दया कले। नन्दन बन मोते दान करि देले ३४
तेणु से व्याधि अंगु होइलाक हत। शुणिण नारी जे मनरे उषत ३५
अग्नि जिबारु पृथु राजा सेठारु अइले। बइधृति नगरे परबेश हेले ३६
जानरु ओहलाइण निजपुर गले।मर्द्दन माजणा सारि स्नाहान सारिले ३७
कमळा आसिण पुण बन्दापना कले। देवार्च्चन बिधि राजन बढ़ाइले ३८
अमृत भोजन कलेक राजा पुण। भोजन सारिण कले आगमन ३९

समक्ष खड़े हो गये। इसी समय वह शाप से आविष्ठ हो गए। उसी समय उनका स्वरूप शूकर का हो गया। २२-२३-२४ इन्द्र ने कहा हे देव! यह रूप किस कारण से हो गया। राजा पृथु बोले कि तुम्हें शाप लगा है। २५ तुम्हारी पत्नी महामाया शची ने यहाँ बैठकर तुम्हारा न्याय किया है। २६ अन्याय को देखकर उसने शाप दिया है। उसने तुम्हें शूकर होने के लिये कहा है। बारह वर्ष होने पर तुम शाप से मुक्त होगे और अन्याय करने से तुम्हारा पुनः पशुजन्म होगा। २७-२८ यह सुनकर इन्द्र वहाँ से भागकर मृत्युलोक में जा पहुँचा। २९ दक्षिण दिशा में वह स्वपच कुल में कौमुदी नामक चाण्डाल के घर में वेग से सागर तट पर जा पहुँचा। ३३० उसके जाने पर राजा पृथु ने अग्निदेव से कहा, अब तुम सकुशल अपने लोक में जाकर निवास करो। ३३१ यह सुनकर अग्निदेव ने नमस्कार किया और अपने लोक में जा पहुँचे। ३२ उन्हें देखकर उनकी स्त्री ने उनकी पूजा की तथा प्रश्न किया कि आपकी व्याधि किसने दूर की। ३३ अग्निदेव ने कहा कि वासुदेव ने दया करके मुझे नन्दनकानन् दान किया। ३४ इस कारण से रोग अंग से दूर हो गया। यह सुनकर उसकी पत्नी का मन प्रसन्न हो गया। ३५ अग्निदेव के जाने पर राजा पृथु वहाँ से जाकर अपने वैधृतनगर में प्रविष्ट हुये। ३६ वह रथ से उतरकर अपने महल में गये और उन्होंने मर्दन-मार्जनपूर्वक स्नान किया। ३७ कमला ने आकर उनकी पुनः पूजा की। राजा ने देवपूजन विधिपूर्वक समाप्त किया। ३८ फिर उन्होंने अमृततुल्य भोजन किये

बिड़िआ भुञ्जिण पलंके निद्रा गले। पात्र मन्त्री मिळिबारु राजन उठिले ३४०
राज्यर भलमन्द सकळ कथा बुझि। लोमपाद बोइले बुझिलि कथा सन्धि ३४१
दशरथ बोले बिप्र दया कले तोते। प्राणे नमारि दुःख देलेक अनमत्ते ४२
लोमपाद बोइले से इन्द्र किसकला। दशरथ बोइले शूकर रूप हेला ४३
बार बर्ष परिजन्ते कला नर्कपान। बार बरषे निधन होइला राजन ४४
स्वर्गरु बिमाने आसन्ते सेहु गला। बारस्वती भवने प्रबेश होइला ४५
शचीकि बोइले मुहिँ हेबि राजन। सकळ देवताए कहिले आसि पुण ४६
शची देबी बोइले पातक तार अछि। चण्डाळरूप होइण नर्क से भोगिछि ४७
शतेक बरष तप कले हेबा क्षये। तोरे जेबे नारायण करिबे सदये ४८
शुणिण इन्द्रदेव खाण्डव बने गला। निश्चळ आसनरे सेहु तप कला ४९
शतेक बरष पुण गला तहिँ बहि। तपसिद्ध हेबारु उठिला शची साइँ ३५०
बारस्वती भवने परबेश हेला। राजन हेबिपरा शचींकि बोइला ३५१
शुणिण शची देबी बोइले बेगे जाअ। पृथु राजांक आगरे तुम्भ कष्ट कह ५२
सेहि राजा अटन्ति बासुदेव जाण। तांक संगे बिमना होइछ आपण ५३
से बोइले राजा सिना हेब स्वर्गपुरे। जाठारे दोषी हेले सेब ता पयरे ५४

और भोजन की समाप्ति पर पान खाकर पलंग पर सो गये। सभासद तथा मंत्री के आने पर राजा उठे।। ३९-३४० उन्होंने राज्य की समस्त कुशलवार्ता पूंछी। लोमपाद ने कहा कि हमने यह रहस्यमयी कथा सुनी। ३४१ दशरथ ने कहा कि ब्राह्मण ने आपके ऊपर दया की। आपके प्राण न लेकर केवल अधिक कष्ट दिया है। ४२ लोमपाद बोले, फिर इन्द्र ने क्या किया ? दशरथ ने कहा कि वह शूकर के रूप में परिवर्तित हो गये। ४३ उन्होंने-बारह वर्ष पर्यन्त नरक-भोग किया और बारह वर्षों के पश्चात् उनकी मृत्यु हो गई। ४४ स्वर्ग से विमान आने पर वह उससे स्वर्गलोक जा पहुँचे। ४५ उन्होंने शची से कहा कि मैं राजा बनूंगा। समस्त देवताओं ने भी आकर उनसे यही कहा। ४६ देवी शची बोली कि उसका पाप अभी शेष है। उसने चाण्डाल के रूप में नर्क का भोग किया है। ४७ जो एक सौ वर्ष तपस्या करने से नष्ट होगा यदि भगवान तुम्हारे ऊपर कृपा करेंगे। ४८ यह सुनकर इन्द्रदेव खान्डव वन चले गये। वहाँ निश्चल आसन से बैठकर उन्होंने तपस्या की। ४९ इसमें सौ वर्ष व्यतीत हो गये। शची के स्वामी तपस्या सिद्ध होने पर उठे और स्वर्गलोक में जा पहुँचे। उन्होंने फिर से राजा बनने के लिये शचीदेवी से कहा। ३५०-३५१ यह सुनकर देवी शची ने कहा कि तुम महाराज पृथु के समक्ष जाकर अपना कष्ट निवेदित करो। ५२ वह राजा विष्णु हैं। आपने उसके साथ कलह किया है। ५३ उनके कहने से ही आप स्वर्गलोक के राजा बनेंगे। आपने जिसका अपराध किया है। उसी की चरण सेवा करो। ५४ यह सुनकर

शुणिण सुर राजा बेगे चळि गला। बैधृति मण्डळरे प्रबेश होइला ५५
पृथु नृपतिंकु कलाक दर्शन। शतेक बर्ष जे रहिला सेहु स्थान ५६
एक दिने पृथु राजा मृग य़ाकु गला। बनस्तरे पशि बेण्ट पारिधि कला ५७
अगम्य बिपिने अटइ घोर लता। ग्रीष्म काळरे पशिले बेणु राजा बेटा ५८
राजांक तृषा बेळे जळ नेइ देला।नर नाराय़ण जळ ता हस्तुं पान कला ५९
सकळ पाप जे ताहार क्षय़ गला। गतु शते गुणरे तेज बिकाशिला ३६०
जाणिण पृथु राजा ताहाकु आज्ञा देला। पूर्व स्थानरे तोर रहजा बोइला ३६१
शुणिण सुर राजा बेगे चळि गला। शचीर पाशरे प्रबेश होइला ६२
प्रहल्लादकु बोइले चळ हे सत्वर। अळका पुररे रह भक्त बीर ६३
नाराय़णंकु केवळ करु थाअ ध्यान। सेहि एका प्रभु देबे गति दान ६४
से देव प्रसन्न हेले तुम्भ आम्भ मेळ। शुणिण बेगे चळिले हिरण्यंक बाळ ६५
अळका पुररे प्रबेश होइले। सप्त निधिर संगे निश्चिन्ते रहिले ६६
भण्डार अधिपति होइले से पुण। एमन्त पराक्रम नाराय़णंकर जाण ६७
शुणिण लोमपाद हरष होइले। दशरथ राजांकु ओळग मेलाइले ६८
जानर उपरे बसिले जाइ करि। दशरथ बोइले शुण हे दण्डधारी ६९

देवराज शीघ्रतापूर्वक चले गये और वैधृतिमण्डल में जाकर प्रविष्ट हुये। ५५ उन्होंने महाराज पृथु के दर्शन किये और सौ वर्ष तक उसी स्थान पर बने रहे। ५६ एक दिन महाराज पृथु आखेट के लिये गये। उन्होंने वनप्रांत में घुसकर आखेट किया। ५७ अगम वन में एक घनी लताकुंज थी। गीष्मकाल में महाराज वेणु के पुत्र उसी के भीतर घुस गये। ५८ प्यास के समय इन्द्र ने उन्हें जल लाकर दिया। नर रूप में नारायण ने उनके हाथ से जलपान किया। ५९ इन्द्र का सारा पाप नष्ट हो गया और पहले से सौ गुना प्रकाश विकसित हो गया। ३६० यह जानकर राजा पृथु ने उन्हें अपने पूर्वस्थान में जाकर रहने की आज्ञा दी। ३६१ यह सुनकर देवराज शीघ्रता से देवी शची के पास जा पहुँचे। उन्होंने प्रह्लाद से कहा, हे भक्तवीर ! आप शीघ्रतापूर्वक चलकर अलकापुरी में निवास करें। ६२-६३ आप केवल नारायण का ध्यान करते रहें। वह ही एकमात्र प्रभु हैं जो सुगति प्रदान करेंगे। ६४ उन भगवान की प्रसन्नता के कारण हमारा और आपका मिलाप हुआ है। यह सुनकर हिरण्यकशिपु के पुत्र शीघ्र ही चल दिये। ६५ वह अलकापुर में जा पहुँचे और सप्त सागराधिपति के साथ निश्चिन्त होकर रहने लगे। ६६ वह वहाँ भण्डार के अधिपति बन गए। भगवान का पराक्रम इस प्रकार का है। ६७ यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गए। उन्होंने राजा दशरथ को प्रणाम किया। ६८ फिर वह जाकर रथ के ऊपर बैठ गए। तब दशरथ ने कहा हे

ऋष्य श्रृंग अइले मोते बार्त्ता देव। हेला नकरिण चार पेषिदेव ३७०
शुणि करि लोमपाद चळि गले बेगे। निज राज्ये प्रबेश होइलेक राज्ञे ३७१
देखिण राज्य लोके आनन्द होइले। निज नवर मध्यरे प्रबेश होइले ७२
अन्तःपुरे प्रबेश होइले राजन। सकळ राणी आसि नमिले चरण ७३
शान्ता कन्या आसि ओळग मेळाइला।पिता आम्भर कि करु अछन्ति बोइला ७४
लोमपाद बोइले से अछन्ति कुशळे। बरषे पूरिले मात्र जिब तार आळे ७५
तोहर कुशळे पितार शुभ कथा। बरष करे तुहि देखिबु सबु माता ७६
पार्वती बोइले शुण हे ईशान। कथाए रहिला कहिब मोते पुण ७७
से नन्दन बनकु शुभ केहु देला।ए कस्तुरी गण्डा जुगरे अग्नि जे भक्षिला ७८
आउ बनमाने अछन्ति अनेक। से बनरे मौषधि रहिला किम्पाइँ त ७९
ईश्वर बोइले शुण भगवती। से बनकु शुभ देले बेदपति ३८०
जतने बन गोटि करिबार पाइँ। निर्मळ स्थान देखिण इन्द्र बिचारइ ३८१
बोइला ए स्थानरे करिबि कानन।बिचारिला बेळे ताकु चतुर्थ चन्द्र जाण ८२
बृहस्पति सप्तम चन्द्ररे देवगण। सुर राजा बिचार कला से बेळेण ८३
ऐरावत चढ़ि बेगे तहुँ गला। जशोवन्ती पुररे प्रबेश होइला ८४

राजन्! सुनो। ६९ श्रृंगी ऋषि के आने पर मुझे समाचार देना। आलस्य न करके दूत को भेज देना। ३७० यह सुनकर लोमपाद शीघ्रतापूर्वक चल पड़े तथा जाकर अपने राज्य में प्रविष्ट हुए। ३७१ उन्हें देखकर राज्य के लोग प्रसन्न हो गए फिर वह अपने महल में प्रविष्ट हुए। ७२ राजा के अन्तःपुर पहुँचने पर समस्त रानियों ने आकर उनके चरणों में प्रणाम किया। ७३ राजकन्या शान्ता ने आकर उनका अभिवादन किया, फिर उसने अपने पिता के विषय में पूँछा। ७४ लोमपाद ने कहा कि वह कुशलपूर्वक हैं। वर्ष समाप्त होने पर, बेटी! तुम उनके घर चली जाना। ७५ तुम्हारी कुशलता में ही तुम्हारे पिता का मंगल है। वर्ष में ही तुम समस्त माताओं का दर्शन करोगी। ७६ पार्वती ने कहा हे ईशान्! सुनो। एक बात रह गई। आप वह मुझे बतलाइये। ७७ उस नन्दनवन का कल्याण किसने किया जबकि दो सौ चौरासी युगपर्यन्त अग्निदेव उसका भक्षण करते रहे। ७८ और बहुत से अन्य वन हैं। उस वन में ही केवल औषधि क्यों पाई गई। ७९ शंकर जी बोले, हे भगवती! सुनो। ब्रह्माजी ने उस वन का कल्याण किया। ३८० यत्नपूर्वक एक वन लगाने के लिये स्वच्छ स्थान देखकर इन्द्र ने विचार किया। ३८१ उन्होंने कहा कि इस स्थान में जंगल तैयार करूँगा। उनके विचार करने के समय चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में और वृहस्पति सप्तम में और चन्द्रमा में समस्त देवगण थे। उसी समय देवराज इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर शीघ्रतापूर्वक वहाँ

देखिला शतेमुखा बेदबर पुण। ओळग मेलाइ गला सुर राण　८५
बेदवर नेइण पाशरे वसाइले। सकळ कुशळ राजांकु पचारिले　८६
सबु मोर भल बोलि वोले सुर राण। कथाए विचारिछि जिब जे आपण　८७
स्वर्ग पुरे चारि बर करिबाकु इच्छा। तुम्भे शुभ देले मोर पूरिब मनो बाञ्छा　८८
शुणिण बेदवर कलेक गमन। से स्थानरे प्रवेश होइले बहन　८९
प्रथमे नन्दन बनकु शुभ देले। देवगण बृहस्पति अछन्ति तांक तुले　३९०
नन्दन बनरु गलेक शुभ देइ। खाण्डव वन वोलि बोले सावित्री साइँ　३९१
सेठारु बेदवर फेरिण जे गले। निज नवरे जाइ प्रवेश होइले　९२
सावित्री देवी आसि मान्यधर्म कले। गायत्री अशउच शकास न आसिले　९३
बेदवर पचारिले साबित्रींकि पुण। ज्येष्ठ सपतणी गुपत किमर्थेण　९४
सावित्री बोइले आज न चहिँ तुम्भ मुख।
　　　　ताहांकर शरीर आज होइछि भेद दुःख　९५
ए शकासे देवी न चाहेँ तुम्भ वदन। शुणिण बेदवर बिचार कले मन　९६
भाषिले बनरे प्रमाद पडिव। मने कले थरे लेखाएँ दहिज्य होइव　९७
आर वेळे षोल जुगे पड़िब विपत्ति। से बनकु बैशानर करिब विनस्वति　९८
एबन दहिला बेळे करिव दया देव। दहन सरिले बन पूर्बवत हेव　९९

गया। फिर यशोवंतीपुर में प्रविष्ट हुआ। ८२-८३-८४ उन्होंने सौमुख वाले ब्रह्मा को देखकर उन्हें प्रणाम किया ब्रह्मा ने उन्हें लेकर अपने पास बैठा लिया और उन्होंने राजा से सब प्रकार के कुशल समाचार पूँछे। ८५-८६ देवराज ने कहा कि हमारी सब प्रकार से कुशल है। एक बात मैंने विचार की है। यदि आप चलें तो स्वर्गलोक में मैं चार वटों की स्थापना करूँ, ऐसी मेरी इच्छा है। आपके शुभ मुहूर्त देने से मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी। ८७-८८ यह सुनकर ब्रह्माजी ने प्रस्थान किया और शीघ्र ही उस स्थान पर जा पहुँचे। ८९ पहले उन्होंने नन्दनवन का शुभ योग बताया। देवगण तथा बृहस्पति उनके पास ही थे। ३९० शुभलग्न देकर वह नन्दनवन से चले गये और सावित्री के स्वामी ने उसे खाण्डव वन का नाम दिया। ३९१ फिर ब्रह्मा जी वहाँ से लौट गये और अपने भवन में जा पहुँचे। ९२ सावित्री देवी ने आकर उनकी अभ्यर्थना की। अपवित्र होने के कारण गायत्री नही आयी। ९३ ब्रह्मा जी ने सावित्री से बड़ी सौत के अनुपस्थित रहने का कारण पूँछा। ९४ सावित्री ने कहा कि आज उनके शरीर में कष्ट है। इस कारण से उस देवी ने आपके श्री मुख का दर्शन नही किया। यह सुनकर ब्रह्मा जी ने अपने मन में विचार किया। ९५-९६ उन्होंने सोचा कि वन में उत्पात होगा। उनके मन में आया कि इसका एक बार दहन होगा। ९७ और फिर सोलह युग बीतने पर विपत्ति पड़ेगी। उस समय उस वन का अग्निदेव विनाश करेंगे। ९८ इस वन के जलने के समय भगवान दया

आरबन दहिज्यरे सकळ जिब नाश। रोपिले बन हेब न रोपिले शेष ४००
एमन्त बिचार कले बेद्वर। से कथा प्रापत हेला एबे बनर ४०१
एथु अनन्तरे शुण उमा देवी। बारस्वति भुवने बिजय़ इन्द्र बेगि २
दासी माने आसिण इन्द्रंकु घेनि गले। शची न आसि बारु इन्द्र पचारिले ३
किस्पाइँ आज देवी न आसे मोर पाश। हरष दिनरे किम्पा होइछि बिरस ४
दासी माने कहिले अशउच सेहि। चारि दिन पर्ज्यन्ते तुम्भ मुख न चाहिँ ५
शुणिण सुरराजा होइले अज्ञान। बोइले अकारण होइला आज दिन ६
दुइ बन अनकुळ बिअर्थ होइला। दुइ बन दहिब बैशानर परा ७
ताकु आजि शुभ दिन मोते जे अशुभ। एमन्त बोलि मनरे भाविले सुरदेव ८
बेळकु एथिरे बिपत्ति अछि जाण। शुणिण पार्बती होइले तोष मन ९
एमन्त प्रकारे नन्दन बन गति। सदाशिव कहि बारु शुणिले पार्बती ४१०
पार्बती बोइले सेठारु किस हेला। ईश्वर बोइले एठारु एगार मासगला ४११
लोमपाद राजा हरष मन हेला। पात्र मन्त्री सामन्त ऋषिकि डाकिला १२
बोइला काळ शेष होइला आसि पुण। केमन्ते बिभाण्डक तनय़ आसे जाण १३
पात्र मन्त्री बोइले शुण हे राजन। से कथारे तत पर कर हे आपण १४

करेंगे जिससे भस्म होने के पश्चात् वन पूर्व अवस्था में आ जायेगा। ९९ अन्य वन जलने से सब नाश हो जायेगा। वृक्ष लगाने से वन होगा और न लगाने से समाप्त हो जायेगा। ४०० ब्रह्मा जी ने इस प्रकार विचार किया। इस समय वन को वही बात प्राप्त हुयी। ४०१ हे देवी उमा ! सुनो। इन्द्र शीघ्रता-पूर्वक स्वर्गलोक में चले आये। २ दासियाँ आकर इन्द्र को ले गई। इन्द्र ने शची के न आने का कारण पूँछा। ३ उन्होंने कहा कि शची देवी आज मेरे पास किस कारण से नहीं आई ? प्रसन्नता के समय में वह किस कारण से उदास है। ४ दासियों ने कहा कि वह अपवित्र अवस्था में है। वह चार दिन पर्यन्त आपका मुख नहीं देखेंगी। ५ यह सुनकर देवराज इन्द्र ज्ञान शून्य हो गये और बोले, कि आज का दिन व्यर्थ हो गया। ६ दोनों वनो का शुभ योग व्यर्थ हो गया। दोनों वनों को अग्नि जलायेगी। ७ उसके लिये आज का दिन शुभ और मेरे लिये अशुभ है। इन्द्र ने अपने मन में इस प्रकार का विचार किया। ८ इस समय इसमें विपत्ति है। यह सुनकर पार्वती का मन संतुष्ट हो गया। ९ इस प्रकार की नन्दन वन की गति को भगवान शंकर ने कहा और पार्वती ने सुना। ४१० पार्वती बोली फिर वहाँ क्या हुआ। शिवजी ने उत्तर दिया कि इस प्रकार ग्यारह महीने व्यतीत हो गये। ४११ महाराज लोमपाद ने प्रसन्न मन होकर सभासद मंत्री सामंत तथा ऋषियों को बुलाकर कहा, कि अब शाप का समय समाप्त हो आया। अब विभाण्डक के पुत्र कब आयेंगे ?। १२-१३ सभासद तथा मंत्री ने कहा हे राजन ! सुनिये। आप उस बात पर तत्पर हो

ड़काअ चार गणंकु बुलन्तु नग्ररे । किए आणि देव विभाण्डकर कुमरे १५
शुणिण नृपवर भण्डार फेड़िला । हीरा माणिक्य चूडी भण्डारु अणाइला १६
सुबर्ण चांगुड़ारे पूराइ चारि चूड़ी । तहिँ रखिला दुइटि अमळाण शाढ़ी १७
पञ्चबर्ण फुल बगभा सेथिरे भरिला । काञ्चन रत्न माळा सेथिरे थोइला १८
आगरे बाजा बाजे पछरे चांगुडि । कटकरे बुलिवार पड़े हाल होलि १९
विभाण्डक कुमर ऋष्य श्रृंग जाण । के आणि देव तांकु निअ रत्न पुण ४२०
शुणिण अनेक स्तिरी पंछरे गोडाइले । विपरीत बाणि शुणि फेरिण अइले ४२१
नब जुबा पुरुषे पचारिले जाइ । किस अर्थे बाजा बाजे आगे कह तुहि २२
वाजन्तरी बोइले शुण मोर बाणी । चम्पावती देशराजा आज्ञा देले पुणि २३
बोइले बिभाण्डक तनय ऋष्य श्रृंग । से ऋषिकि जे आणिदेव अळंकार नेब २४
ऋष्य श्रृंग आसिले ए राज्ये भल हेब । मेघ बृष्टि करिब दुर्भिक्ष क्षय जिब २५
शुणिण से पुरुष आश्चम्बित हेले । एहि कथा आम्भ हस्ते नुहँइ बोइले २६
बुध जन माने पचारिले आसि । आश्चम्बित कथा शुणि न नेले भरसि २७
नूतन स्तिरी माने पछरे गोड़ावन्ति । आनन्द होइण हुळहुळी द्यन्ति २८
आगरे बजन्तरी पछरे कटुआळ । रत्न चांगुडा घेनि बुलइ नग्रपुर २९

जाइये । १४ दूतों को बुलवा लीजिये । वह नगर में घूमें तथा यह जाने कि विभाण्डक के पुत्र को कौन लेकर आयेगा । १५ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा ने भण्डार खोलकर हीरा माणिक्य की चूड़ियाँ वहाँ से मँगायीं । स्वर्ण की टोकरी में चारों चूड़ियों को रखकर उसमें दो स्वच्छ साड़ियाँ रखीं । १६-१७ उसमें पाँच रंग के फूलों के गुच्छे रखे और साथ ही रत्नजड़ित स्वर्ण माला भी उसमें रख दी । १८ आगे-आगे बाजा और उसके पीछे टोकरी नगर में घूम रही थी जिससे राज्य में हलचल मच रही थी । १९ विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि को कौन ला देगा । वही यह रत्न प्राप्त करे । ४२० यह सुनकर बहुत सी स्त्रियाँ पीछे-पीछे दौड़ने लगी और विपरीत वाणी सुनकर लौट गईं । ४२१ नवयुवक पुरुषों ने जाकर पूँछा कि आप हमें पहले यह वताइये कि यह बाजे किसलिये बज रहे हैं । २२ वाजे वालों ने कहा कि आप हमारी बाते सुनिये । चम्पावती देश के राजा ने आज्ञा देते हुये कहा है, कि विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि हैं । उन ऋषि को जो लायेगा । वही आभूषण ग्रहण करेगा । २३-२४ श्रृंगी ऋषि के आने से इस राज्य का भला होगा । मेघ वर्षा करेंगे और अकाल नष्ट हो जायेगा । २५ यह सुनकर वे पुरुष अचम्भे में पड़ गये और बोले कि यह वात हमारे हाथों से नहीं होगी । २६ बुद्धिजीवी लोगों ने आकर पूँछताँछ की । आश्चर्यजनक बात सुनकर उन्हें भरोसा नहीं हुआ । २७ नवयुवा स्त्रियाँ पीछे दौड़ती हुयीं प्रसन्न होकर मांगलिक शब्द कर रही थीं । आगे-आगे बाजे वाले पीछे सन्देशवाहक रत्न की टोकरी लेकर नगर में घूम रहे थे । २८-२९ गाँव-

ग्राम कन्दि बिकन्दि हाट बाट जाण। केहि न बोइले जिबि जे मुहिँ पुण ४३०
बिरस मन करि फेरिण आसन्ति। बड़दाण्ड भितरे जाइण बुलन्ति ४३१
समस्ते बिचारिले एकथा हेला छन्द। केउँ ठारे छन्ति बिभाण्डकर तनुज ३२
एमन्त कुहा कुहि हुअन्ति सकळ। बिरस मन करि फेरिला कटु आळ ३३
नटकारी साइरे पशिले जाइकरि। देखिण बजन्तरी वजान्ति बेग करि ३४
देखिण नटकारी माने जे पचारि। किम्पाइँ घोषणा देउछ राज्य फेरि ३५
कटु आळ बोइले राजा आज्ञा देले। ऋष्य श्रृंग के आणिब पचार जाइ भले ३६
तिनि सहस्र नटकारी पचारि फेरि गले। धनर लोभरे किए पछे गोड़ाइले ३७
एमन्ते नटकारी साइरे जाइ फेरि। जरता आगरे कहिले दासी फेरि ३८
राजा धेण्डुरा फेराए राज्यरे आम्भर। डाकुआ डाकु अछि आगरे ताहार ३६
बोलइ बिभाण्डक तनय ऋष्य श्रृंग। तांकु के आणिदेव रत्न निअ बेग ४४०
दासींकठारु एपरि बारता शुणिण। आनन्द होइले दुइभग्नी जाण ४४१
बेश भूषण से हेले तत्काळ। अमळाण शाढ़ी दिव्य काञ्चुला हृदर ४२
अळता मथामणि जुड़ा फुलगभा। बिद मुदि बाहुटि ताड़ जे चूड़ी प्रभा ४३
मल्लिकढ़ी फासिआ फिरि फिरा काप। रत्न गुणा सिन्धु फळ नोथ भिन्न रूप ४४
पाहुड़ झुण्टिआ बळा खुण्टिआ मेखळा। बेश होइ दुइभग्नी दिशिले बड़ त्वरा ४५

गली कूचा हाट-बाट में किसी ने भी नहीं कहा कि मैं जाऊँगा। ४३० दुःखी मन से वह लोग लौटकर आते हुये राजमार्ग पर जाकर घूमने लगे। ४३१ सबने विचार किया कि यह बात रहस्यमयी है। विभाण्डक के पुत्र कहाँ हैं। ३२ इस प्रकार सभी आपस में बातें कर रहे थे। तभी दूत दुखित मन से लौट पड़े। ३३ वह लोग नटों की बस्ती में जा घुसे। उन्हें देखकर बाजे वाले शीघ्रता से बाजे बजाने लगे। ३४ यह देखकर नटों ने पूँछा कि आप लोग राज्य में घूम-घूम कर क्या घोषणा कर रहे हैं। दूतों ने कहा कि राजा ने आज्ञा दी है कि जाकर ठीक से पूँछो कि श्रृंगी ऋषि को कौन ला देगा ?। ३५-३६ तीन हजार नट पूँछ कर लौट गए। कोई-कोई धन के लोभ से पीछे लग गए। ३७ इस प्रकार नटों की बस्ती से लौटकर दासी ने जरता-वैश्या के पास जाकर कहा। ३८ राजा ने अपने राज्य में ढिढोरा पिटवाया है। उनका उद्घोषक आगे से उद्घोषणा कर रहा है। ३६ वह कह रहा है कि विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि हैं। जो उन्हें शीघ्र लायेगा वह रत्न ग्रहण करे। ४४० दासी के द्वारा यह समाचार सुनकर दोनों बहनें प्रसन्न हो गई। ४४१ तत्काल उन्होंने श्रृंगार करके आभूषण पहने, वक्षस्थल पर कंचुकी और दिव्य स्वच्छ साड़ी पहन ली। ४२ आलता, माथे का वेंदा, जूड़े में फूलों का गुच्छा, बिन्दी, अगूंठी, बाजूबन्द तथा चूड़ियाँ चमचमा रही थीं। ४३ खौर बुलाक, मोती तथा रत्नों से जड़ित नथ की अलग शोभा हो रही थी। ४४ पैर में झुनझुन करने वाली पायलें, कड़े तथा

ताम्बूळ भुञ्जिण धीरे धीरे चालि गले। अति उसत होइण दाण्डे उभा हेले ४६
बारह कामिनी संगे छन्ति पुण। मने मने हसन्ति अपांग ढ़ालिण ४७
एमन्त समयरे डाकुआ डाक देला। केउँ नारी रत्न नेव वेगे आस भला ४८
तार पछे बजन्तरी करन्ति शब्द। बोलन्ति राज्यर शुभ करिव नारी वृन्द ४९
पछरे कटुआळ रत्न चांगुडा धरि चळि। जरता बोइला आहे रह हे सम्भाळि ४५०
कि कारणे बुलुअछ कह ता बुझाइ। किम्पाइँ राजा तुम्भंकु फेराए कटकाइ ४५१
कटु आळ कहिले राजा आज्ञा देले। चम्पावती कटकरे घोषणा दिअ भले ५२
बिभाण्डक कुमर ऋष्यश्रृंग जाण। किए आणि देव बुझहे जाइण ५३
दुइ लक्ष सुनिआंर अलंकार देले। जे ऋषिकि आणिदेव से नेव बोइले ५४
जरता बोइला जेबे आसिबे ऋष्य श्रृंग। राजार किस कार्य्य करिव कह वेग ५५
कटुआळ बोइला ऋष्य श्रृंग आसिले। मेघ बृष्टि करिव ए राज्यरे भले ५६
जरता बोइला एहा केमन्ते जाणा गला। कटु आळ वोइले शुण अपसरा ५७
जेते बेळे राजांकु शाप देले ब्राह्मण। बोइले वार बर्ष न वर्षिव घन ५८
ऋष्य श्रृंग अइले वरषिब घन। वार वर्ष गले विचारिबु हे राजन ५९
निअ रत्न चांगुड़ि पुरु तो मनोरथ। देहरे पिन्धिले दिशिवु देवीर संजात ४६०

कमर की पेटी आदि रत्नो से सुसज्जित दोनों वहने शोभायमान दिखाई दे रही थी। वह दोनों पान खाकर धीरे-धीरे चल दीं और अत्यन्त आनन्द से मार्ग में जाकर खड़ी हो गई। ४५-४६ उनके साथ वारह स्त्रियाँ थी जो आँख नीची करके मन ही मन मुस्करा रही थीं। ४७ इसी समय उद्घोषक ने उद्घोषणा की कि कौन स्त्री रत्न लेगी। वह शीघ्र ही आये। ४८ उसके पीछे वाजे वाले वाद्य-निनाद कर रहे थे और कह रहे थे कि स्त्रियों का दल राज्य का कल्याण करेगा। ४९ पीछे प्रहरी रत्न की टोकरी लेकर चल रहे थे। जरता ने कहा, अरे! ठहरो। ४५० आप किसलिये घूम रहे है। वह हमें समझाइये। हे प्रहरी! राजा तुम्हें किसलिये घुमा रहे हैं। ४५१ प्रहरी ने कहा कि राजा ने चम्पावती नगर में भली-भाँति घोषणा करने की आज्ञा दी है। ५२ विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि है। उन्हे कौन ले आयेगा। यह जाकर समझो। ५३ दो लाख के स्वर्ण आभूषण उन्होंने दिये हैं और यह कहा है कि जो ऋषि को ला देगा वह ही इन्हे प्राप्त करेगा। ५४ जरता ने कहा कि जब श्रृंगी ऋषि आयेंगे तो वह राजा का कौन सा कार्य करेंगे। आप हमे यह शीघ्र ही वतलाइये। ५५ प्रहरी ने कहा कि ऋषि के आने पर इस राज्य में मेघ भली प्रकार वर्षा करेंगे। ५६ जरता वोली कि यह कैसे ज्ञात हुआ। प्रहरी ने कहा हे नर्तकी! सुनो। जिस समय राजा को ब्राह्मण ने शाप दिया कि वारह वर्ष वादल वर्षा नहीं करेंगे और श्रृंगी ऋषि के आने पर वर्षा होगी। वारह वर्ष वीतने पर हे राजन्! इस पर विचार कीजियेगा। ५७-५८-५९ यह रत्न की टोकरी ले लो जिससे तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हो। शरीर में पहनने से देवी के समान लगोगी। ४६०

देखि करि निअ जेतेक आय़े दाये। पछन्ते ए कथाटि पडिबटि न्याय़े ४६१
शुणिण जरता वोले घोड़िणि बेगे काढ़। शुणिण कटुआळ शोइला दाडर ६२
अमळाण शाढी जे उपरु काढि देला।चारि मुठि चुड़ि अछि जरता देखिला ६३
बिदमुदि बाहुटि ताड़ नाना रत्न हार।रतन काञ्चुला हीरा बसिछि माळर ६४
आय़ अळंकार देइछि राजा पुण। लगाइले मोहित होइबे ऋषिगण ६५
दुइ सहस्र सुनिआ तहिँरे अछइँ। दुइ गोटि अमळाण शाढ़ी जे अछइँ ६६
देखि करि जरता चांगुड़ा धइला। राजांकु कह जाइ बोलिण बोइला ६७
राजा लोड़ा कला बेळे घेनि जिबे मोते।एते कहि रत्न चांगुडा नेलाक त्वरिते ६८
देखि कटु आळ आनन्दमन कला। निश्चय़ ए राज्यर सुसमय़ हेला ६९
बाजन्तरी डाकुआ कटु आळ तिनि। बेगे चळि गले हरष होइ पुणि ४७०
राजार आगरे जाइ होइले प्रबेश। कर जोड़ि राजा आगे कहिले सन्देश ४७१
दाण्डु हाट कन्दि बिकन्दि बुलिलुँ। सेथिरे सञ्चार किछि न पाइलुँ ७२
नटकारींक पाशरे प्रबेश हेलुँ जाइ। अनेक नटकारी पचारिले तहिँ ७३
कहिबारु समस्ते होइण मतिभग्न। धन रत्न देखिण मनरे लोभ पुण ७४
सेठारु किछि दूर कलुटि गमन। बाटरे ओगाळिले जरता कन्या पुण ७५

भली प्रकार सोच समझकर इन्हें (उपलब्ध धन) ग्रहण करो। पीछे इस बात पर न्याय होगा। ४६१ यह सुनकर जरता ने कहा कि इसका आवरण हटाओ। जिसे सुनकर प्रहरी ने उसे मार्ग में रखकर उसके ऊपर से स्वच्छ साड़ी हटा दी। उसमें जरता ने चार चूड़ियाँ देखीं। ६२-६३ वेंदा, मुद्रिका, बाजूबन्द रत्नजड़ित कंचुकी तथा हीरों से जड़े माला आदि अनेक प्रकार के आभूषण देखे। राजा ने नाना प्रकार के अलंकार दिये थे जिन्हें पहनने से ऋषियों के समुदाय भी मोहित हो सकते थे। ६४-६५ उसमें दो हजार स्वर्ण मुद्राएँ तथा दो स्वच्छ साड़ियाँ थीं। ६६ यह देखकर जरता ने टोकरी पकड़ ली और बोली कि जाकर राजा से कह दो। राजा के खोजने पर हमें ले चलना। इतना कहकर उसने शीघ्र ही रत्नों की टोकरी ले ली। ६७-६८ यह देखकर प्रहरी का मन प्रसन्न हो गया और वह विचार करने लगा कि अब निश्चित रूप से इस राज्य का अच्छा समय आ गया है। ६९ फिर बाजे वाले, उद्घोषक, प्रहरी यह तीनों शीघ्र ही प्रसन्नतापूर्वक चले गये। ४७० वह राजा के समक्ष जा पहुँचे और उन्होंने हाथ जोड़कर राजा से संदेश देते हुये कहा कि हम लोग हाट बाजार तथा गली कूचों में घूमे परन्तु वहाँ कुछ भी समाधान न मिला। ४७१-७२ फिर हम लोग नटों के पास गये। अनेक नटकारों से पूँछा परन्तु बताने पर सभी की बुद्धि खराब हो गई। यद्यपि उन लोगों का मन धन रत्न देखकर लोभ में पड़ गया। ७३-७४ वहाँ से कुछ दूर चलने पर जरता नामक बालिका ने रास्ता रोक लिया। ७५

काम मोहिनी संगरे अछइँ ताहार। आवर वार वनिता अछन्ति संगर ७६
बोइला ऋष्य शृंगंकु आणि देवि मुहिँ। एते बोलि रत्न चांगुड़ा घेनि जाइ ७७
जगत मोहि पारे से मोहिनी पुण। ता संगे काम मोहिनी ताकु शते गुण ७८
बारह वनिता ताहार सदृश। कि कहिबि रूप राशि देखिले हेब वस ७९
अळप बयस नूतन नव जुवा। मुनि माने देखिले कामे हेबे लोभा ४८०
शुणिण राजन सन्तोषमन हेला। से नारी मानंकु डाकि आण हे बोइला ४८१
शुणि करि कटु आळ वेगे चळिगला। जरता कन्या द्वारे प्रवेश होइला ८२
बोइला अपसरीए शुण मोर वाणी। राजन शुणिण सन्तोष मन पुणि ८३
बोइले मोर पाशकु वेगे ताकु आण। हरषे आज्ञा देले चम्पावती राण ८४
शुणिण जरता काम मोहिनी पुण। वार वनितांकु घेनि वेश ततक्षण ८५
वेश होइ बाहार होइले सकळ। राणी हँस परि दिशिले मञ्जुळ ८६
गज प्राय़ेक गमन करे धीर धीर। राजहंस पराए गमन काहार ८७
चरणे पादुकामान लगाइ सर्वे जाण। प्रवेश होइले राजांक आगेण ८८
देखिण नृपति परम तोष हेले। निश्चय़ आणिबे एहु मने विचारिले ८९
राजन पचारिले कह रम्य नारी। तुम्भर क्रोधरे कि आसिबे ब्रह्मचारी ४९०

उसके साथ कामदेव को मोहित करने वाली अन्य स्त्री भी थीं और उसके साथ वेश्यायें भी थीं। ७६ उसने कहा कि मैं शृंगी ऋषि को ला दूंगी। इतना कहकर वह रत्न की टोकरी ले गई। वह कामिनी संसार को मोहित कर सकती है और उसके साथ वाली काममोहिनी उससे सौ गुना अधिक है। ७७-७८ बारह वेश्यायें भी उसी के समान हैं। उनकी रूपराशि के विषय में क्या कहा जाय। उन्हें देखने पर लोग उनके वश में हो जाएंगे। ७९ मुनि लोग भी उन्हें देखने पर काम से लुब्ध हो जाएँगे। वह अल्पवयसी नवयुवतियाँ हैं। ४८० राजा ने उन स्त्रियों को बुलाने को कहा। यह सुनकर प्रहरी शीघ्र ही चला गया वह जरता कन्या के द्वार पर जा पहुँचा और बोला, हे अप्सराओ! हमारी बात सुनो। ४८१-८२ सुनते ही राजा का मन संतुष्ट हो गया और चम्पावती के सम्राट ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी है कि उन्हें मेरे पास ले आओ। ८३-८४ यह सुनते ही जरता तथा काममोहिनी ने वेश्याओं के साथ शृंगार किया और सुसज्जित होकर वह सभी बाहर निकल पड़ीं। वह रानिवास की रानियों के समान सुन्दर दिखाई दे रही थीं। ८५-८६ वह हाथी के समान धीर भाव से गमन कर रही थीं। किसी की चाल राजहंसियो जैसी थी। ८७ सभी ने पैरों में पदत्राण पहन रक्खे थे। वह सब राजा के समक्ष जाकर प्रविष्ट हुई। ८८ उन्हें देखकर राजा को परम सन्तोष हुआ। यह निश्चय ही ले आयेगी; इस प्रकार उन्होंने मन में विचार किया। ८९ राजा ने कहा कि हे सुन्दर कामिनियो! क्या ब्रह्मचारी आप लोगों के क्रोध से आ जायेगे। ४९० उन्हें ले आने पर अत्यन्त सुख

आणिले बहुत सुख उपुजिब । से अइले ए राज्यरे बरषा करिब ४९१
हरषरे अणाइँब कहिलि सन्देश । बिरस हेले सकळे होइब बिनाश ९२
कुशळरे अनेक कार्ज्य से करिब । बिरह हेले ऋषि ए पुर जाळि देब ९३
अर्द्ध जीवन घेनि आम्भे अछे रहि । आहार न मिळइ जळ जे नपाइ ९४
से कथाकु न्याय़ भावे आणिब ब्रह्मचारी। तेबे से प्रशंसा पाइब सर्ब नारी ९५
राजार बचन शुणि जरता कहे बाणी । केते दूर पथ से कह नृप मणि ९६
गहलरे थाट जे नजिब स्थानकु । आम्भ मानंक बेगर न देखे कहाकु ९७
पुरुष देखिले पुणि से ऋषि बिचारिब । अबिगुण पाइ अबा से ऋषि न असिब ९८
ए कथाकु बिचार कर हे राज्येश्वर ।आम्भे कि कहिबुँ तुम्भे आम्भर ईश्वर ९९
लोमपाद बोइले शुण नारीवर । ऋषिंक आश्रम अटे शते जुण दूर ५००
कउशिक बनरे अछइँ ब्रह्मचारी । अगम्य लता सेजे गमन नुहे करि ५०१
जन मनुष्य सेठारे आउ नाहिँ देखा । पशु जीवमाने जे मेरु गिरि शाखा २
पिता तार बिभाण्डक तपरे निर्जिता । अबिगुण पाइले देवता नुहे शाखा ३
गुपते आसिले आसिब ऋषि पुण । जरता बोइला शुण हे राजन ४

मिलेगा। उनके आने पर ही इस राज्य में वर्षा होगी । ४९१ हम आप लोगों को सन्देश दे रहे हैं कि आप लोग उन्हें प्रसन्नतापूर्वक ले आइयेगा। यदि वह क्रुद्ध हो गये तो सबका विनाश हो जाएगा । ९२ कुशलता से वह बहुत कार्य करेंगे तथा रोष में आने पर ऋषी इस नगर को भस्म कर देंगे । ९३ अभी तक आहार तथा जल न मिलने से हमारी जान आधी रह गई है। इस बात को ध्यान में रखकर आप लोग ब्रह्मचारी को न्यायोचित विधि से ले आइयेगा। तभी सब स्त्रियाँ प्रशंसा की पात्र होंगी । ९४-९५ राजा की बात सुनकर जरता बोली हे नृपश्रेष्ठ ! कितनी दूरी का मार्ग है; आप हमसे बतला दीजिए । ९६ तड़क-भड़क वाली सेना उस स्थान को नहीं जाएगी। हम लोगों का वेग किसी का ध्यान नहीं रखता । ९७ फिर यह ऋषि पुरुष को देखकर विचार करेंगे और कोई अवगुण पाने पर वह ऋषि नहीं आएँगे । ९८ हे राजेश्वर ! आप इस बात पर विचार करें। हम आपसे क्या कहें ? आप हमारे भगवान है । ९९ लोमपाद ने कहा हे श्रेष्ठानारी ! सुनो। ऋषि का आश्रम एक सौ योजन की दूरी पर है। वह ब्रह्मचारी कौशिक वन में हैं जहाँ की घनी लताओं के कारण सहज रूप से अगम्य उस स्थान में जाया नहीं जा सकता । ५००-५०१ वहाँ पर कोई आदमी भी नहीं दिखाई देता। सुमेरु पर्वत की शृंखला में वन्य पशु तथा जीव-जन्तु हैं। अथवा वहाँ के पशु जीव-जन्तु मेरु पर्वत के समान विशालकाय है । २ उसके पिता विभाण्डक तपस्या में लगे हुए हैं। अपराध प्राप्त होने पर देवता भी रक्षा नही कर सकते। ऋषि गुप्तरूप से ही आ सकते है। तब जरता ने कहा हे राजन् ! सुनिये । ३-४ उन ऋषि के आने में बड़ा कष्ट होगा।

से ऋषि आसि बारे बड़ कष्ट जाण । मोहर विचार जेबे करिब राजन ५
शतेक जुण जेबे अगम्य लता पुणि । आम्भे चालि जाइ जे नपारु नृपमणि ६
कण्टा खुञ्च शार्दूळ अनेक नागबळ । आम्भंकु देखिले से पूराइबे काळ ७
सरजू नदी धारा अछि कि सेठाकु । बुझिले चाप सज करिबा जिबाकु ८
राजन बोइले आम्भे बेळहुं विचारि । कन्ध पठाइण जे ऋषिकि ठावे करि ९
नदीर कूळे कूळे आसिण हेले मेळ । राज्यर पश्चिम भागे तुठ जे निर्मळ ५१०
से तुठरे उठिण मोते देखा देले । सकळ कथा मोते मणाइँ कहिले ५११
ताहांकर कथाकु प्रते गला मन । सबु दिन से जे बनर मोक्ष पान १२
शुणिण जरता परम तोष हेला । षड़ गोटि बड़ नाव अणाअ बोइला १३
दुइ नाव एक चाप करिब मिआण । तिनि गोटि चाप एबे कर तिआरण १४
एते कहि जरता मउन भाव हेला । बळरामदास ता पछरे विचारिला १५
कळि जुगे निळाञ्चले बिजे जगन्नाथ।सेहि मोते कहि बारु लेखिलि रामचरित १६
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी । जरता कन्या जे राजांकु तिआरि १७
बोइले तिनि नाव जतने निर्मा हेब । तहिँ परे रुअशेणि चन्दन काठ यिब १८
चूआ अतर सुबास घषिब सेयिरे । उपरे धवळ शाढ़ी देब जतनरे १९

अतः आप हमारे विचार पर ध्यान दें। जब सौ योजन लताओं से अवेष्ठित स्थान अगम्य है तब तो हे नृपश्रेष्ठ हम लोग चलकर जा नहीं सकेंगी।:५-६ काँटे, खोच, सिंह तथा नाना प्रकार के हाथियों के समूह हमें देखकर काल के गाल में डाल देंगे। ७ क्या सरयू नदी की धारा वहाँ से निकलती है। इसे जानकर जाने के लिये नाव तैयार करायें। ८ राजा ने कहा कि एक बार मैंने ऋषि की खोज करने उनके पास कन्द भेजने का विचार किया था। तब नदी के किनारे-किनारे जाकर उनके दर्शन हुये थे। राज्य के पश्चिमी भाग में एक निर्मल स्नानघाट है। उसी घाट पर चढ़ने से वह हमें दिखाई दिये थे। उन्होने मुझसे समझाकर सारी बाते कही थी। ९-५१०-५११ उनकी बात का विश्वास हमारे मन मे हो गया कि वह सर्वदा वन में मोक्षपान करते हैं। १२ यह सुनकर जरता अत्यन्त प्रसन्न हुयी। उसने छै बड़ी नावे मँगाने को कहा। १३ दो नावों को मिलाकर एक बेड़ा बनाया जाये। इस प्रकार तीन बेड़े इसी समय निर्माण करवाइये। १४ इतना कहकर जरता चुप हो गई। इसके पश्चात् बलरामदास (ग्रन्थकर्त्ता) ने विचार किया कि कलियुग में नीलांचल में जगन्नाथ जी विराजमान हैं। उन्हीं के कहने से मैने रामचरित लिखा है। १५-१६ हे शाकम्बरी ! सुनो ! इसके पश्चात् जरता कन्या ने राजा से कहा कि तीन नावों को यत्नपूर्वक तैयार करने से निर्वाह हो जाएगा। उसके ऊपर चमकदार चन्दन की लकड़ी लगी होगी। १७-१८ उसमें चोवा इतर की सुगन्ध घिसवा दीजिये। ऊपर से यत्नपूर्वक सफेद रंग की साड़ी डलवा दीजिये। १९ नीचे उसमें पुतलियाँ बनी

तळे पितुळा लेखि थिब जे सेथिरे। चित्रपट लेखा जे होइब भितरे ५२०
एक चाळे पल्यंक सुपाति थिब पुण। दुइ नाबे नाना बर्ण थिब द्रव्यमान ५२१
कदळी नडिकाळ आम्ब जे पणस। पणा परिड जे नबात कन्दरस २२
लेम्बु नारंग कमळा टभा पुण। नाना बर्णरे फळ सेथिरे थिब जाण २३
हाण्डी तण्डुळ जे व्यञ्जनकु नाना द्रव्य। घृत सर लवणी गोधन दधिभाण्ड २४
चन्द्र दीप दिहुड़ि अनेक थिब पुण। माणिक्यरे मोति जे जळिब अनुक्षण २५
कस्तुरी अगुरु कर्पूरु चन्दन। नाना बर्ण बास फुल सेथिरे थिब पुण २६
अमळाण पतनी देवंकु जेहु शोभा। लोटणी रंगरे होइ थिब फुल गभा २७
देखिले मोह मन खाइले हेबे बश। तेबे सिना आसिब बिभाण्डक शिष्य २८
बार गोटि नाउरी आहुला कात घेनि। सरजू नदीरे नाव चाळिबे धीरे पुणि २९
कइबर्त्त समस्ते होइबे स्तिरी बेश। केहि पुरुष बेशे नजिबे तांक पाश ५३०
कटक चित्रपट लेखिण उजकर। ठाबे ठाबे छामुण्डिआ कर नृपवर ५३१
मंगळ उत्सव कर नग्ररे तोहर। तेबे सिना अनकुळ करिबा बेभार ३२
तर तर नोहिले कार्ज्य नुहइ भल। बिचार सइलेरे कार्ज्य निर्भा कर ३३
से आसिले राज्य सुख कुळ जे उज्वळ। सेथिरे परिश्रम हेबारे सबु भल ३४

रहेंगी। भीतर चित्र बने होंगे। ५२० एक कोष्ठ में पलंग पर गद्दे होंगे। दो नावों में अनेक प्रकार के पदार्थ भरे होंगे। ५२१ केला, नारियल, आम, कटहल रसीले कन्द तथा शरबत, नींबू, नारंगी, खट्टुआ नीबू तथा नाना प्रकार के अन्य फल उसमें रखवा दीजिये। २२-२३ हँड़िया, चावल तथा व्यंजन बनाने की नाना प्रकार की सामग्री, घी, मलाई, मक्खन, दूध तथा दही के पात्र रखवा दीजिये। २४ उसके भीतर बहुत सी दियटें तथा चन्द्रदीप बनवा दीजिये। प्रतिक्षण माणिक्य तथा मुक्ता उनमें झलमलाते रहेंगे। २५ कस्तूरी, अगरु, कपूर, चन्दन तथा अनेक प्रकार के विविध रंग और सुगन्ध से युक्त फूल वहाँ रखवा दीजिये। २६ देवताओं को शोभित करने वाले स्वच्छ वस्त्र, लटकने वाले लाल रंग के पुष्पस्तबक लगे होंगे। २७ जिन्हें देखने से मन मोहित होगा और खाने से मन वश में हो जाएगा। तभी तो विभाण्डक के पुत्र आएँगे। २८ बारह मल्लाह पतवार तथा चप्पू लेकर सरयू नदी में धीरभाव से नावें चलाएँगे। २९ समस्त मल्लाह स्त्रियों के वेश में होंगे। कोई भी पुरुष-वेश में उनके पास नहीं जायेगा। ५३० हे नृपश्रेष्ठ! स्थान-स्थान पर चित्रकारी वाले शिविर तथा छाया मण्डप बनवा दीजिये। ५३१ अपने नगर में मांगलिक उत्सवों का आयोजन करवाइये। तब हम प्रस्थान करेंगी। ३२ जल्दी में कार्य ठीक नहीं होता। अतएव विचारपूर्वक कार्य सम्पादित करना है। ३३ उनके आगमन से राज्य का सुख तथा कुल की उज्जवलता है। उसमे परिश्रम करने से सब ठीक होगा। ३४ आप जाकर समस्त देवताओं की सेवा पूजा करवाइये। विष्णु

सकळ देवतांकु कराअ भज जाइँ। विष्णु प्रतिमा मानंकु अमृत भोग देइ ३५
शिवंक शिररे नेइ गोक्षीरकु ढ़ाळ। तण्डुळ वेल पत्रिकि दिअ मस्तकर ३६
देबी मानंकु माजणा कराअ वहन। बोदा छागळ देइण तोष तांक मन ३७
नटकारी नर्त्तकी डकाइ आण पुण। वाद्यकार दुन्दुभि शव्द करन्तु पुण ५३८

के विग्रहों को भोगराग प्रदान कीजिये। ३५ गो दुग्ध से शिवलिंग का सिर से अभिषेक करवाइये। उनके मस्तक पर अक्षत तथा वेलपत्र चढ़ाइये। ३६ देवियों को शीघ्र ही स्नान करवाइये तथा पाड़ा तथा वकरे देकर उनका मन सन्तुष्ट कीजिये। ३७ नटों तथा नर्तकों को वुलवा लीजिये वाद्यकार लोग दुन्दुभी नाद करें। ५३८



आद्यकाण्ड द्वितीय

जरतांक श्रृंगी ऋषिक आश्रमकु गमन; श्रीराम, लक्ष्मणादि जन्म ओ विश्वामित्र सहगमन

पार्बती बोइले देव शुण हे ईशान। जरता परा गला ऋषिक भुवन १
से पुणि किस कले कह मोर आग। तेबे मोर मने जे होइब सद्भाव २
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो भगवती। जरता संगे गले तेर सती झटति ३
एक चापे बसिले सकळ कामिनी। हर्षरे नृत्य कले मन मोहिनी पुणि ४
गउणा बाजणा जे नाचि बार संग। भ्रूलता भंगि बक्र करिबार व्यंग ५
चातुरी माधुर्य्यरे नयन बुलाइ। हस्तक देखाइ ताकु भुलिबा मति देइ ६
नाना रंग गीत गाइ जे करन्ति नाटरंग। शबद भेदरे आकाश होए रंग ७
आकाशु पुष्प बृष्टि होइलाक पुण। जळ बरषिला प्राये पड़इ पुष्प जाण ८
नाउरिआ ड़ाक देले शुण हे अपसरी। शून्यरु पुष्प बृष्टि हुए देख गो चतुरी ९
शुणिण काम मोहिनी बार जे बनिता। सबु नृत्य रखिण मनरे हेले श्रोता १०
तिनि चापे बसिले जाइण बाण्टि होइ। देखिले आकाशरु पुष्प बृष्टि होइ ११

आद्यकाण्ड द्वितीय

जरता का श्रृंगी ऋषि के आश्रम में जाना; श्रीराम, लक्ष्मण का जन्म और विश्वामित्र के साथ गमन

पार्वती ने कहा हे देव ईशान ! सुनिए। जरता ऋषि के आश्रम को चली गई। फिर उसने क्या किया यह आप हमसे कहिए। तभी मेरा मन सन्तुष्ट होगा। १-२ शंकर जी बोले, हे भगवती ! तुम सुनो। जरता के साथ में तेरह स्त्रियाँ शीघ्रतापूर्वक गईं। एक बेड़े में सभी कामिनियाँ बैठीं। तभी प्रसन्न होकर मनमोहिनी नृत्य करने लगी। ३-४ नृत्य के साथ-साथ गाना बजाना, भृकुटि संचालनयुक्त व्यंग्य भी चलने लगा। चतुरता तथा माधुर्य से नेत्र मटकाकर हाथों को मुद्रा से बुद्धि को विभोर करने लगीं। ५-६ नाना प्रकार से गीतों को गाती हुई वह नृत्य कर रही थीं। उनके सुन्दर शब्द आकाश में गूँज रहे थे। आकश से फूलों की वर्षा होने लगी। बरसात की जलधारा के समान पुष्प बरस रहे थे। ७-८ मल्लाह ने कहा हे चतुर अप्सराओ ! सुनो। देखो यह आकाश से पुष्पों की वर्षा हो रही है। यह सुनकर बारह बारवनितायें तथा काम-मोहिनी सभी नृत्य को रोककर मन में सन्तुष्ट हो गईं। ९-१० उन्होंने आकाश से होती हुई पुष्प-वर्षा को देखा। वह पुष्प अम्लान तथा सुगन्धयुक्त थे। यह

अमळपण पुण्य जे सउरभ वत। देखिण जरता जे मनरे बिचारित १२
बोइला निश्चय्र बासुदेव जात हेले। कहिले देवता किम्पा पुष्प वृष्टि कले १३
एमन्त बिचारी नारी जे आकाशकु चाहिँ। बिद्याधरी अपसरी शून्यरे छन्ति रहि १४
नृत्य गान करन्ति जे देवगणं कर आगे। दुन्दुभि शब्द शुभुछि शून्य मार्गे १५
हरष मनरे जे जरता उठिला। बारवनिताकु घेनि हुळहुळि देला १६
आकाशरे थाइ देबे डाकन्ति सुन्दरी। बेगे देवतांकु तुम्भे कण्टरु कर पारि १७
ऋष्यश्रृंग अइले जे सबुरि देह भल। मर्त्यपुर जन्म तोर सरिला एथर १८
मासे कोड़िए दिबसे आसिबु स्वर्गकु। ऋष्यश्रृंगकु बेगे आण अजोध्या नग्रकु १९
लेउटि चम्पावती नग्रकु देखिबुँ। काम मोहिनी घेनिण संगरे आसिबु २०
एते बोलि देवताए शब्द उच्चये कले। शुणिण जरता जे आनन्द मन हेले २१
से दिन पञ्च जुण पथ गले नाहि। मेला पथ अटइ लता बृक्ष नाहिँ २२
किळामारि नावकु खटाइले पुण। मेलारे रान्धणा जे कले सर्बजन २३
षड़रस भोजन करिण कले आचमन। ताम्बुळ भुञ्जिण नावे बसिले बहन २४
नावरे केरुआळ माने चेतारे रहिले। कन्या माने सेथिरे शय्रन जाइ कले २५
पार्बती बोइले देव शुण हे त्रिलोचन। लोमपादकु कहिले दशरथ राजन २६
ऋष्यश्रृंग बारता कहिब मोते पुण। एबे जरता जाउछि ऋषिंकि आणिण २७

देखकर जरता ने अपने मन मे विचार किया। ११-१२ वह बोली कि निश्चय ही भगवान विष्णु प्रकट हो गए है। नहीं तो देवताओं ने किस कारण से पुष्प वर्षा की। ऐसा विचारते हुए उसने आकाश की ओर दृष्टिपात किया। वहाँ आकाश मे विद्याधरी तथा अप्सरायें खड़ी थीं। १३-१४ जो देवताओं के समक्ष नृत्य तथा गान कर रही थीं आकाश मार्ग में दुन्दुभी का निनाद सुनाई दे रहा था। १५ जरता प्रसन्न मन से उठी। वेश्याओं के साथ उसने मांगलिक शब्द किये। १६ आकाश से देवता लोग कह रहे थे, हे सुन्दरी ! आप शीघ्र ही देवताओं को कष्ट से उवार लें। श्रृंगी ऋषि के आने से सवका भला होगा। मृत्युलोक में तुम्हारा जन्म लेना अव समाप्त हो गया। १७-१८ एक महीना बीस दिन में तुम स्वर्ग आ जाओगी। श्रृंगी ऋषि को शीघ्र ही अयोध्या नगरी में ले आओ। फिर बाद में लौटकर चम्पावतो नगर को देखना। तुम काममोहिनी को साथ लेकर आना। १९-२० इस प्रकार कहते हुये देवताओ ने उच्चस्वर का शब्द किया जिसे सुनकर जरता का मन प्रसन्न हो गया। उस दिन पाँच योजन मार्ग तय हुआ। मार्ग प्रशस्त था। लता और वृक्ष नहीं थे। २१-२२ उन्होंने लंगर डालकर नावों को खड़ा किया। सभी स्त्रियों ने प्रशस्त स्थान पर रसोई वनाई। षड्रस भोजन करके आचमन किया और फिर पान खाकर शीघ्र ही नाव में बैठ गई। २३-२४ नाव खेने वाले लोग जागते रहे और कन्यायें वहाँ पर जाकर सो गई। पार्वती ने कहा हे देव त्रिलोचन ! सुनिये। राजा दशरथ ने लोमपाद से कहा था कि श्रृंगी ऋषि के समाचार मुझे देना। इस

ईश्वर बोइले तुम्भे शुण ठाकुराणी। लोमपाद गले जे नवरे तार पुणि २८
आर दिने हरषे पठाए दूत बेगे। पाञ्च सात जणकु देला आज्ञा संगे संगे २९
बोइला बेगे जाअ अजोध्या नवर। दशरथंक आगरे कररे गोचर ३०
बोलिब ऋष्य श्रृंगकु आणिबा पाइँ जेभेदि।
जरता काम मोहिनी गलेणि पुणि बेगि ३१
एते बोलि धन जे देलाक राजन। चळिले चार गण होइण प्रसन्न ३२
दश दिने सेहि पथ बेगे चळि गले। अजोध्या कटकरे प्रबेश होइले ३३
दशरथंकु देखिण ओळगिले पुण। बोइले मइत्र हे देखिल तुम्भे जाण ३४
ऋष्यश्रृंग आणिबाकु गलेणि अपसरि। जरता काम मोहिनी संगरे बार नारी ३५
तिनि गोटि चापरे जे नाना द्रव्य भरि। सरजू नदीरे चाप चाळिले दण्डधारी ३६
शुणिण दशरथ आनन्द मन हेले। अइले बारता मोते कहिब बोइले ३७
खड़ु नोळो शाड़ो सन्तोषरे देले पुण। आनन्दरे दूतगण गलेक फेरिण ३८
चम्पावती राज्यरे से हेलेक प्रबेश। लोमपाद राजा आगे कहिले बिशेष ३९
बोइले तुम्भ थाळि घेनिण चळि गलुँ। अजोध्या नृपतिकु बारता कहिलुँ ४०
आनन्द होइ मने अनेक तोष हेले। अइले मोर ठाकुं आसिब बोइले ४१
पार्बती बोइले तुम्भे शुण हे ईशान। दशरथ राजा जे बार्त्ता थाए पुण ४२

समय जरता ऋषि को लाने के लिए जा रही है शंकर जी बोले हे देवी ! सुनिये। राजा लोमपाद अपने महल में चले गये। २५-२६-२७-२८ उन्होंने दूसरे दिन प्रसन्नतापूर्वक शीघ्र ही दूत को भेज दिया और साथ-साथ पाँच सात लोगों को आज्ञा देते हुये शीघ्र ही अयोध्या नगर को जाने को और राजा दशरथ के दर्शन करने को कहा। २९-३० उन्होंने कहा कि राजा से कह देना कि जरता तथा काममोहिनी श्रृंगी ऋषि को लाने के लिये शीघ्र ही भेज दी गई हैं। इतना कहकर राजा ने उन्हें धन दिया। दूत लोग प्रसन्न होकर चल दिये। ३१-३२ वह दस दिनों तक मार्ग में शीघ्र चलते हुये अयोध्या दुर्ग में पहुँच गये। दशरथ को देखकर उन्होंने प्रणाम करके कहा हे मित्र ! देखिये। श्रृंगी ऋषि को लाने के लिये अप्सरा जरता के साथ में काममोहिनी तथा अन्य वेश्यायें एक साथ तीन बेड़ों में नाना प्रकार के पदार्थ लिये हुये सरयू नदी में चली गई हैं। ३३-३४-३५-३६ यह सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने कहा कि उनके आने पर हमें समाचार देना। महाराज ने उन्हें कंकण तथा पगड़ी इत्यादि दी। दूतगण प्रसन्न होकर लौट गये। ३७-३८ वह चम्पावती राज्य में पहुँचे और उन्होंने राजा लोमपाद के समक्ष सब कुछ बता दिया। उन्होंने कहा कि आपकी थाली लेकर हम लोग अयोध्या गये और अयोध्या नरेश से समस्त समाचार निवेदित किये। ३९-४० उनका मन प्रसन्न और भलीभाँति संतुष्ट हो गया। उन्होंने कहा कि आ जाने पर हमारे पास अवश्य आना। ४१ पार्वती ने कहा

कहिकरि दूत जे फेरिण अइले। किस विचार कला पछन्ते राज्येश्वर ४३
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। दशरथ राजार तुम्भे शुण चरिति ४४
खबर करिण दूते आसिले फेरिण। दशरथ राजा जे विचार कले मन ४५
पात्र मन्त्री अमनात्य सामन्त डाकिला। वशिष्ठंकु ड़काइ वेगे अणाइला ४६
सभाकरि वसिले जे नृपति शेखर। वशिष्ठंकु वोइले ऋषि शुण मो उत्तर ४७
नव सहस्र वरस होइलाक मोते। मो' कोळरे पुत्र नाहिँ न देखिलि नेत्रे ४८
वाकि अछि सहस्रे वरष आयुषत मोहर। विचारु अछि मुंजे जिवइँ वन घोर ४९
केउँ कार्य्य ए जन्मरे मो जीव असार्थक। सातश पञ्चाश राणीरे नोहिला सुत ५०
वशिष्ठ वोइले जे अनेक राजागण। मर्त्य पुरे देह वहि अछन्ति सर्व जाण ५१
दश विश्वा पुत्र वलान्त छविश्वा पुत्र हीन। से माने समस्ते कि गले घोर वन ५२
काळ शेष वेळरे पोषिआ पुत्र करि। जे अवा एथिरे पुण जाउ छन्ति मरि ५३
से कथाकु धारा जे पूर्वरु अछइँ। पात्र मन्त्री परजा विचारन्ति थाइ ५४
हस्तीर मस्तकरे सुवर्ण कलस। देइण से राज्यरे वुलन्ति हरष ५५
से कळस हस्ती ढ़ाळे जाहार उपरे। से राज्यरे राजा से हुअइ सेहु वेळे ५६
तुम्भे किम्पा मने जे निरस करु अछि। जाहार लेखिथिव कर्म विधाता पुरुष ५७

हे ईशान! सुनिये। राजा दशरथ को समाचार देकर दूत वापस आ गये। पीछे राजेश्वर ने क्या किया। ४२-४३ शंकर जी वोले हे भगवती! तुम राजा दशरथ का चरित्र सुनो। ४४ खवर देकर दूतों के वापस जाने पर राजा दशरथ ने अपने मनमें विचार किया। उन्होंने सभासद, मंत्री, अमात्य, सामन्त तथा वशिष्ठ को शीघ्रतापूर्वक वुलवा लिया। ४५-४६ नृपति शिरोमणि ने सभा में वैठकर वशिष्ठ से कहा हे ऋषि! मेरी वात सुनिये। मुझे नौ हजार वर्ष हो गये परन्तु मेरी गोद में इन नेत्रों से पुत्र नहीं दिखाई दिया। ४७-४८ मेरी आयु एक हजार वर्ष शेष रह गई है। मैं घोर जंगल में जाने का विचार कर रहा हूँ। ४९ पता नहीं किस कारण से इस जन्म में मेरा जीवन निरर्थक हो गया है। सात सौ पचास रानियों के होते हुये भी पुत्र नहीं हुआ। ५० वशिष्ठ ने कहा कि इस मृत्युलोक में अनेक राजागण देह धारण किये हुये हैं। दस विश्वा पुत्र से दुखी और छै विश्वा पुत्रहीन हैं क्या वह लोग सभी घोर जंगल में चले गये। ५१-५२ काल की समाप्ति पर कुछ लोग वालकों को गोद लेकर मर जाते हैं। ५३ यह धारा पूर्वकाल से चली आ रही है। वहाँ पर उपस्थित सभासद मंत्री तथा प्रजा विचार करने लगी। ५४ हाथी के मस्तक पर स्वर्ण कुम्भ रखकर उसे प्रसन्नतापूर्वक उस राज्य में घुमाया जाता है। हाथी वह कलश जिसके ऊपर डाल देता है उस राज्य में उस समय वही राजा वना दिया जाता है। ५५-५६ तुम अपना मन निराश क्यों कर रहे हो। ब्रह्मा ने जो भी कर्म की रेखा लिखी होगी। राजा ने कहा कि मेरी वात सुनिये। यह हमारी

राजन बोइले हे शुण मोर बाणी। शतषठि पुरुष होइला मोर पुणि ५८
ततधन पुरुषे जात जे सगर। ताहार होइले षठिसहस्त्र कुमर ५९
कपिळ मुनि शापरे भष्म से होइले। सेठारु दइव जे विचार पुण कले ६०
सहस्त्र पुत्रंकर शतषठि सहस्त्र बोहु थिले। तांकरि रजरे भगिरथी जन्म हेले ६१
से कुमर किछिदिन राज्य कला पुण। पितांकर दहिज्य शुणिला कर्णण ६२
तांकर घरेणी गर्भे एक मास स्थित। पितृ उद्धार निमन्ते गले भगीरथ ६३
तपकरि गंगाकु अणाइले पुण।पितांकु उद्धारि सेहि गलेक स्वर्ग स्थान ६४
कउमदि राजांकर मानधाता सुत। स्तिरींकर गर्भरे होइले सम्भुत ६५
जळ मन्त्रि पाणि जे बृहस्पति देले। पितांकर शरीरु पुत्र जात हेले ६६
मानधाता नाम जे होइला ताहार। षड़ चक्रवर्त्ती से जे होइले सेहु सार ६७
से माने एमन्ते कुल धर्म रखि। शतषठि पुरुषरे हेलि मुँ निर्माखि ६८
ताहा शुणि बोइले सुमन्त्री मन्त्रीवर। देवकूट करिछन्ति शुण नृपबर ६९
जेउँ दिन तुम्भे हेल नूआँ राजा पुण। से बरष गंगारे बारेणी स्नाहान ७०
से स्नाहान करिबाकु मुहिँ जाइ थिलि। स्नान सारि भरद्वाज मठरे मिळिलि ७१
देखिलि ऋषि गण सेठारे मेळ पुण। भरद्वाज पचारिले कुमरकु जाण ७२
बोइले जम्बुद्वीपे लक्षेक राजन। दशरथ राजांकर नाहिँ जे नन्दन ७३

सरसठवीं पीढ़ी है। ५७-५८ सगर का जन्म तपस्वी पुरुष से हुआ था। फिर उनके साठ हजार बालक हुये। वह कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये। तब विधाता ने विचार किया। हजार पुत्रों की सड़सठ हजार बहुएँ थीं। उन्हीं के रज से भगीरथ का जन्म हुआ। उस कुमार ने कुछ दिन राज्य किया। फिर उसने कानों से पिता का भस्म होना सुना। ५९-६०-६१-६२ उनकी पत्नी को एक मास का गर्भ था। भगीरथ पितरो का उद्धार करने के लिये गये। वह तपस्या करके गंगा को ले आये। पितरों का उद्धार होने से वह स्वर्गलोक को चले गये। ६३-६४ कौमोदी राजा का पुत्र मान्धाता था। जो स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वृहस्पति ने उन्हें अभिमंत्रित जल दिया जिससे पिता के शरीर से पुत्र उत्पन्न हुआ। ६५-६६ उसका नाम मान्धाता हुआ। जो छै चक्रवर्ती सम्राटों में श्रेष्ठ हुआ। उन्होंने इस प्रकार कुल-धर्म की रक्षा की। सरसठवी पीढ़ी में मेरा जन्म हुआ। ६७-६८ यह सुनकर श्रेष्ठ मंत्री सुमन्त ने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! देवताओं ने माया रची है। जिस दिन आप नये राजा वने उसी वर्ष गगा में वारुणी-स्नान था। ६९-७० वह स्नान करने मैं गया था। मैं स्नान करके भरद्वाज के मठ में पहुँचा। मैंने वहाँ ऋषियों के समुदाय को एकत्रित देखा। भरद्वाज ने पूँछा क्या आप कुमार को जानते है ? ।७१-७२ तब वह वोले कि जम्बू द्वीप में एक लाख राजा है। राजा दशरथ के पुत्र नहीं है। दशरथ तथा लोमपाद के किस कारण से पुत्र नहीं है ? यह

दशरथ लोमपादर कि कार्ज्ये पुत्र नाहिँ। धर्मवन्त राजा जे अधर्म करि नाहिँ ७४
शुणि सनान्तन सनन्त कहे पुण। ऋष्यश्रृंग जात हेले देवे पुत्र दान ७५
चम्पावती राज्य जे अपाळक हेव। ब्रह्म शापरे बार वर्ष वहि जिव ७६
तेवे से ऋष्यश्रृंग जे आसिव कटक। जळवृष्टि करिव हे आसिला मात्रक ७७
परजा सुखी हेवे से राज्ये हेव धान। लोमपाद राजा जाग आरम्भिवे जाण ७८
ऋष्यश्रृंग चरु नेले कुमर जात हेव। ए कथाकु पूर्वरु सञ्चिछि दइव ७९
दशरथ राजार दोहिती अबि वाहि। से कन्याकु विभा देवे ऋष्यश्रृंग कुहिँ ८०
चम्पावती कटकरु ऋष्यश्रृंग जिव। अजोध्या कटकरे प्रवेश होइव ८१
से राज्यरे जाग जे करिवे ऋष्यश्रृंग। चरु नेले चारिपुत्र होइवे पुण जन्म ८२
वासुदेव चतुर्द्धा रूपरे जात जाण। तिनि राणी गर्भरु चारि पुत्र पुण ८३
भरद्वाज पचारिले आहे ऋषि कह। किम्पाइ वासुदेव पाइवे नर देह ८४
सनन्त वोइले से जे मारिव असुर। सप्तम अवतार हेवे चक्रधर ८५
एमन्त विचार जे अछइँ से थिरे। देवताए हरिकि मनाइ भावरे ८६
निर्मल ऋषि वोइले शुण हे ऋषि पुण। देवंकु केउँ असुर असाध्य हेलेण ८७
सनान्तन वोइले चारि जे रावण। धरिण वन्दी कले देवगण पुण ८८
ऋषि वोइले पर्शुराम अछि जन्म होइ। सनान्तन वोइले ता हस्तरे असुर नमरई ८९

दोनों राजा धर्मवान् है। इन लोगों ने अधर्म नहीं किया है। ७३-७४ यह सुनकर सनत और सनन्दन वोले कि श्रृंगी ऋषि के उत्पन्न होने पर वह इन्हें पुत्रदान देंगे। चम्पावती राज्य में अकाल पड़ेगा। ब्राह्मण के शाप से बारह वर्ष व्यतीत हो जायेंगे। ७५-७६ तब श्रृंगी ऋषि राजधानी में पधारेंगे। उनके आगमन मात्र से वर्षा होगी। प्रजा सुखी होगी तथा उस राज्य में धान होगा। तब राजा लोमपाद यज्ञ की रचना करेंगे। ७७-७८ श्रृंगी ऋषि के चरु लेने पर पुत्र उत्पन्न होगा। यह बात पहले से ही विधाता ने लिख रखी है। राजा दशरथ की पुत्री अविवाहित है। उस कन्या का विवाह श्रृंगी ऋषि से होगा। ७९-८० श्रृंगी ऋषि चम्पावती राज्य को जायेंगे। वह अयोध्या की राजधानी में प्रविष्ट होंगे। श्रृंगी ऋषि उस राज्य में यज्ञ करेंगे। चरु लेने पर फिर चार पुत्रों का जन्म होगा। ८१-८२ भगवान विष्णु तीन रानियों के गर्भ से चार पुत्रों के रूप मे उत्पन्न होंगे। भरद्वाज ने कहा कि हे ऋषि! यह बताइये कि भगवान विष्णु किस कारण से नर रूप में शरीर धारण करेंगे। ८३-८४ सनत वोले कि वह चक्रधारी असुर का संहार करने के लिये सातवाँ अवतार ग्रहण करेंगे। वहाँ इस प्रकार का विचार बन रहा है। देवताओं ने भगवान विष्णु को भावपूर्वक मना लिया है। ८५-८६ निर्मल ऋषि ने कहा हे मुनि! सुनिए। कौन से असुर देवताओं के लिये दुःसाध्य हो गए। सनातन ने कहा कि चार रावण है जिन्होंने देवताओं को पकड़कर वन्दी बना लिया है। ८७-८८ ऋषि वोले कि परशुराम का भी तो जन्म हो चुका है। सनातन ने कहा कि

बिधाता बरदेइ लिहिछि कपाळे। बासुदेवंक हस्तरे मरिबे असुरे ९०
भरद्वाज बोइले शुण हे चक्रधर। आयुध घेनि जन्म हेबे कि मर्त्त्यपुर ९१
सनन्त सनान्तन बोइले ऋषिंकि। धनु कमाण धरि मारिबे असुरटि ९२
शंक चक्र गदा पद्म नथिब तांक कर। बेनि करे बहिबे असुर सकळ ९३
गरुड़ बाहनक चढ़िबे पुण। चारि रावणकु मारिबे चढ़िकरि जान ९४
भरद्वाज ऋषि बोले किम्पाइ आयुध तेजिब।
सनान्तन बोइले दुइ आयुध जात हेब ९५
गदा आयुधंकु आगे पर्शुराम नेला। षष्ठ अवतारे पर्शुराम जात हेला ९६
बैकुण्ठ शूण्य हेब दश सहस्र बरष। सारस्वत पद्म दळ थिबे एक मात्र ९७
तिनि द्वारे द्वार पाल जगि थिबे रहि।
पश्चिम द्वारे द्वारी रावण कुम्भकर्ण दुइभाइ ९८
एते कहि सनन्त जे सनान्तन गले। स्वर्गकु पुणि जे सप्तऋषि चळे ९९
ए कथा मान मुं जे शुणिलि तांक ठारु। से जिबारु मुँ अइलि शुण हन्तकारु १००
शुणिण सकळ जन सन्तोष होइले। बशिष्ठ दशरथ सामन्त पात्र तुळे १०१
बोइले बहु दिन गलाणि त जाण। बरषके जणाजिब सकळ भिआण २
पक्ष करे जणा जिब आसिबे ऋषि पुण। जळ बरषिले जणाजिब सत्य गुण ३

उनके हाथों से असुर का विनाश नहीं है। ब्रह्मा ने वर देकर उसके मस्तक पर वासुदेव के हाथों द्वारा संहार लिख दिया है। ८९-९० भरद्वाज ने कहा क्या चक्रधर वासुदेव आयुध लेकर मृत्युलोक में जन्म ग्रहण करेंगे। सनतसनन्दन ने ऋषि से कहा कि वह धनुष बाण लेकर असुरों का विनाश करेंगे। ९१-९२ उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म नहीं होंगे। वह समस्त असुरों का दोनों हाथों से विनाश करेंगे। वह गरुड़ वाहन पर न चढ़कर यान पर आरोहण करके चारों रावण का विनाश करेंगे। ९३-९४ भरद्वाज ने कहा कि वह आयुधों का त्याग किसलिये करेंगे। सनातन ने कहा कि दो आयुध जन्म धारण करेंगे। गदा आयुध तो पहले ही परशुराम ने ले लिया है जिन्होंने छठा अवतार ग्रहण किया है। ९५-९६ दस हजार वर्ष के लिये वैकुण्ठ शून्य हो जाएगा। एकमात्र सारस्वत पद्म ही रह जाएगा। तीनों द्वारों पर द्वारपाल पहरे पर रहेगे। पश्चिमद्वार के द्वारपाल रावण और कुम्भकर्ण दोनों भाई हैं। ९७-९८ इतना कहकर सनत् और सनातन चले गए। फिर सप्तऋषि भी स्वर्ग को चल पड़े। मैंने उनसे यह बात सुनी थी। हे शत्रुहन्ता! सुनिये। उनके जाने पर मैं भी चला आया। ९९-१०० यह सुनकर सभी लोग सन्तुष्ट हो गए। वशिष्ठ दशरथ सामन्त तथा सभासद विचार कर बोले कि बहुत दिन व्यतीत हो गए। एक वर्ष में सारी माया समझ में आ जाएगी। १०१-२ एक पखवारे में पता चल जाएगा। जब ऋषि आयगे तब जल की वृष्टि होने से सत्य का पता

एते कहि सभारु समस्ते गले भले। पार्वतींक आगे एहा ईश्वर कहिले ४
पार्बती बोइले शुण हे पञ्चानन। जरता काम मोहिनी गलेक नावे पुण ५
प्रथम दिन पाञ्च जुणरे जाइ रहि। द्वितीय दिनर कथा कह हे गोसाइँ ६
ईश्वर बोइले शुण हे भगवती। रजनी शेषरे जे ना वचाळि छन्ति ७
दुइ पाखे गिरि जे मझिरे नाव पुण। चळइ चाप नाव होइण प्रखर गतिण ८
गिरि परे डाक जे शुभे जीवंकर। गर्ज्जन रड़ि करन्ति पर्वत उपर ९
बन गोरु माने जे हेमारड़ि छन्ति। वळिआ कुकुर राव कुहु कुहु छन्ति ११०
शार्द्दूळ कुहाट मारे सते गिरि छाड़ि। सिहंकर शबद शुभइ घड़घड़ि १११
हस्तींकर गर्ज्जन अश्वंकर हेर्षा राव। मृग शम्बरंकर शंकारे वड़ भाव १२
बराह शूकर जे देखिण राव छन्ति। चारि वर्णरे बानरे डाळरे नाचन्ति १३
नाव देखि भालु माने करन्ति रोदन। पुत्र दोहितांकु जे सुमरन्ति पुण १४
कृष्णवर्ण मृग जे कस्तुरि जुआद। खुराण्टि खुरंग शशा मूषा परमाद १५
हरिण बाहुटिआ गण्डा जे गयळ। वण गध वण मनुष्य पल पल १६
एमाने हुँकार जे करन्ति स्वभावरे। बणर मइँष माने धाइँ छन्ति खरे १७
नदी कूळरे आसि प्रबेश पुणि होन्ति। मर्द्दळ झञ्जाळ शुणिले लेउटि पळान्ति १८
एमन्त जीवंक नाम मुँ कहिबि केते। अनेक जातिर जीव अछन्ति बनस्ते १९

लग जाएगा। इतना कहकर सभी लोग सभा से उठ गए। यह पार्वती से शंकर जी ने कहा। ३-४ पार्वती ने कहा, हे पंचानन! सुनिये। जरता तथा काममोहनी नाव से चली गयीं। पहले दिन वह पाँच योजन जाकर ठहर गई। हे नाथ! अब दूसरे दिन की कथा कहिए। ५-६ शंकर जी बोले, हे भगवती! सुनो। रात्रि के व्यतीत हो जाने पर उन्होने नावें चला दीं। दोनों ओर पर्वत श्रेणियों के मध्य में नावों के बेड़े प्रखरगति से चले जा रहे थे। ७-८ पर्वत पर जीव जन्तुओं का शब्द सुनाई दे रहा था। वह पर्वत के ऊपर गर्जन कर रहे थे। वन्य गाएं रँभा रही थीं बलवान कुत्ते भौंक रहे थे। शार्दूल के गर्जन से लगता था जैसे पर्वत फटकर गिर पड़ेगा। सिह का घोर गर्जन सुनाई दे रहा था। हाथियों की चिग्घाड़ तथा घोड़ों की हिनहिनाहट से हिरन और साँम्हर सशंकित थे। ९-११०-१११-१२ देखते ही वाराह शूकर शब्द करने लगते थे। चार वर्णों के बानर डालों पर उछल कूद रहे थे। नाव देखकर भालुओं के समूह रुदन कर रहे थे। वह अपने बच्चों का स्मरण कर रहे थे। १३-१४ कृष्णसार मृग तथा कस्तूरी मृगों के समूह विशेष प्रकार के मृग, खुरवाले पशु, खरगोश, चूहे इत्यादि हिरन, बाहुटिया (पशु विशेष) गैण्डा, अरना भैंसे, वन्य गधे तथा वन मानुषों के दल के दल स्वभाववश शब्द कर रहे थे। जंगली भैंसें प्रखरवेग से दौड़ रही थीं। १५-१६-१७ नदी के तट पर यह सब आकर प्रविष्ट होने लगे। फिर मृदंग तथा झांझ की ध्वनि सुनकर लौटकर भागने लगे। १८ इस प्रकार के जीवों के नाम मैं कितने कहूँ। वन में नाना प्रकार की जातियों

केरु आळ ड़ाक देले अपसरीए शुण। बाहारे रहिण देख गो जीव पुण १२०
शुणिण अपसरीए जळाक बाटि बाटे चाहिँ।अनेक जन्तु देखिण मनरे तोष होइ १२१
तिनि दिने गिरि जे पर्बत पथ सरि। पड़िलाक मेला जे पुर पाटणा फेरि २२
से कथामान देखि हरष मन हेले। कूळरे रन्धाकरि भुञ्जि सुस्थे गले २३
जळ भितरे पड़िला कइँ बण जाण। नाव चळिबारे ड़ाकइ चड़ चड़ २४
भ्रमर लीळा करे पुष्पंक उपर। दुइ दिन परिजन्ते नाब धीरे चळि
दुइ दिन अन्तरे निर्मळ जळे मिळि × × × × २५
निर्मळ जळरे नाव चळइ खरे पुण। दुइ पाखे कळप बृक्ष अप्रमाण २६
फळरे बृक्षमाने पाउछन्ति शोभा। मळय़ चन्दन जे बासना दिए प्रभा २७
श्रीफल नारिकेळ ताळ गुआ गछ। आम्ब पोलांग जे मरिच निम्ब बृक्ष २८
कदळी नटीकाळ लेम्बु जे नारंग। पणस कमळा टभा जे सउरांग २९
रक्त चन्दन जे अगर चन्दन।ढ़ाउरंग रकत पिड़ि कुम्भि जे मलांग १३०
कउरोभ सउरोभ करळा लेखन। भइञ्च धळा आंकुळ बर कोळि पुण १३१
दुम्बुर झिञ्जर शाळ पिआशाळ। हन्ताळ बेताळ लवंग जाईफळ ३२
मेथि मुथा जुआणि धनिआ सत्य आम्ब। शिशु चाउलि जे बेणु बृक्ष दम्भ ३३
अनेक बृक्षमाने जे सेथिरे अछन्ति। जम्बु जम्बिळ जे बृक्ष छन्ति अनेक
बृक्ष पन्ति पन्ति फळ सेथिरे अनेक × × × × ३४

के जीव हैं। नाविकों ने कहा हे अप्सराओ! सुनो। बाहर आकर आप लोग जीव-जन्तुओं को देखो। १९-१२० यह सुनकर अप्सराओं ने खिड़की से झाँककर नाना प्रकार के जन्तुओं को देखा। तब उनका मन संतुष्ट हो गया। तीन दिनों में वह पर्वतीय मार्ग समाप्त हुआ। प्रशस्त प्रांत नगर गाँव तथा फेरी मार्ग में पड़े। उन्हें देखकर उनके मन प्रसन्न थे। किनारे पर रसोई बनाकर भोजन करके सब विश्राम करने लगे। जल के भीतर कुमुदनी का वन पड़ा। नाव चलने से चड़चड़ का शब्द होता था। १२१-२२-२३-२४ पुष्पों के ऊपर भँवरे लीला कर रहे थे। दो दिन पर्यन्त नाव धीरे-धीरे चली। दो दिनों के पश्चात् निर्मल जल मिला, निर्मल जल में नाव प्रखरता से चल पड़ी। दोनों तटों पर अनगिनत फलवाले स्वर्गीय वृक्ष लगे थे। २५-२६ फलों से वृक्ष शोभायमान लग रहे थे और मलय चन्दन की वासना वायु प्रसारित कर रही थी। बेल, आँवला, नारियल, ताड़ सुपारी, आम, पोलांग (वृक्ष विशेष) मिर्च नीम, केले, तथा गरी, नींबू, नारंगी, कटहल, खट्टे नींबू, अम्लरसपूर्ण फल विशेष, सुन्दर लाल चन्दन अगरु चन्दन दाउरंग, लाल फल, कुम्भी तथा अमरवेल आदि वृक्ष लगे थे। २७-२८-२९-१३० काँटे वाले वृक्ष, सुगन्ध देने वाले वृक्ष करेला, भोजपत्र के वृक्ष, भइंच (वृक्ष विशेष) श्वेत अंकुल, बेर, तुम्बर, झिन्झर शाल पियासाल, हंताल, बेताल, लौंग, जायफल, मैथी, अजवाइन, धनियाँ नाना प्रकार के आम, कोदों, बाँस के वृक्ष तथा अन्य अनेक प्रकार के वृक्ष विशेष वहां

चारि दिन से बन सरिलाक जेणु । पद्मबन पड़िला नचळे नाव तेणु ३५
तिनि चाषरे चबिश कादरे नेइ पेलि ।
चारि बर्णरे पद्म जे फुटिण शत शोभा करि ३६
कळा धळा रंग जे बसन्त वर्ण दिशि । बासरे आमोद जे होइछि नदी गोटि ३७
भ्रमर माने इकार करुछन्ति पुणि ।ए पुष्परु से पुष्पकु मारइ कुन्त जाणि ३८
एमन्त बोलि रोदन करइ भ्रमर ।से बाणी शुणि ताटका होइलेक घोर ३९
बिचारिले एकथा शुणा जे नाहिँ पुण ।केउँ ठारे नारी पाञ्च पुरुषे मारे बाण १४०
से बने पक्षीमाने अछन्ति जे पुणि । से मानंकु जरता पचारे पुण बाणी १४१
पुरुष माने शबद किम्पा एथि द्यन्ति । जीव माने बोइले शुण गो चन्द्रमुखी ४२
ए बनरे जेते मदन भ्रमर । ए पुंसमाने ताकु करन्ति हिंसा बड़ ४३
शरीर समर्पन्ति छळ पण करि ।ब्याधकु फाश जेसने थाआन्ति आबोरि ४४
से पुरुष माने कामरे होन्ति भोळा । मारन्ति दयाधर्म नाहिँ सेथि परा ४५
ए स्तिरी पुरुष माने अण जे बिश्वासी । ए नारिंकि दण्डुइ मतनाग फासि ४६
जरता बोइले ए अटइ असार ।राढ़ेणि पिचाशुणि ए जणा गला एथर ४७
केरु आळंकु चाहिँ जरता बोइला । भांग यार आश्रय ए अटइ दोषी परा ४८

लगे हुए थे । १३१-३२-३३-३४ जामुन जंभिरी के अनेक वृक्ष पंक्ति की पंक्ति में लगे थे और उनमें फल लदे हुये थे । चार दिन तक इस प्रकार का वन मार्ग में पड़ा । आगे चलकर कमलों का वन पड़ा जिससे नाव नहीं चल रही थी । तीन बल्लियों तथा चौबीस चप्पुओं से नावों को ठेला गया चार प्रकार के कमल प्रस्फुटित होने से शोभा सौ गुनी थी । काले, सफेद, लाल तथा पीले रंग के कमल की सुगन्ध से सम्पूर्ण नदी सुवासित हो रही थी । ३५-३६-३७ भँवरे एक फूल से दूसरे फूल पर मड़राते हुये अठखेलियाँ कर रहे थे । इस प्रकार से भँवरों का रोदन सुनकर वह सब अवाक् हो गई । उन्होंने विचार किया कि ऐसी बात तो कही सुनी नही गयी कि कही नारी लक्ष्य करके पुरुष को बाण मारे । ३८-३९-१४० उस वन में बहुत से पक्षी थे । जरता ने उनसे पूंछा कि यहाँ पुरुष लोग कैसा शब्द कर रहे हैं । उन जीवों ने कहा कि हे चन्द्रमुखी ! सुनों । इस वन में जितने मदमस्त कामी भँवरे है । यह पुरुष लोग उनकी हिसा करते हैं । १४१-४२-४३ शरीर समर्पण के बहाने छल करते है । जैसे व्याध का जाल आच्छादित कर लेता है । वह पुरुष लोग काम में विभोर हो जाते हैं । फिर मरते हैं । वहाँ दया-धर्म कुछ नहीं है । यह स्त्री पुरुष लोग अविश्वासी है । इन नारियों को मत्त नाग-फॉस में फाँस कर दण्ड देते हैं । ४४-४५-४६ जरता ने कहा कि यह सारहीन है । इससे तो पता चलता है कि यह दुष्ट पिशाचिनी है । जरता मल्लाहों की ओर देखते हुयी बोली

शुणिण तकरु आल निराटे काद पेलि । तिनि दिने से बनरु नाव जे बाहारि ४६
निर्मळ जळरे नाव प्रवेश होइला । सेठारु तिनि दिने जे नाव चळि गला १५०
नदी कूळर बन दुइ पाखरे तोरा ।अनेक लतामध्यरे अहिमाने भेळा भेळा १५१
सतेकि नाव मानंकु गिळि देबे सेहि । अनेक अहिमाने आसन्ति पाणि खाइ ५२
काहार तिनि फेणा पाञ्च फेणा कार । काहार मुण्ड चूळ दिशइ सुन्दर ५३
केवणा अहिठारे शंख चक्र चिन्ह × × × × ५४
केहु नीळ बर्ण केहु दिशइ धवळ । केउँ सर्प गोटि दिशइ भयंकर ५५
एमन्ते दिन के जे देखिले सर्पबन । सेठारु देखिले जाइ पुष्पक बन पुण ५६
काद छाड़ि केरु आळ आहुलारे बाहि । मधुबन प्राय़ेक बनेक पड़इ ५७
से बनरे पक्षी जन्तु अछन्ति बहुत । शारी शुआ कोकिळ पिक जे ड़ाहुक ५८
तेण्डुआ पाणिकुआ बितारि माछरंका ।बक श्यामळ पारुआ चकोर काठ डेसा ५९
नीळवर्ण चडाइ चक्रबाक पक्षी ।चातेक चाहाणि बाइ चटिआ नामे पक्षी १६०
बडकांक सानकांक काउ जे बइँशि । बाबुरिआ लोधिआ हंस चारि जाति १६१
कामहंस चाळि पेचक भल्लुक । मन्तुरा सन्तुरा झिंक बज्र कावत ६२
बणि राज बणि कुम्भा दुआ जे कापेता × × × × ६३
नाना वर्णरे पक्षी सेथिरे छन्ति पुण । शब्दरे बन जे कहुकु अछि जाण ६४

इनका आश्रय तोड़ दो। यह दोषी हैं। ४७-४८ यह सुनकर मल्लाहों ने निरन्तर चप्पू चलाते हुये तीन दिनों में उस वन से नावों को बाहर निकाल दिया। नावें निर्मल जल में प्रविष्ट हुयीं। वहाँ से तीन दिन तक और नावें चलती रहीं। ४९-१५० नदी के दोनों तटों पर घने जंगल थे। अनेक लताओं के बीच में सर्प बहुतायत में विद्यमान थे। लगता था मानो सचमुच यह नावों को निगल जायेंगे। बहुत से सर्प पानी पीने के लिये आते थे। किसी के तीन फन और किसी के पाँच फन थे। किसी के सिर पर सुन्दर बाल दिखाई दे रहे थे तथा किसी सर्प के शंख और चक्र के चिन्ह विद्यमान थे। १५१-५२-५३-५४ कोई नीले रंग और कोई सफेद दिख रहा था। कोई सर्प भयंकर दिखाई दे रहा था। इस प्रकार सारे दिन उन्होंने सर्पों के वन को देखा। वहाँ से चलकर फिर उन लोगों ने पुष्पक वन देखा। ५५-५६ मल्लाह चप्पू छोड़कर बल्ली से नाव चलाने लगे। वहाँ पर एक वन मधुवन के समान पड़ा। उस वन में बहुत से पशु-पक्षी थे। तोता, मैंना, कोयल, पिक, डाहुक, पपीहा, बटेर, टिटहरी, मछली खाने वाले पक्षी, बगुले, जंगली कबूतर, चकोर, काठफोड़ा, नीलकंठ, चक्रवाक, चातक, खंजन, पवई, छोटे बड़े सारस, कौवे, हंसों की चारों जातियाँ, उल्लू, घुग्घू महोख, ढेक आदि विशेष प्रकार के बहुत से पक्षी वहाँ पर थे। उस वन में उन सबका कलरव गूँज रहा था। ५७-५८-५९-१६०-१६१-६२-६३-६४

शुणिण आनन्द जे अपसरीगण। बोइले ए वन पूर्बे बहुत तपी जाण ६५
से ठारु नाव जे चळिला धीरे धीरे। ग्राम पाटणा अनेक देखिले कूळरे ६६
जळेश्वर देवता बोलिण लिंग पुण। से स्थानरे नाव जे न चळिला पुण ६७
नावरु ओहलाइण सर्बे गले। जळेश्वर लिंगकु दर्शने जाइ कले ६८
तण्डुळ बेल पत्र देलेक शिररे। परिड जळ नेइ शिररे निउडिले ६९
प्रसन्न होइण जळेश्वर बर देले। वासुदेव कार्ज्यरे जाउछ तुम्भे भले १७०
प्रसन्न होइलि एबे ऋष्य श्रृंगकु आण। शुणिण सर्बजन नमस्कार हेले पुण १७१
बिनति होइण जे सेठारु चळि गले। चापरे बसि नृत्य आरम्भ सेहु कले ७२
कौशिक बने जाइ हेले पर बेश। कोड़िए दिवस तहिँ जे हेला शेष ७३
तुठ निरमळ जे पाणि गंगाजळ। मुगनि पथर पडिछि माळ माळ ७४
जिबा आसिबारे पहण्ड अछि पड़ि। देखिण अपसरीए जे मनरे भाळि ७५
बोइले एठारे होइछि दाण्ड गोटि। एहि ठारे छन्ति बिभाण्डेक ऋषि ७६
एमन्त बिचार जे समस्ते बसि कले। चाप डिगा मानंकु तळकु खसाइले ७७
अण तुठरे नाव रखिले नेइ करि। अदृश्य कराइले सकळे बिचारि ७८
रजनीरे सेठारे रहिले सर्बे पुण। रान्धणा करिण जे कलेक भोजन ७९

कलरव सुनकर प्रसन्न होकर अप्सराएँ बोलीं कि यह वन पूर्व से बहुत ही पुण्यवान तपस्वी है। वहाँ से नावें धीरे-धीरे चलने लगीं। उन्होंने बहुत से नगर तथा गाँव तटपर देखे। ६५-६६ वहाँ पर जलेश्वर देव का लिंग था। उस स्थान पर नाव नही चली। सब लोग नाव से उतर पड़े और जाकर उन लोगों ने जलेश्वर लिंग के दर्शन किये। ६७-६८ उन्होंने शिवलिंग पर अक्षत्-बेलपत्र चढ़ाये तथा डाभ का जल लेकर सिर पर छिड़क दिया। प्रसन्न होकर जलेश्वर ने वर देते हुये कहा कि तुम लोग भगवान के कार्य से जा रही हो। मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। अब श्रृंगी ऋषि को ले आओ। यह सुनकर सबने उन्हें बारम्बार नमस्कार किया। ६९-१७०-१७१ उनको प्रार्थना करके वह सभी वहाँ से चल पड़ी और बेड़े में बैठकर उन्होंने नृत्य प्रारम्भ कर दिया। फिर वह लोग कौशिक वन में जाकर प्रविष्ट हुयीं। अब तक बीस दिन व्यतीत हो चुके थे। ७२-७३ विस्तृत स्थान में गंगा का जल निर्मल था और मगुनि प्रस्तर खण्ड ढेर के ढेर पड़े थे। जाने-आने के लिये एक पगडंडी बनी थी जिसे देखकर अप्सराओं ने मन में विचार करते हुये कहा कि विभाण्डक ऋषि इसी स्थान पर हैं। ७४-७५-७६ सबने बैठकर इस प्रकार का विचार करते हुये नावों के बेड़ों को किनारे की ओर बढ़ाया। उन्होंने कुघाट में जाकर नावें खड़ी कीं और उन्हें हर प्रकार से विचार करके छिपा दिया। ७७-७८ रात्रि में सब वहीं पर रहीं और उन्होंने रसोई बनाकर भोजन किया उन्होने उस वन में किसी प्रकार का भय

देखिले से बनरे भय किछि नाहिँ। जीवकु जीव हिंसा जे सेथिरे न बहि १८०
सेठारे शयन जे रात्रेक कले पुण। रजनीरे स्वपन जे देखिले जरता १८१
श्वेतहस्ती उपरे बसि अछि एका। श्वेत हस्ती उपरे धवळ छति पुण ८२
धवळ पुष्पमाळा गळारे लम्बे हारा। एमन्त स्वपन जे देखिले अपसरा ८३
रजनीर शेष जे होइछि तेते बेळे। निद्रा तेजि नारी माने उठिले सत्वरे ८४
बिचारिले सुफळ होइब मोर कार्ज्य। समस्तंकु नारी जे चेता कले निज ८५
समस्ते चेता पाइ चञ्चळ मन हेले। रजनी शेष देखि स्नान जाइ कले ८६
शउच निर्मळ जे हेले सर्ब जन।रान्धणा बिधि सारि भुञ्जिलेक अन्न ८७
आञ्चोवन सारिण ताम्बुळ भुञ्जिले। पलंक सुपातिरे जाइ निद्रा गले ८८
दश घड़ि समयरे उठिले सकळ। सुवेश होइले जे लगाइ चिकुर ८९
नाना वर्णरे बेश मोहिनी तोरा हेले। तिनि पुर मोहिनी से एमन्त दिशिले १९०
जरता बोइले जाअ केरु आळ भाइ। केहु अछि ए बनरे देखि आस जाइ १९१
शुणिण केरु आळ पन्दर कोश गले।पाञ्च क्रोश आक्रान्तरे जाइण घेरिले ९२
देखिलेक मठ गोटि अछि बनस्तरे। सुरभि चरु अछि सेहि निकटरे ९३
बेलगछ मूळरे बसिछन्ति ऋष्य श्रृंग। देखिण बोलन्ति एहि जति हेब ९४
लतार उहाड़रे बेगे चळिगले। नावर निकटरे जाइण मिळिले ९५
बोइले ऋष्य श्रृंग अछइ एहि स्थान।कोशक अन्तरे ऋषि बसि छन्ति जाण ९६

नहीं देखा। वहाँ पर एक जीव दूसरे जीव से हिंसा नही कर रहे थे। ७९-१८० रात्रि में वहीं पर उन लोगों ने शयन किया। रात में जरता ने स्वप्न देखा कि वह अकेले सफेद हाथी पर बैठी है। सफेद हाथी के ऊपर सफेद छाता लगा हुआ है। गले में सफेद पुष्पों की माला पड़ी है। उस अप्सरा ने इस प्रकार का स्वप्न देखा। १८१-८२-८३ उस समय रात्रि समाप्त हो चुकी थी। स्त्रियाँ निद्रा को त्यागकर शीघ्रतापूर्वक उठ गई। उन्होंने विचार किया कि हमारा कार्य सिद्ध होगा। उसने सभी को सजग किया। चेतना पाने पर सबके मन चंचल हो उठे। रात्रि की समाप्ति देखकर सबने जाकर स्नान किया। ८४-८५-८६ स्नान आदि करके सभी लोगों ने स्वच्छ होकर भोजन बनाया और अन्न ग्रहण किया। फिर पलंग के ऊपर गद्दे पर जाकर सो गयी। दस घड़ी समय बीतने पर सबने उठकर बाल झाड़े और श्रृंगार किया। मोहिनी ने अनेक प्रकार से श्रृंगार किया और सज गई। वह तीनों लोकों को मोहित करने वाली दिखाई देने लगी। ८७-८८-८९-१९० जरता ने कहा हे नाविक भाई ! तुम जाकर देख आओ कि इस वन में कौन है। यह सुनकर मल्लाह पन्द्रह कोस तक चला गया। पाँच कोस तक घूम-फिर कर उसने जंगल में एक मठ देखा। उसके निकट एक सुरभी चर रही थी। श्रृंगी ऋषि बेल वृक्ष के नीचे बैठे थे। उन्हें देखकर वह लोग बोले कि यही योगी होगा। १९१-९२-९३-९४ मल्लाह लता की आड़ में चले गए तथा नाव के निकट पहुँच कर बोले कि श्रृंगी ऋषि इसी स्थान पर

शुणिण सकळ नारी माने सज हेले । जे जाहार आयुधे जाइण धइले ९७
काम मोहिनीकु डाकि जरता कहइ । बार वनिता घेनिण वेगे जाइ तुहि ९८
अनेक तिआरिण पुणि से कहिला । प्रेमरस गत तुहि करिबु बोइला ९९
जाअरे नागरी वेगे कर राज कार्य्य । जेउँ रूपे भण्डि आण ऋषिक तनुज २००
शुणि सुन्दरी दिव्य बेश हेला । अलेख तिळक जे सुगन्ध लगाइला २०१
केश सम्भाळिण जे जुड़ाकु बान्धइ । चउँरि मुण्डि संगरे झलकाए देइ २०२
मुकुतार माळ सीमस्थाने लगाइला । जाइ जुई सेवति जे तापरे खञ्जिला ३
शिर परे अळका मथारे मथामणि । नोथ रत्न गुणा मुखकु दिशे जिणि ४
तहिँ परे सुन्दर टोपि नेइ देला । कळा धळा टोपि जे रेखा दिशे तोरा ५
कर्णरे काप अछि मुकुतार कम । मणिकर्ण फिरि फिरा तेजे कि उपाम ६
चन्द्र फासिआ उपरे बिसिछि मुकुता । मल्लिकढि सेथि परे रत्नरे जड़िता ७
कस्तुरी चारु चिता कपाळे देले पुणि ।नासापुटे शोभा पाए माणिक्य बसणि ८
गजमोति प्राय दिशे कर्णरे कर्णफुल । ताम्बुळरे रंग जे दिशइ अधर ९
गळारे लम्बाइला मुकुता चाप सरि । रत्नर कण्ठिमाळ गळारे नेइ भरि २१०

है। वह एक कोस की दूरी पर बैठे है। ९५-९६ यह सुनकर सभी नारियाँ सुसज्जित हो गईं। उन्होंने अपने-अपने आयुध धारण कर लिये। जरता ने काम मोहिनी को बुलाकर कहा तुम वेश्याओं को लेकर शीघ्र ही चली जाओ। उसने अनेक प्रकार से आगाह करते हुए उससे प्रेम रसयुक्त कार्य करने को कहा। हे नागरी ! तुम जाकर राज-कार्य सम्पादित करो। जैसे भी हो ऋषि पुत्र को बरगला कर ले आओ। ९७-९८-९९-२०० यह सुनकर सुन्दरी ने दिव्य वेश धारण किया। उसने अलेख सम्प्रदाय का सुगन्धित तिलक लगाया। केश खींचकर जूड़ा बाँध लिया जिसमें लगी हुई चउँरी घुण्डी के साथ झलमला रही थी। माथे पर मुक्तामाल लगा लिया। फिर उसके ऊपर जुही, चमेली और सेवती (के पुष्प) सजा लिए। शिर के ऊपर अलकें और माथे पर चूड़ामणि थी। रत्नजटित नथ व लौंग (कील) मुख के सौन्दर्य को जीतने वाली थी। २०१-२-३-४ उसके ऊपर उसने सुन्दर टोपी लेकर लगा ली। टोपी की सफेद व काली रेखाएँ सुन्दर दिखाई दे रही थीं। कानों में मुक्ताओं के कर्णफूल कर्ण के मध्य भाग में लगे फिरफिरा (कर्णाभूषण) के तेज की क्या उपमा दें। ५-६ चंद्रिका के ऊपर मुक्ता जड़ा था और उसके ऊपर रत्नों से जड़ी हुई मल्ली कड़ी (जवा-हार) थी। फिर उसने मस्तक पर कस्तूरी का सुन्दर तिलक लगा लिया। नाक में माणिक्य की बुलाक शोभा पा रही थी। कानों के कर्ण-फूल गज मुक्ता के समान दिख रहे थे। उसके अधर पान से लाल दिखाई दे रहे थे। ७-८-९ गले में उसने मुक्ता से जड़ो हुयी हँसली रत्न की माला लेकर पहन ली। उसके नीचे दो लड़ीं सोने की जंजीर थी जिसमें लगा हुआ मुक्ताजड़ित पदक

ताहार तळरे अछि जाउँळि सुना सुता। बन्ध स्थळरे शोहे पदक मुकुता २११
पञ्चरत्न माळा लम्बे गळारु नाभि जाए। रसाणिला मर्कत जेसने जोति दिए १२
रत्न काञ्चला पिन्धिण होइण भुषण।
रंग जरि काञ्चला जे सुन्दर सूचिकाम १३
चन्दन अगर सर्बांगे कुंकुम पुणि घेनि। भास्कर बास कले सौरभरे गुणि १४
कटीरे कटी मेखळा काछेणि प्राय़ शोहे। पाहुड़ि जे नूपुर चरणे बजाए १५
झुण्टिआ बळा शोहे चरणे अळता।देबांग पतनी जे पिन्धिले जगज्जिता १६
एहि रूपे बेश हेले बार जे बनिता। जरतार बेश जे एथिकि अकळिता १७
केवण तरुणी धरे पञ्चबर्ण फुलमाळि।केउँ नारी घेनिला कर्पूर गुण्डि धूळि १८
सुबर्ण पादुका के ता संगे मूचुळा। केहु धूपकाठि संगरे पान बिड़ा १९
के निए रत्न खट हेमर खटुलि। केहु रत्न झरिरे बास पाणि भरि २२०
शाचि पणा नबात परिड कदली। केहु नारी एहाकु धरिण जल करि २२१
अमृत द्रव्यमान संगरे नेले पुण। जरतार आज्ञारे चळिले नारीगण २२
बेळतिनि घड़िरु नबरु चळिगले। लता उहाडरे चळन्ति सर्बे भले २३
कोशक पथ जे पहर करे गले। धीर धीर होइण चळन्ति सर्बे भले २४
मढिआर दुआरे अछइ बेळगछ। से गछतळे बसिछि बिभाण्डेक बत्स २५

वक्ष-स्थल पर शोभा पा रहा था। गले में नाभिपर्यन्त पचरत्नी माला पड़ी हुयी थी। वह मरकत मणि के समान चमक रही थी। २१०-२११-१२ उसने आभूषण पहनकर रत्नों से जड़ी कंचुकी पहनी जो रंग-विरंगी कढ़ाई से सुन्दर लग रही थी। उसने सम्पूर्ण शरीर में चन्दन, अगरु कुमकुम लेकर लगा लिया जो निरन्तर अत्यधिक सुगन्ध दे रहा था। १३-१४ कमर में काछिनी के समान कमरबन्द शोभित हो रहा था। पैरों में पायल तथा नूपुर बज रहे थे। वजने वाले झाँझरे तथा महावर पैरों में शोभा पा रहा था। उसने जगत को जीतने वाली बहुमूल्य साड़ी पहन रखी थी। १५-१६ इसी प्रकार समस्त वेश्यायें सुसज्जित हुयीं। जरता का वेश तो इससे भी अलौकिक था। कोई स्त्री पाँच रंगों की फूल-माला लिये थी और कोई कपूर का चूरा लिये थी। १७-१८ कोई सुन्दर जूते, कोई तकिया, कोई अगरबत्ती और कोई पान के वीड़े लिये थी। कोई रत्न-जड़ित खाट, कोई सोने का खटोला, कोई रत्न-जड़ित सुराही में सुगन्धतयुक्त जल भरकर लिये थी। १९-२२० कोई स्त्री यत्नपूर्वक केले इत्यादि फल तथा शरवत लिये थी। अमृत-तुल्य पदार्थ साथ में लिये हुये जरता की आज्ञा से नारियों का दल चल पड़ा। २२१-२२ तीन घड़ी समय से वह वहाँ से चल पड़ीं। सभी लताओं को आड़ में चली जा रही थीं। वह एक कोस मार्ग तय कर चुकीं। फिर वह सब धीरे-धीरे चलने लगीं। २३-२४ मठ के द्वार पर वेल का वृक्ष था जिसके नीचे विभाण्डक का पुत्र बैठा था। ब्रह्मचारी काले हिरन की छाल पर

कृष्णाजिन छाळ परे बसिण ब्रह्मचारी। वाम पारुशे कमण्डळरे पाणि भरि २६
आगरे थोइछन्ति जे शाळग्राम शिळा ।लयकरि बसिछन्ति बिभाण्डक बळा २७
शुद्ध शौचरे जे बिजए ऋषि गोटि ।आज ए माळा गोटि घेनिण तप निष्ठि २८
अजपा सुमरइ जमिका जे पढ़ि । छतिश थर जाग करइ एक घड़ि २९
सारस्वत मन्त्र जे शहे अष्टोत्तर । एकलय करिण जपन्ति मुनिवर २३०
शिर सुन्दर जे दिशइ चारु जट । शृंग दुइ दिशुछि जेसने मुकुट २३१
निर्भय होइण जे बसिछन्ति मुनि । लता उहाड़रे देखिले सकळ कामिनी ३२
सकळ कामिनी जाइण ओळगिले । देखिण ऋषि तांकु प्रसन्न होइले ३३
चन्द्र चकोर मुख जे मुनि पुण देखि । उठिले मुनि वेगे जे आसन उपेक्षि ३४
कृताञ्जळि घेनिण होइले विनइ । जन्महुँ नारी अंग देखिला तार नाहिँ ३५
से मानंकु देखिण बिचारे ब्रह्मचारी ।काहुँ आसि मुनि माने मो पाशरे मिळि ३६
पचारे केवण देशु अइले मुनिवर । केवण वेद विद्या जे अभ्यास तुम्भर ३७
केवण नदी तीरे मढिआ अछकरि । केवण अर्थे मुनि एथे बिजे करि ३८
किस नाम तुम्भर केवण कुळे जात । एका आश्रमरे थाअ कि तपोवन्त ३९
काम मोहिनी बोइले ऋषि पुण शुण । आम्भर स्थान चम्पावती नग्र जाण २४०

बेठा था। बायीं ओर जल से भरा हुआ कमण्डल रखा था। उनके आगे शालिग्राम शिला रखी हुयी थी और विभाण्डक नन्दन लीन हुये बैठे थे। ऋषि शुद्ध और पवित्र भाव से विराजमान थे। आज एक माला लेकर वह निष्ठा-पूर्वक तपस्या में लगे थे। २५-२६-२७-२८ वह अजपा जाप करके एक घड़ी तक मंत्र पढकर छत्तीस बार यज्ञ करते थे। मुनिश्रेष्ठ एकाग्र मन से एक सौ आठ बार सारस्वत मंत्र का जाप करते थे। २९-२३० सिर में सुन्दर जटायें तथा उनमें मुकुट के समान दो सीग दिखाई दे रहे थे। मुनि निर्भय होकर बैठे थे जिन्हें लता की आड़ से समस्त कामिनियों ने देखा। २३१-३२ उन सबने जाकर ऋषि को प्रणाम किया। वह उन्हें देखकर प्रसन्न हो गये। जैसे चकोर चन्द्रमा का मुख देखता है। वैसे ही मुनि उन्हें देखकर शीघ्रतापूर्वक आसन छोड़कर उठ बैठे। उन्होंने हाथ जोड़कर उनकी विनती की। उन्होंने जन्म से कभी नारी का अंग देखा ही नहीं था। ३३-३४-३५ उन्हें देखकर ब्रह्मचारी ने विचार किया कि यह मुनि लोग कहीं से मेरे पास आये है। उन्होंने उनसे पूँछा हे मुनिश्रेष्ठ ! आप लोग किस देश से आये हो। आपने कौन सी वेद विद्या का अभ्यास किया है। आपने कौन सी नदी के किनारे आश्रम बनाया है और हे मुनि ! आप किस कारण से यहाँ पधारे है। ३६-३७-३८ आप लोग किस कुल में उत्पन्न हुये हैं और आपके नाम क्या है। हे तपस्वियो ! क्या आप लोग एक ही आश्रम में रहते हो। काममोहिनी ने कहा हे ऋषि ! सुनिये। हमारा स्थान चम्पावती

मदन बिद्या आम्भे रति शास्त्र जाणु। नख दन्त आहुति देइण सर्ब भणु २४१
सृष्टिर तप आम्भर अटइ अप्रमाण।चुम्बक चाहाँणि आम्भ ठारे अछि जाण ४२
धनर लोभे आम्भे पर पुरुषे खटु। महा महा तपोंकर तप जे भांगि बटु ४३
इच्छा हेले पुणि जे उत्तम पुरे जाउँ।राज ऋषि देव ऋषि ठावेरे पूजा पाउँ ४४
प्रयाग जळरे आम्भे मकर स्नान करूँ।ऋषि मानंकु देखिले मनत मोहि पारूँ ४५
चइत्र मासे आम्भे शुद्धा सत्य करूँ। बैशाखरे चन्दन कर्पूर देहे बोलुँ ४६
ज्येष्ठरे स्वर्गकु जे जाउ आम्भे थरे। बेदवर नारी जे साबित्री सेवा करे ४७
आषाढ़े घोषजात्रा बैकुण्ठ पुरे देखुँ। × × × × ४८
श्रावण मासरे मडिआरे निश्चिन्ते आम्भे बसुँ।
धनु मासे कामधनु पाशरे तप घोष ४९
ए रूपे बार मासे बुलिण तप करूँ। एबे देखिलुँ जे ग्रीषम महा गरु २५०
नदीरे नाव परे बान्धिण चाप भेळा। रजनी दिवसरे करु जे आम्भे लीळा २५१
बेश हेउँ अलेख तिळक बिचित्र।बेणु जिणा सितार मद्दंळ झिञ्जाळत ५२
आलट चामर जे बिञ्चणा पंखा पुणि। देहकु शीतळ बोलि संगे अछु आणि ५३
अमृत शीतळ द्रब्य अछि जे आम्भ संगे।तृषा कले सेहि द्रब्य भुञ्जु थाइ आम्भे ५४
काम मोहिनी जे एमन्ते तांकु कहि। भाषारे भुलाए बिभाण्डंकर तनयि ५५

नगर में है। हम लोग काम-विद्या तथा रति-शास्त्र में निपुण हैं। नाखून तथा दाँत की आहुति देकर सब कुछ बतला सकती हैं। हमारा सृष्टि का तप अपरिमित है। हमारे पास चुम्बकीय दृष्टि-भंगिमा है। ३९-२४०-२४१-४२ धन के लोभ से हम लोग पर पुरुष की सेवा करती हैं। महान-महान तपस्वियों का तप तोड़ सकती हैं। इच्छा होने से हम श्रेष्ठ भवनों में चली जाती हैं। राजर्षि तथा देवर्षियों से भी पूजा प्राप्त करती हैं। प्रयाग के जल में हम लोग मकर स्नान करती हैं और ऋषियों को देखकर उनके मन मोहित कर सकती हैं। ४३-४४-४५ चैत्र के महीने में हम लोग शुद्धतापूर्वक लीला करती हैं। बैसाख में शरीर में चन्दन तथा कपूर लगाती हैं। ज्येष्ठ महीने में हम लोग एक बार स्वर्ग जाती हैं और ब्रह्मा की पत्नी सावित्री की सेवा करती हैं। अषाढ़ के महीने में वैकुण्ठपुरी की रथ-यात्रा का दर्शन करती हैं। ४६-४७-४८ श्रावण मास में हम निश्चिन्त होकर मठ में रहती हैं। शेष महीनों में कामधेनु के निकट तपस्या करती हैं। इस प्रकार बारह महीने भ्रमण करती हुई तप करती हैं। इस समय हमने बहुत गर्मी देखी। ४९-२५० नदी में नावों को बाँधकर बेड़ा बनाकर रात-दिन उसमें लीला करती हैं। अलेख पन्थ का विचित्र तिलक लगाकर सुवेश करके बंसरी वीणा सितार मृदंग झाँक मंजीरे चामर व्यजन पंखा तथा शरीर को शीतल करने के पदार्थ भी साथ-साथ लायी हैं। २५१-५२-५३ अमृतोपम शीतल पदार्थ हमारे साथ हैं। प्यास लगने पर उन्हें हम लोग पान करती हैं। काममोहिनी ने उनसे इस प्रकार की भाषा कही और

चापे पारि होइ आम्भे अजोध्याकु जिबु। वशिष्ठ ऋषिक संगे आम्भे देखा हेबु ५६
सेठारे मेळ होइ रहिबु दिन दश। सेहि ठारु जिबु आम्भे चम्पावती देश ५७
आम्भर त पवन जे अटइ सार। अमळाण पुष्प देव द्यन्ति निरन्तर ५८
शुणि करि ऋष्य श्रृंग हरष होइले। पाद पखाळिवाकु से कमण्डळु देले ५९
शार्दुळर चर्म जे देले बसिबाकु। गोमन्त पाउँश देले तिळक शोभाकु २६०
हरिड़ा बाहाड़ा जे अँळा फळ देले। कन्दमूळ फळ तांक आगरे थोइले २६१
हसिण बोइले ऋषिकु चतुरी चातुरी। कि पदार्थ आम्भंकु देल तपशाळी ६२
मुनि बोइले ए जे चारि जाति फळ। चरण धोइबाकु नेइ अछुं जळ ६३
तुम्भे हे अतिथि अइल आम्भपुर। मठरे नाहान्ति आज आम्भर पिअर ६४
मुहिँ बाळ कुमर न जाणइ किछि। भगति हेवाकु मोर किस बुद्धि अछि ६५
समय़ अळप जे तरुण बय़स। चउद पन्दर जे हेब अमरश ६६
देश घोष न जाणइ मातांकु नाहिँ देखा। पिता मोर अरण्यरे तपरे शकता ६७
तिनि दिन तपकरि मठकु आसन्ति। एहु रूपे अरण्यरे पिता दिन न्यन्ति ६८
काम मोहिनी बोले शुण हे ऋष्य श्रृंग। पिता अरण्यरे जाइ करन्ति होम जाग ६९
तिनि दिन परे देव आसन्ति ऋषि शुण। एका होइ ए अरण्ये केमन्ते थाअ जाण २७०

विभाण्डक-नन्दन को बातों में बहलाया। ५४-५५ उसने कहा कि हम लोग बेड़े से पार होकर अयोध्या को जायेंगी। वहाँ पर वशिष्ठ ऋषि के साथ हमारा साक्षात्कार होगा। वहाँ पर उनके साथ मिलकर दस दिन तक रहेंगी। फिर वहाँ से हम लोग चम्पावती देश को चली जायेंगी। ५६-५७ हमारे तो लिये पवन महत्वपूण है। देवता लोग कभी न मुरझाने वाले पुष्प निरन्तर दिया करते हैं। यह सुनकर श्रृंगी ऋषि प्रसन्न हो गये। उन्होंने पैर धोने के लिये कमण्डल दे दिया। बैठने के लिये बाघम्बर दे दिया। तिलक लगाने के लिये गोबर की राख दी। ५८-५९-२६० फिर उनके आगे आँवला, हरड़, बहेड़ा तथा कन्दमूल रख दिये। वह चतुर कामिनियाँ चातुरी से हँसकर ऋषि से बोली हे तपस्वी! यह क्या पदार्थ आपने हमें दिये हैं। मुनि ने कहा कि यह चार जाति के फल है और चरण धोने के लिये हम जल लिये हैं। आप लोग अतिथि हैं। हमारे आश्रम में आये है। आज मठ में हमारे पिताजी भी नहीं हैं। २६१-६२-६३-६४ मै बालक हूँ। कुछ जानता भी नहीं। आपकी सेवाभक्ति करने के लिये और हम क्या उपाय करें। अल्प समय में हमारी चौदह पन्द्रह वर्ष की आयु है। देश-कोस नहीं जानता। माता को मैने देखा नही। हमारे पिता जीवन में तपस्या में निरत रहते है। वह तीन दिन तक तपस्या करके मठ में आते हैं। और इसी प्रकार पिताजी वन में कालयापन कर रहे हैं। ६५-६६-६७-६८ काममोहिनी ने कहा हे श्रृंगी ऋषि! सुनो। पिता वन में जाकर हवन यज्ञ करते है। और तीन दिन के पश्चात् ऋषि फिर आ जाते है। तुम अकेले इस

ऋष्य श्रृंग बोइले शुणरे ऋषि तुम्भे। ए वनरे भीति नाहिँ कहु अछुँ आम्भे २७१
बेदमन्त्र मोते देइछन्ति पढ़िबाकु। काम धेनु देइ छन्ति मोते पाळिबाकु ७२
कामधेनु सुरभि जे एथिरे छन्ति रहि। से दुहेँ थिले एथिरे किछि भय नाहिँ ७३
काम मोहिनी बोइले शुण मुनिवर।सुरभि काम धेनुकु तुम्भे पाइल केउँ ठार ७४
ऋष्य श्रृंग बोइले पितांक तपसिद्धे। ब्रह्म मुनि हेबारु देलेक बिबुधे ७५
मोर तप सिद्ध काळे काम धेनुकु देले। सुरभि कामदेवकु मोते समर्पिले ७६
बळबन्त पण जे करइ आम्भ ठारे। से दुहिँ कि कहि देले मारन्ति तत्काळे ७७
काम मोहिनी बोइले पिता गले केउँ दिन।
ऋष्य श्रृंग बोइले आजकु जिबार तिनि दिन ७८
आज मोहर पिता आसिबे मोर पाश।शुणिण काम मोहिनी मनरे थाए त्रास ७९
विचारिले ऋषि जेबे आसिबे आज दिन। पुत्र कहिले कालि नजिबे पाशुं पुण २८०
एमन्त बिचार जे मने पुण कला। ऋषि आसि गले आम्भंकु हेब भला २८१
ऋष्य श्रृंग बोइले शुण हे महामुनि।किस भकति तुम्भंकु करिबु आम्भे पुणि ८२
सुदया करिण जे घेन मोर सेवा। प्रसन्ने फळ मूळ भोजन करिबा ८३
काम मोहिनी बोलन्ति शुण ऋषि।ए तुम्भर फळ मूळ आम्भ मनकु न आसि ८४
हरिड़ा बाहाड़ा खाइले किए भोग जाइ। एका कन्द मूळरे कि क्षुधाकु हरइ ८५

जंगल में कैसे रहते हो। ६९-२७० श्रृंगी ऋषि ने कहा से ऋषि ! आप सुनिये। इस वन में हम कहते हैं कि कोई डर नहीं है। हमें पढ़ने को उन्होंने वेदमंत्र दिये हैं और पालने के लिये मुझे कामधेनु गाय दी है। २७१-७२ कामधेनु गाय यहीं रहती है। दोनों के रहते हुये यहाँ कुछ भी भय नहीं है। काममोहिनी ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये। यह कामधेनु गाय आपको कहाँ से मिली। ७३-७४ श्रृंगी ऋषि ने कहा पिता की तपस्या सिद्ध होने पर ब्रह्मर्षि बनने पर देवताओं ने दी थी। मेरी तपस्या की सिद्धि के समय कामधेनु गाय को मुझे समर्पित किया था। ७५-७६ जो हमारे साथ दुष्टता करेगा तो उन दोनों से कहने पर वे उसे उसी क्षण मार डालेंगी। काममोहिनी बोली, पिता किस दिन गए हैं। श्रृंगी ऋषि बोले आज से जाने के तीन दिन हुए हैं। ७७-७८ आज मेरे पिता मेरे पास आएँगे। यह सुनकर काममोहिनी के मन में भय हो गया। उसने विचार किया कि जब आज ऋषि आएँगे तो फिर पुत्र के कहने से वह कल उसके पास से नहीं जाएँगे। उसने इस प्रकार का विचार मन में किया। ऋषि के आ जाने पर हमारा क्या भला होगा। ७९-२८०-२८१ श्रृंगी ऋषि ने कहा, हे महामुनि ! सुनिए। आपकी सेवा हम किस प्रकार करें। आप कृपा करके हमारी सेवा स्वीकार कीजिए तथा प्रसन्न होकर फल मूल ग्रहण कीजिए। काम मोहिनी बोली, हे ऋषि ! सुनिये। आपके यह फलमूल हमारे मन को नहीं रुचे। ८२-८३-८४ हरड़ तथा बहेड़ा खाने से क्या क्षुधा शान्त होती है ? अकेले

एहि पाणि पिइले कि देहरु जाए तृषा। हरिड़ा फळ खाइले तुण्ड हेव कषा ८६
ए बनर मध्यरे एहि फळ उपुजइ। दुर्मूल्य हेब्रारु ए फळ भक्ष तुम्भे रहि ८७
एहि कषा फळकु आम्भे न भुञ्जु महा जति। देख आम्भर देश जे अपूर्व मूरति ८८
आम्भ देश बनर गछर बकळ। आम्भर देशरे अटे निर्जर बास जळ ८९
आम्भ ठारे अछि जे आम्भर देश फळ। अमूल्य मिठा लागे स्वाद बड़ तार २९०
एते बोलि सुबास जळ आणि पुणि। नव रत्न झरिरे देलाक कामिनी २९१
उठिण ऋषि पुत्र पखाळे पाद पुण।
आचोवन करन्ते ऋषि लागिला जळ स्वाद ९२
मुख पखाळिण से चरण पखाळि। सुवासित जळ नेइ देले अपसरी ९३
लवंग अळाइच मरिच घषा पाणि। पिइले मुनि जे मनरे तोष पुणि ९४
जळरे सन्तोष जे ऋष्य शृंग हेला। बोइला तुम्भ राज्ये कि ए उपुजिला ९५
काम मोहिनी बोइला शुण ब्रह्मचारी। कूप बाम्फी पोखरीरे जळ अछि पूरि ९६
ऋष्य शृंग बोइले से राज्य पुणि भल। आम्भर देहकुत लागिला शीतळ ९७
अपसरी बोइले शुण हे ऋषि बळा। आम्भ राज्य बकळ देहकु दिशे तोरा ९८
ऋष्य शृंग बोइले अणाअ देखिबा। मनकु रचिले सेहि बकळ पिन्धिबा ९९
शुणिण काममोहिनी होइले हरष। देवांग पतनी जे धरिण झीन बास ३००

कन्दमूल से क्या क्षुधा का निवारण होगा। यह पानी पीने से क्या शरीर की पिपासा बुझ सकती है? हरड़ फल खाने से मुख कसैला हो जाएगा। इस वन में यह ही फल उत्पन्न होते हैं। तुम ही यहाँ रहकर इन अमूल्य फलों का भक्षण करो। हे महानयोगी! हम इन कसैले फलों को नहीं ग्रहण करते! देखो हमारा देश अपूर्व सुन्दर है। ८५-८६-८७-८८ हमारे देश के वनों में वृक्षों के समूह हैं। हमारे देश में झरनों का सुगन्धित जल है। हमारे पास हमारे देश के फल हैं जो अमूल्य है और जिनका स्वाद बड़ा मीठा लगता है। ८९-२९० इतना कहकर कामिनी ने लाकर नौ रत्न की सुराही से सुगन्धित जल दिया। ऋषिपुत्र ने उठकर पाद प्रच्छादित किए। आचमन करने पर ऋषि को जल स्वादिष्ट लगा। २९१-९२ मुख धोकर उन्होंने पैर धोए। अप्सरा ने उन्हें सुगन्धित जल लेकर दिया। लौंग, इलायची तथा कालीमिर्च मिश्रित जल पीने से मुनि का मन सन्तुष्ट हो गया। ९३-९४ उस जल से सन्तुष्ट होकर शृंगी ऋषि ने कहा, क्या आपके राज्य में ऐसा जल उत्पन्न होता है। काममोहिनी ने कहा, हे ब्रह्मचारी! सुनो। कुएँ बावली तथा पोखरों में यह जल भरा पड़ा है। ९५-९६ शृंगी ऋषि ने कहा, कि फिर तो वह राज्य अच्छा है। हमारे शरीर को तो ठण्डा लगा। अप्सरा ने कहा, हे ऋषिपुत्र! सुनो। हमारे राज्य के वल्कल से देह सुन्दर दिखती है। ९७-९८ शृंगी ऋषि ने कहा कि मँगाओ तो देखें। यदि मन में भा गए तो वही वल्कल पहनेंगे। यह सुनकर काममोहिनी प्रसन्न हो गई। सुझीन रेशमी वस्त्र लेकर वह बोली कि

एहि आम्भ राज्यर तरुर बकळ। देखि ऋषि बसि हेले हरष मनर ३०१
मन हृष्ट देखि जरता शरीर पोछि देला। पुणि मृग नयनी बस्त्रेक बाछिला २
कुञ्च करि देला नेइ बोइला मुनि पिन्ध। ऋष्य श्रृंग नेइण पिन्धिलेक बेग ३
काम मोहिनी बोइले आम्भर भष्म घेन। केमन्ते आमोद जे करुछि एहु पुणि ४
ऋष्य श्रृंग बोइले अणाअ देखिबा। केमन्ते प्रकार भष्म तुम्भर अटे अबा ५
शुणिण काम मोहिनी गन्ध स्थान आणि।
चारु गन्ध ऋषि शरीरे घेनि लेक पुणि ६
तुम्भर आसनरे बसिबा आम्भे पुण। न देखिला कथामान देखिलु आम्भे पुण ७
ऋषि ठारु शुणिला जे बचन जाहा स्तिरी। जेबण कारण एहा बिस्तार न करि ८
नेळि बनाउत नेइण पाड़ि देला। आम्भ राज्य ब्याघ्र छाल बोलिण बोइला ९
सेथिर उपरे ऋषि बसिलेक पुण। आसन बड शीतळ लागि लाक पुण ३१०
ऋषि बसिबारु जे माया स्तिरी पुण। आस्वाद द्रव्य नेइ बसिलाक जाण ३११
कर्पूर कस्तुरी घसि ऋषि अंगे नेइ। बोले एमन्त बिभूति आम्भ राज्ये थाइ १२
आसि बारु ऋषि अंग शीतळ होइला। काम मोहिनी बोइला शुण ऋषि बळा १३
आम्भर देशरे ए अटे बन माळ। लगाइले सुन्दर दिशिब शरीर १४
ऋष्य श्रृंग बोइले अणाअ लगाइबा। तुम्भर आम्भ ठारे सुदया जेबे हेला १५

यह ही हमारे राज्य के वृक्षों के बल्कल हैं। यह देखकर बैठे हुए ऋषि का मन प्रसन्नता से भर गया। ९९-३००-३०१ मन प्रसन्न देखकर जरता ने उनका शरीर पोंछ दिया। फिर मृगनैनी ने एक वस्त्र छाँटा तथा चुनकर उसने मुनि से पहनने को कहा। श्रृंगी ऋषि ने उसे लेकर तुरन्त पहन लिया। २-३ काममोहिनी ने कहा कि हमारी भस्म स्वीकार कीजिए। यह किस प्रकार का आनन्द देती है। श्रृंगी ऋषि ने कहा कि मँगाइये, देखें तुम्हारी भस्म किस प्रकार की है। यह सुनकर काममोहिनी सुगन्धिपात्र ले आई। ऋषि ने सुन्दर सुगन्ध शरीर में लगाया। ४-५-६ उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे आसन पर बैठेंगे। हमने कभी न देखी वस्तुयें देख ली। जब कामिनी ने ऋषि के यह वचन सुने तो उसने इसके कारण का विस्तार नहीं बढ़ाया। उसने मोटे ऊन से निर्मित नीले रंग का आसन लेकर डाल दिया और कहने लगी कि यह हमारे राज्य का व्याघ्रचर्म है। ऋषि उसके ऊपर बैठ गए। उन्हें आसन बहुत ठण्डा लगा। ७-८-९-३१० ऋषि के बैठने पर वह ठगिनी स्त्री पात्र में पदार्थ लेकर बैठ गई। उसने कर्पूर कस्तूरी लेकर ऋषि के शरीर में घिस दिया तथा कहने लगी कि हमारे राज्य में ऐसी ही विभूति होती है। ३११-१२ उस लेपन से ऋषि का शरीर ठण्डा हो गया तब काममोहिनी ने कहा, हे ऋषिपुत्र सुनो। हमारे देश की यह वनमाला है। इसे पहनने से शरीर सुन्दर दिखेगा। १३-१४ श्रृंगी ऋषि ने कहा मँगाइये, हम पहनेंगे। आपकी हम पर कितनी कृपा है। यह

शुणि बार बनिता भुषण आणि देला ।बसि काम मोहिनी ऋषिंकि खञ्जिला १६
कर्णरे खञ्जिले मर्कत कुण्डळ । गळारे लम्वाइले गजमोति माळ १७
बाहारे वाहुटि अंगुठिरे रत्नमुदि । कटीरे सुनासूता चउसरि भेदि १८
कपाळे खञ्जिला कस्तुरी चारु चिता तोरा ।
बोइले आम्भ राज्य फळ भोजन कर परा १६
बोइले ऋष्य श्रृंग अणाअ वहन ।शुणि करि माया ऋषि तुरिते आणिण ३२०
दुध सर लवणी नबात कन्द थोइ । आम्व नारीकेळ पणस नेला देइ ३२१
लेम्बु नारंग जे टभा करमंगा । कमळा जम्विल जे डाळिम्व सत्य आम्म २२
जाईफळ अळाइच दाराक्ष लवंग । अनेक प्रकारे द्रव्य आगरे ठुळ सर्व २३
खजा मिठाइ जे शाचि कन्दपणा । एमन्ते अनेक द्रव्य थोइले नेइ पुण २४
बोइले आम्भ देशे एफळ फळे वृक्षे । भुञ्ज एबे ऋषिए केमन्ते लागे सुखे २५
शुणिण ऋष्यश्रृंग से फळ भुञ्जिले । सररे न वात देइ पाणि पिआइले २६
साकर बसादहि उत्तम घषा चुडा । खजा पिठा काकरा ड़ाळिम्व जोड़ा जोड़ा २७
आम्ब पणस कदळी टभा जे नारंग । कमळा नारिकेळ दाराक्ष फळ संग २८
शाचिकन्द पेड़ानेइ नाना वर्णरे देले । वाण पड़ड़ संगरे जाईफळ ए बोइले २६
हरषरे ऋषि जे भोजन कले पुण । स्वाद पाइ ऋष्यश्रृंग पचारे तांकु पुण ३३०

सुनकर वेश्या ने आभूषण लाकर दिया। बैठकर काममोहिनी ने ऋषि को पहना दिये। १५-१६ कानों में मरकत मणि के कुण्डल सजा दिये तथा गले में गजमुक्ता की माला पहना दी भुजाओं में वाजूवन्द तथा उँगली में रत्नमुद्रिका पहना दी। कमर में चार लड़ी वाली सोने की करधनी पहना दी। १७-१८ मस्तक पर कस्तूरी का सुन्दर तिलक लगा दिया। फिर वह बोली कि हमारे राज्य के फल ग्रहण कीजिये। श्रृंगी ऋषि ने कहा कि शीघ्र ही मँगाइये यह सुनकर छद्मवेशी ऋषि ने शीघ्र ही लाकर दूध, मलाई, मक्खन, शकरकन्द, आम, नारियल तथा कटहल सामने रख दिये। १६-३२०-३२१ नींबू, नारंगी, खट्टुआ फल, कमरख, मुसम्मी, जामुन, अनार, आम, जाइफल, इलाइची, अंगूर, लौंग आदि अनेक प्रकार की फल सामग्री उनके आगे रख दी। २२-२३ खाजा, मिठाई, कन्द तथा शरबत इस प्रकार के अनेक पदार्थ लाकर रख दिये। उसने कहा कि हमारे देश में यह फल वृक्ष में फलते है। हे ऋषि ! इन्हें ग्रहण कीजिये। फिर कैसा आनन्द आयेगा। यह सुनकर श्रृंगी ऋषि ने फल ग्रहण किये। मलाई में मीठा पदार्थ मिलाकर जल पिला दिया। २४-२५-२६ मीठा दही, उत्तम घी में घिसा हुआ चूड़ा चावल के अनरसे तथा अनार के दाने, आम, कटहल, केला, कमरख, नारंगी, खट्टा नींबू, नारियल, अंगूर फलों के साथ शकरकन्द लेकर अनेक पदार्थ दिये। हरे डाभ के साथ में जाइफल देने पर ऋषि ने प्रसन्नतापूर्वक भोजन किया। स्वाद पाकर श्रृंगी ऋषि ने उससे

तुम्भे एते एते द्रव्य आणिल केउँ बनूँ ।
कामम्मोहनी बोइले आणिछि लोमपाद भवनु ३३१
मिठा द्रव्य खाइ ऋषि होइले सन्तोष । प्रशंसा कले ऋषि धन्य तुम्भर देश ३२
एते स्वाद फळ जे तुम्भर बने थाइ । जाणिलु तुम्भर तप अछइ सिद्ध होइ ३३
केबण बन तुम्भर केमन्त देखिबा । पितात न छाड़िबे केमन्ते आम्भे जिबा ३४
तुम्भ संगरे मोर जिबार मन हेला । ए मिठा फल जे आम्भंकु स्वाद हेला ३५
काम मोहिनी जे ऋषिर वाणी शुणि । हृदकु हृद लगाइ बसिला तरुणी ३६
सकळ द्रव्यमान भुञ्जिले ऋषि पुणि । हर्ष हेले मुनि मने मने गुणि ३७
मुख पखाळिण सेहु आगमन कले । काममोहिनी कोळरे जाइण बसिले ३८
बार बनिता माने पुष्पमाळ देले । पुष्परे ऋषिकि भुषण पुण कले ३९
माळचूळ लगान्ते प्रकटे बास गुणि । ऋष्यश्रृंग मनरे आनन्द हेला पुणि ३४०
मुख बास निमन्ते ताम्बुळ नेइ देले । लवंग जाईफळ संगरे चोवाइले ३४१
भुञ्जिण तपशीळ होइले पुणि भोळ ।काममोहिनी बोलि शुण हे ऋषि बाळ ४२
भल जोगे आज जे पडिला भेट आसि । तुम्भंकु देखि मुँ जे होइलि आज तोषि ४३
शरीर हृदय जे मिशाइ मनोहारी ।केबण बामा बिञ्चे बिञ्चणि करे धरि ४४
चामर चाळिला से केवळ तरुणी । × × × ४५

पूँछा। २७-२८-२९-३३० आप लोग इतने पदार्थ किस वन से लाए हैं? काममोहिनी ने कहा कि यह हम लोमपाद के महल से लाई हैं। मिष्ठान्न पदार्थ खाकर ऋषि सन्तुष्ट हो गए। ऋषि ने प्रशंसा करते हुए कहा कि आपका देश धन्य है। ३३१-३२ आपके वन में इतने स्वादिष्ट फल होते हैं। हम समझ गए कि आपका तप सिद्ध हो गया है। आपका वन कैसा है? यह हम कैसे देखेंगे? पिता तो हमें नहीं छोड़ेंगे फिर हम कैसे जायेंगे? आपके साथ चलने का हमारा मन हो गया है। यह मीठे फल हमें स्वादिष्ट लगे। ३३-३४-३५ नववयसी काममोहिनी ऋषि की वाणी सुनकर हृदय से हृदय लगा बैठी। ऋषि ने फिर सारे पदार्थ खाये और मन में चिन्तन करते हुए मुनि प्रसन्न हो गये। उन्होंने मुख प्रच्छालनकरके आचमन किया और काममोहिनी की गोद में जाकर बैठ गये। ३६-३७-३८ वेश्याओं ने उन्हें फूलों की मालायें पहनायीं और फूलों से ऋषि को सजा दिया। पुष्प-मालायें पहनने से उससे निकली सुगन्ध का चिन्तन करके श्रृंगी ऋषि मन में प्रसन्न हो गये। ३९-३४० उन्होंने मुखवास के लिये मुनि को पान, लौंग तथा साथ में इलायची दी, जिसे वह चबाने लगे। उसे खाकर वह विभोर हो गये। काममोहिनी ने कहा, हे ऋषि! सुनो। ३४१-४२ आज शुभयोग में आपसे आकर भेंट हो गई। आज आपको देखकर मैं सन्तुष्ट हो गई। उस मनोहारिणी ने शरीर के साथ हृदय को मिला दिया। कोई कामिनी पंखा हाथ में लेकर झलने लगी तथा कोई तरुणी चामर डुलाने लगी।

केहु पाट छत्र जे उहाडिले शिरे। पलंक सुपातिरे वसाए मुनि वरे ४६
बेणु बीणा कंसाळ ताळ जे मद्दंळ। सितार बजाइ जात कलेक सुस्वर ४७
माळव रागरे गाउणा रसकरि। अति आनन्दरे राग गाइले केदारि ४८
बीणा ड़म्बुर धरिण गाउणा कले गीत। केहु नृत्य करन्ति जे मुनिंक संगत ४९
के धूपकाठि धरि छिडा होइछन्ति। के नेइ पाद तळरे रत्न पादुका द्यन्ति ३५०
केबण सुन्दरी नेइ दर्पण देखाइले। से मानंक मुख चाहिँ ऋषि जे बोइले ३५१
काममोहिनी कि से बोलन्ति बचन। धन्य तप शीळ तुम्भे अट हे सर्व जन ५२
तुमेत अपूर्व ऋषि देखिला नाहिँ मोर। स्वयं धवळरे दिशे आपणा शरीर ५३
तप सिधारे तुम्भे धर्मवन्त पुण। जुवतींक मुख चाहिँ बोलन्ति ऋषि पुण ५४
हसि काम मोहिनी ऋषि कि बोइला। हृदे स्तन लगाइ मुखेर चुम्ब देला ५५
बोइला ए आमर तपर शकित। तपर बळे एबे धरिछि नवमूर्त्ति ५६
जानुरे हस्त देइण चळाए वेगे नख। पुणि पालटिण चाहिँइ ऋषिमुख ५७
हिआ आउँसिण जे कुचकु ठावकले। हस हस होइ माया मुनिंकि पचारिले ५८
ऋष्यशृंग बोइले शुण जे तपशीळ। केवण पदार्थ ए दिशइ समतुल ५९
कोमळ जिणइ जे थण्डा हेबा पाणि। केमन्ते बिन्धाणि एहा गढिलाक पुणि ३६०

किसी ने सिर पर पाट-छत्र लगा दिया। फिर मुनि-श्रेष्ठ को पलंग के ऊपर गद्दे पर बैठाया। ४३-४४-४५-४६ बाँसुरी, वीणा झाँझ, मंजीरे, करताल, ढोल तथा सितार बजाकर वह लोग सुन्दर स्वर निकालने लगीं। रससिक्त मालव-राग में अत्यन्त आनन्द से गाते हुये केदार-राग गाने लगीं। ४७-४८ उन्होंने वीणा तथा डमरू लेकर गीत गाना प्रारम्भ किया। कोई उन्हीं के निकट नृत्य करने लगी। कोई अगरवत्ती लेकर खड़ी थी। कोई पैरोंमें रत्नजटित पादुकायें पहनाने लगी। ४९-३५० किसी सुन्दरी ने दर्पण लेकर दिखाया। उनके मुख की ओर देखकर ऋषि ने कहा। फिर वह काममोहिनी से कहने लगे कि आप तथा समस्त तपस्वी धन्य हैं। आप जैसे अलौकिक ऋषि को मैंने पहले कभी नहीं देखा। आपका शरीर तो स्वयं धवल दिख रहा है। ३५१-५२-५३ आप तपसिद्ध तथा धर्मवान हैं। ऐसा ऋषि ने युवती के मुख की ओर देखकर कहा। हँसती हुई काममोहिनी ऋषि से बातें करने लगी फिर उसने उनके हृदय में स्तनों का स्पर्श करते हुए मुख चूम लिया। फिर वह कहने लगी कि यह हमारी तपस्या की शक्ति है। तपस्या के बल से ही हमने नववपुष कर रक्खा है। ५४-५५-५६ वह उनकी जाँघों में हाथ लगाकर वेग से नख संचालन करने लगी। फिर उसने पलटकर ऋषि के मुख की ओर दृष्टि डाली। उसने वक्ष को सहलाते हुए कुच भिड़ा दिये तथा ठगिनी हँसती हुई मुनि से पूँछने लगी। ५७-५८ शृंगी ऋषि ने कहा हे तपःपूत! सुनो। यह ऊँचा-नीचा कौन सा पदार्थ दिख रहा है? कोमलता में यह ठंडे पानी को जीतने वाले किस

ए द्रब्य अपूर्ब आम्भ देशरे नाहिँ देखा। एड़े बड़ पदार्थ पाइल कहुँ एका ३६१
काम मोहिनी बोइले शुण हे तुम्भे ऋषि। एथिर भितरे जे अमृत पूरिअछि ६२
एहु से द्रब्य जे आम्भर अछि देह। जागर फल ए जे अटइ सर्ब सह ६३
नागरी बिष्णु रभावरे बश्य होइ देह देला।
दास बत्सळ बाना सेहु जे बोलाइला ६४
अजय़व ऋषि पुणि पाद पाणि नाहिँ। उषुमाने हुकुम देइण छन्ति रहि ६५
आश्वासना करिण प्रसन्न मोते ह्वन्ति। मने जाहा बाञ्छइ से फळ दिअन्ति ६६
तेणु बळरामदास जे सेपादे शरण। उद्धरि धर मोते हे प्रभु नाराय़ण ६७
पार्वती बोइले देव शुण हे महेश्वर। सेठारु किस कले अपसरा मेळ ६८
ईश्वर बोइले शुण गो शाकम्ब्ररी। हृदय़रे चिन्ता जे करिण सर्ब नारी ६९
शाप देबाकु डरिले तरुणी सकळ। बासुदेव सुमरणा करन्ति मनर ३७०
ऋष्यश्रृंग मनकु भोळ कराइले। कोमळ भाषा कहिण मुनिंकि मोहिले ३७१
हिआकु आउजाइण आणिले कोळ करि।
हसि करि अधर जे ऋषि चुम्मे धरि ७२
शरीर आउँसिण चुम्बिले प्रेमरसे। मुनि मन से जे हरिले माय़ा रसे ७३
बिबिध बिनोदे रति देले जे ऋषिंकि। सुवासित द्रव्यमान अंगे नेइ घषि ७४

सजावट के साथ गढ़े गये हैं? यह पदार्थ तो अपूर्व हैं। हमारे देश में नहीं दिखाई देते। तुम्हें इतने बड़े पदार्थ कहाँ से मिले? काममोहिनी ने कहा हे ऋषि! आप सुनिये। इसके भीतर अमृत भरा है। ५९-३६०-३६१-६२ यह द्रव्य हमारे शरीर में है और सबके साथ यह यज्ञ के फल हैं। नागरी ने विष्णु-भाव से वश में होकर देह समर्पित कर दी। उसने दास-वत्सल पताका फहरा दी। आजन्म युवक ब्रह्मचारी ऋषि के हाथ पैर काम नहीं कर रहे थे। उष्मा से वह वहाँ रहकर आज्ञा दे रही थी। ६३-६४-६५ वह मुझे आश्वस्त करते हुये मुझ पर प्रसन्न होते हैं। मन में जो इच्छा होती है वही फल वह प्रदान करते हैं। इस कारण से बलरामदास उन चरणों की शरण में है। हे प्रभु नारायण! मेरा उद्धार करके मुझे ग्रहण कीजिये। ६६-६७ पार्वती ने कहा हे देव महेश्वर! सुनिये। वहाँ पर अप्सराओं ने मिलकर फिर क्या किया? शंकरजी बोले हे शाकम्बरी! सुनो। सभी नारियाँ हृदय में चिन्ता करने लगीं। शाप प्रदान करने के लिये सभी डरने लगीं। वह मन में भगवान का ध्यान कर रही थीं। ६८-६९-३७० उन्होंने मधुर भाषा कहकर मुनि को मोहित करके उनके मन को विभोर कर दिया था। उसने वक्षस्थल को सहलाते हुये उन्हें गोद में ले लिया और हँसते हुये ऋषि को पकड़कर अधरों से चूम लिया। ३७१-७२ उसने शरीर को सहलाकर रति-रस में चुम्बन करते हुये माया की लीला में मुनि का मन हर लिया। विविध प्रकार के विनोद के साथ उसने ऋषि को रति-दान

काम मोहिनीं कि मुनि कोमळ भाषा भाषि ।
तुम्भ भुवनकु आम्भे जिवुहे ब्रह्म राशि ७५
चाल बेगे देखिबा तुम्भर मन्दिर । एमन्त वचन कहि उठिले मुनिवर ७६
नृत्य रुहाइण बोइले अप्सरी । आज कत न जिब हे शुण तपचारी ७७
वेळ उछुरहेउछि जिवु देवता पूजाकरि । अल्प वेळ अछइ आउ तपचारी ७८
दूररे आम्भ मठ अटे विशेषत । × × × ७९
आज जाए बनरे रहिवु आम्भे पुण । कालि संगरे नेवु तुम्भंकु ऋषि शुण ३८०
ऋष्यश्रृंग वोइले भण्डकि अट तुम्भे । तुम्भ संगे जिबाकु मन मो अछि भावे ३८१
काम मोहिनी वोइले करुछु आम्भे सत । तुम्भे अट ब्रह्मचारी आम्भे तपोवन्त ८२
कालि आसि तुम्भंकु आम्भे नेइ जिवु । सत्य आम्भर वचन केवेहे न लंघिवु ८३
निश्चय सत्य वाणी आम्भर अटेपुणि ।मेळ होइ जिवा आम्भे आजक हे मुनि ८४
शुणिण ऋष्यश्रृंगर न इच्छइ मन । गले न आसिवे विचारन्ति मुनि मन ८५
सत्य बचन केवळ मुनि जे शुणिले । मनरे कलिपत मुनि पुणि जे होइले ८६
आसिवु आसिवु वोलि जुवती सत्य कले। पिता तुम्भर दुष्ट वोलिण वोइले ८७
ए जे उपहार पिन्धिछ गछर वकळ । एहाकु घेनि आम्भे जाउछु संगतर ८८
ए जेउँ अळंकार नेइछुँ आम्भे जाण।कालि आणि करि देवु तुम्भंकु आम्भे जाण ८९

किया और सुगन्धित द्रव्य लेकर अंगों पर मल दिया। ७३-७४ मुनि ने काम-मोहिनी से मधुर भाषा में कहा कि हे ब्रह्मराशि ! हम आपके आश्रम चलेंगे। चलो शीघ्र ही आपका मन्दिर देखेंगे। इस प्रकार कहते हुये मुनि-श्रेष्ठ उठ पड़े। ७५-७६ नृत्य रोककर अप्सरा ने कहा हे तपस्वी ! सुनो। आज मत चलो। समय अधिक हो गया है। हम देवता की पूजा करने जायेंगी। समय थोड़ा है और हे तपस्वी ! हमारा आश्रम विशेपतय: दूर है। आज पर्यन्त हम वन में रहेंगी। हे ऋषि ! कल आपको साथ ले चलेंगी। ७७-७८-७९-३८० श्रृंगी ऋषि ने कहा कि आप भरमा क्यो रहे हो ? आपके साथ चलने को मेरा मन सोच रहा है। काममोहिनी ने कहा कि हम प्रतिज्ञा कर रही है। आप ब्रह्मचारी है और हम तपस्वी हैं। कल आकर हम आपको ले जाएँगी। हम अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन कभी नहीं करेंगी यह हमारा वचन निश्चित रूप से सत्य है। हे मुनि ! आज के लिये हम मिलकर ही चली जाएँगी। ३८१-८२-८३-८४ यह सुनकर श्रृंगी ऋषि का मन नहीं लग रहा था। मुनि मन में सोच रहे थे कि यह जाने से नहीं आएँगे। मुनि ने केवल प्रतिज्ञा के वाक्य सुने फिर वह मन में कल्पना में खो गए। ८५-८६ हम, "आएँगी-आएँगी" कहकर युवती ने प्रतिज्ञा की और कहा कि आपके पिता दुष्ट हैं। यह जो आपके पहने हुए उपहार तथा वृक्षों की छाल है, यह हम अपने साथ लिये जा रहीं हैं। यह अलंकार जो हम लिये हैं हम कल लाकर आपको देंगी।

ए जेउँ बिभूति आम्भर हेल बोळि। बेगे लेछि पकाअ हृदरु तुम्भरि ३९०
एते कहि बेश भूषण काढ़िले। अळंकार अंगरु काढ़ि पकाइले ३९१
पिन्धिला बसन जे पालटाइले पुण। निर्मळ जळरे ऋषि करन्ति स्नाहान ९२
गोमय़ से नेइण शिररे लेपिले। बृक्षर बकळ नेइण पिन्धाइले ९३
मृगछाल उपरे मुनिंकि बसाइले। कोमळ बनाउत सेठारु काढ़ि नेले ९४
सुबर्णर कठाउ नेले पादुँ काढ़ि। भष्म आभरण जे जतन करि बोलि ९५
सेज माण्डि मूचुळा चउकि घेनि गले। से स्थान निर्मल परिमळ करि नेले ९६
ऋषिंकि बोइले सकळ जाटाळि। पितांक आगरे तुम्भे न कहिब फेड़ि ९७
कहिले पिता तुम्भर करिबे आकट। संगरे घेनि जिबे नोहिब आम्भ भेट ९८
तेते बेळे आभंकु निन्दा न करिब। सत्य लंघन पुणि ऋषि तुम्भे हेब ९९
आम्भर दोष नाहिँ जे कहिलु तुम्भकु।
पिता जाणिले जाइ न पार आम्भ भवनकु ४००
ऋष्यश्रृंग बोइले मुँ न कहिबि किछि। शुणि करि सकळ जुबती तोष मति ४०१
सकळ द्रव्य घेनि जुबति सेठारु। बाहार होइले ऋषि देखिबारु २
देखु देखु अपसरीए अइले पिठि देइ। बसिला ठावरु उठिले ऋषिंकि तनय़ी ३
माय़ा मोहिनी जिबारु ऋष्यश्रृंग चाहिँ। लतार उहाड़रे मोहिनी मिळे जाइ ४

हमारी यह विभूति जो आपने लगाई है, उसे शीघ्र ही अपने वक्ष से पोंछ डालो। ८७-८८-८९-३९० इतना कहकर श्रृंगार के आभूषण उतार लिये और शरीर से अलंकार निकाल फेंके। पहने हुये वस्त्र बदल लिये। ऋषि ने निर्मल जल से स्नान किया। ३९१-९२ गोबर लेकर सिर में लेपन किया। वृक्ष की छाल लेकर पहन ली। मृगछाल के ऊपर मुनि को बैठा दिया गया। कोमल ऊनी आसन वहाँ से हटा लिया। ९३-९४ सोने की खड़ाऊँ पैरों से उतार लीं। फिर यत्नपूर्वक उनके भस्म लगा दी। सेज और तकिया, गद्दे, चौकी ले गई। वह स्थान साफ-सुथरा कर दिया। ९५-९६ ऋषि से कहा कि यह सारा रहस्य आप अपने पिता से खोलकर न कहियेगा। कहने पर आपके पिता मना कर देंगे। आपको साथ ले जायेंगे और फिर हमसे भेंट नहीं होगी। ९७-९८ उस समय आप हमारी निन्दा न करियेगा। फिर तुम प्रतिज्ञा के उल्लंघन के कारण बन जाओगे। हम आपसे कह देती हैं कि फिर हमारा दोष नहीं होगा। पिता को ज्ञात हो जाने पर आप हमारे भवन में न जा पायेंगे। ३९९-४०० श्रृंगी ऋषि ने कहा कि मैं कुछ भी नहीं कहूँगा। यह सुनकर समस्त युवतियों के मन संतुष्ट हो गये। समस्त पदार्थ लेकर युवतियाँ वहाँ से ऋषि के देखते-देखते अप्सरायें पीठ घुमाकर चली गयीं। ऋषि-पुत्र बैठने के स्थान से उठ पड़े और माया-मोहिनी के जाने पर श्रृंगी ऋषि देखते हुये लता की आड़ में मोहिनी से जा मिले। ४०१-२-३-४ मुनि ताकते हुये चिल्लाये कि आप शीघ्र

मुनि अनाइँ डाकन्ति बेगे तुम्भे आस।तुम्भ संगरे निअ मोठारे नकर अविश्वास ५
सुन्दरी शुणिले जे लता उहाड़रे। बोइले ऋषिमन वळिला आम्भ ठारे ६
आनन्दरे हसिण से मुनिकि बोइले।आसिबु काळि बोलि उच्चरे डाक देले ७
अदृश्य हेबा जाए अनाइले मुनि। बेगे बेगे चळिगले नदीतीरे पुणि ८
बनस्त भितरे चळिले सर्वे पुण। जरता आगरे मिळिले पुण जाण ९
नावर उपरे चढ़िले बेगे जाइ। चित्र मन्दिर परे बसिले स्थिर होइ ४१०
सकळ कथामान जे कहिले तांकु पुण। शुणि करि जरता परम तोष मन ४११
जुवती जिबारु जे भाळन्ति ब्रह्ममुनि। मनरे निरस जे हेले महामुनि १२
एथु अनन्तरे जे ऋष्यश्रृंग पुण। बसिकरि भाळुछन्ति आपणा मनेण १३
नपुण न आसन्ति अपूर्ब तपचारी।कहि करि गले कालि आसिबु स्नान करि १४
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी। पितांकर आसिबावेळ हेबारु बिचारि १५
आसनरु उठि काम धेनुकु आणिले। बत्साकु लगाइ पुण गो दुहन कले १६
सेहि क्षीर नेइण साइतिले जति। जुबतींक ठारे तांक रहिला सनमति १७
एसनक समये रवि अस्तगले। तपस्थान तेजि बिभाण्डक जे अइले १८
निज आश्रमरे प्रबेश हेले आसि। आमोद गन्धरे से स्थान बासु अछि १९
ऋष्यश्रृंग कथा सबु विपरीत मणि। माया नर माने अइला प्राए मणि ४२०

आइये। मुझमें अविश्वास न करके अपने साथ ले चलिये। सुन्दरी ने लता की आड़ से सुना और मन में कहने लगी कि ऋषि का मन हम में लग गया है। उसने प्रसन्नतापूर्वक हँसते हुये मुनि से उच्चस्वर में चिल्लाकर कहा कि हम कल आयेंगी। ५-६-७ मुनि उनके अदृश्य होने तक उन्हें देखते रहे और फिर शीघ्रतापूर्वक नदी के किनारे चले गये। वन के भीतर वह सब चल पड़ीं और जरता के समक्ष जा पहुँची। वह लोग शीघ्रता से जाकर नाव पर चढ़ गयीं और चित्रशाला में स्थिर होकर बैठ गई। ८-९-४१० उन्होंने उससे समस्त घटना कह सुनायी जिसे सुनकर जरता का पन अत्यन्त संतुष्ट हुआ। युवती के जाने के पश्चात् ब्रह्मर्षि विचारों में लीन हुये और उनका मन नीरस हो गया। ४११-१२ इसके पश्चात् श्रृंगी ऋषि बैठकर अपने मन में विचार करने लगे। वह अपूर्व तपस्वी क्या फिर लौटकर नहीं आयेंगे। वह तो यह कहकर गये हैं कि कल स्नान करके आयेंगे। १३-१४ हे शाकम्बरी ! तुम सुनो। इसके पश्चात् पिता के आने का समय विचार कर वह आसन से उठकर कामधेनु को ले आये। बछड़े को छोड़कर उन्होंने दूध दुहा। उस दूध को लेकर मुनि ने रख लिया। उनका मन युवतियों के पास में था। १५-१६-१७ इस समय सूर्यास्त हो गया। तपस्या का स्थान छोड़कर विभाण्डक अपने आश्रम में आकर प्रविष्ट हुये। आमोद की सुगन्ध से वह स्थान सुगन्धित था। श्रृंगी ऋषि की सारी बातें विपरीत समझते हुये मायावी पुरुषो के आने के समान उसे माना। मुनि चरण

चरण पखाळि मुनि शौच जे होइले। प्रातकाळ तर्पण मुनि तहिँ कले ४२१
पुत्रकु पचारन्ति कोळे बसाइण। शरीर आउँसिण मुखरे चुम्बिण २२
कहन्ति किस बाबुरे प्रकटे करे बास। ऋषिकि न जोगाए एमान बिशेष २३
केवण कथा केवण भविष्य। कह मोर आगरे एथिर सन्देश २४
ऋष्यशृंग बोइले पितामह शुण। आज मोर सुफळ होइलाक पुण २५
रूप गुणे मोहिनी जे पारन्ति सुरराज। अपूर्व तनुमानंकु देखिलि मुहिँ आज २६
ताहांकर जट उलट रूपे शुण। एक एक जट समस्तंकर जाण २७
शामळित जटामान उत्तम बिशेष। × × × २८
रुद्राक्षर रत्नमाळा गळारे छन्तिलाइ। वषस्थळे माळमाळ लम्बि अछि तहिँ २६
हरिड़ा बाहाड़ा देखिण हसिले। तांक राज्य स्वादुफळ मोते भुञ्जाइले ४३०
ताहांकर देशर निर्झर पाणि देले। पिअन्ते कोमळ जे शरीर मोर भले ४३१
तुम्भर बिकळरे बिचित्र कम अछि। आम्भ बिकळ तांक मनकु न रुचि ३२
तांकर देवतांकु हृदयरे बहि छन्ति। दण्ड कमण्डळ जे नाहिँ तांकर किछि ३३
मुखमान जिणइ जे चन्द्रर आकार। निर्मळ द्रव्य धरिछन्ति से हस्तर ३४
अपणा मुख दिशइ सेथिरे चाहिँले। सूर्य्य देवता प्राय़ जे रूपकान्ति भले ३५
भो तात धन्य तांकर तप जे अटइ। छद्म प्राय़े आम्भे तपकु मणिलइँ ३६

धोकर पवित्र हुये। प्रातःकाल मुनि ने वहाँ तर्पण किया। उन्होंने पुत्र को गोद में बैठाकर उनका शरीर सहलाते हुये मुख चूम लिया और बोले हे वत्स ! तुम्हारे हाथों से यह सुगन्ध कैसी आ रही है। विशेषतया यह सब ऋषियों के योग्य नहीं है। १८-१६-४२०-४२१-२२-२३ पता नहीं क्या बात है ? क्या भविष्य है। तुम मेरे समक्ष सारी बातें कहो। शृंगी बोले हे महान पिता ! सुनिये। आज मैं सफल हो गया। २४-२५ आज मैंने अलौकिक शरीर देखे हैं जो अपने रूप तथा गुण से देवराज इन्द्र को भी मुग्ध कर सकते हैं। उनकी जटायें उलटी हुयी थीं। सबके एक-एक जटा थी। उनकी मिली-जुली जटायें विशेष प्रकार से उत्तम थीं। २६-२७-२८ रुद्राक्ष की रत्न मालायें गले में पड़ी थीं और अन्य मालायें भी वक्षस्थल पर पड़ी थीं। वह हरड़-बहेड़ा देखकर हँसे। उन्होंने मुझे अपने राज्य के स्वादिष्ट फल खिलाये। २६-४३० अपने देश के झरनों का पानी दिया। उसे पीने से मेरा शरीर ठंडा हो गया। आपकी विकलता वैचित्र्य से कम हुई। हमारी व्याकुलता उनके मन को नहीं रुची। ४३१-३२ वह अपने देवता को हृदय में रखते है। उनके पास दण्ड-कमण्डल कुछ भी नही है। उनके मुख चन्द्रमा के आकार को जीतने वाले है। वह स्वच्छ पदार्थ हाथों में लिये थे जिसमें देखने से अपना मुख दिखाई पड़ता था। सूर्यदेव के समान उनके रूप की कांति सुन्दर थी। ३३-३४-३५ हे पिता ! उनकी तपस्या धन्य है। मैं अपने तप को छुद्र मान रहा हूँ। वह

अंगन्यास करन्ति जे स्थान मान छुइँ ।
तुम्भराण तात मोते आश्वासना हेलि तहिँ ३७
बिभाण्डक बोइले नुहँन्ति जे जति । जाहाकु कहुछ पुत्र राक्षस सेहिटि ३८
तपींकि देखिले देखा दिअन्ति राक्षसुणी । × × × ३९
ताड़का सुरर जे अटइ गड़ कि । पथ ओगाळिण सेहु मनुष्य बोलान्ति ४४०
दशग्रीव भउणी अटइ सूर्पणखा । दिव्य रूप देखि ऋषिर भांगइ तप श्रोता ४४१
काळेण ताहाकु गुरस्त करइ । निद्रा गला वेळे ताहाकु भक्षइ ४२
शते मुखा रावणर भउणी भइरोवि । ऋषि देखि रड़ि करे जे सने वृक्ष भांगि ४३
धरिण ऋषिकि गिळइ जे पुण । खोजिले न मिळइ जळरे बुड़े जाण ४४
इन्द्रजित सुत महीरावण भउणी । शोभा बोलि नाम ताकु देला पिता पुणि ४५
चाटु बचन कहिण ऋषिकि जणाए । ऋषि कोप कले नाग फाशरे बान्धि निए ४६
अग्निरे पोड़िण तार मांस खाइ । तेवे तोष तार उदर हुअइ ४७
सहस्त्रा मुख रावण अछि विलंकारे । दुहिता जे अछि तार कळा जे वर्णरे ४८
काळ जित्ति बोलि तार अटइ नाम जाण ।
ऋषिकि चाहिँले काळि लगाए बहुन ४९
काळ फाश धरिण ऋषिर प्राण हरे । रन्धन करिण खान्ति वनस्तरे ४५०
शुणिण ऋष्यश्रृंग बोइले शुण पिता । राक्षसुणी नुहँन्ति से तपरे जगज्जिता ४५१

स्थानों का स्पर्श करके अंगन्यास करते हैं। हे तात ! आपकी सौगन्ध है। मैं उनसे आश्वस्त हो गया हूँ। विभाण्डक ने कहा कि वह यति नहीं है। हे पुत्र ! तुम जिसके विषय में कह रहे हो वह राक्षस है। तपस्वियों को देखकर राक्षसी दिखाई देती है। ३६-३७-३८-३९ क्या यह ताड़कासुर का दल है। वह पथ रोककर मनुष्य से बात करती है। दसग्रीव रावण की बहिन सूर्पनखा है। वह दिव्यरूप देखकर ऋषि की तपस्या भंग कर देती है। समय पर उसे ग्रस्त कर लेती है और सोते समय उसे खा जाती है। ४४०-४४१-४२ सौ मुख वाले रावण की बहिन भैरवी है जो ऋषि को देखकर वृक्ष के टूटने के समान शब्द करती है और फिर ऋषि को पकड़कर निगल जाती है वह जल में डूबने से खोजने पर नही मिलती। ४३-४४ इन्द्रजीत के पुत्र महिरावण की बहन जिसका नाम पिता ने शोभा रखा। वह ऋषियों से चिकनी-चुपड़ी बातें करती है। ऋषियो के कोप करने पर नागपाश से बाँध लेती है। ४५-४६ वह अग्नि में जलाकर उनका माँस खाती है। तब उसका उदर संतुष्ट होता है। विलंका में सहस्रकंठ रावण है। उसकी पुत्री काले रंग की है। उसका नाम कालजिता है। ऋषियों को देखकर वह शीघ्र ही झगड़ा लगा देती है। वह कालपाश लेकर ऋषि के प्राण हर लेती है और उसे पकाकर जंगल में खा जाती है। ४७-४८-४९-४५० यह सुनकर श्रृंगी ऋषि ने कहा हे पिता ! सुनिये। वह

बिभाण्डक बोइले शुणरे एबे तुहित । मायारे रूपमान प्रकाश होन्ति सेहित ५२
तु बाबु ताहाकु रे बिश्वास न जिबु । मोहर बचन तुहि प्रति पाळिथिबु ५३
एते कहि बिभाण्डेक पुत्रकु संगे घेनि । क्षीर फळ मूळ जे भक्षिले जाइ पुणि ५४
मृगछाल उपरे शयन से जे कले । शर्वरी शेष हेबारू निद्रारु उठिले ५५
प्रभाते बिभाण्डेक पुत्रकु डाके भले । माया कथा मानंकरे न पडिबु तुरे ५६
सुरभि कामधेनुकु चाहिँण छाडि देबु । स्नान तर्पण सारिण भोजण करिबु ५७
एते कहि बिभाण्डक तपस्थाने गले । तपस्थाने मिळि स्नान शौच पुणि हेले ५८
आसन करिण तपे बसिलेक पुण । अनामिका अजपा सुमरे ऋषि पुण ५९
पिता चळिबारु ऋष्यश्रृंग बाहारिले । स्नान तर्पण ऋष्यश्रृंग जे सारिले ४६०
मढिआरे जाइण प्रबेश होइले । × × × ४६१
शाळग्राम शिळांकु पूजिले बिशेष । × × + ६२
पूजा सारि बिभुति अंगरे हेले बोलि । सुरभि काम धेनू दुहिँकि बेगकरि ६३
क्षोर भक्षि काम धेनूकु बनकु छाडि देले । मृगछाल उपरे ऋषि जे बसिले ६४
बेल गछ मूळरे बसिण ऋष्यश्रृंग । अनामिका अजपा जे सुमरन्ति बेग ६५
पार्वती बोइले तुम्भे शुण पञ्चानन । केउँ ठारु अपसरा माने हेले जन्म ६६
से कथा मोर आगे कहिले महेश्वर । तुम्भ ठारु शुणिले मन हेब स्थिर ६७

राक्षसी नहीं है। वह तपस्या से संसार को जीतने वाले हैं। विभाण्डक ने कहा अब तू सुन। माया से रूप आदि प्रकाशित होते हैं। बेटे तुम उनका विश्वास न करना। तुम मेरे बचनों का पालन करते रहना। ४५१-५२-५३ इतना कहकर विभाण्डक ने पुत्र को साथ लेकर दूध, फल, मूल आदि भोजन किये। फिर उन्होंने मृगछाल पर शयन किया। रात्रि व्यतीत हो जाने पर वह निद्रा से उठे। प्रातःकाल विभाण्डक ने पुत्र को बुलाकर कहा कि तुम मायावी की रहस्यमयी बातों में नहीं पड़ना। ५४-५५-५६ सुरभी तथा कामधेनु को देखकर छोड़ देना, स्नान और तर्पण करके भोजन करना। इतना कहकर विभाण्डक तपस्या के स्थान को चले गये। तपोभूमि में पहुँचकर उन्होंने स्नान, शौचादि किया। ५७-५८ फिर वह आसन लगाकर तपस्या में बैठ गये। ऋषि ने अनामिका अजपा स्मरण किया। पिता के चले जाने पर श्रृंगी ऋषि बाहर निकले और उन्होंने स्नान-तर्पण समाप्त किया। ५९-४६० फिर वह मठ में जाकर प्रविष्ट हुये और उन्होंने विशेष प्रकार से शालिग्राम की पूजा की। पूजा समाप्त करके उन्होने शरीर में विभूति लगायी। सुरभी और कामधेनु दोनों का दूध दुहकर भक्षण किया और उन्हें वन में छोड़ दिया। ऋषि मृगछाला के ऊपर बैठ गये। ४६१-६२-६३-६४ श्रृंगी ऋषि बेल के वृक्ष के नीचे बैठकर अनामिका, अजपा जाप शीघ्रतापूर्वक करने लगे। ६५ पार्वती बोली हे पंचानन ! आप सुनिये। अप्सराओं का जन्म कहाँ से हुआ था। हे महेश्वर ! वह कथा आप हमसे कहिए आपसे सुनने पर हमारा मन स्थिर हो जायेगा। ६६-६७ शंकर जी

ईश्वर बोइले से कथा एबे शुण। जेउँ दिन तिनिपुर सञ्जिले नाराय़ण ६८
नवखण्ड मेदिनी जे चउद ब्रह्माण्ड। छपन कोटि जीवकु सर्जिले वासुदेव ६९
स्तिरी पुरुष दुइ अंगरु काढिले। एकरु अनेक जीव प्रकाश होइले ४७०
स्थावर जंगम कीट पतंग जेते गुण। समस्ते स्तिरी पुरुष होइले घटण ४७१
स्वर्गरे देवताए मञ्चरे नर जाण। पाताळे नाग वळ असुरंकर स्थान ७२
सपत सागर सपत जे दिग। सबु ठारे विचारि रखिले समस्त ७३
बेद वरंकु सेठारे देले अधिकार। बोइले सबु जीवंकु करिव उद्धार ७४
बुझिबा निमन्ते देले अधिकार जाण। प्रजापति अंगरु होइला जात पुण ७५
प्रजापति जन्म मरण काळ जाणि। एमन्ते सात मनु वहि गला पुणि ७६
दिनेक बसुदेव मोते आज्ञा देले। तुम्भे अपसरी मेळे नृत्य कर भले ७७
से कथा मोर जे मनरे वाञ्छाथिला। एक दिने मोर विजे स्वर्गपुरकु हेला ७८
बृषभ उपरे वसि तोते जे कोळ करि। उत्सवरे विजे जे मुँ गलि दिग फेरि ७९
कपिळास कन्दरु चळिगलि खरतर। × × × ४८०
बिरजा मण्डळरे बैतरणी कूळे। सपत कन्या जे खेळन्ति नदी कूळे ४८१
अल्प बय़स जे ज्ञान नाहिँ तारि। धूळि घर करिण खेळन्ति कुमारी ८२
देखिले तांक खेळ तु बोइलु वाळि। × × × ८३
ए कन्या माने जे किस करन्ति एठारे। धूळि घर खेळ करन्ति हरष मनरे ८४

बोले कि वह कथा सुनो। जिस दिन भगवान ने तीनों लोकों का निर्माण किया। नौ खण्ड पृथ्वी, तथा चौदह ब्रह्माण्ड तथा छप्पन करोड़ जीवों का सृजन किया। अपने अंग से उन्होंने स्त्री-पुरुष दोनों को निकाला। फिर एक से अनेक जीव विकसित हुये। ६८-६९-४७० स्थावर, जंगम, कीट, पतंग, जितने भी थे। सबमें स्त्री और पुरुषों का सृजन हुआ। स्वर्ग में देवता, मृत्युलोक में मनुष्य, पाताल में नागों के दल तथा राक्षसों का स्थान हुआ। ४७१-७२ सात सागर सातों तरफ सभी स्थानों में सोच-समझकर सबको रखा। ब्रह्माजी को उन्होंने अधिकार देते हुये समस्त प्राणियों का उद्धार करने को कहा। समझने के लिये उन्होंने अधिकार दिये जो प्रजापति के शरीर से उत्पन्न हुये। ७३-७४-७५ प्रजापति जन्म और मरण का समय जानते थे। इस प्रकार से सात मन्वन्तर व्यतीत हो गये। एक दिन वासुदेव ने मुझे अप्सराओं से मिलकर नृत्य करने की आज्ञा दी। यह बात मेरे मन में थी। एक दिन मैं स्वर्ग जा पहुँचा। ७६-७७-७८ तुम्हें गोद में लेकर बैल के ऊपर बैठकर मैं उत्सव से दिशा बदलकर गया। कैलाश पर्वत से मैं शीघ्र ही चल पड़ा। बिरजामण्डल में वैतरणी नदी के तट पर सात कन्यायें खेल रही थी। वह अल्पवयसी थी और उन्हें ज्ञान नही था। कुमारियाँ मिट्टी का घर बनाकर खेल रही थी। ७९-४८०-४८१-८२ उन्हे देखकर तुमने कहा कि यह कन्यायें यहाँ क्या कर रहीं हैं। मिट्टी का घर बनाकर प्रसन्न मन से खेल कर रहीं हैं। ८३-८४ उन्होंने मिट्टी का भात

धूळिर भात जे तिअण करे सबु । एमानंकु दयाकरि बेगे जाअ प्रभु ८५
तोर ठारु शुणि मुँ जे बृक्ष पाशुँ गलि । ब्रह्मचारी बेश धरि तांकर पाशे हेलि ८६
बोइलि कुमारीए गो शुण मो बचन । आम्भे अतिथि जे मागु अछुँ भिक्षा पुण ८७
कुमारी बोइले आम्भे धूळिरे करु घर । अज्ञान कुमारी आम्भे अटु दिगम्बर ८८
धूळिरे तिअण जे धूळिरे भात करि । खेळ कउतुके दिन जाउछि आम्भरि ८९
सेथिरु किस भिक्षा देबु जे तुम्भंकु । कोपन कर ऋषि आम्भ जे मानंकु ४९०
एते कहि धूळिरे भात तिअण बोलि । सेहि कुमारी माने आम्भंकु देले पुणि ४९१
सन्तोषरे तांक भिक्षा आम्भे घेनि गलु ।
चिरञ्जिवी नव जुबा हुअ बोलिण बोइलुँ ९२
स्वर्गपुरे रहिण देवंकु मोह कर । मोहरे पार्वती रूप धर तत्काळ ९३
जेते दिने देवताए स्वर्गरे थिवे । तेते दिन नव जुबा हुअ भले तुम्भे ९४
स्वर्ग अपसरी तुम्भर नाम बह । सप्त कोटि सुन्दर रूपकु मोहु थाअ ९५
एतेक कहि बारु से कन्या जुबा हेले । तोहर सदृश्यरे रूप प्रकाशिले ९६
बोइले ए बर जेबे देल काशिनाथ । तुम्भर बर आम्भकु हेउ जे प्रापत ९७
से पुरे स्थान देइ रख हे नेइ पुण । तेबे सिना बर देबा रहिबा प्रभु पण ९८
शुणि करि मन मोर सन्तोष होइला । जान सुमरिबारु आसिण मिळिला ९९

दाल बनाया । हे प्रभु ! शीघ्र ही इन पर दया करते चलिये । तुमसे ऐसा सुनकर मैं वृक्ष के पास गया। और ब्रह्मचारी का वेश धारण करके उनके निकट जा पहुँचा । ८५-८६ मैने कहा हे कुमारियो ! मेरी बात सुनो। हम अतिथि हैं और भिक्षा माँग रहे हैं। कुमारियों ने कहा कि हमने मिट्टी के घर बनाये हैं। हे दिगम्बर ! हम लोग अबोध कुमारियाँ है। धूल से ही हमने भात दाल बनाया है। ८७-८८ हमारे दिन खेल-खेल में ही निकल जाते हैं। इससे हम आपको क्या भिक्षा दें। हे ऋषि ! आप हम पर क्रोध न करिये। ८९-४९० इतना कहकर धूल द्वारा निर्मित भात दाल उन कुमारियों ने हमें दिया। हम संतोषपूर्वक उनकी भिक्षा लेकर चले गये और उन्हें चिरंजीवी और नवयौवना होने का आशीर्वाद दिया। ४९१-९२ मैंने कहा कि तुम लोग स्वर्गलोक में रहकर देवताओं का मन मोहित करो। मोह से तत्काल पार्वती का रूप धारण करो। जितने दिन देवता स्वर्ग में रहें। उतने दिन तुम नवयुवती बनी रहो। ९३-९४ तुम्हारा नाम स्वर्ग की अप्सरा होगा। सात करोड़ सुन्दर रूपों को मोहित करती रहो। इतना कहने पर वह कन्यायें युवा हो गयीं। तुम्हारे समान उसका रूप प्रकाशित हुआ। ९५-९६ उन्होंने कहा हे काशीनाथ! आपका वर हमें प्राप्त हो। आप उस पुर में स्थान लेकर हमें ले जाकर रख दीजिये। तभी तो वर देने से आपकी महिमा रहेगी। ९७-९८ यह सुनकर मेरा मन प्रसन्न हो गया। स्मरण मात्र से विमान आ पहुँचा। विमान पर सातों कन्याओं को बैठाकर उन्हें

जय़ जय़ दुर्गति निवारण नाम । करुणा सागर तुगो हरि प्रिय़ा प्राण ३२
सबु ठारे तुहि गो करु जे सुदय़ा । तोहर महिमा वळे नुहँइ निर्द्दय़ा ३३
आम्भे जे आरतरे करु सुमरणा । तोर नाम धइले आम्भे न हेबु जिणा ३४
चारि शत जोजन चम्पावती राज्य । जळ वृष्टि नोहिला सपक्ष नोहिला इन्द्र ३५
ऋष्य श्रृंग गले पुणि बरषिब जल । तेबे से राज्यर होइब मंगळ ३६
बिपद बिनाशिनी तोर नामगोटि । तेणु से सकळ जीवरे तोर स्थिति ३७
कर जोड़ि शतवार विनति होइले । विपत्ति आम्भर नाश वोलिण वोइले ३८
बासुदेवंकु सुमरणा कले से कामिनी । जय़ तु नाराय़ण सकळ अन्तर्ज्यामी ३९
सकळ संसार सिना तोहर रचना । एबे किम्पा नाथ तुम्भे हेउछ विमना ५४०
सन्थकु रखिण जे दुष्टकु निवारु । तोहर महिमा जे अटइ महा मेरु ५४१
गरुड़ वाहान तोर सारंग धनुर्द्धर । असुर निवारण अटइ वाना तोर ४२
दुष्टकु नाश करि सन्थकु एबे रख । तुहि न रखिले निश्चे हेलुटि निरेख ४३
एते कहि शते बार प्रणाम जे कले । जगन्नाथ नाम धरि पाद बढ़ाइले ४४
लतार उहाड़रे चालन्ति धीरे धीरे । प्रवेश हेले विभाण्डेक मढिआ दुआरे ४५

सब प्रकार से कल्याण करने वाले भगवान की स्तुति की और अपने मुख से जय हो, कल्याण हो का उच्चारण किया। उन्होंने कहा कि दुर्गति के नाश करने वाले आपके नाम की जय हो। हे करुणा सागर! आप लक्ष्मी प्रिय प्राण हो। ५३१-३२ आप सब स्थानों में दया करते हैं। आप महिमावान होते हुए निष्ठुर नहीं हैं। हम दुःख में आपका स्मरण करते हैं। आपका नाम लेने से हमें कोई जीत नहीं सकता। ३३-३४ चार सौ योजन पर चम्पावती राज्य है। इन्द्र के संतुष्ट न होने से जलवृष्टि नहीं हुई, श्रृंगी ऋषि के जाने से जल की वर्षा होगी। तब उस राज्य का मंगल होगा। ३५-३६ आपका नाम संकट का विनाश करने वाला है। इसी कारण से सभी जीवों में आपकी स्थिति है। उन्होंने हाथ जोड़कर सौ बार प्रणाम किया और कहा कि हमारी विपत्ति का नाश कीजिये। ३७-३८ उस कामिनी ने भगवान का स्मरण किया। सबके हृदय की जानने वाले भगवान आपकी जय हो। यह सारा संसार आपकी रचना है। हे नाथ! आप किस कारण से रुष्ट है। ३९-५४० दुष्टों का नाश करके आप संतों की रक्षा करते हैं। आपकी महिमा महान सुमेरु पर्वत जैसी है। गरुड़ आपका वाहन है। हे सारंग धनुष को धारण करने वाले! राक्षसों का विनाशक आपका वाना है। ५४१-४२ दुष्टों का नाश करके अब आप संतों की रक्षा कीजिये आप यदि रक्षा नहीं करेंगे तो हम निश्चय ही नष्ट हो जायेंगे। इतना कहकर उन्होंने सौ बार प्रणाम किया। उन्होंने जगन्नाथ का नाम लेकर चरण बढ़ाया। ४३-४४ वह धीरे-धीरे लता की आड़ में चली जा रही थी। वह सब जाकर विभाण्डक की मठिया के द्वार पर प्रविष्ट हुयीं। उन्होंने ब्रह्मर्षि

देखिले ऋष्य शृंग अछन्ति पुणि बसि । अनामिका सुमरण करन्ति ब्रह्म ऋषि ४६
जटाळि मुनि मानंकु देखिले नेत्ररे । बिचारिले मुनिमाने आसिले सत्वरे ४७
मुनिकर बचन जे मिथ्या केबे नोहि । काळि कहिगले आज आसिल बेग होइ ४८
एते बिचारि ऋषि जे उठिले तपस्थान । बोइले मुनिमाने अइलेक पुण ४९
आज चाल जिबा जे तुम्भर बने पुण । देखिबा से बन केमन्ते शोभा बन ५५०
एते बोलि ऋषि बत्तिस बोइले तुम्भे शुण । केते बाट आम्भे जिबु तुम्भर संगेण ५५१
शुणि अपसरी हरष मन हेले । आगरे बार बनिता बाट कढ़ाइले ५२
जरता काम मोहिनी पछे पुणि रहि । शुआ ड़ाक देला शुणलो शारी तुहि ५३
ब्रह्म मुनि ऋष्य शृंग देश फेरि गले । बिभाण्डेक मढिआकु तुच्छा करि देले ५४
शारी बोइले तुम्भे शूकराजा शुण । चम्पावती राज्यरे अपाळक जाण ५५
से देशर प्रजामाने जळ न पाइले । प्रजा माने राजा पाशे प्रार्थना जाइ कले ५६
बोइले ए देश आम्भे छड़िकरि जिबु । बार राज्य देश बुलि बालिकि खाइबु ५७
नृपत्ति शेखर जहुँ ए बाणी शुणिले । माया मोहिनी पेषि ऋषिकु घेनि गले ५८
ए ऋषि गले से देशरे बृष्टि हेब । दशरथ राजा बासुदेवंकु देखिब ५९
साआन्ता कन्यांकु ऋष्य शृंग बिभा हेबे । बिभाण्डेक ऋषि ठाकु चार बरगिबे ५६०

शृंगी ऋषि को फिर बैठे हुये अनामिका जाप करते हुये देखा । ४५-४६ उन्होंने जटाधारी मुनियों को अपनी आँखों से देखते हुये विचार किया कि मुनि लोग शीघ्र ही आ गये । मुनियों का वचन कभी मिथ्या नहीं होता । कल आज के आने के लिये शीघ्र ही कह कर गये थे । ४७-४८ इतना विचार करके ऋषि तपस्या के स्थान से उठे और बोले कि मुनि लोग आ गये । चलो आज तुम्हारे वन में चलेंगे और देखेंगे कि वह वन कितना सुन्दर है । ४९-५५० इतना कहकर ऋषि पुत्र ने कहा कि आप लोग सुनिये । आपके साथ हमें कितना मार्ग चलना पड़ेगा । यह सुनकर अप्सरा का मन प्रसन्न हो गया । आगे वेश्यायें मार्ग-दर्शन करने लगीं । जरता और काममोहिनी पीछे रह गई । तोते ने कहा हे मैंना ! तुम सुनो । ५५१-५२-५३ ब्रह्म ऋषि शृंगी ऋषि देश में घूमने चले गये । विभाण्डक की मठिया को उन्होंने रिक्त कर दिया । मैंना ने कहा हे शुकराज ! सुनो । चम्पावती राज्य में अकाल पड़ा है । उस देश की प्रजा को जल नहीं मिल रहा । प्रजा के लोगों ने राजा के पास जाकर प्रार्थना की । ५४-५५-५६ प्रजा ने कहा कि हम इस देश को छोड़कर चले जायेंगे और बारह देशों के राज्यों में घूमकर धूल फाँकेंगे । श्रेष्ठ राजा ने जब यह बात सुनी । तो ऋषि को लाने के लिये उन्होंने मायामोहिनी को भेजा । ५७-५८ इन ऋषि के जाने पर उस देश में वर्षा होगी राजा दशरथ भगवान को देखेंगे । शांता कन्या के साथ ऋषि का विवाह होगा । वह विभाण्डक ऋषि के पास दूत भेजेंगे । ५९-५६० वह दो

देश घोष देखिण आसिवे वेनि मासे। उदे हेला स्नान गो शुण गो हरषे ५६१
ताहा शुणि शूक राजा बचन जे कहि। किस भाव हेला एवे फेडि कह तुहि ६२
शारी वोइला ऋषि पुत्र देशकु जेवे गला। निश्चय वन एवे गहन होइला ६३
ऋषि कुमर जाइण बिभा जेवे हेला। दशरथ राजा केते तप करि थिला ६४
बिभाण्डेक ऋषिंकि जे सम्बन्धि पाइला। जान जउतुक थाए अळंकार देला ६५
अनेक धन रत्न अनेक गोरु गाई। अनेक मइँषि जे मनुष्य आसिवइँ ६६
अनेक ग्राम एथे होइव विका किणा। × × × ६७
ए ऋष्यश्रृंग आम्भंकु धरि घेनि जिव। सुवर्ण पिञ्जरारे नेइण रखिव ६८
श्रीहरिंक नाम से शुणाइव पुण। पक्षी रूप तेजि आम्मे हेवा देवगण ६९
तिनि वर्षे दुइ पुत्र एहार होइव। प्रथमे अपसरी घरणी ए करिव ५७०
द्वितीय़े राजा जेमा होइब पुण बिभा। तेवे से एवने पाइव वड़ शोभा ५७१
एहार जोगुं हेवे वासुदेव जात। मारिबे असुरंकु पृथिवी हेव शान्त ७२
ताहा शुणि शुआ बोले गुप्त कर तुहि। ए ऋषिर सका शरे आम्मे मोक्ष होइ ७३
दुइ जण सेठारु इंकार शब्द कले। ऋष्यश्रृंग चळिजाए नारींक संगरे ७४
केते दूरे कोकिळ पिक पुणि देखि। पिकडाक देला शुण गो शुभ्र केशी ७५
नर नारी एथे रहिबे अनेक आसि। × × × ७६

मास में देश-कोस देखकर आ जायेंगे। क्योंकि स्नान आ गया है। यह तुम हर्ष-पूर्वक सुनो। यह सुनकर शुकराज ने कहा कि अब इसका क्या भाव हुआ। उसे तुम खोलकर कहो। ५६१-६२ मैना ने कहा कि जव ऋषि पुत्र देश को गये। निश्चय ही वन अब दुर्गम हो गया। राजा दशरथ ने कितनी तपस्या की थी जो कि ऋषि पुत्र ने जाकर वहाँ विवाह किया। ६३-६४ उन्हे विभाण्डक ऋषि समधी के रूप में मिले। उन्होंने रथ अलंकार आदि दहेज के रूप में दिये। प्रचुर धन रत्न वहुत से गाय गोरू भैंसे तथा मनुष्य आयेंगे। इसमें वहुत से गाँवों का क्रय-विक्रय होगा। ६५-६६-६७ यह श्रृंगी ऋषि हमको पकड़कर ले जायेंगे और सोने के पिंजड़े में लेकर रखेगे। वह हमें श्री भगवान का नाम सुनायेंगे। तव हम पक्षी रूप छोड़कर देवगण हो जायेगे। तीन वर्ष में इनके दो पुत्र होंगे। पहले यह अप्सरा को पत्नी वनायेंगे। ६८-६९-५७० दूसरा राज्य कन्या से पुनः विवाह होगा। तव वह इस वन में वहुत शोभा को प्राप्त करेगे। इनके कारण नारायण उत्पन्न होंगे जो असुरो का सहार करेगे जिससे पृथ्वी स्थिर होगी। ५७१-७२ यह सुनकर तोते ने कहा कि तुम इसे गुप्त रखो। इन ऋषि के कारण हमारी मुक्ति होगी। दोनों ने वहाँ कलरव शब्द किया। श्रृंगी ऋषि नारियों के साथ चले जा रहे थे। ७३-७४ इतनी दूर तक कोयल तथा मैना ने उन्हे देखा। मैना ने पुकारा हे शुभ्रकेशी ! सुनो। यहाँ पर अनेक नर-नारी

बासुदेव बैकुण्ठ तेजिबे अल्प दिने। स्थावर जंगम कीट पतंग मोक्ष एणे ७७
पिक राजा बाणी शुणि कोकिळ कहिला। भल हेला एबन गहन जेबे हेला ७८
पिक बोइला एबे होइला मठ शून्य। सकळ द्रव्य जे अछइ तहिँ पुण ७९
शृगाळ सर्प मण्डुक से मठे बसिबे। देखिले बिभाण्डेक क्रोधभर हेबे ५८०
क्रोध हेले कौणसि कार्य्यहिँ नोहिब। देवतांक कूट जे एथिरु सरिब ५८१
कोकिळ बोइला किस करिबा आम्भे जाण।
आम्भे त पक्षी जन्तु निर्बळ अंग पुण ८२
शृगाळ सर्प जे आम्भंकु अटे बळ। देव नर बानरकु असुरे महा बळ ८३
देखिले आम्भंकु करिबे नार खार। × × × ८४
पिक बोइला चाल कहिबा सुरभिकि।से ते बेळे दोषी हेबा ऋषिरे आम्मेकि ८५
कोकिळ बोइला एकथा अटे भल। सबु जीव उपरे सेहि अटे बड़ ८६
देव नर बानरंकु असुरे महाबळ। बिचारिले लंघि जे पारन्ति तिनिपुर ८७
ताकु बलिआइ आउ केहि नाहान्ति पुण। सुरभि बळरे ऋषि ए बनरे रहे पुण ८८
पिक ड़ाक देला कामधेनू शुण एबे। बिभाण्डेक मठ ठाकु जाअ तुम्भे बेगे ८९
से ठारे केहि नाहिँ अछि तुत्स बाण। सम्भाळ तु ऋषि मठ सम्भाळ जाइण ५९०
सुरभि बोइला तार पुत्र केणे गला।
कोकिळ बोइला ताकु माया जति घेनि गला ५९१

आकर रहेंगे। ७५-७६ थोड़े दिनों में नारायण बैकुंठ का त्याग कर देंगे। फिर यहाँ पर जड़-चेतन तथा कीट पतंग मोक्ष को प्राप्त करेंगे। पिकराज की वाणी सुनकर कोयल ने कहा अच्छा हुआ जब यह दुर्गम वन हुआ। पिक ने कहा अब मठ शून्य हो गया है। वहाँ पर समस्त पदार्थ हैं। ७७-७८-७९ शृगाल, सर्प तथा मेढक उस मठ में रहेंगे जिन्हें देखकर विभाण्डक क्रोध से भर जायेंगे। क्रुद्ध होने से कोई भी कार्य नहीं होगा। देवताओं का रहस्य यहाँ समाप्त हो जायेगा। कोयल बोली, हम क्या करें। हम तो पक्षी हैं। फिर हमारे अंग भी दुर्बल हैं। ५८०-५८१-८२ शृगाल तथा सर्प हमसे बलशाली हैं। देवता मनुष्य तथा वानरों के लिये राक्षस महान बलवान हैं। देखने से वह हमें नष्ट भ्रष्ट कर डालेंगे। ८३-८४ पिक ने कहा चलो सुरभी से कहें। तब हम ऋषि के दोषी न रहेंगे। कोयल बोली यह बात ठीक है। सब जीवों के ऊपर वह बड़ी है। ८५-८६ देवता नर-वानर से असुर महाबली हैं। यदि वह चाहें तो तीनों लोकों को लाँघकर पार कर सकते है। उनको परास्त करने वाला और कोई नहीं है। सुरभी के बल से ऋषि इस वन में रहते हैं। पिक ने पुकार हुये कहा हे कामधेनु ! सुनो। तुम शीघ्र ही विभाण्डक के आश्रम में जाओ वहाँ पर कोई नहीं है। तुम जाकर ऋषि के मठ में बछड़े तथा अग्नि की देखभाल करो। ८७-८८ ...० सुरभी ने कहा कि उनका पुत्र कहाँ।

कामधेनु बोइले केते बेलु सेहि गले।ताहाकु मारि पुत्रकु मुँ आणिबि तत्काळे ९२
कोकिळ बोइला तोरे नुहइ आयत। ताकु साहा करन्ति अनादि अच्युत ९३
कामधेनु बोले ताकु हरि किपाँ साय।कोकिळ बोइला दुइ राजार नाहिँ पुअ ९४
से राज्य अपाळक परजा माने मरि। ऋष्यश्रृंग गलेण बरषा मेघ करि ९५
कामधेनू बोले से अटइ केउँ दशे।केते वेळे आसिवे जे विभाण्डेक शिष्य ९६
कोकिळ बोइले से चम्पावती राज्य पुण।
लोमपाद राजा अटे से राज्ये राजा जाण ९७
देव इन्द्र बिचारिण बृष्टि जे न कले। वार वरष एथिरे काळ वोहि गले ९८
श्रीहरि जन्म हेले मारिबे असुर। तेबे से देवताए रहिवे निश्चळ ९९
अजोध्या चम्पावती दुइश राजांकु। पुत्र दान देबे कथा रहिव काळकु ६००
बरषा कराइ जे कन्या बिभा हेवे। तिनि मासे फेरि ए वने आसिवे ६०१
शुणिण सुरभि जे बेगे चळिगला। से ऋषि मठरे जाइ प्रवेश होइला २
देखिला मढ़िआ द्वार दिशे अलक्षण। ठावे ठावे सवु द्रव्य पड़िअछि पुण ३
बोइले कोकिळ कथा अटइटि सत्य। न कहि करि गले मोते ऋषि सुत ४
जाणिलि निश्चय्रे एजे हेला देवकूट। मुँ जेवे क्रोध हेवि देबे हेबेकष्ट ५
एते बिचारि सुरभि शान्त मन होइ। एथु अनन्तरे शुण गो देबो तुहि ६

कोयल बोली कि उसे रहस्यमयी योगी ले गये। कामधेनु ने पूंछा। वह कब से गये है। उसे मारकर मैं पुत्र को इसी क्षण ले आऊँगी। ५९१-९२ कोयल ने कहा तुम्हारी शक्ति नहीं है। अनादि अच्युत परमात्मा उनकी सहायता कर रहे है। कामधेनु ने कहा कि फिर उनका हरण करके क्यों ले जा रहे हैं। कोयल बोली कि दो राजाओं के पुत्र नही है। ९३-९४ उस राज्य की प्रजा अकाल से मर रही है। श्रृगी ऋषि के जाने से मेघ वर्षा करेंगे। कामधेनु ने पूँछा, वह कौन सा देश है और विभाण्डक के पुत्र कब तक वहाँ से आयेंगे। ९५-९६ कोयल ने कहा कि वह चम्पावती राज्य है। उस राज्य का राजा लोमपाद है। इन्द्र देवता ने सोच विचार कर वर्षा नही की। इसमें बारह वर्ष का समय व्यतीत हो गया। ९७-९८ श्री हरि जन्म धारण करके असुरों का संहार करेंगे। तब देवता शांतिपूर्वक रह सकेंगे। अयोध्या तथा चम्पावती दोनो के ही राजाओं को यह पुत्रदान देंगे। यह बात युग-युग तक चलेगी। ९९-६०० वर्षा करवाकर यह कन्या से विवाह करेंगे। तीन महीने में यह इस वन में लौट आयेंगे। यह सुनकर सुरभी शीघ्रतापूर्वक चल पड़ी और वह ऋषि के मठ में जा पहुँची। ६०१-२ उसने कुटिया के द्वार को लक्षणहीन देखा। जगह-जगह पर सारे पदार्थ बिखरे पड़े थे। वह बोली कि कोयल की बात सच निकली। ऋषि-पुत्र मुझसे बिना कहे चले गये। ३-४ मैं समझ गयी कि इसमें निश्चय ही देवताओं का षड़यंत्र है। यदि मै क्रुद्ध हो जाऊँ तो देवताओं को कष्ट होगा।

ऋष्यश्रृंगकु घेनिण जरता बेगे गला । नदी कूळरे जाइण प्रवेश नारी हेला ७
चरण पखाळिले ऋषिर कुमर । स्नाहान कले ऋषि नदीर भितर ८
झीन बसन घेनि चरण पोछि देले । नाबर उपरकु ऋषिकि घेनि गले ९
चित्र बिचित्र मन्दिरे नेइण बिजे कले । अमळाण पतनि नेइण पिन्धाइले ६१०
सर्बांगे अळंकार नेइण मण्डिले । चन्दन अगुरुरे चारू गन्ध देले ६११
ऋषिर अंगरे बोळिले नेइ पुण । शीतळ कराइले ऋषिर अंग जाण १२
अमीय रस नेइ ऋषिकि समर्पिले । सुवर्णर थाळिरे नेइण परषिले १३
आखु कन्दमूळ नड़िआ गजा मूग । पाचिला कदळी खइ दहि दुध १४
कन्द शाचि नबात मिठाइ पेड़ा आणि । घृत लवणी कमळाटभा देले पुणि १५
आम्ब पणस सपूरि नाना द्रव्य देले । सुवर्ण झरिरे सुबास जळ भले १६
स्वाद पाइ ऋषि जे भुञ्जिले सकळ।भोजन सारिण आचमन कले ऋषिबाळ १७
मुख बास आणिण ताम्बुळ भुञ्जाइले । केरु आळकु कहिण नाव चाळि देले १८
धीरे धीरे नाब जे चळाइ य्रन्ति पुण । मुनिकि बसाइले पलंके नेइण १९
जरता मुनिकि कोळरे घेनि बसि ।काम मोहिनी ऋषि आगेण कथा भाषि ६२०
बार बनिता ए जेते चित सेवा कले ।आलट चामर धरि बिञ्चणी बिञ्चिले ६२१

ऐसा बिचार कर सुरभी शाँतचित्त हो गई। हे देवी ! इसके पश्चात् की कथा तुम सुनो। ५-६ जरता श्रृंगी ऋषि को लेकर शीघ्र ही चली गयी और वह नारी नदी-तट पर जाकर पहुँची। ऋषिपुत्र ने चरण धोये और नदी में घुसकर उन्होंने स्नान किया। झीना वस्त्र लेकर उसने उनके चरण पोंछ दिये और ऋषि को लेकर नाव में बैठा दिया। वह विचित्र-चित्रशाला में विराजमान हो गये। उसने उन्हें स्वच्छ वस्त्र पहनाये। ७-८-९-६१० उसने उनके सभी अंगों में अलंकार लेकर सजा दिये। चन्दन अगुरु तथा सुगन्धि लगा दी। ऋषि के अंग में सुगन्ध का लेपन करके उनके शरीर को ठंडा कर दिया। ६११-१२ अमृतरस लेकर उसने ऋषि को समर्पित किया। उसने सुवर्ण की थाली लेकर भोजन परोसा। गन्ना, कन्दमूल, नारियल, तली हुयी मीठी मूंग की दाल, पके केले, खीर, दही, दूध, शकरकन्द, मिठाई, पेड़ा, घी, मक्खन, कमला नीबू, खट्टे फल उन्हें लाकर दिये। १३-१४-१५ आम, कटहल तथा अनेक प्रकार के पदार्थ सजाकर दिये। सोने की सुराही से सुवासित जल दिया। ऋषि ने स्वाद पाकर सब कुछ खा लिया। ऋषिपुत्र ने भोजन समाप्त करके आचमन किया। मुख-वास के लिये उसने लाकर पान खिलाया और मल्लाहों से कहकर नाव चला दी। १६-१७-१८ धीरे-धीरे उन्होंने नाव चलायी। तब उसने मुनि को लेकर पलंग पर बैठा दिया। जरता मुनि को गोद में लेकर बैठ गई और काममोहिनी ऋषि के आगे बातें करने लगी। १९-६२० और जितनी वेश्यायें थीं वह सभी

बिड़िआ धूपकाठि गदि पंखा धरि ।नाना रसरे लीळा आरम्भ तहिँ करि २२
झञ्जाळ मर्द्दळ गिनि ताळ धरि ।वेणु वीणा सितार जे बजान्ति कामिनी २३
देखिण ऋष्यश्रृंग आनन्द मन होइ । मधुवन प्राय़ेक ताहाकु मणइ २४
नेतर पतनी जे उपरे झीन बास । शिर परे छत्र जे टेकइ हरष २५
बारश बनिता जे ताहार सेवा करि । नृत्यरंग करन्ति बजान्ति वेणु धरि २६
हरषरे गीत नृत्य जे रस कले । मुनिर मन गोटि तरळ कराइले २७
चित्र विचित्रकु चाहिँले मुनिवर । वसन्त पवन जे वहे धीर धीर २८
जरता कोळरे अछन्ति मुनि वसि । सुन्दरीकि मुनि जे कहन्ति कथा हसि २९
ईश्वरंक कोळकु जे पार्वती पाए शोभा । विष्णुंकु कोळरे जेन्हे कमळांक प्रभा ६३०
रोहणी कोळरे जेन्हे चन्द्रमा शोभा पाए । जरता कोळरे मुनि ते मन्ते पराए ६३१
सर्बांगे पुष्प जे बेश होइछि सुन्दरी । चारु गन्ध अंगरे होइण अछि बोळि ३२
अष्टरत्न अळंकार देहकु शोभपाए ।घृत सर लवणी जे खुआइले ऋषि पोए ३३
मदने जरजर शरीर ताहार । पञ्च शर काम जे प्रकाश हृदय़र ३४
रति लीळा न जाणइ ऋषिर कुमर । विचारइ मोर देह किम्पाइ विकळ ३५

सेवा में लग गयी। व्यजन चामर तथा पंखा लेकर डुलाने लगी। पान के बीरे, अगरवत्ती, हाथ के पंखे लेकर उन्होंने अनेक प्रकार की रसमयी लीलाएं प्रारम्भ कर दीं, कामनियाँ ढोल, झाँझ, मजीरे, खंजड़ी, करताल, वाँसुरी, वीणा तथा सितार लेकर वजाने लगीं। ६२१-२२-२३ यह देखकर श्रृंगी ऋषि का मन प्रसन्न हो गया। उन्हें वह स्थान मधुवन के समान लगा। महीन कपड़ों पर झीने वस्त्र तथा सिर पर आनन्दपूर्वक छत्र लगा हुआ था। २४-२५ वेश्यायें उनकी सेवा करके वाँसुरी वजाकर नृत्य करती हुई हर्षपूर्वक रस विखेर रही थीं। उन्होंने मुनि का मन पिघला दिया। श्रेष्ठ मुनि विचित्र भंगिमा से उन्हें देखने लगे। धीरे-धीरे बासन्ती पवन चलने लगा। २६-२७-२८ मुनि जरता की गोद में बैठे थे। वह हँसते हुये सुन्दरी से वातें कर रहे थे। शंकर जी की गोद में जैसे पार्वती शोभा पाती है। विष्णु की गोद में जिस प्रकार लक्ष्मी प्रभा विखेरती हैं। रोहणी की गोद में जिस प्रकार चन्द्रमा शोभायमान लगता है। उसी प्रकार जरता की गोद में मुनि शोभायमान थे। २९-६३०-६३१ वह सुन्दरी सम्पूर्ण शरीर में पुष्प लगाकर सुसज्जित हुयी थी। उसके शरीर में सुन्दर सुगन्धि लगी हुयी थी अष्टरत्न के अलंकार उसके शरीर पर शोभा पा रहे थे। उसने ऋषि पुत्र को घी मलाई तथा मक्खन खिलाया। उसका शरीर काम से जर्जर था। हृदय में कामदेव के पंचशर प्रकाशित हो गये थे। ३२-३३-३४ ऋषि पुत्र रति-क्रीड़ा नहीं जानते थे। वह सोच रहे थे कि उनका शरीर व्याकुल क्यों हो रहा है। उनकी पीठ पर घड़े के समान स्तन स्पर्श कर रहे थे।

कुच्च कुम्भ लगिअछि पिटिकि ताहार । पिठिकि शीतळ जेन्हे लागइ भास्कर ३६
मुखे चुम्ब द्यन्ति लागे अमीय़ रसप्राए । ऋषिर हृदय़ जे आकुळित हुए ३७
चन्द्रमा प्राय़े अटे जरता अपसरो । बचन ताहार कोकिळ भाषा परि ३८
बेश तोरा जे सने मेनका अपसरी । इन्द्र ताकु धइले शचिकि दूर करि ३९
कहिण बचनरे मोहिले तपचारी । × × × ६४०
चाटु भाषा कहिण मुनिर मन तोषे । माणिक्य दिपाबळि जळइ चउपाशे ६४१
देह आउसिण जे बिळाप गीत करि । प्रेमरस भाबना जे करइ सुन्दरी ४२
पिठि पाखुं चतुरी आगकु उठिगला । सकळ जुबतींकुं नेत्रेर ठारि देला ४३
काम मोहिनी बार बनिता घेनि करि । नृत्य रुहाइण चळिले सर्ब नारी ४४
आरम्भ परे जाइ सकळ नारी रहि । टेराबाड देबारे अदृश्य हेले सेहि ४५
ऋष्यश्रृंग बोइले समस्ते केणे गले । जरता बोइले जे भुञ्जिबाकु गले ४६
मुनि बोइले तुम्भर दुइ उच्च किस । जरता बोइले से जे अमृत प्रिय़ रस ४७
हस्तरे चिपि मुखरे चुम्बिले लागइ बड़सुख । × × × ४८
शुणिण ब्रह्ममुनि हरष पुण होइ । बेनि हस्ते बेनि कुच्च धइले मुठि आइ ४९
कुच्च बेणुरे मुख लगाइ चुम्बिले । मदन ज्वाळारे स्वादु अमृत प्रकारे ६५०

और पीठ को आनन्ददायक शीतलता प्रदान कर रहे थे । ३५-३६ मुख में दिया हुआ चुम्बन अमृतरस के समान लग रहा था ऋषि का हृदय आकुल हो रहा था । जरता अप्सरा चन्द्रमा के समान थी उसकी वाणी कोयल के समान थी । वेश का निखार मेनका अप्सरा के समान था । उसे पकड़ने से इन्द्र शची को भी दूर कर सकते थे । उसके बोलने से तपस्वी भी मोहित हो जाते थे । ३७-३८-३९-६४० वह चिकनी चुपड़ी बातें करके मुनि का मन संतुष्ट कर रही थीं । माणिक्य की दीपावली चारों ओर प्रकाश दे रही थी । वह सुन्दरी शरीर को सहलाते हुये विलासपूर्ण भावना से प्रेमरस का प्रदर्शन कर रही थी । ६४१-४२ वह चतुर नायिका पीछे से उठकर आगे आ गई । उसने सभी स्त्रियों को नेत्र से संकेत किया । काममोहिनी सभी वेश्याओं को साथ लेकर नाच रोककर चल दी । ४३-४४ प्रारम्भ में जाकर सभी स्त्रियों के परदा डाल देने पर वह दिखाई न देने लगी । श्रृंगी ऋषि ने कहा कि सब कहाँ चली गईं । जरता बोली वह सब भोजन करने गई हैं । ४५-४६ मुनि ने कहा कि आपके यह दोनों ऊँचे से क्या हैं । जरता ने कहा कि इनमें अमृत रस भरा है । हाथों से दाबकर मुख से चूमने में अपार आनन्द लगता है । ४७-४८ यह सुनकर ब्रह्मर्षि ने प्रसन्न होकर दोनों हाथों से दोनों स्तनों को मुट्ठी में भर लिया । उन्होंने कुचाग्र में मुख लगाकर चूम लिया । कामाग्नि के कारण वह अमृत के समान स्वादिष्ट लगा । ४९-६५०

देखिण जरता जे अबिद्या गति करि। बळात्कार रमण कराए ऋषि धरि ६५१
हिआरे लगाइण कोळकरि भिडि।देह आउँसिण बोइले सधिरे सेहु भिडि ५२
मुनि न जाणन्ति सुरति रस भाव सुख। पुण पुण सुन्दरी चुम्बे ऋषि मुख ५३
मुखकु मुख लगाइ करे प्रेमरस। बिभाण्डेक मुनिसुत रतिरे हेले तोष ५४
मुखे चुम्ब देइण हसिण बोइला। स्तन वेण्ट नेइण ऋषि मुखे लगाइला ५५
दश नख नेइण लगाए गण्डस्थळे।ब्रह्म बीर्ज्य उछुळिवारु ऋषि देह तरळे ५६
तेते वेळे ऋषि धइले भिडि पुण। ब्रह्मस्थळे उछुळि जे बिन्दु खसे जाण ५७
जरतार गर्भकु न गला सेहि बीर्ज्य। ऋषि तेज को पानळ जरताकु तेज ५८
कामकळा परसन्न जाणइ सुन्दरी। रति शास्त्र पढिण अछइँ जत्न करि ५९
जरतार मत जे नोहिला पुणि क्षय़। जेणु से बीर्ज्य गर्भरे नोहे प्रिय़ ६६०
श्रंगार रसरे जे मुनि भोळ गले। जरताकु चाटु वचन कहिले ६६१
भल रस खुआइल मो मन बड़ सुख। जळ बोहि गला प्राय़ लागे देहरु किस ६२
जरता बोइला शुण मोहर वचन। तुम्भे काहुँ पाइब एमन्त रस पुण ६३
ऋष्यश्रृंग बोइले एहि रसटि मूळ। मिठा लागु अछि एवे तुम्भर उच्चफळ ६४
जानुकु जानु देइण भिडिले एकथा। से कथा मोते सुख लागिलाक व्यथा ६५

यह देखकर जरता विभोर होकर ऋषि को पकड़कर बलपूर्वक रमण कराने लगी। हृदय से लगाकर उसने उन्हें गोद में भर लिया। शरीर सहलाते हुए वह धीरे-धीरे उनसे लिपट कर बातें करने लगी। मुनि तो काम क्रीड़ा के रसमय भावों के सुख को नहीं समझते थे। वह सुन्दरी बारम्बार ऋषि का मुख चुम्बन कर रही थी। ६५१-५२-५३ वह मुख से मुख लगाकर प्रेममई रस क्रीड़ा करने लगी। रमण करने पर विभाण्डक मुनि के पुत्र सन्तुष्ट हो गये। तब उसने मुख चूमकर हँसते हुए बातों में लगा कर मुनि के मुख में कुचाग्र लगा दिये। ५४-५५ उसने दस नाखून मुनि के गण्डस्थल पर लगाए। ब्रह्मवीर्य उद्वेलित होने से ऋषि का शरीर तरलायित हो गया। उस समय ऋषि ने उसे फिर जकड़ लिया। उसी समय ब्रह्मस्थल से वीर्य स्खलित हो गया। ५६-५७ वह वीर्य जरता के गर्भ में नहीं गया। ऋषि का तेजस्वी कोपानल जरता के लिये प्रखर था। वह सुन्दरी काम कला से प्रसन्न करना जानती थी। उसने कामशास्त्र यत्नपूर्वक पढ़ा था। जरता का रज स्खलित न होने से वह वीर्य गर्भ में नहीं गया। मुनि श्रृंगार रस में लीन हो गए। उन्होंने जरता से चाटुकारिता से कहा कि तुमने अच्छा रस खिलाया। मेरे मन को बड़ा सुख मिला। जल बह जाने के समान शरीर में न जाने कैसा लग रहा है। ५८-५९-६६०-६६१-६२ जरता बोली कि आप मेरी बात सुनिये। आपको यह रस कहाँ से मिला होगा। श्रृंगी ऋषि ने कहा कि यह रस ही तो मूल है। इस समय आपके उन्नत फल मीठे लग रहे हैं। ६३-६४ जाँघ से जाँघ भिड़ाकर

जरता बोइले ऋषि जेबे सुख होइ। जेते मन इच्छा तेते भोगकर तुहि ६६
नाना रहस्ये जरता रति लगाइला। ऋषिकि रति सागर पाठ पढ़ाइला ६७
प्रथम बयसे मुनि नागरी संगे प्रीति। पञ्चम शर घाते ऋषि मोह जान्ति ६८
बार बरष जे जरता नामे नारी। रति शास्त्र पढ़ाइ ऋषि मोह करि ६९
मनमथ बयस जे दुहिंकर पुण। शृंगार रस देइ मोहिला ऋषि मन ६७०
द्वितीय थर रमण कराइला नारी। ऋषिकर बीर्ज्यंकु गर्भरे संहारि ६७१
ऋषिर मन खिन्न हेबारु जरता। सुबास जळरे मुख धोइला बनिता ७२
ऋषिर मुख पखाळि अञ्चळरे पोछि।सर लवणी घृत जे भुञ्जाइला जाचि ७३
भुञ्जि सारि मुनिबर आचमन कले। ताम्बुळ भुञ्जिण मनरे तोष हेले ७४
जरता कोळरे घेनिण तांकु शोइ। किछि बेळ उत्तरु मुनिर श्रद्धा होइ ७५
दुइथर जाणिले से रतिरस कळा। जरताकु धरिण से कले रति खेळा ७६
तृतीय थर रति लीळारे तेजाबन्त। रमण करन्ते मुनि बीर्ज्य खसिलात ७७
से बीर्ज्य गोटि जरता गर्भरे रहिला। तेज गर्भ धरिण से थाइत होइला ७८
रति रसे जरतार भांगिले मुहाँस। बिचारिला ऋषि बीर्ज्य करिला गर्भ बास ७९

लिपटने से यह बात हुई है। इस बात से मुझे सुखदायिनी टीस लगी है। जरता ने कहा कि जब आपको सुख हुआ है तो आपकी जितनी इच्छा हो उतना भोग कीजिये। ६५-६६ जरता ने अनेक प्रकार के रहस्यों से परिपूर्ण रति रस प्रारम्भ कर दिया उसने ऋषि को रति-सागर का पाठ पढ़ाया। प्रारम्भिक अवस्था में मुनि की नायिका से प्रीति हुई। फिर मुनि पंच बाणों के आघात से मोहित हो गए। ६७-६८ बारह वर्ष की जरता नामक नारी ने रति शास्त्र पढ़ाकर ऋषि को मोहित कर लिया। दोनों की आयु युवा थी। उसने शृंगार रस देकर ऋषि का मन मोहित कर लिया। ६९-६७० उस स्त्री ने दूसरी बार ऋषि को रमण कराया और उनके वीर्य को गर्भ में नष्ट कर दिया। ऋषि का मन खिन्न हो जाने से जरता ने उनका मुख सुवासित जल से धो दिया। उसने ऋषि का मुख पृच्छालन करके आँचल से पोछ दिया। फिर उसने यति को मलाई मक्खन तथा घी खिलाया। श्रेष्ठ मुनि ने खाने के पश्चात् आचमन किया और फिर पान खाकर संतुष्ट हो गये। ६७१-७२-७३-७४ जरता उन्हें गोद में लेकर सो गई। कुछ समय के पश्चात् मुनि का मन पुनः चला। फिर उन्होंने दूसरी बार रमण किया। जरता को लेकर उन्होंने रति क्रीड़ा की। ७५-७६ फिर उत्तेजना से तीसरी बार की रति क्रीड़ा में रमण करते हुए मुनि का वीर्य स्खलित हो गया। वह वीर्य जरता के गर्भ में रह गया। तेज को धारण करके वह अशक्त हो गई। ७७-७८ रति-रस मे जरता का ममत्व टूट गया। उसने विचार किया कि ऋषि का वीर्य गर्भ मे ठहर गया है। पहले से तो अब बात भी घट गयी। इस प्रकार विचार कर वह नारी शीघ्रता से

प्रथमरु कथा त पडिला एबे घाट। एते बिचारि नारी उठिला त्वरित ६८०
सुबास जळ नेइण शिर देहे सिञ्चि। अज्ञान हुअन्ते चेता कराइला बिञ्चि ६८१
सचेत होइ बसिले ऋष्यश्रृंग मुनि। देखि करि जरता विचार करि पुणि ८२
जेबे मुहिँ कहिबि होइबे मुनि कोप। न पुण क्रोधरे मोते देबे अभिशाप ८३
एमन्त बिचारि मने उठिला जरता। ऋषिकि बोइला शुण हे ब्रह्म बेत्ता ८४
श्रीमुख पखाळि चरण हस्त धुअ। क्षुधा लागि बसि सर लवणी किछि खाअ ८५
एमन्त शुणि ऋषि आसनुँ उठिले। मुनिर्मळ जळ नेइ मुख पखालिले ८६
कर चरण धोइण शउच हेले मुनि। सुवर्ण आसनरे बसिले जाइ पुणि ८७
सुवर्ण थाळिरे घृत सर लवणी थोइ। दिअन्ते ऋष्यश्रृंग भोजन कले तहिँ ८८
आचमन सारिण ताम्बुळ भुञ्जिले। रत्न पल्यांक उपरे सन्तोषे बसिले ८९
सुवर्ण थाळि घेनिण जरता चळिगला। काम मोहिनी थिवा रूपरे मिळिला ६९०
शेष द्रव्यमान जे भोजन कला पुणि। काम मोहिनी कहिला चळ एहि क्षणि ६९१
ऋषिकि श्रृंगार कराइ नाना भावे। जे मने ऋष्यश्रृंग नुहँइ बइरागे ९२
रति नीति लीळा जे सकळ शिखाइलि। मुनिर मन पुणि प्रसन्न कराइलि ९३
दुइ थर बीर्ज्य जे गला अपसरि। तृतीय थरे मुँ जे हेलि गर्भधारी ९४
अक्षय बीर्ज्य से जे नोहिला पुण क्षय। गर्भ एबे भारि मोते लागुछि गो माय ९५

उठी। उसने सुगन्धित जल लेकर सिर तथा शरीर में सिंचन किया और अचेत हो रहे ऋषि को हवा झलकर चेत कराया। ७९-६८०-६८१ श्रृंगी ऋषि सचेत होकर बैठ गये। यह देखकर जरता ने विचार किया। यदि मैं कहूँगी। तो मुनि क्रुद्ध हो जायेंगे। वह क्रोध में आकर मुझे अभिशाप देंगे। ऐसा विचार मन में करके जरता उठी और उसने कहा हे ब्रह्मवेत्ता! सुनो। ८२-८३-८४ आप अपना श्री मुख पृच्छालन करके हाथ पैर धो लें। यदि भूख लगी हो तो बैठकर मलाई, मक्खन, कुछ ग्रहण करें। यह सुनकर ऋषि आसन से उठे। उन्होंने निर्मल जल लेकर मुख धो लिया। ८५-८६ हाथ पैर धोकर मुनि पवित्र हो गये और अन्दर आसन पर जाकर बैठ गये। स्वर्ण थाल में घी, मलाई मक्खन रखने पर श्रृंगी ऋषि ने वहाँ पर भोजन किया। ८७-८८ उन्होंने आचमन करके पान खाया और संतुष्ट होकर रत्न पलंग पर बैठ गये। स्वर्ण थाल लेकर जरता चली गयी। वह रूपवती काममोहिनी से मिली। शेष पदार्थों को उसने भोजन किया। काममोहिनी बोली कि चलो। इसी क्षण नाम के अनुरूप ऋषि का श्रृंगार करें। इससे श्रृंगी ऋषि को वैराग्य न हो जाये। ८९-६९०-६९१-९२ उन्हें रति और नीति की सारी लीलाएँ सिखा दी हैं और मुनि का मन प्रसन्न कर दिया। दो बार उनका वीर्य स्खलित हुआ है। मै तीसरी बार गर्भवती हुयी हूँ। उनका अक्षय वीर्य क्षय नहीं हुआ अरी माँ!

जरता ठारु शुणि काम मोहिनी गला। ऋषिक सन्निधिरे प्रवेश होइला ६६
देखिण ऋष्यश्रृंग हरष होइले। काम मोहिनींकु चाहिँ सधीरे भाषिले ६७
सरागे काममोहिनी कोळ करि बसि। दिबस शेष हेला प्रबेशिला निशि ६८
से स्थाने किला पोति नाव खटाइले।सुमिष्ट द्रव्यमान ऋषिकु भुञ्जाइले ६९
काममोहिनीर साइ ऋषिकर मन। नाना रंग रहस्ये कलाक रमण ७००
थरे रति सारि पुणि थरे रति कले। बेनि घडि पर्य्यन्ते निर्बळ होइले ७०१
प्रहरक उत्तारे बढिला रति कार्य्य। काममोहिनी गर्भरे रहिला ऋषि बीर्य्य २
गर्भबास होइण असक्ते उठिला। उत्तम भावे मुनिक शउच कराइला ३
स्नाहान कराइ ऋषिकर अंगपोछि। नूतन पतनिकि पिन्धाइला बाछि ४
अळंकार मान जतने मण्डिळा। चन्दन कस्तुरी अंगे बिलेपन कला ५
सर्ब्बांगरे कर्पूर गुण्डिकि घषिला। सुमिष्ट द्रव्य मान सन्तोषे भुञ्जाइला ६
सर लबणी भुञ्जाइ कराइले तोष। आचमन सारिण भुञ्जिले मुखबास ७
काममोहिनी कर जोड़ि कहे बाणी। आम्भर दोष क्षमाकर हे मुनि मणि ८
ऋष्यश्रृंग बोइले कि दोष तुम्भर। बहुत सुख भोग हेउछि आम्भर ९
शीतळ द्रव्यमान आम्भकु भुञ्जाइल। अपूर्ब पदार्थमान दान कल ७१०

अब मुझे गर्भ भारी लग रहा है। ९३-९४-९५ जरता से ऐसा सुनकर काममोहिनी ऋषि के समीप जा पहुँची। उसे देखकर श्रृंगी ऋषि प्रसन्न हो गये। काममोहिनी को देखकर उन्होंने सधीर होकर कहा। ९६-९७ वह प्रेम से काममोहिनी को गोद में लेकर बैठ गये। दिन समाप्त हो गया और रात्रि हो गई। उस स्थान पर लंगर डालकर नाव रोक दी गयी। सुन्दर मीठे पदार्थ उसने ऋषि को खिलाये। ऋषि का मन काममोहिनी में लग गया। उन्होंने नाना प्रकार की रहस्यपूर्ण विद्याओं से रमण किया। ९८-९९-७०० उन्होंने एक बार रति-क्रीड़ा समाप्त करके पुनः रमण किया और फिर दो घड़ी पर्यन्त अशक्त हो गये। एक प्रहर के उपरान्त रति कार्य समाप्त हुआ और ऋषि का वीर्य काममोहिनी के गर्भ में ठहर गया। ७०१-२ गर्भवती होकर वह शक्तिहीन होकर उठी। उसने भली प्रकार से मुनि को पवित्र कराया। उसने ऋषि को स्नान कराकर उनके अंग पोंछ दिये। फिर नवीन वस्त्र पहनाकर कुछ अलंकार यत्नपूर्वक सजा दिये। उसने मुनि के अंगों में चन्दन और कस्तूरी का लेपन कर दिया। ३-४-५ सम्पूर्ण शरीर में कर्पूर का चूरा घिस दिया। मीठे पदार्थ उन्हें सन्तोषपूर्वक खिलाए। मक्खन, मलाई खिलाकर उन्हें सन्तुष्ट किया। आचमन करके उन्होंने मुख-वास ग्रहण किया। ६-७ काममोहिनी ने हाथ जोड़कर कहा हे महामुनि ! हमारे दोषों को क्षमा कीजिये। श्रृंगी ऋषि बोले कि आपका दोष क्या है ? हमें तो अत्यन्त सुख का भोग मिल रहा है। आपने हमें ठंडे पदार्थ खिलाये तथा बहुत से अलौकिक पदार्थ दान किये जो मुझे

कामभोहिनी कहिला अछि आम्भ दोष । क्षमा करिव जेवे कहिवु जेवे भाष ७११
एमन्त शुणि ऋष्यश्रृंग जे बोइले । तुम्भ दोषा दोष सवु क्षमा देलुँ भले १२
काममोहिनी कहिला आम्भे अपसरी । स्तिरी जाति अज्ञानी अटु ब्रह्मचारी १३
लोमपाद राजांकर चम्पावती देश । ब्रह्माशापे से देशटि हेउ अछि ध्वंस १४
वार वर्ष हेला तहिँ न बरषे घन । दुर्भिक्षरे मलेणि असुमार जन १५
ब्राह्मण कहिले ऋष्यश्रृंगंकु जे आण । से ऋषि आसिले वर्षा होइव तक्षण १६
पिता जाणिले ऋषि आसि न पारिवे । गुपते जाइ चार आणन्तु तांकु भावे १७
स्तिरींक भावे ऋषि आसिवे निकर । से आसिले सुवृष्टि जे होइव देशर १८
बिचारि राजा आम्भंक पेषिले तुम्भ पाश ।
माया भावे आम्भे जे तुम्भकु कलुँ वश १९
मायार श्रृंगार लीळा कराइलुँ ।माया कथारे तुम्भुकु भुलाइ आणिलु ७२०
आपणंक संगरे कलु रति लीळा । अक्षय वीर्ज्य तुम्भर क्षय जे नोहिला ७२१
तुम्भ वीर्ज्ये दुइ नारी होइलुँ गर्भवास । फेडि करि कहु अछुँ नघेन आम्भ दोष २२
शुणि ऋष्यश्रृंग मुनि स्तम्भी भुते रहि । वोइले अवेभार कल तुम्भे दुइ २३
मायारे जेवे मोते आणिल गो मण्डि । रति लीळा कि लागि करिल गोचण्डी २४

पहले कभी नही मिले । ८-९-७१० काममोहिनी ने कहा कि हमारा दोष है। यदि आप क्षमा कर दें तो हम आपको वतायें। ऐसा सुनकर श्रृंगी ऋषि ने कहा कि मैंने आपके दोष और गुण सब क्षमा कर दिये । ७११-१२ काममोहिनी ने कहा हे ब्रह्मचारी ! हम लोग स्त्री जाति की अज्ञानी अप्सरायें हैं। राजा लोमपाद का देश चम्पावती ब्राह्मण के शाप से नष्ट हुआ जा रहा है । १३-१४ बारह वर्ष हो गए मेघ पानी नहीं वरसा रहे हैं। अनगिनत लोग दुर्भिक्ष से मर गए। ब्राह्मणों ने कहा कि श्रृंगी ऋषि को लाओ। उन ऋषि के आने से तत्काल वर्षा होगी। १५-१६ पिता को ज्ञात हो जाने से ऋषि आ नहीं पाएँगे। दूत लोग गुप्तरूप से जाकर उन्हें आदरसहित ले आयें। स्त्रियों की भावना के वशीभूत होकर ऋषि आ जाएँगे। उनके आने से इस देश में प्रचुर जल की वर्षा होगी। १७-१८ यह विचार कर राजा ने हमें आपके पास भेजा। छल से हमने आपको वश में कर लिया। छल से आपसे श्रृंगारिक लीलाएं करवाईं तथा छलपूर्ण वातें करके ही आपको भरमा कर ले आई है। १९-७२० हमने आपके साथ रतिक्रीड़ा की परन्तु आपका अक्षय वीर्य नष्ट नहीं हुआ। आपके वीर्य से हम दोनों स्त्रियाँ गर्भवती हो गईं। हम सव खोलकर वता रही हैं। हमारे दोषों पर ध्यान न दें। ७२१-२२ यह सुनकर श्रृंगी ऋषि स्तव्ध हो गए और फिर उन्होंने कहा कि तुम दोनों ने अभद्र व्यवहार किया है। जव तुम हमें माया से भरमाकर लाई हो तो फिर तुम लोगों ने उच्छृङ्खलता से रतिक्रीड़ा क्यों

आम्भे त देखु नाहुँ छुउँ नाहुँ नारी । बिडम्बना कथा तुम्भे कल सुकुमारी २५
काममोहिनी बोइला शुण हे गोसाइँ । से राजार अछि झिअ पार्बती सम होइ २६
से दुहिता बिबाह होइब तुम्भंकु । रति लीळा कराइलुँ से गति रसकु २७
जाणि शुणिथिले सिना ता संगे हेब मेळ । न जाणि थिले निन्दा पाइब केवळ २८
ऋण्यश्रृंग बोइले तुम्भे केमन्ते जाणिल । राजकन्या संगे मुँ होइबि बोलि मेळ २९
काममोहिनी बोइला शुण हे मुनि मणि । एक दिने अइले नारद महामुनि ७३०
तुम्भर पिता से हुअन्ति जे भले । राजांक नबरे जाइ कन्याकु देखिले ७३१
राजांकु कहिले एहि आम्भ बधू जाण । राजा कहिले एहा कहुछ केसन ३२
नारद बोइले आसिबे ऋण्यश्रृंग । से पुत्र बिभा होइब नोहिब जे भंग ३३
ऋण्यश्रृंग बोइले एरूपे जेबे कथा । तांक कथा मुहिँ कि करिबि अन्यथा ३४
तुम्भे बेश्या नारी जे निश्चिन्तरे थाअ । अनेक लोकंकु जाणि शुणि देह दिअ ३५
काम मोहिनी कहिला से कथा एबे शुण । कुळटा आम्भे माने नोहु हे ऋषिराण ३६
स्वर्गर अपसरी रम्भा नामे नारी । तार कोळे जात आम्भे दुइटि कुमारी ३७
देवताए जाइण ताहाकु कहिले । दुइ दुहिता मञ्चरे जन्म हुअ भले ३८
नव जुबा रूप जे होइब जेउँ दिन । जाणि दिने जिब जे बिभाण्डकर स्थान ३९

की ? । २३-२४ हमने तो न कभी नारी को देखा है और न स्पर्श ही किया है । अरी सुकुमारी ! तुमने तो विडम्बना की बात की है । काममोहिनी बोली । हे स्वामी ! सुनिए । उस राजा के एक पुत्री पार्वती के समान है । २५-२६ उस पुत्री का विवाह आपके साथ होगा । उसी रतिरस के लिये हमने आपसे रतिक्रीड़ा करवाई । सब ज्ञान होने से ही उसके साथ मिलाप होगा अन्यथा केवल आपको निन्दा ही मिलती । २७-२८ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि आप लोगों को यह कैसे ज्ञात हुआ कि हमारा मिलन राजकन्या से होगा । काममोहिनी ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये । एक दिन महर्षि नारद आए थे । जो आपके पिता के समान हैं । उन्होंने राजा के महल में जाकर कन्या को देखा । २९-७३०-७३१ उन्होंने राजा से कहा कि इसे हमारी बहू समझो । राजा ने कहा कि यह आप क्या कह रहे हैं ? नारद ने कहा श्रृंगी ऋषि आएँगे । वह बालक इससे विवाह करेगा । मना नहीं करेगा । ३२-३३ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि जब यह बात है तो हम उनकी बात को नहीं मेटेंगे । तुम वेश्या नारी निश्चिन्त रहो । बहुत से लोगों को समझ बूझकर अपना शरीर प्रदान करो । ३४-३५ काममोहिनी ने कहा कि अब यह बात सुनिये । हे ऋषीश्वर ! हम लोग कुलटा नहीं हैं । रम्भा नाम की स्त्री स्वर्ग की अप्सरा है । हम दोनों कुमारी उसके गर्भ से उत्पन्न हुयी हैं । ३६-३७ देवताओं ने जाकर उससे मृत्युलोक में दो पुत्रियों को जन्म देने के लिये कहा । यह जिस दिन नवयौवन की अवस्था में आयेगीं । तो यह एक दिन विभाण्डक के स्थान को जायेंगी । विभाण्डक के पुत्र श्रृंगी ऋषि को यह

बिभाण्डक तनय ऋष्यश्रृंग जाण। चम्पावती देशकु आणिब जाइण ७४०
जळ वृष्टि कराइव राजकुमारी हेबे बिभा।
। जाग करि लोमपादकु शते पुत्र देवा ७४१
सेहि ठारु अजोध्या कटककु जिबे। दशरथ जाग कले श्रीहरि जन्मिबे ४२
बासुदेव जात हेले मारिबे असुर। ऋषि देवता मानंकर जिब तेबे सल ४३
ऋष्यश्रृंग कहिले तु सत करि कह। अन्य लोक माने कि न छुअन्ति देह ४४
काममोहिनी बोइला मिछ जे नुहइ। तुम्भ बिना आम्भ देह छुइँ नाहिँ केहि ४५
ऋष्यश्रृंग बोइले से बार बनिता किस। काममोहिनी बोइले शुण हे बिशेष ४६
से माने राजांकु खटन्ति सबु दिन। नर छुआँ होइ छन्ति से माने जे पुण ४७
तुम्भे तांक अंग जे न छुइँब ऋषि। जन्मे जन्मे तुम्भर होइबु जे दासी ४८
ऋष्यश्रृंग बोइले आज रजनीरे। दुइ पुत्र जात हेबे दुहिँकर कोळे ४९
पुत्र घेनि एहिठारु लेउटि तुम्भे जिब। पितार आगे देइ देह जे छाड़िब ७५०
निज माता ठारे जाइँ प्रबेश होइब। स्वर्ग पुरे देवतामानंकु खटिब ७५१
आम्भे जिबु चम्पावती देशकु निश्चे जाण।
। जळ बरषाइ राज्य करिबु सुखी पुण ५२
राजकुमारीकि बिभा होइण जाग करि।
। पुत्र दान करिबु लोमपाद मन सन्तोष करि ५३

लोग चम्पावती देश में ले आयेंगी। ३८-३९-७४० जो जल की वर्षा करायेंगे तथा राजकुमारी से विवाह करेंगे। यज्ञ करने पर लोमपाद को सौ पुत्र देंगे। वहाँ से वह अयोध्या राज्य में जायेंगे और दशरथ के यज्ञ करने पर नारायण का जन्म होगा। ७४१-४२ वासुदेव उत्पन्न होकर राक्षसों का संहार करेंगे। तब ऋषियों, देवताओं का संकट दूर होगा। शृंगी ऋषि ने कहा कि तू प्रतिज्ञा करके कह कि तुमने अन्य लोगों के शरीर को नहीं छुआ है। ४३-४४ काममोहिनी बोली यह झूठ नहीं है। आपके अतिरिक्त हमारे शरीर का स्पर्श किसी ने नहीं किया। शृंगी ऋषि बोले कि वह वेश्यायें कैसी हैं। कामोहिनी बोली विशेष तौर से आप सुनिये। ४५-४६ यह लोग सदैव राजा की सेवा करती हैं। यह लोग मानवस्पर्श वाली हो गयी हैं। आप उनकें अंग को स्पर्श न कीजियेगा। हम जन्म-जन्म आपकी दासी होंगी। ४७-४८ शृंगी ऋषि ने कहा कि आज रात्रि में दोनों के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न होंगे। पुत्र लेकर आप लोग यहाँ से लौट जाना और पिता के आगे उन्हें देकर अपने शरीर का त्याग कर देना। ४९-७५० फिर तुम लोग अपनी माता के निकट जा पहुँचोगी। स्वर्गलोक में जाकर देवताओं की सेवा करना। हम निश्चय ही चम्पावती देश को जायेंगे और जल वर्षा करवाकर राज्य को सुखी करेंगे। ७५१-५२ राजकुमारी से विवाह

सेठारु अजोध्याकु जिबु निश्चे जाण । दशरथ राजा जाग करिबु संपूर्ण ५४
काममोहिनी बोइले निज आश्रमकु पुण । केमन्ते जिबुं आम्भे पथ दश जुण ५५
ऋष्यशृंग बोइले आम्भे रहिबु दिने एथे । एक चाप धरि तुम्भे चळ गो तुरिते ५६
जेउँ ठारे आम्भे बसिलु चापरे । सेठारे ओल्हाइब जाआ गो धाति कारे ५७
एमन्त बचन शुणि बोले अपसरी । केते दिन सेठारे रहिबुं ब्रह्म चारी ५८
ऋष्यशृंग बोइले रहिब सात दिन । उठि आरि गले तुम्भे चळिब स्वर्ग पुण ५९
चउद दिन पिता पाळिबे मोर पुत्रे । नामकरण देबे एकोइश दिन रात्रे ७६०
से दिन दुइ पुत्र हेबे नव जुवा । विद्या पढ़ि तप करिबे से बाळ तनुजा ७६१
शुणिण काम मोहिनी सेठारु चळिगला । जरता पाखरे जाइण मिळिला ६२
जर ताकु कहिला गो शुण मोर वाणी । ऋषि संगे रमण रति जे कलि पुणि ६३
दुइ थर शृंगार करन्ते मुनिवर । एबे गर्भ स्थापित होइला मोहर ६४
गर्भ हेबारु मुं जे मुनिंकि जणाइलि । आम्भेत अपसरी बोलिण बोइलि ६५
ऋषि बोइले तुम्भे मन्दकर्म कल । मायारे आम्भंकु तुम्भे रति कराइल ६६
तुम्भे नटकारी जे अनेक संगे रम । महा पातक अर्जिल आम्भंकु कल भंग ६७
मुं बोइलि काहारि संगरे प्रीति नाहिँ । पूर्बर चेता आम्भ देहरे अछि रहि ६८

करके यज्ञ करवाकर लोमपाद को पुत्रदान देकर उनका मन संतुष्ट कर देंगे वहाँ से निश्चय ही हम अयोध्या को जायेंगे तथा राजा दशरथ का यज्ञ सम्पूर्ण करेंगे। ५३-५४ काममोहिनी बोली कि अपने आश्रम को हम लोग कैसे जायेंगी। मार्ग दस योजन का है। शृंगी ऋषि बोले कि हम यहाँ एक दिन रहेंगे एक बेड़ा लेकर आप लोग शीघ्र ही चलिये। ५५-५६ जिस स्थान से हम लोग बेड़े में बैठे हैं वहीं शीघ्रता से जाकर उतर जाना। ऐसी बात सुनकर अप्सरा ने कहा हे ब्रह्मचारी हम वहाँ कितने दिन तक रहेंगी। ५७-५८ शृंगी ऋषि ने कहा कि तुम वहाँ सात दिन रुकना। उठियारी समाप्त होने पर आप लोग स्वर्ग चली जाना। पिता मेरे पुत्रों का चौदह दिन पालन करेंगे। इक्कीस दिन के बाद रात्रि में नामकरण होगा। ५९-७६० उस दिन दोनों बालक नवयुवा हो जायेंगे। वह मेरे बेटे विद्या पढ़कर तपस्या करेंगे। यह सुनकर काममोहिनी वहाँ से चली गई और जरता के पास जा पहुँची। ७६१-६२ उसने जरता से कहा मेरी बात सुनो। मैंने ऋषि के साथ रमण किया था। दो बार मुनिश्रेष्ठ के साथ रतिक्रीड़ा करने पर अब मेरे गर्भ स्थापित हो गया है। ६३-६४ गर्भ होने से मैंने मुनि से कह दिया कि हम लोग अप्सरायें हैं। ऋषि बोले कि तुम लोगों ने नीच कर्म किया है। तुमने छल से हमसे रति-क्रीड़ा करवायी है। ६५-६६ तुम नाचने वाली अनेक लोगों के साथ रमण करती हो। हमें नष्ट करके तूने महान-पातक कमाया है। मैंने कहा कि हमने किसी से प्रेम

मुनि बोइले मोते कुह एहि अर्थ। मुं बोइलि शुण तुम्भे एथिर चरित ६९
देवताए पेषिले आम्भंकु मर्त्य पुर। बोइले असुर बळ होइले प्रबळ ७७०
बासुदेव जात हेले मारिबे असुर। दशरथ घरे जात हेबे आदि मूळ ७७१
ऋण्यश्रृंगकु तुम्भे आणिब जाइ। सुरति रति देइ तोषिब मुनि देही ७२
तुम्भ नव जुवा देह काहाकु न देव। ऋण्यश्रृंग मेळ हेले मुकत पाइव ७३
शुणि करि ऋषि बोइले किम्पाइ रति देल।
। भाव जदि करि थिल अभाव किम्पा हेल ७४
मुं बोइलि सेथिरे कथा अछि पुण। तुम्भे बिभा हेब राजकुमारीकु पुण ७५
से कन्या न जाणन्ति रतिर प्रसंग। तुम्भे जाणि नाहिँत रति अंग संग ७६
एथि सकाशे तुम्भंकु रति शिखाइलु। अनेक निन्दा जात होइब एथिरु ७७
ऋषि बोइले जेबे आम्भंकु भल हेब। तुम्भ ठारु आम्भर छाड़िला क्रोध भाव ७८
बोइले राजा मानंकर आम्भंकु किम्पा लोडा।
। मुं बोइलि अपाळक राज्य हेला परा ७९
तुम्भे कहिले जळ बरषिब धारा। दुइ राजांकर नाहिँ पुत्र तुम्भे देब परा ७८०
शुणिण बोइले आज प्रसव तुम्भे हुअ। दोष क्षमा हेला बेगे तुम्भे चळिजाअ ७८१

नही किया है। हमारे शरीर में पूर्वकाल का ज्ञान है। ६७-६८ मुनि बोले कि तुम इसका अर्थ मुझसे बताओ। मैंने कहा कि आप शीघ्र ही सुने। देवताओं ने हमें मृत्युलोक भेजा था उन्होंने कहा था कि राक्षसों का बल प्रचंड हो गया है। ६९-७७० भगवान के उत्पन्न होने से राक्षसों का विनाश होगा। आदि कारण नारायण दशरथ के घर में जन्म लेंगे। तुम लोग जाकर श्रृंगी ऋषि को ले आना। काम-क्रीड़ा का आनन्द देकर मुनि के शरीर को संतुष्ट कर देना। तुम अपना नवयुवा शरीर किसी को न देना। श्रृंगी ऋषि से मिलन होने पर तुम लोग मुक्ति प्राप्त करोगी। यह सुनकर ऋषि बोले कि फिर तुम लोगों ने किस कारण से रति-दान किया। यदि तुमने हमें प्रेम किया था तो फिर यह दुर्भाव क्यों किया। ७७१-७२-७३-७४ मैंने कहा उसमें भी एक बात है। आप राजकुमारी के साथ विवाह करेंगे। वह कन्या रमण-क्रीड़ा को नहीं जानती। आपको भी देह मिलन तथा रति-क्रीड़ा का ज्ञान नहीं है। इसी कारण आपको काम कला सिखा दी। इससे बहुत निन्दा उत्पन्न होगी। ऋषि ने कहा यदि हमारा भला होगा तो तुमसे हमें किसी प्रकार का क्रोध नहीं है। ७५-७६-७७-७८ उन्होंने कहा कि राजा लोग हमें किस कारण से खोज रहे हैं। मैंने कहा कि उनका राज्य दुर्भिक्ष से ग्रस्त हो गया है। आपके कहने से जल की वृष्टि होगी। दोनों राजाओं के पुत्र नहीं हैं। आप उन्हें प्रदान करेंगे। ७९-७८० यह सुनकर उन्होंने कहा कि आप लोग आज पुत्र उत्पन्न करो। तुम्हारे दोष क्षमा हो गये। तुम लोग शीघ्र ही चली जाओ। मैंने कहा हे मुनि

मुँ बोइलि जेबे पुत्र जन्म हेबे मुनिवर । केउँ ठारे रहिबु आज्ञा दिअ हे सत्वर ८२
शुणि करि बोइले मोर पितार स्थाने जाअ । × × × ८३
एमन्त कथा बेळे बोइलि मुँ जे पुण । केमन्ते आम्भे जिबु तुम्भ पिता पाशे पुण ८४
बोइले तुम्भे चापे बेगे बसि जाअ । जेउँ स्थानरु आसिछ से स्थाने ओल्हाअ ८५
मुँ बोइलि नाव जेबे आसिबा जा एथिव । से नाव आसिले सेठारु चळि जिब ८६
हेउ बोलि बोइले भो मुनिवर मोते । शुणि करि जरता हरष हेला चित्ते ८७
बार कन्याकु कहिले शुण मोर बाणि । ऋषिर अंग तुम्भे न छुइँब पुणि ८८
सेबा करि थिब जे ऋषिर मन जाणि । अमूल्य पदार्थ तांकु खुआइब पुणि ८९
रति गतिरे श्रद्धा न करिब जे आउ । चम्पावती राज्यरे प्रबेश हेब जहुँ ७९०
राजार नगर छाड़ि निज पुरे जिब । से राज्यरे जश जे तुम्भंकु मिळिब ७९१
आम्भे रति कराइबारु पाइलुणि लाभ ।
। ऋषि मोते शाप देले आम्भ ननांक पाशे जिब ९२
जेउँ बने आम्भ मठ से बनरे कर बास । आम्भर बचन लंघिले तुम्भे जिब नाश ९३
आउ आम्भर देशरे नाहिँ प्रयोजन । अरण्यरे बास कलुँ आज ठारु पुण ९४
शुणि करि बार कन्या तरळ होइ गले । जरता डाकि केरु आळकु कहिले ९५

श्रेष्ठ ! जब पुत्रों का जन्म होगा आप शीघ्र ही हमें आज्ञा दें कि हम कहाँ रहेंगी ? । ७८१-८२ यह सुनकर उन्होंने कहा कि हमारे पिता के स्थान पर चली जाओ । इस प्रकार बातें करते हुये मैने कहा कि हम लोग आपके पिता के पास कैसे जायेंगी । तब उन्होंने कहा कि तुम लोग शीघ्र ही बेड़े में बैठ जाओ और जिस स्थान से आयी हो उसी स्थान पर उतर जाओ । मैंने कहा जब तक नाव आयेंगी । तब तक आप यहाँ रहें और फिर वह नाव आने से वहाँ से चले जायें । ८३-८४-८५-८६ तब मुनिश्रेष्ठ ने मुझसे कहा कि ठीक है । यह सुनकर जरता का मन प्रसन्न हो गया । उसने वेश्या कन्याओ से कहा कि तुम लोग हमारी बात सुनो । तुम लोग ऋषि के शरीर का स्पर्श न करना । ८७-८८ ऋषि की इच्छा के अनुकूल उनकी सेवा करती रहना तथा उन्हें अमूल्य पदार्थ खिलाती रहना । तुम लोग और रति-क्रीड़ा से लगाव न रखना जब चम्पावती नगर में पहुँचना । ८९-७९० फिर राजा का घर छोड़कर अपने घर चली जाना । उस राज्य में तुम्हें यश की प्राप्ति होगी । हमें रति क्रीड़ा करवाने का लाभ मिला है । ऋषि ने हमें पिता के पास जाने का शाप दिया है । ७९१-९२ जिस वन में हमारा मठ है उसी वन में निवास करो । हमारी बात का उल्लंघन करने से तुम्हारा नाश हो जाएगा । अब देश से कोई स्वार्थ नही है । आज से हमें वन मे रहना होगा । ९३-९४ यह सुनकर वैश्या कन्याएँ पानी-पानी हो गयीं तब जरता ने मल्लाह को बुलाकर उसे सारी बातें समझा दीं । तुम जिस स्थान से श्रृंगी ऋषि को लाये हो उसी स्थान पर हमें

सकळ कथा जे तांकु कहिले बुझाइ । जेउँ ठारु ऋण्यश्रृंग आणिण अछइँ ९६
से स्थाने छाडि दिअ आम्भंकु नेइ पुण । शुणि करि केरु आळ मेलिले नाव पुण ९७
से स्थानरे जाइँ सर्बे हेलेक प्रबेश । नावरु दुइ कन्या उतुरि तुरित ९८
कूळरे दुइ कन्या प्रबेश जाइ हेले । केरु आळ नाव धरि बेगे लेउ टिले ९९
ऋण्यश्रृंग थिबा ठारे जाइँ प्रबेश होइले।से ठावरु नाव चाप मेलिण बेगे देले ८००
नाव चालि गला जे अति खर भावे । दुइ कन्या कूळरे रहिले चिन्ता भावे ८०१
चन्द्र पक्ष जेन्हे दिशइ उज्ज्वळ । काम मोहिनी जरता चळिले सत्वर २
बिभाण्डक मढिआ दुआरे जाइँ हेले । मठ पाखे निम्ब बृक्ष गोटिए देखिले ३
सेहि बृक्ष मूळरे दुइ कन्या पुण । निर्ज्जन देखिबारु रहिले सेहि स्थान ४
जरता आग होइ प्रसव होइला । चन्द्रकु दिशे तोरा पुत्रेक जात हेला ५
दुइ गोटि चरण ताहार दुइ गोटि हस्त । शिर परे सप्त फेणि होइछि सम्भुत ६
त्रय नेत्र ताहार अटइ तेज वन्त । काममोहिनी जळ देला नेइ तुरित ७
पुत्रकु स्नान कराइ शउच कराइला । क्षीर दयन्ते पुत्र गोटि शान्त मूर्त्ति हेला ८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण शाकम्वरी । पुण काममोहिनी प्रसब हेला परि ९
रबिर तेज प्राये कुमर जनम । तिनि गोटि शिर तार दुइ जे चरण ८१०
तिनि मस्तकरे नव आक्षि अछि पुण । दुइ गोटि हस्त तार अटइ प्रमाण ८११

ले जाकर छोड़ दो। यह सुनकर मल्लाह ने नाव मोड़ दी। ९५-९६-९७ फिर वह सब उस स्थान पर जा पहुँची। दोनों कन्याये नाव से शीघ्र ही उतरकर किनारे पर जा पहुँची। मल्लाह नाव लेकर शीघ्र ही लौट पड़ा। जहाँ पर मार्ग में श्रृंगी ऋषि थे वह वहीं पहुँच गया। फिर उसने वहाँ शीघ्रता पूर्वक नाव चला दी। ९८-९९-८०० फिर नाव अत्यन्त त्वरित गति से चल पड़ी। इधर दोनों कन्यायें सरिता तट पर चिन्तातुर होकर रहने लगीं। जब चन्द्रमा का उजेला पाख आया। तब काममोहिनी और जरता शीघ्रतापूर्वक चल पड़ी। ८०१-२ वह दोनों विभाण्डक की कुटिया के द्वार पर जा पहुँचीं। उन्होंने मठ के पास एक नीम का वृक्ष देखा। निर्जन स्थान देखकर वह दोनों कन्याये वृक्ष के नीचे उसी स्थान पर रह गयीं। ३-४ सर्वप्रथम जरता के गर्भ प्रसूत हुआ। उसने चन्द्रमा के समान सुन्दर दिखने वाले एक पुत्र को जन्म दिया। उसके दो हाथ और दो पैर थे, सिर के ऊपर सात फन लेकर उसका जन्म हुआ था। ५-६ उसके तेजस्वी तीन नेत्र थे। काममोहिनी ने तुरन्त जल लेकर उसे दिया और पुत्र को स्नान कराकर पवित्र किया। दूध पिलाते ही पुत्र (चुप) शांत हो गया। शंकर जी बोले हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् काममोहिनी का प्रसव हुआ। उसके सूर्य के समान तेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ। उसके दो पैर तथा तीन सिर थे। ७-८-९-८१० तीन मस्तकों पर नौ नेत्र

जगत आलोक जे दिशिला तेजरे। देखिण काममोहिनी तोष जे मनरे १२
पुत्र स्नान कराइ शउच पुण हेला। कोळे धरि से पुत्रकु क्षीर पान देला १३
अमळाण बस्त्ररे दुइ पुअकु शुआइ। शर्बरी शेष होइले शुण गो चान्द्र मुहि १४
पार्बती बोइले तुम्भे शुण हे पञ्चानन। जरता काममोहिनी पुत्र कले जन्म १५
से दिन बिभाण्डेक अइलेटि मठ। से कथा मोर आगे कह हे तुरित १६
ईश्वर बोइले से कथा एबे शुण। बिभाण्डेक गले जे प्रभातुँ तपस्थान १७
बेळ अस्त हुअन्ते उठिले तपरु। दण्ड कमण्डळ पोथि धरिण सेठारु १८
आसन्ते आगे बाटरे अहिकि पुण देखि। फेणा टेकि अनाए जे, मुनिकि निरेखि १९
खण्डे दूररे जाइ गुध्र पक्ष देखि। मांस खाउअछि मत भरे पेखि ८२०
पेचा उल्लुक पुणि देखिले बाटरे। रोदन करुअछि ड़ाळर उपरे ८२१
निर्घातिर शब्द शुभिला कर्णकु। भेबळ बोलिण मुनि बिचारि मनकु २२
मढिआरे प्रबेश हेले मुनिबर। देखिले कामधेनु सुरभि आगर २३
शाळ ग्राम शिळ पोथि दण्ड कमण्डळ। सकळ द्रव्य अछि पुत्र नाहिँ मढिआर २४
बिचारिले मोर ऋष्यशृंग किए नेला। आग करि कुमर मो आगे कहु थिला २५
एते बोलि ऋषि जे आरते ध्वन्ति ड़ाक। केणे गलु बाबुरे आस ऋष्यशृंग २६

थे और उसके दो हाथ थे। उसके तेज से संसार आलोकित हो उठा। यह देखकर काममोहिनी का मन संतुष्ट हो गया। ८११-१२ पुत्र को स्नान कराकर वह पवित्र हो गयी। उसने गोद में लेकर पुत्र को दूध पिलाया। हे चन्द्र-मुखी ! सुनो। दोनों पुत्रों को उन्होंने स्वच्छ वस्त्र पर सुला दिया। इसी समय रात्रि समाप्त हो गई। १३-१४ पार्वती ने कहा हे पंचानन ! सुनिये। जरता और काममोहिनी ने पुत्रों को जन्म दिया। उस दिन विभाण्डक मठ में आये। आप शीघ्र ही हमसे वह कथा कहिये। १५-१६ शंकर जी ने कहा वह कथा सुनो। विभाण्डक प्रातःकाल तपोभूमि पर गये और सूर्यास्त होने पर तपस्या से उठे। दंड कमण्डल तथा पुस्तक लेकर उस स्थान से आते हुये उन्होंने मार्ग में एक सर्प को देखा। वह मुनि की ओर फन उठाकर देख रहा था। १७-१८-१९ थोड़ी दूर पर जाकर उन्होंने गृद्ध पक्षी देखा जो बड़ी रुचि के साथ उछल-उछलकर माँस खा रहा था। फिर उन्होंने मार्ग में वृक्ष की डाल पर रुदन करते हुए उल्लू तथा खूसट को देखा। ८२०-८२१ उन्हे कटु शब्द सुनायी पड़ा। अपशकुन कहकर मुनि मन में विचार करने लगे। मुनिश्रेष्ठ के मठ में प्रवेश करते ही सामने कामधेनु तथा सुरभी दिखाई पड़ी। २२-२३ शालिग्राम शिला, पुस्तक, दंड, कमण्डल समस्त पदार्थ थे परन्तु कुटिया में पुत्र नहीं था। वह विचार करने लगे कि मेरे पुत्र को कौन ले गया है। मेरा पुत्र आगे आकर हमसे बातें करने लगता था। इतना कहकर ऋषि व्यथित होकर पुकारने लगे। अरे वत्स शृंगी ऋषि ! आओ। तुम कहाँ गये

लता उहाड़रे चाहन्ति तपि पुण । पुत्रकु न देखि ऋषि करन्ति रोदन २७
बिचारन्ति डाहाणी कि भूत पिचाशुणी। के मोहर नन्दनकु भक्षिलाक पुणि २८
चारि रावण भउणी कि अवा अइले । गुणवन्त पुत्रकु मोर कि खाइले २९
जेउँ पुत्र अटइ मो वेदवन्त सरि । बार बर्षरे से जे हेला ब्रह्मचारी ८३०
से पुत्र बिचारिले जगत पारे दहि । से कुमर एवे मोर घेनिगला केहि ८३१
जेउँ कुमर बोलरे बरषन्ति जळ । जेउँ कुमरकु मोर डरन्ति दिगपाळ ३२
जेउँ कुमर मुखकु देखि हुअइ मुँ सुखी । केणे छाड़ि गलु पुत्र मोते तु उपेक्षि ३३
एमन्ते अनेक जे रोदन ऋषि कले । सुरभि काम धेनुकु नेइण बान्धिले ३४
श्रुव कुश पात्री जे कठार आदि पुण । एमानंकु नेइण जे रखिले मठेण ३५
मृग छाल पोथि जे दण्ड कमण्डळ । सकळ साइतिण रखिले मुनि बर ३६
पुत्रबिहुने ऋषिकु अन्य न दिशइ । सप्त घडि रजनीरे बनरे बुलु थाइँ ३७
पुत्रकु नपाइ मुनि होइले बिरस । तर्पण न कले मुनि नकले किछि ग्रास ३८
पादकु न पखान्ळि मुखकु न धोइले । निराश होइण ऋषि मठरे शोइले ३९
रजनीरे सपन जे देखिले मुनिबर । श्वेत हस्ती परे बिजे पुत्र जे तांकर ८४०
आलट चामर जे पडइ छामुर । धवळ छति टेकात होइछि उपर ८४१

हो । २४-२५-२६ तपस्वी लता की आड़ में देखने लगे । पुत्र को न देखकर वह रुदन करने लगे । वह सोचने लगे । क्या डाइन-भूत अथवा पिशाची कौन मेरे पुत्र को खा गयी । २७-२८ अथवा चार रावणों की बहनें यहाँ आयीं और हमारे गुणवान पुत्र को खा गयीं मेरा जो पुत्र वेदज्ञ था और जिसने बारह वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था । २९-८३० वह पुत्र इच्छा करने से संसार को जला सकता था । अब उस पुत्र को कोई ले गया । जिस पुत्र के बोलने से जल की वृष्टि होने लगती थी और मेरे उस बालक से द्विगपाल भी डरते थे । ८३१-३२ मैं जिस पुत्र का मुख देखकर प्रसन्न हो जाता था । अरे पुत्र तू मेरी उपेक्षा करके मुझे छोड़कर कहाँ चला गया । इस प्रकार ऋषि ने अनेक प्रकार से रुदन किया । उन्होंने सुरभी और कामधेनु को लेकर बाँध दिया । ३३-३४ श्रुवा, कुश, पंचपात्र तथा समिधा आदि लेकर उन्होंने मठ में रख दी । मुनिश्रेष्ठ ने मृगछाला, पुस्तकदंड, कमण्डल सभी वस्तुओं को ठीक से रख दिया । ३५-३६ पुत्र के बिना ऋषि को और कुछ नहीं दिख रहा था । वह रात्रि में सात घड़ी तक वन में भटकते रहे । पुत्र को न पाकर वह दुखी हो गये । न तो उन्होंने तर्पण किया और न मुनि ने कुछ खाया । ३७-३८ उन्होंने मुख और पैर भी नहीं धोए । निराश होकर ऋषि मठ में सो गये । मुनिश्रेष्ठ ने रात्रि में स्वप्न देखा कि सफेद हाथी के ऊपर उनका पुत्र चढ़कर आया है । ३९-८४० उसके ऊपर श्वेत रंग का छाता लगा है तथा व्यजन और चँवर डुलाया जा रहा है । बड़े जोरों का "राजराजेश्वर"

मणिमा डाक पडुछि शब्द गुरुटाण । कर पत्र जोड़ि आगे उभा नृपराण ४२
के बोलइ मोते तुम्भे रख ऋष्यश्रृंग । केहि बोलुछन्ति तुम्भे पुत्र दिअ बेग ४३
के बोलइ मोर जागे आचार्य्य होइब । एमन्त सपन जे देखिले ऋषि देव ४४
निद्रा भाजि गला क्षणि बिचार कले मुनि। ए स्वपन शुभ जे अटइ मोते पुणि ४५
एमन्त रजनी जे होइलाक शेष । नदी कूळरे ऋषि हेलेक प्रवेश ४६
स्नान शउच जे नदीरे ऋषि कले ।पितृ लोकंकु ऋषि जे जल तिळक देले ४७
सन्ध्या सुमरिले जे सारिले बिधि मत । सेठारु आसि मुनि मठरे उपगत ४८
शाग्ळ ग्राम शिळाकु स्नान कराइले । गन्ध चन्दन देइ पुष्प शिरे देले ४९
फळ मूळ पूजा कले ऋषि पुणि । शतबार पर्य्यन्त ओळग हेले पुणि ८५०
कामधेनु सुरभिकु गो दुहन कले । दोहन करिण बहन छाड़ि देले ८५१
देहरे पुत्र चिन्ता अछि जे ऋषिर । बिचारन्ति ऋष्यश्रृंग केणे गला मोर ५२
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । बेदबर जाणि चिन्ता कलेक बिचारि ५३
नारदकु बोइले तुम्भे बेगे चळ । कउशिक बनरे बिभाण्डक घर ५४
देवंकर उपकारे पुत्र तार आसि । से ऋषि एबे चिन्ता करुअछि बसि ५५
जरता काममोहिनी मायारे ऋषि भण्डि। देवतांक बोलरे श्रृंगार रति सन्धि ५६

का शब्द सुनाई दे रहा है। राजा उसके समक्ष हाथ जोड़कर खड़े है। ८४१-४२ कोई कह रहा था हे ऋष्यश्रृंग आप हमारी रक्षा कीजिये। कोई कह रहा था हमें अविलम्ब पुत्र-दान कीजिए। कोई अपनी यज्ञ में आचार्य बनने के लिये कह रहा था। ऋषि ने इस प्रकार का स्वप्न देखा। ४३-४४ मुनि की निद्रा टूट गई वह एक क्षण के लिये विचार करने लगे। यह स्वप्न मेरे लिये शुभ है। इस प्रकार रात्रि समाप्त हो गई। ऋषि नदी तट पर जा पहुँचे। ४५-४६ उन्होंने नदी में स्नान शौचादि किया। उन्होंने पितरों को जल तिल प्रदान किया। उन्होंने तब विधि-विधान से सन्ध्या की। फिर वह मठ में आ गए। ४७-४८ उन्होंने शालिग्राम शिला को स्नान कराया। फिर उनके शिर पर चन्दन तथा पुष्प चढ़ाये। फिर ऋषि ने उन्हें फल मूल का नैवेद्य लगाया और सौ बार उन्हें दण्डवत प्रणाम किया। ४९-८५० उन्होंने तब कामधेनु तथा सुरभी को दुहा तथा उन्हें दुहने के उपरान्त शीघ्र ही छोड़ दिया। ऋषि की देह में पुत्र की चिन्ता थी। वह विचार कर रहे थे कि हमारा श्रृंगी ऋषि कहां चला गया। ८५१-५२ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् ब्रह्माजी ने यह सोचकर विचारपूर्वक नारद से कौशिक वन में विभाण्डक के घर जाने को कहा। ५३-५४ देवताओं के उपकार के लिये उनका पुत्र आया है। वह ऋषि इस समय बैठकर चिन्ता कर रहे हैं। जरता तथा काममोहिनी ने देवताओं के कहने से ऋषि को भरमाकर उनसे रतिक्रीड़ा करके दो पुत्रों को जन्म दिया है। हे तपोनिधि ! तुम जाकर उन्हें सम्हालो। ५५-५६-५७ यह सुनकर

तांक ठारु दुइ पुत्र होइ छन्ति जात । जाइ करि बेगे तांकु सम्भाळ तपोबन्त ५७
शुणिकरि नारद जे बेगे चळिगले । कउशिक बनरे प्रबेश जाइ हेले ५८
देखिले बिभाण्डके बसिण छन्ति पुण । चिन्तारे ऋषि मन न जाए धरण ५९
नारदंकु देखिण से उठिले बहन । नमस्कार कले नारद ऋषिक चरण ८६०
रोदन करिण जे, बोलन्ति एबे शुण । केणे गला पुत्र मोर पुतुरा तोर जाण ८६१
केते कष्टे पाळिथिलि से कुमर मुहिँ । से कुमर मोर जे, प्राण हे अटइ ६२
नारद बोइले तुम्भे हो नकर रोदन । से कथा तुम्भंकु मुहिँ कहुछि बुझाइण ६३
चारि रावण संगरे अनेक असुर । देवतांकु धरिण से स्वर्ग कले जुर ६४
बासुदेवंकु देवता जाइण कहिले । बासुदेव मर्त्यपुरे जन्मिबे बोइले ६५
दशरथ नृपति कोळरे हेबि जात । तेणु से देवता ए नेले जे, तोर सुत ६६
चम्पाबती राज्यरे राजा लोमपाद । से राज्ये अपाळक पड़िला प्रमाद ६७
काममोहिनी जरता स्वर्गर अप्सरी । से राज्यरे जन्म देवता तांकु करि ६८
दशरथ घरे कन्या ए जात कले । बिहि बिधाता तार कर्मरे लेखि देले ६९
ऋष्यशृंगकु से कन्या होइब पुण बिभा । कमळांक पराए तोर बधू दिशे शोभा ८७०
एगार बर्ष छड मास से कन्याकु होइ । पन्दर बरषर तुम्भ कुमर अटइ ८७१

नारद शीघ्रही चले गए और कौशिक वन में जा पहुँचे। उन्होंने विभाण्डक को बैठे हुए देखा। चिन्ता से ऋषि का मन धैर्य धारण नहीं कर रहा था। नारद को देखकर वह शीघ्र ही उठ गए। नारद ने ऋषि के चरणों में प्रणाम किया। ५८-५९-८६० ऋषि ने रोते हुए कहा कि अब सुनो। मेरा पुत्र तथा तुम्हारा भतीजा न जाने कहाँ चला गया है। मैंने कितने कष्ट से उस बालक का पालन किया था। वह बालक तो मेरा प्राण ही था। ८६१-६२ नारद ने कहा कि आप रुदन न करें। वह बात मैं आपसे समझाकर कह रहा हूँ। चार रावण ने साथ में बहुत से राक्षसों को लेकर देवताओं को पकड़कर स्वर्ग को लूट लिया है। ६३-६४ देवताओं ने जाकर नारायण से कहा। उन्होंने मृत्युलोक में जन्म लेने को कहा है। वह दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लेंगे। ऐसा उन्होंने कहा है। इसी कारण से देवता आपके पुत्र को ले गए हैं। ६५-६६ चम्पावती राज्य के राजा लोमपाद हैं। उस राज्य में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा है। काममोहिनी तथा जरता जो स्वर्ग की अप्सरायें हैं उन्हें देवताओं ने उस राज्य में उत्पन्न किया है। ६७-६८ उन्होंने दशरथ के घर में एक कन्या उत्पन्न कराई है। विधि ने उसके कर्म का लेख लिख दिया। उस कन्या से शृंगीऋषि विवाह करेंगे। आपकी वधू की शोभा लक्ष्मी के समान दिखाई देती है। ६९-८७० वह कन्या ग्यारह वर्ष छै माह की हो गई है। आपका पुत्र पन्द्रह वर्ष का है। इसी कारण विचार करके देवता उसे चम्पावती राज्य में ले जाने को कह रहे

से शकासे देवाए बिचार करि पुण। चम्पावती राज्यकु कहिले नेबे पुण ७२
ऋष्यशृंग आसिले बरषिब जळ। लोमपादर पुत्र हेब कन्यार मंगळ ७३
दशरथ पुत्र हेब कन्यार शकासे। एते बोलि राजाकू कहिले स्वर्ग दूते ७४
शुणिण राजन जे पेषिले अपसरी। नाव चढ़ि अइले राजार बोलकरि ७५
तुम्भर पुत्र संगे पीरति सेहु करे। नाव परे बसाइ एठारु घेनि गले ७६
काममोहिनी जरता ऋषिर संगे। रमण सुरति तांकु कराइले रंगे ७७
तांक ठारु दुइ पुत्र हेले पुणि जात। से नारींकु रखाइण गले तोर पुत्र ७८
तिनि मास परे फेरिण आसिबे तोर पुर।
तो पुत्र जाग कले जात हेबे ब्रह्माण्ड ठाकुर ७९
मारिबे असुर बळ जिबे दुष्ट नाश। सकळ देवता हेबे तो ठारे तोष ८८०
कुळ उद्धारण बधू देखिबु नेत्ररे। अनेक धन द्रव्य आणिबि संगतरे ८८१
ए लता बनस्त कटक सबु हेब। पर्शुराम प्राय़े तोर नाम बिकशिब ८२
सकळ चिन्ता छाड़ि नातिकु प्रतिपाळ। से नाति दुहेँ अटन्ति चन्द्रंकु उज्ज्वळ ८३
शुणिण बिभाण्डेक बोइले कह मिछ। परदिन थिला एठारे मोर बत्स ८४
कालि दिन भितरे कि पुत्र जात करि। एहु कथा मोते त असम्भव परि ८५
नारद बोइले रजनी प्रहरक ठारे। दुइ कन्या गर्भ हेले तो पुत्र बीर्य्यरे ८६

थे। ८७१-७२ श्रृंगी ऋषि के आने से जल की वर्षा होगी। लोमपाद के पुत्र होगा और कन्या का मंगल होगा। उस कन्या के कारण दशरथ के पुत्र होगा। स्वर्ग के दूतों ने इस प्रकार राजा से कहा है। ७३-७४ यह सुनकर राजा ने अप्सराओं को भेजा। वह लोग राजा के आदेशानुसार नाव पर चढ़कर आईं। उन्होंने आपके पुत्र से प्यार किया और नाव पर बैठाकर उसे यहाँ से ले गईं। ७५-७६ काममोहिनी तथा जरता ने ऋषि से रमण कराकर रसमयी रतिक्रीड़ा की। उससे उनके दो पुत्र उत्पन्न हुए है। जिन्हें उन नारियों के पास छोड़कर आपका पुत्र चला गया। ७७-७८ तीन माह के पश्चात् वह आपके घर पर लौट आएगा। आपके पुत्र द्वारा यज्ञ करने पर ब्रह्माण्ड नायक का जन्म होगा। वह असुरों को मारकर दुष्टों का विनाश करेंगे। समस्त देवता आपसे प्रसन्न हो जाएँगे। ७९-८८० आप कुल का उद्धार करने वाली बधू को नेत्रों से देखेंगे। वह अपने साथ प्रचुर धन रत्न लेकर आएगी। इस लता वन में कंटक आदि सब होंगे। परशुराम के समान आपका नाम विख्यात होगा। ८८१-८२ सब चिन्ता त्याग कर नातियों का प्रतिपालन करो। वह दोनों नाती चन्द्रमा से अधिक उज्ज्वल है। यह सुनकर विभाण्डक बोले कि तुम मिथ्या कह रहे हो। परसों यहाँ पर मेरा पुत्र था। ८३-८४ क्या कल के भीतर ही उसने पुत्र उत्पन्न कर लिया। यह बात तो मुझे असम्भव सी लगती है। नारद ने कहा कि रात्रि के एक प्रहर पर तुम्हारे पुत्र के वीर्य से दोनों

चौद घड़ि निशि ठारे जन्म दुइ पुत्र । वेनि घड़ि रजनी जे, थिलाक पुण रात्र ८७
सात दिन माता कोळरे रहिबे कुमर । छाड़ि करि अपसरी जिबे स्वर्गपुर ८८
रजनी दिबस चउद दिन पुण । तुम्भे पाळिब तांकु देइण क्षीर पान ८९
एकाइश दिने नामकरण तांकर । अनेक ऋषि आसिबे एठावकु तोर ८९०
नाम देले से कुमर दुहेँ हेबे जुवा । से मठ जगिबे तोर जिबु तु अलगा ८९१
ऋष्यश्रृंगकु बिभा करि लेउटि आसिबु ।
दुइ नातिकु विद्या शिखाइ निर्वाण करिबु ९२
शुणिण बिभाण्डके बोइले से काहान्ति । तांकु देखिले मोर कल्पना जिब तुटि ९३
नारद बोइले से निम्बबृक्ष मूळे । दुइ नाति अछन्ति से जाइ देख डोळे ९४
विभाण्डेक बोइले तुम्भर नुहन्ति कि नाति।
तुम्भे अट सारधार मुँ अटे पछ कति ९५
चाल आम्भे दुइभाइ से ठावकु जिबा । दुइ नाति दुइ बधू मठकु आसिबा ९६
बिभाण्डेक ड़ाकिबारु नारद संगे गले । निम्ब गछ मूळे जाइ प्रवेश होइले ९७
जरता बोइला शुण गो काममोहिनी । वेनि श्वशुर अइले नातिकु देखि पुणि ९८
मुण्डरे बसन देइ दुइ नारी उठि । देबांग पतनिरे दुइ पुव शोइछन्ति ९९
चन्द्र सूर्ज्य प्राय्रेक दिशइ ज्योति वर्ण । एक पुत्र शिरपरे सपत फेणि पुण ९००

कन्याओं के गर्भ ठहर गये और चौदह घड़ी रात्रि में दो पुत्र उत्पन्न हुये। रात्रि दो घड़ी शेष थी। बालक सात दिनों तक माता की गोद में रहेंगे। फिर अप्सरायें उन्हें छोड़कर स्वर्गलोक चली जायेंगी। ८५-८६-८७-८८ चौदह दिनों तक रात दिन आप दूध पिलाकर उनका पालन पोपण करेंगे। इक्कीसवें दिन उनका नामकरण होगा। आपके इस स्थान पर अनेक ऋषि मुनि आयेंगे। ८९-८९० नामकरण होने पर दोनों बालक युवा हो जायेंगे। फिर आपके अलग चले जाने पर वह लोग आपकी कुटिया की देखभाल करेंगे। आप श्रृंगी ऋषि का विवाह करके लौट आयेंगे और दोनों नातियों को विद्या की शिक्षा देकर मोक्ष को प्राप्त होंगे। ८९१-९२ यह सुनकर विभाण्डक बोले कि वह कहाँ है। उन्हें देखने से मेरा सन्देह दूर हो जायेगा। नारद ने कहा कि नीम के वृक्ष के नीचे दोनों नाती हैं। आप जाकर अपनी आँखों से देख लें। ९३-९४ विभाण्डक ने कहा कि क्या वह आपके नाती नहीं हैं। आप तो श्रेष्ठ है और मैं तो पीछे हूँ। चलो हम दोनों भाई उस स्थान पर चलें। दोनों नाती और दोनों वधुएँ मठ में आयेंगी। ९५-९६ विभाण्डक के बुलाने पर नारद साथ में गये और नीम के वृक्ष के नीचे जा पहुँचे। जरता ने कहा हे काममोहिनी ! सुनो। नातियों को देखने दोनों श्वसुर आये हैं। ९७-९८ दोनों नारियाँ सिर पर वस्त्र डालकर उठ पड़ी। शुभ्र वस्त्र में दोनों बालक पड़े थे। उनके अंग की ज्योति सूर्य और चन्द्रमा के

आर कुमर तिनिशिरे पन्दर जटा जाण। मोहर सदृश्य जुबा दिशइ नन्दन ६०१
देखिण बिभाण्डेक परम तोष हेले। नारदंक चरणरे बिनयी होइले २
बोइले ए चारि जण आसन्ति मढिआ। रहन्तु पुत्र बधू हुअन्तु मोर क्रिया ३
तांकु बोइले पुत्रंकु घेनि मठकु बेगे आस। मठ भितरे से रहिब बिशेष ४
एते कहि ताहांकु जे घेनिण अइले। मठर द्वारे आसिण प्रबेश होइले ५
अगुरु नन्दन जे लगाइले धूनि। अग्नि जात हेबारु सुख मिळिलाक पुणि ६
नारद बिभाण्डेक हरष होइले। संग होइ सात दिन सेठारे रहिले ७
उठिआरि सारिण बेनिजन पुण। स्नाहान सारिण शउच हेले जाण ८
दुइ मुनि चरणे नमस्कार कले। नातिकु पाळ आम्भे जाउछु स्वर्गपुरे ९
बिभाण्डेक बोइले किम्पाइँ तुम्भे जिब। स्वामी आसिबा जाए थाअ एहिठाब ६१०
जरता बोइले प्रभु अटन्ति से आम्भर। बोइले स्वर्गपुर बेगे तुम्भे जिब ६११
मोर बोल मेण्टि जेबे रहिब तुम्भे जाण। सुगति नोहिब आउ तुम्भंकु काळेण १२
आम्भे बोइलु ए पुत्र केहु जे पाळिब। से बोइले मोहर पिताकु देइ जिब १३
शुणिण बिभाण्डेक नारद तोष हेले। शून्यरु जानकी आसि सेठारे मिळिले १४

समान दिख रही थी। एक पुत्र के सिर पर सात फन थे। ६६-६०० दूसरे पुत्र के तीन सिरो पर पन्द्रह जटायें हैं और वह बालक मेरे समान युवा दिखाई दे रहा है। उन्हें देखकर विभाण्डक अत्यन्त प्रसन्न हुये। उन्होंने नारद के चरणों में प्रणाम किया। ६०१-२ उन्होंने कहा कि यह स्त्रियाँ मेरी पुत्रवधू बनें और चारों आकर कुटिया में रहें। उन्होंने स्त्रियों से शीघ्र ही पुत्रों को लेकर मठ में आकर विशेष तौर से रहने के लिये कहा। ३-४ इतना कहकर वह उन्हें साथ ले आये और मठ के द्वार पर आकर प्रविष्ट हुये। उन्होंने अगुरु और चन्दन की धूनी लगायी। अग्नि जलने पर सबको सुख मिला। नारद और विभाण्डक प्रसन्न होकर एक साथ वहाँ सात दिनों तक रहे। ५-६-७ दोनों नारियों ने सोर उठाकर स्नान किया और पवित्र हो गयीं। उन्होंने दोनों मुनियों के चरणों में नमस्कार किया और कहने लगी कि आप नातियों का पालन कीजिये। हम लोग स्वर्गलोक को जा रही हैं। विभाण्डक बोले कि आप लोग क्यों जायेंगी। अपने स्वामी के आने तक इसी स्थान पर रहिए। ८-६-६१० जरता ने कहा कि जो हमारे स्वामी है उन्होंने शीघ्र ही हम लोगों को स्वर्ग जाने के लिये कहा है। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि तुम लोग हमारी बात न मानकर रहोगी तो तुम्हारा नाश हो जायेगा और समय के अनुसार तुम्हें सुगति प्राप्त नहीं होगी। ६११-१२ हमने कहा कि इन पुत्रों का पालन कौन करेगा। तब वह बोले कि इन्हें हमारे पिता को देकर चली जाना। यह सुनकर विभाण्डक और नारद प्रसन्न हो गये। आकाश से यान वहाँ पर आ पहुँचा। दोनों कन्याओं ने अपना शरीर शीघ्र ही छोड़

दुइ कन्या शरीर बेगे तेज्या कले। अतुट नारी बेश त क्षणके धरिले १५
देवदूत अनेक भूषण आणिथिले। लगाइ से नारी जे स्वर्गकु चळिगले १६
अप्सरी पाटणारे हेलेक प्रवेश। रम्भा मेनका देखिण होइले हरष १७
हुळहुळि देइण दोहिता घेनि गले। सन्नत सनातनकु ड़काइ घेनि गले १८
बोइले तुम्भ नारी अइले मञ्चपुरु। ऋषिर नारीकु देव भोग हेनकरु १९
शुणिण सनातन सनन्त अइले। जे जाहार नारीकु आदरे घेनि गले ९२०
पार्वती बोइले शुण हे महेश्वर। जरता काम मोहिनी गले स्वर्गपुर ९२१
पूर्बर माता ठारे प्रवेश होइले। पूर्बर स्वामी घेनि निश्चिन्ते भोग कले २२
दुइ बाळक ऋष्यश्रृंगर कुमर। बिभाण्डेक मठरे रहिले दुइ बाळ २३
से कथा मोर आगे कहहे तुम्भे भले। × × × २४
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। दुइ बाळकंकु बिभाण्डेक जे पाळन्ति २५
काम धेनु क्षीर पान करन्ति दुइ बाळ।तेर दिन हेला आजकु माता छाड़िबार २६
अनेक ऋषिकु सुमरणा कले बिभाण्डेक जति।सुरभि जोगुं अनेक पदार्थ मिळन्ति २७
दधि लवणी सर क्षीर अप्रमाण। नाना जातिर फळ रखिले ऋषि जाण २८
नाम करण दिन सकळ ऋषि आसि। दुइ पुत्रंकु देखिण मनरे हेले तोषि २९

दिया और उसी क्षण सुन्दर अक्षय नारी वेश धारण किया। देवदूत अनेक आभूषण लाये थे जिन्हें पहनकर वह दोनों नारियाँ स्वर्गलोक को चली गयीं। वह लोग अप्सराओं के टोले में जा पहुँचीं। रम्भा तथा मेनका उन्हें देखकर प्रसन्न हो गयीं। १३-१४-१५-१६-१७ मांगलिक शब्द करके वह दोनों कन्याओं को लेकर चली गयीं। वह लोग सनत तथा सनातन को भी साथ में बुलाकर ले गयीं। उन्होंने कहा कि आपकी स्त्रियाँ मृत्यु लोक से आ गयी हैं। अब देखो जिससे देवता लोग ऋषि पत्नियों का भोग न कर सकें। यह सुनकर सनत् और सनातन आये और अपनी-अपनी स्त्री को आदर-सहित लेकर चले गये। १८-१९-९२० पार्वती बोली हे महेश्वर ! सुनिये। जरता और काममोहिनी स्वर्ग चली गयीं और अपनी पहले की माताओं के पास जा पहुँचीं। उनके पूर्व स्वामी उन्हें लेकर निश्चिन्त होकर भोग भोगने लगे। ९२१-२२ शृंगी ऋषि के दोनों बालक विभाण्डक के मठ में रहने लगे। यह कथा आप मुझसे भली प्रकार कहिए। शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनो। विभाण्डक दोनों बालकों का पालन करने लगे। दोनों बालक कामधेनु का दूध पीते थे। माता को छोड़े हुये आज तेरह दिन हो गये। विभाण्डक ऋषि ने अनेक ऋषियों का स्मरण किया। सुरभी के कारण उन्हें नाना प्रकार के पदार्थ मिलते थे। दही, मक्खन मलाई, तथा दूध और अनेक जातियों के फलों का भडार ऋषि ने संचित कर लिया था। २३-२४-२५-२६-२७-२८ नामकरण के दिन समस्त ऋषि

नाना द्रव्य अमृत भोजन तहिँ कले। देव प्रति ऋषि माने आनन्द होइले ६३०
पुत्र दुइंक नाम देले ऋषि पुण।
मारकण्ड दुर्बासा बिश्वामित्र नारद आदि जाण ६३१
अंगिरा कपिळ अष्टबक्र भरद्वाज। सकळ मुनि बिचारि देले सर्ब तेज ३२
बोइले कुमर जात हेले एबे जाण। ऋष्यश्रृंग पिता माता जरता पुण ३३
से कुमर शिररे अछइँ सप्त फेणि। से कुमर नाम हेउ शतेक मुनि पुणि ३४
काम मोहिनी ठारु जेउँ पुत्र जात।तिनि मुण्ड नब आखि ताहार प्रत्यक्ष ३५
ताहार नाम त्रिअम्बक हेले सारस्वत। शुणिण सकळ मुनि मनरे हरष ३६
नाम देइ पुत्र पवित्र कराइले।पञ्चामृते स्नान कराइ मन्त्र कर्ण देले ३७
तपिकर मन्त्र जे शुणिले जहुँ बाळ। जुबा शरीर पुण जे होइले तत्काळ ३८
सकळ ऋषिकु उठि नमस्कार कले। शतबार परिजन्ते बिनय़ी कहिले ३९
देखिण सकळ ऋषि आश्चम्बित हेले। एकोइश दिने पुत्र नवजुबा हेले ६४०
नारद बोइले पिता आगे देले बर। एकोइश दिने जुबा हुअरे कुमर ६४१
मुनिमाने बोइले पिता तांकर काहिँ। नारद बोइले चम्पावती राज्ये जाइँ ४२
ऋषिमाने बोइले कि कार्य्यरे गले। नारद बोइले से देश अपाळक भले ४३

आ गये। वह दोनों पुत्रों को देखकर मन में संतुष्ट हो गये। उन्होंने नाना प्रकार के अमृततुल्य पदार्थ वहाँ पर ग्रहण किये। देवर्षि तथा ऋषि प्रसन्नता से भर गये। २९-६३० ऋषियों ने दोनों पुत्रों का नामकरण किया। मारकण्डेय, दुर्वासा, विश्वामित्र, नारद, अंगिरा, कपिल, अष्टावक्र भरद्वाज आदि सब मुनियों ने विचारपूर्वक उन्हें हर प्रकार का तेज प्रदान किया। ६३१-३२ उन्होंने कहा कि इस समय बालक उत्पन्न हो चुके हैं। इनकी माता जरता और पिता श्रृंगी ऋषि हैं। उस बालक के सिर पर सात फन हैं। इस बालक का नाम शतेक मुनि हो। ३३-३४ जो बालक काममोहिनी से उत्पन्न हुआ है और जिसके तीन सिरों में नौ आँखें प्रत्यक्ष हैं। उसका नाम त्रयम्बक हो तथा वह महान पंडित हो। यह सुनकर सारे मुनियों के मन प्रसन्न हो गये। ३५-३६ नाम रखकर पुत्रों को पवित्र किया गया। उन्होंने पंचामृत से स्नान कराकर उनके कानों में मंत्र दिया। तपस्वी का मंत्र जब बालकों ने सुना। तब उनके शरीर तत्काल युवा हो गये। ३७-३८ उन्होंने उठकर समस्त ऋषियों को नमस्कार किया और सौ-सौ बार उनकी प्रार्थना की। यह देखकर समस्त ऋषि अचम्भे में पड़ गये। बालक इक्कीस दिनों में नवयुवक हो गये। ३९-६४० नारद ने कहा कि पिता ने इक्कीस दिन में पुत्रों को युवा होने का पहले ही वर दे दिया है। मुनि लोग बोले कि इनके पिता कहाँ है। नारद ने कहा वह चम्पावती राज्य को गये हैं। ६४१-४२ ऋषि बोले कि वह किस कार्य से गये हैं। नारद ने उत्तर देते हुये कहा कि उस राज्य में दुर्भिक्ष पड़ा है। श्रृंगी

ऋष्यश्रृंग गले जे वरषिब जळ। सेथि जोगु गले विभाण्डेकर वाळ ४४
शुणि करि ऋषिमाने हरष होइले। दुइ पुत्रंकु पुणि से कल्याण करिले ४५
सन्तोष होइ मुनि जे जाहा स्थाने गले। नारद चळिगले जशोवन्ती पुरे ४६
वेदवर आगरे कहिले सकळ। शुणि करि वेदवर हरष मनर ४७
दुइ जति अष्ट बक्र विभाण्डेक पुणि।
से ऋषिकु रखाइले विभाण्डेक ऋषि जाणि ४८
बोइले बक्र ऋषि मोर सेवा घेन। दुइ जतिकु विद्या शिखाअ तुम्भे पुण ४९
शुणिण बक्र ऋषि हरस मन हेले। कउशिक वनरे से ऋषि रहिले ९५०
पार्वती बोइले शुण हे त्रिलोचन। ऋष्यश्रृंग नावरे जे गलेक वसिण ९५१
केते दिने चम्पावती कटके प्रवेश। से कथा मोर आगे करित्र प्रकाश ५२
सदाशिव बोइले शुण गो भगवती। गला वेळे कोड़िए दिनरे गले जति ५३
दुइ दिन रहिण सेठारु अइले। चम्पावती राज्यरे एकोइश दिनरे मिळिले ५४
जरता काममोहिनी जिबारु तेजि पुण। वार कन्या खटिले मुनिक चरण ५५
अपूर्ब पदार्थ से जेतेक नेइ थिले। रान्धिण मुनिकु भोजन नेइ देले ५६
जाणिवारु ऋषि जे कूळकु ओल्हावन्ति। स्नान शुचिवन्त शौच कूळरे हुअन्ति ५७

ऋषि के जाने से जल की वर्षा होगी। इसी के कारण विभाण्डक के पुत्र वहाँ गये हैं। ४३-४४ यह सुनकर ऋषि लोग प्रसन्न हो गये। उन्होंने फिर दोनों पुत्रों को आशीर्वाद दिया। संतुष्ट होकर मुनि अपने-अपने स्थानों को चले गये और नारद यशोवंती पुर चले गये। ४५-४६ उन्होंने ब्रह्मा जी से सब बता दिया जिसे सुनकर ब्रह्मा जी का मन प्रसन्न हो गया। फिर अष्टावक्र तथा विभाण्डक दोनों तपस्वियों ने उन ऋषियों की देखभाल की। विभाण्डक ने अष्टावक्र से उनकी सेवा स्वीकार करने का आग्रह किया और कहा कि आप दोनों योगियों को विद्या दान करें। ४७-४८-४९ यह सुनकर ऋषि अष्टावक्र का मन प्रसन्न हो गया। वह कौशिक वन में रह गये। ९५० पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन! सुनिये। श्रृंगी ऋषि नाव में बैठकर चले गये। फिर वह कितने दिनों में चम्पावती राजधानी में पहुँचे। आप हमसे वह कथा प्रकाशित करें। ९५१-५२ सदा कल्याण करने वाले शंकर जी ने कहा हे भगवती! सुनो। जाने के समय वह योगी बीस दिन तक चलकर वहाँ पहुँचे। दो दिन तक रहकर वह वहाँ से चले थे। इस प्रकार वह चम्पावती राज्य में इक्कीस दिनों में पहुँचे। ५३-५४ जरता और काममोहिनी के जाने पर वेश्या कन्याओं ने मुनि के चरणों की सेवा की। उन्होंने अपने साथ लाये हुये जितने भी अपूर्व पदार्थ थे। उन्हें पकाकर मुनि को भोजन के लिये दिया। ५५-५६ समय जानकर वह ऋषि किनारे पर उतर जाते और सरिता तट पर स्नान शौचादि से निवृत

सन्ध्या तर्पण जे करन्ति मुनि जाण। भोजन करन्ति आसि नाव भितरेण ५८
बार बनिता आगरे करन्ति नृत्य गीत। पशा खेळु छन्ति जे ऋषिकु हरषित ५९
शाप देवाकु से समस्ते भय़ कले। जरता काममोहिनी जहुँ चळि गले ६६०
रात दिवसरे नाव नेलेक बाहि। आमोद पाइ ऋषि जे पलंकरे शोइ ६६१
चम्पावती राज्यरे मिळिले जाइँ करि। एक बिश दिन गले नावे चढ़ि करि ६२
रजनी शेषरे हेलेक प्रवेश। पूर्व दिगे उदे जे दिन कर नाथ ६३
ऋष्यश्रृंगकु कन्याभाने तोळि ले शेजरु। सुवासित जळ देले नाव रखि बारु ६४
ऋष्यश्रृंग चित्र पुरुँ होइले बाहार। मुख पखाळिले बसि नावर मंगर ६५
झिन बसनरे मुख पोछिले महा ऋषि। चरण पखाळिले आसिण जुबती ६६
कूळकु ऋष्यश्रृंग ओल्हाइ ले पुण। स्नान शौच कले से ठावरे जाण ६७
तर्पण सन्ध्या सारि राज्यकु चाहिँले। मेला राज्य देखिण कन्याकु पचारिले ६८
बार बनिता बोइले शुण ब्रह्मचारी।
चम्पावती राज्य एहु लोमपाद दण्डधारी ६९
बिप्रंक शापरे ए राज्य अपाळक। बार बरष हेला नाहिँ जळ धाप ६७०
चारि शत जुण जे अटइ राज्य पुण।
जळ अन्न न मिळि बारु छाड़ि गले प्रजागण ६७१

होकर पवित्र हो जाते और संध्या तर्पण करके मुनि आकर नाव के भीतर भोजन करते थे। ५७-५८ वेश्या कन्याये उनके आगे नाच-गान करती थीं और ऋषि को प्रसन्न करने के लिये पाँशा खेलती थीं। जरता, काममोहिनी जब से चली गयी तब से वह सब शाप देने से भय करने लगीं। ५९-६६० नाव रात-दिन चलायी गयी, आनन्द पाकर ऋषि पलंग पर सो जाते थे। नाव में चढ़कर इक्कीस दिन बीत जाने पर वह लोग चम्पावती राज्य में जा पहुँचे। ६६१-६२ रात्रि की समाप्ति पर वह वहाँ प्रविष्ट हुये। सूर्यदेव पूर्व दिशा में उदय हो चुके थे। कन्याओं ने श्रृंगी ऋषि को शैय्या से उठाया और नाव में रखा हुआ सुगन्धित जल उन्हें दिया। ६३-६४ श्रृंगी ऋषि चित्रशाला से बाहर निकले। उन्होंने नाव के उपस्थान पर बैठकर मुख पृच्छालन किया और झीने वस्त्र से महर्षि ने मुख पोंछ लिया। युवतियों ने आकर उनके चरण धो दिये। ६५-६६ फिर श्रृंगी ऋषि तट पर उतर पड़े। उन्होंने उस स्थान पर स्नान शौचादिक क्रिया की। तर्पण-सन्ध्या समाप्त करके उन्होंने राज्य की ओर देखा। मिले हुए राज्य को देखकर उन्होंने (वेश्या) कन्या से प्रश्न किया। ६७-६८ वेश्या स्त्रियों ने कहा हे ब्रह्मचारी! सुनो। यह चम्पावती राज्य है और यहाँ के शासक लोमपाद है। ब्राह्मणों के शाप से यह राज्य दुर्भिक्ष ग्रस्त है। बारह वर्ष व्यतीत हो गए जल नहीं गिरा। ६९-६७० यह राज्य चार सौ योजन विस्तीर्ण है। अन्न जल न मिलने के कारण प्रजा के लोग राज्य छोड़ कर चले गए।

सेथिर सकाशे आम्भे तुम्भंकु गुप्ते आणि । सुदया कर एवे मेघ वरषु पाणि ७२
नारींकर बचन शुणिण ऋष्यश्रृंग। विचारि उपरकु चाहिँले तपइन्द्र ७३
बोइले सुर राजा एवे दोष गला ।ब्राह्मणंक शाप त एवे सम्पूर्ण होइला ७४
तुम्भर क्रोध जे, होइला परिपूर्ण । मुँ एवे प्रवेश होइलि एहि स्थान ७५
मुहिँ आसिला बेळरु राज्यर सुख हेला । बरषु एवे जळ वञ्चन्तु जीव परा ७६
जेबे मोहर बोल न करिब देव । तुम्भंकु देला वर तुम्भंकु हेउ भोग ७७
राज्य गोटि सिना तुम्भे अपाळक कल । नर राजार नाहिँ तुम्भ परे बळ ७८
असुर हेले तुम्भे जे, पाआन्त जाहा पुण।से कथाकु विचार हे सहस्त्रे जोनि पुण ७९
नोहिले स्वर्गपुर आजठु गला नाश । एहि क्षणि शाप देवि स्वर्ग हेव भस्म ९८०
एते बोलि नवरे जाइण वेगे उठि । चित्रपुर भितरे मिळिले ब्रह्म ऋषि ९८१
अमळाण पिन्धिले देवंकु पूजा कले ।अमृत जोगाड़ आणि नारी माने देले ८२
भोजन सारिण ऋषि कलेक आचमन । ताम्बुळ भुञ्जिण तोष कले मन ८३
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । नारी गणे बेश जे कलेक ब्रह्मचारी ८४
चन्दन अगुरु नेइण संगे बोळि । सर्वांगे अळंकार देले सर्ब नारी ८५
नाना वर्ण कुसुम पुष्परे वेश कले। रत्न पलंकरे नेइण बसाइले ८६

इसी के कारण हम आपको गुप्त रूप से ले आई हैं। अब दया कीजिये जिससे मेघ जल वृष्टि करें। ९७१-७२ नारियों के वचन सुनकर तपस्या में इन्द्र के समान शृंगी ऋषि ने विचारपूर्वक ऊपर की ओर दृष्टिपात किया। उन्होंने इन्द्र से कहा कि अब अपराध का समय टल गया है। अब ब्राह्मणों का शाप पूरा हो चुका। ७३-७४ आपका क्रोध भी पूर्ण हो गया। अब मैं इस स्थान में प्रविष्ट हो चुका हूँ। मेरे आगमन के समय से राज्य में सुख हुआ है। अब जल की वर्षा करो जिससे प्राणी बच सके। ७५-७६ हे देव ! यदि आप मेरा कहना नहीं सुनेंगे तो आपको दिया हुआ वर आपको ही भोगना पड़े। आपने सम्पूर्ण राज्य को दुर्भिक्ष से ग्रस्त कर दिया। नरेश का आपके ऊपर बल नहीं चला। ७७-७८ आप असुर हो जाने से जो कुछ पाते। हे सहस्रयोनि ! आप उस बात पर विचार करें। नहीं तो आज से स्वर्गलोक नष्ट हो जाएगा। मैं स्वर्ग को भस्म हो जाने का इसी क्षण शाप दे दूँगा। ७९-९८० इतना कह कर ब्रह्मर्षि शीघ्र ही उठकर नाव में जाकर प्रकोष्ठ में (चित्रशाला में) पहुँच गए। उन्होंने स्वच्छ वस्त्र पहनकर देवार्चन किया। स्त्रियों ने लाकर अमृत तुल्य भोजन दिया। ९८१-८२ भोजन समाप्त करके ऋषि ने आचमन किया। फिर ताम्बूल खाकर उन्होंने अपना मन सन्तुष्ट किया। हे शाकम्बरी ! सुनो ! इसके पश्चात् नारियों ने ब्रह्मचारी का शृंगार किया। ८३-८४ उन्होंने चन्दन के साथ अगुरु लेकर उसका विलेपन कर दिया। समस्त स्त्रियों ने उनके सभी अंगों में अलंकार पहना दिए। फिर विविध प्रकार के पुष्पों से उन्हें सजा

ऋष्यश्रृंग बोइले बारण बेगे दिअ। आसन्तु राजन जे घेनिण सबु प्रिय ८७
शुणिण बनिता माने बाहारकुगले। कूले थिबा चारकु बारता कहिले ८८
बोइले ऋष्यश्रृंग होइले प्रबेश। दर्शन करन्तु राजा होइण हरष ८९
शुणिण दूत माने बेगे चळि गले। राजार पाशे जाइ प्रबेश होइले ९९०
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती। दुर्बासा ऋषि जाइ इन्द्रंकु कहन्ति ९९१
चम्पावती राज्यकु अइले ऋष्यश्रृंग। बोइले ए राज्यरे बरषा करु बेग ९२
नोहिले स्वर्ग आज मुँ भग्न करिबि। एते बोलि ऋषि जे होइण अछिरागी ९३
शुणि करि इन्द्र राजा मेघकु आज्ञा देले। चम्पावती राज्ये बेगे बरष बोइले ९४
शुणिण चारि मेघ जे बेगे चळि गले। सकळ मेघ मान लोड़ाइ आणिले ९५
बोइले चम्पावती राज्यकु बेगे चाल। आज्ञा देले इन्द्र जे बरषिबा जळ ९६
शुणिण मेघमाळे समस्ते चळि गले। चारि दिगरु मेघ जे आच्छादित पुण कले ९७
गर्ज्जन नाद करिण घोटिले राज्यकु। मधू समुद्र जळ आणिले बर्षिबाकु ९८
सेहि राज्य प्रजा सबु मने बिचारिले। आज बड़ आश्चम्बित देखा गला भले ९९
चौदिगे मेघमाने घड़ घड़ि करि। बिजुळि मारिण जे कळा मेघ पूरि१०००
नर नारी माने बसि करन्ति बिचार। निश्चय ऋष्यश्रृंगकि, आसिले ए पुर१००१

दिया। उन्होंने उन्हें लेकर रत्न पर्यङ्क पर बिठा दिया। ८५-८६ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि अब शीघ्र ही राजा को समाचार दो जिससे वह समस्त प्रियजनों को साथ लेकर आ जाएँ। यह सुनकर स्त्रियाँ बाहर चली गईं। उन्होंने तट पर रहनेवाले दूत से समाचार बताया। ८७-८८ उन्होंने कहा कि श्रृंगी ऋषि आ पहुँचे हैं। राजा प्रसन्नतापूर्वक उनका दर्शन करें। यह सुनकर दूत लोग शीघ्रता से चले गए। वह लोग राजा के निकट जा पहुँचे। ८९-९९० हे भगवती! सुनो! इसके पश्चात् दुर्वाषा ऋषि ने जाकर इन्द्र से कहा कि श्रृंगीऋषि चम्पावती राज्य में आ गये हैं। अब शीघ्र ही उस राज्य में उन्होंने जल-वृष्टि करने को कहा। ९९१-९२ वह बोले ऐसा न होने से मैं आज स्वर्ग लोक को नष्ट कर दूँगा। इतना कह ऋषि कुपित हो गए। इस प्रकार सुनकर देवराज इन्द्र ने मेघों को चम्पावती राज्य में शीघ्र ही वर्षा करने की आज्ञा दी। ९३-९४ यह सुनकर चारों मेघ शीघ्रतापूर्वक चले गए और समस्त मेघों को खोज लाए तथा उनसे कहा कि शीघ्र ही चम्पावती राज्य को चलो! राजा इन्द्र ने जलवृष्टि करने की आज्ञा दी है। ९५-९६ यह सुनकर सभी मेघ चल दिये और चारो दिशाओं से बादल घिरने लगे। उन्होंने गरजते हुए राज्य को आच्छादित कर लिया तथा वर्षा करने के लिये मधुसागर से जल ले आए। ९७-९८ उस राज्य की सम्पूर्ण प्रजा मन में विचार करने लगी। आज बड़ा ही आश्चर्य दिखाई दे रहा है। चारों ओर से काले बादल गर्जन करते हुए विजली की चमक से युक्त घिर रहे हैं। ९९-१००० स्त्री-पुरुष बैठकर विचार करने लगे

के बोइला राजा जे, अपक्षरी भेदि । जाइण कन्या माने आणिले कि बेगि २
के बोइला राजा जे, आम्भर रखे प्राण । के बोलन्ति भण्डारू देले अनेक धन ३
के बोलइ चण्डाळ धान साइति थिला । राजार आज्ञा पाइ से धन देला ४
एमन्त बिचार जे करन्ति नर नारी । बरषिला जळ जे, चउदिग पुरि ५
नर नारी आनन्द प्रजाए कुशळ । हरषरे उपरकु चाहान्ति सकळ ६
बोलन्ति केते काळरे बरषा देखि लईं । शरीरकु शीतळ लागुछि गो सही ७
एमन्त बिचार जे, राजार लोके करि । राजार आगे जे, चार जाइँ मिळि ८
कर जोड़ि नृपतिर आगरे जणाइ । शुणिमा राज्येश्वर सावधान होइ ९
तोर राज्ये ऋष्य श्रृंग बिजे आसि कला।
नदी कूळरे चाप जे, आसिण लागिला१०१०
बनिता मानंकु कहिले राजांकु घेनि आस। उत्सव आनन्दरे आसु जे, नरईश१०११
वनिताए बोइले आसन्तु महीपाळ । तांकर आज्ञारे मुँ अइलि राज्येश्वर १२
शुणिण लोमपाद हरष होइले । मन्त्रींकु चाहिँण जे, बेगे आज्ञा देले १३
बोइले चतुरंग, वळ बेगे सज कर ।रथी, हस्ती, पदान्ति, अश्व जे आवर १४
बाजन्तरिआ, नटकारी ड़ाकुआ आवर। द्विजवर नृत्यकारी अणाअ सत्वर १५

क्या निश्चय ही श्रृंगीऋषि इस नगर में आ गए हैं। कोई कहने लगा कि राजा ने अप्सराओं को भेजा था। क्या वह कन्याएँ शीघ्रतापूर्वक उन्हें ले आई है। १००१-२ किसी ने कहा राजा ने हमारे प्राण बचा लिये। कोई बोला कि उन्होंने भण्डार से प्रचुर धन दिया। किसी ने कहा कि उन्होंने चाण्डाल के धान सँभाल कर रखे थे। राजा की आज्ञा से वही धान हम लोगों को दिया गया। ३-४ इस प्रकार का विचार स्त्री-पुरुष कर रहे थे। तभी चारों दिशाओं में घिरघर जल की वर्षा हुयी। प्रजा की कुशल मंगल से सभी नर-नारी प्रसन्नता से ऊपर की ओर देखते हुये सुख का अनुभव करने लगे। ५-६ वह कह रहे थे कि न जाने कितने समय के पश्चात् वर्षा को देखा है। हे सहचरी! यह शरीर को ठंडा लग रहा है। राज्य के लोग इसी प्रकार का विचार कर रहे थे। तभी दूत लोग राजा के पास जा पहुँचे। ७-८ उन्होंने हाथ जोड़कर राजा के समक्ष निवेदन किया। हे राजेश्वर! सावधान होकर सुनिये। आपके राज्य में श्रृंगीऋषि आ पहुँचे हैं। नावों का बेड़ा सरिता तट पर आकर लगा है। ९-१०१० उन्होंने वेश्याओं से राजा को ले आने के लिये कहा है और यह भी कहा है कि राजा समारोह के साथ आनन्दपूर्वक आयें। वेश्याओं ने हमसे कहा है कि पृथ्वी का पालन करनेवाले महाराज पधारें। हे राजेश्वर! उनकी आज्ञा से मैं यहाँ आया हूँ। १०११-१२ यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गये। उन्होंने मंत्री की ओर देखते हुये शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना सजाकर रथी, हाथी, घोड़े, तथा पैदल सिपाही लेकर आने की आज्ञा दी। १३-१४ उन्होंने बाजे

खड़ि रत्न सामन्त जे, आवर सेवाकारी। छतिशा निजोग सहिते आण बरि १६
शुणिण पात्र मन्त्री बेगे चळि गले। धेण्डुरा पिटाइ सैन्यबळ सज कले १७
जेते कथा राजन जे आज्ञा देले पुण। सकळ सम्पादि देला मन्त्री सेहु पुण १८
राजार सिंहद्वार हेले सर्वेरुण्ड। एमन्त समग्ररे बरषा कले मेघ १६
चारि दिग आच्छादिण बरषिला पाणि। मूषळ धारा प्रमाणे बरषे नीर आणि१०२०
देखिण जळबृष्टि राजन सुखी हेले। विप्रंक कहिबा कथा मने सुमरिले१०२१
एमन्त पाञ्च घड़ि जे बर्षा कले जळ। पोखरी, कूप, बाम्फी नदी सरोवर २२
गिरि घोर कन्दर पर्बत लता बन। ग्राम देश पाटणा कटक पुर मान २३
सर्ब ठारे जळ जे दिशिलाक पुण। केउँ ठारे पाहाड़रे जळ जे जाण २४
एमन्ते जळबृष्टि हेला जे अनेक। × × × × २५
एथु अनन्तरे गो शाकम्बरी शुण।ऋष्य श्रृंग आगरे बार बनिता कहे पुण २६
बोइले अनेक बृष्ठि कले मेघ माळ। किरूपे आसिबे एठाकु सैन्यबळ २७
बरषा रहिले सिना आसिबे सकळ। शुणिण ऋष्य श्रृंग बोइले रहु जळ २८
सुबर्ण बृष्टि कर घड़िए पर्य्यन्ते। दरिद्र होइ छन्ति एहि राज्य लोके २६
शुणि करि मेघमाने सुबर्ण बृष्टि कले। चम्पावती राज्यकु कुशळ कराइले१०३०

वालों, नृत्यकारों ब्राह्मणों, नटों तथा हाँका देने वालों को शीघ्र ही बुलाने के लिये कहा। श्रेष्ठ गणिको सामंत सेवक झाड़ूदार तथा छत्तीस प्रकार की सेवाओं में नियोजित दासों को शीघ्र ही बुलवा लो। १५-१६ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्रतापूर्वक चले गये और उन्होंने ढिढोरा पिटवाकर सैन्यबल सुसज्जित किया। राजा नेजो भी आज्ञायें दीं। मंत्री ने सबको पूरा कर दिया। १७-१८ राजा के सिंहद्वार पर सब एकत्रित हो गये। इसी समय मेघ वर्षा करने लगे। चारों दिशाओं को आच्छादित करके मूसलाधार वर्षा हो रही थी। १६-१०२० जल-वृष्टि को देखकर राजा सुखो हो गये। वह अपने मन में ब्राह्मणों के कथन पर विचार करने लगे। इस प्रकार पाँच घड़ी तक जलवृष्टि होती रही। पोखरी कुएँ, बापी, नदी, सरोवर, गहन, गिरि कन्दरायें, पहाड़, लताएँ, जंगल, गाँव, देश, खेड़ी खेड़ा, राजधानी, टोले, मुहल्ले सभी स्थानों में जल दिखाई पड़ने लगा। कहीं पर पहाड़ से जल गिर रहा था। इस प्रकार प्रचुरजल की वर्षा हुयी। १०२१-२२-२३-२४-२५ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् श्रृंगी ऋषि से वेश्या नारियों ने कहा, कि मेघमण्डल ने प्रचुर वर्षा की है। अब यहाँ तक सैन्यवल किस प्रकार आयेगी। २६-२७ वर्षा रुकने से ही सब लोग आयेगे। यह सुनकर श्रृंगी ऋषि ने वर्षा को रुक जाने के लिये कहा और उन्होंने एक घड़ी तक स्वर्ण की वर्षा करने के लिये कहा क्योंकि इस राज्य के लोग दरिद्र हो गये हैं। यह सुनकर मेघों ने सोने की वर्षा की और चम्पावती राज्य का मंगल

अमृत बृष्टि हेला पुण से राज्यर। वार वर्ष जळ पाळि नाहिँ सेथिर१०३१
अमृत पाइ धरणी शीतळ होइला। वार वरषर दुःख जे क्षणेक पाशो रिला ३२
रहिला बृष्टि जे ऋष्यश्रृंग बोले। सुवर्ण साउँटि नेले राजा परजा सकळे ३३
राजा नवरे राणी हंस माने देखि। दासींकु लगाइ सुवर्ण साउँटि ३४
मेघ भांगि गला पृथ्वी आलोक दिशिला। देखिण राजन जे प्रसन्न मन हेला ३५
चतुरंग बळकु जे बेगे सजकला। सामन्त मन्त्रींकु चाहिँण आज्ञा देला ३६
बोइले समस्ते तुम्भे जानरे विजेकर। फुल माळमान ऋषिक पाइँ सजकर ३७
बाण चन्द्र दिग अणाअ वहन।शुणि करि पात्र मन्त्री आसिले तुरितेण ३८
आगरे पदान्ति जे पछरे रथी गले। बाजन्तरि आमाने मिशि वाजणा वजाइले ३९
हस्ती अश्व सारेणी बुलिले माळ माळ। प्रजा माने कुशळे धामन्ति आगर१०४०
हादुआ बादुआ जे देखिवा पाइँ गले। समस्ते हर्षरे नदीकूळे चळे१०४१
पात्र मन्त्री सामन्त गलेक चळि पुण। तहिँ पछे नटकारी नृत्य करि जाण ४२
तहिँपरे राजन बिजय़े जाइ कले।निशाण वाजिवा संगे तेलेंगि बाजे भले ४३
कळा छति धळा छति आढ़ेणी पंखा मान।आलट चामर पंखा त्रिञ्चणी आगेण ४४
धळा कळा नीळ जे बसन चारिवर्ण। पतनिरे रथकु मण्डिछि जतन ४५

कराया। २८-२९-१०३० फिर उस राज्य में अमृत की वर्षा हुयी क्योंकि वारह वर्ष तक वहाँ जल नहीं गिरा था। अमृत पाकर पृथ्वी शीतल हो गयी। बारह वर्ष का दुख एक क्षण में भूल गया। १०३१-३२ श्रृंगी ऋषि के कहने से वर्षा रुक गयी। राजा और प्रजा सभी ने सोना समेट लिया। राजभवन में रनिवास की रानियों ने देखकर दासियों को लगाकर सोना समेट लिया। ३३-३४ मेघ छितरा गये। पृथ्वी आलोकित दिखाई देने लगी। यह देखकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने शीघ्रतापूर्वक चतुरंगिनी सेना को सुसज्जित किया। और सामंत तथा मंत्री की ओर देखकर आज्ञा दी। ३५-३६ उन्होंने कहा आप सब लोग रथ पर विराजमान हो जाये और ऋषि के लिये फूल-मालायें सजा ले और शीघ्र ही आकाश में जाने वाली आतिशवाजी मँगा लें। यह सूनकर सभासद और मंत्री तुरन्त ही आ गये। ३७-३८ आगे-आगे पैदल सिपाही और उनकेपीछे रथी चल पड़े। बाजे वालों ने मिलकर बाजे वजाये। हाथी घोड़े, पालकियाँ झुंड के झुंड चल पड़े। प्रजा के लोग बड़ी कुशलता से आगे-आगे दौड़ रहे थे। ३९-१०४० हाट-बाट के राहगीर देखने के लिये चले गये। सभी लोग सरिता तट की ओर चल दिये। सभासद मंत्री तथा सामंत भी चले गये उनके पीछे नाचने वाले नाच रहे थे। १०४१-४२ उनके पश्चात् राजा जा पहुँचे। निशान के बजने के साथ-साथ तुरही बज रही थी। काले और सफेद छत्र, शंख, व्यजन, चामर, पंखा झलने वाले साथ-साथ आगे-आगे चल रहे थे। ४३-४४ सफेद, काले, नीले चारों प्रकार के रंगों वाले वस्त्रों से रथ को

उपरे कळस जे सुबर्ण चिराळ। दर्पण झलकरे दिशइ आलोळ ४६
बाखर रथरे जे जोचिछि बत्रिश।सारथी होइ बसिछि मन्त्रीर ज्येष्ठ पुत्र ४७
लोमपाद राजन जे होइण बेश तोरा। स्वर्गरु इन्द्र किबा मञ्चकु आसे परा ४८
सिंहासन उपरे बसिण राजन। सारथीकि बोइले चाल हे बिमान ४९
शुणिण सारथी जे रथ बेगे बाहि। चळिलाक रथ जे धीर धीर होइ१०५०
नदी कूळरे जाइण हेलेक प्रबेश। वाद्य निशाणरे पूरइ दश दिश१०५१
पूरिला जे नदीकूळे लोकंक गहळे। सात जुण परिजन्ते पूरिले नदीकूळे ५२
धेण्डुरा शबदे जाणिले सर्बजन। आसुछन्ति लोक जे हरष करि मन ५३
ऋषिकु देखिबाकु सबुरि मन रसि। जेमन्ते क्षेत्ररे नीळगिरि बासी ५४
से जेन्हे आषाढ़े गुण्डिचा जात्राकरि।चउद ब्रह्माण्ड लोके सेठारे थान्ति घेरि ५५
कळा धळा बेनि मुख चाहिँ निस्तरन्ति। बड़ दाण्ड गोटि पूरि समस्ते देखन्ति ५६
चम्पावती देश राज्य नर नारी गण। सेहि प्राये ऋष्यशृंगंकु घेरिले जाइण ५७
एथु अनन्तरे शुणगो भगवती। चित्रपुर भितरे जे ऋषि बसिछन्ति ५८
कर जोडि आगे उभा बार जे बनिता। पचारिले ऋषि जे गहळ किस कथा ५९
अपसरी बोइले राजन बिजे कले। चतुरंग बळ घेनि एठाकु अइले१०६०

यत्नपूर्वक सजाया गया था। उनके ऊपर कलश तथा सुन्दर पताका दर्पण की झलक से प्रकाशित हो रहे थे।४५-४६ रथ में बत्तीस घोड़े जोते गये। मंत्री का ज्येष्ठ पुत्र सारथी बनकर बैठ गया। राजा लोमपाद ने सुन्दर वेश सुसज्जित किया था। लगता था जैसे स्वर्ग से इन्द्र मृत्युलोक को चला आ रहा हो।४७-४८ सिंहासन पर बैठकर राजा ने सारथी से रथ चलाने के लिये कहा। यह सुनकर सारथी ने शीघ्रतापूर्वक रथ को चलाया। रथ धीरभाव से चल पड़ा।४९-१०५० वह सरिता तट पर जा पहुँचे। दसों दिशायें वाद्य-नाद से गूंज रही थीं। सरिता तट पर लोगों की चहल-पहल मच गयी। सात योजन पर्यन्त नदी का तट भीड़ से भर गया।१०५१-५२ ढिढोरे के शब्द से पता चला कि सभी लोग प्रसन्न मन से आ रहे हैं। सबके मन में ऋषि के दर्शन की लालसा थी जिस प्रकार पुरी क्षेत्र में नीलगिरि निवासी आषाढ़ के महीने में रथ यात्रा करते है। चौदह ब्रह्माण्ड के लोग वहाँ उमड़ पड़ते है।५३-५४-५५ वह लोग निरन्तर श्वेत और श्याममुख (जगन्नाथ बलभद्र के मुख) देखते रहते हैं तथा जगन्नाथ पथ में भरे हुये सारे लोग उनका दर्शन करते हैं।५६ चम्पावती राज्य के स्त्री पुरुषों ने शृंगी ऋषि को उसी प्रकार जाकर घेर लिया। हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् शृंगी ऋषि चित्रशाला प्रकोष्ठ में विराजमान थे। वेश्यायें हाथ जोड़कर उनके समक्ष खड़ी थीं। ऋषि ने उनसे चहल-पहल का कारण पूंछा अप्सराओं ने कहा कि महाराज लोमपाद चतुरंगिनी सेना के सहित यहाँ आ पहुँचे है।५७-५८-५९-१०६० शृंगी

ऋष्यश्रृंग बोइले जे कह राजनकु । आम्भे जिवा कूळकु कि से आसिवे नावकु१०६१
शुणि अपसरी नाव मंगरे उभा हेले । बोइले नृपति आस ऋषि जे आज्ञा देले ६२
रथरु ओल्हाइ नावकु वेगे आस । दर्शन कर आसि जे ब्रह्मचारी पाश ६३
शुणिण राजन जे रथरु ओहलाइला । नाव उपरे राजा जाइँ विजेकला ६४
देखिला ऋष्यश्रृंग जे वसिछि पलंकरे । नमस्कार कले राजा ऋषिक पद्मरे ६५
ऋष्यश्रृंग बोइले शुण हे नृपवर । कुशळ हेला टिकि राज्यइँ तोहर ६६
लोमपाद बोइला तुम्भर प्रसन्न । राज्य रक्षा हेला तुम्भर दर्शने ६७
एवे शुभकर हे मोहर नवर । तेबे कुशळ होइव सवु जे मोहर ६८
ऋष्यश्रृंग बोइले जेबे तुम्भर भल । जिवा तुम्भ पुरकु निश्चय नृपवर ६९
शुणि करि राजन हरष होइला । शते वार पर्य्यन्ते ओळगि होइला१०७०
राजार भकति देखिण ऋष्यश्रृंग । पळंक उपरु जे, उठिलेक वेग१०७१
नावर मंगरे जे जाइँण छिड़ा हेले । सकळ जने जे ऋष्यश्रृंगंकु देखिले ७२
से जेन्हे पर्शुराम रूप विराजइ । धवळ रूप तार शरीरे श्रृंग दुइ ७३
रक्तवर्ण नेत्र जे दिशइ शोभा बन । मुख विकाशइ जेन्हे पूर्णमीर जन्ह ७४
बाहुद्वय ताहार वर्त्तुळ, विस्तार । सिंह कटी प्राय़ कटी दिशइ ताहार ७५

ऋषि ने कहा कि राजा से पूँछो कि हम किनारे पर आयें अथवा वह नाव पर आएँगे। यह सुनकर अप्सराएँ नाव के उपस्थान पर खड़ी होकर राजा से बोलीं कि हे नरपाल ! आइए। ऋषि ने आज्ञा दे दी है। १०६१-६२ आप रथ से उतरकर शीघ्रही नाव पर ब्रह्मचारी के निकट आकर उनके दर्शन कीजिए। यह सुनकर राजा रथ से उतरकर नाव पर जा पहुँचे। ६३-६४ उन्होंने ऋषि को पलंग पर बैठे देखकर उनके चरणों में नमस्कार किया। श्रृंगी ऋषि ने कहा हे नृप श्रेष्ठ ! सुनो। अब आपके राज्य में कुशल मंगल तो हो गया। ६५-६६ लोमपाद ने कहा कि आपकी प्रसन्नता से आपके दर्शन से राज्य की रक्षा हो गई। अब हमारे महल पधारें तब हमारा सब प्रकार से कल्याण होगा। ६७-६८ श्रृंगी ऋषि ने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! यदि इसमें आपकी भलाई है तो हम निश्चय ही आपके भवन में चलेंगे। यह सुनकर राजा हर्षित हो गए। उन्होंने सैकड़ों बार उन्हें प्रणाम किया। ६९-१०७० राजा की भक्ति को देखकर श्रृंगी ऋषि शीघ्र ही पलंग के ऊपर से उठकर नाव के उपस्थान पर जाकर खड़े हो गए। समस्त लोगों ने ऋषि के दर्शन किये। १०७१-७२ लगता था जैसे साक्षात् परशुराम ही विराजमान हों उनका शरीर गौर वर्ण का था और उनके शिर पर दो सींग थे। उनके लाल रंग के नेत्र शोभायमान दिखाई दे रहे थे। पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान उनका मुख प्रकाशित हो रहा था। ७३-७४ उनकी दोनों बाहुएँ वर्तुल एवं विशाल थीं। उनकी कमर सिंह के समान दिखाई दे रही थी।

चरण दुइ गोटि चम्पाकढ़ी प्राय़ गुण । रम्भार बृक्ष प्राय़े जानु जे, अटे जाण ७६
अळंकार शोभा जे, दिशइ ता देहकु । फुल चन्दन बेश जे, मानइ मुनिंकु ७७
देखिण नर नारी होइले तोषमन । के बोइले देवता के बोले ऋषि पुण ७८
के बोइले एरूपे पुरुष न देखि । के बोलइ ए पुरुष सबु दिने सुखी ७९
एमन्त बोलि लोके करन्ति विचार । नावरु ओल्हाइले विभाण्डक बाळ१०८०
चउदोळ उपरे जाइण बिजे कले । देखिण नारीमाने हुळहुळि देले१०८१
मंगळ नृत्यकले नृत्यकारी माने । बिचारि बेद अध्यय़न कलेक बिप्र तेणे ८२
राजन ओल्हाइण बसिले रथपरे । आलट चामर जे, पड़इ आगरे ८३
पंखा आलट जे पकान्ति सर्बजन । घोर शबद सेठारे होइलाक जाण ८४
आगरे बाजन्ति जे पछरे श्वेत छत्रि टेकि। चउदोळ उपरे ऋषि चालि जान्ति ८५
रथ चढ़ि उपरे बिजय़े नृपति । पात्र मन्त्री सेथि पछे बिजेकरि जान्ति ८६
हाती, रथी, पादान्ति, सकळे चळि जान्ति ।
नृत्यकारी माने आगरे नृत्य जे, करन्ति ८७
कटक भितरे प्रबेश हेले जाइँ । ऋषिकु देखि जुबतीए मोह होइँ ८८
धीरे धीरे दाण्डरे चळन्ति ऋषि पुण । राजसिंह द्वारे प्रबेश बेगेण ८९

उनके दोनों चरण चम्पाकली के समान गुण वाले तथा उनकी जंघाएँ उल्टे केले के वृक्ष के समान थीं। ७५-७६ अलंकारों से उनका शरीर सुशोभित दिखाई दे रहा था। उनका पुष्प चन्दन से सुसज्जित वेश मान बढ़ा रहा था। उन्हें देखकर नर नारियों के मन सन्तुष्ट हो गए। कोई उन्हें देवता कोई ऋषि कह रहा था। ७७-७८ कोई कहता था कि हमने ऐसा पुरुष तो कभी देखा ही नहीं था। कोई कहने लगा कि यह सर्वदा सुखी रहते हैं। लोग इस प्रकार का विचार कर रहे थे। तभी विभाण्डक नन्दन नाव से उतरे। ७९-१०८० वह पालकी के ऊपर जाकर विराजमान हो गये। यह देखकर नारियों ने मांगलिक शब्द किया नृत्यकारों ने मांगलिक नृत्य किया। तब ब्राह्मणों ने विचारपूर्वक वेद-पाठ किया। १०८१-८२ राजा उतरकर रथ पर बैठ गये। आगे-आगे व्यजन तथा चामर चालन हो रहा था। सभी लोग पंखे और चवँर डुला रहे थे। वहाँ पर घनघोर शब्द हो रहा था। ८३-८४ आगे बाजे बजते जा रहे थे और पीछे श्वेत छत्र तना था। ऋषि पालकी के ऊपर बैठे चले जा रहे थे। रथ के ऊपर चढ़कर राजा और उनके पीछे सभासद तथा मंत्री चले जा रहे थे। ८५-८६ हाथी, रथी, पैदल सैनिक सभी चले जा रहे थे। आगे-आगे नृत्यकारी लोग नाच रहे थे। सब लोग दुर्ग के भीतर जाकर प्रविष्ट हुये। ऋषि को देखकर स्त्रियाँ मोहित हो गयीं। ८७-८८ राजमार्ग पर धीरे-धीरे चलते हुये ऋषि राजमहल के सिंह-द्वार पर शीघ्र ही पहुँच गये। ऋषि पालकी से उतरकर भीतर गये। सामंत तथा सभासद ऋषि के साथ चल रहे

चउदोळरु ओल्हाइ भितरकु गले। सामन्त पात्र ऋषि जे संगरे चळिले१०९०
रथरु ओल्हाइ राजा चळि गले पुण। वाहार जगतीरे बिजये ऋषि जाण१०९१
पात्र मंत्री सामन्त राजन तहिँ मिळि। निर्मळ पाणिरे बास पाणि बेगे भरि ९२
मुख पखाळिण ऋषि चरण धोइले। झिन वसन नेइण चरण पोछि देले ९३
सुबर्ण सिहासन उपरे नेइण बसाइले। छत्र टेकाइण आगरे चामर ड़ाळिले ९४
कर जोड़ि समस्ते आगरे हेले उभा। वेढ़िले जहुँ ऋषिकु ऋषि पाइले शोभा ९५
बार बनिता ऋषिक आगरे अछन्ति। ऋष्यश्रृंग देखिण राजांकु कहन्ति ९६
बोइले राजन जे वेगे होइ चळ। पात्र मन्त्री संगरे निअ हे महीपाळ ९७
चतुरंग बळकु मेलाणि जाइँ दिअ। जे जाहार स्थानकु जाआन्तु तुम्भ प्रिय ९८
हटारि बजारि, नाटकारी नृत्यकारी। नर नारी देखन्ति लोक आदि करि ९९
समस्तंकु मेलाणि दिअ हे राजन। गहळ भाजु एबे जाआन्तु जेझा स्थान११००
सामन्त बिप्रबर मोहर पाशे थान्तु। बार बनिताए जे पुरकु चळि जान्तु११०१
शुणिण राजन जे बेगे चळि गले। पात्र मन्त्री दुइ जण पछरे गोड़इले २
बार बनिताए राजार पछे गले पुण। जाइण सिंह द्वारे मिळिले राजन ३
चतुरंग बळकु बोइले जाअ बेगे। ऋषि आज्ञा देले होइण सद्‌भावे ४
शुणिण चतुरंग बळ सर्बे चळिगले। जे जाहार नवरे प्रबेश जाइँ हेले ५

थे। ८९-१०९० रथ से उतरकर राजा चले गये ऋषि वाहर अट्टालिका पर विराजमान हो गये। सभासद मंत्री सामंत तथा राजा ने वहाँ मिलकर शीघ्र ही स्वच्छ जल में सुगन्धित जल मिलाकर भर दिया। १०९१-९२ मुख धोकर ऋषि के चरण धोए और झीने वस्त्र लेकर चरणों को पोंछ दिया। ऋषि को लेकर सुवर्ण के सिहासन पर वैठा दिया। छत्र लगाने के उपरांत उनके आगे चवँर डुलाने लगे। ९३-९४ सभी लोग हाथ जोड़कर उनके समक्ष खड़े हो गये। उनके द्वारा घिर जाने से ऋषि शोभा प्राप्त करने लगे। वेश्या स्त्रियाँ ऋषि के समक्ष खड़ी थीं। श्रृंगी ऋषि ने देखकर राजा से कहा। ९५-९६ हे राजन्! शीघ्र ही चलो। हे महीपाल! अपने साथ सभासद तथा मंत्री को ले लो। तुम जाकर चतुरंगिनी सेना को विदा करो। आपके प्रियजन अपने-अपने स्थान को चले जायें। ९७-९८ हाट-बाट के बटोही, नृत्यकार नृत्यांगनाएँ तथा दर्शक नर-नारियाँ आदि सभी को विदा कर दो। भीड़ हट जाये और सब अपने-अपने स्थान को चले जायें। ९९-११०० सामंत तथा श्रेष्ठ ब्राह्मण हमारे निकट रहें और यह वेश्यायें अपने घर चली जायें। यह सुनकर राजा शीघ्र ही चले गये। सभासद और मंत्री दोनों लोग उनके पीछे-पीछे चले गये। ११०१-२ राजा के पीछे वेश्यायें भी चली गयीं और सिंहद्वार पर राजा जा पहुँचे उन्होंने चतुरंगिनी सेना से कहा कि ऋषि ने सद्‌भावना के साथ आप लोगों को शीघ्र ही चले जाने की आज्ञा दी है। ३-४ यह सुनकर चतुरंगिनी सेना चली

हस्ती, रथी, सारेणि, बेगे चळि गले। जे जाहा स्थानरे नेइ ताहांकु रखिले ६
नृत्यकारी नाटकारी गले जेझा घर। भाजिला गहळ जे, राजार नबर ७
समस्ते जिबारु राजा हरष होइले। बार बनितांकु जे घेनिण पचारिले ८
बोइले जरता काममोहिनी काहिँ गले। तुम्भे त अइले से किम्पाइ नइले ९
शुणिबा हेउ देव जे आम्भर बचन। चापरे गलु आम्भे अठति रिश जुण१११०
छत्रिश जुण अइलु खसिले दुइ जण। राजन बोइले से केणिकि गले पुण१११
नटकारी बोइले कोड़िए दिने गलु। एकोइश दिने ऋषिकु भेटिलु १२
काम मोहिनी जरता मोहिनी ऋषि मन।मोहिनी लगाइ ऋषिकु बसाइ नावेण १३
सुरति लीळा ऋषिर संगते करन्ते। जाणिले ब्रह्म ऋषि से कथा तुरिते १४
पाञ्च सात जुण जे आसिण थिलु जाण। से दुइ कन्याकु ऋषि शाप देले जाण १५
बोइले चोरी रति जे कराइल मोते। कउशिक बनरे रह गो तुरिते १६
बेनि नारी बोइले आम्भे एथुँ केमन्ते जिबु। बनस्त भितरे केते काळ जे रहिबु १७
ऋषि बोइले तुम्भे एके बिश दिन। पितार भुवनरे रहिब तुम्भे पुण १८
सेठारे पुत्रकु छाडि स्वर्गपुर जिब।अचिन्ता पुररे जाइ निश्चिन्ते बसिब १९
जरता बोइला जेबे अइलु तोर काज्यें।से कथा निस्फळ जे, हेउण अछि एबे११२०

गयी और सभी लोग अपने-अपने घरों में जा पहुँचे। हाथी, रथी बहल शीघ्रतापूर्वक चले गये। उन्हें अपने-अपने स्थानों पर ले जाकर रख दिया गया। ५-६ नाचने वाले तथा नट अपने घरों को चले गये। राजा के महल से चहल-पहल समाप्त हो गई। सबके चले जाने पर राजा प्रसन्न हो गये। उन्होंने वेश्याओं को साथ लेकर उनसे पूँछा। ७-८ उन्होंने कहा कि जरता और काममोहिनी कहाँ गयीं। आप लोग आ गयीं परन्तु वह लोग क्यों नहीं आयीं। उन्होंने कहा हे देव ! हमारी बात सुनिये। नाव के बेड़े पर हम लोग अड़तीस योजन गये। ९-१११० छत्तीस योजन आने पर दो लोग उतर गये। राजा ने कहा कि वह कहाँ गये। नर्तकियों ने कहा कि बीस दिन तक चलकर इक्कीसवें दिन ऋषि से भेंट हुयी। ११११-१२ काममोहिनी तथा जरता ने ऋषि का मनमोहित करके मोहिनी लगाकर उन्हें नाव पर बैठाया और ऋषि के साथ रति-क्रीड़ा करने पर ब्रह्मर्षि शीघ्र ही वह बात समझ गये। १३-१४ पाँच सात योजन आ जाने पर ऋषि ने उन दोनों कन्याओं को शाप दिया। उन्होंने कहा कि तुमने चोरी से मुझसे रति-क्रीड़ा करायी है। तुम लोग शीघ्र ही जाकर कौशिक वन में रहो। १५-१६ दोनों नारियों ने कहा कि हम लोग यहाँ से किस प्रकार से जायेंगी और वन में कितने समय तक रहेंगी। ऋषि ने कहा कि तुम लोग इक्कीस दिन तक पिता के घर में रहोगी और उसके पश्चात् वहाँ पुत्र को छोड़कर स्वर्गलोक चली जाना। चिन्ताहीन लोक में निश्चिन्त होकर वास करना। १७-१८-१९ जरता ने कहा हम आपके कार्य से आयी थीं। वह तो

ब्रह्मचारी बोइले किम्पाइ आसि थिल । दुइ कन्या बोइले शुणिमा हेउ देव११२१
चम्पावती राज्य जे अपाळक पुण । तुम्भे कहिले सेठारे जळ वर्षे जाण २२
से राजार पुत्र नाहिँ पुत्र दान देव । तेबे से राज्य गोटि निश्चळे रहिब २३
ऋष्य श्रृंग बोइले आम्भे जाउछु से राज्यकु।जळ बरषाइ पुत्र देबु से राजांकु २४
दुइ कन्या बोइले आम्भे केणे जिबु ।स्तिरी जन आम्भे सिना भय जे पाइबु २५
विचारि ऋषि बोइले एहि नाव परे जाअ। जेउँ ठारे आम्भे नाव चढिलु प्रिय २६
सेठारे छाडि नाव आसु मठ पाश । शुणिण दुइ नारी होइले हरष २७
से ठारे केरुआळ छाडिण अइला । सेहि रजनीरे आम्भ पाशरे मिळिला २८
सेठारु ऋषिकु घेनि आम्भे अइलु पुण ।बाइशि दिनरे आसि मिळिलु ए स्थान २९
शुणिण लोमपाद होइले हरष ।चार भेदि नेले तांक माता घेनि आस११३०
शुणि करि दूत बेगे चळि गला पुण । दुआरींक हस्तरे वार्त्ता देले जाण११३१
दुइ अपसरींक दुआरे दूते हेलेक प्रवेश ।बोइले राजन तुम्भंकु लोड़ुछन्ति आस ३२
वार्त्ता कहि दूत बेगे से अइले । राजार आगरे आसि प्रवेश होइले ३३
कर जोडि राजांकु कले दरशन । बोइले अपक्षरी आसिबे एहि क्षण ३४
तत् क्षणे अपक्षरी मिळे राजा पाश । राजांकु देखिण से होइले हरष ३५

निष्फल ही हुआ जा रहा है। ब्रह्मचारी बोले कि किस कारण से आयी थीं। दोनों कन्याओं ने कहा हे देव ! सुनिये। चम्पावती राज्य दुर्भिक्षग्रस्त है। आपके कहने पर वहाँ जल की वृष्टि होगी। ११२०-११२१-२२ उस राजा के पुत्र नहीं है। आप उन्हें पुत्र दान देंगे। तब वह राज्य शांति से रहेगा। श्रृंगी ऋषि बोले कि मैं उस राज्य को जा रहा हूँ। और जल बरसाकर उस राजा को पुत्र दान दूँगा। २३-२४ दोनों कन्याओं ने कहा कि हम कहाँ जायेंगी हम स्त्री हैं। हमें भय लगेगा। ऋषि ने विचार करके कहा कि इस नाव से चली जाओ। जहाँ से हे प्रिय ! हम लोग नाव पर चढ़े थे। २५-२६ उन्होंने कहा कि मठ के पास उस स्थान पर तुम्हें नाव छोड़ आयेगी। यह सुनकर दोनों नारियाँ प्रसन्न हो गयी। मल्लाह उन्हें वहाँ छोड़ आया और उसी रात हम लोगों से आ मिला। २७-२८ वहाँ से हम लोग ऋषि को लेकर बाइस दिन में इस स्थान पर आ पहुँचे। यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गये। उन्होंने दूत को उनकी माता को साथ ले आने के लिये भेज दिया। २९-११३० यह सुनकर दूत शीघ्रतापूर्वक चला गया और उसने द्वारपाल के हाथों समाचार भिजवा दिया। दूत लोग दोनों अप्सराओं के द्वार पर पहुँचकर बोले कि चलिये आपको राजा खोज रहे हैं। ११३१-३२ समाचार देकर दूत शीघ्र ही राजा के समक्ष आ पहुँचे। उन्होंने राजा के दर्शन करके हाथ जोड़ते हुये कहा कि अप्सरायें इसी समय आ रही हैं। ३३-३४ उसी समय अप्सरायें राजा के पास आ पहुँचीं और राजा को देखकर प्रसन्न हो गई। राजा ने कहा कि तुम लोग

राजन बोइले तुम्भे सावधाने शुण ३६
तुम्भर दुहिता जे गले ऋषि आणि ।ऋषिकु शृंगार देले तुम्भ दुहिता पुणि ३७
ताहा जाणि ऋषि जे ताहांकु शाप देले। मर्त्त्यपुर तेजि स्वर्गकु सेहु गले ३८
शुणि दुइ अपक्षरी हेले शोक भर । शुणिण राजा धइर्ज्य कले नारीवर ३९
बोइले किछि चिन्ता नकर मनर । मुहिं थिले सुख नाहिं कि तुम्भर११४०
एते बोलि राजन अणाइले धन । दुइ सहस्र सुनिआँ जे देले दुइ जण११४१
धन पाइ दुइ नारी निजस्थान गले । आपणा मन्दिरे अपक्षरीए रहिले ४२
एथु अनन्तरे राजा डकाए पुण दूत । बोइले अजोध्याकु जाअरे तुरित ४३
शत जुण बेगे चळि जाअ । दशरथ नृपति आगरे जाइँ कह ४४
बोळिब बिभाण्डक ऋष्य शृंग सुत । चम्पावती राज्यकु अइले एबे नाथ ४५
आसिबारु मइत्र आम्भंकु भेदि देले । बोइले मइत्रंकु जाइ कह भले ४६
पात्र मन्त्री सामन्त बशिष्ठ संगे घेनि । चतुरंग बळ राणी हंसकु घेनि पुणि ४७
आसन्तु नृपति जे हरष मनरे ।साआन्ताकु बिभा हेबे ए ऋष्य शृंगरे ४८
शुणिण दूत माने बेगे चळि गले । दूत पेक्षि राजन जे सेठारु चळिले ४९
भितर पुरे जाइण हेले प्रबेशत । सुबर्णपुर गोटा कले उज्ज्वळित११५०
कनक मण्डपरे रत्न सिंहासनरे देवता।बसाइ उज्वळ कले लोमपाद सामरथा११५१

सावधान होकर सुनो। ३५-३६ तुम्हारी पुत्रियाँ ऋषि को लाने गयी थीं। उन्होंने ऋषि को रति-दान दिया। यह जानकर ऋषि ने उन्हें शाप दिया। वह मृत्युलोक छोड़कर स्वर्ग को चली गयीं। ३७-३८ यह सुनकर दोनों अप्सरायें शोकाकुल हो गयीं। राजा ने उन श्रेष्ठ स्त्रियों को धीरज बँधाया। उन्होंने कहा कि तुम लोग अपने मन में कुछ भी चिन्ता न करो। मेरे रहते हुये क्या तुम सुखी नहीं हो। ३९-११४० इतना कहकर राजा ने धन मँगाकर दोनों को दो हजार स्वर्ण मुद्रायें दी। धन प्राप्त करके दोनों नारियाँ अपने स्थान को जाकर अपने घरों में रहने लगी। ११४१-४२ इसके पश्चात् राजा ने फिर दूत को बुलवाकर शीघ्र ही अयोध्या जाने के लिये कहा। वह बोले कि शीघ्र ही सौ योजन जाकर राजा दशरथ के समक्ष कहना कि हे नाथ ! विभाडण्क के पुत्र शृंगी ऋषि चम्पावती राज्य में आ गये है। ४३-४४-४५ आने पर मित्र ने हमें भेजकर कहा है कि हमारे मित्र को जाकर सूचना दे दो कि वह सभासद, मंत्री, सामंत, वशिष्ठ, चतुरंगिनी सेना तथा रानियों को लेकर प्रसन्न-चित्त होकर आ जायें। शृंगी ऋषि के साथ शांता का विवाह करेंगे। ४६-४७-४८ दूत लोग यह सुनकर शीघ्रता से चले गये। दूतों को विदा करके राजा वहाँ से उठकर अंतःपुर में जा पहुँचे। उन्होंने सम्पूर्ण महल को स्वच्छ करके सजवा दिया। ४९-११५० स्वर्ण मण्डप में रत्न सिंहासन पर देवता को विठाकर समर्थ लोमपाद ने उन्हें सुसज्जित कर दिया। उनके साथ लक्ष्मी नारायण शिव

लक्ष्मी नारायण जे शिव दुर्गा पुण । शालग्राम शिळा जे रखिण संगे पुण ५२
बिप्रगण डकाइण तांकु सेवा करि । सर्बांग अळंकार तांकु से बेश करि ५३
चारु गन्ध चन्दन अगुरु कस्तुरी । से मन्दिर भितरे लेपिले जत्न करि ५४
से देवतांक अंगरे बोलिले चन्दन पुण । गन्ध प्रकटिला जे अमोद वास पुण ५५
अमळाण शाढ़ी जे देबंकु पिन्धाइले । पञ्चवर्ण फुलरे ताहांकु वेश कले ५६
सुबर्ण दुइ झरिरे गंगा जळ भरि । सिंहासन उपरे रखाए जत्न करि ५७
आळत्ति धूप काठि पूजाइ जे विधि । सकळ सम्पादिनेइ सेठारे नृप निधि ५८
देव आळ जत्न करि सेठारु चळि गले । ऋष्य शृंगंक निमन्ते जे पुरेक रचिले ५९
उपरे सुवर्ण चाळ कान्थ रत्न मय़े । भितरे चारु गन्ध लिपन्ते रज हुए११६०
गजदन्त पलंक रत्नरे दोळि पुण । अष्ट रत्न सिंहासन कले तत्क्षणे११६१
दण्ड कमण्डळ जे ऋषिकर लोढ़ा जेले । से घरे समस्ते जे रखिले त्वरिते ६२
बाहारे जगतीकु आसिण सज कले । रत्न सिंहासन जे सेथिरे रखि भले ६३
गन्ध चन्दनरे सुबास सेहि स्थान । से माने सज करि आसिले राजन ६४
ऋष्य शृंग आगरे जाइण मिळिले । कर जोड़ि राजन दर्शन जाइँ कले ६५
ऋष्य शृंग बोइले शुण हे महीपाळ । तुम्भर पुरोहितंकु ड़काअ सत्वर ६६

और दुर्गा तथा शालिग्राम शिला को एक साथ रख दिया। ११५१-५२ उन्होंने ब्राह्मणों को बुलाकर उनकी सेवा सुश्रुषा की और उनके समस्त अंगों को अलंकारों से सुसज्जित कर दिया। उन्होंने महल के भीतर यत्नपूर्वक चोवा तथा सुगन्ध वाले चन्दन अगुर और कस्तूरी लिपवा दी। ५३-५४ देवता के अंगों में चन्दन लगा दिया। उनसे प्रसन्नता प्रदान करने वाली सुगन्ध निकलने लगी। उन्होंने देवता को स्वच्छ वस्त्र पहनाकर पाँच रंग के फूलों से उनका शृंगार किया। ५५-५६ उन्होंने यत्नपूर्वक सिंहासन पर दो स्वर्ण कलशों में गंगाजल भरकर रखवा दिया। श्रेष्ठ राजा ने वहाँ पर धूप दीप से विधि-विधानपूर्वक सम्पूर्ण कर्म कांड सहित उनकी पूजा की। ५७-५८ देवालय का प्रवन्ध करके वह वहाँ से चले गये। उन्होंने शृंगी ऋषि के लिये एक भवन वनवाया जिसकी दीवारे रत्नजड़ित थीं और ऊपर सुवर्ण-छप्पर था और भीतर सुगन्धित पदार्थों से लिपवा देने से सुगन्धि जम गई। ५९-११६० उन्होंने उसी समय हाथी दाँत का पलग रत्नों से जड़ा हुआ झूला तथा आठ रत्नों वाला सिंहासन वनवा दिया। दण्ड कमण्डल तथा ऋषि के निमित्त समस्त आवश्यक सामग्रियों को शीघ्रतापूर्वक उस घर में रखवा दिया। ११६१-६२ बाहर आकर उन्होंने जगती को सजाकर उस पर सुन्दर रत्नमय सिंहासन रखवा दिया। वह स्थान गन्ध, चन्दन से सुवासित हो रहा था। उन्हें सजाकर राजा आ गये। ६३-६४ वह शृंगी ऋषि के समक्ष जा पहुँचे और उन्होंने जाकर हाथ जोड़कर उनके दर्शन किये। शृंगी ऋषि ने कहा हे महीपाल ! सुनो। आप

शुणिण राजन जे पात्र मन्त्रींकु कहि ।शाळेक ऋषिकु मोर घेनि आस जाइँ ६७
शुणिण पात्र मन्त्री बेगे चळि गले । रक्त बर्ण गिरिर तळरे मिळिले ६८
देखिले शाळेक मुनि करन्ति तर्पण । सन्ध्या सारिण ऋषि शौच हेले पुण ६९
पूजा बिधि सारिण अर्घ्य पुणि देले । सकळ देवतांकु नमस्कार कले११७०
कि कार्ज्ये मोर पुरे आज तुम्भे आस । राजांकु आम्भे आज होइबु लोढ़ा किस११७१
आजत जळ बृष्टि बहुत इन्द्र कला । निरपेक्ष पुरुष ए पुरु आज गला ७२
× × × × । से पुरुष आसि करि प्रबेश होइला ७३
राजार दशा एबे लेउटिला पुण । राज्यहि सुस्थ हेब सन्तान हेब जाण ७४
ऋष्य शृंग अइले कि ए राज्यकु पुण । जळ बृष्टि हेबारु हेउछि प्रते जाण ७५
पात्र मन्त्री बोइले शुणिबा ब्रह्मचारी । चार भेदि देले जे राजन आम्भरि ७६
बार अप्सरी जे नावे चळि गले । बिभाण्डेक कुमरकु जाइँण आणिले ७७
से ऋषि आसिबारु बरषिला जळ । ताहांक सकाशरु ए राज्ये उज्वळ ७८
से ऋषिकु राजा जे घेनिण आसि पुण । राजार नवरे अछन्ति ऋषि जाण ७९
ऋष्य शृंग राजांकु चाहिण बोइले । तुम्भर कुळ ऋषि आण जा सत्वरे११८०
शुणिण राजन जे आम्भंकु पेक्षि देले । आम्भर मुनि वरंकु आण जे बोइले११८१

शीघ्र ही अपने पुरोहित को बुलवा लें । ६५-६६ यह सुनकर राजा ने सभासद और मंत्री से अपने शालक ऋषि को साथ में ले आने के लिये कहा । यह सुनकर सभासद और मंत्री शीघ्र ही चले गये और रक्तवर्ण पर्वत की घाटी में जा पहुँचे । ६७-६८ उन्होंने शालक मुनि को तर्पण करते हुये देखा । सन्ध्या समाप्त करके ऋषि पवित्र हुये फिर उन्होंने पूजा विधि समाप्त करके अर्घ्य दिया और समस्त देवताओं को नमस्कार किया । ६९-११७० उन्होंने कहा कि आप लोग आज हमारे घर पर किस कार्य से पधारे हैं । राजा आज हमें किसलिये खोज रहे हैं । आज तो इन्द्र ने प्रचुर जल की वर्षा की है । आज इस नगर में एक उदासीन, स्वतन्त्र पुरुष का प्रवेश हुआ है । ११७१-७२-७३ राजा की दशा अब पुनः फिर गई । उनका राज्य स्थिर होगा तथा उन्हें संतान की प्राप्ति होगी । क्या इस राज्य में शृंगी ऋषि आ गये । जलवृष्टि होने से ही इसका पता चल रहा है । ७४-७५ सभासद तथा मंत्री ने कहा हे ब्रह्मचारी ! सुनिये । हमारे राजा ने दूतों को भेजा । वेश्यायें नाव से जाकर विभाण्डक के पुत्र को ले आयीं । उन ऋषि के आने से जल की वृष्टि हुयी है और उनके ही कारण यह राज्य उज्जवल हो गया है । ७६-७७-७८ राजा उन ऋषि को ले आये हैं । वह ऋषि राजमहल में हैं । शृंगी ऋषि ने राजा को देखकर कहा कि आप शीघ्र ही अपने कुल पुरोहित को ले आइये । ७९-११८० यह सुनकर राजा ने हमें मुनिश्रेष्ठ आपको लाने के लिये कहा है । हे ब्रह्मचारी ! अब आप शीघ्र ही प्रस्थान कीजिये । यह सुनकर शालक ऋषि ने अपने मन को स्थिर

एबे तुम्भे ब्रह्मचारी विजय्रे बेग कर । शुणि शाळक ऋषि मनकु कले स्थिर ८२
बोइले ऋष्यशृंगर जश एबे हेला । निरञ्जन पुरुष विभाण्डकर वळा ८३
ऋषिकुळे ऋष्यशृंग राजा कुळे धृव । नर कुळे गोलख असुर कुळे बळिसाव ८४
अल्प दिने एहांकु जे साहा वासुदेव । आम्भ ठारु जात होइ आम्भंकु असम्भव ८५
जाहार बचन रे पाळइ देव इन्द्र । ब्रह्मा जाहार बचने करन्ति शुभाशुभ ८६
वासुदेव जाहार वेदकु माने पुण । धन्य तांकु बोइले देवता गणे जाण ८७
देब कार्ज्ये पर्शुराम फला जे समरे । आपे निरञ्जन शरीरे विजे कले ८८
क्रोधरे देवतांकर रिपु भांगि पुण । तिनि पुर दुष्टंकु कले जे निवारण ८९
एबे बासुदेव जे ऋषि ऋंगरे माया । वार वरष तपरे हेले ब्रह्म देहा११९०
काम धेनु जाणिण देलेक वेदवर । से ऋषि एबे अइले चम्पावतीपुर११९१
× × × × । राजार मंगळ जे राज्यर शुभ कथा ९२
राजार सन्तान से कराइबे सेहि । दशरथ कुमारीकु विभा से होइ वइँ ९३
दशरथ कोळे पुणि श्रीहरि हेले जात । तेवे से असुर जे होइबे निपात ९४
कुमर दशरथकु देले पुत्र दान । पुराणरे तार कथा रहिव जे जाण ९५
एते बोलि मुनिबर तप स्थानरु उठि । चउदोळ उपरे विजय्रे कले धाति ९६
पात्र मन्त्री पछरे जाने चढि गले । लोमपाद सिंह द्वारे प्रवेश जाइँ हेले ९७

करते हुये कहा । ११८१-८२ अब शृंगी ऋषि की महिमा हुयी है । विभाण्डक-नन्दन मायारहित पुरुष है । ऋषि कुल के शृंगी ऋषि राजा कुल के प्रभु मनुष्य कुल के लिये रहस्य तथा राक्षस कुल के लिये बलवंत हैं । थोड़े ही दिनों में भगवान उनके सहायक बन जायेंगे । हमसे ही उत्पन्न होकर हमारे लिये ही सम्भव नहीं होंगे । ८३-८४-८५ जिसके वचनों का पालन देवराज इन्द्र भी करते हैं । ब्रह्मा जिनके कहने से शुभ तथा अशुभ करते है । भगवान भी जिनके ज्ञान को मानते हैं । देवतागण जिन्हें धन्य-धन्य कहा करते है । ८६-८७ परशुराम ने देवताओं के कार्य के लिये युद्ध किया और स्वयं नारायण मायारहित शरीर में विराजमान हुये । क्रोध से उन्होंने देवताओं के शत्रुओं को तोड़ डाला । उन्होंने तीनों लोकों के दुष्टों को समाप्त कर दिया इस समय नारायण ने शृंगी ऋषि में माया का संचार करके बारह वर्ष की तपस्या में उसे शरीरधारी ब्रह्म बना दिया । ८८-८९-११९० ब्रह्माजी ने इन्हें समझकर कामधेनु प्रदान की । वही ऋषि इस समय चम्पावती नगर में पधारे हैं । जो राजा तथा राज्य की शुभ तथा मांगलिक बात है । ११९१-९२ वह राजा को पुत्र प्रदान करेंगे और दशरथ की पुत्री से विवाह करेगे । दशरथ की गोद में नारायण के उत्पन्न होने से राक्षसों का विनाश होगा । ९३-९४ दशरथ को पुत्रदान देने से यह बात पुराणो में प्रसिद्ध हो जायेगी । इतना कहकर मुनिश्रेष्ठ तपोभूमि से उठे और शीघ्र ही पालकी के ऊपर जाकर विराजमान हो गये । ९५-९६ सभासद मंत्री पीछे से

जान उपरु ओल्हाइण ऋषि भितरकु गले।
ऋष्य श्रृंग थिबा स्थाने प्रवेश जाइँ हेले ९८
देखिण बिभाण्डक कुमर बेगे उठि। शाळक ऋषि चरणे बिनति भावे खटि ९९
शाळके बोइले मंगळ होइब तोर। ए राज्य रक्षा कलु आसिरे कुमर १२००
लोमपाद राजाकु सन्तान एबे दिअ। काळ जुगकु कथा रुहाअरे पुअ १२०१
ऋष्यश्रृंग बोइले पिता तुम्भर सन्तोषरे। शतेक पुत्र हेब ए राजा कोळरे २
शुणिण समस्ते जे हरष मन हेले। बेनि ऋषि चरणे समस्ते नमिले ३
शतेबार पर्ज्यन्ते लोमपाद जे पुण। बेनि ऋषि चरणे कले मान्यधर्म ४
शाळेक ऋषि बोइले राजन एबे शुण। तोर राज्ये सदा बर्त्त दिअ सर्बस्थान ५
दु:खी दरिद्रंकु तुहि दिअ अन्न बस्त्र। ब्राह्मण मानंकु भोजन कर तोष ६
बन्धुगण राजागण अणाअ एहि स्थान। उत्सव कराअ राज्यरे तोर पुण ७
राजा मानंक पाइँ नबर बेगे कर। पात्र मन्त्री रहिबाकु उआस घर तोळ ८
मुनिमाने रहिबाकु कर उचस्थान। जागर पदार्थ एबे भिआअ बहन ९
तेबे तोर पुत्र होइबे पुणि जात। तो जागे आचार्ज्य हेबे बिभाण्डक सुत १२१०
शुणिण लोमपाद राजा सन्तोष होइले। पात्र मन्त्रींकु चाहिँण बेगे आज्ञा देले १२११

रथ पर चढ़ गये और लोमपाद के सिंहद्वार पर जाकर प्रविष्ट हुये। यान से उतरकर ऋषि भीतर गये और श्रृंगी ऋषि के रहने के स्थान पर जाकर प्रविष्ट हुये। ९७-९८ उन्हें देखकर विभाण्डकनन्दन ने शीघ्रता से उठकर शालक ऋषि के चरणों में विनयपूर्वक नमन किया। शालक ने कहा कि तुम्हारा कल्याण हो। अरे पुत्र ! तुमने आकर इस राज्य की रक्षा की। ९९-१२०० अब राजा लोमपाद को सन्तान प्रदान करो और हे पुत्र ! यह बात युग-युग के लिये स्थापित कर दो। श्रृंगी ऋषि ने कहा हे पिता ! आपकी सन्तुष्टि के लिये इस राजा की गोद में सौ पुत्र होंगे। १२०१-२ यह सुनकर सभी लोगों का मन प्रसन्न हो गया। सबने दोनों ऋषियों के चरणों में प्रणाम किया। लोमपाद ने सैकड़ों बार सम्मानपूर्वक दोनों ऋषियों के चरणों में प्रणाम किया। ३-४ ऋषि शालक ने कहा हे राजन् ! अब सुनो। तुम अपने राज्य के सभी स्थानों पर सदावर्त बँटवा दो। दु:खी दरिद्रों को तुम अन्न वस्त्र दो और ब्राह्मणों को भोजन कराकर सन्तुष्ट कर दो। ५-६ बन्धु-बान्धवों तथा राजाओं को इस स्थान पर बुलाकर अपने राज्य में उत्सव का आयोजन करो। राजाओं के लिये शीघ्र ही घर बनवा दो। सभासद तथा मंत्री के लिये आवासगृह तैयार कराओ। ७-८ मुनियों के रहने के लिये ऊँचे स्थान निर्मित करो और शीघ्र ही यज्ञ के पदार्थ एकत्रित करो। तब तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होंगे। विभाण्डक के पुत्र तुम्हारी यज्ञ के आचार्य होंगे। ९-१२१० यह सुनकर राजा लोमपाद संतुष्ट हो गये। उन्होंने सभासद तथा मंत्री की ओर देखकर आज्ञा देते हुये कहा कि

बोइले जेते कथा ऋषि आज्ञा कले। से कथाकु वहन कर जाइण भले १२
शुणिण पात्र मन्त्री वेगे चळि गले। चम्पावती राज्यरे सकळ स्थानरे १३
सदाव्रत देले से बसाइ परिजन। दाण्डु हाट जे सकळ स्थाने पुण १४
दुःखी दरिद्र मानंकु देले अन्न बस्त्र। धेण्डुरा फेराइ राज्ये उत्सव हरष १५
सबु द्वारे पूर्ण कुम्भ रम्भा वृक्ष पुण। नारिकेळ चूत पत्र लम्बइ माळ माळ १६
चित्र बिचित्र सबुरि द्वारे कराइले। चित्रर पितुळि सबु द्वारे लिहिले १७
अलगा स्थानरे मिळिले जाइ पुण। रंग वर्ण गिरि तळे मिळिले बहन १८
मधुवन तोटाकु निर्मळ कराइले। सकळ ऋषि सेठारे रहिबे जत्नरे १९
सेठारु वड दाण्डरे हेलेक प्रबेश। बिश्वकर्माकु डाकि कहिले सन्देश१२२०
उआस नवर जे अनेक तोळाइले। चारु गन्ध देइ बिचित्र कराइले१२२१
राजार आगरे जाइँ मिळिले बहन। ओळग मेलाइण कहिले सबु पुण २२
शुणिण राजन जे हरष होइले। मुनिकर छामुरे जाइ जणाइले २३
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। राजांकु चाहिँण ऋष्यश्रृंग जे बोलन्ति २४
जेउँ बार बनिता जे अणाइले मोते। से बार बनिता केणे गले जे तुरिते २५
राजन बोइले तुम्भर प्रसन्ने। तांकर नवरकु गले जे तत्क्षणे २६

ऋषि ने जो कुछ आज्ञा दी है। उसे शीघ्रतापूर्वक जाकर पूरा करो। १२११-१२ यह सुनकर सभासद और मंत्री शीघ्र ही चले गये। उन्होंने चम्पावती राज्य के सभी स्थानों में सेवकों को बैठाकर सदावर्त बंटवाया। हाट-बाट तथा सभी स्थानों पर दुःखी दरिद्रों को अन्न वस्त्र प्रदान किया। ढिंढोरा पिटवाकर राज्य में हर्षोल्लासपूर्ण उत्सव करवाये। १३-१४-१५ समस्त द्वारों पर जलपूरित कलश तथा केले के वृक्ष, नारियल अथा आम्रपल्लवों के वन्दनवार समूह के समूह में लगवा दिये। समस्त द्वारों पर विचित्र चित्रकारी कर दी गई। सभी द्वारों पर चित्रमय पुतलियाँ बनवा दीं। १६-१७ फिर अलग स्थान पर जाकर शीघ्र ही लाल रंग की पर्वत घाटी में जा पहुँचे। १८ उन्होंने समस्त ऋषियों के रहने के लिये यत्नपूर्वक मधुवन-बाग को साफ करवा दिया। वहाँ से वह फिर राजमार्ग पर प्रविष्ट हुये। उन्होंने शिल्पकारों तथा राजगीरों को बुलाकर कहा। १९-१२२० उनसे अनेक आवास तथा भवन बनवाये और सुन्दर सुगन्ध देकर उन्हें विचित्र बनवाकर शीघ्र ही वह लोग राजा के समक्ष जा पहुँचे। उन्होंने राजा को प्रणाम करके उन्हें सब समाचार दिये। १२२१-२२ राजा सब सुनकर प्रसन्न हो गये और उन्होंने जाकर मुनि से सब बता दिया। हे भगवती ! सुनो। इसके अनन्तर राजा की ओर देखकर श्रृंगी ऋषि बोले। २३-२४ जिन वेश्याओं के द्वारा मुझे मंगवाया गया। वह सब कहाँ चली गयी। राजा बोले कि आपके संतुष्ट हो जाने पर वह लोग उसी क्षण अपने घर चली

ऋण्यशृंग बोइले अणाअ ताहांकु। से सिना आनन्द कले तुम्भर पुरकु २७
उत्सव मंगळ तांकु नग्र बुलाइब। तोष करि ताहांकु धन रत्न देव २८
से माने तोष हेले तुम्भर अटे भल। ए कथाकु बिचार कर हे महीपाळ २९
शुणि करि राजन जे बेगे दूत पेषि। बार कन्याकु ड़ाकि आणिब तड़ति१२३०
शुणिण चार माने बेगे चळि गले। बार कन्यांक नबरे प्रवेश होइले१२३१
बोइले राजन तुम्भंकु लोढ़ि करि। बेगे आस सुन्दरी हेळा जे नकरि ३२
शुणिण बार कन्या बेश बेगे हेले। चारु गन्ध लगाइ काञ्चुला बान्धिले ३३
अंगरे अळंकार लागाइले पुण। नूपुर झुण्टिआ बळा पाहुड़ि पादेण ३४
दुइ गोड़रे अळता पुण लगाइले। कटिरे कटि मेखळा बान्धि सुखी हेले ३५
ताड़ चुड़ि बाहुटि बिद मुदि पुण। चाप सरि पदक चन्द्र हारा बाण ३६
नासारे सिन्धु फळ संगरे रत्न गुणा। × × × ३७
काप मलकढ़ी चन्द्र फासिआ कर्णरे। फिरि फिरा मुक्ता झुलाइ दुइ करे ३८
अळका मयामणि जोगरे बेगे नेला। झरा काठि झुम्पा तार संगरे खञ्जिला ३९
पञ्चबर्ण पुष्परे भूषण नारीवर। नयनरे अञ्जन कपाळे सिन्दुर१२४०
ए नारी बेश हेबारु बार जे बनिता। अपसरी बेशे जे होइले शोभिता१२४१

गयीं। २५-२६ शृंगी ऋषि ने कहा कि उन्हें बुलवाओ क्योंकि उन्हीं ने आपके राज्य को आनन्दित किया है। मांगलिक उत्सव के साथ उन्हें नगर भ्रमण कराकर धन रत्न देकर संतुष्ट करो। २७-२८ उनके संतुष्ट होने से आपका भला होगा। हे महीपाल ! इस बात पर विचार कीजिये। यह सुनकर राजा ने शीघ्र ही दूतों को भेजकर वेश्या कन्याओं को बुला लाने को कहा। २९-१२३० यह सुनकर दूत लोग तुरन्त ही जाकर वेश्या कन्याओं के घर में पहुँचे। उन्होंने कहा कि राजा आप लोगों को खोज रहे हैं। हे सुन्दरियों ! शीघ्र ही आओ। देर मत करो। १२३१-३२ यह सुनकर वेश्या कन्याओं ने शृंगार किया। सुन्दर सुगन्ध लगाकर कंचुकी पहन ली। सभी अंगों में आभूषण पहन लिये। पैंजनी पायल कड़े तथा पायजेब पैरों में पहन ली। ३३-३४ दोनों पैरों में महावर लगा लिया। कमर में कमर की पेटी बाँधकर वह प्रसन्न हो गयीं। बाँहों में चूड़ी, कंगन, बाजूबन्द, अंगूठी आदि पहन ली। चमकदार चन्द्रहार तथा पदक लगी हुयी हँसली पहन रखी थी। नाक में रत्नों से जड़ी हुयी लौंग तथा मोती जड़ित बुलाक थी। ३५-३६-३७ कानों में मल्ली कड़ी मुक्ताओं से जड़ित झूमर आदि कर्ण के आभूषण दोनों ओर लटका लिये। अलकों में वेंदा और उसके साथ झलमलाते हुये झूमरदार काँटे आदि सजा लिये। उन श्रेष्ठ नारियों ने पाँच रंग के फूलों से सुसज्जित होकर आँखों में अन्जन तथा मस्तक में सिन्दूर लगा लिया। ३८-३९-१२४० वह बारह कन्यायें नारी वेश सजा लेने से अप्सराओं के वेश में सुशोभित होने लगीं। उन्होंने स्वच्छ

निर्मळ दर्पणरे मुहिँमान देखि। आपणा वेशमानंकु देखि हेले सुखी ४२
विड़िआ भुञ्जि वा स्थान धरिण हस्तरे। पादुका लगाइले चरण मानंकरे ४३
अमृत जोगरे जे होइले वाहार। धीरे धीरे दाण्डरे चळन्ति सकळ ४४
राजार नवरे जाइँ हेले पर वेश। × × + ४५
वेनि मुनिंकु जाइण दरशन कले। ओळग मेलाइण शिररे कर देले ४६
मुनि वोले आर जन्मे परम सुखी हुअ। स्वर्गर अपसरी संगरे दिन निअ ४७
ए जन्मे राजा प्रजा कराइल सुखी। शुणिण अपसरी मनरे भावन्ति ४८
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्वरी। ऋषिर राजन अणाए सेहु नारी ४९
ऋषि वोइले शुण हे राजन। एमानंकु जानरे वसाइ वुलाअ नग्र पुण१२५०
शुणिण राजन जे मन्त्रींकु आज्ञा देले। श्वेत हस्ती उपरे वसाइ वुलाइले१२५१
सेथि परे विचित्र अमरि टणाहेव। वार वनितांकु सेथिरे वसाइव ५२
शुणिण पात्र मन्त्री वेगे चळिगले। श्वेत हस्ती उपरे अमरि कराइले ५३
सिंहद्वारे हस्तीकि रखाइले आणि। राजांकु कहि वार वनिता नेले पुणि ५४
हस्ती मानंक उपरे वसाइले नेइ। नारी माने वसिले अमरिरे जाइँ ५५
नग्र भितरे से करन्ति गमन। आगरे दुन्दुभि शवद गरू टाण ५६
देशाउर आगरे डाक दिए पुणि। नागरा शब्दे नर नारी जाणि ५७

दर्पण में अपने मुख देखे और अपना शृंगार देखकर सुखी हो गईं। १२४१-४२ उन्होंने अपने हाथों में पानदान लेकर पैरों में पादुकाएँ पहन लीं। अमृतयोग में वह सब वाहर निकलकर धीरे-धीरे मार्ग में चलती हुयीं राजा के महल में जा पहुँची। ४३-४४-४५ उन्होंने जाकर दोनों ऋषियों के दर्शन किए। उन्होने प्रणाम करके हाथ शिर से लगा लिए। मुनि ने कहा कि तुम लोग अगले जन्म में अत्यन्त आनन्द प्राप्त करोगी। स्वर्ग की अप्सराओं के साथ समय व्यतीत करोगी। ४६-४७ इस जन्म में तुम लोगों ने राजा तथा प्रजा को सुखी वनाया है। यह सुनकर अप्सराएँ मन में विचार करने लगीं। ४८ हे शाकम्वरी! सुनो। इसके पश्चात् राजा ने ऋषि के कहने पर उन नारियों को वुलवाया। ऋषि ने राजा से कहा हे राजन्! सुनो। इन लोगों को रथ पर विठाकर नगर भ्रमण करवाइये। ४९-१२५० यह सुनकर राजा ने मंत्री को उन्हें सफेद रंग के हाथी के ऊपर विठाकर भ्रमण कराने की आज्ञा दी। उन्होंने यह भी कहा कि हाथी पर एक सुन्दर हौदा होगा, वेश्याओं को उसी में विठाना। यह सुनकर सभासद-मंत्री शीघ्रतापूर्वक चले गये और उन्होंने श्वेत हाथियों पर हौदे कसवा दिये। १२५१-५२-५३ उन्होंने सिंहद्वार पर हाथी लाकर खड़े कर दिये। राजा से कहकर वह वारह गणिकाओं को ले गये। ५४ उन्हें ले जाकर हाथियों पर वैठा दिया। स्त्रियाँ जाकर हौदों पर वैठ गईं। ५५ वह लोग नगर के भीतर गमन कर रही थीं। आगे-आगे दुन्दुभी का घोर शब्द हो रहा था। ५६ मुनादी करनेवाला आगे-आगे सूचना देता जाता और

बोइले अपक्षरी ए राज्यकु भल । एमानंक सकाशे जे समस्ते भल ५८
शुणि नग्र लोके हरष होइले । शुभ नारी माने जे हुळ हुळि देले ५९
देखणा हारि माने जे बोलन्ति भल कल।
। तुम्भर सकाशे आम्भे होइलु शीतळ१२६०
नर नारी माने जे एमन्त तांकु कहि । देखि बार निमन्ते संगरे गोड़ाइ१२६१
बड़ दाण्ड बुलि कन्दि जे बिकन्दि । हाट बाट बुलिण सर्बे हेले धन्दि ६२
आपणार साहिरे चळिले सत्वरे । नट नारी माने देखन्ति हरषरे ६३
हुळ हुळि देइण बन्दापान कले । बड़ दाण्ड बुलि राज सिंह द्वारे हेले ६४
नट नारी माने बिचारिले आम्भे भल हेलु ।
। ए कन्यांक जोगु सुख समस्ते लभिलु ६५
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती ।हस्ती उपरु ओल्हाइले बार जे जुबति ६६
राजार नबरकु चळिले धीरे धीरे । समस्ते ताहांकु जे साधु साधु कले ६७
मुनिकर छामुरे ओळग मेलाइले । एडे जश आम्भंकु देले जे बोइले ६८
सेठारु राजा आगे हेले परबेश । ओळग मेलाइण मनरे हरष ६९
राजन बोइले कुशळ कल मोते । बिभाण्डक कुमरंकु देखाइल नेत्रे१२७०

नगाड़े की ध्वनि से नर नारी समझ जाते थे। ५७ वह लोग कहने लगे कि इन अप्सराओं ने राजा का भला किया है। इन्ही लोगों के कारण सबका मंगल हो गया है। ५८ यह सुनकर नगर के नर नारी प्रसन्न हो गये। सौभाग्यवती महिलायें मांगलिक ध्वनि करने लगी। ५९ दर्शक नर नारियाँ कहने लगीं कि आप लोगों ने बहुत अच्छा किया। आपके कारण ही हम लोग शीतलता को प्राप्त हुई हैं। १२६० स्त्री-पुरुष उनसे इस प्रकार कहते हुए उनके दर्शनों के लिये पीछे-पीछे दौड़ने लगे। १२६१ राजमार्ग पर चलती हुई वह लोग गली कूचों तथा हाट-बाट में भ्रमणकरने लगी जिससे सभी लोग हर्ष से सन्तुष्ट हो गये। ६२ फिर वह लोग अपने मुहल्ले की ओर चल पड़ीं। नर्तकी स्त्रियाँ प्रसन्नतापूर्वक उन्हें देखने लगीं। ६३ उन्होंने मांगलिक ध्वनि करते हुए उनकी पूजा की तथा फिर राज मार्ग में चलती हुई सभी राजमहल के सिंहद्वार पर जा पहुँची। ६४ नर्तकी रमणियों ने यह विचार किया कि हमारा कल्याण हो गया। इन बालिकाओ के कारण हम लोगो को सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो गये। ६५ हे भगवती ! सुनो ! इसके पश्चात् बारह युवतियाँ हाथी पर से उतरीं। ६६ धीरे-धीरे वह राजा के महल की ओर चल पड़ीं। सभी लोग उन्हें साधुवाद दे रहे थे। ६७ उन्होंने मुनि के समक्ष जाकर उन्हें प्रणाम किया तथा कहने लगीं कि आपने हम लोगों को इतना यश प्रदान किया है। ६८ फिर वह लोग वहाँ से राजा के समक्ष जा पहुँची और प्रसन्नचित्त से उन्होंने राजा को प्रणाम किया। ६९ राजा ने कहा कि

एते कहि पात्र मन्त्री डाकिले राजन । बोइले भण्डारु अणा मोर धन१२७१
अमळाण अळंकार वेश सवु आण ।लगान्तु नारी माने जे पाआन्तु कारण ७२
शुणिण पात्र मन्त्री वेगे चळिगले । भूषण अळंकार धन जे आणिले ७३
जण सहस्र सुवर्ण देले जाण । वार वनिता तांकु भूषण कले पुण ७४
जेते तांक संगरे नटकारी थिले । दश सुनिआँ लेखाएँ समस्तंकु देले ७५
शाढ़ी अळंकार जे किछि किछि देले । सकळ नटकारी सन्तोष मन हेले ७६
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी ।अपक्षरी माने जाइँ निजोग सेबा करि ७७
मुनिर पाशे वार वनिता रहिले । वीणा, सितार धरिण नृत्यरंग कले ७८
मुनिकर पाशरे रहिले राजन । भोजन समयरे रात्र दिन पुण ७९
स्नान शउच कराइ ऋषिकु से पुण । भोजन करान्ति पुण अपूर्व द्रव्यमान१२८०
चन्दन कर्पूर देह जाक बोळि । मस्तकरे दुइ श्रृंग बार जे आंगुळि१२८१
जाइ जुइ सेबति नाना पुष्प पुण । दुइ श्रृंगे गभा बान्धि करन्ति भूषण ८२
कअँळा पुअ ऋषि पन्दर बयस ।-शोभा पणे मदनकु निन्दे तेजो बन्त ८३
सर्बांगरे बेश जे, चन्दन बेश तोरा । अमळाण वसन परिहरण तोरा ८४
एथिरे सात दिन सेठारे बहि गला । शाळक ऋषि निज मढिआकु गला ८५

आप लोगों ने विभाण्डक नन्दन श्रृंगी ऋषि को नेत्रों से दिखाकर हमारा कल्याण किया है। १२७० इतना कहकर राजा ने सभासद तथा मंत्री को बुलाकर भण्डार से अपना धन मँगाने की आज्ञा दी। १२७१ स्वच्छ परिधान-अलंकार आभरण ले आओ जिसे पहन कर यह नारियाँ तृप्त हो जाँय। ७२ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री चले गये और आभूषण तथा धन आदि ले आये। ७३ एक एक को हजार स्वर्ण मुद्रायें प्रदान कीं और वार स्त्रियों को वस्त्रालंकार आदि पहनाये। ७४ उनके साथ अन्य जितनी नर्तकियाँ थीं उन सबको दस-दस स्वर्ण मुद्राये प्रदान कीं। ७५ नर्तक लोगों को पगड़ी अलंकार दिया गया जिससे सभी नर्तक सन्तुष्ट मन हो गये। ७६ हे शाकम्बरी! सुनो! इसके पश्चात् अप्सरायें जाकर मुनि की सेवा सुश्रुषा में नियुक्त होकर रह गयी तथा वीणा सितार लेकर आकर्षक नृत्य करने लगीं। ७७-७८ राजा लोमपाद मुनि के पास रात दिन भोजन के समय रहने लगे। ७९ वह ऋषि को स्नान शौचादि कराकर अपूर्व पदार्थ भोजन कराते थे। १२८० उनके सम्पूर्ण शरीर पर चन्दन तथा कर्पूर का विलेपन करते थे। बारह अंगुल के दो सींग ऋषि के मस्तक पर थे। १२८१ राजा उन्हें जूहीं चमेली तथा सेवती के विविध पुष्पों के गुच्छों से बाँध कर मण्डित कर देते थे। ८२ सुकोमल ऋषि पुत्र पन्द्रह वर्ष की आयु के थे। वह तेजस्वी सौन्दर्य में कामदेव की भी निन्दा कर रहे थे। ८३ उनका चन्दन लेपित सर्वांग सुन्दर वेश मनोहर था तथा उनके अम्लान परिधान शोभा को बढ़ा रहे थे। ८४ इस प्रकार सात दिन व्यतीत हो गये। तब शालक ऋषि

जान परे बसिण गले जे मुनिवर। राजनकु बोइले शुण गो महीपाळ ८६
ऋषिकु भकति होइ बचन कहु थिबु। कुळ निर्मळ हेब जशकु पाइबु ८७
जेते बेळे इच्छा जे होइब तोहर। आम्भंकु ड़काइबु कहिबु बेगर ८८
एते कहि मुनि जे निजस्थाने गले। रुधिर गिरि तळे जाइण मिळिले ८९
निज आश्रमकु निर्मळ करि पुण। निश्चिन्तरे ऋषि जे कले जोग ध्यान१२९०
ऋषि जिबारु राजा भितर पुर जाइ। शतेक राणी आसि दर्शन कले तहिँ१२९१
चरणे ओळगिले शतेक नारीगण। कर जोड़ि आगे जाइँ कहन्ति बचन ९२
बोइले ऋषिकु देखन्तु आम्भे पुणि। दर्शनरे पाप जे, हरन्तु आम्भे जाणि ९३
राजन बोइले मुँ ताकु जणाइबि।आज्ञा कले ऋषि मुँ तुम्भंकु घेनि जिबि ९४
शुणि करि राणी हंस आनन्द होइले। मुक्ति कराअ बोलि आम्भंकु कहिले ९५
सेठारु राजन जे अइले बेग करि। मुनिर छामुरे प्रबेश दण्डधारी ९६
कर जोड़ि आगरे जे कहन्ति बचन। राणी हंस देखि बाकु करुछन्ति मन ९७
ऋष्यश्रृंग बोइले अणाअ ताहांकु। जेबे तांक मन हेला देखिबे आम्भंकु ९८
शुणिण राजन जे बेगे चळि गले। सकळ राणींकि से डकाइ कहिले ९९
बोइले बेश हुअ देखिब मुनिंकि। अर्घ्यस्थाळी मान संगरे नेबाटि१३००

अपने मठ को चले गये। ८५ वह मुनिश्रेष्ठ रथ पर बैठकर चले गये। उन्होंने जाते समय राजा से कहा, हे महीपाल ! सुनो। ८६ तुम श्रृंगी ऋषि से भक्तिपूर्वक बातें करते रहना इससे तुम्हारा वंश निर्मल हो जायेगा और तुम्हें यश की प्राप्ति होगी। ८७ जिस समय भी तुम्हारी यदि अन्य कुछ इच्छा हो तो हमें बुलाकर शीघ्र ही कह देना। ८८ इतना कहकर मुनि अपने स्थान को चले गये और रुधिर पर्वत की वादी में जा पहुँचे। ८९ ऋषि ने अपने आश्रम को स्वच्छ किया और वह निश्चिन्त होकर योग तथा ध्यान में लीन हो गये। १२९० ऋषि के चले जाने पर राजा अन्तः पुर में जा पहुँचे। सौ रानियों ने आकर उनका दर्शन किया। १२९१ सौ स्त्रियों ने उनके चरणों में प्रणाम किया तथा हाथ जोड़कर आगे आकर उनसे कहने लगीं। ९२ वह बोली कि हम लोग भी ऋषि का दर्शन करेंगी उनके दर्शन से हमारे पाप क्षय हो जाएँगे। यह हम जानती हैं। ९३ राजा ने कहा कि मैं उन्हें सूचित कर दूंगा। ऋषि के आज्ञा देने पर तुम लोगों को ले जाऊँगा। ९४ यह सुनकर रनिवास आनन्द से भर गया तथा वह लोग कहने लगीं कि हमारी मुक्ति करवा दीजिए। ९५ राजा वहाँ से शीघ्र ही चल पड़े तथा दण्डधारी राजा मुनि के समक्ष जा पहुँचे। ९६ वह हाथ जोड़कर उनके समक्ष कहने लगे कि रनिवास की रानियों का मन आपके दर्शन करने को चल रहा है। ९७ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि उन्हें बुलवा लो। यदि उनका मन हुआ है तो वह हमें देखेंगी। ९८ यह सुनकर राजा शीघ्र ही गए और उन्होंने समस्त रानियों को बुलवाकर कहा। ९९ आप सब लोग अर्घ्य

शते शते सुनिआँ श्रीफल धरि थिब । ऋषिर आगे थोइ दर्शन करिब१३०१
शुणि करि राणीहंस वेगे सज हेले । दासी माने मिळिण वेगे सज कराइले २
नूपुर पाहुड़ जे वळा जे झुण्टिआ । चरणरे अळता मुदि आंगुठिआ ३
रत्न पादुका चरणे लगाइले पुण । कटीरे मेखळा से जे लगाए वहन ४
वक्षस्थळे रत्न काञ्चला लगाइले । चन्द्र हारा पदक मोति माणिक्य तुले ५
गळारे चापसरि हेममये पुण ।अन्धारे आलोक जे, दिशन्ति नारीगण ६
काच मल्लकढि जे, कर्णरे शोभा पाए ।
चन्द्र फासिआ फिरि फिरा कर्णकु शोभा पाए ७
नासारे सिन्धु फल कर्ण गुणा पुण ।नोथर अरविन्द जे, झटके ज्योति जाण ८
शिर परे अळका मथामणि पुणि । जेसनेक उदय हुअन्ति दिनमणि ९
केश सामळिण जे, वान्धिले जुड़ा तहिँ।अष्ट रत्ने झुम्पि झरा काठि अछिरहि१३१०
वेश करि अमळाण पतनि पिन्धाइले । नयनरे अञ्जन नेइ रञ्जाइले१३११
कपोळरे सिन्दुर संगरे कळा धळा । देखि ता मुनि जने होइबे से भोळा १२
शते राणी शतेक सुबर्ण थाळिरे । शते शते सुवर्ण जे पूराइ सेथिरे १३
श्री फल गुआ जे तण्डुळ रखि पुण । धूप काठि आरती रखिले नेइ पुण १४

थाली आदि लेकर सुसज्जित होकर मुनि के दर्शन करो । १३०० तुम सब सौ-सौ स्वर्ण मुद्रायें तथा श्रीफल ले लेना और उन्हें मुनि के समक्ष रखकर उनका दर्शन करना । १३०१ यह सुनकर सारा रनिवास शीघ्र ही सुसज्जित हो गया । दासियों ने मिलकर सबका शृंङ्गार कर दिया । २ नूपुर पायल, कड़े तथा अलंकार विशेष धारण करके पैरों में आलता लगा लिया । उँगली में अँगूठी पहन कर पैरों में रत्न-पादुकाएँ डाल लीं । उन्होंने शीघ्र ही कमर में तागड़ी पहन ली । ३-४ वक्षस्थल पर उन्होंने रत्न कंचुकी पहनकर मोती माणिक्य के चन्द्रहार पदक डाल लिये । ५ गले में स्वर्णमय हँसली पड़ जाने से वह स्त्रियाँ अन्धकार में आलोक जैसी दिखाई दे रही थीं । ६ कानों में मल्ली कड़ी चन्द्राकार कर्णाभूषण शोभा पा रहे थे । ७ नाक में मोती की बुलाक कील तथा नथ के पद्म से ज्योति छिटक रही थी । ८ शिर पर अलकें और उस पर लगी वेन्दायुक्त माँग उदय होते हुए सूर्य के समान लग रही थी । ९ उन्होंने केश झाड़कर जूड़े वान्ध रक्खे थे । उनमें अष्ट रत्न के गुच्छे तथा चिमटियाँ लगी हुई थीं । १३१० उनका शृंगार करके उन्हें स्वच्छ साड़ी पहनाई गई तथा नेत्रों में अंजन लेकर लगा दिया गया । १३११ गालों में लगी हुई लालिमा तथा आँखों की कालिमा तथा शुभ्रता को देखकर मुनिजन भी विभोर हो जाते थे । १२ सौ रानियों ने सौ स्वर्ण थालों में सौ-सौ स्वर्ण मुद्रायें रखी थीं । १३ उसमें नारियल सुपारी अक्षत अगरवत्ती तथा आरती रखी हुई

दासी माने बेश जे हेले सेहि परि। रत्न चाँगुड़ा मान धरिले परिबारी १५
बिञ्चणी आलट पंखा खदि जे,दरपण। आउ दासी माने धरिण हस्ते जाण १६
शतेक राणी जे शतेक चामर धरि। धाई परिबारि जे देले हुळ हुळि १७
भितरु राणीहंस बाहार होइले। राजन आगे जाइँ नबर शोध कले १८
बार बनिता ऋषि रहिले केवळ। नबरु समस्ते जे होइले बाहार १९
निअवकाश बेळे सकळ महादेई। मुनिंकु दर्शन कले जे चान्द मुहिँ१३२०
रत्न चाँगुड़ामान आगरे थोइ देले। मंगळ आळती नेइ बन्दापना कले१३२१
ऋषि छामुरे नेइ श्रीफल थोइले। तण्डुळ हृदाक्षत नेइण शिरे देले २२
बन्दापना सारिण सकळ राणी हंस। देखिण मुनिंकु जे मनरे हरष २३
बिचारिले मुनिंकु मदन सरि नुहें। बासुदेव कळारे एहु जन्म हुए २४
एमन्त बिचारि जे राणी हंस गले। ऋषिंकि चरणरे ओळगि होइले २५
उठिण कर जोड़ि आगरे हेले छिड़ा। नृपति सेठारे जे प्रतिहारि परा २६
सुनाबेत धरिण लोमपाद राए। राणी हंसमानकुं जे दर्शन कराए २७
ऋष्यशृंग बोइले शुण हे महीपाळ। राणी हंस मध्यरे बिचित्र कथा तोर २८
सुना चांगुड़ि धरि उभा कि कारणे पुण। लोमपाद बोइले ब्रह्मचारी शुण २९

थीं। १४ दासियों ने भी उसी प्रकार का शृंगार कर रक्खा था। सेविकायें टोकरियों में रत्न लिये थीं। १५ अन्य दासियाँ पंखे व्यजन, मुरछल आदि तथा दर्पण हाथों में लिये हुए थीं। १६ सौ रानियों ने सौ चामरें ले लीं। दासियों तथा धाइयों ने मांगलिक ध्वनि की। १७ रनिवास से रानियाँ बाहर निकल पड़ीं और राजा ने प्रथम जाकर महल स्वच्छ कराया। १८ केवल बारह युवतियाँ तथा ऋषि वहाँ रहे। शेष सभी लोग महल से बाहर निकल गए। १९ एकान्त के समय समस्त चन्द्रमुखी रानियों ने मुनि के दर्शन किए। १३२० उन्होंने रत्नों से भरी हुई टोकरियाँ उनके समक्ष रख दीं। उन्होंने मंगला आरती लेकर मुनि का पूजन किया। १३२१ ऋषि के समक्ष उन्होंने नारियल रख दिये। हरिद्रा अक्षत लेकर शिर में लगा दिया। २२ पूजा करने के उपरान्त समस्त रानियाँ मुनि का दर्शन करके मन में प्रसन्न हो गईं। २३ वह सोच रही थीं कि कामदेव भी मुनि के समान नहीं हैं। इनका जन्म तो नारायण की कला से हुआ है। २४ इस प्रकार का विचार करते हुए रानियों ने जाकर मुनि के चरणों में प्रणाम किया। २५ फिर वह सब उनके समक्ष हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं। राजा वहाँ पर प्रतिहारी थे। २६ सुवर्ण यष्टिका लिये हुए महाराज लोमपाद रानियों को दर्शन करा रहे थे। २७ शृंगी ऋषि ने कहा, हे महीपाल! सुनो। रानियों के मध्य तुम्हारी बात बड़ी विचित्र है। २८ स्वर्ण पूरित पलड़े लेकर किस कारण से खड़े हो। लोमपाद ने कहा,

राणीहंस जेउँ ठारे करन्ति दर्शन। सेहि ठारे राजामाने प्रतिहारी पुण१३३०
राणीहंस मानकुं राजा करान्ति दर्शन। देवता ऋषिकु चिन्हाइ द्यन्ति पुण१३३१
अजाण सुखी अटन्ति राजा नारीमाने। जन्मरु देखा जहुँ न थाए तांकु तेणे ३२
एणु करि थाळ जे धरिवा प्रमाण। शुणि करि सन्तोष होइले ऋषि गण ३३
पचारिले ऋष्यश्रृंग शुण महीपाळ। एते नारीरे पुत्र नाहिँ कि तोहर ३४
लोमपाद बोइले मो जीव अकारण। सात सहस्र वर्ष होइला मोते पुण ३५
कोळरे नन्दन जे न देखिलि मुहिँ। मोर वयस एहि ठारु सरुछि गोसाइँ ३६
सकळ द्रव्य अछि राज्य जे विस्तार। केवळ पुत्र नाहिँ शुण मुनिबर ३७
ऋषि बोइले तुम्भर केते राणी सार। केते राणी स्नेह कारी अटन्ति तुम्भर ३८
लोमपाद बोइले देव शते राणी मोर। समस्ते सारधार स्नेहकारी मोर ३९
गंगा जमुना अटन्ति दुहेँ वड राणी। तांक तळे कळावती नीळावती पुणि१३४०
से राणींकि तले सकळ राणी मोर। कर तुम्भे अनुग्रह राणीकुं मुनिबर१३४१
ऋष्यश्रृंग बोइले शतेक राणींक ठारे। शते पुत्र हेबे जे कहिलुं तोहरे ४२
शते राणी कोळरे धरिबे पुत्र जाण। एते बोलि विभूति देले मुनि पुण ४३
राजन बोइलु सकळ राणीकुं बाण्टि दिअ। शुणिण नृपवर होइलाक प्रिअ ४४

हे ब्रह्मचारी ! सुनो। २९ रनिवास की रानियाँ जहाँ पर दर्शन करती हैं वहाँ पर राजा लोग प्रतिहारी की भाँति रहते हैं। १३३० रनिवास की रानियों को राजा दर्शन कराते हैं और देवता तथा ऋषि को पहचनवा देते हैं। १३३१ राजा की रानियाँ अज्ञानता में ही सुखी रहती हैं क्योंकि जन्म से उन्हें उनके दर्शन नहीं होते है। ३२ इसी कारण यह पूजा थाल लिये हैं जो इसका प्रमाण है। यह सुनकर ऋषि प्रसन्न हो गए। ३३ श्रृंगी ऋषि ने राजा से पूँछा क्या इतनी रानियों में भी तुम्हारा पुत्र नहीं है। ३४ लोमपाद ने कहा कि मेरा जीवन ही निरर्थक है। मेरे सात हजार वर्ष व्यतीत हो गए। ३५ मेरी गोद में पुत्र का दर्शन नहीं हुआ। हे नाथ ! मेरी आयु यहीं समाप्त हो रही है। ३६ मेरे पास विस्तृत राज्य तथा समस्त पदार्थ है। हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिए। केवल मेरे पुत्र नहीं है। ३७ मुनि ने प्रश्न किया कि तुम्हारे कितनी पटरानियाँ है तथा कितनी प्रेमिका रानियाँ हैं। ३८ लोमपाद ने कहा, हे देव ! मेरे सौ रानियाँ है। वह समस्त स्नेह करने वाली श्रेष्ठ रानियाँ हैं। ३९ गंगा तथा यमुना दोनों बड़ी रानियाँ हैं। उनके पश्चात् कलावती तथा नीलवती है। १३४० उन रानियों के नीचे मेरी और समस्त रानियाँ हैं। हे मुनिश्रेष्ठ आप रानियों के ऊपर कृपा कीजिये। १३४१ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि मैं कह रहा हूँ कि तुम्हारी सौ रानियों से सौ पुत्र होंगे। ४२ सौ रानियाँ अपनी गोद में पुत्रों को धारण करेंगीं। इतना कहकर मुनि ने उन्हें विभूति प्रदान की। ४३ उन्होने राजा से उसे सब रानियों को बाँट देने को कहा। ये सुनकर श्रेष्ठ राजा

शतेक राणीकुं जे बिभूति बाण्टि देले । कर जोडि राजन आगरे उभा हेले ४५
शते राणी धरि करि ढ़ाळिले चामर ।दासी माने पंखा जे, आलट धरि कर ४६
बिञ्चणी आलट जे, बिञ्चन्ति सर्ब नारी।राणीमाने हरषरे बिञ्चन्ति चामरि ४७
सुना बेत धरि राजा सन्तोष मनरे।ऋषि बोइले जाआन्तु राणी हंस निजपुरे ४८
सुकुमार तनु तांकर पाउछन्ति दुःख । आज दिन ठारु तांकर गला एबे दुःख ४९
लेउट दशमासरे पुत्र कोळे होइ । तेबे राणी मानंकर हरष उपुजइ१३५०
शुणि करि राणीमाने चरण सेविले । मंगळ बन्दापना करिण लेउटिले१३५१
अन्तःपुर मध्यरे हेले परवेश । सकळ राणीहंस जे मनरे हरष ५२
बिचारिले ऋषि एबे सुदयात कले । दासीमाने शुणिण हरषमन हेले ५३
निर्द्धनी लोकर धन अन्धकु चक्षुदान । अपुत्रककु पुत्र दान देबारु ऋषिपुण ५४
आनन्दरे उत्साह सकळ राणीहंस। बिचारिले एतेकाले सरिला एबे कष्ट ५५
पार्वती बोइले तुम्भे शुण हे ईशान ।दशरथ नन्दिनी जे सा आन्ता नारी पुण ५६
लोमपाद ताहांकु रखिछि घरे आणि । से किम्पा मुनिकु नगला देखि पुणि ५७
ईश्वर बोइले देख गो प्राणसही । साआन्ता कन्या जे अटइ अबिबाही ५८
आगे नारद जे कहिण गले पुण ।विचार करि राजा जे, करइ कार्य्य जाण ५९

प्रसन्न हो गये । ४४ उन्होंने वह विभूति सौ रानियों को बाँट दी और हाथ जोड़कर राजा मुनि के समक्ष खड़े हो गये । ४५ सौ रानियाँ चामर लेकर डुलाने लगीं । दासियाँ पंखा व्यजन मुरछल आदि लेकर रानियों सहित प्रसन्नता से चॅवर डुलाने लगीं । ४६-४७ राजा प्रसन्न मन से सोने की छड़ी लिए हुए थे । तब ऋषि ने रानियों को अपने महलों में जाने की आज्ञा दी । ४८ उनके सुकुमार शरीर दुःख पा रहे थे । आज के दिन से उनका दुःख समाप्त हो गया । ४९ दस मास व्यतीत हो जाने पर जब उनकी कोख से पुत्र उत्पन्न होंगे तब रानियों में प्रसन्नता उत्पन्न होगी । १३५० ये सुनकर रानियाँ चरण सेवा तथा मांगलिक पूजा करके लौट चलीं । १३५१ समस्त रानियाँ प्रसन्नचित्त होकर अंतःपुर में जा पहुँचीं । ५२ उन्होंने यह विचार किया कि ऋषि ने अब हमारे ऊपर दया की है । यह बात सुनकर दासियों के मन भी प्रसन्न हो गये । ५३ जैसे निर्धन व्यक्ति को धन, अन्धे व्यक्ति को नेत्रदान मिलने से सुख होता है । उसी प्रकार ऋषि के द्वारा सन्तानहीनों को पुत्र प्राप्ति का सुख मिला । ५४ समस्त रानियों ने आनन्द से उत्साहपूर्वक विचार किया कि अब इस समय से हमारा दुःख समाप्त हो गया है । ५५ पार्वती ने कहा, हे ईशान ! आप सुनिए । दशरथ की पुत्री जो शान्ता थी । उसे राजा लोमपाद ने अपने घरमें लाकर रख लिया था । वह मुनि के दर्शन के लिये किस कारण से नहीं गई । ५६-५७ शंकर जी बोले, हे प्राणसंगिनी ! देखो । शान्ता कन्या अविवाहिता थी । ५८ नारद पहले ही कह गए थे । राजा विचारपूर्वक कार्य कर रहे थे । ५९ जरता

जरता काममोहिनी कहिबारु मुनिवर। गुपते देला राजा डरिण मुनिवर१३६०
पचारिले आज्ञा देले नेब जाण कन्या। ऋषि शाप देवाकु डरइ नृप सिना१३६१
पार्वती बोइले से केमन्ते हेवे भेट। देखिले ऋषि मन होइव उच्चाट ६२
नारद कहिला दिनरु मनरे हरष।तेणु जुवा स्तिरी परा लज्जारे पाए प्रास ६३
ईश्वर बोइले शुण गो शाकम्वरी। राणीहंस देखिण अइले जहुँ फेरि ६४
राणीमानंकु छाडिण लेउटि राजा परा। × × × ६५
तेते बेळे साआन्ता जे होइला बाहार। पितांकर चरणरे नमिले नारी बर ६६
साआन्ता बोइले तुम्भे पितामह शुण। दर्शन करन्ति मुं जे ऋषिकु जाइण ६७
लोमपाद बोइले तुम्भे शुणरे कुमारी।दर्शन करिबाकु तु जे अटु जोग्य कारी ६८
पचारिण दर्शन मुं कराइवि नेइ। शुणि करि सन्तोष होइले चान्द मुहीं ६९
अन्तः पुरु राजन जे बाहार होइ गले। ऋष्य श्रृंग आगरे प्रवेश जाइँ हेले१३७०
एथु अनन्तरे शुण गो दिव्यरीति। लोमपाद राजा जे जणाए ऋषिकि१३७१
अजोध्या राजन जे अटन्ति दशरथ। सेहि अपुत्रिक शुण हे बिभाण्डक सुत ७२
से राजा जे मैत्र मोहर अटे जाण। बनस्ते भेट होइण हेलु प्रीति पुण ७३
से राजार सातश पचाश राणी अटे। कैकयी, कौशल्या, सुमित्रादि श्रेष्ठे ७४
कौशल्या गर्भरे दोहिताए जात।से दोहिताकु राजन पाळन्ति निश्चिन्त ७५

तथा काममोहिनी ने मुनिश्रेष्ठ को पहले ही वता दिया था। मुनि के भय से राजा ने उसे गुप्त रक्खा था। १३६० वह सोच रहे थे कि पूंछने पर यदि वह आज्ञा देंगे तव कन्या को ले आएँगे। राजा ऋषि के शाप के कारण भय कर रहे थे। १३६१ पार्वती ने कहा कि फिर वह कैसे भेंट करेगी। देखने से ऋषि का मन उचाट हो जाएगा। ६२ जिस दिन से नारद ने कहा था। उसी दिन से उसका मन प्रसन्न था। वह युवा स्त्री थी। अतः लज्जा कर रही थी। ६३ शंकर जी बोले, हे शाकम्वरी ! सुनो। जव अन्तःपुर की रानियाँ दर्शन करके लौट आईं और रानियों को छोड़कर राजा लौट गए। ६४-६५ तव शान्ता बाहर निकली। फिर उस श्रेष्ठ रमणी ने पिता के चरणों में नमन किया। ६६ शान्ता ने कहा हे श्रेष्ठ पिता ! सुनिए। मै भी जाकर ऋषि के दर्शन करूँ। ६७ लोमपाद ने कहा, हे कुमारी ! सुनो। तुम दर्शन करने के योग्य हो। ६८ मैं उनसे पूँछकर तुम्हे ले जाकर दर्शन करा दूंगा। यह सुनकर चन्द्रमुखी (शान्ता) सन्तुष्ट हो गई। ६९ राजा अन्तःपुर से वाहर निकल गए तथा श्रृंगी ऋषि के समक्ष जा पहुँचे। १३७० हे देवि ! इसके पश्चात् को दिव्य चर्चा श्रवण करो। राजा लोमपाद ने ऋषि से निवेदन कर दिया। १३७१ अयोध्या नरेश जो दशरथ है, हे विभाण्डकनन्दन ! वह भी सन्तान से रहित है। ७२ उन राजा से मेरी मित्रता है। वनप्रान्त में भेंट होने से उनसे मित्रता हो गई थी। ७३ उस राजा के सात सौ पचास रानियाँ हैं। कैकेयी, कौशल्या तथा सुमित्रा आदि श्रेष्ठ रानियाँ है। ७४ कौशल्या के गर्भ से एक पुत्री उत्पन्न हुई थी।

एक दिने से राजा पुरकु मुहिँ गलि। कुशळ पचारिण सेठारे रहिलि ७६
तांकर कुमारी जे साआन्ता नामे पुण। मोते देखिबाकु से जे अइले पुण ७७
मान्य धर्म करिण से अइले लेउटि। अइला वेळे मुँ जे राजांकु कहिलिटि ७८
बोइलि मोर पुरे पुत्र दोहिता केहि नाहिँ।
तुम्भर दोहिताकु मो पुरे न्यन्ति मुहिँ ७९
तुम्भे गले तुम्भ संगरे फेरि आसन्ता। कहिबारू राजन मनरे कले चिन्ता१३८०
भितर पुरे जाइँ राणीकुं कहिले। राणी माने सन्तोषरे जाउ से बोइले१३८१
मोर संगे दोहिताकु समर्पिण देले। से दोहिता मोहर नवरे अछि भले ८२
आज्ञा देले दर्शन करिब से आसि। शुणिण ऋष्यश्रृंग हरष कलेमति ८३
बोइले से कन्याकु कराअ दर्शन। राणीहंस संगरे न आसे किस्पा पुण ८४
लोमपाद बोइले से अटे अबिबाही। सेथिर सकाशे जे न आणिलि मुहिँ ८५
ऋष्यश्रृंग बोइले बड लोकमाने।पात्र ऋषि सामन्त बिभा ऋषि जने ८६
देवता नरपति पिता जे खुडुता। एमानंकु देखिबाकु मनरे सोरता ८७
देवता मुनिबर देव जे ब्राह्मण। एमानंकु से कन्या मेलारे दर्शन ८८
पात्र मन्त्री सामन्त नृपति भललोक। आड उहाड़े एमानंकु देखिबा उचित ८९
लोमपाद बोइले मोहर चित्ते भय। न पुण तुम्भठारु क्रोध जात हुए१३९०

निश्चिन्त होकर उस कन्या का पालन राजा कर रहे थे। ७५ एक दिन मैं उस राजा के महल में गया। कुशल समाचार लेने के उपरान्त मैं वहाँ रुक गया। ७६ उनके शान्ता नामक कन्या थी। वह भी मुझे देखने को आई। ७७ सत्कार धर्म को पूर्ण करके वह लौट गई। आने के समय मैंने राजा से कहा। ७८ हमारे घर में कोई पुत्र तथा पुत्री नहीं है। मैं आपकी पुत्री को अपने घर ले जाने के विषय में सोच रहा था। ७९ आपके जाने पर वह आपके साथ लौट आएगी। इस प्रकार कहने पर राजा चिन्ता में पड़ गए। १३८० उन्होंने अन्तःपुर में जाकर रानी से कहा। रानियों ने उसे जाने के लिये आज्ञा दे दी। १३८१ उन्होंने मेरे साथ कन्या को भेज दिया। वह कन्या मेरे घर में भली प्रकार से रह रही है। ८२ आज्ञा देने से वह आकर आपके दर्शन करेगी। यह सुनकर श्रृंगी ऋषि का चित्त प्रसन्न हो गया। ८३ उन्होंने उस कन्या को दर्शन कराने की आज्ञा देते हुए कहा कि वह रानियों के साथ क्यों नहीं आ गई। ८४ राजा लोमपाद ने कहा कि वह अविवाहिता है। इसी कारण से मैं उसे उनके साथ नहीं लाया। ८५ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि बड़े लोग, सभासद, ऋषि, सामन्त, विवाहित ऋषि, देवता, राजा, पिता अथवा काका आदि इन लोगों को मन में देखने की इच्छा में क्या सोचना। ८६-८७ देवता नृपश्रेष्ठ तथा ब्राह्मण देव आदि के वह कन्या दर्शन करे। ८८ सभासद मंत्री राजा तथा बड़े लोगों का दर्शन आड़ खोड़ से ही उचित है। ८९ लोमपाद ने कहा कि मेरे मन में

ऋष्यश्रृंग बोइले शुण हे राजन । दर्शन कला लोकंकु किम्पा हेबु तान१३९१
भक्त भावरे आसिबे जेउँ लोक । से मानंकु क्रोध हेले दइव बिपक्ष ९२
सामन्त होइ जेबे सेवककु दण्ड । से कथा भल नुहँ शुण हे नरेन्द्र ९३
सेवक दोष कले सिना ताहाकु न पारि । अप्राध होइले दण्ड दिअ त्रिपुरारी ९४
न मानिले राजन दण्ड हुए ताहा ठारे ।मान्य धर्म न कले अलागि ताकु बोले ९५
एबे जाइँ से कन्याकु घेनि आस तुहि । शुणिण नृप बर जे बेगे चळि जाइ ९६
अन्तःपुर भितरे जाइण मिळिला । सकळ राणी हंसकु ड़काइ आणिला ९७
बोइले दोहिता जे करिब दर्शन । ऋषिकु कहिबारु कहिले बेगे आण ९८
शुण करि राणी माने हरष होइले । दासीकु आज्ञा देले बेशकर भले ९९
शुणि करि दासी माने दोहिता बेश कले । अळका मथामणि मथारे खञ्जिले१४००
हार, पदक, चापसरि, सिन्धु पळ पुणि । रत्न गुणा संगे सकळ बेशकु निर्माणि१४०१
बेश हुअन्ते कन्या दुर्गार प्राय़ दिशि । तेजरे दिशिबे जे सकळ गरु हंसि २
देखिण सकळ नारी बिचारिले मन । कुळ उद्धरिब जे, जणागला पुण ३
ए ऋषि अइले एहाकु लोभ करि । कळह ऋषिक कथा नजिब जे फेरि ४
से बरकु ए कन्या जे होइब घटण । भल जोगे जात हेला साआन्ता जे पुण ५

भय था कि कहीं आप क्रुद्ध न हो जाँय । १३९० श्रृंगी ऋषि ने कहा, हे राजन् ! सुनो । दर्शन करने वाले व्यक्तियों से क्रोध कैसे होगा । १३९१ जो व्यक्ति भक्तिभाव से आयेगा उन पर क्रोध करने से तो दैव ही विपक्षी हो जाएगा । ९२ सामन्त होकर यदि सेवक को दण्ड दे । हे नरेन्द्र ! सुनो । यह बात ठीक नहीं है । ९३ सेवक के दोष करने पर उसे समझना होता है और अपराध होने से शंकरजी दण्ड देते हैं । ९४ यदि वह इस पर भी न माने तो दण्ड उस पर होता है । मान्य धर्म न करने पर उसे अपराधी कहा जाता है । ९५ अब तुम जाकर उस कन्या को ले आओ । यह सुनकर श्रेष्ठ राजा शीघ्र ही चले गए । ९६ वह अन्तःपुर में जा पहुँचे तथा उन्होंने समस्त रानियों को बुलवा लिया । ९७ उन्होंने कहा कि कन्या दर्शन करेगी । ऋषि के कहने पर उन्होंने उसे शीघ्र लाने के लिये कह दिया है । ९८ यह सुनकर रानियाँ प्रसन्न हो गईं । उन्होंने दासियों को उसे सुसज्जित करने की आज्ञा दी । ९९ सुनते ही दासियों ने कन्या का श्रृंगार कर दिया । अलकावलि पर मस्तक में चूड़ामणि पहना दी । १४०० हार पदक मोती सीतारामी रत्नजड़ित कील पहनाकर उसे सुसज्जित कर दिया । १४०१ श्रृंगार के उपरान्त कन्या दुर्गा के समान दिखाई देने लगी । वह अपनी तेजस्विता के कारण घर में सर्वश्रेष्ठ दिखने लगी । २ उसे देखकर समस्त रानियों ने मन में विचार किया कि अब समझ में आ गया कि यह कुल का उद्धार करेगी । ३ यह ऋषि इसी के लोभ से यहाँ आए है । नारद मुनि की बात मिथ्या नहीं हो सकती है । ४ उस वर के लिये यह कन्या

तिनि कुळकु उद्धरिलु धन्यरे सुन्दरी । एमन्त बोलि प्रशंसा करन्ति सर्ब नारी ६
अर्घ थाळि उपरे तण्डुळ श्रीफळ । दोहितारे संगे दासी घेनिण बाहार ७
आगरे राजन जे पछरे दासी गण । पछरे चन्द्र बदनी चाले धीर धीर ८
ऋषिकर आगरे मिळिले जाइँ बेग । देखि करि साआन्ता होइला लाज लाज ९
श्रीफळ तण्डुळ अर्घ्यस्थळि धरि करि । ऋषिक चरणतळे ओळगिला बाळि१४१०
मुख टेकि साआन्ता देखिला निरोळे । मदन शर जे भेदिला शरीरे१४११
ऋष्यश्रृंग साआन्तार मुखकु चाहिँले । धन्य धन्य सुन्दरी बोलिण बिचारि ले १२
अपक्षरी मोते आगे कहुथिला जाहा । सेहि कथा एबे आसि फळिलाटि ताहा १३
सतेकि जोग मोते अछइ ए पुण । मनरे बिचार एहा कले ऋषि जाण १४
एमन्ते विचारन्ते पञ्चशर जडि । बोइले राजन निअ दोहिताकु फेरि १५
शुणि करि नृपति कुमारी घेनि गले । अन्तःपुरे राणीमानंकु समर्पिले १६
सेठारु राजन जे अइला खरे जाण । प्रबेश हेला आसि ऋषिर पाशे पुण १७
कन्या घेनि राजा जिबार बेळे पुणि । ऋष्यश्रृंग मोह हेले शुण गो भवानी १८
सिंहासन उपरु ऋषि पड़े टळि । जाणिण बार बनिता बेगे धरि तोळि १९
शीतळ जळ नेइण चेता कराइले । अळप दिनकु किम्पा बिह्वळ मनरे१४२०

गठित की गई है। शान्ता ने शुभयोग में जन्म धारण किया है। ५ हे सुन्दरी ! तुम धन्य हो। तुमने तीन कुलों का उद्धार किया है। सभी नर-नारी इस प्रकार कहकर प्रशंसा कर रहे थे। ६ दासियाँ अर्घ्य थाली में नारियल तथा अक्षत लेकर कन्या के साथ बाहर निकल पड़ीं। ७ आगे-आगे राजा पीछे-पीछे दासियाँ तथा उनके पीछे चन्द्रबदनी शान्ता धीरे-धीरे गमन करने लगी। ८ वह लोग शीघ्र ही ऋषि के समक्ष जा पहुँचे। शान्ता उनके दर्शन करके लज्जित हो गई। ९ कन्या ने नारियल तथा चावल की अर्घ्य थाली को लेकर ऋषि के चरणों में प्रणाम किया। १४१० शान्ता मुख उठाकर उन्हें अपलक देखती रही। उसके अंगों को कामदेव के बाणों ने बेध दिया। १४११ श्रृंगी ऋषि ने शान्ता के मुख को देखा। वह सुन्दरी को धन्य-धन्य कहते हुए विचार करने लगे। १२ पूर्वकाल में अप्सरा ने जैसा हमसे कहा था इस समय वही बात घट गई है। १३ ऋषि ने अपने मन में विचार करते हुए यह निश्चय किया कि यह हमारा सत्य ही मांगलिक योग है। १४ इस प्रकार विचार करते हुए वह काम के पंचबाणों से आहत हो गए। उन्होंने राजा से राजकन्या को लौटा ले जाने को कहा। १५ यह सुनकर राजा राजकन्या को लेकर चले गए। उन्होंने अन्तःपुर में जाकर उसे रानियों को समर्पित कर दिया। १६ फिर राजा शीघ्र ही वहाँ से लौटकर ऋषि के निकट जा पहुँचे। १७ हे भवानी ! कन्या को लेकर राजा के जाने के समय श्रृंगी ऋषि पुनः मोहित हो गए थे। १८ ऋषि सिंहासन के ऊपर से लुढ़क पड़े। तब सुन्दर स्त्रियों ने उन्हें पकड़कर उठा लिया। १९ शीतल जल

ऋष्यश्रृंग बोइले से कन्या शोभाकार। देखि करि धइर्ज्य हरिला मोहर१४२१
बार बनिता बोइले तुम्भर से नारी।अळप दिन तळे भोग करिब ब्रह्मचारी २२
आगेत गतागत कार्ज्य अछि शिखि।अळप दिनकु किम्पा आरत मने जति २३
शुणि करि ऋष्यश्रृंग हरष होइले।सिंहासन उपरे निश्चळे बसिले २४
एमन्त समयरे राजन प्रबेश। देखि करि ऋष्यश्रृंग मनरे हरष २५
ऋष्यश्रृंग बोइले शुण हे राजन। एकन्या गोटिकि बयस केते जाण २६
राजा बोइले एगार बर्ष छड मास। नव बर्षरे कुमारी हेला ज्ञानवन्त २७
बिभा करिबाकु बुझिले पिता बर। घटण नोहिला बर कन्या सदृश्यर २८
अनेक राज्यकु राजा बरगिले दूत। केबे हेँ वर तांकु नोहिले घटणत २९
स्वयम्बर करिवाकु राजार बड़ मन। चन्दन, गुआ, पान निमित्त द्रव्यमान१४३०
सकळ भिआणि डकाइ दूतकु।जान सज कले पात्र मन्त्रीए जिवाकु१४३१
राजा मानंकु बरिबे बोलि आज्ञा देले। एमन्त समयरे नारद मिळिले ३२
सकळ चरित राजा तांक आगे कहि। शुणि करि नारद राजाकु बोध देइ ३३
बोइले से कन्या, आम्भ बधू पुण। ऋषिक घरणीकु राजाकि, नेबे पुण ३४

से वह उन्हें चेतनावस्था में ले आईं तथा कहने लगी कि थोड़े दिनों के लिये आप मन में विह्वल क्यों हो रहे हैं। १४२० श्रृंगी ऋषि बोले कि वह कन्या शोभा की खान है। उसे देखकर मेरा धैर्य खो गया। १४२१ बार नारियों ने कहा कि हे ब्रह्मचारी ! वह स्त्री आपकी है। थोड़े दिनों में आप उसका भोग कीजियेगा। २२ गतागत कार्यों को आपने पहले ही सीख लिया है। हे मुनि ! आप थोड़े दिनों के लिये मन में व्यग्र क्यों हो रहे हैं। २३ यह सुनकर श्रृंगी ऋषि प्रसन्न हो गए। फिर वह शान्तमुद्रा में सिंहासन पर बैठ गए। २४ इसी समय राजा ने वहाँ प्रवेश किया जिन्हें देखकर श्रृंगी ऋषि मन में प्रसन्न हो गए। २५ श्रृंगी ऋषि ने कहा हे राजन् ! सुनो। इस कन्या की अवस्था कितनी है। २६ राजा ने कहा कि यह ग्यारह वर्ष छै माह की है। नौ वर्ष की आयु में कुमारी ज्ञानवती हो गई थी। २७ पिता ने विवाह करने के लिए वर की खोज की परन्तु कन्या के सदृश वर नही प्राप्त हुआ। २८ राजा ने अनेक राज्यों में दूत प्रेषित किये परन्तु तब भी कन्या के अनुरूप वर नहीं मिला। २९ राजा की वड़ी इच्छा थी स्वयंबर करने की। उन्होंने चन्दन, सुपारी, पान तथा अन्य प्रकार के लगने वाले नैमित्तिक पदार्थ एकत्रित करके दूत को बुलाकर सभासद तथा मंत्री के जाने के लिए रथ सुसज्जित करवाए। १४३०-१४३१ उन्होने राजाओं को वरण करने की आज्ञा दे दी। इसी समय नारद वहाँ पर आ गए। ३२ राजा ने समस्त चरित्र उनके समक्ष कह सुनाया। नारद ने उसे सुनकर राजा को सान्त्वना प्रदान की। ३३ उन्होंने राजा से कहा कि यह कन्या हमारी बधू है। ऋषि पत्नी को राजा कैसे लेंगे। ३४

दशरथ बोइले तुम्भर नाहिँ पुत्र । किम्पाइ बोध मोते देउँछ ब्रह्मसुत ३५
नारद बोइले पुत्र ऋष्यश्रृंग मोर । बिभाण्डेक कोळे होइछि अवतार ३६
चम्पावती देशकु आसिब पुत्रमणि । लोमपाद राजन अणाइब पुणि ३७
तार राज्ये जळ बृष्टि करि बार पाइँ । नटकारी माने आणिबे पुण जाइ ३८
से आसि कहिले जळ बृष्टि जे करिब । दशरथ दुहिताकु बिभा पुण हेब ३९
लोमपादकु ऋषि पुत्र दान देबे । जाग कराइ चरु भुञ्जाइ एथु जिबे१४४०
अजोध्यारे प्रबेश हेबे मुनि मणि । दशरथ जाग कले जन्मि बे पुत्र पुणि१४४१
एते कहि नारद आकट करि गले । राज स्वयम्बर मुनि भांगिले ध्यान बळे ४२
शुणि ऋष्यश्रृंग बोइले जेबे जाण । से कन्यारे प्रसन्न आम्भर मनसिना ४३
उत्सव कराइण बेदी कर सज । आजर दिनकु होइछि बिभा जोग ४४
लोमपाद बोइले से नुहँइ उचित । जन्म बृहस्पति बार दिन अछइत ४५
ताहार जणकु अणाइब एबे । प्रदान करिबे से दुहिताकु भाबे ४६
तुम्भर पिता बिभाण्डक आसिबे जे पुण । ताहांकर संगरे बहुत ऋषि गण ४७
नारद, सनातन सनकादि आसिबे । उत्सवरे बिभा घर होइब जे तेबे ४८
राजागण आसिबे आसिबे बन्धुगण । तेबे से बिभा घर होइब जे पुण ४९

दशरथ ने कहा कि आपके तो पुत्र नहीं है। हे ब्रह्मपुत्र ! आप हमें सन्तोष कैसे प्रदान कर रहे हैं। ३५ नारद ने कहा कि ऋष्य श्रृंग मेरा पुत्र है। उसका जन्म विभाण्डक के अंक से हुआ है। ३६ वह पुत्र श्रेष्ठ चम्पावती राज्य को जाएगा। उन्हें राजा लोमपाद बुलवायेंगे। ३७ उनके राज्य में जलवृष्टि कराने के लिये उन्हें नर्तकियाँ जाकर ले आएँगी। ३८ उनके आकर कहने पर जल की वर्षा होगी। फिर वह दशरथ की कुमारी से विवाह करेंगे। ३९ ऋषि लोमपाद को पुत्र दान देंगे। वह यज्ञ करवाकर खीर खिलाकर यहाँ से जाएँगे। १४४० फिर मुनिश्रेष्ठ आयोध्या में प्रवेश करेंगे। दशरथ के यज्ञ करने पर उनके पुत्र उत्पन्न होंगे। १४४१ इस प्रकार का आगाह कराकर यह कहकर नारद मुनि चले गए और उन्होंने ध्यान के बल से राज स्वयंबर को तोड़ दिया। ४२ श्रृंगी ऋषि ने यह सुनकर कहा कि जब यह पहले से ही ज्ञात है तो फिर उस कन्या से हमारा मन प्रसन्न है। ४३ तुम उत्सव कराकर विवाह की तैयारी करो। विवाह के लिये आज का दिन शुभ है। ४४ लोमपाद ने कहा कि यह उचित नहीं है। इसके जन्म का वृहस्पति बारहवें दिन है। उसके पिता को बुलायेंगे। तब वह कुमारी को भावपूर्वक प्रदान करेंगे। ४५-४६ आपके पिता विभाण्डक आएँगे। उनके साथ अनेक ऋषिगण भी पधारेंगे। ४७ नारद सनातन सनकादि आएँगे। तब उत्सव करके विवाह होगा। ४८ राजा-

आजि कालि विभा हेले होइब निन्दा कथा ।
राजा माने शुणिले होइव आम्भकु व्यथा१४५०
शाशु माने शुणिले तुम्भंकु देवे गाळि ।
बोलिबे ऋष्यश्रृंग किम्पा सम्भाळि न पारि१४५१
राजार दुहिताकु घेनिण पकाइला । ज्ञानवन्त होइण अज्ञान पण कला ५२
ऋषि मानंकु घेनि तुम्भर पिता आसु । दशरथ राजा बळ घेनिण एथे पशु ५३
मोहर बन्धु कुटुम्व अणाइवि बेगे । × × × ५४
ऋष्यश्रृंग बोइले एकथा बडभल । दुइ कुळ थाइ विभा हेबार परिमळ ५५
दुहिता देबार जेबे अटइ सत्य पुण । से कन्या आसि आम्भंकु करु जे बरण ५६
शुणिण लोमपाद बेगे चळिगला । राणीहंस पुरे जाइँ प्रबेश होइला ५७
बोइला ऋष्यश्रृंग दुहिताकु रसि । बोइले से कन्यांकु आम्भंकु विभा देसि ५८
आजर भितरे तुम्भे कर हो बिभा घर । मुँ बोइलि से कथा नुहँइ बेभार ५६
कन्यांकर पिता तुम्भर पिता आसि।राजा बळ ऋषि वळ हुअन्तु मिशामिशि१४६०
उत्सवरे बिभा घर हेब हे मुनिवर । वाहुनि वाकु कथा जे, नथिब आउ तोर१४६१
ऋष्यश्रृंग बोइले वरण मोते करु । दुहिता देबार अटइ जेबे गरु ६२
शुणिण राणी माने हरष होइले ।बरण माळा गोटिए दुहिता हातरे देले ६३

गण तथा बन्धु-वान्धव लोग आएँगे। तव विवाह होगा। ४६ आज कल में विवाह हो जाने से अपयश की बात हो जाएगी। राजाओं के सुनने से हमारे लिये विपत्ति हो जाएगी। १४५० सास लोग सुनकर आपको भला वुरा कहेंगी तथा यह कहेंगी कि श्रृंगी ऋषि अपने को सम्हाल कैसे नहीं पाये। १४५१ वह राजकन्या को लेकर भाग गए। ज्ञानी होते हुए उन्होंने अज्ञानपूर्ण कार्य किया। ५२ ऋषि समूह को लेकर आपके पिता आएँ। राजा दशरथ भी अपनी सेना लेकर यहाँ आ जाँय। ५३ हम भी अपने वन्धु-वान्धुवों तथा कुटुम्बियों को शीघ्र ही बुला लेंगे। ५४ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि यह वात बहुत अच्छी है। दोनो कुलों की उपस्थिति में विवाह का कार्य सम्पादित होना ठीक होगा। ५५ यदि कन्या को देने की वात सत्य है तो वह कन्या आकर हमारा वरण करे। ५६ यह सुनकर लोमपाद शीघ्र ही चले गए और रनिवास में जा पहुँचे। ५७ उन्होंने कहा कि श्रृंगी ऋषि राजकन्या पर मुग्ध हो गए है तथा उन्होंने कन्या का विवाह उनके साथ करने को कहा है। ५८ तुम आज ही विवाह कर दो। मैंने उनसे कहा कि यह वात व्यवहार की नहीं होगी। ५६ कन्या के पिता तथा आपके पिता आ जाँय और ऋषि समूह तथा राजा की सेना आकर एकत्रित हो जाय। १४६० हे मुनिश्रेष्ठ उत्सव आयोजित होने पर विवाह होगा। आपको और अब व्यग्र होने की बात नहीं होगी। १४६१ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि वह कन्या मुझे वरण करे यदि कन्या को देने की बात सत्य हो। ६२ यह सुनकर रानियाँ प्रसन्न हो गईं। उन्होंने एक

बोइले बेगे जाइँ ऋषिकु तु बर । मन इच्छा बर तोते मिळिला भाग्यर ६४
शुणिण साआन्ता हरष मन हेला । मुनिर आगरे प्रबेश जाइ हेला ६५
ब्रह्मचारी गळारे देलाक माळा नेइ । बोइले आज ठारु तुम्भर अटे मुहिँ ६६
एते बोलि कन्या जे, बेगे चळिगला । अन्तःपुरे जाइण प्रबेश होइला ६७
जननी मानंकु ओळग मेलाइ । गंगा, जमुना कोळरे बसिलाक जाइँ ६८
दुइ माता बोइले होइला कार्ज्ज सिद्धि । दुइ कुळे चन्द्रमा होइ थिलु जात ६९
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । ऋष्यश्रृंग आगरे मिळिले दण्डधारी१४७०
पात्र मन्त्री सामन्त ड़काइ नेले पुण । बोइले राजामानंकु कर निमन्त्रण१४७१
बन्धु मानंकु वरण करि घेनि आस । निकटरे दोहिता बिभाघर प्रबेश ७२
नग्र उतसव कराअ मण्डणि बेगे करि । × × × ७३
सकळ सामग्री लोढ़ाइ बेगे आण । अनेक ऋषि एथि हेबे लोढ़ा पुण ७४
शुणि पात्र मन्त्री जे दूतंकु ड़काइले । बन्धुजन मानंकु निमन्त्रण देले ७५
दूर देशकु चिटाउ पठाइ लेखि करि । चळिले दूतमाने जान बाहान चढि ७६
अनेक सामग्री जे अणाइँ ठुळ कले । ऋषि मानंक पाइँ फळमूळ भले ७७

वरमाला कन्या के हाथों में दे दी। ६३ उन्होंने कन्या से जाकर ऋषि को शीघ्र ही वरण करने को कहा और यह भी कहने लगीं कि भाग्यवश तुझे मन में अभिलाषित वर की प्राप्ति हुई है। ६४ यह सुनकर शान्ता का चित्त प्रसन्न हो गया। वह मुनि के समक्ष जा पहुँची। ६५ उसने माला लेकर ब्रह्मचारी के गले में डाल दी तथा कहा कि आज से मैं तुम्हारी हो गयी। ६६ इतना कहकर कन्या शीघ्र ही चली गई और अन्तःपुर में जाकर प्रविष्ट हुई। ६७ उसने माताओं को प्रणाम किया और गंगा तथा यमुना रानी की गोद में जाकर बैठ गई। ६८ दोनों माताओं ने कहा कि कार्य सिद्ध हो गया है। तुम दोनों कुलों के लिये चन्द्रमा सदृश उत्पन्न हुई हो। ६९ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् राजा लोमपाद श्रृंगी ऋषि के समक्ष आए। १४७० उन्होंने सभासद मन्त्री तथा सामन्त को बुलवाकर राजाओं को निमंत्रित करने को कहा। १४७१ उन्होंने बन्धु-बान्धवों को भी आमंत्रण दे आने को कहा क्योंकि राजकन्या के विवाह का समय निकट ही आ गया है। ७२ उन्होंने शीघ्र ही नगर को सुसज्जित करने की आज्ञा दी। ७३ विवाह के समय लगने वाले समस्त पदार्थों की व्यवस्था करने को कहा। यहाँ पर अनेक ऋषियों की भी आवश्यकता होगी। ७४ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री ने दूतों को बुलाया तथा बन्धु-बान्धवों को निमंत्रण भेज दिया। ७५ सुदूर देशों में पत्र लिखकर भेज दिये। यान वाहनों पर सवार होकर दूत चल दिये। ७६ उन्होंने नाना प्रकार के द्रव्य आदि एकत्रित कर लिए। ऋषियों के लिये अच्छे फल मूलादि रखवा दिये। ७७ सम्पूर्ण नगर को सुवासित करके आनंददायक उत्सव आयोजित किये तथा

उत्सव आनन्द जे, नग्र परिमळ। अन्न वस्त्र जतने साइति भण्डार ७८
चतुरंग बळकु साजिण आज्ञा देले। नग्र चउपाशे जाग्रत रहिले ७९
सकळ सम्पादिण राजा पाशे मिळि। देखिण हरष जे हेले दण्डधारी१४८०
पात्र मन्त्री बोइले सकळ कार्य्य सिद्धि। लोमपाद बोइले शुण हे गुण निधि१४८१
मइत्र ठाकु बेगे पेष मोर दूत। राणीं हंस घेनिण आसन्तु तुरित ८२
वशिष्ठंकु आणिबे आसिबे पात्र मन्त्री। चतुरंग बळ घेनि आसन्तु झटति ८३
शुणिण पात्र मन्त्री जे चिटाउ लेखिले। चन्दन मुद नेइण चन्दनी हस्ते देले ८४
बोइले दशरथ राजांकु कह जाइँ। दुहिता बिभा घर आसन्तु बेग होइ ८५
शुणिण विप्रवर बेगे चळि गले। दश दिने अजोध्या कटके मिळिले ८६
दशरथ नृपति जे करि छन्ति बिजे। संगरे पात्र मन्त्री बशिष्ठ बाम देबे ८७
भलमन्द बुझावणा करुछन्ति तहिँ। एहि समग्ररे बिप्रे मिळिलेक जाइँ ८८
कर जोड़ि आगरे कहन्ति वचन। शुण देव अजोध्या देशर राजन ८९
चम्पावती कटककु आसि अछन्ति ऋष्यश्रृंग।
आसिबार वार्त्तात पाइछ देवराज१४९०
ऋष्यश्रृंग आसिवारु वरषिला जळ। बार बनिता जाइ आणिले ऋषि बाळ१४९१

यत्नपूर्वक अन्न-वस्त्र भण्डार घर में भरवाकर रख दिये। ७८ उन्होंने चतुरंगनी सेना को सुसज्जित करने की आज्ञा दी तथा नगर के चारों ओर पहरे बैठा दिए। ७९ इन समस्त कार्यों का सम्पादन करके वह राजा के समक्ष जा पहुँचे। उन्हें देखकर राजा लोमपाद प्रसन्न हो गए। १४८० सभासद तथा मंत्री ने कहा कि समस्त कार्य सम्पादित हो गये। तब लोमपाद ने कहा हे गुणों के भण्डार ! सुनो। १४८१ मेरे मित्र के पास मेरे दूत को भेज दो। वह रानियों को लेकर शीघ्र ही चले आएँ। ८२ वशिष्ठ को ले आएँ। साथ में सभासद तथा मंत्री भी पधारे और राजा दशरथ चतुरंगिनी सेना को लेकर शीघ्र ही आ जाएँ। ८३ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री ने पत्र लिखे तथा चन्दन से उन्हें वन्द करके ब्राह्मण के हाथ में दे दिये। ८४ उन्होंने कहा कि तुम जाकर राजा दशरथ को सूचित करो कि राजकन्या का विवाह है अतः शीघ्र ही पधारें। ८५ यह सुनकर विप्रश्रेष्ठ शीघ्र ही चल पड़े। वह दस दिनों में अयोध्या नगर में जा पहुँचे। ८६ महाराज दशरथ सभासद मन्त्री वशिष्ठ तथा वामदेव के साथ विराजमान थे। ८७ वहाँ सभी अच्छाइयों तथा बुराइयों पर विचार कर रहे थे। इसी समय ब्राह्मण लोग वहाँ जा पहुँचे। ८८ वह हाथ जोड़कर उनसे बोले, हे अयोध्यापति ! सुनिये। ८९ चम्पावती नगर में श्रृंगी ऋषि आ गये हैं। हे देवराज ! आपने उनके आगमन के समाचार पा लिये हैं। १४९० श्रृंगी ऋषि के आने से जलवृष्टि

लोमपाद राजा नग्रे प्रबेश होइले। राणी हंस जाइँण दर्शन सर्बे कले ९२
ऋषि पचारिले सकळ कथा मान। धन द्रव्य पुत्र पौत्री मान पुण ९३
राजन बोइले मोर पुत्र पौत्री नाहिँ।शुणि ऋषि आज्ञा देले राजनकु चाहिँ ९४
बोइले शत पुत्र सेउ जे तुम्भर। एते बोलि बिभूति देले राजा कर ९५
शते राणींकु राजा बाण्टि करि देले। राजन तोष होइ धन बिलोहिले ९६
तुम्भर दुहिता जे साआन्ता नामे बाळी।
दर्शन करिब बोलि नृपति आगे मिळि ९७
दोहिता बचन शुणि राजन चळि गले। ऋष्यश्रृंग आगरे जाइण मिळिले ९८
बोइले ब्रह्मचारी शुण मो बचन। दशरथ नन्दिनी आणि अछि पुण ९९
दर्शन करिबाकु ताहार जे मन। शुणिण ब्रह्मचारी बोइले ताकु आण१५००
ऋषि कहिबारु तुम्भ दुहिताकु नेले। मुनिंक आगरे नेइ दर्शन कराइले१५०१
देखिण मुनिवर होइले हरष। बोइले ए कन्या आम्भंकु दिअ नृपनाथ २
शुणि लोमपाद हरष होइले। दुहिता हस्तरे बरण माळा देले ३
दुहिता नेइ ऋषिंक गळारे लम्बाइले। सेहि दिन बिभाकु ऋषि मन कले ४
लोमपाद बोइले ए नुहँइ उचित। सम्भवंरे बिभा आम्भे करिबु ऋषि सुत ५
राजा गण अणाइबु आसिबे बन्धुजन।कुमारींक पिता माता आसिबे जे पुण ६

हुई है। उन ऋषि पुत्र को वेश्यायें जाकर लाई हैं। १४९१ वह राजा लोमपाद के नगर में प्रविष्ट हो चुके हैं और सभी रानियों ने जाकर उनके दर्शन किये हैं। ९२ ऋषि ने समस्त समाचार धन द्रव्य पुत्र तथा पुत्री के विषय में पूँछे हैं। ९३ राजा ने कहा कि हमारे पुत्र तथा पुत्री नहीं है। यह कहकर ऋषि ने राजा से कहा कि तुम्हारे सौ पुत्र होंगे और इतना कहकर उन्होंने राजा के हाथों में विभूति दे दी। ९४-९५ राजा ने उसे सौ रानियों को बाँट दिया। राजा ने प्रसन्न होकर धन दिया है। ९६ आपकी शान्ता भी मुनि के दर्शन की इच्छा से राजा के समक्ष जा पहुँची। ९७ पुत्री के वचन सुनकर राजा श्रृंगी ऋषि के यहाँ चले गए। ९८ उन्होंने कहा हे ब्रह्मचारी ! हमारी बात सुनिये। मैं दशरथ की कन्या को लाया हूँ। ९९ उसका मन आपके दर्शन करने का है। यह सुनकर ऋषि ने उसे लाने की आज्ञा दे दी। १५०० ऋषि के कहने पर उन्होंने आपकी कन्या को लिया और मुनि के निकट ले जाकर उसे दर्शन कराये। १५०१ उसे देखकर मुनिश्रेष्ठ प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा हे नृपनाथ ! यह कन्या आप हमें दे दीजिये। २ यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गए और उन्होंने राजकन्या के हाथों में वरमाला दी। ३ राजपुत्री ने माला लेकर ऋषि के गले में डाल दी। ऋषि ने उसी दिन विवाह की इच्छा प्रकट की। ४ लोमपाद ने कहा कि यह उचित नहीं है। हे ऋषिनन्दन ! हम समय से विवाह करेंगे। ५ हम राजाओं को बुलवाएँगे। वन्धु-वान्धव लोग आएँगे।

दुइ कुळ चतुरंग बळ रुण्ड हेबे। तुम्भर पिता पुण एठाकु आसिबे ७
पिता संगे अनेक पुण ऋषि आसि। उत्सव आनन्दरे सकळ मन तोषि ८
शुणिण ऋष्यश्रृंग आनन्द हेले तोरा।
अणाअ राजा गण सम्भर्व भिआअ परा ९
शुणिण राजन जे सम्भर्व भिआइले।राजागण, वन्धुगण निमन्त्रण कराइले१५१०
ऋषिमाने रहिबाकु स्थान जे निर्मळ। आग तुम्भ पाखकु पठाइ थिले चार१५११
एबे आम्भ मानंकु पठाइ तुम्भ पाश। बेग जाइँ बिभाघर कर हे विशेष १२
राणी हंस चतुरंग बन्धुजन बळ। पात्र मन्त्री बशिष्ठ कश्यप मुनिवर १३
समस्तंकु घेनि एबे चळ से राज्यकु। बिभा कराअ जाइ तुम्भ दोहिताकु १४
शुणिण दशरथ हरषमन हेला। एमन्त बचन कहि चिटाउ समर्पिला १५
चन्दन मुद भांगिण वशिष्ठ मुनि पढि। राजा जाणि बारु भितरपुर चळि १६
राणीहंस डकाइ कहिले नृपवर। लोमपाद राजा अटे मइत्र आम्भर १७
तार राज्ये अपाळक हेबारु जे जाण। बिभाण्डक कुमरकु अणाइले पुण १८
ऋष्यश्रृंग आसिबारु वरषिले जळ।ऋषिकुं दर्शन कले शतराणी होइ मेळ १९
देखिण ऋष्यश्रृंग जे हरष होइले। पुत्र दान दिअ बोलि राणी जणाइले१५२०

राजकुमारी के माता-पिता आएँगे। ६ दोनों कुलों की चतुरंगिनी सेनाएँ एकत्रित होंगी। आपके पिता जी यहाँ पधारेंगे। ७ पिता के साथ में अनेकानेक ऋषि आयेंगे और उन सबका मन आनन्दोत्सव से सन्तुष्ट होगा। ८ यह सुन श्रृंगी ऋषि ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कहा कि राजाओं को बुलवाइये और उत्सव आयोजित कीजिये। ९ यह सुनकर राजा ने महोत्सव आयोजित किया तथा राजाओं और वन्धु-वान्धवों को निर्मंत्रित किया। १५१० ऋषियों के ठहरने के लिये उत्तम स्वच्छ स्थान निर्मित किये। सर्व प्रथम उन्होंने आपके पास दूत भेज दिये थे। १५११ अब उन्होंने हम लोगों को आपके पास भेजा है। आप शीघ्र ही जाकर विशेष प्रकार से विवाहोत्सव करिये। १२ रानियों, चतुरंगिनी सेनाओं, वन्धु-वान्धवों, सभासद मंत्री मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ तथा कश्यप आदि सबको लेकर उस राज्य को चलिये तथा अपनी पुत्री का विवाह करवाइये। १३-१४ यह सुनकर दशरथ् का मन प्रसन्न हो गया (दूतों ने) इस प्रकार कह कर चिट्ठी सर्मपित कर दी। १५ चन्दन का आवरण हटाकर महर्षि वंशिष्ठ ने पत्रिका पढ़ी। राजा समाचार जानकर अन्त:पुर में चले गए। १६ नृपश्रेष्ठ ने रानियों को बुलाकर कहा कि राजा लोमपाद हमारे मित्र हैं। १७ उनके राज्य में दुर्भिक्ष होने के कारण उन्होंने विभाण्डक के पुत्र को बुलवाया। १८ श्रृंगी ऋषि के आने से जलवृष्टि हुई। सौ रानियों ने मिलकर ऋषि के दर्शन किये। १९ उन्हें देखकर श्रृंगी ऋषि प्रसन्न हो गए। रानियों ने पुत्रदान की उनसे प्रार्थना की। १५२०

शुणिण ऋषि पुत्र सुदया तांकु कले ।शते पुत्र हेउ बोलि बिभूति खुआइले१५२१
राणीहंस जे लेउटि अइले सेठारु । से जिबारु कुमारी राजाकुं कहे दूरु २२
से ऋषिकु जेबे करिबि दर्शन । साफल्य हेब मोहर दुइ जे नयन २३
शुणिण राजन जे ऋषिकु कहि जाइँ । से ऋषि बोइले आगु जे बेशहोइ २४
राजन बोइले कन्या बिभा होइ नाहिँ।ऋषि बोइले सेथिरे दोष किछिनाहिँ २५
दर्शन कलेक मिळइ परामर्श । × × × २६
शुणिकरि राजन जे साआन्ताकु नेले । दर्शन करन्ते ऋषि प्रसन्न तांकु हेले २७
बोइले ए कन्याकु आम्भकु बिभा कर ।शुणि करि दोहिता ऋषिकुं देले माळ २८
सेहि दिन बिभा जे लोड़इ ब्रह्मचारी । राजन कहिबारु रहिला सम्भाळि २९
राजा जन बन्धुजन लोड़िले राजन । बिभा कर आम्भंकु पठाइछन्ति पुण१५३०
चिटाउ लेखिछन्ति बेगे तुम्भे आस ।
न आसिले कुमारीकुं बिभा करिबे अवश्य१५३१
चतुरंग बळ संगे पात्र मन्त्री घेनि । राणीहंस ऋषिगण आणिब संगे पुणि ३२
जेउँ रूपे शोभा हेब से रूपे बेगे आस । बन्धुजन मानकुं लोड़ाइ घेनि आस ३३
कैकया, कौशल्या, सुमित्रा जे जाण । नीळावती कळावती जेते राणी पुण ३४
बोइले सकळ राणी शुणहे राजन । हेळा न करि समस्ते जिबाहे बहन ३५

यह सुनकर ऋषिपुत्र ने उन पर दया की। उन्होंने सौ पुत्र होने के लिए कहकर विभूति खिलाई। १५२१ रानियाँ वहाँ से लौट आई। उनके जाने पर राजकन्या ने राजा से कहा। २२ मैं उन ऋषि के दर्शन करूँगी। मेरे दोनों नेत्र सफल हो जाएँगे। २३ यह सुनकर राजा ने जाकर ऋषि से कहा। उन ऋषि ने उसे श्रृंगार कर आने को कहा। २४ राजा ने कहा कि कन्या का विवाह नहीं हुआ है। ऋषि ने कहा कि उसमें कोई दोष नहीं है। २५ दर्शन करने पर परामर्श प्राप्त होगा। २६ यह सुनकर राजा ने शान्ता को बुलवा लिया। दर्शन करने पर ऋषि उस पर प्रसन्न हो गए। २७ उन्होंने कहा कि इस कन्या का विवाह मुझसे कर दो। यह सुनकर कन्या ने ऋषि को माला पहना दी। २८ ब्रह्मचारी उसी दिन विवाह के लिये इच्छुक थे। राजा के कहने पर वह रुक गये। २९ राजा लोमपाद ने राजागणों तथा बन्धुजनों को बुलवा लिया है और विवाह के निमित्त हमें प्रेषित किया है। १५३० आपको शीघ्र आने के लिये उन्होंने पत्र लिखा है। न आने पर भी वह कुमारी का विवाह अवश्य कर देंगे। १५३१ आप चतुरंगिनी सेना, सभासद, मंत्री, ऋषिगण तथा रानियों को लेकर शीघ्र ही पधारें। ३२ जैसे भी शोभा बने उसी प्रकार से आप शीघ्र ही पधारिए तथा अपने साथ बन्धु-बान्धवों को लेते आइये। ३३ कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा, नीलावती, कलावती तथा अन्य समस्त रानियों ने राजा से प्रमाद न करके शीघ्र ही चलने के लिये कहा। ३४-३५ पुत्री

दुहिता विभा होइले आम्भर होइब सन्तान।से कथारु वड़ जे नाहिँ पुण आन ३६
शुणिकरि राजन जे बोलन्ति वचन। निश्चये जिवार होइला पुण ३७
जुआइँकि देवार बन्दाण सर्व घेन। सकळ राणी तुमे बेश हुअ पुण ३८
जे रूपे बेश होइले मोहिव सर्वजन। × × × ३९
ऋषिमाने देखिले प्रशंसा करिबे। राणी माने देखिले मोहित होइबे१५४०
दासीमाने वेश हेवे तुम्भर सादृश्य। जाणि छन्ति बहुत राजा राणीहंस१५४१
तोरा वेश नोहिले करिबे मोते निन्दा।वोलिबे एते राणी किम्पाइ कले राजा ४२
शुणि राणी हंस जे सज हेले पुण। काहार केउँ बेश नाहिँ नृपराण ४३
जे कथारे हीन आम्भे नोहू नारीगण। × × × ४४
केउँ दिन जिबार अटइ पुण मूळ। राजन बोइले कालि करिबा अनुकूल ४५
राणीमाने बोइले आसिवे बोलि बंधु। से माने केउँ ठाकु जिबे हे पूण्यइन्दु ४६
राजन बोइले जे चिटाउ लेखिवि। चम्पावती देश जिवा बारता कहिबि ४७
शुणिण राणीहंस हरष होइले। फेरिण राजन जे बाहारकु गले ४८
बाहार जगतीरे वसिले जाइँ पुण। पात्र मन्त्री आसिण कलेक दर्शन ४९
राजा बोइले बेगे लेखा दिअ लेखि। वन्धुजन मानकुं बरण कर धाति१५५०
शुणिकरि पात्र मन्त्री चिटाउ लेखिले। दशरथ राजा कर शुभ कथा भले१५५१

के विवाह होने पर हमारे सन्तान होगी। इस बात से बढ़कर अन्य कुछ नहीं है। ३६ यह सुनकर राजा ने कहा कि चलना तो निश्चित है। ३७ आप सभी रानियाँ सुसज्जित हो जाँय और दामाद को देने के लिये सभी पूजन सामग्री ले लें। ३८ वह सव इस प्रकार सुसज्जित हो जाँय कि उन्हें देखकर सभी लोग मोहित हो जायें। ३९ ऋषि लोग देखने से उसकी प्रशंसा करेंगे। रानियाँ उन्हें देखने पर मोहित हो जाये। १५४० तुम्हारे ही समान दासियाँ भी सुसज्जित हों। वह राजा के रनिवास से परिचित हैं। १५४१ आकर्षक सुवेश श्रृंगार न होने से हमारी निन्दा होगी। वह सव कहेंगे कि राजा ने इतनी रानियाँ क्यों कीं ?। ४२ यह सुनकर रनिवास की रानियाँ सुसज्जित हो गई जिस प्रकार का वेश किसी भी राजा की रानियों का कहीं भी नहीं होगा। ४३ जिससे हम नारियों पर कोई आक्षेप न कर सके। ४४ फिर रानियों ने पूँछा कि चलना किस दिन है। तव राजा ने उत्तर दिया कि हम कल प्रस्थान करेंगे। ४५ रानियों ने कहा कि वन्धु-वान्धव लोग आयेंगे। हे पुण्यचन्द्र ! वह सव कहाँ जायेंगे। ४६ राजा ने कहा कि हम उन्हें पत्र लिखेंगे जिसमें चम्पावती देश जाने की वात कह देंगे। ४७ यह सुनकर रानियों का दल प्रसन्न हो गया। राजा लौटकर वाहर चले गए। ४८ वह वाहर जाकर जगती पर विराजमान हो गए। सभासद तथा मंत्री ने आकर उनके दर्शन किए। ४९ राजा ने कहा कि अत्र शीघ्र ही वन्धुजनों को निमंत्रण पत्र लिखवा दीजिये। १५५० यह सुनकर

साआन्ता कुमारी हेउछि एबे बिभा। चम्पावती राज्यकु बिजे करि जिबा ५२
सेठारे बिभाण्डक तनय़ ऋष्यश्रृंग। सकळ नरेन्द्र सेठाकु जिबे बेग ५३
तुम्भे माने मोहर अट जे बान्धव।
राणी माने जिवे बिभा देखि बेगेत आसिव ५४
सकळ भरसा जे मोहर अट तुम्भे। उत्सव आनन्दरे दुहिता बिभा हेब ५५
न आसिले दुःख जे आसिले बड़ सुख। ए कथाकु बिचार करिब समस्त ५६
मोह ठारे जेबे थिब दय़ाभाव। चम्पावती कटकरे जाइण मिळिब ५७
सम्भर्वरे आसिब नोहिब असम्भव। अनेक नृपति जे मिळिब सेहि ठाव ५८
न्यून भाबे थिले निन्दा हेब मोते।आम्भे आगे शुणिबा से न शुणिबे जेमन्ते ५९
आउ केउँ कथा लेखिबि अबा पुण। ए बारता शुणिण आसिब तत्क्षण१५६०
एमन्त बोलि बिटाउ सहस्रे लेखिले। सहस्रे बिप्रे ड़ाकि चाळिण बेगे देले१५६१
पात्र मन्त्री कुमरकु ड़काइ आणिले। × × × ६२
बोइले दुइ पुत्र चळ तुरितरे। सर्ब राजांकु आमन्त्रण करिब सत्वरे ६३
रथ परे जाइण देखिब सर्ब स्थान। जेउँ ठारे देखिव स्वय़म्बर पुण ६४
सेठारे राजा मानकुं बरण करिब। जेतेक राजा थिबे घेनिण आसिब ६५

सभासद तथा मंत्री ने पत्न लिखे। उसमें उन्होंने महाराज दशरथ की शुभ वार्ता लिख दी। १५५१ राजकुमारी शान्ता का अब विवाह है आप लोग चम्पावती राज्य में पधारें। ५२ वहाँ पर विभाण्डकनन्दन ऋष्यश्रृंग हैं। सभी राजा शीघ्र ही वहाँ पहुँचे। ५३ आप लोग हमारे बन्धु बान्धव हैं। रानियाँ भी विवाहोत्सव देखेंगी। आप लोग शीघ्र पधारें। ५४ हमें आप लोगों पर सभी प्रकार का भरोसा है। आनन्दोत्सव में कुमारी का विवाह सम्पादित होगा। ५५ आपके न आने पर दुख तथा आ जाने पर महान सुख होगा। आप सब इस बात पर विचार करिएगा। ५६ यदि हमारे ऊपर आपका कृपाभाव होगा तो आप लोग चम्पावती देश में आकर मिलेंगे। ५७ साज समारोह के साथ पधारिये। टालियेगा नहीं। वहाँ पर अनेक राजागण एकत्रित होंगे। ५८ यदि आप लोग उदासीन रहे तो हमारी निन्दा होगी। उन्हें तो न सुनाई दे हमें भले ही आगे सुनना पड़े। ५९ और अधिक क्या लिखें ? यह समाचार पाकर शीघ्र ही पधारें। १५६० इस प्रकार हजार पत्न उन्होंने लिखे। उन्होंने हजार ब्राह्मणों को बुलाकर रवाना कर दिया। १५६१ सभासद तथा मंत्नी पुत्रों को बुला लाए। ६२ उन्होंने शीघ्र ही दोनों कुमारों से जाकर सभी राजाओं को निमंत्रण दे आने को कहा। ६३ तुम लोग रथ पर चढ़कर सारे स्थानों को देखना। जहाँ पर स्वयंवर देखना वहाँ राजा लोगों को वरण कर देना। जितने भी राजागण वहाँ हों सबको साथ ले आना। ६४-६५ उन राजा लोगों को चम्पावती राज्य में ले आना। देने के लिये पुष्प चन्दन तथा उपहार

चम्पावती देशकु घेनिण जिबि तांकु । फुल चन्दन उपन देले संगरे देबाकु ६६
चळिलेक बेनि पुत्र बेनि रथ चढ़ि । कुञ्जगळ देशरे मिळिले जाइ करि ६७
अनिरुद्ध राजा तहिँ करिछि बरण । सात गोटा दुहिता बरिले राजा पुण ६८
बिभा घर सरि लाणि मेलाणि राजांकर। एहि समयरे जाइ मिळिलाक चार ६९
चन्दन गुआ पान राजांकु नेइ देले । अजोध्या राजन दशरथक निमन्त्रिले१५७०
तांकर दुहिता साआन्ता नामे पुण । बिभाण्डक नन्दन बिभा हेबे पुण१५७१
चम्पावती राज्यरे जे अछन्ति ऋष्यश्रृंग। से हिठारे बिभा घर उत्सव आनन्द ७२
दश सहस्र राजा शुणि आनन्द मन हेले ।
ऋषि बिभा घर आम्भे देखिबा बोइले ७३
दशरथ राजा जे अटन्ति भाग्यवन्त ।बिभाण्डक ऋषि तांकर हेबे सिन्धुमत ७४
आम्भ मानंकर पुण हेला पुरुषार्थ ।ऋषि माने आम्भ घरे हेले सम्भवत ७५
एमन्त प्रशंसा जे करन्ति महीपाळ । तांकर संगतरे रहिले दुइ बाळ ७६
बिप्र माने चळि जाइ बन्धु मानंकु कहि । चिटाउ नेइण सम्प्रते कराइ ७७
सकळ बन्धुमानंकु निमन्त्रण देले । तांकर संगतरे बिप्र जे रहिले ७८
पार्वती बोइले शुण हे बिश्वनाथ । सेठारु दशरथ कले जे केमन्त ७९
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो पार्वती । एक मन होइ शुण कहिबि जे रीति१५८०

उनके साथ में दे दिये। ६६ दोनों पुत्र दो रथों पर चढ़कर चल दिये। वह लोग कुंजगल प्रदेश में जा पहुँचे। ६७ राजा अनिरुद्ध ने वहाँ सबको निमंत्रित किया था। अपनी सात कन्याओं के लिये राजा ने उनका वरण किया था। ६८ विवाह समाप्त हो गया था और राजाओं की विदाई हो रही थी। इसी समय दूत वहाँ पर जा पहुँचा। ६९ उसने राजाओं को चन्दन सुपारी तथा पान लेकर दिये तथा अयोध्या नरेश राजा दशरथ की ओर से निमंत्रण दिया। १५७० उन्होंने कहा कि राजा दशरथ की पुत्री शान्ता है उसका विवाह विभाण्डक के पुत्र से होगा। १५७१ चम्पावती राज्य में श्रृंगी ऋषि है। वहीं पर विवाह का आनन्दोत्सव होगा। ७२ दस हजार राजा यह सुनकर प्रसन्नचित्त हो गये और कहने लगे कि हम ऋषि का विवाह देखेंगे। ७३ राजा दशरथ वड़े भाग्यवान है जो विभाण्डक उनके सम्बन्धी बनेंगे। ७४ हम लोगों का भी यह सौभाग्य है कि हमारे घर पर ऋषियों का समागम होगा। ७५ इस प्रकार राजा लोग प्रशसा करने लगे। वह दोनों बालक उनके निकट रह गये। ७६ बन्धु-बाधवों को कहकर तथा उनका स्वीकृति पत्र लेकर ब्राह्मण लोग चले गये। ७७ उन्होंने समस्त बन्धु-बान्धवों को निमंत्रण दिया और उनके साथ जो विप्र वर्ग था उसे भी आमंत्रित किया। ७८ पार्वती ने कहा हे विश्वनाथ! सुनिये। वहाँ पर फिर दशरथ ने क्या किया। ७९ शंकर जी बोले हे पार्वती! सुनो। मैं जो

दूत माने जिबार राजन कहे पुण। चतुरंग बळ साज कहिले बहन१५८१
शुणिण पात्र मन्त्री बेगे चळि गले। चतुरांग बळकु साजिण आणिले ८२
राजार आगरे कहिले आसि करि। सकळ साजिले शुण हे दण्डधारी ८३
हाती रथी पदाति अश्व जे बळ पुण। शगड़ बळद शारेणी जुथमान ८४
हटारि बजारि रथकारी लम्ब हाता। बाजन्तरिआ बळ खटिबा व्यवस्था ८५
छतिशा निजोग जे सेवाकारी जाण। समस्ते जे आसिले शुण नृपराण ८६
शुणि करि राजन सन्तोष मन हेले। कालि अनुकूळ करिबा बोइले ८७
बशिष्ठ ऋषिकु डकाइ आणिले। चम्पाबती राज्यकु जिबा से बोइले ८८
बेग करि एबे तुम्भे हुअ सज। बामदेव रहिबे मोहर निज राज्य ८९
अर्द्धक सैन्य बळ आसन्तु एथिरे। कालि आम्भे जिबा चम्पाबती कटकरे१५९०
सुरभिकु संगे घेनि चर्च्चा सर्ब हेबे। पर अनुसरण नथाउ आम्भ भावे१५९१
दुहिता बिभा करि ऋषिकु आणिबा। आम्भर राज्यरे आसि जाग कराइवा ९२
से ऋषि पुत्र दान देउछन्ति पुण। भक्ति होइले आम्भर होइब कारण ९३
बशिष्ठ बोइले से साक्षाते ऋषि ब्रहम। बार बर्षरे प्रापत काम धेनु जाण ९४
दशमासे जुबा हेला बरषके तप कला। बार बरषरे हरिकु सन्तोष कराइला ९५

चरित्र कह रहा हूँ उसे ध्यानपूर्वक सुनो। १५८० दूतों के चले जाने के पश्चात् राजा ने शीघ्र ही चतुरंगिनी सेना को सुसज्जित करने का आदेश दिया। १५८१ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्र ही गये और चतुरंगिनी सेना को सजाकर ले आये। ८२ उन्होंने राजा के समक्ष आकर कहा, हे दण्डधारी ! सुनिये। सब कुछ सज गया। ८३ हाथी, रथी, पैदल सिपाही, घोड़ों के दल, बैलगाड़ी, बहलों के दल सज गये। ८४ हे राजन् ! सुनो। हाटबटोही रथकार बाजे वालों के दल सेवा की व्यवस्था करने वाले छत्तिस प्रकार के सेवकों के समूह आदि सभी लोग आये। ८५-८६ यह सुनकर राजा का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने कहा कि अब कल प्रस्थान करेंगे। ८७ उन्होंने महर्षि वशिष्ठ को बुलवाकर चम्पावती राज्य को चलने को कहा। ८८ आप शीघ्र ही चलने के लिये तैयार हो जाँय। बामदेव हमारे अपने राज्य में रहेंगे। ८९ इस समय आधी सैन्य वाहिनी आ जाय। कल हम लोग चम्पावती दुर्ग को चलेंगे। १५९० सुरभी को साथ ले लीजिये जिससे सभी का सेवा सत्कार होगा और हम पराये आसरे पर नहीं रहेंगे। १५९१ पुत्री का विवाह करके ऋषि को साथ ले आएँगे और अपने राज्य में आकर यज्ञ करवाएँगे। ९२ वह ऋषि पुत्र दान देते हैं। श्रद्धा होने से हमारा उद्धार हो जाएगा। ९३ वशिष्ठ ने कहा कि वह साक्षात् ब्रह्मर्षि हैं। उन्होंने बारह वर्षों में ही कामधेनु को प्राप्त कर लिया था। ९४ वह दस महीने में युवा हो गए थे और उन्होंने एक वर्ष की अवस्था में तपस्या की। बारह वर्षों में उन्होंने भगवान नारायण को

केउँ जोगे तोर दुहिता ठारे मन। पश्चाते जाणिब राजा तार जेते गुण ९६
नारद कहि बारु से पुत्र तोष हेला। तोहर कुमारीकु लभिब बोइला ९७
शुणि करि राजन सन्तोष होइले। मुनि बोले प्रभातु जिबा सेहि पुरे ९८
एते कहि ऋषि जे निजपुर गला। राजन अन्तश्वर पुरकु चळिला ९९
पात्र मन्त्री गला जे भांगि लाक सभा। दिबस जाइ रजनी होइलाक प्रभा१६००
राजन जिबारु दासीगण आसि। पहण्ड मणाइँ भितरकु नेलेशि१६०१
अन्तःपुरे राणा जे हेले परबेश। देखिण राणी हंस होइले हरष २
से दिन कउशल्या पुरे राजा रहि। नाना कउतुकरे शर्बरी शेष होइ ३
बेनि घडि रजनी अछइँ पाहि बाकु। प्रभातुँ उठिले अनुकूळ करिबाकु ४
बाहारे अवकाश राजन जाइ हेले। देखिण राणीमाने दर्शन आसि कले ५
राजा आज्ञा देले जिबा एहि क्षणि। तेणे सिंहद्वारे बाजिला बाजा पुणि ६
एथु अनन्तरे शुण गो गउरी। बाहार जगतीरे बिजये राजा करि ७
सेवा करी लोकमाने अइले जे बेगे। माजणा मर्द्दन कले राजार सर्ब अंगे ८
सुबासित नीररे स्नाहान कराइले। झीन बसन घेनिण पोछि देह देले ९

सन्तुष्ट कर लिया। ९५ जाने किस योग से आपकी कन्या के प्रति उनका मन आकर्षित हो गया। आगे चलकर हे राजन्! तुम उनके समस्त गुणों से परिचित हो जाओगे। ९६ वह बालक नारद के कहने से सन्तुष्ट हुआ और तुम्हारी पुत्री को प्राप्त करने को कहने लगा। ९७ यह सुनकर राजा सन्तुष्ट हो गए। मुनि ने प्रभातकाल में उसी नगर को चलने के लिये कहा। ९८ इतना कहकर ऋषि अपने स्थान को चले गए। राजा अन्तःपुर की ओर चल दिये। ९९ सभा समाप्त हो गई। सभासद और मंत्री चले गए। दिन व्यतीत हो गया। रात्रि प्रकाशित हो गई। १६०० राजा के पहुँचने पर दासियाँ आईं और उन्हें आदर सहित भीतर ले गईं। १६०१ राजा अन्तःपुर में प्रविष्ट हुए। उन्हें देखकर रनिवास प्रसन्न हो गया। २ राजा उस दिन कौशल्या के महल में रहे। नाना प्रकार के रागरंग में निशा समाप्त हो गई। ३ रात्रि व्यतीत होने में दो घड़ी का समय शेष था। वह प्रभातकाल में ही प्रस्थान करने के लिये उठ गए। ४ राजा अवकाश के समय बाहर निकल आए। उन्हें देखकर रानियों ने आकर उनके दर्शन किए। ५ राजा ने उसी समय प्रस्थान करने का आदेश दिया। अतएव सिंहद्वार पर बाजे बजने लगे। ६ हे गौरी! सुनो। इसके पश्चात् राजा बाहर जाकर जगती पर विराजमान हो गए। ७ शीघ्र ही सेवक गण वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने राजा के समस्त अंगों का मर्दन तथा मार्जन किया। ८ उन्होंने सुगन्धित जल से राजा को स्नान करवाया और महीन वस्त्र लेकर उनके अंग पोंछ दिये। ९

बसन कुञ्चि देइण नेइण पिन्धाइले । देवार्च्चन मन्दिर राजन बिजे कले१६१०
तिळक लागि होइलेक राजन । मणोहिरे बिजे कले जाइँ जे बहन१६११
भोजन सारिण जे आचमन कले । बिड़िआ भुञ्जिण राजा बेश शीघ्र हेले १२
नवतन पाग जे बान्धिले शिररे । हीरा लीळा झलक मथार उपरे १३
कर्णकु कुण्डळ जे मुकुता बीर बल्ली ।चन्द्रर फासि आरे लागिछि हीरा जालि १४
फिरिफिरा संगतरे लीळा झलमल । कर्णकु काप दिशे रबिर प्रकार १५
कर्णरे चापसरि माणिक्य मोति झरा । पदक चन्द्र परे मुकुता केराकेरा १६
हीरा, लीळा, माणिक्यरे चूड़ि जे हस्ते शोभा ।
बिदमुदि बाहुटि तेज नीळ प्रभा १७
बाहुरकु ताड़ बसन्त बर्ण दिशेटि ।कुंकुमकु बळि शोभा ताहार तेज गोटि १८
कटीरे मेखळा जे दिशे भिन्न भिन्न । नूपुर पाहुड़ बळा चरणे शोभा पुण १९
आंगुठि मानंकरे बाजेणी झुण्टिआ । पादरे अळता जे रुधिरर प्रिय१६२०
सुवर्णर पादुका लगाइले पुण । रत्न काञ्चला मान लगाइले जाण१६२१
अमळाण पतनी रंग जे बसन्त ।
कळा, नीळ, रंग, श्वेत पिन्धि चारि प्रकारेत २२
उपरे चन्द्रातप चारि प्रकारे साजे । नवजुबा रूप धरिले सर्बे बेगे २३

उन्होंने वस्त्र सम्हालकर राजा को पहना दिये। देवार्चन के लिये राजा मन्दिर में जा पहुँचे। १६१० फिर राजा ने तिलक लगाया और शीघ्र ही भोजन के लिये उपस्थित हो गए। १६११ उन्होंने भोजन समाप्त करके आचमन किया और फिर पान खाकर राजा शीघ्र ही सुसज्जित हो गए। १२ उन्होंने नूतन पगड़ी सिर पर बाँध ली। उनके मस्तक पर हीरा नीलम झलमला रहे थे। १३ कानों में कुण्डल तथा मुक्ताओं की लड़ी तथा चन्द्रहार में हीरा की जाली लगी थी। १४ झूमर के साथ में नीलम झलमला रहे थे। कानों के पदक सूर्य के समान दिखाई दे रहे थे। १५ माणिक्य तथा मोतियों से भरे कानों में धनुषाकार आभूषण चमक रहे थे। चन्द्र पदक पर ढेर से मुक्ता लगे हुए थे। १६ हाथों में हीरा नीलम तथा माणिक्य के चूड़े सुशोभित थे। नीलम की प्रभा से युक्त मुद्रिका तथा वाजूबन्द वाहुओं में लगकर बसन्त वर्ण के दिख रहे थे। कुंकुम के लगाने से उसकी शोभा और निखर गई थी। १७-१८ कटि में पड़ी हुई मेखला की शोभा भिन्न-भिन्न वर्ण की दिखाई दे रही थी चरणों में नूपुर पायल कड़े शोभायमान थे। १९ उँगलियों में बजने वाले आभूषण थे। पैरों में रुधिर के समान प्यारा सा महावर लगा हुआ था। १६२० फिर उन्होंने सुन्दर वर्ण की पादुकाएँ धारण कीं। रत्नों से जड़े हुए उर्ध्व वस्त्र धारण किए। १६२१ उन्होंने वसन्ती रंग की स्वच्छ धोती धारण की। उसके ऊपर काले नीले लाल तथा सफेद चार प्रकार के वस्त्र पहन लिये। २२ उनके ऊपर चार प्रकार के

सुर, नर, किन्नर, ऋषि जे गण पुण । एमानंकर मन टळिब देखिलेण २४
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । राजन बोइला मन्त्रीकु बेग करि २५
पाञ्चरथ साजि आण जे जत्न करि । पाञ्च रथे वसि जे भिन्न भिन्न करि २६
शुणिण पात्र मन्त्री अणाइले रथ । धवळ मध्यरे बसिले बशिष्ठ २७
तांक पाखे काश्यप सामन्त माने वसि । जे सनेक शोभा पाए उदे हेले शशी २८
देखिण राजन जे भितर पुरकु गले । राणीमानंकु जाइ डकाइ आणिले २९
आगरे कैकया पछरे कौशल्या ।सौमित्रा शशिमुखी आसन्ति जे धीरा१६३०
बसन्त वर्णरथे कैकेया बसे जाइँ । तार संगे दुइ शत पचाश राणी थाइँ१६३१
निश्चिन्तरे बसन्ते पड़े टेरा बड़ । अनेक दासी बसिले तांकर संगर ३२
रंग वर्ण रथरे कौशल्या मिळि । दुइ शत पचाश राणी बसिले तांकु घेरि ३३
चउपाशे दासीगण घेरि रहे पुण । कळा बर्ण रथरे सौमित्रा बिजे जाण ३४
दुइ शत पचाश राणी ताहार संगरे । घेरिण बसिले जाइँ रथर उपरे ३५
दासी माने घेनिण आलट पंखा बिञ्चि ।
गदि चामर निरन्तरे पकाउ छन्ति सखी ३६
के धरे बीणा के धरे सितारा ।घण्ट घण्टि घागुडि जे कंसाळ मार्दूदळा ३७
गान्धार रागरे से करन्ति गाउणा । अपसरी गण मिळिले कि जाइ किना ३८

चँदोवे सजे थे। सभी ने शीघ्र ही नवयुवा रूप धारण कर रक्खा था। २३ उन्हें देखने से सुर नर मुनि तथा किन्नरों का मन मोहित हो जाता था। २४ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् राजा ने शीघ्र ही मंत्री से कहा। २५ आप यत्नपूर्वक पाँच रथ सजाकर ले आइये जिससे पृथक-पृथक पाँचों रथों पर लोग बैठ जाएँ। २६ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री ने रथ मंगाए। श्वेत रथ पर वशिष्ठ विराजमान हो गए। २७ उनके निकट कश्यप तथा सामन्त लोग बैठ गए। वह उदीयमान चन्द्रमा के समान शोभायमान लग रहे थे। २८ यह देखकर राजा अन्तःपुर को चले गए। वह जाकर रानियों को बुला लाए। २९ आगे-आगे कैकेयी उनके पीछे कौशल्या तथा साथ में चन्द्रमुखी सुमित्रा धीरभाव से आ रही थीं। १६३० कैकेयी जाकर बसन्ती वर्ण के रथ पर बैठ गयी। उनके साथ दो सौ पचास रानियाँ थीं। १६३१ निश्चिन्त होकर बैठ जाने पर टेर-पुकार हुई। उसके साथ अनेक दासियाँ बैठीं। ३२ लाल रंग के रथ पर दो सौ पचास रानियों से घिरी कौशल्या बैठ गई। ३३ उन्हें दासियों ने चारों ओर से घेर रक्खा था। काले रंग के रथ पर सुमित्रा बैठी थी। ३४ उनके साथ में दो सौ पचास रानियाँ थीं। जो उन्हें घेरकर रथ पर जा बैठीं। ३५ दासियाँ व्यजन तथा पंखे और चवँरचालन कर रहीं थीं। सखियां मुरछल तथा व्यजन लिये हुए डुला रहीं थीं। ३६ कोई वीणा कोई सितार कोई घण्टे घण्टी, मजीरे, झाँझ, ढोलक लिये थीं। ३७ वह लोग गान्धार राग में गाने गा

तांकर रथरे अपसरीए करन्ति नृत्य नाट। खेमण्टा नाटर बादर स्वर श्रेष्ठ ३९
तिनि रथे तिनि छति आढेणी तिनि गोटि। रथर चिराळ जे उड़इ लेउटि१६४०
नीळबर्ण रथरे बिजे दशरथ। कनक ध्वज बोलि बोलाए सेहु रथ१६४१
आगरे बीर बाजा घोषण देले पुण। बाहार हेले राजा सुमरि हरि नाम ४२
आगरे बशिष्ठ पछरे पात्र मन्त्री। मध्यरे चारिरथ चळिले धीर गति ४३
स्वर शंख काहाली बाजिला निरन्तरे। हुळहुळि शब्द जे पडे तार परे ४४
कटक भितरु जे बाहार होइले। दशदिने पार्वती नग्ररे मिळिले ४५
लोमपाद आगरे चार जाइँ कहि। अजोध्या राजन जे अइले गोसाइँ ४६
चतुरंग बळ घेनि ऋषि राणी हंस। तुम्भर सीमारे मिळिले आसि सेत ४७
शुणिकरि राजन मन्त्रीकुं आज्ञा देले। रथ मोर साजि आण बोलिण बोइले ४८
दशरथ नृपति मिळिले मोर मित। बाटरु जाइँ तांकु पाछोटि आणिबात ४९
शुणिण पात्र मन्त्री रथ सज कले। चतुरंग बळ सहिते साजिले१६५०
बादर ,निशाणरे कम्पिला बसुन्धरी। उत्सव आनन्द हेले सकळ नर नारी१६५१
गहळ शुणि ऋषि पचारे राजारे। आज किम्पा गहळ शुभुछि दाण्डरे ५२
लोमपाद बोइले अइले दशरथ। सेहि राजा अटन्ति तुम्भर श्वशुरत ५३

रहीं थीं। लगता था मानो अप्सरायें वहाँ उपस्थित हो गई हों। ३८ उनके रथ में अप्सरायें नृत्य कर रहीं थीं। श्रेष्ठ वाद्यस्वर में खेमटा (नृत्य विशेष) चल रहा था। ३९ तीनों रथों में तीन छत्र तथा तीन परदे पड़े थे। रथ के ऊपर पताकायें फहरा रहीं थीं। १६४० दशरथ नीलवर्ण के रथ पर विराजमान हुए। उस रथ को कनकध्वज कहकर पुकारा जाता था। १६४१ आगे से वीरवाद्य ने उद्घोषणा की। राजा भगवान के नाम का स्मरण करके निकल पड़े। ४२ आगे-आगे वशिष्ठ, पीछे से सभासद तथा मंत्री और उनके मध्य में चारों रथ धीरगति से चल पड़े। ४३ शंख तुरही निरंतर वाद्य-नाद कर रहे थे। उसके पश्चात् मांगलिक शब्द उच्चारित हो रहे थे। ४४ हे पार्वती ! वह लोग दुर्ग से बाहर निकले और दस दिनों में चम्पावती नगर में पहुँच गये। ४५ दूत ने जाकर लोमपाद के समक्ष सूचना देते हुये कहा, हे नाथ ! अयोध्या नरेश आ गये हैं। ४६ वह चतुरंगिनी सेना लेकर ऋषि तथा रानियों के साथ आपकी सीमा पर आ पहुँचे हैं। ४७ यह सुनकर राजा ने मंत्री को उनका रथ सजाकर ले आने की आज्ञा दी। ४८ हमारे मित्र राजा दशरथ आ गये हैं। चलकर मार्ग में उनकी अगवानी करके उन्हें ले आयें। ४९ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री ने चतुरंगिनी सेना के साथ रथ सुसज्जित किया। १६५० पृथ्वी वाद्य-निनाद से काँपने लगी। समस्त नर-नारी आनन्दोत्सव में निमग्न हो गये। १६५१ कोलाहल सुनकर ऋषि ने राजा से पूछा कि मार्ग में आज यह कैसी चहल-पहल सुनायी दे रही है। ५२ लोमपाद ने कहा राजा

ऋष्यशृंग बोइले तांक संगे के आसिछन्ति ।
लोमपाद बोइले बशिष्ठ ऋषि छन्ति ५४
ऋष्यशृंग बोइले आम्भर सेहु पिता ।पाछोटि जिबा आम्भर अटइ व्यवस्था ५५
शुणिण लोमपाद अणाइले श्वेत हस्ती । अमरी चढ़ाइण नेले से झटति ५६
श्वेत हस्ती उपरे बिजय ऋष्यशृंग । पात्रमन्त्री बसिले हस्तीर कन्धभाग ५७
राणी हंस बसिले एक रथ परे । राजन बसिले एकोइ रथपरे ५८
नाना रंगे नृत्यरंग कले नटकारी । कंसाळ मद्दर्दळ बीणा सीतार स्वर करि ५९
काहाळी शंख बाजिलाक टाण । हुळहुळि नारीगणे रहि देले पुण१६६०
बड सम्भर्बरे राजा होइले बाहार । आगरे ऋष्यशृंग पछरे मन्त्रीवर१६६१
मध्यर राणीहंस गला संगे चळि । सरजु नदी कूळरे भेट जाइ पड़ि ६२
बशिष्ठ बोइले त अइले ऋष्यशृंग । भल ज्ञान तोर हे बिभाण्डक तनुज ६३
केमन्ते जणा गला उपकार तोते ।नोहिले साहा तोते कि होइले जगन्नाथे ६४
बशिष्ठंकु पाशरे जे ऋष्यशृंग मिळि । कर जोडि नमस्कार होइले ब्रह्मचारी ६५
बशिष्ठ बोइले पुत्र सुकल्याण हेउ । तोहर नाम गोटि जुगे जुगे रहु ६६
शुणिण ऋष्यशृंग हातीरु ओह्लाइले । रथरे चढ़ि कश्यप ऋषिकु मान्यकले ६७

दशरथ आये हैं। वह आपके श्वसुर हैं। ५३ शृंगी ऋषि ने पूंछा कि उनके साथ कौन आये हैं। लोमपाद वोले कि वशिष्ठ जी उनके साथ है। ५४ शृंगी ऋषि ने कहा कि वह भी मेरे पिता हैं। हम भी अगवानी के लिये चलेंगे। क्या इसकी व्यवस्था है। ५५ यह सुनकर लोमपाद ने श्वेत हाथी मँगवाया और उस पर हौदा रखवाकर उन्हें शीघ्र ही चढ़ा दिया। ५६ श्वेत गजराज पर शृंगी ऋषि विराजमान हो गये। सभासद और मंत्री हाथी के कन्धों की ओर बैठ गये। ५७ एक रथ पर रानियाँ बैठ गयीं और राजा भी एक रथ पर बैठ गये। ५८ नृत्यकार बालायें झाँझ, मजीरे, ढोलक वीणा तथा सितार के सुन्दर स्वरों के साथ रंग-रंगीले नाना प्रकार के नृत्य करने लगीं। ५९ तुरही तथा शंख उच्चस्वर के बजने लगे। स्त्रियों के समूह ने वहाँ रहकर मांगलिक ध्वनि की। १६६० बड़े ठाट-बाट से राजा बाहर निकल पड़े। आगे-आगे शृंगी ऋषि तथा पीछे श्रेष्ठ मंत्री थे। १६६१ वीच में रानियाँ साथ-साथ चल रही थीं। सरयू नदी के तट पर उनकी भेंट हो गयी। ६२ वशिष्ठ ने कहा, शृंगी ऋषि! तुम आ गये। हे विभाण्डक नन्दन! तुम बड़े बुद्धिमान हो। ६३ तुम्हें उपकार करने की कैसे सूझी। क्या भगवान तुम्हारे सहायक वन गये। ६४ शृंगी ऋषि जाकर वशिष्ठ से मिले। ब्रह्मचारी ने उन्हें हाथ जोड़कर नमस्कार किया। ६५ वशिष्ठ ने कहा हे पुत्र! तेरा कल्याण हो तुम्हारा नाम युग-युग तक चलता रहे। ६६ यह सुनकर शृंगी ऋषि हाथी से उतर पड़े और रथ पर

वशिष्ठ कोळे नेइ बसाइले पुण। एथु अनन्तरे गो भगवती शुण ६८
लोमपाद रथपरु ओह्लाइण बेगे गले। दशरथ राजांकु ओलग बेगे कले ६९
राणीहंस ओह्लाइ जे रथ परु बेगे गले। कैकेयी राणीकुं जे मान्य धर्म कले१६७०
से रथरु ओह्लाइ मिळिले आर रथ। कौशल्यांकु ओळग हेले जे समस्त१६७१
कौशल्या बोइले साआन्ता मोर मात। तुम संगे दुहिता मथाए किम्पाइत ७२
गंगा जमुना बोइले अइले बर तार। लज्जारु दुहिता जे नोहिले बाहार ७३
एते कहि सेठारु गले बेगे होइ। सुमित्रांकु जाइण ओळग मेलाइ ७४
सुमित्रा बोइले तुम्भे होइले पुत्रवति। आम्भे अभाग्यवन्त अटु बड़ दुःखी ७५
गंगा जमुना बोइले नुहँ गो आरत। तुम्भ कुळे जात हेबे अनादि अच्युत ७६
एते कहि रथरु ओह्लाइ बेगे गले। आपणार रथरे जाइण बसिले ७७
लोमपाद ओह्लाइ निज रथरे बसिले। × × × ७८
ऋष्यश्रृंग ओह्लाइण हस्ती परे वसि। पात्र मन्त्री जाइण सुमन्त्र संगे भेटि ७९
मान्य धर्म करिण हस्ती कन्धरे बसिले। दुइ कुळ मिशिण सम्भर्व चळि गळे१६८०
चम्पावती कटकरे पड़ि हाल होळि। हुळहुळि हरि बोल राम भाळि पडि१६८१
देखन्ति नर नारी आनन्दरे मिळि। राजार सिंहद्वारे मिळिले सकळ ८२

चढ़कर उन्होंने कश्यप ऋषि की अभ्यर्थना की। ६७ वशिष्ठ ने उन्हें अपनी गोद में बैठा लिया। हे भगवती ! इसके पश्चात् की कथा सुनो। ६८ लोमपाद ने शीघ्र ही रथ से उतरकर राजा दशरथ को प्रणाम किया। ६९ रानियाँ भी शीघ्र ही रथ से उतर पड़ीं। उन्होंने महारानी कैकेयी का आदर-सत्कार किया। १६७० फिर उस रथ से उतरकर उन्होंने रानी कौशल्या को प्रणाम किया। १६७१ कौशल्या ने कहा कि मेरी बेटी शांता आप लोगों के साथ क्यों नहीं है। ७२ गंगा तथा यमुना रानियों ने कहा कि उसके पति आये हैं। इसी कारण लाजवश वह नहीं आयी है। ७३ इतना कहकर वह सब शीघ्रता से वहाँ से गयीं और उन्होंने जाकर सुमित्रा को प्रणाम किया। ७४ सुमित्रा ने कहा कि आप लोग पुत्रवती हो गयी। हम लोग अभागी बड़े कष्ट में हैं। ७५ गंगा यमुना बोली कि आप दुःखी न हों। आपके कुल में भगवान विष्णु उत्पन्न होंगे। ७६ इतना कहकर वह सब रथ से उतरकर शीघ्र ही जाकर अपने रथ पर बैठ गयीं। ७७ लोमपाद उतरकर अपने रथ पर बैठ गये। ७८ श्रृंगी ऋषि उतरकर हाथी पर बैठ गये। सभासद तथा मंत्री ने जाकर सुमन्त से भेंट की। ७९ वह लोग उनकी अभ्यर्थना करके हाथी की पीठ पर जाकर बैठ गये। दोनों कुल मिलजुलकर ठाट-बाट से चल दिये। १६८० चम्पावती नगर में हलचल मच गयी। हरी बोल तथा राम नाम के उच्चारण के साथ माँगलिक ध्वनियाँ होने लगीं। १६८१ नर-नारी आनन्दपूर्वक दर्शन कर रहे थे। सभी

रथरु ओह्लाइले वशिष्ठ कश्यप मुनि वर।ऋष्यश्रृंग हस्तीर परु ओह्लाइले
पात्र मन्त्री माने रथरु ओह्लाइले। × × × ८३
लोमपाद दशरथ ओह्लाए रथरु। सिंहद्वार ठारे टेरावाड़ पडिवारु ८४
दासीगण माने सर्बे ओह्लाए रथर। राणीहंस ओह्लाइले हरष मनर ८५
धीरे धीरे होइ जे करन्ति गमन। आगरे दासीगण मणाइ निअन्ति पुण ८६
अन्तःपुरे जाइण होइले प्रबेश। देखिण भितर पुर होइले हरष ८७
साआन्ता देखिण जे हरष होइले। सकळ माता मानकुं ओळग मेलाइले ८८
कैकयार कोळरे वसिले जाइ करि। देखिण कैकया जे हरष मने धरि ८९
शरीरे आउ जाइण मुखे चुम्ब देले। तिनिकुळ उद्धरिलु बोलिण बोइले१६९०
तु एबे कुळकु कुमारी आम्भे अन्ध जाण। चन्द्रमा वदन आउ देखिवु कि पुण१६९१
एते कहि कैकया जे हेले शोकभर। सकळ राणी नेत्ररु वहे अश्रुधार ९२
साआन्ता बोइले माता तुहँ जे विरस। हर्ष वेळे किम्पाइ लगाअ शोकरस ९३
जनम देल सिना कर्मकि तुम्भे देल। तुम्भर गर्भरु जात मोते तुम्भे कल ९४
राजार कुळे जन्म ऋषिर कुळवधू। भल जोग मोते गो प्रवेश हेला इन्दु ९५
शुणिण सकळ माता तृपति होइले। समस्ते साआन्ताकु कोळ नेइ कले ९६
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। सभारे बिजे कले बेनि ऋषि जे नृपति ९७

लोग राजा के सिंहद्वार पर जा पहुँचे। ८२ मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठ तथा कश्यप रथ से उतर पड़े और श्रृंगी ऋषि हाथी के ऊपर से नीचे उतर आये। सभासद तथा मंत्री लोग भी रथ से उतर पड़े। ८३ लोमपाद तथा दशरथ रथ से उतरे। सिंहद्वार से टेर-पुकार होने लगी। ८४ समस्त दासियाँ तथा रानियाँ प्रसन्नचित्त रथ से उतर पड़ीं। ८५ आगे-आगे दासियाँ भोगराग लिये थीं। रानियाँ धीर गति से चल रही थीं। ८६ वह अन्तःपुर में जाकर प्रविष्ट हुई। उन्हें अन्तःपुर देखकर हर्ष हुआ। ८७ शान्ता को देखकर वह प्रसन्न हो गई। उसने सभी माताओं को प्रणाम किया। ८८ वह जाकर कैकेयी की गोद में बैठ गई। उसे देखकर कैकेयी का मन प्रसन्न हो गया। ८९ उन्होंने उसके अंगों को सहलाकर मुख चूम लिया तथा कहा कि तुमने तीनों कुलों का उद्धार कर दिया है। १६९० तू इस कुल की पुत्री थी। अब हम लोग अन्धी हो गई। अब क्या तेरा चन्द्र-वदन पुनः देखने को मिलेगा ?। १६९१ इतना कहकर कैकेयी शोक से भर गई। सभी रानियों के नेत्रों से अश्रुपात होने लगा। ९२ शान्ता ने कहा माँ ! खिन्न मत हो। हर्ष के समय आप शोक क्यों कर रही हो। ९३ आपने जन्म दिया है। क्या आपने कर्म भी दिये है। आपने अपने गर्भ से हमें उत्पन्न किया है। ९४ राजकुल में जन्म तथा ऋषिकुल की वधू बनी। मेरा चन्द्रमा शुभयोग में प्रविष्ट हुआ है। ९५ यह सुनकर समस्त माताएँ तृप्त हो गई। सभी ने शान्ता को अंक में भर लिया। ९६ हे भगवती सुनो। इसके पश्चात् दोनों राजा तथा दोनों

लोमपाद कहिले मन्त्रींकु चाहिँ करि। शळेक ऋषिकु तुम्भे घेनिआस धरि ९८
शुणिण पात्र मन्त्री शीघ्रे चळिगले। जान परे बसाइण ऋषिकु आणिले ९९
सिंहद्वारे ऋषि जे हेलेक प्रबेश। जानरु उतुरि जे गलेक विशेष१७००
बशिष्ठंकु देखिण मान्य धर्म कले। बशिष्ठंक संगरे जाइँण बसिले १७०१
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। दशरथंकु चाहिँण ऋष्यश्रृंग पचारि २
बिभाण्डक कुमर बोले शुण नृपनाथ। प्रजांकु पाळ टिकि पुत्रर सञ्जात ३
पात्र मन्त्री अगणना अछन्ति तुम्भरि।
अमनात्य माने टिकि अछन्ति सेवा करि ४
गज अश्व बहुत अछन्ति सम्भाळि। सामन्त पात्र मन्त्रींकर बिचार कि परि ५
घर देश बार्त्ता मिळइ टिकि प्रतिदिन।
तिनि शास्त्र पढ़ि अचार टिकि सर्वदिन ६
पात्र मन्त्री तुम्भर अछन्ति टिकि सुबुधि।
चोर खण्ट मानंकु दण्ड दिअन्ति टिकि निरोधि ७
ब्राह्मणे पढ़न्तिकि बेद शास्त्रमान। साधव माने निति दिअन्तिकि धन ८
पुत्रे करन्ति कि माता पिता सेवा। सबुरि हृदरे अछि टिकि दयाभाव ९
नग्र नर नारी अटन्ति शोभावन।
जथा काळे जळ बृष्टि करे कि इन्द्रराज पुण१७१०
अन्तःपुर कथा भले बुझटिकि नृपति। देश शेषरे तुण्ड न कर टिकि महीपति१७११

ऋषि सभा में विराजमान हुए। ९७ लोमपाद ने मंत्री की ओर देखकर कहा। आप जाकर शालक ऋषि को ले आइये। ९८ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्र ही चले गए और रथ पर बिठाकर ऋषि को ले आए। ९९ ऋषि सिंहद्वार पर जा पहुँचे और यान से उतर पड़े। १७०० उन्होंने वशिष्ठ को देखकर उनकी अभ्यर्थना की तथा जाकर वशिष्ठ के साथ बैठ गए। १७०१ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् राजा दशरथ को देखकर श्रृंगी ऋषि ने पूँछा। २ विभाण्डकनन्दन ने कहा नृपनाथ! सुनो। आप प्रजा का पालन पुत्रवत् तो करते हैं। ३ आपके सभासद व मंत्री अद्वितीय हैं। अमात्यगण भी सेवा में तो लगे हैं। ४ गज, अश्व भी प्रचुर मात्रा में हैं तथा सामन्त, सभासद और मंत्री के विचार किस प्रकार के हैं। ५ क्या प्रतिदिन देश-विदेश के समाचार मिलते है? तीन शास्त्रों के पाठानुकूल सर्वदा उनके आचरण रहते है। ६ आपके सभासद तथा मंत्री सुन्दर बुद्धि वाले हैं। चोर तथा ठग लोगों की रोक के लिए वह उन्हें कुछ दण्ड तो देते हैं। ७ ब्राह्मण लोग वेद-शास्त्र तो पढ़ते हैं। सम्पन्न लोग क्या नित्य धन-दान करते हैं?। ८ पुत्र क्या माता-पिता की सेवा करते हैं। क्या सबके हृदय में दयाभाव है। ९ नगर के नर-नारी सुन्दर तो हैं और राजा इन्द्र यथा समय जल की वर्षा करता है। १७१० हे राजा! अन्तःपुर की समस्त वार्तों पर तुम ध्यान तो देते हो। देश के शेष भाग

वर्षा काळे नदीरे पकाअटिकि नाव । टस्कर संगे सुजन नोहिटिकि भाव १२
पति संगे भक्ति टिकि हुअन्ति जुवती । विश्वास लोक संगरे हुए ना पीरति १३
वैद्यमाने शास्त्र पढ़ि जगन्ति टिकि व्याधि ।
मळुकु चिन्हिणटि दिअन्ति मौषधि १४
तपोजन देखिले जे आदर भाव विधि । विचारि भृत्यमानंकु कहि वटि बुधि १५
सेवक सेवा कले नुहँना विमुख । संग्रामे क्षेत्री संगे करटिकि आण्ठ १६
देवताए पूजा जे विप्रे दिअ दान । कुळर लोक माने रखन्तिटिकि धर्म १७
नग्रर परिमळे फलन्तिटिकि तरु ।कृषिकारी माने अछन्ति नाहन्तकारु १८
अपन्तरा वाटे दिअन्ति टिकि पाणिदान ।
प्रासाद अट्टाळि अछन्ति ना राज्ये तुम्भर जाण १९
वन्धु माने आसिण संखोळन्ति टिकि पुण । साधु खटइटिकि धनवन्त घर जाण१७२०
सुस्वादु जळ मिळइ टिकि सेहु देशे । भृत्य जने माया न करन्ति,तुम्भ पाशे१७२१
देवआळे ग्राम लोके करन्ति टिकि गोष्ठी ।
पुत्र थिवारे माता पिता नुहन्ति ना कष्टी २२
दारिद्रे दया करन्ति टिकि साधु । लज्ज्यावन्तरे अछन्ति टिकि कुळ वधू २३
औषधिरे रोग माने हुअन्ति टिकि रक्षा ।
शिष्य माने करन्ति टिकि गुरुंकर दीक्षा २४
नित्यानि ब्राह्मणंकु भोजन दिअ इटिकि । × × × २५

में झगड़ा तो नहीं करते। १७११ क्या वर्षाकाल में नदियों में नावें डलवाते हो। स्वजनों का दुर्जनों से प्रेम तो नहीं है। १२ क्या युवतियाँ अपने पति से प्रेम करती हैं। विश्वासी पुरुषों के साथ प्रीति तो होती है। १३ वैद्य लोग शास्त्र के अनुसार ही रोगी की चिकित्सा करते हैं। तथा रोग को समझकर ही औषधि देते हैं। १४ तपस्वी लोगों को देखने पर उनका आदर सत्कार होता है। दासों के साथ विचारपूर्वक व्यवहार तो होता है। १५ सेवक अपने सेवा कार्य से विमुख तो नहीं होते। संग्राम में क्षत्रियों के समक्ष वल प्रदर्शन तो होता है। १६ देवताओं की पूजा तथा ब्राह्मणों को दान देते हो। कुल के लोग धर्म का पालन करते हैं। १७ नगर में वृक्षों में फल लगते हैं। कृषक लोग आलसी तो नहीं हैं। १८ जनहीन स्थानों पर जल दान तो देते हो। तुम्हारे राज्य में प्रासाद तथा अट्टालिकाये तो है। १९ बन्धु-बान्धव आकर खोज खबर लेते हैं। धनवानों के घरो में साधु लोग तो आते हैं। १७२० उस देश में स्वादिष्ट जल मिलता है। नौकर चाकर तुमसे छल तो नहीं करते। १७२१ ग्राम निवासी देवालयों में बैठक करते हैं। पुत्र के रहते हुये माता-पिता कष्ट तो नहीं पाते। २२ साधु लोग दरिद्रों पर दया करते है कुल-वधुएँ लज्जाशील हैं। २३ औषधि से रोगों की रक्षा तो होती है। शिष्य लोग गुरु से दीक्षा प्राप्त करते हैं। २४ क्या नित्य ही ब्राह्मणों को भोजन कराते

राणी माने महादेई जे दासीगण माने । शुभेण अछन्ति टिकि शुण हे राजने २६
कटुआळे नग्रे तोर करन्ति टिकि रक्षा । शत्रुंक ठारे तोर थाइटिकि कक्षा २७
दासींक संगे राणीमाने न करन्ति ना केळि ।
शुभरे अछन्ति तोर नग्ररे जेते नारी २८
मतिआळ निति खटेटिकि रजकारी ।
परिबारी सेवा करन्तिटिकि अबिळ न धरि २९
तुम्भर पुत्र पौत्री अछन्ति केते राजन ।
पुत्रमानंकु माता माने परषान्ति टिकि अन्न१७३०
कर जोडि दशरथ कहन्ति वचन । तुम्भ प्रसादरे सकळ सुख जाण१७३१
बळराम दास सेबे श्रीहरि चरण । नीळ गिरि नाथ मोते सुदया कले पुण ३२
से मोहर प्रभु जे मुँ तांकर भृत्य । बळराम दासंकु रखहे जगन्नाथ ३३
पार्बती बोइले तुम्भे शुण हे त्रिलोचन । से ठारु किस हेला कह देव पुण ३४
शंकर बोइले तुम्भे शुण गो महादेइ । ऋष्यश्रृंग पचारिबारु जे दशरथ कहि ३५
भो देव मुनिवर पचारिल मोते । तुम्भर कल्याणरु समस्ते छन्ति सुखे ३६
पुत्र बोलि जाहा कहिल तपचारी । अपुत्रिक होइ मुँ जे अछि देह धरि ३७
नव सहस्र बर्ष मुँ जे भोग कलि । कर्मर दुर्बळरे पुत्र न पाइलि ३८
निर्ल्लज जीवन मोर न जाए देह छाडि । अभिमान समुद्ररे अछइँ मुहिँ बुडि ३९

हो। २५ हे राजन् ! रानियाँ महारानियाँ तथा दासियाँ सब आनन्द से हैं। २६ रक्षक लोग तुम्हारे नगर की रक्षा करते है शत्रुओं पर तुम्हारा दबाव है। २७ रानियाँ दासियों के साथ तो नहीं खेलतीं। तुम्हारे नगर की नारियाँ सभी सुख में तो हैं। २८ धोबी नित्य कपड़े धोते हैं। सेवकगण आलस्यहीन होकर सेवा करते हैं। २९ हे राजन् ! तुम्हारे कितने पुत्र और पुत्रियाँ हैं। माताएँ पुत्रों को अन्न परसती हैं। १७३० दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा आपकी कृपा से सब प्रकार का सुख है। १७३१ बलरामदास श्री भगवान के चरणों की सेवा करता है। नीलाँचल नाथ ने मेरे ऊपर दया की है। ३२ वह हमारे स्वामी हैं। मैं उनका दास हूँ। हे जगत के नाथ ! बलरामदास की रक्षा कीजिये। ३३ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! आप सुनिये। हे देव ! यह बताइये कि फिर वहाँ क्या हुआ। ३४ शंकर जी बोले, हे महादेवी ! तुम सुनो। श्रृंगी ऋषि के प्रश्न करने पर राजा दशरथ कहने लगे। ३५ हे देव ! मुनिश्रेष्ठ ! आपने मुझसे जो कुछ पूँछा सो आपकी दया से सब प्रकार का सुख है। ३६ हे तपस्वी ! जो आपने पुत्र के विषय में कहा सो मैं निःसंतान होकर जी रहा हूँ। ३७ मैंने नौ हजार वर्षों का भोग कर लिया है। कर्महीनता के कारण मुझे पुत्र की प्राप्ति न हुयी। ३८ मेरा जीवन निर्लज्ज हो गया है। यह शरीर भी नहीं छूटता।

तुम्भंकु देखिबारु हे बिभाण्डक सुत। मोह ठाकु दूत जे पठाइले मित१७४०
जेते बेळे दर्शन कलइँ मुहिँ तोते। पुत्र लाभ मोते जे होइला प्रापते१७४१
मोह ठारु पुणि सरइ मोर बंश। पुत्र न थिबारु मोर जीवन अस्वार्थ ४२
दुहिता गोटिए पाइलि पुण पुण्ये। सेहि से प्रदान नोहिला से अन्ये ४३
एगार बर्ष होइला अटइ नव जुबा।केउँ दुर्जोगरु कन्या नोहिलाक बिभा ४४
जुबा हेबारु खोजिलि न मिळिले बर। मने बिचारिलि मुँ करिबि स्वयम्बर ४५
एमन्त बिचारि बारु अइले नारद। तांक आगे कहिलि मुँ सकळ सम्वाद ४६
से बोइले एकन्याकु मो पुत्र हेब बिभा।ऋषिर भारिजाकु राजार कि प्रभा ४७
मुँ बोइलि तुम्भर नाहिँ जे कुमर। से बोइले पुतुरा ऋष्यश्रृंग मोर ४८
कन्याकु अटकिण स्वर्गपुरे गले।छड़मास हेला कन्या अछिता आशारे ४९
ऋष्यश्रृंग बोइले से कन्या मोते बरि।
सेहि दिन बिभा होइ थान्ता बटे दण्डधारी१७५०
बशिष्ठ नारद जेते ऋष्यश्रृंग गण। समस्तंक पुत्र मुँ से पिता मोर जाण१७५१
राजन बोइले आकुल मोर मति।जेणु पुत्र सम्पादि नाहिँ हे मोहर मति ५२
ऋष्यश्रृंग बोइले बिस्मय तुहुँ हे नृपति। पुत्र लाभ कराइबा थाए कर मति ५३

मैं अभिमान के समुद्र में डूबा जा रहा हूँ। ३९ हे विभाण्डकनन्दन ! आपके दर्शन करने के लिये हमारे मित्र ने दूत भेजा था। १७४० जिस समय मैंने आपका दर्शन किया तो मुझे पुत्र लाभ प्राप्त हो गया। १७४१ मुझसे मेरा वंश समाप्त हो जायेगा। पुत्र के न रहने से मेरा जीवन व्यर्थ हो जायेगा। ४२ पुण्यबल के प्रताप से मुझे एक कन्या प्राप्त हुयी थी। वह अभी तक किसी को प्रदान नहीं हुयी। ४३ वह ग्यारह वर्ष की नवयुवती हो गई है। किसी दुर्योग के कारण उसका विवाह नहीं हुआ। ४४ युवा होने पर मैंने वर की खोज की, परन्तु कोई वर नहीं मिला मैंने मन में स्वयंबर करने का विचार किया। ४५ ऐसा विचार करते ही नारद आ पहुँचे। मैंने उनके समक्ष सब कुछ कह दिया। ४६ उन्होंने कहा कि इस कन्या से मेरा पुत्र विवाह करेगा। ऋषि पत्नी के लिये राजा की क्या योग्यता है। ४७ मैंने कहा कि आपके कोई पुत्र नहीं है तब वह बोले कि मेरा भतीजा श्रृंगी ऋषि हैं। ४८ कन्या को रोककर वह स्वर्ग चले गये। छैः महीने व्यतीत हो गये। कन्या उसी आशा में है। ४९ श्रृंगी ऋषि बोले, हे राजन् ! मेरा वरण होने पर उस कन्या का विवाह उसी दिन हो जाता। १७५० वशिष्ठ नारद आदि जितने महर्षि हैं मैं उन सबका पुत्र हूँ और वह लोग हमारे पिता हैं। १७५१ राजा ने कहा कि मेरी मति व्याकुल है। जब तक मेरे पुत्र नहीं हो जाते तब तक वह अशांत रहेगी। ५२ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि आप व्यग्र न हों। आप अपने चित्त को शांत करिये। मैं पुत्र लाभ

पुत्रर निमिते भय नकर तुम्भे किछि । पुत्र प्रापत जे तुम्भर कर्मरे पुण अछि ५४
आरत नहुअ तुम्भे अळप दिन रह । बर्षक भितरे प्रापत हेब पुअ ५५
कन्याकु बिभा कर तुम्भे हे आम्भंकु । दशरथ बोइले बरि अछि जे तुम्भंकु ५६
नारद आकट कले तुमरि सकाशे । हरषे बिभा देबि उत्सव प्रबेशे ५७
सातश पचाश महादेइ जे, मोहर । बृहस्पति पञ्चम जे, गलेणि सम्वत्सर ५८
ऋष्यश्रृंग बोइले मोर आरद्रा मिथुन । सप्तम बृहस्पति होइछि मोते पुण ५९
बशिष्ठ बोइले से कथा भल जाण । उभय कुळे प्रीति बञ्चिब दिनुँ दिन१७६०
बिगतर दोष जे अभिन्न करिब । गुड, दान देले जे, सेथिरे दोष जिब१७६१
कन्यार पञ्चमरे अछन्ति दिन मणि । आम्भंकु दशम जे, दोष गला जिणि ६२
संकरान्ति सताइसि दिन भोग कला । मिथुन राशिकु गुरु सप्तमे रहिला ६३
आम्भंकु सप्तम कन्याकु पञ्चम ।आम्भंकु प्रशस्त हेला कन्याकु हेलाक्षम ६४
बुध चन्द्र एक जे आसनरे छन्ति । राहु ग्रह रहि छन्ति एहांकर कति ६५
शनिश्चर रहि छन्ति बृषरे बिजे करि । बिछारे रहिछन्ति केतु देह धरि ६६
य़ांकर संगरे अछइँ भूमिबत्स । दोषकु देखिण दुहिता प्रत्यक्ष ६७
बिशेषे आम्भे पुणि अछइँ तपोजन । आम्भंकु काळ बेळे नाहिँटि राजन ६८

कराऊँगा । ५३ पुत्र के लिये तुम किसी प्रकार का भय मत करो । तुम्हारे कर्म से तुम्हें पुत्र प्राप्त होंगे । ५४ तुम दुःखी न हो और थोड़े दिनों तक रुको । एक वर्ष के भीतर तुम्हें पुत्र प्राप्त हो जायेंगे । ५५ तुम अपनी कन्या का विवाह मुझसे कर दो, दशरथ ने कहा कि उसने आपका वरण किया है । ५६ आपके लिये नारद ने उसे रोक रखा था । मैं उत्सवों के बीच में प्रसन्नतापूर्वक आपसे विवाह कर दूंगा । ५७ मेरे सात सौ पचास रानियाँ हैं । सम्वत्सर बीत गया । बृहस्पति पंचम स्थान पर है । ५८ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि मेरा आर्द्रा मिथुन योग चल रहा है । बृहस्पति हमारे सप्तम स्थान पर है । ५९ वशिष्ठ ने कहा यह बात तो उत्तम है । इससे दोनों कुलों में दिन-प्रतिदिन प्रीतिवर्धन होगी । १७६० यह गत जीवन के दोषों को अभिन्न करेगा । गुड़ दान देने से वह दोष समाप्त हो जाएगा । १७६१ कन्या के पंचम स्थान में सूर्य है । हम लोगों के दशम होने से दोष समाप्त हो गया । ६२ संक्रान्ति का सत्ताइस दिन भोग हो चुका है । मिथुन राशि के लिये गुरु सप्तम स्थान में हो गया है । ६३ हमारे सप्तम तथा कन्या के पंचम हो गया है । वह हमारे लिये प्रशस्त तथा कन्या के लिये क्षम्य हो गया है । ६४ बुध तथा चन्द्र एक स्थान पर हैं । उसके निकट राहु ग्रह है । ६५ शनि वृष में स्थित है तथा केतु वृश्चिक में है । ६६ इसके साथ में पृथ्वी का पुत्र है । दोष को देखकर कन्या प्रत्यक्ष देख रहे है । ६७ विशेषतयः हम तपस्वी हैं । हे राजन् ! हमारे लिये समय का

देव, असुर, बिप्र क्षत्री ऋषि पुण।
एमानंकर राशि नक्षत्र शोधि न पारन्ति पुण ६९
बळे आम्भंकु दण्डि नपारन्ति दण्डधारी। एथिरे संशय जे नाहिँटि आम्भरि१७७०
दशरथ बोइले जे तुम्भर विचार।से आम्भंकु शुभ जोग होए लग्न सार१७७१
लोमपाद राजन जे, एहि कथा कहि। शुणिण ऋष्यश्रृंग जे हरष मन होइ ७२
दुइ राजा कहिण भितर पुर गले। वार बनिता भितर पुरकु चळि गले ७३
गौरी आगरे शंकर एहा कहिले। शुणिल टिकि तुम्भे मन निश्चळरे ७४
पार्बती बोइले तुम्भे शुण विश्वनाथ। ऋष्यश्रृंग विभा मोते कहिब तपोवन्त ७५
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती।साएन्ता ऋष्यश्रृंगर विभा जेउँ रीति ७६
लोमपाद दशरथ उठि करि गले। खण्डे दूरे रहिण विचार पुणि कले ७७
सुलभरे विभा घर आम्भे करिबा पुण। एमन्त विचार जे कले दुइ जण ७८
सेठावरे ऋष्यश्रृंग मिळिलेक जाइँ। देखिले दुइ राजा वसिण अछइँ ७९
मुनि पचारिले किस तुम्भे भाळ। देखिण बेगे उठिले दुइ महीपाळ१७८०
बेनि कर जोडिण जे, लोमपाद कहि। आउ किस विचार करिबु गो सेइँ१७८१
जेते बेळु दुहिता बरण माळा देला। सेते वेलु आम्भर बुद्धि जे सरिला ८२
पाञ्च सात दिन सम्भाळ जे, पुणि।राजा बन्धु मानंकु निमन्त्री अछु पुणि ८३

कोई प्रयोजन नहीं रहता। ६८ देवता राक्षस ब्राह्मण क्षत्री तथा ऋषि इन लोगों की राशि नक्षत्र को शोध नही पाते। ६९ राजा वलपूर्वक हमें दण्ड नहीं दे पाते। इसमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं है। १७७० दशरथ ने कहा कि जो आपका विचार है वही हम लोगों के लिये उत्तम लग्न तथा शुभयोग है। १७७१ राजा लोमपाद ने इस प्रकार से अपना मत व्यक्त किया जिसे सुनकर श्रृंगी ऋषि का मन प्रसन्न हो गया। ७२ दोनों राजा ऐसा कहकर अन्त:पुर को चले गए। वारह वैश्या युवतियाँ भी अन्त:पुर में जा पहुँची। ७३ शंकर जी ने पार्वती के समक्ष यह कहा कि तुमने मन स्थिर करके तो सुना है। ७४ पार्वती बोली, हे विश्व के स्वामी! सुनिए। हे तपोनिधि! आप मुझसे श्रृंगी ऋषि के विवाह की कथा कहिए। ७५ शंकर जी बोले, हे भगवती! जिस रीति से श्रृंगी ऋषि तथा शान्ता का विवाह हुआ, तुम उसे सुनो। ७६ लोमपाद तथा दशरथ उठकर चले गए। कुछ दूर जाकर उन्होंने विचार किया। ७७ सुगमता के साथ हम लोग विवाह करेंगे। इस प्रकार दोनो लोगों ने विचार किया। ७८ श्रृंगी ऋषि वहाँ जा पहुँचे! उन्होंने दोनों राजाओं को बैठे हुए देखा। ७९ मुनि ने पूछा कि आप लोग क्या सोच रहे है। उन्हें देखकर दोनों राजा उठ पड़े। १७८० दोनो हाथ जोड़कर लोमपाद ने कहा, हे नाथ! और क्या विचार करेंगे। १७८१ जब से कन्या ने वरमाला पहनाई है तब से हमारी बुद्धि ही काम नहीं दे रही। ८२ आप पाँच सात दिन सम्हाल लें। मैने राज्य के बन्धु-बाँन्धवों को आमंत्रित

से माने आसिले करिबा बिभा घर ।नआसु कले राजा करिबे निन्दा बिचार ८४
ऋष्यशृंग बोइले खड़िरत्न आण । जाणिले सम्भाळ होइब सिना पुण ८५
ऋष्यशृंग बाणी शुणि राजन बोइले ।जोगा जोग नथिले कि किस हेब कले ८६
आम्भर परम भाग्य एबे जे होइला ।ऋष्यशृंग जेणु आम्भर जुआइँ होइला ८७
एथु अनन्तरे दिवस हेला शेष । अस्त गिरिकु चळिले काश्यपर शिष्य ८८
बिभाण्डक कुमर बशिष्ठ संगे मिळे । दशरथंकु धरिण गमन पुण कले ८९
संध्या तर्पण जे सुमरणा कले । अमृत भोजन करि पलंके शोइले१७९०
पात्र मन्त्री, ऋषिकु भोजन नेइ देले । मिठाइ शाचि, कन्द नेइ समर्पिले१७९१
आम्ब पणस जे नडिआ, ताळरस । दधि लवणी, सर दुध घृत रस ९२
लेम्बु, करमँगा ड़ाळिम्ब कमळा । पाचला कदळी टभा देले नेइ परा ९३
चारि ऋषि होइले पूजारे नियुक्त । बशिष्ठ बोइले अणाअ जउतिष ९४
राजा आज्ञारे ड़ाकिले ज्योतिष तुरिते । × × × ९५
बर राशि कन्या राशि दुहिंकु कले ठुळ । बिभा बुझि बारे जे हेले ततपर ९६
बोइले आज दिन न हेले द्वादश दिन । दधि चन्द्र नेले दान बिभा घर हेब ९७
गुड़ दान देले सेहि दिन बिभा घर । एकथाकु बिचार जे, कले नृप बर ९८
लोमपाद दशरथ हात जोड़ि कहि ।बार दिन रहु एबे बिभाण्डक तनय्री ९९

किया है। ८३ उनके आने पर विवाह कर देंगे। उनके न आने पर विवाह कर देने से वह लोग निन्दा करेंगे। ८४ शृंगी ऋषि ने कहा कि गणक को ले आओ। ज्ञात होने पर ही व्यवस्था की जा सकती है। ८५ शृंगी ऋषि की बात सुनकर राजा ने कहा कि योग्य योग न होने से भला क्या होगा। ८६ हमारा तो परम सौभाग्य ही हुआ है जो ऋष्यशृंग हमारे दामाद बने। ८७ इसके पश्चात् दिन शेष हो गया। कश्यपनन्दन अस्ताचल की ओर चले गए। ८८ विभाण्डकनन्दन वशिष्ठ से जा मिले। वह दशरथ के साथ चले जा रहे थे। ८९ उन्होंने संध्या तर्पण तथा नाम स्मरण करके अमृतोपम भोजन किया और पलंग पर सो गए। १७९० सभासद तथा मंत्री ने ऋषि को भोजन लाकर दिया। मिठाई कन्दमूल आदि दिये। १७९१ आम, कटहल, नारियल, ताड़ का रस, दही, मक्खन, मलाई, दूध, घृत, निम्बू, कमरख, अनार, कमला नीम्बू, पके केले तथा अम्लरसपूर्ण फल विशेष आदि दिये। ९२-९३ चार ऋषि पूजा में नियुक्त हुए। वशिष्ठ ने कहा कि ज्योतिषी को बुलवाओ। ९४ आज्ञा पाकर राजा ने ज्योतिषी को शीघ्र ही बुलवाया। ९५ उन्होंने वर तथा कन्या दोनों की राशियों का मिलान किया। विवाह-मुहूर्त के शोधन में तत्पर हो गए। ९६ उन्होंने कहा कि आज के दिन न होने से बारहवें दिन चन्द्रमा को दधि का दान देने पर विवाह होगा। ९७ गुड़ का दान करने से उसी दिन विवाह होगा। नृपश्रेष्ठ ने इस बात पर विचार किया। ९८ लोमपाद तथा दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि विभाण्डकनन्दन

बन्धुबर्ग आसिबे आसिबे राजा मान । आज बिभा घर कले निन्दा हेब पुण१८००
बोलिबे आम्भंकु आमन्त्रण राजा कले ।आम्भे न जाउ से बिभा घर बढ़ाइले१८०१
आज दिन नेब दान से दिन नेब दान । दुइ दिन सरि एके होइब जे पुण २
ऋष्यश्रृंग बोइले जे तुम्भ मनकु अइला ।
वार दिन घुञ्चि गले विभा घर हेव परा ३
शुणिणि दशरथ सुमन्त्र ड़काइले बेग ।
बोइले विभाघर रहिला बार दिन जोग ४
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । राणि हंस सात दिन एक मेळ हेरि ५
सात दिन उत्तरु अजोध्या राणीहंस । नूआँ नवररे हेलेक प्रबेश ६
लोक बाक पएकार हाती, रथी तुले । पात्र मन्त्री सहिते रहिले जेझा घरे ७
चम्पावती देश राजा लोमपाद पुण । अइले बन्धु वर्ग सकळ एबे जाण ८
दुइ सहस्त्र बन्धुंकु निमन्त्रण थिला ।समस्ते चम्पावती देशरे मिळिले परा ९
दशरथ राजार अइले बन्धु वर्ग । चम्पावती देशरे मिळिले आसि बेग१८१०
पात्र मन्त्री बेनि पुत्र राजा जे, बरिले ।
दश सहस्त्र राजा घेनि प्रवेश आसि हेले१८११
लोमपाद राजन ताकु ठाव नेइ देला । बन्धु वर्ग समस्तंकु नेइण रखाइला १२
गह गह शब्द जे चम्पावती पुर । सिन्धु उच्छुळिला प्राये शब्द महाघोर १३

अभी बारह दिन पर्यन्त ठहर जाएँ । ९९ बन्धु-बान्धव तथा राजा लोग आ जाँय । आज विवाह करने से निन्दा होगी । १८०० वह कहेंगे कि राजा ने हमें निमंत्रित किया और हमारे पहुँचने के पूर्व ही उन्होंने विवाह सम्पादित करा दिया । १८०१ आज भी दान लगेगा । उस दिन भी दान लगेगा । इस प्रकार दोनों दिन बिताकर एक दिन हो जायेगा । २ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि जब तुम्हारे मन में आ ही गया है तो बारह दिन बीतने पर विवाह होगा । ३ यह सुनकर दशरथ ने शीघ्र ही सुमंत को बुलाकर कहा कि विवाह का मुहूर्त बारह दिन रह गया है । ४ हे शाकम्बरी ! सुनो इसके पश्चात् रानियाँ सात दिनों तक एक साथ प्रतीक्षा करती रहीं । ५ सात दिनों के पश्चात् अयोध्या की रानियाँ महलों में आ गयीं । अन्य लोग पयकार, हाथी, रथी, सभासद, मंत्री आदि अपने-अपने स्थानों पर ठहरे रहे । ६-७ चम्पावती में राजा दशरथ तथा लोमपाद के बन्धु-बान्धव सभी लोग आ गये । ८ दो.हजार बन्धुवर्ग आमंत्रित थे । सभी लोग चम्पावती देश में आ पहुँचे । ९ राजा दशरथ के बन्धु-बान्धव भी शीघ्र ही चम्पावती देश में आकर एकत्रित हो गये । १८१० सभासद तथा मंत्री के दोनों पुत्रों ने जिन राजाओं को आमंत्रित किया था । वह दस हजार राजागण भी आ पहुँचे । १८११ राजा लोमपाद ने उन्हें रहने का स्थान दिया और सभी बन्धुओं को लेकर ठहरा दिया । १२ चम्पावती नगर में सिन्धु

पात्र मन्त्री पठाइ जे, लोमपाद राये । सकळ राजा मानंकु बिचार कराए १४
दस दिने समस्ते रुण्ड हेले पुण ।बिभा घर दुइ दिवस अछि सेथि जाण १५
देखा देखि होइ अभिमान सबु सारि । नबर उआसे सर्ब बहिले जे पूरि १६
ऋष्यश्रृंग मुनिंकि मान्य धर्म कले । धन पुत्र लाभ हेउ कल्याण वाञ्छा कले १७
शुणिल टिकि हे हेमवन्तर दुहिता । श्रीराम जन्म हेबार एमन्त व्यबस्था १८
शंकर बचन शुणि बोइले गउरी । केमन्ते बिभा हेले कह त्रिपुरारी १९
बिभाण्डक अइलेकि न अइले कह । एहि ठारे रहुछित कथार सन्देह१८२०
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती ।तुम्भे जाहा पचारिब मुँ ताहा कहुछि१८२१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण शाकम्बरी । ऋष्यश्रृंग मुनिंकि जरता जथा बरि २२
बिभाण्डक मढिआकु अइले संध्या समयकु। देखिले सुरभि रक्षा करिछि मठकु २३
देखिले मढिआ गोटि अछि तुछा होइ । पुत्रकु न देखि मुनि गले मोह होइ २४
असाष्टमे मुनि सुमरे पुत्रकु । बोइले किए नेला कुळ प्रदीपकु २५
केणे गलु बांबुरे न कहि करि मोते । अनेक दुःखरे मुँ पाइथिलि तोते २६
ब्रह्म ऋषि संगतरे होइलु गणिता । तोते प्रशंसा करइ बाबुरे बिधाता २७
प्रसन्न होइ तोते इन्द्र देले बर । बालुंका पूजिले बिजे करन्ति ईश्वर २८

गर्जन के समान अत्यन्त कोलाहल मच रहा था। १३ राजा लोमपाद ने अपने सभासद तथा मंत्री को भेजकर सभी राजाओं से परामर्श किया। १४ दसवें दिन विवाह के दो दिन शेष रहने पर सभी लोग एकत्रित हुये। सभी लोग अभिमान को त्यागकर एक दूसरे से मिलजुलकर महल में भरे पड़े थे। १५-१६ उन्होंने महर्षि ऋष्यश्रृंग का आदर-सत्कार किया। उन्होंने धन तथा पुत्रलाभ का आशीर्वाद दिया। १७ हे हिमांचल की पुत्री ! तुमने श्रीराम के जन्म होने की इस प्रकार की व्यवस्था की कथा सुनी। १८ शंकर जी के बचनों को सुनकर गौरी ने कहा हे त्रिपुरारी ! अब यह बताइये कि उनका विवाह कैसे हुआ। १९ यह बताइये कि विभाण्डक आये अथवा नहीं। इस कथा में हमें यहीं पर संदेह है। १८२० शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनो। तुम जो पूँछ रही हो मैं वही कह रहा हूँ। १८२१ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् जरता ने जब श्रृंगी ऋषि का वरण कर लिया तब वह लोग विभाण्डक के मठ में संध्या के समय पहुँची और उन्होंने सुरभी को मठ की रक्षा करते हुये देखा। २२-२३ उन्होंने देखा कि कुटी रिक्त दिखाई दे रही है। पुत्र को न देखकर मुनि चेतनाशून्य हो गये थे। २४ निरन्तर मुनि पुत्र का स्मरण करते हुये कह रहे थे कि कुल के प्रदीप को न जाने कौन ले गया। २५ अरे बेटे ! तुम बिना मुझसे कहे, कहाँ चले गये। मैंने तुम्हें बड़े कष्ट से पाया था। २६ तुम्हारी गिनती ब्रह्मर्षियों में होने लगी थी। ब्रह्मा भी तुम्हारी प्रशंसा करते थे। २७ प्रसन्न होकर इन्द्र ने तुम्हें वर प्रदान किया था। बालू के पूजने पर शंकर जी प्रकट हो जाते

तप निर्जित जे सूर्य्यमय्रे तनू। ब्रह्मज्ञान मात्रके न जाणु एणु तेणु २९
चउकति बनस्त जे नदी देश ग्राम। केणे छाडि गलु पुत्र अभिनव काम१८३०
शोभा मुनि आसिथिले बोलिण कहिलु।
पिचाशिनी देखि कि माय़ारे मोह गलु१८३१
कपटरे राक्षसुणी मुनिंकु भक्षन्ति। केणे गलु पवित्र माय़ावन्त तटि ३२
बाळुत काळरु मुं जे पाळिलइँ तोते। तोहर प्राय़ेक पुत्र केहु देव मोते ३३
काहाकु पुच्छिबि मुं जे पर्वत कन्दर।
भोककि लागिला मुनिंकु खोजन्ति कुमर ३४
आहार न कले मुनि मने सुख नाहिँ। जप मन्त्र तप जे नकले तपि होइ ३५
रजनीरे निर्बिकार होइण शोइले। आर दिन प्रभातरु बारता पाइले ३६
शंकर बोइले तुम्भे शुण गो शाकम्वरी।
जरता काममोहिनी माय़ारे नेले हरि ३७
चम्पावती राज्यकु आणि बार पाइँ।अनेक छाय़ा माय़ा जे मुनिंकु देखाइ ३८
माय़ारे रतिलीळा मुनिंक संगे कले। अजय़े बीर्ज्य मुनि क्षय़ करि न पारिले ३९
से बेनि कामिनी जे हेले गर्भ बास। सेहि दिन जात हेलेक बेनि शिष्य१८४०
ऋषि जाणि पारिबारु मने कोप हेले।
पितांकर आश्रमकु जाअ बोलि आज्ञा देले१८४१

थे। २८ तपस्या के कारण तुम्हारा शरीर सूर्य के समान कांतिमान था। तुम ब्रह्मज्ञान को ऐसा वैसा नहीं समझते थे। अर्थात् पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे। २९ चारों ओर वन्यप्रदेश नदी तथा गाँव में छोड़कर किसी नूतन कामना से कहाँ चले गये। १८३० तुमने कहा था कि सुन्दर-सुन्दर मुनि आये हैं। क्या पिशाचिनी को देखकर तुम उनकी माया में फँस गये। १८३१ छल से राक्षसियाँ मुनियों का भक्षण कर डालती हैं। हे पुण्यतम ! माया के चक्कर में तुम कहाँ चले गये। ३२ मैने बाल्यकाल से तुम्हारा पालन-पोषण किया था। अब तुम्हारे समान मुझे पुत्र कौन देगा। ३३ मैं पर्वत, कन्दराओं में किससे पूँछता फिरूँ। मुनि को भूख लगी थी। पर वह पुत्र की खोज कर रहे थे। ३४ मन प्रसन्न न होने के कारण उन्होंने भोजन नहीं किया। तपस्वी होकर उन्होंने तपस्या तथा मंत्र जाप आदि भी नही किया। ३५ वह निर्विकार होकर रात्रि में सो गये। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्हें समाचार मिले। ३६ शंकर जी ने कहा हे शाकम्वरी ! सुनो। जरता तथा काममोहिनी ने माया से उनका हरण कर लिया था। ३७ उन्होंने मुनि को चम्पावती राज्य में ले जाने के लिये नाना प्रकार के प्रलोभन दिखाये थे। ३८ उन्होंने छल से मुनि के साथ रति-क्रीड़ा की परन्तु वह मुनि के अजेय वीर्य को क्षय न करा पायी। ३९ उस दिन वह दोनों कामिनियाँ गर्भवती हो गई और उन्होंने उसी दिन दो पुत्रों को जन्म दिया। १८४० ऋषि ने जब यह जाना तो मन में क्रुद्ध हो गये। उन्होंने उन दोनों को पिता

नाव परे नारी गलेक बेग होइ। बिभाण्डक आश्रमरे मिळिलेक जाइँ ४२
निम्ब गछ मूळरे रात्रे रहिले। प्रभाते नारद जाइँ प्रबेश होइले ४३
बिभाण्डक देखिण रोदन कले जाण। नारद बोइले किम्पा शोक अकारण ४४
बिभाण्डक बोइले तोर पुत्र केणे गला। नारद बोइले जेणे गला से भल हेला ४५
बिभाण्डक बोइले कह मोते आग। नारद बोइले गला चम्पावती राज्य ४६
से देश अपाळक बार जे बरष। जळ बरषिब कहिले तोर शिष्य ४७
से राज्य राजार पुत्र नाहिँ जाण। जाग करि पुत्र नेबे से राजन ४८
दशरथ राजा जे अजोध्या नृपति। ताहांक कोळरे दुहिता उतपत्ति ४९
एगार बर्ष नवजुबा जे सुन्दरी। ताहाकु बिभा हेब कुमार तोहरि१८५०
कुळकु कुळबधू हेब सेहि पुण। से राजार पुण नाहिँ जे नन्दन१८५१
से राज्ये जाग करि ताहांकु पुत्र देबे। नारायण से राजा घरे जन्म हेबे ५२
असुर मारि बाकु होइछि देव कूट। बिभाण्डक बोइले ए सबु तोर कृत्य ५३
मोहर भल हेला तोहर सर्वनाश। कुळबधू देखिले मुँ होइबि सन्तोष ५४
कुमरकु भण्डि नेइण रमण कराइले। दुइ अपसरी जे सेथिरे बढ़िले ५५
गर्भ बास होइण प्रसब कले पुत्र। से पुत्र दुहेँ हेबे ऋषिकुळकु श्रेष्ठ ५६

के आश्रम में जाने की आज्ञा दी। १८४१ वह नारियाँ नाव पर चढ़कर शीघ्र ही विभाण्डक के आश्रम में जा पहुँची। ४२ वह रात्रि में नीम के वृक्ष के नीचे रहीं। प्रातःकाल वहाँ पर नारद आ पहुँचे। ४३ उन्हें देखकर विभाण्डक रो पड़े। नारद ने कहा कि व्यर्थ में शोक क्यों कर रहे हो। ४४ विभाण्डक बोले कि आपका बेटा कहाँ चला गया। नारद ने कहा वह जहाँ भी गया अच्छा ही हुआ। ४५ विभाण्डक बोले कि हमें सब बताइये। तब नारद ने कहा कि वह चम्पावती राज्य में गया है। ४६ वह देश बारह वर्षों से सूखे से पीड़ित है। तुम्हारे पुत्र ने जल बरसने के लिये कहा है। ४७ उस राज्य के राजा के पुत्र नहीं है। वह यज्ञ करके पुत्र प्राप्त करेगा। ४८ राजा दशरथ अयोध्या के राजा हैं। उनके एक पुत्री उत्पन्न हुयी थी। ४९ वह सुन्दरी ग्यारह वर्ष की नवयौवना है। उसका विवाह तुम्हारे पुत्र के साथ होगा। १८५० तुम्हारे कुल की वह कुलबधू होगी। उस राजा के भी पुत्र नहीं है। १८५१ उस राज्य में यज्ञ करके शृंगी ऋषि उसे पुत्र प्रदान करेगा। भगवान विष्णु राजा के घर में जन्म ग्रहण करेंगे। ५२ राक्षसों के मारने के लिये देवताओं ने यह षड़यन्त्र रचा है। विभाण्डक बोले यह सब तुम्हारा काम है। ५३ मेरा भला हो गया पर तुम्हारा सर्वनाश हो गया। कुलवधू को देखकर मैं संतुष्ट हो जाऊँगा। पुत्र को भ्रमित करके दो अप्सराओं से घेरकर उससे संभोग कराया। ५४-५५ गर्भवती होकर उन्होंने पुत्रप्रसव किये। वह दोनों पुत्र ऋषिकुल के श्रेष्ठ होंगे। ५६ विभाण्डक

विभाण्डक बोइले कहिलु आश्चम्बित । नारद बोइले तोर नातिकु जाइ देख ५७
नारद आग गले बिभाण्डक पछे । निम्बगछ मूळरे देखिले से प्रत्यक्षे ५८
मठरे आणिण तांकु स्थान देले । सात दिने दुइ कन्या स्वर्गपुरे गले ५९
एकोइश दिनरे कुमर नवजुबा । शते मुनि त्रिथ मुनि नाम हेला प्रभा१८६०
दुइ नाति घेनिण निश्चिन्तरे रहि । बक्र ऋषि कुमरंकु विद्या जे पढ़ाइ१८६१
एथु अनन्तरे जे नारद महा ऋषि । ऋष्यशृंग बिभा जाणि परबेश आसि ६२
बिभाण्डकंकु कहन्ति सुमर ऋषि गण । चम्पावती राज्यकु जिबा ततक्षण ६३
दशरथ दुहिता ऋष्यशृंगंकु वरि ।सकळ राजा सेथिरे मिळिले आसि करि ६४
नारद बोइले पुत्र विभाघर कालि । सेठाबकु बेगे चळ हेळा जे नकरि ६५
नारद बोलरे ऋषि सुमरणा कले ।नव सहस्र ऋषि आसि तुरिते मिळिले ६६
देव ऋषि ब्रह्म ऋषि नव सहस्र जाण । सुमरिला मात्र के प्रबेश हेले पुण ६७
जोग लग्न छाड़िण ऋषि बेगे उभा हेले । नमस्कार करिण जे सकळ कहिले ६८
कामधेनु प्रसादरे सकळ द्रव्य पुण । ऋषि गण भोजन जे कले तत्क्षण ६९
आचमन सारिण कषा फळ खाइ । विभाण्डक संगरे समस्ते चळि जाइ१८७०
बेनि नाति वक्र ऋषि रहिले मठरे । मठे रखि बिभाण्डक गले जे सत्वरे१८७१

ने कहा कि यह बड़े आश्चर्य की बात तुमने बतायी। नारद ने कहा कि तुम जाकर अपने नातियों को देखो। ५७ आगे-आगे नारद और पीछे-पीछे विभाण्डक ने जाकर उन्हें नीम के वृक्ष के नीचे प्रत्यक्ष देखा। ५८ उन्होंने मठ में लाकर उन्हें स्थान दिया। सातवें दिन दोनों कन्यायें स्वर्ग चली गयीं। ५९ इक्कीस दिन में दोनों कुमार नवयुवा हो गये। उनका नाम शतमुनि तथा त्रियमुनि रख दिया गया। १८६० दोनों नातियों को लेकर वह निश्चिन्त होकर रहने लगे। वक्र ऋषि ने बालकों को विद्याध्यन कराया। १८६१ इसके पश्चात् महर्षि नारद शृंगी ऋषि के विवाह को जानकर वहाँ आ पहुँचे। ६२ उन्होंने विभाण्डक से कहा कि इसी समय ऋषियों को स्मर्ण करो, चम्पावती राज्य को चलना है। ६३ राजा दशरथ की पुत्री ने शृंगी ऋषि का वरण किया है। सभी राजा लोग वहाँ पर आकर एकत्रित हुये हैं। ६४ नारद ने कहा कि पुत्र का विवाह कल है। प्रमाद न करके शीघ्र ही वहाँ चलो। ६५ नारद के कहने पर ऋषि ने ऋषियों का स्मरण किया। शीघ्र ही नौ हजार ऋषि वहाँ पर आकर एकत्रित हो गये। ६६ नौ हजार देवर्षि तथा ब्रह्मर्षि स्मरणमात्र से वहाँ आ पहुँचे। ६७ योगाभ्यास छोड़कर ऋषि शीघ्र ही खडे हो गए। उन्होंने नमन करके सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया। ६८ कामधेनु के प्रसाद से समस्त ऋषिगणों ने नाना प्रकार के पदार्थ भोजन किए। ६९ आचमन करके हरड़ खाकर विभाण्डक के साथ में सभी चल दिये। १८७० दोनों नाती तथा बक्र ऋषि आश्रम में रह गए। उन्हें मठ में छोड़कर विभाण्डक शीघ्र ही चल पड़े। १८७१ मूहूर्तमात्र में वह सब

प्रहरके चम्पावती देशरे परबेश । बिभाण्डक मिळिवारु हाल होळि हेउ देश ७२
राजा माने पाछोटि आसि घेनि गले । रत्न मण्डपरे नेइण बसाइले ७३
लोमपाद दशरथ चरणे लोटिले । सकळ राजा आसिण दरशन कले ७४
शाचि कन्द नबात फळ मूळ आणि देले । समस्त ऋषिकु चरचा बेगे कले ७५
भुञ्जिण सकळ ऋषि आचमन सारि ।बसिण ताम्बुळ जे भुञ्जिन्ति तपचारी ७६
बिभाण्डक बोइले दशरथ शुण । कुशळ अछटिकि दुइ जे राजन ७७
लोमपाद बोइले सबु जे कुशळ । जेउँ दिनु अइलेणि तुम्भर कुमर ७८
बिभाण्डक बोइले काहिँ तुम्भ झिअ । बिभा घर केते दिन अछि पुण कह ७९
दशरथ कहिले कालिर प्रभाते । आजि मंगळ कृत्य कहिलु पुण तोते१८८०
तुम्भे त सर्वज्ञ अट हे मुनि गण ।किस कहिबि मुहिँ तुम्भे त सर्ब जाण१८८१
ऋषि बोइले तुम्भ दुहिता बेगे आण । देखन्तु सर्व ऋषि करन्तु कल्याण ८२
शुणिण लोमपाद बेगे चळि गले । श्वशुर देखिबे बोलि बेग सज कले ८३
सुबेश करि कन्या घेनि आस बेगे । देखिण सर्व ऋषि माने मने हर्ष हेबे ८४
सन्तोष होइण जे सुकल्याण कले । सुलक्षणी पुत्रवति हुअ तु बोइले ८५
सुलक्षणी त्रिजीवी पुत्र वन्त हुअ । स्वदेह घेनि करि स्वामी संगे जाअ ८६

चम्पावती देश में प्रविष्ट हो गए। विभाण्डक के आने से देश में हलचल मच गई। ७२ राजा लोग आकर उन्हें अगवानी करके ले गए तथा उन्हें लेकर रत्नमण्डप में बैठा दिया। ७३ लोमपाद तथा दशरथ उनके चरणों में लोट गए। सभी राजाओं ने आकर उनके दर्शन किए। ७४ नाना प्रकार के कन्दमूल तथा फल लाकर उन्हें दिये। उन्होंने समस्त ऋषियों का सत्कार किया। ७५ भोजन के उपरान्त समस्त ऋषियों ने आचमन करके बैठकर ताम्बूल ग्रहण किए। ७६ विभाण्डक बोले, हे दशरथ ! सुनो। तुम दोनों राजा कुशलपूर्वक हो। ७७ लोमपाद ने कहा कि सब कुशल है। जिस दिन से आपके पुत्र यहाँ आए हैं। ७८ विभाण्डक ने कहा कि आपकी कन्या कहाँ है। बताइये कि विवाह में कितने दिन शेष हैं। ७९ दशरथ बोले कि कल प्रभात में है। आज मांगलिक कृत्य हैं। यह आप समझ लें। १८८० हे मुनिगण ! आप लोग सर्वज्ञ हैं आप सब जानते हैं। हम आपसे क्या कहें। १८८१ ऋषि ने कहा कि अपनी कन्या को शीघ्र ही ले आओ। देखो, समस्त ऋषि उसे आशीर्वाद प्रदान करें। ८२ यह सुनकर लोमपाद शीघ्र ही चले गए। श्वसुर उसे देखेंगे ऐसा विचारकर उसे शीघ्र ही सुसज्जित किया। ८३ उन्होंने कहा कि कन्या को शीघ्र ही शृंगार कराकर ले आओ। उसे देखकर समस्त ऋषियों के मन प्रसन्न हो जाएँगे। ८४ ऋषियों ने सन्तुष्ट होकर उसे आशीर्वाद दिया हे सुलक्षणी ! तू पुत्रवती हो। ८५ हे सुलक्षणी ! तुम त्रिजीवी पुत्रवती हो। अपना शरीर लेकर तुम स्वामी के साथ जाओ। ८६ नमस्कार करके

नमस्कार करि कन्या भितरकु गला। रवि अस्ते अन्ते रजनी होइला ८७
लोमपाद आज्ञा देले शुण मन्त्रीवर। रत्न देवी जतनरे कर हे तिआर ८८
ऋषि माने रहि बाकुदिअ स्थान बेगे। समस्त लोक देखिबे बिभार संजोगे ८९
शुणि पात्र मन्त्री जे बेगे चळि गले। रुधिर गिरि तळरे ऋषिकु रखाइले१८९०
बशिष्ठ सउनक रहिले तांक पाशे। सुमन्त रहिले चरचार आशे१८९१
राजार बिचाररे रहिले सुमन्त। पात्र मन्त्री चरचारे रहि सर्व लोक ९२
बिप्रंक चरचारे परिजन रहि। सनक ऋषि सुरभि सकळ द्रव्य नेइ ९३
नाना बर्णे रत्न देवी तिआरि कले पुण।आगरे छामुण्डिआ निर्बन्ध कले जाण ९४
इन्द्र गोबिन्द चान्दुआ टाणिले तहिँरे।चित्र बिचित्र पितुळा रत्नबेदीरे कले ९५
राजार आगरे जणाए आसि करि। चरचि तिआरि सकळ निर्मा करि ९६
शुणि करि राजन जे हरष होइला। बासुदेवंकु मनरे सुमरण कला ९७
भितर पुरकु चळिले राजन। मंगळ कृत्य बिधान कराइले पुण ९८
रजनीरे दासी गणे मंगळ विधि कले।हान्दोळारे बसाइण कन्याकु घेनि गले ९९
ग्राम देवती मन्दिरे हेलेक प्रवेश। देबींकर उरसव जे कराइ हरष१९००
प्रति घरु तोळापाणि घेनि बेगे आसि।
पाहान्ति निशिरे कन्या स्नान कले बसि१९०१

कन्या भीतर चली गई। सूर्य के अस्त होने पर रात्रि हो गई। ८७ लोमपाद ने आदेश देते हुए कहा, हे श्रेष्ठ मंत्री! सुनो। तुम यत्नपूर्वक रत्नवेदी तैयार करो। ८८ शीघ्र ही ऋषियों के ठहरने के लिये स्थान दो। सभी लोग विवाहोत्सव देखेंगे। ८९ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्र ही चले गए। रुधिर गिरि की उपत्यका में उन्होंने ऋषियों को ठहरा दिया। १८९० वशिष्ठ तथा शौनक उनके पास रहे। सुमन्त उनकी सेवा सत्कार के लिये वहाँ रुक गए। १८९१ राजा के विचार से वह वहाँ रुके। सभासद तथा मंत्री सभी लोगों की सेवा सत्कार के लिये वहीं रह गए। ९२ ब्राह्मणों की सेवा के निमित्त सेवकगण वहाँ रहे। सनक ऋषि ने सुरभि से नाना प्रकार की वस्तुयें प्राप्त कीं। ९३ उन्होंने विविध प्रकार से रत्नवेदी का निर्माण किया आगे शमिआना तान दिया। ९४ फिर वह इन्द्रगोविन्द चँदोवा तान दिया गया। रत्नवेदी में भाँति-भाँति के पुतले सजा दिये गए। ९५ फिर उन्होंने राजा के समक्ष आकर निवेदित किया कि हर प्रकार की तैयारी हो गई है। ९६ यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गए। उन्होंने मन में भगवान का स्मरण किया। ९७ फिर राजा महल के भीतर चले गए। उन्होंने मांगलिक कृत्य करवाए। ९८ रात्रि में दासियों ने मांगलिक विधि की। वह पालकी में बैठाकर कन्या को ले गईं। ९९ वह जाकर ग्रामदेवी के मन्दिर में प्रविष्ट हुईं। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक देवी का उत्सव करवाया। १९०० प्रत्येक घर से मांगलिक जल लेकर वह आ गईं।

बाढुअ दोष तार सेहि ठारु गला। साध बाणी रूप तार प्रकाश होइला २
एथु अनन्तरे पाहिला रजनी। देव आळे शंख शब्द हुए पुण ३
उठिले सकळ जन सुमरि हरिनाम। पात्र मन्त्री राजा जे बिप्र ऋषिगण ४
प्रजा सैन्य बळ सर्वे होइ लेक चेता। मर्द्दन माजणा जे जेमन्त बिधिमता ५
नित्य कर्म सारिण होइले नाना बेश। समस्ते हरष जे, केहि नुहन्ति बिरस ६
एथु अनन्तरे शुण गो पार्वती। बिभार मंगळ जे उत्सव करन्ति ७
ऋषिगण माने जे अइले बेग होइ। ब्रिप्र जन माने जे ठुळ हेले तहिँ ८
पात्र मंत्री से मानंकु नेइ आसन देले। ब्राह्मण ऋषि सर्वे आसने बसिले ९
राजागण अइले देले जे आसन। पात्र मन्त्री सामन्तंकु देले नेइ स्थान१९१०
बेदी चारि पाशे घेरिले नर नारी। हुळळुळि दिअन्ते कटक उछुळि१९११
दश घड़ि आसिण होइला एबे बेळ। पाट ज्योतिष कहिले कर एबे अनुकूळ १२
ऋष्यश्रृंगकु पुणि अन्तः पुरकु नेले। जतनरे बर बेश करिण आणिले १३
बेदीर उपरे बसाइले नेइ। उपरे चन्द्रातप कनक मण्डाइ १४
शरद चन्द्रमा आसि लागि लाणि तळ। बरकु देखिण जे सकळ नारी बळ १५
हरषरे बिचार करन्ति सर्बे हेरि। बाद्यर निशाणरे पूरइ मेरु गिरि १६

रात्रि की समाप्ति पर कन्या ने बैठकर स्नान किया। १९०१ वहीं से उसका अविवाहित दोष समाप्त हो गया। उसका साध्वीरूप प्रकाशित हुआ। २ इसके पश्चात् रात्रि व्यतीत हो गई। देवालय में शंख का शब्द होने लगा। ३ सभासद, मंत्री, राजा, ब्राह्मण सभी लोग भगवान का नाम स्मरण करके उठ पड़े। ४ प्रजा, सैन्यबल आदि सभी यथाविधि मर्दन-मार्जन करके सचेत हो गये। ५ उन्होंने नित्यकर्म सम्पादित करके विविध वेश में श्रृंगार किया। सभी लोग प्रसन्न थे। कोई भी दुःखी नहीं था। ६ हे पार्वती ! सुनो। इसके पश्चात् विवाह के मांगलिक उत्सव किये जा रहे थे। ७ शीघ्रतापूर्वक ऋषिगण वहाँ आ गये। ब्राह्मण वर्ग भी वहाँ एकत्रित हो गया। ८ सभासद तथा मंत्री ने उन्हें आसन दिया। ब्राह्मण तथा समस्त ऋषि आसन पर बैठ गये। ९ राजाओं के समूह आने पर उन्हें आसन प्रदान किये गये। सभासद मंत्री तथा सामंतों को स्थान दिये गये। १९१० वेदी के चारों ओर घिरे हुये नर-नारियों के मांगलिक शब्द करने के कारण नगर गूँज उठा। १९११ इस समय दस घड़ी बीत चुकी थी। मुख्य ज्योतिषी ने प्रारम्भ करने की आज्ञा दी। १२ श्रृंगी ऋषि को अंत:पुर ले जाकर फिर यत्नपूर्वक वर-वेश में श्रृंगार करके लाया गया। १३ उन्हें लाकर वेदी के ऊपर बैठा दिया और ऊपर से स्वर्ण मंडित चन्द्रातप तान दिया गया। १४ लगता था जैसे शरद का चन्द्रमा नीचे आ गया हो। वर को देखकर सम्पूर्ण नारी समाज प्रसन्नता से उन्हें देखकर हर्षित होकर विचार कर रहा था। वाद्य-निनाद सुमेरु पर्वत तक भर गया था। १५-१६

साएन्ता कन्याकु जे घेनिण आसिले। लवणी चमरी बिधिमते कले भले १७
नवरकु नेइ बेश कराइ सत्वर। × × × १८
वेदी परे नेइण कन्याकु बसाइले। देखिण नारी माने हुळहुळि देले १९
साएन्ता ऋष्यश्रृंगर देखन्ति बिभा घर। दुहेँ पटान्तर कि मदन रतिसार१९२०
देखिण सकळ हेले आनन्द मनर। × × × १९२१
राजागण सर्वे देखिण हेले सुखी। ऋषि गण सबे चाहान्ति निरेखि २२
लोमपाद राजार जेतेक पाटराणी। चौकी परे बसि जे देखन्ति सर्व राणी २३
दशरथ राजार जेतेक महादेई। नूआ उआसरे अछन्ति सेहु चाहिँ २४
वसिछन्ति राजा आगे दुहिताकु घेनि। × × × २५
एकादश घड़ि जे, समय हेला वेळ। ज्योतिष कहिला जे शुभ अनुकूळ २६
बिप्रवर सुज्ञजन अछन्ति बहुत। वर कन्याकु सुकल्याण कले तपोबन्त २७
वरुण पूजा करि शिळा वरण कले। चारि वेद ॐकार करिण पढिले २८
कुशरे बन्धन कले वर कन्या कर। जेउँ ठाकु जेउँ बिधि कलेक बिचार २९
लक्षेक रतन जे शंखरे पूराइण। दशरथ ऋष्यश्रृंगकु देले दान१९३०
अश्व हस्ती रथी धान जे धेनू पुण। बस्त्र अळंकार जे दुहितार पुण१९३१
नव सहस्त्र मउळा शंखरे देले पाणि। शते शते सुवर्ण नेले पुणि आणि ३२

वह शांता कन्या को लेकर आ गयी। फिर उन्होंने विधिपूर्वक राईलोन उतारा। १७ महल में ले जाकर श्रृंगार करने के उपरांत शीघ्र ही कन्या को लाकर वेदी पर बैठा दिया। यह देखकर स्त्रियाँ मांगलिक शब्द का उद्‌घोष करने लगीं। १८-१९ वह शाँता तथा श्रृंगी ऋषि का विवाह देख रही थीं। दोनों कामदेव तथा रति के सार तत्व के समान थे जिनकी कोई तुलना नहीं थी। १९२० उन्हें देखकर सबके मन आनन्दित हो गये। १९२१ समस्त राजागण देखकर सुखी हो गये। समस्त ऋषिगण निर्निमेष देख रहे थे। २२ लोमपाद राजा की जितनी पटरानियाँ थी। वह सब चौकी पर बैठकर देख रही थीं। २३ महाराज दशरथ की जितनी महारानियाँ थीं वह सब नये वास स्थानों से देख रही थीं। २४ राजा अग्रभाग में पुत्री को लेकर बैठे थे। २५ ग्यारह घड़ी का समय होने पर ज्योतिषी ने शुभकार्य प्रारंभ करने की आज्ञा दी। २६ श्रेष्ठ ब्राह्मण तथा बहुत से तपस्वी एवं विद्वान वहाँ थे जिन्होंने वर कन्या को आशीर्वाद दिया। २७ वरुण पूजा करके शिला वरण किया गया। ओंकार के सहित चारों वेदों का पाठ हुआ। २८ वर और कन्या के हाथ कुश से बाँध दिये गये। फिर जहाँ पर जैसा उचित था वह किया गया। २९ एक लाख रत्न शंख में भरकर राजा दशरथ ने श्रृंगी ऋषि को दान किये। १९३० घोड़े, हाथी, रथी, धान, गउएँ, कन्या के वस्त्रालंकार मँगाकर नौ हजार विशिष्ट शंखों में जल भरकर सौ-सौ स्वर्ण मुद्राएँ ले लीं। १९३१-३२ लोमपाद ने एक

लोमपाद लक्षे जे सुबर्ण दान देला। गाई मइँषि अश्व हस्ती समर्पिला ३३
निऊन होइ लोमपाद दशरथ। बोइले दुहितार न घेनिब दोष ३४
गन्ध सम्बन्ध करिण कलेक गन्ध पूजा। उठिण बोइले दशरथ महाराजा ३५
विभाण्डक तनय़ जे ऋष्यश्रृंग मुनि। एहांकु देलु पुणि आम्भर नन्दिनी ३६
जउतुक देबाकु जेहु जे भाजन। समर्पि होइले आजुँ शुण सर्ब जन ३७
बिभाण्डक बोइले आम्भे होइलु सन्तोष। एवे रक्षा हेउ जे तुम्भर बेनि बंश ३८
शुणिण कहिले जे लोमपाद राय़े। आम्भर दोष क्षमाकर हे मुनि ए ३९
ऋषिगण बोइले शुण महीपाळ। दुइ राजांकर कुळ हेउ जे उज्वळ१९४०
शुणिण दशरथ लोमपाद दुहेँ पुणि। ब्राह्मण आचार्य्यंकु दक्षिणा देले पुणि१९४१
सुलक्षणी नारी माने बन्दाइले आसि। होम बिधि सेठारे सारिले ब्रह्मऋषि ४२
बर कन्य़ा भितरकु नेले दासीगण। अन्तःपुरे बर कन्य़ा बसाइ जतन ४३
अन्तःपुरे राजार जे राणीहंस माने। आनन्दे बन्दापना कले सर्बजने ४४
शते शते सुबर्ण राणी माने देले।
गंगा जमुना दुइ राणी लक्षे सुनिआँ बन्दाइले ४५
से ठारु बर कन्य़ा उठिण चळि गले। दशरथ नवररे प्रबेश होइले ४६
कौशल्या कैकय़ा सुमित्रा संगे पुणि। दशरथ राजार जेतेक पाटराणी ४७
तिनि लक्ष सुनिआँ तिनि राणी बन्दाइले। सबुराणी सहस्रे लेखाएँ बन्दाइले ४८

लाख स्वर्णमुद्राएँ दान दीं तथा गाय भैंस घोड़े तथा हाथी समर्पित किये। ३३ दशरथ तथा लोमपाद ने विनम्र होकर पुत्री के दोषों को न देखने की प्रार्थना की। ३४ गन्ध सम्बन्ध करके उन्होंने गन्ध पूजा की और फिर महाराज दशरथ ने उठकर कहा। ३५ विभाण्डक के पुत्र जो मुनि ऋष्यश्रृंग है उन्हें मैने अपनी कन्या प्रदान कर दी। ३६ सब लोग सुनों! जो कुछ दहेज जिन्हें देना था। वह आज समर्पित कर दिया गया। ३७ विभाण्डक ने कहा कि हम संतुष्ट हो गये। अब आपके दोनों कुलों की रक्षा हो। ३८ यह सुनकर राजा लोमपाद ने कहा, हे मुनि! हमारे अपराध क्षमा कीजिये। ३९ ऋषिमण्डल बोला, हे पृथ्वीपाल! दोनों राजाओं के कुल उज्जवल हों। १९४० यह सुनकर दशरथ तथा लोमपाद दोनों ने ब्राह्मण आचार्यों को दक्षिणा दी। १९४१ सधवा स्त्रियों ने आकर पूजन किया। वहाँ ब्रह्मर्षि ने विधिपूर्वक हवन सम्पादित किया। ४२ दासियाँ वर-कन्या को भीतर ले गईं। उन्होंने यत्नपूर्वक वर-कन्या को अन्तःपुर में बैठाया। ४३ अन्तःपुर में राजा की जो रानियाँ थीं उन सबने आनन्द सहित पूजन किया। ४४ रानियों ने सौ-सौ स्वर्णमुद्रायें प्रदान कीं। गंगा तथा यमुना दोनों रानियों ने एक लाख स्वर्णमुद्रायें प्रदान की। ४५ फिर वर-कन्या वहाँ से उठकर चले गए और दशरथ के महल में जा पहुँचे। ४६ राजा दशरथ की जितनी पट-रानियाँ थीं सबने कौशल्या, कैकेयी तथा सुमित्रा के साथ तीनों ने तीन लाख स्वर्णमुद्रायें तथा अन्य ने हजार स्वर्णमुद्राओं से

कळावती नीळावती जे दुइराणी। हीरा नीळा दुइ मुदि बन्दाइले पुणि ४९
मुक्ता कुण्डळ जे कैकय़ा राणी देला। चापसरि पदक कौशल्या बन्दाइला१९५०
अष्टरत्न कंकण देलेक सुमित्रा।ऋष्यश्रृंग बसिले जे राजन बेश तोरा१९५१
एक पत्रे भोजन जे कले कन्य़ा बर। दुर्वाक्षत देले राणी बर कन्य़ाक उपर ५२
सेठारु उठिण जे ऋष्यश्रृंग गले। ऋषि मानंक संगरे जाइण बसिले ५३
रात्र हेबारु से सभा भांगि गले। अमृत भोजन समस्ते जाइ कले ५४
रात्र पाहिण होइला आसि बेळ। सकळ राजा मेलाणि हेले ततकाळ ५५
पउरुष करिण राजा मानंकु धन देले। हरषरे प्रजा माने जे जाहापुर गले ५६
ऋषि माने आनन्दरे धन रत्न नेले। कल्याण बाञ्छा करिण निज स्थाने गले ५७
दशरथर जेतेक पाटराणी पुण। हरष हेले झिअ जोइँकि देखिण ५८
हाटुआ बाटुआ जे देखणा हारि लोक। समस्ते गळारु जे भांगिला गहळत ५९
बिभा घर सरि बारु गहळ गला भांगि।समस्ते प्रशंसा करन्ति केहु नुहे रागी१९६०
पार्वती पचारिबारु ईश्वर एहा कहि। शुणिण पार्बती जे सन्तोष मन होइ१९६१
बळराम दास मुँ जे भाबे जगन्नाथ।शंख चक्रधारी मोते कहिले ए चरित ६२
तेणु करि रामाय़ण कलि मुँ ग्रन्थ पुण। सात काण्ड रामाय़ण करिबाकु मन ६३

पूजा की। ४७-४८ कलावती तथा नीलावती दोनों रानियों ने हीरा तथा नीलम की दो मुद्रिकाएँ देकर पूजन किया। ४९ रानी कैकेयी ने मुक्ताओं के कुण्डल दिये। कौशल्या ने सुतिया देकर पूजा की। १९५० सुमित्रा ने अष्टरत्नों के कंकण प्रदान किए। श्रृंगी ऋषि राजा की वेशभूषा में बैठे थे। १९५१ वर-कन्या ने एक पत्तल में भोजन किया। रानियों ने वर कन्या के ऊपर दूर्वाक्षत छोड़े। ५२ फिर वहाँ से श्रृंगी ऋषि उठकर चले गये और ऋषियों के साथ जाकर बैठ गये। ५३ रात्रि होने पर सभा भंग हो गयी। सबने जाकर अमृत के समान भोजन किये। ५४ रात्रि समाप्ति का समय हो आया। उसी समय समस्त राजा लोग विदा हुये। ५५ उनकी प्रशंसा करते हुये उन्हें धन दिया गया। प्रजा के लोग भी प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थानों को चले गये। ५६ ऋषियों ने प्रसन्न होकर धन तथा रत्न ग्रहण किये और आशीर्वाद देते हुये अपने स्थानों को चले गये। ५७ दशरथ की जितनी पटरानियाँ थीं, वह पुत्री तथा दामाद को देखकर प्रसन्न हो गईं। ५८ हाट बाजार के लोगों, बटोहियों तथा दर्शकों के चले जाने से चहल-पहल कम हो गई। ५९ विवाह समाप्त होने से धूम-धाम कम हो गई। सभी प्रशंसा कर रहे थे और कोई भी क्रोध में नहीं था। १९६० पार्वती के प्रश्न करने पर शंकर जी ने यह सब कहा, जिसे सुनकर पार्वती का मन संतुष्ट हो गया। १९६१ मैं वलरामदास जगन्नाथ जी का भजन करता हूँ। शंख, चक्रधारी भगवान ने यह चरित्र हमसे कहा है। ६२ इसलिये मैंने सात काण्ड रामायण ग्रन्थ की रचना

प्रथमरे आद्यकाण्डर उच्चार मुँ कलि । अद्र्धेक ए काण्डरु पूर्ण मुहिँ कलि ६४
नारायण प्रसन्नरु ऋष्यश्रृंग बिभा । सरिबारु सम्पूर्ण होइला ए अध्या ६५
आठ सहस्त्रे पद जे दुइश पञ्चाशरे । एठाकु आद्य काण्ड होइला लेखारे ६६
बन्दइ जगन्नाथ हे कमळा देबी पति । नीळ गिरि रे बिजये चतुर्द्धा मूरति ६७
सुन्दर श्रीमुख जे नीळेन्दी जळ शोभा । कि जाणि पटान्तरक तोळा रबि प्रभा ६८
बेनि नयन जे शरद कोटि शशी । जगत जनंकर हृदये देब बसि ६९
सुरगण निस्तारण भक्तजन साहा । शुद्ध सुबर्ण पराये शंख चक्र प्रभा१९७०
सर्बांगे चन्दन जे लेपन जगन्नाथे । झीन बास अमळाण अंगरे शोभित१९७१
सुन्दर शौच जे निर्मळ नेत गोटि । श्री अंगकु शोभा जे पाउछि काछेटि ७२
शिररे मुकुट कर्णे कुण्डळ शोभाबन । बक्षस्थळे मणि हीरा जे तेज पुण ७३
ललाटरे शोभइ नवरत्न चिता । गगने उदये कर बिचित्र देवता ७४
अळका पन्ति पन्ति मुक्ता झरा । चन्द्रकु बेढि जेसन दिशु थान्ति तोरा ७५
मस्तकरे मण्डित सिन्दुर चारु चिता । गळारे चाप सरि कन्धरे पइता ७६
अधर सुसञ्च शोभा चारु रेखा । नीळ मेघ जेन्हे बिजुळिर रेखा ७७

करने का विचार मन में किया है। ६३ मैंने पहले आद्यकाण्ड का वर्णन किया है। इस काण्ड का अर्धभाग मैंने पूर्ण कर लिया है। ६४ भगवान की प्रसन्नता से श्रृंगी ऋषि के विवाह की समाप्ति पर यह काण्ड आधा हो गया। ६५ आठ हजार दो सौ पचास पदों में यह आद्यकाण्ड लिखा गया है। ६६ लक्ष्मीपति नारायण जगत् के नाथ की मैं बन्दना करता हूँ जो नीलाँचल पर चतुर्धारूप में विराजमान हैं। ६७ उनका मुखारविन्द नीलजल के समान शोभायमान है। सूर्य की प्रभा भी उसकी समता में नहीं आती। ६८ शरद ऋतु के करोड़ों चन्द्रमा के समान उनके दोनों नेत्र संसार के प्राणियों के हृदय में बसे हैं। ६९ वह देवताओं का उद्धार करने वाले तथा भक्तजनों के सहायक हैं। शंख, चक्र तथा गदा की प्रभा विशुद्ध स्वर्ण के समान है। १९७० जगन्नाथ ने सम्पूर्ण शरीर में चन्दन चर्चित किया है। उनके अंग पर सुझीन स्वच्छ वस्त्र सुशोभित हैं। १९७१ सुन्दर स्वच्छ एवं पवित्र पटविशेष तथा श्री अंग पर कछोटी शोभा पा रही है। ७२ शिर पर मुकुट तथा कानों में कुण्डल शोभित है। उनके वक्षस्थल पर हीरा-मणि प्रकाशित हो रहे है। ७३ भाल पर नवरत्न का तिलक सुशोभित है। मानों विचित्र देवता आकाश में उदय हो गया हो। ७४ अलकों पर पंक्तिबद्ध हीरे तथा मुक्ता ऐसे सुन्दर लग रहे हैं मानो उन्होंने चन्द्रमा को घेर रक्खा हो। ७५ सिन्दूर का सुन्दर तिलक मस्तक पर मण्डित है। गले में चाप-सरि (आभूषण विशेष) तथा कन्धे पर यज्ञोपवीत सुशोभित है। ७६ अधरों पर शोभा की सुन्दर रेखा खिंची है। लगता है मानो नीले बादल में विजली की

सुसञ्च नासिकाकु पटान्तर अछि। आपे निर्माण जे घटणा श्रीबत्सि ७८
त्रैलोक्यर नाथ जे देवर बश होइ।करुणा सागर अटन्ति त्रैलोक्य गोसाइँ ७९
कटीरे कटी मेखळा शोभा दिव्यकान्ति। बामे जमदाढ़ सूर्य्यर प्राय़ ज्योति१९८०
रत्न चका उपरे से हंसुळि तुळिपारि। बिजय़े जगन्नाथ बडिमा पण हरि१९८१
ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र जे चिन्तति अनुक्षणे। से प्रभु कळि जुगे अवतार मउने ८२
जेबण दुर्ल्लभ मनुष्य अगोचर। परम ब्रह्म रूप दिशन्ति अगोचर ८३
अभय़े रूप गुण स्वरूप जार काय़ा। अवनीरे अवतार अगोचर माय़ा ८४
अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड अटइ आत्मा तार।नीळ गिरिरे बिजे देखिण सिन्धु तीर ८५
दण्ड सिंहासन जे चामर श्वेत छत्र। राजाधिराजेश्वर नृपति प्रत्यक्ष ८६
बेनि पाटबंशी जे लक्ष्मी, सरस्वती। संगरे बिजय़े अनन्त जोग मूर्त्ति ८७
अनन्तर घरणी जे मध्यरे बिजय़े। आवर छामुरे जे त्रिदश देवताए ८८
बिजय़े जगन्नाथ अष्टरत्न पुरे। ध्वज मातंग उड़े देउळ उपरे ८९
आगरे बिजय़ जे बिनतार बत्सि। दक्षिण पारुशरे कल्प बट अछि१९९०
लवण सागर जे, नबर पूर्ब पुण। लाउकेश्वर लिंग पश्चिम दिगे पुण१९९१
चउपाशरे अछइ नग्र पुर। छय़ानेक जहिँरे अष्ट पाटक घर ९२

रेखा हो। ७७ सुन्दर नासिका अनुपम है। भगवान नारायण अपनी इच्छानुसार प्रकट हुए हैं। ७८ तीनों लोकों के नाथ देवताओं के वश में हो गए हैं। तीनों लोकों के स्वामी दया के समुद्र हैं। ७९ कमर में दिव्य कान्तिमई मेखला शोभायमान है। बाम भाग में यमराज की डाढ़ के समान सूर्य सा ज्योतिर्मय चक्र है। १९८० रविसदृश् तेजोमय रत्नवेदिका के ऊपर नारायण जगन्नाथ महानता के साथ विराजमान हैं। १९८१ जिन्हें ब्रह्मा इन्द्र तथा चन्द्र प्रतिक्षण ध्यान में रखते हैं। उन प्रभु ने कलियुग में मौन अवतार ग्रहण किया है। ८२ जो मनुष्यों के लिये दुर्लभ तथा अगोचर है वह परमब्रह्म साकार रूप में दृष्टिगत होता है। ८३ जिसका साकार गुणमय रूप अभय प्रदान करने वाला है। उन्होने पृथ्वी पर अवतार लिया है। उनकी माया आगोचर है। ८४ जिसकी आत्मा में अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड व्याप्त है। उसका दर्शन सिन्धुतीर पर नीलांचल पर्वत पर होता है। ८५ दण्ड सिंहासन चामर एवं श्वेत छत्र से युक्त वह प्रत्यक्ष राजाधिराज राजेश्वर हैं। ८६ दोनों पटरानियाँ लक्ष्मी तथा सरस्वती एवं अनन्त योगमूर्ति बलराम उनके साथ में बिराजमान है। ८७ अनन्त की घरणी मध्य में विराजमान है और समक्ष देवसमूह उपस्थित है। ८८ अष्टरत्न के महल में जगन्नाथ जी विराजमान है। देवालय के ऊपर विशाल ध्वज फहरा रहा है। ८९ अग्रभाग में विनतानन्दन गरुड़ विराजमान हैं। उनकी दाहिनी ओर कल्पवृक्ष है। १९९० मन्दिर के पूर्वभाग में लवण सागर तथा पश्चिम में लौकेश्वर शिवलिंग है। १९९१ चारों ओर नगर फैला हुआ है। जहाँ पर आठ

आपणार नाम नेले श्री पुरुषोत्तम। जम्बुद्वीपरे एहा सर्जिले आपण ९३
मार्कंण्डेश्वर जे उत्तर भागरे। चारि द्वारे रत्नपुर जे, अछि जतनरे ९४
सुवर्णमय़पुर तेजरे दिशे शोभा। जहिँरे लभे गुण कळिकाळ प्रभा ९५
से पुरुषोत्तमरे केतेक जने छन्ति। समस्ते चतुर्भुज देवंकु दिशन्ति ९६
शुणिण देवताए पुचिछले पितामह।पुरुषोत्तम पुरुष मानंकर संशय़ फेडि कह ९७
बेदबर बोइले त्रिदश देबे पुण। पुरुषोत्तम जन सर्व चतुर्भुज जाण ९८
बिजय़े निराकार प्रत्य़ेक्ष देव हरि। बेनि लोचने देखिले जिब जे निस्तरि ९९
सेथिर सकाशे पुर जने पुण। दर्शन निर्माल्य़रे सेवारे चतुर्भुज जाण२०००
चतुर्भुज जे, होइले देवराए। पुरुषोत्तम लोकंकु चतुर्भुज दिए२००१
पादपाणि तेज्या करि निगम रूपधरि। नासा श्रवण सहिते गुप्त कले हरि २
शुणिण देवगण हरषमन हेले। आनन्दरे बेदबर चरणे नमिले ३
बळरामदास सेबे श्रीहरि चरण। नाराय़ण पाद पद्मे मोहर शरण ४
पार्वती बोइले तुम्भे शुण हे ईशान। ऋष्यश्रृंग गले चम्पावतीपुर पुण ५
अनाबृष्टि करि बारु बिजय़े ऋष्यश्रृंग। ऋष्यश्रृंग मिळिबारु वृष्टि कले मेघ ६
देखि करि राजा, प्रजा, आनन्द बड़ हेले। दशरथ दुहिताकु तांकु बिभा देले ७

प्रकार के सेवकों के छानबे घर हैं। ९२ आपका नाम श्री पुरुषोत्तम है। आपने ही जम्बूद्वीप में इसका सृजन किया है। ९३ उत्तर भाग में मार्कण्डेश्वर महादेव हैं। यत्न के साथ मन्दिर के चार द्वार हैं। ९४ तेजस्वी स्वर्णमय नगर की शोभा दर्शनीय है। वहीं से कलिकाल की प्रभा गुण प्राप्त करती है। ९५ उस पुरुषोत्तम क्षेत्र में कितने लोग हैं जो सब चार भुजाओं वाले देवता के समान दिखते हैं। ९६ यह सोचकर देवताओं ने पितामह ब्रह्माजी से पूंछा कि आप पुरुषोत्तम क्षेत्र के पुरुषों के विषय में सन्देह स्पष्ट करें। ९७ ब्रह्मा ने कहा, हे देवताओ ! सुनो। पुरुषोत्तम क्षेत्र के सभी लोगों को चतुर्भुज ही समझो। ९८ वहाँ निराकार परमात्मा प्रत्यक्षरूप से विराजमान हैं। उनके दर्शन दोनों नेत्रों से करने पर उद्धार हो जायेगा। ९९ इसी कारण से वहाँ के नगरवासी उनके दर्शन तथा निर्माल्य सेवन से चतुर्भुज हो गए हैं। २००० वह चतुर्भुज देवाधिदेव हैं। वह पुरुषोत्तम क्षेत्र के निवासियों को चार भुजाएँ प्रदान करते हैं। २००१ नारायण ने हाथ पैरों का त्याग करके स्थाई रूप धारण कर लिया है साथ ही साथ उन्होंने नासिका तथा श्रवण भी गुप्त कर रक्खे हैं। २ यह सुनकर देवगण प्रसन्नचित्त हो गए। उन्होंने आनन्द से ब्रह्मा के चरणों में नमन किया। ३ बलरामदास श्री भगवान के चरणों की सेवा करता है। नारायण के चरण कमल ही मेरे शरण-स्थल हैं। ४ पार्वती ने कहा, हे ईशान ! आप सुनिये ! शृंगी ऋषि चम्पावती नगर में गए। ५ अनावृष्टि होने के कारण वह वहाँ गए थे। उनके पहुँचने पर मेघों ने जलवृष्टि की। ६ यह देखकर राजा तथा प्रजा अत्यन्त आनन्दित हुए। उन्होंने दशरथ की पुत्री का विवाह

दशरथ बिभाण्डक लोमपाद मिळि ।आनन्दरे राजा ऋषि अणाइ बिभा सरि ८
सेठारु किस कले कह त्रिलोचन। ईश्वर बोइले तुम्भे भगवती शुण ९
बिभार उत्सव सात मंगळा जे सारि। ऋषि ब्राह्मण राजा प्रबोधन करि२०१०
मेलाणि होइण जे समस्ते चळि गले। दुःखी, दरिद्र, पादान्ति, सरदार तुले२०११
से माने जिबार जे, बिभाण्डक ऋषि। पुत्रकु कोळे धरि कहन्ति आश्वासि १२
अइलु तु जे राज्यरु मोते जे न कहि ।बड़ बिड़म्बन कथा देखिलि राज्ये मुहिँ १३
बेनि कन्या बेनि पुत्र घेनिण मिळिले। सकळ चरित तोर बुझाइ कहिले १४
सात दिन उत्तरु से कन्या स्वर्ग गले। से बेनि कुमर तो बोले बढिले १५
तोते न देखि चिन्ता हेला मोर पुणि। मोर चिन्ता देखि शून्यरु शुभे बाणि १६
शून्यरु शबद शुणि जोगरे बसिलि। तथ्य करि सकळ कथाहिँ जाणिलि १७
तहुँ मुँ ऋषिकु जे सुमरणा कलि। नवसहस्त्रे ऋषि घेनि ए स्थाने अइलि १८
देखिलि बिभाघर रात्र जे पाइले। तु रहिलु बाबुरे भितर पुररे १९
दशरथ नन्दिनी अणाइ देखिलि। कुळ बधू पाइण मन शान्त कलि२०२०
बिभा त सरिला एबे सर्बे जे, मेलाणि।
तोते देखिबाकु बाबुरे मुहिँ रहि अछि पुणि२०२१
ऋष्यश्रृंग बोइले तात तुम्भर प्रसन्ने। सकळ कुशळरे अछइ मुँ एणे २२

उनसे कर दिया। ७ दशरथ विभाण्डक तथा लोमपाद ने मिलजुलकर ऋषियों तथा राजाओं को बुलाकर आनन्दपूर्वक उनका विवाह सम्पादित कर दिया। ८ हे त्रिलोचन ! आप हमें बतलाइये कि फिर उन्होंने क्या किया ? शंकर जी बोले, हे भगवती ! तुम सुनो। ९ सप्त मंगलायुक्त विवाहोत्सव समाप्त करके राजा ने ऋषियों तथा ब्राह्मणों को प्रबोधित किया। २०१० विदा होकर दुःखी दरिद्र पैदल सिपाही सरदार आदि सभी चले गये। २०११ उनके जाने पर विभाण्डक ऋषि ने पुत्र को अंक में भरकर उसे आश्वासन देते हुए कहा। १२ तुम वहाँ से मुझसे बिना कहे चले आये। अत्यन्त विडम्बनापूर्ण बात मैंने राज्य में देखी। १३ दोनों कन्यायें दोनों पुत्रों को लेकर आयीं और उन्होंने तुम्हारा समस्त वृत्तांत समझाते हुये कहा। १४ सात दिन के पश्चात् वह कन्यायें स्वर्ग को चली गयीं। वह दोनों पुत्र तुम्हारे कथनानुसार बड़े हो गये। १५ तुम्हें न देखकर मुझे चिन्ता हो गई। मुझे चिन्तित देखकर आकाशवाणी सुनायी देने लगी। १६ आकाशवाणी का शब्द सुनकर मैं योग में बैठ गया और विचार करके मैंने सारा वृत्तांत जान लिया। १७ तब मैंने ऋषियों का स्मरण किया और नौ हजार ऋषियों को लेकर इस स्थान पर आ गया। १८ हे वत्स ! तुम महल के भीतर थे। १९ दशरथनन्दिनी को बुलाकर मैंने उसे देखा और कुलवधू पाकर अपना मन शांत किया। २०२० विवाह समाप्त हो गया। अब सबकी विदाई भी हो गई। हे वत्स ! तुझे देखने के लिये मैं यहाँ रुका हूँ। २०२१ श्रृंगी ऋषि बोले हे तात ! आपकी प्रसन्नता से अब मेरी सब प्रकार से कुशल

ए राज्यरे इन्द्र न पाळिला जहिँ पुणि । गुप्त करि राजा अणाइलाक जाणि २३
मोहर आसन्ते एपुरे हेलाक जळबृष्टि । जळ जन्तु सम्भाळ हे लोक ए सृष्टि २४
लोमपाद राजा जे ए राज्यरे राजा ।नाना द्रव्य धरिण जे मोते कला पूजा २५
दशरथ राजा ए अजोध्या नृपति । अबिबाही होइ थिला ताहार दोहिति २६
मोते से बेनि राजा जे, दुहिता बिभा देले। से हरष हेले मोते, त्रिपुति कराइले २७
बिभाण्डक बोइले लोमपादकु चाहिँ । × × × २८
एबे सन्तोष मु जे होइलि तोते देखि । बन्धु हेले तुमे पूर्वर कर्म लेखि २९
एजे दशरथ मोर समुधि अटइ । जेणु मोर पुत्रकु देलाक तनयी२०३०
नाहिँ मोर कोप ताकु हेलि मुँ प्रसन्न । वर माग एबे दुइ राजन हे पुण२०३१
शुणिण लोमपाद दशरथ नृपमणि । कर जोड़िण बोइले हे मुनि ३२
आम्भे दुहेँ अपुत्रिक पुत्र दान देवा ।जेबे महाऋषि जे, घेनिण आम्भ सेवा ३३
अस्तु हेउ बोलिण बोइले ब्रह्म मुनि ।बेनि राजा जाग कर ऋष्यभृंगकु घेनि ३४
तुम्भकु ऋष्यभृंग जे देइ छन्ति बर । सेहि बर प्रापत हेउरे तुम्भर ३५
एमन्त कहिण जे बिभाण्डक ऋषि । पुत्रकु कोळे घेनिण सिंहासने बसि ३६
दुइ राजा आगरे अछन्ति उभा होइ । बिभाण्डक कहिले लोमपादकु चाहिँ ३७
चतुर्थी दिवस जे, अटइ आज दिन ।लज्ज्या होम करिबा कर हे भिआण ३८

है। २२ इस राज्य को जब इन्द्र ने नहीं पाला तब राजा ने सोच समझकर गुप्तरूप से मुझे बुलवा लिया। २३ मेरे आने से इस देश में जल की वर्षा हुयी। जल-जन्तु सँभल गये और यह सृष्टि बच गई। २४ इस राज्य के राजा लोमपाद ने नाना प्रकार के द्रव्य लेकर मेरी पूजा की। २५ राजा दशरथ अयोध्या के राजा हैं। उनकी पुत्री अविवाहिता थी। २६ इन दोनों राजाओं ने मेरे साथ पुत्री का विवाह कर दिया। वह मुझ पर प्रसन्न हुये और इन्होंने मुझे तृप्त किया। २७ विभाण्डक ने लोमपाद की ओर देखकर कहा कि अब मैं तुम्हें देखकर संतुष्ट हो गया हूँ। पूर्व कर्मों के अनुसार तुम बन्धु हो गये। २८-२९ इस समय मेरे पुत्र को कन्या प्रदान करके यह राजा दशरथ मेरे समधी बन गये। २०३० मुझे क्रोध नहीं है। मैं उनसे प्रसन्न हो गया हूँ। अब दोनों राजा वर माँगो। २०३१ यह सुनकर नृपशिरोमणि लोमपाद एवं दशरथ हाथ जोड़कर बोले हे महात्मन् ! हम दोनों पुत्रहीन हैं। हमें पुत्रदान दीजिये। यदि महर्षि हमारी सेवा से प्रसन्न हुये हो। ३२-३३ ब्रह्मर्षि ने अस्तु कहते हुये कहा कि तुम दोनों राजा भृंगी ऋषि को लेकर यज्ञ करो। ३४ श्रृंगी ऋषि ने आप लोगों को वर दिया है। वह वर आप लोगों को प्राप्त हो। ३५ इस प्रकार कहकर विभाण्डक ऋषि पुत्र को गोद में लेकर सिहासन पर बैठ गये। ३६ दोनों राजा सामने खड़े थे। विभाण्डक ने लोमपाद की ओर देखकर कहा। ३७ आज का

ऋषिक मुखरु शुणि वेनि राजा गले ।लज्ज्या होमर विधि मिआइ अणाइले ३९
वरुण पूजा करि बेदाध्ययन कले। पूर्ण आहुति करिण श्रीफळ पोड़ि देले२०४०
सारिले लज्ज्या होम गलेक अन्तःपुर। × × ×२०४१
मधू शज्या घरे जे कलेक शयन। नाना रंगरे कले सुरति रति पुण ४२
एथु अनन्तरे जे रजनी शेष हेला। गगन विहारी पूर्व दिगे दिशे तोरा ४३
देखिण बिभाण्डक वेनि राजांकु डाकि।
आम्भे जाउ अछु जे निज आश्रमकु निकि ४४
तुम्भर दुहिताकु अणाअ सत्वर ।एते कहि आज्ञा देले विभाण्डक मुनिवर ४५
देखिबि व्याकुळ मन वधूकु सन्तोषे। एक बेळे देखिलु नोहिला मन सुस्थे ४६
शुणिण लोमपाद अणाए जाइ वाळी। वधूर रूप देखि मुनि मन टळि ४७
श्वशुरंक पाद तळे श्रीफळ पुष्प नेइ। सम्पूर्ण चन्द्रवदनी ओळगि हुअइ ४८
देखिण महामुनि कल्याण वाञ्छा कले। दशरथ राजा साधु बोलिण बोइले ४९
ए तोहर कुळरे जे कमळा संजात। मोर भाग्यकु कुमरकु घरणी प्रापत२०५०
धन्यरे ऋष्यऋंग कुळरे तुहि तप ।कुळ बधू मिळे मोते चञ्चळा स्वरूप२०५१
उठ उठ मागो ऋषि कुळर मण्डनी।चारि गोटि पुत्र तोर हेउ गो सुलक्षणी ५२

दिन चतुर्थी का है। लाजाहोम करने की व्यवस्था करो। ३८ ऋषि के मुख से ऐसा सुनकर दोनों राजा चले गये और उन्होंने लाजाहोम विधि की सामग्री मँगवाकर तैयारी कर दी। ३९ वरुण पूजा करके वेद-पाठ किया गया और नारियल डालकर पूर्णाहुति की गई। २०४० लाजा होम समाप्त करके अंतःपुर में चले गये। २०४१ फिर उन्होंने मधुशैयागृह में शयन किया और विविध प्रकार से काम-क्रीड़ायें कीं। ४२ इसके पश्चात् रात्रि समाप्त हो गई। आकाश में बिहार करने वाले दिनकर पूर्व दिशा में सुशोभित दिखाई देने लगे। ४३ यह देखकर विभाण्डक ने दोनों राजाओं को बुलाकर कहा कि मैं अब अपने आश्रम को जा रहा हूँ। ४४ इतना कहकर मुनिश्रेष्ठ विभाण्डक ने दोनों राजाओं को उनकी पुत्री को शीघ्र ही बुलाने की आज्ञा दी। ४५ मैं वधू को संतोषपूर्वक देखूंगा। मेरा मन व्यग्र हो रहा है। एक वार देखने से मेरा मन संतुष्ट नहीं हुआ। ४६ यह सुनकर लोमपाद पुत्री को ले आये। वधू का रूप देखने से मुनियों का मन भी टल जाता था। ४७ श्रीफल तथा पुष्प लेकर पूर्ण चन्द्रवदनी श्वसुर के चरणों में विनत हो गई। ४८ देखते ही महर्षि ने आशीर्वाद दिया और कहा हे राजा दशरथ ! धन्य हो। ४९ तुम्हारे कुल में यह लक्ष्मी उत्पन्न हुयी और मेरे भाग्य से मेरे पुत्र को स्त्री प्राप्त हुयी है। २०५० हे श्रृंगी ऋषि ! तपस्वी कुल में तुम धन्य हो। जो मुझे लक्ष्मी स्वरूपा कुलवधू प्राप्त हुयी। २०५१ हे ऋषिकुल को मण्डन करने वाली बेटी !

स्वामीर सौभागी जे होइण दिन निअ । जूबा रूप धरिण मागो जुगे जुगे रह ५३
दशरथंकु चाहिँण बोइले ब्रह्म ऋषि । साधुरे महातमा बोइले ब्रह्म ऋषि ५४
धन्य तुम्भर महिमा धन्य तुम्भर जीवन । वर माग सत्य सत्य देबि हे राजन ५५
तुम्भर मन बाञ्छा करिबु आम्भे सिद्धि। पुत्रकु देले मोर जुबती रत्न निधि ५६
से मोर कुळ बधू करिब कुळ रक्षा । मोर प्रसादे तुम्भर पूरु मनोबाञ्छा ५७
आम्भंकु तुम्भे राजन देल जेबे जश । तेणु करि तोर परे नाहिँ अबिश्वास ५८
माग माग बर जे, सत्य मनरे देबि । जावत चन्द्रार्के कथारुहाइबि ५९
मुनिकर बचनरे दशरथ नृपति । कर जोड़ि जणाइ तपन भूपति२०६०
किस बर मागिबि जे पुत्र मोर नाहिँ । दिअ एबे पुत्र दान कुळ रक्षा होइ२०६१
तुम्भर नन्दनकु देलि जे मुहिँ झिअ । तुम्भ पुत्रकु बळिण देव जे मोते पुअ ६२
तिनि पुररे महिमाँ ख्यात हेब जेमन्ते ।
लोक कहिबे झिअ दिअन्ते पुअ पाइले दशरथे ६३
मोरे जेबे प्रसन्न होइल महा ऋषि । बंश रक्षा हेउ मोर पुत्र दान देसि ६४
शुणिण बिभाण्डक हरष मन होइ । बोइले बंश तोर रखिबि जे मुहिँ ६५
बिष्णु जात होइबे जे तोहर कोळरे । तेबे रक्षा सूर्ज्य गोत्र होइबे तोहरे ६६

उठो ! उठो ! हे सुलक्षणी ! तुम्हें चार पुत्र प्राप्त हों । ५२ तुम सौभाग्यवती होकर स्वामी के साथ दिन व्यतीत करो और युवा रूप धारण करके युग-युग तक जियो । ५३ फिर ब्रह्मर्षि दशरथ की ओर देखकर बोले हे महात्मा ! तुम धन्य हो । ५४ तुम्हारी महिमा तथा तुम्हारा जीवन धन्य है । हे राजन ! तुम वर माँगो । मैं प्रतिज्ञापूर्वक तुम्हें प्रदान करूँगा । ५५ हम आपकी मनकामना सिद्ध करेंगे । आपने मेरे पुत्र को युवतीरत्न-निधि प्रदान की । ५६ वह मेरी कुलवधू कुल की रक्षा करेगी । मेरे आशीर्वाद से आपकी मनोकामना पूर्ण हो । ५७ हे राजन् ! तुमने हमें यश प्रदान किया । इसलिये तुम पर अविश्वास नहीं है । ५८ तुम वर माँगो ! वर माँगो । मैं सच्चे मन से प्रदान करूँगा । जब तक चन्द्र और सूर्य स्थित रहेंगे तब तक ख्याति रहेगी । ५९ मुनि के वचनों को सुनकर सूर्यवंशी राजा दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा । २०६० मैं क्या वर माँगू । मेरे पुत्र नहीं हैं । मुझे पुत्र दान दीजिये जिससे कुल की रक्षा हो । २०६१ मैंनें आपके पुत्र को पुत्री प्रदान की और आपके पुत्र ने मुझे पुत्र दान देने को कहा है । ६२ इससे तीनों लोकों में महिमा रह जायेगी लोग कहेंगे कि पुत्री देने से दशरथ को पुत्र मिला । ६३ हे महर्षि ! जब आप मेरे ऊपर प्रसन्न हो गये हैं, तो पुत्र दान दीजिये मेरे वंश की रक्षा हो । ६४ यह सुनकर विभाण्डक का मन प्रसन्न हो गया और उन्होंने कहा मैं तुम्हारे वंश की रक्षा करूँगा । ६५ तुम्हारे अंक से विष्णु उत्पन्न होंगे तब तुम्हारे सूर्यकुल की

लोमपादकु चाहिँण बोइले ब्रह्म मुनि । तोर प्रसन्नरे मोर पुत्र पाइला कामिनी ६७
तोते बर देवइँ माग हो जाहा पार । कर जोड़ि कहे लोमपाद नृप वर ६८
दिअ हे पुत्र दान जेबे कल दया । तुम्भर बाणी प्रापत हेउ मोर काया ६९
ए स्थानरे प्रबेश तुम्भर पुत्र जे पुणि । शते पुत्र बर मोते देइ छन्ति पुणि२०७०
सन्तोषे बिभूति देले शते राणी नेले । सकळ राणी मोर बाण्टिण खाइले२०७१
ब्रह्म मुनि बोइले जे पुत्र मुख चाहिँ ।होम कले चम्पावती राजार पुत्र होइ ७२
तिनि दिने जाग जे, सम्पूर्ण होइब । तेबे राजा से पुत्र दान पाइब ७३
शुणिले लोमपाद जे ऋष्यश्रृंगंकु कहि । बोइले सम्भर्व बेगे अणाअ भिआइ ७४
अजोध्या राज्यरे पिता एबे जाग करु । ए स्थानरे तुम्भंकु देवा जे, पुत्र चरु ७५
शुणिण लोमपाद जे भिआए सम्भर्व ।मन्त्रींकु कहिण जे, बेगे रुण्डकले द्रब्य ७६
एथु अनन्तरे साआन्ता बधू गोटि । श्वशुरकु नमस्कार करिण देवे जान्ति ७७
अन्तःपुरे प्रबेश होइले रूपवती । सकळ जननींकु जे ओळग मेलान्ति ७८
ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष गुरुवार जे, दशमी ।
हस्ता नक्षत्रे जागकर आरम्भ पुणि ७९
पिता पुत्र बेनि जन जाग आरम्भिले । लक्षेक द्विजवर बरण जागे देले२०८०
शउच होइण लोमपाद राजा पुण । नूतन बस्त्र पिन्धिण बसिले जागेण२०८१

रक्षा होगी । ६६ ब्रह्मर्षि ने लोमपाद की ओर देखकर कहा कि तुम्हारी प्रसन्नता से मेरे पुत्र को पत्नी मिली है । ६७ मै तुझे वर दूँगा जो चाहे माँगो । नृप श्रेष्ठ लोमपाद ने हाथ जोड़कर कहा जब आप दया कर रहे है । तो मुझे पुत्र दान दीजिये । आपको बात मेरे शरीर को प्राप्त हो । ६८-६९ आपके पुत्र ने इस स्थान पर प्रविष्ट होते ही मुझे सौ पुत्र होने का वर दिया है । २०७० उन्होंने संतुष्ट होकर विभूति दी जिसे सौ रानियों ने ग्रहण किया । मेरी समस्त रानियों ने उसे बाँटकर खाया । २०७१ ब्रह्मर्षि ने पुत्र के मुख को देखते हुए कहा कि यज्ञ करने से चम्पावती-महाराज के पुत्र होंगे । ७२ तीन दिनों में यज्ञ सम्पूर्ण हो जाएगा तब राजा को सन्तान की प्राप्ति होगी । ७३ यह सुनकर लोमपाद ने श्रृंगी ऋषि से शीघ्र ही समारोह तैयार करने को कहा । ७४ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि यज्ञ करने के लिये अयोध्या जाने के पहले इस स्थान पर आपको पुत्र-चरु प्रदान करेंगे । यह सुनकर लोमपाद ने समारोह की तैयारी की और मन्त्री से कहकर शीघ्र ही सामग्री एकत्रित कर ली । ७५-७६ इसके पश्चात् वधू शांता श्वसुर को प्रणाम करके चली गयी । ७७ वह सुन्दरी अन्तःपुर में प्रविष्ट हुयी और उसने समस्त माताओं को प्रणाम किया । ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दसमी को गुरुवार के दिन हस्ती नक्षत्र में यज्ञ आरम्भ हुआ । ७८-७९ पिता-पुत्र दोनों ने यज्ञ प्रारम्भ किया । उसमें एक लाख श्रेष्ठ ब्राह्मण आमंत्रित किये गये । २०८० राजा लोमपाद पवित्र नूतन स्वच्छ

पिता पुत्रे आचार्य्य होइण जाग कले । तिनि दिनरे पूर्ण आहुति ऋषि देले ८२
ऋष्यश्रृंग चरु देले जे मन्त्रकु सुमरि । आनन्द हेले नृपति चरु अन्न धरि ८३
ऋष्यश्रृंग बोइले होइला उत्तम । शते पुत्र पुरुषार्थ होइबे तुम्भे जाण ८४
रूपरे पटान्तर जे सने कामदेव । एमन्त बचन कहिले जे ऋषि देव ८५
आम्भर सन्तोषरे तुम्भकु देलु बर । कुळ रक्षा होइबे उपुजिबे कुमर ८६
एमन्त वचन जे लोमपादकु चाहिँ । दशरथंकु बोइले अजोध्या जाअ तुहि ८७
पुत्र ऋष्यश्रृंगकु बोइले जाअ अजोध्यापुर ।
सूर्ज्य बंशरे तुम्भे प्रापत कराअ कुमर ८८
शुणि बिभाण्डक बोइले पुत्र चाहिँ । लोमपाद राजाकु चरु दिअ तुहि ८९
शुणिण आनन्द हेले पुत्रमणि । हस्तरे चरु घेनि चळिले तत्क्षणि२०९०
शतेक महादेईंकु वाछि करि नेले । शते पुत्र उपुजाअ बोलिण बोइले२०९१
चम्पावती राजार जे, बड़ पाटराणी । गंगा, जमुना, जे अटन्ति बड़राणी ९२
ऋष्यश्रृंग बोइले शुण हे नृपराए । दश मासे जात हेबे शतेक तनये ९३
गंगार तनय जे, नीळ मूर्त्ति धर । नीळ कन्दर्प जिणिण रूप पटान्तर ९४
जमुनार पुत्र हेब शशीधर प्राये । रूपरे पटान्तर मदन सरि नुहेँ ९५
शतेक पुत्र तोर नळिनी दळ जिणि । शुणि हरष लोमपाद नृपमणि ९६

वस्त्र पहन कर यज्ञ में बैठे । २०८१ पिता पुत्र ने आचार्य बनकर यज्ञ किया। ऋषि ने तीसरे दिन पूर्णाहुति दी । ८२ श्रृंगी ऋषि ने मन्त्र का स्मरण करते हुये चरु प्रदान किया । चरु अन्न लेकर राजा प्रसन्न हो गये । ८३ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि यज्ञ उत्तम हुआ है। तुम्हें सौ पुत्र पुरुषार्थी प्राप्त होंगे । ८४ सौन्दर्य में वह कामदेव के समान होंगे । ऐसा ब्रह्मर्षि ने कहा । ८५ हमने प्रसन्न होकर आपको वर दिया है । पुत्र उत्पन्न होने से आपके कुल की रक्षा होगी । ८६ लोमपाद की ओर देखकर इस प्रकार कहकर उन्होंने दशरथ को अयोध्या जाने को कहा । ८७ उन्होंने पुत्र श्रृंगी ऋषि को अयोध्या जाकर सूर्यवंश में पुत्र उत्पन्न कराने के लिये आज्ञा दी । ८८ यह सुनकर विभाण्डक ने पुत्र की ओर देखकर कहा कि तुम राजा लोमपाद को चरु प्रदान करो । ८९ यह सुनकर पुत्र श्रेष्ठ प्रसन्न हो गये और वह उसी समय हाथ से चरु लेकर चल पड़े । २०९० उन्होंने सौ महारानियों को एक सौ पुत्र उत्पन्न करने का आशीर्वाद दिया । २०९१ चम्पावती राजा की प्रधान पटरानियाँ गंगा और यमुना थीं । ९२ श्रृंगी ऋषि ने कहा हे राजन् ! सुनो । दस महीने में तुम्हारे सौ पुत्र उत्पन्न होंगे । ९३ गंगा का पुत्र श्याम-वर्ण का कामदेव के सौन्दर्य को जीतने वाला होगा । ९४ यमुना का पुत्र चन्द्रमा के समान होगा जिसके सौन्दर्य की समता कामदेव नहीं कर सकेगा । ९५ तुम्हारे सौ पुत्र कमल-दल के सौन्दर्य को जीतने वाले होंगे । यह सुनकर नृप श्रेष्ठ लोमपाद प्रसन्न हो

ऋष्यश्रृंग प्रसन्नरे जेउँ वर देले । काळे काळे प्रापत होइब ताकु भले ९७
बिभाण्डक चरणरे ओळग होइले । नमस्कार करिण अन्तःपुरकु गले ९८
लोमपाद शते राणी होइले सन्तोष । शुणिण पात्र मन्त्री प्रजाए हरष ९९
धन्य धन्य ऋष्यश्रृंग समस्ते बोलन्ति ।तुम्भ जोगुँ सुखी हेला चम्पावती पृथ्वी२१००
एथु अनन्तरे शुण जे दिव्य वाणी । गउरी आगरे एहा सदाशिव भणि२१०१
बिभाण्डक चरणे अजोध्या नृपमणि । नमस्कार करिण जे, मागिले मेलाणि २
ए गले सकळ काज्यं हेला एबे सिद्धि । मोर ठारे प्रसन्न हुअ हे तपो निधि ३
मोहर अजोध्या पुरकु मुनि जिबा । पुत्र नेइण जे मोते कारण करिबा ४
बिभाण्डक बोइले शुण हे दशरथ । अजोध्याकु चळ तुम्भे जुआँइ संगत ५
दुहिता जुआँइंकु घेनि जाअ संगते । अतिशीघ्र जाइ तुम्भे जागकर बेगे ६
निश्चय्र जात हेव, बासुदेव पुण । रूप गुणरे सुन्दर नोहिब जे काम ७
मनर सन्तोषरे आम्भे देलु वर । तुम्भ कुळे जात हेवे जे चारि कुमर ८
जाअ जाअ अजोध्या देश जाग कर बेगे । पुत्रकु बिभाण्डक बोइले सरागे ९
दशरथ नृपवर जे, श्वशुर । सूर्ज्य बंशे जन्म पवित्र नृपबर२११०
ए राजा उपर बंश कथा शुण बावु । सप्त सागर जाक खोळाइछि सबु२१११

गये । ९६ श्रृंगी ऋषि ने प्रसन्न होकर जो वर प्रदान किया । वह उनको यथा समय मंगलकारी होगा । ९७ राजा ने विभाण्डक के चरणों में प्रणाम किया और नमस्कार करके अन्तःपुर को चले गये । ९८ लोमपाद की सौ रानियाँ सन्तुष्ट हो गईं । यह सुनकर सभासद मन्त्री तथा प्रजा प्रसन्न हो गये । ९९ सब लोग श्रृंगी ऋषि को धन्य-धन्य कहने लगे । आपके कारण ही चम्पावती की भूमि सुखी हुयी है । २१०० इसके पश्चात् दिव्य वाणी सुनो जो गौरी के समक्ष सदाशिव महादेव ने वर्णित की है । २१०१ अयोध्या नरेश दशरथ ने विभाण्डक के चरणों में प्रणाम करके विदा माँगी । २ इनके जाने से अब सारे कार्य सिद्ध हो जायेंगे । हे तपोनिधि ! हमारे ऊपर प्रसन्न हों । ३ हे मुनि ! पुत्र को लेकर हमारे अयोध्यापुर में चलिये और हमारा उद्धार करिये । ४ विभाण्डक ने कहा हे दशरथ ! सुनो आप दामाद के साथ अयोध्यापुर चलिये । ५ पुत्री तथा जमाता को साथ ले जाइये और शीघ्रातिशीघ्र जाकर यज्ञ कीजिये । ६ निश्चय ही भगवान नारायण उत्पन्न होंगे जिनके रूप गुण तथा सौन्दर्य की समता में कामदेव भी नहीं होगा । ७ मैंने प्रसन्न मन होकर वर दिया है कि आपके कुल में चार पुत्र उत्पन्न होंगे । ८ तुम शीघ्र ही अयोध्या जाकर यज्ञ प्रारम्भ करो । इस प्रकार विभाण्डक ने प्रेम-पूर्वक पुत्र से कहा । ९ सूर्यवंश में जन्में पवित्र राजा दशरथ तुम्हारे श्वसुर है । २११० हे वत्स ! इन राजा के पूर्व-पुरुषों की कथा सुनो । उन्होंने

सगर राजा बोलिण नाम हेला तार। षाठिए सहस्र नन्दन अटन्ति तांकर १२
कपिळ ऋषि शापरे समस्ते नाश गले। सकळ बधू बिचारि पुत्रेक जात कले १३
सबु माता नाम देले भगिरथी तार। कहिले पितातु सागर जळे निरन्तर १४
शुणि कुमर गंगाकु सुमरणा कले। गंगा आणिण ए मर्त्यरे बुहाइले १५
सप्त सागर जाक कला जळ जेणु। लिभिलाक अनळ स्वर्गंकु गले तेणु १६
एबे दशरथकु पुत्र कराअ प्रापत। मुहिँ आश्रमकु जाउ अछिरे सुत १७
जउतुक आय़मान सबु चळाइ नेबु। मुहिँ गले सम्भाळ करिबिरे बाबु १८
दशरथ राजांकु पुत्र दान देइ। कुळबधू घेनिण आसिबु बेश होइ १९
पर्ण कुटि मढ़आरे नाहान्ति केहि पुण। कि करु थिबे सेमाने जिबि मुँ बहन२१२०
बिभा चतुर्थी सात मंगळा सरिला। लोमपाद राजारत जागहिँ बढ़िला२१२१
धन धान्य धेनू जेतेक जउतुक। हस्ती अश्व समस्त करिबु क्रय़ बिक्र २२
सकळ पदार्थ जे बेगेण ढाळि देबु।जाग सरिले श्वशुर घरु तु बेगे आसिबु २३
मुहिँ तोर संगरे रहि नपारे बाबु। असम्भाळ होइण पडिण थिब सबु २४
हस्ती अश्व सारेणि न नेबु कदा चिते। देखिले दुष्ट लोके होइबे उपगते २५
एते बोलि मुनि पुत्रकु तिआरि। पूजा सारि बेगे चळिले मुनि धरि २६

सात समुद्र खुदवाये थे। २१११ उनका नाम राजा सगर था। उनके साठ हजार पुत्र थे। १२ कपिल ऋषि के शाप से समस्त नष्ट हो गये। समस्त वधुओं ने विचार करके एक पुत्र उत्पन्न किया। १३ सब माताओं ने उसका नाम भगीरथ रखा और उससे कहा कि तुम्हारे पिता सागर में हैं। १४ यह सुनकर पुत्र ने गंगा का ध्यान किया। उन्होंने गंगा को लाकर मृत्यु-लोक में प्रवाहित किया। १५ सातों समुद्रों में जल भर गया और अग्नि शान्त होने से वह लोग स्वर्ग को चले गये। १६ अब दशरथ को पुत्र प्राप्त कराओ। हे पुत्र ! मैं आश्रम को जा रहा हूँ। १७ दहेज के समस्त पदार्थ लेते जायेंगे और मैं जाकर उसकी साज सँवार करूँगा। १८ तुम राजा दशरथ को पुत्र दान देकर शीघ्र ही कुलवधू को लेकर चले आना। १९ आश्रम की पर्णकुटी में कोई भी नहीं है। वह लोग क्या करते होंगे। मैं शीघ्र ही जाऊँगा। २१२० विवाह चतुर्थी तथा सप्त मंगला भी समाप्त हो गई। राजा लोमपाद का यज्ञ भी परिपूर्ण हो गया। २१२१ धन धान्य गऊएँ हाथी, घोड़े आदि समस्त जितने भी दहेज के पदार्थ हैं, उन्हें मैं क्रय-विक्रय कर लूँगा। २२ समस्त पदार्थों का शीघ्र ही संचालन कर देना और यज्ञ समाप्त होने पर तुम श्वसुर घर से शीघ्र ही चले आना। २३ हे वत्स ! मैं तुम्हारे साथ रह नहीं सकता। क्योंकि सब अस्तव्यस्त हो रहा होगा। २४ हाथी, घोड़े, वहलें कुछ भी न लेना क्योंकि उन्हें देखते ही दुष्ट लोग आ जायेंगे। २५ इतना कहकर मुनि पुत्र को सचेत

लोमपाद राजा बोले बाहान आरोहि। शुणिण विभाण्डक हसिलेक तहिँ २७
किस करिबु आम्भे जान जे शुकाशन। मन पवने दण्डे जे करिबि गमन २८
एते कहि चळि गले विभाण्डक ऋषि। निज आश्रम रे प्रवेश जाइँ ऋषि २९
कौशिक नदी तीररे प्रवेश दुइ घड़िर। देखिले काम धेनू चरइ बनर२१३०
मढ़िआरे प्रवेश हेले मुनिवर। देखिले बेनि जति खेळन्ति आनन्दरे२१३१
अष्ट बक्र ऋषि नमस्कार कले। चरण पखाळिबाकु जळ नेइ देले ३२
बसिबारु ऋष्यश्रृंग कुशळ कहिले। पुत्रर बिभा सारि अइलुँ बोइले ३३
दुइ ऋषि कउशिक नदीरे स्नान कले। कन्दमूळ फळ सकळ भुञ्जाइले ३४
नित्य कर्म दुइ ऋषि वढ़ाइले। अष्टवक्र मेलाणि होइण चळि गले ३५
तपस्थाने जाइण प्रवेश बक्र मुनि। एथु अनन्तरे कथा शुण गो भबानी ३६
ऋष्यश्रृंग बोइले लोमपादकु चाहिँ। जेते जउतुक जे तुम्भे अछ देइ ३७
पितांकर आश्रमकु चळाइ बेगे दिअ। हस्ती घोड़ा सारेणी बिक्री करि दिअ ३८
धेनू धान्य धन समस्त चालि दिअ। एते बोलि ऋष्यश्रृंग कहिले करि प्रिय ३९
तक्षणे लोमपाद जौतुक देलाधन। आलट चामर जे बिबिध बसन२१४०
बाटि कंसा नाळुआ गरिआ सुराइ। पान पिक दानी जे तम्बारे गड़ुदेइ२१४१

करके पूजा समाप्त करके ऋषियों को लेकर शीघ्र ही चल दिये। २६ राजा लोमपाद ने उन्हें वाहन पर चढ़ने के लिये कहा। यह सुनकर विभाण्डक हँसते हुए बोले। २७ हम रथ तथा सुखासन का क्या करेंगे। हम इच्छा शक्ति से पलमात्र में पहुँच जायेंगे। २८ इतना कहकर विभाण्डक ऋषि चले गये और अपने आश्रम में जा पहुंचे। २९ वह दो घड़ी में कौशिक नदी के तट पर पहुँच गये। उन्होंने कामधेनु को वन में चरते हुये देखा। २१३० मुनिश्रेष्ठ मठ में प्रविष्ट हुये। उन्होंने दोनों मुनि कुमारों को आनन्दपूर्वक खेलते हुये देखा। मर्हषि अष्टावक्र ने उन्हें नमस्कार किया और उनके चरण धोने के लिए जल लेकर दिया। २१३१-३२ बैठने पर उन्होंने श्रृंगी ऋषि की कुशल बतायी और कहाकि मैं पुत्र का विवाह समाप्त करके आ रहा हूँ। ३३ दोनों ऋषियों ने कौशिक नदी में स्नान किया और सबने कन्द मूल-फल भोजन किये। ३४ दोनों ऋषियों ने नित्यकर्म समाप्त किया और फिर अष्टावक्र विदा होकर चले गये। ३५ वह तपोवन में जा पहुँचे। हे भवानी! सुनों। इसके पश्चात् श्रृंगी ऋषि ने लोमपाद की ओर देखकर कहाकि आपने जो भी दहेज सामग्री दी है। उसे शीघ्र ही पिता जी के आश्रम में भेज दो। हाथी, घोड़ा, बहलें सब विक्रय कर दीजिये। ३६-३७-३८ गऊँए तथा धन धान्य सब भिजवा दीजिये। श्रृंगी ऋषि ने उनसे ऐसा बड़े प्रेम से कहा। ३९ उसी समय लोमपाद ने दहेज में दिये हुये पदार्थ धन व्यजन चामर विविध प्रकार के वस्त्र, काँसे के बर्तन, घड़े, सुराही, पान, पीकदान, ताँबे के गंगासागर (गडुए) रत्नजड़ित पात्रों में नाना

रत्न झरि पाणि द्रव्य अनेक रथे भरि। गाई मईंषिकु देले सज करि ४२
शगड़ बळद सज करिण बेगे। कउशिक नदीकु चळिले सरागे ४३
संगतरे मन्त्री घेनि चलाइले सबु। नृप वर बोइले बिभाण्डकरे देव सबु ४४
तांकर आश्रमरे सर्मपि नेइ देव। कुशळ बार्त्तामान समस्त कहिब ४५
नदीरे नाव स्थळरे बळद शगड़। चउद दिवसरे प्रबेश सकळ ४६
शतेक रखुआळ गाई महिंषि नेले। कउशिक नदी तीरे प्रबेश जाइ हेले ४७
बिभाण्डक आश्रम पाशरे गोरु चरि। गह गह शबदरे बनस्त उछुळि ४८
गाईंकर राव शुणि बिभाण्डक मुनि। देखिले गाई मइँषि करुछन्ति ध्वनि ४९
काहार गाई महिषि धन रत्न मान। केउँ ठारु अइले कह हे रक्षा जन२१५०
वेहेराए बोइले ऋष्यशृंग देइ छन्ति।मोहर पितांक पाशे देवाकु कहि छन्ति२१५१
शुणि करि ऋषि बोइले आम्भे तांक पिता। जउतुक द्रव्यमान देले मोर सुता ५२
बोइले आज दिन ए बनस्तरे रह।आटिका तण्डुळ नेइ अन्न रान्धि खाअ ५३
स्थान देखि चर्च्चा पाइण रहिले। रजनीरे बिश्वकर्मांकु ऋषि सुमरिले ५४
बिश्वकर्मा जाणिण नबर तोळि गले। धेनूंकर पाइँ गुहाळ भिन्न कले ५५
रखुआळ रहिबाकु भण्डार घर देले। चारि कोणरे पाषाण पाचेरि करिले ५६

प्रकार के पेय पदार्थ रथों में भरकर तथा गायें भैंसें देकर तैयार कर दिये। २१४०-२१४१-४२ शीघ्र ही (बैलगाड़ियाँ) तैयार होकर वेग से कौशिक नदी की ओर चल पड़ीं। ४३ मन्त्री को साथ में लेकर यह सब भिजवा दिया। नृपश्रेष्ठ ने वह सब विभाण्डक को देने के लिये आदेश दिया। ४४ उन्होंने कहा कि यह सब ले जाकर उन्हें आश्रम में समर्पित कर देना और उनसे समस्त कुशल समाचार कहना। ४५ नदियों में नावें तथा भू-भाग में बैलगाड़ियाँ चौदह दिनों में वहाँ जा पहुँचीं। ४६ सौ रक्षकों का दल गाय भैंसें लेकर कौशिक नदी के तट पर पहुँच गया। ४७ विभाण्डक के आश्रम के निकट गोरू चरने लगे। वन-प्रान्त चहल-पहल से भर गया। ४८ गायों के रँभाने को सुनकर विभाण्डक ऋषि ने देखा कि गायें भैंसें बोल रही हैं। ४९ उन्होंने रक्षकों से पूँछा कि यह गायें, भैंसें धन रत्न किसके हैं और कहाँ से आये हैं। २१५० रक्षकों ने कहा कि यह शृँगी ऋषि ने दिये हैं और उन्होंने अपने पिता को समर्पित करने के लिये कहा है। २१५१ यह सुनकर ऋषि ने कहा कि मैं उनका पिता हूँ। मेरे पुत्र ने दहेज पदार्थ भेजा है। ५२ उन्होंने कहा आज के दिन इस वन-प्रान्त में रहो और चावल-सीधा लेकर पकाकर भोजन करो। ५३ स्थान देखकर सत्कार पाकर वह लोग रह गये। रात्रि में ऋषि ने विश्वकर्मा का स्मरण किया। ५४ विश्वकर्मा ने आकर आवास बना दिये और चले गये। गउओं के लिये उन्होंने पृथक गौशाला बनायी। ५५ रक्षकों के रहने के लिये भण्डार घर बनाये और चारों कोनों पर पत्थरों की प्राचीर

सकळ नवर मान भिन्न भिन्न करि। बिश्वकर्मा चळिगले आपणा निज पुरी ५७
कौशिक बनरे जे रहिले धेनु पेलि। बिभाण्डक ऋषि रखिले सम्भाळि ५८
रजनी शेष हेबारु बिभाण्डक गले। धान धन रत्न नेइ भण्डारे साइ तिले ५९
बसन बासन जे आवर खट दोळि। भण्डारे सम्पादिले सकळ गणि करि२१६०
बेहेरामानंकु जे बस्त्र धन देइ। समस्त लोक रखाइ सन्तोष कराइ२१६१
मन्त्रीर संगरे जिवा लोकंकु मेलाणि। जाअ जाअ बाबु शुभ अनुकूळ घेनि ६२
गोपाळ मानंकु से बोइले रह भले। कुटुम्बंकु संगे घेनि रह एहि ठारे ६३
शुणि करि मन्त्री वर रक्षक लोक रखि। चम्पावती राज्यकु चळिले पालटि ६४
जे जाहा आश्रमरे हेलेक प्रबेश। नृपतिकु मन्त्री कहे सकळ सन्देश ६५
सकळ कथा सम्भाळि तपरे गले मुनि। शंकर कहन्ति शुण हेमवन्तर दुलणी ६६
पार्वती बोइले जे सेठारु किस हेला। ऋष्यश्रृंग मुनि जे केबण कृत्य कला ६७
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो गिरिजा। से कथा तोर आगे कहुछि शुणिजा ६८
लोमपाद राजा जे ऋष्यश्रृंगकु घेनि। संगरे थिले तांकर बहुत सइनी ६९
रत्न हान्दोळारे साआन्ता बिजे कले। लोमपाद राणीहंस ता आगे मिळिले२१७०
चित्र पतनि उहाड़ आणि देले। शतेक परि वारी हान्दोळा चढि गले२१७१
ऋष्यश्रृंग बिजे कले पुष्पक चौदोळे। मातासानंकु कहिण साआन्ता बेगे चळे ७२

बना दी। ५६ सब आवास पृथक-पृथक बनाकर विश्वकर्मा अपने लोक को चले गये। ५७ कौशिक वन में गउएँ भरकर रह गई। उन्हें विभाण्डक ऋषि ने सँभाल कर रखा। ५८ रात्रि समाप्त होने पर विभाण्डक गये और उन्होंने धन धान्य तथा रत्न सँजो कर रख लिये। ५९ वस्त्र वर्तन तथा पलंग और झूले सब गिनकर भण्डार में भर दिये। २१६० रक्षकों को धन वस्त्र देकर सभी लोगों को संतुष्ट किया। २१६१ मन्त्री के साथ उन्होंने सब लोगों को विदा करते हुये मंगल बेला में जाने के लिये कहा। ६२ गोपालक लोगों को उन्होंने कटुम्ब को साथ लेकर वहीं रहने के लिये कहा। ६३ यह सुनकर श्रेष्ठ मन्त्री ने रखवालों को वहीं रख दिया और चम्पावती राज्य को लौट गये। ६४ सब अपने-अपने आश्रम में प्रविष्ट हुये। मन्त्री ने राजा से समस्त समाचार कहे। ६५ सब व्यवस्था करके ऋषि तपस्या के लिये चले गये। शंकर ने कहा हे हिमांचल कुमारी ! सुनो। ६६ पार्वती ने पूँछा कि फिर वहाँ क्या हुआ। श्रृंगी ऋषि ने फिर क्या किया। ६७ शंकर जी ने कहा हे गिरिजा ! तुम सुनो। मैं वह कथा तुमसे कहता हूँ। ६८ राजा लोमपाद ने श्रृंगी ऋषि को साथ लिया। उनके साथ बहुत-सी सेना थी। ६९ रत्न जड़ित रथ विशेष में शांता बैठ गई। लोमपाद का रनिवास उसके पास जा मिला। २१७० कलात्मक परदे लाकर लगा दिए गये। सौ दासियाँ यान पर चढ़ गयीं। २१७१ श्रृंगी ऋषि पुष्पक नाम के वाहन पर चढ़ गये।

लोमपाद राजा जे चढ़िले पुण हस्ती। रहुबरे बसे जे दशरथ नृपति ७३
सुमन्त्र मन्त्री रथ बाहे घन घन। आलट पाट छत्र उदण्ड ध्वज चिह्न ७४
नेत चिराळ बिमळ रथ गज। सम्भर्वरे बिजय़ कलेक बेनि राज ७५
आगरे दशरथ पछरे लोमपाद। मध्य़रे जाउ छन्ति बिभाण्डक सुत ७६
बाजइ टमक निशाण बीर तुर। शंख महुरि ध्वनि जे शुभइ अपार ७७
बार, जोग, तिथि, सताइश नक्षत्रटि। अजय़ माळागोटि घेनिण तपनिष्ठ ७८
अजपा सुमरिण अनामिका पढ़ि। छतिश थर जे पढ़न्ति एक घड़ि ७९
सारस्बत शए एक उत्तर बार। एकलय़ करिण जपे मुनि बर२१८०
शिररे शोभा दिशे अपूर्व चारि जट। शृंग दुइ गोटि दिशे जेसन मुकुट२१८१
निर्भय़ होइण ऋषि बसि चउदोळे। ए समय़े जाइ बार बनिता मिळे ८२
मुनिक चरणे कले दरशन। देखिण मुनि तांकु कले सुकल्याण ८३
चळिले ऋष्यशृंग चळिले नृप वर। हस्ती रथी पएकार पाहान्ति अपार ८४
राजांकु लोके देखिबाकु आसन्ति कौतुके। आगरे पारुआ जे उडाउछन्ति सुखे ८५
संगरे गोड़ाइण अछन्ति नटकारी। परिमळ स्थान देखि नृत्यरंग करि ८६
मद्दळ, कंसाळ जे बेणु बीणा बजान्ति। माधुर्ज्य आस्यरे से आळाप करन्ति ८७

माताओं से कहकर शान्ता शीघ्र ही चल पड़ी। ७२ राजा लोमपाद फिर हाथी पर बैठ गये और महाराज दशरथ श्रेष्ठ रथ पर बैठ गये। ७३ मन्त्री सुमन्त वेग-पूर्वक रथ को चला रहे थे। व्यजन पाट छत्र दंड में लगा हुआ ध्वज चिह्न सुन्दर-सुन्दरपताकायें, रथ तथा हाथियों से युक्त बड़े समारोह के साथ दोनों राजाओं ने प्रस्थान किया। ७४-७५ आगे-आगे राजा दशरथ उनके पीछे लोमपाद और मध्य में विभाण्डक नन्दन शृंगी ऋषि चले जा रहे थे। ७६ टमक, निशान, वीरतूर्य, बज रहे थे। शंख तथा रमतूलों की अपार ध्वनि सुनायी दे रही थी। ७७ बार, योग, तिथि तथा सत्ताइस नक्षत्र में तपोनिधि ने अजय माला लेकर मन्त्रों को पढ़कर अजपा जाप किया। एक घड़ी में उन्होंने छत्तीस बार पढ़ा। ७८-७९ एक सौ एक बार मुनि श्रेष्ठ ने लीन होकर सारस्वत मन्त्रों का जाप किया। २१८० उनके सिर पर अपूर्व चार जटायें दिखाई दे रही थीं और दोनों सींग मुकुट के समान दिखाई दे रहे थे। २१८१ निर्भय होकर ऋषि यान विशेष पर बैठे थे। इसी समय वैश्या बालायें जाकर उनसे मिलीं। ८२ उन्होंने मुनि के चरणों के दर्शन किये। मुनि ने उन्हें देखकर आशीर्वाद दिया। ८३ शृंगी ऋषि तथा श्रेष्ठ राजा चल पड़े। असंख्य हाथी, रथी तथा दूत लोग चले जा रहे थे। ८४ कौतुक के साथ लोग राजा को देखने के लिये आ रहे थे। आगे-आगे पताकायें आनन्दपूर्वक फहरा रही थीं। ८५ साथ में पीछे-पीछे नर्तक लोग चले आ रहे थे जो मुक्त स्थान देखकर रँगीले नाच कर रहे थे। ८६ वह लोग ढोल झाँझ, बाँसुरी तथा वीणा बजा रहे थे और

बाटरे चारि रजनी रहि गले पुण । पाञ्चदिने अजोध्यारे प्रवेश होइण ८८
नबरे प्रवेश जे लोमपाद दशरथ । साआन्ता सहितरे ऋष्यशृंग तपोवन्त ८९
बशिष्ठंकु देखि लोमपाद जे नमिले । जे विधि विधाने कल्याण सेहु कले२१९०
सुमन्तकु कहिले से अजोध्या नृपति । लोमपादकु पुर देले जे वारस्वति२१९१
ऋष्यशृंगकु दिव्य आसन जे देइ । दिव्य भुवने जाइण ऋषि विळसइ ९२
जननींकु देखिवाकु दुहिता चळि जाइ । कैकेयी कौशल्या चरणे नमइँ ९३
हस हस होइण साआन्ता बेगे उठि । सुमित्रांक कोळरे जाइण बेगे वसि ९४
माता माने बोइले होइला कार्य्य शुभ । मनोरथ पूर्ण हेला पवित्र कुळ भज ९५
माता माने बोइले मुनि हेले तोर पति । कुळ रक्षा आम्भर गो हेव रूपवन्ती ९६
एमन्त बुझाइ माए झिअकु कहे वाणी । माउसी जननी माने किस देले पुणि ९७
लाज लाज करिण कहन्ति साआन्ता । बहुत जउतुक मान देले पिता ९८
शतेक पोइलि जे परिवारी देले । सकळ माए आसि प्रवोधि कहिले ९९
धाइ मुदु सुलि पोइलि जेते जाण । साआन्तार पाशरे प्रबेश जाइ पुण२२००
समस्ते प्रबोधि वारु कौशल्या जे नेले । दिव्य मन्दिरे नेइण प्रबेश कराइले२२०१
एथु अनन्तरे जे दशरथ राये । लोमपाद घेनिण स्नान भोजन कराए २

मधुरता लाने के लिये आलाप भर रहे थे। ८७ . मार्ग में चार रातें उन्होंने बितायीं और पाँचवें दिन अयोध्या में जा पहुँचे। ८८ लोमपाद दशरथ तथा तपस्वी शृंगी ऋषि शांता के साथ महल में प्रविष्ट हुये। ८९ वशिष्ठ को देखकर लोमपाद ने प्रणाम किया और उन्होंने भी विधि-विधान से आशीर्वाद दिया। २१९० अयोध्या नरेश ने सुमन्त से राजा लोमपाद को वारस्वती आवास प्रदान करने को कहा। २१९१ उन्होंने शृंगी ऋषि को दिव्य आवास में दिव्य स्थान दिया जहाँ पर वह जाकर आराम से ठहर गए। ९२ कन्या माताओं के दर्शन करने को चली गई। उसने जाकर कैकेई तथा कौशल्या के चरणों में प्रणाम किया। ९३ हँसती हुई शान्ता उठकर जाकर सुमित्रा की गोद में बैठ गई। माताओं ने कहा कि शुभ कार्य सम्पन्न हो गया। तेरा मनोरथ पूर्ण हो गया। अब तू पवित्र कुल की सेवा कर। ९४-९५ माताओं ने कहा, हे रूपवन्ती ! मुनि के तेरे पति हो जाने से हमारे कुल की रक्षा होगी। ९६ माताओं ने पुत्री से इस प्रकार समझाते हुए कहा कि मौसी माताओं ने क्या दिया। ९७ शान्ता ने लज्जित होते हुए कहा कि पिता ने दहेज में प्रचुर पदार्थ दिये है। ९८ सौ रक्षिका दासियाँ दी है। सभी माताओं ने आकर सान्त्वना के शब्द कहे थे। ९९ जितनी धाइयाँ, वेशकारिणी कामिनियाँ तथा रक्षिका दासियाँ थीं वह शान्ता के पास आ गई। २२०० कौशल्या सबको सन्तुष्ट करके ले गई और उन्हें ले जाकर दिव्य आवासों में पहुँचा दिया। २२०१ इसके पश्चात् राजा दशरथ ने लोमपाद को लेकर स्नान तथा भोजन करवाया। २

ऋष्यश्रृंगर पाइँ मणोहिं जे बिधि । साआन्ता कन्या एणे पाक कले सिद्धि ३
स्नान तर्पण सन्ध्या पूजा ऋषि सारि । भोजन कले जे, ऋष्यश्रृंग तपचारी ४
आचमन सारिण ताम्बुळ भुञ्जि बसि । रत्न पलंकपरे बिजय़ कले आसि ५
दिन शेष अनन्तरे सन्ध्या बिधि सारि । प्रिय़ा घेनि मुनि रजनी भोग करि ६
दशरथ लोमपाद जे जाहा पुरे गले । शय़न नवरे जाइण बिजे कले ७
रजनी शेषरे नित्यकर्म सारि । आस्थाने बिजे दशरथ दण्डधारी ८
लोमपाद राजन मिळिले पुण आसि । ऋष्यश्रृंग बशिष्ठ अछन्ति पुण बसि ९
बामदेव काश्यप जाबाळि सुमन्त । सभा मण्डाइण बसिले समस्त २२१०
ऋष्यश्रृंग बोइले बशिष्ठ पिता पुण । जाग कले दशरथंकर पुत्रे कारण २२११
चरु देले राणीमाने हेबे गर्भबास । पुत्र उपुजिब जे सम्पूर्ण दशमास १२
बशिष्ठ बोइले तुम्भे सुदय़ा जेबे कल ।तुम्भर बिचारे जाहा आम्भंकु बोइल १३
कर तुम्भे जथा बिधि तुम्भर नाम रहु । पुत्रबन्त हेउ जे दशरथ राहु १४
ऋष्यश्रृंग बोइले अजोध्या ईश्वर । जाग करिबा बेगे अणाअँ सम्भार १५
राजा माने आसि बाकु बेगे पेश चार ।बन्धु कुटुम्ब स्वज्ञाति अणाअ नृपवर १६
जाग शाळ शोधि बाकु बेगे दूत पेष । बेगे जोग बेळ बिचार कर तोष १७

शान्ता कन्या ने श्रृंगी ऋषि के लिये विधि विधान से भोजन बनाया। ३ तपस्वी ऋषि ने स्नान पूजा-सन्ध्या-तर्पण समाप्त करके भोजन किया। ४ आचमन करके उन्होंने बैठकर पान खाया और जाकर रत्न पर्यङ्क पर विश्राम किया। दिन के अवशेष होने पर सन्ध्या विधि समाप्त करके मुनि ने प्रिया को लेकर रात्रि-भोग में बिताई। ५-६ दशरथ तथा लोमपाद अपने-अपने स्थानों को चले गए तथा शयन कक्षों में जा पहुँचे। ७ रात्रि व्यतीत हो जाने पर नित्य कर्म से निवृत होकर महाराज दशरथ सिंहासन पर आसीन हुये। ८ राजा लोमपाद भी आ पहुँचे। श्रृंगी ऋषि तथा वशिष्ठ भी बैठे हुये थे। ९ बामदेव, काश्यप जावालि तथा सुमन्त सभी लोग सभा लगाकर बैठे थे। २२१० श्रृंगी ऋषि ने वशिष्ठ से कहा, हे पिता ! यज्ञ करने पर पुत्र होने से दशरथ का उद्धार होगा। चरु प्रदान करने से रानियाँ गर्भवती होंगी और दस महीने पूरे होने पर पुत्र उत्पन्न होंगे। २२११-१२ वशिष्ठ ने कहा कि जब आपने दया की है, तो आपका जो विचार हो वह हमसे कहिए। १३ तुम यथाविधि यज्ञ करो जिससे तुम्हारा नाम रह जाये और राहु के समान राजा दशरथ पुत्रवान हो जायें। १४ श्रृंगी ऋषि ने कहा हे अयोध्यापति ! हम यज्ञ करेंगे। शीघ्र ही सामग्रियाँ उपलब्ध कराइये। १५ राजाओं को बुलाने के लिये शीघ्र ही दूत भेजिये और हे नृपश्रेष्ठ ! बन्धु-बाँधवों तथा अपने जाति-जनों को शीघ्र ही बुलवा लीजिये। १६ यज्ञशाला के शोधन के लिये शीघ्र ही दूत भेजिये और शीघ्रतापूर्वक शुभ मुहूर्त विचराकर सन्तोष को प्राप्त कीजिये। १७ नगर

नग्र पुरकु मण्डाअ तपोजनंकु बर। तिळ घृत जवधान समिध एबे कर १८
द्विज बर देवतांकु कर जे बरण। तेबे से जागरे प्रापत पुत्र जाण १९
शुणिण नृपति जे बशिष्ठंकु चाहिँ। दिग नदिशइ मोते कि करिबि मुहिँ२२२०
बशिष्ठ बोइले बाबु केउँ कथारे चिन्ता। दशरथ बोइले के बरिब देवता२२२१
बशिष्ठ बोइले तुम्भे नारदंकु सुमर। नारदंक सुमरे दशरथ नृपबर २२
सेते बेळे नारद जे, बेदवर पाश। जाणिले नारद जे, जागर आदेश २३
ब्राह्मांकु बोइले शुणिमा हेउ देव। दशरथ जाग करे ऋष्यश्रृंग भाव २४
ब्रह्मा बृहस्पति सकळ बेदवर। श्रुव शुच घेनि देव बिजये बेगकर २५
एते कहि नारद जे स्वर्गपुर गले। इन्द्र देवतांकु जाइण कहिले २६
बोइले दशरथ बरिले तुम्भंकु। त्रिदश देवता घेनि जिब जे, जागकु २७
सुरदेव बोइले आम्भे जिबार पुणि सत्य।
मञ्चकु न जाइ आम्भे रहिबा शून्य रेत २८
शुणिण नारद जे सेठारु चळिगला। कपिळास कन्दरे प्रबेश जाइँ हेला २९
ईश्वर पार्वतींकु हेले नमस्कार। बोइले दशरथ बरिले जागर२२३०
ऋष्यश्रृंग चरु देले बासुदेव हेबे जात। से जागकु तुम्भर जिबार उचित२२३१

ग्राम को सुसज्जित कराओ। तपस्वियों को आमंत्रित करो। तिल, घी जौ तथा धान एवं समिधा मँगवा लो। १८ श्रेष्ठ ब्राह्मणों तथा देवताओं का वरण करो। तब यज्ञ से तुम्हें पुत्र प्राप्त होंगे। १९ यह सुनकर राजा दशरथ ने वशिष्ठ की ओर देखकर कहा कि मुझे कुछ नहीं दिख रहा। मैं क्या करूँ। २२२० वशिष्ठ ने कहा हे वत्स! तुम किस बात की चिन्ता कर रहे हो। दशरथ ने कहा कि देवताओं का वरण कौन करेगा। वशिष्ठ बोले आप नारद का स्मरण करें, तब नृपश्रेष्ठ दशरथ ने नारद को स्मरण किया। २२२१-२२ उस समय नारद ब्रह्मा जी के पास थे। उन्हें यज्ञ का आदेश ज्ञात हो गया। २३ उन्होंने ब्रह्मा से कहा हे देव! सुनिये। श्रृंगी ऋषि का विचार दशरथ की यज्ञ करने का है। २४ अतः आप बृहस्पति तथा समस्त देवगण श्रुव तथा कुश लेकर शीघ्र ही उपस्थित हों। २५ इतना कहकर नारद स्वर्ग लोक चले गये और उन्होंने जाकर इन्द्रदेव से कहा। २६ उन्होंने कहा कि दशरथ ने आपको आमंत्रित किया है। आप समस्त देवताओं को लेकर यज्ञ में उपस्थित हों। २७ देवराज ने कहा कि हमारा जाना तो ठीक है परन्तु हम मृत्यु लोक में न जाकर आकाश में रहेंगे। २८ यह सुनकर नारद वहाँ से चले गये। फिर वह कैलाश पर्वत की कन्दरा में जा पहुँचे। २९ उन्होंने शिव-पार्वती को प्रणाम किया और कहा कि दशरथ ने आपको यज्ञ में आमंत्रित किया है। २२३० श्रृंगी ऋषि के द्वारा चरु प्रदान करने से नारायण उत्पन्न होंगे। उस यज्ञ में आपका जाना उचित है। २२३१ शंकर जी ने कहा कि

ईश्वर बोइले बेदवर सुर राजा तहिँ । से स्थानरे बिजय़ करिबि मुहिँ जाइँ ३२
शुणि करि नारद बेगे चळि गले । अजोध्यारे प्रवेश जाइण होइले ३३
देखिले दशरथ लोमपाद दुहिँकि अस्थानरे। बिजय़ ऋष्यश्रृंग बशिष्ठ संगरे ३४
काश्यप बामदेव सुमन्त छन्ति तहिँ । मुनिंकि देखिण समस्ते उभा होइ ३५
नारदंक चरणे कले नमस्कार ।कल्याण करि मुनि बसिले आस्थानर ३६
दशरथ बोइले शुणिमा मुनि वरे । पुत्र अर्थे जाग मुँ करिबाकु बिचारे ३७
तुम्भे एबे स्वर्ग जिब देवता निमन्त्रि । जेउँ प्राय़े देवता स्वर्गरु आसन्ति ३८
नारद बोइले तुम्भे सुमरि बारु जाणिलु । तेणु करि सकळ देवंकु बरिलु ३९
शुणिण दशरथ हेले तोषमत । मुनिंकि के बरिब कह हे तपोवन्त२२४०
नारद बोइले तुम्भे दुर्बासा सुमर । शुणि करि दशरथ सुमरे मुनिबर२२४१
गोदावरी कूळरे दुर्बासा ऋषि थिले । दशरथ सुमरन्ते समस्ते जाणिले ४२
बिचारे ऋष्यश्रृंग दशरथंकु चरु देबे । पुत्र अर्थे महा जाग से ऋषि करिबे ४३
तेबे दशरथ कोळे बासुदेव जात । मारिबे असुर देबे होइबे निश्चिन्त ४४
मोते सुमरिले बरिबा जाइँ ऋषि । एमन्ते बिचारि जे उठिले बिशेषि ४५

वहाँ पर ब्रह्मा तथा देवराज होंगे। मैं उस स्थान पर निश्चित ही पहुँच जाऊँगा। ३२ यह सुनकर नारद शीघ्र ही वहाँ से चल दिये और जाकर अयोध्या में प्रविष्ट हुये। ३३ उन्होंने दशरथ तथा लोमपाद दोनों को सिंहासन पर देखा। वशिष्ठ के साथ श्रृंगी ऋषि भी बैठे थे। ३४ वहाँ पर काश्यप बामदेव तथा सुमन्त भी थे। मुनि को देखकर सबके सब खड़े हो गये। ३५ उन्होंने नारद के चरणों में प्रणाम किया। आशीर्वाद देते हुये मुनि अपने स्थान पर बैठ गये। ३६ दशरथ नें कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये। पुत्र के लिये मेरा यज्ञ करने का विचार है। ३७ आप इस समय देवताओं को निमंत्रित करने के लिये स्वर्ग जाइये जिससे जैसे भी हो सके देवता स्वर्ग से आ जायें। ३८ नारद ने कहा कि आपके स्मरण करने से मैं समझ गया था। इसलिये मैंने समस्त देवताओं को आमंत्रित कर दिया है। ३९ यह सुनकर दशरथ संतुष्ट हो गये। फिर उन्होंने कहा हे तपोनिष्ठ ! बताइये कि मुनियों का वरण कौन करेगा। २२४० नारद ने कहा कि आप दुर्वासा का स्मरण कीजिये। यह सुनकर दशरथ ने मुनि श्रेष्ठ दुर्वासा का स्मरण किया। २२४१ ऋषि दुर्वासा गोदावरी के तट पर थे। दशरथ के स्मरण करने से उन्हें सब ज्ञात हो गया। ४२ उन्होंने विचार किया कि श्रृंगी ऋषि दशरथ को चरु प्रदान करेंगे और वह ऋषि पुत्र के निमित्त महान यज्ञ करेंगे। ४३ तब दशरथ के कुल में नारायण का जन्म होगा। वह राक्षसों को मारकर नष्ट कर देंगे और देवता चिन्तामुक्त हो जायेंगे। ४४ उन्होंने मेरा स्मरण किया है। अतः मैं जाकर ऋषियों का वरण करूँगा। इस प्रकार का विचार करते हुये वह उठ खड़े

मन पवन दण्डरे बेगे चळि गले। मर्त्यपुर ऋषि मानंकु वरिले ४६
बरिण ऋषि मानंकु गले मुनिवर। प्रबेश हेले जाइँ अजोध्या नवर ४७
देखिण समस्ते जे नमस्कार कले।मान्य धर्म देखि ऋषि आनन्दे वसिले ४८
दशरथ बोइले मुनि तुम्भरे कारण। वृद्ध काळे तुम्भे मोते दिअ पुत्रदान ४९
सकळ ऋषिंकि बरण करि आण। दुर्बासा बोइले सर्बे हेलेणि वरण२२५०
शुणिण दशरथ परम तोष हेले। विप्रंक बरणे के जिव जे बोइले२२५१
बशिष्ठ बोइले जे बामदेव जान्तु। लक्षे द्विजवर एहु राज्यरु वरन्तु ५२
शुणिण वामदेव उठिण वेग गले। लक्षेक ब्राह्मणंकु वरिण आणिले ५३
देखिण नृपति जे सुमन्त्रकु चाहिँ। जागर विधान बेगे कर आज्ञा देइ ५४
शुणि करि सुमन्त्र बेगे पेषे दूत।नाना देश राजांकु से वरिण आणिलेत ५५
विश्व कर्माकु ड़काइ सुमन्त्र मन्त्री बोले।जाग शाळ तोळ बोलि प्रमाणता नेले ५६
बन्धुजन मानंक पाशकु भेदिले पुणि चार। सातश नउराजा वन्धु दशरथंकर ५७
लोमपाद राजांकर एगार शत असि। दुइ राजांकर वन्धु आणिलेत मन्त्री ५८
लोमपाद राजांकर शते जे कामिनी। चार भेदि दशरथ आणिलेक पुणि ५९
राजा माने आसिवारु तांकु देले दान। अन्तः पुरे भेट हेले सकळ राणी पुण२२६०

हुये। ४५ कल्पना शक्ति से वह शीघ्र ही मुहूर्त मात्र में जा पहुँचे और उन्होंने मृत्युलोक के ऋषियों को वरण किया। ४६ मुनिश्रेष्ठ ऋषियों का वरण करके अयोध्या के महलों में जा पहुँचे। ४७ उन्हें देखकर सबने नमस्कार किया। मान सम्मान देखकर ऋषि आनन्दपूर्वक बैठ गये। ४८ दशरथ ने कहा हे मुनि! आपके कारण से उद्धार हो गया है। वृद्धावस्था में आप हमें पुत्र-दान दें। ४९ आप समस्त ऋषियों को आमंत्रित करके ले आयें। दुर्वासा ने कहा कि सबका आमंत्रण हो चुका है। २२५० यह सुनकर दशरथ को प्रसन्नता हुयी। फिर उन्होंने कहा कि ब्राह्मणों का वरण करने कौन जायेगा। २२५१ वशिष्ठ ने कहा कि बामदेव जाकर इस राज्य के एक लाख श्रेष्ठ ब्राह्मणों को वरण करें। ५२ यह सुनकर बामदेव शीघ्र ही उठकर गये और एक लाख ब्राह्मणों को आमन्त्रित करके ले आये। ५३ यह देखकर राजा ने सुमंत की ओर देखकर शीघ्र ही यज्ञ का विधान करने की आज्ञा दी। ५४ यह सुनकर सुमंत ने शीघ्र ही दूत भेजे जो अनेक देशों के राजाओं को वरण करके ले आये। ५५ मंत्री सुमंत ने विश्वकर्मा को बुलाकर यज्ञशाला निर्माण करने का वचन ले लिया। ५६ फिर उन्होंने बन्धु-बान्धवों के पास दूत भेजे। दशरथ के सात सौ नौ राजा बन्धु जन थे। ५७ राजा लोमपाद के ग्यारह सौ वन्धु आये। मंत्री दोनों राजाओं के बन्धु-बान्धओं को ले आये। ५८ राजा लोमपाद के सौ रानियाँ थी। दशरथ ने दूत भेजकर उन्हें बुलवा लिया। ५९ राजाओं के आने पर दान वितरित किया गया। समस्त रानियाँ अन्तःपुर में मेल-मिलाप

लोमपादर शतेराणी प्रबेश आसि हेले। दशरथ नवररे जाइण रहिले२२६१
साआन्ता दुहिता आसि शुभे ओळगिले।सुकल्याण हेउ बोलि राणी माने बोले ६२
दुइ कुळ रक्षा हेला तुम्भर सकाशुं।दुइ राज्यरे प्रशंसा गो मिळिला तुम्भंकु ६३
एते कहि स्नाहान भोजन सर्ब कले। नूतन नवरे प्रबेश जाइ हेले ६४
बन्धु राजा माने शुणि अइलेक बेगे। जे जाहा नवररे रहिले सद्भाबे ६५
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो हेमवन्ती।अजोध्यार लोक सर्व आनन्द हुअन्ति ६६
मण्डाइले कटक जे बिबिध गति करि।रम्भा बृक्ष चूत पत्र समस्ते छन्ति धरि ६७
उपरे त्रोणा खम्भे लगान्ति झालर। पूर्ण कुम्भ उपरे थोइले चूत डाळ ६८
पिढ़ा उपरे थोइले सुबर्ण कळस। नेत चिराळ उड़े नाना वर्ण बेश ६९
चउकति पाट जे पतनि चिराळ। दर्पण पन्तिरे शोभा दिशु थाइ घर२२७०
बिचित्र लेखन जे चन्दन गन्धवास। निरन्तरे मण्डिले आणि दिव्य पुष्प२२७१
दाण्डरे परिमळ चतु:सरि छेरा। सबु झीन शाढ़ीरे पाडिले पाएड़ा ७२
सेथिर उपरे पुष्प बिञ्चि पुणि। कर्पूरर धूळि तार उपरे बिञ्चणि ७३
ठाबे ठाबे जन्त्र बाजइ बेणु बीणा। नग्र नर नारी माने एकु एक जिणा ७४
बिबिध बर्णरे जे रत्नमाळ लाइ। बिचित्र झीन बसन पहिरण तहि ७५

करने लगीं। २२६० राजा लोमपाद की सौ रानियाँ भी आ पहुँचीं और वह दशरथ के महल में जाकर ठहर गईं। २२६१ राजकुमारी शांता ने आकर उन्हें प्रणाम किया और रानियों ने उसे आशीर्वाद प्रदान किया। ६२ तुम्हारे कारण दो कुलों की रक्षा हो गई तथा तुम्हें दोनों राज्यों से प्रशंसा प्राप्त हुई। ६३ इतना कहकर सबने स्नान भोजन किया और नवीन महल में जा पहुँचीं। ६४ सम्बन्धी राजा गण सुनते ही शीघ्र आ पहुँचे तथा सद्भाव से अपने-अपने आवास में रह गए। ६५ हे हिमांचलनन्दिनी ! सुनो। इसके पश्चात् समस्त अयोध्या-वासी आनन्द में निमग्न हो गए। ६६ उन्होंने नाना प्रकार से नगर को सुसज्जित किया। सभी केले के वृक्ष तथा आम्र पल्लव लिए थे। ६७ तोरण के स्तम्भों के ऊपर झालरें लगा रहे थे तथा पूर्णकुम्भों पर आम्र की डालें लगाई जा रही थीं। ६८ पीठिका पर सुवर्णकलश स्थापित रक्खे गए थे तथा नाना प्रकार की रंग बिरंगी झण्डियाँ और पताके फहरा रहे थे। ६९ चारों ओर पाट वस्त्रों के ध्वज लगे थे। घरों की शोभा पंक्तिबद्ध दर्पण के समान दिख रही थी। २२७० सुगन्धित चन्दन से बिचित्र चित्रकारी की गई थी। दिव्य पुष्प लाकर निरन्तर सजाये जा रहे थे। २२७१ मार्ग में चारों ओर सुवास फैल रही थी। सुझीन साड़ियों के पाँवड़े पड़े थे। ७२ उनके ऊपर पुष्प बिछा दिये गए थे और ऊपर से कर्पूर का चूर्ण उस पर डाल दिया गया था। ७३ स्थान-स्थान पर वेणु-वीणा वाद्य यंत्र बज रहे थे। नगर के नर-नारी एक-एक को जीतने वाले थे। ७४ विविध वर्ण के सुझीन वस्त्र तथा रत्नमाल उनके परिधना

तुण्डरे पान तांकर मुण्डरे फुल गभा ।सर्वांग सुन्दर तांक दिशन्ति सर्बे शोभा ७६
घरे घरे उत्सव मंगळ गीत गाइ ।सात पाञ्च मेळ होइ नग्र बुलि जाइ ७७
चतुरी सुन्दरी नागरी नारी देखि । काम भरे सेहि जे ठराठरि आखि ७८
लोकमान गहळ नग्र पुर पुणि । टमक निशाण जे टाणरे बाजे पुणि ७९
नाट गीत नृत्य जे केवण ठारे हुए । केउँ ठारे माल जुद्ध बन्दाण गत हुए२२८०
केउँ ठारे अशु आर अश्वकु पुण ध्वाइँ । केउँ ठारे कउतुक पारुआ मेळि होइ२२८१
केहु उड़ाइ छन्ति कागज पत्र चकि । उपरे उड़न्ते भितर लोक देखि ८२
नानादि राज्यरु जे अइले नृपवर । भट देश हट माळ बंग कलिंगेश्वर ८३
तिहुडि मरहट्ट मगध जे कर्णाट । कलबर कल्याण काशी करकट ८४
केहु मथुरारु आसे केहु कोन्तकदे शर ।
कळिंग कर्णाट काञ्चि मिथिल्या राज्यर ८५
काउँरी नाभदेश घुँघुरा श्वेत राष्ट्र । केहु गंग बंश केहु होयं वंश ८६
देव गिरि ब्रह्मगिरि प्रबेश हेले आसि । केहु मत्स्य देशरु आसे आए मरूत देशि ८७
केहु हरद्वार केहु गौतम गरुहंस । × × × ८८
हेमाळ देशरु ओडराष्ट्र जाए ।अजोध्या देशरे आसि समस्ते ठुळ हुए ८९
बाजणार शबदरे कुरुम उछुळि । पादघाते कम्पिण हलिला महीआळि२२९०

थे । ७५ उनके मुख में ताम्बूल और मस्तकों पर फूलों के गुच्छे थे। उनके सुन्दर सर्वांग शोभायुक्त दिखाई दे रहे थे । ७६ गृह-गृह में मांगलिक गीतोत्सव हो रहे थे। सात-पाँच के झुण्ड बनाकर नगर में विचरण कर रहे थे । ७७ चतुर एवं सुन्दर नगर की नारियों को देखकर वह कामपूर्ण नयन कटाक्ष कर रहे थे । ७८ जनरव से नगर व्याप्त था । टमक तथा निशान उच्च स्वर से बज रहे थे । ७९ इसी स्थान पर नाच-गाने हो रहे थे। कहीं नृत्य नाटिकायें चल रही थी। कहीं पर मल्लयुद्ध दाव पेंच वाले हो रहे थे । २२८० कहीं पर आगे-आगे अश्व को दौड़ाते हुये योग्यतापूर्वक कौतुक हो रहे थे । २२८१ कोई कागज की पतंगे उड़ा रहे थे जिन्हें उड़ते हुये भीतर से लोग देख रहे थे । ८२ कलवर, कल्याण, काशी, कर्कट, त्रिरहुत, महाराष्ट्र, मगध, कर्नाटक, भूटान, माल देश तथा, बंग, कलिंग आदि अनेक देशों से श्रेष्ठ राजागण आये थे । ८३-८४ कोई मथुरा से कोई कुन्त देश से आया था। कलिंग कर्नाटक, कांची, मिथिला, नाभदेश आदि-आदि देशों से गंगवंशीय तथा होयंग वंशीय राजागण आये थे । ८५-८६ देवगिरि तथा ब्रह्मगिरि आ चुके थे। कोई मत्स्य देश कोई मरुत देश कोई हरिद्वार और कोई गौतम गरु हंसी प्रदेश से आया था । ८७-८८ हिमांचल से लेकर उत्कल प्रदेश तक के लोग आकर अयोध्या में जमा हो गये । ८९ वाद्य नाद से कच्छप तिलमिला उठा। पैरों के आघात् से भूमण्डल काँपने लगा । २२९०

अजोध्यारे प्रबेश जे सकळ महीपति। बिचित्र परिमळ जे कटक देखन्ति२२९१
नाना लोकंक भाषा देशरे भिन्न भिन्न। देखि करि हरष अजोध्या राजन ९२
सुमन्त सम्भाळिले जे जोगाड़मान देइ। रहिले राजामाने हरष मन होई ९३
थाटकु अन्न व्यञ्जन अश्वकु दाना पुण।राजांकर जोगाणे भिआण हेला जाण ९४
अनेक तीर्थर जे अइले तीर्थ बासी। भिक्षुक जोगी माने जे सन्यासी ९५
अजोध्यारे लोके देखुण छन्ति तेणे। अन्न बस्त्र तइळ दिअन्ति जणे जणे ९६
ताम्बुळ चन्दन गन्ध पुष्पमान द्यन्ति। पाणि पणा पइड़ थोके परषन्ति ९७
जे जाहा मागन्ति पाआन्ति सर्व सिद्धि। सुमन्त्र देइछन्ति सञ्चाकु संपादि ९८
सरजु नदी बेड़े नग्रर चउपाशे। दाराक्ष बिपिन जे अछइँ बिकान्थे ९९
चूतबन निकटरे रचिले जागशाळा। अगरु चन्दनरे निर्माकले चाळ२३००
पाट सूता गण्ठिकरि सजळस बता। तेज पत्ररे छाएणी कले चाळ गोटा२३०१
उपरे रत्न कळस नेइण बसाइले। सेथिर उपरे नेत पाट उड़ाइले २
नेतर पतनी जे त्रोणा खम्भे बान्धि। फुलमाळ सेथिर उपरे छन्दि ३
दर्पण पन्ति पन्ति चामर श्वेत कळा। चउकतिरे लम्बइ गजमोति झरा ४
चारि द्वारे मण्डणि भिन्न भिन्न करि। शशीधर भुवनकु पटान्तर करि ५

समस्त राजागण अयोध्या प्रदेश में आ पहुँचे। वह लोग अयोध्या नगरी की विचित्र शोभा को देख रहे थे। २२९१ भिन्न देशों के लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं को देखकर अयोध्या नरेश प्रसन्न हो गये। ९२ सुमंत ने समस्त सुविधाएँ देकर उनकी साज सँभाल की। राजा लोग प्रसन्नचित्त से वहाँ ठहरे थे। ९३ राजा की ओर से सेना को भोजन तथा घोड़ों को दाने-चारे की व्यवस्था की गई थी। ९४ बहुत से तीर्थों के तीर्थवासी, भिक्षुक, योगी, तथा संन्यासी आये थे। ९५ अयोध्या के लोग उन सबको अन्न वस्त्र तथा तैल दे रहे थे। ९६ पान, चन्दन सुगन्धित पुष्प, प्रदान कर रहे थे। जल, पेय पदार्थ तथा बहुत से हरे नारियल आदि द्रव्य पदार्थ परस रहे थे। ९७ जो कोई जो कुछ माँगता था। उसे सब प्रकार के ईप्सित पदार्थ प्राप्त हो रहे थे। सुमंत उन्हें परम्परागत ढंग से प्रदान कर रहे थे। ९८ नगर को चारों ओर से सरयू नदी ने घेर रखा था। परकोटे के समीप ही द्राक्षा-वन था। ९९ आम्रकानन के समीप यज्ञशाला निर्मित थी उसका छाजन अगुरु तथा चन्दन से बनाया गया था। २३०० पाट के धागों को गाँठ लगा करके चिरे हुये हरे बाँसों द्वारा एक छप्पर तेजपत्र से छा दिया गया। २३०१ उसके ऊपर रत्न-कलश लेकर रख दिया गया और उसके ऊपर ध्वजा फहरा दी गयी थी। २ झण्डे की रस्सी तोरण के खम्भे से बँधी थी और उसके ऊपर फूल मालायें लगा दी गयी थीं। दर्पण की पंक्तियाँ काली और श्वेत चामर और चारों ओर से लगे हुये गजमुक्ता झिलमिला रहे थे। ३-४ चारों द्वारों की सजावट भिन्न-भिन्न की गई थी जो कैलाशपुरी से

मर्कत पाणि पाटिआ होइछिक निर्वाण । केवण ठावरे काच सुवर्ण रसाण ६
काहिँरे पोएळा जे काहिँरे हीरा जड़ि । × × × ७
केवण ठावरे रंग बसन्त वर्ण परि । केवण ठावरे कळा मेघ रत्न घोटि ८
मध्यरे वेदी कले विचित्र वर्ण रचि । शते हात दीर्घ जे चारि दीर्घ प्रति ९
निर्वाण कले पुण विश्व कर्माकु घेनि ।से सभा दिशु अछि सुधर्मा सभाकु जिणि२३१०
तथि मध्यरे पुण रचिले हेम कुण्ड । दीर्घ प्रति प्रमाणे दश हात लम्ब२३११
गभीर वेनि हात रचिले सूत्र करि । प्रवेश होइले आसि सकळ तपचारी १२
अगस्ति पारेश्वर कुशध्वज मुनि ।चेतन चैतन्य उत्तम विश्वामित्र ज्ञानी १३
पौलस्त्य विश्रवा जे अइले पिता पुत्रे । मारकण्ड पारेश्वर शरभंग पवित्रे १४
भरद्वाज ऋषि तारण महामुनि । देव उद्याळक दुर्वासा तपोधनी १५
एहांकर मूळे जे वतिश सहस्रे ऋषि । अजोध्या कटकरे प्रवेश हेले आसि १६
दशरथ नमस्कार होइण वोइले । आज मोर सूर्ज्य वंश पवित्र होइले १७
ब्रह्म ऋषि राज ऋषि देव ऋषिमाने । प्रवेश होइले आसि अजोध्या भुवने १८
दशरथ वोइले मुनि कल्याण मोते कर । तुम्भ कल्याणरे मोर हेउ जे कुमर १९
तपोमाने बोइले साधुरे महीपाळ । तुम्भेत देखिल विभाण्डक मुनि वाळ२३२०

समता कर रही थी । ५ कहीं पर मरकत (मणि) से पाणि-पीठ गई थी किसी स्थान पर शीशे तथा सुवर्ण को लगा कर वनाया गया था । ६ कहीं पर रत्न विशेष और कहीं पर हीरे जड़े थे । ७ किसी स्थान का रंग वसन्ती और किसी स्थान का रंग काले मेघ के समान नीलम के समान वना था । ८ मध्य भाग में एक अद्भुत वेदिका वनी थी । उसका विस्तार चारों ओर से सौ हाथ का था । ९ विश्वकर्मा के द्वारा उस सभा का निर्माण कराया गया था । वह इन्द्र लोक की सुधर्मा सभा को जीतने वाली थी । २३१० उसके मध्य में सुवर्ण का हवन कुण्ड वनाया गया जिसका विस्तार दस हाथ का था । २३११ सूत्र से मापकर उसकी गहराई दो हाथ निर्मित हुई । सभी तपस्वी वहाँ पर आकर प्रविष्ट हुए । १२ अगस्त पारेश्वर कुशध्वज चेतन चैतन्य तथा उत्तम ज्ञानी विश्वामित्र तथा पिता पुत्र पुलस्त एवं विश्रवा वहाँ आ गए । पवित्र ऋषि मारकण्ड पारेश्वर तथा शरभंग वहाँ पधारे । १३-१४ ऋषि भरद्वाज महामुनि तारण देव उद्दालक तपोधन दुर्वासा तथा उनके नीचे के वत्तिस सहस्र ऋषि अयोध्या नगर में आ पहुँचे । १५-१६ दशरथ ने प्रणाम करते हुए कहा कि आज मेरा सूर्यवंश पवित्र हो गया । १७ ब्रह्मर्षि, राजर्षि तथा देवर्षि गण अयोध्या दुर्ग में आकर प्रविष्ट हुए । १८ दशरथ ने कहा हे मुनियों ! हमारा कल्याण कीजिये जिससे आपके आशीर्वाद से मेरे पुत्र उत्पन्न हो । १९ तपस्वी बोले हे महिपाल ! तुम धन्य हो जो तुमने विभाण्डकनन्दन के दर्शन

आउ कि चिन्ता तुम्भर अछि हे पुत्र पाइँ। आरत नुहँ मने नृपति कुळ साइँ२३२१
एहि जाग चरुरे तोर पुत्र हेब जात। आम्भर कल्याण तोरे हेउ जे प्रापत २२
एथु अनन्तरे जे सुमन्त्र मन्त्री मिळि।राजा आज्ञा पाइण तपोंकि घेनि चळि २३
जे जाहा अनुरूपे ठाव नेइ देला। कन्दमूळ पक्व फळ आणि समर्पिला २४
सुस्थ होइ ऋषि माने निश्चिन्ते रहिले। निज राज्य लोक सर्व देखिण अइले २५
लोमपादकु चाहिँण बोले दशरथ। पूर्व द्वार रक्षा तुम्भे कर जाइ मित २६
कौशल्यांकर भाइ रखु उत्तर द्वार। दक्षिण द्वारे थान्तु कैकेय़ी पिअर २७
सुमित्रार भाइ जे पश्चिम द्वार रखु। सकळ लोकमानंकु एक करि देखु २८
सुमन्त सम्भाळिबे ऋषिगण मान। तपोंकि बशिष्ठ करिबे सनमान २९
जाबाळि तण्डुळ समिध आणि द्यन्तु। बामदेव जाइण भण्डार रखन्तु२३३०
काश्यप चर्च्चिबे कुसुम गन्ध पुष्प। चतुर्पाश्वे थिबे लक्ष्मीबन्त जे पुरुष२३३१
मत्त गज अश्ब दिब्य जान मान।बेश्या स्तिरी आसिण करन्तु नृत्य पुण ३२
जे जाहा मागिब जे निराश नकरिब। अन्न बस्त्र तण्डुळ तइळ घृत देव ३३
आषाढ़ शुक्ल एकादशी गुरुवार। ज्येष्ठ नक्षत्र जे दशाकु साध्य तार ३४
सप्त चन्द्र शुभलग्न बेळ जाणि। शुक्र अधिकारी जे होइ छन्ति पुणि ३५

किये। २३२० हे नृप कुलेश्वर! तुम मन में दुःखी न हो। अरे! तुम्हें पुत्र प्राप्ति के लिए किस बात की चिन्ता है। २३२१ इस यज्ञ के चरु से तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होंगे। हमारा आशीर्वाद तुम्हें प्राप्त हो। २२ इसके पश्चात् मंत्री सुमंत आये और राजा की आज्ञा से तपस्वी जनों को लेकर चल पड़े। २३ उन्होंने सबके अनुरूप उन्हें स्थान दिया और कन्दमूल तथा पके फल लाकर समर्पित कर दिये। २४ ऋषि लोग निश्चिन्त होकर आराम से वहाँ रह गये। राज्य के सभी लोग उनके दर्शन करने के लिये आये। २५ दशरथ ने लोमपाद की ओर देखते हुये कहा हे मित्र! आप पूर्व-द्वार की रक्षा कीजिये। २६ कौशल्या का भाई उत्तर द्वार की रक्षा करे और कैकेयी के पिता दक्षिण द्वार पर रहें। २७ सुमित्रा का भाई पश्चिम द्वार की रक्षा करे और सभी लोगों को समान देखे। २८ सुमंत ऋषि मंडल का ध्यान रखेंगे और वशिष्ठ तपस्वियों का आदर-सत्कार करेंगे। २९ जावालि चावल तथा समिधा लाकर देंगे और वामदेव जाकर भण्डार की देखभाल करेंगे। २३३० काश्यप सुगन्धित पुष्प तथा चन्दन की व्यवस्था करेंगे। धनवान पुरुष चारों ओर रहेंगे। २३३१ मत्तगजराज अश्व तथा दिव्य रथ इत्यादि प्रस्तुत रहेंगे। वेश्या स्त्री आकर नृत्य करें। ३२ जो कोई जो कुछ माँगेगा उसे निराश न करना। उसे अन्न वस्त्र, तेल, घी, चावल, दे देना। ३३ आषाढ़ शुक्ल एकादशी गुरुवार ज्येष्ठा नक्षत्र की शुभ दशा में सप्तम चन्द्रमा की शुभ लग्न का समय जानकर जिसमें शुक्र ने अधिकार कर रखा है। इस प्रकार के शुभ लग्न के योग के समय विभाण्डकनंदन

एसनक शुभलग्न जोग तीर्थ बेळे। दशरथंकु बोले बिभाण्डक बाळे ३६
जेतेक अछन्ति जे तुम्भर महादेई। सेमानंकु बोल ब्रत पाळिथिबे सेहि ३७
प्रभातु स्नाहान हबिष्य एकाबेळे। मौन ब्रते धर्म साधिबे न्याय बळे ३८
अबिच्छिन्ने अन्न बस्त्र देबे दुःखीजने। किञ्चित कथारे चिन्ता नकरिबे मने ३९
मन्त्र गोटि जपिबे बसिण जोग ध्याने। ऋष्यश्रृंग कहिले दशरथंकर कर्ण२३४०
शुणि करि दशरथ हरष हेले मने। ऋष्यश्रृंग बचनरे करि अनुध्याने२३४१
दिनके सहस्रे बेळ महामन्त्र जपिब। जेहु हेळा करिब से पुत्र न पाइब ४२
एकान्ते बसि जपिब काहाकु न देखि। ऋषि मानंक विधि जेणु शास्त्ररे लेखि ४३
दिबसर शेषरे भोजन पुण करि। अरुआ अन्न भोजन करिबे सर्वनारी ४४
निर्दोषी कृष्णाजिने शयने हुए पुत्र। ब्याघ्र छाल से नुहँइ परम पबित्र ४५
सेथिरे बसिब जेबे पश्चिम मुख होइ। होइण परनारी न हरिब काहिँ ४६
शताइश कुशरे शताइश गण्ठि। मन्त्र जप करिब सुमने देइ मति ४७
गळारे थिब जे तुळसी पुष्पमाळि। छामुरे गुआ घृत दीप थिब जाळि ४८
तेबे सेहि मानंकर फळ सिद्ध होइ। मृग छाल बिधान शुण हे नृप साइँ ४९
मृग छाल उपरे निश्चळे जेबे बसि। शताइश गण्ठिरे जे महामन्त्र जपि२३५०

श्रृंगी ऋषि ने दशरथ से कहा। ३४-३५-३६ आपकी जितनी भी महारानियाँ हैं। उन सबसे व्रत पालन करने के लिये कह दीजिये। ३७ वह लोग न्याय के बल पर प्रभातकाल में स्नान, एक समय सात्विक भोजन तथा मौन व्रत धारण करके धर्म का पालन करें। ३८ दुःखी दरिद्रों को अन्न वस्त्र दान करें और मन में थोड़ी बात के लिये भी चिन्ता न करें। ३९ ध्यान योग में बैठकर एक मंत्र का जाप करें। ऐसा कहकर श्रृंगी ऋषि ने दशरथ के कान में मंत्र कहा। २३४० उसे सुनकर दशरथ मन में प्रसन्न हो गये और उन्होंने श्रृंगी ऋषि के वचनों का अनुसरण किया। २३४१ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि इस महामंत्र का जाप एक दिन में एक हजार बार करना है जो प्रमाद करेगा उसे पुत्र प्राप्त नहीं होगा। ४२ विना किसी को देखे हुये एकान्त में बैठकर जाप करना होगा। जैसी विधि ऋषियों ने शास्त्र में लिखी है। ४३ सभी नारियाँ दिन की समाप्ति पर अरवा, अन्न का भोजन करेंगी। ४४ निर्दोष हिरन के काले चमड़े पर शयन करने से पुत्र होगा, क्योंकि बाघ की छाल अत्यन्त पवित्र नहीं है। ४५ हे पुत्र ! उस कृष्ण मृग-चर्म पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठना होगा। पर पुरुष का ध्यान किंचित न आना चाहिये। ४६ सत्ताइस कुश में सत्ताइस गाँठों पर विशुद्ध मन से मंत्र जप करना होगा। ४७ गले में तुलसी पुष्प-माला होगी सामने सुपारी तथा घी का दीपक जलता होगा। ४८ तब उन लोगों की मनोकामना सिद्ध होगी। हे नृपेश्वर ! अब मृग-छाल का विधान सुनो। ४९ जब निश्चल होकर मृग छाल के ऊपर बैठें और सत्ताइस गाँठों पर महामंत्र का जाप करें। उस समय

महामन्त्र जपिबाकु जेते बेळ हेब । तेते बेळे जाए पुण आचाररे थिब२३५१
पूर्ण कुम्भ बसाइ करिब बरुण पूजा । आम्भर बोलरे तुम्भे चळ महाराजा ५२
शुणिण नृपवर नवरे प्रबेश । हकारि अणाइले सकळ राणीहंस ५३
ऋष्यश्रृंग जेतेक कहि थिले पुणि । पाट महादेईकि बुझाइ नृपमणि ५४
शुणिकरि राणी सर्बे आचरिले ब्रत । आपणे दीक्षा जेणु कहिले अजसुत ५५
शुणन्ति पार्वती जे कहन्ति शंकर ।आद्यकाण्ड रामायण ग्रन्थ मध्ये सार ५६
श्रीराम जे जन्म हेबे पुण एहु जज्ञे । तुम्भे एहा शुण गो करिछ भाग्य पूर्वे ५७
पार्बती बोइले तुम्भे शुण आहे शूळी । मोहर पाप भाग पकाअ एबे दळि ५८
तुम्भर प्रसादे देव पाइछि बहु धर्म ।कह हे प्राण नाथ श्रीराम आद्य जन्म ५९
केते राजा ठुळ हेळे अजोध्या नवरे । एहि कथा बुझि कह आहे दिगम्बरे२३६०
देव ऋषि केते थिले ब्रह्म ऋषि केते । राज ऋषि शुद्र ऋषि अइलेक केते२३६१
जोगी सन्यासी जे आबर दुःखीजने । एमाने केते अइले कहहे प्रसन्ने ६२
बन्धु बान्धव राजा केते जे अइले । हाटुआ वाटुआ पुण केते रुण्ड हेले ६३
एहा मोते बुझाइण कह शूळपाणि । तुम्भर चरणरे बिनत मोर पुणि ६४
शुणि करि ईश्वर कहन्ति सेहु कथा । शुण आगो हेमवन्त गिरिश दुहिता ६५

महामंत्र के जाप करते समय आचार-विचार पूर्वक रहें । २३५०-२३५१ जलपूर्ण कुम्भ स्थापित करके वरुण पूजन करें । हमारा कहना मानकर हे महाराज ! आप जाइये । ५२ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा ने महल में प्रवेश किया । उन्होंने सारी रानियों को बुलवा लिया । ५३ श्रृंगी ऋषि ने जो भी कहा था । नृप शिरोमणि दशरथ ने पटरानी को समझा दिया । ५४ यह सुनकर समस्त रानियों ने व्रत का आचरण किया जिस प्रकार की दीक्षा अज नन्दन ने स्वयं दी थी । ५५ पार्वती जी इस कथा को सुन रही हैं और शंकर जी उन्हें सुना रहे हैं । रामायण ग्रन्थ में आद्य काण्ड सार है । ५६ इस यज्ञ से श्री राम का जन्म होगा । तुम्हारे पूर्व-काल के भाग्य शुभ हैं अतः इसे सुनों । ५७ पार्वती ने कहा हे सूलधर ! आप सुनिये । हमारे पापों के भार को आप नष्ट करके हटा दीजिये । ५८ हे प्राणनाथ ! आप श्रीराम का जन्म आदि से कहिये । आपकी कृपा से हे देव ! हमें पुण्य प्राप्त हुआ है । ५९ हे दिगम्बर ! अयोध्या नगर में कितने राजागण एकत्रित हुये । यह कथा आप हमें समझा कर कह दीजिये । २३६० वहाँ पर कितने देवर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि तथा शूद्र ऋषि आये । २३६१ आप प्रसन्न होकर हमसे कहिए कि वहाँ पर कितने योगी, संन्यासी तथा दुःखी लोग आये थे । ६२ वहाँ कितने बन्धु-बान्धव राजागण तथा हाट-वटोही एकत्रित हुये थे । ६३ हे शूलपाणि ! आप मुझसे यह समझाकर कहें । मैं आपके चरणों में विनती करती हूँ । ६४ यह सुनकर शंकर जी ने कहा कि

द्वादश सहस्त्र जे अइले राजागण । सस्त्रे तिनि शत दशरथंकर वन्धु जाण ६६
लोमपाद राजांकर सहस्त्रे सातश ।दुइ राजा वन्धु जे एमन्ते तिनि सस्त्र ६७
पन्दर सहस्त्र राजा तहिँ हेले मेळ । चून प्रांगणरे पुण रहिले सकळ ६८
दर्पणर झरा जे मुकुता झलकन्ति ।चित्रपट्ट पितुळा कान्थरे लेखि छन्ति ६९
चूआ चन्दन जे सुगन्ध छेरा पड़ि । कर्पूरर धूळि तळरे अछन्ति जे पाड़ि२३७०
एक एक राजांकु जे शतेक वखरा ।खट दोळि पळंक वॉकिआ दिशे तोरा२३७१
पञ्चु वर्ण पुष्पमाळ गुन्थिण जतने । माळाकार माने नेइ दिअन्ति राजने ७२
रत्नमय्र सिंहासन प्रति राजांकर । शीतळ मणोहि जे जोगाड प्रकार ७३
अमळाण वस्त्र पाटशाढ़ी जे पतनी । सरु झीन वास खटणी दिए आणि ७४
जुणेक आक्रान्तरे नवर निर्माण । सेथिरे विजय्र सकळ राजागण ७५
गह गह शवद जे शुभइ वीर तूर । वीणा सितार जे मर्द्दळ वाजे घोर ७६
सकळ राजा छामुरे जाइ नृत्यकारी । मोहन्ति राजा मानंक मन जे हकारि ७७
कि कहिवि शोभा गो से पुर कथा पुणि । वार जुण दीर्घ अजोध्या नग्र जाणि ७८
देव ऋषि मिळिले षोळ सहस्त्र पुणि ।ब्रह्म ऋषि अइलेक वार सहस्त्र जाणि ७९
तपोजन अइले वार जे सहस्त्र । राज ऋषि अइले जे सपत सहस्त्र२३८०

हे पर्वतराज हिमांचल नंदिनी ! तुम वह कथा सुनो। ६५ वहाँ पर वारह-हजार राजागण आये जिसमें से एक हजार तीन सौ दशरथ के वन्धु-वान्धव थे। ६६ राजा लोमपाद के वन्धु-वान्धव एक हजार सात सौ थे। इस प्रकार दोनों राजाओं के वन्धु-वान्धव तीन हजार हुये। ६७ वहाँ पर पन्द्रह हजार राजा एकत्रित हुये थे जो श्वेत प्रांगण में ठहरे हुये थे। ६८ वहाँ दर्पण के समान मुक्ता झिलमिला रहे थे। दीवारों पर चित्र-विचित्रपुत्तलिकायें वनी थीं। ६९ चोवा, चन्दन तथा सुगन्धि का सिचन हो रहा था और भूभाग में कपूर का चूर्ण विखरा दिया गया था। २३७० एक-एक राजा के सौ-सौ वखरियाँ थीं। खाट झूले पलंग तथा शिविकायें शोभा से युक्त दिखाई देती थी। २३७१ माली पाँच वर्ण के पुष्पों की मालायें गूँथ कर दिया करते थे। ७२ प्रत्येक राजा के लिये रत्नमय सिंहासन था। शीतल पदार्थों के भोजन आदि का प्रवन्ध था। ७३ दासियाँ लाकर स्वच्छ सुझीन परिधान वस्त्रादि देते थे। ७४ एक योजन के विस्तार में भवन निर्मित थे जहाँ सभी राजागण ठहरे थे। ७५ वीर तूर्य का घनघोर उद्घोष सुनाई पड़ता था। वीणा, सितार, ढोल, मृदंग की तुमुल ध्वनि हो रही थी। ७६ नर्तकियाँ समस्त राजाओं के समक्ष जाकर हाव-भावपूर्ण नृत्य से उनके मन मोह लेती थीं। ७७ उस नगर की शोभा का क्या वखान किया जाय। अयोध्या नगर का विस्तार वारह योजन का था। ७८ वहाँ पर सोलह हजार देवर्षि एकत्रित हुये थे और वारह हजार ब्रह्मर्षि आये थे। ७९ वारह हजार तपस्वी तथा सात हजार राजर्षि वहाँ पर आये हुए थे। २३८० शूद्रमुनि

शुद्र मुनिंक संगे तिनि सहस्त्र शिष्य ।जोगी सन्यासी पुण पाञ्च जे सहस्त्र२३८१
समस्त ऋषि तपी चउबन ठुळ । जुणकर नबरे रहिले सकळ ८२
नन्दीग्रामरे सकळ रहिलेक जाइँ ।बिपुळ राजा सेथिरे जे अछि भिआइ ८३
घृत अग्नि सकळ सेथिरे रखे नेइ । धूनी करिण ऋषि मुनि तपी रहि ८४
कन्दमूळ फळ जे पक्वद्रव्य आणि । दधि दुध सर जे समर्पन्ति आणि ८५
अमालु माण्डुआ पोड पुण देले नेइ । छेना साकर जे पुण नाना द्रब्य देइ ८६
सेहि स्थाने मुनि माने रहिले सुस्थरे । एथु अनन्तरे शुण उमादेबी भले ८७
मागन्ता दुःखीजन अइले जेते पुण । से मानंकु अन्न बस्त्र देले राजा जाण ८८
लक्षेक ब्राह्मण जे हेले आसि रुण्ड । घोष जात्रारे जेन्हे शोभा बड़दाण्ड ८९
नवजुण छामुण्डिआ राजा करे जाण । अनेक लोक आसिले जागकु देखिण२३९०
ईश्वर बोइले पार्वतींक मुख चाहिँ ।जाहा पचारिल तुम्भे शुणिण टिकि सही२३९१
श्रीराम जन्म चरित कहिबा मणाइँ । जागरे नारायण जन्म हेबे मही ९२
दशरथ नृपति जे आचरिले ब्रत ।दीक्षा घेनि राणीहंस सकळे कले तत्त्व ९३
ऋष्यश्रृंग मुनि जे निष्ठावन्त होइ । तपी जागरे मिळिले जुबती न छुइँ ९४

के साथ तीन हजार शिष्य थे। योगी तथा सन्यासी पाँच हजार की संख्या में थे। २३८१ समस्त ऋषियों तथा तपस्वियों के चौवन दल सभी एक योजन विस्तृत नगर में ठहरे हुये थे। ८२ नन्द्री ग्राम में राजा ने विपुल साधन जुटाए थे जिसका विस्तार एक योजन का था। सभी वहाँ जाकर ठहर गए। ८३ वहाँ पर घी अग्नि सभी पदार्थों का प्रबन्ध था। ऋषि मुनि तथा तपस्वी वहाँ धूनी रमाकर रह रहे थे। ८४ कन्दमूल पके फल, पाक द्रव्य, दूध, दही, मलाई आदि सब उन्हें लाकर दिये जा रहे थे। ८५ घी में पकी हुई पिष्ठी, माण्डुआ पका हुआ शस्य विशेष छेना शक्कर आदि नाना प्रकार के पदार्थ उन्हें लाकर दे रहे थे। ८६ मुनि लोग उस स्थान पर सुखपूर्वक रह रहे थे। हे देवी उमा! इसके पश्चात् सुनो। ८७ जितने भिखारी तथा दुःखी दरिद्र लोग आये थे। उन सबको राजा ने अन्न तथा वस्त्र प्रदान किया। ८८ एक लाख ब्राह्मण वहाँ आकर एकत्रित हुये थे। वहाँ की शोभा इस प्रकार लग रही थी जिस प्रकार जगन्नाथ राजपथ की शोभा रथयात्रा के समय में होती है। ८९ नौ योजन तक राजा ने बितान तनवा दिये थे। यज्ञ को देखने के लिये अनेक व्यक्ति आ गये थे। २३९० शंकर ने पार्वती के मुख की ओर देखते हुये कहा, हे सहचरी! तुमने जो पूँछा था। उसे सुन लिया। २३९१ मै श्रीराम के जन्म का चरित्र सादर कहूँगा। यज्ञ से नारायण पृथ्वी पर जन्म लेंगे। ९२ राजा दशरथ ने व्रत का आचरण किया और समस्त रानियों ने दीक्षा लेकर अनुष्ठान प्रारम्भ किया। ९३ श्रृंगी ऋषि ने निष्ठा से कार्य किया और तपस्वी लोग स्त्री का स्पर्श न करते हुये यज्ञ में सम्मिलित हुये। ९४ ब्रह्मर्षि के पुत्र यज्ञ में प्रविष्ट हुये

जागे प्रवेश होइले ब्रह्म ऋषि पुत्र। जाणि अजपा गायत्री पढ़न्ति तुरित ९५
जज्ञरे ब्राह्मण वरिले जण चारि। कुण्डळ मुदि बस्त्र जे देले दण्डधारी ९६
ऋष्यश्रृंग मुनि जे जागरे आचार्य्य। मार्कण्ड ऋषि देखि जे हेलेक धइर्ज्य ९७
अग्निकि स्थापिण बेद मन्त्र पढ़ि। कुश समिध भइँच पलाश जे पोड़ि ९८
जवधान दधि दुध गुआघृत बिधि। तिळ तण्डुळ जेते बेळे जेउँ सिद्धि ९९
बिधि बिधानरे जाग कले महा मुनि। गन्ध चन्दन कर्पूर सकळ विधि घेनि२४००
जेबण देवतांकु जेबण मन्त्र पूजा।होमरे वाक्य करन्ति समिध करे दूजा२४०१
जाग पाशे वाजे शंख महुरी भेरी। अति गहळरे उत्सव नग्रपुरी २
स्वर्गरु सुरगणे आसिले सत्वर। त्रिदश देवता जे ब्रह्मा रुद्र मेळ ३
सुर राजा संगरे किन्नरी अपसरी। जक्ष गन्धर्ब जे सकळे आसिमिळि ४
सुधर्मा सभारे जे बिजय सर्ब करि। × × × ५
दश जुण मञ्चकु छाडिण रत्ने देव। मञ्चपुर लोकंकु मिळिले क्षेत्रभाव ६
मध्यरे सदाशिव बामरे सुर राजा। डाहाणरे बिधाता बसि छन्ति प्रभा ७
एमन्त समग्ररे चन्द्र देवता आसि। ईश्वर ललाटरे बिजये कले शशी ८
दिवसरे चन्द्र उइँले शीतळ रबितेज। तेणु चन्द्र शेखर बोलाए ईश्वर देव ९

और शीघ्रतापूर्वक गायत्री का अजपा जाप करने लगे। ९५ यज्ञ में चार ब्राह्मण लोगों का वरण किया गया और राजा ने उन्हें कुण्डल मुद्रिका तथा वस्त्र दिये। ९६ महात्मा शृंगी ऋषि यज्ञ में आचार्य हुये। जिन्हें देखकर मार्कन्ड ऋषि संतुष्ट हो गये। ९७ अग्नि को स्थापित करके वेद के मंत्रोच्चारण के साथ कुश समिधा कुदुम्बर तथा पलाश जलाये गये। ९८ जौ, धान, दही, दूध, घी, सुपारी, तिल चावल की जिस समय विधान के लिये आवश्यकता होती थी। वह सब दिये जाते थे। ९९ महामुनि ने सुगन्धित चन्दन कपूर तथा अन्य सामग्रियाँ लेकर विधि-विधान से यज्ञ किया। २४०० जिस समय जिस देवता की जिस मंत्र से पूजा होती थी। उससे हवन करते थे और दूसरा समिधा साकल्य डालता था। २४०१ यज्ञ के समीप शंख महुरी तथा भेरियाँ बज रही थीं। अत्यन्त हर्षोल्लासमय उत्सवों से नगर पूरित था। २ शीघ्र ही स्वर्ग से देवतागण आ गए। समस्त देवगण ब्रह्मा तथा शिव वहाँ पर उपस्थित हो गए। ३ देवराज इन्द्र के साथ किन्नरियाँ, अप्सरायें, यक्ष, गन्धर्व आदि सभी आए थे। ४ जैसे सभी लोग स्वर्ग की सुधर्मा सभा में उपस्थित होते हैं। ५ वह देवरत्न दस योजन विस्तीर्ण मंच को छोड़कर क्षेत्रीय सद्भाव से मृत्युलोक-वासियों से मिले। ६ मध्य भाग में सदा कल्याण करनेवाले शंकर जी बाँयी ओर देवराज इन्द्र दाहिनी ओर प्रभा से युक्त विराजमान थे। ७ इसी समय चन्द्रदेव आकर शंकर जी के ललाट पर विराजमान हो गये। ८ दिन में चन्द्र के उदय होने से सूर्य का तेज शीतल हो गया। इसलिये महादेव जी को चन्द्रशेखर कहा जाने लगा। ९ सभी देवता सुधर्मा सभा में जाकर बैठ गये।

सकळ देबे सुधर्मा सभारे जाइँ बसि। देखि बेदवरंकु सुर राजा पुछि२४१०
बोलन्ति बेदवर शुण मो वचन। चतुर्द्धा मूर्त्ति जे जन्म नारायण२४११
कौशल्या गर्भरे बासुदेव हेबे जात। कैकेयांक गर्भे जात सुदर्शन चक्र १२
सुमित्रांक गर्भरे अनन्त शंख दुइ। एमन्त जन्म हेबे चतुर्द्धा रूप होइ १३
तिनि राणी ठारु जे चारि पुत्र जात। सकळ राणींक निष्ठा होइब बिअर्थ १४
एते बोलि क्षुधाकु जे बोइले बिधाता। बोइले अजोध्याकु चळ बळवन्ता १५
दशरथंकर सात शह पचाश जे राणी।कौशल्या कैकेयी सुमित्रा छाड़ि पुणि १६
आउ सबु राणींक हृदयरे बस जाइँ।क्षुधा हेबारु निष्ठा तेज्या करिबे सेहि १७
सातश शतचाळिश राणी तेजिले निष्ठापुण। क्षुधारे आर्त्त होइ कलेक भोजन १८
केबळ तिनि राणी रहिले निष्ठा बन्ते। शुणिण पार्वती जे पचारे विश्वनाथे १९
बोइले सेठारु जे किस हेला पुण। ईश्वर बोइले तुम्भे भगवती शुण२४२०
स्वर्ग मर्त्य पाताळ जे आनन्द तिनिपुर। देखिण पुरजने तेजिले शोक भर२४२१
जेउँ देवतांकु मुनि मन्त्ररे सुमरि।से देवतामाने हबि भुञ्जन्ति बसि करि २२
पाञ्च दिनरे जाग होइला समापत। पूर्णाहुति कले ऋष्यशृंग तपोबन्त २३
जहुँ ऋष्य ऋंग देलेक आहुति। सकळ देवता घेनि बिजे बेदपति २४
ऋष्यशृंग आहुति बेदमन्त्रे देले। तेतिश कोटि देबे हरषे भक्षिले २५

यह देखकर इन्द्र देव ने ब्रह्मा जी से पूँछा। २४१० ब्रह्मा जी बोले हमारी बात सुनो। भगवान विष्णु चार रूपों में जन्म लेंगे। २४११ कौशल्या के गर्भ से वासुदेव तथा कैकेयी के गर्भ से सुदंशन चक्र उत्पन्न होंगे। १२ सुमित्रा के गर्भ से शेषनाग तथा शंख होंगे। इस प्रकार चार रूपों में नारायण का जन्म होगा। १३ तीन रानियों से चार पुत्र उत्पन्न होंगे। अन्य सभी रानियों की निष्ठा व्यर्थ हो जायेगी। १४ इतना कहकर ब्रह्मा जी ने बलबती क्षुधा से अयोध्या जाने के लिये कहा। १५ दशरथ की सात सौ पचास रानियाँ हैं उनमें से कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, को छोड़कर अन्य सभी रानियों के हृदय में जाकर बैठो जिससे भूख लगने से वह अपनी निष्ठा का परित्याग कर दें। १६-१७ सात सौ सैंतालिस रानियों ने क्षुधा से व्याकुल होकर व्रत को छोड़कर भोजन कर लिया। १८ केवल तीन रानियाँ व्रत-परायण बनी रहीं। यह सुनकर पार्वती ने विश्वनाथ से पूँछा। १९ उन्होंने कहा कि फिर वहाँ पर क्या हुआ। शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनों। २४२० स्वर्ग, मृत्यु तथा पाताल तीनों लोकों को सुखी देखकर देवताओं का शोक छूट गया। २४२१ मुनि मंत्र से जिस देवता का स्मर्ण करते थे। वह देवता बैठकर हव्य ग्रहण करता था। २२ पाँच दिनों में यज्ञ समाप्त हुआ और तपस्वी शृंगी ऋषि ने पूर्णाहुति डाली। २३ जब शृंगी ऋषि ने आहुति दी तब समस्त देवताओं को लेकर ब्रह्मा जी उपस्थित हो गये। २४ शृंगी ऋषि के वेद मंत्रों द्वारा आहुति देने पर तैंतीस करोड़ देवताओं

नवग्रह दिगपाळ सहिते तोष हेले।चौद कोटि शिव घेनि ईश्वर भुञ्जिले २६
अष्ट वसु आवर दिगपाळ तोष। चारि जुग संगतरे पृथ्वी देवी वश्य २७
अणचाण पवन जे चउषठि मेघ। गन्धर्व किन्नर आदि नृत्यकारी सर्व २८
स्वर्गर अपसरी पाताळे नाग लोके। वासुकी सहिते पाताळ पुर जेते २९
नवकोटि सहितेण दुर्गा संगे मिळे।गायत्री सावित्री संगे शची विजे कले२४३०
सकळ देवा देवी मूर्त्तिवन्त होइ। हवि भुञ्जिले सुखे परम सुख पाइ२४३१
ब्रह्मा रुद्र सकळ देवतांकु देखि। उठिले सर्व ऋषि आसन उपेक्षि ३२
वाक्य प्रतिक्षण छाड़िण सर्व जीत। कर जोड़िण आगे कले वहु स्तुति ३३
धन्य मोर पिता धन्य मोर तप। प्रत्यक्षरे देखिलि मुं सुरगणंक रूप ३४
ऋषि मुनि तपी जेते सेथिरे थिले। सकळ देवतांकु चक्षुरे देखिले ३५
राजा गण सहिते प्रजागण जेते। ईश्वर इन्द्रदेवे देखिले समस्ते ३६
राणीहंस वेश्यानटकारी जेते थिले तहिँ। अपसरी मानंकु देखि उभा होइ ३७
द्विज ब्राह्मण सेथिरे वहुत पुण थिले। ईश्वर ब्रह्मांकु पुण दरशन कले ३८
ऋष्य श्रृंग वोइले समस्त देवे शुण। दशरथंकु सर्वे कर सुकल्याण ३९
पुत्र गति पाआन्तु अजोध्या नृपवर। तुम्भे देवता एवे सर्वे दिअ वर२४४०
मोहर जश पुण रवितळे रहु। धर्म आश्रे करिछि राजा पुत्र पाउ२४४१

ने प्रसन्न होकर हविष्यान्न ग्रहण किया। २५ द्विगपालों के सहित नवग्रह संतुष्ट हो गये और चौदह करोड़ मंगल मूर्तियों को लेकर शिव ने भोजन किया। २६ अष्टवसु तथा द्विगपाल संतुष्ट हुये। चार युगों सहित पृथ्वी देवी संतोष को प्राप्त हुई। २७ उनचास पवन चौंसठ मेघ गन्धर्व किन्नर आदि सभी नृत्यकार स्वर्ग की अप्सरायें पाताल तथा नागलोग वासुकि के सहित नौ करोड़ दुर्गा, गायत्री तथा शची देवी आदि सब वहाँ पर पधारी। २८-२९-२४३० समस्त देवी देवताओं ने शरीर धारण करके अत्यन्त सुख से हवि ग्रहण की। २४३१ ब्रह्मा, रुद्र तथा समस्त देवताओं को देखकर सारे ऋषि आसन का त्याग कर उठ खड़े हुये। ३२ समस्त ऋषि वाक्य की प्रतीक्षा छोड़कर हाथ जोड़कर उनके समक्ष नाना प्रकार से स्तुति करने लगे। ३३ मेरे पिता धन्य है। मेरी तपस्या धन्य है जो मैं देवताओं का साकार रूप में प्रत्यक्ष दर्शन कर रहा हूँ। ३४ वहाँ पर जितने भी ऋषि मुनि तथा तपस्वी थे। सभी ने अपने नेत्रों से देवताओं का दर्शन किया। ३५ राजा के सहित सारी प्रजा ने शंकर जी तथा चन्द्रदेव का दर्शन किया। ३६ वहाँ पर रानियाँ, वेश्यायें, नर्तकियाँ जितनी भी थीं। वह सब अप्सराओं को देखकर खड़ी हो गईं। ३७ वहाँ पर वहुत से द्विज ब्राह्मण थे। उन्होंने शंकर तथा ब्रह्मा का दर्शन किया। ३८ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि समस्त देवतागण ! सुनिये। आप सब दशरथ को आशीर्वाद दीजिये। ३९ अयोध्या नरेश को आप सब देवता पुत्र लाभ का वरदान दीजिये। २४४० हमारा यश

पुत्र बर दिअ सकळ देबे पुणि । कथा रहिथाउ एबे जावत मेदिनी ४२
तुम्भे देवताए सन्तोष होइ सबैं । कर तुम्भे अनुग्रह सूर्य्य बंशकु एबे ४३
एते बोलि मुनि जे प्रळम्ब करि शोइ । ए समये बासुदेव मिळिलेक जाइ ४४
देखिण देवताए बिष्णुँकु स्तुति कले । जय जय परमेश्वर बोलिण बोइले ४५
जय जय नारायण मधु कैटभ हारी ।जगत जन निस्तारण परम ब्रह्मचारी ४६
तुम्भे देव परंब्रह्म स्वयं अन्तर्ज्यामी । नमो श्री पुरुषोत्तम सकळ गुणे दानी ४७
संसार तारण सुर गणंकर नाथ ।आपणार महिमा तुमर शंख चक्र हस्त ४८
श्रीवत्स लक्षण जे श्री बत्सर चिन्ह । कण्ठरे कौस्तुभ आदित्य निन्दे पुण ४९
हृदरे पीतबस्त्र अंगुष्ठि शोहे मुदि । हृदरे बनमाळा बिजुळि प्रसिद्धि२४५०
आरत भञ्जन हे जगत जन मूळ । शरण रक्षण प्रभु असुर क्षय कर२४५१
श्री पुरुषोत्तम सकळ लोकमन्त्र । मुकुन्द नारायण माधव उचित ५२
कर देब अनुग्रह अपार महिमा । एसनेक बोलिण स्तुति कले ब्रह्मा ५३
श्रीहरि बोइले जे तुम्भर किस कार्ज्य । किम्पाइँ स्तुति तुम्भे कर हे देवराज ५४

सूर्य मण्डल के नीचे विख्यात् हो। राजा को पुत्र प्राप्त हो क्योंकि उन्होंने धर्म का आश्रय लिया है। २४४१ समस्त देवता उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दें जिससे सम्पूर्ण भूमण्डल पर यह बात इतिहास बनकर रह जाए। ४२ आप समस्त देवगण सन्तुष्ट होकर अब सूर्यकुल पर अनुग्रह करें। ४३ इतना कहकर मुनि ने दण्डवत प्रणाम किया। इसी समय भगवान नारायण वहाँ आ गए। ४४ यह देखकर देवताओं ने विष्णु की स्तुति की। उन्होंने कहा हे परमेश्वर ! आपकी जय हो। जय हो। ४५ मधुकैटभ का विनाश करनेवाले नारायण ! आपकी जय हो-जय हो। हे परम ब्रह्म का अचरण करनेवाले ! आप समस्त लोकों के उद्धार के कारण हैं। ४६ हे देव ! आप स्वयं परब्रह्म तथा अन्तर्यामी हैं। हे पुरुषोत्तम ! आप समस्त गुणों का दान करनेवाले हैं। आपको नमस्कार है। ४७ आप संसार का उद्धार करनेवाले तथा देवताओं के स्वामी है। आपकी महिमा के रूप में आपके हाथों में शंख और चक्र विराजमान् है। ४८ श्री वत्स लक्षण वाला श्री वत्स का चिन्ह है। कण्ठ में पड़ी हुयी कौस्तुभ मणि सूर्य की निन्दा करती है। हृदय में पीताम्बर तथा ऊँगलियों में मुद्रिकाएँ शोभित हैं। वक्षस्थल पर बिजली के समान चमकने वाली वनमाला है। ४९-२४५० आप दुखों का विनाश करनेवाले संसार के आदि कारण है। शरणागत की रक्षा करनेवाले हे प्रभु ! असुरों का विनाश कीजिये। २४५१ हे पुरुषोत्तम ! आप समस्त लोगों के लिये उचित मंत्रणा देनेवाले मुकुन्द नारायण तथा माधव हैं। ५२ हे देव ! आपकी अपार महिमा है। आप कृपा कीजिये। ब्रह्मा ने इस प्रकार से स्तुति की। भगवान नारायण ने कहा कि आपका क्या कार्य है।

बिधाता बोइले तुम्भे शुण देवस्वामी ।सर्व देब निस्तारण कर हे अन्तर्यामी ५५
उत्पत्ति स्थिति प्रळय़ हुअन्ता बिहन्ता । तुम्भर बिनु आन के सृष्टि उद्धरन्ता ५६
तुम्भर प्रसादे आम्भे स्वर्ग सुस्थे रहु । तुम्भर अवज्ञारे सृष्ट रहिब काहुँ ५७
तुम्भे परा ठाकुर आम्भे तुम्भ भृत्य । भृत्य जनंकु कारण कर जगन्नाथ ५८
शुणि देव नाराय़ण ब्रह्माण्ड मुरारि । हेति प्रहेति दुइ गर्भरू अवतरि ५९
केशा नामरे ताहांकर पुत्र । वड़ाइ धार्मिक से अटे पुरुषार्थ२४६०
से महातमा जे पाप पुण्य ज्ञानी । न्याय़बन्त पुरुष सामान्य महामुनि२४६१
ताहार तनय़ जे बिद्युजिह्बा होइ । प्रतापी पणरे जे समान नोहे केहि ६२
एहि काळे तिनि पुत्र होइलेक जात । माळि सुमाळि जे अटन्ति माल्य बन्त ६३
दुष्टपण करिण जे धर्म नाश कले । तपी जपी गोरु ब्राह्मण हत्या कले ६४
तेणुकरि बध ताकु कल नाराय़ण । परनारी हरिले, हरिले परधन ६५
माळि सुमाळि माल्य़बन्त मले तुम्भ हस्ते। डरे पळाइले सुमाळि नामे दैत्ये ६६
असुर बळ घेनिण पाताळरे लुचि । नौकेशा नामरे ताहार दोहेती ६७
काळेण बिभा ताहांकु होइले बिश्रबा । मुनिकर बीर्य़रे तिनि पुत्र उभा ६८

हे देवराज ! आप किसलिये स्तुति कर रहे है। ५३-५४ ब्रह्मा जी ने कहा हे देवताओं के स्वामी ! आप सुनिये। हे अन्तर्यामी ! आप समस्त देवताओं का उद्धार कीजिये। आप उत्पत्ति स्थिति तथा प्रलय करनेवाले है। आपके अतिरिक्त संसार का उद्धार करनेवाला और कौन है। ५५-५६ आपकी कृपा से हम लोग स्वर्ग में सकुशल रहते हैं। आपकी अवज्ञा करके हम लोग सुखी कैसे रह सकते हैं। ५७ आप हमारे स्वामी और हम आपके दास हैं। हे जगत् के नाथ ! दासों का उद्धार कीजिये। हे ब्रह्माण्डनायक मुरदैत्य के शत्रु नारायण ! हेति तथा प्रहेति दोनों के गर्भ से उन्होंने जन्म धारण किया। ५८-५९ उनके पुत्र का नाम केशा हुआ जो पुरुपार्थी तथा धर्म की अभिवृद्धि करनेवाला था। २४६० वह महात्मा न्यायशील सामान्य पुरुप के समान महामुनि पाप और पुण्य के ज्ञाता थे। २४६१ उनका पुत्र विद्युज्जिह्वा हुआ। वैसा प्रतापी अन्य कोई नहीं था। ६२ इसी समय उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुये जो माली, सुमाली तथा माल्यवंत के नाम से विख्यात् थे। ६३ उन्होंने दुष्टता करके धर्म को नष्ट कर दिया। उन्होंने तपस्वियों, जपकर्ताओ, गायों तथा ब्राह्मणों की हत्या की। ६४ हे नारायण ! इसीलिये आपने उनका विनाश किया क्योंकि वह दूसरे की स्त्रियों तथा धन का अपहरण करते थे। ६५ माली, सुमाली तथा माल्यवंत आपके हाथों से मारे गये। सुमाली नामक दैत्य भयभीत होकर भाग गया। ६६ वह राक्षसों की वाहिनी लेकर पाताल में छिप गये। उनकी पुत्री नवकेशी नाम की थी। ६७ समय व्यतीत होने पर उससे विश्रवा का विवाह हुआ। मुनि के वीर्य से तीन पुत्र हुये। ६८ रावण तथा कुम्भकर्ण अत्यन्त

रावण कुम्भकर्ण अति बळबन्त। देव असुर मानवे डरिले समस्त ६९
जाग जज्ञ भांगिले दुष्टरे बेनि भाइ। रावण तनय़ जे मेघनाद होइ२४७०
इन्द्रकु जिणि बारे नाम इन्द्रजित। आवर नरान्तक देवान्तक पुत्र२४७१
अतिकाय़ असमय़े सम ए त्रिशिरा। अशोक बिशोक जे अक्षय़ महाबीरा ७२
जम्बुमाळि सक्राजित नाद जे प्रहेति। एहांकर चालन्ते कम्पइ बसुमती ७३
अक्षय़ महाकाय़े पृथ्वी देबीकि भारा।कुम्भेक मकराक्षस बिरुपाक्ष महोदरा ७४
अशोक बिशोक जे बिराट प्रशस्त।महा पुरुष निकटकु शुक सारण बळबन्त ७५
एमानंक घेनि रावणेश्वर देव दळि। पृथ्वी राजामानंकु हेळेण निबारि ७६
कुबेरकु जिणि नेले पुष्पक बिमान। सुरगणंकु पादे खटाए दशानन ७७
दश गोटि मुण्ड तार कोड़िए नेत्र जाण। कोड़िए भुज तार अटइ प्रमाण ७८
भाइ कुम्भकर्णर अकळित बळ हुए। मेघे शिर लागे जेते बेळे उभा हुए ७९
अळका गढ़ नामरे एकइ गढ़ पुण। सेहि गढ़ भितरे अटइ देव जाण२४८०
नउकाळ दैत्य जे सेथिरे राजा होइ। काळेण दुष्ट पण कला सेथि रहि२४८१
काळे ताहांकु पुण इन्द्र नाश कला। तेणु से पुर गोटि पेछापुर हेला ८२
तारार दुहिता नाम सुलभ शुभ्र केशी।
जय़न्त बोलि ॠषिकि बिभा हेला आसि ८३

बलवान हैं। उनसे देवता असुर तथा मानव सभी डरने लगे। ६९ वह दोनों भाई दुष्टता से जोग तथा यज्ञ नष्ट करने लगे। रावण का पुत्र मेघनाद हुआ। २४७० इन्द्र को जीतने के कारण उसका नाम इन्द्रजीत पड़ा। उनके अन्य पुत्र नारान्तक तथा देवान्तक हैं। २४७१ बुरे समय में अतिकाय तथा त्रिसरा एक समान हैं। महान पराक्रमी अशोक, विशोक तथा अक्षय हैं। ७२ जम्बू मालो शक्राजित तथा नाद ये प्रहेति के पुत्र हैं। इनके चलने से पृथ्वी डगमगाने लगती है। ७३ अक्षय तथा महाकाय भूदेवी के लिये भार स्वरूप हैं तथा अन्य कुम्भेक मकराक्षस विरूपाक्ष और महोदर हैं। ७४ महापुरुष के सहित अशोक, विशोक, विराट प्रहस्त तथा शुकसारण वलवान् हैं। ७५ उन्हें लेकर रावणेश्वर ने देवताओं का दलन किया और भूमण्डल के राजाओं का खेल-खेल में विनाश कर दिया। उसने कुबेर को जीतकर पुष्पक विमान छीन लिया और दशानन ने देवताओं को अपनी चरण-सेवा में लगा लिया। ७६-७७ उसके दस सिर बीस नेत्र तथा बीस भुजायें हैं। ७८ उसका भाई कुम्भकर्ण अपरिमित शक्तिशाली है। जब वह खड़ा होता है तो उसका शिर बादलों से छूता है। ७९ अल्कागढ़ नाम वाली एक ही गढ़ी है जिसमें वह रहा करता है। २४८० नवकाल के समान दैत्य वहीं रहता है और वहीं से दुष्टता किया करता है। २४८१ समय होने पर इन्द्र ने उसे नष्ट कर डाला। तब वह नगर वेश्यालय बन गया। ८२ उसकी पुत्री का नाम शुभ्र-केशी सुलभ

ताहार कोळे जात शतमुखा जे रावण । पवनकु वळिण्ठ सेहु हेला पुण ८४
तिनिपुर साधिण देवंकु नेला धरि ।सप्त जुग पर्ज्यन्ते रखिला वन्दि करि ८५
मरुत कहि वारु देवंकु छाड़ि देला । अतुट शरीर गोटि अटे तार परा ८६
लक्षेक कुमर जे नवलक्ष नाति । वार जुण गढ़ तार अकळित निति ८७
अलंका वोलिण देव साहररे घर । मेघासुर कुमर सहस्र मुख वीर ८८
ईश्वरंक वररे से अटइ वळमान । तिनिपुर साधिण कलाक रण भण ८९
देवंकु धरि नेइ चउद जुग जाए । वन्दि करि रखिला शुण देवराये२४९०
ईश्वर कहि वारु देवंकु छाड़ि देला । देवंकु जिणि असुर वळमान हेला२४९१
सहस्रे मुख हेवारु मध्यरे वर तार । चारि पाखरे पेट मुख अटे तार ९२
वेनि लक्ष कुमर जे वार लक्ष नाति । अठर लक्ष जुआइँ अटन्ति महारथी ९३
ताहांक भारे धरणी प्रति दिन कान्दि ।
वासुकी शिर टेकि नपारे निऊन होइ बन्दी ९४
ताहार कुमर जे गुमानी सुर पुण । गुमानीसुर जिणिला तिनिपुर जाण ९५
महीरावण नामे नाति दशमुखा रावणर । इन्द्रजित कुमर अटइ महाबीर ९६
काळे से तपकरि दुर्गांकु मनाइला । तेणु अमरवर जोग मागि देला ९७

था जिसने आकर जयंत ऋषि से विवाह किया । ८३ उसके गर्भ से सतकण्ठ रावण उत्पन्न हुआ । वह पवन से भी अधिक वलशाली हुआ । ८४ उसने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करके देवताओं को पकड़ लिया था और उन्हें सातयुग पर्यन्त वन्दी वना कर रखा । ८५ मरुत देव के कहने से उसने देवताओं को छोड़ दिया । उसका शरीर कठोर तथा अक्षय था । ८६ उसके एक लाख पुत्र और नौ लाख नाती थे । वारह योजन के विस्तार में वने हुये अगणित वीर-वाहिनी थी । ८७ हे देव ! उसके सहचरों का घर भी अलंका में है। मेघासुर का पुत्र पराक्रमी सहस्र मुख वाला है। ८८ वह शंकर के वर से वलवान है। वह तीनों लोकों को परास्त करके नष्टभ्रष्ट कर रहा है। ८९ चौदह युग हुये। उसने देवताओं को वन्दी वनाकर रखा था। हे देवराज ! आप इसे सुनिये । २४९० शंकर के कहने से उसने देवताओं को छोड़ दिया और इस प्रकार वह देवताओं को जीतकर शक्तिशाली वन गया । २४९१ सहस्रमुख होने के कारण उसके मध्य की श्रेष्ठता है। उसके चारों ओर पेट और मुख है। ९२ उसके दो लाख पुत्र और वारह लाख नाती हैं। उसके अठारह लाख दामाद महारथी हैं। ९३ उनके भार से पृथ्वी प्रतिदिन रुदन करती है। शेषनाग उसे शिर पर धारण नहीं कर पाते और अपने को न्यून होकर वन्दी समझते हैं। ९४ उसके पुत्र गर्वीले तथा प्रतापी हैं। जिन्होंने तीनों लोकों को जीत लिया है। ९५ दसमुख रावण का नाती महिरावण नाम वाला है। वह महान पराक्रमी इन्द्रजीत का पुत्र है। ९६ किसी समय उसने तपस्या करके दुर्गा को प्रसन्न किया

तेणु करि तिनिपुर साधिला दइत। देवंकु धरि नेइ रखिला बन्दि रेत ६८
अशीए नन्दन तार एगार सत्र नाति। शत सहस्र जुआइँ अटन्ति तार रथि ६६
जोगमाया कहिबारु देवंकु छाड़ि देला। बर देबा प्रभुंकर बोल मानिपरा२५००
सुलंका ज्योति लंका बेनि गडरे राज।तेणु महीरावणकु प्रतापीश्वर राजा२५०१
दशमुखा रावणकु मुहिँ बर देलि।बिश्रवा नन्दन मोते न माने तुच्छ करि २
देवंकु छाड़ बोलि मुहिँ कहिबारु पुण। मोते बन्दी कला जे देवंक संगेण ३
भो देव नारायण दइत बेगे मार। तुम्भर सेवक आम्भे आम्भंकु रक्षा कर ४
चारि रावण माइले पृथ्वी हेब स्थिर। जेउँ रूपे असुरंकु मारिबे बिचार ५
बळिकि चापिल जे बामन रूप धरि। काश्यप कुळे जात होइल बिचारि ६
बेद चोरी कला जे शंखा नामे दैत्य। सुमरिला मात्रकरे तुम्भे कल हत ७
बेद मन्त्र देइ मोते निश्चिन्त कराइल। जय जय नारायण जय आदिमूळ ८
पृथ्वी देवीर पुण भारा न सहिला। बासुकी देवता जे मस्तक नूआँइला ९
हिरण्यकश्यप जे बोलि बेनि दैत्य। जात होइण कले बहुत अनर्थ२५१०
काश्यपर पाद घाते पृथ्वी तलतल। मेरु जणाइला जाइँ तुम्भर आगर२५११

था। योगमाया ने उसे अभय वर प्रदान किया। ९७ इसलिये उस दैत्य ने तीनों लोकों को परास्त करके देवताओं को बन्दी बनाकर रख लिया। ९८ उसके अस्सी पुत्र और ग्यारह हजार नाती हैं। उसके एक लाख रथी जामाता हैं। ९९ योगमाया के कहने से उसने देवताओं को छोड़ दिया। उसने वरदाती का कहना मान लिया। २५०० सुलंका तथा ज्योति लंका दोनों गढ़ों पर उसका राज्य था। इसलिये महिरावण बड़ा प्रतापी राजा हुआ है। २५०१ दसकण्ठ रावण को मैंने वर दिया है। विश्रवानन्दन तुच्छ समझकर मुझे नहीं मानता। २ जब मैंने देवताओं को छोड़ने की बात कही तो उसने देवताओं के साथ मुझे भी बन्दी बना लिया। ३ हे देवनारायण! दैत्य का शीघ्र ही विनाश कीजिये। हम आपके सेवक हैं। हमारी रक्षा कीजिये। ४ चारों रावण को मारने से पृथ्वी स्थिर हो जायेगी। उन असुरों को किस रूप से मारना है। आप विचार करिये। ५ आपने बामन रूप धारण करके काश्यप कुल में विचारपूर्वक जन्म लेकर बलि को दाब दिया था। अर्थात् उसके शरीर को माप कर उसे पाताल-लोक भेज दिया था। ६ शंखासुर ने वेदों को चुरा लिया था। स्मरण-मात्र से ही आपने उसका विनाश कर दिया था। ७ आपने मुझे वेदमंत्र प्रदान करके निश्चिन्त कर दिया था। हे नारायण! हे आदिमूल! आपकी जय हो! जय हो!। ८ पृथ्वी देवी फिर भार नहीं सहन कर पायी और शेषनाग ने अपना मस्तक झुका लिया। ९ क्योंकि हिरण्यकश्यप नाम के दोनों दैत्यों ने उत्पन्न होकर बड़ा अनर्थ किया। २५१० कश्यप के पदाघात् से पृथ्वी तिलमिला गई और मेरु ने जाकर आपके समक्ष निवेदन किया। २५११ कृपा करके मेरु

दयाकरि मेरुरे तुम्भे जात हेल। वराह रूप धरि काश्यपु संहारिल १२
काश्यपु मरिबारु हिरण्य पळाइला। पाताळ पुरे जाइ लुचिण रहिला १३
तुम्भे अन्तर्भुत हेबारु नरहरि।हिरण्य पाताळरू अइला जाणि करि १४
मध्यपुरे प्रवेश हेला दैत्य आसि।देव, ब्राह्मण, ऋषि बिना दोषे नाशि १५
पुत्रेक स्थित हेला ताहार कोळेण। पुत्र नाम प्रह्लाद देला पुण जाण १६
काळे से पुत्र हेला तुम्भरे भकति।
तेणु से दैत्य ताकु पाञ्चिला बिघ्न निति १७
उत्पात देखि सुमरे तुम्भर सेहि पुत्र। स्तम्भरु जात होइ माइल दइत १८
सेठारु सतर जुग वहि गला। असुर प्रवळ हेले सम्भाळि नोहिला १९
जमदग्नी कुळरे तुम्भर अंश जात। पर्शुराम नाम जे जगते बिख्यात२५२०
शते वार सप्तपुर दुष्टंकु जे मारि। सहस्राज्जुन संगरे अनेक संहारि२५२१
ए चारि रावण तांक हस्तरे नहेबे मृत्यु।छपन गण्डा जुगकु पाइले आग्रुष ततु २२
अजोध्या दशरथ घरे तुम्भे जात हेले।चारि रावण मरिबे दशमुखार दोषरे २३
चोरी करि सीता नेब बिश्रवार सुत। तेणु से चारि रावण मरिबे नियत २४
जेहु काश्यप ऋषि सेहिटि दशरथ। अदिति कौशल्या तार गर्भे हेब जात २५

पर आपने जन्म लिया और वाराह रूप धारण करके कश्यप का विनाश किया। १२ कश्यप के मरने पर हिरण्य भागकर पाताल लोक में जाकर छिपकर रहने लगा। १३ हे नरहरि ! आपके अन्तर्भूत होने पर हिरण्य सोच समझकर पाताल से आ गया। १४ दैत्य आकर नगर के मध्य में प्रविष्ट हुआ। वह विना दोष के देवताओं, ब्राह्मणों तथा ऋषियों का विनाश करने लगा। १५ उसके कुल में एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम उसने प्रह्लाद रक्खा। १६ समय के साथ वह वालक आपका भक्त हो गया। इसलिये वह दैत्य उसे दुःख नित्य देने लगा। १७ वह वालक उत्पात देखने पर आपका नाम स्मरण करता था। तव आपने स्तम्भ से प्रकट होकर दैत्य का संहार किया। १८ फिर सत्रह युग व्यतीत हो गए। असुर पुनः प्रवल हो गए। उनसे बचाव नहीं हो पा रहा था। १९ तव आपका अंशावतार यमदग्नि के कुल में हुआ जो संसार में परशुराम के नाम से विख्यात हुआ। २५२० उन्होंने सौ वार सातों लोकों के दुष्टों का दमन किया तथा सहस्रार्जुन के साथ अनेकों का संहार किया। २५२१ उनके हाथों से इन चार रावणों की मृत्यु नहीं है। उन्हें छप्पन चतुर्युगी की आयु प्राप्त हुई है। २२ अयोध्या के दशरथ के भवन में आपके उत्पन्न होने से दशकण्ठ के अपराध के कारण चारों रावण का संहार होगा। २३ विश्रवानन्दन चोरी करके सीता को ले जाएगा। तव चार रावणों की स्वाभाविक रूप से मृत्यु होगी। २४ वह कश्यप ऋषि ही दशरथ हैं। अदिति ही कौशल्या है

सुदर्शन चक्र जे कैकेया गर्भे जात। काश्यपंकर नारी अटइ हे तात २६
प्रहेती अंशरे जे जात सुमित्रा। ताहार गर्भरे अनन्त जात हेबे निष्ठा २७
डाहाणावर्त्तक संखे अनन्त संगे जात। शतेमुखा रावणकु मारिबे पुण सेत २८
अनन्त मारिबे इन्द्रजित, महीरावण। दशमुखा, कुम्भकर्ण तुम्भ हस्तेलीन २९
सहस्र मुखा रावणर षड़ पुत्र बड़। से मानंकु भरथ जे मारिबे निकर२५३०
सहस्रे मुखाकु घरणी तोर मारि। तेणु तार पिठि अदृश्ये उहाड़ि२५३१
पिठि पेट दृश्य जे हेले नमरे आन हस्ते। एमन्ते चारि रावण मरिबे सगोत्र ३२
बाळकाळे बिश्वामित्र रखिब तुम्भे हरि।शिव धनु भांगिण जानकी बिभा सारि ३३
जुबा काळे बने जिब सत्य रक्षा करि।भाइ भारिजा संगते जिबे जे तुम्भरि ३४
पञ्चबटी बनु सीतांकु रावण हरिनेब। चउद मास दुःखरे तुम्भे जे बञ्चिब ३५
देबंक निमन्ते सीता पाइब बहु कष्ट। जन्म नहेले असुरे नुहन्ति पुण नाश ३६
बानर भालु सैन्य घेनिण तुम्भे जिब। तेबे से चारि रावण दैत्यकु नाशिब ३७
मानव रूप धरि असुर मारिब। जुद्धरे असुर मारि जानकी आणिब ३८
शुणिण सन्तोष जे हेले देव हरि। होइबि जात मुं जे तुम्भ बोल करि ३९

जिसके गर्भ से आप उत्पन्न होंगे। २५ हे तात ! कैकेयी कश्यप की पत्नी है। सुदर्शन चक्र उसके गर्भ से उत्पन्न होगा। २६ सुमित्रा प्रहेती के अंश से उत्पन्न हुई है। उसके गर्भ से निष्ठावान अनन्तदेव उत्पन्न होंगे। २७ अनन्त के साथ दक्षिणवर्त्ती शंख उत्पन्न होगा जो शतकण्ठ रावण का हनन करेगा। २८ अनन्तदेव इन्द्रजीत को मारेंगे। महिरावण दशानन तथा कुम्भकर्ण आपके हाथों से मोक्ष प्राप्त करेंगे। २९ सहस्रकण्ठ रावण के छै प्रतापी पुत्र हैं। उनका संहार भरत करेंगे। २५३० सहस्रकण्ठ को आपकी पत्नी विनाश करेगी। वह छिपकर बिना देखे पीठ का लक्ष्य करेगी। २५३१ पीठ तथा पेट दिखने से वह किसी के हाथ से नहीं मरेगा। इस प्रकार चार रावण गोत्र के सहित विनष्ट होंगे। ३२ हे नारायण ! बाल्यकाल में विश्वामित्र आपको रक्खेंगे। शिव के धनुष का खण्डन करके जानकी का विवाह सम्पन्न करेंगे। ३३ आप सत्य को रक्षार्थ युवाकाल में वन गमन करेंगे। आपके भाई तथा भार्या भी आपके साथ जाएँगे। ३४ पंचवटी वन में रावण सीता का हरण कर लेगा। आप दुःखपूर्ण चौदह माह व्यतीत करेंगे। ३५ देवताओं के लिये सीता को प्रचुर कष्ट प्राप्त होंगे। आपके जन्म न लेने से असुर नष्ट नहीं होंगे। ३६ आप वानर-भालू की सेना को लेकर जायेंगे। तब उन चार रावण का विनाश होगा। ३७ आप मानव रूप धारण करके असुरों का संहार करेंगे और युद्ध में असुरों का विनाश करके सीता को ले आएँगे। ३८ यह सुनकर नारायण देव संतुष्ट हो गए तथा बोले कि आप लोगों के कहने से हम जन्म धारण करेंगे। ३९ तुम्हारे कष्ट

तुम्भर दुःखे मुँ जे असुर निवारिबि ।दैत्य बळ नाशिण जे उद्धार करिबि२५४०
श्रीहरि प्रसन्न हेबारु ब्रह्मा ताहा जाणि ।मुहिँ स्तुति कलि जे हेमवन्तर दुलणी२५४१
कहिलि नारायण आद्य जन्मर वाणी । अनन्त राज्यरे जे विजय चक्रपाणि ४२
पार्बती बोइले से हरि देव प्रिय । अवतार नोहिले हिँ असुर मारे केह ४३
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती । अवतार नोहिले जेहु असुर मारन्ति ४४
से कथा तुम्भ आगरे कहिबा एवे शुण । अनन्त शज्यारे जे शयन नारायण ४५
कर्णरु कानगुआ काढ़िले देव मळि । सेथिरु दुइ पुरुष जनम महाबळी ४६
मधु कैटभ नाम होइला तांकर ।आकाशरे जाइण लागिला तांक शिर ४७
समुद्र पाणि तांकु होइला आण्ठु आणि ।चाळि करि आसन्ते न हेले पुण पाणि ४८
महालक्ष्मींकि देखि से बोइले मुढ़मति । आम्भर घरणी हेबु तुहि रे जुबती ४९
एहि ठारे तुम्भे गो किस पाअ सुख । आम्भर बोले तुम्भे ताहाकु उपेक्ष२५५०
आम्भे एहि सृष्टिरे अटु अधिपति । भोग करिबु ना अमर बारस्वती२५५१
आम्भे सिना स्थापिलु सकळ दिगपाळ ।आम्भरे होइला स्वर्ग मञ्च जे पाताळ ५२
आस आस सुन्दरीरे न धर विमन । रख प्राण आम्भर सुरति देइ दान ५३
अधर चुम्बिबइँ अधर पान जाणि । उठ उठ सखीरे तुहि से पद्मिनी ५४

के लिये हम असुरों का संहार करेंगे और दैत्य समूह को नष्ट करके उद्धार करेंगे। २५४० श्रीहरि को प्रसन्न देखकर ब्रह्मा जी भी समझ गए और हे हिमांचल नन्दिनी ! फिर मैने भी उनकी स्तुति की। २५४१ मैंने भगवान के प्राचीन काल के वचनों के विषय में कहा ! तब चक्रपाणि नारायण ! अनन्त राज्य में प्रविष्ट हुए। ४२ पार्वती ने कहा कि भगवान के देवताओं के कल्याण के लिये जन्म न लेने पर असुरों का संहार कौन करता। ४३ शंकर जी बोले हे देवि भगवती ! तुम सुनो ! वह अवतार न लेकर भी असुरों का संहार करते हैं। ४४ मैं वह कथा तुमसे कहता हूँ, सुनो ! नारायण अनन्त शैय्या पर शयन कर रहे थे। ४५ उन्होंने कर्ण मर्दन करके कान का मैल निकाला उससे दो महाबली व्यक्ति उत्पन्न हुए। ४६ उनका नाम मधु कैटभ पड़ा। उनके सिर आकाश तक जा लगे। ४७ सागर का जल उनके घुटनों तक हुआ। चलकर आने पर पानी समाप्त हो जाता था। ४८ वह मूढ़ बुद्धि महालक्ष्मी को देखकर बोले ! हे युवती तुम हमारी पत्नी बनोगी। ४९ आपको यहाँ क्या सुख प्राप्त हो रहा है ? हमारे कहने से आप उसकी उपेक्षा कर दें। २५५० हम इस सृष्टि के अधिपति है। आप (हमारे यहाँ) स्वर्गीय सुखों का उपभोग करें। २५५१ हमने समस्त दिग्पालों को स्थापित किया है। स्वर्ग मृत्यु तथा पाताल हमारा है। ५२ हे सुन्दरी ! आवो-आवो। विषण्य मत हो। हमें रतिदान देकर हमारे प्राणों की रक्षा करो। ५३ अधर पान समझ कर हम अधर चुम्बन करेंगे। हे सहचरी ! तुम पद्मिनी हो। उठो ! उठो ! ५४

हेबु तु पाटराणी बसिबु आम्भ कोळे। तोर रूप देखिण बुड़िलु काम जळे ५५
शुणि करि चञ्चळा बोइले जे हसि। ए मोहर नाथंकर अटइ जे दासी ५६
एहांकु तुम्भे जेबे पारिब निश्चे जिणि। तेबे जाइ तुम्भर जे होइबि घरणी ५७
शुणि करि दइत जे बोइले बेग चळ। निश्चय एहार आम्भे पूराइबु काळ ५८
कमळा बोइले केमन्ते भांगिबा तांक निद। एबे तुम्भे तोळिण कर पुण द्वन्द ५९
कमळाङ्क संगे कथा हुअन्ते दइत। चक्षुमळि निद्रारु उठिले जगन्नाथ२५६०
कमळांकु चाहिँण बोइले चक्रधर। ए दुइ पुरुष काहुँ हेले अवतार२५६१
महालक्ष्मी बोइले देव न जाणइँ मुहिँ। तुम्भे तांकु पचार बोइले देबी तहिँ ६२
श्रीहरि पचारिले किस किस बोल।असुरे बोइले आम्भे जिणिबु तुम्भ तुल्य ६३
तोते जिणि तोर नेबु जे घरणी। तोह घरणी सत्य करिअछि पुणि ६४
शुणिण बोइले तांकु देव बनमाळी।आम्भे आग तुम्भ संगे नकलुटि कळि ६५
तुम्भर बळ थिले समर बेगे कर। भुजकु बढ़ाइ देलेक दामोदर ६६
दइत बोइले बेगे उठिण उभा हुअ। स्वामी बोइले हे पारिले धरि निअ ६७
शुणि करि धरिले कोपरे भाइ बेनि। दुइ भुजे दुहँ बिन्धाण रति पुणि ६८
अनेक समर जे कले बेनि बीर। श्रम उपुजिला बड़ दइत शरीर ६९

तुम पटरानी बन कर हमारी गोद में बैठोगी। तुम्हारा रूप देखकर हम काम जल में निमग्न हो गए हैं। ५५ यह सुनकर चंचला लक्ष्मी ने हँसते हुए कहा, यह अपने स्वामी की दासी है। ५६ यदि तुम इन्हें निश्चित ही जीत सको तब जाकर मैं तुम्हारी पत्नी बन सकती हूँ। ५७ यह सुनकर दैत्य ने कहा कि तुम शीघ्र ही चलो। मैं निश्चय ही इसका समय पूरा कर दूँगा। ५८ लक्ष्मी ने कहा कि उनकी निद्रा कैसे भंग करें। अब तुम्हीं इन्हें उठाकर इनसे द्वन्द्व करो। ५९ लक्ष्मी के साथ दैत्य बातें कर ही रहा था तभी जगत के स्वामी विष्णु आँख मलते हुए निद्रा से उठ गए। २५६० चक्रधारी कमला की ओर देखते हुए बोले कि यह दो व्यक्ति कहाँ से प्रकट हो गए। २५६१ महालक्ष्मी ने कहा हे देव ! मैं नहीं जानती। देवी ने कहा, आप ही इनसे पूँछ लीजिये। ६२ नारायण ने पूँछा कि आप लोग कौन हैं ? असुरों ने कहा कि हम तुम्हें जीतेंगे। और जीतकर तुम्हारी स्त्री को ले जाएँगे क्योंकि तुम्हारी पत्नी ने हमें बचन दिया है। ६३-६४ यह सुनकर परमात्म देव बनमालाधारी नारायण ने उनसे कहा कि हम पहले तुम्हारे साथ युद्ध नहीं करेंगे। ६५ यदि तुममें शक्ति हो तो शीघ्र ही युद्ध करो। इतना कहकर दामोदर ने हाथ बढ़ाया। ६६ दैत्यों ने कहा कि तुम शीघ्र उठकर खड़े हो। तब विश्वनियन्ता बोले यदि तुम हमें उठा सको तो उठाओ। ६७ यह सुनकर दोनों भाइयों ने कुपित होकर दोनों भुजाओं को फँसाकर उन्हें पकड़ लिया। ६८ दोनों वीरों ने नाना प्रकार से युद्ध किया। दोनों दैत्यों के शरीर से बड़ा पसीना निकल आया। ६९ कमल-

दुहिँकि आकर्षिण आणिले पद्म नेत्र । दृढ़ करि चापन्ते लुचिला कर पत्र२५७०
असुरंकु मृत्यु देले देव जहुँ पुणि । आकुळे रोदन जे दइते कले पुणि२५७१
भो देव नाराग्नण एकइ वर देवा ।जळ नथिबा ठावरे आम्भंकु मारिबा ७२
शुणिण श्रीहरि तांकु पद्मासन देले । दुइ दइतकु माइले देव भले ७३
पिण्डकु धरिण वेनि करे मर्दिदेले । कञ्चा माटिकु जेसने पिटइ कुराळे ७४
सेहि प्रकारे पुण मद्‌र्दले आदिमूळ । दळिण सन्तोष जे होइले दामोदर ७५
नख मुख हानि मांस रक्त जाण । जन्त्रीण बेनिगोटि कले देव पुण ७६
तांकर मेदमांसरे मेदिनी स्थापिले ।संसार करिवाकु जे ब्रह्मण्ड रचिले ७७
तेणु करि सृष्टि जे रचिले चक्रधर । अनन्त कोटि ब्रह्माण्डर ठाकुर पिताम्बर ७८
एबे से असुरे हेले मग्ने मता । देव ऋषि नरे पाइले बड़ चिन्ता ७९
दशग्रीवर घाते न सहे देवी पृथ्वी ।लज्जयारे विकळ जे भाळन्ति सुरपति२५८०
असुरे दर्पिष्ठ पुणि ऋषिकु नमानन्ति । पारिले रक्षा देव करहे एघान्ति२५८१
अनेक दुःख देबे दैत्य तुम्भे लीळा कले । ब्रह्मा करजोड़ि जे बहुत स्तुति कले ८२
शुणि करि सन्तोष हेले मधुहारी । बोइले देवगणे शुण स्थिर करि ८३

नयन विष्णु दोनों को खींच लाये और दृढ़ता से दबाने पर दोनों के हाथ दब गए। २५७० जब विष्णुदेव ने असुरों को मृत्युदण्ड दिया तब दैत्य व्याकुल होकर रुदन करने लगे। २५७१ वह बोले हे देव नारायण! एक वर दे दीजिए। आप हमें वहीं मारें जहाँ पर जल न हो। ७२ यह सुनकर नारायण ने उन्हें पद्मासन प्रदान करते हुए दोनों दैत्यों को मार डाला। ७३ उनके शरीर को पकड़ कर उन्होंने दोनों हाथों से मसल दिया। जिस प्रकार कुम्भकार कच्ची मिट्टी को पीटता है। ७४ इस प्रकार से जगत् के आदि कारण प्रभु ने उनका मर्दन कर दिया तथा उनका संहार करके दामोदर नारायण सन्तुष्ट हो गये। ७५ देवाधिदेव विष्णु ने उन दोनों के मुख, नख, रक्त, माँस को नियंत्रित करके एक कर दिया। ७६ उनके मेद माँस से उन्होंने मेदिनी पृथ्वी की रचना की तथा सृष्टि के संचालन के लिये उन्होंने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया। ७७ चक्रधारी भगवान ने इस प्रकार से सृष्टि की रचना की। पीताम्वरधारी नारायण अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के नायक हैं। ७८ इस समय वह असुर लोग मदमत्त हो गए हैं। देवता मनुष्य तथा ऋषि अत्यन्त चिन्तित हो गये हैं। ७९ भू देवी दशकण्ठ के भार को नहीं सहन कर पा रही है। देवराज इन्द्र लज्जा से अभिभूत होकर विकल तथा सोचयुक्त हो गये हैं। २५८० दम्भी दैत्य ऋषियों की परवाह नहीं करते। हे प्रभु आप अपनी सामर्थ से उन्हें नष्ट करके हमारी रक्षा कीजिये। २५८१ आपके देवताओं पर उन दैत्यों ने नाना प्रकार की दुखद लीलायें की हैं। इस प्रकार ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर उनकी बहुत स्तुति की। ८२ यह सुनकर मधुसूदन प्रभु प्रसन्न हो गये। उन्होंने कहा हे देवगण! सावधान

तुम्भर छळे आम्भे नव ऋषि हेबु । असुरकु मारि आम्भे निसंशय्र करिबु ८४
होइला सन्तोष जे बेदबर शुण । एसनक आज्ञा देले देवंकु नारायण ८५
बिष्णुंकर आज्ञारे हरषमन होइ । देवताए स्वर्गपुर सभाकु चळि जाइ ८६
से काळर कथा कहिलि तोते पुण । जय़े बिजय़े द्वारी रावण कुम्भकर्ण ८७
होमर अग्नि मध्य़रे बिजय़े चक्रपाणि । ऋष्यश्रृंग देखिण नमिले पुण पुणि ८८
आनन्दरे मुनि जे आहुति समर्पिले । पूर्ण आहुति पुण माहेन्द्र बेळे देले ८९
दर्पणरे जेसने दिशइ निज काय़े । मुनिकि दिशिले प्रभु तेसन पराय़े२५९०
चन्द्र सूर्ज्य जेसनेक एक देह बहि । तेसन सञ्जात दिशे नारायण तहिं२५९१
ऋष्यश्रृंगकु प्रसन्न हेले पद्मनेत्र । कररे घेनि छन्ति मुनि सुबर्णर पात्र ९२
चरुदेवा निमन्ते मुनि अग्निरे पात्र देले । देखि करि नारायण परम तोष हेले ९३
चरु पात्रे पूराइ बोइले महाबाहु । घेन हे ऋष्यश्रृंग कार्ज्य सिद्ध हेउ ९४
दशरथ राजांकर महादेईमान । बाण्टि करि खाइले जे उपुजे नन्दन ९५
ऋषिकि समर्पि देइण देब गले । चरु पात्र घेनिण ऋष्यश्रृंग उभा हेले ९६
बाजइ बीर तूर शंख जे महुरी । हुळहुळि शबदरे मेदिनी उछुळि ९७
हरि बोल शबद करन्ति नग्रलोके । कुरुम उछुळे शबदर घाते ९८

होकर सुनो । ८३ आप लोगों के कारण हम युवा ऋषि बनेंगे तथा असुरों का संहार करके आपको निश्चिन्त कर देंगे । ८४ तब वेदवर ब्रह्मा जी सन्तुष्ट हो गये जब भगवान ने देवताओं को इस प्रकार का बचन दिया । ८५ विष्णु का आदेश पाकर देवता लोग प्रसन्न होकर स्वर्ग की सभा को चले गये । ८६ मैंने उस समय की कथा तुम्हें सुना दी । जय और विजय द्वारपाल रावण और कुम्भकर्ण हुये । ८७ हवन की अग्नि के मध्य में चक्रधारी भगवान उपस्थित हुये और श्रृंगी ऋषि ने उनको देखकर प्रणाम किया । ८८ मुनि ने प्रसन्न होकर माहेन्द्र बेला में पूर्णाहुति समर्पित की । ८९ जिस प्रकार दर्पण में अपनी काया दिखाई देती है । उसी प्रकार मुनि को भगवान दिखाई पड़े । २५९० मानो चन्द्रमा और सूर्य एक साथ में एक ही शरीर धारण करके अवतरित हो गये हों ठीक उसी प्रकार भगवान वहाँ दिखाई दिये । २५९१ कमलनयन भगवान मुनि पर प्रसन्न हो गये । मुनि हाथ में स्वर्ण पात्र लिये थे । ९२ चरु प्रदान करने के लिये मुनि ने अग्नि में पात्र डाला । यह देखकर भगवान बहुत प्रसन्न हुये । ९३ महाबाहु नारायण ने चरु पात्र पूरित करके कहा हे श्रृंगी ऋषि ! इसे ग्रहण करो जिससे कार्य सिद्ध हो । ९४ महाराज दशरथ की पटरानियों के द्वारा बाँट कर खाने पर पुत्र उत्पन्न होंगे । ९५ भगवान ऋषि को चरु पात्र देकर चले गये और श्रृंगी ऋषि उसे लेकर खड़े हो गये । ९६ वीर-तूर्य महुरी तथा शंख बज रहे थे । मांगलिक शब्दों से पृथ्वी भर रही थी । ९७ नगरवासी हरि बोल शब्द उच्चारित कर रहे थे । शब्द के आघात से कूर्म उद्वेलित हो उठा । अयोध्या के नर-नारी प्रसन्न थे । ऋषि-मुनि तथा

आनन्द नर नारी अजोध्या नग्रपुरे । ऋषि मुनि तपी जे सुकल्याण करे ९९
राजा बन्धुजन जे सकळ सेथि पूरि । समस्तंकर आनन्द चरु देखि करि२६००
देबे जय़ जय़ कले स्वर्गे थाइ । चरु देइण मुनि दशरथंकु कहि २६०१
बोइले नृपति तुम्भर वाञ्छासिद्ध हेउ ।
आम्भर वचन गोटि अन्यथा केबे नोहु २
तुम्भर कोळरे बासुदेव हेबे जात । संसार भाराभर करिबे उश्वासत ३
शुणिण आनन्द मन दशरथ राय़े । चरु अन्न घरिण अन्तःपुरकु जाए ४
राणीमानंकु राइण पुच्छि दशरथ । तिनि पाटराणी जे आचरि छन्ति व्रत ५
अन्य राणीमाने व्रत न पारिले करि । देवकूट माय़ारे जे समस्ते विह्वळि ६
दइब दुर्ज्योगुँ राणीमाने व्रत तेजि । स्वामी आज्ञारे ब्रतरे नोहिलु संजोगी ७
राजन बोइले जे राणीकं मुख चाहिँ । व्रत किम्पा तेजिल अज्ञान मूर्ख होइ ८
कर्मरे अछइ जे तुम्भर पूर्व दोष । से फळ भुज्जिब जे सकळ राणीहंस ९
लोमपाद राजा जे अटन्ति मित्र मोर । शते राणी व्रतकु आचरिले तार२६१०
शते पुत्र हेव तांक ऋषि आज्ञा देले । शते राणी चरुकु वाण्टिण खाइले२६११
शुणि करि राणी हंस बोइले वचन । एवे जेउँ पुत्र हेव करिव कारण १२
शुणिण राजन जे उदबेग चित्त । दुइ भाग करि चरु वाण्टिले दशरथ १३

तपस्वियों ने आशीर्वाद प्रदान किया। ९८-९९ राजा के बन्धु-बान्धव आदि सभी लोग वहाँ भरे पड़े थे। चरु को देखकर सभी लोग प्रसन्न थे। २६०० स्वर्ग से देवता जय-जयकार कर रहे थे। चरु को देकर मुनि ने दशरथ से कहा। २६०१ हे राजन ! आपका मनोरथ सिद्ध हो। मेरा वाक्य कभी असत्य न हो। २ आपकी गोद से वासुदेव उत्पन्न होंगे। वह संसार का भार उतारेंगे। ३ यह सुनकर महाराज दशरथ का मन आनन्द से भर गया। वह चरु—अन्न लेकर अन्तःपुर को चले गये। ४ रानियों को बुलाकर दशरथ ने उनसे पूँछा कि तीन पटरानियाँ व्रत का आचरण कर रहीं थीं। ५ अन्य रानियाँ व्रत नहीं क पायी। वह सब देवताओं की माया से विह्वल हो गयी थीं। ६ दैव के विपरीत होने से वह रानियाँ व्रत को छोड़कर स्वामी की आज्ञा से भी व्रत का पालन न कर पायी। ७ राजा ने रानियों के मुख की ओर देखते हुये कहा कि अज्ञानता एवं मूर्खता के वशीभूत होकर तुम लोगों ने व्रत क्यों छोड़ दिया। ८ यह तुम्हारे पूर्व कर्मो का दोष है। अतएव रनिवास की सभी रानियाँ उसका फल भोगे। ९ राजा लोमपाद जो हमारे मित्र हैं। उनकी सौ रानियों ने व्रत का आचरण किया था। २६१० ऋषि ने उन्हें सौ पुत्र होने का आशीर्वाद दिया। उन सौ रानियों ने चरु बाँटकर खा लिया। २६११ यह सुनकर रानियों ने कहा कि अब जो पुत्र होगा वह ही उद्धार करेगा। १२ यह सुनकर राजा ने खिन्न मन से चरु को दो भागों में विभाजित कर दिया। १३ उन्होंने

कौशल्या कैकेयाकु समर्पिले नेइ। घेनिण दुइराणी हरष मन होइ १४
सुमित्रांकु चाहिँण कहिले कउशल्या।भो स्वामी एहांकु किम्पा सुदया नोहिला १५
आम्भ संगे ब्रत पाळिअछि शशिमुखी।तुम्भ हस्त धरिण होइला निरि माखि १६
कर अनुग्रह ताकु सुदया जे हेउ। आम्भ दुइ भागरु बाण्टिण चरु पाउ १७
नृपति बोइले मुँ जे जाणि न पारिलि। समस्तंक संगरे मुँ ताहाकु गणिलि १८
जेबे सेहु ब्रत गोटि पाळि छन्ति पुणि। चरु तांकु देबार उचित अछि पुणि १९
शुद्धमने चरु दिअ कल्याण ताकु हेउ। एसनक आज्ञा देले अजोध्यार प्रभु२६२०
शुणिण कौशल्या कैकेया बेनि राणी। आपणा चरुकु दुइ भाग कले पुणि२६२१
अधे रखि अधेक दुहेँ देले जाण। सुमित्रा करे चरु देलेक नेइ पुण २२
से राणी कर्मरे दुइ भाग जे अछइ। बिष्णुंकु सुमरिण समस्ते चरु खाइ २३
आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमीर दिबस।चरु खाइ तिनि राणी होइले सन्तोष २४
एथु अनन्तरे शुण भगवती। लीळावती काशिराजांकर जे दुहिति २५
समस्तंक पछरे आसिण भेट हेला। केते बेळु चरु अर्ण सरिलाणि परा २६
राणी बोले स्वामी मुँ करि अछि ब्रत।
शुणि करि समस्तंकु लागिला चिन्तात २७
बोइले या कथात होइला एबे तुल। केणे थिल तुम्भेत नोहिल समतुल २८

उसे कौशल्या तथा कैकेयी को समर्पित कर दिया। दोनों रानियाँ उसे लेकर प्रसन्नचित्त हो गई। १४ कौशल्या ने सुमित्रा को देखते हुए कहा, हे स्वामी! इस पर दया क्यों नहीं हुयी। १५ इस चन्द्रबदनी ने हमारे साथ ब्रत का आचरण किया है। आपका हाथ पकड़कर यह पवित्र हुई है। १६ दया करके उस पर अनुग्रह कीजिये। हम दोनों के भाग से इसे चरु प्राप्त हो। १७ राजा ने कहा कि मैं समझ नहीं सका मैंने अन्य रानियों के साथ इसे भी गिन लिया। १८ जब इसने भी व्रत का पालन किया है तो इसे भी चरु देना उचित है। १९ शुद्ध मन से इसे चरु प्रदान करो जिससे इसका कल्याण हो। अयोध्या नरेश ने उन्हें ऐसी आज्ञा दी। २६२० यह सुनकर कौशल्या तथा कैकेयी दोनों रानियों ने अपने-अपने चरु को दो भागों में विभक्त किया। २६२१ आधा रखकर दोनों ने आधा-आधा चरु भाग सुमित्रा के हाथों में रख दिया। २२ उस रानी के कर्म में दो भाग थे। सबने भगवान का स्मरण करते हुये चरु को खा लिया। आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन चरु खाकर तीनों रानियाँ संतुष्ट हो गईं। २३-२४ हे भगवती! सुनो। इसके अनन्तर काशीराजा की पुत्री लीलावती वहाँ पर सबसे पीछे आई। तब तक चरु अन्न समाप्त हो चुका था। रानी ने कहा हे स्वामी! मैंने भी ब्रत का आचरण किया है। यह सुनकर सभी को चिन्ता हो गई। २५-२६-२७ उन्होंने कहा यह तो अनर्थपूर्ण बात हो गई। तुम कहाँ थीं जो अभी तक नहीं आई। २८ लीला-

लीळावती बोले मोते न कहिले केहि । एकान्तरे बसि व्रत आचरिलि मुहिँ २९
शुणिण दशरथ वेगे चळिगले । ऋष्यश्रृंग मुनिकर आगरे कहिले२६३०
बोइले सकळ राणि व्रत कले तेज्या । चारि राणी व्रतरे आचार पणे हेजा२६३१
सकळ राणी व्रत न करि मनरे भेबळ ।वड़ पाटराणींकि मुँ चरु वाण्टिवा वेळ ३२
से राणी चेताइले सुमित्रा राणी कथा । तेणु मोते लागिला अनेक गरु व्यथा ३३
दुइ राणींक ठारु अणाइ दुइ भाग ।दुइ भाग भुञ्जि राणी होइले आनन्द ३४
चरु ग्रास सरि बारु एकइ राणी पुण ।आसिण बोइले मुं व्रत आचरिछि जाण ३५
से कथा शुणि मोर बड चिन्ता हेला । पचारुछि मुनि हे सन्देह फिटु परा ३६
ऋष्यश्रृंग बोइले ए नारायण माया । तिनि राणींक ठारे चतुर्धा रूप काया ३७
जेउँ राणी दुइ भाग कलेक भोजन । से राणी दुइ पुत्र जन्म करिबे पुण ३८
से दुइ पुत्ररु राणी एकइ पुत्र नेबे । जेबे से व्रतकु आचरि पुणथिवे ३९
पुत्र जन्मकाळे से जेबे हेब भेट । ताहांक स्तनुँ क्षीर जे होइब स्रवित२६४०
तेबे जाणि करि तांकु एकइ पुत्र देव ।तांक स्तनुँ खीर खाइ बाळक सुस्थ हेब२६४१
शुणि करि दशरथ सन्तोष होइले । अन्तःपुर भितरकु बेगे चळि गले ४२
बोइले राणीहंस सकळ एबे पुण । ऋषिकु पचारि बारु ऋषि कहे पुण ४३

वती ने कहा कि हमसे किसी ने कुछ नहीं बताया। मैं एकान्त में व्रत का आचरण कर रही थी। २९ यह सुनकर राजा दशरथ शीघ्र ही गये और उन्होंने श्रृंगी मुनि के समक्ष निवेदित किया। २६३० वह बोले कि सभी रानियों ने व्रत को छोड़ दिया था। केवल चार रानियों ने ही व्रत का आचरण किया। २६३१ मैंने मन में सोचा कि सभी रानियों ने व्रत नहीं किया है। अतः बड़ी पटरानियों को चरु बाँटते समय उन्होंने सुमित्रा की बात मुझे याद दिलाई तब मुझे अत्यन्त व्यथा हुई। ३२-३३ दोनों रानियों से दो भाग मँगाकर उन्हें खाकर रानी सुमित्रा प्रसन्न हो गई। ३४ चरु ग्रास समाप्त होने पर एक रानी आकर पुनः बोली कि मैंने भी व्रत का आचरण किया है। ३५ यह बात सुनकर मुझे बड़ी चिन्ता हो गई। हे मुनि ! मैं आपसे पूँछ रहा हूँ। मेरे सन्देह को दूर कीजिये। ३६ श्रृंगी ऋषि ने कहा कि यह भगवान की माया है। तीन रानियों से चार रूपों का जन्म होगा। ३७ जिस रानी ने दो भाग ग्रहण किये हैं। उस रानी से दो पुत्रों का जन्म होगा। ३८ उन दोनों पुत्रों में से एक पुत्र वह रानी ले लेगी जिसने व्रत का आचरण किया है। ३९ पुत्र जन्म के समय जब उससे भेंट होगी तब उसके स्तन में क्षीर प्रवाहित हो जायेगा। २६४० तब तुम समझकर एक पुत्र उसे दे देना। वह बालक उसके स्तन का दूध पीकर स्थिर हो जायेगा। २६४१ यह सुनकर राजा दशरथ संतुष्ट हो गये और शीघ्र ही अन्तःपुर में चले गये। ४२ उन्होंने रानियों को बुलाकर कहा कि ऋषि से

बोले दुइ भाग चरु जे भुञ्जिले पुण। दुइ गोटि पुत्र ता गर्भु जात जाण ४४
ज्येष्ठ पुत्र गर्भवतीर लीळावतीर कनिष्ठ।
एसन्त बचन जे कहिले मुनि श्रेष्ठ ४५
शुणि सर्व राणीहंस आनन्द होइले। लीळावती मनरे आनन्द पुण हेले ४६
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। चरु भुञ्जि सन्तोष होइले तिनि नारी ४७
से नारी सेहु रात्रे हेले रजस्वळा। अस्परश तांकर देह जे पुण हेला ४८
प्रातः काळु रजस्वळा तांकर चिह्न गला।
पाञ्च दिनरे तांकर शुद्ध स्नान हेला ४९
रात्रे दशरथ राजा कलेक गमन। प्रथमे कौशल्या पुरे बिजे कले पुण२६५०
श्रृंगारे रति कले नाना बिनोदरे। बञ्चिले से रजनी कौशल्यांक संगरे२६५१
द्वितीय दिन रजनी कैकया पुरे बिजे। श्रृंगार रति रसे रजनी तहिँ हजे ५२
तृतीय दिन रजनी सुमित्रा पुरे गले। श्रृंगार रतिलीळा से राणी संगे कले ५३
तिनि रजनीरे तिनि राणी गर्भु जात। दइब जोगे चतुर्द्धा रूपरे सम्भूत ५४
से दिन अनन्त शज्या तेजिले बनमाळी। कउशल्या गर्भरे बिजय कले हरि ५५
कौशल्या भागुँ जे चरुनेलेक सुमित्रा। अनन्त प्रबेश हेले तांक गर्भगता ५६
कैकेयांक गर्भे सुदर्शन चक्र मिळि। सुमित्रा गर्भे शंख प्रबेश जाइँ करि ५७
चतुर्द्धा मूर्त्ति धरि देव नारायण। तिनि राणींकर गर्भरे मिळिले जाइण ५८

पूछने पर उन्होंने कहा कि दो भाग खाने से रानी सुमित्रा के गर्भ से दो पुत्र होंगे। बड़ा लड़का गर्भवती का तथा छोटा पुत्र लीलावती का होगा। मुनि-श्रेष्ठ ने इस प्रकार से कहा है। ४३-४४-४५ यह सुनकर सम्पूर्ण रनिवास प्रसन्नता से भर गया और लीलावती का मन आनन्दित हो गया। ४६ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् तीनों रानियाँ चरु खाकर प्रसन्न हो गई। ४७ वह नारियाँ उसी रात्रि रजस्वला हुयीं। उनके शरीर अस्पर्श हो गये। ४८ प्रातःकाल उनके रजस्वला होने के चिह्न समाप्त हो गये। पाँचवें दिन उनका शुद्ध स्नान हुआ। ४९ रात्रि में सर्वप्रथम राजा दशरथ कौशल्या के महल में पहुँच गये। २६५० उन्होंने नाना प्रकार से विनोदयुक्त श्रृंगारिक रति-रस में कौशल्या के साथ वह रात्रि बितायी। २६५१ दूसरे दिन वह रात्रि के समय कैकेयी के महल में जा पहुँचे उन्होंने वह रात्रि कैकेयी के साथ श्रृंगारिक रति रस में बितायी। ५२ तीसरे दिन वह रात्रि को सुमित्रा के पास गये और उन्होंने श्रृंगारिक रति-क्रीड़ा की। ५३ तीन रातों में तीनों रानियाँ गर्भवती हो गई जो दैवयोग से चार रूपों में अवतरित हुये। ५४ उस दिन वनमाला धारण करने वाले नारायण ने शेष शैय्या का परित्याग किया और वह कौशल्या के गर्भ में जा पहुँचे। ५५ कौशल्या के भाग से सुमित्रा को चरु मिला था। अतः अनन्तदेव उनके गर्भ में प्रविष्ट हुये। ५६ सुदर्शन चक्र कैकेयी के गर्भ में जा पहुँचा और सुमित्रा के गर्भ में शंख जाकर प्रविष्ट हुआ। ५७ भगवान विष्णुदेव

जेते बेळे वसु देव शयन तेजि आसि । लक्ष्मी सरस्वती जे चरणे पड़े आसि ५९
कर जोड़ि देबी जे हरिंकि कहिले ।मुहिँ रहि बिकि जिवि आज्ञा दिअ मोरे२६६०
श्रीहरि बोइले तुम्भे बेगे चळि जाअ । जनक जज्ञशाळे प्रवेश तुम्भे हुअ२६६१
आगे तुम्भ अंश बेनि सहस्र वर्षत । तुम्भ अंश जात हेले मेरु कोळरेत ६२
से अंग गोटि तुम्भर बेनि भाग पुण । मेरु कोळे जात हेले दुइ अंश जाण ६३
तेते बेळे चेता जे तुम्भे माने पुणि । विचारिल दुइ अवतार लभिबु दुइ भग्नी ६४
तेणु जे मेरु राजा तांकर नाम देला । देवमति झरामति बोलिण बोइला ६५
केते दिन उतारु ताहांकु पचारिला ।
विभा करि देबि वर खोजिकि बोइला ६६
से बोइले आम्भे बासुदेवंकर नारी ।स्वामी देखिले बरिबु तुम्भे नुहँ द्वन्दकारी ६७
निर्मळ स्थान देखि आम्भंकु तुम्भे रख । तेबे सिना वासुदेव भजन बड़ सुख ६८
शुणि करि मेरु राजा परम तोष हेला ।
ज्योति निर्मळ पुरे दुइ भग्नीकि रखाइला ६९
से पुरे रहि सेहु मोर नाम जपि । नव सहस्र वरष बहिगला सेथि२६७०
चारि रावण दैत्यबळ हेवारु प्रबळ ।देबे बिचारिले कि रूपे मरिबे दैत्यबळ२६७१

चार रूप धारण करके तीन रानियों के गर्भ में जा पहुँचे जिस समय वासुदेव निन्द्रा का त्याग करके चले । उस समय लक्ष्मी तथा सरस्वती ने आकर उनके चरण छुये । ५८-५९ उन दोनों देवियों ने हाथ जोड़कर भगवान से कहा कि आप मुझे आज्ञा दें कि हम रुकें अथवा चलें । २६६० भगवान ने कहा कि आप लोग शीघ्र ही जाकर जनक की यज्ञशाला में पहुँचो । २६६१ दो हजार वर्ष पूर्व आप लोगों के दोनों अंश मेरु पर्वत की गोद से उत्पन्न हुये । ६२ वह एक अंश आप दोनों के अंश का था । मेरु पर्वत की गोद से दो भाग अवतरित हुये । ६३ उस समय आप लोगों को चेतन्यता आई तव आप दोनों वहनों ने दो अवतार ग्रहण करने का विचार किया । ६४ तव राजा सुमेरु ने उनका नाम वेदमती तथा झरामती रखा । ६५ कुछ दिनों के पश्चात् राजा ने उनसे कहा कि अव विवाह करोगी तो मैं वर का अन्वेषण करूँ । ६६ उन दोनों ने कहा कि हम दोनों भगवान की पत्नी है । स्वामी को देखने पर हम उनका वरण करेंगी । आप झगड़े में मत पड़िये । ६७ स्वच्छ स्थान देखकर आप हमें रख दें तव वहाँ भगवान का भजन करने में अत्यन्त सुख मिलेगा । ६८ यह सुनकर राजा मेरु अत्यन्त प्रसन्न हुये और उन्होंने उन दोनों को निर्मल ज्योतिपुर में रख दिया । ६९ उस महल में रहकर मेरा नाम जपते हुये उन्होंने नौ हजार वर्ष व्यतीत कर दिये । २६७० चारो रावण के दैत्यों की शक्ति का प्रभाव प्रवल होने पर देवताओं ने विचार किया कि इस दैत्यवाहिनी का संहार कैसे हो । २६७१ तब

तेणु से मोर पादे सकळ देबे सेबि । मोते बोइले मर्त्यपुरे जन्म हुअ बेगि ७२
ताहांकर सेवा देखि दया मोर हेला ।जन्म हेबि बोलिण बोइलि तांकु भला ७३
तेणु देवता सिना कूट भिआइले । नारद ऋषि पुत्र अंगिराकु अणाइले ७४
ज्योति निर्मळ पुररे नेले बेगे पुण ।अंगिरा महा ऋषि जे मिळिलेक जाण ७५
तुम्भ अंश बेदमतिकि जाइण कहिले ।तुम्भे मर्त्यपुरे गले बिष्णु जन्मिबे भले ७६
शुणिण बेदमति मर्त्यपुरकु आसि ।देखि दशमुखा रावण तांकु जाइ त्रासि ७७
तेणु से तुम्भ अंश असुरे शाप देला । मोहर हेतुरु तुहि मररे बोइला ७८
असुरकु शापदेइ से देह आसि तेजि । तुम्भर शरीरे से मिशिला बेगे आसि ७९
से दैत्य रावण जे मृत्यु देखि पुण । व्यञ्जन करिबाकु नेला से शव जाण२६८०
ताहार घरणी जे मन्दोदरी राणी । ताकु चाहिँण रावण कहिलाक बाणी२६८१
बोइला ए पदार्थ निअ गो बहन्न । ए मांसकु रन्धन करतु नेइण ८२
एमन्त कहि असुर स्नान करि गला । एहि समयरे मुनि नारद मिळे भला ८३
मन्दोदरीकु बोइले ए शवकु बेगे निअ । समुद्र भितरे एकु नेइण पकाअ ८४
ए मांसकु खाइले तुम्भर स्वामी मरि । नारद कथा सत मणिला मन्दोदरी ८५
तेणु से शबकु नेइ मञ्जूषरे भरि । समुद्ररे मेलि देला नेइ बेग करि ८६

सभी देवताओं ने मेरे चरणों की सेवा करते हुये मुझे शीघ्र ही मृत्यु लोक में अवतरित होने के लिये कहा। ७२ उनकी सेवा से मुझे दया आ गई। फिर मैने उनसे जन्म लेने के लिये कह दिया। ७३ तब देवताओं ने माया रची। नारद ने ऋषि पुत्र अंगिरा को बुलाया। ७४ वह उन्हें ज्योति निर्मल महल में शीघ्र ही ले गये और महर्षि अंगिरा वहाँ जा पहुँचे। ७५ उन्होंने जाकर तुम्हारे अंश वेदमती से कहा कि आपके मृत्युलोक जाने पर नारायण जन्म ग्रहण करेंगे। ७६ यह सुनकर वेदमती मृत्युलोक में चली आई। उसे देखकर दसकण्ठ रावण ने जाकर उसे कष्ट पहुँचाया। ७७ तब तुम्हारे उस अंश ने राक्षस को शाप देते हुये कहा कि मेरे कारण तुम्हारी मृत्यु होगी। असुर को शाप देकर उसने शरीर का त्याग कर दिया और वह अंश आकर शीघ्र ही तुम्हारे शरीर में मिल गया। ७८-७९ वह दैत्य रावण उसे मरा हुआ देखकर उसके शव को व्यंजन बनाने के लिये ले गया। २६८० वह अपनी रानी मन्दोदरी की ओर देखकर बोला कि तुम यह ले जाओ और इस माँस से रसोई तैयार करो। २६८१-८२ इस प्रकार कहकर असुर स्नान करने को चला गया। इसी समय महर्षि नारद वहाँ आ पहुँचे। ८३ उन्होंने मन्दोदरी से कहा कि इस शव को लेकर शीघ्र ही इसे समुद्र में गिरा दो। ८४ इस माँस के खाने से आपके स्वामी का निधन हो जायेगा। मन्दोदरी को नारद की बात सच लगी। ८५ इसलिये उसने उस शरीर को लेकर मंजूषा में भरा और उसे शीघ्र ही लेकर

दुइ शत हान्दोळा चळे साएन्त संगरे ।सहस्त्रे महिषी रखु आळ अछन्ति संगरे १५
शतेक रजकारी शते लम्ब हता ।बेनिशत बिश्वकर्मा शत बोल करन्ता १६
लोमपाद दशरथ संगतरे गले । कौशिक नदी तीरे प्रवेश होइले १७
ऋष्यश्रृंग प्रवेश जे पितांक आश्रमे । देखिले बिपुळ घर नग्रर आरम्भे १८
बेनि कोश पर्ज्यन्ते नग्र शोभा तोरा ।गोशाळा घर सेथिरु कोशेक अटे परा १९
जेतेक लोक से रहिले निश्चळे । बार सहस्त्र घर वस्ति सेहु पुरे२७२०
कउरब बोलि नग्र से पुर नाम हेला । मध्यरे बिभाण्डक मठ दिशे तोरा२७२१
पितांकु देखि पुत्र नमस्कार कले । बधू दासीगण घेनि ओळगि होइले २२
दुइशत परिबार घेनिण ऋषि बधू । मठर मध्यरे रहे आचरि स्थान साधु २३
धान चाउळमान साइतिले पुण । मठ गोटि आयतन बेनि कोश जाण २४
दशरथ लोमपाद प्रबेश जाइ हेले ।विभाण्डक ऋषिकि जे नमस्कार कले २५
आदर कले ऋषि रहिले सेदिन । प्रभातु उठि बेनि नृपति कले मान्य २६
पिता पुत्र दुहिँकि कहिण नृपवर । दुहिता प्रबोधिण होइले बाहार २७
पादान्ति लोक घेनिण अजोध्या प्रबेश । बाजइ बीर तूर सञ्चार गज अश्व २८

महाराज लोमपाद के द्वारा दिये गये थे । १४ शांता के साथ दो सौ पालकियाँ चल दीं । उसके साथ में एक सहस्त्र भैंसें तथा रक्षक भी थे । १५ सौ धोवी धोबिनें सौ धावक दूत तथा दो सौ शिल्पकार चले । १६ दशरथ तथा लोमपाद साथ-साथ चल दिये तथा कौशिक नदी के तट पर जा पहुँचे । १७ श्रृंगी ऋषि पिता के आश्रम में प्रविष्ट हुए । नगर के प्रारम्भ में उन्होंने अनेक आवास देखे । १८ दो कोस पर्यन्त नगर की छटा दिखाई दे रही थी । वहाँ से एक कोस की दूरी पर गोशाला थी । १९ जितने भी लोग वहाँ थे वह शान्तिपूर्वक रह रहे थे । उस नगर में बारह सहस्त्र घरों की वस्ती थी । २७२० उस नगर का नाम कौरव पड़ा । मध्य भाग में विभाण्डक के मठ की शोभा दर्शनीय थी । २७२१ पिता को देखकर पुत्र ने नमन किया । दासियों के साथ बधू ने उनको प्रणाम किया । २२ वह ऋषि बधू दो सौ दास-दासियों को साथ लेकर उस स्थान के नियमों का पालन करती हुई रह गई । २३ उसने धान, चावल इत्यादि सामग्री को संजोकर रख लिया । वह मठ दो कोस के आयतन में था । दशरथ तथा लोमपाद वहाँ जाकर प्रविष्ट हुए और उन्होंने विभाण्डक ऋषि को प्रणाम किया । २४-२५ ऋषि ने उनका सत्कार किया । वह उस दिन वहाँ रह गए । प्रातःकाल उठकर दोनों राजाओं ने उनकी अभ्यर्थना की । दोनों राजा, पिता तथा पुत्र को समझाकर तथा पुत्री को समझा बुझाकर बाहर निकल गए । २६-२७ पैदल सिपाहियों को साथ लिये हुए वीरतूर्य के निनाद में अश्व तथा हाथियों की गति के साथ वह दो दिन में अयोध्या जा पहुँचे । २८ दस दिन

दश दिन लोमपाद रहिण चळि गले। सकळ राणीहंस संगतरे नेले २९
दुइ कुळ राणी भेट हेले आनन्दरे। प्रबेश हेले चम्पावतीर नवरे२७३०
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण भगबती। अजोध्यारे आनन्द नर नारी होन्ति२७३१
दशरथ राणी जे हेले गर्भबास।राजांक ठारु दिनु दिनु छाड़िले मुहांस ३२
आहार न रुचे पुण बुलइ नयन। देहरे मण्डन होइ गन्ध जे चन्दन ३३
शुक्ल बर्ण भाजिण कळा दिशे स्तन। मन छन्न छन्न हुए प्रकृति भिन्न भिन्न ३४
शीतळ लागे चन्दन कर्पूर जे पुण। दुइ मास पूरि बारु अळस पुण जाण ३५
जेउँ द्रव्य भक्षन्ति तत्काळे उद्गारि। शयन ठारु उठि न पारन्ति नारी ३६
श्रद्धा करन्ति सेहु अपूर्ब पदार्थ। नृपति जाणि बारु दिअन्ति तुरित ३७
तिनि मास हुअन्ते खसिलाक स्तन।कुच्च उपरमान पुण दिशिला कळा वर्ण ३८
हेम शीतळ जे लागे पिठिकि आउजाइ। पिन्धिलार बसन कटीरु खसइ ३९
चारि मास हुअन्ते राणी चाळन्ते आशक्ते। उठिले झांम से मारइ तुरिते२७४०
देखिण महाराजा मनरे सन्तोष। पाञ्चमासे बन्दापना कलेक अजसुत२७४१
छड़मास हुअन्ते उदर गरु होइ। जीव गमन्ते गर्भरे पुत्रमाने बुलइ ४२
एककु आरकरे बेढिण अन्यजन। पेटे हस्त दिअन्ते बुलन्ति नन्दन ४३

वहाँ रहकर राजा लोमपाद समस्त रानियों को साथ लेकर चले गए। २९ दोनों कुलों की रानियों के परस्पर मिलन के पश्चात् वह जाकर चम्पावती नगर के महल में प्रविष्ट हुए। २७३० हे भगवती! तुम इसके पश्चात् सुनो। अयोध्या के नर-नारी आनन्द मना रहे थे। २७३१ दशरथ की रानियाँ गर्भवती हो गईं थीं। उन्होंने शनैः-शनैः राजा का संसर्ग त्याग दिया। ३२ उन्हें भोजन नहीं रुचता था! नेत्र चकरा रहे थे! उनके शरीर में सुगन्धित चन्दन लगा था। ३३ गौर वर्ण को छोड़कर उनके स्तन काले दिखाई देने लगे। उनका मन सन्न-सन्न करने लगा प्रकृति में भी भिन्न-भिन्न परिवर्तन हो गए। ३४ कर्पूर तथा चन्दन से उन्हें ठण्डक मिलती थी। दो मास पूर्ण होने पर उन्हें आलस्य लगने लगा। ३५ जो पदार्थ खाती थीं उसे तत्काल उल्टी कर देती थीं। सो जाने पर वह नारियाँ उठ नहीं पाती थीं। ३६ वह जिन अपूर्व पदार्थों की इच्छा करती थीं वह पता लगने पर तुरन्त ही राजा उन्हें लाकर देते थे। ३७ तीन माह होने पर उनके स्तन लटक आए! कुचों का ऊर्ध्वभाग काले रंग का दिखने लगा। ३८ पीठ सहलाने पर उन्हें भली ठण्डक लगती थी। पहनने के वस्त्र कमर से खिसक जाते थे। ३९ चार मास होते-होते रानियाँ चलने में अशक्त हो गईं। उठने पर उन्हें तुरन्त चक्कर सा आ जाता था। २७४० यह देखकर महाराज का मन सन्तुष्ट था। अजनन्दन दशरथ ने पाँच महीने होने पर पूजन किया। २७४१ छै माह होने पर उनके पेट भारी हो गए। जीव संचार होने पर शिशु गर्भ में घूमने लगे। ४२ अन्य लोग एक दूसरे को घेरकर

दासी जनमाने जाइ राजारे कहन्ति । राणी मानंक गर्भरे कुमर बुलुछन्ति ४४
शुणि आनन्दे बधाइ देले महीपाळ । आपे देखिले पेटे बुलन्ति दुलाळ ४५
सात मास हेबारु वड़ बड पेट । करे धरि पेटकु मणन्ति महाकष्ट ४६
नाभि तळरे पुणि कळा शिरा टाणि । देखि करि उपत हुअन्ति दासी पुणि ४७
स्तनरु क्षीर स्रबिबारु आनन्द सर्वराणी । देखि करि हरष सकळ तरुणी ४८
अष्टमास हुअन्ते राजा दशरथ । पात्र मन्त्री डकाइण विचारे सेहुत ४९
बशिष्ठ बामदेव जाबाळिकि चाहिँ । काश्यप सुमन्तकु ड़काइ अणाइँ२७५०
नृपति बोइले बाबु शुण हे सुमन्त । तुम्भ कथा मोते जे लागइ बड़हित२७५१
पाट राणी मानंकर गर्भ जे गणिता । लेखारे अष्टमास होइला शोभिता ५२
गर्भदान करिबा एबे कर हे बिचार । ज्योतिषकु ड़काइ कर हे अनुकूळ ५३
माघमास शुक्ल पक्ष अष्टमी गुरुवार ।
अश्विनी नक्षत्र कन्या राशिकु सम तार ५४
कौशल्या राणींकर रेबती मीन राशि । मूळा धनु कैकयांकर राजन जे भाषि ५५
मघा सिंह अटइ सुमित्रा राणीरत । तिनि राणींकर एक शुभे परिणत ५६
एक अंश तिनि जण होइ छन्ति जात । सत्य सातुक्य दया पणरे एमन्त ५७

पेट पर हाथ रखने पर शिशु घूमते थे । ४३ दासियों ने जाकर राजा से रानियों के गर्भ में शिशुओं के घूमने की वात कही । ४४ पृथ्वीपाल नरेन्द्र ने यह सुनकर आनन्द से उन्हें बधाई दी तथा उन्होंने स्वयं शिशुओं को पेट में घूमते हुए देखा । ४५ सात माह हो जाने के कारण पेट बड़े हो गए । महान कष्ट होने पर वह हाथों से पेट थाम लेती थी । ४६ नाभि के निम्न भाग की काली शिराओं के तनाव को देखकर दासियाँ अधीर हो जाती थीं । ४७ स्तनों से दूध स्रवित होने से सभी रानियाँ प्रसन्न थीं । यह देखकर सारी स्त्रियाँ हर्षित थीं । ४८ आठ मास होने पर राजा दशरथ ने सभासद तथा मंत्रियों को बुलाकर उस पर विचार किया । ४९ उन्होंने वशिष्ठ, वामदेव तथा जावालि को देखकर काश्यप तथा सुमंत को बुला भेजा । २७५० राजा ने कहा हे तात सुमंत ! सुनो । तुम्हारी वात मुझे बहुत हितकारी लगती है । २७५१ पटरानियों के गर्भ गणित के हिसाब से आठ महीने के होकर सुन्दर लगते हैं । ५२ अब हम गर्भदान करेंगे । इस पर विचार करो । ज्योतिषी को बुलाकर शुभ मुहूर्त निकलवाओ । ५३ माघ मास शुक्लपक्ष की अष्टमी और गुरुवार का दिन था । अश्विनी नक्षत्र कन्याराशि की समता में था । ५४ रानी कौशल्या का रेवती नक्षत्र तथा मीन राशि थी । राजा ने कैकेयी का नक्षत्र मूल तथा धनु राशि बतायी । ५५ रानी सुमित्रा का नक्षत्र मघा तथा सिंह राशि थी । तीनों रानियों का एक साथ शुभ मंगल हुआ था । ५६ एक अंश से यह तीनों उत्पन्न हुयी थीं । सत्य सात्विक तथा दया से परिपूर्ण थीं । ५७ तीनों के गर्भ में नर

तिनिंक गर्भरे प्रबेश नरहरि । एक नारायण जे चतुर्द्धा रूप धरि ५८
अदिति प्रहेति अंशे जन्म एहु पुण ।कौशल्या कैकेया सुमित्रा लीळा जाण ५९
एणु करि चारि राणींकर एकराशि । जोग लग्नमान ज्योतिष कहे बसि२७६०
बशिष्ठ कहु छन्ति दशरथंकु चाहिँ । शुभ जोग बेळा राए अनुकूळ एहि२७६१
नग्रपुर मण्डण कर हे नृपमणि ।शुणिण सन्तोष हेले अजोध्या नृपमणि ६२
राजा घरे बिजय़ कलेक देव हरि । मने जाहा बिचारिब सुलभ ताहारि ६३
देशाउर ड़काइण अजोध्या महीपाळ । बोइले बेगे जाअ चम्पावती पुर ६४
देशाउर जाइ राजा छामुरे ओळगिला । सकळ चरित्रमान बुझाइ कहिला ६५
शुणि करि लोमपाद हरष होइले ।आपणा देशाउरकु ड़ाकिण आज्ञा देले ६६
राज्यरे घोषणा दिअ तुम्भेरे बेगे । अजोध्याकु जिबाकु सज हुअन्तु आगे ६७
रथ गज अश्व जे पादान्ति नटकारी । बाद्यर निशाणरे नग्र तार पूरि ६८
बन्धुजन मानंकु बरणे पेक्षेलोक । बार दिने चम्पावती नग्रे ठुळ सेत ६९
सकळ जनंकु कहि बेगे चाळि देले । राणी हंस पुरे जाइ प्रबेश होइले२७७०
राणीमाने बाहार होइण बेगे गले । धन रत्न बहुत संगरे सेहु नेले२७७१
लोमपाद राजा चळे राणींक संगे पुण । अजोध्या देशरे प्रबेश सर्बे जाण ७२

रूप में नारायण प्रविष्ट हुये। एक नारायण ने चार रूप धारण किये थे। ५८ यह रानियाँ लीला करने के लिये अदिति तथा प्रहेति के अंश से कौशल्या कैकेयी लीला और सुमित्रा के रूप में उत्पन्न हुयी थीं। ५९ इस प्रकार चारों रानियों की एक राशि थी। ज्योतिषी ने बैठकर योग और लग्न के विषय में बताया। २७६० वशिष्ठ ने दशरथ की ओर ताकते हुए कहा हे राजन ! शुभ अनुकूल बेला यही है। २७६१ हे नृपश्रेष्ठ ! महल, नगर सुसज्जित करो। यह सुनकर अयोध्या नरेश संतुष्ट हो गये। ६२ भगवान राजा के घर में उपस्थित हुये थे। जो अपने मन में विचार करोगे तुम्हें वही सुलभ हो जायेगा। ६३ अयोध्या नरेश ने दूतों को बुलाकर उन्हें शीघ्र ही चम्पावती नगर जाने के लिये कहा। ६४ दूत ने जाकर राजा के समक्ष प्रणाम किया और उनसे सारी बातें समझाकर कहीं। ६५ यह सुनकर लोमपाद प्रसन्न हो गये। उन्होंने अपने दूत को बुलाकर आज्ञा दी। ६६ तुम शीघ्र ही सबसे अयोध्या चलने को तैयार होने की घोषणा करवा दो। ६७ रथ, हाथी, घोड़ों, पैदल वीरों, नृत्य नटकारों तथा वाद्य-निनाद से उनका नगर भर गया। ६८ बन्धुजनों को आमंत्रित करने के लिये उन्होंने दूत भेज दिये। वह सभी लोग बारह दिनों के भीतर नगर में आकर एकत्रित हो गए। ६९ सब व्यक्तियों को समझा बुझाकर वह शीघ्र ही चल दिये और जाकर रनिवास में प्रविष्ट हुए। २७७० रानियाँ शीघ्र ही प्रचुर धन रत्न लेकर बाहर निकल पड़ीं। २७७१ राजा लोमपाद रानियों के साथ चले और सभी लोग अयोध्या नगर में जा पहुँचे। ७२ उन्होंने नगर में अद्भुत चित्रकारी वाले

चित्र बिचित्र घर से नग्रे देखिले । राणीहंस निज नग्रे प्रवेश होइले ७३
मान्य़ गौरब जे सकळ नृप कले । विप्र ऋषि ज्योतिष प्रवेश जाइँ हेले ७४
समस्ते प्रबेश हेले आनन्दरे वसि । वशिष्ठंक आमन्त्रणे अइले सर्ब ऋषि ७५
तपोजन देखिण राजन मन तोषि । से मानंकु सनमान देलेक विशेषि ७६
मुनि माने आसिण सकळ ठुळ हेले । लेखारे बत्रिश सहस्र ठुळ हेले ७७
ब्राह्मण प्रबेश जे छय़ाणोइ सहस्र । देखणा हारी लोके अजोध्या प्रबेश ७८
घोष जात्रा प्राय़े जे लागिला हेळ । उत्सव आनन्द जे जे सने स्वर्गपुर ७९
ऋषि बिप्र मुनिंकि उत्तम स्थान मान ।
उपरे छामुण्डिआ तळ कर्पूर धूळि जाण२७८०
बन्धुजन मानंकु बिपुळ घरे रखि । सामन्त सेवक राजांकर जेते लोक आसि२७८१
लोक जगाइले चरचा करि बारे । सकळ खञ्जा कले नृपति विचारे ८२
खाइबा पिइबा शोइबा वसिबा हसिबा । समस्त संजोग दशरथ जे करिबा ८३
सुमन्तकु चाहिँण बशिष्ठ आज्ञा देले । जे विधि विधान कराअ बोइले ८४
शुणिण सुमन्त मण्डे दिव्य पुरमान । घरे घरे पतनि दिव्यांग बसन ८५
द्वारे चूत पत्र जे कदळी गछ पोति । सुबर्णर कळस चिराळ पन्ति पन्ति ८६
राजा मानंकु करि थिले से बरण । शुणि बारु अइले सकळ राजामान ८७

घर देखे। रानियाँ अपने नगर में प्रविष्ट हुई। राजा ने सबका आदर-सत्कार किया। तभी ब्राह्मण ऋषि तथा ज्योतिषी वहाँ आ पहुँचे। ७३-७४ सभी लोग वहाँ पहुँचकर आनन्द से बैठ गए। वशिष्ठ के आमंत्रण पर सभी ऋषि वहाँ आ गए। ७५ तपस्वियों को देखकर राजा का मन सन्तुष्ट हो गया। उन्होंने उनका विशेष प्रकार से सम्मान किया। ७६ सभी मुनिवृन्द वहाँ आकर एकत्रित हो गए जिनकी संख्या लगभग बत्तीस हजार थी। ७७ छिआसी हजार ब्राह्मण तथा दर्शकजन अयोध्या में आ पहुँचे। ७८ वहाँ पर रथ यात्रा के समान लग रहा था। मानों स्वर्गलोक में आनन्दोत्सव हो रहा हो। ७९ ऋषि विप्र तथा ब्राह्मणों के स्थान उत्तम थे। ऊपर तम्बू तने थे और नीचे कपूर का चूर्ण बिछा था। २७८० बन्धु-बान्धवों तथा राजाओं के जितने भी सामंत तथा सेवक आये थे। उनको अनेक घरों में ठहरा दिया गया। २७८१ सेवा सत्कार के लिये राजा ने सेवकों की नियुक्ति कर दी और विचारपूर्वक सारे पदार्थ वहाँ रखवा दिये। ८२ दशरथ ने खाने, पीने, सोने, बैठने तथा मनोरंजन के सारे साधन जुटा दिये। ८३ सुमंत को देखकर वशिष्ठ ने उन्हें विधि-विधान कराने की आज्ञा दी। ८४ यह सुनकर सुमंत ने दिव्य सदनो को मंडित करा दिया। घरों-घरों में सुन्दर यवनिकाएँ तथा दिव्यांग वस्त्र द्वार पर आम्रपल्लव तथा केले के वृक्ष लगाये गये। स्वर्ण-कलश तथा पताकाओं की पक्तियाँ सुसज्जित कर दी गयी। ८५-८६ जिन राजाओं को आमंत्रित किया गया था। वह सब

राजांकु उआस जे मन्त्रीमानंकु घर। शोइबा बसिबा खाइबा पिइ बार ८८
पुष्प चन्दन अनेक आभरण करि। ऋषि बिप्र देखणा द्वारिंकि चर्च्चा करि ८९
अजोध्या नगरे जेतेक छन्ति नारी। राणीहिँ समस्ते जेतेक दया करि२७९०
अन्न बस्त्र पाणि पणा देइ सदान्नत। घरे घरे आनन्द उत्सब नृत्यगीत२७९१
अगुरु चन्दन आणि कले छामुण्डिआ। नेत पाट मण्डणि बिबिध चान्दुआ ९२
मध्यरे रचिले नेइ कनकर बेदी। बिजुळि आच्छन्न जेन्हे कमळा मेघे साजि ९३
इन्द्र गोबिन्द चान्दुआ टाणिले उपरे। बइडूर्य्य चिराळ उडइ फरहरे ९४
दिनकर ठारु राजा मंगळ बिधि कले। देबता ब्राह्मण ऋषिमानंकु तोषिले ९५
दशरथ संगरे जेतेक महीपाळ। देव ऋषि बिप्र घेनि कलेक मंगळ ९६
राणी महादेई संगे मुदुसुलि झड़ा। हळदी चन्दन लगाइ होइलेक तोरा ९७
हास रस प्रबन्धरे खेळ सर्ब घरे। आनन्दरे आज्ञा देले अजोध्या नृपबरे ९८
शुण तुम्भे शाकम्बरी दिब्य रस बाणी। बेश होइलेक दशरथ नृपमणि ९९
जेबण दिन राजन घेनिले अनुकूळ। नदी कूळरे स्नान कलेक महीपाळ२८००
तहुँ आसि प्रबेश कनक मण्डपरे। समस्त राजागण अछन्ति संगतरे२८०१
मुनि ऋषि बिप्र ब्राह्मण पुणि द्बिज। राजा संगतरे समस्ते हेले सज २

सुनते ही चले आये थे। ८७ राजाओं तथा मंत्रियों के आवासों पर सोने, खाने पीने और बैठने की व्यवस्था थी। ८८ ऋषि ब्राह्मणों तथा दर्शकों की फूल चन्दन तथा अनेक आभरणों से चर्चा की गयी। ८९ अयोध्या नगरी में जितनी भी स्त्रियाँ थीं। उन पर रानियों ने पूर्ण कृपा की थी। २७९० अन्न वस्त्र पेय-पदार्थ आदि के सदावर्त खुले थे। घर-घर में आनन्दोत्सव नृत्य तथा गीत हो रहे थे। २७९१ अगुरु चन्दन लाकर वितान तान दिये गये थे और रेशमी वस्त्रों के विविध प्रकार के चंदोवे लगे थे। ९२ मध्य में स्वर्णवेदिका की रचना की गयी थी। लगता था मानो श्याममेघ के बीच में चमकती हुयी बिजली सुशोभित हो रही थी। ९३ उसके ऊपर इन्द्र-गोविन्द नामक चँदोवा ताना गया जिस पर वैदूर्य की पताका फहरा रहा थी। ९४ सूर्य के समीप राजा ने मांगलिक विधि की और देवता ब्राह्मणों तथा ऋषियों को संतुष्ट किया। ९५ दशरथ के साथ जितने राजा लोग थे। उन्होंने देवताओं ऋषियों तथा ब्राह्मणों को लेकर मांगलिक विधि सम्पादित की। ९६ पटरानियों के साथ वेशकारिणी-गण हल्दी तथा चन्दन लगाकर सुसज्जित हो गई। ९७ हास-मनोरंजन के खेल घर-घर में होने के लिये अयोध्या नरेश ने आज्ञा दी। ९८ हे शाकम्वरी ! तुम दिव्य रसमयी कथा सुनो। राजाओं में शिरोमणि दशरथ ने शृंगार किया। ९९ जो दिन राजा के लिये शुभ मुहूर्त का था। उसी दिन राजा ने नदी तट पर स्नान किया। २८०० वहाँ से आकर वह समस्त राजाओं को साथ लेकर कनक मण्डप में प्रविष्ट हुये। २८०१ ऋषि मुनि विप्र द्विज तथा ब्राह्मण आदि सभी

रत्न बेदी चतु पार्श्वे मिळिले सकल। बेद ध्वनि कले बसि सकळ ऋषिबर ३
हरि बोल शबद शुभइ निरन्तर। हुळहुळि दिअन्ति सकळ नारी बर ४
जाबालि काश्यप जे सकळ महर्षि। मारकण्ड गौतम बिश्रबा भृगु तपी ५
आचार्य्य बरण जे कपिळ मुनि हेले। लोमपादंक आचार्य्य अष्टवक्र हेले ६
दुइ राजा होमकले कनक बेदी परे। गह गह शबदरे कुरुम उछूळे ७
होम बिधि कराइ राणी बसिलेक रथ। हरष जे दशरथ चम्पावती नाथ ८
सभाकु बर कन्या बेश होइ आसि। दशरथ संगतरे तिनि राणी बसि ९
लोमपाद राजा पुण बरबेश होइ। शतेक राणी घेनि सभारे बसे जाइ२८१०
अष्ट बर्ण गर्भदान बेभार सारिले। दुइ राजा राणीगण घेनि उभा हेले२८११
आदित्य देबतांकु से अर्घ्य देले पुणि। आनन्द होइण से दुइ नृपमणि १२
सुकल्याण पाइण भितर पुर गले। इष्ट देबतांकु जाइँ नमस्कार कले १३
नबरे बन्दापना अनेक सम्भार। होम बन्दापना कले आदित्य अस्त बेळ १४
नारी गणे हरिद्रा स्नान कले मिळि। नूतन अमळाण पिन्धिले सर्ब बाळी १५
बेश भूषण जे होइले पुण सर्बे। माळ कुसुम जे भूषण गन्ध पुष्पे १६
हुळहुळि ध्वनी पुणि पड़े चउपाश। हरि बोल शबदरे पुरइ आकाश १७

लोग राजा के साथ सज गये। २ रत्नवेदी के चारों ओर समस्त एकत्रित थे और सारा श्रेष्ठ ऋषिमंडल वेदध्वनि करने लगा। ३ निरन्तर हरि बोल का स्वर सुनाई दे रहा था। समस्त श्रेष्ठ स्त्रियाँ मांगलिक शब्द कर रही थीं। ४ तपस्वीमहर्षि जावालि, काश्यप, मार्कण्ड, गौतम, भृगु, विश्रवा तथा कपिल आचार्य रूप में वरण किये गए। महाराज लोमपाद के आचार्य अष्टावक्र हुए। ५-६ स्वर्णवेदी पर दोनों राजाओं ने हवन किया। गहमा-गहमी के शब्द से कूर्म कलमला उठा। ७ हवन विधि सम्पादित हो जाने पर रानी रथ पर बैठ गई। राजा दशरथ तथा चम्पावती के स्वामी लोमपाद प्रसन्न थे। ८ वर-कन्या सभा में श्रृंगार करके आ गए। दशरथ के साथ तीनों रानियाँ बैठी थीं। ९ राजा लोमपाद सुवेष होकर अपनी सौ रानियों को लेकर सभा में जाकर बैठ गए। २८१० अष्टवर्ण गर्भदान विधि सम्पादित की गई। फिर दोनों राजा रानियों को लेकर खड़े हो गए। २८११ फिर उन्होंने भास्कर देवता को अर्घ्य दान किया और दोनों ही श्रेष्ठ राजा प्रसन्न हो गए। १२ आशीर्वाद प्राप्त करके वह अन्त:पुर में गए और उन्होंने जाकर इष्टदेवता को नमस्कार किया। १३ महल में बड़ी धूम-धाम से पूजन किया गया और सूर्यास्त होने पर उन्होंने हवन-पूजन किया। १४ स्त्रियों ने मिल जुलकर हरिद्रा स्नान किया और सबने नवीन परिधान धारण किए। १५ फिर सबने सुवेश होकर सुगन्धित पुष्प चन्दन तथा आभूषण धारण किये। १६ चारों ओर मांगलिक ध्वनि हो रही थी और हरिबोल शब्द से आकाश गूँज गया। १७ लगातार शंख

शंख महुरी बाद्य जे बाजे निरन्तर। बाहार भितरे लोक अछन्ति अपार १८
अछन्ति नाना देशर महीपाळ माने। ऋषि ब्राह्मण जे नाना जाति भिन्ने १९
नग्र नर नारी जे देखन्ति सर्बे आसि। हटारी बजारी जे देखन्ति सर्बे मिशि२८२०
एहि रूपे सज हेले लोमपाद राणी। बेश भूषण से बेगे हेले पुणि२८२१
छामुरे ब्राह्मणे कले बेद पुराण बाणि। मंगळ जोगरे जे आसन्ति राजा राणी २२
श्रीहरिंक नाम पुणि सुमरे नृपमणि। कल्याण बाञ्छा घेनि भितरे गले पुणि २३
नग्ररे प्रबेश जे होइले अर्घ्य देइ। देवगण घेनिण पितामह सकळ २४
दशरथ राजांकर सुजोग भाग्यबळ। उपुजिबे नारायण कौशल्यांक कोळ २५
आम्भंकु से रक्षा जे करिबे मधूहारि। तेबे निश्चळे आम्भे रहिबा स्वर्गपुरी २६
दशरथ राजा जोगुँ आम्भे होबा सुस्थ। ए राजांकु अक्षत देबा आम्भर उचित २७
बिचार करिण देबे पवन बेगे राइ। बेगेण अक्षत घेनि देले पठिआइ २८
पवन देवता जे मिळिले बेगे जाइ। बशिष्ठंक कर्णरे कहिले शबदाइ २९
सकळ देवता जे हेले एक मेळ। इन्द्र पितामह घेनि दश दिगपाळ२८३०
मोर हस्ते अक्षत देइण अछन्ति। दशरथंक राणीकि बेगे दिअ ऋषि२८३१
तुम्भेत जोग बळे सकळ अछ जाणि। दुष्ट नाश करिबे नारायण जन्मि ३२

महुरी वाद्य बज रहे थे। भीतर-बाहर अपार जनसमूह था। १८ विभिन्न जातियों के ऋषि ब्राह्मण तथा अनेक देशों के राजागण वहाँ पर थे। १९ नगर के समस्त नर-नारी हाट बटोही सभी लोग वहाँ आकर सब देख रहे थे। २८२० इसी प्रकार से लोमपाद की रानियाँ सुसज्जित हुईं। उन्होंने शीघ्र ही श्रृंगार करके आभूषण धारण किये। २८२१ उनके समक्ष ब्राह्मणों ने वेद की ऋचायें तथा पुराणों का पाठ किया। उस मांगलिक योग में राजा और रानी पधारे। २२ नृपशिरोमणि दशरथ ने भगवान का नाम स्मरण किया और आशीर्वाद प्राप्त करके पुनः भीतर चले गये। २३ वह अर्घ्यदान करके नगर में प्रविष्ट हुये। पितामह ब्रह्मा समस्त देवताओं को लेकर आये। २४ राजा दशरथ के सौभाग्य से भगवान कौशल्या की कोख से जन्म ग्रहण करेंगे। २५ वह मधुसूदन नारायण हम लोगों की रक्षा करेंगे। तब हम निश्चिन्त होकर स्वर्गलोक में निवास कर सकेंगे। २६ राजा दशरथ के कारण हम चिन्तारहित हो जायेंगे। इस राजा को हम लोगों का अक्षत् देना उचित है। २७ ऐसा विचार करके देवताओं ने शीघ्र ही पवन देव को बुलाया और शीघ्र ही उन्हें अक्षत् देकर भेज दिया। २८ पवनदेव ने शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर वशिष्ठ के कान में कुछ शब्द कहे। २९ समस्त देवताओं ने एकत्रित होकर इन्द्र तथा दस दिगपालों को लेकर पितामह ब्रह्मा ने मेरे हाथों से अक्षत् भिजवाये हैं। हे ऋषि ! राजा दशरथ तथा रानी को इन्हें शीघ्र ही दे दीजिये। २८३०-२८३१ आपको तो योगबल से सब ज्ञात होगा। भगवान जन्म धारण करके दुष्टों का विनाश

नाराय़ण आसिण कौशल्य़ा राणी गर्भे। चतुर्द्धा मूरति जे धरिण बासुदेबे ३३
बेनि मास मध्यरे पुण हेबे जन्म। अक्षत देइ देबे गले निजस्थाने ३४
शुणि बशिष्ठ ऋषि बेगे उठि पुण। राजांकर नग्ररे प्रवेश हेले जाण ३५
दशरथंकु कहिले देबंक बृत्तान्त। बेदबर देवताय़े देले जे अक्षत ३६
शुणि करि दशरथ आनन्द मन हेले। ऋषिमानंकु घेनिण संगरे बसिले ३७
अक्षत नेइण बशिष्ठे देले पुणि। चारि जातिर पारिजातक पुष्प आणि ३८
तिनि राणी संगे राजा पुष्प नेले पुण। दशरथ बोइले शुण मुनि ब्रह्म ३९
लोमपाद राजाकु अक्षत नेइ दिअ। बशिष्ठ बोइले से कथा नोहे प्रिय़२८४०
नाराय़ण अवतार तुम्भर घरे हेबे। सेथि जोगुं अक्षत तोते देले देबे२८४१
तुम्भे जाणिल मुं जाणिलि न जाणिबे केहि।
जाणिले देवता माने कोप करिबे तहिं ४२
एकथा गुपत करि प्रकाश नकरि। एहि पुष्प प्रतिदिन बाष्प एहि परि ४३
बरषक तिनिश षाठिए दिन जाण। तेते दिन जाए पुष्प बासना करे पुण ४४
बृक्षरु तोळिला प्राय़ दिशइ प्रतिदिन। तेणु से अमळाण पुष्प बोलि जाण ४५
नाराय़णप्र बेशरे देबे तोष तोरे। शुणि करि दशरथ आनन्द मनरे ४६
बुझाइ बशिष्ठ जे आगे चळिगले। भितर पुरे राणीमानंक पाशे मिळिले ४७

करेंगे। ३२ वासुदेव भगवान ने रानी कौशल्या के गर्भ में आकर चार रूप धारण किये हैं। ३३ दो महीने के मध्य वह जन्म लेंगे। अक्षत् देकर देवता अपने स्थान को चले गये। ३४ यह सुनकर वशिष्ठ ऋषि शीघ्र ही उठ पड़े। उसी समय राजा नगर में प्रविष्ट हुये। ३५ उन्होंने दशरथ से देवताओं का वृत्तांत कहते हुये बताया कि ब्रह्मा जी तथा इन्द्र ने अक्षत् दिये हैं। ३६ यह सुनकर राजा दशरथ का मन प्रसन्न हो गया। वह ऋषियों के साथ वहाँ बैठ गये। ३७ वशिष्ठ ने अक्षत् लेकर दिये और साथ में चार प्रकार के पारिजात पुष्प प्रदान किए। ३८ राजा ने तीन रानियों के साथ पुष्प ग्रहण किये। दशरथ ने कहा हे ब्रह्मर्षि ! सुनिये। ३९ आप राजा लोमपाद को भी अक्षत् प्रदान कीजिये। वशिष्ठ ने कहा कि यह बात उपयुक्त नहीं है। २८४० भगवान आपके घर में अवतार लेंगे। इस कारण से देवताओं ने तुम्हें अक्षत् प्रदान किये हैं। २८४१ यह बात तुम्हें और मुझे ज्ञात है। किसी और को इसका पता नहीं चलेगा यह बात अन्य लोगों को ज्ञात होने पर देवता कुपित होंगे। ४२ इस बात को गुप्त रखकर प्रकाशित न करे। यह पुष्प सदैव इसी प्रकार सुगन्धि देते रहेंगे। ४३ एक वर्ष के तीन सौ साठ दिन तक यह पुष्प सुगन्धित रहेंगे। ४४ यह प्रतिदिन तुरन्त वृक्ष से टूटे जैसे दिखेंगे। इसलिये इन्हें अम्लान पुष्प कहा जाता है। ४५ नारायण के प्रविष्ट होने से देवता तुम पर प्रसन्न हैं। यह सुनकर राजा दशरथ का मन आनन्द से भर गया। ४६ इस प्रकार समझाकर

एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी । बशिष्ठंकु डकाइ दशरथ दण्डधारी ४८
लोमपाद राजांकु अक्षत तुम्भे दिअ । त्रिपुत्र हेब चम्पावती राजा प्रिय ४९
शुणि करि बशिष्ठ परम सन्तोष हेले । लोमपाद राजांकर राणींकु डकाइले२८५०
बन्दापना सारि अक्षत देले ऋषि ।अक्षत धरि तुष्ठ लोमपाद राजा सेठि२८५१
अक्षत देइ बशिष्ठ मेलाणि होइ गले । भितर पुरे राणी निश्चिन्ते रहिले ५२
भोजन शयन कलेक जथा विधि । कुहन्ति शूळ पाणि शुण गो प्राणनिधि ५३
दशरथ गर्भ दान कलेक जे स्नेहे ।जेझापुर जिबाकु नृपति माने आग होए ५४
सान्य धर्म विधि दशरथ राजा कले । धन रत्न बहुत राजा मानंकु देले ५५
बन्धुजन मानंकु मेलाणि बेगे कले । धन रत्न बसन बहुत सेहु देले ५६
राजा माने चळिण गले जेझापुर । बन्धुजन माने चळि गले ततपर ५७
लोमपाद राजा देइण गर्भदान । बन्दापना होइण जुर कले धन ५८
देब ब्राह्मण ऋषि दुःखीजन देइ । राजागण मानंकु धनरत्न देइ ५९
बन्धुजन मानंकु बहुत धन देले । आनन्द होइण दशरथंकु कहिले२८६०
राज्यकु जाउछि बोलि मेलाणि बेगे मागे। राणी हंसकु कहिण चळि गले शीघ्रे२८६१
चम्पावती नग्रे प्रबेश जाइँ हेले ।ऋषिमाने जे जाहा मढिआरे बिजे कले ६२

वशिष्ठ आगे चल दिये और अंतःपुर में रानियों के पास जा पहुँचे। ४७ हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् तुम सुनो। दण्डधारी दशरथ ने वशिष्ठ को बुलाकर राजा लोमपाद को अक्षत् देने के लिये कहा। चम्पावती नरेश को तीनों पुत्र प्रिय होंगे। ४८-४९ यह सुनकर वशिष्ठ को बड़ा सन्तोष हुआ। उन्होंने राजा लोमपाद की रानियों को बुलाया। २८५० पूजा की समाप्ति पर ऋषि ने अक्षत् प्रदान किये और अक्षत् लेकर राजा लोमपाद वहाँ सन्तोष को प्राप्त हुये। २८५१ अक्षत् देकर वशिष्ठ विदा हो गये। रानियाँ अंतःपुर में रहकर निश्चिन्त हो गई। ५२ उन्होंने यथाविधि भोजन तथा शयन किया। शूलपाणि शंकर ने कहा हे प्राणनिधि ! सुनो। ५३ दशरथ ने प्रेमपूर्वक गर्भदान किया। राजा लोग अपने-अपने नगर को जाने के लिये अग्रसर हुये। ५४ राजा दशरथ ने उनका स्वागत-सत्कार करके प्रचुर धन तथा रत्न राजाओं को प्रदान किया। ५५ उन्होंने शीघ्र ही बन्धु-बान्धवों को बहुत सा धन, रत्न और वस्त्र प्रदान करके विदा किया। ५६ राजा लोग तथा बन्धु-बान्धव अपने-अपने नगरों को तत्परता से चले गये। ५७ राजा लोमपाद ने गर्भदान देकर पूजा करके धन लुटाया। ५८ उन्होंने देवताओं, ब्राह्मणों, ऋषियों, दुःखीजनों को तथा राजागणों को धन और रत्न प्रदान किये। उन सबने प्रसन्न होकर राजा दशरथ से कहा। ५९-२८६० हम अपने राज्य को जाने के लिये शीघ्र ही विदा माँग रहे है। वह रनिवास से कहकर शीघ्र ही चल दिये। २८६१ राजा जाकर चम्पावती नगर में प्रविष्ट हुये। ऋषि लोग अपने-अपने मठों को चले गये। ६२ दोनों

धन रत्न देले बेनि नृपवर जाणि । आनन्दरे वेदध्वनी कले ऋषि पुणि ६३
निज नबरु ऋषि जे राजा जिबारु पुण । सन्तोष दशरथ मनरे होइण ६४
अजोध्यापुर गहळ भाँगिलाक जहुँ । अन्न वस्त्र पाइले दरिद्र लोके तहुँ ६५
हाट बाट धोबा तुठ जुर होइ गला ।लेखा होइ धन जे भण्डारु दिआ गला ६६
कैकया राजनंकर बेनि पुत्र चळे । कौशल्या सुमित्रांकु भाइ माने गले ६७
समस्त मेलाणि देइ नृपति आनन्द । मुख बिकाशइ जेन्हे पूर्णमीर चान्द ६८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो मोर प्रिया । वशिष्ठंकु नमस्कार कले नर नाहा ६९
सेथिर उत्तरु कथा होइला जेमन्ते । शुण एकमने ताहा गिरिराज दुहितेर२८७०
अष्टमास सम्पूर्णरे हेला नव मास । अपसरे आउजि न पारे राणीहंसर२८७१
नव मास शेषरे जे दशमास हेला । दिन वढ़ा लेखन्ते दशमास पूरा ७२
दश मास सम्पूर्ण चैत्र चबिशदिन । अष्टमी तिथिरे हेला नवमी वर्द्धमान ७३
से दिन चइत्र जे गुण्डिचा जात होइ । ईश्वर देवतांकर उत्सव जे होइ ७४
रास उत्सब गुण्डिचा तिनि पुरे सार । ताळ ध्वज बिजे कले गउरी शंकर ७५
कपिळास कन्दरे जे एकाम्बर वने । अनेक स्थाने विजय कले पञ्चानने ७६
सेहि दिन कौशल्या देह जे बिकळ । चेता हेला अन्तराळ पवन वहे खर ७७

राजाओं ने उन्हें प्रचुर धन तथा रत्न दिये। ऋषि आनन्द से वेदध्वनि करने लगे। ६३ अपने महल से ऋषियो तथा राजा लोमपाद के जाने पर दशरथ का मन संतुष्ट हो गया। ६४ जब अयोध्या पुर की चहल-पहल समाप्त हुयी। तब दरिद्र लोगों को अन्न तथा वस्त्र प्रदान किये। ६५ हाट-वाट-गली-घाट में लूट मच गई। भण्डार से प्रचुर धन दिया गया। ६६ कैकय नरेश के दोनों पुत्र चल दिये और कौशल्या तथा सुमित्रा के भाई लोग भी चले गए। ६७ राजा ने सबको आनन्दपूर्वक विदाई दी। उनका मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान विकसित था। ६८ हे मेरी प्रिया! तुम इसके पश्चात् सुनों। नरनाथ ने वशिष्ठ को नमस्कार किया। ६९ उसके अनन्तर जो बात हुई हे गिरिराजनन्दिनी उसे एकाग्र मन से सुनो। २८७० आठ माह पूरे होने पर नवाँ महीना आ गया। अब वह बहुधा रानियों का आलिंगन नहीं कर पा रहे थे। २८७१ नव माह व्यतीत होने पर दसवाँ महीना आया। समय की गणना करने पर दस माह पूरे हो गए। ७२ दस माह पूर्ण होकर चौविस दिन व्यतीत हो गए। अष्टमी तिथि में नवमी लग गई। ७३ उस दिन चैत्र का गुण्डीचा उत्सव (जगन्नाथ पुरी के गुण्डीचा रानी के मन्दिर में होने वाला उत्सव) था। वह भगवान शिव का महोत्सव होता है। ७४ गुण्डीचा का रासोत्सव तीनों लोकों का सार है। भगवान शिव और पार्वती तालध्वज रथ पर विराजमान हुए। ७५ उन पंचानन ने एकाग्र कानन के कपिलास की कन्दरा में अनेक स्थानों पर आवास किया। ७६ उसी दिन कौशल्या के शरीर

पेटवथाइ शुळ जे आसे घन घन। देखिण मुदुसुलि जगाये राजन ७८
भो देव महाराजा नृपति शेखर।श्रीअंग आळस्य हेला मझिआ राणींकर ७९
पुण दासी जणे आसि एसन समये। शुण देव अजोध्या नृपति कुळ राये२८८०
सान पाटराणी सुमित्रांक पेट व्यथा। शुणि भितरकु बिजे कले महारथा२८८१
सकळ राणीमानंकु कहिले से राइ। तिनि राणींकि जग सकळे तुम्भे रहि ८२
कहिण जे बाहारकु अइले नरपति।बशिष्ठ सुमन्त घेनि बसिण भाळन्ति ८३
पाटराणी मानंकर पेट व्यथा कथा। शुणिण बोइले जे बशिष्ठ महाज्ञाता ८४
शुण हे दशरथ नृपति तिळेक।मास सम्पूर्ण हेलाणि कर हे एबे लेख ८५
एहा कहि बशिष्ठ आषाढ़ मास अन्ते।
पूर्णमी दिन रजस्वळा राणी जे हुअन्ते ८६
सेदिन राणी माने चरु जे कले ग्रास। दिनवतारे लेखिले सम्पूर्ण दशमास ८७
चैत्र शुक्ल अष्टमी अन्ते नवमी जे तिथि। दिनक्षय्र लेखिले नबमी से दिनटि ८८
पूर्णमी लेखारे दश मास जे सम्पूर्ण। प्रापत पुत्र तुम्भंकु हेब हे राजन ८९
दिन गड़ि गले पुण दुहिता हेब जात। पूर्बर कथाए जे पुराणे बिख्यात२८९०
बिशेषे आषाढ़ मास परिपूर्ण गला। श्रावण मासरु बढ़ि मास जे होइला२८९१

में पीड़ा की आकुलता हुई। उनका अन्तराल चैतन्य हो गया। उनकी श्वास तीव्र गति से चलने लगी। ७७ पेट में शूल सी पीड़ा प्रखरता से होने लगी। यह देखकर दासी ने राजा को सचेत कर दिया। ७८ हे देव नृपति शेषर महाराज! मँझली रानी का शरीर आलस्यपूर्ण हो गया है। ७९ इसी समय फिर एक दासी ने आकर कहा हे अयोध्याधिपति! सुनिये। २८८० छोटी महारानी सुमित्रा के पेट में व्यथा हो रही है। यह सुनकर महारथी दशरथ भीतर चले गए। २८८१ उन्होंने समस्त रानियों को बुलाकर कहा कि तुम सब तीनों रानियों की देखभाल करो। ८२ यह कहकर महाराज बाहर आए। वह वशिष्ठ तथा सुमन्त के साथ बैठकर विचार विमर्श करने लगे। ८३ तीनों रानियों के उदर पीड़ा की बात सुनकर महाज्ञानी वशिष्ठ बोले। ८४ हे नृप-तिलक दशरथ! सुनो। अब गणना करके देखो। महीने पूरे हो चुके हैं। ८५ वशिष्ठ ने आषाढ़ मास की समाप्ति पर पूर्णमासी के दिन रानियों के रजस्वला होने की बात कही। ८६ उस दिन रानियों ने चरु भक्षण किया था। दिनों का लेखा-जोखा करने पर दस माह पूरे हो चुके हैं। ८७ चैत्र शुक्ल अष्टमी के अन्त में नवमी तिथि आती है। दिन समाप्त होने पर वह नवमी का दिन होगा। ८८ पूर्णमासी को लेने से दस माह पूर्ण हो चुके हैं। हे राजन! अब आपको पुत्र प्राप्त होंगे। ८९ दिन बढ़ जाने से पुत्री उत्पन्न होगी। पूर्वकाल से यह बात पुराणों में विख्यात है। २८९० विशेष प्रकार से आषाढ़ माह पूरा हो गया है। श्रावण होने पर एक माह हो चुका है। २८९१ अधिक माह की

मास वढ़ा लेखिले नव मास पचिश दिन ।
दशमास सम्पूर्ण केउँ नारी जे प्रसवीण ९२
उणा अधिकरे पुण पाआन्ति पुत्र लाभ । एहा अटइ जे तुम्भ पक्षरे सुलभ ९३
सम्पूर्ण दिन प्रसव हेला काळ स्थिति । एथिकि भ्रान्ति तुम्से नकर नरपति ९४
शुणिण दशरथ सुमन्तकु वोलि । समस्त पुत्र वन्ति अणाअँ मुदु सुलि ९५
शुणिण सुमन्त मन्त्री वेगे चळिगला । आज्ञा प्रमाणे पुत्र वन्तिकि अणाइला ९६
पुत्रवन्ति देखि राजा मने हरष हेले ।भितरकु जाअ वोलि राजा आज्ञा वेले ९७
एसनक समये शुण गो तुम्भे पुण । लोमपाद राजांकर शते राणी पुण ९८
चइत्र शुक्ल जे पञ्चमी दिन पुणि । शते पुत्र जात कलेक शते राणी ९९
पुत्रंक जन्म देखि लोमपाद राये । मनरे हर्ष होइण उत्सव कराए२९००
पात्रकु डकाइ चम्पावती देश राये । वन्धु जन मानंकु निमन्त्रण कराए२९०१
शते राणी पिता घरकु पेषिले खड़ि रत्न। संगे ब्राह्मणंकु घेनि चळिले तुरित २
अजोध्याकु खड़िरत्न संगते ब्राह्मण । पाञ्चदिने प्रवेशिले अजोध्या भुवन ३
दशरथंक छामुरे जणाइले जाइ । लोमपाद राजांकर शते पुत्र होइ ४
शुणिण दशरथ राजा हरष होइले । धन रत्न आणि वधाइ तांकु देले ५
खड़िरत्न विप्रवर चळिलेक पुण । चम्पावती भुवनरे प्रवेश जाइण ६

गणना करने से नौ महीने पच्चीस दिन हुए । दस माह पूरे होने पर जो नारी प्रसव करती है। अधिक समय यदि विषम हो तो उसे पुत्र प्राप्त होता है। तुम्हारे पक्ष में यह सुलभ है। ९२-९३ काल की स्थिति के अनुसार पूरे दिनों में प्रसव हो रहा है। हे नरपति ! तुम इसके लिये सन्देह मत करो। ९४ यह सुनकर दशरथ ने सुमन्त से कहा कि आप समस्त पुत्रवती दासियों को बुलवाइये। ९५ यह सुनकर मंत्री सुमन्त शीघ्र ही चला गया। आज्ञानुसार उसने पुत्रवती दासियाँ बुलवा लीं। ९६ पुत्रवती दासियों को देखकर राजा प्रसन्न हो गए। उन्होंने उन्हें भीतर जाने की आज्ञा दी। ९७ हे गौरी ! सुनो। इसी समय राजा लोमपाद की जो सौ रानियाँ थीं। उन्होंने चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन सौ पुत्रों को जन्म दिया। ९८-९९ पुत्रों के जन्म को देखकर राजा लोमपाद ने मन में प्रसन्न होकर उत्सव आयोजित किये। २९०० चम्पावती नरेश ने सभासद को बुलाकर वन्धु-वान्धवों को आमंत्रित किया। २९०१ सौ रानियों के पितृ सदनों में उन्होंने गणका भिजवा दिये। वह लोग ब्राह्मणों को साथ लेकर शीघ्र ही चल पड़े। २ वह ब्राह्मण खड़िरत्न (गणक) के साथ पाँच दिनों में अयोध्या नगर में पहुँच गए। ३ उन्होंने दशरथ के निकट जाकर राजा लोमपाद के सौ पुत्र उत्पन्न होने की बात कही। ४ यह सुनकर राजा दशरथ प्रसन्न हो गए। उन्होंने उन्हें धन रत्न देकर वधाई दी। ५ श्रेष्ठ खड़िरत्न ब्राह्मण चल दिये और वापस चम्पावती राज्य में पहुँच गए। ६

राजांकर आगरे पउरोषरे कहि । अजोध्या नृपति शुणि हरष मन होइ ७
पार्बती बोइले तुम्भे शुण हे इशान । लोमपाद राजार शुणिलि पुत्र जन्म ८
दशरथ राणीमाने दुःख पाए एणे । तांक पुत्र जन्म तुम्भे कह पञ्चानने ९
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती । दशरथ राणींकर उदबेग मति२९१०
थोकाए बेळरे भाजिला मूत्र पुड़ा ।धाईंक उपरे राणी दिअन्ति कर भड़ा२९११
पुण शुळ आसन्ते प्रसव निकटत । बिकळे कौशल्या सुमरे दइबत १२
नारायणंक सुदया धन्य राणीर पेट । गर्भरे धरि थिले से ब्रह्माण्डर नाथ १३
सातद्वीप सात सिन्धु नदी घोर बन । जळ स्थळ पर्बत जे चउद भुवन १४
दश दिग पुणि जे आवर कपिळास ।चन्द्र सूर्ज्य जाहार करन्ति गर्भे बास १५
से प्रभु अछन्ति पुणि कौशल्या पेटरेत । गर्भे धरि थिले नारी जगतर नाथ १६
कौशल्या गर्भरे जे प्रभु हेले स्थिति । देह धरि सुमरे राणी जगतर पति १७
भगत बत्सळ अटे सेहु जे मुरारी । दशरथ राणी गर्भे बिजे नरहरि १८
पुत्र गति पाइले जे नर देह धरि । जेणु से बासुदेव गर्भरे बिजे करि १९
किस पट्टान्तर मुँ जे देबइँ तांकु पुण । जेउँ गर्भे बिजय चउबाहा जाण२९२०
अनेक पुण्यरे पाइले सेहु फळ । दुःखरे मन तार करे से बिकळ२९२१

उन्होंने राजा के समक्ष गौरवपूर्ण वर्णन करते हुए कहा, अयोध्या नरेश के मन में यह समाचार पाकर बहुत हर्ष हुआ। ७ पार्वती ने कहा हे ईशान ! आप सुनिये। हमने राजा लोमपाद के पुत्रों के जन्म के विषय में सुन लिया। ८ हे पंचानन ! दशरथ की रानियों को कष्ट हो रहा था। उनके पुत्रों के जन्म की कथा आप हमें सुनाइये। ९ शंकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनो। दशरथ की रानियों के पेट में व्यथा थी। कुछ समय के पश्चात् मूत्रपिण्ड फट गया। रानी ने धाई के ऊपर हाथों का भार डाल दिया। २९१०-२९११ फिर पीड़ा का जोर होने से और प्रसव काल निकट आने पर व्याकुलता से कौशल्या ने भगवान का स्मरण किया। १२ भगवान की कृपा से रानी की कोख धन्य हो गई। क्योंकि उन्होंने ब्रह्माण्ड के स्वामी को गर्भ में धारण किया था। १३ जिसके गर्भ में सात द्वीप सात समुद्र नदियाँ घोर कानन जल स्थल पर्वत चौदह लोक दसों दिशायें कैलाश चन्द्र तथा सूर्य वास करते हैं वह भगवान कौशल्या के उदर में थे और वह रानी संसार के स्वामी को गर्भ में धारण किये हुये थी। १४-१५-१६ कौशल्या के गर्भ में देह धारण करके भगवान स्थित हो गये थे। रानी जगतनाथ का स्मरण कर रही थी। १७ वह भगवान मुर दैत्य का-नाश करनेवाले और भक्त वत्सल हैं। वह हरी नर रूप में दशरथ की रानी के गर्भ में विराजमान थे। १८ उन्होंने नर-देह धारण करके पुत्र की गति प्राप्त की थी और इसीलिये वह वासुदेव गर्भ में विराजमान थे। १९ हम उसकी तुलना किससे दें। जिस गर्भ में चतुर्भुज भगवान विराजमान हों। २९२० उन्हें अनेक पुण्यों का

श्रीहरि नाराय़ण सुमरे कउशल्या। धर्म बळरे पुत्र जन्म हेले तोरा २२
स्वर्गरे आनन्द हेले जाणि देवलोक। विचारिले आजहुँ गला आम्भ दुःख २३
शून्य़रे जान चढ़ि रहिले दिगपाळे। ऐरावत गजपरे इन्द्र विजे कले २४
वेदवर विजे कले हंस वाहानरे। देवे विजे कले जे जाहार आय़ुधरे २५
तेतिश कोटि देवे जेञ्ञा आय़ुधे मिळि। चौद कोटि शिवगण घेनि त्रिपुरारी २६
अठर कोटि नागवळ घेनि नाग राजा। धीरे धीरे चळिले काश्यप तनुजा २७
सकळ देवताय़े शून्य़रे विजे देखि। बळराम दास तांक चरणे नमिलाटि २८
कर जोड़ि स्तुति करे देवंक पादे पड़ि। नाराय़ण रख वोलि तुण्डरे उच्चारि २९
पार्बती बोइले देव शुण हे महेश्वर। सकळ देवता ठुळ शून्य़ मण्डळर२९३०
किस बिचार से करिबे आसि करि। से कथा फळाइ मोते कह त्रिपुरारी२९३१
ईश्वर वोइले तुम्भे शुण भगवती। देव गणे जाणि करि आसि जे अछन्ति ३२
चारि जुग सहिते कर पत्र जोड़ि उभा। नवग्रहे मिळिवारु भिआण कले सभा ३३
देव गुरु बृहस्पति पाञ्जि धरि कहि। वतिश वर्षे चारि रावण मरिबइँ ३४
अहल्या मुकत हेवे बार वरषरे। ताड़काकु मारिवेसे सेहि बय़सरे ३५
विश्वामित्र जाग जाइ रखिवे देवहरि। कउशिक ऋषि आसि नेवे वरण करि ३६

फल प्राप्त हुआ था। (इस समय) रानी का मन दुःख से व्याकुल था। २९२१ कौशल्या भगवान वासुदेव का स्मरण कर रही थी। धर्म के प्रभाव से उससे श्रेष्ठ पुत्र का जन्म हुआ। २२ यह जानकर देवता लोग स्वर्ग में प्रसन्नता से भर गये और विचार करने लगे कि आज से हमारा दुःख समाप्त हो गया। २३ द्विगपाल आकाश में विमानों पर चढ़े थे। ऐरावत हाथी पर चढ़कर देवराज इन्द्र उपस्थित हुये। २४ हंस वाहन पर ब्रह्मा जी विराजमान थे और अपने-अपने आयुध लेकर देवतागण उपस्थित हुये। तैंतीस करोड़ देवता अपने-अपने आयुध लिये हुये थे। शंकर जी के साथ चौदह करोड़ गण थे। २५-२६ नागराज के साथ अठारह करोड़ नाग सेना थी। कश्यप तनुज धीरे-धीरे चले। २७ समस्त देवताओं को आकाश में उपस्थित देखकर बलराम दास ने उनके चरणों में नमन् किया। २८ उन्होने देवताओं के पैरों में गिरकर हाथ जोड़कर स्तुति की और मुख से कहा कि हे भगवान ! रक्षा करो। २९ पार्वती बोली हे देव महेश्वर ! सुनो। सारे देवता आकाश में उपस्थित थे। उन्होंने आकर क्या विचार किया। हे त्रिपुरारी ! वह कथा आप हमसे खोलकर कहिये। २९३०-२९३१ शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनो। यह समाचार जानकर ही देवतागण आये थे। ३२ चारों युगों के साथ वह हाथ जोड़कर खड़े थे। नवग्रहों के आने पर उन्होने सभा संयोजित की। ३३ देवगुरु वृहस्पति ने पत्रा लेकर कहा कि बत्तीस वर्षों में चारों रावण नष्ट हो जायेंगे। ३४ बारह वर्ष पर अहिल्या मुक्त होगी और वह उसी अवस्था में ताड़का का संहार करेंगे। ३५ भगवान वासुदेव जाकर विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करेंगे। कौशिक ऋषि

शिवधनु भांगिण जानकी बिभा हेबे। पर्शुरामर बळ भेटरे हरिबे ३७
अजोध्यारे रहिबे षड़ जे बरष। नाना बिद्या पढिण होइबे हरष ३८
अरण्यबासी हेबे चउद बरष। एथिरे राम घरणी हरिब दशायुष ३९
जानकी चोराइ तेर मास जे रखिब। चौद मास सात दिने तिनि रावण मरिब२९४०
सत्रमुखा रावण मरिब सेथिर बार दिने।
लंकारे भेट हेबे चारि भाइ सेहि दिने२९४१
जम्बुद्वीप लक्षे राजा होइबे जाइ ठुळ। रामायण जुद्ध शेष देखिबे सकळ ४२
तिनिभाइ जाक तिनि रावण नाशिबे। जनक दुहिता सत्र मुखाकु मारिबे ४३
एते कहिण तुनि होइण देवगुरु। शुणिण सकळ देबे हेले कल्पतरु ४४
दुन्दुभि बजाइ देबे पुष्प वृष्टि कले। गाइले किन्नरी अपसरी जे नाचिले ४५
देबे आनन्द भर होइले सकळ। अजोध्या देशे आनन्द हेले नृपबर ४६
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो भगवती। नर देह घेनिण बिष्णु जे उत्तपति ४७
कउशल्यार पुत्र जन्म देखिण मुदुसुलि।
राजा आगे जणाइबि बोलिण बिचारिलि ४८
धाइ मुदुसुलि बेगेण चळि गले। राजांकर आगरे प्रबेश जाइ हेले ४९
कर जोड़ि बोइले बधाइ राजा देवा। कौशल्यार पुत्र जात तेसने सुरदेव२९५०

आकर उन्हें वरण करके ले जायेंगे। ३६ शिव धनुष का खंडन करके जानकी से विवाह होगा। परशुराम से भेंट करके वह उनके बल को क्षय करेंगे। ३७ वह छै वर्ष अयोध्या में रहकर नाना प्रकार की विद्याएँ सीखकर प्रसन्न होंगे। ३८ चौदह वर्ष में वह बनवासी होंगे और इसी बीच दशानन उनकी पत्नी का हरण करेगा। ३९ वह जानकी को चुराकर तेरह महीनों तक रखेगा। फिर चौदह महीने और सात दिनों में तीन रावण का संहार होगा। २९४० उसके बारहवें दिन सहस्रकण्ठ रावण मारा जायेगा। उसी दिन लंका में चारों भाइयों की भेंट होगी। २९४१ जम्बूद्वीप के एक लाख राजा वहाँ जाकर एकत्रित होंगे और वह समस्त रामायण कालीन युद्ध का अंत देखेंगे। ४२ तीन भाई जाकर तीन रावणों का विनाश करेंगे और जनकनन्दिनी सहस्रकण्ठ का संहार करेंगीं। ४३ इतना कहकर देवगुरु किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। यह सुनकर सारे देवता कल्पतरू हो गये अर्थात् सफल काम होगए। ४४ देवताओं ने दुन्दुभी बजाकर फूलों की वर्षा की। किन्नरियाँ गाना गाने लगीं और अप्सरायें नाचने लगीं। ४५ तब सभी लोग आनन्द से भर गये और अयोध्या के श्रेष्ठ राजा प्रसन्न हो गये। ४६ शंकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनो। नर देह धारण करके विष्णु जी उत्पन्न हुये। ४७ कौशल्या के पुत्र जन्म को देखकर दासी ने राजा के समक्ष समाचार देने का विचार किया। ४८ धाई और दासी शीघ्र ही राजा के समक्ष जा पहुँचीं। ४९ उन्होंने हाथ जोड़कर राजा से कहा कि बधाई हो। कौशल्या ने देवता के समान

शुणिण नृपवर हरष मन हेला। आनन्दरे नृपवर सन्तोष होइला२९५१
धाइकि बोइले वधाइ निअ गो हरष।कैकेय़ा राणींक खबर जाइण नेइ आस ५२
कथा हुअन्तेण तेणे शुभइ मुख गोळ। अइले मुडुसुलि कहिले छामुर ५३
भो देव महाराजा कैकेय़ा पाटराणी। पुत्रेक जन्म कले जे सने दिन मणि ५४
परम तोष हेले अजोध्य़ा पुरराय़े। बिचारिले प्रापत मोते जे तनय़े ५५
ए समय़े धाइ बार्त्ता आणि देले। सुमित्रा पाटराणी पुत्रेक जन्म कले ५६
तार पछे आर धाइ आसिण कहइ।सुमित्रांकर आहुरि पुत्रेक जन्म होइ ५७
धर्म बळरे चारि पुत्र जन्म होइले। काम देवंकु जिणि सुन्दर दिशे भले ५८
शुणि करि नृपमणि आनन्द मन पुण। देलेक बधाइ जे हरषे धनरत्न ५९
जे जाहा आनन्दरे धन नेले पुण। धाइ मुडुसुलि जे परीवारी जाण२९६०
केहु घेनि चळिले वस्त्र अळंकार। थाळि झरि गरिआ डुबार अपार२९६१
भण्डार घरु सबु नेउ छन्ति वहि। देखिण आनन्द जे अजोध्य़ार साइँ ६२
चक्रधर देव जहुँ से जन्म हेले। आनन्दरे हरष समस्ते होइले ६३
गज अश्व मुकुळा होइण पुण वुले। गउड़ गोष्ठरे गाव स्थकिते रहिले ६४
बहि जिबा नदी जे होइलेक स्थिर। गहळ होइला जे अजोध्य़ा नामे पुर ६५

पुत्र उत्पन्न किया है। २९५० यह सुनकर राजा का मन प्रसन्न हो गया और वह आनन्द से संतुष्ट हो गये। २९५१ उन्होने भाई से प्रसन्नतापूर्वक बधाई लेने के लिये कहा और फिर जाकर रानी कैकेयी के समाचार ले आने को कहा। ५२ बातचीत होते-होते सभी मुखराव सुनायी पड़ा। दासी ने आकर उनसे कहा हे देव ! महाराज ! महारानी कैकेयी ने सूर्य के समान एक पुत्र को जन्म दिया है। ५३-५४ अयोध्याधिपति अत्यन्त प्रसन्न हुये। उन्होंने विचार किया कि मुझे पुत्र प्राप्त हो गये हैं। ५५ इसी समय धाई ने महारानी सुमित्रा के एक पुत्र उत्पन्न करने का समाचार लाकर दिया। ५६ उसके पीछे-पीछे एक और धाई ने आकर कहा कि सुमित्रा के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ है। ५७ धर्म के बल पर चार पुत्र उत्पन्न हुये हैं जो कामदेव पर विजय प्राप्त करते हुये सुन्दर दिखाई दे रहे है। ५८ यह सुनकर नृपशिरोमणि दशरथ का मन प्रसन्न हो गया। उन्होंने प्रसन्न होकर धन, रत्न बधाई में दिये। ५९ वहाँ पर जितनी भी दासियाँ धाई तथा सेवक थे। सभी ने अपना-अपना धन ग्रहण किया। २९६० कोई अपने वस्त्र और अलंकार लेकर चल दिया। असंख्य थाली, झारी, गरिया, आदि लोग भण्डार घर से ढोकर ले जा रहे थे इसे देखकर अयोध्या नरेश प्रसन्न हो रहे थे। २९६१-६२ भगवान चक्रधारी ने जब जन्म ग्रहण किया तो सभी हर्ष से भर गये। ६३ हाथी, घोड़े मुक्त विचरण कर रहे थे। ग्वालों की गौशालाओं में गायें स्तब्ध थीं। ६४ बहती हुई नदी स्थिर हो गई। अयोध्या नाम के नगर में चहल-पहल मच गई। ६५ मयूर-शुक-पिक मंगल गीत गाने लगे। नट तथा

शारी शुक पिक मंगळ गीत गाइले । नृत्यकारी नटकारी आगरे नृत्य कले ६६
अठर कोटि रथी जे बेश होइ बसि । राजार सिंहद्वारे मिळिलेक आसि ६७
बार लक्ष हस्ती घेनि माहुन्त प्रबेश । देखिण नृपति जे मनरे हरष ६८
एमन्त समयरे बाइशि कोटि अश्व । सज करि सिपाही जे मिळिले तुरित ६९
सारिणि बेनि लक्ष गोपाळ बेनि कोटि । पादान्ति बतिश लक्ष ठुळ हेले सेठि२९७०
सामन्त पात्र मन्त्री संगते सरदार । सबुंकु बधाइ जे देले नृपबर२९७१
मेलाणि होइण जे समस्त चळिगले । मनरे आनन्द जे समस्ते होइले ७२
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । राजांकर आनन्द जे केहु कहि पारि ७३
थेण्डुआ जुर कले कन्दि बिकन्दिरे । हाट बाट जुर हेला राजा हुकुमरे ७४
साधुत माने पशिले किळिण कबाट ।राज्य जाक हालहोलि पुर हाट बाट ७५
मेलारे थिबा पदार्थ हुरिआ जुर कले । काहार घरु अनेक धन बहि नेले ७६
हटारि बजारि धोबा तुठ जुर करि । दोकान बजार जाके पड़िला हाल होलि ७७
नव घड़ि रात्र ठारे श्रीराम जन्म हेले । बशिष्ठंकु दशरथ डकाइ कहिले ७८
दश घड़ि रजनीरे तिनि पुत्र जात । चारि कुमर जोग लग्न बुझिबा उचित ७९
सुमन्त बसिले बेगे खड़ि रत्न डाकि । जातक पत्र जोग लग्न बेगे लेखि२९८०
पण्डित ज्योतिष पाड़िले ग्रह कोठि । बोले बृहस्पतिकर तिनि पाद दृष्टि२९८१

नाचने वाले नृत्य करने लगे। ६६ अठारह करोड़ रथी सुसज्जित बैठे थे। वह राजा के सिंहद्वार पर आकर एकत्रित हो गये। ६७ बारह लाख हाथी लेकर महावत आ पहुँचे जिन्हें देखकर राजा के मन में प्रसन्नता छा गई। ६८ इसी समय बाइस करोड़ घोड़े सजाकर तुरन्त ही सिपाही आ गये। ६९ वहाँ पर दो लाख पालकियाँ, दो करोड़ गोपाल तथा बत्तीस लाख पैदल सिपाही एकत्रित हो गये। २९७० श्रेष्ठ राजा ने सामंत सभासद मंत्री तथा सरदारों के साथ सबको बधाई दी। २९७१ सब लोग विदा होकर चले गये और सभी के मन प्रसन्न थे। ७२ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् राजा के आनन्द का वर्णन कोई नहीं कर पा रहा था। ७३ नदी, घाट गली-कूचे तथा हाट-बाट में राजा की आज्ञा से लूट मच गई। ७४ व्यापारी लोग द्वार बंद करके भीतर घुस गये। सम्पूर्ण राज्य के हाट-बाट में हड़कम्प मच गया। ७५ मेला के पदार्थ शोर मचाकर लूट लिये गये। किसी-किसी के घर से लोग बहुत सा धन ढो ले गये। ७६ हाट-बटोही गली-घाटों में लूट करने लगे, बाजार की दुकानों में हड़कम्प मच गया। ७७ नौघड़ी रात्रि में श्रीराम का जन्म हुआ। दशरथ ने वशिष्ठ को बुला कर कहा। ७८ दस घड़ी रात्रि में तीन पुत्र उत्पन्न हुये हैं। आप चारों कुमारों का योग तथा लग्न उचित रीति से समझ लें। ७९ खड़ी रत्न गणकों को लेकर शीघ्र ही सुमंत बैठ गये। जन्म पत्र के योग तथा लग्न पर शीघ्र ही विचार हुआ। २९८० पंडित तथा ज्योतिषियों ने ग्रहों के प्रकोष्ठ बनाये। उन्होंने

धनु लग्नरे जात बड़ जे पुत्र पुण। मकर लग्नरे जात तिनि पुत्र जाण ८२
पुष्या नक्षत्र ककड़ा राशि पुण होइ्। प्रथमे जन्म हेले जेवण तनय़े ८३
आर पुत्रंकर अश्लेषा नक्षत्र। आर दुइ पुत्रंकर अश्विनी नक्षत्र ८४
ककडा राशिरे जन्म हेले चारि पुत्र। क्षेत्र भिन्न भिन्न होइला संयुक्त ८५
दुइ गोटि ग्रह जे शेषरे उतपत्ति। एमन्ते चारि ग्रह शुभ जोगे छन्ति ८६
धनु लग्नरे जात नक्षत्र आवर। एका मात्र देवगुरु होइण बाहार ८७
ए चारि पुत्रे धार्मिक हेबे नर साइँ। तिनि पुरे वळवन्त सरि केहि नाहिँ ८८
धार्मिक सुजन जे हेबे शान्त शीळ। साधु महिँमा तुम्भर उद्धरिबे कुळ ८९
भगीरथकु बळिण नाम बिकशिबे। तिनि पुरे प्रशंसा बहुत पाइबे२९९०
मानधाता चक्रबर्त्ती हरि जे चन्दन। एमानंक उपरे बड़ हेबे पुण२९९१
सगर राजा परा उपर वंशे थिले। सप्त सागर खोळाइ कीर्त्ति रुहाइले ९२
तांक ठारु अधिक होइब पुण जश। दुष्टजन नाशिण पाळिबे पुण सन्थ ९३
ए बचन खडि रत्न राजारे कहिले। ऋषि ब्राह्मण मन्त्री जन तोष हेले ९४
राशि नक्षत्रकु जाणिले सर्बे पुणि।लक्षे ब्राह्मण ड़काइ भोजन देले जाणि ९५
ईश्वरंकर शिररे लक्षे गो दोहन।चण्डी अपराजिता शुणिले लक्षे ब्राह्मण ९६

कहा कि बृहस्पति की तीन स्थानों पर दृष्टि है। २९८१ बड़ा पुत्र धनु लग्न में उत्पन्न हुआ है। अन्य तीनों पुत्र मकर लग्न में उत्पन्न हुये हैं। ८२ प्रथम जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका पुष्य नक्षत्र और कर्क राशि थी। ८३ दूसरे पुत्र का अश्लेखा नक्षत्र था। अन्य दोनों पुत्रों के अश्विनी नक्षत्र थे। ८४ चारों पुत्रों का जन्म कर्क राशि में हुआ। भिन्न-भिन्न क्षेत्र संयुक्त हो गए। ८५ दो ग्रहों की उत्पत्ति अन्त में हुई। इस प्रकार चारों ग्रह शुभ योग में हैं। ८६ और नक्षत्र धनु लग्न में उत्पन्न हुए। एकमात्र देवगुरु बृहस्पति ही बाहर थे। ८७ हे नरेश ! यह चारों पुत्र धार्मिक होंगे। तीनों लोकों में इनके वल की समानता करने वाला कोई नहीं होगा। ८८ यह धार्मिक सुजान शान्त तथा शीलवान होंगे। आपकी महिमा धन्य है। यह कुल का उद्धार करेंगे। ८९ भगीरथ से भी अधिक इनका यश फैलेगा। यह तीनों लोकों में प्रचुर प्रशंसा प्राप्त करेंगे। २९९० यह चक्रवर्ती मान्धाता तथा हरिचन्दन से भी बढ़कर होंगे। २९९१ पूर्व पुरुष राजा सगर हुए हैं जिन्होंने सप्त सागर खुदवा कर कीर्ति कमाई है। ९२ इनका यश उनसे भी अधिक होगा। यह दुष्टों का दलन करके सन्तों का प्रतिपाल करेंगे। ९३ खड़िरत्न (गणक) ने यह वाक्य राजा से कहे। ऋषि ब्राह्मण तथा मंत्रीजन संतुष्ट हो गए। ९४ सबने राशि तथा नक्षत्रों के विषय में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने एक लाख ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन दिया। ९५ शिवलिंग के मस्तक पर एक लाख गाये दुही गयीं। अपराजिता

बिष्णु देवतांकु तृप्ति सेहु करि । नाना बर्णे भोग राग कराए दण्डधारी ९७
लक्षेक ब्राह्मण जे सहस्र नामगुणि । एकोइश दिन जाए बरण हेले जाणि ९८
देबी मानंकु पुण उत्सव कराइले । बोदा पोढुअ छागळ अनेक पुण देले ९९
आबर इष्ट देवता बिरञ्चि नारायण । अनेक भोग राग कलेक राजन३०००
सुमन्तंकु ड़काइण राजन आज्ञा देले । अजोध्यारे उत्सव जे कराअ बोइले३००१
शुणिकरि मन्त्रीवर बेगे चळि गला । चउषठि दाण्डरे धेण्डुरा फेराइला २
बड़ दाण्ड कन्दि बिकन्दि पात्र सामन्त उआस।
सकळ स्थाने उत्सव कलाक बिशेष ३
केउँ ठारे नृत्य जे केउँ ठारे गीत । केउँ ठारे छामुण्डिआ बिहित ४
केउँ ठारे बाद्य जे मर्द्दळ कंसाळ । केउँ ठारे जात्रा जे कराए महीपाळ ५
एमन्ते अजोध्यारे नवर तेर कला । राजार आगरे जाइ प्रबेश होइला ६
कर जोडि आगरे जे कहिले बुझाइ । शुणिण राजन जे परम तोष होइ ७
पात्र मन्त्री ड़काइण देले धन शाढ़ी । जे जाहा नवरकु गले हाती चढि ८
समस्तंकु बधाइ करिण धन देले । अश्व हस्ती बधाइ करिण सर्मापिले ९
थेण्ट खण्टिआ माने धन बहि नेले । हरिआ जुरिआ जे सकळ जुर कले३०१०
नटकारी नृत्यकारींकि बोधिले धन देइ । धन बस्त्र पाइण समस्ते तोष होइ३०११

चण्डी पाठ एक लाख ब्राह्मणों से सुना गया । ९६ राजा ने अनेक प्रकार के भोग-राग कराकर विष्णुदेव को तृप्त किया । ९७ एक लाख ब्राह्मणों ने सहस्र नाम का पाठ किया । इक्कीस दिनों तक आमंत्रण चलता रहा । ९८ अनेक भैंसें पड़वे तथा बकरे देकर देवियों के उत्सव मनाये गये । ९९ राजा ने इष्ट देवता विरंचि नारायण को नाना प्रकार के भोग-राग अर्पित किये । ३००० राजा ने सुमंत को बुला कर अयोध्या में उत्सव मनाने की आज्ञा दी । ३००१ यह सुनकर श्रेष्ठ मंत्री शीघ्र ही चला गया और उसने चौसठ मार्गो पर ढिंढोरा पिटवा दिया । २ राजमार्ग गली कूंचों सभासद सामंतों के निवास तथा सभी स्थानों पर विशेष उत्सव मनाये गये । ३ कहीं पर षटकोण चदोवे लगे थे । कहीं नाच और कहीं गाना हो रहा था । ४ कहीं पर ढोल तथा झांझ बाज रहे थे । कहीं पर राजा ने नाटक आयोजित किये थे । ५ इस प्रकार अयोध्या राजमहल के कर्मचारी राजा के समक्ष जा पहुँचे । ६ उन्होंने हाथ जोड़कर राजा से समाचार कहे जिसे सुनकर राजा को अत्यन्त संतोष हुआ । ७ उन्होंने सभासद तथा मंत्री को बुलाकर धन तथा सरोपे प्रदान किये । फिर वह लोग हाथी पर चढकर अपने घर चले गये । राजा ने सबको बधाई देते हुये धन हाथी घोड़े समर्पित किये । ८-९ दु:खी दरिद्र धन ढो ले गये । लूटपाट मचाने वाले लोभी लालचियों ने सब लूट लिया । ३०१० नटों तथा नृत्यकारों को धन देकर संतुष्ट किया । धन वस्त्र पाकर सभी संतुष्ट हो गये । ३०११ प्रशंसा करते हुये भाटों को राजा ने संतुष्ट

भाट कए बार करन्ते तांकु बोधे राय्ये । दरिद्र लोकंकु पुण अन्न बस्त्र दिए १२
समस्तंकु प्रबोधि जे दशरथ पुण । गहळ भांगिण जे चळिले ततक्षण १३
राजा बिजे कले जे भितर पुरे जाइ ।देखिले चारि पुत्रंकर नाभि कटा होइ १४
चन्दन काठरे पुण एन्तुडि लागि अछि । एन्तुडि लगाइ जे पुत्र मानंकु सेकि १५
बुद्धिबन्त नारी माने संगरे बहुत । विधि बिधान मानसे करन्ति समस्त १६
नाभि कटा सरिबारु स्नान कराइले ।बास पाणि घेनि चारि पुत्र समार्जिले १७
एन्तुडि शेजरे पाट सुपाति मुचुळि ।इन्द्र गोविन्द चान्दुआ उपरे टाणि करि १८
धाईंकर हस्तरे धरा गाई दुध । राणीमानंक पाखरे प्रवेश कले बेग १९
प्राणरु अधिक करि प्रतिपाळि पुणि ।
धाई माने राणींकि तात्पर्ज्य कले जाणि३०२०
काशप अदिति पुण ब्रह्मांक शाप पाइ । दशरथ कौशल्या रूपे जात होइ३०२१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हेमबती । दशरथ घरे जे श्रीहरि उत्पति २२
पार्बती बोइले तुम्भे शुण पञ्चानन । बैकुण्ठ पुरकु तेजि जन्म नारायण २३
जन्म होइ किस कले कह प्राणनाथ । ईश्वर बोइले से कथा अटइ प्रत्यक्ष २४
दासी गण माने जे अनुआन रीति । नबरु बाहार होइ नग्ररे बुलन्ति २५
गालरे हळदी लगाइ नय्रने कज्ज्वळ । केउँ नारी बुलन्ति मुकुळा करिबाळ २६
बुकु पणन्तरे पुण मुखकु लुचान्ति ।रसिक पुरुष देखिले काख टेकि छन्ति २७

किया और दरिद्र लोगों को फिर से अन्न वस्त्र प्रदान किये । १२ सबको संतुष्ट करके दशरथ उसी समय सभा समाप्त करके चल दिये । १३ राजा ने अंत:पुर में जाकर देखा कि चारों पुत्रों का नाभि-छेदन हो चुका था । चन्दन की लकड़ी में एक विशेष प्रकार का पदार्थ लगा था जिससे पुत्रों की नाभि छेदन क्रिया की गयी थी । १४-१५ बहुत सी बुद्धिमान स्त्रियाँ थीं जो नाना प्रकार के विधि विधान कर रही थी । १६ नाभि-छेदन की समाप्ति पर चारों पुत्रों को सुगन्धित जल से स्नान मार्जन कराया गया । १७ शैया पर रेशमी बिछौने तथा गद्दी थी । ऊपर इन्द्र-गोविन्द चदोवा तना था । धाइयाँ हाथ में गाय का दूध लेकर शीघ्र ही जा पहुँची । १८-१९ धाइयों ने अपनी कार्य चातुरी से प्राणों से अधिक रानियों का प्रतिपालन किया । ३०२० कश्यप और अदिति, ब्रह्मा के शाप से दशरथ और कौशल्या के रूप में उत्पन्न हुये थे । ३०२१ हे हेमवती ! सुनों । इसके अनन्तर दशरथ के घर में वासुदेव उत्पन्न हो गये । २२ पार्वती बोली हे पंचानन ! आप सुनिये । भगवान ने बैकुण्ठ का त्याग करके जन्म ग्रहण किया । २३ हे प्राण नाथ ! जन्म लेकर उन्होने क्या किया । शंकर जी बोले कि वह बात तो प्रत्यक्ष है । २४ दासियाँ विभिन्न रीतियों के अनुसार महल से निकलकर नगर में घूमने लगी । २५ कोई स्त्री गालों में हल्दी तथा आँखों में काजल लगाये थी । कोई बालों को बिखराकर घूम रही थी । २६ वक्षस्थल के आँचल से वह मुख को छिपा लेती और रसिक पुरूष को देखने पर टिहुनी मार

नग्ररे नर नारी देखन्ति समस्त ।बोलन्ति बृद्ध राजा पाइले चारि पुत्र २८
एमन्त बिचार जे करन्ति नर नारी। समस्त राजांकर मंगळ बिचारि २९
केहु नारी पुरुष बोलन्ति भल हेला ।महाराजांक सन्ताप आजहुँ पुण गला३०३०
पाञ्च सात मेळ होइ बसिले से पुणि । बिचार करन्ति से सकळ कामिनी३०३१
के बोलन्ति भल जे राजाकु हेला पुण । के बोलन्ति सुखरे दिन सरिब जाण ३२
के बोलन्ति बहु सुलभ देखिबा पुणि । सूर्ज्य बंशरे कारेणी होइबे पुत्रमणि ३३
के बोलन्ति महाराजा बहुत दान देले ।के बोलन्ति राणी माने सुस्थरे रहिले ३४
के बोले राजार दिन सुस्थरे जे जिब ।के बोले एथि थिब जाहा हेब से देखिब ३५
एमन्त बिचार जे करन्ति नर नारी।
आनन्द होन्ति अजोध्या बासी सर्बे मिळि ३६
ठावे ठावे दशबिंश होइण मेळ रुण्ड ।पशा गञ्जपा शकटा खेळन्ति होइ संग ३७
के बोलन्ति ए राज्यकु भल हेला पुण ।
चाल आम्भे माने जिबा राजाकु देखिण ३८
पादान्ति धरि छन्ति ढाल काण्ड खण्डा। केहु धरि छन्ति बरछा धूप बादा ३९
केहु चढ़े अश्व केहु चढ़े हस्ति त्वरा । दाण्डरे जुझन्ति जे गउड़ जोड़ा जोड़ा३०४०
चारि सहस्र अशि कोश अजोध्या सिमा जाण ।
सबु ठारु पएकार अइले तणक्षण३०४१

देती। २७ नगर के सभी नर-नारी देखने लगते और कहते कि बूढ़े राजा ने चार पुत्र प्राप्त किये हैं। २८ सभी लोग राजा के कल्याण की कामना से इस प्रकार का विचार कर रहे थे। २९ कोई स्त्री, पुरूष कह रहे थे कि अच्छा हुआ। आज से महाराज का कष्ट दूर हो गया। ३०३० फिर सात पाँच स्त्रियाँ मिलकर बैठकर विचार करने लगीं। ३०३१ कोई कहती थी कि राजा का कल्याण हो गया। कोई कहती थी कि अब सुख से दिन व्यतीत होंगे। ३२ कोई कहती थी कि अब बहुत लाभ दिखाई पड़ेगा। यह पुत्र रत्न सूर्य वंश के उद्धार का कारण बनेंगे। ३३ कोई कह रही थी कि महाराज ने बहुत दान दिया है और कोई बोली कि रानियाँ अब स्वस्थ हैं। ३४ कोई कह रही थी कि अब राजा के दिन शांति से बीतेंगे। कोई कह रही थी कि अब यहीं रहेंगे और जो होगा उसे देखेंगे। ३५ अयोध्या की नर-नारियाँ इस प्रकार का विचार करते हुये सब मिलकर प्रसन्न हो रही थीं। ३६ जगह-जगह पर दस बीस इकठ्ठे होकर चौपड़ आदि खेल रहे थे। ३७ कोई कहता था कि इस राज्य का भला हो गया है। चलो हम लोग राजा के दर्शन करें। ३८ पैदल सिपाही ढाल, तलवार चमकदार बाण लिये हुये थे। ३९ कोई हाथी पर कोई घोड़े पर चढ़ा था। मार्ग में जोड़ों जोड़ों में अहीरों के युद्ध का प्रदर्शन हो रहा था। ३०४० चार हजार अस्सी कोस अयोध्या की सीमा है। सभी स्थानों से उस समय दूत

बाजइ बाजतुरि शंख जे महुरि। राजांक सिंहद्वारे पडिलाक हुरि ४२
नौ कोटि पादान्ति अश्‍व गज तुले। सरदार बिशोइ नायक सर्व मिळे ४३
गहळ शुणि राजा सिंहद्वारे बिजे कले। समस्तंकु शाढ़ी रत्नमान आणि देळे ४४
मेलाणि होइण सर्बे गले जेझपुर। से जिबारु ज्योतिष ड़काइ नृपवर ४५
बन्धुजन मानंकु सेजे भेदिले चिटाउ। दुइ जण चम्पावती नग्रकु गले सेहु ४६
चारि दिने चम्पावती नग्रे प्रबेश। लोमपाद राजांकु जणाए बिशेष ४७
शुणिण चम्पावती राजन तोष हेले।अन्तःपुरे जाइण राजा राणींकु कहिले ४८
गंगा जमुना बोइले शुण महाराजा। एकोइशा दिन बिजे करिबार श्रद्धा ४९
आम्भर पुत्र जन्म जाणिले सेहु पुण। एकोइशा दिन से न आसिले जाण३०५०
लोमपाद बोइले से अवश्य आसिथान्ते।अन्तःपुरे उद्‌जोग न हेबारु न आसन्ते३०५१
आम्भे गले आम्भंकु पचारिबे राये। एकोइ शाकु उत्सव कराइबे सिए ५२
राणीहंस बोइले बहन होइ जाअ। पुत्रंकर एकोइशाकु उत्सव कराअ ५३
बेनि राज्ये उत्सव कराअ पुत्रंकर। शुणिण परम तोष हेले नृपबर ५४
पात्र मन्त्री ड़काइ बुझाइ कहिले। सज होइण राजन बाहार होइले ५५

लोग आ गये। ३०४१ तुरही-शंख महुरी आदि बाजे बज रहे थे और राजा के सिंहद्वार पर कोलाहल मच गया। ४२ नौ करोड़ पैदल सिपाही हाथी घोड़ों पर सवार सरदार नायक आदि सभी वहाँ पर एकत्रित थे। ४३ कोलाहल सुनकर राजा सिंहद्वार पर उपस्थित हुये और उन्होंने सबको पगड़ी तथा रत्न आदि लाकर दिये। ४४ फिर विदा होकर सब अपने अपने घर चले गये। उनके जाने पर श्रेष्ठ राजा ने ज्योतिषी को बुलाया। ४५ उन्होंने बन्धु-बान्धवों को पत्र प्रेषित किये और दो व्यक्ति चम्पावती नगर को गये। ४६ चार दिनों में वह चम्पावती नगर में जा पहुँचे और उन्होंने बिशेषतयः राजा लोमपाद को समाचार दिये। ४७ यह सुनकर चम्पावती नरेश सतुष्ट हो गये और उन्होंने अंतःपुर जाकर रानियों को सन्देश दिया। ४८ गंगा और यमुना ने कहा हे महाराज! सुनिये। इक्कीसवें दिन वाले महोत्सव में हमारी जाने की इच्छा हो रही है। ४९ हमारे पुत्र के जन्म के विषय में सुनकर भी वह इक्कीसवें दिन के महोत्सव में सम्मलित नहीं हुये। ३०५० लोमपाद ने कहा कि वह अवश्य आते, परन्तु अंतःपुर के उद्योग न होने के कारण नहीं आये। ३०५१ हमारे जाने पर राजा हमसे पूँछेगे और वह इक्कीसवें दिन का उत्सव करायेंगे। ५२ रानियों ने कहा कि आप शीघ्र ही जायें और पुत्रों का इक्कोसा उत्सव सम्पन्न करायें। ५३ पुत्रों का उत्सव दोनों राज्यों में कराइये। यह सुनकर श्रेष्ठ राजा को परम सन्तोष हुआ। ५४ उन्होंने सभासद तथा मन्त्री को बुलाकर समझाया और सुसज्जित होकर वह

अजोध्या दूतंकु धनरत्न देले सेहु। बेनि गोटि अश्व से समर्पि देले तहिँ ५६
बजाइ बीर तूर जे होइले बाहार। तिनि दिने प्रबेश अजोध्या नामे पुर ५७
दशरथ राजा आगे चम्पावती नरसाइँ। भेट होइले से जे आनन्द मन होइ ५८
दुःख सुख शंखोळारे आनन्द हेले पुणि। पुत्रंकर कुशळ दशरथ पचारे जाणि ५९
सर्व कुशळ बोलि लोमपाद राजा पुच्छे। ऋष्यश्रृंग जोगुँ सकळ शुभ आछे३०६०
कउशल्यांकर भाइ कैकयांकर पिता। अजोध्यारे प्रबेश पाइण बारता३०६१
सुमित्रांकर भाइ अइले शुणिण। पुत्रंकर जन्म शुणिले सातण पचाश राजन ६२
आनन्द होइले राजा देखिण समस्त। सकळ राजा देखिले पुत्रंकर जात ६३
एथु अनन्तरे गला दिन चारि। बन्धुजन समस्ते अइले शंखोळि ६४
पाञ्चदिने मउळा पञ्चु आति कले। जे बिधि बिधान जे सकळ सारिले ६५
जोगी जन जाहांकु जे हृदरे चिन्तन्ति। अनेक जतने तांकु देबे सुमरन्ति ६६
पुत्रंकर मउळांकु बधाइ मान देले। धन रत्न देइण पुरुषार्थ कराइले ६७
रजनी प्रभातरे हेला षठीघर। षठी पूजा सारिण मण्डिले घरद्वार ६८
पुष्प मण्डिण जालि जे बेढ़ाइले। चन्दन चतुसम मिशाइ घषिले ६९
सुवर्ण कउडिरे मण्डिले षठी घर। हुळहुळि शबदरे कलेक अपार३०७०

बाहर निकले। ५५ उन्होंने अयोध्या के दूतों को धन और रत्न दिये और उन्हें दो घोड़े भी समर्पित किये। ५६ वीरतूर्य बजाकर वह निकल पड़े और तीन दिनों में अयोध्या नगर में जा पहुँचे। ५७ राजा दशरथ के समक्ष जाकर चम्पावती के नरेश ने प्रसन्न मन से भेंट की। ५८ दुःख सुख की बातें करके उन्हें प्रसन्नता हो रही थी। दशरथ ने उनके पुत्रों के कुशल समाचार पूंछे। ५९ राजा लोमपाद ने कहा कि श्रृंगी ऋषि के कारण सब कुछ शुभ है। ३०६० तभी कौशल्या के भाई तथा कैकेयी के पिता समाचार पाकर अयोध्या पहुँचे। ३०६१ उन्होंने सुमित्रा के भाई के आगमन के बारे में सुना। सात सौ पचास राजाओं ने भी पुत्रों के जन्म के विषय में सुना। ६२ राजा उन सबको देखकर प्रसन्न हुये और सभी राजाओं ने पुत्रों का जन्म देखा। ६३ इसके पश्चात् चार दिन व्यतीत हो गये। समस्त बन्धु-बान्धव वहाँ पर आकर एकत्रित हो गये। ६४ पाँच दिनों में मामा ने पंचुआती पूजा की, उसके सारे विधि-विधान सम्पादित किये गये। ६५ योगीजन जिनका चिन्तन हृदय में किया करते हैं और देवता नाना प्रकार के यत्नों से जिनका स्मरण किया करते हैं। ६६ उन पुत्रों के मामाओं को राजा ने बधाई दी। उन्हें धन रत्न देकर गौरवान्वित कराया। ६७ रात्रि के पश्चात् प्रभात बेला में षष्ठी पूजा समाप्त करके घर-द्वार सजा दिये गये। ६८ फूलों की जाली घेरकर सजा दी गई। चन्दन के साथ केसर मिलाकर घिसी गई। ६९ सुन्दर वर्ण वाली कौड़ियों से षष्ठीग्रह सजाया गया और अपार माँगलिक शब्द कहे गये। ३०७०

षठीघरे पसिण जे पूजिले नारी मिळि।
गायत्री साबित्री जे ब्रह्मांकु घेनि मिळि३०७१
समस्तंक उपरे कर्त्ता बासुदेव।आम्भे तांक कपाळरे लेखिबा नोहिब ७२
शुणि बेदबर बोले मोते से आज्ञा देले।
पाप पुण्य बुझि कपाळे आयु लेखिबु बोइले ७३
सेहु जात होइ छन्ति मानव शरीरे। आम्भर लेखि बार उचित सेठारे ७४
एहा शुणि बेदबर बेगे चळि जाइ। श्रीरामंक षठीघरे मिळिलेक तहिँ ७५
कर जोडि जणाए बासुदेवंक छामुरे। आजर उत्सव कथा आपण करि बारे ७६
बेदबर भगतिरे बासुदेव कहि। देवलोक नागलोक तुम्भरे जे होइ ७७
जोगकु अनुसरि करहे लेखन। शुणिण परम तोष बेदबर मन ७८
एमन्त समयरे सिद्धान्त नामे जोग। बळवन्त जोगकु घेनिण संजोग ७९
अमृत जोग संगरे होइ मेळ पुण। देखिले बेदबर मनरे बिचारिण३०८०
लेखन कले से जे कलम करे धरि। प्रथमुँ अठर वर्ष अमृत जोग घेरि३०८१
द्वितीये चउद वर्ष उत्पात जोग अछि। अनेक दुःख एथि पाइबे श्रीवत्सि ८२
तृतीय ठारु चतुर्थ एगार सस्र वर्ष। देव लोके नाग लोके होइबे सन्तोष ८३
एमन्त बोलि बिधाता अन्तर्द्धाने गले। आपणे बासुदेव एमान रहिले ८४

षष्ठी घर में घुसकर स्त्रियों ने एकत्रित होकर पूजा की। गायत्री और सावित्री ब्रह्मा को लेकर आ गईं। २०७१ सभी के ऊपर जगत्कर्त्ता वासुदेव हैं। हम उनके मस्तक पर लिखें। यह नहीं हो सकता। ७२ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा कि उन्होंने मुझे पाप-पुण्य समझकर कपाल पर आयु लिखने की आज्ञा दी है। ७३ वह भी मानव शरीर में उत्पन्न हुये हैं। हमारा लेखन वहाँ पर उचित है। ७४ यह सुनकर ब्रह्मा जी शीघ्र ही जाकर श्रीराम के षष्ठी घर में पहुँच गये। ७५ उन्होंने वासुदेव के समक्ष हाथ जोड़कर कहा कि आज के उत्सव की बात आपको करना है। ७६ ब्रह्मा की भक्ति से वासुदेव ने कहा कि आपके देवलोक तथा नागलोक में जैसा होता हो। ७७ योग का अनुसरण करके आप लेखन कीजिये। यह सुनकर ब्रह्मा का मन अत्यन्त संतुष्ट हो गया। ७८ इसी समय सिद्धान्त नामक योग बलवन्त योग को लेकर संयोजित हुआ। ७९ उसका मिलन अमृत योग के साथ हो गया। यह देखकर ब्रह्मा ने मन में विचार किया। ३०८० उन्होंने लेखनी पकड़कर लिखा। पहले अठारह वर्ष पर्यन्त अमृत योग का घिराव रहेगा। ३०८१ दूसरे चरण में चौदह वर्ष पर्यन्त उत्पात योग है। उसमें श्रीवत्स नारायण को अनेक दुःख प्राप्त होंगे। तीसरे से चौथे तक ग्यारह हजार वर्षों में देवलोक तथा नागलोक संतुष्ट होंगे। ८२-८३ ऐसा कहकर ब्रह्मा जी अन्तर्ध्यान हो गये और स्वयं वासुदेव इसी प्रकार रहने

कपाळे लेखा सरन्ते सरिला षठोघर । षठी घरे उदय़ कि हेले निराकार ८५
पार्बती बोइले देव सप्त दिन बिधि । ताहा मोते फळाइ कहिबा तपनिधि ८६
ईश्बर बोइले तुम्भे शुण गो गिरिजा । सपत दिन विधि जाहा कले राजा ८७
सपत दिने सेजे कलेक उठि आरि । एन्तुड़ि उठाइण देले सेजे तोळि ८८
अग्निकु पूजिले से जे दुध गुड़ देइँ । नूतन शेजरे चारि पुत्रंकु शुआइ ८९
पञ्चु पत्र पाणिरे तिनि राणी स्नान कले। कर्पूर चन्दन गन्ध देहरे लगाइले३०९०
पुष्प भूषण होइ धर्मकु ओळगिले । पुत्रंकु चिरञ्जिबी मुक्ति दिअ बोले३०९१
तिनि राणींक संगरे सकळ राणीहंस । बोइले कुमरकु संसारे कर बास ९२
सप्तम दिन अन्ते अष्टम दिन हेला । श्वेत दूब शज्यारे पुत्र शुआइले भला ९३
नव दिन तिनि राणी होइले मार्ज्जना । गण्डुष भोजन कले राणीमाने सिना ९४
राणीमानंक देहरु शरद तेज पुणि ।उछुळि पडिला जिबा आसिण धरणी ९५
एगार दिनरे पुण शउच बन्त हेले । नबर उज करिण नूतन हाण्डि कले ९६
देब आळे पूजा के कले देवराजा। बिप्रंकु डकाइण कले पाद पूजा ९७
दान ध्यान कले दशरथ नृपवर । अमृत भोजन जे कलेक सकळ ९८
मेलाणि होइण जे सर्ब बिप्रे गले ।बार दिनरे बार जात्रा भिआण पुण कले ९९

लगे । ८४ भाग्य का लेखा समाप्त होने पर षष्ठी घर का कार्यक्रम समाप्त हो गया । छठी के घर में निराकार भगवान उदय हो गये थे । ८५ पार्वती ने कहा हे देव तपोनिधि ! सातों दिन के विधि-विधान का वर्णन मुझसे खोलकर कहिये । शंकर जी बोले हे गिरिजा ! तुम सुनो । जो विधि-विधान राजा ने सातदिनों तक किये । ८६-८७ सातवें दिन उन्होंने उठावनी की । उन्होंने सोर की खाट उठा ली । ८८ उन्होंने दूध और गुड़ देकर अग्नि की पूजा की और नये पलंग पर चारों पुत्रों को सुलाया । ८९ पंचपात्र के जल से तीनों रानियों ने स्नान किया । उन्होंने शरीर में कपूर, चन्दन तथा इत्र लगाया । ३०९० पुष्पों से आभूषित होकर उन्होंने धर्म को प्रणाम किया और पुत्रों को चिरंजीव वर देने की प्रार्थना की । तीनों रानियों के साथ समस्त रानियों ने बालकों को संसार में स्थित रहने की प्रार्थना की । ३०९१-९२ सातवें दिन की समाप्ति पर आठवां दिन आया तब श्वेत दूर्वा की शैय्या पर पुत्रों को भली प्रकार उन्होंने सुलाया । ९३ नवें दिन तीनों रानियों ने मार्जन किया और उन्होंने हथेलियों पर भोजन किया । ९४ रानियों के शरीर में शरद का तेज मानो पृथ्वी पर आकर समा गया हो । ९५ ग्यारह दिनों पर वह फिर पवित्र हुई । महलों को पुताकर नवीन घड़े बदले गये । ९६ राजा ने देवालयों में देवता की पूजा की । उन्होंने ब्राह्मणों को बुलाकर उनकी पाद-पूजा की । ९७ श्रेष्ठ राजा दशरथ ने दान देकर ध्यान किया और सबने अमृत के समान भोजन ग्रहण किये । ९८ सभी ब्राह्मण विदा होकर चले गये । तब उन्होंने बारह दिनों पर बरहों का

स्नाहान मार्जना जे हेले तिनि राणी। चारि पुत्रंकु स्नाहान कराइले पुणि३१००
नूतन शज्यारे जे पुत्रंकु शुआइले। पुरुणा शेज मानंकु धाई माने नेले३१०१
दिनकु दिने पुत्रे दिशिले आनुआन। अगाध जळे जेन्हे वढ़इ पद्मबन २
शुकळ पक्षरे जेन्हे शशि बढ़ि आसि। तेसनक प्राय़े बढ़न्ति वाळ शिषि ३
एकोइश दिवस होइ वार जाणि। राजा मानंकु वरण कले नृपमणि ४
बन्धुजन मानंकु जे डकाइ वहन। विप्र ऋषि मानंकु कलेक जे वरण ५
बैशाख कृष्णपक्ष चतुर्द्दशी दिन। नग्रपुर मण्डिले जे अजोध्या राजन ६
कोटिए तीर्थ सुजळ अणाइले भले। तीर्थ जळरे पुत्रंकु स्नान कराइले ७
रतनर खट दोळि उपरे शुआइ। नग्ररे नर नारीए देखि आनन्द होइ ८
ग्रह शान्ति होम करि दक्षिणा दान देले। अन्न वस्त्र तइळ घृत समर्पिले ९
सुलक्षणी नारी माने अइले वन्दाइ। ढ़ोल दमा टमक जे महुरी बाजइ३११०
ठावे ठावे नृत्य जे करन्ति अपसरी। नग्र नर नारी माने साधु साधु करि३१११
समस्तंक दुआरे रम्भा वृक्ष पुण। नारीकेळ चूत पत्रमान जे भिआण १२
द्वार मानंकरे विचित्र गति करि। राजांकर नवर जे चित्रपटरे पूरि १३
मन्त्रींकर उआस पात्रंकर घर। लोक लगाइण मण्डिले नृपवर १४
समस्तंक पुर जे उज्ज्वळ दिशे पुण। जे सने चन्द्र उदय़े रजनीरे जाण १५

उत्सव किया। ९९ तीनों रानियों ने स्नान मार्जन किया और उन्होंने चारों पुत्रों को स्नान कराया। ३१०० नई सेज पर उन्होंने पुत्रों को सुलाया। पुरानी शैय्या धाई लोग ले गईं। ३१०१ दिन पर दिन पुत्र बदलते हुये दिखाई देने लगे जिस प्रकार अगाध जल में कमल का वन वृद्धि को प्राप्त करता है। २ जैसे शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा बढ़ जाता है उसी प्रकार वालक बढ़ने लगे। ३ इक्कीसवाँ दिन देखकर नृपशिरोमणि ने राजाओं को आमंत्रित किया। ४ उन्होंने शीघ्र ही बन्धु-बान्धवों को बुला लिया और ब्राह्मण तथा ऋषियों को आमंत्रित किया। ५ बैसाख की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन नगर तथा महल अयोध्या नरेश ने सजवाये। ६ उन्होंने कोटि तीर्थों का जल मँगाकर उससे पुत्रों को स्नान कराया। ७ बालकों को रत्नमय पालनों में सुलाया। नगर के नर-नारी यह देखकर प्रसन्न हो गये। ८ ग्रह-शाँति के लिये हवन करके दान दक्षिणा दी और अन्न, वस्त्र, तेल तथा घी समर्पित किया। ९ सौभाग्यवती महिलायें पूजा के लिये आईं। ढोल, नगाड़े, डुग्गी तथा महुरी बज रही थीं। ३११० स्थान-स्थान पर अप्सरायें नृत्य कर रही थीं और नगर के नर-नारी धन्य-धन्य कह रहे थे। ३१११ सबके द्वार पर केले के वृक्ष लगे थे। नारियल तथा आम्रपल्लव आदि लगाये गये थे। १२ द्वारों को विचित्रता से सजाया गया। राजमहल चित्रपटों से भरा था। १३ मन्त्रियों तथा सभासदों के निवास आदमी लगाकर राजा ने सुसज्जित करवाये। १४ सबके भवन स्वच्छ

ऋषिकर आश्रम बन्धुजनंकर नग्र। छामुण्डिआ भिआण कलेक संजोग १६
भितरपुर राजा पुष्परे मण्डे जाण। सुबर्णर मण्डप भिआण कले पुण १७
सातश पचाश महादेई जा रमणी। ज्येष्ठ कैकेय़ी कौशल्या सुमित्रा फुलेणि १८
सकळ राणीहंस हेले अन्तःपुरे। हीरा माणिक्यर चूड़ि समस्त हस्तरे १९
दुइ कर्णरे सुन्दर चारि बर्ण देश। दुइ शत राणी जे चन्द्रर सदृश३१२०
आउ राणीमाने जे गौर बर्ण जाण। समस्ते शान्त शीळ नुहँन्ति दुष्ट पुण३१२१
चारि पुत्रंक ठारे स्नेह सर्भिकर। तेणु करि दशरथ मनरे कुशळ २२
ताड़ बिद बाहुटि गळारे चापसरी। पदक चन्द्र हारा बक्ष स्थळे लुळि २३
नासारे सिन्धु फळ लोथ रत्नगुणा। कर्णरे कर्णफुळ झलकि दिशे सिना २४
चाप मल्ल कढ़ि चन्द्र फासिआ कर्ण शोहे। झरा चउँरि मुण्डि झलकि तोरा हुए २५
मस्तकरे अळका मथारे मथामणि। गउरींक पराय़े मुख दिशे पुणि २६
पादरे बळा पाहुड़ नूपुर रुण झुण। अंगुष्ठि कि झुण्टिआ दिशे शोभाबन २७
हस्तरे अंगुष्ठिरे रत्नमुदि साजे। मुदि उपरे हीरा मान जे बिराजे २८
कळारंग बसन्त नीळ अमळाण। पहिरण कले समस्त राणी पुण २९

दिखाई दे रहे थे जिस प्रकार रात्रि में चन्द्रमा के उदय होने पर चाँदनी छिटकती है। १५ ऋषियों के आश्रम तथा बन्धुजनों के भवनों पर शामियाने चँदोवे लगे थे। १६ राजा ने अंतःपुर को पुष्पों से सजाकर वहाँ पर स्वर्ण मण्डप बनवाये। १७ जिसकी भार्या सात सौ पचास महारानियाँ थीं और कैकेयी, कौशल्या तथा सुमित्रा महासाम्राज्ञी थीं। १८ अंतःपुर में समस्त रानियों के हाथों में हीरा तथा माणिक्य की चूड़ियाँ थीं। १९ दोनों कानों में सुन्दर चार वर्ण के आभूषण थे। दो सौ रानियाँ चन्द्रमा के समान थीं। ३१२० अन्य रानियाँ गौर वर्ण की थीं। सभी शांत तथा शीलवती थीं। कोई भी दुष्ट नहीं थी। ३१२१ चारों पुत्रों पर सभी का प्रेम था। इस कारण से दशरथ का मन प्रसन्न था। २२ ताड़विध (आभूषण विशेष) बाहुटी गले में चाप के आकार के आभूषण लटकन लगे हुये चन्द्रहार वक्षस्थल पर झूल रहे थे। नाक में बुलाक तथा रत्न की कील और नथनी थी। कानों में कर्णफूल झलमलाते दिखाई दे रहे थे। २३-२४ धनुषाकार मल्ली कड़ी चन्द्रिका कानों में सुशोभित थी और सिर पर झालरदार चँवरी झलक रही थी। २५ मस्तक पर अलक तथा सिर पर मस्तकमणि से उनके मुख पार्वती के समान दिखाई दे रहे थे। २६ पैरों में कड़े पायल तथा रुनझुन करनेवाले नूपुर उँगलियों के बिछुए शोभायमान दिख रहे थे। २७ हाथ की उँगलियों में रत्नजड़ित मुद्रिका सजी थी। अँगूठियों के ऊपर हीरा इत्यादि जड़े थे। २८ समस्त रानियाँ काले रंग बसन्ती तथा नीले रंग के परिधान पहने हुये थीं। २९ ऊपरी भाग में उन्होंने विशेष वस्त्र पहन

उपरे खण्डुआ पहिरण करि जाण ।मस्तकरे पुष्प वेनि करन्ति शोभावन३१३०
सकळ राणींकर धाई परीवारी । चन्द्रंकर सदृश्य जे वेश सवुंकरि३१३१
चन्दन कर्पूर वास जे गन्ध घेनि । वेश होन्ते राणीगण शोभादिशे पुणि ३२
एथु अनन्तरे राजन वेश हेले । रत्न खडु वीर वलिल मुकुता लाइले ३३
जरि पारा वलिल चिता जे मस्तकरे ।पाञ्च वर्ण रत्नमाळा लुळइ वक्षस्थळे ३४
नट नृत्यकारींकर वेश दिशे तोरा ।नग्र नर नारीए सर्वे उज्ज्वळ दिशे परा ३५
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगवती । मन पवन दण्ड चढि अइले सर्वजति ३६
मुनि माने सर्वे प्रवेश हेले आसि । ऋषिकि रखाइले वशिष्ठ तपनिष्ठि ३७
गन्ध चन्दन जे कर्पूर पुष्प देले । अगुरु चन्दन काष्ठ नेइण समर्पिले ३८
कन्दमूळ पक्वफळ नवात कन्द छेना ।वृक्षर मूळे निवास कराइ ताकु सिना ३९
वृक्ष तळे वास कराइ ताकु पुण ।मुनि माने सन्तोषे रहिले जे मा स्थान३१४०
ऋषि मुनि तपी छयानवे कोटि । नन्दिग्रामे मढिआ करि रहि लेटि३१४१
बिप्र, द्विज, ब्राह्मण, लक्षेक अइले । चित्रपट छामुण्डिआ भितरे रहिले ४२
गन्ध चन्दन पुष्प तांकु देले मन्त्रीवर । वरण पूजा पाइ रहिले विप्रवर ४३
लोमपाद राजांकर अइले बन्धुजन । एके एके बेश जे अटन्ति आनु आन ४४

रखे थे। मस्तक पर पुष्पों की चोटी शोभा पा रही थी। ३१३० समस्त रानियों की धाईयाँ तथा सेविकायें थीं। वह सब चन्द्रमा के समान सुन्दर वेश में सुसज्जित थीं। ३१३१ चन्दन कपूर तथा इत्र सुगन्ध लेकर श्रृंगार करती हुई रानियाँ शोभायमान दिख रही थीं। ३२ इसके उपरान्त राजा ने श्रृंगार किया। उन्होंने रत्नों के कड़े वीरवल्ली तथा मुक्ता धारण किये। ३३ जरीदार वल्ली तथा मस्तक पर तिलक और पाँच वर्ण की रत्न माला वक्षस्थल पर झूल रही थी। ३४ नट तथा नृत्यकारों के वेश सुहाने दिखाई दे रहे थे। नगर के समस्त नर-नारी उज्जवल दिख रहे थे। ३५ हे भगवती ! सुनों। इसके पश्चात् सारे यति अपनी इच्छा शक्ति पर सवार होकर वहाँ आये। ३६ समस्त मुनिवृंद वहाँ आ पहुँचे। उन ऋषियों को तपस्वी वशिष्ठ ने ठहरा दिया। ३७ उन्हें गन्ध, चन्दन, कपूर दिया गया। अगुरु तथा चन्दन काष्ठ लेकर उन्हें समर्पित किया गया। ३८ उन्हें वृक्ष के नीचे आवास देकर कन्द-मूल पके फल छेना तथा शकरकन्द आदि प्रदान किये गये। ३९ उन्हें वृक्षों के नीचे ठहरा दिया गया। मुनि लोग अपने-अपने स्थानों पर रह गये। ३१४० छियानवे करोड़ ऋषि मुनि तपस्वी नंदीग्राम में कुटिया बनाकर रह गये। ३१४१ एक लाख विप्र द्विज और ब्राह्मण आये जो कलापूर्ण तम्बुओं या रावटियों के भीतर रह गये। ४२ मंत्री ने उन्हें गन्ध चन्दन पुष्प दिये। श्रेष्ठ विप्रगण वरण पूजा पाकर रुक गये। ४३ राजा लोमपाद के बन्धु-बान्धव आ गये जो एक दूसरे से अधिक सजे-धजे थे। ४४

केहु कळा बसन्त जे रंग अटे नीळ। ए रूपे चारि बर्णरे बिजय़े महीपाळ ४५
कळाधळा बसन्त रंगरे चारि बर्ण। छत्रमान टेकाइ बिजय़े राजन ४६
कळधळा रंग नीळ बर्णरे आढ़ेणि। राजन मानंकु शोभा दिशे सेहु पुणि ४७
बन्धु राजा माने जे अजोध्य़ा पुरे मिळि।जानरु उतुरि राजा माने जे गले चळि ४८
दशरथ लोमपाद बेश होइ पुण। जगतीर उपरे विजय़े कले जाण ४९
चारि बर्णरे छति आढ़ेणी टेकाइ। सिंहासन उपरे बिजय़े कले जाइ३१५०
स्वर्गर इन्द्र प्राय़े दिशन्ति सेहु त्वरा।हीरा, नीळा, मोति जे दिशइ बर्ण फेरा३१५१
नाराय़ण देवतार लागिछि जेणु लीळा। तेणु तेजाबन्त अज राजांकर बळा ५२
वासुदेव जात जे होइलेक जेणु। राजा कुळ उज्ज्वळ दिशइ पुण तेणु ५३
मान्य धर्म करिण बन्धु बर्ग गले। रत्न बेदी उपरे जाइण रहिले ५४
दशरथंकर बन्धु अइले उत्सवरे। हस्ती रखि अछन्ति ताहांक संगतरे ५५
कळा धळा बसन्त रंगरे छति टेकि। आलट चामरकु चारि बर्णरे टेकि ५६
ढोल दमालु जे बाजइ बीर बाजा। तुरी काहाळि चांगु बाजइ नाना बाजा ५७
आगरे नृत्य करे नटकारी फेरि। भाट कय़ेबार आगरे ध्वनि करि ५८
चित्रपट्ट पुष्प आगरे धाडि धाडि। हाबेळि चम्पा चेंग मध्यरे गुण मारि ५९

कोई काला, कोई पीला, कोई लाल और कोई नीला था। इस प्रकार चार वर्ण के राजागण उपस्थित हुये। ४५ वह राजागण काले सफेद पीले तथा लाल चार रंगों के छत्रों को लिये हुये आये। ४६ उनके व्यजन काले सफेद लाल और नीले रंग के थे। जिनसे वह राजागण सुशोभित दिखाई दे रहे थे। ४७ बन्धु राजागण अयोध्या में आ पहुँचे और यान से उतरकर वह लोग चल पड़े। ४८ राजा दशरथ और लोमपाद सुसज्जित होकर जगती के ऊपर विराजमान थे। ४९ चार प्रकार के छत्र तथा व्यजन लगाकर वह सिंहासन पर जाकर विराजमान हुये। ३१५० स्वर्ग के इन्द्र के समान वह शोभायमान दिखाई दे रहे थे। हीरा नीलम और मोतियों की झलमलाहट दिखाई दे रही थी। ३१५१ मानों भगवान वासुदेव की लीला चल रही हो, उसी प्रकार राजा अज के पुत्र दशरथ तेजस्वी लग रहे थे। ५२ भगवान वासुदेव के जन्म धारण करने से राजा का कुल उज्जवल दृष्टिगोचर हो रहा था। ५३ आदर सत्कार और अभिवादन करके बन्धु वर्ग चला गया और जाकर रत्न-वेदी पर रुक गया। ५४ उत्सव में अपने साथ हाथियों को लेकर दशरथ के बान्धव आये। ५५ वह काले सफेद वसन्ती और लाल चार वर्ण के छत्र व्यजन और चामर लिये हुये थे। ५६ ढोल नगाड़े वीर वाद्य तुरही चंग पिपहरी आदि नाना प्रकार के बाजे बज रहे थे। ५७ आगे-आगे नृत्यकार नृत्य कर रहे थे। चारण और भाट आगे-आगे शब्द कर रहे थे। ५८ चित्रपट पुष्प और पंक्ति-पंक्ति में चम्पा आदि पुष्पों के साथ चेंग आदि लिये थे। ५९ पानी भरने तथा मछली पकड़ने वाले पक्षी जैसी आतिश बाजियाँ

पाणि न उति मानंक उपरे माछरंका बाण। पछरे हस्ती अश्व आगरे निशाण३१६०
गारेडि चम्पाबाण पछरे बान्धि मारे । चन्द्रा चकोर हाबेळि मारन्ति आगरे३१६१
जुइ जाइ मल्लिबाण फुटन्ति मध्यरे । केहु शून्य चक्र शून्यरे चम्पा मारे ६२
मध्यरे राजा माने बिजय़ कले पुण । मणिमा डाक पड़इ ताहांक आगेण ६३
पात्र मन्त्री सामन्त पादान्ति बळमान । अजोध्या नग्रे प्रबेश होइले सम्भ्रमेण ६४
लागिला चहळ जे अजोध्या नग्रर । आनन्द मन हेले अजोध्यापुर नर ६५
गहळरे लोके जे होइलेक बणा । बाद्यर नाद घोष शुभइँ अकळणा ६६
पिण्ड प्रांगणरे उठि केबण नारी माने । केबळ लोके देखन्ति उच्च स्थाने तेणे ६७
केहु देउळ मण्डप उपरे उठि देखि । केहु बृक्ष उपरे उठि देखन्ति निरेखि ६८
पात्र मन्त्री माने जे आसन्ति जान चढि। बाटरे भेट होइ सनमान करि ६९
दशरथ लोमपाद अमरि बिजे करि । श्वेत हस्ती उपरे कळा बर्णर अमरी३१७०
सकळ नृत्य रंग सनातन देखि । अमरी परे चाहिँण रहिले निरेखि३१७१
हस्ती परुँ ओहलाइण राजन बिजे कले । सकळ बन्धुंकु राजा संगरे घेनि गले ७२
मान्य धर्म करिण बेगे चळि गले । सुमन्त स्थान देले समस्ते रहिले ७३
समस्त राजांकु मन्त्री चरचा बिधि कले। भोजन सारि आसन परे बिजे हेले ७४
नाट नृत्य पुणि होइला सर्ब स्थिर ।बन्धुजन माने तिनिश पञ्चाश असि ठुळ ७५

चल रही थीं। आगे-आगे निशान और पीछे हाथी घोड़े थे। ३१६० चतुर चालक पीछे से चम्पा बाण (आतिश बाजी) बाँधकर मार रहे थे और आगे चन्द्र चकोर उछल रहे थे। जुही, चमेली, बेला मध्य में प्रस्फुटित थे। कहीं आकाश में पक्षी चक्कर मार रहे थे। ३१६१-६२ उसी के मध्य में राजागण जा पहुँचे। उनके आगे राजेश्वर का स्वर गूंज रहा था। ६३ सभासद मंत्री सामन्त पैदल सैनिक बड़ी धूमधाम से अयोध्या नगर में प्रविष्ट हुए। ६४ अयोध्या नगर में चहल-पहल मच गई और नगर निवासीजन प्रसन्न मन थे। ६५ उस चहल-पहल से लोग आश्चर्यचकित हो गए। अकलित वाद्य नाद सुनाई दे रहा था। ६६ प्रांगण के ऊपर से कुछ नारियाँ उठ गईं। केवल लोग उच्च स्थान से देख रहे थे। ६७ कोई देवालय के ऊपर से देख रहे थे। कोई वृक्षों के ऊपर चढ़कर अवलोकन कर रहे थे। ६८ सभासद तथा मंत्री लोग रथ पर चढ़े आ रहे थे। मार्ग में उनसे भेट हो जाने पर उनका सम्मान होता था। ६९ दशरथ और लोमपाद काले हौदे पर सफेद हाथी पर चढ़कर उपस्थित हुए। ३१७० वह हौदे पर चढ़े हुए निरन्तर होनेवाले सभी प्रकार के नृत्य रंग का निरीक्षण कर रहे थे। ३१७१ हाथी से उतर कर राजा पधारे। वह सभी बन्धुओं को लेकर चले गए। ७२ वह मान्य धर्म करके शीघ्र ही चले गए। सुमन्त ने स्थान दिये और सभी लोग वहाँ ठहर गए। ७३ श्रेष्ठ मंत्री ने समस्त राजाओं का सत्कार किया। वह सब भोजन करके आसन पर विराजमान हुए। ७४ फिर सब नाच रंग स्थिर

नेपाळ भोपाळ राजा बिजे करि आग्ने ।काशी बाराणसी राजा माने पुण आग्ने ७६
बंग कळिंग जे उत्कळ देश राजा । उत्कळ देशुँ अइले छड़ सहस्र राजा ७७
उत्तर दिगरु चाळिश सहस्र जाणि ।पश्चिम दिगरु अइले बतिश सहस्रपुणि ७८
दक्षिणुँ शत सहस्र राजा रुण्ड हेले । मान्य धर्म करिण समस्ते रहिले ७९
समस्तंकु सुमन्त चरचा कले पुण । भोजन शयन आसन नृत्य जाण३१८०
पार्बती बोइले शुण आहे प्राणनाथ । एते राजा केते दिने बरिले दशरथ३१८१
दश बरष ठुळ न हेबे खोजिले । एकोइशा दिन केमन्ते बारण पाइले ८२
एहा मोते बुझाइ कहन्ति शूळ पाणि । ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो पुणि ८३
उत्कळ देशर श्रीबन्त बाज पुरु । से देशर राजा जे अटइ हन्तकारू ८४
निम देव बोलि से राजार नाम । दुहिता गोटिए तार कोळरे जनम ८५
से जेमार नाम जे अटइ नीळमणि । बिभा करिबाकु बिचारे मउड़मणि ८६
स्वय़म्बर इच्छा करि दूत बरगिले । बार बर्ष राजांकु निमन्त्रि अणाइले ८७
सभा मण्डाइ बसिले सकळ राजन । दुहिता इच्छारे बरिला बर जाण ८८
बिभा घर दिन अइला अयोध्या मन्त्री पुणि। अस्थानरे प्रबेश होइलेक जाणि ८९
सकळ राजा मानंकु से निमन्त्राइ । चन्दन गुआ पान मन्त्री तांकु देइ३१९०

हो गया। तीन सौ पचास बन्धुजन आकर वहाँ एकत्रित हुए थे। ७५ नेपाल तथा भोपाल के राजा वहाँ पधारे थे। काशी तथा वाराणसी के नृपाल भी वहाँ आये थे। ७६ बंग कलिग तथा उत्कल से छै हजार राजागण आये थे। ७७ उत्तर दिशा के चालिस सहस्र राजा थे तथा पश्चिम दिशा के बत्तीस हजार राजा थे। ७८ दक्षिण दिशा के एक लाख राजागण अभ्यर्थना करके वहाँ ठहरे हुए थे। ७९ सुमन्त ने सभी राजाओं का स्वागत सत्कार किया। भोजन शयन आसन तथा नृत्यादि की व्यवस्था थी। ३१८० पार्वती ने कहा हे प्राणनाथ ! सुनिए। दशरथ ने इतने राजाओं का आमंत्रण कितने दिनों तक किया। ३१८१ खोजने पर भी दस वर्ष में इतने एकत्रित नहीं होंगे। इक्कीस दिनों में इतने कैसे निमंत्रित हो गए। ८२ हे शूलपाणि ! यह हमसे समझाकर कहें। शंकर जी ने कहा, ठीक है अब तुम सुनो। ८३ उत्कल प्रदेश में श्रीवन्त बाजपुर है। उस देश का राजा प्रतापी है। ८४ उस राजा का नाम निमदेव है उसके कुल में एक पुत्री का जन्म हुआ। ८५ उस राजकन्या का नाम नीलमणि है। नृपशिरोमणि ने उसका विवाह करने का बिचार किया। ८६ स्वयंवर की इच्छा से उसने दूत भेजे और बारह वर्ष तक राजागणों को निमंत्रित करके बुला लिया। ८७ समस्त राजागण सभा लगाकर बैठ गए। राजकुमारी ने इच्छानुसार वर का वरण किया। ८८ विवाह के समय अयोध्या का मन्त्री वहाँ आया। वह समझ बूझकर उस स्थान पर प्रविष्ट हुआ। ८९ उस मंत्री ने पान-सुपारी देकर समस्त

बोइले मन्त्रीवर सकळ राजा शुण । दशरथ राजांकर जन्म पुत्र जाण३१६१
अजोध्या नवरकु समस्ते बिजे कर । पुत्रंकर उत्सव जे करिबे नृपबर ६२
शुणिण सकळ राजा सनमत कले । जिबु अजोध्या पुरकु बोलिण बोइले ६३
मन्त्रीवर संगरे सकळ राजा आसि । अजोध्यापुरे प्रबेश हेले सेहु आसि ६४
बहु दिनरु शुणि थिले कर्ण पुटे । बासुदेव जन्म हेबे अजोध्यार राष्ट्रे ६५
सूर्ज्य बंशरे जन्म होइबे श्रीहरि । अजोध्या नग्रे दशरथ कोळरे मुरारी ६६
पूर्बर शबदरे प्रबेश जाइ हेले ।पञ्चस्तरी सहस्र राजा जाइण ठुळ हेले ६७
समस्तंक पछरे अइले बिभाण्डक ।मान्य धर्म कले तांकु समस्त राजा जाक ६८
एथु अनन्तरे शुण गो हेमबन्ती । सुधर्मा सभारे जाइ बिजय़ देब निकि ६९
नारद प्रबेश जे होइले ततक्षण । बोइले सर्ब देव कि बिचार मन३२००
तुम्भ मानंक कष्ट देखिण बासुदेव । दशरथ घरे अजोध्यारे हेले उद्भव३२०१
देव ऋषि तपी जे ब्रह्म ऋषि गले । लक्षेक नृपति एबे ठुळ पुण हेले २
आम्भे अइलु तुम्भकु खबर करिबाकु । बिजे कर प्रभु अजोध्या पुरकु ३
शुणिण सुर राजा पितामह बिजे कले । आज दिन नाम दिआ होइब बोइले ४
जे जाहा बाहानरे चळिले देबे पुण । सुधर्मा सभा नेले मण्डुकि अहि जाण ५

राजाओं को वरण कर लिया। ३१९० श्रेष्ठ मंत्री ने कहा कि आप लोग सुनिये। अयोध्या नरेश के यहाँ पुत्र-जन्म हुआ है। ३१९१ श्रेष्ठराजा पुत्रों का जन्मोत्सव मनाएँगे। आप सभी लोग अयोध्या के राजमहल में पधारें। ९२ यह सुनकर समस्त राजाओं ने स्वीकृति दी। सभी ने अयोध्यापुर चलने की इच्छा व्यक्त की। ९३ श्रेष्ठ मंत्री के साथ समस्त राजागण आकर अयोध्या नगर में प्रविष्ट हुए। ९४ उन्होंने भगवान के अयोध्या राष्ट्र में जन्म लेने की बात बहुत दिनों से कानों सुन रक्खी थी। ९५ अयोध्या नगर में सूर्यबंशी दशरथ के घर मुर दैत्य के शत्रु श्री नारायण जन्म धारण करेंगे। ९६ पूर्व से सुने के अनुसार पचहत्तर सहस्र राजागण वहाँ पर आकर जमा हो गए। ९७ सबसे पीछे विभाण्डक आए। समस्त राजाओं ने उनकी अभ्यर्थना की। ९८ हे हेमवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् सुधर्मा देव सभा में समस्त देवता विराज-मान थे। ९९ उसी समय नारद वहाँ जा पहुँचे। उन्होंने पूँछा कि आप समस्त देवगण किस बात पर मन में विचार रहे है। ३२०० आप लोगों का कष्ट देखकर भगवान वासुदेव अयोध्या में दशरथ के घर में अवतरित हो चुके है। ३२०१ देवता ऋषि तपस्वी ब्रह्मर्षि वहाँ पहुँचे हैं और एक लाख राजागण भी अब वहाँ पर एकत्रित है। २ हम आप लोगों को समाचार देने के लिये आए हैं। आप सब अयोध्यापुर के लिये प्रस्थान करें। ३ यह सुनकर देवराज इन्द्र तथा ब्रह्मा जी वहाँ गए और बोले कि आज तो उनका नामकरण होगा। ४ देवता अपने-अपने वाहनों से चल दिये। सुधर्मा सभा अहिमण्डूक ने ले ली। ५

अजोध्यापुर सळखे अहि धरि अछि पुण । बिजे कले सभारे सकळ देवगण ६
अजोध्याकु दिशिले मेघ खण्ड प्राय़े ।सकळ राज्य नरनारी देखन्ति सभिएँ ७
मुनि ऋषि तपी देखिले बाहारेण । द्विज बिप्र ब्राह्मण देखन्ति सर्बे पुण ८
के बोलइ मेघ खण्ड रहिछि निश्चळेण । ऋषिमाने बोइले देवता पूजा पुण ९
राजा माने बोइले शुणि अछु पुणि । बासुदेव जनम होइबे देह घेनि३२१०
देखिबा निमन्ते दशरथंकर सुत । समस्तंक मन हेउछि उत्सुकत३२११
जाणिण आम्भे बिजे देवंकर मेळे । सबु देव कहिवारु पवन देव गले १२
सुगन्ध घेनिण जे पवन बहे धीरे । जळ स्थळ अनळ सकळ बास करे १३
पितामह बोइले नारद तुम्भे शुण । अजोध्या नवरकु बेगे जाअ पुण १४
आम्भर अक्षत देव से चारि पुत्रंकु ।बिधि बिधान सरिले आसिब एठाबकु १५
शुणिण नारद जे बेगे चळि गले । अजोध्या नवरे जाइ प्रबेश होइले १६
नारद आसि बार समस्ते जाणिले । मान्य धर्म आसिण समस्ते पुण कले १७
एथु अनन्तरे शुण गो हेमबन्ति । गहळ बाद्य शबदे कंपइ बसुमति १८
बशिष्ठ ब्रह्म ऋषि आश्चर्य्य होइले । नारद बिभाण्डक तारेश्वर तुले १९
गउतम दुर्बासा अष्टबक्र सनातन । एते ऋषि सेठारे हेले ब्रह्मा बरण३२२०
अग्निक मुखे आहुति बशिष्ठ नेइ देले ।सम्पूर्ण आहुति दिअन्ति वेद अध्यानरे३२२१

अयोध्यापुर की सीध में सर्प पकड़ रक्खा था । समस्त देवगण जाकर सभा में उपस्थित हुए । ६ अयोध्या से वह मेघखण्ड के समान दिखा । राज्य के समस्त नर-नारी सबको देख रहे थे । ७ ऋषि, मुनि, द्विज, तपस्वी, विप्र तथा ब्राह्मण सभी लोग बाहर से देख रहे थे । ८ कोई कहता था यह स्थिर मेघखण्ड है । ऋषियों ने कहा कि यह देवताओं की पूजा है । ९ राजा लोगों ने कहा कि हमने सुना कि भगवान शरीर धारण करके आकार लेंगे । ३२१० दशरथ के पुत्र को देखने के लिये सबके मन उत्सुक हो रहे है । ३२११ यह जानकर हम देवताओं के साथ आ गये हैं । समस्त देवताओं के कहने से पवन देव चले । १२ पवन सुगन्धि लेकर धीर भाव से बह रहा था । जल, स्थल, तथा अग्नि सब सुवासित हो गया । १३ ब्रह्मा ने कहा हे नारद ! तुम सुनो और शीघ्र ही अयोध्या के महल में जाओ । १४ हमारे अक्षत् चारों पुत्रों को देना और विधि-विधान समाप्त करके यहाँ लौट आना । १५ यह सुनकर नारद शीघ्र ही चले गये और अयोध्या के राजमहल में जा पहुँचे । नारद का आगमन सबको ज्ञात हो गया । उन सबने आकर उनका स्वागत तथा अभ्यर्थना की । १६-१७ हे हेमवती ! सुनों । इसके पश्चात् वाद्यों के कोलाहलपूर्ण शब्दों से पृथ्वी काँप रही थी । १८ ब्रह्मर्षि वशिष्ठ आचार्य बने । नारद विभाण्डक, तारेश्वर, गौतम, दुर्वासा, सनातन तथा अष्टावक्र ऋषि इतने ऋषि वहाँ पर ब्रह्मा के रूप में वरण किये गये । १९-३२२० वशिष्ठ ने आहुति

सारिण बेद बिधि आशीर्बाद कले। नारद महाऋषि ततक्षणे उठिले २२
देवंक अक्षत देले चारि पुत्रंकु।सर्व ऋषि ब्राह्मण शिष्य देले बाळकंकु २३
भोजन सारिण ऋषि मेलाणि होइ चळि। धन रत्न वसन देले दण्डधारी २४
मन पवन दण्डरे चतिण ऋषि चळि।जे जाहा आश्रमरे मिळिले जाइ करि २५
नारद प्रबेश हेले सुधर्मा सभारे। सुधर्मा सभा घेनिण सभारे मिळिले २६
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। राजा गणे बोइले पुत्रंकु देखिबा तुम्भरि २७
शुणिण दशरथ बोइलेक पुणि। कथाए कहुछि तुम्भे शुण नृपमणि २८
एक एक राजा जाइ देख हे तुम्भे पुण। रथी सेनापति मान घेनिण संगेण २९
एकोइश दिवस आजकु पुत्रंकर। गहळ नकर पाताळे देखिब नृपवर३२३०
शुणि करि राजा माने सनमत कले। चारि द्वारे चारि चार रखहे बोइले३२३१
शुणि करि दशरथ प्रहरि जगाइण। भितर पुरे प्रबेश होइलेक जाण ३२
धाई मानंकु बोइले कनक मण्डपरे। चारि पुत्रंकु शुअअ देखन्तु नृपबरे ३३
शुणि धाई माने चारि पुत्रंकु घेनि चळि। कनक मण्डपे शुआइले नेइ करि ३४
राजा माने आसिण देखिले जणे जण। चतुर्द्धा मूर्त्ति देखि तोष कले मन ३५
राजा माने बधाइ देलेक देखि पुत्र। रत्न खडु बीरबलिल चन्द्रहार पदक ३६

अग्नि के मुख में दी। वेदमंत्रों के साथ उन्होंने सम्पूर्ण आहुतियाँ दीं। ३२२१ वैदिक विधान समाप्त करके उन्होंने आशीर्वाद दिया। तभी महर्षि नारद उठ पड़े। २२ उन्होंने चारों पुत्रों को देवताओं के अक्षत् दिये और समस्त ऋषियों तथा ब्राह्मणों ने बालकों को आशीर्वाद दिये। २३ भोजन समाप्त करके ऋषि विदा होकर चल दिये राजा ने धन रत्न और वस्त्र प्रदान किये। २४ ऋषि लोग प्राण वायु पर चढ़कर चले गये और अपने-अपने आश्रमों में जा पहुँचे। २५ नारद सुधर्मा सभा में प्रविष्ट हुये और सभा के बीच में जा पहुँचे। २६ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् राजागणों ने उनके पुत्रों को देखने के लिये कहा। २७ यह सुनकर राजा दशरथ बोले हे श्रेष्ठ राजागण! आप लोग हमारी एक बात सुनें। २८ एक-एक राजा रथी तथा सेनापति आदि को साथ ले जाकर देखें। २९ आज पुत्रों का इक्कीसवाँ दिन है। शोर-शराबा न करके शान्ति-पूर्वक देखें। ३२३० यह सुनकर राजाओं ने स्वीकृति दी। उन्होंने चारों द्वार पर चार दूत रखने के लिये कहा। ३२३१ यह सुनकर दशरथ ने चारों प्रहरी नियुक्त किये और अंतःपुर में चले गये। ३२ उन्होंने धाइयों से कहा कि चारों पुत्रों को कनक मण्डप में लिटा दो। राजा लोग उन्हें देखेंगे। ३३ यह सुनकर धाइयों ने चारों पुत्रों को ले जाकर कनक मण्डप में सुला दिया। ३४ एक-एक करके राजा लोगों ने आकर प्रसन्न मन से चारों मूर्तियों के दर्शन करके संतोष किया। ३५ राजा लोगों ने पुत्रों को देखकर रत्न कड़े जंजीरें चन्द्रहार तथा पदक प्रदान करते हुये बधाई दी। ३६ समस्त राजाओं ने पुत्रों को

सकळ राजा माने आशीष देइ गले । राजाकुळ मानंकु ए कारेणी होइले ३७
एते कहि राजा माने होइले मेलाणि । दशरथ लोमपाद मान्य कले पुणि ३८
बोइले मोठारे सर्बे सन्तुष्ट जे हुअ । सुकल्याण करिण समस्ते सुखे जाअ ३९
शुणिण राजा माने बोइले बचन । निश्चिन्त हेल एबे बासुदेवंकु पाइण३२४०
एते कहि राजा माने बेगे चळि गले ।राजा मानंकु अनेक धन दशरथ देले३२४१
चळिले राजा माने जे जाहार स्थान । हस्ती रथि पादान्ति संगरे घेनिण ४२
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती ।बशिष्ठ महाऋषि राजांकु बोधि सेठि ४३
लक्षेक बाजणा जे लक्षेक महुरी ।समस्त कामिनी हुळहुळि ध्वनि करि ४४
दधि माछ पूर्ण कुम्भ द्वारे पुण अछि ।
मंगळाष्टक जे करन्ति देखिण चण्ड बत्सी ४५
मन्त्री अमनत्यांकु घेनिण दशरथ । सभा करिण बसिले जाइण तुरित ४६
मनरे आनन्द होइण दशरथ लोमपाद । ब्राह्मणे मेळ होइ देलेक आशीर्बाद ४७
बशिष्ठ महामुनि पुत्रंकर कर्णे । सारस्वत मन्त्र जे कहिले तत्त्वज्ञाने ४८
बशिष्ठ पचारिले राजन शुण एबे । किस किस नाम देबा बिचारकर एबे ४९
दशरथ बोइले भुत भबिष्य कथा । सकळ तुम्भे जाण पण्डित महाज्ञाता३२५०
ब्राह्ममुनि बोइले तुम्भर ज्येष्ठ पुत्र । देखिण रोमावळी पुलकु अछि गात्र३२५१

आशीर्वाद दिया कि यह लोग राजाओं के कुल के लिये उद्धार करनेवाले होंगे और इस प्रकार कहते हुये राजा लोग विदा हो गये तब दशरथ और लोमपाद ने सबका सत्कार किया। ३७-३८ उन्होंने कहा कि आप सब संतुष्ट होकर हमें आशीर्वाद देते हुये सुखपूर्वक प्रस्थान करें। ३९ यह सुनकर राजा लोग बोले कि अब आप भगवान को पाकर निश्चिन्त हो गये। ३२४० इतना कहकर राजागण शीघ्र ही चल पड़े। दशरथ ने उन्हें प्रचुर धन प्रदान किया। ३२४१ राजा लोग हाथी रथी तथा पैदल सिपाहियों को साथ लिये अपने-अपने स्थानों को चले गये। ४२ हे भगवती ! सुनों। इसके पश्चात् महर्षि वशिष्ठ ने राजा को बोध देते हुये संतुष्ट किया। ४३ लाख-लाख बाजे बजने लगे। सारी स्त्रियाँ मांगलिक ध्वनि करने लगीं। ४४ दही मछली तथा पूर्णकुम्भ द्वारों पर रखे थे। ब्राह्मण लोग मंगलाष्टक का पाठ कर रहे थे। ४५ राजा दशरथ शीघ्र ही मंत्री तथा अमात्य लोगों को लेकर सभा करने बैठ गये। ४६ दशरथ और लोमपाद के मन में आनन्द हो रहा था। ब्राह्मणों ने मिलकर उन्हें आशीर्वाद दिया। ४७ महामुनि वशिष्ठ ने पुत्रों के कान में तत्वज्ञान वाला सारस्वत मंत्र पढ़ा। ४८ वशिष्ठ ने कहा हे राजन् सुनों। अब विचार करना है कि इन्हें क्या क्या नाम दिये जायें। ४९ दशरथ बोले आप महाज्ञानी पंडित हैं और 'भूत-भविष्य सब कुछ जानते हैं। ३२५० तब ब्रह्मर्षि बोले कि आपके ज्येष्ठ पुत्र को

नमस्कार कले दशरथंकर पाद । देखिण सानन्द हेले अजोध्या नरेन्द्र ८२
कैकयी पितांकु दशरथ मान्य कले । कैकयी सुमित्रांकु कहिण भाइ गले ८३
निज नवरे जाइ प्रवेश होइले । सकळ कुशळ बोलि राज्यरे कहिले ८४
सुमन्तकु डकाइ राजन देले धन । शतेक सुवर्ण आणिण देलेक पुण ८५
कश्यप वामदेव जाबाळि बशिष्ठ । एमानंकु रत्न वस्त्र देले नरनाथ ८६
जे जाहा पुरे गले भागि गला चहळ । लक्षे धेनू क्षीर देले ईश्वरंक शिर ८७
देवींकि माजणा स्नान कराइ राजन । मणोहि बिधि सारि कलेक शयन ८८
छामुण्डिआ भंगाइ सुमन्त सम्भाजिले । पतनि चान्दुआ सर्ब जतने थोइले ८९
दिनकु दिन पुए वढ़िले शशि जिणि । शुक्ळ पक्षे जेसने बढ़इ निशा मणि३२९०
उत्थान होइण शोइलेक पुए । चारि मासरे उबुरा उबुरि से हुए३२९१
पाञ्च मासरे से दिअन्ति गुळु गुञ्चा । हेमा पाडि खेळन्ति जाहार जेउँ इच्छा ९२
छड़ मास हेबारु सुधीर होइ बसि । कहि हसाइले हसन्ति चारि बतिस ९३
पार्बती बोइले देव शुण मो वचन । वासुदेवंकर जन्म शुणिलि मुं कर्ण ९४
कमळा जनम जे केउँ ठारे हेले । केउँ रूपे जात किस नाम से बहिले ९५
ईश्वर कहन्ति तुम्भे शुण भगवती । एबे से कथा तोते कहुछि जे सती ९६

नमस्कार किया। यह देखकर इन्द्र के समान अयोध्यानरेश आनन्दित हो गये। ८२ दशरथ ने कैकेयी के पिता का सम्मान किया। भाई लोग कैकेयी तथा सुमित्रा को कहकर चले गए। ८३ वह अपने महलों में जा पहुँचे और राज्य में सारे कुशलता के समाचार दिये। ८४ राजा ने सुमन्त को बुलाकर धन प्रदान किया। उन्होंने उन्हें लाकर सौ स्वर्ण मुद्राएँ दीं। ८५ नरनाथ ने कश्यप वामदेव जाबालि वशिष्ठ आदि इन सबको रत्न तथा वस्त्र प्रदान किये। ८६ अपने-अपने घरों को चले जाने पर समारोह समाप्त हो गया। उन्होंने शिव के मस्तक पर एक लाख गउओं का दूध चढ़ाया। ८७ राजा ने देवी का स्नान मार्जन करवाकर उनकी वलिभोग की विधि सम्पादित करके शयन किया। ८८ सुमन्त ने तम्बू, कनातें, चन्दोवे तथा सजावट के अन्य वस्त्रादि उतरवाकर सब यत्नपूर्वक रखवा दिये। ८९ चन्द्रमा को जीतने वाले पुत्र दिन प्रतिदिन बढ़ने लगे जिस प्रकार शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा वृद्धि को प्राप्त होता है। ३२९० बालक चार माह तक चित्त लेटते रहे फिर वह उलट-पलट करने लगे। ३२९१ पाँच महीने में वह हाथ पैर चलाते हुए कुलाटी खाते सुवर्ण के बिछौनों पर इच्छानुसार खेलने लगे। ९२ छै महीने पर वह चारों बालक धीरे से बैठकर बोलने से हँसने-हँसाने लगे। ९३ पार्वती ने कहा हे देव हमारी बात सुनिये ! मैने अपने कानों से वासुदेव के जन्म की लीला सुनी। ९४ लक्ष्मी का जन्म कहाँ हुआ। वह किस भाँति उत्पन्न हुयी और उनका नाम क्या पड़ा। ९५ शंकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनों। हे सती ! अब मैं वही कथा तुमसे कह रहा हूँ। ९६

सात जुग अन्तरे जे देवता माने पुण । चारि रावण प्रतापरे आकुळ हेले जाण ९७
नारायण देवतांकु कहिलेक जाइ । अचिन्ता बैकुण्ठ द्वारे स्मरण कले रहि ९८
केबेहें नारायण निद्रा न तेजिले । सकळ देवता बिस्मय मन होइले ९९
तेणु करि बेदबर नेले आसि मोते । सुमरणा करिबारु गलु जे तुरिते३३००
देवताए देखिण सकळ कथा कहि । शोक भर होइण बसि रहिले तहिँ३३०१
बोइले नारायण बिपक्ष आम्भरे । असुरंकर प्रतापे नरहु स्वर्ग पुरे २
शुणिण बेदबर आम्भे बिचारिलु । आम्भ सरिकि असुर प्रबळ बोइलु ३
देवतांकु नेइण एचारि रावण । निजोग कराए खटाए दैत्य राण ४
देवतांकु पादतळे खटाइ बारु नेइ । आम्भ हस्तरे न मरिबारु आम्भंकु कष्ट देइ ५
एमन्त बिचारिण बेनि भाइ आम्भे । अनामिका तप कलुटि आम्भे थम्बे ६
अनामिका सुमरन्ते उठिले नारायण । सरस्वतींकु बोइले जाअ गो बहन ७
पश्चिम द्वार खोलिण देवंकु घेनि आस ।
ब्रह्मा शिव बेनि जण आसन्तु मोर पाश ८
शुणिण जोगमाया पशिचम द्वारे मिळि । निर्बन्ध कबाट जे बेगे देले फेडि ९
बोइले देवताए आस प्रभु पाश । आज्ञा देले नारायण बहन होइ आस३३१०
शुणि करि बेद ब्रह्मा सुरनाथ हरि । प्रबेश हेलु आसि छामुरे श्रीहरि३३११

सतयुग के अन्त में देवता लोग चार रावणो के प्रताप से व्याकुल होकर उन्होंने जाकर नारायण देव से कहा । उन्होंने चिन्ताशून्य बैकुण्ठ के द्वार पर स्थित होकर भगवान का स्मरण किया । ९७-९८ किन्तु फिर भी भगवान ने निद्रा का परित्याग नहीं किया । समस्त देवता मन में विस्मित हो गये । ९९ तब ब्रह्मा जी ने आकर मुझे साथ में लिया । मैं भी तुरन्त ध्यान करने पर चला गया । ३३०० मैने देवताओं को शोक संतप्त बैठे देखा । उन्होंने हमसे सारी बाते बतायीं । ३३०१ वह बोले कि भगवान हमारे प्रतिकूल हैं । हम असुरों के प्रताप से स्वर्ग में नहीं रह पा रहे हैं । २ यह सुनकर हमने और ब्रह्मा ने विचार किया । क्या असुर हमारे समान है, इस प्रकार से कहा । ३ यह चार रावण देवताओं को पकड़कर अपनी सेवा कराते हैं । देवताओं को अपने चरणों की सेवा कराने को ले जाने पर हमारे हाथों से न मरने के कारण हमें कष्ट दे रहे है । ४-५ इस प्रकार विचार करके हम दोनों भाइयों ने अचल होकर नाम रहित तपस्या की । ६ उस अजपा जाप से भगवान उठे और उन्होंने सरस्वती से शीघ्र जाकर पश्चिम द्वार खोलकर देवताओं को ले आने के लिये तथा ब्रह्मा और शिव दोनों को अपने पास लाने के लिये कहा । ७-८ यह सुनकर योगमाया पश्चिम द्वार पर पहुँची उसने बंद द्वार को शीघ्रता से खोल दिया । ९ उसने कहा हे देवताओ ! भगवान के पास चलो । भगवान ने शीघ्र चलने की आज्ञा दी है । ३३१० यह सुनकर ब्रह्मा, इन्द्र, शिव, आकर भगवान के समक्ष उपस्थित

देखिण श्रीहरि रंगा अधरे कले हास्य । बोइले किमर्थे अइल सुरनाथ १२
सुरनाथ बोइले शुण हे देव हरि । तुम्भर सबु दिने आम्भे सेवाकारी १३
तुम्भे थाउँ थाउँ असुरकु करु सेवा । प्रळय न कर किम्पा ए कष्ट समर्पिबा १४
नारायण कहे चारि रावण काहा हस्तरे मरि । वेदवर बोइले शुण हे देवहरि १५
दशमुखा रावण जे मरिब तुम्भ हस्ते । एक मुखाकु मारिबे अनन्त प्रत्यक्षे १६
शते मुखाकु डाहाण ब्रत शंख मारि । कमळांक हस्तरे सहस्र मुखा मरि १७
सुदर्शन मारिबे बहुत असुर पुण । स्वर्ग मर्त्य पाताळ सपत द्वीप मही जाण १८
सकळ असुर तुम्भे करिब निशोधन । तेबे अनन्त नाग जे पाए कषण १९
शंख चक्र गदा जे होइबे बेनि मूर्त्ति । अनन्त नारायण तुम्भर संगे साथि३३२०
देवता मानंक अंशे मञ्चरे हेबे जात । मर्कट भालु रूपरे होइबे सम्भूत३३२१
तुम्भर चरणरे समस्त खटिबे । जेणिकि बोलिब तुम्भे तेणिकि से जिबे २२
शुणि करि श्रीहरि जे परम सानन्द । होइबि मञ्चरे जात बोइले आदि कन्द २३
सात जुग शेषरे अजोध्या पुर जाइ । सूर्ज्य वंशरे जात हेबि देह वहि २४
शुणि करि देवताए चरण तळे पड़ि । वेदवर बोइले कहुछु कर जोड़ि २५
सेते बेळु देवताए गुहारि करि थिले । तेणु करि नारायण अजोध्यारे जन्म हेले २६

हुये । ३३११ यह देखकर भगवान ने लाल रंग के अधरों से हँसते हुये कहा हे सुरेन्द्र ! किस कारण से पधारे है । १२ इन्द्र ने कहा हे देवनारायण ! सुनिये । हम सदा से आपके सेवक रहे है । १३ आपके रहते-रहते हम असुर की सेवा कर रहे है । आप इस कष्ट को नष्ट करने के लिये प्रलय क्यों नहीं करते । १४ नारायण ने कहा कि चार रावण किसके हाथों से मरेंगे । ब्रह्मा बोले हे देवहरि ! सुनिये । १५ दस कण्ठ रावण का संहार आपके हाथों से होगा । एक मुखवाले रावण का वध प्रत्यक्ष रूप से अनन्त देव करेंगे । १६ शतकण्ठ रावण को दक्षिण-वर्ती शंख मारेंगे और लक्ष्मी के हाथों सहस्रकण्ठ रावण मारा जाएगा । १७ सुदर्शन अनेक असुरों का संहार करेंगे । स्वर्गलोक मृत्युलोक पाताल सातों द्वीपों से आप असुरों का नाश करेंगे । तब अनन्त दुःखों का विनाश होगा अथवा तब शेषनाग के कष्ट दूर होंगे । १८-१९ शंख, चक्र तथा गदा दो रूप धारण करेंगे । अनन्त नारायण आपके साथी होंगे । ३३२० देवताओं के अंश मृत्युलोक में बन्दर और भालुओं के रूप में उत्पन्न होंगे । ३३२१ यह सब आपके चरणों के सेवक होंगे । आप जहाँ कहेंगे, यह लोग वहीं जायेंगे । यह सुनकर भगवान अत्यन्त प्रसन्न हुये फिर आदि कारण भगवान वासुदेव ने कहा कि मैं मृत्युलोक में जन्म धारण करूँगा । २२-२३ सतयुग के अन्त में अयोध्यापुर के सूर्य वंश में शरीर धारण करके जन्म ग्रहण करूँगा । २४ यह सुनकर देवता लोग चरणों में गिर गये । ब्रह्मा जी ने हाथ जोड़ते हुये कहा तब से देवता लोग आर्तपुकार करते रहे, इसलिये भगवान ने अयोध्या में जन्म लिया । २५-२६ पार्वती बोली हे देव !

पार्वती बोइले देव सेठारु किस हेला । नारायण जन्म कथा कहिल मोते परा २७
कमळा जन्म कथा न शुणिलि कर्ण । केउँ रूपे श्रीहरिंक घरणी हेले जन्म २८
ईश्वर बोइले से कथा तोते देवा कहि । एक मन होइ तुम्भे शुण प्राण सही २९
आम्भे जाइ बोइलु श्रीहरि तुम्भे शुण । तुम्भरे दोषकारी असुर हेबे पुण३३३०
तेबे से क्रोध चित्त तुम्भर जात हेब । तेबे से दैत्य मरि नथिब सद्भाव३३३१
श्रीहरि बोइले कमळांक ठारु अंशे जाउ । गिरिजा गृहरे जन्म जाइ हेउ ३२
दुइ कळारु दुइ मूर्त्ति होइबे जनम । बेदमति झरामति नाम हेब पुण ३३
छड़ जुग पर्य्यन्त तप जे करिबे । सत्य जुग जाए नारी तेजोबन्त हेबे ३४
जुगर प्रथमरे गले नारायण । नाम गोटि तांकर होइब पर्शुराम ३५
सप्तद्वीप पृथ्वी साधिण दुष्ट मारि । गरिष्टंकु न मारि रहिबे अपसरि ३६
त्रेतया जुगरे जाइ आम्भे हेबु जात । चतुर्द्धा मुरति धरि होइबु सम्भूत ३७
कमळा होइबे पुण चतुर्द्धा मूरति । गिरिजा दुहिता जे थिब झरामति ३८
पाताळ नीळाचळ शान्तिरे सेहि रहि । बेदमति असुरंकु प्रेछना कराइ ३९
दशमुखा रावणर कटाळ बळे पुण । स्वदेह छाड़ि देबी आसिब मो पाशेण३३४०
कमळांकर देहरे आसि सम्भूत होइबे । ते बेसे मोर निद्रा भाजि बटि तेबे३३४१
दश सहस्र बरष घेनिण लीळाकरे । तेबे मुँ जन्म जे हेबि मञ्च पुरे ४२

आपने भगवान के जन्म की कथा हमसे कही । २७ मैंने लक्ष्मी के जन्म की कथा अपने कानों से नहीं सुनी । भगवान की पत्नी का जन्म किस भाँति हुआ । २८ शंकर जी बोले वह कथा हम तुमसे कह रहे है । हे प्राणसहचरी ! तुम एकाग्र-मन से सुनों । २९ हमने जाकर भगवान से कहा कि आप सुनिये । यह असुर आपके अपराधी होंगे । ३३३० तब आपके चित्त में क्रोध उत्पन्न होगा । उनसे सद्भाव नहीं रहेगा । तब यह दैत्य मरेंगे । ३३३१ भगवान ने कहा कि लक्ष्मी का अंश जाकर गिरिजा के घर में जन्म ग्रहण करे । दो कलाओं से दो रूपों का जन्म हो । उनके नाम वेदमती और झरामती हों । ३२-३३ छै युग पर्यन्त वह तपस्या करेंगी और सतयुग में वह नारी तेजस्वनी होगी । ३४ युग के प्रथम भाग में नारायण परशुराम के नाम से विख्यात् होंगे । ३५ वह सात द्वीपों के दुष्टों को पृथ्वी से परास्त कर उनका संहार करेंगे । श्रेष्ठ दुष्टों को न मारकर वह हट जायेंगे । ३६ त्रेता युग में हम उत्पन्न होगे । हम चार रूपों को धारण करके जन्म लेंगे । ३७ लक्ष्मी भी चार रूप धारण करेंगी । गिरिजा की पुत्री झरामती होगी । ३८ पाताल के नीलांचल पर शांतिपूर्वक रहकर वेदमती असुरों को उत्तेजित करेंगी । ३९ दसकण्ठ रावण के कुकृत्य से वह अपने शरीर को त्याग कर मेरे पास आयेगी । ३३४० वह आकर लक्ष्मी की देह से प्रादुर्भूत होगी । तब वह मेरी निद्रा भंग करेगी । ३३४१ दस हजार वर्ष तक उसे लेकर लीला करने पर तब मैं मृत्युलोक में जन्म ग्रहण करूँगा । ४२ मेरे जन्म लेने के छै

मोर जन्म होइ वार छड़मास उत्तरे। कमळा जनमिबे जनक ऋषि घरे ४३
तिनि अंश धरिण कमळा जात हेवे जेणु।
। प्रथमे झरामति द्वितीये बैदेही नाम जेणु ४४
तृतीये पार्वती रूपे होइबे सम्भूत। पार्वती अंशरे जात अनादि नारी सेत ४५
चतुर्थे माळिनी सुमाळिनी जात। चारि नारींकर गर्भु होइबे अष्ट पुत्र ४६
दुइ मातांकर जुगते स्वति जाण। पार्वती अंशे कमळा अजोनि जात पुण ४७
वेनि मातांक ठारु तिनि जे दुहिता। गर्भरु जात हेवे शुण हे विधाता ४८
मुहिँ आपे जनक दुहिता बिभा होइ। अजोनि सम्भूतरे जात जे थिबे होइ ४९
जनक भाइ दुहिता अनन्त हेवे विभा। गर्भधारी तिनि राणी शोभा हेब प्रभा३३५०
प्रथम नारींकि पर्शुराम बिभा होइ।
चतुर्थे बेनि नारी सुदर्शन शंख चक्र बिभा होइ३३५१
शुणिण देवताए हरष मन हेले। मेलाणि मागिण से जेझा पुर गले ५२
सेठारु नारायण विहार कले पुण। दश सहस्र बरष सम्पूर्ण हेला जाण ५३
कमळांकु बोइले ए वेनि कळा तेज। गिरिजा घरे जन्म होइ मोते भज ५४
शुणिण कमळा जे वेनि तेज छाडि। वेनि तेज गिरिजा घरणी देहे भरि ५५
तिनि मासरे वेनि दुहिता जात हेले। जाणि करि श्रीहरि शयन जाइ कले ५६
सात जुग शेष जे होइला पलंकरे। पर्शुराम जात हेले जुगर आद्यरे ५७

महीने बाद लक्ष्मी जनक ऋषि के घर में जन्म लेगी। ४३ तब लक्ष्मी तीन अंशों को धारण करके जन्म ग्रहण करेगी। पहले झरामती दूसरे वैदेही नाम से तीसरे पार्वती के रूप में उत्पन्न होगी। पार्वती के अंश से उत्पन्न हुयी स्त्री अनादि होगी। ४४-४५ चौथे मालिनी और सुमालिनी उत्पन्न होंगी। चारों स्त्रियों के गर्भ से आठ पुत्र होंगे। ४६ दो माताओं से युक्तिपूर्वक जन्म होगा। पार्वती के अंश से कमला अयोनिज होगो। ४७ दोनों माताओं के गर्भ से तीन पुत्रियाँ उत्पन्न होंगी। हे ब्रह्मा! आप सुन लें। ४८ मैं स्वयं जनक की पुत्री से विवाह करूँगा जो अयोनिसम्भूत होगी। ४९ जनक के भाई की पुत्री से अनन्त का विवाह होगा। गर्भ-धारिणी तीनों रानियों की शोभा प्रकाशित होगी। ३३५० प्रथम नारी से परशुराम का विवाह होगा। चौथे दोनों नारियाँ सुदर्शन शंख चक्र से विवाहित होंगी। ३३५१ यह सुनकर देवताओं के मन प्रसन्न हो गये। वह विदा लेकर अपने घर चले गये। ५२ तब नारायण ने वहाँ विहार किया। इसमें दस हजार वर्ष व्यतीत हो गये। ५३ उन्होंने लक्ष्मी से कहा कि इन दोनों कलाओं का परित्याग करके गिरिजा के घर से उत्पन्न होकर मेरी सेवा करो। ५४ यह सुनकर लक्ष्मी दोनों तेजों को त्यागकर गिरिजा के शरीर में जा मिली। ५५ तीन महीने में दोनों पुत्रियाँ उत्पन्न हुयीं यह जानकर भगवान जाकर सो गये। ५६ सेज पर लेटे-लेटे सतयुग समाप्त हो गया। युग के प्रारम्भ

सप्त पुर साधिण दुष्ट निबारिले। तपरे मन करि श्रीहरि सुमरिले ५८
तेणु नारायण दशरथ घरे जात। अनन्त आयुध धरि मूरति सम्भूत ५९
एबे जन्म हेबार हेला छड़ मास। तेणु करि देबतांकर चिन्ता जे उश्वास३३६०
पार्बती बोइले देव जनम हरि हेले। कमळा अंश घेनि जन्मत नोहिले३३६१
अजोनि सम्भूतरे जनम हेबे पुणि। अजोनि अनळे केउँ ठारे पुणि ६२
बैशानर देवता अटन्ति पुरुषत। पुरुष अंगरु स्तिरी केमन्ते हेला जात ६३
ईश्वर बोइले गो से कथा एबे शुण। केउँ रूपे जात हेले कमळा देबी पुण ६४
प्रथमे गिरिजा घरे कमळाए जात। झरामती बेदमती नामरे सम्भूत ६५
सप्त जुग तप करि बेदमती गला। मर्त्यपुरे जाइ देबी प्रबेश होइला ६६
दशग्रीव जम्बुद्वीप मण्डळरे फेरि। बेदमती कि देखिण बळात्कार करि ६७
बळबन्त पण देखि देबी शरीर छाड़ि गला।
बैकुण्ठ भुबने कमळा अंशरे सम्भाइला ६८
देखिण दशग्रीव शव घेनिण चळि। जाइण लंका नवरे निज मन्दिरे मिळि ६९
ताहार पाट राणीकि मन्दोदरीकि कहि। ए मांस तिअण मुँ भोजन करिबइँ३३७०
एहा कहिण राजन बेगे चळि गले। एमन्त समयरे नारद मिळिले३३७१
मन्दोदरीकि बोइले शुण गो सती नारी।
तो स्वामी जेउँ मांसकु देले आणि करि ७२

में परशुराम उत्पन्न हुये। उन्होंने सातों लोकों से युद्ध करके दुष्टों का नाश किया और तपस्या में मन लगाकर भगवान का स्मरण करने लगे। ५७-५८ तब भगवान अनन्त आयुध को लेकर दशरथ के घर में रूप धारण करके उत्पन्न हुये। ५९ इस समय जन्म लिये हुये छह महीने हो चुके हैं। इसीलिये देवताओं के उद्धार की चिन्ता है। ३३६० पार्वती ने कहा हे देव ! भगवान का जन्म तो हो गया परन्तु कमला अंश ग्रहण करके उत्पन्न नहीं हुयी। ३३६१ वह तो अयोनि-सम्भूता होगी। बिना योनि की गर्भी के वह कैसे होगी। ६२ अग्नि देव तो पुरुष है। पुरुष के अंग से स्त्री कैसे उत्पन्न हुयी। ६३ शंकर जी बोले कि अब वह कथा सुनों कि कमला देवी किस प्रकार से उत्पन्न हुयी। ६४ पहले गिरिजा के घर में लक्ष्मी झरामती और वेदमती नाम से उत्पन्न हुयीं। ६५ सात युग पर्यन्त तपस्या करके वेदमती चली गई और वह मृत्युलोक में जा पहुँची। ६६ जम्बू द्वीप मंडल में घूमते हुये दसकण्ठ ने वेदमती को देखकर उससे बलात्कार किया। ६७ उसकी उद्दंडता देखकर देवी ने शरीर त्याग कर दिया और बैकुण्ठ लोक में कमला के अंश में समाहित हो गई। ६८ यह देखकर दशग्रीव शव लेकर चल पड़ा और लंका में जाकर अपने महल में पहुँचा। ६९ उसने अपनी पटरानी मंदोदरी से कहा कि इस मांस से रसोई बनाओ। मैं भोजन करूँगा। ३३७० इतना कहकर राजा शीघ्र ही चला गया। इसी समय वहाँ नारद पहुँच गये। ३३७१ उन्होंने मंदोदरी से कहा हे सती नारी ! सुनों। तुम्हारे स्वामी

सेहु मांस जे देवंकु कूट जाण । खाइले मरिव जे अवश्य स्वामी पुण ७३
एबे से शवकु मञ्जुषरे भरि । समुद्ररे मेलि देले सरिब चिन्ता तोरि ७४
शुणिण मन्दोदरी सुबर्ण मञ्जुषरे । मेलि देला नेइ करि सागर भितरे ७५
भारा पाइण मञ्जुष बुडिला सागररे । धरणी घेनि गला मिथिळा नवररे ७६
निर्मळ स्थानरे नेइण गुप्त कला । दश सहस्र बरष एथिरे बहिगला ७७
देवतांकर छळे जे बासुदेव जात । बासुदेव जात देखि विधाता हेले चेत ७८
मञ्जुषर भितरे जाइण मिळिले । सतीर शवकु सेहि पितुळा रचिले ७९
द्वादश आंगुळ नासा श्रवण करि पुण । मस्तक मुख चक्षु जे कलेक भिआण३३८०
हस्त पाद उदर जे वक्षस्थळ कले । मञ्जुषर भितरे शुआइ चळिगले३३८१
कुशध्वज राणी गर्भे कमळा अंश नेइ । रजस्वळारे ज्योति मिशाइण थोइ ८२
ऋतु स्नान करन्ते कुशध्वज राणी पुण । राणी कि घेनि राजन कला बिहरण ८३
एथु अनन्तरे जे ईश्वर कहिले । धनु जाग करिबा बोलि जनक कहिले ८४
जनक ऋषि आज्ञारे सकळ तिआरिण । छामुण्डिआ घर करन्ते दिन शेष पुण ८५
बरषा ऋतु देखि समस्ते मनाकले । आश्विन शुक्ल पक्षे अनुकूळ कले ८६
से जनक ऋषि अणाइ सकळ राजा पुण ।
लोडिण चारि मासरे समस्त साइतिण ८७

ने जो माँस लाकर दिया है। वह माँस देवताओं का षड़यंत्र है। उसे खाने से तुम्हारा स्वामी अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होगा। ७२-७३ इस समय उस शव को मंजूषा में रखकर समुद्र में फेंक देने पर तुम्हारी चिन्ता समाप्त हो जायेगी। ७४ यह सुनकर मंदोदरी ने स्वर्ण की मंजूषा में उसे भरकर समुद्र में फेंक दिया। ७५ भार पाकर वह मंजूषा समुद्र में डूब गई। पृथ्वी उसे लेकर मिथिला नगर पहुँच गई। ७६ उसे लेकर एक सुन्दर स्थान में छिपा दिया। इसमें दस हजार वर्ष व्यतीत हो गये। ७७ देवताओं के बहाने नारायण उत्पन्न हो गये। उन्हें देखकर ब्रह्मा को चेतना आ गई। ७८ वह मंजूषा के भीतर जा पहुँचे। उन्होंने सती के शव से एक पुतली का निर्माण किया। ७९ उन्होने बारह अंगुल के नाक तथा कानों की रचना की। फिर मस्तक मुख तथा नेत्रों का निर्माण किया। ३३८० हाथ पैर तथा वक्षस्थल बनाया तथा मंजूषा के भीतर उसे लिटाकर चले गए। ३३८१ कुशध्वज राजा की रजस्वला रानी के गर्भ में लक्ष्मी का अंश रख कर ज्योति मिला गए थे। ८२ ऋतु स्नान करने पर रानी के साथ राजा कुश-ध्वज ने बिहार किया। ८३ शंकर जी बोले इसके अनन्तर जनक ने धनुष यज्ञ करने को कहा। ८४ जनक ऋषि की आज्ञा से सब तैयारियाँ करने तथा तम्बू रावटियाँ आदि लगाने में दिन समाप्त हो गया। ८५ वर्षा ऋतु देखकर सबने मना किया तथा आश्विन शुक्ल पक्ष में योग निकाला गया। ८६ उस जनक ऋषि ने समस्त राजाओं को बुलवा कर चार महीनों में समस्त सामग्री एकत्रित

आश्विन पशिबारु पात्र मन्त्री राइ। तिनि पुर ऋषिकि निमन्त्रण कल जाइ ८८
अगस्ति मार्कण्ड जे नारद चळि गले। तिनि पुर ऋषिकि जाइण अणाइले ८९
पाताळकु नारद गलेक जे पुण। नाग ऋषि सिद्ध ऋषि अणाइले जाण३३९०
स्वर्गकु मार्कण्ड गलेक बरण करि। देवर्षि ब्रह्मर्षि घेनिण जे आसि मिळि३३९१
मर्त्यपुर पारेश्वर भ्रमण करि गले। सकळ ऋषिकि जे बरणे अणाइले ९२
लक्षेक ऋषि आसिण हेले पर बेश। ऋषि माने आसन्ते आश्विन मास शेष ९३
लक्षेक ब्राह्मणंकु अणाए ऋषिराए। जाग शाळ शोधाइ बाकु अनुकूळ बुझाए ९४
दशमी रबिवार बेळ जे उदयकु। जागशाळ अनुकूळ मिळिला ताहांकु ९५
प्रभातुँ सकळ ऋषि स्नान शौच करि। महा लंगळ घेनिण जाग शाळारे मिळि ९६
ऋषिमाने बेद ध्वनि कले जे उच्चरे। ब्राह्मणे बेद ओंकार बेद ध्वनि कले ९७
चण्ड पुत्रमाने जे जोग लग्न कहि। महा लंगळ स्थापिण पूजा कले तहिँ ९८
पुष्प चन्दन जे नाना वर्णरे गन्ध। देइण पूजाबिधि सारिलेक बेग३३९९
लक्षेक शंख महुरी शबद कले घेरि। बिर बाजा दुन्दुभि बजाइ श्वर करि३४००
हरि बोल रामताळि करन्ति सर्बे मिळि।
नारी माने कुशळे पुण द्यन्ति हुळहुळि३४०१

कर ली। ८७ आश्विन मास लगते ही उन्होंने सभासद तथा मंत्री को बुलाकर उन्हें भेजकर तीनों लोकों के ऋषियों को निमंत्रित किया। ८८ नारद अगस्त तथा मार्कण्ड जाकर तीनों लोकों के ऋषियों को ले आए। ८९ नारद पाताल को गए। वह नाग ऋषि तथा सिद्ध ऋषियों को लिवा लाए। ३३९० स्वर्ग में निमंत्रण देने मार्कण्ड ऋषि गए। देवर्षि तथा ब्रह्मर्षियों को लेकर वह आ पहुँचे। ३३९१ पारेश्वर मृत्युलोक में भ्रमण करके समस्त ऋषियों को निमंत्रित करके ले आए। ९२ एक लाख ऋषि वहाँ आ पहुँचे। ऋषियों के आते-आते आश्विन माह समाप्त हो गया। ९३ ऋषिराज ने एक लाख ब्राह्मण बुलवाए और उनसे यज्ञशाला के शोधन के लिये कहा। ९४ उन्हें यज्ञशाला-शोधन का मुहूर्त प्रातः दशमी को रविवार के दिन मिला। ९५ प्रभात काल में ही समस्त ऋषि स्नान शौचादि से निवृत्त होकर महान हल को लेकर यज्ञशाला में जा पहुँचे। ९६ ऋषियों ने उच्चस्वर में वेद-ध्वनि की तथा ब्राह्मणों ने ॐकार युक्त वेदों का पाठ किया। ९७ तंतज्ञों ने शुभलग्न बताकर महान हल की पूजा करके उसे वहाँ स्थापित कर दिया। ९८ उन्होंने शीघ्र ही पुष्प चन्दन तथा नाना प्रकार के गन्ध से पूजा विधि समाप्त की। ९९ लाख-लाख महुरी तथा शंख ध्वनि कर उठे। वीर वाद्यों तथा दुन्दुभि का निनाद भरने लगा। ३४०० सब लोग मिलकर ताली बजाकर हरि बोल तथा राम नाम लेने लगे बड़ी कुशलता से नारियाँ मांगलिक ध्वनि करने लगीं। ३४०१ दस ऋषियों

दश गोटि ऋषि जे कन्धे जुआळि धरि ।
लंगळ कण्टिर उपरे जनक हस्त भरि २
पाद देइ लंगळरे चाळिलेक पुण । सतर पाद पर्य्यन्त लंगळ गमन ३
सतर पाद ठारे लंगळ फाळ मुने । मञ्जुषरे लागइ जे छन्दे एणे तेणे ४
ऋषि ब्राह्मण समस्ते शबद गोळ कले। किस मूळरे लागिला बोलिण खोळाइले ५
खोळन्ते सुबर्ण जे मञ्जुषि देखि पुण । आनन्दरे ऋषिमाने तोळिले बेगे जाण ६
तोळिण समस्थाने नेइण ताकु रखि । लंगळ तेजि जनक मञ्जुष फेडि देखि ७
मञ्जुष भितरे बिधाता पशिण करि । चेता जीव देइण जे भलेक बाहारि ८
जनक मञ्जुष फेडन्ते दुहिता छाड़े रड़ि । देखिण जनक ऋषि श्रद्धारे जे धरि ९
करे धरि खेळन्ते दुहिता जुबा हेला परा ।
जगत मोहिनी सिन्धु दुहिता दिशे तोरा३४१०
देखिण जनक ऋषि दुहिता कले अलगा ।
ऋषि ब्राह्मण सकळ देखिण हेले ताटका३४११
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । दुर्बासा ऋषि जाइ दुहिता पाशे मिळि १२
बोइले जनक राजा शुण मो बचन । कहुछि कथा ए तुम्भे पाळिब जतन १३
से बाळिर लम्ब हता घरणी सहिते । श्री अंग न छुआँइबु कहिलि मुं तोते १४

ने कन्धों पर जुआँ रख लिया। जनक ने हल की मूठ पर हाथ रख दिया। २ उन्होंने हल पर पैर रखकर हल चालन किया। सत्रह डग तक हल चला। ३ सत्रह डग पर हल के फाल की नोक छिपी हुई मंजूषा में लगकर डगमगाने लगी। ४ सभी ऋषि ब्राह्मणों में चाँचर मच गई। इसकी जड़ किससे अटक गई; यह कहते हुए उन्होंने उसे खुदवाया। ५ खोदने पर सुवर्ण-मंजूषा को देखकर आनन्द से ऋषियों ने उसे शीघ्र ही उठा लिया। ६ उन्होंने उसे उठा कर समतल स्थान में रखा। जनक ने हल छोड़कर मंजूषा को खोलकर देखा। ७ मंजूषा के भीतर से ब्रह्मा के द्वारा घुसकर दिया हुआ चैतन्य जीव भली प्रकार से बाहर निकाला गया। ८ जनक के मंजूषा खोलने पर बालिका रुदन करने लगी। यह देखकर जनक ऋषि ने प्यार से उसे उठा लिया। ९ हाथों में लेकर खिलाते-खिलाते बालिका युवा हो गई। वह संसार को मोहित करनेवाली सागर तनया लक्ष्मी के समान सुन्दर दिखने लगी। ३४१० यह देख जनक ऋषि ने बालिका को अलग कर दिया। ऋषि-ब्राह्मण तथा समस्त लोग यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए। ३४११ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् दुर्वासा ऋषि बालिका के निकट जा पहुँचे। १२ वह बोले हे राजा जनक ! हमारी बात सुनो। मै तुमसे इसे यत्नपूर्वक पालने के लिये कह रहा हूँ। १३ यह बालिका आजानुबाहु (नारायण) की पत्नी है। इसके श्री अंग को किसी दास-दासी को न छूने देना। यह मैं तुमसे कह रहा हूँ। १४ पुत्र दुहिता समेत धोबी

रजकारी रजक ए दुहेँ बेनि जन। पुत्र दुहिता सहिते निषेध कल जाण १५
कमळा बोइले पिता एकि बिड़म्बण। जेमन्ते बिभा हेब से कथा कह पुण १६
केहु उच्च केहु नीच अटन्ति जाति पुणि।
से कथा फळाइ मोते कह मुनि मणि १७
दुर्बासा बोइले देव बहु सेवा करि। देवतांकु शुद्र जे छुइंबा नकरि १८
मनुष्य अंश उच्च लोकर सेवा कारी। तुम्भर अंग से छुइँबे किपरि १९
जानकी बोइले पिता ए केबण प्रकार। मुहिँ चळिबइँ एबे केमन्त प्रकार३४२०
ए कथाकु सञ्चपिण कह पिता तेबे।से कथा शुणि दुर्बासा बोलन्ति जे एबे३४२१
दुर्बासा बोले पन्दर दिन रजस्वळा। शुद्धस्नान दिन तु जे न करिबु हेळा २२
दासींकि डकाइण माजणा बेगे होइ। अग्निरे स्नान करिबु चान्द मुहीँ २३
दासींकि घेनि कज्वळ सिन्दूर तु देबु। लम्ब हता घरणी रजकारीकि तेजिबु २४
अग्निरे स्नान करिले पक्षेक निर्मळ। अमळान बस्त्र जे मळिन नोहे तोर २५
जानकी बोइले अन्तस्तररे मुँ किस। हीन सेवाकारींक आकट कले किस २६
दुर्बासा बोइले तु अदु कमळिनी। तोर स्वामी अटन्ति जे बासुदेव पुणि २७
त्रैलोक्यर करता अटन्ति नारायण।ऋषि ब्राह्मण देवता तांकर सेवाकारी जाण २८
जानकी बोइले से जेबे अटन्ति नारायण। मर्त्यपुरे जात हेले केबण कारण २९

तथा धोबिन यह दोनों विशेषतय: वर्जित हैं। १५ कमला ने कहा हे पिता! यह तो बड़ी विडम्बना है। विवाह कैसे होगा वह बात हमसे कहिए। १६ कौन उच्च तथा कौन नीच जाति का है। हे मुनिश्रेष्ठ! यह बात आप हमें खोलकर समझाइये। १७ दुर्वासा बोले कि देवता की सेवा बहुत लोग करते हैं। परन्तु शूद्र देवता का स्पर्श नहीं करते। १८ मानव अंश के उच्च सेवाकारी भी तुम्हारा अंग कैसे स्पर्श करेंगे। १९ जानकी ने कहा हे पिता! यह कैसे होगा। मैं अब किस प्रकार से चलूँ। ३४२० यह बात आप संक्षिप्त रूप में मुझे बताइये। यह बात सुनकर दुर्वासा ने कहा। ३४२१ पन्द्रह दिन में तुम रजस्वला होगी। शुद्ध स्नान के दिन तुम प्रमाद न करना। २२ दासियों को बुलवाकर तुम शीघ्र ही मार्जनकर लेना। हे चन्द्रमुखी! फिर तुम अग्नि में स्नान करना। २३ दासियों को लेकर तुम काजल तथा सिन्दूर लगाना। हे आजानुबाहु-पत्नी! तुम सेवाकारियों व धोबी का त्यागकर देना। २४ अग्नि में स्नान करने पर एक पाख में तुम निर्मल हो जावोगी। तुम्हारे अम्लान वस्त्र कभी मलिन नहीं होंगे। २५ जानकी ने कहा कि मेरे अन्तस में क्या हो रहा है। हीन सेवाकारियों पर आपने रोक क्यों लगा दी है। २६ दुर्वासा बोले कि तुम पद्मिनी हो। तुम्हारे स्वामी भगवान हैं। २७ भगवान तीनों लोकों के कर्त्ता है। ऋषि ब्राह्मण तथा देवता उनके सेवक हैं। २८ जानकी ने कहा यदि वह भगवान हैं तो कौन कारण से उन्होंने

दुर्बासा बोइले दुष्ट असुर दळिबाकु । अजोध्यारे जात हेले देवंकर बपु३४३०
दशरथ घरे जन्म हेले नारायण । चतुर्द्धा रूपे बिजय़ कले नारायण३४३१
छड़ मास सम्पूर्ण होइला आजकु । दशरथ घरे बिजे कले असुर छळकु ३२
जानकी बोले केते दिने भेट हेबे । से कथा बड चिन्ता मनरे हेला एबे ३३
दुर्बासा बोइले षड़मास एगार बरषे ।
विश्वामित्र जाग करिबे कौशिक बन देशे ३४
जाग रखिबा निमन्ते अणाइबे पुण । जाग रखि दैत्यंकु मारिबे नारायण ३५
जाग सम्पूर्णरे बिश्वामित्र मुनि तोष होइ ।
तोर पिता पुरकु घेनि आसिबे सेहि ३६
तोर पिता शिव धनु जात्रा जे थिबे करि। राजा गण मुनिगण अणाइ थिबे बरि ३७
देवता ब्राह्मण ऋषि जे सकळ । नर वानर जे आवर दैत्य मेळ ३८
केहि शिब धनुकु आमञ्चि न पारिबे । तोर स्वामी नारायण धनु आमञ्चिबे ३९
समस्तंक मुखरे लगाइबे काळि पुण । तोते बिभा हेबे जे तहुँ नारायण३४४०
पार्बती अंशरे जात तोहर भग्नी पुण ।
जात होइ थिबे तांकु अनन्त बिभा जाण३४४१
बेनि दुहिता जात हेबे कुशध्वजर जाण । से दुइ भाइंकि तेबे से दुहिता बिभा
। माळिनी सुमाळिनी तोहर गुणे शोभा ४२

मृत्युलोक में जन्म लिया। २९ दुर्वासा ने कहा कि वह दुष्ट असुरों का नाश करने के लिये अयोध्या में देव शरीर धारण करके उत्पन्न हुये है। ३४३० भगवान ने चार रूप धारण करके दशरथ के घर में जन्म लिया है। ३४३१ छह मास आज से पूरे हो गये, असुरों के बहाने वह दशरथ के घर में पधार चुके हैं। ३२ जानकी ने कहा उनसे कितने दिनों में भेंट होगी। इस बात से मेरे मन में बड़ी चिन्ता हो रही है। ३३ दुर्वासा ने कहा कि छह माह ग्यारह वर्ष में विश्वामित्र कौशिक वन खण्ड में यज्ञ करेंगे। ३४ यज्ञ रक्षा के लिये वह उन्हें ले आयेंगे। वह भगवान यज्ञ की रक्षा करते हुये दैत्यों का विनाश करेंगे। ३५ यज्ञ पूर्ण होने पर मुनि विश्वामित्र उनसे प्रसन्न होकर उन्हें तुम्हारे पिता के नगर में साथ ले आयेंगे। ३६ तुम्हारे पिता राजागणों तथा मुनिगणों को आमंत्रित करके शिव धनुष महोत्सव करेंगे। ३७ देवता, ब्राह्मण, ऋषि, नर वानर तथा दैत्य यह सभी लोग वहाँ एकत्रित होंगे। ३८ कोई भी शिव धनुष को उठाकर चढ़ा न पायेगा। तुम्हारे स्वामी नारायण धनुष का आकर्षण करेंगे। ३९ वह सबके मुख पर कालिमा पोत देंगे और वहाँ पर भगवान तुमसे विवाह करेंगे। ३४४० पार्वती के अंश से तुम्हारी बहिन उत्पन्न हुयी है। वह अनन्त देव के साथ विवाह करेंगी। ३४४१ कुशध्वज के दो पुत्रियाँ उत्पन्न होंगी वह दोनों भाइयों को विवाहित होंगी। मालिनी तथा सुमालिनी तुम्हारे गुणों

से बेनि भग्नी जे जोनि मध्यु जात। तुम्भे दुइ भउणी अजोनि सम्भूत ४३
आगत निगत जणा तोहर भग्नीकि।
पचारिले कहिब न पचारिले न कहिबटि ४४
ए चारि बर्ष छड़मास धनु जाग हेब। तोर पिता निय़म करिण कहिब ४५
जे धनु भांगिब से मो दुहिता बिभा हेब।
एहा शुणि ऋषि राजा सकळ तोष भाव ४६
शुणिण जानकी जे परम तोष हेले। सकळ ऋषि ब्राह्मणकु नमस्कार कले
जान चढिण देबी जे अन्तः पुरकु गले ४७
हरि बोल रामताळि पडिला हुळहुळि। राज्यर नरनारी मनरे सर्ब भाळि ४८
के बोले असम्भव देखागला आज। के बोले जनम होइ नवजुबार तेज ४९
के बोले सिन्धु सुता कमळा अटे एहि। के बोले ईश्वरंकर घरणी अटइ३४५०
के बोले बेदबर घरणी साबित्री। जन्मकाळु जन्म होइ मोहुअछि पृथ्वी३४५१
के बोले शची देबी छाय़ा जे रोहिणी।
के बोले अइला अबा गौतम नारी पुणि ५२
गौतम शापरे पाषाण होइ थिला। एबे बिधाता आणि एठारे जातकला ५३
एमन्त बिचार जे करन्ति नर नारी। सकळ देवताए स्वर्गपुरे भळि ५४

से सुशोभित होंगी। ४२ वह दोनों बहिनें योनि से उत्पन्न हुयी हैं और तुम दोनों बहन अयोनिज हो। ४३ तुम्हारी बहन को भूत-वर्तमान ज्ञात है। पूँछने पर वह कहेंगी और न पूंछने से नहीं कहेंगी। ४४ इन चार वर्षो तथा छह महीनों में धनुष यज्ञ होगा। तुम्हारे पिता प्रतिज्ञा करके कहेंगे कि जो धनुष को तोड़ेगा, वह मेरी पुत्री से विवाह करेगा। यह सुनकर ऋषि तथा सभी राजा संतुष्ट हो गये। ४५-४६ जानकी यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुयी। उसने समस्त ऋषियों तथा ब्राह्मणों को प्रणाम किया और देवी रथ पर चढ़कर अन्तःपुर को चली गईं। ४७ हरिबोल तथा रामधुन एवं मांगलिक शब्द होने लगे। राज्य के समस्त नर-नारी मन में विचार करने लगे। ४८ कोई कहता था कि आज अद्भुत बात देखने में आई। कोई कहता था कि यह नवयौवना तेजस्विनी उत्पन्न हुयी है। ४९ कोई बोला कि यह सागर सुता लक्ष्मी है। कोई कह रहा था कि यह शंकर की गृहणी है। ३४५० कोई कहता था कि यह ब्रह्मा की पत्नी सावित्री है। जन्म धारण करने के समय से ही यह पृथ्वी को मोहित कर रही है। ३४५१ कोई देवी शची कोई छाया और कोई रोहिणी बता रहा था। कोई कह रहा था कि क्या गौतम की स्त्री पुनः आ गई। ५२ गौतम की स्त्री उनके शाप से पत्थर हो गई थी। अब ब्रह्मा ने उसे लाकर यहाँ उत्पन्न कर दिया। ५३ नर-नारी इस प्रकार का विचार कर रहे थे और समस्त

बिचारन्ति नारायण घरणी कमळा । अजोनि सम्भूते करिबे बोलि लीळा ५५
एमन्ते बिचारि देबे ब्रह्मा शिव घेनि ।
सुरराज संगे जान चढिण बाहारन्ति पुणि ५६
मिथिळा नगर सळखे रहिले शून्यरे ।देखु छन्ति रहि करि सुधर्मा सभा परे ५७
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती । कमळा चळि गले जनक नवरटि ५८
देखिण मातामाने हरष मन हेले । जनक ऋषि घरणी कोळरे बसाइले ५९
मुखरे चुम्बन देइण आउँसे देह पुण । कोळरु उठि जानकी मान्य कले पुण३४६०
एमन्त समयरे जानकी देबी पुण । एगार घडि समयरे रजस्वला जाण३४६१
जाणिले जनक कहिले ऋषि ब्राह्मणरे । शुणिण समस्ते हरष हेले मनरे ६२
चण्ड पुत्रंकु डाकिण जोग लग्न गणि ।दोष अबिरोध ताठारे नाहिँ किछि पुणि ६३
माहेन्द्र समयरे जे शुभ लग्न छन्ति ।सेठारु पुण जे पाञ्च दिन गला बिति ६४
पाञ्च दिनरे मद्दर्दन माजणा हेले बइदेही । × × × ६५
जनककु बोइले स्नान करिबे दुहिता । अग्नि स्थापन कर होइण जे स्वस्ता ६६
शुष्क काष्ठ लगाइ अग्नि तेज कले ।
प्राञ्जळित होइण अग्नि जळिला भले ६७
हरि बोल राम ताळि सेठाबरे पडि । जळिला हुताशनरे बइदेही मिळि ६८
अग्निरे स्नान करि होइले तेजबन्त ।अमळाण शाढ़ी पिन्धि बाहार तुरित ६९

देवता स्वर्गलोक में सोच रहे थे कि यह वासुदेव की पत्नी अयोनिसम्भूता कमला है जो लीला करेगी । ५४-५५ इस प्रकार का विचार करते हुये देवतागण ब्रह्मा, शंकर तथा देवराज इन्द्र को लेकर यान पर चढ़कर निकल पड़े । ५६ वह आकाश में मिथिला नगर की सीध में सुधर्मा सभा में स्थित रह कर देख रहे थे । ५७ हे भगवती ! सुनो । इसके पश्चात् लक्ष्मी जनक के महल में चली गई । ५८ उसे देखकर माताओं के मन प्रसन्न हो गये । जनक ऋषि की पत्नी ने उसे गोद में बैठा लिया । ५९ उन्होंने उसके मुख को चूमते हुये शरीर को सहलाया । तब जानकी ने गोद से उठकर उनका सम्मान किया । ३४६० इसी समय देवी जानकी ग्यारह घड़ी के समय में रजस्वला हो गयी । यह जानकर जनक ने ऋषि और ब्राह्मणों को बताया जिसे सुनकर सबके मन प्रसन्न हो गये । ३४६१-६२ चण्ड पुत्र को बुलाकर योग लग्न की गणना करवायी । उसमें किसी प्रकार का दोष तथा अवरोध नहीं था । माहेन्द्र वेला में शुभ लग्न था । उससे पाँच दिन व्यतीत हो चुके थे । पाँचवें दिन वैदेही ने मर्दन-मार्जन किया । ६३-६४-६५ उन्होंने जनक से कहा कि पुत्री स्नान करेगी । आप भलीभाँति अग्नि की स्थापना कीजिये । ६६ सूखी लकड़ी लगाकर अग्नि प्रज्ज्वलित की गयी । अग्नि प्रज्ज्वलित होकर प्रचंडता से जलने लगी । ६७ हरिबोल तथा राम-ताली ध्वनि वहाँ होने लगी । वैदेही आग में प्रविष्ट होकर जलने लगी । ६८ वह अग्नि में स्नान करके तेजयुक्त हो गई और

देखिण ऋषि ब्राह्मण देवता तोष हेले ।
असम्भव कथा बोलि नर नारी बिचारिले३४७०
अग्नि स्नान सारि बारु देवता गण पुण । सनातन ऋषिंकि कहिले तुम्भे शुण३४७१
आम्भर अक्षत घेनिण तुम्भे जिब । जनक ऋषि नबरे प्रवेश होइब ७२
नामकरण सरिबारु अक्षत देव पुण ।कहिब जनक ऋषिंकि आम्भर बचन ७३
बोलिब जे ए चारि बरष पर्य्यन्ते । धनुजाग करिब ए दुहिता निमन्ते ७४
शिव धनुरे गुण देइण जेहु आमञ्चिब ।
ताहाकु बिभा करिबु दुहिता प्रिय भाव ७५
जाणिबु नारायण अटन्तिटि सेहि । गति मुकति लभिबु तांक मुख चाहिँ ७६
शुणिण देवऋषि बेग चळिगले ।मिथिळा जनक नबरे जाइण मिळिले ७७
सुमन्त ऋषिंकि जे देखिण सकळ । मान्य धर्म करिण बसाए सभार ७८
ब्रह्म ऋषि चाहिँ बोलन्ति जनक । दुहिता नाम गोटि किस देबा लेख ७९
अगस्ति बोइले ए बैदेही मण्डळ । बइदेही नाम जे होइब एहांकर३४८०
मारकण्ड बोइले जानकी नाम सार । जाग शाळारु जेणु उत्पत्ति तांकर३४८१
नारद बोइले सीता नाम एहार हेउ । सत्य मने उपुजिला नबजुबा जहुँ ८२
शुणिण जनक ऋषि परम तोष हेले । तिनि नाम सार बोलि सबुंकि कहिले ८३
सनातन ऋषि बोइले शुण जनक ऋषि । स्वर्गरु देवताए मोते अक्षत देइ पेषि ८४

शीघ्र ही कभी मलिन न होनेवाली साड़ी पहनकर बाहर आ गई। ६९ यह देखकर ऋषि, ब्राह्मण तथा देवता प्रसन्न हो गये। इस असम्भव बात को नर-नारियां अपने मन में सोचने लगीं। ३४७० अग्नि स्नान समाप्त होने पर देवताओं ने सनातन ऋषि से कहा कि आप सुनिये। ३४७१ आप हमारे अक्षत् लेकर जनक ऋषि के यहाँ जाइये। ७२ नामकरण होते समय यह अक्षत् दे देना और जनक ऋषि से कह देना कि इस पुत्री के लिये चार वर्ष पर्यन्त धनुष यज्ञ करो। ७३-७४ शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर जो उसे खींचेगा उससे प्रेम से पुत्री का विवाह कर देना। ७५ तब यह समझ लेना कि यह नारायण है और उनका मुख देखकर सुगति तथा मुक्ति प्राप्त करोगे। ७६ यह सुनकर देव तथा ऋषि शीघ्रतापूर्वक चले गये और मिथिला के राजा जनक के महल में जा पहुँचे। ७७ सुमन्त ऋषि को देखकर सबने उनका सम्मान करके सभा में बिठाया। ७८ जनक ने ब्रह्मर्षि को देखकर कहा कि पुत्री का नाम क्या रखा जाये। ७९ अगस्त ऋषि ने कहा कि यह विदेह मण्डल है। अतः इसका नाम वैदेही पड़ेगा। ३४८० मारकण्ड ने कहा कि जानकी नाम मुख्य रहेगा। क्योंकि इसकी उत्पत्ति यज्ञ-शाला से हुयी है। ३४८१ नारद ने कहा कि इसका नाम सीता हो। जब यह सच्चे मन से उत्पन्न होते ही नवयौवना बन गई। ८२ यह सुनकर जनक ऋषि को अत्यन्त संतोष हुआ। उन्होंने सबसे कहा कि यह तीनों नाम सार हैं। ८३ सनातन ऋषि ने कहा हे जनक ऋषि ! सुनो। स्वर्ग से देवताओं ने मुझे अक्षत्

नाराय़ण घरणी कमळा जात हेला। तेणु सिना देवतांक अक्षत अइला ८५
देवताए बोइले शिवधनु जे आञ्चिब। सीता कमळिनींकु सेहु विभा हेब ८६
आज ठारु एगार वरष पर्ज्यन्ते। एगार थर धनुजाग करिबे जनके ८७
जनक बोइले ए अटइ प्रमाण। सीतापाइँ धनुजाग करिबि भिआण ८८
एमन्त कहिबारु सनातन गले। अक्षत नेइ बइदेही शिररे देले ८९
जानकींक शिररे अक्षत ऋषिमाने देले। × × × ३४९०
ऋषि अक्षत पाइ परम तोष हेले सीता। बुद्धिरे बळवन्त सुन्दरी जगज्जिता३४९१
अक्षत देइण जे सनातन गले। देवंकर आगरे प्रबेश होइले ९२
सकळ कुशळ देवतांकु कहि। शुणिण देवताए शून्यरे चळि जाइ ९३
सुधर्मा सभा घेनि स्वर्गरे जाइ मिळि। हरषरे देवता जे जाहा पुण चळि ९४
पार्वती बोइले सेठारु किस हेला। कि रूपे जनक ऋषि जागरे हेले तोरा ९५
ईश्वर बोइले शुण हे भगवती।
पाञ्चमास जिवार आश्विन मास सम्पूर्णटि ९६
कार्त्तिक मास प्रथम दिनरु वृष्टि छाडि।
जाग आरम्भ कले सकळ ऋषि मिळि ९७
नारद बोइले शुण हे जनक। सुवर्णर मञ्जुषकु मध्यरे नेइ रख ९८
चन्दन अगुरु काठ चारि पाखे वेढ़ि। होम कले मञ्जुष होइब भष्म परि ९९

देकर भेजा है। ८४ नारायण की पत्नी लक्ष्मी उत्पन्न हुयी है। इसीलिये देवताओं के अक्षत् आये हैं। ८५ देवताओं ने कहा कि जो शिव-धनुष को चढ़ाकर तोड़ देगा, उसका ही विवाह कमलिनी सीता के साथ होगा। ८६ आज से ग्यारह वर्ष पर्यन्त ग्यारह वार जनक धनुष यज्ञ करेंगे। ८७ जनक बोले यह प्रमाण है। सीता के लिये मैं धनुष यज्ञ का आयोजन करूँगा। ८८ ऐसा कहने पर सनातन चले गये। अक्षत् लेकर जानकी के सिर पर डाल दिया। ८९ ऋषियों ने भी जानकी के सिर पर अक्षत् छोड़े। ३४९० सीता ऋषियों के अक्षत् को पाकर अत्यन्त तोष को प्राप्त हुयी। वह बुद्धि में बलवान तथा सुन्दरता में जगत को जीतने वाली थी। ३४९१ अक्षत् देकर सनातन चले गये और देवताओं के समक्ष जा पहुँचे। ९२ उन्होंने समस्त कुशल समाचार देवताओं को दिये जिसे सुनकर देवगण शून्य में चले गये। ९३ फिर वह स्वर्ग की सुधर्मा सभा में पहुँचे। प्रसन्नता से देवता लोग भी चल पड़े। ९४ पार्वती बोलीं फिर वहाँ क्या हुआ ? जनक ऋषि यज्ञ में किस प्रकार से रत हो गये। ९५ शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनो। पाँच महीने बीतने पर आश्विन माह पूरा हो गया। ९६ कार्तिक महीने के प्रथम दिन से वृष्टि समाप्त हो गई। सब ऋषियों ने मिलकर यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। ९७ नारद ने कहा हे जनक ! सुनो। सुवर्ण की मंजूषा को लेकर बीच में रखो। ९८ चन्दन अगुरु की लकड़ी

तेणु जाग चरुरे होइबे से बीर्ज्य । से बीर्ज्यरु जात होइब महातेज३५००
से तेज मूर्त्ति दुहिता सर्वज्ञ हेब । अनन्त ईश्वरंकु से नारी लभिब३५०१
सुन्दर पणे से जे पार्वतींकि जिणि । देखिले मोह हेब सुर मुनि पुणि २
शुणिण जनक ऋषि हरष होइले एबे ।अजोनि बेनि दुहिता मो कुळ उद्धरिबे ३
केवळ आम्भ बेनि भाइंकर नाहिँ पुत्रपुण ।
ए कथारे चिन्तार्थ आम्भे रहिलु जाण ४
नारद बोइले तुम्भकु तिनि सहस्र बर्षंत । नब सहस्र बर्षरे हेबे तुम्भर पुत्र ५
जेते बेळे झिअ जुआइँ सुदया करिबे । सेते बेळे बेनि भाइ चारि पुत्र पाइबे ६
शुणिण ऋषि गणे बिप्र गणे पुणि । जाग शाळे प्रबेश होइलेक जाणि ७
अगस्ति हेले आचार्ज्य बरणे मार्कण्ड । नारद दुर्बासा जे अष्टबक्र बिभाण्ड ८
पारेश्वर गउतम बिश्वामित्र पुण । एते ऋषिंकि जनक बरिलेक पुण ९
आउ ऋषि सकळे बेदध्वनि कले । बिप्रमाने मन्त्र सुमरि पढिले३५१०
जनक ऋषि आहुति देलेक अग्निरे । प्राज्जळित होइण जळिले बैशानरे३५११
कृष्णपक्ष शुक्ल पक्ष कार्त्तिके होम हेला । द्विपक्ष होमरे मञ्जुष रूप हेला १२
मार्ग शिर बेनि पक्ष कले होम पुण । नवमुखा नासिका बाहु पाद जाण १३

चारों तरफ से लगाकर हवन करने पर मंजूषा भस्म के समान हो जायेगी । ९९ तब यज्ञ के चरु से वीर्य होगा । उस वीर्य से महातेज उत्पन्न होगा । ३५०० वह तेजमूर्ति बालिका सर्वज्ञ होगी । वह नारी अनन्त देव को प्राप्त होगी । ३५०१ सौन्दर्य में वह पार्वती को जीतने वाली होगी । और उसे देखने से सुर-मुनि मोहित हो जायेंगे । २ यह सुनकर जनक ऋषि प्रसन्न हो गये और बोले अब यह दोनों अयोनिज कन्यायें मेरे कुल का उद्धार करेंगी । ३ केवल हम दोनों भाइयों के पुत्र नहीं हैं । इस बात से हमें चिन्ता बनी रहती है । ४ नारद ने कहा कि तुमको तीन हजार वर्ष हुये हैं । नौ हजार वर्ष होने पर तुम्हारे पुत्र होंगे । ५ जिस समय पुत्री तथा दामाद कृपा करेंगे । उस समय दोनों भाई चार पुत्रों को प्राप्त करेंगे । ६ यह सुनकर ऋषिगण तथा विप्रगण जाकर यज्ञशाला में प्रविष्ट हुये । ७ अगस्त आचार्य रूप में वरण हुये । फिर जनक ने मारकण्ड, नारद, दुर्वासा, अष्टावक्र, विभाण्डक, पारेश्वर, गौतम तथा विश्वामित्र इतने ऋषियों का वरण किया । ८-९ समस्त ऋषियों ने वेदध्वनि की । ब्राह्मणों ने मंत्रों का जाप और पाठ किया । ३५१० जनक ऋषि ने अग्नि में आहुति दी । प्रज्ज्वलित होकर अग्नि जलने लगी । ३५११ कार्तिक के कृष्ण पक्ष तथा शुक्ल पक्ष में हवन होता रहा । दोनों पक्षों में हवन करने से मंजूषा रूपायित हुयी । १२ अगहन माह के दोनों पक्षों में भी हवन हुआ, जिसमें नवीनमुख, नाक, हाथ तथा पैर हुये । १३ सब अंगों में रत्न के आभूषण

सर्वांगे रत्न भूषण अळंकार पिन्धि।
ज्योति तार दिशिला अग्निर कान्ति निन्दि १४
चारि पक्ष सरन्ते बेनि पक्ष गला। पाञ्च पक्षरे देबी जे जीव पाइला १५
पार्बतीर षडकळा तुटिण आसि पुणि। अग्नि बिदारण ठारे प्रबेश हेला जाणि १६
पाञ्च पक्षे अतुट नारी अग्निरु हेले जात।
जेणु से अग्निकु जिणि दिशे देबी रूप १७
अग्निरु देबी आसिण धरणी परे उभा।
देखिण ऋषि ब्राह्मण सकळ मने लोभा १८
पूर्ण आहुतिरे जाग समापत कले। दुध सर लबणी अमृत संजोगिले १९
शीतळ होइ अग्नि निर्बत्ति निर्बिकार। प्रथम जाग समाप्त हेला जनकर३५२०
शिव धनु पूजा करि से कन्या नाम देले। रूप गुण सुन्दर देखि उर्मिळा बोइले३५२१
नाम देबारु से कन्या परम तोष हेला। नव जुबा स्वरूपरे तेज प्रकाशिला २२
देव ऋषि बिप्रंकु ओळगे देबी होइ। झटक बिजुळि प्राए सेठारु चळिजाइ २३
जनक अन्तःपुरे हेले परबेश। जनक राणींहंसकु ओळगे हरष २४
जानकीर चरण नमिले शतेबार। बोइले स्वामी दर्शन बार बर्ष अन्तर २५
पार्बती बोले जानकी उर्मिला जन्ममुं शुणि थिलि।
माळिनी सुमाळिनींक कथा मुं न जाणिलि २६

अलंकार पहन कर अग्नि की कांति को निन्दित करती हुयी उसकी ज्योति दिखाई पड़ी। १४ चार पक्ष समाप्त होते हुये दो माह व्यतीत होने पर पाँचवें पक्ष में देवी को जीव प्राप्त हुआ। १५ पार्वती की छह कलायें टूटकर आकर अग्नि विदारण के समय से प्रविष्ट हो गई। १६ पाँचवें पक्ष में अक्षय नारी अग्नि से उत्पन्न हुयी। उस देवी का रूप अग्नि को जीतने वाला दिखाई दे रहा था। १७ वह देवी अग्नि से आकर पृथ्वी पर खड़ी हुयी। उसे देखकर ऋषि ब्राह्मण तथा सबके मन लुभा गये। १८ पूर्णाहुति से यज्ञ की समाप्ति हुयी। दूध, मलाई, मक्खन, अमृत संयोजित किये गये। १९ अग्नि शीतल होकर निर्विकार हो गई। जनक का पहला यज्ञ समाप्त हो गया। ३५२० शिव-धनुष की पूजा करके उस कन्या के रूप, गुण तथा सौन्दर्य को देखकर उसका नाम उर्मिला रखा गया। ३५२१ नामकरण हो जाने पर वह कन्या अत्यन्त संतुष्ट हुयी। उसके नवयुवा स्वरूप का तेज प्रकाशित हुआ। २२ देवता ऋषि तथा ब्राह्मणों को वह देवी प्रणाम करके चंचल विद्युत के समान वहाँ से चली गई। २३ वह जाकर जनक के अन्तःपुर में प्रविष्ट हुई और उसने प्रसन्नता से रानियों को प्रणाम किया। २४ उसने जानकी के चरणों में सौ बार नमन किया और बोली कि बारह वर्ष के अन्तर में स्वामी का दर्शन होगा। २५ पार्वती ने कहा कि जानकी तथा उर्मिला के जन्म की कथा तो हमने सुनी थी परन्तु मालिनी-

अजोनि सम्भूतरे ए दुहेँ जात हेले। उर्मिळा रजस्वळा न जाणिलि भले २७
ईश्वर बोइले से कथा एबे शुण।षड़ दिने उर्मिळा रजस्वळा हेला जाण २८
एगार दिने शुद्ध स्नान कले अतुट नारी।हुताशन जाळिण अग्निरे स्नान करि २९
नीळ बर्ण अमळाण पिन्धिण बाहारिले। देखिण जनक राणी परम तोष हेले३५३०
राज्यर नर नारी हेले चमत्कार।बेनि दुहिता अग्नि स्नान देखि नयनर३५३१
उर्मिळा तिनि मासरे थरे रजस्वळा। शुद्ध स्नान अग्निरे से करइ अबळा ३२
पक्ष करे जानकी पाकास्परश धरे। अग्निरे स्नान सेहु करन्ति हरषरे ३३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण शाकम्बरी। कुशध्वज राणी गर्भबासरे भारि ३४
तिनि मास षडपक्ष गलाक तार बहि। ता पक्षरु बार दिन भोग करे सेहि ३५
तेर दिवसे सेहु राणी पाइला पुण दुःख। शूळ आसे घन घन पाइला विमुख ३६
माघ मास कृष्ण पक्ष त्रयोदशी दिन। रबिबारे चौदघड़ि बेळ समयेण ३७
दुहिताए जात होइलाक पुण। पुणिहिँ शूळ आसे घन घन ३८
देखिण नारी माने आश्चम्बित हेले। एकि बिपरीत बोलि पुणिहिँ बोइले ३९
केहु बोलइ आउ किस होइबकि जन्म।एथिरे जाउळि होइ जात होन्ति पुण३५४०
एमन्ते कहु कहु दुहिताए जात।गायत्री साबित्री प्राए दिशन्ति सञ्जात३५४१

सुमालिनी की कथा ज्ञात नहीं हो पाई। २६ यह दोनों अयोनिसम्भूत के रूप में उत्पन्न हुई। उर्मिला के रजस्वला होने की बात ज्ञात नहीं है। २७ शंकर बोले कि अब वह कथा सुनो। छठे दिन उर्मिला रजस्वला हुई। २८ उस अक्षय रमणी ने ग्यारहवें दिन शुद्ध स्नान किया। उसने अग्नि जलाकर उसमें स्नान किया। २९ वह नीलवर्ण का अम्लान परिधान पहने हुए बाहर निकली। यह देखकर जनक की रानी अत्यन्त प्रसन्न हुई। ३५३० राज्य के नर-नारी चमत्कृत हो गए जब उन्होंने दोनों बालिकाओं का अग्नि स्नान नेत्रों से देखा। ३५३१ उर्मिला तीन माह में एक बार रजस्वला होती थी और वह शुद्धस्नान अग्नि में करती थी। ३२ प्रति पक्ष जानकी पाकास्पर्श होती और वह भी प्रसन्नतापूर्वक अग्नि में स्नान करती थी। ३३ हे शाकम्बरी ! तुम सुनो। इसके पश्चात् कुशध्वज की रानी गर्भ से गुरुतर हो गई। ३४ तीन माह छह पखवारे बीत गये। उस पक्ष के उसके बारह दिन व्यतीत हुये थे। ३५ तेरहवें दिन उस रानी को दुःख प्राप्त हुआ। पेट की व्यथा के कारण वह क्षुब्ध हो गई। ३६ माघ महीने के कृष्ण पक्ष के त्रयोदशी के दिन रविवार को चौदह घड़ी समय के व्यतीत होने पर उसके एक पुत्री उत्पन्न हुई। फिर भी उसे घनघोर पीड़ा उदर में होती रही। ३७-३८ यह देखकर नारियाँ आश्चर्य में पड़ गयीं और कहने लगी कि यह विपरीत क्या हो रहा है। ३९ कोई बोली कि क्या किसी और का जन्म होगा। ऐसे तो जुड़वे बच्चे होते हैं। ३५४० इतना कहते-कहते फिर एक पुत्री उत्पन्न हुयी। वह दोनों गायत्री तथा

इन्द्रंकर शची प्राय़े दिशन्ति शोभा वन । चन्द्र राणी रोहिणी पराएक जाण ४२
देखिण कुशध्वज राणीहंस पुणि । जाउँळि दुहिता राजांकु कहिलेक बाणी ४३
शुणिण दासीए जाइ राजांकु कहिले ।
सुना मोहिनी राणी गर्भु बेनि झिअ जात हेले ४४
शुणि करि हरष होइले राजन । वधाइ करि धन बहुत दासींकि देले पुण ४५
आनन्द होइण दासी फेरि करि गला । फुल नाड़ छेदि करि स्नान कराइला ४६
इन्तुडि लगाइण बेनि दुहिता सेकि । पञ्चुआति षठीघर सारिलेक सेथि ४७
सात दिने एन्तुडिकि कले अन्तर्मुक्त । राणी दुहिता स्नान कले जे तुरित ४८
बार दिने बार जात्रा कले से बिहित । एकोइशा करिण हरष कले चित्त ४९
मासक सम्पूर्णरे कुशध्वज गले । मिथिळा कोशळ देशरु ब्राह्मण बरिले३५५०
से बेनि दुहितांकर नामकरण पुणि । दुर्वासा बोइले शुण सकळ तुम्भे मुनि३५५१
ए बेनि दुहिता जे सुन्दर सुलक्षणी । गायत्री साबित्री प्राय़े दिशन्ति दुहें पुणि ५२
बड़ दुहिता नाम माळिनी सान सुमाळिनी ।
ए बेनि दुहिता जे कमळा अंशे जन्मि ५३
सप्त वर्ष ए जे होइबे नवजुबा । रजनीरे प्रबळ होइब य़ांक प्रभा ५४
शशीधर प्राय़े य़ांक बिकाशिब मुख ।
एगार बर्ष पाञ्च मासे पाइबे स्वामी सुख ५५

सावित्री के समान दिख रही थीं। ३५४१ इन्द्र की शची के समान सुन्दर दिखाई दे रही थी। वह चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी के समान थीं। ४२ यह देखकर कुशध्वज की रानियों ने राजा से जुड़वाँ बालिकायें होने की बात कही। ४३ यह सुनकर दासी ने जाकर राजा से कहा कि स्वर्ण मोहिनी रानी के गर्भ से दो बालिकायें उत्पन्न हुयी हैं। ४४ यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गये और उन्होंने दासी को प्रचुर धन वधाई के रूप में प्रदान किया। ४५ प्रसन्न होकर दासी लौट गई। उसने नाभिच्छेदन कराकर स्नान कराया। ४६ एण्डुरी लगाकर उसने दोनों कन्याओं की पंचुवाती तथा षष्ठी पूजा समाप्त की। ४७ सात दिनों पर एण्डुरी को ठीक करके रानी तथा कन्याओं को स्नान कराया। ४८ बारह दिनों पर बरहों का उत्सव किया गया। फिर प्रसन्नचित्त से इक्कीसा उत्सव हुआ। ४९ महीना पूर्ण हो जाने पर कुशध्वज ने जाकर मिथिला तथा कोशल देश के ब्राह्मणों को निमंत्रित किया। ३५५० फिर दोनों बालिकाओं का नामकरण हुआ। दुर्वासा ने कहा कि तुम सब मुनिजन सुनो। ३५५१ यह दोनों सुन्दर सुलक्षणी बालिकाएँ गायत्री तथा सावित्री के समान दिखाई दे रही हैं। ५२ बड़ी कन्या का नाम मालिनी तथा छोटी पुत्री का नाम सुमालिनी होगा। यह दोनों बालिकाएँ लक्ष्मी के अंश से अवतरित हुई हैं। ५३ यह सातवें वर्ष में नवयुवती हो जाएँगी रात्रि में भी इनकी कान्ति उज्ज्वल रहेगी। ५४ इनके मुख चन्द्रमा के समान विकसित होंगे। ग्यारह वर्ष

चारि भग्नी जाक एहु एकु एके जिणा। पाइबे उत्तम बर बिष्णुर अंश सिना ५६
नाम देइण ऋषि ब्राह्मण चळि गले। अनेक धन रत्न बेनि राजन देले ५७
ऋषि ब्राह्मणंकु से देले बेनि दुहिता। दण्ड प्रणाम छाडिले सबु चिन्ता ५८
ऋषि बिप्रे अक्षत देइण चळिगले। जे जाहा आश्रमरे जाइण मिळिले ५९
पार्बती बोइले तुम्भे शुण त्रिलोचन। अजोध्यारे कि कले दशरथंक नन्दन३५६०
सेहि कळा फळाइण कहिबा मोते हेउ। त्रिलोक ठाकुर जे अटन्ति राम राहु३५६१
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती। से कथा गोटि तोते फळाइ कहिबाटि ६२
दशमास संपूर्ण धीर होइ बसि। बरषके कान्थ बाड धरि उभा सेटि ६३
दिनकु दिन चालन्ति धाईंक कर धरि। आनु आनरे सेहि चालन्ति फेरि करि ६४
रत्न पाहुड़ जे नूपुर शोहे गोड़े। चाप सारि हेम कण्ठि पदक बक्षस्थळे ६५
बनमाळ चन्द्रहार कण्ठरे बिराजे। हस्तरे रत्न खडु सूर्ज्य किरण निन्दे ६६
कटीरे कटी मेखळा घागुडि रत्न घोरि।
चालि बारे चारि पुए दिशन्ति शोभा भारि ६७
बाहुरे बाहुटी जेसने आदित्य। आंगुण्ठिरे रत्न मुदि नायक माणिक्य ६८
चारि पुत्र बसन्ति अमळाण पिन्धि।
चारि पुत्रंक हस देखि सकळ राणी बन्दि ६९

पाँच महीने पर इन्हें पति सुख मिलेगा। ५५ यह चारों बहनें एक को एक जीतने वाली हैं। यह विष्णु के अंश उत्तम वर प्राप्त करेंगी। ५६ नामकरण करके ऋषि तथा ब्राह्मण चल दिये। दोनों राजाओं ने उन्हें बहुत धन तथा रत्न प्रदान किए। ५७ उन्होंने दोनों कन्याएँ ऋषि और ब्राह्मणों को दे दीं तथा दण्डवत् प्रणाम करके समस्त चिन्ताओं का त्याग कर दिया। ५८ ऋषि-ब्राह्मण अक्षत देकर चले गए और अपने-अपने आश्रम में जा पहुँचे। ५९ पार्वती ने कहा हे त्रिनेत्रधारी ! आप सुनिए। अयोध्या में दशरथ के पुत्रों ने क्या किया ?। ३५६० आप वह कथा मुझसे खोलकर कहें। श्रीराम राहु तीनों लोकों के स्वामी हैं। ३५६१ शंकर बोले, हे भगवती ! तुम सुनो। वही लीला हम तुमसे खुलासा कहेंगे। ६२ दस महीने पूरे होने पर वह धीरभाव से बैठने लगे। वर्ष भर में दीवार या बाड़ पकड़कर खड़े होने लगे। ६३ दिन पर दिन वह धाइयों के हाथ पकड़ कर चलने लगे। एक दूसरे के पीछे वह चलने लगे। ६४ उनके पैरों में रत्नजड़ित पायलें तथा नूपुर शोभायमान थे और वक्षस्थल पर धनुषाकार आभूषण सोने की कण्ठी तथा पदक थे। ६५ उनके गले में वनमाल तथा चन्द्रहार विराजमान थे और हाथ के रत्नजड़ित कड़े सूर्य की निन्दा कर रहे थे। ६६ उनकी कमर में रत्नों से जड़ी हुयी शब्द करनेवाली घंटियों से युक्त मेखला पड़ी थी। चलने पर चारों बालक अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रहे थे। ६७ हाथों में सूर्य के समान बाजूबन्द तथा उँगलियों में रत्न तथा श्रेष्ठ माणिक्य की अँगूठियाँ थीं। ६८ चारों पुत्र वसन्ती

पितांकु देखि पुत्ते लाज लाज करि। धाइँ कोले जाइ बसन्ति सेहु फेरि३५७०
दशरथ बोलन्ति आस आस बाबु। ए जेते सम्पत्तिमान तुम्भरि सिना सबु३५७१
नीळ बदन गोटि जे परि मुण्डा जाइ। रघुबंश कुळकु जे तुम्भे अट ग्राही ७२
श्रीराम लक्ष्मण जे भ्रत शतृघन। चारि पुत्रकु बेढ़ि खेळान्ति नारी गण ७३
धाई मानंक कोळे बसन्ति पोए जाइ। दशरथ पचारन्ति पुत्रंकु केते वर्ष होइ ७४
कौशल्या कहन्ति आजकु दुइ बर्ष गला। अघर बरष आसि पुत्रंकु होइला ७५
ज्येष्ठमास दुइ बर्ष बेनिमास सप्त दिवस होइ।
राणींकर कथा शुणि दशरथ कहि ७६
अढ़ाइ बरष जेबे हेला परबेश। कर्ण बद्ध करिबा एहि आषाढ़ मास ७७
चतुर्मास्या होइले नोहिब कर्णविद्ध। पूर्बरु आम्भ बंशरे अछि एसन बिधि जोग ७८
राणी मानंकु बुझाइ दशरथ कहे। नि अवकाश बिजे वशिष्ठ ऋषि होए ७९
पात्र मन्त्रीकि डकाइण करे बिचारण। कर्णबिद्ध करिबा अनुकूळ एबे पुण३५८०
एमन्त बचन बोले अजोध्या ईश्वर। शुणिण ज्योतिष डाकिले मन्त्रीबर३५८१
बुझिले जउतिष खड़ि बेगे पाड़ि। आषाढ़ शुक्ळ दशमी बेळ चारि घड़ि ८२
एथिरे अनुकूळ करहे बिचारि। ग्रह नक्षत्र लग्न समस्ते शुभ कारी ८३

रंग के अम्लान वस्त्र पहने हुये थे। उनको हँसी को देखकर सभी रानियाँ विभोर थीं। ६९ पिता को देखकर बालक लजाते हुये दौड़कर उनकी गोद में जाकर बैठ जाते थे। ३५७० आओ बेटे आओ कहकर दशरथ उन्हें बुलाते थे और कहते थे कि यह जितनी सम्पदा है सब तुम्हारी ही है। यह नील मुख जैसे भी उठाया जा सके। क्योंकि तुम लोग रघुवंश के कुल को ग्रहण करनेवाले हो। ३५७१-७२ नारियाँ श्रीराम लक्ष्मण भरत तथा शत्रुघ्न इन चारों पुत्रों को घेरकर खिलाती थी। ७३ सारे पुत्र धाइयों की गोद में बैठ जाते थे। तब दशरथ पूँछते थे कि पुत्र कितने वर्ष के हो गए। ७४ कौशल्या बोली आज से दो वर्ष हो गये। अब ढाई वर्ष के पुत्र हो आए हैं। ७५ ज्येष्ठ मास में दो वर्ष दो माह तथा सात दिन हो चुके है। रानी की बातें सुनकर दशरथ ने कहा जब ढाई वर्ष प्रविष्ट हो गया है तो इसी आषाढ़ मास में कर्णछेदन करेंगे। ७६-७७ चतुर्मास होने पर कर्णछेदन नहीं होगा। हमारे वंश में प्राचीन काल से यह नियम रहा है। ७८ दशरथ ने रानियों को समझाते हुये कहा नहीं तो वशिष्ठ ऋषि चतुर्मास में अवकाश ग्रहण कर लेंगे। ७९ उन्होंने सभासद तथा मंत्री को बुलाकर विचार किया कि अब शुभ मुहूर्त में कर्णछेदन करेंगे। ३५८० अयोध्या नरेश ने जब इस प्रकार कहा तो उसे सुनकर श्रेष्ठ मंत्री ने ज्योतिषी को बुलाया। ३५८१ ज्योतिषी ने खड़िया लेकर शीघ्र ही गणना की और कहा कि आषाढ़ शुक्ल दशमी को चार घड़ी समय पर इसका शुभ योग होगा। तभी विचारपूर्वक यह कार्य करें। उस समय ग्रह, नक्षत्र, लग्न सब कुछ शुभ होगा। ८२-८३ श्रीराम के नक्षत्र से उसकी मित्रता

श्रीरामंक नक्षत्रकु अटे मित्र तार। चतुर्थ तार जाइ पञ्चमी बळीयार ८४
एहि दिवस दुइ घडि समयरे बेळ। आवर तिनि पुत्रंक शुण अनुकूळ ८५
शुक्रर बेळरे नक्षत्र अपराजिता। बेळ पहरके श्रीराम घेनिले पइता ८६
लक्ष्मण शतृघ्न दुइ भाइंकर पुण। पाञ्च घडि बेळ ठारे अनुकूळ जाण ८७
चतुर्थ जाइ पञ्चम समस्तंकु हेब। मिथुन ककड़ा दुइ लग्न घटि थिब ८८
कर शुभ कार्ज्य जे महेन्द्र बेळ एहु। श्रीरामंकु दशमरे अछन्ति एका राहु ८९
देवगुरु पञ्चमे षष्ठमे रबि सुत। कर्णबिद्ध करिबाकु अटइ पवित्र३५९०
राजन शुणिण जे सुमन्त मुख चाहिँ। कर सम्भार बेगे जे तुम्भे एथु जाइ३५९१
रजनीरे जाइ जे करिब भिआण। प्रभातरे अनुकूळ करिबा जे पुण ९२
शंकर कहिले तुम्भे शुण भगवती। शुणि करि सुमन्त बेगे चळि जान्ति ९३
नवर मण्डण करि छामुण्डिआ कले। लोक लगाइ मन्त्री उद्जोग देले ९४
छामुण्डिआ भिआण कले ततक्षण। चित्र बिचित्र पुर कलेक भिआण ९५
इन्द्र गोविन्द चान्दुआ उपरे टणा हेला। बाद्यकारी मानंकु हरषे डकाइला ९६
सकळ सम्भर्व बेगे करि मन्त्रीबर। रजनीर शेषर जे सम्पूर्ण सकळ ९७
अश्विनी नक्षत्रे जे रजनी प्रभातरे। रजनी पाहिबारु जे देखिले सकळे ९८
छाया मण्डप देखि बाकु बिजय दशरथ।
देखि करि दशरथ सन्तोष हेले रघु गोत्र ९९

है। उसके चतुर्थ घर से जाकर पाँचवाँ घर बलवान है। ८४ इसी दिन दो घड़ी समय पर योग होगा और तीनों पुत्रों का शुभ योग सुनो। ८५ शुक्र के समय में नक्षत्र अपराजिता है। तभी एक प्रहर के समय पर श्रीराम को यज्ञोपवीत लेना उचित रहेगा। ८६ लक्ष्मन शत्रुघ्न दोनों भाइयों का शुभ योग पाँच घड़ी समय पर होगा। ८७ चतुर्थ जाकर सबका पंचम होगा। मिथुन तथा कर्क दोनों लग्न घटित रहेंगे। ८८ यह महेन्द्र वेला है। इसमें शुभ कार्य करो। श्रीराम की दशम स्थिति में अकेला राहु है। ८९ देवगुरू पंचम स्थान पर है और छठे स्थान पर शनि है। जो कर्णछेदन के लिये पवित्र है। ३५९० राजा ने ऐसा सुनकर सुमन्त के मुख की ओर देखते हुये शीघ्र ही उत्सव कराने के लिये कहा। ३५९१ रात्रि में ही जाकर तैयारी कर लेना। प्रभातकाल में शुभ कार्य सम्पादित करेंगे। ९२ शंकर ने कहा हे भगवती ! तुम सुनो। यह सुनकर सुमन्त शीघ्र ही चला गया। ९३ उसने महल को सजाकर तम्बू तनवा दिये। मंत्री ने लोगों को लगाकर कार्य आगे बढ़ाया। ९४ उस समय तम्बू लगवाकर महल में विचित्र चित्रकारी करवा दी। इन्द्र गोविन्द चंदोवा तनवा दिया। उन्होंने प्रसन्न होकर बाजा वालों को बुलवाया। ९५-९६ श्रेष्ठ मंत्री ने शीघ्र ही समारोह की सारी तैयारियाँ रात्रि समाप्त होते-होते पूरी कर लीं। ९७ प्रभातकाल में रात्रि समाप्त होने पर सबने अश्विनी नक्षत्र देखा। ९८ दशरथ

देखिण सकळ स्थान फेरिण अइले। माजणा होइ स्नाहान बेगे सारिले३६००
धाई मुदुसुली राणी माने पुण। स्नान शउच जे होइ ततृक्षण३६०१
सामन्त मन्त्री माने स्नान करि आसे। विप्रे ज्योतिषे जाणि होइले हरषे २
बशिष्ठ ऋषि स्नान करिण बिजे कले। वाद्य शंख महुरी वाजिला सिंह द्वारे ३
चारि पुत्र घेनि संगे बिजे दशरथ। कनक मण्डप परे बसिले जाइ सुत ४
कुळर पुरोहित बशिष्ठ महामुनि। अग्निकि आरोहण कलेक ब्रह्ममुनि ५
पूर्णकुम्भ स्थापिण बरुण पूजा कले। नवग्रह दशदिग पाळंकु आहुति देले ६
चूढ़ा कर्म आरम्भ कलेक विप्रगण। दशकर्म भितरु कलेक बेनि कर्म ७
शुभ जोग बेळरे कलेक देव कर्म। बाजे वाजा शंख महुरी बिबिध छन्देण ८
पाञ्च घडि समय़रे सारिले कर्णविद्ध। कर्णबिद्ध सारि बेद कलेक सम्पाद ९
शाम बेदरे होम कलेक ब्रह्म ऋषि। छड़ कर्म विधि जे सारिले सकळे बसि३६१०
छड़कर्म सरिवारु नृपति शान्ति मूर्त्ति। पूर्ण आहुति बिधि कलेक पुण सेथि३६११
चन्दन कर्पुर जे नळ घोषामणी। अग्निकि देइण से शीतळ कले किना १२
होम कर्म सारि करि दशरथ गले। चारि पुत्रंकु अन्तः पुरकु छाड़ि देले १३
पुत्र मानंकु देखिण सकळ राणी पुण। आनन्दरे हुळहुळि सर्बे देले जाण १४

छाया मण्डप को देखने के लिये उपस्थित हुये। रघुवंशी दशरथ उसे देखकर संतुष्ट हो गये। ९९ समस्त स्थानों का निरीक्षण करके वह लौट आये और उन्होंने शीघ्र ही स्नान मार्जन समाप्त किया। ३६०० धाई, वेशकारिणी तथा रानियों ने उसी समय स्नान, शौच समाप्त किया। ३६०१ सामन्त तथा मंत्री लोग स्नान करके आ गये। ब्राह्मण और ज्योतिषी यह जानकर प्रसन्न हो गये। २ वशिष्ठ ऋषि स्नान करके उपस्थित हुये। सिंहद्वार पर शंख, महुरी वाजे वजने लगे। ३ दशरथ चारों पुत्रों को साथ लिये उपस्थित हुये और जाकर कनक मण्डप में बैठ गये। ४ ब्रह्मर्षि तथा कुल के पुरोहित महामुनि वशिष्ठ ने अग्नि की स्थापना की। ५ पूर्णकुम्भ स्थापित करके उन्होंने वरुण पूजा की और नवग्रह तथा दस द्दिगपालों को आहुति दी। ६ ब्राह्मणों ने चूड़ाकर्म प्रारम्भ किया। दस कर्म के भीतर से दो कर्म सम्पादित किये। ७ शुभ योग के समय उन्होंने देव कर्म किया। भिन्न-भिन्न रागों में शंख, महुरी बाजे वजने लगे। ८ पाँच घड़ी समय में कर्णछेदन समाप्त करके वेदपाठ किया गया। ९ ब्रह्मर्षि ने सामवेद से हवन किया। सबने बैठकर षड़कर्म सम्पादित किये। ३६१० षड़कर्म की समाप्ति पर शांत रूप राजा दशरथ ने पूर्णाहुति की विधि सम्पादित की। ३६११ चन्दन, कपूर तथा सुगन्धि देकर मंत्रोच्चार के साथ अग्नि शीतल की गई। १२ होमकर्म समाप्त करके राजा दशरथ गये और उन्होंने चारों पुत्रों को अंत:पुर में छोड़ दिया। १३ पुत्रों को देखकर समस्त रानियाँ प्रसन्न हो गई और उन्होंने मांगलिक ध्वनि की। १४ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात्

एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। दशरथ पात्र मन्त्री कि डकाए बेगे करि १५
बोइले ऋषि ब्राह्मणे भोजन एबे दिअ। शुणिण पात्र मन्त्री हेले बड प्रिय १६
बिप्र ऋषिरे भोजन अमृत रस देले। बिप्र मेलाणि होइण छामुकु अइले १७
बशिष्ठ ऋषि गले निज जे मन्दिरे। सामन्त पात्र चळि गले निज निज पुरे १८
एते कहि सुमन्त निज पुरे गला। राजन पुरे हरष भाव उपुजिला १९
दिना केते जिबारु कर्ण फासिआ तिआरइ। दशरथ बीरबल्ली मुक्ता देले नेइ३६२०
चारि पुत्रंक कर्णरे आभरण कले। शुणु छन्ति पार्बती जे ईश्वर कहिले३६२१
पुत्र मानंकु देखि राणी माने बड़ सुख। दिनुँ दिन पुत्रमाने सेहु जे बढ़िलेक २२
एथु अनन्तरे आसि हेला पाञ्च बरष।
अन्न भोजन निमन्ते दिने खोलिले बिशेष २३
चण्ड पुत्र बिप्र ऋषि ड़काइ बुझिलेक। बशिष्ठंकु पचारिले किस तांक सुत २४
दशरथंकु बोइले शुण अजोध्यार राए। ए चारि नन्दनकु बेनि जे जोगाए २५
बैशाख शुक्ळ पक्ष तृतीया बुधबार। अमृत जोग से दिन अन्न भुञ्जिबे कुमर २६
नूतन अमळा पिन्धिबे चारि भाइ। रत्न पिढ़ा उपरे बसिबे पुण जाइ २७
रत्न गडु चारि गोटिरे जळ नेले। अनेक बाटि गिना नेइ समर्पिले २८
अन्न संगरे दुधसर देलाक लबणी। छड़ रसे ब्यञ्जन परशन्ति आणि २९

दशरथ ने शीघ्र ही सभासद तथा मंत्री को बुलाकर ऋषि तथा ब्राह्मणों को भोजन देने के लिये कहा जिसे सुनकर सभासद और मंत्री को बहुत प्रिय लगा। १५-१६ उन्होंने ब्राह्मणों तथा ऋषियों को अमृत रस युक्त भोजन प्रदान किया। ब्राह्मणों को विदा देकर वह राजा के समक्ष आए। वशिष्ठ अपने घर चले गए। फिर सामन्त तथा सभासद भी अपने-अपने आवासों को गए। १७-१८ इस प्रकार समाचार देकर सुमन्त अपने घर चला गया। राजमहल में हर्ष तथा सद्‌भाव भर गया था। १९ कुछ दिनों पर कर्ण आभूषण तैयार किया गया। दशरथ ने मुक्ता जड़ी हुयी वीरवल्ली लेकर दी। ३६२० चारों पुत्रों के कानों में आभूषण पहना दिये गये। इस प्रकार शिव जी के कहने पर पार्वती ने सुना। ३६२१ पुत्रों को देखकर रानियाँ अत्यन्त सुख को प्राप्त हुयीं। दिन प्रतिदिन वह पुत्र बढ़ने लगे। २२ इसके पश्चात् पाँचवाँ वर्ष आ पहुँचा। अन्न भोजन के लिये विशेष प्रकार से एक दिन खोल दिया गया। २३ चण्डपुत्र, ब्राह्मण, ऋषि को बुलाकर पूँछा गया और वशिष्ठ से भी कहा गया कि अब पुत्रों का क्या होगा। २४ उन्होंने दशरथ से कहा हे अयोध्याधिराज सुनो। इन चारों पुत्रों के दो योग हैं। २५ बैसाख शुक्ल पक्ष तृतीया बुधवार के दिन अमृत योग है। उसमें बालक अन्न का भक्षण करेंगे। २६ चारों भाई नवीन अम्लान वस्त्र धारण करेंगे और जाकर रत्न के पीढ़े पर बैठेंगे। २७ उन्होंने चार रत्न गडुओं में जल लेकर अनेक धन, मुद्रायें समर्पित कीं। २८ अन्न के साथ दूध, मलाई, मक्खन दिया

सकळ राणी राजा देखन्ति पाशे रहि । चारि पुत्रे भोजन करन्ति वसि तहिँ३६३०
आचमन कराइ ताम्बुळ भुञ्जाइले । रत्न पलंक उपरे नेइण शुआइले३६३१
आलट बिञ्चणी सर्बे धरिण कामिनी । चारी कुमरकु पलंकरे वसाइ पुणि ३२
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगवती । सिंह द्वारे राजन बिजे कले धात्ति ३३
दारिद्र भिक्षुक जने अन्न वस्त्र देले । सदावर्त्त अन्न वस्त्र बाटरे सञ्चिले ३४
शिवलिंगे देले नेइ पत्री तण्डुळ । आम्ब पनस कदळी छेना शाकरर ३५
बिष्णु प्रतिमाकु देले अन्न खिरि पिठा । अमृत समान भोजन कराइ मन इच्छा ३६
इष्ट देवतांकु तिनि धूप पाञ्च अवकाश । बिरञ्चि नारायण होइले जे तोष ३७
ग्रामे ग्रामे देबी मानंकु माजणा कराइ । बोदा छागळ पोढुअ तांकु देइ ३८
एथु अनन्तरे अपूर्ब कथा शुण । चन्द्र पुत्र विप्र ऋषि डकाइ राजन ३९
बशिष्ठ सामन्त पात्र आसि वेगे । राजनर छामुरे मिळिले सरागे३६४०
बाद्य शंख महुरी आण बोलि करि । सुमन्तकु आज्ञा देले राजन बिचारि३६४१
राजनकु पचारिले बशिष्ट तपोधनी । पुत्र बाद्य पढ़िबे अनुकूळ घेनि ४२
मार्ग शीर मास जे पञ्चमी गुरुवार । हस्ता नक्षेत्रकु श्रीरामर साधक तार ४३
प्रहरक भितरे वसिबे बाद्य पढ़ि । बृहस्पति उदय्र बेनि पाञ्च घड़ि ४४

और षडरस व्यंजन लाकर परोस दिया। राजा तथा समस्त रानियाँ निकट में रहकर चारों पुत्रों को वैठकर वहाँ भोजन करते देखने लगे। २९-३६३० आचमन कराके उन्हें पान खिलाये गये और रत्नपर्यंक के ऊपर सुला दिया गया। ३६३१ सब स्त्रियाँ व्यजन चामर लिये थीं। चारों वालकों को फिर पलंग पर वैठाया गया। हे भगवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् राजा सिंहद्वार पर जा पहुँचे। ३२-३३ उन्होंने दरिद्र तथा भिक्षुकजनों को अन्न, वस्त्र प्रदान किया और रास्तों में अन्न, वस्त्र के सदावर्त वितरित कराये। ३४ शिवलिंग के ऊपर वेल पत्र तथा अक्षत् चढ़ाये। आम, कटहल, केले, छेना और शक्कर समर्पित किया। ३५ विष्णु प्रतिमा को भोग खीर, पकवान तथा अमृत समान भोजन से संतुष्ट कराया। ३६ इष्ट देवता को अवकाश के समय धूप, अगरवत्ती, पंच प्रकार पूजा अर्पित की गयी जिससे विरंचि नारायण प्रसन्न हो गये। ३७ गाँव-गाँव में देवियों को स्नान, मार्जन कराकर भैंसे, वकरे, तथा पड़वे इत्यादि का वलि-भोग लगा। ३८ इसके पश्चात् अपूर्व लीला सुनों। चन्द्रमा के पुत्र ब्राह्मणों, ऋषियों को राजा ने बुलवाया। ३९ वशिष्ठ सामन्त तथा सभासद शीघ्र ही आकर प्रेम से राजा के समक्ष उपस्थित हुये। ३६४० राजा ने विचारपूर्वक सुमन्त को शंख, महुरी आदि बाजे मँगवाने की आज्ञा दी। ३६४१ तपोधन वशिष्ठ ने राजा से कहा कि पुत्र शुभ मुहूर्त में स्वर पठन करेंगे। ४२ मार्गशीर्ष महीने के पंचमी गुरुवार को हस्ती नक्षत्र में श्रीराम की साधना होगी। ४३ एक प्रहर के भीतर वह स्वर पठन के लिये बैठेंगे। दस घड़ी पर वृहस्पति उदय होंगे। आज का दिन कृष्ण-

कृष्ण पक्ष चतुर्थी अटे आज दिन । कालि प्रहरक ठारे पुत्र छुइँबे खड़ि पुण ४५
शुणि करि राजन मन्त्रीकि बोइले बाणी । मण्डिण कर नबर उत्सब कर पुणि ४६
लक्षे धेनू दोहन कराअ शिवशिरे । अमृत भोजन कराअ बिष्णु प्रतिमारे ४७
बिरञ्चि नारायण इष्ट देवता आम्भर ।
तिनि धूप पाञ्च अवकाश तांक ठारे कर ४८
दधि अन्न खिरि पिठा अमृत जोगाड़ । सम्भर्वरे कराअ प्रशन हुअन्तु लम्बोदर ४९
ग्राम देवती मानंकु माजणा कराइब । बोदा छागळ देइण सन्तोष कराइब३६५०
ईश्वरंकर पुत्र जे अटन्ति लम्बोदर । बेश कराअ चुआ चन्दन देइ शिर३६५१
गय़स दुदुरा जे तुळसी बेलपत्री । लम्बोदरकु एमान देइकर शान्ति ५२
तुळसी पत्ररे बिरञ्चिकि तोषकर । एमन्त बचन जे कहिले महीधर ५३
दरिद्र दुःख जनकु देइ अन्न बस्त्र । प्रभातु आहुति देइ मनरे हेब तोष ५४
शुणि करि मन्त्री बर बेगे चळिगले । सुमन्तकु डकाइ कुशळे आज्ञा देले ५५
जे रूपे राजन कहिण थिले पुण । सेहि रूपे मन्त्री कले सकळ भिआण ५६
रजनीर शेषरे प्रबेश हेले आसि । शंख महुरी बाद्य संगरे घेनाइटि ५७
शिव लिंगरे देले पुष्प दुदुरा गय़स । बेलपत्र तुळसी भोग से बिशेष ५८
लम्बोदरकु बेश जे कराइले पुण । ग्राम देवतीकु माजणा कले जाण ५९
बिष्णु प्रतिमा बिरञ्चिकु बेश कराइले । दुःखी दरिद्र लोकंकु धनरत्न देले३६६०

पक्ष की चतुर्थी का है। कल एक प्रहर से बालक खड़िया का स्पर्श करेंगे। ४४-४५ यह सुनकर राजा ने मंत्री से महल को सजाकर उत्सव आयोजित करने को कहा। ४६ उन्होंने एक लाख गायों को शिवलिंग पर दोहन कराने के लिए तथा विष्णु प्रतिमा को अमृतमय भोजन कराने को कहा। ४७ विरंचि नारायण हमारे इष्ट देव हैं। उन्हें पाँच प्रकार की पूजा धूपदान करवाओ। ४८ दही, अन्न, खीर, पकवान, अमृत के समान पदार्थ समारोह के साथ अर्पित करो, जिससे लम्बोदर गजानन प्रसन्न हों। ४९ ग्रामदेवियों को स्नान कराकर भैंसे बकरे देकर संतुष्ट करो। ३६५० भगवान शंकर के पुत्र गणेश हैं। उनके सिर पर चोवा चन्दन लगाकर उनका श्रृंगार कराओ। ३६५१ मरवादोना, तुलसी, बेलपत्र तथा धतूरा देकर लम्बोदर गणेश को शांत करो। ५२ तुलसी पत्र से विरंचि को संतुष्ट करो। महिपाल ने उनसे इस प्रकार के वचन कहे। ५३ दुःखी, दरिद्रों को अन्न, वस्त्र देकर प्रभातकाल में आहुति देने पर मन में संतोष होगा। ५४ यह सुनकर श्रेष्ठ मंत्री शीघ्र ही चला गया। सुमन्त को राजाज्ञा सुना दी गई। ५५ राजा ने जिस प्रकार कहा था, मंत्री ने उसी प्रकार की सारी तैयारियाँ कर लीं। ५६ रात्रि के समाप्त होने पर लोग शंख, महुरी वाद्य लेकर आ गये। ५७ शिवलिंग पर पुष्प, आकधतूरे, बेलपत्र, तुलसी इत्यादि चढ़ायी गई। ५८ गणेश का श्रृंगार करवाकर ग्रामदेवियों का मार्जन कराया गया। ५९ विष्णु प्रतिमा, विरंचि

दुःखी लोकंकु अन्न बस्त्र देले पुण । सकळ बिधिमते सारिले मन्त्री जाण३६६१
राजनंक पाशरे प्रबेश जाइ हेले । बाद्य शंख महुरी बजाइ सिंह द्वारे ६२
अनुकूळ बेळरे तण्डुळ फळ नेइ । पुत्रमानंकु अणाइ ऋषिक पाशे देइ ६३
बिघ्न राज सरस्वती पूजा आराधन । श्रीराम लक्ष्मण जे भ्रत शतृघन ६४
पढ़िले श्लोक शान्त जे नाना बर्ण पाए । दिनकु दिन पढ़ि से बाद्यरे गरिष्ट ६५
श्रीरामंक दासी जेणु अटन्ति शारदा । ताहांकु कि अपूर्ब बाद्य अटे अबा ६६
संसारे रखिबा निमन्ते मानव रघुधारी । नाना शान्त बाद्य जे पढ़िले मने करि ६७
सपत बरष तेणु होइलाक आसि । बशिष्ठ ऋषिकि घेनि राजन भाळन्ति ६८
श्रीरामंकु देखि मुनि आनन्द स्वर चित्त । दिअ आज्ञा मुनि तुम्भे कराइब ब्रत ६९
चण्ड पुत्र डकाइ मुनि पुणि । जन्म पत्रिका पढ़िण जणाइले जोग३६७०
पुणि ग्रह लग्न नक्षत्र तिथि बेळ धरि । बुझिले चण्ड पुत्र कि करिले बिधिकरि३६७१
बृहस्पति शुद्धि आदिग्रे प्रसिद्धि । ब्रत जोगाए श्रीरामंकु कुम्भ सात दिन बिधि ७२
दुइ मास तेर दिन रहिलाक जाण । पात्र मन्त्री ड़काइ राजन बिचारिण मनेण ७३
दशरथ बोइले मोर वन्धु जे सहस्रे ।
लोमपाद राजांक बन्धु ए गारशहबास्तरी अटे ७४

का शृंगार हुआ। दुःखी, दरिद्रों को धन-रत्न दिये गये। ३६६० दुःखी लोगों को फिर अन्न, वस्त्र दिया गया। मंत्री ने समस्त विधियाँ विधि-विधान से सम्पादित की। ३६६१ फिर वह सिंहद्वार पर शंख, महुरी वाद्य बजाकर राजा के पास जा पहुँचे। ६२ शुभ-योग में उन्होंने चावल और फल लेकर पुत्रों को ऋषि के पास बुलाकर प्रदान किया। ६३ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न ने विघ्नराज गणेश तथा सरस्वती की पूजा-आराधना की। ६४ फिर उन्होंने नाना प्रकार के वर्णों वाले श्लोको का शांतिपूर्वक पाठ किया। दिन प्रतिदिन वह वेद-पाठ करके निष्णात् हो गये। ६५ लगता था सरस्वती श्रीराम की दासी हो गई है। उनका वेदज्ञान कितना अपूर्व है। ६६ संसार की रक्षा के लिये मानव शरीर धारण करके उन्होंने मन लगाकर नाना प्रकार के वेदशास्त्र पढ़े। ६७ फिर सातवाँ वर्ष आकर लग गया। राजा वशिष्ठ ऋषि को लेकर विचार-विमर्श करने लगे। ६८ श्रीराम को देखकर मुनि का चित्त प्रसन्न हो गया। राजा ने कहा हे मुनि! आपके आज्ञा देने पर उपनयन संस्कार करूँगा। ६९ मुनि ने चण्ड पुत्र को बुलाकर जन्म पत्रिका पढ़कर मुहूर्त निकाला। ३६७० फिर ग्रह, नक्षत्र, तिथिकाल को लेकर चण्ड पुत्र ने किस विधि से कार्य करने पर शुभ होगा, यह शोधन किया। ३६७१ बृहस्पति का शोधन करने पर श्रीराम का उपनयन कुम्भ की सप्तदिवस विधि का योग निकाला। ७२ दो माह तेरह दिन रह गए थे। सभासद् तथा मंत्री को बुलाकर राजा ने मन में विचार किया। ७३ दशरथ ने कहा कि मेरे एक सहस्र बन्धु-बान्धव हैं तथा

दुइ सहस दुइश कर हे बरण। एमाने सर्बे पुत्रंक मउळा बोलि जाण ७५
बशिष्ठंकु कहिण नारद अणाइले। नमस्कार करि राजा चरणे शुतिले ७६
बोइले ब्रह्ममुनि बिनति मोर घेन। देब राजा ऋषि घेनि प्रबेश हेब जाण ७७
दुइ मास सतर दिन कुम्भ सात दिने। पुत्रकु ब्रत करिबा कहिले मुनि एणे ७८
ऋषि मानंक कथा तुम्भंकु हेला लगा। मोहर मागुणि मुनि बारेक घेनिबा ७९
शुणिण नारद मुनि परम तोष हेले। ब्रह्मांक आगे जाइण नारद कहिले३६८०
शुणि करि पितामह स्वर्गकु चळि गले। सुधर्मा सभारे देव राजांकु कहिले३६८१
दशरथंक नन्दन श्रीराम हेबे बडु। कुम्भ सात दिन जज्ञोपबीत घेनिबे प्रभु ८२
सकळ देवताए शुणि थाअ एबे। नारायणंक सुलभ देखिब जाइ सबे ८३
शुणिण देवताए बोइले बचन। अतुट जज्ञ पवित्र देब तुम्भे पुण ८४
छाया पति देबे अमळाण वस्त्र। सुर राजा देबे अमळाण पुष्प ८५
कुबेर देबे जे रत्नरे चारि पिढ़ा। कटकम्पा देबे चन्द्र देवता परा ८६
सकळ देबे नेइ देबे अक्षत पुण। इन्द्र गोबिन्द छामुण्डि आटि चान्दु आटि जाण ८७
कहि करि बेदबर बेगे करि गले। जशोवन्ती पुरे जाइ प्रबेश होइले ८८
शुणिण सकळ देबे उठि चळि गले। जे जाहार आश्रमरे जाइण मिळिले ८९

राजा लोमपाद के ग्यारह सौ बहत्तर है। ७४ आप दो हजार दो सौ को आमंत्रित कर दीजिए। यह सब पुत्रों के मामा लोग है। ७५ उन्होंने वशिष्ठ को कहकर नारद को बुलवाया। राजा प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़े। ७६ उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मर्षि ! हमारी विनय को स्वीकार करें। आप देवराज इन्द्र तथा देव ऋषियों को लेकर पधारें। ७७ दो माह सत्रह दिनों पर कुम्भ के सातवें दिन हम पुत्रों का यज्ञोपवीत संस्कार करेंगे। उन्होंने इस प्रकार मुनि से कहा। ७८ ऋषियों की बात हमने आपको सौंप दी। हमारी यह माँग एक बार स्वीकार कर लीजिए। ७९ यह सुनकर नारद मुनि अत्यन्त प्रसन्न हो गए। उन्होंने ब्रह्मा के समक्ष जाकर निवेदित किया। यह सुनकर ब्रह्माजी स्वर्ग को चले गए। उन्होंने सुधर्मा सभा में जाकर देवराज इन्द्र से बता दिया। ३६८०-३६८१ दशरथनन्दन श्रीराम बटुक होकर कुम्भ के सातवें दिन यज्ञोपवीत धारण करेंगे। ८२ अब समस्त देवताओं सुनो। सभी लोग भगवान का शुभ महोत्सव जाकर देखेंगे। ८३ यह सुनकर देवता लोग बोले कि हे देव ! आप अक्षय यज्ञोपवीत प्रदान करेंगे। ८४ छायापति अम्लान वस्त्र प्रदान करेंगे तथा देवराज इन्द्र भी अम्लान पुष्प देंगे। ८५ कुबेर रत्न-निर्मित चार पीढ़े प्रदान करेंगे। चन्द्रदेव गजमुक्ता प्रदान करेंगे। ८६ इन्द्र गोविन्द, तम्बू तथा चँदोवे के नीचे सभी देवता अक्षत् प्रदान करेंगे। ८७ यह कहकर वेदवर ब्रह्मा जी शीघ्र ही चल पड़े और यशोवंतीपुर में जा पहुँचे। ८८ यह सुनकर सारे देवता लोग उठ गये और अपने-अपने आश्रमों में जा पहुँचे। ८९

बन्धुंकु निमन्त्रि जे चळि गले दूत। दशरथ राजांकर हेला कुशळत३६९०
कुम्भ सात दिन पुत्रंकर बडु जाण। सकळ बन्धु मानंकु कले आमन्त्रण३६९१
बन्धु मान निमन्त्रि दूत अइले फेरि। अजोध्या नगरे मिळिले आसि करि ९२
बन्धु बर्ग सकळ पाइले बारण। देवताए शुणिले व्रतघर कथा ९३
राज्यरे धेण्डुरा से फेराइले पुण। श्रीराम चारि भ्रात ब्रत हेवे तु जाण ९४
ग्राम ग्राम के मंगळ आचार करिबे। द्वारे रम्भा वृक्ष चूतपत्र स्थापिबे ९५
बेभार जौतुक घेनिण जिबे चळि। राजांक छामुरे भेट हेब राज्य लोके मिळि ९६
धेण्डुरा फेराइ जे सुआर गला चळि। राज्ये हाल होळि हेला ब्रत घर बोलि ९७
सर्बजन आनन्द देखिबे बोलि करि। सम्भर्वरे बाहारिबा मनरे बिचारि ९८
सर्ब तिआरन्ते जे दिन जे बहिगला। प्रवेश आसि कुम्भ मास जे होइला ९९
नग्रपुर मण्डाइले मन्त्री बीरवर। राजांक पाइँ नवर सामन्त पाइँकि घर३७००
बिप्रंक पाइँ छामुण्डिआ रचि मन्त्री वर। देखणा हारींक पाइँ मेला पदा सार३७०१
चित्र विचित्र पुर मान जे भिआइ। चूत पत्र नारीकेळ कदळी वृक्ष थोइ २
इन्द्र गोबिन्द चान्दुआ छामुरे होइछि टणा।
जे सनेक स्वर्गपुर दिशइ रञ्चना ३

बन्धु-बान्धवों को आमंत्रित करके दूत चले गये। राजा दशरथ का कल्याण हो गया। ३६९० कुम्भ के सातवें दिन पुत्रों का उपनयन होगा। समस्त बन्धु-बान्धवों को इसलिये आमंत्रित किया गया। ३६९१ बन्धुओं को निमंत्रित करके दूत लोग लौटकर अयोध्या नगर में आ पहुँचे। ९२ सभी बन्धु वर्ग को निस्तार प्राप्त हुआ। देवताओं ने यज्ञोपवीत की वार्ता सुनी। ९३ राज्य में ढिंढोरा पिटवाया गया कि आज श्रीराम के चारों भाइयों का यज्ञोपवीत संस्कार होगा। यह सबको ज्ञात हो। ९४ गाँव-गाँव में मंगलाचार मनाये जायें। द्वार-द्वार पर केले के वृक्ष तथा आम्रपल्लव लगा दिये जायें। ९५ व्यवहार तथा दान सामग्री साथ ले जायेंगे और राज्य के समस्त लोग मिलकर राजा के समक्ष भेंट करेंगे। ९६ ढिंढोरा पीटकर सन्देशवाहक चला गया और राज्य में यज्ञोपवीत होने की चर्चा होने लगी। ९७ सभी लोग आनन्दोत्सव देखने के लिये बड़ी धूमधाम से चलेंगे। ऐसा सबने मन से विचार किया। ९८ सब तैयारियाँ करने में दिन व्यतीत हो गये और कुम्भ माह आ पहुँचा। ९९ वीरवर मंत्री ने नगर, गाँव सुसज्जित करा दिये। राजाओं के लिये महल, सामन्तों के लिये घर, ब्राह्मणों के लिये छाया मण्डप का निर्माण करवाकर श्रेष्ठ मंत्री ने मेला के लिये मैदान, दर्शकों के हेतु तैयार करवाया। ३७००-३७०१ विचित्र प्रकार की चित्रकारी से युक्त भवनों का निर्माण कराकर आम्रपल्लव, नारियल तथा केले के वृक्ष लगाकर उनके सामने इन्द्र गोविन्द चँदोवे तनवा दिये। वह स्वर्गलोक के समान सुन्दर दिखाई दे रहे थे। २-३ रत्नमय चार वेदियाँ निर्मित कराकर

रत्नरे चारि बेदी करिण तिआरि। रत्न खम्भ बेदी चारि पाशे घेरि बरि ४
कनकर मण्डप बेदी परे शोहे। तेज पत्र छाएणो चन्दन छेरा दिए ५
माणिक्यर रुअ जे बैडूर्य्यर सेणि ।नोळार गुंज सेथिरे चारि कोणरे पुणि ६
ब्रह्म जाति जे हीरा चउपाशरे रखि। रजनीरे आलोक हीरार तेज दिशि ७
लोमपाद राजा ठाकु लोक पेषि आणि।
दुइ राजा बसि करि बिचार कले पुणि ८
झिअ जुआइँ दुहिँकि घेनिण आस तुम्भे। मोते सबु कज्जळ लागिण अछि एबे ९
शुणिण लोमपाद बेगे चळि गले। कउशिक नदी तीरे प्रबेश आसि हेले३७१०
बिभाण्डक मुनिंकु देखि नमस्कार करि। कुशळ बार्त्ता सबु कहिले दण्डधारी३७११
पुत्र वधूकु नेबाकु सुलभ हेला बेळ ।तुम्भ पाशकु पेषिले दशरथ महीपाळ १२
तुम्भ पुत्र बधू जे जिबे आम्भ संगे। शुणिण ब्रह्म ऋषि आसिले उदबेगे १३
उठिण पुत्र बधू दुहिँ कहे जाइ। पुत्र बधू दुहिँकि जानरे बसाइ १४
लोमपाद राजा संगे अजोध्या प्रबेश। एथु अनन्तरे गला छड़ जे दिबस १५
बरण हेबारु अइले बन्धुजन ।कौशल्या कैकय्रा सुमित्रांक भाइ पुण १६
नबररे राणी माने हर्षमन हेले। सामन्त पात्र सेवक रखाइ चळिले १७
बिबिध पदार्थ रखे नबररे नेइ। पुष्प चन्दन अगुरु सम्पादे मन्त्री नेइ १८

उनके चारों ओर रत्न के खम्भे बनाये गये। ४ वेदी के ऊपर कनक मण्डप शोभायमान था। जो तेजपत्र से छाया गया था और वहाँ चन्दन की लिपाई हुयी थी। ५ माणिक्य का चूरा वैदूर्य के साथ मिलाकर लगाया गया था और चारों कोनों पर नीलम के गुच्छे लगा दिये गये थे। ६ ब्रह्मजाति के हीरे चारों ओर जड़े थे जो रात्रि में चमकते हुये दिखाई देते थे। ७ दूत को भेजकर राजा लोमपाद को बुलवा लिया। फिर दोनों राजा बैठकर विचार-विमर्श करने लगे। ८ दशरथ ने कहा कि आप बेटी और दामाद को ले आयें। हमें तो सब अँधेरा ही दिख रहा है। ९ यह सुनकर लोमपाद शीघ्र ही चल दिये और कौशिक नदी के तट पर जा पहुँचे। ३७१० उन्होंने विभाण्डक मुनि को देखकर नमस्कार किया और सारे कुशल समाचार बताये। ३७११ आपकी पुत्रवधू को लेने के लिये समय उपलब्ध हो गया है। महाराज दशरथ ने हमें आपके पास भेजा है। १२ आपकी पुत्रवधू हमारे साथ जायेगी। यह सुनकर ब्रह्म ऋषि शीघ्र ही उठे और उन्होंने जाकर पुत्रवधू तथा पुत्र से कहा और उन दोनों को रथ पर बैठा दिया। १३-१४ राजा लोमपाद के साथ वह अयोध्यापुर में प्रविष्ट हुये। इसके अनन्तर छे दिन व्यतीत हो गये। १५ निमंत्रण पाकर बन्धु-बान्धव तथा कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा के भाई आ पहुँचे। १६ महल में रानियों के मन प्रसन्न हो गये। सामन्त तथा सभासद सेवकों को नियोजित करके चले गये। १७ मंत्री ने पुष्प, चन्दन, अगुरु आदि विविध पदार्थ महल में

बशिष्ठ महामुनि कुळर पुरोहित। आवर अइले जे सकळ तपोवन्त १६
बरणी आमन्त्रणे अइले समस्त। प्रवेश हेले जाइ अजोध्यार देश३७२०
से दिन बिधिमत मंगळ कृत्य करि। एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बेरी३७२१
दशरथ राणी तहुँ नीळावती जाण। सुन्दरी सुलक्षणी अटन्ति सेहु पुण २२
सुमित्रा उत्तरु तांकु बिभा दशरथ। गंगपुर बंश जाजपुर राज जेमा सेत २३
सुमित्रा राणी ठारे अटे तार मेळ।सुमित्रा राणींकि से एक दिने कहे भल २४
बोइले ज्येष्ठ राणी सुदया मोते कर। बेनि पुत्ररु दिअ मोते कनिष्ठ कुमर २५
सुमित्रा बोइले सकळ राणींकर।ए चारि कुमर सिना अटन्ति तुम्भर २६
मनरे आन किम्पा धर गो कन्या पुणि।
नीळावती बोइले मोर श्रद्धा बळे पुणि २७
सुमित्रा बोइले जेबे श्रद्धा तुम्भर। बड़ बेळे आञ्जोळिए तण्डुळ तुम्भे धर २८
ए बचन शुणि बारु नीळावती तोष। बेलुं बेळ पुत्र बळाइले आश २९
स्नेह देखि सुमित्रा जे मनरे आनन्द। नीळावती कन्या कोळे पुत्र देले बेग३७३०
सेहि दिनुं नीळावती पुत्रकु पाळिबार। समस्त आर्दोळि से करइ कुमरर३७३१
कुमर आर्दोळि बेनि मासरे पुण। दइब लेखन कथा के करइ मेण्टन ३२
नीळावती कन्यार स्तनरु क्षीर झरि।कुमरकु आनन्दरे क्षीर दिए स्नेह करि ३३

लेकर रख दिये। १८ कुल के पुरोहित महामुनि वशिष्ठ तथा अन्य सभी तपस्वी आ पहुँचे। १९ सभी वरण आमंत्रण पाकर आये थे और अयोध्या प्रदेश में प्रविष्ट हो चुके थे। ३७२० उस दिन विधि-विधान से उन्होंने मांगलिक कृत्य किये। हे शाकम्बरी ! सुनो। ३७२१ दशरथ की रानी नीलावती-सुन्दरी तथा सुलक्षणी थी। २२ सुमित्रा के पश्चात् दशरथ ने उससे विवाह किया था। वह गंगवंशीय याजपुर की राजकुमारी थी। २३ रानी सुमित्रा से उसका मेल था। उसने एक दिन रानी सुमित्रा से कहा। २४ वह बोली हे बड़ी रानी ! मुझ पर दया करो। अपने दोनों पुत्रों में से छोटा पुत्र मुझे दे दीजिये। २५ सुमित्रा ने कहा कि सभी रानियों के चारों पुत्र तुम्हारे ही है। तुम मन में अन्यथा क्यों सोच रही हो ? नीलावती ने कहा कि हमारी श्रद्धा बढ़ गयी है। २६-२७ सुमित्रा बोली जब तुम्हें इतना प्रेम है, तो उपनयन के समय तुम अँजुरी भरकर चावल ले लेना। २८ यह बात सुनकर नीलावती संतुष्ट हो गई और उत्तरोत्तर पुत्र प्राप्ति की आशा बढ़ती गई। २९ प्रेम को देखकर सुमित्रा का मन प्रसन्न हो गया और उन्होंने शीघ्र ही पुत्र को लेकर उसकी गोद में डाल दिया। ३७३० उसी दिन से नीलावती पुत्र का लालन-पालन करने के लिये सब प्रकार से उसकी सेवा करती थी। ३७३१ दो मास तक उसने पुत्र की सेवा की। भाग्य के लेखा को कौन मिटा सकता है। ३२ नीलावती के स्तनों से दूध गिरने लगा। वह बड़े प्रेम से बालक को क्षीरपान कराती

ए रूप बरषक अन्तरे राजा राणी ।धाई दासी जणाइले राजांक आगे पुणि ३४
शुणिबा अजोध्यार मउड़मणि एबे । कथाए सुलभ आम्भर अन्तःपुरे एबे ३५
सुमित्रांक तळराणी जे नीळावती । जाजपुर मउड़मणिर जेमा सेटि ३६
गंग बंश जाति श्रेष्ठ अटन्ति राजन । तांकर नीळावती जेमा देई पुण ३७
सुमित्रा राणींकि से अनेक सेवा कले ।प्रसन्ने सुमित्रा राणी सान कुमरकु देले ३८
सान कुमरकु धरन्ते से राणी स्तनरु । क्षीर स्त्रबिला कुमर खाइण हन्तकारु ३९
शुणिण राजन जे परम तोष हेले । हेमन्ती धाईंकि बसाइ बेश कले३७४०
बोइले बेश करिबु जेमन्ते गउरी । ईश्वर देखिले जेमन्ते लोभकरि३७४१
सेहि रूपे बेश जे करिबु आज मोते । राजन देखि जेमन्ते बिभोळित हेबे ४२
एहा शुणि हेमबन्ती थाइ बेश कला ।गउरी सादृश्ये नीळावती जे दिशिला ४३
सेहि रजनीरे नृपति बिजे कले ।नीळावती अन्तःपुरे राजन जाइ मिळे ४४
देखिले गजदन्त पलंक उपरे । बिजय़े सान कुमर पहुडि जतनरे ४५
नीळावती राणी बसि छन्ति रत्न पलंकरे।
बिजे करि बसि छन्ति से लज्या भावरे ४६
नीळावतीकि राजन देखि तोष हेले ।शिवंक गउरी किबा मो पुरे बिजे कले ४७
एसन बिचारि राजा रत्न पलंकरे । नीळावतीकि कोळे धरि बसिले हर्षरे ४८

थी। ३३ एक वर्ष के अनन्तर राजरानी धाई तथा दासी ने राजा से यह बताया। ३४ हे अवध शिरोमणि महाराज ! सुनिये। हमारे अंतःपुर में एक घटना-घटित हुयी है। ३५ सुमित्रा से छोटी वाली रानी नीलावती याजपुर महाराज की राजकन्या है। वह राजा श्रेष्ठ जाति के गंगवंशीय नरेश हैं। उनकी पुत्री नीलावती ने सुमित्रा रानी की बहुत सेवा की। प्रसन्न होकर रानी सुमित्रा ने उन्हें कनिष्ठ पुत्र दे दिया। ३६-३७-३८ छोटे बालक को लेने पर उस रानी के स्तन से क्षीर बहने लगा और बालक दूध पीकर तृप्त हो गया। ३९ यह सुनकर राजा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हेमंती धाई को बैठाकर (नीलावती) ने श्रृंगार करवाया। ३७४० उन्होंने कहा कि गौरी के समान श्रृंगार करो। शंकर भी जिसे देखने पर लुभा जायें। ३७४१ उसी प्रकार आज मेरा श्रृंगार करना जिससे राजा भी देखकर विभोर हो जायें। ४२ यह सुनकर हेमंती ने रहकर उनका सुवेश किया। नीलावती गौरी के समान दिखाई देने लगी। ४३ उस रात्रि में राजा उपस्थित हुये और नीलावती के अंतःपुर में जा पहुँचे। ४४ उन्होंने हाथी दाँत के पलंग पर छोटे कुमार को यत्न-पूर्वक लेटे हुये देखा। ४५ रानी नीलावती रत्न पलंग पर बड़ी लज्जा के साथ बैठी हुयी थी। ४६ नीलावती को देखकर राजा संतुष्ट हो गये। वह विचार करने लगे। क्या शिव की पत्नी पार्वती मेरे महल में आ गई हैं। ४७ ऐसा सोचकर राजा प्रसन्नचित्त होकर नीलावती को अपनी गोद में लेकर रत्न के

मुखे चुम्ब देइण आश्वासना करि। बोइले अनुआन वेशन आज फेरि ४९
धाईकि देखिण बोइले गजदन्त पलंकरे। शोइछन्ति ए कुमर केवण प्रकारे३७५०
धाई बोले राणी स्तनरु स्रविलारु क्षीर। सुमित्रा देले तांकु सान जे कुमर३७५१
राजनकु बोइले कुमरकु घेनि आण। राणींक ठारु केमन्ते खाउछि क्षीर पुण ५२
शुणि नीळावती धाई कुमरकु देला। स्तन धरि कुमर जे क्षीर पान कला ५३
देखि करि राजन परम तोष हेले। आज ठारु ए कुमर तुम्भर होइले ५४
कुमरकु धाई नेइ पलंके शुआइले। कुमर जिवारु राजा दुइ स्तन धरे ५५
क्षीर स्रविला स्तनरु राजन विचारिले। × × × ५६
धरन्ते क्षीर जे स्रविला स्तनरु। राजन विचारे ए दइव कृत्यरु ५७
पूर्ब लिखित कर्मरु एमान हुअइ घटण। नव सहस्र वर्षे एबे क्षीर स्रबे पुण ५८
देवंकर वरे वाहुबळे एहि कर्म। देवंकर कार्ज्य कि होइव हस्तण ५९
एमन्त बिचारि राए रजनी सेथि सारि। पादान्ति अवकाश हेले दण्डधारी३७६०
उठिण नीळावती चरणे ओळगिला। कर जोड़ि सुन्दरी वचन प्रकाशिला३७६१
बोइला प्राणेश्वर शुण मो बचन। कथाए कहिवि देबे हेले सुप्रसन्न ६२
नव सहस्र वर्ष जे आसिण भोग हेला। चतुर्थ समयरे आसि बिहि पुत्र देला ६३

पलंग पर बैठ गये। ४८ उन्होंने उसका मुख चुम्बन करके आश्वस्त किया तथा बोले कि आज फिर अपूर्व शृंगार किया है। ४९ वह धाई को देखकर बोले कि गजदन्त-पर्यङ्क पर यह बालक कैसे लेटा है। ३७५० धाई ने कहा कि रानी के स्तन से क्षीर श्रवित होने के कारण सुमित्रा ने छोटा पुत्र इन्हें दे दिया। ३७५१ राजा ने वालक लाने को कहा। फिर राजा ने कहा देखें— बालक कैसे रानी का क्षीरपान करता है। ५२ यह सुनकर नीलावती को धाई ने बालक को उठाकर दे दिया। बालक ने स्तन पकड़कर क्षीरपान किया। ५३ यह देखकर राजा को महान संतोष हुआ और वह बोले कि आज से यह पुत्र तुम्हारा हुआ। ५४ धाई ने वालक को लेकर पलंग पर लिटा दिया। बालक के चले जाने पर राजा ने दोनों स्तन दबा दिये। ५५ स्तन से क्षीर श्रवित होने पर राजा ने विचार किया। ५६ स्तन को पकड़ने के साथ ही साथ दूध निकला, राजा ने सोचा कि यह दैव का कार्य है। ५७ पुरातन लेख के अनुसार ऐसा घटित होता है। नौ हजार वर्षों में अब क्षीर श्रवित होता है। ५८ देवताओं के वर से यह कार्य हुआ है। इस कार्य में क्या देवताओं का हाथ है। ५९ राजा ने इस प्रकार का विचार करते हुये रात्रि वही व्यतीत कर दी। तदुपरान्त राजा अवकाश में हो गये। ३७६० सुन्दरी नीलावती ने उठकर उनके चरणों में प्रणाम किया और हाथ जोड़कर बोली। ३७६१ हे प्राणेश्वर! मेरी वात सुनिये। यदि आप प्रसन्न हों तो एक बात कहूँ। ६२ नौ हजार वर्षों का भोग समाप्त हो गया। चौथापन आने पर विधाता ने पुत्र दिया है। ६३ अब

प्रमाण सहस्र बर्ष आयुष अटे पुण।
पाप केते पुण्य केते लेखिछि रबिर नन्दन ६४
सेथिर सकाशे कहु जे अछि मुहिँ। सत शान्ति सुखरे परजा पाळ तुहि ६५
राजनरे प्रशंसा परजारे सुस्थ। मुनि ब्राह्मणंकु दान देबार उचित ६६
दुःखी दरिद्ररे अन्न बस्त्र दिअ। सकळ लोक ठारे शान्त मूर्त्ति हुअ ६७
शुणि करि दशरथ बोलन्ति बचन। सकळ राणी हंसर अट हे सुज्ञान ६८
एहि ज्ञान पणरे तुम्भकु राजन भोग हेउ। बहु बर्ष राज भोगरे दिनि जाउ ६९
प्रसन्नरे राजन एमन्त बर देले। शुणिण नीलावती जे चरणे ओळगिले३७७०
बोइले ए बर गोटि नुहँइ मंगळ। ए बर देले मोते अटे असार३७७१
स्वदेह घेनिण मुं तुम्भर संगे जिबि। एहि बर सुदया कर हे देवस्वामी ७२
हेउ बोलि दशरथ बोइले जे बाणी। मोर बळ सरिले तोर बाञ्छा पूर्ण पुणि ७३
नीळावती बोले देव जाणिलि एथर। अळप दिनरे स्वामी जिब स्वर्गपुर ७४
तुम्भे जिबा उत्तरु चउद बरषरे। मोते सुदया हेब बोले कल्पणारे ७५
एते कथा होइण राजन चळि गले। बाहार अवकाश जगतीरे हेले ७६
पार्वती बोइले देव शुण त्रिपुरारी।मंगळ कृत्य बिधि कि रूपे राणी करि ७७

हजार वर्ष की प्रमाणिक आयु बची है। पता नहीं कितने पाप अथवा पुण्य सूर्य पुत्र यम ने लिखे हैं। ६४ इसी कारण से मैं कह रही हूँ। आप सत्यता, शान्ति तथा सुख से प्रजा का पालन करें। ६५ राजा की प्रशंसा से प्रजा सुस्थिर रहती है। मुनियों तथा ब्राह्मणों को दान देना उचित है। ६६ दुःखी, दरिद्रों को अन्न-वस्त्र प्रदान कीजिए। समस्त लोगों के लिये शान्त स्वरूप धारण कीजिए। ६७ यह सुनकर दशरथ ने कहा कि तुम समस्त रानियों में ज्ञानवती हो। ६८ इसी ज्ञान के कारण तुम्हें राजसी भोग प्राप्त हों। राज-सुख भोग करते हुए तुम्हारा अधिक से अधिक समय व्यतीत हो। ६९ राजा ने प्रसन्न होकर उसे इस प्रकार का वर प्रदान किया। ऐसा सुनकर नीलावती ने उनके चरणों में प्रणाम किया। ३७७० उसने कहा कि यह वर मेरे लिये मंगलकारी नहीं है। हमें ऐसा वर देना व्यर्थ है। ३७७१ अपनी देह के साथ मैं आपका अनुगमन करूँ। हे देव ! स्वामी ! मुझे दया करके इस प्रकार का वर प्रदान कीजिये। ७२ दशरथ ने कहा कि ऐसा ही हो। मेरा बल समाप्त होने पर तुम्हारी कामना पूर्ण हो। ७३ नीलावती ने कहा, हे देव ! अब मैं समझ गई कि आप कुछ ही दिनों में स्वर्गारोहण करेंगे। ७४ आपके जाने के चौदह वर्ष उपरान्त मेरे ऊपर कृपा होगी। मुझे इस प्रकार का विचार समझ में आ रहा है। ७५ इस प्रकार सम्भाषण के अनन्तर राजा चले गये और अवकाश के समय बाहर जगती पर विराजमान हो गए। ७६ पार्वती ने कहा, हे देव त्रिपुरारी ! सुनिये। रानी ने किस प्रकार की विधि से मांगलिक कृत्य

से कथा बुझाइण कहिब मोते पुण। वासुदेवर बडु शुणि तोष हेव जाण ७८
ईश्वर बोइले गो शुण भगवती। से कथा गोटि तोते कहिवा बुझाइटि ७९
कुम्भ मास छ दिनरे मंगळ कृत्य कले। जे त्रिधि विधान करन्ति स्नेह भरे३७८०
बेदी परे नारद बशिष्ठ बसे जाण। बरुण पूजा विधि कले उच्चारण३७८१
ऋष्यश्रृंग मारकण्ड बेनि बेदीरे बसि। चारि वेदी परे ऋषि दशरथ वसि ८२
पूर्ण कुम्भ स्थापिले जे बेदी परे नेइ। द्वितीय बेदीरे नारद पूर्ण कुम्भ रखाइ ८३
पूर्ण कुम्भ चूतपत्र स्थापिले वेदी रेण। तृतीय बेदीरे वसिले ऋष्यश्रृंग पुण ८४
पूर्ण कुम्भ स्थापिण कर्म आचरिले। चतुर्थ बेदीरे मार्कण्ड कर्म कले ८५
बरुण पूजा सारिण वेद उच्चारिले। कनकर चारि पिढ़ा आणिण थोइले ८६
गुआ घृत हळदी लगाइ चारि पोए। श्रीरामंकु नेले सेथिकि वड स्नेहे ८७
रजनीरे तोळापाणि अणाइ थिले पुण। से पाणिरे चारि पुत्र कराइ स्नाहान ८८
नूतन वस्त्रमान पुत्रंकु पिन्धाइले। तण्डुळ गुआ नेइ पुत्रंक हस्ते देले ८९
चारि पुत्र तण्डुळ आञ्जळि करे धरि। चारि जननीकि कुमरे देले तोळि३७९०
कैकया कौशल्या सुमित्रा नीळावती। चारि जननी पणतरे तण्डुळ घेनि लेटि३७९१
सेठारु चळि श्रीराम बेदी परे गले। एन्तुडि बरुण राजा बेदीरे सारिले ९२

किए। ७७ आप यह कथा मुझसे समझाकर कहिए। वासुदेव के उपनयन की कथा सुनकर मुझे सन्तोष होगा। ७८ शंकर जी ने कहा हे भगवती! सुनो। मैं वह कथा तुमसे समझाकर कहूँगा। ७९ उन्होंने कुम्भ मास के छठे दिन मांगलिक कृत्य किए। प्रेमपूर्वक विधि-विधान हो रहे थे। ३७८० वेदी पर नारद तथा वशिष्ठ बैठे थे। उन्होंने मंत्रोच्चार करके वरुण पूजा की। ३७८१ श्रृंगी ऋषि तथा मारकण्ड दोनों वेदियों पर बैठे थे। चारों वेदियों पर ऋषियों तथा दशरथ ने बैठकर वेदी के ऊपर पूर्ण कुम्भ की स्थापना की। दूसरी वेदी पर नारद ने पूर्ण कुम्भ स्थापित करके उस पर आम्रपल्लव की स्थापना की। ८२-८३ तीसरी वेदी पर श्रृंगी ऋषि बैठे, उन्होंने पूर्ण कुम्भ की स्थापना करके कर्म काण्ड सम्पादित किया। चौथी वेदी का कर्म काण्ड मारकण्ड ने किया। ८४-८५ वरुण पूजा करके उन्होंने वेद पाठ किया तथा सुवर्ण के चार पीढ़े लाकर रख दिये। ८६ चारों पुत्रों को सुपारी, घृत तथा हरिद्रा लगाई गई। वड़े प्रेम से श्रीराम को वहाँ लाया गया। ८७ रात्रि का उठाया हुआ जल मँगा लिया गया था। उसी जल से चारों कुमारों को स्नान कराया गया। ८८ उन्हें नए वस्त्र पहनाए गए। चावल तथा सुपारी लेकर कुमारों के हाथों रख दिये गए। ८९ चारों माताओं ने उठाकर वह उन्हें प्रदान किए। चारों पुत्र अंजलियों में चावल लिये थे। ३७९० कैकेई, कौशल्या, सुमित्रा तथा नीलावती इन चारों माताओं ने आँचल से चावल लिये। ३७९१ वहाँ से चलकर श्रीराम वेदी के ऊपर गए। उन्होंने अँजुरी वरुणराज के समक्ष रख दी। ९२ वहाँ वशिष्ठ

बेद उच्चारण जे बशिष्ठ कले तहिँ। अग्नि स्थापि होम जे कले मुनि रहि ९३
सेहि रूपे द्वितीय़ बेदीरे भरत बसि।बेद उच्चारि नारद अग्नि तहिँ स्थापि ९४
शाम बेद उच्चारण कले मुनिबर। तृतीय़ बेदीकु गले लक्ष्मण कुमर ९५
बेद उच्चारण जे ऋष्यश्रृंग कले। अग्निकु स्थापिण होम बिधि आरम्भिले ९६
मार्कण्ड बसिले जे चतुर्थ बेदीरे। शतृघन बेश होइ अइले सहरे ९७
श्रीरामकु कोळे घेनि दशरथ बसि। भरतंकर पाशरे मउळा बसे आसि ९८
लक्ष्मणकु कोळे घेनि लोमपाद राए। शतृघन पाशरेण मउळा बिजय़े ९९
चारि बेदीरे चारि जे ऋषि दुइ मउळा। दशरथ लोमपाद दुइ बेदीरे तोरा३८००
चन्दन काठे होम कले ऋषि माने। एथु अनन्तरे तुम्भे शुण सुज्ञजने३८०१
स्वर्गपुर देवता माने जे अइले। सुधर्मा सभा परे जाइ बिजे कले २
मण्डुक राजा मुण्डे देइण सभा पुण। अजोध्या सळखरे रहिले देवगण ३
सुधर्मा सभा सेथिरे रुहाइ पितामह। मर्त्यपुरकु दशजुण उपरे देवप्रिय़ ४
दशरथ नृपतिर नबर सळखरे। देबे बिजे कले जाइ सुधर्मा सभारे ५
कळामेघ प्राय़े जे दिशइ तळकु।लक्षे छाय़ा माय़ा जे चाहिँले उपरकु ६
सकळ ऋषि जाणिले देवता बिजे कले।
नन्दि ग्रामे थिबा मुनि अजोध्या मिळिले ७

ने वेदोच्चारण किया, फिर मुनि ने अग्नि स्थापित करके हवन किया। ९३ इसी प्रकार दूसरी वेदी पर भरत ने बैठकर किया। नारद ने वेदोच्चार के साथ अग्निस्थापन किया। ९४ मुनिश्रेष्ठ ने सामवेद का मंत्रोच्चार किया। तीसरी वेदी पर लक्ष्मण कुमार गए। ९५ श्रृंगी ऋषि ने वेदोच्चार किया उन्होंने अग्नि स्थापित करके हवन किया। ९६ मारकण्ड चौथी वेदी पर बैठे। उस स्थान पर शत्रुघ्न शीघ्र ही आ गए। ९७ श्रीराम को गोद में लेकर दशरथ बैठ गए। भरत के समीप मामा आकर बैठ गए। ९८ राजा लोमपाद लक्ष्मण को गोद में लिये थे तथा शत्रुघ्न के निकट मामा विराजमान थे। ९९ चार वेदियों पर चार ऋषि तथा दो मामा थे और दशरथ तथा लोमपाद दो वेदियों पर शोभायमान थे। ३८०० ऋषियों ने चन्दन काष्ठ से हवन किया। हे ज्ञानी लोगो! सुनो। इसके पश्चात् जो देवतागण स्वर्गलोक से आए थे वह सुधर्मा सभा में जा पहुँचे। ३८०१-२ राजा मण्डूक के सिर पर सभा लगाकर देवगण अयोध्या पर ध्यान केन्द्रित किये हुए थे। ३ पितामह ब्रह्मा ने सुधर्मा सभा को रोक दिया और देवहितकारी वह दस योजन ऊपर मृत्युलोक में जा पहुँचे। ४ महाराज दशरथ के महल को ध्यान में रखते हुए सुधर्मा सभा से देवगण भी वहाँ जा पहुँचे। ५ लाखों मायावी छायाएँ नीचे से ऊपर की ओर ताकने पर काले मेघ के समान दिख रही थीं। ६ समस्त ऋषि समझ गए कि देवगण आ गए हैं। नन्दी ग्राम में रहने वाले ऋषि, मुनि अयोध्या जा पहुँचे। ७

सकळ बन्धुजन देखन्ति रहि पुण। हाटुआ वाटुआ जे राज्यरे लोकगण ८
लागिलाक गहळ देखिले सर्बजन।त्रैलोक्यर नाथ जाण बेदीरे बिजे जाण ९
वेद पढ़ि बसि नव कर्म करे होम। सुवर्णर पइता जे प्रदान श्रीराम३८१०
चारि भाइ एहि रूपे जज्ञ पवित्र घेनि। चारि भाइंकर कर्म सारिले जे मुनि३८११
भिक्षा मागिवाकु जे से उद्यम कले।
चारि कुमरंक मउळा सुबर्ण थाळि जे धइले १२
प्रथमे माता गणे वडु भिक्षा देले।
तहुँ उत्तरु लोमपाद दशरथ भिक्षा सर्मपिले १३
सातश पचाश मउळा नेइ भिक्षा देले। वन्धु वर्ग सकळ नेइ भिक्ष सर्मपिले १४
रत्न खडु बीर वल्ली देले बहुत जाण। देखिण राज्य लोके आनन्द हेले पुण १५
ऋषि गण सकळ आशिष नेइ देले। ब्राह्मणे मिळि सर्बे सुकल्याण कले १६
वेदवर देवताए कलेक बिचार। बोइले आम्भ दुःख जिबटि एथर १७
एते कहि श्वेत पुष्प तहिँ बृष्टि कले। सधवा स्तिरी माने हुळहुळि देले १८
रोषाणि घर विधि कले तहिँ पुण। पुत्रंक मउळामाने जाउँळि धरिण १९
बेनि कोटि शंख जे महुरी बाजे भेरि। बाद्यर शबदरे कम्पे मेरु गिरि३८२०
दाण्डरे बिजे कले चारि पुत्र पुणि।जेन्हे गुण्डिचा जात्राकु बिजे चक्रपाणि३८२१

समस्त वन्धु-वर्ग हाट बटोही तथा राज्य के लोग वहाँ रुककर देख रहे थे। ८ चहल-पहल मच गई। सब लोगों ने तीनों लोकों के स्वामी श्रीराम को वेदी पर विराजमान देखा। ९ वेदपाठ के साथ नवकर्म सहित हवन किया गया। श्रीराम को सुवर्ण का यज्ञोपवीत प्रदान किया गया। ३८१० इसी प्रकार चारों भाइयों का यज्ञ के सहित कर्मकाण्ड मुनि ने सम्पादित किया। ३८११ उन्होंने भिक्षा माँगने का उद्यम किया। चारों कुमारों के मामा सुवर्ण की थाली लिये हुये थे। १२ पहले माताओं ने ब्रह्मचारियों को भिक्षा दी, उसके पश्चात् लोमपाद तथा दशरथ नें भिक्षा समर्पित की। १३ सात सौ पचास मामा लोगों ने भिक्षा प्रदान की और सभी वन्धु-बान्धवों ने भी भिक्षा प्रदान की। उन्होंने बहुत सी रत्नजड़ित खड़ाऊँ तथा वीरवल्ली प्रदान की। यह देखकर राज्य के लोग आनन्दित हो गये। १४-१५ समस्त ऋषियों तथा ब्राह्मणों ने मिलकर उन सबको शुभाशीष दिया। १६ ब्रह्मा जी तथा देवताओं ने विचार करके कहा कि अब हमारा दुख दूर हो जायेगा। १७ इतना कहकर उन्होंने श्वेत पुष्पो की वर्षा की और सौभाग्यवती स्त्रियों ने मांगलिक ध्वनि की। १८ पुत्रों के मामा लोगों ने अधारी (दो थैलों का झोला) धारण करके विशेष विधि सम्पादित की। १९ दो करोड़ शंख, महुरी तथा भेरियाँ बज रही थीं। वाद्य-नाद से मेरुपर्वत काँपने लगा। ३८२० जैसे पुरी की रथयात्रा के समय चक्रधारी भगवान जगन्नाथ निकलते हैं, उसी प्रकार चारों कुमार राजपथ

ग्राम मुण्डे जाइण होइले पर बेश । रोषाणि बिधि सेठारे कलेक बिशेष २२
छता मडु जाउँळि जे कान्धरे पकाइ । रोषाणि बिधि कले पुणि चारि भाइ २३
सेहि ठारु बाहुड़िण नबरकु गले । रतन बेदी उपरे प्रबेश होइले २४
सेठारे पूर्ण आहुति सारिलेक पुण । नबरर भितरकु गले सेहु जाण २५
देबे थाइ शून्यपुरे करन्ति जणाण । असुर बेगे मार भो देव नारायण २६
एते कहि देवताए गले स्वर्गपुर । सुधर्मा सभारे बसि देवता सकळ २७
सुधर्मा सभा नेइण स्वर्गरे रखाइले । जे जाहार निजस्थाने प्रबेश होइले २८
ऋषि गण माने जे मेलाणि होइगले । जे जाहार अनुरूपे धन बस्त्र नेले २९
भोजन सारि ब्राह्मणे मेलाणि होइले । धन रत्न पाइ बारु सन्तोष होइले३८३०
देश घोष पादान्ति सद्दार जेते वळ । शाढ़ी सुना पाइ सर्बे हर्षे चळिबार३८३१
मंगळ नारी माने नबरु चळि जाइ । नटकारी बेश्या स्तिरी गले बोध होइ ३२
पञ्चम सप्तम दश मंगळा जे सारि । शान्ता जे ऋष्यशृंग गले निज पुरी ३३
लक्षेक सुनिआँ धन रत्न घेनि चळि । दशरथ लोमपाद अइले तांकु छाडि ३४
लोमपाद कहि करि निज राज्ये गले । चम्पावती पुररे जाइ प्रबेश होइले ३५
सकळ राणीहंस जे कुशळे रहि पुण । सकळ पुत्रंकु घेनि रहिले निश्चिन्तेण ३६
दशरथ कैकेय्रा कौशल्यांकर तुले । सुमित्रा नीळावती राणीहंसरे प्रीति कले ३७

पर निकले। ३८२१ वह ग्राम के छोर पर जा पहुँचे। फिर उन्होंने वहाँ विशेष विधि सम्पादित की। २२ छाता, दण्ड तथा अधारी कन्धों पर डालकर चारों भाइयों ने विधि विशेष पूर्ण की। २३ वह वहाँ से लौटकर फिर महल में गए और रत्नवेदी पर जा पहुँचे। २४ वहाँ पर पूर्णाहुति समाप्त की और महल के भीतर चले गए। २५ आकाश में स्थित देवगण विनती कर रहे थे कि हे देव नारायण ! आप शीघ्र ही असुर का संहार करें। २६ इतना कहकर देवगण स्वर्ग चले गए तथा सभी देवता जाकर सुधर्मा सभा में बैठ गए। फिर स्वर्ग की सुधर्मा सभा को त्याग कर अपने-अपने स्थानों को जा पहुँचे। २७-२८ फिर ऋषियों की बिदाई हुई। सबने अपने अनुरूप धन, वस्त्र ग्रहण किया। २९ भोजनोपरान्त ब्राह्मण बिदा हुए और धन-रत्न की प्राप्ति से सन्तुष्ट हो गए। ३८३० देश के रथी, पैदल, सिपाही, सरदार तथा सैन्यवाहिनी आदि सब सरोपा तथा स्वर्ण प्राप्त करके आनन्दपूर्वक चले गए। ३८३१ सधवा स्त्रियाँ भी महल से चली गईं। नाट्यकारिणी वेश्याएँ भी संन्तुष्ट होकर चली गईं। ३२ पंचम, सप्तम तथा दश मंगला समाप्त करके शान्ता तथा शृंगी ऋषि भी अपने भवन को चले गए। ३३ वह एक लक्ष स्वर्ण मुद्रायें धन तथा रत्न लेकर चले। दशरथ और लोमपाद उन्हें छोड़ने आए। ३४ लोमपाद कहकर अपने राज्य को चले गए और चम्पावती राज्य में जा पहुँचे। ३५ समस्त रानियाँ सभी पुत्रों को लेकर कुशलतापूर्वक निश्चिन्त होकर रहने लगीं। ३६ दशरथ, कैकेयी तथा

चारि राणींक भाइ पिअर चळिगले । निज निज राज्ये जाइ प्रवेश होइले ३८
ईश्वर बोइले एबे शुण देवी उमा ।त्रिलोकरे बिख्यात जे श्रीराम महिमाँ ३९
पार्बती बोइले आहे शुण दिगम्बर ।सात वर्षे श्रीराम कले केवण सम्भार३८४०
ईश्वर बोइले शुण आगो भगवती । बिष्णु तेज देखिले जे लक्षेक नृपति३८४१
पूर्बे शुणि थिलु आम्भे ऋषिमानंक ठारु । वासुदेव जन्मिबे जे धरणी गर्भरु ४२
ऋषि माने कहि थिले सूर्ज्य बंशे हरि । अजोध्या देशरे जे जन्मिबे देह धरि ४३
तेणु से राजामाने हरष होइले । श्यामळ चतुर्द्धा मूर्त्ति सुन्दर तेज भले ४४
देवताए जाणिण शून्यरे रहि देखि ।विप्र माने बेद शास्त्र पढि जाणि लेटि ४५
तिनिपुर ऋषि जे जाणिले जोग बळे ।
तेणु जे श्रीराम नाम बिख्यात तिनिपुरे ४६
पार्वती वोइले देव सेठारु किस हेला । सप्त वरष अटे जे दशरथ वळा ४७
सेठारु किस कले कह मोते परा ।जननींक कोळ घेनि चारि भाइ तोरा ४८
वडुव्रत सरिबारु दशरथ नृप । बशिष्ठ मुनिंकि घेनि कले बिचारत ४९
बिद्या आरम्भ करन्तु चारि जे कुमर । पुत्र माने मोर पृथ्वीकि हेबे सार३८५०
शुणि करि बशिष्ठ जे चण्ड पुत्र राइ । दिन बार बुझिण बिद्या आरम्भइ३८५१

कौशल्या के समान सुमित्रा तथा नीलावती आदि रानियों से स्नेह करते रहे। ३७ चारों रानियों के भाई तथा पिता चले गये और अपने-अपने राज्यों में जा पहुँचे। ३८ शंकर जी वोले हे देवी उमा ! अव सुनो। श्रीराम की महिमा तीनों लोकों में विख्यात हुयी। ३९ पार्वती ने कहा हे दिगम्बर! सुनिये। सात वर्षों में श्रीराम ने क्या लीला की। ३८४० शंकर जी वोले हे भगवती! सुनो। लाखों राजाओं ने विष्णु के तेज को देखा। ३८४१ पहले हमने ऋषियों से सुना था कि भगवान वासुदेव पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न होंगे। ४२ ऋषियों ने कहा था कि भगवान अयोध्या देश के सूर्यवंश में देह धारण कर उत्पन्न होंगे। ४३ इस कारण से वह राजा लोग प्रसन्न हो गये। श्यामल चारों रूप वहुत सुन्दर तथा तेज से युक्त थे। ४४ देवताओं ने आकाश में स्थित रहकर ज्ञात कर लिया। ब्राह्मणों को वेदशास्त्र पढ़ने से इसका ज्ञान हुआ। ४५ तीनों लोकों के ऋषियों को योग वल से ज्ञात हो गया। इस कारण से श्रीराम का नाम तीनों लोकों में प्रसिद्ध हो गया। ४६ पार्वती ने कहा हे देव ! फिर वहाँ क्या हुआ। दशरथ-नन्दन सात वर्ष के हो गये थे। ४७ आप हमसे वताइये कि फिर उन्होंने वहाँ क्या किया। माताओं की गोद में चारों भाई शोभायमान हो रहे थे। ४८ ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत समाप्त हो गया। राजा दशरथ ने वशिष्ठ मुनि के साथ विचार-विमर्श किया। ४९ अव चारों कुमार विद्या आरम्भ करें। मेरे पुत्र भूमण्डल में महत्वपूर्ण वनें। ३८५० यह सुनकर वशिष्ठ ने चण्ड पुत्र को बुलाकर विद्या आरम्भ करने के लिये मुहूर्त पूँछा। ३८५१ बैसाख शुक्ल तृतीया

वैशाख शुक्ल तृतीया जे बुधबारे। बृहस्पति अछन्ति जे एकादशी घरे ५२
से दिन गुरु बशिष्ठ बिद्या आरम्भिले। पक्ष के पराकृत बिद्या शिखाइले ५३
बेनि पक्षे संस्कृति बिद्या शिखि पुणि।तेलेंगि नागरि शिखिले बेनि मास जाणि ५४
आरबी खोरटा जे छतिश बर्ण शिखि। देव नागरी काक चरित्र भाषा लेखि ५५
देबा देबी मानंकर एमानंक भाब। शिखिले चारि भाइ लेखिण सद्भाव ५६
तिनि भुवन बिद्या शिखाइले बशिष्ठ नामे गुरु।
छपन कोटि जीव भाषा जाणिले ह्न्तकारु ५७
वशिष्ठ श्रीरामकु धनु बिद्या देले। मन्त्र जन्त्र बारण सकळ शिखाइले ५८
नागान्तक जोगान्तक साधन्ति बिद्यामान।
वरण करि शिखाइले बशिष्ठ ऋषि पुण ५९
बशिष्ठ बिद्या शिखाइ अगस्ति सुमरिले। चित्त निश्चळ करि मनरे जाणिले३८६०
जोग वळे अगस्ति मिळिले आसि पुण। चतुर्द्धा मूर्त्ति देखि हर्ष मुनि मन३८६१
सकळ विद्या जाणि बाकु से लयकले। कि अर्थे सुमरिल बोलि पचारिले ६२
बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण आहे मुनि। भ्रत शतृघनकु धनुर्बिद्या दिअ पुणि ६३
शुणि करि अगस्ति जे बिद्यागुरु होइ। सकळ धनुर्बिद्या शिखाइले तहिँ ६४
बाजणी बारणसी आत जात लय।सकळ बिद्या शिखाइले ब्रह्मांकर पुअ ६५

बुधवार जब कि बृहस्पति ग्यारहवें घर में थे। उस दिन गुरु वशिष्ठ ने विद्या आरम्भ करवायी। एक पक्ष में उन्होंने अक्षर ज्ञान की शिक्षा दी। ५२-५३ दो पक्षों अर्थात् एक माह में संस्कृति विद्या सिखा दी। फिर दो महीने में उन्होंने तैलंग तथा नागरी सीखी। ५४ अरबी, फारसी आदि छत्तीस भाषायें सीखकर उन्होंने देवनागरी तथा सांकेतिक भाषायें लिखीं। ५५ चारों भाइयों ने देवी-देवताओं के भाव सीखे और उनके सद्भाव लिखे। ५६ गुरु वशिष्ठ ने तीनों लोकों की विद्यायें उन्हें सिखायीं और उन्हें छप्पन करोड़ जीवों की भाषाओं का विशद् ज्ञान कराया। ५७ वशिष्ठ ने श्रीराम को धनुर्विद्या दी और मंत्र, यंत्र तथा निवारण आदि सब कुछ सिखा दिया। ५८ नागान्तक, योगान्तक विद्याओं की उन्होने साधना करायी और वशिष्ठ ऋषि ने उनका निवारण भी सिखा दिया। ५९ वशिष्ठ ने विद्या की शिक्षा देकर अगस्त का स्मरण किया। वह चित्त को एकाग्र करके मन में समझ गये। ३८६० योगबल से अगस्त आ पहुँचे। उन चार मूर्तियों का दर्शन करके मुनि का मन प्रसन्न हो गया। ३८६१ उन्होंने कहा कि इन्होंने समस्त विद्यायें लगकर सीख ली हैं। फिर आपने मेरा स्मरण किस कारण से किया है। ६२ वशिष्ठ ने कहा कि हे मुनि ! सुनों। आप भरत और शत्रुघन को धनुर्विद्या प्रदान करें। ६३ यह सुनकर अगस्त ने विद्या गुरू बनकर वहाँ पर उन्हें सम्पूर्ण धनुर्विद्या की शिक्षा दी। ६४ घातक तथा निवारक के आवागमन को तन्मयता के साथ अन्य सभी विद्याओं का ज्ञान ब्रह्मा

बज्र धनु अणाइ भरत हस्ते देले।बज्र बाटुळी बसाइ आध्यान कराइले ६६
ब्रह्म बाटुळि देबंक सकळ बाटुळि। शिबंक बाटुळि नाग लोकंक बाटुळि ६७
मनभेदी बाटुळि मोह जे बाटुळि। जीवन्यास बाटुळि जे अचेत बाटुळि ६८
देइण बोइले जे अगस्ति तपधारी। प्रबळ निर्बळरे मारिबु हेतु करि ६९
ब्रह्म बिष्णु महेश्वर दशदिगपाळ। सकळ देवता आदि तेते नाग बळ३८७०
नर बानर दक्ष केहि न रहिवे।मारिले बज्र बाटुळि समस्ते मोह जिबे३८७१
जिआँइबाकु जीवन्यास बाटुळि। एते कहि बज्र धनु देले दैत्यकर ७२
चरण धरि भरथ मुनिक पादे नमि। अगस्ति बोइले सुखरे रह मुनिमणि ७३
भरथ बोइले मुं जे करिबि परीक्ष। तेबे सिना जाणिबि तुम्भर सपक्ष ७४
अगस्ति बोइले ज्येष्ठ श्रीराम तोर भाइ। कनिष्ठ लक्ष्मण जे अनन्त अटइ ७५
गुरु आम्भे अटु बेदवर समान। ए तिनि जणरु जणे परीक्षाकर पुण ७६
तेबे तु जाइ करि सकळ जीव सार। आउ काहाकु भय न थिब तोहर ७७
शुणि करि भरथ बज्र धनु बेगे धरि।
मोह तिनि बाटुळि तिनि जिणंकु जे मारि ७८
श्रीराम लक्ष्मण अगस्ति जे हेले मोह। देखि करि तोष हेले दशरथ पुअ ७९

के पुत्र ने उन्हें करा दिया। ६५ उन्होंने वज्र धनुष मँगाकर भरत के हाथ में दिया और वज्र का अस्त्र रखकर उसे चलाने का अभ्यास कराया। ६६ ब्रह्मास्त्र, समस्त देवताओं के अस्त्र, शिव तथा नागलोक के मनभेदी अस्त्र, मोहित करनेवाली शक्ति, जीवन्यास अस्त्र, अचेत करनेवाली शक्ति, देकर तपस्वी अगस्त ने उनसे कहा कि अत्यन्त सबल तथा निर्बल को समझकर इनका प्रहार करना। ६७-६८-६९ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दस दिगपाल नागों के दल, समस्त देवता, नर, वानर तथा यक्ष कोई भी नहीं बच पायेगा। इस वज्र शर से प्रहार करने पर सब मूर्च्छित हो जायेंगे। ३८७०-३८७१ जिलाने के लिये जीवन्यास अस्त्र है। इस प्रकार कहकर उन्होंने उन्हें विशालकाय वज्र-धनुष प्रदान किया। ७२ भरत ने मुनि के चरण पकड़कर उनके चरणों में प्रणाम किया। अगस्त ने कहा हे ब्रह्मचारी ! तुम सुखपूर्वक रहो। ७३ भरत ने कहा कि मैं आपके समक्ष परीक्षा लूँगा। तभी तो वास्तविकता का ज्ञान होगा। ७४ अगस्त ने कहा कि श्रीराम तुम्हारे बड़े भाई है। तुम्हारा छोटा भाई लक्ष्मण अनन्त देव है। ७५ हम ब्रह्मा के समान गुरू हैं। इन तीनों लोगों में से किसी एक पर परीक्षा कर लो। ७६ तब तुम जाकर समस्त जीवों में महत्त्वशाली होगे। फिर और किसी से तुम्हें भय नहीं रहेगा। ७७ यह सुनकर भरत ने शीघ्र ही वज्रधनुष लेकर तीन मोहनास्त्रों का तीनों लोगों पर प्रहार किया। ७८ श्रीराम लक्ष्मण तथा अगस्त मूर्छित हो गये। यह देखकर दशरथ-नन्दन संतुष्ट हो गये। ७९ फिर उन्होंने मंत्र पढ़कर जीवन्यास शर

जीव न्यास बाटुळि कि मन्त्रिण सुमरि मारि।
बाजन्ते तिनि जण उठिले मोह तेज्या करि३८८०
पार्वती बोइले कह शतृघन कथा। कि रूपे क्षत्रीपण नीळावतीर सुता३८८१
ईश्वर बोइले जे अगस्ति दयाकले। ब्रह्मा देला पिनाकी शतृघनरे देले ८२
बोइले परीक्षा कररे कुमर। शरदर अग्निकि तु पर्वत कर मेळ ८३
शुणि करि कुमर जे शुष्ककाठ रखि। जळकुण्ड मध्यकु तीरदेला जोखि ८४
पिनाकी धनुरे गुण देइ टंकारिला।शोषेक जळ धारा पबनाशर बसाइला ८५
शुष्ककाठरे अग्नि तक्षणे लागिला। मारन्ते तिनि शर प्रताप घोर कला ८६
जळ शुखि बारु अनळु लिभि गला। × × × ८७
पाषाण उडिला जे शून्य मण्डळे जाइ। देखिण शतृघन हरष मन होइ ८८
जीवन्यास शरकु प्रति तुल्य करि। जळ कूळरे भरि अग्नि उठे जलि ८९
शून्ये उठिबा पाषाण तळे आसि रहि। देखि शतृघन परम तोष होइ३८९०
अगस्तिक चरणे नमस्कार कले। सम्मान धर्म देखि मुनि हरष होइले३८९१
बोइले तोते बतिश बरष समग्ररे। तेतिश कोटि देवता तेज देबे तोरे ९२
देवंकु उपकार करिबुरे बाबु। देव कार्ज्य कले सफळ तोर सबु ९३
एते कहि अगस्ति निज आश्रमे गले। बळराम दास सेबे श्रीराम पद्मरे ९४

का प्रहार किया। उसके लगते ही तीनों लोग मूर्छा त्यागकर उठ बैठे। ३८८० पार्वती ने कहा अब शत्रुघन की कथा कहिये। नीलावती के पुत्र का पराक्रम कैसा था। ३८८१ शंकर ने कहा कि अगस्त ने दया करके ब्रह्मा का दिया हुआ पिनाक धनुष शत्रुघन को दिया। ८२ उन्होंने कुमार से परीक्षा करने को कहा। शरदकालीन अग्नि को क्या तुम पर्वत से मिला सकते हो। ८३ यह सुनकर शत्रुघन कुमार ने सूखी लकड़ियाँ रखकर जलकुण्ड के मध्य में तीर चला दिया। ८४ उन्होंने पिनाक धनुष प्रत्यंचा चढ़ाकर टंकार की। जल-धारा को सुखाकर वायु बाण सन्धान किया। ८५ उसी समय सूखी लकड़ियों में अग्नि प्रज्वलित हो गई। तीन बाणों के प्रहार करने पर प्रचंड ताप हो गया। ८६ जल सूखने पर भी अग्नि बुझ गई। ८७ पाषाण उड़कर नभ मण्डल में चले गए। यह देखकर शत्रुघन का मन प्रसन्न हो गया। ८८ फिर उन्होंने जीवन्यास बाण को चढ़ाकर जल के कूल पर छोड़ दिया जिससे आग जल उठी। ८९ आकाश में उड़े हुए पाषाण नीचे आ गए। यह देखकर शत्रुघन को अत्यन्त संतोष हुआ। ३८९० उन्होंने अगस्त के चरणों में प्रणाम किया। उनका मान्य धर्म देखकर मुनि प्रसन्न हो गए। ३८९१ उन्होंने कहा कि बत्तीस वर्षों में तैंतिस करोड़ देवता तुम्हें तुम्हारा प्रताप प्रदान करेंगे। ९२ हे वत्स ! तुम देवताओं का उपकार करना। देवकार्य करने से तुम्हारी समस्त इच्छायें पूर्ण होंगी। ९३ इतना कहकर अगस्त अपने आश्रम को चले गए। बलराम

वळरामदास जे श्रीराम चरणे। भक्तिभाव होइ पुराण बखाणे ९५
त्रेतया जुग कथा श्रीराम अवतार। वर्णिबाकु शरधा जे बळिला मोहर ९६
जेउँ कथा ईश्वर पार्वती आगे कहि। से कथा गोटि मोर कण्ठरे बिकाशइ ९७
पार्वती बोइले शुण हे त्रिलोचन।श्रीराम लक्ष्मणकु धनु बशिष्ठ देले पुण ९८
से कथा मोर आगे कहिबा ईशान। × × × ९९
ईश्वर बोइले शुण गो महामायी। सारंग धनुकु कोदण्ड बोलि कहि३९००
से धनु श्रीरामरे बशिष्ठ सर्मापले। तेणु कोदण्ड चापधारी श्रीराम बोलाइले३९०१
बासुकीर कोदण्ड जे लक्ष्मणकु देले।से कोदण्ड सदाशिव होन्ति सब्रु काळे २
पार्वती बोइले से परीक्षा किस कले। से कथा मोर आगे कहिबाक भले ३
ईश्वर बोइले शुण गो महामायी। सारंग कोदण्डकु धरि रघुसाइँ ४
गुणकु चढ़ाइ टंकार नाद कले। तिनिपुर पूरिला जे टंकार नादरे ५
स्वर्गरे देवताए बोइले स्तबद।दश दिगपाळे बिचारिले सरिला सम्पद ६
बेदब्रह्मा जशोबन्ती पुर चमकिले।गायत्री साबित्री जाइ ब्रह्माकु कोळ कले ७
ईश्वर ताटका हेले कपिळास पड़े भांगि।तु मोते कलु कोळ सकळ बिधि छाड़ि ८
सप्तपुर राजामाने चमकि पडिले। सप्त सागर जे लहरी स्थिर हेले ९

दास श्रीराम के चरणों की सेवा करता है। ९४ बलराम दास श्रीराम के चरणों की भक्ति करके पुराण का वर्णन कर रहा है। ९५ त्रेतायुग की श्रीराम के अवतार की कथा का वर्णन करने की मेरे मन में श्रद्धा जाग्रत हुई है। ९६ जिस कथा को शंकर जी ने पार्वती के समक्ष कहा है वही कथा मेरे कण्ठ से विकसित हो। ९७ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! सुनिये। वशिष्ठ ने श्रीराम तथा लक्ष्मण को धनुर्विद्या प्रदान की। आप वह कथा मुझसे स्पष्ट रूप से कहिए। ९८-९९ शंकर ने कहा हे महामाया ! सुनो। सारंग धनुष को ही कोदण्ड कहा जाता है। वही धनुष वशिष्ठ ने श्रीराम को समर्पित किया। इसी कारण से श्रीराम को कोदण्डधारी कहा जाने लगा। ३९००-३९०१ वासुकी नाग का कोदण्ड लक्ष्मण को दिया गया। वह कोदण्ड सर्वकाल में सब प्रकार का मंगल करनेवाला रहा है। २ पार्वती ने कहा कि उन्होंने परीक्षा कैसे की। वह कथा आप हमसे भली प्रकार से कहिए। ३ शंकर ने कहा, हे महा-मातेश्वरी ! सुनो। रघुकुल में श्रेष्ठ लक्ष्मण ने सारंग कोदण्ड को धारण करके उस पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर उन्होंने टंकार की। उस टंकार का नाद तीनों लोकों में भर गया। ४-५ स्वर्ग में देवगण विनती करने लगे। दश दिग्पालों ने विचार किया कि अब सारा ऐश्वर्य समाप्त हो गया। ६ यशोवन्तीपुर में वेदवर ब्रह्मा चौंक पड़े। गायत्री तथा सावित्री ने जाकर ब्रह्मा को आलिंगन कर लिया। ७ कैलाश टूट गया। शंकर स्तब्ध रह गए। समस्त विधियों को छोड़कर तुम मुझसे लिपट गईं। ८ सातों लोकों के राजा लोग चौंक पड़े।

नर बानर असुर हेले मोर गत ।पर्शुराम ऋषि छाडिले स्थकिते से तप३६१०
बासुकी नाग राजा भय़रे थरहर । धरणी तेजिबाकु मन जे ताहार३६११
धरणी देबी मनरे थरहर होइ । सुमरिला बासुदेव मोरे कर त्राहि १२
सकळ जीव तरस्त हेबारु जाणि दुर्गा ।सुरभि गोटि जाइ श्रीराम अंगे शोभा १३
कर जोडि बोइले श्रीराम रक्षा कर ।गुण टंकार शब्दे समस्ते हेले अस्थिर १४
श्रीराम बोइले तु जे केवण अटु पुण । सकळ हिते आसि करु तु जणाण १५
जय़दुर्गा बोइले मुँ अटइ जोगमाय़ा ।तेणुकरि मोर अंगे घोटुअछि माय़ा १६
गुणटंकार शब्दरे होइलि अस्थिर । देव नागबळ नर बानर असुर १७
उड़न्ता बुड़न्ता जे चळन्ति अचळन्ति । समस्ते निर्बिकार शुण दाशरथि १८
से गुणरे शरकु बसाइले सहर । समस्ते मरि बेटि शुण हे निकर १९
श्रीराम बोइले मुँ परीक्षा नकले । केमन्ते दुष्ट जनकु मारिबि हस्तरे३९२०
जोगमाय़ा बोइले हेबारे चिन्ह दिअ । शरे सिन्दूर लगाइ उश्वासरे बिन्ध३९२१
तेबे हे दुष्टजन जिबार नाश जाणि । शुणि करि हरष हेले रघुमणि २२
शरर मुनरे सिन्दूर नेइ देले । उश्वास करिण जे शरकु बिन्धिले २३
तेणु करि शर गोटि बेग चळि गला ।देव दानब मानव नाग बळरे चिह्न देला २४

सात समुद्रों की लहरें स्थिर हो गईं। ९ नर-वानर और असुर मेरी शरण में आ गए। स्तब्ध होकर ऋषि परशुराम ने तपस्या का त्याग कर दिया। ३९१० नागराज वासुकी भय से थरथराने लगे। उनका मन पृथ्वी को छोड़ देने का हो गया। ३९११ भूदेवी मन ही मन थर्रा उठी। उसने नारायण का स्मरण करते हुए रक्षा करने के लिये कहा। १२ दुर्गा समस्त जीवों को त्रस्त जानकर सुरभि के रूप में श्रीराम के पास जाकर शोभायमान हुईं। १३ उन्होंने हाथ जोड़कर श्रीराम से रक्षा करने को कहा क्योंकि समस्तप्राणी प्रत्यञ्चा की टंकार के शब्द से अशान्त हो गए है। १४ श्रीराम ने कहा तुम कौन हो ? तुम सबके हित के लिये आकर प्रार्थना कर रही हो। १५ जयदुर्गा ने कहा कि मैं योगमाया हूँ। इसी कारण मेरे शरीर में ममता बढ़ गई है। १६ हे दाशरथि ! सुनो। प्रत्यञ्चा के टंकार शब्द से मैं चंचल हो उठी हूँ। देव लोग, नागगण नर-वानर असुर, नभचर, जलचर, जीव, जड़चेतन सभी निर्विकार हो गए हैं। १७-१८ हे देव ! उस प्रत्यञ्चा पर बाण चढ़ाने से सब नष्ट हो जाएँगे। १९ श्रीराम ने कहा यदि मैं परीक्षा न करूँ तो अपने हाथों से दुष्टजनों का कैसे वध करूँगा। ३९२० योगमाया ने कहा यदि ऐसा है तो चिह्न लगा दो और बाण में सिन्दूर लगाकर हल्का करके चलाओ। ३९२१ तब उन दुष्टों को मरा हुआ समझो। यह सुनकर रघुश्रेष्ठ राम प्रसन्न हो गए। २२ उन्होंने बाण के फल पर सिन्दूर लेकर लगा दिया तथा बाण को हल्का करके छोड़ दिया। २३ तब शीघ्रतापूर्वक उस बाण ने जाकर देव, दानव, मानव तथा नागबल को संकेत

चळन्ति अचळन्ति बुड़न्ता उड़न्ता। सर्ब ठारे बिहरि अइला शर गोटा २५
श्रीरामंक त्रोणरे आसिण सम्भाइला।
शरकु सम्भाळि श्रीराम जोग माय़ारे कहिला २६
बोइले संकेत देवि देखा अगो मोते। तेबे प्रते जिवि मुँ तुम्भर कथा हिते २७
जोगमाय़ा बोइले मोर कपाळ देख। मोर कपाळ देखिले सबु हेब एहिमत २८
बशिष्ठंक कपाळ देख चापधारी। तांकर समाने सबु ऋषि सेहि परि २९
तुम्भ पिता दशरथ मस्तक चाहिँण। राजागण सकळ सेहि रूपरे गण३९३०
मन्त्री सुमन्तर कपाळ देख एबे। नर बानर असुरंकर एहि भावे३९३१
अष्टदेवता बिरञ्चि नारायणंकु देख। अन्तःपुरे पोषिला जीवंकु निरेख ३२
शुणि करि श्रीराम देवी मस्तककु चाहिँ। बशिष्ठ सुमन्त दशरथंकु अनाइ ३३
बिचारिले कहिले देबी कथा सत। शान्तशीळ सेठारु होइले रघुनाथ ३४
लक्ष्मण शिवधनु उपरे गुण देले। देबींकि बोइले कि देबा चिह्न भले ३५
जय़दुर्गा बोइले निअहे अञ्जन। शुणि काण्ड फळरे देले चिह्न पुण ३६
आमञ्चि नाराचकु उश्वासे देले छाड़ि। देव दानव जे मानव आदि करि ३७
छपन कोटि जीव नागबळ स्थळ। समस्तंक मस्तकरे अञ्जन लागि बार ३८
श्रीराम चारि भाइ बशिष्ठ दशरथ। संकेत देखि सर्बे होइले उसत ३९

दिया। २४ चर, अचर, नभ तथा जल में सभी स्थानों में घूमकर वह बाण लौट आया। २५ वह आकर श्रीराम के तरकश में समा गया। बाण को सम्हालकर श्रीराम ने योगमाया से कहा। २६ हे माता ! मुझे संकेत दिखाइये, तब मुझे आपको बातों पर विश्वास होगा। २७ योगमाया ने कहा कि तुम मेरा मस्तक देखो। मेरे मस्तक को देखने से सब इसी प्रकार होगा। २८ हे चापधारी ! वशिष्ठ का कपाल देखो। उनके समान सभी ऋषि उसी प्रकार के हैं। २९ आपके पिता दशरथ के मस्तक को देखने पर सभी राजाओं को उसी रूप में जानो। ३९३० अब मंत्री सुमन्त का कपाल देखो और नर-वानर तथा असुरों को इसी भाव से देखो। ३९३१ इष्टदेव विरंचि नारायण को देखो। अन्तःपुर स्थित जीवों का निरीक्षण करो। ३२ यह सुनकर श्रीराम ने देवी के मुख को ताककर वशिष्ठ, दशरथ तथा सुमन्त की ओर दृष्टि डाली। ३३ फिर उन्होने सोचा कि देवी की बात सत्य है। फिर श्रीराम शान्त हो गए। ३४ फिर लक्ष्मण ने शिव धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई और देवी से कहा कि कौन सा चिह्न लगाएँ। ३५ जय दुर्गा ने कहा, यह अंजन लो। यह सुनकर उन्होंने बाण के फल पर चिह्न लगाया। ३६ फिर उन्होंने बाण खींचकर हल्के से छोड़ दिया। देव, दानव, मानव आदि छप्पन करोड़ स्थलीय जीवों, नागबल आदि सबके मस्तक पर अंजन लग गया। ३७-३८ श्रीराम आदि चारों भाई, वशिष्ठ दशरथ आदि सब संकेत देखकर आनन्दित हो गए। ३९ फिर योगमाया वहाँ

सेठारु जोगमाय़ा अन्तर्द्धान हेले। दशरथ राजा मनरे बिचारिले३६४०
बोइले नाराय़ण अंशरे चारि पुत्र। जनम होइछन्त बळरे बळबन्त३६४१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी।श्रीरामे चाहिँ बशिष्ठे कहिले धीर करि ४२
बोइले बार बर्ष पूर्ण काळे। शिव धनु प्रापत जे हेब अवश्य तुम्भरे ४३
लक्ष्मणंकु बोइले बतिश बरषरे। पिनाकी अक्षय़ त्रोण प्रापत जे भले ४४
दशरथंकु बोइले श्रीराम लक्ष्मण जे शतृघन।
बतिश बर्ष परे रथ परे करिबे गमन ४५
भरत बार बरष रथरे बिजे करि।
सप्त खण्ड मेदिनीरे प्रशंसा पाइबे पुत्र तोरि ४६
एते कहि मेळ भांगि सेठारु चळि गले। दशरथंक संगे चारि पुत्र चळिगले ४७
बशिष्ठ चळिगले जे निजर भुवन। नव बर्ष पूरि जाइ दश बर्ष पशे पुण ४८
पार्बती बोइले सेठारु किस हेला।
बिद्या शिक्षा करिलारु किस कले भला ४९
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। से कथा गोटि तोते बुझाइ कहिबाटि३६५०
सेठारु श्रीराम प्रति दिनरे पुण। कोदण्डकु धरिण बिजय़ कले जाण३६५१
तिनि पट लेखाएँ चारि भाइ काण्ड धरि।
श्रीराम चारि भाइ कोदण्डे गुण भरि ५२
लाख कले प्रथमे कदळी गछकु। शबद भेदि दशरथ देले ताकु ५३

से अन्तर्ध्यान हो गई। राजा दशरथ ने मन में विचार किया। ३६४० चारों पुत्र नारायण के अंश से उत्पन्न हुए हैं और बल में पराक्रमी हैं। ३६४१ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् श्रीराम की ओर देखकर वशिष्ठ ने धीर भाव से कहा। ४२ बारह वर्ष पूर्ण होने के समय तुम्हें अवश्य ही शिव धनुष प्राप्त होगा। ४३ उन्होने लक्ष्मण से कहा कि बत्तिस वर्ष में तुम्हें शिव का अक्षय तूणीर प्राप्त होगा। ४४ फिर उन्होंने दशरथ से कहा कि श्रीराम, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न बत्तिस वर्ष के पश्चात् रथ पर गमन करेंगे। ४५ आपके पुत्र भरत बारह वर्ष पर रथ पर आसीन होकर सातों खण्ड मेदिनी पर यश प्राप्त करेंगे। ४६ इतना कहकर सभा भंग करके वह वहाँ से चले गए। दशरथ के साथ चारों पुत्र चले गए। ४७ वशिष्ठ अपने आश्रम को चले गये। नौ वर्ष समाप्त होकर दसवाँ वर्ष लग गया। ४८ पार्वती ने कहा फिर वहाँ क्या हुआ, विद्याओं की शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने क्या किया। ४९ शंकर ने कहा हे भगवती ! सुनो। वही बात मैं तुमसे समझाकर कहूँगा। ३६५० उस दिन से श्रीराम प्रतिदिन कोदण्ड को धारण करके निकलने लगे। ३६५१ वह चारों भाई बहुत से बाण लेकर गए। उन्होंने कोदण्ड पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई। ५२ सर्वप्रथम उन्होंने केले के वृक्ष को लक्ष्य किया। दशरथ ने उन्हें शब्दभेदी बाण

मनकु विन्धिले से सुमरि मन्त्र पुण । ड़ाकरे सहस्रमान चळिले तक्षण ५४
अचळन्ति चळन्ति नाश करिण आसिशर। तोणरे मिळिबार देखन्ति सकळ ५५
कोदण्डकु जेते बेळे चारि भाइ आमञ्चे। स्वर्ग मर्त्य पाताळ तिनिपुर कम्पे ५६
धनुर्बिद्या आतजात चारि भाइंकर । देखि हेले दशरथ आनन्द मनर ५७
छेल चक्र गदा जे मुदगर साधिले । माल बिन्धाण जे कुस्तिकि साधिले ५८
सकळ विद्यामान बशिष्ठ शिखाइले । धनुर्बिद्यारे जेणु से परिपूर्ण हेले ५९
बेनि बरष पुण एथिरे बहि गला । धनु धरि चारि भाइ होइलेक तोरा३९६०
शब्दरे भेदि नाराच भेदन्ति जेते बेळे । उड़न्ता जीवमाने पड़न्ति आसि तळे३९६१
एथु अनन्तरे दशरथ जे बिचारि । अश्वपरे बसिबाकु अनुकूळ लोडि ६२
बशिष्ठंकु बिचारि बुझिले अनुकूळ । आषाढ़ शुक्ल जे द्वितीया रबिबार ६३
सेदिन चारि पुत्रे अश्वरे बिजे कले । राउत बेश होइण नग्ररे फेरिले ६४
बीरवल्ली रत्न खडु मस्तके जरि पाग । गळारे चाप सरि चन्द्रहारा तेज ६५
श्रीराम भरथ जे धवळ जामा पिन्धि । लक्ष्मण शत्रुघन कळापतनि छन्दि ६६
कटीरे सुना सूता अंगुष्टिरे मुदि । बेनि कर अंगुष्टिकि सुन्दर दिशे भेदि ६७
बेनिबाहुटि अंगुष्टिरे मुदि जाण ।धळा कळा घोडा चढ़ि चारि पुत्र जाण ६८

प्रदान किया । ५३ उन्होंने अपने मन में मंत्र का स्मरण करके वाण छोड़ दिया । शब्द पर हजारों बाण उसी समय चल दिये, चराचर नाश करके वाण तूणीर में लौट आया जिसे सभी लोगों ने देखा । ५४-५५ जिस समय चारों भाई कोदण्ड को चढ़ाते थे तब स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक यह तीनों काँपने लगते थे । ५६ चारों भाइयों की धनुर्विद्या का आदान प्रदान देखकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया । ५७ उन्होंने चक्र, सेल, गदा, मुग्दर, मल्लयुद्ध तथा कुश्ती का अभ्यास किया । ५८ वशिष्ठ ने समस्त विद्याओं की शिक्षा दी । वह धनुर्विद्या में दक्ष हो गए । ५९ इसमें दो वर्ष व्यतीत हो गए । चारों भाई धनुष धारण करके शोभायमान दिखाई देते थे । ३९६० जिस समय वह शब्दभेदी बाण छोड़ते थे, उस समय उड़ते हुए जीव पृथ्वी पर आ गिरते थे । ३९६१ इसके पश्चात् दशरथ ने विचार किया तथा अश्वारोहण के लिये मुहूर्त की खोज करने लगे । ६२ उन्होंने वशिष्ठ से विचारविमर्श करके मुहूर्त पूँछा । आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को रविवार के दिन चारों पुत्र घोड़ों पर विराजमान हो गए । सुसज्जित होकर घुड़सवारों ने उन्हें नगर में घुमाया । ६३-६४ बीरवल्ली, रत्न के कड़े, माथे पर जरीदार पगड़ी, गले में धनुषाकार चन्द्रहार सुशोभित थे । ६५ श्रीराम तथा भरत श्वेत वस्त्र तथा लक्ष्मण और शत्रुघन काले रंग के वस्त्र पहने हुए थे । ६६ दोनों हाथों की उँगलियों में अंगूठी सुन्दर दिखाई दे रही थीं । ६७ दोनों बाहुओं में बाजूबन्द तया उँगलियों में मुद्रिकाएँ थीं ।

पागपरे मुकुट झलमल शोहे। बाजि परे चढ़िले कोरड़ा हस्त हुए ६९
आगरे श्रीराम जे पछरे शतृघन।मध्यरे भ्रथ लक्ष्मण चळन्ति धीरे पुण३९७०
चारि भाइ अश्वपरे राज्यरे फेरि पुणि। हुळहुळि शबद जे करन्ति तरुणी३९७१
कोरडा उच्चाइ फेराइले घोडा भले। अजोध्या सिमारे बुलिण लेउटिले ७२
माजणा स्नान जे सारिण चारि भाइ। भोजन सारि पलंके पहुडिले जाइ ७३
से दिन ठारु प्रतिदिन अश्व चढ़ि फेरि। प्रहरे भितरे शते जुण भ्रमण करि ७४
दशरथ महीपाळ देखिलेक जाण। हस्तीपरे चढ़इबा बिचार कले पुण ७५
बशिष्ठंकु ड़काइ कहिले अनुकूळ। दधि माछ पूर्ण कुम्भ सकळ दुआर ७६
श्वेत चारि हस्तीरे अमरि सज कले। भाद्रब पूर्णमी सिंह लग्नरे बिजे कले ७७
बाद्य शंख महुरी आगरे बाजे फेरि। हुळहुळि शबदरे गहळ पूरि ७८
राउत बेशरे चारि भाइ बिजे पुणि।श्रीराम पछे तिनि भाइ बिजे कले जाणि ७९
राज्यरे फेरि जान्ते देखिले नरनारी।
श्रीराम राए बिजय़े बोलिण हाल होळि३९८०
हस्ती धूआँइण करन्ति गमन। सकळ राज्ये बुलिण लेउटि ततक्षण३९८१
हस्तीपरु ओह्लाइसे भितरे चळिगले। मणिमा मणिमा डाक आगे ड़ाक भले ८२

चारों पुत्र सफेद तथा काले घोड़ों पर चढ़े थे। ६८ पगड़ी पर मुकुट झलमलाकर सुन्दर दिख रहे थे। वह घोड़ों पर चढ़े हुए हाथों में कोड़े लिये थे। ६९ आगे-आगे श्रीराम उनके पीछे शत्रुघन तथा मध्य में भरत तथा लक्ष्मण धीर भाव से चले जा रहे थे। ३९७० अश्वारोहण करके चारों भाई राज्य में घूमते थे और तरुणियाँ मांगलिक शब्द करती थी। ३९७१ वह सब कोड़ा ऊँचा करके घोड़े दौड़ाते हुए अयोध्या की सीमा तक घूमकर लौट आए। ७२ उन्होंने तब मार्जन स्नान समाप्त करके भोजन किया और पलंगों पर जाकर लेट गए। ७३ उस दिन से प्रतिदिन वह लोग अश्व पर चढ़कर एक प्रहर के भीतर सौ योजन भ्रमण करके लौट आते थे। ७४ राजा दशरथ ने यह सब देखकर उन्हें हाथी पर चढ़ाने का विचार किया। ७५ उन्होंने वशिष्ठ को बुलाकर मुहूर्त पूँछा। समस्त द्वारों पर दही, मछली तथा पूर्ण कुम्भ रक्खे गये। ७६ चार श्वेत हाथियों पर हौदे कसवा दिये। भाद्रपूर्णमासी की सिंह लग्न में वह चारों उन पर विराजमान हुए। वाद्य शंख महुरी आगे-आगे बजती चल रही थी। चारों ओर मांगलिक शब्द भर रहा था। ७७-७८ आरोही वेश में चारों भाई उपस्थित हुए। श्रीराम के पीछे तीनो भाई चल पड़े। ७९ राज्य में उन्हें भ्रमण करते हुए नर-नारियों ने देखा। राजा राम की जयकार से हड़कम्प मच गया। ३९८० वह हाथियों को दौड़ाते हुए सम्पूर्ण राज्य में घूमकर उसी समय लौट आए। ३९८१ हाथियों से उतर कर वह सब भीतर चले गए। उनके आगे राज राजेश्वर की ध्वनि होती चल रही थी। ८२ उन्होंने शीघ्र ही मार्जन करके स्नान किया

माजणा होइण स्नान करिण बेगे। षड़ रसे भोजन कलेक पिता संगे ८३
आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी गुरुबार। से दिन जान परे बिजये कुमर ८४
राज्य देश बुलिण नवरे प्रबेश। दशरथ राजा देखि होइले हरष ८५
कुमार पूर्णमी दिन सभा मण्डाइले। बशिष्ठ पात्र मन्त्रीकि डकाइ अणाइले ८६
श्रीराम संगरे घेनिण तिनि भाइ। सभारे बिजे कले आनन्द मन होइ ८७
सभा मउळि बारु गले जेझापुर। प्रबेश हेला आसि आद्य मार्ग शिर ८८
बेण्टर पारिधिकि खोजिले अनुकूळ। कृष्ण पक्ष नवमी जे से दिन मित्र तार ८९
से दिन पारिधिकि अनुकूळ कले। पात्र मन्त्री अमानत्य सकळ संगे नेले३९९०
रथ गज अश्व संगरे तत्पर। श्रीराम बिजय कले बारुर उपर३९९१
तिनि भाइ तांकर संगरे चळि गले। से माने बारु उपरे तक्षणे बिजे कले ९२
अरण्य भितरे जे प्रबेश हेले जाइ। चारि भाइ बाण्टरे पारिधि कले तहिँ ९३
प्रथमे श्रीराम गण्डा गोटिए माइले।
तहिँ उत्तरु भरथ सिंह गोटिए नाश कले ९४
लक्ष्मणंकर से दिन बराह पारिधि। शतृघन पारिधि मृग बेण्ट साधि ९५
पारिधि सारिण से लेउटिले पुण। राज्यरे प्रबेश हेले से जाइण ९६
दश बर्ष जे सम्पूर्ण पुण हेला। सकळ बिद्यारे जिता कुमर हेले परा ९७
माल बिन्धाण कुस्ति साधिले सेहु पुण। गदा मुद्गर जे बुलान्ति शक्ति पुण ९८

और पिता के साथ षड्रस भोजन किया। ८३ आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को गुरुवार के दिन राजकुमार यान के ऊपर चढ़े। ८४ वह राज्य के देशों में घूमकर लौट आए। क्वार की पूर्णमासी के दिन सभा लगाई गई। वशिष्ठ सभासद तथा मंत्री बुला लिये गये। ८५-८६ प्रसन्नचित्त श्रीराम साथ में तीनों भाइयों को लेकर सभा में उपस्थित हुये। ८७ सभा समाप्त होने पर सब अपने-अपने घर चले गये, फिर मार्ग शीर्ष का महीना आ पहुँचा। ८८ फिर अस्त्र लेकर आखेट के लिये मुहूर्त खोजा गया। कृष्ण पक्ष की नवमी का दिन उनका मुहूर्त निकला। उसी दिन आखेट के लिये निकल पड़े और अपने साथ सभासद मंत्री अमात्य आदि सबको ले लिया। ८९-३९९० रथ हाथी घोड़े साथ में तत्पर थे। श्रीराम घोड़े के ऊपर चढ़कर चल पड़े। ३९९१ तीनों भाई उनके साथ घोड़ों पर चढ़कर चल दिये। ९२ वह वन के भीतर जा पहुँचे। चारों भाइयों ने वहाँ अस्त्रों से आखेट किया। ९३ पहले श्रीराम ने एक गैंडा मारा। उसके पश्चात् भरत ने एक सिंह मार दिया। ९४ उस दिन लक्ष्मण ने सुअर का शिकार किया और शत्रुघन ने हिरन मारा। ९५ आखेट समाप्त करके वह लौट पड़े और जाकर राज्य में प्रविष्ट हुये। ९६ दस वर्ष पूरे हो चुके थे। राजकुमार सभी विद्याओं में पारंगत हो गये थे। ९७ उन्होंने मल्लयुद्ध तथा कुश्ती का अभ्यास किया। वह गदा मुग्दर तथा शक्ति चलाते थे। ९८ अश्व पर चढ़कर शौर्य

अश्व उपरे चढ़िण जाणिले क्षत्री बिद्या । हस्ती परे बसिण होइ राज्य सिधा ६६
धनु धरि चित्कार करन्ति गुण देइ ।सकळ बिद्यारे निपुण बशिष्ठ कराइ४०००
संगरे श्रीराम तिनि भाइंकु जे घेनि । वेण्ट पारिधि कले दिने छड़ारे पुणि४००१
सिंह शार्दुळ मृग मारन्ति स्वम्बर । गण्डा मईँषि खुरुंग बरेहा गय़ळ २
कटके प्रबेश होन्ति देखन्ति सर्बजन । शुणन्ति पार्बती जे कहन्ति पञ्चानन ३
परमब्रह्म श्रीराम स्वयं अबतार । दुष्ट निबारि सन्थ जनंकु उद्धार ४
नर बानर देबता नागबळ हिते । बासुदेब अबतार होइले जगते ५
जा' नाम सुमरिले सकळ पाप जाइ । जेते पाप थिले अंगे सकळ क्षय़जाइ ६
एबे आद्य काण्ड जे शाम बेद बाणी । बालमीक मुनि देब पुराणे बखाणि ७
संकल्प करिण जे शुणि एहा नित्ये । अपुत्रिक पुत्र जे प्रापत हुए एथे ८
सुज्ञजने शुणिले मिळिब सद्‌गति । सदाशिव आगे एहा कहे भगवती ९
पार्बती बोइले तुम्भे शुण त्रिअम्बक । कथाए रहिला देब न शुणिलि मुंत४०१०
बासुदेव चतुर्द्धा मूर्त्ति रूपे जात । आज दशबर्ष लीळा शुणिलि सकळत४०११
सागर दुलणी जे अटन्ति कमळा । चारि रूप धरिण से जन्म हेले परा १२
जनम हेबार मुं शुणि थिलि कर्णे । जनक ऋषि घरे किस कले कि गुणे १३

विद्या सीखी और हाथी पर बैठकर राज्य-सिद्ध हो गये । ९९ धनुष लेकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर चीत्कार करते थे । वशिष्ठ ने उन्हें समस्त विद्याओं में निपुण कर दिया था । ४००० एक दिन श्रीराम ने तीनों भाइयों के साथ अस्त्र लेकर अकेले ही आखेट किया । ४००१ उन्होंने सिंह, शार्दूल, मृग, साँभर, गैंडा, भैंसे, सुअर, खुरुंग (मृग विशेष) तथा अरनें का शिकार किया । २ फिर वह दुर्ग में जा पहुँचे । सब लोगों ने उनके दर्शन किये । पार्वती सुन रही हैं और पंचानन शिवजी कह रहे हैं । ३ श्रीराम स्वयं परब्रह्म के अवतार हैं । वह वासुदेव दुष्टों का विनाश, सन्तों के उद्धार तथा नर, वानर, देवता और नागों का हित करने के लिये संसार में अवतरित हुये हैं । ४-५ जिसका नाम स्मरण करने से सब पाप छूट जाते हैं और जो पाप शरीर में होते हैं वह सब नष्ट हो जाते हैं । ६ यह आद्यकाण्ड सामवेद की वाणी है जिसे वाल्मीकि महर्षि ने पुराण में वर्णित किया है । ७ संकल्प करके नित्य इसे सुनने से सन्तानहीन व्यक्ति को पुत्र प्राप्त होता है । ८ सज्जन पुरुषों के सुनने से उन्हें सद्‌गति मिलेगी । सदाशिव ने भगवती के समक्ष इस प्रकार कहा । ९ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! आप सुनिये । एक बात रह गई जो मैंने नहीं सुनी है । ४०१० भगवान चार रूपों में उत्पन्न हुये । आज तक दस वर्ष की समस्त लीलायें मैंने सुनी । ४०११ सागर नन्दिनी लक्ष्मी भी चार रूप धारण करके अवतरित हुयी । १२ उनके जन्म की कथा मैंने कानों से सुनी थी । उन्होंने जनक ऋषि के घर में क्या किया । १३

जनक मुनि नेत्रे दुहिता देखिबारु। धनु स्वयम्बरकु से मनरे कले गरु १४
नियम कले ऋषि शिवधनु जे धरिब।
अजोनि सम्भूता दुहिता सीतांकु बिभा हेब १५
शुणिण दुर्बासा जे जनकंकु कहि। धनुजाग एगार बरष कर तुहि १६
से कथाकु पाळिले जनक मुनिबर। चारि दुहिता किस जे कलेक तांकर १७
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती। से कथा फळाइ जे कहिबा तुम्भकुटि १८
जागरे फाळमुने जानकी हेले जात। अजोनि सम्भूता ए सागर दुहिता १९
से नारीकि देखन्ते होइले नवजुबा। त्रिपुर मोहिनी से पार्बती प्राय शोभा४०२०
देखिण जनक जे हरषमन हेले। शिबधनु जे भांगिब ताकु देबइँ बोइले४०२१
दुर्बासा बोइले ए अतुट नारी जाति। पाक स्नान शुद्ध स्नान अग्निरे हुअन्ति २२
शुणिण ऋषि माने बोइले जाणिबा। अग्निरे परीक्षा कले तेबे से बुझिब २३
एमन्ते बिचारन्ते बेनि दिबस गला। जनकर नन्दिनी जे पाकस्परश हेला २४
पाञ्च दिनरे अग्निरे कलेक स्नाहान। निर्मळ दिशे सती उज्ज्वळ देह पुण २५
देखिण सकळ ऋषि परम तोष हेले। एगार बर्ष जाए धनु जात्रा सेहु कले २६
जानकी जन्म जे प्रथम वर्षरे। प्रथम जाग जनक कले सम्भर्बरे २७

जनक महर्षि ने पुत्री को आँखों से देखने पर धनुष स्वयंवर करने का मन में विचार किया। १४ उन्होंने प्रण किया कि जो कोई शंकर के धनुष को उठा लेगा वह अयोनिसम्भूता पुत्री सीता से विवाह करेगा। १५ यह सुनकर दुर्वासा ने जनक से ग्यारह वर्ष तक धनुष यज्ञ करने को कहा। १६ जनक महर्षि ने उनकी आज्ञा का पालन किया। उनकी चार पुत्रियों ने क्या किया। १७ शंकर जी बोले हे भगवती ! सुनो। हम वह कथा तुमसे विस्तारपूर्वक कहेंगे। १८ यज्ञ में हल की नोंक से जानकी उत्पन्न हुयी जो अयोनिसम्भूता समुद्र की कन्या थी। १९ वह नारी देखने में नवयुवा हो गई और पार्वती के समान सुन्दर तथा तीनो लोकों को मोहित करने वाली थी। उसे देखकर जनक का मन प्रसन्न हो गया और उन्होंने कहा कि जो शिव के धनुष को तोड़ेगा, यह उसी को प्राप्त होगी। ४०२०-४०२१ दुर्वासा ने कहा कि यह नारी अक्षय है। यह पाकस्नान तथा शुद्ध स्नान अग्नि में करेगी। २२ यह सुनकर ऋषियों ने मन में विचार किया कि अग्नि में परीक्षा करने पर ही यह ज्ञात होगा। २३ ऐसा विचार करते हुये दो दिन बीत गये। जनक नंदिनी अशौच अवस्था में (राजस्वला) हो गई। २४ उसने पाँचवें दिन अग्नि में स्नान किया। तब सती का उज्ज्वल शरीर निर्मल दिखाई देने लगा। २५ यह देखकर समस्त ऋषि सन्तुष्ट हो गए। ग्यारहवें वर्ष उन्होंने धनुष महोत्सव किया। २६ जानकी के जन्म के प्रथम वर्ष में, जनक ने प्रथम यज्ञ समारोह किया। २७ उस यज्ञ की

जे जाग समापत पूर्ण आहुति बेळे। अजोनि सम्भूतरे दुहिता जात हेले २८
से दुहितार नाम जे होइला उर्मिळा। तिनिमास उत्तरु होइला रजस्वळा २९
पाञ्च दिने अग्निरे स्नान पुणि कले। अजोनि बेनि दुहिता जनक पाळिले४०३०
तृतीय स्वयम्बर जागर सम्भार। स्वयम्बरे बरण कलेक ऋषि मेळ४०३१
देवऋषि ब्रह्मऋषि सिद्ध ऋषि जाण। नाग ऋषि शिव ऋषि राज ऋषि पुण ३२
तिनि पुर बरिले जनक ऋषि जाण। निमन्त्रण पाइ ऋषिमाने मिळे पुण ३३
अगस्ति मार्कण्ड पुण बिस्वामित्र गले। तिनि पुरर ऋषिंकि बरिण आणिले ३४
तिनि मास पन्दर दिने जाग समापत। जनक बोइले शुण सकळ तपोबन्त ३५
अजोनि सम्भूते मेरु दुहिता बेनि जात। ऋतु समापतरे अग्निरे स्नाहानत ३६
तेणुकरि कथाए नियम मुं जे कलि।
शिवधनु जे टेकिब दुहिता ताकु देबि बोलि ३७
सेथिर सकाशे मुं जे करुछि धनु जाग। तिनिपुर ऋषि बरि करुछि संजोग ३८
धनुधरि आमञ्चिबाकु जार अछि बळ। से धनुकु टेकिब दुहिता देबि मोर ३९
शुणिकरि ऋषि माने धनुकु देखि गले। शिवधनु देखिबारु मोहमान हेले४०४०
केहु अचेत हेले के पुण गले मोह। केहु पळाइबारे असम्भाळ देह४०४१

पूर्णाहुति-समाप्ति के समय अयोनिसम्भूता पुत्री उत्पन्न हुई। २८ उस कन्या का नाम उर्मिला पड़ा। वह तीन माह के पश्चात् रजस्वला हो गई। २९ उसने पाँचवें दिन अग्नि में स्नान किया। जनक ने दो अयोनिज कन्याओं का पालन किया। ४०३० यज्ञ के तृतीय स्वयंवर महोत्सव में उन्होंने ऋषि समुदाय को आमंत्रित किया। ४०३१ जनक ने तीनों लोकों के ऋषियों, देवर्षियों ब्रह्मर्षियों, सिद्ध ऋषियों, नाग ऋषियों, शैव ऋषियों तथा राज ऋषियों को आमंत्रित किया। निमंत्रण पाकर ऋषिमण्डल आ पहुँचा। ३२-३३ अगस्त मार्कण्ड तथा विश्वामित्र जाकर तीनों लोकों के ऋषियों का वरण करके ले आए थे। ३४ तीन महीने पन्द्रह दिनों में यज्ञ समाप्त हो गया। जनक ने कहा हे समस्त तपस्वियो ! सुनो। ३५ मेरी दो पुत्रियाँ अयोनिसम्भूता हैं। उन्होंने रजकाल की समाप्ति पर अग्नि में स्नान किया है। ३६ इस बात पर मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि जो शिव धनुष को उठाएगा मैं उसी को पुत्री प्रदान करूँगा। ३७ इस कारण मैं धनुष यज्ञ कर रहा हूँ और तीनों लोकों के ऋषियों का वरण करके उत्सव मना रहा हूँ। ३८ जिसमें धनुष उठाकर धारण करके उसे चढ़ाने की शक्ति होगी, मै उसे ही अपनी कन्या प्रदान करूँगा। ३९ यह सुनकर ऋषि लोग धनुष को देखकर चले गये और कितने ही शिव धनुष को देखकर मूर्च्छित हो गए। ४०४० कोई अचेत हो गए, कोई संज्ञा शून्य हो गए। किसी के शरीर भागने से सम्हाल नहीं पाये। ४०४१ यह देखकर जनक ने

देखिकरि जनक जे मने मने भाळि। बोइले ऋषिमाने भार्जन नोहे तोळि ४२
तेणु धनु जात्राकु निवर्त्त कराइले। एहि समय़रे भाइ आसि जे मिळिले ४३
कुश ध्वज बोइले शुणिव ज्येष्ठ नना। वेनिगोटि दुहिता जन्म हेले सिना ४४
जाउँळि जन्म जे होइ वारु पुण। माळिनी सुमाळिनी तांक नाम जाण ४५
जनक बोइले शिवधनु जे तोळिव। आमञ्चि गुण देइ टंकार करिव ४६
ताहाकु चारि दुहिता देवार मोर मूळ। साक्षी होइ थान्तु मोर दश दिगपाळ ४७
वेनि भाइ जाणिण जे प्रमाण जहुँ कले। कुशध्वज मुनि जे राज्यकु चळिगले ४८
तिनि पुर ऋषि जाक मेलाणि होइ गले। सनमान धनरत्न पाइण चळिले ४९
जे जाहार आश्रमरे मिळिले जाइ पुण। ए कथाकु शाकम्वरी एणे शुण४०५०
तृतीय़ वरषरे जनक ऋषि पुणि। धनुजाग करिवानि उदवेग जाणि४०५१
गौतम विश्वामित्र मनरे सुमरिले। जाणि करि वेनि ऋषि आसिण मिळिले ५२
देखिण जनक ऋषि मान्य धर्म कले। पाद पखाळि वाकु नेइ गंगा जल देले ५३
चरण पखाळि मुनि आसनने वसि। बोइले किम्पा जनक चिन्ता कर वसि ५४
जनक बोइले वेनि दुहिता सकाशरे। सत्यकरि जाग मुं कलि दुइयरे ५५
प्रथमे जाग करन्ते दुहिता जात हेले। द्वितीय़ जागरे केहु धनु न धरिले ५६

मन में विचार कर कहा कि यह ऋषि लोग तो उठाने में असमर्थ रहे। ४२ यह सोचकर उन्होंने धनुपमहोत्सव को समाप्त करवा दिया। इसी समय उनके भाई वहाँ आ गए। ४३ कुशध्वज ने कहा हे अग्रज ! सुनिये। दो कन्याओं के जन्म हुए हैं। ४४ जुड़वां कन्याएँ होने के कारण उनका नाम मालिनी तथा सुमालिनी पड़ गया है। ४५ जनक ने कहा जो शिव धनुप को उठाकर उसे चढ़ाकर टंकार करेगा उन्ही को चारो कन्याएँ प्रदान करने का हमारा प्रयोजन है। दस दिगपाल मेरे साक्षी होकर रहें। ४६-४७ दोनों भाइयों ने जान बूझकर ऐसा प्रण किया और फिर कुशध्वज राज्य को चले गए। ४८ तीनों लोकों के ऋषिगण विदा होकर चले गए। वह सव सम्मान तथा धन-रत्न प्राप्त करके चले गए। ४९ वह सव अपने-अपने आश्रम में जा पहुँचे। हे शाकम्वरी ! इस कथा को यहाँ सुनो। ४०५० ऋषि जनक ने पुनः तीसरे वर्ष धनुष यज्ञ करने की चिन्ता की अर्थात् विचार किया। ४०५१ उन्होंने ऐसा मन में विचार कर गौतम तथा विश्वामित्र का स्मरण किया। यह समझकर दोनों ऋषि आ पहुँचे। ५२ उन्हें देखकर जनक महर्षि ने उनका स्वागत-सत्कार किया और पाद प्रच्छालन के लिये गंगा जल लेकर दिया। ५३ चरण धोकर मुनि आसन पर विराजमान हो गए और कहने लगे, हे जनक ! आप बैठकर क्या चिन्ता कर रहे है। ५४ जनक ने कहा कि मैंने दोनो कन्याओं के कारण प्रण करके दो वार यज्ञ किया है। ५५ प्रथम यज्ञ करने पर पुत्री का जन्म हुआ। द्वितीय धनुष यज्ञ में कोई धनुष नहीं

तृतीय जागकु एबे करइ सम्भार। तुम्भे बेनि मुनि जाइ देवताकु बर ५७
एते कहि जाग जे आरम्भ मुनि कले। बिश्वामित्र गौतम स्वर्गपुर गले ५८
सकळ देवतांकु बरिले जाइ करि। चन्दन फुलमाळ देइ देवंकु गले बरि ५९
बरन्ते नउसागर देबंकु बरिले। सुरराजा संगरे दशदिग पाळे४०६०
बृहस्पति संगरे अइले नवग्रह। चन्द्र सूर्ज्य अश्विनीकुमारे हेले प्रिय४०६१
मिथिळार सभारे सकळ देबे मिळि। जाणिण जनक ऋषि मान्य धर्म करि ६२
करजोड़ि जनक देवतांकु चाहिँ। बेनि गोटि दुहिता अग्निरु जात होइ ६३
जनम होइ दुहिता हेले नब जुबा। ताकु देखि मुहिँ जे प्रमाण कलि अबा ६४
बोइलि शिवधनु जे मोर पुरे अछि। जे धनु धरिब दुहिता देबि मुँटि ६५
प्रथमरे ऋषिंकि बरण मुँ जे कलि। तांक बळरे धनु न धरे केहि पेलि ६६
एबे धनु जाग करि बरिलि तुम्भकु। बरण कलि तुम्भंकु धनु धरिबाकु ६७
शुणिकरि सुरराजा बोइले मुनि शुण। धनुकु अणाअ देखिबा केवण कारण ६८
शुणिण जनक ऋषि धनुघर फेड़ि। बोइले सकळ देबे देख जाइ करि ६९
देखि बाकु सुरराए प्रथमे चळिगले। धनुकु से चाहिँण जे अचेत होइले४०७०
देखिबाकु दशदिगपाळे गले पुण। धरन्ते मोह हेले सेहु एबे जाण४०७१

उठा सका। ५६ अब तीसरे यज्ञ का आयोजन कर रहे है। आप दोनो मुनि जाकर देवताओं का वरण कीजिए। ५७ ऐसा कहकर मुनि ने यज्ञ आरम्भ कर दिया। विश्वामित्र तथा गौतम स्वर्ग लोक को चल दिये। ५८ उन्होंने जाकर समस्त देवताओं को आमंत्रित किया। चन्दन तथा पुष्पहार देकर देवताओं को आमंत्रित करके वह चले गए। ५९ आमंत्रित करते हुये उन्होंने नौ सागर (संख्या परिमाण) देवताओं को देवराज इन्द्र तथा दस दिगपालों सहित वरण किया। ४०६० बृहस्पति के साथ नव ग्रह आये। चन्द्र, सूर्य तथा अश्विनी कुमारों ने कृपा की। ४०६१ मिथिला की सभा में सब देवता जा पहुँचे। यह जानकर महर्षि जनक ने उनका आदर सत्कार किया। ६२ जनक ने हाथ जोड़कर देवताओं की ओर देखते हुये कहा कि दोनों पुत्रियाँ अग्नि से उत्पन्न हुयी है। ६३ जन्म लेकर दोनों कन्यायें नवयुवती हो गई। उनको देखकर मैंने प्रण किया कि जो शिव धनुष मेरे महल में है, उसे जो कोई उठायेगा, मै उसी को कन्या प्रदान करूँगा। ६४-६५ सबसे पहले मैंने ऋषियों का वरण किया। उनमें से कोई भी धनुष को नहीं उठा सका। ६६ अब धनुष यज्ञ करके आपको धनुष उठाने के लिये वरण किया है। ६७ यह सुनकर देवराज इन्द्र ने कहा हे महर्षि! सुनिये। धनुष को मँगाइये। हम देखेंगे कि वह कैसा है। ६८ यह सुनकर जनक महर्षि ने धनुष का कक्ष खुलवाकर कहा कि समस्त देवगण उसे जाकर देखें। ६९ सर्वप्रथम देवराज इन्द्र उसे देखने के लिये गये। वह धनुष को देखकर अचेत हो गये। ४०७० फिर दस दिगपाल उसे देखने के लिये गये और

चतुर्द्धा मूरतिरे जन्म नारायण ।
आम्भर चारि भएणींकि से चारि भाइ बिभा पुण४१००
शुणिण जनक राणी हरष होइले । जानकी उठि जाइ भग्नींकु कोळ कले४१०१
हास रस खेळ कले सेहि क्षणि पुण । जननी दुहिता दासी हरष कले मन २
पार्वती बोइले जनक तिनि जाग कला । सेठारु किस कले कह मोते भला ३
ईश्वर बोइले तुम्भे शुणरे भगवती । तृतीय़ जज्ञ सरन्ते जनक विचारन्ति ४
चतुर्थ जागकु ऋषि उत्सव कराइले । दुर्बासा नारदंकु सुमरणा कले ५
बोइले शिवगण नागबरंकु वर ।
तुम्भे आसिले मो जागे आचार्य्य हेब मुनिबर ६
शुणि करि दुर्बासा जे बेगे चळि गले । कपिळास कन्दरे प्रबेश जाइ हेले ७
सदाशिव चरणे करि नमस्कार । बोइले जनक ऋषि जज्ञकु एबे चळ ८
अजोनि सम्भूत कन्या तांकर घरे जात ।ए धनु जे टेकिब ताकु कन्या परापत ९
ईश्वर बोइले मुनि से धनु मोहर । मुहिँ आमञ्चिबार नुहँइ बेभार४११०
से जनक नन्दिनीकि अनन्त नारायण । एहु कमळांकु बिभा हेबे पुण४१११
नारायण शाखारे बेनि भाइ जात । कुशध्वज दुहिताकु बिभा हेबे सेत १२
जज्ञ करिबारु देवताए हविपाइ । एगार थर पूर्ण आहुति करिबइँ १३

हुये हैं। ९९ भगवान ने चार रूपों में जन्म ग्रहण किया है। वह हम चारों वहनों से विवाह करेंगे। ४१०० यह सुनकर जनक की रानी प्रसन्न हो गई। जानकी उठकर वहन से लिपट गई। ४१०१ उन्होंने उसी समय हास-परिहास किया तथा माता, बेटी तथा दासी का मन प्रसन्न किया। २ पार्वती वोली कि जनक ने तीन यज्ञ किये, फिर उन्होंने वहाँ क्या किया। हे भोलेनाथ ! यह हमें वताइये। ३ शंकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनों। तीसरे यज्ञ की समाप्ति पर जनक ने विचार किया। ४ ऋषि ने चौथा यज्ञ महोत्सव आयोजित किया उन्होंने दुर्वासा तथा नारद का स्मरण किया। ५ उन्होंने कहा कि आप लोग शिवगण तथा नागों को आमंत्रित कीजिये और हे मुनि श्रेष्ठ ! आप आकर हमारे यज्ञ के आचार्य बनिये। ६ यह सुनकर दुर्वासा शीघ्र ही चले गए और जाकर कैलाश की कन्दरा में प्रविष्ट हुए। ७ उन्होंने सदा शिव के चरणों में नमस्कार करके कहा कि अब आप जनक ऋषि के यज्ञ में चलिए। ८ उनके घर में अयोनि सम्भूता कन्या उत्पन्न हुई है। उस धनुष को जो भी उठाएगा कन्या उसी को प्राप्त होगी। ९ शंकर जी ने कहा, हे मुनि वह धनुष मेरा है। मेरा उसे चढ़ाना उचित नहीं है। ४११० उस जनकनन्दिनी से अनन्त देव तथा लक्ष्मी से नारायण विवाह करेंगे। ४१११ नारायण के अंश से दो भाई उत्पन्न हुए हैं। वह कुशध्वज की कन्याओं से विवाह करेंगे। १२ ग्यारह वार यज्ञ करके पूर्णाहुति देने पर देवताओं को हव्य प्राप्त होगा। १३ तब महर्षि जनक को चारों

तेबे ऋषि देखिबे चतुर्द्धा मूरति । एगार बर्ष छड मासे ए कन्या भेटि बटि १४
सकळ शिबे जान्तु न जिबि मुहिँ पुणि । पुत्र माने मोहर संगरे जिबे जाणि १५
देखि सर्बे फेरिबे सकता नोहिबे । एते बोलि शिवगण सुमरिले बेगे १६
जाणि चउद कोटि शिब बृषभ चढ़ि । चउद कोटि डम्बरु संगरे जे धरि १७
मिथिळार नबरे जनक ऋषि पुण । धनु जज्ञ करइ दुहिता निमन्त्रेण १८
से धनु जे धरिब दुहिता ताकु देब । चउद ब्रह्माण्डरे ईश्वर बोलाइब १९
शुणिकरि शिवगण ईश्वर पुत्र घेनि । मिथिळा नबररे बिजय़ कले पुणि४१२०
दुर्बासा बोइले जनक ऋषिकि ।धनु घर फेडिले शिव देखिबे धनु टिकि४१२१
शुणिण जनक पुणि धनुघर फेडि ।प्रथमे कार्त्तिकेश्वर धनुकु जाइ तोळि २२
धनु तोळि नपारि लाजरे फेरिला । ड़ाक हाक करि गणपति जे मिळिला २३
थोर हस्ते दश भुजे तोळन्ते लम्बोदर । तोळि न पारिले धनु पार्बती कुमर २४
नन्दि भृकुटी जे मिळिले धनु पाशे । संकेत सिंह रडि देलेक क्रोध चित्ते २५
धनु धरन्ते जाइ अचेता सेहु हेले । सेठारु चउद कोटि शिवगण गले २६
धनुकु देखिण केहि भरसि न पारि । फेरिले शिवगण मनरे भय़करि २७
तेणु जे शिवगणे आमञ्चि न पारिले । फेरिण शिव पाशे आसिण मिळिले २८

रूपों के दर्शन होंगे और ग्यारह वर्ष छै माह में इन कन्याओं से उनकी भेंट होगी । १४ समस्त शैवगण जायँ, मैं नहीं जाऊँगा । मेरे पुत्र लोग उनके साथ जाएँगे । १५ सब लोग देखकर लौट आएँगे । कार्य की शक्ति उनमें नहीं होगी । इतना कहकर शिव ने शीघ्र ही गणों का स्मरण किया । १६ यह जानकर चौदह करोड़ शिव-गण बैल पर चढ़कर आए । वह अपने हाथ में चौदह करोड़ डमरू धारण किए थे । १७ मिथिलापुर में जनक ऋषि कन्या के लिए यज्ञ कर रहे हैं । १८ उस धनुष को जो उठाएगा, वह अपनी कन्या उसे ही देंगे । वह चौदह भुवनों से शैवों को बुला रहे हैं । १९ यह सुनकर शिवगण शिवजी के पुत्र को साथ लेकर मिथिलापुर में जा पहुँचे । ४१२० दुर्वासा ने जनक ऋषि से कहा कि धनुष-शाला को खोलने पर शिवगण धनुष को देखेंगे । ४१२१ यह सुनकर जनक ने धनुगृह खोल दिया । पहले कीर्तिकेश्वर धनुष उठाने को चले । २२ वह धनुष न उठा पाने के कारण लज्जित होकर लौट आये । फिर गर्जन करते हुये गणों के स्वामी गजानन वहाँ पहुँचे । २३ फिर लम्बोदर अपनी सूँड़ तथा दस भुजाओं से उठाने लगे परन्तु पार्वतीनन्दन धनुष को नहीं उठा सके । २४ फिर नन्दी तथा भृकुटी धनुष के पास जा पहुँचे । उन्होंने क्रोधित चित्त से सांकेतिक सिंह गर्जना की । २५ वह धनुष को उठाते समय जाकर अचेत हो गये । फिर वहाँ चौदह करोड़ शिवगण पहुँचे । २६ धनुष को देखकर कोई भी सँभल न पाया । वह मन में डरकर लौट गये । २७ जब शिव के गण धनुष को नहीं उठा पाये तब वह लौटकर

बोइले धनु आम्भे न पारिलु तोळि । एते कहि मेळ भांगि जे जाहार चळि २९
पार्बती बोइले तुम्भर बपु हीन ।बोलाउ थाअ जे प्रभु तुम्भे वड़ जाण४१३०
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो गउरी ।काहार नारीकि से केहु जे नेइ पारि४१३१
तुम्भंकु जेते वेळे आम्भे परापत । सकळ देवे चाहिँ नपारे नेत्रपथ ३२
पार्बती बोइले नारद तळपुर गले ।नाग बल आणिवाकु जनक पेषि थिले ३३
आसिले टिकि नागबळ घेनि करि ।से कथा मोर आगरे कहिवा शूळधारी ३४
ईश्वर बोइले से कथा एवे शुण । नागवळ आणिवाकु नारद गले पुण ३५
बासुकी राजाकु जाइ कलेक निमन्त्रण । वासुकी बोइला मुँ जिवइँ केमन्तेण ३६
धरणी धरिछि मुँ देख हे साक्षाते । छाडिण एहाकु मुँ जिवइँ केमन्ते ३७
नारद बोइले धरणी धरिवाकु पुण । सप्तपुर मध्यरे केहु अछि जाण ३८
बासुकि बोइले मर्त्यपुररे पर्शुराम । ईश्वरंक नन्दन कार्त्तिकेश्वर जाण ३९
दैत्यगण मध्यरे अटइ प्रह्ललाद । वानरंक मेळरे वाळी वळबन्त४१४०
नरक मध्यरे नृपति ललाट केशरी ।ए चारि जण अइले धरणी धरि पारि४१४१
नारद बोइले ललाट केशरी राजन । केउँ देशे घर तांक केउँ कुळे जन्म ४२
बासुकी बोइले जम्बुद्वीपरे तांक स्थान । गिरिजा मण्डळे ओड़ राष्ट्रनाम पुण ४३

शिव के समीप आ पहुँचे । २८ उन्होंने कहा कि हम लोग धनुष को नहीं उठा पाये । इतना कहकर सभा भंग करके अपने-अपने स्थानों को चले गये । २९ पार्वती ने कहा कि आपका शरीर जर्जर है परन्तु हे प्रभु ! आप बड़े कहलाते हैं । ४१३० शंकर जी बोले हे गौरी ! तुम सुनो । क्या कोई किसी की स्त्री ले सकता है । ४१३१ जब मैंने तुमको प्राप्त किया तब सारे देवता तुम्हें आँख से नहीं देख सके । ३२ पार्वती ने कहा कि नारद पाताल लोक गये थे । जनक ने उन्हें नाग लोगों को लाने के लिये भेजा था । ३३ क्या वह नागों के दल लेकर आये ? हे शूलधारी ! वह कथा आप मेरे समक्ष कहिये । शंकर जी बोले अब वह कथा सुनो । नारद नागों के दल को लाने के लिये गये । ३४-३५ उन्होंने जाकर राजा वासुकी को निमंत्रित किया । उन्होंने कहा कि मैं कैसे जा सकता हूँ । ३६ तुम साक्षात् देखो, मैंने पृथ्वी को उठा रक्खा है । इसे छोड़कर मैं कैसे जाऊँगा । ३७ नारद ने कहा कि पृथ्वी को धारण करने के लिये सातों लोकों में क्या कोई है । ३८ वासुकी ने कहा कि मृत्युलोक में परशुराम और शंकर के पुत्र कार्तिकेश्वर है । ३९ दैत्यों के मध्य प्रह्लाद है । वानरों के समूह में बलवान बालि है । ४१४० मनुष्यों के बीच राजा ललाट केशरी है । यह चारों लोग आने पर पृथ्वी धारण कर सकते हैं । ४१४१ नारद ने कहा कि राजा ललाट केशरी का घर किस देश में है और किस कुल में उनका जन्म हुआ है । ४२ वासुकी बोले कि जम्बूद्वीप में उनका स्थान उड़ीसा के

ताहार एक पुत्र एकइ दुहिता । गंगबंश तिळक से अटइ जगज्जिता ४४
बिष्णुर अंशरे बिष्णु भक्त जात । तेणु से नारायणरे नियत करि चित ४५
प्रतिदिन बासुदेव अपराजिता पुणि । लक्षे पद भजरे सम्पूर्ण करे पुणि ४६
नारद बोइले मुँ ताहांकु देबि कहि । पर्शुराम गोलक आसिबा नुहँइ ४७
बासुकी बोइले जे आसन्तु पर्शुराम । राजा आसिले गारिमा हेब बड़ पुण ४८
शुणिण नारद जाइ तळपुर । कर्कट शीतळबन प्रबेश सत्वर ४९
देखिले पर्शुराम बसिछि आसनरे । बैडूर्ज्य सिंहासन उपरे मउनरे४१५०
कोदण्ड कोठार जे पाशरे गदा थोइ । अनामिका जपइ जे मन चइतन देइ४१५१
उपरे इन्द्र गोबिन्द चान्दुआ छाइ पुण । मळय़ बहुअछि शीतळ गन्ध जाण ५२
गंगाजळ घेनिण मय़ दैत्य उभा । शीतळ बन गोटि दिशु अछि शोभा ५३
नारद मिळिबारु न फेड़े नय़न । देखिण नारद बीणा शब्द कले पुण ५४
शब्द भेद हुअन्ते जोग निद्रा भांगि । नारदंकु देखिण मान्यकले बेगि ५५
पर्शुराम बोइलेरे मय़ दैत्य शुण । गंगाजळे नारदंक चरण धुअपुण ५६
शुणिण मय़दैत्य गंगा जळ घेनि । नारदंक चरण पखाळि देला पुणि ५७
बोइले पर्शुराम आस मो आसने । नारद बसिले पर्शुरामंक पाशे तेणे ५८

गिरिजा मण्डल में है। ४३ उनके एक पुत्र और एक कन्या है। वह जगत् को जीतने वाला गंग वंश का तिलक है। ४४ वह विष्णु के अंश से पैदा हुआ विष्णु-भक्त है। इस कारण से उसने अपने मन को नारायण में लगा लिया है। ४५ प्रतिदिन वह अपराजित वासुदेव के एक लाख पदों का भजन पूरा करता है। ४६ नारद ने कहा कि मैं उससे कह दूंगा। परशुराम की विषम समस्या है। उनका आना न हो सकेगा। ४७ वासुकी ने कहा कि परशुराम ही आयें। राजा के आने से बड़ा गर्व होगा। ४८ यह सुनकर नारद पाताल लोक जाकर शीघ्र ही कर्कट-शीतल वन में जाकर प्रविष्ट हुये। ४९ उन्होंने परशुराम को वैदूर्य के सिंहासन पर मौनभाव में बैठे देखा। ४१५० कोदण्ड तथा कुठार पास में रखे हुये थे। वह सचेत मन से अनामिका जाप कर रहे थे। ४१५१ इन्द्र गोविन्द छाजन छाया हुआ था। शीतल सुगन्धित वायु बह रही थी। ५२ मयदैत्य गंगाजल लिये खड़ा था। सम्पूर्ण शीतल वन सुन्दर दिखाई दे रहा था। ५३ नारद के आने पर भी उन्होंने नेत्र नहीं खोले। यह देखकर नारद ने वीणा का स्वर छेड़ दिया। ५४ शब्दभेद से योगनिद्रा टूट गई। उन्होंने नारद को देखते ही तुरन्त उनका सम्मान किया। ५५ परशुराम ने कहा, अरे मयदैत्य ! सुन। नारद के चरण गंगाजल से धो। ५६ यह सुनकर मय दैत्य ने गंगाजल लेकर नारद के चरण धो दिए। ५७ परशुराम ने उनसे अपने आसन पर आने को कहा। तब नारद परशुराम के पास बैठ गए। ५८ परशुराम ने पूंछा, हे मुनि आप किस कारण

पर्शुराम पचारिले अइल मुनि किम्पा ।
जोग निद्रा भांगिलेणि तुम्भर किस संज्ञा ५९
नारद बोइले तुम्भे गोलख नाथ शुण । धनु जाग मिथिलारे जनक करे पुण४१६०
वेनि गोटि दुहिता तार अजोनि सम्भुतरे। जात हेबारु नियम कले मुनिवरे४१६१
शिव धनु जे आमञ्चिव ताहाकु कन्या देवि।
नवखण्ड मेदिनीरे वळवन्त अछि के देखिवि ६२
सेथिर सकाशरे देवता ऋषिगण। ईश्वर दिगपाळ वरण कले जाण ६३
से धनुकु तोळि समस्ते घुञ्चि गले।
नागवळ वासुकींकु अणाइबाकु कहिले ६४
शुणि करि आम्भे पाताळ पुरकु चळि गलु। बासुकी नाग राजांकु निमन्त्रण कलु ६५
वासुकी बोइले जेबे आसिवे पर्शुराम। तेवे मर्त्य पुरकु मुं जिवार प्रमाण ६६
पर्शुराम बोइले मिथिला आम्भे जिवा।
आम्भे तोळि न पारिले पछे असु नाग राजा ६७
एते बोलि पर्शुराम कोठार गदाधरि।
कोदण्ड कान्धे पकाअ मय़दैत्यकु बोलि ६८
घेन मोर सिंहासन मिथिला नवरकु। देखिवा धनुजाग कोदण्ड सायककु ६९
घेनिला मय़दैत्य मस्तके सिंहासन। मस्तके वसाइ चळे सिंहासने पुण४१७०
मिथिलार नवरेरे हेलेक प्रवेश। रामताळि हुळहुळि देलेक समस्त४१७१

से पधारे है। योगनिद्रा भंग करने का आपका क्या प्रयोजन है। ५९ नारद ने कहा कि आप गोरखनाथ हैं। सुनिए! जनक मिथिला में धनुष यज्ञ कर रहे है। ४१६० उनके अयोनिसम्भूता दो कन्याएँ हैं। उनके उत्पन्न होने पर मुनिश्रेष्ठ ने प्रण कर लिया। ४१६१ जो कोई शिव-धनुष को उठाएगा, मैं कन्या उसी को प्रदान करूँगा। मैं देखूँगा कि नवखण्ड मेदिनी में कौन वीर है। ६२ उसके कारण देवता ऋषिगण शंकर तथा दिगपालों को उन्होंने आमंत्रित किया। ६३ उस धनुष को सभी उठाने वाले आकर लौटकर चले गए। तव उन्होंने नागदल के वासुकी को बुलाने को कहा। ६४ यह सुनकर हम पाताल लोक चले गए तथा नागराज वासुकी को आमंत्रित कर दिया। ६५ वासुकी ने कहा कि जव परशुराम आयेंगे तव मेरा मृत्युलोक जाना निश्चित होगा। ६६ परशुराम बोले कि हम मिथिला जायेंगे। जव हम न उठा पायें तव पीछे नागराज आये। ६७ इतना कहकर परशुराम ने कुठार तथा गदा धारण करते हुये कोदण्ड धनुष को कंधे पर डालकर मय दैत्य से कहा। ६८ मेरा सिंहासन मिथिलापुर को ले चलो। मैं धनुष यज्ञ में कोदण्ड धनुष को देखूँगा। ६९ मयदैत्य ने सिंहासन मस्तक पर उठा लिया और उसे मस्तक पर रखे हुये चल दिया। ४१७० वह मिथिलापुर में प्रविष्ट हुये। सभी लोग राम

जनक ऋषि पुणि पाछोटि घेनि गले। अगस्ति पारेश्वर सकळ ऋषि मूळे ७२
पर्शुराम बोइले शिबर शरासन। केउँठारे अछि मोते देखाअ बहन ७३
शुणिण जनक ऋषि धनु घर फेडि। शिवधनु पाशरे जे पर्शुराम मिळि ७४
बैडूर्य्य सिहासनरु अइले ओहलाइ।
पर्शुराम आसे बोलि हाल होळि पडि तहिँ ७५
जानकी पचारिले ए गहन किस पुणि। उर्मिला बोइले शुण गो ठाकुराणी ७६
जमदग्निर सुत पर्शुराम बीर। शिव धनु भांगिबाकु आसे से सहर ७७
गोलक नारायण जन्म एहु हेले। सप्तपुर दैत्यंकु मारिण साध्य कले ७८
पूर्ब जन्मरे तुम्भर भगिनी धीराबती। सात जुग हेला से जे तपस्या करन्ति ७९
से नारींकर एहु हेबे प्राणनाथ। तुम्भे बिभा हेबार जिब सतर बर्षत४१८०
तेबे से तुम्भ स्वामी संगरे घेनि जिबे। तळ पुरे ए मुनिंकि बिबाह कराइबे४१८१
जानकी बोइले एकि पारिबे धनु धरि। बळबन्त पुरुष ए नारायण सरि ८२
उर्मिळा बोइला ए धनु धरन्ते बळे।
नारायणंक बनिता तुम्भे आउकेशकता महीरे ८३
देख तुम्भे नेत्रे ए धनुकु तोळि न पारिब। उपहास पाइकरि एठारु पुण जिब ८४
एमन्त समयरे पर्शुराम गले। शिव धनु तोळन्ते से अचेत होइले ८५

तालियाँ बजाकर मांगलिक शब्द करने लगे। ४१७१ महर्षि जनक, अगस्त पारेश्वर तथा समस्त ऋषियों को लेकर अगवानी के लिये गये। ७२ परशुराम ने कहा कि शंकर का धनुष किस स्थान पर है। मुझे शीघ्र ही दिखाओ। ७३ यह सुनकर महर्षि जनक ने धनुष-गृह खोल दिया तब परशुराम शिव धनुष के पास जा पहुँचे। ७४ वह वैदूर्य के सिंहासन से उतर आये। परशुराम आये हैं यह जानकर वहाँ खलबली मच गई। ७५ जानकी ने पूँछा कि यह हलचल कैसी है। तव उर्मिला ने कहा हे देवी ! सुनों। ७६ यमदग्नि के पुत्र पराक्रमी परशुराम शिव धनुष को तोड़ने के लिये आवेश में आये हैं। ७७ वैकुण्ठपति भगवान के अंश से यह उत्पन्न हुये हैं। इन्होंने सातों भुवनों के दैत्यों को युद्ध करके मार दिया है। ७८ पूर्व जन्म में आपकी बहन धीरावती हुयी है। जो सात युगों से तपस्या कर रही है। ७९ उस नारी के प्राणनाथ होंगे। तुम्हारे विवाह होने के सत्तरह वर्ष बीत जायेंगे। ४१८० तब वह आपके स्वामी को साथ में ले जायेंगे और शिव सदन में मुनि का विवाह करायेंगे। ४१८१ जानकी ने कहा क्या यह धनुष उठा पायेंगे। यह नारायण के समान बलवान पुरुष है। ८२ उर्मिला ने कहा इनका धनुष-धारण भारी पड़ेगा। तुम भगवान की पत्नी हो। संसार में और कौन समर्थ है। ८३ आप नेत्रों से देख लें यह इसे उठा नहीं पायेंगे, उपहास प्राप्त करके तब यहाँ से जायेंगे। ८४ उस समय परशुराम शिव धनुष को उठाने गये और वह अचेत

बासुकी बोले धरणी गोलख नाथ धरि । ए जुगरे अन्यके धरणी कि नुहे सरि १४
आउ तिनि थर उश्वास पाइब धरणी । तुम्भर तिनि दिअर धरिबा बेळे पुणि १५
जानकी बोइले आम्भंकु सुदया करिथिब ।
आम्भ ठारे बिबादी जे केबेहेँ नोहिब १६
नाग राजा बोले मुं तुम्भर अटे दास । दास ठारे करिब केबळ आशिष्य १७
जानकी बोइले प्रभुंकु केते दिनरे भेटि ।
बासुकी बोइले सात बर्ष छड़ मास गलेटि १८
बिश्वामित्र जाग जे करिबाकु आणि । जाग रखि असुरंकु मारिबे कम्बु पाणी १९
बाटरे गौतम नारींकि उद्धरिबे । शिब धनु भांगिण तुम्भंकु बिभा हेबे४२२०
देबता शिबगण नागबळ जाण । नर बानर असुर राजागण पुण४२२१
समस्तंक मुखरे लगाइबे काळि । जिबा बेळे जाउँळि अबतार मनसरि २२
एते बोलि नाग राजा बेनि गोटि मणि । देलाक जानकी उर्मिळाकु नेइ पुणि २३
बोइले एमणि माळरे स्वामी नाम जपिब ।
जेउँ दिन पर्ज्यन्ते एमणि मळिन नथिब २४
तेज उदित देले स्वामी देबे दरशन । एते कहि नागराजा सेठारु गले पुण २५
नाग बळ घेनि चळे बासुकी राजन । जनक ऋषिंकु बोले केते कल पूण्य २६

धारण किया है ? । १३ वासुकी बोले कि पृथ्वी को गोरखनाथ (परशुराम) ने धारण किया है। इस युग में उनकी बराबरी करनेवाला पृथ्वी पर अन्य कोई नहीं है । १४ तीन बार और पृथ्वी का उद्धार होगा जब आपके तीनों देवर उसे धारण करेंगे । १५ जानकी ने कहा कि हम पर विशेष दया भाव रखियेगा । आप हमारे साथ कभी भी विवादी न बनिएगा । १६ नागराज ने कहा कि मैं आपका दास हूँ । इस दास को आप केवल आशीर्वाद दीजियेगा । १७ जानकी ने कहा कि स्वामी के साथ कितने दिनों में भेंट होगी । वासुकी ने उत्तर दिया कि सात वर्ष छै माह व्यतीत होने पर उनसे भेंट होगी । १८ विश्वामित्र यज्ञ-रक्षा के लिये उन्हें लाएँगे । वह कम्बुधारी भगवान यज्ञ की रक्षा करके असुरों का विनाश करेंगे । १९ मार्ग में वह गौतम की स्त्री का उद्धार करेंगे । फिर शिव-चाप को तोड़कर आपसे विवाह करेंगे । ४२२० वह देवता, रुद्रगण, नागों के दल, नर-वानर, असुर तथा राजागण आदि सभी के मुख पर कालिख लगा देंगे और जाने के समय मनोरथ की थैली उतार देंगे । अर्थात् सारे मनोरथपूर्ण कर लेंगे । ४२२१-२२ इतना कहकर नागराज ने दो मणियाँ लेकर जानकी तथा उर्मिला को प्रदान कीं । २३ उन्होंने कहा कि इन मणिमालाओं से स्वामी का नाम जपना, उस दिन तक यह मणि-माल मलिन नहीं होगी । २४ तेजोदय होने पर स्वामी दर्शन देंगे । इतना कहकर नागराज वहाँ से चले गए । २५ हे महर्षि जनक ! आपने कितना पुण्य किया है, इस प्रकार कहते हुए नागराज

पाताळ पुररे जाइ हेले पर बेश। धूपदीप देइ पूजा कले पर्शुरामकु सेत २७
बोइले गोलक नाथ तुम्भर शकासरे। दर्शन कलि हरि घरणी मर्त्यपुरे २८
शिब धनु पादे मुहिँ दर्शने हेलि तोष। पर्शुराम चरणे होइले अनुगत २९
सेठारु पर्शुराम धरणी तेज्या कले। बासुकींक शिरे देइ मर्त्यपुर गले४२३०
पार्बती बोइले सेठारु किस हेला। ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो हिंगुळा४२३१
नारद दुर्बासा जे बसिले आचार्ज्यरे। चतुर्थ जाग सरे बेनि जे मासरे ३२
संजोग सरिबारु त बरषे बहिगला। पुणि धनु जाग उत्सव मुनि कला ३३
पारेशर मुनिकु जे कहिले जनक। बानरेश्वर तुम्भे निमन्त्रण करि आस ३४
शुणि करि पारेश्वर मुनि चळि गले। किष्किन्ध्या कटरे प्रबेश होइले ३५
देखिण बाळि नृपति ऋषिरे भगति। गंगा जळरे पखाळि ऋषिर चरणटि ३६
बोइले ब्रह्मऋषि केणे बिजे कल। पारेश्वर मुनि बोले शुण कपिबर ३७
मिथिळारे जनक धनु जाग कले। अजोनि सम्भूत जे दुहिता शकासरे ३८
से धनु जे धरिब ताकु कन्या देबे। तोते निमन्त्रण कला जनक ऋषि भाबे ३९
ऋषिंक ठारु शुणि बाळि राजा कहि। जाअ बेनि मास मध्ये प्रबेश हेबि मुहिँ४२४०
लक्षेक राजा अछन्ति मोहर जे साथि। से मानंकु अणाइँ मुं जिबि मिथिलाटि४२४१

नाग-दल को लेकर चले गए। २६ वह जाकर पाताल लोक में प्रविष्ट हुए। उन्होंने धूप-दीप से परशुराम की पूजा की। २७ उन्होंने कहा, हे गोरखनाथ! आपके कारण मैंने मृत्युलोक में जाकर भगवान नारायण की पत्नी का दर्शन किया। २८ शिव-धनु-पाद दर्शन से मैं सन्तुष्ट हो गया। फिर उन्होंने परशुराम के चरणों में नमन किया। २९ तब परशुराम ने वहाँ पृथ्वी को छोड़ा और शेषनाग के शिर पर रखकर मृत्यु लोक चले गए। ४२३० पार्वती बोलीं फिर वहाँ क्या हुआ ? शंकर जी ने कहा, हे हिंगुले ! तुम सुनो। ४२३१ नारद तथा दुर्वासा आचार्य बनकर बैठे। दो महीनों में चौथा यज्ञ समाप्त हो गया। ३२ संयोजन समाप्त होने में एक वर्ष लग गया। मुनि ने फिर से धनुष-यज्ञ आयोजित किया। ३३ जनक ने पाराशर मुनि से वानरेश्वर को आमंत्रित कर आने को कहा। ३४ यह सुनकर मुनि पाराशर चल दिये और जाकर किष्किन्धा-दुर्ग में प्रविष्ट हुए। ३५ उन्हें देखकर राजा बालि ने भक्ति पूर्वक गंगा जल से ऋषि के चरणों का प्रच्छालन किया। ३६ उसने कहा, हे ब्रह्मर्षि ! आपके पधारने का क्या कारण है ? पाराशर मुनि बोले, हे कपिश्रेष्ठ ! सुनो। ३७ जनक ने मिथिला में अयोनि सम्भूता पुत्री के लिये धनुष-यज्ञ किया है। ३८ जो कोई उस धनुष को धारण करेगा उसे ही यह कन्या प्रदान करेंगे। ३९ ऋषि से ऐसा सुनकर राजा बालि ने कहा कि आप चलिये ! मैं दो माह के भीतर पहुँचूंगा। ४२४० हमारे मित्र एक लाख राजा है। मैं उन्हें बुलवाकर मिथिला जाऊँगा। ४२४१ यह सुनकर पाराशर मुनि चल दिये और मिथिलापुर जा

शुणि करि पारेश्वर मुनि चळिगले। मिथिला नवरे प्रवेश जाइ हेले ४२
सकळ बृत्तान्त मान जनकंकु कहि। वेनि मासे कपिराजा आसिब एथे तहिँ ४३
ए बाणी शुणि जनक धनु जाग कले। तिनि पक्षे धनु जाग शुभरे सारिले ४४
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण शाकम्बरी। पञ्चम जाग सारे जनक विचारि ४५
बारता बाळि राजा पाइबारु जाण। लक्षेक कपिराजांकु बरिलेक पुण ४६
बेनि मास भितरे सकळ अणाइले। लक्षे बानर राजा घेनिण मिथिला मिळिले ४७
देखिण जनक ऋषि सनमान कले। धनुघर फेड़िण नेइण देखाइले ४८
लक्षे कपि राजा देखिबा मात्रके पुण। धरणीरे पडिले अचेता होइण ४९
देखिण बाळी राजा शिबर चाप धरि। तळरु द्वादश आंगूळ धरिण तोळि४२५०
थर थर होइण धरणी परे पड़ि। मुखरु रुधिर तिनि धाररे गळि पडि४२५१
लज्या पाइ कपि राजा बेगे चळिगला। आपणार पुररे प्रवेश जाइ हेला ५२
लक्षे कपिराजा मेलाणि होइ गले। पाञ्च थरे पाञ्च बरष धनु जाग सरे ५३
छड़ बरषे धनु जाग जनक भिआइले।
नारद कपिळ अंगिरा तिनि ऋषिकि अणाइले ५४
बोइले सप्त द्वीपरे दैत्य बळ जेते। निमन्त्रण कराइ अणाअ तुरिते ५५
शुणिण तिनि ऋषि तिनि पुर गले। तिनि पुर असुरंकु निमन्त्रण कले ५६

पहुँचे। ४२ उन्होने समस्त वृत्तान्त जनक से बताते हुए कहा कि दो महीने में कपिराज यहाँ आएगा। ४३ यह वचन सुनकर जनक धनुष यज्ञ करने लगे तथा उन्होंने तीन पखवारों में शुभ धनुष-यज्ञ समाप्त कर दिया। ४४ हे शाकम्वरी! तुम सुनो। इसके पश्चात् विचारपूर्वक जनक ने पाचवाँ यज्ञ पूर्ण किया। ४५ समाचार पाकर राजा बालि ने एक लाख कपि राजाओं को आमंत्रित किया। ४६ दो महीने के भीतर सबको बुलाकर एक लाख वानर राजाओं को लेकर वह मिथिलापुर पहुँच गया। ४७ यह देखकर महर्षि जनक ने उनका आदर सम्मान किया तथा उन्हें लेकर धनुष-गृह खोलकर दिखा दिया। ४८ एक लाख वानर-राजा केवल दर्शन मात्र से पृथ्वी पर गिरकर अचेत हो गए। ४९ यह देखकर राजा वालि ने शिव-चाप को पकड़कर भूमि से बारह अंगुल तक उठा लिया फिर वह थरथराकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसके मुख से रक्त की तीन धारायें फूट पड़ीं। ४२५०-४२५१ लज्जित होकर कपिराज शीघ्र ही लौटकर अपने राज्य में जा पहुँचा। ५२ एक लक्ष कपि राजागण विदा होकर चले गए। पाँच वर्षों में पाँच बार धनुष यज्ञ समाप्त हुआ। ५३ छठे वर्ष जनक ने छठे धनुष-यज्ञ का आयोजन किया। उन्होंने नारद, कपिल, अंगिरा तीन ऋषियों को बुलवा कर उनसे कहा कि सातों द्वीपों में जितने भी दैत्य दल हैं, उन्हे आमंत्रित करके आप शीघ्र बुलवा ले। ५४-५५ यह सुनकर तीनों ऋषि तीनों लोकों में गए और

बोइले मिथिलारे धनु जाग होइ। अजोनिरे जनम जे दुहिता अछि होइ ५७
जेहु शिव धनु तोळिण आमञ्चिब। से कन्या सेहि क्षणि घेनिण सेहुजिब ५८
आमञ्चि न पारि जेबे मेळरे गोळ करि।
पर्शुराम हस्तरे मरिबे गोळरे पड़िकरि ५९
एते कहि तिनि ऋषि मिथिला प्रबेश। छड़ बर्ष धनु जाग होइलाक शेष४२६०
पाताळपुर असुर आसिण मिळिले। धनुकु देखिण दैत्य घुञ्चिण पळाइले४२६१
गोळकरि कन्याकु बळे नेबे बोलि करि। देखिण सर्ब लोके हाहाकार करि ६२
जनक गोळ देखि गोलक सुमरि। जाणिण पर्शुराम मिथिळारे मिळि ६३
गोळ देखि गदा धरि पिटिले तुरित। अनेक असुर जे पडिले गदा घात ६४
देखिण तळपुर असुर पळाइले। सात थर जाग जे जनक ऋषि कले ६५
स्वर्गपुरे दैत्यबळ जेते पूरिथिले। मिथिलापुरे प्रबेश जाइण होइले ६६
धनुकु छुअन्तेण सकळे गले मोह। मोह तेजि उठिण कळिरे कले प्रिय ६७
देखिण पर्शुराम कोठार बेग धरि। सतुरि कोटि असुर पकाइले मारि ६८
छबिश कोटि असुर पळाइ पुण गले। ताहांक पछे पर्शु गोड़ाइ छन्ति भले ६९
देखिण स्वर्गपुरे असुरे पळाइले। मर्त्यपुररे आसिण समस्ते लुचिले४२७०

असुरों को आमंत्रित करते हुए कहा कि मिथिलापुर में धनुष यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें अयोनिज कन्या उत्पन्न हुई। ५६-५७ जो कोई शिव धनुष को उठाकर चढ़ा देगा वह ही उसी समय उस कन्या को ले जाएगा। ५८ बिना चढ़ाए जो सभा में व्यवधान डालेगा वह झगड़े में पड़कर परशुराम के हाथों मारा जाएगा। ५९ ऐसा कहकर तीनों ऋषि मिथिला में जा पहुँचे। छठे वर्ष धनुष यज्ञ समाप्त हुआ। ४२६० पाताल लोक से दैत्य आ पहुँचे। धनुष को देखकर दैत्यगण पीछे हटकर भाग गए। ४२६१ उन्होंने कहा कि हम युद्ध करके बल-पूर्वक कन्या को ले जाएँगे। यह देखकर सब लोग हाहाकार करने लगे। ६२ जनक ने व्यवधान देखकर गोरख परशुराम का स्मरण किया। यह जानकर परशुराम मिथिला में आ पहुँचे। ६३ उन्होंने वहाँ उत्पात देखकर गदा लेकर तुरन्त पिटायी लगाई। अनेक असुर गदा के आघात से गिर गये। ६४ असुर लोग यह देखकर पाताल को भाग गये। महर्षि जनक ने सात बार यज्ञ किया। ६५ स्वर्ग लोक में जितनी दैत्य वाहिनी भरी थी वह मिथिलापुर में जा पहुँची। ६६ धनुष को छूते ही सब अचेत हो गये। चेत आने पर वह उठकर विवाद करने लगे। ६७ यह देखकर परशुराम ने शीघ्र ही कुठार लेकर सत्तर करोड़ असुरों को मार गिराया। ६८ छब्बीस करोड़ असुर भाग गये। परशुराम ने उनको भली प्रकार से पीछे से खदेड़ा। ६९ यह देखकर असुर गण स्वर्ग से भाग गये और मृत्यु लोक में आकर सब छिप गये। ४२७० सातवें वर्ष का यज्ञ भली

सप्त बरस जाग सरिलाक भले । अष्ट बरष जाग जनक कल सुलभरे४२७१
जाग समापतरे मर्त्यपुर दैत्ये । मिथिळारे मिळिले चारि रावण संगते ७२
ड़ाक हाक करिण धनुर पाशे गले । केछूअन्ते के चाहान्ते सकळ मोह् गले ७३
दशमुखा रावण धरिला धनु पुण । तोळन्ते उपरे माड़ि बसिला धनु जाण ७४
अनेक असुर ताकु नेइण जे उछुड़ि । ओळिक उतारे चेता रावण देहे मिळि ७५
देखिण सहस्र मुखा धनु पाखे मिळि । से धनुकु छुइँबारु अज्ञान होइ पडि ७६
देखिण महीरावण सिंह रड़ि देला । धनुकु छुअन्ते तार निर्बळ तनू हेला ७७
अचेता होइण पड़िला भुमिरे । बेनि रावणकु तोळि धइले दैत्य बीरे ७८
देखिण शतेमुखा धनुर पाशे जाइ । धनुकु तोळि न पारि लेउटि आसइ ७९
चारि रावण लेउटि बारु अनेक दैत्य गले ।
धनुकु तोळि न पारिबारु लेउटि अइले४२८०
एमन्त समग्ररे प्रवेश पर्शुराम । पर्शुरामकु देखिण घुञ्चिले दैत्य पुण४२८१
जे जाहार स्थानकु असुर माने गले । चारि रावण चारि लंकारे मिळिले ८२
अष्टमथर धनु जाग हेला समापत । जनकंकर दुहिताकु अष्टम बरषत ८३
पार्वती बोइले देब सेठारु किस हेला । ईश्वर बोइले गो गिरिजा दुलळा ८४
नब बरष जागकु जनक ऋषि तोरा ।
बिचारिले राजा मानंकु बरण करिबा परा ८५

प्रकार से समाप्त हो गया आठवें वर्ष जनक ने सुलभता से यज्ञ किया । ४२७१ यज्ञ की समाप्ति पर मृत्यु लोक के दैत्य चारों रावणों के साथ मिथिलापुर पहुँचे । ७२ कोलाहल करते हुये वह लोग धनुष के समीप गये । कोई देखते ही और कोई छूते ही सब अचेत हो गये । ७३ दसकण्ठ रावण के धनुष को छूकर उठाने के समय वह (धनुष) उसे दबाते हुये उसके ऊपर गिर पड़ा । ७४ अनेक असुरों ने उसे पकड़कर घसीटा । निकलने पर रावण के शरीर में चेतना लौटी । ७५ यह देखकर सहस्रकण्ठ रावण धनुष के पास गया । वह धनुष को छूते ही अचेत होकर गिर पड़ा । ७६ यह देखकर महिरावण ने सिंहनाद किया । धनुष को छूते ही उसका शरीर बलहीन हो गया । ७७ वह अचेत होकर घूमकर गिर पड़ा । वीर दैत्यों ने दोनों रावण को पकड़ कर उठाया । ७८ यह देखकर शतकण्ठ रावण धनुष के निकट गया परन्तु वह धनुष को न उठा सकने के कारण लौट आया । ७९ चारों रावण के लौटने से अनेक दैत्यगण गये परन्तु धनुष को न उठा पाने से लौट आये । ४२८० इसी समय परशुराम आ पहुँचे उन्हें देखकर दैत्य भाग गये और अपने-अपने स्थान को चले गये । चार रावण चार लंका में जा पहुँचे । ४२८१-८२ आठवीं बार धनुष यज्ञ समाप्त हुआ । जनक की पुत्री का आठवाँ वर्ष था । ८३ पार्वती ने कहा हे देव ! वहाँ फिर क्या हुआ । शंकर जी बोले हे गिरीशनन्दिनी ! जनक ने नवें वर्ष के यज्ञ में राजा लोगों को

एते बोलि मय़ दैत्यकु मनरे सुमरि । जाणिण मय़दैत्य मिळिला जाइकरि ८६
जनक ऋषि देखि दैत्यंकु कहे बाणी ।
अजोनि सम्भूतारे दुहिता मोर जन्म पुणि ८७
धनु जाग करिबाकु मुँ स्वय़म्बर कलि । आठथर धनुकु केहि न पारिले तोळि ८८
एबे राजागणंकु अणाइबाकु इच्छा । लक्षे नृपति अइले पूरे मनोबांछा ८९
बेनि गोटि सभा तिआरि करि । तेबे राजामानंकु बरिबाकु शरधा मोहरि४२९०
एकइ सभा जे धवळ ज्योति हेब । एकइ सभा सुबर्ण रत्नरे निर्माहिब४२९१
शुणिण मय़दैत्य रजनीरे पुण । बेनि सभा तिआरिलेक सुमरिण ९२
लक्षे लक्षे खम्बमान सुबर्णरे प्रभा । आरेक सभा पुण बइडूर्य्यरे शोभा ९३
रजनीरे चन्द्रमा उदय़े जेन्हे तोरा । लक्षेक स्तम्भ सेथिरे होम जे प्रबळ
बेनि गोटि सभा तार दिशइ सुन्दर ९४
रजनी प्रान्तरे जे मय़दैत्य गला । आपणार निज स्थाने प्रबेश जाइ हेला ९५
रजनी शेषरे जे देखिले सकळ । बिचित्र हेला बोलि बिचारन्ति मनर ९६
के बोले बासुदेव घरणी कमळा । साएर दुलणी एथिरे जन्म परा ९७
के बोलन्ति पार्बती जे गिरिजा नन्दिनी । अजोनी सम्भूतरे अग्निरु जात पुणि ९८
के बोले एमाने एथि होइबे पुणि जन्म । देब शोभा एपुरे केमन्ते जात पुण ९९

आमंत्रण करने के लिये विचार किया । ८४-८५ उन्होंने यह सोचकर मन में मय दैत्य का स्मरण किया । ऐसा जानकर मय दैत्य वहाँ जा पहुँचा । ८६ महर्षि जनक ने दैत्य को देखकर कहा मेरी पुत्री अयोनि सम्भूता उत्पन्न हुयी । ८७ धनुष यज्ञ करने के लिये मैंने स्वयंवर किये । आठ बार धनुष को कोई भी नहीं उठा सका । ८८ अब राजागणों को बुलाने की इच्छा है । एक लाख राजाओं के आने से मनोरथ सिद्ध होगा । ८९ दो सभा मण्डप निर्माण कराकर राजाओं को आमंत्रित करने की मेरी इच्छा है । ४२९० एक सभा मण्डप उज्ज्वल कांति वाला होगा और अन्य सुवर्ण रत्नों से निर्मित होगा । ४२९१ यह सुनकर मयदैत्य ने रात्रि में स्मरण मात्र से दो सभामण्डप निर्मित कर दिये । ९२ लाखों सुवर्ण प्रभा वाले खम्भे लगे थे और दूसरा सभा मण्डप वैदूर्य से सुशोभित था । ९३ रात्रि में उदय होने पर जैसे चन्द्रमा सुहावना लगता है । उसी प्रकार लाख-लाख स्तम्भ प्रबल कांति से युक्त थे । दोनों सभामण्डप अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रहे थे । ९४ रात्रि में ही मय दैत्य चला गया और अपने स्थान पर जा पहुँचा । ९५ रात्रि समाप्त होने पर उन्हें सभी ने देखा और उनकी अद्भुत निर्मिति के विषय में मन में विचार करने लगे । ९६ कोई बोला कि लक्ष्मी वासुदेव की पत्नी है । उस सागर नन्दिनी ने यहाँ जन्म लिया । ९७ कोई बोला कि गिरीशनन्दिनी पार्वती अयोनिसम्भूत होकर अग्नि से उत्पन्न हुई है । ९८ किसी ने कहा कि इन लोगों के जन्म लेने से इस नगर की शोभा दैवी

के बोले सुबर्णर सभा देख पुण। झालेरि झलमल बसन्त पुष्प जाण४३००
एमन्ते कुहा कुहि जे मिथिला नर नारी। एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो गउरी४३०१
जनक ऋषि पुण प्रभातुं देखिला। हर्षमन होइ ऋषिकु सुमरिला २
तेणु से सकळ ऋषि आसि हेले ठुळ। बइडूर्ज्य सभारे आसि हेले मेळ ३
जनक बोइले तुम्भे शुण आहे जति। आउ तिनि बेळ जाग कले मुँ हेबि शान्ति ४
लक्षे ऋषि जाइण लक्षे राजा आण। देखिबे शिव धनुकु समस्ते जाइण ५
शुणिण लक्षे ऋषि लक्षे राजांकु बरिगले। लक्षे नृपति घेनिण छड़मासरे फेरिले ६
देखिण जनक ऋषि हरष मनरे। राजनकु बसाइले सुबर्ण सभारे ७
सेठारु धनु जाग करिण आहुति देले। जोग शेष करिण हरष होइले ८
राजा गणकु बोइले शुण हे सकळे। बेनि गोटि दुहिता जनम मोहरे ९
अजोनि सम्भूतरे जात जे बेनि जुबा। से कन्याकु नेबाकु मनरे मोर श्रद्धा४३१०
शिव चाप गोटिए मोर पुरे अछि। शतषठि पुरुष हेला ईश्वर देइछन्ति४३११
से धनुकु जेहु आमञ्चिब बळत्कारे। मोहर दुहिताकु देबि मुँ ताहारे १२
स्वयम्बर अष्टबेळ एधनु पाइँ कलि। केहि तोळि न पारिले नेत्ररे देखिलि १३
जेणु मुँ तुम्भ मानंकु अणाइलि बरि। जे तोळिब ताहाकु दुहिता मोर बरि १४

हो गई है। ९९ किसी ने कहा कि सुवर्ण-सभा को देखो। जहाँ वसन्ती पुष्पों की झालरे झिलमिला रही हैं। ४३०० मिथिलापुर के नर-नारी इस प्रकार का विचार करने लगे। हे गौरी ! इसके पश्चात् तुम सुनों। ४३०१ महर्षि जनक ने प्रातःकाल उन्हें देखकर प्रसन्नचित्त होकर ऋषियों का स्मरण किया। २ इस कारण से समस्त ऋषि वैदूर्य मण्डप में आकर एकत्रित हो गये। ३ जनक ने कहा हे तपस्वियो ! आप लोग सुनिये। तीन बार और यज्ञ करने से मुझे शांति मिलेगी। ४ एक लाख ऋषि जाकर एक लाख राजाओं को ले आये। वह सब आकर शिव-धनुष का दर्शन करें। ५ यह सुनकर एक लाख ऋषि, एक लाख राजाओं को आमंत्रित करने गये और छह महीने में एक लाख राजाओं को लेकर लौट आये। ६ यह देखकर जनक ऋषि ने प्रसन्न मन से राजाओं को स्वर्ण मण्डप में बैठाया। ७ वहाँ उन्होंने धनुष यज्ञ करके आहुति दी। यज्ञ विधान समाप्त करके वह प्रसन्न हो गये। ८ उन्होंने राजाओं से कहा कि आप सभी लोग सुने। मेरे दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुयी है। ९ दोनों ही युवा कन्यायें अयोनि सम्भूत होकर उत्पन्न हुयी है। उन कन्याओं को प्रदान करने की मेरे मन में कामना है। ४३१० मेरे महल में शंकर जी का धनुष है जिसे सड़सठ पीढ़ियों पूर्व शंकर जी ने दिया था। ४३११ उस धनुष को जो कोई बल-पूर्वक उठाकर चढ़ा देगा। मैं उसी को अपनी कन्या प्रदान करूँगा। १२ मैंने इस धनुष के लिये आठ बार स्वयंवर किया। मैंने अपने नेत्रों से देखा कि उसे कोई भी उठा नहीं पाया। १३ इसलिये मैंने आप लोगों को आमंत्रित करके बुलवाया

शुणि करि राजा माने बोइले धनु देखा। शिब धनु गोटार केते बळ शिखा १५
शुणिण जनक ऋषि धनुघर फेडि।धनुर तेज देखि जे राजामाने बाहुड़ि १६
एहि रूपे सते दिन परिजन्ते राजा । धनुकु धरि न पारि पाआन्ति बड़ लज्या १७
एहा देखि जनक तिनि मास जाग कले । जाग हेला समापत राजन उठिले १८
के धनु छुअन्ते मोह गतरे पडि। केहु धनु देखि करि अचेतार बळि १९
एथिरे बरषे जे सेठारे राजा मेळ।तोलि न पारिले केहि शायक शिबिर४३२०
एथु अनन्तरे जे नवथर जाग कला। दश बरष जाग जनक ऋषि कला४३२१
जाग समापतरे जनक ऋषि कहि।

पात्र मन्त्री सामन्त जे एधनु तोळिबइँ २२

रथी सरदार आदि पादान्ति सहिते । जे तोळिब दुहिता देबि तारहाते २३
शुणि करि पात्र मन्त्री दुहिता उठिगले। धनुकु देखि तोळि न पारि लेउटिले २४
पात्र मन्त्री लेउटि बारु रथी सेनापति गले। शिव धनु देखि दूरु लेउटि अइले २५
आउथरे राजा माने उठिण गले जाण । भरसि न पारि जे फेरिले जणे जण २६
लोभ करि पात्र मन्त्री राजा गणे रहि । के धनु तोळिब जे देखिबार पाइँ २७

है। जो कोई उसे उठायेगा उसी से मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगा। १४ यह सुनकर राजाओं ने धनुष दिखाने को कहा। देखें वह शिव धनुष कितना शक्तिशाली है। यह सुनकर महर्षि जनक ने धनुष-गृह खोल दिया। धनुष का तेज देखकर राजागण लौट पड़े। १५-१६ इस प्रकार सौ दिन पर्यन्त राजागण धनुष न उठा पाने के कारण लज्जा को प्राप्त करते रहे। १७ यह देखकर जनक ने तीन माह यज्ञ किया। यज्ञ की समाप्ति पर राजा लोग उठे। १८ कोई धनुष को छूते ही और कोई धनुष को देखते ही अचेत हो गया। १९ इस प्रकार एक वर्ष तक वहाँ राजाओं का जमघट लगा रहा। परन्तु कोई भी शिव-चाप को उठा नहीं पाया।४३२० इसके पश्चात् नौ बार यज्ञ हुआ था। अब महर्षि जनक ने दसवाँ वार्षिक यज्ञ किया। ४३२१ यज्ञ की समाप्ति पर महर्षि जनक ने कहा कि अब सभासद मंत्री तथा सामन्त इस धनुष को उठाएँगे। २२ पैदल सिपाही आदि के साथ रथी या सरदार जो कोई भी धनुष को उठाएगा। मैं उसी के हाथों में कन्या समर्पित करूँगा। २३ यह सुनकर सभासद तथा मंत्री शीघ्र उठकर गए परन्तु धनुष को देखकर उसे उठा न पाने के कारण लौट आए। २४ सभासद तथा मंत्री के लौटने पर रथी, सेनापति गए। किन्तु शिव-धनुष को देखकर दूर ही से लौट आए। २५ राजा लोग फिर एक बार उठकर गए किन्तु उठा न पाने से एक के बाद एक लौट आए। २६ लोभ-वश सभासद मंत्री तथा राजागण वहाँ यह देखने के लिये रह गये कि धनुप को देखे कौन उठाता है। २७

राजा मानंक आर्दोळि जनक सहिले। मने हरष होइ जोगाड़ मान देले २८
पार्बती वोइले देव शुण मो बचन। दशरथ चारिपुत्र किस कले पुण २९
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती। दशरथ कुमरकु जे दशबरष निकि४३३०
हस्ति अश्व चढ़िण चळन्ति पारिधिरे। दिने छड़ा पारिधि करन्ति निरन्तरे४३३१
एकादश बर्षरे सामर्थ से नन्दन। सकळ विद्या साधिण निपुण हेले पुण ३२
समस्ते प्रशंसा जे श्रीरामकु कले। सूर्ज्यबंश कुळ जे उद्धरिबे भले ३३
कोशळ द्वीपरु सात असुर अइले। महोदधिर पूर्ब कूळरे मिळिले ३४
अनेक सैन्य सम्पद संगरे तांकर। राज जेनामणि जे मिळिले अजोध्या नवर ३५
सुबळय़ा, कुबळय़ा, हबळ चतुर्मुखा। बय़णा भुषणा जे सात मुखा लेखा ३६
प्रबेश हेबारु दैत्य हुरि जुरि कले। घरद्वार उजाडि जे परजा नाशिले ३७
पडिलाक हुरि जे अजोध्या नग्रजाक। राजांकर छामुरे जाइ जणाए दूत ३८
शुणि करि बीरसेन नृपति दशरथ। पात्र मन्त्री बेश होइ अइले तुरित ३९
वाजइ बीर बाजा बीर तूर घोष पुणि। सैन्य माने चळिबार कम्पइ मेदिनी४३४०
दशरथ राजा बिजे कले रथरे पुण। अजोध्याकु असुरे कले रण भण४३४१
धनुधरि गुण टंकार राजा कले। मार मार शब्द शुभे अजोध्या नबरे ४२

जनक ने राजाओं का भार वहन करते हुये प्रसन्न चित्त से उन्हें सुविधाएँ तथा मान प्रदान किया। २८ पार्वती ने कहा हे देव ! मेरी बात सुनिये। फिर दशरथ के चार पुत्रों ने क्या किया। २९ शंकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनों। दशरथ के पुत्र दस वर्ष के हो गये थे। वह हाथी घोड़ों पर चढ़ कर आखेट करने जाते थे। एक दिन छोड़कर एक दिन निरन्तर आखेट करते थे। ४३३०-४३३१ ग्यारहवें वर्ष में वह पुत्र समर्थ तथा सभी विद्याओं की साधना करके निपुण हो गये। ३२ सब लोग श्रीराम की प्रशंसा करते हुये कहते थे कि यह सूर्य-वंश का उद्धार करेंगे। ३३ कोशल द्वीप से सात दैत्य आये और महोदधि के पूर्वी किनारे पर एकत्रित हुये। ३४ उनके साथ प्रचुर सैन्य सम्पदा थी। राज्य के श्रेष्ठ राज्य पुत्र अयोध्या को गये। ३५ वह बोले कि सुबलया कुबलया, हवल, चतुर्मुख, बयणा, भूषणा तथा सप्तमुखा आदि दैत्यों ने आकर आतंक मचा रखा है। उन्होंने घर द्वार उजाड़कर प्रजा को नष्ट किया। ३६-३७ सम्पूर्ण अयोध्या नगर में कोलाहल मच गया। दूत ने राजा के समक्ष जाकर समाचार दिये। ३८ यह सुनकर वीर शिरोमणि राजा दशरथ सभासद और मंत्री को सुसज्जित करके तुरन्त आ गये। ३९ वीर वाद्य वीरतूर्य बजने लगे। सैन्य-वाहिनी के चलने से पृथ्वी काँपने लगी। ४३४० राजा दशरथ रथ पर चढ़कर चल दिये। दैत्यों ने अयोध्या को तहस नहस कर दिया। ४३४१ राजा ने धनुष धारण करके प्रत्यंचा पर टंकार दी। मारो-मारो का शब्द अयोध्या

लेउटिले असुरे जे होइला महारण। सहस्त्रे नाराच जे बिन्धिले राजा गुण ४३
टह टह होइण जे असुरे हसिले। आज तोर काळरे पूरिला बोइले ४४
वृक्ष उपाड़िण दैत्य पिटिले नेइ रागे। देखिण सैन्य बळ पळाइ गले बेगे ४५
असुरे पिटिबारु भांगिण गला रथ। बाजिबारु दशरथ गले मोह गत ४६
सुमन्त मन्त्री सम्भाळि राजांकु घेनिगले। अजोध्या नबरे जाइ प्रबेश होइले ४७
चेतना पाइ दशरथ राए पुण।
आज्ञा देले मोर चारि पुत्रकु अणाअ बहन ४८
मन्त्री बोइले देव नबरे केहि नाहिँ। पारि धिकु चारि पुत्र अछन्ति पुण जाइ ४९
राजा बोइले पुत्रंकु मोर घेनि आस बेगे। नपुण असुर जे मारन्तिटिकि रागे४३५०
मन्त्री चारमानंकु ड़काइ बोइले।
पारिधिकु चारि पुत्र जाइछन्ति घेनिआस भले४३५१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण शाकम्बरी। पारिधिरु चारिभाइ बाहुड़ा बिजे करि ५२
बाटरे देशाउर जणाइला जाइ। असुरे राज्य उजाड़ुण अछन्ति रहि ५३
पात्र मन्त्री सैन्य घेनि राजन जुद्ध कले। असुरे बड़ दर्पिष्ठ शरकु न मानिले ५४
असुरे मारन्ते जे राजन मोह गले। तांकु घेनि सुमन्त नगरकु चळिगले ५५
राजन बोइले अछन्ति मोर काहिँ। पारिधिकु जाइछन्ति सुमन्त मन्त्री कहि ५६
राजन बोइले तांकु डकाइ घेनि आस। श्रीराम लक्ष्मण शुणि हेले हस हस ५७

में सुनायी देने लगा। ४२ दैत्य लौट पड़े और भीषण युद्ध होने लगा। राजा ने हजारों बाण छोड़े। ४३ दैत्यगण अट्टहास करते हुये बोले कि आज तेरी आयु समाप्त हो गई है। ४४ दैत्य वृक्ष उखाड़कर क्रोध से प्रहार करने लगे। यह देखकर सेना शीघ्र ही भाग गई। ४५ असुरों के प्रहार से रथ ध्वस्त हो गया था और चोट लगने से दशरथ अचेत हो गये। ४६ मंत्री, सुमंत सँभाल कर राजा को लेकर अयोध्यापुर में जा पहुँचे। ४७ चेतना आने पर राजा दशरथ ने अपने चारों पुत्रों को शीघ्र बुला लाने को आज्ञा दी। ४८ मंत्री ने कहा हे देव ! महल में कोई नहीं है। चारों पुत्र आखेट के लिये गये हैं। ४९ राजा ने कहा कि हमारे पुत्रों को शीघ्र ही ले आओ। नहीं तो यह क्रुद्ध दैत्य मार डालेंगे। ४३५० मंत्री ने दूतों को बुलाकर कहा कि चारों पुत्र आखेट के लिये गये है। उन्हें भलीभाँति ले आओ। ४३५१ हे शाकम्बरी ! तुम सुनों। इसके उपरान्त चारों भाई आखेट करके वापस लौटे। ५२ मार्ग में दूत ने समाचार दिया कि दैत्यों ने आकर राज्य को उजाड़ दिया। ५३ सभासद मंत्री तथा सेना को लेकर राजा ने युद्ध किया परन्तु असुर बड़े प्रतापी थे। उन्होंने बाणों की आन नहीं मानी। ५४ असुरों के प्रहार करने से राजा अचेत हो गये। सुमन्त उन्हें लेकर नगर को चले आये। ५५ राजा ने पूँछा कि मेरे पुत्र कहाँ हैं। तब मंत्री सुमन्त ने कहा कि वह आखेट करने गये हैं। ५६ राजा ने उनसे पुत्रों को

अथ शत्रुघन बोले चाल बेगे जिवा । असुरे केवण शोभा दिशन्ति देखिवा ५८
श्रीराम चन्द्र बोइले वेगे कढ़ा वाट । देखिवा असुरंकु केते से मुराट ५९
रथि सारथी रखाइण बोइलेक पुण । वाळुत कुमर तुम्भे देखि नाहिँ रण४३६०
शुणिण श्रीराम जे क्रोधरे जर्ज्जर । राजपुत्र आम्भे बोलि जाणन्ति सकळ४३६१
आम्भे जेबे असुरंकु न करिबु नाश । आज ठारु अजोध्या आम्भर हेव ध्वंस ६२
एते बोलि चारि भाइ अश्वंकु मेलि देले । असुरंक आगे जाइ प्रवेश होइले ६३
धनुधरिण श्रीराम बिन्धिले वेगे बाण । हसिले असुरे जे देखिण तांकु पुण ६४
दयणा करुणा बोलि बेनि दैत्य बेगे । श्रीराम आगे मिळिले धनुधरि रागे ६५
बोइले तुम्भे वाळके किस युद्ध जाण । आम्भे असुर अटु देबंक समान ६६
स्वर्गपुरे पशिण देबंकु जिणिलु । सकळ देवतांकु धरिण आणिलु ६७
बेदवर कहन्ते छाडिलु तांकु पुण । बिधाता वररे आम्भे हेलइ बड़ जण ६८
दइबर बररे अज्रामबर आम्भे । तुम्भे बाळके नवुझि जुझुछ आम्भ संगे ६९
बाप तोर दशरथ प्रथमे आसिथिला । समर करि नपारि फेरिण पळाइला४३७०
तुम्भे बाळक निश्चय हारिब जीवन । फेरि जाअ बाबुरे तुम्भ निज स्थान४३७१
दयणा करुणा बेनि दैत्यंक ठारु शुणि । श्रीराम बोइले शुण असुर कुळमणि ७२

बुला लाने को कहा। श्रीराम लक्ष्मण यह सुनकर हँस पड़े। ५७ भरत शत्रुघन ने कहा कि चलो शीघ्र ही चलें। असुर कैसे लगते हैं यह देखा जाये। ५८ श्रीराम ने कहा कि शीघ्र ही मार्ग निकालो। देखें असुर कितने प्रतापी है। ५९ रथी, सारथी को रखकर उनसे कहा गया कि अभी तुम लोग बालक हो, युद्ध देखा नहीं है। ४३६० यह सुनकर श्रीराम क्रोध से तमतमा उठे और बोले कि हम राजपुत्र हैं और सब कुछ जानते है। ४३६१ यदि हम असुरो का संहार नहीं करेंगे तो आज से हमारी अयोध्या ध्वंस हो जायेगी। ६२ इतना कहकर चारों भाइयों ने घोड़ों को वढ़ा दिया और जाकर असुरों के समक्ष प्रविष्ट हुये। ६३ श्रीराम ने शीघ्र ही धनुष धारण करके बाणों का सन्धान किया। दैत्य उन्हें देखकर हँसने लगे। ६४ दयणा तथा करुणा नाम के दोनों दैत्य शीघ्र ही क्रोधित होकर धनुष लिये श्रीराम के समक्ष आ पहुँचे। ६५ उन्होंने कहा कि तुम बालक हो, युद्ध क्या जानो। हम असुर देवताओं के समान हैं। ६६ हम लोगों ने स्वर्ग में घुसकर देवताओं को जीत लिया है और सभी देवताओं को पकड़ कर ले आये हैं। ६७ ब्रह्मा के कहने से हमने उन्हें छोड़ दिया है। विधाता के वर से हम बलवान हुये हैं। ६८ विधाता के वर से हम अजर अमर हैं। तुम बालक विना जाने बूझे हमारे साथ युद्ध में जूझ रहे हो। ६९ तुम्हारा पिता दशरथ पहले आया था। युद्ध न कर पाने के कारण वह लौटकर भाग गया। तुम बालक हो निश्चित रूप से अपने प्राण खोओगे। अरे बालक! तुम अपने स्थान को लौट जाओ। ४३७०-४३७१ दयणा और करुणा दोनों दैत्यों से ऐसा सुनकर

धनुर्धरि श्रीराम बिन्धिले शर बळे। से काण्ड पड़िला जाइ असुर उपरे ७३
देखिण असुर गदा प्रहारे व्यग्रे। आड़ बाड़ करिण श्रीराम मेण्डाइले ७४
वशिष्ठे देला शर गुणे बसाइले। मन्त्र अध्यान करि शरकु छाडि देले ७५
पडिला दैत्यंक कन्धे छिड़िला कन्द जाण। भुमिरे पड़िण दैत्य छाडिला जीबन ७६
देखि शिशुपाळ संगे असुर धाईंले। श्रीरामकु आगरे ओगाळ बोइले ७७
किरे किरे बाळक प्रबळ बळ तोर। नर बानरंकु आम्भे करिबु आहार ७८
एते कहिण बृक्षेक उपाडिण नेइ। अश्वंकु घुञ्चाइले श्रीराम चाहिँ तहिँ ७९
देखिण श्रीराम जे धनुरे जोचे शर। बिन्धिले अग्नि शर बिचारि रघुबीर४३८०
कटीरे पडन्ते शर बेनि खण्ड हेला। प्राण छाड़ि दैत्य मूढ़ स्वर्गकु चळिगला४३८१
दय़णा करुणा शिशुपाळ दैत्य तिनि। श्रीरामंक हस्तरे मलेटि एहु पुणि ८२
अथ आगरे कुबळ दैत्य मिळि। ड़ाक हाक करिण जे जुझिला ओगाळि ८३
वज्र बाटुळि घेनिण श्रीरामर भाइ। मारन्ते असुर जे धरणीरे शोइ ८४
कपाळे बाजि बाटुळि हारिला जीवन। शरीर तेजि करि गला जे तार प्राण ८५
कुबळ दैत्य जहुँ पडिलाक रण। चारि जण मरिबारु रहिले तिनि जण ८६
लक्ष्मणंकर आगरे मिळिले बेनि दैत्य। लक्षेक रथी अछि तांकर संगरेत ८७

श्रीराम ने कहा हे असुर कुल श्रेष्ठ सुनो। ७२ श्रीराम ने धनुष उठाकर बल-पूर्वक बाण छोड़े। वह बाण असुर के ऊपर जा गिरे। ७३ यह देखकर दैत्य ने व्यग्र होकर गदा से प्रहार किया। श्रीराम ने उसे छिन्न-भिन्न कर डाला। ७४ फिर उन्होंने वशिष्ठ द्वारा दिया गया बाण प्रत्यंचा पर चढ़ाया और मंत्र पढ़कर उसे छोड़ दिया। ७५ दैत्य के कंधे पर गिरने से उसका कंधा कट गया। उस दैत्य ने पृथ्वी पर गिरकर प्राण छोड़ दिये। ७६ यह देखकर शिशुपाल के साथ दैत्य दौड़ पड़े और आगे से ही श्रीराम को रोक कर ललकारते हुये बोले। ७७ क्यों रे बालक ! तू बड़ा शक्तिशाली है। हम नर और वानरों को आहार बना लेंगे। ७८ इतना कहकर एक वृक्ष उन्होंने उखाड़ लिया। श्रीराम ने यह देखकर घोड़ा मोड़ लिया। ७९ श्रीराम ने देखकर धनुष पर बाण चढ़ा दिया और रघुवीर ने विचारपूर्वक अग्नि बाण छोड़ा। ४३८० बाण कमर में लगने से वह दो खण्डों में विभक्त हो गया और दैत्य प्राण छोड़कर स्वर्ग को चला गया। ४३८१ दयणा करुणा तथा शिशुपाल यह तीनों दैत्य श्रीराम के हाथों मारे गये। ८२ कुवल दैत्य भरत के आगे जा पहुँचा। वह गर्जन, तर्जन करते हुये युद्ध करने लगा। ८३ श्रीराम के अनुज ने वज्रास्त्र लेकर प्रहार किया जिससे वह पृथ्वी पर सो गया। ८४ वज्रास्त्र सिर में लगने से उसका जीवन नष्ट हो गया और उसके प्राण शरीर को छोड़कर निकल गये। ८५ जब समरांगण में कुबल दैत्य का पतन हो गया तो चार लोगों की मृत्यु हो जाने से तीन लोग बच गए। ८६ दो दैत्य लक्ष्मण के समक्ष जा पहुँचे। उनके साथ में एक लाख

बार सेनापति जे पादान्ति तिनि कोटि। लक्ष्मणर चारि पाशे बेढ़िले झटति ८८
तांकु देखि लक्ष्मणर रक्त बर्ण नेत्र। बिचारि मोहनाशर मारिले तुरित ८९
एकाथरे मोहशर मारिबारु जाण। शोइले धरणीरे सकळ सैन्य पुण४३९०
देखिण लक्ष्मण जे कतुरी शर कले।
सेनापति अश्व हस्ती पादान्ति काटिले४३९१
बेनि दैत्य देखिण क्रोधरे जर्ज्जर। अधा स्वर्ग पर्ज्यन्ते बढ़ाए शरीर ९२
छेल चक्र धरि लक्ष्मणे प्रहारिले। चतुर पणे लक्ष्मण अश्वकु फेराइले ९३
क्रोध भरे लक्ष्मण जे बिन्धुछन्ति शर। पड़िलाक काण्ड जाइ असुर उपर ९४
कटी सळखरु शर काटिलाक पुण। पड़िले बेनि दैत्य छिडिण तळेण ९५
त्रिशिरा बेनि मुखा पडिले जहुँ रणे।
चतुर्मुखा बिचारिला निर्माखि हेलि एणे ९६
पाञ्च कोटि पादान्ति कोटिए रथी जाण। × × × ९७
शतेक सेनापति लक्षेक सद्दार। शतृघन संगतरे करन्ति समर ९८
सकळ शर छेदइ अज राजार नाति। देखि चमत्कार हेले सकळ सेनापति ९९
बेलुँ बेळ समर होइला घोर टाण। मेघ गर्ज्जन प्राये शरंक शब्द जाण४४००
देखिण शतृघन मन भेदी धरि। सात कोटि शर जे बिन्धला बिचारि४४०१

रथी थे। ८७ तीन करोड़ पैदल सिपाहियों के साथ बारह सेनापतियों ने शीघ्र ही चारों ओर से लक्ष्मण को घेर लिया। ८८ उन्हें देखकर लक्ष्मण के नेत्र लाल हो गए। उन्होंने शीघ्र ही विचार करके मोहनास्त्र से प्रहार किया। ८९ एक साथ ही मोहन बाणों के प्रहार से सम्पूर्ण सेना पृथ्वी पर लोट गई। ४३९० यह देखकर लक्ष्मण ने कर्तुरी बाण चलाकर हाथी घोड़ों सेनापतियों तथा पैदल सैनिकों को काट डाला। ४३९१ यह देखकर दोनों दैत्य क्रोध से तमतमा उठे तथा उन्होंने अपने शरीर आधे स्वर्ग तक विस्तृत कर लिए। ९२ उन्होंने सेल तथा चक्र लेकर लक्ष्मण पर प्रहार किया। लक्ष्मण ने बड़ी चतुराई से घोड़ों को हटा लिया। ९३ लक्ष्मण क्रोध में भरे हुए बाण छोड़ रहे थे। वह बाण असुर के ऊपर जाकर गिरे। ९४ कमर की सीध मे बाण के काटने पर दोनों दैत्य कटकर पृथ्वी पर गिर पड़े। ९५ जब त्रिशिरा तथा द्विमुखा दोनों ही युद्ध में काम आ गए तब चतुर्मुखा ने विचार किया कि मै अब असहाय हो गया हूँ। ९६ वहाँ पर पाँच करोड़ पैदल सिपाही तथा एक करोड़ रथी थे। सौ सेनापति तथा एक लाख सरदार शत्रुघन के साथ में युद्ध कर रहे थे। ९७-९८ महाराज अज के पौत्र समस्त बाणों का छेदन कर रहे थे। यह देखकर सारे सेनापति आश्चर्यचकित हो गये। ९९ धीरे-धीरे युद्ध भीपणता को प्राप्त हो गया। बाणों का शब्द मेघ-गर्जन के समान लग रहा था। ४४०० यह देखकर शत्रुघन ने मनभेदी उठाकर विचारपूर्वक सात करोड़ बाण छोड़ दिये। ४४०१

रथी पादान्ति आदि पएकार बळ। समस्तंकु बेनि खण्ड कला जाइ शर २
एहा देखि शतृघन संगरे युद्धकला। अनेक शर बर्षा जाणि तोरा ३
देखिण शतृघन ब्रह्मशर मारि। दइब दुर्बळरे दैत्य प्राण हारि ४
से सात दैत्यंकु मारि श्रीराम चारि भाइ। पादान्ति तेर कोटि मले रहि तहिँ ५
बेनि लक्ष सरदार लक्षेक सेनापति। कोटिए रथी जे रणरे गले लोटि ६
बहिला रक्त नदी जे नाचिले कोबन्ध। मातिले खेचर जे होइण आनन्द ७
देखिण देवताए परम तोष हेले। चारि भाइंक उपरे पुष्प बृष्टि कले ८
सतर कोटि वळरु शतेक जणथिले। पळाइण निज राज्ये प्रबेश जाइ हेले ९
निज राज्ये कहिले सकळे गले नाश। असुरुणी माने शुणि मनरे बिरस४४१०
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगवती। अजोध्या लोके देखि हरि बोल ध्वन्ति४४११
जय़ जय़ शबद पुणि शुभिला ड़ाक। दशरथंक आगकु धाइँले पुण लोक १२
शुण देब अजोध्या ईश्वर महीपति। असुर माने आसि कले जे अनीति १३
दुष्टपण करिण राज्यकु उजाडिले। दइब बिपक्षरे प्राण से हारिले १४
चारि पुत्र तुम्भर माइले समस्तंकु। सात दैत्य सेथिरे थिले बळमान बपु १५
तिनि दैत्य सेथिरु माइले श्रीराम। बेनि कोटि पादान्ति पडिले दैत्य जाण १६

उस वाण ने जाकर रथी, पैदल सिपाही तथा पयकारों के दल आदि सबको दो खण्डों में काट दिया। २ यह देखकर उसने शत्रुघन के साथ युद्ध किया और नाना प्रकार के तीक्ष्ण वाणों की वर्षा की। ३ यह देखकर शतुघन ने ब्रह्म शर का प्रहार किया। दुर्भाग्य से दैत्य अपने प्राण खो बैठा। ४ श्रीराम आदि चारों भाइयों ने सात दैत्यों का संहार कर डाला और वहाँ पर तेरह करोड़ सैनिक मारे गये। ५ दो लाख सरदार, एक लाख सेनापति तथा एक करोड़ रथी रण स्थल में लोट गये। ६ रक्त की नदी बहने लगी। कबन्ध नाचने लगे। नभचर पक्षी आनन्द से उन्मत्त हो गये। ७ यह देखकर देवताओं को अपार सन्तोष हुआ। उन्होंने चारों भाइयों पर पुष्पों की वर्षा की। ८ सत्तरह करोड़ वाहिनी में सौ लोग बच गये थे जो भागकर अपने राज्य में जा पहुँचे। ९ उन्होंने सबके मारे जाने का वहाँ समाचार दिया। राक्षसियाँ यह सुनकर मन में दुःखी हो गई। ४४१० हे भगवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् अयोध्यावासी यह देखकर "हरिबोल" को ध्वनि करने लगे। ४४११ जय जयकार का शब्द सुनायी देने लगा। लोग दशरथ के समक्ष दौड़ गये। १२ उन्होंने कहा हे अयोध्यानाथ ! हे पृथ्वीपालक ! सुनिये। दैत्यों ने आकर अन्याय किया था। १३ उन्होंने दुष्टता करके राज्य को उजाड़ डाला था। भाग्य के विपरीत होने से उन्होंने अपने प्राण खो दिये। १४ आपके चारों पुत्रों ने सबको मार डाला। वह सात दैत्य बहुत बलवान थे। १५ तीन दैत्यों को श्रीराम ने मार डाला और दो करोड़

भरत एक दैत्य पादान्ति तिनि कोटि। सरदार सेनापति माइले लक्षे सेटि १७
लक्ष्मण माइले बेनि दैत्य पाञ्च कोटि बळ। सद्दार सेनापति माइले अपार १८
चतुर्मुखा असुरकु शतृघन मारि।
सात कोटि पादान्ति संगरे सेनापति मरि १९
शतृघनर शरे समस्ते पडिलेटि।असुरंकु मारि चारि भाइ आसुछन्ति४४२०
तुम्भ आगे कहिबाकु आसिछु आम्भेटि। × × × ४४२१
शुणि करि दशरथ परम तोष हेले। एसनेक बेळे आर दूत जे मिळिले २२
बोइले भो देव सर्ब असुरे गले नाश। शोणित नदी गोटिए होइला प्रकाश २३
नाचिले कोबन्ध जे मातिले खेचरी। देबे पुष्प वृष्टि कलेक बेग करि २४
शुणिण दशरथ हरष मनरे। दूतकु वधाइ देले मन आनन्दरे २५
एथु अनन्तरे जे चारि भाइ गले। अश्वमान चढ़िण राज्यरे फेराइले २६
श्रीराम लक्ष्मण दुइ गोटि भाइ जाण। आगरे असुआर होइछन्ति पुण २७
भ्रत शतृघन पछरे आसे पुणि। आगपछ आसुआरे देखन्ति सर्ब पुणि २८
अश्व टिपि चारि भाइ हेले गोटि गोटि। आगपछ होइकरि नग्ररे पशन्ति २९
नर नारी देखुछन्ति नग्रे रहि पुण। हुळ हुळि शवद शुभइ उच्चे जाण४४३०
के बोले क्षत्रिय अटन्ति नृपतिक पोए। माइले असुरंकु कलेक निर्भये४४३१

दैत्यवाहिनी का संहार किया। १६ भरत ने एक दैत्य, तीन करोड़ सैनिक तथा एक लाख सरदार व सेनापतियो को मार गिराया। १७ लक्ष्मण ने दो दैत्य, पाँच करोड़ सैन्यवाहिनी तथा असंख्य सरदार और सेनापतियों का वधकर दिया। १८ चतुर्मुखा दैत्य को मारकर शत्रुघन ने सात करोड़ पैदल सिपाहियों के साथ सेनापतियों का संहार किया। १९ शत्रुघन के बाण से सभी लोट गये। दैत्यों का संहार करके चारों भाई आ रहे हैं। ४४२० हम आपको समाचार देने के लिये आये हैं। ४४२१ यह सुनकर दशरथ को अत्यन्त आनन्द हुआ। इसी समय और भी दूत वहाँ गये। २२ वह बोले हे देव ! सारे राक्षस नष्ट हो गए। रक्त की एक सरिता प्रवाहित हो गई। २३ रुण्ड नृत्य करने लगे। नभचारी पक्षी प्रसन्न हो गये तथा देवता फूलों की वर्षा करने लगे। २४ यह सुनकर दशरथ ने प्रसन्नचित्त होकर दूतों को उपहार प्रदान किये। २५ इसके उपरान्त चारों भाइयों ने घोड़ों पर चढ़कर राज्य-भ्रमण किया। २६ श्रीराम लक्ष्मण दोनों भाई आगे सवार थे। भरत तथा शत्रुघ्न पीछे आ रहे थे। समस्त लोग आगे पीछे के सवारों को देख रहे थे। २७-२८ अश्वों को दौड़ाते हुए चारों भाई आगे पीछे एक-एक करके नगर में घुसे। २९ नगर के नर-नारी उन्हें देख रहे थे। उच्च स्वर में मांगलिक शब्द सुनाई दे रहा था। ४४३० कोई कहता था कि राजपुत्र पराक्रमी हैं। उन्होंने निर्भय होकर असुरों का संहार किया। ४४३१

द्वारे द्वारे देखन्ति स्तरी पुरुष रहि।साधु साधु श्रीराम बोलन्ति सर्बे तहिँ ३२
नग्रे प्रबेश जे चारि भाइ हेले। अश्वरु उतुरिण पितांकु ओळगिले ३३
माजणा होइण जे स्नान विधि सारि। माता मानंक अन्तःपुरकु गले चळि ३४
कौशल्या कैकेया सुमित्रा नीळावती पुरे। चारि पुत्र ओळगिले मातांक पयरे ३५
पुत्रंकु देखि आनन्द हेले माता माने। आनन्दे चुम्बन द्यन्ति हरष बचने ३६
भोजन शयन जे चारि पुत्र कले। पात्र मन्त्री सामन्त घेनि राजन सभा करे ३७
श्रीरामंकु प्रशंसा करन्ति सर्बे मिळि। ए चारि नन्दन सूर्य्य बंशकु उद्धरि ३८
एगार बर्ष एहु माइले दैत्य बळ। निश्चय श्रीराम जाण भगिरथी तुल्य ३९
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगवती। प्रतिदिन पारिधिकि चारि भाइ जान्ति४४४०
सिंह शार्द्दूळ गण्डा गयळ जे मारि। मृग सयम्बर जे बरिला हस्ती धरि४४४१
आठ दश पक्षरे मिळन्ति दुष्ट जेते। जाणि शुणि बिचारि मारन्ति चारि भ्राते ४२
श्रीरामंकु एगार बर्ष सम्पूर्ण होइला। दिनुँ दिन श्रीराम नाम प्रकाशिला ४३
अनेक दुष्ट दैत्य जे मारिबारु पुण। ढ़ाकिण राजामाने शंखोळे अबिछन्न ४४
दनेक चम्पावती नग्रकु चारि भाइ गले। चारि भाइ सैन्य बळ घेनिण मिळिले ४५

द्वार-द्वार पर खड़े होकर नर-नारी दर्शन कर रहे थे। श्रीराम धन्य हो! धन्य हो! ऐसा सभी कह रहे थे। ३२ चारों भाई नगर में प्रविष्ट हुए। घोड़ों से उतर कर उन्होंने पिता को प्रणाम किया। ३३ मार्जन करके उन्होंने विधिपूर्वक स्नान किया और फिर माताओं के अंतःपुर को चले गये। ३४ चारों पुत्रों ने कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा तथा नीलावती के महलों में जाकर माताओं के चरण छुये। ३५ माताएँ पुत्रों को देखकर प्रसन्न हो गई और हर्षोल्लास युक्त वचनों से प्रसन्न होकर उन्हें चूमने लगीं। ३६ चारों पुत्रों ने भोजन करके शयन किया। राजा ने सभासद, मंत्री तथा सामन्तों को लेकर सभा की। ३७ सब मिलकर श्रीराम की प्रशंसा करने लगे और बोले कि यह चारों पुत्र सूर्य वंश का उद्धार करेंगे। ३८ ग्यारह वर्ष में इन्होंने दैत्यों का संहार किया है। निश्चय ही श्रीराम भगीरथ के समान हैं। ३९ हे भगवती! सुनों। इसके पश्चात् चारों भाई प्रतिदिन आखेट के लिये जाते थे। ४४४० वह सिंह, शार्दूल, गैंड़ा, हिरन, मृग साँभर को मारते और बिगड़ैल हाथियों को पकड़ लेते थे। ४४४१ आठ-दस के झुण्ड में जितने भी दुष्ट मिलते थे, चारों भाई उन्हें समझ-बूझकर मार डालते थे। ४२ श्रीराम पूरे ग्यारह वर्ष के हो गये। दिन-प्रतिदिन उनका नाम विख्यात् होने लगा। ४३ अनेक दुष्ट दैत्यों के मारने के कारण राजा लोग निरन्तर उनकी खोज करके उन्हें बुलाते थे। ४४ एक दिन चारों भाई चम्पावती नगर को गये। वह सैन्यवाहिनी को लेकर गये थे। ४५ पाँच दिनों में वह

पाञ्च दिने चम्पावती नग्रे प्रवेश। देखिण लोमपाद मनरे हेले तोष ४६
लोमपाद राजार शते पुत्र जाण। श्रीरामंकु बड से जे बेनि मास जाण ४७
श्रीराम से मानंकु मान्य धर्म कले। मेळ होइ सात दिन पारिधि कले भले ४८
सुख पाइ पक्षक जे रहिले चारि भाइ। लोमपाद राणी माने देखि तोष होइ ४९
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण भगवती। कोशळ दीप बोलि राज्य भद्रनाम पृथ्वी४४५०
से राज्यरे असुर राजन नीळमणि। मैषासुर अंश अटे सेहु पुणि४४५१
देवंकु रिपुधरि स्वर्गरे पशिला। वार वर्ष पर्य्यन्ते देवंक संगे रणकला ५२
जाणिण सुर राजा से दैत्यकु मारि। ताहार एक पुत्र कुमारेश्वर बोलि ५३
रिपुधरि देवंक संगे कलि कला। रणकरि देवता मानंकु जिणिला ५४
देवतांकु जिणिण निज पुरे आसि। किछि दिन उत्तारु जम्बु द्वीपरे पशि ५५
भय्र करि राजागणे ता संगे प्रीति कले। तेणु से राजा मानंकु न दण्डइ भले ५६
चम्पावती राज्ये जाइ होइला प्रवेश। राज्य उजाढीण भांगिले पुण देश ५७
चार जाइ जणाइले लोमपाद आगे। असुर आसि नग्रे होइलाक बेगे ५८
देश घोष उजाडिण करइ सेहु जुर। शुणि करि लोमपाद बोइले जिबा चाल ५९
ताहार संगे धीर कथा आम्भे हेबा जाणि।
तेबे से असुर राजा बोध हेबा पुणि४४६०

चम्पावती नगर में जा पहुँचे। उन्हें देखकर लोमपाद का मन प्रसन्न हो गया। ४६ राजा लोमपाद के एक सौ पुत्र थे जो श्रीराम से दो माह बड़े थे। ४७ श्रीराम ने उन लोगों का सम्मान किया और उन्होंने मिलजुल कर भली प्रकार से सात दिन तक आखेट किया। ४८ चारों भाई वहाँ पन्द्रह दिन रहे। लोमपाद की रानियाँ उन्हें देखकर संतुष्ट हो गई। ४९ हे भगवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् पृथ्वी के कोशल द्वीप में एक भद्र नाम वाला राज्य था। ४४५० उस राज्य का राजा नीलमणि असुर था। वह महिसासुर के अंश से उत्पन्न हुआ था। ४४५१ देवताओं से शत्रु भाव रखकर वह स्वर्ग में घुसा, उसने बारह वर्ष पर्यन्त देवताओं के साथ युद्ध किया। ५२ यह जानकर देवराज इन्द्र ने उस दैत्य का बधकर दिया। उसके कुमारेश्वर नाम का एक पुत्र था। ५३ उसने देवताओं के साथ शत्रुता करके युद्ध किया और रण में देवताओं को जीत लिया। ५४ देवताओं पर विजय प्राप्त करके वह अपने घर आ गया। कुछ दिनों बाद वह जम्बू द्वीप में घुसा। ५५ डरकर राजाओं ने उसके साथ मित्रता कर ली। इस कारण से उसने राजा लोगों को दण्ड नहीं दिया। ५६ वह चम्पावती राज्य में जा पहुँचा। उसने राज्य को उजाडकर देश को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। ५७ लोमपाद के समक्ष जाकर दूतों ने समाचार दिया कि राक्षस लोगों के आने से नगर में हलचल मच गई है। वह देश को उजाड़कर लूट लेते है। यह सुनकर लोमपाद ने कहा कि चलो चलें। ५८-५९ उसके साथ हम

श्रीराम बोइले पिता दुष्टंकु जेबेड़रि । केते काळ ए राज्यरे थिब हे देह धरि४४६१
जेते दुष्ट अछन्ति ए सप्त द्वीपरे । दरशनिकु धन आम्भर नाहिँत भण्डारे ६२
लोमपाद बोइले बाबु असम्भाळ बेळे । दुष्टंकु प्रबोधिले सम्भाळ होन्ति भले ६३
श्रीराम बोइले तुम्भे रणरे न पार । तेणु मन नेबाकु मन जे तुम्भर ६४
लोमपाद बोइले तांकु देवता नुहें सरि । तेणु करि मनरे भय़ जे आम्भरि ६५
श्रीराम बोइले से जेबे देवतांकर सल ।
आम्भे मारिबु तांकु तुम्भे नकर बिचार ६६
एते कहि श्रीराम जे बेनि भाइ घेनि । अश्वपरे बिजेकले करे धनु पुणि ६७
धनुरे गुण देइ टंकारिले बसि ।असुरंकु ओगाळिले जाइण रघु शिषि ६८
देखिण असुर क्रोधरे जर जर । श्रीराम छामुरे कुमारेश्वर बीर ६९
सैन्यकु बोइला तुम्भे चारिभाग हुअ । सरदार जाक तुम्भे मोर संगे थाअ४४७०
सेनापति माने जे मन्त्रीर तुले राहि । रथी पादान्ति संगरे रहन्तु बेनि भाइ४४७१
ए चारि कुमरकु चारि भागरें रण । मारिण राज्य नेले जे आम्भर कारण ७२
राजनर बाणि शुणि चारिभाग हेले । चारि भाइंक संगरे रण आरम्भिले ७३
शतृघन संगरे पादान्ति पुत्र लागि । देखिण शतृघन जे मोहना शर बिन्धि ७४

शांति वार्ता करेंगे। तब वह राक्षसराज प्रसन्न हो जायेगा। ४४६० श्रीराम ने कहा हे पिता ! यदि दुष्टों से आप भय करेंगे तो आप शरीर धारण करके इस राज्य में कितने दिन रहेंगे। ४४६१ सातों द्वीप में जितने भी दुष्ट हैं। उनको देने के लिये अपने भण्डार में उतना धन नहीं है। ६२ लोमपाद ने कहा हे वत्स ! असहाय अवस्था में दुष्टों को प्रबोध देने से वह सँभल जाते हैं। ६३ श्रीराम ने कहा आप युद्ध करके उनका पार नहीं पा सकते इसलिये सन्धि के लिये आपका मन हो रहा है। ६४ लोमपाद ने कहा कि उनकी समता में देवता भी नहीं आते। इसी कारण मेरे मन में डर लगता है। ६५ श्रीराम बोले कि जब वह देवताओं का शत्रु है। तो हम उसे मारेंगे। आप चिन्ता मत कीजिये। ६६ इतना कहकर अपने दोनों भाइयो को लेकर हाथ में धनुष धारण करके घोड़ों पर विराजमान हो गये। ६७ उन्होंने बैठकर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर टंकार की और रघुनन्दन ने जाकर असुर को ललकारा। ६८ उन्हें देखकर असुर क्रोध से तमतमा उठा और वीर कुमारेश्वर श्रीराम के समक्ष आ गया। ६९ उसने सेना से चार भागों में विभक्त होने के लिये कहा और समस्त सरदारों को अपने साथ रहने की आज्ञा दी। ४४७० सेनापति लोग मंत्री के समीप रह गये। उसने दोनों भाइयों को रथी तथा पैदल सिपाहियों के साथ रहने को कहा। ४४७१ इन चारों कुमारों से चारों ओर से युद्ध करो इन्हें मारकर राज्य ले लेना ही हमारा लक्ष्य है। ७२ राजा के वचन सुनकर वह चार भागों में बँट गये और उन्होंने चारों भाइयों के साथ युद्ध प्रारंभ कर दिया। ७३ शत्रुघन के साथ पदान्ति पुत्र

मोहशर पेषन्ते जे धरणीरे शोइ। देखिण शतृघन कतुरी शर लिहि ७५
बेनि बेनि खण्ड करि पकाए कतुरी।
सकळ पादान्ति बळ राजार भाइ मरि ७६
देखिण सेनापतिए चारिभाग होइ। लक्ष्मण संगरे रण कलेक रुहाइ ७७
देखिण लक्ष्मण जे बावल शर मारि। रथी पादान्ति सहिते समस्ते गले मरि ७८
बेनि खण्ड होइ पड़िले सकळ। देखिण राजन भाइ नटनामे बीर ७९
सेनापति घेनिण भरथ संगरे जुझि। देखिण भरथ बीर मने बड़ रागी४४८०
बज्र बाटुळिए माइले भरथबीर। पडिले सेनापतिए धरणी उपर४४८१
देखिण नटकार असुर रणकला। बज्र बाटुळि बाजन्ते तार प्राण गला ८२
देखिण कुमार जे मनरे बिचारि। ए बाळक हस्तरे मो सकळ सैन्य मरि ८३
एमन्त बिचारि दैत्य श्रीराम संगे रण। असुरंकु श्रीराम बिन्धिले शर टाण ८४
जयन्त शरे सकळ सरदार मारि। देखिकरि कुमर कायाकु बिस्तारि ८५
माया रूप देखिण श्रीराम कतुरी शरकरि।
बेनि फाळ करि श्रीराम पकाइले चिरि ८६
पाञ्च कोटि बळरु जे बतिश जण बळि। शयर कुळकु से पकान्ति बेग करि ८७

लग गया। यह देखकर शत्रुघन ने मोहन बाण छोड़ा। ७४ मोहन बाण छोड़ने से वह पृथ्वी पर सो गया। यह देखकर शत्रुघन ने कर्तुरी बाण उठा लिया। ७५ कर्तुरी बाण दो-दो खण्डों में काटकर गिराने लगा। समस्त पैदल सिपाहियों के साथ राजा का भाई मारा गया। ७६ यह देखकर सेनापति लोग चार भागों में बट गए और उन्होंने लक्ष्य करके लक्ष्मण के साथ युद्ध किया। ७७ यह देखकर लक्ष्मण ने वावल बाण छोड़ दिया। पैदल सैनिकों के साथ सारे रथी मारे गए। ७८ समस्त वीर दो खण्डों में कटकर गिर गए। यह देखकर राजा नट नाम वाला पराक्रमी भाई सेनापतियों को लेकर भरत से जूझ गया। यह देखकर भरत के मन में बड़ा क्रोध हुआ। ७९-४४८० पराक्रमी भरत ने वज्र-बाटुली से प्रहार किया। सेनापति लोग पृथ्वी पर गिर पड़े। ४४८१ यह देखकर नटकार दैत्य ने युद्ध किया। परन्तु बज्र-बाटुली लगने से उसके प्राण चले गए। ८२ यह देखकर कुमार ने मन में विचार किया कि इस बालक के हाथों से मेरी सम्पूर्ण सेना मार डाली गई। ८३ ऐसा विचार कर दैत्य श्रीराम के साथ युद्ध करने लगा। श्रीराम ने असुर पर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार किया। ८४ उन्होने जयन्त शर से समस्त सरदारों को मार गिराया। यह देखकर कुमार ने अपनी काया का विस्तार किया। ८५ उसके मायावी रूप को देखकर श्रीराम ने उसे कर्तुरी बाण से दो टुकड़ों में चीर फेंका। ८६ पाँच करोड़ दल से वत्तिस लोग वचे थे। वह राजकुल की ओर शीघ्रता से भागे। ८७ राजपुत्र ने जाकर

राजनर पुत्र जाइ घरणो आगे कहि । राजन रणे पड़िले जम्बुद्वीपरे जाइ ८८
एथु अनन्तरे शुग गो शाकम्बरी । श्रोणित नदी गोटिए बहिला पुणि करि ८९
नाचिले कबन्द जे मातिले खेचरी । देखिण चम्पावती देशर नरनारी४४९०
बिचारिले अजोध्या नृपतिक कुमर । असुरंकु मारि रक्षा कले एहुपुर४४९१
एमन्त समयरे स्वर्गर देबे मिळि । श्रीरामंक उपरे पुष्प बृष्टि करि ९२
चार जाइ जणाइला लोमपाद आगे । दशरथ नन्दने असुर मारि एबे ९३
चारि भाइ मारिले जे पाञ्च कोटि बळ ।
अक्षय तिनि असुरंकु माइले करि गोळ ९४
तुम्भर पुत्रमाने राज्यरे जेते बळ । सबंकु मनाकले दशरथ बाळ ९५
शुणिण नृपति जे पात्र मन्त्रींकि घेनि । सामन्त सेबक पुत्र संगरे घेनि पुणि ९६
सैन्य गण घेनि रण स्थानरे प्रबेश । रामताळि हरि बोल पढ़िला अनेक ९७
गुण्डिचा बिजये प्राये उत्सब राज्ये करि । बाद्य नाट नृत्यरंग नाना वर्ण करि ९८
हरष उत्सबरे नबरे प्रबेश । हुळहुळि शबदरे पूरइ आकाश ९९
माजणा स्नाहान जे सारिण चारि भाइ। षड़ रसरे भोजन करिण निद्रा जाइ४५००
निद्रा भांगि बारु राज्यकु बाहारिले पुण । लोमपाद पुत्र तांक संगरे गले जाण४५०१
सकळे पुत्र मेळ होइण आसिले ।पाञ्च दिने अजोध्यारे प्रबेश होइले २

स्त्री के समक्ष कहा कि राजा जम्बूद्वीप जाकर युद्धस्थल में मारे गए। ८८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके अनन्तर रक्त की सरिता प्रवाहित हो गई। ८९ रुण्ड नाचने लगे। नभचर मस्त हो गए। यह देखकर चम्पावती देश के नर-नारी विचार करने लगे कि अयोध्या नरेश के कुमारों ने राक्षसो का वध करके इस नगर की रक्षा की है। ४४९०-४४९१ इसी समय स्वर्ग से देवताओं ने आकर श्रीराम के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। ९२ दूत ने लोमपाद के समक्ष जाकर समाचार दिये कि अब दशरथ के पुत्रों ने राक्षसों को मार दिया। ९३ चारों भाइयों ने पाँच करोड़ सैन्य दल का संहार कर दिया। उन्होंने युद्ध करके तीन अक्षय राक्षसों का बधकर दिया। ९४ तुम्हारे पुत्रों को तथा राज्य की सैन्यवाहिनी आदि सबको दशरथ नन्दन ने मना कर दिया था। ९५ यह सुनकर राजा, सभासद, मंत्री, सामंत, सेवकों, पुत्रों तथा सेना को लेकर युद्धस्थल में प्रविष्ट हुये। रामताली तथा हरिवोल की विपुल ध्वनि उठने लगी। ९६-९७ उन्होंने रथ यात्रा के समान राज्य में नृत्य गीत आदि तथा वाद्य बाजन समेत नाना प्रकार के उत्सव आयोजित कराये। ९८ हर्षोत्सव के मध्य उन्होंने महल में प्रवेश किया। आकाश मांगलिक शब्दों से भर गया था। ९९ चारों भाइयों ने मार्जनोपरान्त स्नान करके षड्रस भोजन किये और सो गए। ४५०० निद्रा भंग होने पर वह (अपने) राज्य को निकल पड़े। लोमपाद के पुत्र उनके साथ चले। ४५०१ समस्त पुत्रगण मिलजुलकर पाँच दिनों में अयोध्या आ पहुँचे। २

दशरथ राजांकु जे नमस्कार कले । लोमपाद पुत्रमाने सकळ कहिले ३
स्नान भोजन जे सकळ पुत्रे कले । राजा राणी शुणिण जे सन्तोष होइले ४
लोमपाद राज अजोध्यारे रहिले दिना केते ।
आपणा राज्यकु चळिगले से तुरिते ५
पार्बती पचारिले सेठारु किस हेला । ईश्वर बोइले तुम्भे शुण सेथिर लीळा ६
बेनि मास अन्तरे श्रीराम चारि भाइ । सायन्ता भउणीकि देखि जिबा पाइँ ७
अनेक सम्भर्बरे चळिगले पुण । धन धान्य आये अलंकार नेले जाण ८
घेनिण कौशिक बने हेले जे प्रबेश । देखिले से बने लागिछि उपद्रव बिशेष ९
पूर्ब दिगरे उदय गिरि जे हिमाळरे । बृद्धासुर नबर अटे से बनरे४५१०
बृद्धासुरकु मारिले जेहु बज्रधर । तार नाति अटे बइबा नामे सुर४५११
स्वर्गरे पशिण जे देबंकु जिणिला । पाताळरे नाग बळ जाइण धरिला १२
मञ्चरे सप्त द्वीप जिणिण सेहु पुण । जम्बु द्वीपरे बुले राजा मानंक स्थान १३
देखा दरशनि जे घेनिण बीर चळि । कउशिक बनरे मिळिले शते बळि १४
बिभाण्डक ऋषिकु जञ्जाळ से कला । असुरंकु देखि मुनि तरस्त होइला १५
एमन्त समयरे प्रबेश श्रीराम चारि भाइ ।
सम्भर्ब देखि असुर ताहांकु ओगाळइ १६

उन्होंने महाराज दशरथ को प्रणाम किया और लोमपाद के पुत्रों ने उन्हें समस्त समाचार दिये। ३ सभी पुत्रों ने स्नान, भोजन समाप्त किया। यह सुनकर राजा और रानियाँ संतुष्ट हो गई। ४ लोमपाद के पुत्र कुछ दिनों अयोध्या में रहकर शीघ्र ही अपने राज्य को चले गये। ५ पार्वती ने पूँछा कि फिर क्या हुआ। शंकर जी बोले कि अब तुम वहाँ की लीला सुनों। ६ दो महीनों के पश्चात् श्रीराम तथा चारों भाई नाना प्रकार के ठाठ-वाट के साथ शांता वहन को देखने के लिये चले गये। उन्होंने साथ में प्रचुर धन-धान्य तथा अलंकार ले लिये थे। ७-८ यह सब लेकर वह लोग कौशिक वन में जा पहुँचे। उन्होने उस वन में विशेप उपद्रव होते देखा। ९ पूर्व दिशा में हिमालय में जो उदय-गिरि है। उस वन में वृद्धासुर का निवास था। ४५१० वृद्धासुर को बज्रधारी इन्द्र ने मार दिया था। उसका पौत्र वइवा नाम का दैत्य था। ४५११ उसने स्वर्ग में घुसकर देवताओं को जीत लिया था और पाताल में जाकर नाग-दल को पकड़ लिया था। १२ उसने मृत्युलोक के सातों द्वीपो को जीत लिया था। अब वह जम्बूद्वीप के राजाओं के स्थानों में भ्रमण कर रहा था। १३ वह पराक्रमी देखा दर्शनीय अर्थात् राजकर तथा सम्मान लेकर घूम रहा था। वह सौ पराक्रमी वीर कौशिक वन में जा पहुँचे। १४ उसने विभाण्डक ऋषि को उलझन में डाल दिया। दैत्य को देखकर मुनि त्रस्त हो गये। १५ उसी समय श्रीराम आदि चारों भाई वहाँ प्रविष्ट हुये। धूमधाम देखकर असुर ने उन्हें

तिनि कोटि पादान्ति जे कोटि एक रथी ।
लक्षे सेनापति परे कोटिए सैन्य छन्ति १७
श्रीरामंकु ओगाळि बारु चारि भाइ पुण । धनुशर धरिण कलेक से रण १८
काण्ड रड़ि शबदरे पूरिला आकाश । त्रिन्धि बारु चारि भाइ असुरे कले त्रास १९
हस्ती रथी पादान्ति सरदार पएकार ।
सेनापति पात्र मन्त्री जेतेक थिले बळ४५२०
बेनि घडि मध्ये चारि भाइ सबुंकु नाश कले ।
देखिण बइबासुर आगरे मिळि गले४५२१
देखिण भरथ बज्र बाटुळि मारिले । लक्षेक बाटुळि जे शरीरे गला गलि २२
लक्षेक जळा जे असुर देहे होइ । देखिकरि असुर जे सिंह रड़ि देइ २३
देखिण भरथवीर अग्निशर कला । अग्नि शरकु देखि असुर पाटि बिस्तारिला २४
अग्निशर भक्षिबारु पेट गला जळि । भष्म हेला असुर जेसनेकु हुता परि २५
देखिण देवताए पुष्प बृष्टि कले । नारायण अवतार बोलिण जाणिले २६
असुरे मारिबारु श्रोणित नदी बहि । मातिले खेचरी कबन्ध नाचे तहिँ २७
दश पाञ्च असुर पळाइण गले । उदे गिरि देशरे जाइण मिळिले २८
तांक राज राणींकु कहिले जाइकरि । अजोध्या राजन सुत गले मारि करि २९

ललकारा । १६ उसकी सैन्यवाहिनी में तीन करोड़ पैदल सैनिक, एक करोड़ रथी, एक लाख सेनापति तथा करोड़ों की संख्या में सैनिक थे । १७ श्रीराम को ललकारने पर उन चारों भाइयों ने धनुष बाण उठाकर उससे युद्ध किया । १८ बाणों की सरसराहट के शब्द से आकाश भर गया । चारों भाइयों ने शर-सन्धान करके असुर को त्रस्त कर दिया । १९ हाथी, रथी, पैदल सैनिक, सरदार, पयकार, सेनापति, सभासद, मंत्री आदि जितने भी दल थे उन सबको चारों भाइयों ने दो घड़ी में ही नष्ट कर दिया और बइबासुर को देखकर वह लोग उसके समक्ष जा पहुँचे । ४५२०-४५२१ उसे देखकर भरत ने वज्र की गोली से प्रहार किया । एक लाख गोलियाँ उसके शरीर में धँस गईं । २२ दैत्य के शरीर में एक लाख छिद्र हो गये । यह देखकर उसने सिंहनाद किया । २३ यह देखकर पराक्रमी भरत ने अग्नि बाण छोड़ा । अग्नि बाण को देखकर राक्षस ने मुख फैला दिया । २४ अग्नि बाण खाने से उस राक्षस का पेट जल गया । रहस्य में पड़कर दैत्य भस्म हो गया । २५ यह देखकर देवताओं ने पुष्प वर्षा की और नारायण अवतरित हो गये । उन्हें इसका ज्ञान हो गया । २६ असुरों के संहार से रक्त की नदी बहने लगी । रुण्ड नाचने लगे और नभचर पक्षी विशेष प्रफुल्लित हो गये । २७ दस, पाँच दैत्य भागकर उदयगिरि देश में जा पहुँचे । २८ उन्होंने जाकर अपनी राजरानी से कहा कि अयोध्या नरेश के पुत्र संहार करके चले गये । २९ इसके

एथु अनन्तरे देखिण गोपाले। विभाण्डक आगरे कहिले हरषरे४५३०
बोइले दशरथ नन्दन चारि पुए। असुर बळ मारिण तुम्भर पाशे आए४५३१
ऋष्यशृंग विभाण्डक जोगरे जाणि ध्यान्ते। चारि भाइंकु पाछोटि नेलेक तुरिते ३२
पाञ्च सात दिन रहि पुणि अजोध्या अइले।फेरिण अजा मउळा घर वुलिगले ३३
केउँठारे दुइदिन केउँठारे चारि। सातश पचाश मातांक घर फेरि ३४
सकळ मातामानंकु कहिले वारता। वुलिण श्रीराम जे होइले जगज्जिता ३५
दुष्टबळ असुर देखिले मारे पुण।श्रीराम नाम गोटि संसारे ख्यात जाण ३६
ईश्वर कहिवारु जाणिले हेमवन्ती। मुनिमाने अजोध्याकु देखिण आसन्ति ३७
बार बर्ष श्रीरामंकु होइला सम्पूर्ण। मुनि माने जाणिले वासुदेवर जन्म ३८
शुणिकरि ईश्वर पार्वती पचारि। पर्शुराम केतेदिन थिलाक विहरि ३९
ईश्वर बोइले शुणगो महामाई। जनक जाग कले एगार थरहि४५४०
वरषके छड़मास जनक पुरे रहि। नर वानर दुष्टंकुमारन्ते जागे रहि ४५४१
आर छड़ मासरे करन्ति तप आसि। पर्शुराम भयरे सकळ जन त्रासि ४२
पार्वती बोइले जे त्रिलोचन शुण। जनक ऋषि जे किस कले पुण ४३
ईश्वर बोइले शुण भगवती। एकदिने अंगिरा अइले विश्वामित्रंक कति ४४

पश्चात् गोपालको ने देखकर प्रसन्नतापूर्वक विभाण्डक के समक्ष कहा। ४५३० दशरथ के चार पुत्र असुर दल का विनाश करके आपके पास उपस्थित है। ४५३१ ऋृंगी ऋषि तथा विभाण्डक ने ध्यान योग से सब जानकर शीघ्र ही चारों भाइयों की अगवानी की। ३२ पाँच सात दिन वहाँ रहकर वह अयोध्या लौट आए और फिर नाना तथा मामा के घर घूमने गए। ३३ वह कहीं दो दिन और कहीं चार दिन रहते थे। फिर वह लोग सात सौ पचास माताओं के घर पर भ्रमण करते रहे। ३४ उन्होंने समस्त माताओं को समाचार बताए। श्रीराम भ्रमण करके जगज्जयी हो गए। ३५ वह बलवान दुष्ट असुर को देखते ही मार देते थे। श्रीराम का नाम संसार में विख्यात हो गया। ३६ शंकर जी के कहने पर हिमांचलनन्दिनी को यह ज्ञात हुआ। मुनि लोग अयोध्या में दर्शन करने को आते थे। ३७ श्रीराम पूरे बारह वर्ष के हो गए। मुनियों को भगवान के जन्म के विषय में ज्ञात हो गया। ३८ यह सुनकर पार्वती ने शिव से पूँछा कि परशुराम वहाँ कितने दिन विचरण करते रहे। ३९ शंकर ने कहा, हे महामातेश्वरी ! सुनो। जनक ने ग्यारह बार यज्ञ किया। ४५४० वह वर्ष में छै माह जनकपुर के यज्ञ में रहकर नर-वानर दुष्टों का विनाश करते थे। ४५४१ अन्य छै माह जाकर तपस्या करते थे। परशुराम के भय से सभी लोग त्रस्त थे। ४२ पार्वती बोली। हे त्रिनयन ! सुनिए। फिर महर्षि जनक ने क्या किया। ४३ शंकर ने कहा, हे भगवती सुनो। एक दिन अंगिरा विश्वामित्र के निकट आए और उनके आश्रम में जा पहुँचे। उन्हें देखकर प्रसन्नता से मुनि विश्वामित्र ने पूँछा,

बिजये कले जाइ ऋषिंक आश्रमरे। देखिण बिश्वामित्र मुनि हरषरे ४५
पचारिले केउँपुरे थिल ऋषिशिष्य। मोरपुरे बिजेकल होइण बड़ जश ४६
अंगिरा बोइले आम्भे ब्रह्मांक पुरे थिलु। बेदबरंक बोले तुम्भ आश्रमे अइलु ४७
बेदबरे बोइले बिश्वामित्ररे कह। तपकरि जाग कले पवित्र हेब देह ४८
प्रथमरे पातक जे बिश्वामित्र कला। गो ब्राह्मणकु रण गोळरे माइला ४९
तेणुकरि निर्मळ जे नोहिला तांक काय़ा। एमन्त कहि मोते भेदिदेले ब्रह्मप्रिय़ा४५५०
शुणिण बिश्वामित्र जे स्तम्भी भूत हेले। ध्यानरे बसि जोगबळरे जणिले४५५१
कपिळ ऋषिंकि जे कले सुमरण। तत्क्षणे कपिल मिळिले आसि पुण ५२
बिश्वामित्र बोइले मुँ करिबि केळि जाग। मोर जागरे तुम्भे होइब आचार्य्य ५३
सुरभिकि घेनि तुम्भे एथि बिजेकर। सकळ संजोग जेमन्ते हुए मोर ५४
शुणिण कपिळ जे बिश्वामित्ररे कहि। मय़ दइतकु सुमरिले सकळ सिद्धि होइ ५५
शुणिण बिश्वामित्र मय़दैत्यकु सुमरि। जाणिण मय़दैत्य ऋषिपुरे मिळि ५६
बिश्वामित्र कहिले करिबा केळि जाग। बिधि बिधाने जे रूपे करि सिद्ध बेग ५७
शुणिण मय़दैत्य जुणक ओसाररे। बेनि सभा भिआइला धवल प्रकारे ५८
मध्यरे जागशाळ गोटि निर्माकला। रजनीरे रचिण जे अन्तर्द्धान हेला ५९
प्रभातरु बिश्वामित्र मुनि जे देखिला। × × × ४५६०

हे ऋषि नन्दन ! आप किस स्थान पर थे। आप बड़ी कृपा करके हमारे स्थान पर उपस्थित हुए हैं। ४४-४५-४६ अंगिरा ने कहा कि हम ब्रह्मलोक में थे। ब्रह्मा जी के कहने पर हम आपके आश्रम को आए है। ४७ ब्रह्मा ने कहा कि तुम जाकर विश्वामित्र से कहो कि तपस्या करके यज्ञ करने से देह शुद्ध हो जाती है। ४८ विश्वामित्र ने पहले पाप किये हैं उसने युद्ध में गौ तथा ब्राह्मणों का वध किया है। ४९ इसलिये उनकी काया निर्मल नहीं हुई। इस प्रकार कहकर ब्रह्मा जी ने हमे (आपके पास) भेजा है। ४५५० यह सुनकर विश्वामित्र स्तम्भित हो गए। उन्होंने ध्यान लगाकर योग-बल से सब ज्ञातकर लिया। ४५५१ फिर उन्होंने कपिल ऋषि का स्मरण किया। कपिल उसी क्षण उनसे आकर मिले। विश्वामित्र ने कहा कि मैं केलि यज्ञ करूँगा। मेरे यज्ञ में आप आचार्य बनिएगा। ५२-५३ आप सुरभी को लेकर यहाँ पधारें। जिससे हमारा सम्पूर्ण विधि-विधान पूर्ण हो जाय। ५४ यह सुनकर कपिल ने विश्वामित्र से कहा कि मयदैत्य का स्मरण करने से सब सिद्ध हो जाएगा। ५५ यह सुनकर विश्वामित्र ने मयदैत्य का स्मरण किया। यह जानकर मयदैत्य ऋषि के आश्रम में जा पहुँचा। ५६ विश्वामित्र ने कहा कि हम प्रमोद यज्ञ करेंगे। तुम ऐसा कुछ करो कि विधि-विधान से यज्ञ पूर्ण हो जाय। ५७ यह सुनकर मयदैत्य ने एक योजन क्षेत्र में उज्जवल प्रकार से दो सभा मण्डपों का निर्माण किया। ५८ मध्य भाग में यज्ञशाला बना दी। रात में ही यह कार्य पूर्ण करके अन्तर्ध्यान हो गया।

कपिल ऋषिंकि जे बोइले विश्वामित्र । सुरभिंकि कहिण अणाअँ वेगे वित्त४५६१
शुणिण कपिल जे सुरभिरे कहि । जागर सम्भार माता वेगे दिअ तुहि ६२
लुण आदि घृत मथा दहिर तुले जाण । अन्न व्यञ्जन जे फलमूल आण ६३
काठ हाण्डि सहिते अमृत जोगाड़ । सकळ घरे रखिबा अटइ वेभार ६४
शुणि करि सुरभि सकळ सञ्चि रखि । देखिण विश्वामित्र मनरे हेले सुखी ६५
बाउन कोटि मुनिंकु सुमरिले पुणि । जाणिण सर्वमुनि मिळिले ततक्षणि ६६
मुनिंकि घेनिण जागशाळा शोद्धे जाइ । महा लंगळे चषि तिळ वुणि देइ ६७
तिनि दिनरे तिळ उठिवार देखि । जागर आरम्भ जे कले तहिँ ऋषि ६८
तिनि मास जाए जे जाग सेहु कले । जाणि करि असुरे अइले से वनरे ६९
जाग सम्भार सबु उजाडि सबु खाइ । देखि करि ऋषिमाने गले जे पळाइ४५७०
जाग भांगि असुरे जे जाहापुरे गले । असुर जिवारु ऋषिए आसिण देखिले४५७१
देखिण विमुख जे होइले विश्वामित्र । बोइले पूर्व पापरु नोहिलि मुकत ७२
एमन्त समयरे नारद आसि मिळि । देखिण विश्वामित्र नारद आगे भाळि ७३
बोइले जाग गोटि निर्मूळ मोर हेला । असुर उजाडिले केहि रक्षक नोहिला ७४
नारद बोइले न अणाइल पर्शुराम ।
विश्वामित्र बोले से अनामिका जपे पुण ७५

प्रातःकाल विश्वामित्र मुनि ने उसका निरीक्षण किया । ५९-४५६० उन्होंने कपिल ऋषि से कहा कि सुरभी से कहकर शीघ्र ही सामग्री मँगा लीजिये । ४५६१ यह सुनकर कपिल ने सुरभी से कहा हे माता ! आप शीघ्र ही यज्ञ की सामग्री प्रदान कीजिये । ६२ नमक, घी, मठ्ठा, दही आदि अन्न के व्यंजन तथा फल-मूल मँगा दीजिये । ६३ लकड़ी तथा हंडी के सहित अमृतमय जुगाड़ समस्त घरों में रखना उचित है । ६४ यह सुनकर सुरभी ने सव कुछ संचय करके रखवा दिया । विश्वामित्र उसे देखकर मन में प्रसन्न हो गये । ६५ समाचार पाकर सभी मुनिगण उसी समय वहाँ एकत्रित हो गये । मुनियों को ले जाकर यज्ञशाला का शोधन सम्पन्न हुआ । महान् हल से जोतकर ऋषि ने तिल वो दिये । ६६-६७ तीन दिनों में तिलों को अंकुरित देखकर ऋषि ने वहाँ यज्ञ प्रारम्भ कर दिया । ६८ उन्होंने तीन महीनें तक यज्ञ किया । समाचार पाकर उस वन में राक्षस लोग आ गये । ६९ उन्होंने सम्पूर्ण यज्ञशाला को उजाड़ दिया और सव कुछ खा गये यह देखकर ऋषि लोग भाग गये । ४५७० यज्ञ नष्ट करके दैत्य अपने-अपने घर चले गये । राक्षसो के जाने पर ऋषियों ने आकर देखा । ४५७१ यह देखकर विश्वामित्र क्षुब्ध हो गये और वोले कि मैं पूर्वकाल के पापों से मुक्त नहीं हुआ । ७२ इसी समय नारद वहाँ आ पहुँचे । यह देखकर विश्वामित्र ने नारद से सव वता दिया । ७३ उन्होंने कहा मेरा यज्ञ निर्मूल हो गया । राक्षसों ने इसे उजाड़ डाला और कोई भी हमारा रक्षक नही वना । ७४ नारद ने कहा

जनक ऋषिर जे जाग रखि गले । षड़ मास मिथिलारे निअन्ति दिन भले ७६
पुणि षड़ मास अनामिका जप जपि । चारिबेद जपइ के भांगिब जप गोटि ७७
नारद बोइले जेबे न आसिबे सेहि । कथाए कहिबा जेवे करिपारु तुहि ७८
देवताए कहिवारु बासुदेव जात । असुर मारिबाकु मञ्चे उपगत ७९
अनन्त संगे घेनि बिजे नारायण । चतुर्द्धा रूप धरि दशरथ घरे जन्म४५८०
बार बरष हेलाणि मारिलेणि दैत्यबळ । पृथ्वीरे रामनाम हेलाणि चहल४५८१
ताहांकु आणिपारिले जाग रखिबे बाहु बळे । एहि जागकु तुम्भर रखिबे कुशले ८२
शुणिण बिश्वामित्र बड़ तोष हेले । एते कहि नारद स्वर्गपुरे गले ८३
नारद जिवारु जे बिश्वामित्र मुनि । आपणा मढिआकु च्छिले बेगे पुणि ८४
मनःदुख करिण वसिले जोग ध्याने । दनुज बळ हत हेबार बिचारिण मने ८५
जोग बळे जाणिले दशरथ घरे जात । नारायण अवतार नारद कथा सत ८६
जोग निद्रा भांगिण आनन्द महा ऋषि । मनरे बिचारन्ति परम ब्रह्म सेटि ८७
दुष्टंकु मारि सन्थ पाळिबाकु जन्म । निश्चय निराकार देह धरि पुण ८८
देवंकर छळरे जनम होइले । ए काळे धरणी जहुँ भरा से पाइले ८९

कि परशुराम को क्यों नहीं बुलाया। विश्वामित्र बोले कि वह ध्यान जाप में लगे हुये है । ७५ वह जनक महर्षि के यज्ञ की रक्षा करके गये हैं। वह मिथिला में छह महीने व्यतीत करते है। ७६ फिर वह छह महीने निर्गुण जाप में लीन हो जाते है। वह चारों वेदों का जाप करते हैं। उनके जाप को कौन तोड़े। ७७ नारद ने कहा कि जब तक वह नही आते तब तक मै तुमसे एक बात कहूँगा क्या तुम उसे कर सकोगे। ७८ देवताओं के कहने से भगवान वासुदेव ने जन्म ग्रहण किया है। उनकी उत्पत्ति मृत्युलोक में असुरों के संहार करने के लिये हुयी है। ७९ नारायण अनन्त देव को साथ में लेकर चार रूपों में दशरथ के घर में उत्पन्न हुये हैं। ४५८० बारह वर्ष हो गये और कितनी दैत्य-वाहिनी उन्होंने मारीं। पृथ्वी पर राम नाम की धूम मच गई है। ४५८१ उनको लाने पर वह अपने बाहुवल से तुम्हारे इस यज्ञ की कुशलतापूर्वक रक्षा करेंगे। ८२ यह सुनकर विश्वामित्र को वड़ा सन्तोष हुआ, इतना कहकर नारद स्वर्गलोक को चले गये। ८३ नारद के चले जाने पर विश्वामित्र मुनि ने शीघ्र ही अपने मठ का त्याग कर दिया। ८४ वह दुखित मन से योग ध्यान में बैठ गये और मन में राक्षस कुल के संहार के विषय में विचार करने लगे। ८५ उन्होंने योगबल से जान लिया कि दशरथ के घर में नारायण अवतरित हुये हैं और नारद की बात सत्य है। ८६ योगनिद्रा का त्याग करके महर्षि प्रसन्न थे और परब्रह्म वहाँ पर है। ऐसा वहाँ पर मन में विचार करने लगे। ८७ दुष्टों को मारकर सन्तों का पालन करने के लिये उन्होंने जन्म लिया है। निश्चित रूप से निराकार ब्रह्म ने देह धारण किया है। ८८ देवताओं के बहाने उनका जन्म हुआ है। इस

चारि रावण मारिण देवंकु उद्धरिबे। मुनि मानंकर सबु जागकु रखिबे४५९०
एमन्त बिचारि मुनि स्वर्गकु चळिगले। देव ऋषिमानंकु जाइण पचारिले४५९१
सर्व ऋषि बोइले श्रीराम आसिले जाग हेब।
पाताळ पुर ऋषि आणि कले एकठाव ९२
सिद्ध ऋषि मानंकु कहिले रामबाणि। समस्ते तोष हेले श्रीराम नाम शुणि ९३
शुणिण बिश्वामित्र होइले बाहार। अजोध्यारे विजय़ कले शुभ जे वेळर ९४
बाटरे मुनिब्रर बिचार कले मने। दनुज दहिज हेबे श्रीरामर बाणे ९५
श्रीराम रूप चिन्ति पथे जाउँ जाउँ। श्यामळ शान्त मूर्त्ति शंख चक्र बाहु ९६
श्रीबत्स चिन्ह जे कउस्तुभ हार। किरीट कुण्डळ निन्दइ दिबाकर ९७
बिजे कले देब निज रूप तेज्या करि। समस्तंकु दिशन्ति मानव रूप धारि ९८
दशरथ राजांकर अटे ज्येष्ठ वळा। मझिआ राणी कौशल्या गर्भे जन्म परा ९९
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी। बिश्वामित्र मुनि जे गले बेग चळि४६००
अजोध्या नग्ररे जाइ हेले परबेश। चन्द्र किरण प्राय़े दिशइ नगरत४६०१
अष्टरत्नरे कळस दिशन्ति पन्ति पन्ति। भिन्न भिन्न नेत जे चिराळ उड़ुछन्ति २
नर नारी सकळे दिशन्ति सुन्दर। स्वर्गर अपसरा पराय़े निर्मळ ३

समय पृथ्वी को भार प्राप्त हुआ है। ८९ वह चारों रावण का संहार करके देवताओं का उद्धार करेंगे और समस्त मुनियों के यज्ञों की रक्षा करेंगे। ४५९० ऐसा विचार करके मुनि स्वर्ग को चले गये। उन्होंने देवर्षियों से जाकर पूँछा। ४५९१ उन समस्त ऋषियों ने कहा कि श्रीराम के आने से यज्ञ होगा। उन्होंने पाताल लोक के ऋषियों को लाकर एकत्रित किया। ९२ उन्होंने सिद्ध ऋषियों से राम की बात कही। श्रीराम का नाम सुनकर सब संतुष्ट हो गये। ९३ यह सुनकर विश्वामित्र निकल पड़े और शुभ काल में अयोध्या में जा पहुँचे। ९४ मार्ग में मुनि श्रेष्ठ ने मन में विचार किया कि श्रीराम के बाण से दानव जल जायेंगे। ९५ मार्ग में जाते-जाते वह श्रीराम के रूप का चिन्तन कर रहे थे, कि उनकी श्यामल शान्त मूर्ति है और हाथों में शंख, चक्र धारण किये हैं। ९६ श्रीवत्स चिह्न से युक्त कौशतुभ हार पड़ा है। क्रीट-कुण्डल सूर्य की निन्दा कर रहा है। वह देव अपना रूप त्याग कर उपस्थित हुये हैं और वह सबको मानव रूपधारी दृष्टिगोचर होते है। ९७-९८ वह महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र तथा मझली रानी कौशल्या के गर्भ से उत्पन्न हुये है। हे शाकम्बरी! तुम सुनो। इसके पश्चात् विश्वामित्र शीघ्रता से चल पड़े। ९९-४६०० वह अयोध्या नगर में जाकर प्रविष्ट हुए। नगर चन्द्रकिरण के समान सुन्दर दिख रहा था। ४६०१ पंक्ति की पंक्ति अष्टधातु के कलश थे और भिन्न-भिन्न प्रकार के ध्वजा तथा पताकाएँ उड़ रही थी। २ समस्त नर-नारी सुन्दर दिखते थे। स्त्रियाँ स्वर्ग की अप्सराओं के समान सुन्दर थीं। ३ जिस दिन से नारायण ने

जेबण दिनुँ बासुदेव से पुरे हेले जन्म। से दिनुँ सुन्दर दिशे अजोध्या जे पुण ४
निर्द्धने धन अपुत्रिए पुत्र पाए पुण। आरोग्य जे सकळ नर नारी जाण ५
दुःख सुख चण्डपुत्र कहन्ति बेळ जाणि। कृपण लोक सेथिरे अछन्ति बड़ दानी ६
नारीमाने सौभागिनी पुरुषे धनशील। बार मास जाकरे बृक्षरे फळे फळ ७
मेघ बरषन्ति नदी पोखरी कूपरे। गाई महिषि क्षीर सुबर्ण काले ८
जे जाहा काळरे भोगइ षड़ ऋतु। धन जन परिपूर्ण सकळ जन हेतु ९
देखिण प्रशंसा करे बिश्वामित्र ऋषि।

श्रीहरि घरणी महालक्ष्मी बिजे एथि आसि४६१०

बासुदेव जहुँ जे होइले एथि जात। तेणु नगर जे सकळ गुणे ख्यात४६११
रथ गज अश्वमान देखिण मुनि पाआन्ति।

बेनि जुण परिजन्ते एमाने पूरिछन्ति १२

पार्बती बोइले देव शुण त्रिलोचन। बेनि जुणे रहिछन्ति गज अश्व जाण १३
केते केते अछन्ति मोते भिन्न करि कह। ए कथा शुणिबारे स्नेह मोर देह १४
ईश्वर बोइले नाग अछन्ति तिनि लक्ष। नव कोटि अश्व जे सेथिरे प्रत्यक्ष १५
अठर कोटि सर्दार सेनापति सेठि। हाटुआ बाटुवा जे छतिश बर्ण जाति १६
दाण्ड चउषठि जे कन्दि बिकन्दि बणा। बड़ दाण्ड गोटि जे जुणेक लम्ब सिना १७

उस नगर में जन्म लिया उसी दिन से अयोध्या नगर सुन्दर दिखाई देने लगा। ४ दरिद्र लोगों को धन तथा निःसन्तान को सन्तति प्राप्त हो गई और समस्त नर-नारी नीरोग हो गए। ५ चण्ड पुत्र समय-समय पर सुख-दुख बताया करते थे। वहाँ कृपण लोग भी बड़े दानी थे। ६ पुरुषवर्ग धनी तथा शीलवान और नारियाँ सौभाग्यवती थीं। वृक्षों में बारह महीने फल फलते थे। ७ मेघ बरसनें से नदी, तालाब तथा कुएँ जलपूरित थे और गाय, भैंसें सब समय भरपूर दूध देती थीं। ८ षड्ऋतुएँ अपने-अपने समय पर होती थीं। लोककल्याण के लिये धन-जन परिपूर्ण थे। ९ देखते ही महर्षि विश्वामित्र प्रशंसा करने लगे। नारायणप्रिया महालक्ष्मी आकर यहाँ विराजमान हो गई है। ४६१० जब से वासुदेव यहाँ उत्पन्न हो गए तब से यह नगर समस्त गुणों के लिये प्रसिद्ध हो गया। ४६११ मुनि ने रथ, हाथी, घोड़े आदि दो योजन पर्यन्त भरे हुए देखे। १२ पार्वती ने कहा हे देव त्रिलोचन! सुनिये। हाथी घोड़े दो योजन में फैले थे। १३ वह कितने-कितने थे। यह आप हमसे पृथक-पृथक कहिए। मेरे शरीर में इस कथा को सुनने की श्रद्धा है। १४ शंकर जी ने कहा कि हाथी तीन लाख थे और वहाँ प्रत्यक्ष रूप से नौ करोड़ घोड़े थे। १५ वहाँ अट्ठारह करोड़ सरदार सेनापति थे। हाट, बटोही आदि की वहाँ छत्तिस जातियाँ थीं। १६ वहाँ पर चौंसठ मार्ग तथा भ्रान्ति में डालने वाले गली कूचे थे। एक ही राजमार्ग एक

अन्यरे निवारण नुहँन्ति दनुज। श्रीराम नाश करिबे असुर बळ बीर्य्य ४४
तुहि जे दशरथ न धर मने आन। श्रीरामर नाम जे विख्यात एबे पुण ४५
एगार शत राजा पुररे आम्भे गलु। सबु ठारे राम नाम प्रकाश शुणिलु ४६
श्रीराम विष्णु अंशरे जनम बिख्यात। सकळ राजा शुणि कलेणि निअत ४७
बेद बरंक बोले जात हेले तोर कोळे। चारि रावण मारिबे देवतांक छळे ४८
सकळ बिधान आम्भे जाणिलु जोग बळे। नारायण अवतार श्रीराम तुम्भ घरे ४९
नारद मार्कण्ड अगस्ति सनातन। अंगिरा पारेश्वर दुर्वासा गउतम४६५०
एमानंकु पचारिलि कहिले प्रमाण। तेणु करि विचारि आसिलु एहिस्थान४६५१
बशिष्ठंकु पचार अटे टिकि सत। चतुर्द्धा मूर्त्ति रूपे जन्म पद्म नेत्र ५२
आनबारे असुरे जे नोहिले निपात। तेणु करि जन्म तो घरे जगन्नाथ ५३
शुणि करि कर जोड़ि बोले दशरथ। पर्शुराम अबतार विष्णु जे साक्षात ५४
बार बरष दिनुं बार सहस्र बर्ष हेला।
सप्त द्वीप नवखण्ड मेदिनी साध्य कला ५५
चउद भुबनरे बानर देवता। असुर दुष्टजन साधइ ऋषि पुता ५६
अंग बळ संगरे नाहान्ति केहि पुण। एकाकी साध्य कले रेणुका नन्दन ५७

यज्ञ की रक्षा कर सकेंगे। ४३ किसी अन्य के द्वारा वह दैत्य नहीं हटेंगे। श्रीराम असुरो के बल विक्रम को नष्ट करेंगे। ४४ तुम दशरथ हो! मन में कुछ अन्यथा मत सोचना। इस समय श्रीराम का नाम प्रसिद्ध है। ४५ हम ग्यारह सौ राजाओं के निवास पर गए। मैंने सभी स्थान पर श्रीराम के नाम की बड़ाई सुनी है। ४६ ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीराम का जन्म विष्णु के अंश से हुआ है। सभी राजाओ ने सुनकर यह निश्चय किया है। ४७ ब्रह्मा के कहने से वह तुम्हारे वश में उत्पन्न हुए हैं। देवताओं के बहाने वह चार रावणों का विनाश करेगे। ४८ हमने योग-बल से सारे विधान जान लिये हैं। तुम्हारे घर में श्रीराम के रूप में नारायण का अवतार हुआ है। ४९ मेरे द्वारा पूँछने पर नारद, मारकण्डेय, अगस्त, सनातन, अंगिरा, पारेश्वर, दुर्वासा तथा गौतम ने प्रमाणपूर्वक ऐसा कहा। इसलिये मैं विचार करने के पश्चात् इस स्थान पर आया हूँ। ४६५०-४६५१ तुम वशिष्ठ से पूँछो क्या यह सत्य है कि कमललोचन नारायण ने चार रूपों में जन्म धारण किया है। ५२ अन्य चार असुरों का संहार न हो पाने के कारण जगत् के स्वामी ने तुम्हारे घर में जन्म लिया है। ५३ यह सुनकर दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा कि परशुराम का साक्षात् विष्णु-अवतार है। ५४ बारह वर्ष के दिन से बारह हजार वर्ष हो गए। उन्होंने सप्त द्वीपों वाली नौ खण्ड पृथ्वी को परास्त किया। ५५ ऋषि-पुत्र ने चौदह भुवनों में वानर, देवता, असुर तथा दुष्टजनों को परास्त किया। ५६ रेणुकानन्दन ने बिना सैन्य

से ऋषिंकि बिचार से अटन्ति नारायण । ताहांकु बरिले जाग रखिथाए पुण ५८
बिश्वामित्र बोइले शुण हे सूर्ज्य बंशी ।
जनक मिथिलारे धनु जाग करि छन्ति ५९
शिबंक शरासन से पुररे पुण । सदाशिब सुदयारे आगहुँ देले जाण४६६०
शरासन देइ पुण ईश्बर कहिले । ए शरासनरे तोते मुक्ति हेब भले४६६१
जेउँ काळे दुहिताए अजोनि सम्भूत । जन्मर काळरु से होइब जुबात ६२
शुद्ध स्नान काळे से अग्निरे करि स्नान । से दिनरु धनु जाग करिबु तु पुण ६३
एगार बर्ष जाए करिबु जाग जाण । जाग करि स्वयम्बर कराइबु पुण ६४
सेहि जागरु जात अजोनि सम्भूत । जाणिबु कमळा निश्चे होइबे प्रापत ६५
ए धनुकु तोळिब जे गुण टंकार करि । जाणिबु नारायण सेहु बोलि करि ६६
तांक संगे जेहु थिब अनन्लटि सेहि । से बेनि कन्यांकु तांकु बिभा देबु तुहि ६७
एते कहि सदाशिव धनु देइ गले । ए उत्तरु सताइश पुरुष जे गले ६८
एते काळे अजोनि सम्भूत कन्या जात । तेणु से जनक धनु जागरे उपगत ६९
नर बानर देवता नाग बळ दैत्य । एमानंकु जागरे से बरिले तुरित४६७०
एगार थर पर्ज्यन्त एमाने आसि जळ ।
धनु तोळि न पारि सेथिरे कले गोळ४६७१

दल से एकाकी युद्ध किया है। ५७ उस ऋषि के विषय में सोचिए। वह नारायण हैं। उन्हें वरण करने पर यज्ञ की रक्षा हो सकती है। ५८ विश्वामित्र ने कहा, हे भानुवंशी ! सुनो। मिथिला में जनक ने धनुष-यज्ञ किया है। ५९ उस पुर में शिव का धनुष है जिसे पूर्वकाल में शिव जी ने कृपा करके दिया था। ४६६० धनुष प्रदान करते हुए शिव जी ने कहा था कि इस शरासन से तुम्हारा उद्धार होगा। ४६६१ जिस समय अयोनिसम्भूता पुत्री होगी। वह जन्मकाल से ही नवयुवती हो जायेगी। ६२ शुद्ध स्नान के समय वह अग्नि में स्नान करेगी। तुम उसी दिन से धनुष यज्ञ करना। ६३ यज्ञ ग्यारह वर्ष तक करते रहना और यज्ञ करके स्वयंवर करवाना। ६४ उस यज्ञ से उत्पन्न अयोनिसम्भूता लक्ष्मी तुम्हें निश्चित रूप से प्राप्त होगी। ६५ जो कोई उस धनुष को उठाकर इसकी प्रत्यंचा पर टंकार करेगा। उसे तुम भगवान विष्णु समझना। ६६ उनके साथ जो होगा, वह अनन्त नारायण होगा। उन दोनों के साथ अपनी दोनों कन्याओं का विवाह कर देना। ६७ इतना कहकर सदा कल्याण करने वाले शंकर जी धनुष देकर चले गये। इसके पश्चात् सत्ताइस पीढ़ियाँ बीत गई। ६८ इस समय अयोनिसम्भूता कन्या उत्पन्न हुयी है। इसलिये जनक ने धनुष यज्ञ किया है। ६९ उन्होंने शीघ्र ही नर, वानर देवता, नागों के दल, दैत्य आदि सबको यज्ञ में वरण किया। ४६७० ग्यारह बार यह सब आये, पर धनुष न उठा सकने के कारण उन्होंने उपद्रव

गोळ देखि जनक पर्शुरामकु नेले । एगार थर जाग पर्शुराम रक्षा कले ७२
पर्शुरामर भये सेथिरे नुहें कळि । मिथिळारे पर्शुराम रहिबा मुँ जे भलि ७३
तेणुटि तोर पुरे अइलि राजन । जोगे जणाइला श्रीराम रखिबे जाग पुण ७४
एहा शुणि दशरथ कोमळ कहे बाणि । आजकु बार बर्ष रामकु मोर मुनि ७५
धाईंक स्तनरु खिर खाइ पोषुछन्ति पिण्ड ।
अन्तःपुर भितरु बाहार नुहन्ति दाण्ड ७६
केबळ काक परीप नाहाल बेलि शर । धनु धरि केबळ जे मारन्ति कुमर ७७
कि रूपे जाणिबा जाग श्रीराम रक्षा करि ।
दैत्यंकु देखि श्रीराम भये प्राणे हारि ७८
देबंकर हस्तरे न मरे जेहु पुण । श्रीरामर बाणे घुञ्चिबे कि जाण ७९
धोड़ि बळद पुणि शगड़ि बहि काहिँ । श्रीराम लक्ष्मण दैत्य न पारिबे दहि४६८०
बाळ कुमर श्रीराम न जाणइँ किछि । खेळिबा बुलिबारत समय होइछि४६८१
जुबा बयसरे अटइ सिना जुद्ध । तुम्भे ब्रह्म मुनि बिचारिण बुझ ८२
बृद्धकाळे मोते जे प्रापत हुए । न देखिले तांकु जे मरिबि निश्चये ८३
नव सहस्र बर्ष आसिण मोते हेला । एते काळे प्रापत होइले चारि बळा ८४
चारि पुत्रे सुकल्याण कर हे मुनिबर । मोर कर्म सुफल अइल मोर पुर ८५

मचाया । ४६७१ विप्लव देखकर जनक ने परशुराम को बुला लिया और उन्होंने ग्यारह बार यज्ञ की रक्षा की । ७२ परशुराम के भय से वहाँ उपद्रव नही हुआ । मुझे मिथिला में परशुराम का रहना ज्ञात हो गया । ७३ हे राजन् ! मैं तुम्हारे घर आया । योग से मुझे ज्ञात हुआ है कि श्रीराम हमारे यज्ञ की रक्षा करेंगे । ७४ यह सुनकर दशरथ ने मधुर वचनो मे कहा हे मुनि ! आज हमारा राम बारह वर्ष का हुआ है । ७५ वह धाई के स्तन का दूध पीकर शरीर का पोषण कर रहा है । अंतःपुर के भीतर से बाहर मार्ग में नही निकलता । ७६ केवल खेल-खेल में वह बालक कौवे तथा पक्षियों पर धनुप चलाता है । ७७ यह कैसे जाना जाये कि श्रीराम यज्ञ की रक्षा करेगा । दैत्यों को देखकर भय से उसके प्राण निकल जायेगे । ७८ जो देवताओं के हाथों से भी नहीं मरते, क्या वह श्रीराम के बाणों से परास्त होंगे । ७९ क्या बछड़ा गाड़ी खींच सकता है । श्रीराम और लक्ष्मण दैत्यों का विनाश न कर पायेगे । ४६८० बालक श्रीराम कुछ नहीं जानता । उसका समय खेलने तथा घूमने में ही बीता है । ४६८१ युद्ध तो युवावस्था में होता है । हे ब्रह्मर्षि ! आप तनिक विचार तो करें । ८२ बुढ़ापे में यह मुझे प्राप्त हुये है । उन्हें न देखकर मै निश्चय ही मर जाऊँगा । ८३ मै नौ हजार वर्ष का हो आया । इस समय मुझे चार पुत्र प्राप्त हुये हैं । ८४ हे मुनिश्रेष्ठ ! आप चारों पुत्रों को आशीर्वाद दीजिये । मेरे सुकर्मों के फल से आप मेरे घर पधारे है । ८५ जैसे चन्द्रमा सबको शीतल लगता है परन्तु विरही

चन्द्रे जेन्हे समस्तंकु लागइ शीतळ । बिरही जनमानंकु करन्ति बिकळ ८६
तुम्भे मोते प्रसन्न जे हेल गाधि सुत । बाळुत कुमर मोर कि करि पारित ८७
तुम्भे आज्ञारे मोर सैन्य बळ जान्तु । मुहिँ तुम्भ संगे जिबि कहिलि जे तत्तु ८८
बिश्वामित्र बोइले तुम्भरे नाहिँ कार्य्य ।
बाळ काळुं तोर जणा अछि बळबीर्य्य ८९
कुमर न थिले राए सबुंक बळ थाइ । कुमर जन्म हेले देहरु बळ जाइ४६९०
तुम्भरे असुरे दुष्टे नोहिबे जे नाश । दएणा करुणा जे अइले तोर देश४६९१
तांक संगे राजन न पारिलु रण करि । स्तिरी प्राय्ये गुपते रहिलु अन्तःपुरी ९२
दुष्ट दैत्यगण जे देबंकु न ड़रन्ति । तोरे काहिँ असुरे होइबे निपाति ९३
असुर मारिबाकु जेबे हुअन्तु सामर्थ । बासुदेब किम्पा तो पुरे होन्ते जात ९४
असुर मारिबा पाइँ बैकुण्ठ तेज्या कले । मञ्चरे आसि जन्म तो घरे होइले ९५
राम नारायण नोहिलेबि तेजिबु तोते ।
जाण नाहिँ कि राजन आम्भर जश जेते ९६
तु बोलु बाळुत जे अटन्ति तोर पुए । दएणा करुणांकु माइले केन्हे सिए ९७
लोमपाद राजांकु जे शंखोळि पुत्ने गले ।
से ऱाज्ये दैत्य हरि जुरि करिबा देखिले ९८
तेणु से दैत्यबळ मारिले बिकोति । लोमपाद राजाकु निश्चिन्त कले सेथि ९९

लोगों को व्याकुल कर देता है। ८६ हे गाधिनन्दन ! आप मुझ पर प्रसन्न हो गए है। मेरा शिशु कुमार क्या कर सकेगा। ८७ आपकी आज्ञा से हमारी सैन्यवाहिनी जाये। मै आपसे कह रहा हूँ कि मैं भी आपके साथ चलूँगा। ८८ विश्वामित्र ने कहा कि आपका कोई कार्य नहीं है। बाल्यकाल से तुम्हारा बलवीर्य मुझे ज्ञात है। ८९ सन्तान न होने तक सबके शक्ति रहती है और सन्तान उत्पन्न होने से शरीर का बल चला जाता है। ४६९० दुष्ट असुरों का विनाश आपसे नहीं होगा। दयणा तथा करुणा तुम्हारे देश में आ गए थे। ४६९१ हे राजन ! तुम उनके साथ युद्ध न कर सके और अन्तःपुर में स्त्री की भाँति छिपे रहे। ९२ दुष्ट दैत्य लोग देवताओं को भी नहीं डरते, फिर असुरों का संहार तुमसे कैसे होगा। ९३ यदि तुम असुरों को मारने के लिये समर्थ होते तो भगवान तुम्हारे घर में उत्पन्न क्यों होते। ९४ उन्होंने असुरों का संहार करने के लिये ही वैकुण्ठ का त्याग किया और मृत्युलोक में आकर तुम्हारे घर में जन्म धारण किया। ९५ राम के भगवान न होने पर भी मैं तुम्हें (शाप देकर) त्याग दूंगा। हे राजन् ! क्या तुम्हें हमारे यश का ज्ञान नहीं है। ९६ तुम कहते हो कि तुम्हारे पुत्र बालक हैं। फिर उन्होंने दयणा और करुणा को कैसे मार दिया। ९७ राजा लोमपाद का हाल-चाल जानने पुत्र गये और उन्होंने राज्य में दैत्यों को लूट खसोट करते देखा। ९८ इसलिये उन्होंने वह दैत्यबल व्याकुल

बिभाण्डक पुरगले चारि पुत्र तोर। देखिले से वनरे असुर हेलेवळ४७००
चारि पुत्र जुद्ध करि असुर दळिले। श्रीराम केमन्ते तोर वाळकुमर हेले४७०१
तुम्भर सामर्थ बेळहुँ जणा अछि।
शनिकु जिणि पितांकु जिआँइलु से काळेटि २
एबे जाणि थाअ श्रीराम परम ब्रह्मपुण।
लक्ष्मण अनन्त अटे शंख शत्नुघन जाण ३
सुदर्शन चक्र जे अटइ भरत। ए रूपे चतुर्द्धा रूपे जात जगन्नाथ ४
बिश्वामित्रंक बचन शुणि दशरथ राजा। विचारिले निश्चे नेबे मोहर तनुजा ५
दशरथ पचारे शुण हे तपोबन्त। काहार कोळे से दैत्य होइअछि जात ६
ऋषि बोले शुण हे अजोध्या ईश्वर। दशमुखा रावण लंकारे तार घर ७
कोडिए भुज तार अटे दशशिर। पुत्रता इन्द्रजित बळे बळीश्वार ८
आहुरि रावण जे एकमुखा जाण। सुलंका ज्योति लंकारे सेहु राजा पुण ९
आरेक रावण जे अटे शते मुखा। अलंका गड़रे से अटइ निशंका४७१०
आरेक रावण जे सहस्रे मुखा जाण। विलंका गड़रे से अटइ रावण४७११
एकोइश जुग हेला से रावणंकु नेइ। चारि रावण पादतळे अछन्ति खटाइ १२
मधु पुररे पुण लबण नामे दैत्य। अकळित बळ तार बळरे बळबन्त १३

करके मार दिया और वहाँ राजा लोमपाद को चिन्ता से मुक्त कर दिया। ९९ फिर तुम्हारे चारों पुत्र विभाण्डक के घर गए। उन्होंने उस वन में असुरों के आतंक को देखा। ४७०० चारों पुत्रों ने युद्ध करके असुरों का संहार कर दिया फिर तुम्हारे श्रीराम कैसे शिशु वालक हुये। ४७०१ आपकी सामर्थ्य का समय भी मुझे ज्ञात है जिस समय आपने शनि को जीतकर पिता को जीवित किया था। २ अब आप समझ लीजिये कि श्रीराम परब्रह्म हैं। लक्ष्मण अनन्त देव तथा शत्नुघन शंख हैं। ३ सुदर्शन चक्र ही भरत हैं। इस प्रकार संसार के स्वामी चार रूपों में उत्पन्न हुये है। ४ विश्वामित्र के वचन सुनकर राजा दशरथ ने विचार किया कि यह निश्चय ही हमारे पुत्रों को ले जायेंगे। ५ दशरथ ने कहा हे तपोधन ! सुनिये। वह दैत्य किस कुल में उत्पन्न हुआ है। ६ ऋषि ने कहा हे अयोध्याधिपति ! सुनिये। दशमुख वाला रावण लंका का निवासी है। ७ उसके दस सिर तथा वीस भुजायें हैं। उसका पुत्र इन्द्रजीत बड़ा शक्तिशाली और पराक्रमी है। ८ अन्य एक रावण एक मुख वाला है। वह सुलंका की ज्योति है और वह लंका का राजा है। ९ और एक रावण सौ मुख वाला है। जो अलंका दुर्ग में निःशंक भाव से रहता है। ४७१० और एक रावण हजार मुख वाला है जो विलंका दुर्ग का अधिपति है। ४७११ इक्कीस युग हो चुके। चारों रावणों ने देवताओं को लेकर अपनी चरण सेवा में लगा लिया। १२ मधुपुर में एक और लवण नामक दैत्य है, जिसका वल अप-

सुबाहु ताड़कासुर बेनि दैत्य बीर। नारायणंक हस्ते मले जिबे स्वर्गपुर १४
तेणु शिव पुत्र कार्त्तिकेश्वर मारि। ताड़कासुर भउणी ताड़की बोलिकरि १५
स्वयंबर नारकासुर अनेक असुर। नाम धरिण केते कहिबि तांकर १६
अग्नि लागिले जेन्हे शुष्क काष्ठ जळन्ति।
पाणि पकाइ देले सेहि लिभि जान्ति १७
अग्नि अटन्ति असुरे श्रीराम अटन्ति नीर।
आनलोक हस्ते दैत्य नुहँन्ति निबार १८
तुम्भे महाराजा जे व्याकुळ नुहँ पुणि। षडमासरे सकळ जाणिबु नृपमणि १९
श्रीराम चन्द्र अटे असुरे पर्वत। आनके भाजन दैत्यंकु करिबारे हत४७२०
शुणिकरि दशरथ नदिए उत्तर। शिर नूआँइण जे मुख न टेके आबर४७२१
दशरथ राजा जेणु समस्या न देला। कोपानळ सेठारु गाधिसुत हेला २२
एहि तपन वंशरे अनेक राजाथिले। एड़े अधर्म राजा देखा नाहिँ नेत्ररे २३
राजार पुत्र होइले रखन्ति ऋषि जाग। ए कथामान अटइ राज्यकु सुजोग २४
तपींकर सुकल्याण राजांकु बर्द्धमान। ए कथा न बुझन्ति अटे जे मूर्खजन २५
भस्म करि देबि आज अजोध्यानामे पुर। शुणिण बशिष्ठ ऋषि देले जे उत्तर २६
बोइले ब्रह्ममुनि सम्भाळ तोर क्रोध। राजांकु बोध करिबा हुअ तुम्भे बोध २७

रिमित है और महान शक्तिशाली है। १३ ताड़का तथा सुबाहु भी पराक्रमी दैत्य है जो नारायण के हाथों मरने पर स्वर्ग सिधारेंगे। १४ ताड़कासुर को शिवजी के पुत्र कार्तिकेश्वर ने मार दिया है। ताड़कासुर की बहन ताड़की है। १५ सम्बरासुर, नरकासुर आदि अनेक दैत्य हैं जिनके विषय में मैं कितना कहूँ। १६ आग लगने से जैसे सूखी लकड़ी जलती है और पानी डाल देने से बुझ जाती है। १७ उसी प्रकार दैत्य अग्नि के समान तथा श्रीराम पानी के समान हैं। अन्य किसी के हाथों दैत्यों का विनाश नहीं होगा। १८ हे महाराज ! आप व्याकुल न हों। हे नृपश्रेष्ठ ! छै महीने में आप सब जान जाएँगे। १९ श्रीरामचन्द्र पर्वत के समान हैं। वह अनेक दैत्यों के संहार के पात्र हैं। ४७२० दशरथ ने ऐसा सुनकर उत्तर नहीं दिया। उनका सिर झुका था। उन्होंने अपने मुख को नहीं उठाया। ४७२१ जब दशरथ महाराज ने कोई समाधान नहीं किया तब गाधिनन्दन की क्रोधाग्नि बढ़ गई। २२ वह बोले कि इसी सूर्य वंश में अनेक राजा थे। मैंने ऐसा अधर्मी राजा आँखों से नहीं देखा। २३ राज-पुत्र होने पर ऋषियों के यज्ञ की रक्षा करते है। यह बात राज्य के लिये कल्याणकारिणी होती है। २४ तपस्वियों का आशीर्वाद राजा की उन्नति का कारण होता है। जो लोग मूर्ख हैं वह यह बात नहीं समझते। २५ आज मैं अयोध्या नगरी को भस्म कर दूँगा। यह सुनकर महर्षि वशिष्ठ ने उत्तर दिया। २६ वह बोले, हे ब्रह्मर्षि ! आप अपने क्रोध को शान्त करें। आप आश्वस्त हों। हम राजा को

ए राजा वृद्ध पुत्ररे करे श्रद्धा। श्रीरामंकु नेबारे चिन्तारे अबिरोधा २८
दण्डे न देखिले राजा हुअइ व्याकुळ। राणी हंस समस्ते एमन प्रकार २९
न जाणन्ति देवता न जाणे बिष्णु बोलि।
चारि पुत्रंकु समस्ते अछन्ति घरे पाळि४७३०
तुम्भे सुजाण बेदबर सम पुणि। तुम्भे क्रोध हेलेकि सम्भाळे धरणी४७३१
बशिष्ठ कहिबारु बिश्वामित्र शान्ति। शुणन्ति गिरिजा जे शंकर कहन्ति ३२
पार्बती बोइले शुण हे त्रिलोचन। बैकुण्ठरु बासुदेव आसि हेले जन्म ३३
अनन्तकु केमन्ते आणिले शंख चक्र। गदा पद्म किम्पाइ रखि आसिले पद्म नेत्र ३४
महालक्ष्मी अइले रहिले सरस्वती। ए कथा बुझाइ मोते कुह पशुपति ३५
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो शारळा। जेउँ कथा पचारिल शुण गो अबळा ३६
गदा पद्म रहिले निज आश्रमरे। सरस्वती रहिले बैकुण्ठ जगिबारे ३७
पद्म जय़ दुर्गा बोलि शय़न स्थान जगि।
आगे जे पर्शुराम गदा नेइअछि मागि ३८
तेणु गदा पद्म न निए एसन जाणि हरि। शंख चक्र संगे घेनि जनम हेले हरि ३९
पार्बती बोइले देब दशबर्ष जाग। जनक जाग कले देब प्रीति भाब४७४०
पुणि से जाग गोटि जनक कले निकि। से कथा फळाइ मोते कह हे पिनाकी४७४१

समझा देंगे। २७ यह वृद्ध राजा पुत्रों से स्नेह करते हैं। श्रीराम को ले जाने की चिन्ता से यह अवरोध करते हैं। २८ राजा उन्हें एक पल भी न देखने से व्याकुल हो जाते हैं। रानियाँ भी इसी प्रकार की हैं। २९ यह उन्हें देवता अथवा विष्णु नहीं समझते तथा चारों पुत्रों का घर में लालन पालन कर रहे है। ४७३० आप ब्रह्मा के समान सुजान हैं। आपके कुपित होने पर पृथ्वी पर कौन उसे सम्हाल सकता है। ४७३१ वशिष्ठ के कथन पर विश्वामित्र शान्त हो गए। यह कथा शंकर जी कह रहे हैं और पार्वती श्रवण कर रही है। ३२ पार्वती ने कहा, हे त्रिलोचन ! सुनिए। वासुदेव वैकुण्ठ से आकर अवतरित हो गए। ३३ वह कमलनयन अनन्त देव शंख तथा चक्र को कैसे लाए और गदा तथा पद्म को किस कारण से छोड़ आए। ३४ महालक्ष्मी आ गईं तथा सरस्वती वहीं रह गईं। हे पशुपति ! आप यह बात हमसे समझाकर कहिए। ३५ शंकर जी बोले, हे शारला ! तुम सुनो। हे अबले ! जो बात तुमने पूछी है उसे सुनो। ३६ गदा पद्म अपने आवास पर रह गए। सरस्वती वैकुण्ठ की रक्षा के लिये रह गई। ३७ पद्म जयदुर्गा नामक शयन स्थान की रक्षा करने लगा। परशुराम ने गदा तो पहले ही ले ली थी। ३८ ऐसा जानकर नारायण ने गदा तथा पद्म को नहीं लिया तथा शंख और चक्र को लेकर भगवान ने जन्म धारण किया। ३९ पार्वती बोली, हे देव ! दस वर्षीय यज्ञ जनक ने देव-प्रीति भाव से सम्पादित किए। ४७४० फिर एक यज्ञ जनक ने किया या नहीं। हे पिनाक धनुष को धारण करनेवाले !

ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो गिरिजा।
दशथर जाग करि ऋषि कले आशा तेज्या ४२
नारदकु बोइले जागरे किस कार्ज्य।दशथर धनु धरिबाकु के नोहिले धैर्ज्य ४३
नारद बोइले नर बानर देबता। असुर नागबळ अछन्ति नकर किछि चिन्ता ४४
सम्पूर्ण जागरे एबे पूर्ण आहुति कर। अबारण स्वयम्भर होइब एथर ४५
नारद बोले जनक सम्पूर्ण जाग कले। पूर्ण आहुति करि जाग से सारिले ४६
बोले नर वानर आदि छतिश पाटक। असुर नागबळ अछ हे जेतेक ४७
अच्छब चण्डाळ परिजन्ते मोर। जे धरिब धनु ताकु देबई निकर ४८
षड़ मास पर्ज्यन्त एथर देलि कण्ट। एते बोलि जनक कहिले सभारेत ४९
जनक ठारु शुणि आनन्द सर्बे हेले। प्रतिदिन धनु देखि सकळे फेरिले४७५०
बेळकुं बेळ तेज दिशिला शिबधनु। पाशे गले गर्जन करइ जेन्हे भानु४७५१
धनुर गर्जनरे उलुका पात मही। प्रतिदिन धनुकु जनक पूजा जे करइ ५२
पार्बती बोइले तुम्भे शुण त्रिअम्बक। धनु किम्पा गर्जन करुछि देखिलाकुत ५३
ईश्वर बोइले धनु नागमूर्त्ति हेला। तेणु से नागराजा आहुति भोगकला ५४
तेणु जीव न्यास हेला धनुगोटि जाण। तेणे रहि जानकी बिरहे मन छन्न ५५

यह कथा हमसे स्पष्ट रूप से कहिए। ४७४१ शंकर जी ने कहा हे गिरिजा ! तुम सुनो। दसबार यज्ञ करके ऋषि ने आशा छोड़ दी। ४२ उन्होंने नारद से कहा कि यज्ञ से क्या प्रयोजन ? दसबार धनुष धारण करने का धैर्य राजा लोगों में नहीं हुआ। ४३ नारद ने कहा नर, वानर, देवता, असुर तथा नागों के दल हैं। आप कुछ भी चिन्ता न करें। ४४ अब आप पूर्णाहुति देकर यज्ञ पूर्ण करें। इस बार निश्चित रूप से स्वयंवर होगा। ४५ नारद के कहने पर जनक ने यज्ञ पूर्ण किया और पूर्णाहुति देकर यज्ञ समाप्त किया। ४६ उन्होंने कहा नर, वानर शूद्रों की छत्तीस उपजातियाँ, असुर, नागदल आदि जो भी हों। चाण्डाल पर्यन्त जो भी इस धनुष को धारण करेगा मैं उसे (कन्या) प्रदान करूँगा। ४७-४८ मैंने छै माह पर्यन्त कष्ट दिया है। जनक ने इस प्रकार सभा में कहा। ४९ जनक की बात सुनकर सभी प्रसन्न हो गए। सभी नित्य आकर धनुष को देखकर लौट जाते थे। ४७५० दिन पर दिन शिवधनुष प्रखरतर दिखाई देता था। पास जाने पर राजा के समान गर्जन करता था। ४७५१ धनुष के गर्जन से पृथ्वी पर उल्कापात होने लगता था। जनक प्रतिदिन धनुष की पूजा करते थे। ५२ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! आप सुनिये। देखने मात्र से धनुष गर्जन क्यों करता था। ५३ शंकर जी ने कहा कि धनुष नाग रूप में हो गया था। क्योंकि उसने नागराज की आहुति का उपभोग किया था। ५४ इसलिये धनुष में जीवन उत्पन्न हो गया था। अब जानकी का मन विरह से क्षुब्ध हो रहा था। ५५ सागर-

स्वामींकु देखिबा पाइँकि सागर दुलणी ।
चिन्ता भरे भाळइ न देखि सुलक्षणी ५६
पार्वती बोइले बिश्वामित्र किस कले । ए कथा बुझाइ मोते कह दिगम्बरे ५७
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण भगवती । बिश्वामित्र क्रोधकु वशिष्ठ कले शान्ति ५८
वशिष्ठ मुनि बुझाइ राजनरे कहि । ए मुनिर क्रोधरे न पार तुम्भे रहि ५९
भो राजा बिश्वामित्र निअन्तु श्रीरामकु । तिनिपुत्र अछन्ति जे कुळ रखिबाकु४७६०
ए मुनिर कोपकु ड़रन्ति सुरगण । बिशेषे श्रीराम तोर अटन्ति नारायण४७६१
ए मुनिक संगे गले होइबे जशजुक्त । गाधिसुत पढ़ाइबे सकळ धनु मन्त्र ६२
संशय न विचार आम्भ कथा घेन । श्रीरामंकु मुनिंकि दिअ हे राजन ६३
वशिष्ठ बचन शुणि राजा हेला दम्भ । श्रीरामंकु ड़काइण आणिले नरेन्द्र ६४
शुण हे श्रीराम ए मुनिंक कथा बिपरीत ।
तोते नेबाकु आसि अछन्ति, गाधिसुत ६५
जाग रखिबाकु तोते मागन्ति मुनि पुणि ।
नास्ति कले क्रोधरे से हुअन्ति मुनिमणि ६६
पितांक ठारु शुणि राम बोलन्ति वचन । जिबि ऋषिक संगे जाग रखिबि पुण ६७
केउँ रूपे जाग कह अंश केउँ गति । जाग मुँ देखिले नेत्रे होइबि कृतार्थी ६८

तनया लक्ष्मी स्वामी के दर्शन के लिये सुलक्षण न देखकर चिन्तातुर होकर सोचती रहती थी। ५६ पार्वती ने कहा कि फिर विश्वामित्र ने क्या किया ? हे दिगम्बर! अब आप यह कथा समझा कर कहें। ५७ शंकर जी बोले, हे भगवती ! तुम सुनो। वशिष्ठ ने विश्वामित्र के क्रोध को शान्त कर दिया। ५८ वशिष्ठ ऋषि ने राजा से समझा कर कहा कि इन महर्षि के क्रोध से आप बच नही सकेंगे। ५९ हे राजन् ! विश्वामित्र को श्रीराम को ले जाने दीजिये। कुल की रक्षा करने के लिये आपके अन्य तीन पुत्र हैं। ४७६० देवगण भी इन मुनि के क्रोध से डरते हैं फिर आपके राम तो विशेष तौर से नारायण ही है। ४७६१ इन मुनि के साथ जाने पर वह यश में युक्त हो जाएँगे। गाधिनन्दन उन्हें सम्पूर्ण मंत्रों सहित धनुर्विद्या की शिक्षा देंगे। ६२ बिना संशय किये हुए हमारी बात मानकर हे राजन् ! श्रीराम को मुनि को प्रदान कर दीजिये। ६३ वशिष्ठ के वचन सुनकर राजा दृढ़ हो गए। नरेन्द्र ने श्रीराम को बुला लिया। ६४ उन्होंने कहा कि हे श्रीराम ! इन मुनि की बात विपरीत है। यह गाधिनन्दन तुझे लेने को आये है। ६५ यह मुनि तुझे यज्ञ की रक्षा करने के लिये माँग रहे हैं और मुनि श्रेष्ठ मना करने पर कुपित हो रहे है। पिता की बातों को सुनकर राम ने कहा कि मैं ऋषि के साथ यज्ञ रक्षा के लिये जाऊँगा। ६६-६७ उन्होंने कहा कि आप मुझे बताइये कि वह यज्ञ कैसा है और किस भाँति किया जा रहा है। यज्ञ देखने से

भो पिता किम्पा तुम्भे मोते निषेध कर। निःसंशय्रे करि पुण मारिबि असुर ६९
तुम्भ कुळे जन्म होइ काहाकु मोर भीति ।
चन्द्र सूर्य्य केवळ मोर हुअन्ति साक्षी४७७०
आम्भे जदि क्षत्री सुत निसत किम्पा हेबु ।
तुम्भे थिले पिता आम्भे काहाकु न डरिबु४७७१
ए बचन शुणिण जे दशरथ बोले। तुम्भे गले एथुँ देह धरिबि कि भले ७२
जेबे तु रघुनाथ मुनिक संगे जिबु। मुहिँ नबर्ते आउ मोते छाड़िगले बाबु ७३
शोके गदगद बेनि नय़नुं बहे नीर। चन्द्र सूर्य्य दुहिंकु साक्षी देले नृपबर ७४
भो धर्म देबता श्रीरामकु मोर रख। एते कहि राजन मनरे कले दुःख ७५
बिश्वामित्र मुनिक श्रीरामंकु देले नेइ। अनेक प्रकारे जे बिनय़ी होइ कहि ७६
ए राम बाळुत मोर न जाणइँ किछि। खेळिबा बुलिबार त बय़स होइछि ७७
जुद्धर ब्यबस्थामान न जाणइँ एत। तुम्भ कोप देखि मुँ रामकु समर्पित ७८
मोर जिबारु ए पछे होन्तु जाहा। रंकुणी धन श्रीराम मो पिण्डकु साहा ७९
एते कहि शोक गदगदे नृपमणि। बहु शोक करे श्रीरामकु देइ गुणि४७८०
अन्तःपुरे राबिले सकळ राणीमाने। स्तम्भीभूत होइले शुणिण सर्बजने४७८१
एमन्त शुणि बशिष्ठ अन्तःपुरकु गले। अन्तःपुरे राणीमानंकु से बोधकले ८२

मेरे नेत्र धन्य हो जायेंगे। ६८ हे पिताजी ! आप मुझे क्यों मना कर रहे हैं। मैं निःसन्देह राक्षसों का वध करूँगा। ६९ आपके कुल में जन्म लेकर मुझे किसका डर है। चन्द्रमा और सूर्य केवल मेरे साक्षी हैं। ४७७० मैं यदि क्षत्री-पुत्र हूँ तो तेजहीन क्यों होऊँगा। हे पिता ! आपके रहते हुये मैं किसी से भी नहीं डरूँगा। ४७७१ इन बातों को सुनकर दशरथ ने कहा कि तुम्हारे जाने पर मैं क्या यहाँ जीवित रह सकता हूं। ७२ हे रघुनाथ ! यदि तुम मुनि के साथ चले जाओगे तो हे पुत्र ! मुझे छोड़ देने पर मै बच न पाऊँगा। ७३ शोक से गद्गद् होकर उनके दोनों नेत्रों से अश्रुपात होने लगा। श्रेष्ठ राजा ने चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों की साक्षी दी। ७४ वह बोले हे धर्म देव ! मेरे श्रीराम की रक्षा करना। इतना कहकर राजा मन में दुःखी हो गये। ७५ उन्होंने श्रीराम को लेकर विश्वामित्र मुनि को सौप दिया और नाना प्रकार से उनकी विनती की। ७६ उन्होंने कहा मेरा यह राम बालक है और कुछ भी नहीं जानता। इसकी उम्र खेलने और घूमने की है। ७७ यह युद्ध की व्यवस्था नहीं जानता। आपका क्रोध देखकर मैंने राम को समर्पित कर दिया है। ७८ मेरे जाने पर पीछे कुछ भी हो। मेरा राम रंक का धन तथा मेरे प्राणों का आश्रय है। ७९ इतना कहकर शोक-जर्जरित श्रेष्ठ राजा श्रीराम का चिन्तन करते हुये बहुत दुःखी हुये। ४७८० समस्त रानियाँ अंतःपुर में रुदन करने लगीं और यह सुनकर सारे लोग अवाक् रह गये। ४७८१ ऐसा सुनकर वशिष्ठ ने अंतःपुर में जाकर रानियों को सांत्वना

बोइले रोदन गो नकर तुम्भे केहि । ए ऋषिक संगे गले बहुत भाग्य होइ ८३
अनेक जश करिण आसिबे एथकु । ए ऋषिक जोगुं निर्भय होइब बेळकु ८४
अनेक विद्या देबे ए बिश्वामित्र मुनि । पुत्रंकु जिणिबाकु ड़रिबे देबे पुणि ८५
शुणि राणीमाने शोक सम्भाळि हेले तुनि ।
बोइले मुनिंक कथा मुनि सिना जाणि ८६
वशिष्ठ बोइले आम्भंकु ज्ञाते न थिले । पुत्रंकु दिअ बोलि मुं कहन्तिकि भले ८७
राणीमानंकु वशिष्ठ बोध करि आसि । नृपति आगरे कथा कहन्ति बिशेषि ८८
जेणु निःशबद हेले अन्तःपुर । हसिण धनुशर धरिले रघुबीर ८९
धनुशर धरिण पितांक मुख चाहिँ । मारिवि दैत्य निश्चे कहिले शबदाइ४७९०
जाग रखि निश्चे मुं करिबि देब काज्यं । पितांकर चरणे ओळगे रघुराज४७९१
भितरपुरे मातामानंकु ओळगिले । सर्ब मातांक चरणे नमस्कार कले ९२
वशिष्ठंकु नमस्कार करिण कले पूजा । जाबाळि काश्यप वामदेबंक तनुजा ९३
मान्य धर्म करिण श्रीराम चळिगले । सुमित्रा मातांक पाशे प्रबेश जाइँ हेले ९४
देखिण सुमित्रा माता बोइले श्रीरामंकु ।
एका कम्पा जिब संगरे निअ लक्ष्मणंकु ९५
सान जननींक ठारु शुणिले श्रीराम । बोले संगे जिबाकु लक्ष्मण किरे मन ९६

दी । ८२ उन्होंने कहा कि आप लोग कोई भी रोदन न करें। इन ऋषि के साथ जाने पर इनका परम सौभाग्य होगा । ८३ यह अनेक यश अर्जित करके यहाँ लौटेंगे और इन ऋषि के कारण समय पर निर्भय रहेंगे । ८४ यह विश्वामित्र मुनि इन्हें नाना प्रकार की विद्याओं की शिक्षा देंगे, पुत्र को जीतने के लिये देवता भी भय करेंगे । ८५ यह सुनकर रानियाँ शोक को सँभालते हुये स्तब्ध होकर कहने लगीं कि मुनि की बात मुनि ही समझ सकते हैं । ८६ वशिष्ठ ने कहा हमें ज्ञात न होने से क्या मैं पुत्र को देने के लिये कहता ? । ८७ रानियों को आश्वस्त करके वशिष्ठ ने राजा के समक्ष आकर विशेषभाव से बताया जिससे अंतःपुर शांत हो गया था, तब रघुवीर राम ने हँसते हुए धनुष बाण धारण कर लिए । ८८-८९ धनुष बाण उठाकर उन्होंने पिता के मुख की ओर देखते हुए कहा कि मैं निश्चय ही दैत्यों का संहार करूँगा । ४७९० यज्ञ रक्षा करके मैं निश्चय ही देव कार्य करूँगा । यह कहते हुए रघुनाथ श्रीराम ने पिता के चरणों में प्रणाम किया । ४७९१ अन्तःपुर जाकर उन्होने माता के चरणो में प्रणाम करके सभी माताओं के चरणों में नमस्कार किया । ९२ उन्होंने वशिष्ठ को नमन करके उनकी पूजा की । जावालि, कश्यप तथा वामदेव आदि की पूजा करके श्रीराम चले गए तथा माता सुमित्रा के पास जा पहुँचे । ९३-९४ यह देखकर माता सुमित्रा ने श्रीराम से कहा कि तुम अकेले क्यों जाओगे । साथ में लक्ष्मण को ले लो । ९५ छोटी रानी से ऐसा सुनकर श्रीराम ने कहा,

शुणिण लक्ष्मण जे चरणे ओळगिले । तुम्भ संगे मुहिँ जिबि बोलिण बोइले ९७
तुम्भे गले मुहिँ किम्पा रहिबि बोइले । मातांकु जे नमस्कार करिण बाहारिले ९८
लक्ष्मणंकु संगरे घेनिण रघुनाथ । मोहर ड़ाहाण पखा होइलुरे भ्रात ९९
अन्य अन्य पिण्ड सिना नुहँइ एकरुण्ड । कउशल्यार चरुरु लक्ष्मणर पिण्ड४८००
श्रीराम लक्ष्मण बेनि एक भिन्न नुहँ । रूप भिन्न जननी देगळ हेबारु हे४८०१
भ्रथ शतृघन जे अटन्ति एक चरु । एकइ मूर्त्ति आम्भे चतुर्द्धा मूरतिरु २
जे जाहा पाशरे रहिले सुखे भले । श्रीरामंक पाशरु लक्ष्मण चळिगले ३
बिश्वामित्र मुनिंकि से नमस्कार करि । बोलु छन्ति श्रीराम शुण हे तपचारी ४
आगरे विजय़ हे मुनि तुम्भे कर । केबण बनरे करिछ जागशाळ घर ५
शुणिण सन्तोष हेले गाधिर नन्दन । श्रीराम लक्ष्मणंकु कल्याण कले पुण ६
आगे चले गाधिसुत राम लक्ष्मण पछे । मंगळाष्टक पढ़न्ति मुनि जाइँ पछे ७
हुळहुळि शबद नारीगणे करि । आगरे शंख चिल उड़े आहार धरि ८
संगरे पात्र मन्त्री सामन्त चळिजान्ति । भ्रथ शतृघन पछरे गोड़ाउ अछन्ति ९
देखिण श्रीराम जे नन्दिग्रामरे रहि । सामन्त पात्र मन्त्रींकि बुझाइ करि कहि४८१०

हे लक्ष्मण ! क्या साथ चलने का तुम्हारा मन है ? । ९६ यह सुनकर लक्ष्मण ने चरणों में प्रणाम किया तथा उन्होंने कहा कि मैं भी आपके साथ चलूंगा । ९७ उन्होंने कहा कि आपके जाने पर मै कैसे रहूँगा, फिर वह माता को प्रणाम करके निकल पड़े । ९८ लक्ष्मण को साथ लेकर रघुनाथ जी ने कहा हे भाई ! तुम हमारे दाहिने हाथ हो गये । ९९ पृथक-पृथक शरीर होने पर भी वह एक ही हैं क्योंकि कौशल्या के चरु के भाग से लक्ष्मण का शरीर निकला था । ४८०० श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनों एक हैं, भिन्न नहीं हैं। दो माताएँ होने से रूप भिन्न हो गए । ४८०१ भरत तथा शत्रुघ्न एक चरु से हैं। चार रूप होते हुए भी हम एक हैं । २ जो भी जिसके साथ है, सुखी है। तब श्रीराम के निकट से लक्ष्मण चले गए । ३ उन्होंने महर्षि विश्वामित्र को प्रणाम किया। तब श्रीराम ने कहा हे तपस्वी ! सुनिए । ४ आपने किस वन में यज्ञशाला निर्मित की है। हे महात्मन् ! आप आगे-आगे प्रस्थान करें । ५ यह सुनकर गाधि-नन्दन सन्तुष्ट हो गए और उन्होंने श्रीराम तथा लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया । ६ आगे गाधितनय और पीछे-पीछे श्रीराम तथा लक्ष्मण चल दिये। अन्य मुनि मंगलाष्टक पाठ करते हुए पीछे-पीछे चल रहे थे । ७ नारियों के समूह मांगलिक शब्द कर रहे थे। आगे शंख चील (श्वेत-चील) आहार लेकर उड़ने लगी । ८ सभासद, मंत्री और सामंत साथ-साथ चल रहे थे। भरत और शत्रुघ्न पीछे-पीछे दौड़ रहे थे । ९ यह देखकर श्रीराम ने नन्दीग्राम में रुककर सामंत, सभासद तथा मंत्री को समझाते हुये कहा कि मेरे पिता को चिन्ता में न डालना ।

बोइले मो पितांकु चिन्ता जे न देब । बिह्वळित चिन्ताकले बोध कराइब४८११
भरथकु बोइले शतृघनकु न छाड़िबु । असुर दुष्ट देखिले ओप्रोध न करिबु १२
एते बोलि श्रीराम सभांकि बोधकरि । समस्ते नन्दि ग्रामरु गलेक जे फेरि १३
दशरथंक आगे मिळिले जाइकरि । श्रीरामंक बोध बाक्य सबु जे पचारि १४
श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र पछे जान्ते । दुन्दुभि शन्द कले शून्यरे शचीनाथे १५
सकळ देबताए होइले रुण्ड पुण । बिचारन्ति श्रीराम आज बाहारिले जाण १६
एमन्त बिचारि देबे कुसुम बृष्टि कले । आम्भंकु चिन्ता जळरु उद्धरिबे भले १७
बृहस्पति बोइले धरणी होइब उश्वास । कोडिए बरष गले असुरे हेब नाश १८
एहि समय़रे श्वेत पारुआ उड़ाइ । आनन्द होइले देबे श्रीराम मुख चाहिँ १९
विश्वामित्र बोइले श्रीरामचन्द्र शुण । निश्चय़ जाग मोर हेबार कारण४८२०
देखिलि देबताए कुसुम बृष्टि कले । तुम्भकु जश अछि जणागला भले४८२१
ए समय़े गोपाळुणी दधि घेनि गले ।
बन्धु घरकु बन्धु ए माछ भार घेनिगले २२
बाम पाखुँ ड़ाहाणकु उदळिआ पक्षी उडि ।
जाहाण पाखु श्रृगाळ बाम पाखकु चळि २३
बेश्या स्त्री माने बेश होइछन्ति पुण । पञ्चा पञ्चा होइकरि करन्ति गमन २४

जब वह चिंता से व्याकुल हों तो उन्हें प्रबोध प्रदान करना । ४८१०-४८११ उन्होंने भरत से कहा कि तुम शत्रुघ्न को न छोड़ना और दुष्ट असुर को देखकर अनुग्रह न करना । १२ ऐसा कहकर श्रीराम ने सबको सांत्वना दी । सभी लोग नन्दीग्राम से लौट गये। १३ वह लोग दशरथ के समक्ष जा पहुँचे । उन्होंने श्रीराम के समस्त सांत्वना के शब्दों के विषय में जिज्ञासा की । १४ विश्वामित्र के पीछे श्रीराम और लक्ष्मण को जाते देखकर आकाश में शची के स्वामी (इन्द्र) ने दुन्दुभीनाद किया। १५ फिर समस्त देवतागण एकत्रित होकर विचार करने लगे कि आज श्रीराम निकल पड़े हैं। १६ ऐसा सोचकर देवताओं ने पुष्प वर्षा की और कहने लगे कि वह चिन्ता-जल से हमारा भली प्रकार उद्धार करेंगे । १७ बृहस्पति ने कहा कि वीस वर्ष व्यतीत होने पर राक्षसों का नाश हो जायेगा और पृथ्वो का उद्धार हो जायेगा । १८ इसी समय सफेद कबूतर उड़ा । देवता लोग श्रीराम का मुख देखकर प्रसन्न हो गये । १९ विश्वामित्र ने कहा हे श्रीराम ! सुनो । मेरा यज्ञ निश्चित्त रूप से रक्षित होगा । ४८२० मैंने देवताओं को कुसुम वर्षा करते देखा है । ज्ञात होता है कि तुम्हारा यश फैलेगा । ४८२१ इसी समय ग्वालिन दही लेकर निकली । मित्र के घर मित्र मछलियों का भार लेकर गया । २२ वाँयी ओर से उड़कर पक्षी विशेष दाहिनी ओर चला गया । श्रृंगाल दाईं ओर से वाँयी ओर चला गया । २३ वैश्या स्त्रियाँ श्रृंगार करके झुण्ड के झुण्ड चल पड़ीं । युवा स्त्रियाँ आश्चर्य से चकित

जुबा स्तिरीमाने जे होइण फुलणा । बिचारन्ति श्रीराम गमन केणे किना २५
बिश्वामित्रंक संगे श्रीराम लक्ष्मण चळि । अजोध्या नग्र सीमारु गले सेहि बळि २६
सरजू नदी कूळरे जाइण प्रबेश । श्री जगन्नाथ शरण मुँ बळराम दास २७
शुण गो हेमबन्ती श्रीराम कहाणी । जगमोहन नारायण विचित्र काहाणी २८
ईश्वर कहिबारु जे पार्बती शुणन्ति । बालमिक मुनिंकि प्रसन्न सरस्वती २९
गति मुक्ति निमन्ते मुँ ताहा वखाणइँ । तुण्डरे राम नाम मुँ नित्य सुमरइ४८३०
श्रीरामंक जन्म जे चतुर्द्धा मुरति । कमळांक जनम चतुर्द्धा रूप हेति४८३१
एक कथा बर्णिबाकु मनरे मोर श्रद्धा । सहस्र पदे सम्पूर्ण होइला ए अध्या ३२
एथु अनन्ते श्रीरामचन्द्र कथा भाळि । शारळा भगवती जे मनरे सुमरि ३३
दीन वन्धु चरणे समर्पि मन पुण । बळरामदास जे पशिला शरण ३४
पार्बतींक आगरे जे कहन्ति शूळपति । सप्तम अवतार नारायण कथा एथि ३५
बोलन्ति सदाशिब शुण गो शाकम्बरी । बेदवर बोइले नारदंकु ड़ाकिकरि ३६
तुम्भे एबे जाअ बाबु मञ्चपुर साध । दशरथ राणी हँसकु कहिकरि बोध ३७
बिधातार बचने नारद चळिगले । अजोध्या नग्ररे जाइ प्रबेश होइले ३८
नारद मिळिले जे कौशल्या राणी पुरे । देखिले राणीहँस सकळ शोकभरे ३९

होकर विचार करने लगीं कि श्रीराम कहाँ जा रहे है। २४-२५ विश्वामित्र के साथ श्रीराम लक्ष्मण चलते हुये उस समय अयोध्या नगरी की सीमा को पार कर गये। २६ वह लोग सरयू नदी के तट पर जा पहुँचे। मैं बलरामदास श्री जगन्नाथ की शरण में हूँ। २७ हे हिमांचलनंदनी ! संसार को मोहित करने वाले भगवान श्रीराम की अद्‌भुत गाथा श्रवण करो। २८ शंकर जी के कहने पर पार्वती ने सुना और सरस्वती महर्षि वाल्मीकि पर प्रसन्न हो गई। २९ सद्‌गति तथा मुक्ति के लिये मैंने उसका वर्णन किया है। मैं श्रीराम के नाम का स्मरण मुख से नित्य करता हूँ। ४८३० श्रीराम का जन्म चार रूपों में हुआ और लक्ष्मी भी चार रूपों में प्रकट हुयीं। ४८३१ इस कथा का वर्णन करने के लिये मेरे मन में श्रद्धा हुयी और यह अब एक हजार पदों में सम्पूर्ण हो गई। ३२ इसके पश्चात् श्रीराम के चरित्र का चिन्तन करते हुये मैं अपने मन में शारला देवी का स्मरण करता हूँ। ३३ दीनबन्धु भगवान के चरणों में मन को समर्पित करते हुये बलरामदास उनकी शरण में आया है। ३४ पार्वती के समक्ष शूलधर शंकर जी ने यह भगवान के सातवें अवतार की कथा कही। ३५ सदा कल्याण-कारी श्री शंकर जी बोले, हे शाकम्बरी ! सुनो। ब्रह्मा जी ने नारद को बुला कर कहा ! हे वत्स ! आप अब मृत्युलोक जाकर सम्हालिये तथा दशरथ की रानियों को समझाकर सान्त्वना प्रदान कीजिए। ३६-३७ ब्रह्मा के कहने पर नारद चले गये और अयोध्या नगर जा पहुँचे। ३८ नारद रानी कौशल्या के महल में गये और उन्होंने समस्त रानियों को शोक संतप्त देखा। ३९ नारद

नारदंकु देखिण सकळ राणीहँस । उठिण ओळगिले कळह ऋषि पाश४८४०
गंगाजळ आणिण चरण धोइदेले । चरण उदक नेइ समस्ते सेवाकले४८४१
बसिबाकु आसन देले सिंहासन । आलट विञ्चणिरे विञ्चन्ति नारीगण ४२
कौशल्या बोइले अइल मुनि केणे । विश्वामित्र मुनि नेले शंखाळि मोरधने ४३
आउ किस अछि जे आसिण अछ नेब । अन्धुणी करि नेले गाधिसुत देव ४४
सरन्ति दिन मोर बृद्ध काळजाए । चिन्तारे तनु मोर होइलाक क्षये ४५
नारद बोइले एबे आरवेनि पुत्र । नेबा पाइँ आम्भे जे होइलु उपगत ४६
स्वर्गरे सुरदेव करिबे जाग पुण । सेथिर सकाशरे भेदिले मोतेजाण ४७
कैकेयी बोइले जे ए कथा भलहेला ।श्रीरामंकु मुनि नेले भ्रथ स्वर्ग जाउ भला ४८
दशरथ राजन जे सकळ राणी घेनि । जमराजा पुरकु जे विजे करन्तु पुणि ४९
शुणिकरि नारद जे परम तोष हेले । न नेबुँ पुत्र आम्भे नभाळ मनेभले४८५०
दृष्टान्तर कथा कहि नारद तिआरन्ति । सकळ राणी हंसकु बुझाइ कहन्ति४८५१
तुम्भे राणीमाने जे रोदन न कर । पुत्रे बळिआरे त अटन्ति तुम्भर ५२
साक्षात नारायण त अटन्ति श्रीराम । असुर मारिवा पाइँ होइछन्ति जन्म ५३
जेणे गले श्रीरामर जश बहुत हुए । बिधाता कहिबारु आम्भे एथि आये ५४
बोइले दशरथ राणींक घरे जिब । विधाता देबता जे कहिले बोलिब ५५

को देखकर समस्त रानियों ने कलह करवा देने वाले महर्षि नारद के चरणों में प्रणाम किया । ४८४० उन्होंने गंगाजल लाकर उनके चरण धो दिये और सबने चरणोदक पान किया । ४८४१ उन्होंने उनके बैठने को सिंहासन दिया और नारियाँ व्यजन तथा पंखे डुलाने लगीं । ४२ कौशल्या ने कहा हे मुनि ! आप कहाँ से आ रहे है । महर्षि विश्वामित्र हमारा धन बटोर ले गये । ४३ और क्या है, जो आप लेने के लिये आये हैं । गाधिनन्दन हमें अन्धा करके ले गये । ४४ मेरी वृद्धावस्था व्यतीत हो रही है । चिन्ता से मेरा शरीर क्षीण हो गया है । ४५ नारद ने कहा कि आपके और दो पुत्र हैं । उन्हें लेने के लिये हम आये है । ४६ सुरराज इन्द्र स्वर्ग में यज्ञ करेंगे । इसलिये उन्होंने मुझे भेजा है । ४७ कैकेयी ने कहा यह बात ठीक हुयी । श्रीराम को मुनि ले गये और भरत स्वर्ग चले जायें । ४८ राजा दशरथ सभी रानियों को लेकर यमलोक प्रस्थान करें । यह सुनकर नारद अत्यन्त प्रसन्न हुये और बोले आप मन में चिन्ता न करें । हम पुत्र को नहीं लेंगे । ४९-४८५० नारद दृष्टांत सहित कथायें कहकर समस्त रानियों को समझाने लगे । ४८५१ हे रानियों ! आप रुदन न करें । आपके पुत्र तो बलवान है । ५२ श्रीराम साक्षात् नारायण हैं । उनका जन्म असुरों के संहार के लिये हुआ है । ५३ यहाँ भी जाने पर श्रीराम का बहुत यश होगा, ब्रह्मा के कहने पर हम यहाँ आये हैं । ५४ उन्होंने कहा कि तुम दशरथ के घर जाओ और हमारा कथन रानियों से कह

मिथिलारे शिव धनु भांगिबे कुमर । लक्षे राजा मुखे काळि लगाइबे चापधर ५६
जनक राजा दुहिता नाम सीता उमा । बरण माळा देइ बरिबे बेनिपुत्र किना ५७
एथिर बार्त्ता तुम्भे पाइब षड़ मासे । सकळ माता जिब दशरथ संगते ५८
तुम्भे गले श्रीराम लक्ष्मण बिभा जाण । एथकु किम्पा मने हेउछ बिमन ५९
श्रीहरिंक घरणी जन्म कमळा सेथि । अजोनि सम्भूते जन्म बेनि जे मृगाखि४८६०
आबर बेनिपुए जे संगे जिबे जाण । सेहि बिभा होइबे जे बेनि कन्याकु पुण४८६१
फेरिण आसिब जे निज राज्ये जाण । बिधिर बिधि बिधान बढ़ाइण पुण ६२
बाटे पर्शुराम भेटरे हेब कळि । तार धनु भांगिण ताकु देबे दळि ६३
ए कथामान पुण केहि न जाणन्ति । देबे मोते कहिबारु मुँ कहिलि एथि ६४
आगहुँ बिधाता अछि जे भिआइ । दैत्यंकु मारिबा पाइँ जन्म चारिभाइ ६५
सकळ राणीमानंकु नारद जाइ कहि । शुणिण राणीमाने आनन्द मन होइ ६६
एतेकहि राणीहंस पुरु चळिगळे । दशरथ राजांकर आगरे जाइ मिळे ६७
नारदकु देखिण अजोध्या राजा उठि । चरण तळे ओळगि होइला नरेन्द्रटि ६८
नारद पचारिले मनरे किम्पा खेद । शुणिकरि दशरथ शोके गद गद ६९
बोइले विश्वामित्र जे आसिथिले एथि । पिण्ड थाइ प्राण मोर घेनि गले सेटि४८७०

दो । ५५ पुत्र मिथिला में शिव जी के धनुष का खंडन करेगे और धनुर्धारी राम एक लाख राजाओं के मुख में कालिख पोत देंगे । ५६ राजा जनक की पुत्री जिनका नाम सीता तथा उमा है । वह दोनों पुत्रों को वरण माला देकर वरण कर लेंगी । ५७ यह समाचार आपको छह महीने में मिल जायेगा । सभी मातायें दशरथ के साथ जायेंगी । ५८ आपके जाने पर श्रीराम, लक्ष्मण का विवाह होगा । इस समय मन में दुःखी क्यों हो रही हो । ५९ वहाँ भगवान की पत्नी लक्ष्मी का जन्म हो गया है । दो मृगलोचनी अयोनिसम्भूता उत्पन्न हुयी हैं । ४८६० और जो दो पुत्र साथ जायेंगे । वह ही उन अन्य दोनों कन्याओ से विवाह करेंगे। फिर वापस अपने राज्य को लौट आयेंगे तथा विधि के विधान को सम्पादित करेंगे । ४८६१-६२ मार्ग में परशुराम से भेंट होने पर विवाद होगा । वह उनके धनुष को तोड़कर उनका मान-मर्दन करेंगे । ६३ यह बात कोई नहीं जानता है । देवताओं के बताने पर मैंने यहाँ प्रकाशित किया है । ६४ पहले से ही ब्रह्मा ने इसे निर्दिष्ट कर दिया है । दैत्यों का वध करने के लिये ही चारों भाइयों का जन्म हुआ है । ६५ नारद ने जाकर समस्त रानियों से इस प्रकार कहा । यह सुनकर रानियों के मन प्रसन्न हो गए । ६६ इतना कहकर नारद रानियों के महल से चलकर राजा दशरथ के समक्ष जा पहुँचे । ६७ नारद को देखकर अयोध्या नरेश ने उठकर उनके चरणों में प्रणाम किया । ६८ नारद ने पूँछा कि आप मन में दुख क्यों कर रहे है । यह सुनकर दशरथ शोक से विह्वल हो गए । ६९ उन्होंने कहा कि विश्वामित्र यहाँ आए थे । वह हमारे शरीर को

वृद्धकाळे चारिपुत्र जे पाइथिलि मुहिँ ।
बेनि पुत्र घेनिगले मोते अन्ध करिदेइ४८७१
नारद बोइले श्रीराम अटन्ति नारायण । लक्ष्मण तोर अनन्त हेतु करि जाण ७२
असुर मारिवाकु जन्म हेले एथि । तुम्भे किम्पा मनरे हेउ अछ दुखी: ७३
देवता दइव जे पेषिले तुम्भ पाश । बोइले दशरथ राजांकु बोधि आस ७४
बोलन्ति दशरथ नकर जे चिन्ता । शोक सन्ताप कले देवे करिबे अहन्त ७५
षड़ मास बेनि दिने शुणिबु श्रीरामर कथा ।
भागिरथी संगरे से होइबे जे लेखा ७६
एतेकहि नारद अन्तर्द्धाने गले । शुणिकरि दशरथ सानन्द मन कले ७७
शुणिलटिकि पार्वती गुपतमय़ रस । से पादकु भरसा जे बळराम दास ७८
शुण तुम्भे शशिमुखी एथुअनन्तरे । रघुनाथ रहिले जे सरजू नदी तीरे ७९
रजनी बञ्चिले सेठारे विविध कथा कहि।प्रभातरु स्नान कले ऋषि बेनि भाइ४८८०
श्रीराम लक्ष्मणंकु सकळ विद्या हेले । से विद्यामान-सबु सेठारे शिखाइले४८८१
स्नान सन्ध्या तर्पण सकळ विधि जेते । सारस्वत मन्त्र जे शिखाए तपोबन्ते ८२
श्रीराम लक्ष्मणंकु विद्या कराइ परापत। सेठारु चळिगले तिनि जण जे तुरति ८३
गंगाकूळे प्रबेश होइले पुण जाइ । देखिले ऋषिमाने तप करन्ति तहिँ ८४

छोड़कर प्राण ले गए । ४८७० मैंने वृद्धावस्था में चार पुत्र पाए थे । मुझे अन्धा बनाकर वह दो पुत्र ले गए । ४८७१ नारद ने कहा कि श्रीराम भगवान हैं तथा तुम्हारे लक्ष्मण अनन्तदेव है । ७२ असुरों का संहार करने को उन्होंने यहाँ जन्म लिया है । आप मन में दुखी क्यों हो रहे है । ७३ देवताओं तथा ब्रह्माजी ने मुझे आपके पास बोध प्रदान करने के लिये भेजा है । ७४ उन्होंने कहा कि हे दशरथ ! चिन्ता मत करो । शोक सन्ताप करने से आप देवताओं का अहित करेंगे । ७५ छै माह दो दिनों में आप श्रीराम का समाचार सुनेंगे । उनकी गणना भागीरथी के साथ होगी । ७६ इतना कहकर नारद अन्तर्ध्यान हो गए । यह सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हो गया । ७७ पार्वती ने यह गोपनीय रस श्रवण किया । बलराम दास को उन्ही चरणों का भरोसा है । ७८ हे चन्द्र-मुखी ! सुनो । इसके पश्चात् रघुनाथ जी सरयू नदी के तट पर ठहरे थे । ७९ नाना प्रकार की कथाएँ कहकर वहाँ रात्रि व्यतीत की । प्रात:काल ऋषि ने दोनों भाइयों के साथ स्नान किया । ४८८० उन्होंने श्रीराम तथा लक्ष्मण को समस्त विद्याओं की शिक्षा दी तथा उन्हें समस्त विद्याओं में पारंगत कर दिया । ४८८१ स्नान संध्या तर्पण आदि समस्त प्रकार की विधियों सहित तपोनिधि ने सारस्वत मंत्र की शिक्षा दी । ८२ श्रीराम, लक्ष्मण को विद्या प्राप्त कराकर तीनों लोग शीघ्र ही वहाँ से चल पड़े । ८३ फिर वह गंगातट पर जा पहुँचे, उन्होंने ऋषियों को वहाँ तप करते हुए देखा । ८४ पंक्ति की पंक्ति, वहाँ

विविध वृक्षमाने सेठारे पन्ति पन्ति। हरिड़ा बेल कइँथ बइजयन्ति ८५
नागेश्वर वरुण धळाआंकु चम्पावन। पळाश अशोक कञ्चन गुळुचि बास पुण ८६
जेउँठि लेम्बु कदळी कमळा टभा। बाहाडा उआउ पुण सपुरी बड़शोभा ८७
जम्बिल करमंगा लेम्बाउ दाराक्ष। शाळ क्षीर कोचिला अनेक बेणु वृक्ष ८८
खजुरी शाहाड़ा सुनारी गम्भारित। हेंगु वृक्ष कदम्ब अगवथु लोध गछ ८९
अएँळा गुजुराति ताळ जे नटिकाळ। राइ महुल आम्भ आषाढुआ फल४८९०
चन्दन लबंग पियूळी बड दारु। से वने पुष्प फळ डाळमाने गरु४८९१
बाघ भालु सेथिरे जे मइँषि गय़ळ। शशा मञ्जारि मूषा चरन्ति पलपल ९२
गुराण्डि सएम्बर बरेहा अपार। मृग हरिण सेथिरे अछन्ति पल पल ९३
काठ कटा जढ़ेइ कस्तुरी नामे मृग। लता मानंक भितरे कुक्कुट पक्षी राब ९४
गुळिचि लता तळे मर्कट देखा उछन्ति मुख। मरिच फळ खाइण मनरे विमुख ९५
शिआळि लता तळे सेहु खेळ खेळि। चारिवर्ण मर्कट केवणठारे मिळि ९६
रामंकु देखिण कपि हुअन्ति कुहाकुहि। एहि श्रीराम आज्ञारे पर्वत नेबा बहि ९७
भालु पल पल विचार करन्ति सेथि पुणि।
एहि श्रीरामचन्द्र समुद्रे बन्ध वान्धिबे जाणि ९८
लंकार रावणकु करिबा पाइँ नाश। आज्ञ कोड़िए वर्षरे दैत्य हेब शेष ९९

नाना प्रकार के वृक्ष लगे थे। हरड़, बेल, कैथा, बैजयन्त, नागेश्वर, वरुण श्वेत आंकु, (वृक्ष विशेष) चम्पावन, पलाश, अशोक, कंचन, गुर्च आदि सुगन्धित वृक्ष लगे थे। ८५-८६ जहाँ पर निम्बू, कदलो, कमला नीम्बू, अम्ल रस पूर्ण फल विशेष बहेड़ा पसई तथा शरीफे के वृक्ष शोभा पा रहे थे। ८७ जम्भीरी, कमरख, खट्टा, नींबू, दाख शाल, दूधिया, कोचिला तथा बाँस आदि अनेक प्रकार के वृक्ष लगे थे। ८८ खजूर शाखोट गम्भारी वृक्ष विशेष सुनारी हींग कदम्ब अग्नि-मन्थ वृक्ष लोध्र, आँवला, सुपारी, ताड़, नारियल, राई, महुए, आम, चन्दन, लौंग पीपल, बड़ पीपल, बड़ देवदार आदि वृक्षों की डालें उस वन में फूलों तथा फलों से गुरुतर हो रही थीं। ८९-४८९०-४८९१ बाघ, भालू, भैंसे, मृग विशेष, खरगोश, बिड़ाल, चूहे दल के दल चर रहे थे। ९२ लघुजाति के मृग विशेष साम्हर बरहा मृग हरिण आदि के वहाँ दल के दल विचर रहे थे। ९३ कठफोड़वा एवं कस्तूरी-मृग भी थे तथा लताओं की ओट में कुक्कुट पक्षी शब्द कर रहे थे। ९४ गुर्च की लता के नीचे बन्दर मुख दिखा रहे थे तथा मिर्च के फलों को खाकर खिन्न मन हो रहे थे। ९५ चार वर्णों के वानर शिआली लता के नीचे खेल-खेल रहे थे। ९६ राम को देखकर बन्दर किलकारी मारते हुए कह रहे थे कि इन्हीं श्रीराम के कहने से पर्वत ढोएँगे। ९७ फिर वहाँ पर दल के दल भालू विचार करने लगे कि यह ही श्रीराम समुद्र में सेतु बँधवाएँगे। ९८ लंका के रावण का नाश करने में तथा दैत्यों का संहार होने में और बीस वर्ष शेष हैं। ९९ ऋषि तथा दोनों भाइयों ने

मर्कटंकथा बेनि भाइ ऋषि शुणि। देब नागरी काक चरित पढ़ा जाणि४६००
विश्वामित्र बोइले शुण एहांकर बाणि।आगत कथामान जाणन्ति भाळिले पुणि४६०१
जाईफळ गछरे बरेहा उठिथिला। श्रीराम लक्ष्मणंकु देखिण पळाइला २
महुल गछतळे खेळन्ति श्वेत जे नेउळ। बण कुकुड़ा मथारे दिशे रंगफुल ३
भासन्ति शारि शुआ राम नाम वाणि। लाञ्ज मेलि नाचन्ति मयूर माने पुणि ४
फळिण तरुमाने लोटन्ति तळे पुणि।मुनिमानंक मढ़िआ पटान्तर कि जाणि ५
देखिण श्रीराम जे सन्तोष कले मन। ऋषिकि पचारिले ए बनर किसनाम ६
बोलन्ति ब्रह्ममुनि शुण दाशरथी। काम दहन बोलिण एहार नाम एथि ७
कामदेबर आश्रम एहाकु पुण बोलि। सबुकाळे तरुमाने एथिरे लहुलि ८
श्रीराम लक्ष्मण जे बिश्वामित्र तिनि। सेहि दिन सेठारे विश्राम कले पुणि ९
तपिगण आसिण मेळ सेथिरे हेले। से दिन सेठारे रहि रजनी वञ्चिले४६१०
प्रभात समयरे मिळिले गंगा कूळे। नित्यकर्म सारन्ते आदित्य उदे हेले४६११
कैबर्त्त नाव जे जोगाए बेगे आणि। सेथिरे बसिले श्रीराम लक्ष्मण ऋषि तिनि १२
हरषे कैबर्त्त नाव काढ़िण बाहि। उजाणिर स्रोतरे नेला टेकि सेहि १३
कात न पाइबारु धरिले केरुआळ। नाव मंगरे बसिण से बाहिला सत्वर १४

बन्दरों की भाषा सुनी तथा भावी चरित्रों का उन्हें ज्ञान हो गया। ४६०० विश्वामित्र ने कहा कि इनकी बातें सुनो। इन्हें भविष्य में घटने वाली घटनाओं का यथेष्ट ज्ञान है। ४६०१ जायफल के वृक्ष पर मयूर चढ़ा था। वह श्रीराम तथा लक्ष्मण को देखकर भाग गया। २ महुए के वृक्ष के नीचे सफेद न्योले खेल रहे थे। वन-कुक्कुट के मस्तक पर लाल फूल दिखाई दे रहा था। ३ मैना तथा तोते राम नाम कह रहे थे। पंख फैलाकर मयूर नाच रहे थे। ४ वृक्ष फलों से लदे पृथ्वी पर लोट रहे थे। मुनियों की झोपड़ियों की कोई तुलना नहीं थी। ५ यह देखकर श्रीराम का मन सन्तुष्ट हो गया। उन्होंने ऋषि से उस वन का नाम पूँछा। ६ ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने कहा हे दाशरथी सुनो। यहाँ इसका नाम कामदहन है। ७ इसे कामदेव का आश्रम भी कहा जाता है। यहाँ पर हर समय वृक्ष हरे भरे रहते हैं। ८ श्रीराम, लक्ष्मण तथा विश्वामित्र ने उस दिन वहीं विश्राम किया। ९ वहाँ पर तपस्वीगण भी आकर एकत्रित हो गए। उस दिन वहीं रहकर उन्होंने रात्रि व्यतीत की। ४६१० प्रभात वेला में वह गंगा तट पर पहुँच गए। नित्य कर्म समाप्त करते-करते सूर्योदय हो गया। ४६११ केवट ने शीघ्र ही नाव की व्यवस्था कर दी। उस पर श्रीराम, लक्ष्मण तथा ऋषि विश्वामित्र तीनों बैठ गए। १२ प्रसन्नतापूर्वक केवट नाव को निकाल कर खेने लगा। वह स्रोत के विपरीत दिशा में नाव ले गया। १३ बल्ली न लगने से उसने चप्पू पकड़ लिये और नाव के ऊपरी भाग पर बैठकर वह उसे शीघ्र

गंगा नदी मध्यरे नाव जे हेला जाइ। शब्देक शुभिला गंगार मध्ये तहिँ १५
श्रीराम पचारन्ति शुण महामुनि। गंगा नदी मध्यरे शबद शुभे पुणि १६
विश्वामित्र मुनि कहे शुण जगज्जिता। पूर्विरे बिधाता जे एठारे हेला चेता १७
रत्नगिरि परे बिजे जगतर मात। जोगलग्न करन्ते भेदिला शर दैत्य १८
तेणु से सरोबर होइला उतपति। से सरोबर थोइले मेरुर पछकति १९
तारनाम देले धाता, मेरु सरोबर। सेथिरु बहिण जे आसुअछि धार४९२०
सरोवररू जात हेबारु सरजु तार नाम। गंगा सागर संगमे मिशिहेला सम४९२१
थोकाए दुर सेहु एक अंगरे जाइ। पुणि बारणरे अलगा जाए बहि २२
अजोध्या चम्पावती देश घेरिआसि। गंगा सरजु सागर एका जाण रघुशिषि २३
तिनि पुरुष मेळरे कथा हुए जाणि। स्वामीर संगते से शब्द शुभे पुणि २४
एसनक बाणि मुनिर ठारु शुणि। बोइले ए कीर्त्ति पूर्बे केहु कला पुणि २५
मुनि बोले तुम्भ उपर अंशे भगिरथी। बिष्णु सेवाकरि गंगा मथारे बुहाइलेटि २६
शुणिण राम लक्ष्मण मने तोष हेले। गंगा नदी जळ आणि मस्तके सिञ्चिले २७
एथु अनन्तरे नाव चळिगला पुणि। उत्तर कूळे नाव मिळे ततक्षणि २८
नावरु ओहलाइ श्रीराम लक्ष्मण ऋषि तिनि।
नाउरिआ चळिगला आरकूळे पुणि २९

खेने लगा। १४ नाव गंगा नदी के बीच पहुँच गई। वहाँ गंगा के बीच एक शब्द सुनाई पड़ा। १५ श्रीराम ने पूँछा हे महामुनि सुनिये। गंगा नदी के मध्य में यह कैसा शब्द सुनाई दे रहा है। १६ विश्वामित्र ने कहा हे जगत्‌जयी राम ! सुनो। ब्रह्मा को पहले यहीं ज्ञान हुआ। १७ जगत्माता के रत्नगिरि पर पहुँच कर योग में लीन होने के समय दैत्य ने बाण छोड़ दिया। १८ इसलिये वह सरोवर उत्पन्न हो गया। उसे मेरु पर्वत के पीछे के भाग में अवस्थित कर दिया गया। १९ विधाता ने उसका नाम मेरु सरोवर रक्खा। वहीं से बहकर धारा आ रही है। ४९२० सरोवर से उत्पन्न होने से उसका नाम सरयू पड़ा। गंगा-सागर संगम में मिलकर वह बराबर हो गया। ४९२१ थोड़ी दूर तक एक साथ जाकर फिर वह पृथक होकर बहता है। २२ उसने अयोध्या तथा चम्पावती प्रदेश को आकर घेर लिया है। हे रघुनन्दन ! गंगा सरयू तथा सागर को एक ही समझो। २३ तीन पुरुषों के मिलाप से स्वामी के साथ यह शब्द हो रहा है जो सुनाई पड़ रहा है। २४ मुनि से इस प्रकार की बात सुनकर उन्होंने पूँछा कि यह कीर्ति पूर्वकाल में किसने की। २५ मुनि ने कहा कि तुम्हारे पूर्व पुरुष भगीरथ ने विष्णु की सेवा करके गंगा को मस्तक पर बहाया। २६ यह सुनकर श्रीराम तथा लक्ष्मण का मन सन्तुष्ट हो गया। उन्होंने गंगा नदी का जल लेकर मस्तक पर छिड़क लिया। २७ इसके पश्चात् नाव चल पड़ी तथा उसी समय उत्तरी तट पर पहुँच गई। २८ श्रीराम, लक्ष्मण तथा महर्षि विश्वामित्र नाव से

देखिला गंगा कूळरे निविड़ घोर वन। अति भयंकर जे गहन कानन४६३०
श्रीराम पचारिले शुण हे ब्रह्ममुनि। ए वनर नाम किस कह तपोधनि४६३१
विश्वामित्र बोइले पूर्वे रुचिक नाम दैत्य। ए वन रूपिता घर कला जतनेत ३२
असुर ए स्थानरे तपकरि जाण। हुताशन ठारु दैत्य वरपाइलाक पुण ३३
वरपाइ मनाइला अग्नि देवतांकु। तुम्भंकु वळितेज दिअ हे आम्भंकु ३४
जे मोते विवादी हेव ताकु मुँ भष्मकरि।तेवे मोर नाम जे विख्यात तिनिपुरी ३५
वैशानर बोइले तु सर्भिकु जिणिवु। वरुणसंगे कळि कले निश्चय मरिवू ३६
एते कहि वैशानर अन्तर्द्धान हेले। असुर वरपाइ तिनिपुर जिणिले ३७
ताहार पादभारे कम्पिला तिनिपुर। देवताए कहिले जाइ इन्द्रर छामुर ३८
शुणिण सुर राजा वृहस्पतिकि पुछि। ए दैत्य मृत्यु हेव काहार हस्तरेटि ३९
वृहस्पति बोइले वरुण हस्ते मरि। जळरे बुड़िले दैत्य भष्म होइकरि४६४०
शुणिण सुर राजा वरुणकु सुमरि। वरुण मिळन्ते कहिले हेतु करि४६४१
जाणिकरि वरुण काळवेळ जगि। गंगा वारेणिकि से असुर गला वेगि ४२
सरजू गंगारे सेहु करन्ति जे स्नान। भष्म हेला दैत्य जळ लागन्तेण पुण ४३

उतर पड़े। और नाविक दूसरे किनारे पर चला गया। २९ उन्होंने गंगा तट पर घना जंगल देखा। वह गहल कानन अत्यन्त भयंकर था। ४६३० श्रीराम ने कहा हे ब्रह्मर्षि ! सुनिये। हे तपोधन ! इस वन का नाम क्या है। ४६३१ विश्वामित्र ने कहा कि पूर्वकाल में एक रुचिक नाम का दैत्य था। इस वन में उसने अपना घर यत्न से वना लिया था। ३२ उस दैत्य ने इस स्थान पर तपस्या की। फिर उसने अग्निदेव से वर प्राप्त किया। ३३ उसने अग्निदेव को प्रसन्न करके वर प्राप्त किया और कहा कि आप अपना वल तथा तेज हमें प्रदान कीजिये। ३४ जो मुझसे युद्ध करे मैं उसे भस्म कर दूंगा। तव मेरा नाम तीनों लोकों में प्रसिद्ध होगा। ३५ अग्नि देव ने कहा कि तुम सव लोगों पर जय प्राप्त करोगे परन्तु वरुण के साथ शत्रुता करने पर निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होगे। ३६ इतना कहकर अग्नि देव अन्तर्ध्यान हो गए। राक्षस ने वर पाकर तीनों लोकों को जीत लिया। ३७ उसके पदाघात से तीनों लोक काँपने लगे तव देवताओं ने जाकर इन्द्र से सव कह सुनाया। ३८ यह सुनकर देवराज इन्द्र ने वृहस्पति से पूँछा कि इस दैत्य की मृत्यु किसके हाथों से होगी। ३९ वृहस्पति ने कहा कि यह वरुण के हाथों मारा जाएगा। जल में डूवने से यह जलकर भस्म हो जाएगा। ४६४० यह सुनकर देवराज ने वरुण का स्मरण किया तथा उनके मिलने पर कारण समझा दिया। ४६४१ यह जानकर वरुण ने समय की प्रतीक्षा की। वह असुर शीघ्र ही गंगा स्नान के लिये गया। ४२ सरयू-गंगा में स्नान करते हुए जल के स्पर्श होते ही वह दैत्य भस्म हो गया। ४३ दैत्य की मृत्यु हो

पृथिबी स्थिर हेला दैत्य जेणु मरि। तेणु बरुणकु देबे अभिषेक करि ४४
जेणु से असुर निर्मळ जळे मला। तेणु ए वन नाम निर्मळ होइला ४५
आबर कथाए तुम्भे शुण हे श्रीराम। कहुअछि श्रीराम लक्ष्मण हे शुण ४६
कुम्भ ऋषि तनुज अटन्ति अगस्ति। से मुनि तप जे कलेक रहि एथि ४७
उद्धर्व मुखरे से, जे बहुत तप कले। ब्रह्मऋषि संगरे गणिता जे हेले ४८
अनेक कष्टरे तप कले पुण जहुँ। पितृलोक आसिण प्रबोध हेले तहुँ ४९
पुत्र न थिले पुण तपरे किस कार्ज्य। सकळ धनर मूळ अटे जे तनुज४९५०
पुत्र निमन्ते चिन्ता कर हे ब्रह्म ऋषि। पश्चान्ते जपतप करिब तुम्भे बसि४९५१
पितृगणंक ठारु से शुणिले सिद्धान्त। मने मने भाळिले अगस्ति तपोबन्त ५२
पुत्र हेबा कारण आनरे कार्ज्य नाहिँ। कुळ रक्षा निमन्ते पितृ गले कहि ५३
पितृ लोकंकर कथा पाळिबा नियत। अवश्य बारे जात करिबा नन्दनत ५४
एते बिचारि मुनि गन्ध नदी तीरे। प्रबेश होइले जाइ अगस्ति मुनिबरे ५५
देखिण गन्धर्ब राजन कले पूजा बिधि। बोइले सफळ हेला देखिलु तपोनिणि ५६
बेदबर समाने मुनि आजि मुँ देखिलि। अनेक जन्मर पाप लेछि पकाइलि ५७
केबळ कारणरे अइल महाऋषि। गन्धर्ब राजन बचने अगस्ति मुनि भाषि ५८
बोइले तोर पुरे अछि जे दुहिता। नवमुद्रा बोलिण जेबण तोर सुता ५९

जाने पर पृथ्वी स्थिर हो गई। तब देवताओं ने वरुण का अभिषेक किया। ४४ जब वह दैत्य निर्मल जल में मर गया तभी से इस वन का नाम निर्मल-वन पड़ा। ४५ हे श्रीराम तथा लक्ष्मण और एक कथा सुनो। मैं तुमसे कह रहा हूँ। ४६ कुम्भ ऋषि के पुत्र अगस्त ने यहाँ रहकर तपस्या की थी। ४७ उन्होंने ऊर्ध्वमुख होकर बहुत तप किया और फिर उनकी गणना ब्रह्मर्षियों में हो गई। ४८ जब उन्होंने नाना प्रकार के कष्टों से तपस्या की तब पितर लोकों ने आकर प्रबोधित करते हुए कहा कि पुत्र न होने से फिर तप का क्या प्रयोजन ? समस्त धन का मूल पुत्र है। ४९-४९५० हे ब्रह्मर्षि ! पुत्र के लिये चिन्ता करो। फिर पीछे बैठकर जाप-तप करना। ४९५१ उन्होंने पितृगणों से सिद्धान्त सुना और तपस्वी अगस्त मन ही मन सोचने लगे। ५२ पुत्र होना ही कारण है। अन्य कुछ कार्य नहीं। पितृ लोग कुल की रक्षा के लिये कह गये हैं। ५३ पितरों की आज्ञा का पालन करने के लिये एक बार अवश्य ही पुत्र उत्पन्न करूँगा। ५४ ऐसा सोचकर मुनिश्रेष्ठ अगस्त गन्ध नदी के तट पर जा पहुँचे। ५५ उन्हें देखकर गंधर्वराज ने विधि से उनकी पूजा की और कहा हे तपोनिधि ! आपको देखकर हम सफल हो गये। ५६ मैंने आज ब्रह्मा के समान तपस्वी देखा है और अनेक जन्मों के पापों को उतार फेंका है। ५७ हे महर्षि केवल आप कारणवश आये हैं। गंधर्वराज के वचनों को सुनकर महर्षि अगस्त ने कहा। ५८ आपके भवन में जो पुत्री है। उसका नाम नवमुद्रा है। ५९ उस रूपवती का विवाह मुझसे

आम्भंकु से कन्या विभा करिव रूपवन्ती । शुणिकरि बोइले गन्धर्वा नृपति४९६०
ए तुम्भर आज्ञाकु मुँ न करइ आन । नव मुद्रा दुहिता मोर तुम्भरे प्रदान४९६१
एहा कहि राजन मण्डिले नग्रपुर । से दिन मंगळ कृत्य कलेक मुनिवर ६२
आर दिन वेभार सम्भार वेगे करि । वेशकरि दुहिताकु आणिले दण्डधारी ६३
सम्भवें विधि बिधान विभा जे कराइले । अनेक धनरत्न जउतुक देले ६४
से कन्याकु घेनिण अइले अगस्ति । निज आश्रमरे जाइ प्रवेश हेलेटि ६५
अनेक भोग ताकु घेनिण विळसिले । काळेण पुत्र तारठारु उपुजिले ६६
धनु वाहन बोलिण नाम देले तार । सुन्दर सुकुमार हेले से आम्भर ६७
ए रूपे श्रीराम हे अगस्ति मुनि कथा । भो मुनि धार्मिक जे अटइ महाज्ञाता ६८
पूर्वे असुर थिले आतापि वातापि । से बेनि भ्रात जे ए वनरे रहिथान्ति ६९
ए बन भितरे माया पुरेक से रचि । बाटे गला लोकंकु जतने डाकि रखि४९७०
आतापिकि मेण्ढा करिण वान्धि थाइ जे वातापि ।
पथुकी रखिकरि से मेण्ढा मारइटि४९७१
ब्राह्मण रूप धरिण पाक करे रन्धा । जतने रान्धिकरि मनरे हुए थण्डा ७२
शउच स्नान सारि आसन्ति पथुकी जन । वातापि माया रूपरे परशे नेइ अन्न ७३
मेण्ढा माएँष तिअण बेगे से आणि दिए । बिदेशी लोकमाने भुञ्जिण तोषहुए ७४

कर दीजियेगा। यह सुनकर गंधर्वराज ने कहा। ४९६० आपकी इस आज्ञा को मैं अन्यथा नहीं करूँगा। मैं अपनी पुत्री नवमुद्रा आपको प्रदान करता हूँ। ४९६१ ऐसा कहकर राजा ने नगर तथा महल को सजवाया। मुनिश्रेष्ठ ने उस दिन मांगलिक कृत्य किये। ६२ दूसरे दिन शीघ्र ही विवाहोत्सव में दण्डधारी राजा अपनी कन्या को श्रृंगार करके ले आये। ६३ बड़ी धूम-धाम से विधि-विधानपूर्वक विवाह कराया तथा प्रचुर धनरत्न तथा उपहार प्रदान किये। ६४ अगस्त उस कन्या को लेकर आ गये और अपने आश्रम में जा पहुँचे। ६५ उसको लेकर उन्होंने नाना प्रकार से भोग-विलास किया। समय पर उससे पुत्र उत्पन्न हुये। ६६ उन्होंने उनका नाम धनुवाहन रक्खा, जो सुन्दर और सुकुमार थे। ६७ हे श्रीराम ! अगस्त की कथा इस प्रकार से है। वह मुनि धार्मिक तथा महान ज्ञानी है। ६८ पूर्वकाल में आतापी और वातापी दैत्य थे। वह दोनों भाई इस वन में रहते थे। इस वन के भीतर एक माया-महल का निर्माण करके रास्ते चलते लोगों को यत्न से बुलाकर अटका लेते थे। ६९-४९७० आतापी को मेढ़ा बनाकर वातापी बाँध लेता था और बटोही को रोककर वह मेढ़ा मारता था। ४९७१ वह ब्राह्मण का रूप धारण करके रसोई पकाता था और यत्नपूर्वक पका लेने पर उसका मन ठंडा हो जाता था। ७२ शौच, स्नान करके राहगीर आते थे वातापी माया रूप से अन्न लेकर परोसता था। ७३ बना हुआ मेढ़े का माँस लाकर शीघ्र ही देता था। परदेशीजन खाकर संतुष्ट हो

आचमन सारि से भुञ्जन्ति ताम्बुळ। से माउँस जेहु खाए पशे ता हृदय़र ७५
बातापि ड़ाक दिए आतापि बेगे आस। भुञ्जि बुटिकि बाबुरे सुपक्व माएँस ७६
ड़ाक शुणि आतापि जीअइँ गर्भे थाइ। निज रूपकु धरिण गर्भु बाहार होइ ७७
पेट फाटि जाअन्ते जे पथुकी मरन्ति। हरषरे बेनि भाइ ताहाकु खाआन्ति ७८
एहि रूपे नित्ये खाआन्ति पथुकी जन मारि।
हरषरे बेनिभाइ खाइण दिन सारि ७९
जाणि शुणि पथुकी जे से पथे नगले। न जाणिबा लोक गले से बाटरे मले४९८०
से पथ पड़िला जे न गले सेथि केहि। बेदबर आगरे जे देबे जाइ कहि४९८१
शुणिण पितामह अगस्ति बेगे पेषि। जाअ मुनि तुम्भे दैत्यंकु आस नाशि ८२
बिधातार वचने चळिले कुम्भसुत। कमण्डळ करे धरि बिजय़े तपोबन्त ८३
सेहि पथरे ऋषि कले जे गमन। आतापि बातापि दुहेँ देखिले तांकु पुण ८४
देखिण रुहाइला बातापि नामे दैत्य। बोइला मुनि मुँ जे करिण अछि सत्य ८५
भो मुनि आज मोर पितृ दिवस श्राद्ध।
तुम्भंकु देखिलि मोर सुफळ बड कार्ज्य ८६
क्षणके बिश्राम करिण एथरु जाअसि। भल मेण्ढा गोटिए जे मुहिँ अछि पोषि ८७
से मेण्ढाकु मारिबि मुँ पितृकार्ज्य अर्थे। गय़ा श्राध फळ जे प्रापत हेब मोते ८८

जाते थे। ७४ वह आचमन करके पान खाते थे वह माँस जो भी खाता था, वह उसके हृदय में घुस जाता था। ७५ वातापी पुकारता कि आतापी शीघ्र आओ। अरे भाई! भली प्रकार से पके हुये माँस को थोड़ा सा खा लो। ७६ पुकार सुनकर गर्भ में स्थित आतापी जीवित हो जाता और अपना रूप धारण करके गर्भ से बाहर आ जाता। ७७ पेट फट जाने से वह पथिक मर जाता था फिर प्रसन्नतापूर्वक दोनों भाई उसे खा जाते थे। ७८ इसी प्रकार से नित्य बटोहियों को मारकर खाया करते थे तथा खा-पीकर दोनों भाई प्रसन्नता से दिन बिताते थे। ७९ जो लोग इस बात को जानते थे वह उस रास्ते से नहीं जाते थे। अनजान लोग उस मार्ग से जाने पर मारे जाते थे। ४९८० वह मार्ग पड़ने से कोई भी आगे नहीं जाता था। तब देवताओं ने जाकर ब्रह्मा जी से सब बताया। ४९८१ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने अगस्त को शीघ्र ही भेजा, उन्होंने कहा हे मुनि! तुम जाकर दैत्य को मारकर आ जाओ। ८२ कुम्भज ऋषि ब्रह्मा के वचनों से वहाँ गए। वह तपोधन कमण्डल हाथ में लेकर पहुँचे। ८३ ऋषि उसी मार्ग से गए। आतापी तथा वातापी दोनों ने उन्हें देखा। ८४ यह देखकर वातापी नामक दैत्य ने उन्हें रोक लिया तथा बोला कि हे मुनि! हमने प्रतिज्ञा की है। ८५ हे मुनि आज मेरे पितरों का श्राद्ध-दिवस है। आपको देखकर हमारा बड़ा कार्य सिद्ध हो गया। ८६ एक क्षण यहाँ विश्राम करके जाइये। मैंने एक अच्छा सा मेढ़ा पाल रक्खा है। ८७ पितरों के कार्य के लिये मैं उस मेढ़े

हसिण मुनिबर बोइले वचन। कर बेगे रन्धन जे करिबा भोजन ८९
शुणिण बातापि बेगे मेण्ढाकु मारिला। माएँस काटिकरि जतन ताकु कला४९९०
आपण पाक से जे सम्पादे षड़रस। उत्तम प्रकारे से जे अन्न रान्धिण बिशेष४९९१
देखिण स्नानकरि अइले मुनिबर। पत्र पाणि घेनिण बसिले भोजनर ९२
बातापि ब्राह्मणरूपे परषइ अन्न। माएँष तिअण मुनि करन्ति भोजन ९३
मुनि पचारिले अछटिकि हे आउ। आम्भकु सन्तोष कर भाग्य जे तोर हेउ ९४
हसिण बातापि जे परशे सबु आणि। भुञ्जिण सन्तोष जे होइले तपोधनि ९५
आचमन सारिण बसिले महाऋषि। कमण्डळरु पाणि पिइले जाणि सेटि ९६
भस्म मन्त्र पढ़ि मुनि पेट आउँसिले। जेतेक भुञ्जि थिले समस्ते भस्म हेले ९७
एथु अनन्तरे जे बातापि दैत्य पुण। ऋषिक आगरे जाइ बसिले तुरितेण ९८
उच्चे ड़ाक देला जे आतापि बेगे आस।
आस भाइ भोजन करिबा न कर अळस ९९
अगस्ति बोइले आउ काहुँ से आसिब। गर्भरे पढ़िण से जीर्ण मने भाब५०००
से काहुँ आसिबटि जीर्ण होइगला। बिश्वास घातक हेल दैत्यरे तुम्भे परा५००१
क्रोधरे अगस्ति ऋषि सेठारु उठि गले।
कमण्डळरु जळ सिञ्चि असुर भस्म कले २

को मारूँगा। तब हमें गया-श्राद्ध का फल प्राप्त होगा। ८८ श्रेष्ठ मुनि ने हँसते हुए कहा कि शीघ्र ही रन्धन करो, मैं भोजन करूँगा। ८९ यह सुनकर वातापी ने शीघ्र ही मेढ़े को मार दिया। मांस काटकर उसे यत्नपूर्वक रखा। ४९९० वह स्वयं उत्तम प्रकार के षड्रस व्यंजन पकाकर विशेष प्रकार से रसोई बनाने लगा। ४९९१ यह देखकर स्नान करके श्रेष्ठ मुनि आ गए तथा पत्तल और जल लेकर भोजन करने बैठ गए। ९२ ब्राह्मण के रूप में वातापी भोजन परोसने लगा। वह माँस देता था और मुनि खा रहे थे। ९३ मुनि ने पूँछा, क्या और भी है ? तुम हमें सन्तुष्ट करो जिससे तुम्हारा भाग्योदय हो। ९४ मुस्कराते हुए वातापी सब कुछ लाकर परसने लगा। तपोवन्त ऋषि भोजन करके तृप्त हो गए। ९५ महर्षि आचमन करके बैठ गए। फिर उन्होंने विचारपूर्वक कमण्डल का जल पिया। ९६ मुनि ने भस्म-मंत्र पढ़कर पेट सहलाया। उन्होंने जो भी खाया था वह सब भस्म हो गया अर्थात् पच गया। ९७ इसके पश्चात् फिर वातापी दैत्य ऋषि के समक्ष जाकर शीघ्र ही बैठ गया। ९८ उसने उच्च स्वर में पुकारा, अरे आतापी शीघ्र आओ और भाई ! थोड़ा भोजन कर लो। ९९ अगस्त ने कहा कि अब और वह कहाँ से आएगा। तुम यह मनमें समझ लो कि वह पेट में पड़कर जीर्ण हो गया। ५००० वह कैसे आएगा। वह तो जीर्ण हो गया। अरे दैत्य ! तुम विश्वासघाती हो गए। ५००१ अगस्त ऋषि क्रोध से उठकर वहाँ से चले गए तथा उन्होंने कमण्डलु से जल छींटकर असुर को भस्म

भस्म होइगले जे से बेनि असुर। देखिण पुष्प बृष्टि कले सुनाशिर ३
दैत्य बिनाशि ऋषि चळिगले पथ। धन्य अगस्ति बोलि बोइले दइवत ४
शुण तुम्भे श्रीराम अगस्तिक महिमा। बड़ प्रतापी अटे से ऋषिक महिमा ५
श्रीराम पचारिले शुण ब्रह्ममुनि। आउ किस कले से अगस्ति मुनि पुणि ६
बिश्वामित्र बोइले शुण हे श्रीराम। अगस्ति ऋषि अटन्ति मुनिरे उत्तम ७
सात समुद्रकु ऋषि चळु करिदेइ। मन्त्रर बळरे सिन्धु गर्भरे जिर्ण होइ ८
शुखि गला सात समुद्र पाणि पुण। बरुण राजा बिकळ होइला देखिण ९
बिधातार आगरे बरुण कहे जाइ। जळ शुखिलारु मिन गले लीन होइ५०१०
किरूपे स्थळरे मुँ होइबि राजन। सपत द्वीप पृथ्वी एकइ हेला जाण५०११
शुणिकरि बिधाता बरुणे बोध कले। तोर दोषु सागर शुखिला एबे बळे १२
अगस्तिकर पिता जे अटन्ति कुम्भ ऋषि।
तोहर तरंग मन्त्री ताहाकु बळे नाशि १३
सेथिर फळ एबे पाइलुना राए। सातजुग परिजन्ते सागर स्थित नुहें १४
सात जुग अन्ते शून्यरु गंगा आसि। तेबे से सपत सागर हेब स्थिति १५
शुणिकरि बरुण चिन्ताकरि रहि। एमन्ते सातजुग सेथिरे गला बहि १६
सातद्वीप जाक जहुँ हेले एकमेळ। छपन कोटि जीव जे होइले उत्कुळ १७

कर दिया। २ वह दोनों दैत्य भस्म हो गए। यह देखकर इन्द्र ने पुष्पों की वर्षा की। ३ दैत्य को नष्ट करके ऋषि मार्ग पर चल पड़े। देवता उन्हें कहने लगे, हे अगस्त! तुम धन्य हो। ४ हे श्रीराम! तुम अगस्त की महिमा सुनो। वह ऋषि महिमावान तथा बड़े प्रतापी हैं। ५ श्रीराम ने कहा हे ब्रह्मर्षि! सुनिए। फिर अगस्त ऋषि ने और क्या किया। ६ विश्वामित्र ने कहा हे श्रीराम! सुनो। अगस्त ऋषि मुनियों में श्रेष्ठ हैं। ७ ऋषि ने सात समुद्रों का आचमन कर लिया था तथा मंत्र के बल से उसे पचा डाला था। ८ फिर सात सागरों का जल सूख गया। यह देखकर राजा वरुण व्याकुल हो गए। ९ उन्होंने ब्रह्मा के समक्ष जाकर निवेदन किया कि जल समाप्त होने से मछलियाँ समाप्त हो गईं। ५०१० इस स्थल का राजा मैं कैसे रहूँगा। यह सप्तद्वीप पृथ्वी तो एक ही हो गई। ५०११ यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा कि तेरे ही अपराध के कारण बलपूर्वक समुद्र सूख गया है। १२ अगस्त के पिता कुम्भ ऋषि को तुम्हारे मंत्री तरंग ने बलपूर्वक मार दिया था। १३ हे राजन्! उसी का फल तुम्हें प्राप्त हुआ है। सतयुग पर्यन्त अब सागर की स्थिति नहीं रहेगी। १४ सतयुग की समाप्ति पर आकाश से गंगा आएगी। तब सातों समुद्र भरेंगे। १५ यह सुन वरुण चिन्तित रहने लगे। इस प्रकार सतयुग व्यतीत हो गया। १६ सप्तद्वीप मिलकर एक हो गए थे। छप्पन करोड़ जीव उत्कर्ष में आ गए। देवता असुर नर तथा वानर हिंसा करके युद्ध में लग गए। कोई

देबे असुरे जे नरे बानरे मिळि। हिंसा करि समस्ते लगाइबे कळि १८
केहि काहाकु न माने बढ़मान पण। देखिण बिधाता जे बिचार कले जाण १९
रबिंकि बोइले तुरे पुत्रेक जात कर। तपन कुळरे मर्त्यपुररे नृपवर५०२०
तेबे से सप्त सागर होइबाकु पुणि। नोहिले नाश गलाटि मर्त्यपुर धरणी५०२१
शुणिण माया देवता माय़ा नारीकि राइ। तार संगे रमण कले छाय़ा साइँ २२
रबि बोर्ज्य उछुळन्ते माय़ानारी गर्भे स्थित।
दश दिने से नारी गर्भरु पुत्र जात २३
एकोइश दिनरे देह शुद्ध कले। नाम गोटि ताहार सगर बोलि देले २४
दश मासे कुमर नबजुबा पुण। मिनरु बेदबर जात कले पुण २५
अजोनि सम्भूत नारी जन्म होइण जुबा। सगर राजांकु देइ तांकु कले बिभा २६
बेनि जण एकमुख होइबारु जाण। रति प्रीति करन्ति बनस्तरे पुण २७
स्थान न पाइ सागर उद्धर्व मुख साधि। कळिजुग गोटि जे बहिला तपे बेगि २८
सत्य जुग अन्तरे वेदवर गले। किम्पाइँ तप करँ बोलिण पचारिले २९
सगर बोइले पिता न पाइलि स्थान। तेणु जे व्याकुळ होइला मोर मन५०३०
दइब बोले एबे आम्भ बोले आस। अजोध्या देशरे तु होइबु नरेश५०३१
एते कहि संगरे घेनिण चळि गले। अजोध्या देशरे नेइ राजन तांकु कले ३२
एमन्ते तपन कुळ सूर्ज्य बंशरे जात। आदित्यर नन्दन तुम्भ उपर बंशत ३३

किसी को बड़ा नहीं मानता था यह देखकर ब्रह्माजी ने विचार किया। १७-१८-१९ उन्होंने सूर्य से कहा एक पुत्र उत्पन्न करो जो सूर्यवंशी मृत्यु लोक का श्रेष्ठ राजा हो। ५०२० तब पुनः सात समुद्र स्थित हो जॉय। अन्यथा मृत्युलोक की पृथ्वी नष्ट हो जाएगी। ५०२१ यह सुनकर प्रभा के देव छायानाथ ने माया स्त्री को बुलाकर उसके साथ रति प्रसंग किया। २२ सूर्य का वीर्य स्खलित होने से माया नारी के गर्भ स्थित हो गया। उस नारी के गर्भ से दस दिनों में पुत्र उत्पन्न हो गया। २३ इक्कीस दिनों में शरीर शुद्ध हुआ। उसने बच्चे का नाम सगर रक्खा। २४ दस महीने में बालक नवयुवक हो गया। फिर ब्रह्मा ने मछली से एक कन्या उत्पन्न की। २५ अयोनिसम्भूता नारी के साथ सगर का विवाह कर दिया गया। २६ दोनों लोग आपस में मिलकर वनप्रान्त में रति क्रीड़ा करने लगे। २७ स्थान न पाने से सगर ने ऊर्द्धमुख होकर प्रचण्ड तपस्या की। २८ सतयुग के अन्त में ब्रह्मा जी वहाँ गए और उन्होंने तपस्या करने का कारण पूंछा। २९ सगर ने कहा हे पिता ! मुझे स्थान नहीं मिला। इसलिये हमारा मन व्याकुल हो गया। ५०३० ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम हमारे कहने से आओ। तुम अयोध्या देश के राजा बनोगे। ५०३१ इतना कहकर वह उन्हें साथ लेकर चले गए और उन्हें ले जाकर अयोध्या का राजा बना दिया। ३२ इस प्रकार रविकुल के सूर्यवंश में आदित्यनन्दन तुम्हारे पूर्वज हुए। ३३

श्रीराम पचारिले शुणिमा हेउ मुनि । आतापि बातापिकि अगस्ति मारे पुणि ३४
बाप कुम्भ ऋषि सागरे बुड़ि मरिबारु ।
सप्त सागर शुखिला चळु करि भक्षिबारु ३५
सेठारु आदित्य देबे सेठारु जात कले । पुण किस जश जे अगस्ति अरजिले ३६
श्रीराम ठारु शुणि बोलन्ति गाधि सुत । जे मुनिंक चरित शुण हे रघुनाथ ३७
जेबण दिने आदित्य मेरु बाद कले । देबे तांकु कहिबारे निबर्त्त नोहिले ३८
जुद्धरे समान जे नोहिले तांकु जणे । स्वर्गरे बिजय होइले देवगणे ३९
सकळ देबे जाइ ब्रह्मांकु जणाइले । छायापति एबे पुण आकट होइले५०४०
बेनि जुग हेला मन्दर संगे कळि । क्रोधरे दाबानळ होइले असम्भाळि५०४१
रजनी प्रकट नोहिला बेनि जुग । रबिर तेजरे भग्न जे सभिकर गर्ब ४२
शुणिण बेदबर निज स्थानरु आसि । अगस्तिक आश्रमरे मिळिले बिधाताटि ४३
बोइले महा ऋषि बेगे तुम्भे चळ ।
बेनि जुग हेला आदित्य संगे समर करिछि मन्दर ४४
तुम्भे जाइ ताहांकु प्रबोध बेग कर । नोहिले राज्य निश्चे होइला नार खार ४५
शुणि करि अगस्ति जे ब्रह्मा बोइले जाइ । मन्दर गिरि निकटे मिळिलेक तहिं ४६
देखिले चळि नपारे आदित्य देवता । स्वर्ग मर्त्त्य घोटिछि मन्दर बळवन्त ४७

श्रीराम ने पूँछा हे मुनि ! सुनिए। अगस्त ने आतापी तथा वातापी को मार डाला। ३४ पिता कुम्भ ऋषि के सागर में डूबकर मर जाने पर आचमन कर लेने पर सात समुद्र सूख गए। ३५ फिर आदित्य देव ने पुत्र उत्पन्न किया, अगस्त ने और कौन सा यश अर्जित किया। ३६ श्रीराम से यह सुनकर गाधि-नन्दन विश्वामित्र ने कहा हे रघुनाथ ! उन मुनि के चरित्र सुनो। ३७ जिस दिन सूर्य तथा सुमेरु में झगड़ा होने लगा। देवताओं के आग्रह पर भी वह झगड़ा टाल न सके। ३८ युद्ध में उनकी समता का कोई नहीं निकला। तब देवतागण स्वर्ग में जा पहुँचे। ३९ समस्त देवताओं ने जाकर ब्रह्मा जी से कहा कि छाया-नाथ सूर्य अब फिर अटका लिये गए हैं। ५०४० दो युग से मन्दर के साथ झगड़ा-चल रहा है। वह अपने को न सम्भाल पाने से क्रोध में दावानल से हो गए। ५०४१ दो युग तक रात्रि नहीं आई। सूर्य के तेज से सबका घमण्ड चूर हो गया। ४२ यह सुनकर ब्रह्मा जी अपने लोक से आकर अगस्त ऋषि के आश्रम में जा पहुँचे। ४३ उन्होंने कहा हे महर्षि ! आप शीघ्र ही चलिये। दो युग व्यतीत हो गए सुमेरु आदित्य के साथ युद्धकर रहा है। ४४ आप जाकर शीघ्र ही उन्हें समझा दें। नहीं तो निश्चित रूप से राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाएगा। ४५ ब्रह्मा के कहने पर अगस्त मन्दराचल के निकट जा पहुँचे। ४६ उन्होंने देखा कि सूर्य देव चल नहीं पा रहे हैं। बलवानमन्दर ने स्वर्ग तथा मृत्यु लोक को

जुद्धरे जिणिण से क्रोधरे गुरुतर । छायावल्लभ भागि रहिब मन्दर प्रकार ४८
अगस्ति मुनि बोलन्ति शुण हे मन्दर । आम्भे कथाए मागिबु देबुकि सत्य तोर ४९
मन्दर बोइले मुनि जे तोहर इच्छा ।
मागमाग देवि मुनि पुरु तो मनोबाञ्छा५०५०
एते बोलि मन्दर चरणे लोटकाळि । कर जोडि शोइले करिण पाए पडि५०५१
अगस्ति बोइले मुं जिबि दक्षिण दिगे चळि ।
केते दिनरे पुण बाहुड़ा बिजे करि ५२
ते ते दिन पर्ज्यन्ते नोहिबु कोपमन । बड़िबा इच्छारे तुरे होइबु सामान्य ५३
शुणि करि मन्दर जे सीउकार कला । सामान्य रूप धरि निज स्थानरे रहिला ५४
देखिण आदित्य जे मेरु प्रदक्षिण करि । सत्य पाळि मन्दर सामान्य रूप धरि ५५
जेबे अगस्ति से स्थाने हेबे प्रबेशत । बेनिजन बिबादे नाश जाआन्ता जगत ५६
तेणु करि ऋषि जे दक्षिण दिगे गले । पुनर्वार महामुनि फेरिण नइले ५७
एसनक कथा जे शुणिले दाशरथी । अगस्ति मुनिकर एमन्त प्रतिज्ञाटि ५८
आहुरि कथाए श्रीराम कहिबा तुम्भंकु । पार्बती नन्दन जे माइले ताड़काकु ५९
से ताड़का अटे बळा दैत्यर नन्दन । ताड़की भग्नणी जे ताड़का ठारु जन्म५०६०
ताड़का ताडकीकि दैत्य जन्म करि । इन्द्रंकर विवादरे सेहु गला मरि५०६१

आच्छादित कर रक्खा है। ४७ प्रचण्ड क्रोध से उसने सूर्य को युद्ध में जीत लिया है। छायापति सूर्य मंदर के समक्ष से भाग रहे थे। ४८ महर्षि अगस्त ने कहा हे मन्दर ! सुनो। हम तुमसे एक वचन माँग रहे हैं क्या तुम प्रतिज्ञापूर्वक मुझे प्रदान करोगे। ४९ मन्दर ने कहा हे मुनि ! आपकी जो इच्छा हो माँगो। आपकी मनोकामना पूर्ण करने को मैं प्रदान करूँगा। ५०५० इतना कहकर मंदर ने चरणों में दण्डवत करके हाथ जोड़ते हुए कहा। ५०५१ अगस्त बोले मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूँ और कुछ दिनों में लौटूंगा। ५२ तब तक तुम क्रोध न करना और बड़प्पन की इच्छा से सामान्य हो जाना। ५३ यह सुनकर मंदराचल ने स्वीकार कर लिया तथा सामान्य रूप धारण करके अपने स्थान पर ठहर गया। ५४ यह देखकर सूर्य ने मेरु की प्रदक्षिणा की। प्रतिज्ञानुसार मंदर ने सामान्य रूप धारण कर लिया। ५५ यदि अगस्त उस स्थान पर न पहुँचते तो दोनों लोगों के विवाद में जगत नष्ट हो जाता। ५६ फिर ऋषि दक्षिण दिशा को चले गए और महामुनि फिर वापस नहीं आए। ५७ दशरथनन्दन ने अगस्त मुनि की प्रतिज्ञा की ऐसी कथा सुनी। ५८ हे श्रीराम तुमसे एक कथा और कहूँगा। पार्वतीनन्दन ने ताड़कासुर को मार डाला। ५९ वह ताड़कासुर बला दैत्य का पुत्र था। ताड़कासुर तथा ताड़की का जन्म हुआ। ५०६० ताड़कासुर तथा ताड़की को जन्म देकर वह दैत्य इन्द्र के साथ विवाद में मारा गया। ५०६१ ताड़की को लेकर ताड़कासुर रहने लगा। उसने बहन से विवाह

ताड़कीकु घेनिण ताड़कासुर रहि । भयेणी कि बिभा होइ रति प्रीति होइ ६२
काळेन ताडकी जे गर्भबास हेला । ताहार गर्भरु जे पुत्रेक उपुजिला ६३
पुत्रर दश दिनरे ताड़का गला नाश । ताड़की पुत्र नाम देले मारिच विशेष ६४
काळेण से कुमार नवजुबा हेला । मधुदैत्य दुहिताकु ताडकी पुत्र विभाकला ६५
पुत्र वधू रखाइण ताडकी असुरुणी । जम देबतार नाम जपिला बसि पुणि ६६
केते दिन उत्तरु प्रसन्न रबिसुत । बोइले बळबन्त हुअरे नारी तुत ६७
देबे असुर बळ वानर नागबळ । एहांकर हस्तरे न पूरे तोर काळ ६८
खण्ड तप बहिण तु काळे काळे थाअ । एते बोलि बर देले रबिकर पुअ ६९
शुणि करि ताड़की बोइला जमकु । कि रूपे मुकति हेबि कहिदे आम्भंकु५०७०
रबिसुत बोइले अठर जुग गले । श्रीहरि मारिबे तोते गति लभिबु से काळे५०७१
सेहि दिनु ताडकी जे उपद्रव करे । ए वनरे अगस्ति महाऋषि थिले ७२
निशिरे तांकर आश्रम ताड़की भांगि देले। कोपेण शाप ताकु ब्रह्मचारी देले ७३
राक्षस प्रकृति तोर नुहें जे भिन्न पुणि । एहि वनरे थाअलो दुष्ट राक्षसुणी ७४
एते कहि अगस्ति सेठारु चळिगले । दक्षिण गोदावरी कूळरे रहिले ७५
मुनिक शापरे राक्षसुणी ए बनरे रहि।पथुकी देखिले बाट पाडिण ताकु खाइ ७६

कर लिया और रति प्रीति करने लगा । ६२ समय पर ताड़की गर्भवती हो गई । फिर उसके गर्भ-से एक पुत्र उत्पन्न हुआ । ६३ पुत्र के दस दिनों के होने पर ताड़कासुर नष्ट हो गया । ताड़की ने पुत्र का नाम विशेष तौर से मारीच रक्खा । ६४ समय पर वह बालक नवयुवा हो गया । ताड़की के पुत्र ने मधु दैत्य की पुत्री से विवाह किया । ६५ पुत्रवधू को रखकर असुरी ताड़की बैठकर यम देवता का नाम जपने लगी । ६६ कुछ दिनों के पश्चात् रविनन्दन प्रसन्न होकर कहने लगे । अरे नारी ! तू बलवती हो जा । ६७ देवतागणों, नाग लोकों, असुरों तथा वानरों के हाथ से तुम्हारी आयु शेष न हो । ६८ थोड़ा तप करने से तुम युग-युग तक रहोगी । रवि पुत्र यम ने इस प्रकार उसे वर दिया । ६९ यह सुनकर ताड़की ने यम से कहा कि हमें यह बताइये कि हमारी मुक्ति कैसे होगी ? ५०७० सूर्य पुत्र ने कहा कि अट्ठारह युग बीतने पर श्री भगवान तुम्हारा बध करेंगे। उस समय तुझे गति प्राप्त होगी । ५०७१ उसी दिन से ताड़की उपद्रव कर रही है । महर्षि अगस्त इसी वन में थे । ७२ रात्रि में ताड़की ने उनका आश्रम तोड़ डाला । ब्रह्मचारी ने कुपित होकर उसे शाप दे दिया । ७३ तेरी प्रकृति राक्षसों से भिन्न नहीं है । तू दुष्ट राक्षसी बनकर इसी वन में रह । ७४ इतना कहकर अगस्त वहाँ से चले गए तथा दक्षिण में गोदावरी के तट पर रहने लगे । ७५ मुनि के शाप से राक्षसी इस वन में रहकर जो बटोही रास्ते में पड़कर दिख जाते थे, वह उन्हें खा डालती थी । ७६ इसलिये उस मार्ग

एणुकरि ए पथरे न आसन्ति जन। उपद्रव हेबारु भांगिले एथु जन पुण ७७
एथिरु अगस्ति मुनि आश्रम तेजि गले। जेणु राक्षसुणीर दुष्टपण से देखिले ७८
सुर नर किन्नर न पशन्ति जे भये। अनेक असुरबळ संगरे घेनि रहे ७९
एहि क्षणि भेटिबाकु पाइबा आम्भे वने। × × × ५०८०
मुनि बोलन्ति शुण हे राम लक्ष्मण। अगम्य वनभूमि अटे एहार नाम५०८१
तेणु ए वनरे न पशे पुणि जम। × × × ८२
न जाणिबा पणे जे अइलु एहि वाटे। आज अकारणे जे पडिब संकटे ८३
दुष्ट राक्षसुणी जे ओप्रोध न करइ। ए पथे गला लोकर जीवन हरइ ८४
एबे चाल श्रीराम हे बाट भांगि जिबा। अन्य बाटे गले आम्भे कष्ट न पाइबा ८५
एहा शुणि श्रीराम जे धरिले करे धनु। ऋषिकर मुख चाहिँ बोले दशरथ तनु ८६
प्रथमरे परीक्षा करिबा बोलि मुनि। ए वनरे आम्भंकु अइल पुणि घेनि ८७
तुम्भेत महामुनि किस विचार मनर। असुरुणीकु डरिबेकि दशरथ कुमर ८८
जद्यपि भेट से पडिब पुणि आसि। प्राण घेनि आगरु जिबकि से राक्षसी ८९
तुम्भर चरण रेणुरे आम्भे गाधि सुत। असुर बळ आम्भे करिबु निश्चे हत५०९०
एते बोलि श्रीराम जे कोदण्ड सज कले। लक्ष्मण धनु धरि गुण चढ़ाइले५०९१
रक्त वर्ण नेत्र जे दिशइ श्रीरामर। लक्ष्मण क्रोध हेले जे दैत्यंक उपर ९२

से लोग नहीं आते हैं। उपद्रव के कारण यहाँ से लोग भाग गए। ७७ राक्षसी की दुष्टता देखकर अगस्त मुनि वह आश्रम छोड़कर चले गए। ७८ देवता मनुष्य तथा किन्नर भय से वहाँ नहीं घुसते हैं। वह अनेक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ रहती है। इसी समय वन में हमारी भेंट हो जाएगी। ७९-५०८० मुनि ने कहा हे राम तथा लक्ष्मण ! सुनो। इस वन भूमि का नाम अगम्य है। इस कारण से यम भी इस वन में नहीं घुसता। ५०८१-८२ विना जाने मैं इस मार्ग से आ गया। आज विना कारण के ही संकट में पड़ जाएँगे। ८३ दुष्ट राक्षसी कही आक्रमण न कर दे। इस मार्ग से जानेवाले लोगों के वह प्राण ले लेती है। ८४ हे राम ! अब इस मार्ग को छोड़कर चले जाएँगे। अन्य मार्ग से चलने पर हमें कष्ट नही प्राप्त होगा। ८५ ऐसा सुनकर श्रीराम ने हाथ में धनुष उठा लिया और ऋषि के मुख की ओर ताक कर दशरथनंदन श्रीराम ने कहा। ८६ आप हमें इस वन में ले आये हैं। हे मुनि हम पहले उसकी परीक्षा करेंगे। ८७ आप तो महर्षि है। मन में क्या विचार कर रहे है। दशरथ कुमार क्या राक्षसी से डर जाएँगे। ८८ यदि वह आकर मिली तो क्या वह सामने से प्राण बचाकर जा सकेगी। ८९ हे गाधिनन्दन आपकी चरण रज के प्रभाव से हम निश्चय ही असुर दल का नाश करेंगे। ५०९० इतना कहकर श्रीराम ने कोदण्ड सम्हाल लिया तथा लक्ष्मण ने धनुष उठाकर प्रत्यञ्चा चढ़ा ली। ५०९१ श्रीराम के नेत्र रक्तवर्ण के दिखाई दे रहे थे। लक्ष्मण भी दैत्यों, के ऊपर क्रुद्ध

भगवती शुणन्ति जे शंकर कहिबारु। पार्वती पचारिले किस एथि उत्तरु ९३
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो संगातुणी। ताडकीर चार जे बुलइ वने पुणि ९४
श्रीराम लक्ष्मणंकु देखि फेरि गले दैत्य। ताड़की आगरे जाइ कहिले वारता ९५
शुण गो दैत्य माए वनर ठाकुराणी। विश्वामित्र संगे बेनि वाळकंकु घेनि ९६
ए बने गमन जे करन्ति आसि मुनि। से बेनि बाळ कुमरे करे छन्ति धनु घेनि ९७
शुणि करि ताड़की जे बिकराळ पुणि। आहार प्राय़ मणि जे धाइँला राक्षसुणी ९८
तार पछे बार लक्ष असुर सैन्य आसि। × × × ९९
ताड़कीर रूप जे दिशइ भय़ंकर। जिह्बाकु लह लह बुलाए अन्तराल५१००
आकाशरे असुरुणी लगाइ अछि शिर। असुरी आसि बारे वन कन्दर हुए चूर५१०१
बिकराळ बदन जे बिरूप मति होइ। पेटकु खंखाळिण बेगे आसे धाइँ २
दूररु देखिण जे ड़रिले गाधिसुत। विश्वामित्र बोइले शुण हे रघुनाथ ३
ए पथ छाड़िण जे जिबा अन्य पथे। ए राक्षसी दुष्ट पण करिब एहु पथे ४
हसि श्रीराम बोइले मुनि हेल बाइ। निशाचर ड़ररे कि बाट भांगि जाइ ५
आज जेबे असुरुणीकि मुँ न करिबिनाश। जाग केसनेक रक्षा करिबि तपोबन्त ६
एते कहि राघव जे कम्पन्ति थरहर। कोदण्ड धरि आग जे होइले रघुबीर ७

हो गए। ९२ शंकर जी कह रहे थे और पार्वती सुन रही थीं। पार्वती ने पूँछा कि इसके पश्चात् क्या हुआ। ९३ शंकर जी ने कहा हे सखी! तुम सुनो। वन में ताड़की का दूत घूम रहा था। ९४ श्रीराम-लक्ष्मण को देखकर दैत्य लौट गए तथा उन्होंने ताड़की के पास जाकर समाचार दिये। ९५ हे वन की अधिष्ठात्री दैत्यमाता! सुनो। मुनि विश्वामित्र साथ में दो बालकों को लिए इस वन में आकर विचरण कर रहे हैं। वह दोनों बालक हाथों में धनुष लिए हैं। ९६-९७ यह सुनकर ताड़की विकराल हो गई और आहार के समान समझ कर वह राक्षसी दौड़ पड़ी। ९८ उसके पीछे बारह लाख असुर सेना आ गई। ताड़की का रूप भयंकर दिखाई दे रहा था। वह वारम्बार जीभ लपलपा रही थी। ९९-५१०० राक्षसी का सिर आकाश को छू रहा था। राक्षसी के आने से वन-कन्दर चूर-चूर हो गए। ५१०१ विकृत बुद्धि वाली बिकरालवदनी पेट फुलाते हुए शीघ्र ही वहाँ दौड़ती आ गई। २ दूर से देखते ही गाधिनंदन भयभीत हो गए। विश्वामित्र ने कहा हे रघुनाथ! सुनो। ३ यह पथ छोड़कर चलो दूसरे मार्ग से चलें। इस मार्ग पर यह राक्षसी दुष्टता करेगी। ४ हँसते हुए श्रीराम ने कहा, हे मुनि! क्या आप पागल हो गए हैं। क्या निशाचर के भय से मार्ग छोड़कर चले जाँय। ५ हे तपोनिधि! यदि आज मैं राक्षसी का विनाश नहीं करूँगा तो फिर यज्ञ की रक्षा कैसे करूँगा। ६ ऐसा कहकर राघव (क्रोध से) थर-थर काँपने लगे! रघुवीर क्रुद्ध होकर कोदण्ड लेकर आगे बढ़े। ७

लक्ष्मणकु बोइले तु मो पछरे आस ।मुँ जाहाकु मारिबि तु न जिबु तार पाश ८
मुँ हेबि सरदार तु हेबु पादान्ति । मुँ जेते बेळे जुझिबि तु हेबु सेनापति ९
एते कहि थोकाए जे दूर गले बहि । देखिले जे ताडकी आसु अछि धाइँ५११०
मुनि बोइले श्रीराम असुरुणी कि चाहिँ ।
आसुअछि तानमाने ताड़कार प्रिया५१११
मत होइ असुरी नर बानर खाइ । ए वचन शुणिण बोइले रघुसाइँ १२
स्तिरी बध दोषकु अछइँ भय करि ।नोहिले कि असुरी आसन्ता प्राण धरि १३
विश्वामित्र बोइले शुणिमा रामचन्द्र । पूर्वरे स्तिरी गोटिए बध कले इन्द्र १४
दुष्ट नारींकि माइले धर्म एथिरे अछि ।ब्राह्मणर घरणी किबा बिधबा जुबती १५
ए दइतुणी पुरुष हत्यार कारण । जाग कला ऋषिकि खाइले जाइ पुण १६
लक्ष्मण बोइले तुम्भे कि ऋषिकि पचार । मार राक्षसुणीकि किछि न बिचार १७
आपणा बड़ पण न रखिब जेबे । ए कथा हेतु करि मार राक्षसुणी एबे १८
लक्ष्मण कहिबारु श्रीराम ताहा जाणि । आम्भे न माइले बड़पण जिव पुणि १९
कथा हुअन्ते असुरुणी धाइँ पड़ि । बोइला आज सुख दिन जिब सरि५१२०
आजकि जिइँ जिब मोर मुखरे पडि।तोटिकणा करि रक्त खाइबि बसि करि५१२१

उन्होंने लक्ष्मण से अपने पीछे आने को कहा। मैं जिसे मारूँगा तुम उसके निकट न जाना। ८ मैं सरदार और तुम पैदल सिपाही बनोगे। मैं जिस समय युद्ध करूँगा तुम सेनापति बन जाना। ९ इतना कहकर वह थोड़ी दूर बढ़ गए। उन्होंने ताड़की को दौड़कर आते देखा। ५११० मुनि ने कहा हे श्रीराम ! राक्षसी को देखो ! ताड़का की प्रिया वड़े जोर-शोर से आ रही है। ५१११ राक्षसी मत्त होकर नर तथा वानर का आहार करती है। ऐसी बात सुनकर रघुनायक ने कहा। १२ मुझे स्त्री-वध के दोष का भय है। नहीं तो क्या राक्षसी जीवित आ पाती। १३ विश्वामित्र ने कहा हे रामचन्द्र सुनो ! पूर्वकाल में इन्द्र ने एक स्त्री का बध किया था। १४ दुष्ट स्त्री का वध करना धर्म है। चाहे वह युवती विधवा हो या ब्राह्मण की पत्नी हो। १५ यह राक्षसी पुरुषों की हत्या कारिका है। यह जाकर याज्ञिक ऋषियों को खा जाती है। १६ लक्ष्मण ने कहा आप ऋषि से क्या पूँछ रहे हो। आप कुछ न सोचकर राक्षसी को मार डालिए। १७ आप अपने वड़प्पन की रक्षा नहीं करेंगे। यह विचार कर अब आप राक्षसी का वधकर दें। १८ लक्ष्मण के कहने पर श्रीराम ने ऐसा समझा कि यदि हम राक्षसी का वध नहीं करेंगे तो हमारा वड़प्पन चला जाएगा। १९ बातें होते-होते राक्षसी दौड़कर आ गई और कहने लगी कि आज का दिन सुख से व्यतीत होगा। ५१२० यह मेरे मुख में पड़कर क्या आज जीवित बचेगा ? मुख में डालकर बैठकर इसका रक्त पान करूँगी। ५१२१ ऐसा कहकर राक्षसी ने

एते बोलि दइतुणी बिधाए माइला।श्रीराम घुञ्चि जाइ ताहा बञ्चाइला २२
जेणु बिधा श्रीराम हृदरे न बाजेटि। अधर कामुडिण दइतुणी उठि २३
बृक्षेक उपाड़िण धइला बेग करे। आर भुजे धइला जे महत पथरे २४
अन्तरीक्षे बुलाइ श्रीरामकु मारे। बिचित्र गतिकरि श्रीराम ताहा फेरे २५
कोपरे राक्षसुणी बेगे धनु धरि। शररे अदृश्य जे कला रोमाबळी २६
श्रीराम पचारिले शुण हे महामुनि। स्त्री होइण एहु धरइ धनु पुणि २७
गुण टंकार करिण शर बृष्टि करे। दिवसरे जामिनी घोटे अन्धकारे २८
बिश्वामित्र बोइले शुण हे दाशरथि।बैशानर देवता जेउँ धनुशर देइछन्ति २९
जयन्ति शर बेगे मार हे रघुबत्ति। जामिनी तुटिजाउ प्रसर हेउ राति५१३०
फिटाअ अन्धकार मोर बोल कर। शुणिण श्रीराम जे पेषिले सूर्य्यशर५१३१
तक्षणे तिमिरि जे गलाक पळाइ। दिशिले दशदिश चाहिँले रघुसाइँ ३२
अधाचन्द्र गुण श्रीराम बसाइ। पेशिले श्रीराम कोपभर होइ ३३
पवनरु बेगे जे चळिण गला शर। असुरीर कण्ठरे जाइ पडिला प्रखर ३४
छिडिलाक बेक जे होइला बेनिखण्ड। देखिण सैन्यबळ ओगाळे प्रचण्ड ३५
देखिण लक्ष्मण जे मोहना शर मारि। बार लक्ष दैत्यंकु खण्ड खण्ड करि ३६
देखिण आउ जेतेक दैत्यबळ थिले। नरहि पळाइले प्राणर बिकळे ३७

एक मुक्का मारा। श्रीराम ने पीछे हटकर उसे बचा लिया। २२ जब मुक्का श्रीराम की छाती पर न लगा तब ओंठ चबाती हुई राक्षसी उठी। २३ वह एक वृक्ष हाथ से उखाड़ कर वेग से दौड़ी। उसने दूसरे हाथ में विशाल पत्थर ले लिया। २४ उसने उसे शून्य में घुमा कर श्रीराम पर प्रहार किया, अद्‌भुत गति से श्रीराम ने उसे लौटा दिया। २५ कुपित होकर राक्षसी ने शीघ्र ही धनुष लेकर बाणों से रोमावली अदृश्य कर दी। २६ श्रीराम ने कहा हे महर्षि सुनिए ! स्त्री होकर भी यह धनुष चलाती है। २७ प्रत्यंचा पर टंकार करके बाण वर्षा करती है। दिन में रात्रि सा अन्धकार हो जाता है। २८ विश्वामित्र ने कहा हे दशरथ नन्दन ! सुनो। अग्नि देव ने इसे यह धनुष बाण दिया है। २९ हे रघुनन्दन ! शीघ्र ही जयन्ती शर से प्रहार करो। रात्रि प्रसरित होकर नष्ट हो जाय। ५१३० मेरा कहना मानकर अन्धकार का नाश कर दो। यह सुनकर श्रीराम ने सूर्य-बाण छोड़ दिया। ५१३१ उसी क्षण अन्धकार दूर हो गया। रघुनाथ जी ने देखा कि दशों दिशाएँ दिखाई देने लगीं। ३२ श्रीराम ने अर्ध चन्द्र बाण को प्रत्यञ्चा पर चढ़ाकर कुपित होकर छोड़ दिया। ३३ बाण पवन-वेग से चल पड़ा और प्रखरता से राक्षसी के कण्ठ में घँस गया। ३४ गर्दन कटकर दो खण्डों में विभक्त हो गई। यह देखकर प्रचण्ड सेना ने ललकारा। ३५ यह देखकर लक्ष्मण ने मोहन बाण छोड़ दिया और बारह लाख सेना को खण्ड-खण्ड कर डाला। ३६ यह देखकर और जितनी राक्षस सेना थी वह सब वहाँ न रुककर

बार लक्ष सैन्यबळ घेनिण ताड़की। पुष्पक विमाने बसि स्वर्गकु गले सेटि ३८
देवताए शून्यरे जे जुद्ध देखु थिले। राक्षसी मरिवा देखि हरष होइले ३९
कुसुम वृष्टि कले श्रीरामर शिरे। साधु साधु श्रीराम बोइले स्वर्गपुरे५१४०
विश्वामित्रंकु बोइले वेदवर पुण। भो मुनि विश्वामित्र आम्भर बोल घेन५१४१
वेदबर बोइले धनुर्विद्या जेते। समस्त शिखाअ रामचन्द्रंकु तुरिते ४२
सकळ विद्या एबे श्रीरामरे देसि। एसनक बोलि कहि गलेक स्वर्गवासी ४३
से दिन लक्ष्मण श्रीराम विश्वामित्र। से बनरे रहि वञ्चिले रजनीत ४४
रजनी प्रभाते तिनि जण स्नान सारि।
श्रीराम लक्ष्मणरे मुनि सकळ विद्या देबे बोलि ४५
जया विजया पुणि बेनि मन्त्र कहि। बोलन्ति महामुनि शुण हे रघुसाइँ ४६
एजे आदित्य मन्त्र चळन्ति सर्ब गुण। विष्णु तेजरे जात होइले शस्त्र पुण ४७
एमन्ते जे सकळ कार्ज्य करि सारि। पद पद के साय़ हुअन्ति मुरारि ४८
एते कहिण मुनि सकळ शस्त्र देले। ब्रह्म शस्त्र विद्या मुनि पथ जे कहि देले ४९
पाशुपत शिव शस्त्र नाराय़ण शर पुणि। जज्ञ शस्त्र काळ शस्त्र देले महामुनि५१५०
बरुणास्त्र इन्द्राअस्त्र अग्निशर देले।
शिशु मुना अक्षय़ त्रोण द्रोत्सना समर्पिले५१५१

व्याकुल चित्त से भाग खड़ी हुई। ३७ ताड़की बारह लाख सैन्यबल को लिये पुष्पक विमान में बैठकर स्वर्ग लोक चली गई। ३८ देवगण आकाश से युद्ध देख रहे थे। वह राक्षसी को मरा देखकर प्रसन्न हो गए। ३९ उन्होंने श्रीराम के सिर पर पुष्प-वर्षा की तथा स्वर्ग से "धन्य है —धन्य है" कहने लगे। ५१४० ब्रह्मा ने विश्वामित्र से कहा, हे महर्षि विश्वामित्र ! मेरा कहना मानो। ५१४१ तुम जितनी भी धनुर्विद्या है वह सब शीघ्र ही श्रीराम को सिखा दो। ४२ समस्त विद्याएँ श्रीराम में दिखने लगें। इस प्रकार कहकर स्वर्गवासी देवगण चले गए। ४३ श्रीराम लक्ष्मण तथा विश्वामित्र ने उस दिन उसी वन में रुककर रात बिताई। ४४ रात्रि के पश्चात् प्रातः काल में तीनों लोगों ने स्नान किया और मुनि ने कहा कि श्रीराम तथा लक्ष्मण को समस्त विद्याएँ प्रदान करेंगे। ४५ जया तथा विजया दोनों मंत्रों का उच्चारण करते हुए महर्षि ने कहा, हे रघुनन्दन ! सुनो। ४६ यह जीवित सूर्य मंत्र सर्वगुणों से युक्त हैं। यह विष्णु तेज से उत्पन्न हुए सारे अस्त्र हैं। ४७ इनसे सभी कार्य किये जा सकते हैं। हे मुरदैत्य का नाश करनेवाले राम ! यह पद-पद पर सहायक होते हैं। ४८ ऐसा कहकर मुनि ने सारे शस्त्र प्रदान कर दिये तथा ब्रह्म-शस्त्र विद्या के सभी रहस्य मार्ग में समझा दिए। ४९ पाशुपत, शिवास्त्र तथा नारायणास्त्र, यज्ञास्त्र और कालशस्त्र सभी महर्षि ने प्रदान कर दिए। ५१५० उन्होंने वरुणास्त्र, इन्द्रास्त्र तथा अग्नि शर प्रदान किए। क्षुद्र नोक वाले बाणों से युक्त अक्षय तूणीर तथा

कपाळ विमोचना गर्ज्जना अस्त्र देले ।
मोहना अस्त्र सूर्ज्या अस्त्र सकळ समर्पिले ५२
ब्रह्म शस्त्र बज्र शस्त्र काळ शस्त्र तिनि ।
कुबेरा अस्त्र पनंगा अस्त्र देले महामुनि ५३
गरुड़ास्त्र गन्धर्वास्त्र सहिते दानवा । गर्ज्जनास्त्र तर्ज्जनास्त्र बज्र सूची आभा ५४
चन्द्रर शकति जे कुमार शकति । ए शक्ति मानंकु सरि नुहँन्ति देवतादि ५५
कौशिक कोदण्ड गदा मोह फेरि । काळ गदा मोह गदा सकळ आदिकरि ५६
इन्द्र चन्द्र मुदुगर सकळ देबंकर । बैष्णवा अस्त्रकु कि देबा पटान्तर ५७
जय़ा विजय़ाकु देले श्रीरामंकु तहिँ । बाछिण अस्त्रमान श्रीरामंकु देइ ५८
पढिण मन्त्र श्रीराम घेनिले सर्बबाण । शूळ शकति ब्रह्म शकति देले मुनिपुण ५९
सकळ शस्त्रमान नेले दशरथ सुत । आबर घेनिले जे सशस्त्र समस्त५१६०
शस्त्र निमन्ते मन्त्र पढिले तक्षण । आसिण शस्त्रमान पशिले त्रोणे जाण५१६१
गगन आच्छादिला न दिशिले किछि । आदित्य उइँण तेज शून्य होइलेटि ६२
शस्त्रंक तेजरे कम्पिला मेदिनी । अरष्टि दिशिला सर्ब उलकापात जाणि ६३
सिन्धु उछुळिण एबे लंधिबकि कूळ । सूर्ज्यर पराश सिना अमास्या काळबेळ ६४

दिव्यास्त्र समर्पित किए। ५१५१ कपाल विमोचन तथा गर्जन अस्त्र प्रदान किये। मोहन अस्त्र तथा सूर्य अस्त्र सभी समर्पित कर दिये। ५२ ब्रह्म शस्त्र, काल शस्त्र तथा बज्रास्त्र यह तीनों देकर महर्षि ने कुबेरास्त्र तथा नागास्त्र प्रदान किए। ५३ गरुड़ास्त्र तथा गन्धर्वास्त्र के साथ में दानवास्त्र प्रदान किए। गर्जनास्त्र तर्जनास्त्र बज्रसूची तथा आभास्त्र भी प्रदान किए। ५४ चन्द्र शक्ति, कुमार शक्ति दिये जिनका सामना देवता लोग भी नहीं कर पाते थे। ५५ कौशिक ने कोदण्ड गदा मोह फेरी (मोहनास्त्र) काल गदा, मोह गदा आदि सब दिये। ५६ इन्द्र चन्द्र तथा समस्त देवताओं के मुग्दर प्रदान किए। वैष्णवास्त्र की तुलना कौन कर सकता था। ५७ उन्होंने वहाँ श्रीराम को जया तथा विजया विद्याएँ प्रदान कीं तथा छाँट-छाँटकर अस्त्र श्रीराम को समर्पित किए। ५८ श्रीराम ने मंत्र पढ़कर समस्त बाण स्वीकार किए। फिर महर्षि ने शूल शक्ति तथा ब्रह्म शक्ति प्रदान की। ५९ दशरथनन्दन ने समस्त अस्त्र-शस्त्र ग्रहण किए तथा समस्त प्रकार के शस्त्रास्त्र प्राप्त किए। ५१६० उन्होंने शस्त्र के लिये उसी समय मंत्र पढ़े तभी शस्त्र आकर उनके तूणीर में समा गए। ५१६१ आकाश आच्छादित होने से कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता था। उदित सूर्य का तेज भी शून्य हो गया। ६२ शस्त्रों के तेज से पृथ्वी कम्पित होने लगी। उल्कापात समझकर सबको अनिष्ट लगने लगा। ६३ लगता था कि अभी सागर तटों को लांघता हुआ उछल पड़ेगा। लगता था मानो अमावस्या के समय सूर्य ग्रहण लग गया हो। ६४ देवताओं

उपरे थाइ ताहा देखिले देवगण। भय़ करि सकळे सुमरे नाराय़ण ६५
विधाता बिजे कले अन्तरीक्षे आसि।
एका बेळे अस्त्र किम्पा सुमर रघुवंसि ६६
ऋषि देला अस्त्र तेज केहि सहि न पारिले।
संसार हतसिना करिब एकाबेळे ६७
कार्ज्य पडिवा बेळे ए शर सुमरिव। सबु शर एका बेळे मने न सुमरिव ६८
सकळ देवतांकर तेज अस्त्र मान। एका बेळे सुमरिले न रहे भुवन ६९
आम्भर बोल एबे कर हे रघुनाथ। ए शस्त्र संहर बेगे तोर तूणीरेत५१७०
श्रीराम पचारिले वेदबर वाणी शुणि। कथाए पचारिबि कह हे ब्रह्ममुनि५१७१
विश्वामित्र कहिले श्रीरामंकु चाहिँ। ए शरमान जे संहर बेगे तुहि ७२
ऊर्द्धबरे थाइ बोइले शस्त्रमान पुण। तुम्भे जाहा कहिब करिबु आम्भे पुण ७३
श्रीराम बोइले तुम्भे शुण हे सर्व शस्त्र। परीक्षा निमन्ते सिना सुमरिलि मुँ त ७४
जे जाहा तुम्भ स्थानरे जाइण तुम्भे थिव। मोहर सुमरिले आसिण मिळिव ७५
शुणिकरि शस्त्र माने जे जाहा स्थाने गले। घड़ घड़ि प्राय़ेक शवदमान कले ७६
एथु अनन्तरे जे शुण दिव्य रस। ईश्वरंकु गउरी जे पचारे सन्देश ७७
श्रीरामंकु शस्त्र सर्व विश्वामित्र देले। लक्ष्मण संगे थिले ताकु किम्पा न देले ७८

ने ऊपर से ही ऐसा देखा। वह भयभीत होकर भगवान का स्मरण करने लगे। ६५ अन्तरिक्ष से ब्रह्मा जी ने आकर कहा हे रघुनन्दन! एक समय में ही इतने अस्त्रों का स्मरण क्यों कर रहे हैं। ६६ ऋषि के द्वारा प्रदान किए गए अस्त्रों का तेज कोई भी सहन नहीं कर सका, लगता था मानो संसार एक बार में ही नष्ट हो जाएगा। ६७ कार्य पड़ने के समय इन बाणों का स्मरण करना। एक साथ सब बाणों का स्मरण मन में न करना। ६८ समस्त देवताओं के तेजस्वी अस्त्रों को एक साथ स्मरण करने से यह संसार नहीं बचेगा। ६९ हे रघुनाथ! हमारा कहना मानो और इन अस्त्रों को शीघ्र ही तूणीर में समाविष्ट कर लो। ५१७० ब्रह्मा की बात सुनकर श्रीराम ने पूँछा हे ब्रह्मर्षि! एक बात मैं पूँछ रहा हूँ। ५१७१ श्रीराम की ओर देखकर विश्वामित्र ने कहा कि तुम शीघ्र ही इन बाणों का संम्वरण कर लो। ७२ शस्त्रास्त्रों ने ऊपर से ही कहा कि आप जो कहेंगे हम वही करेंगे। ७३ श्रीराम ने कहा कि समस्त शस्त्रो! सुनो। मैंने परीक्षा के लिये ही स्मरण किया था। ७४ आप लोग अपने-अपने स्थान पर जाकर रहें और मेरे स्मरण करने पर आ जाएँ। ७५ यह सुनकर सभी शस्त्र अपने-अपने स्थान को चले गए। उनके जाते समय घड़-घड़ का शब्द होने लगा। ७६ इसके पश्चात् दिव्य रस का श्रवण करो। शंकर जी से पार्वती जी ने पूँछा। ७७ विश्वामित्र ने श्रीराम को सभी अस्त्र प्रदान किए।

शंकर बोइले तुम्भे शुण गो भगवती। श्रीरामंकु देले मुनि लक्ष्मणकु न देलेकि ७९
बोलन्ति गउरी जे एथु अनन्तरे। किस कले दशरथ राजांक कुमरे५१८०
शस्त्रकु परीक्षा श्रीराम करन्तेण। दशदिश पूरिण घोटिले शरमान५१८१
देवताए कहन्ते श्रीराम आज्ञा देले। शुणिण शस्त्रमाने हरष होइले ८२
शस्त्र जे शान्ति हेबारु अरष्टि तुटिजाइ। आदित्य देवतार तेज विकाशइ ८३
एथु अनन्तरे जे बिश्वामित्र मुनि। हरषरे लक्ष्मणकु बिद्या कहे पुणि ८४
श्रीरामंकु जेते मन्त्र ऋषि देइ थिले। तहुँ बेनि गुणरे लक्ष्मणंकु देले ८५
अक्षयत्रोण जे पाशुपति पिनाकी धनु पुण।
शिव शक्ति शिव शूळ देले मुनि पुणि ८६
दश दिगपाळंक शस्त्रमान देले। नबकोटि देबंक शस्त्र समर्पिले ८७
जय़ बिजय़ रथ ताळध्वज दुइ। बोइले बिचारिले जे एमान मिळइ ८८
तेतिश कोटि देबतांकर जेते शर जाण। लक्ष्मणर सकळ समर्पे मुनि पुण ८९
शिब शक्ति ब्रह्म शक्ति बिष्णु इन्द्र शक्ति।
अनन्त शक्ति जोगमाय़ा शक्ति नेइ समर्पन्ति५१९०
शूळ चक्र मुदुगर मोहना अग्निशर। लक्ष्मणकु मन्त्र जे शिखाए मुनिबर५१९१
सकळ मन्त्र शिखाइ शस्त्र समर्पिले। लक्ष्मण परीक्षा जे निमन्ते सुमरिले ९२

लक्ष्मण साथ में थे, उन्हें क्यों नहीं प्रदान किए। ७८ शंकर जी ने कहा, हे भगवती! तुम सुनो। मुनि ने श्रीराम को प्रदान किए और क्या लक्ष्मण को नहीं दिया अर्थात् उन्हें भी प्रदान किए। ७९ पार्वती ने कहा कि इसके पश्चात् राजा दशरथ के पुत्रों ने क्या किया। ५१८० श्रीराम के शस्त्र परीक्षा करने पर बाण दस दिशाओं में भर गए। ५१८१ देवताओं के कहने पर श्रीराम ने आज्ञा दी जिसे सुनकर अस्त्र शस्त्रादि प्रसन्न हो गए। ८२ शस्त्रों के शान्त हो जाने से अरिष्ट दूर हो गया तथा सूर्य देव का तेज विकसित हो गया। ८३ इसके पश्चात् महर्षि विश्वामित्र ने प्रसन्नतापूर्वक विद्या की शिक्षा दी। ८४ श्रीराम को जितने मंत्र ऋषि ने दिये थे उससे दो गुने उन्होंने लक्ष्मण को प्रदान किए। ८५ अक्षय तूणीर, पाशुपत, पिनाक धनुष, शिव शक्ति तथा शिवशूल मुनि ने प्रदान किए। ८६ दश दिग्पालों के शस्त्र दिए। नौ करोड़ देवताओं के अस्त्र प्रदान किए। ८७ जय विजय तथा तालध्वज दोनों रथों के विषय में बताया कि इनका स्मरण मात्र करने पर तुम्हें प्राप्त हो जाएँगे। ८८ तैंतीस करोड़ देवताओं के जितने बाण थे वह सभी मुनि ने लक्ष्मण को समर्पित किए। ८९ शिव, ब्रह्मा विष्णु इन्द्र, अनन्त तथा योग माया की शक्तियाँ उन्हें लेकर प्रदान कीं। ५१९० शूल, चक्र, मुग्दर, मोहन तथा अग्नि शर के मंत्र मुनिश्रेष्ठ ने लक्ष्मण को सिखाए। ५१९१ सब मंत्र सिखा कर शस्त्र समर्पित कर दिए। लक्ष्मण ने परीक्षा के लिये उनका

अइले शस्त्रमान तेज विकाशिण। दिवस अन्धार जे होइलाक पुण ९३
इन्द्र दिगपाळ आसि शून्यरे बिजे कले। अनन्तकु स्तुति जे करन्ति शून्यरे ९४
देवतामाने पुणि स्तुति करिण कहि। श्रीराम बोइले शुण सुमित्रा तनयी ९५
देबे स्तुति कले जे इन्द्रंकु संगे घेनि। शस्त्रमाने जेमन्ते जिबे बोध होइ पुणि ९६
शुणि करि सउमित्री शरकु कहिले। जे जाहार निज स्थाने जाअरे बोइले ९७
आज्ञा मानि शस्त्रमाने वेगे चळि गले। जे जाहार निजस्थाने जाइ प्रबेशिले ९८
देबताए चळिगले स्वर्ग जे भुवन। श्रीराम लक्ष्मणंकर हरष हेला मन ९९
विश्वामित्र मुनि देखि होइले आनन्द। मुख विकाशइ कि पूर्णमीर चान्द५२००
श्रीराम लक्ष्मणकु मुनि बहुत प्रशंसिले। प्रसन्नरे सकळ विद्यार मन्त्र देले५२०१
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो पार्वती। श्रीरामंकु देखिण सन्तोष ब्रह्मजति २
हरषरे तिनि जण सेठारु चळि गले। जान्तेण वाटे दिव्य बिपिन देखिले ३
नाना तरु जे बनरे पल्लवि अछन्ति। फळन्ति पाचन्ति जे फुटिण झड़न्ति ४
से बनरे पशिण हरषे चळि गले। धन्य धन्य एहु बन बोलि प्रशंसिले ५
विश्वामित्र मुनिंकि पचारिले श्रीराम। कह तुम्भे महामुनि ए बनर नाम ६
रघुनाथंक वचने बोलन्ति विश्वामित्र। जाहा पचारिल तुम्भे दशरथ सुत ७

स्मरण किया। ९२ तेज विकसित करके सभी शस्त्र आ गए। दिन में अन्धेरा हो गया। ९३ इन्द्र तथा दिग्पाल आकाश से आ गए और अनन्त की स्तुति करने लगे। ९४ फिर देवताओं ने स्तुति की। श्रीराम ने कहा हे सुमित्रा-नन्दन! सुनो। ९५ इन्द्र को साथ लेकर देवताओं ने स्तुति की है। जिससे शस्त्र शान्त होकर चले जाँय। ९६ यह सुनकर सुमित्रा कुमार ने बाणों से अपने-अपने स्थानों को जाने को कहा। ९७ आज्ञा मानकर सव शस्त्र शीघ्रता से चले गए और अपने-अपने स्थानों में जाकर प्रविष्ट हो गए। ९८ देवता स्वर्ग लोक चले गए। श्रीराम तथा लक्ष्मण का मन प्रसन्न हो गया। ९९ महर्षि विश्वामित्र देखकर प्रसन्न हो गए। पूर्णिमा के चन्द्र के समान उनका मुख विकसित हो गया। ५२०० मुनि ने श्रीराम तथा लक्ष्मण की बहुत प्रशंसा की और प्रसन्न होकर समस्त विद्याओं के मंत्र दे दिए। ५२०१ हे पार्वती! सुनो। इसके पश्चात् ब्रह्मर्षि श्रीराम को देखकर सन्तुष्ट हो गए। २ तीनों लोग प्रसन्नता से वहाँ से चल दिये। जाते हुए उन्होंने मार्ग में दिव्य वन देखा। ३ वन में अनेक प्रकार के वृक्ष पल्लवित थे। वह फलते पकते तथा फूटकर झड़ जाते थे। ४ उस वन में घुसकर वह हर्ष से चले गए। वह 'धन्य है यह वन' कहते हुए वहुत प्रसंसा करने लगे। ५ श्रीराम ने महर्षि विश्वामित्र से पूँछा, हे मुनि! आप इस वन का नाम वतलाइये। ६ रघुनाथ जी के वचनों को सुनकर विश्वामित्र ने कहा, हे दशरथनन्दन तुमने जो पूँछा है उसे सुनो। ५२०७

बळि उपाख्यान

सत्य जुगरे बळि बोलिण नृपति। तिनिपुर जिणिण होइला चक्रबर्त्ती १
दान देबारे जे तार होइला बिश्वास। इन्द्रपद घेनिला सेबइलोचन सुत २
देबताए पळाइण होइले एक गोष्ठी। नारायणंकु सुमरणा कले परमेष्ठि ३
बेदबर स्तुति जाणिले पद्मनाभ। अनन्त शज्या तेजि मिळिले देबतांक आग ४
देखिण नमस्कार कले देबगण। हरष मनरे जे बोइले नारायण ५
केबण कार्ज्य तुम्भ अछि हे देब कह। तुम्भेत देबताए अट मोर प्रिय ६
कर जोडि करिण बोइले बेदपति। बळि नृपति तिनि पुरे कलाक अनीति ७
दान दिअन्ते से जे धर्मरे बळिआर। तिनि पुरे बिख्यात होइला धर्म तार ८
देबलोकरे बसिण जाइण सत्वर। प्रतिदिन दान से जे दिअइ निरन्तर ९
प्रथमे मञ्चपुरे नरेन्द्र होइला। सपत द्वीप राजांकु चरणे खटाइला १०
द्वितीये पाताळकु गला जे बीरमणि। नागराजा संगरे कला जे द्वन्द पुणि ११
जिणन्ते नागराजा धरणी तेज्या कला। देखिण बळिराजा धरणी धइला १२
बेनि लक्ष बरष एथिरे गला बहि। लुचिले नागबळ बळिर भय पाइ १३
ईश्वर देबतांकु जाइण सेवा कले। जाणि करि ईश्वर बृषभ चढि गले १४

बलि का उपाख्यान

सतयुग में बलि नाम का राजा था जो तीनों लोकों को जीतकर चकवर्ती हो गया। १ उसे दान देने की श्रद्धा हुई। उस विरोचन के पुत्र ने इन्द्र पद ले लिया। २ देवता भागकर एकजुट हो गए। ब्रह्मा जी ने भगवान का स्मरण किया। ३ पद्मनाभ नारायण ने ब्रह्मा की स्तुति सुन ली और अनन्त शैय्या का त्याग करके देवताओं के समक्ष आ गए। ४ देवताओं ने उन्हें देखकर नमस्कार किया। भगवान ने प्रसन्न मन से कहा। ५ हे देवगण ! कहो आपका क्या कार्य है। आप लोग तो हमारे प्रिय हैं। ६ वेदपति ब्रह्मा ने हाथ जोड़कर कहा कि राजा बलि ने तीनों लोकों में अनीति फैला रक्खी है। ७ दान देने से वह धर्म में बड़ा है। उसका धर्म तीनों लोकों में विख्यात है। ८ वह प्रतिदिन देवलोक में जाकर बैठ जाता है और निरन्तर दान देता रहता है। ९ पहले वह मृत्यु लोक में राजा बना और सातों द्वीपों के राजाओं को अपनी सेवा में लगा लिया। १० दूसरी बार वीर शिरोमणि पाताल गया और उसने नागराज के साथ द्वन्द्व युद्ध किया। ११ विजित होने पर नागराज ने पृथ्वी का त्याग कर दिया। यह देखकर राजा बलि ने पृथ्वी को साध लिया। १२ इस प्रकार से दो लाख वर्ष व्यतीत हो गए। बलि का भय पाकर नागों के दल छिप गए। १३ वह जाकर भगवान शंकर की सेवा करने लगे। यह जानकर शंकर जी

बळिराजा आगरे होइले परबेश । ईश्वरंकु बळि देखि होइला सन्तोष १५
देखिण बळिराजा शिबंकु मान्य कला । केणे अइल बोलि त्रिलोचने पुच्छिला १६
ईश्वर बोइले आम्भे अइलुं जहिँकि । सत्य कले कहिबा नोहिले फेरि बाटि १७
बळि बोले गुरु शिष्यरे काहिँ सत्य । बाप पुअरे सत्य करिबा आश्चम्बित १८
तुम्भे जाहा मागिब निश्चय देबि मुहिँ । तुम्भे मोर पिता जे बर देबार साइँ १९
तुम्भर प्रसन्ने सिना जिणिलि तिनिपुर । मोहर शरीर गोटि अटइ तुम्भर २०
ईश्वर बोइले तुरे तळपुर तेज । आम्भर आश्रित सिना अटइ नागराज २१
शुणिण बळिराजा बोइलाक पुणि ।
तुम्भर बोले धरणी छाड़िलि एबे जाणि २२
शुणिण सदाशिब बासुकी राइ बेगे । बळिराजा तेजि बारु धरिले नागराजे २३
नागबळ घेनि बासुकी पाताळे रहिले । दैत्य बळ घेनि वळि मञ्चकु अइले २४
मञ्चरे सपत द्वीप साधिलेक जेणु । बतिश लक्ष राजन बन्धन लोड़े तेणु २५
दश सहस्त्र बरष परिजन्ते बन्दी । करिण बळिराजा बिचारे मन्द बुद्धि २६
बिचारिला राजमेध जाग मुँ करिबि । सकळ राजामानंकु अग्निरे निबेशिबि २७
एमन्त बिचारन्ते जाणिले देवगण । मोते जे सुमरणा कलेक सर्बे पुण २८

वृषभारूढ़ होकर गए । १४ वह राजा बलि के समक्ष जा पहुँचे । बलि शंकर को देखकर सन्तुष्ट हो गया । १५ यह देखकर राजा बलि ने शंकर जी का मान्य धर्म किया और उसने त्रिलोचन से आने का कारण पूँछा । १६ शंकर जी बोले कि हम जिस कारण से आए हैं वह प्रतिज्ञा करने पर कहेंगे अन्यथा लौट जाएँगे । १७ बलि ने कहा कि गुरु और शिष्य में प्रतिज्ञा कैसी ? पिता और पुत्र में प्रतिज्ञा हो यह आश्चर्य की बात है । १८ आप जो माँगेंगे मैं उसे निश्चय ही प्रदान करूँगा । आप मेरे पिता और वर देनेवाले नाथ हैं । १९ आपकी कृपा से ही मैंने तीनो लोक जीत लिये है । मेरा सम्पूर्ण शरीर आपका है । २० शंकर ने कहा कि तुम पाताल का त्याग कर दो । नागराज तो हमारे आश्रित हैं । २१ फिर राजा बलि ने ऐसा सुनकर कहा कि आपके कहने से अब पृथ्वी को छोड़ दे रहा हूँ । २२ यह सुनकर सदा कल्याण करनेवाले महादेव ने वासुकी नाग को शीघ्र ही बुलाया । राजा बलि के त्यागने पर (पृथ्वी) नागराज ने धारण की । २३ नागदल लेकर वासुकी पाताल में रहने लगे और दैत्य दल लेकर बलि मृत्युलोक को चले आए । २४ उसने मृत्यु लोक में सात द्वीपों को जीत लिया और बत्तीस लाख राजाओं को बन्दी बना लिया । २५ दस हजार वर्ष तक उन राजाओ को बन्दी रखकर मन्द बुद्धि राजा बलि ने विचार किया । २६ उसने सोचा कि मैं राजमेध यज्ञ करूँगा और समस्त राजाओं को अग्नि में डाल दूँगा । २७ उसके इस विचार को देवगण समझ गए । उन सबने पुनः मेरा

जाणिण मर्त्यपुर आम्भे जे बेगे गलु । बळिराजा आगरे जाइण बिजे कलु २९
देखिण बळिराजा जे नमस्कार कला । अइलु मुनिबर आम्भर भल हेला ३०
राजमेध जज्ञ मुँ करिबि एबे पुण । सेथिर न्याय़ सिना तुम्भे परिमण ३१
आम्भे बोइलु दैत्यराय़ नुहँइ उचित । बळबन्त हेले राजा हुअइ से हित ३२
राजपद बळबन्त लोकर अटे शिरी । राजांकु मारिले तु केबण जशकरि ३३
केबे हेँ स्वर्गबास नोहिं बटि तोते । आपणा पण बिनाशन कर कदाचिते ३४
शुणिण बळिराजा बोलइ बचन ।
तुम्भे जेबे मना कल नाहिँकि प्रय़ोजन ३५
सकळ राजामानंकु छाडिण मुहिँ देबि । तुम्भर कहिबा बचन मुँ प्रतिपाळिबि ३६
जेतेक राजा मुं जे रखिछि बन्दि करि । जे जाहार राज्यकु निअन्तु दान करि ३७
राजदत्त पृथिबी जे आज ठारु हेउ । पिता दत्त कन्या जे जुगे जुगे थाउ ३८
एते बोलि सकळ राजांकु छाडि देला । दत्त करि राज्य देलि जाअरे बोइला ३९
शुणिण सकळ राजा हरषरे गले । जे जाहा राज्यरे जाइ निश्चिन्ते रहिले ४०
मर्त्यपुर तेजि बळि स्वर्गपुर गला । देबंकु घउड़िदेइ स्वर्गरे इन्द्र हेला ४१
नाराय़ण बोइले से अन्याय़ किस कला । तळपुरे रहिबारु न रखिदेल परा ४२
मर्त्त्यरे रहिबारु तापरे हेल त्वरा । स्वर्गपुरकु पुणि से मन कला परा ४३

स्मरण किया। २८ यह जानकर मैं शीघ्र ही मृत्युलोक गया और राजा बलि के समक्ष जा पहुँचा। २९ राजा बलि ने देखकर (मुझे) नमस्कार किया तथा कहने लगा कि हे मुनिश्रेष्ठ ! आप आए यह हमारा सौभाग्य है। ३० मैं अब राजमेध यज्ञ करूँगा। उसके न्याय के लिए आप साक्षी हैं। ३१ मैंने कहा हे दैत्यराज ! यह उचित नहीं है। राजा बलवान होने से हितकर होता है। ३२ बलवान लोगों की श्री ही राजपद है। राजाओं को मारकर तुम कौन सा यश करोगे। ३३ तुम्हें कभी भी स्वर्ग प्राप्त न होगा। आप अपने अपनत्व का विनाश कदाचित न करें। ३४ यह सुनकर राजा बलि ने कहा कि यदि आप मना करते हैं तो फिर हमारा कोई प्रयोजन नहीं है। ३५ मैं सब राजाओं को छोड़ दूँगा। तथा आपकी आज्ञा का मैं पालन करूँगा। ३६ मैंने जितने भी राजा बन्दी बना रक्खे है वह सब अपना-अपना राज्य दान में ले लें। ३७ आज से यह पृथ्वी राजा के द्वारा प्रदत्त हो और युग-युग तक पिता द्वारा दी गई कन्या के समान रहे। ३८ ऐसा कहकर उसने समस्त राजाओं को छोड़ दिया और कहा कि मैंने यह राज्य दिया है। अब तुम लोग जाओ। ३९ यह सुनकर समस्त राजागण प्रसन्नता से चले गये और अपने-अपने राज्यों में निश्चिन्त रहने लगे। ४० मृत्युलोक को छोड़कर बलि स्वर्ग लोक चला गया और देवताओं को खदेड़कर स्वर्ग में इन्द्र बन गया। ४१ भगवान ने कहा कि इसने अन्याय क्या किया है। पाताल लोक में रहने पर तुमने उसे वहाँ न रहने दिया। ४२ मृत्यु लोक में रहने पर

दयाकु दैत्य वीर तुम्भर बोल करि। धर्म कला लोककु बिचारुचु मारि ४४
इन्द्रपद घेनिण जे स्वर्गरे हेला इन्द्र। ताहांकु ब्रह्मा किम्पा करुअछि राग ४५
शुणिण वेदवर देवताए कहि। स्वर्गरे इन्द्र केउँ असुर होइ नाहिँ ४६
कर हे प्रतिकार रहे तार दर्प। देवे मण्डनि हेले जे से होइला सर्प ४७
अति गर्व बहिला जे वैलोचन सुत। दैत्यगण साधिण जे साधिला जगत ४८
आम्भ मानंकु से बहुत दुःख देला। तेणु करि तुम्भ ठारे गुहारि कलु परा ४९
देवे कहिबारु जे शुणिले नारायण। वोइले निश्चे आम्भे होइबु जनम ५०
काश्यप कुळरे आम्भे निश्चे हेबु जात। स्वर्गरु बळिराजा जिब जे तुरित ५१
अदितिर गर्भरे जे हेबि अवतार। करिबि अनुग्रह देवे रहिबे निरन्तर ५२
एते कहि वासुदेव अन्तर्द्धान हेले। अनन्त शज्यापरे प्रवेश जाइ कले ५३
एथु अनन्तरे देवे लुचिला स्थाने गले।
किछि दिन अन्तरे नारायण विजे कले ५४
अदितिर गर्भरे जात होइलेक पुण। काश्यप ऋषि देखि हरष हेले जाण ५५
जेउँ काळे वासुदेव होइले पुण जात। बाउन आंगुळ मांस शरीर सम्भूत ५६
कज्वळ कळा जिणि अटइ शरीर। नीळेन्दि जळरे जेन्हे भ्रमइ भ्रमर ५७

उसके पीछे लग गये फिर उसने स्वर्ग लोक में आने का मन किया। ४३ दया के लिये वीर दैत्य आपका कहना मानता है। धर्म करनेवाले व्यक्ति को विचार करके मारना होगा। ४४ वह इन्द्र का पद लेकर स्वर्ग में इन्द्र हो गया है। उससे क्रोध क्यों है। ४५ यह सुनकर ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि स्वर्ग में कोई असुर इन्द्र नहीं हुआ है। ४६ तुम प्रतिकार करो जिससे उसका घमंड रुक जाये। देवता मणि हुये और वह सर्प वन गया। ४७ विरोचन के पुत्र को अत्यन्त गर्व हो गया। उसने दैत्यों सहित संसार को परास्त कर दिया। ४८ हमें उसने वहुत दुःख दिया है। इस कारण से हम लोगों ने आपके पास गुहार की है। भगवान ने देवताओं का कथन सुनकर कहा कि मैं निश्चित रूप से जन्म धारण करूँगा। ४९-५० हम निश्चय ही कश्यप-वंश में जन्म लेंगे। राजा वलि स्वर्ग से शीघ्र ही चला जायेगा। ५१ मैं अदिति के गर्भ से अवतरित होकर अनुग्रह करूँगा जिससे देवता निश्चिन्त रहेंगे। ५२ इतना कहकर नारायण अन्तर्ध्यान हो गये और अनन्त शैया पर जा पहुँचे। ५३ इसके पश्चात् देवगण छिपने के स्थानों पर पहुँच गये। कुछ दिनों के पश्चात् भगवान उपस्थित हुये। ५४ वह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुये। उन्हें देखकर कश्यप ऋषि प्रसन्न हो गये। ५५ जिस समय भगवान वासुदेव उत्पन्न हुये तब उनका शरीर बाँवन अंगुल माँस का था। ५६ उनका शरीर काजल की कांति को जीतने वाला था। लगता था जैसे नील जल में भौंरा भ्रमण कर रहा हो। ५७ हे श्रीराम चन्द्र ! आप सुनिये।

एथु अनन्तरे तुम्भे श्रीरामचन्द्र शुभ। दिनकु दिन तेज विकाश नारायण ५८
पाञ्च बरषे कर्ण बिद्ध सप्त बरषे विद्यापढि। नबम बर्षे बडु होइले श्रीहरि ५९
ब्रह्मचारी बेश होइण सेहु पुण। चारि देव अध्यान मन्त्र पढ़ि जाण ६०
बेदबर बोइले जन्म चक्रपाणि। बळिराजा नृपतिर जाग बेळ जाणि ६१
तिनिपुर राजा जे अटन्ति तहिँ मिळि। ऋषि ब्राह्मण जे अनेक तपशाळी ६२
बृहस्पतिक संगरे देवतागण आसि। देखिण पचारन्ति बळि जे नृपति ६३
एहि द्विजबर अटन्ति तुम्भर जे किस। बामन बोइले आम्भे काश्यपर सुत ६४
तु एबे स्वर्गरे इन्द्र करिण अछु जाग। मागन्ता लोकंकर अटे परम भाग्य ६५
शुणि करि बोइले बळि नृपमणि। तुम्भे किस मागिब मोते माग पुणि ६६
दान देले तुम्भे करिबटिकि पारकरि। बिशेषे सान तुम्भे नुहँहे मन्त्रचारि ६७
बामन बोइले तुम्भे जाणिल केमन्ते। देबमन्त्र पढ़िलेकि जीबंक परते ६८
जाहा पचारिबु राजा से कथा देबि कहि। सत्य करि देबु तु तिनिपाद मही ६९
मोहर चरणरे गणि तिनिपाद देबु। जेबे तु न देबु राजा सत्यकु लंघिबु ७०
तेबे तोते ए राजभोग अभोग हेबु पुण।
सत्य थिले काळे काळे बञ्चिब राजन ७१
हसिण बळिराजा बोइले सत्य कलि। पारु जेबे तु ब्राह्मण शामदेव बोलि ७२

इसके पश्चात् दिन-प्रतिदिन नारायण का तेज विकसित होने लगा। ५८ पंचम वर्ष में कर्ण छेदन सातवें वर्ष में विद्या अध्ययन और नवें वर्ष में श्री भगवान ब्रह्मचारी बनें। ५९ उन्होंने ब्रह्मचारी का वेश धारण किया और चारों वेदों का मंत्र पढ़कर अध्ययन करने लगे। ६० ब्रह्मा ने कहा चक्रधारी का जन्म राजा बलि ने योग वल से जान लिया। ६१ तीनों लोकों के राजा वहाँ एकत्रित थे। अनेक तपस्वी ब्राह्मण तथा ऋषि भी थे। ६२ बृहस्पति के साथ देवगण आए। उन्हें देखकर राजा बलि ने पूँछा। ६३ यह श्रेष्ठ ब्राह्मण आपके कौन हैं ? वामन ने कहा मै कश्यप का पुत्र हूँ। ६४ तुम इस समय स्वर्ग के इन्द्र हो और यज्ञ कर रहे हो। भिखारियों के परम भाग्य हैं। ६५ यह सुनकर राजाओं में श्रेष्ठ बलि ने कहा कि आपको जो माँगना हो हमसे माँगो। ६६ दान देने से क्या तुम उसे सम्हाल सकोगे। हे मंत्रचारी तुम विशेषतयः छोटे नहीं हो। ६७ वामन ने कहा कि आपने कैसे जाना। देवमंत्र पढ़ने से क्या जीव की प्रतीति हो सकती है। ६८ हे राजन्। आप जो बात पूँछेंगे मैं उसे बता दूँगा। आप प्रतिज्ञा करके मुझे तीन पग भूमि प्रदान करें। ६९ मेरे पैर की माप से तीन पग भूमि देना। हे राजन् ! यदि तुम न दोगे तो प्रतिज्ञा का उल्लंघन करोगे। ७० तब तुम राज्य का भोग न कर पाओगे। हे राजन् ! प्रतिज्ञा रह जाने पर तुम युग-युग तक रहोगे। ७१ राजा बलि ने हँसकर कहा कि मैं प्रतिज्ञा कर रहा हूँ। हे ब्राह्मण ! यदि तुममें सामर्थ हो तो सामवेद बोलो। ७२ तब मैं तुम्हें तीन

तेबे से देबि मुं जे मेदिनी तिनि पाद । शुणि करि श्रीहरि मनु छाडिले बिषाद ७३
बोइले राजन हे आसन बेगे दिअ । जेबे शामवेद शुणि बारे तोर स्नेह ७४
शुणिण बळि नृपति रत्न पिढ़ा देला । आसन करि एथिरे बसहे बोइला ७५
बामन बोइले एबे कथाए तुम्भे शुण । आसन करि एबे वस मो पाशेण ७६
शुणिण बळिराजा परम तोष हेले । ब्राह्मण पाशे कनक आसने वसिले ७७
राजा बसिबार देखिण बामन । कुश बिड़ा छता पोति मन्त्र पोथि पुण ७८
थोइ करि बसिले आसन शोधि करि ।
छयानबे कोटि राजा बसिछन्ति तहिं पूरि ७९
बास्तरी लक्ष जे ब्राह्मण पोथि पुण । तिनिपुर सारस्वत बिजे राजागण ८०
देब शुणि समस्ते आश्चर्य्य मणन्ति । राजा देबता ऋषि परजा अछन्ति ८१
दश दिगपाळ नवग्रह द्विजबर पुण । समस्ते बेढि छन्ति बामन मूर्त्ति कि जाण ८२
असुर गण पुरि अछन्ति सर्बे पुणि । कोळाहळ शबदरे चमके मेदिनी ८३
शुणन्ति सर्बजने निशबद होइ । समस्ते बिचारन्ति अल्प बयस एहि ८४
सुन्दर दिशुअछि अपूर्व बाळ पोइ । कोकिळर बाणी प्राये बचन कहइ ८५
बामन मुरति एबे उतरी पइता । कररे कुश बटु चारिवर्णे चिता ८६
लोटणि छन्दे बाळ बान्धि छन्ति एहु । रूपरे सुन्दर दिशे चन्द्रकु जिणि राहु ८७

पग भूमि प्रदान करूँगा। यह सुनकर श्रीहरि के मन का विषाद दूर हो गया। ७३ उन्होंने कहा हे राजन्! शीघ्र ही आसन दो, यदि तुम्हें सामवेद सुनने का प्रेम हो। ७४ यह सुनकर राजा बलि ने रत्न-पीठ प्रदान किया और कहा कि इस पर आसन करके बैठ जाइये। ७५ वामन ने कहा कि आप एक बात सुनिए। आप भी मेरे पास आसन पर बैठ जाइये। ७६ यह सुनकर राजा बलि परम सन्तुष्ट हुए तथा ब्राह्मण के निकट स्वर्ण के आसन पर बैठ गए। ७७ वामन ने राजा को बैठा देखकर कुश का गट्ठर, छाता तथा मंत्र की पोथी रख दी। ७८ यह रखकर आसन शुद्ध करके वह बैठ गए। वहाँ पर छयानवे करोड़ राजा भरे थे। ७९ वहत्तर लाख पोथीधारी ब्राह्मण तथा तीनों लोकों के सार्वभौम राजा लोग उपस्थित थे। ८० देवतागण सुनकर आश्चर्य करने लगे। देवराज ऋषि तथा प्रजा सभी थे। ८१ दस दिगपाल, नवग्रह, श्रेष्ठ ब्राह्मण सभी वामन को घेरकर बैठे थे। ८२ सभी राक्षसगण भी उपस्थित थे। कोलाहल के शब्द से पृथ्वी चौंक रही थी। ८३ सभी लोग शांत होकर सुन रहे थे और सोच रहे थे कि यह अल्प-आयु वाला अपूर्व सुन्दर बालक कोयल के समान बोल रहा है। ८४-८५ यह वामन मूर्ति उत्तरीय तथा यज्ञोपवीत धारण किये हैं। हाथ में कुशवटु तथा चार वर्ण के तिलक धारण किये है। ८६ इसने लटकने वाले बालों को समेटकर बाँध रखा है। रूप में सुन्दर तथा चन्द्रमा को जीतने

एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। देबता असुर राजा समस्ते बिचारि ८८
जेणु से विष्णु माया सकळ ठारे घोटि। बळिराजा सहिते समस्ते मोह सेठि ८९
बळि राजाकु चाहिँ बामन कहे पुण। धीर करि मनरे बेद एबे शुण ९०
बळिराजा बोइले बामन देब शुण। एक दिने केते बेद करिब संधान ९१
बामन बोइले जेबे शुणिपारु राए। एक दिने चारि बेद मु पढि पार ए ९२
बयाळिशि काण्डि जे मन्त्र देबि पढि।
बसि करि शुण राजा निश्चळ मन करि ९३
शुणिण बळिराजा पचारे बामनरे। चारि बेद निर्णय जे केबण प्रकार ९४
बयाळिश काण्डि जे अटइ मन्त्र सार। केउँ बेद केते काण्ड अटेकि प्रकार ९५
बामन बोइले शुण हे महीधर। श्याम बेद गोटि अटे शुकळ प्रकार ९६
एगार काण्डि मन्त्र ए बेद अंग देह। प्रथमे बिधाता शिखिला करि स्नेह ९७
द्वितीय बेद नाम रुक्‌बेद कहि। दश काण्डि मन्त्र जे ताहार अटे देही ९८
बारण बेद गोटि नुहुँइ मिशा जाण। मूषळि अंश बेदए अटइ प्रमाण ९९
तृतीय बेद गोटि जदुर्बेद कहि। बसन्त बर्ण बेद सबु स्थानरे बिहरइ १००
एगार काण्डि मन्त्र ए बेद जे होइ। एहि बेद गोटिरे बेदबरर स्नेही १०१
चतुर्थ बेद गोटि अटइ जे नीळ। अथर्ब बेद से' जे से' बेद निर्गळ २

वाले राहु के समान दिख रहा है। ८७ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् देवता तथा असुर राजा सभी ने विचार किया। ८८ तभी विष्णु की माया ने सबको आच्छादित कर दिया। राजा बलि के सहित वहाँ सभी लोग मोहित हो गये। ८९ फिर राजा बलि को देखकर वामन ने कहा अब मन स्थिर करके वेद श्रवण कीजिये। ९० राजा वलि ने कहा हे वामन देव ! सुनो। आप एक दिन में कितने वेदों का पाठ करेंगे। ९१ वामन ने कहा हे राजन् ! यदि आप सुन सकें तो मैं एक दिन में चारों वेद पढ़ सकता हूँ। ९२ मैं बियालीस कांड के मंत्र पढ़ दूँगा। हे राजा ! आप एकाग्रमन से बैठकर सुनो। ९३ येह सुनकर राजा बलि ने वामन से पूंछा कि चारों वेदों का निर्णय किस प्रकार का है। ९४ बियालीस कांड में सार मंत्र है। कौन सा वेद कितने कांडों का और किस प्रकार का है। ९५ वामन ने कहा हे महिपाल ! सुनो। सम्पूर्ण सामवेद शुक्ल प्रकार का है। ९६ इस वेद के ग्यारह कांड मंत्र वेदांग हैं। पहले ब्रह्मा जी ने स्नेह-पूर्वक इसे सीखा। ९७ दूसरे वेद का नाम ऋग्वेद कहा गया है। उसके वेदांग दस कांड मंत्र हैं। ९८ बारण वेद पूरा मिला जुला नहीं है। मूसलअंश इस वेद का प्रमाण है। ९९ तीसरा वेद यजुर्वेद कहा गया है। यह वसंती वर्ण का वेद सब स्थानों में पाया जाता है। १०० यह वेद ग्यारह कांड मंत्रों का है। यह वेद ब्रह्मा को प्रिय है। १०१ चौथा वेद नील है। वह अथर्ववेद से उद्धृत

अथर्बबेद गोटि अटइ कळा वर्ण। स्त्री बेद गोटि सावित्री न्याय़ जाण ३
दश काण्डि मन्त्र जे से मन्त्वर सर्ब। सेहि मन्त्र पढिले तृपुति देव सर्ब ४
शीतळाष्टक उपरे जेतेक जनम। अध्यय़न कले देवी शुकळ हुए पुण ५
शुणि करि बळिराजा परम तोष हेला। पढ़ प्रथम बेदहे बोलिण बोइला ६
बळिर पाशे बामन कलेक बेद ध्वनि। स्वर्गरे प्रशंसा जे कले सुर मुनि ७
श्याम बेद पढिले गान्धार राग करि। दक्षिण करे जवरे आळाप बेग करि ८
श्यामबेद पढ़न्ते कम्पिला बसुमती। निशबद होइण सभारे सर्बे छन्ति ९
बेद शुणि अति सुख पाइले नृपति। बेनि घडिरे श्याम बेद बामन पढिलेटि ११०
एगार काण्डि वेद घडिके देले पढि। शुणिण परम तोष बळि जे नृपति १११
द्वितीय़े रुक्‌बेद बामन कले ध्वनि। दश काण्डि मन्त्र जे पढिले बेगे पुणि १२
छ घड़ि समय़ जे सेथिरे वहि गला। जदुर्बेद ॐकार जे बामन पुण कला १३
से बेद पढ़न्ते एगार काण्डि मन्त्र। दण्डकरे से बेद पढिले पद्म नेत्र १४
चतुर्थे सरन्ति बेद पढिले वेग करि। दश काण्डि मन्त्र तुरिते देले पढ़ि १५
शुणि करि समस्ते मोहमान गले। असुर मन बामन शीतळ कराइले १६
बैशाख शुक्ल जे त्रय़ोदशी दिन। बधूक नामे बारे अटइ प्रमाण १७

हुआ है। २ अथर्ववेद काले वर्ण का है। सावित्री न्याय को स्त्री वेद समझो। ३ उन सारे मंत्रों में दस कांड मंत्र सर्वस्व हैं। उन मंत्रों को पढ़ने से समस्त देवता तृप्त होते हैं। ४ शीतलाष्टक के ऊपर जितने भी जन्म हैं, उनका अध्ययन करने से देवी प्रसन्न होती है। ५ यह सुनकर राजा वलि अत्यन्त संतुष्ट हो गये और उसने प्रथम वेद का पाठ करने के लिये कहा। ६ वलि के निकट वामन ने वेद ध्वनि की। स्वर्ग में देवता और मुनि प्रशंसा करने लगे। ७ उन्होंने गान्धार राग में सामवेद का पाठ किया और दाहिने हाथ को संचालन करके शीघ्र ही आलाप भरा। ८ सामवेद पढ़ते ही पृथ्वी काँपने लगी। सभी लोग सभा में शांत थे। ९ वेद सुनकर राजा को अत्यन्त सुख प्राप्त हुआ। वामन ने दो घड़ी पर्यन्त सामवेद का पाठ किया। ११० ग्यारह कांड वेद उन्होंने घड़ी भर में पढ़ दिये, जिसे सुनकर राजा वलि अत्यन्त संतुष्ट हो गये। १११ दूसरी वार वामन ने ऋग्वेद की ध्वनि की। उन्होने शीघ्र ही दस कांड मंत्र पढ़ डाले। १२ इसमें छह घड़ी का समय व्यतीत हो गया फिर वामन ने ओंकारयुक्त यजुर्वेद का पाठ किया। १३ पद्मलोचन भगवान को वेद के ग्यारह कांड मंत्रों को पढ़ने में एक दण्ड का समय लगा। १४ चौथा पूर्ण होते उन्होंने शीघ्र ही वेद पाठ किया और दस कांड मंत्रों का तुरन्त पाठकर दिया। १५ यह सुनकर सभी लोग मोहित हो गये। वामन ने असुर का मन शीतल कर दिया। १६ वैसाख शुक्ल की त्रयोदशी का दिन था। प्रामाणिक रूप से बुधवार का दिन था। १७

एगार घडि समयरे बेदमन्त्र पढ़ि । शुणिण बळिराजा मनरे श्रद्धाकरि १८
माग माग दान तुम्भे बोइले चक्रबर्त्ती । शुणि करि हरष जे कमळार पति १९
बळि बोइले बामन मागु कना दान । बामन बोले मागिछि तिनि पादभूमि पुण १२०
बळि बोइले बामन आउत लोभ नाहिँ । बामन बोइले सेहि सत्यरे मोर स्नेही १२१
बळि बोइले मोर से बचन सत्य । प्रह्लाद पिता मोर कले एक ब्रत २२
तेणु से श्रीहरिंकि लभिले काळे काळे । तुम्भे जाहा मागिल मुँ न देबिटि तिळे २३
बामन बोइले प्रह्लादकु जिबु बळि । दान देले प्रतिदिन देखिबु नरहरि २४
शुणिण मन्त्री बोले शुण हे मन्त्रीवर । ए बामन गोटि जे अटन्ति चक्रधर २५
देबताए कहिबारु तुम्भर दुष्टपण । तेणु दान मागिबाकु अइले नारायण २६
माया बळे हरि जे घेनिबे तोर शिरी । अमरगणंकर छळरे मूरारी २७
तुम्भे किना ए कथा न जाणि दान जाच । आपणार पदार्थ पररे नेइ सञ्च २८
राजा बोइले से जेबे अटन्ति दामोदर । जाग सुफळ निश्चे होइला मोहर २९
देबइँ दान निश्चे घेनइँ बनमाळी । पूर्बर पाप मोर जाउ जे निकिळि १३०
मन्त्री ताकु तिआरन्ते जाणिले जगन्नाथ ।
आपणे ताहाकु ठारि देले बाम हस्त १३१

उन्होंने ग्यारह घड़ी समय तक वेदमंत्रों का पाठ किया। जिसे सुनकर राजा बलि के मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी। १८ चक्रवर्त्ती राजा ने उनसे दान माँगने को कहा जिसे सुनकर लक्ष्मीपति प्रसन्न हो गये। १९ बलि ने कहा हे वामन दान क्यों नहीं माँग रहे। वामन ने कहा कि मैंने तीन पग भूमि तो माँगी। १२० बलि ने कहा अरे वामन! और तो लोभ नहीं है। वामन बोले उसी प्रतिज्ञा से हम संतुष्ट हो जायेंगे। १२१ बलि ने कहा कि मेरे वचन सत्य हैं। मेरे पिता प्रह्लाद ने एक व्रत किया था। २२ इसलिए उन्होंने युग-युग तक भगवान को प्राप्त किया था। तुमने जो माँगा, वह मैं तिल भर अर्थात् इतना कम नहीं दूँगा। २३ वामन ने कहा कि तुम प्रह्लाद से भी महिमावंत होगे। दान देने से प्रतिदिन नरहरि का दर्शन करोगे। २४ यह सुनकर मंत्रज्ञ ने कहा हे श्रेष्ठ दाता! सुनो। यह वामन चक्रधारी भगवान हैं। २५ देवताओं के द्वारा आपकी दुष्टता के विषय में कहने से भगवान दान माँगने के लिये आये हैं। २६ नारायण माया के बल तुम्हारी श्री का हरण कर लेंगे और यह मुरारी देवताओं की छलना है। २७ तुम यह बात न समझ कर दान के लिये कह रहे हो। अपनी वस्तु को दूसरे से लेकर संचित करो। २८ राजा ने कहा कि यदि यह दामोदर है तो मेरा यज्ञ निश्चित रूप से सफल हो गया। २९ मैं निश्चित रूप से दान दूँगा जिसे बन-माली ग्रहण करें। मेरा पहले का पाप नष्ट हो जाये। १३० मंत्रज्ञ के उसे सचेत करने पर जगत के स्वामी ने जान लिया और उन्होंने स्वयं उसे बाँये हाथ

जाणिण तुनि होइ रहिले शुक्र मन्त्री । बामन बोइले राजा अटु पुण्य बन्ती ३२
सत्य करिण किम्पा होइल एबे तुनि । मोहर वेदमन्त्र शुणिल सर्बे पुणि ३३
तुम्भर सत्य बाक्य समस्ते छन्ति जाणि । देबुकि न देबु कह हे नृपमणि ३४
हसिण बोइले से जे बळि नृपराए । जाहा मुँ सत्य करिछि से कथा आन नुहे ३५
निअ हे धन रत्न जान सुखासन । आनन्द मनरे देलि निअ हे वहन ३६
बामन बोइले मोर सेथिरे कार्ज्य नाहिँ ।
पाशोरिलु राजा मुँ जाहा मागि थिलइँ ३७
राजन बोइले तोते करि देबा बिभा । बाड़ि बृत्ति शासन जे मठ तोळि देबा ३८
बामन बोइले तोर नष्ट जे प्रकृति । अज्ञानीक पराये तु कहुछु नृपति ३९
जाहा मागिलि मुँ जे ताहाकु न देउ । केसनेक दैत्य स्वर्गे इन्द्र तु बोलाउ १४०
भल आश्राकरि आम्भे अइलु जे तोते ।
असुर जाति सिना तो ठारु नाहिँ सत्ये १४१
मत्त गज जेसनेक बेण्टकु बेखि कम्पि । बामन बचने बळि राजा जे चमकि ४२
आस आस बामन तु धर कुश पाणि । प्रसन्न होइण से जे बोलइ नृपमणि ४३
केबळ बामन जे कहिण अछु जाहा । श्री हरिरे दरशन नित्ये मोर प्रिया ४४
तुम्भे त बामन सान न जाण हो किछि । केउँ दान नेबाकु हे तुम्भ मन इच्छि ४५

से सकेत दिया । १३१ यह जानकर मांत्रिक शुक्राचार्य अवाक् रह गये । वामन ने कहा हे राजन ! तुम पुण्यवान हो । ३२ प्रतिज्ञा करके अब आश्चर्य में क्यों पड़ गये । तुमने मेरे सारे वेदमंत्र सुन लिये । ३३ आपकी प्रतिज्ञा की बात समस्त लोगों को ज्ञात है । हे नृपश्रेष्ठ ! बताओ । तुम दान दोगे अथवा नहीं । ३४ राजा बलि ने हँसकर कहा जो मैंने प्रतिज्ञा की है वह मिथ्या नहीं हो सकती । ३५ तुम धन, रत्न, यान, सुखासन शीघ्र ही ग्रहण करो । मैं प्रसन्नचित्त होकर दे रहा हूँ । ३६ वामन ने कहा मुझे उससे सरोकार नही है । हे राजा ! मैंने जो माँगा था क्या आप उसे भूल गये । ३७ राजा ने कहा मैं तुम्हारा विवाह करा दूँगा । घर-द्वार आजीविका के साधन कराकर मठ बनवा दूँगा । ३८ वामन बोले कि तुम्हारी मति भ्रष्ट हो गई है । हे राजन् ! तुम अज्ञानी के समान बात कर रहे हो । ३९ मैंने जो माँगा है उसे नहीं दे रहे हो । तुम कैसे दैत्य हो, स्वर्ग के इन्द्र कहलाते हो । हम भली प्रकार आसरा करके तुम्हारे पास आए थे । तुम असुर जाति के हो फिर भी तुममें सत्यता नहीं है । १४०-१४१ जिस प्रकार मतवाला हाथी अंकुश से शीघ्र ही काँपने लगता है उसी प्रकार राजा बलि वामन की बातों से चौक पड़ा । ४२ वह नृपशिरोमणि प्रसन्न होकर बोला, आओ ! वामन ! तुम हाथ में कुश लेकर आओ । ४३ हे वामन ! तुमने जैसा कहा है मुझे केवल नित्य भगवान के दर्शन करना ही प्रिय है । ४४ तुम तो छोटे बौने हो, तुम्हें कुछ पता नही है । तुम्हारे मन में क्या

बामनर बचने बळिराजा कहेटि । अळपदान देबाकु मोर मन नबळेटि ४६
तेणु करि मनरे एबे मुँ भाळइ । बिमुख हेउछ तुम्भे न देला बोलि कहि ४७
बामन बोइले मुँ जेतेक भाजन । सक्षम अनुक्रमरे घेनिब सिना दान ४८
तिनि अग्नि पूजिबु आम्भे भुमि तिनि पादे ।
जज्ञ होम करिबु राय़े तोहर प्रसादे ४९
शुणिण बळिराजा घेनिला कुशपाणि । बामनर करे नेइ सर्मपिले पुणि १५०
रत्न झरि घेनि धुअन्ते बामनर पाद । शुक्र मन्त्री तेणे आइले मने खेद १५१
राजार सकळ सम्पद एहि क्षणि जिब । माय़ा रूपी बामन अटन्ति बासुदेब ५२
कहिलार बोलि मोर राजा न कला । अति दान पणरे राजन नाश गला ५३
एते बोलि शुक्र मन्त्री रत्न झरिरे पशि ।
जळ तोळि देला बेळे नीर जे न खसि ५४
तेणु बामन हस्तरे जळ न पड़िला । पाणि न पडिबारु जे बामन जाणिला ५५
जाणिबारु कोप से जे कलेक मुरारी । बिचारिले देब कार्ज्य शुक्र नाश करि ५६
कुशकु मन्त्री नाळरे मारिले दइतारी । से कुश गोटि होइला बज्र संगे सरि ५७
शुक्रंकर नय़ने बाजिला कुश जाइ । चक्षु कणा हेबारु शुक्र जे पळाइ ५८
जेणु शुक्र नाळु आरु बाहार होइ गले । बामनर हस्तरे पडिला नीर भले ५९

दान लेने की इच्छा है । ४५ वामन की बात पर राजा बलि ने कहा थोड़ा दान देने के लिये मेरा मन नहीं करता । ४६ इसलिये मैं अपने मन में सोच रहा हूँ । तुम दान नहीं देते कहकर क्षुब्ध हो रहे हो । ४७ वामन ने कहा कि मुझमें जितनी पात्रता है उसी क्षमता के अनुसार ही तो दान ग्रहण करूँगा । ४८ मैं तीन पग भूमि में तीन अग्नियों की पूजा करूँगा । हे राजन् तुम्हारे ! अनुग्रह से मैं यज्ञ-हवन करूँगा । ४९ यह सुनकर राजा बलि ने हाथ में कुश ले लिया और वामन के हाथ को लेकर उसमें समर्पित कर दिया । १५० रत्न का जलपात्र लेकर वामन के पाद प्रच्छालन करते समय मांत्रिक शुक्राचार्य के मन में दुःख हुआ । १५१ यह वामन मायारूपी वासुदेव हैं । राजा की समस्त सम्पदा इसी क्षण चली जाएगी । ५२ मेरे कहने पर भी राजा नहीं माना । अत्यन्त दान-शीलता के कारण राजा नष्ट हो गया । ५३ इतना कहकर मांत्रिक शुक्राचार्य रत्नझारी में घुस गए और उठाकर जल डालने पर भी जल नहीं गिरा । ५४ इस कारण से वामन के हाथ में जल नहीं गिरा । जल न गिरने से वामन समझ गए । ५५ जानने पर जब मुर दैत्य के शत्रु भगवान कुपित हो गए । उन्होंने सोचा कि शुक्राचार्य ने देव-कार्य नष्ट कर दिया । ५६ तब दैत्यारि ने कुश को अभिमंत्रित करके टोंटी में डाला । वह कुश वज्र के समान हो गया । ५७ कुश जाकर शुक्राचार्य के नेत्र में लगा । नेत्र से काने हो जाने पर शुक्राचार्य भाग गए । ५८ जैसे ही शुक्राचार्य टोंटी से बाहर निकले तभी वामन के हाथ में जल

बळि बोइले मुँ जे सत्यरे देलि दान । तिनि पाद भुमि दान घेन हे बामन १६०
शुणि करिण श्रीहरि चरण बढ़ाइले । एक पादे स्वर्गपुर गोटि घोड़ा इले १६१
देखि करि नृपति जे होइला चकित । मने बिचारिला ए होइला बिपरीत ६२
हसिण बोइले श्रीहरि शुण नृपबर । काहिँरे बिश्रामिब मोर आरेक पयर ६३
बळि बोइले मुँ जे देलि मर्त्यपुर चळ । तेबे आम्भे पादकु बढ़ाइ सेथिर ६४
शुणिण बळिराय़ मर्त्य पुरकु आसि । पूर्बरु ए बनरे ताहार निबासटि ६५
ए बने बिजे कला बइलोचन बळा । देखि करि श्रीहरि पाद बढ़ाइला ६६
ब्रह्मलोक सहिते घोटिला मर्त्यपुर । देखिण चकित जे होइला असुर ६७
श्रीहरिंक पादपद्म देखिण बिधाता । चरणे गंगाकु ढ़ाळे जगतर पिता ६८
चउराशि काठि गंगा चरणे गला लुचि । बाम बाम बुढ़ा आँगुष्ठि कणरेटि ६९
देखिण बळिराजा जाणिला एहि से दइतारी ।
सत्य बिडिबा निमन्ते माय़ारूप धरि १७०
राजांकु चाहिँण जे बामन कहे पुणि । किम्पाइँ मने बिस्मय़ हेउ नृपमणि १७१
आरेक पाद जे मोते दिअदान । केउँ ठारे स्थान देबु दिअ हे राजन ७२
बळि राजा बोइले तुम्भे शुण नाराय़ण । तुम्भर कथा मोते अगोचर पुण ७३
आरेक पाद तोर अछि पुण काहिँ । शुणि नाभिरु पादेक काढिले भावग्राही ७४

भली प्रकार से गिरा । ५९ वलि ने कहा कि मैंने प्रतिज्ञानुसार दान दिया है। हे वामन ! तुम तीन पग भूमि ग्रहण करो। १६० ऐसा सुनकर श्रीभगवान ने चरण बढ़ाए । उन्होंने एक डग में स्वर्ग को नाप लिया। १६१ देखते ही राजा चकित हो गया। उसने मन में सोचा कि यह तो उल्टा हो गया। ६२ हँसते हुए श्रीभगवान ने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! सुनो। मेरा अगला पग कहाँ पड़ेगा। ६३ बलि ने कहा कि मैंने मृत्युलोक दान किया। तव अपने पैर को वहाँ से बढ़ाते हैं। ६४ यह सुनकर राजा बलि मृत्युलोक को आ गया ! पूर्वकाल में इस वन में उसका निवास था। ६५ विरोचननन्दन बलि इस वन में आ पहुँचा। यह देखकर श्रीभगवान ने पैर बढ़ाया। ६६ उन्होंने ब्रह्मलोक सहित मृत्युलोक को नाप लिया। यह देखकर असुर चौक पड़ा। ६७ भगवान के श्रीचरण को देखकर जगत्पिता ब्रह्मा जी ने चरणों पर गंगा जल डाल दिया। ६८ चौरासी कट्ठे की गंगा चरण के वाम अंगुष्ठ के कोने में छिप गई। ६९ यह देखकर राजा बलि समझ गया कि यह दैत्यों के शत्रु नारायण हैं। प्रतिज्ञा को नष्ट करने के लिये इन्होंने माया का रूप धारण किया। १७० राजा को देखकर वामन फिर वोले हे नृपशिरोमणि ! मन में विस्मय क्यों कर रहे हो। १७१ हमें एक पग और दान करो। हे राजा ! कहाँ स्थान देना है, दो। ७२ राजा बलि ने कहा हे नारायण ! आप सुनिये। आपकी बात हमारे लिये अगोचर है। ७३ आपका तीसरा पैर कहाँ है। ऐसा सुनकर भावग्राही भगवान ने नाभि से एक पैर

देखिण आश्चर्य्य हेले बळि जे नृपति । बिचारिला हरि मोर हरिला बिभूति ७५
एमन्त बिचारि बळि पाताळपुर जाइ । सेथिरे बिष्णु पाद स्थापिलेक नेइ ७६
पाताळपुर घोटि बारु बळि जे बिचारि । मोर सत्य पूरिला हरि सत्य अपसरि ७७
जाणि करि श्रीहरि तिनिपुर काढिले पाद ।
काढि निअन्ते तिनिपुर होइला आनन्द ७८
देखिण बळिराम्ने पातिलेक शिर । बोइले तुम्भ सत्य तुम्भे प्रतिपाळ ७९
शुणि करि श्रीहरि बळिकि चापि देले । सुताळपुरे नेइण ताहाकु थोइले १८०
सत्य छळरे दिव्य भुबन ताकु देइ । सुताळपुरे जतने नेइण ताकु थोइ १८१
जेणु से बळिराजा सुताळ पुरे रहि । बळिद्वारे बामन बिजय्न कले जाइ ८२
देखिण बळिराजा मन आनन्द होइला । बामन चरणे नमि पाइलि बोइला ८३
प्रभातरु सन्ध्या बेळे द्वारेण दरशन । लय्न लगाइला जे श्रीहरि चरण ८४
तहुँ से बळि द्वारे रहिले नाराय्नण । सुरगण घेनि ब्रह्मा स्तुति कले पुण ८५
बिक्रम रूप गोटि धरिण जगन्नाथ । दैत्य रूप तिनिपुरे ध्वंसिले पद्मनेत्रा ८६
बेदबर वचन बाञ्छा होइला जेणु सिद्धि । सिद्ध बोलि नाम देले कुश निधि ८७
बने सकळ कार्य्य सिद्ध हुए जाण । तेणुटि ए बन गोटि सिद्धान्त प्रमाण ८८

निकाला। उसे देखकर राजा बलि आश्चर्य में पड़ गये। उसने सोचा कि भगवान ने मेरी विभूति हरण कर ली। ७४-७५ ऐसा सोचकर बलि पाताल लोक को चला गया और विष्णु ने वहाँ पैर लेकर स्थापित कर दिया। ७६ पाताललोक नाप लेने पर बलि ने विचार किया कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गई और भगवान की प्रतिज्ञा टल गई। समझबूझकर भगवान ने तीनों लोकों से पैर निकाला। पैर निकलने पर तीनों लोक प्रसन्न हो गये। ७७-७८ यह देखकर राजा बलि ने सिर झुका लिया और बोला कि अब आप अपनी प्रतिज्ञा का पालन करें। ७९ यह सुनकर भगवान ने बलि को चाप दिया और उसे लेकर सुतल-लोक में स्थापित कर दिया। प्रतिज्ञा के बहाने उसे दिव्यलोक प्रदान करके यत्नपूर्वक सुतललोक में रख दिया। १८०-१८१ जब राजा बलि सुतललोक में रहने लगा तो वामन बलि के द्वार पर जा पहुँचे। ८२ यह देखकर राजा बलि का मन प्रसन्न हो गया और उसने कहा कि वामन के चरणों में प्रणाम करके यह मुझे प्राप्त हुआ है। ८३ प्रातःकाल से संध्या तक द्वार पर दर्शन होते रहे। उसने भगवान के चरणों में ध्यान लगा लिया। ८४ जब भगवान बलि के द्वार पर टिक गये तब देवताओं को लेकर ब्रह्मा स्तुति करने लगे। ८५ जगत के स्वामी ने शक्तिशाली रूप धारण करके उन पद्मलोचन ने तीनों लोकों के दैत्यों का नाश किया। ८६ ब्रह्मा जी की बात तथा इच्छा जब सिद्ध हो गई तब कुशनिधि विधाता ने उन्हें सिद्ध नाम प्रदान किया। ८७ इस वन में सब कार्य सिद्ध होते हैं। इस कारण से यह वन सिद्धि का प्रमाण है। ८८ हे रघुमनि !

ए बनर संकल्प जाणि मुं जे पुणि । ए बनरे आश्रम मुं करिछि रघुमणि ८९
चाल एबे श्रीराम ए बन देखिबा । जावत काळर आम्भे पाप उपेक्षिवा १९०
प्रतिमा चित्रपट रूपे बिजे ब्रह्म राशि । देखिबा नारायण पाषाण रूपे बसि १९१
सेठारु ऋषि श्रीराम लक्ष्मण तिनि जण । देखिले बामनरूपे प्रत्यक्षे नारायण ९२
पाषाण प्रतिमा जे बामन मूरति । उतरि पइता जे कन्धरे बहिछन्ति ९३
कटीरे शुक्ल बसन श्रीअंगे आभरण । मस्तकरे जुड़ा गोटि दिशे शोभावन ९४
देखिण नमस्कार जे कले तिनि जण । श्रीराम बोइले तुम्भ प्रसादे मुनि पुणि ९५
बिष्णु दर्शने आम्भर पाप क्षय गला । ए जन्म आम्भर एबे सुफळ होइला ९६
हसिण बिश्वामित्र जे कहिलइँ तहिँ । आज ठारु पाप तुम्भर गला हे रघुसाइँ ९७
सुखिबन्त हुअ बोले गाधि राजा सुत । बामन प्रसाद देले श्रीरामर हस्त ९८
लक्ष्मण करे नेइ देले ब्रह्म ऋषि । प्रणाम करि चरणे शुतिले दाशरथि ९९
मुनि बोइले श्रीराम सिद्ध हेउ वाञ्छा । सुकल्याण पाअ दशरथंक बत्सा २००
उठिण श्रीराम पुणि कले नमस्कार । सेठारु चळिजाइ पशिले बन घोर २०१
वनवासी माने पूजा कलेक तहुँ आसि । श्रीराम एहु बोलिण बोइले ब्रह्मऋषि २
कृत कृत होइ तपी आणि अर्घ्य देले । कन्दमूळ फळ आणि ऋषि समर्पिले ३

इस वन में संकल्प की सिद्धि जानकर मैंने यहाँ आश्रम वना लिया है। ८९ हे श्रीराम ! चलो अव इस वन को देखें और सदा के लिये पाप से मुक्त हो जायें। १९० यहाँ पर ब्रह्मराशि चित्रित प्रतिमा के रूप में उपस्थित है। उस नारायण को प्रस्तर मूर्त्ति में बैठे देखेंगे। १९१ वहाँ पर विश्वामित्र, श्रीराम तथा लक्ष्मण तीनों लोगों ने वामन के रूप में नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन किये। वामन रूप में पापाण-प्रतिमा के कन्धे में उत्तरोय तथा यज्ञोपवीत पड़ा था। ९२-९३ उनके श्री अंग में आभूषण, कमर में श्वेताम्वर और मस्तक पर जूड़ा शोभित दिखाई दे रहा था। ९४ उन्हें देखकर तीनों लोगों ने प्रणाम किया। श्रीराम ने कहा हे महर्षि ! आपकी कृपा से विष्णु का दर्शन करके हमारे पाप नष्ट हो गये और हमारा यह जन्म सफल हो गया। ९५-९६ तव विश्वामित्र ने हँसते हुये कहा हे रघुनाथ ! आज से आपके पाप नष्ट हो गये। ९७ गाधिनन्दन ने कहा हे राम ! तुम सुखी हो और फिर उन्होंने श्रीराम के हाथ में वामन का प्रसाद दिया। ९८ फिर ब्रह्मर्षि ने लक्ष्मण के हाथ में प्रसाद दिया। दशरथ-नन्दन ने उनके चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। ९९ मुनि ने कहा हे श्रीराम ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो और दशरथनन्दन तुम्हारा कल्याण हो। २०० श्रीराम ने उठकर फिर नमस्कार किया और वहाँ से चलकर घोर वन में प्रविष्ट हुये। २०१ वहाँ पर वनवासी लोगों ने उनकी पूजा की। ब्रह्मर्षि ने कहा कि यह ही श्रीराम हैं। २ तपस्वियों ने कृतकृत्य होकर अर्घ के लिये लाकर जल दिया और ऋषियों ने लाकर कन्द-मूल-फल समर्पित किये। ३ विश्वामित्र श्रीराम तथा लक्ष्मण

बिश्वामित्र श्रीराम लक्ष्मण तिनिजण। भुञ्जिण सन्तोष जे होइलेक पुण ४
से दिन रजनी जे बञ्चिले से स्थान। बळराम दास सेबे श्रीहरि चरण २०५

॥ आद्यकाण्ड द्वितीय खण्ड सदाजय सम्पूर्ण ॥

तीनों लोग भोजन करके संतुष्ट हो गये। ४ उस स्थान पर उन्होंने उस दिन रात्रि व्यतीत की। बलराम दास श्रीभगवान के चरणों की सेवा करता है। २०५

॥ आद्य काण्ड द्वितीय खण्ड सम्पूर्ण ॥

आद्यकाण्ड तृतीय

विश्वामित्र द्वारा यज्ञ आणि, राम द्वारा राक्षसंकु संहार

ईश्वर कहन्ति जे पार्वती आगरे। से दिन तिनि जण रहिले सेहि ठारे १
प्रभातुँ उठिण जे नित्यकर्म सारि। सन्ध्या सुमरण पितृलोके देले बारि २
एथु अनन्तरे जे विश्वामित्र मुनि। सेठारु चळिगले श्रीराम लक्ष्मणंकुघेनि ३
प्रबेश हेले साइ आपणा आश्रम। विश्वामित्र बोइले तुम्भे शुण हे श्रीराम ४
एहि ठारे जाग मुनि देखहे तुम्भे पुण। जाग करु करु असुर धाप देले पुण ५
देखिले श्रीराम लक्ष्मण बिस्तार स्थान तहिँ।
बेनि जुण आयतन निर्मळ अटे भुइँ ६
प्रवाळ मढिआ जे भाँगिण पड़ि अछि। एहि जाग शाळ गोटि अग्निरे भष्मटि ७
देखिण श्रीरामचन्द्र मुनिकु पचारि। विस्तार स्थानरे जाग आरम्भ तुम्भरि ८
विप्र ऋषि राजा परजा बरिलकि। केउँ रूपे जाग एथिरे करुथिल हे ऋषि ९
बिश्वामित्र बोइले शुण हे रामचन्द्र। स्वयंबर आरम्भ नुहइ उदजोग १०
जाग सिना करिबाकु ऋषि ब्राह्मण वरिबा। फळमूळ देइण ताहांकु बोधिबा ११
श्रीरामंक बोइले ऋषि नुहँइ एमार। तुम्भे देबता ऋषि जे आग बर १२

आद्यकाण्ड तृतीय

विश्वामित्र द्वारा यज्ञ करना और राम द्वारा राक्षसों का संहार

शंकर जी ने पार्वती से कहा कि उस दिन तीनों लोग वहीं रहे। १ प्रातः काल उठकर उन्होंने नित्यकर्म से निवृत्त होकर सन्ध्या जाप के पश्चात् पितरों को जल दिया। २ इसके पश्चात् महर्षि विश्वामित्र श्रीराम तथा लक्ष्मण को लेकर वहाँ से चल दिये। ३ फिर वह अपने आश्रम में जा पहुँचे ! विश्वामित्र ने कहा हे श्रीराम ! तुम सुनो। ४ यह स्थान मुनियों की यज्ञ का है, इसे देखो। यज्ञ करते समय असुरों ने आक्रमण कर दिया था। ५ श्रीराम तथा लक्ष्मण ने वहाँ का विस्तृत स्थान देखा। दो योजन आयतन की वह निर्मल भूमि थी। ६ प्रवाल-मठ भग्न होकर गिरा पड़ा था तथा वह यज्ञशाला अग्नि से भस्म हो गई थी। ७ देखकर श्रीराम चन्द्र ने महर्षि से कहा कि आपका यज्ञ विस्तृत स्थान में आरम्भ हो। ८ क्या आपने विप्र, ऋषि, राजा तथा प्रजा का वरण किया था ? हे महर्षि आप यहाँ किस प्रकार से यज्ञ कर रहे थे। ९ विश्वामित्र ने कहा। हे रामचन्द्र ! सुनिये। स्वयंवर का उद्योग हमारा नहीं है। १० मात्र यज्ञ करने के लिये ऋषि तथा ब्राह्मणों को वरण करेंगे। उन्हें फल मूल प्रदान करके सन्तुष्ट करेंगे। ११ श्रीराम ने कहा हे ऋषि ! यह विधि नही है। आप पहले देवता तथा ऋषियों का वरण कीजिये। मृत्युलोक से ऋषियों,

मञ्चरु ऋषि परजा ब्राह्मण राजा बर पुणि ।
भल राजा चारि सहस्र अणाअ जाणि शुणि १३
चारि दिगरु राजा आसिबे चारि सहस्र । राजांक संगरे बिप्र परजा बिशेष १४
पाताळ नाग राजा नाग ऋषि जे पुणि ।
सिद्ध ऋषि अइले जाग सुफळ बोलि जाणि १५
शुणिण बिश्वामित्र परम तोष हेले । नारद दुर्बासा जे अगस्ति सुमरिले १६
शुणिण तिनि मुनि प्रबेश हेले आसि । श्रीरामंकु देखिण मनरे हेले तोषि १७
बिश्वामित्र बोइले नारद तळपुर जिब ।
नाग ऋषि सिद्ध ऋषि बरिण आणिब १८
बेनि दिने एहिठारे हेब परबेश । तेबे जाग करिबार होइब बिशेष १९
शुणिण नारद पाताळ पुरकु गले । नारद जिबारु अगस्ति मुनिकु कहिले २०
बोइले स्वर्गपुर जाअ हे वेग पुण । सकळ देवतांकु कर हे बरण २१
सुर राजा चारि मेघ दश दिगपाळ । नबग्रह ब्रह्मा शिब बरि आणिब सत्वर २२
शुणिण अगस्ति मुनि स्वर्गपुर गले । सकळ देबता सुर राजांकु बरिले २३
ब्रह्मा शिब नबग्रह दिगपाळ बरि । चारि मेघ बरिण अगस्ति बिहरि २४
दुर्बासांकु बोइले बिश्वामित्र ऋषि । मञ्चपुर बिप्र राजा ऋषिंकु बरि बटि २५
शुणिण दुर्बासा जे बेगे चळि गले । बार कोटि ऋषि संगे राजाँकु बरिले २६

प्रजा, राजा तथा ब्राह्मणों को वरण कीजिये और चार हजार श्रेष्ठ राजा सोच समझ कर बुला लीजिये । १२-१३ चारों दिशाओं से चार हजार राजा लोग आयेंगे । राजाओं के साथ विशेषतया प्रजा तथा ब्राह्मण होंगे । १४ पाताल से नागराजा, नागऋषि तथा सिद्ध ऋषियों के आने पर यज्ञ को सफल समझेंगे । १५ यह सुनकर विश्वामित्र अत्यन्त संतुष्ट हुये । उन्होंने नारद, दुर्वासा तथा अगस्त का स्मरण किया । १६ यह सुनते ही तीनों मुनि आ पहुँचे और श्रीराम को देखकर मन में संतुष्ट हो गये । १७ विश्वामित्र ने कहा हे नारद ! आप पाताल-लोक जाकर नागऋषि तथा सिद्ध ऋषियों को वरण करके ले आओ । १८ दो दिन में वहाँ पहुँच जाइयेगा । तब हम विशेष प्रकार से यज्ञ प्रारंभ करेंगे । १९ यह सुनकर नारद पाताललोक गये । नारद के जाने पर उन्होंने अगस्त ऋषि से कहा कि आप शीघ्र ही स्वर्गलोक जाकर समस्त देवताओं को वरण कर लीजिये । २०-२१ आप देवराज इन्द्र, चारों मेघ, दस दिगपाल, नवग्रह, ब्रह्मा तथा शंकर का वरण करके शीघ्र ही ले आइये । २२ यह सुनकर अगस्त ऋषि स्वर्ग-लोक को गये और उन्होंने समस्त देवताओं तथा इन्द्र को वरण कर लिया । २३ ब्रह्मा, शिव, नवग्रह, दिगपालों तथा चारों मेघों को वरण करके अगस्त लौट आये । २४ महर्षि विश्वामित्र ने दुर्वासा से मृत्यु लोक के ब्राह्मण, राजा तथा ऋषियों को वरण करने के लिये कहा । २५ सुनते ही दुर्वासा शीघ्र ही चले गये और उन्होंने बारह करोड़ ऋषियों के साथ राजाओं का वरण

बेनि लक्ष ब्राह्मणंकु बरिण ऋषि पुण। एथु अनन्तरे देबी पार्बती जे शुण २७
तिनि पुरकु तिनि ऋषि जिबारु विश्वामित्र।
मय़ दैत्यकु सुमरणा कलेक त्वरित २८
जाणिण मय़ दैत्य प्रबेश रजनीरे। बेनि जाग शाळा कले रजनि भितरे २९
होम कुण्ड मेघनाद पाचेरि बुलाइण। पूर्ब पश्चिम द्वार निर्मा कले पुण ३०
सेहि रजनीरे से निजपुर गला। मय़ दइत जिबारु रजनी शेष हेला ३१
श्रीराम लक्ष्मण मुनि देखिले जे पुण। श्रीराम पचारिले ए देबंक भिआण ३२
से दिन दिबस शेष रजनी होइला। बिश्वामित्र बिश्वकर्मा मनरे सुमरिला ३३
जाणिण विश्वकर्मा रजनीरे आसि। बतिश कोटि घर तिआरि प्रवाळशि ३४
बतिश कोटि बृक्ष मूळ छामुण्डिआ। अगुर चन्दन रखिबारे ऋषिकर प्रिय़ा ३५
बिश्वकर्मा जिबारे रजनी शेष हेला।
श्रीराम लक्ष्मण देखिले ऋषिक प्रतिज्ञा परा ३६
बिचारिले श्रीराम ए ऋषि मानंकु बरि। एड़े कृत्य हेला सिना देवतांकर मेळि ३७
श्रीराम लक्ष्मण मुनि स्नान जाइँ कले। संध्या तर्पण सारि पितृंकु बारि देले ३८
फळ मूळ भोजन कलेक तिनि जण। एहि समय़रे रजनी हेला पुण ३९
सुरभिकु विश्वामित्र कले सुमरण। जाणि करि काम धेनु उपगत पुण ४०

कर दिया। २६ ऋषि ने दो लाख ब्राह्मणों का भी वरण किया। इसके पश्चात् हे देवी पार्वती! सुनों। २७ तीनों ऋषियों के तीनों लोकों में चले जाने पर विश्वामित्र ने शीघ्र ही मय दैत्य का स्मरण किया। २८ यह जानकर मय दैत्य रात्रि में आ पहुँचा और उसने रात भर में दो यज्ञशालाओं का निर्माण कर दिया। २९ मेघनाद प्राचीर बनाकर हवनकुण्ड तथा पूर्व और पश्चिम द्वार बना दिये। ३० उसी रात वह अपने घर चला गया। मय दैत्य के चले जाने पर रात्रि समाप्त हो गई। ३१ श्रीराम लक्ष्मण तथा विश्वामित्र मुनि ने उसका निरीक्षण किया। श्रीराम ने पूँछा कि यह देवताओं की निर्मिति है। ३२ उस दिन, दिन समाप्त होकर रात्रि हो गई। विश्वामित्र ने मन में विश्वकर्मा का स्मरण किया। ३३ यह जानकर रात्रि में विश्वकर्मा आये और उन्होंने बत्तीस करोड़ प्रवाल गृह बना दिये। ३४ उन्होंने वृक्षों के नीचे बत्तीस करोड़ छाया मण्डप बना दिये और अगुर चन्दन रखने के लिये ऋषियों का प्रिय कार्य कर दिया। ३५ विश्वकर्मा के जाने पर रात्रि समाप्त हो गई। श्रीराम तथा लक्ष्मण ने ऋषि की प्रतिज्ञा देखी। ३६ श्रीराम ने विचार किया कि इन ऋषियों के वरण करने से देवताओं के साथ मिलकर इतना कार्य हो गया है। ३७ श्रीराम लक्ष्मण तथा विश्वामित्र ने जाकर स्नान किया और उन्होंने संध्या तर्पण समाप्त करके पितरों को जल दिया। ३८ तीनों लोगों ने फल, मूल, भोजन किये। इसी समय रात हो गई। ३९ विश्वामित्र ने सुरभी का स्मरण किया।

फळ मूळ घृत सर छामुण्डिआरे थोइ। तण्डुळ हाण्डि काठ से घरे रखाइ ४१
जागशाळा पाशरे सुरभि रहि पुण। रजनी पाहिबारु दिन हेला जाण ४२
उठिण विश्वामित्र श्रीरामंकु देखाइले। जागर बिधि मोते मिळिला एबे भले ४३
एते कहिण स्नान शउच करि गले। कउशिक नदीरे स्नान तर्पण जे कले ४४
एहि समयरे नारद ऋषि मिळि। नाग ऋषि सिद्ध ऋषि नागबळ संगकरि ४५
बेनि कोटि ऋषि कोटिए नाग पुण। आबर जेते नाग बिप्रथिले जाण ४६
देखि तांकु विश्वामित्र आनन्द पुण हेले।
धन्यरे कळह ऋषि बोलिण प्रशंसिले ४७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। मर्त्यपुर जाए दुर्बासा गले चळि ४८
नव कोटि ऋषि जे लक्षेक ब्राह्मण।
चारि सहस्र राजा घेनि अइले ऋषि पुण ४९
लोमपाद अइले न अइले दशरथ। दशरथ बोइले मोर जाउण छन्ति पुत्र ५०
प्रबेश दुर्बासा जे सिद्ध बने जाइ। देखिण बिश्वामित्र हरष मन होइ ५१
बोइले धन्य तुम्भे दुर्बासा मुनिबर। तिनि दिने सबुँकु जे बरिल सत्वर ५२
राजा मानंकु घर ऋषिमानंकु वृक्ष मूळ। बिप्रंकु स्थान देले छामुण्डिआ तळ ५३
श्रीरामंकु बोइले जे जग बेनि द्वार। बेनि भाइ धनुशर घेनिण बेगे चळ ५४

यह जानकर कामधेनु वहाँ आ गई। ४० फल, मूल, घी, मलाई छाया मण्डप में एकत्रित करके उसी घर में चावल, हंड़ियाँ तथा काष्ठ रखवा दिये। ४१ यज्ञ-शाला के पास सुरभी रह गई। रात्रि समाप्त होने पर दिन निकल आया। ४२ विश्वामित्र ने उठकर श्रीराम को दिखाया और कहा कि मुझे यज्ञ की भली विधि प्राप्त हो गई। ४३ इतना कहकर वह स्नान शौचादि के लिये गये और कौशिक नदी में उन्होंने स्नान-तर्पण किया। ४४ इसी समय नागऋषि, सिद्धऋषि तथा नागदल को साथ लेकर नारदऋषि आ गये। ४५ दो करोड़ ऋषि, एक करोड़ नाग तथा और जितने नागविप्र थे। उन्हें देखकर विश्वामित्र प्रसन्न हो गये और हे कलहऋषि ! तुम धन्य हो, इस प्रकार कहकर प्रशंसा करने लगे। ४६-४७ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् मृत्यु लोक में दुर्वासा चले गये। ४८ वह महर्षि नौ करोड़ ऋषि, एक लाख ब्राह्मण और चार हजार राजागणों को साथ लेकर आ गये। ४९ लोमपाद आये पर राजा दशरथ नहीं आये। उन्होंने कहा कि मेरे पुत्र गये हैं। ५० दुर्वासा सिद्ध वन में जा पहुँचे। उन्हें देखकर विश्वामित्र का मन प्रसन्न हो गया। ५१ वह बोले हे मुनि श्रेष्ठ ! दुर्वासा आप धन्य हैं, जो आपने शीघ्र ही तीन दिनों में सबको वरण कर लिया। ५२ उन्होंने राजाओं को घर, ऋषियों को वृक्ष के नीचे तथा ब्राह्मणों को छाया मण्डप में स्थान दिया। ५३ उन्होंने श्रीराम से दोनों द्वारों की रक्षा करने के लिये कहते हुये दोनों भाइयों को शीघ्र ही धनुष बाण लेकर चलने का आदेश दिया। ५४ वह बोले

होइला गहळ जे आसिबे दैत्य बळ। जे रूपे जाग मोर हुअइ सफळ ५५
शुणिण श्रीराम जे बोइले लक्ष्मणकु। तुहि एबे चळरे पश्चिम द्वारकु ५६
श्रीरामंक वचनरे लक्ष्मण चळि गले। पश्चिम द्वारे जाइ प्रबेश होइले ५७
देखिले लक्ष्मण जे पश्चिम द्वारे जाइ। देखिले अपूर्ब बन शोभा जे दिशइ ५८
कउशिक नदी जे पश्चिम द्वारे घेरि। बहुअछि नदी जे निर्मळ दिशे वारि ५९
देखिण सउमित्रि मनरे तोष हेले। पिनाकी धनुरे गुण चढ़ाइले ६०
अक्षय़ तूणीरे जे विचारि रखे शर। पश्चिम द्वारे बसि होइले निश्चळ ६१
एथु अनन्तरे जे श्रीरामचन्द्र राय़े। पूर्ब सिंहद्वारे जे बिजे करि रहे ६२
शारंग धनुरे जे चढ़ाइ गुण पुण। अक्षय़ तूणीरे रखिले नाना शस्त्र पुण ६३
अगस्ति सकळ जे देवता बरि पुण। दश दिगपाळ नवग्रहंकु जे जाण ६४
बेदबर सुर राजा सदाशिब बरि। जाणिण देवता जे सभाकु बेगे चळि ६५
सिद्ध बन उपरे शून्यरे जाइ रहि। दुन्दुभि शबदरे तिनिपुर कम्पइ ६६
गान्धार रागे नृत्य सुधर्मा सभा आगे। अपसरि माने नाचुछन्ति नाना रंगे ६७
देवे आसिबारु अगस्ति मुनि पुणि। तिनि कोटि देव ऋषि घेनिण बेगे जाणि ६८
सिद्धबने जाग स्थाने हेले परवेश। देखि करि विश्वामित्र होइले हरष ६९
बोइले देवताए अइलेटिकि एबे। अगस्ति बोइले सर्बे रहिले शून्य भागे ७०

कि चहल-पहल होने से दैत्यों का दल आयेगा जैसे भी हो, मेरा यज्ञ सफल हो। ५५ यह सुनकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा तुम अब पश्चिम द्वार को चलो। ५६ श्रीराम के कहने पर लक्ष्मण चल दिये और पश्चिम द्वार पर जा पहुँचे। ५७ लक्ष्मण ने पश्चिम द्वार पर जाकर देखा। वहाँ पर वन की अपूर्व शोभा दिखाई दे रही थी। ५८ कौशिक नदी ने पश्चिम द्वार को घेर रखा था। नदी का बहता हुआ जल निर्मल दिखाई दे रहा था। ५९ यह देखकर लक्ष्मण मन में संतुष्ट हो गये और उन्होंने शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा ली। ६० उन्होंने अक्षय तूणीर में विचारपूर्वक बाण रख लिये और पश्चिम द्वार पर शांत होकर बैठ गये। ६१ इसके पश्चात् श्रीराम पूर्व दिशा के सिंह द्वार पर जाकर ठहर गये। ६२ उन्होंने सारंग धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी और अक्षय तूणीर में अनेक प्रकार के शस्त्र रख लिये। ६३ अगस्त ने समस्त देवताओं, दस दिगपालों, नवग्रहों, ब्रह्मा, देवराज इन्द्र तथा भगवान शंकर का वरण किया। यह जानकर देवतागण शीघ्र ही सभा को चल दिये। ६४-६५ वह सिद्ध वन के ऊपर आकाश में ठहर गये। दुंदुभी नाद से तीनों लोक काँप उठे। ६६ सुधर्मा सभा में अप्सरायें गान्धार राग में नाना प्रकार की रंगीलियों से नृत्य कर रही थीं। ६७ देवताओं के आने पर अगस्त मुनि तीन करोड़ देवर्षियों को शीघ्र ही साथ लेकर सिद्ध वन के यज्ञ-स्थल पर उपस्थित हो गये। विश्वामित्र उन्हें देखकर प्रसन्न हो गये। ६८-६९ उन्होंने कहा क्या अब देवता लोग आ गये। अगस्त ने कहा कि

शुणिण विश्वामित्र उपरकु चाहिँ । देखिले सर्ब देबे सभारे छन्ति रहि ७१
विश्वामित्र हरषरे बोले मुनि शुण । शीतळ सभारे सर्ब बिजे कर हे पुण ७२
शुणि तिनिपुर ऋषि सभारे बिजे करि । राजा बिप्र सभारे बिजय़ बेग करि ७३
देखि विश्वामित्र चारि मेघकु सुमरि ।
जाणि चारि मेघ घृत ढ़ाळिले बेग करि ७४
अगस्ति दुर्बासा जे नारद मारकण्ड । चारि ऋषिकि आचार्ज्य कले मुनि बेग ७५
प्रथमरे शामवेद पढ़िण होम कले । ब्रह्मा बिष्णु सदाशिबरे आहुति समर्पिले ७६
अगस्ति हेले आचार्ज्य तिनि देव नृपति । तिनि दिन उत्तरे देबे पाइले आहुति ७७
मासे बेनि दिन आहुति देले पुण । सकळ देबे जाइ हरष हेले जाण ७८
सुधर्मा सभा घेनि स्वर्गरे बिजे पुण । देबे जिबारु जे नारद आचार्ज्य हेले जाण ७९
होमकुण्ड निकटरे से बसिलेक बेग । नाग देव सिद्ध ऋषिकि देले हबिर्भाग ८०
अथर्ब बेदकु गाय़न ऋषि कले । अठर कोटि नागंकु आहुति समर्पिले ८१
सिद्ध ऋषि नाग ऋषि बेनि कोटि जाण ।समस्ते हबि भुञ्जि हरष हेले पुण ८२
मासे दुइ दिनरे पूर्ण आहुति कले । सम्पूर्ण वेदमन्त्र हेबारु चळिगले ८३
पाताळपुरे जाइ नागबळ परबेश । बासुकी आगे कहि समस्ते हरष ८४

वह पहले से ही आकाश में अवस्थित हैं। ७० यह सुनकर विश्वामित्र ने ऊपर की ओर देखा। उन्हें समस्त देवता सभा में उपस्थित दिखाई दिये। ७१ विश्वामित्र ने प्रसन्नता से कहा हे मुनि ! सुनो समस्त लोग शीतल सभा में उपस्थित हो जायें। ७२ यह सुनकर तीनों लोकों के ऋषि सभा में उपस्थित हो गये। राजागण तथा ब्राह्मण लोग भी शीघ्र ही सभा में आ गये। ७३ यह देखकर विश्वामित्र ने चारों मेघों का स्मरण किया। यह जानकर चारों मेघों ने शीघ्र ही घृत डाल दिये। ७४ विश्वामित्र मुनि ने शीघ्रता से अगस्त, दुर्वासा, नारद तथा मारकण्ड चारों ऋषियों को आचार्य बनाया। ७५ पहले सामवेद का पाठ करके हवन किया। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को आहुति समर्पित की। ७६ अगस्त आचार्य बने। तीनों देवता तृप्त हो गये। देवताओं ने तीन दिनों पश्चात् आहुति प्राप्त की। ७७ एक मास दो दिन उन्होंने आहुति दी। समस्त देवतागण तब जाकर प्रसन्न हुये। ७८ सुधर्मा सभा को लेकर देवगण स्वर्ग जा पहुँचे। उनके जाने पर नारद आचार्य बने। ७९ वह शीघ्रता से हवन कुण्ड के निकट बैठ गये। उन्होंने नागदेव, सिद्ध ऋषियों को हवि का भाग प्रदान किया। ८० ऋषि ने अथर्ववेद का पाठ किया और अठारह करोड़ नागों को आहुति प्रदान की। ८१ सिद्ध ऋषि, नाग ऋषि दो करोड़ थे। समस्त लोग हवि खाकर प्रसन्न हो गये। एक माह दो दिन में पूर्ण आहुति प्रदान की और वेदमंत्र पूर्ण होने पर चले गये। ८२-८३ नागदल जाकर पाताल लोक पहुँच गया और शेषनाग के सामने उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक सब कह सुनाया। ८४ इसके

एथु अनन्तरे दुर्वासा ऋषि पुण । तहुँ से आचार्ज्य जे होइले आपण ८५
जजुर्वेद गोटिकु जे कलेक प्रकाश । सकळ ऋषि आहुति समर्पिबे शेष ८६
एकोइश दिन जे एथिरे बहिगला । ऋषि मानंक आहुति सम्पूर्ण होइला ८७
राजुसि जाग जे तहुँ अनुकूळ करि । एमन्त समये असुरे जाइ मिळि ८८
देखिण श्रीराम जे मन भेदी शर करि । पाचेरी बाड़धरी असुरंकु देले धाड़ी ८९
जाग शाळे ऋषि बिप्र परजागणे राजा ।
बृक्षतळे ऋषि माने थोइण कले पूजा ९०
बिप्रगण माने जे छामुण्डिआ तळे रहि । परजा गणमाने सभारे अछन्ति रहि ९१
सुरभि ऋषि मानंकु फळमूळ देले । कामधेनु बिप्रंकु अमृत पान कराइले ९२
कम्पइ मेदिनी जे मध्यपुर जिणि । गह गह शबद जे शुभइ गोळ पुणि ९३
भितर कूप बाम्पी अटाळी पोखरी । स्नान शउच जे सेथिरे सर्बे करि ९४
एथु अनन्तरे जे श्रीराम देले ड़ाक । बेनी द्वार पाशरे आसि मिळिले दैत्य ९५
शुणि बेनि कवाट पकाइले निर्बंधरे । पूर्ब द्वारे श्रीराम कोदण्ड धरि करे ९६
पश्चिम द्वारे लक्ष्मण धनुशर धरि । कोदण्डरे गुण बेगे देले चापधारी ९७
एथु अनन्तरे जे असुरे मिळि पुण । नउ सहस्र असुर बळ मारिच घेनिण ९८
पाचेरी चारि पाशे बेढिले जाइ बेगे । डाक देले ऋषि बिप्र पड़िअछ जोगे ९९

पश्चात् दुर्वासा ऋषि स्वयं वहाँ आचार्य बने । ८५ उन्होंने सम्पूर्ण यजुर्वेद का पाठ किया । समस्त ऋषियों ने पूर्णाहुति प्रदान की । ८६ इसमें इक्कीस दिन बीत गये । ऋषियों की आहुतियाँ सम्पूर्ण हो गई । ८७ तब राजसी यज्ञ का शुभ योग आया । इसी समय वहाँ राक्षस जा पहुँचे । ८८ यह देखकर श्रीराम ने मनभेदी बाण चला दिया । उन्होंने चाहार दीवारी के घेरे को लेकर राक्षसों की लाइन लगा दी । ८९ यज्ञशाला में ऋषि, ब्राह्मण, राजा तथा प्रजा, ऋषियों ने वृक्ष के नीचे रहकर पूजा की । ९० विप्रगण छाया मण्डप में और प्रजागण सभा में ठहरे थे । ९१ सुरभी ने ऋषियों को फल मूल प्रदान किया । कामधेनु ने ब्राह्मणों को अमृत पान कराया । ९२ मृत्यु लोक को जीतने पर पृथ्वी काँप रही थी । धूम-धाम के साथ कोलाहल सुनाई दे रहा था । ९३ कुएँ बावली पोखरी तालाव में सबने स्नान, शौच किया । ९४ इसके पश्चात् श्रीराम ने पुकार कर कहा कि दोनों द्वारों के पास दैत्य आ पहुंचे हैं । ९५ यह सुनकर दोनों किवाड़ जड़वा दिये और श्रीराम ने पूर्व द्वार पर कोदण्ड धारणकर लिया । ९६ पश्चिम द्वार पर लक्ष्मण ने धनुष बाण धारण कर लिया और धनुर्धारी ने कोदण्ड पर शीघ्र ही प्रत्यंचा चढ़ा दी । ९७ इसके पश्चात् नौ हजार राक्षसों को लेकर मारीच वहाँ पहुँच गया । ९८ उन्होंने चारों ओर से जाकर चहारदीवारी को घेर लिया और ललकारते हुये कहा कि ऋषियो और ब्राह्मणो !

देखिण श्रीराम जे मनरे बिचारिले । कोदण्ड धरिण तीक्ष्ण नाराच विन्धिले १००
बेकछिड़ि असुरे पडिले तळे बेगे । देखि जुद्ध कले दइते जे रागे १०१
बृक्षमान धरि पिटन्ति श्रीराम उपरे । बावल शरे श्रीराम निवारण करे २
काण्ड रडि रण गोळ शुभिला जहुँ टाण । स्वर्गरु देवताए अइले शून्ये पुण ३
तळकु चाहिँले जे श्रीराम दैत्यरण । अग्निशर बसाइण पेषिले श्रीराम ४
भस्म होइगले जे दैत्यबळ पुण । केते दैत्य खण्ड बिखण्ड होइलेक पुण ५
पुण ब्रह्मशर श्रीराम बिन्धिले जे तहिँ । बहुत असुर जे मरिण लोटे भुइँ ६
चाळिश सहस्र दैत्यंकर गला बेक छिडि । हुँकार शबदरे श्रीराम बाण मारि ७
दश सहस्र बळ धरि मारिच आगुँसार ।
श्रीरामंकु सते पुर करि बेढिले अचागंळ ८
दैत्य ड़ाक देले आज मानव मलु तुहि ।
मोर जननीकि मारि बारे तोरमने नाहिँ ९
आज तोते मुँ पेशिबि जम राजापुर । भल जोगे मोर आगे पडिछु आजिर ११०
शुणिण बावल शर श्रीराम जोचि बेगे । मन्त्र सुमरिण जे बिन्धिलेक बेगे १११
हुँकार ध्वनी करिण शर पेषि देले । उडिण दैत्य माने गगन मार्गे गले १२
थोके दैत्य पडिले सिन्धु गर्भरे जाइ । केहु गिरीरे पडिण धूळि पाउँश होइ १३

योग में पड़े हो। ९९ यह देखकर श्रीराम ने मन में विचार किया और कोदण्ड धारण करके तीक्ष्ण बाण छोड़ दिये। १०० शीघ्र ही राक्षसों की गर्दन कट गई और वह गिर पड़े। यह देखकर दैत्यों ने क्रोध से युद्ध किया। १०१ वह लोग वृक्ष आदि को लेकर श्रीराम के ऊपर पीटने लगे जिन्हें श्रीराम ने बावल बाण से नष्ट कर दिया। २ गर्जन करते हुये बाणों का युद्ध-घोष जब तीव्रता से सुनायी देने लगा तो देवतागण स्वर्ग से आकाश में आ गये। ३ उन्होने श्रीराम तथा दैत्य का युद्ध नीचे देखा। श्रीराम ने अग्निबाण सन्धान करके छोड़ दिया। ४ दैत्यों के दल भस्म हो गये। कितने दैत्य खण्ड-खण्ड हो गये। ५ फिर वहां पर श्रीराम ने ब्रह्मबाण छोड़ा। बहुत से राक्षस मरकर पृथ्वी पर लोट गये। ६ चालीस हजार दैत्यों के सिर कट गये। श्रीराम हुंकार शब्द करके बाण छोड़ रहे थे। ७ दस हजार सेना लेकर मारीच आगे आया। उसने अचानक श्रीराम को सचमुच पूरी तौर से चारों ओर से घेर लिया। ८ दैत्य ने ललकारते हुये कहा अरे मानव! आज तू मारा गया। मेरी माता का बध क्या तेरे मन में नहीं है। ९ आज मैं तुझे राजा यम के लोक में भेज दूँगा। आज तुम शुभयोग में मेरे आगे पड़े हो। ११० यह सुनकर श्रीराम ने शीघ्र ही बावल बाण सन्धान किया और तुरन्त ही अभिमंत्रित करके छोड़ दिया। १११ उन्होंने ओंकार शब्द करके बाण छोड़ा, दैत्य लोग आकाश मार्ग में उड़ गये। १२ कुछ दैत्य समुद्र के गर्भ में जा गिरे। कुछ पहाड़ पर

बड़बानळे पडि मिळाइ थोके गले। मारिच्च निज आश्रमे जाइण पडिले १४
श्रीरामंकु चित्तरे महाभय़ करि। निज आश्रमे रहिला दइब सुमरि १५
मारिच्च असुर तहुँ उडिण पुण गला। सुबाहु आसिण जे हुँकार नाद कला १६
श्रीराम उपरकु पडिला पुण धाइँ।अग्नीशर पेशि श्रीराम भस्म करिदेइ १७
जिळिण गला जहुँ सुबाहु असुर। माळबशर पुणि धइले श्रीराम जे कर १८
मन्त्र सुमरि बिन्धिले श्रीराम पुण टाणि। दश सहस्र वळ पकाइले हाणि १९
चाळिश सहस्र दैत्य एरूपे श्रीराम मारि। बेक छिडिला काहार केहु भस्मे उडि १२०
मारिच सुबाहु दुहिंक संगे दैत्य मले। तिनि ताळ उच्चे रक्त नदी बहे भले १२१
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। पश्चिम द्वारे कले लक्ष्मण जेउँ रीति २२
बिरह दैत्य मिळे पश्चिमर द्वारे। चाळिश सहस्र दैत्य अछन्ति संगतरे २३
लक्ष्मण देखिण जे क्रोध हेले पुण। मोहशर जोचिण बिन्धिले तीक्ष्ण बाण २४
अमोह शर पुणि बिरह दैत्य कला। ता देखि लक्ष्मण कुबेरा शरकु माइला २५
कोडिए सहस्र दैत्यंकर काटि देले मुण्ड। बिरह सुर दैत्य क्रोधरे प्रचण्ड २६
असुराशर पुणि प्रहार कला दैत्य। घोटिला कुहुक जे न दिशिला पथ २७
देखि करि लक्ष्मण आदित्य शर करि। पळाइला कुहुक जे दिशे दिग फेरि २८

गिरकर चकनाचूर हो गये। १३ कुछ दैत्य वड़वानल में गिरकर उसमें लीन हो गये। मारीच जाकर अपने आश्रम पर गिरा। १४ वह अपने मन में श्रीराम से अत्यन्त भयभीत होकर दैव का स्मरण करते हुये अपने आश्रम में रह गया। १५ जब मारीच दैत्य वहाँ से उड़ गया, तव सुबाहु आकर गर्जन करने लगा। १६ वह श्रीराम के ऊपर झपटा। तव उन्होंने उसे अग्निवाण छोड़कर भस्म कर दिया। १७ जब सुबाहु दैत्य जल गया तब श्रीराम ने अपने हाथों में मालव वाण उठा लिया। १८ उन्होंने मन्त्र का स्मरण करके उसे खींचकर छोड़ दिया और दस हजार सेना को मार गिराया। १९ इस प्रकार से श्रीराम ने चालीस हजार दैत्यों को मारा, किसी का सिर कट गया और कोई भस्म होकर उड़ गया। १२० मारीच तथा सुबाहु दोनों के साथी दैत्य मारे गये। तीन ताड़ वृक्षों की उँचाई में रक्त की नदी प्रखरता से बहने लगी। १२१ हे भगवती! इसके पश्चात् पश्चिम द्वार पर लक्ष्मण ने जो रीति अपनायी, उसे सुनो। २२ विरह दैत्य पश्चिम द्वार पर चालीस हजार राक्षसों को साथ में लेकर पहुँचा। २३ लक्ष्मण उसे देखकर क्रुद्ध हो गये। उन्होंने मोहशर सन्धान करके तीक्ष्ण वाण छोड़े। २४ बिरह दैत्य ने अमोहबाण छोड़ दिया उसे देखकर लक्ष्मण ने कुबेर वाण मारा। २५ उन्होंने बीस हजार दैत्यों के सिर काट लिये तव विरहासुर का क्रोध प्रचण्ड हो गया। २६ फिर दैत्य ने असुर वाण चला दिया। जिसका अन्धकार फैलने से मार्ग नहीं दिखाई पड़ा। २७ यह देखकर लक्ष्मण ने सूर्यबाण छोड़ा जिससे अन्धकार हट गया और पुनः दिशायें दिखाई देने

ब्रह्मशर बसाइ जे लक्ष्मण बिन्धिले। पन्दर सहस्र बळ काटि पकाइले २६
कटा ठारु सर्बे जे बेनि खण्ड होइ। पडिले दैत्य माने निघञ्चक होइ १३०
बिरह दैत्य देखि माया जे रचिला। देव रूप धरिण बिमाने बसिला १३१
पर्वत शर जे जोचिला गुणे पुण। मारन्ते लक्ष्मण जे बिन्धिले वज्र बाण ३२
दुइ फाळ होइण पर्वत फाटिगला। बिरहासुरकु वज्र शररे संहारिला ३३
बुकु सळखे शर चळिगला पुण। आर पाखे बाहार होइला जाइँ पुण ३४
विरहासुर दैत्य पडिलाक तळे। कदम्बासुर मिळिला लक्ष्मण आगरे ३५
विचित्र गति करि पथर प्रहारिला। अंग ढाळ देइण लक्ष्मण वञ्चाइला ३६
पुण से तरु एक उपाड़िण पुण। प्रहार कला नेइण लक्ष्मण अंगेण ३७
वाम भागरे लक्ष्मण आउजि घुञ्चि गला। देखिण असुर पुण ताटका होइला ३८
नारायणी शस्त्रकु लक्ष्मण काढि बेगे। जोचिण लक्ष्मण विन्धिले अतिरागे ३६
गर्जन नादकरि शर चळि गला। कदम्बासुर नाभि सळखे पडिला १४०
पेटरे पशिण अन्त विदारिला पुण। पडिला दैत्य तळे गलाक जीवन १४१
कदम्बासुर जेणु तळे पडि मला। बावल शर लक्ष्मण धनुरे बसाइला ४२
बिन्धन्ते पाञ्च सहस्र पदाति बेक छिड़ि। आउ दैत्ये पळाइले घोर रडिकरि ४३

लगीं। २८ लक्ष्मण ने ब्रह्मशर का सन्धान करके छोड़ा और पन्द्रह हजार सेना को काट गिराया। २६ समस्त दैत्यगण दो खण्डों में कट कर निश्चेष्ट होकर गिर पड़े। १३० यह देखकर विरह दैत्य ने माया का विस्तार किया और देव-रूप धारण करके विमान में बैठ गया। १३१ फिर उसने प्रत्यञ्चा पर पर्वत वाण चढ़ाकर प्रहार किया जिस पर लक्ष्मण ने वज्रबाण चला दिया। ३२ पर्वत दो भागों में होकर फट गया और वज्रबाण से विरहासुर का संहार हो गया। ३३ वह बाण सीधे वक्षस्थल में धँसकर अन्य ओर जाकर बाहर निकला। ३४ दैत्य विरहासुर भूमि पर गिरा। फिर कदम्बासुर लक्ष्मण के समक्ष जा पहुँचा। ३५ उसने अद्भुत रीति से पत्थर का प्रहार किया जिससे लक्ष्मण ने अपने अंगों को शीघ्र हटाकर बचा लिया। ३६ फिर उसने एक वृक्ष उखाड़कर लक्ष्मण के शरीर पर प्रहार किया। ३७ लक्ष्मण बाँयीं ओर उसका स्पर्श करते हुये पीछे हट गये। यह देखकर राक्षस आश्चर्यचकित हो गया। ३८ तब लक्ष्मण ने नारायणास्त्र सन्धान करके अत्यन्त क्रुद्ध होकर छोड़ दिया। ३६ गर्जना करता हुआ वह वाण कदम्बासुर की नाभि में जाकर लगा। १४० पेट में लगते ही उसकी आँतें विदीर्ण हो गयी और दैत्य निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। १४१ जब कदम्बासुर पृथ्वी पर गिर कर मर गया, तब लक्ष्मण ने धनुष पर बावल बाण चढ़ा दिया। ४२ उसके प्रहार से पाँच हजार पैदल सिपाहियों के सिर कट गये और अन्य दैत्य घोर गर्जन करते हुये भाग गये। ४३ दो ताड़ के वृक्षों की

वेनि ताळ उत्सर्गरे रक्त नदी बहे। देखिण लक्ष्मणर सन्तोष मन हुए ४४
शून्यरे देवताए रहि देखु थिले। राम जोद्धा पण देखि परम तोष हेले ४५
जुद्ध करन्ते दशदिन वहि गला पुणि।
राव्र दिवसे जुद्ध करन्ति राम लक्ष्मण बेनि ४६
एमन्त समय़रे विश्वामित्र जाण पुण। शेष होइ पूर्ण जे आहुति देले पुण ४७
राजुसि जाग सरिबारु राज माने पुणि। मेलाणि होइ गले वेळ काळ जाणि ४८
फिटिला वेनि द्वार वज्र जे किळिणि।मड़, रक्त देखिण भाळन्ति राजा पुणि ४९
स्वर्गरे देवताए देखिण तोष हेले। श्रीराम लक्ष्मण शिरे पुष्प बृष्टि कले १५०
दैत्यकु नाशिण सुमित्रा सुत पुण। पुर्व द्वारे प्रवेश हेले वेगे जाण १५१
श्रीराम चरणरे जाइण ओळगिले। हस हस होइण वचन प्रकाशिले ५२
रक्तरे जर जर मन्दार पुष्प प्राय़े। देखिकरि श्रीरामर आनन्द मन हुए ५३
बोइले असुरत प्रबळ एथि बड़। आम्भरे बहुत जे घोटिले निशाचर ५४
द्वार फिटन्ते ऋषि विप्र जे अइले। बाहारे समस्ते आसिण देखिले ५५
गडु अछि मुण्ड जे मूर्द्धनिमान पुण। रक्त नदीरे जे भासि जाउछन्ति पुण ५६
देखिण समस्ते ताटका पुण हेले। धन्य धन्य श्रीराम लक्ष्मण बोइले ५७
धन्य धन्य पिता माता धन्य तुम्भ कुळ। धन्य विश्वामित्र तुम्भे तपी कुळ शीळ ५८

उँचाई में रक्त की नदी बहने लगी। यह देखकर लक्ष्मण का मन संतुष्ट हो गया। ४४ देवतागण आकाश में स्थित होकर देख रहे थे। वह लोग श्रीराम की वीरता देखकर अत्यन्त संतुष्ट हुये। ४५ युद्ध करते-करते दस दिन व्यतीत हो गये। राम और लक्ष्मण दोनों रात-दिन युद्ध कर रहे थे। ४६ इस समय तक विश्वामित्र का यज्ञ समाप्त हो गया और उन्होंने पूर्णाहुति प्रदान की। ४७ राजसी यज्ञ समाप्त होने पर राजा लोग समय के अनुसार विदा होकर चले गये। ४८ जो द्वार वज्र से जड़े हुये थे, वह खुल गये। रक्त तथा शवों को देखकर राजा सोचने लगे। ४९ देवता लोग स्वर्ग से देखकर प्रसन्न हो गये और उन्होंने श्रीराम तथा लक्ष्मण के सिर पर पुष्प-वर्षा की। १५० दैत्यों को नष्ट करके सुमित्रानन्दन शीघ्र ही पूर्व द्वार पर प्रविष्ट हुये। १५१ उन्होंने जाकर श्रीराम के चरणों में प्रणाम किया और हँसते हुये बातें करने लगे। ५२ रक्त से जर्जर मन्दार पुष्प के समान उन्हें देखकर प्रसन्नचित्त हो गये। ५३ वह बोले कि यहां पर तो राक्षस बड़े प्रवल है। बहुत से राक्षसों ने हमें घेर लिया था। ५४ द्वार खुलने पर ऋषि और ब्राह्मण आये और सबने वाहर आकर देखा। ५५ रक्त की नदी में सिर घड़े के समान वहते चले जा रहे थे। ५६ यह देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये और श्रीराम तथा लक्ष्मण को धन्य-धन्य कहने लगे। तुम्हारे पिता धन्य हैं। तुम्हारी माता तथा तुम्हारा कुल धन्य है और हे तपस्वी विश्वामित्र ! आपको भी धन्य है। ५७-५८ चम्पावती

चम्पावती राज्यर जे लोमपाद राए। कौशल्यांकर भ्रात कैकेय्र पिता कहे ५९
आज जुद्धे पारिवार पण जणा गला।
आज ठारु आम्भ मानंक चिन्ता जे सरिला १६०
देखि श्रीराम लक्ष्मण ओळगि तांकु हेले। स्नान शउच कर्म वेगे से सारिले १६१
भोजन आसि कले शीतळ मणोहि। राजुसि जाग सम्पूर्ण देखिले श्रीराम तहिँ ६२
राजा माने मेलाणि होइण चळि गले। जे जाहार नवरे जाइण मिळिले ६३
कौशल्यांकर भ्रात कैकेय्रार पिता।सुमित्रार पिता लीळावती भ्रातस्रोता ६४
लोमपाद राजन संगरे चारि जण। प्रवेश होइले जाइ अजोध्या भुवन ६५
चार जणाइला जाइ दशरथ आगे। चारि बान्धव लोमपाद बिजे कले एवे ६६
शुणिण दशरथ पाछोटि वेगे आसि।सिंह द्वार ठारे मेळ होइ हेले हसाहसि ६७
चरणमान पखाळि वसिले जगतीरे।दशरथ पुच्छाकले कि काज्य मोर पुरे ६८
लोमपाद बोले विश्वामित्र जागे गलु। तिनि जाग सरिवारु मेलाणि होइलु ६९
तुम्भर दर्शनरे अइलु तुम्भ पुर। सकळ कुशळटि अटइ तुम्भर १७०
दशरथ बोइले मुँ सर्व शुभे थिलि।श्रीराम लक्ष्मण विनु मुँ चिन्तार्थ होइलि १७१
लोमपाद बोइले तिनिपुर लोके सुखि। श्रीराम लक्ष्मणंकर क्षत्रीपण देखि ७२
बाटरे जाउ जाउ ताड़की वध कले। विश्वामित्र मुनि जाग हेलेण रखिले ७३

राज्य के राजा लोमपाद ने कौशल्या के भाई तथा कैकेयी के पिता से कहा। ५९ आज युद्ध में सामर्थ्य का परिचय मिला। आज से हम लोगों की चिन्ता दूर हुयी। १६० यह देखकर श्रीराम तथा लक्ष्मण ने उन्हें प्रणाम किया और शीघ्र ही वह स्नान शौचादि क्रियाओं से निवृत्त हो गये। १६१ फिर उन्होंने आकर शीतलतादायक भोजन किया। श्रीराम ने राजसूय यज्ञ को समाप्त होते देखा। ६२ राजा लोग विदा होकर चले गये और अपने-अपने घर जा पहुँचे। ६३ कौशल्या के भाई, कैकेयी के पिता, सुमित्रा के पिता तथा लीलावती के भाई चारों लोग राजा लोमपाद के साथ अयोध्या नगर में जा पहुँचे। ६४-६५ दूत ने जाकर लोमपाद के साथ चारों बान्धवों के आने की सूचना दी। ६६ यह सुनकर शीघ्र ही दशरथ अगवानी करने के लिये आ गये और हँसते हुये आपस में सिंहद्वार पर सब मिल गये। ६७ पैर धोकर वह जगती पर बैठ गये। दशरथ ने पूँछा कि हमारे नगर में आने का क्या प्रयोजन है। ६८ लोमपाद ने कहा कि हम विश्वामित्र के यज्ञ में गये थे। उनका यज्ञ समाप्त होने पर हम विदा कर दिये गये। ६९ आपके दर्शनों के लिये तथा आपकी समस्त कुशलता के लिये हम आपके नगर में आये हैं। १७० दशरथ ने कहा कि हम हर प्रकार से सुखी थे पर श्रीराम तथा लक्ष्मण के बिना चिन्ताग्रस्त हो गये हैं। १७१ लोमपाद ने कहा कि श्रीराम लक्ष्मण के पराक्रम को देखकर तीनों लोक सुखी हो गये हैं। ७२ मार्ग में जाते-जाते उन्होंने ताड़का का संहार कर दिया और खेल-खेल में उन्होंने

अशीसहस्र दैत्य बळ सहस्रे सेनापति । मारिच सुबाहु घेनिण प्रवेश झटति ७४
जागर पूर्व द्वारे श्रीराम जगि पुण । पश्चिम द्वारे लक्ष्मण शुण हे राजन ७५
दशदिन जुद्ध हेला समस्तंकु मारि । मारिच बोलि असुर पळाए सेहु फेरि ७६
देखिण देवगण नागबळ पुण । हरष होइले सर्वे देखिण वीर पण ७७
देबे पुष्प वृष्टि कले श्रीरामर शिरे । नाग लोक अतुट मणि देले श्रीरामरे ७८
तिनिपुर ऋषि जे पाद अर्घ्य देले । सकळ राजागण सुवर्ण बृष्टि कले ७९
देव जाग नाग जाग राजुसि जाग सारि ।
देवता नाग राजामाने अइलु मेलाणि करि १८०
तिनि पुरे ध्वनि शुभे श्रीराम मानधाता।देव नाग ऋषिकर सरिला एवे चिन्ता १८१
ऋषि विप्र जाग जे करिबे विश्वामित्र । तेवे से केळि जाग तांकर समापत ८२
शुणिण दशरथ नयनु अश्रु गळि । बोइले वृद्धकाळरे से मोर संखाळि ८३
एमन्त बोलि राय़ रोदन शान्त कले । राणीमानंक आगरे दासी जे कहिले ८४
बोइले श्रीराम लक्ष्मण जागरे नेले जश । अनेक असुर बळ मारिले विशेष ८५
लोमपाद कहिले, कहिले अजा मामुँ । शुणि करि हरष सकळ राणी तेणु ८६
राजामाने माजणा होइण स्नान कले । अमृत भोजन करि सेदिन रहिले ८७

विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की । ७३ मारीच तथा सुबाहु आतुर होकर अस्सी हजार असुर वाहिनी तथा एक हजार सेनापति लेकर आये थे । ७४ हे राजन् ! सुनिये । यज्ञ के पूर्व द्वार की श्रीराम तथा पश्चिम द्वार की लक्ष्मण रक्षा कर रहे थे । ७५ उन्होंने दस दिन तक युद्ध करके सबको मार डाला और मारीच नाम का असुर वहाँ से भाग गया । ७६ उनके पराक्रम को देखकर देवताओं के दल और नागों के दल सभी प्रसन्न हो गये । ७७ देवताओं ने श्रीराम के सिर पर पुष्प वर्षा की और नाग लोगों ने श्रीराम को अक्षयमणि प्रदान की । ७८ तीनों लोकों के ऋषियों ने उन्हें अर्घ्य-पाद्य प्रदान किया और समस्त राजाओं ने स्वर्ण की वर्षा की । ७९ देवयज्ञ, नागयज्ञ तथा राजयज्ञ समाप्त करके देवता, नाग तथा राजा लोग विदा होकर चले गये । १८० तीनों लोकों में यह चर्चा फैल गई कि श्रीराम मान्धाता हैं । देवता, नागों तथा ऋषियों की चिन्ता अब समाप्त हो गयी । १८१ अब विश्वामित्र ऋषि तथा ब्राह्मणों की यज्ञ करेंगे तब उनका केलि यज्ञ समाप्त होगा । ८२ यह सुनकर दशरथ के नेत्रों में अश्रुपात होने लगा । वह बोले कि वह मेरी वृद्धावस्था के सहारे हैं । ८३ ऐसा कहकर राजा ने रुदन को शांत किया । तभी रानियों के आगे दासियों ने कहा । ८४ श्रीराम तथा लक्ष्मण ने बहुत से राक्षसदल को मारकर यज्ञ में विशेष यश प्राप्त किया है । ८५ ऐसा लोमपाद तथा मामा और नाना ने कहा है । यह सुनकर समस्त रानियाँ प्रसन्न हो गई । ८६ राजाओं ने मार्जन करके स्नान किया और अमृतमय भोजन करके उस दिन वहाँ विश्राम किया । ८७ प्रातःकाल सब अपने-

प्रभातु जे जाहा पुरे चळि गले पुण । एथु अनन्तरे जे पार्वती देवी शुण ८८
राजा माने जिबारे विश्वामित्र ऋषि ।मारकण्ड ऋषिकु वसाए आचार्य्यटि ८९
केळि जागरे आहुति ऋषि सर्वे देले । ऋकवेद पढ़ि वेद अध्यान सेहुकले १९०
ऋषि आहुति सरिवार विप्रमाने मिळि ।
सकळ विप्रे सेथिरे आहुति देले तोळि १९१
चउद दिबसरे जाग समापत ।पूर्ण आहुति करिण वसिले विश्वामित्र ९२
अग्निकि शीतळ करि जागकु उठिले । ऋषि विप्रगणंकु मेलाणि वेगे देले ९३
चळिले ऋषि विप्र जे जाहा आश्रमकु । देखणाहारी पथुकी गले जे देशकु ९४
सुरभी चळिला जे आपणा निज स्थाने । बेनि सभा मय दैत्य हरिला ततक्षणे ९५
बिश्कर्मा सुमरन्ते चित्र बिचित्र पुर गला ।
श्रीराम सुमरन्ते शर बाड़ जे तुटिला ९६
चारि मेघ गले जे जाहार आळ । जागर स्थान सबु दिशिला निर्मळ ९७
केवळ जाग स्थानरे ऋषि मढिआ रहि । वैदूर्य्य मढिआ जे तेजरे विराजइ ९८
देखिण विश्वामित्र जे परम तोष हेले ।श्रीराम लक्ष्मणंकु मुनि चाहिँण बोइले ९९
तुम्भर सकाशे मोर जाग समापत । बड़ दुःख पाइल जे बेनि भाइ एथ २००
एथु अनन्तरे शुण गो हेमवन्ती । श्रीराम लक्ष्मण पुण कले किस रीति २०१

अपने घर चले गये। हे पार्वती ! इसके पश्चात सुनो। ८८ राजाओं के चले जाने पर महर्षि विश्वामित्र ने मारकण्ड को आचार्य पद पर बैठा दिया। ८९ समस्त ऋषियों ने वेदपाठ करते हुये केलि यज्ञ में ऋगवेद के मंत्रों से आहुति प्रदान की। १९० ऋषियों की आहुति समाप्त होने पर ब्राह्मण लोग आ गये और समस्त ब्राह्मणों ने वहाँ आहुति प्रदान की। १९१ चौदह दिनों में यज्ञ समाप्त हो गया और पूर्णाहुति करके विश्वामित्र बैठ गये। ९२ वह अग्नि को शीतल करके यज्ञ से उठे और उन्होंने शीघ्र ही ऋषियों तथा ब्राह्मणों को विदाई दी। ९३ ऋषि तथा ब्राह्मण अपने-अपने स्थानों को तथा दर्शक, बटोही अपने-अपने देशों को चले गये। ९४ सुरभी भी अपने स्थान को चल दी। फिर उसी क्षण मय दैत्य ने दोनों सभामण्डप खोल लिये। ९५ विश्वकर्मा के स्मरण मात्र से चित्र विचित्र पुर समाप्त हो गया और श्रीराम के स्मरण करने से वाणों की चहार दीवार टूट गई। ९६ चारों मेघ अपने स्थानों को चले गए और सम्पूर्ण यज्ञस्थल निर्मल दिखाई देने लगा। ९७ यज्ञस्थल पर केवल ऋषि की कुटिया रह गई। वह वैदूर्य की मठिया सुन्दर तेज से दीप्त थी। ९८ यह देखकर विश्वामित्र को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। महर्षि श्रीराम तथा लक्ष्मण की ओर देखकर बोले। ९९ तुम्हारे कारण से मेरा यज्ञ पूर्ण हो गया। तुम दोनों भाइयों ने यहाँ बड़ा कष्ट पाया है। २०० हे हिमाँचलनन्दिनी ! इसके पश्चात् श्रीराम तथा लक्ष्मण ने क्या लीला की उसे सुनो। २०१ विश्वामित्र ने मंत्रोच्चारण करके उन्हें

मन्त्र पढ़ि विश्वामित्र आर्शीर्बाद कले । बोइले भय तुम्भर न थाउ संग्रामरे २
विश्वामित्र हरषरे बिचार कले पुण । दशरथ पुत्रकु मुँ अछि जे आणिण ३
असुरंकु मारिण रखिले जाग मोर । केमन्ते शुझिबि मुँ श्रीराम उपकार ४
श्रीरामकु जेबे बिभा मुँ करिपारे सीता । तेबे महीरे रहिब मोहर जे कथा ५
श्रीराम लक्ष्मणंकु जे पचारन्ति ऋषि ।
मिथिला कटक बाटे जिबाकि आम्भे पशि ६
जनक ऋषि जे करिछि धनु जाग ।से जाग देखिले श्रीराम बहुत हेब भाग्य ७
श्रीराम बोइले मुनि हे जे तोहर इच्छा।आम्भर मनकु से जोगाए मन बाञ्छा ८
श्रीराम ठारु शुणि एमन्त वचन ।श्रीरामंकु संगे घेनि चळिले ऋषि पुण ९
बोइले आस बाबु मोर संगे चळि । बाटरे असुर बळ बेढिले आसि करि २१०
श्रीराम लक्ष्मण जे देखिण जुद्ध कले ।अनेक असुर मारि से स्थानु चळि गले २११
श्रीणित नदी तीरे जे रहिले से दिन । कन्दमूळ फळ से जे कलेक भोजन १२
श्रीराम पचारिले विश्वामित्रंकु तहिँ । ए काहार देश अटे कह हे तपिसाइँ १३

महर्षि कुशंक उपाख्यान

विश्वामित्र बोइले शुण दशरथ कुमर । ब्रह्मांक कुमर अटे कुश नामे मुनिवर १

आशीर्वाद दिया और कहा कि संग्राम में तुम्हें किसी प्रकार का भय न रहे। २ फिर प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने विचार किया कि मैं दशरथ के पुत्रों को लाया। ३ उन्होंने राक्षसों का संहार करके मेरे यज्ञ की रक्षा की। मैं श्रीराम के उपकार का बदला कैसे चुकाऊँ। ४ यदि मैं श्रीराम का विवाह सीता से करा सकूँ तो पृथ्वी पर मेरा यश रह जायेगा। ५ महर्षि ने श्रीराम तथा लक्ष्मण से पूँछा क्या हम लोग मिथिला दुर्ग के मार्ग से होकर चलें। ६ महर्षि जनक ने धनुष-यज्ञ का आयोजन किया है। हे श्रीराम ! उसका दर्शन करना बड़े भाग्य की बात है। ७ श्रीराम ने कहा हे महर्षि ! जैसी आपकी इच्छा, वह ही हमारे भी मन में अच्छी लगेगी। ८ श्रीराम के ऐसे वचनों को सुनकर उन्हें साथ लेकर चल दिये। ९ उन्होंने कहा, आओ वत्स ! हमारे साथ चलो। मार्ग में असुरदल ने आकर उन्हें घेर लिया। २१० श्रीराम तथा लक्ष्मण ने यह देखकर युद्ध किया और अनेकानेक असुरों का संहार करके वह उस स्थान से चले गये। २११ उस दिन वह श्रोणित सरिता के तट पर ही ठहरे। उन्होंने कन्दमूल फलों का भोजन किया। १२ वहाँ पर श्रीराम ने विश्वामित्र से पूँछा हे तपोनिधि ! बताइये यह किसका देश है ? । २१३

(महर्षि कुश का उपाख्यान)

विश्वामित्र ने कहा, हे दशरथनन्दन ! सुनो। कुशनाम के श्रेष्ठ मुनि

तांक ठारु चारि पुत्र हेले उत्पत्ति । कुशसेन नाम बोलि ता ज्येष्ठ पुत्र गोटि २
द्वितीय पुत्र तारकुश जे नाभ नाम । तृतीय पुत्र जय क्षत्रीय विद्यमान ३
वसु बोलिकरि सबुहुँ सान पुत्र । चारिहिँ बळवन्ते अटन्ति पवित्र ४
क्षत्री सरिसम जे नाहान्ति त्रिभुवने । चारिहें राजा पुण होइले जगतेणे ५
शशी नाम देशर सारसा नृपति । हुमाबर नाउ नग्र कुश नामे नृपति ६
काउँरी देशरे साराबती पुरे । अमृतान्ध सेथिरे होइला नृपबरे ७
देवदेशरे जे विरजा नामे पुरि । वसु नामरे नृपति सेथिरे बिजे करि ८
प्रतिज्ञावन्त से जे अटइ वसुराजा । डरे ऐरीबळ ताकु करन्ति पाद पूजा ९
वसु कटक परिरे आरेक पुर थिला । धर्मदेश पाटना नाम जे तार त्वरा १०
एबे दिशुअछि पथु अलगा पर्वत । मगध देश एहु निकटे रघुनाथ ११
पञ्चु वर्ण बोलिण से सेथिरे नदी बहि । सदाशिव शिररु आसुअछि धाइँ १२
मगध भुवने जे कुशनाभ राये । देवकन्या आणिण सुखरे भोग करे १३
घृत जाह्नबी नामेण जे ताहार जुबती । शतेक दुहिता जे ताहार उत्पत्ति १४
रूपे पटान्तर जे नाहिँ तिनि पुरे । मनरे विचारे कुशनाभ नृपबरे १५
दुहिता सुन्दर जुबा हेबारु तार पुणि । कन्या अनुरूपे वर न मिळिले जाणि १६
खोजि बर न मिळिबारु नग्रर अन्तरे । बिचित्र पुरेक सेथि कला नृपबरे १७

ब्रह्मा के पुत्र थे। १ उनके चार पुत्र उत्पन्न हुए। उनके ज्येष्ठ पुत्र का नाम कुशसेन था। २ दूसरे पुत्र का नाम कुशनाभ था। तीसरा पुत्र पराक्रमी जय था। ३ सबसे छोटे पुत्र का नाम वसु था। चारों ही पवित्र तथा बलवान थे। ४ वीरता में उनके समान तीनो लोकों में कोई न था। फिर वह चारों ही इस जगत में राजा बने। ५ शशी नामक देश के राजा सारसा तथा हुमावर नामक देश के राजा कुश हुए। ६ काउँरी देश के सारावती नगर का श्रेष्ठ राजा अमृतान्ध हुआ। ७ देव देश में विरजा नाम की पुरी है वहां पर वसु नाम का राजा विराजमान था। ८ राजा वसु प्रतिज्ञाशील था। भय से शत्रु लोग उसके चरणों की पूजा किया करते थे। ९ वसु के कटकपुर में एक अन्य नगर था जिसका नाम धर्म देश पटना था। १० मार्ग से इस समय उसका पर्वत अलग दिखाई देता है। हे रघुनाथ ! इसी के निकट मगध देश है। ११ वहाँ पंचवर्णी नदी बहती है जो सदा कल्याण के कर्ता शंकर जी के शिर से त्वरित गति से चली आ रही है। १२ मगध देश का राजा कुशनाभ देव कन्या को लाकर सुख-पूर्वक भोग करता है। १३ उसकी युवा पत्नी का नाम घृत जान्हवी है। उसके सौ कन्यायें हैं। १४ उसके रूप की समता तीनों लोकों में नहीं थी। नृप-श्रेष्ठ कुशनाभ ने मन में विचार किया। १५ उसकी कन्या युवा और सुन्दर होने पर भी उसके अनुरूप वर नहीं मिल रहा था। १६ खोजने पर भी अन्य नगरों में वर न मिल पाने के कारण नृपश्रेष्ठ ने वहाँ एक विचित्र पुर

नाना तरु लता रोपिला लय़ नेइ । कन्यामाने क्रीडा जे कले सेथिरे थाइ १८
दिनेक जगत प्राण दुहिताकु देखि । कामभरे मन तार नोहिला उपेक्षि १९
कन्याकु चाहिँण से जे बोलइ मरुत । स्वर्गर देवता मुँ जे रूपरे शोभावन्त २०
समस्तंक हृदरे मुं अछि बिजे करि । मोहर प्रसादे जे सर्व जीवे चळि २१
मुहिँ पवन देवता देख मोहर दुःख ।मोते विभा होइले भुञ्जिब तुम्भे सुख २२
मुहिँ तुम्भंकु वश गो होइलि सुन्दरी । मदन विह्वळिते अंग मोर घारी २३
शुणिण सुन्दरी सर्वे लज्याभर होइ । शतेक सुन्दरी जाइ ओळगि तांकु होइ २४
बोइले सुन्दरी सर्वे मरुत देव तुम्भे ।कुशध्वज राजार शतेक दुहिता आम्भे २५
समस्ते अबिवाही भ्रता काहार नाहिँ ।
पिता न जाणिले तुम्भंकु वरिबु आम्भे काहिँ २६
पितांकर आज्ञा जे केमन्ते भांगिवइँ ।पिता सिना आम्भंकु अर्जिछि जन्म देइ २७
पिता न जाणिले जे नवरुँ आम्भे केभे । बिअर्थ होइलाणि तुम्भर मन एबे २८
शुणिण संकोच पुणि पाइले पवन । शाप देले तांकु होइण कोपमन २९
आम्भर कहिला बोल नकल सुन्दरी । कुबुजी होइ थाअ तुम्भे सकळ नारी ३०
एते कहि अन्तरीक्षे गले जे मरुत । कुबुजी हेले राजार शतेक दुहित ३१

बनवाया । १७ बड़ी लगन से उसमें नाना प्रकार के वृक्ष तथा लताएँ लगवाईं। कन्याएँ वहीं रहकर क्रीड़ा किया करती थीं । १८ एक दिन संसार के प्राण पवन देव का मन कन्या को देखकर कामासक्त हो गया जिसकी वह उपेक्षा नहीं कर सके । १९ मरुत ने कन्या को ताकते हुए कहा मैं शोभाशाली स्वर्ग का देवता हूँ । २० मैं सबके हृदय में रहता हूँ तथा मेरी कृपा से सभी प्राणी चलते हैं । २१ मैं पवनदेव हूँ! मेरे दुख को देखो । मुझसे विवाह करने पर तुम सुखभोग करोगी । २२ हे सुन्दरी ! मैं तुम्हारे वशीभूत हो गया हूँ । मेरा शरीर काम से जर्जरित हो रहा है । २३ यह सुनकर समस्त सुन्दरियाँ लजा गईं । उन सौ सुन्दरियों ने जाकर उन्हें प्रणाम किया । २४ फिर समस्त सुन्दरियों ने कहा कि आप मरुतदेव है और हम लोग राजा कुशध्वज की सौ कन्याएँ हैं । २५ समस्त अविवाहिता है । किसी का भी पति नहीं है । पिता की जानकारी के बिना हम आपका वरण कैसे कर सकती हैं । २६ हम लोग पिता की आज्ञा का उल्लंघन कैसे करें ? पिता ने हमें जन्म देकर प्राप्त किया है । २७ पिता के जाने बिना हम कभी भी वरण नहीं कर सकतीं । इस समय आपकी मनोकामना व्यर्थ हो गई । २८ यह सुनकर पवनदेव संकुचित हो गए तथा कुपित होकर उन्होंने उन्हें शाप दे दिया । २९ हे सुन्दरियो ! तुम लोगों ने हमारी बात नहीं मानी । अस्तु तुम सभी स्त्रियाँ कुबड़ी होकर रहो । ३० इतना कह कर पवनदेव अन्तरिक्ष में चले गए । राजा की सौ कन्याएँ कुबड़ी हो गईं । ३१

लज्यारे निजपुरे नइले सुन्दरी। बारता पाइला पिता कुश दण्डधारी ३२
दुहिता मानंकु देखि बिकळित मन। बिचारे दुहितामाने किम्पाइ एसन ३३
जेमाए बोइले पिता शुण हे उत्तर। पवन देवता आसि मिळिले आम्भ ठार ३४
बोइले मोते वर बेगे गो सुन्दरी। समस्तंक भ्रता आम्भे होइबु तुम्भरि ३५
आम्भे नास्ति कलुँ जे तांकरि कथा शुणि।
पिता अटे आम्भरटि जीवर कारेणि ३६
जाहाकु पिता आम्भर समर्पिबे नेइ। सेहि आम्भर भ्रता मरुत गोसाइँ ३७
ए वचन शुणि से आम्भंकु कोप कले। कुबुजो हुअ बोलिण सेहु शाप देले ३८
एते कहि पवन जे अन्तरीक्षे गला। शुणिण कुशनाभ जे आनन्द मन हेला ३९
बोइले धन्य मोर कुळर नन्दना। तुम्भर प्रसादे मोर कुळ निर्मळ सिना ४०
अनेक प्रशंसा तांकु कले नृपमणि। साधु साधु बोइले जे नग्र लोक शुणि ४१
दुहिता मानंकु पुणि घेनि जाए राये। निज मन्दिरे जे प्रबेश जाइ हुए ४२
श्रीराम पचारिले शुण हे ब्रह्ममुनि। बिभा होइलेटिकि कुश नाभर नन्दिनी ४३
कउशिक बोइले शुण हे रघुनाथ। मरुचि नामरे एकइ तपोबन्त ४४
से मुनिक उर्द्धरेता जप मन्त्र अटे। से मुनिर तपकु डरन्ति सुरनाथे ४५
मने मने इन्द्र बिचार करे निति। स्वर्गर सम्पद मोर हरिब निश्चे जति ४६

लज्जावश वह अपने पुर को नहीं गई। उनके पिता महाराज कुशध्वज को यह सूचना मिली। ३२ पुत्रियों को देखकर उनका मन व्याकुल हो गया। वह विचार करने लगे कि पुत्रियाँ ऐसी कैसे हो गई। ३३ राजकुमारियों ने कहा हे पिता! सुनो। पवनदेव आकर हमसे मिले। ३४ उन्होंने कहा हे सुन्दरियों! हमें शीघ्र ही वरण कर लो, मैं तुम सबका पति बनूँगा। ३५ हमने उनकी बात सुनकर अस्वीकार करते हुए कहा कि हमारे जीवन के कर्त्ता पिता जी हैं। ३६ पिता जिसे भी हमें समर्पित करेंगे। हे पवनदेव! वह ही हमारा भर्त्ता होगा। ३७ यह बात सुनकर वह हमारे ऊपर क्रुद्ध हो गए तथा कुबड़ी हो जाने का शाप दे डाला। ३८ इस प्रकार शाप देकर पवनदेव अन्तरिक्ष में चले गए। यह सुनकर कुशनाभ का मन प्रसन्न हो गया। ३९ वह बोले, हमारे कुल की कन्याओ! तुम धन्य हो। तुम्हारे प्रसाद से ही हमारा कुल निर्मल है। ४० नृपश्रेष्ठ ने अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा की। नगरवासी भी सुनकर धन्य-धन्य कहने लगे। ४१ फिर राजा पुत्रियों को साथ लेकर अपने महल में जा पहुँचे। ४२ श्रीराम ने प्रश्न किया, हे ब्रह्मर्षि! सुनिये। क्या फिर कुशनाभ की कन्याओं का विवाह हुआ। ४३ कौशिक बोले हे रघुनाथ! सुनो। मरुचि नाम के एक तपस्वी थे। वह मुनि उर्द्धरेता मंत्र जाप में लगे थे। देवराज इन्द्र उनकी तपस्या से भयभीत हो गए। ४४-४५ नित्य ही वह अपने मन में विचार करते थे कि यह योगी हमारी स्वर्गीय सम्पत्ति निश्चय ही हरण कर

एमन्त विचारि जे शचि देवीर साइँ । उद्यान गन्धर्वकु जे कहिला बेगे राइ ४७
तोहर दुहिता जे सुन्दर सुकुमारी । अविवाही होइण अछइ सेहु नारी ४८
मरुचि मुनिर तप वेगे कर नाश । तु जे मोर पुण अटुरे निज दास ४९
शुणिण गन्धर्व जे नगरे बेगे आसि । ड़काइ दुहिता जे सुन्दर सुकेशी ५०
तु मोर नन्दिनी गो कुळर अटु सार । मोते राइण आज्ञा देले वज्रधर ५१
बोइले मरुचि मुनिर जाइ जोइ भांगि । तोहर दुहिता जाइ हेउ तांकर अंगी ५२
शुणि गन्धर्व दुहिता बेगे चळिगला । मरुचि मुनि चरणे जाइण सेवा कला ५३
शतेथर प्रणाम करइ प्रतिदिन । निर्मळ शउच होइ जपइ ऋषि नाम ५४
षड़ मास जिवारु से ऋषि नयन जे फेडि । गन्धर्व देवती ठारे नेत्र गला पड़ि ५५
बोइले सुन्दरी गो केउँ ठारे घर । काहाकु भजु तु जे आसिण एहि ठार ५६
गन्धर्वर दुहिता बोलइ कर जोडि । दइव विधाता जे मोते जन्म करि ५७
जुबा काळे मोते न देलेक वर । का आगे कहिवि मुँ हेउछि नारखार ५८
तेणु विधाताकु मुँ सुमरणा कलि ।केउँ ठारे भर्त्ता मोर काहिँ न पाइलि ५९
विधाता बोइले तोर मरुचि मुनिवर ।एहा शुणि मुँ आसिछि तुम्भंकु मन मोर ६०
शुणिण मरुचि मुनि हरष होइले । वेदवरकु वेग सुमरणा कले ६१

लेगा । ४६ शची पति ने इस प्रकार विचार कर शीघ्र उद्यान गन्धर्व को बुलाकर कहा । ४७ तुम्हारी सुन्दर सुकुमारी कन्या अभी तक अविवाहिता नारी है । ४८ महर्षि मरुचि का तप शीघ्र ही नष्ट कर दो । तुम तो हमारे निजी सेवक हो । ४९ यह सुनकर गन्धर्व ने शीघ्र ही घर में आकर सुन्दर सुकेशी कन्या को बुलाया । ५० वह बोला कि तू मेरी पुत्री है और कुल की निधि है । वज्रधारी (इन्द्र) ने मुझे बुलाकर आज्ञा दी है कि तुम्हारी पुत्री जाकर महर्षि मरुचि की तपस्या भंग करके उनकी अंगिनी बने । ५१-५२ यह सुनकर गन्धर्व कन्या शीघ्र ही चली गई और उसने जाकर मरुचि मुनि के चरणों की सेवा की । ५३ वह प्रतिदिन उन्हे सौ बार प्रणाम करती थी तथा निर्मल पवित्र होकर ऋषि के नाम का जाप करती थी । ५४ छै माह व्यतीत होने पर ऋषि ने नेत्र खोले तभी उनकी दृष्टि गन्धर्व कन्या पर पड़ी । ५५ वह बोले हे सुन्दरी ! तुम्हारा घर कहाँ है ? यहाँ आकर तुम किसका भजन कर रही हो ? । ५६ तब गंधर्व कन्या ने हाथ जोड़कर कहा कि भाग्यवश विधाता ने मुझे जन्म दिया है । ५७ युवाकाल में मुझे वर नही प्रदान किया । मैं किससे कहूँ कि मैं विनष्ट हुई जा रही हूँ । ५८ इसलिये मैंने विधाता का स्मरण किया । मेरा पति कहाँ है । मुझे क्यों नही मिला । ५९ ब्रह्मा ने कहा कि मुनिश्रेष्ठ मरुचि तुम्हारे है । यह सुनकर मैं यहां आई हूँ और आपके प्रति मेरा मन लग गया है । ६० यह सुनकर महर्षि मरुचि प्रसन्न हो गये । उन्होंने शीघ्र ही

जाणिण बेदबर मिळिले आसि पुण ।सकळ बृतान्त तांकु कहिले मुनि जाण ६२
बेदवर बोइले उचित कथा सेहि । पुत्र होइले सिना कुळ धर्म रहि ६३
शुणिण मरुचि ऋषि से कन्या बिभा हेले। पाशे थाइ बेदबर बिभा करि देले ६४
तेणु से मरुचि मुनि मडिआ करि रहि । एमन्ते केते दिन सेथिरे गला बहि ६५
से ऋषिर चारि पुत्र होइलेक जात । चारि दिगरे राजा होइले चारि पुत्र ६६
चारि पुत्र कुशनाभर शते जे दुहिता । पवन कहिबारे नोहिले से जे स्रोता ६७
तेणु पवन देवता कुबुजी करि गला । ब्रह्ममुनि बिभा हेले सुन्दर हेबे परा ६८
अकमळ ऋषि जे प्रतापि काळी जाण ।सेहि ऋषिंकि कुशनाभ कलाक बरण ६९
शतेक दुहितांकु से मुनिंकु देला । ब्रह्म तेज लगन्ते अबुजी रूप गला ७०
देखिण कुशनाभ जे होइला सन्तोष । निज पुरे प्रबेश मरुचिर सुत ७१
बिश्वामित्र बोइले शुण हे रघुनाथ । कन्या माने कुबुजी होइण थिले एथ ७२
तेणु से कुबुजी बन से बनकु कहि ।श्रीरामंक आगे बिश्वामित्र जे बुझाइ ७३
अनेक दिन एथे कुशनाभ राजा हेला । कर्म हीनरे तार तनय न होइला ७४
शतेक दुहिता जे ब्रह्म तेजकु देइ । जाग आरम्भ करिले तहुँ नरसाइँ ७५
होम करन्ते से जे आकाशु बाणी शुणि । नकर जाग बोलि बोइले देबे पुणि ७६

ब्रह्मा का स्मरण किया । ६१ यह जानकर ब्रह्मा वहा आ पहुँचे । मुनि ने उनसे सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया । ६२ ब्रह्मा ने कहा कि यह बात उचित है । पुत्र होने से ही कुल धर्म की रक्षा होती है । ६३ यह सुनकर महर्षि मरुचि ने उस कन्या से विवाह कर लिया । ब्रह्मा ने समीप रहकर विवाह करा दिया । ६४ तब मरुचि मुनि मठ बनाकर रहने लगे । इस प्रकार वहा कुछ समय व्यतीत हो गया । ६५ उन ऋषि के चार पुत्र उत्पन्न हुये और वह चारो पुत्र चारो दिशाओ मे राजा बने । ६६ कुशनाभ की सौ पुत्रिया जिन्होने पवन देव की बात नही सुनी थी और पवनदेव उन्हे कुवडी बनाकर चले गये थे । उनके साथ चारो ब्रह्मर्षियो के विवाह करने पर वह सुन्दर हो जायेगी । ६७-६८ निर्मल तत्कालीन प्रतापी ऋषियो को कुशनाभ ने वरण कर लिया । उन्होने सौ कन्याओ को मुनि को समर्पित किया और ब्रह्मतेज के लगने से कुवड़ापन चला गया । ६९-७० यह देखकर कुशनाभ सतुष्ट हो गये और मरुचि के पुत्र अपने घर चले गये । ७१ विश्वामित्र ने कहा हे रघुनाथ ! सुनो । कन्याये यहा पर कुवड़ी हो गई थी । ७२ इस कारण से इस वन को कुबुजा वन कहा जाता है । यह बात श्रीराम के समक्ष विश्वामित्र ने समझाकर कही । ७३ कुशनाभ यहाँ के राजा बहुत दिन तक रहे । दुर्भाग्यवश उनके पुत्र नही हुआ । ७४ सौ कन्याओं को ब्रह्मतेज को समर्पित करके नर-नाथ ने वहाँ पर यज्ञ प्रारम्भ किया । ७५ हवन करने पर आकाशवाणी सुनायी पड़ी । देवताओ ने कहा कि

कथा हुअन्तेण जे होइला अर्द्धरात्री।अष्ठमी तिथिरे जाण प्रकाश चन्द्र ज्योति ९३
सगर मुनि माने बोइले गाधिसुत। श्रीरामंकु अटइ जे अळप वयसत ९४
आपार वेळ निशि जे होइलाणि आसि। केते उजागर होइण थिबे बसि ९५
कथा रुहाअ श्रीराम लक्ष्मण निद्रा जान्तु। कोमळ देह गोटि उश्बास एवे पान्तु ९६
कउशिक ऋषि बोले कथा त सरिला। रजनी आसिण एबे अर्द्धरु गडिला ९७
उठन्तु श्रीरामचन्द्र निद्रा एबे जान्तु। वाट चला अळस जे देहरु छड़ान्तु ९८
एथु अन्ते शोइले सकळे सेठार। रजनी शेष हुअन्ते उदय दिनकर ९९
शज्या छाड़ि श्रीराम जे शुचि वन्त होइ। श्रोणित नदीतिरे मिळिले वेगे जाइ १००

गंगा पुराण

नावरे वसिपुण होइले नदी पारि। सकळ मुनि राम लक्ष्मण आदि करि १
केतेहेंक बेळे मिळिले तेणे कूळे। विश्वामित्र बोले श्रीरामंकु चाहिँ धीरे २
एहिटि पुण्य नदी एथिरे स्नान कर। पाप नाशिनी गंगा एहिटि रघुवीर ३
ए नदीर अपार जे अटइ महिमा। चतुर्मुखे जाहा कहि न पारे वेद ब्रह्मा ४

सिद्ध हो गया है और यज्ञ करने से मेरे शरीर से पाप चला गया। ९२ कथा-वार्ता होते-होते आधी रात बीत गई। अष्टमी तिथि में चन्द्रमा की ज्योति प्रकाशित हो रही थी। ९३ समस्त मुनियों ने कहा हे गाधिनन्दन! श्रीराम अभी अल्पायु है। ९४ बहुत रात हो गई है वह बैठकर कब तक जागते रहेगे। ९५ अब बाते बद कर दीजिये। जिससे श्रीराम और लक्ष्मण सो जाँए और उनका कोमल शरीर अब विश्राम करे। ९६ महर्षि कौशिक ने कहा कि कथा तो समाप्त हो गई है और रात भी आकर आधी बीत गई है। ९७ अब श्रीरामचन्द्र उठे और निद्रा अब चली जाये और मार्ग चलने का आलस्य देह से छूट जाये। ९८ इसके पश्चात् सभी वहाँ सो गये और रात्रि समाप्त हो जाने पर सूर्य उदय हो गया। ९९ राम ने शैय्या त्याग दी और पवित्र होकर शीघ्र ही गगा नदी के तट पर जा पहुँचे। १००

गंगा पुराण

नाव में बैठकर उन्होंने नदी पार की। समस्त मुनि राम तथा लक्ष्मण आदि सभी थे। १ कुछ समय मे वह लोग दूसरे किनारे पर पहुँच गये। तब श्रीराम की ओर देखकर धीरभाव से विश्वामित्र ने कहा। २ यह पुण्य सरिता है, इसमे स्नान करो। हे रघुवीर! यह पापनाशिनी गगा है। ३ इस नदी की अपार महिमा है। ब्रह्मा भी इसका वखान चारो मुखों

अळप दिने होइब तोर पुत्र । से पुत्ररे निर्मळ होइब कुळ गोत्र ७७
आकाशरु वाणी जे शुणिण राजा पुण । जाग न कला तेणु विचारि राजन ७८
काळेण पुत्र तार होइलेक जात । कउस्तुभ नाम ताकु देलेक तार तात ७९
रूपरे सुन्दर जे वळरे महावळी । नाहिँ ताकु पटान्तर सपत द्वीपावळि ८०
ताहार नन्दन पुण कउशिक राये । कउशिक नन्दन गाधि जे राजा हुए ८१
सेहि गाधि राजार अटे मुँ कुमर । तेणु मुँ गाधिसुत बोलाए चापधर ८२
पितृंक छळरे मुँ जे जागरे प्रवेश ।मोर जाग रखिल हे आसिण बेनि भ्रात ८३
मोहर सान भग्नी जे अटइ सत्यवती । अगस्तिंकि प्रदान कलि हे दाशरथि ८४
से भग्नी अनेक काळ मुनि संगे रहि । काळेण नदीकि जे स्नान करि जाइ ८५
शुर वाहिनी नदीरे मिशिण वहि गला । वन गिरि जिणिण से सागरे पशिला ८६
नदीर संगे मिशि पवित्र से जे हेला । अजार नाम गोटि ताठारे सम्भविला ८७
कउशिक नदीर पुणि जगते प्रसिद्धि । पवित्र जळ बुहाइ गिरि मध्य भेदि ८८
भउणीर संग मुँ जे तेजिण न पारि । सेहि नदी कूळरे आश्रम मुँ जे कलि ८९
अनेक काळ मुँ जे तपरे वसिलि । भग्नीर सन्निधे रहि अनेक दिन नेलि ९०
से वनरे सिंह शार्द्दूळ मत्त जेणु । सिद्ध बने रहिलि भय करि तेणु ९१
एबे जे मोहर कार्य्य सिद्ध हेला । जाग करन्ते मोर अंगु पातक गला ९२

यज्ञ मत करो। ७६ थोड़े दिनो में तुम्हारे पुत्र होगा और उससे तुम्हारा कुल तथा गोत्र निर्मल हो जायेगा। ७७ राजा ने आकाशवाणी सुनकर और उस पर विचार करके यज्ञ नही किया। ७८ समय पर उनके पुत्र उत्पन्न हुआ, पिता ने उसका नाम कौश्तुभ रखा। ७९ वह रूप मे सुन्दर वल में महान पराक्रमी था। सातो द्वीपों मे उसकी समता नही थी। ८० उसका पुत्र राजा कौशिक था। कौशिक के पुत्र राजा गाधि हुये। ८१ उन्ही राजा गाधि का मै पुत्र हूँ। हे धनुर्धारी! इसी कारण से मुझे गाधि-सुत कहा जाता है। ८२ पितरो के बहाने मै यज्ञ में प्रवृत्त हुआ और तुम दोनो भाइयों ने आकर मेरे यज्ञ की रक्षा की। ८३ मेरी छोटी बहन सत्यवती है। हे दशरथनन्दन! मैंने उसे अगस्त को प्रदान किया है। ८४ वह बहन बहुत समय तक मुनि के साथ रही है। एक समय वह स्नान करने के लिये नदी पर गई। ८५ सूरवाहिनी नदी मे जाकर वह वह गई। जगलो, पहाड़ों पर होती हुई वह समुद्र में जा पहुँची। ८६ नदी के साथ मिलकर वह पवित्र हो गई। उससे बाबा का नाम सम्भूत हुआ। ८७ वह संसार में कौशिक नदी के नाम से प्रसिद्ध है। पर्वत के मध्यभेदन करती हुई पवित्र जल प्रवाहित करती है। ८८ वहन का साथ मैं त्याग नही पाया। इस-लिये मैंने उसी नदी के तट पर आश्रम बना लिया। ८९ मै वहुत समय तक वहन के सानिध्य में रहकर तपस्या में बैठा रहा। ९० उस वन में सिह, शार्दूल उन्मत्त थे। अतः मैं भयभीत होकर सिद्धवन में रहने लगा। ९१ अब मेरा कार्य

एथु अनन्तरे शुण हे रघुनाथ ।कुम्भ ऋषि सागरकु गले स्नानर निमित्त १९
गोविन्द द्वादशी बुड़ करन्ते ऋषि जाइ। तरंग लहरी मारिला तांकु नेह २०
जाणिण अगस्ति ऋषि वेगे चळि गळे । सप्त सागरकु चळु करिण पिइले २१
तेणु सागर शुखि गला पुण । मनुए पर्ज्यन्त विदा भूमि हेला जाण २२
देखिण देवताए रविकि कहिले ।आदित्य देवता सगर राजांकु जात कले २३
विश्वामित्र बोइले शुण हे रघुसाइँ । तुम्भर उपर वंशे सगर राजा होइ २४
बिधर्बा बिसर्बा जे अटन्ति दुइ जेमा । रबि तळे नृपति पणरे गरिमा २५
से राजा दुहिता चन्द्र हारा जे मुकुता ।सगर राजांकु विभा कलेक बळवन्ता २६
वेनि राणींकि घेनिण सगर कले भोग । बेनि लक्ष वर्षरे नोहिला पुत्र जोग २७
पुत्र नोहिला जेणु सेहु वेनि नारी । कश्यप ऋषिकि से जाइण सेवा करि २८
काळेण प्रसन्न तांकु होइले देवमुनि । अनेक पुत्र तुम्भर हेउ जे कामिनी २९
वहु सेवा आम्भंकु कल जे तुम्भे जहुँ । आम्भर वचन जे निष्फळ केबे नोहु ३०
एहि बर देइ जे गले तपशाळी । निज पुरे प्रवेश सगर राजा नारी ३१
पाक स्परश से जे एका बेळके हेले । सगर राजा वीर्ज्यरे गर्भवास भले ३२
गर्भरे रहन्ते वीर्ज्य बढिले ऐथि शिष्य । दिनकु दिन राणी छाड़िले सुहास ३३

की छोटी उँगली के नख-कोण मे जा छिपी । १८ हे रघुनाथ ! सुनो। इसके पश्चात् कुम्भ ऋषि समुद्र में स्नान करने के लिए पहुँचे । १९ ऋषि गोविन्द-द्वादशी में डुबकी लगाने गए थे। तभी लहरो में बहकर वह मर गए। २० यह जानकर अगस्त ऋषि शीघ्र ही वहाँ गए और उन्होंने सातों समुद्रो को आचमन करके पी लिया। २१ तब समुद्र सूख गया। एक मन्वन्तर पर्यन्त भूमि विद्यमान रही। २२ यह देखकर देवताओ ने सूर्य से कहा तब सूर्य देवता ने राजा सगर को उत्पन्न किया। २३ विश्वामित्र ने कहा हे रघुनाथ ! तुम्हारे पूर्व पुरुष राजा सगर हुये है। २४ विदर्भा और विसर्वा दो राजकुमारियाँ थी और सूर्यमण्डल के नीचे राजा की महत्ता थी। २५ उस राजा की पुत्री मुक्ता व चन्द्रहारा ने बलवान राजा सगर से विवाह किया। २६ दोनों रानियों को लेकर सगर भोग भोगने लगे। परन्तु दो लाख वर्ष तक पुत्र का योग नही हुआ। २७ जब उन दोनों रानियों के पुत्र नही हुआ तब उन्होने जाकर कश्यप ऋषि की सेवा की। २८ समय पर देवर्षि उन पर प्रसन्न हुए और उन्होने आशीर्वाद दिया। हे कामिनी ! तुम्हारे अनेक पुत्र हों। २९ तुमने हमारी बहुत सेवा की है। हमारा वाक्य कभी अन्यथा नहीं होगा। ३० यह वर देकर तपस्वी चले गये और राजा सगर की पत्नियाँ अपने महल में जा पहुँची। ३१ उन्हे एक साथ ही पाक स्पर्श पड़ा अर्थात दोनो एक साथ ही रजस्वला हुईं और सगर के वीर्य से गर्भवती हो गईं। ३२ गर्भ में वीर्य स्थापित रहने से शिशु बढ़ने लगे और दिन पर दिन रानियों की चंचलता दूर

श्रीराम बोइले ए नदी काहार अंशे जात। संशय फेड़िण मोते कह हे तपोवन्त ५
मुनि कहिले तुम्भे शुण हे रामचन्द्र। पूर्वर कथा एजे अटइ प्रसिद्ध ६
मेरुर दुहिता जे मेनका नामे बाळी। हेमवन्तकु से जे देलाक विभाकरि ७
ताहांक ठारु सम्भूत होइले झिअ दुइ।
गंगा ज्येष्ठ भउणी सामा जे सान होइ ८
श्रीराम बोइले ए जे गंगा स्वर्गवासी। मञ्चरे किम्पाइ वहिलेक पुण आसि ९
विश्वामित्र वोले शुण हे श्रीरामचन्द्र। गंगा पुराण कथा शुण हे नरेन्द्र १०
हेमवन्त घरे जे पार्वती गंगा जात। पार्वतीकि बिभा हेले त्रिलोचन नाथ ११
गंगांकु विभाहेले वरुण देवता। तेणु से सप्त सागर अटइ जिअन्ता १२
से वरुण राजा पुणि लीळावतीकि बिभा। तेणु से गंगांकु न कले आउ श्रद्धा १३
तेणु से गंगा देबी रूषिण स्वर्ग गले। वेदबर कमण्डळे जाइण रहिले १४
अठर मनु उत्तारु बळी जात हेला। वळीर प्रतापरे देवता दुःखी परा १५
वासुदेवंकु कहन्ते होइले मञ्चेजात। वामन रूपे तुम्भे बधिल पद्म नेत्र १६
दान देइ वळी पाताळकु जाइ। देखि वेदवर वासुदेव चरण धोइ १७
तेते बेळे कमण्डळु गंगा बाहारिले। विष्णुर कनिष्ठ आंगुळि कणरे लुचिले १८

से नही कर सकते। ४ श्रीराम ने कहा कि यह नदी किसके अंश मे उत्पन्न हुई है। हे तपोनिधि! मेरा सशय दूर करते हुए मुझसे कहिए। ५ मुनि ने कहा हे रामचन्द्र! तुम पूर्वकाल की प्रसिद्ध कथा को सुनो। ६ मेरु की पुत्री जिस कामिनी का नाम मेनका था उसका विवाह हिमवान से कर दिया गया था। ७ उससे दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। गगा बडी बहन और सामा (पार्वती) छोटी बहन थी। ८ श्रीराम ने कहा कि यह गगा तो स्वर्गवासिनी है। फिर यह किस कारण से आकर मृत्युलोक मे बही। ९ विश्वामित्र ने कहा, हे नरो मे इन्द्र के समान रामचन्द्र! गगा-पुराण की कथा सुनो। १० हिमवान के घर मे गगा और पार्वती उत्पन्न हुई। उन्होने त्रिनेत्र महादेव से पार्वती का विवाह कर दिया। ११ गगा से वरुणदेव का विवाह हो गया। इसी से सप्तसागर को जीवन प्राप्त हुआ। १२ फिर उस राजा वरुण का विवाह लीलावती से हो गया इस कारण से उसने गगा से और प्रेम नही किया। १३ तब गगा देवी रूठकर स्वर्गलोक मे जाकर ब्रह्मा के कमण्डल मे रह गई। १४ अट्ठारह मन्वन्तरो के पश्चात् बलि उत्पन्न हुआ। उसके प्रताप से देवतालोग दुखी हुए। १५ नारायण से प्रार्थना करने पर उन्होने मृत्युलोक मे जन्म लिया। हे कमलनयन! आपने बामनरूप से उसे छल लिया-अर्थात् वश मे कर लिया। १६ दान देकर बलि पाताल को चला गया। यह देखकर ब्रह्मा ने नारायण का चरण धो लिया। १७ तब कमण्डल से गगा निकली और विष्णु

इष्ट बन्धु वरण कलेक नृपति ।जति ऋषि ब्राह्मण बरण कले सेहिटि ५०
आसिण समस्ते जे होइलेक रुण्ड। गहळरे शबद जे पूरिला ब्रह्माण्ड ५१
अश्वमेध जागकु राजा कलेक बरण। नाना द्रव्य सम्पादन कलाक राजन ५२
लक्षणवन्त अश्व बाधिण पूजा करि। नग्रपुर मण्डाइला विचित्र गति करि ५३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे रघुनाथ। चोर रूप धरिण अइले पुरुहुत ५४
जागशाळारु घोड़ाकु नेले फेडि ।कपिळ मुनिकु पछे बान्धिले जत्न करि ५५
रात्र पाहिला नृपति देखिले नाहिँ अश्व। सगर विचारिले ए जागे उतपात ५६
पुत्रकु राइण सेजे बोइले नृपति। एड़ेक धर्म मोर विफळ हेउ अछि ५७
तुम्भे पुत्रे थाउ मोर अश्वकु केहु नेला। पुत्रंक मुख चाहिँण नृपति बोइला ५८
शुणिण कुमर माने कहिले कर जोड़ि।नुहँ राजा विस्मय आणिबु अश्व लोडि ५९
पितांकु बोध करि लोडिण गले पुत्रे। लोडिले वन कन्दर पर्वत नदी जेते ६०
लोडिण न पाइले खोळिले बिम्बरि। पाताळे थोइथिब केहु गोप्य करि ६१
शस्त्रे विदारिले मेदिनी हृदे नेइ ।अश्व न पाइण जे खोळिले क्रोध वहि ६२
भयरे थरहर कम्पिला धरणी। जीवमाने बहुत बिकळ हेले पुणि ६३

घी समिधा आदि सभी पदार्थ संचित करके यज्ञ प्रारम्भ किया। ४९ राजा ने इष्ट मित्र ऋषि मुनि तथा ब्राह्मणो को वरण किया। ५० सभी लोग आकर एकत्रित हो गये और उनके चहल-पहल के कोलाहल से ब्रह्माण्ड भर गया। ५१ राजा ने अश्वमेध यज्ञ के लिये अनेक राजाओं का वरण करके नाना प्रकार की सामग्री एकत्रित कर ली। ५२ लक्षणयुक्त घोडे को बाँधकर उसकी पूजा की और बड़ी विचित्रता के साथ नगर और महल सुसज्जित करा दिये। ५३ हे रघुनाथ! सुनो। इसके पश्चात् चोर का रूप धारण करके इन्द्र आये। ५४ उन्होंने यज्ञशाला से घोडे को खोल लिया और उसे ले जाकर यत्नपूर्वक कपिल मुनि के आश्रम के पीछे बाँध दिया। ५५ रात्रि बीत जाने पर राजा को अश्व न दिखाई दिया। सगर ने विचार किया कि यह तो यज्ञ मे उत्पात् हो गया। ५६ राजा ने पुत्र को बुलाकर कहा कि मेरा इतना धर्म विफल हो रहा है। ५७ तुम्हारे जैसे पुत्रो के रहते हुये कोई हमारा अश्व ले गया। पुत्रों के मुख की ओर देखते हुये राजा ने इस प्रकार कहा। ५८ यह सुनकर राजकुमारो ने हाथ जोड़कर कहा हे राजन्! आप विस्मित न हो हम लोग अश्व खोज लायेंगे। ५९ पिता को बोध करके पुत्र खोज के लिये चल पडे। उन्होने वनों, कन्दराओं, पर्वतों तथा नदियो में सर्वत्र खोज की। ६० जब वह लोग खोज न पाये तब उन्होने एक बिवर खोदा। हो सकता है कि किसी ने उसे पाताल मे छिपा रखा हो। ६१ उन्होने शस्त्र लेकर पृथ्वी के हृदय को विदीर्ण किया और घोड़ा न पाकर वह और कुपित होकर खोदने लगे। ६२ पृथ्वी भय से थर्राकर कांपने

दश मास सम्पूर्ण जे चन्द्रहार प्रसवइ। पुत्रेक जात से जे कलेक महादेई ३४
से पुत्रर नाम असुजा देले जाण। रूप गुणे सुन्दर कामदेव पुण ३५
एथु अनन्तरे शुण हे दाशरथि।मुक्ता महादेईंक ठारु त्रिअम्बक उपुजन्ति ३६
से त्रिअम्क बोलिण जाहाकु जात कले।षाठिए सहस्र डिम्व सेथिर भितर पुरे ३७
देखिब बोलि सगर राजा भांगि मन कला। एहि समये स्वर्गरु शब्द शुभिला ३८
ए डिम्बकु विनाश नकर नृपति। तहिँ भितरे पुत्रमाने जे अछन्ति ३९
लाउ मञ्ज प्रमाणे अनेक छन्ति सुत। घृत कुम्भे एहांकु नेइ कर तु मिश्रित ४०
जेते गोटि डिम्ब पुण तेते भाण्ड घेन। जत्न कले घृतरे उपुजे नन्दन ४१
शुणिले राजा राणी स्वर्गर वाणी पुणि। अनेक घृत कुण्डे सम्पादिले आणि ४२
घृतरे डिम्ब भरन्ते डिम्ब फाटि गले। सेथिर भितरु अनेक पुत्र जात हेले ४३
षाडिए सहस्र सेथिरु उपुजे कुमर। घृत लागन्ते तेज अति जे निर्मळ ४४
दश दिनरे कुमरे समस्ते जुवा रूप। सुन्दर पणे से जे जिणन्ति कन्दर्प ४५
षाठिए सहस्र जे कुमर उपुजिले। अग्नि देवता प्राय़ से तेज विकाशिले ४६
दिनकु दिन कुमरे हेले बळवान। देखिण आनन्द जे सगर राजन ४७
नृपति विचारिले जे करिबि मुहिँ जाग। एहि मही मण्डळे होइब मोरभाग ४८
एमन्त विचारि जाग आरम्भिळे सकल। जव घृत समिध सञ्चिला महीपाल ४९

होती गई। ३३ दस महीने पूर्ण होने पर महारानी चन्द्रहार ने एक पुत्र को जन्म दिया। ३४ उस पुत्र का नाम असूजा रखा गया। वह रूप और गुणो में कामदेव के समान सुन्दर था। ३५ हे दशरथनन्दन ! सुनो। इसके पश्चात् महारानी मुक्ता ने त्रयम्वक को जन्म दिया। ३६ जिस त्रयम्वक को उसने जन्म दिया, उसके भीतर साठ हजार डिम्व भरे थे। ३७ राजा सगर की इच्छा हुई कि इन्हे तोडकर देखा जाये। इसी समय आकाशवाणी सुनायी पडी। ३८ हे राजन् ! इन डिम्वो को नष्ट मत करो। इनके भीतर पुत्र हैं। लौकी के बीज के आकार के अनेक पुत्र है। इन्हे लेकर घृतपूर्ण कुम्भ में मिला दो। ३९-४० जितने डिम्व है, उतने ही कुम्भ ले लो और इन्हे घी मे यत्न से रखने से पुत्र उत्पन्न होगे। ४१ राजा तथा रानी ने आकाशवाणी सुनी और उन्होने अनेक घृतकुम्भ लाकर रखे। ४२ घृत में डिम्व रखने पर वह फट गये और उनके भीतर से अनेक पुत्र उत्पन्न हो गये। ४३ उससे साठ हजार वालक उत्पन्न हुये। घृत लग जाने से वह अत्यन्त निर्मल, तेजयुक्त हो गये। दस दिनो में सारे बालक युवा हो गये। सौन्दर्य मे वह कामदेव को जीतने वाले थे। ४४-४५ जो साठ हजार पुत्र पैदा हुये थे, उनका तेज अग्निदेव के समान विकसित हुआ। ४६ दिन पर दिन कुमार वलवान् होते गये। यह देखकर राजा सगर आनन्द में भर गये। ४७ राजा ने विचार किया कि मै यज्ञ करके इस भूमण्डल पर सौभाग्यशाली होऊँगा। ४८ ऐसा विचार करके राजा ने जौ

देखिले हस्ती एक रहिछि पृथि धरि । बिरूपाक्ष नाम बोलि अटइ ताहारि ७९
से जेबे चळइ जे चळइ बसुमती । देखि करि कुमरे कलेक भकति ८०
सेठारु चळि गले सगर राजा पुत्रे । दक्षिण दिगकु पुण चळिले तुरिते ८१
से दिगरे देखिले जे पद्म गज हस्ती । मन्दर गिरि समान दिशे दन्त पन्ति ८२
से हस्तीकि नमस्कार करि चळि गले । पश्चिमे मणि हस्ती जाइण देखिले ८३
कपिळास पर्वत समान देह दिशि । तांकु ओळगि कले सकळ बाळ शिषि ८४
उत्तर दिगरे देखिले इन्द्र गज । शुकळ अम्बर गिरि पराए दिशे तेज ८५
तत्पर करिण पुछा कले तांकु । शेषे मघबा गज कहिले ताहाकु ८६
एहि क्षणि पाइब जागर हय पुण । शुणिण सन्तोष हेले सगर नन्दन ८७
लोडन्ते बिम्बरेक देखिले महाघोर । खोजिबा पाइँ पशिले बिम्बर भितर ८८
अनेक दूर बिम्बररे गले चळि । भेटिलेक जाइण कपिळ तपशाळी ८९
लक्षणबन्त घोड़ा बन्धा होइछि पछकति ।
ध्याये धारणा जपि बसिण महाजति ९०
देखिण कुमरे जे कोपमुख होइ । बोइले एहि तपी आणिला चोराइ ९१
एते धर्म गोटि जे तपीर हेला नाश । भण्ड तपस्वीए जे न जाइ बिश्वास ९२

विवर मे प्रविष्ट हुए । ७८ उन्होने पृथ्वी को धारण किये हुए एक हाथी को देखा । उसका नाम विरूपाक्ष था । ७९ उसके चलने पर पृथ्वी चलती थी । उसे देखकर राजकुमारो को श्रद्धा हो गई । ८० राजा सगर के पुत्र वहाँ से चले गए और फिर शीघ्र ही दक्षिण दिशा की ओर चलने लगे । ८१ उस दिशा में उन्होने गजराज पदम् को देखा जिसके दाँत मन्दराचल पर्वत के समान दिखाई दे रहे थे । ८२ वह उस हाथी को नमस्कार करके चल दिये और उन्होंने पश्चिम मे जाकर मणि हाथी के दर्शन किये । ८३ उसका शरीर कैलाश पर्वत के समान दिखाई दे रहा था । समस्त राजकुमारो ने उसे प्रणाम किया । ८४ उत्तर दिशा में उन्होंने इन्द्र-गज को देखा । जिसका तेज शुक्लाम्बर पर्वत के समान दिखाई दे रहा था । ८५ तत्पर होकर उन्होने उससे पूँछा । अत से इन्द्र के हाथी ने उन्हे बताया । ८६ तुम लोग इसी क्षण यज्ञ का घोड़ा प्राप्त करोगे । यह सुनकर सगर के पुत्र संतुष्ट हो गये । ८७ खोजते हुये उन्होने एक बड़ा घनघोर गर्त देखा । खोजने के लिये वह लोग विवर के भीतर घुसे । ८८ वह विवर में बहुत दूर तक चले गये और तपस्वी कपिल से जाकर मिले । ८९ उनके पीछे ·लक्षणो से युक्त घोडा बँधा था और महान योगी ध्यान धारणा तथा जाप मे बैठे थे । ९० देखते ही कुमार लोग कुपित होकर कहने लगे कि यह ही तपस्वी चुरा कर लाया है । ९१ इस तपस्वी का इतना धर्म नष्ट हो गया । इस ढोंगी तपस्वी पर विश्वास नही होता । ९२ इस प्रकार विचार

ब्रह्मांकर आगरे कहिले पृथ्वी देवी। सगर पुअ मोते ध्वंसिले हे विधि ६४
देह खण्ड खण्ड करि विदारु छन्ति देख। शुणिण मेदिनीकि बोइले चतुर्मुख ६५
नुहसि विकळ तु अळप दिन रह। से दुष्टमानंकर दहन हेब देह ६६
बिधातार बचनरे वसुमती जाइ। एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे रघुसाइँ ६७
बनगिरि बुलि सेहि मेदिनी खोजिले। लक्षणवन्त अश्व से काहिँ न पाइले ६८
बाहुडि कहिले सेहि पिता आगे जाइ। अनेक लोडिलुं देव काहिं जे न पाइ ६९
पिता बोले सर्व तुम्भे अटरे अधम। जोइँ किस करिब तुम्भे हुअरे दहन ७०
षाठिए सहस्र तुम्भे मोहर नन्दन।
तुम्भे थान्ते मोर जाग नोहिलाक पुण ७१
बळराम दास चिन्ते श्रीहरि चरण। शरण रख मोते दशरथ नन्दन ७२
एथु अनन्तरे जे श्रीरामचन्द्र पुण। विश्वामित्रंकु चाहिँण बोलन्ति वचन ७३
सगर राजार जे अनेक पुत्र पुणि। बेनिपुर खोजिण अश्व न पाइले आणि ७४
पितार आगे कहन्ते पिता क्रोध कले। पितांक क्रोध देखि पुत्र खोजि गले ७५
किस कले कुमर से कथा मोते कह। शुणिण विश्वामित्र बोलन्ति करि स्नेह ७६
बोलन्ति दाशरथि शुण एहु बाणी। सगर नृपति पुत्रे गले बळ घेनि ७७
नदी नग्र बन जे बहुत जिणि गले। पाताळ बिम्बरे जाइ प्रबेश होइले ७८

लगी। बहुत से जीव व्याकुल हो गये। ६३ पृथ्वी ने ब्रह्मा के समक्ष कहा हे विधाता! सगरपुत्रों ने मुझे ध्वंस कर डाला है। ६४ देखो वह मेरे शरीर को खण्ड-खण्ड करके विदीर्ण कर रहे हैं। यह सुनकर चतुर्मुखी ब्रह्मा ने पृथ्वी से कहा। ६५ तुम व्याकुल मत हो और थोड़े दिन रुको। उन दुष्टों के शरीर दग्ध हो जायेंगे। ६६ ब्रह्मा की बात सुनकर पृथ्वी चली गई। हे रघुनाथ! इसकेपश्चात् की कथा सुनो। ६७ उन्होंने जगलो, पहाडो पर घूम-घूमकर खोज की परन्तु वह सुलक्षण अश्व कही न मिला। ६८ उन्होंने पिता से लौटकर कहा। हे देव! हमने बहुत खोजा परन्तु कही नही मिला। ६९ पिता ने कहा कि तुम सब नीच हो। तुम जीवित रहकर क्या करोगे। सब भस्म हो जाओगे। ७० तुम साठ हजार मेरे पुत्र हो। तुम्हारे रहते हुये मेरा यज्ञ नही हो पाया। ७१ बलरामदास श्री भगवान के चरणो का चिन्तन करता है। हे दशरथनन्दन! मुझे शरण मे ले लो। ७२ इसके पश्चात् श्रीरामचन्द्र ने विश्वामित्र की ओर देखते हुये कहा। ७३ राजा सगर के अनेक पुत्र थे परन्तु वह दोनो लोको से घोड़े को खोज कर न ला सके। ७४ पिता के समक्ष कहने पर पिता कुपित हो गये। उनका क्रोध देखकर पुत्र फिर से खोजने निकले। ७५ फिर उन्होंने क्या किया। यह सुनकर विश्वामित्र ने स्नेहपूर्वक कहा। ७६ हे दशरथनन्दन! यह बात सुनो। राजा सगर के पुत्र दल बल के साथ गये। ७७ वह अनेक नगरो, जंगलों तथा नदियो को जीतते हुए चले और जाकर पाताल

पिता आम्भर अश्व मेघ जज्ञ इच्छा कले । लक्षणवन्त अश्व बाछि से बान्धिले ९
रात्रिरे पुरुहुत तांकु घेनि गले । कपिळ ऋषि पछरे तांकु बान्धि गले ११०
खोजिण भेट आम्भे एठारे पाइलु ।
मुनिकि देखि आम्भे बहुत भर्त्सना कलु १११
शुणिण मन्द बाणी जे मुनि कोपकले । कोपभर होइण आम्भंकु शाप देले १२
आवर कथाएक बोइले बिचारि । तुम्भे माने दहन होइब दिन सरि १३
निशारे तुम्भ अंग पुण कअँळिब । आर दिनरे पुण दहिज होइब १४
एमन्त बोलिण मुनि आम्भरे शाप देले । शुणिण सगर राये मनरे कोपकले १५
कपिळ मुनिकि जे पचारे राजा जाइ ।
एमानंकु दहिज किम्पा कल हे गोसाइँ १६
केमन्त प्रकारे एहु होइबे मुकति । प्रतिकार बचन कह हे बेगे जति १७
मुनि बोइले राये अपूर्व भविष्य । जेसने कर्मरे तांकर अछइ भविष्य १८
से फळ भुञ्जिण जे अछन्ति सकळ ।
आकाशर गंगा जेबे मञ्चकु आणि पार १९
तेबे से शीतळ जे हेब तांक देहि । आनरे शीतळ जे नुहइ मुनि कहि १२०
तुम्भर कुळरे जात हेबे भागीरथि । मञ्च मण्डळरे तांकर रहिब कीरति १२१
सेहि से आकाशरु पारिबे गंगा आणि । सपत सागर जाक पूरिब पुण पाणि २२
तेबे से शीतळ जे हेब तांक देही । भागीरथि जनम होइबे जे मही २३

की। उन्होंने छाँटकर लक्षणो से युक्त घोड़े को बाँधा । ९ रात्रि में इन्द्र उसे लेकर चले गए। उन्होंने उसे कपिलमुनि के पीछे बाँध दिया और चले गए। ११० खोजने पर वह यहाँ पर मिला। मुनि को देखकर हमने बहुत भर्त्सना की । १११ मूर्खता की बातो को सुनकर मुनि क्रुद्ध हो गए। उन्होंने कुपित होकर हमें शाप दे दिया। १२ उन्होने विचार करके एक बात और कही कि तुम लोग दिन भर भस्म होओगे। १३ रात्रि में तुम्हारे अंग पुनः विकसित होगे और अगले दिन फिर भस्म हो जाओगे। १४ ऐसा कहते हुए मुनि ने हमें शाप दिया। यह सुनकर राजा सगर के मन में क्रोध हो गया। १५ राजा ने जाकर कपिलमुनि से पूँछा हे स्वामी ! आपने किस कारण से इन लोगों को भस्म कर दिया। १६ इनकी मुक्ति किस प्रकार से होगी। हे योगी ! हमें इसका उपाय बताइये। १७ मुनि ने कहा हे राजन् ! भविष्य अपूर्व है। जिसके जैसे कर्म है उसका वैसा ही भविष्य है। १८ सभी ने वही फल भोगा है। यदि आकाश की गंगा को मृत्युलोक में ला सको तो इनकी देह शीतल हो जाएगी। मुनि ने कहा कि अन्य प्रकार से यह शान्त नही हो सकते। १९-१२० उन्होंने फिर कहा कि तुम्हारे कुल में भगीरथ उत्पन्न होगे। उनकी कीर्ति भूमण्डल पर विकसित होगी। १२१ वह ही आकाश से गंगा ला सकेगे। फिर सात समुद्रों में पुनः जल भर जाएगा। २२ तब इनके अंग शीतल होंगे जब भगीरथ इस

एमन्त बिचारि कोप कले राज पुत्रे । ऋषिकि भर्त्सना मान कले जे वहुते ९३
बेढिण समस्ते जे धइँले रोष भरे । अश्व चोराइ आणिल माया मुनिवरे ९४
केहु मृग छाल जे उछुडि घेनि जान्ति । चाळिला करि केहु कर्णरे रड़ि द्यन्ति ९५
ध्यान भांगिण से जे कपिळ मुनि चाहिँ । सगर पुत्र माने गले दहिज्य होइ ९६
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे रघुपति । पुत्र न आसिवारु सगर राजा तहुँटि ९७
बिचारिला प्राणे नाहान्ति पुत्रमाने । जीबने थिले पुत्र आसन्तेणि एणे ९८
एबे अश्वकु लोडि आणिबइँ मुहिँ । कर बेगे जाग जे हरष मन होइ ९९
एते कहि अश्व चढ़ि गमन करि गले । पश्चिम दिग भागरे प्रवेश जाइ हेले १००
पद्मनाभ हस्तीकि देखिण पुच्छा कला । सेहि से महातमा समस्त कहिला १०१
बोइला एठारु जे किछि दूर जाअ । सकळ पुत्रंकु जाइण भेट पाअ २
से स्थानरे तोर अश्व देखिबु राजन । शुणिण सगर राजा चळिले बहन ३
केते दूरे देखिले पाताळकु पथ । सेथिरे पशि गला सगर राजनत ४
सेथिरे पशिला पुणि भय भ्रान्ति छाडि । देखिला सेठारे पुत्र माने छन्ति जळि ५
सगर पचारिले तबद मन होइ । काहार शापे तुम्भे हेउ अछ दहि ६
जळिबा पुत्रे बोलन्ति पिता बाक्य शुणि । इक्ष्वाकु बशरे सगर नृपमणि ७
तांकर आम्भे अटु षाठिए सहस्र पुत्र । कर्मर विपाके पुणि होइलु एमन्त ८

करके राजकुमारो ने कुपित होकर ऋषि की वहुत भर्त्सना की। ९३ वह सव क्रोध मे भरकर घेरकर दौड़ पड़े और वोले अरे पाखडी मुनि ! तुम घोड़ा चुरा लाये हो। ९४ कोई मृगछाल खीचकर लेकर चल दिया और कोई जाकर कान में हुँकार कर रहा था। ९५ ध्यान भग होने पर कपिल मुनि ने दृष्टिपात् किया जिससे सगर के पुत्र भस्म हो गये। ९६ हे रघुपति ! इसके पश्चात् तुम सुनो। पुत्रो के न आने पर राजा सगर ने तव विचार किया कि पुत्र लोग जीवित नही है। यदि जीवित होते तो अव तक लौट आते। ९७-९८ अव मैं अश्व को खोज कर लाऊँगा। प्रसन्न मन से शीघ्र ही यज्ञ करो। ९९ इतना कहकर वह घोड़े पर चढकर चलते हुये पश्चिम दिशा मे जा पहुँचे। १०० उन्होने पद्मनाभ हाथी को देखकर पूँछताँछ की, उस महान आत्मा ने सव कुछ वताते हुये कहा कि यहाँ से कुछ दूर जाओ और जाकर सभी पुत्रो से भेट करो। १०१-२ हे राजन् ! उस स्थान पर तुम अपने घोडे को देखोगे। यह सुनकर राजा सगर शीघ्र ही चल दिये। ३ कुछ दूर पर उनको पाताल का मार्ग दिखाई पडा। उसी मे राजा सगर प्रविष्ट हो गए। ४ वह भय तथा सन्देह का त्यागकर उसमे घुसे थे। उन्होने वहाँ पर जलते हुए पुत्रो को देखा। ५ सगर ने स्तब्ध होकर पूँछा कि तुम लोग किसके शाप से जल रहे हो। ६ पिता के वचनो को सुनकर जलते हुए पुत्रो ने कहा कि इक्ष्वाकु वश मे नृपश्रेष्ठ सगर है उनके हम साठ हजार पुत है। कर्म के विपाक से ऐसे हो गए है। ७-८ हमारे पिता ने अश्वमेध यज्ञ की इच्छा

से राजांकु स्वर्गरे कलेक दिगपाळ। पदमनिधि शंखनिधि दिलिप नामे बीर ३८
मर्त्यपुर आसि बाकु नोहिला तार शक्ति। तेणु देव अंग धरिला नरपति ३९
दिलिप न आसि बारु अजोध्या अणराज। दिलिप राणीमाने शोकरे निर्बेद १४०
जाणिण बशिष्ठ जे राणीकि बुझाइले।
तुम्भ कोळे माइका पुत्र हेब जे बोइले १४१
जोडि जोडि होइ तुम्भे स्त्री पुरुष हुअ।
तुम्भ रज स्खळितरु सेथिरु हेब पुअ ४२
शुणि लक्षे स्त्री जे सतरे जोडि जोडि। दइबर जोगरे रज मत गळि ४३
बशिष्ठ बोइले दिलिप पाट तोर ज्येष्ठ।
दिलिप राजार पाटमाळती अटे श्रेष्ठ ४४
गिळिला सकळ रज शुद्ध स्नाने सेत। से रजरु कुमर होइला सम्भूत ४५
सतर बरषरे गर्भरु सुत जात। से कुमर रजरु हेबारु पुण जात ४६
अस्थि नथिबारु चालिण न पारइ। भुमिरे गडि गडि एणे तेणे जाइ ४७
संकेत नदेखि जे सकळ राणी पुणि। बोइले भागीरथि ए पुत्र नाम जाणि ४८
भागीरथि बोलि तेणु डाकिले ताहाकु। एक दिने अष्टबक्र अइले अजोध्याकु ४९
बाटरे भागीरथि चालि बार देखिले। केते बेळे पड़े उठे केते बेळे १५०
देखि अष्ट बक्र ताकु मनरे क्रोध कले। मोते बाउनुछु मने बिचारि शाप देले १५१

उनका सम्मान किया। ३७ पद्मनिधि एव शखनिधि ने दिलीप नामक पराक्रमी राजा को स्वर्ग का दिगपाल बना दिया। ३८ मृत्युलोक आने की उसकी शक्ति नही हुयी। इस कारण से राजा ने देवशरीर धारण कर लिया। ३९ दिलीप के न आने से अयोध्या राजहीन हो गई। दिलीप की रानियाँ शोक संतप्त हो गई। १४० यह जानकर वशिष्ठ ने रानियों को समझाते हुये कहा कि तुम्हारे क्रोड़ से स्त्री पुत्र होगा। १४१ जोड़ी-जोड़ी मे आप लोग स्त्री पुरुप हो जाओ। आपके रज के स्खलित होने से पुत्र होगा। ४२ यह सुनकर एक लाख स्त्रियाँ सैकड़ो जोड़ियो मे हो गई। दैवयोग से रज स्खलित हुआ। ४३ वशिष्ठ ने कहा कि दिलीप की पटरानी तुम मे बडी है। राजा दिलीप की श्रेष्ठ पटरानी मालती थी। ४४ वह शुद्ध स्नान मे सारा रज निगल गई। उस रज से बालक उत्पन्न हुआ। ४५ सत्तरह वर्ष मे गर्भ से पुत्र उत्पन्न हुआ और फिर वह बालक रज से उत्पन्न हुआ था। ४६ अस्थि न होने के कारण वह चल नही पाता था। वह पृथ्वी पर घिसटते घिसटते इधर-उधर चलता था। ४७ कुछ सकेत न पाकर समस्त रानियो ने कहा कि इसका नाम भगीरथ है। ४८ इसलिये वह उसे भगीरथ कहकर पुकारने लगी एक दिन अष्टावक्र अयोध्या मे आये। ४९ मार्ग मे उन्होने भगीरथ को घिसटते हुये देखा कभी वह गिरता और कभी उठता था। १५० उसे देखकर अष्टावक्र मन में कुपित हो गये। यह मुझे मान दे रहा

पितृ लोक शीतळ होइवे तांक कृते ।
आन केहि भाजन नाहिँ रखिबाकु गोत्र २४
शुणिण सगर राजा अइले अश्व घेनि । प्रवेश होइला आणि अजोध्यारे पुणि २५
ऋषि बिप्रंक पाशरे तुरंग आणि देले । जे विधि विधान जे समस्त कहिले २६
एते कहिण राजा जे जाग आरम्भिला । अश्वमेध जाग ताकु प्रापत होइला २७
तेणु जे जाग पुणि होइला समापत । कनक स्थान जे कलाक नरनाथ २८
पुत्र मानंक पाइँ जे अनेक दान हेला ।
अश्ववन्त पुत्रकु अजोध्यारे राजा कला २९
जेणु से जाग पुणि होइला समापत । देवलोकंकु स्तुति जे कलेक बहुत १३०
काळेण सगर राजा स्वर्ग प्राप्त हेला । एथु अनन्तरे शुण हे दशरथ बळा १३१
अश्ववन्त राजा से राज्यरे राजा हेला । समस्तंक से राज्यरे परजा पाळिला ३२
शतेक जाग धर्म कलाक सेहु पुण । दिलिप नामे पुत्र होइला तार जाण ३३
दिलिपकु अजोध्यारे सेहु राजा करि । सेहि राजा स्वर्गकु गले स्वदेह धरि ३४
दिळिप राजा बड़ प्रतिज्ञा नृपति । चारि दिगे से जे होइले चक्रबर्त्ति ३५
लक्षे राजा जिणि मउड़मणि सेत । सूर्ज्य वंशरे सेहि हेले जे विख्यात ३६
एक दिने राजन जे स्वर्ग साधि गला । देखिण सुर राजा सनमान कला ३७

पृथ्वी पर जन्म लेंगे । २३ उनके द्वारा पितर लोग शीतल होगे । गोत्र की रक्षा करने का पात्र अन्य कोई नही है । २४ यह सुनकर राजा सगर घोड़ा लेकर चले आए तथा अयोध्यापुर में प्रविष्ट हुए । २५ उन्होने ऋषि तथा ब्राह्मणो को घोडा लाकर दिया तथा सम्पूर्ण विधि-विधान राजा ने वता दिया । २६ इतना कह कर राजा ने यज्ञ प्रारम्भ किया और उन्हे अश्वमेध यज्ञ-फल प्राप्त हो गया । २७ तब फिर वह यज्ञ समाप्त हो गया और राजा ने विसर्जन के पूर्व का स्नान किया । २८ पुत्रो के लिये उन्होने प्रचुर दान दिया और उन्होने अपने पुत्र अश्ववन्त को अयोध्या का राजा बना दिया । २९ जब वह यज्ञ समाप्त हो गया तब उन्होंने देवताओ की वहुत स्तुति की । १३० कुछ समय के पश्चात् राजा सगर स्वर्गवासी हो गए । हे दशरथ नन्दन! इसके पश्चात् की कथा सुनो । १३१ उस राज्य का राजा अश्ववन्त हुआ । सब प्रकार से उसने राज्य की प्रजा का पालन किया । ३२ उसने सौ-सौ धार्मिक यज्ञ किए । फिर उसके दिलीप नामक पुत्र हुआ । ३३ दिलीप को अयोध्या का राजा बनाकर वह राजा स्वदेह धारण करके स्वर्ग को चला गया । ३४ राजा दिलीप बड़े ही प्रतिज्ञावादी थे । वह चारो दिशाओ के चक्रवर्त्ती राजा हुए । ३५ लाखो राजाओ को जीतकर वह राजाओ में शिरोमणि हो गए । वह सूर्यवश मे विख्यात हुए । ३६ एक दिन उस राजा ने स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी । उन्हें देखकर देवराज इन्द्र ने

से शरकु देखिण समस्ते भय़ कले। इन्द्र देवता आणि दुहिता समर्पिले ६६
देव ऋषि सनातन देले झिअ पुण। तांकु बिभा होइले जे भागीरथि जाण ६७
राज माने भेटि मउडमणिकि कन्या देले।
चारि दिगे मउड़मणि भागीरथि हेले ६८
देव असुर जे नर वानर राजा। समस्ते भागीरथिकि कले पाद पूजा ६९
सहस्रे कन्या भागीरथि होइलेक बिभा। इन्द्रंकर दुहिता बड़ पाटरे जे शोभा १७०
बधू माने आसिबारु माता माने कहि।
केउँ ठारे आम्भ स्वामी अछन्ति देखा नेइ १७१
शुणिण भागीरथि सकळ माता घेनि। रथर परे बसि स्वर्गकु गले पुणि ७२
शंखनिधि पाशरे हेले परबेश। पितांक चरणरे ओळगे जाइ शिष ७३
जननी बोलन्ति भागीरथि सम्भाळे।तुम्बे थाउ आम्भकु एदशा हेळा काळे ७४
शुणिकरि शंखनिधि हरष होइले। अमृत लोचने महादेईंकि चाहिँले ७५
तेणु से लक्षेक महादेई पुण। देवतनु घेनिण विजय़ संगे पुण ७६
सेठारु भागीरथि मञ्च पुरकु आसि।
निज राज्य अजोध्यारे मिळिलेक आसि ७७
भागीरथि राजा होइले सत्यवादी। पुत्ररु अधिक करि परजा आछादि ७८
दाने खाण्डे साचा जे हेले महाराय़े। देव दानव सकळे कम्पिले तार भय़े ७९

अभिमन्त्रित बाण का संधान करने पर चिन्ह भी नही रहता था। ६५ उस बाण को देखकर सभी डर गए। इन्द्रदेव ने लाकर बालिका सर्मापत की। ६६ फिर देवर्षि सनातन ने बालिका प्रदान की। भगीरथ ने उनसे विवाह कर लिया। ६७ राजा लोगों ने उनसे भेट करके नृप चूड़ामणि को कन्याएँ समर्पित की। भगीरथ चारो दिशाओं में शिरोमणि राजा हो गए। ६८ देवता राक्षस नर वानर तथा राजागण सभी भगीरथ की पादपूजा करने लगे। ६९ भगीरथ से सहस्त्र कन्याओं का विवाह हुआ। इन्द्र की पुत्री बड़ी पटरानी के रूप में सुशोभित हुई। १७० वधुओं के आने से माताओं ने कहा कि हमारे स्वामी किस स्थान पर है, उन्हें लाकर दिखाओ। १७१ यह सुनकर भगीरथ समस्त माताओं को लेकर रथ पर बैठकर स्वर्ग को गए। ७२ वह शखनिधि के पास प्रविष्ट हुए और पुत्र ने पिता के चरणों में प्रणाम किया। ७३ माताओं ने कहा कि भगीरथ हमें सम्हाल रहा है। आपके रहते हुए इस समय हमारी ऐसी दशा हो गई। ७४ यह सुनकर शंखनिधि प्रसन्न हो गए। उन्होने अमृत दृष्टि से पटरानियों को देखा। ७५ इस कारण से एक लाख महारानियाँ देवशरीर धारण करके उनके साथ विराजमान हो गईं। ७६ भगीरथ वहां से मृत्युलोक को लौटे और अपने राज्य अयोध्या मे आ पहुँचे। ७७ राजा भगीरथ सत्यवादी हुए और पुत्र से अधिक उन्होंने प्रजा का पालन किया। ७८ महाराज दानशील भोजन

बोइले स्वभाव जेबे हुअ नब जुबा। लक्षे गुण प्रकाश हेउ तोर प्रभा ५२
जाहातु बिचारिबु से कथा सिद्ध हेउ। आम्भर बरजेते प्रापत बाबु हेउ ५३
अळप दिनरे तु करिबु पितृ काज्यं। देव काज्यं पितृ काज्यं तो हस्ते हेउ सर्ब ५४
ए बचन शुणि हेले भागीरथि छिड़ा। नीळमणि प्राय़े से बिराजे तेज तोरा ५५
कुमर ज्ञान पाइ ऋषिकि कले मान्य़। भागीरथि संगते बक्र ऋषि जे गमन ५६
ब्रशिष्ठ ड़काइ राणीहंसकु कहिले। ए कुमर आज राजा होइब बोइले ५७
कीरतिस्वर मन्त्रीकि अणाइ बेगे पुण। कनक स्नान जे कराइले बहन ५८
तीर्थ जळ अणाइ अभिषेक कले। अजोध्या देशरे राजन से होइले ५९
माणके पदिकाए घरतण्ड नाहिँ जाण। एहि रूपे परजांकु सुखरे पाळे पुण १६०
बेनि बरष जिबारु प्रकाश तार गुण।विद्या शास्त्र सिद्धान्त शिखाए ऋषि पुण १६१
देव असुरे जे नरहिँ बानर। सकळ जीव कथा भागीरथिकि गोचर ६२
बेदवर आसिण अनेक शस्त्र देले। प्रथमरे बेदबर सुमरणा कले ६३
रण कला बेळरे धनुर प्राय़ मत्त। से धनुर गुण तुम्भे शुण रघुनाथ ६४
धरि थिले अहिप्राय़ दिशइ सबुंकि।
सुमरि बिन्धिले शर चिह्न न रहे निकि ६५

है, ऐसा मन मे विचार कर उन्होने वर दे दिया। १५१ उन्होने कहा कि जब तुम स्वाभाविक रूप से नवयुवक होगे तो तुम्हारी प्रभा लाखो गुनी प्रकाशित होगी। ५२ जो तुम विचार करोगे। वह बात पूरी हो जायेगी। हे वत्स! तुम्हे मेरा वर प्राप्त हो। ५३ थोड़े दिनो में तुम पितरो का कार्य करोगे। तुम्हारे हाथो द्वारा देवताओ तथा पितरो के समस्त कार्य सम्पादित हो। ५४ यह बात सुनकर भगीरथ खडे हो गये। उनकी प्रभा, नीलमणि के समान विराजित हो रही थी। ५५ ज्ञान प्राप्त करके कुमार ने ऋषि का आदर-सत्कार किया। भगीरथ के साथ अष्टावक्र ऋषि चल दिये। ५६ वशिष्ठ को बुलाकर उन्होने रानियों से कहा कि यह कुमार आज राजा वनेगा। ५७ कीर्तिस्वर मन्त्री को शीघ्र ही बुलाकर उन्होने उसे कनक स्नान (विशेष प्रकार का स्नान) कराया। ५८ तीर्थों का जल मँगाकर उसका अभिषेक किया। वह अयोध्या प्रदेश का राजा वन गया। ५९ जिस प्रजा के पास घर द्वार पृथ्वी आदि नही थी। उनका पालन सुखपूर्वक वह करने लगे। १६० दो वर्ष व्यतीत होने पर उनका गुण प्रकाशित हुआ। ऋषि उन्हे विद्या शास्त्र तथा सिद्धान्त की शिक्षा देने लगे। १६१ भगीरथ को देवताओ, असुरों, मनुष्यो, वानरों तथा सभी जीवो की बाते ज्ञात हो जाती थी। ६२ उन्होने सर्वप्रथम ब्रह्मा का स्मरण किया। विधाता ने आकर उन्हे वहुत शस्त्र प्रदान किये। ६३ युद्ध करते समय प्रायः वह धनुष प्रचंड हो जाता था। हे रघुनाथ तुम उस धनुष की विशेषता सुनो। ६४ ग्रहण करने पर वह सबको सर्प के समान दिखाई देता था।

अश्वमेध जाग पुणि सगर राजा कला। लक्षणवन्त अश्वकु इन्द्र हरि नेला ९५
से अश्व लोडिबाकु जे गले पुत्र माने। कपिळ मुनि पछरे अश्वकु देखि तेणे ९६
कपिळ ऋषिंकु चोर बोलिण दण्डिले। सेहि ऋषिर शापरे दहन होइले ९७
श्रीराम पचारिले शुण हे गाधिसुत। किम्पा अश्व तांकर हरिले पुरुहुत ९८
पुत्रे जे जळुछन्ति ऋषिर शापे तहिँ। से ऋषि अज्ञानकि ज्ञान तांकर नाहिँ ९९
जेबे पुरुहुत तांक पछरे बान्धिलइँ। ऋषि किम्पाइँ जाणि न पारिले तहिँ २००
सर्वज्ञ ऋषिमाने जाणन्ति जोग बळे। इन्द्ररे बिवादी किम्पा न हेलेतपशीले २०१
राज पुत्र होइकरि अटन्ति अज्ञान। चोरकु देखिले दण्डिवार जे कारण २
मुनि बोइले श्रीरामचन्द्र शुण। पूर्वर कथा एबे पुराणे बखाण ३
काळकेतु आपणा दुष्ट बुद्धि धरि। अन्याय उपद्रव कलेक वसुन्धरी ४
सवंशे दुइभाइ समुद्र मध्ये थान्ति। निशारे बाहार होइ परजा खाआन्ति ५
ऋषि बिप्र से जे नगर परिजन। रजनीरे एमानंकु करन्ति भोजन ६
जाणि पारि पळाइले जन्तु एणे तेणे। खोजिण काळकेतु भक्षन्ति जे पुणे ७
सत्य जुगरे तुछा होइले जे महि आळि।
अस्थिमय पृथ्वी जे देखिण पिता भाळि ८
देवगण घेनि से जे कलेक बिचार। सृष्टि नाश गला जे बोइले बेदवर ९
एते बोलिण गले जे कपिळास पुरी। बोइले कर रक्षा बारे त्रिपुरारी २१०

कर लिया। ९५ पुत्र लोग उस अश्व को खोजने गए। वहाँ उन्होने कपिलमुनि के पीछे अश्व को देखा। ९६ उन्होने चोर कहकर कपिल मुनि की भर्त्सना की। फिर उन्ही ऋषि के शाप से भस्म हो गए। ९७ श्रीराम ने प्रश्न किया, हे गाधिनन्दन ! सुनिये। अश्व को इन्द्र क्यों चुरा ले गये। ९८ ऋषि के शाप से पुत्र वहाँ जल रहे हैं। क्या वह ऋषि अज्ञानी थे। उनके बुद्धि नही थी। ९९ जब इन्द्र ने उनके पीछे अश्व बाँध दिया तब ऋषि को यह जानकारी क्यों नही हुई। २०० ऋषि योगबल से सर्वज्ञ होते है। उन तपस्वी ने इन्द्र से झगड़ा क्यों नही किया। २०१ राजपुत्र होते हुये वह मूर्ख थे। चोर को देखने पर दंड देना चाहिये। २ मुनि ने कहा हे श्रीरामचन्द्र ! पूर्वकाल की पुराणों में वर्णित कथा सुनो। ३ कालकेतु ने अपनी दुष्ट बुद्धि से पृथ्वी तल पर अन्याय और उपद्रव किया था। ४ वह दोनो भाई समुद्र के भीतर रहते थे। और रात्रि में निकलकर प्रजा को खाते थे। ५ वह रात्रि मे ऋषियों ब्राह्मणो नगर निवासियों आदि इन सबको खा जाते। ६ यह जानकर प्राणी इधर-उधर भागे। फिर भी कालकेतु उन्हे खोज-खोजकर खा जाता था। ७ सतयुग में पृथ्वी रिक्त हो गई। पिता ने पृथ्वी को अस्थियों से भरा देखकर विचार किया। ८ उन्होने देवताओ को लेकर विचार किया ब्रह्मा ने कहा कि सृष्टि नाश हो जायेगी। ९ इतना कहकर वह कैलाशपुरी को गये और त्रिपुरासुर के शत्रु शंकर जी से एक

एमन्ते सहसे बरष जे वहिगला । तिनि पुरे भागीरथिर चमक पडिला १८०
दिनेक गले नृपति मृगयारे फेरि । अश्वेक चढिण से वनस्तरे बुलि १८१
कृष्णाञ्जिन मृगेक से आगरे देखिले । तार उपरे नृपति शर जे विन्धिले ८२
बाण देखिण मृग जे गलाक पळाइ । मृग पळान्ते राजा पछरे गोड़ाइ ८३
अति आरतरे जे पळाए मृग गोटि । पाताळ विम्वरे जाइ पशिलाक फुटि ८४
राजा गोडाइण तार पछरे जे पशि । पाताळे प्रवेश हेले तार सगे सेटि ८५
देखिला पितृ गणे हेउछन्ति दहि । तरस्त होइण जे नृपति बाहुडइ ८६
निज पुरे प्रवेश होइला नृपति । स्थान मणोहि जे सारिला तडति ८७
आस्थाने विजय़ करि पात्र मन्त्री राइ । कहइ राजन जे भ्रान्ति मन होइ ८८
अपूर्व कथाए जे देखिलि मुं आज । मृग पळाइला जे पाताळर मार्ग ८९
से वनरे पशन्ते मुं देखिलि आचम्बित । अनेक लोक सेथिरे हेउ छन्ति दहित १९०
केहु से कथा जाण मोर आगे कह । विकृत मणिलि मुं जे न पाइ सन्देह १९१
राजार वचन से शुणिण मन्त्रीगण । बोइले मउडमणि सावधाने शुण ९२
तुम्भर उपर वंशे सगर नृपति । चतुर्दिगे से होइले चक्रवर्त्ती ९३
षाठिए सहस्र सुत हेले जे तांकर । एके एके जिणि पारन्ति सपत सागर ९४

तथा पुरस्कार प्रदान करने वाले थे। देव-दानव सभी उनके भय से काँपते थे। ७९ इस प्रकार एक सहस्र वर्ष व्यतीत हो गए। तीनो लोकों में भगीरथ का यश छा गया। १८० एक दिन राजा आखेट के लिये गए। वह अश्वारोही बनकर वनप्रान्त मे घूम रहे थे। १८१ उन्होने सामने एक कृष्णासार मृग देखा। राजा ने उस पर बाण छोड दिया। ८२ बाण देखते ही मृग भाग गया। मृग को भागते देखकर राजा ने उसका पीछा किया। ८३ वह मृग अत्यन्त आर्त होकर भाग रहा था। वह भागकर पाताल विवर मे घुस गया। ८४ राजा भी उसका पीछा करते हुए उसमे घुसा और उसके साथ पाताल में पहुँच गया। ८५ उसने पितरो को जलते हुए देखा। त्रस्त होकर राजा लौट पड़ा। ८६ अपने महल मे आकर उसने शीघ्र ही स्नान भोजन समाप्त किया। ८७ सिंहासन पर विराजमान होकर उसने सभासद तथा मन्त्री को बुलाकर शंकित मन से कहा। ८८ आज मैंने एक अपूर्व घटना देखी है। मृग पाताल मार्ग से भागने लगा। ८९ उस वन मे घुसते ही मैं देखकर आश्चर्य मे पड़ गया। वहाँ पर अनेक लोग जल रहे थे। १९० यदि किसी को वह पता हो तो मेरे समक्ष कहो। उसकी जानकारी न होने से मै अपने को विकृत समझ रहा हूँ। १९१ राजा के वचनो को सुनकर मन्त्रियो ने कहा हे नृप शिरोमणि ! सावधान होकर सुनिए। ९२ आपके पूर्व पुरुष राजा सगर चारों दिशाओ के चक्रवर्त्ती सम्राट थे। ९३ उनके साठ हजार पुत्र हुए। एक-एक सप्त समुद्रों को जीत सकते थे। ९४ राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया। लक्षणवान घोड़े को इन्द्र ने हरण

देवतांकु बुझाइ से ब्रह्मांकु कहिले। अल्प दिने नाश तांकु करिबा बोइले २६
शुणिण देवताए स्वर्गपुरे गले। कुम्भ मासे गोबिन्द द्वादशी बुढ़ हेले २७
से दिन कुम्भऋषि सिन्धुरे स्नान करि।देबकूटे तरंग मन्त्री से ऋषिकि मारि २८
जाणिण अगस्ति जे क्रोधरे चळिगले।सप्त सागर मन्त्रबळे चळु करि शुखाइले २९
सपत सिन्धु मुनि पिइलेक हेळे। अगोचर कर्म से कले महीतळे २३०
पाणि शुखि जिबारु देखिले असुर। देवंक संगे असुरे जुद्ध कले घोर २३१
धर्मवळ घेनिण से असुर महाबळी। कूट करि देवताए असुरंकु दळि ३२
दानव कुळ जहुँ होइले निपात। तेणु स्थिर होइला संसार जगतत ३३
बेदवर कहिले अगस्तिंक आगे। एबे सागर नोहिले नाश जिवे सर्बे ३४
सिन्धुकु शोषिल मुनि देवतांक हिते। एबे सागर स्थिति करहे तपोवन्ते ३५
अगस्ति बोइले काहुँ जळ देवि आणि।गर्भे जीर्ण होइला सपत सागर पाणि ३६
शुणिण देवताए कहिले श्रीहरिरे। अगस्ति नाशिले जेणु सपत सागरे ३७
मागिले न देले जे जीर्ण कले सेहु। ताहा शुणि बोइले जे जगतर प्रभु ३८
तुम्भे देवताए निजपुरे जाअ एबे। थोकाए काळ एठारु तुम्भे थाअ भाबे ३९
सागर पूरेइ बाकु मुहिँ करइसिना बुद्धि। जेबे उदय होइब सपत बारिधि २४०

देवताओ को समझाते हुये ब्रह्मा से कहा कि थोड़े ही दिनों में उन्हे नष्ट कर देगे। २६ यह सुनकर देवतालोग स्वर्गलोक चले गये और कुम्भ के महीने में गोविन्द द्वादशी का स्नान पड़ा। २७ उस दिन कुम्भ ऋषि ने समुद्र मे स्नान किया। और देवकूट में ऋषि तरग मंत्री के द्वारा मार डाले गये। २८ यह जानकर अगस्त ऋषि क्रोध से चले गये और उन्होने मंत्र के बल से सात समुद्रो को आचमन करके सुखा दिया। २९ मुनि ने सातों समुद्रों को सहज में ही आचमन कर लिया। उन्होंने पृथ्वीतल पर अलौकिक कार्य किया। २३० असुरों ने पानी सूखा देखकर देवताओं के साथ घोर युद्ध किया। २३१ तपस्याके बल पर असुर महाबली थे। देवताओ ने माया करके असुरों को मार डाला। ३२ जब दानवपुर का संहार हो गया तब यह संसार शात हो गया। ३३ ब्रह्मा ने अगस्त से कहा कि अब सागर न होने से सभी नष्ट हो जायेगे। ३४ हे मुनि ! देवताओं के हित के लिये आपने समुद्र को सोख लिया है। अब हे तपोनिधि ! समुद्र को अवस्थित करो। ३५ अगस्त ने कहा हम जल कहाँ से लाकर देगे क्योंकि सात समुद्रो का जल पेट में पच गया है। ३६ यह सुनकर देवताओं ने श्री भगवान से कहा कि अगस्त ने सातों समुद्रों को नष्ट कर दिया है। ३७ उन्होंने माँगने पर उसे नही दिया क्योकि वह जल जीर्ण हो चुका था। यह सुनकर जगत् के स्वामी श्री भगवान ने कहा। ३८ अब आप सब देवता अपने लोक चले जाओ और कुछ समय तक भावपूर्वक वहाँ पर रुको। ३९ हम समुद्र को भरने के लिये कुछ

काळकेतु बेनि भाइ समुद्रे लुचिथान्ति।रजनीरे बाहारि जन परजा खाआन्ति २११
अस्थिमय़ पृथ्वी जे होइला गोसाइँ। राजा परजा माने जे देखिबाकु नाहिँ १२
तुम्भे से जगतर अट अधिपति। कर अनुग्रह पन्दर नेत्र मूर्त्ति १३
बेदवर बचन जे शुणि त्रिळोचन। हृदे पद्म मध्यरे कथा बिचारिण १४
पितामहंकु बोइले कह जाइ करि। सेहि से असुर बळ पारन्ति संहारि १५
आनरे संसार जे नुहइ पुण स्थिर। श्रीहरि अटन्ति जे सबुरि ठाकुर १६
एहा शुणि हरष हेले देवगण। विष्णुर चरणे शरण पशिले से पुण १७
कहिले संसार सबु जे दुःख भार। हे देव नाराय़ण प्रतिकार कर १८
असुरे प्रबळ होइ परजा जन खान्ति। दिवसरे समुद्रर भितरे लुचन्ति १९
तुम्भे जे जगत ईश्वर ब्रह्मराशि। सृष्टि जाकर सबु असुर विनाशि २२०
शुणि करि श्रीहरि कहिले पितामह। मोहर बोइला बोलि अगस्तिकु कह २२१
से तांकु निवारण करिबे अवश्य। शुणिण देवताए गले मुनि पाश २२
बेदवर बोइले जे अगस्तिंकु चाहिँ। वासुदेवंक आगरे गलुं आम्भे कहि २३
काळकेतु बेनिभाइ समुद्रे लुचि थान्ति। रजनी होइले से जे परजा जन खान्ति २४
एथिर कारण तुम्भे कर तपचारी। शुणिण महामुनि मनरे विचारि २५

बार रक्षा करने की प्रार्थना करने लगे। २१० कालकेतु दोनों भाई समुद्र मे छिपकर रहते है। और रात मे निकलकर प्राणियों को खा जाते है। २११ हे नाथ! यह पृथ्वी अस्थिमय हो गई है। राजा प्रजा देखने को भी नही बची। १२ आप ससार के स्वामी है! पन्द्रह नेत्रो वाले शिव जी दया कीजिये। १३ ब्रह्मा के वचनो को सुनकर शकर जी ने अपने हृदय मे बातो पर विचार किया। १४ उन्होने पितामह ब्रह्मा से कहा कि आप जाकर कह दे कि वह ही असुरदल का संहार करने में सक्षम है। १५ यह निश्चित है कि अन्य से उनका विनाश नही हो सकता। श्री भगवान सबके स्वामी है। १६ यह सुनकर देवता लोग प्रसन्न हो गये और वह विष्णु के चरणों की शरण में गये। १७ उन्होने ससार के समस्त दुखो की पीड़ा के विषय में कहा और श्री भगवान से उपाय करने के लिये निवेदन किया। १८ असुर प्रबल होकर प्रजाजनो को खाते है। और दिन में समुद्र के भीतर छिप जाते है। १९ हे ब्रह्मराशि! आप जगत् के नाथ है। सम्पूर्ण सृष्टि को असुर नष्ट कर रहे है। २२० यह सुनकर भगवान ने कहा हे ब्रह्मा! मेरे कहने से यह बात अगस्त से कहो। २२१ वह निश्चय ही उन्हे समाप्त कर देंगे। यह सुनकर देवता लोग महर्षि (अगस्त) के पास गये। २२ ब्रह्मा ने अगस्त की ओर देखते हुये कहा कि मैं यह कहने के लिये नारायण के पास गया था। २३ कालकेतु दोनो भाई समुद्र मे छिपकर रहते है और रात्रि होने पर वह प्रजाजनों का भक्षण करते है। २४ हे तपस्वी! आप इसका प्रतिकार कीजिये। यह सुनकर महामुनि ने मन में विचार किया। २५ उन्होने

तेबे सिना रक्षा होइब तुम्भ कुळ। शुणिण सन्तोष जे होइले महीपाळ ५६
वशिष्ठ मन्त्री गोचरे राज्य समर्पिले। गोमती तीर्थकु जे बेगे चळिगले ५७
तेणु से शून्य वाणी शुभिला उपरे। ए स्थान सिद्ध नुहे चळहे राजा खरे ५८
बिरजा मण्डळरे दश सहस्र घर। बराह मूरत जे सेथिरे अटे सार ५६
आखण्डळ त्रिलोचन नाम जे पञ्चानन।
बिरजा मण्डळ पाप करन्ति बिमोचन २६०
बइतरणी नदी सेठि स्वाधीनामे घाट। गंगार नाभिरे अछि पाताळकु बाट २६१
ब्रह्म नाभि स्थानरे दुइ बाण छन्ति। भागीरथि सेथिरे प्रबेश जाइ होन्ति ६२
उद्र्ध्वबाहु होइण तप करन्ति राय़े। शीत खरा बरषा षड़ ऋतु सहे ६३
जोगेण बेदवर से पुर आसिथिले।बैतरणी नदी कूळे भागीरथिकि भेटिले ६४
बोइले ए तीर्थरे किम्पाइ करतप। मुहिँ बिधाता अटइरे जगतर बाप ६५
शुणि करि नमस्कार कले से नृपति। कर दुइ जोड़िण कहन्ति भागीरथि ६६
भो पितामह मोते कर हे सुदय़ा। दहन हुए मोर पितृलोक काय़ा ६७
कपिळ मुनिक शापे होइले से हत। बंश रक्षा कर मोर जगतर तात ६८
आकाशरु गंगा मोते आणिबा बुद्धि कह। राजार बचने जे बोलन्ति पितामह ६९
विष्णुर चरणरे अछइ सुरासुरि। जेते बेळे बामन मूरति श्रीहरि २७०

गंगा को लाने मे समर्थ होगे। ५५ तब ही आपके कुल की रक्षा होगी। यहसुनकर महिपाल संतुष्ट हो गये। ५६ उन्होने वशिष्ठ के समक्ष मंत्री को राज्य समर्पित करके शीघ्र ही गोमती तीर्थ के लिये गमन किया। ५७ तभी उन्हें आकाशवाणी सुनायी पड़ी। हे राजन्! शीघ्र ही जाओ यह स्थान सिद्ध नही है। ५८ विरजा मण्डल मे दस हजार घर है। और उनमे बाराह मूर्तियाँ श्रेष्ठ है। ५६ पंचानन नाम वाला विरिजामण्डल का आखण्डल शिवलिग पाप नाश करने वाला है। २६० वैतरणी नदी का वह स्वाधी नामक घाट है। गगा की नाभि में पाताल का मार्ग है। २६१ ब्रह्मनाभि के स्थान में दो बाण हैं। भगीरथ वही पर जाकर प्रविष्ट हुये। ६२ महाराज भुजाये ऊपर करके तपस्या करने लगे। शीतकाल, ग्रीष्मकाल तथा वर्षा आदि छः ऋतुओं को सहन करते रहे। ६३ दैवयोग से ब्रह्माजी उस स्थान पर आये थे। वैतरणी नदी के किनारे उनकी भेट भगीरथ से हो गई। वह बोले कि मैं जगत्पिता ब्रह्मा हूँ। तुम इस तीर्थ में किस कारण से तपस्या कर रहे हो। ६४-६५ राजा ने ऐसा सुनकर हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुये उनसे कहा। ६६ हे पितामह! मुझ पर दया कीजिये। मेरे पितरो की काया भस्म हो रही है। ६७ वह कपिलमुनि के शाप से मृत्यु को प्राप्त हुये है। हे जगत् पिता! हमारे वंश की रक्षा कीजिये। ६८ हमें स्वर्ग से गंगा लाने का उपाय बताइये। राजा के वचन सुनकर पितामह ने कहा। ६९ गंगा विष्णु के चरणो में है। जिस समय श्री भगवान ने बामनरूप धारण करके

श्रीहरि ठारु वेदवरएसन बोध पाइ। देवतांकु घेनिण से निज पुरे जाइ २४१
तेणु से श्रीहरि जे मनरे बिचारइ। अंशेक जात कले कपिळ ऋषिंकिहिं ४२
से मुनि मासकरे सकळ विद्या साधि। पाताळ बिम्बरे जाइ जोगलये विधि ४३
से ऋषिकि देखिण दइब कूट कला। सगर राजा हृदे पशि जाग मनाइला ४४
देव कार्य्य निमन्ते लक्षणबन्त हय। पुरुहुत चोरि करि नेवार कले स्नेह ४५
कपिळ ऋषिक पछरे रखिण चळि गले।
सगर राजा पुत्रे खोजि खोजिण देखिले ४६
ऋषिंकि दण्ड देवारु शाप परापत। पूर्बर कर्म दोषें होइले दहनत ४७
जोगबळे कपिळ जाणिलेक पुण। स्वर्गर इन्द्र मोते देलेक कषण ४८
मनरे देवतांकु क्रोधभर हेले। भस्म करि देबि से मनरे बिचारिले ४९
जाणिण देवताए विधातांकु घेनि। ऋषिकि प्रबोध जे कराइले पुणि २५०
प्रति बोधे ऋषि सगर पुत्रंकु कहिले। बेनि लक्ष बरषे मुकत हुअ बोलें २५१
तेणु बेनि लक्ष बरष बेनि राजारे गला। सेहि कुळे भागीरथि जनम होइला ५२
पात्र मन्त्री कहिले पूर्बर जन्म कथा। शुणिण विस्मय जे होइले सामरथा ५३
बोइले केमन्ते शीतळ होइब मोर बंश। पितृकार्य्य न कले जीवने कि आश ५४
मन्त्री बोइले शुण हे नृपमणि। स्वर्गर गंगा जेबे पारिब तुम्भे आणि ५५

उपाय करेंगे जिससे पुनः सातो सागर अवस्थित हो जाये। २४० श्री भगवान से ब्रह्माजी को इस प्रकार की सात्वना मिलने पर वह देवताओ को लेकर अपने लोक वापस चले गये। २४१ तब श्री भगवान ने मन में विचार कर अपने अश से कपिल ऋषि को उत्पन्न किया। ४२ उन मुनि ने एक महीने मे समस्त विद्याओ का अभ्यास किया तथा पाताल विवर मे जाकर योग मे लीन हो गये। ४३ उन ऋषि को देखकर दैव ने माया की। उन्होने सगर महाराज के हृदय मे प्रविष्ट होकर यज्ञ की इच्छा की। ४४ देवकार्य के लिये इन्द्र ने लक्षणयुक्त घोड़े को चोरी करना उचित समझा। ४५ वह उसे कपिल ऋषि के पीछे छोड़कर चले गये और राजा सगर के पुत्रो ने खोजते हुये उसे वहाँ देखा। ४६ ऋषि को दण्ड देने के कारण उन्हे शाप प्राप्त हुआ और अपने पूर्वकर्मो के दोप से उन्हे जलना पड़ा। ४७ कपिल ने योगबल से ज्ञात किया कि स्वर्ग के इन्द्र ने मुझे यह कष्ट दिया है। ४८ वह मन में देवताओ पर कुपित होकर उन्हे भस्म करने के लिये विचार करने लगे। ४९ यह जानकर देवताओ ने ब्रह्मा को साथ लेकर उन्हे समझाया बुझाया। २५० प्रबोध करके ऋषि ने सगर के पुत्रो से दो लाख वर्षो मे मुक्त होने की बात कही। २५१ तब दो राजाओं के दो लाख वर्ष व्यतीत हो गये और उसी कुल मे भगीरथ का जन्म हुआ। ५२ सभासद तथा मत्रियो ने पूर्वकाल की कथा सुनायी। जिसे सुनकर वह विस्मय मे पड़ गये। ५३ उन्होने कहा कि हमारा वंश कैसे उद्धार पायेगा तथा पितृकार्य न करने से जीवन से क्या प्रयोजन है। ५४ मत्री ने कहा हे नृपमणि सुनिये। जब आप स्वर्ग से

चतुर्भुजे शोभावन शंख चक्र गदाधनु । श्रीअंग गोटि विराजे द्वितीय जे भानु ८५
गरुड पृष्ठ परे विजये रमापति । पारिषद गणमाने पारुशे बेढि छन्ति ८६
भागीरथि छामुरे प्रबेश हेले जाइ ।
हसि हसि आज्ञा दिअन्ति कमला देबी साइँ ८७
कह कह महाराजा कह तोर इच्छा ।
आम्भे पूर्ण करिबा जे थिब मन बाञ्छा ८८
देखिण नृपबर हरि पादतळे पड़ि । बिनयरे कहइ से बेनि कर जोड़ि ८९
भो देब हे नारायण प्रतिकार कर । दुःसह कषणु मोते उद्धरिण धर २९०
कपिळ मुनि कोपरे बंश मोर दहि । इह पर बेनि लोक सुख जे नुहइ २९१
तुम्भ श्रीचरणे देव अछि सुर नदी । दिअ मोते गंगा स्वामी कृपा जळनिधि ९२
भगवान कहन्ति मुं देबी सुरासरि । ताहार पड़न्ते पृथ्वी न पारिव धरि ९३
रुद्र मात्र ताहा धरिबाकु सामरथ । ताहांकु एबे मनाइ आण नर नाथ ९४
से जेबे धरिबे गंगा निश्चे देवि मुहिँ । एते बोलि अन्तर्द्धान कमळार साइँ ९५
श्रीहरि श्रीमुखरु एमन्त शुणि राये । महादेव स्मरणरे तपस्यारे ध्याये ९६
निराहार होइण बालुंका लिंगस्थापि । हर ठारे मन नेत्र समस्त निरोपि ९७

थी । ८४ चारों भुजाओ में शख चक्र गदा तथा धनुष विराजमान थे । उनके श्रीअग द्वितीय आदित्य के समान राजित हो रहे थे । ८५ रमापति (नारायण) गरुड़ की पीठ पर चढकर उपस्थित हुए । पार्षद-गणो ने उन्हें समीप से घेर रक्खा था । ८६ वह जाकर भगीरथ के समक्ष उपस्थित हुए । कमलापति ने हँसते हुये कहा । ८७ बोलो महाराज ! तुम्हारी क्या इच्छा है ? हम तुम्हारी मन कामना पूर्ण करेगे । ८८ नारायण को देखकर श्रेष्ठ राजा ने उनके चरणों में गिरकर दोनों हाथो को जोडते हुए कहा । ८९ हे देव नारायण ! हमारी रक्षा कीजिये । आप हमे पकडकर असहनीय कष्ट से उबार लीजिए । २९० हमारा वंश कपिल मुनि के कोप से दग्ध हो गया है । इस पर दोनो लोको में सुख नही है । २९१ आपके श्री चरण में देवनदी गंगा है । हे कृपासागर ! हे नाथ ! हमें गगा दे दीजिये । ९२ भगवान ने कहा कि हम सुरसरि को दे देंगे । परन्तु उनके गिरने पर पृथ्वी उसे रख न पाएगी । ९३ केवल शिव ही उसे धारण करने में समर्थ है । हे नरनाथ ! अब तुम उन्हे प्रसन्न करके ले आओ । ९४ यदि वह धारण करे तो मै तुम्हे निश्चितरूप से गंगा दे दूंगा । इतना कहकर लक्ष्मी-पति अन्तर्ध्यान हो गए । ९५ राजा श्री भगवान के इस प्रकार के वचनों को सुनकर तपस्या में लीन होकर महादेव जी का स्मरण तथा ध्यान करने लगे । ९६ निराहार रहकर उन्होने बालुकामय लिंग को समर्पित किया और उन्होने अपना मन नेत्र तथा सर्वस्व शिवजी में लगा दिया । ९७

बळिराज ठारु जे घेनिले भुमिदान । त्रिविक्रम रूप जे होइले नाराय़ण २७१
आकाशकु पाद जे बढ़ाए देवहरि ।तांक चरणे अभिषेक कलि मुं सुरासरि ७२
बासुदेव विश्वरूप पाद नख कोणे । रहिलेक गंगा जे देखिले देवगणे ७३
एबे तु नृपति जे विष्णुंकु सेवा कर । तांक ठारे मन चइतन देइण लय़कर ७४
अवश्य प्रापत होइबे गंगा तोते । जोगबळे दृश्य जे होइलाक मोते ७५
एमन्त बोलि बिधाता निज पुरे जाइ । भागीरथि भगवान चरणे चिन्तइ ७६
महाकष्ठे तप आरम्भ कला राय़े । वृद्ध अंगुळिरे बरषेक उभा हुए ७७
नाराय़ण नाम सुमरइ अबिरत । होइलेक प्रसन्न कमळादेवी कान्त ७८
नवघन इन्द्रनीळ मणि जिणि बर्ण । पीतबस्त्र बिन्दुरेखा दिशइ शोभन ७९
सप्तशाखा मुकुट कीरटी शोभा पान्ति । कटी मेखळारे नाना रत्न झटकन्ति २८०
नानारत्न हाररे बक्षस्थळि दिशे शोभा । कण्ठे विराजइ कउस्तुभ मणि प्रभा २८१
मकराकृति कुण्डळ श्रवणे विराजे । शुक्र कवि घेनिकि निशानाथ बिजे ८२
बक्षस्थळे बिराजइ श्रीवत्सर चिह्न । आजानु लम्बित बैजय़न्ती शोभावन ८३
सर्बांगरे घनसार मळय़ राजसि । कस्तुरी रेख पराय़े दाढि निश दिशि ८४

राजा बलि से भूमिदान लिया तब भगवान ने विशालरूप धारण किया । २७०-२७१ नारायण ने जब अपना पैर आकाश को बढाया । तब मैने गगा से उनके चरणों का अभिषेक किया । ७२ विराटरूप वासुदेव के चरण के नख-कोण में गगा रह गई और देवताओ ने यह सब देखा । ७३ हे राजन् ! इस समय तुम विष्णु की अर्चना करो । तुम अपने मन तथा चैतन्य को उनमे लीन कर दो । ७४ तुम्हें गंगा अवश्य प्राप्त होगी । यह हमे योग-बल से ज्ञात हो गया है । ७५ ऐसा कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को चले गए । भगीरथ भगवान के चरणो का चिन्तन करने लगे । ७६ राजा ने महान कष्टमय तप आरम्भ किया । वह वृद्ध उँगली पर एक वर्ष खड़े रहे । ७७ वह निरन्तर नारायण के नाम का स्मरण करते थे । लक्ष्मी-पति नारायण प्रसन्न हो गए । ७८ उनका वर्ण नवीन मेघ तथा इन्द्रनील मणि को जीतने वाला था । पीताम्बर तथा बिन्दुरेखा (तिलक) शोभायमान दिखाई दे रहा था । ७९ सात शाखाओ वाला मुकुट तथा क्रीट शोभित था । कमर की तागडी मे नाना प्रकार के रत्न झलमला रहे थे । २८० नाना प्रकार के रत्नो से जटित हारो से वक्षस्थल सुन्दर दिख रहा था तथा गले में प्रभा से युक्त कौस्तुभमणि विराज रही थी । २८१ कानो में मकर की आकृति वाले कुण्डल विराजमान थे । लगता था जैसे शुक्राचार्य को साथ लेकर निशापति चन्द्रमा विराजमान हो । ८२ वक्षस्थल पर श्री वत्स का चिन्ह सुशोभित था आजानुपर्यन्त वैजन्तीमाला शोभा पा रही थी । ८३ सर्वाङ्ग से घन-सार मलय प्रवाहित हो रही थी । कस्तूरी रेखा के समान दाढ़ी व मूंछ दिखाई देती

सेहि आज्ञा देले मुँ देबि सुरासुरि । शंकर पारिबे ताहा मस्तकर धरि १२
कर अनुग्रह स्वामी घेन मम सेवा । मो बंश निमन्ते गंगा भारकु बहिबा १३
तुम्भे न रखिले के भरसा मोर नाहिँ । एथकु कारण मोते कर उमा साइँ १४
अनेक मते महाराजा करइ जे स्तुति । शुणि करि परम तोष हेला उमापति १५
शंकर कहन्ति गंगा जेबे देवहरि । सत्य आम्भे मस्तके धरिबुँ सुरासुरि १६
स्मरण कले आसिबु बोले शूळपाणि । अन्तर्द्धान होइले बिजुळि ज्योति जिणि १७
राजन त्रयदेव मनाइ निज राज्ये गला । राज्यर भल मन्द जाइण बुझिला १८
एथु अनन्तरे शुण हे श्रीराम चन्द्र । इन्द्रंकर दुहिता जे माळती नाम सेत १९
भागीरथि राजांकर बड़ से पाटराणी । भागीरथि जिबारे से पुष्पवती पुणि ३२०
शुद्ध स्नान करन्ते से राजार अंग संग । से राणीर गर्भरे रहिला राजा बीर्ज्य ३२१
तेणु से राणी गोटि गर्भवास हेला । षष्टमासे गर्भदान देइण राजा गला २२
बैतरणी नदीतटे हेले परबेश । बासुदेव सुमरणा कलेक विशेष २३
प्रसन्न होइले आसि देव चक्रधारी । भागीरथि सुमरन्ते अइले शूळधारी २४
सदा शिबंकु देखि श्रीहरि मने तोषि । गंगांकु बोइले तु मध्यपुर जाअसि २५

गगा को मांगा । ३११ उन्होंने मुझसे कहा कि मै गगा प्रदान करूँगा । उसे शकर ही मस्तक पर धारण कर सकते है । १२ हे नाथ ! मेरी सेवा ग्रहण करके मुझपर अनुग्रह कीजिए तथा मेरे हित में गंगा को मस्तक पर धारण कीजिए । १३ आपके आश्रय न देने पर मेरा अन्य कोई सहारा नही है । हे उमानाथ ! इस बार मेरा निस्तार कर दीजिए । १४ महाराज ने नाना प्रकार से स्तुति की । ऐसा सुनकर उमापति अत्यन्त प्रसन्न हुए । १५ शकर ने कहा यदि वासुदेव गगा को देगे तो मै सचमुच सुरसरि को मस्तक पर धारण करूँगा । १६ उन्होने कहा कि मै स्मरण करते ही आ जाऊँगा । फिर विद्युत प्रभा को जीतनेवाले (आशुतोष शिव) अन्तर्ध्यान हो गए । १७ त्रिदेव (ब्रह्मा विष्णु महेश) को प्रसन्न करके राजा अपने राज्य को चले गए । और जाकर उन्होने राज्य की देखरेख सम्हाली । १८ हे श्रीरामचन्द्र ! सुनो । इसके पश्चात् इन्द्र की पुत्री जिसका नाम मालती था और जो राजा भगीरथ की बडी पटरानी थी, वह राजा के जाते समय रजस्वला हुई थी । १९-३२० शुद्ध स्नान के पश्चात् राजा के अग प्रसंग से उनका वीर्य उसके गर्भ में ठहर गया था । ३२१ इससे वह रानी गर्भवती हो गई थी । छठे माह गर्भदान देकर राजा चला गया था । २२ वह जाकर वैतरणी नदी के तट पर प्रविष्ट हुआ तथा उसने विशेष प्रकार से भगवान का स्मरण किया था । २३ चक्रधारी भगवान ने आकर उस पर कृपा की । भगीरथ के स्मरण करने पर त्रिशूलधारी शिव पधारे । २४ सदाशिव को देखकर नारायण ने मन में प्रसन्न होकर गंगा से मृत्यु-

रोम मूळरे तम्बार छुञ्चि मुन फोड़ि । बत्र घृत देइ तहिँ जाळइ दिहुड़ि ९८
तहुँ कठोर तप नृपति जहुँ कला । सदाशिव स्वामी आसि प्रवेश होइला ९९
बृषभ पृष्ठ परे विजय़ दिगवास । त्रिशूळ डम्बरु जे धरिण व्योम केश ३००
नाग राजा बासुकि होइण कण्ठहार । जटा जूट मुकुट सन्यासी अळंकार ३०१
शुद्ध स्फटिक जिणि सुन्दर तनुवर्ण । मस्तक उपरे अर्द्धचन्द्र शोभावन २
कोळरे गिरिराज नन्दिनी छन्ति बसि । रजत नगरे स्वर्ण श्रृंग शोभा दिशि ३
चन्द्र सूर्ज्य अनळ जे तृतीय़ नय़न । नृपति आगे विजय़ कलेक ईशान ४
पचारन्ति राजा हे किम्पाइ कर सेवा ।
जेउँ बर इच्छा हेब माग हे ताहा देवा ५
एहा शुणि नृपति प्रणाम करि शोइ । बेनि कर जोडिण कहइ नर साइँ ६
भो देव हे त्रिपुर ईश्वर देवशूळी । कपिळ मुनि कोपरे बंश मोर जळि ७
सगर नृपतिर षाठिए सहस्र सुत । नय़न अनळरे दहिले तपोबन्त ८
तेणु मुहिँ महा दुःखी होइलि गोसाइँ । राज्य सुख भोगरे मोर कार्ज्य नाहिँ ९
गंगा नदी अइले होइबे सेहु सुस्थ । तेणु मुँ तोते आश्रय़ कलि उमाकान्त ३१०
भगवान प्रसन्न होइले मोते आसि । गंगांकु मागिलि मुँ बंश रक्षा करसि ३११

रोम कूपो को ताँबे की सुई की नोक से विदीर्ण कर वज्रघृत डालकर राजा ने वहाँ दीप प्रज्वलित किये । ९८ जब राजा ने इतनी कठिन तपस्या की तब सदा कल्याण करने वाले शिवजी वहाँ आ पहुँचे । ९९ दिगम्वर शकर वृषभ की पीठ पर आरूढ होकर उपस्थित हुए। व्योम केश शिव त्रिशूल तथा डमरू धारण किये हुए थे । ३०० नागराज वासुकी कण्ठहार वने थे । वह सन्यासी जटाजूट के मुकुट से अलकृत थे । ३०१ उनके शरीर का वर्ण शुद्ध स्फटिक के सौन्दर्य को जीतने वाला था । मस्तक के ऊपर अर्ध चन्द्र विराजमान था । ३०२ उनकी गोद मे हिमाँचलकुमारी बैठी थी । वह चादी के पर्वत पर स्वर्णमय शृग के समान सुशोभित हो रही थी । ३ चन्द्र सूर्य तथा अग्निवाले तीन नेत्रोंवाले ईशान दिशा के स्वामी राजा के समक्ष उपस्थित हुए । ४ उन्होने राजा से तप करने का कारण पूँछते हुये कहा कि तुम जिस वर की कामना करते हो उसे मागो, हम तुम्हें प्रदान करेगे । ५ यह सुनकर राजा ने दण्डवत प्रणाम करते हुये दोनो हाथ जोडकर कहा । ६ हे तीनो लोको के स्वामी ! हे देवशूली ! कपिल मुनि के कोप से मेरा वश दग्ध हो गया । ७ राजा सगर के साठ हजार पुत्रो को नेत्रों की अग्नि से तपस्वी ने भस्म कर दिया है । ८ इससे हे नाथ ! मै महान दुःख में पड गया । राज्य सुखभोग से मेरा प्रयोजन नही है । ९ गंगानदी के आने से वह उवर जायेगे । हे उमानाथ ! इसी से मैने आपका आश्रय लिया है । ३१० भगवान ने आकर मेरे ऊपर कृपा की । मैंने वश की रक्षा करने के लिये उनसे

तुम्भे मेरु गिरि हे नकर गुपत।
दिअसि गंगा देबींकि मे जे होन्तु सुस्थ ३४१
मेरु बोइले राजन जाइत बाट नाहिं। तुहो नृपति प्रबोध कर गंगांकु जाइ ४२
मेरुर बचन जे शुणिले नृपबर। गंगा देबींकि जे बहुत स्तुति तार ४३
मेरुर नन्दिनीकि बहुत स्तुति कले। कार्पुण्य होइण जे भागीरथि बोले ४४
अनेक दुःखरे जे आणिलि तोते मागि।
तु किम्पा पिता घरे निश्चिन्ते रहु लागि ४५
मोहर बिकळ जे देखु एबे माए। कर अनुग्रह एबे जिबा पितृंक जाए ४६
प्रसन्ने गंगा बोइले मुं अटइ जुवती। बाट न पाइले मुं जिबि केउँ कति ४७
तु जेबे पारु बाबु ऐरावत आणि। से जेबे मेरुकु दन्ते पारिब जे हाणि ४८
तेबे से बाहार होइण मुं जिबि। तोहर बचन मुं निश्चिय पाळिबि ४९
शुणिण भागीरथि बिस्मय मन होइ। ऐरावत गजकु सुमरे मने सेहि ३५०
बोइला मातंग दया मोते कर। गंगा पशिण अछि मेरुर भितर ३५१
बाट न पाइण देबी न पारे पुण आसि। अनुग्रह नकले गलिटि निश्चे भासि ५२
गंगा गले मोर बंश रक्षा होइ। कर जोडि नृपति गजराजकु कहि ५३
शुणिण ऐरावत सनमत कले। नृपतिंकि राइण एमन्त कहिले ५४
इन्द्र देवता जे अटइ स्वामी मोर। ताहांकु कथाए तुम्भे कह हे नृपबर ५५

लगे। ३४० उन्होंने कहा हे मेरु गिरि ! आप गुप्त न करके गंगा देवी को दे दें, जिससे वह लोग (पूर्वज लोग) शाँत हो जाये। ३४१ मेरु ने कहा हे राजन् ! जाने का मार्ग नही है। तुम जाकर गंगा को समझाओ। ४२ मेरु के वचन सुनकर नृपश्रेष्ठ ने गंगादेवी की बहुत स्तुति की। ४३ भगीरथ ने मेरुनन्दिनी की बहुत स्तुति करके दीनता के साथ कहा। ४४ मैं तुम्हें बहुत कष्ट से माँग कर लाया हूँ। तुम पिता के घर में निश्चिन्त होकर कैसे रहने लगी। ४५ हे माता ! मेरे दुःख को देखो। अब चलकर हमारे पितरों पर दया करो। ४६ गंगा ने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि मै युवती हूँ। मार्ग न मिलने से मै किधर जाऊँगी। ४७ हे वत्स ! तुम यदि ऐरावत को ला सको और वह दाँत से मेरु को भेद सके तब मै बाहर निकल कर चलूंगी और तुम्हारी बातों का निश्चितरूप से पालन करूँगी। ४८-४९ यह सुनकर भगीरथ ने आश्चर्यचकित होकर मन में ऐरावत हाथी का स्मरण किया। ३५० वह बोले हे गजराज ! मुझ पर दया करो। गंगा मेरु के भीतर घुसी हुयी हैं। मार्ग न मिलने से देवी बाहर नहीं आ पा रही है। दया न करने पर मैं निश्चय ही डूब जाऊँगा। ३५१-५२ गंगा के जाने से मेरे वश की रक्षा होगी। राजा ने हाथ जोड़कर गजराज से प्रार्थना की। ५३ यह सुनकर ऐरावत ने स्वीकृति दी और राजा को बुलाकर इस प्रकार कहा। ५४ हे नृपश्रेष्ठ ! इन्द्रदेव मेरे स्वामी है। आप उनसे बात कर ले। ५५

गंगा बोइले मुँ जेबे मध्यपुर जिबि। निश्चय निश्चळ जे से पुरे होइबि २६
काहार दण्ड मोते नोहिब विप्रबळ। नर बानर जे असुर नागबळ २७
एमाने मोते छुइँण मुकत होइ जिबे। स्नान कले त्रिकुळ पितृकु उद्धरिबे २८
स्वामी मोर बरुण गउरब करि। शरधा मोते बड़ करिबे जळधारी २९
श्रीहरि बोइले जेते कहिल अबळा। से कथा प्रापत जे तोते हेउ परा ३३०
शुणिण गंगा देबी जे हरष होइले। बिष्णुरि अंगुष्ठि कोणरु बाहारिले ३३१
ताहा शुणि सदाशिव धइले ता शिरे। रहिलेक गंगा हर जटार भितरे ३२
बिष्णु पावोदक पाइ महादेव तोष। पूर्ब काळरु जाँहिकि करिथिले आश ३३
सदाशिव स्वामी तांकु शिररे धइले। तेणु से सदाशिव आनन्द होइले ३४
मेरु गिरि उपरे जाइँ मिळिले ईश्वर।
पञ्चशिरे रहिला त्रिलोचनंक आनन्दर ३५
ईश्वर मस्तकरु गंगा खसिण पडिले। तेणु से मेरु गिरि उपरे जाइ मिळे ३६
देखिण पिता माता गउरब करि। ईश्वर मस्तकरु गंगा जाआन्ते चळि ३७
त्रिलोचन बोइलेपिता घरे गंगा मिळि। सेठारु पुण जे नइले बाहारि ३८
मेरुकु सुमरणा करहे राजन। तेबे से गंगा देबी होइबे प्रसन्न ३९
एते कहि ईश्वर कपिळास गले। सेठारु भागीरथि मेरुकु सुमरिले ३४०

लोक को जाने को कहा। २५ गगा ने कहा जब मै मृत्युलोक को गमन करूँगी तो निश्चितरूप से उस लोक मे निश्चल हो जाऊँगी। २६ ब्राह्मण, नर, वानर नाग तथा असुरों आदि किसी का शासन मेरे ऊपर न होगा। २७ यह लोग मुझे स्पर्श करके मुक्त हो जाएँगे और स्नान करने पर तीनो कुलो के पितरो का उद्धार हो जाएगा। २८ जल धारण करने वाले मेरे स्वामी वरुण मुझसे अधिक सम्मानयुक्त प्रेम करेंगे। २९ श्री भगवान ने कहा हे अवले! तुमने जो भी कहा है वह सब तुम्हे प्राप्त हो। ३३० यह सुनकर देवी गगा प्रसन्न हो गई तथा विष्णु की उँगली के नखकोण से बाहर निकली। ३३१ यह सुनकर सदाशिव ने उन्हे शिर पर धारण किया और गगा शिव की जटाओ में ठहर गई। ३२ विष्णु का चरणोदक पाकर महादेव सन्तुष्ट हो गए। चिरकाल से उनकी यह आशा थी। ३३ सदा कल्याणकारी प्रभु ने उसे शिर पर रक्खा था इससे सदाशिव शंकर प्रसन्न हो गये थे। ३४ फिर शिवजी मेरु-शिखर पर जा पहुँचे। त्रिलोचन के पाँचो शिर आनन्दयुक्त थे। ३५ तभी शिव के मस्तक से गंगा गिर पडी और तब वह मेरु गिरिपर जा पहुँची। ३६ उन्हे देखकर माता पिता ने उनका सम्मान किया। शिव के मस्तक से गगा के जाने पर शकर ने कहा कि गगा पिता के घर में पहुँच गई है। गगा फिर वहाँ से बाहर नही निकली। ३७-३८ हे राजन्! अब तुम मेरु का स्मरण करो तब देवी गंगा प्रसन्न होंगी। ३९ इस प्रकार कहकर शंकरजी कैलाश को चले गये और भगीरथ वहाँ पर मेरु का स्मरण करने

सेहि से मेरु अटे पृथ्वीकि धारणा।
अदोषे किम्पा तांकु मुँ करिबि खणिकिना ७२
राजा बोइले से जे गउरब स्तिरी। बरुणर घरणी से अटे निर्मळ बारी ७३
ईश्वर देवता जाकु मस्तकरे बहि। मोर कर्त्तव्यरे कि ताहाकु हुए कहि ७४
भो महगज तुम्भे मने न धर आन। मुहिँ से निरेख अटइ मञ्चे हीन ७५
चाल एबे बेगे जिबा दुष्ट पण छाड़। त्रैलोक्यरे तोते जे बोलन्ति महामल्ल ७६
जोग्य जीब होइ तु अजोग्य कथा कह। जय जय मातंग तुहे जनंकर राहु ७७
हस्ती बोइला जाइ तु पचार गंगांकु। से मोर घरणी हेब कहि आस ताकु ७८
शुणिण भागीरथि भाळिले पञ्चभुते। केमन्ते कहिबि मुँ माता से प्रत्यक्षे ७९
पोड़ु मो करम जीइँबा नुहँ छिटि। ए कथा केमन्ते गंगांकु कहिबिटि ३८०
बिस्मय मनरे नृपति जाए चळि। कर दुइ जोडिण गंगांकु स्तुति करि ३८१
भगबती पुच्छिले जे हस्तीकि अइले। लाजरे शिर पोति नृपति रहिले ८२
नृपति भाळिबार जाणिले गंगा देबी। भागीरथिकि बोइले जाअरे पुत्र बेगि ८३
क्रोधरे सुरासुर कम्पइ थरहर। नेत्र श्रोणित कान्ति दिशइ परखर ८४
देवी बोइले गज आसु बेगे होइ। धरि जेबे पारिब हेउ मोर साइँ ८५

नही तो मै इतना कार्य क्यों करूँगा। ३७०-३७१ वह मेरु पृथ्वी के द्वारा धारण किया गया है। बिना दोष के मै उसे कैसे भेदूँगा। ७२ राजा ने कहा कि वह स्त्री सम्माननीय है। स्वच्छ जल वाली वह वरुण की पत्नी है। ७३ शंकर ने उसे मस्तक पर धारण किया है। क्या मेरा यह कहना उचित होगा। ७४ हे गजराज! आप मन में अन्यथा न सोचे। मै मृत्युलोक का तुच्छ प्राणी हूँ। ७५ चलो अव दुष्टता को त्यागकर शीघ्र ही चलें। तीनो लोको में तुम्हे महान परक्रमी कहा जाता है। ७६ योग्य प्राणी होकर तुम अयोग्यता की बात करते हो। हे श्रेष्ठ गजराज! तुम्हारी जय हो। तुम प्राणियों के राहु हो। ७७ हस्ती ने कहा कि तुम जाकर गगा से पूँछो और हे वत्स! उससे कहकर आओ कि वह मेरी पत्नी बनेगी। ७८ यह सुनकर भगीरथ ने पंचभूतो का स्मरण किया और सोचने लगे कि वह प्रत्यक्षरूप से माता है, मै यह उससे कैसे कहूँगा। ७९ मेरे कर्म दग्ध हो जाये। जीने की इच्छा नही है। मैं यह बात गंगा से कैसे कहूँ। ३८० विस्मित मन से राजा चल दिये और उन्होने दोनों हाथ जोड़कर गंगा की स्तुति की। ३८१ भगवती ने पूँछा कि क्या हाथी आ गया। राजा लज्जा से सिर झुकाये रहे। ८२ देवी गगा राजा की चिन्ता समझ गईं। उन्होंने भगीरथ से कहा हे पुत्र तुम शीघ्र ही जाओ। ८३ उनके क्रोध से देवता असुर घबराते हुये कॉपने लगे। नेत्र की प्रखर रक्तिम कान्ति दिखाई देने लगी। ८४ देवी ने कहा कि हाथी शीघ्रता से दौड़कर आये। यदि वह हमें पकड़ सके तो मेरा पति हो जाये। ८५ हम स्त्रियो का नाम अबला है। हमारे

न कहिण गले से बोलिबे मोते मन्द । जाइण नृपति हे कह सुराभद्र ५६
शुणिण भागीरथि जे गले खर करि । स्वर्ग पुरे वासव आगरे जे मिळि ५७
देखिण मघबा जे हरष होइले । केणे अइल बोलि नरेन्द्र पचारिले ५८
भगीरथि बोइले कथाए मोते देबा । तिनि पुरे स्वामी तु अटु हे मघवा ५६
पितृ लोके मोर जे दहिज हेउछन्ति । आगेत से कथाकु कहिछि शचीपति ३६०
गंगा गले से माने मुकति लभिबे । अग्नि ज्वाळारु सेमाने शीतळ होइबे ३६१
बसुदेव प्रसन्नरे देले सुरासुरि । महेश्वर मस्तकरे बहिले दिव्य वारि ६२
मोहर हितरे देव रुद्र छाड़ि देले । धरणी न आसि गंगा पिता घरकु गले ६३
मुहि सुमरन्ते गंगा मोते आज्ञा देले । ऐरावत मेरु हाणिले मुँजिवइँ बोइले ६४
तेणु करि मागुछि ऐरावत दिअ मोते । तेबे पितृ मोर लभिबे स्वर्ग पथे ६५
शुणिण हरष जे होइले सुरपति । ऐरावतकु बोइले जाअरे तड़न्ति ६६
जाअ तु महागज भागीरथि सगे । मेरुकु फोडिणरे वाहार कर गंगे ६७
सुरराज आज्ञा पाइण मत्त गज । गर्जन करिण से धाइँला होइ ओज ६८
मेरु निकटरे गजराज से कहइ । एमन्त करिण से जे गुपते बोलइ ६६
तु हो मञ्चर नरेन्द्र शुण मोर बाणी । जेबे से मेरुकु पकाइबि हाणि ३७०
से गंगा देवी जे धरणी हेव मोरे । नोहिले एते कर्म करिवि किम्पा भले ३७१

विना कहे जाने पर वह मुझे मूर्ख कहेंगे। हे राजन् ! तुम जाकर सुरेन्द्र से कह दो। ५६ यह सुनकर भगीरथ शीघ्रता के साथ स्वर्गपुर जाकर इन्द्र से मिले। ५७ उन्हे देखते ही इन्द्र प्रसन्न हो गये और बोले हे नरेन्द्र ! आप कैसे पधारे है। ५८ भगीरथ ने कहा हे इन्द्र ! तुम तीनो लोकों के स्वामी हो। मुझे एक वचन दो। ५६ मेरे पितर लोग भस्म हो रहे हैं। हे शचीपति ! हमने पहले ही वह बात बता दी। ३६० गंगा के जाने से उन्हे मुक्ति प्राप्त होगी और वह लोग अग्नि ज्वाला से शीतल हो जायेंगे। ३६१ नारायण ने प्रसन्न होकर देवसरिता को प्रदान किया है और उस दिव्यजल को महादेव जी ने मस्तक पर धारण किया। ६२ मेरे भलाई के लिये रुद्रदेव ने उसे छोड़ दिया। गंगा पृथ्वी पर न आकर पिता के घर को चली गयी। ६३ मेरी विनय पर गंगा ने मुझसे कहा कि ऐरावत द्वारा मेरु को भेदने से मैं चलूंगी। ६४ मै इसलिए याचना करता हूँ कि आप मुझे ऐरावत को दे दें। तब मेरे पितृगण स्वर्ग प्राप्त करेंगे। ६५ यह सुनकर इन्द्र प्रसन्न हो गये और उन्होने ऐरावत को शीघ्र ही जाने के लिए कहा। ६६ वह बोले हे गजराज ! तुम भगीरथ के साथ जाओ और मेरु को भेदकर गंगा को बाहर करो। ६७ देवराज की आज्ञा पाकर मत्तगज छल से गर्जन करता हुआ दौड़ पड़ा। ६८ मेरु के पास गजराज ने गुप्त रूप से इस प्रकार कहा। ६६ तुम मृत्युलोक के नरेन्द्र हो मेरी बात सुनो। जब मै मेरु को खोद कर गिरा दूंगा। तब वह गंगादेवी मेरी स्त्री हो जायेगी।

किस बोलिण मोते जे बोलिबे जगते। मोहर इछारे त नजाइ ता संगते ४००
तार बळ थिले बळत्कारे मोते नेउ। एक अपवाद दोष मोठारु जाउ ४०१
शुणि करि सन्तोष गजराज होइ। चाल मोते देखाअ गंगा अछि काहिँ २
मेरु फोडि ताकु आणिबि बुहाइ। कथाए कहिब जे गंगार मुख चाहिँ ३
बळे धरि ताकु मुँ जे करिबि सुरति। आगे बाट कढ़ाअ मोते हे नृपति ४
शुणिण सन्तोष जे हेले नर साइँ। गज राजकु घेनि नृपति चळि जाइ ५
जान्तेण मातंगर फुफुकार राब। थोर हस्त टेकिण जे धामइ बेगे बेगे ६
गज बिच्छेद होइण बड़ रोष करि। जान्तेण बीर घण्ट शबद प्रसरि ७
चउदन्त क्रोध होइ मेरुरे मारइ। मेरु फुटिलार बेळे कम्पिलाक मही ८
लबण पर्वते जेन्हे तीक्ष भालि बसे। तेसन पटान्तर चउदन्त दिशे ९
जहुँ मेरुर अंग फुटिलाक पुणि। चउदन्त मुन जे भितरे कम्पे पाणि ४१०
बाट पाइबारु गंगा होइले बाहार। दन्त काढ़ि न पारे सेथिरु करीबर ४११
गर्जन करि गंगा बेगे से बाहारिला। गज इन्द्रकु से बळेण पेलि देला १२
आरम्भे ऐरावत न पारे सम्भाळि। तिनि दन्त बेगे जे उपुडिला तारि १३
गंगार तेज गज जे न पारइ सहि। दन्तेक भाजिण से मेरुरे जे रहि १४

सकती हूँ। ९९ ससार मुझे क्या कहेगा ? मै अपनी इच्छा से तो उसके साथ नही जा सकती। ४०० उसके पास वल होने से वह मुझे बल से प्राप्त करे। एक दोषपूर्ण अपवाद मुझसे निकल जाए। ४०१ यह सुनकर गजराज ने सन्तुष्ट होकर कहा कि चलो मुझे दिखाओ, गगा कहाँ है। २ मेरु को फोड़कर उसे बहा कर ले आऊँगा। फिर गगा का मुख देख कर वात कहूँगा। ३ बलपूर्वक मैं उसे पकड़कर प्रसग करूँगा। हे राजन् ! आगे चलकर मुझे मार्ग दिखाओ। ४ ऐसा सुनकर नराधिप सन्तुष्ट हो गए। वह राजा गजराज को लेकर चल दिए। ५ मत्तगज चिग्घाड़ता हुआ सूँड उठाए हुए वेग से दौड़ा जा रहा था। ६ वियोगी होकर हाथी क्रोध मे भरा चला जा रहा था और चलने से वीर घण्टे की ध्वनि प्रसारित हो रही थी। ७ वह क्रुद्ध होकर चारो दाँतों से मेरु पर प्रहार करने लगा और मेरु के फटते समय पृथ्वी कापने लगी। ८ जैसे नमक के पर्वतपर तीक्ष्ण भाला धँस जाता है उसी प्रकार से उसके चारों दाँत दिखाई दे रहे थे। ९ जब मेरु का अग नुकीले चारो दाँतो से फूट गया तब भीतर पानी लहराने लगा। ४१० मार्ग मिल जाने से गगा बाहर निकली। श्रेष्ठ हाथी वहाँ से दाँत नही निकाल पा रहा था। ४११ गर्जन करती हुई गगा के वेग ने उसे निकाल दिया और बलपूर्वक इन्द्र के हाथी को ठेल दिया। १२ प्रारम्भ में ही ऐरावत सम्हल नही पाया। वेग से उसके तीन दाँत उखड गए। १३ हाथी गंगा के तेज को सहन नही कर सका। उसका एक दाँत टूट कर मेरु पर्वत में ही रह

आम्भे जे स्तिरी माने अवळा नाम बहु ।
आम्भ आद्‌र्दोळि जे सम्भाळे तार पाशे रहु ८६
निर्बळ लोकरे आम्भे न जाउ बिश्वास । एकथा कहिण जे हस्तीकि घेनि आस ८७
भागीरथि बोइले शुणिवा हेउ माए । मुहिँ ताहा कहिबाकु करइ महा भग्ने ८८
सेहि गज इन्द्र जे तुम्भेत सुरासुरि । मुहिँ पामर एहा मध्यरे द्वन्दकारी ८९
केमन्ने कहिबि सुं जे बोलित नपारइ । ए कथारे संकोच बहुत मणइ ३९०
त्रैलोक्य तारिणी गंगा बोइले राग्ने शुण । गज मूर्ख बोलिटि पुराणे बखाण ३९१
तोहर हितरे तार बचन पाळिवा । केते बळ बहे गज ताहा जे बुझिबा ९२
जाअ बिळम्ब एबे नकर नृपति । एकथा कहिण जे घेनिण आस निकि ९३
गंगार चरणे राजा नमस्कार करि । ऐरावत निकटरे मिळिले दण्डधारी ९४
देखिण गज इन्द्र बोइलाक हसि । किस बोइला तोते चारु शुभ्र केशी ९५
कला कि सनमत तोहर भक्ति घेनि । कि अवा कला नास्ति चतुर कामिनी ९६
शुणिण नृपति जे कहिले तार कथा । कर दुइ जोडिण बोइले महारथा ९७
जाहा तु प्रकाश कलु कहिलि मुहिँ जाइ ।
शुणि करि हरषरे बोइले चान्द मुहीं ९८
बरुण राजन जे अछन्ति मोर नाहा ।
तांकु छाड़ि केमन्त मुं करिब पुण एहा ९९

सम्मान की वह रक्षा कर सके तब मैं उसके पास रहूँ । ८६ निर्बल लोगो पर हमारा विश्वास नही जमता। यह बात कहकर हाथी को ले आओ । ८७ भगीरथ ने कहा हे माता ! सुनिये। मै यह कहने में महान भय कर रहा हूँ । ८८ वह इन्द्र का हाथी है और आप देव सरिता है। मैं तुच्छ इसके बीच मे फँस गया हूँ । ८९ मै कैसे कहूँ कि मैं यह नही कह सकता। इस बात पर मुझे बहुत सकोच होता है । ३९० तीनो लोको को तारने वाली गगा ने कहा हे राजन् ! सुनो। पुराणो मे हाथी को मूर्ख कहा गया है । ३९१ तुम्हारे हित के लिए उसके वचनो का पालन करूँगी। उस हाथी मे कितना बल है। यह देखूंगी । ९२ हे राजन् ! अब शीघ्र ही जाओ। बिलम्ब मत करो। यह बात कहकर उसे शीघ्र ले आओ । ९३ गगा के चरणो मे नमस्कार करके राजा ऐरावत के निकट जा पहुँचे । ९४ उन्हे देखकर इन्द्र के हाथी ने हँसते हुए कहा कि सुन्दरि सुकेशी ने क्या कहा ? । ९५ तुम्हारी भक्ति से क्या उसने स्वीकृति दे दी। अथवा उस चतुर कामिनी ने मना कर दिया । ९६ यह सुनकर राजा ने उनकी बात कह दी। वह महारथी दोनो हाथ जोड़कर कह रहे थे । ९७ जो आपने कहा था मैने वही जाकर कहा। उसे सुनकर चन्द्रमुखी ने प्रसन्न होकर कहा । ९८ वरुण राजा मेरे स्वामी है। उन्हे छोडकर मैं यह कैसे कर

स्वर्गरे साधु साधु करन्ति सुर मुनि। चतुर्वेद ॐकार करन्ति ब्रह्मा पुणि ४३०
स्वर्गरे अपसरीए हुळ हुळि द्यन्ति। गन्धर्व किन्नर से जे नृत्य करुछन्ति ४३१
दुन्दुभि बजाइण इन्द्र तोष चित्त। एबे से गंगा जे पूरिबे सिन्धु सात ३२
एथु अनन्तरे सुरासुरि पुणि। तिनि बर्णरे से जे थाआन्ते बोहि पाणि ३३
गंगा जे जमुना सरस्वती नाम जाण। तिनिपुर बिख्यात होइला जगते जाण ३४
एक धार अन्तर होइण स्वर्ग गला। धवळांगी पुर गोटि से पुरे बोलाइला ३५
नीळ रूप जमुना प्रयाग तीर्थ पुण। पाताळकु गमन कलेक से जाण ३६
भगवती सुरासुरि पाताळे बोलाइला। पुणि से बेनि धार गुपत होइगला ३७
धवळांगी गंगा जे मञ्चरे बिहरिला। सेहि से तिनि धार तिनिपुर हेला ३८
गंगा जमुना सरस्वती बोलि तिनि नाम। कळा धळा नीळ जे बारण तिनि बर्ण ३९
पश्चिमरे सरस्वती दक्षिणे जमुना। धवळांगी रहिला उत्तर मुखे किना ४४०
धवळांगी संगरे भागीरथि रहि। भागीरथि गंगा नाम होइला तार तहिँ ४४१
मृत्यु लोकरे जेणु होइला पुण जात। सकळ जीवंकु से करइ मुकत ४२
भागीरथि राजन पितृंक तुले नेइ। आगे आगे भागीरथि पछरे गंगा जाइ ४३
हेमगिरि प्रदक्षिण करिण देवी आसि। हुँकार शबद जे करिण शुभ्रकेशी ४४
मञ्चरे बिक्रमि से जे आसे सुरासुरि। तर्ज्जनर घाते पुणि कम्पइ बसुन्धरी ४५

धन्य-धन्य कहने लगे। ब्रह्मा चारों वेद तथा ओकार का उच्चारण करने लगे। ४३० स्वर्ग में अप्सराएँ मांगलिक ध्वनि करने लगी। गधर्व और किन्नर नृत्य करने लगे। ४३१ इन्द्र ने प्रसन्नचित्त होकर दुदुभी बजायी और कहने लगे कि अब गगा सात समुद्रो को भर देगी। ३२ इसके पश्चात् देव सरिता फिर तीन वर्ण के जल मे बहने लगी। ३३ उनके नाम गगा, जमुना और सरस्वती ससार तथा तीनो लोको मे विख्यात है। ३४ एक धार अन्तर्ध्यान होकर स्वर्ग को चली गई और वहाँ धवलागी कही जाने लगी। ३५ नीलवर्ण की यमुना प्रयाग तीर्थ से पाताल को चली गई। ३६ पाताल मे उसे भगवती सुरसुरि कहा गया फिर वह दोनो धाराएँ गुप्त हो गई। ३७ धवलागी गंगा मृत्युलोक में विचरण करने लगी। वही तीन धाराएँ तीनों लोकों मे विद्यमान हो गई। ३८ काला श्वेत तथा नीला यह तीनों वर्णवाली गगा यमुना और सरस्वती इन तीन नामो से विख्यात् हुई। ३९ पश्चिम मे सरस्वती, दक्षिण में यमुना और उत्तर की ओर धवलागी विद्यमान हुई। वहाँ उनका नाम भागीरथी गगा पड़ गया। ४४०-४४१ वह मृत्युलोक मे उत्पन्न होकर समस्त प्राणियो को मोक्ष प्रदान करने लगी। ४२ आगे-आगे भगीरथ पीछे-पीछे गगा राजा भगीरथ के पितरों के पास ले जायी गई। ४३ शुभ्रकेशी देवी गगा हिमालय की प्रदक्षिणा करती हुयी हुँकार शब्द करने लगी। ४४ देवनदी मृत्युलोक को लाँघती हुयी चली आ रही थी। गर्जना के आघात् से पृथ्वी काँप रही थी। ४५ राजा एक घोड़े पर चढ़कर

हेठ माथ होइण पडिला सेहु पुणि । स्रोतर घाते भासि गला जे गज मणि १५
असम्भाळ होइ जे पड़िला मातंग । प्रळय़ प्राय़ होइण बहिलाक गंगा १६
क्षणे बुड़े क्षणे तार दिशइ शरीर । मन्दर पर्वत कि से समुद्र भितर १७
तेते महागज जे होइला निसत । गौरव स्तिरीकि जेहु लोड़िबार मित १८
तेणु से मत्तगजर तेज गला छाड़ि । गंगा विश्वरूपरे गर्ज्जइ करि रडि १९
चउराशि काठि गभिर अटइ सुरासुरि । स्थळ न पाइला गज स्रोतरे जे पडि ४२०
दन्तेक भाजि बारु तेज जे दर्प हत । गंगांकु हरिवाकु श्रद्धा तार चित्त ४२१
मेरु से गजर अटइ निवासी । परर बोले पडि मेरुकु से ध्वंसि २२
गौरव स्त्रीकि जहुँ कहिला अवधि । तेणु लज्जा पाइला गजेन्द्रर निधि २३
केतेहें दूर पुणि स्रोतरे भासि गला । धर्म बळरे सेहु चेतना पाइला २४
सम्भाळि होइला पुणि से केते दूररे । जाइण लागिला से हस्तिना नगरे २५
शुणि श्रीराम लक्ष्मण कहन्ति गाधि सुते । ऐरावत मेरुरे पाइला चारि दान्ते २६
दन्तेक भाजिण जे रहिला गिरि बरे । तिनि धार होइ गंगा होइले बाहारे २७
आबर तिनि दन्तरु तिनिधार फुटि । तिनि वर्णरे गंगा हेले उत्पत्ति २८
कळा नीळ धबळ होइण तिनि वर्ण । प्रय़ागरे तिनि धार संग हेले पुण २९

गया । १४ मस्तक नीचा करके वह भी गिर गया और श्रोत के आघात से श्रेष्ठ हाथी डूब गया । १५ मत्त हाथी अस्थिर होकर गिर पड़ा था । गगा प्रलय के समान बहने लगी । १६ वह एक क्षण में डूब जाता था और अगले क्षण उसका शरीर दिखाई देने लगता था । लगता था मानो समुद्र के भीतर मन्दराचल पर्वत पड़ा हो । १७ गौरवशालिनी स्त्री मे मितता की खोज करने पर इतना महान गज अशक्त हो गया । १८ तब मतवाले हाथी का तेज समाप्त हो गया, गगा विराटरूप धारण करके हुँकार भरती हुयी गर्जना कर रही थी । १९ चौरासी बल्ली गगा गहरी थी । स्रोत मे पड़कर हाथी को थाह नही मिली । ४२० एक दाँत टूट जाने से उसका तेज और घमण्ड चूर हो गया । गगा को हरण करने की उसके मन मे इच्छा थी । ४२१ मेरु उस हाथी का निवास था । दूसरे के कहने मे पड़कर उसने मेरु ध्वस कर दिया था । २२ जब उसने गौरवशालिनी स्त्री से अशोभनीय बाते कही तभी श्रेष्ठ गजेन्द्र लज्जा को प्राप्त हुआ । वह कुछ दूर तक स्रोत मे बह गया । धर्म के बल से उसे चेतना मिली । २३-२४ कुछ दूर पर वह सँभल पाया और हस्तिना नगर मे वह जाकर (किनारे) लगा । २५ यह सुनकर श्रीराम और लक्ष्मण ने गाधिनन्दन से कहा कि ऐरावत को मेरु से चारो दाँत मिल गये । २६ वह एक दाँत तोडकर पर्वत पर रहा । गगा तीन धार होकर निकल पड़ी । २७ आने वाले तीन दिन मे तीन धारे फूटकर गगा तीन वर्ण मे उत्पन्न हुई । २८ काला नीला तथा श्वेत यह तीनो वर्ण प्रयाग में फिर तीन धाराओं में संगम को प्राप्त हुये । २९ सुर मुनि स्वर्ग से

देव ब्राह्मणे जाणन्ति महिमा तार किस । प्रजापति बोइले अमर संगे बस ४६०
एते बोलि गंगा जमुनारे कहि । सेठारु पुण दुहेँ छडाछडि होइ ४६१
मिळन स्थान बोलिण तार नाम देइ । सेठारु सुरासुरि अइलेक बहि ६२
आगरे अश्व चढि भागीरथि दण्डधारी । पछरे धवळांगी गर्जन करे चळि ६३
केते दिन आसन्ते गंगा जे पुछन्ति । बामभागरे राजा केबण पुर दिशि ६४
नृपति बोइले एजे वाराणसी पुर । से थिरे बिजय़ जे करिछन्ति हर ६५
सुबर्णर कळस धवळ घरमान । विचित्र चिराळ जे उडइ बित्तपन ६६
वाराणसीपुर बोलि से पुरर नाम । एथिरे जेहु मरन्ति लिंग होन्ति पुण ६७
पाञ्च जुण नग्र गोटिए धनुर आकार ।
ईश्वर बिजय़ करिछन्ति पार्वती धरि कोळ ६८
विश्वनाथ क्षेत्रे खटि जोगि जन थान्ति । एथिरे मले जीव कृमि जे नुहन्ति ६९
प्राण जिबा बेळे शबद राम तारक बाणी । जीव मानंक कर्णरे कहे शूळ पाणि ४७०
एणु से प्राणी माने मुकत गति पाइ ।
लिंग होइ रहिबारु काळे से क्षय़ नोहि ४७१
नवद्वीप मध्यरे अटइ सार मुइँ । ए मुइँ पाञ्च जुणरु स्वर्ण जात होइ ७२
चक्र घेनि श्रीहरि खोळिले सरोवर । चक्र पुष्करिणी नाम जे ताहार ७३

उसकी महिमा जानते है। ब्रह्मा ने उसे देवताओ के साथ बैठने की अनुमति दी है। ५९-४६० गंगा ने यमुना से इस प्रकार कहा और फिर वहाँ से दोनों पृथक् हो गई। ४६१ उसका नाम सगम देकर गंगा वहाँ से बह चलीं। ६२ आगे-आगे घोडे पर चढ़कर महाराज भगीरथ चल रहे थे और उनका अनुगमन करती हुई गर्जन करती गंगा चल रही थी। ६३ कुछ दिनो पर गंगा ने राजा से पूँछा कि बाम भाग में यह कौन सा नगर दिखाई दे रहा है। ६४ राजा ने कहा कि यह नगर वाराणसी है और यहाँ शकर जी विराजमान है। ६५ स्वर्ण कलशयुक्त श्वेत रग के भवन है। विचित्र पताकाएँ आकाश में उड़ती है। ६६ इस नगर का नाम वाराणसी है। यहाँ जिनकी मृत्यु होती है वह शिव स्वरूप हो जाते है। ६७ धनुष के आकार का यह पाँच योजन का नगर है। जहाँ पर पार्वती को गोद में लेकर शिवजी निवास करते है। ६८ इस विश्वनाथ क्षेत्र की सेवा योगीजन किया करते है। यहाँ पर मृत्यु होने से प्राणी कीट आदि योनि में नही पड़ता। ६९ मरणकाल के समय त्रिशूलधारी शंकर प्राणियों के कानों में रामतारक मंत्र की ध्वनि करते है। ४७० इसलिये प्राणी मोक्ष प्राप्त करके शिव का स्वरूप ग्रहण करते है और उनका नाश नही होता। ४७१ नवखण्ड द्वीपों में यह भूमि श्रेष्ठ है। पाँच योजन की इस पृथ्वी पर सोना उत्पन्न होता है। ७२ सरोवर को चक्र लेकर भगवान ने खनन किया। अतः इसका नाम चक्रपुष्करिणी

अश्वेक चढिण नृपति चळे आग । प्रबेश हेले जाइ पवित्र स्थान मार्ग ४६
केउँ ठारे तिनि रूप हुअन्ति मेळण । पुण से छड़ाछड़ि हुअन्ति केउँ स्थान ४७
मिळिण एका स्थानरे से भउणी बोलाइ ।
छड़ाछडि बेळे जे जाहा नाम प्रकाशइ ४८
प्रयाग तीर्थरे गंगा रहिले मकर मासे । भागीरथि रहिले जे ताहांकर पाशे ४९
से तीर्थे मकर मास जहुँ शेष हेला । कर जोडि भागीरथि चरणे नमिला ४५०
भो मात त्रैलोक्य तारिणी सुरासुरि ।
मो ठारे निर्दय किम्पा हेउछ पूर्ण नारी ४५१
केते कष्टरे मुँ जे आणि अछि तोते । एते बोलि राये गंगांकु भावे चित्ते ५२
भागीरथि भक्ति देखि पूर्व मुखरे गंगा बहि । जमुना सरस्वती संगरे आसे तहिँ ५३
शते धनु परिजन्ते अइले संग होइ । से ठारे कोळ कला वरुण राजा तहिँ ५४
सेठारे मेलाणि देले धवळांगी तांकु । बरषे प्रयाग तीर्थे भेट जे आम्भंकु ५५
मकरे प्रयाग तीर्थरे जेहु स्नान करे । अमृत भोजन से करिबे स्वर्गपुरे ५६
अग्निरे पखाळिण पिन्धिबे वसन ।श्रीखण्ड चन्दन पारिजातक पुष्प पुण ५७
स्वर्गपुरे अष्टरत्न अळंकार लाइ । आम्भर पद लभिब स्वर्गपुरे जाइ ५८
प्रयागे मकर स्नान कले एमन्त पुण्य होइ।
पितृ लोके चाहिँ थान्ति स्वर्गकु जिबा पाइँ ५९

आगे-आगे चले जा रहे थे। वह पवित्र स्थान के मार्ग में प्रविष्ट हुये। ४६ कही पर तीनो रूपों का सगम हो जाता था। और कही पर वह फिर से पृथक हो जाती थी। ४७ एक स्थान पर संगम करके वह बहने कही जाने लगी और कही उनका नाम पृथक्-पृथक् प्रसिद्ध हुआ। ४८ गगा मकर मास में तीर्थ प्रयाग मे रही और भगीरथ उनके समीप रहे। ४९ उस तीर्थ में जब मकर मास समाप्त हो गया तब भगीरथ ने हाथ जोड़कर चरणो में प्रणाम किया। ४५० उन्होने कहा हे त्रैलोक्यतारिणी सुरसरि माता ! आप सिद्ध नारी है। मुझपर किस कारण से दया नही करती हो। ४५१ मै तुम्हे कितने कष्ट से लाया हूँ। इस प्रकार कहकर राजा मन मे गगा का चिन्तन करने लगे। ५२ भगीरथ की भक्ति को देखकर गंगा पूर्वमुख होकर बहने लगी, यमुना और सरस्वती भी उनके साथ चली। ५३ सौ धनुष पर्यन्त वह एक साथ मिलकर आईं। वहाँ पर राजा वरुण ने उन्हे गोद मे ले लिया। ५४ वहाँ धवल अग वाली ने उन्हे विदा करके कहा कि प्रयागतीर्थ मे वर्ष मे एक बार हमारी भेट होती है। ५५ जो भी मकर मे प्रयागतीर्थ में स्नान करता है। वह स्वर्गलोक मे अमृतमय भोजन करता है। ५६ अग्नि मे धोकर वह वस्त्र पहनता है फिर श्रीखण्ड चन्दन तथा पारिजात के पुष्प और स्वर्गलोक मे अष्टरत्नो के अलकारो से अलंकृत होकर अमरपद प्राप्त करता है। ५७-५८ प्रयाग मे मकर मे स्नान करने से ऐसा पुण्य होता है। पितर लोग स्वर्ग जाने के लिये ताकते रहते है। देवता तथा ब्राह्मण

निजपुर गला बेळे बिरञ्चि बिचारिण । आपणा नामरे तीर्थ कलेक भिआण ८९
रविवार दिन जेबे से तीर्थे स्नान करि । रबिकु अर्घ्य देले मन कामना पुरि ४९०
हविष्य भोजन जेहु रात्रिरे करे । अनेक धन प्राप्त हुअइ ताहारे ४९१
स्वर्गरे बसन्ति जे अमृत पान करि । सहस्र जुगरे से देव तनु धरि ९२
तहुँ पुण उत्तम कुळरे जात होइ । राजा होइण से जे परजा पाळइ ९३
महालक्ष्मी कुण्ड बोलि एकइ तीर्थ अछि ।
से तीर्थरे स्नान कले कमळा होन्ति शान्ति ९४
गुरु बारे से कुण्डरे स्नान जाइ करि । दधि गुड़ सर घृत से तीथ दान करि ९५
बृहस्पति सुमरि बिप्ररे देले दान । तेबे से सम्पद लभइ सेहु जाण ९६
महालक्ष्मी न छाड़न्ति कन्धरु ताहार । अन्न बस्त्र न छाड़इ थाइ जेते काळ ९७
मणि कुण्डळ बोलिण जेबण तीर्थ नाम । दुइ दण्ड से तीर्थरे कले जे विश्राम ९८
स्वर्ग दुन्दुभि शबद से स्थानरे शुणि । एमन्ते अनेक तीर्थ ए पुररे पुणि ९९
स्वर्ग मञ्च पाताळरे जेते मिळे फळ । कोटि कोटि तीर्थ जे तिनिपुरे ठुळ ५००
तीर्थंकर उपरे ए तीर्थ प्राण पति ।मध्याह्न काळरे जेहु ए तीर्थे रहन्ति ५०१
मणि कर्णिकारे जेहु करइ स्नाहान । विश्वनाथ दरशने खण्डइ पापमान २

गया उन्होने जाकर विश्वनाथ देवता के दर्शन किये। ८८ अपने लोक को जाते समय विरंचि नारायण ने अपने नाम पर एक तीर्थ का सृजन किया। ८९ जो व्यक्ति रविवार के दिन उस तीर्थ मे स्नान करके सूर्य को जल देगा। उसकी मनोकामना पूर्ण हो जायेगी। ४९० जो रविवार को सात्विक भोजन (हविष्यान्न) खायेगा। उसे प्रचुर धन प्राप्त होगा। ४९१ वह स्वर्ग में अमृतपान करके वास करेगा और सहस्र युग के पश्चात् वह देव-शरीर धारण करेगा। ९२ उसके पश्चात् उत्तम कुल में जन्म लेकर राजा बनकर प्रजा का पालन करेगा। ९३ महालक्ष्मी कुड नाम से विख्यात् एक ही तीर्थ है। उस तीर्थ में स्नान करने से लक्ष्मी सतुष्ट होती है। ९४ जो कोई गुरुवार के दिन उस कुड में जाकर स्नान करता है। दही, गुड़, मलाई तथा घी उस तीर्थ में दान करता है। बृहस्पति का स्मरण करके जो ब्राह्मणो को दान देता है तब उसे सम्पत्ति प्राप्त होती है। ९५-९६ महालक्ष्मी उसका साथ नही छोड़ती और जब तक वह रहती है तब तक अन्न-वस्त्र की कमी नही होती। ९७ मणि कुन्डल नाम का जो तीर्थ है। उसमें दो दण्ड पर्यन्त विश्राम करने से उस स्थान से स्वर्ग की दुदुभी का शब्द सुनाई देता है। इस प्रकार के अनेक तीर्थ इस नगर में है। ९८-९९ स्वर्ग मृत्यु तथा पाताल तीनो लोको मे करोड़ो-करोड़ो तीर्थ है। उनमें जाने से जो भी फल प्राप्त होता है। उन समस्त तीर्थो में यह तीर्थ उनका स्वामी (प्राणपति) है। मध्यान्हकाल मे जो कोई इस तीर्थ में रहता है जो मणि-कर्णिका मे स्नान करता है, विश्वनाथ के दर्शन करने से उसके पाप नष्ट हो

काळे सदाशिव देखिले पुण जाइ।
चक्र आकारे पुष्करिणी देखिण तोष होइ ७४
तुम्भेत पुष्करिणी श्रीहरिंक ठारु जात। एसनक बोलिण शंकर उषत ७५
मस्तक हलान्ते हर हलइ कुण्डळ। खञ्जा फिटि कुण्डळ पडिला सेहु जळ ७६
तेणु पुष्करिणीर मणिकर्णिका नाम होइ। धबळांगी आगरे भागीरथि कहि ७७
शुणुछन्ति श्रीराम कहुछन्ति विश्वामित्र।सेठारु किस हेला पचारन्ति रघुनाथ ७८
कौशिक कहन्ति श्रीराम लक्ष्मण शुण।से कथा तुम्भ आगरे कहिवा एबे पुण ७९
भागीरथिंक ठारु सुरासुरि शुणि। आनन्द धबळांगी मनरे हेले पुणि ४८०
धबळांगी कहुछन्ति भागीरथि शुण। केउँ गुणे ए पुर सारस्वत पुण ४८१
भागीरथ बोइले मात शुण मोर वाणी। प्रळयकाळे शूळ धरिले हर पुणि ८२
शूळ मारन्ते कापाळी विमोचन अर्थे। सदाशिव शूळकु होइला सम्भुते ८३
सेथिरे तप कले अनेक पाप जाइ। ब्रह्म हत्या गोहत्या हेले पार होइ ८४
शुण गो धबळांगी अज्ञान दोष जाइ। एथि उत्तारु कथा शुण गो मात तुहि ८५
सूर्ज्य कुण्डळ नामे तीर्थ जे अछइ। रविंक ठारु जात से तीर्थ जे होइ ८६
बिरञ्चि नारायण बोलान्ति आदित्य। एक दिने वाराणसी तीर्थरे आगत ८७
बुलि बुलि देखिण हरष मन हेले। विश्वनाथ देवतांकु दर्शन जाइ कले ८८

पड गया। ७३ कुछ समय पर शंकर जी ने जाकर देखा कि वह चक्र के आकार की पुष्करिणी है और उसे देखकर वह सन्तुष्ट हो गये। ७४ उन्होने कहा कि यह पुष्करिणी नारायण से उत्पन्न हुयी है। ऐसा कहकर शकर उल्लसित हो गये। ७५ मस्तक हिलने से शकर के कुण्डल हिलने लगे और कुड़ा निकल जाने से कुण्डल उस जल में गिर पडा। ७६ इस कारण से उस पुष्करिणी का नाम मणिकर्णिका पड गया। भगीरथ ने धवलागी से इस प्रकार कहा। ७७ विश्वामित्र कह रहे थे और श्रीराम सुन रहे थे। फिर रघुनाथ ने पूंछा कि वहाँ तव क्या हुआ ?। ७८ कौशिक ने कहा हे श्रीराम तथा लक्ष्मण ! सुनो। अव वह ही कथा तुमसे कह रहे हैं। ७९ सुरसरि ने भगीरथ से ऐसा सुनकर धवलागी गगा का मन प्रसन्न हो गया। ४८० उसने कहा हे भगीरथ ! सुनो। यह नगर कौन से विशेष गुणो के कारण प्रसिद्ध है। ४८१ भगीरथ ने कहा, हे माता ! मेरी वात सुनिए। शंकर ने प्रलयकाल में त्रिशूल धारण किया। ८२ कपाल विमोचन के लिये कपाली (शकर) के त्रिशूल से यह उत्पन्न हुआ। ८३ वहाँ तप करने से नाना प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्म हत्या अथवा गोहत्या होने पर भी तरण तारण हो जाता है। ८४ हे धवलागी ! सुनिए। अज्ञान का दोष नष्ट होता है। हे माता ! आप इसके पूर्व की कथा सुनिए। ८५ सूर्य से उत्पन्न हुआ सूर्यकुण्डल नाम का तीर्थ है। ८६ विरचि नारायण जिन्हे सूर्य कहा जाता है वह एक दिन वाराणसी तीर्थ मे आए। ८७ घूमते-घूमते उनका मन प्रसन्न हो

अळंकार भूषण काखरे कुम्भ घेनि ।पाणि आणिला बेळे देखिले तांकु मुनि १७
ताकु देखि जति जे अळप देइ हसि ।पाप ग्रह प्रकाशिला जतिर देहेँ आसि १८
मदन विह्वळे चित्त धारण न जाइ । कामज्वाळारे जति होइले पुण बाइ १९
धइर्ज्यपण छाड़ि जति आस्थानु उठिला ।
शुण्ढि आणी आसन्तेण जाइण ओळगिला ५२०
तु जे कुळ भुआसुणी जीवन मोर रख । मदन ज्वाळारे मुँ जे होइलि निरेख ५२१
तोते देखिण मुँ जे मनरे स्थिर नोहि ।
पञ्चभुत आत्मा मोर तोर तहिँ रहि २२
शुणिण शुण्ढि आणी जे होइला आश्चर्ज्य । बोइला तपी तुम्भे न हुअ अधइर्ज्य २३
तुम्भेत ब्रह्ममुनि मुहिँ जातिरे हीन । ए छार कथा कुत बळे तुम्भर मन २४
ऋषि बोइले मुँ जे होइलि कामे बाइ । तोर रूप देखि चित्त धरण न जाइ २५
कर मोते अनुग्रह नकर निराश । मोहर मुखरे तु चुम्बन देइ तोष २६
हसिण पुणि आणि बोइला जति शुण । दिवसरे केमन्ते करिब विड़म्बण २७
ए तुम्भ बोल जे भांगि बाकु नाहिँ । सुरति देबि बेळ काळ जे जाणि मुहिँ २८
एकेत दिबस जे पुणि नदी कूळ । अनेक लोक एथिरे होइ छन्ति मेळ २९
घरे मोर शाशु जे नणन्द छन्ति एबे । मुहिँ जे सुन्दरी अटइ जेणु भावे ५३०

दिव्यवस्त्र पहने थी । १६ अलकार आभूषणो से अलंकृत काँख मे घड़ा लेकर पानी लेने आती हुयी मुनि ने उसे देखा । १७ उसे देखकर तपस्वी थोड़ा हँस दिया । उसके शरीर मे पापगृह आकर प्रविष्ट हो गया । १८ काम से पीडित चित्त को वह साध नही पा रहा था । वह तपस्वी काम की ज्वाला से पागल हो गया । १९ चंचल होकर तपस्वी स्थान से उठा और आती हुई कलवार कन्या को आगे जाकर रोका । ५२० उसने कहा कि तुम कुल की नवविवाहिता हो । मेरे जीवन की रक्षा करो । मै काम की अग्नि से व्याकुल हो गया हूँ । ५२१ तुझे देखकर मेरा मन स्थिर नही हो पा रहा, मेरी पचभूत आत्मा तेरे पास ही रहती है । २२ यह सुनकर वह आश्चर्यचकित होकर बोली हे तपस्वी ! आप धैर्य न खोये । २३ आप ब्रह्मर्षि है और मै हीन जाति वाली हूँ । इस तुच्छ बात के लिये आपका मन चल गया है । २४ ऋषि ने कहा मै काम से पागल हो गया हूँ ! तेरे रूप को देखकर मेरा मन स्थिर नही रह पाता । २५ मुझे निराश न करके मुझ पर कृपा करो । तुम मुझे मुख का चुम्बन देकर सतुष्ट करो । २६ उसने हँसते हुये कहा हे ऋषि ! सुनिये । दिन में यह हास्यास्पद कार्य कैसे होगा । २७ आपकी यह बात मै तोड़ नही सकती समय देखकर मै तुम्हे रतिदान प्रदान करूँगी । २८ एक तो यह दिन है और फिर नदी का किनारा । यहाँ पर बहुत से लोग इकट्ठे हैं । २९ अभी मेरे घर मे सास तथा ननद है और फिर मै

से पुर वेढिण जे तीर्थमान रहि । तेणु वाराणसी जीवन्ता तीर्थ होइ ३
सबु काळे ईश्वर छन्ति रहिण एथि । तेणु से ए पुर नाम बोलाए जे काशी ४
पूर्वे देइ थिले भोग ए जन्मे से पाइ । न देइ थिले लिंग पूजा जे न पाइ ५
ब्रह्मलिंग होइण जे कल्पेक जाए थाइ । तेते समय गले पूजा विधि पाइ ६
मृत्यु हेला बेळे जेबे ईश्वर न कहे ज्ञान । से पापर कारेणि विश्वनाथ जाण ७
विष्णुर आगे ईश्वर अछन्ति सत्य करि । से कथाकु निश्चय करन्ति शूळधारी ८
एकव्रत एक द्विज ब्रह्मचारि जात । काया धारणा से जे फळइ जत सत ९
पय पानरे सन्तोष तांकर निज काये ।ब्रह्मकुळे थाइण देवता पूजे अस्त जाए ५१०
दिन शेष हुअन्तेण आसइ निज वास । निशारे उजागर कन्दमूळ ग्रास ५११
दिनेक नदी कूळरे जतिए पुण आसि । एकान्त होइण से स्नान करे बसि १२
स्नान विधि सारिण रुद्र पूजा करि । क्षणे चक्षु बुजिण क्षणे चाहेँ फेरि १३
शुण्ढि आणी बोहु जे गला पाणि आणि । रूप गुणे सुन्दर जगत पारे जिणि १४
निति सुन्दरी स्नान करइ नदी जळे । तेणु तार तनु जे अटइ निरिमळे १५
विशेषे बेपारी जन सेहु अटे पुणि । पिन्धि थाइ सुन्दरी जे देवांग पतनि १६

जाते है । ५००-५०१-२ इस नगर को अनेक तीर्थो ने घेर रखा है। इसलिए वाराणसी जीवित तीर्थ हो गया है । ३ शकर हर समय यहाँ विराजमान रहते है। इसलिए इस नगर को काशी नाम से जाना जाता है । ४ पूर्वजन्म में भोग दान देने से वह इस जन्म मे मिलता है, और नही देने से लिग पूजा का सुयोग प्राप्त नही होता । ५ जो ब्रह्मलिग की स्थापना करके एक कल्प तक रह जाता है। उतना समय गत होने पर पूजा-विधि को प्राप्त करता है। ६ यदि मृत्यु के समय शकरजी ज्ञान कथन नही करते उस पाप के भागी विश्वनाथ को समझो। ७ विष्णु के आगे शकर ने प्रतिज्ञा की है। इसलिये उस बात को त्रिशूलधारी शकरजी अवश्य ही करते है । ८ एक ब्रह्मचारी ब्राह्मण व्रत करके शरीर धारण के लिये थोडा बहुत खा लेता था। वह दूध पीकर अपनी काया को सतुष्ट करता था। ब्रह्मकुल मे होते हुये वह जाकर देवता की पूजा संध्या तक करता था । ९-५१० दिन समाप्त होते-होते वह अपने घर आ जाता था, और रात्रि मे जागरण करके कन्दमूल का भोजन करता था। ५११ एक दिन यति सरिता तट पर आकर एकात मे स्नान करने के लिये बैठ गया । १२ वह स्नान करके शिव की पूजा करता था। कभी किसी क्षण वह नेत्र बन्द कर लेता था और कभी नेत्र खोलकर ताकता था। १३ एक कलवार महिला पानी भरने के लिये गई। वह अपने रूप-गुण तथा सौन्दर्य मे ससार को जीतने वाली थी । १४ सुन्दरी नित्य नदी के जल मे स्नान करती थी। इसलिये उसका शरीर निर्मल था। १५ विशेष तौर से वह भी व्यापार वाली थी। वह अपने शरीर पर

एथु अनन्तरे से नारी नायक । सुरा जाक नेइण सम्पादे भाण्डक ४६
जेबण भाण्डरे जे जति पशि थिला ।तुछा भाण्ड बोलिण मदिरा पूराइला ४७
से जति भयरे जे न कहिले कथा । सुरा पूरान्ते मुनि मनरे पाए व्यथा ४८
दश द्वार सहिते जतिर बुडिगला । तेणु ब्रह्मचारिकिषोळ विश्वा हेला ४९
निश्वास बन्दी हेबारु गला तार प्राण । जाणिण शूळ पाणि बिजय तत्क्षण ५५०
त्रिलोचन चाहुँन्ते सुरा भाण्ड जळिगला ।
तेणु जति कर्णे राम तारक मन्त्र देला ५५१
पार्वती शयन जे करिथिले पुण । चेता पाइण न देखिण त्रिलोचन ५२
स्वामींकी न देखि देवी बिकळ मन हेले ।
एहि क्षणि थिले से जे प्रभु काहिँ गले ५३
जोगेण जाणिण से स्थाने मिळिले जाइ ।पञ्चानन आसन्ते देखिले देवी तहिँ ५४
पार्वती कर धरि बाहुडिले शूळ पाणि । तुम्भे किम्पा अइल हेमबन्तर दुळणी ५५
पार्वती बोइले देव तुम्भंकु न देखि मुहिँ। जोग बळे जाणिण अइलि देव तहिँ ५६
बाटे जान्ते हर बोले शुण गो गउरी । तपीजणे जाइ थिला परदारा करि ५७
शुण्ढिकि देखि लुचिला सुराभाण्डे जाइ । न जाणि सुरा भाण्डरे पुराइला सेहि ५८
लग्नरे महा जति छाडिला सेठि प्राण।आम्भे राम तारक मन्त्र शुणाइलुँ ता कर्ण ५९

पश्चात् उस स्त्री का स्वामी सुरा को लेकर एक पात्र में भरने लगा। ४६ जिस भाण्ड मे वह यति घुसा हुआ था। उसे रिक्त पात्र समझकर उसमें मदिरा भर दी। ४७ भयभीत होकर उस ऋषि ने कुछ नही कहा। मद भरने से मुनि का मन व्यथित हो गया। ४८ मद भर जाने से मुनि का सारा शरीर डूब गया। इसलिये दम घुटने लगा। ४९ श्वास प्रक्रिया बन्द हो जाने के कारण उसके प्राण छूट गये। यह जानकर शूलपाणि शंकर जी वहाँ उसी समय आ पहुँचे। ५५० त्रिलोचन शिव जी के देखते ही मद-भाण्ड जल गया तब यति के कान में उन्होने रामतारक मंत्र दिया। ५५१ पार्वती शयन कर रही थी। चैतन्यता प्राप्त करने पर उन्होने शिवजी को नही देखा। ५२ स्वामी को न देखकर देवी का मन व्यग्र हो उठा और वह बोली कि अभी तो मेरे स्वामी यही थे कहाँ चले गये। ५३ योगेश्वर यह जानकर उस स्थान पर जा पहुँचे। देवी पार्वती ने वहाँ पंचमुख शिव को आते देखा। ५४ त्रिशूलधारी पार्वती का हाथ पकड़कर लौट पड़े और उन्होंने कहा कि हे हिमांचल की कन्या ! तुम किसलिये आयी हो। ५५ पार्वती ने कहा हे देव ! आपको न देखकर मैं योगवल से जानकर यहाँ आ गई। ५६ मार्ग मे जाते-जाते शंकर ने कहा हे पार्वती ! सुनो। एक तपस्वी पराई करने के लिये गया था। ५७ वह कलवार को देखकर छिप गया। उसने विना जाने सुराभाण्ड को भर दिया। ५८ श्रेष्ठ ऋषि के प्राण छूट , न

तेणु करि मोते जे समस्ते जगे फेरि । स्वभावे मुहिँ आसि न पारे निशि घेरि ५३१
कालि आसन्ता हेब पूर्णिमा जे तिथि । चन्द्रग्रहण हेब कालि पूर्णमा राति ३२
से दिन निशिरे नदीकि लोक जिबे । स्नान शउच सारिण ब्राह्मणे दान देबे ३३
मुहिँ एका होइ घरे थिवि हो तपचारी । समग्र जाणि बेगे जिब हो अनुसरि ३४
ए वचन ऋषिकि कहिला शुण्ढि आणी । आर दिन पूर्णमी होइला बेळ जाणि ३५
दिन सरि बेळ बुडिण हेला रत निशि ।
पाञ्च घडि रजनीरे चन्द्रकु राहु ग्रासि ३६
जति जे सुरति रसरे अशकत । एहि समग्ररे ग्रहण छाडिले चन्द्रंकुत ३७
नदीकि स्नान करिण जहुँ सर्वे गले । घरके जणे जणे मात्रक रहिले ३८
एसन समग्ररे बिचारे तपचारी । प्रवेश हेले पुणि द्वारे जाइँ करि ३९
नाना कउतुक हस रस भावरे । शुण्ढि आणी मन जे मोहिले मुनिबरे ५४०
एहि समयरे आसे ताहार पुरुष । शते भार सुरा जे घेनिण परवेश ५४१
निजपुर मिळन्ते जाणिला तार नारी ।बोइला सुरा हाण्डिरे लुच हो तपचारी ४२
एते कहि जतिकि सुरा भाण्डे से लुचाइ। तुछा सुरा भाण्ड जे भितरेण थोइ ४३
स्नान करिण माता भउणी जाइ थिले । माता झिअ आसि जे प्रवेश होइले ४४
गहळरे घर पूरिले सर्वजन । से बेनि जनंकर बिकळित मन ४५

ऐसी सुदर हूँ । ५३० इसलिये सभी लोग मेरी निगरानी रखते है । रात्रि होने पर मै सहज रूप से आ नही पाती । ५३१ कल पूर्णिमा तिथि होगी और कल पूर्णिमा की रात्रि मे चन्द्रग्रहण होगा । ३२ उस दिन रात्रि मे लोग नदी मे जायेगे । स्नान शौचादि से निवृत होकर ब्राह्मणो को दान देंगे । ३३ हे तपस्वी । मै घर में अकेली रहूँगी । समय को जानकर आप पीछे आ जाना । ३४ उसने ऋषि से यह वात कही । अगले दिन पूर्णमासी पड़ी । ३५ दिन समाप्त होने पर सूर्यास्त हो गया और रात्रि हो गई । पाँच घडी रात्रि मे राहु ने चन्द्रमा को ग्रस लिया । ३६ वह ऋषि रति प्रसंग से असक्त हो गये थे । इसी समय चन्द्रमा से ग्रहण मोचन हो गया । ३७ सभी लोग नदी मे स्नान करने के लिये गये और घरो मे केवल एक-एक आदमी रह गया । ३८ ऐसे समय मे तपस्वी ने विचार किया और द्वार पर जाकर प्रविष्ट हो गया । ३९ मुनि श्रेष्ठ ने नाना प्रकार के हास्य विनोदपूर्ण भावो से उस कलवार स्त्री का मन मोहित कर लिया । ५४० इसी समय उसका पति आ गया । वह सौ भार सुरा लेकर प्रविष्ट हुआ । ५४१ अपने घर मे आने पर उसकी स्त्री समझ गई । उसने तपस्वी से मद-भाण्ड मे छिप जाने को कहा । ४२ इतना कहकर के ऋषि को मद पात्र मे छिपाकर उस मदपात्र को भीतर रख दिया । ४३ उसकी माता तथा बहन स्नान करने गयी थी तभी माँ बेटी वहाँ आ पहुँची । ४४ जब सभी लोगो का घर में भड़भड़ मच गया तब उन दोनो का मन व्याकुल हो उठा । ४५ इसके

शुणिण अश्व पिठिरे राजन बिजे कला । आगरे भगीरथ पछरे गंगा तोरा ७४
जहिँरे विश्रामे गंगा तहिँरे तीर्थ होइ । केउँ ठारे देवी जे हरषे चळि जाइ ७५
आनन्दे गंगा भागीरथ पछरे बहि जाइ । काळदूत माने सर्बे ओगाळिले तहिँ ७६
गंगा बोइले तुम्भे माने किम्पाइ निरोध । मणिकर्णिका जे अटइ तीर्थ राज ७७
तांकु देखि आम्भे जिबुँ पुणि थरे । शुणिण बोइले काळ जे महाकाळे ७८
पुण्य तीर्थ जे अटइ पाञ्च जुण । तुम्भे एथिरे गले पाइब दोष पुण ७९
गंगा बोइले आम्भे जे धीर होइ जिबुँ । जेते दिन बहिबुँ अमोक्ष न करिबुं ५८०
त्रिबार सत्य करि कहिले गंगा पुण । छाड़ि देले बाट से जे गंगा गले पुण ५८१
जहिँ गंगा रहे अश्वमेध जागफळ पुण । केउँ ठारे तांकर महिमा अटे धन्य ८२
धीरे धवळांगी करन्ति जे गमन । मणिकर्णिका संगरे मिळिले जाइ पुण ८३
मणिकर्णिका देखिण बेगे कले कोळ । मेळ हेबारु पुच्छिले कुशळ सकळ ८४
गंगा बोइले मणिकर्णिकाकु चाहिँ । महासुखरे थाअ गो सुलक्षणी होइ ८५
वार बरषरे थरे आसिब देखि तोते । मत्सश्वरी बोलिण होइला तोर तीर्थे ८६
जे अबा झासदेइ एठारे दान देइ । स्वर्गरे बसिब से जन्म तार नाहिँ ८७
रहिण तिनि दिन पुण गले चळि । चन्द्रावती कटक नग्ररे जाइँ मिळि ८८

सुनकर राजा घोडे की पीठ पर सवार हो गये । आगे-आगे भगीरथ और पीछे गगा शोभा पा रही थी । ७४ गगा जहाँ पर विश्राम करती थी । वहाँ तीर्थ बन जाता था । कही पर गगादेवी प्रसन्नतापूर्वक चलीं जाती और कही वह आनन्द से भगीरथ के पीछे बहती चली आती थी । वहाँ पर सभी कालदूतों ने आगे से उन्हे रोका । ७५-७६ गगा ने कहा कि तुम लोग क्यों रोक रहे हो । मणि-कर्णिका तो तीर्थराज है । ७७ हम उसके एक बार दर्शन करके चले जायेगे यह सुनकर काल ने महाकाल से कहा । ७८ पाँच योजन तक पुण्यतीर्थ है । यहाँ से जाने पर तुम्हें पाप लगेगा । ७९ गगा ने कहा हम यहाँ स्थिर हो जायेगी जितने दिन बहेगी । इसका त्याग नही करेगी । ५८० यह बात गंगा ने प्रण करते हुये तीन वार कही तब उन्होने मार्ग छोड़ दिया और गंगा चल पड़ी । ५८१ जहाँ पर गगा रुकी । वहाँ अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है । कही-कही उनकी महिमा धन्य है । ८२ धवल अगवाली गंगा धीरभाव से गमन करने लगी और मणिकर्णिका के साथ जाकर मिली । ८३ मणिकर्णिका ने उसे देखकर गोद मे ले लिया और मिलने पर सारे कुशल समाचार पूंछे । ८४ गगा ने मणि-कर्णिका की ओर देखते हुये कहा हे शुभ लक्षणों वाली ! तुम महान सुखपूर्वक स्थित रहो । ८५ तुझे देखने बारह वर्ष में एक बार आना होगा । तुम्हारा तीर्थ मत्सेश्वरी नाम से विख्यात् होगा । ८६ जो कोई दान देकर यहाँ छलाँग लगायेगा । वह स्वर्ग मे निवास पायेगा और उसका जन्म नही होगा । ८७ वह तीन दिन वहाँ रहकर चन्द्रावती दुर्ग के नगर में जा पहुँची । ८८ वहाँ से

तेणु ताहार मानव शरीर जे गला।
लिंग गोटिए होइ सुरा भाण्डरे रहिला ५६०
शुणिण सन्तोष जे होइले पार्वती। करताळि मारिण हसिले पाशुपति ५६१
जेणु से शंकर गलेक मन्त्र देइ। तेणु सुरालिंग जति से बोलइ ६२
एहि काशीपुरे मले अवश्य लिंग हुए। पूर्वे होइथिबालोक सेथिरे पूजा पाए ६३
जम देवता जमेश्वर लिंग पूजा करि। से लिंग दर्शन कले न जाए जमपुरि ६४
कुबेर आसि पूजे केदारेश्वर जाण। सुरराजा पूजिले सुरसेन लिंग पुण ६५
कार्त्तिकेश्वर जे आबर गणपति। काशीनय पुअंक संगे खेळ निति ६६
एसन प्रकारे एथिरे देव हर। महा भइरवी जे रखन्ति सिंहद्वार ६७
दण्ड हस्ते घेनिण बुलन्ति नग्रपुर। पापकले स्वर्गरु आसि नेबे सुर ६८
बिष्णुदेव ए पुर जतने निर्मा कला। अति हरषरे से शिवंकु नेइ देला ६९
एहि से धर्म क्षेत्र जे अटइ पवित्र। एथिरे थिलालोक समस्ते होन्ति मुक्त ५७०
भागीरथंक मुखरु गंगादेवी एहा शुणि। हरष होइले जे वरुण पाटराणी ५७१
गंगा बोइले राजन कथाए मोते कर।
मणिकर्णिका देखिबाकु शरधा अछि मोर ७२
बाट कढ़ाअ राजन तेणे जिवि पुण। देखिबाकु इच्छा मोर पार्वती ईशान ७३

में रामतारक मत्र सुना दिया। ५९ इसलिए उसका मानव शरीर चला गया। केवल वह एक लिगरूप धारण कर सुराभाण्ड में रह गया। ५६० यह सुनकर पार्वती संतुष्ट हो गयी और पशुपति शिव ताली बजाकर हँसने लगे। ५६१ जब शकर मत्र देकर चले गये तब सुरालिग यति ने कहा। ६२ इस काशीनगर में मरने से अवश्य ही प्राणी शिव स्वरूप हो जाता है और पहले से वहाँ रहने वाला व्यक्ति पूजा पाता है। ६३ यमराज यमेश्वर लिंग की पूजा करते है। उस शिवलिंग के दर्शन करने पर व्यक्ति यमलोक को नही जाता। ६४ कुबेर आकर केदारेश्वर की पूजा करते है। देवराज इन्द्र ने सूरसेन शिवलिग की पूजा की। ६५ कार्तिकेय तथा गणेश नित्य काशीनगर के बालको के साथ खेलते है। ६६ इस प्रकार यहाँ महादेव जी रहते है। महाभैरवी सिंहद्वार की रक्षा करती है। ६७ वह हाथ मे दण्ड लेकर सम्पूर्ण नगर मे घूमती है। पाप करने पर भी स्वर्ग से आकर देवता ले जाते है। ६८ भगवान विष्णु की यत्नपूर्वक देख रेख में यह नगर था। उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न होकर इसे शिव को समर्पित कर दिया। ६९ यह धर्मक्षेत्र पवित्र है। यहाँ के रहने वाले सभी लोग मुक्त हो जाते है। ५७० भगीरथ के मुख से ऐसा सुनकर वरुणदेव की पटरानी गंगा देवी प्रसन्न हो गयी। ५७१ गंगा ने कहा हे राजन्! मेरे लिये एक बात मानो। मेरी इच्छा मणिकर्णिका देखने की है। ७२ हे राजन्! मार्ग दिखाओ। मै वहाँ चलूंगी। पार्वती तथा शंकर जी के दर्शन करने की मेरी इच्छा है। ७३ यह

देवी बोइलेक जाणुइ केणे जाइ। तु राजा जाउ छुकि काहाळी बजाइ ४
तेबे जे जिबि मुँ रे तोहरि संगे संगे। एसनक वचन कहिले देवी गंगे ५
शुणिण भगीरथ जोड़िले बेनि कर। तुम्भर आज्ञा मुँ जे पाळिबि निकर ६
एते बोलिण राज्य काहाळी अणाइला। आगरे राजन जे बजाइ चळे धीरा ७
काहाळि शबदरे चळे सुरासुरि। आगरे भगीरथ पछरे देवी चळि ८
काहाळि बजाइण आणिले जेउँ ठारु।
काहाळिआ गंगा नाम बोलाइ सेहि ठारु ९
सान धार होइ जेउँ गोटिक रहिला। तार नाम गोटि भइरबी बोलाइला ६१०
भगीरथ बोइले शुणिबा महामायी। आगे जाइ से स्थान मुँ देखिण आसइ ६११
एहि ठारे मागो क्षणेक तुमे थाअसि। मोहर राण तोते केणे न जिबुटि १२
सत्य कराइण नृपति छाडि गले। ठाब करिबा स्थानरे जाइण मिळिले १३
आगे लोक जगाइ थिले से बिबर। सन्तक पाइण से बाहुडि व्यग्रर १४
देखिले धबळांगी बिस्मय मुख होइ। सेठारु सपत धारा होइण बोहि जाइ १५
सपत भइरबी तेणु से बोलाइला। सुर नर मुनि तांकु सेबिबाकु त्वरा १६
देखिण नृपति जे होइला चकित। केवण कारण मात कलु अनियमत १७
गंगा बोइले मुँ जे अटइ जुबती। स्वभावे स्तिरींकर चञ्चळ प्रकृति १८

इससे मेरा क्या प्रयोजन, इस समय लौटकर मुझे उलझन मे मत डालो। ३ देवी ने कहा मुझे क्या पता कि किधर जाना है। हे राजा ! क्या तुम तुरही बजाकर चल रहे हो। ४ देवी गंगा ने कहा कि जब तुम तुरही बजाकर चलोगे। तभी मै तुम्हारे साथ-साथ चलूँगी। ५ यह सुनकर भगीरथ ने दोनों हाथ जोड़ लिये और कहा कि मै आपकी आज्ञा पालन करूँगा। ६ ऐसा कहकर राजा ने तुरही मँगायी और वह आगे-आगे तुरही बजाते हुये धैर्य के साथ चल दिये। ७ गगा भगीरथ के पीछे तूर्यनाद के साथ चल रही थी। ८ जहाँ तक वह तुरही बजाकर गंगा को लाये थे। वहाँ उसका नाम काहालिया गगा (तूर्य गगा) पड़ा। ९ एक छोटी सी धारा जो वहाँ रह गई उसका नाम भैरवी विख्यात् हुआ। ६१० भगीरथ ने कहा हे महामाया ! सुनो। मै आगे जाकर वह स्थान देख आऊँ। ६११ हे माँ ! तुम यहाँ एक क्षण के लिये ठहरो तुम्हे मेरी सौगन्ध है। कही भी मत जाना। १२ प्रतिज्ञा करवाकर राजा उन्हे छोड़कर चले और लक्ष्य के स्थान पर जा पहुँचे। १३ उन्होने पहले ही उस विवर पर आदमी लगा रखे थे। सन्धान पाकर वह शीघ्र ही लौट आये। १४ उन्होने विस्मित होकर देखा कि वहाँ से शुभ्र वर्णवाली गंगा सात धाराओ मे बह रही है। १५ इसलिये उसे सप्तभैरवी कहा गया। सुर, नर, मुनि उसकी सेवा के लिये तत्पर थे। १६ यह देखकर राजा चकित होकर बोले हे माता ! किस कारण से आपने यह अनीति की है। १७ गंगा ने कहा कि मै युवा स्त्री हूँ। स्त्रियो की स्वाभाविक

उत्तरकु मुख करि देवी चळि गले ।उत्तराङ्गी धवळांगी बोलिण बोलाइले ८९
सेठारु पूर्व मुख होइण चळिजाइ । वाराणसी चारि पाख देखिलेक तहिँ ५९०
काशी क्षेत्रकु पुण तेजिले सुरासुरि ।धनुर आकार से दिशिला तिनि पुरि ५९१
गंगा देवी से तीर्थरे दिशे धनुकर्ण । मणिकर्णिका जे बोलाए काण्ड पुण ९२
गंगा धनु ईश्वर धइले हस्ते पुण । मणिकर्णिका शर सेथिरे वसाइण ९३
पाप म्लान ध्वंसन करन्ति त्रिपुरारि ।सुरासुरि धनु करि पिनाकी देले तारि ९४
एथु अनन्तरे शुण हे रघुनाथ । गउड़ देशे प्रवेश होइले गंगा श्वेत ९५
सिन्धु घोष देवी कर्णरे शुणिला । राजा अदृश्य होन्ते देवी एणे जेणे गला ९६
काउँरी देशरे देवी हेले परवेश । उत्तर वाहिनी होइ चळिले हरष ९७
थोकाए दूरे राजा लेउटिण चाहिँ । गगा न देखि भगीरथ गले धाइँ ९८
देवींकि न देखिण बाहुडि धाति कारे । देखिले उत्तर दिगे जाउछि गंगा खरे ९९
अश्व धुआँइण जे नृपति बेगे गला । आगरे ओगाळिण अनेक स्तुति कला ६००
भो मात सुरासरि एणे नुहे बाट । किम्पाइ मात मोरे देउछि एते कष्ट ६०१
जेते कष्टे आणिलि तुहित पुण जाणु । बाळुतंक प्राय होइ एणे तेणे गमु २
एणे मोर कार्ज्य नाहिँ शुण गो धवळांगी ।
एबे बाहुड़ि जननी मोते न करधन्दी ३

उत्तराभिमुख होकर बहने से धवलाँगी उत्तरवाहिनी गंगा कही जाने लगी । ८९ फिर वहाँ से वह पूर्वाभिमुख होकर चल पड़ी और उसने चारो ओर से वाराणसी को देखा । ५९० फिर काशी का त्याग करने पर गंगा तीनो लोको को धनुष के आकार की दिखाई पड़ने लगी । ५९१ गंगा देवी इस तीर्थ में खिचे हुये धनुप के समान दिखाई देती है और मणिकर्णिका को वाण कहा जाता है । ९२ शंकर गंगारूपी धनुष को हाथो में धारण करके उस पर मणिकर्णिका रूपी वाण चढ़ाकर पापो का विनाश करते है और इस प्रकार पिनाक धनुप को धारण करने वाले त्रिपुरासुर के शत्रु गगा का धनुष लेकर उद्धार कर देते है। ९३-९४ हे रघुनाथ ! सुनो। इसके पश्चात् धवलागी गंगा गौड़ देश में प्रविष्ट हुई । ९५ वहाँ पर देवी ने कानो से समुद्र का गर्जन सुना । राजा के अदृश्य हो जाने पर देवी इधर उधर चलकर भटक गयी । ९६ काँवरी देश मे पहुँचकर गगा प्रसन्नता से उत्तरावाहिनी होकर बहने लगी । ९७ थोड़ी दूर जाने पर राजा भगीरथ ने पलटकर देखा। गगा को न देखकर वह दौड़कर आ गये। ९८ देवी को न देखकर उन्होने शीघ्रता से लौटकर गंगा को उत्तर दिशा मे जाते हुये देखा। राजा शीघ्र ही घोड़ा दौड़ाकर आगे जा पहुँचे और उनके समक्ष नाना प्रकार से स्तुति करने लगे। ९९-६०० हे मा गगे ! उधर मार्ग नही है। हे मा ! आप मुझे इतना कष्ट क्यो दे रही है। ६०१ मैं कितने कष्ट मे लाया हूँ। यह तुम जानती हो। वच्चो की भाँति तुम इधर उधर जा रही हो। २ हे धवल अगवाली जननी !

सबु दिने परमाण आग कथा आगे। पछर कथा नृपति पछे कर एबे ३३
भगीरथ बोले जेबे होइलु परसन्न। सत्य करि चळ मात नकर द्वन्द्व पुण ३४
धवळांगी बोइले बाबु सत्य परिमाण। सात दिने सात जे सागर पूराइण ३५
आठ दिने तोर पाशे होइबि परबेश।
तोर पाशे न मिळिले पिता चरणे हारइत ३६
एते कहि धवळांगी सातधारे गला। सपत दिने सपत सागर पूरेइला ३७
आठ दिने भगीरथ निकटे आसि मिळि। देखिण भगीरथ आनन्द मने भाळि ३८
धवळांगी बोले तो पितृ केउँ ठारे ठुळ। से स्थानकु आगे बाट कढ़ाअ नृपवर ३९
शुणिण नृपवर आगरे बेगे चळि। राजांकर पछरे चळिले सुरासुरि ६४०
जेबण ठारे गंगा राजांकु रखि गला।
केणिकि न जिबु बोलि नियम कराइला ६४१
तार नाम गोटि हेला अतुट जे घाट।से स्थाने स्नान कले दिशइ स्वर्ग बाट ४२
भगीरथ नथिवा बेळे अइले सुर देव। शचींकि घेनिण जे स्नान कले बेग ४३
देखिण सुरासुरि शचींकि कोळकले। तेणु इन्द्राय़णी गंगारे भक्त हेले ४४
शची देबी बोइले गंगा घेन मोर सेवा। प्रसन्न होइण मोते कथाए वर देवा ४५
ए स्थानरे तुम्भर मोहर हेला भेट। ए स्थानर नाम हेउ गंगा इन्द्राय़णी घाट ४६

है। हे राजन्! पीछे की बात अब पीछे करना। ३३ भगीरथ ने कहा जब आप प्रसन्न हो गई है तो हे माता! आप प्रतिज्ञानुसार चले और द्वन्द्व न करे। ३४ शुभ्रांगी गगा ने कहा हे वत्स! प्रतिज्ञानुसार सात दिनो मे सात समुद्र भरकर आठवे दिन तेरे पास आ जाऊँगी। तेरे पास न आऊँ तो पितृ चरणो की सौगन्ध। ३५-३६ इतना कहकर गगा सात धाराओ में चल पड़ी तथा सात दिनो में सात समुद्र भर दिये। ३७ आठवे दिन वह भगीरथ के निकट आ पहुँची। यह देखकर भगीरथ प्रसन्नता से विचार करने लगे। ३८ गगा बोली, हे नृपश्रेष्ठ! तुम्हारे पितृगण कहाँ एकत्रित है? तुम आगे-आगे उस स्थान का मार्ग दिखाओ। ३९ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा आगे शीघ्र ही चल पड़े और गंगा राजा के पीछे चल दी। ६४० जिस स्थान पर गगा राजा को कही भी न जाने की प्रतिज्ञा कराकर गई थी, उसका नाम अक्षय-घाट पड़ा। उस स्थान पर स्नान करने पर स्वर्गपथ दिखाई पड़ता है। ६४१-४२ भगीरथ की अनुपस्थिति के समय देवराज इन्द्र शची देवी को लेकर आए और उन्होने शीघ्र ही (वहाँ) स्नान कर लिया। ४३ यह देखकर देवसरि गगा ने शची का आलिगन किया। इससे वह गगा की भक्त बन गई। ४४ देवी शची ने कहा हे गंगा मेरी सेवा को स्वीकार करो तथा प्रसन्न होकर मुझे एक वर प्रदान करो। ४५ इस स्थान पर तुम्हारी मुझसे भेट हुई है अस्तु इस स्थान का नाम गगा इन्द्राणीघाट हो। ४६ गंगा ने संतुष्ट होकर स्वीकृति प्रदान की। फिर इन्द्र शचीदेवी को

एक ठाव होइ स्तिरी न पारइ रहि। तेणु सपतांगरे मो मन वळइ १९
आग कथा न बिचारि पछकथा भाळु।
आपणा बंश कीर्त्ति जे किम्पाइ पाशोरु ६२०
भगीरथ बोइले किस मुहिँ छाड़ि।आग कथा न विचारि पछ कथा भाळि ६२१
धबळांगी बोइले शुण हे राजन। जेते बेळे बिहि तांकु कलाक रचन २२
सातपुर करिण पृथ्वीकि भिआइला। एकपुर गोटि करे सात द्वीप कला २३
नवखण्ड मेदिनी जे चउद भुवन।सात गोटि सागर जे कलाक भिआण २४
सागर सात हुड़ारे सातपुर करि। सपत सागरे वरुण दण्डधारी २५
मर्त्यपुर सपत सागरकु पुण। अगस्ति पिइ देले मन्त्रवळरे जाण २६
तेणु से सपत सागर शुखि पदा। बास्तरी जुग जे होइला उदबुदा २७
तेणु तुम्भ बंशरे सगर नृपति।
अनेक पुत्र थिबारु सागर खोळाएटि २८
सत्य जुगे सात जे सागर खोळाइला। नोहि बारु जाग सेहु कला २९
जाग लक्षणवन्त अश्वकु इन्द्र हरि। कपिळ मुनि पछरे नेइ बान्धि करि ६३०
खोजि आसन्ते पुत्र माने से अश्व देखिले।
चोर बोलि मुनिकि अनेक दण्ड देले ६३१
कपिळ मुनिक शापे होइले दहन। केउँ कथा आगे तोर करिबाकु मन ३२

प्रकृति चचल होती है। १८ स्त्री एक स्थान पर स्थिर नही रह पाती। इसलिए मेरी इच्छा सात रूप धारण करने की हुई। १९ आगे की बात पर विचार न करके तुम पीछे की बात सोच रहे हो। अपने वश की कीर्ति को क्यो भूल रहे हो। ६२० भगीरथ ने कहा कि मैने क्या छोड़ दिया है। जो आगे की बात पर विचार न करके पीछे की सोच रहा हूँ। ६२१ गगा ने कहा हे राजन्! सुनो। जिस समय ब्रह्मा ने उसकी रचना की तो उन्होने सात लोको का निर्माण करके पृथ्वी को उत्पन्न किया और एक लोक मे सात द्वीप बनाये। २२-२३ उन्होने नौ खण्ड पृथ्वी, चौदह भुवन तथा सात समुद्रो का निर्माण किया। २४ सात समुद्रो के बीच मे सात पुर बनाकर सातों समुद्रो का राजा वरुण को कर दिया। २५ मृत्युलोक के सात समुद्रो को अगस्त ने मत्र के बल से पी लिया। २६ इस कारण से लगभग बहत्तर युग हुए सातो समुद्र सूखकर मैदान हो गए। २७ इस कारण से आपके वश मे राजा सगर के अनेक पुत्र होने के कारण उन्होने समुद्र को खुदवाया। २८ उन्होने सतयुग मे सात समुद्र खुदवाये फिर भी कार्य सिद्ध न होने पर उन्होने यज्ञ किया। २९ यज्ञ के लक्षणयुक्त घोड़े को इन्द्र ने अपहरण करके ले जाकर कपिलमुनि के पीछे बाँध दिया। ६३० खोजते हुये पुत्रो ने उस घोडे को देखा। उन्होने चोर समझकर मुनि को बहुत कष्ट दिये। ६३१ वह लोग कपिलमुनि के शाप से भस्म हो गये। आगे तुम्हारी क्या करने की इच्छा है। ३२ आगे की बात आगे यह सदैव से प्रमाणिक बात रही

देखिण देबताए सन्तोष मन हेले । गंगासागरे जाइ स्नान दान देले ६६१
स्नान करि दान देइ गले देवगण ।जे जाहा आस्थानरे मिळिले जाइ पुण ६२
एथु अनन्तरे शुण हे रघुराण । जाणिण मिळिले बरुण आसि पुण ६३
धबळांगी गंगांकु गउरब करि । संगरे घेनि बरुण निज पुरे मिळि ६४
एथु अनन्तरे शुण हे दाशरथि । सगर राजा पुत्रे से स्थाने थिलेटि ६५
गंगा सेठारे मिळि शीतल तांकु कला ।
भगीरथ खोजिबारु गंगा सागर बोलाइला ६६
से स्थानरे हरिहर संकेत रूप होइ । उत्तर अभिमुखे बिजय़ करि तहिँ ६७
चक्र घाटकु हे शतेक धेनु अन्ते । श्रीय़ांकु घेनिण सेथि बिजये अनन्ते ६८
ए गंगा तीर्थ जे पुराणे बखाण ।ए तीर्थे स्नान कले स्वर्गकु जान्ति पुण ६९
गंगाकु जोजनेक छड़ा जे स्वर्ग पुण । प्रय़ाग जे दुइ जुण अटइ प्रमाण ६७०
पुरुषोत्तमकु जुणेक छडा स्वर्ग । सागरकु लागिछि पुरुषोत्तम भाग ६७१
गंगा कूळरे मले मुकत होन्ति प्राणी । निश्चय़ मृत्यु अटे पुराणे बखाणि ७२
बाराणसी पुरे जळ मूळरे मोक्ष ।
जहिँ विजय़ करिण अछन्ति बिश्वनाथ ७३
सागर कूळरे जेहु प्राण हारि ।प्रत्यक्षे मुकुति गति पाआन्ति नरनारी ७४
चन्द्र घाटे जे प्राणी श्वास देइ पुण । अचिन्ता बइकुण्ठरे बसइ सेहु जाण ७५

तथा उन्होने जाकर गंगा-सागर में स्नान तथा दान किया। ६६१ स्नान करके दान देकर देवगण चले गए और अपने-अपने लोको में जा पहुँचे। ६२ हे रघुनाथ! सुनो। इसके पश्चात् वरुण यह जानकर वहाँ आ पहुँचे और शुभ्रांगी गगा को सम्मान करके साथ में लेकर अपने लोक में जा पहुँचे। ६३-६४ हे दशरथनन्दन! सुनो। इसके अनन्तर जिस स्थान पर राजा सगर के पुत्र थे। वहा पर गगा ने जाकर उन्हे शान्त किया तथा भगीरथ के खोजने के कारण वह स्थान गगासागर नाम से विख्यात हुआ। ६५-६६ उस स्थान पर उत्तराभिमुख होकर भगवान विष्णु तथा शिव गुप्तरूप से वास करते है। ६७ चक्रघाट से एक सौ धनुष की दूरी पर श्री के सहित अनन्तदेव वहाँ वास करते है। ६८ इस गंगा तीर्थ का पुराणो में वर्णन मिलता है। इसमें स्नान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ६९ गगा से एक योजन तथा प्रयाग से दो योजन पर स्वर्ग है ऐसा प्रमाण मिलता है। ६७० पुरुषोत्तम क्षेत्र मे एक योजन पर स्वर्ग है। पुरुषोत्तम क्षेत्र का भाग सागर से जुड़ा हुआ है। ६७१ प्राणी गंगा-तट पर मरने से मुक्त हो जाते है। मृत्यु निश्चित है ऐसा पुराणो में वर्णित है। ७२ वाराणसीपुर के जल-मूल में मोक्ष है। जहाँ पर विश्व के स्वामी शिवजी का वास है। ७३ समुद्र के तट पर जिसके प्राण जाते है, वह नर-नारी प्रत्यक्षरूप से गति तथा मुक्ति प्राप्त करते है। ७४ जो कोई चन्द्रघाट में

सन्तोषरे धवळांगी सनमत कले । से तीर्थरु सुर राजा शचींकु घेनि चळे ४७
भगीरथ मिळि बारु गंगांकु नेले वरि । पितृंकर पाशरे मिळिले जाइँ करि ४८
भगीरथ बोइले शुण गो जननी । एहि मोर पितृ दहन ह्वन्ति पुणि ४९
कर तु शीतल पितृ जाआन्तु स्वर्गपुरी ।
शुणि सुरासुरि बोले शुण दण्डधारी ६५०
कला सत्य कले सिना पितृ होइबे मुकत । तु आगरे गले मुँ पछे जिबार निअत ६५१
तु जेबे अनळरे पसिबु राजा आग । तेबे सिना निश्चे मुँ पशिबि तोर सँग ५२
आकाशरे देबताए करन्ति विचार । अश्वकु धुआँइ एबे केवण असुआर ५३
पितामह कहे जार पोड़इ मण्डळ । सेहि रघुबंशे भगीरथ महीपाळ ५४
एहा शुणि देबताए धन्य धन्य कले । ए वंशर शिरोमणि बोलिण प्रशंसिले ५५
एथु अनन्तरे पुण दिलिपर सुत । अनळरे झास देला करिण शुद्ध चित्त ५६
जहुँ से नृपबर अनळे पड़े डेइँ । पछे पछे लागि तारे पशिले महामाय़ी ५७
होइ लेक शीतल सगर राजा पोए । आबर देवता माने धन्य धन्य कहे ५८
स्वदेह घेनिण समस्तंकु घेनि चळिगले । अचिन्ता बइकुण्ठरे जाइण रहिले ५९
से स्थाने भगीरथकु धवळाँगी खोजिबारु पुण ।
चक्र गंगा नामरे बोलाइले जाण ६६०

लेकर उस तीर्थ से चले गए । ४७ भगीरथ ने गगा के मिलने पर उन्हे वरण किया और उन्हे लेकर पितृगणो के पास जा पहुँचे । ४८ भगीरथ ने कहा हे अम्ब ! सुनिए । यही मेरे पितृगण है जो भस्म हो गये है । ४९ आप इन्हे शान्त करे जिससे यह स्वर्ग को चले जाँय । यह सुनकर गगा ने कहा, हे राजन् ! सुनिए । ६५० तुम्हारे द्वारा की गई प्रतिज्ञा का पालन होने से ही तो पितृगण मुक्त होंगे तुम्हारे आगे चलने पर मेरा पीछे चलना निश्चित हुआ था । ६५१ हे राजन् ! जब तुम आगे अग्नि मे प्रवेश करोगे तव मैं भी निश्चित रूप से तुम्हारे साथ ही प्रवेश करूँगी । ५२ आकाश मे देवगण विचार करने लगे कि यह सवार अश्व को अब कैसे दौड़ाएगा । ५३ ब्रह्माजी ने कहा कि जिसका यश इस मण्डल को सन्तप्त कर देता है महीपाल भगीरथ उसी वश के है । ५४ यह सुनकर देवगण धन्य-धन्य करने लगे और वह इस वश के शिरोमणि है ऐसा कहकर वह प्रशसा करने लगे । ५५ इसके पश्चात् दिलीपनन्दन ने शुद्धचित्त होकर आग मे छलाग लगा दी । ५६ जब वह श्रेष्ठ राजा अग्नि में कूद पड़ा तब उनके पीछे-पीछे लगी रहने मे महामातेश्वरी भी प्रवेश कर गई । ५७ राजा सगर की सतान शान्त हो गई । देवगण पुनः धन्य-धन्य कहने लगे । ५८ वे अपनी देह धारण किये हुए सबको लेकर चले गए और जाकर चिन्ताशून्य वैकुण्ठलोक में स्थित हो गए । ५९ भगीरथ को गगा द्वारा खोजे जाने के कारण उस स्थान का नाम चक्रगगा विख्यात् हो गया । ६६० यह देखकर देवताओ के मन संतुष्ट हो गए

भगीरथंकर जे लक्षे महा देई। बड़पाट इन्द्रंकर दुहिता अटइ ६९०
जेउँ दिन भगीरथ गंगा आणि गले। बाप जिबा बेनि मासे पुत्र जन्म हेले ६९१
बार बरष सेथिरे बहिगला पुण। भगीरथ न फेरिले निज राज्य स्थान ९२
राजार जिबार परजा मन्त्री भाळि। से पुत्रकु जुबराज कले सेबि ९३
सुदर्शन चक्रवर्त्ती से पुत्रर नाम। एथिरे केते बरष बहिगला पुण ९४
पिता स्वर्ग जिबारु शुणिण राजा हेला। देखिण सन्तोष समस्त हेला धरा ९५
देबंकर दुहिता जे ऋषिक कुमारी। राजांकर जेमा जे ब्रह्मांकर नारी ९६
ए माने बेश होइ बृद्ध परजा नारी घेनि। गंगा सागरे झास देलेक जाइ पुणि ९७
भगीरथ संगरे प्रवेश जाइ हेले। अचिन्ता बैकुण्ठरे निश्चिन्ते रहिले ९८
श्रीराम शुणिण जे सन्तोष मन हेले। गंगारे स्नान जे बेनि भाइ कले ९९
धन्य धन्य धबलांगो नदी स्वरूप। जेउँ ठारे देखिब व्यापिछि तोर रूप ७००
मध्यरे शुक्लवर्ण बेनि पाशे नीळ। ए रूपे तिनि रूप बहिण सधीर ७०१
लहरी रत्न जाळ पराये दिशुछि। जे सने रत्न मेघि अमळाण पिन्धेकाछि २
धबळांगी बेनि तटे बालि सुबर्ण प्रभा। पुष्प बुणिला प्राये जळ दिशे शोभा ३
पबनकु से जे शोभित गुरुतर। नेतर पराये पणन्त रहे फरहर ४
साधु से धबळांगी धबळ लक्षे नेत्र। सेथिरे स्नान जाइ कलेक रघुनाथ ५

उनमे इन्द्र की पुत्री बडी पटरानी थी। ६९० जिस दिन भगीरथ गंगा को लाने गए तब पिता के जाने के दो महीनो पर पुत्र उत्पन्न हुए। ६९१ फिर बारह वर्ष व्यतीत हो गए। भगीरथ के न लौटने पर उनके राज्य में राजा के चले जाने पर प्रजा तथा मत्रियों ने विचार किया और उस पुत्र को सेवा के हेतु युवराज बना दिया। ९२-९३ पुत्र का नाम चक्रवर्त्ती सुदर्शन था। इसमें बहुत कुछ वर्ष व्यतीत हो गए। ९४ पिता के स्वर्गारोहण की बात सुनकर वह राजा हो गया। उसे देखकर सारी पृथ्वी सन्तुष्ट हो गई। ९५ देवपुत्री ऋषिकुमारी राजपुत्री तथा ब्रह्मनारी यह समस्त शृगार करके प्रजा की वृद्धा नारियो को साथ लिये गंगा सागर गई और उन्होने वहाँ छलाग लगा दी। ९६-९७ वह भी भगीरथ के साथ ही जा पहुँची और चिन्तारहित बैकुण्ठ में स्थित हो गईं। ९८ यह सुनकर श्रीराम का मन प्रसन्न हो गया। फिर दोनो भाइयो ने गंगा में स्नान किया। ९९ धवलागी गगानदी का स्वरूप धन्य है। जहाँ भी देखता हूँ तेरा रूप व्याप्त है। ७०० मध्यभाग में शुक्लवर्ण और दोनो ओर नीलवर्ण है। ऐसे रूप में तीनो लोको मे धीरभाव से बह रही हो। ७०१ लहरे रत्नजाल के समान दिखाई दे रही है। लगता जैसे अम्लान रत्न परिधान पहन लिया हो। २ गगा के दोनो किनारो पर सुवर्ण बालू की कान्ति में सुमन बोती हुई जल की आभा सुशोभन दिखाई देती है। ३ पवन के कारण उसकी शोभा और बढ़ गई है। आँचल पताका के समान फहरा रहा है। ४ आपके लाखों धवल नेत्र धन्य है। रघुनाथ ने वहाँ जाकर स्नान किया। ५ विश्वामित्र के साथ जितने ऋषिगण थे उन्होने

सकळ देबंकर से स्थान अटे गोष्ठि । तेणु से धवळांगी त्रिकुळे उद्धरेटि ७६
कपिळ महामुनि जे गंगार कूलरे । निरन्तरे ब्रह्मज्ञान जपन्ति मुनिवरे ७७
सागर कारणी जे तारिणी बोलाइ ।ए गंगा शिररे धरि अछन्ति त्रिपुरारि ७८
गंगाधर नाम जे जपन्ति तेणुकरि । एठाकु आन जे पटान्तर नुहे सरि ७९
एथिरे स्नान तुम्भे कर हे बेनिभाइ । मोक्ष पवित्र जळ एहि जे अटइ ६८०
विश्वामित्र मुनिकरि एसन वाणी शुणि ।
कर जोडि श्रीराम जे पचारन्ति पुणि ६८१
पितृलोक संगे भगीरथ स्वर्ग गले । अजोध्यारे राजा सेहु होइला से भले ८२
बोलन्ति गाधिसुत शुण हे दासरथि । जेते बेळे गंगा पातालरे थिले पशि ८३
आगरे भगीरथ पछरे सुरासुरि । सन्ध्या समग्ररे पितृंक संगे मिळि ८४
तेते बेले से स्थान कपिल मुनि तेजिले । मध्य पुरे कार्त्तिकेश्वर संगरे रहिले ८५
कपिल मुनि आसन तेजि बारु पुणि । पितृ सगे भगीरथ स्वर्ग गले पुणि ८६
गंगा सुदग्नारे मुकति होइ गले । देखिण देवताए हरष होइले ८७
कउशिक बोइले शुण हे राघव ।भगीरथ स्वर्ग जिबार देखिण दूत बर्ग ८८
संगरे थिबा लोक अजोध्या पर बेश । राजा स्वर्ग जिबार कहिले समस्त ८९

छलाग लगा देता है वह चिन्ताशून्य वैकुण्ठ वास प्राप्त करता है। ७५ उस स्थान पर समस्त देवताओ का सम्मिलन होता है। इस कारण से गगा तीनो तटो पर उद्धार करती है। ७६ मुनिश्रेष्ठ कपिल गगा के तट पर निरन्तर ब्रह्म का जाप करते है। ७७ जो गगा सागर को भरने वाली तथा मोक्षदायिनी कही जाती है उसे त्रिपुरासुर के शत्रु शिवजी सिर पर धारण किए है। ७८ इस-लिये जो गगाधर का नाम जपते है यहां पर कोई भी उसकी समता नही कर सकता, उसकी तुलना अन्य से नही हो सकती। ७९ तुम दोनों भाई यहाँ स्नान करो। यह पवित्र जल मोक्ष को देने वाला है। ६८० मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्र की ऐसी बाते सुनकर श्रीराम ने हाथ जोड़कर उनसे पूँछा। ६८१ पितृगणो के साथ भगीरथ स्वर्ग को चले गए फिर अयोध्या का राजा कौन हुआ ? । ८२ गाधि-नन्दन ने कहा हे दाशरथी ! सुनो। जिस समय गंगा पाताल में प्रविष्ट हो गई थी। आगे-आगे भगीरथ और पीछे-पीछे देव सरिता गगा सन्ध्या के समय पितृगणो के निकट पहुँची। ८३-८४ उस समय वह स्थान कपिलमुनि ने छोड़ दिया। वह मध्यपुर में कार्तिकेश्वर के निकट रहने लगे। ८५ कपिलमुनि के आसन त्याग करने पर पितृगणो के साथ भगीरथ स्वर्ग को चले गए। ८६ गंगा की कृपा से वह मुक्त हो गए। यह देखकर देवतागण प्रसन्न हो गए। ८७ विश्वामित्र ने कहा हे राघव ! सुनो। भगीरथ को स्वर्ग सिधारा देखकर साथ के दूतों का दल अयोध्या जा पहुँचा। उन्होने राजा के स्वर्ग सिधारने का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। ८८-८९ भगीरथ को जो एक लाख महारानियाँ थी

हेमरु जात हेले अजोनि सम्भुतरे। बेनि पक्षरे जुबा होइले चञ्चळ रे ८
हेमबन्त पचारिले दुहिता गउरींकु। तुमर निमन्ते गो बरिवा काहाकु ९
गउरी बोले ईश्वर अटे मोर प्रभु। ईश्वर देखि पिता बरि मोते देबु १०
एमन्त बचन जे दुहिता ठारु शुणि। ईश्वरकु बरिले हेमबन्त जे पुणि ११
ईश्वर बरिण गउरी बिभा हेले।गौरींकु घेनिण ईश्वर कपिळाश गले १२
अनेक सुख लीळा सेथिरे भोग कले। महा आनन्दरे कपिळा शरे रहिले १३
एमन्ते शते बरष सुख भोग करि। एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे चापधारी १४
ताड़कासुर बोलिण असुर उत्पति। बळरे बळबन्त जन्मरु दुष्टमति १५
कर्मरे पुणि लेखा कलेक बेदबर। कार्तिकेश्वर हाते मरण तोहर १६
जोगे जाणिले सुति कार्त्तिक हस्ते मरि। लेखिण बिधाता कर्म गलेक ताहारि १७
तेणु से प्रबळ जे ताड़कासुर हेला। देव दानव नागबळ सबुंकि जिणिला १८
समस्ते डरिण जे खटिबे पादतळे। शतेक जुग ध्वंसिला जोग बळे १९
राजा परजा देवता नर जे बानर। समस्तंकर भय होइला हृदयर २०
बेदबर आगरे कहिले लोके जाइँ। जगत संसारकु रख हे गोसाइँ २१
शतृकार उपद्रब सहिण नोहिला।खोजिकरि मुनि मानंकु बनरु खाइला २२
बिधाता बोइले सम्भाळ किछिकाळ। सदाशिवंकर त जन्मिब दुलाळ २३

जन्म हुआ। ७ वह हिमालय पर्वत से अयोनिज रूप में उत्पन्न हुयी और दो पक्षो में शीघ्र ही वह युवा हो गई। ८ हिमवान ने पुत्री गौरी से पूँछा कि मैं तुम्हारे लिये किसका वरण करूँ। ९ गौरी ने कहा कि मेरे स्वामी शकर जी हैं। हे पिता ! आप शिव को देखकर मेरा विवाह कर देना। १० पुत्री के ऐसे वचनों को सुनकर हिमवान ने शिव का वरण कर दिया। ११ शिव को वर कर गौरी का विवाह हो गया। महादेव गौरी को लेकर कैलाश चले गये। १२ उन्होंने वहाँ नाना प्रकार की भोग क्रीड़ाये की और कैलाश पर अत्यन्त आनन्द से रहने लगे। १३ इस प्रकार उन्होने सौ वर्ष पर्यन्त सुखपूर्वक भोग किया। हे धनुर्धारी ! सुनों। इसके पश्चात् तारकासुर नामक दैत्य उत्पन्न हुआ। बल में वह महान बलशाली तथा जन्म से ही दुष्ट बुद्धि वाला था। १४-१५ ब्रह्मा ने उसके कर्म का लेखा लिखते हुये उसकी कार्तिकेश्वर के हाथो मृत्यु निर्धारित की। १६ उन्होने योग से जाना कि यह कार्तिकेश्वर के हाथो मरेगा। ब्रह्मा उसके कर्म मे ऐसा लिखकर चले गये। १७ तब वह तारकासुर प्रतापी हो गया। उसने देव, दानव, नाग आदि सभी को जीत लिया। १८ सभी भयभीत होकर उसके चरणो की सेवा मे लग गए। वह योग के बल से सौ वर्ष पर्यन्त विध्वन्स करता रहा। १९ राजा, प्रजा, देवता, नर, वानर सभी के मन मे भय व्याप्त हो गया। २० लोगों ने जाकर ब्रह्माजी से निवेदन किया। हे नाथ ! विश्व को सहार से बचाइये। २१ उसका उत्पात सहन नही हो रहा है। उसने वन में खोज-

विश्वामित्र सहिते जेतेक ऋषिगण। धवळांगी नदी मध्ये कलेक स्नाहान ६
नित्य कर्म सारि सर्वे नावरे बसन्ति। देखिण तटरु पारि होइण जाआन्ति ७
नावरु ओह्लाइ जे नवरे परबेश। श्रीरामरे शरण मुं बळरामदाश ८
बिश्वामित्र मुनि जे कहिबारु पुणि। श्रीराम पचारन्ति शुण हे एबे मुनि ९
गंगार सान भग्नि अटन्ति देबी उमा। हेमबन्तर दुलणी सर्ब गुणे शोभा ७१०
कार्त्तिकेश्वर अटे शिवर नन्दन। केमन्ते उमादेवी कलेक जनम ७११
से कथा मो आगरे कह ऋषि पुणि। बोलन्ति बिश्वामित्र श्रीरामचन्द्र शुणि ७१२

षड्मुख-जन्मोपाख्यान

सावित्री पार्वती दुहें प्रजापति दुहिता जाण। पार्वतींकि बरिले ईश्वर देव पुण १
सदाशिव देवंकु पार्वतींकि देले। सावित्रीकि बेदबर से ठारे बिभा देले २
केते जुग उत्तारु प्रजापति जाग करि। सकळ देवता ऋषि आणिले बरिकरि ३
सदाशिव जोगि बोलि नबरे प्रजापति। अभिमाने पार्वती मिळिले सेथि आसि ४
पितांकु कहि जागकुण्डे झास देले। जाणि करि सदाशिव कपिळासु गले ५
प्रजापति मारिण जाग कले नाश। डरिण देवताए पळाइले समस्त ६
सेठारु आसिण सदाशिव तप कले। शतेक बर्षरे गउरा जन्म हेले ७

शुभ्रांगी गंगा मे स्नान किया। ६ नित्यकर्म समाप्त करके सब नाव पर बैठे और किनारे से चलकर पार हो गये। ७ नाव से उतरकर वह लोग नगर मे प्रविष्ट हुये, मैं बलरामदास श्रीराम की शरण में हूँ। ८ महर्षि विश्वामित्र के कहने पर फिर श्रीराम ने कहा हे मुनि ! सुनिये। ९ गंगा की छोटी बहिन देवी उमा है। हिमाचल पुत्री सर्वगुणो से युक्त और सुन्दर है। ७१० कार्तिकेश्वर शिव के पुत्र है। देवी उमा ने उन्हे कैसे जन्म दिया। ७११ हे मुनि ! यह कथा मुझसे कहिए। विश्वामित्र कहने लगे और श्रीरामचन्द्र सुनने लगे। ७१२

षड्मुख जन्मोपाख्यान

सावित्री तथा पार्वती दोनों प्रजापति की कन्याये थी। महादेव जी ने पार्वती के साथ विवाह किया। १ उन्होने (प्रजापति ने) पार्वती को महादेव जी को समर्पित किया और ब्रह्मा के साथ सावित्री का विवाह कर दिया। २ कुछ समय के पश्चात् प्रजापति ने यज्ञ किया। वह समस्त देवताओ तथा ऋषियो को वरण करके ले आये। ३ महादेव को उन्होने योगी समझकर अभिमान से आमंत्रित नही किया। पार्वती वहाँ पर आ पहुँची। ४ पिता को बुरा-भला कहकर वह अग्निकुड मे कूद गई। यह जानकर महादेव कैलाश मे आये। ५ उन्होने प्रजापति को मारकर यज्ञ नष्ट कर दिया। डरकर समस्त देवता भाग गये। ६ वहाँ से आकर महादेव जी ने तपस्या की फिर सौ वर्ष मे गौरी का

पृथवी कम्पिला जे कम्पिले दिगपाळे ।
भाळिण देवता माने जे मिळिले एक मेळे ३९
ब्रह्माकु संगे घेनि अइले देवगण । स्तुति कले कार्पूण्य होइण आगेण ४०
शुणिले सदाशिब देवतांकर बाणी ।रतिभाव तेजिले जाणिण शूळ पाणि ४१
जेते बेळे शृंगार तेजिले त्रिलोचन । बिन्दु उछुळि पड़े धरणी परे जाण ४२
देखिण धरणी जे आकुळ मति हेला । देवताम्ने अन्याय हे कल जे बोइला ४३
हर बीर्ज्य बहिबाकु नुहँइ सामर्थ । रसातळे पड़िबिजे नुहँइ धरित ४४
धरणीर आकुळ जे जाणिण पितामह।अग्निकि बोइले शिबकार्ज्य कर परिग्रह ४५
पृथिबी सेहि जे बीर्ज्य बेदनारे । तुम्भे एबे बह देब सकळ हितरे ४६
अग्नि बोइले बहि न पारिबि जाण । तुम्भर आज्ञाकु मुँ न करि पारे आन ४७
एते बोलि शिव बीर्ज्य बहिले हुताशन । तेणु अग्नि शरीर होइला दहन ४८
अग्नि सुमरइ करिब मुहिँ किस ।रख मोते पितामह बोलिण देला ड़ाक ४९
बेदबर बोइले शुणरे अग्नि तुहि । गंगांकर गोचरे दिअ बीर्ज्य नेइ ५०
शुणिण सुरासुरि छामुरे अग्नि देला । बेदबर बोइले बोलिण से बोइला ५१

आनन्द में विभोर हुये कितना समय व्यतीत हो गया परंतु शकर और गौरी की शृंगारिक क्रीड़ाये समाप्त न हुयी। ३८ पृथ्वी तथा दिगपाल काँपने लगे देवता लोग विचार विमर्श करने के लिये एकजुट हो गये। ३९ देवगण ब्रह्मा को साथ लेकर आये और बड़ी दीनता के साथ उनके आगे स्तुति करने लगे। ४० सदा कल्याण करने वाले शकर ने देवताओ को वाणी सुनी और फिर त्रिशूलधारी ने विचार करके कामभाव का परित्याग कर दिया। ४१ तीन नेत्रों वाले शंकर ने जिस समय उस क्रीड़ा का परित्याग किया। उस समय उनका वीर्य उछलकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। ४२ यह देखकर पृथ्वी की मति व्याकुल हो गई। उसने कहा अरे देवताओ। तुमने अन्याय किया है। ४३ शिव के वीर्य को धारण करने की मुझमें सामर्थ्य नही है। यह सँभल न पाने के कारण रसातल की ओर प्रस्थान कर रहा हैं। ४४ पृथ्वी को व्याकुल जानकर पितामह ब्रह्मा ने अग्नि से शंकर जी के शुक्र को संचित करने का आदेश दिया। ४५ उन्होंने कहा यह पृथ्वी वीर्य की वेदना को सहन करने में असमर्थ है। समस्त देवों के हित के लिये तुम इसे वहन करो। ४६ अग्नि ने कहा मै इसे धारण नही कर पाऊँगा और आपकी आज्ञा को मिटाना भी कठिन है। ४७ ऐसा कहकर अग्नि ने शिव के शुक्र को धारण किया तब अग्नि का शरीर जल उठा। ४८ अग्नि ने सोचा मैं क्या करूँ। "हे पितामह मेरी रक्षा कीजिये" उसने इस प्रकार कहकर उन्हें पुकारा। ब्रह्मा ने कहा हे हुताशन ! सुनो। तुम शुक्र को लेकर गंगा को प्रदान कर दो। ४९-५० यह सुनकर अग्नि ने उसे गंगा को प्रदान करते हुये कहा कि

सेहि से दैत्यकुत करिबे विनाश । शुणिण अमरगण होइले हरष २४
एथु अनन्तरे हे शुण रघुनाथ । पार्वती पाक स्पर्श होइले से वनेत २५
शुद्ध स्नान करन्ते ईश्वर तांकु कहि । भो सखी सुरति मोते देवा बेग होइ २६
पार्वती बोइले तुम्भर देह क्षीण । ए समये शृंगार नकर ईशान २७
ए बचन शुणि बोइले त्रिपुरारी । अमळिन शरीर गो हेउछि मोर भारी २८
तु मोते सखी पुण बुझिलुकि सान । मुहिं त अटइ जे जगत कारण २९
ताहार विहुने कि बळ मोर तुटि । एथिकि सखीरे मनरे तोर दुःखी ३०
जेते बेळे ब्रह्म जे प्रळय होइला । अठर मनु पर्य्यन्त जळे तप हेला ३१
तेते बेळे सखीरे न तुटे बळ मोर । पाशोरिलु से कथा जन्म दोष रहे बार ३२
आस आस सुरति दिअ गो प्राण सही । जिणवा हारिवार जाणिवा एहि ठाइ ३३
हसि करि शुभ्रकेशी सनमत कले । हस्त धरि उमाकु जे कोळरे बसाइले ३४
नदीर तट अटे गहन से वन । दर्पण शिळारे विजे कलेक बेनि जन ३५
शृंगार भाव कले लज्जा भाव छाड़ि । नाना बिनोदरे जे न तरळिला जे जड़ि ३६
शृंगार रति रमणे जे घुञ्चि बाकु नाहिं । एमन्ते शते बरष सेथिरे गला बहि ३७
देव हरष भोळरे केते काळ गला । शंकर गउरीकर शृंगार न सरिला ३८

खोजकर ऋषियो को खा लिया है । २२ ब्रह्मा ने कहा, कुछ समय के लिये और सम्हालो फिर महादेव जी के पुत्र उत्पन्न होगा । २३ वह ही उस दैत्य का विनाश करेगा । यह सुनकर देवगण प्रसन्न हो गए । २४ हे रघुनाथ ! सुनो । इसके पश्चात् उस वन में पार्वती रजस्वला हो गईं । २५ शुद्ध स्नान करने पर महादेवजी ने उनसे कहा हे सहचरी ! मुझे शीघ्र ही रति-रस प्रदान करो । २६ पार्वती ने कहा कि आपकी देह क्षीण है । हे ईशान् ! इस समय शृंगार न करो । २७ यह बात सुनकर त्रिपुरारी शिव ने कहा कि मेरा अम्लान शरीर भारी हो रहा है । २८ हे सखी ! क्या तुम मुझे छोटा समझ रही हो । मैं जगत का कर्ता हूँ । उद्धार करने वाला हूँ । २९ उसके अतिरिक्त मेरा वल कैसे क्षय होता है ? हे सखी ! तुम्हारा मन इसी से दुखी है । ३० जिस समय ब्रह्माद्वारा प्रलय हुआ तब अट्ठारह मनुपर्यन्त जल मे तपस्या होती रही । ३१ हे सखी ! उस समय भी मेरा वल क्षीण नही हुआ । जन्म दोष रहने के कारण वह बात तुम भूल गई । ३२ हे प्राण सगिनी आओ और मुझे सुरति प्रदान करो । यहाँ पर जीत-हार का ज्ञान हो जाएगा । ३३ सुकेशी ने हँसते हुए स्वीकृति प्रदान की । उन्होने उमा का हाथ पकडकर उन्हे गोद मे वैठा लिया । ३४ घनघोर वन में सरिता-तट की स्फटिक शिला पर दोनों विराजमान हो गए । ३५ लज्जा का त्याग कर शृगार भावयुक्त नाना प्रकार के विनोद करने पर भी वह योगी (शिव) तरलाइत नही हुआ । ३६ शृंगारिक रतिक्रीड़ा मे वह विमुख नही हो रहे थे । इस प्रकार इन क्रीड़ाओ में सौ वर्ष व्यतीत हो गए । ३७ महादेव को

जोग माय़ाकु घेनिण बेगे तुहि चळ । हरंकर बीर्ज्य गोटि ताकर गरभर ६७
ए बीर्ज्य जात हेले मरन्ते असुर । तेबे से पृथिबी भार होइबक स्थिर ६८
शुणिण जन्तुपति जोगमाय़ारे कहि ।जाणि करि जोगमाय़ा से गिरिकि जाइ ६९
संगरे षडनारी घेनिण करि पुण । बिचार करन्ति पुण देवींकि घेनिण ७०
बोइले पूर्वे शाप आम्भकु अछइटि । सपत ऋषिकर घरणी आम्भेटि ७१
अग्नि देवता आम्भंकु कपटे भोग कला । तेणु आम्भर बुद्धि जणारे हीन हेला ७२
शाप देइ स्वामी से कहिल पुण जाइ । मुक्त हेब सदाशिवरे उपकारी होइ ७३
बोइले हर बीर्ज्य करिब सम्भाळण । तेबे शापरु तुम्भे पाइब कारण ७४
ए अग्नि देवता तुम्भकु विड़म्बण करि । ए पुणि तुम्भर पुत्र हेबे गो सुन्दरी ७५
एमन्त बिचार करि षडनारी सेथि । से बीर्ज्य सबु जे गर्भकु देले क्षेपि ७६
गर्भरे धरन्ते प्रसव पुत्रकरि । आदित्य उइँला कि तिमिरि विदारि ७७
षडमुख सुन्दर अठर चक्षु तेणे । देखिण षड़नारी तेजि न पार क्षणे ७८
कोळे धरि पुत्रर मुखे क्षीर देले । ए वचन शुणिकरि श्रीरामपचारिले ७९
षड़गोटि नारी जे शिव बीर्ज्य भक्षि । भिन्न भिन्न मूर्त्ति नोहि होइले एक मूर्त्ति ८०
एथिर कथा मुनि संक्षेपि मोते कह । षड़गोटि मुख पुण केमन्ते एक देह ८१

जगत की रक्षा करने के लिये कहा। ६६ तुम योगमाया को लेकर शीघ्र ही जाओ और महादेव के शुक्र को उनके गर्भ मे स्थित करो। ६७ इस वीर्य के लेने पर असुर का विनाश होगा तब इस पृथ्वी का भार हरण होगा और यह धरा स्थिर हो जायेगी। ६८ यह सुनकर यमराज ने योगमाया से निवेदन किया। सब कुछ ज्ञात होने पर योगमाया उस पर्वत पर जा पहुँची। ६९ साथ मे छैः स्त्रियों को लेकर देवी के साथ वह विचार करने लगी। ७० उन्होने कहा कि हमें पूर्वकाल का शाप है। हम सप्त ऋषियों की पत्नी है। ७१ अग्नि देवता ने छलपूर्वक हमसे सभोग किया तब हमारी बुद्धि ज्ञान शून्य हो गई। ७२ शाप देकर स्वामी ने कहा कि महादेव का उपकार करके तुम मुक्त होगी। ७३ वह पुनः बोले कि जब तुम लोग शंकर के वीर्य को धारण करोगी तब तुम्हे शाप से मुक्ति मिलेगी। ७४ इस अग्निदेवता ने तुमसे कपटपूर्ण कार्य किया। अतः अरी सुन्दरी ! यह तुम्हारा पुत्र होगा। ७५ ऐसा विचार करके उन छैः स्त्रियों ने वहाँ पर उस समग्र वीर्य को अपने गर्भ मे डाल लिया। ७६ गर्भ धारण करते ही पुत्र का जन्म हुआ। लगता था मानो पर्वत को विदीर्ण करके सूर्य उदय हो गया हो। ७७ उसके सुन्दर छैः मुखो और अठारह नेत्रो को देखकर वह छैः नारियाँ क्षणमात्र के लिये भी उसका त्याग न कर सकी। ७८ उन्होंने पुत्र को गोद में लेकर उसके मुख में स्तन-पान कराया। यह बात सुनकर श्रीराम ने पूँछा। ७९ छैः नारियो ने शिव का वीर्य भक्षण किया फिर भिन्न-भिन्न मूर्ति न होकर केवल एक ही पुत्र हुआ। ८० हे महर्षि यह कथा सक्षेप में मुझसे कहिए।

गंगा बोइले मुहिँ कि पारे धरि। एते बळ बीर्य्य जे त्रिपुरार परि ५२
विधातार आज्ञा जे पाळिवि अवश्य। न रखिले ईश्वर पछरे देबे दोष ५३
एते बोलि धबळांगी कर जे प्रसारिला। हर बीर्य्य घेनिण संगे छपाइला ५४
मुखबाटे से जे गर्भकु देला गिळि।पेटरे पडन्ते बीर्य्य होइला अन्तराळि ५५
देह स्थिर नोहिबारु उद्गारि पकाइला। कण्ठ तटरु बीर्य्य लेउटि अइला ५६
मुखबाटरे बाहार हेला आसि बीर्य्य।उद्गारि पकान्ते जे नोहिला गर्भ सज ५७
बिकळरे गंगादेबी अजोनि रूप धरि। तेबे से हर बीर्य्य नोहिला सम्भाळि ५८
सम्भाळि न पारिबारु धबळांगी पुण। कपिळास कन्दरे पकाए नेइ जाण ५९
पकान्ते हर बीर्य्य बिञ्चि होइ पडि।पाषाणे पड़िबारु भिन्न भिन्न तेज बढ़ि ६०
सेथिरु अष्टधातु जे होइला उत्पति। काच हिंगुळ से जे हरिताळ मोडि ६१
मणि शिळा धवळ पारा जाण रस। स्फटिक वैदुर्य्य मुकुता मणिशेष ६२
पारा रस हिंगुळ उपुजे नाना सेटि। संसार मोहरे जड बान्धे लोटि ६३
तेणु से हर बिन्दु जरिर परे पडि। ठाबे ठाबे होइण अष्टधातु पड़ि ६४
देखि देवताए बिचारिले करिबा किस। अक्षय बीर्य्य गोटि हेउण अछि ध्वंस ६५
बेदबर भाळिण कुल देवता राइ। बोले जगत रक्षकर किना तुहि ६६

ब्रह्मा ने आपको देने के लिये कहा है। ५१ गगा ने कहा कि त्रिपुरारी के समान बलशाली वीर्य को क्या मैं धारण कर सकूँगी। ५२ मैं ब्रह्मा की आज्ञा का पालन अवश्य करूँगी। न धारण करने से पीछे शकर मुझे दोष देंगे। ५३ ऐसा कहकर शुभ्र अग वाली गगा ने हाथ बढ़ाकर शकर के वीर्य को ग्रहण करके अपने साथ छिपा लिया। ५४ उन्होने मुख से उसे निगलकर गर्भ में डाल लिया। पेट मे गिरते ही वीर्य अन्दर चला गया। ५५ परन्तु उनका शरीर स्थिर न रह पाने के कारण उन्हे उल्टी हो गयी। वह वीर्य कण्ठ भाग से लौट आया। ५६ फिर वीर्य मुख से बाहर निकल पड़ा और उल्टी कर देने के कारण गर्भ तैयार न हुआ। ५७ गगा ने व्याकुल होकर अयोनि रूप धारण किया परन्तु फिर भी शिव के शुक्र की सँभाल न हो सकी। ५८ जब गगा उसे सँभाल न पायी तब उसने उसे लेकर कैलाश की गुफा में डाल दिया। ५९ गिरते ही शिव का वीर्य छितरा गया। पत्थर पर गिरने के कारण विभिन्न प्रकार से उसके तेज में अभिवृद्धि हो गई। ६० उससे अष्ट धातुएँ उत्पन्न हुई। काँच, हिंगुल (लोहित वर्ण का खनिज) हरिताल, मोतीमणि पत्थर तथा श्वेत पारे का रस, स्फटिक वैदूर्य तथा मुक्तामणि आदि हुये। ६१-६२ नाना प्रकार के पारा तथा हिंगुरस वहाँ उत्पन्न हुये जो संसार को मोह में बाँधने वाले थे। ६३ शिव का वीर्य पाषाण पर पड़ने से स्थान-स्थान पर अष्ट धातुएँ प्रकट हो गई। ६४ तब देवताओं ने यह देखकर विचार किया कि अब क्या किया जाये। यह अक्षयवीर्य नष्ट हुआ जा रहा है। ६५ ब्रह्मा ने विचार करके मंगलग्रह को बुलाकर उनसे

केवण कार्य्य तुम्भर करिबहुँ कह। शुणिण वचन जे कहन्ति पितामह ९७
ताड़कासुर नामरे असुर बळबन्त। ताहार भयरे जे भांगिला जगत ९८
स्वर्गरे सुरदेव न पारन्ति रहि। ताड़कासुर भोग जे कला तिनि मही ९९
देबंक ठारू शुणि कुमार कला सनमत। दैत्यकु मारिबाकु से होइले समर्थ १००
ब्रह्मांकु बोइले मोते दिअ अस्त्र पुणि। हरषरे बेदबर देलेक धनु आणि १०१
शस्त्र धारणा धनु देलेक हरषरे। ए जत्न पवित्र धनु बोइले बेदबरे २
शाम बेदरु ए जे होइलाक जात। पवित्र धनु शोभे द्विजबरंक हृदरेत ३
एहाकु बोलि ब्रह्मशर शकति मुद्‌गर। छेल चक्र शाबेळि आयुध नाना शर ४
इन्द्र जे आणि देले बज्रधनु गोटि। बज्र बाटुळि कुहुक जे बज्र सुचि ५
घड़ घड़ि चड़क जे आवर बज्र शक्ति। एमन्ते अनेक शर सुरराजा समर्पन्ति ६
अमरगण जे जाहा तेज शर देले। बृहस्पति मन्त्र जन्त्र सकळ कहिले ७
दश दिगपाळ जे अयुध मान देइ। सदाशिव नन्दनकु देले तोष होइ ८
कनकर दण्डकु वरुण आणि देले। मोहना शरकु कुबेर समर्पिले ९
नाग पाश शर जे देलेक वासुकी। मुनिमाने बहुत बळ देले निकि ११०
देखिण हरष चित्त शिवसुत हेले। इन्द्र वेदबरंकु वचन प्रकाशिले १११

नाना प्रकार से स्तुति की। तब कुमार ने पूँछा कि आपका मन व्याकुल क्यों है। बताओ मै तुम्हारा क्या कार्य करूँ। यह वचन सुनकर ब्रह्माजी बोले। ९६-९७ तारकासुर नाम का एक बलशाली असुर है। उसके भय से ससार नष्ट हो गया। ९८ देवराज इन्द्र स्वर्ग में नही रह पा रहे है। तारकासुर तीनो लोकों का उपभोग कर रहा है। ९९ देवताओं से ऐसा सुनकर कुमार ने अपनी सम्मति प्रदान की वह दैत्य को मारने के लिये समर्थ हो गये। १०० उन्होंने ब्रह्मा से अपने को अस्त्र देने को कहा। प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने धनुष लाकर प्रदान किया। १०१ शस्त्र को धारण करने वाला धनुष ब्रह्मा ने प्रसन्नतापूर्वक देते हुये कहा कि यह धनुष पवित्र तथा उपयोगी है। २ यह सामवेद से उत्पन्न हुआ है। यह पवित्र धनुष श्रेष्ठ ब्राह्मणों के हृदय में सुशोभित होता है। ३ इसे ब्रह्मशर शक्ति मुग्दर सेलचक्र शावल आयुध तथा नाना प्रकार के नामो से जाना जाता है। ४ इन्द्र ने एक बज्र धनुष लाकर दिया। बज्र के छर्रे वाला अस्त्र, मायाशर तथा बज्र की नोक वाले बाण, घनघोर गर्जन करने वाले शस्त्र बज्रशक्ति आदि इस प्रकार के अनेक बाण देवराज इन्द्र ने लाकर समर्पित किए। ५-६ देवगणों ने अपने-अपने तीक्ष्ण बाण प्रदान किए। वृहस्पति ने सभी मन्त्र तथा यन्त्र समझा दिए। ७ दश दिगपालों ने सन्तुष्ट होकर शिवजी के पुत्र को नाना प्रकार के आयुध प्रदान किए। ८ वरुण ने सुवर्ण-दण्ड लाकर दिया और कुबेर ने मोहन बाण समर्पित किया। ९ वासुकी ने नागपाश बाण दिया तथा मुनियो ने उन्हे महान बल प्रदान किया। ११० यह देखकर

विश्वामित्र बोइले तुम्भे दाशरथि शुण। सेथिर कथा आम्भे कहिबा प्रमाण ८२
त्रिहस्त अधे उच्च तिनि हात अधे मोटा।ए रूपे षड़रूप षड़नारींक ठारु जात ८३
आनन्दरे षडनारी क्षीरपान देइ। एक आसनरे पुणि शुआइले नेइ ८४
जेणु शिव बीर्य्य षडभाग कले। जनम बेळरे षड़रूप होइ थिले ८५
एक स्थाने शुआन्ते समस्ते मिशिगले। एक मूर्त्ति होइण बारण नोहिले ८६
बार पाद मिशिण होइले बेनिपद। षड़देह मिशिण होइला एक हृद ८७
केवळ बार हस्त बेळेण रहिल। षड़ गोटि मुण्ड जे अठर अक्षि तार ८८
षड नारींकर संकेत ए जे रहि। तेणुटि षड़ानन बोलाइले सेहि ८९
ए रूपे कार्त्तिकेश्वर षड मातारु जात। षड गोटि सिंह बळ बहे शिवसुत ९०
एकोइश हात उच्च मोट एकोइशि। एडेक तनु बहि कुमर बेगे उठि ९१
जाणिण बिधाता जे सकळ देब घेनि। शिव पुत्र निकटे मिळिला जाइ पुणि ९२
सदा शिव बीर्य्य जे तेजरे अनर्गळ। कि जाणि तेज हेले जेसने शशधर ९३
पाशे जाइ देवताए अभिषेक कले। अपसरीए जाइण नृत्य आरम्भिले ९४
तेणु से नाम तांकर हेला संकर्षण। देवंक उपरे सेनापति कले ब्रह्मा जाण ९५
अनेक स्तुति बिधाता बेदबर कले। कुमार बोइला किम्पा बिकळ मनरे ९६

उनके मुख छैः और फिर शरीर एक कैसे हुआ। ८१ विश्वामित्र ने कहा हे दशरथनन्दन ! सुनो। हम उस प्रामाणिक कथा को तुमसे कहेगे। ८२ तीन हाथ आधे उठे हुये और तीन हाथ आधे झुके हुये इस प्रकार का षड़रूप छैः नारियों से उत्पन्न हुआ। आनन्दपूर्वक छैः नारियों ने उन्हें क्षीरपान कराया और उसे लेकर एक स्थान पर लिटा दिया। ८३-८४ जब शिव के वीर्य को छैः भागो में विभक्त कर दिया। तब वह जन्म के समय छैः रूपो मे प्रकट हुआ। ८५ एक स्थान पर सुलाने से समस्त भाग मिल गये वह एक रूप हो गये। पृथक नही हो पाये। ८६ बारह पैर मिलकर दो चरण हो गये और छैः शरीर मिल जाने से एक देह रह गई। ८७ समय पर केवल बारह हाथ रह गये। उनके छैः मुख और अठारह आँखे विराजमान थी। ८८ उन छैः नारियो का यह सकेत रह गया। इसलिये उनको षड़ानन नाम से ख्याति प्राप्त हुयी। ८९ इस प्रकार छैः माताओ से कार्तिकेश्वर का जन्म हुआ। शिव का पुत्र छैः सिंहो का बल धारण किये था। ९० उसकी ऊँचाई इक्कीस हाथ की थी और मोटाई भी इक्कीस हाथ की थी। वह कुमार इस प्रकार के शरीर को धारण करके शीघ्र ही उठ पड़ा। ९१ यह जानकर ब्रह्मा समस्त देवताओ को साथ मे ले करके शकर के पुत्र के पास जा पहुँचे। ९२ सदाशिव के वीर्य का तेज अपरिमित था जिस प्रकार चन्द्रमा तेजस्वी होता है। ९३ देवताओं ने उनके समीप पहुँचकर उनका अभिषेक किया अप्सराओ ने जाकर नृत्य आरम्भ कर दिया। ९४ इससे उनका नाम शंकर्षण पड़ा। ब्रह्मा ने उन्हे देवताओं का सेनापति बनाया। ९५ ब्रह्मा ने उनकी

तोर मोर शृंगार भाव रति रस। सेहि काळे देवे जाइँ हेले परवेश २६
देबंकु देखि तुम्भे भय़रे उठिगल। तेते बेळे बिन्दु जे उछुळिला मोर २७
से बिन्दु उछुळिण जे षड़ भागे पड़ि। धरणीआकुळ देखि जोग माय़ा धरि २८
गर्भकु क्षेपन्ते बिरूपे सुत जात। तेणु षड़भाग षड़रूपे सम्भुत २९
पार्बती बोइले से अतुट धाई काहिँ। ईश्वर बोइले बिधाता मुक्ति देइ १३०
आग शाप थिबार पार होइ गला। जन्मे जन्मे से तुम्भर अटन्ति धाई परा १३१
पार्बती बोइला विधाता परा आसि। ईश्बर बोइले पुत्र जन्म देखि होइ तोषि ३२
देबंकु संगे घेनि कुमर पाशे मिळि। अनेक शस्त्र बळ धनुमन्त देइ करि ३३
अमर पुरकु जे समस्ते चळि गले। बळवन्त हेबारु कुमर आम्भंकु सुमरिले ३४
गउरी बोइले देबंक किस हित। किस अर्थे आम्भ पुत्रकु कलेक समर्थ ३५
त्रिलोचन बोइले से कथा एबे शुण। ताड़का दैत्य तिनि पुरकु धोका देला पुण ३६
देवता सुर नर वानर नाग बळ। समस्तंकु परजा करि खटाए पादतळ ३७
जुद्ध रण करिण हारिले सकळ। तेणु से असुर जे जाळिला तिनिपुर ३८
पार्बती बोइले जे न थिलेकि हरि। असुरकु किम्पाइ जे न पारिले मारि ३९
ईश्वर बोइले दैत्य तांक अस्त्रे न मरइ। चन्द्र देवतांक बरे अजर अमर सेहि १४०

वीतने पर देवताओं ने विचार किया। २५ जब हमारी तुम्हारी रसक्रीड़ा चल रही थी उसी समय देवता लोग आकर उपस्थित हो गए। २६ देवताओं को देखकर तुम भय से डर गई। उसी समय मेरा वीर्य स्खलित हो गया। २७ वह वीर्य उछलकर छैः भागो मे पतित हुआ। पृथ्वी को व्याकुल देखकर योगमाया ने उसे धारण किया। २८ उसे गर्भ में डालने पर अद्‌भुत रूप वाला पुत्र उत्पन्न हुआ। अतः वह छैः भाग, छैः रूपों में प्रकट हुआ। २९ पार्वती ने कहा वह अक्षय धाइयाँ कहाँ है ? शंकर जी बोले कि ब्रह्मा ने उन्हे मुक्ति प्रदान कर दी। १३० वह पूर्वकाल से अभिशप्त पार हो गई। वह जन्म-जन्म से तुम्हारी धाई रही है। १३१ पार्वती ने कहा कि ब्रह्मा भी आए थे। शंकर जी बोले कि वह पुत्र का जन्म देखकर सन्तुष्ट हो गए। ३२ वह देवताओं को साथ लेकर कुमार के निकट आ पहुँचे और नाना प्रकार के शस्त्रबल धनुष तथा मंत्र देकर सभी देवलोक को चले गए। बलशाली हो जाने पर कुमार ने हम लोगों को स्मरण किया। ३३-३४ गौरी ने पूँछा कि इसमें देवताओं का कौन सा हित था। किस कारण से उन्होने मेरे पुत्र को समर्थ बना दिया। ३५ त्रिनेत्रधारी शिव ने कहा कि अब वह कथा सुनो। तारकासुर दैत्य ने तीनो लोको को त्रस्त कर दिया है। ३६ देवता सुर नर वानर नागों के दल आदि सभी को उसने अपनी चरण सेवा में लगा रक्खा है। ३७ उसने युद्ध करके सबको पराजित कर दिया तथा तीनो लोको मे आग लगा दी। ३८ पार्वती ने कहा क्या श्री नारायण नहीं थे। वह असुर को क्यो नही मार पाए। ३९ शिव ने कहा कि दैत्य को उनके अस्त्रों

तुम्भे देवताए एबे मो वचन शुण। पिता माता मोर केहु अटइ जे पुण १२
बेदबर बोइले पिता तो ईश्वर। माता जे तोहर शुण आरे कुमर १३
कुमर बोइले ए जे षड़ नारी किए। बेदबर बोइले ए पाळिबा धाईमाए १४
संकर्षण बोइले किम्पाइ पाळिले मोते। बिधाता बोइले ए पूर्बर शाप मुक्ते १५
कुमार बोइला एहांकु शाप पारि कर।
बिधाता बोइले मुक्ति देलि जाआन्तु स्वर्गपुर १६
शुणिण षडनारी स्वदेह धरि चळि। अमर भुवनरे मिळिले जत्ने नारी १७
सेठारु बेदबर सकल देव घेनि। अमर भुवनरे मिळिले जाइ पुणि १८
माता देवता ऋषि जे जिबारु कुमार। ईश्वर देवतांकु सुमरे मनर १९
पार्बती घेनिण जे ईश्वर बिजे कले। कार्त्तिक पदारे जाइ पुत्रकु भेटिले १२०
देखिण पिता मातांकु कुमार तरळिला। कर जोडि कुमार आगरे छिड़ा हेला १२१
पार्बती बोइले केवण कृत्य एहु। षड़ गोटि मुख एक शरीर हेला काहुँ २२
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो बनिता। तुम्भर कुमर एटि के करे धर माता २३
पार्बती बोइले ए केमन्ते जात हेला। मोर गर्भ होइला जणा त नगला २४
ईश्वर बोइले आम्भर श्रृंगार रतिकाळे। बहुदिन हेबारु देबताए जे माळे २५

शिव-पुत्र का मन प्रसन्न हो गया। उन्होने इन्द्र तथा ब्रह्मा से कहा। १११ आप देवगण मेरी बात सुनो। मेरे माता-पिता कौन है ?। १२ ब्रह्माजी ने कहा कि तुम्हारे पिता महादेव है। हे पुत्र ! अब माता के विषय मे भी सुनो। १३ कुमार ने पूंछा कि यह छैः स्त्रियाँ कौन है ? ब्रह्मा ने कहा कि यह तुम्हे पालने वाली धाई मातायें हैं। १४ सकर्षण ने कहा कि इन्होंने मेरा पालन किसलिये किया। ब्रह्माजी ने कहा कि पूर्वशाप से मुक्त होने के लिये। १५ कुमार ने कहा कि इन्हे शाप से मुक्त कर दीजिये। ब्रह्मा बोले मैंने इन्हे मुक्त कर दिया। यह स्वर्गलोक को प्रस्थान करे। १६ यह सुनकर छैः स्त्रियाँ स्वदेह धारण करके यत्नपूर्वक स्वर्ग लोक मे जा पहुँची। १७ फिर ब्रह्माजी समस्त देवताओं को साथ लेकर वहाँ से देवलोक में जा पहुँचे। १८ माताओ, देवताओ तथा ऋषियो के चले जाने पर कुमार ने मन में महादेव का स्मरण किया। १९ पार्वती को साथ लेकर शकर जी वहाँ आए और उन्होने कार्तिक के निकट जाकर पुत्र से भेट की। १२० माता पिता को देखकर कुमार स्नेह से तरलायित हुए और हाथ जोडकर उनके समक्ष खडे हो गए। १२१ पार्वती ने कहा कि यह कैसा कृत्य हो गया। छैः मुख तथा एक देह कहा से हो गया। २२ शंकर ने कहा, हे रूपसि ! तुम सुनो। यह पुत्र तुम्हारा है। कोई इस बात को नकारेगा नही। २३ पार्वती ने कहा कि यह कैसे उत्पन्न हुआ। मेरे गर्भ हुआ इसका तो पता ही नही चला। २४ शंकर जी ने कहा कि हम लोगो की श्रृगार रतिक्रीड़ा का समय बहुत अधिक

श्रीराम पचारन्ति सेठारु किस हेला। गाधिसुत बोइले शुण दशरथ बळा ५५
सकळ देवता ईश्वर बेदबर। ठुळ हेबार देखि रति मिळे सेठार ५६
बोइला कामदेव दहन हेला जेबे। मुँ किस करिब रहिण लज्जा भावे ५७
मुहिँ प्राण हारिबि समस्ते तुम्भे देख। बेदवर बोइले देबी नुहगो बिमुख ५८
ईश्वर देबतांकु कह जा देबी जाइ।सेइ से जीआँइ देबे तोहर निज स्वामो ५९
शुणिण रतिदेबी जे बेगे चळि गला। ईश्वर पार्बतोंक चरणे ओळगिला १६०
पार्वती बोइले ए कथा किस पुण। किम्पाइ एहि स्त्री जे करइ रोदन १६१
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो भगवती। तोते न देखि जोग साधिलि मुहिँटि ६२
एहि समग्ररे असुर होइले प्रबळ।देवताए बिचारि भिआइले कामेश्वर ६३
जोग निद्रा भांगन्ते देखिलि कामदेव। चाहाँन्ते भस्म हेला रतिपति देव ६४
किछि दिने तुम्भंकु पाइण तोष हेलि। रति शृंगार प्रीतिरे हरष होइलि ६५
देव बरषे शते बरष गला पुण। कामदेव भस्म जे होइले एते दिन ६६
हेमबन्ती बोइले बहन जीआअ देव। भस्म स्थानकु ईश्वर चळिगले बेग ६७
पाउँश गोटाइले पढिले संजीवनो। जीव पाइ कामदेव उठे ततक्षणि ६८
ईश्वर गउरींकु नमस्कार कला। पितामह चरणे जाइण ओळगिला ६९

फिर वहाँ क्या हुआ। गाधिनन्दन बोले हे दासरथी ! सुनो। ५५ महादेव ब्रह्मा तथा समस्त देवताओ को एकत्रित देखकर रतिदेवी वहा आ गई। उसने कहा कि जब कामदेव का दहन हो गया, मै लज्जा के साथ जीवित रहकर क्या करूँ। ५६-५७ आप सबके देखते-देखते मै प्राण त्याग कर दूँगी। ब्रह्मा ने कहा हे देवी ! क्षुब्ध न हो। ५८ तुम जाकर महादेव जी से कहो। वह तुम्हारे स्वामी को जोवित कर देगे। ५९ यह सुनकर रति देवी ने शीघ्र ही जाकर शिव-पार्वती के चरणों में प्रणाम किया। १६० पार्वती ने कहा कि यह क्या बात है ? यह स्त्री रुदन क्यों कर रही ? । १६१ शिव ने कहा, हे भगवती ! सुनो। तुम्हें न देखकर मैने योगसाधन कर लिया। ६२ इसी समय असुरों का उत्पात बढ गया। देवताओं ने विचार करके कामदेव को लगा दिया। ६३ योगनिद्रा टूटने पर मैंने कामदेव को देखा। मेरे देखते ही रति का स्वामी मदन भस्म हो गया। ६४ कुछ दिनों मे तुम्हें प्राप्त करके मै सन्तुष्ट हुआ तथा शृगारिक रति-क्रीड़ा प्रीति से प्रसन्न हो गया। ६५ सौ देव वर्ष व्यतीत हो गए। कामदेव को भस्म हुए इतने दिन बीत गए। ६६ हिमावलकुमारी ने कहा, हे देव ! उसे शीघ्र ही जीवित कर दीजिए। तब महादेव जी शीघ्र ही भस्म होने वाले स्थान को चले गए। ६७ उन्होने राख एकत्रित करके संजीवनी मन्त्र पढा। उसी क्षण जीवन पाकर कामदेव उठ खड़ा हुआ। ६८ उसने शिव-पार्वती को नमस्कार किया तथा जाकर पितामह ब्रह्मा के चरणों में प्रणाम किया। ६९

जेते बेळे बर देले तेते बेळे कहि । ईश्वर पुत्र हस्तरे निश्चे मरिबु तुहि १४१
से कथा मिळिण देबे जाणिले सकळ । पुत्रकु कहिण जे चळिले निजपुर ४२
शुणिण परम तोष जे देबी हेले ।जाणिलि एथर बोलि स्वामींकु कहिले ४३
श्रीराम बोइले सेठारु किस हेला । पुत्रकु पिता माता आदर कले परा ४४
बिश्वामित्र बोइले तुम्भे शुण रघुनाथ । ईश्वर पुत्रकु नेइ बसाइ कोळरेत ४५
बोइले कुमररे कि बरे तोर इछा ।मन इछा वर माग पुरु मनोबाञ्छा ४६
कुमार बोइला तुम्भे पिता अट मोर । प्रळये न तुटिबि बर देबु जे चञ्चळ ४७
पाशुपत्र त्रिशूल शकति मोरे देबु । जेउँ ठारे रहिबु पछ कतिरे रखिबु ४८
सकळ देबंकर देहरे जेते बळ । मोहर देहरे देब आणि करि ठुळ ४९
ईश्वर बोइले एकथा अस्तु तोते हेउ । देबंकर काज्यं तो हस्तरे निर्भ पाउ १५०
मार असुरंकु देबतांकु भल कर । तिनिपुर कष्ट जाउ माररे कुमार १५१
माता बोइले तोते देलि अभय्र बर । तिनि पुररे जय्री हुअरे कुमार ५२
शुणिण कुमार जे बाहार होइला । बेदवर देवतांकु घेनिण मिळिला ५३
ईश्वर पार्वतींकि कले दरशन । अनेक स्तुति करि त्रिपुति कलेमन ५४

से नही मरना था । वह चन्द्रदेव के वर से अजर अमर है। १४० जब उन्होने वर दिया था उस समय उन्होने कहा था कि तुम्हारा सहार शिव के पुत्र द्वारा होगा। १४१ समस्त देवताओ को यह बात मालूम पड़ गई । यह बात पुत्र (कुमार) से कहकर वह सब अपने-अपने लोको को चले गए। ४२ यह सुनकर देवी को महान सन्तोष प्राप्त हुआ । उन्होने अपने स्वामी से कहा कि अब मैं समझ गई। ४३ श्रीराम ने कहा कि फिर वहाँ क्या हुआ । माता पिता ने पुत्र का सम्मान किया। ४४ विश्वामित्र ने कहा हे रघुनाथ ! तुम सुनो। शकर जी ने पुत्र को अपनी गोद में बिठा लिया। ४५ उन्होने कहा हे पुत्र तुम्हे किस वर की इच्छा है। तुम मन मे अभीप्सित वर की याचना करो। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो। ४६ कुमार ने कहा आप मेरे पिता है। मेरा नाश प्रलय में भी न हो। आप शीघ्र ही हमें यह वर प्रदान करे। ४७ मुझे पाशुपत अस्त्र त्रिशूल तथा शक्ति प्रदान करे। मैं जहाँ भी रहूँ यह सब मेरे पीछे रहे। ४८ समस्त देवताओ के शरीर में जितनी शक्ति है वह सब मेरे शरीर मे भर दीजिये। ४९ शकर जी बोले कि तेरी इच्छा पूर्ण हो, तुम्हारे हाथो द्वारा देव-कार्य सम्पादित हो। १५० असुर का सहार करके देवताओ का कल्याण करो। हे पुत्र ! उनका संहार करो जिससे तीनों लोको का कष्ट दूर हो जाये। १५१ माता ने कहा कि मै तुझे अभयवर प्रदान कर रही हूँ। हे वत्स ! तुम तीनो लोकों में जय प्राप्त करो। ५२ यह सुनकर कुमार निकल पडे। ब्रह्मा जी देवताओ को साथ लेकर वहाँ आ गये। ५३ उन्होंने शिव पार्वती का दर्शन किया और नाना प्रकार की स्तुति करके अपने मन को तृप्त किया। ५४ श्रीराम ने पूँछा

श्रीराम लक्ष्मण मुनि जे संगरे अनेक। धीर धीर होइण गमन करन्ति त ८५
देखिले से नग्र गोटा दिशे शोभावन। नेतर चिराळ जे उड़इ अविछिन्न ८६
काहिँरे सुवर्ण जे काहिँरे हेम काच। चित्र लेखन प्रतिमा दिशन्ति सुसञ्च ८७
बनमाने दिशन्ति मण्डळि गज प्राये। कूप बाम्पि पोखरी तड़ाग शोभा पाए ८८
देउळ अट्टालि जे पाचेरी मेघनाद। सुस्वरे गायन करे दुन्दुभी शबद ८९
पूरइ शोभाबन गहळ घाट बाट। अश्व गज पदान्ति चतुरंग थाट १९०
शोभाकार देखिण जे पुच्छन्ति श्रीराम। कहिबा हेउ मुनि ए नग्रर किस नाम १९१
रघुनाथंकर ठारु एसन वाणी शुणि। कहन्ति गाधि सुत अमृतमय वाणी ९२

सागर-मन्थन

शुण तुम्भे श्रीराम हे रघुबंश नाहा। मोहर आगरे ब्रह्मा कहिगले जाहा १
से कथा तुम्भ आगे कहइ रघुसाइँ। दक्ष प्रजापतिकर षाठिए झिअ होइ २
काश्यप ऋषिकि जे तेर कन्या देले।
धार्मिक ऋषि बोलिण तांकु बिभा हेले ३
दिति अदिति जे उत्तम बेनि नारी। देबे असुरे तांक गर्भरे अवतरि ४

नगर में जा पहुँचे। ८४ श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ बड़ी धीरगति से गमन कर रहे थे। ८५ उन्होने देखा कि सम्पूर्ण नगर शोभायमान दिख रहा है। नेत की पताकाएँ निरन्तर उड़ रही थी। ८६ कही पर हेमकांच की जड़ी हुई चित्रकारी तथा प्रतिमाएँ सुसज्जित दिखाई देती थी। ८७ गज के सदृश वन सुन्दर तथा सघन दिखाई देते थे जिसमें कुएँ, बावड़ी, पोखर तथा सरोवर सुशोभित दिखाई देते थे। ८८ देवालय अट्टालिकाये तथा विशाल प्रचीरें थीं। दुँदुभी के शब्द का सुन्दर उद्घोष सुनाई दे रहा था। ८९ चहल-पहल युक्त गली घाटो में सुन्दरता भर गयी थी। हाथी, घोड़े, पैदल सिपाही आदि थे। १९० सौन्दर्य को देखकर श्रीराम ने कहा हे मुनि हमें बताइये कि इस नगर का क्या नाम है। १९१ रघुनाथ जी की ऐसी वाणी सुनकर गाधिनन्दन मधुर वचनों में कहने लगे। ९२

सागर-मन्थन

हे रघुवश मे श्रेष्ठ श्रीराम ! तुम सुनो। जैसा मुझसे ब्रह्माजी कह गये थे। १ हे रघुनाथ ! मैं वही कथा तुमसे कह रहा हूँ। दक्ष प्रजापति के साठ कन्याये हुई। २ उन्होने कश्यप ऋषि को तेरह कन्याये समर्पित की। ऋषि धार्मिक थे अतः उनसे विवाह कर दिया। ३ दिति और अदिति जो दोनो उत्तम स्त्रियाँ थी, उनके गर्भ से देव और असुर उत्पन्न हुये। ४ अदिति के गर्भ से देवता

देबंकु नमस्कार कलेक बेगे पुण । सुरराजा चरणे ओळगे ततुक्षण १७०
रतिकि घेनिण निज स्थान गले । ईश्वर गउरी से स्थानरु चळिगले १७१
ब्रह्मा इन्द्र चळिले आपणा निजस्थान । ईश्वरंक कुमर जुद्धकु गले पुण ७२
देवंकु घेनिण जे अनेक जुद्ध कले । जे जाहार अस्त्रमान घेनिण अइले ७३
अनेक समर जे कार्त्तिकेश्वर कले । बेदवर शरे बरषे जुद्ध कले ७४
केबेहेँ ताड़कासुरर सैन्य न सरिले । देखि करि शिवसुत मने विचारिले ७५
शक्ति घेनि शिवसुत माइले कोप भरे । पडिलाक शक्ति जाइ हृदय़ उपरे ७६
बुकु फुटि प्राण जे होइला बाहार । ज्ञान हारिण से जे पड़िला निशाचर ७७
प्राण गला तार जे पार्थिव देह छाड़ि । देखिण देवताए जय़ जय़ करि ७८
जय़ शंख बजाइ कार्त्तिकेश्वर गले । कपिळास कन्दरे से पितांकु भेटिले ७९
नमस्कार करिण पितार पाशे बसि । जननीकु देखिण ओळगि कले आसि १८०
हर गउरी पुत्रकु देखि तोष हेले । पश्चिम भागे नेइ ताहांकु रखाइले १८१
शुणुछन्ति दाशरथि कहन्ति विश्वामित्र। शुणिण सन्तोष हेले जे दशरथ सुत ८२
पार्वती बोइले तुम्भे शुण हे त्रिलोचन । सेठारु किस हेला कहिवा मोते पुण ८३
सेठारु श्रीराम जे विश्वामित्र जाइ । हेमाळ नग्रे हेले परवेश जाइ ८४

फिर शीघ्र ही उसने देवताओ को प्रणाम किया और उसी क्षण उसने देवराज इन्द्र के चरणो मे नमन किया । १७० फिर रति को लेकर अपने स्थान को चले जाने पर शिव-पार्वती भी उस स्थान से चल दिये । १७१ ब्रह्मा तथा इन्द्र भी अपने लोको को चल पडे और शिवजी के पुत्र कुमार युद्ध हेतु चले गए । ७२ उन्होने देवताओ को साथ लेकर बहुत युद्ध किया । सभी लोग अपने-अपने अस्त्र लेकर आ गए । ७३ कार्तिकेश्वर ने बहुत युद्ध किया । एक वर्ष पर्यन्त वह ब्रह्मास्त्र द्वारा लडते रहे । ७४ तारकासुर की सेना कभी भी समाप्त नही हुई । यह देखकर शिव के पुत्र ने मन मे विचार किया । ७५ महादेव के पुत्र ने कुपित होकर शक्ति उठाकर प्रहार किया । वह उसके हृदय के ऊपर जा गिरी । ७६ हृदय के विद्ध हो जाने से उसके प्राण निकल गए । वह निश्चर सज्ञाशून्य होकर गिर पड़ा । ७७ पार्थिव शरीर को छोडकर उसके प्राण निकल गए । यह देखकर देवगण जय-जयकार करने लगे । ७८ विजय शख वजाकर कार्तिकेश्वर चल दिये और उन्होने कैलाशकन्दर मे पहुँचकर पिता मे भेंट की । ७९ नमस्कार करके वह पिता के समीप बैठ गए फिर उन्होने माता को देखकर आकर उनके चरणो मे प्रणाम किया । १८० शकर और पार्वती पुत्र को देखकर प्रसन्न हो गये और उन्हे लेकर पश्चिम भाग मे रख दिया । १८१ विश्वामित्र (यह कथा) कह रहे थे और दशरथनन्दन उसे सुन रहे थे । यह सुनकर दशरथ के पुत्र श्रीराम प्रसन्न हो गये । ८२ पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन ! सुनिये । आप हमे बताये कि फिर वहाँ क्या हुआ । ८३ वहाँ से श्रीराम और विश्वामित्र चलकर हेमल

देव असुरंकर आकुळ भाव देखि। वाम करे मन्दर धइले देव टेकि २०
किआ कन्दा जेसने कि उपाड़े मत्त हस्ती।
तेसन पराए मन्दर उपाड़े श्रीपति २१
देखिण उसत जे देव असुर गण। शंकिले समस्ते जे नाराय़णंकु जाण २२
जेणु मन्दर गिरी उपाड़िले हरि। समस्ते मिळि तांकु नेले कन्धकरि २३
क्षीर समुद्रर कूळरे नेइण थोइले। बासुकि नागकु आणिबा पाइँ गले २४
समस्ते अनन्त नागकु कहिले जाइ पुण। देव दानबंकर शुणिण वचन २५
बासुकि बोइले एबे सकळे तुम्भे शुण। मुँ गले रसातले पड़िब पृथ्वी पुण २६
शुणिण बेदबर देवंकु पचारि। मेदिनी धर तुम्भे देवता जाइ करि २७
शुणि करि देवताए बोइले नुहेँ धरि। असुरंकु ईश्वर पचारे विचारि २८
असुरे बोइले आम्भे केभेँ धरि नाहुँ। एते बळ आम्भ देहे हेब अबा काहुँ २९
समस्तंक नास्त शुणि विचारे वासुदेव।
आज से जोगमाय़ा सम्पादे हेउ कार्ज्य ३०
एमन्त विचारि जे सुमरे जोगमाय़ा।जाणिण जोगमाय़ा आगरे हेले ठिआ ३१
वासुदेव देव बोइले धरिण एबे धर।
शुणि करि जोगमाय़ा पृथ्वीकि धरे धीर ३२
सेठारु बासुकि घेनि मिळिले सिन्धु कूळ। बासुकिकि बोइले से धर तु गिरीबर ३३

बाँए हाथ से मन्दराचल उठा लिया। २० जैसे मतवाला हाथी झाड़ को जड़ से उखाड़ लेता है उसी प्रकार से श्रीहरि ने मन्दराचल को उखाड़ लिया। २१ यह देखकर देवता तथा असुर आनन्द में भर गए तथा नारायण से सशंकित हो गए। २२ जब श्री भगवान ने मन्दर गिरि को उखाड़ लिया तब सभी मिल-जुलकर उसे कन्धे में लेकर चल पड़े। २३ उसे लेकर क्षीरसागर के तट पर रख दिया। फिर वासुकी नाग को लेने चले गए। २४ सबने जाकर अनन्त नाग से कहा। देवता तथा दानवों की बात सुनकर वासुकी बोले, अब आप सभी लोग सुनिए। मेरे चलने से पृथ्वी रसातल में गिर जाएगी। २५-२६ यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा, हे देवताओ ! आप लोग जाकर पृथ्वी को धारण करें। २७ यह सुनकर देवताओं ने कहा कि हम पृथ्वी को धारण नहीं कर पाएँगे। तब विचारपूर्वक शंकर जी ने असुरों से पूँछा। २८ राक्षसों ने कहा कि हमने पृथ्वी कभी धारण नही की है। इतना बल हमारे शरीर में कहाँ है। २९ सबकी अस्वीकृति सुनकर भगवान विचार करने लगे कि यह कार्य आज योगमाया सम्पादित करे। ३० ऐसा सोचकर उन्होंने योगमाया का स्मरण किया। यह जानकर योगमाया आगे आकर खड़ी हो गई। ३१ भगवान ने उससे पृथ्वी धारण करने के लिये कहा। यह सुनकर योगमाया ने धैर्य के साथ पृथ्वी को धारण किया। ३२ वहाँ से वासुकी को लेकर समुद्र तट पर आ पहुँचे और

अदितिर गर्भरे देवता होन्ति जात । दितिर गर्भरु पुण असुर सम्भुत ५
बइमातृ दोषरु जे करन्ति पुण कळि । पुण बिचार कले होइण एक मेळि ६
क्षीर सागरकु से मन्थि बार पाइँ ।मन्दर गिरी निकटे मिळिले बेगे जाइ ७
ए गिरी घेनि चाल जे मन्थिबा सागर । समस्ते मेळ होइ उपाड़िबा गिरिवर ८
एमन्त बिचारि जे गिरीकि धइले जाइ । समस्ते धइले निबिड़ करि तहिँ ९
हक हकि होइण गिरीकि टाणन्ति । भुमिरे भरा देइण तोळि जे बसन्ति १०
समस्तंकर चक्षुरु जे अश्रु जळ गड़ि ।समस्ते बिचारिले पारिबा नाहिँ तोळि ११
बेदवर बोइले बासुदेबंकु चाहिँ । तु किम्पा तुनि होइ बसिलु प्रभु होइ १२
बहुत लोकरे कि पर्वत हुए तोळि । तुम्भे न तोळिले कि उपुड़े महागिरी १३
ईश्वर निउने जे बोइले हरिकि । केते उप्रोध तुम्भे करिछ गिरीकि १४
नकर हेला एबे नकर उप्रोध । ईश्वर वाणी शुणि हसिले पद्मनाभ १५
हरि बोइले जे देव असुर पुणि । काहार केते बळ अछिकि न जाणि १६
एके एके से जे अटन्ति महाबळी ।मिशामिशि होइछ दैत्य जे सुर मिळि १७
एमाने एक एक पारन्ति पृथ्वी दळि । आज से प्राकर्म जे जाणिबा एहांकर १८
शुणिण समस्त जे शिरे कर देले । तुम्भेत ठाकुर बोलि समस्ते बोइले १९

और दिति के गर्भ से असुर उत्पन्न हुये। ५ विमातृ-दोष के कारण वह कलह किया करते थे एक बार उन सबने मिलकर विचार किया। ६ क्षीर सागर का मन्थन करने के लिये। वह लोग शीघ्र ही मन्दराचल पर्वत के निकट जा पहुँचे। ७ वह बोले कि इस पर्वत को लेकर चलो। सागर का मन्थन करे। हम सब मिलकर इस श्रेष्ठ पर्वत को उखाड़ लेगे। ८ ऐसा विचार करके सबने दौड़कर दृढता के साथ उस पर्वत को पकड लिया। ९ एकजुट होकर जोर-शोर के साथ वह पर्वत को खीच रहे थे। पृथ्वी पर भार देकर उसे उठाते और फिर बैठ जाते थे। १० सबकी आँखो से अश्रुजल प्रवाहित होने लगा और सभी सोचने लगे कि हम इसे उठा नही सकेंगे। ११ ब्रह्मा ने वासुदेव की ओर देखते हुये कहा कि तुम स्वामी होकर चुपचाप कैसे बैठे हो। १२ क्या बहुत लोगो से यह पर्वत उठ जायेगा। आपके न उठाने पर क्या यह महान पर्वत उखड़ेगा। १३ शंकर ने नम्रता के साथ विष्णु से कहा कि आपने इस पर्वत का कितना कल्याण किया है। १४ अब न तो प्रमाद करो और न इस पर दया करो। शकर के वाक्य सुनकर पद्मनाभ विष्णु हँस पड़े। १५ वह बोले देवता और दैत्य इनमें किसके कितना बल है। मुझे पता नही है। एक से एक यह महान बलशाली है यहाँ पर दैत्य और असुर मिलकर एकजुट हुये है। १६-१७ यह लोग एक-एक पृथ्वी को ध्वस कर सकते है। आज इनके पराक्रम का पता चल जायेगा। १८ यह सुनकर सबने शिर से हाथ लगा लिये। सब कहने लगे कि आप हमारे स्वामी है। १९ देवता तथा असुरो की व्याकुलता का भाव देखकर भगवान ने

त्रिपुर मोहिनी से मोहिले सभिंकि । देखिबाकु अनुमाने नाहान्ति धरति ४८
देवताए बोइले आम्भरे एहा दिअ ।पुणि जाहा उपुजिब तुम्भे ताहा निअ ४९
देवतांक वचने बोइले बेदबर । ए कन्या गोटि अटे नारायणंकर ५०
विधाता कहिबारु समस्ते तोष हेले । निअन्तु बोलिण जे असुर बोइले ५१
आर बेळे मन्थिले क्षीर जे सागर । परमहंस जात होइले सेथिर ५२
देवताए बोइले आम्भंकु एहा दिअ । ईश्वर बोइले ए बेदबर प्रिय़ ५३
आर बेळे सागर मन्थिलेक पुण । बिष जात हेला जे काळानळ जाण ५४
बासुदेव बोइले देवताए निअ । देवताए बोइले एथिरे नाहिँ प्रिय़ ५५
देबंक ठारु शुणि श्रीहरि बोइले । असुर निअन्तु बोलि श्रीहरि कहिले ५६
असुरे बोइले एहा आम्भर नुहँ भोग । तुम्भेत बड़ अडुआ करिअछ जोग ५७
बेदबर बोइले ईश्वर भागे पडि । शुणि करि ईश्वर गरळ गर्भे भरि ५८
गरळ भक्षन्ते हर होइले विकळ ।श्रीहरि बोइले गारेड़ि पढिले हेब पार ५९
शुणि करि ईश्वर गारेडि सुमरिले । तेणु से गरळ हरण होइ गले ६०
आर बेळे सागर मन्थिले पुणि धरि । सुरा उपुजिबारु असुरे लोभ करि ६१
जाणिण श्रीहरि असुरे सुरा देले । सुराभक्षि असुरे परम तोष हेले ६२

मोहित कर लिया। देखकर अनुमान लगाया जा सकता था कि ऐसी अन्य धरित्री पर नही है। ४८ देवताओ ने दैत्यों से कहा कि इसे हमें प्रदान करो और अब जो कुछ निकले उसे तुम ले लेना। ४९ देवताओं के वचन सुनकर ब्रह्मा ने कहा यह कन्या तो नारायण के लिए है। ५० ब्रह्मा के कहने पर सब सन्तुष्ट हो गए। असुरों ने भी कहा ठीक है ले लें। ५१ फिर पुनः दूसरी बार उन्होंने सागर का मन्थन किया। जिससे परमहंस उत्पन्न हुए। ५२ देवताओ ने कहा इसे हमें प्रदान कर दो। शंकर ने कहा कि यह तो ब्रह्मा का प्रिय हैं। ५३ फिर उन्होंने अगली बार समुद्र मन्थन किया। उससे कालानल विष प्रकट हुआ। ५४ भगवान ने कहा हे देवताओ ! इसे ग्रहण करो। देवता बोले इसमें हमारा प्रेम नही है। ५५ देवताओ की बात सुनकर नारायण ने कहा कि तब इसे असुर लोग ग्रहण करे। ५६ असुर बोले यह हमारे भोग के योग्य नही है। आपने तो बड़ी अटपटी बात कह दी। ५७ ब्रह्माजी बोले कि यह शिव के भाग मे पड़ा है। यह सुनकर शंकर जी ने विष को पान कर लिया। ५८ विष के भक्षण करते ही शिव व्याकुल हो गये। भगवान नारायण ने कहा कि गरुड़ मंत्र का पाठ करने से इससे त्राण मिलेगा। ५९ यह सुनकर शंकर जी ने गरुड़ मंत्र का स्मरण किया। तब वह विष शात हुआ। ६० अगली बार फिर समुद्र का मन्थन हुआ जिससे सुरा प्रकट हुयी। असुर लोग उस पर लुब्ध हो गये। ६१ यह जानकर श्री नारायण ने असुरों को सुरा प्रदान की। सुरापान करके असुरलोग अत्यन्त सन्तुष्ट हो गये। ६२ समुद्र मन्थन फिर हुआ। तब देवताओं ने अमृत

बेदवर बोइले राजि हेबा परकार। आस आस अहि आहे देवकार्ज्य कर ३४
शुणि करि सन्तोष होइले महीधर। देव दानव जे तोळिले गिरीबर ३५
राजि होइ नागराजा बेढिले मन्दर। दुइ पाखे रहिले जे देवता असुर ३६
समकछ करिण धरिले बासुकिकि। देबे असुरे धरिण आणिले ताकु टेकि ३७
खुआ प्राये करिण धरिले सकळ। लाञ्जरे देवताए मुण्डरे असुर ३८
हुँकार शबद करि धरिले सर्बे सेथि।
गिरिकि तोळन्ते अचेष्टा सर्बे हुवन्ति ३९
मन्दर तोळन्ते जे सागरे बुडि गला। देखि करि बासुदेव कमठ रूप हेला ४०
क्षीर साहि दधि भाण्ड मन्दर हेले खुआ। श्रीहरि धरणी हेले बासुकिर प्रिया ४१
सागर मन्थते जे उपुचाए गिरी। देखिण देवताए निज रूप धरि ४२
मन्दर गिरी उपरे बसिलेक जाइ। तेबे से गिरीबर स्थिर होइ रहि ४३
उपरे श्रीहरि तळरे से पुण। मध्यरे मन्दर गिरी करन्ति मन्थन ४४
ऋक्षंक नृपति जे दधि खोजिण आणिला। धवळ सागररे नेइ पकाइला ४५
देखिण बेदबर देवे तोष होइ। देवे असुरे मिळि समुद्र मन्थइ ४६
एसनक समयरे बरुण दुहिता। पुष्प भुषण होइ बाहारे जगज्जिता ४७

उनसे श्रेष्ठ पर्वत को धारण करने की आज्ञा दी। ३३ ब्रह्माजी ने उन्हे मनाते हुये कहा हे अहिराज ! आइये और देवकार्य कीजिये। यह सुनकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग प्रसन्न हो गये देवताओ तथा दानवो ने श्रेष्ठ पर्वत को उठा लिया। ३४-३५ इसे स्वीकार करते हुये नागराज ने मन्दराचल को लपेट लिया। दोनों सिरो पर देवता और असुर स्थित हो गये। ३६ बराबर करके उन्होने वासुकी को पकड लिया और दोनों ही उन्हे उठाकर पकड़कर लाये। ३७ सबने उन्हे मथानी के समान पकड़ रखा था। पूँछ की ओर देवता तथा फन की ओर दैत्य थे। ३८ सभी ने हुँकार शब्द करके उन्हे पकड़ लिया और पर्वत को उठाते-उठाते सभी अचेत हुये जा रहे थे। ३९ मन्दराचल को उठाने पर वह समुद्र में डूब गया। यह देखकर श्रीनारायण ने कछुए का रूप धारण किया। ४० क्षीरसागर दही का पात्र, मन्दराचल मथानी, श्रीनरायण पृथ्वी, तथा वासुकी रस्सी बन गये। ४१ सागर मन्थन के समय पर्वत हुमँच जाता था। यह देखकर देवताओं ने अपना रूप धारण किया और मन्दराचल के ऊपर जाकर वैठ गये। तब वह पर्वत श्रेष्ठ स्थिर होकर ठहर गया। ४२-४३ ऊपर और नीचे श्रीवासुदेव थे मध्य में मन्दर पर्वत मन्थन कर रहा था। ४४ ऋक्षराज दधि खोजकर लाए तथा उसे लेकर श्वेत सागर मे फेक दिया। ४५ यह देखकर ब्रह्माजी तथा देवता सन्तुष्ट हो गए और सुरासुर मिलकर मन्थन करने लगे। ४६ इसी समय वरुण-पुत्री जगत् को जय करने वाली लक्ष्मी पुष्प आभूषणो से भूषित होकर वाहर निकली। ४७ उस त्रिपुर मोहिनी ने सबको

असुर देबंक संगे कळि। देखिण वासुदेव असुरंकु जे मारि ७९
जाणिण असुर देबंक संगे कळि। देखिण वासुदेव असुरंकु जे मारि ७९
तेणु से असुरे भांगिण पलाइले। समस्ते मेळ होइ सदा शिबंकु कहिले ८०
तेणु से देवताए अमृत घेनि चळि। बेदबर बिजे कले बेनि हंस चळि ८१
बासुदेव कमळांकु घेनिण चळिले। देवता असुरे से दिनु कळह रहिले ८२
बासुदेव गला बेळे असुरंकु कहि। आज ठारु सदाशिव तुम्भर हिते रहि ८३
आम्भे देवतांक हिते रहिलु पुण। बेदबर बेनि कूळ मध्यस्थ हेले जाण ८४
शुणिण देवताए हरष मन हेले। त्रिलोचन देबतांकु असुरे सेवा कले ८५
देबताए सेवा कले श्रीहरि चरण। शुणिण श्रीराम जे हरष कले मन ८६
जेतेक धन रत्न सिन्धुरु जात हेला। इन्द्र देवता नेइ भण्डारे रखिला ८७
अमृत खाइ देबताए हेले बळबान। इन्द्रंक संगते कलेक गोल पुण ८८
बार बर्ष पर्ज्यन्ते स्वर्गरे जुद्ध कले।असुरंकु नमारि इन्द्र हरिंकि सुमिरिले ८९
जाणिण वासुदेव ईश्वर ब्रह्म घेनि। जुद्ध रुहाइण से पचारिले पुणि ९०
देबताए बोइले शुणिण नारायण। एकळ धन राजा बाण्टि नदेलेक पुण ९१
वासुदेव बोइले आम्भे वण्टरा करि देबा। जुद्ध न करि तुम्भे स्थिररे रहिबा ९२
शुणिण देबताए शान्त मूर्त्ति हेले। सकळ धन नारायण भण्डारु अणाइले ९३

गुप्तरूप से जाकर अमृतपान किया। यह देखकर नारायण ने राहु को मार डाला। ७८ यह जानकर दैत्यों ने देवताओ से विवाद किया। भगवान ने ऐसा देखकर असुरों को मारा। ७९ तब वह असुर भाग खड़े हुये और सबने मिलकर महादेव जी से कहा। ८० तब देवता अमृत लेकर चल दिये। ब्रह्माजी भी दोनो हसो पर बैठकर चल दिये। ८१ भगवान विष्णु लक्ष्मी को लेकर चल पड़े, देवता और असुरो मे उस दिन से कलह होता रहा। ८२ जाते समय भगवान विष्णु ने कहा कि आज से सदा कल्याणकारी शकर तुम्हारे हितैषी रहेगे। ८३ मैं देवताओ का हित साधन करने वाला रहूँगा। ब्रह्माजी ने दोनों की मध्यस्थता की। ८४ यह सुनकर देवताओ के मन प्रसन्न हो गये। असुरलोग विनेत्रधारी महादेव जी की सेवा करने लगे। ८५ देवताओ ने श्रीराम भगवान के चरणो की सेवा की। यह सुनकर श्रीराम का मन प्रसन्न हो गया। ८६ जो भी धन रत्न समुद्र से उत्पन्न हुआ। उसे इन्द्रदेव ने लेकर भण्डार मे रख लिया। ८७ अमृतपान करके देवता वलवान हो गये और इन्द्र के साथ मिलकर युद्ध करने लगे। ८८ बारह वर्ष पर्यन्त स्वर्ग में युद्ध हुआ। असुरो के न मारने पर इन्द्र ने भगवान का स्मरण किया। ८९ यह जानकर विष्णु ने शकर तथा ब्रह्मा को लेकर युद्ध रोकते हुये उनसे पूँछा। ९० देवताओ ने कहा भगवन्! सुनिए। राजा ने समस्त धन बाँट कर नही दिया। ९१ नारायण ने कहा कि बटवारा हम कर देगे। आप लोग युद्ध न करके शान्त रहे। ९२ यह सुनकर देवता शान्त हो गए। भगवान ने भण्डार से सम्पूर्ण धन मँगा लिया। ९३

आर बेळे सागर मन्थिले जे पुण । अमृत जात हेला देखिले देवगण ६३
वेदवर बोइले देवंकर एहु । शुणिण देवताए हरष हेले तहुँ ६४
आर बेळे सागर मन्थन्ते औषधि । जात जाहा हेला रखिले सम्पदि ६५
आर बेले सागए मन्थिबारु पुण । खण्डा खपर जे अनेक जात जाण ६६
देखिण गोबिन्द जे सुमरि देबींकि । आसिण जे जय़ दुर्गा मिळिले सेथि ६७
श्रीहरि बोइले तुम्भे खण्डा खपर निअ । शुणिण जय दुर्गा धरिण करि स्नेह ६८
असुरे बोइले देबी आम्भंकु एहा दिअ । तुम्भे देले अस्त्र आम्भर एहु प्रीय़ ६९
शुणि करि जय दुर्गा खण्डा तांकु देले । छेल चक्र कातिनेइ देवंकु समर्पिले ७०
एथु अन्ते समस्ते होइले तोष चित्त । मन्दरकु थोइले निज स्थानरे तुरित ७१
सेठारु वासुकि नाग बेगे चळिगला । तलपुरे निज स्थाने धरणी धइला ७२
सेठारु जय़ दुर्गा जोग माय़ा मिळि । जम्बेव बृहस्पति सेठारु गले चलि ७३
ईश्वर कपिळासरे मिळिले जाइ वेग । एथु अन्ते श्रीराम शुण हे सम्वाद ७४
सुरा बाण्टिण जे असुर जाक खाइ । परम तोष होइ बिचार कले तहिँ ७५
बोइले देबताए खाइलेकि पुण । राहु जाइ बुझिण आसु तत्क्षण ७६
एपरि कथा हेला श्रीराम तुम्भे शुण । देबताए अमृत भक्षिले बसिण ७७
जाइ करि राहु गुपते अमृत भुञ्जिला । देखिण वासुदेव राहुकु माइला ७८

को उत्पन्न होते हुये देखा । ६३ ब्रह्मा ने कहा यह देवताओं का है । यह सुनकर देवतागण प्रसन्न हो गये । ६४ अगली बार सागर मन्थन करने पर औषधि उत्पन्न हुई जिन्हे सँभालकर रखा गया । ६५ पुन॰ सागर मन्थन करने पर नाना प्रकार के खड्ग तथा खप्पर उत्पन्न हुये । ६६ यह देखकर गोविन्द ने देवी का स्मरण किया । जै दुर्गा वहाँ आ पहुँची । ६७ भगवान विष्णु ने उनसे खाँड़ा और खप्पर ग्रहण करने को कहा । यह सुनकर जै दुर्गा ने स्नेहपूर्वक उन्हे ग्रहण कर लिया । ६८ असुरो ने कहा हे देवी ! यह हमे दो । तुम्हारे देने से यह हमारे प्रिय अस्त्र होगे । ६९ यह सुनकर जै दुर्गा ने खाडा उन्हे प्रदान किये और सेल चक्र काता लेकर देवताओ को दे दिये । ७० इसके अनन्तर सभी के मन सतुष्ट हो गये तुरन्त ही मन्दराचल को उसके स्थान पर रख दिया । ७१ वासुकी नाग वहा से शीघ्र ही चला गया और पाताललोक में अपने स्थान पर पहुँचकर उसने पृथ्वी को धारण कर लिया । ७२ जै दुर्गा योगमाया जामवत तथा बृहस्पति वहा से चले गये । ७३ महादेवजी शीघ्र ही कैलाश जा पहुँचे । हे श्रीराम ! इसके पश्चात् की कथा सुनो । ७४ असुर लोगों ने मिलजुलकर सुरा का पान कर लिया । फिर उन्होने अत्यन्त प्रसन्न होकर विचार किया । ७५ उन्होने कहा क्या देवता लोगो ने (अपना भाग) खा लिया है । हे राहु तुम शीघ्र ही जाकर पता लगाकर आओ । ७६ हे श्रीराम ! इस प्रकार की बाते हुई जिन्हे तुम सुनो । देवता लोगो ने बैठकर अमृत-पान किया । ७७ राहु ने

नारायण बोइले राहु जे पवन । मय़ दैत्य शुक्र जे आबर बळि पुण ११०
ए पाञ्च पुत्रे तोर काळ जुगे थिबे ।असाध्य दैत्य माने निश्चय़ नाश जिबे १११
अदिती नारायण वचन शिरे धरि ।तुम्भ वचन पाळिबि बोलि सत्य करि १२
नारायण जाआन्ते कश्यप ऋषि मिळि ।बोइले कुमारी गो किम्पाइ मनेभाळि १३
पुत्र माने तोहर जीइँले जे पुण ।आम्भे थिले तोर कि पुत्र चिन्ता जाण १४
उत्तम कुमर जे होइबे जात पुण । एबे संगातुणो मन नकर मळिन १५
शुणि करि अदिती मनरे तोष हेला । कश्यप ऋषि संगरे अंग संग कला १६
काळे से नारी जे होइला गर्भवास । धर्म बेळे कश्यप देले बिन्दुरस १७
गर्भ हेबारु शरीर दिनुदिन भारी । वेदबरंकु कहि सकळ मुनि मिळि १८
बेदबर बोइले इन्द्रंकु शुणा भाइ । अदितीर पाशे गुपतरे थाअ रहि १९
जेमन्ते पुत्र तार करि पारु हत ।नारायण आज्ञारे कुमर होइब बळबन्त १२०
शुणिण अदितीर सन्निधे इन्द्रगला । गुपतरे रहिण जे सबु ठाब कला १२१
अनुसरि रहिले जे शतेक वरष । प्रसव निकटे नारी पाइला अळस २२
दिने दिने नारी पुण सुमरे आई अई । पेट चड़ बड़ मुखरे आसे हाइ २३
सीमस्थान कतिकि चरण करि शोइ । अबे भार कथा इन्द्र देखिला जे तहिँ २४

कौन से पुत्र अक्षय होंगे । ९ भगवान बोले राहु, पवन, मधुदैत्य, शुक्र तथा बलि यह तुम्हारे पाँच पुत्र चिरकाल तक रहेंगे और अन्य असाधारण दैत्य निश्चय ही नाश को प्राप्त होंगे । ११०-१११ अदिति ने भगवान के वचनों को शिर पर धारण करते हुए कहा कि मै आपके वचनों को पालन करने की प्रतिज्ञा करती हूँ । १२ नारायण के चले जाने पर कश्यप ऋषि वहाँ आ गए । उन्होने कहा हे कुमारी तुम अपने मन में चिन्तित क्यो हो । १३ तुम्हारे पुत्र लोग पुनः जीवित हो गए है । हमारे रहते हुए तुम्हे पुत्र-चिन्ता कैसी ? । १४ हे सहचरी ! तुम अब अपना मन मलीन मत करो । तुम्हारे उत्तम पुत्र उत्पन्न होंगे । १५ यह सुनकर अदिति का मन संतुष्ट हो गया । फिर उसने कश्यप ऋषि के साथ समागम (रति प्रसग) किया । १६ समय पर वह स्त्री गर्भवती हो गई । धर्म के समय कश्यप ने विन्दुरस (शुक्र) प्रदान किया था । १७ गर्भ हो जाने से शरीर दिन पर दिन भारी होता गया । समस्त ऋषियो ने ब्रह्माजी से मिलकर सब बता दिया । १८ ब्रह्मा ने इन्द्र से कहा, अरे भाई ! सुनो । तुम अदिति के समीप छिपकर रहो । १९ जिससे उसके पुत्र का हनन कर सको । भगवान की आज्ञा से कुमार बलवान होगा । १२० यह सुनकर इन्द्र अदिति के निकट गया और वहाँ पर गुप्त रहकर उसने सब टोह ली । १२१ वह सौ वर्ष पर्यन्त उसका पीछा करते रहे । प्रसव के निकट आने पर वह स्त्री आलसी हो गई । २२ दिन पर दिन वह नारी अरी माँ-अरी माँ चिल्लाती थी और पेट में वेदना उठने से उसके मुख से हाय निकल जाता था । २३ वह सीमास्थल के पास पैर करके

प्रथम आदित्यकु सुमन्तक मणि देले। उच्चैश्रवा अमोह मणि समर्पिले ९४
चन्द्र देबताकु देले अष्ट अपसरी। कळ्पतरु आसिण नेलक शाकम्बरी ९५
इन्द्र देबतांकु देले जे ऐरावत गज। अष्टरत्न सहिते जेते धन लाभ ९६
धन रत्न कुबेरे जे भण्डारे थोइले। जग्न दुर्गा जोगमाय़ा सदाशिव नेले ९७
आउ जेते द्रव्य जे देवता सर्बे नेले। कनक दण्डछत्र बरगु घेनि गले ९८
वेद मन्त्र जेतेक जे उपुजिण थिला। विधाता पुरुष जे सेमान घेनिगला ९९
अमृत कुण्डळ जे नेलेक आदित्य। पाणि द्रव्यमान सबु बरुण रखिलेत १००
देवता इन्द्रंकर जे कळह भागिला। असुरंक उपद्रव आगहुँ जाइ थिला १०१
एथु अनन्तरे शुण आहे दाशरथि। चन्द्रदेव जणाइले नाराय़ण कति २
बोइले असुरंक जननी शोक कले। शुणिण नाराय़ण जे सेठारे मिळिले ३
अदितींकि बोइले शुण आगो जननी। पुत्र मलारु किम्पा शोककरु पुणि ४
तो पुत्रे होइबे पुण अति बळवान। देवताए एहांकु जे नोहिबे भाजन ५
काळ परिजन्ते से नपाइबे मृत्यु। पुत्रवन्ती लेखारे गणिता होइबु तु ६
ए मोहर वचन जे लय करि थिवु। अबेभार कथाकु जे केबेहेँ न जिबु ७
अमार्गरे गले तु जे पड़िब विपत्ति। धर्म बळ थिले पुत्रे हेबे उतपति ८
शुणि करि आदित्य परम तोष हेले। केउँ केउँ पुत्र मोर अतुट हेबे बोले ९

सर्वप्रथम उन्होंने सूर्य को सुमन्तक मणि प्रदान की तथा उच्चैश्रवा और अमेह-मणि भी समर्पित की। ९४ चन्द्रदेव को आठ अप्सराये समर्पित की। शाकम्बरी ने आकर कलपतरु ले लिया। ९५ इन्द्रदेव को ऐरावत हाथी दिया। अष्टरत्नो सहित जितना धन प्राप्त था उस धन रत्न को कुबेर ने भण्डार में रख लिया। शकर जी ने जय दुर्गा तथा योगमाया को ले लिया। ९६-९७ और जितना द्रव्य था वह सव देवताओ ने ले लिया। वह लोग स्वर्ण छत्र तथा दण्ड आदि छाँट छाँटकर लेकर चले गये। ९८ जो भी वेदमत्र प्रकट हुए थे उन्हे लेकर ब्रह्माजी चले गए। ९९ सूर्य ने अमृत-कुण्डल ले लिए वरुण ने समस्त पेय पदार्थ लेकर रख लिए। १०० देवताओ तथा इन्द्र का कलह समाप्त हो गया। असुरो का उपद्रव पहले ही ममाप्त हो चुका था। १०१ हे दशरथ नन्दन ! सुनो। इसके पश्चात् चन्द्रदेव ने भगवान विष्णु से कहा। २ असुर-माता को दुख हो गया है। यह सुनकर नारायण वहाँ गए। ३ उन्होंने अदिति से कहा, हे माता जी ! सुनिये। पुत्र निधन पर शोक क्यों कर रही हो। ४ तुम्हारे पुत्र पुनः अत्यन्त वलवान हो जाएँगे। देवता इनका पार न पा सकेंगे। ५ चिर-काल तक उनकी मृत्यु नही होगी और तुम्हारी गणना पुत्रवती स्त्रियो मे होगी। ६ हमारे यह वाक्य ध्यान में रखना। अव्यवहारिक वात कभी न करना। ७ कुमार्ग पर चलने से तुम विपत्ति में पड़ जाओगी। धर्म का वल होने से पुत्र उत्पन्न होंगे। ८ यह सुनकर अदिति अत्यन्त प्रसन्न हुई और कहा कि मेरे कौन-

पवन जात हेबारु सकळ देबे तोष। तेणु देवताए गले जे जाहार बास १४०
श्रीराम आगे मुनि कहिलेक एहा। जाहा कहिल मुनि संकेत देव एहा १४१
ए वैशाळी कटकर एमन्त प्रताप। आन स्थान एहाकु नुहइ स्वरूप ४२
एठारे अदिती जे गर्भवास हेला। ए स्थानरे अवतार पवन होइला ४३
इन्द्र काटन्ते अणचाश मूर्त्ति जे पवन। तेणु वैशाळी बोलि बोलाए एहुस्थान ४४
पवन जन्म हेबारु ए स्थान शीतळ। तेणु क्षय नोहिला जे अदिती कुमर ४५
जेते खण्ड होइ थिला तेते हेला मूर्त्ति। तेणु से आनन्द जे काश्यप अदिती ४६
कउशिक कहिबारु शुणिले रघुनाथ। तुम्भर बंश एथिरे होइण राजा सेत ४७
श्रीराम बोइले जेबे मोर वंश राजा। एथिरे केते पाट पाइले पाद पूजा ४८
कह हे ब्रह्म मुनि शुणिबा एहु कथा। ए भुमिरे गोत्र मोर जेबे से सामरथा ४९
तपन कुळर त अजोध्या अटे महो। ए राज्यरे राजा जे केमन्ते हेले सेहि १५०
बिश्वामित्र बोइले जे इक्ष्वाकु नृपति। अळम्बुष नामरे जे तांकर सन्तति १५१
अळम्बुष राजन जे बेनि पुत्र जाण। वैशाळ पुत्र बोलि तार वळवान ५२
अळम्बुष राजन जे मनरे बिचारिला। बड़ नन्दनकु अजोध्यारे राजा कला ५३
एमन्ते केते दिन उत्तारु जे पुण। मृगयार्थे अइला जे ए स्थानकु जाण ५४

बलवान था। देवता है या असुर इसे कौन पृथक कर सकता था। ३९ पवन के उत्पन्न होने से सारे देवता सन्तुष्ट थे। फिर देवता अपने अपने घर चले गए। १४० मुनि विश्वामित्र ने श्रीराम से यह बताया। राम बोले आपने जो कहा है। उसका संकेत देंगे। १४१ इस वैशाली दुर्ग का ऐसा प्रताप है। अन्य कोई स्थान इसके समान नही है। ४२ यही पर अदिति गर्भवती हुयी थी और इसी स्थान पर पवन का अवतार हुआ था। ४३ इन्द्र के काटने पर पवन के उनचास स्वरूप हो गये। इस कारण इस स्थान को बैशाली कहा जाता है। ४४ पवन के जन्म से ही यह स्थान शीतल है। इसी कारण अदिति का पुत्र नष्ट नही हुआ। ४५ जितने भाग हुये थे उतने ही शरीर धारण करने से कश्यप और अदिति प्रसन्न हो गये। ४६ विश्वामित्र के कहने पर रघुनाथ जी ने यह सुना कि आपके वश वाले यहाँ राजा हुये थे। ४७ श्रीराम ने कहा कि जब मेरे वश के राजा थे, तो यहाँ पर कितनी पोढियों को पाद पूजा प्राप्त हुई। ४८ हे ब्रह्मर्षि ! कहिये यह कथा हम सुनेंगे। जबकि इस भूमि पर मेरे गोत्र के समर्थ राजा हुये। ४९ सूर्यवंश की तो राजधानी अयोध्या है। वह इस राज्य के राजा किस प्रकार से बने। १५० विश्वामित्र ने कहा कि राजा इक्ष्वाकु की अल्मुक्ष नामक सन्तान थी। १५१ अल्मुक्ष के दो पुत्र थे। वैशाल नाम का उनका पुत्र बलवान था। ५२ राजा अल्मुक्ष ने मन में विचार किया और बड़े पुत्र को अयोध्या का राजा बना दिया। ५३ इस प्रकार कुछ दिनों के पश्चात् वह आखेट के लिये इस स्थान पर आया। ५४ निर्मल स्थान को देखकर उसने

छिद्र पाइ सुरराण गर्भरे परबेश। पेटर पुत्रकु से वज्ररे कला नाश २५
सात खण्ड करिण से काटि पकाइला।
पुणि खण्डक जे सात सात खण्ड कला २६
एक गोटि पुत्रकु अणचाष खण्ड कला। पूर्बर काहाणीमान आन से नोहिला २७
नाराय़ण आज्ञारे जे नमला कुमर। गर्भे थाइ रोदन कलेक अपार २८
अणचाश मूर्त्ति धरि पाइले शरीर। तप बळरे ताहा जाणिले मुनिवर २९
जाणिण काश्यप ऋषि इन्द्ररे शाप देले। सहस्र जोनि बह् बोलिण बोइले १३०
जाइण इन्द्रदेव पितार पाशे मिळि। देखिण काश्यप न चाहेँ मुख तोळि १३१
जननी बोइले तुरे एड़े कर्म कलु। गर्भरे पशिण मोर पुत्रकु मारिलु ३२
डररे सुर इन्द्र कम्पइ थर हर। भो माता दोष गो होइला तोहर ३३
पिता मोर शाप देले तु नदिअ शाप। शुणि असुर माता छाडिले बेगे कोप ३४
बोइले तोर भाइकि एबे तु जीआँअ। अमृत आणिण एहाकु बेगे दिअ ३५
शुणिले बज्रधर जे आणिला अमृत। भुञ्जन्ते पुत्र माने होइले बळबन्त ३६
अणचाश पवन जे भिन्न भिन्न मूर्त्ति। तेणु से पवन देवता जात गोटि ३७
पुत्र जात हेवारु जननी तोष हेले। अणचाष मूर्त्ति जे स्वरूप देखिले ३८
सकळ देवतारु बळबन्त पुण। देवता असुर के करि पारे भिन्न ३९

सो गई। इन्द्र ने उसके अभद्र व्यवहार को देखा। २४ छिद्र पाकर देवराज इन्द्र गर्भ में घुस गया और उसने पेट के बालक को वज्र से नष्ट कर दिया। २५ उसने उसे सात खण्डो मे काट डाला। फिर उसने एक-एक खण्ड के सात सात टुकडे कर दिये। २६ एक पूरे पुत्र के उनचास टुकडे कर दिये परन्तु पहले की कही गई बात अन्यथा नही हुयी। २७ भगवान के अशीर्वाद से पुत्र नही मरा। गर्भ में वह बहुत रोया। २८ उसके उनचास शरीर हो गये। मुनि-श्रेष्ठ ने तपस्या के बल से वह सब जान लिया। २९ ज्ञात होने पर कश्यप ऋषि ने इन्द्र को शाप दिया और कहा कि तेरे सहस्र योनियाँ हो जाये। १३० इन्द्रदेव पिता के पास जा पहुँचे और कश्यप को देखकर मुख उठाकर नही ताक सके। १३१ माता ने कहा अरे ! तूने ऐसा कर्म कर डाला। तूने गर्भ मे घुसकर मेरे पुत्र को मार दिया। ३२ सुरेन्द्र भय से थरथर काँपने लगे। उसने कहा हे माता ! मुझसे अपराध हो गया है। ३३ मेरे पिता ने मुझे शाप दिया परन्तु आप न दीजिये। यह सुनकर दैत्य माता ने शीघ्र ही कोप का परित्याग कर दिया। ३४ फिर वह बोली कि तुम अपने भाई को जीवित करो। अमृत लाकर इसे शीघ्र दो। ३५ यह सुनकर वज्रधारी इन्द्र अमृत ले आया। उसको खाते ही सारे पुत्र बलवान हो गये। ३६ उनचास पवन भिन्न-भिन्न शरीर वाले थे। इस प्रकार वह पवनदेव उत्पन्न हुये। ३७ पुत्र के उत्पन्न होने पर माता सतुष्ट हो गई। उन्होने उनचास मूर्तियो का स्वरूप देखा। ३८ वह समस्त देवताओ में

बैशाळि राजनर तिनि पुरुष कहि। मने हेबारु पुण श्रीराम पचारइ १७०
श्रीराम पुछिबारु मुनि कहन्ति पुण। शुण तुम्भे श्रीराम लक्ष्मण वेनिजन १७१
सूरचन्द्र नृपति ज बळवन्त हुए। मर्त्यपुर जिणिण से कलाक निर्भय़े ७२
बड़ाइ प्रतापि से गमिला तिनिपुर। सकळे प्रशंसा जे कलेक सुरनर ७३
धर्मचन्द्र बोलि करि ताहार तनय़े। पितार अन्तरे से जे महिपाळ हुए ७४
ताहार तहुँ जात सुत जे नृपति।अश्वमेध जाग करि होइला चक्रवर्त्ती ७५
ताहार तनय़ जे हुए नरबइ। देहबन्त बोलिण ताहार तनय़ी ७६
सृजना नामे कुमर अटे तार पुण। श्यामदूत बोलिण जे ताहार नन्दन ७७
श्याम दुतर नन्दन जम्बुदत होइ। लुहदत नन्दन तार साधिलाक महि ७८
मुनि बोइले तुम्भे शुण हे रघुनाथ। एते पाट तोर बंशे राज्य कले एथ ७९
शुणिण सानन्द जे होइले राघव। बैशाळि नग्ररे प्रवेश हेले बेग १८०
आपणा बंश राजा शुणि से अइले। विश्वामित्रंक चरणे ओळग मेलाइले १८१
लुहदत्त राजन जे मुनिकि पुछा कले। ए बेनि बाळक तुम्भ संगतरे बुले ८२
विश्वामित्र बोइले से अजोध्या राजासुत।
जाग रखिबाकु जाइ आणिलु आम्भेत ८३
जाग रखि आम्भर मिथिला पुरजाइ। जनकु जाग देखि राज्यकु जिबे सेहि ८४

बताया। ६९ उन्होने वैशाली राजाओं के तीन पीढियों का हाल बताया। मन में होने के कारण श्रीराम ने पुनः प्रश्न किया। १७० श्रीराम के पूँछने पर मुनि बोले हे श्रीराम लक्ष्मण! दोनो व्यक्ति सुनो। १७१ राजा सूरचन्द्र बलवान था। उसने मृत्युलोक को जीतकर निर्भय कर दिया था। ७२ वह अत्यन्त प्रतापी तीनो लोको में गया था। सुर नर इत्यादि सभी लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। ७३ उनके पुत्र का नाम धर्मचन्द्र था। जो पिता की मृत्यु के पश्चात् राजा बना। ७४ उनके सूत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। जो अश्वमेध यज्ञ करके चक्रवर्त्ती हो गया। ७५ उसका पुत्र नरवई हुआ जिसका पुत्र देहवंत था। ७६ उसके पुत्र का नाम सृजना था। श्यामदूत नामवाला उसके पुत्र हुआ। ७७ श्यामदूत के पुत्र का नाम जयदत्त था। उसके पुत्र का नाम लूहदत्त हुआ। जिसने पृथ्वी के सभी राजाओं से युद्ध करके उन्हें परास्त किया था। ७८ मुनि ने कहा हे रघुनाथ जी! आप सुनिये। तुम्हारे वंश के इतने राजाओं ने यहाँ राज्य किया। यह सुनकर श्रीराघव प्रसन्न हो गये और शीघ्र ही वैशाली नगर मे प्रविष्ट हुये। ७९-१८० राजा अपने वंश का नाम सुनकर वहाँ आये और उन्होने विश्वामित्र के चरणों में प्रणाम किया। १८१ लूहदत्त राजा ने मुनि से पूँछा कि यह दोनों बालक जो आपके साथ भ्रमण कर रहे है, यह कौन है। ८२ विश्वामित्र ने कहा कि यह अयोध्या के राजा के पुत्र है और हम यज्ञ की रक्षा करने के लिये जाकर इन्हे मांग लाये। ८३ हमारे यज्ञ की रक्षा करके यह जनक

निर्मळ स्थान देखि परजांकु पुछि । ए राज्य केउँ राजा पाळइ जे सृष्टि ५५
परजा बोले मळय अंशरे राजा थिला ।ताड़का असुर तार वंशकु निशेधिला ५६
आजकु शते बरष अणराजा होइ । असुर भयरे आम्भे नपारुँ जे रहि ५७
अळम्बुष राजा बोले आम्भर कुमर । से राज्ये राजा हेले हेबकि शीतळ ५८
शुणिण परजाए हरष होइ कहि । हुअ तुम्भे राजा बोलि बोइलेक सेहि ५९
शुणिण अळम्बुष वैशाळ अणाइला । से देशे राजा करि देश नाम देला १६०
तेणु वैशाळी नग्र एहाकु से कहि । तेणु इक्ष्वाकु वंश एथिरे राजा होइ १६१
वैशाळर पुत्र जे हेमवन्त राग्ने । सुर इन्द्र नृपति जे ताहार तनये ६२
ए रूपे तिनि पाट एथिरे बसे पुण । बळराम दास से जे श्रीहरि चरण ६३
जयतु जगन्नाथ हे जगत करता । दुःखी जनर वान्धव जगतर पिता ६४
देवतांक छळे जे सप्तम अवतार । असुर दलन नाम अटइ तुम्भर ६५
विश्वामित्र संगरे जाग रखिल जाइ ।तेणु गाधिसुत अनेक स्थान जे देखाइ ६६
वैशाळि नग्रे जे होइले परवेश । कुरु वंशर उदय कहिले ऋषि सेत ६७
पार्वती पचारिले सदाशिबंकु पुण ।सेठारु किस कले श्रीराम ऋषि जाण ६८
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो भगवति ।श्रीराम आगे जाहा विश्वामित्र कहन्ति ६९

प्रजा से पूछा कि इस राज्य का पालन-पोषण कौन राजा करता है। ५५ प्रजा ने कहा मलय के अंश से राजा था। तारकासुर ने उसके वंश को निषेध कर दिया। ५६ आज तक सौ वर्ष से विना राजा का राज्य है। असुर भय से हम रह नही पा रहे है। ५७ राजा अलमुक्ष ने कहा कि हमारा पुत्र उस राज्य का राजा बन जाये तो क्या शाति आ जायेगी। ५८ यह सुनकर प्रजा ने प्रसन्न होकर कहा कि आप राजा हो जाये। ५९ यह सुनकर अल्मुक्ष ने वैशाल को बुलाया और उस देश का राजा बनाकर नामकरण कर दिया। १६० इसलिये इस नगर को वैशाली कहा जाता है और तभी इक्ष्वाकु वंशीय यहाँ राजा बने थे। १६१ वैशाल का पुत्र राजा हेमवत था और उसके पुत्र का नाम राजा सूरचन्द्र हुआ। ६२ इस प्रकार यहाँ तीन राजसिंहासन अवस्थित थे। बलरामदास श्रीहरि के चरणों की सेवा करता है। ६३ हे जगत के सृष्टा! जगन्नाथ ! आपकी जय हो। आप दीन दुखी लोगो के वन्धु तथा ससार के पिता हो। ६४ देवताओ के बहाने आपका सातवाँ अवतार हुआ जिसमें आपका नाम असुरनिकन्दन ख्यात हुआ। ६५ आपने विश्वामित्र के साथ जाकर उनके यज्ञ की रक्षा की तब गाधि-नन्दन ने आपको अनेक स्थानो के दर्शन कराए। ६६ वैशाली नगर मे वह जाकर प्रविष्ट हुये और वहाँ ऋषि ने कुरुवश के उदय की बात बताई। ६७ पार्वती ने महादेव जी से पूँछा कि वहाँ पर श्रीराम तथा ऋषि ने क्या किया। ६८ शकर जी बोले हे भगवती ! तुम सुनो। जैसा कि विश्वामित्र ने श्रीराम से

अहिल्योद्धार

राघव पचारन्ते कहन्ति बिश्वामित्र । बिपुळ बन ए चउपाशरे पवित्र	१
गउतम ऋषि एथि तप करुथिले । तांकर घरणी संगतरे घेनि भले	२
तुछा पर्ण कुटिर जे अछि एठि देख । जाग करि अछन्ति जागकुण्ड देख	३
श्रीरामंकु देखाइले गाधिर नन्दन । कहन्ति बिश्वामित्र शुण हे श्रीराम	४
एहि स्थाने षड़ऋतु बोधइ पुण । ए जे शीतळ बन एहार गुण शुण	५
हे राम आगरे जे पथरेक दिशि । एहि से अहल्या बोलि गाधिसुत भाषि	६
अहल्यार वन जे अहल्यार नाम । पुराणर कथा ए जे शुण हे श्रीराम	७
पूर्बरे दइब जे मनरे विचारि । सकळ रूप गुण जे एकइ ठाब करि	८
लाबण्य मुरति करि कन्याए गढ़िला । अहल्या बनरे रखि अहल्या नाम देला	९
देखिण मोह गले सकळ जे मुनि । देवतांकु चाहिँण बोइले पद्म जोनि	१०
से आग पृथि जे बेगरे बुलि आसि । ताहार घरणी बोलि पितामह भाषि	११
शुणिले सुर जे ऋषि असुर गण । ब्रह्माण्ड बुलिबाकु गले से बेगेण	१२
बेदबर बोइले गउतमकु चाहिँ । तुम्भे किम्पा ए बनरे अछ थग्र होइ	१३

अहिल्योद्धार

राघव के पूछने पर विश्वामित्र ने कहा, यह विपुल वन है जो चारों ओर से पवित्र है। १ यहाँ पर गौतम ऋषि अपनी स्त्री को साथ लेकर तपस्या करते थे। २ देखो यहाँ पर एक रिक्त पर्णकुटी है। यज्ञ करने वाले यज्ञ-कुण्ड को देखो। ३ गाधिनन्दन ने श्रीराम को दिखाते हुए कहा हे श्री राम ! सुनो। ४ यहाँ षड्ऋतुओ का आभास होता है। यह जो शान्त तपोवन है इसके गुणो के विषय मे सुनो। ५ हे श्रीराम ! यह आगे जो एक पत्थर दिखाई दे रहा है यह ही अहिल्या है, इस प्रकार से गाधितनय ने कहा। ६ अहिल्या के नाम पर यह अहिल्या का वन है। हे श्रीराम ! इससे सम्बन्धित पौराणिक कथा को सुनो। ७ पूर्वकाल में विधाता ने विचारपूर्वक समस्त गुणो तथा सौन्दर्य को एकत्रित करके एक लावण्य मूर्ति कन्या का गठन किया और उसे अहिल्या नाम देकर इस वन में रख दिया। ८-९ उसे देखकर समस्त मुनिगण मोहित हो गए। तब पद्मयोनि ब्रह्मा ने देवताओ की ओर देखते हुए कहा। १० जो कोई सबसे पहले शीघ्रतापूर्वक पृथ्वी का चक्कर लगाकर आएगा। यह उसी की पत्नी होगी। इस प्रकार पितामह ब्रह्मा ने कहा। ११ यह देवताओं असुरों तथा ऋषियो ने सुना और सभी लोग शीघ्रतापूर्वक भूमण्डल का चक्कर लगाने चल पड़े। १२ ब्रह्माजी ने गौतम की ओर देखते हुए कहा कि आप इस वन में शान्त क्यो खड़े हो। १३ आप भी जाकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा करे और आगे आकर कन्या का

शुणिण राजन जे हरष मन हेला। मोर वड अंश बोलि संगे घेनिगला ८५
अन्तःपुर नारि माने देखिले तांकु पुण। हरषरे से दिन रहिले तिनि जण ८६
जाणिण रजनिरे गउतम गले।देखिण विश्वामित्र श्रीराम मान्य कले ८७
रजनी शेषे गौतमे पाछोटि घेनि गले। गउरव करिण आश्रमे मिळिले ८८
गौतम पचारिले काहार पुत्र बेनि। हरि हर जनम कि मनुष्य देह घेनि ८९
काहार पुत्र ए जे काहार बंशे जात। कार बनिता अटन्ति एहांकर मात १९०
शुणिण विश्वामित्र जे कहिले सकळ। दशरथ नृपति अजोध्या महिपाळ १९१
से राजार कोळे जात चारि पुत्र पुणि। तिनि माता गर्भरु जनम बेळ जाणि ९२
श्रीराम लक्ष्मण जे एहांक नाम पुणि।जाग रखिवा निमन्ते अइलु ताकु घेनि ९३
धनु उत्सव जाग जे जनक ऋषि घरे। देखिबे बोलि पुए अइले श्रद्धारे ९४
शुणिण गउतम जे गउरव कले। मोर शुभ कार्ज्य एहांकरे हेव बोले ९५
आवर भाव करिण से दिन रखिले। जोग बळे गौतम नारायण जाणिले ९६
रजनी शेषरे जे सेठारु चळिगले। बिपुळ वनरे जाइण प्रबेश होइले ९७
बन निशबद देखि पचारन्ति श्रीराम। कह महामुनि ए वनर किस नाम १९८

के यज्ञ को देखकर अपने राज्य को चले जायेंगे। ८४ यह सुनकर राजा आनन्दित हो गया। यह हमारे वड़े अश है ऐसा जानकर उन्हे साथ ले आया। ८५ अतःपुर की नारियो ने उन्हे देखा। वहॉ वह तीनो लोग आनन्दपूर्वक तीन दिन तक रहे। ८६ यह जानकर रात्रि मे गौतम वहॉ आ गये। श्रीराम तथा विश्वामित्र को देखकर उन्होने उनकी अभ्यर्थना की। ८७ रात्रि की समाप्ति पर गौतम अगवानी लेने गये और गौरव करके आश्रम मे जा पहुँचे। ८८ गौतम ने पूंछा कि यह दोनो पुत्र किसके है क्या भगवान विष्णु और शकर मनुष्य शरीर धारण करके उत्पन्न हुये है। ८९ यह किसके पुत्र है और किस वश मे उत्पन्न हुए है। इनकी माता किसकी स्त्री है। १९० यह सुनकर विश्वामित्र ने समस्त वृत्तात कहते हुये बताया कि राजा दशरथ अयोध्या के महाराज है। १९१ उन राजा के अक से चार पुत्र उत्पन्न हुये। इन्हे तीन माताओ ने जन्म दिया। ९२ इनके नाम श्रीराम और लक्ष्मण है। मैं इन्हे यज्ञ की रक्षा करने के लिये लाया था। ९३ जनक महर्षि के घर में धनुष यज्ञ महोत्सव देखने के लिये यह वालक प्रेमपूर्वक आये है। ९४ यह सुनकर गौतम ने बड़ा सम्मान किया। उन्होंने कहा कि मेरा भी शुभकार्य इनके द्वारा होगा। ९५ उन्होने आदर करके उस दिन वहॉ रखा। यह नारायण है ऐसा गौतम को योगबल से ज्ञात हो गया। ९६ रात्रि समाप्त हो जाने पर वह वहॉं से चल पडे और विपुलवन मे जाकर प्रविष्ट हुये। ९७ वन को शब्दरहित देखकर श्रीराम ने पूँछा हे महर्षि ! बताइये इस वन का क्या नाम है । १९८

मोहर हृदयरे तोहर हस्त लागु । प्रसन्न हुअ सखीरे बिरह ज्वर भागु २६
अहल्या बोइले तुम्भे शुण हे सुरपति ।एते अविचार किम्पा कह एथि आसि ३०
मुहिँ ऋषिआणी जे तुम्भे त देब राय । कि रूपे बासब तु एकथा आसि कह ३१
जतिर भारिजा मुं जे पतिव्रता नारी । मोते तु हरिबाकु कि रूपे मन करि ३२
जाअ तु स्वर्गपुर न रह क्षणे एथ । एहि क्षणि आसिबे मोहर प्राणनाथ ३३
ईश्वर कहिबारु कामदेव भस्म पुण । तुहि भस्म हेबु न रह एथि क्षण ३४
अहल्या निराशरे पळाए सुरपति । अहल्या रूप गुण विचारु थाए निति ३५
चारि दिन छ दिनरे इन्द्र जे आसइ । गउतम बनरे से जाइण पशइ ३६
बाट चाहुँ थाए से ऋषि जिबार बेळे । ए रूपे राजा जे मनर बिकळे ३७
एकदिने स्नाहान समय काळ होइ । गउतम स्नाहान करिण गले नई ३८
तेते बेळे बासब जे मायारूप धरि । अहल्या छामुरे इन्द्र ऋषि रूप धरि ३९
कन्या बोइले मुनि स्नान करि गल । नित्यकर्म नसारि जे बाहुडि अइल ४०
मायारूप धरिण जे बोले बज्र पाणि । शुण तु शशीमुखि आम्भर जे बाणी ४१
जळ घाटे देखिलु स्नान करइ उर्बशी । सुन्दर रूप गोटि नवजौवन कान्ति ४२
जानु जउवन रूप कान्ति देखि तार ।बाहुडि अइलु आम्भे काम पीड़ा घोर ४३

बाँध लो। २८ मेरे हृदय में तुम्हारा हाथ लगे। हे सहचरी ! तुम प्रसन्न हो जिससे विरह का ताप चला जाये। २९ अहिल्या ने कहा हे सुरेन्द्र ! सुनो। तुम यहाँ आकर यह दुराचार की कैसी बाते कर रहे हो। ३० मै ऋषि पत्नी हूँ और आप देवताओं के राजा। हे वासव तुम यहाँ आकर यह कैसी बाते कह रहे हो। ३१ मै तपस्वी की पत्नी पतिव्रता नारी हूँ। मुझे हरण करने के लिये तुमने मन में कैसे विचार किया। ३२ तुम यहाँ एक क्षण भी न रुककर स्वर्गलोक को चले जाओ। मेरे प्राणनाथ इसी समय आते ही होगे। ३३ शकर के कहने मात्र से कामदेव भस्म हो गया था, तुम भी भस्म हो जाओगे। अतः यहाँ क्षण भर के लिये भी मत रुको। ३४ अहिल्या से निराश देवराज इन्द्र भाग गया परन्तु वह नित्य अहिल्या के रूप तथा गुणों के विषय में सोचता रहता था। ३५ चार छैः दिनो मे इन्द्र गौतम के वन में घुसकर आता रहता था। ३६ वह ऋषि के जाने-की बाट जोहता रहता था। इस प्रकार इन्द्र राजा मन मे व्याकुल रहता था। ३७ एक दिन स्नान का समय हो गया। गौतम स्नान करने के लिये नदी को गये। ३८ उसी समय इन्द्र माया से ऋषि का रूप धारण करके अहिल्या के समक्ष पहुँचा। ३९ अहिल्या ने कहा हे मुनि ! आप स्नान करने गये थे। नित्यकर्म सम्पादित किये बिना ही लौट आये। ४० माया रूपधारी वज्रपाणि इन्द्र ने कहा हे शशिमुखी ! मेरी बात सुनो। ४१ जल के घाट पर सुन्दर रूपवाली नवयौवन-काति से युक्त उर्वशी को स्नान करते देखा। ४२ उसकी जंघाओ, यौवन तथा रूप कांति को देखकर घोर कामपीड़ा के कारण मैं

तुम्भे जाइ प्रथिबी प्रदक्षिण कर। आग होइ आसि कन्याकु तुम्भे वर १४
शुणिण गउतम हरष मन होइ। सुरभीकि प्रदक्षिण कलेक से जाइ १५
वेदबर आगरे कहिले महाऋषि। देखिण पितामह मने मने हसि १६
हेला प्रापत तुम्भकु अहल्या जुबती। एते बोलि कन्याकु सर्मपि बेदपति १७
बिभा कराइले ताकु गोत्र जे सुमरि।
देव असुरे ऋषि आसन्ति पृथि बुलि करि १८
देखिले गउतम होइलेणि बिभा। मने मने कोप कले असुर सुर देवा १९
एथु अनन्तरे जे बिधाता आज्ञा देइ। अहल्याकु घेनि तहुँ गले तपि साइँ २०
ए बनरे मठ करि बहुत दिन थिले। अहल्याकु घेनि करि सुखरे भोग,कले २१
सत्यानन्द बोलिण होइला एक पुत्र। समर्थ धार्मिक जे अटइ निवर्त्त २२
एथु अनन्तरे शुण हे श्रीराम। अहल्याकु इन्द्र भाळइ प्रतिदिन २३
अहल्याकु हरिले मोर जीवन सफळ। पितार शापरु जे ता मन चञ्चळ २४
एमन्त बिचारि मुनि आश्रमकु गला। एहि समयरे ऋषि तपकु जाइ थिला २५
निर्जन बन जाणि पशिला बज्रधर। प्रवेश होइला जाइ गौतम मठर २६
अहल्याकु चाहिँण बोइला शुण सखी। कामशरे तोते देखि होइलि मुं दुःखी २७
ए तोहर अधर चुम्बित मोर मन। कर रजुरे मोते कर गो वन्धन २८

वरण करे। १४ यह सुनकर गौतम ने प्रसन्नचित्त हो जाकर सुरभी की प्रदक्षिणा की। १५ महर्षि ने जाकर ब्रह्माजी से यह वताया। उन्हे देखकर ब्रह्माजी मन ही मन हँसने लगे। १६ यह अहिल्या नारी आपको प्राप्त हुई ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने कन्या उन्हे समर्पित कर दी। १७ गोत्र का स्मरण करके उससे उनका विवाह कर दिया। पृथ्वी की परिक्रमा करके देवता, असुर तथा ऋषियो ने आकर देखा कि उसका विवाह गौतम से हो चुका है। देवता तथा असुर मन ही मन क्रुद्ध हो गए। १८-१९ इसके पश्चात् ब्रह्माजी ने आज्ञा दी तव तपोधन गौतम उसे लेकर वहाँ से चले गए। २० इस वन मे मठ वनाकर वह बहुत दिन रहे और अहिल्या को लेकर सुख भोगते रहे। २१ उनके सतानन्द नामक एक पुत्र हुआ। वह सामर्थ्यवान धार्मिक तथा शातचित्त वाला था। २२ हे श्रीराम! सुनो। इसके पश्चात् इन्द्र प्रतिदिन अहिल्या के विषय मे सोचता रहता था। २३ अहिल्या का हरण करने से मेरा जीवन सफल हो जायेगा। पिता के शाप से उसका मन चचल था। २४ ऐसा विचार कर वह मुनि के आश्रम मे गया। इसी समय ऋषि तपस्या के लिये गये थे। २५ वन को निर्जन समझकर वज्रधारी इन्द्र घुसकर गौतम के मठ में जा पहुँचा। २६ अहिल्या को देखकर वह बोला हे सखि! सुनो। तुम्हे देखकर मै काम के वाण से विकल हो गया हूँ। २७ मेरी इच्छा तुम्हारे अधरो का चुम्बन करने की हे। तुम अपने बाहुओं की रस्सी से मुझे

स्वर्गर सम्पद एवे इच्छारे नाश कलु । एका एक घरणी मोर माय़ारे हरिलु ५९
जेणु जोनि किरे रसिलु श्रद्धा पाइ । जेते काळ तोर शरिरे प्राण थाइ ६०
तेते काळ जाए तु सहस्र जोनि बह । जोनिमय़ हेउ जे ए तोहर देह ६१
जेबण अण्डरे तु हरिलु मोर नारी ।सेहि अण्ड तोर छिड़ि पडु बज्रधारि ६२
कोपरे ब्रह्म ऋषि जहुँ शाप देले । सुरपतिर अण्ड छिडिण पड़िले ६३
सहस्रेक जोनि जे होइला तार काय़े । देखिण देवराज बहुत लज्जा पाए ६४
पळइ जाइ मान सरोबररे पशि । संकोच पाइण रहिला सेथि लुचि ६५
स्वर्ग जे अण राजा गोळ हेला तहुँ । दुर्बळ लोककु सिना दुष्ट लोक रहु ६६
बणिजारर धन चोर घेनि गले । पर जाए राजाकु माय़ा धन देले ६७
जान आरहिले निर्द्धन जनमाने । ड़रिण रहिले जे साधुत जनमाने ६८
दिगपाळे माने जाइ ब्रह्मारे कहिले । भो देव दुर्बळ जने प्रबळ होइले ६९
इन्द्र नथिबारु हट पाट राज्य हेला । बडकु सानमाने न मानिले परा ७०
धाता बोइले से कथा मोते अछि जणा । गौतम घरणी हरिले इन्द्र कना ७१
ताहा जाणि मुनिवर शाप ताकु देले । सहस्रे जोनि बह बोलिण बोइले ७२
पुणि शाप देले ताकु छिडु तोर अण्ड ।शाप पाइ इन्द्र लज्जारे गला होइ भण्ड ७३
मान सरोवररे लुचि अछि जाइ ।चाल आम्भे जिबा गउतम ऋषि तहिँ ७४

कर लिया । तूने अचानक कपट करके मेरी स्त्री का हरण कर लिया । ५९ तूने प्रेम पाकर जिस योनि के साथ रसक्रीडा की तो जब तक तेरे शरीर में प्राण रहें तब तक तू सहस्र योनियो को वहन करता रहे । यह तेरा शरीर योनिमय हो जाये । ६०-६१ जिस अण्ड से तूने मेरी स्त्री से भोग किया है । हे वज्रधर ! तेरा वह अण्ड टूटकर गिर जाये । ६२ जब ब्रह्मर्षि ने कुपित होकर यह शाप दिया तो देवराज का अण्ड टूटकर गिर पड़ा । ६३ उसके शरीर में सहस्र योनियाँ हो गई । यह देखकर देवराज बहुत लज्जित हो गया । ६४ वह भाग कर मान सरोवर में घुस गया संकोच के कारण वह वहाँ छिप कर रहा । ६५ स्वर्ग में कोई राजा न होने के कारण उपद्रव मचा । दुर्बल लोगों को दुष्ट लोग सताने लगे । व्यापारी का धन चोर ले गये । प्रजा राजा को कपट युक्त धन देने लगी । ६६-६७ निर्धन लोग रथों पर सवार हो गये । साधु लोग भयभीत रहने लगे । ६८ दिगपालो ने जाकर ब्रह्मा से कहा हे देव दुर्बल लोग प्रबल हो गये है । इन्द्र के न रहने से राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया है । बड़े लोगो की बाते छोटे नही सुनते । ६९-७० ब्रह्मा ने कहा कि वह बात मुझे ज्ञात है । इन्द्र ने गौतम की पत्नी से व्यभिचार किया है । ७१ यह जानकर श्रेष्ठ मुनि ने उसे हजार योनियो को धारण करने का शाप दिया । ७२ फिर उन्होने उसके अण्ड गिर जाने का शाप दिया । शाप की प्राप्ति से इन्द्र लज्जा से गड़ गया । ७३ वह जाकर मान सरोवर में छिपा है । चलो हम लोग वहाँ चले जहाँ गौतम

करि थाअ आलिंगन दिअ गो सुरति । ए मोर प्राण रख गो बारेसती ४४
एते बोलि करि जे अहल्याकु धरि । बिविध छन्देण श्रृंगार रति करि ४५
एसनक समय़रे गउतम ऋषि ।स्नान सारिण से जे मिळिले पुण आसि ४६
देखिण बेनि जन होइले तरस्त । मञ्जारि स्वरूप से धइले सुरनाथ ४७
जळाक बाटि बाटे गळिण पळाइला ।माय़ा पुरुष बोलिण अहल्या जाणिला ४८
केशबास ततक्षणे सम्भाळि करि बामा ।लज्जा भाव घेनि उभा होइले उत्तमा ४९
मुनिजाइ भितर पुररे बेगे मिळि । देखिले मनभग्न होइण अछि नारी ५०
इन्द्र जे मञ्जारि रूप होइण पळाइला । अहल्याकु गउत्तम तमरे पचारिला ५१
जळाक बाटि बाटे के होइला बाहार ।अहल्या बोइले से जे मञ्जारि जिवार ५२
शुणिम गउत्तम तपस्थानरे गले । जोगबळरे ऋषि से कथा जाणिले ५३
बोइले इन्द्र माय़ारे हरिलु मोर नारी । केते पाप कलुरे माय़ारूप धरि ५४
जतिर भारिजा पुण सतीकि द्रोह कलु । देवराज होइण जे अनीति आचरिलु ५५
कपट करिण जे सतीकि हरिलु । एबे तु बज्रधर निश्चय़ नाश गलु ५६
अनेक जे बिद्याधरी अपसरी तोर । किन्नरी माने जे नृत्य करन्ति अपार ५७
स्वर्गर सुन्दरी पुण त्रिभुबने नाहिँ । एमान भोग किम्पा नकलु नरसाइँ ५८

लौट आया । ४३ मुझे आप आलिंगन करते हुये मेरे साथ रतिक्रीड़ा करो । हे सती ! इस बार मेरे प्राणो की रक्षा करो । ४४ इतना कहकर उसने अहिल्या को पकड़कर नाना प्रकार के ढंगों से उससे रतिक्रीड़ा की । ४५ इसी समय गौतम ऋषि स्नान करके आ पहुँचे । ४६ वह दोनो देखकर भयभीत हो गए । इन्द्र ने बिलाव का रूप धारण कर लिया । ४७ वह खिडकी के रास्ते भाग खडा हुआ । तव अहिल्या को पता चला कि यह मायावी पुरुष था । ४८ उसी समय वह उत्तम स्त्री अपने केश तथा वस्त्रो को संभालकर लज्जाभाव से युक्त खड़ी हो गयी । ४९ मुनि घर के भीतर शीघ्र ही जा पहुँचे । उन्होने टूटे हुये मन वाली स्त्री को देखा । ५० इन्द्र विलाव का रूप धारण करके भाग गया था । गौतम ने कुपित होकर अहिल्या से पूँछा । ५१ खिड़की के मार्ग से कौन वाहर निकला था । अहिल्या ने कहा बिलाव था । ५२ यह सुनकर गौतम तपस्या के स्थान पर गये और ऋषि ने योगवल से वह वात ज्ञात कर ली । ५३ उन्होंने कहा अरे इन्द्र तूने छल से मेरी स्त्री का हरण किया है तूने कपटरूप धारण करके कितना पाप किया । ५४ तपस्वी की पत्नी और फिर सती से द्रोह किया । देवताओ के राजा होकर तूने अनैतिक कार्य किया है । ५५ तूने छल करके सती को लूट लिया । अरे वज्रधर ! अब तू निश्चित ही नष्ट हो गया । ५६ तेरे पास अनेक विद्याधरी अप्सराये, असख्य किन्नरियाँ, नाना प्रकार के नृत्य करती रहती है । ५७ स्वर्ग जैसी सुन्दरियाँ तीनों लोको मे नही है । हे नरेन्द्र ! तूने उनका उपभोग क्यो नही किया । ५८ तूने इच्छानुसार स्वर्ग की सम्पत्ति को नष्ट

गउतम बोइले शुणरे सुन्दरी। मोते केमन्ते बोइलु गला त मञ्जरी ९१
तेणु जे दोषी गो होइलु तुहि किना। आम्भ शाप मेण्टण न जाइ गो बामा ९२
शुणिण सुन्दरी जे जोड़िण बेनिकर। पूर्बे आसिथिला से स्वर्गर बज्रधर ९३
नास्ति करि तांकु मुं जे बोलि थिलि जेणु। मायारूपे धरिण अइला एबे तेणु ९४
तुम्भ रूप वर्ण चिह्न देखि मुं देह देलि। से कथाकु बिचार न कल तपचारी ९५
न जाणिण दोषकु शाप. देल पुण। सुदयारे मोते कर हे परित्राण ९६
अहल्या बिकळ देखि बोलन्ति तपोधनि। अळप दिन तनु गो पाषाण हुअ पुणि ९७
मुनिबोइले शते बरष पाषाण रूपे थिबु।श्रीरामंकर पाद लागि मुकति लभिबु ९८
दशरथ राजा घरे जनम ब्रह्मराशि। असुर नाशिबाकु जनम हेबे आसि ९९
जाग रखिबाकु मागि आणिबे विश्वामित्र।मिथिला गलाबेळे भेटिबे तोते सेथ १००
चरण लगाइबे तो परे मुनि ठारु शुणि। पाइबु निज तनु तु जुबती शिरोमणि १०१
श्रीराम चरण लागि दोष तो पार जिब। तेबे तोहर संगे मोहर हेब भाव २
शुणिण अहल्या चरणे पडिला बोले। पुत्र दुहिता मोर तुम्भंकु लागिले ३
निराश करिण न बोलिब जे किछि। मोर ठारे सपक्ष होइण थिब ऋषि ४

सर्वज्ञ है। इसमें सर्वथा मेरा दोष नही है। ९० गौतम ने कहा अरी सुन्दरी! सुन। तूने मुझसे यह कैसे कहा कि बिल्ली गयी है। ९१ क्या तू इससे अपराधिनी नही है। अरी कामिनी! मेरा शाप अन्यथा नही हो सकता। ९२ यह सुनकर सुन्दरी ने दोनो हाथ जोड़कर कहा कि पूर्वकाल में स्वर्ग से वज्रधारी इन्द्र आया था। ९३ मैने उससे मना कर दिया था। इस बार वह छद्मरूप धारण करके आया। ९४ आपका रूप वर्ण तथा चिह्न देखकर मैने अपना शरीर समर्पित कर दिया। हे तपस्वी! आपने उस बात का विचार नही किया। ९५ बिना दोष को समझे शाप दे दिया। कृपा करके मुझे इससे छुटकारा दिलाइये। ९६ अहिल्या को व्याकुल देखकर तपस्वी बोले कि थोड़े दिन के लिये तुम्हारा शरीर पाषाण हो जायेगा। ९७ मुनि ने कहा कि सौ वर्ष पर्यन्त तुम पाषाणरूप रहोगी। श्रीराम के चरण लगने से मुक्ति प्राप्त करोगी। ९८ ब्रह्म पुरुष असुरों का विनाश करने के लिये राजा दशरथ के घर मे जन्म लेगे। ९९ विश्वामित्र उन्हें यज्ञ की रक्षा के लिये मांगकर ले आएँगे। मिथिला जाने के समय मार्ग में तुझसे मिलेगे। १०० मुनि से तुम्हारे विषय में सुनकर वह तुम्हारे ऊपर चरण का स्पर्श कराएँगे। हे रमणी शिरोमणि। तब तुम अपना शरीर प्राप्त करोगी। १०१ श्रीराम के चरणो के स्पर्श से तेरा दोष समाप्त हो जाएगा। तब तुमसे हमारा प्रेम होगा। २ यह सुनकर अहिल्या चरणो में गिरकर बोली यदि मेरे पुत्र तथा पुत्री आपसे कुछ कहे तो उनसे उपेक्षापूर्वक बात न करियेगा। हे ऋषि! मेरे लिये आप सहायक बने रहियेगा। ३-४ मैं आपसे कहकर जा

अनेक प्रकारे आम्भे प्रबोधिबा जति । तेबे सेहि इन्द्र जे पाइव सदगति ७५
एते बोलि ब्रह्मा जे सुरगण घेनि । गौतम आश्रमरे प्रबेश पद्मजोनि ७६
इन्द्र देबंक पाइँ कहिले बहुमते । शुणिवा बोध हेले तपोवन्त चित्ते ७७
मुनि बोइले मोर वचन नुहँ आन । सस्रे जोनि जाइण सहस्रे थाउ पुण ७८
प्रसन्न होइण जे गउतम कहि ।छिण्डि बार अण्ड त लागिब आउ काहिँ ७९
मेषर अण्ड जे लगाए एबे नेइ । निज अण्ड थाउ जे कअँळिव नाहिँ ८०
शुणिण सुर ब्रह्म बेगे चळिगले । मान सरोवरे जाइ इन्द्रंकु देखिले ८१
गउतम आज्ञा से देइ थिले जहुँ । सहस्र लोचन जे होइलेक तहुँ ८२
तेणु बाहार जे होइले सुरपति । मेषर अण्ड आणि बिधाता लगाएटि ८३
सेठारु इन्द्रंकु नेइण कले अभिषेक । तेणु से पालिला संसार त्रिलोक ८४
सेठारु देवता गले गलेक बेदवर । जे जाहा आश्रमरे प्रबेश धातिकार ८५
एयु अनन्तरे तुम्भे शुण दाशरथि । अहल्याकु शाप जे बिहिलेक जति ८६
तुगो दो चारुणी न छुउँ तोर देह । पाषाण होइण गो ए बनरे थाअ ८७
शुणिण सुन्दरी जे बोलइ वचन । मोहर दोष नाहिँ शुण हे मुनि पुण ८८
मायारे तुम्भ रूप धरिण सुरपति ।मुहिँ स्त्री जनमाया जे जाणिबि किमिति ८९
तुम्भे सिना ब्रह्म बेत्ता जाण सर्ब कथा । ए कथारे दोष मोर नाहिँ जे सर्बथा ९०

ऋषि है । ७४ हम तपस्वी को अनेक प्रकार से समझाएँगे । तभी उस इन्द्र को सद्गति प्राप्त होगी । ७५ इतना कहकर कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी देवताओ को लेकर गौतम के आश्रम में प्रविष्ट हुए । ७६ उन्होने बहुत प्रकार से इन्द्रदेव के लिए प्रार्थना की, जिसे सुनकर तपस्वी का चित्तशात हो गया । ७७ मुनि ने कहा कि मेरा वाक्य अन्यथा नही हो सकता । अतः सहस्र योनियाँ हटकर सहस्र नेत्र प्राप्त करे । ७८ फिर गौतम ने प्रसन्न होकर कहा कि टूटकर गिर गया अण्ड और कहाँ लग पाएगा । ७९ अब भेड़ का अण्ड लेकर लगा दो । उसका अण्ड रहने दो वह पनपेगा नही । ८० यह सुनकर देवता और ब्रह्माजी शीघ्र ही चले गए और उन्होने मान सरोवर जाकर इन्द्र को देखा । ८१ जब गौतम ने आज्ञा दी तभी उसके एक हजार नेत्र हो गये । ८२ तब देवराज इन्द्र बाहर निकले । ब्रह्मा जी ने भेड का अण्डकोष लाकर लगा दिया । ८३ फिर इन्द्र को वहाँ से लाकर उनका अभिषेक किया तब वह तीनों लोकों का पालन करने लगे । ८४ वहाँ से देवता और ब्रह्माजी चल दिये और अपने-अपने आवासो में जा पहुँचे । ८५ हे दशरथनन्दन ! सुनो । इसके पश्चात् ऋषि ने अहिल्या को शाप दिया । ८६ उन्होने कहा कि तू दुराचारिणी है । तुम्हारे शरीर का स्पर्श नही करूँगा । तू पाषाण होकर विजन मे रह । ८७ यह सुनकर उस सुन्दरी ने कहा हे महर्षि ! मेरा दोष नही है । ८८ देवराज माया से आपका रूप धारण करके आया । मैं स्त्री हूँ । छल छदम क्या समझूं । ८९ आप ब्रह्मवेत्ता है,

पूर्व रूपरु सहस्रे गुणरे सुन्दर। देखिकरि धरणी जे होइला उज्जळ १२०
देखिले अहल्याकु श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र।
हृदयरु छाडि पाप पळाइ गला ताप १२१
अहल्या सुमरणा जे धरणी कि कला। अनन्त वासुदेव मुनिंकि अर्घ्य देला २२
श्रीराम लक्ष्मणंक शिरे दुर्बा अक्षत देइ। शते बरष पापरु मुकत हेलि मुहिँ २३
निज तनु पाइला जे गउतम नारी। बोइला श्रीरामचन्द्र शुण मो गुहारि २४
पाषाण रूपरु मोते मुकति गति देल। ध्रुव मण्डळरे एबे कथा रहाइल २५
एबे गौतम ऋषिकि सुमर जे तुम्भे। से ऋषि आसिले मुहिँ जिबि तांक संगे २६
बनगिरि लता ए जे नजाणइ बाट। केउँ ठारे ऋषि थिबे लागुछि संकट २७
शुणिबारु गाधिसुत सुमरणा कले। गउतम आश्रमरे थाइण जाणिले २८
बिचारिले अहल्या जे होइले निस्तार। श्रीरामर पयरत लागिला तारशिर २९
निश्चय श्रीरामचन्द्र अटन्ति परंब्रह्म।
असुरंकु नाशिबाकु होइले आसि जन्म १३०
एमन्त बिचारि ऋषि बहन चळिगले। अहल्या निस्तारण स्थानरे मिळिले १३१
देखिण अहल्या चरणरे ओळगिला। गौतम श्रीराम विश्वामित्ररे देखा हेला ३२
विश्वामित्र बहुत जे तिआरि कहिले। शुणिण गउतम जे सन्तोष मन हेले ३३

उसका सौन्दर्य पहले से सौ गुना अधिक था। उसको देखकर पृथ्वी उज्ज्वल हो गई। १२० श्रीराम लक्ष्मण और विश्वामित्र ने अहिल्या को देखा। उसके हृदय से पाप-ताप हट गया था। १२१ अहिल्या ने पृथ्वी का स्मरण किया और अनन्त वासुदेव तथा मुनि को अर्घ्य प्रदान किया। २२ वह श्रीराम तथा लक्ष्मण के शिर पर दूर्वाक्षत प्रदान करते हुए बोली कि मै सौ वर्ष के पापों से मुक्त हो गई। २३ गौतम की स्त्री को निज शरीर प्राप्त हुआ। तब उसने कहा हे श्रीरामचन्द्र ! मेरी विनती सुनिए। २४ आपने पाषाणरूप से मुझे मुक्ति तथा गति प्रदान की है। ससार में आपका यश अवस्थित हो गया। २५ इस समय आप गौतम ऋषि का स्मरण करे। उन महर्षि के आने पर मै उनके साथ जाऊँगी। २६ वन, गिरि, लताओ से मुझे मार्ग ज्ञात नही है। ऋषि कहाँ होगे। बड़ा संकट लग रहा है। २७ यह सुनकर गाधिनन्दन ने उनका आह्वान किया। इसे गौतम ने अपने आश्रम से ही जान लिया। २८ उन्होंने विचार किया कि अहिल्या का उद्धार हो गया है। श्रीराम का चरण उसके शीश पर लग चुका है। २९ निश्चय ही श्रीराम परमब्रह्म है। असुरो का नाश करने के लिये उनका जन्म हुआ है। १३० इस प्रकार विचार करके ऋषि शीघ्र ही चल पड़े और अहिल्या के उद्धार-स्थल पर जा पहुँचे। १३१ उन्हे देखकर अहिल्या ने चरणों में प्रणाम किया। गौतम का श्रीराम तथा विश्वामित्र के साथ मिलन हुआ। ३२ विश्वामित्र ने अनेक प्रकार से समझाते हुए सांत्वना दी जिसे सुनकर

मुहिँ तुम्भंकु जे कहि गलि जाण ।श्रीराम आसिबा जाए न पुणके निअ दिन ५
केते दिनरे श्रीराम होइबे पुण जात । एहि कथा मोते मुनि कहिब संकेत ६
गउतम बोइले शुणरे प्रियवती । शतेक बरषरे होइबु मुकति ७
आजकु अठाशि वर्ष श्रीराम हेबे जात । बार बरष हेले आसिबे एहु पथ ८
शते बरष एक दिने तो पाशे मिळिबे । से दिन मुकति जे गति तोते देबे ९
एते बोलि मुनि जे पुत्र दुहिता घेनि । नानातीर्थ बुलिण से तप कले पुणि ११०
पुत्र दुहितांकु पढ़ाइ नाना शास्त्र । विद्यारे निर्जिता मुनि कराइले सेत १११
गउतम जान्ते पुण अहल्या विकळ । पाषाण रूप गोटि हेले ततकाळ १२
शते बरष एकदिन सम्पूर्ण होइला ।अहल्यारे ऋषि शाप मेण्टिण जे गला १३
श्रीराम तोर चरण एहा उपरे लद । आगहुँ गउतमर कुमन्त कोप पद १४
एहि कन्या मुकत एबे हेउ तुम्भ लागि ।कथा रहिथिब जुग जुगान्तरकु भाबि १५
श्रीरामचन्द्र बोइले तुम्भे शुण हो महामुनि ।
कथा बडिबार उपाय तुम्भर अटे पुणि १६
जोगबळे जाणि कथा जेबे मुनि सत । तेबे एहु कन्या हेब जे मुकत १७
श्रीराम कहिले जे विश्वामित्ररे बाणि । पाषाण उपरे पाद लदिले रघुमणि १८
जेणु श्रीराम चरण लागिला पाषाणे । दिव्य शरीर जात होइला ततक्षणे १९

रही हूँ। श्रीराम के आने तक कितने दिन लगेंगे। ५ श्रीराम का जन्म कब होगा। हे मुनि ! आप मुझे इस बात का सकेत कर दीजिये। ६ गौतम बोले हे प्रियतमे ! सुनो। सौ वर्ष में तुम मुक्त हो जाओगी। ७ आज से अट्ठासी वर्षो पर श्रीराम जन्म लेगे और बारह वर्ष होने पर इस मार्ग पर आयेगे। ८ सौ वर्ष और एक दिन पर वह तुमसे मिलेगे। उसी दिन वह तुम्हे गति और मुक्ति देगे। ९ इतना कहकर मुनि पुत्र तथा पुत्री को लेकर अनेक तीर्थो मे घूमते हुये तपस्या करने लगे। ११० मुनि ने पुत्र तथा पुत्री को नाना प्रकार की विद्याओ तथा शास्त्रो में पारगत कर दिया। १११ गौतम के जाने से अहिल्या व्याकुल हो गई और उसी क्षण पाषाण रूप मे बदल गई। १२ सौ वर्ष और एक दिन पूर्ण हो गया है। ऋषिके शाप की अवधि अहिल्या पर से समाप्त हो चुकी है। १३ हे श्रीराम ! इसके ऊपर अपना चरण रख दो। पहले से ही गौतम के क्रोध से दबी है। १४ आपके कारण यह कन्या अब मुक्त हो और यह बात युग-युग के लिये अमर हो जाये। १५ श्रीराम ने कहा हे महर्षि ! सुनिये। इसका उपाय आपका ही है। यदि आपने जो योगबल से यह बात जान ली है। तो यह कन्या मुक्त हो जायेगी। १६-१७ रघुकुलमणि श्रीराम ने विश्वामित्र से इस प्रकार कहते हुये पाषाण के ऊपर चरण रख दिया। १८ जैसे ही श्रीराम का चरण पाषाण से स्पर्श हुआ। उसी समय दिव्य शरीर प्रकट हो गया। १९

देखिण नाउरिआ नाबरु ओहलाइला ।राम लक्ष्मण मुनिंक चरण ओळगिला ४९
एमन्त समग्ररे विचारी गंगा देवी । नाव भितरे रत्न'गरिआ थोइ भावि १५०
एथु अनन्तरे जे बिश्वामित्र मुनि ।श्रीराम लक्ष्मण घेनि कुमार बने मिळि १५१
रजनीरे से बनरे रहिले समस्ते । अश्विनी कुमार जे जाणिले जोग पथे ५२
कुमार बनरे से तप करुथिले । आसन तेजिण से बेगेण उठिले ५३
अमृत समान से फळमूळ देले आणि ।तप सिद्ध हेला बोलि कुमार देव भणि ५४
रजनीरे तांक संगे बसिले से बने । रजनी शेष हेबारु उठिले तक्षणे ५५
विश्वामित्र संगरे श्रीराम गले चळि । अश्विनी कुमार जे स्वर्गपुरे मिळि ५६
सहस्रे मुनि छन्ति श्रीरामर संगे ।विश्वामित्र मुनि जे अछन्ति पुण आगे ५७
मिथिला नगरे श्रीराम होइले प्रवेश । देखिले जे रामचन्द्र हिरन्यमय देश ५८
मेढ़ मण्डप जे प्रासाद जगती । सुबर्णर कळश दिशन्ति पन्ति पन्ति ५९
विचित्र चिराळ जे उड़इ फरहर । स्फटिक पावच्छ जे बसिला अछि घर १६०
साधुत जनमाने बार बणिजार । विचित्र करिण मण्डिण छन्ति पुर १६१
दाण्ड पअँरि कर्पूर धूळि सिञ्चि । चन्दन छेरा देइण विपुळ घर रचि ६२
नग्र परिमळ जे राजा दाण्ड बाट हाट । रथ गज अश्व जे चतुरंग थाट ६३
नदी पुष्करिणी कूप बाम्पि दिशे तोरा । पुष्प फळ तोटा जेके करु संखोळा ६४

विश्वामित्र श्रीराम तथा लक्ष्मण के चरणो में प्रणाम किया। ४९ इसी समय विचारपूर्वक गगादेवी नाव में रत्नों की हण्डी रखकर (प्रभु का) चिन्तन करने लगी। १५० इसके पश्चात् महर्षि विश्वामित्र श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनों कुमारों को लेकर वन में पहुँचे। १५१ रात्रि में उन सबने उस वन में वास किया। इसे अश्विनी कुमार योगमार्ग से जान गए। ५२ वह कुमार वन में भोजन का त्याग करके तपस्या कर रहे थे। वह शीघ्र ही (तपस्या से) उठ पड़े। ५३ उन कुमारदेव ने अमृत के समान फलमूल लाकर देते हुए कहा कि हमारी तपस्या सफल हो गई। ५४ वह उस वन मे रात्रि में उनके साथ बैठे रहे और रात्रि के अवसान पर वह उसी क्षण उठ बैठे। ५५ विश्वामित्र के साथ श्रीराम के चले जाने पर अश्विनी कुमार स्वर्गलोक जा पहुँचे। ५६ श्रीराम के साथ एक हजार मुनि थे। महर्षि विश्वामित्र आगे-आगे थे। ५७ फिर श्रीराम ने मिथिलानगर में प्रविष्ट होकर उस स्वर्णिम नगर को देखा। ५८ अट्टालिका, मन्दिर, छाया मण्डप, जगती प्रासाद तथा पंक्ति के पक्ति में स्वर्ण कलश दिखाई दे रहे थे। ५९ विचित्र प्रकार की पताकाएँ फहरा कर उड़ रही थी, घरो में स्फटिक की सीढ़ियाँ लगी थी। १६० पुरजन सज्जन थे और हाट बजार तथा नगर विचित्र प्रकार से सुसज्जित था। १६१ पथ एवं पौर कपूर-चन्दन के विपुल चूर्ण से लीपपोतकर सजाये हुए थे। ६२ नगर के राजमार्ग हाट-बाट सुगन्धित थे। रथ हाथी घोड़े चतुरगिनी सेना, नदी पुष्करिणी कुएँ वावली सुन्दर दिख रहे थे। फल तथा

श्रीराम लक्ष्मणकु आशिष ऋषि देले । प्रिय़ाकु घेनिण हरष मने गले ३४
गउतम हरसरे कहिले जे पुण । बोइले सखि तु गो भेटिलु श्रीराम ३५
एते कहि प्रियाकु घेनिण चळिगले । निज आश्रमरे जाइ प्रवेश होइले ३६
पार्वती पचारिले सेठारु किस हेला । सेठारु श्रीराम जे केणिकि पुण गला ३७
ईश्वर बोइले शुण गो भगवती । अहल्या निस्तारण करिण दाशरथि ३८
विश्वामित्रंक संगरे बेनि भाइ चळि । आबर अनेक तपि संगतरे मिळि ३९
धवळांगी गंगा कूळे हेले परबेश । गंगारे स्नान करि समस्ते हरष १४०
नित्यकर्म सारिण फळ मूळ भुञ्जि । एहि समय़रे नाउरि मिळे आसि १४१
सकळ मुनिवर नावरे बसे जाइ । श्रीरामंकु चाहिँण जे केरु आळ कहि ४२
तुम्भे बेनि भाइ जे चरण धोइ बस । मुहिँ अटे दुःखिजन नकर मोते नाश ४३
गउतम नारी जे अहल्या पाषाण ।
तुम्भर पाद लागन्ते होइला स्तिरी पुण ४४
नावरे बसिले मोर संखाळि बुड़िब । नाव गोटि मोर जेबे स्तिरी रूप हेब ४५
शुणि करि श्रीराम लक्ष्मण हसिले । चरण धोइ जाइ नावरे बसिले ४६
गंगाकु पारि करि नेला केरुआळ । नावरे बसाइण जगत ठाकुर ४७
नावरू ओहलाइले जे श्रीराम लक्ष्मण । विजय़ कले कूळे हरष होइ मन ४८

गौतम का मन सतुष्ट हो गया । ३३ ऋषि ने श्रीराम तथा लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया और अपनी प्रिया को लेकर प्रसन्नचित्त होकर चले गए । ३४ फिर गौतम ने प्रसन्नतापूर्वक कहा हे सहचरी ! तुम्हारी भेंट श्रीराम से हो गई । ३५ इतना कहकर प्रियतमा को लेकर चल दिये और अपने आश्रम मे जा पहुँचे । ३६ पार्वती ने पूँछा कि फिर वहाँ क्या हुआ ? वहाँ से श्रीराम फिर कहाँ गए ? । ३७ शकर जी बोले, हे भगवती ! सुनो । अहिल्या का उद्धार करके दशरथनन्दन दोनो भाई विश्वामित्र के साथ चल पडे और वह अनेक अन्य तपस्वियो से मिले । ३८-३९ वह शुभ्रगगा के तट पर जा पहुँचे । गगा मे स्नान करके सभी प्रसन्न हो गए । १४० उन्होने नित्यकर्म समाप्त करके फलमूल भोजन किए । इसी समय वहाँ केवट आ गया । १४१ समस्त मुनिगण जाकर नाव पर बैठ गए । श्रीराम को देखकर केवट कहने लगा । ४२ आप दोनो भाई पाद प्रच्छालन करके नाव पर बैठिए । मै दीन दुखी हूँ मेरा नाश मत करो । ४३ गौतम की स्त्री जो पाषाण थी वह आपके चरणो के स्पर्श से स्त्री हो गई । ४४ नाव पर बैठने से मेरा सहारा डूब जाएगा अर्थात् नष्ट हो जाएगा यदि मेरी नौका स्त्री हो गई । ४५ यह सुनकर श्रीराम तथा लक्ष्मण हँस पडे तथा चरण धोकर नाव पर जा बैठे । ४६ केवट विश्व के स्वामी को नाव में बिठाकर गगा के पार ले गया । ४७ श्रीराम तथा लक्ष्मण प्रसन्नचित्त होकर नाव से उतरकर गंगा तट पर पहुँच गए । ४८ यह देखकर मल्लाह ने नाव से उतरकर महर्षि

के पान पिक नेइ चरणे लगाइले। अळता नोहे बोलि संगर लोक देले ७९
सिन्दूर चितामान घेनुण थिले नारी।
गन्ध चन्दन बोलि से बोळिले पाशोरि १८०
केवण सुन्दरी जे हसि हसि धाइँ। मुखरे खाइला पान ओष्ठरे पड़इ १८१
केवण स्तिरी पिन्धने खर करि। अर्द्धक पिन्धि अछि अर्द्धक करे धरि ८२
आड़ पणत उडे काहार बात पाए। नुपुर गोडु पड़िला धाइँला समये ८३
केवण नागरी जे बोलइ घरे थाइ। आग होइण केते गो जाउछ पळाइ ८४
क्षणके फिटाइले समस्ते देखि जिबा। हस्त धरा धरि होइण जे आसिबा ८५
संग मेळ होइण गले जे सर्व नारी।लोटणी छन्दरे जे पिन्धिण छन्ति शाढ़ी ८६
केवण नारींकर बसणी गला खसि। केबण सुन्दरी जे मुरुकि हसा हसि ८७
केवण जुवती जे नमाने पुरुषकु। केवण बधू माने नमाने श्वशुरकु ८८
केहु नमानिले गुरुँ गउरब। मानित जन संगे होइले सदभाव ८९
केवण नारी मळा शुरकु पचारन्ति।निकटरे देखिले से जिह्वा कामुडन्ति १९०
देढ़ शुरकु देखि पचारे श्रीराम छन्ति काहिँ।
राम लक्ष्मण तुम्भे देखिला केउँ ठइँ १९१
श्वशुरकु बोहु माने नमानिण गले। लोके कहि देबारु लेउटि अनाइले ९२

आने से वह उसे खोल नही पा रही थी। ७८ किसी ने पान की पीक लेकर चरणो में लगा ली। फिर किसी ने आल्ता नही है यह कहकर साथ के लोगों को दे दिया। ७९ नारियों ने सिन्दूर की बिन्दी और तिलक न लगाकर उसे गन्ध चन्दन कहकर पोत लिया था। १८० कोई सुन्दरी हँसते हुए दौड़ रही थी। उसके मुख का खाया हुआ पान ओठों पर से गिर रहा था। १८१ कोई स्त्री वस्त्र पहनने की जल्दी में आधा पहन पाई थी और आधा हाथों में लिये थी। ८२ हवा पाकर किसी का घूँघट और आँचल उड रहा था। दौड़ते समय उसके पैरो के नूपुर गिर गए। ८३ कोई स्त्री घर से ही बोल रही थी कि कितना आगे-आगे भागती हो। ८४ एक क्षण रुकने से सभी देखने चलेंगी और हाथों में हाथ मिलाकर हो आएँगी। ८५ समस्त स्त्रियाँ एक साथ मिलकर गई उनके वस्त्र परिधान लथड़ रहे थे। ८६ किसी स्त्री की बसनी गिर गई थी और कोई स्त्री मुख मोड़कर हँस रही थी। ८७ कोई स्त्री पुरुष की परवाह नही कर रही थी और कोई कोई बहुएँ ससुर की बात नही सुन रही थी। ८८ कोई गुरुजनों की आन नही मान रही थी। मनचाहे जन से उनका प्रेम हो गया था। ८९ कोई स्त्री ममियाँ ससुर को पूँछती और पास दिख जाने पर जीभ काटने लगती। १९० कोई जेठ को देखकर पूँछतो कि श्रीराम कहाँ है। आपने श्रीराम लक्ष्मण को कहाँ देखा था ?। १९१ श्वसुर को बात न मानकर भी बहुएँ चली गई। लोगों के टोकने पर पलटकर देख लेती थी। ९२ कोई पैर का कड़ा हाथ में पकड़े थी।

गह गह शबद शुभइ मुख बाणी। मिथिला कटकरे प्रवेश रघुमणि ६५
पथ मार्गरे जाआन्ते देखन्ति सर्वजन। धन्य एहु देश बोलि बोलन्ति बचन ६६
एकर कहन्ते तहुँ आरेक पचारि।श्रीराम देखि आसन्ति मिथिला नर नारी ६७
नग्र नर नारीए जे धूआं धुइँ होइ। एकर कहंते आरेक आसे धाइँ ६८
नव जुबा सुन्दरी अइले श्रीरामंकु देखि। पञ्चम शर घाते लज्जा जे उपेक्षि ६९
केवण जुवती जे देखान्ति जानु जंघ। बस्त्र खशाइ देखन्ति जउबन भाग १७०
अळप हसि केहु आखि छटा मारि।केहु काख देखाइण देखान्ति हिग्रा फेडि १७१
केउँ नारी केश जे बान्धि न पारिले। आसिबार बेळे से जे हस्तरे धइले ७२
काहार जुड़ा गोटि धाउँ धाउँ फिटि। जुड़ार बउळ माळ भुमिरे पड़े लुटि ७३
श्रीरामंकु देखु देखु खञ्जा जे फिटि गला।
काहार मुक्ता माळ भुमिरे लोटिला ७४
काहार नाक चणा नाशारु गला लोटि।
काहा गळारु खसे चाप सरिमाळ गोटि ७५
केवण नारी बेश सुन्दर होइ थिला। श्रीरामंकु देखिबाकु धाइँण अइला ७६
नयने कज्जळ केहु न पारे घेनि बेगि। अंगुळर अग्ररे कळा अछि लागि ७७
काहार हस्तरे जे धरि अछि पेड़ि। तरवरे आसन्ते न पारइ फेडि ७८

फूलो के उद्यानो की गणना कौन कर सकता था। ६३-६४ मुखरित वाणी की चहल-पहल सुनाई दे रही थी। रघुश्रेष्ठ श्रीराम मिथिला नगर में प्रविष्ट हुए। ६५ सभी लोग उन्हे मार्ग मे जाते देखकर कह रहे थे कि यह प्रदेश धन्य है। ६६ एक के कहने पर अन्यजन उनसे पूंछते और मिथिलापुरवासी नर-नारियाँ श्रीराम को देखकर लौट आते थे। ६७ नगर के नर नारी दौड़ दौड़कर एक के कहने पर अन्य लोग भाग आते थे। ६८ श्रीराम को देखकर नवयुवती स्त्रियाँ कामबाण से प्रभावित होकर लज्जा की उपेक्षा कर देती थी। ६९ कोई युवा स्त्री अपनी जानु जघाओ का और कोई वस्त्र को गिराकर अपने यौवनागों का प्रदर्शन कर रही थी। १७० कोई थोड़ा मुस्कराकर आँख मार देती और कोई काँख उघार कर हृदय खोलकर दिखा रही थी। १७१ कोई स्त्री केश न झाड सकने के कारण आने के समय उन्हे हाथ मे पकड़े थी। ७२ दौडते-दौड़ते किसी का जूडा खुल गया था। और जूडे से लगा पुष्पमाल गिर गया था। ७३ श्रीराम को देखते-देखते किसी का कुडा खुल गया था और किसी का मुक्तामाल भूमि में गिर गया था। ७४ किसी के नाक की कील गिर पडी थी और किसी के गले से चाप के आकार का कण्ठहार गिर गया था। ७५ किसी स्त्री का वेश सुन्दर बना था और वह दौड़कर श्रीराम को देखने आ गई थी। ७६ शीघ्रता मे कोई आँखो में काजल नही लगा पाई थी। उनकी उँगलियो के अगले भाग मे काजल लगा रह गया था। ७७ कोई हाथों में मंजूषा लिए थी और शीघ्रता में

चम्पा पुष्प प्राय़ शरीर दिशइ सान भाइ। धन्य एहांकर गो गर्भधारी आई ७
आम्भर मिथिला नग्र बड़ जे पुण्य आज। काहुँ आसि प्रवेश होइले रूपराज ८
आम्भ देहजाक किम्पा नोहिला नय़न। एहाकु देखिबार शान्ति जे नुहँ मन ९
केमन्ते एहांकर छुइँबा आम्भे देह।एथकु केउँ उपाय़ अछि गो सखि कह २१०
के बोले एहांकु गो चुम्बन आम्भे देवा। एहांकर संगरे गोड़ाइण थिबा २११
के बोले आम्भर जीवन धिक हेउ। जेबे आम्भर नोहिब काळ प्रभु १२
आम्भर कुचमान मर्द्दन्ते करे धरि। तेबे से जीबन गो सफळ आम्भरि १३
एहांक संगे जेबे सुरति आम्भे पुणि।जेबे आम्भर जीवन सार्थक संगातुणी १४
एहाकु घेनि जेवे पलंके शोइथिबा। स्वर्गकु जाइ आम्भे किस जे करिबा १५
चालन्ते श्रीरामर दिशुछि बदन। जुबा स्तिरी मानंकु जे पीडुछि मदन १६
के बोले घरद्वारे आम्भर काज्यं नाहिँ। के बोले आई गो जिबु आम्भे काहिँ १७
काहुँ ओ कामध्वंसन अइले एहु पुरी। जुबा जुवती मानंकर प्राण नेले हरि १८
निश्चय़ एहु आज गो करिब स्तिरी वध। चाहिँ बार चातुरिरे प्राण जे दगध १९
हसि कथाए कहिले करिबे निश्चे नारी। अवश्य प्राण ए गो नेव सबुंकरि २२०
जेबण स्तिरी माने होइण छन्ति जुबा।
बिचारन्ति मने आम्भे नोहि थिले बिभा २२१

छोटे भाई का शरीर चम्पा के फूल के समान दिख रहा है। इनकी गर्भधारिणी माँ धन्य है। ७ आज हमारे मिथिलानगर का महान पुण्य उदय हुआ है जो यह सौन्दर्य के अधिराज कही से आकर यहाँ प्रविष्ट हुए है। ८ हमारे सम्पूर्ण शरीर मे नेत्र क्यो नही हुए। इन्हे देखने से मन तृप्त नही हो रहा है। ९ हम इनके शरीर का स्पर्श कैसे करे। हे सखि ! बताओ, क्या इसका कोई उपाय है। २१० कोई कहती कि इन्हे हम चूम लेगे। इनके साथ इनके पीछे लगे रहेगे। २११ कोई कह रही थी कि हमारे जीवन को धिक्कार है यदि यह काल प्रभु हमारे स्वामी न बन सके। १२ यह जब हमारे स्तनो को हाथो से पकड़कर मर्दन करते तब हमारा जीवन सफल होता। १३ हे सखी ! जब इनके साथ हमारा सहवास होता तभी हमारा जीवन सार्थक होता। १४ यदि हम इन्हे लेकर पर्यङ्क पर लेट सके तो फिर हम स्वर्ग में जाकर क्या करेगी। १५ चलते हुए श्रीराम का वदन दिखने से युवास्त्रियो को कामदेव पीड़ित कर देता। १६ कोई कहती थी कि घर द्वार से हमें क्या प्रयोजन है ? कोई कहती अरी माँ ! हम कहाँ जाँय। १७ कही यह काम को नाश करने वाले इस नगर में तो नही आ गए है और इन्होने युवा युवतियो के प्राणो का हरण कर लिया है। १८ निश्चय ही यह आज स्त्री-वध करेगे। चितवन-चातुर्य से प्राण दग्ध हो रहे है। १९ हँसकर बात करने से नारियाँ निश्चितरूप से मरेगी। यह अवश्य ही सबके प्राण ले लेगे। २२० जो स्त्रियाँ युवा हो गई थी वह सोचने लगी कि यदि हम विवाह न करती तो

केहु हस्ते धरि गोड़र जे बळा। कण्ठरे पड़ि अछि चउसरि माळा ९३
केहु पाट बरत बाहारे बान्धु थिला। श्रीरामकु देखिबाकु धाइँण अइला ९४
केवण जुवतीर जउवन भारी।धाइँ जाउअछि स्तन दुहिंक हस्ते धरि ९५
खुआ चळन्तेण चापइ पुण पुणि। एककु आरेक जे धाएँ जिणा जिणि ९६
केउँ स्तिरी आनन्दरे नय़नु बहे बारि। शरीर जडितारे दुइ कुचरे पड़ि ९७
काहार कंकण जे बाजइ रुण झुण। केवण नारी गोटि कुंकुमे विलेपन ९८
केउँ नारी गोटिए भुकुटि नाहिँ फुटि। वस्त्र उडि जिबारु दिशु अछि फुटि ९९
दाण्डरे गहळ जे जिबार बाट नाहिँ।
के बोले श्रीराम लक्ष्मण अछन्ति केउँ ठाइँ २००
के बोले देखुछन्ति विश्वामित्रंकर पाशे। नव दुर्वादळ प्राय़क तनु दिशे २०१
शरद चन्द्रमा प्राय़ेक दिशि मुख। राजीव लोचन जे बेनि नेत्र देख २
आजानु लम्बित बाहु दिशइ कर स्थळ। फर हर उडइ जे नेत पणन्तर ३
उपरे नेइ रंग वस्त्रके बताइला। करे धरिबा धनु एहाकु शोभे परा ४
जाईफुल गभा शिररे बेढ़ि अछि। हेळेण मोहु अछि संसार नव सृष्टि ५
कर्णरे कुण्डळ शोभे गळारे मोतिमाळा। निर्मळ मेघरे कि उदय़ हेले तरा ६

गले मे पड़ी हुई चौलरी माला गिर गई थी। ९३ कोई रेशमी वस्त्र बाहर बाँध रही थी। वह श्रीराम को देखने के लिये दौड़कर आ गयी। ९४ किसी युवती के यौवन भारी थे। वह दोनो स्तनो को हाथो मे पकड़कर दौडी चली जा जा रही थी। ९५ वह लोग वराबर चलती हुई वाजुओं को दबाती तथा दौडा दौड़ी में एक दूसरे को पछाडती हुयी भाग रही थी। ९६ किसी स्त्री के नेत्रो से आनन्दाश्रु वह रहे थे और शरीर मे लगे हुये दोनो स्तनो पर गिर रहे थे। ९७ किसी के ककण रुनझुन बज रहे थे और कोई स्त्री कुमकुम का लेप किये हुये थी। ९८ किसी स्त्री की एक भृकुटी नही दिखाई दे रही थी परन्तु वस्त्र उड़ जाने से उसका प्रदर्शन हो रहा था। ९९ मार्ग मे चहल-पहल थी। जाने की राह नही थी। कोई कहती थी कि श्रीराम लक्ष्मण कहाँ है। २०० कोई कहती थी कि देखो विश्वामित्र के निकट नवदूर्वादल के समान शरीर दिखाई दे रहा है। २०१ उनका मुख शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान दिखाई देता है। देखो उनके दोनो नेत्र कमल के समान है। २ उनकी भुजाएँ अजानुलम्बित दिख रही है। रेशमी पटछोर फर-फर उड़ रहा है। ३ इन्होने ऊपर से लालरग का वस्त्र लगा रक्खा है। हाथो मे पकड़ा धनुष उन्हे सुशोभित कर रहा है। ४ शिर में चमेली के फूलों का गुच्छा सजा है। संसार की नवल सृष्टि को सहज में ही मोहित कर रहे है। ५ कानो मे कुण्डल और गले में मोतियो की माला शोभित हो रही है। लगता है जैसे निर्मल आकाश मे तारागण उदित हो गए हो। ६

राम नाम जपि बारु दुर्गरे जाइ बसि। स्वर्गपुर बासि माने रामनाम घोषि ३६
देवताए चिन्तिण जे सुन्दर रूप हेले। नागबळ चिन्तिण जे सुमरन्ति भले ३७
राजा गण चिन्तिण जे सुन्दर शोभा रघु।
पात्र मन्त्री चिन्ति बारु शोभा सुन्दर बुलदु ३८
साधवे चिन्तिबारु बहुधन पाइ। स्तीरि माने चिन्ति बारु शोभा सुन्दर होइ ३९
नामर सुन्दर तार रूपर सुन्दर। चालिबार सुन्दर कहिबार सुन्दर २४०
जेणु प्रभु पण घेनिण शरीर। समस्त लोकमानंकु दिशइ सुन्दर २४१
एठारु श्रीराम जे केणिकि गले पुण।
से कथा मोह आगे कहिब स्वामी जाण ४२
ईश्वर बोइले शुणरे संगातुणी। एथु अनन्तरे जे विश्वामित्र मुनि ४३
श्रीराम लक्ष्मणंकु संगरे घेनि चळि। अनेक ऋषि माने संगरे छन्ति घेरि ४४
अनेक नर नारी पछरे गोड़ाइ। ऋषिकर नबरे प्रबेश हेले जाइ ४५
जागरे बसिछन्ति जनक महाऋषि। श्रीराम लक्ष्मणकु देखिले मुनि आसि ४६
विश्वामित्र सहिते अनेक तपिगण। देखिले प्रळग्न जे जलुछि हुतासन ४७
मूषळ प्रमाणरे पडइ घृत धार। सञ्चपि कहिबा केते जागर सम्भार ४८
अन्न बस्त्र पाणि पणा सदाबर्त्त जाण। अनेक देशर राजा सेथिरे छन्ति पुण ४९

जन वन में बैठकर जिसका नाम जप करते है। ३५ राम नाम के जाप से लोग राज्य प्राप्त करते है। स्वर्गलोकवासी भी राम नाम का जाप करते है। ३६ देवता जिसका चिन्तन करके सुन्दर रूप वाले हो गए। नाग लोग जिसका चिन्तन भली प्रकार से करते रहते है। ३७ राजागण उस सुन्दर रघुवीर का चिन्तन करते हैं। मंत्री तथा सामन्तो के चिन्तन से सुन्दर समृद्धि की अभिवृद्धि होती है। ३८ साधुजन चिन्तन करके प्रचुरधन प्राप्त करते है। स्त्रियाँ स्मरण करके सुन्दरता को प्राप्त होती है। ३९ उनका नाम रूप चाल-ढाल बाते आदि सब सुन्दर है। २४० जब ब्रह्मतत्व ने विग्रह धारण किया तो वह सभी लोगो को सुन्दर दिखने लगा। २४१ पार्वती ने कहा कि फिर श्रीराम यहाँ से कहाँ गए, हे नाथ ! वह कथा आप हमसे कहिए। ४२ शंकर जी बोले, हे सहचरी ! सुनो। इसके पश्चात् महर्षि विश्वामित्र श्रीराम तथा लक्ष्मण को साथ लेकर चल दिये। अनेक ऋषि साथ-साथ उन्हे घेरे हुए थे। ४३-४४ पीछे लगे हुए अनेक नर-नारियों के साथ उन्होने महर्षि जनक के महल में प्रवेश किया। ४५ महर्षि जनक यज्ञ में बैठे थे। मुनि ने आकर श्रीराम तथा लक्ष्मण को देखा। ४६ अनेक तपस्वियो के साथ विश्वामित्र ने प्रलयाग्नि के समान प्रज्वलित हुताशन को देखा। ४७ मूषलाधार घृत पड़ रहा था। यज्ञ के महोत्सव के विषय में कहाँ तक कहा जाय। ४८ अन्न वस्त्र पेय पदार्थ के सदावर्त खुले थे। अनेक

आगहुँ आसि थिले हुअन्तु एहांकरि।
पिता माता न जाणन्ते आम्भे जान्तुबरि २२
वृद्धा स्तिरी माने जे सन्तापि हुअन्ति। बयस थिले आम्भर हुअन्ते एहु पति २३
ए पुरुष संगे जेबे हुअन्ता अंग संग।
आम्भ देह थिवा जाए मनरे थान्ता भाव २४
मध्य पुरुषे बोलन्ति साधुए सन्थमूर्त्ति।
देखिल नथिला जे शुणिला नाहिँ स्मृति २५
अपूर्व सुन्दर जे अळप वयस। ए रूपे बिजे कले धन्य एहु देश २६
बाळपुए विचारन्ति जेबे एहाक संगे खेळि। तेबे सुन्दर जे दिशन्ता बाळकेळि २७
जुबा पुरुष वोलन्ति ए देवता स्वरूप। मनुष्य जाकरे के होइब एड़े रूप २८
नारी गण माने जे मुच्छि न पारन्ति। श्रीराम पछरे गोडाइ जाउछन्ति २९
सामन्त पात्र मानंकर नारी माने देखि। जगतिरे उठिण चाहाँन्ति निरेक्षि २३०
अंगुळि देखाइ के कहन्ति तांक पाश। कळा श्यामळ वर्ण गो धनु धरि हस २३१
सिह छुआ प्राय गो चाहिँ वार ठाणि। पाषाण तरळे गो चाहिँले एहु पुणि ३२
एहा शुणि पार्वती पचारे त्रिलोचने। श्रीराम रूप देखि बिरहि हेले जने ३३
बिरह मन किस्पा शुण गो शशी मुखि।निर्गुण पुरुष ए अविगुण नाहिँ किछि ३४
जगत जाकर लोके जा नाम सुमरन्ति। मुनि माने जपि अरण्यरे बसि थान्ति ३५

अच्छा था। २२१ पहले आने से हम इनकी हो जाती। माता-पिता की जानकारी के विना ही हमारा विवाह हो जाता। २२ वृद्धा स्त्रियाँ सताप कर कर रही थी। यदि हमारी अवस्था होती तो यह हमारे पति हो जाते। २३ इस पुरुष के साथ जब अग का समागम होता तो हमारे जीवन पर्यन्त मन मे प्रेम रहता। २४ प्रौढ पुरुष कहते थे कि यह सन्त मूर्तियाँ धन्य है। न ही देखा था और न कानो से ऐसा सुना ही था। २५ यह छोटी अवस्था वाली अपूर्व सुन्दर मूर्तियो के आने से यह प्रदेश धन्य हो गया। २६ बालकवृन्द सोच रहे थे यदि हम इनके साथ खेलते तो बालकेलि सुन्दर दिखती। २७ युवा पुरुष कहते थे कि यह देव स्वरूप है समग्र मानव सृष्टि मे कौन इतना रूपवान होगा। २८ नारियाँ अचेत न होकर श्रीराम के पीछे लगी चली जा रही थी। २९ सामन्त तथा मत्रियो की स्त्रियाँ देखकर जगती पर चढकर उन्हे अपलक देख रही थी। २३० कोई उँगली के सकेत से बता रही थी कि यह श्यामलवर्ण का धनुष धारण किये हँस रहा है। २३१ इसकी दृष्टिभगिमा सिह शावक के समान है। इनके देखने से पाषाण भी तरल हो जाता है। ३२ यह सुनकर पार्वती ने त्रिलोचन शकर जी से पूँछा कि श्रीराम का रूप देखकर लोग विरही बन गए। ३३ शिवजी बोले कि हे चन्द्रमुखी ! सुनो। मन मे विरह कैसा ? वह निर्गुण पुरुष दोषशून्य है। ३४ ससार के समस्त लोग जिसका नाम स्मरण करते है। मुनि

ताडकिकु श्रीराम बेनि खण्ड करि । ताहार सैन्य बळ लक्ष्मण निबारि ६५
सेठारु आसि आम्भर जाग रक्षा कले । अनेक असुर जे बेनिभाइ माइले ६६
तिनि मास पन्दर दिन जाग मो सम्पूर्ण। कलि जागर पूर्ण आहुति कले पुण ६७
बुलि जिबा पाइँ श्रद्धा पुए जे मन कले । तेणु मुँ तांकु घेनि अइलि संगतरे ६८
बाटरे अहल्या नारी निस्तारिले ।आपणा राज्यकु जिबा बोलिण कहिले ६९
आम्भे बोइलु मिथिला दाण्डे जिबा पशि। धनु जाग करन्ति जनक महाऋषि २७०
धनु जाग देखिबाकु आसिले पुण तहुँ । तांक मनरे शरधा होइलाक जहुँ २७१
जनक बोइले तुम्भे शुण हे गाधिसुत । अहल्याकु केमन्ते कले ए मुकत ७२
बिपुळ बनरे थिले गउतम नारी । गउतम शापरे पाषाण रूप धरि ७३
विश्वामित्र कहिले शुण हे जनक । श्रीराम चरण लागि हेला दिव्यरूप ७४
पूर्बरु शते गुण सुन्दर दिशिला ।जाणि करि गउतम अहल्या घेनि गला ७५
विश्वामित्र कहन्ते आनन्द जनक । कउशिकंक आगे कहन्ति करि शोक ७६
बोइले एगार थर मुँ धनु जाग कलि । दुहितार पाइँ मुँ नियम करिथिलि ७७
तिनिपुर मध्ये केहु न धइले धनु । जाग सम्पूर्णरे विकृत मोर तनु ७८
तेणु मुँ कहिलि सकळ जाति अजाति हेउ। ए धनु जे धरिब मो दुहिता नेब सेहु ७९

खण्डो में काट दिया और लक्ष्मण ने उसकी सेना को नष्ट कर डाला । ६५ वहाँ से आकर इन्होने हमारे यज्ञ की रक्षा की और दोनों भाइयों ने अनेक असुरो का सहार किया । ६६ मेरा यज्ञ तीन माह पन्द्रह दिन में समाप्त हो गया फिर यज्ञ की पूर्णाहुति की । ६७ इन बालकों के मन में घूमकर जाने के लिये इच्छा हुयी । इसलिये मै इन्हे साथ लेकर आ गया । ६८ मार्ग में इन्होने अहिल्या का उद्धार किया और फिर अपने राज्य को जाने के लिये कहने लगे । ६९ मैने इनसे मिथिला पथ मे प्रविष्ट होकर चलने के लिये कहा और यह भी बताया कि महर्षि जनक धनुष यज्ञ कर रहे है । २७० तब इनके मन में इच्छा हुई और यह धनुष यज्ञ देखने के लिये आये है । २७१ जनक ने कहा हे गाधिनन्दन ! सुनिये । इन्होने अहिल्या को किस प्रकार से मुक्त किया । ७२ गौतम की पत्नी तो उनके शाप से पाषाण रूप धारण करके विपुल वन में थी । ७३ विश्वामित्र ने कहा हे जनक ! सुनिये । श्रीराम के चरण के स्पर्श से उसका रूप दिव्य हो गया । ७४ वह पहले से सौ गुनी सुन्दर दिखाई देने लगी । यह जानकर गौतम अहिल्या को ले गये । ७५ विश्वामित्र के बताने पर जनक प्रसन्न हो गये फिर वह दुखी होकर विश्वामित्र से बोले । ७६ मैने ग्यारह बार धनुष यज्ञ किया । पुत्री के लिये मैने प्रतिज्ञा की थी । ७७ तीनों लोकों मे किसी ने भी धनुष को नही उठाया । यज्ञ की समाप्ति पर मेरा शरीर शिथिल पड़ गया । ७८ तब मैने सबसे कहा कि चाहे जाति अथवा कुजाति का हो । जो कोई भी धनुष को उठायेगा उसे मेरी पुत्री प्राप्त होगी । ७९ विश्वामित्र ने कहा हे जनक ! सुनिये ।

ब्राह्मण द्विज ऋषि बिप्र जे संन्यासी । नानादि देशरु पथुकि छन्ति आसि २५०
जाग शाळे अनेक अछन्ति तपशाळी । नाना आभरण अलंकार होइ करि २५१
विश्वामित्रंकु देखिण मुनि जे पूजा कले । आसनरे बसाइण कुशळ पुछिले ५२
श्रीराम लक्ष्मणंकु देखिले पुण जहुँ । ताहांकु अनाइण ऋषिकि पुछे तहुँ ५३
मुरुछि न पारि जे रूप गुण नाहिँ । जनक पचारिले बिनय भाव होइ ५४
भो महामुनि तुम्भे शुण मो वचन । मोर पुरे अइल कि बिचारि उत्तम ५५
जनक बोइले मुनि एकथा मोते कह । ए दळ वळ पोइ अटन्ति काहा पुण ५६
कौशिक कहिले जनक ठारु शुणि । दशरथ राजा जे अजोध्या नृपमणि ५७
श्रीराम लक्ष्मण जे भरत शत्रुघन । चारि गोटि पुत्र जे अटइ तार पुण ५८
बृद्धकाळे दशरथ जाग करि पाइ । नव बरष दिने पुत्रे क्षात्रीपण होइ ५९
मुहिँ जाग आरम्भ सिद्ध बनरे कलि । तिनि थर उजाड़ असुरे आसि करि २६०
असुरंकर भये मुँ चिन्ता करिबारे । नारद मुनि स्वर्गरु आसिले ततकाळे २६१
बोइले अजोध्या पुरकु तुम्भे जिव । दशरथ राजा बेनि पुत्रकु आणिब ६२
तुम्भ जाग देखिबाकु सेहि जे सामरथ । ताहा शुणि अजोध्यारे हेलु उपगत ६३
श्रीराम लक्ष्मणकु संगरे आम्भे घेनि । आसन्ते ताड़कि ओगाळे बाट पुणि ६४

देशो के राजागण वहाँ उपस्थित थे । ४९ द्विज ब्राह्मण, विप्र ऋषि, सन्यासी तथा पथिकगण अनेक देश देशान्तरो से वहाँ आए थे । २५० यज्ञशाला मे अनेक तपस्वी उपस्थित थे जो नाना प्रकार के आभूपण अलंकारो से सुसज्जित थे । २५१ महर्षि जनक ने विश्वामित्र को देखकर उनकी पूजा की । आसन पर आसीन कराकर उनके कुशल समाचार पूँछे । ५२ जब महर्षि ने श्रीराम तथा लक्ष्मण को देखा । तब उन्होने उन दोनो की ओर देखकर ऋपि विश्वामित्र से पूँछा । ५३ उनके रूप और गुण को देखकर वह चेतना नही खो सके । जनक ने विनीतभाव से कहा । ५४ हे महर्षि ! आप मेरी वात सुनिये । क्या उत्तम विचार करके आप हमारे नगर मे आये है । ५५ उन्होने कहा कि यह दोनो वालक किसके पुत्र है । आप यह बात हमसे कहिये । ५६ जनक की वात सुनकर विश्वामित्र ने उत्तर दिया । महाराज दशरथ अयोध्या के श्रेष्ठ राजा हैं । ५७ उनके श्रीराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन चार पुत्र है । ५८ वृद्धावस्था में दशरथ ने यज्ञ करके इन्हे प्राप्त किया है । नौवर्ष मे पुत्र क्षत्री बन गये । ५९ मैने सिद्ध वन मे यज्ञ प्रारम्भ किया । असुरो ने आकर तीन बार उजाड दिया । २६० असुरो के भय से मेरे चिन्ता करने पर उसी समय स्वर्ग से नारद मुनि आये । २६१ उन्होने मुझसे अयोध्यापुर जाकर राजा दशरथ के दोनो पुत्रो को लाने के लिये कहा । ६२ तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करने मे वह ही समर्थ है । यह सुनकर मैं अयोध्या जा पहुँचा । ६३ अपने साथ श्रीराम और लक्ष्मण को लेकर आते समय ताड़का ने मार्ग में ललकारा । ६४ श्रीराम ने ताड़का को दो

बिश्वामित्रेर उपाख्यान

एहि मुनि साध्य कले मञ्च अहि स्वर्ग । ए मुनिंक कथा न सरे कहिले राघव १
कुशहस्त होइण ध्यान कलेक बेदपती । ध्यान करिबारे पुत्र उत्पत्ति २
से कुमर नाम जे बिधाता देले किस । बेदरु जात करन्ते होइले बेदव्यास ३
कुशबेदर जे चारिपुत्र होइ । कुश बिष्णु नेत्रसेन हृदयसेन होइ ४
कुशसेन बोलिण जेबण बडभाइ । सेहि पुणि साध्यकला तिनिपुर मही ५
तांकर कुमर जे गाधि ऋषि होइ । गाधिकर नन्दन विश्वामित्र एहि ६
अइरि बळ पूजा करन्ति पादतळे । नृपति पण कले नबखण्ड मेदिनीरे ७
अति प्रतापरे होइले नृपमणि । जे नग्ररे पशे पाप पुण्यकु न जाणि ८
दिनेक बळ घेनिण नृपति शेखर । मृगया बिनोदरे पशिले बन घोर ९
अनेक बरेहा जे हरिण मारिले । मयमत गज जे अनेक बन्दि कले १०
क्षुधार बेळ जहुँ होइला पुण आसि । अजोध्यारे भेटिले जे बशिष्ठ महाऋषि ११
देखिण ब्रह्म मुनि गउरब कले । जाहा मिळिला ऋषि आणिण सर्मपिले १२
बोले क्षणेक बिश्राम राजा तुम्भे कले ।
ए तोर सैन्यकु आहार देबि मुहिँ भले १३

विश्वामित्र उपाख्यान

इन महर्षि ने मृत्युलोक, पाताललोक तथा स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त की है। हे राघव ! इन महर्षि की कथा का कोई अन्त नही है। १ वेदपति ब्रह्मा ने हाथ में कुश धारण करके ध्यान किया और ध्यान करने से पुत्र की उत्पत्ति हुई। २ उस पुत्र का नाम ब्रह्मा ने क्या दिया। वेद से उत्पन्न होने से वेद व्यास हुये। ३ कुशवेद के कुश विष्णु नेत्रसेन और हृदयसेन चार पुत्र हुये। ४ कुशसेन नाम का जो बड़ा भाई था उसने तीनो लोको को परास्त किया था। ५ उनके पुत्र महर्षि गाधि हुये और गाधि के पुत्र यह विश्वामित्र है। ६ शत्रुगण इनके चरणो की पूजा करते है। इन्होंने नवखंड पृथ्वी पर राज्य किया। ७ यह नृपश्रेष्ठ अत्यन्त प्रतापी हुये। यह जिस नगर में प्रविष्ट होते थे। वहाँ पाप पुण्य समझ में नही आता था। ८ एक दिन नृप शिरोमणि अपनी सेना लेकर आखेट करने के लिये घोर वन मे घुसे। ९ उन्होने बहुत से सुअर तथा हिरण मारे और बहुत से मस्त हाथियो को बदी बना लिया। १० जब भूख का समय आया तब अयोध्या मे महर्षि वशिष्ठ से इनकी भेट हो गयी। ११ देखते ही ब्रह्मर्षि ने इनका आदर किया और जो कुछ भी मिला। ऋषि ने लाकर समर्पित किया। १२ फिर उन्होंने राजा से कुछ काल तक विश्राम करने के लिये

कउशिक बोइले शुण हे जनक। धनु जाग सरिला ए केउँ जाग कृत्य २८०
जनक बोइले मो न पुरे मन वाञ्छा।
तेणु अग्निरे आहुति देउछि मन इच्छा २८१
शुणिण कउशिक जे हरष होइले। गौतमंक पुत्र सत्यानन्द पचारिले ८२
केमन्ते जननी मोर पाइला शरीर। केउँ देवता ठारे से पाइलेक वर ८३
केमन्ते पिता मोर मातांकु घेनि गले। से कथा मुनि एबे कह मोते भले ८४
विश्वामित्र बोइले श्रीराम बाटरे जे देखि। पचारन्ते बळाइ कहिलि मुहिँ टि ८५
तेणु एहि श्रीराम चरण लगाइले। चरण लगान्ते जननी निज रूप हेले ८६
तोर जननी देखि तो पितांकु सुमरिलु।
जाणिण पिता तोर आसिले हन्तकारु ८७
सकळ कथा शुणि हरष होइले। तोहर जननी घेनि निज स्थाने गले ८८
शुणिण सत्यानन्द आनन्दित चित्त। श्रीरामरे प्रशंसा कलेक बहुत ८९
तुम्भे श्रीराम मोते हे जननी दान कल। बहु लोक लज्जारु मुकत कराइल २९०
तुम्भर महिमा एबे पूरिला जगत। अगोचर कथा मान कल हे तुम्भेत २९१
कउशिक मुनि जे अटन्ति ब्रह्मज्ञानी। ए ऋषिक प्रशंसा करन्ति पद्म जोनि ९२
एहांकर कथा जे अश्रुत अगोचर। एक मन होइण शुण हे रघुबीर २९३

धनुष यज्ञ समाप्त हो गया। फिर यह किस यज्ञ का आयोजन हो रहा है। २८० जनक ने कहा कि मेरी मनोकामना सिद्ध नही हुयी है। अत. मैं अपनी इच्छानुसार अग्नि में आहुति दे रहा हूँ। २८१ यह सुनकर विश्वामित्र को प्रसन्नता हूई। तव गौतम के पुत्र सतानन्द ने पूँछा कि मेरी माता को शरीर कैसे प्राप्त हुआ। उन्हे किस देवता से वर प्राप्त हुआ। ८२-८३ मेरे पिता किस प्रकार मेरी माता को ले गये। हे महर्षि ! यह कथा आप मुझसे भली प्रकार कहिये। ८४ विश्वामित्त वोले कि श्रीराम ने मार्ग मे उसे देखकर मुझसे पूँछा तव मैंने उन्हे सव कुछ वताया। ८५ तव इन श्रीराम ने अपना चरण स्पर्श करा दिया। चरण के लगते ही माता अपने रूप मे आ गयी। ८६ तुम्हारी माता को देखकर मैंने तुम्हारे पिता का स्मरण किया। ज्ञात होने पर तुम्हारे पिता शीघ्र ही आ गये। ८७ सारी वात सुनकर वह प्रसन्न हो गये और तुम्हारी माता को लेकर अपने स्थान पर चले गये। ८८ यह सुनकर सतानन्द ने प्रसन्न-चित्त होकर श्रीराम की वहुत प्रशसा की। ८९ हे श्रीराम ! आपने मुझे माता का दान दिया है। उसे वहुत से लोगो की लज्जा से मुक्त करा दिया है। २९० आपका यश ससार में व्याप्त हो गया है। आपने तो ऐसी वात की जिसे कभी नही देखा गया। २९१ महर्षि कौशिक ब्रह्मज्ञानी है। इन महर्षि की प्रशसा ब्रह्माजी भी करते है। ९२ इनकी भी कथा ऐसी है जो न देखी गयी और न सुनी ही गई थी। हे रघुवीर ! उसे एकाग्रचित्त होकर सुनो। २९३

सुरभि गोटिकि जे मुनि मोते दिअ । जदि हे महाऋषि घेनिलु मोर स्नेह २८
मुनि बोइले ए जे तुम्भंकु न जोगाइ । अनेक जाग कले गो सुरभि मिळइ २९
मुनिंक ठारु एमन्त शुणि नृपमणि । कोपरे बोलइ मुहिँ नेबि एहिक्षणि ३०
एते बोलि सुरभिंकि घेनिले अड़ाइ । देखिण गो माता जे मुनिंकि कहइ ३१
बोइले मुनि किम्पा निर्द्दय़ा कल मोते । मोर त दोष जे कला नाहिँ तोते ३२
बशिष्ठ बोइले बळे राजा जे निए तोते । किम्पाइ सुरभि गो मन्द बोलु मोते ३३
खाइबाकु देलारु उपकार करे । राजा होइ धर्म गो न बिचारे बेळे ३४
ए राजा मानंकु गो आम्भर आसत । ए राजांक बळरे जाग जे अम्भरत ३५
राजांकु सुकल्याण करु गो आम्भे निति । अग्निर मुखे आम्भे देउ गो आहुति ३६
देवता माने आम्भरे हुअन्ति परसन्न । दिगपाळमाने उपुजान्ति शस्यमान ३७
शस्य उपुजिले प्रजाय़े हुअन्ति सुखी । प्रजार सुखे राजाए परशंसा पाआन्ति ३८
तेणुटि नृपति बळवान काए । प्रजा वळवन्त हेले शत्रु जे पळाए ३९
अइरि पळाबन्ते कटक हुए रक्षा । जहिँ तहिँ रहिले निर्भय़ मुनि एका ४०
तपिगण मानंकर राजा माने बळ । राजा मानंकर प्रभुत तपि काळ ४१
प्रभु धनरे आशा करे जेबण प्राणी ।
निश्चय़ नाश जाए शुण गो माता पुणि ४२

विश्वामित्र परम सतोष को प्राप्त हुये। २७ उन्होंने कहा हे महर्षि ! यदि आप मुझसे प्रेम करते है तो यह सुरभी मुझे दे दीजिये। २८ मुनि ने कहा यह आपको प्राप्त नही हो सकती। अनेक यज्ञ करने पर सुरभी प्राप्त होती है। २९ नृप श्रेष्ठ ने मुनि से इस प्रकार सुनकर कुपित होकर कहा कि मै इसे इसी समय ले जाऊँगा। ३० इतना कहकर वह सुरभी को बलपूर्वक ले जाने लगे। यह देखकर गौमाता सुरभी ने महर्षि से कहा। ३१ हे मुनि ! हमारे प्रति निष्ठुरता क्यों कर रहे है ? मैने तो तुम्हारा कोई अपराध नही किया है। ३२ वशिष्ठ ने कहा कि राजा तुम्हे बलपूर्वक ले जा रहे है। हे सुरभी ! तुम हमे बुरा भला क्यों कह रही हो ? । ३३ मैने भोजन कराकर उनका उपकार किया है। परन्तु समय पर राजा धर्म का भी विचार नही कर रहा। ३४ यह राजा लोग ही हमारे आश्रयदाता है। इन्ही राजाओ के बल पर हमारे यज्ञ आदि निर्भर रहते है। ३५ हम नित्य राजाओं को आशीर्वाद देते रहते है और अग्नि के मुख में आहुति दिया करते है। ३६ हमसे देवतागण प्रसन्न हो जाते है और दिगपाल अन्न उपजाते है। ३७ धान्य उत्पन्न होने से प्रजा सुखी रहती है। प्रजा के सुख से राजा को प्रशंसा मिलती है। ३८ इससे राजा का शरीर पुष्ट रहता है। प्रजा के बलवान होने से शत्रु भाग जाते है। ३९ शत्रुओं के पलायन से दुर्ग रक्षित रहता है। मुनि लोग अकेले जहाँ तहाँ भयरहित रहते है। ४० तपस्वियों के बल राजा लोग ही है। राजाओ के प्रभु तपस्वी होते है। ४१ जो प्राणी प्रभु के धन

तुम्भे मणोहि कर हे आम्भ पुरे आसि । शुणिण नृपति जे होइले गाधि ऋषि १४
राजा पुरे जाइण जे बशिष्ठ महामुनि । आपणा मन्दिरे पाक जाइ कले पुणि १५
सुरभिकि डकाइ बोइले बशिष्ठ ।
तुम्भे एबे मात गो सम्भाळ विश्वामित्र १६
शुणिण सुरभि जे भिआए सर्ब विधि । जेणु से कहिले बशिष्ठ तपोनिधि १७
राजांकर नबर जे पात्रंक उआस । परजा मानंकु जे अनुरूपे बास १८
अन्न ब्यञ्जन संगते विबिध उपहार । राजार सैन्यकु पुणि देलेक सम्भार १९
गन्ध चन्दन जे कुंकुम बस्त्रमान । जे जाहार अनुरूपे देलेक भोजन २०
मणोहि करिण राजा होइले तृपत । बशिष्ठकु पुच्छा से जे कले राजन त २१
बोइले महामुनि जोग ध्याने थाअ । मोर सैन्य पाइँ सर्ब जोगाड़ भिआअ २२
मुनि बोइले मोर सुरभि भिआइला । एबे तुम्भ मानंकु जोगाड़ अण्टिला २३
शुणिण आश्चर्य्य जे होइले गाधिसुत । मनरे से कथा विचारे राजन त २४
बोइला एथर मुँ जे करिबि कटकाइ । एकथाकु मोते जे जोगाइब सेहि २५
एमन्त बिचारि राजा बशिष्ठंकु कहि । सुरभिकि आण देखिबि जे मुहिँ २६
शुणि करि बशिष्ठ सुरभि अणाइले । देखिण विश्वामित्र परम तोष हेले २७

कहा और उन्होने फिर कहा कि हे राजन्! तुम्हारी इस सेना को मैं अच्छी प्रकार खाद्य प्रदान करूँगा । १३ आप हमारे स्थान पर आकर भोजन ग्रहण करे । यह सुनकर महर्षि गाधि पुत्र तृप्त हो गये राजमहल से जाकर महर्षि वशिष्ठ अपने आश्रम मे पहुँचे और उन्होने भोजन की व्यवस्था की । १४-१५ वशिष्ठ ने सुरभी को बुलाकर कहा हे माता! अब आप विश्वामित्र की देख-रेख करिये । १६ यह सुनकर सुरभी ने सब प्रकार से तपोनिधि वशिष्ठ के कहने के अनुसार व्यवस्था की । १७ राजा के लिये महल मत्रियो के लिये भवन और प्रजा जनो के अनुरूप आवास का निर्माण किया । १८ फिर उन्होने बड़ी धूमधाम से राजा की सेना को अन्न व्यजन आदि के साथ नाना प्रकार के उपहार प्रदान किये । १९ सुगन्धित चन्दन कुमकुम तथा वस्त्रो को देकर अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उन्हे भोजन प्रदान किया । २० भोजन करके राजा तृप्त हो गये और वह वशिष्ठ से पूँछने लगे । हे महामुनि ! आप तो योग-ध्यान मे लगे रहते है । हमारी सेना के लिये सब प्रकार की व्यवस्था आपने की । २१-२२ मुनि वोले कि मेरी सुरभी ने यह सब व्यवस्था की है । आप लोगो को यह सब अब दिखाई पडा । २३ यह सुनकर गाधिनन्दन आश्चर्य मे पड़ गये और राजा मन मे इसी बात को सोचने लगे । २४ उन्होने कहा कि इस वार मै शिविर लगाऊँगा । इसके लिये उसी प्रकार मेरा प्रबन्ध करा देना । २५ ऐसा विचार कर राजा ने वशिष्ठ से कहा आप सुरभी को ले आइये । मै उसके दर्शन करूँगा । २६ यह सुनकर वशिष्ठ ने सुरभी को मँगा लिया । उसे देखकर

ईश्वर प्रसन्नरे नाना शस्त्र मिळि। बर पाइ कोपेण बिश्वामित्र चळि ५८
बशिष्ठंक आश्रमरे अग्नि लागिबा पुण। त्रिदण्ड घेनि बशिष्ठ मुनि गले जाण ५९
देखिण कउशिक शस्त्र जे बेगे पेषि। ब्रह्मदण्ड बुलाइ निबार कले ऋषि ६०
देव शस्त्रमान जे बिअर्थकु गला। मुनिर लोम मूळरु अग्नि जात हेला ६१
स्वर्गरे थाइण जे डाकिले देवगण। तोर भळकथा नुहइ विश्वामित्र जाण ६२
राजन एहु कथा जे हुए अविचार।
बशिष्ठंक कोपरे नाश जिब जे आज शिर ६३
तुम्भे नृपबर हो नकर समर। आम्भर बोले तुजे बेळेक अपसर ६४
शुणिकरि गाधिसुत होइले मउन। तपिंकि प्रशंसा जे करन्ति मने मन ६५
बशिष्ठ शान्ति हेले जे स्वर्गर वाणी शुणि।
तप आरंभिले विश्वामित्र जाइ पुणि ६६
पुत्र भारिजाकु अणाइ गाधि सुत। अजोध्या राज्यरे जे रखाइ तुरित ६७
अजोध्या राजनकु समर्पि देइ पुण। तप स्थाने मिळि तप कलेक जाइण ६८
श्रीराम पचारन्ति शुण हे सत्यानन्द। से दिने अजोध्यारे अटके नरेन्द्र ६९
सत्यानन्द बोइले से काळे जेउँ राजा।
तार नाम बासुचि देव पाइले जन प्रजा ७०

प्रदान किया। ५७ शकर जी के प्रसन्न होने पर उन्हें नाना प्रकार के शस्त्र प्राप्त हुये। वर पाकर विश्वामित्र कुपित होकर चल दिये। ५८ वशिष्ठ के आश्रम मे अग्नि स्थापना हो रही थी। वशिष्ठ मुनि तीन दण्ड लेकर गये थे। ५९ यह देखकर विश्वामित्र ने शीघ्र ही शस्त्र छोडा। महर्षि वशिष्ठ ने ब्रह्मदण्ड घुमाकर उनका निवारण किया। मुनि के लोमकूपो से अग्नि उत्पन्न हो गयी। उससे समस्त देवास्त्र व्यर्थ हो गये। ६०-६१ स्वर्ग से देवगण कहने लगे, हे विश्वामित्र ! यह तुम्हारी बात अच्छी नही है। ६२ हे राजन् ! यह मूर्खतापूर्ण कृत्य है। वशिष्ठ के कोप से आज तुम्हारा सिर नष्ट हो जायेगा। ६३ हे नृपश्रेष्ठ ! आप युद्ध न करे। हमारे कहने से तुम एक बार हट जाओ। ६४ यह सुनकर गाधिनन्दन मौन हो गये और मन ही मन तपस्वी वशिष्ठ की प्रशसा करने लगे। ६५ स्वर्ग की वाणी सुनकर वशिष्ठ शाँत हो गये और विश्वामित्र ने जाकर पुनः तपस्या प्रारम्भ कर दी। ६६ गाधिनन्दन ने पुत्रों तथा पत्नी की ओर देखकर उन्हे शीघ्र ही अयोध्या राज्य में रख दिया। ६७ उन्होने् इन लोगों को अयोध्या नरेश को समर्पित कर दिया और स्वयं तपस्थली मे जाकर तपस्या करने लगे। ६८ श्रीराम ने पूँछा, हे सतानन्द ! सुनिए। उन दिनो अयोध्या का राजा कौन था। ६९ सतानन्द ने कहा कि उस समय अयोध्या में जो राजा था उसका नाम वासुचिदेव था। वह प्रजाजनो का पालन करता था। ७०

नृपतिर बळे जे नेउण अछि पुणि । सुरभि शुणिला जे वशिण्ठंक बाणी ४३
खरतर निश्वास प्रजळित जाणि । प्रचण्ड मेघ जाणि रडि दिए पुणि ४४
हम्बा राब देइण डाके माता बोले । तब सैन्य आसिण मिळिले तहिँरे ४५
शृंगरु गन्धर्व होइले पुण जात । चारि खुरारु बाहार होइले दइत ४६
हाण हाण मार मार शुभिला शबद । शुणिण विश्वामित्र होइले तबद ४७
बाजिला रण गोळ दुइ वळ थाट । राजार सैन्य तेणे मले जे वहुत ४८
विश्वामित्रंकर शते पुत्र थिले । अनेश्वत पुत्र जे जुद्धरे नाश गले ४९
पञ्चशत सइनि जे एकइ पुत्र घेनि ।
पळाइले विश्वामित्र संकुचित भावे पुणि ५०
संगरे शात ज जगइँ गले पुण । निज पुररे राजा प्रवेश हेले जाण ५१
अपमान पाइण राजा पुत्रकु राजा कला । घरणिकि घेनिण संगरे चळियला ५२
हिमाञ्चळरे बसिण बहुत तप कला । से स्थानरे चारि पुत्र जे उपुजिला ५३
हरि चन्दन मधु चन्दन विरधु चन्दन । वज्र चन्दन चारि तप स्थानरे जन्म ५४
पुणि राजार जे आबर चारि पुत्र । अष्टपुत्र सेठारे होइले सम्भुत ५५
अष्ट बसु सेमाने जे अष्टपुत्र जाण । अनेक बळमान कुमरे अटे पुण ५६
अनेक तप सेठारे गाधि सुत कला । प्रसन्न होइण ताकु ईश्वर वर देला ५७

की आशा करता है। वह निश्चय ही नाश को प्राप्त होता है। हे माँ ! ऐसा तुम सुन लो। ४२ राजा की सेना के समक्ष मै हीन हूँ। सुरभी ने वशिष्ठ के यह वचन सुने। ४३ उसकी श्वास तीव्रगति से चलने लगी। वह प्रचण्ड मेघ के समान गर्जन करने लगी। ४४ गौमाता ने तव हुँकार मारी। उसी समय वहाँ सेना आ पहुँची। ४५ उसके सीग से गन्धर्व प्रकट हो गये। चारो खुरो से दैत्य उत्पन्न हो गये। ४६ मारो काटो का शब्द सुनाई देने लगा। जिसे सुनकर विश्वामित्र स्तब्ध हो गये। ४७ दोनो दलो की सेनाओ मे युद्ध होने लगा। राजा के अनेक सैनिक मारे गये। ४८ विश्वामित्र के सौ पुत्र थे। निन्यानवे पुत्र युद्ध में मारे गये। ४९ विश्वामित्र सकुचित होकर एक पुत्र और पाँच सौ सैनिको को लेकर भाग गये। ५० उनके साथ सौ अंगरक्षक भी भाग गये। राजा अपने महल में जा पहुँचे। ५१ अपमानित होकर राजा ने पुत्र को राजा वना दिया और पत्नी को साथ लेकर चल दिये। ५२ उन्होने हिमालय पर्वत पर वैठकर वहुत तपस्या की। उस स्थान पर उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये। ५३ हरिचन्दन, मधुचन्दन, विरधुचन्दन और वज्रचन्दन यह चारो तपोवन मे उत्पन्न हुये। ५४ राजा के पुनः चार पुत्र उत्पन्न हुये। इस प्रकार वहाँ उनके आठ पुत्र हुये। ५५ वह आठो पुत्र आठ वसुओ के समान अत्यन्त वलवान थे। ५६ गाधिनन्दन ने वहाँ पर बहुत तपस्या की। प्रसन्न होकर शकर जी ने उन्हें वर

विश्वामित्र कुटुम्ब जे राज्यरे थिले पुण । सत्यब्रत जिबारु न पचारे राजन ८५
बशिष्ठ संगे विश्वामित्र हेबारु बिमन । बशिष्ठ न कहिले राजाकु जे पुण ८६
तेणु से विश्वामित्रंक कुटुम्ब अरक्ष । खाइबाकु न पाइ से होइले बिमुख ८७
एथु अनन्तरे तुम्भे श्रीरामचन्द्र शुण । कान्तार काळ से जे पडिला आसिण ८८
विश्वामित्र कुटुम्ब मागि खाउ थिले । भिक मागिबारु ताटका पुण हेले ८९
तेणु से अष्ट पुत्र घेनिण नारी भाळि ।कि बुद्धि करिबि बोलि मनरे बिचारि ९०
के मोते पोषिब दुर्भिक्ष काळरे । बशिष्ठ न कहिले पार्श्वरे राजा मोरे ९१
बाबु बिधातारे राजार मुत राणी । एहि कष्ट बिधाता देलुरे मोते आणि ९२
अन्न बस्त्र नमिळिला बञ्चिबु केमन्ते । भो धर्म प्रतिकार कर एबे मोते ९३
एमन्त विचार जे करइ पुण सती । एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे रघुपति ९४
ऋषिर नारी बसिण मनरे बिचारइ । एकइ पुत्र हाटरे बिकिबइँ मुहिँ ९५
एमन्त बिचार जे दृढ़ कला मन । आठ पुत्रकु बसाइ पचारे माता पुण ९६
केमन्ते प्रकारे बाबुरे पोषिबि तुम्भत । अहन्ता कला तुम्भ बशिष्ठ तपोबन्त ९७
राजाकु पिता तुम्भर समर्पिले देइ गला । से राजा काले पुणि परदारा कला ९८
तेणु से राजन जेते जिला निज राज्य ।
पुत्र ता राजा हेबारु नकला आम्भ काज्यं ९९

भोजन करता था। ८४ राज्य में विश्वामित्र के जो कुटुम्बी थे उनकी पूँछताँछ सत्यव्रत के चले जाने पर राजा नही करता था। ८५ वशिष्ठ के साथ विश्वामित्र का वैमनस्य होने के कारण उन्होंने भी राजा से कुछ नही कहा। ८६ तब विश्वामित्र का कुटुम्ब अरक्षित हो गया। भोजन न मिलने से वह दुखी हो गए। ८७ हे श्रीरामचन्द्र ! सुनो। इसके पश्चात् वहाँ दुर्भिक्ष का समय आ गया। ८८ विश्वामित्र का कुटुम्ब भिक्षाटन करके भोजन करता था। भीख माँगने से वह त्रस्त थे। ८९ तब आठों पुत्र को लेकर स्त्री मन मे विचार करने लगी कि अब क्या उपाय किया जाय। ९० दुर्भिक्ष के समय कौन हमारा पालन पोषण करेगा। राजा के हमारे निकट होने पर भी वशिष्ठ ने उनसे नही कहा। ९१ हे पुत्र ! भाग्यवश मैं भी तो राजा की रानी हूँ। अरे विधाता ! मुझे कष्ट में लाकर पटक दिया। ९२ अन्न, वस्त्र न मिलने पर हम कैसे बचेगे ? हे धर्म ! अब आप ही हमारी सहायता करे। ९३ सती इस प्रकार का विचार करने लगी। हे रघुपति ! सुनो। इसके पश्चात् ऋषि पत्नी ने बैठकर एक पुत्र को हाट में विक्रय कर देने का मन में विचार किया। ९४-९५ इस प्रकार मन में दृढ विचार करके माता ने आठो पुत्रो से पूँछा। ९६ अरे वत्स ! तुम लोगो का पोषण मै किस प्रकार से करूँ। तपस्वी वशिष्ठ ने तुमसे द्वेष किया है। ९७ तुम्हारे पिता राजा को समर्पित करके चले गए थे। समय पर उस राजा ने परदारा अपना ली। ९८ अस्तु उस राजा ने अपना राज्य छोड़

से काळे विश्वामित्रर धइर्ज्य पुण देखि ।अजोध्या राजन जे ताठारे हेले खुसि ७१
जेणु से बासुचि राजा ता कुटम्ब सम्भाळि।
तेणुटि विश्वामित्र निश्चिते तप करि ७२
बासुचि राजा काळे स्वर्गपुरे गले । केशरि पाळ नन्दन सेठारु राजा हेले ७३
काळे से राजांकु स्वर्ग जे परापत । तांक नन्दन सत्यब्रत राजन सेत ७४
दिनेक से सत्यब्रत नग्र जे बुलिजाइ । देखिले ब्राह्मणर झिअ अविवाहि ७५
रूप गुणे सुन्दर अटइ नबजुबा । कन्या सबृसे बर नमिळिबार नोहिला बिभा ७६
द्वारेण उभा होइण थिला से सुन्दरी । सत्यब्रत राजा देखि मदनरे घारि ७७
तेणे ब्राह्मण दुहिता राजांकु देखिण । पञ्चशर बाणरे होइला हतज्ञान ७८
तेणु से बेनिजन मदने उन्मत्त । से कन्याकु घेनिण चळिले राजनत ७९
निजपुरे नेइ रति शृंगारे भोळ हेला । ब्राह्मण जाइ राज द्वारे डाक देला ८०
गुहारि करन्ते ताहा जाणिले सकळ । सामन्त पात्र मन्त्री आवर जेते नर ८१
अर्धामि राजा बोलि बाहार करि देले ।समस्ते मेळ होइ ता पुत्रकु राजा कले ८२
सत्यब्रत राजन घरु बाहार होइ गला । ब्राह्मण दुहिता घेनि बनस्ते रहिला ८३
बनस्त भितरे करिण एक घर । मृग मारी मांस जे करइ आहार ८४

उस समय विश्वामित्र के धैर्य को देखकर अयोध्या नरेश उनसे प्रसन्न हो गए। ७१ जब राजा वासुचि ने उनके कुटुम्ब को सम्हाल लिया तब विश्वामित्र ने निश्चिन्त होकर तपस्या की। ७२ कुछ काल के पश्चात् राजा वासुचि स्वर्ग सिधार गए। उनके पुत्र केशरीपाल वहाँ के राजा बने। ७३ कुछ काल के पश्चात् उस राजा का भी स्वर्गवास हो गया। फिर उनका पुत्र सत्यव्रत राजा बना। ७४ एक दिन वह सत्यव्रत नगर मे भ्रमण करने गया। उसने अविवाहिता ब्राह्मण कन्या को देखा। ७५ वह नवयुवती रूप और गुणो मे सुन्दर थी। कन्या के अनुरूप वर न मिलने से उसका विवाह नही हुआ था। ७६ वह सुन्दरी द्वार पर खड़ी थी। उसे देखकर राजा सत्यव्रत काम के वशीभूत हो गया। ७७ वह ब्राह्मण कन्या भी राजा को देखकर काम के पचवाणो से ज्ञानशून्य हो गई। ७८ तब दोनो ही काम से उन्मत्त हो गए। राजा उस कन्या को लेकर चल दिया। ७९ वह उसे अपने महल मे ले गया और उसके साथ कामकलायुक्त रतिप्रसग में विभोर हो गया। ब्राह्मण ने राजद्वार पर पहुँचकर पुकार लगाई। ८० गुहार लगाने पर सामन्त सभासद मंत्री तथा जो भी अन्य व्यक्ति थे। उन्हे सब ज्ञात हो गया। ८१ राजा अधर्मी है यह कहते हुये सबने उस राजा को निकाल दिया और सबने मिलकर उसके पुत्र को राजा बना दिया। ८२ राजा सत्यव्रत घर से बाहर निकल गया। वह ब्राह्मण कन्या को लेकर वन मे रहने लगा। ८३ वन मे एक घर बनाकर वह रहता था और मृग को मारकर उसके मॉस का

विश्वामित्र राजा संगे बशिष्ठ बिमना । तेणु से बशिष्ठ ऋषि कहिले किना १४
पाञ्च सात दिन बृथारे पाइ कष्ट । पुत्रंक निमन्ते मुं बुलिलि हाट बाट १५
केहि समर्थ न होइले मो पुत्रकु नेइ ।निरास होइ ए पथे कान्दु जे सर्व रहि १६
शुणिण सत्यब्रत बोइले जे बाणि । बिश्वष राजन मोर बिश्वाष पुणि १७
निज घरु तुमु आणि देबि धन । एते बोलि सत्यब्रत गलाक बहन १८
बेनि सहस्र सुनिआँ से आणि करि देला । एगार बर्ष सतमासे धन सरिला १९
धन सरिबारु जे बिश्वामित्र राणी ।सत्यब्रतकु प्रार्थना जे कले जाइ पुणि १२०
से राजन बोइले मो घरे नाहिँ धन ।मुहिँत तुम्भरि प्राय बनस्ते निए दिन १२१
दुर्भिक्ष काळ आसि बार बरष हेला ।
एड़े कान्तार काळे तुम्भ स्वामी पाशकु नोइला २२
मुहिँ मृग मांस जे करइ आहार ।मांस रखि पोषि हेलि आसि बनस्तर २३
शुणि माता पुत्रमाने तांक संगे गले । अरण्य भितरे पत्र कुटीर करिले २४
निर्झर पाणि फळ भुञ्जिजले सेथिरे ।मृग मांस प्रतिदिन दिए सत्यब्रत बीर २५
एथु अनन्तरे तुम्भे श्रीरामचन्द्र शुण । बार बर्ष पूरिबाकु अछि तिनि दिन २६
सत्यब्रतकु एक दिने न मिळिला मृग ।सन्ध्या बेळ पर्य्यन्त बिळिबिळि शीघ्र २७

उसके पुत्र ने राजा बनने पर हमें भुला दिया। १३ राजा विश्वामित्र के साथ वशिष्ठ का वैमनस्य है। इस कारण से वशिष्ठ ने भी कुछ नहीं कहा। १४ पाँच सात दिन व्यर्थ ही कष्ट पाकर पुत्रो के लिये मैं हाट-बाट में घूमती रही। १५ मेरे पुत्र को क्रय कर लेने मे कोई भी समर्थ नही हुआ। निराश हुए हम सब लोग यहाँ रहकर रो रहे है। १६ यह सुनकर सत्यव्रत ने कहा कि राजा विश्वसनीय है। मेरा विश्वास कीजिये। १७ मै अपने घर से लाकर आप लोगो को धन प्रदान करूँगा। इतना कहकर सत्यव्रत शीघ्र गति से चला गया। १८ उसने दो सहस्रस्वर्ण मुद्राये लाकर दी। वह धन ग्यारह वर्ष और सात महीनों में समाप्त हो गया। १९ विश्वामित्र की रानी ने धन समाप्त हो जाने पर पुनः सत्यव्रत के पास जाकर प्रार्थना की। १२० तब उस राजा ने कहा कि मेरे घर में धन नही है, मै तो आप लोगों की ही भाँति वन में दिन काट रहा हूँ। १२१ दुर्भिक्षकाल को आए बारह वर्ष हो गए। इतने कष्ट के समय पर भी आपके पति आपके पास नही आए। २२ मैं मृगमाँस का भोजन करता हूँ। माँस रखकर शीघ्र ही वन में आ गया हूँ। २३ यह सुनकर माता तथा बेटे उनके साथ गए और उन्होने वन में पर्ण-कुटी बना ली। २४ वहाँ फल खाये तथा झरने का पानी पिया। पराक्रमी सत्यव्रत नित्य ही मृगमांस दिया करते थे। २५ इसके पश्चात् श्री रामचन्द्र ! आप सुनिए। बारह वर्ष पूर्ण होने में तीन दिन शेष रह गए थे। २६ एक दिन सत्यव्रत को पशु (शिकार मे) नही मिला। वह सन्ध्या पर्यन्त बड़े वेग से तिलमिला उठा। २७ मृग न पाकर वह मन में

एते बोलि माता पुत्रे करन्ति रोदन। गा लभा बोले मोते बिकिरि कर पुण १००
एमन्त कहि कुमर होइला आगुसार। पुररे जननी जे गोपए ताहार १०१
नयनु अश्रु जळ मातार जाए बहि। आउ सात पुए जे पछरे गोड़ाइ २
गालभकु आग करि समस्ते पछे गले। अजोध्या नग्रहाटरे प्रबेश जाइ हेले ३
हाटरे बुलि डाकिले बिश्वामित्र राणी। पुत्रकु बिकिबि के नेब बोलि भणि ४
राणीर ड़ाकरे जे न लोड़िले केहि। हाट बेळ जिबारु हाट भांगि जाइ ५
हाट भांगि जिबार देखि उठिले सेठारु। नग्र कन्दि बिकन्दि बजार फेरिबारु ६
केहि न बोइले नेबार बचन। निराश होइण फेरिले नबजण ७
आपणा नबर मन्दिर दाण्ड द्वारे बसि। नव जण जाक बिकळे कान्दिले आसि ८
सत्यब्रत राजा जे से पथे जाउ थिला। पथरे नबजण रोदन देखिला ९
पचारिला तुम्भे किए पथरे बसि कान्द। केउँ कथारे तुम्भे शोककु आरम्भ ११०
विश्वामित्र राणी कहे शुण हे पथुकि। विश्वामित्रंकु घरणी पुत्र आम्भे निकि १११
तप करि गले राजा आम्भकु एथे छाडि।
सत्यब्रत राजा जे आम्भंकु थिले पाळि १२
काळे से राजन जे अन्तर एथु हेला।
ता कुमर राजा होइ आम्भंकु पाशोरिला १३

दिया। उसके पुत्र ने राजा होने पर हमारा कार्य नही किया। ९९ ऐसा कह कर माता और पुत्र रुदन करने लगे। तव गालव ने कहा कि मुझे विक्रय कर दीजिये। १०० इस प्रकार कहता हुआ कुमार आगे बढा। उसकी माँ उसे लेकर नगर मे घूमने लगी। १०१ माता के नेत्रो से अश्रुपात हो रहा था। अन्य सात पुत्र पीछे लगे हुए थे। २ गालव को आगे करके सभी पीछे-पीछे अयोध्या नगर की हाट मे जा पहुँचे। ३ विश्वामित्र की रानी हाट मे घूम-घूम कर कहने लगी कि मै पुत्र को विक्रय करूँगी। कोई उसे क्रय करेगा। ४ रानी की बात पर किसी ने ध्यान नही दिया क्योकि हाट का समय समाप्त हो जाने से बाजार भंग हो गई थी। ५ बाजार को उठा हुआ देखकर वह लोग वहाँ से उठ पडे और उन्होने नगर के गली कूचे घूम डाले। ६ परन्तु किसी ने भी क्रय करने की बात नही की। निराश होकर नौ व्यक्ति लौट पड़े। ७ वह लोग अपने घर आकर सड़क के द्वार पर बैठकर विकलता से रुदन करने लगे। ८ राजा सत्यव्रत उसी मार्ग से जा रहा था। वहाँ मार्ग मे उसने नौ व्यक्तियो को रोते हुए देखा। ९ उसने पूँछा कि आप लोग कौन हैं और मार्ग मे बैठकर किस दुःख के पडने से रुदन कर रहे है। ११० विश्वामित्र की रानी ने कहा, हे पथिक ! सुनो। मै विश्वामित्र की पत्नी हूँ और यह मेरे पुत्र है। १११ हमें यहाँ रखकर राजा तपस्या करने चले गए। राजा सत्यव्रत हम लोगो का पालन पोषण करते थे। १२ कुछ काल के उपरान्त वह राजा वहाँ से चला गया।

मोहर राजा पण मोहर दोषरु गला। जेणु करि परदारा प्रवेश मोते हेला ४३
मो पुत्र राजा हेबारु तो कुटुम्ब पाळि ।बशिष्ठ ऋषि संगरे आगरे कलु कळि ४४
से अबिगुणे बशिष्ठ राजने न कहिले। तेणु तो पुत्र घरणी कष्टरे दिन नेले ४५
तांकर कष्ट देखि मुहिँ जे धन देलि। धन सरिबारु मृग मांस समर्पिले ४६
एक दिने मृग नमिळिला मोते ।वशिष्ठ सुरभि मारि देलि तो कुटुम्बते ४७
शुणि करि बशिष्ठ जे मोते शाप देले। त्रिशूद्र चण्डाळ होइ जाअन्तु बोइले ४८
तेणु से राज्य तेजि हेलि ब्रह्मचारी। तुम्भठारे बळ थिले ए दोषरु कर पारि ४९
शुणिण बोइले बिश्वामित्र महाऋषि। मोहर महिमा तु रे देखिबु सूर्ज्यबंशी १५०
जाग करिण तोते मुँ स्वर्गरे बसाइबि। जाबत काळकु मुँ कथा रहाइबि १५१
एते बोलि मुनि जे बेगे चळि गले।
जागर बिधि बिधान बेगे से आरम्भिले ५२
सकळ तपचारींकि मुनि जे सुमरिले। पुत्र घरणीकि घेनिण चळि गले ५३
विश्वामित्र सुमरन्ते अइले सर्व ऋषि।
से ऋषिंकि पाछोटि बशिष्ठ नेले आसि ५४
केमन्ते चण्डाळर कराइब जाग। तुम्भे माने केमन्ते देव हबिभाग ५५
ए कथा शुणिण बाहुड़े सर्ब ऋषि ।शिष्यगणे आसि विश्वामित्रंकु कहिलेटि ५६

उसे दुर्भिक्षकाल मे बड़ा दुख प्राप्त हुआ है। ४२ मेरे दोष के कारण से हमारा राजत्व समाप्त हो गया। जब से मैंने परदारा के प्रति आसक्ति दिखाई। ४३ मेरा पुत्र राजा होने से आपके कुटुम्ब का पालक नही बना। आपने वशिष्ठ ऋषि से पहले ही विवाद कर लिया था। ४४ उस दोष से वशिष्ठ ने भी राजा से कुछ न कहा तब तुम्हारे पुत्र और स्त्री कष्ट से दिन बिताने लगे। ४५ उनके कष्ट को देखकर मैंने धन दिया। धन समाप्त होने पर मृग मांस समर्पित किया। ४६ एक दिन मुझे मृग नही मिला। मैंने वशिष्ठ की सुरभी को मारकर तुम्हारे कुटुम्ब को दे दिया। ४७ यह सुनकर वशिष्ठ ने मुझे त्रिशूद्र चाण्डाल हो जाने का शाप दिया। ४८ तब वह राज्य छोड़कर मै ब्रह्मचारी बन गया। यदि आपके पास शक्ति हो तो मुझे इस दोष से मुक्त करें। ४९ यह सुनकर महर्षि विश्वामित्र ने कहा हे सूर्यवंशी ! तुम मेरी महिमा को देखो। १५० मैं यज्ञ करके तुझे स्वर्ग मे स्थापित करूँगा और मेरी यह बात चिरकाल तक बनी रहेगी। १५१ इतना कहकर मुनि शीघ्र ही चले गये और उन्होने शीघ्र ही विधि विधान से यज्ञ प्रारम्भ किया। ५२ मुनि ने समस्त तपस्वियो का स्मरण किया जो पुत्र और पत्नी को लेकर चले गये। ५३ विश्वामित्र के स्मरण करते ही सभी ऋषि आ गये। वशिष्ठ ने आकर उन ऋषियो की अगवानी की। ५४ उन्होने कहा कि आप लोग चाण्डाल का यज्ञ किस प्रकार से करायेगे और किस प्रकार हवि भाग प्रदान करेंगे। ५५ यह बात सुनकर सभी ऋषि लौट गये। शिष्यो

मृग नपाइ मनरे बिरस से हेला ।बशिष्ठंक सुरभिकि कि जाइण नाश कला २८
जोग बळरे ताहा जाणिले महा ऋषि । सत्यब्रत कतिरे मिळिले जाइ सेठि २९
बोइले चण्डाळरे हीन विधि कलु । मोहर सुरभिकि मारिण खाइलु १३०
लभिलु गोहत्या जे पार तोते नाहि । आबर सदगति पारिबु तुरे काहिँ १३१
त्रिशूद्र चण्डाळरे नाम तोर हेला । जाबत काळकु तोर कथा जे रहिला ३२
एमन्त बोलिण गलेक ब्रह्मा ऋषि । सत्यब्रत राजा जे मनरे भाळे वसि ३३
मनरे बिचारइ होइलि चण्डाळ । ए देह मोहर जे रहिब केते काळ ३४
एमन्त विचारन्ते दुर्भिक्ष सरिला । इन्द्र पाळिवारु शीतळ राज्य हेला ३५
मागिला लोकंकु भिक्षा मिळिला बहुत पुण।
देखिण विश्वामित्र घरणी पुत्रे जाण ३६
नग्ररु भिक्षा करि प्रति पोषण हेले । पुण आनन्दरे बनस्ते काटिले ३७
देखिण सत्यब्रत घरणी संगे घेनि ।सिन्दुर कुळे बिश्वामित्रंकु भेटकु पुणि ३८
तपरे कौशिक होइले पुण तपि । सत्यब्रतकु देखिण पचारे महा ऋषि ३९
किरात स्वरूप त दिशुछ नृपबर । तोते देखि आत्म मोर हेउछि बिकळ १४०
सत्यब्रत बोइले मुं होइलि बड़दुःखि ।तुम्भर सकाशे मुं होइलि निरिमाखि १४१
तुम्भे जे कुटुम्ब थोइल अजोध्यारे । दुर्भिक्ष काळरे अनेक दुःख मिळे ४२

दुःखी हो गया और उसने जाकर वशिष्ठ की सुरभी को मार डाला । २८ महर्षि वशिष्ठ योगबल से यह सब जान गए और वह सत्यव्रत के समीप वहाँ पर जा पहुँचे । २९ उन्होने कहा अरे चाण्डाल ! तूने हीन कार्य किया है। तू मेरी सुरभी को मारकर खा गया । १३० तूने गो हत्या की है। तेरा उद्धार नही होगा और तुझे सद्गति कहाँ से प्राप्त होगी ?। १३१ त्रिशूद्र चाण्डाल मे तेरा नाम हो गया और चिरकाल तक तेरी बात रह गई। ३२ ऐसा कहकर ब्रह्मर्षि चले गए। राजा सत्यव्रत बैठकर मन में विचार करने लगा। ३३ उसने मन में सोचा कि मैं चाण्डाल हो गया हूँ। मेरा यह शरीर कितने दिनो तक रहेगा। ३४ ऐसा विचारते हुये दुर्भिक्ष समाप्त हो गया और इन्द्र के पालन करने से राज्य शात हो गया। ३५ भिक्षुक लोगो को बहुत भिक्षा मिलने लगी। यह देखकर विश्वामित्र की पत्नी और पुत्र नगर से भिक्षा माँगकर भरण पोषण करने लगे और आनन्दपूर्वक वन में समय विताने लगे। ३६-३७ यह देखकर सत्यव्रत पत्नी को साथ लेकर समुद्र तट पर विश्वामित्र से भेट करने गये। ३८ विश्वामित्र तपस्या में लगे हुये थे। सत्यव्रत को देखकर महर्षि ने पूंछा। ३९ हे नृपश्रेष्ठ ! आपका स्वरूप किरात के समान दिख रहा है। तुम्हे देखकर मेरी आत्मा व्याकुल हो रही है। १४० सत्यव्रत ने कहा मैं आपके कारण असहाय होकर बहुत दु.खी हूँ। १४१ आपने अपना कुटुम्ब जिसे अयोध्या मे छोड़ा था

त्रिशूद्रकु देवता बाहुडि बोलि बोले। भस्म होइ जिबु तुरे स्वर्गकु अइले ७२
देवंक बोले बाहुडि अइला नृपति। रक्षाकर बिश्वामित्र पड़िला दुर्गति ७३
एमन्त बोलि पुण ड़ाकिला सत्यव्रत। क्रोधरे प्रज्वळित से गाधि राजा सुत ७४
इन्द्रादि देवतांकु करिबि आज आन। एते बोलि होम जे कला घन घन ७५
ब्रह्मा बोइले तुरे शुण विश्वामित्र। किम्पाइ अबिचार कररे राजपुत्र ७६
चण्डाळ आसि स्वर्गरे बसिब केमन्ते। एकथा सिद्ध कर होइब कदाचिते ७७
देवऋषि ब्रह्मऋषि नोहुरे जुकते। राजऋषि होइ करि गुमान करु केते ७८
देबंक संगे आसि बसिब केमन्ते सेहु। एकथा नबिचारि मनरे क्रोध हेउ ७९
तुहतु क्रोधमन शान्त भाव धर। राजऋषि होइ तोर एड़े अबेभार १८०
तोहर जेतेक पितृ अछन्ति स्वर्गरे। समस्ते बसिबे आसि चण्डाळ संगरे १८१
एहा शुणि बिश्वामित्र बोइले हे बस। निश्चे सत्यकु तांकु देबि स्वर्गबास ८२
बिधाता बोइले ए नुहइ उचित। बशिष्ठ बोइले चण्डाळ हुअ सत्यव्रत ८३
से केन्हे देबंक संगरे बसिब। ए कथाकि मुनि जे बिचारे जोगाइब ८४
बिश्वामित्र बोइले शुण हे शूळधारि। त्रिशूद्र मोहर बहुत हितकारी ८५
ताहाकु अवश्य मुं स्वर्गरे बसाइबि। जाबत काळकु जे कथा रहाइबि ८६

आकाश से यह अनाचार देखा। १७१ उन्होने त्रिशूद्र को लौट जाने के लिये कहा और फिर बोले कि तू स्वर्ग में आने से भस्म हो जायेगा। ७२ देवताओ के कहने से राजा लौट गया और गुहार लगाते हुये बोला हे विश्वामित्र ! मै दुर्गति में गिर गया हूँ। मेरी रक्षा कीजिये। ७३ सत्यव्रत ने इस प्रकार की बात कही। तब गाधिनन्दन क्रोध से प्रज्वलित हो गये। ७४ मैं आज इन्द्र आदि देवताओं को व्यर्थ कर दूँगा। ऐसा कहकर उन्होने भीषण यज्ञ किया। ७५ ब्रह्मा ने कहा अरे विश्वामित्र ! तू सुन। हे राजपुत्र ! यह नासमझी क्यो कर रहा है। ७६ चाण्डाल आकर स्वर्ग में कैसे बैठेगा। यह बात सम्भवतः सिद्ध नही होगी। ७७ तू न तो देवर्षि और न ब्रह्मर्षि ही है। राजर्षि होकर इतना गर्व कर रहा है। ७८ वह देवताओं के साथ आकर कैसे बैठेगा। यह बात मन में बिना विचारे तू क्रोध कर रहा है। ७९ तू कुपित न होकर शाँति धारण कर। राजर्षि होकर तेरा ऐसा अभद्र व्यवहार। १८० स्वर्ग में तेरे जितने भी पितृगण हैं। वह सब चाण्डाल के साथ आकर बैठेंगे। १८१ यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा आप बैठिये मै निश्चित ही सत्यव्रत को स्वर्ग वास प्रदान करूँगा। ८२ ब्रह्मा ने कहा यह उचित नही है। वशिष्ठ ने सत्यव्रत को चाण्डाल होने का शाप दिया। वह देवताओं के साथ कहाँ बैठेगा। हे मुनि क्या इस बात पर विचार करोगे। ८३-८४ विश्वामित्र ने कहा हे कुश धारण करने वाले ब्रह्माजी ! सुनिये। यह त्रिशूद्र मेरा हितकारी है। ८५ मै उसे अवश्य ही स्वर्ग में स्थापित करूँगा और

शुणि करि क्रोध कले गाधिर तनये । सत्यब्रत चण्डाळकु ब्रह्म दीक्षा दिए ५७
आपणे बसिण जे शिखिले चारि बेद । कलेक अग्निन्यास मुद्रा पूजा भेद ५८
त्रिशूद्र चण्डाळकु होम करिण सुत्र देले । जाग शाळारे नेइ ताहांकु बसाइले ५९
विश्वामित्र मुनि सेथि होइले आचार्य्य । बेदध्वनि करि जाग कलेक सम्पाद १६०
जब तिळ घृत जे समिध अणाइ । जाग आरम्भिले सिन्धु तीरे जाइ १६१
सत्यब्रत जेउँ ब्राह्मणी नेइ थिला । जाग हेबा निमन्ते मुनि विभा हेला ६२
तेणु अग्निरे आहुति त्रिसुद्र जे देला । देवतागण माने मिळिले स्वर्ग परा ६३
सत्यानन्द कहिले श्रीरामचन्द्र शुण । चण्डाळ से जागकु नुहइ भाजन ६४
एमन्त बिचारि से जे नइले सुर देव । बिश्वामित्र मुनि जे कोपे गरुभाव ६५
बोइले मुँ आज आन देवता भिआइबि । एते कहि अग्निरे समर्पिले हबि ६६
स्वर्गरे देवताए होइले बिकळ । निश्चय़ बिश्वामित्र करिबे दिगपाळ ६७
एमन्त बिचारि जे ब्रह्मादि देवगण । अन्तरीक्षे आसि विजय ततक्षण ६८
शून्ये थाइ ड़ाक जे देले स्वर्गसुर । न शुणइ मुनि जे कोपे गुरुतर ६९
बोइले त्रिशूद्ररे जाअ तु स्वर्गपुर । जेहु तोते अटकिबे हेबे भस्मकार १७०
मुनिकर आज्ञारे जे गमइ नृपबर ।देबे अन्तरीक्षे थाइ देखिले अन्याचार १७१

ने आकर विश्वामित्र से सब बता दिया। ५६ यह सुनकर गाधिनन्दन कुपित हो गये और उन्होने सत्यव्रत चाण्डाल को ब्रह्मदीक्षा प्रदान की। ५७ उन्होने स्वयं बैठकर चारो वेद पढकर अग्निन्यास (अग्नि स्थापन) पूजा तथा मुद्राभेद किया। ५८ उन्होने त्रिशूद्र चाण्डाल को हवन के सूत्र दिये, और उन्हे ले जाकर यज्ञशाला में बैठाया। ५९ महर्षि विश्वामित्र वहाँ आचार्य बने और उन्होंने वेद पाठ करते हुये यज्ञ सम्पादित किया। १६० जौ, तिल, घी तथा समिधा मँगाकर सिन्धु तट पर जाकर यज्ञ प्रारम्भ किया। १६१ सत्यव्रत जिस ब्राह्मणी को ले गया था। यज्ञ होने के कारण उसने उससे विवाह किया। ६२ तब त्रिशूद्र ने अग्नि में आहुति दी। देवतागण स्वर्ग मे एकत्रित हो गये। ६३ सतानन्द ने कहा हे श्रीरामचन्द्र ! सुनिये। वह चाण्डाल उस यज्ञ का पात्र नही था। ६४ ऐसा विचार करके वह देवगण नही आये। तब महर्षि विश्वामित्र ने अत्यन्त कुपित होकर कहा कि आज मै अन्य देवताओं की सृष्टि करूँगा। ऐसा कहकर उन्होने हवि की आहुति दी। ६५-६६ स्वर्ग मे देवगण व्याकुल हो गये, विश्वामित्र निश्चितरूप से दिगपालो की सृष्टि करेगे। ६७ ऐसा विचारकर ब्रह्मा आदि देवगण उसी समय आकाश मे आकर उपस्थित हो गये। ६८ स्वर्ग के देवताओ ने आकाश मे स्थित रहकर पुकार लगाई परन्तु अत्यन्त क्रोध के कारण मुनि विश्वामित्र नही सुन रहे थे। ६९ उन्होने त्रिशूद्र सत्यव्रत से स्वर्ग जाने के लिये कहा और यह भी बोले कि जो तुझे रोकेगा वह भस्म हो जायेगा। १७० मुनि की आज्ञा से नृपश्रेष्ठ सत्यव्रत चल पडा। देवता लोगो ने

सत्यानन्द बोइले शुण हे रघुनाथ।
पुत्र भारिजा घेनि ऋषि सेठारु चळिलेत २
सिद्धवने मढिआ करि जे रहिले। सेठारे अश्वमेध जाग से तहुँ कले ३
श्रीराम पचारन्ति शुण हे सत्यानन्द। सेठारु बिश्वामित्र कले केउँ कार्य्य ४
सत्यानन्द बोइले शुण हे दाशरथि। जहुँ त्रिशूद्र चण्डाळ स्वर्गकु गलाटि ५
तेणु बिश्वामित्रंकु बशिष्ठ कोप हेला। बोले मोर शापकु वाहुड़ाइ नेला ६
अधर्म कला सेहु धर्मबन्त होइ। एपरि प्राणि कि जे केमन्ते धर्म सहि ७
शते पुत्र मराए मार सुरभीर हस्ते। तार जोगुँ सिना जे मलेटि समस्ते ८
सेहु से मोर रूपे पुत्र हत्या पाउ। मोहर बचन गोटि केबे आन नोहु ९
एते बोलि ऋषि गणंकु जे संगे घेनि। अजोध्यारे प्रबेश होइले पुणि २१०
देखिण बशिष्ठ जे बोलइ ताहांकु। राज ऋषि अइले किम्पाइ ए स्थानकु २११
आदर न कले तांकु न देले आसन। क्रोध भरे विश्वामित्र फेरिले जे पुण १२
सिद्धवनरे जाइ पुणि से जाग कले। अनेक ऋषिंकि जे घेनिण संगरे १३
एथु अन्ते शुण तुम्भे दशरथ बळा। सत्यव्रत कुमर जे स्वर्गकु पुण गला १४
तांकर कुमर जे हरिचन्दन जाण। अजोध्यारे राजन होइले से पुण १५
दाने खाण्डे साचा जे होइले सेहु राज।
राजुसि जाग करिबाकु मनरे हेला हेज १६

कहा हे सतानन्द ! सुनिये फिर विश्वामित्र की पत्नी कहाँ रहने लगी। २०१ सतानन्द बोले हे रघुनाथ जी ! सुनिये। पुत्र और पत्नी को लेकर ऋषि वहाँ से चल पड़े। २ वह सिद्ध वन मे मठ बनाकर रहने लगे। वहाँ उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। ३ श्रीराम ने सतानन्द से पूँछा कि विश्वामित्र ने वहाँ पर क्या कार्य किया। ४ सतानन्द ने कहा हे दशरथनन्दन ! सुनिये। जब त्रिशूद्र चाण्डाल स्वर्ग को चला गया तब वशिष्ठ का विश्वामित्र पर क्रोध बढ गया उन्होंने कहा कि इसने मेरे शाप को पलट दिया। ५-६ उसने धर्मवत होकर भी अधर्म किया है। इस प्रकार के प्राणी को धर्म कैसे सहन कर सकता है। ७ विश्वामित्र ने सोचा सुरभी के हाथों मेरे सौ पुत्र मारे गये। केवल उसी के लिये यह सब मारे गये। ८ वह भी मेरी प्रकार पुत्र हत्या को प्राप्त करे। मेरा यह वाक्य कभी मिथ्या न हो। ९ ऐसा कहकर वह ऋषियो को साथ लेकर अयोध्या में प्रविष्ट हुआ। २१० उन्हे देखकर वशिष्ठ ने उनसे कहा हे राजर्षि इस स्थान पर कैसे पधारे ? । २११ न तो उन्होने उनका आदर किया और न आसन ही प्रदान किया। तब विश्वामित्र कुपित होकर वहाँ से लौट पड़े। १२ उन्होंने फिर सिद्ध वन में जाकर अनेक ऋषियों को साथ में लेकर यज्ञ किया। १३ हे दशरथ नन्दन ! सुनिये। इसके पश्चात् सत्यव्रत का पुत्र स्वर्ग चला गया। १४ उनका पुत्र हरिचन्दन अयोध्या का राजा बना। १५ दान में, शौर्य मे वह राजा सच्चा था

शुणिण बिधातार नस्फुरे बुद्धि किछि । विश्वामित्र जेणु कटाळ करुअछि ८७
त्रिशूद्र चण्डाळ जे अधा स्वर्गरे जाइ ।बेदबर बोले विश्वामित्र मुनिंकि चाहिँ ८८
अनुरूपरे स्थान एहाकु आम्भे देवा ।आम्भे कहिबारु शान्ति होइण रहिबा ८९
अन्य स्थानरे नेइ एहाकु बसाइबा । देवता ऋषिकर वचन पाळिश्रा १९०
शुणिण बिश्वामित्र सन्तोष मन होइ । अधा स्वर्गरे ताहाकु बसाइले नेइ १९१
स्वर्गरे साधु साधु शुभिला पुण ध्वनि । धन्यरे बिश्वामित्र धन्यरे तप पुणि ९२
गोहत्या करिण जे ब्रह्म स्तीरी हरि । आबर बचन जे राज्यइँ नपाळि ९३
एइ जे तिनि कथाकु जेबण लोक कला ।
बशिष्ठ ऋषि जाहाकु चण्डाळ बोइला ९४
देबताए बाछिले जे महापापी बोलि । ताहाकु वळे नेइ बसाए स्वर्गपुरी ९५
बाबुरे गाधिसुत धन्यरे तोर पुण्य । तोहरे करि पुण हेला एड़े कर्म ९६
ब्राह्मण दुहिता सत्यब्रत संगे गला । अधा स्वर्गरे जाइण ता संगे रहिला ९७
एमन्त समग्ररे जे बिश्वामित्र मुनि । देबे स्वर्ग जिबारु आनन्द हेले पुणि ९८
शुण हे श्रीराम तुम्भे ए मुनि महिमा । जाहाकु प्रशंसा जे करन्ति सुर ब्रह्मा ९९
ब्रह्मास्मरी हरिबा दोषरु सेहु तरी । अज्ञानरे भ्रमिले ए कथा शुणि करि २००
श्रीराम बोइले सत्यानन्द शुण एवे ।बिश्वामित्रंक भारिजा रहिले केउँ ठाबे २०१

यह बात चिरकाल के लिये प्रसिद्ध कर दूँगा । ८६ यह सुनकर ब्रह्मा की बुद्धि मे कुछ नही सूझा । क्योकि विश्वामित्र ने यह फैसला कर लिया था । ८७ तब ब्रह्मा ने विश्वामित्र मुनि की ओर देखकर कहा कि त्रिशूद्र चाण्डाल आधा स्वर्ग मे जाये । ८८ हम लोग इसे उचित स्थान प्रदान करेगे । हमारे कहने से तुम शात रहो । ८९ हम इसे अन्य स्थान मे ले जाकर बैठायेगे और देवता और ऋषियों के वचन का पालन करेगे । १९० यह सुनकर विश्वामित्र का मन सतुष्ट हो गया फिर उन्होने उसे लेकर अर्ध स्वर्ग प्रदान किया । १९१ स्वर्ग मे साधु-साधु का शब्द सुनाई देने लगा । अरे विश्वामित्र तुम धन्य हो और तुम्हारी तपस्या धन्य हो । ९२ जिसने गोहत्या करके ब्राह्मण स्त्री का हरण किया ओर बात की बात मे राज्य छोड दिया । ९३ जिस व्यक्ति ने यह तीन बाते की । जिसे वशिष्ठ ने चाण्डाल कहा । देवताओ ने जिसे महापापी ठहराया । उस व्यक्ति को बलपूर्वक तुमने लेकर स्वर्गलोक मे बैठा दिया । ९४-९५ हे वत्स गाधिनन्दन ! तुम्हारे पुण्य धन्य है । तुम्हारे कृत्यो से ही ऐसा कार्य हुआ है । ९६ ब्राह्मण पुत्री सत्यव्रत के साथ गयी और अर्ध स्वर्ग मे उनके साथ रहने लगी । ९७ इसी समय देवताओ के स्वर्ग जाने पर महर्षि विश्वामित्र प्रसन्न हो गये । ९८ हे श्रीराम ! आप इन महर्षि की महिमा को सुनिये । इनकी प्रशसा देवगण तथा ब्रह्माजी करते है । ९९ ब्राह्मण स्त्री के हरण के दोष से वह मुक्त हो गया । यह बात सुनकर के भी वह अजान से घूमने लगे । २०० श्रीराम ने

देवतामाने हबि भुञ्जि सन्तोष होइले । कल्याण करिण जे स्वर्गपुर गले २३१
पूर्ण आहुति जे करिले जाग सारि । से जाहार देशकु जे गले दण्डधारी ३२
मुनि माने जे जाहा आश्रमे प्रवेश ।
हाटुआ बाटुआ पथुकी गले जे जाहार देश ३३
ब्राह्मण माने धन घेनि गले जे जाहारपुर ।
हरि चन्दनकु बोइले गाधिराजा कुमर ३४
देले दक्षिणा मोते जिबइँ तप करि । शुणि करि सन्तोष हेले दण्डधारी ३५
लक्षेक सुनिआँ जे आसिण वेगे देला । कार्पण्य होइण से वचन कहिला ३६
तेबे मुनिर मन नोहिला तृपुति । पुणि राजा आणि देलाक शते हस्ती ३७
सुवर्ण शिकुळि आवर पाट डोर । नेत पाट चामर मण्डिण अळंकार ३८
मुनिक मन त्रिपुति नोहिला सेथिरे । सहस्रे अश्व पुणि देलाक मुनिवरे ३९
रत्नमय्न बाखर सुबर्ण कळिआर । कळा श्वेत चामर मण्डिल निश्चळ २४०
देखिकरि विश्वामित्र उपहास कले । एहा देले दक्षिणाकि सुझिबु बोइले २४१
पुणि नरसाइँ देले शतेक जुबती । अळंकार भूषण करि आणिले तडित ४२
मुनि बोइले मोर एथिरे नाहिँ किछि । तु राजा कृपण जे न पारु धन मूच्छि ४३
राज्य देले तोर सुझि न पारिबु । एमान देइण मोते कि भण्डिबु ४४

सन्तुष्ट हो गए और आशीर्वाद देकर स्वर्ग चले गए । २३१ यज्ञ की समाप्ति पर पूर्णाहुति दी गई । सभी राजागण अपने-अपने देशो को लौट गए । ३२ मुनि लोग अपने-अपने आश्रमों को चले गए । हाट बाट बटोही सब अपने-अपने स्थानों को चले गए । ३३ ब्राह्मण लोग धन लेकर अपने-अपने घर चले गये । तब महाराज गाधि के पुत्र ने हरिचन्दन से कहा । ३४ मुझे दक्षिणा देने पर मै भी तपस्या करने जाऊँगा । यह सुनकर राजा सन्तुष्ट हो गए । ३५ उन्होने शीघ्र ही एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ लाकर उन्हें समर्पित की और दीनभाव से प्रार्थना की । ३६ तब भी मुनि का मन तृप्त नही हुआ । फिर राजा ने सौ हाथी लाकर दिए । ३७ उन्हे स्वर्ण श्रृंखलाओं, रेशमी रस्सों चामर तथा पताकाओं से अलकृत कर दिया । ३८ इससे भी मुनि का मन तृप्त नही हुआ । तब उसने एक हजार घोडे मुनि श्रेष्ठ विश्वामित्र को समर्पित किए । ३९ रत्नजटित जीनों, स्वर्ण की बल्गाओं, काली सफेद चामरों से उन्हें सजाया गया था । २४० यह देखकर विश्वामित्र ने उपहास करते हुए कहा कि यह दक्षिणा देकर थोड़े ही बनेगा । २४१ फिर नरनाथ ने शीघ्र ही आभूषणादि समलंकृता एक सौ युवतियाँ लाकर प्रदान की । ४२ मुनि ने कहा इससे मेरा कोई प्रयोजन नही है । तू कृपण राजा है । धन नही छोड़ पाता । ४३ तुम अपना राज्य देकर भी उऋण नही हो पाओगे । यह सब देकर मुझे क्या भरमाओगे । ४४

सकळ पदार्थ जे लोड़िण थोइला । जव तिळ घृत सम्पादन पुण कला १७
बिचारे काहाकु जे आचार्य्य मुँ करिबि ।
विश्वामित्र मुनिकि मुँ जागरे बरिबि १८
से मोर पिताकु जे स्वर्ग गति देला । ताहाकु बरिबि बोलि नृपति विचारिला १९
दक्षिण सिन्धु तीरकु गला खर करि ।
विश्वामित्र सन्निधे मिळिला दण्डधारी २२०
प्रणाम करिण बोलइ ब्रह्मऋषि ।मुहिँ तुम्भर तहिँ कि जतने आसि अछि २२१
राजुसि जाग मुनि करिबइँ मुहिँ । तुम्भे से जागरे आचार्य्य होइबइँ २२
शुणिण सन्तोष जे होइले महाऋषि ।अजोध्याकु गले हरि चन्दन संगे शिषि २३
हरिचन्दन बरिथिले सकळ नृपवर । प्रवेश होइले आसि अजोध्यार पुर २४
नाना तीर्थरु जे अइले तीर्थवासी ।
अजोध्या सरुजी तीरे मिळिले सर्वे आसि २५
मुनि माने सर्बे जे प्रवेश आसि हेले । लक्षेक ब्राह्मण जे आसिण रुण्ड हेले २६
हाटुआ बाटुआ जे पथुकी जने पुण । पात्र मन्त्री सहिते राजार लोकगण २७
सकळ लोक पुरिण पुर जे मण्डिले । अन्न वस्त्र पाणि पणा समाबर्त्ता देले २८
जाग आरोपण करिण बसिले सेहित । मूषळ धारा प्रमाणे अग्निरे देले घृत २९
देवताए अइले जे मूर्त्तिवन्त होइ । घृत पान कले जे परम सुख पाइ २३०

उसके मन मे राजसूय यज्ञ करने का विचार हुआ। १६ उसने जौ तिल घी आदि समस्त पदार्थ एकत्रित करके रखवा दिये। १७ उसने विचार किया कि मैं आचार्य किसको वरण करूँ। मै विश्वामित्र मुनि को यज्ञ मे आचार्य रूप में वरण करूँगा। १८ उन्होने हमारे पिता को स्वर्ग की गति प्रदान की है। उन्ही को वरण करने का राजा ने विचार किया। १९ वह शीघ्रतापूर्वक दक्षिण सागर के तट पर जा पहुँचा और राजा विश्वामित्र से मिला। २२० उसने प्रणाम करके कहा। हे ब्रह्मर्षि ! मै यत्नपूर्वक आपके समीप आया हूँ। २२१ हे मुनि ! मैं राजसूय यज्ञ करूँगा। आप यज्ञ में आचार्य बने। २२ यह सुनकर महर्षि प्रसन्न हो गए। वह हरिचन्दन के साथ शीघ्र ही चल दिए। २३ जिन राजाओं का वरण हरिचन्दन ने किया था वह सभी अयोध्यापुर मे आ पहुँचे। २४ अनेक तीर्थो से तीर्थवासी अयोध्या मे सरयू तट पर सभी आकर एकत्रित हुए। २५ समस्त मुनिगण आ पहुँचे। एक लाख ब्राह्मण आकर वहाँ उपस्थित हो गए। २६ हाट बाजार के लोग तथा पथिक, सभासद, मन्त्री सहित राज्य के जन समूह सब एकत्रित हो गए। उन्होने नगर को सुसज्जित किया। अन्न वस्त्र, पेय पदार्थों के सदावर्त खोल दिए गए। २७-२८ वह यज्ञ मे अग्नि स्थापित करके बैठ गए। अग्नि मे मूषलधारावत घी पड़ने लगा। २९ देवगण मूर्तिमन्त होकर पधारे और घृतपान करके अत्यन्त सन्तुष्ट हो गए। २३० हवि ग्रहण करके देवता लोग

मणिकर्णिकारे स्नाहान सकले। विश्वनाथंकु दर्शन करिण कहिले ५९
बोइले सदाशिव सकळ कथा जाण। ए मुनिंकि आणि मुँ देलि बहुत धन २६०
राज्य भार समर्पिलि बोध नोहिले मुनि। एड़े दुष्ट तपि जणे देखि नाहिँ पुणि २६१
पुत्र भारिजा मोहर बिक्रय्र करि नेब। ए कष्टरु पारि कले तुम्भर धर्म हेब ६२
एते कहि राजन शरणागत पुण। नग्ररे बुलिले जाइण तिनि जण ६३
आम्भे बिक्रि हेबुँ बोलि आपणे डाकन्ति।
किणि बार लोके जाइ दाण्डरे उभा होन्ति ६४
सत्य बिडिबा पाइँ कि स्वर्गर देवता। नग्रर लोके केहि न हेले घेनन्ता ६५
जन्तुपति चाण्डाळ रूपे राजाकु किणि नेला।
इन्द्र द्विजवर होइ राणीकि किणिला ६६
पुत्र सहिते किणि नेइ इन्द्र द्विजबर।तांक संगे विश्वामित्र गमन करिबार ६७
विश्वामित्र बोइले शुण हे राजन। एबे त बिक्रि तुम्भे हेल तिनि जण ६८
एबे आम्भर दक्षिणा दिअ आणि पुण। धन घेनिले आम्भे जिबु ततक्षण ६९
एहा शुणि द्विजबर लक्षेक धन देले। चण्डाळ आणिण लक्षे धन समर्पिले २७०
बेनि लक्ष सुनिआँ विश्वामित्र नेले।क्षत्री कुळकु हरि चन्दन कथा रहाइले २७१
हरिचन्दनंकु नेइ जम उत्तम स्थाने रखि।जगती अट्टाळि सिंहासन नबर देखि ७२

पटरानी थी। ५८ उन्होने मणिकर्णिका में स्नान किया और विश्वनाथ के दर्शन करके बोले हे सदाशिव ! आप सब कुछ जानते है। इन मुनि को मैने वहुत सा धन लाकर दिया। ५९-२६० सम्पूर्ण राज्य देने पर भी यह मुनि संतुष्ट नही हुये। मैने ऐसा दुष्ट तपस्वी व्यक्ति नही देखा है। २६१ यह मेरे पुत्र तथा पत्नी को विक्रय करके लेगा। इस कष्ट से हमें उद्धार करने पर आपका धर्म रह जायेगा। ६२ ऐसा कहकर राजा उनके शरणागत हुये और तीनों लोग नगर मे जाकर घूमने लगे। ६३ हम विक्रय होंगे कहते हुये वह पुकार लगा रहे थे, क्रय करने वाले व्यक्ति मार्ग में खडे हो रहे थे। ६४ क्या सत्य की परीक्षा लेने वाला स्वर्ग का देवता है। कोई भी नगरवासी क्रेता नही बना। ६५ यमराज ने चाण्डाल के रूप में राजा को क्रय कर लिया। इन्द्र ने श्रेष्ठ ब्राह्मण वनकर रानी को क्रय कर लिया। ६६ पुत्र के सहित क्रय करके द्विज श्रेष्ठ इन्द्र उन्हें ले चला। उनके साथ विश्वामित्र भी चल दिये। ६७ विश्वामित्र ने कहा हे राजन् ! सुनो। अब तो तुम तीनो विक्रय हो चुके हो। ६८ अब हमारी दक्षिणा लाकर दो। धन लेकर हम इसी समय चले जायेंगे। ६९ यह सुनकर द्विज श्रेष्ठ ने एक लाख मुद्रायें दीं, चाण्डाल ने भी एक लाख मुद्राएँ लाकर समर्पित की। २७० विश्वामित्र ने दो लाख स्वर्ण मुद्रायें ग्रहण करके क्षत्रिय कुल में हरिचन्दन की कीर्ति स्थापित की। २७१ यमराज ने हरिचन्दन को लेकर जगती अट्टालिका, सिंहासन तथा महल देखकर उत्तम स्थान पर रखा। ७२ उनके पुत्र

राजा बोइले मुनि मागुअछ काहा। घेनि मुनिवर देबइँ मुं ताहा ४५
एते बोलि महाराजा समर्पण देले। तुम्भर राज्य गोटि बोलिण बोइले ४६
विश्वामित्र बोइले एहा न नेबि किछि।
मोते सन्तोष कले तोर स्वर्ग भोग लेछि ४७
राजुसि जाग कलु अति धर्मकरि। शते अश्वमेध जज्ञ तहिँकि नुहे सरि ४८
संसारे जश पाइलु नृपति हादे एणे। जागरे आचार्य्य नोहिले केहि जणे ४९
तुहि जे मोते भण्डि आणिलु महीपति। त्रिशूद्र हेतुरु होइलि तोरे प्रीति २५०
केते पापभारा बहिलि ए शिरे। दक्षिणा देवाकु नोहिलु नृपवरे २५१
नृपति बोइले मोर धन आउ नाहिँ। सेथि सकाशे राज्य समर्पिला मुहिँ ५२
ऋषि बोइले तोर पुअ माइप बिक। आपणे बिक्रय हुअ नृपति तिळक ५३
शुणि हरि चन्दन होइले मने तोष। पुत्र भारिजा बिकिले तुम्भर मन तोष ५४
बशिष्ठंकु बोइले ए राज्य धनरथ। अश्व हस्ती जुवती सकळ साइत ५५
एपुणि मागिले न देबटि किछि। अधर्म ऋषि एजे कपट करि अछि ५६
एते बोलि राजन पुत्र भारिजा घेनि।
विश्वामित्रंकु घेनिण चळिले बेगे पुणि ५७
काशि क्षेत्ररे जाइ होइले प्रवेश। संगरे पाटराणी कुमर बिशेष ५८

राजा ने कहा, हे मुनि ! आप क्या माँगते है ? हे मुनिश्रेष्ठ ! मैं वह अवश्य ही प्रदान करूँगा। ४५ इतना कहते हुए महाराज ने समर्पित करते हुए कहा कि यह सम्पूर्ण राज्य आपका हुआ। ४६ विश्वामित्र ने कहा कि यह मैं कुछ भी ग्रहण नही करूँगा। मुझे सन्तुष्ट करने से तुम स्वर्ग भोग करोगे। ४७ तुमने अत्यन्त धर्म करके राजसूय यज्ञ किया है जिसकी समता सौ अश्वमेध यज्ञ नही कर सकते। ४८ हे राजन ! इस यज्ञ से सहज ही तुम्हे ससार मे यश मिला है। यज्ञ के लिये आचार्य कोई भी नही बना। ४९ हे राजन् ! तुम मुझे भरमाकर ले आए। त्रिशूद्र के कारण मै तुम पर प्रसन्न हो गया। २५० इस सिर पर मैने कितने पापो का भार वहन किया है। हे नृपश्रेष्ठ ! तुम दक्षिणा देने में अन्यमनस्क हो रहे हो। २५१ राजा ने कहा कि अव धन और मेरा नहीं रहा ! इसी कारण से मैंने राज्य समर्पित कर दिया। ५२ ऋषि ने कहा कि तुम अपने पुत्र तथा स्त्री को विक्रय करो। हे नृपतिलक ! तुम स्वय अपने को विक्रय करो। ५३ यह सुनकर हरिचन्दन का मन सतुष्ट हो गया। पुत्र और पत्नी को बेचने से आपका मन सतुष्ट हो जायेगा। ५४ उन्होने वशिष्ठ से इस राज्य धन रथ हाथी घोडे युवती इत्यादि सबको सँभालकर रखने को कहा। ५५ इसके पुन. माँगने पर कुछ भी न देना। इस अधार्मिक ऋषि ने कपट किया है। ५६ इतना कहकर राजा पुत्र स्त्री तथा विश्वामित्र को लेकर शीघ्र ही चल दिये। ५७ वह काशी क्षेत्र मे जा पहुँचे। उनके साथ मे विशेपतया: पुत्र और

केमन्ते राज्य रखिबु निश्चय राज्य नेबि।
ए राज्यरु तोते मुहिँ बाहार करि देबि ८८
ए राज्ये पुत्र भारिजा मोर मागु थिले भिक।
स्वर्गरे बसिण जे, लभिले दिव्य सुख ८९
एहि क्षणि तुरे ए राज्यरु जाअ जा। दण्डे एथि रहिले करिबि मुहिँ कज्ज्या २९०
एते बोलि विश्वामित्र ड़ेणा मेलाइ धाईँला।
तोर मोर आज जुद्ध करिबा बोइला २९१
एते कहि विश्वामित्र होइलेक बक। शते जुण मोट हेले शते जुण उच्च ९२
देखिण बशिष्ठ तांकु होइलेक बक। बेनि बक दिशिले जे पर्बत सादृश्य ९३
ओप्रध तेजिण जे, कलेक समर। जे सनेक बेनि गिरि हुअन्ति एकठार ९४
बेनि बेनि ड़ेणारे से हेले पिटा पिटि। के काहार थण्टरे तोटि रकटन्ति ९५
नखमान घेनिण बिदारिले अंग। रुधिरे स्नान कले दिशिला बिरंग ९६
बन गिरि पर्वत जे कम्पिला महि आळि।
देखि करि बन जीबे सर्बे कले हाल होळि ९७
अष्टदिग लोके देखि आश्चर्य होइले। बर्षक पर्ज्यन्त सेथिरे जुद्ध कले ९८
ईश्वर बेदबर देवतांकु घेनि। बिजय़ कले आसि अजोध्यारे पुणि ९९
दुहेँ न घुञ्चन्ति सरिसमरे रहि। नारद नृत्य कले बीणातुरी बाइ ३००

तुझे दे दूँगा। ८७ मैं निश्चितरूप से राज्य लूँगा और देखूँगा कि तुम कैसे राज्य रखते हो। मै तुझे इस राज्य से बाहर निकाल दूँगा। ८८ इस राज्य में मेरे पुत्र और पत्नी भिक्षा माँगते थे। अब स्वर्ग में वास करके दिव्य सुख प्राप्त कर रहे है। ८९ तू इसी क्षण इस राज्य से चला जा। अब एक पल भी यहाँ रहने पर मैं तुम्हे उलझन में डाल दूँगा। २९० ऐसा कहकर विश्वामित्र उन पर झपट पड़े और बोले आज तेरा और मेरा युद्ध होगा। २९१ इतना कहकर विश्वामित्र बगुला बन गए। वह सौ योजन मोटे और सौ योजन ऊँचे हो गये। ९२ वशिष्ठ भी उन्हे देखकर बगुला बन गये। देखने में दोनो बगुले पर्वत के समान थे। ९३ दयाभाव छोड़कर उन्होंने युद्ध किया। लगता था जैसे दो पर्वत इकट्ठे हो गये हो। ९४ दोनो एक दूसरे के पख से पीटा पीटी करने लगे चोंच से एक दूसरे की गर्दन पर प्रहार करने लगे। ९५ नाखूनों से अंग विदीर्ण कर दिये। रुधिर से स्नान करने से वह विशेष प्रकार से लाल दिखाई दे रहे थे। ९६ वन गिरि पर्वत तथा भूमण्डल काँपने लगा। उन्हे देखकर जंगल के जीवों में हड़कम्प मच गया। ९७ आठों दिशाओं के लोग यह देख कर आश्चर्य मे पड़ गये। वहाँ पर एक वर्ष पर्यन्त युद्ध होता रहा। ९८ शकर भगवान ब्रह्माजी तथा देवताओ को लेकर अयोध्या में आकर उपस्थित हो गये। ९९ दोनो बराबरी का युद्ध करते हुये पीछे नही हट रहे थे। नारद वीणा तूर्य

पुत्र भारिजांकु तांकर इन्द्र घेनि गला । शूलेइ घरे नेइ ताहांकु रखाइला ७३
एथु अनन्तरे शुण रघुनाथ ।हरिचन्दन आसि बारु ब्रशिष्ठ उपत ७४
हस्ति घोड़ा जुबती रखिले नग्रे सेत । समस्त धन साइति रखिले तपोवन्त ७५
धन रत्न चामर जेतेक थिले देइ । राजार नबरे सम्भाळि मुनि थोइ ७६
एथु अनन्तरे विश्वामित्र मुनि । बेनि लक्ष सुवर्ण घेनि से गले पुणि ७७
अजोध्या नबरे हेले परवेश । वशिष्ठंकु देखिले पुरे जाइण त ७८
बोइले किम्पाइँ मोहर राज्ये अछु । एथिरे रहिबाकु कि उपाय़ पाञ्चुछु ७९
वशिष्ठ बोइले किए अटु तुहि । राजा राणी पुत्रकु बिदाय़ कलु नेइ २८०
से ते वेळे राजा तोते कहिलाक पुण । मोर राज्यु धन द्रव्य निअ तु भलेण २८१
तु जे मोर जीवन विक्रय़ करि नेलु । राज्य धन देलि बोध न घेनिलु ८२
तेणु मोते बोइला सकळ धन निअ । मोर राज्य सम्भाळिण तुम्भे भले रह ८३
मुहिँ न आसिले मोहर अंशरु जणे । राजन करिब जे कहिण गले एणे ८४
जेणु राज्य गोटा समर्पण मोते करि । तोर किस अछिरे निर्ल्लज तपचारि ८५
शुणि विश्वामित्र हेले क्रोधरे जर्ज्जर ।
बोइले राजा राणीकि बिकिलि अन्य घर ८६
तार राज्य तार घर मुहिँ सिना नेबि ।राजाकु नेलि मुं जे, राज्यकु तोते देबि ८७

और पत्नी को इन्द्र ले गया और उन्हे घर मे लेकर रख दिया। ७३ हे रघुनाथ ! सुनिये। इसके पश्चात् हरिचन्दन के चले जाने पर वशिष्ठ क्षुब्ध हो गये। ७४ उन्होने हाथी घोड़े तथा युवतियो को नगर में सँभाल कर रखा। तपस्वी वशिष्ठ ने सारे धन को सँभालकर रख दिया जो भी धन रत्न चाँमर इत्यादि दिया गया था उसे उन मुनि ने सँभाल कर राजमहल मे रखवा दिया। ७५-७६ इसके पश्चात् मुनि विश्वामित्र दो लाख स्वर्ण मुद्राये लेकर चले गये। ७७ वह जाकर अयोध्या नगर मे प्रविष्ट हुये और महल मे जाकर वह वशिष्ठ से मिले। ७८ उन्होने कहा तुम किसलिए मेरे राज्य मे हो क्या यहाँ रहने का उपाय सोच रहे हो। ७९ वशिष्ठ ने कहा कि तुम कौन हो। तुमने राजा रानी और पुत्र को ले जाकर विदा कराया। २८० जब राजा ने तुझसे कहा था कि मेरे राज्य से तुम अच्छी प्रकार धन और द्रव्य ले लो। २८१ तूने उसके जीवन को विक्रय करके ले लिया। राज्य धन देने से तुझे संतोप नही हुआ। ८२ तब उसने मुझसे कहा कि यह सारा धन ले लो और मेरे राज्य को सँभालकर आप भली प्रकार से रहे। ८३ यदि मै न आऊँ तो मेरे अश के किसी व्यक्ति को राजा बना देना। इस प्रकार कहकर वह चले गये। ८४ राज्य उन्होने मुझे समर्पित किया है। अरे निर्लज्ज तपस्वी ! तेरा इसमे क्या है। ८५ विश्वामित्र यह सुनकर क्रोध से तमतमा उठे और बोले कि राजा और रानी को दूसरे के घर मे विक्रय कर दिया है। ८६ उसका राज्य तथा घर मैं लूँगा। राजा को मैंने लिया है। तो क्या राज्य

आगर हिंसा कथा मनरे तार रखि। देबतांक उपरे क्रोध प्रज्वळिति १५
कोपे थरहर होइण शाप देला। मनुष्य शरीर तुम्भे पाअरे बोइला १६
चउराशि जोनि भ्रमि देबे होन्ति जात। अदोषे शाप मोते देले दइबत १७
देवता पण छाड़ि मञ्चरे अवतार। शुणिण देवताए क्रोधरे गुरुतर १८
बोइले विश्वामित्र एड़े गर्ब तोर। राज ऋषि होइणरे देबंक संगे गाढ़ १९
पुत्र भारिजा चण्डाळ गोमांस खाइ। त्रिशूद्र चण्डाळकु स्वर्गकु देलु तुहि ३२०
भल कहिलारु तु मन्द बिचारिलु। देवतांक संगे बिवादि आज ठारु हेलु ३२१
एके पितृंकु तु नकरु तर्पण।तर्पण काळे जळ देले चण्डाळ हेबे पुण २२
जेते बेळे ब्रह्ममुनि बशिष्ठ तोरे बोलि।
तेते बेळे चण्डाळर पातक जिब तोरि २३
शुणिण विश्वामित्र बोइले बचन। मोहर बचन जे, तोहरे हेउ आन २४
अनेक दिन अन्तरे द्वापर जुग शेष। कृष्ण अवतार होइबे पीतवास २५
काळ नउमि दैत्यंकर स्वरूपरे जात। मथुर राजा उग्रसेनरे हेब पुत्र २६
तिनिपुर जिणि तुम्भंकु दण्ड देव। देबे तुम्भे वासुदेव जनम कराइब २७
पृथ्वी नसहिब जे, ताहार पाद घात। तेणुटि नारायण राम कृष्ण रूप २८

द्वेष होने के कारण वह देवताओ के ऊपर क्रोध से प्रज्वलित हो गए। १५ क्रोध से थरथराते हुए उन्होंने शाप देते हुए कहा कि तुम लोगों को मनुष्य शरीर प्राप्त हो। १६ हे देवताओ! तुम चौरासी योनियों में भ्रमण करके उत्पन्न हो। मुझे ब्रह्मा ने बिना दोष के शाप दिया। १७ देवयोनि छोड़कर मृत्युलोक में अवतार ग्रहण करो। यह सुनकर देवताओं को महान क्रोध हुआ। १८ उन्होंने कहा अरे विश्वामित्र! तुझे इतना गर्व हो गया है। राजर्षि होकर देवताओ से भिड रहा है। १९ पुत्र और भार्या ने चाण्डाल का गोमाँस खाया और तूने त्रिशूद्र चाण्डाल को स्वर्ग भेज दिया। ३२० उचित कहने पर तूने उसे मन्द विचार समझा और आज से देवताओ के साथ शत्रुता कर ली। ३२१ अब तुम पितरों को जल अर्पण मत करो। तर्पणकाल में जलदान करने से वह चाण्डाल हो जायेगे। २२ जब वशिष्ठ तेरे लिये ब्रह्मर्षि कहेगे। तब तेरा चाण्डाल वाला पातक नष्ट हो जायेगा। २३ यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा कि मेरा वाक्य तुम्हारे लिये मिथ्या न हो। २४ वहुत काल बाद द्वापर युग के अन्त में भगवान पीताम्बरधारी कृष्ण के रूप मे अवतरित होगे। २५ काल नउमी, दैत्य (कंस) के स्वरूप मे उत्पन्न होगा। वह मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र बनेगा। २६ तीनो लोको को जीत करके वह आप लोगों को दण्ड देगा। हे देवताओ! आप लोग भगवान वासुदेव को अवतरित कराइयेगा। २७ उसके पदाघात को पृथ्वी सहन नही कर पायेगी। इस कारण से भगवान नारायण राम तथा कृष्ण के रूप में कंस को मारकर वह पृथ्वी का उद्धार करेगे। कुरुवश में दुर्योधन उत्पन्न

विधाता वोइले तुम्भे वेनि जण शुण । तुम्भे जुद्ध रहाअ कहु आम्भे पुण ३०१
ब्रह्मांकर बचने दुइ जण छिडा ।वेदवर वोले विश्वामित्र माडुछ अकामड़ा २
राजा तोते देला वेळे न नेलु एराज्य ।राजारे माया करि कहिलु कथा द्वन्द्व ३
वोइलु तोर पुत्र भारिजा विक्रि करि नेवि। काळ जुगकु मुं त कथा रहाइवि ४
एमन्त कहिण राजाकु धन छाडि गलु। राजा वंश विक्रय करिण धन नेलु ५
एवे जे अधर्म करि कथा कहु पुण। एते अधर्म कलेरे काहुं हेव पुण्य ६
जेते पुण्य करि थिलु नाश गला सर्व। एड़े अधर्मा होइलु न जाणु धर्माधर्म ७
एवे जेवे दण्डेरे रहिबु एथिरे। भस्म होइण जिवुरे कहिलु तोहरे ८
शुणि करि विश्वामित्र थरहर होइ। निज रूप धरिण अजोध्यारु पळाइ ९
सिद्धवने पुत्र घरणी तुले मिळि। तप आरम्भिले शेथिरे वसि करि ३१०
विचारिले मोर मुखे मोर पुण्य गला।
तपिरे जोग्य नोहिलि राज्यरु तेज्या हेला ३११
एमन्त विचारि मउने करि तप। देवताए स्वर्ग गले रहिले वशिष्ठ १२
श्रीराम पचारिले सेठारु किस हेला। सत्यानन्द कहि तुम्भे दशरथ वळा १३
तप करन्ते से जे, किछि दिन जाइ। तपरे तेजवन्त विश्वामित्र होइ १४

वजाकर नृत्य करने लगे। ३०० ब्रह्माजी ने कहा आप दोनो व्यक्ति सुनिये। मेरे कहने से आप दोनो युद्ध रोक दें। ३०१ ब्रह्मा की बात पर दोनों व्यक्ति खड़े हो गये। ब्रह्मा ने कहा हे विश्वामित्र ! न रौंदने वाले स्थान को क्यों रौंद रहे हो। २ राजा द्वारा देने पर यह राज्य तूने नहीं लिया और राजा से तूने माया करके छलपूर्ण बातें कही। ३ तूने उसके पुत्र तथा पत्नी को विक्रय करके लेने को कहा। सर्वकाल के लिये मैं तेरी कीर्ति स्थापित कराऊँगा। ४ ऐसा कहकर तू राजा के धन को छोडकर चला गया तथा राजा के वंश को विक्रय करके तूने धन लिया। ५ अब फिर यह अधार्मिक बात कर रहा है। इतना अधर्म करने से पुण्य कहाँ से होगा। ६ तूने जितने पुण्य किए थे सब नष्ट हो गए। तू इतना पापी हो गया कि अधर्म तथा धर्म को भी नहीं जानता। ७ अब यदि तू यहाँ एक दण्ड भी रुकेगा तो भस्म हो जाएगा ऐसा मैं तुझसे कह रहा हूँ। ८ यह सुनकर विश्वामित्र थर्रा उठे और अपना रूप धारण करके अयोध्या से भाग गए। ९ वह सिद्धवन मे जाकर अपनी पत्नी तथा पुत्रो मे मिले और फिर उन्होने वैठकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। ३१० उन्होने विचार किया कि मेरे मुख मे ही मेरा पुण्य चला गया न तो तपस्वी के योग्य हुआ और राज्य भी छूट गया। ३११ इस प्रकार सोचकर वह मौन होकर तपस्या करने लगे। उधर देवता स्वर्ग चले गए और वशिष्ठ रह गए। १२ श्रीराम ने पूंछा कि फिर वहाँ क्या हुआ ? सतानन्द कहने लगे और दशरथनन्दन सुनने लगे। १३ तप करते हुए कुछ दिन व्यतीत होने पर तपस्या से विश्वामित्र तेजीयान हो गए। १४ उनके मन मे पहले का

बेदबर बोइले तु विश्वामित्र शुण । राजपण छाड़ि तुत तपि हेलु पुण ४४
तपि माने तपकले न करन्ति राग हिंसा ।तपिमानंकर सुख भोगरे नाहिं इच्छा ४५
दुष्टपण छाडि सन्थपण धर एबे । सन्थपण न धरिले नाश जिबुटि बेगे ४६
अनेक थर तु जे कलुटि दुष्टपण । आज ठारु दुष्ट हेले भस्म हेबु जाण ४७
एते कहि बेदबर देबंकु संगे घेनि । स्वर्गपुरे मिळिले जाइण पद्म जोनि ४८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण रामचन्द्र । विश्वामित्र मुनिकर कथा बड़ मन्द ४९
पुष्कर तीर्थे प्रबेश गाधि सुत जाण । सिद्ध बनरे पुत्र घरणी रखिण ३५०
तप आरम्भिला से जाइ राजन । निष्ठारे तपकरि बसिलाक जाण ३५१
एथु अनन्तरे शुण हे दाशरथि । गालभ नामरे जे, एकइ नृपति ५२
अश्वमेध जाग करिबाकु तार बुद्धि । भिआण कले से जे सकळ सम्पादि ५३
नृपति मानंकु जे कले निमन्त्रण । नाना तीर्थरु अणाइ तपिगण ५४
घृत तीळ जळ जे समिध ठुळ करि । विश्वामित्र पाशकु गलेक दण्डधारी ५५
कर जोडि नृपति कहिले मुनिबर । भो मुनि मुँ करुछि अश्वमेध यज्ञ ५६
मोर जागे आचार्य्य होइब गाधिसुत । शुणि करि विश्वामित्र कले सनमत ५७
गालभर संगरे अइले महामुनि । कटकरे प्रवेश होइले आसि पुणि ५८
तेणु से राजन नग्र करइ मण्डन । लक्षणबन्त अश्व बुलाइ पृथी पुण ५९

तू तपस्वी बना । ४४ तपस्वी तपस्या करने पर क्रोध तथा हिंसा नही करते है। तपस्वियों की इच्छा सुखभोग की नही होती । ४५ आज तू दुष्टता छोड़कर साधुता को अपना। साधुता न धारण करने पर तू शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा । ४६ तूने अनेक बार दुष्टता की है। आज से दुष्टता करने पर तू भस्म हो जायेगा । ४७ इतना कहकर पद्मयोनि ब्रह्माजी देवताओ को साथ लेकर स्वर्ग जा पहुँचे । ४८ हे श्रीरामचन्द्र ! आप सुनिये। इसके पश्चात् मुनि विश्वामित्र की कथा बड़ी मन्द है । ४९ सिद्धवन में पुत्र तथा पत्नी को छोड़कर गाधिनन्दन पुष्कर तीर्थ में जा पहुँचे । ३५० राजा ने जाकर तपस्या आरम्भ की। वह निष्ठापूर्वक तप करने बैठ गये । ३५१ हे दाशरथी ! सुनो। इसके पश्चात् गालव नाम का एक राजा था । ५२ उसका मन अश्वमेध यज्ञ करने का हुआ। उसने समस्त पदार्थों का सम्पादन कर लिया था । ५३ उसने राजा लोगों को आमंत्रित किया और अनेक तीर्थों से तपस्वियों को बुला लिया । ५४ घृत, तिल, जौ, तथा समिधा एकत्रित कर ली। फिर राजा विश्वामित्र के निकट गये । ५५ राजा ने हाथ जोड़कर कहा हे मुनि श्रेष्ठ ! मै अश्वमेध यज्ञ कर रहा हूँ । ५६ हे गाधिनन्दन ! आप मेरे यज्ञ में आचार्य बन जायें। यह सुनकर विश्वामित्र ने स्वीकृति प्रदान की । ५७ महर्षि गालव के साथ आये और कटक मे आ पहुँचे । ५८ तब उस राजा ने नगर को सुसज्जित कराया और लक्षणों से युक्त अश्व को भूमण्डल में घुमाया । ५९ वेणुनदी के तट पर यज्ञ प्रारम्भ हुआ ।

कंसकु मारिण से जे, उद्धरिबे मही। कुरु बशरे जात दुर्योधन होइ २९
तार संगे जन्मिबे शतेक भाइ पुण। अष्ट वसु नवग्रह दश दिग पाळे जाण ३३०
देव किन्नरी आवर देवताए। पन्नंगा नाराय़ण संगरे जन्म हुए ३३१
तुम्भे देवताए अधर्म कुळे जात। कळि द्वन्द तुम्भर हृदरे पुरा जात ३२
धर्म से, जेन्मिबे जुधिष्ठिर महीपाळ। अश्विनकुमार जे होइबे नकुळ ३३
इन्द्ररु अर्जुन जे पवनरु भीम। वरुणरु अवतार होइबे साय़तन ३४
सहदेव मन्त्री पण्डु राजा सुतदेव। सुरेकु अनाइले सकळ जाणिव ३५
आगत निगत कथा सबु करिव वखाण।
भीष्मदेव वसु, जे अभिमन्यु चन्द्र जाण ३६
कर्ण जात हेबे रवि अंशरु जाण। शाळु शिशुपाळ जरासन्ध ए जाण ३७
एमाने दैत्य होइण जन्म हेबे जाण। × × × ३८
माय़ारे श्रीहरि जे सभिकु मारिबे। पाण्डव दुर्योधन जुद्ध आरम्भिबे ३९
समर भुइँरे दुइपक्ष जे होइबे। × × × ३४०
आपणा आपणारे होइबे मरामरि। जोगमाय़ा हेबे जे पाण्डबंक नारी ४४१
तांक गर्भे अष्टवसु होइबे जे, जात।
जन्म काळे सात दिने शोइबा स्थाने हत ४२
अळप दिन रहिण आसिबे स्वर्गपुरी।
एसन बोलि कहिले विश्वामित्र तपचारी ४३

होगा। उसके साथ एक सौ भाई उत्पन्न होंगे जो अष्टवसु नवग्रह तथा दस दिगपाल होंगे। २८-२९-३३० देव किन्नरी तथा अन्य देवगण अनन्त वासुदेव के साथ जन्म लेंगे। ३३१ आप देवता लोग अधर्मी कुल में उत्पन्न होंगे, आपके हृदय मे झगड़ा-झझट भरे पडे होंगे। ३२ धर्म महाराज युधिष्ठिर के रूप मे और अश्विनी कुमार नकुल के रूप मे जन्म लेंगे। ३३ इन्द्र से अर्जुन, पवन से भीम, और वरुण से सहदेव अवतरित होंगे। ३४ राजा पाण्डु का पुत्र सहदेव मात्रिक होगा। सूर्य की ओर देखने पर वह सब जान जायेगा। ३५ वह भूत-भविष्य की कथाओ का वर्णन करेगा। भीष्मदेव वसु और चन्द्रमा अभिमन्यु बनेगा। ३६ सूर्य के अश से कर्ण उत्पन्न होगा ओर शालुदेव जरासन्ध-शिशुपाल होंगे। ३७ यह लोग दैत्य होकर जन्म ग्रहण करेंगे। ३८ भगवान नारायण माया से सबका सहार करेंगे। पाडव तथा दुर्योधन युद्ध प्रारम्भ कर देंगे। युद्धभूमि मे दो पक्ष हो जायेंगे। ३९-३४० वह आपस मे ही मार धाड करेंगे। योगमाया पाडवो की पत्नी होगी। ३४१ उसके गर्भ से आठ वसु उत्पन्न होंगे। जन्मकाल से सातवे दिन लेटने के स्थान पर मृत्यु को प्राप्त होंगे। ४२ वह अल्पदिन रहकर स्वर्गपुरी मे आ जायेंगे। तपस्वी विश्वामित्र ने इस प्रकार वर्णन किया। ४३ ब्रह्माजी ने कहा अरे विश्वामित्र ! सुन। राजत्व छोड़कर

अतिहिँ चञ्चल जे अति बळबान। एककु आरेक जे नथिले बड़ सान ७६
समस्त अण्डिर थिबे नथिबे केहि माई। समस्त व्यग्र बोलि कहिला पुण रहि ७७
जहिँ कि मन कले जान तहिँ जिबे। एक दिनके मेदनी बुलिण आसिबे ७८
एहि रूपे सहस्र अश्व दिअ आणि। शुणि करि राजनर साहस उडे पुणि ७६
मनरे बिचारिला मनरे कोप हेला। मोहर जोगुं सिना एकथा उपुजिला ३८०
जाहा से मुनिबर मागिले एबे मोते।बेनि लक्ष अश्व खोजिले न मिळबे शते ३८१
एमन्ते बिचारि राजा मुनिर पादे पड़ि। कार्पण्य होइण जे कहइ कर जोड़ि ८२
तु महामुनि मोते प्रतिकार कर। ए महा संकटरु बारेक उद्धर ८३
मुहिँ जे अज्ञान न जाणइ किछि। तहिँर फळ एबे मुहिँ त पाइलिटि ८४
शुणिण कउसिक मनरे हेले तोष। प्रसन्न होइण मुनि बोइले सर्ब बस ८५
आज्ञा देइ बिश्वामित्र निज आश्रमरे मिळि।
ततक्षणे राजन चळिला स्वर्गपुरी ८६
शुणि करि श्रीराम जे मुनिक चरित। ए मुनि अटन्ति जे धार्मिक तपोबन्त ८७
शुण तुम्भे रामचन्द्र तुम्भ उपर बंश कथा।
अम्बरीश बोलिण अजोध्या सामरथा ८८
नर मेध जज्ञ जे करित इच्छा कला। लक्षण वन्त पुरुष भिआइ आणिला ८६

वाली हो। यह शीघ्र ही प्रदान करके मेरे मन को सतुष्ट करो। वह अत्यन्त वलवान और बड़े चंचल होने चाहिये एक दूसरे से कोई बड़ा छोटा न होना चाहिये। ७५-७६ सभी घोड़े होंगे घोडी कोई भी नही होगी। यह सारी बातें ऋषि ने थोड़ा रुक- ककर व्यग्रभाव से कह डाली। ७७ जहाँ भी इच्छा होगी रथ वही जायेगा और एक दिन में जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर भ्रमण करके आ सकेगे। ७८ इस प्रकार के हजार घोड़े लाकर दो। यह सुनकर राजा का साहस उड़ गया। उसने मन में सोचा कि सम्भवतः ऋषि मन में कुपित हो गये है। मेरे कारण ही यह बात उत्पन्न हुयी है। ७६-३८० जिससे मुनि श्रेष्ठ ने मुझसे इस प्रकार की याचना की है। दो लाख घोड़े खोजने पर ऐसे सौ घोडे भी मिलेगे ?। ३८१ ऐसा विचार कर राजा मुनि के चरणों में गिरकर दीनतापूर्वक हाथ जोड़कर बोला। ८२ आप महामुनि है। हमसे बदला ले रहे है। आप इस महान संकट से हमारा उद्धार करे। ८३ मै अज्ञानी हूँ कुछ भी नही जानता हूँ और उसी का फल मुझे इस समय मिला है। ८४ यह सुनकर विश्वामित्र मन में संतुष्ट हो गये। मुनि ने प्रसन्न होकर सबसे बैठने को कहा। ८५ विश्वामित्र आज्ञा देकर अपने आश्रम में जा पहुँचे। राजा उसी समय स्वर्गलोक की ओर चल दिये। ८६ श्रीराम ने मुनि का चरित्त सुनकर कहा कि यह मुनि धार्मिक तथा तपस्वी है। ८७ हे श्रीरामचन्द्र ! अब आप अपने पूर्वजो की कथा सुनिये। अम्वरीप नामक राजा अयोध्या का समर्थवान अधिपति था। ८८ उसने नरमेध

जाग आरम्भ बेणु नदी कूळे कला ।आपणे विश्वामित्र आचार्य होइला ३६०
अग्निर मुखरे नेइ समर्पिले घृत । हवि भक्षिबाकु जे अइले देव शत ३६१
जाग सारिण पूर्ण आहुति समर्पिले । तिनि पक्षरे जाग सम्पूर्ण सेहु कले ६२
देबे तोष होइण गले स्वर्गपुर । जे जाहार राज्यकु जे गले निजपुर ६३
तपि जपिमाने जे जाहार पुरे गले । विश्वामित्र मुनि जे गालवकु बोले ६४
तु हे नृपति मोते दक्षिणा दिअसि । ए तोहर धर्म जे सुफळ कर आसि ६५
शुणि करि नृपति नेलेक बहुधन । परम तोष हेले जे कउशिक पुण ६६
राजार तृपत जे नोहिला पुण चित्त । मनरे विचारिला देवइँ आउ वित्त ६७
ऋषिकि कहिला जे प्रसन्न बदनरे ।आवर मागिले जे दक्षिणा देवि तोरे ६८
मुनि बोइले मुं जे हेलिणि तृपति । सुखरे राज्य भोग कर हे नृपति ६९
विश्वामित्रकर एसन वाणी शुणि । गालभ बोइले जे मने मने गुणि ३७०
तुम्भे मोते ऋषिमाग देवइँ आउ धन । नोहिले तुम्भर इच्छा जेउँ थिरे पुण ३७१
शुणिण कउशिक कोपमन हेले । अधर कम्पाइ जे राज्यकु अइले ७२
दिअ मोते आणि सहस्त्र अश्व वेग । सर्वांग श्वेत बर्ण कदम्ब चालि भाव ७३
मस्तक उपरे खूण न थिब भुमिर । कटि मोट अति नोहिब आगभर ७४
श्वेत चामर जिणिण दिशुथिब लांज्ज । एहा देइण बेगे मन मोर रञ्ज ७५

विश्वामित्र स्वय आचार्य बने । ३६० घृत लेकर अग्नि के मुख मे समर्पित किया गया । देवता लोग हवि खाने के लिये आये । ३६१ यज्ञ समाप्त करके पूर्णाहुति दी गयी । उन्होने तीन पक्षो में यज्ञ सम्पन्न किया । ६२ देवता सतुष्ट होकर स्वर्ग को चले गये और राजागण अपने-अपने राज्यो को लौट गये । ६३ तपस्वी भी अपने-अपने स्थानो को चले गये तब मुनि विश्वामित्र ने गालव से कहा । ६४ हे राजन् ! तुम मुझे दक्षिणा प्रदान करो जिससे तुम्हारा धर्म सफल हो जाये । ६५ यह सुनकर राजा ने प्रचुरधन प्रदान किया तब विश्वामित्र परम सतोष को प्राप्त हुये । ६६ परन्तु राजा का चित्त तृप्त नही हुआ । उन्होने और धन प्रदान करने का मन मे विचार किया । ६७ उसने प्रसन्नमुख से ऋषि से कहा कि और माँगने पर मै आपको और दक्षिणा दूंगा । ६८ मुनि ने कहा मै तो तृप्त हो गया हूँ । हे राजन् ! तुम सुखपूर्वक राज्य का उपभोग करो । ६९ विश्वामित्र के ऐसे वचन सुनकर मन ही मन विचार कर गालव ने कहा । ३७० हे ऋषि ! आप मुझसे धन की याचना करिये । मै फिर अवश्य दूंगा अथवा आपकी जो इच्छा हो । यह सुनकर विश्वामित्र का मन कुपित हो गया । वह ओठ फड़-फड़ाते हुये राज्य मे आये । ३७१-७२ उन्होने कहा मुझे शीघ्र ही एक सहस्र अश्व ला दो जिनके सर्वांग श्वेत रंग के हो और कदम चाल वाले हो । ७३ उनके मस्तक के ऊपर भौरी आदि का दोष न हो । उनकी कमर अत्यन्त मोटी न हो और आगे का हिस्सा भारी न हो । ७४ उनकी पूंछ सफेद चामर को जीतने

नरमेध जज्ञ जे, आरम्भ मुहिँ कलि । सकळ पदार्थ जे आणिण ठुळ कलि ५
लक्षणबन्त पुरुष मो केहु नेला हरि । ए महीमण्डळे मुँ न पाए खोजि करि ६
तुम्भर तिनि पुत्र अछन्ति सुन्दर । धन नेइ एक पुत्र दिअ मुनिबर ७
तुम्भ द्वारा प्रापत हेउ जे मोते धर्म । नोहिले प्रापत मोते नुहे जाग धर्म ८
शुणि करि ऋचिक भाळिले मने मन । एहि क्षणि नेब ए जे लक्षेक सुबर्ण ९
दरिद्र अवस्था मोर जिब अपसरि । एमन्त बिचार जे मनरे ऋषि करि ४१०
बोइले नरनाथ पुत्र नेबार शुण । धन देइ पारिले नेबु नृपराण ४११
धनरे पुत्र मोर जिब जेबे बुडि । तेबे मुँ पुत्र निश्चे देबि दण्ड धारी १२
शुणि करि राजन जे, सिउकार कला । आपणा निज राज्ये बेगे चळि गला १३
लक्षे रथ पाणि द्रब्य घेनाइ अइला । ऋचिक महामुनिर आश्रमे मिळला १४
अम्बरिश राजाकु ऋषि राइ कहि । ज्येष्ठ पुत्रकु मुहिँ देइ न पारइ १५
ए कुमरे मोहर जे, बहुत काज्यं अछि । क्षणे ताकु नदेखिले न पारइ मूर्च्छि १६
एमन्त शुणिण जे, बोइले ऋषि आणि । कनिष्ठ पुत्र मोर जीबकु कारेणि १७
एहि कुमर मुँ जे न पारे केबे मूर्च्छि । कोळर पुत्रकु केमन्ते देबि निकि १८
पिता मातांकर एमन्त वाणी शुणि । मझिआँ कुमर जे कहुअछि बाणी १९
ज्येष्ठ पुत्र गोटिकु सम्भाळि नेले पिता । कनिष्ठ पुत्रकु जे सम्भाळिले माता ४२०

कहूँगा उसे आप सुनिए । ४ मैंने नरमेध यज्ञ आरम्भ किया है। सारे पदार्थ मैंने लाकर एकत्रित कर दिये । ५ मेरे लक्षणवन्त पुरुष को कोई हरण करके ले गया । मैंने इस भूमण्डल पर उसे खोजा परन्तु वह नही मिला । ६ आपके तीन सुन्दर पुत्र है। हे मुनि श्रेष्ठ ! धन लेकर आप मुझे एक पुत्र प्रदान करे । ७ आपके द्वारा मुझे धर्म की प्राप्ति हो। नही तो मुझे यज्ञ का धर्म प्राप्त नही होगा । ८ यह सुनकर ऋचिक ने मन ही मन सोचा कि इसी समय मै इससे एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ ले लूँ । ९ मेरी दरिद्रता का समय दूर हो जाएगा । इस प्रकार का विचार मन में दृढ़ करके ऋषि ने कहा यदि आपको पुत्र ले जाना है तो सुनिये। हे नृपश्रेष्ठ ! यदि आप धन दे सके तो पुत्र को ले जॉय । ४१०-४११ जब मेरा पुत्र धन में डूब जाएगा तो हे राजन् ! मै निश्चय ही पुत्र प्रदान कर दूंगा । १२ यह सुनकर राजा ने स्वीकृति प्रदान की तथा शीघ्र ही वह अपने राज्य को चले गए । १३ एक लाख रथो में पेय पदार्थ लेकर वह ऋचिक मुनि के आश्रम में आ पहुँचा । १४ ऋषि ने राजा अम्बरीष को बुलाकर कहा कि मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र को नही दे पा रहा हूँ । १५ यह कुमार मेरे बहुत कार्य का है । एक क्षण भी उसे बिना देखे मै नही रह सकता । १६ ऐसा सुनकर ऋषि पत्नी ने कहा कि कनिष्ठ पुत्र मेरे प्राणों का आधार है । १७ मै इस पुत्र को कभी नही छोड़ सकती हूँ। अपनी कोख के पुत्र को हम कैसे प्रदान कर दे । १८ माता-पिता के इस प्रकार के वचनों को सुनकर मॅझले पुत्र ने कहा । १९ पिताजी ज्येष्ठ

घृत तिल जव समिध सज करि। भुषण्डि धेण्डुरा जे फेराए बेग करि ३९०
लक्षेक नृपति जे मिळिले तहिँ आसि। आवर अइले जे अनेक महाऋषि ३९१
जागर सम्भवं तार बासब जाणिला। लक्षणबन्त पुरुषकु हरि घेनि गला ९२
बिचार कला मनरे स्वर्गर नृपति। ए जाग कले राजा होइब सुरपति ९३
अनेक अश्वमेध पूर्वरु अछि करि। एमन्त बिचारि इन्द्र तहुँ नेले हरि ९४
रजनि पाहिबारु देखिले नर नाथ। लक्षणबन्त पुरुष जहिँ अछन्ति समस्त ९५
बोइले राजन पुण हेला बिपरित्त। एबे पुण मुहिँ जे करिबि केमन्त ९६
ऋषि मानंकु राजा पचारे बसाइ। मुनिमाने कहिले जे, शास्त्रकु देखाइ ९७
गला कथाकु राज्ञे न कर पुण चिन्ता।खोजिण आणजा लक्षण पुरुष सामरथा ९८
जाग समापन बेळे पूर्ण आहुत कार्य्य। जहिँरे थिब राजा तुम्भे आण बेग ९९
आम्भे अग्निरे घृत देइ देवंकु तोषिबु। क्षणे आम्भे जाग होम बिलम्ब करिबु ४००
शुणि राजन बिमान आरोहण कला। देशे देशे राज्ये राज्ये जाइण खोजिला ४०१
अनेक दूर राजा भ्रमण करि गला। ऋचिक मुनिकर आश्रमे देखिला २
लक्षणबन्त तांकर तिनि पुत्र छन्ति। अम्बरिश राजा जे, ताहांकु जाइ पुछि ३
चरणे नमिण जे, पुछइ नृपति। कथाए कहिबि एबे शुण हे महाजति ४

यज्ञ करने का विचार किया। वह एक लक्षणयुक्त पुरुष को ले आया। ८९ घी, तिल, जौ, समिधा सुसज्जित करके उसने शीघ्र ही ढिंढोरा पिटवा दिया। ३९० वहाँ पर एक लाख राजा लोग आ पहुँचे और अनेक महर्षि वहाँ पधारे। ३९१ उनके यज्ञ के समारोह को जानकर इन्द्र (यज्ञ के) लक्षणवान पुरुष को हर ले गया। ९२ स्वर्ग के अधिपति ने मन में विचार किया कि इस यज्ञ को कर लेने से राजा सुरपति हो जाएगा। ९३ इसने पहले ही अनेक अश्व-मेध यज्ञ किए है। इस प्रकार का विचार करके इन्द्र उसे वहाँ से हर ले गया। ९४ रात्रि समाप्त होने पर नरनाथ ने सबको देखा पर लक्षणवन्त पुरुष नही दिखाई दिया। ९५ राजा ने कहा कि यह तो विपरीत परिस्थिति आ गई। अब मै क्या करूँ ? । ९६ राजा ने ऋषियो को बैठाकर उनसे पूँछा। मुनियो ने शास्त्र सम्मत बात कही। ९७ हे राजा ! बीती बात के लिये आप चिन्ता न करे। आप जाकर लक्षणवान सामर्थ पुरुप खोज लाइये। ९८ यज्ञ के समापन पर पूर्णाहुति होगी। तब उसकी आवश्यकता पड़ेगी। अतः हे राजन् ! आप शीघ्र ही उसे ले आइये। ९९ हम अग्नि मे घृत देकर देवताओ को सतुष्ट करेंगे। थोड़ी देर हम यज्ञ-होम में विलम्ब कर देंगे। ४०० यह सुनकर राजा रथ पर बैठ गया तथा देश-देश में प्रत्येक राज्य में जाकर खोजने लगा। ४०१ राजा भ्रमण करते हुए बहुत दूर निकल गया। फिर उसने ऋचिक मुनि के आश्रम मे देखा। २ उनके तीन लक्षणवान पुत्र थे। राजा अम्बरीष ने जाकर उनसे पूँछा। ३ राजा ने चरणो मे प्रणाम करके कहा, हे महान् तपस्वी मैं एक बात

मुनि बोइले तुरे शुण शून्य सिह । जाहाकु बोइलु आम्भे नोहि बुटि भंग ३६
तोहर निमन्ते आम्भे देवा निज सुत । अम्बरीश राजाकु स्वर्ग परापत ३७
एते बोलि कउशिक निज पुत्र राइ । पाशरे बसाइ ताकु बुझाइण कहि ३८
शुण बाबु नन्दनरे मोर एबे कथा । अम्बरीश राजन अजोध्या महारथा ३९
ऋचिकर पुत्रकु जे आणिला पुण किणि। नरमेध जाग से जे, करिब नृपमणि ४४०
शून्य सिह ऋषि पुत्र जीवन अछि मूर्च्छि ।
मोरे शरण पशिला ऋचिक मुनि बत्सि ४४१
सत्य करि अछि मुं जे रखिब ताहांकु । केमन्ते जाग कराइबा जे, नर नाहाकु ४२
मोहर सत्यकु रखरे बाबु तुहि । ए देह गोटि तोर जागरे हेब दहि ४३
जदि तुम्भर मोहर हिते ब्रत । देह देइ रखरे ए मोहर सत्य ४४
शुणिण कुमर जे, बोइले पुणि हसि । परपाइँ आपणा पुत्रकु एबे नाशि ४५
बाइंकर कथा जे एसनेक मत । एमन्त बचन जे बोइले किम्पा तात ४६
आम्भे किम्पा परपाइँ देबु एबे देह । शुणि करि बिश्वामित्र होइले बिस्मय ४७
शून्य शंखकु जे राइण कहिले । तुहि जिबु बाबुरे राजा संगतरे ४८
जाअ राजा संगरे किछि जे भय नाहिँ । आम्भेत रखिलु तोते उपदेश देइ ४९
एते बोलि मन्त्र जे शिखाइ ऋषि देला। एमन्त ध्यान करिबु बोलिण बोइला ४५०

ही समझे। मुनि ने कहा हे शून्यसिह ! तुम सुनो मैने जो कहा है वह टूट नही सकता। ३५-३६ तेरे लिये हम अपने पुत्र को प्रदान करेंगे। जिससे राजा अम्बरीष को स्वर्ग प्राप्त हो। ३७ इतना कहकर विश्वामित्र ने अपने पुत्र को बुलाकर पास मे बैठाकर उसे समझाते हुये कहा। ३८ हे पुत्र ! तुम अब हमारी बात सुनो। अम्बरीष अयोध्या का पराक्रमी राजा है। फिर वह ऋषि का पुत्र क्रय करके ले आया है। वह नृप श्रेष्ठ नरमेध यज्ञ करेगा। ३९-४४० ऋषि पुत्र शून्यसिह का जीवन संकट में है। महर्षि ऋचिक का पुत्र मेरी शरण मे आया है। ४४१ मैने प्रतिज्ञा की है कि मै उसकी रक्षा करूँगा। मै उस नर नाथ का यज्ञ किस प्रकार से सम्पन्न कराऊँगा। ४२ यह तुम्हारा शरीर यज्ञ मे भस्म होगा। हे वत्स ! तुम मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा करो। यदि तुम मेरी सहायता करना चाहते हो तो अपना शरीर देकर मेरी प्रतिज्ञा की रक्षा करो। ४३-४४ यह सुनकर कुमार ने हँसते हुये कहा कि दूसरे के लिये अब अपने पुत्र को नष्ट कराते हो। ४५ यह तो पागलों जैसी बात है। परन्तु पिता ने इस प्रकार की बात कैसे कही। ४६ बालक ने कहा कि मै दूसरे के लिये अपना शरीर क्यों प्रदान करूँ यह सुनकर विश्वामित्र विस्मय में पड़ गए। ४७ उन्होंने शून्यशंख को बुलाकर कहा हे वत्स ! राजा के साथ तुम जाओगे। ४८ तुम राजा के साथ जाओ कुछ भय नही है। मै उपदेश देकर तुम्हारी रक्षा करूँगा। ४९ ऐसा कहकर ऋषि ने उसे मंत्र सिखा दिया और जिस प्रकार ध्यान

मोते एबे आउ रक्षक केहि नाहिँ। मुहिँ एथिरे किस करिबि जीइँ थाइ ४२१
भो राजा धन देइ मोते तुम्भे किण। निरक्ष होइथिबार केबण कारण २२
शुणि करि सन्तोष होइले नृपति। लक्षेक पाणि द्रब्य रथ देले सेथि २३
कुमरकु घेनिण बेगे चळि गला। पुस्कर तीर्थरे से जाइण रहिला २४
स्नान सारि राजा जे ऋषि पुत्र सहिते। जाइण मिळिले बिश्वामित्र तपोबन्ते २५
नमस्कार करि राजा बिनयी भाव होइ। शून्य शंख ऋषि जे शरण पक्षे जाइ २६
हे भृगु नन्दन हे बारे रक्षा कर। मोरे नरमेध जाग करिब नृपबर २७
पिता माता मोते विकिले धन घेनि। प्राण दान मोते दिअ हे महामुनि २८
शुणिण विश्वामित्र रखिबुँ बोइले। अम्बरीश राजा शुणि बिस्मय होइले २९
शून्य शंख बोले आकुळ नुह हे नृपति। मोते एबे प्राणदान देले महाजति ४३०
तुम्भंकु जे प्रतिकार करिबे महामुनि-। पिता माता मोते जे बिकिले धन घेनि ४३१
तिनि कुळ रखि जेबे मरइ एबे मुहिँ। नोहिले मो प्राण रखिबि काहिँ पाइँ ३२
बिश्वामित्र मुनि चाहिँ बोइले कुमर। मोते जेबे प्राणदान देल हे मुनिबर ३३
लक्षे रथ पाणि द्रब्य देले अम्बरीश राये।ऋणिआ होइबे सिना मोर बापा माए ३४
पिअर जननी ठारे मुहिँ लदि द्रोहि। एथिर कारण जे तुम्भंकु लागइ ३५

पुत्र को और माता जी ने कनिष्ठ पुत्र को सम्हाल लिया है। ४२० अब मेरा रक्षक कोई नही है। मै अब जीवित रहकर क्या करूँ। ४२१ हे राजन् ! आप धन देकर मुझे क्रय कर लीजिये। अरक्षित रहकर जीवित रहने से क्या प्रयोजन ? । २२ राजा यह सुनकर सन्तुष्ट हो गए। उन्होने एक लाख रथ पेय पदार्थ उन्हे प्रदान किए। २३ फिर वह कुमार को लेकर शीघ्र ही चल दिए और पुष्कर तीर्थ मे जाकर रुके। २४ राजा स्नान समाप्त करके ऋषि पुत्र के साथ जाकर तपस्वी विश्वामित्र से मिले। २५ राजा ने विनीतभाव से उन्हे नमस्कार किया। शून्यशख ऋषि के शरणापन्न हो गए। २६ उन्होने कहा हे भृगुनन्दन ! एक बार मेरी रक्षा कीजिए। यह श्रेष्ठ राजा मुझसे नरमेध यज्ञ करेगा। २७ माता और पिता ने धन लेकर मुझे विक्रय कर दिया है। हे महामुनि ! मुझे प्राणदान दीजिये। यह सुनकर विश्वामित्र ने रक्षा करने का वचन दिया। राजा अम्बरीप यह सुनकर विस्मय मे पड गये। २८-२९ शून्य शंख ने कहा हे राजन् ! आप व्याकुल न हो। महायोगी ने मुझे प्राणदान दिया है। महामुनि आपसे वदला लेगे। माता-पिता ने धन लेकर मुझे विक्रय कर दिया। ४३०-४३१ मैं तीनो कुलो की रक्षा करता हुआ इस समय प्राण त्याग कर दूँ अन्यथा मैं अपने प्राण क्यो धारण करूँ। ३२ महर्षि विश्वामित्र को देखकर वालक ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ आपने मुझे प्राणदान दिये है। ३३ राजा अम्बरीप ने एक लाख पेय पदार्थ दिये है। मेरे माता-पिता ऋणी हो गये है। ३४ मैंने पिता और माता से द्रोह प्राप्त किया है। इसका कारण आप

कूलरे लोक जगाइ अछन्ति चउकति । जागरे बिजय़ कले जे नृपति ६५
जव तिळ घृत समिध आणि पुण । साधु साधु ध्वनी जे कले सर्बजन ६६
नरमेध जाग जे समापत बेळे । माजणा कराइले ऋषि सुत ततकाळे ६७
पशु प्रोक्षण जे पूर्ण आहुति बेळे । कौशिक मन्त्र जे शून्य सिंह भाळे ६८
इन्द्रंकु सुमरन्ते ऋचिक सुत सेथि । देवगण घेनिण मिळिले सुरपति ६९
राजाकु प्रशंसा जे करइ बज्रधर । प्रसन्न कराइण से मागिला कुमर ४७०
बोइला मुनि पुत्र न कर प्राणे नाश । सकळ देवता आम्भे होइलु जे तोष ४७१
ए ऋषिर प्राण जे दिअ मोते दान । जागर फळ तु जे पाइलु राजन ७२
शुणिण नृपति जे सन्तोष मन होइ । बोइले सुर राजा मायावी अटु तुहि ७३
लक्षणवन्त पुरुष मोहर हरि नेलु । ऋषि पुत्र आणिबारु दान जे मागिलु ७४
जागर बिधि तु जे करुछु निषेध । ए कथामान तुम्भर अटइ अपराध ७५
जेमन्ते जाग शुद्धि हुअइ जे पुण । इह पर दुइ जेमन्ते निर्भा जाण ७६
शुणिण इन्द्र देव परम तोष हेले । लक्षणबन्त पितुळा सजीबे समर्पिले ७७
देखिण अम्बरीश हरष मन हेला । ऋचिक मुनि पुत्रकु इन्द्रकु दान देला ७८
पितुळा अग्निरे जे समर्पिळा नेइ । तेणु से जागर सुफळ होइलइँ ७९
जाग सरन्ते शून्य सिंह मेलाणि होइला । पिता मातांकर सन्निध्ये मिळिला ४८०

यज्ञस्थल में उपस्थित हुए। ६५ फिर जौ तिल घृत और समिधा लाई गयी। सभी लोग साधु-साधु की ध्वनि करने लगे। ६६ नरमेध यज्ञ की समाप्ति के समय तत्काल ऋषिपुत्र को मार्जन कराया गया। ६७ पूर्णाहुति के समय पशु प्रोक्षण की बेला में शून्यसिंह ने विश्वामित्र के मत्र का चिन्तन किया। ६८ वहाँ पर ऋचिक पुत्र के द्वारा इन्द्र का स्मरण करने पर देवताओ को लेकर इन्द्र वहाँ आ गए। ६९ बज्रधारी इन्द्र राजा की प्रशंसा करने लगे। उन्हें प्रसन्न करके उसने ऋषि कुमार को माँग लिया। ४७० उसने कहा कि मुनि पुत्र के प्राणों का नाश मत करो। हम सब देवता सन्तुष्ट हो गए। ४७१ इस ऋषि के प्राण मुझे दान कर दो। हे राजन् ! तुम्हे यज्ञ का फल प्राप्त हो गया है। ७२ यह सुनकर राजा ने प्रसन्नमन होकर कहा हे देवराज ! तुम मायावी हो। ७३ तुमने हमारे लक्षणवान पुरुष का हरण कर लिया और ऋषिपुत्र के लाने पर उसे दान में माँग लिया। ७४ तुम यज्ञ की विधि को निषिद्ध कर रहे हो। यह सब तुम्हारा अपराध है। ७५ अब तो वह करना है जिससे यज्ञ के विधान का सम्पादन हो जाय और इसके पश्चात् दोनो का निर्वाह हो जाय। ७६ इन्द्र यह सुनकर बहुत सन्तुष्ट हो गए तथा उन्होने लक्षणवन्त पुतला जीवित करके समर्पित कर दिया। ७७ जिसे देखकर अम्बरीष का मन प्रसन्न हो गया। उसने ऋचिक मुनि के पुत्र को इन्द्र को दान कर दिया। ७८ उस पुतले को लेकर यज्ञ में समर्पित कर दिया। तब वह यज्ञ सुफल हो गया। ७९ यज्ञ समाप्त होने पर

गुरु उपचारण करिण पुण थिबु । पशु प्रतिक्षण बेळे इन्द्रकु सुमरिबु ४५१
बासब राजा से जाणि बाकु पुण । सुरपतिर प्राण के बेहें न रहिण ५२
ऐते बोलि मुनि अम्बरीशकु चाहिँ । लक्षणबन्त पुरुष निअ हो राजा तुहि ५३
कर तोर जाग प्रापत तोते हेउ । ए मोहर कोर्त्ती जे जुगे जुगे थाउ ५४
शून्य सिह पुणि जे अटइ मुनि पुत्र । लक्षणबन्त पुरुष कराइब परापत ५५
तो लक्षणबन्त पुरुषकु इन्द्र हरिनेला । ऋषि पुत्र मराइ सुखी हेब बिचारिला ५६
एबे जेबे नदेब आग जिब नाश । ताहार इन्द्र पण जे तोते परापत ५७
बिश्वामित्रंकर एमन्त बाणी शुणि । शून्य सिहंकु घेनिण चळिले नृपमणि ५८
अजोध्या नग्ररे जाइँ होइले प्रबेश । देखिलेक मण्डणि जे नग्र चउपास ५९
ऋषि बिप्रे जाग शाळे अग्निरे घृत दयन्ति ।
अम्बरीश राजा जागे प्रबेश जाइ होन्ति ४६०
नृपति देखि सर्बे परम सानन्द । लक्षणबन्त पुरुष अणिले नरेन्द्र ४६१
मन्त्री अमनात्य जे मिळिले सकळ । बिचार करे मनरे अजोध्या महिपाळ ६२
उतपात पुणि जे उपुजिब एथ । तेबे ए जाग जत्न करिबा उचित ६३
शुणिण मन्त्रीगण उपाय्र बुद्धि कले । पुस्करिणी दीप दण्डिरे कुमर बान्धिले ६४

करना था वह सिखा दिया । ४५० विशेष प्रकार से उच्चारण करते रहना तथा पशु प्रदक्षिणा के समय इन्द्र का स्मरण करना । ४५१ राजा इन्द्र को पता चलने पर देवराज का प्राण किसी भी प्रकार से नही बचेगा । ५२ इतना कहकर मुनि ने अन्तरिक्ष की ओर ताकते हुए राजा से लक्ष्मणवन्त पुरुप को ले जाने को कहा । ५३ तुम अपनी की हुई यज्ञ का फल प्राप्त करो । मेरी यह कीर्ति युग-युग तक रहे । ५४ फिर शून्यसिह मुनि पुत्र है । यह लक्षणवन्त पुरुष को प्राप्त करा देगा । ५५ तुम्हारे लक्षणवान पुरुष को इन्द्र हरण करके ले गया । ऋषि पुत्र को नष्ट करवाकर उसने सुखी होने का विचार किया है । ५६ यदि अब वह नही देगा तो वह पहले ही नष्ट हो जाएगा और उसका इन्द्रत्व तुझे प्राप्त होगा । ५७ विश्वामित्र के ऐसे वचन सुनकर नृपश्रेष्ठ शून्यसिह को लेकर चल दिए । ५८ वह अयोध्या नगर मे जाकर प्रविष्ट हुए । उन्होने नगर को चारो ओर से सुसज्जित देखा । ५९ ऋषि और विप्र यज्ञशाला मे अग्नि मे घृत डाल रहे थे । तभी राजा अम्बरीष यज्ञस्थल में प्रविष्ट हुए । ४६० राजा को देखकर सब प्रसन्न हो गए तथा कहने लगे कि नरो मे इन्द्र तुल्य राजा लक्षणवन्त पुरुष ले आए है । ४६१ मंत्री सामन्त आदि सभी लोग आकर उनसे मिले । तब अयोध्या नरेश अपने मन मे विचार करने लगे । ६२ अब यहाँ पर इससे पुन. उत्पात होगा । अस्तु इस यज्ञ की यत्नपूर्वक रक्षा करना उचित है । ६३ यह सुनकर मन्त्री लोग उपाय सोचने लगे । उन्होने पुष्करिणी दीपस्तम्भ से कुमार का बन्धन किया । ६४ कुल के लोगो को चारो ओर पहरे पर लगा दिया । राजा

धर्मरे आज आम्भे अइलु प्राण पाइ । रम्भा पाषाण होइल एबे हे गोसाइँ ८६
कि बुद्धि करिबा एबे तुम्भे ताहा कह । शुणि करि आपणे हसन्ति पितामह ८७
हेमगिरि बने कउशिक नदी तीरे । देबगण घेनि प्रबेश कुश धरे ८८
ऋषिकु बोइले तु किम्पाइ तप करु । दुःखे देह कदर्थना कि पाइँ तु मरु ८९
कह किस इच्छा देबा तोते आम्भे बर । मुहिँ से ब्रह्मा जाण जगत ईश्वर ५९०
बिधातार बचने बोलन्ति कउशिक । भो पितामह हे मोते देबाक बरेक ५९१
ब्रह्म ऋषि हेबाकु मोहर बड़ मन । दिअ हे आज्ञा मोते चतुर बदन ९२
ब्रह्मा बोइले तु एबे हुअ ब्रह्म ऋषि । शुणिण अति सन्तोष गाधिराजा शिषि ९३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण नृपबर । बिश्वामित्र जति अति आनन्द शरीर ९४
बशिष्ठक सन्निध्यकु गलाक हरषे । देखिण पचारिले पितामह ऋषि से ९५
क्षमेण ब्रतितु अछुना तपचारी । जळ स्थळ तपस्थाने मिळिले तोहरि ९६
बिश्वामित्र बोइले जे तुम्भर प्रसादे । बिपिने तप मुँ जे कलि अप्रमादे ९७
तुम्भर कुशळ ना आहे अटइ समस्त । बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण तपोबन्त ९८
आज मोर सुफल सकल होइला । राज ऋषि कउशिक मो पुरे अइला ९९
बिश्वामित्र शुणि कोपे हेले थरहर । बाहुडि आसिण जे प्रबेश बन घोर ६००
कठोर तप पुणि कले से बहुत । पुणि प्रसन्न आसि होइले बिधात ६०१

रम्भा पाषाण हो गई है। ८६ अब आप ही बताइये कि क्या उपाय किया जाय। यह सुनकर पितामह ब्रह्माजी स्वयं 'हँसने लगे। ८७ फिर ब्रह्माजी देवताओ को साथ लेकर हिमगिरि वन में कौशिकी नदी के तट पर जा पहुँचे। ८८ उन्होने कहा हे ऋषि ! तुम किसलिये तपस्या कर रहे हो। देह को दुःख देकर क्यों मर रहे हो। ८९ तुम बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है ? हम संसार के ईश्वर ब्रह्मा हैं। हम तुम्हे वर प्रदान करेंगे। ५९० ब्रह्मा की बात पर विश्वामित्र बोले हे पितामह ! मुझे एक ही वर प्रदान कीजिये। ५९१ ब्रह्मर्षि बनने की मेरी बड़ी इच्छा है। हे चतुरानन ! मुझे यह वर प्रदान कीजिये। ९२ ब्रह्मा ने कहा तुम अब ब्रह्मर्षि होगे। यह सुनकर राजा गाधि के नन्दन को बड़ा सन्तोष हुआ। ९३ हे नृपश्रेष्ठ ! तुम सुनो। इसके पश्चात् योगी विश्वामित्र अत्यन्त हर्षोत्फुल शरीर मे वशिष्ठ के पास गए। उन्हें देखकर ब्रह्मर्षि ने पूँछा। ९४-९५ हे तपस्वी ! जल स्थल तथा तपस्थली में सर्वत्र ही क्या तुम क्षमाव्रत का पालन कर रहे हो। ९६ विश्वामित्र ने कहा कि आपकी कृपा से मैंने प्रमाद रहित होकर वन में तपस्या की है। ९७ आपका सब कुशल मंगल तो है। वशिष्ठ ने कहा हे तपस्वी सुनो। ९८ आज मेरा सब कुछ सफल हो गया जो कि राजर्षि विश्वामित्र हमारे घर पधारे। ९९ यह सुनकर विश्वामित्र क्रोध से थर्रा गए। उन्होने लौटकर घोर वन में प्रवेश किया। ६०० फिर उन्होंने अत्यन्त कठोर तपस्या की। ब्रह्माजी पुनः प्रसन्न होकर आए। ६०१ ब्रह्मा ने

निर्मल नय़नरे ऋषि देले दृष्टि । देखिण आगरे उभा होइछि बिम्बोष्ठि ५७१
मेनकार प्राय़ बिचारि ऋषि मने । तु मोहर असहणी अदुरे नारी एणे ७२
त्रिपुर मोहिनी रम्भा बोणा जन्त्र बाइ। अळप अलप करि मुनि पचारइ ७३
रम्भा सुन्दरी कहे मुं नुहइ मेनका । मोह नाम रम्भा मुं स्वर्गर नाय़िका ७४
अपसरीरे मोते श्रेष्ठ बोल लेखि । स्वर्गरु अइलि मुं तुम्भर तप देखि ७५
सेबा करिबाकु आसि अछि तुम्भ पाश । शुणि करि कोप कले ताकु गाधि सुत ७६
किम्पाइ अइलु तु केबण गुण बहि । जाणिलि देबे तोते अछन्ति पठि आइ ७७
मोहर तपकु तुम्भे भांगिबाकु आस । अनळ नय़नरे करन्ति धूळि पाउँश ७८
स्त्री अंग बोलि करि आज कलि दय़ा । जाअरे सुन्दरी हुअ पाषाणर हिआ ७९
शुणि रम्भा रम्भा पत्र प्राय़ थरहर । बोलइ भो मुनि मोते कर प्रतिकार ५८०
बिश्वामित्र बोले अपसरी मुख चाहिं । एहि क्षणि मुकत पाइबु आरे काहिं ५८१
जेउँ काळे मुहिँ जे होइबि ब्रह्म मुनि । से बेळे कारण तुरे पाइबु कामिनी ८२
जहुँ कउशिक ताकु बोइले ए बाणी । ततक्षणे पाषाण जे होइला तरुणी ८३
देखिण पळाइले इन्द्र कामदेब । जाणिले महामुनि आम्भंकु शापदेब ८४
एते बिचारिणि तहुँ गले बेनि जन । ब्रह्मांकु कहिले जाइ सहस्र लोचन ८५

हुई विम्बाफल के समान होठो वाली सुन्दरी को देखा। ५७१ ऋषि ने उसे मेनका समझकर कहा ऐ रमणी ! तुम मेरे लिये असहिष्णु हो। ७२ तीनो लोको को मोहित करने वाली रम्भा वीणा बजा रही थी। मुनि ने धीरे-धीरे उससे पूँछा। ७३ सुन्दरी रम्भा ने कहा कि मैं मेनका नही हूँ। मेरा नाम रम्भा है और मै स्वर्ग की नायिका हूँ। ७४ अप्सराओ मे मेरी गिनती श्रेष्ठ अप्सरा में है। मैं आपकी तपस्या देखकर स्वर्ग से आई हूँ। ७५ मै सेवा करने के लिये आपके पास आई हूँ। यह सुनकर गाधिनन्दन उसमे क्रुद्ध हो गए। ७६ उन्होने कहा तू कौन सा गुण लेकर यहाँ किसलिए आई है। मैं समझ गया कि देवताओ ने तुझे भेजा है। ७७ तुम मेरी तपस्या को भंग करने के लिए आई हो। मैं तुझे अग्निमय दृष्टि से क्षार बना देता। तुझे स्त्री समझकर आज दया कर रहा हूँ। अरे सुन्दरी ! तू जा और पाषाण हृदया हो जा। ७८-७९ यह सुनकर रम्भा केले के पत्र के समान काँप उठी तथा बोली हे महर्षि ! मुझ पर दया करो। ५८० विश्वामित्र ने अप्सरा के मुख की ओर ताक कर कहा अरे ! तुझे इस समय मुक्ति कहाँ प्राप्त होगी। ५८१ जिस समय मै ब्रह्मर्षि हो जाऊँगा, हे कामिनी ! उसी समय तुम त्राण प्राप्त करोगी। ८२ जब विश्वामित्र ने उससे यह बात कही उसी क्षण वह युवती पाषाण बन गई। ८३ यह महामुनि हमे शाप दे देंगे ऐसा समझकर इन्द्र तथा कामदेव भाग गए। ८४ ऐसा विचारकर वहाँ से दोनो व्यक्ति चले गए और सहस्र लोचन वाले इन्द्र ने जाकर ब्रह्मा से कहा। ८५ आज हम धर्म के बल से प्राण बचाकर आ सके। हे नाथ ! अब

गउरब करिण से कतिरे बसाइला । जे बिधि बिधान करि शिरे अर्घ्यदेला १७
जेणु कउशिक होइलेक ब्रह्मऋषि । निज तनु पाइला जे रम्भा शुभ्रकेशी १८
शाप मुक्त होइण जे स्वर्ग कइँ गला । सत्यानन्द एहा जे श्रीरामंकु कहिला १९
सप्त ॠषिकर एसनेक रूप एक । ब्रह्मऋषि होइण बसिला कउशिक ६२०
सत्यानन्द मुखरु एसनेक शुणि । मुनि माने सन्तोष होइले ताहा जाणि ६२१
कउशिक पादरे से कले नमस्कार । साधु साधु महिमा जे तुम्भर मुनिबर ६२२

जनक ओ विश्वामित्रंकर सम्बाद

एथु अनन्तरे जनक तपचारी । किस कार्ज्ये अइल से बोलिण पचारि १
बिश्वामित्र बोइले हे दशरथ नान । ईश्वर धनु देखिबाकु तांकर जे मन २
तेणु आम्भे आसिअछु ताहांकु जे घेनि। हुअ तुम्भे प्रसन्न हे जनक महा मुनि ३
पुरातन धनुकु पूर्ब पुण्य थिले देखि । श्रीरामर निर्मळ होइब बेनि आखि ४
बिश्वामित्रर बचने बोलइ जनक । कि करिबे एहु बाळुत देखिले कार्मुक ५
बिष्णुंकर तेजरु जेबण धनु जात । हर से बहिबाकु अटन्ति सामरथ ६
दक्ष माथ भांगिले जे ए धनुकु धरि । देवतांकु काटिले से खण्ड खण्ड करि ७

अब आपकी गिनती ब्रह्मर्षियों में हो गई । १६ फिर उन्होने उनका सम्मान करके उन्हें पास बिठाया और विधि-विधान से उनके सिर पर अर्घ्य प्रदान किया । १७ जब कौशिक ब्रह्मर्षि हो गये तब सुकेशी रम्भा ने अपना शरीर प्राप्त किया । १८ शाप से मुक्त होकर वह स्वर्गलोक चली गयी । सतानन्द ने इस प्रकार श्रीराम से कहा । १९ इस प्रकार सप्तर्षियो का एक रूप ब्रह्मर्षि होकर विश्वामित्र बैठ गया । ६२० सतानन्द के मुख से ऐसा सुनकर मुनियों को सब समझ में आ गया और उन्हें संतोष हो गया । ६२१ उन्होने विश्वामित्र के चरणो में नमस्कार किया और बोले हे मुनिश्रेष्ठ ! आप धन्य है । आपकी महिमा धन्य है । ६२२

जनक तथा विश्वामित्र का सम्वाद

इसके पश्चात् तपस्वी जनक ने उनसे पूछा कि आप किस कार्य से पधारे हैं । १ विश्वामित्र ने कहा यह दशरथ के पुत्र है और शिव के धनुष के दर्शन करने की इच्छा इनके मन में है । २ इस कारण से इन्हे लेकर हम आये है । हे महर्षि जनक ! आप प्रसन्न होइये । ३ पूर्वकाल के पुण्य के प्रभाव से प्राचीन धनुष को देखकर श्रीराम के दोनो नेत्र निर्मल हो जायेगे । ४ विश्वामित्र के वचन सुनकर जनक ने कहा यह बालक शिव धनुष को देखकर क्या करेगे । ५ जो धनुष विष्णु के तेज से उत्पन्न हुआ है । उसे शिव ही उठाने में समर्थ है । ६ उन्होंने यही धनुष उठाकर दक्ष प्रजापति का संहार किया था । उन्होने देवताओं

ब्रह्मा बोइले ए तोर केवण जे कथा। एड़े बड तप करु काहिँकि महाज्ञाता २
बिधाता बोइले मुँ ब्रह्म ऋषि कलि। पुणि तुहि मायारे मरुअछु भुलि ३
कउशिक बोइले जेबे वशिष्ठ आसइ। मोते राज ऋषि सर्वदा बोलइ ४
शुणिण टह टह जे हसन्ति बेदपति। तु एबे तप छाडिण जाअ महाजति ५
बिश्वामित्र कइँ जे बोलन्ति कुशधारी। बशिष्ठ तहिँकि तु जाअ तपचारी ६
से जेबे तोते एथर न करे आदर। राज ऋषि बोइले तु आसिबु मुनिवर ७
जेबे तु बशिष्ठंक ठारु पिठिआइ आसु। से महात्मा तोर जोगुँ हेव धूलि पांशु ८
ए कथा सत मणिण जाअ कउशिक। एते बोलि ब्रह्मा बिजे कले ब्रह्म लोक ९
शुणिण बिश्वामित्र जे परम तोष होइ। बशिष्ठंक आश्रमरे मिळिलेक जाइ ६१०
देखि करि पचारइ ब्रह्मांक तनय़े। कि कारणे राजऋषि गमन करि आए ६११
गाधि राजार नन्दन ए वचन शुणि। बिचार करन्ति से मने मने पुणि १२
पिठि देइण गले मरिब महाऋषि। नोहिले धाता वचन होइब जे दुषि १३
ए दुइ कथा आसि संकट होइला। एते बोलि मुनि पुणि पछघुञ्चा देला १४
वशिष्ठ बिचारिले क्रोध एहार गला। एबे से महामुनिरे गणिता होइला १५
एते बोलि बशिष्ठ बिश्वामित्रंकु राइ। आस आस ब्रह्म ऋषिरे गणिता जे होइ १६

कहा यह तुम्हारी क्या वात है। हे महाज्ञानी! इतनी घोर तपस्या क्यो कर रहे हो। २ ब्रह्मा ने कहा कि मैने तुम्हे ब्रह्मर्षि वना दिया। फिर भी तुम माया मे भ्रमित होकर मर रहे हो। ३ विश्वामित्र ने कहा कि जव भी वशिष्ठ आता है, वह हमे सदा ही राजर्षि कहता है। ४ यह सुनकर ब्रह्माजी ठठाकर हँस पडे और बोले अव तुम हे महायोगी! तपस्या छोड़कर जाओ। ५ ब्रह्मा ने विश्वामित्र से कहा हे तपस्वी! अव तुम फिर वशिष्ठ के पास जाओ। ६ हे मुनिश्रेष्ठ! यदि वह तुम्हारा आदर न करे और तुमसे राजर्षि कहे तो तुम लौट आना। ७ जव तुम वशिष्ठ को पिछाड़कर (पीठ दिखाकर) लौटोगे तो वह महान आत्मा तुम्हारे लिये क्षार-क्षार हो जाएगा। ८ हे कौशिक! यह वात तुम सत्य मानकर जाओ। इतना कहकर ब्रह्माजी ब्रह्मलोक को चले गए। ९ यह सुनकर विश्वामित्र अत्यन्त सतुष्ट होकर वशिष्ठ के आश्रम में जा पहुँचे। ६१० देखते ही ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ ने पूंछा हे राजर्षि! किस कारण से आप चलकर आए है। ६११ राजा गाधि के पुत्र यह वचन सुनकर मन ही मन विचार करने लगे। १२ इन्हे पीठ दिखाकर जाने मे यह महर्षि मर जाएँगे। नही तो विधाता के वचन दूषणकारक हो जाएँगे। १३ इन दोनो वातो से संकट आ पड़ा है। ऐसा सोचकर मुनि पीछे ठिठककर हटे। १४ वशिष्ठ ने विचार किया कि इनका क्रोध चला गया है। अब इनकी गिनती महामुनि में हो गई है। १५ ऐसा विचार कर वशिष्ठ ने विश्वामित्र को बुलाकर कहा, आओ-आओ

बळरामदास जे श्रीहरि चरण । शरण पशिलि एबे रख हे रघुराण ५२
एथु अनन्तरे जे सत्यानन्द कहि । तुहि जे नारायण जन्म नर देहि ५३
जेते बेळे शुणिलिणि जननी मुकत । जाणिलि नारायण जन्म जे साक्षात ५४
बोइले जनक तारे उत्सव आनन्द । हुळहुळि शबदरे गहळि प्रमोद ५५
आजत अग्नि स्नान जे दुइ भग्निकर । सेथिर सकाशे आजि उत्सव बेभार ५६
अग्निरे स्नान सारिबारु कले बन्दापना । तेणु हुळहुळी शबद गोळकिना ५७
श्रीराम पचारिले शुण हे सत्यानन्द । एगार वर्ष षडमास जागरे आनन्द ५८
राजा, प्रजा, ऋषि, ब्राह्मणे एथि मेळ । हाटुआ बाटुआ जे अछइ चण्डाळ ५९
एमानंकु चरचा जनक ऋषि करि । केते द्रब्य धन घरे अछइँ सम्भाळि ६०
श्रीराम ठारु शुणि बोइले सत्यानन्द । आगे जनक ऋषि तपरे प्रमोद ६१
तप देखि बेदबर आसिण वर देले । ब्रह्ममुनि हुअ बोलि कुशपाणि कहिले ६२
शुणिण जनक जे बेदबरे कहि । कामधेनु सिना थिले ब्रह्ममुनि होइ ६३
शुणिण बिधाता जे सुरभि आणि देले । सुरभि पाइ जनक निश्चिन्त होइले ६४
से कामधेनुर जे प्रसादे जनक । निश्चिन्त होइण से करइ जाग कृत्य ६५
समस्तंक आर्दोळि सहइ कामधेनु । जे जाहा लोड़इ ताकु मिळइ पुणि काहुँ ६६

जनक ने पुत्री के लिये यज्ञ किया। ५१ बलरामदास श्रीभगवान के चरणों की शरण में आ पड़ा है। अब हे रघुनाथ जी रक्षा कीजिये। ५२ इसके पश्चात् सतानन्द बोले कि हे नारायण ! आप मनुष्य का शरीर धारण करके उत्पन्न हुये हैं। ५३ जिस समय मैने माता की मुक्ति के विषय में सुना। तब मैं समझ गया कि साक्षात् नारायण का जन्म हो गया। ५४ जनक ने कहा तब तो उत्सव आनन्द और मांगलिक शब्दों की चहल-पहल और आनन्द होगा। ५५ आज दोनों बहनों का अग्नि स्नान है इसीलिये आज उत्सव हो रहा है। ५६ अग्नि स्नान समाप्त करके उन्होने पूजा आरती की है। तभी यह मागलिक शब्द गूँज उठे है। ५७ श्रीराम ने पूँछा हे सतानन्द सुनिए। ग्यारह वर्ष छैः माह से यज्ञ का आनन्दोत्सव हो रहा है। ५८ राजा, प्रजा, ऋषि, ब्राह्मण, हाट बटोही अथवा चाण्डाल जो भी है उन सबकी सेवा तथा अर्चना करने के लिये महर्षि जनक ने कितना धन, द्रव्य घर में जोड़ रक्खा है। ५९-६० श्रीराम से इस प्रकार सुनकर सतानन्द ने कहा कि पूर्वकाल में महर्षि जनक तपस्या में मग्न थे। ६१ तपस्या को देखकर कुशपाणि ब्रह्माजी आए और उन्होंने ब्रह्मर्षि होने का वर प्रदान किया। ६२ यह सुनकर जनक ने ब्रह्माजी से कहा कि कामधेनु होने पर ही तो ब्रह्मर्षि होंगे। ६३ यह सुनकर ब्रह्माजी ने सुरभी लाकर प्रदान की। सुरभी को प्राप्त करके जनक निश्चिन्त हो गए। ६४ उस कामधेनु के प्रसाद से जनक निश्चिन्त होकर यज्ञ का कृत्य कर रहे है। ६५ कामधेनु सबकी देख रेख करती है। जो कोई जिस वस्तु की इच्छा करता है वह उसे प्राप्त होती

धनु जे धुइले से हेले हत बीर्य्य। मूर्च्छा होइण से छाडिले निज तेज ३८
केहि से शराशनकु न पारिले तोळि। कन्या नेबाकु मन अछि जे सबुंकरि ३९
बेनि बरष जाकरे न पारिले धनु तोळि।
लज्जा भरे राजा माने सभारे आसि मिळि ४०
एमन्ते एगार बरषे एगार थर जाग कला।तेणु से जनक ऋषि स्वय्रम्बर कला ४१
बोइलि हाटुआ बाटुआ जेते प्रजाजन। अछब चण्डाळ जाति जेते हे अछ पुण ४२
जेहु धरिब धनु ताहाकु देबि कन्या।ए मोहर प्रमाण कथा नुहइँ आन किना ४३
शुणिकरि समस्ते धनु घरकु चाहिँ। शिवधनु देखिण हत जे ज्ञान होइ ४४
राज ऋषि बिप्र जे प्रजाजन पुण। हाटुआ बाटुआ जे प्रजा भिन्न भिन्न ४५
के तोळिब धनु बोलि अछन्ति एथि रहि। एथिरे एगारथर राजा गोळ होइ ४६
ऋषि माने राजांकु कहिले पुण टाण। बळवन्त पण कले करिबु भस्म जाण ४७
राजांक कळह देखि पर्शुरामंकु आणि। एगार बरष हेला थिले से एथि पुणि ४८
एबे बेनिमास हेला तपकु अछि जाइ।
राजा मानंकु चदिण गला जे पुण सेहि ४९
बोइला गोळ कले मुं गदारे निवारिबि।शमन राजा पुरकु तुम्भंकु चाळि देबि ५०
शुण हे श्रीराम जे धनु जागर कथा।
दुहिता निमन्ते जाग कले जनक ऋषि चेता ५१

को छूते ही तेजहीन हो गये और मूर्छित होकर उन्होने अपने तेज को गवाँ दिया। ३८ सबका मन कन्या को प्राप्त करने का था परन्तु कोई भी उस धनुष को उठा नही सका। ३९ दो वर्ष पर्यन्त धनुष नही उठा सके और लज्जित होकर राजा लोग सभा मे आ पहुँचे। ४० इस प्रकार ग्यारह वर्षो मे ग्यारह वार यज्ञ किया गया तब महर्षि जनक ने स्वयवर किया। ४१ मैंने कहा चाहे कोई भी हाट बटोही प्रजा हो या चाण्डाल अथवा अंत्यज जाति का हो जो वह धनुष धारण करेगा उसको कन्या प्रदान करूँगा। यह मेरी बात प्रमाणिक है। असत्य नही हो सकती। ४२-४३ यह सुनकर सबने धनुशाला की ओर देखा और शिवधनुष का दर्शन करके ज्ञानशून्य हो गये। ४४ राजर्षि, ब्राह्मण, प्रंजाजन, हाट-बटोही तथा भिन्न-भिन्न जातियो की प्रजा वहाँ पर यह देखने को ठहरे हुये थे कि धनुष कौन उठायेगा। इससे यहाँ पर ग्यारह वार राजाओं में कलह हुआ था। ४५-४६ तब ऋषियो ने धमकाते हुये कहा कि वलपूर्वक दवाव डालने से हम भस्म कर डालेगे। ४७ राजाओ का कलह देखकर मैं परशुराम को ले आया। वह ग्यारह वर्ष से यही पर थे। ४८ अव दो माह हुये, वह राजा लोगों को धमकाकर तपस्या के लिये चले गये है। ४९ उन्होने कहा था कि झगड़ा करने पर मैं गदा से नष्ट कर दूंगा और तुम्हे यमलोक भेज दूँगा। ५० हे श्रीराम! आप धनुष यज्ञ की कथा सुनिये। महाज्ञानी महर्षि

जाअ तु मिथिलाकु चळिण बहन । धनु धरि पारिले बोलिबे तोते धन्य ८२
सदाशिव कहन्ते अइला बाणासुर । बिदेह मण्डळरे मिळिला आसिकर ८३
मोते बोइला असुर धनु मोते देखा । बळ परीक्षा करिण आसिछि मुँ एका ८४
ईश्वरंक आज्ञारे तोळिबि शरासन । एते बोलि मोते से कहिला बचन ८५
केबण निमन्ते तु रखिछु शरासन । एहा मोते फेडिण कह हे राजन ८६
मुँ बोइलि मोहर दुहिता बेनि छन्ति । शरासन जे धरिब ताहाकु देविटि ८७
शुणिण बाणासुर धनुकु जाइ तोळि ।तोळि नपारि असुर अचेता होइ पड़ि ८८
केते बेळ उत्तरु चेत पाइ पुण । लज्जारे नरहिला पळाइला क्षण ८९
एहि समग्ररे जे, रावण दशानन । बेद बरंकु घेनि जे, कहिला वचन ९०
देवता असुर जे, नरहि बानर । नागबळ नृपति जेतक महोर ९१
समस्तंकु जिणिलि के, बळबन्त अछि ।सेहि कथा गोटि मते कह धाता बाछि ९२
बिधाता बोइले राग्ने मिथिळाकु चळ । शिव धनु अछि जे जनकर घर ९३
से धनु जेबे तुहि तोळि धरि पारु । तेबे पर्शुरामंकु बळरे तु पारु ९४
शुणिण रावण एठाकु बेगे आसि । दशशिर हलाइण कहिला मोते हसि ९५
बोइला ए धनुकु तोळिले देबु किस । मुँ बोइलि दुहिता देबइँ अवश्य ९६
शुणि करि दशानन धनुकु जाइ तोळि । तोळि न पारिण धरणी धरे ढ़ळि ९७

ही मिथिला में जाओ। धनुष उठा लेने पर लोग तुम्हें धन्य कहेंगे। ८२ सदाशिव के कहने से बाणासुर मिथिला प्रदेश में आ पहुँचा। ८३ असुर ने मुझसे कहा कि धनुष मुझे दिखाइये। मै बल परीक्षा करने के लिये अकेला आया हूँ। ८४ शिव की आज्ञा से मैं धनुष उठाऊँगा। उसने मुझसे इस प्रकार की बात कही। ८५ किस कारण से तुमने धनुष को रखा है। हे राजन्! यह हमसे स्पष्ट बताइये। ८६ मैंने कहा कि मेरे दो पुत्रियाँ है। जो धनुष उठायेगा उसे वह प्राप्त होंगी। ८७ यह सुनकर बाणासुर धनुष उठाने चला परन्तु उठा न पाने के कारण वह संज्ञा शून्य होकर गिर पड़ा। ८८ कुछ समय के पश्चात् चेतना वापस आने पर वह लज्जावश एक क्षण भी नही रुका और भाग गया। ८९ इसी समय दसमुख रावण ने एक दिन ब्रह्मा जी से कहा। ९० देवता, असुर, नर, वानर, नागो के दल तथा जितने भी पृथ्वी पर राजागण है मैंने सबको जीत लिया और बलवान कौन है। आप यह हमसे बता दीजिये। ९१-९२ ब्रह्माजी बोले हे राजन्! मिथिला को प्रस्थान करो। जनक के घर में जो शिव धनुष है। उसे यदि तुम उठाकर धारण कर सको तो तुम परशुराम से वल में जीत सकते हो। ९३-९४ यह सुनकर रावण ने शीघ्र ही यहाँ आकर दस शिरों को हिलाते हुए मुझसे हँसकर कहा। ९५ इस धनुष को उठाने पर मुझे क्या देगे। मैंने कहा कि निश्चितरूप से अपनी पुत्री प्रदान करूँगा। ९६ यह सुनकर दशकन्धर धनुष उठाने चला परन्तु न उठा पाने के कारण पृथ्वी पर लुढ़क

श्रीराम पचारि वारु सत्यानन्द कहि । बहुत प्रशंसा जे समस्ते कले तहिँ ६७
एथु अनन्तरे जे जनक तपचारी । किमर्थे कौशिक अइल मोर पुरि ६८
विश्वामित्र बोले ए दशरथंक नन्दन । ईश्वर धनु जे देखिते तार मन ६९
तेणु से ताकु आम्भे अइलु एथे घेनि । हुअ तुम्भे प्रसन्न जनक महामुनि ७०
पुरातन धनु ए जे पुण्य थिले देखि । राम लक्ष्मण देखन्तु निर्मळ हेउ आखि ७१
विश्वामित्र बचनरे बोइले जनक । ए किस करिबे जे देखिले कार्मुक ७२
देखिण नृपतिगणे कळि भांगिण स्थिर । मूर्च्छि न पारिण रहि अछन्ति एठार ७३
एथु अनन्तरे एगार बरष बहिगला । हर आगे बाणासुर जाइण कहिला ७४
भो देव शूळपाणी पार्वती देवी साइँ । मोते सरिसम जे पृथ्वी वीरे नाहिँ ७५
मोहर बळ अटे मोते अगोचर । आवर अटइ मोर सहस्रेक कर ७६
मो ठारु बळबन्त अछइँ के आन । ए कथा बुझि मोते कह त्रिलोचन ७७
हसिले ईश्वर बाणासुर बाणि शुणि । गर्व नोहिला बोलि बोइले शूळपाणि ७८
असुरकु चाहिँण बोइले त्रिलोचन । केतेक बळ तोर जाणि नुहे पुण ७९
जनकर घरे जे अछइ शरासन । जे ताहा तोळि पारे होइब राजन ८०
भूमिरु छडाइले होइबु बळिआर । ताहाकु सम नाहिँ एहि तिनिपुर ८१

है । ६६ श्रीराम के पूँछने पर सतानन्द ने यह वृत्तान्त कहा । सबने वहाँ पर उनकी बहुत प्रशसा की । ६७ इसके पश्चात् तपस्वी जनक ने कौशिक से अपने नगर में आने का कारण पूँछा । ६८ विश्वामित्र ने कहा कि यह दशरथ के पुत्र है । इनके मन में शिव के धनुष को देखने की इच्छा थी । ६९ इसलिये हम इन्हे लेकर यहाँ आए है । हे महात्मा जनक आप इन पर प्रसन्न हो । ७० पुरातन पुण्यो से ही इस धनुष का दर्शन सम्भव है । श्रीराम लक्ष्मण उसके दर्शन करे जिससे इनके नेत्र धन्य हो जॉय । ७१ विश्वामित्र के वचन सुनकर जनक ने कहा कि यह कार्मुक (शिव-धनुष) देखकर क्या करेगे । ७२ राजागण इसे देखकर कलह छोड़कर स्थिर होकर यहाँ रह रहे है । इसे छोड़ नही पाए है । ७३ इसके पश्चात् जब ग्यारह वर्ष बीते तब शंकर जी के पास जाकर बाणासुर ने कहा । ७४ हे देव ! त्रिशूलधर पार्वतीनाथ ! इस पृथ्वी पर मेरा वराबरी करने वाला कोई नही है । ७५ मेरा बल मेरे लिये अगोचर है और मेरी सहस्र भुजाये है । ७६ मुझसे बलवान् दूसरा कौन है । हे त्रिलोचन ! यह बात विचार कर आप मुझे बताइये । ७७ बाणासुर की बात सुनकर शिवजी हँस दिये और यह समझकर कि इसे गर्व तो नही हो गया है, उन्होने कहा । ७८ असुर की ओर देखकर तीन नेत्र वाले शकर जी ने पूँछा कि तुम्हारा बल कितना है, कुछ समझ मे नही आ रहा है । ७९ जनक के घर मे जो धनुष है । उसे जो भी व्यक्ति उठायेगा, वह राजा होगा । ८० भूमि से छुडाने पर वह बलवान होगा और उसकी समता करने वाला तीनों लोको मे कोई नही होगा । ८१ तुम शीघ्र

सुलंका गड़रे शतेमुखा रावण राजा। देखि चेता कराए जे ऋषिर तनुजा १३
पचारिला किम्पाइरे ए स्थाने पडि मोहासे बोइला शिव धनु तोळिबारे स्नेह १४
तोळि न पारिबारु मुँ जे अचेष्टारे पडि।
रेणुका नन्दन मोते फोपाडि देला धरि १५
तेणु ए तोहर पुरे पड़िलि आसि करि। रेणुका नन्दनकु केहि नुहे सरि १६
बाबु से धनु गोटि अटइ तेजवन्त। महिरावण गला सुलंका तुरित १७
शुणिण शतेमुखा रावण आसि मिळि। धनुकु तोळन्ते से जे रुधिर उद्गारि १८
देखिण पर्शुराम फोपाड़ि ताकु देला। पडिला शतेमुखा बिलंका गड़े परा १९
पाञ्चदिने शुणि सहस्रमुखा जे धइला। जीवन नाहिँ बोलि शरीर देखिला १२०
तेते बेळे मरुत देवता जाइ मिळि।शीतळ लागन्ते शतेमुखा उठिला वसिकि १२१
सकळ बुझाइ कथा सहस्र मुखरे कहि। रथ चढ़ि अलंकारे प्रबेश हेला जाइँ २२
एथु अनन्तरे सहस्र मुखा जे रावण। रथ चढ़ि ए स्थानरे प्रबेश हेला पुण २३
देखिण सकळे तांकु आचम्बित हेले। चारि आड़े मुख पिठि पेट न देखिले २४
सहस्र मुखा रावण रथरु ओहलाइला। शरासन छुअन्ते पड़िण मोह गला २५
देखिण तार मन्त्री गुण जे सागर। अनेक लोक लगाइ सहस्रमुखा बीर २६
रथरे नेइ सहस्र मुखाकु थोइला। बिलंका गड़कु बोलि रथ वाहि नेला २७

लका मे जा गिरा। १२ सुलंकागढ मे सौ मुखवाला रावण राजा था। ऋषि की पुत्री ने उसे देखकर उसकी चेतना वापस लौटायी। १३ फिर उसने पूँछा कि इस स्थान पर मूर्छित होकर कैसे पडे हो तब उसने कहा शिवधनुष को उठाने के समय ऐसा हुआ। १४ उसे न उठा सकने के कारण मै अचेत होकर गिर गया। रेणुका कुमार ने मुझे उठाकर फेक दिया। १५ इसलिये मै आकर तुम्हारे महल में गिरा हूँ। रेणुकानन्दन के समान कोई नही है। १६ उसके पास एक तेजस्वी गाय है। महिरावण सुलंका शीघ्र ही गया। १७ यह सुनकर सौ मुखवाला रावण वहाँ जा पहुँचा। गाय को खोलते समय वह रक्त वमन करने लगा। यह देखकर परशुराम ने उसे उठाकर फेक दिया और सौ मुखवाला रावण विलंका दुर्ग मे जा गिरा। १८-१९ पाँच दिनो पर सुनकर सहस्रकण्ठ ने उसे उठा लिया और देखा कि उसके शरीर मे जीवन नही था। १२० उसी समय मरुत देवता वहाँ जा पहुँचे। शीतल पवन के लगने से शतकण्ठ रावण उठकर बैठ गया। १२१ सहस्रकण्ठ से उसने सारा वृत्तात कह सुनाया फिर वह रथ पर चढकर अलका में जा पहुँचा। २२ इसके पश्चात् सहस्रकण्ठ रावण रथ पर चढकर इस स्थान पर आया। २३ उसे देखकर सभी लोग आश्चर्य मे पड़ गये। उन्होने चारो ओर मुख और पीठ ही देखे परन्तु पेट न दिखाई दिया। २४ सहस्रकण्ठ रावण रथ से उतर पड़ा और धनुष को छूते ही मूर्छित हो गया। २५ यह देखकर उसके गुण सागर मंत्री ने अनेक लोगो को लगाकर पराक्रमी सहस्रकंठ

देखिण पर्शुराम वेगे ताकु धरि ।बुलाइ फिंगि दिअन्ते किष्किन्ध्यारे पडि ९८
तिनि दिन उत्तारु पाइला चेता पुण ।वाळि बीर पचारिला किस ए रावण ९९
दशानन बोइला मुँ मिथिला जाइ थिलि । शिव धनु तोळन्ते मुँ अचेता होइलि १००
तेते बेळे पर्शुराम फोपाडि मोते देला । तेणुटि एते दशा मोते भोग हेला १०१
एते कहि रावण सुबर्णपुर गला । सेठारु वाळी बीर प्रबेश आसि हेला २
शिवधनु तोळन्ते मुखमाडि पडि । देखिण पर्शुराम देलेक फोपाड़ि ३
दधि समुद्र मध्यरे जाइँण पड़िला । ताहार शरीररु जीवन छाडि गला ४
बिधाता आसिण जे जीव ताकु देइ । चेतापाइ कपिबीर निज राज्ये जाइ ५
एथु अनन्तरे जे तुम्भे शुण गाधि सुत । एक दिने अग्नि पूजे इन्द्रजितर सुत ६
एकमुखा महीरावण जे तार नाम । हुताशन प्रसन्नरे कहिला से जे पुण ७
बोइला असुर देबता नाग बळ । बाहु बळे जिणिण मुँ अछइ सकळ ८
एमानंकु जिणिवाकु के अछि बळबन्त । बैश्वानर बोइले तु चळरे तुरित ९
मिथिळार नबरे शिव धनु अछि । ताहाकु तोळिले तु जे जिणिबु नव सृष्टि ११०
शुणिण महिरावण एठाकु अइला । कार्मुक तोळन्ते से अचेत होइला १११
ताहार अचेता देखि जमदग्नि सुत । फोपाड़ि देवारु सेत पडिलालंकारेत १२

गया। ९७ यह देखकर परशुराम ने शीघ्र ही उसे उठाकर घुमाया और फेंक दिया। तब वह किष्किन्धा मे जा गिरा। ९८ तीन दिनो के पश्चात् उसे चेत हुआ। पराक्रमी बालि ने पूँछा अरे रावण! क्या बात है ? । ९९ रावण ने कहा कि मै मिथिला गया था। शिव धनुष को उठाते हुए मैं संज्ञाशून्य हो गया। १०० उस समय परशुराम ने मुझे फेंक दिया। इसलिये मुझे यह भोग भोगने पडे। १०१ ऐसा कहकर रावण स्वर्ण नगरी लका को चला गया। फिर पराक्रमी बालि यहाँ आ पहुँचा। २ शिव धनुष को उठाते हुए वह मुँह के बल गिर गया। यह देखकर परशुराम ने उसे फेंक दिया। ३ वह दधि समुद्र मे जाकर गिरा। उसके शरीर से प्राण निकल गए। ४ ब्रह्माजी ने आकर उसे जीवनदान दिया। चेत होने पर पराक्रमी वानर अपने राज्य को चला गया। ५ हे गाधिनन्दन! सुनिए। इसके पश्चात् एक दिन इन्द्रजीत का पुत्र अग्नि की पूजा कर रहा था। ६ उस एक मुख वाले (असुर) का नाम महिरावण था। जब अग्निदेव उस पर प्रसन्न हुए तब उसने कहा कि मैंने असुर, नाग, देवता आदि सबको अपने बाहुबल से जीत लिया है। ७-८ इन पर विजय प्राप्त करने वाला कौन है ? तब अग्निदेव ने कहा कि तू शीघ्र ही मिथिलापुर को जा। जनक के घर में शिव का धनुष है। उसे उठाने पर तुम नवखण्ड सृष्टि पर विजय प्राप्त करोगे। ९-११० यह सुनकर महिरावण यहाँ आया। धनुष को उठाते समय वह अचेत हो गया। १११ उसे अचेत देखकर यमदग्नि नन्दन के फेंकने पर वह

विश्वनाथंकर धनु तोळि नपारु आम्भे । चक्रधर तोळि जे पारन्ति आरम्भे ४३
शुणिण बृहस्पति कहिले दइबकु । शरासन छुइँल जे लागिला तुम्भंकु ४४
तेणु से हृतलक्ष्मी दिशिला तुम्भ मुख ।न जाणिबा पण तुम्भे जे कल चतुर्मुख ४५
ए धनु प्रत्यक्षरे जे सदा शिबर तेज । देबनाशन धनु ए क्रोधरु जात उज ४६
एबे विधाता हे जाग धर्म कर । नोहिले ए दोषरु केबेहेँ नुहेँ पार ४७
शुणिण विधाता जे एथिरे जाग कला । तेतिष कोटि देवता घेनिण रहिला ४८
सात दिन जाग जे कलेक विधाता । पवित्र होइला विदेह स्थान गोटा ४९
विधाता गला बेळे कहिण गला मोते । ए शरासनकु तु थोइण थिबु सुखे १५०
बासुदेवकु तु जे देखिबु नयनरे । सीता परम लक्ष्मी जनम तोर घरे १५१
असुर मारिबाकु होइबे हरि जात । ए धनुकु धरि तोर नन्दिनी नेबे सत ५२
शुण हे विश्वामित्र ए धनुर महिमा ।प्रत्यक्षे शुणिलि जाहा कहिण गले ब्रह्मा ५३
ए धनु थोइण अछि अति जत्न मते । ईश्वर परमेश्वर धरि पारन्ति हस्ते ५४
विश्वामित्र बोइले अटइ तेज चाप । के ताहा आमञ्चिब काहार एड़े दर्प ५५
मुहिँ बोलिबि अबा श्रीराम आमञ्चिब। केबळ श्रद्धा जे करिछि देखिब ५६
अप्रमादे से अबा आमञ्चि पारे धरि । तोते शुभ कार्ज्य जे अटइ तपचारि ५७

है। ४२ हम लोग विश्वनाथ का धनुप उठा नही सकते। चक्रधारी भगवान सहज ही उठा सकते है। ४३ यह सुनकर बृहस्पति ने देवताओ से कहा कि धनुष को छूने से तुम्हे पाप लगा है। ४४ इस कारण से तुम्हारा मुख श्री विहीन दिखाई दे रहा है। हे चतुर्मुख ! आपने अज्ञान का कार्य किया है। ४५ यह धनुष सदा कल्याणकारी शकर का प्रत्यक्ष तेज है। इस देवनाशन धनुष के क्रोध से ऊर्जा उत्पन्न हो गयी है। ४६ हे ब्रह्मा अब आप इसके लिये धर्म कीजिये, अन्यथा इस दोष से कभी मुक्त न हो सकेंगे। ४७ यह सुनकर यहाँ ब्रह्मा ने यज्ञ किया और तेतीस करोड़ देवताओं को लेकर ठहरे रहे। ४८ ब्रह्मा ने सात दिनो तक यज्ञ किया और विदेह का स्थान पवित्र हो गया। ४९ जाते समय ब्रह्माजी मुझसे इस धनुष को सुखपूर्वक रखने के लिये कह गए। १५० उन्होने यह भी कहा कि तुम वासुदेव भगवान को नेत्रो से देखोगे। महालक्ष्मी सीता के रूप मे तुम्हारे घर उत्पन्न हुई है। १५१ नारायण असुरो का सहार करने के लिये उत्पन्न होगे। वह सत्य ही इस धनुष को धारण कर तुम्हारी कन्या को लेंगे। ५२ हे विश्वामित्र ! इस धनुष की महिमा सुनिए जो ब्रह्माजी ने जाते-जाते मुझसे कहा था। ५३ मैने इस धनुष को अत्यन्त यत्नपूर्वक रक्खा है। ईश्वर तथा परमेश्वर ही इसे हाथ से उठा सकते है। ५४ विश्वामित्र ने कहा कि धनुष तेजस्वी है। कौन उसका कर्षण करेगा। इतना दर्प किसमे है। ५५ मै तो कहता हूँ कि श्रीराम उसे धारण करेगा उसने केवल इच्छा की है। अब देखना। ५६ अप्रमाद से वह इसे उठाकर कर्षित कर सकता है। हे तपस्वी !

चारि रावण बाळी जे हारिबारु पुण ।लवणासुर स्वयम्बररे मिळिला तक्षण २८
कार्मुककु चाहिँण समस्ते फेरि गले । कउळा संगे पाताळ असुर मिळिले २९
पाताळ असुरंकु देखिण शिव धनु । सहस्त्रे सिंह रडि करिलाक तेणु १३०
भय करि असुरे समस्ते पळाइले । अष्टकुळा नागे आसिण मिळिले १३१
देखिण नमस्कार करिण चळि गले । पाताळ पुरे जाइँ तुरिते मिळिले ३२
नर नारायण ऋषि हेलेक प्रवेश । शरासन तोळि न पारिले जे विशेष ३३
से ठारे शरासन शून्यरे ड़ाक देला ।द्वापर जुगे हरि अर्ज्जुन हुअरे बोइला ३४
मोते छुइँ वार दोष जे प्रापत । तोते तोर पुत्र जे करिव बारे हत ३५
नारायण ऋषिकि पुत्र जे पिण्ड देव । तेवे मोते छुइँ बार दोष तेणे जिव ३६
एगार वर्ष पर्ज्यन्त जाग मुँ करिबार ।
तोळि न पारि समस्ते होइले हन्तकार ३७
समस्ते जिबारु बिधाता आसि मिळि । बोइले विश्वनाथ धनु देखिबु बोलि ३८
विधातांक संगे समस्ते आम्भे गलु । महागिरि समानरे सायक देखिलु ३९
देखिण बिधाता बेगे धरिले शरासन । मूर्च्छि नपारि से जे तोळिलेक पुण १४०
अष्ट भुजे से जे नपारिले तोळि । अथय होइण धाता पड़िले एथे ढ़ळि १४१
चेता होइ पचारिले आम्भंकु विधाता ।शिव धनु तोळिबाकु विष्णु जे शकता ४२

को रथ पर रखा और विलका गढ की ओर रथ को हॉक दिया। २६-२७ चारो रावण तथा वालि के हार जाने से उसी क्षण लवणासुर स्वयवर में आ पहुँचा। २८ धनुष को देखकर सभी लौट गये तव पाताल के असुर धनुष के समीप आ पहुँचे। २९ पाताल के राक्षसो को देखकर शिव धनुष ने हजार सिंहो के समान गर्जना की। १३० भयभीत होकर सव राक्षस भाग गये और आठ फन वाले नाग के पास जा पहुँचे। १३१ उसे देखकर नमस्कार करके चल दिये और शीघ्र ही पाताललोक पहुँच गये। ३२ तत्र नर और नारायण ऋषि प्रविष्ट हुये परन्तु विशेषतया वह लोग धनुष न उठा सके। ३३ वहाँ पर धनुष ने शून्य से शब्द किया कि तुम लोग द्वापर युग मे कृष्ण और अर्जुन वनो। ३४ मुझे स्पर्श करने का दोष तुम्हे प्राप्त हो एक वार तुम्हारा पुत्र तुम्हारा वध करेगा। ३५ नारायण ऋषि का पुत्र जव पिण्डदान करेगा तव मेरे छूने का अपराध हटेगा। ३६ ग्यारह वर्ष पर्यन्त मेरे द्वारा यज्ञ करने पर कोई भी उसे उठा नही सका और हतप्रभ हो गये। ३७ सवके जाने पर ब्रह्माजी वहाँ आये और उन्होने विश्व के नाथ शकर जी के धनुष को देखने की इच्छा की। ३८ ब्रह्मा के साथ हम सभी गये और महान पर्वत के समान धनुष को देखा। ३९ उसे देखकर शीघ्र ही विधाता ने धनुप को पकडा। छोड़ न सकने के कारण वह उसे उठाने लगे। १४० वह आठ भुजाओ से उसे उठा नही पाये और थककर गिर पडे। १४१ ज्ञान आने पर उन्होने हम सबसे कहा कि शिव धनुप को उठाने में विष्णु समर्थ

नग्र नर नारीए शुणिण हरष। आनन्दरे बेश होइ अइले तुरित ७३
सभा मण्डिले राम्रे अति शोभावन। नेतर चिराल जे उडइ भिन्न भिन्न ७४
मर्कतर कलश बैडुर्जर पीढ। चउकति लम्बइ जे मर्कतर हार ७५
स्फटिकर खम्ब जे नीळारे पुण दम्भ। उदम्ब पाटछत्र चिराळ आलम्ब ७६
ढोल, दमाटमक जे महुरी शंख बाजे। चान्दुआर छाइरे रविक तेज गञ्जे ७७
सकळ राजा माने सभारे बिजे जाइँ। सुवर्ण सभा गोटि प्रति दश जूण होइ ७८
तिनि जूण दीर्घ जे उच्च उपरकु। छग्राणोइ खम्ब जे भिआइछि बसिबाकु ७९
खम्भ गोटि करे गोटिए सिंहासन। चारि अंशरे खम्भ बसिछि सुबर्ण १८०
राजा पात्र मन्त्री सामन्त संगे घेनि। ए रूपे बसन्ति जे राजा माने पुणि १८१
सभा तळरे उभा सेवाकारी जन। सभारे गहळ जे गह गह पुण ८२
नीळा सभा उपरे बिजय्र ऋषि विप्र। देब सभा प्राग्रेक दिशइ साक्षात ८३
नीळ सभा उपरे बिश्वामित्र बसिछन्ति। श्रीराम लक्ष्मण जे तांक पाशे छन्ति ८४
सत्यानन्द ऋषि बाम पाशे बसि पुण। बेनि सभा शोभा दिशे जेन्हे स्वर्ग स्थान ८५
बेढ़िण देखिले जाइँ पुर नर नारी। स्वर्गरु ओह्लाइ देखि अइले अपसरि ८६

का दर्शन करेंगे। ७२ नगर के नर-नारी यह सुनकर प्रसन्न हो गये और आनन्द से सुवेश धारण कर शीघ्र ही आ गये। ७३ राजा ने अत्यन्त शोभाशाली सभा सजायी जिसमें रेशमी पताकाएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ रही थी। ७४ मरकत के कलश वैदूर्य के पीढ़े थे और चारों ओर मरकत मणियो के हार लटक रहे थे। ७५ स्फटिक के खम्भे जिनमें नीलम लगे हुये थे और ऊँचे-ऊँचे पाट छत्र पताकाओं के आकार बने थे। ७६ ढोल, नगाडा, मौहर तथा शख आदि बाजे वजने लगे। चन्द्रातप की छाया मे सूर्य का तेज गजित हो रहा था। ७७ सारे राजा लोग सभा में उपस्थित हो गये। यह स्वर्ण की सभा अथवा (सुन्दर वर्ण वाली सभा) दस योजन के विस्तार मे थी। ७८ तीन योजन विस्तीर्ण स्थल में ऊपर उठे हुये छियानबे खम्भे बैठने के लिये निर्मित किये गये थे। ७९ एक-एक स्तम्भ पर एक-एक सिहासन था और खम्भो के चतुर्थाश सोने से जड़े थे। १८० राजा पात्र मत्नी सामतों को साथ लेकर राजा लोग इस प्रकार से बैठे थे। १८१ सभा स्थल में सेवक लोग खडे थे। सभा मण्डप में कोलाहल और चहल-पहल मची थी। ८२ नीलम की सभा के ऊपर ऋषि तथा विप्र विराजमान थे। वह सभा साक्षात देव सभा की भाँति दिखाई दे रही थी। ८३ नील सभा के ऊपर विश्वामित्र बैठे थे और श्रीराम तथा लक्ष्मण उनके पास में थे। ८४ महर्षि सतानन्द उनके वाम भाग में बैठे थे। दोनो सभाएँ स्वर्ग-स्थान के समान सुन्दर दिखाई पड़ रही थी। ८५ नगरवासी स्त्री और पुरुष जाकर चारों ओर से घेर कर देखने लगे। अप्सराये स्वर्ग से उतरकर देखने के लिये आ गईं। ८६

दोहिताकु एगार बर्ष षड़मास । श्रीराम लक्ष्मणकु बार जे बरष ५८
दुहेँ सरिसम होएण छन्ति पुण । दइव अबा काळे करिथिबटि घटण ५९
ए क्षिति मण्डळरे शुभिब अबा भल । एकथा बिचार जेबे करिबे ईश्वर १६०
ताड़कि मारि श्री अहल्या निस्तारिले ।माल्यवन्त सुबाहु दुहिँकि नाश कले १६१
मोर जाग पुण रखिले दुइ भाइ । नव कोटि पुण असुर बळ दहि ६२
सेहि दिनु मुहिँ जाणइ विष्णु जात । देखिलि श्रीरामर बळ अप्रमित ६३
सीता सुलक्षणी जन्म शुभ बेळे । श्रीराम परा वर मिळिबे पुण्य बळे ६४
दिअ ऋषि आज्ञा जे आणन्तु श्रीराम । शुणिण जनक जे परम तोष मन ६५
सेदिन रुहाइले गउरोब करि । सदाशिव कहन्ति शुण गो शाकम्बरि ६६
एथु अनन्तरे जे जनक महाऋषि । नग्रपुर मण्डणि कलेक लोक पेशि ६७
सकळ देश प्रजा जागरे अछन्ति । नाना तीर्थरु जे अनेक तपिछन्ति ६८
देखणा हारि लोक पथुकि जनमाने । अनेक देशर जे अछन्ति विप्रजने ६९
गहळरे गह गह मिथिला नग्रपुर । दाण्ड बाट, हाट जे कन्दि विकन्दिर १७०
जाआन्ता जाउ अछि आसन्ता आसे पुण।बाद्य घोष तूरी जे मद्र्दळ बाजे पुण १७१
नग्ररे घोषण से देलेक नृपवर । राम लक्ष्मण देखिबे शिव शाय़क मोर ७२

तुम्हारे लिये यह कार्य शुभ होगा । ५७ पुत्रियाँ ग्यारह वर्ष छैः माह की है और श्रीराम लक्ष्मण बारह वर्ष के हुए है। ५८ दोनो ही बराबर के हो गए है। दैव ने इसी काल के लिये इनका निर्माण सम्भवत. किया है। ५९ यदि ईश्वर इस बात पर विचार करेगा तो इस भूमण्डल पर यह शुभ समाचार प्रसारित होगा। १६० इन्होने ताडका का सहार करके अहिल्या का उद्धार किया है। माल्यवन्त (मारीच) सुबाहु दोनो को नष्ट किया है। १६१ दोनो भाइयों ने मेरे यज्ञ की रक्षा की है। फिर इन्होने नौ करोड़ राक्षसो का दलन किया है। ६२ उसी दिन से मुझे ज्ञात हो गया है कि विष्णु प्रकट हो गया है। मैंने श्रीराम का अपरिमित बल देखा है। सुलक्षणी सीता के शुभजन्म के अवसर पर उसके पुण्य के बल से श्रीराम वर रूप में प्राप्त होगे। ६३-६४ हे ऋषि ! आप श्रीराम को लाने की आज्ञा दे। यह सुनकर मन अत्यन्त सन्तुष्ट हो गया। ६५ उन्होने सम्मान करके उन्हे उस दिन रोक लिया। शकर जी ने कहा हे शाकम्बरी ! सुनो। ६६ इसके पश्चात् महर्षि जनक ने लोगो को भेजकर नगर तथा महल की सजावट कराई। ६७ समग्र देश की प्रजा यज्ञ मे है। अनेक तीर्थो से वहुत से तपस्वी आए है। ६८ दर्शक लोग नाना प्रकार के बटोही तथा भिन्न-भिन्न देशो के विप्रजन है। ६९ मिथिला नगर तथा महल मे हाट-वाट राजमार्ग गली कूचो मे कोलाहलपूर्ण चहल-पहल मच गई। १७० आने-जाने वाले लोग आ जा रहे थे। तूर्य मादल आदि वाद्य यन्त्रो का घोष होने लगा। १७१ नृपश्रेष्ठ ने नगर मे घोपणा करा दी कि श्रीराम तथा लक्ष्मण हमारे शिव धनुष

सेथि परे बिजय़ करिछन्ति सीता। कपोळे सिन्दूर जे सर्बांगे गन्ध चिता २
नानादि जतनरे बान्धिछन्ति जुडा। पञ्चबर्ण कुसुममान सेथि परे बेढ़ा ३
रत्न झुम्पीमान जुड़ारे बेढ़ि लम्बि। शिररे अळका जे चन्द्र सूर्ज्य निन्दि ४
नय़नरे कज्जळ जे कर्णरे रत्नकाप। गळारे बेढि अछि चउसरि खाप ५
नाशारे शोभाइ जे रत्न सिन्धु फळ। देह दिशइ जेन्हे सुबर्ण आकार ६
निष्कळंक चन्द्रमा प्राय़क बदन। सिन्धु फळ संगरे रत्नगुणा पुण ७
हृद पद्म मध्यरे सपत पद्ममाळा। श्रीमुख श्वेत पद्म प्राय़ेक बेनि ड़ोळा ८
बेनि कर स्थळरे पद्म जेन्हे फुटि। चालन्ते अबेण्ट पद्म पादरेटि फुटि ९
निळोत्पळ पराय़ नय़न जुगळ। ए रूपे अंगे शोभा सप्त जे कमळ २१०
शाम बेदरु से जे होइलेक जात। धरणी देबी जार अटइ पुण मात २११
शामवेद अंशरे कमळा अबतरि। त्रैलोक्यरे पटान्तर नाहिँ समसरि १२
शोभा दिशइ देह सुबर्ण पुष्प प्राय़े। अधर ड़ाळिम्ब कुसुम जेन्हे शोहे १३
बाउन कोटि अपसरी रूप तेज गुण। नय़न दुइ तांकर पञ्चमशर बाण १४
चाहाँणि छटकरे दशदिग भोळ। नागेश्वर पुष्पमाला धरिण छन्तिकर १५

दिया गया था। २०१ उसके ऊपर सीताजी विराजमान है। उनके मस्तक में सिन्दूर और समस्त अंगों में सुगन्धित तिलक लगे है। २ नाना प्रकार के फीतो से जूड़ा बाँध रखा है और उन पर पाँच रंगो के फूल घेर रखे है। ३ रत्नों के गुच्छे जूड़े को घेरकर लटक रहे है। सिर पर सूर्य और चन्द्र को निन्दित करने वाली अलका सुशोभित है। ४ नेत्रों में काजल, कानों में रत्नो के कर्णफूल और गले में चार लडी वाली जंजीर सुशोभित है। ५ नाक मे मोती की बुलाक शोभा पा रही है। उनका शरीर सुवर्ण के आकार जैसा लग रहा है। ६ उनका मुख कलकरहित चन्द्रमा के समान है और मोती की बुलाक के साथ रत्न जड़ित कील पहने हुये है। ७ हृदयकमल के बीच मे सात प्रकार के कमलों की माला है। श्रीमुख पर श्वेत कमल के समान दोनों नेत्र है। दोनों हाथ कमल जैसे प्रस्फुटित हुये है और चलने मे नाल रहित कमल चरणों मे खिल जाते है। ८-९ उनके दोनों नेत्र नीलकमल के समान है। उनके अग की शोभा इस प्रकार सात कमलो के समान है। २१० वह सामवेद से उत्पन्न हुई है। उनकी माता पृथ्वी देवी है। २११ सामवेद के अश से लक्ष्मी ने अवतार ग्रहण किया है। तीनो लोकों में उसकी समता का कोई नही है। १२ उनकी देह की शोभा स्वर्ण के पुष्प के समान दिखाई दे रही है। अधर दाड़िम के पुष्प के समान शोभायमान है। उनका रूप और तेज तथा गुण बावन करोड़ अप्सराओ जैसा है। उनके दोनो नेत्र कामदेव के पचबाणों की तरह है। १३-१४ उनकी दृष्टि भगिमा से दसों दिशायें विभोर हो जाती है। वह हाथों मे नागेश्वर पुष्पों की माला धारण किये हुये है। १५ उनके साथ में जितनी भी दासियाँ है। वह

एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरि। नारद बिजे कले स्वर्ग नामे पुरि ८७
बारस्वती भुबनरे हेले पर बेश। सुधर्मा सभारे देखिले सकळ देवान्त ८८
ब्रह्मा शिब दिगपाल सुरराजा सेथि। गह गह सभा जे सकळ देव सेठि ८९
नारद बोइले तुम्भे शुण हे देब गण।कउशिक पाशे छन्ति श्रीराम लक्ष्मण १९०
मिथिला नग्ररे जाइँ हेले पर बेश। धनु भांगिवाकु हेलेणि सज सेत १९१
शुणिण सुर राजा सुधर्मा सभा घेनि। अधा स्वर्गरे जे मिळिले देब पुणि ९२
अन्तरीक्षे रहिण देखन्ति देबगण। कउशिक जनक सिद्ध ऋषि पुण ९३
शून्युतळकु चाहान्ति जे देवगण। एक कहन्ते जे आरेक चाहेँ पुण ९४
गन्धर्व किन्नर जे जक्ष बिद्यधर। एककु आरेक जे मिळले आगुसार ९५
के बोले देख बिजे श्रीराम लक्ष्मण। एमन्ते कुहा कुहि हेले देबगण ९६
मिथिला नग्ररे जे बसित ठाव नाहिँ।पचिश जुण स्थळी जे गहळ अछि होइ ९७
कनक मण्डपरे रत्नमय चाळ। मुक्तार त्रोणा जे लम्बइ माळ माळ ९८
गज, मोति, हीरा जे लम्बइ पन्ति पन्ति। विविध वर्णे कुसुम मण्डिण अछन्ति ९९
सेथिर उपरे देबांग पाट तुळि। नागेश्वर गुण्डिरे केशर मुचुळि २००
शेज सजाइ अछन्ति पतनी जत्न करि। कर्पूरर धूळि नेइ शेज परे पारि २०१

हे शाकम्वरी ! सुनो। इसके पश्चात् नारद स्वर्गलोक मे जा पहुँचे। ८७ वह स्वर्गभुवन में प्रविष्ट हुये। उन्होने समस्त देवताओ को सुधर्मा सभा मे बैठे हुये देखा। ८८ वहाँ पर ब्रह्मा शिव दिगपाल तथा देवराज आदि समस्त देवताओ से सभा विभूषित थी। ८९ नारद ने कहा हे देवगण ! आप लोग सुनिए। श्रीराम और लक्ष्मण विश्वामित्र के पास है। १९० वह जाकर मिथिला नगर मे प्रविष्ट हुए है तथा वह धनुष को भग करने के लिये तैयार हो गए हैं। १९१ यह सुनकर देवराज इन्द्र सुधर्मा सभा को लेकर स्वर्ग के अधवारे पर एकत्रित हो गए। ९२ वह देवगण अन्तरिक्ष मे स्थित होकर कौशिक, जनक, सिद्ध ऋषियो को देखने लगे। वह एक दूसरे को देखकर बाते करने लगे और आकाश से भूतल पर दृष्टि जमाकर रह गए। ९३-९४ गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, विद्याधर एक दूसरे से आगे बढकर एकत्रित हो गए। ९५ कोई कहने लगा कि श्रीराम और लक्ष्मण विराजमान है। देवगण इस प्रकार आपस में बाते कर रहे थे। ९६ मिथिला नगर मे बैठने का स्थान नही था। पच्चीस योजन के भूमिखण्ड मे चहल-पहल मची थी। ९७ स्वर्णमण्डप पर रत्नो की छत पडी थी। मुक्ताओ के तोरण पक्ति-पक्ति में लटक रहे थे। ९८ गजमुक्ता, मोती, हीरा और भाँति-भाँति के अनेक रगो के पुष्प कतारों में सजे थे। ९९ उनके ऊपर दिव्यपाट की सजावट थी, नागेश्वर के चूर्ण में केशर का चूर्ण मिलाया गया था। २०० बिछावन को यत्नपूर्वक फैलाकर सेज सजाई गई थी तथा कर्पर का चूरा लेकर सेज पर डाल

चरणे पाहुड़ बळा नूपुर शोभा पाइ। अंगुष्ठि मानंकरे झुण्टिआ बिराजइ २३१
हस्तर अंगुळिरे अनेक रत्न मुदि। अष्टरत्न सेथिरे मिश्रित होइलाणि ३२
नील अमळाण काछि पिन्धिलेक देबी। नीळ वर्ण खण्डुआ जे उपराण लागि ३३
बेश होइ देबी जे मनरे चञ्चळ। नवकोटि देबींक परे अटन्ति सार ३४
पार्बती देबींक प्राय़ दिशिलेक पुण। स्वर्गर देवता देखि बुजिले नय़न ३५
आलट चामर पंखा बिञ्चणी दासी घेनि। शतेक परिबारि आगरे ढाळे पुणि ३६
धीरे धीरे देबी से बिजेकरि गले। जानकींक छामुरे जाइण मिळिले ३७
पाहाड़ा पकाइण ओळगे पादतळे। कर जोड़ि करि उभा होइले आगरे ३८
जानकी बोइले तोर बेशत आज तोरा।
स्वप्न देखिलाकि स्वामी प्राप्त हेल परा ३९
उर्मिला बोले ठाकुराणी शुण मो वचन। अनन्त बसुदेव गो बिजय़ कले पुण २४०
विश्वामित्र मुनि संगे अइलेणि सेहु। आज धनु धरिबे जणा गो गला तहुँ २४१
एगार बर्ष जाए गो जेतेक आसुथिले। समस्ते बरजात्री गो शुण देबी भले ४२
एबे आम्भर प्रभु हेलेणि पर बेश। देख बिदेह मण्डल गहळ नाद घोष ४३
शुणिण जानकी देबी बेग होइ उठि। धनु घर दिशिबा स्थाने जगती परबेसि ४४
बेनि शत दासी जे संगरे सान भग्नि। हरषरे बिजय़ जगति परे पुणि ४५

में सुसज्जित थे। २३० पैरो में पायल कड़े तथा नूपुर शोभा पा रहे थे। उँगलियो में विछुये विराजमान थे। २३१ हाथ की उँगलियो में अनेक रत्नजटित मुद्रिकाएँ थी। उनमें अष्टरत्न मिले हुये थे। ३२ देवी ने नीले रंग का परिधान और नीले रग की ही ओढनी पहन रखी थी। ३३ शृगार करके देवी का मन चचल हो गया था। वह नौ करोड़ देवियों के ऊपर सारस्वरूपा थी। ३४ वह पार्वती देवी के समान दिखाई पड़ रही थी। स्वर्ग के देवताओ ने उन्हे देखकर नेत्र बन्द कर लिये। ३५ एक सौ दासियाँ आलट चामर पखा तथा व्यजन लेकर डुला रही थी। ३६ वह देवी मन्द-मन्द गति से चलती हुई जानकी के समक्ष जा पहुँची। ३७ उसने जानकी को दण्डवत प्रणाम किया और उनके समक्ष हाथ जोडकर खड़ी हो गई। ३८ जानकी ने कहा कि आज तेरा वेश बडा सुन्दर हुआ है। क्या स्वामी की प्राप्ति का स्वप्न देखा है। ३९ उर्मिला ने कहा हे स्वामिनी ! मेरी बात सुनिए। अनन्त वासुदेव आए हुए है। २४० वह महर्षि विश्वामित्र के साथ आए है। मुझे पता चला है कि वह आज धनुष धारण करेगे। २४१ ग्यारह वर्षो तक जितने भी लोग आए थे। वह सभी बराती थे, हे देवी ! यह बात तुम ठीक प्रकार से सुन लो। ४२ अभी हमारे प्रभु प्रविष्ट हुए है। विदेह मण्डल की चहल-पहल तथा वाद्य-नाद के उद्घोष को देखिए। ४३ यह सुनकर देवी जानकी शीघ्रता से उठी और धनुषगृह दिखने के स्थान पर जगती के ऊपर बैठ गई। ४४ फिर दो सौ दासियो के साथ छोटी

संगरे जेतेक जे अछन्ति परिवारि । समस्ते नबजुवा एक वयस सवुरि १६
चामर पंखा आलट बिञ्चणी करे धरि। जानकीर छामुरे ढ़ाळन्ति धीर करि १७
केहु कर जोड़िण बुझाउ छन्ति कथा । एथु अनन्तरे शुण जगतर माता १८
जनक सान झिअ उर्मिला नामे बाळी । तनु पुलकित जे होइला ताहांकरि १९
मुख पखाळि करकु चाहिँले दुलाळि । जाणिले नारायण अनन्त बिजे करि २२०
स्वामो अइले वोलिण मने बिचारिले । दासीमानंकु डाकि वेगे माजणा होइले २२१
केश सजाइण जुड़ा जे वान्धिले । जोड़ा उपरे झुम्पा वृत्तरि मण्डिले २२
झरा काठि उपरे कुसुम गभा रञ्जि । नयने कज्वळ मस्तकरे अळका पन्ति २३
मथामणि सळखे चन्दन टोपि चिता । सुन्दर पणे अटइ किवा जगज्जिता २४
मध्यरे चन्दन विन्दु रविकि जिणि शोभा ।
नासारे सिन्धुफल रत्नकु जिणि प्रभा २५
नासारे रत्न दण्डि रत्न गुणा शोहे । कर्णे काप मल्लकढ़ि फिरि फिरा शोहे २६
चन्द्र आकारे फासिआ रत्नरे निवाड़ । गळारे चापसरि वसन्ति वर्णाकार २७
पदक चन्द्रहार मुकुता गुञ्जमाळ । वक्षस्थळे लुळइ जे काञ्चला उपर २८
हीरामाणिक्य चूड़ी वेनि करे शोभे । आग खडु कतुरी पछकु शोभा पाए २९
बेनि बाहुरे ताड़ बाहुटी विदमाळि । कररे सुवर्ण सुता सप्तसरि घेरि २३०

सब एक ही आयु की और नवयुवतियाँ हैं। १६ वह जानकी के समक्ष धीरभाव से पखा व्यजन आलट तथा चामर हाथ में लिये हुये डुला रही है। १७ कोई हाथ जोडकर कोई बात समझा रही है। हे जगत् जननी ! सुनो। इसके पश्चात् जनक की छोटी पुत्री जिसका नाम उर्मिला था। उसका शरीर पुलकित हो गया। १८-१९ राजकुमारी ने मुख धोकर हाथ की ओर देखा और समझ गयी कि अनन्त नारायण पधारे है। २२० स्वामी आए है। यह वात मन मे सोचकर उसने दासियो को बुलाकर शीघ्र ही मार्जन किया। २२१ केश सँवारकर जूड़ा वाँधा और जूडे के ऊपर गुच्छे लगाकर उसे सजा लिया। २२ पुष्पो की लडी के ऊपर फूलो के गुच्छे सजा लिये है। आँखो मे काजल और सिर मे माग निकाल ली। २३ मस्तकमणि सजाकर चन्दन का तिलक किया। सौंदर्य मे वह ससार को जीतने वाली थी। २४ मध्य मे लगा चन्दन का विन्दु सूर्य की शोभा को जीतने वाला था, नाक में लगा हुआ मोती रत्न प्रभा को जीतने वाला था। २५ नासिका में रत्नजटित वाली तथा रत्नो की कील शोभा पा रही थी। कानो मे मल्ली कड़ी तथा फिरफिरा (आभूषण विशेष) शोभा पा रहे थे। २६ चन्द्रमा के आकार को रत्नजटित हँसली तथा धनुषाकार सुनहला आभूषण गले मे सुशोभित था। २७ पदकयुक्त चन्द्रहार तथा मुक्ताओ की गुज माल कचुकी के ऊपर वक्षस्थल पर झूल रही थी। २८ दोनो हाथो मे हीरे तथा माणिक्य की चूड़ियाँ शोभायमान थी। आगे कडे और पीछे पछेले शोभायमान थे। २९ दोनो बाहुओ मे ताड़ के बाजूबन्द और सात लड़ वाले दस्तबद हाथो

एसनेक समयरे मेनका अपसरि । बिमान आरोहिण अन्तरिक्षे चळि २६१
सुखरे देखि मुँ जे मनरे बिचारिलि । ए रूपे दोहिताए मनरे मनासिलि ६२
से कन्या जाणिला जे मोहर मन कथा । मोते से बोइला शुण हे महाग्याता ६३
बेदबर शापे मुँ मर्त्ये अबतरि । स्वर्गकु जाउछि मुहिँ शाप जे पार करि ६४
नोहिले मुहिँ जात हुअन्ति तोर कोळे । मनरे चिन्ता तुम्भे नकर मुनिबरे ६५
मोहर रूपकु से कोटिए गुणे पुण । अल्प दिने प्राप्त हेब बेनि दोहिता जाण ६६
एमन्ते केते दिन उत्तारु मोर मन । जाग मुँ करिबाकु अनुकुळ पुण ६७
फाँळ घेनि भूमि चिरिलि शबदाइ । तळमाटि उपरकु आणिलि उठाइ ६८
फाँळ मुनरे पुणि मञ्जूष उकुटि । मञ्जूषर भितरे देखिलि बाळी गोटि ६९
शुक्ल पक्ष पूर्णमीर शशधर प्राये । तेसनेक सञ्जत दुहिता रूप हुए २७०
स्वर्गर अपसरि कहिले शबदाइ । सम्भाळ ऋषि एबे दुहिता गोटि नेइ २७१
ए दुहिता उद्धरिब तुम्भर कुळ गोत्र । एणे वंश तोर होइब पबित्र ७२
एते कहि शून्यरे गले जे अपसरि । ताहार बचन जे मनरे प्रति पाळि ७३
से कन्याकु छुअन्ते से हेले नब जुबा । रुत शुद्धरे अग्नीरे स्नान कले बामा ७४
सेहि ठारु मुँ जे धनु जाग कलि । प्रथम जज्ञरे कन्याए जात हेबार देखिलि ७५

इसके पश्चात् तीन वर्ष का समय बीत गया। २६० इसी समय मेनका अप्सरा विमान पर बैठकर आकाश मार्ग से जा रही थी। २६१ उसे सुखपूर्वक देखकर मैंने मन में विचार किया और उसी प्रकार की एक पुत्री के लिये मन में कामना की। ६२ मेरे मन की बात उस कन्या को विदित हो गयी। उसने मुझसे कहा हे महाज्ञानी ! सुनो। ६३ ब्रह्मा के शाप से मैं मृत्युलोक में अवतरित हुयी थी। शाप से मुक्त होकर अब मै स्वर्ग को जा रही हूँ। ६४ नही तो मै आपके कुल में जन्म ग्रहण कर लेती। हे मुनिश्रेष्ठ ! आप मन मे चिन्ता न करे। ६५ मेरे रूप से करोडो गुनी सुन्दर दो पुत्रियाँ तुम्हे कुछ दिनों मे प्राप्त होगी। ६६ इस प्रकार कुछ दिनों बाद मेरा मन यज्ञ करने का हुआ और मैने यज्ञ का मुहूर्त निकाला। ६७ मैने हल लेकर पृथ्वी का कर्षण किया और नीचे की मिट्टी ऊपर उठा ली। ६८ हल की नोक में एक मजूषा अटक गई। मंजूषा के भीतर एक बालिका दिखाई पड़ी। ६९ वह शुक्लपक्ष के पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान थी। उस वालिका का रूप उसी प्रकार का गठा था। २७० स्वर्ग की अप्सरा ने पुकार कर कहा हे ऋषि अब इस पुत्री को सँभालकर रखो। २७१ यह वालिका तुम्हारे कुल और गोत्र का उद्धार करेगी। ७२ इतना कहकर वह अप्सरा आकाश मे चली गई। मैने उसके कथनानुसार इसका मन से लालन-पालन किया। ७३ छूने पर वह कन्या नवयुवती हो गयी। उसने ऋतुमती होकर अग्नि मे शुद्ध स्नान किया। ७४ वही पर मैने धनुष यज्ञ किया। पहले यज्ञ से एक और कन्या को उत्पन्न होते

एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। राम लक्ष्मण घेनिण गाधिसुत सेथि ४६
दशरथंकर बेनि बाळक आग करि। दुहिंकर करकु से बेनि हस्ते धरि ४७
प्रवेश हेले जाइँ राज सभारे पुण। देखिकरि आश्चर्य्य हेले सर्बजन ४८
केहु बोलु अछन्ति ए काहार पुत्र बेनि। हरिहर अइलेकि मनुष्य देह घेनि ४९
नृपति सकळ जे देखिण अचाबुआ। मत्तगज मेळेकि प्रवेश सिंहछुआ २५०
कौशिक ऋषिक पाशे अछन्ति बेनिभाइ। देव सभा मध्ये कि चन्द्र सूर्ज्य उइँ २५१
कुशधर ईश्वर कि बासव आदित्य। राम लक्ष्मण दिशुअछन्ति सेहि मत ५२
गौरव पाइण बसिले सभामध्ये। जेसनेक हरि हर बिजय़ स्वर्ग मध्ये ५३
देबंकर सगरे कि शची देबी पति। बिश्वामित्रंक संगे तेसन रघुपति ५४
एसनक समय़रे जनक महाऋषि। अस्थानर तळरे प्रवेश हेले आसि ५५
बेनि सभाकु चाहिँण बोलन्ति जनक। ऋषि, विप्र, नृपति अछ हे जेतेक ५६
कहु अछि कथाए मुँ शुण एकमन। हाटुआ, बाटुआ जे जेतेक प्रजाजन ५७
ए मोहर सत्य जे अछइँ पूर्ब कला। तुम्भे माने एगार थर शुणि अछ परा ५८
आजकु हेला पन्दर बरषर तळे। पुत्रनाहिँ बोलि भाळुथिलि मुँ बिकळे ५९
जाग करि बाकु मुहिँ करुथिलि बिधि। एथि उतारु गला तिनि बरष अबधि २६०

वहन (उर्मिला) भी प्रसन्नतापूर्वक जगती पर आकर विराजमान हो गई। ४५ हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् गाधिनन्दन विश्वामित्र दशरथ के दोनों पुत्रो राम और लक्ष्मण को आगे करके और दोनो हाथो से दोनो के हाथो को पकडे हुए राजसभा मे जाकर प्रविष्ट हुए। यह देखकर सभी लोग आश्चर्य मे पड गए। ४६-४७-४८ कोई कहने लगा कि यह दोनो किसके पुत्र है। क्या मानव रूप धारण कर विष्णु तथा शिव ही आ गए है। ४९ सारे राजागण देखते ही आश्चर्य में पड़ गए, भौचक्के हो गए। लगता था मानो मत्त हाथियो के झुण्ड मे सिंह शावक आ पहुँचे हो। २५० दोनो भाई कौशिक ऋषि के पास थे। लगता था जैसे देवसभा में चन्द्रमा तथा सूर्य उदय हो गए हो। २५१ ब्रह्मा तथा शिव अथवा इन्द्र और आदित्य के समान ही राम और लक्ष्मण दिख रहे थे। ५२ वह सम्मान प्राप्त करके सभा मे बैठ गये, जैसे विष्णु और शंकर स्वर्ग मे विराजमान हो। ५३ विश्वामित्र के साथ रघुनायक इस प्रकार लग रहे थे जैसे देवताओ के साथ शची देवी के स्वामी इन्द्र विराजमान हो। ५४ इसी समय महर्षि जनक सिंहासन के नीचे आ पहुँचे। ५५ दोनो सभाओ की ओर देखकर जनक ने कहा यहाँ पर जितने भी ऋषि, विप्र तथा राजागण है। उन सबसे मै एक बात कह रहा हूँ। सब एकाग्रमन से सुने। जितने भी हाट बटोही और प्रजाजन है वह भी सुने। ५६-५७ पूर्वकाल के समान यह जो मेरी प्रतिज्ञा है, इसे आप लोगो ने ग्यारह बार सुना है। ५८ आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व मै व्याकुल होकर सोच रहा था कि मेरे पुत्र नही है। ५९ मै यज्ञ करने की विधि सम्पादित कर रहा था।

जणे सिना कोदण्डकु तोळिण धरिब ।ताहार कन्याकु पुणि आन कि घेनि जिब २९१
धनु टेकि नपारिबा लोककि नेबकन्या। धनु न तोळिला लोक बळहीन सिना ९२
तेते बेळे जेबे आमे न पारिवुं ताकु ।कन्या घेनि गला बेळे से जाणिब आम्भकु ९३
कउशिक बोइले बळरे गोळकले । ड़रिण जनक तांकु दिअन्ति बोइले ९४
जनक बोइले तुम्भे शुण रघुनाथ ।बहु बेळ मोर संगे गोळ कले राजा ए त ९५
ईश्वरंक मायारे मुं त्रिबार उतरि । कामधेनु बळरे तिनि बेळ सुस्थ हेलि ९६
पर्शुराम बळरे मुं पाञ्च बेळ सुखी । एमन्ते एगार बरष जे गला घुञ्चि ९७
एबे मुं शायकंकु करिबि बाहार ।गोळ करिबे राजा बोलि मोहर अटे ड़र ९८
श्रीराम बोइले शुण हे महाऋषि । पर्शुराम एकात सपत पुर ध्वंसि ९९
ए राजा मानंकर पिता मानंकु मारि । तांकर रुधिर रे तर्पण सेहु करि ३००
एकारे नारायण असुर बळ दळि । एकारे सदाशिव सकळे घ्नन्ति पढि ३०१
एकारे बेदबर सबुंकु जात कला । एकारे इन्द्र देबता पृथिबी पाळिला २
एकारे चन्द्र जे सबुंकु दिए फल । एका मदन सबुंकरि देहरे जर्ज्जर ३
एकाकि रबि देबता सप्तपुर दिशि । एकाकि जन्तुपति सबुंकु बिनाशि ४
एकाकि गंगा देबी सकळ पुरे घोटि । एकाकि कुबेर सबुंकु धन बाण्टि ५

ओर देखकर वह विनयपूर्वक बोले कि जो धनुष को धारण करेगा, क्या उसके पास वल न होगा । २९० जब एक व्यक्ति कोदण्ड को उठाकर धारण करेगा क्या उसकी कन्या को दूसरा कोई ले जायेगा । २९१ क्या धनुष न उठाने वाला व्यक्ति कन्या को लेगा । धनुष न उठाने वाला व्यक्ति तो बलहीन है । ९२ उस समय यदि हम उसको परास्त न कर पाये तो कन्या ले जाने के समय उसे हमारा ज्ञान होगा ।। ९३ विश्वामित्र ने कहा कि बल से कलह करने पर डर से जनक उसे तो नही दे देगे । ९४ जनक बोले हे रघुनाथ ! आप सुनिये । इन राजाओं ने मेरे साथ बहुत बार युद्ध किया है । ९५ ईश्वर की माया से मै तीन बार उतरा हूँ और कामधेनु के बल से मै तीनों बार स्वस्थ रहा हूँ । ९६ परशुराम के बल से मै पाँच बार प्रसन्न रहा हूँ । इस प्रकार ग्यारह वर्ष व्यतीत हो चुके है । ९७ इस समय मे धनुष को बाहर करूँगा । मुझे भय है कि कही यह राजा लोग उत्पात न करे । ९८ श्रीराम ने कहा हे महर्षि सुनिये । परशुराम ने अकेले ही सातो लोको को ध्वंस किया है । ९९ उन्होंने इन राजाओ के पिताओं को मारकर उनके रक्त से तर्पण किया है । ३०० विष्णु अकेले ही असुरो का सहार करते है । शिव अकेले ही सबका सहार करते है । ३०१ ब्रह्मा ने अकेले ही सबको उत्पन्न किया है । इन्द्रदेव अकेले ही पृथ्वी का पालन करते है । २ चन्द्रमा अकेले ही सबको फल प्रदान करते है । कामदेव अकेले ही सबके शरीर को मथ डालते है । ३ सूर्यदेव अकेले ही सातों लोको में दिखाई देते है । यमराज अकेले ही समस्त प्राणियों का विनाश करते हैं । ४ गंगा देवी ने अकेले

दुइ कन्या अजोनि सम्भुत जाणि मुहिँ। बेनि कथा नियम कलि बिचारिण तहिँ ७६
ए शिब धनु जे धरिब देबि बड़ झीअ ।लक्षे राजा जे जिणिब देबि मुँ सान झिअ ७७
एगार बर्षरे नधरे धनु केहि । लक्षे राजा जिणि केहि नदेले घउडाइ ७८
बेनि कथा नपारि से अनेक गोळ कले। पर्शुराम आसिबारु से निबर्त्त होइले ७६
एबे देख बिश्वामित्र अइले मो पुर । संगे छन्ति दशरथ बेनि जे कुमर २८०
कोदण्ड देखिबाकु श्रद्धा जे पुए कले । कौशिक मुनि आसि मोते जे कहिले २८१
ईश्वरक धनु ए जे बिष्णु रूपरे जात। दर्शन कले लोक हुअन्ति मुकत ८२
जेणु मोते कहिले गाधिराजा सुत । तेणु मोर साम्रककु काढिबार सत्य ८३
समस्ते एकमन होइ तुम्भे शुण । जे धनुकु धरिब से कन्या नेब पुण ८४
ए मोर सत्यकु जे बिअर्थ न करिब । शुणि करि बोइले जे राजागण सर्ब ८५
अणाअ धनु तुम्भे देखन्तु सर्ब लोक । जे अबा पारिब से उछुडु कार्मुक ८६
जे धरिब धनुकु कन्याकु से नेब । कन्या लोभ करि केहु कळि नकरिब ८७
एते कहि नृपतिमाने कले सिउकार ।सत्य सत्य बोलिण से बोलन्ति तिनिबार ८८
श्रीराम बोइले तुम्भे शुण हे कौशिक । राजा गोळरे मुनि कराउ छन्ति सत्य ८६
जनक ऋषिकि चाहिँ बिनोयी कहिले ।जे धनुक धरिब नथिबकि बळतार भले २६०

देखा । ७५ दोनो कन्याओ को अयोनि-सम्भूता जानकर मैने विचारपूर्वक वहाँ दो बातो की प्रतिज्ञा की । ७६ जो शिव धनुप को धारण करेगा । उसे वडी कन्या और जो एक लाख राजाओ पर विजय प्राप्त करेगा । उसे छोटी कन्या प्रदान करूँगा । ७७ ग्यारह वर्षो मे न तो किसी ने धनुष धारण किया और न किसी ने एक लाख राजाओ को जीतकर भगाया । ७८ दोनो बाते न हो सकने पर बहुत झगडा हुआ और फिर परशुराम के आने से सब शात हुये । ७६ अब देखो विश्वामित्र हमारे नगर मे आये है। उनके साथ दशरथ के दोनो पुत्र है । २८० इन बालको ने कोदण्ड के दर्शन को इच्छा प्रकट की । विश्वामित्र मुनि ने यह बात आकर मुझसे कही । २८१ शिव का यह धनुष विष्णु के रूप में उत्पन्न हुआ है। इसके दर्शन करके लोग मुक्त हो जाते है। ८२ जब महाराज गाधि के पुत्र ने मुझसे कहा तो मेरे धनुष को निकालना उचित है। ८३ तुम सब एकाग्र मन होकर सुनो जो कोई धनुष को धारण करेगा, वह कन्या को प्राप्त करेगा । ८४ मेरी इस प्रतिज्ञा को व्यर्थ न करना । यह सुनकर समस्त राजागण बोले । ८५ आप धनुष को मँगाइये । समस्त लोग उसका दर्शन करे जो समर्थ होगा, वह धनुष को उठायेगा । ८६ जो धनुष को धारण करेगा वह कन्या को प्राप्त करेगा । कन्या का लोभ करके कोई कलह नही करेगा । ८७ ऐसा कहकर राजाओ ने अपनी स्वीकृति प्रदान की और तीन बार सत्य, सत्य, सत्य कहकर इसका प्रतिपादन किया । ८८ श्रीराम ने कहा हे विश्वामित्र ! आप सुनिये । राजाओ के समूह से मुनि प्रतिज्ञा करा रहे है। ८६ जनक ऋषि की

पुञ्जा पुञ्जा होइ करि करन्ति बिचार। बार बर्षर अटे जे दशरथ बाळ ३२०
ऋषिकि टेकिण से आम्भंकु निन्दि कला।केमन्ते तोळिब धनु देखिबा थरे भला ३२१
एमन्त बिचार जे करन्ति राजागण। बिश्वामित्र बोइले जनक तुम्भे शुण २२
दशरथ कुमर श्रीराम लक्ष्मण। देखिबे धनुकु से बेग करि आण २३
जनक बोइले मो मनकु न आसइ। केमन्ते बिश्वामित्र कहुछ बळि आइ २४
तुम्भर बोल मुँ जे करिबइँ पुण। देखन्तु शरासन श्रीराम लक्ष्मण २५
शुणिण जनक जे सत्यानन्दकु राइ। अणाअ धनु बोलि जनक आज्ञा देइ २६
जहिँ से कोदण्ड अछइँ पूजा कला। से ठावरे जनक जे जाइँण मिळिला २७
नग्नरे अनेक जन रुण्ड होइ पुण। लक्षणबन्त पुरुषे आणन्ति धनु जाण २८
दश सहस्र बळवन्त ओटारि आणे पुण। चउद चक उपरे धनुर शयन २९
बाजे टमक निशाण मद्दर्दळ महुरी। गह गह शब्द शुभइ गोळ पुरि ३३०
हादुआ बादुआ जे भाट कएबार। आळम्ब पन्ति पन्ति गहळ चिराळ ३३१
धरि करिण से जे कार्मुक आणन्ति। देबे पुष्प बृष्टि कले नारी हुळ हुळि द्यन्ति ३२
देखिण आसिले जे सकळ नर नारि। बिञ्चणि चामर जे आलट करे धरि ३३
हस्ती, अश्व, पदाति जे बळ पटुआरि। प्रतिहारी सुनाबेत धरिण हस्तर ३४

कर विचार करने लगे कि यह दशरथ का पुत्र तो बारह वर्ष का है। ३२० ऋषि को चढाकर इसने हमारी निन्दा की है। हम एक बार देखे तो सही कि यह धनुष कैसे उठायेगा। ३२१ राजागण इस प्रकार का विचार करने लगे। तभी विश्वामित्र ने कहा हे जनक ! आप सुनिए। २२ दशरथ के पुत्र श्रीराम तथा लक्ष्मण धनुष का दर्शन करेगे। अतः उसे शीघ्र ही मँगवाइये। २३ जनक ने कहा कि मेरी समझ में नही आ रहा है कि विश्वामित्र इतने दावे के साथ कैसे कह रहे है। २४ आपकी आज्ञा का पालन मै अवश्य ही करूँगा। श्रीराम तथा लक्ष्मण धनुष का का दर्शन करे। २५ यह सुनकर जनक ने सतानन्द को बुलाकर उन्हे धनुष मँगवाने की आज्ञा दी। २६ जहाँ पर कोदण्ड था वहाँ पूजा की गई। वही पर जनक जा पहुँचे। २७ नगर में अनेक लोग एकत्रित हुए और लक्षणों से युक्त पुरुष धनुष को लाए। २८ चौदह पहियों की गाड़ी पर धनुष लिटाया रक्खा था जिसे दस हजार बलशाली व्यक्ति घसीट कर ले आए। २९ टमक निशान मादल तथा महुरी वाद्य बज रहे थे। प्रचण्ड कोलाहलपूर्ण उद्घोष सुनाई दे रहा था। ३३० हाट-बटोही दास-भाट आदि लम्बी-लम्बी पताकाएँ पंक्ति की पंक्ति मे लिए हुए धनुष को ला रहे थे। देवता पुष्पों की वर्षा कर रहे थे और महिलाएँ मागलिक ध्वनि कर रही थी। ३३१-३२ समस्त नर-नारी दर्शनार्थ आ गए। वह हाथो में चामर व्यजन तथा पंखे लिये हुए थे। ३३ हाथी घोड़े पैदल सिपाही तथा प्रतिहारी सुवर्ण के बेत हाथो में लिये महोत्सव के जुलूस में थे। ३४ स्वर्ण की मंजूषा मे धनुष रखा था। चारों

एक एक जणकु जे सरि नुहे केहि। बळ नथिलेकि कळिरे जिणि होइ ६
जनक बोइले शुण हे दाशरथि। गोळ रण करिवाकु ड़रइ मु जे एथि ७
धनु न धरि कन्या ने वारे सबुंकरि मन। मुहिँत पचारु अछि के एथे भाजन ८
श्रीराम बोइले शुण हे ऋषि तुम्भे। कउशिक ऋषि थिले भय़ जे नाहिँ एबे ९
राजा माने किस जे करिबे रण पुण। जाहार कोप कले डरन्ति देवगण ३१०
सुर, ब्रह्मा, हर जे जाहार बोले छन्ति।विचारिले वासुदेवंकु आणि से पारन्ति ३११
प्रथमे राजा पणरे पृथिबी साध्य कले। द्वितीय़े तप करि नव सृष्टि मिआइले १२
तप बले चाण्डाळकु देले स्वर्गपुर। नरमेध जागरे रखिले ऋषिर कुमर १३
मेनका नग्ररे पुणि श्रृंगार भाव कले। दुहिता जात हेवारु देबताए बिभा देले १४
ब्रह्मज्ञान साधिण होइले ब्रह्ममुनि। सप्त ऋषिरे गणिता होइलेक पुणि १५
राजा माने ताकु कि करिबे रहि। स्वर्ग, मञ्च पाताल क्षणेके पारे दहि १६
शुणिण जनक ऋषि तृपति होइले। नाराय़ण ए श्रीराम मने विचारिले १७
राजामाने बिचारन्ति आम्भे करिवा गोल। के धनु धरुछि धरु आम्भर आगर १८
एहा भाबि राजामाने मउन होइ रहि।पुणि विचारन्ति एबाळक केते बळ बहि १९

ही सब लोको को घेर रखा है। कुवेर अकेले ही सबको धन वितरित करते है। ५ एक-एक व्यक्ति की बराबरी का कोई नही हे। वल न रहने से क्या युद्ध मे विजय मिलती हैं। ६ जनक ने कहा हे दशरथनन्दन ! सुनो। कलह और युद्ध करने मे मै इसलिए डरता हूँ कि धनुप को विना उठाये ही कन्या को ले जाने का सबका मन है। मैं तो पूँछ रहा हूँ कि इसका पात्र कौन है। ७-८ श्रीराम ने कहा हे ऋषि ! आप सुनिये। विश्वामित्र ऋषि के रहते हुये अब कोई भय नही है। ९ राजा लोग क्या रण करेंगे। जिनके क्रोध से देवता लोग भी डरते है। ३१० सुर ब्रह्मा तथा शिव जिनके वश मे है। विचार करने पर वह विष्णु को भी ला सकते है। ३११ पूर्वकाल में राजत्वकाल में उन्होने पृथ्वी को जीत लिया था। दूसरे फिर तपस्या करके नवीन सृष्टि का निर्माण किया। १२ उन्होने तपस्या के वल से चाण्डाल को स्वर्ग प्रदान किया। नरमेध यज्ञ में उन्होने ऋपि कुमार की रक्षा की। १३ मेनका नागरी से जिन्होने रतिक्रीडा की। पुत्री उत्पन्न होने से देवता ने विवाह करा दिया। १४ ब्रह्म-ज्ञान की साधना करके वह ब्रह्मर्षि वन गए तथा उनकी गणना सप्तर्षियो में हो गई। १५ राजा लोग रहकर उनका क्या करेंगे ? वह एक क्षण में स्वर्ग, मृत्यु, तथा पाताल लोक को भस्म कर सकते है। १६ यह सुनकर महर्षि जनक तृप्त हो गए। यह श्रीराम नारायण है ऐसा उन्होने मन में विचार किया। १७ राजा लोग विचार करने लगे कि हम कलह करेंगे। धनुष को कौन उठाता है ? हमारे सामने उठाए। १८ यह सोचकर राजा लोग मौन रहे। फिर विचार करने लगे कि इस वालक में कितना वल है। १९ वह लोग झुण्ड-झुण्ड में बट

सभार तळे मञ्जुष आणिण उभाकले।न जाणिबा लोके कहन्ति एहु किस भले ३५१
के बोले ए मञ्जुष भितरे धनु अछि। एक आरकरे पुणि होन्ति पुछापुछि ५२
स्वर्गपुरे थाइण बोलन्ति देवगण। देखिबा श्रीरामर बीर सुर पण ५३
आज ठारु आम्भर मनरु धोका जिब। आजहुँ चौद बर्ष चारि रावण मरिब ५४
तेर वर्षरे बाळी बीर जिब दूत। बाइशि दिने पर्शुराम तेजिबे कोदण्डत ५५
एमन्ते देवगणे कुहाकुहि हेले। जाणिले वासुदेब महीरे जन्म हेले ५६
सभाजने निर्बेद होइण देखुछन्ति। एक आरेक जे कथा बार्त्ता न हुअन्ति ५७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। जगती उपरे सीता उर्मिळा बिजे करि ५८
दासींकि चाहिँण जे बोलन्ति जानकी। ए धनुकु देखि गो आत्मा मोर शंकि ५९
एगार थर नृपति देखिण भाजि गले। एबे किम्पा ए धनुकु सभाकु आणिले ३६०
मेरु समान धनुकु के पारिब तोळि। पर्शुराम जेउँ धनु न पाइले चाळि ३६१
सुर राजा भुमिरु न पारिले धरि। बिधाता शास्ति पाइ गला बारे फेरि ६२
दश दिगिपाल देखिण मोह गले। बिंश भुजे रावण जे तोळि न पारिले ६३
तोळि न पारिण राजा प्रजा घुञ्चि गले। लवण स्वयंबरे एमाने आसिथिले ६४
देखि करि असुरे नरहि पळाइले। नारकासुर जे बाणासुर छळे ६५

वहाँ आ पहुँचा। उसे देखकर बलवान लोग भयभीत हो गए। ३५० मंजूषा लाकर सभा में रख दी गई। अजाने लोग पूँछने लगे कि इसमें क्या है। ३५१ कोई कहता था कि इस मजूषा में धनुष है। फिर एक दूसरे आपस मे पूँछताँछ करने लगे। ५२ देवगण स्वर्ग में ही कहने लगे कि श्रीराम का शौर्य तथा वीरता देखेंगे। ५३ आज से हमारे मन का सन्देह मिट जाएगा। आज से चौदह वर्षो में चारों रावण का संहार हो जाएगा। ५४ तेरह वर्षो में पराक्रमी बलि का निधन होगा। बाइस दिनों में परशुराम धनुष का त्याग करेगे। ५५ इस प्रकार देवगण आपस में कहा सुनी करने लगे तथा उन्हे ज्ञात हो गया कि नारायण ने पृथ्वी पर जन्म ले लिया है। ५६ सभा के लोग एक दूसरे से वार्ता किये बिना स्तब्ध से चुपचाप देखने लगे। ५७ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् सीता और उर्मिला जगती के ऊपर विराजमान थी। ५८ दासियों की ओर देखकर जानकी ने कहा कि इस धनुष को देखकर मेरी आत्मा सशंकित हो रही है। ५९ इसे देखकर ग्यारह बार राजा लोग भाग गए। अब इस धनुष को सभा में किसलिए लाये है। ३६० जिस धनुष को परशुराम नही हिला सके उस मेरु के समान धनुष को कौन उठा सकेगा। ३६१ देवराज जिसे भूमि से नही उठा सके। ब्रह्माजी कष्ट पाकर एक बार लौट गए। ६२ जिसे देखकर दश दिगपाल मूर्छित हो गए और बीस भुजाओं से रावण भी जिसे नही उठा सका। ६३ न उठा पाने के कारण राजा तथा प्रजा सभी वापस चले गए। लवण स्वयंबर में यह लोग आए थे। ६४ नारकासुर तथा बाणासुर के बहाने

सुवर्ण मञ्जुषरे खञ्जिला अछि शङ्ख। श्वेत चामर जे मण्डिछि चउपाश ३५
रुणझुण रडि पुण घुंघुरर दोष। शब्द करुअछि जेसने जात घोष ३६
दर्पण झलकइ इन्द्र, चन्द्र कान्ति जिणि। चउपाशरे जे लम्बन्ति नाना मणि ३७
बज्र किळिणिरे त्रिशूल खञ्जा मुदि। पाट दउड़िरे जे जत्न करि छन्ति ३८
जम्बुनद सुवर्णर धण्टिमान लुळि। चाळन्ते तेजतार मर्कद मणि परि ३९
चालन्ते कार्मुक जे शबद बिजि घोष। धर धर शवदरे पुरइ आकाश ३४०
आगरे पडुअछि चतुः सम छेरा। देबांग पतनि मान पाडिण पाएड़ा ३४१
गोल शुभन्ते बिचार करन्ते नृपति। कि कारणे लोकमाने धुआँ धोइँ होन्ति ४२
जनक ऋषि बोले आसुछि कोदण्ड। भुमि चमकइ जे कम्पइ ब्रह्माण्ड ४३
न देखिला राजा ए जे होइले बेद। मुहिँ चुहाँ चुहिँ जे होइले समस्त ४४
के बोले जेउँ धनु जे ईश्वर बहइ। आन के जम हेब करे धरिबइँ ४५
एहि मही मण्डळे पर्शुराम बळि। सेहित शरासन नपारिले तोळि ४६
इन्द्र देबता जे नोहिले सामरथ। अग्नि, बरुण जे पबन नइरुत ४७
दश दिगपाल जे नोहिले समान। एका मात्र एका जे बहन्ति त्रिलोचन ४८
अकळ बळ धनु नामटि जाहार। बळबन्ते धरिबाकु क्षम जे काहार ४९
एसनेक समयरे मिळिला धनु आसि। बळबन्त लोकमाने भयकले देखि ३५०

ओर श्वेत चामर सजे हुए थे। ३५ घुंघरुओ का रुनझुन उद्घोष रथ-यात्रा के घोष के समान लग रहा था। ३६ इन्द्र तथा चन्द्र की कान्ति को जीतने वाले दर्पण झलमला रहे थे। चारो ओर नाना प्रकार की मणियाँ लटक रही थीं। ३७ वज्र की कीलो से जड़े त्रिशूल के छल्लो मे उसे रेशमी रस्सो से यत्नपूर्वक बाँधा गया था। ३८ उसमे सोने की घटियाँ झूल रही थी और चलने पर उनका तेज मरकतमणि के समान लगता था। ३९ धनुष के चलने पर घर्र-घर्र शब्द आकाश को आच्छादित कर रहा था। ३४० आगे-आगे झाड़ लगती चल रही थी और रेशमी वस्त्रो के पाँवड़े बिछाये जा रहे थे। ३४१ कोलाहल सुनाई देने से राजागण विचार करने लगे कि यह लोग किस कारण से दौडा दौडी कर रहे है। ४२ महर्षि जनक ने कहा कि पृथ्वी को चौंकाता हुआ और ब्रह्माण्ड को कंपित करता हुआ धनुष आ रहा है। ४३ जिन राजाओ ने उसे नही देखा था, उन्हे भी ज्ञात हो गया और समस्त एक दूसरे का मुख देखने लगे। ४४ कोई वोला कि जिस धनुष को शिवजी धारण करते है। उसे उठाने में अन्य कोई सक्षम कैसे हो सकता है। ४५ इस भूमण्डल मे परशुराम बली है, परन्तु वह भी तो धनुष नही उठा सके। ४६ इन्द्र देवता भी समर्थ नही हो सके। अग्नि, वरुण, पवन, नैऋत्य, दश दिगपाल भी असमर्थ रहे एकमात्र केवल त्रिनयन शकर ही इसे धारण करते रहे है। ४७-४८ जिस धनुष का नाम ही अकलित बल है उसे बल से उठाने में कौन समर्थ हो सकता है। ४९ इसी समय धनुष

शते वरषरे पाइले जे वर। सदाशिवंकु बिभा होइले शुभ बेळ ८२
बिभा होइण गउरी अनेक भोग कले। आरतरे कार्ज्य जे नुहइ पुण भले ८३
देबे जे दानबे मन्थिले सिन्धु जल। सेथिरु जात हेला पदार्थ सकल ८४
बिष्णुंकर भागरे मिळिला कमळिणी। काळकुट बिष जे खाइले शूळपाणी ८५
देवताए नेइण अमृत भोग कले। सुरा मदिरा जे असुर पुण नेले ८६
दैत्य होइ राहु जे खाइला अमृत। जाहाकु जेउँ जोग हुअइ परापत ८७
शचीपति पवनकु काटिले बिकोति। एकइ शरीर कले अणचाश मूर्ति ८८
बेनि खण्ड हेले प्राणी नपान्ति जीवन। जोगे अणचाश रूप धरिले पवन ८९
सबु देबतारु से होइले महाबळी। जन्तुंकर ठाकुर जे प्राणरु उगुलि ३९०
दक्ष प्रजापतिक सताइश दोहिता। रोहिणी चन्द्रकु बिभा करि देइ पिता ३९१
पुणि से बिभा हेले छबिश नन्दिनी। सताइश कन्यांकर चन्द्रकान्त पुणि ९२
एक माता ठारु जात सताइश दोहिता। एथिरे बड़ सान अछन्ति गो सीता ९३
सुभाग्यवती सेथिरे अटइ रोहिणी। दुर्भाग्यबन्त हेले छबिश भउणी ९४
आज सभा शोभावन सुन्दर दिशुअछि। ऋषिक मुख जेन्हे कमळ बिकाशुछि ९५
बदन लम्बाइ बसिछन्ति राजामाने। अवश्य स्वामीकि तु लभिबु अल्पदिने ९६

ने हिमालय के घर जन्म लिया। उन्होने अपने शरीर को कष्ट देकर बहुत तपस्या की। ३८१ सौ वर्षो पर उन्हें वर प्राप्त हुआ और शुभ समय मे उनका विवाह शंकर जी से हुआ। ८२ विवाह करके पार्वती ने अनेक भोग भोगे। दुखी होने से कार्य ठीक नही होता। ८३ देवताओ और दानवो ने समुद्र के जल का मन्थन किया उससे सारे पदार्थ उत्पन्न हुये। ८४ विष्णु के भाग्य मे कमलिनी प्राप्त हुई और त्रिशूलधारी शंकर को विष पान करना पड़ा। ८५ देवताओ ने अमृत लेकर उसका उपभोग किया। राक्षसों ने सुरा मदिरा ले ली। ८६ दैत्य होकर राहु ने अमृतपान किया। जिसके भाग्य मे जो होता है। वह उसे प्राप्त होता है। ८७ शचीपति इन्द्र ने पवन को विकृत करके काट दिया। एक शरीर के उनचास टुकड़े कर दिये। ८८ दो टुकड़े होकर प्राणी जीवित नही रह पाते। इस पर भी पवन ने उनचास रूप धारण किये। ८९ वह सभी देवताओं से महान पराक्रमी बने। वह प्राणियों के मालिक तथा प्राण को रखने वाले हैं। ३९० दक्ष प्रजापति के सत्ताइस कन्यायें थी। पिता ने रोहणी का विवाह चन्द्रमा से कर दिया। ३९१ फिर उन्होंने छब्बीस कन्याओं से विवाह किया। इस प्रकार चन्द्रदेव सत्ताइस कन्याओं के स्वामी बने। ९२ एक माता से ही सत्ताइस कन्याये उत्पन्न हुयी। हे सीते ! उसमें बड़ी और छोटी भी थी। ९३ परन्तु रोहणी उनमें सौभाग्यवती थी और छब्बीस बहने मदभाग्य वाली हुयी। ९४ आज सभा सुन्दर सुहावनी दिख रही है। ऋषियों के मुख कमल के समान प्रफुल्लित है। ९५ राजा लोग अपने मुख को लटका कर बैठे है।

तोळि न पारिण जे बाहुडिण गले । समस्ते लज्जा पाइ पळाइण गले ६६
बार बरष मोते षडमास ऊणा । एगार बरष हेला धनु जाग किना ६७
पिता मोर सत्य जे कलेक न जाणि । तेणु मोर दुःख सिना हेला संगातुणि ६८
केते बेळे मोहर जे कष्ट जिब पर । भो धर्म देवता मोते प्रतिकार कर ६९
दासी गणे जानकी कि तिआरि कहन्ति। किहेतु आकुल गो जनक दोहिता ३७०
सर्बदा काळे पुणि कार्ज्य नुहे हानि ।शुभ काळर कार्ज्य उर्मिळा सिना जाणि ३७१
जेहु पद्म जोनि सेहि से पितामह । सेहि पितामह गढ़ि नाशिला सिना देह ७२
जेसन जशमान अर्जिलार बिधाता । सेहि पितामह अटे परम देबता ७३
से जाहा कल्पिअछि मनरे जे धरि । जे धनु ताकु देबइ कुमारी ७४
से धर्म अटइ जे पुण महाज्ञाता । ताहार बोलनिकि होइब अन्यथा ७५
न जाणिण सत्य कि करिछन्ति ऋषि । महा संशयरे पडि हेउछन्ति ध्वंसि ७६
तुम्भे जे बोइल अनेक काळ गला । केहि ए धनुकु तोळिण न पारिला ७७
तुम्भ सगे जनम बाळुत भावे छन्ति । बिभा नोहि दाण्डरे हाटरे बुलन्ति ७८
तुम्भे मैथिळि गो जन्मरु नवजुबा । नबजुबा पुरुष तुम्भकु सिना शोभा ७९
जेते बेळे जाहाकु थाइ जेउँ जोग । काळ बेळ जाणिण करन्ति सेहि भोग ३८०
गउरी हेमवन्ती घरे जन मिले । देह पिञ्जारिण अनेक तप कले ३८१

देखकर राक्षस वहाँ न रुककर भाग गए । ६५ उठा न पाने के कारण वह लौट गए तथा सभी लज्जित होकर भाग गए । ६६ मै छः माह कम बारह वर्ष की हो गई । इस धनुष यज्ञ को ग्यारह वर्ष हो रहे है । ६७ बिना समझे मेरे पिता ने प्रतिज्ञा कर ली है । हे सखी ! इसी कारण से मुझे कष्ट हुआ है । ६८ मेरा कष्ट कब तक दूर होगा । हे धर्मदेव ! मेरी सहायता कीजिये । ६९ दासियाँ जानकी को समझाते हुए बोली, हे जनक नन्दिनी ! आप किसलिये आर्त हो रही हो । ३७० हर समय कार्य नष्ट नही हुआ करता । उर्मिला को इस समय का शुभकार्य ज्ञात था । ३७१ जो पद्मयोनि है वह ही पितामह है और उसी ने शरीर को गढकर नष्ट किया था । ७२ वह पितामह परम देवता हैं। उसने महान यश प्राप्त किया है । ७३ उसने मन मे रखकर जो कल्पना की है, कुमारी उसी को प्रदान होगी । ७४ वह धर्म का महान ज्ञाता है । क्या उसका कथन मिथ्या हो सकता है ? । ७५ क्या ऋषि ने बिना समझे ही प्रतिज्ञा की है ? जो इस महान संशय मे पडकर ध्वस हो रही हो । ७६ आपने जो कहा कि बहुत समय बीत गया है और कोई भी इस धनुष को उठा नही सका । ७७ आपके साथ जन्मे बालक बाल्यक्रीड़ा मे रत है । उनके विवाह नही हुए है वह हाट बाट मे घूमा करते है । ७८ हे मैथिली ! आप जन्म से ही युवा हो गईं अस्तु नवयुवक पुरुष ही आपको शोभा देता है । ७९ जिस समय जिसका जो योग होता है । काल क्रमानुसार उसे वही भोग प्राप्त होता है । ३८० गौरी

जेहुटि चक्रपाणि सेहुटि देब हरि । जे अटे नारायण से जगत अधिकारी ४११
जहुँ जगत से अधिकार करन्ति । जगतर स्वामी बोलि ताहांकु कहन्ति १२
जगतर स्वामींकि देखिले मोह होइ । से पुरुष सबु ठारे पूजा विधि पाइ १३
से पुरुष मानंकु गो बोलन्ति करता । से पुरुष तोर कान्त मनरे हुअ चेता १४
कमला बोले जेते लक्षण कहिलु मोहरे । सेते लक्षणे पुरुष काहान्ति एठारे १५
मन माय़ा बोले तो स्वामी कौशिक पाशे बसि ।
चाहँ तुम्भे ठाकुराणी शरदर शशी १६
तुम्भ दुइ भउणींकि से दुइ भाइ बर अटन्ति ।
सभार लोके निरेखि चाहुँण अछन्ति १७
अपूर्ब पदार्थरे सबुंकरि श्रद्धा होइ । तेणुटि एक दृष्टि करिण सर्बे चाहि १८
एकान्त देखि सखिरे प्रसन्न मोर मन ।तेणु जणागला तुम्भ स्वा मीबोलि पुण १९
तुम्भे मात ठाकुराणी नुहसि आरत । निश्चय़ तुम्भंकु बर गो हेला परापत ४२०
मनमाय़ा ठारु एसनेक बाणी शुणि । हस हस होइण जुबती शिरोमणि ४२१
मृदु मृदु हसिण बचन प्रकाशन्ति । अल्प बय़स दुइ भाइ जे दिशन्ति २२
उर्मिळाकु पचारिले शुणगो कनिष्ठ । मनमाय़ा कहिबा कथा अटे टिकि सत २३
उर्मिळा बोले ठाकुराणी एकथा नुहँ आन ।
तिनि दिन ठारु सखि जणा गलाणि पुण २४

दी। ४१० जो चक्रपाणि है, वही देव नारायण हैं और जो नारायण है, वह संसार का स्वामी है। ४११ जब संसार पर उनका अधिकार हो जाता है, तब उन्हे जगत का नाथ कहा जाता है। १२ जगत के स्वामी को देखने पर मोह हो जाता है। वह पुरुष सबके द्वारा पूजा जाता है। १३ उन पुरुषों को कर्त्ता कहा जाता है। वह पुरुष तुम्हारा पति है। ऐसा अपने मन में जान लो। १४ कमला ने कहा कि जितने लक्षण तूने मुझसे कहे उतने लक्षण वाला पुरुष यहाँ कहाँ है। १५ मनमाया ने कहा कि तेरे स्वामी विश्वामित्र के पास बैठे है। हे शरदचन्द्र के समान स्वामिनी ! आप उसे देखिये। १६ वह दोनों भाई आप दोनो बहनो के वर है। सभा के लोग उन्हे देख रहे है। १७ अपूर्व पदार्थ पर सबका प्रेम हो जाता है। इसी कारण से सभी टकटकी लगाकर देख रहे है। १८ अरी सखी ! ये कान्त देखकर मेरा मन प्रसन्न है। इसलिये ज्ञात हुआ कि यह आपके स्वामी है। १९ हे माता ! तुम स्वामिनी हो। दुखी मत हो निश्चय ही आपको वर प्राप्त हो गया है। ४२० मनमाया से ऐसे वचनों को सुनकर युवती शिरोमणि हँसने लगी। ४२१ फिर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुये बोली कि यह दोनो भाई अल्प आयु वाले दिखाई देते है। २२ उन्होने उर्मिला से पूँछा हे छोटी बहन ! सुन। क्या मनमाया का कहना सच है। २३ उर्मिला ने कहा हे स्वामिनी ! यह बात मिथ्या नही है। तीन दिनों से हे सखि ! यह पता चल

जे तोहर बर गो देख चन्द्रमुखि । बिश्वामित्रंक पाखरे अछन्ति से बसि ९७
दिअर तुम्भर गो तार पाशरे अछइ । तुम्भ सान भग्नी उर्मिला बर सेहि ९८
गुरस्त शामळ वर्ण देखगो मृगाक्षी । अल्प बयस तांकु अटन्ति जुबा सेहिटि ९९
तुम्भ दुइ भग्नीकि से दुइ भाइ बर ।तुम्भे श्वेत शामळ से शामळ गोरा सार ४००
एहि वर तुम्भंकु गो प्रापत होइब । मो कथा मिछ हेले पचार भग्नीकि सदभाव ४०१
ए कथा शुणि हसि जे वोलन्ति मइथिलि ।

किम्पाइ सखी मोते गो करुछ ढमाळि २
जे अबा धनु गो आमञ्चि पारिबे । ताहांकु पिअर मोर मो पाइँ बरिबे ३
केमन्ते आगरु गो जाणिला प्राय़ कहु । निकटे स्वामी मोते देला प्राय़ कहु ४
ए कथा शुणिण बोइले मनमाय़ा । तुम्भर भग्नी ठारु शुणिलि गो सीतय़ा ५
जेतेक नृपति गो अछन्ति सभारे । धनु धरिबाकु शकता नाहान्ति एठारे ६
तपिगण माने जे अटन्ति पितामह । पवित्र अंग तोर केमन्ते छुइँबे कह ७
तुम्भे कमला अट तुम्भ पाइँ नाराय़ण जात । राजकुले जात जे हेलेणि अच्युत ८
अजोनि सम्भुत तुम्भे दुइ गो भउणी । सर्बज्ञ अटन्ति तुम्भ कनिष्ठ भगिनी ९
करकु चाहिँण जेबग कथा भाषि । आगत कथा तुम्भ आगरे प्रकाशि ४१०

थोडे दिन मे तुम अवश्य स्वामी को प्राप्त करोगी । ९६ हे चन्द्रमुखी ! देखो । जो विश्वामित्र के निकट बैठे है । वह ही तुम्हारे वर है । ९७ आपके देवर उन्ही के पास है । जो आपकी छोटी वहिन उर्मिला के पति है । ९८ हे मृगनयनी ! उनके सुन्दर श्यामल वर्ण को देखो । वह अल्प अवस्था मे ही युवा हो गए है । ९९ आप दोनो बहनो के लिये वह दोनो भाई वर है । आप श्वेत और वह श्यामल श्यामता और गोराई के सारभूत है । ४०० आपको यह वर प्राप्त होगे । यदि आपको मेरी वात पर विश्वास न हो तो आप अपनी बहन से सद्भावना के पूँछ लीजिये । ४०१ यह वात सुनकर जानकी ने हँसते हुये कहा हे सखी ! हमसे मसखरी किसलिये कर रही हो । २ जो कोई धनुष को उठा पायेगा । उसी को मेरे पिता मेरे लिये वरण करेंगे । यह सब पहले से ही जानी हुयी वातों की तरह कैसे कह रही हो जैसे स्वामी पास मे ही है और तुम मुझे दे दोगी । ३-४ यह बात सुनकर मनमाया ने कहा हे सीते ! यह मैने तुम्हारी बहन से सुना है । ५ सभा मे जितने भी राजागण है । वह धनुष धारण करने मे यहाँ समर्थ नही है । ६ जो पितामह के समान तपस्वीगण हैं । वह तुम्हारे पवित्र अग को कैसे छुयेगे । ७ तुम लक्ष्मी हो और तुम्हारे लिये नारायण उत्पन्न हुये हैं । वह अच्युत राजकुल मे उत्पन्न हुये है । ८ आप दोनों वहन अयोनि सम्भूता हो । आपकी छोटी वहन सर्वज्ञ है । ९ हाथ को देखकर जो बात उसने कही । वही भविष्य की वाते मैने आपके समक्ष प्रकाशित कर

सान बोलिकरि जे कहिल तुम्भेत। सान वेळे हुअइ गो एमन्त कृत्य ३९
जनकर दुहिता जे शुणिण तोष हेले। गौरींक आगरे जे ईशान कहिले ४४०
एथु अनन्तरे जे जनक महाऋषि। धनु जात्रा सभा तळे प्रबेश हेले आसि ४४१
राजामानंकु कहिले तुम्भे एबे शुण। आज बुझिबा जे तुम्भर बळमान ४२
एहि राजमाने तुम्भे एगार बरष। बरषके थरे धनु सात्रा देखु अछ ४३
कौणसि बेळे तुम्भे नोहिल समर्थ। धनु न तोळि तुम्भे जे कळह कर जात ४४
के अछ समर्थ तुम्भे बहन होइ आस। धनु तोळिले प्राकर्म जाणिबि बिशेष ४५
एते बोलि डाक देले जनक ऋषि राए। सम केशरी बोलिण मळय देश राए ४६
बोइले शिब धनुरे बल अछि केते।देखिले जाणिबा ना शुणिळे नाहिँ प्रते ४७
जनक बोइले सबु करिलेक जाणि। धनुर पाशे जाइ कस हे सर्ब पुणि ४८
केते बळ हेव केते भारी पुण।तोळिले तुम्भे सिना जाणिव राजागण ४९
जम्बुनद सुनारे गढ़न्ति अळंकार।ब्रह्म जाति हीरा संगे करन्ति ताकु मेल ४५०
तेबे सिना रत्न तुम्भे हेव आभरण। जनकर कथा जे शुणिले राजागण ४५१
लोकनाथ नृपतिकर अटन्ति तनय। गोविन्द केशरी बोलि तांक नाम होए ५२
से राजा बोइले जे जनक मुख चाहिँ। मञ्जुषर कबाट फेड़ एबे तुहि ५३

दिया। ३८ आपने जिसे छोटा कहा है तो छोटे समय में ही ऐसे-ऐसे कार्य होते है। ३९ जनक नन्दिनी यह सुनकर सतुष्ट हो गईं तब शंकर जी ने पार्वती से कहा कि इसके पश्चात् महर्षि जनक ने धनुष यज्ञ सभा स्थल में आकर प्रवेश किया। ४४०-४४१ उन्होंने कहा हे राजागण ! आप लोग सुनें। आज आपके बल पराक्रम को समझ लेगे। ४२ हे राजा लोग ! आप सब ग्यारह वर्ष से वर्ष में एक बार धनुष महोत्सव देखते आ रहे हो। ४३ परन्तु किसी भी समय आप लोग समर्थ नही हुये। धनुष न उठाकर आप लोग कलह उत्पन्न कर देते हो। ४४ आप मे से कौन समर्थ है, शीघ्र ही वह यहाँ आये। धनुष उठा लेने पर उसके पराक्रम का पता लग जायेगा। ४५ इतना कहकर ऋषिराज जनक ने आवाज लगायी। समकेशरी नामक मलय देश के राजा ने कहा। शिव धनुष में कितना बल है। देखने से पता चलेगा। सुनने से विश्वास नहीं होता है। ४६-४७ जनक ने कहा सब जानकारी कर लीजिये धनुष के निकट जाकर सब उसे कर्षित करो। ४८ वह कितना वलशाली है और कितना भारी है। हे राजागण ! उसे उठाने से आप लोगों को पता चल जायेगा। ४९ जम्बूनद स्वर्ण से अलंकार गढ़े जाते है। उनमें ब्रह्म जाति के हीरे लगाये जाते है। ४५० तव वह रत्न तुम्हारा आभरण वनता है। जनक की यह वात समस्त राजाओं ने सुनी। ४५१ महाराज लोकनाथ के पुत्र जिनका नाम गोविन्द केशरी था। ५२ उन्होने जनक के मुख की ओर ताक कर कहा कि अब तुम मंजूषा का पल्ला खोलो। ५३ पहले धनुष

जाहार चरण लागि पाषाण हेला स्तिरी ।बार बरष काळु सेहु जाग रक्षा करि २५
जानकी बोइले महाबळी राजाए भागिले। बग्नसे सान ए धनु तोळिबे कि भले २६
जेउँ धनु अटइ पर्बत प्राये पुण । से धनु तोलिबे एहांकर काहिँ ज्ञान २७
मो मनकु सखिरे एमन्त न जोगाइ । शुणिकरि मनमाया बचन प्रकाशइ २८
मीनरूप जेते बेळे धइले देवहरि । क्षुद्र रूप धरिण शंखासुरकु मारि २९
बेद मन्त्र आणिण ब्रह्मार हस्ते देले । सान होइण से पुण एमन्त कर्म कले ४३०
सागर मन्थिले सुर असुर सर्बजन । तेते बेळे बासुदेव होइथिले सान ४३१
कमठ रूपधरि गिरि तळरे रहि । तेणु मन्दर धरिण सागर मन्थिलइँ ३२
सान रूप होइ जे गिरिकि सम्भाळिले । से काळरे समस्त पदार्थ उपुजिले ३३
वासुकी भारा पाइण तेजिले पुण सहि । बराह मूर्त्ति हेले धरणीकि धरिबा पाइँ ३४
सान रूपरे सेहि गो धरणी धरिले । कश्यप रूप धरिण बासुकी शिरे देले ३५
प्रह्लाद छळरे नृसिंह अबतार । जन्म होइ मारिले हिरण्य असुर ३६
जन्म हेला पिलाकि नुहइ पुण सान ।सान होइ बामन जे मागिले भुमि दान ३७
बळिकि दान मागिण तिनि पुर नेले । बलि दैत्यकु नेइण पाताळे रखिले ३८

रहा है । २४ जिसके चरणो के स्पर्श से पाषाण स्त्री हो गयी । बारह वर्ष की अवस्था मे जिन्होने यज्ञ की रक्षा की । २५ जानकी ने कहा कि महाबली राजा लोग भाग गये । फिर यह आयु मे छोटे धनुष कैसे उठायेंगे । २६ जो धनुष पर्वत के समान है वह धनुष यह उठायेंगे । इनका ज्ञान कहाँ गया । २७ हे सखि ! मेरे मन मे ऐसा जँच नही रहा । यह सुनकर मनमाया बोली । २८ जिस समय वासुदेव ने मछली का रूप धारण किया । तब क्षुद्ररूप धारण करके शखासुर का विनाश किया । २९ उन्होने वेदमन्त्रो को लाकर ब्रह्मा के हाथो मे सर्मपित किया । छोटे होते हुये उन्होने ऐसे-ऐमे कार्य किये । ४३० देवता दानव आदि सबने मिलकर समुद्र मन्थन किया । उस समय भी वासुदेव छोटे बन गये थे । ४३१ कछुए का रूप धारण करके वह पर्वत के नीचे रहे । इससे मन्दराचल को पकड़कर सागर का मन्थन किया गया । ३२ क्षुद्ररूप होकर जिसने पर्वत को साधा । उस समय समस्त पदार्थ उत्पन्न हुये । ३३ वासुकी नाग को भार पड जाने के कारण वह कार्य रुक गया फिर उन्होने पृथ्वी को पकड़ने के लिये वाराह रूप धारण किया । ३४ छोटे रूप में ही उन्होने पृथ्वी को धारण किया और कश्यप का रूप धारण करके उसके वासुकी के सिर पर स्थापित कर दिया । ३५ प्रह्लाद के बहाने नृसिह अवतार धारण करके हिरण्यासुर का विनाश किया । ३६ जन्म धारण किया हुआ बालक फिर छोटा नही रहता । छोटे होकर ही बामन ने भूमिदान की याचना की थी । ३७ उन्होने बलि से दान में तीनो लोक माँग लिये और बलि दैत्य को लेकर पाताल में रख

द्विजबर चण्डाल पथुकी जने शुण । जे तोळिब धनु से कन्याकु नेब जाण ४७०
हाटुआ बाटुआ प्रजाजन माने । रथि पदाति जे सरदार गणे ४७१
धनु जे तोळिब मिळ एथि आसि । पछन्ते मोहर जे दोष नाहिँ किछि ७२
शुणिण केहि नगले न कहिले किछि केहि। धनुकु भय कले सर्बजने चाहिँ ७३
जनक बोइले तुम्भे सकळ लोक शुण । धनु धरि के पारिब से माने आस पुण ७४
धनु धरिले दुहिता निश्चय बिभा देबि ।
राजा प्रजा जे धरिब मोहर चित्ते भावि ७५
सत्य सत्य सत्य त्रिबार मुँ न करइ आन । शुणिण स्तम्भीभूत हेले सकळ जन ७६
एहा शुणि समस्या न देले पुण केहि । निशबद होइण अछन्ति सर्बे रहि ७७
क्षणे निर्बत्ति होइण रहिले ऋषिगण । धनु धरिबाकु केहि नोहिले भाजन ७८
बाहुड़ाइ नेलि धनु समस्ते तुम्भे शुण ।बिश्वामित्र मुनि बोइले धनु तुम्भे आण ७९
श्रीराम लक्ष्मण देखिबाकु कढ़ाइ आणिलु । एबे सर्बंकरि बळ प्राकर्म देखिलु ४८०
जनक बचने बिश्वामित्र कहिलेण । किम्पाइँ बिमुख जे जनक हेल पुण ४८१
जाहा से सत्य करि अछन्ति पूर्बरु पुणि । काळ आग पछकु आम्भे थिबु जाणि ८२
जेबण काळे प्रापत हेब जेउँ जोग । कर्मर अनुसारे बिधाता दिए भोग ८३
तुह तु आकुळ जे बुझिण कार्ज्य कर । बड़ बड़ प्रतापी जे अछन्ति नृपबर ८४

आए तब उच्चस्वर से महर्षि जनक ने पुनः कहा । ६९ श्रेष्ठ ब्राह्मण, चाण्डाल, तथा पथिक जन ! सुनो । जो कोई धनुष को उठाएगा वह कन्या को प्राप्त करेगा । ४७० हाट बटोही प्रजाजन रथी पैदल सिपाही तथा सरदारगण सभी लोग सुने । ४७१ जो कोई धनुष उठाना चाहे वह इधर आ जाए । पीछे मेरा कुछ भी दोष नही होगा । ७२ यह सुनकर न तो किसी ने कुछ कहा और न ही कोई गया । सभी लोग धनुष को देखकर भयभीत हो गए । ७३ जनक ने कहा आप सभी लोग सुनिए । धनुष को कौन उठाएगा वह इधर आ जाए । ७४ धनुष उठाने पर मै कन्या से उसका विवाह निश्चय ही कर दूँगा । मेरे चित्त की इच्छा को पूर्ण करने वाला भले ही राजा हो या प्रजा । ७५ मै तीन बार वचन देता हूँ । यह अन्यथा नही होगा । यह सुनकर सभी लोग स्तम्भित हो गए । ७६ ऐसा सुनकर भी किसी ने समाधान नही किया । सभी लोग मौन बैठे रहे । ७७ एक क्षण शान्त होकर ऋषिगण बैठे रहे । धनुष उठाने का भाजन कोई भी नही बना । ७८ आप सब लोग सुनिये मै इस धनुष को लौटाये दे रहा हूँ । तब मुनि विश्वामित्र ने कहा कि आप धनुष मँगवाइये । मैंने श्रीराम लक्ष्मण के देखने के लिये उसे निकलवाया है । इस समय सबका बल और पराक्रम हम देख चुके । ७९-४८० जनक के कहने पर विश्वामित्र ने कहा हे जनक ! आप विमुख क्यो हो रहे है । ४८१ जो आपने पहले प्रतिज्ञा की है । वह समय के आगे पीछे हमें ज्ञात हुई है । ८२ जिस समय जो योग प्राप्त होगा ।

देखिबाक धनु जे जाणिबा केते बल । एमन्त बोइले जे नृपति सकळ ५४
शुणिण जनक ऋषि फेड़िले कवाट । देखन्ति लोकमाने होइण उच्चाट ५५
बाघ जे सने जन्ता भितरे गर्ज्जइ । छेळिकि देखिले जेन्हे पलासि आसइ ५६
शरासनकु देखि तेसने राजामाने त्रासि।आबर राजामानंकु चाहिँण महाऋषि ५७
बोइले तुम्भे जेबे नृपतिगण पार । बळबन्त होइले आगकु बाहार ५८
धनुकु देखिण कि हेउछ हतबीर्ज्य । शुणिण नृपतिगणे होइलेक सज ५९
सभारु उठि नृपति प्रबेश जाइँ हेले । देखिकरि राजामाने फेरिण अइले ४६०
पुण से मेळ होइण समस्त उठि गले । मञ्जुष भितरकु समस्ते अनाइले ४६१
श्वेत नाग जेसने पेडिरे शोइ थाइ । लाञ्जर कतिरे पाइ मूषा जेन्हे चाहिँ ६२
सेहि रूपे भय पान्ति नृपति सकळ । पछ घुञ्चा देइण गले जे महीपाळ ६३
सभारे बसिण जे बोलन्ति नृपराशि । ए धनुकु आम्भे न पारिबु जे आर्कषि ६४
जे पारिब तोळि से कन्याकु बिभा हेउ । एते बोलि सभारे बसिले नृपराहु ६५
जनक बोइले जे ऋषिगणे शुण । जेहु धनु धरिब उठ हे बहन ६६
शुणिण ऋषिगण प्रबेश होइले । मञ्जुष भितरकु जाइण देखिले ६७
बिचारिले ईश्वर बिजय करिछन्ति । फेरिण आसिले जे सकळ महा ऋषि ६८
ऋषिगण जेणु जे फेरिण आसिले । जनक ऋषिपुण उच्चरे डाक देले ६९

को देखेंगे तब जानेंगे कि कितना बल है। समस्त राजाओ ने इस प्रकार कहा। ५४ यह सुनकर महर्षि जनक ने पल्ला खोल दिया। लोग उद्वेग से देखने लगे। ५५ जैसे बाघ कटघरे के भीतर गर्जन करता है और बकरी को देखकर निष्ठुर होकर आ जाता है। ५६ धनुष को देखकर उसी प्रकार राजा लोग भयभीत हो गए। तभी महर्षि ने राजाओ की ओर देखते हुए कहा हे राजाओ ! यदि तुम इसे उठा सको और बलवान हो तो आगे आओ। ५७-५८ धनुष को देखकर हतवीर्य क्यो हो रहे हो ? यह सुनकर राजा लोग तैयार हुए। ५९ सभा से उठकर राजा लोग वहाँ जा पहुँचे और धनुप को देखकर लौट आए। ४६० फिर वह सब इकट्ठे होकर उठे और सब लोग मंजूषा के भीतर देखने लगे। ४६१ जैसे कुण्डली मारकर श्वेत नाग मजूषा मे पड़ा रहता है और चूहा पूँछ के पास से उसे देखता है। ६२ सारे राजा उसी प्रकार से भय कर रहे थे। फिर राजागण पीछे हटकर चले गए। ६३ वह राजा लोग सभा में बैठकर कहने लगे कि इस धनुष को हम लोग आर्कषित न कर पाएँगे। ६४ जो कोई इसे उठा सके वह कन्या से विवाह करे। वह राहु के समान राजागण इस प्रकार कहकर सभा मे बैठ गए। ६५ जनक ने कहा हे ऋषिगण सुनिये। जो कोई धनुष उठाना चाहे वह शीघ्र ही उठे। ६६ यह सुनकर ऋषिगण प्रविष्ट हुए और उन्होने जाकर मजूषा के भीतर देखा। ६७ उन्होने सोचा कि यह शिवजी विराजमान है। फिर समस्त महर्षि लौट पड़े। ६८ जब ऋषिगण वापस लौट

जनक ऋषि बोइले जे गोळ करिब। ताहार दोषरु सेहु सिना नाश जिब ९९
एथिरे मोहर दोष नाहिँ बिश्वामित्र। एगार थर गोळ कलेणि राजा जुथ ५००
ए ईश्वरंकर धनु पर्शुराम बळे। बार बरष मुँ जे बर्त्तिलि कुशळे ५०१
एबे तुम्भे गोळ कले मोर दोष नाहिँ। निर्बल लोक किम्पा गोळरे हेबे ग्राहि २
शुणिण बिश्वामित्र बोइले तुम्भे शुण। देखन्तु धनु तुम्भर श्रीराम लक्ष्मण ३
ए जेबे नपारिबे करिवा आम्भे किस। भुञ्जिब ना सीतया कर्मर भबिश्य ४
शरासन फेराइण नेबाकु तुम्भ मन। श्रीराम लक्ष्मण धनु देखन्तु थरे पुण ५
ए दुहेँ देखिबारु फेराइ तुम्भे निअ। श्रद्धा करि अछन्ति जे दशरथ पुअ ६
बिश्वामित्रंक ठारु एसन बाणी शुणि। जनक बोइले से देखन्तु आसि पुणि ७
बिश्वामित्र बोइले त्रिबार सत्य कर। जे तोलिब ए धनुकु ए कन्या हेब तार ८
जनक बोइले मुँ त्रिबार सत्य कळि। जे धनु तोळिब ताकु दोहिता देबि बोलि ९
आहुरि कथाए तुम्भे शुण तपोधन।
लक्षे राजा जे जिणिब सान दुहिता नेब पुण ५१०
चाहिँले बिश्वामित्र श्रीराम लक्ष्मण बेनि।
लाज लाज होइण उठिले रघुमणि ५११
कउशिकंक पद्मरे कलेक नमस्कार। लक्ष्मणंकु संगे घेनि श्रीराम आगुं सार १२

करने पर वह सबको मार गिरायेगे। महर्षि जनक ने कहा जो झगडा करेगा वह अपने दोष से नष्ट होगा। ९८-९९ हे विश्वामित्र ! इसमें मेरा दोष नही होगा। इन राजागणो ने ग्यारह बार उत्पात मचाया है। ५०० परशुराम के वल से इस शिवधनुष को मैने ग्यारह वर्ष तक सकुशल रखा है। ५०१ अब तुम्हारे उत्पात मचाने से मेरा दोप नही होगा। निर्बल लोग इस उत्पात में कैसे सम्मिलित होगे। २ यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा कि आप सुनिये। श्रीराम तथा लक्ष्मण धनुष का दर्शन करे। ३ यदि यह नही समर्थ होंगे तो हम क्या कर सकते है। सीता अपने कर्मो का फल भोगेगी। ४ तुम्हारा मन धनुष को लौटा देने का है। एक बार श्रीराम और लक्ष्मण को धनुष देखने दो। ५ इन दोनों के देख लेने पर तुम धनुष लौटा देना। दशरथ नन्दन को उसे देखने की इच्छा है। ६ विश्वामित्र की ऐसी वाणी सुनकर जनक ने कहा कि फिर वह लोग आकर देखे। ७ विश्वामित्र ने कहा कि आप तीन बार प्रतिज्ञा करे कि जो धनुष उठायेगा यह कन्या उसी को देगे। ८ जनक बोले मैने त्रिवाचा हारी। जो धनुष उठायेगा। उसी को कन्या प्रदान करूँगा। ९ हे तपोधन ! और भी एक बात आप सुनिये कि यदि छोटा बालक एक लाख राजाओ को जीतेगा तो उसे कन्या प्राप्त होगी। ५१० विश्वामित्र ने श्रीराम और लक्ष्मण दोनो को देखा। लजाते हुये रघुकुल मे मणि के समान श्रीराम उठे। ५११ उन्होंने विश्वामित्र के चरणो में नमस्कार किया। फिर वह लक्ष्मण को साथ लेकर आगे

एहि राजामाने जे स्वयंबरे जाइ थिले ।
मञ्जारी लाख बिन्धिवाकु क्षम जे नोहिले ८५
काळे से लाखकु बिन्धिले दशरथ। देखिकरि राजागण कलेक अनर्थ ८६
अनर्थ देखिण जे तपन कुळ राए। धनु धरि समर कलेक सेठारे ८७
चाळिश सहस्र राजांकु पकाइले हाणि। आउ राजामाने जे पळाइले पुणि ८८
पर्शुराम शत्रु सहस्राज्र्जुन आसिला ।मृग मारि आसि जमदग्नि मठरे मिळिला ८९
चरचा पाइ राजा पाइला मुख जेणु । सुरभिकि मागिला न देला ऋषि तेणु ४९०
अधर्मरे ऋषिक मारिण राजा नेला । तेणुटि पर्शुराम ता संगे कळि कला ४९१
जाणिण सहस्राज्र्जुन मनरे बिचारि । चाळिश सहस्र राजा आणिलाक बरि ९२
नब दिन पर्ज्यन्ते सेठारे जुद्ध हेला । सकळ राजा सगे सहस्रार्जुन मला ९३
तेणुटि पर्शुराम छळिण मनरे। राजामानंकु मारिला एकोइश थरे ९४
राजामानंक रुधिरे तर्पण सेहु कला । तेणु से पर्शुराम सप्तपुर गला ९५
दुष्टकु मारि सन्थ रखिण साध्य करि । ब्रह्मा हर बासब देवता आदि करि ९६
रणरे जिणिला हारिले सर्बे पुण । से कथाकु बिचार कर हे तपोधन ९७
श्रीराम लक्ष्मण जेबे निश्चय धनु धरि । गोळ कले समस्तंकु पकाइबे मारि ९८

कर्म के अनुसार विधाता उसका भोग देता है। ८३ आप व्याकुल मत होइये और समझ-बूझकर कार्य करिये। वडे-वडे प्रतापी श्रेष्ठ राजा लोग है। ८४ यह राजा लोग स्वयवर मे गये थे। मजारी के लक्ष्य वेधन मे कोई भी समर्थ नही हुआ। ८५ समय पर उस लक्ष्य को दशरथ ने वेध दिया। यह देखकर राजागणो ने उत्पात मचाया। ८६ अनर्थ को देखकर सूर्यकुल के अधीश्वर ने धनुष धारण करके वहाँ युद्ध किया। ८७ उन्होने चालीस हजार राजाओ को मार गिराया अन्य राजा लोग भाग गये। ८८ परशुराम का शत्रु सहस्रार्जुन आया और मृगया करके वह यमदग्नि के आश्रम मे आ पहुँचा। ८९ सत्कार पाकर राजा सुखी हो गया तव उसने सुरभी की याचना की परन्तु ऋषि ने उसे नही प्रदान किया। ४९० राजा ने अधर्म से ऋषि को मारा और उसे ले गया। तब परशुराम ने उसके साथ युद्ध किया। ४९१ यह जानकर सहस्रार्जुन मन मे विचार करके चालीस हजार राजा आमन्त्रित करके ले आया। ९२ नौ दिन पर्यन्त वहाँ युद्ध चला और समस्त राजाओं के साथ सहस्रार्जुन मारा गया। ९३ तब परशुराम ने वदला लेने की भावना से इक्कीस बार राजाओ का विनाश किया। ९४ राजाओ के रक्त से उन्होने तर्पण किया और फिर परशुराम सातों लोको को गये। ९५ उन्होने दुष्टो को पराजित करके सन्तो की रक्षा की। ब्रह्मा, शंकर, इन्द्र, देवता आदि को युद्ध मे जीत लिया। अन्य सभी लोग हार गये। हे तपोधन ! इस बात पर विचार कीजिये। ९६-९७ श्रीराम लक्ष्मण तब निश्चय ही धनुष उठायेंगे, उत्पात

के बोलइ किछि जे न जाण तुम्भे पुण। बड़ सान प्रकृति अलगा अटे जाण २७
दृष्टन्तर पढिथिले एमान सिना जाणि। जाहार शरीर दिशे श्यामळ बर्ण पुणि २८
नीलमणि सदृश राजिबलोचन।पद्मराग माणिक्य प्राय़ अधर शोभाबर्ण २९
सुदीर्घ नासिका मुख पद्म प्राय़ जाण। जाहार शरीर दिशे भ्रमर ज्योति पुण ५३०
शिर जार शोभादिशे जाइ फुले गभा। कपोळरे कस्तुरी चिता अटे शोभा ५३१
कण्ठरे रत्नमाळा सर्बांगे चन्दन। बक्षस्थळे लुळइ पदक नबरत्न ३२
बाहारे बाहुटि शोभे हस्तरे कंकण। कि जाणि पटान्तर सूर्य्यर किरण ३३
अंगुष्ठि मानंकरे नबरत्न मुदि। बिजुळिर तेज जेन्हे कळामेघे भेदि ३४
कटिरे कटि मेखळा शिरे पाग बान्धि। उपरे दोषड़ा जेन्हे कळा मेघे साजि ३५
पय़रे नूपुर तार रुण झुण बाजे। सुन्दर सुकुमार श्यामल रूप साजे ३६
एते लक्षणे ज्येष्ठ भाइ पुण दिशि। संगरे सानुज भाइ अछन्ति जे आसि ३७
शुक्लाम्बर मूर्त्ति जे सरि सम नाहिँ। ए धनुकु धरिबे बिळम्ब किछि नाहिँ ३८
बिधाता निर्मा करिण से थोइ थिला काहिँ।
ए रूपरे रूप गोटि देखिलात नाहिँ ३९
के बोलइ देख तुम्भे आसिबार गति। तृषा कलाबेळे जेन्हे आसे मत्त हस्ती ५४०

ही समझ में नही आता। २६ कोई कहता कि आपको तो कुछ भी ज्ञात नहीं है। बडे और छोटे की प्रकृति पृथक है। २७ ध्यान से देखने पर पता चलता है जिसका शरीर सावले रग का नीलकमल सा दिखाई देता है। नेत्र कमल (लाल कमल) के समान है। पद्मराग माणिक्य के समान जिसके अधरों का वर्ण शोभायमान है। २८-२९ मुख कमल में सुदीर्घ नासिका है। भ्रमर की ज्योति के समान जिसका शरीर दिखाई दे रहा है। ५३० जिसके शिर पर जूही के फूलों के गुच्छे शोभायमान है। गालों मे कस्तूरी के तिलक शोभित हो रहे है। ५३१ गले मे रत्नों की माला और सम्पूर्ण अगो में चन्दन लगा है। वक्षस्थल पर नौरत्नो के पदक झूल रहे है। ३२ बॉहो में बाजूबन्द और हाथों में कंकण शोभायमान है। सूर्य की किरणे भी जिनकी समता में नही आती। ३३ उॅगलियो मे नौरत्न की मुद्रिकाएँ है। लगता है जैसे काले बादलो को भेदकर बिजली चमक रही हो। ३४ कमर में कमरबन्द तथा शिर मे पाग बॅधी है। ऊपर से अम्बर से मानो काला मेघ सजा हो। ३५ उनके पैरो में नूपुर रुनझुन बज रहे है। उनका सुन्दर सुकुमार श्यामल वर्ण सुसज्जित है। ३६ इन लक्षणो से यह बड़ा भाई दिखाई देता है। इनके साथ मे इनका छोटा भाई आया हुआ है। ३७ यह शुक्लाम्बर मूर्ति अतुलनीय है। यह धनुष अवश्य ही उठाएँगे। इसमें कुछ भी विलम्ब नही है। ३८ विधाता ने इनको सृष्टि करके इन्हें कही छिपा रक्खा था। इस प्रकार का रूप कही दिखाई नही पड़ा। ३९ कोई कहता था कि इनके आने की गत्ति को तो देखो। जिस प्रकार प्यास लगने पर

देखिण पचारन्ति सकळ सभाजन। ए दुइ गोटि अटन्ति काहार नन्दन १३
के बोले बिश्वामित्र आणिण अछन्ति। के बोले राजा कुमर प्रायेक दिशन्ति १४
के बोले किम्पाइँ ए उठिले आस्थानु। के बोलइ अवा ए देखिबे कि धनु १५
के बोलइ पिलाए जे करि बेटि किस। के बोले लेउटिले पाइबे उपहास १६
के बोले धाता धनु एहांक पाइँ सञ्चि। एहु अवा से कोदण्ड पारिबे आमञ्चि १७
के बोलइ तुम्भ माने होइलकि बाइ। पर्बतकु मुण्डरे पेलिलेकि घुञ्चि जाइ १८
टेला मारिले कि जे भांगइ पर्वत। के बोलइ किम्पा जे कहुछ एमन्त १९
सान देखि एहांकु भरसा न पाए तुम्भरि।
एहांक कर्मे सिना लेखिछि कुशधारी ५२०
अगस्ति जे सान होइ शोषिले सिन्धु सात। प्रहल्लाद सान जे तोषिले पद्मनेत्र ५२१
ध्रुब सप्त बरषे बिष्णुंकु तोष कला।भगिरथि सान जे काळे गंगाकु आणिला २२
केमन्ते एहांकु तुम्भे बोइल जे सान।धाता सिना जाणइँ जे जहिँकि भाजंन २३
निर्भा करिण जे से अछइँ अबा जाणि। पुरुषंक भाग्य हुए क्षण क्षण के पुणि २४
भरसा न पाइले कि उठिण आसन्ते। चालिबार छटक भुमिकि आकर्षन्ते २५
के बोलइ एहि जे अटन्ति बेनि भाइ। के बोलइ सान बड़ बारण न जाइ २६

वढे। १२ यह देखकर सभी सभाजनो ने पूँछा कि यह दोनों किसके पुत्र है। १३ किसी ने कहा कि इन्हे विश्वामित्र लाये है। कोई कहने लगा कि यह राजपुत्र के समान दिख रहे है। १४ कोई बोला कि यह सिंहासन से किसलिये उठे हैं। कोई बोला सम्भवत यह धनुप को देखेंगे। १५ कोई बोला कि यह बालक क्या करेंगे। कोई कहने लगा कि लौटने पर इन्हे उपहास प्राप्त होगा। १६ किसी ने कहा कि ब्रह्मा ने इन्ही के लिए धनुष को बचाकर रक्खा है। क्या यह इस धनुष का कर्षण कर सकेंगे। १७ कोई बोला क्या आप लोग पागल हो गये है। क्या पर्वत को सिर से ठेलने पर वह हिल सकता है। १८ क्या ढेला मारने से पर्वत टूट सकता है। कोई बोला कि तुम ऐसा क्यो कह रहे हो। १९ इन्हे छोटा देखकर तुम्हे विश्वास नही हो रहा है। ब्रह्मा ने इनके कर्म में ही ऐसा लिखा है। ५२० अगस्त ने छोटे होकर भी सात समुद्रो को सोख लिया। प्रह्लाद ने छोटे होकर भी पद्मलोचन नारायण को सन्तुष्ट कर लिया। ५२१ सातवर्ष के ध्रुव ने विष्णु को सन्तुष्ट कर लिया था। अल्प आयु का भगीरथ गगा को ले आया था। २२ तुम इन्हे छोटा कैसे बोल रहे हो। विधाता जानता है कि कौन किस कार्य का पात्र है। २३ उसने जान बूझकर कार्य आरोपित किया है। एक-एक क्षण मे पुरुष का भाग्योदय हो जाता है। २४ विश्वास न होने से क्या वह उठकर आते ? उनकी यह चलने की भगिमा न होकर वह भूमि कुरेदते। २५ कोई कहता था कि यह दोनो भाई है। कोई बोला कि बड़े छोटे मे कोई अन्तर

देखिण संग सखीमाने सीतारे कहिले ।नीळमणि चाप पाशे बिजय़ आसि कले ५५
धनु धरिबाकु सेहु होइलेणि उभा ।तारागण मध्यरे कि पूर्णमीचन्द्र शोभा ५६
देब सभा मध्यरे श्रीहरि जेन्हे दिशि ।बन जीब मध्यरे कि विक्रम सिंह मिशि ५७
मनमाय़ा बोले सीता अनरूपे बर ।भाग्यबती केड़े तुम्भे धरिब एहांक कर ५८
दासीजनंक मुखरु एसन शुणि सीता । श्रीरामंकु चाहिंले जे जनक दुहिता ५९
कुमुद चन्द्र कि अबा रजनीरे भेट । रबिकि देखि जेन्हे पद्म पुलकित ५६०
चुम्बक लुहा जेन्हे माटिरे झळइ । पर्बत परे जेन्हे गगन मेघ चरइ ५६१
पारा रस जेन्हे बिञ्चि होइ थाइ । मिशाइले एक ठाबे बारण न जाइ ६२
तेसन सञ्जात श्रीरामंकु देखि सीता । चाहिँ बारे विह्वळित जनक दुहिता ६३
कर जोडि जानकी जे सुमरे बिधाता । समकछ बय़स त दशरथ बत्सा ६४
भो दइब बिधाता बिनति मोर घेन । आज बिधाता निराश नकर मोते पुण ६५
एगार बर्ष हेला दुःखरे अछि रहि । मदनरे उन्मत तनु मोर होइ ६६
तुम्भे मोते अनुग्रह कर रमाबर ।करुछि दइनि मुँ छाडिलि लज्जा भार ६७
ए बर आज जेबे होइब प्रापत । तेबे मोर मनोरथ सम्पूर्ण हेबारत ६८

कर रहे थे तभी श्रीराम शीघ्रता के साथ मजूषा के पास आ पहुँचे। ५४ यह देखकर साथ की सखियों ने सीता से कहा कि नीलमणि धनुष के पास आकर उपस्थित हो गये है। ५५ अब धनुष उठाने के लिये वह खड़े हो गये है। लगता है, जैसे तारागण के बीच में पूर्णमासी का चन्द्रमा शोभायमान हो। ५६ जिस प्रकार देवताओं की सभा में श्रीभगवान नारायण दिखाई देते है अथवा वन के जीवों के बीच मे पराक्रमी सिंह मिल जाता है। ५७ मनमाया ने कहा हे सीते ! यह तुम्हारे अनुरूप वर है। तुम कितनी भाग्यवान् हो जो इनका हाथ ग्रहण करोगी। ५८ दासियो के मुख से जनकनन्दिनी सीता ने ऐसा सुनकर श्रीराम की ओर दृष्टिपात् किया। ५९ लगता था जैसे रात्रि में कुमुदिनी तथा चन्द्रमा की भेट हो गयी हो और जैसे सूर्य को देखकर कमल खिल उठा हो। ५६० जैसे चुम्बक लोहे को मिट्टी से खींच लेता है। जैसे पर्वत पर आकाश का मेघ विचरण कर रहा हो। ५६१ जैसे पारा द्रव छितराया हुआ हो और एक स्थान पर एकत्रित कर देने पर उसमे अन्तर नही दिखता। ६२ उसी प्रकार अपने सहचर श्रीराम को देखकर जनकनन्दिनी सीता विह्वल हो गई। ६३ जानकी हाथ जोड़कर विधाता का स्मरण करने लगी कि दशरथनन्दन समकक्ष आयु के है। ६४ हे देव विधाता मेरी विनती स्वीकार कीजिए। आज मुझे आप निराश मत कीजिए। ६५ ग्यारह वर्षो से मै कष्ट में रह रही हूँ। मेरा शरीर कामोन्मत्त हो रहा है। ६६ हे लक्ष्मीपति ! आप मेरे ऊपर अनुग्रह करें। मैं लज्जा का त्याग करके दैन्य प्रदर्शित कर रही हूँ। ६७ जब आज हमें यह वर प्राप्त होगा तभी

एमन्त सुन्दर रूप त्रिभुवने नाहिँ। पयरकु पटान्तर नोहिबे आन केहि ५४१
के बोलइ आजानु लम्बित बेनि बाहा। के बोलइ कपोळ सुन्दर शोभा देहा ४२
के कहइ निबिड अटइ बक्षस्थल। के बोलइ चारेर अटे एहांकर बाळ ४३
के बोलइ कटी जे अटइ सिंह ठाणि। के बोलइ दान्त देख ड़ालिम्ब बीज जिणि ४४
के बोलइ एहांकर धन्य गर्भधारी। के बोले एहांक पिता केते तप करि ४५
के बोले धन्य अटे बिश्वामित्र मुनि। केवण देशरु अइले एहांकु घेनि ४६
के बोलइ आम्भर जे जीवन सुफळ। एहांकु देखिबारु पातक हेला दूर ४७
के बोलइ जनक अनेक तप कले। के बोलइ जानकी उर्मिला कष्ट गले ४८
बिभा जात्रा बेनि भगिनकर आजहुँ फिटिला।
बाड़ोइ होइ थिले साधिबी एबे भला ४९
निश्चय ए राजपुत्र धनु आमञ्चिब। आजर भितरे शुभ कार्ज्य जे होइब ५५०
के बोलइ बाळुत जे बयसरे सान। ए धनुर महिँमा से न जाणन्ति पुण ५५१
के बोलइ धनु ए जे न पारिबे तोळि। के बोले प्रसन्न एहांकु हेबे देवहरि ५२
के बोले सुदया एहांकु करिबे सदाशिव। ताहांकर प्रसन्नरे ए धनु धरिब ५३
एसन कुहा कुहि हुअन्ति सर्बजन। मञ्जुष ठारे बेगे मिळिले श्रीराम ५४

मतवाला हाथी गमन करता है। ५४० ऐसा सुन्दर रूप तीनो लोकों मे नही है। इनके पगो की तुलना मे कोई भी नही आता। ५४१ कोई कहता कि इनकी दोनो बाहुएँ आजानु लम्बित है। कोई कहता कि इनके कपोल तथा शरीर सुन्दर शोभायमान लग रहे है। ४२ कोई कहता कि इनका वक्षस्थल विस्तीर्ण है। कोई कहता कि इनके केश घुँघराले है। ४३ कोई कहता कि इनकी कमर सिंह के समान है। कोई कहता था कि दाड़िम को जीतने वाले इनके दाँत देखो। ४४ कोई कहता था कि इनकी गर्भधारिणी माता धन्य है। कोई कहता था कि इनके पिता ने कितनी तपस्या की होगी। ४५ कोई बोला कि मुनि विश्वामित्र धन्य है जो न जाने कौन देश से इन्हे लेकर आए। ४६ कोई बोला कि हमारा जीवन सफल हो गया। इनके दर्शन से हमारे पातक दूर हो गए। ४७ कोई बोला कि जनक ने बहुत तपस्या की है। कोई बोला कि जानकी और उर्मिला का कष्ट दूर हो गया। ४८ आज से दोनो बहनो के विवाह का महोत्सव खुल गया। इन साध्वी लोगो का अच्छा हो गया। ४९ निश्चय ही यह राजपुत्र धनुष का कर्षण करेंगे। आज यह शुभ कार्य होगा। ५५० कोई बोला कि यह बालक अवस्था मे छोटे है। वह इस धनुप की महिमा को नही जानते। ५५१ कोई कहता था कि यह धनुप नही उठा पाएँगे। कोई बोला कि इन पर भगवान प्रसन्न हो जायेगे। ५२ कोई बोला कि शकर जी इन पर दया करेंगे और उन्ही की प्रसन्नता से यह धनुष उठायेगे। ५३ सभी लोग इसी प्रकार की बात चीत

बाहारकु काढ़ि मुँ कि बेनि शरासन। तुम्भे जेबे महऋषि होइब प्रसन्न ८४
हरषरे महामुनि मोते आज्ञा हेउ। सदाशिब धनु ए त छुइंले पाप जाउ ८५
श्रीराम बचनरे बोलन्ति जनक। तु धनु देखि केमन्ते मणिलु रघुनाथ ८६
अकळ बळ धनु एहाकु बाहारे लोड़ु आणि।
एथिर चरित बाबु अछु टिकि जाणि ८७
बिश्वामित्र बोइले कल जेबे श्रद्धा। पारिले धनु आणन्तु तुम्भंकु किम्पा बाधा ८८
असंख्य कथा एहार बुझिबे सर्बे आसि। धनुकु तोळि धरिले बळिष्ठरे लेखि ८९
जनक बोइले जे बिश्वामित्रंकु चाहिँ।
महादेब विष्णु बीतिरे छुअन्ता केहि नाहिँ ५९०
अनेक देशर जे राजमाने छन्ति। ए धनुकु न तोळि लज्जारे घुञ्चुछन्ति ५९१
ए बाळक पुअ धनु केमन्ते आणिब। माया कळे निकि परलोककु जिणिब ९२
जनक ऋषि ठारु एसन बाणी शुणि। प्रजागणे समस्ते बोइले जे बाणी ९३
मो मुनि किम्पाइँ जे न बोल धनु आण। बुझि बाना एहार अटइ केते प्राण ९४
ज्वळन्ता जुइरे पशि मन से करइ। सामान्य भरसाकि समुद्र पहँरइ ९५
आम्भे माने भासि आसि बार से देखिला। केड़े भरसा ताहार धनु पाशे गला ९६
बिश्वामित्र बोले तुम्भ मनकु नपाइ। बृशाल जुबा हेले बोलन्ति आण जाइ ९७

ने जनक की ओर देखते हुए कहा। ८३ हे महर्षि यदि आप प्रसन्न हो तो मैं धनुष को बाहर निकाल लूँ। ८४ हे महर्षि ! आप हमे प्रसन्न होकर आज्ञा प्रदान करे। इस शिव धनुष के स्पर्श से पाप नष्ट हो जाते है। ८५ श्रीराम की बात सुनकर जनक ने कहा हे रघुनाथ ! तुम्हें धनुष देखकर कैसा लग रहा है। ८६ इस अकलित बल धनुष को बाहर निकालना चाहते हो। हे वत्स ! क्या तुम्हे इसके चरित्र के विषय में पता है ?। ८७ विश्वामित्र ने कहा कि यदि तुम्हें श्रद्धा है तो धनुष लाओ इसमें आपको क्या बाधा है। ८८ इसकी असख्य कथाएं सभी आकर समझ लेगे। धनुष को उठाकर धारण करने पर बलिष्ठ में उनकी गणना होगी। ८९ जनक ने विश्वामित्र की ओर देखकर कहा कि महादेव तथा विष्णु को छोड़कर इसे छूने वाला अन्य कोई नही है। ५९० अनेक देश-देशान्तरों के राजागण वहाँ है जो इस धनुष को न उठा पाने के कारण लज्जा से पीछे हट जाते हैं। ५९१ यह बालक धनुष को कैसे लाएगा। माया करने से क्या परलोक को जीतेंगे। ९२ महर्षि जनक के यह बचन सुनकर सभी प्रजाजन बोल उठे। ९३ हे महर्षि ! आप धनुष लाने को क्यो नही कह रहे है। देखे इनमें कितना जीवट है। ९४ यह प्रज्वलित अग्नि मे घुसने की इच्छा कर रहा है। साधारण भरोसे पर क्या समुद्र तैरा जा सकता है। ९५ उसने हम लोगों को डूबते हुए आते देखा है। इसका विश्वास कितना है जो यह धनुष के समीप पहुँच गया। ९६ विश्वामित्र ने कहा कि तुम्हारे मन का पता नही चल रहा

नोहिले निश्चे मुं जे हेबि स्तिरी हत्या । किम्पा तोते बोलिबे जे जगतर पिता ६९
एसन समय़रे उर्मिला देबी उठि । पाएढा पाडिण सेहु विनति कलाटि ५७०
बोइला ठाकुराणी गो निळमणिक देख । क्षीर सागर उपेक्षि विजे पद्ममुख ५७१
अनन्त बासुदेव ए दुहे बोलि जाण । नेत्ररे देखि एबे लभन्ति मुक्ति पुण ७२
अर्घ्य तांकु बन्दापना कर गो ठाकुराणी । सीतय़ा बोइले सम्भाळ तुगो पुणि ७३
लोके उपहास करिबे एहा देखि । बोलिबे केडे निर्लज्जजि अटइ जानकी ७४
धनुकु न धरुँ बन्दापना करुछन्ति । निर्ल्लज पणरे स्वामींक वरु छन्ति ७५
केवळ हुळहुलि दिअन्तु दासीगण । धनु धइले आळति करिबा सनमान ७६
एमन्त समय़रे शुभिला हुळहुळि ।बाम चक्षु स्फुराइला जानकी मैथिळि ७७
मनमाय़ाकु चाहिँ जानकी बोलइ । चाहुँ किना बाम चक्षु मोहर डिअइँ ७८
शुणिण मनमाय़ा बोइला सुलभटि । मोर कथाकु प्रते न कर जे शुभ्र केशि ७९
एहिबर तोते गो होइब प्रापत । मोते जणागलाणि तुम्भर हरिव्रत ५८०
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरि । श्रीराम उभा हेले लक्ष्मण कर धरि ५८१
मस्तक नुआँइण मञ्जुषकु चाहिँ । सिंह बनस्तरे जेन्हे हस्तीरे दृष्टि देइ ८२
धनु देखि श्रीराम मनरे हेले तोष । जनकंकु चाहिँण बोइले रघुनाथ ८३

हमारा मनोरथ पूर्ण होगा । ६८ नही तो निश्चय ही मैं प्राण त्याग दूंगी फिर आपको जगत् पिता कैसे कहा जाएगा । ६९ इसी समय देवी उर्मिला ने उठकर पैरो मे गिरकर विनती की । ५७० उसने कहा हे स्वामिनी ! नीलमणि को देखिए । क्षीर सागर का त्याग करके कमलानन उपस्थित हुए है । ५७१ वासु-देव और अनन्त नारायण यह दोनो ही है । नेत्रो से इनके दर्शन करके मुक्ति प्राप्त कीजिए । ७२ हे स्वामिनी ! इनकी अर्घ्य-पूजा कीजिये । सीता बोली कि तू अपने को सम्हाल । ७३ यह देखकर लोग उपहास करेंगे तथा कहेगे कि जानकी कितनी निर्लज्ज है । ७४ विना धनुष के उठाए ही पूजा कर रही है तथा निर्लज्ज होकर स्वामी का वरण कर रही है । ७५ अभी दासियाँ केवल मागलिक ध्वनि करे । धनुष उठाने पर आरती पूजा करेंगे । ७६ इसी समय मागलिक ध्वनि सुनाई पड़ी और जानकी का बायाँ नेत्र फड़कने लगा । ७७ जानकी ने मनमाया की ओर देखते हुए कहा क्या तुम देख रही हो कि मेरा बायाँ नेत्र फड़क रहा है । ७८ यह सुनकर सहजभाव से मनमाया बोली, हे शुभ्रकेशी ! आप मेरी बात पर विश्वास ही नही करती हो । ७९ तुम्हे यही वर प्राप्त होगा । तुम्हारा हरि-व्रत हमे पता है । ५८० हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् तुम सुनो । श्रीराम लक्ष्मण का हाथ पकडकर खड़े हो गए । ५८१ जैसे वन में सिंह हाथी पर दृष्टिपात करता है वैसे ही उन्होने मस्तक झुकाकर मजूषा की ओर देखा । ८२ धनुष को देखकर श्रीराम मन मे प्रसन्न हो गए तथा रघुनाथजी

बुढ़ा आंगुठि नख उपरे रखिले । धनुर हुळ नेइ नखरे लदिले ४२
कउशिक बोइले शुण हे जनक । देख श्रीरामर बळ जे अनेक ४३
बसुधा कान्दि बारु उपाय़ पुण कले । निज बाम पाद जे आगकु बढ़ाइले ४४
बिश्वामित्र बोइले राजा गणे शुण । श्रीराम बाम पादे रखिले धनु पुण ४५
ऋषि माने देख हे सकळे जेते अछ । कअँळा पुअ राम बळ बपु देख ४६
हाटुआ बाटुआ जे पथुकी जनमाने । समस्ते प्रशंसा करु अछन्ति रघुनाथे ४७
सत्यानन्द बोइले शुण हे कउशिक । मो जननी अहल्याकु मुकत कले एत ४८
दिनकर मान जे उद्धरिल तुम्भे ।जाग रखिबाकु तुम्भे आणिल केउ शुभे ४९
नोहिले कि देबताए तुम्भंकु प्रशंसि ।बिधाता जे बर देले होइल ब्रह्म ऋषि ९५०
चण्डाळकु नेइण स्वर्गरे बसाइल । ऋषिर कुमरकु जीव दान देल ९५१
एगार बर्ष षड़ मास सीतय़ाकु जाण । जन्म काळरु अजोनि जुबा हेला पुण ५२
तार तळे अजोनि उर्मिला नामे बाळी । जानकी कि षड़मास ऊणा सेहु नारी ५३
बेनि कन्याकु बेनि सत्य कले जे जनक ।धनु जे भांगिब मोर देबार सत्य सत्य ५४
शुणि करि बिश्वामित्र आनन्द होइले । शुणरे सत्यानन्द बोलिण बोइले ५५
बेनि कन्याकु निश्चे नेबे से बेनि भाइ ।राजा मानांकु गर्ब भांगिब आज बिहि ५६

उन्होने धनुष के छोर को अँगूठे के नख पर रख लिया । ४२ तब विश्वामित्र ने कहा हे जनक ! सुनो और श्रीराम के प्रचुर बल को देखो । ४३ पृथ्वी के रुदन करने पर उसका उपाय करके श्रीराम ने अपने बाएँ पैर को आगे बढ़ा दिया है । ४४ विश्वामित्र ने फिर कहा हे राजागण ! सुनो । श्रीराम ने धनुष को बाएँ पैर पर रख लिया है । ४५ जितने भी ऋषिगण है वह सभी सुकोमल बालक श्रीराम के शारीरिक बल को देख लें । ४६ जो हाट-बटोही तथा पथिक जन थे वह समस्त रघुनन्दन की प्रशंसा करने लगे । ४७ तब सतानन्द ने कहा हे कौशिक ! सुनिए । इन्होंने तो हमारी माता अहिल्या का उद्धार किया है । ४८ आपने तो सूर्य का यश विस्तारित कर दिया । किस शुभ घड़ी में आप इन्हे यज्ञ-रक्षा के लिये लाए । ४९ नही तो क्या देवता आपकी प्रशसा करते । ब्रह्मा ने आपको वर दिया और आप ब्रह्मर्षि हो गए । ९५० आपने चाण्डाल को लेकर स्वर्ग में बैठा दिया और ऋषि पुत्र को जीवन दान दिया । ९५१ ग्यारह वर्ष छैः माह की अयोनि सम्भूता सीता जन्म काल से युवा हो गई । ५२ उसके नीचे उर्मिला नाम की कन्या भी अयोनि सम्भूता हुई जो जानकी से छैः माह छोटी है । ५३ दोनो कन्याओं के विपय में जनक ने दो प्रण किये, जो कोई धनुप को तोड़ेगा, हमारा कन्यादान उसी को होगा । यह वात सत्य है । ५४ यह सुनकर विश्वामित्र प्रसन्न हो गये और उन्होने कहा हे सतानद ! सुनिये । ५५ यह दोनों भाई निश्चित रूप से दोनों कन्याओं को ग्रहण करेगे । आज दैव

धनुधरि श्रीराम अछन्ति उभा होइ । लक्ष्मण वीर बोइले दश दिगकु चाहिँ २७
भो पृथ्वी देबी तुहि स्थिर होइ थाअ । असम्भाल होइले तो ध्वंसि हेब देह २८
बासुकी नाग रह क्षणे सम्भाळ होइ । कूर्म माने तुम्भे पृथ्वी धरि थाअ रहि २९
दश दिगपाळ माने शुण सावधाने । अळस न करि तुम्भे रह सावधाने ६३०
मन्दपण कले तुम्भर धइर्ज्य पण जिब । ईश्वर धनु आज श्रीराम आमर्ष्चिव ६३१
सप्तपुर लोकंकु लक्ष्मण कहिले । जे जाहा सजरे सर्बे रह जे बोइले ३२
मेढ़ जगतीरे सीता उर्मिला जे चाहिँ । लक्ष्मण कहि बार जे कर्णरे सम्भाइ ३३
मन माय़ाकु जानकी देबी बोले शुण । केहु ड़ाकु अछि उच्चरे बाणी पुण ३४
मनमाय़ा सखी बोले दिअर तोर जाण । धनु धरिबारु ड़ाकन्ति उच्चे पुण ३५
एथु अनन्तरे शुण हे रस बाणी । निशबद होइण अछन्ति सर्बे पुणि ३६
कोदण्ड धरिण जे उभा दाशरथि । गुण टंकार कलेक श्रीराम झटति ३७
पृथ्वीर भितरु शुभिलाक जे शबद । मोते बारे रक्षा कर हे रघुराज ३८
धनुर हुळ जेबे लदिब मोरे तहिँ । निश्चय़ प्राण मोर तेजिबि रघुसाइँ ३९
मेरुर शते गुणे अटइ धनु गरु । मो परे धनु थोइले प्राण मोर हरु ६४०
शुणि करि श्रीराम पृथ्वीकि दय़ा कले । निज बाम पाद आगकु बढ़ाइले ६४१

ठीक कह रहे हो । २६ धनुष धारण करके श्रीराम खडे हो गये । तभी पराक्रमी लक्ष्मण ने दसो दिशाओ को देखकर कहा । २७ हे पृथ्वी देवी ! तुम स्थिर रहो असावधान होने से तुम्हारा शरीर नष्ट हो जायेगा । २८ हे शेषनाग ! तुम एक क्षण के लिये सँभल कर रहो । हे कच्छपगण ! आप लोग पृथ्वी को पकडे रहे । २९ हे दस दिगपाल ! आप सचेत होकर सुने और आलस्य त्याग कर सावधान रहे । ६३० प्रमाद करने से आपकी धीरता समाप्त हो जायेगी । आज शकर के धनुप का कर्षण श्रीराम करेगे । ६३१ लक्ष्मण ने सातो लोको के निवासियो से अपने-अपने कार्य मे लगे रहने के लिये कहा । ३२ जगती के ऊपर से सीता और उर्मिला ने देखते हुये लक्ष्मण के कथन को कानो से सुना । ३३ देवी जानकी ने मनमाया से कहा कि सुनो कोई उच्च स्वर से पुकार रहा है । ३४ तव मनमाया सखी ने कहा कि यह तुम्हारे देवर है जो धनुष उठाने के लिये ऊँचे स्वर से कह रहे है । ३५ इसके पश्चात अव रसमय कथा को सुनिए । वहाँ सभी लोग चुपचाप शान्त हो गए । ३६ दशरथ नन्दन कोदण्ड को उठाए खड़े थे । फिर श्रीराम ने चचलता से प्रत्यचा पर टंकार मारी । ३७ पृथ्वी के भीतर से शब्द सुनाई पडा कि हे रघुराज ! आप एक बार मेरी रक्षा कीजिए । ३८ यदि आप धनुष के छोर को मुझ पर लाद देंगे तो हे रघुनाथ ! मेरे प्राण निश्चित रूप से छूट जाएँगे । ३९ यह धनुष मेरु पर्वत से सौ गुना भारी है । मुझ पर धनुष रखने से मेरे प्राण चले जायेगे । ६४० यह सुनकर श्रीराम ने पृथ्वी के ऊपर दया करके अपने बाएँ पैर को आगे वढ़ाया । ६४१ फिर

मंगळ आळती बन्दापना कले पुण। कर जोडि ओळग मेलाइले जाण ७२
बन्दापना सारिण जे बोइले जानकी। तु बन्दापना करिबु कनिष्ठंकु कि ७३
उर्मिला बोइले मोर सुफल नोहे कार्य्य। शुणि करि जानकी मन कले बोध ७४
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण भगबती। कौशिक ऋषि बोले शुण हे दाशरथि ७५
जनक दुहितार सरिला बन्दापना। धनुरे गुण देइ टंकार कर किना ७६
शुणिण श्रीराम जे हरष मन हेले। आनन्द होइण से मनरे भाळिले ७७
शिब धनु श्रीराम जे बाम करे धरि। गुण देबे बोलिण से आणिले उछुड़ि ७८
मड़ मड शबद जे शुभइ कोदण्ड। थर हर होइ मेदिनी कम्पे नबखण्ड ७९
गुणर फास श्रीराम दक्षिण करे नेइ। मञ्जुषर पेट पाशे गुण देले नेइ ६८०
जहुँ सायकरे राम नेइ देले गुण। शिर नुआँइले देखि सकळ राजन ६८१
बिचारिले बार वर्ष तनय़ एहा कला। राजांकर मुखरे से काळी लगाइला ८२
गुण देइ धनुरे राम धरिले सज करि। ऋषि बिप्र पथुकी आनन्द सबुंकरि ८३
राजा गण मनरे समस्ते हेले दुःखी। किछिहिँ न कहन्ति तळकु मुख पोति ८४
धनुकु धरि श्रीराम टंकार करन्ति। देखि जनक राजार फिटिगला भ्रान्ति ८५
मने मने बिचारिला एहिटि बासुदेव। नोहिले कि आनलोक धनु आमञ्चिब ८६

अर्घ्य प्रदान किया। ६७१ फिर उन्होने मंगला आरती करके हाथ जोड़कर उन्हे प्रणाम किया। ७२ पूजा समाप्त करके जानकी ने उर्मिला से कहा क्या तू भी छोटे भाई की पूजा करेगी। ७३ उर्मिला बोली कि मेरा कार्य सुफल नही हुआ है यह सुनकर जानकी के मन में बोध हो गया। ७४ हे भगवती! सुनो। इसके पश्चात् महर्षि विश्वामित्र ने दशरथ नन्दन से कहा। ७५ जनक की पुत्री की पूजा समाप्त हो गई। अब धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर टंकार क्यों नही मारते। ७६ यह सुनकर श्रीराम का मन प्रसन्न हो गया और वह आनन्दित होकर मन मे विचार करने लगे। ७७ श्रीराम ने बाँये हाथ से शिवजी के धनुष को धारण किया और चचलता से उसे प्रत्यंचा चढाने के लिये ले आये। ७८ कोदण्ड का चरचर शब्द सुनायी पड़ने लगा जिससे नौ खण्ड पृथ्वी काँप कर थर्राने लगी। ७९ प्रत्यंचा की फाँस को (फन्दा) श्रीराम ने दाहिने हाथ में लेकर मंजूषा के पेट के पास डोरी चढा दी। ६८० जब श्रीराम ने धनुष पर प्रत्यचा चढ़ा ली तब यह देखकर समस्त राजाओं ने सिर झुका लिये। ६८१ वह सोचने लगे कि इस बारह वर्ष के बालक ने ऐसा कर दिया। उसने राजाओं के मुख पर स्याही लगा दी। ८२ धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर राम ने उसे सँभाल कर पकड़ लिया। ऋषि, विप्र, पथिक आदि सभी प्रसन्न हो गये। ८३ सभी राजाओं के मन दुखी हो गये। वह नीचे को मुख गड़ाकर कुछ भी नही बोल रहे थे। ८४ श्रीराम धनुष को धारण करके टंकार मारने लगे। यह देखकर राजा जनक का भ्रम दूर हो गया। ८५ वह मन ही मन विचार करने

एथु अनन्तरे शुण तुम्भे गो शाकम्बरी ।मनमाय़ा सीता आगे कहिला विस्तारि ५७
देख गो ठकुराणी श्रीरामक वळ । वाम पादरे से थोइले धनु हुळ ५८
दिअर लक्ष्मण जाइ श्रीराम कहिले । शिर तुम्भे न नुआँअ बोलिण बोइले ५९
जणागला बिष्णु ए ईश्वर दुइ जण । भोग एबे कर गो घेनिण नाराय़ण ६६०
तुम्भे जे कमळिणी वेळहुँ मोते जणा । नाराय़ण अबतार तोर पाइँ किना ६६१
आजहुँ सतर दिने होइब एक संग । प्रीति उपुजिब जे होइब नाना भाव ६२
समसरि एसन जे घटइले बिहि । तुहि ऋषि जेमा गो राज पुत्र सेहि ६३
दुहिँक मेळ दइब कले एक जोग । आम्भ मानंकु तुम्भे मनरु छाड़िब ६४
मन माय़ा बचनरे सीतय़ा कहे बाणी । केते केते ढ़माळि गो करु तुहि पुणि ६५
समस्ते मिळि मोहर संगतरे जिब । हास्य रस कउतुक तुम्भे कराइब ६६
जानकीर वचने समस्ते हेले तोष । उर्मिळाकु बोइले उपाय़ कर किस ६७
उर्मिळा बोइले तुम्भे वेगे अर्घ्य दिअ ।तुम्भेत सौभाग्य हेल नुहँ किम्पा प्रिय़ ६८
शुणि करि जानकी धइले अर्घ्य थालि । पञ्च बर्ण कुसुम दूर्बाक्षत तोळि ६९
दासीगण मिळिले जे देले हुळ हुळि । आनन्द मनरे सीतय़ा अर्घ्य धरि ६७०
प्रथमे पञ्चवर्ण पुष्प बन्दाइले । द्वितीय़े दूर्बाक्षत अर्घ्यनेइ देले ६७१

राजाओ के गर्व का खण्डन करेगा। ५६ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् मनमाया ने सीता के समक्ष विस्तारपूर्वक कहा। ५७ हे स्वामिनी ! श्रीराम के बल को देखो। उन्होने बॉये पैर पर धनुष के छोर को रख लिया है। ५८ देवर लक्ष्मण ने जाकर श्रीराम से सिर न झुकाने के लिये कहा है। ५९ ऐसा ज्ञात होता है कि यह दोनो विष्णु तथा शकर जी है। तुम नारायण को लेकर अव भोग करो। ६६० तुम्हारे वचपन के समय से ही मुझे ज्ञात है कि तुम्हारे लिये वासुदेव का अवतार हुआ है। ६६१ आज से सत्रहवे दिन तुम एक साथ हो जाओगी और प्रेम प्रकट होने से नाना प्रकार के भावो का उद्गम होगा। ६२ दैव ने समानता की ऐसी घटना घटित कर दी। तुम ऋषि पुत्री हो और वह राजपुत्र है। ६३ एक योग में दोनो का मेल भाग्य ने कर दिया। अव तुम हम लोगो को मन से निकाल दोगी। ६४ मनमाया के वचन सुनकर सीता ने कहा कि तू कितनी मसखरी कर रही है। ६५ तुम सव मिलकर मेरे साथ चलोगी और तुम लोग हास्यरसपूर्ण कौतुक कराती रहोगी। ६६ जानकी के वचनो से सव सतुष्ट हो गयी और उर्मिला से कुछ उपाय करने के लिये कहने लगी। ६७ उर्मिला ने कहा कि तुम शीघ्र ही अर्घ्य प्रदान करो। तुम तो सौभाग्यवती हो गयी फिर प्रसन्न क्यो नही हो। ६८ यह सुनकर जानकी ने पॉच रंग के फूलो तथा दूर्वाक्षत युक्त अर्घ्य-थाली उठा ली। ६९ दासीगण ने मिलकर मागलिक ध्वनि की और सीता ने प्रसन्नचित्त होकर अर्घ्य धारण कर लिया। ६७० पहले उन्होने पाँच रग के फूलो से पूजा की। उसके पश्चात् दूर्वाक्षत लेकर

सदाशिव तोते देखन्ते बर देबे। वज्र अंग आयुध जे करिण रखिबे ७०१
एसनेक जोग तोर अछि जन्म बेळे। कर्म एहा बिहि लेखिला तेते बेळे २
जेतेक समय तोर तेतेक भोग हेला।काहार बेळे से कथा आन जे नोहिला ३
एसनेक कथा जे कर्मरे निर्बाण।सीता बिभा हेला काळे तेजिबु पराण ४
सेहि कथा निकट होइला एबे आसि। मूर्ख पणे साय़रु तु बिमुख हेउ एथि ५
आगत कथा शुणि स्तबद शरासन। गुण धरि श्रीराम जे उछुडिले पुण ६
दक्षिण कर्ण जाए ओटारि आणु धनु। लोटि होइण जे आसिलाक तेणु ७
श्रीराम धनु आमञ्चन देखि सीता। मन प्रकृतिए कले जनक दुहिता ८
बेनि नेत्र स्थिर करि देखिले एमन्त। बिचारन्ति एहि से अटन्ति मोर नाथ ९
धनुर गुण धरि श्रीराम आमञ्चिले। सीतांकु दृष्टि देले सेहि समय़रे ७१०
स्वर्गरे देबताए साधु साधु कले। धन्य धन्य श्रीराम हे बोलिण बोइले ७११
आस्थानर लोक आश्चर्य्य हेले चाहिँ। के बोले पुण्यवन्त अटन्ति एहा आई १२
एमन्त असम्भव कथा जे देखा नथिला। नय़नरे देखिलइँ केहु से बोइला १३
मनमाय़ा बोइले शुण गो देबी सीता। धनु जाग कले जे जोगरे तोर पिता १४
लक्षे राजा देखिले जे ऋषि अकळित।बिप्र राजा देखिले जे हाटुआ पथुकी त १५

देखते ही वर प्रदान करेंगे और तुम्हें बज्रांग आयुध बनाकर रखेंगे। ७०१ जन्मकाल से तुम्हारा ऐसा ही योग है। उस समय ब्रह्मा ने तुम्हारे कर्म में ऐसा ही लिखा था। २ तुम्हारा जितना समय था। उतना भोग प्राप्त हुआ है जिसका जिस समय जो होना होता है वह मिथ्या नही होता। ३ तुम्हारे कर्म में ऐसी ही बात लिखी थी कि सीता के विवाह होने के समय तुम अपने प्राण त्याग करोगे। ४ वही बात अब निकट आ पहुँची है। हे धनुष ! तुम मूर्खता-वश यहाँ दुःखी हो रहे हो। ५ धनुष भविष्य की बात सुनकर स्तब्ध हो गया। श्रीराम ने प्रत्यंचा पकड़कर खीच ली। ६ फिर उन्होंने दाहिने कान पर्यन्त धनुष को खीच लिया। तब वह धनुष झुक गया। ७ सीता ने श्रीराम द्वारा धनुष का कर्षण देखा और जनकनदनी ने अपने मन को प्रकृतिस्थ कर लिया। ८ उन्होंने अपने दोनो नेत्रों को स्थिर करके यह देखते हुये विचार किया कि यह ही हमारे स्वामी है। ९ श्रीराम ने धनुष की डोरी पकड़कर खींच ली और उसी समय उन्होंने सीता पर दृष्टिपात किया। ७१० स्वर्ग से देवतागण साधु-साधु करने लगे। वह श्रीराम को धन्य है, धन्य है, कहने लगे। ७११ सभा के लोग यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये। कोई कहने लगा कि यह अत्यन्त पुण्यवान है। १२ इस प्रकार की असम्भव घटना नहीं देखी गयी थी। कोई बोला कि अब हमने नेत्रों से देख लिया है। १३ मनमाया ने कहा हे देवी सीता ! सुनों। इसीलिये तुम्हारे पिता ने धनुष यज्ञ किया था। १४ असंख्य ऋषियों, लाखों राजाओं, ब्राह्मणों, तथा हाट बटोहियों को भी देखा गया। १५

ईश्वर ए धनुकु अटन्ति सामरथ। नारायण जात हेले श्रीराम रूपरेत ८७
शिव धनुकु श्रीराम कले जे आयत। निश्चय सीतया मोर एहाकु प्रापत ८८
एथुरे अनन्तरे सायक करे धरि। दक्षिण भुजरे तहुँ आणिले उछुडि ८९
शिव धनु बोइले शुण तु रघुनाथ। हेळे नाश न कर मोहर पुरुषार्थ ६९०
अकळित बळ मोर शुण रघुसाइँ।क्षत्री माने मोते केहि आलोडि न पारइ ६९१
परम लक्ष्मी कमळा जे अटन्ति सीतया। तुम्भर जुगे जुगे अटन्ति से प्रिया ९२
मुहिँ प्रसन्न जे हेलि तुम्भंकु जाण। तेणु करि श्रीराम धरिल मोते पुण ९३
एबे थिरि करि हे उछुड़ रघुवीर। करुणासागर बाना अटइ तुम्भर ९४
धनुर काकुति वचन श्रीराम जे शुणि। हृद पद्म मध्यरे बिचारिले पुणि ९५
बोइले किम्पाइ हे तरस्त हेउ चाप। कथाकु न बुझि पुण हेउछ केते ताप ९६
तोते आकर्षण जेबे नकरिबि मुहिँ। लज्जा जे पाइबइँ राजांक ठारे मुहि ९७
तुहि त धार्मिक धनु अटु रे ज्ञानवन्त।
काज्यं कला बेळे किम्पा न जाणु कथात ९८
तोते घेनि ईश्वर दक्षंक जाग नाशि। देवंकु कोप कले कपिळाश बासी ९९
से काळर धनु प्राय मणिलुकि आज। से देह छाड़ि करि शिबि पुरकु भज ७००

लगे कि यह भगवान विष्णु है नही तो क्या अन्य कोई व्यक्ति धनुप उठा पाता। ८६ इस धनुष को धारण करने मे ईश्वर हो समर्थ है। श्रीराम के रूप मे नारायण ही उत्पन्न हुये हैं। ८७ शिव के धनुप को श्रीराम ने उठाकर खीच दिया निश्चय ही मेरी सीता इन्हे प्राप्त होगी। ८८ इसके पश्चात् सायक को हाथ में पकड़कर दाहिनी भुजा से उसे चचलता पूर्वक ले आये। ८९ तब शिव धनुष ने कहा हे रघुनाथ! सुनिये मेरे पुरुषार्थ को सहज ही नष्ट न कीजिये। ६९० हे रघुनाथ! सुनो। मेरा वल अकलित है। योद्धा लोग कोई भी मुझे उठा नही पाये। ६९१ सीता महालक्ष्मी है। वह युग-युग से आपकी प्रिया रही है। ९२ मैं आप से प्रसन्न हूँ। इसलिये हे श्रीराम! आपने मुझे धारण किया है। ९३ हे रघुवीर! अब अपनी उत्तेजना को स्थिर करो। आपका बाना करुणा-सागर है। ९४ श्रीराम ने धनुष की दैन्यतामय वाणी सुनी और वह अपने हृदय कमल में विचार करते हुये बोले हे धनुष! तुम किसलिये त्रस्त्र हो रहे हो। तुम बात को न समझकर कितने आर्त हो रहे हो। ९५-९६ यदि मैं तुझे आकर्षित नही करूँगा। तो मै राजाओ के समक्ष लज्जा को प्राप्त करूँगा। ९७ हे ज्ञानवत! तुम तो धार्मिक धनुष हो कार्य करने के समय तुम समझ क्यो नही रहे हो। ९८ तुझे लेकर शिव ने दक्ष की यज्ञ को नष्ट किया था और कैलाशवासी ने देवताओ पर क्रोध किया था। ९९ क्या आज तुम उसी समय के धनुष को मान रहे हो। अब उस शरीर का परित्याग करके शिव लोक की सेवा करो अर्थात् शिवलोक को प्राप्त करो। ७०० सदाशिव तुझे

हस हस होइण भाळे त्रिपुरारि। केमन्ते कथा कहिबे हेमबन्तर दुलाळि ७३१
एसनेक समयरे भाजिला कोदण्ड। थरहर होइ कम्पे मेदिनी नबखण्ड ३२
कपिळास पुरकु जे शुभिला शबद। शुणि करि बनजन्तु होइले तवद ३३
लक्षेक बज्र कि पड़िला एक ठाइ। भयरे देबी उमा अइले पळाइ ३४
तरस्तरे जाइँण रुद्रंकु कोळ कले। कुच कुम्भे लगाइ तरस्ते भिड़िले ३५
डरे थरहर होइण कम्पे सती। अतिहिँ आनन्द होइले पशुपति ३६
मनरे बिचारिले भल हे रघुनाथ। तोहर जोगुँ मोते पार्बती प्रापत ३७
पार्बती हेला मोहर जानकी हेला तोर। दुहिँक कथा सफल हेला रघुबीर ३८
अनेक द्रबय मोहर होइलाणि क्षये। एहि कथा जे अनेक लाभ हुए ३९
प्रसन्न होइ शंकर श्रीरामे बर देले। सीतांकु भोग करि असुर मार हेले ७४०
एथु अनन्तरे शुण हे रस बाणी। अकळ बळ धनु भांगिले रघुमणि ७४१
आस्थानर तळे जे बिजय़ राम मणि। मनरे बिचारिले जनक ऋषि पुणि ४२
इन्द्र गोबिन्द पराय़ दिशन्ति बेनि भाइ। नोहिले आनकि ए धनुकु भांगइ ४३
तोळित भाजन जे नोहिले आन लोक। ईश्वर से धनु जे पारन्ति धरि एक ४४
ए सनेक समयरे बिश्वामित्र ऋषि। जनक संगरे होइले एक गोष्ठी ४५

गईं। ७३० त्रिपुरासुर के शत्रु शिवजी हँसते-हँसते सोच रहे थे कि हिमाचलतनया अब बात कैसे करेगी। ७३१ इसी समय धनुष का खण्डन हो गया। नौ खण्ड पृथ्वी थर-थर कम्पित होने लगी। ३२ वह शब्द कैलाशपुरी में सुनाई पड़ा। जिसे सुनकर वन्य-जन्तु स्तब्ध हो गए। ३३ लगता था जैसे एक लाख वज्र एक साथ मिलकर गिर पड़े हो। भयभीत होकर देवी उमा भाग आई। ३४ उन्होने भय से शिव को अक में भर लिया तथा दोनों कुच-कुम्भो को लगाकर भयभीत होकर उनसे चिपक गई। ३५ सती भय से थर्राकर कॉपने लगी। पशुपति शंकर अत्यन्त प्रसन्न थे। ३६ वह मन मे विचार करने लगे कि हे रघुनाथ ! आप बडे भले है। आपके कारण मुझे पार्वती प्राप्त हो गईं। ३७ पार्वती मेरी और जानकी तुम्हारी हुई। हे रघुवीर ! दोनो की वात सफल हो गई। ३८ मेरी बहुत विभूति नष्ट हो गई थी। इस बात से बड़ा लाभ हो गया। ३९ शकर ने प्रसन्न होकर श्रीराम को सीता को भोग करने तथा असुरों को सहज ही विनाश करने का वर प्रदान किया। ७४० इसके पश्चात् की रसमयी वार्ता सुनो। रघुश्रेष्ठ राम ने अकलित बल धनुष का खण्डन कर दिया। ७४१ श्रेष्ठ राम सिंहासन के नीचे विराजमान थे। तब महर्षि जनक ने मन में विचार किया। ४२ यह दोनो भाई इन्द्र-गोविन्द के समान दिख रहे है। नही तो क्या अन्य कोई धनुष को तोड़ सकता था। ४३ अन्य कोई धनुष को खण्डन करने का पात्र नही बना। केवल शिव ही धनुष को धारण करने में समर्थ थे। ४४ इसी समय महर्षि विश्वामित्र जनक ऋषि के साथ

एते लोक उपरे श्रीराम शिरोमणी। देखिले शिबधनु धरिले हस्ते पुणि १६
पितांकु गाळि देइ बिमुख हेउ थिल। एते काळे श्रीरामंकु पति गो पाइल १७
दशरथ राजा बधू होइल एवे पुण। अजोध्यारे पाटराणी होइब जाइण १८
शुणिण सीता ताकु वचन पुणि कहि। केते गो सगातुणी इंगिति करु तुहि १९
तुम्भ मानंक प्रसन्नरे हेलि मुं मुकत। बर्त्तिथान्तु मोर जनक नामे तात ७२०
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी। श्रीराम जे गुण टंकार कले धरि ७२१
आतजात करिण उछुड़े धनु जहुँ। कोवण्डर दर्प जे कलिले राम तहुँ २२
अतिहिँ आमञ्चन्ते कोदण्ड शरासन। मड मड शबद शुभइ घन घन २३
मध्यरु भांगि गला बेनि खण्ड होइ। आदित्य देबता जे स्थकित होइ रहि २४
सप्त समुद्र जे लहरी हेला स्थिर। ड़रे स्तम्भीभूत जे हेले शशीधर २५
पर्शुराम तपे थिले भांगि गला जोग। बिचारिले मने त एकथा असम्भव २६
जोगरे जाणिले जे धनु भग्न हेला। जाणिण पर्शुराम मनरे शंका कला २७
कपिळास कन्दरे जे शंकर गउरी। कळिकरि दुइ जण मने बिमन धरि २८
सदाशिब उमांकु सम्पादि न नेवारु। तेणु करि उमा देबी क्रोधे बसे दूरु २९
पार्वती ईश्वरंकु अछन्ति पछकरि। कथारे बइराग मनरे दुःख धरि ७३०

श्रीराम इतने लोगो पर सिरमौर हो गये। उन्होंने शिव धनुप को उन्हे हाथों पर धारण करते हुये देखा तुम पिता को बुरा भला कहकर दुःखी हो रही थीं। इस समय श्रीराम को तुमने पति रूप मे प्राप्त कर लिया है। १६-१७ अब तुम राजा दशरथ की बहू हो गयी और तुम जाकर अयोध्या की पटरानी बनोगी। १८ यह सुनकर सीता ने फिर कहा हे सखि! तुम कितनी बातो का सकेत कर रही हो। १९ तुम लोगो की आनन्ददायिनी शुभेक्षाओ से मैं मुक्त हो गई (सफल कामा हो गई)। हमारे पिता जनक चिरजीवी रहे। ७२० हे शाकम्बरी! तुम इसके पश्चात् सुनो! श्री राम ने प्रत्यञ्चा पकड कर टंकार दी। ७२१ श्रीराम ने खीच-तान करके कोदण्ड धनुष के दर्प का आकलन किया। २२ कोदण्ड धनुप के अत्यन्त कर्षण करने पर घनघोर मर-मर शब्द सुनाई पडा। २३ फिर वह कोदण्ड मध्य से दो खण्डो मे होकर टूट गया। भगवान भास्कर स्तब्ध होकर रह गए। २४ सातो समुद्रो की लहरें शान्त हो गईं। चन्द्रशेपर शिवजी भय से स्तम्भित हो गए। २५ परशुराम तपस्या कर रहे थे। उनकी समाधि भंग हो गई। वह इस असम्भव बात पर विचार करने लगे। २६ उन्हे योग से ज्ञात हो गया कि धनुपभग हो गया है। यह जानकर उनके मन मे शका हो गई। २७ कैलाश की कन्दरा में शिव पार्वती दोनों मे कुछ कहा सुनी हो जाने से उनके मन खिन्न थे। २८ शकर द्वारा पार्वती की इच्छा पूरी न होने से वह मान करके दूर बैठ गई थी। २९ मन मे दुखी होकर बातचीत छोड़कर पार्वती शकर की ओर पीठ करके बैठ

देखिण मुनि बोलन्ति शुण गो दुलाळी ।
तो लागि बार बरष सहिलि आद्दर्दोळि ७६०
एबे तुम्भ कर्मरे उत्तम बर मिळि । सरिसम तोते गो अटइ महा आळि ७६१
दशरथ राजा जे सूर्य्य बंशरे जात ।श्रीराम लक्ष्मण दुहेँ अटन्ति तांक सुत ६२
जणा गला ताहांकु क्षत्री सम नाहिँ । अगम्य वनरे ताड़की मारे सेहि ६३
बिश्वामित्र जाग जे रखिले भुजबळे । शापरे अहल्या जे पाषाण होइथिले ६४
श्रीराम पादलागि होइला पूर्ब देह । प्रशंसा करन्ति जारे स्वर्ग पितामह ६५
बिश्वामित्रंक संगते एथकु अइले ।मोर बाञ्छा एहि बर करिबि बोइले ६६
ईश्वरंक धनु जे अकळित बळ । भुमिर छड़ाइ न पारन्ति सुरपाळ ६७
पर्शुराम जेउँ धनु देखि प्रशंसइ । क्षत्री होइ केहि धनु तोळि न पारइ ६८
रावण कुम्भकर्ण शते मुखा रावण ।तिनि लक्ष असुर घुञ्चिले आसि पुण ६९
लक्षेक राजा मुँ जे बरणा करि आणि ।एगार बेळ पर्य्यन्त फेरिले देखि पुणि ७७०
बतिश कोटि ब्राह्मण षाठिए कोटि ऋषि ।
हाटुआ बाटुआ जे पथुकी जन आसि, ७७१
एगार थर एथिरे धनु जज्ञ कलि ।गोटिए सामर्थ मुँ काहाकु न देखिलि ७२

उन्होने जाकर जनक के चरणो में प्रणाम किया। ५९ यह देखकर मुनि ने कहा हे दुलारी! सुनो। तुम्हारे लिये बारह वर्ष तक मैं उलझनों को सहन करता रहा हूँ। ७६० इस समय तुम्हारे कर्म के अनुसार उत्तम वर मिला है। हे पुत्री! वह तुम्हारे बराबरी का है। ७६१ राजा दशरथ सूर्य वंश मे उत्पन्न हुए और श्रीराम तथा लक्ष्मण दोनो उनके पुत्र है। ऐसा पता चलता है कि उनकी बराबरी करने वाला कोई योद्धा नही है। उन्ही ने अगम वन में ताड़का को मार डाला। ६२-६३ उन्होंने अपने बाहुबल से विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की है। शाप के कारण अहिल्या पाषाण हो गयी थी। ६४ श्रीराम के चरणों के लगने से उसे पहले जैसा शरीर प्राप्त हो गया। स्वर्ग के पितामह ब्रह्माजी जिसकी प्रशंसा करते है। ६५ यह विश्वामित्र के साथ यहाँ पर आये। मेरी इच्छा इन्ही को वर के स्वरूप में वरण करने की है। ६६ शिवजी का जो अकलित बल वाला धनुष है। उसे बड़े-बड़े सूरवीर भूमि से नही छुड़ा पाते थे। ६७ जिस धनुष को देखकर परशुराम प्रशसा करते रहते है। उस धनुष को पराक्रमी होकर भी कोई उठा नही पाया। ६८ रावण कुम्भकर्ण शतकण्ठ रावण तथा तीन लाख असुर यहाँ आकर पीछे हट गये। ६९ मैं एक लाख राजाओ को वरण करके लाया था। ग्यारह बार पर्यन्त वह उसे देखकर लौट गये। ७७० बत्तीस करोड ब्राह्मण, साठ करोड़ ऋषि, हाट बटोही तथा पथिक-जन आये है। ७७१ मैने इस स्थान पर ग्यारह बार धनुषयज्ञ किया है परन्तु मैंने

सकळ मुनि मेळि होइले बिचारि। श्रीरामर बेळे जे एड़े कर्म करि ४६
बार बरष हेला अदर्दोळि सहिलि। धनुर स्वयम्बर आज मुँ सारिलि ४७
दशरथ राजांकर कि सामान्य पुण्य कहि। एमन्त परा पुत्र से भाग्य बळे पाइ ४८
देखणाहारी लोक बेढिण देखुछन्ति।
धन्य धन्य श्रीरामचन्द्र बोलिण बोलन्ति ४९
बाळक तनय तोर आजानु बेनि बाहु।बज्र समान धनु भांगि जश तु रुहाउ ७५०
सुन्दर रूप गोटि राजांक दर्प जिणे। तुहि से रामचन्द्र, कुळर मण्डने ७५१
श्यामळ देह गोटि पबित्र तोर अंग। पाद पद्मंकु सरि नुहइ अनंग ५२
केउँ ठारे विधाता थिला तुम्भंकु थोइ। सीता परा दुहिता थिला अबिबाहि ५३
दिकथा एक करि विधाता भिआए पुण।
एते काळे आणिबिधाता संग कला जाण ५४
कौशिक बोइले जनक मुख चाहिँ। जेब्रण सत्य तुम्भे करिछ तपसाइँ ५५
से बाञ्छा सिद्ध हेला जानकी बिभाकर। दुहितार सदृशे मिळिला आसि बर ५६
शुणिण जनक ऋषि हरष मन होइ। सत्यानन्दकु जे राइण आज्ञा देइ ५७
नग्ररे उत्सव जे कराअ बोइले। सीतार सन्निध्यकु जनक वेगे गले ५८
पिताकु देखि जानकी लाज होइ। जनकर चरणे ओळगिले जाइ ५९

जा मिले। ४५ समस्त ऋषि लोग सम्मिलित होकर विचार करने लगे कि इस समय श्रीराम ने ऐसा कार्य कर दिया। ४६ बारह वर्ष से मै उलझन में पड़ा अपमान सहता रहा। आज मेरा धनुष यज्ञ समाप्त हुआ। ४७ राजा दशरथ का पुण्य क्या साधारण कहा जा सकता है। जिन्हे भाग्य से ऐसा पुत्र प्राप्त हुआ है। ४८ दर्शनार्थी लोग चारो ओर से घेरे हुए देख रहे थे और श्रीरामचन्द्र ! तुम धन्य हो ! धन्य हो। इस प्रकार कह रहे थे। ४९ हे बालक ! तुम्हारी दोनो भुजाएँ आजानु लम्बित है। वज्र के समान धनुष का खण्डन करके तुमने यश स्थापित किया है। ७५० तुम्हारा सुन्दर रूप राजाओ के घमण्ड को चूर करने वाला है, जीतने वाला है। हे रामचन्द्र ! तुम ही कुल की शोभा वढाने वाले हो। ७५१ तुम्हारा श्यामल शरीर पवित्र है। कामदेव भी आपके चरण कमलो की समता नही कर सकता है। ५२ ब्रह्मा ने आपको किस स्थान पर रख दिया था जो कि सीता जैसी कन्या अविवाहिता रह गई। ५३ भाग्य दो बातो को एक करके उसकी संरचना करता है। इतने दिनो मे विधाता ने लाकर सग करा दिया। ५४ विश्वामित्र ने जनक के मुख की ओर देखते हुये कहा। हे तपोधन ! आपने जो प्रतिज्ञा की थी। वह इच्छा सिद्ध हो गई। अव जानकी का विवाह करो क्योकि कन्या के अनुरूप ही वर आकर मिला है। ५५-५६ यह सुनकर महर्षि जनक ने प्रसन्नचित्त होकर सतानन्द को बुलाकर आज्ञा दी। ५७ उन्होने कहा कि नगर में उत्सव कराओ फिर जनक शीघ्रता से सीता के पास चले गये। ५८ पिता को देखकर जानकी लज्जा से गड़ गयी और

नवरत्न माळाकु कररे नेबि घेनि। धिर धिर होइण जे, चालइ पद्मिनी ८८
श्रीराम पाशरे प्रवेश हेले जाइँ। अतिहिँ आनन्दरे हरष मन होइ ८९
राजागण माने जे, सभारे बसिथिले। जानकी आसिवार नय़ने देखिले ७९०
नेपाळ, भूपाळ, कर्णाट, काञ्चि जे विराट।
काशी, जाजपुर, आवर ओड़राष्ट्र ७९१
अंग, बंग, कळिंग, घोड़ा घाटि रणपुर। काउँरि देश, सउरि सम्भल जय़पुर ९२
सकळ राजागण होइण एक मेळ।कन्याकु नेबे बोलि कलेक आसि गोळ ९३
जे, जाहार आयुध घेनिण बाहारिले।मार मार धर धर बोलिण डाक देले ९४
गोळ शुणि करिण रामंकु कहिले। राजागण कळि भिआण एथि कले ९५
शुणि करि श्रीराम निशरे हस्त देले। लक्ष्मण वीर धनु धररे बोइले ९६
मोते वरिबारु कन्या बिभा हेले जाण। धनु धरि राजांकु कर मोह मान ९७
प्राणरे नमारिबु मोहरे रखि थिबु। कन्या एथुँ गले देखिबा बळ सबु ९८
बहुत राजा गणे अछन्ति एथि रहि।आज जाणिबा ना काठारे केते बळथाइ ९९
जनकंकु चाहिँण जे, रामचन्द्र कहि। मनरे भय़ न कर पितामह रहि ८००
कौशिक ऋषि जदि मो ठारे सन्तोष। लक्षे राजा होइले करिबेक किस ८०१
तुम्भे जेबे सत्यमने दुहिता मोते देव। ब्रह्मा शिव हेले मोते कि करि पारिव २

मन से धीरे-धीरे चल रही थी। उनके साथ एक सौ दासियाँ थी। ८७ वह कमलिनी नवरत्नों की माला हाथ में लेकर मन्दगति से चल रही थी। ८८ वह अत्यन्त आनन्दपूर्वक प्रसन्नचित्त से श्रीराम के निकट जा पहुँची। ८९ जो राजागण सभा में बैठे थे उन्होने नेत्रों से जानकी को आते देखा। ७९० नेपाल, भूटान, कर्नाटक, काची, विराट, काशी, याजपुर, उत्कल, अग, वंग, कलिंग, घोड़ाघाटी, रणपुर कउँरी देश सौर सम्भल, जयपुर के सभी राजागण एकजुट होकर कन्या को लेने के लिये आकर उत्पात मचाने लगे। ७९१-९२-९३ वह सब अपने-अपने आयुध लेकर निकल पडे और मारो-मारो पकड़ो-पकड़ो कहकर चिल्लाने लगे। ९४ शोर सुनकर राम ने कहा कि राजागणों ने यहाँ उत्पात मचा रखा है। ९५ कोलाहल सुनकर श्रीराम ने मूछों पर हाथ फेरा और उन्होंने पराक्रमी लक्ष्मण से धनुष उठा लेने को कहा। ९६ वह पुनः बोले मुझे वरण करने के कारण कन्या का विवाह हो गया। तुम धनुष उठाकर राजाओं को अचेत करो। ९७ तुम उनके प्राण नष्ट न करना केवल उन्हे अचेत रखना। कन्या के यहाँ से जाने पर उनका सारा बल देख लेगे। ९८ यहाँ पर बहुत से राजागण है। आज पता चलेगा कि किसके पास कितना बल है। ९९ जनक की ओर देखते हुये श्रीराम ने कहा हे महान पिता ! आप यहाँ रुके और मन मे भय न करे। महर्षि विश्वामित्र जब मुझ पर प्रसन्न है तो यह लाख राजा होने पर भी क्या कर पाएँगे। ८००-८०१ यदि आप सच्चे मन से कन्या मुझे प्रदान करेंगे

बेदबर इन्द्र जे दशदिगपाळे । सेहि घुञ्चिगले जे न धरि धनु बळे ७३
ईश्वर कहिबारु मोते जणा गला । असुर मारिबाकु विष्णु जात हेला ७४
से धनुकु श्रीराम धइले भुजबळे । तुम्भे मात देखिल त नयन जुगळे ७५
एबे जिबा चाल गो शरद चान्दमुहिँ । श्रीरामंकु वर तुहि रत्नमाळ देइ ७६
एबे मोर सत्य जे ब्रतहिँ पूरिला ।श्रीराम शिवधनुकु जेणु आमञ्चिला ७७
आस आस सीतय्रा गो बिळम्ब न कर । महेन्द्र समय्ररे श्रीरामंकु बर ७८
पितांकर मुखरु एसनेक शुणि ।जानकी बोइले पिता कहुछ केउँ वाणी ७९
बोइले कनिष्ठ दुहितांकु जे पुच्छ ।सकल कथा जाणइँ जन्मरु उर्मिळा त ७८०
शुणिण जनक उर्मिळाकु अनाइले ।किस कहे जानकी जाणु कि कथा भले ७८१
उर्मिळा बोइले पिता ठाकुराणी जाआन्तु। त्रैलोक्य नाथ ठाकुरंकु बरण करन्तु ८२
ठाकुराणी फेरिले मुँ जिबि तुम्भे शुण । आम्भे बेनि दुहितारु पाइब कारण ८३
जनक बोइले तोर सत्य सिद्ध नोहि ।उर्मिळा बोइले अनन्तसिद्ध करिब रहि ८४
देखिब एहि क्षणि जे कार्ज्य हेब सिद्ध । सत्य ब्रत पुरिब तुम्भर एबे आज ८५
शुणि करि जनक जानकी तोष हेले । उठिकरि जानकी पितार संगे चळे ८६
संकोच चित्तरे से चालन्ति धीर धीर । संगरे परिवारि शते जे, तांकर ८७

किसी एक को भी सामर्थ्यवान नहीं देखा । ७२ वेदवर ब्रह्मा इन्द्र दसों दिगपाल लोग भी धनुष को बलपूर्वक बिना उठाये ही खिसक गये । ७३ शिव के कहने पर हमें पता चला कि असुरो का नाश करने के लिये विष्णु ने अवतार ग्रहण किया है । ७४ उस धनुष को श्रीराम ने अपने भुजबल पर धारण कर लिया । हे माता ! आपने भी दोनों नेत्रो से देखा है । ७५ हे शरदचन्द्रवदनी ! अब चलो चलेंगे और तुम श्रीराम को रत्नमाला प्रदान करके वरण करो । ७६ इस समय मेरी सत्य प्रतिज्ञापूर्ण हो गयी । जब श्रीराम ने शिव धनुष का कर्षण किया । ७७ हे सीता ! शीघ्र ही आओ । विलम्ब मत करो और महेन्द्र बेला मे श्रीराम का वरण करो । ७८ पिता के मुख से ऐसे वचनो को सुनकर जानकी ने कहा हे पिता ! कैसी बाते कर रहे हैं । ७९ आप छोटी बेटी से पूँछिये । वह सम्पूर्ण कथा जन्मकाल से ही जानती है । ७८० यह सुनते ही जनक ने उर्मिला की ओर निहारते हुये पूँछा कि जानकी क्या कह रही है । क्या यह कथा तुम्हे भली प्रकार ज्ञात है । ७८१ उर्मिला बोली हे पिता ! स्वामिनी सीता जाये तथा तीनो लोको के स्वामी को वरण करें । ८२ इनके आने पर मैं जाऊँगी । यह आप सुन लीजिये कि हम दोनो कन्याओ से आपको मुक्ति मिलेगी । जनक ने कहा कि तुम्हारी प्रतिज्ञा तो पूर्ण नही हुयी । उर्मिला बोली कि इसे थोडा रुककर अनन्तदेव सिद्ध करेंगे । ८३-८४ आप इसी क्षण कार्य सिद्ध होते देखेंगे और आज ही आपकी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जायेगी । ८५ यह सुनकर जनक तथा जानकी सन्तुष्ट हो गये । जानकी उठकर पिता के साथ चल दी । ८६ वह सकुचित

श्रीरामंकु ओळगि होइले बेगे पुण । बोइले नना तुम्भे न धर धनु त्रोण १८
कुसुम माळ धरि ठाकुराणी उभा आगे । बरण करिण सेहु जाआन्तु सरागे १९
ऐ राजागण माने मोते न अण्टन्ति । एका थर करे मुँ मारिबि सकुन्ति ८२०
शुणि नाहिँ कि तुम्भे जनक राजा कहि । लक्षे राजा जिणिले जे दुहिता देबइँ ८२१
कौशिक तोष हेबे जनकर सरिब आर्दोळि। दशरथ हरष हेबे बधू देखि करि २२
शुणि करि बिश्वामित्र जनक सन्तोष ।जानकी बिचारिले उर्मिला कथा सत २३
एमन्त समयरे लक्ष्मण क्रोध हेले । अजय्य मोह शर धनुरे जोचिले २४
मन्त्र शुमरिण शरकु तिआरिले । सकळ राजांकु जाइ मोह कर बळे २५
परम आनन्द हेले शर शुणि करि ।बोइला समस्तंकु शुआइ बिमोह करि २६
एते करि तुणीरु शर चळि गला । सकळ नृपति अंगे जाइण भेदिला २७
धनु शर छाडिण सकळ राजा पडि । देखिण देवताए साधु साधु करि २८
बिचारिले चारि रावण एबे मले । पृथ्वीर भारा एबे उश्वास हेब भले २९
सकळ ऋषि तोष प्रजागण सर्वे । हुळहुळि देइ नारी माने तोषं भावे ८३०
जनक कौशिक सत्यानन्द पुण । हसिले मुखरे से देइण बसन ८३१

अभ्यर्थना करते हुये श्रीराम को प्रणाम किया और शीघ्रतापूर्वक बोले हे भैया ! आप धनुष तथा त्रोण न धारण करे । १७-१८ राजकन्या सुमन माल लेकर सामने खड़ी है । वरण करने के उपरान्त वह भी प्रेम से चली जाये । १९ यह राजा लोग मुझे नही गाँठते है । मै इन सबको एक बार मे ही मार दूँगा । ८२० क्या आपने महाराज जनक के इस कथन को नही सुना कि एक लाख राजाओं पर विजय पाने वाले को वह पुत्री प्रदान करेंगे । ८२१ इससे विश्वामित्र जी प्रसन्न होगे । जनक की उलझन समाप्त हो जायेगी और बहुओ को देखकर दशरथ प्रसन्न हो जायेगे । २२ यह सुनकर जनक और विश्वामित्र संतुष्ट हो गये और जानकी विचार करने लगी कि उर्मिला की बात सत्य है । २३ इसी समय लक्ष्मण कुपित हो गये । उन्होने अजेयमोह बाण धनुष पर चढ़ा लिया । २४ फिर उन्होने मन्त्र का स्मरण करके बाण छोड़ दिया और उसे आदेश दिया कि सभी राजाओ को जाकर बलपूर्वक अचेत कर दो । २५ बाण सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । बाण बोला कि मै सभी को अचेत करके सुला दूंगा । २६ इतना कहकर बाण तूणीर से चल पड़ा और उसने जाकर सभी राजाओं के अंग भेद डाले । २७ सभी राजा लोग धनुष बाण छोड़कर गिर गये । यह देखकर देवता लोग धन्य-धन्य कहने लगे । २८ देवताओ ने विचार किया कि अब चार रावणो का विनाश हो जायेगा और पृथ्वी का भार अब भली प्रकार से समाप्त हो जायेगा । २९ सभी ऋषिगण तथा प्रजाजन यह देखकर सन्तुष्ट हो गये और नारियाँ सन्तुष्ट होकर मागलिक शब्द करने लगी । ८३० जनक विश्वामित्र और सतानन्द मुख में वस्त्र रखकर हँसने लगे । ८३१ दासियो सहित सीता का मन

जनक बोइले बाबु श्रीराम तुम्भे शुण । एहि रूपे बहु थर गोळ कले पुण ३
धनु तोळि न पारि गोळ ए करन्ति । निर्ल्लज पण करि एठारे रहि छन्ति ४
सदाशिव कामधेनु, पर्शुराम बळे । दश वेळ मुहिँ जे, वन्चिलि अव हेले ५
एबे तुम्भ संगरे करिवे बोलि रण । धनु शर धरिण बाहार हेले पुण ६
श्रीराम बोइले किस करिबे सेत । सानुज लक्ष्मण बीर रखिछि ताहान्त ७
एमन्त कथा कहन्ते राजा शुणे पुण । सभारु उठि सकळे अइले तत्क्षण ८
देखन्ता जनमाने बोइले हेला गोळ । जनक प्रजामाने मनरे बिकळ ९
ऋषि गण सर्वे देखिण हेले उभा । ताटका होइले देखि सर्वजन प्रजा ८१०
धनुर टंकार शब्द कले राये ।धनु रडिरे ब्रह्माण्ड कम्पिला स्वर्ग जाए ८११
स्वर्गरे देवे थाइ मनरे बिचारन्ति ।श्रीराम लक्ष्मणंकु लक्षे राजा वेढिछन्ति १२
ए दुहेँ अटन्ति बाळुत दशरथ पुए । तांक संगे जुद्ध आजि करिबे राजाए १३
बृहस्पति बोइले सकळ सुरे शुण । विश्वामित्र जागरे असुरंक रण १४
नउ सहस्र असुर परिवार मिळि । रण करन्ते जे सेथिरे समस्ते मरि १५
ए छार राजागणे कि समरे होन्ति सरि। एकाके लक्ष्मण जे मारिव धरि करि १६
एमन्त समग्ररे जे बीर लक्ष्मण । कौशिक जनकंकु कले मान्य धर्म १७

तो ब्रह्मा तथा शिव होने पर मेरा कुछ न कर पायेंगे । २ जनक ने कहा हे वत्स राम ! तुम सुनो । इन लोगों ने इसी प्रकार से बहुत बार उत्पात मचाया है । ३ धनुप न उठा पाने के कारण यह लोग उत्पात मचाते है और निर्लज्ज होकर यहाँ डेरा जमाये है । ४ सदाशिव, कामधेनु तथा परशुराम के बल पर मैं दस वार अवहेलना से वचा रहा हूँ । ५ इस समय तुमसे युद्ध करने के लिये यह लोग धनुप वाण लेकर निकल पडे हैं । ६ श्रीराम ने कहा कि यह क्या करेंगे पराक्रमी भाई लक्ष्मण ने उन्हे अटका रखा है । ७ ऐसी वाते करते हुये सभी राजा लोग उसी समय सभा से उठकर आ गये । ८ दर्शक लोग चिल्ला पड़े कि हगामा मच गया है । जनक की प्रजा मन से व्याकुल थी । ९ उसे देखकर सम्पूर्ण ऋपि मण्डल खडा हो गया और समस्त प्रजाजन यह देखते ही स्तब्ध रह गये । ८१० राजा लोग धनुष पर टकार की ध्वनि करने लगे । धनुष की टकार के शब्द से ब्रह्माण्ड तथा स्वर्ग पर्यन्त सभी काँप उठे । ८११ स्वर्ग मे देवता लोग मन मे विचार करने लगे कि श्रीराम और लक्ष्मण को एक लाख राजाओ ने घेर लिया है । १२ यह दोनो दशरथ के पुत्र बच्चे हैं । आज राजा लोग इनके साथ युद्ध करेगे । १३ वृहस्पति ने कहा कि सभी देवता लोग सुनो । विश्वामित्र की यज्ञ मे राक्षसो के युद्ध मे नौ हजार असुरो के परिवारों ने मिलकर युद्ध किया और वहाँ पर सभी मार डाले गये । १४-१५ यह तुच्छ राजागण युद्ध मे उनकी समता कैसे कर पायेंगे । अकेला लक्ष्मण ही उन्हे पकड़कर मार डालेगा । १६ इसी समय पराक्रमी लक्ष्मण ने विश्वामित्र और जनक की

नोहिले कि शिव धनु धरन्ते एहु पुण । जणा गला सबु एथर सामर्थ पण ४५
जनक ऋषिकि जाइ राजा गणे कहि ।बरण करु श्रीरामंकु दुहिता दिअ कहि ४६
एथु अनन्तरे गो शुण शाकम्बरी । लक्षे राजा जिणिले लक्ष्मण धनु धरि ४७
तेणु से मन माया उर्मिलारे कहि ।कर बन्दापना तुम्भ काज्यं गो सिद्ध होइ ४८
शुणिकरि उर्मिला जे हरष होइले । कुसुम दूर्वाक्षत प्रथमे बन्दाइले ४९
मंगल आळती जे दीपाबळी पुण । हुळ हुळि देइण बन्दान्ति नारी गण ८५०
बन्दापना करन्ति मंगळ ध्वनि करि । हुळहुळि शबदरे गगन मार्ग पूरि ८५१
एथु आनन्तरे जे जनक ऋषि पुण । दासीकि कहिले तु कह जे मारेण ५२
शुणि करि दासीगणे जानकीरे कहि । पिता आज्ञा देले जे बरण कर तुहि ५३
शुणिण जानकी जे मनरे हेतु करि । पुष्प रत्नमाळा से जे बेनि करे धरि ५४
श्रीराम कण्ठरे जे लम्बाइले नेइ । चारि चक्षु भेट जे पडिला एक ठाइँ ५५
मुखकु मुख जहुँ निकट होइला । भ्रमर कि सते जे पद्मकु चुम्बिला ५६
भेट हुअन्तेण हसिले बेनि जन । आनन्दरे हरष कलेक सेहु मन ५७
स्वर्गरे साधु साधु शुभिला जय़ ड़ाक । चारि वेद गाय़न कलेक चतुर्मुख ५८
जुबती गणे रहि जे देले हुळहुळि । कि जाणि मुख राबरे सागर उछुळि ५९

प्रसन्न हो गये । ४४ नही तो शिव का धनुष उठाने पर सबकी सामर्थ्य का पता चल गया । ४५ राजाओ ने जाकर महर्षि जनक से कहा कि आप आज्ञा दीजिये कि पुत्री सीता श्रीराम का वरण करे । ४६ हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् जब लक्ष्मण ने धनुष धारण करके लाख राजाओं को जीत लिया । ४७ तब मनमाया ने उर्मिला से कहा कि तुम्हारा कार्य सिद्ध हो गया । अब जाकर पूजा करो । ४८ यह सुनकर उर्मिला प्रसन्न हो गयी । उन्होने पहले फूल तथा दूर्वाक्षत से पूजा की । ४९ नारियाँ मगला आरती, दीपावली तथा माँगलिक ध्वनि के साथ पूजा करने लगी । ८५० उनके माँगलिक शब्द के साथ पूजा करने से वह ध्वनि आकाश में गूँजने लगी । ८५१ इसके पश्चात् महर्षि जनक ने दासियों से राजकुमारियो से कहने को कहा । ५२ यह सुनकर दासियों ने जानकी से कहा कि पिताजी ने वरण करने की तुम्हें आज्ञा दी है । ५३ यह सुनकर जानकी ने अपने मन में निश्चय करके दोनों हाथो में पुष्प-रत्नमाला धारण करके श्रीराम के कण्ठ में डाल दी तथा चारों नेत्र एक स्थान पर मिल गए । ५४-५५ जब मुख के पास मुख आ गया तो ऐसा प्रतीत होने लगा मानो सत्य ही भ्रमर ने कमल का मुख चुम्बन कर लिया हो । ५६ भेंट होते ही दोनों हँस पड़े और उनके मन आनन्द से भर गए । ५७ स्वर्ग मे साधुवाद तथा जयघोष सुनाई देने लगा । चतुर्मुख ब्रह्मा चारों वेदों का गायन करने लगे । ५८ युवतियाँ ठहरकर माँगलिक ध्वनि करने लगी । मुख का शब्द ऐसा हो रहा था

दासीगण हरष ज सीतार मन तोष। श्रीराम बोइले भाइ शुणरे कनिष्ठ ३२
एक गोटि बाणरे सकळ राजा मोह। राजा गणे सर्वे जे निरक्त हेले देह ३३
पिता शुणि करि आम्भर निन्दा जे करिबे।
स्वयंवर निमन्ते राजाहिँ न आसिबे ३४
जीवदान दिअ तुम्भे उठन्तु सर्वे पुण। जीवन्यास शर तु विन्ध तत्क्षण ३५
शुणिण लक्ष्मण जे जीवन्या सशर मारि।
चेता पाइ राजामाने उठिले वेग करि ३६
उठिकरि राजा माने सभारे हेले रुण्ड।
बोइले धन्य श्रीराम लक्ष्मण क्षत्री षण्ढ ३७
मारिण जीवदान देले हे एवे पुण। एहि परि कथा आम्भे न देखु नयन ३८
राजकुळे बाबु हे कीर्त्ति रुहाइल। उपर वंश संगरे तुम्भे जे सरि हेल ३९
सगर राजा बळे सागर खोळाइला।भगिरथि गंगा आणि मञ्चरे बुहाइला ८४०
हरिचन्दन राजा सत्यरे स्वर्ग गले। शिव राजा धर्मबळे वैकुण्ठ लभिले ८४१
दशरथ राजा जे शनिंकि जिणिले।तुम्भे लक्षे राजा जे जिणिल एहि ठारे ४२
जीबदान देबारु दिशिला बड़ पण। भल जोगे जन्म हेले भल भाइ पुण ४३
आम्भ मानंकर सबु जेते हिंसा थिला। जीवदान देबारु सन्तोष मन हेला ४४

प्रसन्न हो गया तभी श्रीराम बोले हे अनुज ! सुनो। ३२ एक ही वाण से सारे राजागण अचेत हो गये और उनके शरीर रक्तविहीन हो गये। ३३ यह सुनकर पिता जी हमारी निन्दा करेगे क्योकि स्वयंवर के लिये अब कोई राजा ही नही आयेगा। ३४ अब तुम सबको जीवनदान दो जिससे सब उठ पडे तुम इसी क्षण जीवन्यास वाण का सन्धान करो। ३५ यह सुनकर लक्ष्मण ने जीवन्यास वाण छोडा जिससे सचेत होकर राजा लोग शीघ्र ही उठ गये। ३६ राजा लोग उठ कर सभा मे एकत्रित हो गये और कहने लगे। हे क्षत्रियो में सॉड राम लक्ष्मण तुम्हारा पराक्रम धन्य है। ३७ तुमने मारकर फिर जीवनदान दे दिया। इस प्रकार की घटना हमने नेत्रो से नही देखी थी। ३८ हे वत्स ! तुमने राजकुल की कीर्ति स्थापित कर दी और अपने पूर्वजो की समता मे तुमने स्थान प्राप्त कर लिया। ३९ राजा सगर ने वलपूर्वक समुद्र को खुदवाया था और भगीरथ ने गगा को लाकर मृत्युलोक मे प्रवाहित कर दिया। ८४० राजा हरिचन्दन (हरिश्चन्द्र) सत्य प्रतिज्ञा से स्वर्ग को गये और राजा शिवि ने धर्म के वल पर वैकुण्ठ प्राप्त किया। ८४१ राजा दशरथ ने शनि पर विजय प्राप्त की और आपने यहाँ एक लाख राजाओ को जीत लिया। ४२ जीवनदान देने से आपका वडप्पन दिखायी पडा। भले योग मे जन्म लेने से तुम लोग अच्छे भाई हो। ४३ हम लोगो की जितनी भी ईर्ष्या तथा द्वेष था वह सब जीवनदान से नष्ट हो गया और हम सब

ताहार उत्सब जे स्वयम्बर आज। शिवधनु तोळिले दशरथंक तनुज ७५
दक्ष प्रजापति पूर्बरे जाग कले। देबंकर बोलरे ईश्वर न बरिले ७६
आमे कहिबारु मनरे कले खंग। अनेक बुझाइ जे कहिले श्रीरंग ७७
काहार बोल पुणि नकला जे दक्ष। कर्म तार जेणु होइला बिपक्ष ७८
एड़े अपमान शिबे दक्ष देला जहुँ। शुणि क्रोधरे ईश्वर अइले जे तहुँ ७९
क्रोधरे पञ्चानन धनुए जात कले। बिष्णुर तेज घेनिण कोदण्ड सर्जिले ८८०
अकळ बळ धनु नाम जे तार देले। चउद कोटि बळ ईश्वर रचिले ८८१
एकादश रुद्रंकर एगार कोटि बळ। हस्तरे धरि तांकु न पारन्ति हर ८२
नारायणंकु चिन्तले सेठारे सदाशिव।
जाणि करि साहा तांकु होइले बासुदेब ८३
बासुदेब सुमरन्ते बळ अकळित। तेणु से सदाशिब नाराच बिन्धिलेत ८४
दक्ष प्रजापतिकर जाग जे नाश कले। सुरगणंकु क्रोधे बाण जे प्रहारिले ८५
प्रजापति नाश करि गले शूलधारि। देबताए पळाइले ईश्वरंकु भय करि ८६
मिथिळारे सदाशिब से धनु थोइ गले।पिता मरिबा देखि उमा कुण्डरे पडिले ८७
क्रोध मनरे तहुँ महादेब पळाइले। हेमबन्त पर्बतरे प्रबेश होइले ८८
पार्बती बिहुने तप कले जे ईश्वर। एमन्ते बहिगला गुण केते काळ ८९

आज उसका स्वयम्बरोत्सव है। दशरथ के पुत्र ने शिवजी के धनुष कोउठा लिया है। ७५ पूर्वकाल में दक्ष प्रजापति ने यज्ञ किया था। देवताओ के कहने पर उन्होने शिवजी का वरण नही किया। ७६ हमारे कहने पर उनके हृदय में दु:ख हो गया। विष्णु ने भी उन्हें बहुत समझाया। ७७ परन्तु दक्ष ने किसी का भी कहना नही सुना क्योकि उसके कर्म ही उसके विपक्ष में हो गए थे। ७८ जब दक्ष ने शिव का इतना अपमान किया। तब यह सुनकर शिवजी क्रोधित होकर वहाँ जा पहुँचे। ७९ पचानन ने कुपित होकर विष्णु का तेज लेकर इस धनुष का निर्माण करके इसे प्रकट किया। ८८० उन्होंने इस धनुष का नाम अकल-बल रखा। फिर उन्होंने चौदह करोड़ सेना उत्पन्न की। ८८१ ग्यारह रुद्रो की ग्यारह करोड़ सेना थी। शिवजी उसे हाथ में धारण नही कर पा रहे थे। ८२ फिर वहाँ पर शकर जी ने विष्णु का चिन्तन किया। यह जानकर वासुदेव ने उनकी सहायता की। ८३ वासुदेव के स्मरण करते ही उनमें अमित बल आया तब शिव ने बाण का संधान किया। ८४ फिर उन्होंने दक्ष- प्रजापति का यज्ञ नष्ट किया और क्रोध से सुरगणो पर बाणो का प्रहार किया। ८५ त्रिशूलधारी प्रजापति का सहार करके चले गये शिवजी से डरकर देवता लोग भाग गये। ८६ शकर जी उस धनुष को मिथिला में रख गये। पिता की मृत्यु को देख कर सती यज्ञकुण्ड में गिर पड़ी। ८७ तब मन में कुपित होकर महादेव जी वहाँ से दौड़े और हिमालय पर्वत पर जा पहुँचे। ८८ पार्वती के वियोग में शकर जी

देखणा हारी लोके जय़ जय़ करि। एक आरेक देखे उबुरा उबुरी ८६०
के बोलन्ति सीता गो काहिँरे तप कला। रूप अनुरूपे गो वर से पाइला ८६१
देखिले श्रीराम जे विजे करिछन्ति। दक्षिण पाशरे जनक आत्मज अछि ६२
बाम पाशे लक्ष्मण अछइँ बीर मणी। गह गह शबद शुभइ गोळ वाणी ६३
टमक निशाण जे महुरी शंख ध्वनि। हुळहुळि शबदरे ध्वनि शुभे पुणि ६४
अन्तरीक्षे थाइण जे देखन्ति सुरगण। पुष्पक जान चढिण मिळिला रावण ६५
दिग भ्रमण रथरे शून्यरे जाए चळि। देखिले देवताए शून्यरे विजे करि ६६
ब्रह्मांकर आगरे जे मिळिला दशशिरि। देखिला देवताए सर्वे छन्ति पूरि ६७
देखिण सुरगण कले भय़मन। एककु आरेक जे पुछन्ति बचन ६८
देबे बोइले किम्पा अइल लंकपति। के बोले देखिले ए सरिव बिभुत ६९
ए कथा देखि एबे अइला लंक पाळ। तुम्भे तुनि होइ थाअ सकळ दिगपाळ ८७०
दशशिर बोइला जे बिधाताकु चाहिँ। कर जोड़िण जे कहइ लंक साइँ ८७१
भो पितामह तुम्भे केवण कारणे। स्वर्ग तेजि गगने बिजय़े देवगणे ७२
बिधाता वोइले एबे मञ्चकु तुहि चाहिँ। मिथिळा नग्ररे आजि हेउछि उत्साह ७३
मिथिळार नृपति जनक महामुनि। जानकी नामरे जे ताहार दुलणी ७४

मानो समुद्र उद्वेलित हो रहा हो। ५९ दर्शक लोग जयनाद कर रहे थे और एक दूसरे से आगे बढकर देख रहे थे। ८६० कोई कहने लगा कि सीता ने कहाँ तपस्या की है जिससे उसे उसके अनुरूप सुन्दर वर प्राप्त हुआ है। ८६१ उन लोगो ने श्रीराम को उपस्थित देखा। उनके दाहिनी ओर जनक की पुत्री थी। ६२ उनके वाम पार्श्व मे पराक्रमी लक्ष्मण थे। सर्वत्र चहल-पहल का उद्घोष सुनाई दे रहा था। ६३ टमक निशान शख तथा महुरी के घोप के साथ मागलिक ध्वनि सुनाई दे रही थी। ६४ देवगण आकाश से सब देखरहे थे। तभी पुष्पक विमान पर चढकर रावण आ पहुँचा। ६५ आकाश से देवताओ ने उसे दिग्भ्रमण रथ पर बैठकर जाते हुए देखा। ६६ दशकण्ठ ब्रह्मा के समक्ष जा पहुँचा। उसने देवताओ को एकत्रित देखा। ६७ उसे देखकर देवता मन मे भयभीत हो गए तथा एक दूसरे से पूँछने लगे। ६८ देवताओ ने कहा कि लकापति का आगमन किसलिये हुआ है। किसी ने कहा कि देखने से यह पवित्र विभूति समाप्त हो जाएगी। ६९ इस बात को देखकर लका का अधिराज आया है। दश दिग्पाल! तुम लोग! अवाक् बने रहो। ८७० ब्रह्मा को देखकर लकेश्वर दशकण्ठ ने हाथ जोडकर कहा हे पितामह! आप समस्त देवगण किस कारण से स्वर्ग को त्यागकर आकाश मे विराजमान हो ?। ८७१-७२ ब्रह्मा ने कहा कि तुम मृत्युलोक की ओर देखो। आज मिथिला नगर मे उत्सव हो रहा है। ७३ मिथिला मे जनक नाम के महर्षि है। उनकी कन्या का नाम जानकी है। ७४

आर दोहिता नामरे प्रमाण कला पुण ।लक्षे राजा जे जिणिब ताकु देबि जाण ४
ए वचन पाळि एगार बरष जाग कला । ऋषि ब्राह्मण राजा सर्बुंकि बरिला ५
धनु धरिबाकु केहि नोहिला भाजन । अनेक आद्गुर्दोळि जे सहिले ऋषि पुण ६
बार बरषरे जे हेला बिपरित । दशरथ नन्दन श्रीराम लक्ष्मण सेत ७
बार बरष बयसे धनु आमञ्चिला । गुण टंकार करन्ते धनु भाजि गला ८
जनक ऋषि सत्य फळिलाक जहुँ । रत्नमाळा देइ बरिले सीता तहुँ ९
एमन्त समयरे राजाए गोळ कले । कन्या नेबा बोलिण मनरे बिचारिले ९१०
श्रीराम सानुज जे अटन्ति लक्ष्मण । एका काण्डे मोह कले लक्षे राज पुण ९११
श्री राम कहन्ते पुण जिआइ ताकु देले । राजा गणे सर्बे सन्तोष तहुँ हेले १२
ताहांकु देखिबाकु जे अइले सुरगण । शुणिण संकोच पाए बिश्रबा नन्दन १३
ब्रह्मा कहिबारु तळकु देला दृष्टि । देखिला शोभाबन दिशु अछि सृष्टि १४
देखिण नृपति माने खसिण पळाइले । पर्बतरु जेसने नदी खसि पडे १५
एथु अनन्तरे गो शुण शाकम्बरि।राजा माने बिचारिले एठारु जिबा फेरि १६
बार बरष पुअ एत धनु भग्न कला ।आम्भ मानंक मुखरे काळि लगाइला १७
आम्भ मानंकु जिणिला एकाकाण्डे मारि । केउँ धर्म बळरे जिआए दया करि १८

कन्या प्रदान करूँगा । ३ और दूसरी कन्या के लिये उन्होंने यह निश्चित किया कि जो एक लाख राजाओं को जीत लेगा उसे प्रदान करूँगा । इन वचनों का पालन करते हुये उन्होने ग्यारह वर्ष तक यज्ञ किया और ऋषि ब्राह्मण राजा आदि सबका वरण किया । ४-५ धनुष उठाने में कोई समर्थ नही हुआ । महर्षि को अनेक कष्टो को सहन करना पड़ा । ६ बारह वर्ष तक अवस्थाये विपरीत रही, वह तो दशरथनन्दन श्रीराम-लक्ष्मण थे जिन्होने बारह वर्ष की आयु में धनुष का कर्षण कर दिया और प्रत्यंचा पर टंकार मारने से धनुष टूट गया । ७-८ जब महर्षि जनक की प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई, तब सीता ने रत्नमाला प्रदान करके उनका वरण कर लिया । ९ इसी समय राजा लोगों ने उत्पात मचाया और वह लोग कन्या को ले जाने के लिये मन मे विचार करने लगे । ९१० श्रीराम के अनुज जो लक्ष्मण है उन्होंने एक ही बाण से एक लाख राजाओं को मूर्च्छित कर दिया । ९११ श्रीराम के कहने पर उन्होने उन्हें फिर जीवित कर दिया । तब समस्त राजागण प्रसन्न हो गए । १२ उन्हे देखने के लिये देवता लोग आए हैं । यह सुनकर विश्रवानन्दन संकोच में पड़ गये । १३ ब्रह्मा के कहने पर उसने नीचे की ओर दृष्टि डाली । उसे सृष्टि बहुत शोभायमान दिखाई दी । १४ यह देखकर राजा लोग खिसक कर भाग गए । जैसे पर्वत से नदी नीचे गिर पड़ती है । १५ हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् राजाओ ने वहाँ से लौट जाने का विचार किया । १६ बारह वर्ष के बालक ने तो वह धनुष तोड़ डाला और हम लोगो के मुख पर कालिमा पोत दी । १७ एक बाण मारकर हम

से राजा काळेण धनुकु पूजा कला। नेणु प्रसन्न होइले जहुँ भोळा ८९०
तोर बंशे जनम होइले कमळिणी। ताहाकु बिभा तुहि करिबु चक्रपाणि ८९१
जेते बेळे श्रीराम आमञ्चिबे धनु धरि। तोर बंशर दोषकु हारिबे मधुहारि ९२
एते कहि ईश्वर हेमगिरिकि गले। काळेण गउरी प्रापत तांकु हेले ९३
सताइश पुरुष पूजा कले शरासन। से धनुकु जनक पूजिले करि ज्ञान ९४
जाग करिबाकु से सकळ मिआइले। लंगळ नेइण जाग भुमिकु शोधिले ९५
मेनिका अपसरि शाप जे पाइ थिला। मोक्ष हेबारु आसन्ते जनक देखिला ९६
मनरे से विचारइ ईश्वरंक कथा। बहुत काळे पूरिला मोर मनबाञ्छा ९७
एसनेक समग्ररे बसुन्धरा फाटि। कन्याए उपुजिला से लंगळ उकुटि ९८
सेहि कन्या नाम जे जनक देले सीता। देखि परम तोष जनक ब्रह्म बेत्ता ९९
जन्मरु से जुबा हेले दोहिताए पुण। सेहि दिनरु जाग कले जे मुनि पुण ९००
पुणि से जाग कुण्डरु कन्याए जात हेला। अजोनि सम्भुत जे जन्मिण जुबा परा ९०१
ताहार नाम गोटि उर्मिला देले पुण।
बेनि कन्याकु निमन्ते सत्य कले ऋषि जाण २
सीतांक पाइँ शिव धनुकु मनासिला। से धनुकु धरिब जे देबइँ बोइला ३

तपस्या करने लगे। इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हो गया। ८९ उस राजा ने उस समय धनुप की पूजा की तब महादेव भोला उस पर प्रसन्न हो गये। ८९० उन्होंने कहा तुम्हारे घर मे लक्ष्मी का जन्म होगा। तुम चक्रधारी विष्णु से उसका विवाह कर देना। ८९१ जिस समय श्रीराम धनुप धारण करके उसे खीचेगे तभी वह मधुसूदन तुम्हारे वंश के दोषो को नष्ट कर देंगे। ९२ ऐसा कहकर शंकर जी हिमालय पर्वत पर चले गये और कुछ काल के पश्चात् उन्हे गौरी प्राप्त हो गईं। ९३ सत्ताइस पीढियो ने उस धनुप की पूजा की और जनक ने भी यह ज्ञात होने पर उस धनुष की पूजा की। ९४ उन्होने यज्ञ करने की सम्पूर्ण तैयारी कर ली। फिर उन्होने हल लेकर यज्ञ भूमि का शोधन किया। ९५ मेनका अप्सरा को शाप मिला था। मुक्त होकर जाती हुई उसको जनक ने देखा। ९६ मन मे वह शंकर जी की बात पर विचार करने लगे। बहुत समय पर मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ है। ९७ इसी समय पृथ्वी फट गयी और हल के अटक जाने से एक कन्या उत्पन्न हुयी। ९८ उस कन्या का नाम जनक ने सीता रखा। उसे देखकर ब्रह्मज्ञानी जनक को महान प्रसन्नता हुई। ९९ वह कन्या जन्म से ही युवा हो गयी। महर्षि जनक ने उसी दिन से यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। ९०० पुनः यज्ञकुण्ड से एक और कन्या उत्पन्न हुई। वह अयोनि सम्भूता पैदा होते ही युवा हो गयी। ९०१ उसका नाम उर्मिला पड़ा और महर्षि जनक ने दोनो कन्याओ के लिये प्रतिज्ञा की। २ सीता के लिये उन्होने शिव धनुष को लक्ष्य बनाते हुये कहा। जो कोई धनुष को धारण करेगा उसे

श्रीरामटि बासुदेव लक्ष्मण अनन्त। जणा गला शिब धनु भांगिला बेळुत ३३
एथु अनन्तरे जे राबण दैत्यराये। बिधाता बचन मानि फेरे लंकराये ३४
बसिण जगति परे सभा करे पुण। बिभीषणर आगरे कहइ दशानन ३५
मुहिँ आज अपूर्ब जे देखिण अइलि।अन्तरीक्षे बिमान जे मुँ चढि जाउथिलि ३६
विधाता देवगण शून्यरे देखि पुण। समस्ते रहि अछन्ति गगन मार्गेण ३७
मिथिला कटकरे जनक महामुनि।सीता उर्मिला दुइ दुहिता तार जाणि ३८
धनु स्वयम्बर एगार बर्ष जाए कला।एते काळे मनबाञ्छा सम्पूर्ण तार हेला ३९
अजोध्या देशर राजा अटे दशरथ। तार कोळे जन्म हेले चारि पुत्र सेत ९४०
ताहांकर ज्येष्ठपुत्र श्रीराम नाम पुण।सेहि एबे आमञ्चिला ईश्वर शरासन ९४१
से धनुकु भांगि देला दुइखण्ड करि।रत्नमाला देइ सीता बरण ताँकु करि ९४२
बार बरषर पुअ एडे कृत्य कला। ताहार देहरे जे एतेक बळ थिला ४३
से धनुकु देखिण थरे मुहिँ मोह गलि।लाजरे बाहुड़ि आसि लंकारे मिळिलि ४४
जेबण धनुकु इन्द्र तोळि जे नपारि।सामान्य करि श्रीराम बाम भुजे धरि ४५
सान भाइ नाम गोटि अटे जे लक्ष्मण। बीर शूर पणरे अटइ निर्बाण ४६
लक्षे राजा से कथाकु देखिण मेळि कले। एका काण्डकरे से ध्वंसिला बाहु बळे ४७

तथा लक्ष्मण अनन्त देव है। यह शिव धनुष के खण्डित होते समय ही ज्ञात हो गया। ३३ इसके पश्चात् दैत्यराज लंकापति रावण ब्रह्मा की बात मानकर लंका को लौट गया। ३४ उसने जगती पर बैठकर सभा की, फिर दसानन ने विभीषण से कहा। ३५ मै आज अपूर्व दृश्य देखकर आया हूँ। मै अंतरिक्ष मे विमान पर चढ़कर चला जा रहा था। ३६ मैने ब्रह्मा सहित देवताओं को आकाश मे देखा। वह सब आकाशमार्ग मे ठहरे हुये थे। ३७ मिथिला दुर्ग में महर्षि जनक की सीता तथा उर्मिला दो कन्याये थीं। ३८ उन्होंने धनुष स्वयवर ग्यारह वर्ष पर्यन्त किया। इस समय उनकी मनोकामना सिद्ध हो गई। ३९ अयोध्या देश के राजा दशरथ है। उनके वंश में चार पुत्र उत्पन्न हुये। ९४० उनके ज्येष्ठ पुत्र का नाम श्रीराम है। उसी ने अब शकर के धनुष को कर्षित किया है। ९४१ उसने उस धनुष को दो खण्डों में तोड़ डाला है और सीता ने रत्नमाला प्रदान करके उसका वरण कर लिया है। ४२ बारह वर्ष के पुत्र ने इतना कार्य कर डाला। क्या उनकी देह में इतना बल था। ४३ उस धनुष को देखकर एक बार मै भी मूर्च्छित हो चुका हूँ और फिर लज्जा के कारण से लौट आया था। ४४ जिस धनुष को इन्द्र भी नही उठा पाते थे। उसको सामान्यतः श्रीराम ने बॉयी भुजा से उठा लिया। ४५ छोटे भाई का नाम लक्ष्मण है। वह शौर्य और वीरत्व में निष्णात है। ४६ एक लाख राजा इस बात को देखकर एकजुट हो गये परन्तु उसने अपने बाहुबल से एक ही बाण मे उन्हे नष्ट कर दिया। ४७ ऐसी बात सुनकर विभीषण ने कहा

चून कळा नलगाए गाले आणि करि ।जे चाहा सजरे राजा माने गले चळि १६
मुनि माने समस्ते श्रीरामंकु छन्ति बेढ़ि । के जाइ रहिला वृक्षर तळे मिळि ६२०
नग्र नर नारी जे समस्ते देखि चाहिँ । गहन बनरे जेन्हे जीब जन्तु रहि ६२१
श्रीरामंकु बेढिण जे अछन्ति सर्ब नारी । नारी मध्ये सिंह अटे जनक कुमारी २२
लक्ष्मण शार्द्दोळ जे श्रीराम बनपति । सेते बेळे कउशिक अटन्ति मत्तहस्ती २३
दुइ खण्ड होइण जे पड़िछि धनु गोटि । कि अबा पर्बत जे गगन मार्गे घोटि २४
बासुकी सदृशरे दिशे तार गुण । देखिण भग्न मनरे पाइला रावण २५
दशग्रीबकु चाहिँण बिधाता बोइले । सीतांकु लोभ कले मरिबु लंका मल्ले २६
नेत्ररे तुहि देखि जाउछु ए कथा । हेतु करिथिबुटि मनरे दशमथा २७
रावण बोइला मुं मिथिला पुर जिबि ।सीता केडे सुन्दरी मुं देखिण आसिबि २८
बिधाता बोइले होइलु किरे बाइ ।मिथिलाकु गले निश्चे जीवन पाइ नाहिँ २६
देबताए ड़रिले राजाए पळाइले । बिश्वामित्रंक जागरे से असुर वधिले ६३०
स्वर्ग मञ्च पाताळ से काण्डके साधिब । एते वेले गले तोते केहि न रखिब ६३१
ए पृथ्वीरे तुम्भे जेते अछ दैत्यबळ । समस्ते मिळले श्रीराम मारिबे एकळ ३२

सबको जीत लिया। अब कौन से धर्म के बल से वह मुझे दया करके जीवित रखे है। १८ वह कही लाकर हमारे गालो में काला चूर्ण न लगा दें। अतएव सभी राजा लोग अपने-अपने नगरो को चले गये। १६ समस्त मुनि लोग श्रीराम को घेरे थे। कोई-कोई जाकर वृक्ष के नीचे ठहर गये। ६२० नगर के समस्त नर-नारियाँ उन्हे ऐसे देखते थे जैसे घने वन मे जीव जन्तु रहते हो। ६२१ श्रीराम को सभी स्त्रियाँ घेरे खड़ी थी और उन नारियों के मध्य में जनक कुमारी जानकी सिंहनी कें समान थी। २२ लक्ष्मण शार्दूल तथा श्रीराम वनराज के समान थे इस समय विश्वामित्र मत्त गजराज से थे। २३ धनुष दो खण्डो मे टूटा पडा था। लगता था जैसे पर्वत आकाश मार्ग मे फैला हो। २४ शेषनाग के समान उसकी प्रत्यञ्चा दिखाई दे रही थी जिसे देखकर रावण मन में भयभीत हो गया। २५ दसकण्ठ की ओर देखकर ब्रह्माजी ने कहा हे लंका के वीर ! सीता के लिये लोभ करने से तुम नष्ट हो जाओगे। २६ नेत्रो से तुम यह बात देखकर जा रहे हो। हे दसकण्ठ ! इसे तुम अपने मन में बनाये रखना। २७ रावण बोला मैं मिथिलापुर जाऊँगा और सीता कितनी सुन्दर है देखकर आऊँगा। २८ ब्रह्मा ने कहा क्या तू पागल हो गया है। मिथिलापुर जाने पर तुम जीवित न बच सकोगे। २६ देवता लोग डर गये। राजा लोग भाग गये। विश्वामित्र की यज्ञ में जिन्होंने राक्षसो का सहार किया। ६३० जो स्वर्गलोक मृत्यु तथा पाताल लोक को एक ही वाण से जीतने वाले हैं। इस समय जाने पर तुम्हे कोई छोड़ेगा नही। ६३१ इस पृथ्वी पर तुम्हारी जितनी भी दैत्य सेना है। सबके आ जाने पर श्रीराम सभी को मार डालेगे। ३२ श्रीराम वासुदेव

एका जणकु जेबे समस्ते न सहिबे। ताहाकु केमन्ते रखि पारिब दइबे ६३
छपन गण्डा जुगकु पाइछि आयुष। दश दिगपाळ आदि देवंकु कलि बश ६४
सुबर्णमय पुरे भुञ्जिलि बिभुति।अठर गण्डा कुमर मोर तेरशत नाति ६५
भाइ मोर तुहिरे देबंक संगे गणा।कनिष्ठ कुम्भकर्ण क्षत्रीरे जगत् जिणा ६६
पुत्र मेघनाद जे जिणिला इन्द्रंकु। स्वर्गपुरे पशिण आणिला देवतांकु ६७
बेदवर नाति मुँ जे विशेषे दशशिर। आबर अटइ मोर देख विंशकर ६८
पुष्पक विमान मोर देवरे अजय़।सेथिरे बसिण मुँ दिग्‌बिजे करि जाए ६९
अयुत कोटि मोर जे अटन्ति पाटराणी।भण्डारे साइति अछि विविध रत्नमणी ९७०
सुबर्णरे निर्माण अटइ गड़ लंका। सुर, नर, देवतांकु मोर नाहि शंका ९७१
एते सम्पद जेबे मोर श्रीराम विध्वंसिब। काहार बोले भाइरे एकथा आन हेब ७२
नकर शोचना मोहर हादे नाहिँ व्यथा। एहि क्षणि नाहिँ मोते पछर से कथा ७३
एते कहिण रावण गला अन्तःपुरे। शुण देबी गउरी गो एथु अनन्तरे ७४
आकाशे थाइ वेदबर कहन्ति देवतारे।रावणकु भुलाइण छाडिलुँ ता राज्यरे ७५
मिथिला जाइ थिले रामसीतांकु चिन्हि थान्ता सेहु।
सेते बेळे चिन्हिण न भरसन्ता सेहु ७६

वह पुनः हमें प्राप्त होगे। ९६१-६२ यदि एकाकी व्यक्ति को सब लोग न सहन कर पायेगे तो फिर भाग्य उसे कैसे रख पायेगा। ६३ मैंने दो सौ चौबीस युगों की आयु पायी है। मैने दस दिगपाल आदि देवताओं को वश में कर लिया है। मैंने स्वर्णमयी लंका के वैभव का उपभोग किया है। मेरे बहत्तर पुत्र तथा तेरह सौ नाती है। ६४-६५ तुम मेरे भाई हो जिसकी गिनती देवताओं के साथ होती है और मेरा छोटा भाई पराक्रम मे संसार को जीतने वाला कुम्भकर्ण है। ६६ मेरा पुत्र मेघनाद है। इसने इन्द्र को जीत लिया था और वह स्वर्ग लोक में घुसकर देवताओ को पकड लाया है। ६७ मै ब्रह्माजी का विशेष नाती दसकण्ठ हूँ और देखो मेरे बीस भुजाये है। ६८ देवताओ द्वारा अजेय मेरा पुष्पक विमान है। उसी मे बैठकर मै दिग्विजय के लिये निकलता हूँ। ६९ मेरी दस हजार करोड़ पटरानियाँ है। मैने विविध मणि रत्न भण्डार में सँजो कर रक्खे हैं। ९७० लङ्का दुर्ग स्वर्ण से निर्मित है। मुझे सुर, नर तथा देवताओं का भय नही है। ९७१ जब श्रीराम इतनी सम्पदा विध्वन्स करेंगे। तो भाई किसी के कहने से भी यह बात मिथ्या होगी। ७२ तुम सोच न करो। मुझे किसी प्रकार का कष्ट नही है। इस समय मुझे चिन्ता नहीं है। पीछे की बात छोड़ो। ७३ इतना कहकर रावण अन्तःपुर में चला गया। हे देवी गौरी! इसके पश्चात् सुनों। ७४ आकाश में स्थित रहकर ब्रह्मा ने देवताओं से कहा कि रावण को भ्रम में डालकर मैने उसे उसके राज्य में छोड़ दिया है। ७५ मिथिला में जाने से वह राम और सीता को पहचान लेता। उस समय वह उन्हे

बिभीषण बोले एसनक बाणी शुणि । आज नेत्ररे देखिल जाहा नृपमणि ४८
से श्रीराम अवतार स्वयं जे नरहरि । महालक्ष्मी अटन्ति जे जनक कुमारी ४९
ए तोहर कुमार्ग देखिण देवगण । गुहारि कले जाइँ बैकुण्ठपुरे जाण ९५०
देवंकर बिकळ देखिण नरहरि । रबितले जात हेले मानब देह धरि ९५१
धर्मबळे तो संगे जुझिबे नारायण । ए बाद अर्जिअछ तुम्भे देबंक संगे पुण ५२
शुणिण रावण जे हसिला टह टह । तुम्भे किम्पा मोते जे एसन बाणी कह ५३
देबे मेळि हेले सर्बे किस मोर जाइँ । समुद्रे मोहर ठणा पाइबे से काहिँ ५४
जेहु पर्बत आणिण पोतिब महाजळ । सेहु जे मनुष्य मुं असुर अचार्गळ ५५
मनुष्य होइ जेबे पारिब मोते मारि । एकइ शिरेक जे नुहइ मोहरि ५६
दशशिर छेदिले कन्धे मो लागइ । क्षत्रीरे सम मोते नाहान्ति ए मही ५७
ए बचन शुणि करि बिभीषण बोले । साक्षाते बासुदेव जनम पुण हेले ५८
तुम्भर छळरे से जे मानब देह धरि । देवंकर कष्टरे मञ्चरे अबतरि ५९
ए कथा जेबे मोते कहिलु आरे भ्रात । बासुदेव हाते मले मुं होइबि मुकत ९६०
जेबे सम मोते होइबे रघुनाथ । ताहांकर बाणे जेबे छिड़िब मोरमाथ ९६१
बिष्णुर हस्ते मले जिबि स्वर्गपुर । तेबे से पुणि मोर प्रापत हेबार ६२

हे नृपमणि ! आज आपने जो नेत्रों से देखा है। वह श्रीराम स्वय नरहरि के अवतार है और जनककुमारी महालक्ष्मी है। ४८-४९ तुम्हारे कुमार्ग को देखकर देवताओ ने वैकुण्ठ लोक मे जाकर गुहार की। ९५० नरहरि ने देवताओ की व्याकुलता को देखकर भूमण्डल पर मानव शरीर धारण करके जन्म ग्रहण किया। ९५१ धर्म के वल पर भगवान वासुदेव तेरे साथ युद्ध करेंगे। यह विवाद तुमने देवताओ के साथ लगकर कमाया। ५२ यह सुनकर रावण ठठाकर हँस पडा और वोला कि तुम हमसे इस प्रकार की वात कैसे कहते हो। ५३ क्या समस्त देवतागण लोग मेरे लिये मिल गये। समुद्र में मेरा ठिकाना उन्हे कहाँ मिलेगा। ५४ क्या वह पर्वत लाकर महान जलराशि को तोपेंगे। वह मनुष्य है और मैं वलवान असुर। ५५ यदि मनुष्य होकर वह मुझे मार सकेगा तो मेरे केवल एक ही सिर नही है। ५६ दस सिर काटने पर वह पुनः मेरे कन्धे मे लग जायेंगे और फिर इस पृथ्वी पर मेरे समान कोई क्षत्री नही होगा। ५७ यह बात सुनकर विभीषण ने कहा कि साक्षात् नारायण का जन्म हुआ है। ५८ आपके वहाने से उन्होने मानव शरीर धारण किया है और देवताओ के कष्ट से वह मृत्यु लोक मे अवतरित हुये हैं। ५९ अरे भाई ! जव यह बात तुम मुझसे कह रहे हो तो भगवान के हाथो से मरकर मै मुक्त हो जाऊँगा। ९६० यदि रघुनाथ हमारे समान हुए और उनके वाणो से मेरे मस्तक कटेंगे तो विष्णु के हाथो से मरकर मै स्वर्ग लोक जाऊँगा। तव

दासीगण माने मिळि मंगळ बिधि कले । बिप्र नारी मिळिण हुळहुळि देले ९९१
बिप्र ऋषि मिळिण पढिले चारि बेद । चण्ड पुत्र माने वाक्य कलेक शबद ९२
लक्ष्मणंक पाशरे उर्मिला जाइँ मिळि ।
देखि श्रीराम पछे घुञ्चिले मने भाळि ९३
बोइले सउमित्रो कोदण्ड एथे थुअ । बरणमाळा घेन रहु जनकर स्नेह ९४
शुणिण लक्ष्मण जे कोदण्ड तळे थोइ । आनन्दरे उभा हेले सुमित्रा तनयी ९५
मुख देखि उर्मिळा हरष मन हेला । पञ्च रत्न माळा नेइ लक्ष्मण कण्ठे देला ९६
चारि चक्षु एकान्त हेले तेते बेळे । बेनि जन हरष हेले जे जाहा मनरे ९७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । कउशिक जनकंकु कहे धीर करि ९८
वेनि दुहितांकु जे अन्तःपुरकु निअ ।कामना सिद्ध हेला आउकि अछि कह ९९
जनक बोइले शुण हे बिश्वामित्र । कामना सम्पूर्ण होइला मोहरत१०००
शिब धनु ए जे भांगिले श्रीराम । ज्येष्ठ नन्दिनी बिभा हेबे तांकु पुण१००१
लक्षे राजांकु जे जिणिला लक्ष्मण । कनिष्ठ दुहिता जे तांकर हेला पुण २
एबे बिभा हुअन्तु दशरथ सुत । आज दिन अटइ शुभ परापत ३
जनकर मुखरु एसन बाणी शुणि । श्रीराम कहु अछन्ति हृदपद्मरे गुणि ४
तुम्भे जाहा बोइल अटइ एहु सत्य । मोह ठारे अनुग्रह कल तपोवन्त ५

लगीं । ९९० दासियों ने मिलकर मंगल विधान सम्पादित किये और ब्राह्मण-स्त्रियों ने मिलकर मांगलिक ध्वनि की । ९९१ ब्राह्मण तथा ऋषियों ने मिलकर चारों वेदों का पाठ किया । चण्ड पुत्रों ने मांगलिक शब्दों का उच्चारण किया । ९२ उर्मिला लक्ष्मण के पास जा पहुँची । यह देखकर श्रीराम मन में विचार कर पीछे हट गये । ९३ उन्होने कहा हे लक्ष्मण अब धनुष रख दो और वरमाला स्वीकार करो जिससे जनक का प्रेम स्थिर रह जाये । ९४ यह सुनकर लक्ष्मण ने धनुष नीचे रख दिया और सुमित्रानन्दन आनन्द से खडे हो गये । ९५ उनका मुख देखकर उर्मिला का मन प्रसन्न हो गया । उसने पंचरत्नों की माला लेकर लक्ष्मण के गले में पहना दी । ९६ उस समय चारों नेत्र मिलकर एक हो गये और दोनों अपने मन में प्रसन्न हो गये । ९७ हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् विश्वामित्र ने धैर्य के साथ जनक से कहा । ९८ अब दोनों कन्याओं को अतःपुर में ले जाइये तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो गयी और कुछ हो तो कहो । ९९ जनक बोले हे विश्वामित्र ! सुनिये । मेरा तो मनोरथ पूर्ण हो गया । १००० इस शिवधनुष को श्रीराम ने तोडा है । अतः उनका विवाह बडी पुत्री से होगा । १००१ लक्ष्मण ने एक लाख राजाओं को जीता है अतः छोटी कन्या उसकी हो गई । २ अब दशरथ के पुत्रों का विवाह हो । आज शुभ दिन की प्राप्ति हुयी है । ३ जनक के मुख से ऐसे वचन सुनकर श्रीराम ने अपने हृदय कमल मे विचार कर कहा । ४ आपने जो कहा वह सत्य है । हे तपोधन !

तेणु करि माया तांकु कलु आम्भे जाण।
सीतांकु न नेले नमरन्ति चारि रावण ७७
पार्वती बोइले देव सेठारु किस हेला। सीतया जाइँण श्रीरामंकु बरिला ७८
मिथिला कटकरे श्रीरामचन्द्र छन्ति।दक्षिण पाखे उभा जे सीता कमळाक्षी ७९
वाम पाशे लक्ष्मण वीर अछि उभा होइ। कोदण्डकु हस्ते धरि सुमित्रानेइ ९८०
जानकी रत्नमाला देइण उभा पुण। मनरे बइदेही बिचार कले जाण ९८१
एहि मोर प्राणनाथ बोलिण दृष्टि देइ। मदनशरे तनु बिह्वळित होइ ८२
कउशिक बोइले जनक ऋषि शुण।जाआन्तु अन्तःपुरकु जेमा तोर जाण ८३
शुणि करि जनक हरष मन हेले। मोर ठारु कथा एक शुण हे बोइले ८४
ज्येष्ठ कुमारी मोर एहार नाम सीता।
रामंकु बरिला बेळुँ मनरु गला चिन्ता ८५
आवर कथा एक मोर सिद्ध होइ। राम कनिष्ठ लक्ष्मण लक्षे राजांकु जिणइ ८६
एहांकु कनिष्ठ दुहिता मोर बरिबे एबे। एकथाकु बिचार कर हे प्रभु तुम्भे ८७
कउशिक बोइले मनकामना तोर सिद्ध। कनिष्ठ दुहिताकु घेनिआस बेग ८८
शुणि करि उर्मिला जे हरषे उठे बेग।सखी मानंकु संगरे धरिण चालि शीघ्र ८९
दासीगण संगरे घेनिण चळि गले। देखि करि नारीगण हुळहुळि देले ९९०

पहचान कर दुःसाहस न करता। ७६ इसलिये मैंने उसे माया में डाल दिया। सीता न लेने पर चारो रावणो का विनाश न होगा। ७७ पार्वती ने कहा हे देव! फिर वहाँ क्या हुआ? जब सीता ने जाकर राम का वरण कर लिया। ७८ मिथिला कटक मे श्रीरामचन्द्र है। उनके दाहिनी ओर कमल नयनी सीता खड़ी है। ७९ बाम पार्श्व में पराक्रमी सौमित्र लक्ष्मण हाथ मे धनुष धारण किए खडे है। ९८० रत्नमाला पहनाकर जानकी खडी है। फिर वैदेही मन मे विचार करने लगी। ९८१ यह ही मेरे प्राणेश्वर है ऐसा विचार कर उसने दृष्टिपात किया। फिर उनका शरीर काम के वाण से विह्वल हो गया। ८२ विश्वामित्र ने कहा हे महर्षि जनक! सुनो। तुम्हारी राजकन्या अन्त.पुर को जाये। ८३ यह सुनकर जनक का मन प्रसन्न हो गया। फिर उन्होने कहा कि मुझसे एक बात सुनो। ८४ मेरी बड़ी कन्या जिसका नाम सीता है। राम के वरण करते समय इसके मन से चिन्ता चली गयी। ८५ मेरी एक बात और पूर्ण हो गयी। राम के अनुज लक्ष्मण ने एक लाख राजाओ को जीत लिया। ८६ अब हमारी छोटी कन्या इन्हे वरण करेगी। हे प्रभु! आप इस बात पर विचार करिये। विश्वामित्र ने कहा कि तुम्हारी मनोकामना सिद्ध हो गयी। अब तुम शीघ्र ही छोटी कन्या को ले आओ। ८७-८८ यह सुनकर उर्मिला शीघ्र ही प्रसन्न होकर उठी और सखियो को साथ लेकर शीघ्र ही चल पड़ी। ८९ उनके साथ-साथ दासियों को चलते देखकर नारियाँ माँगलिक ध्वनि करने

के बोलन्ति आम्भर अन्नपूर्णा तुम्भे। श्रीराम परा बर पाइल माए एबे१०२१
सीतय़ा उर्मिला लज्जारे पोति छन्ति मथा।
हस हस होइण जे न कहिले कथा २२
के बोलइ आगे देख गो किना आसि। एमन्त समय़रे जनक राणी बसि २३
जानकी उर्मिळाकु पलंके बसाइले। दासीमाने आलट चामर बिञ्चिले २४
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती।श्रीराम लक्ष्मण पाशे सत्यानन्द छन्ति २५
जानकी जिबारु श्रीराम लक्ष्मण। कोदण्ड हस्ते धरि गलेक बहन २६
ऋषिमाने सभारे जाइँ बिजे कले। मुनि मानंकर सबु हरष देखिले २७
पार्बती बोइले जे कथाए रहिला। तुम्भर पुणे धनु बेनिखण्ड हेला २८
से धनु किस हेला कह हे दिगाम्बर। शुणि करि सदाशिब कहन्ति उत्तर २९
से धनु भाजिबारु आश्रय़ तार गला।मोर पाशे धनु शबद आसिण मिळिला१०३०
देखिण हरष मुँ होइलि ताहाकु। एक धनु जात कलि बिचारि मनकु१०३१
से धनुर नाम गोटि पिनाकि पुण देलि। बज्रकरि सेहि धनु आपे मुँ रखिलि ३२
काळेण से धनु जे प्रापत हेला तोते। अक्षय़ त्रोण धनु अछि तोर हस्ते ३३
बळराम दास चिन्ते श्रीराम पय़रे। शरण रख मोते करुणा सागरे ३४
हर पार्बतींकर सम्बाद मुँ बिचारि। जानकी श्रीराम चरणे आश्रय़ मोहरि ३५

कि तुम हमारी अन्नपूर्णा हो जो तुम्हे श्रीराम जैसा वर प्राप्त हुआ है। १०२१ सीता और उर्मिला ने लज्जा से मस्तक झुका लिया। मुस्कराते हुये उन्होंने कुछ भी नही कहा। २२ कोई बोली अरे! आगे आकर तो देखो। इसी समय जनक की रानी बैठ गयी। २३ उसने जानकी और उर्मिला को पलंग पर बैठा लिया। दासियाँ व्यजन तथा चामर चालन करने लगी। २४ हे भगवती! सुनों। इसके पश्चात् श्रीराम और लक्ष्मण के पास सतानन्द थे। २५ जानकी के जाने के पश्चात् श्रीराम और लक्ष्मण हाथों में धनुष लेकर शीघ्र ही चले गये। २६ ऋषि लोग सभा में जाकर उपस्थित हो गये। सभी लोग मुनियों को प्रसन्न देख रहे थे। २७ पार्वती ने कहा कि एक बात रह गयी। आपका धनुष दो खण्डों में हो गया था। २८ हे दिगम्बर! बताइये कि उस धनुष का क्या हुआ, यह सुनकर सदाकल्याणकारी शकरजी ने उत्तर दिया। २९ उस धनुष के टूट जाने से उसका आश्रय समाप्त हो गया। धनुष का शब्द मेरे पास तक आ पहुँचा। १०३० मै उसे देखकर प्रसन्न हो गया। फिर मैने मन में विचार करके एक धनुष उत्पन्न किया। १०३१ मैंने उस धनुष का नाम पिनाक रक्खा। फिर मैने उस धनुष को वज्र बनाकर अपने पास रख लिया। ३२ कुछ समय पर वह धनुष तुझे प्राप्त हुआ और अक्षय तूणीर, धनुष तुम्हारे हाथों मे है। ३३ बलरामदास श्रीराम के चरणों का चिन्तन करता है। हे करुणा सागर मुझे शरण में रख लीजिये। ३४ मैंने शिव-पार्वती के सम्वाद पर विचार किया है। श्रीराम

सन्तोष मनरे दुहिता देव मोते । मुहिँत मने प्रार्थना करुअछि एते ६
तुम्भेत महाॠषि महत पुरुष । तुम्भे जाण मुँ अटइ दशरथ सुत ७
लक्षे राजा फेरिले फेरिले ॠषि गण । असुर देवतागण फेरिलेक जाण ८
सनमाने बिभा हेले जश एथु अछि ।आम्भे बिभा होइगले लज्जा उपुजुछि ९
पिता दशरथ अर्जिला आम्भ देहि । ए पिण्ड अधिकारी अटन्ति ना सेहि१०१०
ताहांकु न कहिले केमन्ते हेबि बिभा ।
बिभा ठारे पिता माता थिले दिशे शोभा१०११
तुम्भे जे मनरे विचार महॠषि । शुणिण बिश्वामित्र जनक दुहेँ हसि १२
आस्थान लोक माने शुणिण उसत । धन्य धन्य श्रीराम हे पितारे भगत १३
नोहिले कि एडे जश प्रापत होए तोते । साधु साधु बोलिण बोइले समस्ते १४
जनक बिश्वामित्र भाळिले बेनिजन । विचारि निज नबरे करन्ति गमन १५
सखीगण घेनिण सीतग्रा चळे आगे । पछरे उर्मिळा बिजे कले दासी संगे १६
देखणा हारि लोके गोड़ान्ति तांक पछे । जनक राजा नबरे प्रबेश समस्ते १७
अन्तःपुर मध्यरे बिजय़े महासती । जननी माने आसि मिळिले तड़ती १८
जननींक पाशे वेनि जेमा कले नमस्कार । जनक राणी माने बेढिले सत्वर १९
केउँ माता धरि नेइ मुखे चुम्ब देइ । के बोलन्ति तुम्भे गो केते पुण्य देहि१०२०

आपने मुझपर कृपा की है। ५ मै मन में इतनी प्रार्थना कर रहा हूँ कि आप प्रसन्न मनसे हमें कन्या प्रदान करे। ६ हे महर्षि ! आप तो महानपुरुष है। आप जानते है कि मै दशरथ का पुत्र हूँ। ७ एक लाख राजागण तथा ॠषिगण लौट गये। देवता तथा दैत्यगण भी वापस चले गये। ८ सम्मानपूर्वक विवाह होने पर कीर्ति रहेगी। केवल हमारे विवाह करने पर लज्जा का उद्भव होगा। ९ पिता दशरथ ने हमारे शरीर का निर्माण किया। इस पिण्ड के अधिकारी वह ही है। १०१० उनको विना सूचित किये मै विवाह कैसे करूँगा। विवाह में पिता माता के रहने से शोभा दिखाई देती है। हे महर्षि ! आप ही मन मे विचार करिये। यह सुनकर विश्वामित्र और जनक दोनों हँस पडे। १०११-१२ सभा के लोग यह सुनकर प्रसन्न हो गये और बोले हे श्रीराम ! तुम्हारी पितृ भक्ति धन्य है। १३ नही तो क्या तुम्हे इतना यश प्राप्त होता और सभी लोग धन्य है धन्य है कहने लगे। १४ जनक तथा विश्वामित्र दोनों विचार करने लगे और सोचते-सोचते अपने आवास को चले गये। १५ सीता को आगे लेकर सखियो का समुदाय चल दिया और उर्मिला के पीछे-पीछे दासियाँ भी चल दी। १६ उनके पीछे-पीछे दर्शक बृंद दौडने लगे और सब राजा जनक के महल मे प्रविष्ट हो गये। १७ महासती अतःपुर मे जा पहुँची। शीघ्र ही माताएँ आकर उनसे मिली। १८ दोनो कन्याओं ने माताओं से नमस्कार किया और जनक की रानियो ने शीघ्र ही उन्हे घेर लिया। १९ कोई माता पकड़कर उनका मुख चूमने लगी और कोई बोली कि तुम कितनी पुण्यवान हो। १०२० कोई बोली

सत्यानन्द जिबार जहुँ होइला प्रमाण ।ताहा जाणि श्रीरामंकु कहन्ति लक्ष्मण१०५१
आम्भ सर्ब कुशल बारता मान लिहि । श्रीकरे लेख गोटिए लेख रघुसाइँ ५२
शुणिण श्रीरामचन्द्र श्रीकरे पत्र घेनि । दक्षिणे लेखनकु धइले रघुमणि ५३
निज पिता चरणरे बिनय़ी उत्तर । अति कार्पुण्य होइ बोलन्ति रघुबीर ५४
श्रीराम लक्ष्मणंकर पितांकु नमस्कार । मिथळा नबरे जनक ऋषि पुर ५५
बिश्वामित्रंक संगरे अइलु बेनि भाइ । मिथिला नबररे रहिलु बन्दि होइ ५६
भो तात उद्धर कोशल अधिपति । अजोध्या राज्यरे तुम्भे बीर चक्रबर्त्ती ५७
भुज बल प्रतापरे राज्य जे बळ रख । दय़ा धर्मरे कुशळ अटन्ति हे साक्षात ५८
दानरे दय़ाकु तुम्भे बळरे गारिमा । ड़रे अइरी बळ न लंघति सीमा ५६
अनेक गुण जे अछइँ तुम्भ तहिँ । मुहिँ किस जाणिबि हे बाळुत तनय़ी१०६०
तुम्भ श्री चरणरे भकति ए जे मोर । एठाकु आसिण उद्धरि मोते धर१०६१
भो पिता मोते अर्जिल दुःख सहि ।विश्वामित्र मुनि मागे तुम्भंकु मोते जाइ ६२
तुम्भे सत्यशीळ ओप्रोधे समर्पिल । बहुत भाळि मनरे हृदरे चिन्ता कल ६३
मुरुछि नपारि जे ऋषिक कर धरि । मोते समर्पिल जे अति जत्नकरि ६४
ए तुम्भर बचने मुनिर मन तोष ।मोते घेनि अइले जे गाधिराजा शिष्य ६५

पालन करूँगा । ४६-१०५० जब सतानन्द के जाने का निश्चय हो गया तब लक्ष्मण श्रीराम से बोले हे रघुनाथ जी ! हम लोगो की सम्पूर्ण कुशलवार्ता अपने हाथो से एक पत्र मे लिख दीजिये । १०५१-५२ यह सुनकर रघुश्रेष्ठ श्रीराम-चन्द्र ने अपने हाथो से पत्र उठाकर दाहिने हाथ में लेखनी पकड ली । ५३ अपने पिता के चरणो में विनय करते हुये अत्यन्त दीनता के साथ पराकमी रघुनन्दन ने कहा । ५४ श्रीराम-लक्ष्मण की ओर से पिता जी को नमस्कार । हम दोनों भाई विश्वामित्र के साथ मिथिला नगर मे महर्षि जनक के महल मे आये और मिथिला नगर मे बदी होकर रहे । ५५-५६ हे तात ! आप अयोध्या राज्य के पराक्रमी चक्रवर्त्ती उत्तर कौशल के अधिपति है । ५७ आप अपने भुजबल के प्रताप से राज्य की रक्षा करते है और दक्षता के साथ दया धर्म मे कुशल है । ५८ दान से दया पर तुम्हारी बल-पूर्वक गरिमा है । भय से शत्रु वाहिनी सीमा का उल्लघन नही करती । ५६ आपके अनेकानेक गुण है । मै बालक उन्हे क्या जानूँ । १०६० आपके श्री चरणो मे हमारा प्रेम है । यहाँ आकर हमारा उद्धार कर दीजिये । १०६१ हे पिताजी ! आपने हमे कष्ट सहकर प्राप्त किया है । मुनि विश्वामित्र ने जाकर मुझे आपसे माँग लिया । ६२ आपने सत्य तथा शील का आश्रय लेकर हमे समर्पित कर दिया है और बहुत कुछ सोच विचार कर मन में चिन्ता करते रहे । ६३ मना न कर पाने के कारण ऋषि का हाथ पकड़कर अत्यन्त यत्न पूर्वक मुझे समर्पित कर दिया । ६४ आपके इन वचनो से मुनि का मन सतुष्ट हो गया और महाराज गाधिनन्दन मुझे साथ लेकर आ गये । ६५ हम

एथु अनन्तरे पुण पार्वती विचारि। सेठारु किस हेला कह हे शूळधारी ३६
ईश्वर बोइले शुण गो देबी उमा। श्रीराम सभा मध्ये बसिबार किना ३७
सकळ जने आसि बेढिण देखन्ति। नारीगणे बेढिण हुळहुळि द्यन्ति ३८
के बोलइ साधुजन के बोलइ धनि। प्रशंसा करि सेठारु बाहुडि कामिनी ३९
श्रीराम संगरे जे ऋषिमाने मेळ। प्रशंसा करिण जे कहन्ति सकळ१०४०
कउशिक बोइले गउतम शिष्य। अजोध्या देश तुम्भे चळहे तुरित१०४१
बिश्वनाथ धनु जे श्रीराम आमञ्चिले। सीता बिभा करिबाकु जनक बोइले ४२
श्रीराम बोइले मुं जे पितारे भगति। बिभा होइबाकु मोर नाहिँ केबे मति ४३
पिता माता न आसिले नुहइ मुं बिभा। उत्सबरे सुलभ नोहिले किस शोभा ४४
ए कथा कहिब दशरथ आगे जाइ। आसिबार होइले आसिब संग होइ ४५
निअ बेगे बारता जे लेउटाइ आण।आम्भंकु सम्बाद देउ अजोध्या नृपराण ४६
से जेबे बोलिब बिश्वामित्र जनक अछन्ति।
मोहर पुत्र कि तांकर बोल न करन्ति ४७
जेबे से अछन्तिटि श्रीरामंक पाश। मुं जाइ से स्थानरे करिबि जे किस ४८
एसनक बोइले आसिब बेग होइ। शुणिण सत्यानन्द आनन्द मन होइ ४९
अजोध्या जिबाकु से सनमत कला। तुम्भर आज्ञा मुहिँ पाळिबि बोइला१०५०

जानकी के चरण मेरे आश्रय है। ३५ इसके पश्चात् फिर पार्वती ने कहा हे त्रिशूलधारी ! बताइये। फिर वहाँ क्या हुआ। ३६ शकरजी बोले हे देवी ! सुनो। श्रीराम सभा के मध्य मे बैठ गये। ३७ सभी लोग घिर कर उन्हे देखने आने लगे। नारियाँ घेर कर मागलिक शब्द करने लगी, कोई कहती कि यह बडे सज्जन पुरुष हैं और कोई कहती कि यह धनी है। इस प्रकार प्रशसा करके महिलाएँ वहाँ से लौट गयी। ३८-३९ ऋषि लोग श्रीराम के साथ मिले और सभी उनकी प्रशसा करने लगे। १०४० विश्वामित्र ने कहा हे गौतमनन्दन ! आप शीघ्र ही अयोध्या प्रदेश जाइये। १०४१ शकर के धनुष को श्रीराम ने कर्षित किया। जनक ने सीता से विवाह करने का आदेश दिया। ४२ श्रीराम ने कहा कि मै पिता से प्रेम करता हूं। विवाह करने की मेरी बुद्धि नही है। ४३ पिता-माता के न आने पर मैं विवाह नही करूँगा। उत्सव सुलभ न होने पर कैसी शोभा ? । ४४ यह बात आप जाकर दशरथ से कह दीजियेगा और यदि हो सके तो उनके साथ ही आ जाइयेगा। ४५ आप शीघ्र ही सन्देश ले जाये और अयोध्या नरेश जो कुछ कहे वह सम्वाद लौटकर ले आये। ४६ यदि वह कहे कि वहाँ पर जनक और विश्वामित्र तो है। क्या मेरे पुत्र उनका कहना नही मानेगे। ४७ जब वह श्रीराम के पास है तो मैं वहाँ जाकर क्या करूँगा। ४८ ऐसा बोलने पर आप शीघ्र ही चले आना। यह सुनकर सतानन्द ने प्रसन्नचित होकर अयोध्या जाने की स्वीकृति प्रदान की और बोले कि मै आपकी आज्ञा का

केहि से धनुकु जे न पारिले तोळि। चाहिँले छुइँले रुधिर मुखुँ गळि१०८०
विश्वामित्र कहिबारु धइलि कोदण्ड।गुण देइ आमञ्चन्ते होइला बेनिखण्ड१०८१
धनु भांगिबारु आम्भे देखि जनक मुनि। सीतय़ा नामरे तांकर ज्येष्ठ नन्दिनी ८२
से आसिण मोते बरिला मन तोषे। जनक बोइला तुम्भे बिभा हुअ एथे ८३
एते कहि जनक अनकूळ खोजे।मुँ बोइलि बिभा हेबि पिता अइले शुभे ८४
एहि समय़रे नृपति गणे उठि। मोहर संगरे आसि कळह कलेटि ८५
से काळे सीता बरिछि मोर आय़त नोहिला।
लक्ष्मण शर मारिण राजा गणंकु मोह कला ८६
राजा माने पड़िबारु मुं लक्ष्मणे कहिलि।
जिआअ राजागणंकु तु बोलिण बोइलि ८७
शुणिण जीवन्यास शर लक्ष्मण पेषि देले।
राजा माने उठि नरहि समस्ते पळाइले ८८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण हे भो तात। लक्ष्मण जिणिले जे लक्षे नृपनाथ ८९
जनक बोइले बेनि सत्य सिद्ध हेला।बेनि दुहितांकु मोर बिभा मुँ देबिपरा१०९०
एते बोलि सान जे उर्मिळा नामे तार। लक्ष्मणे बरण कला से सत्वर१०९१
बेनि दुहिता बरिबारु जनक हरषित। बोइले कालि बिभाघर हेबार नियत ९२

करोड़ ऋषि, हाट, बटोही, पथिक जन एकत्रित थे।७९ कोई भी उस धनुष को उठा नही पाया उसकी ओर देखने तथा छूने से मुख से रक्त निकलने लगता था।१०८० विश्वामित्र के कहने पर मैने वह धनुष उठा लिया था। प्रत्यचा चढाकर उसका कर्षण करने पर वह दो खण्ड हो गया।१०८१ मेरे द्वारा धनुष का खण्डन महर्षि जनक ने देखा। सीता नाम की जो उनकी बडी कन्या है। उसने आकर प्रसन्न मन से मेरा वरण कर लिया है। उस समय जनक ने मुझसे विवाह करने के लिये कहा।८२-८३ इतना कहकर जनक शुभयोग खोजने लगे। तब मैंने कहा पिता के शुभागमन पर ही मै विवाह करूँगा।८४ इसी समय राजागणो ने उठकर हमारे साथ आकर विवाद किया।८५ उस समय सीता का वरण करना समाप्त नही हुआ था। तभी लक्ष्मण ने बाण मारकर राजागणो को मूर्च्छित कर दिया।८६ राजाओं के गिरने से मैने लक्ष्मण से उन्हे जीवित कर देने के लिये कहा।८७ यह सुनकर लक्ष्मण ने जीवन्यास बाण छोड़ दिया। राजा लोग वहाँ नही रुके और सब भाग गये।८८ हे तात! इसके पश्चात् आप सुनिये लक्ष्मण ने एक लाख राजाओ को जीत लिया।८९ जनक ने कहा कि मेरी दोनो प्रतिज्ञाये पूरी हो गई अब मै दोनो कन्याओ का विवाह कर दूँगा।१०९० इतना बोलने पर उनकी छोटी कन्या उर्मिला ने शीघ्र ही लक्ष्मण का वरण कर लिया।१०९१ दोनो कन्याओं का वरण हो जाने पर जनक

सरजु पारि होइण पशिलु घोर बने । सुर नदी आदि जे भेटिलु दुइ दिने ६६
गंगा जिणि आम्भे अइलु अरण्यरे । ताड़की राक्षसीकि माइलु धर्म बळे ६७
देखिण देवताए बेदवरंकु घेनि । बिश्वामित्र मुनिंकि कहिले शून्ये बाणी ६८
बोइले जेते विद्या अछि तुम्भ ठारे । श्रीराम लक्ष्मणंकु दिअ हे सत्वरे ६९
शुणि करि विश्वामित्र सकळ बिद्या देले ।
मन्त्र आघ्राण करन्ते मिळिला सबु मोरे१०७०
सेठारु विश्वामित्रंक आश्रमे परबेश ।
जाग आरम्भ कले जे गाधि राजांक शिष्य१०७१
अनेक मुनि राजा अणाइँ जाग कले । मोते देखि तोषे से सुकल्याण कले ७२
जाग रखिलि देव लक्ष्मण संगे घेनि । बहुत दैत्य सेठारे पकाइलि हाणि ७३
तेणु तिनि पक्षरे जाग जे समापत ।
लोमपाद कहिबारु जाणि थिब जे तुम्भेत ७४
सेठारु पश्चिम दिगे पथ वहि गलुँ । बिपुळ बने गौतम नारींकु देखिलु ७५
गउतम घरणी अहल्या नामे नारी । शापरे थिला से जे पाषाण रूप धरि ७६
से मोर पाद लागि निज अंग पाइ । मोते अर्घ्य देइण मुनिर संगे जाइ ७७
सेठारु मिथिळापुरे हेलु परबेश । जनकर जाग देखि होइलु बड तोष ७८
सेठारे थिले लक्षे बतिश कोटि ऋषि । हाटुआ बाटुआ जे पथुकी जन मिशि ७९

लोग सरयू को पारकर घोर जगल मे घुसे और दो दिनो मे गंगा नदी पर पहुँच गये। ६६ गगा पार करके हम जगल मे आये और धर्म के वल पर राक्षसी ताड़का का सहार किया। ६७ यह देखकर ब्रह्माजी को साथ लेकर देवताओं ने विश्वामित्र मुनि से आकाशवाणी द्वारा कहा कि तुम्हारे पास जितनी विद्या है वह शीघ्र ही श्रीराम लक्ष्मण को प्रदान करो। ६८-६९ यह सुनकर विश्वामित्र ने सारी विद्याये प्रदान कर दी। मत्र का स्मरण करते ही मुझे सब कुछ मिल गया। १०७० फिर वहाँ से विश्वामित्र के आश्रम मे प्रविष्ट हुये। महाराज गाधिनन्दन ने यज्ञ प्रारभ कर दिया। १०७१ उन्होने अनेक मुनियो तथा राजाओं को बुलाकर यज्ञ किया। मुझे देखकर उन्होने सतुष्ट होकर आशीर्वाद दिया। ७२ हे देव ! हमने लक्ष्मण को साथ लेकर यज्ञ की रक्षा की और बहुत से दैत्य वहाँ मार गिराये। ७३ तब तीन पक्षो मे यज्ञ समाप्त हो गया। आपको लोमपाद के कहने पर पता चल गया होगा। ७४ वहाँ से पश्चिम दिशा की ओर जानेवाले मार्ग पर हम चले और विपुल वन मे हमने गौतम की स्त्री को देखा। ७५ गौतम की पत्नी अहिल्या नाम की स्त्री थी। जो शाप के कारण पत्थर हो गई थी। ७६ हमारे पैर के लगने से उसे अपना स्वरूप प्राप्त हो गया फिर वह मुझे अर्घ्य देकर मुनि के साथ चली गयी। ७७ वहाँ से हम लोग मिथलापुर में प्रविष्ट हुये। जनक का यज्ञ देखकर हमे वड़ी प्रसन्नता हुई। ७८ वहाँ पर एक लाख बत्तीस

सत्यानन्द बोइले श्रीराम सुकल्याण पाआसि ।
जानकी बिभा होइ एथिरु जाआसि ६
शुणिण श्रीराम जे अळप होइ हसि ।लक्ष्मण भुज धरि आनन्दे रघुशिशि ७
सत्यानन्दकु पाशकु ड़काइ जनक । दृष्टान्तर कथा मान कहिले अनेक ८
तुम्भे महामुनि मन्त्री जे मोर पुणि । कहिण सर्ब कथा आस जे संगे घेनि ९
सेहि से दशरथ सूर्ज्य बंशरे अवतार ।भाग्य काळ आसिण जे होइला मोहर१११०
सेहि जे रत्नाकर मुहिँ जे गंगानदी । तुम्भर आश्रिते सकळ मोर बुद्धि११११
मोहर सम्बाद नेइ नृपति आगे देबु । सकळ कुशळ कथा बोलिण बोलिबु १२
तांकर पुत्रकु जे मोहर झिअ देबि । अजोध्या नृपतिकि समन्धि पाइबि १३
ए कथा सत्यानन्द भिआइ आस जाइ । पथे तोते रक्षा जे करन्तु उमा साइँ १४
शुभ बेळे एबे तुम्भे करन्तु गमन ।शुणिण सन्तोष जे हेले अहल्या नन्दन १५
जनक विश्बामित्र आबर जेते मुनि । ताहांकु सत्यानन्द लम्बाए मुर्द्धनि १६
नाशा पवन बारि चरण बढ़ाइला । आनन्द चित्त होइ पथ जे बहिगला १७
प्रथम दिन जे बैशाळि नग्रे रहि । आर दिन श्रोणित नदी कूळरे होइ १८
उद्बेगरे मुनि बेगे चळिगले । सिद्ध बनरे जाइँ प्रबेश होइले १९
चारि दिनरे से अगम्य बने जाइ । पाञ्च दिनरे पिता गौतम आश्रमरे होइ११२०

देखकर वहाँ पर घिरे हुए समस्त लोगो ने उनकी प्रशसा की । ५ सतानन्द ने कहा हे श्रीराम तुम्हारा कल्याण हो और तुम जानकी से विवाह करके यहाँ से जाओ । ६ यह सुनकर रघुनन्दन श्रीराम ने किंचित मुस्कराते हुए आनन्द पूर्वक लक्ष्मण की बाँह पकड ली । ७ जनक ने सतानन्द को पास बुलाकर अनेक दृष्टान्त की बाते बताई । ८ हे महामुनि ! आप हमारे मत्री है । उनसे समस्त बाते बताकर उन्हे साथ ले आइये । ९ वह दशरथ सूर्य वश मे अवतरित हुए है । मेरे सौभाग्य का समय आकर उपस्थित हो गया है । १११० वह सागर तथा मै गगा नदी के समान हूँ । हमारी समग्र बुद्धि आपके आश्रित है । ११११ मेरा सम्बाद आप राजा से बता दीजियेगा और उनको सारे कुशल समाचार बता दीजियेगा । १२ उनके पुत्र को मै अपनी कन्या प्रदान करूँगा और अयोध्या नरेश को समधी के रूप मे प्राप्त करूँगा । १३ हे सतानन्द ! आप जाकर इस बात की संरचना कर आये । मार्ग मे उमानाथ आपकी रक्षा करे । १४ आप अब शुभ बेला मे प्रस्थान करे । यह सुनकर अहिल्या नन्दन प्रसन्न हो गये । १५ सतानद ने जनक विश्वामित्र और अन्य जितने मुनि थे उन्हे शिर झुकाया । १६ श्वास पर विचार करके उन्होने चरण बढाया फिर उनका मार्ग आनन्द पूर्वक तय होने लगा । १७ पहले दिन वह वैशाली नगर मे रुके । दूसरे दिन शोणित नदी के तट पर से होकर वह शीघ्र ही उद्वेग के साथ चलते हुये सिद्धवन मे जा पहुँचे । १८-१९ चार दिनो में वह अगम्य वन में जा पहुँचे तथा पाँचवे

मुं बोइलि अणाअँ पितांकु मोहर ।पिता न अइले मुं बिभा नोहिब निकर ९३
शुणि करि कउशिक जनक सन्तोष । गउतमंक शिष्यंकु पेशिले तुम्भ पाश ९४
ए जाहा कहिबे य़ांक तुण्डरु शुणिबा नृपबर। आस बा न आस मनरे बिचार ९५
मोहर दइनिकि नघेन मने दोष त । एठारु आसि मोते उद्धरि नेप तात ९६
ए जेउँ कउशिक प्रतापी ब्रह्ममुनि ।ब्रह्मा बिष्णु शिव आदि देबे डरे पुणि ९७
बिश्वामित्र आसिबारु बहुत कार्य्य हेला ।
नानादि बिद्या देइ मोते बहुत जश कला ९८
स्वर्ग मञ्च पाताळे नाम एहांक बिख्यात।
तुम्भे मोर जन्म पिता बिद्यागुरु ए मो तात ९९
तुम्भे न आसिले आम्भे बिभा जे नोहिबु।
एहांकर बचनकु भांगि जे न तात पारिबु११००
आहुरि कथाए जाणिबा हेउ तुम्भे । जनक बेनि झिअ अजोनि जात शुभे११०१
एक पत्नी ब्रता जे अटन्ति आम्भर । एहि ठारु ब्रिचार उतसव सरिबार २
एमन्त लेखि श्रीराम लेखा मुदकले । सत्यानन्द हस्तरे देलेक मुद भले ३
ए मोहर सम्बाद नृपंतिक देब । सकळ कथा तांकु जे कुशळे कहिब ४
एमन्त कहि मुनिंकि नमस्कार करि । देखिण प्रशंसा जे कले सर्बे घेरि ५

प्रसन्नचित्त होकर बोले कि कल विवाह निश्चित होगा । ९२ मैने कहा कि मेरे पिता को बुलवाइये । पिता के न आने पर मै विवाह नही करूँगा । ९३ यह सुनकर विश्वामित्र और जनक प्रसन्न हो गये और उन्होने गौतम के पुत्र को आपके पास भेज दिया । ९४ हे नृप श्रेष्ठ ! यह जो कुछ अपने मुख से कहे उसे आप सुनियेगा । आप आये या न आये । यह आप अपने मन मे विचार करे । ९५ मेरे दोषो पर ध्यान न देकर मेरी दीनता को देखे । हे तात ! यहाँ आकर हमारा उद्धार कर ले । ९६ यह जो प्रतापी ब्रह्मर्षि विश्वामित्र है। इन्हे ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवता भी डरते है । ९७ विश्वामित्र के आने से बहुत कार्य बन गया । इन्होने अनेक विद्यायें मुझे देकर बहुत यश दिलाया । ९८ इनका नाम स्वर्ग मृत्युलोक तथा पाताल में विख्यात है। हे तात ! आप मेरे जन्मदाता पिता और यह मेरे विद्या गुरु है । ९९ आपके न आने से हम विवाह नही करेंगे और इनके वचनो को भी हम तोड नही पायेंगे । ११०० आप एक बात और समझ लीजिये कि जनक की दोनो कन्याये मगलमयी तथा अयोनि सम्भूता हैं । ११०१ हमारा व्रत एक पत्नी का है। वह उत्सव यहाँ सम्पन्न होने की बात है । २ श्रीराम ने इस प्रकार का लेख लिखकर लेखा बन्द किया तथा बन्द पत्र सतानन्द के हाथो मे दे दिया । ३ फिर उन्होने कहा कि हमारा यह सम्वाद पत्र राजा को दे दीजियेगा और कुशलता के सम्पूर्ण सम्वाद उनसे बता दीजियेगा । ४ इस प्रकार कहकर उन्होने मुनि को नमस्कार किया । यह

शुण हो द्वारपाळ आम्भ ठारु बाणी ।
श्रीरामंक बार्त्ता आम्भे आसिअछु घेनि ३६
वैदेही मण्डळरे जे मिथिला नामेपुरी । जनक महाऋषि सेथिरे दण्डधारि ३७
श्रीरामंकु बिभा जे करिबे दोहिता । ताहांकर दोहिता जे नाम अटे सीता ३८
ईश्वरंक धनु से जनक घरे थिला । दशरथ नन्दन श्रीराम आमञ्चिला ३९
तेणु करि श्रीरामंकु सीता देबे मुनिबर । विश्वामित्र सहिते बिचारि सकळ११४०
मोते पेशिछन्ति दशरथंकु नेबा पाइँ । सकळ राजांकु कथा कहिबा मणाइँ११४१
निकटे अनुकूल अछन्ति बिचारि । तेणु आम्भे आसि अछुं शुण हे दुआरी ४२
गउतमंक तनय़ आम्भे अहल्या गर्भु जात। मोर नाम सत्यानन्द जनक पुरोहित ४३
एमान कहिले जाणन्ति सिना मोते । शुणि करि द्वारपाल चळिला तुरिते ४४
आनन्दरे द्वारपाळ नय़नु बहे जळ । सत्यानन्दंकु रखाइ गलाक सत्वर ४५
भितरे द्वार पडिहारिंकि जाइँ कहि ।
श्रीरामंक बार्त्ता आणिछन्ति गौतम तनय़ी ४६
शुणि करि पड़िहारी वेगे चळि गला । बेहेरा खुण्टिआ आगरे कहिला ४७
शुणि करि बेहेरा खुण्टिआ चळिगला ।
राजार आस्थान ठाबरे जाइँण मिळिला ४८
किस कथा बोलि जे मन्त्री पचारइ । बेहेरा बोइला श्रीरामंक दूत आसिलइँ ४९

जा पहुँचे। उन्होने द्वारपालो को देखकर कहा। ३५ हे द्वारपाल ! हमारी बात सुने। हम श्रीराम के समाचार लाये है। ३६ विदेह मण्डल में मिथिला नाम का नगर है। जहाँ के राजा महर्षि जनक है। ३७ वह श्रीराम से कन्या का विवाह करेंगे। उनकी कन्या का नाम सीता है। ३८ जनक के घर में शंकर जी का धनुष था। दशरथनन्दन श्रीराम ने उसका कर्षण किया। ३९ इसलिए मुनिश्रेष्ठ श्रीराम को सीता प्रदान करेगे। विश्वामित्र के साथ सभी लोगो ने ऐसा विचार किया। ११४० मुझे दशरथ को लाने के लिये भेजा है। राजा से सारे समाचार आदरपूर्वक कहना है। ११४१ निकट के योग पर ही विचार हुआ है। हे द्वारपाल ! सुनो। हम इसी कारण से आये है। ४२ हम अहिल्या के गर्भ से उत्पन्न गौतम के पुत्र है। मेरा नाम सतानन्द है और हम जनक के पुरोहित है। ४३ उन्हे बताने से वह हमे जान जायेगे। यह सुनकर द्वारपाल शीघ्र ही चल पड़ा। ४४ द्वारपाल के नेत्रो से आनन्दाश्रु बहने लगे। वह सतानन्द को ठहराकर शीघ्र ही चला गया। ४५ अत:पुर के द्वार पर उसने जाकर प्रतिहारी से कहा कि गौतम के पुत्र श्रीराम का समाचार लाये है। ४६ यह सुनकर प्रतिहारी ने शीघ्र ही जाकर बेहेरा तथा खुटिया (विशेष पद के राजदूत) से कहा। ४७ यह सुनकर वह लोग चल दिये और शीघ्र ही राजा के सिंहासन के पास जा पहुँचे। ४८ मंत्री

नमस्कार करिण जे पितांकु कहिला ।अजोध्या जाउअछि बोलिण बोइला११२१
जननींक पादरे शोइला लम्बहोइ । श्रीरामंक कार्य्ये गो जाउ अछि मुहिँ २२
शिव धनु जनक जतने थोइ थिला । शुभ बेळरे श्रीराम धनु आमञ्चिला २३
पिता अइले श्रीराम होइवे जे बिभा । कौशिक जनक मोते भेदिले आणिबा २४
शुणि करि गौतम अहल्या तोष हेले । कहिण सत्यानन्द प्रभातु चळि गले २५
जननी मुक्त हेबा ठारु सबु गला जणा । नारायण अवतार श्रीराम एबे किना २६
एमन्त बिचार जे पिता मातांकर । बोइले कारण जे होइले पुत्र मोर २७
सेदिन सत्यानन्द गंगा पारि होइ । सरजु नदी कूळरे सेदिन जाइ रहि २८
पक्ष करे प्रवेश अजोध्यारे जाइँ । पशिले कटकरे आनन्द मन होइ २९
देखिले नग्र जे अतिहिँ बितपन । नेत चिराळ जे उड़इ भिन्न भिन्न११३०
काहिँरे काच कळण काहिँरे बैढुर्ज्य ।कहिँरे शुद्ध स्फटीक चन्द्रमा प्राए तेज११३१
काहिँरे बसिछि सुवर्ण पन्ति पन्ति । देखिण सत्यानन्द मनरे तोष होन्ति ३२
मेढ़ मण्डप जे देउळ ठाव ठाव । नघ परिमळ जे दिशे स्वर्गपुर भाव ३३
रूप गुणे सुन्दर सकळ नर नारी । देखिण सन्तोष जे हेले तपचारी ३४
राजार सिंह द्वारे मिळिले ऋषि जाइँ । द्वारपाळंकु देखिण सत्यानन्द कहि ३५

दिन पिता गौतम के आश्रम मे प्रविष्ट हुए । ११२० उन्होने नमस्कार करते हुये पिता जी से कहा कि मै अयोध्या जा रहा हूँ । ११२१ फिर उन्होने माता के चरणो मे दण्डवत् प्रणाम किया और बोले कि मै श्रीराम के कार्य के लिए जा रहा हूँ । २२ जनक ने शिव का धनुष यत्नपूर्वक रक्खा था । शुभ समय मे श्रीराम ने धनुप का कर्षण किया । २३ पिता के आने पर श्रीराम का विवाह होगा । विश्वामित्र तथा जनक ने मुझे उन्हे लाने के लिए भेजा है । २४ यह सुनकर गौतम तथा अहिल्या सन्तुष्ट हो गये और उनसे विदा लेकर प्रातःकाल सतानन्द चल दिये । २५ माँ के मुक्त होने से सब कुछ पता चल गया कि यह श्रीराम नारायण के अवतार है । २६ ऐसा विचार करके माता-पिता कहने लगे मेरे पुत्र का उद्धार हो जायेगा । २७ उस दिन सतानन्द गगा पार करके सरयू नदी के तट पर जाकर ठहर गये । २८ वह एक पक्ष मे अयोध्या नगर के दुर्ग मे प्रसन्न मन होकर प्रविष्ट हुये । २९ उन्होने अत्यन्त विस्तीर्ण नगर को देखा । वहाँ पर भिन्न-भिन्न-प्रकार की पताकाएँ उड़ रही थी । ११३० कही पर काँच के कही वैदूर्य के और कही शुद्ध स्फटिक के कलश चन्द्रमा के समान चमक रहे थे । ११३१ कही पर पक्ति की पक्ति में सुवर्ण जडा था जिसे देखकर सतानन्द का मन प्रसन्न हो गया । ३२ स्थान-स्थान पर अट्टालिकाये, मण्डप तथा देवालय थे स्वच्छ नगर स्वर्ग के समान दिखाई दे रहा था । ३३ समस्त नर-नारी सुन्दर रूप और गुण वाले थे । तपस्वी सतानन्द उन्हे देखकर प्रसन्न हो गये । ३४ ऋषि, राजा के सिंह द्वार पर

शुणिमा मोह ठारु राजांक पाटराणी। श्रीरामंकर बार्त्ता अछइ मु जे शुणि ६४
तेणु करि तुम्भ आगरे आसिण कहिलुं। लोके धाइँबारु आम्भे जतने मणिलुं ६५
शुणि करि कौशल्या बेगे आस्थानरु उठि।मन बिकळ हुए जे आत्मा हुए घाण्टि ६६
दासीकि ड़ाकि बोइला श्रीरामर माता। तथ्य करिण मोते कह गो बारता ६७
पुत्रंकर मुख मुं गो देखिबि केमन्ते। के आणि श्रीरामर वार्त्ता देव मोते ६८
कैकयीर आनन्द जे कहिले नसरे। नयन जुगळरु अश्रु जल गले ६९
सुमित्रार उसत वदन सतेचन्द्र जाणि। चातक पाइलाक बरषार पाणि११७०
आबर जेतेक जे राणी हंसमान। श्रीरामर वार्त्ता शुणिबाकु टेकि जे श्रवण११७१
कउशल्या राणीपुरे समस्ते रुण्ड हेले। बारता जाणिबा पाइँ समस्ते अइले ७२
एथु अनन्तरे शुण गो गउरी। दूत अइला बोलि नग्ररे पड़े हुरि ७३
द्वारपाळ बोले शुण गो तपोबन्त।राजा आज्ञा देले तुम्भे आस हे तुरित ७४
एमन्त समयरे खुण्टिआ माने जान्ति।
श्रीरामंकर दूत केहु से बोलिण बोलन्ति ७५
शुणि करि सत्यानन्द जोग बळ घेनि। राजांकर आगरे प्रबेश महामुनि ७६
सुमन्त मन्त्री देखि चिन्हिले ततक्षण। अहल्यार पुत्र एहु पवित्र बिचक्षण ७७

भीतर समाचार दिये श्रीराम के समाचार जो मैने सुने है। हे राजमहिषी! उन्हे आप मुझसे सुनिये। ६३-६४ इसीलिये मैने आपके पास आकर निवेदन किया है। लोगों के दौड़ने से हमे विश्वास हो गया है। ६५ यह सुनकर शीघ्र ही कौशल्या सिहासन से उठ पडी। उनका मन व्याकुल और आत्मा बोझिल सी हो रही थी। ६६ दासी को बुलाकर श्रीराम की माता ने कहा कि तुम सच-सच मुझे समाचार बताओ। ६७ मै पुत्र का मुख कैसे देखूँगी। श्रीराम के समाचार मुझे कौन लाकर देगा। ६८ कैकेयी का आनन्द कहते नही बनता था। उनके दोनो नेत्रो से अश्रु जल प्रवाहित हो रहा था। ६९ सुमित्रा का प्रसन्न मुख सैकड़ों चन्द्रमा के समान लग रहा था। लगता था मानो चातक को वर्षा का (स्वाती) जल मिल गया हो। ११७० और भी रनिवास की जितनी रानियाँ थी उन्होने श्रीराम के समाचार सुनने के लिये कान लगा दिये। ११७१ समस्त रानियाँ कौशल्या के महल में एकत्रित हो गयी थी। वह सब समाचार जानने के लिये आयी थी। हे गौरी! सुनों। इसके पश्चात् दूत आया है। ऐसा हल्ला नगर में मच गया। ७२-७३ द्वारपाल ने कहा हे तपोधन! सुनिये। राजा ने आपको शीघ्र ही चलने की आज्ञा दी है। ७४ रक्षक लोग विशेष ढग से चले जा रहा थे। कोई कह रहा था कि यह श्रीराम के दूत है। ७५ यह सुनते हुए योगबल से युक्त महर्षि सतानन्द राजा के समक्ष जा पहुँचे। ७६ उसी क्षण उन्हे देखते ही मंत्री, सुमन्त पहचान गये कि यह पवित्र विचक्षण अहिल्या के पुत्र है। ७७ श्रेष्ठ मत्री ने उन्हे पहचान कर नमस्कार

बशिष्ठंक पाशरे कहे धीर करि ।शुणिण महाऋषि खुण्टिआ कर धरि११५०
खुण्टिआर तुले बशिष्ठ कथा होन्ते । आसिकरि मिळिले मन्त्री जे सुमन्ते११५१
किस किस कथा भाळ हे गुपत । बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण हे सुमन्त ५२
श्रीरामर बार्त्ता दूत अछि आणि ।शुणि करि लय़ पुणि कलेक नृपमणि ५३
राम नाम शबद जे शुभिला राजा कर्णे । बशिष्ठ चाहिँण जे बोलन्ति राजने ५४
किस राम बोलिण बोल हे ऋषि वाणी ।
शुणि करि बशिष्ठ खुण्टिआंकु संगे घेनि ५५
राजार छामुरे जणाए तपचारि । शुण तुम्भे अजोध्या ठाकुर दण्डधारि ५६
श्रीरामंक बार्त्ता आणिछि एक दूत । सिंहद्वारे आसिण होइछि उपगत ५७
ए बार्त्ता पडिहारी खुण्टिआरे कहि ।
तेणु मन्त्रींक संगरे रहिभाळिलु आम्भेरहि ५८
शुणि करि नृपबर खुण्टिआकु चाहिँ ।केउँ दूत आसि अछि देखिलु किरे तुहिँ ५९
बेहेरा जणाइला दुआरी कहिला । सिंह द्वारे देब अछन्ति से बोइला११६०
शुणि करि नृपबर उदबेग मन । बेग करि दूतकु रे अणाअ बहन११६१
आज्ञा पाइ बेहेरा खुण्टिआ गला खरे । ताहार पछरे जे मन्त्रीबर चळे ६२
भरत शतृघन जे अनेक लोक गले । मुदुसुलि जाइण भितरे जणाइले ६३

ने पूँछा क्या बात है। वेहेरा बोला कि श्रीराम का दूत आया है। ४९ रक्षक दूत ने धैर्य के साथ वसिष्ठ के पास जाकर निवेदन किया। यह सुनकर महर्षि वसिष्ठ उसका हाथ पकडकर बात करने लगे। तभी मत्री सुमत आ पहुँचे। ११५०-११५१ उन्होने आकर कहा कि क्या गुप्तवार्ता हो रही है। तब वशिष्ठ ने कहा हे सुमत ! आप सुनिये। ५२ दूत राम के समाचार लाया है। यह सुनकर श्रेष्ठ राजा ध्यान से सुनने लगे। ५३ राजा के कानो मे राम का नाम सुनाई पड़ा। तभी राजा ने वसिष्ठ की ओर देखते हुये कहा हे महर्षि ! आप किस राम की बात कर रहे है। यह सुनकर तपस्वी वसिष्ठ ने विशेष रक्षक को साथ लेकर राजा से निवेदन किया। हे अयोध्या के स्वामी महाराज ! आप सुनिये। ५४-५५-५६ एक दूत श्रीराम के समाचार लाया है वह सिह द्वार पर आकर उपस्थित हुआ है। ५७ यह समाचार प्रतिहारी ने विशेष रक्षक को दिया है। इसी कारण से हम मत्रियो के साथ विचार विमर्श कर रहे थे। ५८ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा ने विशेष रक्षक की ओर देखते हुये कहा कौन दूत आया है। क्या तुमने देखा है। ५९ हे देव ! द्वारपाल तथा सतरी ने समाचार दिया है कि वह सिहद्वार पर है। ११६० यह सुनकर श्रेष्ठ राजा का मन प्रफुल्लित हो गया और उन्होने कहा कि दूत को शीघ्र ही बुला लो। ११६१ आज्ञा पाकर विशेष दूत तथा रक्षक शीघ्र ही चल पडे और उनके पीछे से मत्री भी शीघ्र ही चल दिये। ६२ शत्रुघन तथा अनेक लोग भी चल दिये। वेशकारिणी ने जाकर

कौशिक जनक बोले अइले एड़े मुनि। बाबु दशरथ भाग्य जे तोर धनि ९२
शुणि करि राजन पाछेटि बेगे आए। वशिष्ठ अइले किछि दूर जाएँ ९३
देखिण सत्यानन्द बशिष्ठ मान्य कले। बहुत लोक तांकु देखिण अइले ९४
तांकर पछकतिरे अनेक सइनि। पटुआर पडिला आनन्द रसे पुणि ९५
राउत माहुन्त खुण्टिआ पडिहारी। पात्र मन्त्री सामन्त जे बेहेरा परिबारि ९६
मुदुसुलि धाइ भितरे दुआरे देखन्ति। कबाटकु आड़ आइ कथान्त बुझु छन्ति ९७
एथु अनन्तरे जे सत्यानन्द जाइँ। बशिष्ठंक मुख चाहिँ अळप हसे सेहि ९८
निकटरे जाइँण मिळिले मुनिबर। कोळ कले बशिष्ठ अहल्या कुमर ९९
बोइले कुमररे चिरञ्जिबीरे रह। जश पउरुष सकळ स्थाने पाअ१२००
दशरथ राजा जे बेगे पुण आसि। शिररे लगाइले मुनिकर पादगोटि१२०१
ए बिधिरे राजा जे करिण बसाइले। सत्यानन्द कहे शुण राजन कर्णरे २
जाबाळी बामदेव कश्यपंकु जे देखि। पूजा बिधि कले कथान्त उपेक्षि ३
बशिष्ठ दक्षिण पाखरे छन्ति रहि। एसनेक समये जे सत्यानन्द कहि ४
दशरथ राजांकु कहन्ति सत्यानन्द। शुण तुम्भे नृपति श्रीराम सम्बाद ५
तुम्भर कुमर बेनि जे श्रीराम लक्ष्मण। विश्वामित्रंक संगरे बिजये कले पुण ६

है। ११९१ यह मुनि विश्वामित्र और जनक के कहने पर आये है। हे वत्स! दशरथ तुम्हारा भाग्य धन्य है। ९२ यह सुनते ही राजा शीघ्र ही अगवानी करने आ गये। वसिष्ठ भी थोडी दूर तक आये। ९३ सतानन्द को देखकर वसिष्ठ ने उनका सत्कार किया और बहुत से लोग उनके दर्शनार्थ आये। ९४ उनके पीछे अनेक सेना थी और उत्सव के शुभागमन पर आनन्द झर रहा था। ९५ घुड़-सवार, महावत, वीर योद्धा, प्रतिहारी, सभासद, मंत्री, सामत, कुशल योद्धा तथा परिवारी लोग वहाँ थे। ९६ वेशकारिणी भीतर से दौडकर द्वार पर देखती थी और किवाड़ो की आड़ से कथा का सार समझ रही थी। ९७ इसके पश्चात् सतानन्द जाकर वशिष्ठ के मुख की ओर ताकते हुये थोडा मुस्करा दिये। ९८ मुनि श्रेष्ठ ने पास जाकर भेट की और वशिष्ठ ने अहिल्या नन्दन का आलिगन कर लिया। ९९ उन्होने कहा हे वत्स! चिरजीव हो और सभी स्थानो में यश और पुरुषार्थ प्राप्त करो। १२०० फिर शीघ्र ही महाराज दशरथ ने आकर मुनि के चरणो को सिर से लगा लिया। १२०१ इस प्रकार विधानपूर्वक राजा ने उन्हे बैठाया। तब सतानन्द बोले हे राजन्! कान लगाकर सुनो। २ उन्होने जावालि वामदेव तथा कश्यप को देखकर वार्तालाप छोड़कर यथाविधि पूजा की। ३ वशिष्ठ दक्षिण पार्श्व मे थे। इसी समय सतानन्द ने कहा। ४ सतानन्द राजा दशरथ से बोले कि हे राजन्! आप श्रीराम के समाचार सुनिये। ५ आपके दोनों पुत्र राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ पधारे है। ६ आपके पुत्रो ने अयोध्यापुर से जाकर यश कमाया और उन्होने मार्ग मे

चिन्हिण मन्त्रीबर कलेक नमस्कार।
कुशल अछन्ति टिकि श्रीराम लक्ष्मण मोर ७८
सत्यानन्द बोइले बहुत शुभ कार्ज्य।कह तुमे बेगे जाइँ अजोध्या देश राज ७९
सुमन्त बोइले नृपति अबकाश। भो ऋषि कुमर तुम्भे बेग होइ आस११८०
भ्रत शतृघन आसि सत्यानन्दकु भेटिले।सुमन्त कहिले श्रीराम कनिष्ठ एहिटि११८१
श्रीरामर दूत बोलि अइले एबे देखि।सत्यानन्द बोइले ए दिशन्ति एकमूर्त्ति ८२
धन्य हे दशरथ धन्य तो चारि पुत्र। देबता समान तु पाइलु नन्दन त ८३
भ्रत शतृघन जे ऋषिर पादे पड़ि। कुशळ पचारन्ति से बेनिकर जोडि ८४
श्रीराम नना आम्भर क्षेमेण छन्तिटिकि। सुकल्याण करिण बोइले तांकु जती ८५
सकळ शुभे छन्ति श्रीराम लक्ष्मण। तांकर दूत पणे आसिछु आमे पुण ८६
एमन्त कहि ऋषि सै चळिले तुरित।
चारि द्वार जिणि जान्ते दिशिले तपोवन्त ८७
देखि मने बिचारिले बशिष्ठ रूषित। गउतमर तनय़ अहल्यार सुत ८८
जनक ऋषिकर पुरोहित मन्त्री। ए आसिबारु जाणिले दशरथंक सम्पत्ति ८९
ए जेबे अइले होइला शुभकार्ज्य। शुणिबा हेउ तुम्भे अजोध्या देशराज११९०
गउतमंक नन्दन सत्यानन्द ए मुँ चिन्हइ। सपत ऋषि संगरे बिधाता गणइ११९१

किया तथा पूँछा क्या हमारे श्रीराम, लक्ष्मण सकुशल है। ७८ सतानन्द ने कहा कि महान शुभ कार्य है। आप शीघ्र ही जाकर अयोध्या प्रदेश के महाराज से निवेदित कर दे। ७९ सुमन्त ने कहा कि महाराज खाली है। हे ऋषि पुत्र आप शीघ्र ही आइये। ११८० भरत और शत्रुघन ने आकर सतानन्द से भेंट की, सुमत ने कहा कि यह श्रीराम के छोटे भाई है। ११८१ आप श्रीराम के दूत है ऐसा जानकर अब यह आपसे मिलने आये है। तब सतानन्द ने कहा कि यह तो एक रूप दिखाई देते है। ८२ हे दशरथ! आप धन्य है। आपके पुत्र धन्य है। आपको देवता के समान पुत्र प्राप्त हुये है। ८३ भरत, शत्रुघन ने ऋषि के चरणो मे साष्टाग प्रणाम किया और दोनो हाथ जोडकर कुशल पूँछने लगे। ८४ हमारे बडे भाई श्रीराम कुशल क्षेम से तो है। तब यति ने उन्हे आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्रीराम और लक्ष्मण सब प्रकार से कुशल है। मैं उनका दूत बनकर आया हूँ। ८५-८६ ऐसा कहकर ऋषि शीघ्रता से चल दिये और वह तपस्वी चारो द्वारो को पार करते दिखाई पडे। ८७ उन्हे देखकर महर्षि वसिष्ठ ने मन मे विचार किया कि यह गौतम और अहिल्या के पुत्र है। ८८ यह महर्षि जनक के पुरोहित और मत्री है। इन्होने आकर दशरथ के ऐश्वर्य की जानकारी कर ली। ८९ यह जब आये है तब तो कार्य शुभ हो गया। हे अयोध्या के अधीश्वर! सुनिये। ११९० यह गौतम के पुत्र सतानन्द है। मै इन्हे पहचानता हूँ। ब्रह्मा ने इनकी गणना सप्तर्षियो के साथ की

सेठारु जनक ऋषि श्रीरामरे कहि । बेनि कामना मोहर सिद्ध एबे होइ २२
कउशिक बोइले किस जे कामना । जनक ऋषि बोइले शुण तुम्भे किना २३
बेनि दुहिता मोर अजोनि सम्भुत । जात होइला बेळे नियम कलि मुँत २४
धनु जे तोळिब ज्येष्ठ नन्दिनीकि नेब ।
लक्षे राजांकु जिणिले कनिष्ठ बिभा हेब २५
शुणि करि कउशिक बोइले जनककु ।श्रीरामकु सीता जे उर्मिळा लक्ष्मणंकु २६
जनक ऋषि कहे कउशिककु आसि ।बोइले आज बिभा करिबा दुहिताटि २७
श्रीराम बोइले ए नुहइ उचित । पिता माता न जाणिले नुहइ ए कृत्य २८
शुणि करि साधु साधु श्रीराम सर्वे कले। उत्सवरे बिभाघर करिबा बोइले २९
तु जेबे जिबु राजा बेग हुअ सज । हेळा नकर दण्डे अजोध्या महाराज१२३०
एते कहि श्रीरामंक लेखा गोटि देइ ।
पुणि बोइले कउशिक जनक छन्ति कहि१२३१
तुम्भ कुमर श्रीरामंकु बार बरष पुण । ऋषि माने बोइले जात नारायण ३२
नोहिले कि शिवधनु तोळि ए भांगइ । मो जननी मुक्तिरु जाणिले सर्बे तहिँ ३३
एगार बरष पर्जन्त धनु जाग हेला ।
देव असुर नाग बळ धनु देखि फेरे परा ३४

तब महर्षि जनक ने श्रीराम से कहा कि मेरी दोनों कामनाएँ सिद्ध हो गयी है। २२ विश्वामित्र ने कहा कैसी कामनाएँ ? तब महर्षि जनक ने कहा कि आप सुनिए। २३ मेरी दोनो अयोनि सम्भूता कन्याओं के उत्पन्न होने के समय मैने प्रण किया था। जो कोई धनुष को उठायेगा वह बड़ी कन्या को प्राप्त करेगा और जो एक लाख राजाओं को जीत लेगा, उससे छोटी कन्या का विवाह होगा। २४-२५ यह सुनकर विश्वामित्र ने जनक से कहा कि फिर तो सीता श्रीराम की और उर्मिला लक्ष्मण की हुई। २६ महर्षि जनक ने आकर विश्वामित्र से कहा आज दोनो पुत्रियो का विवाह करूँगा। २७ श्रीराम ने कहा कि यह उचित नही होगा। माता-पिता के जाने बिना यह कार्य नही होगा। २८ यह सुनकर सबने कहा कि श्रीराम तुम धन्य हो। फिर वह बोले कि विवाह महोत्सव के साथ करेंगे। २९ हे राजन् अब आपको चलना है। आप शीघ्र ही तैयार हो जाये और हे अयोध्याधिपति ! अब आप क्षणिक मात्र के लिए भी विलम्व न करे। १२३० ऐसा कहते हुए उन्होंने श्रीराम का पत्र दे दिया और वोले कि विश्वामित्र तथा जनक ने भी यही कहा है। १२३१ आपके पुत्र राम वारह वर्ष के है। ऋषि लोग तो कहते है कि नारायण हो उत्पन्न हो गए है। ३२ नही तो क्या यह शिवधनुष को उठाकर तोड़ देते और मेरी माता की मुक्ति से सभी लोगों को यह ज्ञात हो गया। ३३ ग्यारह वर्ष तक धनुपयज्ञ होता रहा। देवता, असुर तथा नाग धनुष को देखकर लौट गए। ३४ नर,

अजोध्यापुरु जाइँ जश कले तुम्भ सुत । वाटरे ताड़का असुरिकि कले हत ७
सेठारु विश्वामित्रंक जागकु रखिले। अनेक असुरंकु सेथिरे माइले ८
सेठारु विश्वामित्र विद्या देले जाण। सकळ विद्या जे मन्त्र जन्त्र पुण ९
सेठारु विश्वामित्र संगरे घेनि चळि। बाटरे जननीकि मुकत मोर करि१२१०
सेठारु श्रीराम लक्ष्मण चळि गले। मिथिलारे प्रबेश विश्वामित्र तुले१२११
शिव धनु रखि थिले जनक सत्य करि। से शरासनकु केहि नपारिले तोळि १२
तुम्भर पुत्र ताहा हेले आमञ्चिले। दुइ खण्ड करिण भांगि पकाइले १३
देखिण जनक ऋषि मनरे तोष होइ। सीतया नामरे तार दुहिता अटइ १४
श्रीरामंकु देव बोलि सनमत कला।
रत्नमाळा श्रीराम कण्ठे सीता लम्बाइला १५
एमन्त समयरे राजागणमान। गोळ कले उठिण श्रीराम संगतेण १६
श्रीरामंकु बरिवाकु आगे उभा सीता। देखि करि लक्ष्मण मनरे महाक्रोधा १७
मोह शर गोटिए बिन्धिले लक्ष्मण। लक्षे राजा मोह गले एक शरे पुण १८
देखि करि रामचन्द्र लक्ष्मणकु कहि। जिआइ दिअ राजागण मानंकु तुहि १९
शुणि करि लक्ष्मण जीवदान देले। जीव पाइ नृपति सकळे पळाइले१२२०
साधुरे लक्ष्मण बोलि देबताए बोले। कुसुम बृष्टि करि स्वर्गपुर गले१२२१

राक्षसी ताडका का वध कर दिया। ७ फिर वहाँ उन्होने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की और अनेक राक्षस मार डाले। ८ फिर वहाँ विश्वामित्र ने सब प्रकार की विधाये तथा मंत्र-यंत्र प्रदान किये। ९ वहाँ से विश्वामित्र उन्हे साथ लेकर चल दिये। मार्ग मे मेरी माता को मुक्त किया। १२१० वहाँ से चलते हुये श्रीराम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ मिथिला मे प्रविष्ट हुये। १२११ जनक ने प्रण करके शकर का धनुप रखा था। उस धनुष को कोई भी नही उठा पाया। आपके पुत्र ने उसे सहज ही कर्षित किया और तोडकर दो खण्ड करके गिरा दिया। १२-१३ यह देखकर जनक का मन प्रसन्न हो गया। उनके सीता नाम की पुत्री है। १४ उन्होने श्रीराम को देने की सम्मति दी। तब सीता ने रत्नो की माला श्रीराम के गले मे पहना दी। १५ इसी समय राजागणो ने उठकर श्रीराम के साथ युद्ध किया। १६ सीता श्रीराम का वरण करने के लिये आगे खड़ी थी। यह देखकर लक्ष्मण मन मे अत्यन्त कुपित हुए। १७ तब लक्ष्मण ने एक वाण मोहशर छोड दिया और एक लाख राजा एक ही बाण से मूर्छित हो गये। १८ यह देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि तुम इन राजागणो को जिला दो। १९ यह सुनकर लक्ष्मण ने उनको जीवनदान दे दिया और जीवन पाकर सभी राजा लोग भाग गये। १२२० देवताओ ने लक्ष्मण को धन्य-धन्य कहते हुये पुष्पो की वर्षा की और फिर स्वर्ग लोक चले गये। १२२१

जाणिण जनक बेनि दुहिता जे आणि । बेनि भाइंकि बरण कले जे सेथि पुण१२५०
पञ्चरत्न माळा देइ बरण करि गले । से दिन जनक बिभा करिण लोड़िले१२५१
श्रीराम शुणिबारु बिभा जे मनाकले । तुम्भ ताकु लेखालेखि य़ाकु बरगिले ५२
बिश्वामित्र सन्तोषरे सकळ कार्ज्य तोरान गले निश्चे बिभा जे करिबे मुनिबर ५३
ब्रह्मा विष्णु शिव जे सकळ मुनिगण । से मुनिकि भय़े करन्ति सर्ब जाण ५४
से बोलिबे जाहा से कथा हेब पुण । सकळ जश सिना ताहांक प्रकाशेण ५५
बिश्वामित्र सहिते आबर सर्ब ऋषि । सत्यानन्द मुनिकि ए स्थानकु पेशि ५६
तुम्भे एबे किस जे बिचारुछ मने । श्रीराम लक्ष्मण बिभा सरि बटि तेणे ५७
अजोनि कन्या बेनि से अटन्ति पतिब्रता।
केबे बिभा नुहँन्ति श्रीराम लक्ष्मण जगत् जिता ५८
जेबण लोककु सर्बे प्रशंसा करन्ति । से लोककु देवता बोलिण जाणन्तु टि ५९
श्रीराम तोहर बंशे उत्पत्ति । जनककु समुन्धि पाइले हेब चक्रवर्त्ती१२६०
बिश्वामित्रंक संगरे जिबारु तुम्भ पुत्र । कउशिक प्रसन्नरे उद्धारि कुळ गोत्र१२६१
धन्य गाधिसुत से मामुँ भणजा जन्म हेले । भणजा सप्तपुरे सबंकु जिणिले ६२
मामुँ देवतांकु जे न मारिले पुण । जाहा विचारे कउशिक देबे करन्ति शून्य ६३

कर दिया। इसके पश्चात् श्रीराम के कहने पर उन्हे पुनः जीवित कर दिया। ४९ यह जानकर जनक ने वहाँ दोनों कन्याओं को लाकर दोनो भाइयों का वरण किया। १२५० वह उन्हे पचरत्नों की माला पहनाकर वरण करके चली गई। उसी दिन जनक विवाह करने के लिये सोचने लगे। १२५१ यह सुनकर श्रीराम ने विवाह के लिये मना कर दिया और आपको लिखकर इन्हे यहाँ भेजा है। ५२ विश्वामित्र की सन्तुष्टि से आपका सारा कार्य हो गया यदि आप नही गए तो भी मुनि श्रेष्ठ निश्चित रूप से विवाह कर देगे। ५३ ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा सभी मुनि गण महर्षि से भय करते है। ५४ जो वह कहेगे वही होगा। उन्ही के कारण यह सारा यश प्रकाशित हुआ है। ५५ विश्वामित्र के सहित अन्य सभी ऋषियों ने महात्मा सतानन्द को इस स्थान पर भेजा है। ५६ अब आप अपने मन में क्या विचार कर रहे है? वहाँ श्रीराम तथा लक्ष्मण का विवाह समाप्त हो जाएगा। ५७ वह दोनो अयोनिज कन्याएँ पतिव्रता है। वह जगतज्जयी श्रीराम-लक्ष्मण को छोडकर कभी विवाह नही करेगी। ५८ जिस व्यक्ति की सभी लोग प्रशसा करते है उस व्यक्ति को देवता समझो। ५९ श्रीराम आपके वश मे उत्पन्न हुए है। जनक को सम्बन्धी पाकर चक्रवर्ती हो जाएँगे। १२६० विश्वामित्र के साथ तुम्हारे पुत्रो के जाने से उनकी प्रसन्नता से तुम्हारे कुल तथा गोत्र का उद्धार हो गया। १२६१ गाधि के पुत्र धन्य है। वहाँ मामा और भाजे ने जन्म धारण किया है। भाजे ने सातो लोको मे सबको जीत लिया। ६२ मामा ने देवताओं का संहार नही किया। विश्वामित्र जो कुछ भी सोचते है,

नर बानर जे आबर ऋषिगण। धनु धरिवाकु केहि नोहिले भाजन ३!
एमन्त कहि ऋषि लेख जे समर्पिले। शुणिण दशरथ परम तोष हेले ३!
कृताञ्जळि होइ घेनिले नरनाथ। हृदरे लगाइ देले बशिष्ठंक हस्त ३!
ब्रह्मांकर तनय़ लेखाकु हस्ते धरि। श्रीरामर सन्तक मुद ठाव करि ३!
चन्दनर मुद गोटि पकाइले भांगि। तलय़े करिण चिटाउ धरि बेगि ३
मने मने लेखा जे देखिले बिचारि। प्रस्थावमान शुणि हसिले ब्रह्मचारी१२४
पढिण बिचारि मने मर्य्यादा से कले। नृपतिक मुख चाहिँ बचन बोइले१२४
शुण तुम्भे दशरथ पुत्रंकर गुण। धनु आमञ्चि श्रीराम रखिले बड़पण ४
अगस्थ बनरे ताडकी बध कले। बिश्वामित्र मुनिकर जाग से रखिले ४
सुबाहु संगे असुर बळ नाश कले। तेणु से कउशिक अनेक विद्या देले ४
अहल्या मुकत कले जे तुम्भ पुत्र। साधु साधु पद सेठारु हेला जे प्रापत ४
मिथिळा नबरे प्रबेश जाइ हेले। जनकंकपुरे शिव धनु से देखिले ४
तेणु शिबधनु से धइले बामकरे। गुण टंकार नाद शुभिला बाहु बले ४
जनक धनुबळ भांगिले जे बेग। देखि करि राजा माने कळिरे उद्बेग ४
देखिण लक्ष्मण बीर राजांकु मोह कला। श्रीराम कहिबारु जिआइ पुण देला ४

वानर तथा अन्य ऋषिगण कोई भी धनुष धारण करने का पात्र नही ब पाया। ३५ ऐसा कहते हुए ऋषि ने पत्र प्रदान कर दिया जिसे सुनकर दशरथ को बड़ा सन्तोष हुआ। ३६ राजा ने हाथ जोड़कर उसे (पत्र को) ले लिय और फिर हृदय से लगाकर उसे वशिष्ठ के हाथों मे दे दिया। ३७ ब्रह्मा के पु वशिष्ठ ने श्रीराम के पत्र को हाथ मे लेकर उसे सावधानी से पकडा और लिफा को फाडकर फेंक दिया और पत्र को ठीक से निकाल लिया। ३८-३९ उन्हों उस लेख पर मन ही मन विचार कर लिया और प्रस्तावो को सुनकर वह तपस्वी ब्रह्मज्ञ हँस पडे। १२४० उन्होने उसे पढकर मन मे विचार किया और उसे सम्मा दिया फिर उन्होने राजा के मुख की ओर देखते हुए कहा। १२४१ हे दशरथ आप अपने पुत्रो के गुण सुनिए। श्रीराम ने धनुष का कर्पण करके बड़प्पन की रक्षा की है। ४२ उन्होने अगम्यवन मे ताड़का का वध कर दिया तथ विश्वामित्र मुनि के यज्ञ की रक्षा की। ४३ सुबाहु के साथ असुर सेना का सहा कर दिया। तब विश्वामित्र ने उन्हे अनेक विधाऐ प्रदान की। ४४ आपके पुत्र ने अहिल्या को मुक्त कर दिया। उन्हे वहाँ साधुवाद प्राप्त हुआ। ४५ फि वह मिथला नगर में जा पहुँचे। उन्होने जनक के महल मे शिवधनुष को देखा। ४६ फिर उन्होने बाँए हाथ से शंकर का धनुप उठा लिया। उनके बाहु-बल से किया गया प्रत्यचा का टंकार नाद सुनाई पडा। ४७ फिर उन्होंने शीघ्रता से बल पूर्वक जनक के धनुप को तोड दिया। यह देखकर राजा लोग उत्पात मचाने लगे। ४८ यह देखकर पराक्रमी लक्ष्मण ने राजाओ को मूर्छित

जाबाळि कश्यप आवर बामदेब। समस्त मनरे आनन्द सद्भाव ७८
आस्थानरे लोक जे कले धन्य धन्य। बाबु श्रीराम जात हेले ए मेदिनी ७९
केते दिनरे तोर जे देखिबु श्रीमुख।तेबे सिना पाशोर जिब संसारर दुःख१२८०
नग्र नर नारी शुणिण तोष चित्त। मुदुसुलि जाइण कहिले भितरेत१२८१
शुण गो अजोध्या राजांक पाटराणी। श्रीरामंक कथा गो पुराणे बखाणि ८२
बिश्वामित्रंक संगरे श्रीराम लक्ष्मण गले। बाटरे ताडकीकि श्रीराम बध कले ८३
बिश्वामित्रंक जाग रखिण तहुँ चळि। गंगा कूळे अहल्या मुकत से जे करि ८४
मिथिळा कटकरे हेले परवेश। शिवधनु सेठारे भांगिले रघुनाथ ८५
लक्षे राजांकु जे लक्ष्मण जिणिले। देखि करि जनक ऋषि तोष हेले ८६
अजोनि सम्भुतरे बेनि दुहिता तार। साक्षाते कमळा पार्वती रूप तांकर ८७
श्रीराम लक्ष्मणकु ऋषि बरण कले। तेणुटि बेनिभाइ हरष मन हेले ८८
जनक श्रीरामंकु बोइले हुअ बिभा। श्रीराम बोइले पिता नथिले नुहँ शोभा ८९
शुणिकरि कउशिक गउतम पुत्र भेदि। शुणिण राजामाने जिबाकु उदबेगि१२९०
तेणु बधाइ मुँ मागिबार पाइँ। एहि कथा तुम्भ आगे कहुछि बुझाइ१२९१
शुणि करि बोइले जे श्रीरामर आई।
श्रीमुख न देखिले मुँ मन मो सुस्थ नोहि ९२

देखेंगे। यह सुनकर अयोध्या नरेश सतुष्ट हो गये। ७७ जावालि, कश्यप, बामदेव तथा सभी के मन में आनन्द और सद्भावना थी। ७८ सभा के लोग धन्य-धन्य करने लगे। वत्स राम इस पृथ्वी पर उत्पन्न हुये है। अब तुम्हारा श्रीमुख हम कितने दिनो में देखेगे। तब जाकर हमारा सासारिक दुःख नष्ट होगा। ७९-१२८० नगर के नर-नारियो के मन यह सुनकर प्रसन्न हो गये। वेशकारिणी ने भीतर जाकर समाचार दिया। १२८१ अयोध्या नरेश की पट-रानियो ! सुनिए। श्रीराम की कथा पुराणो में वर्णित है। ८२ श्रीराम तथा लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ गए। श्रीराम ने मार्ग मे ताड़का का बध कर देया। ८३ विश्वामित्र की यज्ञ रक्षा करके वह वहाँ से चल दिए और गगा के ट पर उन्होंने अहिल्या का उद्धार किया। ८४ फिर रघुनाथ ने मिथिला नगर म प्रविष्ट होकर शकर जी के धनुष का खण्डन किया। ८५ लक्ष्मण ने एक लाख राजाओ को जीत लिया। यह देखकर महर्षि जनक सन्तुष्ट हो गए। ८६ उनकी दो पुत्रियाँ अयोनि सम्भूता है। वह साक्षात् लक्ष्मी और पार्वती का स्वरूप है। ८७ जनक ऋषि ने श्रीराम तथा लक्ष्मण को वरण कर लिया। तब दोनो भाई प्रसन्नचित्त हो गए। ८८ जनक ने श्रीराम से विवाह करने को कहा तब वह बोले कि पिता जी के न रहने पर यह शोभनीय न होगा। ८९ यह सुनकर विश्वामित्र ने गौतम के पुत्र को भेज दिया। समाचार पाकर राजा लोग जाने को तत्पर है। १२९० इस कारण से बधाई माँगने के लिए आपके समक्ष यह कथा समझा कर कह रही हूँ। १२९१ यह सुनकर श्रीराम की माता ने कहा कि

शुणिण दशरथ परम सानन्द। मुख विकाशिला कि पूर्णमीर चान्द ६४
आनन्दरे अश्रुजळ गले घन घन।वशिष्ठ ऋषिकि चाहिँ बोइले राजन ६५
भो मुनि जाहा हो सत्यानन्द कहि। एहि कथा मोते जे संशय़ लागइ ६६
ताड़की मारिबार जे शुणि थिलि मुहिँ।
जाग रखिबार मोते कैकेय़ा भाइ कहि ६७
अहल्या मुकत कथा अटे अगोचर। सबुहुँ वळिला श्रीराम धनु धरिबार ६८
अकळ बळ धनु केहि न तोळिले। ईश्वरंक कोपरे से धनु जात हेले ६९
देव असुर नाग बळ जे एमाने। नर वानर बाणसुर वज्रधर एणे१२७०
पर्शुराम वेदवर दशदिगपाळे। चारि रावण से धुनुकु तोळि न पारन्ति बळे१२७१
नर नाराय़ण देखिण गले घुञ्चि। से धनुकु श्रीराम केमन्ते आमञ्चि ७२
वशिष्ठ बोइले से कथा अटे सत।
नोहिले एते पथकि आसे गउतम शिष्य ७३
जाहाकु वेदबर बरष करे थरे। देखिबा पाइँ आसइ मिथिळारे ७४
श्रीराम सम्मत करन्ते सरन्ताणि बिभा।
तुम्भे किम्पा राजन बिचार ए कथाकु अबा ७५
श्रीराम तोर सकळ गुणे अटे सार। स्वय़ं नाराय़ण से हेले अवतार ७६
लक्ष्मी नारायणंक बिभा देखिबा चाल। शुणि करि सन्तोष अजोध्या दण्डधर ७७

देवता उसे पूरा करते है। ६३ यह सुनकर दशरथ अत्यन्त प्रसन्न हुये। उनका मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान विकसित हो गया। ६४ आनन्द के कारण निरन्तर अश्रुपात हो रहा था। तब राजा ने महर्षि वशिष्ठ की ओर देखते हुये कहा। ६५ हे मुनि! जो बात सतानन्द ने कही है, उसमें मुझे सन्देह हो रहा है। ६६ ताड़का के वध के विषय में मैने सुना था और यज्ञ रक्षा की बात मुझे कैकेयी के भाई ने मुझसे कही थी। ६७ अहिल्या की मुक्ति की बात तो अगोचर है और सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो श्रीराम का धनुष धारण करना है। ६८ अकलित बल धनुष को कोई भी नही उठा पाया। शकर के कोप से वह धनुष उत्पन्न हुआ था। ६९ देवता, दानव, नाग आदि नर-वानर बाणासुर तथा इन्द्र, परशुराम, ब्रह्मा जी, दस दिगपाल, चारो रावण भी इस धनुष को बल से उठा नही पाये। १२७०-१२७१ नर तथा नारायण भी उसे देखकर लौट गये। उस धनुष को श्रीराम ने इस प्रकार से कर्षित किया। ७२ वशिष्ठ बोले कि यह बात सत्य है। नही तो क्या गौतम के पुत्र इतना मार्ग चलकर आते। ७३ जिसे साल मे एक बार देखने के लिये ब्रह्मा जी मिथिलापुर मे आते हैं। ७४ श्रीराम द्वारा स्वीकृति देने पर विवाह समाप्त हो गया होता। हे राजन्! इस बात पर क्यो विचार कर रहे हो। ७५ तुम्हारे राम समस्त गुणो के सार है। स्वय नारायण ही अवतरित हुये है। ७६ चलो लक्ष्मी और नारायण का विवाह

देवता असुर जे नरहिँ बानर। नागबळ ऋषि जे प्रजाजन मेळ ८
तिनिपुर लोके जे श्रीरामरे प्रशंसिले। जेणुटि श्रीराम विश्वामित्र संगे गले ९
जाग रखि अहल्याकु कले से मुकत। शिवधनु भांगिवारु हरष समस्त१३१०
तेणुटि जनकर बेनि दुहिता बरि।
विभा न होइ श्रीराम मो ठाकु दूत चाळि१३११
आम्भे गले बिभाघर हेब सुलभरे। जिबार सम्भवं जे कहिलुँ मन्तव्यवरे १२
एते कहि राजा जे सेठारु चळि गले। बाहारे अवकाश जे जाइण होइले १३
माजणा मद्दंन विधि बेगे राए सारि। षड़रसे मणोहि जे कले जाइकरि १४
रजनीरे कौशल्यापुरे बिजे महीपाळ। रजनी शेषे शंख स्फुरइ देबाळ १५
शेज्या तेजिण उठिले महिपति। अवकाश हेला जाइँ बाहार जगती १६
दिहुडि हुळामाळ जळइ निरन्तर। खुण्टि आकु राइण बोलइ नृपबर १७
टमक दिआअ बेगे टमकिआ राइ। चतुरांग बळ जे आसन्तु सज होइ १८
शुणि करि खुण्टिआ जे बेगे चळि गले। टमकि आकु डाकि करि से कहिले १९
शुणि करि टमकिआ घोषणा बेगे देला। सैन्यबळ सज हुअ बोलि से बोइला१३२०
चउषठि दाण्ड जे कन्दि बिकन्दिरे। देश घोषे धेण्डुरा फेराए सत्वरे१३२१
सिंह द्वारे आसिण मिळिला तडति। कर जोडि दर्शन कलाक नृपति २२

भागीरथी के समान है। ७ जब से श्रीराम विश्वामित्र के साथ गये तब से देवता असुर, मानव, वानर, नाग, ऋषि, प्रजाजन तथा तीनों लोकों के सभी लोगों ने श्रीराम की प्रशंसा की है। ८-९ उसने यज्ञ की रक्षा करके अहिल्या को मुक्त किया है। शंकर का धनुष तोड़ने से सभी प्रसन्न है। इसीलिये जनक की दोनो कन्याओं ने उन्हें वरण किया हैं। विवाह न करके श्रीराम ने हमारे पास दूत भेजा है। १३१०-१३११ हमारे जाने पर विवाहोत्सव होगा। मैने जाने के सब कार्यक्रम कह दिये है। १२ इतना कहकर राजा वहाँ से चल पड़े और बाहर जाकर अवकाश में हो गये। १३ राजा ने शीघ्र ही मर्दन और मार्जन समाप्त करके जाकर षड़रस भोजन किया। १४ रात्रि मे महाराज कौशल्या के महल में पहुँचे और रात्रि की समाप्ति पर देवालय मे शख ध्वनि होने लगी। १५ राजा शैया त्याग कर उठ गये और बाहर जगती पर जाकर फुर्सत में बैठ गये। १६ दीपक तथा मसाले निरन्तर जलती थी। श्रेष्ठ राजा ने खुटिया (विशेष रक्षक) को बुलाकर कहा। १७ तुम शीघ्र ही नगाड़ची को बुलाकर नगाड़ा बजवा दो जिससे चतुरंगिनी सेना तैयार होकर आ जाये। १८ यह सुनकर खुण्टिया शीघ्र हो चला गया और उसने नगाड़ची को बुलाकर कहा। १९ यह सुनकर टमक बजाने वाले ने शीघ्र ही घोषणा करते हुये कहा कि सैन्यबल शीघ्र ही तैयार हो जाये। १३२० उसने चारों ओर चौसठ मार्गों, गली-कूचों तथा नगर में शीघ्र ही ढिंढोरा पीटकर घोषणा की। १३२१ फिर वह शीघ्र ही सिंहद्वार

मार्गशिर मासरे गला मोर वळा। बैशाख मासकु एबे छड़ मास हेला ९३
एते बोलि रोदन करन्ते राममात। केते दिने श्यामळ वदन देखिबि त ९४
सान काळरु से जे गले एकाकरि। कोळरे शुआइ जे केते गेल करि ९५
देखिले हेबि तोष न देखि बिकळ। एते बोलि दासीकि वधाइ देले खर ९६
एथु अनन्तरे जे दशरथ राय़े। बशिष्ठंकु बोइले करहे उपाय़े ९७
जनक जेबे श्रीरामंकु निश्चे देबे सीता। एसनेक बिचार जे करिछि विधाता ९८
तुम्भ आम्भ बेगळरे नुहँ पुण आन। जाहासे प्रजापति करिछि लेखन ९९
सत्यानन्द जेबे अइले मोते कहि।रत्न बेदि उपरे श्रीरामंकु बिभा कराइबि१३००
सुमन्तकु चाहिंण कहे नृपवर। चतुः रांग वळ जे आम्भर सजकर१३०१
कालिर प्रभातरु आम्भे जे पुण जिबा। जनक कउशिक श्रीरामंकु देखिबा २
तुम्भे हे बशिष्ठ निअ सत्यानन्द। गौरव करिण जे रख मुनि इन्द्र ३
एते बोलिण राए आस्थानु उठि गले। श्रीराम लेख गोटि हस्तरे घेनि चले ४
मुदुसुलि आसिण मणाइँ घेनि गले। अन्तःपुररे राय़े प्रबेश होइले ५
कौशल्या कैकेय़ी संगरे राणीगण। राजांक चरणरे कलेक मान्य धर्म ६
राजन बोइले गो सकळ राणी शुण। भागीरथिक संगे श्रीरामंकु लेख पुण ७

मै जब तक उनका श्रीमुख नही देख लेती तब तक मेरा मन शान्त नही होगा। ९२ मेरा पुत्र मार्गशीर्ष माह मे गया था। वैसाख माह तक छै. महीने बीत गए। ९३ इतना कहकर श्रीराम की माता रुदन करती हुई बोली कि उस श्यामल वदन को और मै कितने दिनो मे देखूंगी। ९४ बचपन मे ही वह मुझे अकेला करके चले गए। मै उसे गोद मे लेकर कितना दुलराया करती थी। ९५ मैं उसे बिना देखे व्याकुल हूँ। इतना कहकर उन्होने शीघ्र ही दासी को बधाई दी। ९६ इसके पश्चात् राजा दशरथ ने वशिष्ठ से उपाय करने के लिये कहा। ९७ जब जनक निश्चित रूप से श्रीराम को सीता देगे तो विधाता का विचार ऐसा ही होगा। ९८ जो कुछ विधाता ने लिखा है वह हमारे और आपके सोचने से मिथ्या नही हो सकता। ९९ जब सतानन्द मुझसे कहने आए है तो मैं रत्न वेदिका पर श्रीराम का विवाह कराऊँगा। १३०० श्रेष्ठ-राजा ने सुमन्त की ओर देखते हुए कहा कि हमारी चतुरगिनी सेना को तैयार करो। १३०१ कल प्रभात काल मे हम प्रस्थान करेंगे और जनक विश्वामित्र तथा श्रीराम को देखेंगे। २ हे वशिष्ठ ! आप सतानन्द को ले जाइये और इन मुनीन्द्र को सम्मान सहित ठहरा दीजिये। ३ ऐसा कहकर राजा सिंहासन से उठकर श्रीराम का पत्र हाथो मे लिये हुये चल दिये। ४ दासी उन्हे आकर ले गयी और राजा अतःपुर में प्रविष्ट हुये। ५ कौशल्या तथा कैकेयी के साथ रानियो ने आकर राजा के चरणो की अभ्यर्थना की। ६ राजा ने कहा हे समस्त रानियो ! सुनो। यह श्रीराम का लेख

अइरावत गज जे तिरिशि सस्त्र अश्व । दुइ लक्ष पदाति संगरे जाआन्तु त ३८
आज्ञा पाइ मन्त्रीर पुत्र जे बाहार । बेश होइण बेग चढिण हस्ती पर ३९
आगेण नृपति जेउँ हस्ती थिले देइ । से हस्तीरे मन्त्रीपुअ अमरीबिजे होइ१३४०
श्वेत बर्ण हस्ती जे दिशइ सुन्दर । धीरे धीरे गमन करइ करीबर१३४१
काच कुम्भ उपरे सुवर्णर झूळि । कटीरे जे सुबर्ण किंकिणी नाद करि ४२
पाट छत्र धराइ चळे मन्त्री सुत । आग पछरे बाजे टमक निशाण त ४३
पाद घातरे स्वर्गे नदिशे अखण्डळ । थाट चळिबारे जे चळइ बन घोर ४४
फरिकार पदान्ति जे आगरे चळि जान्ति ।
छुरि खण्डा धनुधरि आगरे झमकान्ति ४५
हस्तीमान चढ़िण माहुन्त बेगे गले । अश्वपरे सिपाही उद्वेगे चळिले ४६
शरेणी ओट उपरे सरदार गले । शोभाकार रथपरे चढ़ि रथि गले ४७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरि ।नब कोटि सैन्य जे राज्यरे रखिले करि ४८
जगाइ राज्य घोष नृपति शिखर । मन्त्रींकि कहिण जे होइले बाहार ४९
सम्भर्बरे जहुँ चळिले सैन्य गण । स्वर्गर देबता देखिले से जे पुण१३५०
देखिण मनरे जे बिचार करन्ति ।श्रीराम सीता बिभा देखिवा ए घान्ति१३५१
एथु अनन्तरे जे दशरथ राए । आपणे सज हेबाकु नृपति बिजये ५२

तथा दो लाख पैदल सिपाही जॉय । ३८ आज्ञा पाकर मन्त्री का पुत्र सुसज्जित होकर हाथी पर चढ़कर बाहर निकला । ३९ आगे से राजा ने जो हाथी दिया था मंत्री पुत्र ने उस हौदे पर सवार होकर प्रस्थान किया । १३४० सफेद रग का हाथी सुन्दर दिखता था । गज श्रेष्ठ मन्दगति से गमन कर रहा था । १३४१ कचकुम्भों पर सुवर्ण की झूल लगी थी और कटि सुवर्ण किंकिणी शब्द कर रही थी । ४२ मंत्री पुत्र पाट छत्र लगाकर चल रहा था । आगे-पीछे टमक तथा निशाण बज रहे थे । ४३ पदाघात से स्वर्ग में इन्द्र नही दिख रहा था । सेना के चलने से लगता था जैसे घोर प्रवाह से जल चला जा रहा हो । ४४ शस्त्र कुशल सैनिक आगे-आगे चल रहे थे और कटार, कृपाण तथा धनुष लेकर आगे ही चमका रहे थे । ४५ महावत भी शीघ्र ही हाथियों पर चढ़कर निकल पड़े । घोड़ों पर चढ़कर सिपाही उत्साह के साथ चल दिए । ४६ बहलो पर तथा ऊँटों पर सरदार चल पड़े और सुन्दर रथो पर सवार होकर रथी निकल पड़े । ४७ हे शाकम्बरी । इसके पश्चात् नौ करोड़ सेना उन्होंने राज्य में रख दी । ४८ तब नृपति शिरोमणि दशरथ राज्य पर पहरा लगाकर मंत्री से कहकर बाहर निकले । ४९ जब समारोह के साथ सेना ने प्रस्थान किया तो स्वर्ग के देवगण बारम्बार निहारने लगे । १३५० वह लोग देखकर मन में विचार कर रहे थे कि अब शीघ्र ही श्रीराम और सीता का विवाह देखेंगे । १३५१ इसके पश्चात् राजा दशरथ स्वयं सुसज्जित होकर चल पड़े । ५२

एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । ड़गरा कहइ देब शुण दण्डधारी २३
धेण्डुरा देइण जे सबुंकि जणाइलि । सज होइ अइले समस्ते शुणि करि २४
नृपति पचारिले शुण हे सुमन्त । बिभा बिधि पदार्थ जोगाड़ जेमन्त २५
सकळ द्रव्यमान नेव जे संगरे ।एहि समय़रे आसि बशिष्ठ ऋषि मिळे २६
राजा नित्य कर्मसारि तड़ति जे आसे ।बशिष्ठंकु मान्यकरि पाशरे जाइँ बसे २७
राजन कहे मिथिलापुर चाल जिवा । श्रीराम लक्ष्मणंकु बिभा कराइबा २८
जनक ऋषि मोते सुदय़ा एबे कले । मोहर जीबन एबे सुफळ होइले २९
वशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण नृपमणि । आज्ञादिअ थाट आगरे जान्तु पुणि१३३०
एहि समय़रे बाम कश्यप जाबाळि । प्रवेश होइले सत्यानन्द तपशाळि१३३१
भरत शत्रुघन जे आसिले सज होइ । गगनरे उदय़ जे हेले छाय़ा साइँ ३२
रथ गज अश्व जे पळान्ति अपार । समस्ते मिळिले जे आसि सिंह द्वार ३३
बाजइ टमक जे निशाण मद्दंळ । दमा दाउण्डि जे महुरी शंख गोळ ३४
आलुम्ब बिलुम्ब पाट छत्रमान पुण । जे जाहार सजरे अइले सर्बजन ३५
बशिष्ठंकु चाहिँण बोइले नृपबर । गहणंक संगरे आगे तुम्भे चाल ३६
मन्त्रीर पुअ आगु आणि थाटे जाउ । नब सहस्र रथि एहार संगे नेउ ३७

पर आ पहुँचा और उसने हाथ जोड़कर राजा के दर्शन किये। २२ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् दूत ने कहा हे महाराज ! ढिंढोरा पीटकर सबको बता दिया गया है। सभी लोग सुनकर तैयार होकर आ गये है। २३-२४ राजा ने सुमन्त से पूछते हुये कहा कि विवाह की विधि के सारे पदार्थों का प्रबन्ध कर लो। २५ साथ मे समस्त सामग्रिनाँ ले लेना। इसी समय महर्षि वशिष्ठ आ पहुँचे। २६ नित्य कर्म से निवृत्त होकर राजा शीघ्र ही आ गये और वशिष्ठ को अभिवादन करके समीप मे जाकर बैठ गये। २७ राजा ने कहा चलिये। श्रीराम लक्ष्मण का विवाह कराने के लिये मिथिलापुर चले। २८ महर्षि जनक ने अब मुझ पर कृपा की है। अब मेरा जीवन सफल हो गया है। २९ वशिष्ठ ने कहा हे नृपमणि ! आप सुनिये। आप सेना को आगे चलने की आज्ञा दे। १३३० इसी समय में वामदेव, कश्यप, वलिवैश्य तथा तपस्वी सतानन्द प्रविष्ट हुये। १३३१ भरत शत्रुघन तैयार होकर आ गये। लगता था छाया-कात आकाश मे उदय हो गये हो। ३२ असख्य रथ गज और घोड़े दौड़ रहे थे। सभी आकर सिहद्वार पर एकत्रित हो गये। ३३ टमक, निशान, तथा मादल बज रहे थे। नगाड़ा, डुग्गी महुरियो तथा शखो का निनाद हो रहा था। ३४ सभी लोग तैयार होकर पाट छत्र इत्यादि अपने-अपने सामान से सुसज्जित होकर आ गये। ३५ वशिष्ठ की ओर देखकर श्रेष्ठ राजा ने कहा कि आप विशिष्ट राजपुरुषो के साथ आगे चले। ३६ मत्री-पुत्र निरीक्षक वाहिनी मे जाए और अपने साथ नौ हजार रथी ले ले। ३७ साथ में ऐरावत हाथी तीस हजार अश्व

दशरथ बोइले अमरीश सज कर । बेनि अमरिशरे बिजे करिबे पुत्र मोर ६८
कश्यप बामदेब जावाळि तिनि जण । बशिष्ठ सत्यानन्द जिबे अमरीरे पुण ६९
शुणिण सुमन्त मन्त्री बेगे चळि गला ।
श्वेत हस्ती सात गोटा अमरी सज कला१३७०
सात जणंक आगरे निबेशिला पुण । बेनि पुत्र सामन्त बसिले अमरीरे पुण१३७१
देखिण नृपबर वशिष्ठरे कहि । तिनि बर्णरे गहण सज कर नेइ ७२
बसन्त नीळ आबर रंग बर्ण जाण । एमन्त सज करि आण मो राणी गण ७३
भरत शतृघनकु बोइले राए राइ । पछुआणि दण्डे तुम्भे रह बेनिभाइ ७४
शुणिण शतृघन भरत चळिगले । थाट चाळि देइण पछरे बिजे कले ७५
एथु अनन्तरे जे राजार राणीगण । समस्ते बेशहुअ गो बोइले राजने ७६
कौशल्या कैकय़ा सुमित्रा तिनि राणी । सकळ राणी घेनि बेश हेले पुणि ७७
नासारे सिन्धु फल रत्न गुणा लाइ । अळका मथामणि मस्तके [illegible]जइ ७८
नय़ने रञ्जन कपोळे श्रीखण्डि चन्दन । जुड़ा बान्धि झरा झुम्पा लगाई बहन ७९
पञ्चु बर्ण कुसुमर गभामान बान्धि । अळका उपरे जे पुष्प धण्डा छन्दि१३८०
कर्ण काप मलकति चन्द्र जे फासिआ ।हीरा निळा जडितरे फिरि फिरा कुआ१३८१

तब सुमन्त कनक ध्वज रथ को सुसज्जित करके ले आया । ६७ दशरथ ने कहा कि हौदे सुसज्जित करो । मेरे दोनों पुत्र दो हौदों पर विराजमान होगे । ६८ कश्यप, वामदेव, जाबालि यह तीनों लोग और शतानन्द तथा वशिष्ठ भी हौदों से जाएँगे । ६९ यह सुनते ही मत्री सुमन्त शीघ्र चला गया और उसने सात श्वेत रंग के हाथियों पर हौदे कसवा दिये । १३७० फिर सातों लोगों के समक्ष उन्हे समर्पित कर दिया । दोनों पुत्र सामत हौदे में बैठ गए । १३७१ यह देखकर श्रेष्ठ राजा ने वशिष्ठ से तीन वर्ण के विशिष्ट राजपुरुषो को सुसज्जित करने के लिये कहा । ७२ उन्होंने वसन्ती, नीला तथा लाल रग से सुसज्जित करके अपनी रानियो को लाने की आज्ञा दी । ७३ राजा ने भरत और शत्रुह्न को बुलाकर कहा कि तुम दोनों भाई मार्ग में पीछे रहोगे । ७४ यह सुनकर भरत और शत्रुह्न चल दिये और उन्होनें सेना को चलाकर पीछे से गमन किया । ७५ इसके पश्चात् राजा ने शीघ्र ही समस्त रानियों को श्रृंगार करके तैयार होने के लिए कहा । ७६ समस्त रानियो को लेकर कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा तीनों रानियाँ सुसज्जित हो गईं । ७७ उन्होने नाक में मोती की बुलाक तथा रत्न-जड़ित कील पहन ली । सिर पर मस्तक मणि सुशोभित थी । ७८ नेत्रों में अंजन कपोलो पर श्रीखण्ड चन्दन लगा लिया और जूड़ा बाँधकर शीघ्र ही चमकदार गुच्छा लगा लिया । ७९ अलकावलि पर पुष्पो की माला सजाकर पाँच रगों के फूलों के गुच्छे बाँध लिये । १३८० कानों में मल्ली कड़ी और चन्द्र फाँसिया (कान के आभूषण) और हीरा तया नीलम से जड़े हुये फिरफिरे लगा लिये । १३८१

बिबिध बसन देबांगि मञ्चिला पिन्धि । शिरर उपरे नेइ जरिपागि बान्धि ५३
रत्नमय़ मुकुट शोहे सप्त शाखा । मुकुतार किरण बिकाशे तेज जिता ५४
कर्णरे कुण्डल जे कण्ठरे मोति माळ । पदक चन्द्रहारा लुळइ बक्षस्थल ५५
बाहारे बाहुटी जे तेजरे झटकन्ति । अंगुष्ठिरे रत्न मुदि तेज बिराजन्ति ५६
कटिरे कटि मेखळा कररे कंकण । बाम भुजे बीरनेत दिशे शोभाबन ५७
पय़रे तोढ़र जे क्षत्रींकर सल । एहि रूपे सज हेले अजोध्या महीपाल ५८
बशिष्ठ नेइ कले मंगळ आळति । मस्तकरे गोरचना चिता बिराजन्ति ५९
दुर्बाक्षत अनुकूल शिररे राए घेनि । ब्राह्मणंकु नमस्कार करिण राजा पुणि१३६०
जाए शुभ निमन्ते दधिमाछ आगे ।
पूर्ण कुम्भ नटिकाळ रम्भा जे बृक्ष साजे१३६१
श्वेत पारुआ ज राजहंस पुण । मंगल शुभ अर्थे रखाइ बाटे पुण ६२
बिप्र माने बेद जे आध्यान करन्ति । शास्त्र श्लोक जे चण्ड पुत्रे सुमरन्ति ६३
भाटे कएबार जे गोबिन्द नाम घोषि । मंगळाष्टक जे ज्योतिषे पढ़न्ति ६४
नग्ररे नरनारी द्यन्ति हुळ हुळि । बिश्वास बारि पाद बढ़ाए दण्डधारि ६५
शुभ जोगरे बाहार होइले दशरथ । संगतरे अछन्ति शतृघन भ्रत ६६
सिंह द्वारे राजन होइले परबेश ।कनक ध्वज रथ मण्डि आणिला सुमन्त ६७

अनेक वस्त्र और रेशमी अगरखा पहनकर उन्होने शिर के ऊपर जरीदार पाग बाँध लिया । ५३ सात कगूरो वाला रत्नमय मुकुट शोभा पा रहा था । तेज को जीतने वाली मुक्ता-किरणे निकल रही थी । ५४ कानों मे कुण्डल तथा गले मे मोतियो की माला थी । वक्षस्थल पर पदक चन्द्रहार झूल रहा था । ५५ बाहो में चमकते हुए बाजूबन्द और उँगलियो में ज्योति छटकाने वाली मुद्रिकाएं थी । ५६ कटि में मेखला और हाथो में ककण थे । उनकी बाई भुजा पर वीरनेत शोभायमान दिख रहा था । ५७ पैरो में योद्धाओ को सालने वाले तोडे (पैरो के आभूषण विशेष) पड़े थे । इस प्रकार से अयोध्या नरेश सुसज्जित हुए । ५८ वशिष्ठ मंगला आरती लेकर गए । मस्तक पर गोरोचन का तिलक विराज रहा है । ५९ राजा ने शुभयोग के दूर्वाक्षतो को शिर पर धारण करके ब्राह्मणो को नमस्कार किया । १३६० शुभयात्रा के लिये सामने दही, मछली आया । पूर्ण कुम्भ, नारियल तथा कदली के वृक्ष सजाए गए । १३६१ मार्ग मे सफेद कबूतर तथा राजहस शुभ यात्रा के लिए रक्खे गए । ६२ विप्रगण वेदपाठ करने लगे । तान्त्रिक लोग शास्त्रो के श्लोको का पाठ करने लगे । ६३ विदूपक तथा भाट गोविन्द का नाम उच्चारण करने लगे । ज्योतिषीगण मगलाष्टक की आवृत्ति करने लगे । ६४ नगर के नर-नारी मागलिक शब्द ध्वनि करने लगे । राजा ने श्वास को समझकर पैर बढाया । ६५ राजा दशरथ शुभ योग मे भरत, शत्रुघ्न के साथ निकल पड़े । ६६ राजा सिंह द्वार पर जा पहुँचे

दुइशत पचाश राणी पिन्धि पीत बर्ण।रत्न हान्दोळा जे नीळ बर्णरे शोभावन ९६
सहस्रेक दासी जे बेश होइ पुण। हान्दोळारे विजय़ कलेक से जाण ९७
रंग वर्णरे छति जे चामर रंग बर्ण। हान्दोळार आगरे दिशइ शोभावन ९८
ए रूपे तिनि बर्ण सकळ राणी धरि। दासीगण मानंकु घेनिण बिजे करि ९९
हान्दोळामान चढिण दाण्डकु बाहार। हुळहुळि शबद जे होइला गहळ१४००
देखिण दशरथ राजन हेले तोष। जाबाळि कश्यपंकु बोइले बेगे आस१४०१
शुणिण जाबाळि कश्यप चळिगले। राणी हंस गहण जे आगरे मिळिले २
बशिष्ठंकु बोइले सत्यानन्दंकु घेनि। गहणंक मध्यरे बिजे कर पुणि ३
शुणिण बशिष्ठ जे सत्यानन्द गले। राणीहंस मध्यरे विजय़ करि चळे ४
बामदेबंकु राजन बोले धीरे वाणी।तुम्भंकु लागिला जे एहु राज्यभार पुणि ५
आम्भे आसिबा जाए राज्य रक्षाकर। जे रूपे परराष्ट्र न पशे मोर पुर ६
रथी सरदार पादान्तिपादान्ति पएकार। हाटुआ बाटुआ पथुकी जिबार ७
दुःखी दरिद्रंकु देबेटि अन्न बस्त्र। सदाबर्त्त देबे जे चळन्ति पथ ८
कळि द्वन्द निबर्त्त जे करिबु बुझि करि। एते कहि राजन जे राणींक पछे चलि ९
हुळ हुळि हरि बोल शबद गहळ। राम ताळि उत्सव जे मंगळ बेभार१४१०

हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् सुमित्रा ने नीले रग की साड़ी पहनी। ९५ दो सौ पचास रानियों ने पीले रग की साड़ियाँ पहनी और नीले रग की रत्न जडित शिविकाऐं शोभा पा रही थी। ९६ एक हार दासियाँ शृंगार करके डोलियो में विराजमान हो गईं। ९७ छत्र चामर लाल वर्ण के थे जो शिविकाओं के आगे सुन्दर दिखाई दे रहे थे। ९८ इस प्रकार समस्त रानियाँ तीन रगो को धारण करके दासियो को लेकर विराजमान हो गईं। ९९ वह सब शिविकाओ मे चढ़कर मार्ग पर निकल पड़ी। मागलिक शब्दो की चहल-पहल मच गयी। १४०० राजा दशरथ देखते ही सतुष्ट हो गये और उन्होने जावालि तथा कश्यप से शीघ्र ही आने के लिये कहा। १४०१ यह सुनकर वह लोग चल दिये और रानियो के विशिष्ट समुदाय के आगे जा पहुँचे। २ वशिष्ठ को साथ लेकर विशिष्ट व्यक्तियो के मध्य भाग मे उपस्थित रहने के लिये सतानन्द से कहा गया। ३ यह सुनकर वशिष्ठ और सतानन्द चल दिये और रनिवास के मध्य भाग मे चलने लगे। ४ राजा ने बामदेव से नम्र निवेदन किया कि अब राज्य का भार आपके ऊपर है। ५ आप हमारे लौटने तक राज्य की रक्षा कीजिये जिससे दूसरे राष्ट्र वाले हमारे नगर मे न घुस सके। ६ रथी, सरदार, पैदल सिपाही, पैयकार, हाट, बटोही, राहगीर इन सबके जाने पर दुखी दरिद्रो को अन्न वस्त्र दे दीजियेगा और मार्ग में चलने वाले लोगो को सदावर्त मे दान देते रहियेगा। ७-८ विचार करके आप झगडे झझट निपटाते रहियेगा। इतना कहकर राजा रानियो के पीछे चल पड़े। ९ मागलिक शब्द तथा हरिबोल की ध्वनि गूँजने

हस्तरे हीरा माणिक्य चुडि शोभावन। आगुआल कतुरि दिशे भिन्न भिन्न ८२
ताड़ बिद बाहुटि बेनि बाहे शाजे। कटिरे मेखळा जे रत्नमान खञ्जे ८३
गळारे चापसरि वक्षस्थळे माला। हेम मन्ने मेखला वक्षस्थळकु तोरा ८४
पदक चन्द्रहारा मोतिमाळ मान। रजनी कोळे जेन्हे उदे जे चन्द्र पुण ८५
चरणे नूपुर जे पाहुड़ बळा शोभे। अंगुष्ठि मानंकरे झुण्टिआ शोभा पाए ८६
कर अंगुष्ठिरे रत्न मुदि तोरा। पुञ्जि-पुञ्जि हीरा नीळा वसि अछि परा ८७
एहि मति बेश हेले सकळ जे राणी। वसन्त वर्ण पतनि कैकेय़ी पिन्धे पुणि ८८
बेनि शत पचाश जे वसन्त वर्ण पुण। सहस्रेक दासी पुण बेश ए रूपे जाण ८९
बड पाट कैकय़ी ता संगे बाहारिले।
रत्न हान्दोळा भितरे समस्ते बिजे कले१३९०
रंग वर्ण पतनि जे कौशल्या राणी पिन्धि।
वेनिशत पचाश राणी एहि रूपे बान्धि१३९१
सहस्रेक दासी जे बेश हेले पुण। रंगवर्ण हान्दोळारे बिजे कले जाण ९२
कैकेय़ी राणी आगे धबळ छति तोरा। धवळ श्वेत चमर आलट पंखा तोरा ९३
कउशल्यांक आगरे वसन्त बर्ण छति। आलट चामर जे वसन्त बर्ण कान्ति ९४
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। सुमित्रा पिन्धिले जे नीळबर्ण शाढ़ी ९५

हाथो मे हीरा तथा माणिक्य की चूड़ियाँ शोभायमान थी। और आगे भिन्न-भिन्न प्रकार की कैंचिया (विशेष आभूषण) दिखाई दे रही थी। ८२ दोनो बाँहो में तारो के बाजूबन्द सुशोभित थे। कमर मे मेखला तथा रत्नों की पेटी सजी थी। ८३ गले में धनुषाकार आभूषण और वक्षस्थल पर माला और स्वर्ण निर्मित हार सुन्दरता से सजे थे। पदकयुक्त चन्द्रहार तथा मोतियों की मालाएँ ऐसी लग रही थी जैसे रात्रि की गोद मे चन्द्रमा उदय हो गया हो। ८४-८५ चरणो मे नूपुर और पैरो में कडे तथा उँगलियो मे रौनेदार बिछुए शोभा पा रहे थे। ८६ हाथ की उँगलियो में रत्न मुद्रिकाएँ सुशोभित थी जिनमे हीरा नीलम प्रचुर मात्रा मे जडे थे। ८७ इस प्रकार शीघ्र ही समस्त रानियाँ सुसज्जित हो गईं। कैकेयी ने वसन्ती रग की साडी पहन रखी थी। ८८ दो सौ पचास रानियों ने वसन्ती वस्त्र पहने और इसी रूप मे एक हजार दासियाँ सुसज्जित हो गईं। ८९ उनके साथ बडी पटरानी कैकेयी निकल पड़ी और सब रत्न जड़ित शिविकाओ मे बिराजमान हो गईं। १३९० रानी कौशल्या ने लाल रग की साड़ी पहनी, दो सौ पचास रानियो ने भी इसी प्रकार की साड़ी पहनी। १३९१ एक हजार दासियाँ शृंगार करके सबके साथ लाल रग की शिविकाओ में विराजमान हो गयी। ९२ रानी कैकेयी के आगे श्वेत छत्र शोभायमान था। सफेद चामर व्यजन तथा पंखे सुशोभित थे। ९३ कौशल्या के आगे वसन्ती रग का छत्र तथा वसन्ती कांति वाले व्यजन और चामर थे। ९४

सुजाण नामरे जे पात्रइ विश्वास ।से सम्भाळि रखिला भण्डारइ विशेष २६
निति सेवाकारि राजनर जेते । संगरे गले जे सकळ निजोगिते २७
वामदेव मुनि राज्य रखिबाकु रहे । आउ सर्बे राजा संगे चळिले निर्भये २८
क्षितीकि चउकिआ जगिले नग्र पुण । एहि अनुरूपे राज्य जगि थान्ति पुण २९
सेनापति माने शारेणी अश्व जगि बार। तेर लक्ष हस्ती जे सम्भाळे सरदार१४३०
ठाबे ठाबे ठणा करि राज्यकु घेरि रहि। बशिष्ठंकर पुत्रमाने बेहरणरे रहि१४३१
समस्तंकु जाग्रत करिण नृपबर । पर उपद्रव जेमन्ते नोहिब राज्यर ३२
समस्तंकु कहिण राजन चळिगले । भ्रत शतृघन पछरे पुण चळे ३३
सरजु पारि होइ आर कूळे रहि । गह गह शबदरे बन गिरि चमकइ ३४
एथु अनन्तरे गो शुण शाकम्बरि । कटक शून्य हेला जिबारु दण्डधारी ३५
सरजु पारि होइ राजा मनरे हरष । समस्तंक कुशळ जे बिचारे नरेश ३६
जेते बेळे अइले सकळ बुझि पुण । रहिबार बशिष्ठंकु पुछिले राजन ३७
सकळ बुझाइ जे वशिष्ठ ऋषि कहि । शुणिकरि राजन परम तोष होइ ३८
सरजु पारि होइ रहिले सर्बजन । दिबस शेष होइ रजनी प्रबेशण ३९

रत्न लेकर कश्यप के भाई भण्डार के रक्षक थे। २५ सुजान नाम के एक विश्वास पात्र ने विशेष भण्डार को सम्हाल रक्खा था। २६ राजा के जितने भी नित्य के सेवक थे वह समस्त अपनी-अपनी सेवा के लिये साथ गए। २७ राज्य की रक्षा करने के लिये महर्षि वामदेव रह गए और सभी लोग निर्भय होकर राजा के साथ चल दिये। २८ नगर मे स्थान-स्थान पर चौकियों पर चौकीदार पहरे पर थे। इस प्रकार नगर की चौकीदारी होने लगी। २९ रथो घोड़ो आदि की रक्षा के लिये सेनापति लोग थे। सरदार लोग तेरह लाख हाथियो की रक्षा कर रहे थे। १४३० स्थान-स्थान पर पड़ाव डालकर राज्य को घेर कर वशिष्ठ के पुत्र रक्षा करते घूम फिर रहे थे। १४३१ जिससे कि राज्य मे अन्य उपद्रव न हो इससे श्रेष्ठ राजा ने सबको सचेत कर दिया था। ३२ सभी से कह कर राजा चल दिये थे और पीछे से भरत तथा शत्रुघन भी चले गए थे। ३३ लोग सरयू को पार करके दूसरे तट पर पहुँच गए। खर भर शब्द से वन तथा पर्वत चमत्कृत हो रहे थे। ३४ हे शाकम्बरी ! सुनों। इसके पश्चात् राजा के चले जाने पर दुर्ग सूना सा हो गया। ३५ सरयू के पार हो जाने पर राजा का मन प्रसन्न हो गया। राजा सबके कुशल मगल के लिए विचार कर रहे थे। ३६ जब सब लोग पूँछ-ताँछ कर आ गए, तब बचे हुए लोगों के विषय में राजा ने वशिष्ठ से पूछा। ३७ तब महर्षि वशिष्ठ ने उन्हे भलीभाँति समझा दिया। तव राजा को सुनकर अत्यन्त सन्तोष हो गया। ३८ सभी लोग सरयू पार करके ठहर गए। तभी दिन समाप्त हो गया और रात हो गई। ३९ दीवट मे दीपक

आगरे श्वेत पारुआ उड़ान्ति राजन। आगरे राजहंस करन्ति गमन१४११
दधिमाछ घेनिण आगे केहु जान्ति। भारे कएबार आगरे सुमरन्ति १२
भण्डार घेनाइ सुमन्त मन्त्री पुण। राजा कइ पछरे करइ गमन १३
नग्ररु बाहार होइ गले सर्ब पुण। सरजु नदी तटरे प्रवेश हेले जाण १४
राजार संगे सर्बे चळन्ति निजोग। जे जाहार सेबारे अछन्ति संजोग १५
केहु रथे बसि जाए केहु गज कन्धे चढि।
केहु जान सुकाशळ चढिण जान्ति चळि १६
सारेणी ओट गण्डा के पिठिरे आरोहि। केबण फरिकार जाआन्ति सज होइ १७
खुण्टिआ पडिहारि के लंका लम्ब हता।
पाञ्च सात जण संग होइ हेउ छन्ति कथा १८
नट, नृत्य गणीकाए आसन्ति अपार। अछन्ति विनोदिआ घेनिण संगतर १९
थोकाएक पछे जे मारन्ति बाण। आद्य आषाढ़रे कि मेघ गरजन१४२०
न जाणिबा लोके जे हुअन्ति तरस्त। केउँ माने पचारन्ति केवण उतपात१४२१
भण्डार अधिकारि भण्डार घेनि चळि। दश सहस्त्र पादान्ति तार संगे मेळि २२
सैन्यंकर मध्यरे चळइ से जे पुण। एक रथरे से सकळ सम्पादिण २३
अनेक अळंकार रत्नमान भरि।जेते बेळे जाहा जे लोड़िले दण्डधारि २४
दण्ड सिंहासन संगरे अनेक रतन नेइ। भण्डार परिछा जे कश्यपंकर भाइ २५

लगी। मॉगलिक उत्सव मे विशेष विधान किये गये। १४१० राजा ने आगे सफेद कबूतर उडाये। आगे-आगे राजहस गमन कर रहे थे। १४११ कोई दही मछली लेकर आगे चल रहा था। भाट तथा विदूषक आगे-आगे वर्णन कर रहे थे। १२ भण्डार लेकर मत्री सुमन्त राजा के पीछे-पीछे चल रहे थे। १३ सभी लोग नगर से बाहर निकलकर सरयू नदी के तट पर जा पहुँचे। १४ राजा के साथ सभी सेवक समुदाय अपनी-अपनी सेवाओं मे सलग्न थे कोई रथ पर बैठा जा रहा था कोई हाथी पर चढ गया था तथा कोई गाडी पर चढकर चला जा रहा था। १५-१६ ऊँट की पीठ पर चढकर वीर लोग चले जा रहे थे। कोई बहलो पर सवार थे। कोई फरीकार सुसज्जित होकर चल रहा था। १७ वीर योद्धा प्रतिहारी मेवक समुदाय पॉच सात के झुण्ड मे साथ होकर बात-चीत कर रहे थे। १८ नट, नृत्यकार तथा असख्य गणिकाएँ थी जिन्होने अपने साथ मे विदूषक ले लिये थे। १९ पीछे से कुछ लोग आतिशबाजी चला रहे थे जैसे आषाढ के प्रारभ मे मेघ गर्जन करता है। १४२० न जानने वाले लोग त्रस्त हो जाते थे और कोई पूँछता था कि यह उत्पात कैसा है। १४२१ भण्डार का अधिकारी भण्डार लेकर चल रहा था उसके साथ दस हजार पैदल सिपाही थे। २२ वह सेना के मध्य में चल रहा था और एक रथ मे उसने सब कुछ रख लिया था। २३ उसमें अनेक अलकार तथा रत्न भरे थे। राजा जिस समय जो चाहते थे, वह उपलब्ध था। २४ दण्ड तथा सिहासन के साथ मे अनेक

से सुरासुरि गंगा जे व्यापिला सप्तपुर। तेणु सकळ जीबे आहार कले स्थिर ५२
नर बानर देव होइलेक मेळ। से काळे मंसासुर होइला अवतार ५३
धरणी गर्भरु सेहि से जात हेला। शुम्भ निशुम्भ जे ताहार भ्रात परा ५४
से तिनिभाइ जे बेदबरकु बन्दि। तेणु से बेदबर जळ देले सिधि ५५
तेणु से सपतपुर जिणिला असुर। देबे देखि पळाइले नरहि स्वर्गपुर ५६
तेणु से बिधाता जे दुर्गाकु जात कला।
असुरंकु मार बोलि देबींकि आज्ञा देला ५७
शुणिण दुर्गा नवकोटि देवी जात करि।
नब कोटि देबी ठारु चउषठि जोग्नी अवतरि ५८
चउषठि जोग्नी ठारु बाउन कोटि पिचाशुणि।
जात होइ सर्वे असुरंकु मारि पुणि ५९
असुरंकु रक्तरे बहे रक्त नदी।शोणित नदी बोलि बिधाता देले हेजि१४६०
चण्डी जुद्ध काळु से नदी उत्पत्ति। शुणि करि पार्वती जे होइले तृपति१४६१

दशरथंक मिथिला प्रबेश

एथु अनन्तरे शाकम्बरि शुण। बारता पाइले जनक ऋषि पुण ६२
दशरथंक पाशरु सत्यानन्द जाइ। दशरथ अइले बोलिण जाइ कहि ६३

लोको मे व्याप्त हो गई। तव समस्त जीव स्थिरता पूर्वक आहार कर पाए। ५२ नर, वानर तथा देवता एकत्रित हो गये। उस समय मसासुर (महिषासुर) का अवतार हुआ। ५३ वह पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। शुम्भ तथा निशुम्भ उसके भाई थे। ५४ उन तीनो भाइयो ने ब्रह्मा जी की स्तुति पूजा की। तब ब्रह्मा ने उन्हे जल सिद्धि प्रदान की। ५५ इस कारण से उस असुर ने सातों लोक जीत लिए। यह देखकर देवता लोग स्वर्ग त्यागकर भाग खडे हुए। ५६ तब विधाता ने दुर्गा को उत्पन्न किया तथा उन्होने देवी को असुरो का विनाश करने की आज्ञा दी। ५७ यह सुनकर दुर्गा ने नौ करोड देवियाँ उत्पन्न की उन नौ करोड-देवियो से चौसठ योगिनियाँ अवतरित हुई। ५८ चौसठ योगिनी से बावन करोड पिशाचिनी उत्पन्न हुई और उन्होने समस्त असुरो का सहार किया। ५९ असुरो के रक्त से खून की सरिता बहने लगी। उसका नाम ब्रह्मा ने शोणित नदी रक्खा। १४६० चण्डी के युद्ध करते समय वह नदी उत्पन्न हुई। यह सुनकर पार्वती तृप्त हो गई। १४६१

दशरथ का मिथिलापुर में प्रवेश

हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् महर्षि जनक को समाचार प्राप्त हुये। ६२ दशरथ के पास से आकर सतानन्द ने उन्हे उनके समाचार दिये। ६३

लागिलाक चन्द्रदीप हुळा जे दिहुडि ।
पाञ्च जुण जाए दिशे चन्द्रउईँलार परि१४४०
राजन ड़काइ जे वशिष्ठंकु पुण । जे रूपे सकळे करन्ति भोजन१४४१
शुणि करि वशिष्ठ सुरभि सुमरिले । जाइण सुरभि जे सकळ द्रव्य देले ४२
जे जाहा भुञ्जइ जे ताहाकु ताहा मिळि। आनन्दरे भोजन सकळे सेथि करि ४३
भोजन शयन सारि तहुँ चळिगले । सप्त दिनरे गंगा नदी पारि हेले ४४
अहि अनुक्रमरे थाट चळि जान्ति । शोणित नदी जिणि गमन करन्ति ४५
मिथिळारे प्रबेश तेर दिने जाइँ । देखिले मिथिलारे चहळ बड़ होइ ४६
पार्बती बोइले शुण हे ईशान । शोणित नदी गोटि काहुँ हेला पुण ४७
से कथा मोर आगे फळाइ कहिबा । शुणि करि ईश्वर बोइले शुण बामा ४८

शोणित सरितांक उत्पत्ति

सहस्रमुखा विधाता जेउँ काळे पुण । सृष्टिकि सर्जिला से नकला बारण ४९
से काळे सपतपुर निरोळरे कला । पुरके छपन कोटि जीव भिआइला१४५०
सागर से काळरे केहुणि पुरे नाहिँ ।
सागर नथिबारु सुरासुरि गंगा भिआइ१४५१

और मशाले जल उठी । उदित चन्द्र के समान प्रकाश पाँच योजन तक दिख रहा था । १४४० फिर राजा ने वशिष्ठ को बुलाकर सबको भोजन कराने के लिये कहा । १४४१ यह सुनकर वशिष्ठ ने सुरभी का स्मरण किया । सुरभी ने जाकर समस्त पदार्थ प्रस्तुत कर दिए । ४२ जिस किसी ने जो वस्तु खानी चाही उसे वह वस्तु प्राप्त हो गई । वहाँ पर सबने आनन्दपूर्वक भोजन कर लिया । ४३ भोजन तथा विश्राम करके सब चल दिए और सात दिनो पर उन्होंने गगा नदी पार की । ४४ सर्प के समान सेना चली जा रही थी । फिर वह लोग शोणित नदी पार करके चलने लगे । ४५ तेरहवें दिन वह लोग मिथिला मे प्रविष्ट हुए । उन्होने मिथिला मे बडी चहल-पहल होते देखी । ४६ पार्वती ने कहा हे ईशान ! सुनिए । शोणित नदी किस प्रकार उत्पन्न हुई, आप यह कथा हमसे खोलकर कहिए यह सुनकर शकर ने कहा हे कामिनी ! सुनो । ४७-४८

शोणित नदी की उत्पत्ति

जब सहस्र मुख वाले ब्रह्मा ने बिना रोक-टोक के सृष्टि की सर्जना की । उस समय सप्त पुरियो का निर्माण किया । फिर उसमे छप्पन करोड जीवो की सृष्टि की । ४९-१४५० उस समय किसी लोक मे सागर नही था । सागर न होने के कारण सुरसरी गंगा का सृजन किया । १४५१ वह सुरसरि गंगा सातों

आर बेनि पुत्रंकु बेनि बधू काहिँ। एहि सकाशे मोर मनकु न आसइ ७८
विश्वामित्र कहिले जे कहिलि जा सत। निश्चये चारि बधु हेबे परापत ७९
एहा शुणि दशरथ मने तोष हेले। दोष क्षमा हेउ बोलि मुनिकि कहिले१४८०
देखिबाकु नरनारी होइले आसिरुण्ड। थाटरे गहळ होइ पूरिलाक दाण्ड१४८१
दिव्य नगरेक जनक तुछा कला। दशरथकु नेइँण सेथिरे रखाइला ८२
पात्र मन्त्री सामन्तंकु बेगळ घर देइ। आबर जेते सैन्य संगरे थिले जाइ ८३
जेह्ना अनुरूपे घर छामुण्डिआ देले। जोगाड सञ्चा देइण गउरब कले ८४
राणीहंस गहण जे आगे चळिगले। ताहांकु जनक जे चरचा बिधि कले ८५
दशरथ राणी माने निश्चिन्ते रहिले। अनेक सैन्य बळ मिथिला नग्रे भले ८६
गहळरे मिथिला नग्र जागा नाहिँ। सकळ सैन्यबल रहिले सेथि पाइँ ८७
हस्ती अश्व शारेणी गण्डा जे पएकार। मुखध्वनि राबरे शुभइ गहळ ८८
कउशल्या कैकेय़ी सुमित्रा संगरे। सातश पञ्चाश राणी मिळिले से पुरे ८९
छड़ सहस्र दासी जे परिबारिजन। एकस्थाने मिळन्ते गहळ हेला जाण१४९०
श्रीराम लक्ष्मण जे मातांक पाशे मिळि। नमस्कार करिण रहिले कर जोड़ि१४९१
देखिण कउशल्या श्रीरामंकु कोळ कले। लक्ष्मणंकु बसाइले बाम जे जानुरे ९२

है। ७७ और दोनों पुत्रो की दोनो बधुएँ कहाँ है। इस विषय में मेरे मन में कुछ समझ मे नही आ रहा है। ७८ विश्वामित्र ने कहा जो मैने कहा है वह सत्य है। तुम्हे निश्चित रूप से चार बधुएँ प्राप्त होगी। ७९ यह सुनकर दशरथ का मन संतुष्ट हो गया। उन्होने मुनि से अपराध क्षमा करने के लिये कहा। १४८० नर-नारियाँ देखने के लिये आकर एकत्रित हो गये और सैन्य-वाहिनी की चहल-पहल मार्गो मे भर गयी। १४८१ जनक ने एक दिव्य नगर की व्यवस्था की और दशरथ को लेकर वही ठहरा दिया। ८२ सभासद मंत्री और सामतो को एव अन्य जितनी भी सेना साथ मे गयी थी, सबको पृथक-पृथक घर दे दिये। ८३ हर कोई को उनके अनुसार आवास तथा छायामण्डप दिये और उनमे समस्त सामग्रियो की व्यवस्था करके उनका सम्मान किया। ८४ रनिवास तथा विशिष्ट व्यक्तियो का दल जो आगे गया था, जनक ने उन सबका आदर सत्कार किया। दशरथ की रानियाँ निश्चिन्त होकर ठहर गयीं और मिथिला नगर मे अनेक सैन्यबल आराम से ठहर गये। ८५-८६ समस्त सेना के ठहरने से मिथिला नगर मे कोलाहल मचा था और नगर मे बाकी स्थान नही बचा। ८७ हाथी, घोड़े, रथ, बहल, खच्चर पयकार आदि सबका कोलाहल सुनायी दे रहा था। ८८ कौशल्या कैकेई और सुमित्रा के साथ सात सौ पचास रानियाँ उस महल मे एकत्रित हुई। ८९ छैः हजार दासियाँ एवम् सेवक गणो के एक स्थान पर मिलने से कोलाहल मच गया। १४९० श्रीराम और लक्ष्मण ने माताओ के पास जाकर उन्हे प्रणाम किया और हाथ

बारता पाइण जे जनक महाऋषि।
सम्भर्बरे ऋषि जे पाछोटि वेगे आसि ६४
श्रीराम लक्ष्मण जे कौशिक सहिते। देखिकरि आनन्द होइले दशरथे ६५
पितांकु नमस्कार कले बेनि भाइ। कोळ करिण राए मुखरे चुम्ब देइ ६६
भरत शतृघन जे श्रीराम पादे पडि। कार्पुण्य होइण शिरे कर जोडि ६७
लक्ष्मण नमइँ जे भ्रतर चरण। शतृघन लक्ष्मणंक पादरे नमिण ६८
जनक ऋषिंकि देखि ओळगे दशरथ। ऋषिंक पादे पड़िले शतृघ्न भरथ ६९
विश्वामित्रंक पादे ओळगिले पुणि। भरत शतृघनकु घेनि नृपमणि१४७०
हसिण विश्वामित्र बोइले शुणराए। शुभे देखिलु कि राजा तो बेनि तनये१४७१
देबार बेळे राए शोक करुथिलु। एबे तो बेनि पुत्रंकु पाइ तोष हेलु ७२
तो बेनि पुत्रंकु राजा देलु मो संगरे।
एते बिचारि बधू देवि मुहिँ तोते भले ७३
शतषठि पुरुषरे नथिला जाहा पाइ। एबे सेहि पदार्थ तोते भोग पाइ ७४
दशरथ बोइले नकर ऋषि मोते रोष। तुम्भरे उद्धार जे हेले सूर्ज्यबंश ७५
जनक महऋषि मोते दया कले। मोहर सम्पद जे तोह जोगुँ भले ७६
जाहा कहिल चारि बधू पाइबार मिछत। राम लक्ष्मणंकु बेनि कन्या देवासत ७७

समाचार पाते ही महर्षि जनक बड़े ठाठ वाट से शीघ्र ही उनकी अगवानी के लिये आये। ६४ विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर दशरथ प्रसन्न हो गये। ६५ दोनो भाइयो ने पिता को प्रणाम किया। राजा ने उन्हे गोद मे भरकर उनका मुख चूम लिया। ६६ भरत और शत्रुघन श्रीराम के चरणो में गिर गये और दीन होकर सिर से हाथ जोड़ लिये। ६७ लक्ष्मण ने भरत के चरणो मे नमन किया और शत्रुघन लक्ष्मण के चरणो मे नत हो गये। ६८ दशरथ ने महर्षि जनक को देखकर प्रणाम किया और भरत तथा शत्रुघन महर्षि के चरणो पर गिर गये। ६९ फिर विश्वामित्र के चरणो मे नृपश्रेष्ठ दशरथ ने भरत और शत्रुघन के सहित प्रणाम किया। १४७० विश्वामित्र ने हँसते हुये कहा हे राजन्! सुनो। क्या आपने अपने दोनो पुत्रो को कुशल मगल देखा। १४७१ हे राजन्! देने के समय तुम शोक कर रहे थे। अब अपने दोनो पुत्रो को पाकर सतुष्ट हो गये हो। ७२ तुमने अपने दोनो राजपुत्रो को मेरे सग भेज दिया था। ऐसा विचारकर मै तुम्हे चार अच्छी बधुएँ प्रदान करूँगा। ७३ जो तुम्हे सडसठ पीढियो से नही मिला था, वह पदार्थ आज तुम्हे उपभोग के लिये मिलेगा। ७४ दशरथ ने कहा हे महर्षि हमसे क्रुद्ध न हो। आपसे सूर्यवश का उद्धार हो गया है। ७५ महर्षि जनक ने मुझ पर दया की है। मेरी सम्पदा आपके ही निमित्त है। ७६ आपने जो चार बधुओ की प्राप्ति के लिये कहा है, वह अन्यथा है। राम और लक्ष्मण को दोनो कन्याये देने की बात ही सत्य

तांक संगे थाइण रजनी दिवस न जाणिलु।
मने जाहा बिचारिलुं से कथा लभिलुं ६
पिता मातांकु पाशोर कराइले सेहि।राज्य घोषरे आम्भर मन आउ नाहिं ७
शुणिण कउशल्या कैकय़ा सुमित्रा। बोइले धन्य तुम्भे गाधि राजा सुता ८
एमन्त कहि राणी माने मनरे हरष। एथु अनन्तरे शुणिमा दिव्य रस ९
दशरथ राजा जे दाण्ड द्वारे थिले। सकळ राणी भितरे जिबार देखिले१५१०
भितर पुरे राजा जाइण बिजे कले।सकळ राणीकि नेइ निश्चिन्ते रखाइले१५११
दासी परिबारि जे राणींक संगे रहि। गहळरे नबर पूरिण अछइँ १२
समस्तंक बेश देखि राणी जे आनन्द।बिचारिले सर्ब कार्ज्य हेला मोर सिद्ध १३
सकळ राणी उपरे चारि राणी सार।
कउशल्या कैकय़ा सुमित्रा, नीळावतींकर १४
चारि राणींक कोळरे बसिले चारि भाइ। पुत्रंकु कोळकरि राणी माने कहि १५
बेश, हास, रस जे देखिण राजन। मनरे हरष जे बहुत हेले पुण १६
नीळाबती बोइले शुण हे राजन। आबर बेनि पुत्र बिभा केबे हेबे पुण १७
राजन बोइले तुम्भे शुण गो महादेइ। कउशिक ऋषि मोते कहिले मणाइ १८
बोइले चारि पुत्र एठारे बिभा हेबे।चारि बधू घेनिण चळिबे राजा शुभे १९

उनके साथ रहकर हमें दिन व रात का भान ही नही हुआ। जो हमारे मन में आया हमें वही प्राप्त होता रहा। ६ उन्होने माता-पिता का विस्मरण करा दिया। फिर हमारे मन में राज्य की याद ही नही रही। ७ यह सुनकर कौशल्या, कैकेयी तथा सुमित्रा ने कहा हे राजा गाधि के नन्दन विश्वामित्र ! तुम धन्य हो। ८ इस प्रकार कहकर रानियाँ मन मे प्रसन्न हो गई। अब इसके पश्चात् की दिव्य रसमयी कथा सुनो। ९ राजा दशरथ मार्ग के द्वार पर थे। उन्होने समस्त रानियो को भीतर जाते देखा। १५१० राजा अन्त.पुर मे जा पहुँचे। उन्होने निश्चिन्त होकर समस्त रानियो को ठहरा दिया। १५११ रानियो के साथ दासियाँ तथा परिचारिकाएँ भी रह गई। सम्पूर्ण महल चहल-पहल से गूँज रहा था। १२ सबका शृंगार देखकर रानियाँ प्रसन्न थी। उन्होने विचार किया कि हमारे सभी कार्य सिद्ध हो गए। १३ समस्त रानियो में चार रानियाँ कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा तथा नीलावती प्रमुख थी। चारो भाई उनकी गोद मे बैठ गए। पुत्रो को गोद मे लेकर रानियाँ बाते करने लगी। १४-१५ उनके वेश, हास्य-रस देखकर राजा के मन मे बहुत आनन्द हुआ। १६ नीलावती ने कहा हे राजन् ! सुनिए। अन्य दोनो पुत्रो का विवाह कब होगा। १७ राजा ने कहा हे महारानी ! सुनो। महर्षि विश्वामित्र ने मुझसे कह रखा है कि चारो पुत्रो का विवाह यहीं होगा। तुम चार वधुएँ साथ लेकर मगलमय यात्रा करोगे। १८-१९ मैंने कहा, हे महर्षि चार वधुएँ तो मन मे अभीप्सित है। श्रीराम

बोइले जाहा मोते कहिले नारद। से कथामान मोते होइला सम्पद ९३
धन्य हे नारद तुम्भे आगत कथा जाण। भुत भविष्य कथा तुम्भे जे परिमाण ९४
एते बोलि राणी जे मनरे उषत। श्रीराम लक्ष्मणंकु देखिण पुलकित ९५
दुइ पुत्रंक मुखरे देलाक चुम्बन। स्नेह भरे आखि जे कले थन थन ९६
श्रीरामर मुख चाहिँ बोइले कउशल्या। आज ठारु बाबुरे मोर दुःख गला ९७
हृदरे जीव गोटि पशिला आसि मोर।
जेते बेळुँ श्रीमुख कुमुद देखिलिणि तोर ९८
दुःखीर संखाळि तु रे रंकुणिर धन। तोते नदेखि मोहर अस्थिर जीवन ९९
छड़ मास हेला बाबुरे छाड़िण अइलु। निराश करिण मोते निश्चिन्ते रहिलु १५००
काहार कोळरे रहि वञ्चि थिलु राति। के तोहर आद्‌र्दोळीरे सहइ पुण निति १५०१
केमन्ते चाळिबु बाबु एते दूर पथ। ईश्वर धनु केमन्ते धरिलु तु हस्त २
अति कोमळ जे तोहर करस्थळ। व्यथा पाइलु ना धनु धरिबार बेळ ३
ईश्वरंकु धनु जे अतिहिँ गरिष्ठत। केमन्ते बळ तार कळिलु देखि तु त ४
मातार बचन शुणि बोलन्ति रघुनाथ। तुम्भंकु बळिष्ठ हेले गाधिराजा सुत ५

जोडकर खडे हो गये। १४९१ यह देखकर श्रीराम को कौशल्या ने गोद मे ले लिया और लक्ष्मण को अपनी वायी जघा पर बैठा लिया। ९२ फिर वह बोली कि जो बात नारद ने मुझसे कही थी, वह सारी बाते आज सम्पादित हो गई है। ९३ हे नारद ! तुम धन्य हो। तुम्हे भविष्य की बाते ज्ञात है। भूत और भविष्य की बातो के लिये तुम प्रमाण हो। ९४ इतना कहकर रानी का मन प्रसन्न हो गया और वह श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर प्रफुल्लित हो गई। ९५ उन्होने दोनो पुत्रो का मुख चूम लिया और उनके नेत्रो से प्रेमाश्रु झरझर वहने लगे। ९६ कौशल्या ने श्रीराम के मुख की ओर ताकते हुये कहा हे वत्स ! आज से मेरा दुःख दूर हो गया। ९७ जिस समय मैने तुम्हारा श्रीमुख-कुमुद देखा तभी से मेरे हृदय मे प्राण लौट आए। ९८ तुम दुःखी के सचित धन तथा रकिनी की सम्पदा हो। तुम्हे न देखकर मेरा जीवन अशान्त हो गया था। ९९ छैः माह हुए, हे वत्स ! तुम मुझे छोडकर आ गए थे। मुझे अकेला करके तुम यहाँ निश्चिन्त होकर रह गए। १५०० तुम किसकी गोद मे रहकर रात्रि व्यतीत करते थे। नित्य तुम्हारी कौन देखरेख करता था। १५०१ इतने दूर का मार्ग हे वत्स ! तुमने कैसे पार किया ? और शिवजी का धनुष तुमने हाथो से कैसे उठा लिया। २ तुम्हारी हथेलियाँ तो अत्यन्त कोमल है। धनुप उठाते समय तुम्हे कष्ट तो नही हुआ। ३ शिव का धनुप तो अत्यन्त महान था। तुमने उसे देखकर उसके वल का पार कैसे पा लिया। ४ माता के वचन सुनकर रघुनाथ ने कहा कि आपके लिये राजा गाधि के पुत्र विश्वामित्र बलिष्ठ हो गए। ५

ज्येष्ठ नाम श्रीराम कनिष्ठ शतृघन। भरथ लक्ष्मण जे अटन्ति मध्यमान ३५
बिश्वामित्र ऋषि जे सिद्ध बने पुण। जाग आरम्भि जे से कले विचारण ३६
जाइ करि असुरे जाग नाश कले।जोग बळे जाणि मुनि अजोध्या पुर गले ३७
दशरथंकु कहिण श्रीराम लक्ष्मण आणि।
गहन बने श्रीराम ताड़की बध कले पुणि ३८
विश्वामित्रंकर जाग रखिले बेनिभाइ। नउ सहस्र राजांकु माइले निठाइ ३९
जाग सारि विश्वामित्र संगरे घेनि चळि।
गंगा कूळे अहल्याकु श्रीराम मुक्त करि१५४०
मिथिळा नबरे आसि हेले परवेश। शिवधनु धरिण भांगिले रघुशिष्य१५४१
देखिण जनक राये दुहिता घेनि चळि।
श्रीरामंक कण्ठरे लम्बाइले रत्नमाळि ४२
बरण करिबारु देखिण राजा गण। मेळि होइ श्रीराम संगे कळि कले पुण ४३
देखिण श्रीराम भाइ लक्ष्मण शरमारि। एका शरकरे सबु लक्षे राजा दलि ४४
राजा गणे मरिबारु श्रीराम आज्ञा देले। लक्षे राजांकु जिआअ लक्ष्मणे कहिले ४५
शुणिण लक्ष्मण जीबन्यास शर मारि। लक्षे राजा चेता पाइ पळाइले फेरि ४६
तेणु से जनक राये कनिष्ठ झिअ देले। लक्ष्मणंक गळारे बरण माळा देले ४७

जो बारह वर्ष के है और शक्ति में वलवान है। ३३-३४ बड़े का नाम श्रीराम और छोटा शत्रुघ्न है। भरत तथा लक्ष्मण बीच के है। ३५ फिर विश्वामित्र ऋषि ने सिद्धवन में विचार करके यज्ञ प्रारम्भ किया। ३६ राक्षसो ने जाकर यज्ञ विध्वंस कर दिया। योग के बल से ज्ञात करके ऋषि अयोध्यापुर गए। ३७ वह दशरथ से माँगकर श्रीराम और लक्ष्मण को ले आए। फिर गहन वन में श्रीराम ने ताड़का का नाश कर डाला। ३८ दोनो भाइयो ने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की। उन्होने नौ हजार राजाओ का चुन-चुनकर वध किया। ३९ यज्ञ समाप्त करके विश्वामित्र उन्हे साथ लेकर चल दिये। गंगा तट पर श्रीराम ने अहिल्या को मुक्त किया। १५४० फिर वह मिथलापुर में आ पहुँचे। रघुनन्दन ने शिवचाप को उठाकर तोड़ डाला। १५४१ यह देखकर राजा जनक पुत्री को लेकर बढ़े। उन्होने उनके गले में रत्न माला डालकर श्रीराम का वरण कर लिया, इसे राजा लोगो ने देखा। फिर वह मिलकर श्रीराम के साथ झगड़ा करने लगे। ४२-४३ यह देखकर श्रीराम के भाई लक्ष्मण ने लाखो राजाओं को एक ही वाण से आहत कर दिया। ४४ राजाओं की मृत्यु हो जाने पर श्रीराम ने लक्ष्मण को उन्हे जीवित कर देने की आज्ञा दी। ४५ यह सुनकर लक्ष्मण ने जीवन्यास वाण मारा। तब लाखों राजा सचेत होकर भाग गए। ४६ तब राजा जनक ने उन्हें छोटी कन्या प्रदान की। उसने लक्ष्मण के गले मे वर माला डाल दी। ४७ उन्होंने उसी दिन विवाह करने की इच्छा की। तब श्रीराम

मुँ बोइलि मुनि हे चारि बधू मन मूळ।
श्रीराम लक्ष्मणंकु बरण करिबारु जे सुफळ१५२०
आउ बेनि बधू जे केउँ ठारे छन्ति ।सेहि कथा गोचर नोहिला मोते किछि१५२१
विश्वामित्र बोइले जनकर भाइ ।ताहार बेनि दुहिता अछन्ति जुबा होइ २२
से कन्या सुन्दर जे रूपरे गुणवन्त। चाहिँले देवताए हेबे मोहगत २३
से बेनि कन्यांकु बिभा कराइबि मुहिँ ।देबंकर लोभ जे से कन्याकु नेबा पाइँ २४
तेते वेळु शुणिण मुँ हरष होइलि ।तुम्भे पचारिबारु मुँ फेडिण कहिलि २५
शुणि करि हरष जे हेले राणीगण। एथु अनन्तरे गो शाकम्बरि शुण २६
जेणु दशरथ जे हेले परबेश। जनक महामुनि मनरे हरष २७
सत्यानन्द कउशिक घेनिण मुनि भाळि। बैशाळि नबरकु देबा जणे चाळि २८
कुशध्वज भाइंकि जे आणु मोर जाइँ।
बेनि दुहिता राणीहंस आसन्तु संग होइ २९
एमन्त बिचारि जे मन्त्रींकि डकाइले। जाअ बैशाळि पुरे बोलिण लेख देले१५३०
शुणिण शंकर्षण मन्त्री जे चळि जाइ ।बैशाळि नग्ररे पाञ्च दिने सेहि पाइ१५३१
कुशध्वज बोइले शुण हे मन्त्रीबर ।केहु धइला कार्मुक कामना पुरिला मनर ३२
शंकर्षण मन्त्री कहे शुण हे राजन। दशरथ नामे जे अजोध्या राजा पुण ३३
तांकर चारि पुत्र अटन्ति जे पुण। बार बरष जे बळरे बळबान ३४

तथा लक्ष्मण के वरण कर लेने से वह सफल हो गया। १५२० अन्य दोनो वधुएँ कहाँ पर है। सो बात मुझे कही कुछ भी नही दिखाई दी। १५२१ विश्वामित्र ने कहा कि जनक के भाई की दो कन्याएँ है जो नवयौवना हो चुकी है। २२ वह कन्याएँ रूप मे सुन्दर तथा गुणवती है। उनके देखने से देवता भी मोहित हो जाते है। २३ मै उन दोनो कन्याओ से विवाह कराऊँगा। उन कन्याओ को लेने के लिए देवता भी लोभ करते है। २४ तब मै यह सुनकर प्रसन्न हो गया। तुम्हारे पूछने से मैने उसे खोलकर समझा दिया। २५ यह सुनकर रानियो का समुदाय प्रसन्न हो गया। हे शाकम्बरी ! इसके पश्चात् की कथा सुनो। २६ जव महाराज दशरथ आकर प्रविष्ट हुए तव महर्पि जनक के मन में वहुत आनन्द हुआ। २७ महर्पि ने सतानन्द तथा विश्वामित्त को लेकर विचार किया कि एक व्यक्ति को हम वैशाली के महल में भेज दे। २८ वह जाकर मेरे भाई कुशध्वज को ले आए। उनकी रानियाँ तथा दोनों कन्याएँ भी साथ मे आवे। २९ ऐसा विचार करके उन्होने मत्री को बुलवाया और उसे पत्र देकर वैशाली के महल मे जाने को कहा। १५३० यह सुनकर मत्री सकर्षण पाँच दिनो मे वैशाली नगर मे जा पहुँचे। १५३१ कुशध्वज ने कहा हे मत्री श्रेष्ठ ! सुनिए। किसने धनुप को धारण करके मन की कामना पूर्ण की है। ३२ मत्री सकर्षण ने कहा हे राजन् ! सुनिए। दशरथ नाम के जो अयोध्या के राजा है, उनके चार पुत्र है

मिथिलार नबरकु जिबे से राजन। रजनीरे सज होइ आस हो बहन ६३
तिरिशि जुण पथ अटइ सेहु राज्य। शतेक धेन्डुरा फेराइला से राज्य ६४
शुणि रथि पादान्ति सरदार पएकार। हस्ती अश्व शरेणी आबर ओट बळ ६५
सज होइ समस्ते अइले सिंहद्वार। शंख महुरी बाद्य निशाण बाजे घोर ६६
देखिण राजन जे परम तोष हेले। तिनि भाग करिण से सैन्यंकु बाण्टिले ६७
करुणाकर ऋषिकि बेनि भाग देले। मोर आसिबा जाए तुम्भे राज्य रखभले ६८
बनमाळि मन्त्रीकि जे बोइले राजन। सज करि भण्डार चळ सैन्यंक संगे पुण ६९
पात्रंकु डकाइण जे बोइले राजन। अठर कोटी बळ घेनि चळतु बहन१५७०
शुणिण पात्र सैन्यंकु घेनिण चळि गला।भण्डार घेनि मन्त्री सैन्य संग बहारिला१५७१
शतेक राणी से जे सहस्रेक दासी।हान्दोला चढिण सबे हरसे चळि जान्ति ७२
कळा, धळा, छती जे बेनि शत टेकि। आगरे चळिगले सेबाकारि क्षेपि ७३
भिन्न भिन्न बेशरे दिशइ शोभाबन। तांकर पछे राजन कलेक गमन ७४
बाद्यर निशाणरे कम्पइ बसुन्धरि।पञ्चम दिने मिथिलार नबरे जाइँ मिळि ७५
बाद्यर निशाण जे तुण्डर चहळ। हस्तींकर गरजन अश्वंक हेर्षा बड़ ७६
शबदरे मेरु गिरि कम्पइ थरहर। बिश्वामित्रंकु दशरथ पचारे सत्वर ७७

वनमाली शीघ्र ही चला गया। नगाडची को बुलवाकर उसने ढिढोरा पिटवा दिया। ६२ राजा मिथिला नगर को प्रस्थान करेगे। सब शीघ्र ही तैयार होकर रात मे आ जाएँ। ६३ इस राज्य से वहाँ का मार्ग तीस योजन का है। उस राज्य मे सौ डुग्गियाँ पिटवाई गई। ६४ ऐसा सुनकर रथी, पैदल सैनिक, सरदार, पयकार, हाथी-घोडे, रथ-बहले तथा ऊँटो के दल सभी सुसज्जित होकर सिह द्वार पर आ गए। शख महुरी निशान आदि बाजे तुमुल ध्वनि से बज रहे थे। ६५-६६ यह देखकर राजा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उन्होंने सेना को तीन भागो में विभक्त कर दिया। ६७ दो भाग उन्होने महर्षि करुणाकर को दे दिये और उन्होने कहा कि हमारे आने तक आप भली प्रकार से राज्य की देखरेख करते रहे। ६८ राजा ने वनमाली मत्री से सैन्य के साथ कोष सुसज्जित करने को कहा। ६९ राजा ने सभासद को बुलाकर उसे अट्ठारह करोड़ सेना लेकर शीघ्र चलने को कहा। १५७० यह सुनकर सामन्त सेना को लेकर चल पड़ा और सेना के साथ भण्डार लेकर मत्री बाहर निकला। १५७१ एक हजार दासियो को लेकर सौ रानियाँ शिविकाओ पर चढकर प्रसन्न होकर सभी चली जा रही थी। ७२ काले और श्वेत छत्र लेकर दो सौ सेवक आगे-आगे चल रहे थे। ७३ भिन्न-भिन्न वेश मे वह सुन्दर दिखाई दे रहे थे। उनके पीछे राजा ने प्रस्थान किया। ७४ वाद्य निशान से पृथ्वी काँपने लगी। वह पाँचवे दिन मिथिलापुर मे जा पहुँचे। ७५ हाथियो की चिग्घाड़, घोड़ो की हिनहिनाहट, वाद्य निशान के घोष तथा मुखरित शब्दों से कोलाहल मच रहा था। ७६ उस घोष से मेरु

सेहि दिन बिभा जे करित मन कले।
श्रीराम बोइले पिता मो आसिले हेब भले ४८
ताहा शुणि जनक राये सत्यानन्दकु भेदि। दशरथंकु कहि आणिले तपोनिधि ४९
दशरथ आसिबारु बिभार उत्सव। तेणु करि मोते जे भेदिले तुम्भ ठाव१५५०
कुशध्वज बोले दशरथ चारि पुत्र। केते केते बयस जे अटन्ति सम्भूत१५५१
शंकर्षण कहन्ति बार जे बरष।एक दिने जनम होइछन्ति चारि शिष्य ५२
छड़ मास सान जे ताहांकु जानकी। बरषे सान पुणि अटन्ति उर्मिळादि ५३
बेनि वर्ष सान तुम्भर ज्येष्ठ झिअ। कनिष्ठ दुहिता तिनि बर्ष सान प्रिय ५४
कुशध्वज बोइले मोर दुहिता बिभा देबि।
प्रसन्न हेला मन बोइले ऋषि भाबि ५५
मन्त्रींकि रखाइण से अन्तःपुर गले। शतेक राणींकि बुझाइ कहिले ५६
शुणि महादेई माने हरष होइले। जानकीर बिभा घर देखिबा बोइले ५७
एथु अनन्तरे कुशध्वज राजा पुण। बनमाळि मन्त्रीकि से ड़काए बहन ५८
करुणाकर ऋषिकि से आणिले डकाइ। सामन्त पात्र अइले राजा आज्ञा पाइ ५९
बोइले शिवधनु श्रीराम आमञ्चिले। जानकी बिभा देवाकु जनक मन कले१५६०
मोहर पाशकु से भेदिले मन्त्रीबर। कालि प्रभातरु जिबा सैन्य सज कर१५६१
सुणिकरि वनमाली मन्त्री बेगे गला। नागराकु डकाइण धेण्डुरा फेराइला ६२

ने कहा कि माता-पिता के आने पर विवाह भली प्रकार से होगा। ४८ यह सुनकर राजा जनक ने सतानन्द को भेजा। तपोधन राजा दशरथ को कहकर लिवा लाए। ४९ दशरथ के आने से अब विवाहोत्सव होगा। इसी कारण से मुझे आपके पास भेजा गया है। १५५० कुशध्वज ने कहा कि दशरथ के चार पुत्र कितनी-कितनी आयु के है। १५५१ सकर्षण ने कहा कि वह वारह वर्ष के है। चारो वालक एक ही दिन उत्पन्न हुए है। ५२ जानकी उनसे छै. माह छोटी है। उर्मिला एक वर्ष छोटी है। ५३ आपकी वडी कन्या दो वर्ष छोटी तथा प्रिय छोटी वालिका तीन वर्ष छोटी है। ५४ कुशध्वज ने कहा कि हम अपनी पुत्रियो का विवाह कर देगे। यह सोचकर ऋषि का मन प्रसन्न हो गया। ५५ मन्त्री को वहाँ रखकर वह अन्तःपुर में गए और उन्होने अपनी सौ रानियो को समझाते हुए कहा। ५६ यह सुनकर महारानियाँ प्रसन्न हो गई और जानकी का विवाहोत्सव देखने को कहने लगी। ५७ इसके पश्चात् राजा कुशध्वज ने शीघ्र ही वनमाली मन्त्री को बुलवाया। ५८ वह महर्षि करुणाकर को बुला लाए। राजा की आज्ञा पाकर सामन्त तथा सभासद आ गए। ५९ उन्होने कहा कि श्रीराम ने शिव धनुष का कर्षण कर दिया। जनक का मन जानकी का विवाह कर देने का हुआ। १५६० उन्होने श्रेष्ठ मन्त्री को मेरे पास भेजा है। सेना सजवाइये, कल प्रभात से ही हम प्रस्थान करेगे। १५६१ यह सुनकर मंत्री

श्रीराम देखाइ कहिले कउशिक ।एहि धनु भांगिछन्ति देखि हे बेनि नेत्र ९२
लक्ष्मणंकु चिन्हाइले ए लक्षे राजा जिणि ।
ए वेनि भाइंकि सीता उर्मिला बरे पुणि ९३
भ्रत शत्रुघन एहिटि बेनि भाइ ।श्रीरामर तांक ठारे के बेहँ माया नाहिँ ९४
कुशध्वज वोइले शुणिवा मुनिबर । × × × ९५
कुशध्वज बोइले ए बेनि भाइं कि पुणि । मोर बेनि दुहिता जे देलि हे एवे पुण ९६
बिश्वामित्र बोइले देबार जे हेला सत्य। देखन्तु बेनि कन्या अणाअ तुरित ९७
शुणिण कुशध्वज जानरु ओहलाइले ।हान्दोळ भितरु बेनि दुहिता अणाइले ९८
अस्थानर तळरे उभा कले नेइ । देखिण सर्वजन जे ताहांकु मोह नेइ ९९
कउशिक बोइले बरण बेगे कर । ततक्षणे बिभाधर कर हे सत्वर१६००
शुणिण कुशध्वज बेनि कन्यारे कहि । रत्नमाळा तुम्भे नेइ बरण कर जाइ१६०१
शुणिण बेनि कन्या रत्नमाळा घेनि । आस्थानर उपरे उठिले बेगे पुणि २
भरथ शतृघनरे वरण माळा देले ।
आस्थानरु ओहलाइ हान्दोळारु बिजे कले ३
जनक ऋषि नवरे हेले परबेश । हुळ हुळि शबद पूरइ आकाश ४
देखिण जनक जे परम तोष हेले । सत्यानन्दकु कह सैन्य सम्भाळु बोइले ५

विश्वामित्र ने श्रीराम को दिखाते हुये कहा कि इसने धनुष तोड़ा है। आप दोनो नेत्रो से देख लीजिये । ९२ लक्ष्मण की पहचान कराते हुये उन्होने कहा कि इसने लाख राजाओं को जीता है। इन दोनों भाइयो का वरण सीता और उर्मिला ने किया है । ९३ भरत और शत्रुघन यह दोनो भाई है। श्रीराम का उनके प्रति कभी भी छल कपट नही रहता। कुशध्वज ने कहा हे मुनिश्रेष्ठ ! सुनिये । ९४-९५ कुशध्वज ने कहा मै अपनी दोनों कन्याओं को इन दोनो भाइयों को प्रदान कर रहा हूँ । ९६ विश्वामित्र बोले कि देना तो ठीक है परन्तु दोनों कन्याओ को शीघ्र ही बुलाइये जिससे उन्हे देख ले । ९७ यह सुनकर कुशध्वज रथ से उतरे और शिविका के भीतर मे उन्होने दोनो कन्याओं को बुलवाया । ९८ उन्होने उन्हे लेकर सिहासन के नीचे खड़ा कर दिया। सभी लोगो ने उनके रूप सौन्दर्य को देखा । ९९ विश्वामित्र ने शीघ्र ही वरण करके उसी समय विवाह कर देने को कहा । १६०० यह सुनकर कुशध्वज ने दोनो कन्याओं से रत्न माला लेकर वरण करने के लिये कहा । १६०१ यह सुनकर दोनों कन्याएँ रत्न माला लेकर शीघ्र ही सिहासन के ऊपर चढ गयी । २ उन्होने भरत और शत्रुघन को वर-माला पहना दी और सिहासन मे उतर कर शिविका मे बैठ गई । ३ फिर वह लोग महर्षि जनक के महल मे प्रविष्ट हुये। मॉगलिक शब्दों से आकाश गूँज रहा था । ४ यह देखकर जनक को परम सतोष हुआ। उन्होने सतानन्द से सेना की सँभाल करने के लिये कहा । ५ यह सुनकर सतानन्द शीघ्र ही चल दिये

बोइले ए शवद किए करि आसि ।ऋषि बोइले तो सान समुन्धि आसुछि ७८
शुणिण दशरथ सज होइ जाइ । वाटरे कुशध्वज ऋर्षिकि भेट होइ ७९
राजन मान्य धर्म ऋर्षिकि पुण कले । कुशध्वज ऋषि जे कल्याण कले भले१५८०
कुशध्वज बोइले शुण हे राजन । केउँ बेनि पुत्र अवरणे छन्ति पुण१५८१
से बेनि पुत्रंकु तुम्भर घेनि आस । तांकु देखि आम्भ मन होइव हरष ८२
शुणि करि दशरथ आनन्द मन हेले । आस्थानरु चारि पुत्र निअ हे बोइले ८३
शुणिण सुमन्त मन्त्री बेगे चळि गला । राम लक्ष्मण भ्रत, शतृघनकु कहिला ८४
कुशध्वज सैन्यवल घेनिण चढि जाइ । आस्थानर तळरे मिळिले बेगे जाइँ ८५
दशरथ चारि नन्दनंकु नेत्रे देखि । मनरे आनन्द जे होइले ऋषि सेथि ८६
जनक, बशिष्ठ, विश्वामित्र जे आसि । सत्यानन्द छामुरे अछन्ति वहु ऋषि ८७
आस्थानर उपरे समस्ते रुण्ड हेले । कुशध्वज काहाकु बरिबि बोइले ८८
बिश्वामित्र बोइले कुशध्वजकु चाहिँ । एठारे किम्पा हे आस्थान तळे रहि ८९
कुशध्वज बोइले शुणिबा मुनिबर । केउँ बेनि पुत्रंकु वरण जनक करिबार१५९०
केउँ पुत्र धनु भांगे के जिणे लक्षे राजा ।शुणि करि विश्वामित्र बोले दुजा दुजा१५९१

गिरि थर्राकर काँप रहा था । तब शीघ्र ही दशरथ ने विश्वामित्र से पूँछा । ७७ उन्होने कहा कि यह कोलाहल करते हुए कौन आ रहा हैं । महर्षि ने कहा कि आपके छोटे समधी आ रहे है । ७८ यह सुनकर दशरथ तैयार होकर गये और उन्होने मार्ग मे जाकर महर्षि कुशध्वज से भेंट की । ७९ राजा ने ऋषि का आदर सत्कार किया । महर्षि कुशध्वज ने उन्हे आशीर्वाद दिया । १५८० कुशध्वज बोले हे राजा सुनिये । आपके अविवाहित दोनो पुत्र कहाँ है । १५८१ आप अपने दोनो पुत्रों को ले आइये । उन्हे देखकर हमारा मन प्रसन्न होगा । ८२ यह सुनकर दशरथ का मन आनन्दित हो गया । उन्होने सिहासन से चारो पुत्रो को लाने के लिये कहा । ८३ यह सुनकर मन्त्री सुमन्त शीघ्र ही चला गया और उसने जाकर राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघन को समाचार दिया । ८४ कुशध्वज सैन्यवाहिनी लेकर गये और शीघ्र ही सिहासन के पास जा पहुँचे । ८५ उन्होने दशरथ के चारो पुत्रो को नेत्रो से देखा और वह महर्षि मनमे प्रसन्न हो गये । ८६ जनक, वशिष्ठ, विश्वामित्र भी आ गये । सतानन्द के सामने बहुत से ऋपि उपस्थित थे । ८७ सभा मण्डप मे सभी लोग एकत्रित हो गये और कुशध्वज किसको वरण करेगे इस पर चर्चा करने लगे । ८८ विश्वामित्र ने कुशध्वज की ओर देखते हुये कहा कि यहाँ पर सभा मण्डप के नीचे आप क्यों ठहरे है । ८९ कुशध्वज बोले हे मुनिश्रेष्ठ ! जनक ने कौन से दोनो पुत्रो का वरण किया है । १५९० कौन से पुत्र ने धनुप तोड़ा है और किसने लाख राजाओ पर विजय प्राप्त की है । यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा कि वह दोनो ये है । १५९१

बिभा घर करिबाकु मन कलेक से दिन ।
श्रीराम बोइले पिता मो अइले बिभा पुण१६२१
शुणि जनक राय़े दशरथंकु राइ । कुशध्वज भाइंकि आणिले ड़काइ २२
बोइले बालमिक ऋषिकि जाइ आण । से अइले बिभाघर करिबि आम्भे पुण २३
शुणिण बालमिक वेश होइ चळि । मढ़िआरे प्रबेश होइले बेग करि २४
बालमिकंक घरणि शतेक परिबारि । बेनि सहस्र शिष्य जे, घेनिण बाहारि २५
दासी ऋषि आणि जे, हान्दोळा चढि बळि ।
शुकासन परे बालमिकि बिजे करि २६
मिथिळा नबरे जाइँ हेले परबेश । उत्सब देखिण मुनि मनरे हरष २७
जाणिण कउशिक जे, जनक महाऋषि। बालमिकि आसि पाछोटि निअन्ति २८
बशिष्ठ दशरथ चारि पत्र जे, संगरे । बालमिक ऋषिकि दर्शन जाइ कले २९
बशिष्ठंकु बालमिक जे, पचारन्ति बाणि ।
ए चारि गोटि नन्दन काहार अटे पुणि१६३०
बोइले ए चारि पुत्र दशरथर कि । अनन्त बासुदेव बिजय़ कले निकि१६३१
चतुर्द्धा मुरति होइ जनम नाराय़ण । नय़ने देखिलि मुं जे पाइलि कारण ३२
शुणिण दशरथ चारि पुत्र घेनि । हुळ हुळि शबद जनक पुरे ध्वनि ३३
जनक पचारिळे बालमिकंकु पुणि । दशरथ चारि पुत्र पूर्वरे किस जाणि ३४

वरण कर लिया । १६२० उसी दिन विवाह करने की इच्छा मन में उठी परन्तु श्रीराम ने कहा कि पिता के आने पर विवाह होगा । १६२१ यह सुनकर राजा जनक ने दशरथ को और भाई कुशध्वज को बुलवा लिया । २२ फिर उन्होने महर्षि वाल्मीकि को ले आने के लिये कहा और यह भी बोले कि उनके आने पर हम विवाहोत्सव करेगे । २३ यह सुनकर वाल्मीकि शीघ्र ही चल दिये तथा मठ मे जा पहुँचे । २४ वाल्मीकि की पत्नी सौ कुटुम्बियों तथा दो हजार शिष्यो को साथ लेकर निकल पडी । २५ दासियाँ तथा ऋषि पत्नी शिविकाओ पर तथा वाल्मीकि सुखासन पर चढकर चल दिए । २६ वह सब मिथिला नगर मे जाकर प्रविष्ट हुए । उत्सव देखकर मुनि का मन प्रसन्न हो गया । २७ वाल्मीकि को आया हुआ जानकर महर्षि विश्वामित्र तथा जनक ने आकर उनकी अगवानी की । २८ चारो पुत्रो के साथ दशरथ तथा वशिष्ठ ने जाकर ऋषि वाल्मीकि के दर्शन किए । २९ तब वाल्मीकि ने वशिष्ठ से पूँछा कि यह चारो पुत्र किसके है । १६३० उन्होने कहा क्या यह चारो पुत्र दशरथ के है । क्या अनन्त वासुदेव ही उपस्थित हो गए है । १६३१ या नारायण चार रूप धारण करके उत्पन्न हुए है । इन्हे नेत्रो से देखकर हमारा उद्धार हो गया । ३२ यह सुनकर दशरथ ने चारो पुत्र साथ ले लिये । जनकपुर में मागलिक ध्वनि गूँजने लगी । ३३ जनक ने वाल्मीकि से पूँछा कि दशरथ के चारो पुत्र पूर्व काल में

शुणिण सत्यानन्द बेगे चळि गले ।सैन्यबळ हस्ती घोड़ा सम्भाळ जाइ कले ६
एथु अनन्तरे जे जनक ऋषि पुण । कुशध्वज ड़काइ बोइले राजन ७
बिभाघर संजुक्त कराअ बहन । जे रूपे जेउँ कथा कर हे जतन ८
दासीगणंकु ड़काइ जनक ऋषि कहि । पुर, नग्र, उत्सव मण्डणि कर जाइ ९
अन्तःपुरे कहि पुणि बेगे से अइले । सत्यानन्दंकु चाहिँण बिचारि कहिले१६१०
बोइले बळीवनकु चळ जा बहन । वालमिक ऋषिकि अणाअ बहन१६११
शुणि करि सत्यानन्द बेगे चळि गले ।बळि राजा बनरे चारि दिनरे मिळिले १२
देखिले वालमिक तपरे बसिछन्ति । ऋषिगण माने मढ़िआरे रहिछन्ति १३
बालमिक आगरे मिळिले मुनि जाइँ । अनामिका शवद उच्चरे मुनि देईं १४
अनामिका शुणन्ते ऋषिर तपभंग । चाहिँले बालमिक सत्यानन्दकु बेग १५
सत्यानन्द ऋषिकि नमस्कार कले । जनक पेषिले मोते बोलिण बोइले १६
जानकी बिभाघर जिब जे बेग होइ । शुणि करि बालमिक परम तोष होइ १७
बोइले श्रीरामकि धइले शिवधनु । बार बरष जे दशरथ तनु १८
सत्यानन्द बोइले राम लक्ष्मण बेनि ।
विश्वामित्र संगे जाइ भांगिले शिव धनु पुणि १९
राम धनु भांगिले लक्षे राजांकु जिणि ।जानकी उर्मिळा तांकु बरण कले पुणि१६२०

और उन्होने जाकर सैन्यवाहिनी, हाथियो तथा घोडो की साज सँभाल की । ६ उसके पश्चात् महर्षि जनक ने राजा कुशध्वज को बुलाकर कहा कि सयुक्त रूप से शीघ्र ही विवाहोत्सव करवाइये और उसका उसी रूप से प्रयत्न कर लीजिये । ७-८ महर्षि जनक ने दासियो को बुलाकर नगर महल की सजावट करके उत्सव करने को कहा । ९ वह शीघ्र ही अत.पुर मे रहकर आ गये और सतानन्द की ओर देखते हुये विचारपूर्वक वोले कि आप शीघ्र ही बलीवन को चले जाइये और महर्षि वाल्मीकि को बुला लाइये । १६१०-१६११ यह सुनकर सतानन्द शीघ्र ही चल दिये और वलि राजा के वन में चार दिनो मे जा पहुँचे । १२ उन्होने वाल्मीकि को तपस्या में बैठे देखा । अन्य ऋषि लोग मठ में थे । १३ मुनि वाल्मीकि के समक्ष जा पहुँचे और उन्होने उच्च स्वर से ओकार शब्द किया । १४ ओकार श्रवण करते ही महर्षि का तप भग हो गया अर्थात् ध्यान टूट गया और वाल्मीकि ने सतानन्द को देखा । १५ सनानन्द ने महर्षि को नमस्कार किया और बोले कि जनक ने मुझे भेजा है । १६ आप शीघ्र ही जानकी के विवाह में चलिये । यह सुनकर वाल्मीकि वहुत प्रसन्न हुये । १७ वह वोले कि वारह वर्ष के दशरथ नन्दन श्रीराम ने क्या शिव का धनुप उठा लिया । १८ सतानन्द ने कहा कि राम और लक्ष्मण दोनो ने विश्वामित्र के साथ जाकर शकर के धनुष का खडनकर डाला । १९ राम ने धनुप तोडा और लक्ष्मण ने लाख राजाओ को जीता । जानकी और उर्मिला ने उन दोनो का

बोइले मिथिला नग्रे बेगे तुम्भे चळ। श्रीराम लक्ष्मणंकर अटइ बिभाघर१६५०
श्रीराम धनु भांगिले लक्ष्मण जिणि राजा। मिथिला चळिगले दशरथ राजा१६५१
कहिण दूतमाने फेरिण अइले। सैन्य़ घेनि लोमपाद गमन करि गले ५२
चबिश दिने लोमपाद हेले परबेश। देखिण दशरथ होइले हरष ५३
एहि समय़रे आसि कैकेय़ा भाइ मिळे।
कउशल्या पिता जे मिळिले जाइ करि ५४
सुमित्रार भाइ जे नीळाबतीर पिता।
कळाबतीर भाइ जे काशी राजार सुता ५५
मासक सम्पूर्णरे समस्ते जाइ मिळि। देखिण जनक जे हरष मन करि ५६
सकळ-राजांकु जे नबर पुण देले।सैन्य़ बळ हस्ती घोड़ा सकळ रखाइले ५७
गह गह शबद जे मिथिला नबर। जेणु से सहस्र राजा होइलेक ठुळ ५८
नारदंकु बोइले चळ मर्त्यपुर। लक्षे राजा अछन्ति चारि जे दिगर ५९
बोळिब श्रीराम जे अटन्ति नाराय़ण। असुर मारिबाकु होइछन्ति जन्म१६६०
से तुम्भंकु जिणिलाकु मान करि अछ बसि।
देबे कारण हेबारे अछ जे बिश्वासि१६६१
तेबे मिथिलारे तुम्भे प्रबेश बेगे हुअ। नोहिले असुरंक संगकु तुम्भे थाअ ६२
शुणि करि नारद जे बेग चळिगले।
चारि दिग राजांकु चारि दिनरे कहिले ६३

श्रीराम तथा लक्ष्मण का विवाहोत्सव होने को है। १६५० श्रीराम ने धनुष तोड़ दिया है और लक्ष्मण ने राजाओ को जीत लिया है। राजा दशरथ मिथिलापुर चले गए है। १६५१ ऐसा कहकर दूत लोग लौट आए। उधर लोमपाद सेना लेकर चल दिये और वह चौबिस दिनो मे वहाँ जा पहुँचे। उन्हे देखकर दशरथ प्रसन्न हो गए। ५२-५३ इसी समय कैकेयी के भाई तथा कौशल्या के पिता वहाँ पर आ पहुँचे। ५४ सुमित्रा के भाई, नीलावती के पिता, कलावती के भाई और काशिराज के पुत्र आदि एक माह के भीतर ही वहाँ जा पहुँचे। उन्हे देखकर जनक का मन प्रसन्न हो गया। ५५-५६ उन्होने समस्त राजाओं को आवास प्रदान किए और सैन्यवाहिनी हाथी घोड़े सभी को ठहरा दिया। ५७ जब हजार राजा मिथलापुर में एकत्रित हुए तो वहाँ पर चहल पहल मच गई। ५८ देवताओं ने नारद से मृत्युलोक जाने के लिये कहा और बोले कि चारो दिशाओ में एक लाख राजा है उनसे कहना कि श्रीराम नारायण है। असुरों का संहार करने के लिये उनका अवतार हुआ है। ५९-१६६० उन्होने तुम्हे जीत लिया तो तुम सब मानकरके बैठे हो। यदि तुम्हें देवताओं के उद्धार का विश्वास है तो तुम सब शीघ्र ही मिथिलापुर जा पहुँचो। अन्यथा असुरो का साथ देने को तुम यही बने रहो। १६६१-६२ यह सुनकर नारद शीघ्र ही चले गए और उन्होने चार

बालमिक बोइले श्रीराम वासुदेब । लक्ष्मण बोलि जे, अनन्त निश्चे हेब ३५
सुदर्शन चक्र जे, अटइ भरथ । शतृघन अटन्ति डाहाण वर्त्त शंख ३६
चतुर्द्धा रूप धरिण हेले अबतार । असुर बळ मारिले पृथ्वी हेब स्थिर ३७
पूर्ब फळे देखिलि कमळा नाराय़ण । करिबे से जेउँ कार्ज्य देखिबे नय़न ३८
एते कहि ऋषि जे, होइलेक तुनि । जनक राणीकि बालमिक नमे पुणि ३९
कुशध्वजंक राणी नमिले आसि पुण । सनमाने सर्बे हरष होइ जाण१६४०
पार्वती बोइले तुम्भे शुण त्रिलोचन । अजोध्या नग्ररु आसे दशरथ पुण१६४१
बामदेव ऋषिकि से रखिण अइले । सेहि पुणि रहि पुण केमन्ते कृत्यकले ४२
ईश्वर बोइले तुम्भे शुण गो भगवती । दशरथ अइले जे समर्पि देइ पृथि ४३
तेणु से वामदेव बिचार करि पुण ।नव कोटि रथिकि जणाए राजा जाण ४४
देशे घोषे पादान्ति वळ जगाइला । अपन्तरा पथरे से सदाबर्त्त देला ४५
दुःखि लोक देखि अन्न बस्त्र देले परा । मागन्ता लोकंकु धन देले होइ त्वरा ४६
गला बेळे दशरथ जाइ थिले कहि । निमन्त्रण देब बन्धु माने पठिआइ ४७
तेणु से वामदेव बिचारि दूत भेदि । बेनि सस्र दूत जे भेदिलेक बेगि ४८
रथ चढि दूत माने बेगे चळिगले । दश दिनरे सहस्रे बन्धु निमन्त्रिले ४९

कौन थे। ३४ वाल्मीकि ने कहा कि श्रीराम वासुदेव थे और लक्ष्मण नाम वाले निश्चित रूप से ही अनन्त देव होगे। ३५ भरत सुदर्शन चक्र है तथा शत्रुघन दक्षिणा-वर्ती शख है। ३६ वह चार स्वरूपो को धारण करके अवतरित हुए है। असुरो का सहार करने पर पृथ्वी स्थिर हो जाएगी। ३७ पूर्वकाल के फल से मैंने लक्ष्मी नारायण के दर्शन किए। वह जो भी कार्य करेगे उसे मैं नेत्रों से देखूंगा। ३८ इतना कहकर ऋषि अवाक् हो गए फिर वाल्मीकि ने जनक की रानी को नमस्कार किया। ३९ फिर कुशध्वज की रानी ने आकर उन्हे नमन किया। सम्मान से सभी लोग प्रसन्न थे। १६४० पार्वती ने कहा हे त्रिलोचन! सुनिए। अयोध्या नगर से दशरथ आ गए। १६४१ वह वामदेव ऋषि को नगर की रक्षा के लिये छोड़ आए थे। उन्होने फिर वहाँ क्या कार्य किया। ४२ शकर जी बोले हे पार्वती! तुम सुनो। जब दशरथ पृथ्वी को समर्पित करके चले आए। ४३ तब वामदेव ने सोच विचार कर नौ करोड रथियो को राज्य की देखरेख मे लगा दिया। ४४ देश मे पैदल सिपाहियो का पहरा लगा दिया। निर्जन मार्गो पर सदावर्त बँटवाए गए। ४५ दुःखी लोगो को देखकर उन्हे अन्न वस्त्र प्रदान किये और भिक्षुक लोगो को शीघ्र ही धन दिया गया। ४६ जाते समय राजा दशरथ बन्धु जनो को निमत्रण भेजने को कह गए थे। ४७ इस कारण वामदेव ने सोच विचार कर दो हजार दूत भेज दिये। ४८ दूत लोग रथ पर चढकर शीघ्र ही चल दिये। उन्होने दस दिनो मे हजार बन्धुओ को आमत्रित कर दिया। ४९ शीघ्र ही उन्होंने उनसे मिथिलापुर चलने को कहा। वहाँ पर

बन गिरि लता जे चाळिशि कोश जाण। छामुण्डिआ चान्दुआ टणाए राजन ७८
ठाबे ठाबे बाद्य बाजे शंख जे महुरी। शबदे मेरु गिरि कम्पइ आदि करि ७९
अनेक गहळ जे देखि कामधेनु। अठर कोटि रूप जे जात कला मनु१६८०
बोइला अमृत जोगाड़ तुम्भे देब। राजा परजा ऋषिंकि नेइण चरचिब१६८१
शुणिण मनु जात पुरुष स्तिरी गले।
राजा परजांक लोड़ा जाहा ताहा तांकु देले ८२
ऋषि ब्राह्मण जे हाटुआ बाटुआ। समस्तंकु चरचा कामधेनु छुआ ८३
एथु अनन्तरे जे बशिष्ठ महाऋषि। जनकंकु ड़काइ बोलन्ति बिशेषि ८४
शुण मिथिला नग्रर आहे मुनिबर। दशरथ राजा जे अजोध्या ईश्वर ८५
देवताए प्रशंसा करन्ति ताहांकु। धर्मरे धार्मिक जे लेखन्ति ताहांकु ८६
विशेषे चक्रबर्त्ती मउडमणि सेहि। गरिष्ठ ए राजार उपरे केहि नाहिँ ८७
बड़ धार्मिक जे अटन्ति शान्तशीळ। परशिमान घेनि मारन्ति दुष्टबळ ८८
दानेण दाता अटे मानेण चक्रबर्त्ती। गारिमा राजन ए देबता न मानन्ति ८९
जनक बोइले कह उपर बंश कथा। तपन कुळरे जात अनेक महारथा१६९०
आद्यरे अबतार एहार बंश काहुँ। मोहर आगरे कह मो मने प्रते जाउ१६९१

छाया से व्यवस्थित करा दिया। ७७ चालिस कोश गिरि लता वनों में राजा ने छाया मण्डप तथा चन्दोवे तनवा दिये। ७८ स्थान-स्थान पर शंख महुरी का वाद्यनाद हो रहा था। उस घोष से मेरु पर्वत काँप रहा था। ७९ अत्यन्त भीड़भाड देखकर कामधेनु ने अट्ठारह करोड़ मनुष्य संकल्प से उत्पन्न कर दिये। १६८० उसने उनसे राजा प्रजा तथा ऋषि समेत सबका सेवा सत्कार करके उन्हे अमृतोपम सामग्रियाँ उपलब्ध कराने को कहा। १६८१ यह सुनकर सकल्प से उत्पन्न स्त्री पुरुष चले गए और उन्होने राजा, प्रजा आदि को इच्छित वस्तुएँ प्रदान की। ८२ कामधेनु-पुत्रो ने ऋषियों, ब्राह्मणों, हाट-बटोहियो आदि सबका सेवा सत्कार किया। ८३ इसके पश्चात् महर्षि वशिष्ठ ने विशेषतय: जनक को बुलाकर उनसे कहा। ८४ हे मिथिला नगर के मुनिश्रेष्ठ! राजा दशरथ अयोध्या के अधीश है। देवता उनकी प्रशसा किया करते है और उनकी गणना धार्मिको मे करते है। ८५-८६ वह विशेषतय: चक्रवर्तियों में शिरोमणि है। इन राजा से महान अन्य कोई नही है। ८७ यह शान्त शील तथा अत्यन्त धार्मिक है और शस्त्र लेकर दुष्टो का विनाश करते है। ८८ यह दान से दाता और मान से चक्रवर्ती है। गरिमा मे यह राजा देवता को भी नही मानते। ८९ जनक ने कहा कि इनके पूर्व पुरुषो के इतिहास का वर्णन कीजिये। सूर्य कुल में अनेक महारथी उत्पन्न हुए है। १६९० इनके वश का आदि अवतरण कहाँ से हुआ। आप मेरे समक्ष वर्णन कीजिये जिससे मेरे मन में प्रतीति हो जाय। १६९१

बोइले देवताए बेदबर शुण ।भेदिले तुम्भ पाशे मिथिला जिव जाण ६४
नगले निश्चे तुम्भंकु मारिबे रामपुण । गले नाराय़ण बिभा देखिव नेत्रेण ६५
मरिले बैकुण्ठ जिब जिइँले सुखभाव । असुरंकु मारिबाकु श्रीराम जन्म बेग ६६
शुणि करि राजा माने मने बिचारिले ।नाराय़ण श्रीराम रूपे जन्मिले महीपरे ६७
मलेत स्वर्ग जिबा जिइले कारण । देबे दूत पठिआइले एबे कहिण ६८
एमन्त विचारि जे रथ सज करि ।सैन्य़ गण घेनिण जे जाहा मते चळि ६९
के पाञ्च दिने के मिळे सात दिबसरे । के मिळे बारतेर कोड़िए दिबसरे१६७०
मास करे सम्पूर्ण चाळिशि सत्र राजा ।देखि जनक ऋषि सुरभिकि कले पूजा१६७१
बोइले राजागणंकु देवा संच्चाबिधि ।कामधेनु बोले चिन्ता नकर नृपनिधि ७२
खाइबा पिइबार जेतेक बिधिमत । ए सकळ सबु कथा लागइ मोते त ७३
शुणि जनक ऋषि हरष होइले । सत्यानन्दंकु कहिण ग्राम मण्डाइले ७४
संकर्षण मन्त्री जे राज्य घोष मण्डि । द्वारे पूर्ण कुम्भ रम्भा वृक्ष बान्धि ७५
कन्दि बिकन्दि जे बडदाण्ड नबर ।सकळ पुरकु मन्त्री कराए विचित्रसार ७६
उपरे छामुण्डिआ चान्दुआ टणाइ । बतिश कोश नवर सकळ स्थान छाइ ७७

दिनो के भीतर चारो दिशाओ के राजाओ को सूचना दे दी। ६३ उन्होने कहा कि ब्रह्माजी तथा देवताओ ने मुझे आप लोगो के पास भेजा है। आप सब मिथिलापुर जाइये। ६४ न जाने पर श्रीराम तुम्हे फिर मार डालेगे। जाने पर तुम सब भगवान वासुदेव का विवाह नेत्रो से देखोगे। ६५ मरने पर बैकुण्ठ प्राप्त करोगे और जीवन में सुख पावोगे। असुरो के सहार के लिए श्रीराम का जन्म हुआ है। ६६ यह सुनकर राजाओ ने मन में विचार किया कि पृथ्वी पर वासुदेव ने श्रीराम के रूप में जन्म लिया है। ६७ मरने पर स्वर्ग मिलेगा और जीवन से उद्धार। देवताओ ने दूत भेजकर हमे सन्देश भिजवाया है। ६८ इस प्रकार विचार करके सब तैयार होकर रथ सजाकर सैन्यवाहिनी लेकर अपने-अपने हिसाब से चल दिए। ६९ कोई पाँच दिनो मे, कोई सात, कोई बारह, तेरह और कोई बीस दिनो मे पहुँच गए। १६७० महीने के भीतर ही चालिस हजार राजाओ को देखकर महर्षि जनक ने सुरभी की पूजा की। १६७१ उन्होने राजाओ को समस्त आवश्यक पदार्थ सुलभ कराने के लिए प्रार्थना की। कामधेनु ने कहा, हे नृपश्रेष्ठ ! आप चिन्ता न कीजिए। ७२ खाने पीने के जितने भी पदार्थ है, उनकी व्यवस्था की सारी बाते मुझे ज्ञात है। ७३ यह सुनकर महर्षि जनक प्रसन्न हो गए और उन्होने सतानन्द से कहकर ग्राम को सुसज्जित करवाया। ७४ मन्त्री सकर्षण ने द्वार पर पूर्ण कलश रखकर और केले के वृक्षो को बाँधकर राज्य-कोष को सजावट की। ७५ नगर के गली कूचो राजमार्ग आदि सम्पूर्ण नगर को मन्त्री ने विचित्र प्रकार से सुसज्जित करवाया। ७६ ऊपर छाया-मण्डप तथा चन्दोवे तनवा दिये। सम्पूर्ण नगर के बत्तिस कोश के स्थान को

से देवतांकु स्वर्ग हेला जे परापत । सन्तोषरे से रहिले स्वर्गपुरे त ६
आगे जेहु जात हेले से हेले सुर राजा । मध्यरे जात हेबारु दिगपाळ हेजा ७
पछे जात हेबारु देवतागण हेले । तेणुटि देबताए स्वर्ग भोग कले ८
देवतांक माता होइलेक हेती । प्रहेती संगे प्रीति कश्यप करन्ति ९
प्रहेती ठारु जात नउसागर अण्डा । अण्डा फुटन्ते असुर परचण्डा१७१०
से असुर मञ्चपुर आवोरि रहिले । आबर वेळे हेती ठारु अण्डा जात हेले१७११
से अण्डारु जात जे मानव चारि बर्ण ।बिप्र, क्षत्रीय़, वैश्य, शूद्र जे चारि बर्ण १२
प्रहेती ऋषिक संगे होइबारु मेळ ।ताठारु चारि बर्ण मुनि जात जे हेबार १३
एमानंकु बोइले सपत पुरे रह । राजा परजा पणे तुम्भे दिन निअ १४
सेठारु खग मृग आबर जळचर । अनेक वर्ण से हेले अबतार १५
पछरे मण्डुकी नाग होइलेक जात । छपन कोटि जीबंकर कश्यप जे तात १६
तेणु से सपत पुरे क्षत्रीय जात हेले ।पुर गोटि के लक्षे राजा क्षत्री जे होइले १७
कश्यपर तनय़ जे हेले अश्व माळि ।अश्व माळिर नाम जे बोलाए तेजकारी १८
तेजकारी सुत जे वैवसुत मनु । तेज बळ प्राकर्मरे अटे दिती भानु १९
एहार तनय़े जे इछाकुरु बोलिराए । इछावती नग्ररे राजन से जे हुए१७२०
रबितळे चक्रबर्त्ती अटइ से सेहि । बाहुवळे पृथिबी बुलइ से जाइ१७२१
इछाकुरु बंश बोलि नाम देले तार । इछाकुरु बंश जे जगते बिस्तार २२

वह सन्तोष पूर्वक स्वर्ग मे रहने लगे । ६ जो पहले उत्पन्न हुआ वह देवराज हुआ । मध्य में पैदा होने वाले दिग्पाल हुए । ७ पीछे उत्पन्न होने वाले देवता-गण हुए । तब देवता स्वर्ग का उपभोग करने लगे । ८ देवताओं की माता हेती हुई । फिर कश्यप ने प्रहेती के साथ प्रीति की । ९ प्रहेती के नौ सागर अण्डे हुए । अण्डे फूटने से प्रचण्ड असुर हुए । १७१० वह असुर मृत्यु लोक में रहने लगे । फिर हेती से और अन्डे उत्पन्न हुए । १७११ उन अण्डों से चारो वर्ण के मनुष्य उत्पन्न हुए । ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य तथा शूद्र यह चार वर्ण के मनुष्य थे । १२ ऋषि के साथ प्रहेती का समागम होने से उससे चार वर्ण के मुनि उत्पन्न हुए । १३ इन लोगों को सातो लोकों में राजा तथा प्रजा भाव से रहने के लिये कहा गया । १४ फिर वहाँ खग मृग तथा अनेक वर्णो के जलचर उत्पन्न हुए । १५ पीछे मण्डूकी तथा नाग उत्पन्न हुए । कश्यप छप्पन करोड़ जीवों के पिता बने । १६ तब सातो लोको मे क्षत्री उत्पन्न हुए । एक पुर में पराक्रमी एक लाख राजा हुए । १७ कश्यप के पुत्र अश्वमाली हुए । अश्वमाली का नाम तेजकारी विख्यात हुआ । १८ तेजकारी के पुत्र वैवस्वत मनु हुए जो तेज वल तथा पराक्रम में दूसरे सूर्य थे । १९ इनके पुत्र राजा इक्ष्वाकु हुए जो इच्छावती नगर के राजा वने । १७२० वह सूर्य मण्डल के नीचे चक्रवर्ती थे । वह अपनें वाहुबल से जाकर पृथ्वी पर विचरण करते थे । १७२१ उनके

सूर्यवंशर वर्णन

वशिष्ठ वोइले तुम्भे शुण मन देइ। कहु अछि वंशानु प्रते जेणे जाइ ९२
जेते बेळे प्रळय़ काळ जेणु हेला। बट पुटे शय़न अनन्त हेले परा ९३
जळ भितरे बुदु बुदु हेले जात। सेठारु अनेक वर्ण होइला सम्भूत ९४
रबिकर ठारु जे एहांक बंश जात। तुम्भर आगरे स्वरूप कहइ त ९५
खग रूप जेते बेळे धरिले नाराय़ण। सेहि परा सर्जिला जे जगत हादे पुण ९६
अण्ड गोटिकरु जे संसार जात हेला। जनक मुनि आगे वशिष्ठ कहे परा ९७
से अण्डगोटि खगरु जात हेला। से अण्ड गोटिक खसि जळरे सञ्चरिला ९८
से अण्डरु जेबण पुरुष बाहार। एहि सृष्टि करिवाकु कलेक विचार ९९
ताहांकर नाम हादे अटइ विधाता। सेहि से होइले जे जगतर पिता१७००
नवखण्ड मेदिनी चउद खण्ड भुवन जे कले। के आन करिव ए कथाकु भले१७०१
अश्वमाळि बोलिण विधातार सुत। ताहाकु प्रजापति कलेक बिधाता २
मनुष्य चारि वर्ण प्रजापति कले जात। सेथिरु ऋषिए जे होइले सम्भूत ३
से ऋषिकर नाम कश्यप बोलाइले।चेता हेवारु जे ऋषि रति संग मागिले ४
तेणु से प्रजापति दोहिता एक जात।हेति प्रहेति नाम बेनि दोहिता सम्भूत ५

सूर्य वंश का वर्णन

वशिष्ठ ने कहा कि तुम मन लगाकर सुनो ! मै तुम्हारी प्रतीति के लिए वश का वर्णन कर रहा हूँ। ९२ जिस समय प्रलय का समय हुआ तव नारायण बट-पत्र पर अनन्त शयन मै लीन हुए। ९३ जल के भीतर बुलबुले उत्पन्न हुए। उससे अनेक वर्ण उत्पन्न हुए। ९४ सूर्य से इस वश की उत्पत्ति हुई। मैं उसका स्वरूप तुम्हारे समक्ष कह रहा हूँ। ९५ जिस समय नारायण ने खग रूप धारण किया। उसी से इस जगत की सहज ही सृष्टि हो गई। ९६ महर्षि वशिष्ठ ने जनक से वताया कि एक अण्डे से ससार की उत्पत्ति हुई। ९७ वह अण्डा एक पक्षी से उत्पन्न हुआ। वह अण्डा जल मे गिर पड़ा। ९८ उस अण्डे से जो पुरुष उत्पन्न हुआ उसने इस सृष्टि को करने का विचार किया। ९९ उसका नाम विधाता था। वह ही जगत् के पिता हुए। १७०० उन्होने नौ खण्ड पृथ्वी और चौदह भुवनो का निर्माण किया। इसे अन्य कौन कर सकता था। १७०१ अश्वमाली नाम वाला विधाता का पुत्र हुआ। उसे विधाता ने प्रजापति वना दिया। २ प्रजापति ने चार वर्ण के मनुष्यो को उत्पन्न किया। उससे एक ऋषि उत्पन्न हुए। ३ उस ऋषि का नाम कश्यप रक्खा गया। चेत आने पर उन ऋषि ने रति रस की याचना की। ४ तब प्रजापति ने एक कन्या उत्पन्न की। उससे हेती और प्रहेती दो कन्याएँ हुईं। ५ उनसे देवताओ को स्वर्ग प्राप्त हुआ और

कुबळय़ा कुमर होइला पूर्बसार । शत्रु त्रास नमाने ताहार कुमर ३८
प्रसन्न जित बोलि ताहार सन्तति । शत्रुजित नामरे पुत्रेक ताहा रति ३९
ताहार कुमर कुरु जे नृपति । अति मानरे राजा हेला चक्रबर्त्ती१७४०
कुरुनाथ नन्दन जे जगन्नाथ महीधर ।से राजा महिमा मुनि अतिहिँ अगोचर१७४१
से जगन्नाथ, महीधरर अनेक कीरति । पुत्र तार नोहिबारु भाळे से नृपति ४२
अष्टबक्र ऋषिकि से सेवा करि मनाइला। भगती देखिण से मुनि दय़ा कला ४३
कालि मो आश्रमकु आसिबुं बोइले । अन्धकु नय़न कि दरिद्रे धन देले ४४
शुणि से नृपबर प्रभात बेळे जाइ । अष्टबक्र मुनिकर आश्रमे मिळइ ४५
देखिण ऋषि बोले शुणरे नृपबर । एमन्त पाणि घेनिण बहन तु जे चळ ४६
महादेई मानंकु बाण्टिण तुम्भे देव । पुत्र उपुजिब बळिण तोर तेज ४७
एते कहिण मुनि अन्तर्द्धानिरे गले । मन्त्र जळ घेनिण नृपति बाहुडिले ४८
दइबिर माय़ाकु बुझि त नपारि । से पाणिकि पिइले नृपति पाशोरि ४९
आपणे गर्भबास हेलेक राजन । पाञ्च मास अन्तरे गर्भ बुलइ नन्दन१७५०
अष्टबक्र ऋषि जाणि आसिले बेगकरि । राजाकु बोइले तु अबिचार करि१७५१
राणीकि न देइ तु आपणे भक्षिलु । तेणु करि ए कष्ट तु आपणे लभिलु ५२

कुवल नामक पुत्र हुआ। उसकी महिमा तीनो लोकों में विख्यात थी। ३७ कुवल का पुत्र पूर्वसार था। उसका पुत्र शत्रु से भयभीत नही होता था। ३८ प्रसन्नजित उसकी सतान हुई। उसके पुत्र का नाम शतृजित हुआ। ३९ उसका पुत्र राजा कुरु था। वह अत्यन्त मान से चक्रवर्ती राजा हुआ। १७४० कुरु नाथ का पुत्र महीधर जगन्नाथ हुआ। हे मुनि ! उस राजा की महिमा अत्यन्त अगोचर है। १७४१ उस महीधर जगन्नाथ का बड़ा प्रताप था। पुत्र न होने से उस राजा ने विचार किया। ४२ उसने सेवा करके महर्षि अष्टावक्र को प्रसन्न किया। उसकी भक्ति देखकर महर्षि ने उस पर दया की। ४३ उन्होने कहा कि तुम कल मेरे आश्रम मे आ जाना। लगता था जैसे अन्धे को नेत्र और दरिद्री को धन मिल गया हो। ४४ यह सुनकर श्रेष्ठ राजा प्रभात काल मे महर्षि अष्टावक्र के आश्रम मे जा पहुँचा। ४५ देखते ही ऋषि ने कहा हे श्रेष्ठ राजन ! सुनो। यह पानी लेकर तुम शीघ्र ही जाओ। ४६ तुम इसे पटरानियों में बाँट देना। तुमसे भी अधिक प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा। ४७ इतना कह कर मुनि ध्यानमग्न हो गये और अभिमन्त्रित जल लेकर राजा लौट पडे। ४८ दैव की माया को वह समझ न पाए और भूल से राजा ने वह पानी पी लिया। ४९ स्वय राजा के गर्भ ठहर गया। पाँच माह बीतने पर शिशु गर्भ में घूमने लगा। १७५० यह जानकर ऋषि अष्टावक्र शीघ्र ही आ गए। उन्होने राजा से कहा कि तूने अज्ञानता का कार्य कर डाला। १७५१ तूने रानी को न देकर उस जल को स्वय पी लिया। इसीलिये तुझे यह कष्ट प्राप्त

इछाकुरु ठारु जे बिळोछि हेले जात। जोद्धापणे सरितांकु नुहे सपत द्वीप २३
ताहार कुमर जे अजय़े बोलि जाण। द्वापर जुग गोटि भोग से कले जाण २४
स्वर्ग मर्त्य, पाताळ तिनिपुर जिणि। नग्र नाम आपणा नाम देले पुणि २५
सेहि दिनु से राज्य जे अजोध्या बोलाइला।

काळे पुण तांक ठारु पुत्र जात हेला २६
से राजा कुमर नाम देले महीपति। चारि समुद्रे से राजा स्नान करे निति २७
काकुस्थ बोलिण जे ताहार तनय़े। ए मही मण्डळरे सबु कले जाए २८
ताहांकर तनय़ कबिर नामे बीर। ताहा ठारु जात विश्रवा नामे बीर २९
बिश्रवा तनुज जे आरण्यक नृपति। सुनाम नामरे पुण ताहार एक मन्त्री१७३०
से राजाकु दशमुखा रावण नाश कला। से राजा मन्त्रीर बोल केबेहें नकला१७३१
आदित्य नामेण जे से राजा कुमर। पितार शत्रु बोलिण गला लंकापुर ३२
मन भेदि शरे से लंकाकु पोड़िला। उपर चारि पाख पाषाणे पोतिला ३३
दश बरष जे से लंका अन्धार। देखि करि रावण विधाताकु सुमरिबार ३४
डरिण दइब जे से पुर नगला। बिश्रवा ऋषि आसि अग्नीकि कहिला ३५
तेणु से मन भेदी अग्नी देले काढि। तेणु से रबित्रास लंका गड़रे पड़ि ३६
सेहि राजा ठारु कुवळ बोलि पुत्र। तिनि भुवनरे तार महिमा बिख्यात ३७

वश का नाम इक्ष्वाकु वश हुआ। इस प्रकार ससार मे इक्ष्वाकु वश का विस्तार हुआ। २२ इक्ष्वाकु से विलोछी उत्पन्न हुआ जिसके समान योद्धा सात द्वीपो में अन्य कोई न था। २३ उनका पुत्र अजय हुआ जिसने पूरे द्वापर युग तक भोग किया। २४ उन्होने स्वर्ग मृत्यु तथा पाताल लोको पर विजय प्राप्त करके नगर का नाम अपने ऊपर रक्खा। २५ उसी दिन से उस राज्य का नाम अयोध्या पड़ा। समय पर उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। २६ उस राजा ने पुत्र का नाम महीपति रक्खा। वह राजा नित्य चारो समुद्रों में स्नान करता था। २७ उसके काकुस्थ नामक पुत्र हुआ जिसने इस भूतल पर सबको पराजित कर दिया था। २८ उनके पुत्र पराक्रमी कबीर हुए जिनसे पराक्रमी विश्रवा नामक वीर उत्पन्न हुआ। २९ विश्रवा का पुत्र राजा अरण्यक था। उसके सुनाम नामक एक मत्री था। १७३० उस राजा को दशकण्ठ रावण ने मार डाला। उस राजा ने मत्री की बात कभी नही मानी। १७३१ उस राजा के आदित्य नाम का पुत्र था। वह पिता के शत्रु की नगरी लका मे गया। ३२ उसने मन भेदी बाण से लंका को जला दिया और ऊपर से चारो ओर से पत्थरो से तोप दिया। ३३ दस वर्ष तक लका मे अँधेरा बना रहा। यह देखकर रावण ने विधाता का स्मरण किया। ३४ भयभीत होकर विधाता उस नगर में नही गये। तब विश्रवा ऋषि ने आकर अग्नि से कहा। ३५ तब मन भेदी अग्नि ने उसे निकाल दिया। उस लका दुर्ग पर सूर्य का त्रास पड़ा था। ३६ उस राजा के

बाहुकर पुत्र जे सगर नृपति । सपत सागरकु खोळाइले कीर्त्ति ६८
सात जुग परिजन्ते बञ्चिले राजन । स्वदेह घेनिण जे स्वर्गकु गले पुण ६९
अश्व जोला नामरे ताहार कुमर । देवताए भय़ कले जाणि तार बळ१७७०
ताहा ठारे जात अश्वबन्त पुत्र होइ । से पुत्र अश्व चढिण शून्यरे उडइ१७७१
तार पुत्र दिलिप साधिला सप्त महि । तिनिपुरे नाम बिख्यात तार होइ ७२
दिळिप नन्दन जे भगिरथ होइला । आकाशर गंगा आणि मञ्चरे रुहाइला ७३
से भगिरथ पुत्र अटे सुरसेन । नाभ नाम होइला जे ताहार नन्दन ७४
नाभर नन्दन जे सिन्धु घोष होइ । सिन्धु घोषर नन्दन कृतिका बोलाइ ७५
कृतिकार नन्दन अखिळ नृपति । ऋतुपन्न नामरे ताहार सन्तति ७६
ऋतुपन्न राजा नळराजाकु सम्भाळिला । आजहुँ कीरति तार पुराणे रहिला ७७
ऋतुपन्न कुमर अटइ विलम्बर । लक्षे राजाकु बिक्री कला एक बार ७८
ताहार नन्दन जे कुम्भ नाम राये । त्रिभुबन मध्ये पटान्तर नाहिँ किए ७९
निकुम्ब नन्दन अळम्बुसा हुए । तिनि पुररे ताकु सरि सम केहि नुहेँ१७८०
अळम्बुसा नन्दन बाकु राजा जे पुण । सकळ नृपति तार पादे खटे जाण१७८१
बाकु राजार नन्दन अटे सुतिक्षण । पिता बिजोगरे से अजोध्या राजन ८२
सुतिक्षण राजन जे अग्निकेतु होइ । सिंहनाद नन्दन जे ताहार बोलाइ ८३

पराक्रमी बहुल था । ६६-६७ बाहुक का पुत्र राजा सगर था जिसने सात समुद्र खुदवाकर यश का विस्तार किया । ६८ वह राजा सात युगों तक जीवित रहा फिर सशरीर वह स्वर्ग को गया । ६९ उसके पुत्र का नाम अश्व जोला हुआ उसके बल से देवता लोग भी डरते थे । १७७० उसके अश्ववल पुत्र हुआ । वह कुमार घोड़े पर चढ़कर आकाश में उड़ता था । १७७१ उसके पुत्र दिलीप ने सात खण्ड पृथ्वी जीत ली थी । उनका नाम तीनों लोको मे विख्यात् हो गया था । ७२ दिलीप का पुत्र भगीरथ हुआ जिसने आकाश की गगा को लाकर मृत्यु लोक में प्रवाहित किया । ७३ उस भगीरथ का पुत्र सूरसेन था जिसके नाभ नामक पुत्र हुआ । ७४ नाभ के पुत्र सिधघोष और उसका पुत्र कृत्तिका हुआ । ७५ कृत्तिका का पुत्र राजा अखिल था जिसकी सन्तान का नाम ऋतुपन्न था । राजा ऋतुपन्न ने राजा नल से युद्ध किया । आज भी पुराणों में उसकी कीर्ति वर्णित है । ७६-७७ ऋतुपन्न का पुत्र बिलम्वर हुआ जिसने एक बार एक लाख राजाओं को विक्रय कर दिया था । ७८ उसके पुत्र का नाम राजा कुम्भ था जिसकी तुलना में तीनों लोको में कोई नही था । कुम्भ का पुत्र अलम्बसा हुआ उसकी समता का तीनों लोको में कोई नही था । ७९-१७८० अलम्बसा नन्दन राजा बाकु हुआ । समस्त राजागण उसके चरणों की सेवा करते रहते थे । राजा बाकु का पुत्र सुतीक्षण हुआ । पिता के निधन पर वह अयोध्या का राजा बना । १७८१-८२ राजा सुतीक्षण का पुत्र अग्निकेतु हुआ और उसके पुत्र का नाम सिहनाद था । ८३

दश माश राजार पेट सेहु चिरि । तार गर्भु पुत्र एक वाहार जे करि ५३
से पुत्र नाम जे देले मानधाता । ए महि मण्डळरे रुहाइले कथा ५४
मानधाता ठारे जे मुचुकुन्द हेले जात । वाण नरनाथ होइले तार पुत्र ५५
बाण नरनाथर जे पुत्र वसुनामे बीर । सेहि पुणि होइले जे अजोध्या ईश्वर ५६
सत्यव्रत बोलिण जे ताहार तनये । कुमन्त राजन जे ताठारे उदये ५७
सेहि राजाठारे जे हरिचन्दन जात । दानेण खाण्डेब दाता पणरे बिख्यात ५८
सेहि राजा जाग कले विश्वामित्र राइ । अनेक धन देवारे न नेले मुनि तहिँ ५९
बिक्रि करि नेल जे पुत्र भारिजा जाण । सेहि राजा सान पुत्र हेलेक राजन१७६०
तेणुटि विश्वामित्र जोग बळे जाणि । श्रीराम लक्ष्मणरे भवुसि हेले पुणि१७६१
हरिचन्दन द्वितीय पुत्र नाम जाण । सौरभ्य नामरे अटइ राजन ६२
भ्रथ नामरे तार पुत्रेक जात होइ । जम्बुद्वीप मण्डळे एकांग राजा होइ ६३
से राज्य राजामाने खटिण पादरे । जम्बुद्वीपकु असुर न आसन्ति डरे ६४
तेणु जम्बुद्वीपकु भ्रथ खण्ड नाम देले । गड़करि भक्ष्यपुर राज्यरे रहिले ६५
केते हे काळेक राजार चारि पुत्र हेले ।
मधुवन हस्तिना भ्रथ अजोध्यारे राजा हेले ६६
इसिते सतेज अमळ कमळ । इसित कुमर बहुळ नामे बीर ६७

हुआ है । ५२ दस महीने पर उन्होने राजा के पेट को चीरकर उसके गर्भ से एक पुत्र बाहर निकाला । ५३ उस पुत्र का नाम मान्धाता रक्खा गया । उनकी यश-गाथा इस महिमण्डल पर चिरकाल तक चर्चित रही । ५४ मान्धाता से मुचकुन्द उत्पन्न हुए । उनके पुत्र महाराज वाण हुए । ५५ वाण का पुत्र पराक्रमी वसु हुआ जो अयोध्या का अधीश्वर वना । ५६ उसका पुत्र सत्यव्रत और उससे राजा कुमन्त उत्पन्न हुआ । ५७ उस राजा से हरिश्चन्द्र की उत्पत्ति हुई जो दान मे महा प्रसाद के समान दान वीरता मे प्रसिद्ध था । ५८ उन्ही राजा ने विश्वामित्र को बुलाकर यज्ञ किया । प्रचुर धन प्रदान करने पर भी मुनि ने उसे ग्रहण नही किया । ५९ फिर पत्नी तथा पुत्र को विक्रय करके उन्होंने लिया । फिर उस राजा का छोटा पुत्र राजा वना । १७६० तव विश्वामित्र ने योग बल से जानकर श्रीराम और लक्ष्मण पर भरोसा किया । १७६१ हरिशचन्द्र के दूसरे पुत्र का नाम राजा सौरभ्य था । ६२ उनके भरत नाम का एक पुत्र उत्पन्न हुआ । जो जम्बूद्वीप मण्डल का एक छत्र शासक हुआ । ६३ राजा लोग उसके चरणों की सेवा मे लग गये । भयभीत होकर जम्बूद्वीप मे राक्षस नही आते थे । ६४ इस कारण से जम्बूद्वीप का नाम भरत खण्ड पड़ा । उन्होने मृत्यु लोक के उस राज्य मे दुर्ग बनाकर निवास किया । ६५ कुछ समय पर उस राजा के चार पुत्र हुये जो मधुवन, हस्तिनापुर, भरत खण्ड तथा अयोध्या के राजा हुये । असित, सतेज, अमल तथा कमल यह चार हुये । असित के पुत्र का नाम

दशरथंकर सेहु अटइ ज्येष्ठ राणी। से राणी तळरे कउशल्या पुणि१८००
कउशल्या तळरे अटइ सौमित्र। शोभा सुन्दर से सकळ राणि स्तोत्र१८०१
ए रूपे शुणि ऋषि दशरथ महिमा। जाहाकु प्रशंसा जे करन्ति सुर ब्रह्मा २
सत सठी पुरुष दशरथंकर एमन्त। सेदिनु अटइ मुं जे कुळर पुरोहित ३
बशिष्ठंकर मुखरु एसन बाणी शुणि। कृत कृत होइले जनक महामुनि ४
बोइले भो मुनि कहिल तुम्भे जाहा। सर्व गुणे सुन्दर अजोध्या नर नाहा ५
तुम्भे कहिल एहांक बंशानु चरित। गत पापमान गला ए मोहर गात्र ६

जनकंकर वंश वर्णन

मोहर कुळ गोत्र शुण हे ब्रह्ममुनि। बिधि बिधान काळे अवश्य एहा जाणि ७
सत्यानन्द ऋषि मोर कुळर पुरोहित। एहांक मुखरु शुण मोहर कुळगोत्र ८
अहल्या नन्दन कहे एसनक शुणि। सावधान होइ शुण अजोध्या नृपमणि ९
सावधान होइ तुम्भे शुण हे बशिष्ठ। इछाबरु नामे एक नृपति गरिष्ठ१८१०
निद्रार बोलि हेला ताहार तनय़े। चारि सागरे सेहु होइला महाराय़े१८११
सइन संगरे घेनि बुलिलाक पृथि। समान नोहिले ताकु कउणसि क्षत्री १२

पुत्री शौर्यशालिनी है। उसके गर्भ से भरत उत्पन्न हुए। ९९ वह दशरथ की वडी रानी है। उस रानी के नीचे फिर कौशल्या है। १८०० कौशल्या के नीचे सुमित्रा है। यह समस्त रानियाँ शोभा तथा सौन्दर्य की खान है। १८०१ ऋषि ने इस प्रकार दशरथ की महिमा सुनी जिनकी प्रशसा देवता और ब्रह्माजी किया करते है। २ दशरथ की इस प्रकार को सड़सठ पीढियाँ है। तभी से मै इनके कुल का पुरोहित हूँ। ३ वशिष्ठ के मुख से ऐसे वचन सुनकर महर्षि जनक कृत-कृत्य हो गये। ४ वह बोले हे महर्षि ! आपने जैसा कहा, अयोध्या नरेश वैसे ही समस्त गुणो मे युक्त तथा सुन्दर है। ५ आपने इनके वंशानुगत चरित्रों का वर्णन किया। मेरे शरीर के समस्त पाप क्षय हो गए। ६

जनक के वंश का वर्णन

हे ब्रह्मर्षि ! आप मेरे कुलगोत्र के विषय में सुनिये। विधि विधान के समय इसका जानना आवश्यक है। ७ सतानन्द ऋषि हमारे कुल पुरोहित है। इनके मुख से हमारे कुल गोत्र के विषय में सुनिए। ८ ऐसा सुनकर अहिल्या नन्दन ने कहा हे अयोध्या के श्रेष्ठ नरपाल। सावधान होकर सुनिए। ९ हे वशिष्ठ ! आप भी सावधान होकर सुनें। इच्छावरु नाम का एक प्रतापी राजा था। १८१० उसका पुत्र निद्रार हुआ। वह चारो सागरो पर अधिपति बना। १८११ साथ में सैन्य वहिनी लेकर उसने भूमण्डल पर भ्रमण किया। कोई भी योद्धा उनकी

सिहनाद बोलिण ताहार नाम होए । राजापण चारिमास सेहि पुण कए ८४
स्वर्गरे देबता तप कले जे चारि मास । पाताळे धरणीधर धइले महीकि त ८५
स्वर्गसनि बोलि करि ताहार कुमर । ता ठारु जात अमीय़ रस नृपबर ८६
तार ठारु जात जे नजाणि होइला । जजाति नन्दन जे भार्गवि बोलाइला ८७
कामदेव बोलिण जे ताहार तनय़े । सेहि राजपण कले कुळदिप राय़े ८८
महिमा अगोचर प्रशंसे सुर राय़े । रघुबंश बोलिण जे सेहि ठारु हुए ८९
ताहार नन्दन अजनामे महिपाळ । दशरथ नामरे ताहार दुलाळ१७९०
एहि दशरथ अजोध्यारे राजा पुण । वेनि प्रकार जे अटइ देह जाण१७९१
नय़न चरण वेनि अटइ वेनि वेनि । सरिर मस्तकरे अटइ एक पुणि ९२
अष्ट गोटि वाहु तार करइ पलव । चारि गोटि धनु धरि सर्माजइ बेग ९३
ऋष्यश्रृग प्रसादरे चारि जे नन्दन । श्रीराम लक्ष्मण भरथ शतृघन ९४
राजार ज्येष्ठ पाट कैकय़ा नामे राणी ।
कौशल्या कनिष्ठ अटे शुण हे महामुनि ९५
सुमित्रा निळा तुले सातश पचास । एहि मानंकु सान राणीरे लेखित ९६
कउशल्या गर्भरु श्रीराम हेले जात । कैकयांक गर्भरे भरथ सम्भुत ९७
सुमित्रांकर गर्भरु लक्ष्मण शतृघन । एमन्त चारि गोटि दशरथ नन्दन ९८
कैकेया राजा दुहिता अटइ चापवन्ति । ताहांकर गर्भु भरथ उत्पत्ति ९९

उसका नाम सिहनाद होने से उसने चार महीने तक राजत्व का भोग किया । ८४ देवताओ ने चार मास तक स्वर्ग में तपस्या की और पाताल में शेप पृथ्वी को धारण किये रहे । ८५ उसका पुत्र स्वर्ग सेन हुआ । उससे नृपश्रेष्ठ अमिय-रस उत्पन्न हुए । ८६ उससे नजाणी उत्पन्न हुआ । ययाति नन्दन का नाम भार्गवी था । ८७ उसके कामदेव नामक पुत्र था । उस राजा कुल दीपक ने राजत्व भोग किया । ८८ उसकी महिमा अगोचर थी और देवराज इन्द्र भी उसकी प्रशसा करते थे । उन्ही से रघुवश का नाम विख्यात हुआ । ८९ उनके पुत्र का नाम महाराज अज था । उनके दशरथ नामक पुत्र हुआ । १७९० यही दशरथ अयोध्या के राजा है । इनका शरीर दो प्रकार का है । १७९१ इनके दो चरण तथा दो नेत्र है । शरीर मे एक मस्तक है । ९२ कर पल्लवो वाली इनकी आठ भुजाएँ हैं । यह चार धनुप धारण करके शौर्य प्रदर्शन करते है । ९३ शृगी ऋषि की कृपा से इनके राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न चार पुत्र है । ९४ राजा की बड़ी पटरानी का नाम कैकेयी है । हे महामुनि ! सुनिये । कौशल्या छोटी रानी है । ९५ सुमित्रा तथा नीलावती को लेकर सात सौ पचास रानियाँ है जिनकी गणना छोटी रानियो मे है । ९६ कौशल्या के गर्भ से श्रीराम उत्पन्न हुए तथा कैकेयी के गर्भ से भरत का जन्म हुआ । ९७ सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए । इस प्रकार दशरथ के चार पुत्र है । ९८ राजा कैकय की

बालमिक सिद्धबने जाइण तप कला । तेणुटि सिद्ध ऋषि संगरे गणा हेला २६
सानभाइ कुशध्वज अनेक तप करि । शूद्र मुनि होइण से बैशाळ पुरे मिळि१८३०
बैशाळि राजा जे अटइ दिनकर । सोमबंश घेनिण स्वर्गकु गला बीर१८३१
गला बेळे कुशध्वजकु राज्य देइ गले । तेणुटि कुशध्वज से राज्ये राजा हेले ३२
से कुशध्वजर जे दुहिता अटे बेनि । जनकर बचने अइले जे घेनि ३३
भ्रथ शतृघनकु जे देखि तोष हेला । से दुहिकि बरिण निजपुरे गला ३४
माळिनी नामरे तार ज्येष्ठ जे तनयी । से दुहिता बिभा जे भ्रथकु करिबइँ ३५
सुकीर्ति कन्याकु से शतृघनरे देव । सेहि तुम्भ समुन्धि शुण अजोध्या नरेन्द्र ३६
लक्ष्मणकु उर्मिळा जे श्रीरामरे सीता । जतनरे एहा भिआइण अछि धाता ३७
तुम्भ तिनि राणीरु चारि पुत्र जात ।
से बेनि भाइंक ठारु चारि कन्या सम्भूत ३८
शुणि करि दशरथ होइले आनन्द । मुख बिकाशइ जेन्हे पूर्णमीर चान्द ३६
बशिष्ठंक मुख चाहिँ कहन्ति बचन । भो मुनि हे बेग अनुकूळ तुम्भे घेन१८४०
दशरथ जनक दुहिक बाणी शुणि ।बशिष्ठ सत्यानन्द बिचारि जोग पुणि१८४१
ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष एकादशी दिन । चन्द्रबार हस्ती नक्षत्र बिद्यमान ४२
स्वाति नामे जोग जे करण शइतुल्य । एगार घडिरे हेब बरण अनकूळ ४३

सिद्ध वन में जाकर तपस्या की । इससे वह सिद्ध ऋषियो की गिनती में आ गए । २६ छोटे भाई कुशध्वज ने बहुत तपस्या की तथा शूद्र मुनि होकर वह वैशाली पुर में पहुँच गए । १८३० वैशाली का राजा दिनकर था सोमवंश को लेकर वह पराक्रमी स्वर्ग को चला गया । १८३१ जाते समय वह कुशध्वज को राज्य दे गए । इसलिये कुशध्वज उस राज्य के राजा हो गए । ३२ उन कुशध्वज के दो कन्याएँ है । जनक की बात पर वह उन्हे लेकर आए है । ३३ भरत और शत्रुघ्न को देखकर उन्हे तोष होगा । वह दोनो का वरण करके अपने पुर को चले गए । ३४ मालिनी नाम की उसकी ज्येष्ठ पुत्री है । उस पुत्री का विवाह वह भरत से करेगे । ३५ सुकीर्ति कन्या को वह शत्रुघ्न को देंगे । हे अयोध्या नरेश ! सुनिये । वह आपके समधी है । ३६ लक्ष्मण को उर्मिला तथा श्रीराम को सीता का मिलना विधि ने बड़े यत्न से निर्मित कर रक्खा है । ३७ आपकी तीन रानियो से चार पुत्र हुए है और इन दोनो भाइयों के चार कन्याएँ है । ३८ यह सुनकर दशरथ प्रसन्न हो गए । उनका मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान विकसित हो गया । ३६ उन्होने वशिष्ठ के मुख की ओर देखते हुये कहा हे मुनि ! आप शीघ्र ही शुभ मुहूर्त निकाले । १८४० दशरथ और जनक दोनों की बात सुनकर वशिष्ठ और सतानन्द मुहूर्त पर विचार करने लगे । १८४१ उन्होने कहा कि ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को सोमवार का दिन होगा जिसमे हस्ती नक्षत्र विद्यमान रहेगा । ४२ शइतुल्यकरण के स्वाती नामक

से राजार नन्दन जे निमि जात होइ। मिथिला नामरे तार नन्दन उपुजइ १३
मिथिलार नृपति अटे बड़ाइ प्रतापी।आपणार नामरे जे मेदिनीकि स्थापि १४
तेणु करि मिथिला नाम हेला मही। दशरथ आगे एहा सत्यानन्द कहि १५
मिथिलार नन्दन जे उद्यानक राय़े। उदान बसु नामरे ताहर तनय़े १६
नन्दिवर्द्ध नामरे ताहार जे सुत। सुकेत नामरे तार नन्दन हेला जात १७
एहार नन्दन जे करज जात हुए। ताहा ठारे महादेव शिव धनु दिए १८
से राजा महादेव धनुकु पूजा कला।भोग राग भिआइण भण्डारे रखाइला १९
से राजार नन्दन जे ब्रह्मब्रत होइ।आत्मा द्विज बोलि तार नन्दन उपुजइ१८२०
शुबव्र बोलि होइला ताहार तनय़े। मुकेरु बोलिण जे नन्दन उपुजाए१८२१
अळिर्त्तित नाम हेला ताहार तनय़। कृति सेन नामरे ताहार पुत्र हुए २२
धृबसेन नामरे जे ताहार कुमर। भोजमनु नामेण नन्दन अबतार २३
प्रेम नामरे होइला ताहार तनय़। सत्य प्रेम बोलि से नन्दन उपुजाए २४
कृत प्रेम बोलि ताहार तनुज। ताहार तहुँ हेला सिद्ध प्रेम राज २५
बसुरोम नामरे जे ताहार नन्दन। ताहा ठारु तिनि पुत्र हेले उत्पन्न २६
जनक बालमिक कुशध्वज तिनि। राजा होइण सेहु पाळन्ति मेदिनी २७
एहि जनक मिथिलारे कले राजपण। जाग तप करि ब्रह्ममुनि हेले जाण २८

बराबरी न कर सका। १२ उन राजा के निमि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उनसे मिथिला नाम का पुत्र हुआ। १३ मिथिला नृपति बड़ा प्रतापी था। उसने अपने नाम से पृथ्वी की स्थापना की। १४ इससे इस पृथ्वी का नाम मिथिला हुआ। ऐसा दशरथ के समक्ष सतानन्द ने कहा। १५ मिथिला का पुत्र राजा उद्यानक था। उनके पुत्र का नाम उदान वसु हुआ। १६ नन्दिवर्ध नामक उसका पुत्र हुआ उसके सुकेतु नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। १७ इससे करज नाम के पुत्र का जन्म हुआ। शंकर ने उसे अपना धनुप प्रदान किया था। १८ उस राजा ने महादेव के धनुष की पूजा की। भोग राग की व्यवस्था कराकर उसे भण्डार गृह में रखवा दिया। १९ उस राजा का पुत्र ब्रह्मव्रत हुआ जिसके आत्मा द्विज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। १८२० उसके पुत्र का नाम सुव्रत था जिससे मुकेरु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। १८२१ अलिर्तित नाम वाला उसका पुत्र था। उसके कृतिसेन नामक पुत्र हुआ। २२ ध्रुवसेन नाम वाला उसका पुत्र था। उससे भोज मनु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। २३ प्रेम नामक उसका पुत्र हुआ उससे सत्य प्रेम नामक पुत्र का जन्म हुआ। २४ कृतप्रेम नाम वाला उसका पुत्र था। फिर उसके राजा सिद्धप्रेम हुआ। २५ वसुरोम नामक उसका पुत्र था। उसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए। २६ जनक, वाल्मीकि, कुशध्वज यह तीनो राजा होकर पृथ्वी का पालन करने लगे। २७ इन जनक ने मिथिला पर राज्य किया। वह यज्ञ और तपस्या करके ब्रह्मर्षि बन गए। २८ वाल्मीकि ने

एथु अनन्तरे शुण सभाजन आस्थान। जे जाहार पुरकु चळिले सर्वजन ५९
विविध बाजणा मान बाजे बिरतुर। लोक महा गहळ जे शबद बिरतुर१८६०
निज नबरे जनक प्रबेश होइले।सत्यानन्द राइ से कथान्ति बिचारिले१८६१
नग्रकु मण्डनि कराइब उत्सेव। बिभा बिधि बिधान भिआइब सर्व ६२
शुणिण सत्यानन्द कराइले सिद्धि। पुराणरे जेन्हे मंगळर बिधि ६३
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी। जेउँ कथा शुणिले दुरित क्षय़ करि ६४
आनन्द होइण जे कहे दशरथ। कालि देखिबा हेवा चारि बधू सेत ६५
तेबेक मोर मन होइबाक सुस्थ। मो कुळ उद्धरिले जनक तपोबन्त ६६
य़ांक जोगु चारिपुत्र पवित्र मोर हेले। जनक राजांकर जुआँइ बोलाइले ६७
बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण नृपबर। रबि तळरे कीरति रहिला तुम्भर ६८
जेउँ भाग्ये पाइल श्रीरामचन्द्र पुण। तिनि भुवनरु भय़ तोर गला जाण ६९
जनक महा ऋषि संगरे सत्यबादि।ताहार महिमा तिनि भुवने आछादि१८७०
चारि नन्दनकु तोर चारि झिअ देला।
कन्यादान देले ताकु स्वर्ग प्राप्ति परा१८७१
ऋष्यश्रृंग आसि बारु उदय़ तोर हेला।भल जोगे बिभाण्डक नन्दन चरु देला ७२
शुणिण दशरथ कैकय़ा भाइ राइ। बोइले सैन्य बळ घेनिण चळ तुहि ७३

के लोग प्रसन्न हो गये। ५८ हे सभाजन ! सुनिये। इसके पश्चात् सभी लोग सभा मण्डप से अपने-अपने घर चले गये। वीरतूर्य तथा नाना प्रकार के बाजे बज रहे थे। भीड़-भाड़ से बड़ी चहल-पहल थी। ५९-१८६० जनक अपने महल मे प्रविष्ट हुये और उन्होने सतानन्द को बुलाकर विचार-विमर्श किया। १८६१ वह बोले कि आप उत्सव मे नगर को सुसज्जित करवा दीजियेगा और विवाह के सारे विधि विधान की तैयारियाँ कर लीजियेगा। ६२ यह सुनकर सतानन्द ने पुराणो में वर्णित मागलिक विधि-विधान की तैयारी कर ली। ६३ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् वह कथा सुनो, जिसके सुनने से पाप नष्ट हो जाते है। ६४ दशरथ ने प्रसन्न होकर कहा कि कल चारो बधुओ की दिखावनी होगी। ६५ तब हमारा मन सतुष्ट होगा। तपस्वी जनक ने हमारे कुल का उद्धार कर दिया। ६६ इनके कारण से हमारे चारो पुत्र पवित्र हो गये और राजा जनक के जामाता कहलाये। ६७ वशिष्ठ ने कहा हे नृपश्रेष्ठ ! सुनिये। इस सूर्य-मडल के नीचे आपकी कीर्ति फैल गयी है। ६८ जिस भाग्य से श्रीरामचन्द्र को प्राप्त किया था और फिर तीनो लोको से तेरा भय समाप्त हो गया। ६९ मैं सत्य कहता हूँ कि महर्षि जनक के साथ उनकी महिमा तीनो लोकों मे व्याप्त हो गई। १८७० उन्होने आपके चारो पुत्रो को चार कन्यायें प्रदान की। कन्यादान देने से उन्हे स्वर्ग की प्राप्ति हो गई। १८७१ शृगी ऋषि के आने से आपका उत्थान हुआ। विभाण्डक नन्दन ने शुभ योग में चरु प्रदान किया

धनु लग्न प्रबेश श्रीराम हेबे बिभा। से दिबस सिद्ध नाम जे महाप्रभा ४४
श्रीरामचन्द्र राशिकि अटइ सिद्ध तार। तृतीय चन्द्र तार अटइ बळिआर ४५
जानकिर मित्र तार अटइ से दिन। द्वादश चन्द्रकु मात्र देबा शंखदान ४६
दशमचन्द्र एहाकु अटइ महा प्रीति। बर कन्या दुहिंकर देवतांक जाति ४७
दशम चन्द्र जोगरे दोष नाहिँ किछि। सप्त माळारे दिग कहइ ब्रह्मबत्सि ४८
नागनत्त चन्द्र अटे अति बळवान। बिभा बिधि विधान अटइ सेहि दिन ४९
भरथ शतृघनकु एहि शुभ होइ। अळ्ळेशा ककडारे ये जनम बेनिभाइ१८५०
माळिनि कन्यारे जे ज्येष्ठा बिछा पुण। दुहेँ ब्रह्म राक्षस से दिन शुभदिन१८५१
उर्मिळार नक्षत्र रेवती जे मीन। लक्ष्मणर नक्षत्र एहि अटे पुण ५२
बेनि जन देवता अटन्ति स्वजाति। ए रूपे जोग लग्न नमिले नृपति ५३
सुकीर्तिक ककड़ा राशिरे असुर। शतृघन एहार जोगाए भल बर ५४
ए चारि बरंकु जोगाए सेहि दिन। बिचारिण बशिष्ठ कहिले से तिथि दिन ५५
प्रहरक पर्य्यन्ते शुक्रंकर वेळ। मिथुन लग्नरे हेब बरण अनकूळ ५६
कालि तिथि बेनी होइब शुक्रबार। बुधबार परबेश पहरे भितर ५७
मिथुन वेळरे हेब सीतांक देखुणि। सभाजने आनन्द होइले एहा शुणि ५८

योग की ग्यारह घडी में वरण करने का शुभ योग होगा। ४३ धनु लग्न के प्रविष्ट होने पर श्रीराम का विवाह होगा। उस दिन सिद्ध नामक योग महा-प्रभावकारी रहेगा। ४४ श्रीरामचन्द्र जी की राशि के लिये वह दिन शुभ रहेगा। उनके तृतीय स्थान पर चन्द्रमा बलिष्ठ है। ४५ वह दिन जानकी का मित्र है केवल द्वादश चन्द्रमा को शख दान देना पड़ेगा। ४६ इसके लिये दशम चन्द्र महान प्रीतिकारी है। वर-कन्या दोनो की ही देवजाति है। ४७ दशम चन्द्र के योग से कुछ भी दोप नही है। तब ब्रह्म पुत्र ने सप्तमाला से दिशा निर्देश करते हुये कहा। नागमत्त चन्द्र अत्यन्त बलवान है। विवाह का विधि विधान उसी दिन होगा। ४८-४९ भरत और शत्रुघन के लिये यह शुभ होगा। क्योकि अश्लेश कर्क मे दोनो भाइयो का जन्म हुआ है। १८५० जो बडी कन्या मालिनी है, उसका वृश्चिक है। दोनो ब्रह्मराक्षस है। अतः उन्हे वह दिन शुभ होगा। १८५१ उर्मिला का नक्षत्र रेवती और मीन राशि और लक्ष्मण का नक्षत्र भी यही है। ५२ दोनो लोग स्वजाति मे देवता है। हे राजन्! इस प्रकार का योग लग्न नही मिलता। ५३ सुकीर्ति की कर्क राशि के लिये हमारे शत्रुघन इसके लिये अनुकूल वर है। ५४ इन चारो वरो के लिये वही दिन शुभ है। वशिष्ठ ने विचार करके वह तिथि और दिन बता दिया। एक प्रहर पर्यन्त शुक्र का समय है। मिथुन लग्न मे वरण का योग होगा। ५५-५६ कल शुक्र का वार तथा तिथि दोनो होगा। एक प्रहर के भीतर ही बुध के वार का प्रवेश होगा। ५७ मिथुन की वेला में सीता की दिखावनी होगी। यह सुनकर सभा

ज्येष्ठ भगिनकि देखिण नमस्कार कले । सुकल्याण करिण शाएन्ता चळिगले ८८
जनक नबरे हेले परबेश । ऋषि आणिक चरणे नमिले तुरित ८६
बधूमानंकु देखिण साएन्ता हरष । जनकंकु ऋष्यश्रृंग घरणि नमित१८६०
एथु अनन्तरे जे रजनी परबेश । जे जाहा नबरे होइले प्रबेश१८६१
दशरथ नृपति नित्यकर्म सारि । सकळ बिधि बढ़ाइ शज्यारे पहुडि ६२
केते बेळ उत्तरु रजनी प्रभात । शीतळ गुण घेनि बहइ मरुत ६३
शज्या तेजि बहन उठिले नृपबर । एबे बिधि बिधान सारिले ततपर ६४
एसनेक समये जनक दूत आसि । सभाकु बिजेकर बचन प्रकाशि ६५
शुणिण दशरथ राजा देवार्चन सारि । हय पृष्ठे आरोहण कला दण्डधारि ६६
शिरे बीर छत्र तार उड़े फरहर । चतुरंग बळ ता संगरे अपार ६७
अश्वपरु उतुरि सभारे परबेश । जनकंक चरणे नमइ अज शिष्य ६८
बशिष्ठ विश्वामित्र आदि तपिजन । एमानंकु नमस्कार दशरथ राजन ६६
देखिण सुकल्याण करन्ति सर्ब जति । गउरब पाइ तहिँ बसिले नृपति१६००
बशिष्ठ कहन्ति हे जनक तुम्भे शुण । सजकरि जानकिकि बेश करि आण१६०१
बुध बेळ परबेश हेउ अछि आसि ।सज करि घेनि आस सीता शुभ्र केशि २

पहुँचे। ८७ उन्होंने बड़ी बहन को देखकर नमस्कार किया। आशीर्वाद देकर शाता चली गई फिर जनक महल मे प्रविष्ट हुये। उन्होने शीघ्र ही ऋषि पत्नी के चरणों मे नमन किया। ८८-८६ बहुओ को देखकर शाता प्रसन्न हो गई और जनक को श्रृंगी ऋषि की पत्नी ने नमन किया। १८६० इसके पश्चात् रात्रि हो गई। सब अपने-अपने महलो मे जा पहुँचे। राजा दशरथ नित्य कर्म से निवृत होकर समस्त विधियो को सम्पादित करके शैया में लेट गये। १८६१-६२ कितने समय के पश्चात् रात्रि की समाप्ति पर प्रभात आया। शीतल गुण लेकर वायु बहने लगी। ६३ नृपश्रेष्ठ शैया का त्याग करके शीघ्र ही उठ पड़े और विधि-विधान के सम्पादन में तत्पर हो गए। ६४ इसी समय जनक के दूत ने आकर उन्हे सभा मे पधारने के लिये कहा। ६५ यह सुनकर राजा दशरथ ने देव पूजन समाप्त किया और फिर दण्डधारी घोडे की पीठ पर सवार हो गए। ६६ उनके सिर पर वीर छत्र फर-फर उड़ रहा था। उनके साथ अपार चतुरगिनी सेना थी। ६७ वह अश्व से उतर कर सभा मे प्रविष्ट हुए। फिर अज नन्दन दशरथ ने जनक के चरणों में नमन किया। ६८ राजा दशरथ ने तपस्वी वशिष्ठ विश्वामित्र आदि उन सबको नमस्कार किया। ६६ यह देखकर समस्त योगियो ने उन्हे आशीर्वाद दिया। फिर राजा सम्मानित होकर वहाँ बैठ गए। १६०० वशिष्ठ ने कहा, हे जनक ! आप सुनिए तथा शीघ्र ही जानकी को सुसज्जित करके ले आइए। १६०१ बुध बेला आकर प्रविष्ट होने वाली है। अतः सुकेशी सीता को सुसज्जित करके बुलवाइए। २ आज भृगुवार है। उसके प्रथम

कउशिक वन जाए वेग होइ जाअ। विभाण्डक पुत्र वधू वरिण अणाअ ७४
शुणिण कैकय़ा भाइ वेग होइ गला।कउशिक वनरे पाञ्च दिनरे मिळिला ७५
ऋष्यश्रृंगकु जाइण नमस्कार कला। श्रीराम विभाघर जिव जे वोइला ७६
शुणि करि ऋष्य श्रृंग घरणि संगे घेनि। प्रबेश हेले आसि मिथिलारे पुणि ७७
बशिष्ठ कउशिककु देखि ओळगिले। जनक कुशध्वज चरणे स्तुति कले ७८
दशरथ मनेण मान्य धर्म कले। सकळ नृपति उठि चरणे नमिले ७९
श्रीराम लक्ष्मण जे भरथ शतृघन। बारता पाइले जे मातांक पुरेण१८८०
आसिण चारि भाइ नमस्कार कले। सुकल्याण करिण मुनि चळि गले१८८१
सत्यानन्द आसिण गउरव कले। जनक ऋषि पुरे प्रबेश होइले ८२
बेगे जाइ जनक सीतय़ारे कहिले। नण देइ ऋष्यश्रृंग आसिण मिळिले ८३
शुणिण जानकि चारि भग्नि घेनि करि। ऋष्यश्रृंग चरणे ओळगे बेग करि ८४
सुलक्षणी हुअ बोलि वोइले मुनिबर। सेठारु चारि भग्नि चळिले सत्वर ८५
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्वरी।शान्ता ऋषि आणि मातांक पुरे मिळि ८६
सकळ जननीकि कलेक नमस्कार।
तिनि भाइ घेनि श्रीराम मिळिले मातापुर ८७

था। ७२ यह सुनकर दशरथ ने कैकेयी के भाई को बुलाकर उन्हे सेना लेकर चलने के लिए कहा और बोले कि तुम शीघ्र ही कौशिक वन तक जाकर विभाण्डक की पुत्रवधू को आमन्त्रित करके बुलवा लो। ७३-७४ यह सुनकर कैकेयी के भाई शीघ्र ही चल दिये और पॉच दिनो में कौशिक वन मे जा पहुँचे। ७५ उन्होने जाकर श्रृगी ऋषि को नमस्कार किया और श्रीराम के विवाहोत्सव में पधारने के लिये कहा। ७६ यह सुनकर श्रृगी ऋषि पत्नी को साथ लेकर मिथिला मे आ पहुँचे। ७७ वशिष्ठ तथा कौशिक को देखकर उन्होने प्रणाम किया जनक और कुशध्वज के चरणो की स्तुति की। ७८ दशरथ ने मन से आदर सत्कार किया और सभी राजाओ ने उठकर उनके चरणो मे प्रणाम किया। ७९ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन को माताओ के महल मे यह समाचार मिला। १८८० चारो भाइयो ने उन्हे आकर नमस्कार किया और मुनि आशीर्वाद देकर चले गये। १८८१ सतानन्द ने आकर उनका स्वागताभिनदन किया और फिर महर्षि जनक के महल मे प्रविष्ट हुये। ८२ जनक ने शीघ्र ही जाकर सीता से कहा और वह अपने नन्दोई श्रृगी ऋषि से आकर मिली। ८३ यह सुनकर जानकी ने चारो बहनो को लेकर श्रृगी ऋषि के चरणो मे प्रणाम किया। ८४ मुनि श्रेष्ठ ने उन्हे सुलक्षणी होने का आशीर्वाद दिया फिर वहाँ से चारो बहने शीघ्र ही चली गयी। ८५ हे शाकम्वरी ! सुनो। इसके पश्चात् ऋषि पत्नी शाता माताओ के महल मे जा पहुँची। ८६ उसने सभी माताओ को नमस्कार किया। तीनो भाइयो को लेकर श्रीराम माता के महल मे जा

नवग्रह अएँळादि कस्तुरि लगाइ । जानकिर मस्तके लेपिले ताहा नेइ १६
घटि घटि मस्तके तइळ राब लेछि । दिब्य सरु बसन घेनिण ताहा पोछि १७
महा सुगन्ध पुण लेखिलेक नेइ । अष्टांग शरीरे दिब्य सुगन्ध लगाइ १८
तीर्थ जळ घेनिण धोइले पुण केश ।पुणिहिँ पोछिले घेनि दिव्य सरु बास १६
सुगन्ध हळदिरे टभा रस गोळि ।जानकिर श्रीअंगरे लेपिले नेइ बाळि१६२०
सुबासित जळरे धोइले पुणि काये ।बसन घेनिण अंग पोछि द्यन्ति माए१६२१
शुद्ध सुबर्ण जेसने चिक्‌ण भसाणि । तहुँ शते गुणे शोभा जनक दुलणी २२
केशकु शुखाइले बिञ्चणि घेनि बिञ्चि। चाचेर चिकुर केश बिश महा जोडि २३
कृष्ण चामरु अधिक दिशइ जे कळा ।नवीन घन तमाळ लताकि भृंग मेळा २४
मयूर कड़ पराये झट झट दिशि । गुञ्जर मुख मर्कत पुछ परकाशि २५
शिख परिजन्ते तार कयर राब नाहिँ । बसि थिले कुन्तळ लागइ तार भुइँ २६
श्रद्धा करि बसन्ति बेडिण सर्ब नारी । सुबर्णर कंकणि जे घेनिण केश चिरि २७
भितर उदाभाव छाड़ि लाक जहुँ । बिबिध पुष्प छामुरे देलेक जे तहुँ २८
चम्पा बकुळ सेबति कुसुम सम करि । आबरहिँ नागेश्वर मरुआकु भरि २६
गोरचना कुरुबळ रखिण कुरु बेलि । थोकाए बसि मारिले बसन्तर मल्लि१६३०

आँवलादि कस्तूरी लगाकर उसे जानकी के मस्तक पर विलेपित किया । १६ उन्होंने घिस-घिस कर मस्तक पर तैलादि लगाया । फिर दिव्य महीन वस्त्र लेकर उसे पोंछ डाला । १७ फिर उन्होने महा सुगन्ध लेकर लेपन किया तथा शरीर के आठों अगो में दिव्य सुगन्ध लगा दिया । १८ तीर्थ जल लेकर उनके केश धो दिए । फिर दिव्य महीन वस्त्र से उसे पोछ डाला । १६ कन्याओ ने हल्दी सुगन्ध के साथ टभा (फल विशेष) का रस घोलकर जानकी के श्री अगों पर पोत दिया । १६२० फिर सुगन्धित जल से उनका शरीर धो डाला । माताएँ वस्त्र लेकर उनके अग पोछने लगी । १६२१ जैसे शुद्ध सुवर्ण कान्तियुक्त चिकना दिखाई देता है । उससे भी सौ गुनी सुन्दरता जनक नन्दिनी की थी । २२ फिर व्यजन डुलाकर उनके केश सुखाए गये । घने-घने लच्छेदार बाल, काली चामर से भी अधिक काले दिखाई दे रहे थे । वह नवीन घन भ्रमरावेष्ठित तमाल लता की भाँति दिख रहे थे । २३-२४ मोर की कलगी के समान वह छिटके दिखाई दे रहे थे । घुघची के मुख तथा मर्कत पुच्छ से दिखाई दे रहे थे । २५ शिखा पर्यन्त उसके कही स्थान नही था और बैठने से उसके केश पृथ्वी पर लग जाते थे । २६ समस्त स्त्रियाँ उसे घेर कर प्रेम से बैठ गई और सुवर्ण कघी लेकर केश झाड़ने लगी । २७ जब भीतर से आर्द्रता समाप्त हो गई तब उसमें विविध प्रकार के पुष्प लगा दिये । २८ चम्पा बकुल सेवती की समता वाले पुष्प तथा नागेश्वर मरुआ दोना आदि के फूल लगा दिये । २६ गोरोचन कुरुबल पुष्पों के साथ उसके फूलों की लड़ियां और गुच्छे वासन्ती मल्ली फूल के लगा

भृगुवार आजि तार प्रथम चारिदण्ड । उदय होइ भोग कले मारतण्ड ३
एबे तिनि घडि परबेश हेला आसि । सजकरि अणाअ जानकि शुभ्रकेशि ४
शुणिण जनक कुशध्वज मुख चाहिँ । बेग करि जानकींकि घेनि आस जाइ ५
उर्मिला सहितरे तुम्भ झिअ बेनि । सज करि बेग करि आस तुम्भे घेनि ६
जनक मुखरु शुणि कुशध्वज जाइ । मुदु सुलि आगरे भितरकु से कहि ७
तु वेगे जाइ जणाअ नृपतिर राणी ।
जानकि चारि भग्निकि सजकरि दिअ मोते आणि ८
तक्षण मुदु सुलि कहिला बेग जाइ । जानकिकि सज करि दिअसि गोसाइँ ९
नृपतिक आज्ञारे दुआरे कुशध्वज । अनकूळ बेळ हेला बेगे कर सज१९१०
एमन्त शुणिकरि जनक राणीमान । मुदुसुलि बचने हरषित मन१९११

सीतांकर श्रृंगार वर्णन

सुवर्ण पीडा उपरे बसाइले सीता । चारि पारुशरे बेढि छन्ति सर्व माता १२
पवित्र स्वछ जळकु सुबासित करि । ताहा नेइण सुबर्ण गरिआरे भरि १३
शतेक जळघट बसाइले नेइ । जानकि मस्तके दिव्य सुगन्ध लगाइ १४
शरीरे मुळपार नतृप लगान्ति । तिळ अएँळा घेनिण घटकि छडान्ति १५

चार दण्ड में सूर्य उदित होकर उसका उपभोग कर चुके हैं। ३ अब तीन घड़ी आकर प्रविष्ट हो चुकी है। सुकेशी जानकी को सुसज्जित करके बुलवाइये। ४ यह सुनकर जनक ने कुशध्वज के मुख की ओर देखकर शीघ्र ही जाकर जानकी को ले आने को कहा। ५ उर्मिला के सहित अपनी दोनों पुत्रियों को भी शीघ्र ही सुसज्जित करके ले आओ। ६ जनक के मुख से यह सुनकर कुशध्वज ने अन्त.पुर मे जाकर वेशकारिणी से कहा। ७ तुम शीघ्र ही जाकर राजरानी से निवेदित करो और जानकी आदि चारो बहनो को सजाकर ले आकर मुझे दो। ८ मृदुशूलीने उसी समय जाकर कहा, हेस्वामिनी ! जानकी को तैयार कर दे। ९ राजा की आज्ञा से कुशध्वज द्वार पर है। शुभ लग्न का समय हो गया है। उन्हे शीघ्र ही तैयार कर दीजिए। १९१० मृदुशूली के ऐसे वचनो को सुनकर जनक की रानियो के मन प्रसन्न हो गए। १९११

सीता का श्रृंगार-वर्णन

उन्होंने सुवर्ण पीठिका पर सीता को बिठाया। सभी माताएँ चारो ओर से उसे घेरे थी। १२ पवित्र स्वच्छ जल को सुवासित करके उसे लेकर स्वर्ण घट मे भर दिया। १३ वहाँ पर एक सौ एक जल कुम्भ लेकर रख दिये। फिर जानकी के मस्तक पर दिव्य सुगन्ध लगा दिया। १४ वह शरीर मे उपटन लगाने लगी और तिल आंवला लगाकर शरीर से छुड़ाने लगी। १५ नवग्रह

निळमय़ करे पुण कुन्दनर फुल । श्रवण भाग मध्यरे दिशिला अमूल्य ४६
पुण तिथि शिखरे जे खञ्चिले बेण्टुला ।शरु मोति झुम्पि तार तहिँ कि घटिला ४७
माळि शाळि अंबतंश खञ्जिले पुण नेई ।
उपमा देबाकु आउ ब्रह्माण्डे न दिशइ ४८
झळिमिळि चन्द्र झुम्पा माळि पुण देले । कस्तुरि सिन्दूर एकत्र गोळि चित्रकले ४९
तिळफुळ सुन्दर नाशा शोभा बन । पञ्च गज मोति तहिँ कलेक मण्डन१९५०
नाशा आउ पटे शोभा मरकत गुणा । जळि उठुअछि हेम सुना नाक चणा१९५१
कर्त्तीक पुञ्जाकु शोभा दिशइ ताहार । उपमा देबाकु न दिशइ बेनि पुर ५२
कड देशे खञ्जिले सपत सरि मोति । मध्ये माणिक नाय़क अगुणर ज्योति ५३
पुणित थिलेरे जाउँळि सुना सुता ।मध्य देशे गोटि गोटि गुन्थिछि मुकुता ५४
पूर्ण चन्द्ररु अधिक उज्जल ताहार । तहिँर तळे देले निळमणि हार ५५
चारि जाति रत्ने चउसर माला देले । तथि तळरे मर्कत पदक खञ्जिले ५६
पुण सुबर्ण गण्ठि प्रबाळ माळ देइ । एक गोटि मुकुता माळाकु लम्बाइ ५७
पुणि मण्डिले नेइ कनक पद्ममाळ । महा शोभा दिशिला सुन्दर बक्षस्थळ ५८

कहने मे कुछ वैसी ही उपमा लग रही थी । ४४ कही पर पद्मराग, कही केशर की बूँदे पड़ी थी लगता था जैसे चन्द्रातप मे कमल खिल गया हो । ४५ कुन्दन का फूल नीलिमा बिखेर रहा था। वह श्रवण के मध्य भाग में अमूल्य दिख रहा था । ४६ फिर उसके ऊपर छोटे-छोटे मोतियो से युक्त आभूषण विशेष पहना दिये । ४७ फिर छोटे-छोटे थोड़े माले लेकर लगा दिये जिनको उपमा देने के लिए ब्राह्माड में कुछ भी नही दिखाई देता । ४८ फिर झिलमिलाते हुए माला युक्त चन्द्र झूमर पहना दिए और कस्तूरी तथा सिन्दूर को एक साथ मिलाकर चित्रकारी कर दी । ४९ नाक तिल के फूल के समान सुन्दर थी उसमें पाच गज-मुक्ता सजा दिए । १९५० नासिका की दूसरी ओर मरकत की कील सुशोभित थी । वह नाक की स्वर्णिम लौग दमदमा रही थी । १९५१ कार्तिक चन्द्रिका के समान उसकी शोभा थी । दोनो लोकों मे उसकी सुन्दरता की उपमा की समानता नही दिखती थी । ५२ चूड़ प्रदेश में सात लरो वाली मोतियो की माला पहना दी गई । मध्य भाग मे माणिक्य की ज्योति आगे से दिखाई देती थी । ५३ फिर उस पर दो सोने की जंजीरे थी जिसके मध्य भाग में एक-एक मुक्ता गूँथे गए थे । ५४ वह पूर्णिमा के चन्द्र से भी अधिक उज्जवल थे । उसके नीचे नीलमणि का हार पहना दिया गया था । ५५ फिर चार ज्योति रत्नों की चार लड़ी वाली माला पहनाई और उसके नीचे मरकत का पदक लगाया गया । ५६ फिर सोने की मटर माला और प्रबाल की माला डाल दी और एक मुक्ता की माला भी पहना दी । ५७ फिर स्वर्ण कमल की माला लेकर पहना दी । उनका वक्षस्थल अत्यन्त शोभा से युक्त दिखने लगा । ५८ हीरो से जड़ित स्वर्ण पद्म वाले कान

कुसुमकु घेनिले से समभाग करि । उपरे रञ्जिले नेइ कर्पूर कस्तुरी१६३१
जानकिर मस्तके निरोळि ताहा आसि । तारागणे गगने कि एक मेळे आसि ३२
खोसाकु खोसिले से अति जतन करि । गभा केतकि वळ जे उपरकु डेरी ३३
पछकु एहा नेइण बसिलेक जहुँ । सुन्दर मुख अति सुन्दर दिशे तहुँ ३४
बेल बळिला पराय़ दिशइ बळिण । स्वय़ं ए बिश्वकर्मा कि करिछि घटण ३५
किबा चित्रकार ताहा चित्ररे लिहिला ।खोसिबार खोसामणि सुन्दर दिशिला ३६
खोसानाभि भ्रमर छन्दरेण वुले । तहिँरे खोसिले नेइ कनक पद्म फुले ३७
दिव्य बसन कुञ्चिण देलाक सिखारि । दिव्यरंग वान्धि जे पतनि सबु साडि ३८
तारामण्डळ जिणि कुसुम पन्ति पन्ति । वसन अञ्चळरे खोसिले गजमोति ३९
से बसनकु बाछिण पिन्धाइले नेइ । रत्न पीठ परु देबि अइले ओह्लाइ१६४०
पाट खरड़ उपरे पद्मासने वसि ।आभरण मानघेनि जननी माने आसि१६४१
वेनि कर्ण खञ्जिले मुकुतार काप । हरमय़क दिशइ मुकुतार धाप ४२
तथि चारि पारुसरे शोहे हिरार नाय़क । मुकुता बेढ़ पाखरे बसिछि माणिक्य ४३
कळा मेघे बिजुळि जेसने झकमक । तेशनेक उपमाकि अवां कहिबाक ४४
काहिँरे पद्मराग काहिँरे कुरुविन्द । चन्द्र ताप घटण फुटिला थरबिन्द ४५

दिये । १६३० उन्होने फूलों को सम भाग लेकर उसके ऊपर कस्तूरी तथा कर्पूर लगा दिया । १६३१ उसे लाकर जानकी के मस्तक पर लगा दिया । लगता था जैसे आकाश में तारागण एकत्रित हो गए हो । ३२ उन्होने अत्यन्त यत्न-पूर्वक जूडे को खोस दिया और उसके ऊपर केतकी का गुच्छा लगा दिया । ३३ वह जब इसे पीछे लेकर बैठी तब सुन्दर मुख और भी सुन्दर दिखने लगा । ३४ दिन निकलने के समान वह सुन्दर दिख रहा था । क्या विश्वकर्मा ने स्वय इसकी रचना की है । ३५ अथवा चित्रकार ने उसे चित्र मे उतार दिया । खोसने से श्रेष्ठ जूड़ा सुन्दर दिखाई देने लगा । ३६ जूडे की नाभि मे भ्रम से भ्रमर घूम रहे थे अथवा जूडे को मूल से घुमा-घुमाकर वॉध दिया गया था वहॉ पर स्वर्ण कमल के फूल लेकर लगा दिये गये थे । दिव्य वस्त्र की कचुकी ओढ़नी तथा दिव्य रंग की साड़ी पहना दी गई । ३७-३८ वस्त्र के अचल मे गजमुक्ता खोस दिये गये थे और नक्षत्र मण्डल को जीतने वाले सुमन पक्ति की पंक्ति मे लगा दिये गये थे । ३९ वह वस्त्र छॉटकर उन्हे पहनाये गये थे फिर देवी सीता रत्न-पीठिका से उतर पड़ी । १६४० फिर वह रेशमी गलीचे पर पद्मासन मे बैठ गयी और माताये अलंकार लेकर आ गयी । १६४१ दोनो कानो मे मुक्ता जड़ित आभूपण पहना दिए । स्वर्णमय मुक्ता चमकते दिखाई दे रहे थे । ४२ उसके चारो ओर हीरो का जड़ाव शोभा पा रहा था और मुक्ता की पक्ति के पास माणिक्य जड़े हुये थे । ४३ जैसे काले मेघो में बिजली कौध जाती है ।

सरु कज्जळरे देख व्यापि गला आखि। स्वामीरे सउभागी होइब शशिमुखि ७३
चन्दनर अर्द्ध चन्द्र कपोळे दिअन्ति।अर्द्ध करि पुणि से कस्तुरि चिताग्रन्ति ७४
सिन्दुर बिन्दु तहिँर मध्ये पुण सहे। चन्द्र कोळे जेसने अरुण शोभा पाए ७५
अळता रंग घेनि चरणे चित्र कले। कर्पुर कस्तुरि अंगे मिशाइ घषिले ७६
अळकाकु मण्डिले से केरि केरि करि। मदन कमळ गोटि भ्रमर आबोरि ७७
बिचित्र पाटेक उपराण करि देले। श्रीफळ गोटिए जे हस्तरे समर्पिले ७८
एहि रूपे चारि भग्नी बेश करि दासी। देखि करि माता माने मने हेले तोषि ७९
कुशध्वजकु कहिले दासीमाने जाइ। अणाअ रत्न हान्दोला जाआन्तु जेमा दुइ१९८०
शुणिकरि कुशध्वज हान्दोळा बेगे आणि।
बिजे कले चारि भग्नि हान्दोळरे पुणि१९८१
हुळहुळि शबदरे शुभिला कोळाहळ। शंख महुरी काहाळि बाजइ निरन्तर ८२
बीर राजा दुन्दुभि ढोल दमा बाजे।कम्पिला मिथिलार पुर भुमि खण्डि जे ८३
दाण्डरे चळन्ति जे नर नारी देखि। हरि बोल रामताळि हुळहुळि द्यन्ति ८४
सभा तळरे नेइ हान्दोळा रुहाइले।चारि भग्नि घेनि दासी सभारे उठिले ८५
रत्न जगतिपरे नेइण बसाइले। जनक कुशध्वज बिजय़ पाशरे ८६

लगा क्या राजा कामदेव ने धनुष बाण उठा लिया है। ७२ देखो पतला काजल आँखों में व्याप्त हो गया। यह चन्द्रमुखी स्वामी से सौभाग्यशालिनी होगी। ७३ गालो पर चन्दन का अर्द्धचन्द्र बनाकर फिर आधे में कस्तूरी का तिलक लगाया गया। ७४ और उसके बीच-बीच मे सिन्दूर बिन्दु रख दिये। लगता था जैसे चन्द्रमा की गोद में अरुण शोभायमान हो। ७५ फिर आलता लेकर चरणों में लगा दिया और कर्पूर तथा कस्तूरी को मिलाकर शरीर पर घिस दिया। ७६ बालों की लटे बना करके उन्हे गूँथ दिया। मानों एक मदन कमल को भवँरों ने घेर रखा हो। ७७ एक विचित्र रेशमी ओढ़नी-ओढ़ाकर उनके हाथों में एक श्रीफल दिया। ७८ दासियो ने इसी प्रकार से चारों बहनों का श्रृंगार कर दिया यह देखकर माताओ के मन संतुष्ट हो गये। ७९ फिर दासियो ने जाकर कुशध्वज से कहा कि रत्न की शिविकाएँ मँगाइए जिनसे दोनो कन्याये जा सके। १९८० यह सुनकर कुशध्वज शीघ्र ही शिविका ले आये। चारो बहने शिविका पर विराजमान हो गई। १९८१ मागलिक शब्दो का कोलाहल सुनायी देने लगा। शंख, महुरी, तुरही निरन्तर बज रहे थे। ८२ वीरवाद्य, दुदभी, ढोल तथा नगाड़े बज रहे थे और मिथिलापुर का भूमिखण्ड कम्पित हो रहा था। ८३ जो नर-नारी मार्ग में चल रहे थे। वह लोग देखकर हरिबोल तथा मागलिक शब्द के साथ ताली बजाकर रामधुन करने लगे। ८४ शिविका सभा मण्डप पर रोक दी गयी। चारों बहनो को लेकर दासियाँ सभा में बढ़ी। ८५ उन्हे ले जाकर रत्नमयी जगती पर

हिरामय़ पद्मकाप कर्णेण भुषण। शरद आदित्य पराए ताहार किरण ५९
तार तळे अमूल्य सुन्दर बिदमाळि। पाट सुत्रे गुन्थिण वान्धिले तेइ वाळि१९६०
मर्कत ककण जे सुबर्ण सिकुळी। रतन चुडि तेज बिजुळि जिणि टळि१९६१
अंगुष्ठि मानंकरे मुद्रिका आभरण। काहिँरे वंशधर काहिँरे मत्स चिह्न ६२
कटिरे कटि मेखला खञ्जिले जत्न करि।

बसिलाक तार हार आण्ठुकु आबोरि ६३
किंकिणिरे लाज शोभा गजमोति झरा।निळमणि माणिक्य दिशइ अति तोरा ६४
बेनि चरणे नुपुर रत्नमय़ कम। पाद चापन्तेण से शुभइ झम झम ६५
चरण अंगुळिरे मुद्रिका झटकन्ति। विविध मणिमाने तहिँरे लागि छन्ति ६६
आवरहिँ नाना जाति अळंकार लाइ। मातांक मध्ये बिजे शरद चन्द्र मुहिँ ६७
शिरे सीमन्तिनि जे खञ्जिले मोति माळि।

पुणि मणि खञ्जिले जे ललाट मुकुळि ६८
ताम्बुळ भुञ्जाइले रञ्जिले कज्जळ। नय़न बेनि निन्दइ निळ उत्पळ ६९
कज्जळ कुळंकु रञ्जिबारु दिशिला सुन्दर। कुसुम आबोरि कि बसिला भ्रमर१९७०
अञ्जनकु रंञ्जिले जे अति सरु करि। नय़नरे लागन्ते से होइला बिस्तारि१९७१
देखि करि बिचार करन्ति नारीगण। मदन राजन कि धइला धनुर्बाण ७२

के आभूषण की किरण शरद ऋतु के सूर्य के समान थी। ५९ उसके नीचे अमूल्य कण्ठा लेकर स्त्रियो ने रेशमी धागे मे गूंथकर बाँध दिया। १९६० मरकत के ककण, सोने की जंजीर और रत्न की चूड़ियो का तेज विद्युत को जीतने वाला था। १९६१ उँगलियो के आभूषण मुद्रिकाएँ थी। कही किसी का नाम, कही मछली का चिन्ह था। ६२ कमर मे तागडी यत्नपूर्वक पहना दी। बैठते समय उसका हार घुटनो तक आ आता था। ६३ बजने वाली किंकिणी की शोभा, गजमुक्ताओ की झिलमिलाहट और नीलमणि एवम् माणिक्य की शोभा अत्यन्त श्रेष्ठ दिखाई दे रही थी। ६४ दोनो चरणो में रत्नमय नूपुर थे जो पाद सचालन से रुनझुन करते सुनाई देते थे। ६५ चरण की उँगलियो मे बिछुए चमक रहे थे जिनमे नाना प्रकार की मणियाँ लगी थी और भी अनेक प्रकार के अलंकार आभूषणो से अलंकृत होकर शरद चन्द्र मुखी सीता माताओ के मध्य में विराजमान थी। ६६-६७ सिर पर मोती माल का बेदा और मस्तक पर अनेक प्रकार की मणि सुसज्जित थी। ६८ उन्हे पान खिलाकर काजल लगाया, उनके दोनो नेत्र नील कमल की निन्दा करने वाले थे। ६९ काजल की कोर लग जाने से सुन्दर दिखाई देने लगा। लगता था मानो भ्रमर फूल को आवेष्ठित करके बैठ गया हो। १९७० उन्होने बहुत पतला-पतला अजन लगाया। जो नयनों मे लगने से फैल गया। १९७१ यह देखकर नारियो का समुदाय विचार करने

के बोलइ तुम्भे माने होइल कि बाई । जे उपमा मान देल मनकु न आसइ२००१
ए मानंकु श्रांक संगे नकर तुळना । मरकत संगे कर काचकु घटना २
साक्षातरे लक्ष्मी एहु जगत जन माता । श्रीराम चन्द्र नारायण जगत करता ३
ताहार रमणी एहु सम के नुहन्ति । ए साधबी रमणी जुबती रत्न कान्ति ४
के बोलइ आम्भे माने एहु बेनि चक्षु । घेनि अनेक जुबती मानंकु देखिछु ५
जानकीर कोटिए रूपरु एक गुण । समान केहु नारी होइब कह पुण ६
के बोलइ शरीर सुद्ध सुबर्ण पराए । कुंकुम लेपनरे अधिक शोभा पाए ७
छणपट कुसुमर पराए बिराजि । कोमळरे शिरिष कुसुम हेब गञ्चि ८
चम्पा शम्पा केतेकिरु दिशइ उगुळि । सुबर्ण केउँ गुणे थापिब एहा टाळि ९
के बोलइ जाणि नाहिँ एहि कथामान । सीता रूपकु अहंकार करिण सुबर्ण२०१०
एथि रहि नपारि पशिला बनस्ते । लज्यारे लुचिला जाइ हेम परबते२०११
जम्बुनद भितरे गुपत होइ रहि । तेणु करि देबे अंगे जे आभरण होइ १२
आपणार मर्ज्यादा जे रखिला आपण । धन्य धन्य सुबर्ण तोहर बड़ पण १३
जजाति बंशरे होइले अवतार । गर्ब मने करि से छाड़िले बन घर १४
तोहर तिआरि बार बचन नकले । चञ्चळ जळ शंखरे बहि से अइले १५

तीनो लोको की सुन्दरियों के मध्य से बाहर हुई है, निकली है। २००० कोई बोला क्या आप लोग पागल हो गए है। जो भी उपमाये आपने दी वह मन में नही जम रही। २००१ इन सबकी तुलना इनके साथ मत करो। मरकत के साथ कॉच को जोड़ रहे हो। २ यह जगत् की जननी साक्षात् लक्ष्मी है तथा श्रीराम चन्द्र जगत् के कर्ता भगवान नारायण है। ३ उनकी पत्नी के समान यह कोई भी नही हो सकती। यह साध्वी सुन्दरी युवतियों में कान्तिमयी मणि के समान श्रेष्ठ है। ४ कोई कहने लगा कि हमने इन दोनो नेत्रो से अनेकानेक युवतियों को देखा हे। ५ परन्तु जानकी के कटि भाग, सुन्दरता के एक भाग की भी क्या कोई नारी समता कर सकती है। ६ कोई कहने लगा कि इनका शरीर शुद्ध स्वर्ण के समान है और कुमकुम के विलेपन से और अधिक शोभा पा रहा है। ७ शरीर पटसन के फूल के समान है। कोमलता मे सिरीष सुमन भी कम होगा। ८ शम्पा चम्पा तथा केतकी भी (उसके आगे) मलिन दिखाई देती है। फिर सुवर्ण किस गुण के कारण इसके समक्ष टिकेगा। ९ कोई बोला क्या यह बात मालूम नही है कि स्वर्ण ने सीता के रूप का अभिमान किया था। फिर वह यहाँ टिक नही सका और वन प्रान्त में घुसकर लाज के कारण हेम पर्वत पर छिप गया। २०१०-२०११ वह जम्बूनद के भीतर गुप्त होकर रह गया। इस कारण से देवाग का आभरण बनकर उसने अपनी मर्यादा स्वय रक्खो। हे सुवर्ण तुम्हारे बड़प्पन के लिये तुम धन्य हो। १२-१३ ययाति के वश मे अवतरित होने पर मन में गर्व होने के कारण उसने वन का घर छोड़ दिया। १४ वरुण के मना

वृत्त पाशे दासीगण बेढ़ि रहि छन्ति। क्षण क्षण करे पुण हुळहुळि ध्वन्ति ८७
देखि करि चमत्कार लागिला सबुन्ति।

पूर्ण चन्द्र शशि कि पडिला आसि एथि ८८
के बोलइ धन्य धन्य नारी शिरोमणि। के बोलइ ए सुन्दरी समस्त रूप क्षणि ८९
के बोलइ विधाता जगति चिन्ता छाडि। अनेक जतनरे वसिअछि गढ़ि१९९०
के बोले जे जगते सुन्दर पण थिला। भाळि भाळि धाता एहा एक ठाव कला१९९१
के बोलइ अटइ सकळ गुण निधि। धाता निर्मा करि अछि ए सकळ सिद्धि ९२
के बोलइ अटइ ए केवण देबता। अति जतने मर्त्यपुरे आणिछि बिधाता ९३
के बोलइ अटइ ए स्वयं कमळिनी। के बोलइ पार्वती ए ईश्वर घरणी ९४
के बोलइ रोहिणी चन्द्रर प्रियवती। के बोलइ तार एहु देवगुरु प्रीति ९५
के बोलइ गंगा ए वरुण घरणी। के बोलइ जमुना ए जमर भउणी ९६
के बोलइ ए साबित्री ब्रह्मार वनिता। के बोलइ अरुन्धती विधाता दोहिता ९७
के बोलइ सत एहि इन्द्र मनोहारी। के बोलइ एमाने कि अटन्ति एहा सरि ९८
के बोलइ अटन्ति ए अष्ट अपसरि। बिधाता सर्जना कला एक देह करि ९९
के बोलइ एहाकु केहि नुहें पटान्तर। ए तिनि पुर सुन्दरी मध्यरु बाहार२०००

बैठा दिया। पास ही जनक तथा कुशध्वज बैठे थे। ८६ वृत्त के निकट दासियाँ घेरकर बैठी थी और प्रतिक्षण मागलिक शब्द का उच्चारण कर रही थी। ८७ यह देखकर सभी चमत्कृत हो रहे थे। लगता था जैसे पूर्णमासी का चन्द्र यहाँ आकर गिर पड़ा हो। ८८ कोई कह रहा था कि यह नारी शिरोमणि धन्य है। कोई बोला कि यह रूपवती सकल सौन्दर्य की खान है। ८९ कोई कहने लगी कि विधाता ने ससार की चिन्ता छोड़कर अनेक यत्न से इसे बैठाकर गढा है। १९९० किसी ने कहा कि ससार मे जितना भी सौन्दर्य था उसे विधाता ने सोच-सोचकर एकत्रित कर दिया है। १९९१ कोई कहती थी कि यह समस्त गुणो की निधि है। इसमे विधाता ने सब कुछ भर दिया है। ९२ कोई बोला कि यह कोई देवी है जिसे विधाता बड़े यत्न से मृत्यु लोक मे ले आया है। ९३ कोई कहता था कि यह स्वय लक्ष्मी, है कोई कहता था यह महादेव जी की पत्नी देवी पार्वती है। ९४ कोई बोला कि यह चन्द्रमा की प्रिया रोहिणी है। कोई कहने लगा कि यह उसके गुरुदेव की पत्नी है। ९५ कोई कहता कि यह वरुण की पत्नी गंगा है और किसी ने कहा कि यह यमराज की बहन यमुना हैं। ९६ कोई बोला कि यह ब्रह्मा की पत्नी देवी सावित्री है और किसी ने कहा कि यह विधाता की वहू अरुन्धती है। ९७ किसी ने कहा कि यह इन्द्र के मन को हरण करनेवाली शची हैं और किसी ने कहा कि क्या यह सब इसकी समानता मे आते है ?। ९८ किसी ने कहा कि जो आठ अप्सराएँ है उन्हे मिलाकर विधाता ने एक शरीर का निर्माण कर दिया है। ९९ कोई कहने लगा कि इनकी तुलना का अन्य कोई है ही नही। यह

बहन कला तहुँ अंगार जाळि देइ। आबर बहुत रूपे कष्टमान देइ२०३१
तेणु शुद्ध शुबर्ण होइला नार खार। षाठिए बाननी सुना बिक्रय़ पण बार ३२
मन्द रुपुलि से जाति बिनाश कले। सात कुम्भ बोलि जाहा नकरि अइले ३३
जानकि रूपकु से कलाक अहन्ता।बिचारिण दण्ड ताकु बिहिला बिधाता ३४
से शुद्ध सुबर्ण अति जाणिबा पण कला। देबता मानंक अंगे आभरण हेला ३५
के बोले पबन शोभा शरद चन्द्र ज्योति। न जाणि गगने उदे हेले निशा पति ३६
देखि तांकु धिक्कार करन्ति सर्ब जन। जानकीर मुख शोभा न देखु नय़न ३७
ताकु चाहिँ मुर्खतु लज्जा न पाइलु। केउँ बिचाररे गगने उदय़ होइलु ३८
ए कथा तोहर जोगाइला नाहिँ शशि। चिर होइ पूर्ण रूपे उदय़ मुहसि ३९
से चन्द्र महातमा अटइ साधुजन। न जाणि उदय़ होइ थिला से गगन२०४०
जानकीर मुखचन्द्र देखिलाक जहुँ। बहन होइ पळाइ न रहिला तहुँ२०४१
बिचार करइ केउँ काज्यें उदे हेबि। ए महि मण्डळे उपहासकु पाइबि ४२
जानकीर श्रीमुखत भुवनकु मण्डे।महा घोर अन्धकार किञ्चितरे खण्डे ४३
मोर उदे देबाफळ बिफळ होइला। एमन्त बिचारि तहुँ लाजे पळाइला ४४
जोगे पथे जान्ते से देखिला देबहर।किछिहिँ न कहि मउने उभा निशाकर ४५

जब उसने अंगार जलाकर उसे दग्ध किया और अन्य प्रकार से भी उसे बहुत कष्ट दिये, तब शुद्ध सुवर्ण नष्ट-भ्रष्ट हो गया साठ भरी सोना विक्रय योग्य हो गया।२०३१-३२ मन्द रूप से उसने उसकी जाति को नष्ट कर दिया। तब वह सात प्रकार से (नष्ट होकर) निकल आया। ३३ उसने जानकी के रूप से ईर्ष्या की थी। यह सोचकर ब्रह्मा ने उसे दण्ड दिया। ३४ उस शुद्ध स्वर्ण ने बहुत कुछ जानने का अभिमान किया। वह स्वयं देवताओं के शरीर का आभूषण बना। ३५ कोई कह रहा था कि मुख की कांति का सौदर्य शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान है। इससे अनभिज्ञ होकर निशापति चन्द्रदेव आकाश में उदय हुये। ३६ सब लोग उसे देखकर धिक्कार करने लगे और कहने लगे क्या तुमने अपने नेत्रो से जानकी के मुख की शोभा नही देखी है। ३७ अरे मूर्ख ! तू उसे देखकर लज्जित नही हुआ। किस विचार से तू आकाश में उदित हुआ। ३८ अरे चन्द्र ! तेरे योग्य यह बात नही हुई। पुराने होकर पूर्ण रूप से उदय मत हो। ३९ वह चन्द्र महात्मा साधु पुरुष है। वह अनजान में आकाश में उदय हो गया था। २०४० उसने जानकी के मुख चन्द्र को देखा तव शीघ्र ही वहा न रुककर भाग गया। २०४१ वह विचार करने लगा कि अव हम किसलिये उदय हो। इस भूमण्डल पर उपहास ही प्राप्त करेंगे। ४२ जानकी का श्रीमुख इस लोक को सुशोभित करता है और महान घोर अन्धकार को सहज ही नष्ट कर देता है। ४३ मेरे उदय होने का फल व्यर्थ हो गया। ऐसा विचार करके वह लज्जित होकर वहां से भाग गया। ४४ संयोग से उसने मार्ग में जाते हुए

ग्राम पाशे प्रबेश होइले जहुँ आसि । कोपे शरकु पितामह देले पेशि १६
जानकीर रूपकु अहन्ता मने करि । निजस्थान छाडिण अइला हेम झरि १७
एबे जाइ तुम्भे ताकु धरि घेनि आस । जेमन्ते नाश हेव तेमन्त करि नाश १८
एहा शुणि धोअरए बेग होइ गले । नदी मध्ये पशिण से सुबर्ण खोजिले १९
खोजि खोजि ताहाकु धइले जत्न करि । बिधाता कहिबा बचन मने धरि२०२०
नग्ररे प्रवेश हुवन्ते देखिले सुनारी । सुना नाशक अस्त्रकु करे अछि धरि२०२१
ताहार आगरे जाइ कहिले सम्पादि । बोलन्ति तोहर आमे धरिअछु बादि २२
कि बधाइ देबु ताहा कहसि तुरित । तेबे सिना शत्रु सर्मपिबु तो पुरेत २३
शुणि करि सुनारी कहइ देबा फेडि । केते मान शत्रु ताकु देखिबा निबाडि २४
आय़ अनुरूप करि देबाना बधाइ । एड़े बड़ शत्रु जेबे देबु तु शघाइ २५
शुणिण धोअर माने होइले तोषमन । सुनारी करे नेइ सर्मपि सुबर्ण २६
करे धरि सुनारी ताकु तुळकस कला । अनळरे पोडि ताकु बिकोति काटिला २७
आणिला लोक मानकु अनरूप करि । बिबिध पदार्थ मान देलाक सुनारी २८
से सुद्ध सुबर्ण संगे मिशाइला कंसा । बेदान्त ब्राह्मण जेन्हे शुण्डि घरे बसा २९
तम्बा मिशाइण ताकु पुण जाळि देला । सुरा पाने जेमन्ते बिप्र नाश गला२०३०

करने पर भी जब नही सुना तब वह चंचल जल के साथ वहकर आ गया । १५ जब वह ग्राम के निकट आकर प्रविष्ट हुआ, तव पितामह ने क्रोध मे वाण छोड़ दिया । १६ मन मे जानकी के रूप से ईर्ष्या करके अपने स्थान का त्याग करके हेम झर के आ गया है । १७ अभी तुम जाकर उसे पकड़कर ले आओ । वह जैसे भी नष्ट हो उसे वैसे ही नाश करो । १८ यह सुनकर रक्षक शीघ्र ही गए तथा नदी मे घुसकर सुवर्ण को खोजने लगे । १९ उन्होने बड़े यत्न से उसे विधाता के कथनानुसार खोज लिया । २०२० नगर में प्रविष्ट होते ही उन्होंने स्वर्ण को नाश करनेवाले अस्त्र को धारण किये हुए सुनार को देखा । २०२१ उन्होने जाकर उसके समक्ष कहा कि हमने अपराधी को पकड़ लिया है । २२ तुम शीघ्र बोलो क्या बधाई दोगे ? तभी शत्रु को आपके घर मे आपके हवाले कर दे । २३ यह सुनकर सुनार ने कहा कि इन्हे खोलो । हम सम्हाल कर देखे कि शत्रु कितने है । २४ आय के अनुरूप आपको पुरस्कार देंगे । जव तुम इतने बड़े शत्रु को पराजित करवा रहे हो । २५ यह सुनकर रक्षक दल सन्तुष्ट हो गए । उन्होने सुनार के हाथो में स्वर्ण सर्मपित कर दिया । २६ सुनार ने हाथ मे लेकर उसका कर्षण किया फिर आग मे जलाकर उसे विकृत करके काट डाला । २७ लानेवाले लोगो को सुनार ने हिसाव से विविध पदार्थ प्रदान किए । २८ जैसे वेदान्ती ब्राह्मण श्वपच के घर में अपना निवास बना ले उसी प्रकार से उसने शुद्ध सुवर्ण के साथ काँसा मिला दिया । २९ फिर उसने ताँबा मिलाकर उसे पुनः जला दिया । जैसे सुरापान करने से ब्राह्मण नष्ट हो जाता है । २०३०

तेणु करि कळंक होइला शशधर। एमन्त बोलिण जने करन्ति बिचार२०६०
केवल नयन बेनि निळोत्पळ जिणि। कुरंगी ठारु बड़ होइब एणु पुणि२०६१
बिस्तारि नयन चळइ कर्ण जाए। अञ्जन रञ्जनरे अधिक शोभा पाए ६२
फुटिला कमळिकि भ्रमर अशकत।नेत्र सुन्दर मुखि साक्षी मात्र सर्व चित्त ६३
नाशा देखि बोले केहु ए तिळ कुसुम। के बोले से केउँ गुणे हेब एहासम ६४
के बोलइ श्रबण मदन देब पाशि। जगत जनकु एथि बान्धइ आकर्षि ६५
के बोलइ अधर बन्धुक फुल ज्योति। पक्व बिम्ब जबा कुसुमादि नरपन्ति ६६
ड़ाळिम्ब बीज कुन्द हिरक क्षुद्र मोति। सिन्दूर छन जाणि दिशइ दन्तपन्ति ६७
के बोलइ भ्रूलता मदन शरासन। तहिँकि नाराच परा सुन्दर नयन ६८
ताहा पुराइण बिन्धिब जेबे टाणि। कामि जन हृदयकु पकाइब हाणि ६९
ए सहस्र महादेबकु मनमथ कला। हर कोपानळरे से दहन होइला२०७०
मदनर रोदे भाजिला हर ताप। बिरहरे चळिले से उमांक समिप२०७१
जेबण ठावरे काम होइला भस्मराशि। कामदेव रमणी देखिला ताहा आसि ७२
धनुशर घेनि तहु बाहुडिला बाळी।काहिँ रखिबि बोलि पञ्चमने भाळि ७३

इसलिए चन्द्रमा कलंकी हो गया। इस प्रकार कहकर लोग विचार कर रहे थे। २०६० इनके (सीता के) केवल दोनो नेत्र ही नीलोत्पल (नील कमल) को जीतने वाले है और मृगी से भी बड़े होगे। २०६१ नेत्र विस्तृत होकर कर्ण पर्यन्त चले गए है तथा अजन से रजित होने पर और अधिक शोभायमान लगते है। ६२ कमल के प्रस्फुटित हो जाने पर क्या भ्रमर अशक्त हो गया है। मृगी के समान सुन्दर नेत्रो के साक्षी केवल सबके चित्त है। ६३ नासिका को देखकर कोई कहता था कि वह तो तिल का फूल है। कोई कह रहा था कि वह किस गुण में इसकी बराबरी कर सकता है। ६४ कोई कहता कि कान तो कामदेव के फन्दे है जो सासारिक पुरुषों को खीचकर बाँध देते है। ६५ कोई कहता था कि अधर की ज्योति बन्धूक के फूल के समान है। पके बिम्बा फल, जवा कुसुम आदि भी नही ठहरते। ६६ अनार के बीज, कुन्द तथा हीरे के छोटे-छोटे मोती जैसे सिन्दूर मे गुप्त हो गए हो। इस प्रकार की दन्त पक्ति दिखाई दे रही थी। ६७ कोई कहता था कि यह भ्रूलता कामदेव के धनुष के समान है, सुन्दर नेत्र उस पर चढ़े वाण के समान है। ६८ वह बाण चढ़ाकर जब यह खीचकर छोड़ेगी तब कामीजनो के हृदय को काट डालेगी। ६९ कामदेव ने महादेव के मन को मथ डाला तब शिव की क्रोधाग्नि में वह जल गया। २०७० काम की उत्तेजना से शिव की तपस्या भग हो गई और वह विरह मे उमा के पास चल दिये। २०७१ जिस स्थान पर कामदेव जलकर भस्म हुआ था उसे आकर काम पत्नी रति ने देखा। ७२ वह कामिनी धनुष बाण लेकर वहाँ से लौट पड़ी। वह अपने मन मे सोच रही थी कि इसे कहाँ रक्खा जाय। ७३ स्त्री को स्त्री ही प्रिय सखी

महादेव पचारन्ति काहिँ थिल शशि। स्वर्गर बचन आम्भ आगरे कहसि ४६
सुधांशु कहन्ति तुम्भे शुण हे गंगाधर। गगने उदे होइबा सहजे मोहर ४७
जगत हित निमन्ते देइ जाइ देखा।अति मळिन दिशिला ए मोहर शिखा ४८
जानकीर मुखचन्द्र मर्त्ते अवतार। किन्चित तेजरे तार नाशे अन्धकार ४९
ताहा देखि स्वामी मुहिँ पळाइलि लाजे। गगनरे उदे हेबि केउँ कार्ज्यरे२०५०
शुणिण महादेव प्रसन्न मुख होइ। चन्द्रकु परशंसा करन्ति गोसाइँ२०५१
धन्य धन्य ए तुम्भर बड़पण शशि।आस आस आम्भर मस्तके थाअ वसि ५२
एमन्त बोलि चन्द्रकु बसाइले शिरे। चन्द्रशेखर नाम जे बिदित संसारे ५३
चन्द्र महातमा अति बड़पण कला। भवानि पति मस्तके जाइ बसिला ५४
ए महि मण्डले तेणु अग्रपूजा पाइ। दुर्वाक्षत शिरे देइ प्रथमे बन्दाइ ५५
शोळ कळा घेनिण जहुँ हेला बड़। सीता मुख देखि अभिमान कला राड़ ५६
तेणु लोक श्याप देले पूजा तु न पाअ। असुरंकर हस्तरे तु गञ्ज होइ थाअ ५७
पूर्ण चन्द्र बोलि केहु न करु आदर। जुग्म अर्ध होइ तु बोलाअ देशाकर ५८
ए सनेक बोलिण जगत जन भाळि। से पूर्णचन्द्र मुखरे लगाइले काळि ५९

महादेव जी को देखा तब निशाकर बिना कुछ कहे मौन होकर खड़ा हो गया। ४५ महादेव ने पूँछा, हे चन्द्र ! तुम कहाँ थे ? स्वर्ग की बात मेरे समक्ष कहो। ४६ सुधाशु ने कहा हे गंगाधर ! आप सुनिए। आकाश मे उदित होना मेरा सहज स्वभाव है। ४७ ससार के हित के लिये मै दिखाई दे जाता हूँ। मेरी यह किरणे अत्यन्त मलिन दिखाई देने लगी। ४८ मृत्युलोक मे जानकी का मुख-चन्द्र अवतरित हो गया है। उसका स्वल्प तेज ही अन्धकार को नष्ट कर देता है। ४९ हे स्वामी ! उसे देखकर मैं लज्जा से भाग आया। मैं अब किसलिये आकाश में उदय होऊँ। २०५० यह सुनकर महादेव जी प्रसन्न मुख होकर चन्द्रमा की प्रशसा करने लगे। २०५१ हे चन्द्र ! तुम्हारा यह बड़प्पन धन्य है। आओ-आओ। तुम हमारे मस्तक पर विराजमान रहो। ५२ ऐसा कहकर उन्होने चन्द्रमा को अपने मस्तक पर धारण कर लिया और उनका नाम संसार मे चन्द्रशेषर विख्यात हो गया। ५३ महात्मा चन्द्र ने बड़ा उत्तम कार्य किया। वह पार्वती के स्वामी शिव के मस्तक पर जाकर विराजमान हो गया। ५४ इस कारण से इस भूमण्डल पर उसे अग्र पूजा प्राप्त हुई और उसके सिर पर दूर्वाक्षत से प्रथम पूजा की जाने लगी। ५५ जब वह सोलह कलाएँ लेकर वृद्धि को प्राप्त हुआ तब सीता का मुख देखकर अनार्य ने अभिमान किया। ५६ तब लोगो ने उसे पूजा न प्राप्त करने का शाप दिया तथा यह भी कहा कि तुम असुर के हाथो कष्ट पाते रहो। ५७ पूर्ण चन्द्र होने पर भी कोई तेरा आदर न करे। युग्म अर्द्ध होकर तुझे दोषकारक कहा जाए। ५८ इस प्रकार सोच-विचार करके संसार के लोगों ने कहकर उस पूर्ण चन्द्र के मुख पर कालिमा लगा दी। ५९

के बोलइ हृददेश अतिहिँ बिशाल । भुज मुळ केकि देख केमन्त रसाळ ८८
के बोलइ स्तन बेनि अतिशय सरु। भागि पडि थाइ टिकि मध्यदेश ठारु ८९
के बोलइटि बर्नसिंह लुचिला लाजे । एथिरे रहिब थाउ केबणहिँ कार्ज्य२०९०
जेते दिन जाए सीता होइथिला जात । केशरी मध्य प्रशंसा करन्ति जगत२०९१
के बोलइ ताहा ठारु सबु एहा आण्ट । केशरीकि हेला ए सपतणि कण्ट ९२
जानकी कटि देखिण से गला पळाइ । के कहइ दुर्गा तांकु सम्भाळिले नेइ ९३
के बोलइ बितम्ब देश दिशइ सुन्दर । बसन परिधानरे दिशे मनोहर ९४
के बोलइ जानु देश ओलाट करिकी । के बोलइ कि सुन्दर दिशइ पादत्सकि ९५
के बोलइ चरण अंगुष्ठि अनाअत । अशोक करि सुन्दर हेबकि एमन्त ९६
तार उज्वळकु निन्दा करे नख पन्ति । तिनिपुर मध्यरे एहि से रूपबन्ति ९७
के कहइ समस्त शुभहिँ एहु हेतु । × × × ९८
आगकु महा सुन्दर पछकु शोभा दिशि। केते काळ बिधाता रचिला एहा बसि ९९
धन्य धन्य सुन्दरीरे जनक दुहिता ।भला भला सुन्दरी गो नाम गोटि सीता२१००
श्रीरामचन्द्र एहाकु अनरूपे बर । आन केवा शिवधनु धरि बटि कर२१०१
बिधाता भिआण करि अछि ताहा जाणि ।
बेळ काळे संजोग ताहा कराइला आणि २

(हस्तरेखा) गुणो से पूर्ण है। ८६-८७ कितने लोग कह रहे थे कि वक्षस्थल अत्यन्त विशाल है। देखो भुजमूल कितने रसाल है। ८८ कोई कहता था कि दोनो स्तन अत्यधिक पतले है जो मध्यदेश से थोड़ा झुक गए है। ८९ कोई कहता था कि वन के सिह लज्जित होकर छिप गए है अब यहाँ किसलिये रहा जाय। २०९० जब से सीता प्रकट हो गई है तब से केशरी जगत भी उनकी प्रशसा करता है। २०९१ कोई कहता था कि उन सबसे इसे गर्व है। केशरी वर्ग के लिये यह सौतियाडाह हो गई है। ९२ वह लोग जानकी की कटि को देखकर भाग खडे हुए। किसी ने कहा कि दुर्गा ने उस सिह को पाल लिया। ९३ कोई कहता था कि इनका नितम्व प्रदेश सुन्दर दिखता है। वस्त्र परिधान से वह मनोहर दिख रहा है। ९४ कोई कहता था कि इनके जानु उल्टे करिशुण्ड अथवा उल्टे बॉस के वृक्ष के समान है। कोई कहता था कि इनके चरण कितने सुन्दर दिख रहे है। ९५ कोई कहता था कि चरण को उँगलियाँ कैसी सुडौल है। अशोक की कलिकाएँ भी इतनी सुन्दर क्या होंगी। ९६ नखपंक्ति उसकी उज्जवलता की निन्दा करती है। यह तीनो लोको में रूपवान है। कोई कहता था कि इसी कारण से सब शुभ है। ९७-९८ आगे से अत्यन्त सुन्दर तथा पीछे से शोभायमान दिख रही है। विधाता ने कितने समय तक बैठकर इनकी रचना की है। हे सुन्दरी जनकनन्दिनी ! तुम धन्य हो। हे सुन्दरी ! तुम्हारा सीता नाम वहुत अच्छा है। ९९-२१०० श्रीरामचन्द्र इनके अनुरूप वर है। अन्य कौन शिव का धनुष हाथो में उठा सकता था। २१०१ व्रह्मा ने यह जानकर ऐसी

स्तिरिकर स्तिरिए अटइ प्रियवती । जानकीर पाशरे मिळिला देबी रति ७४
धनुशर जतने थोइला तार तहिँ । तप करिबाकु गला स्वामी हित पाइँ ७५
सिता से सायककु कला अति जत्न । भ्रूलतारे जतने थोइले स्तिरि रत्न ७६
नयनरे गुपते थोइले पञ्च शर । एमन्त बोलिण जने करन्ति बिचार ७७
कपाळरे चन्दन मोहइ आड़कार । मदन भोगरे कि फरक फरहर ७८
सिन्दूर चिता एथि निरोळे अछि बसि । पूर्णचन्द्र कोळेकि अरुण परकाशि ७९
केतेवा लेखिबि अळका पन्ति दिशइ सुन्दर ।
फुटिला पद्मकुकि बेडि अछन्ति भ्रमर२०८०
के बोले कि सुन्दर सिमन्थि मोति माळि । मेरु परु गंगा किबा पडु अछि ढ़ळि२०८१
के बोले कि जन दिशइ केडे शोभा ।निन्दा करुछि दक्षिणा ब्रत शंख प्रभा ८२
के बोले भुज पंकज मृणाळकु जिणि । सुबर्ण करिकरे कहिछि एहा आणि ८३
मदनरे बेनि पाश पराए सुन्दर । एणु करि मनमथ बान्धइ संसार ८४
चम्पाकळि बळि अति सुन्दर अंगुळि ।नख श्रेणी बिराजन्ति जाणि दळ बळि ८५
करके निन्दा करे अमळ मन्दार । ऊर्द्धरेखा जवध्वज मत्सादि चामर ८६
सधबार लक्षण अटइ एमान । के बोलइ सामुद्रिक लक्षणरे पूर्ण ८७

होती है। वह देवी रति जानकी के पास जा पहुँची। ७४ उसने अपना धनुष बाण वही रख दिया तथा स्वामी के हित की आकांक्षा से तपस्या करने चली गई। ७५ सीता ने उस धनुष बाण को यत्नपूर्वक रख लिया तथा उस रमणी सखि ने उसे बड़े यत्न से भ्रू लता में स्थान दे दिया। ७६ पाँच बाणो को उन्होने नेत्रो मे छिपाकर रख लिया। लोग इस प्रकार कहते हुए विचार कर रहे थे। ७७ उनके मस्तक पर लगा आडा चन्दन मोहित करता है। क्या वह मदन भोग के कारण दूर से चचल लग रहे हैं। ७८ यहाँ पर सिन्दूर का तिलक एकान्त मे बैठा है। लगता है जैसे पूर्ण चन्द्रमा की गोद में अरुण प्रकाशित हो रहा हो। ७९ कितना कहा जाय। अलकावलि सुन्दर दिख रही है। क्या प्रस्फुटित कमल को भ्रमरो ने घेर रक्खा है ?। २०८० कोई कह रहा था कि माँग पर लगा मोतीमाल कितना सुन्दर है। मानो मेरु पर्वत से गगा झर रही हो। २०८१ कोई कह रहा था कि कण्ठ की शोभा कितनी सुदर दिख रही है। वह दक्षिणावर्ती शख की प्रभा को निन्दित कर रही है। ८२ कोई कह रहा था कि भुजाएँ कमलनाल को जीतने वाली है। इन्हे स्वर्ण के बाँसो की भीट से निकाला गया है। ८३ यह दोनो कामदेव के पाश के समान सुन्दर है। इन्ही से कामदेव ससार को बाँध लेता है। ८४ उँगलियाँ चम्पा की कलियो से भी अत्यन्त सुन्दर है। नख पक्तियाँ मान-मर्दन करती हुईं विराजमान है। ८५ कर पल्लव अम्लान मन्दार की निन्दा करने वाले है। ऊर्द्ध रेखाओ, जौ, ध्वज, मत्स्य, चामरादि सधवा के लक्षणो से युक्त है, कोई कहता था कि यह सामुद्रिक

उपहार जोगाड़ सुमन्त्र आणि करि। बशिष्ठ महामुनि मन्त्रकु आचरि १२
निज करे चन्दन घेनिण दशरथ। नेइण लगाइले जानकी मस्तक १३
कपाळ पटरे तार श्री खण्डि शोभिला। देखिण नरपति आनन्द होइला १४
जानकिर मुख देखिबाकु तार मन। बिचारि कपाळ कर तोळइ राजन १५
अति लाजे जानकी पोतिलेक शिर। जतनरे टेके दशरथ नृपवर १६
चन्द्रमा पाताळकु दिशिला परि दिशे। देखि दशरथ राजा मने मने हसे १७
मथामणि देले नेइ जानकी मस्तक। त्रिभुवन मोहिला जे स्तिरींक नायक १८
चन्दन लेपन करि मस्तके पुष्प आसि। कण्ठरे रत्नमाळा लम्बाइ अजशिषि १९
नव रत्ने जडित दुइ बस्त्र देला। कोटि एक रतन मस्तके बरसिला २०
जय जय शबद करन्ति स्वर्ग बासी। एहि रूपे चारि कन्या देखि राजा तोषि २१
ब त्र अळंकार देइ चारि जे वधूकु। हरषे बिजये जे कले आस्थानकु २२
बोइले कउशिक हे जीवन मोर धन्य। चारि वधू पाइलि मुं तुम्भर प्रसन्न २३
कमळा पार्बती जे गायत्री साबित्री। चारि देखाइलु सुदया करि तुटि २४
एथु अनन्तरे जे पार्बती देबी शुण। राजांकर देखुणि सरिला जहुँ पुण २५

आशीर्वाद दे रहे थे और कह रहे थे कि अमृतवेला हो गई है। ११ सुमन्त ने लाकर उपहार आदि वस्तुओं का प्रबन्ध कर दिया था। महामुनि वशिष्ठ मन्त्रोच्चारण सहित कार्य कर रहे थे। १२ दशरथ ने अपने हाथों में चन्दन लेकर जानकी के मस्तक पर लगा दिया। १३ उनके मस्तक पर श्री खण्ड चन्दन सुशोभित हुआ जिसे देखकर राजा प्रसन्न हो गये। १४ उनका मन जानकी के मुख को देखने का था। यह विचार कर राजा ने हाथ से उनका मस्तक उठा लिया। १५ जानकी ने अत्यन्त लज्जा के साथ शिर झुका लिया। नृपश्रेष्ठ दशरथ उसे यत्नपूर्वक साधे थे। १६ चन्द्रमा पाताल की ओर देखते हुए के समान उनका मुख दिखाई दे रहा था। यह देखकर राजा दशरथ मन ही मन मुस्करा दिये। उन्होने चूड़ामणि लेकर जानकी के मस्तक पर लगा दिया। वह स्त्री-रत्न तीनों लोको को मोहित करने लगी। १७-१८ अजनन्दन दशरथ ने मस्तक पर चन्दन का लेपन करके पुष्प लगा दिये और कण्ठ में रत्न माला पहना दी। १९ उन्होंने नौरत्न जड़ित दो वस्त्र प्रदान किये और करोड़ों रत्न उनके मस्तक पर बरसा दिये। २० स्वर्गवासी देवता जय-जय शब्द करने लगे। इसी प्रकार से चारो कन्याओ को देखकर राजा संतुष्ट हो गये। २१ वह चारो बहुओं को वस्त्र तथा अलकार देकर प्रसन्नतापूर्वक सिहासन पर जा पहुँचे। २२ उन्होंने विश्वामित्र से कहा कि मेरा जीवन धन्य हो गया और आपकी कृपा से मैंने चार वधुएँ प्राप्त की। २३ आपने कृपा करके हमें लक्ष्मी, पार्वती, गायत्री तथा सावित्री के दर्शन करा दिये। २४ हे पार्वती देवी ! सुनो। इसके पश्चात्

एरूपे प्रशंसा करन्ति सभाजन। जानकी देहरे सर्बे निबेशि नयन२१०३

श्रीराम ओ तिनि भाइंकर बाहाघर

बशिष्ठ कहन्ति तुम्भे शुण दशरथ। एमन्त कन्या तुम्भ पुत्रकु परापत १
एहा शुणि महाराजा जोड़ि बेनिकर। सुदया कले मोते जनक मुनिवर २
बिश्वामित्र प्रसन्नरे हेला एड़े कथा। समस्त तुम्भ सुकल्याणरे ब्रह्मवेता ३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो पार्बती।
बेनि पिता कोळे चारि भग्नी बिजे करिछन्ति ४
प्रहरेक परबेश होइलाक जहुँ। पाट ज्योतिष अनुकूळ जणाइले तहुँ ५
नाडि घड़िअळ कहे बिभार बिधान। बशिष्ठ बोलन्ति तुम्भे शुण हे राजन ६
माहेन्द्र बेळ हेला देखुणि बिधि सारि। अइले सर्बजन नबरु बाहारि ७
चारि पाशे लोक माने बेढ़िण देखन्ति। साधु साधु जानकी बोलिण प्रशंसन्ति ८
नटेक ए बार जे करन्ति आगे मिळि।बेळ जाणि सुन्दरी दिअन्ति हुळ हुळि ९
मंगळ अष्टक मान पढ़न्ति पाट जोषी। ब्राह्मण माने मिळि बेद वाक्य घोषि १०
जपि तपिमाने मिळि कल्याण करन्ति। अमृत बेळ हेला बोलिण बोलन्ति ११

रचना की है और उचित समय जानकर उसे लाकर सयोग करा दिया है। २ सभाजन इस प्रकार प्रशसा कर रहे थे और सबके नेत्र जानकी के शरीर पर लगे थे । २१०३

श्रीराम तथा तीनों भाइयों का विवाह

वशिष्ठ ने कहा हे दशरथ ! आप सुनिये। आपके पुत्र को इस प्रकार की कन्या प्राप्त हो रही है। १ ऐसा सुनकर महाराज ने दोनो हाथ जोडकर कहा कि महर्षि जनक ने मेरे ऊपर कृपा की है। २ विश्वामित्र की प्रसन्नता से तथा ब्रह्मवेत्ता आपके आशीर्वाद से यह सब कार्य हुआ है। ३ हे पार्वती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् दोनो पिता की गोद मे चारो बहने विराजमान हो गई। ४ जब एक प्रहर प्रवेश कर गया, तब मुख्य ज्योतिषी ने शुभयोग बताया। ५ नाड़ी तथा घड़ी के अनुसार उसने विवाह का विधान बताया। वशिष्ठ ने कहा हे राजन् ! आप सुनिये। ६ माहेन्द्र वेला आने पर दिखावनी विधि समाप्त करके सभी लोग महल से बाहर आ गये। ७ लोग चारो ओर घेरकर देख रहे थे और जानकी को धन्य-धन्य कहकर प्रशंसा कर रहे थे। आगे-आगे नट तथा विदूषक कला प्रदर्शन कर रहे थे। समय को जानकर सुन्दरियाँ मॉगलिक ध्वनि करने लगी। ८-९ मुख्य जोशी मगलाष्टक पढ रहे थे। ब्राह्मण लोग एक साथ वेद मत्रो का उच्चारण कर रहे थे। १० जप करने वाले तथा तपस्वी लोग मिलकर

शरीर आउँसिण मुखरे चुम्ब देले। धन्यरे बिधाता तु बोलिण बोइले ४१
धन्य हे कउशिक धन्य हे ऋष्य शृंग। धन्य हे जनक धन्य कुशध्वजरे पुण संग ४२
धन्य हे धरणी तुम्भे धन्य हे बैश्वानर। धन्य हे जार गर्भु जनम एहांकर ४३
धन्य हे गर्भधारी जनम य़ांकु कले। बृद्ध काळे आम्भ मन हरष कराइले ४४
एमन्त बोलिण जे दासी मानंकु कहि। बोले शाशु मानंकु बधूंकु दिअ नेइ ४५
शुणिण दासीमाने जानकींकि नेले। कउशल्यांक कोळरे नेइण वसाइले ४६
बधू देखि हरष दशरथ राणि। सेठारु दासीमाने जे गले बेगे पुणि ४७
उर्मिळाकु नेइण सुमित्रा कोळे देले। देखि करि सुमित्रा जे मनरे तोष हेले ४८
सेठारु दासी माने चळि गले पुण। सान बधू सुमाळिकि नेलेक बहन ४९
निळावती कोळरे नेइण पुण देले। देखिण निळावती जे हरषमन हेले ५०
एथु अनन्तरे शुण गो पार्बती। कैकेय़ा राणी बोले शुण गो दासी तुटि ५१
सुप कारे आणन्तु अन्न जे व्यञ्जन। बधूमानंकु निउछाळि करिबा आम्भे पुण ५२
शुणिकरि दासीमाने सुपकारे कहि। सुबर्णर थाळीरे अन्न जे अणाइ ५३
चारि बधूंक ठारे सकळ शाशु रुण्ड। निउछाळि कले अन्न व्यञ्जनरे पिण्ड ५४
निउछालि सरन्ते सकळ राणी पुणि। चारि बधूंकु घेनि भोजन कळे पुणि ५५

परम सतोष मिला। उसने दोनो जंघाओं पर चारों बधुओं को बैठाकर उनके शरीर सहलाते हुए मुख चूम लिये और कहने लगी हे विधाता ! तुम धन्य हो। ४०-४१ हे विश्वामित्र ! हे शृगी ऋषि ! आप लोग धन्य हो। हे जनक तथा कुशध्वज आप लोग धन्य है। ४२ हे पृथ्वी ! हे अग्निदेव ! तुम धन्य हो ! जिनके गर्भ से इनका जन्म हुआ है। ४३ इनकी गर्भधारिणी जिन्होने इन्हे जन्म दिया वह भी धन्य है। उन्होने वृद्धावस्था मे हमारे मन प्रसन्न किए है। ४४ ऐसा कहते हुए उसने दासियो से बहुओं को सासुओं को देने को कहा। ४५ यह सुनकर दासियों ने जानकी को लेकर कौशल्या की गोद मे बिठा दिया। ४६ वहू को देखकर दशरथ की रानी प्रसन्न हो गई। फिर दासियाँ शीघ्रता से चली गई और उन्होने उर्मिला को लेकर उनकी गोद मे दे दिया। उसे देखकर सुमित्रा का मन प्रसन्न हो गया। ४७-४८ फिर दासियाँ वहाँ से चली गई और उन्होने छोटी वहू सुमाली को लेकर नीलावती की गोद में बिठा दिया। उसे देखकर नीलावती का मन प्रसन्न हो गया। ४९-५० हे पार्वती ! सुनो। इसके पश्चात् रानी कैकेयी ने कहा, अरे दासियो ! सुनो। ५१ सूपकार अन्न व्यजन आदि ले आओ। हम वहुओ का भोग राग करेंगी। ५२ यह सुनकर दासियों ने सूपकारों से कहकर स्वर्ण पात्र मे अन्न मगवाया। ५३ चारो बहुओ के पास समस्त सासुओं ने एकत्रित होकर उनसे अन्न व्यजनादि पिण्डो से भोग लगवाया। ५४ भोगराग समाप्त होने पर चारों बधुओं को लेकर समस्त रानियों ने भोजन किया। ५५

दासीगण घेनिण चारि भग्नी चळि। दशरथ नबररे बेगे जाइ मिळि २६
सकळ राणींक पुर देखाइले नेइ। देखिण राणीमाने परम तोष होइ २७
नेइण बधूमानंकु कोळरे बसाइले। मुखरे चुम्बन जे राणी माने देले २८
के बोलन्ति विधाता गणिला केते काळे।सकळ तेज्या करिलि चिन्तिला यांकरे २९
के बोलन्ति ऋष्यश्रृंग जोगरु प्रापत। के बोलन्ति कउशिक धइले जे गोत्र ३०
के बोलइ दइब जे भला घटाइला।
के बोलइ भाग्य आम्भ एते काळरे दिशिला ३१
के बोलइ बधूमाने कुळ उद्धारण।के बोलइ नारायण श्रीराम जे अटे पुण ३२
के बोलइ एहि परि रूप गुणरे पुणि। सकळ राणिहंस मोहित देखि जाणि ३३
एहि रूपे कुहाकुहि हुअन्ति राणी सर्बे।सातश पचाश राणी देखिण तोष एबे ३४
एथु अनन्तरे जे चारि बधू पुण। सकळ शाशु मानंकु ओळगिले जाण ३५
निळावती चारि बधुंकु नेइण कोळ कले। मुखे चुम्बन देइण हरष होइले ३६
सेठारु सुमित्रा जे नेलेक चारि बधू। कोळे बसाइण आउँसिले कुळ बधू ३७
बोइलि तुम्भ आगे आम्भर प्राण जाउ। जुगे जुगे तुम्भर कथा रहिथाउ ३८
सेठारु चारि बधू ओळग मेलाइण। कंकया कोळरे बसिले जाइ पुण ३९
देखिण कंकया जे परम तोष लभि। बेनि जानुरे चारि बधू बेगि ४०

जब राजा की दिखावनी समाप्त हो गयी, तब दासियाँ चारो बहनो को लेकर चल दी और शीघ्र ही दशरथ के महल मे जा पहुँची। २५-२६ उन्होने उन्हे समस्त रानियो के महल दिखाये, उन्हे देखकर रानियाँ अत्यन्त सतुष्ट हो गई। २७ उन्होने बहुओ को लेकर गोद मे बिठा लिया और रानियाँ उनका मुख चूमने लगी। २८ कोई कहने लगी कि ब्रह्मा ने कितने समय मे इन्हे बनाया है। इनकी चिन्ता मे उसने सारा कार्य छोड दिया। २९ कोई बोली यह श्रृंगी ऋषि के कारण प्राप्त हुयी है। कोई कहने लगी कि विश्वामित्र ने गोत्र को रख लिया। ३० कोई कह रही थी कि भाग्य ने ठीक ही घटित किया। कोई बोली कि अब हमारा भाग्य उदय हुआ है। कोई कहने लगी कि यह बहुयें कुल का उद्धार करने वाली है। कोई बोली कि श्रीराम भगवान वासुदेव है। ३१-३२ कोई बोली कि इस प्रकार के रूप और गुण को देखकर सारा रनिवास मोहित हो गया। ३३ समस्त रानियाँ इस प्रकार बाते कर रही थी और उन्हे देखकर सब सात सौ पचास रानियाँ सतुष्ट हो रही थी। ३४ इसके पश्चात् चारों बहुओं ने समस्त सासुओ को प्रणाम किया। ३५ नीलावती चारो बहुओ को गोद मे लेकर उनके मुख चूमकर प्रसन्न हो गई। ३६ उसके बाद सुमित्रा चारों कुलवधुओं को गोद मे बैठाकर हाथ फेरने लगी। ३७ और बोली कि तुम्हारे सामने हमारे प्राण जाये और तुम्हारा यश युग-युग तक जीवन्त रहे। ३८ वहाँ से चारो वधुएँ प्रणाम करके कैकेयी को गोद मे जाकर बैठ गयी। ३९ यह देखकर कैकेयी को

लक्षेक सुबर्णरे कराइले जनक स्नाहान ।
चारि दुहितांकु बेगे स्नाहान कराइले पुण ७१
दशरथ बशिष्ठ बिश्वामित्र जे पुण । जनक कुशध्वज सत्यानन्द जाण ७२
ए समस्ते देखिले जे जनकर स्नान । देखि करि दशरथ हेले तोष मन ७३
सेठारु दशरथ नबरे मिळिले । सुमन्त मन्त्रिकि चाहिँ राजन बोइले ७४
अणाअ लक्षे सुनिआं भण्डारु मोर भले । श्रीराम कनक स्नान करिबे सेथिरे ७५
शुणि करि मन्त्रीवर बेगे अणाइला ।चारि पुत्र डकाइले नृपति होइ त्वरा ७६
चारि भाइंकि नेइण कनक स्नान कले । स्नाहान करि पुत्रे सेठारु चळि गले ७७
से लक्षे सुबर्णकु बशिष्ठ घेनि गले । बधूंक स्नान सुनिआं सत्यानन्द देले ७८
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी ।
कनक स्नान सारिण अजोध्या दण्डधारी ७९
मनरे हरष जे हेले दशरथ । बिचारिले भगीरथ जे घरे हेले जात ८०
एसनक समयरे गहळ भाजि गला । जनक राजन जे सेठारु चळि गला ८१
एसनक समयरे मउलिला सभा । दशरथ राजन मन्दिरे हेले उभा ८२
जे जाहार मन्दिरकु बेगे चळि गले । एकादशी दिवस जे प्रबेश आसि हेले ८३
श्रीराम चारि भाइ बिभा बिचारि जनक। नाना द्रब्य सम्पाद जे कलेक अनेक ८४
सुबर्णर मण्डप से कलेक निर्माण । उपरे छाइले जे तेज पत्र पुण ८५

एक लाख स्वर्ण (मुद्राओं) से चारों कन्याओ को कनक स्नान करवाया । ७१ दशरथ, वशिष्ठ, विश्वामित्र, जनक, कुशध्वज तथा सतानन्द सभी थे । ७२ इन सबने कनक स्नान देखा । दशरथ का मन संतुष्ट हो गया । ७३ दशरथ वहाँ से महल मे जा पहुँचे और उन्होने मत्री सुमन्त को देखकर कहा । ७४ मेरे भण्डार से एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ मँगाओ । उससे श्रीराम कनक स्नान करेंगे । ७५ यह सुनकर श्रेष्ठ मत्री ने शीघ्र ही मगा लिया फिर राजा ने शीघ्र ही चारो पुत्रों को बुला लिया । ७६ उन्होने चारों भाइयो को लेकर कनक स्नान कराया और स्नान करके पुत्र वहाँ से चले गये । ७७ उन लक्ष स्वर्ण मुद्राओं को वशिष्ठ ले गये और बहुओ के स्नान स्वर्ण को सतानन्द को दिया गया । ७८ हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् कनक स्नान समाप्त करके अयोध्या नरेश दशरथ का मन प्रसन्न हो गया । वह विचार करने लगे कि मानों भगीरथ ही घर में उत्पन्न हो गए हो । ७९-८० इसी समय चहल-पहल समाप्त हो गई । राजा जनक भी वहाँ से चले गए । ८१ इसी समय सभा समाप्त हो गई और राजा दशरथ महल में जाकर खडे हुए । ८२ सव अपने-अपने आवासों को चले गए । तभी एकादशी का दिन आ पहुँचा । ८३ श्रीराम आदि चारो भाइयो के विवाह के लिये विचार कर जनक ने अनेक प्रकार की हव्य सामग्रियों का प्रबन्ध किया । ८४ उन्होने स्वर्ण मण्डप का निर्माण कराया । ऊपर तेज पत्र छवा दिये । ८५ इस प्रकार के

नाना बर्ण अमृत भोजन सर्बे करि। वधूमानंकु भुञ्जाइले हस्त धरि ५६
आचमन सारिण बेश भूषण हेले। चारि वधूंकु से सुवेश कराइले ५७
नवरत्न माळा जे सगरे मोति हारा। चारि वधूंकु देइण से होइलेक तोरा ५८
हुळ हुळि देइण से बन्दापना कले। दूर्बाक्षत नेइण वधूक शिरे देले ५९
देखणा चाहाणी जे सरिला तांकर। वधूमानंकु दासी घेनि चळिले सत्वर ६०
सिंहद्वार दाण्डरे नेइण समर्पिले। रत्न हान्दोळारे चारि वधू जे बिजे कले ६१
दाण्डरे गहळ जे शुभइ शंख ध्वनि। जनक नवररे मिळिले जेमा पुणि ६२
सुखा सनु ओह्लाइण भितरकु गले। जननी मानंकु से ओळग मेलाइले ६३
देखिले जननी माने नवरत्न माळा। मोतिर हारमाळ दिशइ तहिँ तोरा ६४
देखिण ऋषि आणी हरष मन हेले। उदय तारा प्राये जेमा जे दिशिले ६५
मनमाया कहे शुण जनकर राणी। हरष होइले से दोहिता कथा शुणि ६६
एथु अनन्तरे शुण गउरी देबी एबे। दुइ दिन एथिरे वहिण गला भावे ६७
तिनि पक्ष सेथिरे रहिले दशरथ। देखणा सरिवारु बिभार उत्सबत ६८
जनकंकु दशरथ बोइले तुम्भे शुण। चारि वधूंकु जनक स्नाहान कराअ पुण ६९
शुणि करि जनक भितर पुरे गले। परिछाकु कहिण सुवर्ण अणाइले ७०

सबने अनेक प्रकार के अमृतमय भोजन किए फिर हाथ पकड़ कर उन्होंने बहुओं को भोजन कराया। ५६ आचमन करके उन्होंने सुवेश करके आभूषण धारण किए तथा चारों बहुओं को सुसज्जित किया। ५७ उन्होंने चारों बहुओं को नवरत्नों की मालाएँ तथा मोतियों के हार प्रदान किए तब वह और सुन्दर हो गईं। ५८ मांगलिक शब्दों का उच्चारण करके उन्होंने पूजन किया फिर उन्होंने दूर्वाक्षत लेकर बहुओं के शिर पर डाल दिये। ५९ फिर उनकी दिखावनी समाप्त हुई। फिर दासियाँ बहुओं को लेकर शीघ्र ही चल दीं। ६० उन्होंने उन्हें सिंहद्वार पर ले जाकर मार्ग में छोड़ दिया। चारों बहुएँ रत्न शिविका पर विराजमान हो गईं। ६१ मार्ग में चहल-पहल तथा शंख-ध्वनि सुनाई दे रही थी। राज कुमारियाँ जनक के महल में जा पहुँचीं। ६२ वह सुखासन से उतर कर भीतर चली गईं और उन्होंने माताओं को प्रणाम किया। ६३ माताओं ने सुन्दर दिखने वाली नौ रत्नों की मालायें तथा मोतियों की मालाएँ देखीं। ६४ उन्हें देखकर जनक महर्षि की पत्नी का मन प्रसन्न हो गया। राज कन्याएँ उदय होते हुए तारागण के समान दिख रही थीं। ६५ मनमाया ने कहा हे जनक की रानी! आप पुत्रियों की बात सुनो। जिसे सुनकर वह प्रसन्न हो गईं। ६६ हे गौरीदेवी! अब सुनो। इसके पश्चात् प्रेमभाव में दो दिन का समय बीत गया। ६७ दशरथ वहाँ दिखावनी समाप्त होने में विवाहोत्सव पर्यन्त तीन पक्ष तक रहे। ६८ फिर उन्होंने जनक से चारों बहुओं को स्नान करवाने को कहा। ६९ यह सुनकर जनक अंतःपुर गये और उन्होंने आभूषित करने को कहकर स्वर्ण मँगाया। ७०

मंगळ उत्सबकु बाहार नारी बृन्द । कैकया आदि राणी मनरे आनन्द २
सुखासने बिजे कले समस्त राणीहंस । देबींकर मन्दिरे होइले प्रबेश ३
मर्द्दन माजणा कलेक जे देबीरे ।स्नान शउच जे कले गन्ध पुष्प बासरे ४
सिन्दूर कज्जळ जे नाना पुष्प देले । सुगन्ध चन्दन जे शरीरे लेपिले ५
रंग कळा बसन्त जे धळा बर्ण चारि । देबी मानंकु बन्दाइ भुषण बेगे करि ६
अन्न व्यञ्जन आबर क्षीरि पिठा । अमृत जोगाड़ जे नाना बर्ण मिठा ७
अनेक सम्भर्बरे पूजा बिधि कले । पूर्णमासी तोष होइ राणिरे कहिले ८
बोइले प्रसन्न तोते होइलु आम्भे पुण । पाषाण फिटि देबी स्वरूप बितपन ९
गंगा जळ नेइ शिरे सात थर देले ।सेहि तोळा पाणि राणी माने जे रखिले ११०
तोळा पाणि घेनि फेरिले राणीगण । आपणा नबरे जाइ प्रबेश हेले पुण १११
दासी माने हुळहुळि कले जे शबद । मंगळ उत्सब जे कराइ आनन्द १२
एथु अनन्तरे पुण राम चन्द्र माए । चोरि पाणि घेनिण पुअकु गाधु आए १३
तीर्थ जळकु जाहा निशाकाळरे आणि ।तेणु करि ताहाकु बोलन्ति चोरि पाणि १४
बिष्णुर चरणरु झरन्ति सुरासुरि । रजनी नपाउ ताहा आणन्ति सुन्दरी १५
से जळ बोलिण नजाणन्ति रघुनाथ । तेणु चोरि पाणि बोलन्ति जगत १६

निकली । १०१ मंगल उत्सव के लिये नारियों का समूह बाहर निकल पड़ा। कैकेयी आदि रानियों के मन प्रसन्न थे। २ सारा रनिवास सुखासनों पर विराजमान होकर देवी के मन्दिर मे प्रविष्ट हुआ। ३ उन्होने देवी को मार्जन स्नानादि कराया। स्नान के पश्चात् गन्ध तथा सुवासित पुष्पों से पूजन किया। ४ सिन्दूर, काजल तथा विविध प्रकार के पुष्प समर्पित किए। सुगन्ध तथा चंदन का लेप शरीर पर किया। ५ उन्होने लाल, काले, बसन्ती तथा सफेद वर्ण के आभूषणों से देवी की पूजा करके उन्हे शीघ्र ही भूषित किया। ६ अन्न ब्यंजन दूध से बने पकवान और अनेक प्रकार की अमृतमय मिठाइयो से उन्होने नाना प्रकार के समारोहों के साथ विधि-विधान से पूजा सम्पादित की। तब पूर्णमासी (जगजननी) ने सन्तुष्ट होकर रानी से कहा। ७-८ पाषाण से निकल कर देवी निजरूप में बोली कि मै तुमसे प्रसन्न हूँ। ९ गगाजल लेकर सात बार शिर पर डाला तो जल को रानियों ने रख लिया। समस्त रानियाँ वह ढारा हुआ जल लेकर वापस लौटी और अपने महल में जा पहुँची। ११०-१११ दासियों ने मांगलिक शब्द किए तथा आनन्ददायक उत्सव आयोजित किए। १२ इसके पश्चात् श्री रामचन्द्र की माताओं ने तीर्थ जल लेकर पुत्रों को स्नान करवाया। १३ तीर्थ-जल रात्रि के समय लाया गया था। इसी कारण उसे अपहृत-जल कहा जाता है। १४ विष्णु के चरणों से देव नदी गंगा बहती है। रात्रि समाप्त होने के पूर्व ही सुन्दरियाँ उसे ले आती है। १५ रघुनाथ जी उस जल के विषय मे नही जानते। इसी कारण संसारी जन उसे अपहृत जल कहते

ए रूपे चारि मण्डप रत्नरे निवाडिला।चारि चारि अश्व जे रत्नरे दिशे तोरा ८६
इन्द्र गोबिन्द चान्दुआ उपरे टणाइला । मुकुता माणिक्यरे झालेरि बाड़ देला ८७
बिबिध बसनरे मण्डिले चउपाश । बेदीर चउपाश होइले अदृश्य ८८
सेथिपरे गजमोति झरा लम्बाइला ।पञ्च वर्ण पुष्प माळा सेथिरे सञ्जिला ८९
श्वेत चामर खञ्जिले दर्पण ठाब ठाब । कि जाणि पटान्तर सुधर्मा सभा हेब ९०
बेदी गोटि प्रमाण शतेक आंगुळ । दिबाप्रति चउ पाढ़ी अटे समतुल ९१
सुबर्णर मण्डपरे कनकर बेदी । अनेक सम्भर्बरे कले सर्ब सिद्धि ९२
चारि बेदीपरे अछि सुबर्ण कळस । चूत पत्र नटिकाळ कले बिधिमत ९३
रम्भा बृक्ष मानंकु द्वारे पोति पुण । चन्दन छेरा पकाइ कलेक जतन ९४
बेदी मानंक उपरे कळस बसाइ । नेतर चिराळ चउपाशरे उड़ाइ ९५
देखि करि प्रशंसा कले ऋषिगण । राजा परजा जे आबर बिप्रजन ९६
आस्थानरे आकृति मर्कत दिशि तोरा । जेसने दिशन्ति गगन पथे परा ९७
कर्पुरर गुण्डि जे बिञ्चिला अछि धूळि । सुबास बासरे जे मिथिला उछुळि ९८
माणिक्यर दीपमान जळइ गहळ । नवरत्न झटकन्ति बिजुळि प्रकार ९९
देखि करि सन्तोष होइले जनक । सत्यानन्दकु प्रशंसा कलेक अनेक १००
एथु अनन्तरे शुण गो देबी उमा ।रात्र थाउँ बाहार होइले राणी किना १०१

चार रत्न मण्डप वनवाए। चार-चार अश्व रत्न से सुन्दर दिख रहे थे। ८६ ऊपर से इन्द्र गोविन्द चँदोवा तनवा दिए। मुक्ता तथा माणिक्यो की लडियो की पंक्तिवद्ध झालरे लगवा दी। ८७ चारों ओर से नाना प्रकार के वस्त्रो को सजवा दिया। मात्र वेदी के चारो ओर वह नहीं थे। ८८ उस पर गजमुक्ताओं की झालरे लगी थी और उसके ऊपर पाँच रग के फूलों की मालाएँ सजाई गई थी। ८९ स्थान-स्थान पर श्वेत चामर तथा दर्पण लगे थे। स्वर्ग की सुधर्मा सभा भी उसकी समता में नही आ रही थी। ९० सौ-सौ अगुल की एक-एक वेदी थी। जो चारो ओर से समान आयताकार थी। ९१ स्वर्णमण्डप की कनक वेदी पर अनेक समारोह के साथ सारे विधान किए गए। ९२ चारो वेदियों पर स्वर्ण कलश थे। विधि के अनुसार आम्रपल्लव तथा नारियल लगे थे। ९३ द्वारों पर केले के वृक्ष गडे थे। यत्नपूर्वक चन्दन से लिपाई की गई थी। ९४ वेदियो के ऊपर कलश स्थापित करके चारो ओर लाल पताकाएँ फहरा दी। ९५ ऋषिगण देखकर प्रशसा करने लगे। राजा-प्रजा तथा विप्रगण भी प्रशसा कर रहे थे। ९६ सिंहासन पर मरकत की आकृति सुन्दर दिखाई दे रही थी जैसे आकाश में कबूतर दिखाई देता है। ९७ कर्पूर का चूर्ण धूल के रूप में विछा पडा था। सुगन्धित बास से मिथलापुर महक रहा था। ९८ माणिक्य के दीपक जल रहे थे। नौरत्न विजली के समान चमक रहे थे। ९९ इसे देखकर जनक सन्तुष्ट हो गए। उन्होने सतानन्द की भूरि-भूरि प्रशसा की। १०० हे उमा देवी! सुनो। इसके पश्चात् रात्रि रहते-रहते रानियाँ वाहर

श्रीअंग पोछन्ति पुणि दिव्य बस्त्र घेनि । चारि पाखे बेढि छन्ति सकळ जननी ३२
देबांग पतनी से पिन्धाइले नेइ । घर मध्ये घेनि गले कठाउ मड़इ ३३
एथु जाइ माता कोळे बिजे चारि भ्राथ । पञ्चु ग्रास कले जे मणोहि चारि पुत्र ३४
आचमन सारि भुञ्जि कर्पूर ताम्बुळ । सुबर्ण पिडारे बिजे रघुबंश बाळ ३५
कउशल्या कंकेय़ा सुमैत्रा मेळ होइ । आबर हिँ मातागण माने बेढि रहि ३६
बेश करिबाकु मने बिचारन्ति नारी । चिक्ण हलदिरे से टभारस गोळि ३७
श्रीराम चन्द्र श्रीअंगे लेपिले नेइ ताहा । एककु आरेक नारी होइण उत्साहा ३८
केउँ नारि कुंकुमकु श्रीअंगरे घसि । कोळरे के कण्ठे के मुखरे शुभ्र केशी ३९
केहु बक्षस्थळे केहु चरणे लगाइ । महा सुगन्ध तइळ घेनिण छड़ाइ १४०
नीळ देह श्रीरामर सुन्दर दिशिला । मर्कत प्रतिमारे कि सुवर्ण मिसिला १४१
कमळ कुसुमरे कि भ्रमर बसिथिला । कुसुम पराए तार अंगरे लागिला ४२
अरुण प्रकाशे पूर्ब दिग जेन्हे दिशि । रघुनाथ शरीर तेमन्त परकाशि ४३
सुन्दर महासुन्दर रामचन्द्र काय़े । शरधारे बेढिण देखन्ति सर्बमाए ४४
केशकु शुखाइले चिरिणी घेनि करि । कृष्ण चामरकु जिणि सुन्दर कबेरि ४५
अतिहिँ सुगन्ध पुष्प मानकु बाछिले । कर्पूर गुण्डि तहिँ उपरे सिञ्चिले ४६

फिर समस्त माताएँ चारो ओर से घेरकर दिव्य वस्त्र लेकर पुत्रो के श्री अंग पोंछने लगीं। ३२ फिर उन्हें पीताम्बर लेकर पहनाए और खड़ाऊँ पहनाकर घर के भीतर ले गईं। ३३ यहाँ से जाकर चारों भाई माताओं की गोद में विराजमान हो गए। फिर चारों पुत्रों ने पचग्रास भोजन किया। ३४ आचमन करके उन्होने पान तथा कर्पूर ग्रहण किया और रघुवंश के लाल सुवर्ण के पीढो पर विराजमान हो गए। ३५ कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा आदि सभी माताओ ने न्हें घेर लिया। ३६ नारियाँ उनका श्रृंगार करने के लिए विचार करने लगी। कनी हल्दी में टभा नामक फल का रस घोलकर एक से एक उत्सुक नारियो उसे श्रीराम के शरीर पर लेपन कर दिया। ३७-३८ कोई स्त्री ने उनके श्री ग पर कुमकुम घिस दिया। किसी शुभ्रकेशी ने उनके मुखकण्ठ तथा बगल में गा दिया। ३९ किसी ने वक्ष तथा किसी ने चरणों मे लगा दिया किसी ने हासुगन्धयुक्त तेल लेकर छोड़ दिया। १४० श्रीराम का श्यामल अंग सुन्दर दखने लगा। लगता था जैसे मरकत प्रतिमा मे स्वर्ण मिल गया हो। १४१ या कमल के फूल पर भ्रमर बैठा था तथा पुष्प के समान उनके शरीर में लग या। ४२ जैसे पूर्व दिशा में अरुणिमा प्रकाशित दिखाई देती है। रघुनाथ जी का श्री अग उसी प्रकार प्रकाशित होने लगा। ४३ सभी माताएँ श्रीराम के सुन्दरतम शरीर को प्रेम से घेरकर देख रही थीं। ४४ उन्होने कंघी लेकर उनके केश सुखाए। उनकी सुन्दर अलकें कृष्ण चामर को जीतने वाली थी। ४५ फिर उन्होंने अत्यन्त सुगन्धित पुष्प चुने। उन पर कर्पूर का

साधबि नारी माने उछुक होइ मने । रात्र थाउ उठिण से चाहान्ति गगने १७
एककु आरेक नाम धरि से ड़ाकन्ति । एबे सखि उठ बेगे हेलाणि पाहान्ति १८
देबतांक आळरे शुभइ शंख ध्वनि । कुकुट पक्षी डाकइ निकट रजनी १९
पाण्डुर बर्ण बासब दिग प्रकाशइ । काकनिद्रा भांगि आसि ड़ाळरे बसइ १२०
चन्द्र अस्त हेबारु त दुइ घडि होए । केते बेळे सज होइ बेटि चारि पोए १२१
एहा शुणि समस्त जुबती माने आसि । सपत जण काखरे घेनिले कळशि २२
राज दाण्डे बुलन्ति मंगळ गीत गाइ । घरे घरे पाणि मान मागन्ति से जाइ २३
भितरे थाइ ताहा जाणन्ति सर्ब बाळि । बरघर लोके अइले पाणि तोळि २४
साधबी जुबती माने दिब्य बेश होइ ।शुचि बन्त होइण पाणि दिअन्ति बढ़ाइ २५
एहि रूपे प्रतिघरु जळ मागि नेले । जत्ने ताहा एक ठुळ करि सम्पादिले २६
सपत गरिआ जहुँ पूरिलाक पाणि । बाहुडि आसन्ति घेनि चतुर कामिनी २७
दिबसरे न आणि आणन्ति जहुँ राति ।तेणु करि चोरि पाणि ताहाकु कहन्ति २८
रत्न पीढ़ा उपरे राम लक्ष्मण बसाइ । भ्रथ शतृघन बसाइले पुण नेइ २९
नबग्रह अएँळा शुगन्ध लगाइले । साधब जुबती माने हुळहुळि देले १३०
देबींक तोळा पाणि स्नाहान कराइ चारि भाइ ।
केशकु पोछिले नेइ सबु बस्त्र देइ १३१

है । १६ साधवी स्त्रियाँ उत्सुक हृदय से रात्रि के रहते ही उठकर आकाश की ओर निहारती है । १७ वह एक दूसरे का नाम लेकर पुकारती है । हे सखि ! अब शीघ्र उठो । भोर हो गया है । १८ देवालयो मे शख ध्वनि सुनाई दे रही है तथा रात्रि शेष पर मुर्गा बॉग दे रहा है । १९ पूर्व दिशा (वासव-दिशा) में अरुणिमा प्रकाशित हो गई है । काक पक्षी निद्रा त्यागकर डालो पर बैठ गए है । १२० चन्द्रमा को अस्त हुए दो घडी व्यतीत हो गई । चारो पुत्र कब तक तैयार हो पाएँगे । १२१ ऐसा सुनकर समस्त युवतियाँ आ गईं । सात युवतियो ने कलश उठा लिए । २२ वह राजमार्ग पर माँगलिक गीत गाते हुए घर-घर जाकर पानी मॉग रही थी । २३ भीतर की समस्त स्त्रियाँ यह जानती थी कि वर के घर के लोग पानी लेने आए है । २४ दिव्यवेश होकर साध्वी स्त्रियाँ पवित्र होकर पानी प्रदान कर रही थी । २५ इसी प्रकार से प्रति घर से वह जल मॉगकर ले गईं और उसे यत्नपूर्वक एक स्थान पर रख दिया । २६ जब जल सात घड़ो में भर गया तब चतुर कामिनियाँ उसे लेकर लौट आईं । २७ जब उसे दिन मे न लाकर रात्रि में लाया जाता है इसीलिये उसे चोरी का पानी कहा जाता है । २८ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न को लेकर रत्न के पीढो पर बैठाया गया । २९ उनके नवग्रह सुगन्ध तथा ऑवला लगाया गया । सधवा स्त्रियो ने मागलिक ध्वनि की । १३० देवी के ढारे-पानी से चारो भाइयो को स्नान कराया गया । फिर वस्त्र देकर उनके बालों को पोछा गया । १३१

रघुनाथ रूपकु बर्णि केहु पारि। कोटि कोटि कन्दर्प रूपकु नोहे सरि ६२
अति शरधारे माए बसाइले कोळे। कज्जळकु रञ्जिले कमळ बेनि ड़ोळे ६३
कर्ण परिजन्ते तार मेलि देले लाञ्जि। किबा निळोत्पळ नाड उपरे खञ्जि ६४
चन्दन कर्पूर मृगमद कस्तुरिरे। दिब्य कमळ लेखिले श्रीराम कपाळरे ६५
देले मण्डळ आकाररे सिन्दूरर चिता। उदय़ काळे जेसने दिशइ सबिता ६६
शपत शाखा दिब्य मुकुट मणि मए।श्रीराम चन्द्र मस्तके बान्धिले नेइ माए ६७
बेश करि बसाइण देखन्ति जुबती। अति आनन्दे मंगल हुळहुळि द्यन्ति ६८
पुणि कउशल्या भरतकु घेनि कोळे। श्रीराम चन्द्र अनुरूपे बेश कले ६९
बसाइले नेइण श्रीराम दक्षिण पाशे। बेढ़ि देखन्ति सुन्दर पण अनमिषे १७०
तदुत्तारे मध्ये सौमित्रकु बसाइ। बेश करन्ति महा आनन्द मन होइ १७१
श्रीराम बाम पारुशे नेइण बसाइले।तिनि शोभा तिनि पुरे नाहिँ बिचारिले ७२
एथु अनन्तरे कौशल्या आणि शतृघन। सज होइ करि बिजय़े चारि नन्दन ७३
एहि समय़रे तुम्भे शुण गो शाकम्बरि।
जनक पुरे बिचार जे ऋषि आणि करि ७४

ने घेर रक्खा हो। १६० फिर दोनों चरणों में महावर लगा दिया जो तलवों से भी सौ गुना लाल दिख रहा था। १६१ रघुनाथ जी के रूप का वर्णन कौन कर सकता है। कोटि-कोटि कामदेव भी सौन्दर्य में उनकी समता नही कर सकते थे। ६२ माताओ ने उन्हे बडे प्रेम से गोद में बिठा लिया। फिर उन्होने दोनो कमल नयनो में काजल लगा दिया। ६३ कर्ण पर्यन्त उसकी कोर निकाल दी लगता था मानो नीलकमल के नाल ऊपर से सजा दिये गए हो। ६४ श्रीराम के मस्तक पर कर्पूर चन्दन मृगमद कस्तूरी से दिव्यकमल चित्रित कर दिये। ६५ फिर उन पर मण्डलाकार सिन्दूर के तिलक लगा दिये। वह उदयकालीन सूर्य के समान दिख रहे थे। ६६ फिर माताओ ने सात कँगूरों वाला मणियो का सुन्दर मुकुट लेकर श्रीराम के मस्तक पर बाँध दिया। ६७ युवतियो ने उन्हे शृंगार करके बिठा दिया और देखने लगी। वह अत्यन्त प्रसन्नता के साथ मांगलिक ध्वनि भी कर रही थी। ६८ फिर कौशल्या ने भरत को गोद में लेकर श्रीराम के समान सुसज्जित किया। ६९ फिर उन्हे लेकर श्रीराम के दाहिनी ओर बिठा दिया और उन्हे घेरकर निर्निमेष सौन्दर्य को देखने लगी। १७० फिर उसके पश्चात् लक्ष्मण को बिठाकर अत्यन्त प्रसन्न मन से शृंगार करने लगी। १७१ उन्हे लेकर तब श्रीराम के बाई ओर बिठा दिया और विचार करने लगी कि इन तीनो जैसी शोभा तीनों लोकों में नही है। ७२ इसके पश्चात् कौशिल्या ने शत्रुघ्न को लेकर सजाया। चारो सुसज्जित पुत्र विराजमान थे। ७३ हे शाकम्बरी ! तुम सुनो। इसी समय जनक के महल में

श्रीरामर मस्तके खोसिले ताहा नेइ ।बिचित्र गभा मस्तक उपरे शोभा पाइ ४७
बाहार करि पुण देखाइ केशर । कि जाणि गगनरे उदय़ दिबाकर ४८
रामचन्द्र मस्तककु दिशिला बड़ शोभा । ताळु परु आबोरि बसिला जहुँ गभा ४९
सरु बहळ नबोन बसन्त पतनि । धडि तार दिब्य गन्ध कुसुम लेखनि १५०
तारा मण्डळ बान्धि कुसुम प्रकाशइ । दीर्घ नबहात तार प्रति तिनि होइ १५१
मध्येण सरु सरु फुल फुटि पड़ि अछि ।से बस्त्र श्रीरामंकु माए पिन्धाइले बाछि ५२
निळ मेघे जेसने बिजुळि बिराजइ । श्रीराम चन्द्र श्रीअंगुळि दिशिला तेमन्तहिँ ५३
मातार मुख मुकुता फेरि दिब्य काम । श्रबण देशे मुकुता अति अभिराम ५४
पूर्ण चन्द्र पाशे जेन्हे शुक्र जे दिशइ ।श्रीराम चन्द्र कर्ण कुण्डळ तेमन्त बिराजइ ५५
कण्ठ देशे खञ्जिले जाउळि सुना सुता । दोषरिआ कण्ठिमाळ दिशइ मुकुता ५६
नीळमणि माणिक्य एमान चउसरा । रत्ने माझे पदके लागिछि मोति झरा ५७
बाहुरे दिब्य बाहुटि ताड़ बिद मुदि । कटिरे मेखळा देले किरण प्रसिद्धि ५८
बामपाशे छुरि बिरबर नेत फरहर । चरणरे देले नेइ मर्कत तोड़र ५९
निळ पद्म जेमन्त बेढि रहि । श्रीराम चन्द्र चरणकु तेमन्त शोभा पाइ १६०
पुणि बेनि चरणरे लेपिले अळता । तळिपार शते गुण दिशिला जे रता १६१

चूर्ण छिड़क कर उन्हे लेकर श्रीराम के मस्तक पर खोंस दिया। मस्तक पर विचित्र पुष्प स्तवक शोभा पा रहे थे। ४६-४७ उनसे बाहर निकला हुआ केशर दिखाई दे रहा था। क्या पता आकाश मे सूर्य उदय हो गया हो। ४८ श्रीरामचन्द्र का मस्तक अत्यन्त शोभायमान दिखने लगा। ढलावदार स्थान पर पुष्प स्तवक लग गया। ४९ घनी पतली वसती रग की सुगन्धित पुष्पो से चित्रित किनारी वाली धोती जिसमे सितारो के मण्डल बाँधकर पुष्प बने थे और जो नौ हाथ लम्बी थी। उसके बीच बीच मे पतले फूल खिले पड रहे थे ऐसे वस्त्र छाँटकर माताओ ने श्रीराम को पहनाए। १५०-१५१-५२ जैसे नीले बादल मे विद्युत शोभित होती है उसी प्रकार वह श्रीराम के शरीर पर सुशोभित दिख रहे थे। ५३ माताओ के सुन्दर मुख सचालन से दिव्य मुक्ता श्रवण देश मे अति अभिराम दिखाई देते थे। ५४ जैसे पूर्णचन्द्र के निकट शुक्र तारा दिखाई देता है वैसे ही श्रीराम के कानो के कुण्डल दिखाई दे रहे थे। ५५ कण्ठ में दो लरी सोने की जजीर व दो लर वाला मुक्ताओ का कण्ठमाल दिखाई दे रहा था। ५६ माताओ ने चार लड़ी वाले नीलमणि के माणिक्यमाल में मोतियो के झिलमिलाते पदक लगा रक्खे थे। ५७ बाहुओ पर सुन्दर ताड़ के आकार वाले वाजूबन्द,फेरे तथा अगूठियाँ और कमर मे मेखला सजा दिये। ५८ बाई ओर वीरनेत में कटार झूल रही थी। चरणो मे मरकत के तोड़े डाल दिये। ५९ श्रीराम के चरण इस प्रकार शोभित हो रहे थे मानो उन्हे नीलकमलों

सेहि ठारु श्रीराम धरिले जुबा तनु । द्वितीय दिन जेसने उदय स्वर्भानु १९०
शुणिण ईश्वर जे कहन्ति पार्बतींकि । शुण गो पार्बती तु काळे काळे सती १९१
जेणु से चोरि पाणि श्रीराम स्नान कले । देबतांकु बासुदेब पराए दिशिले ९२
ऋषिंकि दिशिले जे शान्तशीळ मूर्त्ति । राजांकु दिशिले जे पर्शुराम मूर्त्ति ९३
असुरंकु दिशिले जे काळ बिकाळ प्राए । मानबकु दिशिले से देबता पराए ९४
दुष्टकु दिशिले जे जमर प्राए मूर्त्ति । सजनकु दिशिले गुरु पराएटि ९५
सागरकु दिशिले से गंगा जळ प्राये । प्रथिकि उस्वास जेसने फुल होए ९६
शान्ति जनकु दिशले से मदन पराए । नागबळकु दिशिले ईश्वर जेन्हे आए ९७
समस्तंक मन मोहिले रघुराण । तेणु से नूतन जुबा होइले देब पुण ९८
स्वर्ग मर्त्त्य पाताळ तिनि पुर करि तोष । बरबेश होइले दशरथ शिष्य ९९
बिबिध रंगरे बेश कले माता माने । आनन्दरे हुळहुळि देले से जे जने २००
मंगळ गीतमान करन्ति गायेणि । सर्ब शुभ जोग बळे ए मान से जाणि २०१
श्रीराम लक्ष्मण जे भरथ शतृघन । चारि भाइ बेश होइ अइले बहन २
मंगळ बिधि मते आळति कले सर्बमाये । दधि माछ घेनिण आगरे केहु धाएँ ३

बालपन समाप्त हो गया । ८९ श्रीराम ने वहीं से युवा शरीर धारण किया जैसे दिन में द्वितीय भानु उदय हो गया हो । १९० यह सुनकर शकर जी ने पार्वती से कहा पुरातन सती ! तुम सुनो । १९१ जब श्रीराम ने चोरी पानी से स्नान किया तब देवताओं को वह वासुदेव के समान दिखने लगे । ९२ ऋषियो को वह शान्तिशील के स्वरूप दिखाई दिए तथा राजाओ को परशुराम जैसे दिखने लगे । ९३ असुरो को वह काल विकाल की भाँति दिखाई देने लगे । मनुष्यों को वह देवता के समान दिखाई दिए । ९४ दुष्टों को वह यमराज के रूप में दिखे । स्वजनो को वह गुरु स्वरूप में दिखाई देने लगे । ९५ समुद्र को वह गंगाजल के समान दिख रहे थे । पृथ्वी को वह उद्धार के कारण के समान दिखाई दिए । ९६ शान्तिशील पुरुषों को वह कामदेव के समान दिख रहे थे । नाग लोगों को वह शिव के समान दिखाई दिए । ९७ रघुनाथ जी ने सबके मन मोहित कर लिए । वह प्रभु देवताओं के समान नवयुवा हो गए थे । ९८ स्वर्ग मृत्यु तथा पाताल तीनों लोकों को सन्तुष्ट करके दशरथ नन्दन ने वर वेश धारण किया । ९९ माताओ ने विविध रंगों से सुसज्जित किया । युवतियाँ आनन्द से मागलिक ध्वनि करने लगी । २०० वह मगल गीत गा रही थी । वह अपने मन में सब प्रकार के शुभ माँगलिक योग पर विचार कर रही थी । २०१ श्रीराम लक्ष्मण भरत शत्रुघन चारो भाई शीघ्र ही श्रृंगार करके आ गए । २ समस्त माताओं ने विधि विधान से मंगला आरती की । कोई दही और मछली लेकर आगे आगे दौड़ रही थीं । ३ कोई आगे-आगे राजहंस पक्षी को चला रही

आम्भे आण मंगळ कृत्य करिबाक भले । एमन्त बिचारि जे दाउण्डि सज कले ७५
पूर्ण कुम्भे गंगाजळ नेइण रखिले । अति आनन्दरे सेहु उतसब जे कले ७६
शंख महुरी बाद्य शबद घोर करि । हुळहुळि शबदरे बसुन्धरी पुरि ७७
रतन हिन्दोळरे समस्ते बिजे कले । महामाय़ा स्नानकु समस्ते चळि गले ७८
हरिद्रा सुगन्ध लगाइ देबींकि माजणा । स्नान कराइले होइ करि तोष मना ७९
सिन्दूर कज्जळ जे गन्ध चन्दन देले । सकळ अळंकार नेइण छुआंइले १८०
देखिण महामाय़ा पाषाण रूप तेजि । पार्बती स्वरूपरे बिजे कले बेगि १८१
गंगा जळ तोळिण सात थर देले ।ए पाणिरे जानकि स्नान करन्तु बोइले ८२
एते कहि अन्तर्द्धान हेले देबी किना ।अन्तर्द्धान देखि सर्बे लेउटि आसे किना ८३
नवरे प्रबेश जे हेले जाइकरि । चारि दुहितांकु अणाइ बेगि करि ८४
कोळे रत्न पीढ़ारे नेइ बसाइले । तोळा गंगा जळरे स्नान कराइले ८५
शरीर पोछिण जे नूतन बसन पिन्धाइ । पलंक उपरे जे बसाइले नेइ ८६
एथु अनन्तरे शुण गो भगबती । दशरथ पुत्रंकर होइला किस रीति ८७
पार्बती बोइले देब सेठारु किस हेला । दशरथ पुत्रंकर बाडुअ अबस्था गला ८८
तोळा पाणि स्नान जे करिबार पुण । सेठारु बाळक अंग तेजिले श्रीराम ८९

महर्षि जनक की पत्नी ने विचार किया । ७४ हम अन्य मागलिक कृत्य करे, इस प्रकार का विचार करके उन्होने आनन्द का वाद्य विशेष तैयार कराया । ७५ गंगाजल से पूर्ण कुम्भ रखवा दिये । उन्होने भी अत्यन्त आनन्दोत्सव किए । ७६ शख महुरी आदि वाद्यनाद के साथ की गई मागलिक ध्वनि से पृथ्वी गूंजने लगी । ७७ रत्न शिविकाओ पर सवार होकर वह सब महामाया भगवती को ढारने को चल दी । ७८ हल्दी तथा सुगन्ध लगाकर उन्होने देवी का मार्जन किया और स्नान कराकर सन्तुष्ट हो गईं । ७९ फिर उन्होने सिन्दूर काजल गन्ध चन्दन लगाया और समस्त अलंकार लेकर स्पर्श कराए । १८० यह देखकर महामाया पाषाण रूप त्यागकर शीघ्र ही पार्वती के रूप में विराजमान हो गई । १८१ उन्होंने सात वार गगाजल उठाकर दिया और कहा कि इस जल से जानकी स्नान करे । ८२ इस प्रकार कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई । तब यह देखकर सभी लौट आईं । ८३ वह लोग महल मे जाकर प्रविष्ट हुईं । फिर उन्होने शीघ्रही चारों कन्याओं को बुलाया । ८४ फिर उन्हे गोद में लेकर रत्न-पीढो पर बिठाया और ढारे हुए जल से उन्हे स्नान कराया । ८५ शरीर पोछकर नये वस्त्र पहनाए और उन्हे लेकर पलंग के ऊपर बिठा दिया । ८६ हे भगवती ! इसके पश्चात् दशरथ के पुत्रो का जो विधान हुआ उसे सुनो । ८७ पार्वती ने कहा हे देव ! फिर वहाँ क्या हुआ । दशरथ के पुत्रो की अविवाहित अवस्था शेष रह गयी । ८८ ढार के पानी से स्नान करने के पश्चात् श्रीराम का

सुमन्त मन्त्री तोळि धइला बीर छति । आरोहण करि अछि रण सिंह हस्ति १९
जोधा कुरुमुख दरपण अछि धरि । आरोहण करिण महा मेघनाद करि २२०
सुमन्तर नन्दन धरिछि धूप काठि ।
आरोहण कराइ बिभाण्डक कुमर राजपिठि २२१
आबर सामन्तमाने घनिण चामर । समस्ते हे बसिछन्ति गज कन्द पर २२
सिंह द्वारे उभा जे होइले चारि भाइ । मंगळ आळती जे बशिष्ठ कले तहिँ २३
बशिष्ठ बिश्वामित्र आबर गुरु जन । समस्ते हे आरोहण कले सुखासन २४
सुबर्णमय़ रथे बिजय़े रघुनाथ । शरासन नारद घेनिण बेनि हस्त २५
भरत लक्ष्मण शतृघन तिनि भाइ । रथमान चढिण श्रीराम पाखे जाइ २६
जुबा जुबती थाटरे पशिले झसाइ । गहळरे ठेळि होइ देखन्ति सर्बे चाहिँ २७
काहार बसन मान ठिआरे गला चिरि ।
काहार बस्त्र अधे नाहिँ न जाणे सुन्दरी २८
काहार कर्ण भुषण पड़िलाक तळे । गज मोतिहार छिडि पड़िला गहळे २९
केबण सुन्दरीर तुटिलाक बाहि । काहार गोडु नुपुर पडिला न जाणइँ २३०
एहा शुणि केउँ नारी बसणि काढ़िला । हजिब ए सिना बोलि तुण्डरे जाकिला २३१
काहार कबरी थाउँ थाउँ गला फिटि । फुल माळ मान सबु एणे तेणे लोटि ३२

महाराज दशरथ चढ गए। उसका नाम शतृजय था और वह बलवान तथा महातेजस्वी था। १८ मंत्री सुमन्त ने वीर क्षत्र उठाकर धारण कर रक्खा था। वह राजसिंह हाथी पर सवार था। १९ पराक्रमी कुरुमुख दर्पण धारण किए था। वह महान मेघनाद हाथी पर सवार था। २२० सुमन्त का पुत्र अगरबत्तियाँ लिए था। उसने विभाण्डक नन्दन को हाथी की पीठ पर बैठा रक्खा था। २२१ अन्य सभी सामन्त लोग चामर लेकर हाथियो की पीठ पर बैठे थे। २२ चारो भाई सिंहद्वार पर खड़े हो गए। वहाँ पर वशिष्ठ ने मगला आरती की। २३ वशिष्ठ विश्वामित्र आदि जितने गुरुजन थे वह सभी सुखासनों पर विराजमान हो गए। २४ दोनो हाथो मे धनुष बाण धारण किए हुए श्री रघुनाथ जी सुवर्ण के रथ पर विराजमान हुए। २५ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनो भाई रथों पर बैठ करके श्रीराम के पास जा पहुँचे। २६ युवा-युवतियाँ सेना में झपट कर घुस आई। भीड़ में धक्का-मुक्की करते हुए सभी लोग देख रहे थे। २७ किसी के वस्त्र फट गए। किसी सुन्दरी को यह ज्ञात ही नही था कि उसका वस्त्र आधा ही है। २८ किसी का कर्णाभूषण नीचे गिर गया। किसी का गजमुक्ता हार टूट कर भीड़ में छितरा गया था। २९ किसी सुन्दरी का भूषण टूट गया। किसी के पैर से नूपुर गिर गया और उसे पता ही न चला। २३० यह सुनकर किसी नारी ने थैली निकाल ली। यह खो जाएगी ऐसा सोचकर उसे मुख में दबा लिया। २३१ किसी की चोटी रुक-रुक कर खुल

राजहंस पक्षी केहु आगरे चलाइ। श्वेत पारुआकु जे गगने उडाइ ४
केउँ माताए देइ गोरचना चिता। हुळहुळि देले दासीमाने होइ श्रोता ५
माता मानंकु नमस्कार कलेक चारि भाइ।
चाउळ आञ्जुळि गुआ मातामानंकु देइ ६
द्रुतग्र तण्डुळ आञ्जोळि माताए देले। कनक दुर्गांक चरणे नमस्कार कले ७
पूर्णकुम्भ श्रीफळ देखिण चळिजाइ। पितांकर पादे जाइ नमस्कार होइ ८
अपलक होइ चाहे ँ दशरथ राग्र जाण। मने मने आनन्द होइलाक पुण ९
बिचारइ धन्य धन्य एमानंक माता। पुण बोले धन्य धन्य जनक दुहिता २१०
पुण बोले धन्य धन्य मोर रबिकुळ। धन्य धन्य जनक दुहिता तपफळ २११
धन्य धन्य एहाकु देखन्ति जेते जन। पुण मने बिचारइ गगन धन्य धन्य १२
बशिष्ठंक चरणरे चारि पुत्र घेनि। प्रणाम कलेहिँ अजोध्या नृपमणि १३
बिश्वामित्र आदि जेते मुनिमाने थिले। पुत्र घेनि दशरथ पादे प्रणमिले १४
ब्राह्मण मानंक मुखु सुकल्याण पाइ। पुत्रंकु घेनि बिजे अजोध्या नरसाइँ १५
बाजे बाजणा बसन्त रागरे जे भेदि। महुरि ध्वनि जाइ गगने आछादि १६
लक्षेक शंख आगे स्फुरइ घन घन। सम्भव होइ बाहार चतुरंग सैन्य १७
दशरथ राजा आरोहिला मत्त गज। शत्रुजग्र नाम तार बळ महा तेज १८

थी तथा सफेद कबूतर को आकाश में उड़ा रही थी। ४ कुछ माताएँ गोरोचन का तिलक लगा रही थी। और दासियाँ दर्शक बनकर मागलिक ध्वनि करने लगी। ५ चारो भाइयो ने माताओं को नमस्कार किया। उन्होने चावल तथा सुपारी की अजलि माताओ को दी। ६ माताओ ने तुरन्त ही चावलो की अंजलि दी तथा कनक दुर्गा के चरणो मे नमस्कार किया। ७ चारो भाइयो ने पूर्णकुम्भ तथा श्रीफल को देखकर जाकर पिता के चरणो मे नमस्कार किया। ८ राजा दशरथ उन्हें निर्निमेष नयनो से निरख रहे थे तथा मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। ९ वह सोच रहे थे कि इन लोगो की माताएँ धन्य है। वह फिर बोले कि जनक की कन्याएँ धन्य है। २१० फिर वह कहने लगे कि हमारा सूर्यवश धन्य है। जनक तनया की तपस्या का फल धन्य है। २११ जो लोग इन्हे देख रहे है वह धन्य है। फिर मन मे विचार करने लगे कि यह आकाश धन्य है। १२ अयोध्या के श्रेष्ठ राजा ने चारो पुत्रों को साथ ले जाकर वशिष्ठ के चरणो में प्रणाम किया। १३ फिर राजा दशरथ ने पुत्रो को साथ लेकर विश्वामित्र आदि जितने मुनिजन थे सबके चरणो मे प्रणाम किया। १४ ब्राह्मणो के मुख से आशीर्वाद प्राप्त करके पुत्रो के साथ श्रेष्ठ अयोध्या के नरपाल विराजमान हुए। १५ बसन्त राग में बाजे बज रहे थे। महुरी की ध्वनि आकाश मे गूँज रही थी। १६ आगे-आगे लाखो शख बज रहे थे। सज धजकर चतुरंगिनी सेना बाहर निकली। १७ मत्त गज पर

सीता देबी कमळा ए साक्षात नाराय़ण। अबनिरे जात हेले दइब भिआण ४७
जनकर पुण्य कि कहिले शेष अछि। दुहिता पाइला देख स्वय़ं कमळिणी ४८
एमान आउ के नथिबे करि तप। धन्य धन्य जनक तुम्भे जानकी देबी बाप ४९
एसनेक प्रशसा करन्ति नर नारी। के बोलइ काहिँ दशरथ दण्डधारी २५०
के बोलइ सखी गो धबळ छत्र तळ। गज कन्धे बिजे से करिछि महिपाळ २५१
पाट छत्र गहळरे न दिशे गगन। सहस्रे श्वेत चामर गड़इ अबिछन्न ५२
एबे दशरथ राजा श्रीराम चन्द्र पिता। तमुरे जात य़ाकु करिछि बिधाता ५३
एहा जोगु मेदिनि जे होइब उद्धरि। जहुँ ए बंशरे श्रीराम चन्द्र अबतरि ५४
एहा कहुँ श्रीराम दाण्डरे बिजे करि। एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरि ५५
जनक कुशध्वजकु राइण आज्ञा देले।
दशरथ चारि पुत्र बरण करि आण हे बोइले ५६
शुणि करि सज हेले जनक दुइ भाइ। बाहार होइला से बरण करि जाइ ५७
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो हेमबती। सत्या नन्द मिळिले जे जनक राजा कति ५८
बोइले शुणिमा मो बचन महाजति। चारि जाति बरण जे जिब तांक कति ५९
जनक बोइले सुजाण तुम्भे गउतम बळा। अहल्यार पुत्र मोते बहुत हित कला २६०
मन्त्रि होइण जेबे बुद्धिवन्तरे थाइ। पात्र होइण जेबे राजा बचन न भांगइ २६१

अनुसार यह पृथ्वी से उत्पन्न हुई। ४७ जनक के पुण्य के विषय में कुछ कहना शेष नही है। देखो उन्होने स्वय लक्ष्मी जैसी पुत्री प्राप्त की। ४८ ऐसा तप और किसी ने न किया होगा। हे जानकी देवी के पिता तुम धन्य हो। ४९ नर-नारियाँ इस प्रकार प्रशंसा कर रहे थे। कोई बोला कि राजा दशरथ कहाँ है ?। २५० कोई कहने लगी हे सखी ! महाराज हाथी की पीठ पर श्वेत छत्र के नीचे विराजमान है। २५१ पाट-छत्र की बहुतायत से आकाश नही दिख रहा था। अविरल हजारो श्वेत चामरे डुलाई जा रही थी। ५२ इस समय श्रीरामचन्द्र के पिता राजा दशरथ है। विधाता ने तेज से श्रीराम को उत्पन्न किया है। ५३ इनके द्वारा ही पृथ्वी का उद्धार होगा। इसी कारण से इस वश में श्रीरामचन्द्र का अवतार हुआ है। ५४ यह कहते-कहते ही श्रीराम राजपथ पर आ पहुँचे। हे शाकम्बरी ! तुम अब इसके आगे की कथा सुनो। ५५ जनक ने कुशध्वज से राजा दशरथ के चारो पुत्रों को वरण करके ले आने को कहा। ५६ यह सुनकर जनक तथा कुशध्वज सुसज्जित हो गए और बाहर निकल कर उन्होने जाकर उनका वरण किया। ५७ हे हेमवती ! सुनो। इसके पश्चात् सतानन्द राजा जनक के पास आ पहुँचे। ५८ उन्होने कहा हे महर्षि ! मेरी बात सुनिए। चारो जातियो का आमत्रण उनके पास जाएगा। ५९ जनक ने कहा, गौतम तथा अहिल्या के पुत्र सतानन्द ! आप चतुर है और आपने हमारा बड़ा हित किया है। २६० मन्त्री होकर यदि वह

हाती घोड़ा पदाति मध्यरे जाइ पशि । श्रीरामंकु देखिबाकु उछुक शुभ्र केशी ३३
के बोलइ जननि गो आग दण्डे केहु । बिरछत्र धराइण जाउअछि सेहु ३४
जाणिबा लोके बोलन्ति शुण गो तुम्भे पुण । दशरथ मइत्र ए लोमपाद राण ३५
के बोलइ श्रीराम चन्द्र केउँ ठारे अछि ।
के बोलइ एहि क्षणि जाणि बाना पुछि ३६
के बोलइ सखी आगो समदण्डे देख । गहळ होइ जहिँ उडइ उल्लाख ३७
रत्नमये रथ हेम कलस बसन्ति । झिन पतकामान उड़इ पन्ति पन्ति ३८
एहि से श्रीराम चन्द्र शुणरे प्राण सही ।एहांकर दक्षिण पाशे भरत नामे भाइ ३९
श्रीराम चन्द्र पराए गो एहार तनु बर्ण । शोभा दिशइ एहाकु सुबर्ण बिमान २४०
बाम पाशे देख सखो लक्ष्मण कुमर । करे धरि अछइ प्रचण्ड अशिबर २४१
नीळबर्ण रथ गो एहाकु शोभा पाए । चम्पा पुष्प वर्ण गो जगत मोहइ ४२
एहार पछरे गो लक्ष्मण सान भाइ । शतृघन नाम गो एहाकु शोभा पाइ ४३
मानिछि एहाकु देख मर्कतर रथ । एकु एक सुन्दर अटन्ति चारि भ्रात ४४
जनकर झिअ एबे गो केबण पुण्य कला । रूप अनरूपे देख बरकु पाइला ४५
धन्य धन्य श्रीराम चन्द्र सर्बांग सुन्दर । जानकिर रूपकु ए अनुरूपे बर ४६

गई और फूल मालाएँ सब इधर-उधर जा गिरी। ३२ कोई शुभ्रकेशी श्रीराम के दर्शन करने के लिये उत्सुक होकर हाथी, घोडा, पैदल सिपाहियो के बीच मे जा फँसी। ३३ कोई बोली अरी मा ! मार्ग में आगे कोई वीर छत्न धारण कर जा रहा है। ३४ जानकार लोगो ने कहा, अरे तुम लोग सुनो। यह दशरथ के मित्र राजा लोमपाद है। ३५ कोई बोली कि श्रीरामचन्द्र कहाँ है ? कोई कहने लगी कि इसी क्षण पूँछने से पता चल जाएगा। ३६ कोई बोली, अरी सखी मार्ग में सामने देखो। वहाँ पर भीड होने पर भी उल्लास उड़ रहा है। ३७ रत्नमय रथ पर स्वर्ण कलश रक्खे थे। पक्ति की पक्ति सुझीन वस्त्रो की पताकाएँ फहरा रही थी। ३८ हे प्राणसखी ! यह ही श्री रामचन्द्र है। इनके दाहिनी ओर भरत नामक भाई है। ३९ इनके शरीर का वर्ण श्रीरामचन्द्र के वर्ण के समान है। इनका स्वर्ण विमान सुन्दर दिखाई दे रहा है। २४० हे सखी ! देखो बाईं ओर लक्ष्मण कुमार है। वह हाथों में तीक्ष्ण कृपाण लिए हुए है। २४१ इनका नीलवर्ण वाला रथ सुन्दर दिख रहा है। चम्पा पुष्प के समान इनका वर्ण ससार को मोहित करता है। ४२ इनके पीछे लक्ष्मण का छोटा भाई सुशोभित हो रहा है। उसका नाम शत्नुघ्न है। ४३ मै जानती हूँ देखो इनका मरकत का रथ है। चारो भाई एक से एक सुन्दर है। ४४ अब जनक की पुत्नी ने कौन सा पुण्य किया जो देखो उसे रूप के अनुरूप वर प्राप्त हुआ। ४५ सर्वाङ्ग सुन्दर श्री रामचन्द्र धन्य है। जानकी के रूप के अनुरूप यह वर है। ४६ सीता देवी लक्ष्मी और यह साक्षात् नारायण है। दैव के

कुशध्वज राजा जाइ बरिलेक भरथ। गळारे माळा देइ होइले उसत ७७
सेठारु शत्रुघन पाशरे मिळिले। ताहांकु बरण करि तहुँ चळिगले ७८
श्रीरामंक कर धरि जनक चळि गले। भरथ कुशध्वज कर धरि नेले ७९
रत्न चारि बेदीरे नेइण बसाइले ।समस्त बिधि बिधानरे बशिष्ठ आसिले २८०
श्रीराम रत्न बेदीरे जनक दशरथ। वशिष्ठ सत्यानन्द बसिले तुरित २८१
बरण पूजा सेठारे सारिले चारि जण। सेठारु उठि तृतीय बेदीपरे पुण ८२
प्रथम बरण जे लक्ष्मणंकु कले। ब्रह्मा बरण से जे सेठारे सारिले ८३
श्रीरामंक पाशरे चारि जण मिळि। कउशिककु दशरथ बोइले कर जोडि ८४
तृतीय बेदी परे तुम्भे आचार्य्य हेब जति। जनक बोइले मोर मारकण्ड ऋषि ८५
मोर दुहिता मउळा जाआन्तु तुम्भ संगरेटि। शुणिण दशरथ सुमंत्र भरथ डाकि ८६
बोइले लक्ष्मणकु बिभा कर बसि। कउशल्या भरथकु कहिले बिशेषि ८७
शुणिकरि बेनि मउळा मारकण्ड कउशिक। तृतीय बेदीपरे बसिले जाइण त ८८
सेठारु दशरथ बशिष्ठ कुशध्वज। सत्यानन्द द्वितीय बेदी परे परबेश ८९
भरथकु घेनिण सेथिरे बरण पूजा कले। बरुण पूजा सारि सेठाकु चळि गले २९०
चतुर्थ बेदि परे हेले परबेश। बेदि बरण कले मनरे होइ तोष २९१

वरण किया और नौरत्न-हार उनके गले में पहना दिया। ७६ राजा कुशध्वज ने जाकर भरत का वरण किया और गले में माला पहनाकर प्रसन्न हो गए। ७७ फिर वह वहाँ से शत्रुघन के निकट जा पहुँचे तथा उन्हे वरण करके वहाँ से चले गए। ७८ जनक श्रीराम का हाथ पकड़कर और कुशध्वज भरत का हाथ पकड़ कर ले चले। ७९ उन्हे ले जाकर चार रत्नवेदियो पर बैठा दिया और समस्त विधि-विधान के सहित वशिष्ठ वहाँ आ गए। २८० श्रीराम की रत्नवेदी पर शीघ्र ही दशरथ जनक वशिष्ठ तथा सतानन्द बैठ गए। २८१ वहाँ पर चारों लोगों ने वरण पूजा समाप्त की। फिर वहाँ से उठकर तृतीय वेदी पर पहुँचे। ८२ उन्होने प्रथम लक्ष्मण का वरण किया और वहाँ पर ब्रह्मा वरण समाप्त किया। ८३ चारो लोग श्रीराम के समीप आ गए तब दशरथ ने दोनों हाथ जोड़कर विश्वामित्र से कहा। ८४ हे महर्षि ! आप तृतीय वेदी के आचार्य होंगे। जनक ने कहा कि मेरी ओर से ऋषि मारकण्ड रहेगे। ८५ आपके साथ हमारी कन्या के मामा जॉय। यह सुनकर दशरथ ने भरत और लक्ष्मण को बुलाया। ८६ उन्होने लक्ष्मण से बैठकर विवाह करने को कहा और कौशल्या ने विशेष तौर से भरत से वही बात कही। ८७ यह सुनकर दोनों मामा मारकण्ड तथा कौशिक तीसरी वेदी पर जाकर बैठ गए। ८८ वहाँ से दशरथ कुशध्वज वशिष्ठ तथा सतानन्द द्वितीय वेदी पर जाकर प्रविष्ट हुए। ८९ उन्होने भरत को लेकर वरण पूजा की और वरुण पूजा समाप्त करके वहाँ से चले गए। २९० वह फिर चौथी वेदी पर जा पहुँचे। फिर उन्होने मन में सन्तुष्ट होकर वेदी-

बणिजार होइ जेबे लोडिले सर्व पाइ । परजा होइण जेबे राजाकु डरि थाइ ६२
गोरु घोषि जेबे संखोळ करे निति । एते लोकरे प्रशंसा करन्ति बेद पति ६३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगबती । बाजिला शंख महुरि बिर तुर अति ६४
हाति रथि पादान्ति जे सम्भर्बरे आसि । बिप्रमाने बेद जे घेनन्ति तहिँ आसि ६५
कुशध्वज सज जे होइथिले पुण । सत्यानन्द जाइण मिळिले सेठारेण ६६
बरण बिधिमान सकळ घेनाइँ । नापित हाते धराइ मिळिलेक जाइ ६७
देखिण सम्भर्बरे होइले बाहार । आगरे बाजइ जे बिविध बाद्य सार ६८
जाइण मिळिले दशरथ पाशे पुण । श्रीराम लक्ष्मण भरत शतृघन उभा जाण ६९
देखिण जनक कुशध्वज सत्यानन्द तोष । माळब रागरे बेद कले जे अभ्यास २७०
बशिष्ठ ओहलाइण अइले तहिँ जाण । सत्यानन्द पाशरे मिळिलेक पुण २७१
दुइ ऋषि बेद वाक्य कलेक उचारण ।बरण कले से रामकु जनक ऋषि जाण ७२
प्रथमे श्रीफळ जे मस्तके लगाइले । द्वितीय्रे नूतन अमळान पिन्धाइले ७३
पुष्प चन्दन जे दुर्बाक्षित देले । नवरत्न माळा नेइ गळारे लम्बाइले ७४
बरण बिधि सारिण बेगे चळिगले । लक्ष्मणंक पाशरे जाइ प्रवेश होइले ७५
सेहि बिधि बरण ताहाकु जे कले । नवरत्न माळा नेइ गळारे लम्बाइले ७६

बुद्धिमान हो। सामन्त होकर यदि वह राजाज्ञा का उल्लंघन न करे। व्यापारी हो तो उसके पास समस्त वाछित पदार्थ प्राप्त हो। प्रजा होकर यदि वह राजा से डरता रहे। पशुओं को पाल कर यदि उसकी वरावर सार-सम्हाल करता रहे तो ब्रह्मा भी ऐसे लोगों की प्रशसा करते है। २६१-६२-६३ हे भगवती ! तुम सुनो। इसके पश्चात् शख-भेरी, महुरी आदि वाजे जोर से वजने लगे। ६४ हाथी, रथी, पैदल सेना समारोह से आ रही थी। ब्राह्मण लोग वहाँ आकर वेद ग्रहण कर रहे थे। ६५ कुशध्वज भी तैयार थे, सतानन्द भी वहाँ जा पहुँचे। ६६ वह वरण की समस्त सामग्री लेकर नाई के हाथो रखवा कर वहाँ पहुँच गए। ६७ यह देखकर वह वडे समारोह के साथ बाहर निकले। आगे-आगे विविध प्रकार के विशिष्ट वाद्य वज रहे थे। ६८ वह दशरथ के समीप जाकर मिले श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न वहाँ खडे थे। ६९ उन्हे देखकर जनक कुशध्वज तथा सतानन्द को सतोष हुआ। उन्होने मालवराग मे वेदो-उच्चारण किया। २७० फिर वहाँ पर उतर कर वशिष्ठ आ पहुँचे और सतानन्द से मिले। २७१ दोनो ऋषियो ने वेदोच्चारण किया। तब महर्षि जनक ने श्रीराम का वरण किया। ७२ सर्वप्रथम श्रीफल को मस्तक से लगा लिया दूसरे नवीन अम्लान वस्त्र पहनाये। ७३ पुष्प चन्दन दूर्वाक्षत लगा दिया और नवरत्न की माला गले मे डाल दी। ७४ शीघ्र ही वरण विधि समाप्त करके वह जाकर लक्ष्मण के निकट पहुँच गए। ७५ उन्होने उसी प्रकार से लक्ष्मण का

पूर्ण कुम्भ रखिण वरण पूजा करि। इन्द्रादि दशदिगपाळंकु पूजा करि ७
नवग्रह पूजा पुण कले महामुनि। देश काळ वाक्यरे करन्ति वेद ध्वनि ८
वार तिथि तार जोग करिण सुमरि। विधि बिधानरे समस्त से करि ९
वसन अळंकार जे श्रीफळ सहिते। जनक समर्पिले नेइ श्रीरामंक हस्ते ३१०
मस्तकरे चन्दन तिळक देले नेइ। सुगन्ध कुसुम माळा कण्ठरे लम्बाइ ३११
बसने पिन्धाइण बसने उपराण। बेनि कर्ण कुण्डळ देलाक आभरण १२
सुबर्ण पइता कण्ठरे मोतिमाळ। अंगुष्ठिरे मुद्रिका जे भुजकु सरल १३
ए आदि सर्ब अळंकार रामा बरि। दुहिताकु देबइँ कहइ सत्य करि १४
चारि बरंकु राजा बरिला एहि मते। बसन अळंकार बसन सहिते १५
एथु अनन्तरे पुणि हरिद्राधि बिधि। आनन्दे कामिनी माने बाटन्ति हळदि १६
बेदीपरु ओहलाइण गले चारि बर। जनक साजइ नंदी श्राद्धर बेभार १७
सत्यानन्दकु घेनि करइ सर्ब काज्र्य। पुण पूजा करन्ति बासुकि नागराज १८
अष्टकुळा नागकु जे पूजा विधि सारि।बग्रसाला पोति बसि पञ्चकु बिचारि १९
श्राद्ध पूर्णकुम्भ चूतपत्र नटिकाळ। बेणु परे उड़ाइले कुसुम चिराळ ३२०
एथु उत्तारु पुण साधबि जुबती। ग्राम देबर्तिकि जाइ मंगुळि आसन्ति ३२१
धूप दीप नइबेद्य गन्ध पुष्प घेनि। मंगळ गीत गाइण चळन्ति कामिनि २२

पूर्ण कुम्भ को स्थापित करके वरण-पूजा की फिर इन्द्रादि दिग्पालों का पूजन किया। ७ फिर महामुनि ने नवग्रहो की पूजा की। वह देश काल और वाक्य के अनुरूप वेद ध्वनि कर रहे थे। ८ उनके लिये वार, तिथि का स्मरण करके उन्होने समस्त विधि-विधान किए। ९ जनक ने श्रीराम के हाथो मे वस्त्र अलंकार सहित श्रीफल समर्पित किया। ३१० फिर उनके मस्तक पर चन्दन का तिलक लगाया और सुगंधित पुष्पो का हार गले में पहना दिया। ३११ एक वस्त्र पहनाकर अन्य वस्त्र का उत्तरीय तथा कानो के कुण्डल तथा आभूषण प्रदान किए। १२ कण्ठ मे मोतियो की माला, सुनहरा यज्ञोपवीत, सुन्दर दिखने वाली भुजाओ की उँगलियो में मुद्रिकाएँ तथा इन समस्त आभूषणों से श्रीराम को वरण किया और पुत्री को प्रदान करने की प्रतिज्ञा की। १३-१४ राजा ने इसी प्रकार से चारों वरो का वरण वस्त्र अलंकार आभरणो सहित किया। १५ इसके पश्चात् फिर हरिद्रा विधि हुई। स्त्रियाँ आनन्द से हल्दी बाँटने लगी। १६ चारों वर वेदी से उतरकर चले गए और जनक नन्दी श्राद्ध की तैयारी करने लगे। १७ वह सतानन्द को लेकर समस्त कार्य कर रहे थे। फिर उन्होने नागराज वासुकि की पूजा की। १८ अष्टफन वाले नाग की पूजा करके वह आसन विछाकर ध्यान में वैठ गए। १९ श्राद्ध-कलश, आम्रपल्लव, नारियल रखकर बाँसो पर सुमन पताकाएँ उड़ाई। ३२० इसके पश्चात् फिर सधवा स्त्रियाँ जाकर ग्राम देवी की मांगलिक पूजा करने आईं। ३२१ धूप, दीप, गन्ध,

बरण पूजा सारि ऋष्य शृंगकु ड़ाकि । लीळावतींक भाइंकि बसाइले सेथि ९२
कुशध्वजंक शळा अगस्ति तांक पाइँ ।कन्यार पाइँ आचार्ज्य बरण से जे होइ ९३
सेठारू कुशध्वज अष्टवक्र ऋषि घेनि । द्वितीय बेदीपरे बसिले जाइ पुणि ९४
देखिण दशरथ कैकेयी भ्रथ ड़ाकि । नारदकु बोइले आचार्ज्य हुअ निकि ९५
शुणिकरि कैकेयी भाइ नारद बसिले ।बशिष्ठ दशरथ श्रीराम पाशरे बसिले ९६
ए रूपे चारि बेदीरे आचार्ज्य हेले पुण । बसिले षोळ जण हरष मने पुण ९७
सकळ ऋषि माने सेठारे विजे कले ।चाळिशि सहस्र राजा आस्थाने बसिले ९८
परजा पथुकि जे आसन्ता गला लोके । एथि सरदार पादान्ति सैन्य जेते ९९
हस्ती घोड़ा पएकार सारेणि ओट जाण ।
चारि बेदी चारि पाशे घेरिण रहिलेण ३००
मध्यरे अपसरी नृत्य रंग करि ।चउपाशे बाद्य जे बजान्ति बाजन्तरि ३०१
बेदीर उपरे जाइ बसिले विप्रवर । गह गह शबद शुभइ महागोळ २
एथु अनन्तरे पुण बशिष्ठ महाऋषि । जनक मुख चाहिँ बचन परकाशि ३
पहरे आसि हेला परबेश बेळ । अमृत लग्ने कर बरण अनकूळ ४
एते बोलि श्रीरामकु बेदीरे बसाइ । पूर्णकुम्भ आग करि बसिले रघुसाइँ ५
पूर्ब मुख होइकरि बसिले जनक ।बशिष्ठ महाऋषि जे करावन्ति वाक्य ६

वरण किया । २९१ वरण पूजा समाप्त कर उन्होने ऋष्यशृग को बुलाकर वहाँ नीलावती के भाई को बिठाया । ९२ अपनी ओर से कुशध्वज के साले ने अगस्त को और कन्या की ओर से आचार्य वरण (अपना-अपना) हुआ । ९३ फिर वहाँ से कुशध्वज अष्टावक्र ऋषि को लेकर दूसरी वेदी पर जा बैठे । ९४ यह देखकर दशरथ तथा कैकेय ने भरत को बुलाकर नारद से आचार्य बनने के लिये कहा । ९५ यह सुनकर कैकेयी के भाई तथा नारद बैठ गए । वशिष्ठ तथा दशरथ श्रीराम के पास बैठे । ९६ इस प्रकार चारो वेदियों पर आचार्य हो गए और सोलह व्यक्ति प्रसन्नचित्त होकर बैठ गए । ९७ समस्त ऋपि लोग वहाँ पर उपस्थित हो गए । चालिस हजार राजागण मण्डप में विराजमान थे । ९८ प्रजा, वटोही आने-जाने वाले लोग सरदार और पैदल सेना आदि जितने भी लोग थे हाथी, घोड़े, पयकार तथा ऊँट आदि सब चारो वेदियो को चारो ओर से घेरकर खडे थे । ९९-३०० इसके मध्य मे अप्सराये नृत्य रंग कर रही थी और चारो ओर बाजा वाले बाजे बजा रहे थे । ३०१ श्रेष्ठ ब्राह्मण वेदी पर जा बैठे । चहल-पहल का अत्यन्त शोर सुनाई देने लगा । २ इसके पश्चात् फिर महर्षि वशिष्ठ ने जनक के मुख की ओर देखते हुए कहा । ३ सहज ही वह शुभ वेला आ पहुँची है । अमृत लग्न में वरण का शुभारम्भ करो । ४ ऐसा कहकर श्रीराम को वेदी पर बिठाया । रघुनाथ जी पूर्ण कुम्भ आगे रखकर बैठे । ५ जनक पूर्व की ओर मुख करके बैठे । महर्षि वशिष्ठ सकल्प कर रहे थे । ६

त्र भंगिरे श्रीरामचन्द्रकु डाकन्ति । शून्ये शून्ये चम्ब केहु देइण हसन्ति ३८
बोलइ सीतांकुइ पाळिबटिवि भले ।कोप न करिब नॉ किञ्चित दोष कले ३९
ाबरहिँ बिभाकु नोहिबटिकि पुणि । एकथा अटे आम्भर सबुरि मागुणि ३४०
ाहुँ परिहास ताकु करन्ति जुबती । ताहा शुणि अल्प अल्प हसि दाशरथि ३४१
ारि बरंकर ए बिधि सरिला मंगळन ।

जानकि कि मंगिळि आसन्ति नारी गण ४२

निष्ठ तिनि भग्नि सहितरे सति । जे बिधि बिधानरे मंगुळि हुअन्ति ४३
त्थु अनन्तरे पुण मुदुसुलि माने । हळदि घेनि गले राजांक सन्निध्याने ४४
मर साइ भलकरि न पारन्ति नेइ । देखिण दशरथ राजा आपणे कहइ ४५
आण आण हळदि गो नकर तुम्भे भीति । आम्भ श्रीअंगरे आणि लेपरे जुबती ४६
पुत्रमानंकर बिभा उत्सव मोहर । हळदिकि बिमुख गो नाहिना मनर ४७
राजा आज्ञा पाइण जे मुदुसुलिमान । राजांकु बेढ़ि कुकुम करन्ति लेपन ४८
सर्वांगरे लेपन्ते दिशिला सुन्दर । सुवर्ण गुणा पराए बाडि मनोहर ४९
पक्व केश ताहार हळदि रस मिशि । दशरथ राजन तहिँ शोभा दिशि ३५०
बशिष्ठ बिश्वामित्र बाम देब मुनि । हेले मंगळन समस्त ऋषि घेनि ३५१
लोमपाद जोध कुरु सुमन्त सहिते । बर जात्री पणे से जाइ थिले जेते ५२

स्त्री गण्डस्थल पर कुमकुम रगड रही थी। ३७ कोई आँख मारकर श्रीराम को बुला रही थी और कोई शून्य-शून्य में चूमकर हँसने लगती थी। ३८ कोई कहती थी कि आप सीता का भली प्रकार से पालन करेंगे। थोडा अपराध करने पर क्रोध न करिएगा। ३९ फिर और अन्य विवाह न करिएगा। हम सबकी आपसे यही विनती है। ३४० जब युवतियाँ उनसे परिहास कर रही थी उसे सुनकर दशरथनन्दन मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे। ३४१ इस प्रकार चारों वरो के मांगलिक कार्य सम्पन्न हुए। नारियाँ जानकी की मॉगलिक विधि करने के लिये आई। ४२ तीनो छोटी बहनो के साथ सती सीता का मांगलिक कृत्य विधि-विधान से होने लगा। ४३ इसके पश्चात् वेशकारिणी दासियाँ हल्दी लेकर राजा के पास गई। ४४ भली प्रकार पकड़ने पर भी वह उसे साध नही पा रही थी। तब ऐसा देखकर राजा दशरथ ने स्वय कहा। ४५ लाओ-लाओ हल्दी ले आओ! तुम लोग भय मत करो। अरी युवतियो! उसे लेकर हमारे अगों में लेपित कर दो। ४६ मेरे पुत्रो का विवाहोत्सव है। हल्दी से मेरा मन विमुख नही है। ४७ राजा की आज्ञा पाकर वह वेशकारिणी दासियाँ राजा को घेरकर कुमकुम लेपन करने लगी। ४८ उसके लेपन से सर्वांग सुनहरा निखर आने से मनोहर दिखने लगा। ४९ राजा दशरथ के पके बाल हरिद्रारस के लग जाने से सुन्दर दिखाई देने लगे। ३५० महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, बामदेव आदि समस्त ऋषियों को लेकर माँगलिक विधि सम्पन्न हुई। ३५१ लोमपाद योध कुरु तथा सुमन्त के

नगर परिमळ बोलन्ति राज बाट । जुबतींक गमने सुन्दर बिशिष्ठ २३
देबतांकु मंगुळि निजपुरे आसि । वरकु मंगुळिबाकु अइले शुभ्र केशि २४
श्रीराम लक्ष्मण जे भरथ शतृघन ।रत्न पिढ़ारे बसाइ बेढ़ि बसि नारी गण २५
सुवर्ण गरिआरे दिब्य कुसुम पूराइ । श्रीरामकु बेढि वसि हुळ हुळि देइ २६
कपाळरे हळदि तिळक देले नेइ । एक आरकरे अग्रसर सेहि होइ २७
के भुजरे लगाए के कण्ठरे लगाइ । केबण तरुणि बेनि चरणरे देइ २८
केहु बक्षस्थळरे के लगाए पिठि । कन्ध देशे लगाइले केवण बिम्बोष्ठी २९
केबणहिँ चतुरि कुकुम घेनि करे । नेइण लगान्ति रामचन्द्रंक मुखरे ३३०
श्रीरामंक श्रीकर कुच परे देइ । आनन्द मनरे से भुजरे कुकुम लगाइ ३३१
मदने मत होइ केबण जुबती । रामचन्द्र पृष्ठ देशे स्तन आउजान्ति ३२
केहु नेइ श्रीपसर निज जंघे लदि । हृदरे हृद लगाइ हुअन्ति प्रमोदि ३३
केहु कोळ करन्ति जे रमण संजोगे ।हिआ उर देइण के भिड़न्ति अति सरागे ३४
शालि शळा भाउज जे करन्ति ढ़माळि । केहु कामभर होइ सति न सम्भालि ३५
स्तम्भीभूत होइण चाहँ केउँ नारी । रामचन्द्र मुखकु अनाइ नेत्र ढ़ालि ३६
लभिर भितरकु के काडइ मळकुटि । केहु नारी गण्डस्थळु कुकुम उकुटि ३७

पुष्प, नैवेद्य आदि लिए हुए मागलिक गीत गाती हुईं स्त्रियां चली जा रही थी। २२ नगर के सुवासित राजपथ पर विशिष्ट सुन्दरियाँ निकल पडी। २३ वह शुभ्रकेशी सुन्दरियाँ देवी की पूजा करके अपने वर का पूजन करने आ गईं। २४ श्रीराम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को रत्नपीढो पर बिठाकर नारियाँ घेरकर बैठ गईं। २५ सुवर्ण के घडे में दिव्य पुष्प भरकर श्रीराम को घेरकर बैठकर वह लोग मागलिक शब्द करने लगी। २६ उन्होने मस्तक पर हल्दी के टीके लगा दिए। एक-दूसरे से आगे बढ़कर उन्होने यह कार्य किया। २७ कोई भुजाओ में, कोई कण्ठ मे और कोई युवती दोनों चरणो में लगा रही थी। २८ कोई वक्षस्थल और कोई पीठ मे लगा रही थी। किसी बिम्बाधारी ने कधो पर लगा दिया। २९ कोई चतुर स्त्री हाथ में कुमकुम लेकर श्रीराम के मुख पर लगा रही थी। ३३० श्रीराम के हाथ को कोई कुच के ऊपर रखकर प्रसन्न मन से बाहुओ पर कुमकुम लगा रही थी और कोई युवती कामोन्मत्त होकर श्रीराम की पीठ पर स्तन सहला रही थी। ३३१-३२ कोई उनके श्री चरण को लेकर अपनी जघा पर लादकर छाती में हुदा लगाकर प्रसन्न हो रही थी। ३३ कोई रमण सयोग के लिये उनका आलिगन कर रही थी। कोई छाती सटाकर बड़े प्रेम से उनसे भिड़ रही थी। ३४ साली, साले, भाभियाँ उनसे मस्खरी कर रही थी। कोई कामातुर होकर अपने सतीत्व की रक्षा नही कर पा रही थी। ३५ कोई स्त्री उन्हे ठगी-ठगी सी देख रही थी और श्रीरामचन्द्र के मुख पर दृष्टि जमाए हुए थी। ३६ कोई नाभि के भीतर से उबटन का मैल निकल रही थी। कोई

षोळ जण बसिले चारि बेदि परे। श्रीराम लक्ष्मण भ्रथ शतृघन पाशरे ६७
आचार्य्ये षड़ अर्घ्ये पुष्य बाचन करि।सुगन्ध पुण्य बासरे जे चारि बर वरि ६८
मातृ पूजा बसुधारा कउतुक सुत्र। वेदमन्त्र प्रमाणे करन्ति समस्त ६९
तृतीय बरण जे बिधि मते सारि। शिळा बरण जे कले ब्रह्मचारी ३७०
शिळा बरण सारि बेदमन्त्र घोषि। अग्निकि आरोपण कलेक महाऋषि ३७१
तेते बेळे जनक खिर पाञ्चि आणि। ऋषि माने मन्तुरि देले बेगे पुणि ७२
चारि ज्वाईंकि नेइ जनक सर्मपिले।श्रीराम लक्ष्मण भ्रथ शतृघन पिन्धिले ७३
मुकुट बान्धिले नेइ मस्तक उपरे। चारि बेदिरे बसिले कटकम्पा परे ७४
एसनक समग्नरे अइले देबी सीता। संगतरे तिनि भग्नि बहुत बनिता ७५
फळ पुष्प देइ सीता श्रीरामंकु नमइ। सप्त पादुकादि उपचार कले तहिं ७६
उदुँ उर्मिला माळिनि सुक्रिता तिनि भग्नि।
फळ पुष्प नेइ तिनि भाइंकि जे नमि ७७
एथु अनन्तरे हेला लबण चामरि। पूजा बढ़ाइले चारि कन्या बृद्धानारी ७८
एथु अनन्तरे पुण हेला ब्राह्मण भोजन। भितरकु ड़ाक से दिअन्ति बिद्युजन ७९
जानकिंकि आण बेगे कन्या बेशकरि। मस्तकरे मुकुट गळारे पुष्प भरि ३८०
कुश बिट आदि कले बेदर बिधान। बेश भूषण कन्याकु कले दासीगण ३८१

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के पास वेदी पर सोलह व्यक्ति बैठे थे। ६७ छः आचार्यो ने स्वस्ति वाचन करते हुए अर्घ्य प्रदान किया। सुगन्धित सुवास से उन्होंने चार वरो का वरण किया। ६८ वेदमन्त्रो के अनुसार मातृपूजन वसुधारा तथा कौतुक सूत्रादि समस्त कार्यक्रम किये गए। ६९ विधिपूर्वक तृतीय वरण समाप्त करके ब्रह्मचारी ने शिला वरण किया। ३७० शिलावरण समाप्त करके वेदोच्चारण करके महर्षि ने अग्नि का स्थापन किया। ३७१ उसी समय जनक विचारपूर्वक विवाह की वेदी पर पहनने वाले वस्त्र ले आए। उसे ऋषियो ने शीघ्र ही अभिमन्त्रित करके दे दिया। ७२ जनक ने उसे लेकर चारों दामादो को समर्पित किया। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न ने उन्हे पहन लिया। ७३ उन्होने मुकुट लेकर मस्तक पर बाँध लिए तथा चार वेदियो पर वह चारों बैठ गए। ७४ इसी समय देवी सीता आ गई साथ मे बहुत सी स्त्रियो के साथ तीनो बहने थी। ७५ फल, पुष्प प्रदान करके सीता ने श्रीराम को प्रणाम किया तथा सप्त पादुकादि कार्यक्रम सम्पादित किए। ७६ फिर उर्मिला, मालिनी तथा सुक्रता तीनों बहनों ने फल, पुष्प लेकर तीनो भाइयों को नमन किया। ७७ इसके पश्चात् परिछन हुआ। फिर वृद्धा स्त्रियो ने चारो कन्याओ की पूजा समाप्त की। ७८ इसके पश्चात् ब्राह्मणो ने भोजन किया। विद्युज्जन भीतर से आवाज दे रहे थे। ७९ जानकी को कन्या वेश बनाकर मस्तक पर मुकुट तथा गले में पुष्प हार पहनाकर शीघ्र ही ले आओ। ३८० फिर कुशवट आदि वैदिक

नग्र नर नारी माने सर्बे मंगुळि हुअन्ति। कुंकुम वर्ण पराए दिशिलाक पृथि ५३
दाण्डरे हळदि पड़े हातेक वहळ। मंगळ उत्सबरे होइला नग्रे गोळ ५४
चारि दिग राजाकर जेते सैन्य थिले। समस्तकु जनक कुंकुम दान देले ५५
दशरथ लोमपाद आदि राजा जेते।माजणा विधि विधान सारिले समस्त ५६
सर्बागरे नड़प घेनिण बर जान्ती।नदी पुष्करिणीकि स्नाहान करि जान्ति ५७
जनकर मन्दिरे प्रवेश हेले जाइ। भुञ्जि बाकु बसिले से गउरव पाइ ५८
लोमपाद दशरथ अजोध्या कुरु तिनि। संगरे सर्व राजा सामन्त पात्र घेनि ५९
अनुरूपे समस्तकु ठाव करि देले। पत्र पाणि देइण से अन्न परशिले ३६०
नानादि व्यञ्जन मान दिअन्ति क्षण क्षण।

दधि दुग्ध घृतरे से होइछि निर्माण ३६१
नाना जाति पिठा पणा पइढ़ कदळि। भरि भोजन देले से जनक तपशाळि ६२
सन्तोष होइ करि उठिले सर्बजन।बास पाणि घेनि सर्बे करन्ति आचमन ६३
समस्तकु देले नेइ कर्पूर ताम्बुळ। एसनेक समग्रे सबिता अस्तकाळ ६४
छाया मण्डपकु जे मण्डिले हुळा जाळि। एक मणि तेज दिशे आरेक उगुळि ६५
वर बेश होइण अइले चारि भाइ। द्वितीय्र वरणकु वेदिपरे बिजे जाइ ६६

सहित जितने भी बराती वनकर गए थे उन्हे नगर के नर-नारी मांगलिक कृत्यो से सम्पादित कर रहे थे। सारी पृथ्वी कुमकुम वर्ण की दिख रही थी। ५२-५३ हाथो से छिटककर हल्दी मार्ग पर गिर रही थी। मांगलिक उत्सव से नगर में कोलाहल मच गया। ५४ राजा के चारो ओर जितनी सेना थी उन सबको जनक ने कुमकुमदान दिया। ५५ दशरथ और लोमपाद आदि जितने राजा थे उन सबने विधि-विधान से मार्जन विधि सम्पन्न की। ५६ बराती लोग सर्वागो मे लेपित होकर नदी तथा पुष्करिणी मे स्नान के लिये चल दिये। ५७ फिर सब जनक के महल मे जाकर प्रविष्ट हुए तथा सम्मान पाकर भोजन करने के लिये बैठ गए। ५८ लोमपाद दशरथ तथा अयोध्या के गुरु तीनो के साथ मे समस्त राजाओ तथा सामन्तो को लेकर सबको यथा स्थान पर विठा दिया और पत्र-पानी रखकर भोजन फरोसा। ५९-३६० वह प्रति क्षण नाना प्रकार के व्यजन दे रहे थे जो दही दूध तथा घी से वनाए गए थे। ३६१ अनेक प्रकार के पकवान, पना डाभ (अपक्व नारियल) केले आदि प्रचुर भोजन तपस्वी जनक ने दिये। ६२ सभी लोग सन्तुष्ट होकर उठे, फिर सबने सुवासित जल से आचमन किया। ६३ सबको कर्पूर-ताम्बूल लेकर दिये गए। इसी समय सूर्यास्त हो गया। ६४ मशाले जलाकर छाया मण्डप को मण्डित किया गया। एक मणि का तेज अन्य से अधिक दिखने लगा। ६५ वर वेश मे चारो भाई वहाँ आ गए और द्वितीय वरण के लिये वेदी पर जाकर विराजमान हो गए। ६६

असर तुठरु सुबर्ण पात्रे पाणि आणि । बर पाद धोइले जनक नृपमणि ९६
दधि दुध पइड़ जे मधुरस ढ़ाळि । कन्यार भाइ माने दिअन्ति पाणि तोळि ९७
चरणर तळरे सुबर्णर खुरा दुइ । पाददक जाइ सम्भाळिला पूर्ण होइ ९८
ए प्रभु बामन अवतार एहु पाद । पखाळि नपारि धाता मनरे बिषाद ९९
चउरासि काठि गंगा पादकु नछुइँ । से चरणर उदक शंकर न पाइ ४००
से बिष्णु चरणकु धोइला जनक । पूर्ब काळे तपस्या से कलेक अनेक ४०१
एथु अनन्तरे पुण बिभार बिधान । भितरकु डाकि जे दिअन्ति बिद्युजन २
एथु अन्ते पुण महावाक्य उच्चारि । मन्त्रमान सुमरिण मधुपर्ब सारि ३
जनक ऋषि कोळे अछइ नन्दिनि । बरुण कोळरे जेन्हे सुन्दर कमळिनि ४
श्रीरामचन्द्र बिजे दशरथ कोळे । नाहिँ नाहिँ पटान्तर ए महि मण्डळे ५
जनक राणी माने गगन मार्गे चाहिँ । एक आर करे ठारन्ति आंगुळि देखाइ ६
देख श्रीरामचन्द्र सीताकु हरइ । एहाकु एहि कन्या कन्याकु बर एहि ७
धन्य धन्य श्रीराम श्यामघन जिणि बर्ण । बिजुळि झटक परि पिन्धिला बसन ८
अनेक स्तिरी पुरुष सुन्दर पणे अछि । ए दुहिँकि अनाइले न जोगाए किछि ९
ए समय्रे इन्द्रादि देवगण माने । मातळि राइ से कहन्ति बचन ४१०

लगे। ९५ सुवर्ण के पात्र मे वर्षा का जल लाकर नृपश्रेष्ठ ने वर के पाद-प्रच्छालन किये। ९६ दही-दूध, अपक्व नारियल तथा मधुरस डालकर ढार के लिये पानी कन्या के भाई दे रहे थे। ९७ चरण तल के नीचे दो सुवर्ण के कटोरे थे जो चरणामृत से भर गए थे। ९८ वामन अवतार में विधाता इन प्रभु के चरण न धो पाने से दुखी हो गए थे। ९९ चौरासी काठी की गंगा चरणों को न छू पाई। उस चरणामृत को शिव भी नही पा सके। ४०० उन विष्णु के चरणों को जनक ने प्रच्छालन किया। उन्होने पूर्वकाल में अनेक तपस्या की थी। ४०१ इसके पश्चात् फिर विवाह के विधान के अनुसार विद्वानों ने उन्हे भीतर बुलाया। २ इसके पीछे महावाक्य का उच्चारण तथा मन्त्रपाठ के सहित मधुपर्क की रीति पूर्ण की गई। ३ वरुण की गोद मे सुन्दर लक्ष्मी के समान महर्षि जनक की पुत्री जानकी थी। ४ दशरथ की गोद में श्रीराम-चन्द्र विराजमान थे जिसकी तुलना इस भूतल पर नही हो सकती थी। ५ जनक की रानियाँ आकाश की ओर ताकती हुईं एक दूसरे को उँगली दिखाकर सकेत कर रही थी। ६ देखो श्रीराम सीता को ग्रहण कर रहे है। इनको यह कन्या और इस कन्या को यह ही वर है। ७ श्याम मेघ के वर्ण को जीतने वाले श्रीराम को धन्य है! धन्य है। उन्होने चमकती हुई विजली के समान (पीले) वस्त्र पहन रक्खे है। ८ सौन्दर्य में अनेक स्त्री पुरुष है परन्तु इन दोनो को देखने पर कुछ नही जमता। ९ इस समय इन्द्रादि देवताओ ने मातलि को

चारि भग्नि सहिते अइले देवी सीता। हुळहुळि ध्वनि कले साधबि बनिता ८२
अञ्जुळि श्रीकरे तण्डुळादि धरि। श्रीरामंक उपरकु पकाइ सुन्दरी ८३
से काळरे ऋषि मानंकर वेद ध्यान।हुळहुळि ध्वनि दिव्य जुबतिंकि गान ८४
लोक मानंक आनन्द कळना न जाइ। उपमा देबाकु तिनिपुरे जहिँ नाहिँ ८५
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरि। तिनि भग्नि तण्डुळ बरंकु देइ करि ८६
बेदिर उपरे बसिलेक जाइ। कुशध्वज कोळरे माळिनि शोभा पाइ ८७
कैंकेइर कोळरे भरथ बसिले। बेदपति साबित्री पराए दिशिले ८८
उर्मिळा बसिले जाइ जनक शळा कोळे। सुमित्रा भाइ कोळे लक्ष्मण सुन्दरे ८९
कि अबा हर पार्बती मध्यपुरे आसि। धन्य धन्य बोलि सभाजने परशंसि ३९०
मउळा कोळरे सुक्रिता बिजे करि। निळाबती भाइ कोळे शतृघन बसि करि ३९१
सचि वासब पराए होइले भुषण। नाहिँ नाहिँ पटान्तर ए तिनि भुबन ९२
एथु अनन्तरे पुण शुण गो गउरी। बेश होइ करि बिजे जनक कुमारी ९३
दशरथ कोळरे बिजय़ रघुसाइँ। जनक मुनि कोळरे जानकि शोभा पाइ ९४
श्रीरामचन्द्र आगरे जानकि देवी बसि। वाक्य करावन्ति बशिष्ठ महाऋषि ९५

विधान किए गए। दासियो ने कन्या का वेशभूषा से शृंगार किया। ३८१ देवी सीता चारो वहनों के साथ आ गई। साध्वी स्त्रियो ने मागलिक ध्वनि की। ८२ सुन्दरी ने अजुलि मे चावल इत्यादि लेकर श्रीराम के ऊपर गिरा दिये। ८३ उस समय का ऋपियो का वेदोच्चारण, सुन्दर युवतियो की मांगलिक ध्वनि तथा गान और लोगो के आनन्द की कल्पना नही की जा सकती थी। उपमा देने के लिये तीनो लोको में कुछ नही मिल रहा था। ८४-८५ हे शाकम्वरी ! तुम सुनो। इसके पश्चात् तीनो वहने वरो को चावल देकर वेदी के ऊपर जाकर बैठ गई। कुशध्वज की गोद मे मालिनी शोभा पाने लगी। ८६-८७ कैंकेय की गोद मे भरत बैठे थे। वह ब्रह्मा और सावित्री के समान दिख रहे थे। ८८ जनक के साले की गोद में जाकर उर्मिला बैठ गई। सुन्दर लक्ष्मण सुमित्रा के भाई की गोद मे बैठ गए। ८९ लगता था जैसे शिव-पार्वती मृत्युलोक मे आ गए हों, सभाजन धन्य-धन्य कहते हुए उनकी प्रशसा कर रहे थे। ३९० मामा की गोद मे सुकृता विराजमान हो गई और शत्रुघ्न नीलावती के भाई की गोद मे बैठ गए। ३९१ इन्द्र और शची की भाँति उन्होने भूषण धारण किये थे इन तीनो लोको मे उनके तुल्य कोई अन्य नही था। ९२ हे गौरी ! अव इसके आगे की कथा सुनो। जनकनन्दिनी शृंगार करके वहाँ आ गई। ९३ रघुनाथ जी दशरथ की गोद मे विराजमान थे और महर्षि जनक की गोद में देवी जानकी शोभा पा रही थी। ९४ देवी जानकी श्रीराम के समक्ष वैठ गई। महर्षि वशिष्ठ वाक्-वन्धन कराने

बिबिध प्रकार पात्र मुख दरपण ।काण्ड खण्डा साबेळि जे शरासन त्रोण २५
लक्षे महा मत्त गज सज करि आणि ।
जोद्धा माने बसि धरि अछन्ति जे पुणि २६
लक्षेक अश्व देला से सुलक्षण बन्त । सुबर्णर बाग धेनि चढिण राउत २७
लक्षेक सुरभि देला समकछ करि । लक्षेक परिबार सर्व अळंकार भरि २८
र गीतरे कुशळ अपूर्ब सुन्दर । पूजा मोह करिबारे सर्बे धुरन्धर २९
हब्रते रथ देला रथिक सहित । रत्नमय़े कळश मण्डन बीर नेत ४३०
ते श्वेत चामर जे लक्षेक श्वेत छत्र । लक्षेक देला पुण से सुरंगिनी बस्त्र ४३१
लेक मुक्ता देला चन्द्र कान्ति जिणि ।
लक्षे पुण आणि देले चन्द्र कान्ति मणि ३२
ते हिरा पद्मराग लक्षेक पोएळा । लक्षेक बइडुर्ज्य लक्षेक पुष्पराग माळा ३३
दुका बिञ्चणा पंखा सबु रत्नमय़े । गजदन्त पलंक से नेत तुळि दिए ३४
। शाड़ी पाटरे अपूर्ब सुचुळि । गज दन्त निर्मित अपूर्व खट दोळि ३५
चित्र चान्दु आमाने सुचिकामरे टेरा । नबरत्न चउकि मुकुता रत्न झरा ३६
ड़ बाहुटि शंखुळि कंकण बिदमाळी । चरणकु तोड़र जे कटिकि मेखळि ३७
दयकु पदक कण्ठकु रत्नहार । श्रवणकु कुण्डळ आदित्य तेजकर ३८

ख देखने वाले दर्पण, बाण, तलवारे, सावल, धनुष, तूणीर। २३-२४-२५ लाखों मस्त हाथी सुसज्जित करके लाए गए। उन पर योद्धा लोग यह सब लेकर बैठे । २६ उन्होंने एक लाख लक्षणो से युक्त घोड़े प्रदान किये। उन पर स्वर्णिम गाम पकड़े हुए वीर योद्धा सवार थे। २७ एक लाख एक जैसी गाये प्रदान की। क लाख परिवारी भी अलंकारो से विभूषित कर दिए। २८ वह अपूर्व सुन्दर त्यगीतों मे कुशल, पूजा तथा प्रेम करने मे वह सब धुरन्धर थे। २९ शेष व्रत उन्होने रथियों के सहित रथ जो रत्नमय कलश तथा वीर नेत से सुसज्जित , उन्हें समर्पित किये। ४३० एक लाख सफेद चामर, एक लाख श्वेत छत्र और क लाख रंग बिरगे वस्त्र प्रदान किये। ४३१ चन्द्रकांति को जीतने वाले एक ाख मुक्ता तथा एक लाख चन्द्रकांतिमणियाँ लाकर प्रदान की। ३२ एक लाख ोरा, एक लाख पद्मराग तथा एक लाख पोयला नामक रत्न, एक लाख वैदूर्य था एक लाख पुष्पराग मालाएँ अर्पित की। ३३ पादुका, व्यजन तथा पखे जो ब रत्नमय थे और हाथी दाँत के बने पलग तथा रेशमी गद्दे दिये। ३४ ग विरंगी रेशमी साड़ियाँ, बिचित्र प्रकार के तकिये, हाथी दाँत के बने सुन्दर ूले तथा खटोले प्रदान किए। ३५ कढे-कढ़ाये विचित्र प्रकार के चँदोवे, नवरत्न था मुक्ता और रत्नो से जड़ित चौकियाँ प्रदान की। ३६ ताड़ के आकार के ाजूबन्द, जजीरे ककण वेदे, पैरो की पायल, कमर की पेटी, हृदय के लिये पदक, ले के लिए रत्नहार और कानो के लिये सूर्य से अधिक तेजस्वी कुंडल प्रदान

तुम्भे जाइ श्रीरामचन्द्र बिभा देखि आस। एहा शुणि देव सुत मनरे हरष ४११
से विधि आक्षत घेनि वेग होइ गला।
मिथिला मण्डळे बिभा स्थानरे मिळिला १२
ऋषिमानंक चरणे नमस्कार करि। पाशे वसाइले विश्वामित्र तपचारी १३
शुण देबी भगवती एथु अनन्तरे। कुळ गोत्र उच्चारि वशिष्ठ मुनिबरे १४
महावाक्ये देश काळ पात्रकु सुमरि। श्रीरामचन्द्र दक्षिण भुजकु करे धरि १५
जानकि देवी दक्षिण करतळे नेइ। मन्त्र पढ़ि कुशरे वान्धिले तप देहि १६
शंखे पाणि तोळि जनक ऋषि देला। श्रीरामंकु निज दुहिता समर्पिला १७
हुळहुळि शबद शुभइ घोर तर। मंगळ रागे वाहारे वाजे बीर तुर १८
कोटिए शंख ध्वनि शुभइ घन घन। सुस्वर स्वरे सुन्दरि करन्ति गायन १९
देवताए आनन्द अमर पुरे थाइ। कुसुम बरषन्ति वर कन्यांक शिरे नेइ४२०
श्रीराम सीतांक कर ग्रहण से करि। कनकंकर कर मर्कत कर कि अछि धरि४२१
कन्या दान देइण दक्षिणा ऋषि देला। लक्ष लक्ष सुवर्ण बिप्रकु समर्पिला २२
नाना जाति अळंकार देबाँग वसन। हीरा नीळा सुना मरकत पात्रमान २३
गड़ु गरुआ नाकुआ रतनर झरि। गोड़ धुआ हात धुआ ताटिक खुराखुरि २४

बुलाकर कहा। ४१० आप जाकर श्रीरामचन्द्र का विवाह देख आइये। यह सुनकर देवपुत्र का मन प्रसन्न हो गया। ४११ वह विधि-अक्षत लेकर चल दिया और शीघ्र ही मिथिला प्रदेश के विवाह के स्थान पर जा पहुँचा। १२ उसने ऋषियो के चरणों मे नमस्कार किया। उसे तपस्वी विश्वामित्र ने अपने निकट बैठा लिया। १३ हे देवी भगवती! सुनो इसके पश्चात् मुनि श्रेष्ठ तपस्वी वशिष्ठ ने कुल गोत्र का उच्चारण करते हुए महावाक्य के लिए देश काल तथा पात्र का स्मरण करते हुए श्रीराम की दाहिनी भुजा को हाथ मे पकड़कर देवी सीता के दाहिने करतल में लेकर मंत्रपाठ करते हुए कुश से बाँध दिया। १४-१५-१६ महर्षि जनक ने शख-जल लेकर संकल्प करके अपनी कन्या श्रीराम को समर्पित कर दी। १७ प्रखरता से मागलिक शब्द सुनाई देने लगे। वाहर मगल राग मे वीर तूर्य वज रहा था। १८ करोड़ो शख-नाद का कोलाहल सुनाई दे रहा था। सुन्दर स्वरो में सुन्दरियाँ गायन कर रही थी। १९ आनन्दपूर्वक देवगण स्वर्गलोक से वर-कन्या के शिर पर पुष्प वर्षा कर रहे थे। ४२० श्रीराम ने सीता का हाथ ग्रहण कर लिया। लगता था जैसे मर्कत के हाथ ने स्वर्ण का हाथ पकड़ लिया हो। ४२१ महर्षि जनक ने कन्यादान देकर लक्ष-लक्ष स्वर्ण मुद्राये ब्राह्मणो को दक्षिणा मे दी। २२ अनेक प्रकार के वस्त्रालंकार, हीरा, नीलम, सोना, मरकत के पात्र, गड़ुए चरुआ, टोटी वाली रत्नझारियाँ, हाथ पैर धोने वाले कटोरे कटोरियाँ आदि विभिन्न प्रकार के पात्र,

हेम ध्रुममान एक होइण उठाइ। जानकिर मुख पद्म पाशरे मिळइ ५४
फुटिला पद्मरेकि भ्रमर अशकति। मधु लोभरे जेमन्ते होइ थाइ मति ५५
होम बिधि सारिबारु दक्षिणा मान देइ। आशीर्बाद करन्ति सकळ तप देहि ५६
चउसठि काण्ड बिभार बिधि पाठ। आदि अन्त करि ताहा पढ़न्ति बशिष्ठ ५७
एथु अनन्तरे जे तृतीय बेदी परे। कउशिक मारकण्ड आचार्य्य सेथिरे ५८
एहि बिधिरे लक्ष्मण उर्मिळा कले बिभा।
कुशग्रन्थि बान्धिले ऋषि बेदवाक्ये पूर्ब ५९
जनक आसिण जे जउतुक देले। सेहि बिधानरे अनेक धन रत्न देले ४६०
पुणि तृतीय बेदिरे नारद अष्टबक्र। भरथ माळिनिकि कले बिभा सुत्र ४६१
कुशग्रन्थि बान्धिले बेदवाक्य पढि। कुशध्वज जउतुक दिअन्ति पाणि तोळि ६२
राम बिधि परकारे देले बहु धन। कुशगण्ठि फेडि देले सधबा नारि गण ६३
तहुँ कुशध्वज जे चतुर्थ बेदिरे परबेश। ऋष्य शृंग अगस्ति सेथिरे आचार्य्यंत ६४
लक्ष्मण सान भ्रथ नाम ता शतृघन। दशरथ नृपतिरे कोळर नन्दन ६५
सुकिर्त्ती नामरे जे अति मनोहर। उपमा देबाकु न दिशइ तिनिपुर ६६
कुशध्वज झिअ से माळिनि ठारु सान। से कन्या बिबाह जे होइले शतृघन ६७

होम किया। घृत प्राप्त करके अग्नि संतुष्ट हो गयी। ५३ हवन का धुआँ एक साथ उठकर जानकी के मुख कमल के पास में लग रहा था। ५४ लगता था जैसे प्रस्फुटित कमल में भौरा आसक्त हो गया हो। उनका चित्त मधु के लोभ से आर्कषित हो रहा था। ५५ होम का विधान समाप्त होने पर दक्षिणा आदि प्रदान की गयी और समस्त तपस्वी आशीर्वाद देने लगे। ५६ विवाह के विधि-विधान के चौसठ काडो का पाठ होने लगा। वशिष्ठ आदि से अन्त पर्यन्त उसका पाठ करने लगे। ५७ इसके पश्चात् तीसरी वेदी पर विश्वामित्र मारकण्ड वहाँ पर आचार्य थे। ५८ इसी प्रकार से लक्ष्मण और उर्मिला का विवाह किया गया। ऋषि ने वेदमत्र पढकर कुश ग्रन्थि बाँध दी। ५९ जनक ने आकर दहेज दिया और उसी विधि-विधान से प्रचुरधन और रत्न समर्पित किये। ४६० फिर तीसरी वेदी पर नारद तथा अष्टावक्र ने भरत और मालिनी का विवाह कराया। ४६१ उन्होने मत्र पढ़कर कुश ग्रन्थि बाँध दी। कुशध्वज ने जल लेकर दहेज का सकल्प किया। ६२ उन्होने राम को विधि के अनुसार बहुत सा धन प्रदान किया, सधवा स्त्रियो ने कुश की गाँठ खोल दी। ६३ तब कुशध्वज चौथी वेदी पर प्रविष्ट हुये। शृगी ऋषि तथा अगस्त वहाँ के आचार्य थे। ६४ लक्ष्मण और भरत से छोटे भाई का नाम शत्रुघन था जो राजा दशरथ के कुल में पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ था। ६५ सुकीर्ति नाम की अत्यन्त मनोहारिणी कन्या थी। उसकी उपमा देने के लिये तीनो लोको में कोई नही था। ६६ यह कुशध्वज की पुत्री मालिनी से छोटी थी। इस कन्या का विवाह शत्रुघन के साथ

सम्भवं करि अनेक देला जउतुक। देइण मने तृपति नोहिला जनक ३९
भण्डार सहिते सबु सज करि आणि। चतुरंग सैन्य सबु देला नृपमणी ४४०
सभातळे उभा होइ जोडि बेनिकर। दशरथ महाराजा अजोध्या ईश्वर ४४१
ए मोहर दोहिता जानकि नामे बाळि।रूप गुणे सरि सम नाहिँ महि आळि ४२
एहांकर सुतंकु मुं बिभा तांकु देलि। रघुबंश नाथंकु मुं समंपि होइलि ४३
जउतुक देबाकु मुं नुहइ भाजन। समंपि होइलि तुम्भे पुण सबंजन ४४
एहा शुणि दशरथ कर जोड़ि कहि। होइलि पवित्र तुम्भे बस तप देहि ४५
मोहर नन्दनकु नन्दिनी बिभा कल। अजोध्या नवरे मोर कारेणि होइल ४६
एहा शुणि जनेक परम तोष हेले। इष्ट बन्धु लोके जउतुक नेइ देले ४७
कन्यार मातादि उपमाता खुडि आई। बन्दाइ जउतुक दिअन्ति मुख चाहिँ ४८
आस्थान तळरे होइला द्रव्य पूर्ण। सुमन्त मन्त्रि करे समस्त सम्भाळण ४९
सुलक्षणि द्विज नारी हस्त गण्ठि फेड़ि।जे बिधि बिधान मान समस्त निबाड़ि ४५०
पुणि अग्नि स्थापन करन्ति बिद्युजन। इछा होम करिण पूजन्ति हुताशन ४५१
दिगपाळंकु जे हबिर्भाग देले पुणि।इष्ट होम करन्ति जे बिधि बेळ जाणि ५२
लाज्या होम कले पुण एथु अनन्तरे। घृत पाइ आनन्द होइले बैश्वानरे ५३

किये। ३७-३८ उन्होने बड़े समारोह के साथ बहुत सा दहेज दिया। इतना देने पर भी जनक का मन तृप्त नही हुआ। ३९ श्रेष्ठ राजा ने भडार के सहित सब सुसज्जित करके उन्हे प्रदान किया और चतुरगिनी सेना भी प्रदान की। ४४० फिर वह दोनो हाथ जोडकर सभा में खड़े होकर बोले हे अयोध्या नरेश महाराज दशरथ! यह जानकी नाम की बालिका मेरी पुत्री है। इस पुत्री पर इसके रूप गुण की समता करने वाला कोई नही है। ४४१-४२ इन महाराज के पुत्र से मैने उसका विवाह कर दिया है और रघुकुल नाथ के प्रति समर्पित हो गया हूँ। ४३ मै दहेज देने योग्य पात्र नही हूँ फिर भी हम सबने अपने को समर्पित किया। ४४ यह सुनकर दशरथ ने हाथ जोड़कर कहा हे तप:पूत! मै पवित्र और तुम्हारे वश मे हो गया हूँ। ४५ मेरे पुत्र से आपने अपनी पुत्री का विवाह करके आप अवध महल मे हमारे उद्धार का कारण बने है। ४६ यह सुनकर जनक को अत्यन्त प्रसन्नता हुयी। इष्ट जनो ने तथा बन्धु बान्धवो ने भी दहेज दिया। ४७ कन्या की माताएँ, विमाताएँ चाची, ताई समस्त पूजा करके उनका मुख देखते हुये दहेज प्रदान कर रही थी। ४८ सिंहासन के नीचे समस्त पदार्थ भर गये। मंत्री सुमन्त सबको सँभालने लगे। ४९ सुलक्षणयुक्त ब्राह्मण-पत्नियो ने हाथ की गाँठ खोली और सारे विधि-विधान सम्पादित किये। ४५० विद्वानो ने फिर से अग्नि स्थापन करके इच्छानुसार हवन करके अग्नि की पूजा की। ४५१ उन्होने दिगपालो को हवि का भाग प्रदान किया और फिर शुभ मुहूर्त के अनुसार इष्ट यज्ञ करने लगे। ५२ इसके पश्चात् उन्होने फिर से लाजा

माळिन पछरे बिजय़ भरथ। फूलमाकु आबोरि बासब जेमन्ते ८३
उर्मिळार पछरे बिजय़ सउमित्री। सदाशिव आगरे जेमन्ते पार्बती ८४
सेहि शिब पछरे जेमन्ते निशाकर। सुकित्रा शतृघन जे केमन्ते सुन्दर ८५
जनकर मन्दिर मध्यरे जाइ मिळि। आसिण परबेश होइले सर्ब बाळि ८६
नेत तुळि उपरे बिजय़े बर कन्या। जुत खेळा तहिँ जे कलेक रचना ८७
शुद्ध सुबर्ण कउडि कुड़ाइले नेइ। बाळि बाछन्ति से बर कन्यांकर पाइँ ८८
दुइ बाळि मिशाइ जानकि करे देले। खेळ घर हार जिति परीक्षा से कले ८९
कन्यार लोकमाने बोलन्ति तहिँ थाइ। श्रीरामचन्द्र बिने आन मने हेब नाहिँ ४९०
एमन्त निश्चे हेले फेड़िब आम्भ बाळि। शुणिण हसन्ति बरदिग मुदुसुलि ४९१
सीता घेनि सर्ब काळे बञ्चिब हे दिन। सीता बिने आन ठारे न करिब मन ९२
दुइ कुळरु जहुँ होइला सनमत। कउड़िक पकाइले जनक दुहित ९३
जानकिर बाळि तळे पडिलाक जहुँ। नारीगण माने हुळहुळि देले तहुँ ९४
आम्भे जिणिलु बोलि बोलन्ति कन्या लोके।
मध्यस्त होइण जे कहन्ति पुण थोके ९५
आउ बेळे पुण श्रीरामचन्द्र पाडु बाळि।
तेबे से कथामान जाणिबा थोके परि कळि ९६

भगवान राम गमन कर रहे थे। लगता था जैसे रति के निकट सुन्दर स्वरूप वाला कामदेव गमन कर रहा हो। ८२ मालिनी के पीछे भरत थे। वह ऐसे लग रहे थे जैसे शची को घेरकर इन्द्र खड़े हो। ८३ उर्मिला के पीछे सुमित्रानदन लक्ष्मण, पार्वती के समक्ष सदाशिव की भाँति विराजमान थे। ८४ उन शिव के पीछे जैसे चन्द्रमा हो उसी प्रकार सुकीर्ति के साथ शत्रुघन सुन्दर दिख रहे थे। ८५ फिर समस्त कन्याये जनक मदिर के बीच मे जा पहुँची। ८६ नेत उठाकर उस पर वर-कन्या विराजमान हुये फिर वहाँ द्यूत-क्रीड़ा का आयोजन किया गया। ८७ शुद्ध सुन्दर वर्ण वाली कौड़ियाँ लाकर वहाँ कुड़ेल दी गयी और वर कन्याओ के लिये स्त्रियाँ उन्हे छांटने लगी। ८८ दो स्त्रियो ने मिलाकर उन्हे जानकी को समर्पित किया और क्रीड़ागृह में हार जीत की परीक्षा करने लगी। ८९ कन्यापक्ष के लोग वहाँ उपस्थित होकर कह रहे थे कि श्रीरामचन्द्र के सिवाय अन्य में मन न लगाना। ४९० ऐसा निश्चित होने पर हमारी कन्या उसे खेलेगी। यह सुनकर वरपक्ष की वेशकारिणी परिचारिकायें हँसने लगी। ४९१ वह बोली कि सदा सीता को साथ लेकर अपने दिन व्यतीत करना। सीता को छोड़कर अन्य कही मन न लगाना। ९२ जब दोनो कुलो की सम्मति मिल गई तब जनकनन्दिनी ने कौड़ी फेकी। ९३ जब जानकी की बाजी गिर गई तो नारियाँ मांगलिक ध्वनि करने लगी। ९४ कन्याये बोलने लगी कि हम जीत गयी है। तब कुछ मध्यस्थ होकर बोली। ९५ एक बार और श्रीरामचन्द्र जी

बिधि बिधानरे बिभा वढ़ाइ बेनि मुनि । कन्या बरंकर हस्त बान्धि कुश बेनि ६८
वहुत धन रत्न देले कुशध्वज मुनि त । कर जोडि कहिले अनेक बिनइ त ६९
सन्तोष होइले शुणिकरि शतृघन । एथु अनन्तरे जे पार्वती देवी शुण ४७०
सेठारु कुशरज्ज बिप्रे फेड़ि देले । कटकम्पा उपरे नेइण बसाइले ४७१
अग्निकि समर्पण कलेक आहुति । सहस्रे आहुति लेखा ए देवतारे द्यन्ति ७२
देबकर्म सरन्ते घृत देवार थिर कले । बर कन्या छिड़ा करि आग पछ भले ७३
अग्निरे निबेशिले श्रीफळकु नेइ ।होम बिधि सारिले बर कन्याकु बसाइ ७४
अग्निकि सन्तोष कले अमृत रसनेइ । देखिण देवताए शून्यरे तोष होइ ७५
कुसुम बृष्टि कले चारि बेदि परे । पारिजातक पुष्प सर्बे देखिले नेत्ररे ७६
सकळ ऋषिए जे मने बिचारिले । निश्चय नारायण श्रीराम अटे भले ७७
बिप्रमाने बिचारन्ति अटन्ति श्रीहरि ।राजा गणे बिचारन्ति अटन्ति नर हरि ७८
सेनावळ परजा समस्ते विचारन्ति ।लक्ष्मी नारायण बिभा देखि तोष ह्वन्ति ७९
तेणु अमळाण पुष्प बृष्टि कले जाण । एमन्त बिचार जे कले सर्बजन ४८०
चारिबर पाशरे सुन्दर चारि बामा । नाहिँ नाहिँ पटान्तर देबाकु उपमा ४८१
सीता पछे गमन करन्ति देब राम । रति पाशे जेमन्ते सुन्दर रूप काम ८२

हुआ । ६७ दोनो मुनियो ने विधि-विधान पूर्वक विवाह समाप्त करके कन्या तथा वर दोनो के हाथ कुश से बाँध दिये । ६८ महर्षि कुशध्वज ने वहुत रत्न तथा धन प्रदान किया फिर हाथ जोड़कर नाना प्रकार से विनती करने लगे । ६९ उसे सुनकर शत्रुघन सतुष्ट हो गये । हे देवी पार्वती ! सुनो । इसके पश्चात् ब्राह्मणो ने कुश की रस्सी खोल दी और उन्हे चौकी के ऊपर ले जाकर बैठाया । ४७०-४७१ फिर उन्होने अग्नि मे आहुतियाँ समर्पित की और लगभग एक हजार आहुतियाँ देवताओ के नाम से प्रदान की । ७२ देवकार्य समाप्त होने पर उन्होने पूर्णाहुति देने का निश्चय किया और उन्होने वर कन्या को आगे पीछे खड़ा किया । ७३ फिर नारियल को लेकर अग्नि मे डाल दिया और हवन विधि समाप्त करके वर कन्या को बैठा दिया । ७४ फिर उन्होने अमृत लेकर अग्नि को संतुष्ट किया । यह देखकर प्रसन्न होकर देवता लोग आकाश से चारो वेदियो पर पुष्प वर्षा करने लगे । उन पारिजात पुष्पो को सबने अपने नेत्रो से देखा । ७५-७६ समस्त ऋषियो ने मन मे विचार किया कि श्रीराम निश्चित रूप से नारायण है । ७७ ब्राह्मण लोग विचार करने लगे कि यह श्रीहरि है । राजा लोग सोचने लगे कि यह नरहरि है । ७८ सैन्यबल तथा समस्त प्रजा विचार करने लगी कि यह लक्ष्मीनारायण है और उनके विवाह को देखकर सभी संतुष्ट हो गये । ७९ जब अम्लान पुष्पो की वर्षा हुयी तभी समस्त लोगो ने ऐसा विचार कर लिया । ४८० चार सुन्दर वरो के पास चार सुन्दर वधुएँ थी । उनसे तुलना करने के लिये कोई उपमा नही थी । ४८१ सीता के पीछे

सुबर्ण थाळिरे बाळि अन्न आणि देले । एक पात्रे वर कन्या भुञ्जिब बोइले १२
रत्न झरिरे पाणि अणि देले तोळि।अनेक जुबती माने अछन्ति तहिँ मिळि १३
मुकुतारू अधिक दिशइ अन्न बर्ण । परषन्ति जनक राणीहंस मान १४
लबण चूर्ण सुबास घृत आणि देले । डाळिम्ब जम्बिल बीज अदा परषिले १५
कृष्ण मृदु ब्यञ्जन सुबर्ण परि ज्योति । आनन्दरे श्रीराम मणोहि करन्ति १६
सीता अन्न भुञ्जिबाकु बडाबन्ति हात । रत्न बाहि मध्यरे दिशिले प्राणनाथ १७
पित बस्त्र मुकुट कुण्डळ मणिहार । रुपिला मर्कत परि बिराजे शरीर १८
कोटि कोट पूर्णचन्द्र निन्दइ बदन । राजिब बदन पराय़े सुन्दर नय़न १९
जनकर लब्धे मुखे पूरिछि प्रसन्न । अधर होइछि मन्द हासे परिपूर्ण ५२०
देखि देबी लाजे काडि न पारि हात । मने बिचारन्ति ए मोहर प्राणनाथ ५२१
धन्य धन्य श्रीरामचन्द्र सबाँग सुन्दर । अनेक तपस्यारे मुँ पाइलि ए बर २२
एते बिचारिण निरोपइ पुणि पुणि । ताहा देखि ब्रिचारन्ति सकळ तरुणी २३
के बोलइ अन्न किम्पा न भुञ्जिइ सती । के बोलइ आगे जा रोदन कले पति २४
उच्छिष्ठ बोलि अबा नकले आहार । बिभा समय़रे मात नुहइ ए बेभार २५

पर दूर्वाक्षत देकर जब पूजा विधि समाप्त हो गई तब उनके भोजन की व्यवस्था की गई। ५११ कामिनियों ने स्वर्णथाल में उन्हे भोजन लाकर दिया तथा उन्होने वर कन्या को एक पात्र में भोजन करने के लिये कहा। १२ फिर उन्होने रत्नझरी मे भरकर पानी ला दिया। वहाँ अनेक युवतियाँ उपस्थित थी। १३ अन्न का वर्ण मुक्ताओं से अधिक सुन्दर था। जनक को रानियाँ उसे परोस रही थी। १४ उन्होने पिसा नमक तथा सुवासित घृत लाकर दिया। अनार तथा जमीरी के दाने तथा अदरख भी परोस दी। १५ कृष्णमृदु व्यजन तथा सुनहरी ज्योति से युक्त पदार्थो को श्रीरामचन्द्र आनन्दपूर्वक ग्रहण करने लगे। १६ सीता ने तब अन्न ग्रहण करने के लिये हाथ बढाया। तब रत्न के ककण मे उन्हे प्राणनाथ दिखाई पड़े। १७ पीत वस्त्र मुकुट कुण्डल मणियो के हार से विमण्डित मर्कत का शरीर विशेष प्रकार से सुन्दर दिख रहा था। १८ उनका मुख कोटि कोटि पूर्णचन्द्र की निन्दा करने वाला था। उनके कमल के समान मुख पर सुन्दर नेत्र थे। १९ जनक द्वारा लब्ध मुख पर प्रसन्नता भरी थी। उनके अधर मन्दहास्य से परिपूर्ण थे। ५२० यह देखकर देवी लज्जा से हाथ हटा नही पा रही थी तथा मन मे विचार कर रही थी कि यह हमारे प्राणनाथ हैं। ५२१ हे सर्वाङ्ग सुन्दर श्रीरामचन्द्र ! तुम धन्य हो। अनेक तपस्या से हमे ऐसा वर प्राप्त हुआ है। २२ रह रहकर वह वारम्वार इसी प्रकार का विचार कर रही थी। यह देखकर समस्त युवतियाँ विचार करने लगी। २३ कोई कहने लगी कि सती अन्न क्यो नही खा रही है ? कोई बोली कुछ ही समय पूर्व यह रुदन कर चुकी है। २४ अथवा उच्छिष्ठ समझकर यह

एका बेळ के जणा नाहिँ शुद्धा शुद्धि । समस्ते बोलन्ति ए हेला भल बुद्धि ९७
सीतग़ार हस्तरु कउड़ि घेनि गले ।नागरी नारी माने श्रीराम करे देले ९८
श्रीरामचन्द्र सिञ्चिकरि पाड़िले जे बाळि ।
से वेळे जिणिले पुण जनक दुलाळि ९९
कन्या दिग लोक माने हुळहुळ द्यन्ति । कोपभर होइण कहन्ति रघुपति ५००
एबेळ जे हारिब ताहार सेवक । ए कथाकु साक्षी होइथाअ सर्ब लोक ५०१
शुणिण समस्ते जे परम तोष मति । श्रीराम श्रीकरे कउडि घेनि छन्ति २
कन्यार लोक माने बोलन्ति तुम्भे छाड । आम्भर सिना होइब एधान्तर पीड़ ३
जानकी पकाइबे जिणिछु सिना आम्भे ।कउडि न छाड़ किम्पा धरि अछ तुम्भे ४
शुणि हसि श्रीराम कररु कउडि छाडिले।जुबती माने तोळि जानकि करे देले ५
बाळि करे झमकाइ घेनिण जे सति । अलप अलप हसइ मनरे तोष मति ६
पकान्तेण सेथर पड़िला सीता बाळि । जगत जिता जिणिला जनक दुलाळि ७
एथु अनन्तरे जुतखेळ विधि सारि । बन्दाइण अइले जे जनक मनोहारि ८
पछकरे एकु एक आगसरि हुवन्ति । बर कन्या करशिरे दूबक्षित द्यन्ति ९
हुळहुळि शबदे जे शुभइ निरन्तर । लक्ष्मी नारायण बिजे जनक मन्दिर ५१०
एमन्त बन्दापना विधिरे शिरे जहुँ ।भुञ्जि बाकु ठाव आसि करि देले सेहु ५११

की वारी डाली जाये तव यह वात समझ में आयेगी । ९६ एक वार और सही तब सभी कहने लगी कि यह विचार ठीक है । ९७ नागरी स्त्रियो ने सीता के हाथ से कौडियाँ ले जाकर श्रीराम के हाथो मे दे दी । ९८ श्रीरामचन्द्र ने हिलाकर बाजी गिरायी । उस समय जनकनन्दिनी समझ गयी । ९९ कन्यापक्ष की नारियाँ मागलिक ध्वनि करने लगी तव रघुपति ने क्रोध मे कहा । ५०० इस बार जो हारेगा, वह उसका सेवक होगा । सभी लोग इस बात के साक्षी बन जाये । ५०१ यह सुनकर सभी का मन सतुष्ट हो गया और श्रीराम ने अपने हाथ मे कौडिया ले ली । २ कन्यापक्ष के लोगो ने कहा कि आप छोड़िये । इससे तो हमे आतरिक पीडा होगी । ३ हम लोग जीती है, इसलिये जानकी फेकेगी । तुम पृथक करके कौडियो को क्यो पकडे हो । ४ यह सुनकर श्रीराम ने हँसते हुये हाथो से कौडियाँ छोड दी । स्त्रियो ने उठाकर उन्हे जानकी के हाथों मे दे दिया । ५ सती ने झपट कर कौड़ियाँ उठा ली और प्रसन्नचित्त होकर धीरे-धीरे हँसने लगी । ६ गिरने पर वहाँ सीता की बाजी पड गयी और ससार को जीतने वाले को जनकनन्दिनी ने जीत लिया । ७ इसके पश्चात् द्यूत-क्रीड़ा विधि समाप्त करके जनक ने मनोहर जोडी की पूजा की । ८ एक दूसरे के पीछे वह आगे बढने लगे और उन्होने वर कन्या के सिर पर दूर्वाक्षत छोड़े । ९ निरन्तर मागलिक शब्द सुनायी दे रहे थे, फिर लक्ष्मी-नारायण ने जनक के महल मे प्रवेश किया । ५१० इस प्रकार सिर

गंगा बाण पन्नड़ पेटि अमृत दान कले । चारि बिधानरे भक्ष द्रब्य परसिले ५४१
मणोहि करि सन्तोष हेले बर चारि । एथु अनन्तरे जे आचमनकु बाहारि ४२
दासी माने नेइण सुबास जळ देले । आचमन श्रीराम जे चारि भाइ कले ४३
सुबर्ण डुबाइरे करन्ति आचमन । झिन बसनरे जे पोछिले मुख पुण ४४
सेठारु उठि जाइ पलंके बिजे कले । कर्पूर तामुळ आदि दासी भुञ्जाइले ४५
सेठारु दासीमाने जानकि पाशे गले । मणोहिँ द्रब्य घेनि प्रबेश होइले ४६
आचमन कराइले चारि भउणिकि । सेठारु अन्तपुरे चळिण घेनि जान्ति ४७
गजदन्त पलंक उपरे बसाइले । कर्पूर ताम्बुळ जे दासी भुञ्जाइले ४८
एथु अनन्तरे जे जनक महाऋषि । ऋषि ब्राह्मणकु जे भोजने मन तोषि ४९
अमृत भोजन सारि कले आचमन । कर्पूर बिडिआ देले जनक राजन ५५०
सेठारु राजागणे भोजन कले आसि । अमृत भोजन सारि मने महातोषि ५५१
कर्पूर बिड़िआ राजा समर्पिले नेइ । भुञ्जिण राजा माने बसाकु चळि जाइ ५२
पात्र मन्त्री सेनापति रथि सरदार । निजोग सेबा करि ड़काइ सत्वर ५३
अमृत समानरे भोजन ताकु देले । कर्पूर बिडिआ जे नेइण समर्पिले ५४

खाँड़ से निर्मित पदार्थ, निर्मल अपक्व नारियल आदि अमृतोपम पदार्थ प्रदान किये तथा चारो प्रकार के भोज्य पदार्थ उन्हे परोसे। ३८-३९-५४०-५४१ चारो वर भोजन करके सन्तुष्ट हो गए। इसके पश्चात् वह आचमन के लिये बाहर निकले। ४२ दासियो ने उन्हें सुवासित जल लेकर दिया। श्रीराम आदि चारों भाइयो ने आचमन किया। ४३ वह सोने के पात्रो में आचमन करने लगे। फिर उन्होने झीने वस्त्रो से मुख पोंछ लिया। ४४ वह वहाँ से उठकर पलग पर जाकर विराजमान हो गए। दासियों ने उन्हे कर्पूर-ताम्बूल खिलाए। ४५ दासियाँ वहाँ से जानकी के पास गई और भोजन सामग्री लिये प्रविष्ट हुईं। ४६ फिर उन्होंने चारो बहनों को आचमन कराया। फिर उन्हे साथ लेकर अन्तःपुर को चल दी। ४७ उन्हे हाँथी दाँत के पर्यङ्क पर बिठा दिया और दासी ने उन्हे कर्पूर-ताम्बूल खिलाए। ४८ इसके पश्चात् महर्षि जनक ने भोजन कराकर ऋषि तथा ब्राह्मणों के मन को सन्तुष्ट किया। ४९ अमृतमय भोजन करके उन्होने आचमन किया। फिर राजा जनक ने उन्हे कर्पूर ताम्बूल समर्पित किये। ५५० फिर वहाँ पर आकर राजाओं ने भोजन किया। अमृतमय भोजन करके उनके मन अत्यन्त सन्तुष्ट हो गए। ५५१ राजा ने उन्हे कर्पूर-ताम्बूल लेकर दिये। उसे खाकर राजा लोग अपने आवास को चले गए। ५२ पात्र, मंत्री, सेनापति, रथी, सरदार, सेवकगण आदि सबको शीघ्र ही बुलाकर उन्हे अमृतोपम भोजन प्रदान किया। फिर उन्हे कर्पूर-ताम्बूल समर्पित किए। ५३-५४ फिर पैदल सिपाही पयकार तथा सैन्यबल को बुलाकर अमृततुल्य भोजन प्रदान

के बोलइ आम्भ मानंकु देखि लज्जा कला।बहुत लोक देखि अन्न न खाइला २६
चाल एठारु आम्भे समस्ते चालि जिवा।
जानकिर उपवास एथिरे किम्पा थिवा २७
एहांकर उत्सव आम्भे देखिण आनन्द।एहान्त विचारन्ति ए आम्भर कर्म मन्द २८
बिचारि बोले तहिँ एक नारी जन। मुहिँ जाणि लिणि सखी जानकिर मन २९
अन्न भुञ्जिवाकु ए बढ़ाइला हस्त। रत्न बाहि मध्यरे दशिले प्राणनाथ ५३०
स्वामीर सुन्दर पण देखि अनुसरि।तेणु निमग्न होइ अन्न न भुञ्जे सुन्दरी ५३१
कर जेबे काढ़िवि मुँ नदिशिबे नाहा। एहि भये सुन्दरी जे न चाळइ बाहा ३२
रूपरे कन्या जहुँ प्रघट नोहिला। सीता प्रशंसन्ति तो जीवन भला भला ३३
तेणु पुण बइदेहि भुञ्जिलेक भात। आमिषादि निरामिष अनेक पदार्थ ३४
झडा वड़ा व्यञ्जनरे सड़रस विधि। जेउँ पाक जतने माये करिछन्ति सिद्धि ३५
घृतरे के पक्व पुण कदुरेण तुल्य। दुग्ध हेगु गुड़ दधि मरिचे अमूल्य ३६
भुञ्जि करि श्रीराम प्रशंसा करन्ति। खिरि खिरि सामान आणि परषन्ति ३७
दुग्ध लड्डु गंगा जळे लभ मनोहर। चण्ड वड़ा पापुड़ि जे सह केळि शर ३८
काकरा बड़वर नाना वर्ण पुळि। मोति चुर झील पारिजात चन्द्र केळि ३९
पक्व आम्ब पनस डाळिम्ब आदि करि। कर्पूर खण्ड मरिच शर्करादि भरि ५४०

भोजन नही कर रही है। अरी बेटी! विवाह के समय ऐसा व्यवहार उचित नही है। २५ कोई बोली कि यह हमें देखकर लज्जा कर रही है और बहुत लोगो को देखकर अन्न नही खा रही है। २६ चलो हम सब यहाँ से चलें। इसके लिये जानकी उपवास क्यो करे ?। २७ इनका उत्सव देखकर हमे आनद होता है। यह हमारे कर्म को मन्द समझ रही हैं। २८ ऐसा विचार कर एक स्त्री ने कहा कि मै जानकी के मन की बात समझ गई। २९ इसने अन्न खाने को हाथ बढाया तब इसे रत्नकंकण के मध्य प्राणनाथ दिख गए। ५३० स्वामी के सौदर्य को देखकर उस पर विचार करते हुए सुन्दरी अन्न नही ग्रहण कर रही है। ५३१ यह सोच रही है कि यदि हम हाथ हटा लेगी तो प्रियतम दिखाई नही देगे। सुन्दरी इसी भय से हाथ नही हटा रही है। ३२ जब कन्या का रूप प्रकट नही हुआ, तब सीता प्रशसा करने लगी कि तुम्हारा जीवन धन्य है। ३३ फिर वैदेही ने भात का भोजन किया। आमिष तथा निरामिष अनेक पदार्थ ग्रहण किये। ३४ सुपाच्य उबले हुए षड्रस व्यंजन जिन्हे माताओ ने विशिष्ट प्रकार से तैयार किया था। घी में पकाया हुआ चरफरा दही, गुड़ हींग तथा मिर्च से युक्त अमूल्य पदार्थों को खाकर श्रीराम प्रशंसा करने लगे। माताएँ दूध तथा उससे निर्मित पदार्थ परोस रही थी। ३५-३६-३७ गगाजल को मिलाकर दूध के सुन्दर लड्डू बनाए गए थे। ईश्वर को निवेदित होने योग्य पदार्थ वडे पापडी मलाई काकरापीठा आदि भाँति-भाँति के पदार्थ मोतीचूर झिली परिजात चन्द्रभोग, पके हुए आम, कटहल, अनार आदि कर्पूर मिर्च तथा

पलंकरे बसाइण बिड़िआ जोगाइले । नबरत्न पलंकरे लक्ष्मण निद्रा कले ६९
अनन्त शयन किना करन्ति सेठारे । देखिण दासीमाने चळिगले खरे ५७०
शतृघनकु घेनिण चळिले निजपुर । जाइण बसिले पञ्च रत्न पलंकर ५७१
बिडिआ भुञ्जाइले सेथिरे नेइ भले । भुञ्जिण शतृघन आळसे निद्रा गले ७२
देखिण दासीगण चळिले भितरे । सीताकु बेश करिण श्रीराम पाशे नेले ७३
शेज मण्डाइ शंगरे घेनिण चळिले । सीताकु छाडि उर्मिला पुरे प्रबेशिला ७४
उर्मिलाकु दासीगणे देले बेश करि । लक्ष्मण शेज छुआइँ चळिले सुन्दरी ७५
सेठारु माळिनिकि घेनिण दासी गले । भ्रथकु मधु शज्या छुआइँ फेराइले ७६
सेठारु दासीमाने सुक्रिताकु घेनि । शतृघन पुरे बिजय़ कले पुणि ७७
मधु शज्यापुरे चळिले घेनि बेगे । छुआइँ सुक्रिताकु फेरिले सेहिलागे ७८
एथु अनन्तरे जे शुण गो शाकम्बरी । बिभार रजनि जे ए रूपे शेष करि ७९
गगने उदय़ जेणु दिनमणि हेले । जनक दशरथ निद्रारु उठिले ५८०
सकळ ऋषि मानकु मान्य धर्म कले।बेनि कोटि लेखाए सुबर्ण ऋषि गोटिके देले ५८१
ए रूपे बतिश कोटि ऋषिकि मेलाणि । करन्ते ऋषि माने आश्रमे चळे पुणि ८२
केबळ शते ऋषि रहिले सेथि पुण । जनक बन्धु बर्ग अटन्ति जेते जाण ८३
सेठारु बिप्रगण मेलाणि पुण हेले । जण के दश सुनिआ लेखाए राय़े देले ८४

दिया। ६८ उन्हे पलंग पर बिठाकर ताम्बूल प्रदान किया। फिर नौरत्न के पर्यङ्क पर लक्ष्मण सो गए। ६९ वहाँ अनन्तदेव को शयन करते देखकर दासियाँ शीघ्र ही वहाँ से चली गई। ५७० फिर वह शत्रुघ्न को लेकर अपने महल की ओर चल दी और उन्हे ले जाकर पचरत्न के पलंग पर बिठा दिया। ५७१ फिर वहाँ से लेकर उन्हे पान खिलाया। पान खाकर शत्रुघन आलस में पड़कर सो गए। ७२ यह देखकर दासियाँ भीतर चली गई। वह सब सीता को शृंगार करके श्रीराम के पास ले गई। ७३ वह शैया को स्पर्श कराने उन्हे साथ ले गई, फिर वह सीता को छोडकर उर्मिला के सदन मे प्रविष्ट हुईं। ७४ उन्होने मिलकर उर्मिला का शृंगार किया और लक्ष्मण की सेज का स्पर्श कराकर सुन्दरियाँ वहाँ ले चल दी। ७५ फिर वहाँ से जाकर वह मालिनी को साथ ले गई और भरत की शैया का स्पर्श कराकर वहाँ से वापस ले गई। ७६ फिर दासियाँ सुकीर्ति को लेकर शत्रुघन के सदन मे गई। ७७ मधुशैया सदन मे साथ ले जाकर सुकीर्ति से शैया का स्पर्श कराकर उसी समय शीघ्र ही वापस लौट गई। ७८ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् विवाह की रात्रि इस प्रकार समाप्त हो गई। ७९ जब दिनमणि आकाश मे उदय हो गए, तब जनक तथा दशरथ निद्रा से उठ गए। ५८० उन्होने समस्त ऋषियो की अभ्यर्थना की। फिर उन्होने एक-एक ऋषि को दो-दो करोड स्वर्णमुद्राएँ प्रदान की। ५८१ इस प्रकार बत्तिस करोड़ ऋषियो की विदाई करने पर वह लोग आश्रम को चले गए। ८२ केवल एक सौ ऋषि वहाँ रह गये। जनक के जितने भी बन्धु-बान्धव वहाँ पर थे, वह ही सब रह गये। ८३ फिर वहाँ ब्राह्मणो की विदाई हुई। एक-एक व्यक्ति

पदाति पयकार सैन्य बळ आणि । अमृत समानरे भोजन देले पुणि ५५
बिडिआ देइण हरष कराइले । हाटुआ बाटुआकु भरि भोजन से देले ५६
समस्ते तोष होइ भोजन मान करि । काम धेनु प्रसादे सकळ मिळे आसि करि ५७
समस्तंकर सरन्ते जनक दशरथ । अमृत समानरे भोजन कले से त ५८
बिजय पलंकरे सारिण आचमन । कर्पूर बिड़िआ जे भुञ्जिण तोषमन ५९
जनक कुशध्वज आनन्द होइले । सकळ जञ्जाळ से सहिबारु भले ५६०
तिनि प्रहर रजनी हेला आसि करि । ऋषि बिप्र राजाए शयन मान करि ५६१
सकळ जनमाने निद्रारे अचेत । सैन्य बळ शयन कले जेझा मत ६२

मधुयामिनी

एथु अनन्तरे जे दासी गणे मिळि । जनक मन्दिरकु श्रीराम घेनि चळि ६३
नवरत्न कम से पुरके देवा उपामा । नाहिँ नाहिँ पटान्तर ए तिनि भुवन ६४
हंस कुतुळि पुरे माण्डि जे मुचुळि । श्रीराम शयन जे सेथिरे जाइ करि ६५
तहुँ जाइ दासी गणे भरथ घेनि गले । माणिक्य पलंकरे नेइण बसाइले ६६
कर्पूर बिड़िआ पान भुञ्जाइले नेइ । भुञ्जिण भरथ जे पलंके निद्रा जाइ ६७
सेठारु दासीमाने बेगे चळि गले । लक्ष्मणकु ब्रह्म ज्योति पुरे नेइ कले ६८

किया । ५५ उन्हे पान देकर सन्तुष्ट किया तथा हाट वटोहियो को प्रचुर भोजन प्रदान किया गया । ५६ सवने सतुष्ट होकर भोजन किया । सव कुछ कामधेनु के प्रसाद से आकर प्राप्त हुआ था । ५७ सवके भोजन करने के उपरान्त जनक तथा दशरथ ने अमृतमय भोजन किए । ५८ आचमन करके वह पर्यंक पर जाकर विराजमान हो गए और कर्पूर ताम्बूल ग्रहण करके उनका मन सन्तुष्ट हो गया । ५९ समस्त कार्यक्रम भलीभाँति निपट जाने से जनक तथा कुशध्वज प्रसन्न थे । ५६० रात तीन प्रहर वीत चुकी थी । ऋपि, व्राह्मण तथा राजा लोग शयन कर रहे थे । ५६१ सभी लोग निद्रा से अचेत थे । अपने-अपने हिसाब से सेना भी सो रही थी । ६२

मधुयामिनी

इसके पश्चात् दासियाँ मिलकर श्रीराम को लेकर जनक महल को चल दी । ६३ उस नवरत्न निर्मित महल की उपमा कोई क्या देगा । उसकी समता के लिये तीनो लोकों मे कुछ नही है । ६४ निर्मल विछावन विछे विस्तर पर तकिया रखकर श्रीराम उस पर लेट गए । ६५ फिर वहाँ से जाकर दासियाँ भरत को ले गई और उन्हे माणिक्य के पलंग पर बिठा दिया । ६६ फिर उन्हे कर्पूर-ताम्बूल लेकर खिलाया । उसे खाकर भरत पलग पर सो गए । ६७ फिर दासियाँ शीघ्र ही वहाँ से चली गई तथा लक्ष्मण को ले जाकर व्रह्म ज्योतिपुर मे छोड़

शतृघन पाशरे मिळिले शुकर्ण।
जे परि चारि बेद पढ़िले जे बिप्र ऋषि जाण ६०१
बशिष्ठ शामबेद कलेक गायन। अग्नि आरोपण करि थापिलेक पुण २
श्रीराम जानकिर कले लज्जा होम। जे बिधि बिधान जे सारिलेक पुण ३
पूर्ण आहुति जे कलेक से स्थानरे। बेद मन्त्र कर्म जे सारिले निजोगरे ४
संगरे बशिष्ठंकु दशरथ दिए पाणि। आचार्ज्य दक्षिणा जे लक्षेक सुबर्ण पुणि ५
सत्यानन्द ऋषिकु जनक पाणि देले। आचार्ज्य दक्षिणा जे लक्षे सुबर्ण भले ६
सेठारु अग्निकि जे शीतळ करि पुण। पाद अर्घ्य अक्षत देले मुनिगण ७
लाजा होम बिधि जे सारिबारु पुण। दासीगणे घेनि गले जनक श्रीराम ८
पहण्ड मणाइ जानकिकि घेनि गले। भितर अनन्तपुरे नेइण बसाइले ९
श्रीरामंकु बइडुर्ज्य पुररे रखाइ। चउपाशे माणिक्य दीपाबळि जळाइ ६१०
से बेदिरु श्रीराम जे जिबारु पुण। से बेदिरु दशरथ चळिले बहन ६११
भरथर पाशरे हेले परबेश। ऋष्यश्रृंग मारकण्ड सेथिरे तपोबन्त १२
जजुर्बेद पढ़िण कलेक लाजा होम। अग्निकि स्थापिण जे आहुति देले पुण १३
पूर्ण आहुति देइ लाजा होम सारिलेण। देखिण दशरथ संगे पाणि देले पुण १४
लक्षेक सुबर्ण जे ऋष्यश्रृंग देले।आचार्ज्य दक्षिणा बोलि ऋषिकि कहिले १५

लक्ष्मण के साथ बैठी। भरत के साथ मालिनी बैठी थी। ६०० शत्रुघन के पास सुकीर्ति आ गई। फिर वहाँ ब्राह्मण तथा ऋषि चारो वेदों का पाठ करने लगे। ६०१ वशिष्ठ तथा बामदेव ने वेद पाठ किया और अग्नि आरोपित करके उसकी स्थापना की। २ उन्होने श्रीराम और जानकी का लाजाहोम किया और उस विधि-विधान को सम्पादित किया। ३ फिर उन्होने उस स्थान पर पूर्णाहुति दी और नियोजित ढग से वेद मत्रो के साथ कर्मकाण्ड समाप्त किया। ४ दशरथ ने वशिष्ठ को शंख के जल से आचार्य दक्षिणा के रूप में एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दी। ५ जनक ने महर्षि सतानन्द को जल के साथ आचार्य दक्षिणा के रूप में एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की। ६ फिर वहाँ अग्नि को शात करके मुनिगणों को पाद्य, अर्घ तथा अक्षत प्रदान किये। ७ लाजा होम की विधि समाप्त होने पर दासियाँ जानकी तथा श्रीराम को ले गईं। ८ फिर वह सीता को पैदल ले गइ और उन्हे अत:पुर मे ले जाकर विठा दिया। ९ श्रीराम को वैदूर्य के महल में रखकर चारो ओर माणिक्य की दीपावली जला दी। ६१० उस वेदी से श्रीराम के चले जाने पर वहाँ से उठकर दशरथ शीघ्र ही चल दिये। ६११ वह भरत के पास जा पहुँचे। वहाँ पर तपस्वी श्रृगी ऋषि तथा मारकण्ड थे। १२ उन्होने यजुर्वेद का पाठ करते हुये लाजा होम किया और अग्नि की स्थापना करके आहुतियाँ दी। १३ फिर पूर्णाहुति देकर लाजा होम समाप्त किया। यह देखकर दशरथ ने शंख के जल से एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ श्रृंगी ऋषि को दी और

सेठारु द्विजगण क्षणे गले चळि । जे जाहा सदनरे जाइण बेगे मिळि ८५
सेठाबरु जनक दशरथ जे पुण । चाळिशि सहस्र राजाकु मेलाणि कले जाण ८६
दश सस्र लेखाए सुबर्ण आणि देले । घेनिण राजा माने हरषे चळिगले ८७
केबळ दशरथंक बन्धू माने रहे । ए रूपे तिनि दिन सेठारे बहि जाए ८८
चारि दिने चतुर्थी घर आसि होइ । चतुर्थी बिधि सेठारे जनक कले तहिँ ८९
दिबसरे पितृ बिधि कलेक उपराण । पितृ लोकंकु देलेक श्राद्ध पुण ५९०
दिबसर बिधि सारि भोजन से कले । दिबस शेष जान्ते रजनी होए भले ५९१
वेदीर उपरे चारि ब्राह्मण जाइ वसि । चारि वेदरे सर्बे जे बेद ध्वनि भाषि ९२
बशिष्ठ बोइले तुम्भे शुण हे दशरथ । बन्दापना उत्सव जे आजिर व्यहित ९३
चारि पुत्र बेश करि आण हे बेदिकि।लज्जा होम होइब जे बधूंकु अणाअ एथिकि ९४
सत्यानन्द बोइले जे जनककु राइ । वेश करिण चारि दुहिता आण जाइ ९५
शुणिण दशरथ पुत्रमानकु अणाइले । श्रीराम चन्द्र संगे अछन्ति उत्सबरे ९६
वेनि बेदिरे बसिले श्रीराम लक्ष्मण ।आर वेनि वेदिरे बसिले भरत शतृघन ९७
देखिण जनक जे दुहिता वेगे आणि ।सीतांक संगरे जे अछन्ति चारि भग्नि ९८
बेश कुसुम जे होइण अइले । श्रीरामंक पाशरे जनक बसिले ९९
उर्मिला बसिले जे लक्ष्मण संगत । श्रथ संगरे बसे आसिण माळिनि त ६००

को राजा ने दस-दस स्वर्णमुद्राएँ प्रदान की । ८४ फिर वहाँ से ब्राह्मण लोग चल दिये और अपने-अपने घर पहुँच गये। ८५ फिर जनक और दशरथ ने चालीस हजार राजाओ की विदाई की। ८६ उन्होने दस सहस्र स्वर्णमुदाएँ लाकर प्रदान की जिसे लेकर राजा लोग प्रसन्नतापूर्वक चले गये। ८७ केवल दशरथ के बन्धु-बान्धव लोग रह गये। इस प्रकार वहाँ तीन दिन व्यतीत हो गये। ८८ चौथे दिन चतुर्थी पूजा का समय आ गया फिर जनक ने वहाँ पर चतुर्थी की सारी विधियाँ सम्पादित की। ८९ दिन मे पितृ-पूजन सम्पादित किया और पितृ लोगो का श्राद्ध किया। ५९० दिन मे विधि-विधान समाप्त करके उन्होने भोजन किया और दिन व्यतीत होने पर रात्रि आ गई। ५९१ चारो ब्राह्मण जाकर वेदी के ऊपर बैठ गये और चारो वेदो से सभी लोग वेदपाठ करने लगे। ९२ वशिष्ठ ने कहा हे दशरथ! आप सुनिये। आज का पूजा उत्सव उचित है। ९३ चारो पुत्रो को श्रृंगार करके वेदी पर बुलवा लीजिये और बहुओं को भी बुलवा लीजिये, क्योकि अब लाजा होम होगा। ९४ तब जनक को बुलाकर सतानन्द ने कहा कि चारो कन्याओ को श्रृंगार कराकर ले आइये। ९५ यह सुनकर दशरथ ने पुत्रो को बुलवाया। श्रीरामचन्द्र तो उत्सव में साथ ही थे। ९६ श्रीराम और लक्ष्मण दोनो वेदियो पर बैठे और अन्य दोनों वेदियो पर भरत और शत्रुघन विराजमान हुए। ९७ यह देखकर जनक शीघ्र ही कन्याओ को ले आये। सीता के साथ चारों बहने थी। ९८ वह फूलो का श्रृंगार करके आयी थी। जनक श्रीराम के समीप बैठ गये। ९९ उर्मिला

नारदे लक्षे सुवर्ण देले दशरथ। देखिण जनक जाइ धइलेक शंख ६३१
अष्टबक्रंक करे जळ नेइ देले। लक्षेक सुबर्ण जे मेलाणि कराइले ३२
अग्निकु शीतळ करि पाद्ये अर्घ्य देले मुनि। हरष मन हेले सकळ तपोधनी ३३
सेठारु दासीगण बर कन्या नेले। धबळ पुरे नेइण बन्दापना कले ३४
सेठारु सुकिर्त्तीकु जे घेनिण दासी चळि। अनन्तपुर भितरकु नेले बेग करि ३५
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी।
ऋषि बिप्रे राजागणे चरचा बिधि सारि ३६
अमृत समानरे भरि भोजन देले। परजा सैन्य बळ समस्ते भुञ्जिले ३७
सेठारु जनक दशरथ भोजन बसि कले। दशरथ राजन जे नबरे चळिले ३८
सेठारु ऋषि आणी माने बेगे चळि।
चारि जुआँइकि भोजन देले गउरब करि ३९
सुधा समाने अमृत भोजन कराइले। सुबासित जळ पुणि दासी माने देले ६४०
आचमन सारि चारि भाइ बसिले जे पुण। कर्पूर ताम्बुल जे भुञ्जाइले जाण ६४१
सेठारु दासी माने चारि बरंकु नेले। चारि पुरे नेइण पलंके बसाइले ४२
सुगन्ध कुंकुम जे चन्दन अंगे बोळि। नाना परिबन्धरे बेश मान करि ४३
पलंक सुपातिरे बसाइ चळि गले। अन्त पुरे जाइण सीतांक पाशे मिळे ४४

एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की। यह देखकर जनक ने भी शंख का जल ले लिया। ६३०-६३१ उन्होने अष्टावक्र के हाथो में जल डालकर एक लाख स्वर्ण मुद्राओ से उनकी बिदाई की। ३२ मुनि ने अग्नि को शीतल करके अर्घ्य, पाद्य प्रदान किया और समस्त तपस्वियों के मन प्रसन्न हो गये। ३३ दासीगण वहाँ से वर कन्या को ले गईं और उन्हे श्वेत सदन मे रखकर उनकी पूजा आरती की। ३४ वहाँ से दासियाँ सुकीर्ति को लेकर चल दी और उन्हे शीघ्र ही अंत:पुर में ले गईं। ३५ हे शाकम्बरी ! तुम सुनो। इसके पश्चात् ऋषि, ब्राह्मण तथा राजागणो की चर्चा-विधि समाप्त हुई। ३६ फिर उन्हे अमृत के समान प्रचुर भोजन प्रदान किये गये जिसे प्रजा तथा सैन्यबल सबने ग्रहण किया। ३७ फिर जनक तथा दशरथ ने बैठकर भोजन किया और राजा दशरथ अपने महल में चले गये। ३८ वहाँ से ऋषि-पत्नियाँ वेगपूर्वक चल दी और उन्होंने चारों दामादो को सम्मान सहित भोजन प्रदान किया। ३९ उन्होने अमृत के समान उन्हे भोजन कराया और दासियो ने फिर सुगिन्धत जल प्रदान किया। ६४० आचमन समाप्त करके चारों भाई फिर बैठ गये और कर्पूर ताम्बूल उन्हे खिलाये गये। ६४१ फिर दासियाँ चारो वरो को लेकर चार घरो में गईं और उन्हे पलंग पर बैठा दिया। ४२ उनके श्रीअंग पर सुगन्धित कुमकुम तथा चन्दन का लेपन कर दिया और अनेक प्रकार की विधियों से उन्हे सुसज्जित किया। ४३ फिर उन्हे पलंग के गद्दे पर बैठाकर चल दी, और अत:पुर में सीता के पास जा

जनक राजन जे देले पाणि पुण । अगस्तिकि लक्षे माड़ सुबर्ण देले जाण १६
सेठारु ऋषि माने हरष मन होइ ।अग्निकि शीतळ करि पादार्घ्य देले नेइ १७
सेठारु दशरथ जनक चळि गले । लक्ष्मण पाशरे जाइ प्रबेश होइले १८
दासी गणे भरथ माळिनिकि देले । माणिकर पुररे भ्रथकु बसाइले १९
सेठारु माळिनिकि भितर पुरे नेले । हरषरे ऋषि आणि हुळ हुळि देले ६२०
लक्ष्मण उर्मिळार कलेक लाज्या होम ।अग्निकि स्थापिण घृत आहुति देले पुण ६२१
चारि बेद सेथिरे कलेक गायन ।लाज्या होम सारि पूर्ण आहुति देले पुण २२
दशरथ कैकय्यांकु करे पाणि देले । लक्षेक सुबर्ण रत्न आणि समर्पिले २३
देखि करि जनक संगरे पाणि घेनि । मारकण्ड हस्तरे देलेक नेइ पुणि २४
लक्षेक सुबर्ण जे दक्षिणा करि देले । सेठारु मारकण्ड हरष मन हेले २५
अग्निकि शीतळ करि देलेक पाद्य अर्घ्य। सेठारु दशरथ जनक गले बेग २६
दासी गण मिळि बर कन्या घेनि गले । ब्रह्मजाति हीरा नेइ शिररे लगाइले २७
बर कन्या बन्दापना सेथिरे पुण करि । भितर पुरकु उर्मिळाकु घेनि चळि २८
नारद अष्टबक्र शतृघन पाशे रहि । लाज्या होम कले से अथर्व बेद गाइ २९
अग्निरे घृत देइ पूर्ण आहुति कले । सरिबारु दशरथ शंखरे जल देले ६३०

ऋषि से कहा कि यह आचार्य दक्षिणा है । १४-१५ राजा जनक ने जल के साथ अगस्त को एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ समर्पित की । १६ वहाँ से ऋषियो ने मन मे सतुष्ट होकर अग्नि को शात करके अर्घ, पाद्य प्रदान किया । १७ फिर दशरथ और जनक वहाँ से चल दिये तथा लक्ष्मण के पास जा पहुँचे । १८ दासियो ने भरत और मालिनी को ले जाकर माणिक्यपुर मे बैठा दिया । १९ और वहाँ से मालिनी को अंत.पुर ले गई । प्रसन्नता से ऋषि-पत्नी मागलिक शब्द करने लगी । ६२० लक्ष्मण और उर्मिला का लाजाहोम किया गया । अग्नि को स्थापित करके घृताहुति प्रदान की गयी । ६२१ चारो वेदो का पाठ वहाँ पर हुआ । लाजाहोम की समाप्ति पर पूर्णाहुति दी गयी । २२ दशरथ ने कैकेयी के हाथ पर जल डाला और एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ तथा रत्न लाकर समर्पित किये । २३ यह देखकर जनक ने शख मे जल लेकर मारकण्ड के हाथो मे दे दिया और उन्हे एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दक्षिणा स्वरूप भेट की । वहाँ पर मारकण्ड का मन प्रसन्न हो गया । २४-२५ उन्होने अग्नि को शीतल करके अर्घ्य, पाद्य प्रदान किया और फिर वहाँ से शीघ्र ही दशरथ तथा जनक चल दिये । २६ दासियाँ मिलकर वर-कन्याओ को ले गई और उन्होने ब्रह्म जाति का हीरा लेकर सिर मे लगा दिया । २७ फिर वर-कन्याओ का पूजन करके उर्मिला को लेकर अत.पुर चली गई । २८ नारद तथा अष्टावक्र शत्रुघन के पास रह गये फिर उन्होने अथर्ववेद पढ़कर लाजा हवन किया । २९ अग्नि में घृताहुति देकर पूर्णाहुति प्रदान की और उसकी समाप्ति पर दशरथ ने शख जल लेकर नारद को

मस्तकरे अळका जे मथामणि देले। नाशारे सिन्धुफल रत्न गुणा देले ६६०
कपाळरे चन्दन पाटि बोळे नेइ। नयनरे अञ्जन रञ्जिले चान्दमुहिँ ६६१
कर्णरे खञ्जिले चन्द्रफासिआ फिरी फिरा।
काप मल्लकढ़ी जे तेजरे दिशे तोरा ६२
बक्षस्थळे काञ्चला हेममय़ जडि। गळारे चापसरि हृदरे माळ घेरि ६३
पदेक चन्द्रहारा बर्णमाळ शोहे। देखिले देबता ऋषि पढ़िबे जे मोहे ६४
ताड़ बिद बाहुटि बाहारे शोभाबान। ब्रह्मजाति हीरा जे दिशइ तेज बर्ण ६५
माणिक्यर चुडि जे बेनिकरे शोहे। नवरत्न झट झट बिराजे तेजमये़ ६६
कटिरे मेखळा जे देलेक नेइ पुण। चरणे बळा पाहुड़ नूपुर शोभावन ६७
झुण्टिआ अळता जे चरणे नेइ देले। अमळाण कळा मेघि पतनि पिन्धाइले ६८
अमळाण खण्डुआ जे देले उपराण। बेशकरि दासीमाने हेले तोष मन ६९
एहि प्राये़ चारि भगिन बेश शेष कले। रजनीरे रबि प्राये़ तेज प्रकाशिले ६७०
एहि प्राये़ बेश कले बेढिण कामिनी। बहुत तिआरन्ति पूर्ब कथा मानि ६७१
तुम्भे एबे जानकी गो आम्भर बोलकर। श्रीरामचन्द्र अटन्ति जीबन ठाकुर ७२
तुम्भे आज रजनी गो अनाअ ताहान्त। एहि कथा भल तोते हेब बड हित ७३

और पाँच रंग के फूलो का गुच्छा लगा दिया। ५९ माथे पर अलको के ऊपर चूड़ामणि लगा दी। नाक में मोती की बुलाक तथा रत्न की कील पहना दी। ६६० मस्तक पर चन्दन की रेखाये खीच दी और चन्द्रमुखी के नेत्रों में अजन लगा दिया। ६६१ कानो मे चन्द्र फाँसियाँ, झूमर तथा फूलो के आकार वाली जंजीर पहनायी जिसका तेज सुन्दर दिख रहा था। ६२ वक्षस्थल पर सुनहली जड़ाऊ कचुकी पहनायी, गले में धनुषाकार आभूषण तथा हृदय में माला पड़ी थी। ६३ पदक युक्त चन्द्रहार तथा विभिन्न प्रकार की मालाये शोभा पा रही थी। उसके देखने पर देवता तथा ऋषि भी मोह में पड जाते। ६४ बाँहों पर ताड़ के आकार के बजुल्ले तथा बाजूबन्द शोभित थे, उन पर ब्रह्म जाति का हीरा चमकता दिखाई दे रहा था। ६५ दोनो हाथों में माणिक्य की चूड़ियाँ शोभायमान थी। उनमे चमकदार नवरत्न लगे हुये थे। ६६ उन्होने कमर मे मेखला लेकर पहना दी। चरणों में कड़े पायजेब तथा नूपुर शोभा पा रहे थे। ६७ गहरा आलता लेकर चरणों में लगा दिया और निर्मल काले मेघ के समान साड़ी पहना दी। ६८ स्वच्छ घेरदार चूनर ऊपर डाल दी। उनका श्रृगार करके दासियों का मन सतुष्ट हो गया। ६९ इसी प्रकार उन्होने चारों बहनो का श्रृगार कर दिया। रात्रि में सूर्य के समान प्रकाश फैल गया। ६७० इस प्रकार श्रृगार करके कामनियो ने घेरकर उनसे बहुत सी बातो का आग्रह किया। ६७१ वह बोली हे जानकी ! अब तुम हमारा कहना सुनो। श्रीरामचन्द्र जीवननाथ है। ७२ आज तुम उन्ही के पास रात्रि व्यतीत करो।

एथु अनन्तरे दासी माने गले पुण । मण्डणि घेनि मिळिले चारि वरंक पुरेण ४५
शयन मन्दिरे मण्डिलेक जाइ । चान्दुआ टणाइले उपरेक नेइ ४६
गजदन्त पलंकरे सुवर्ण पितुळि । रत्नमय कम जे सबु ठारे झलि ४७
सेथि उपरे जे अमळाण शेज पाड़ि । नाना बर्णर सेथिरे शज्या करि ४८
नेतर मुचुळि जे मण्डि अनुपाम । चारि पाशरे जाळिले अगर धूपमान ४९
से नारी चारि पाखरे बेढिण पाखुडि । शेज उपरे बिञ्चिले कर्पूरर धूळि ६५०
उपर चान्दुआरे बिचित्र पटान्तर । तारागण मध्यरे कि उदय शशधर ६५१
ठाबे ठाबे पद्म रेखा अछइ उकुटि । हीरा नीळा सेथिरे जड़ित होइ मिशि ५२
माणिक्य मुकुता मर्कत जे झरा । चामर पन्ति पन्ति दर्पण लागि परा ५३
अष्टरत्न पलंकरे झलमल परि । सेथिरे चारि भाइ बिजय जाइ करि ५४
सुगन्ध कुंकुम जे चन्दन अंगे बोळि । नाना परि बन्धरे बेशमान करि ५५
पलंक सुपातिरे बसाइ चळिगले । अन्तःपुरे जाइण सीता पाशे मिळिले ५६
चारि भगिनकि बसाइ करन्ति सुबेश । सीतांकु वेश दासी करन्ति विशेष ५७
नवरत्न अळंकार देहरे खञ्जिले । केशकु सामळिण जुडा जे बान्धिले ५८
झरा झुम्पा झिञ्जरी चउँरी मण्डि देले। पञ्चु बर्ण कुसुम गभारे खञ्जिले ५९

पहुँची । ४४ इसके पश्चात् दासियाँ फिर गईं और मंडनी लेकर चारो वरो के महलों में पहुँची । ४५ उन्होने शयन मदिर को सुसज्जित किया और उसके ऊपर चँदोवा तनवा दिया । ४६ हाथी दाँत के बने पलंग पर सुन्दर वर्ण वाली पुतली तथा सब स्थान पर रत्न झिलमिला रहे थे । ४७ उसके ऊपर उन्होने निर्मल शैय्या बिछा दी और उसे अनेक प्रकार से सुसज्जित कर दिया । ४८ उसे लाल रंग के रेशमी तकिये से अनुपमेय ढंग से मण्डित किया और चारो ओर अगर तथा धूपबत्ती जला दी । ४९ उस स्त्री ने चारो ओर से घेरकर पंखुड़ियाँ तथा कर्पूर का चूरा शैय्या के ऊपर बिखेर दिया । ६५० ऊपर लगा हुआ विचित्र प्रकार का चँदोवा ऐसा लग रहा था जैसे तारागण के मध्य में चन्द्रमा उदय हो गया हो । ६५१ स्थान-स्थान पर रेखाओ से कमल उत्कीर्ण किये गये थे और उनमे मिलाजुलाकर हीरे तथा नीलम जडे थे । ५२ माणिक्य मुक्ता मरकत झिलमिला रहे थे । उनमें पक्ति-पक्ति मे चामर तथा दर्पण लगे थे । ५३ अष्टरत्न के झिलमिलाते पलग पर चारों भाई जाकर विराजमान हो गये । ५४ सुगन्धित कुमकुम तथा चन्दन का लेप शरीर पर किया गया तथा नाना प्रकार के ढग से उनका शृगार किया गया । ५५ वह उन्हे पलग के गद्दे पर बिठाकर चली गईं और अन्तःपुर मे सीता के पास जा पहुँची । ५६ वह चारो बहनो को बिठाकर शृगार करने लगी । दासियो ने सीता का विशेष प्रकार से शृगार किया । ५७ उन्होंने नौ रत्न के अलकार शरीर पर सजा दिये तथा केश को खीचकर जूड़ा बना दिया । ५८ झिलमिलाता हुआ झुम्पा, चौरी तथा झालर

अधिक करि तोते गो तिआरिबु किस ।

सर्ब गुणे सुलक्षणी तु चञ्जला सादृश्य ८८

एमन्त तिआरिण नागरी नारी माने । सीतांकु घेनि गले श्रीराम सन्निध्याने ८९

लज्जा भरे मथा पोति चालन्ति धिरे धिरे ।

आगरे जुबती माने ड़ाकन्ति सधीरे ६९०

आस-आस मागो न धर मने आन । लाज शोक भय छाड जुबती रतन ६९१

एमन्त करिण घेनि गले राम पाश । शज्या परे बिजे करिछन्ति रघुशिष्य ९२

जानकिंकि देखिण परम तोष मति । पलंकर तळे उभा हेले जाइ सती ९३

अनेक जुबती माने अछन्ति तांक मेळे । श्रीरामंकु कथा से कहन्ति कुतुहळे ९४

तुम्भे रघुनाथ हे पुरुष उत्तम । जानकी बाळिका एहा दोष न घेनिब ९५

जनक ऋषिकर ए अळिअळ जेमा । जेते दोष एहांकर करिबे सर्बक्षमा ९६

बाळुत कुमारी एहु न जाणइ किछि । पाळिण भोग तुम्भे करिब मृगाक्षी ९७

अबोध अलिअळ अळप बयस । तुम्भ मन सन्तोषकु करिब ए किस ९८

स्वप्न कामरस एहु न जाणइ बाळी । तुम्भ परा होइ एकि जाणिब तमाळि ९९

तुम्भे महा महत्त्व नकर मने रोष । स्वभावे स्तिरींकर बहुत रूपे दोष ७००

नागर शेखर तुम्भे कहिबु किबा आने । आणन्ते जेमा बिमन न धरिब मने ७०१

रस की मर्मज्ञ हो। तुम्हारे समान अन्य कौन हो सकता है। ८७ तुम्हें और अधिक क्या आगाह करें। तुम सर्वगुण सुलक्षणी लक्ष्मी के समान हो। ८८ नागरी नारियाँ इस प्रकार समझा बुझाकर सीता को लेकर श्रीराम के पास गयी। ८९ वह लज्जा से मस्तक झुकाये धीरे-धीरे चल रही थी और आगे-आगे युवतियाँ उन्हे धैर्य के साथ बुला रही थी। ६९० आओ माँ! आओ। मन में और कुछ मत सोचो! हे रमारत्न लज्जा शोक तथा भय का त्याग कर दो। ६९१ ऐसा कहती हुई वह उन्हे श्रीराम के पास ले गई। रघुनन्दन शैया पर विराजमान थे। ९२ जानकी को देखकर उनका मन अत्यन्त प्रसन्न हो गया। तभी सती सीता पलंग के निकट जाकर खड़ी हो गई। ९३ उनके संग मे अनेक युवतियाँ थी। वह कुतूहल से श्रीराम से वार्ता कर रही थी। ९४ हे रघुनाथ! आप पुरुषोत्तम है, यह जानकी बालिका है। आप इसके दोषो पर ध्यान न दीजियेगा। ९५ महर्षि जनक की यह लाड़ली कन्या है। इसके समस्त दोषो को आप क्षमा कर दीजियेगा। ९६ यह कुमारी बालिका है, कुछ भी नही जानती। इस मृगनयनी का उपभोग आप लालन-पालन सहित कीजियेगा। ९७ यह लाड़ली अबोध तथा अल्प अवस्था वाली है। आपके मन को सन्तुष्ट करने के लिये यह क्या करेगी। ९८ यह बालिका स्वप्न में भी कामरस के विषय में कुछ नहीं जानती। यह तुम्हारी होकर क्रोध करना क्या जानेगी। ९९ आप महत्वपूर्ण व्यक्ति है। आप मन में कुपित न होना। स्त्रियो के तो बहुत दोष स्वाभाविक होते है। ७०० हे नागर

जेमन्ते से मानसरे न धरिबे आन। सेहि रूपे स्वामी सेबारे हेब सान ७४
प्रथम दिन स्वामींकि कराइले रोष। सर्वदा से स्तिरींकि न थाइ सुख लेख ७५
प्रथम दिनरे स्वामीकि तोष करि। देह थिबा जाके सर्व कुशळे भोग करि ७६
तुत सर्व सुलक्षणी जाणु सर्व कथा। जेउँ रूपे रघुनाथ न पाइबे ब्यथा ७७
से रसिक शेखर करिबे जाहा इच्छा। तुम्भे चन्द्रमुखी पूराइब मनवाञ्छा ७८
लज्जारे अनादर न करिबु किछि। धर्मठारे सम्भावना रखिबु मृगाक्षी ७९
से तोहर प्रभु तु ताहांकर नारी। एक देह बेनि रूप वारण नकरि ६८०
जेते बेळु कुश बान्धि लेणि द्विजवर। तो देहरे रामचन्द्र प्राण परकार ६८१
तुम्भे तांक चरणरे दासी चन्द्रमुखी। श्रीरामचन्द्र प्रसादे होइब महासुखी ८२
ए तोहर स्तन बेनि बिळसिबे राम। संसाररे अन्य जन देखित नोहे क्षम ८३
ए तोहर अधर चुम्बिबे रघुनाथ। तेबे तोहर सुन्दर पण पुरुषार्थ ८४
जेबे तांक हृदरे तो कुच जत्ने लागि। तेबे सिना जानकी तु हेब्रु सुख भोगी ८५
रघुनाथ संगे जेबे करिबु तु केळि। तेबे तो जीवन सार्थक मही स्थळी ८६
तु त संगीत साहित्य पठन सुन्दरी। रस विषयरे के समान तोहपरि ८७

यह वात तुम्हारे लिये अच्छी तथा हितकारी होगी। ७३ जिस प्रकार वह अपने मन में अन्य कुछ विचार न करे, उसी प्रकार से स्वामी की सेवा करना। ७४ प्रथम दिन स्वामी को क्रोध दिलाने से उस स्त्री के पास कभी भी लेशमात्र सुख नही रहता। ७५ पहले दिन स्वामी को सतुष्ट कर देने पर जीवन की अतिम साँस तक स्त्री को सुख सौभाग्य प्राप्त होता है। ७६ तुम तो सर्व लक्षणो से युक्त हो और सब वात समझती हो। ऐसा करो जिससे रघुनाथ को कष्ट न प्राप्त हो। ७७ वह रसिक-शेखर जो भी इच्छा करे, हे चन्द्रमुखी! तुम उस मनोकामना को पूर्ण कर देना। ७८ लज्जा से उनका तनिक भी अनादर न करना। हे मृगनयनी! धर्म मे आस्था रखना। ७९ वह तुम्हारे प्रभु और तुम उनकी पत्नी हो। एक प्राण दो रूप है, जो भिन्न नही किये जा सकते। ६८० जिस समय द्विजश्रेष्ठ ने कुश-वन्धन किया। उसी समय तुम्हारे शरीर में रामचन्द्र के प्राण सचरित हो गये। हे चन्द्रमुखी! तुम उनके चरणो की दासी हो। श्रीरामचन्द्र की कृपा से महान सुख प्राप्त करोगी। ६८१-८२ तुम्हारे इन दोनो स्तनो का उपभोग श्रीराम करेंगे। संसार में अन्य किसी के देखने पर उसे क्षमा नही किया जायेगा। ८३ तुम्हारे इन अधरों का चुम्वन श्रीरघुनाथजी करेगे तब तुम्हारा सौदर्य तथा श्रम सार्थक होगा। ८४ जव उनके हृदय में यत्नपूर्वक तुम्हारे कुच लगेंगे तभी तो हे जानकी! तुम सुख का उपभोग कर पाओगी। ८५ जब तुम रघुनाथ के साथ केलि क्रीडा करोगी तव इस पृथ्वी पर तुम्हारा जीवन सार्थक होगा। ८६ हे सुन्दरी! तुम सगीत साहित्य पठन मे

धाति कारे सेठारु बाहारे चळि गले । बाहारे थाइ जत्नरे किळिणि किळिले १६
जहुँ सखी माने जानकिंकि गले छाड़ि । उठि रामचन्द्र बेनि भुजे सीता भिडि १७
कोल करि पलंकरे बसाइले सेजे । वन्धुक अधर तार धइले श्रीभुजे १८
मनोहर चाटु तांकु कहन्ति बहुत । किम्पा सखी बिमन धरि अछु चित्त १९
तु मोहर देह सखी मुँ तोहर प्राण । एकथाकु निश्चय करि प्रिया जाण ७२०
नकर शोचना मोर प्राणर पञ्चभुत । तुहि ऋषि कुमारी मुँ अटे राजपुत्र ७२१
जाणिण बिधाता करि अछि घटसुत्र । आस आस सुन्दरीरे हरष मन रेत २२
तु बाळ कुमारि मुँ बयसरे सान । एथकु किम्पाँ सखिरे संकोच शुमन २३
मुँ तोते बस होइलिरे प्राण सहि । एकान्तर कथा तोहर आगरे कहि २४
ए तोहर मुख सखी बिकाश कमळ । एथु बिहारकु मुँ अटइ भ्रमर २५
आस आस सुन्दरी मोहर बोल कर । भुजे भिडि मोहर उररे लगा उर २६
तो चारु अधरु सुधा पान दिअसि । अनेक काळरु मुँ सुरति उपबासी २७
तोर संग बिना मोर प्राण नोहे स्थिर । मुँ तृषार्त्त चातक तु गगनर निर २८
मेदिनिर जळ मुँ गो न करइ ग्रास । सर्बदा काळे मोहर तोर संगे आस २९
तु काळ गरळ रूपि मुहिँ सदाशिव । मोह बिना आन तोते के भोग करिब ७३०

गई। १५ वह हठात् वहाँ से बाहर चली गई और बाहर जाकर उन्होने दरवाजे की जजीर लगा दी। १६ जब सखियाँ जानकी को छोड़कर चली गई तब रामचन्द्र ने उठकर दोनो भुजाओं से सीता का आलिगन कर लिया। १७ उन्होने उन्हे गोद में लेकर पलग पर बिठा लिया तथा उनके बन्धूक पुष्पी अधरों को अपने हाथ से पकड़ लिया। १८ वह उनसे सुन्दर-सुन्दर मन को हरने वाली चिकनी चुपड़ी बाते करने लगे और बोले हे सहचरी ! तुम मन में दुखी क्यो हो रही हो। १९ हे सखी ! तुम मेरी देह और मै तुम्हारा प्राण हूँ। हे प्रिये ! यह बात तुम निश्चित रूप से समझ लो। ७२० हे मेरी पचभूत प्राण ! तुम सोच मत करो। तुम ऋषि कुमारी हो और मै राजपुत्र हूँ। ७२१ विधाता ने जान बूझकर यह सयोग रचा है। हे सुन्दरी ! तुम प्रसन्नचित होकर आओ। २२ तुम बालिका कुमारी हो और मै भी आयु में छोटा हूँ। अत: तुम मन में संकोच क्यो कर रही हो। २३ हे प्राणसहचरी ! मै तुम्हारे वश में हो गया हूँ। मैंने एकान्त की बात तुमसे कह दी है। २४ यह तुम्हारा मुख कमल सा विकसित है। इस पर विहार करने के लिये मैं भ्रमर हूँ। २५ आओ सुन्दरी ! हमारी बात सुनो। मेरी भुजाओं में आकर छाती से छाती सटा लो। २६ तुम अपने चारु अधरो का सुधापान प्रदान करो। अधिक समय से मैं सुरति के लिये उपवासी हूँ। २७ तुम्हारे संग के बिना मेरे प्राण स्थिर नही हो सकते। मैं प्यासा चातक हूँ और तुम आकाश का नीर हो। २८ मैं पृथ्वी का जल ग्रहण नही करता। मैं सदा तुम्हारे संग की आशा करता रहता हूँ। २९ तुम कालकूट

त्रास देइ एहांकु न करिव हे भोग । धाता तुम्भ कर्मे एहा करिछि संजोग २
तुम्भ मनरुचि द्रव्य आणि सर्मपिलु । बधाइ करि एहार दोषकु मागिलु ३
के कहे जानकींकु पाळिले सबु गला । केवण सुन्दरी एहा कहि करि गला ४
के कहे गो सत्यब्रत निद्रा मोते माडे । व्यापार झगड़ा गो अळस न छाडे ५
अनिद्रा होइ मुहिँ गो नपारिवि रहि । अळसरे व्याकुळ हेलाणि मम देहि ६
एते बोलि करि बाळी टाळी देइ गला । संगरु सजनी जणे हात धरि नेला ७
केउँ सखि कहइ गो क्षणे मात्र रह । श्रीरामंकु बोध करि सीता पाइँ कह ८
के बोलइ आम्भर कहिले किस होइ । जे जाहार पदार्थ सेहि से साइतइ ९
तिआरिबा कथा गो के रखइ केते काळ। किपाँइँ सखी एहा मने तुम्भे भाळ ७१०
शुणि करि हसिण कहन्ति रघुमणि । आम्भेत बाळुत पुअ अटु गो तरुणी ७११
के जाणे पाळिबार के जाणे भोग करि ।
भुञ्जिबा खेळिबा वेळ पडिछि आम्भरि १२
एहा शुणि हास्य रस दासी माने कले । नागर चतुर ए अटन्ति बोइले १३
एते वेळे आम्भे तिआरि कहिबा । रहि बारे दुहिकर दुःख बढ़ाइबा १४
आस आस बोलि होइले ठराठरि । एकइ आरेक से कर धराधरि १५

शिरोमणि ! आप अन्यथा क्या कहेंगे । राजकुमारी को लाने से आप मन मे अन्य कुछ न सोचियेगा । ७०१ आप त्रास देकर इसका उपभोग न कीजियेगा । आपके कर्मानुसार विधाता ने यह सयोग किया है । २ आपके मन के अनुकूल दृव्य लाकर हमने समर्पित कर दिए है तथा वधाई मे इसके दोष को माँग रही हूँ । ३ कोई कहने लगी कि जानकी को पालकर भी सव चला गया । इस प्रकार कहते हुए कोई सुन्दरी चली गई । ४ कोई वोली कि सचमुच हमे निद्रा लग रही है । व्यापार तथा झगड़े के लिये आलस्य नही छोड़ रहा । ५ मैं विना सोये रह नही सकती । मेरा शरीर आलस्य से व्याकुल हो रहा है । ६ ऐसा कहकर युवती वहाना वनाकर चली गई और साथ मे हाथ पकड़कर एक सखी को भी लेती गई । ७ कोई सखी कहने लगी अरे ! तुम एक क्षण के लिये रुको और श्रीराम को वोध कराकर सीता के लिये कहो । ८ कोई वोली कि हमारे कहने से क्या होगा ? जो जिसकी वस्तु है वही उसकी रक्षा करता है । ९ समझाने बुझाने वाली बात कोई कितनी देर रखेगा । अरी सखी ! ऐसा तुम क्यो सोच रही हो । ७१० यह सुनकर रघुश्रेष्ठ श्रीराम ने मुस्कराते हुए कहा कि हम तो शिशु वालक है और तुम तो युवती हो । ७११ पालन करना तथा भोग करना किसे पता है । अभी तो हमारे खेलने खाने के दिन है । १२ यह सुनकर दासियाँ-हँसी मसखरी करने लगी तथा कहने लगी कि यह चतुर नागर हैं । १३ इस समय रुककर हमारा समझाना बुझाना दोनो के दु खों को वढाना है । १४ आओ-आओ कहकर वह एक दूसरे का हाथ पकड़कर इधर-उधर चली

कर जोड़ि बइदेही कहन्ति उत्तर। भो स्वामी दइनि घेनन्तु मोहर ४५
तुम्भे मोर स्वामी अट पञ्च प्राण नाहा। सुदया करि मोते होइलेक बिभा ४६
पूर्बरे सत्य पुणि करिछ जेउँ कथा। से कथा तुम्भ मनरे अछि कि करता ४७
जेते बेळे मोते भेदिल मर्त्यपुर। बोइले एकब्रती हेबु अवतार ४८
तेहि कथा मनरे अछि कि तुम्भर। बहुत दिनरु दुःख अछि मो मनर ४९
से कथाकु अबेभार न कर देव आन। सुदया कर मोते करता नारायण ७५०
जेते दिन जाए न करिथिब आन नारी। केते काळ सुदया मोठारे थिब करि ७५१
अनेक जुबती कर धरि जहुँ हस्त। से काळर दया आउ न रखिब नाथ ५२
अनेक काळरु मुँ जे आशा करि अछि। तप करि तेजिलि एबे देह गोटि ५३
तुम्भर सामर्थ पण देखि देवता असुर। राजा गणे जाचि देबे दुहिता तांकर ५४
सपत्नी माने मोते कहिबे मन्द बाणी।तुम्भे मन्द बोलिब ताहांकर कथा शुणि ५५
ए समय कथामान पाशोरिब नाथ। ज्येष्ठ पत्नी होइण मुँ होइबि अनाथ ५६
ए माया संसार देखु देखु होए आन। थोका एक दिने मो भाजिब जउबन ५७
नब जुबा नारी संगे करिब तुम्भे प्रीति। से मोते अपमान होइब दाशरथि ५८
एबे दिना केते होइथिबि मुँ सुभागी। ए देह थिव पुण होइबि दुर्भागी ५९

सौ-सौ बार विनय करने लगी। ४४ वैदेही ने हाथ जोड़ते हुए कहा हे स्वामी ! मेरी दैन्यता को स्वीकार करे। ४५ मेरे पचप्राणों के स्वामी तुम हमारे नाथ हो। आपने कृपा करके मुझसे विवाह किया है। ४६ पूर्वकाल मे आपने जिस बात की प्रतिज्ञा की थी, हे कर्ता क्या वह बात आपके ध्यान में है। ४७ जिस समय आपने मुझे मृत्यलोक में भेजा था तो आपने कहा था कि मैं एक पत्नी व्रत लेकर अवतार ग्रहण करूँगी। ४८ वह बात क्या आपके ध्यान में है ? बहुत दिनो से मेरा मन दुःखी है। ४९ उस बात को आप भूल न जाइयेगा। हे नारायण ! मुझ पर दया कीजिये। ७५० जितने दिनो तक आप अन्य स्त्री को वरण नही करेंगे तब तक आप हम पर दया करते रहेंगे। ७५१ जब आप अन्य स्त्री का हाथ ग्रहण कर लेंगे तब हे नाथ ! आप मुझ पर कृपा न कर सकेंगे। ५२ बहुत समय से मैने ऐसी आशा कर रक्खी है। अब मैने तपस्या करके एक शरीर का त्याग कर दिया है। ५३ आपकी सामर्थ तथा पुरुषत्व को देखकर देवता, असुर तथा राजागण अपनी कन्याओ के लिये आपसे याचना करेंगे। ५४ सौतें मुझसे निम्न प्रकार की बाते कहेगी और उनकी बातें सुनकर आप भी मुझे नीच कहेगे। ५५ हे नाथ जिस समय आप यह बात विस्मर्ण कर देगे तब मैं बड़ी रानी होकर भी अनाथ हो जाऊँगी। ५६ यह माया का संसार देखते-देखते मिथ्या हो जाता है। थोड़े ही दिनो मे मेरा यौवन नष्ट हो जाएगा। ५७ आप नवयुवा स्त्री से प्यार करने लगेंगे। हे दशरथनन्दन ! फिर वह मेरा अपमान करेगी। ५८ तब मैं कितने दिनों तक सौभाग्यशालिनी

तुम्भे से चारि वेद मुँ अटइ कुश पाणि ।मोर बिना आन के तो गुण ग्राम जिणि ७३१
मुहिँ सुरपति तु गो अटु सुधारस । आन जने केबा तोते करिपारे ग्रास ३२
मुँ अगस्ति ऋषि तु गो सपत सागर । तु से कुमुदुनि मुँ अटइ सुधाकर ३३
तोते देखि मोहर आनन्द पञ्च प्राण । तु बिकास कमळ मुँ छायार रमण ३४
मुँ से काम देब प्राण सजनि तु रति । ए तोहर रूपकु मुँ अनुरूपे पति ३५
ए तोहर नयन मदन शिर जिणि । खण्ड खण्ड करि मो हृदयकु हाणि ३६
जेते बेळे शिब धनु कररे धइला । लक्षे नृपतिकर गरब गञ्जिला ३७
तुहि रत्न माळा देइ बरि मोते गलु ।
ए मोहर पञ्च आत्मा हरि तु आणिलु ३८
अपंग नयनरे चाहिँलु बक्र करि । एबे मोते प्रापत होइल महि स्थलि ३९
हसि मोते कथा कह रहु मोर प्राण । तु जे महा लक्ष्मी मुँ अटइ नारायण ७४०
दैत्य बळ निबारणे देबतांक हिते । मेदिनीरे अवतार होइ मुँ अछि सते ७४१
दशरथ राजा घरे जन्म मुँ देह धरि । तु सखी होइलु आसि जनक कुमारी ४२
श्रीरामचन्द्र श्रीमुख एमन्त बाणी शुणि। गत जन्म सुमरिले जनक दुलणी ४३
श्रीरामचन्द्र चरणे कले नमस्कार । पुण पुण बिनय करिण शते बार ४४

गरल हो तो मैं सदाशिव हूँ। मेरे बिना तेरा उपभोग अन्य कौन करेगा। ७३० तुम चार वेद हो, मै कुशपाणि ब्रह्मा हूँ। मेरे बिना अन्य कौन तुम्हारे गुण ग्राम को जय कर सकता है। ७३१ मैं सुरपति इन्द्र और तू सुधारस है। कोई अन्य व्यक्ति तुझे कैसे ग्रास कर सकता है। ३२ मै अगस्त ऋषि हूँ तो तुम सातो समुद्र हो। तुम कुमुदिनी और मैं चन्द्रमा हूँ। ३३ तुझे देखकर मेरे पचप्राण आनंदित हो जाते है तुम कमल का विकास हो तो मैं छायारमण सूर्य हूँ। ३४ मैं कामदेव हूँ तथा हे प्राणसगिनी ! तुम रति हो। तुम्हारे इस रूप के अनुरूप मैं पति हूँ। ३५ तुम्हारे इन नयनो ने कामदेव के घमण्ड को जीत लिया है और हमारे हृदय को खण्ड-खण्ड करके काट डाला है। ३६ जिस समय मैने शिवधनुष को हाथो मे उठा लिया था और एक लाख राजाओ का घमण्ड चूर-चूर कर दिया था तब तुम मुझे रतनमाला पहनाकर वरण करके चली गई तब तुमने मेरे पचप्राणों को हरण कर लिया था। ३७-३८ तुमने आँखे नीची करके मुझे वक्रदृष्टि से देखा था। इस समय तुम इस भूमण्डल पर मुझे प्राप्त हुई हो। ३९ तुम मुझसे हँस कर वार्ता करो जिससे मेरे प्राण बच जॉय। तुम महालक्ष्मी तथा मैं नारायण हूँ। ७४० मैं प्रतिज्ञावश दैत्यों का सहार तथा देवताओ का हित करने के लिये पृथ्वीतल पर अवतरित हुआ हूँ। ७४१ राजा दशरथ के गृह मे मैने देह धारण करके जन्म ग्रहण किया है और तुम आकर जनकनन्दिनी हुई हो। ४२ श्रीरामचन्द्र के श्रीमुख से ऐसी वाणी सुनकर जनकनन्दिनी ने अपने गत जन्म की याद की। ४३ उन्होंने श्रीरामचन्द्र के चरणो में नमस्कार किया तथा

तेते बेळे शोक बिरूप हेब तोर ।एकब्रति बिचारिबारु एते कष्ट तोहर ७५
तु निकि मोते छाड़ि थाउरे चान्दमुखी । तेते बेळे सिना मुहिँ होइ बिटि दुःखि ७६
स्तिरी मानंकर चित्त चञ्चळ अस्थिर । प्रकृति अन्याय त अटइ ताहांकर ७७
जद्यपि कान्त जाणि थाइ काम कळा । बिद्याबन्त पण होइ थाइ अशृंखळा ७८
निर्मळ बंशरे होइ थाइ अबतार । धनबन्त जुबा बयस अत्यन्त सुन्दर ७९
अबिरते दातापण गुणरे गरिष्ठ ।सर्ब जने ताकु करि थान्ति महारिष्ट ७८०
जुबतींकि तिआरे से परे बोध करि । जीवनरु अधिक करन्ति ताकु नारी ७८१
एमन्त नोहिले पुरुष छाड़न्ति जुबती । आन पुरुषरे नेइण द्यन्ति मति ८२
तेणु करि तोतेरे तिआरइ सुन्दरी । एमन्त बचन जहुँ कहिले चापधारी ८३
शुणि कर जोडि कहे जनक दोहिती । तुम्भ बिना अन्य मोहर नबळइ मति ८४
जद्यपि हे नाथ मोते नेब अन्यजन । तेबे से दिनरु मुहिँ छाडिबइँ अन्न ८५
बेश बसन मोर छाडिबि सुख भोग । पुण जेबे स्वामीरे होइबि संजोग ८६
तेबे से स्नान भोजन समस्त करिबि । ए तुम्भर पद्म पादे सेवा करि थिबि ८७
सत्य सत्य ए मोहर कुळ दीप साक्षी । एते बोलि अनळ छुइँले चन्द्रमुखी ८८
जानकिर बचने श्रीराम पुण गले । सीताहिँ रामचन्द्र बचने सत्य कले ८९

रूप मे असुरों का सहार करूँगा। हे चन्द्रवदनि ! तुम चौदह महीने असुरालय में रहोगी। ७४ तब शोक से उस समय तुम विरूप हो जाओगी। एकव्रती विचार से तुम्हें इतना कष्ट होगा। ७५ हे चन्द्रमुखी ! जब तुम मुझे छोड़कर जाओगी तब मैं दुखी हो जाऊँगा। ७६ स्त्रियों का चित्त चचल तथा अस्थिर होता है यह उनकी स्वाभाविक अनीति है। ७७ यद्यपि उनका स्वामी कामकला जानता है फिर भी उसका ज्ञान उच्छृखल हो जाता है। ७८ उसका निर्मलवश में अवतार होता है। वह अत्यन्त धनवान सुन्दर तथा युवा आयु वाला होता है। ७९ वह निरन्तर दानवीर तथा गुणो में महिमावान होता है तब सब लोग उसे विघ्न डालते है। ७८० युवतियो के समझाने से वह शान्त हो जाता है। उसे नारी जीवन से भी अधिक समझने लगती है। ७८१ ऐसा न होने से पुरुष युवती को त्याग देता है। तब वह अन्य पुरुष मे अपना चित्त लगा लेती है। ८२ इसलिये हे सुन्दरी ! मै तुझे समझा रहा हूँ। धनुर्धारी राम ने इस प्रकार की बात जब कही, तब उसे सुनकर जनकनन्दिनी ने हाथ जोड़कर कहा कि तुम्हें छोड़कर अन्य के प्रति मेरा चित्त न डोले। ८३-८४ हे नाथ ! जब मुझे अन्य व्यक्ति ले जायेगा मै उसी दिन से अन्न का परित्याग कर दूंगी। ८५ अपने वस्त्र, शृगार और सुख भोगों त्याग का कर दूंगी। फिर जब स्वामी के साथ मिलन का संयोग होगा तभी स्नान भोजनादि सब करूँगी। फिर आपके चरण कमलों की सेवा करती रहूँगी। ८६-८७ यह मेरी प्रतिज्ञा है और हमारा कुलदीप इसका साक्षी है। ऐसा कहते हुए चन्द्रवदनी सीता ने अग्नि का स्पर्श किया। ८८ जानकी के

लोकनिन्दा कथा जे होइब मोते ब्यथा। एते बोल देवी पादे लम्बाइले मथा ७६०
थन थन नयन करिण चान्द मुहिँ। ए जन्मे सत्यब्रतरे पाळ हे रघुसाइँ ७६१
ए शरीर गोटि मोर अटइ तुम्भर। शुणि करि श्रीराम जे कहिले सत्वर ६२
तुम्भे जाहा कहिल से कथा मोर मूळ। आगे कहिवा कथा एबे नुहइँ निवार ६३
तुम्भर संगकु मुं न करिबि सपतणी।एहि कथा सत्य मोर कहु अछि बाणी ६४
नोहिबि बिभा मुं जे न छुइँबि अन्यनारी।
आजहुँ माता मोहर थाउ सकळ नारी ६५
केवळ कथाए गो शुणि थाए तुम्भे। आम्भे जेणे जिबु गो जिबु तेणे तुम्भे ६६
अलंघिते तुम्भे जेबे हराइब प्राण। तथापि अन्य नारी नाहिँ मो रमण ६७
तोर नाम देइ मात्र सुबर्ण प्रतिमा। पत्नि भ्रष्टा निमन्ते मुं अणाइबि बामा ६८
से पितुळा संगे जेबे करिबि मुं केळि। पूर्वबन्ते से पितुळा तो देह बदळि ६९
अनेक जुबती मोते भोग कराइब। तेते बेळे तुम्भर गो सुआग न रहिब ७७०
एबे जेते काळ तुम्भे मोर संगे थिब। नब जुवा रूपरे जे तोहर दिन जिब ७७१
नोहिब बृद्ध शरीर कहिलु तुम्भंकु। तुम्भंकु देखिले मन नटळे अन्यकु ७२
केवळ कथाएक अछइ थाअ जाणि। देबंकर छळे जनम हेबु पुणि ७३
प्रबळ असुर मारिबि निश्चे मुहिँ। चउद मास अमुर पुरे रहिबु चान्द मुहिँ ७४

रहूँगी ? यह शरीर रहते हुए भी मै हतभागिनी हो जाऊँगी। ५९ लोकनिन्दा की बातो से मुझे कष्ट होगा। इतना कहकर देवी ने उनके चरणो में मस्तक झुका दिया। ७६० चन्द्रमुखी के नेत्रों मे अश्रु छलक आए। वह बोली हे रघुनाथ जी ! इस जन्म मे इस सत्य प्रतिज्ञा का पालन कीजिये। ७६१ यह मेरा सम्पूर्ण शरीर आपका है, यह सुनकर श्रीराम ने तीव्रता से उत्तर दिया। ६२ तुमने जो कहा वह बात हमारे लिये मुख्य है। पहले की गई प्रतिज्ञा को मै नही छोड़ूंगा। ६३ तुम्हारे साथ रहकर मैं सौते नही करूँगा। मैं यह बात सत्य कह रहा हूँ। ६४ न तो मै दूसरा विवाह करूँगा और न अन्य स्त्री का स्पर्श ही करूंगा। आज से समस्त स्त्रियाँ मेरी माता है। ६५ तुम केवल मेरी एक बात सुन लो। मै जहाँ भी जाऊँगा, तुम भी मेरे साथ चलोगी। ६६ तुम यदि इसका उल्लघन करके प्राण त्यागोगी तब भी मै अन्य नारी से रमण नहीं करूँगा। ६७ तुम्हारे नाम की मात्र स्वर्ण प्रतिमा बनाकर हे कामिनी मैं पत्नी भ्रष्टा होने के कारण मँगवा लूँगा। ६८ उस पुत्तलिका के साथ जब मै केलि करूँगा तो पहले की भाँति वह पुतली तुम्हारी देह में परिणित हो जाएगी। ६९ जब अनेक युवतियो से मेरा भोग होगा उस समय तुम्हारा सौभाग्य नही रहेगा। ७७० अब जब तक तुम मेरे साथ रहोगी तब तक तुम्हारा समय नवयुवा रूप मे व्यतीत होगा। ७७१ मै तुमसे कहे देता हूँ कि तुम्हारा शरीर वृद्ध नहीं होगा। तुम्हे देखकर मेरा मन अन्य के प्रति नही डोलेगा। ७२ केवल तुम एक बात और समझ लो, देवताओं के छल से मेरा पुनः जन्म होगा। ७३ मैं निश्चित

से बेनिजन मदन रसरे रसे माति । बिबिध प्रकारे से करन्ति सुरति ५
जाहा नेत्रान्तरु जात होइछि मदन । सदा काळे श्रृंगार जेहु पूर्ण ६
कन्दर्प रतिर जहुँ लिळा अगोचर । सीता संगे रंगे आरम्भिले रघुबीर ७
एककु एके रति शास्त्रे अटन्ति से पूर्ण । बचनरे नुहँइ तांक चरित लेखन ८
एथु अनन्तरे आसि रजनि हुए शेष । देबतांक आळरे शुभइ शंख घोष ९
बेणु बीणा ताळ मर्द्दळ से बजान्ति । ढोल दमा निशारता ध्वनि उछुळन्ति ८१०
श्रीरामचन्द्र जानकी बिषाद मन होइ । आज किम्पा रजनि अळपे गला पाहि ८११
श्रद्धा पूर्ण नोहिला होइला महाव्यथा । एथु अनन्तरे तुम्भे शुण रस कथा १२
सेठारु दासीगणे भितरे मिळिले ।माळिनी नामे कन्याकु जाइण बेश कले १३
जोड़ा बान्धि झम्पा झुम्पी चउरि भण्डि देले ।
अळका फुल गभा केतकि रञ्चिले १४
चन्दन पाटि नेइ सिन्दूर टोपा देले । नय़ने अञ्जन देलेक नेइ भले १५
शिर परे अळका मथामणि पुण । नाशारे सिन्धु फळ लोथ दण्डि जाण १६
काप मल्लकढ़ि चन्द्र फासिआ फिरि फिरा ।
बेनि कर्णे खञ्जिबारु दिशिले बड़ शोभा १७
बेनि बाहु बाहुटि बिद ताड़ शोहे । कर्णरे रत्न चुड़ि बिराजे ज्योति मय़े १८

फिर वह दोनो कामरस मे सलग्न हो गए और नाना प्रकारसे रतिक्रीड़ा करने लगे। ५ जिसके नेत्रान्तर से कामदेव उत्पन्न हुआ है। जो सदा श्रृगार से परिपूर्ण रहता है। रति और कामदेव की जो अगोचर लीलाएँ है वही रंगरलियाँ रघुवीर राम ने सीता के साथ प्रारम्भ की। ६-७ वह एक से एक रतिशास्त्र मे निपुण थे। उनके चरित्रो का लेखन वाणी द्वारा नही हो सकता। ८ इसके पश्चात् रात्रि शेष हो आई। देवालयो में शखो का उद्‌घोष सुनाई देने लगा। ९ वेणु, वीणा, ताल, मृदग आदि बज रहे थे। ढोल तथा नगाड़ो मे प्रभाती ध्वनि गूँजने लगी। ८१० श्रीराम तथा जानकी का मन खिन्न हो गया। वह सोच रहे थे कि आज थोड़े मे ही रात्रि क्यों समाप्त हो गई। ८११ प्रेम पूर्ण न होने से उन्हे अत्यन्त कष्ट हुआ। इसके पश्चात् की रस कथा अब तुम सुनो। १२ तब दासियाँ भोतर जा पहुँची। उन्होने जाकर मालिनो नामक कन्या का श्रृगार किया। १३ जूडा बाँधकर झम्पा झुम्पी तथा चौरी लगा दी। अलकों में केतकी फूलों के गुच्छे सजा दिये। १४ फिर चन्दन लेकर लगाया और सिन्दूर का तिलक लगा दिया। आँखो मे अजन लेकर भली प्रकार से लगा दिया। १५ शिर की अलको पर चूड़ामणि लगा दी। नाक में मोती लगी नथ पहना दी। १६ काप मल्लो कली फाँसिया फिरफिरा आदि कानों के आभूषण कानो में पहना देने से वह सुन्दर दिखने लगे। १७ दोनों बाहुओं पर पहुँची व बाजूबन्द शोभित हो रहे थे। कानो में रत्न की ज्योतिर्मय बालियाँ विराजमान

बोइले सखी तु गो शुण मो बचन। आम्भे कुळ दीप छुइँ करिछु नियम ७९०
ए जन्मरे मोहर नोहिब आननारी। एकथा आन हेले न सहिब वसुन्धरि ७९१
सत्य सत्य ए मोहर अटइ अलंघित। एते वोलि कुळ दीप छुइँले रघुनाथ ९२
बेनि जनंकर जे एरूपे सत्य हेला। सेठारु जानकि जे हरष मन तोरा ९३
ए उत्तारु जानकि श्रीराम हेले मेळ।श्रीराम जानकिकि नेइ वसाइले कोळ ९४
सत्यरे से दुहेँ जाणिलेक बेनि जन। गजदन्त पलंकरे कलेक शयन ९५
जानकि शोइले श्रीरामंकु पिठि देइ। तांक पछे शयन कलेक रघुसाइँ ९६
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो गउरी। नयरे अचेत जे जनक कुमारी ९७
श्रीरामचन्द्र चिआँइ अछन्ति तुनि होइ। निद्रा होइ ताहांकर नयनरे नाहिँ ९८
जानकि सुन्दर पण मनरे सुमरि। करकु लेउटाइ लोड़न्ति कोळ करि ९९
पुण पुण मानसरे बिचारि संकोच। श्री मर्दन्ति जे जानकरि कुच ८००
थोका एक बेळरे बिभोर भाव होइ। हे सखी हे सखी वोलि कर लेउ टाइ ८०१
अति गाढ़े ताहाकु लोड़न्ति कोळकरि। काम भरे निद्राभंग जनक कुमारी २
संकोच छाडिण श्रीरामंकु कोळ कले। मुखे मुख लगाइ उररे उर देले ३
चरणकु चरण से लगाइ छन्दिले। कामदेवकु से वळ करिण बान्धिले ४

वचन से श्रीराम को प्रतीति हो गयी। फिर सीता के वचनो पर उन्होने प्रतिज्ञा करते हुए कहा, हे सगिनी ! तुम मेरी बात सुनो। हमने भी कुलदीपक का स्पर्श करके प्रतिज्ञा की है। ८९-७९० इस जन्म में मेरी अन्य स्त्री नही होगी। यह बात मिथ्या होने पर उसे पृथ्वी सहन नही कर सकेगी। ७९१ यह मेरी सत्य प्रतिज्ञा अटल है, ऐसा कहते हुए रघुनाथ जी ने कुलदीप का स्पर्श किया। ९२ इस प्रकार दोनो लोगो की प्रतिज्ञा हो गई तब जानकी का मन प्रसन्नता से चमक उठा। ९३ इसके पश्चात् श्रीराम तथा जानकी का मिलन हुआ। श्रीराम ने जानकी को लेकर गोद मे बिठा लिया। ९४ सत्य से वह दोनो एक-दूसरे को समझ गए तथा दोनो हांथी दांत के पलग पर लेट गए। ९५ श्रीराम की ओर पीठ करके जानकी सो गई और उनके पीछे श्रीराम भी सो गए। ९६ हे गौरी ! सुनो। इसके पश्चात् जनकनन्दिनी निद्रा मे अचेत हो गई। ९७ श्रीरामचन्द्र आश्चर्य से शान्त थे। उनके नेत्रो में निद्रा नही थी। ९८ जानकी के सौदर्य को मन मे विचारकर हाथ पलटकर उन्हे आलिगन करने के लिए खोजने लगे। ९९ बारम्बार अपने मन मे विचार करके वह सकोच से जानकी के कुचमर्दन करने लगे। ८०० थोड़ी देर के बाद भाव में विभोर होकर हे सखी ! हे सखी कहते हुए उन्होने हाथ लौटा लिया। ८०१ अत्यन्त दृढता के साथ उन्हे आलिगन करने के लिए सोचने लगे। कामातुरा होने से जनकनन्दिनी की भी निद्रा भग हो गई। २ उन्होने सकोच को छोड़कर श्रीराम का आलिगन कर लिया और मुख मे मुख लगाकर हृदय से हृदय भिड़ा दिया। ३ पैरो मे पैर भिड़ाकर उन्हे फाँस लिया और बलपूर्वक उन्होने कामदेव को बाँध दिया। ४

उर्मिळा कन्याकु बेश धाई माने कले । चरण अंगुष्ठिरे झुण्टिआ खञ्जिले ३४
अळता पग्नरे जे खञ्जिले तिनि धाड़ि । पाहुड नुपुर बळा खञ्जिले जत्न करि ३५
कटिरे मेखळा बक्षस्थळरे काञ्चला । गळारे चाप सरि पदक दिशे तोरा ३६
चन्द्रहार बनमाळा नबरत्न खञ्जि । सुन्दरी मानंकु सेबु पळाए जे गञ्जि ३७
हिरा माणिक्यर चुडि बेनि करे देले । बाहुटि बिद ताड बाहारे खञ्जिले ३८
अंगुष्ठीर रत्नमुदि नाशारे बसणी । रत्नरे लोथ दण्डि गुण देले पुणि ३९
काप जे मलकड़ि चन्द्र फासिआ नेइ।फिरि फिरा बेनि कर्ण खञ्जिले तोषहोइ ८४०
नग्नने अञ्जन देले सिन्दूर मस्तकर । मथामणि अळका पाटि चन्दन सार ८४१
केशकु शामळिण जोडा बान्धि जत्ने । चउँरी मुण्डिरे झुम्पी लगाइ तुरिते ४२
पञ्चुवर्ण फुल गभा तापरे केतकि ।पिताम्बर पाट साढि बाछिण पिन्धान्ति ४३
बसन्त पतनि जे उपराण देले । बेशकरि दासी गणे घेनि चळि गले ४४
शितळ माणिक्य पुरे हेले परबेश । देखिले पलंकरे लक्ष्मण निद्रागत ४५
टाहिच माळिरे हरसे जोत कले । शुणिण लक्ष्मण जे हसिण उठिले ४६
देखिण दासीगणे उर्मिळा समर्पिण । चळिले कबाटकु देइण बेगे जाण ४७
भितर पुरे जाइ प्रबेश दासी हेले । सेठारु लक्ष्मणउर्मिळाकु कोळ कले ४८

जा पहुँची। ३३ फिर दासियो ने राजकन्या उर्मिला का शृगार किया । चरण की उँगलियो में झुन-झुन करनेवाले बिछुए पहना दिये । ३४ पैरो मे तीन धारी आलता की लगा दी तथा यत्नपूर्वक पायल, कड़े और नूपुर पहना दिये । ३५ कमर में तागडी, वक्षस्थल पर कचुकी, गले मे धनुषाकार आभूपण तथा पदक सुन्दर दिखाई दे रहे थे । ३६ नव रत्न के चन्द्रहार तथा वनमाला पहना दिये थे जो सुन्दरी स्त्रियों का मद गजन कर भगा रहे थे । ३७ दोनों हाथो मे हीरा तथा माणिक्य की चूड़ियाँ पहना दी तथा बाँहो मे पहुँची तथा बाजूवन्द सुसज्जित कर दिये । ३८ उँगलियो मे रत्न मुद्रिकाएँ तथा नाक में बुलाक तथा रत्न जडी कील पहना दी । ३९ काप मल्ली कली की लड़ी, चन्द्र फाँसिया, झूमर झुमके आदि कर्णाभूषण प्रसन्न होकर दोनो कानो में पहना दिये । ८४० आँखो मे अंजन तथा मस्तक पर सिन्दूर लगा दिया । चन्दन की खौर लगाकर बालो मे चूडामणि बेदा पहना दिया । ८४१ केश को झाड़कर यत्नपूर्वक जूडा बाँध दिया और शीघ्र ही उनमें चौरी तथा झालरे लगा दी । ४२ पाँच प्रकार के फूलो के गुच्छे के साथ केतकी के फूल लगाकर छाँटकर पीले रग की रेशमी साड़ी पहना दी । ४३ ऊपर से बसती रग का दुपट्टा डाल दिया । दासियाँ उनका शृगार करके उन्हे लेकर चल दी । ४४ वह फिर शीतल माणिक्य सदन मे जाकर प्रविष्ट हुई । उन्होने लक्ष्मण को पलंग पर सोते देखा । ४५ हँसी मस्खरी में भरकर वह राग छेड़ने लगी । यह सुनकर लक्ष्मण हँसते हुए उठ पड़े । ४६ यह देखकर दासियाँ उर्मिला को समर्पित करके शीघ्र कपाट वन्द करके चली गईं । ४७ फिर वह दासियाँ अन्त:पुर में जा पहुँची । उधर लक्ष्मण ने उर्मिला

गळारे चापसरि हृदरे पदक । बक्षस्थळरे चन्द्रहार हिरार नायक १९
अंगुष्ठिरे रत्न मुदि कटिरे मेखळा ।बळा पाहुड नूपुर झुण्टिआ दिशे तोरा ८२०
चतुःसम कुकुम सर्बांगे लेपिले पुण । चरणरे अलता दिशे शोभावन ८२१
निळ अमळाण शाढ़ी जे पिन्धाइले । खण्डुआ उपराण मस्तक परे देले २२
घेनि करि दासीगण चळिले धिरे धिरे । प्रबेश हेले हिरा प्रबाळर पुरे २३
भ्रथंकर पाशरे नेइण छिड़ा कले । ए स्तिरी भोग तुम्भे कर हे बोइले २४
अळप बयस त अटइ राजजेमा । सुन्दर चञ्चळा गरु हँसी अटे रम्भा २५
नब जउबनकु भोगकर पुण ।आजि ठारु तुम्भर दासी एहु हेला जाण २६
एते कहि सकळ नारीगणे गले । बाहारि कबाट देइण दासी चळिगले २७
उठिकरि भरथ कोळ कले आसि । पलंक उपरे बसाए शशिमुखी २८
बेनि कुच मरदिण मुखरे चुम्ब देले । नाना परिबन्धे से सुरति रति कले २९
रति केळि सारिण पलंके बेनि जन । मुखकु मुख लगाइ कलेक शयन ८३०
बाहुकु बाहु बेनि चरण छन्दा छन्दि । दुइ कुच जुगुळ हृदरे नेइ लदि ८३१
हेममय पलंकरे निश्चिते निद्रा गले ।लज्जा भाव छाडिण शृंगार रति कले ३२
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी । दासीगण माने जे भितरे जाइ मिळि ३३

थी । १८ गले में धनुपाकार आभूषण तथा वक्षस्थल पर पदकयुक्त हीरो का चन्द्रहार सुशोभित था । १९ उँगलियो मे रत्नजड़ित मुद्रिकाये तथा कमर में तागड़ी और पैरो मे कड़े-तोड़े-नूपर तथा रुनझुन करनेवाले आभूषण शोभायमान दिखाई दे रहे थे । ८२० उसके सम्पूर्ण शरीर मे कुमकुम का लेपन कर दिया । चरणो मे लगा आलता शोभायमान दिखाई दे रहा था । ८२१ फिर उसे अम्लान नीले रग की साड़ी पहना दी तथा एक ओढनी मस्तक पर डाल दी । २२ फिर उसे लेकर दासियाँ धीरे-धीरे चल दी तथा हीरा-प्रवाल सदन में जाकर प्रविष्ट हुई । २३ उसे ले जाकर भरत के पास खडा कर दिया तथा कहने लगी कि आप इस स्त्री का उपभोग करे । २४ यह राजकन्या अल्पवयसी है । यह सुन्दरी हसिनी तथा चंचला रम्भा सी है । २५ आप नव यौवन का भोग करे । आज से यह आपकी दासी हो गई है आप यह समझ ले । २६ ऐसा कहकर सभी नारियाँ चल दी और बाहर निकल कर कपाट बन्द करके दासियाँ चली गई । २७ भरत ने उठकर उसे गोद मे ले लिया तथा चन्द्रमुखी को पलग के ऊपर बिठा लिया । २८ दोनो कुचो को मर्दन करके उन्होने मुख मे चुम्बन दिया तथा अनेक प्रकार के परिबन्धनो से रति क्रीडा की । २९ रति क्रीडा की समाप्ति पर दोनों मुख मे मुख लगाकर पलग पर सो गए । ८३० बाहुओ मे बाहुएँ, चरणो में चरण फँसाकर दोनो कुचो को वक्षस्थल पर भिडा दिया । ८३१ हेममय पर्यंक पर वह निश्चिन्त होकर सो गए । उन्होने लज्जा भाव को त्याग कर शृंगारिक रति क्रीड़ा की थी । ३२ हे शाकम्बरी ! सुनो । इसके पश्चात् दासियाँ भीतर

उठि रंग केळिरे बेनि जन भोळ ।रति प्रीति शरिबारु लज्ज्या हेला दूर ६४
लक्ष्मण बोइले तुम्भे शुण प्राणसहि ।चउद बरष वनबास करिबु आम्भे जाइ ६५
असुर मारि उश्वास करिबु पृथिभारा । सेहि काळे तोर मोर होइब जे छड़ा ६६
न छुइँबि स्तीरि अंग न करिबि जे आहार ।
न करिबि जे रतिप्रीति चिन्ता नोहिब मोहर ६७
तुम्भंकु देखिले रति प्रीतिरे श्रद्धा हेब ।
अन्न मुहिँ भुञ्जिबि जे कहिलि तुम्भ आग ६८
शुणि करि उर्मिळा जे बचन धीरे कहे ।
तुमे बने जिबा काले मुहिँ अपुंसक हुए ६९
चउद बरष जाए मुँ अपुंसक थिबि । तुम्भंकु देखिला बेळे पुष्पबती हेबि ८७०
तुम्भे बन गला दिन हेब नपुंसक । लेउटि मोते देखिले मदने उच्छुक ८७१
एमन्ते कुहा कुहि हेले बेनि जन । गजदन्त पलंकरे कलेक शयन ७२
कुचकु बक्षस्थळ मुखकु मुख पुण । बाहुकु बाहु बन्ध चरण छन्दि जाण ७३
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी । सुकिर्त्ती कन्याकु दासी माने बेश करि ७४
पुष्प चन्दन जे सुगन्ध अंगे बोळि ।केश सामळि जुडा बान्धिले जत्न करि ७५
झरा झुम्पा चउँरि मुण्डिमान जे खञ्जि। ता उपरे पञ्चवर्ण पुष्पमाळा गञ्जि ७६

प्रसन्न हो गया । फिर उन्होने उसे गोद में लेकर पलंग पर लिटा लिया । ६३ वह दोनों उठकर रति रंग क्रीडा मे विभोर हो गए । रति प्रसग करने पर उनकी लज्जा दूर हो गई । ६४ लक्ष्मण ने कहा हे प्राण सहचरी ! तुम सुनो । हम चौदह वर्ष के लिये वन में जाकर वास करेंगे । ६५ असुरो का संहार करके हम पृथ्वी का भार हल्का करेंगे । उसी समय हमारा तुम्हारा विछोह होगा । ६६ तब मै न तो स्त्री का अग-स्पर्श करूँगा और न आहार ग्रहण करूँगा । रति प्रीति भी नही करूँगा । तब मुझे किसी प्रकार की चिन्ता नही होगी । ६७ तुम्हें देखने पर ही हमे रतिक्रीड़ा से प्रेम होगा और मै तुम्हारे आगे ही अन्न ग्रहण करूँगा । ६८ यह सुनकर उर्मिला धैर्य के साथ बोली कि तुम्हारे वन जाने पर मै अपुसक हो जाऊँगी । ६९ चौदह वर्ष पर्यन्त मै उसी अवस्था मे रहूँगी और तुम्हारे दर्शन होने पर ही मै ऋतुमती होऊँगी । ८७० तुम वन गमन के समय नपुसक हो जाओगे । लौटकर जब मुझे देखोगे तभी पुरुषत्व को प्राप्त करोगे । ८७१ दोनों में इस प्रकार का कथोपकथन हुआ । फिर दोनो हाथी दाँत के पर्यंङ्क पर सो गए । ७२ कुच को वक्षस्थल मे और मुख से मुख सटाकर हाथो में हाथ तथा पैरों में पैर फंसाकर वह दोनो सो गए । ७३ हे शाकम्बरी ! तुम सुनो । इसके पश्चात् दासियो ने कन्या सुकीर्ति का श्रृंगार किया । ७४ सुगन्धित पुष्प तथा चन्दन का लेप शरीर पर कर दिया । केश झाड़कर उन्होने यत्नपूर्वक जूड़ा बाँध दिया । ७५ झरा झूमर आदि आभूषण पहना कर उसके ऊपर पाँच

मुखरे चुम्ब देइ कुचरे देले हस्त। उर्मिळा बोइले शुण हे प्राणनाथ ४९
सपतणि न करिब न करिब रोष। एहि कथा मानथाइ कर हे संकेत ८५०
तेबे मुँ तुम्भर दासी निश्चय़ जे जाण। नोहिले मरिब खाइण बिसपुण ८५१
शुणिण लक्ष्मण जे कोमळ भाषा कहि। कौणसि दिने दुइ घरणी मोर नाहिँ ५२
एक प्रतिब्रता जे अटइ मोर अंग। अनन्त अटइ मुँ जे नुहइ परे संग ५३
केबळ बासुदेव संगरे मुँ जे थाइ। सेहि जेणे जाआन्ति मुहिँ तेणे जाइ ५४
एबे बासुदेब जे श्रीराम रूपे जात। जगत अतुट नारी मनरे किम्पा दुःख ५५
सर्बकाळे नब जुबा अट जे सुन्दरी। तेते जिणि नारी जे नाहान्ति तिनि पुरि ५६
आगत निगत जे जाण तुम्भे पुण। शशि सूर्ज्य हुताशन तोषे देखिले नय़न ५७
प्रळय़ हेले मोर मन नटळइ। असुर मारिबा पाइँ अबतार महि ५८
पूर्ब कथा मनरे तुम्भर हेतु कर। तुम्भेत बड़ सुन्दरी परकु नबळा मन तोर ५९
मोहर नय़न रबि कोटिए रबि तेज। तेबे तोर रूपकु करइ मुँ जे भोग ८६०
शुणिण उर्मिळा जे मनरे प्रते गले। बोइला एकथा सत्य शुणिलइ भले ८६१
एते कहि चरण धइले उर्मिळा पुण। दोष क्षमाकर मोर कहिबा दुर्गुण ६२
शुणि करि लक्ष्मण जे हरषमन हेले। कोळकरि आणिण पलंके शुआइले ६३

को गोद मे ले लिया। ४८ उन्होने उनका मुख चूमकर उनके स्तनो पर हाथ लगाया। उर्मिला ने कहा हे प्राणनाथ ! सुनिए। ४९ आप न तो क्रोध करियेगा और न सपत्नी लाइयेगा। यह बात मेरे मन मे है जिसका मैं सकेत दे रही हूँ। ८५० तब मै निश्चित रूप से आपकी दासी बनूँगी। नही तो विष खाकर प्राणो का त्याग कर दूँगी। ८५१ यह सुनकर लक्ष्मण ने मधुर वचनो में कहा, कि मै कभी भी दो पत्नी नही करूँगा। ५२ मेरा अंग एक पत्नीव्रता है। मै अनन्त हूँ। अन्य के साथ मेरा सग नही है। ५३ मै केवल वासुदेव के ही साथ रहता हूँ। वह जहाँ जाते है मै भी वही जाता हूँ। ५४ इस समय नारायण श्रीराम के रूप मे उत्पन्न हुए है। जगत की अक्षय नारी मन में दुःख क्यो कर रही हो। ५५ हे सुन्दरी ! तुम सदा सर्वदा नवयुवा रहने वाली स्त्री हो तुम्हारे सौन्दर्य को जीतने वाली नारी तीनो लोको में नही है। ५६ तुम भूत, भविष्य सब जानने वाली हो। तुम्हे देखकर चन्द्र, सूर्य तथा अग्नि देव भी प्रसन्न हो जाते है। ५७ प्रलय होने पर भी मेरा मन नही डिगता। असुरो का सहार करने के लिये पृथ्वी पर मेरा जन्म हुआ है। ५८ तुम अपने मन मे पूर्वकाल की बात का स्मरण करो। तुम तो परम सुन्दरी हो। अन्य के प्रति तुम्हारा मन नही डोलता है। ५९ मेरे नेत्र करोडो सूर्य के समान तेजस्वी है। तब भी मै तेरे रूप का उपभोग करता हूँ। ८६० यह सुनकर उर्मिला के मन मे विश्वास जम गया। वह बोली कि यह बात सत्य ही मैने भली प्रकार सुनी है। ८६१ इतना कहकर उर्मिला ने उनके चरण पकड़ लिये और कहने लगी कि इस प्रकार कथोप-कथन करने के मेरे दोष को क्षमा कर दीजिये। ६२ यह सुनकर लक्ष्मण का मन

बेणु बीणा ताळ जे कंसाळ मद्दंळ ।ढोल दमा टमक निशाण बीर बाजा सार ८९१
उठिले सैन्यगण जे राजागण पुण। सेनापति सरदार आबर मन्त्रीगण ९२
पात्र सामन्त जे सिपाहि माहुन्त। बिप्र ऋषि समस्ते हेले चेनाबन्त ९३
आस आस जाअ जाअ लागिला गह्ळ। जानकि श्रीराम उठिले जाणिण चह्ळ ९४
भरथ लक्ष्मण जे शतृघन पुण। शय्रन तेजिण जे उठिले बह्न ९५
दासीगण माने आसि पाषरे मिळिले। चारि भग्निकि से संगरे घेनि गले ९६
अन्तपुरे प्रबेश हेले चारि भग्नि। देखिण हरष जे होइले जननी ९७
दासीमाने सुबास जळ घेनि गले।श्रीराम लक्ष्मण भ्रथ शतृघनपाशे मिले ९८
बास पाणि घेनिण मुख पखाळिले। चरण पखाळिण हरष मन हेले ९९
दासीगण फेरिण भितर पुरे मिलि। सुबास जळ नेइ सीतांकु स्नान करि ९००
श्रीअंग पोछिण पतनि पिन्धाइले। नूतन बेशमान बसिण दासी कले ९०१
पूर्बरु शते गुण उज्ज्वळ बेश करि।जननी माने अमृत भुञ्जाइ नेइकरि २
भोजन सारिण आचमन कले चारि भग्नि। पलंकर उपरे बसिले जाइ पुणि ३
कर्पूर ताम्बुळ जे बिड़िआ भुञ्जिले।दासी माने जे जाहार निजोगे खटिले ४
एथु अनन्तरे जे श्रीराम चारि भाइ। पलंक तेजि बाहार मेलारे बसे जाइ ५

रात्रि समाप्त हो गई। देवालयों में शख ध्वनि सुनाई देने लगी। ८९० वेणु, वीणा, करताल, मजीरे, मृदग, ढोल, नगाड़े, टमक-निशान और मुख्य वीर बाजे बजने लगे। ८९१ सेना, सिपाही, राजागण, सेनापति, सरदार, मन्त्रीगण, सभासद, सामन्त, सिपाही, महावत, ब्राह्मण तथा ऋषि सभी लोग उठकर सचेत हो गए। ९२-९३ आओ-आओ, जाओ-जाओ, का कोलाहल होने लगा। इस चहल पहल से श्रीराम-जानकी उठ पड़े। ९४ फिर भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघन भी निद्रा त्यागकर शीघ्र ही उठ गए। ९५ तब दासियाँ उनके पास आ पहुँची वह चारो बहनो को साथ लेकर चली गई। ९६ चारो बहने अन्त:पुर में जा पहुँची। उन्हे देखकर माताएँ प्रसन्न हो गईं। ९७ दासियाँ सुवासित जल ले गईं और श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघन के पास जा पहुँची। ९८ उन्होंने सुवासित जल लेकर उनका मुख प्रच्छालन कर दिया तथा चरण पखार कर उनके मन प्रसन्न हो गए। ९९ दासियाँ अन्त:पुर को लौट गई तथा सुवासित जल लेकर उन्होने सीता को स्नान कराया। ९०० फिर उनके श्रीअगों को पोंछकर साड़ी पहना दी और दासियों ने बैठकर उनका नवीन श्रृंगार किया। ९०१ पहले से भी सौ गुना अधिक उनका उज्ज्वल वेश कर दिया। फिर माताओं ने लेकर उन्हे अमृतमय भोजन करवाए। २ चारों बहनों ने भोजन करके आचमन किया और फिर जाकर पलंग पर बैठ गईं। ३ उन्होंने कर्पूर-ताम्बूल खा लिए और दासियाँ जाकर अपनी-अपनी सेवा में लग गईं। ४ इसके पश्चात् श्रीराम आदि चारो भाई पलंग को त्यागकर बाहर खुले में जा

कपोळरे बिन्दु देले श्रीखण्डि चन्दन । नयने अञ्जन देले लाञ्जि शोभावन ७७
नाशारे सिन्धुफळ रत्न गुणा लोथ ।
कर्णरे काप मल्लकढि चन्द्रफासिआ उदएत ७८
गळारे चापसरि हृदरे काञ्चला । चन्द्रहारा पदक जोडि करे बनमाळा ७९
बाहारे ताड़ बिद बाहुटि जे शोहे । हस्तरे रतन चुडि जगज्जन मोहे ८८०
कटिरे मेखळा जे चरणे नुपुर । बाहु बोला अळत दिशइ सुन्दर ८८१
अंगुष्ठि मानंकरे लगाइ झुण्टिआ । कळामेघि पतनि पिन्धान्ते नेइ नूआ ८२
तहिँ परे उपराण देइण नेइ गले । धबळ पुरे शत्रुघन पाशरे छिडा कले ८३
धाई परिबारि जे संगरे अपार । दासीगणे कथाए जे कहन्ति आछन्दर ८४
कहि करि सेठारु दासीगण गले । बाहार किळिणि जे कवाटरे देले ८५
शतृघन उठिण नेइण कोळ कले । मुखरे चुम्ब देइ कुच से मर्दिदले ८६
निबिड प्रकारे से कले रति लीळा । केते वेळे उत्तारु मन भग्न परा ८७
मन भग्न हेबारु पलंके निद्रा गले । मुखरे मुख लगाइ चरणे छन्दिले ८८
बाहारे बाहा छन्दि हिआरे हिआ जड़ि । गजदन्त पलंकर उपरे पहुडि ८९
एथु अनन्तरे जे रजनी हेला शेष । देवताक आळे जे शुभिला शंख घोष ८९०

रग के पुष्पो की मालाएँ सजा दी । ७६ गालों पर श्रीखण्ड चन्दन के विन्दु रख दिये । उनके नेत्रो मे सुन्दर अंजन लगा दिया । ७७ नाक में मोतियो की बुलाक, रत्नजटित कील तथा नथ पहना दी । कानो मे चन्द्र फॉसिया आदि कर्ण-आभूषण सजा दिए । ७८ गले मे धनुपाकार आभूषण तथा वक्ष में कंचुकी पहना दी । छाती में पदकयुक्त चन्द्र हार तथा वनमाला पहना दी । ७९ बाहो मे पहुँची, वाजूवन्द सुशोभित थे । हाथों में पड़ी रत्न जटित चूड़ियाँ ससारी जनो का मन मोहित कर लेती थी । ८८० कमर में पेटी तथा पैरो मे नूपुर तथा हाथों से लगाया आलता महावर सुन्दर दिख रहा था । ८८१ पैरो को उँगलियो मे रुनझुन करनेवाले विछुए तथा नवीन काले रग के मेघ के समान साडी पहना दी । ८२ उसके ऊपर ओढ़नी ओढाकर उसे लेकर चल दी, और उसे ले जाकर शत्रुघन के पास खड़ा कर दिया । ८३ उसके साथ अनेक सेविकाएँ तथा दासियाँ थीं । वह आनन्दपूर्वक कथा-वार्ता कर रही थी । ८४ बाते करके दासियाँ बाहर निकल गईं और उन्होने कपाट में जजीर लगाकर उन्हे वन्दकर दिया । ८५ शत्रुघन ने उठकर उन्हे गोद में ले लिया । उन्होने उसका मुख चूम लिया और उसके कुच मर्दन करने लगे । ८६ एकान्त मे नाना प्रकार की रति रस क्रीड़ा उन्होने की । कुछ देर वाद उनका मन हट गया । ८७ मन हट जाने पर वह पलग पर सो गए । उन्होने मुख में मुख और पैरो में पैर फँसा लिए । ८८ बाहो में बाहे और छाती से छाती भिड़ाकर वह दोनो हाथी दाँत के पर्यंङ्क पर लेट गए । ८९ इसके पश्चात्

देखिण ऋषि आणी माने आसि पुण ।
राणी हंस मानंकु घेनि गले पहण्ड मणाइँण ९२१
सकळ पुरमान राणीमानंकु देखाइले । बइढुर्ज्य पुरे नेइण बसाइले २२
सेठारु राणीमाने राणीहंसंकु पुण । मान्य धर्म कले उचितरे जाण २३
देखि करि ऋषि आणी परम तोष हेले । उत्सब हरषरे मिळन होइले २४
के काहाकु कोळाग्रत करिण भिडाभिडि ।
के काहाकु घेनिण बसिले कोळकरि २५
केहु एक ठाबे बसिण कथा होन्ति । केउँ माने हास्य परिहासे माति २६
केहु काहा अंगरे कुंकुम द्यन्ति बोलि । केहु भिड़ा भिड़रे हुअन्ति उछुळि २७
एमन्ते नाना उत्सब राणी ऋषि आणी । बेनि कुळ रहस्य के कहि पारे पुणि २८
दासीगण माने बेनि कुळर जाण । हास्य रस कउतुक हरष हेले पुण २९
एहि समयरे चारि पुत्र मिळिलेक आसि ।
मातामानकु नमस्कार होइलेक सेथि ९३०
देखिण परम आनन्द माता गण । पुत्रमानंकु कोळे बसाइले पुण ९३१
एहि समयरे शान्ता कन्या मिळि । जननी मानंकु ओळगे जाइ करि ३२
देखिण जननी माने परम तोष हेले । दुहितांकु कोळरे नेइण बसाइले ३३
मुखरे चुम्बन देइ आश्वासना कहि । दुहिता मानंकु प्रफुल कराइ ३४

जनक के महल मे जा पहुँची । ९२० यह देखकर ऋषि-पत्नी सम्मान सहित रानियो को लेकर पैदल चलने लगी । ९२१ उन्होने सम्पूर्ण महल रानियो को दिखाया और उन्हे ले जाकर वैदूर्य के महल में बैठाया । २२ वहाँ पर रानियों ने रनिवास का उचित रूप से आदर सत्कार किया । २३ यह देखकर ऋषि पत्नी परम सन्तुष्ट हो गई । उत्सव तथा हर्ष से मेल मिलाप हुआ । २४ कोई किसी का आलिगन करके भिड़ रही थी । कोई किसी का आलिगन करके बैठ गई । २५ कोई एक स्थान पर बैठकर बाते करने लगी । कोई हास-परिहास में मग्न थी । २६ कोई किसी के अंग मे कुमकुम लगा रही थी । कोई धक्का मुक्की करती हुई उत्साहित हो रही थी । २७ रानियाँ तथा ऋषि-पत्नियाँ इस प्रकार मिलकर नाना प्रकार के उत्सव मना रही थी । दोनो कुलो के रहस्यों को कौन कह सकता है ? । २८ दोनो कुलो की दासियाँ हास-परिहास तथा कौतुक से प्रसन्न हो गई । २९ इसी समय चारो पुत्र वहाँ आ गए और वहा उन्होने माताओ को प्रणाम किया । ९३० यह देखकर माताओ को महान आनन्द प्राप्त हुआ और उन्होने पुत्रो को गोद मे बैठा लिया । ९३१ इसी समय कन्या शान्ता आ गई और उसने जाकर माताओ को प्रणाम किया । ३२ यह देखकर माताएँ अत्यन्त प्रसन्न हो गई । उन्होने पुत्री को लेकर गोद में बिठा लिया । ३३ उन्होने मुख चूमकर उससे आश्वासन के वाक्य कहे तथा कन्या

एहि समयरे निजोग लोके मिळि। माजणा मर्द्दन कलेक वेग करि ६
सुवासित जळरे जे स्नाहान कराइले। श्रीअंग पोछि नूतन वस्त्र पिन्धाइले ७
देवार्च्चन तिळक सारिले राम पुण। भितरपुरे विजय कलेक जाइण ८
दासीगणे जाणिण मणाइ घेनि गले। अन्तपुरे ज्योति घरे नेइण बसाइले ९
जनक राणीमाने जुआँइंकि देखि पुण। भोजन कराइवाकु कलेक जतन ९१०
रत्न पिढ़ा झरि शाढ़ी आणिण पुण देले।कनक थाळिरे अन्न व्यञ्जन परसिले ९११
खिरिखिरिसा बड़झड़ा जे महुर।अमृत भोजन कले चारि भाइ जे सत्वर १२
आचमन सारिण बिड़िआ लागि हेले। सेठारु चळिजाइ पल्यंके बिजे कले १३
एथु अनन्तरे दशरथ राणी। दशरथंकु ड़काइण कहन्ति वाणी १४
बोइले ऋषिक पुरकु आम्भे जिबुँ। वधु ऋषि आणी मानंकु देखिबुँ १५
शुणिण दशरथ वेगे चळि गले। जनक ऋषि पुरे प्रबेश होइले १६
बोइले राणी माने आसिबे तुम्भपुर। देखा होइ करि जिबे निजपुर १७
शुणि करि जनक हरषरे कहि।मो ठारे सुख थिले आसन्तु महामायी १८
शुणिण दशरथ हरषे चळि गले। सकळ राणीमानंकु जाइण कहिले १९
शुणिण राणीमाने वेश भुषण होइ। रत्न हान्दोळारे बसि जनकपुरे जाइ ९२०

बैठे। ५ इसी समय सेवको ने आकर शीघ्र ही उनका मर्दन मार्जन किया। ६ उन्होने सुवासित जल से उन्हे स्नान कराया तथा श्रीअगो को पोछकर उन्हे नवीन वस्त्र पहनाए। ७ फिर राम ने देवार्चन तिलक समाप्त किया तथा अन्त.पुर में जा पहुँचे। ८ यह जानकर दासियाँ भोजन ले आईं तथा उन्हे अन्त.पुर के ज्योतिगृह में ले जाकर बिठाया। ९ जनक की रानियो ने जामाताओ को देखकर उन्हे भोजन करवाने की व्यवस्था की। ९१० उन्हे रत्नपीठिका, रत्नझरी तथा साडी लाकर दी। फिर उन्होने स्वर्णथाल मे भोजन (अन्न व्यजन) परोसे। ९११ गरी की खीर, चावल के बडे तथा मधु से वने अमृतमय व्यंजन शीघ्र ही चारो भाइयो ने किये। १२ आचमन करके उन्होने पान खाए और वहाँ से चलकर पलग पर जा पहुँचे। १३ इसके पश्चात् दशरथ की रानी ने दशरथ को बुलाकर कहा। १४ हम ऋषि महल मे जाएँगी तथा बहुओ के और ऋषि पत्नियो के दर्शन करेंगी। १५ यह सुनकर दशरथ शीघ्र ही चले गए और महर्षि जनक के महल मे जा पहुँचे। १६ उन्होने कहा कि रानियाँ आपके महल में आएँगी और आपके दर्शन करके अपने महल में लौट जाएँगी। १७ यह सुनकर जनक ने हर्ष-पूर्वक कहा यदि उन्हे मेरे पास सुख मिले तो महान माताएँ आ जाँय। १८ यह सुनकर दशरथ प्रसन्न होकर चले गए और जाकर उन्होने रानियों से कहा। १९ यह सुनकर रानियाँ अलकारों से श्रृगार करके रत्न शिविकाओ में बैठकर

शुणिकरि जनक बहन चळि गले । समुन्धा समुन्धी जोगाड सारिले ४८
रथ गज अश्व बस्त्र अळंकार । अष्ट रत्ने पाणिद्रव्य देलेक अपार ४९
श्रीराम चारि भाइंकि चन्दन पुष्प देले । कृताञ्जळी होइण बचन कहिले ६५०
तुम्भे जे दशरथ सूर्ज्य वंशे जात । सकळ नृपति तुम्भर अनुगत ६५१
स्वर्गरे प्रशंसा करन्ति सुरगण । चतुर्दश पुरे बिख्यात बीरसुर पण ५२
तुम्भर कुळरे उपुजे चारि पुत्र । श्रीं राम लक्ष्मण अटन्ति कुळदीप ५३
तांकर महिमा त्रिपुरे बिख्यात । स्वर्ग मर्त्य पाताळरे धन्य बुझूछित ५४
महादेब शराशन हेळे आमञ्चिले । सेहि दिनु बळमाने गरब मुञ्चिले ५५
धनुधरि जेणु पूर्ण कले मोर ब्रत । तेणुकरि बिबाह मुं देलइँ दुहित ५६
एबे देख चारि पुत्रंकु मो चारि झिअ देळि । बरकुळ बोलि तोते शरण पशिलि ५७
तुम्भे महाजन मुं अटइ सुर नदी । तोते आश्रय करिबा मोहर प्रसिद्धि ५८
मोहर दुहितांकर जेते अबिगुण । से कथा मने न बिचारिब महाराण ५९
तो चारि पुत्रकु मो चारि पुत्री दासी । भो राजा तु से मानंकु थिबुटि आश्वासि ६६०
ए मोहर उक्तिकि घेनिण नृपबर । मो दुहिता मानंकर अप्राध क्षमा कर ६६१
एते बोलि बिनम्र होइण वेगे उठि । कोळ कले तांकु दशरथ सत्वरेटि ६२

विदा करे। अब हम अपने राज्य को जाएँगे। ४७ यह सुनकर जनक शीघ्र ही चले गए और समधी तथा समधिनों के जाने की व्यवस्था कर दी। ४८ उन्होने रथ, हाथी, घोड़े, वस्त्र, अलकार, आठ प्रकार के रत्न तथा अपार पेय पदार्थ प्रदान किए। ४९ श्रीराम आदि चारो भाइयो को उन्होने चन्दन तथा पुष्प प्रदान किए, और हाथ जोड़कर कहने लगे। ६५० हे दशरथ ! आप सूर्यवश मे उत्पन्न हुए है। सारे राजागण आपके अनुगत है। ६५१ स्वर्ग में देवराज आपकी प्रशसा करते है और चौदह भुवनों मे आपका शौर्य वीर्य प्रसिद्ध है। ५२ चार पुत्र आपके कुल में उत्पन्न हुए। श्रीराम तथा लक्ष्मण कुल के दीपक है। ५३ उनकी महिमा तीनो लोको मे विख्यात है। स्वर्ग, मृत्यु तथा पाताल लोक में सब उन्हे धन्य-धन्य कहते है। ५४ उन्होने खेल-खेल में शिव का धनुष कर्षित कर दिया। उसी दिन वीर पुरुषों का दर्प चला गया। ५५ धनुष उठाकर जैसे ही इन्होने मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण की तभी मैने पुत्री का विवाह कर दिया। ५६ अब देखिये मैने चारो पुत्रों को चार कन्याएँ प्रदान कर दी तथा वरपक्ष का समझकर आपके शरणापन्न हो गए है। ५७ आप महान पुरुष है। मैं सुरनदी गगा हूँ। आपके आश्रित रहने से मेरी प्रसिद्धि है। ५८ मेरी बेटियों के जितने अवगुण है; उन्हे महाराज ! ध्यान में न लाइयेगा। ५९ मेरी चारों कन्याएँ आपके चारो पुत्रो की दासी है। हे राजन् ! आप उन्हे आश्वासन देते रहियेगा। ६६० हे नृपश्रेष्ठ ! आप हमारी यह विनती स्वीकार कीजिए। मेरी पुत्रियों के अपराधो को क्षमा करते रहियेगा। ६६१ ऐसा कहकर वह विनयावनत हो गए और शीघ्र ही उठे। तभी राजा दशरथ ने उन्हे वेग से

सेठारु भाइ भउणी गले जहुँ पुण। एहि समग्नरे चारि वधु मिळे पुण ३५
शाशु मानंकु ओळग होइलेक सेथि। देखिण राणीमाने कल्याण करन्ति ३६
बधुमानंकु कोळरे बसाइले पुण। मुखे चुम्बन देइ आनन्द हेले जाण ३७
एथु अनन्तरे ऋषि आणी माने। राणीमानंकु भोजन देलेक तक्षणे ३८
षड़ रसरे भोजन राणी माने कले। आचमन सारिण विड़िआ भुञ्जिले ३९
ऋषि आणी मानंकु कहि होइले बाहार। जनक राणीमाने विनय़ कहि वार ९४०
बोइले दुहिता देइ पशिलु शरण। दुहिता मानंकु मोर पाळिव जतन ९४१
गोला दुला जेमा मोर न जाणन्ति किछि।
आम्भे तेज्या कलुं तांकु तुम्भर हेले सेटि ४२
एमन्त कहिण बहुत शोक कले। कउशल्या कैकय़ा सुमित्रा प्रबोधिले ४३
प्रबोध करिण बाहार नारीगण। दाउण्डीरे बसि नवरकु गले पुण ४४

वरजात्री मानंकर विदा ओ प्रस्थान करिवा

पार्वती बोइले देव सेठारु किस हेला। बिभार उत्सब सेठारु सरिला ४५
एथु अनन्तरे जनक महाऋषि। दशरथंक आगरे मिळिलेक आसि ४६
देखिण दशरथ मान्य धर्म कले। निज राज्ये जिबु आम्भे मेलाणि दिअ भले ४७

को प्रफुल्लित कर दिया। ३४ जब भाई-बहन वहाँ से चले गए उसी समय चार वधुएँ वहाँ पहुँच गईं। ३५ उन्होने वहा सासुओ को प्रणाम किया तब यह देखकर रानियाँ आशीर्वाद देने लगी। ३६ उन्होने बहुओ को गोद मे बिठा लिया और मुख चूमकर प्रसन्न हो गईं। ३७ इसके पश्चात् ऋषि-पत्नियो ने उसी समय रानियो को भोजन दिया। ३८ रानियो ने प्रसन्न होकर षड्रस भोजन किए और आचमन करके पान खाए। ३९ वह ऋषि पत्नियो से कहकर बाहर निकल आईं। जनक की रानियाँ उनसे विनीतभाव मे कहने लगी। ९४० हम कन्या देकर शरणापन्न हो गई है। आप हमारी कन्याओं का यत्नपूर्वक पालन कीजियेगा। ९४१ हमारी लडैती राजकुमारियाँ कुछ नही जानती है। हमने आपको देकर उनको छोड़ दिया है। ४२ इस प्रकार कहकर उन्हे बहुत दुःख हुआ। कौशल्या, कैकयी तथा सुमित्रा ने उन्हे सान्त्वना दी। ४३ समझा बुझाकर नारियाँ बाहर निकल आईं और पालकियो पर बैठकर घर को चली गईं। ४४

बरात की विदाई तथा प्रस्थान

पार्वती ने कहा हे देव ! फिर वहाँ क्या हुआ ? विवाहोत्सव तो समाप्त हो गया। ४५ इसके पश्चात् महर्षि जनक दशरथ के समक्ष जा पहुँचे। ४६ उन्हे देखकर दशरथ ने उनका आदर सत्कार किया तथा कहने लगे कि आप हमें

एहि सम्पदरे तुम्भे अट हे कारेणी। शुणिण बिश्वामित्र तोष हेले पुणि ७८
आबर जेतेक सामन्त पात्र थिले। सरदार सेनापतिंकि अळंकार देले ७९
पादान्ति पएकार नट्य नृत्यकारी। भाटे कथ्येबार जे आबर बाजन्तरि ९८०
रत्न अळंकार समस्तंकु आणि देले। घेनि करि अजोध्याबासी हरष होइले ९८१
सेठारु आपणा जे बाळबा ऋषिगण। सर्बंकु रत्न देइ तोष कले पुण ८२
आपणा सैन्य सर्बे जेते नृत्यकारी। सर्बंकु रत्न देइ तोष ऋषि करि ८३
ऋष्यश्रृंग घरणी ऋष्यश्रृंगकु पुण। रत्नरे भुषण जनक कले जाण ८४
बिष्णु जनकु धन देइ बोध कले। दुःखी दरिद्रकु अन्न वस्त्र देले ८५
दशरथ राणीहंस दासी परिबारि। समस्तंकु अळंकार देले जनक दण्डधारी ८६
अष्ट रत्ने भुषण चारि दुहिताकु कले। चारि शत दासी जे भुषणे अळंकारे ८७
चारि दुहितांकु तिआरि बसाइ। तुम्भे कुळ उद्धारण अट गो तनये ८८
प्राणकु धारणा तुम्भे अट गो मोर माये। किस बोलिण तुम्भंकु तिआरण कहे ८९
श्रीराम चारि भाइंकि तुम्भंकु बिभा कळि।
कन्यादान फळ मुं जे धर्मरे अर्जिलि ९९०
जेते काळ जाए गोथिल मोर घरे। से काळर कथा एवे नघर मनरे ९९१
शाशु श्वशुर घर जिब गो आज जेमा। तुम्भे सेथि न करिब एथिर गरिमा ९२

वह बोले कि इस सुखोत्सव के आप ही कारण है। यह सुनकर विश्वामित्र प्रसन्न हो गए। ७८ और भी जितने सभासद, सामन्त, सरदार, सेनापति आदि थे उन्हे अलकार समर्पित किए। ७९ पैदल सिपाही, पैकार, नट, नृत्यकार, भाट-विदूषक तथा बाजे वाले आदि सभी को रत्नालकार लाकर दिये। जिन्हे प्राप्त करके अयोध्यावासी प्रसन्न हो गए। ९८०-९८१ फिर वहाँ अपने द्वारा बुलाए गए समस्त ऋषिगणो को उन्होने रत्न देकर सन्तुष्ट किया। ८२ अपनी सेना तथा जितने भी नृत्यकार थे उन सबको महर्षि ने रत्न देकर सन्तुष्ट किया। ८३ फिर जनक ने श्रृंगी ऋषि तथा उनकी पत्नी को रत्नो से भूषित किया। ८४ उन्होने वैष्णवजनो को धन देकर सतुष्ट किया तथा दुःखी और दरिद्रो को अन्न-वस्त्र प्रदान किए। ८५ महाराज जनक ने दशरथ के रनिवास व दास-दासियो तथा कुटुम्बीजनो सभी को अलकार प्रदान किए। ८६ उन्होने चारों पुत्रियो को अष्टरत्नो से आभूषित कर दिया तथा चार सौ दासियो को अलंकार से भूषित किया। ८७ चारो पुत्रियो को समझा बुझाकर बैठाते हुए कहा हे पुत्रियो ! तुम कुल का उद्धार करने वाली हो। ८८ अरी पुत्रियो ! मेरे प्राणों की अवधारणा तुम लोग हो। तुम्हे क्या कहकर समझाएँ। ८९ श्रीराम आदि चारो भाइयो से तुम्हारा विवाह कर दिया और मैने धर्म से कन्यादान का फल प्राप्त किया। ९९० जितने काल पर्यन्त तुम हमारे घर में थी। उस समय की बाते अब ध्यान में न लाना। ९९१ हे पुत्री ! आज तुम लोग सास-ससुर के घर चली

जनक चरणे पडइ महि पति। पितामह समाने तु अटु महाजति ६३
तो कल्याणे मोह पुत्रे होइबे बर्द्धमान। सुख भोग सम्पद अर्जिबे जशधन ६४
धर्मबन्त बळबन्त होइबे महासुर। ए तोहर परम कल्याणे मुनिबर ६५
एथु अनन्तरे शुण शाकम्बरी भले। दशरथ बोले जिबु मेलाणि तुम्भे देले ६६
शुणिकरि जनक बहन चळि गले। भितर पुरु आग्न अळंकार आणिले ६७
कैकय़ा राजार तनय़ जे जोद्धाकु। विधि बिधाने पूजा करन्ति ताहांकु ६८
दिव्य अळंकार आणि आभरण कले। देइण जनक ऋषि प्रवेश कराइले ६९
सुमित्राकर पिअर कौशल्यांकर भाइ। अळंकार आभरण बेनि जने देइ ९७०
लोमपाद राजांकर शते पुत्रे पुण। रत्न अळंकार तांकु ऋषि देले जाण ९७१
सातश पचाश राजागण शाळकगण पुण। समस्तंकु कले से रत्नरे आभरण ७२
षड अर्घ्य देइण बसिष्ठ पूजा करि। समर्पि होइण बोइले कर जोडि ७३
बिभा बेळरे तुम्भे देल जे अक्षत। रत्नरे भुषण करिण मोर चित्त ७४
बशिष्ठ बोइले तुम्भर जे इछा। दिअ अळंकार हे पूरु मनोवाञ्छा ७५
शुणिण जनक रत्न आभरण कले। कश्यप बामदेव सुमन्त्रे रत्न देले ७६
बिश्वामित्र मुनिंकि कले पाद पूजा। उपहार अळंकार देलेक ऋषि राजा ७७

अपनी छाती से लगा लिया। ६२ महाराज ने जनक के चरण पकडे और कहा हे महर्षि ! आप पितामह के समान है। ६३ आपके आशीर्वाद से हमारे पुत्र बृद्धि को प्राप्त होगे। सुख भोग, धन-सम्पत्ति तथा यश कमाएँगे। ६४ हे मुनिश्रेष्ठ आपके आशीर्वाद से यह देवताओ के समान धर्मवान तथा वलवान हो जाएँगे। ६५ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात दशरथ ने कहा कि आपके विदा देने पर हम जाएँगे। ६६ यह सुनकर जनक शीघ्र ही चल दिये और अन्तःपुर से धन तथा अलकार ले आए। ६७ कैकय नरेश के वीर पुत्र की उन्होने विधि-विधान से पूजा की। ६८ दिव्य अलकार लाकर आभरण पहना दिए। फिर महर्षि जनक ने धन देकर उन्हे प्रवेश कराया। ६९ सुमित्रा के पिता तथा कौशल्या के भाई दोनो को अलकार आभरण प्रदान किए। ९७० राजा लोमपाद के सौ पुत्रो को महर्षि जनक ने रत्न तथा अलकार प्रदान किए। ९७१ सात सौ पचास राजागण उनके साले थे। उन्होने सभी को रत्नाभरणो से अलंकृत किया। ७२ फिर अर्घ्य, पाद्य प्रदान करके उन्होने वशिष्ठ की पूजा की तथा अपने को समर्पित करते हुए कहने लगे। ७३ आपने विवाह के समय में आशीर्वाद के अक्षत रत्न से हमारे चित्त को विभूपित कर दिया है। ७४ वशिष्ठ ने कहा जैसी आपकी इच्छा हो, अलकार प्रदान कीजिये, आपकी मनोकामना पूर्ण हो। ७५ यह सुनकर जनक ने उन्हे रत्नाभरणो से भूषित किया तथा कश्यप बामदेव तथा सुमन्त को रत्न प्रदान किए। ७६ फिर उन्होने महर्षि विश्वामित्र के चरणो की पूजा की तथा ऋषिराज ने उन्हे उपहार अलंकार प्रदान किए। ७७

पृथि अनळरु जात होइले अज्ञ काळे। बार बरष बढिले ए मोर पुरे ९
प्राणरु अधिक करि प्रतिपाळिलु एहांकु। एबे पूर्ब भाग्यरे मुँ पाइलि तुम्भंकु१०१०
एमानंकु सुदया जे तुम्भे करिथिब। अपराध दोष कले मने न धरिब१०११
एमाने तुम्भर जे होइबाक दासी। एते कहि शोक जे कलेक महाऋषि १२
श्रीराम चरण जे धरिण प्रबोधन्ति ।जनक ऋषिकि श्रीराम बोधिण कहन्ति १३
तेणु से चारि भाइ विनय भाव हेले। शोक तेजि जनक भितर पुर गले १४
पितांकु देखि जेमा रोदन जे कले। ऋषि आणीमाने उच्चरे रोदन कले १५
बोइले अति जतने तुम्भंकु पाळिथिलु। दइबर बसरे पर घरे देलु १६
आजहुँ दश दिग दिशुछि अन्धार। तुम्भ मुख चाहुँ थाउ रजनी बासर १७
तोर मन गो रञ्चु थाइ निति ।तोते मुँ कहिछि मागो श्रीराम मन रञ्जिबटि १८
पुरुष अभागी जे धरन्ति अबिगुण। मिछरे कोप पुण करुथान्ति जाण १९
एथु अनन्तरे जे जनक महाजति। जानकिकि नेइ श्रीराम समर्पन्ति१०२०
उर्मिळा दुहिताकु लक्ष्मणे समर्पिले। शोकभर होइण जनक कहिले१०२१
आज ठारु तुम्भर ए होइले जे दासी। किछि न बोलिब हे दशरथंक बत्सि २२
जनक राणीहंस करन्ति पुण शोक। शुणि करि मनरे लक्ष्मण दक दक २३

चारो बहने मेरी शिशु कन्याएँ है वह लाडिली बालिकाएँ सेवा करना नही जानती। ८ यज्ञ काल मे वह पृथ्वी-अग्नि से उत्पन्न हुईं और बारह वर्ष तक हमारे घर मे रही। ९ मैने प्राणो से भी अधिक समझ कर इनका लालन-पालन किया। अब पूर्व सचित सौभाग्य से मैने आप लोगो को प्राप्त किया। १०१० आप सब इन पर दया करते रहना। अपराध तथा दोष करने पर उस पर ध्यान न देना। १०११ यह सब आपकी दासियाँ बन गई हैं। इतना कहकर महर्षि जनक शोकग्रस्त हो गए। १२ श्रीराम उनके चरण पकड़कर महर्षि जनक को सान्त्वना देने की बाते कहने लगे। १३ तभी वह चारों भाई विनत हो गए। फिर जनक शोक को त्यागकर अन्तःपुर मे चले गए। १४ पिता को देखकर राज कन्याएँ रुदन करने लगी। ऋषि पत्नियाँ भी उच्च स्वर मे रो पड़ी। १५ वह कहने लगी कि हमने तुम्हे अत्यन्त यत्न से पाला था। भाग्य के वशीभूत होकर तुम्हे पराये घर में दे दिया। १६ आज हमें दशो दिशाये अन्धकारमय लग रही है। हम रात-दिन तुम्हारा मुख देखा करती थी। १७ नित्य तुम्हारे मन को प्रसन्न रखती थी। हम तुमसे कह रही है। अरी बेटी ! तुम श्रीराम का मन प्रसन्न रखना। १८ अभागी पुरुष दोष लगाकर झूँठ मूठ कोप करते रहते है। १९ इसके पश्चात् महर्षि जनक ने जानकी को लेकर श्रीराम को समर्पित कर दिया। १०२० जनक ने पुत्री उर्मिला को लक्ष्मण को समर्पित किया तथा उनसे दुःख पूर्ण वचन कहे। १०२१ आज से यह तुम्हारी दासी बन गई है। हे दशरथ नन्दन ! आप इससे कुछ न कहिएगा। २२ फिर जनक की रानियाँ

शाशु मानंकु देखिले आसन्तु उठिब। शशुरंकु देखिले नमस्कार हेब ९३
बिभळित कथा तुम्भे न कहिब किछि। अकारणरे हास्य न करिबि गो मृगाक्षी ९४
साबत शाशुमानंकु थिब भय़ करि। जे जाहा न कहिबे करिब बेग करि ९५
दासींकर संगरे नोहिब अप्रीति। अहर्निशि स्वामीरे जे होइव भगति ९६
अनुक्षणे कथामान न कहिब स्वामी पाशे। जेमन्ते स्वामीर गो होइव विश्वासे ९७
जेउँ आज्ञा तुम्भंकु देवे स्वामी राइ। ताहांक कथारे थिब सावधान होइ ९८
अपूर्व पदार्थ गो देखिले न मागिब। रात्र दिवसरे गो विनय़ भावे थिब ९९
स्वामीर शरधा गो जेउँ द्रव्यरे थाए। से कथाकु जतने गो देवटि गो माए१०००
जेसने कोप जे नकरन्ति कान्त। तेसनक करिण खटि थिब मात१००१
पति हेले इह लोकरे ठाकुर। अन्तः काळे स्वामी सह स्वर्गकु जिवार २
मुं किस तिआरिबि जाणतुम्भे पुण। अघट महिळारे पचारिबि जाण ३
चारि दुहिताकु तिआरि ऋषि गले। माधुर्य्यरे कहि पूर्बकथा बुझाइले ४
सेठारु जनक ऋषि पुण चळिगले। श्रीरामंक आगरे जाइण मिळिले ५
तुम्भे चारि भाइ हे दशरथंक सुत। ईश्वरंक धनुकु श्रीराम बळरे कले हत ६
मोर दुहिता मानंकु तुम्भंकु बिभाकलि। बड़ कुल बोलिण मुं शरण पशिलि ७
जानकि चारि भग्नि बाळुत कन्या मोर।सेबाकरि न जाणन्ति जेमा जे अलिअळ ८

जाओगी। तुम वहाँ पर यहाँ की बड़ाई न करना। ९२ सासुओ को देखकर आसन से उठ जाना, श्वसुर को देखकर नमस्कार करना, प्रणाम करना। ९३ हे मृगाक्षी! तुम लोग विह्वलता की कोई वात न करना और विना कारण के हास्य भी न करना। ९४ विमातृ सासुओ से भी डरती रहना और उनके कथन के पूर्व सब शीघ्र ही कर लेना। ९५ दासियो पर कोप न करना और रात-दिन स्वामी से प्रीतिरत रहना। ९६ प्रतिक्षण की वाते स्वामी से न कहना। जैसे भी हो स्वामी का विश्वास प्राप्त करना। ९७ स्वामी तुम्हे बुलाकर जो भी आज्ञा दे उन बातो से सदा सजग रहना। ९८ अपूर्व पदार्थ देखते ही उसे न माँगना। रात-दिन विनीतभाव से रहना। ९९ मेरी पुत्रियो! जिस वस्तु में स्वामी की प्रीति हो वह उन्हे यत्नपूर्वक देना। १००० तुम सब वही करती रहना जिससे वह क्रुद्ध न हो। १००१ पति इस लोक के स्वामी हैं। अन्त काल मे स्वामी के साथ ही स्वर्ग को जाना। २ मैं क्या समझाऊँ, तुम सब कुछ समझती हो। बाकी गुरुजन, महिलाओ मे पूँछती रहना। ३ चारो पुत्रियों को समझा बुझाकर महर्षि चले गए। उन्होने बड़ी मधुरता से पूर्व कथाये समझा दी। ४ फिर वहाँ से चलकर महर्षि राम के समक्ष जा पहुँचे। ५ वह कहने लगे कि आप चारो भाई दशरथ के तनय है। श्रीराम ने बल से शिव धनुष का खण्डन कर डाला। ६ मैंने अपनी कन्याओ का विवाह आप लोगो से कर दिया तथा श्रेष्ठ कुल का समझ कर मैं आपके शरणापन्न हो गया। ७ जानकी आदि

नारीगण मिळिण जे हुळहुळि देले । हरि बोल राम ताळि अनेक सेथि परे ३८
एथु अनन्तरे जे माळिनी कन्या लेग । रथर उपरे जे जाइँण बिजे कले ३९
संगरे दासीगण जाइण सर्बे मिळि । आलट चामर जे ढ़ाळन्ति धीर करि१०४०
भरथ बिजे कले रथरे जाइ पुण । हुळहुळि हरिबोल शबब गरु टाण१०४१
उर्मिळा बिजे कले रथरे जाइ पुण । शतेक दासी जे संगरे नेले पुण ४२
देखिण सउमित्री रथरे बिजे कले । आलट चामर जे पड़इ आगरे ४३
हुळहुळि हरिबोल पड़इ निरन्तरे । एथु अनन्तरे शुण गो देबी भले ४४
सुकीर्त्ती शते दासी घेनि गले चळि । नीळबर्ण रथरे बिजय़े जाइ करि ४५
देखिण शतृघने से रथे बिजे कले । आलट चामर जे पडइ आगरे ४६
चारि भाइ जहुँ रथरे बिजे कले । देखिण समस्ते जे हरष मन हेले ४७
उपरे पाट छत्र आलम्ब निरन्तर । पञ्चम स्वर आगे बाजइ बीर तुर ४८
गज खेळ करि से आसन्ति बर चारि । बेढिकरि हुळहुळि दिअन्ति सुन्दरी ४९
जानकीर सखीमाने अछन्ति गोड़ाइ ।देखिला लोकमाने स्वर्ग सुख बिचारइ१०५०
दुर्बाक्षत देइ बजान्ति घरे घरे । प्रबेश हेले जाइ दशरथर नबरे१०५१
शुकासनु ओहलाइण भितरकु गले ।निज माता उपमाता मानंकु ओळगिले ५२

सिंहासन पर बैठ गई । ३७ नारियाँ मिलकर मांगलिक शब्द करने लगीं और ताली बजाकर हरी बोल की ध्वनि नाना प्रकार से होने लगी । ३८ इसके पश्चात् राजकन्या मालिनी जाकर रथ के ऊपर विराजमान हो गई । ३९ साथ की दासियाँ जाकर धीर स्थिर भाव से चामर तथा व्यजन संचालन करने लगी । १०४० भरत जाकर रथ पर विराजमान हो गए । हरि बोल तथा मांगलिक शब्दों का उद्‌घोष गूंजने लगा । १०४१ फिर उर्मिला जाकर रथ पर बैठ गई । वह भी साथ मे सौ दासियाँ लिये थी । ४२ यह देखकर सुमित्रा-नन्दन लक्ष्मण रथ पर जा बैठे । उनके आगे व्यजन तथा चामर-चालन हो रहा था । ४३ निरन्तर हरिबोल तथा मांगलिक ध्वनि हो रही थी । हे देवी ! अब इसके पश्चात् की कथा सुनो । ४४ सुकीर्ति सौ दासियों को साथ लिये चली और जाकर नीले वर्ण के रथ पर बैठ गई । ४५ यह देखकर शत्रुघ्न जाकर रथ पर विराजमान हो गए और उनके आगे व्यजन तथा चामर संचालित हो रहे थे । ४६ जब चारो भाई रथों पर विराजमान हो गए तब सभी लोगों के मन यह देखकर प्रसन्न हो गए । ४७ ऊपर निरन्तर पाट छत्र लगे थे और आगे-आगे पंचम स्वर मे वीर तूर्य बज रहा था । ४८ चारों वर हाथियो को खिलाते हुए चले आ रहे थे । सुन्दरियाँ घेरकर मांगलिक ध्वनि कर रही थी । ४९ जानकी की सखियाँ पीछे-पीछे दौड़ी आ रही थी । देखने वाले लोगों को वह स्वर्गीय सुख मालूम पड़ रहा था । १०५० घर-घर में दूर्वाक्षत देकर बाजे बजाए जा रहे थे । इस प्रकार सब लोग जाकर दशरथ के महल में प्रविष्ट हुए । १०५१ शुकासन से उतर कर अन्तःपुर में पहुँच कर वह अपनी माताओं तथा विमाताओं

कुशध्वज उठिण जे रोदन पुण कले। माळिनी दुहिता नेइ भरते समर्पिले २४
कुशध्वज राणी माने करन्ति रोदन। केणे गल जे मारे आम्भर प्राणधन २५
सुकीर्त्तीकु नेइण शत्रुघन समर्पिले। जनक कुशध्वज अचेता सेथि हेले २६
श्रीराम लक्ष्मण ऋषिकि चेता कले। भरथ शत्रुघन कुशध्वजरे तोळिले २७
एथु अनन्तरे जे ऋषि आणी माने। रोदन करिण अचेत हेले तेणे २८
देखिण साएन्ता जे दासीगणे मिळि।ऋषि आणी मानंकु तोळिण चेता करि २९
जनक कुशध्वज चेता हेले जाण। बिचारिले दुहिताकु पाळिबे एबे पुण१०३०
ऋषि आणी बिचारिले ए अटन्ति शान्त शीळ।
निश्चये दुहिता माने होइबे अलिअल१०३१
बिचारि चारि दुहिता समर्पण कले। रोदन शान्त करि शीतळ कहिले ३२
एथु अनन्तरे जे गण्ठिआळ लागि करि। पिन्धाइण अइले जे साधबा सुन्दरी ३३
चारि रथ मण्डि जे आणिले बेग करि। सुबर्ण कळस परे सुबर्ण माळ उडि ३४
से रथ उपरे चारि भग्नी बिजे कले। बसन्त वर्ण रथरे जानकि बिजे कले ३५
शतेक दासी घेनि बिजये बइदेही। आलट चामर जे ढ़ाळन्ति तहिँ ३६
से रथरे जाइण बिजे कले। कनक मण्डाइ सिंहासने जे बसिले ३७

शोकातुर हो गई जिसे सुनकर लक्ष्मण का मन धक्-धक् करने लगा। २३ तब कुशध्वज उठकर रुदन करने लगे। उन्होने कन्या मालिनी को लेकर भरत को समर्पित किया। २४ कुशध्वज की रानियाँ भी रो पड़ी तथा कहने लगी कि हमारी प्राण-धन कन्याएँ कहाँ गईं। २५ सुकीर्ति को लेकर शत्रुघ्न को समर्पित करके जनक तथा कुशध्वज वही पर अचेत हो गए। २६ श्रीराम तथा लक्ष्मण ने महर्षि को चेत कराया और भरत तथा शत्रुघ्न ने कुशध्वज को उठा लिया। २७ इसके पश्चात् महर्षि की रानियाँ रुदन करते हुए अचेत हो गईं। २८ यह देखकर सान्ता ने दासियो के साथ मिलकर महर्षि की रानियो को उठाकर उन्हे सचेत किया। २९ जनक तथा कुशध्वज भी होश मे आ गए। वह दुहिताओ के पुनः लालन-पालन करने का विचार करने लगे। १०३० ऋषि की रानियो ने विचार किया कि यह तो शान्तशाल है। निश्चय ही पुत्रियाँ लड़ैती हो जाएँगी। १०३१ ऐसा सोचकर उन्होने चारो कन्याओ को समर्पित कर दिया। रुदन त्याग कर वह सान्त्वना के शब्द कहने लगी। ३२ इसके पश्चात् सधवा स्त्रियाँ मिल बाँट कर उन्हे सब पहना कर आ गई। ३३ इसके पश्चात् सुवर्ण कलशो पर सुवर्ण की मालाये लहराते हुए चार रथ सुसज्जित करके लाए गए। ३४ उन रथो पर चारो बहने विराजमान हो गई। वसन्त वर्ण के रथ पर जानकी विराजमान हुई। ३५ वैदेही सौ दासियो को साथ लेकर उपस्थित हुई जो वहाँ पर व्यजन तथा चामर चालन कर रही थी। ३६ वह उस रथ पर जाकर स्वर्ण मण्डित

कुज पिठि उपरे पडिलाक नात।महा लज्जा पाइ दासी होइला चकित ६७
श्रीरामचन्द्र मुखकु चाहिँला तराटि। रकत बहइ किबा बेनि नेत्र फाटि ६८
कोपे बोलन्ति श्रीराम किम्पा मोते चाहुँ। गुरुजन मध्ये बिभळित कथा कहु ६९
पुणि मारिबे बोलि धाइँले रघुपति। माता माने बेढि करि धइलेक धाति१०७०
गाळि देइ भितर पुरकु पळाइला। मनरे बिरष होइ मुख सुखाइला१०७१
बोइला श्रीरामरे तोरे मुँ होइबि व्याधि। समय़ काळे तोते देबी मुँ ए औषधि ७२
मोह आय़तरे जाहा होइबाक पुणि। बेनि बरषरे ताहा जाणिबु रघुमणि ७३
एते बोलि मन्थडि भितर पुरे रहि। शुणि करि श्रीराम क्रोधरे ताकु कहि ७४
बोइले आउबेळे जेबे तु आसिबु। जीवन घेनिण तु जमपुर जिबु ७५
एमन्त कहि शान्ति होइले श्रीराम। बळरामदास जे से पादे शरण ७६
एथु अनन्तरे जे शुण गो उमादेबी। सकळ राणीहंस आनन्द मने भाबि ७७
अजोध्याकु जिबाकु दशरथ राजा। बिबिध छन्दरे जे बाजइ बीर बाजा ७८
सकळ राणीगणे पुत्र बधूकु भुञ्जाइले। राज्यकु जिबाकु सर्बे उद्बेग हेले ७९
तहिँ उत्तारु राणीमाने भुञ्जिण हेले तोष।
धाई परिबारी माने भुञ्जि होइले सन्तोष१०८०
बन्धुजन राजामाने नित्यकर्म सारि। जे जाहार पुरे भोजन जाइ करि१०८१

उन्होने मन्थरा के ऊपर चरण प्रहार किया। ६६ वह लात उसकी कुबड़ी पीठ पर लगी। तब वह दासी अत्यन्त लज्जित होकर चकित हो गई। ६७ उसने श्रीरामचन्द्र के मुख की ओर घूरकर देखा। लगता था मानों उसके दोनो नेत्रों के फटने से रक्त बह रहा हो। ६८ श्रीराम ने क्रोध से कहा कि तू मेरा मुख क्यों देख रही है ? गुरुजनों के बीच में अशिष्ट बाते कह रही है। ६९ राघव पुनः मारने के लिये दौड़े। शीघ्र ही माताएँ भी उन्हें घेरकर दौड़ पड़ी। १०७० तब वह गाली देती हुई अन्तःपुर की ओर भागी। मन के दुःखी होने से उसका मुख सूख गया था। १०७१ वह राम से बोली कि मै तेरे लिये व्याधि बन जाऊँगी तथा समय आने पर मै तुझे दवा दूंगी। ७२ मेरे साथ उलझने से जो होगा उसे हे रघुमणि ! दो वर्ष के भीतर जान जाओगे। ७३ इतना कहते हुए वह अन्तःपुर में ठहर गई। यह सुनकर श्रीराम ने उससे क्रोधपूर्वक कहा। ७४ यदि तू अबकी बार फिर आई तो मैं तेरा जीवन ले लूंगा और तू यमलोक को चली जाएगी। ७५ ऐसा कहकर श्रीराम शान्त हो गए। बलरामदास उनके चरणों की शरण में है। ७६ हे देवी उमा ! सुनो। इसके पश्चात् सारा रनिवास मन में आनन्द की बातें सोच रहा था। ७७ राजा दशरथ के अयोध्या को जाने से विविध प्रकार से वीर वाद्य बज रहे थे। ७८ समस्त रानियों ने पुत्रवधुओं को भोजन करवाया और फिर अपने राज्य के लिये चलने को व्यग्र हो गईं। ७९ उसके पश्चात् रानियाँ भोजन करके सन्तुष्ट हो गईं। फिर धाइयाँ तथा दासियाँ भी भोजन करके तृप्त हो गईं। १०८० बन्धु-बान्धव राजाओं ने

पुत्रबधु मुख देखि आनन्द जननी। वेगे अक्षत नेइण बन्दाइले पुणि ५३
चारि बर चारि कन्याकु कोळ करि। भितरकु नेले दशरथ मनोहारी ५४
हुळहुळि शबद शुभइ उच्च स्वर। बाहारेण बजाइण अनेक बीर तुर ५५
आनन्द सिन्धु मध्यरे समस्तेहिँ भाषि। बोइले मानिण गउरब मिशा मिशि ५६
श्रीरामचन्द्र सीतांकु बसाए माए कोळे। आनन्द अश्रुपूर्ण ताहांकर बेनि ड़ोळे ५७
अबन्ति पाशे जेन्हे शची सुरपाळ।तेमन्त सुन्दर कउशल्या सीता रघुबाळ ५८
मस्तकरे चुम्ब देइ देह आउँ सइ। मो कुळर चन्द्रमा बोलि प्रशंसइ ५९
एहि समयरे जे मन्थिडि नामे दासी। फुल चन्दन नूतन बसन पिन्धी हसि१०६०
तुण्डरे पान जाकि मुण्डरे फुल गभा।तिनि कुज घेनिण जे चालिबार शोभा१०६१
टाहि ढ़माळि गीत गाइ से बिड़म्बण। नवर भितरे से करइ गमन ६२
केऊँ ठारे नाचइ केऊँ ठारे ड़ेइ। केऊँ ठारे हसइ काहाकु गाळि देइ ६३
नाना परिबन्धे कथा मान कहि। मुहँकु हलाइ ढ़माळि गीत कहि ६४
बिभार बिधान सेहु अछि पूर्बु जाणि। श्रीरामचन्द्र जे कोप कले ताहा शुणि ६५
मातांकर कोळरु उठिले रोष भरे। पाद प्रहारिले नेइ मंथडि उपरे ६६

को प्रणाम करने लगे। ५२ माताएँ पुत्रवधुओ का मुख देखकर प्रसन्न हो गईं तथा उन्होने शीघ्र ही अक्षत लेकर उनकी पूजा की। ५३ वह दशरथ के मन को हरण करने वाले चारो पुत्रो तथा चारो पुत्रवधुओं को आलिगन करके अन्तःपुर मे ले गईं। ५४ उच्चस्वरो मे मॉगलिक शब्द सुनाई दे रहे थे तथा बाहर अनेक वीर तूर्य बज रहे थे। ५५ सभी लोग आनन्द सागर मे निमग्न थे और मिलजुलकर गौरवशाली बाते कर रहे थे। ५६ माताओ ने श्रीराम तथा सीता को गोद मे बिठा लिया। उनके दोनो नेत्र आनन्दाश्रुओ से भरे थे। ५७ अवन्ती के पास शची तथा सुरराज की भाँति कौशल्या श्रीराम तथा वैदेही सुदर लग रहे थे। ५८ वह उनके मस्तक चूमकर देह सहला रही थी और तुम मेरे कुल के चन्द्र हो कहकर प्रसशा कर रही थी। ५९ उसी समय मन्थरा नाम की दासी फूलचन्दन से युक्त नवीन वस्त्र धारण करके हँसती हुई मुख में पान दवाकर तथा सर पर फूलो के गुच्छे लगाए चल रही थी। तीनो कूवड़ो को साथ लेकर चलने पर वह और सुन्दर लग रही थी। १०६०-१०६१ वह विडम्वना के हँसी मस्खरीपूर्ण गीत गाते हुए महल के भीतर जा रही थी। ६२ कही नाचने लगती और कही कूद-कूदकर चलती थी। कही हँसने लगती और कही किसी को गाली देने लगती थी। ६३ अनेक प्रकार की भाव भगिमाओ के साथ मुख को हिलाकर हास्यास्पद गीत गाती तथा बाते करती थी। ६४ विवाह के विधान के विषय मे उसे पहले से ही ज्ञात था। उसकी बातो को सुनकर श्रीराम को क्रोध आ गया। ६५ वह क्रुद्ध होकर माता की गोद से उठ पड़े तथा

आलट चामर जे घेनिण दासीगण। राणीमानंक आगरे ढ़ाळिले नेइ पुण ९७
देखिण राजन जे बेगे चळि गले। सुमित्रा आगरे जाइ प्रबेश हेले ९८
बोइले रथरे जाइण बिजेकर। बेनी शत राणी जे घेनिण संगर ९९
शुणिकरि सुमित्रा जे निळावती चळे। बेनि शत पचाश राणी गलेक संगरे११००
माणिक्य वर्ण रथरे जाइण विजेकले। सकळ दासीगण मिळिण खटिले११०१
चामर आलट जे धरिण पखापुण। खटिलेक दासी जे हरष मने जाण २
देखिण राणी माने हुळहुळि देले। हरि बोल राम ताळि शबद तहिँकले ३
नबर शून्य हेबारु दशरथ पुण। बशिष्ठ बिश्वामित्रंकु बोइले राजन ४
जानर उपरे तुम्भे जाइण बिजे कर। कश्यप बामदेव चळन्ति संगरे ५
शुणि करि बशिष्ठ कउशिककु घेनि। हस्तिर अमरीपरे बिजय़ कले पुणि ६
कश्यप बामदेब अमरी बिजे कले। सेठारु दशरथ चळिण बेगे गले ७
राजा गण मानंकु कहिले जाइ करि। रथ परे बिजय़ कर हे महीधारि ८
शुणिकरि राजा माने रथरे बिजे कले। खटणि सामन्त माने खटिले छामुरे ९
सरदार सेनापति डाकिण राजन। बोइले रथरे कर हे गमन१११०
पछ भागरे तुम्भे रहिब जे जाण। शुणिण सज होइ रथरे चढिलेक पुण११११
माहुन्त सिपाहिंकि बोइले राय़ चाहिँ। हस्ती अश्व शारेणी उपरे चढि जाइ १२

लेकर नीले वर्ण के रथ पर जाकर बैठ गई। ९६ दासियाँ व्यजन तथा चामर लेकर रानियो के आगे डुलाने लगी। ९७ यह देखकर राजा शीघ्र ही चल दिये और सुमित्रा के पास जा पहुँचे। ९८ उन्होने उनसे दो सौ रानियों को साथ लेकर रथ पर जाकर बैठने को कहा। ९९ ऐसा सुनकर सुमित्रा तथा नीलावती चल दी। उनके साथ दो सौ पचास रानियाँ भी गई। ११०० वह लोग जाकर माणिक्य वर्ण के रथ पर बैठ गईं और समस्त दासियाँ मिलकर सेवा में लग गईं। ११०१ दासियाँ प्रसन्नचित्त होकर व्यजन, चामर तथा पखे लेकर सेवा में जुट गई। २ यह देखकर रानियो ने मागलिक शब्द किया तथा हरि बोल कहते हुए तालियो के साथ रामधुन होने लगी। ३ महल खाली हो जाने पर राजा दशरथ ने वशिष्ठ तथा विश्वामित्र से कहा कि आप लोग रथ पर विराजमान हो। कश्यप तथा बामदेव भी साथ चले। ४-५ यह सुनकर वशिष्ठ विश्वामित्र को लेकर हाथी के हौदे पर विराजमान हो गए। ६ कश्यप तथा बामदेव के हौदों पर विराजमान हो जाने पर दशरथ वहाँ से शीघ्र ही चल पड़े। ७ फिर उन्होने जाकर राजागणो से शीघ्र ही रथों पर विराजमान होने को कहा। ८ यह सुनकर राजागण रथों पर विराजमान हो गए और सेवक सामन्त लोग सेवा में जुट गए। ९ फिर राजा ने सरदार तथा सेनापतियो को बुलाकर रथ पर चलने के लिये कहा। १११० उन्होने उन्हे पिछले भाग में रहने की आज्ञा दी। यह सुनकर वह सभी रथों पर जा बैठे। ११११ राजा ने महावत तथा सिपाहियों

दशरथ लोमपाद कलेक भोजन। राउत माहुन्त सिपाइ सकळ जन ८२
निजोग पड़िहारि सकळ सेवाकारी। पात्र मन्त्री ऋषि बिप्र आदि करि ८३
सेनापति सरदार पादान्ति बळ जेते। हस्ति घोष सारेणी ओट जे सहिते ८४
नट नृत्यकारी ए भाट कथ्ने बार। समस्ते भुञ्जि सज हेले जे जाहार ८५
समस्ते सज हेबारु जणाए पढ़िहारि। बिजम्रे कर देबे समस्ते बाहारि ८६
चार पुत्र चारि बधू रथ परे बसे। किम्पाइ उछुरु जे करुछ नरईशे ८७
शुणि करि राजन मन्त्रीकि ड़काइले। तिनि रथ सज करि आण हे बोइले ८८
शुणिण सुमन्त्र मन्त्री बेगे चळिगला। तिनि रथ सज करिण बेगे अणाइला ८९
देखिण दशरथ परम सानन्द। मुख बिकाशइ जेन्हे पूर्णीमार चान्द१०९०
कएकय़ा राणी जे कहिले राजन। दुइश पचाश राणी घेनि करि पुण१०९१
शुणिकरि कएकय़ा सपतणी कि घेनि। बसन बर्ण रथरे बिजम्रे कले पुणि ९२
धाई परिबारि जे परिजन जेते। आलट चामर ढ़ाळन्ति आगरे समस्ते ९३
एथु अनन्तरे जे राजन जाइ पुण। कउशल्या पुररे प्रबेश ततक्षण ९४
बोइले रथरे जाइण बिजेकर। दुइश पचाश राणी जे घेनिण संगर ९५
शुणिण कउशल्या सपतणींकि घेनि। नीळबर्ण रथरे बिजम्र कले पुणि ९६

भी नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपने-अपने आवासो पर जाकर भोजन किया। १०८१ दशरथ तथा लोमपाद ने भी भोजन किया। योद्धा, महावतों, सिपाही आदि समस्त लोगों ने, सेवाकारी दासों ने, पात्र मन्त्री, ऋषि, ब्राह्मण आदि सबने भोजन किया। ८२-८३ जितने भी सेनापति सरदार तथा सैनिक थे हाथी, रथ बहलो तथा ऊँटों के साथ नृत्यकारों, भाट और विदूषको आदि सभी ने अपना-अपना भोजन किया और तैयार हो गए। ८४-८५ प्रतिहारी ने सबकी तैयारी की सूचना दी। हे देव ! आप प्रस्थान करे। अन्य सभी निकल पड़े है। ८६ चारो पुत्र तथा चारो वधुएँ रथ पर बैठ गईं। हे नरेश ! अब विलम्ब क्यो कर रहे है ?। ८७ ऐसा सुनकर राजा ने मन्त्री को बुलाकर उन्हे तीन रथ सुसज्जित कर लाने के लिये कहा। ८८ यह सुनकर मन्त्री सुमंत शीघ्र ही चल दिये और उन्होने तीन रथ वेग से सुसज्जित कराकर मँगवा लिए। ८९ यह देखकर दशरथ का मन अत्यन्त प्रसन्न हो गया। उनका मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान विकसित हो गया। १०९० राजा ने रानी कैकेयी से दो सौ पचास रानियों को साथ लेने के लिये कहा। १०९१ यह सुनकर महारानी कैकेयी सपत्नियो को लेकर वसन्त वर्ण के रथ पर जाकर विराजमान हो गईं। ९२ जितने भी परिजन परिवारी तथा धाइयाँ थी वह सब उनके समक्ष व्यजन तथा चामर चालन करने लगी। ९३ इसके पश्चात् राजा ने जाकर उसी समय कौशल्या के महल में प्रवेश किया। ९४ उन्होने उनसे दो सौ पचास रानियो को साथ लेकर रथ पर बैठने को कहा। ९५ यह सुनकर कौशल्या सपत्नियों को

चळबाबु मढ़िआळु नकर बिळम्ब ।धन रत्न घेनि संगे जाआन्तु लोक सर्व २८
शुणि करि ऋष्यशृंग हरष होइले । अणाअ लोक बोलि राजांकु कहिले २९
शुणिण दशरथ लोक बेनि शत । अणाइ धन रत्न समर्पि देला सेत११३०
देखिण शुकासन चढिला ऋष्यशृंग । शाएन्ता बिजे कले पितांकर आग११३१
ओळग मेलाइण हान्दोळारे बसि । आग्न अळंकार दशरथ देले निकि ३२
लोमपाद लक्षे सुवर्ण नेइ देले । हरषरे शाएन्ता स्वामीर संगे चळे ३३
तिनि दिने कउशिक नदी तीरे होइ । मढ़िआरे प्रबेश होइलेक जाइ ३४
बिभाण्डक पिता आगे प्रबेश होइले । जानरु उतुरि जे नमस्कार हेले ३५
शाएन्ता हान्दोळारु उतुरिले पुण । श्वशुरंक चरणे ओळगि हेले जाण ३६
निज पुरे प्रबेश होइले पुत्र बधू ।धन रत्न सम्पादि रखिले मुनि सिन्धु ३७
सेठारु दशरथ जनकंकु कहि । कुशध्वजकु ड़काइ कहिलेक तहिँ ३८
बोइले मोर कुळ उद्धार एबे कल । मेलाणि देले आम्भे जिबु निजपुर ३९
जनक बोइले तुम्भे अट जे सागर । गंगाजळ अटइ मुहिँ जे नदी धार११४०
तुम्भर जोगु मुँ जे कृतार्थ लभिलि ।लक्ष्मी नाराग्रणंकु मुँ ए जन्मे देखिलि११४१
एबे मोते दग्रा तुम्भे कर हे राजन । दुहिता देइ मुँ जे पशिलि शरण ४२
तपि मुनिमाने जे सबु दिनरे जाण । तुम्भर बाहुक जे आम्भर आशा पुण ४३

राजा दशरथ ने उनसे नम्र स्वर मे कहा। २७ हे वत्स ! अब विलम्ब न करके मठ की ओर प्रस्थान करो। सब लोग धन रत्न लेकर साथ जायँ। २८ यह सुनकर शृगी ऋषि प्रसन्न हो गए। उन्होने राजा से लोगो को बुलाने को कहा। २९ यह सुनकर राजा दशरथ ने दो सौ लोगो को बुलाकर धनरत्न समर्पित कर दिया। ११३० देखते ही शृगी ऋषि सुखासन पर चढ़ गए और पिता के आगे शान्ता भी आ गई। ११३१ वह उन्हे प्रणाम करके शिविका पर बैठ गई। दशरथ ने उसे धन तथा अलकार प्रदान किए। ३२ लोमपाद ने एक लाख स्वर्णमुद्राएँ लेकर प्रदान की। शान्ता स्वामी के साथ प्रसन्नता से चल दी। ३३ तीन दिनो मे वह कौशिक नदी के पार हो गए तथा मठ मे जा पहुँचे। ३४ वह पिता विभाण्डक के समक्ष प्रविष्ट हुए। उन्होंने सुखासन से उतरकर उन्हे प्रणाम किया। ३५ फिर शान्ता शिविका से उतरी और उसने श्वसुर के चरणो में प्रणाम किया। ३६ फिर पुत्रवधू अपने घर में प्रविष्ट हुई और मुनिश्रेष्ठ ने धन रत्न सम्हालकर रख दिया। ३७ वहाँ पर राजा दशरथ ने जनक से कहकर कुशध्वज को बुलाकर कहा। ३८ आप लोगो ने मेरे कुल का उद्धार किया है। अब विदा देने पर हम अपने नगर जाएँगे। ३९ जनक ने कहा कि आप सागर है मै गगा नदी की धारा हूँ। ११४० आपके कारण हम कृतार्थ हो गए तथा इसी जन्म मे मैने लक्ष्मीनारायण के दर्शन कर लिए। ११४१ हे राजन् ! अब आप मुझ पर दया कीजिए। मै कन्याओ को प्रदान करके आपके शरणापन्न हूँ। ४२ सदैव से हम जैसे तपस्वी मुनियों को आपकी भुजाओं

शुणिकरि माहुन्त सिपाहि बेगे गले। हस्ती अश्व सारेणी उपरे चढ़िले १३
सेठारु पदाति पएकारंकु डकाइ। बोइले सज होइ बाहार बेगे जाइ १४
शुणिण पदाति पएकार गले। सज होइ आगरे बाहार होइले १५
ताहांक पछरे हस्ती अश्व ओट। शारेणी उपरे दमालु शबदत १६
ताहांक पछरे चळन्ति चारि मुनि। सरदार सिपाही गले आगे पुणि १७
बाजन्तरि माने आगरे बाजा कले। भाटे कएबार शबद आगे कले १८
गीत नृत्य नटकारी कलेक आगेण। कम्पिला मिथिलापुर जे बाजार नादे पुण १९
देखिण नर नारीए हुळहुळि देले। हरि बोल रामताळि पड़िला गहळे११२०
श्वेत पारुआ राजहंस आगरे गमन। दधि माछ पूर्ण कुम्भ ठाबे ठाबे पुण११२१
आगे कैकय़ा रथ चळिलाक पुण। कउशल्या रथ चळि गला मध्ये रेण २२
तार पछे सुमित्रार रथ चळि जाइ। ताहांक पछे श्रीराम रथ चळे तहिँ २३
श्रीराम पछे भरथ लक्ष्मण शतृघन। चळिलाक रथ जे मिथिला दाण्डे पुण २४
गहळरे जन्ता जन्ति होइण चळि जान्ति। नर नारी माने पछरे गोडान्ति २५
समस्ते चळि जिबारु राजन पछे गले। जनकर पुरे जाइ प्रबेश होइले २६
देखिण ऋष्यश्रृंग राजन पाशे मिळि। दशरथ राजा बोले बचन धीर करि २७

की ओर देखकर उन्हे हाथी, घोड़ो, ऊँटो पर चढ़कर चलने को कहा। १२ यह सुनकर महावत, सिपाही शीघ्र ही चल दिये और हाथी घोड़ो तथा ऊँटो पर जा बैठे। १३ फिर उन्होने पैदल सिपाहियों, पैकारो को उन्हे तैयार होकर बाहर निकलने के लिए कहा। १४ यह सुनकर पैदल सैनिक तथा पैकार लोग गए और शीघ्र ही तैयार होकर बाहर निकल पड़े। १५ उनके पीछे हाथी, घोड़े तथा ऊँट थे। सारेणी के ऊपर नगाड़ो का शब्द हो रहा था। १६ उनके पीछे चारो ऋषि चल रहे थे। सरदार तथा सिपाही तो आगे चले गए थे। १७ बाजे वाले आगे-आगे बाजे बजा रहे थे। भाट तथा विदूषक भी आगे ही शब्द कर रहे थे। १८ गीतकार, नृत्यकार नटों को भी आगे कर दिया गया। वाद्यनाद से मिथिलापुर प्रकम्पित होने लगा। १९ यह देखकर नर-नारी मागलिक शब्द करके रामताली बजाकर हरि बोल का उद्घोष करने लगे। ११२० श्वेत कपोत तथा राजहंस आगे चल रहे थे। स्थान-स्थान पर दही, मछली तथा पूर्ण कुम्भ रक्खे थे। ११२१ फिर आगे-आगे कैकेयी का रथ चल पड़ा। मध्य में कौशल्या का रथ चला। २२ उसके पीछे सुमित्रा का रथ चला जा रहा था। उसके पीछे श्रीरामचन्द्र का रथ चला जा रहा था। २३ श्रीराम के पीछे भरत लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के रथ मिथिला के राजमार्ग पर चले जा रहे थे। २४ भीड़ भाड़ मे चालकदल धूल उड़ाते हुये चले जा रहे थे। नर-नारियाँ पीछे-पीछे दौड़ रही थी। २५ सबके चले जाने पर पीछे से राजा चल दिये और राजा जनक के महल में जा पहुँचे। २६ यह देखकर श्रृंगी ऋषि राजा के पास आए।

केबण सुन्दरी काम भरे हेले भोळ । जानकिंकि कहिले श्रीरामंकु करे कोल ५९
सखी सखी बोलि श्रीराम मुखके चुम्बन्ति ।
बिळास मतरे श्रीराम जंघरे आउँसन्ति११६०
लज्जा मनु छाड़िले मिथिला नर नारी ।
अधैर्ज्य होइ अंगरे बसन न रहे काहारि११६१
जानकि श्रीराम बेनि बाहुड़न्ति जाअ । सुकल्याण होइ निज नबररे थाअ ६२
आसिबाकु मन त नुहइ काहारि । झर झर नयनु होइण वहे बारि ६३
बिकळरे काहार अरुण वर्ण मुख ।बाहुड़ि आसिबाकु के मणन्ति विमुख ६४
सीता सीता बोलि के आउँ से राम पेट ।जाउ अछि बोळि के देखाए नेत्र नाट ६५
नेत्रान्ते होइ ठारिण के पछ होइ जाइ । जाउँ जाउँ केऊँ नारी पथु लेउटइ ६६
मुरुछि नपारि केहु हुअन्ति विकळ । देखिण कहन्ति तांकु रघुबंश बाळ ६७
बाहुडि जाअ सही न आस दुःख सहि । केते दूर जाए एबे अइल गोड़ाइ ६८
के बोले घर बरे आम्भर काज्र्य नाहिँ । तुम्भर संगरे आम्भे जिबु हे रघुसाइँ ६९
दासींक पराय्ने पाशे थिबु सेवा करि ।ए करुणा आम्भ ठारे कर चापधारी११७०
श्रीरामचन्द्र कहन्ति ए न जोगाए किछि। बहुत एथि वड़ प्रपञ्च कथा अछि११७१

कहती कि आज से आप इसके माता-पिता हो गए । ५८ कोई सुन्दरी कामासक्त होकर विभोर हो गईं । जानकी से बातें करती हुई श्रीराम का आलिंगन करने लगी । ५९ सखी-सखी कहकर श्रीराम का मुख चूमने लगी । विलासोन्मत्त होकर श्रीराम की जंघाओ को सहला रही थी । ११६० मिथिला के नर-नारियों के मन से लज्जा दूर हो गई थी । अधीर होने से किसी के अग से वस्त्र हट गया था । ११६१ जानकी और श्रीराम दोनो उन्हे वापस जाने के लिये कहने लगे और बोले कि आप लोग शुभ मगल के साथ अपने घर में रहो । ६२ लौटने का किसी का मन नही हो रहा था । नेत्रो से झर-झर अश्रुपात हो रहा था । ६३ व्याकुलता से किसी का मुख लाल हो गया था । वापस जाने के लिये कहने से किसी-किसी को अच्छा नही लग रहा था और वह क्रुद्ध हो जाता था । ६४ सीता-सीता कहकर कोई श्रीराम का पेठ सहला रही थी और मै जा रही हूँ कहकर कोई नेत्र मटका रही थी । ६५ कोई आँख मारकर पीछे हट जाती थी । जाते जाते कोई स्त्री मार्ग से वापस आ जाती थी । ६६ छोड़ न पाने के कारण कोई व्याकुल हो जाती थी । उन्हे देखकर रघुवश कुमार कहने लगे हे सखी ! वापस चली जाओ । कष्ट सहन करके मत आओ । तुम कितनी दूर तक पीछे-पीछे चली आयी । ६७-६८ कोई कहती थी कि घर-वर से हमारा कोई प्रयोजन नही है । हे रघुनाथ ! हम आपके साथ ही चलेगी । ६९ दासी की भाँति सेवा करती हुई आपके पास रहेगी । हे धनुर्धारी ! आप हम पर यह दया कीजिये । ११७० श्रीरामचन्द्र ने कहा कि यह कुछ उचित नही है । यह तो

फळ मूळ भोजन जे अटइ आम्भर। धन रत्न देवाकु क्षमता नाहिँ मोर ४४
दुहिता मानंक दोष न घेनिब मने। केवळ प्रार्थना तुम्भे घेनु थिब एणे ४५
एमन्त बोलिण जे जनक कुशध्वज। चउदोळा उपरे बिजय़ कले वेग ४६
नबरु बाहार होइण वेगे गले। देखिकरि दशरथ हरष होइले ४७
एमन्त देखि करि जे लोमपाद पुण। रथर उपरे जे बसिले जाइ जाण ४८
शतेक कुमर जे शतेक हस्ती चढ़ि। अमरी उपरे जे जाइण बिजे करि ४९
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगवती। जे जाहा वाहान चढ़ि सर्बे चळि जान्ति ११५०
देखिकरि दशरथ रथ परे बसि। सुमन्त हस्ती परे चढिले तड़ति ११५१
सुजाण पात्र हस्ती उपरे बिजे कले। राजा परे वेनि छति टेकिण धरिले ५२
पुत्र वधू मानंक पछरे राय़े चळि। लोमपाद पछरे जे अछन्ति ताकरि ५३
लोक महा गहळरे जाइत पथ नाहिँ। मिथिलार नर नारी अछन्ति गोडाइ ५४
जानकिर जेतेक सखी संगा तुणी धाई दासी।
श्रीरामचन्द्र शुकाशन चारि पाशे मिशि ५५
गोड़ाइ अछन्ति सर्बे स्नेह भर होइ। श्रीरामचन्द्र रूप देखिवार पाइँ ५६
जुवा जुवती माने मदन रसे बाइ। के श्रीरामचन्द्र देहकु स्नेहे आउँसइ ५७
केहु हस्त धरिण समर्पे नेइ सीता। आजहुं तुम्भे हेल एहार पिता माता ५८

का आसरा रहा है। ४३ हमारा भोजन तो फलमूल है। धन रत्न देने की मुझमे क्षमता नही है। ४४ पुत्रियो के दोषो पर आप ध्यान न दीजियेगा। आपसे केवल हमारी यही प्रार्थना है जिसे आप स्वीकार करे। ४५ ऐसा कहकर जनक तथा कुशध्वज शीघ्र ही पीनस पर बैठकर नगर के बाहर तक गए। उन्हे देखकर दशरथ प्रसन्न हो गए। ४६-४७ ऐसा देखकर तब लोमपाद रथ के ऊपर जाकर बैठ गए। ४८ उनके सौ पुत्र सौ हाथियो के हौदो पर जाकर विराजमान हो गए। ४९ हे भगवती ! इसके पश्चात् सुनो। सब अपने अपने वाहनों पर चढकर चल दिये। ११५० यह देखकर दशरथ रथ के ऊपर बैठ गए और सुमन्त शीघ्र ही हाथी पर चढ़ गए। ११५१ सुजानपात्र हाथी पर चढ़ गए और उन्होने राजा के ऊपर दो छत्र उठाकर लगा दिए। ५२ राजा पुत्रवधुओं के पीछे चल पडे। उनके पीछे लोमपाद थे। ५३ लोगो की भीड-भाड़ में जाने के लिये मार्ग नही था। मिथिला के नर-नारी पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। ५४ जानकी की जितनी भी सखियाँ, सहेलियाँ, धाइया तथा दासियाँ थी वह सब श्रीराम के सुखासन के पास चारो ओर घेरकर आ गई। ५५ प्रेम के कारण सभी उनके पीछे-पीछे श्रीरामचन्द्र के रूप का दर्शन करने के लिये दौड़ी आ रही थीं। ५६ युवा युवतिया कामरस से उन्मत्त हो रही थी। कोई श्रीरामचन्द्र के शरीर को स्नेह से सहला रही थी। ५७ कोई हाथ पकड़कर सीता को समर्पित करते हुए

स्तिरींकर हुळहुळि ब्राह्मणंक बेद। समस्तंक राब घोष जात्रार सम्भर्ब ८७
धूळि उडिबारे जे न दिशे गगन। लोकर गहळे बुझि नोहे कथा पुण ८८
सत्यानन्द मुनि जे जनक कुशध्वज। दुहितांक मउळांकु बोइले जाअ संग ८९
शुणिण बेनि मउळा बेनि सज हेले। बालमिक सत्यानन्द संगरे पुणि गले११९०
श्वेत हस्ती उपरे अम्बरी बिजे कले। चारि दुहितांक संगरे चळन्ति धीररे११९१
जउतुक पदार्थ तांकर संगे गला। हस्ती घोड़ा पदाति बळ चळन्ति जे तोरा ९२
बरुण नबरु जेन्हे महालक्ष्मी चळि। नारायणंक संगरे नदी घोषरे घेरि ९३
तेसनक प्राय़े जे जानकि रघुनाथ। शून्यरे देबताए देखिण हर्षित ९४
मिथिळार कटकरु होइले बाहार। दशरथंकु जनक कहन्ति जोड़ि कर ९५
फेरिण जनक ऋषि लेउटि अइले। आपणार मन्दिररे प्रबेश होइले ९६
कुशध्वज जणाए ज जनक छामुर। मोर पुरे आज जे रहिबे सकळ ९७
जनक बोइले तुम्भे राजांकु बेगे चळ। अजोध्यार राजनंकु चरचा जाइकर ९८
शुणि करि कुशध्वज गहण सैन्य घेनि।
अति शीघ्रे राज्यकु चळिला चार पुणि ९९
आपणा नबरे हेले परबेश। पात्र मन्त्रींकि राजा ड़काइले पाश१२००
सकळ पदार्थ जे लोड़ाइ अणाइला। अनेक द्रब्य अणाइ नबरे ठुळ कला१२०१

तथा रथो के घर्घर शब्द से अत्यन्त कोलाहल मच रहा था। ८६ स्त्रियों की मांगलिक ध्वनि तथा ब्राह्मणो का वेदपाठ सब मिलकर यात्रा महोत्सव सा लग रहा था। ८७ धूल उड़ने से आकाश नही दिख रहा था। लोगो की भीड के कोलाहल से बात नही सुनाई देती थी। ८८ महर्षि सतानन्द, जनक तथा कुशध्वज ने पुत्रियो के मामा से साथ जाने को कहा। ८९ यह सुनकर दोनों मामा तैयार हो गये और वाल्मीकि के साथ सतानन्द चले गए। ११९० वह श्वेत हाथी के हौदे पर जाकर विराजमान हो गए तथा चारों पुत्रियो के साथ धीरे-धीरे चलने लगे। ११९१ उनके साथ दहेज का सामान भी चला। हाथी, घोड़े, पैदल सिपाही बड़ी शान से चले जा रहे थे। ९२ जैसे वरुणालय में लक्ष्मी गमन करती है। नारायण के साथ नदी गगा का उद्घोष भर जाता है इसो प्रकार श्रीराम जानकी को देख स्वर्ग मे देवता प्रसन्न हो रहे थे। ९३-९४ वह सब मिथिला दुर्ग से बाहर निकल पड़े। तब जनक ने दशरथ से हाथ जोड़कर आज्ञा ली। ९५ फिर महर्षि जनक लौट आए और अपने महल में जा पहुँचे। ९६ कुशध्वज ने जनक से कहा कि आज वह सब हमारे नगर में ठहरेंगे। ९७ जनक ने कहा कि तब तुम शीघ्र ही अपने राज्य में जाकर अयोध्या नरेश की सेवा सत्कार करो। ९८ यह सुनकर कुशध्वज प्रभूत सेना लेकर चल दिये दूत लोग भी शीघ्रता से चल पड़े। ९९ वह जाकर अपने महल में प्रविष्ट हुए। फिर राजा ने सभासद मंत्री सामन्तों को बुलाया। १२०० उन्होने सारे पदार्थ खोज

कुळ बधू होइ करि घर छाड़ि आस । इष्ट बन्धु कुटुम्बे बोलिबे एबे किस ७२
निगम बचन जहुँ कहिले श्रीराम । जुबतींक हृदय होइला दम दम ७३
निराश होइण सर्बे बाहुड़ि आसन्ति । थोके दूरे रहि पुण लेउटि चाहान्ति ७४
प्राण जिबा बेळे देह जेमन्ते बिकळ । मिथिलार नर नारी तेमन्ते सकळ ७५
एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो भगबती ।आगरे बशिष्ठ बिश्वामित्र जाउछन्ति ७६
आगरे बाद्य भेरी पाट छत्र उडे । शंख महुरी काहाळी शुभे निरन्तरे ७७
शगड बळद जे अछन्ति पछरे । सुमन्त मन्त्रींकि जे दशरथ बोले ७८
समस्ते अइल टिकि बुझ हे तथ्यरे । मनरु कल्मष एबे जाउ हे सत्वरे ७९
शुणि करि मन्त्रीबर कहइ कर जोड़ि । सकळ सैन्य बळ गलेणि आगे चळि११८०
एहा शुणि दशरथ आनन्द होइले । मिथिलारु बाहारि हरषे चळि गले११८१
बिबिध छळरे जे बाजे बीरतुर । आलम्ब बिळम्ब जे उड़इ चिराळ ८२
पाट छत्र गहळरे न दिशे गगन । हरि बोल राम ताळि दिए सर्बजन ८३
कुसुम बिञ्चिण जे चन्दन छेरा द्यन्ति । नग्रर बाटरे बृष्टि करिण जाआन्ति ८४
हस्तींकर गरजन शुभे घण्टि ध्वनि । अश्वंकर ह्रेसाराव सागर प्राय़े पुणि ८५
पदातिक मुख गोळ नादर चहळ । रथंकर घोष जे अतिहिँ गहळ ८६

बडे प्रपच की बात है । ११७१ कुलवधू होकर घर छोडकर आ रही हो । अब इष्ट मित्र तथा कुटुम्बीजन क्या कहेगे । ७२ जब श्रीराम ने शास्त्रोक्त वचन कहे तब युवतियो के हृदय धड़कने लगे । ७३ निराश होकर सब लौटने लगी । थोडी दूर चलकर वह लौटकर देखने लगी । ७४ जैसे प्राण जाने के समय शरीर व्याकुल हो जाता है, वैसे ही मिथिला के समस्त नर-नारी व्याकुल थे । ७५ हे भगवती ! सुनो । इसके पश्चात् वशिष्ठ और विश्वामित्र आगे-आगे जा रहे थे । आगे-आगे भेरी बज रही थी । पाट छत्र उड रहे थे । शंख, महुरी, तुरही का घोष निरन्तर सुनाई दे रहा था । ७६-७७ पीछे बैलगाडियाँ थी । दशरथ ने मत्री सुमन्त से कहा कि तुम पता कर लो कि सभी लोग आ गये है । अब सबके मन से कलुष शीघ्र ही दूर हो जाये । ७८-७९ यह सुनकर श्रेष्ठ मत्री ने हाथ जोडकर कहा कि सारी सेना आगे चली गयी है । ११८० यह सुनकर दशरथ प्रसन्न हो गये और वह मिथिला से निकलकर हर्ष से चल पड़े । ११८१ विविध प्रकार से वीरतूर्य बज रहे थे । पताकायें रह-रहकर फहरा रही थी । ८२ पाट छत्रों की बहुतायत से आकाश नही दिख रहा था । सभी लोग रामताली बजाकर हरिबोल का उच्चारण कर रहे थे । ८३ चन्दन से लीपकर फूल बिछा रहे थे तथा नगर के मार्गों पर फूल बरसाते जा रहे थे । ८४ हाथियो की चिग्घाड़ तथा घण्टो की ध्वनि सुनाई दे रही थी । सागर गर्जन की भाति घोड़ो की हिनहिनाहट लग रही थी । ८५ पैदल सिपाहियो की तुमुल मुखरता

शुणिकरि सुरभी जे सकळ द्रब्य देले । समस्ते भुञ्जि सेथि हरष मन हेले १६
रजनी प्रभातरु सेठारु चळि गले ।बिश्वामित्र आश्रमरे जाइण मिळिले १७
देखिण विश्वामित्र सुरभी सुमरिले । सकळ सैन्यंकु जे भोजन सेथि देले १८
सकळ गहळ पुत्र बधू समस्तंक तुले । गउतम ऋषिकि जाइ दर्शन कले १९
अहल्यांक पाशरे मिळिले सकळ । देखिण अहल्या मनरे होइले कुशळ१२२०
श्रीराम जानंकिकि कोळरे बसाइले । आज मुं निस्तारिलि बोळिण बोइले१२२१
रजनीर शेषरु सेठारु चळि गले । अगम्य बनस्तरे प्रबेश जाइ हेले २२

मार्गरे परशुरामंक संगरे भेंट होइबा

से दिन दशरथ देखिले बिपरीत । पर्बतर उपरे पड़िला निर्घात २३
बाम नयन राजार स्फुरइ घन घन । गृध्र पक्षीमाने आसि उड़न्ति गगन २४
सैन्य गणंक उपरे बसन्ति जाइ काक ।उपद्रब पड़िब बोलि बोइले सर्ब लोक २५
शृगाळ जुथ आसि आगरे ओगाळि । कुहुडि परायक मेघरु रहे झरि २६
दिबसरे तारामाने गगनरे उदे । धूमकेतु उदे हेले आकाशर मार्गे २७
कुहुड़िर प्रतापरे न दिशे दश दिश । प्रळयर काळ प्राय़े बहिला बतास २८

से कहा कि पुत्रियाँ तथा जामाता आए है। उन्हे हर प्रकार की सुविधा प्रदान करो। १५ यह सुनकर सुरभी ने समस्त पदार्थ प्रदान किये। सभी लोग भोजन करके प्रसन्नचित्त हो गए। १६ रात्रि के उपरान्त प्रातःकाल वहाँ से चल दिये और विश्वामित्र आश्रम में जा पहुँचे। १७ यह देखकर विश्वामित्र ने सुरभी का स्मरण किया फिर उसने सारी सेना को भोजन प्रदान किया। १८ पुत्रवधुओ सहित समस्त लोगो ने जाकर गौतम ऋषि के दर्शन किये। १९ सब लोग अहिल्या से मिले। उन्हे देखकर अहिल्या का मन प्रसन्न हो गया। १२२० उसने श्रीराम जानकी को गोद में बिठा लिया और कहने लगी कि आज मेरा उद्धार हो गया। १२२१ रात्रि बिताकर वहाँ से चलकर सब लोग अगम्य वन में पहुँचे। २२

मार्ग में परशुराम का मिलन

उस दिन दशरथ को प्रतिकूलता दिखाई दी। पर्वत के ऊपर वज्रपात हो गया। २३ राजा का बायाँ नेत्र तीव्रता से फड़क रहा था, गृद्ध पक्षी आकर आकाश मे उड़ने लगे। २४ कौवे सेना के ऊपर आकर बैठने लगे। सभी लोग कहने लगे कि कोई उपद्रव होने वाला है। २५ शृगाल आगे से आकर रास्ता काट रहे थे। आकाश मे कुहरे के समान बादल छाया हुआ था। २६ दिन मे भी तारागण उदय हो गए थे। आकाश मार्ग में धूमकेतु उदय हो गये थे। २७ कोहरे के कारण दशो दिशाये द्रष्टिगोचर नही होती थी। प्रलयकालीन पवन बहने लगा

बोइला झिअ जुआइँ आसन्ति सम्भर्वरे । समस्तंकु चरचा कराइबा एठारे २
एमन्त कहि राजा जाग्रतरे रहि । एथु अनन्तरे गो पार्वती शुण तुहि ३
से दिन दशरथ जनक सीमा ड़ेइँ । अकाद नबरे रहिले सर्ब जाइ ४
बशिष्ठ सुरभिकि सुमरणा कले । सकल पदार्थ मान सुरभी आणि देले ५
जे जाहार इछारे जे कलेक भोजन । एथु अनन्तरे तुम्भे भगवती शुण ६
आरदिन बैशाळि पुररे जाइ रहि । देखिण कुशध्वज आनन्द मन होइ ७
चारि ज्वाइँ चारि झिअ नबरकु नेइ । समस्त बन्धुमानंकु बसा सञ्चा देइ ८
देखिण शाशु माने होइले आनन्द । मुख बिकाशइ जेन्हे पूर्णीमार चान्द ९
झिअ ज्वाइँकि अनेक प्रकारे भोजन कराइले।
राजा सैन्य मानंकु सञ्चानेइ देले१२१०
हाण्डि काठ तण्डुळ अनेक पदार्थ नेइ देले ।
रान्धि करि भोजने समस्ते सुस्थे कले१२११
रजनी प्रभातरु सेठारु चळि गले । शोणित नदी कूळे जाइण रहिले १२
रजनी प्रभातरु सेठारु चळि जाइ । सिद्ध बनरे रहिले सेदिन पुण जाइ १३
देखिण बालमिक हस्तीरु उतुरीले । निज आश्रमे जाइ प्रवेश होइले १४
सुरभिकि कहिले जाइण तत्काळ । झिअ जुआइँ अइले दिअन्तु सम्भार १५

कर मगवा लिये और नाना प्रकार के पदार्थ घर में एकत्रित कर लिये। १२०१ वह बोले कि बेटी व दामाद लोग समारोह के साथ आ रहे है। यहाँ सबका स्वागत करना है। २ ऐसा कहकर राजा सजग हो गए। हे पार्वती ! अब तुम इसके बाद की कथा सुनो। ३ उस दिन दशरथ जनक की सीमा को पार करके सबके साथ अकाद के नगर में ठहरे। ४ वशिष्ठ ने सुरभी का स्मरण किया। सुरभी ने समस्त पदार्थ लाकर दे दिये। ५ सबने अपनी-अपनी इच्छानुसार भोजन किया। हे भगवती सुनो। इसके पश्चात् अगले दिन वह लोग वैशाली नगर मे जाकर रुके। उन्हे देखकर कुशध्वज आनन्द में भर गए। ६-७ वह चारो पुत्रियो तथा जामाताओ को महल में ले गए तथा सभी बन्धु-बान्धओ आदि लोगो को उन्होने आवास सुविधाएँ प्रदान की। ८ उन्हे देखकर सासुएँ प्रसन्न हो गईं। उनके मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान विकसित हो गए। ९ उन्होने बेटी तथा दामादो को नाना प्रकार से भोजन कराया तथा राजा ने सेना को सारे ईप्सित पदार्थ प्रदान किए। १२१० उन्हे पात्र चावल लकड़ी अनेक पदार्थ प्रदान किये। सबने अपनी रसोई बनाई तथा भोजन करके तृप्त हो गए। १२११ रात्रि के अन्त मे प्रभात होने पर वह सब वहाँ से चल दिये और उन्होने शोणित नदी के तट पर पहुँचकर विश्राम किया। १२ रात्रि बिताकर प्रातःकाल वहाँ से चलकर उस दिन सिद्धवन मे जाकर रुके। १३ यह देखकर वाल्मीकि हाथी से उतर पड़े और अपने आश्रम में जा पहुँचे। १४ उन्होने जाकर तत्काल सुरभी

पर्शुरामंकु कहे प्रतापरे बड पण। शिबधनु भांगि सीता बिभा हेले जाण ४५
दशरथ नन्दन नाम जे रघुनाथ।कन्या घेनि जाउछि ता राज्यकु सेहि पथ ४६
पारिले ओगाळि जिण जाइ ताकु। नोहिले आज ठारु नमानु तुम्भंकु ४७
शुणि करि नारद बेगे चळि गले। पर्शुराम आगरे जाइण मिळिले ४८
देखिण पर्शुराम तप शान्ति कला। नारदंकु चरणे प्रणिपात हेला ४९
नारद बोइले बाबु तोते जे बळबन्त। दशरथ नन्दन श्रीराम नाम से त१२५०
बिश्वामित्र जाग रखि अहल्या निस्तरिला।
शिबधनु भांगिण सीतांकु बिभा हेला१२५१
एबे श्रीराम सीता घेनिण निज राज्ये चळि।बीर बाजा बाजन्ते कम्पइ बसुन्धरी ५२
आज तो मढिया बाटे करिब गमन। तेणु तोते कहि आइलु आम्भे पुण ५३
एते कहि नारद शून्यरे चळि गले।आधा स्वर्गे जाइ कळि धोकडि झाड़िले ५४
लागु लागु बोलि कले धूळि बृष्टि। तेणु पर्शुराम जे गळ गाजि उठि ५५
कुठार गदा कोदण्ड धरिण हस्तरे। क्रोधरे तनु तार कम्पइ थरहर ५६
मेरु गिरि प्राये शरीर बढ़े तार। देखिण देबताए होइले भयंकर ५७
एथु अनन्तरे शुण गो शाकम्बरी।दशरथ आगे कहिले बिश्वामित्रफेडि करि ५८

नारद से कहा कि आप शीघ्र ही मृत्यु लोक में जाइये। ४४ आप परशुराम से जाकर कहिए कि अत्यन्त प्रतापी शिव धनुष का खण्डन करके दशरथ नन्दन जिनका नाम रघुनाथ है वह सीता से विवाह करके कन्या लेकर उसी पथ से अपने राज्य को जा रहा है। ४५-४६ यदि आप समर्थ हों तो उन्हे रोक कर उन पर विजय प्राप्त करो। अन्यथा आज से हम आपको नही मानेंगे। ४७ यह सुनकर नारद शीघ्र ही चले गए और परशुराम के पास जा पहुँचे। ४८ उन्हें देखकर उन्होने तपस्या त्याग दी। उन्होंने नारद के चरणों में प्रणाम किया। ४९ नारद ने कहा हे वत्स! तुमसे भी अधिक बलवान श्रीराम नाम वाला दशरथ का पुत्र है। १२५० उसने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करके अहिल्या का उद्धार किया तथा शिव धनुष का खण्डन करके सीता से विवाह किया है। १२५१ इस समय श्रीराम सीता को लेकर अपने राज्य को जा रहा है। वीर वाद्य बजने से वसुन्धरा कम्पित हो रही है। ५२ आज वह तुम्हारे मठ के मार्ग से गमन करेंगे। इससे तुम्हे बताने के लिये मै आया हूँ। ५३ इतना कहकर नारद आकाश मार्ग से चले गए। आकाश से आधी दूर जाकर उन्होने कलह की झोली फाड़ दी। ५४ कलह लग जाय कहते हुए उन्होने धूल की वर्षा की। तब परशुराम हुंकार मारते हुए उठ पड़े। ५५ कुठार, गदा तथा कोदण्ड हाथ में उठाकर उनका शरीर क्रोध से थर्रा उठा। ५६ उनका शरीर मेरु पर्वत के समान विस्तारित होने लगा। यह देखकर देवता भयभीत हो गए। ५७ हे शाकम्बरी! सुनो। इसके पश्चात् विश्वामित्र ने दशरथ के समक्ष सब खोलकर कह दिया। ५८

दशरथ पचारिले एकि उतपात कथा। बशिष्ठंकु जाइ पचारिले महारथा २९
आज त बिपरीत शकुन देखा जाइ। मोहर मनरे बड़ भय उपुजइ१२३०
अवश्य प्रमाद ए पडिब मोते आज। प्रमाद उपुजिबार दिशुछि अशुभ१२३१
बिश्वामित्र बोइले प्रमाद नाहिँ किछि। एका कथा एक मुं मनरे भाबुछि ३२
मउळा मोहर जे अटइ पर्शुराम। गोलख नारायण क्षत्रिक उत्तम ३३
देवता असुर जे नर नारायण। ब्रह्मा शिब केहि सरि नुहन्ति जे पुण ३४
ताहांकु जिणन्ता जे सपत पुरे नाहिँ। दुष्टंकु मारि सपत पुर साध्य कला सेहि ३५
एहि घोर बिपिनरे अटे तांक स्थान। ए वनरे तप जे करइ पर्शुराम ३६
से पुण भेट आज पडिले बाटरे। प्रमाद उपुजि एड़ेक शुभ काळे ३७
शुणि करि श्रीराम जे बोइले उत्तर। भेट पड़िले क्षत्रिपण जाणिबा ताहार ३८
स्वर्गर देवताए तांकु साहा हेले। निश्चय मुं क्षत्रि पण सारि देबि भले ३९
तुम्भे किछि भय एबे नकर सर्बजन। एते बोलि श्रीराम कोदण्ड धरे पुण१२४०
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती। स्वर्गर देवताए बिचार कले बसि१२४१
बोइले पर्शुराम आम्भर अटे काळ। बळ पणे ताहांकु ड़रिले सकळ ४२
आज जेबे श्रीराम आगरे भेटकरि। तेबे से निर्बळ होइब पर्शुधारी ४३
एमन्त बिचारि जे नारदंकु कहि। मर्त्य पुरकु तुम्भे जाअ बेग होइ ४४

था। २८ दशरथ ने पूँछा कि यह क्या उपद्रव की बात है। महारथी दशरथ ने जाकर वशिष्ठ से इसके विषय में पूँछा। २९ आज के अपशकुन देखकर मेरे मन मे बड़ा भय उत्पन्न हो रहा है। १२३० आज मुझ पर अवश्य कोई सकट आने वाला है क्योकि उसके अशुभ लक्षण दिखाई दे रहे है। १२३१ विश्वामित्र ने कहा कि कुछ भी उपद्रव नही है। मैं अपने मन में एक ही वात सोच रहा हूँ। ३२ परशुराम मेरे मामा है। वह महान पराक्रमी गोलोकवासी नारायण है। ३३ देवता, असुर, नर, नारायण, ब्रह्मा तथा शिव कोई भी उनकी बरावरी नही कर सकता है। ३४ सातो लोको मे कोई भी उसे जीतने वाला नही है। उसने सातो लोको मे युद्ध करके दुष्टों का सहार किया है। ३५ इस घोर वन में उनका स्थान है। परशुराम इसी वन मे तपस्या कर रहे है। ३६ आज मार्ग में उनसे भेट हो जाने से इस शुभ काल मे प्रमाद घटित हुआ है। ३७ यह सुनकर श्रीराम ने कहा कि भेट होने से उनका योद्धापन देख लेगे। ३८ यदि स्वर्ग के देवता भी उनकी सहायता करे तो भी मैं उनकी वीरता समाप्त कर दूंगा। ३९ आप सभी लोग किंचित भय न करे। ऐसा कहकर श्रीराम ने कोदण्ड धारण कर लिया। १२४० हे भगवती ! सुनो। इसके पश्चात् स्वर्ग के देवताओ ने बैठकर विचार किया। १२४१ वह बोले कि परशुराम हमारा काल है। उसके बल से सभी लोग त्रस्त है। ४२ यदि आज उसकी भेट श्रीराम से हो जायेगी तो वह धनुर्धारी निर्बल हो जाएगा। ४३ ऐसा विचार कर उन्होने

एमन्त कहि पवन श्रीराम पाशु गला । ए समये जानकिरे शुभ प्राप्त हेला ७५
श्वेत नेउळ तांक रथर आगे देखा । उलुसइ अंग जे शीतळ लागे मथा ७६
जानकि बिचारिले होइब मोते शुभ । एमन्त बिचार करि गमन्ति बेग बेग ७७
बीर बाजा बजाइ अतिटाणे पुण । बाजार घाते कम्पु अछि त्रिभुबन पुण ७८
बीर बाद्य शुणिण आसइ पर्शुराम । घन घन गर्ज्जन करइ क्षण क्षण ७९
मढिआ भितरु बेगे बाहार होइ आसि । कळा मेघ बिदारकि प्रकाश हुए शशि१२८०
शिररे नाग फेणि त्रिबेणी बान्धि जटा । ललाटरे तिळक पिन्धिछि काछटा१२८१
श्रबणरे तम्बार कुण्डळ झटके । कण्ठरे तुळसी माळ जे बिशेषे ८२
पद्म पुष्कर जे स्फटिकर माळा । पुइँ चान्दुआ माळ मिशिण संगे तोरा ८३
कृष्णाजिन छाल जे कटिरे ओढि आणि। कटि परे भिड़िण अछइ ताहा जाणि ८४
पइता उतुरि कन्धे करे कुश बान्धि । कन्ध परे पइता ज्योति जे जंघि उठि ८५
कस्तुरी रेखा प्राय़े सुन्दर दिशे दाढि । फरहर बेनि निश अछइ उहाड़ि ८६
पिठि परे उहाड़िण अछइ व्यघ्र छाल । कोप भरे तिनि खन्ड धरिअछि भाल ८७
स्वाहाश्रुब प्रोक्षणी आबर बेद पोथि ।बाम काख मूळरे अधारि गोटि स्थिति ८८

अधिक हो गया। अब हम देवताओं के लिये कष्ट सहन करेंगे। ७४ ऐसा कहकर पवन श्रीराम के समीप से चले गये। इसी समय जानकी को शुभ-सकुन होने लगे। ७५ श्वेत रंग का नेवला उनके रथ के आगे दिखाई दिया। उनका शरीर उल्लसित हो गया और उनका मस्तक शात था। ७६ जानकी ने विचार किया कि मेरे लिये शुभ होगा। ऐसा विचार कर वह शीघ्रता से चलने लगी। ७७ वीर-वाद्य अत्यन्त तुमुल ध्वनि में बज रहे थे। वाद्य-नाद से तीनों लोक कम्पित हो गये। ७८ वीर वाद्य सुनकर परशुराम प्रतिक्षण गर्जना करते हुये वेग से आ रहे थे। ७९ वह मठ के भीतर से तीव्र गति से बाहर आ गये। लगता था जैसे काले मेघ को विदीर्ण करके चन्द्रमा प्रकाशित हो गया हो। १२८० सिर पर नागफणी तीन जटाये बँधी थी। मस्तक पर तिलक और उन्होने कछोटा पहन रखा था। १२८१ कानो मे ताँबे के कुण्डल झलक रहे थे और गले में तुलसी की विशेष प्रकार की माला पड़ी थी। ८२ पद्म पुष्प की स्फटिक माल, चमेली तथा चाँदनी की माला के साथ मिलकर शोभायमान थी। ८३ कमर मे कृष्ण मृग की छाल लिपटी थी तथा कमर को भली प्रकार से घेरे थी। ८४ कन्धे पर उत्तरीय तथा यज्ञोपवीत था और हाथो में कुश मुष्ठि थी। कान्धे पर ज्योतिमन्त उपवीत था। ८५ उनकी दाढी कस्तूरी की रेखा के समान सुन्दर दिखाई दे रही थी। उनकी दोनो मूछे फरफरा रही थी। ८६ वह पीठ पर व्याघ्र-चर्म ओढ़े थे। उनके क्रुद्ध भाल पर त्रिपुण्ड लगा था। ८७ स्वाहा श्रुवा प्रोक्षणी

शुणिण दशरथ मनरे कले भय़े । श्रीरामंकु शुभ प्रापत आसि हुए ५९
डाहाण नय़न श्रीछामुर स्फुरे घन घन । संखचिल आगे उड़े असार घेनि पुण१२६०
बक पक्षी श्यामळकु अछइ माड़ि बसि । उदळिआ चढाइ आगरे डाकय़न्ति१२६१
श्रृगाळ डाहाण बामकु जाए पुण । श्रीरामर रंग बर्ण दिशइ नेत्र गुण ६२
शुभ जोग देखिण श्रीराम आनन्द । बोइले क्षत्री होइ कि कले आज द्वन्द ६३
एहि समय़रे पवन कर्णे बहि । बहु क्रोध मनरे श्रीरामचन्द्र तुहि ६४
पर्शुराम अटन्ति जे गोलक नाराय़ण । एक अंग गोटि जे तुहइ भिन्न भिन्न ६५
एक अंग गोटि अट जे एका बेळे तुम्भे । अवतार भिन्न भिन्न न चिन्हिकि एबे ६६
षष्ठ अबताररे पर्शुराम जात । सप्तम अवतारे तुम्भे हे सम्भूत ६७
सात पुररे जे जेते दुष्ट थिले । समस्ते पर्शुराम हस्तरे साध्य हेले ६८
पर्शुराम दर्प जे नसहि देबगण । देबे तुम्भंकु कहि कराइले जन्म ६९
से कथाकु जाणिण जे गलेक श्रीकृष्ण । पर्शुरामकु बोइले असुर नकर नाश१२७०
स्वयं बासुदेव मारिबे जे तहिँ । बेनि पुर असुर नमार एवे तुहि१२७१
शुणिण पर्शुराम शान्तिकि भजिला । बेनि पुरु असुर केबेहेँ न मारिला ७२
एबे आज तुम्भ संगरे हेब भेट । बइष्णवा धनु तुम्भंकु देव रेणुका सुत ७३
श्रीराम बिचारिले अनेक भारा हेला ।देवतांक जोगु दुःख सहिबा आम्भे परा ७४

उसे सुनकर दशरथ मन में भयभीत हो गए। तभी श्रीराम को शुभ लक्षण प्राप्त हुए। ५९ उनका दाहिना नेत्र फड़कने लगा। चील के झुण्ड असार पदार्थ लेकर उडने लगे। १२६० बगुला पक्षी श्यामल पक्षी को दाबकर बैठ गया। क्षेमकरी पक्षी सामने से शब्द कर रही थी। १२६१ श्रृगाल दाहिने से बाँयी ओर जा रहा था। श्रीराम के नेत्र लाल रग के दिखाई दे रहे थे। ६२ शुभ योग देखकर श्रीराम प्रसन्नता-पूर्वक बोले आज कलह में वीरता का पता चलेगा। ६३ वायु ने कान में कहा हे रामचन्द्र ! तुम्हारा मन बहुत क्रुद्ध है। ६४ परशुराम गोलोक के नारायण है, एक अश होते हुये वह उनसे भिन्न नही है। ६५ एक अश तुम हो। अवतार भिन्न-भिन्न है। क्या आप उन्हे पहचान नही रहे। ६६ छठे अवतार मे परशुराम उत्पन्न हुये और सातवे अवतार मे आपका जन्म हुआ है। ६७ सात लोको में जितने दुष्ट थे, सभी परशुराम के हाथो से मारे गये। ६८ देवगण परशुराम के दर्प को नही सहन कर सके। देवताओ ने आप को कहकर अवतरित कराया है। ६९ इस बात को जानकर श्रीकृष्ण चले गये और उन्होने परशुराम से असुरो का नाश न करने को कहा। १२७० उन्होने कहा कि स्वय वासुदेव उनका बध करेगे। दोनो लोको के असुरो का सहार तुम मत करो। १२७१ यह सुनकर परशुराम शात हो गये फिर उन्होने दोनों लोकों के असुरो को नही मारा। अब आज आपके साथ भेट होगी। रेणुका नन्दन आपको विष्णु का धनुष प्रदान करेगे। ७२-७३ श्रीराम ने विचार किया कि भार

शुणिण दशरथर उडिला साहस। शरीर कम्पिला बहे खर निशुआस ३
बिधाता सुमरिण कपोळे कर मारि।बशिष्ठंकर मुखकु चाहिँण शोक करि ४
भो मुनि बिपरित शुण एबे वाणी। आगरे सैन्य मोर ओगाळे पर्शुमणी ५
किम्पाइ से ओगाळे अकारणे एथ। एथकु उपाय़ मोते कह ब्रह्मासुत ६
रोष भरे पर्शु अछइ पुण आसि। मोहर पुत्रकु से न पुण जाए नाशि ७
कि बुद्धि करिब मुं कह हे बिचारि। शुणि करि बोइले बशिष्ठ तपचारी ८
बिश्वामित्र बोइले तरस्त किम्पा हुअ। बुझि चिन्हि कथा बिचारिबा जे रह ९
चाल आम्भे प्रबोध करिबा तांकु पुणि।पर्शुराम आसि थिव बीर बाजा शुणि१३१०
जेबण अरिष्टि बाटे देखिले महाराजा।
प्रत्यक्षरे आसिण फळिला नोहिलाहे तेज्या१३११
मुं बोइलि पर्शुराम एथे थाइ। ताहा आगे भेट जेबे आज पडिलइँ १२
निश्चय़े उतुपात जे करिब पर्शुधर।ए कथाकु महाराजा तोर कि बिचार १३
से कथा आन जे नोहिलाक आन। चाल चाल प्रबोधिबा रेणुका नन्दन १४
जेबे आम्भ बचन न करिब तपोबन्त। तेबे तार गारिमा जे होइबाक हत १५
बिश्वामित्र कहिले राजन दम्भ हेले। रथर उपरु जे राजन ओह्लाइले १६
बशिष्ठ बोइले तुम्भे दशरथ शुण। जाउँळि अवतार आज भेट हेबे जाण १७

रेणुका नन्दन निश्चय ही कलह करेगा। २ यह सुनकर दशरथ का साहस उड़ गया। शरीर काँपने लगा और श्वाँस प्रखरता से चलने लगी। ३ दैव का स्मरण करके उन्होने सिर पर हाथ पटका तथा शोकातुर होकर वशिष्ठ के मुख की ओर ताकने लगे। ४ उन्होंने कहा हे मुनि ! यह प्रतिकूल वचन सुनिए। मेरी सेना को आगे से परशुमणि ने रोक रखा है। ५ उसने कम्पित करते हुए अकारण ही पथ रोक रक्खा है। हे ब्रह्मपुत्र ! आप मुझे इसका उपाय बताइये। ६ परशुराम क्रोध में भरा हुआ आया है। कही वह मेरे पुत्र को मार न जाय। ७ आप विचार करके कहो मै क्या करूँ। यह सुनकर तपस्वी वशिष्ठ बोले। ८ विश्वामित्र ने कहा कि आप त्रस्त क्यों हो रहे है। रुको जरा समझ बूझकर विचार करेगे। ९ चलो हम उसे समझाएँ। परशुराम वीर वाद्य सुनकर आया होगा। १३१० महाराज ने मार्ग में जैसे अपशकुन देखे थे, वह प्रत्यक्ष आकर फलीभूत हो गए। वह छूट नही पाए। १३११ मैने कहा कि परशुराम यहाँ रहता है। यदि आज उससे भेट हो गई तो निश्चित रूप से परशुधर उत्पात करेगा। हे महाराज ! तुमने इस बात पर क्या विचार किया। १२-१३ वह बात मिथ्या नही हुई। अब चलो रेणुका नन्दन को समझाएँ। १४ यदि वह तपोनिष्ठ मेरा कहना नही सुनेगा तो फिर उसकी गरिमा नष्ट हो जाएगी। १५ विश्वामित्र के कथन से राजा में दृढ़ता आई। तब वह रथ के ऊपर से उतरे। १६ वशिष्ठ ने कहा हे दशरथ ! आप सुनिये।

वेद कराण्डि आबर जदद गाव बछा।
खमण्ड खणन्ति कमण्डळ जे ब्रह्मचर्य्य दीक्षा ८९
बामकरे शरासन ड़ाहाणे कुठार। बेनि कन्धे सुन्दर अक्षय्र त्रोण भार१२९०
बइष्णबा धनुरे कोदण्ड गुण देइ। पइता छळे कान्धरे अछइ पकाइ१२९१
नय्रन तेज तार मिथुन बिजुळि। जेणिकि अनाइब अनळ उठे जळि ९२
निश्वास बहइ जेन्हे बड़बा पवन। रोम टांकुराइ क्रोध भरे पुण ९३
समुद्र कूळरे जेन्हे अगस्ति आसि मिळि। तेसन प्राय्रेक पर्शुराम तेज बळि ९४
एमन्ते बेश होइ बाहार हेले पुण। चाळि बारे कम्पइ धरणी देबी जाण ९५
आगरे काळ सर्प देखिले पर्शुराम। बाम चक्षु ड़ेइँला अशुभ दिशे पुण ९६
देखिण पर्शुराम जे मनरे बिचारि। आज अशुभ मोते दिशुछि हेला परि ९७
एते बिचारि मनरे बेगे चळि गला। सैन्य्र वळंक आगरे जाइण मिळिला ९८
प्रळय्र अनळ प्राय्रेक तेज दिशि। बिरंकर देबताकि मेदिनीकि आसि ९९
सुकिते सैन्य्र रहिण कहिले नृपबर। हाटरे बाट आसि ओगाळे पर्शुबीर१३००
द्विती जमर प्राय्रे दिशइ तार मूर्त्ति। कोप भर होइण उभा भृगुपति१३०१
सत्यानन्द बोइले शुण अजोध्या राजन।
निश्चय्र द्वन्द आज करिब रेणुका नन्दन २

तथा वेद की पुस्तक तथा बायी कॉख में अधारी स्थित थी। ८८ वेद शक्ति गोमुखी कमण्डल आदि लिये थे और वह ब्रह्मचर्य मे दीक्षित थे। ८९ बॉये हाथ में धनुष और दाहिने मे कुठार था। दोनो कन्धो पर सुन्दर अक्षय तूणीर भरे थे। १२९० वैष्णव धनुष पर प्रत्यचा चढी थी और वह यज्ञोपवीत के आकार में कन्धे पर पड़ा था। १२९१ उनके दोनो नेत्र दो बिजलियों के समान थे। लगता था जिधर देखेगा आग जल उठेगी। ९२ उनकी श्वास प्रलय प्रभंजन के समान चल रही थी। क्रोध से उनके रोमाच हो गया था। ९३ लगता था जैसे अगस्त समुद्र के किनारे आ पहुँचे हो। परशुराम का तेज उससे भी अधिक था। ९४ इस प्रकार का वेश धारण करके वह बाहर निकले। उनके चलने से पृथ्वी कॉप रही थी। ९५ परशुराम ने सामने काल सर्प देखा और उनका बायॉ नेत्र फडककर अपसकुन की सूचना देने लगा। ९६ यह देखकर परशुराम ने मन मे विचार किया कि आज मुझे अशुभ होने जैसा लग रहा है। ९७ मन मे ऐसा विचार कर वह शीघ्रता से चल दिये और सेना के समक्ष आ पहुँचे। ९८ उनका तेज प्रलयाग्नि के समान दिखाई दे रहा था। मानो वीरता का देवता पृथ्वी पर आ गया हो। ९९ स्तब्ध होकर सेना ठहर गई उन्होने श्रेष्ठ राजा से निवेदित किया कि हठात् मार्ग में आकर पराक्रमी परशुराम ने बाट रोक ली है। १३०० वह वीर मूर्ति दूसरे यमराज के समान दिख रही है। भृगुपति परशुराम क्रोध मे भरे हुये खड़े है। १३०१ सतानन्द ने कहा हे अयोध्या नरेश सुनिये। आज

देखिण दशरथ आगरे उभा हेले। भृगुपति चरणे नमस्कार कले ३३
शते बार प्रणमित कले पादे पड़ि। कार्पण्य होइण जे आगरे कर जोडि ३४
भो मुनि हे आज दिशिला मोर पुण्य।
केउँ भाग्ये मिळिले आसि रेणुका नन्दन ३५
भृगुकुळे जनम तपिक कुळे श्रेष्ठ।क्षत्री पणरे उत्तम मन्त्री पणरे गरिष्ठ ३६
प्राकर्मरे बळबन्त नाम गोटि सार। बळरे अजय जे कोपरे असम्भाळ ३७
दया धर्म बुद्धिरे जुद्धार मेदिनि। जय जय पर्शुराम महिमा तोर धनि ३८
जेते पाप मोहर अंगरे पुण थिला। तुम्भर दरशने सकळ क्षय गला ३९
तप बळे बेदबर जोगरे ईश्वर। क्षत्री पणरे तुम्भे अट चक्रधर१३४०
मोहर उत्सब त पुत्रंकर बिभा।दया करि अइल कि तुम्भे देखि जिबा१३४१
सत्य कहिलु बोलि कहिले पर्शुधर।जेणु करि तोहर मु काटि नाहिँ शिर ४२
अपुत्रिक बोलिण नगलि तोर पाश।
तेणु करि बीर बाजा बजाउ मोर पाश ४३
ए महि मण्डळे तु अटु महाराजा।आम्भ उपरे आसि बजाउ बीर बाजा ४४
तो समाने क्षत्री एथि नाहिँ केहि आन। अति बड़ प्रतापीत अजोध्या राजन ४५
जेते राजा माने छन्ति मेदिनि भितर। समस्तंक उपरे गरिष्ठ नृपबर ४६

थे तथा उनका शरीर थरथर काँप रहा था। ३२ देखते ही दशरथ उनके समक्ष खडे हो गए। उन्होने भृगुपति के चरणों में नमस्कार किया। ३३ उन्होंने चरणों में गिरकर सौ बार प्रणिपात किया तथा दीनता के साथ हाथ जोड़ लिये। ३४ वह बोले हे महात्मन्! आज मेरे पुण्य उदय हुए है। मेरे किस पुण्य के बल पर आज रेणुका नन्दन आकर मिले। ३५ आपका जन्म भृगु वश में श्रेष्ठ तपस्वी के कुल में हुआ है। वीरता में आप श्रेष्ठ तथा मन्त्रतन्त्र मे आप महान् है। ३६ वीर पराक्रमियो में आपका नाम श्रेष्ठ है। बल में आप अजेय है और अपार क्रोध वाले है। ३७ पृथ्वी पर आप दया धर्म की बुद्धि से युद्ध करते है, हे परशुराम! आपकी जय हो। आपकी महिमा धन्य है। ३८ हमारे तन के जितने पाप थे वह सब आपके दर्शन से नष्ट हो गए। ३९ तप बल से आप ब्रह्मा, योग बल से शिव तथा पुरुषार्थ में आप चक्रधारी विष्णु है। १३४० मेरा उत्सव तो पुत्रो का विवाह है। आप कृपा करके क्या देखने के लिये पधारे है। १३४१ परशुराम बोले कि तू ठीक कह रहा है। वह तो मैने तेरा सिर नही काटा। ४२ तुझे नि:सन्तान समझकर मै तेरे पास नही गया। तभी तू मेरे सामने वीर वाद्य बजा रहा है। ४३ इस महिमण्डल में तू महाराज है। तू हमारे ऊपर आकर वीर वाद्य बजा रहा है। ४४ तेरे समान योद्धा यहाँ कोई नही है। अयोध्या नरेश तो अत्यन्त प्रतापी है। ४५ इस पृथ्वी पर जितने भी राजागण है। तू उन सबमें श्रेष्ठ राजा है। तू वीर तूर्य बजाकर पृथ्वी पर

शिव धनु भांगिला दिनुं मुहिँ से जाणइँ। पर्शुराम अबतार प्रबळ भांगि देइ १८
एबेत पर्शुराम आज लज्जा पाइ। श्रीरामंकु प्रसन्न होइण जिब सेहि १९
श्रीराम ड़ाक देले शुण हे राजन। पर्शुरामंकु किम्पा डरुछ तुम्भे पुण१३२०
केते बळ अछि जे ऋषिर देहे देखि। जाणिबा आज जे से केडे प्रतापी१३२१
विश्वामित्र बोइले शुण हे रघुनाथ। पर्शुराम अटन्ति जे गोलकर नाथ २२
अधर्म न कर धर्मबन्तरे थाइ। दुष्टपण कले से निश्चय्र मरइ २३
शान्तशीळ होइण जे कहिब ताहाकु। न बुझिले दण्ड जे देबा हे ताहाकु २४
शुणि करि श्रीराम जे शान्तशीळ हेले। पवन कहिला कथा सत बिचारिले २५
विश्वामित्रंक ठारु शुणि दशरथंक दम्भ।

बिचारिले पर्शुराम करिब किस द्वन्द्व २६

जोगबळे ऋषि माने जाणन्ति सकळ। केबळ मन मोर हेउछि बिकळ २७
गह गह शबद शुभइ घोर ध्वनि। पाञ्च जुण परिजन्ते पुरे जे सइनि २८
के बोलइ पर्शुराम ओगालि अछि वाट। के बोलइ श्रीरामंकु नुहइ गरिष्ट २९
के बोलइ नोहिले से देव पराभब। एमन्त कुहा कुहि हुअन्ति तहिँ सर्ब१३३०
कथा हुअन्तेण मिळिले पर्शुधारी। काळदण्ड प्राय्रक कुठार अछि धरि१३३१
क्रोधरे पर्शुधर कामोडे अधर। रागरे देह तार कम्पे थरहर ३२

आज जुड़वाँ अवतारो की भेट होगी। १७ शिव के धनुप के खण्डन वाले दिन से ही मै जानता था कि परशुराम के अवतार की प्रवलता नष्ट होगी। १८ अभी तो आज परशुराम लज्जित होकर वह श्रीराम से प्रसन्न होकर जाएगा। १९ तभी राम ने कहा हे राजन्! सुनिए। आप परशुराम से क्यो डर रहे है। १३२० देखे ऋषि के शरीर मे कितना वल है। आज समझ मे आएगा कि वह कितने प्रतापी है। १३२१ विश्वामित्र ने कहा, हे रघुनाथ! सुनो। परशुराम गोलोक के नाथ है। २२ धर्मवन्त होकर अधर्म मत करो। दुष्टता करने से वह निश्चय ही मरेगा। २३ उससे शान्त होकर वार्ता करना। यदि वह नही मानेगा तो फिर दण्ड दिया जाएगा। २४ यह सुनकर श्रीराम शान्त हो गए। उन्होने विचार किया कि पवन ने ठीक ही बात कही थी। २५ विश्वामित्र की वात सुनकर दशरथ ने दृढता से विचार किया कि पता नही परशुराम कैसा द्वन्द्व करेगे। २६ योग वल से ऋषि लोग सब जानते हैं। केवल मेरा मन व्याकुल हो रहा है। २७ चहल-पहल का घनघोर कोलाहल सुनाई दे रहा था। पाँच योजन पर्यन्त सेना भरी पडी थी। २८ कोई कहता था कि परशुराम ने मार्ग रोक रक्खा है, कोई कहता था कि वह श्रीराम से अधिक महान नही है। २९ कोई बोला नही, वह पराजित कर देगा। वहाँ इस प्रकार सबकी आपस में कहा-सुनी हो रही थी। १३३० बाते होते-होते परशुधारी आ पहुँचे! वह काल दण्ड के समान कुठार धारण किये थे। १३३१ क्रोध से परशुराम ओठ चबा रहे

तिनि लक्ष बरष एथिरे बहिगला। तृतीय जुग गोटि मोते जे भोग हेला ६२
दुष्ट मारि सन्थरे मोर मन शान्ति।मोहर आगरे तु बजाउ वाजा निकि ६३
नवसस्र बरष जे स्तिरी रूप होइ। राणी मानंक संगरे लुचि रहु तुहि ६४
एबे दशा गला जे तोहर क्षत्रिपण। बीर वाजा बजाइ तु करुछु गमन ६५
बीर तुर बजाइ तु साधु अछु महि। ए रबि तळरे तोते क्षत्री सम नाहिँ ६६
जणा गला तोर कोळे जनम वासुदेब। परीक्षरे जाणिबा से कथा अटे सबं ६७
ए बचन कहु कहु कम्पे ता शरीर। बशिष्ठ बिश्वामित्र मिळिले आगर ६८
बोइले क्रोध शान्ति कर हे भृगुपति। राजार शुभ बेळे नकर बिघ्न एथि ६९
तुम्भर तुले सरि नुहँ ए राजन। सपत पुर राजा हारिले तोते पुण१३७०
दया करि एहाकु जाअ निज राज्य। शुणिण पर्शुराम न छाड़े मनु राग१३७१
बोइला ए राजाकु केहि सरि सम नाहिँ।
सदाशिव धनुकु यार केउँ पुत्र भांगिलइँ ७२
केउँ पुत्र लक्षे राजांकु जिणिला। सेहि पुत्र चाल देखिबा बोलिण वोइला ७३
ताहांकर बळरे तु बजाउ बीर तुर। काहिँ अणाअ पुत्र अछि जे तोहर ७४
एते बोलि पर्शुराम भितरे पशे जाइ। जेणे जाए पर्शुराम सइन पळाइ ७५

सातों लोकों में दुष्टों का संहार तथा सन्तो के पालन करने के लिये भ्रमण किया। १३६१ इसमें तीन लाख वर्ष व्यतीत हो गए। इस प्रकार मेरा त्रेता युग समाप्त हो गया। ६२ दुष्टों को मारकर सन्तों के लिए मेरा मन शान्त है। तू मेरे सामने वीर वाद्य बजा रहा है। ६३ तू स्त्री रूप धारण करके नौ हजार वर्षों तक स्त्रियो के बीच में छिपा रहा। ६४ अब तेरी वीरता दिखाई पड़ी। तू वीर वाद्य बजाकर गमन कर रहा है। ६५ वीरतूर्य नाद करके तू पृथ्वी को पराजित कर रहा है। इस रविमण्डल के नीचे तेरे समान अन्य कोई योद्धा नहीं है। ६६ यह ज्ञात हो गया कि तेरे कुल मे वासुदेव का जन्म हुआ है। परीक्षा से वह सारी बातें ज्ञात करूँगा। ६७ यह बात कहते-कहते उनका शरीर कांपने लगा। तभी वशिष्ठ और विश्वामित्र उनसे आकर मिले। ६८ उन्होने कहा हे भृगुपति ! क्रोध को शान्त करो। राजा के शुभ समय में विघ्न मत उपस्थित करो। ६९ यह राजा आपकी समता का नही है। तुमसे तो सातों लोको के राजागण हार चुके है। १३७० इस पर कृपा करके आप अपने राज्य में पधारे। ऐसा सुन करके भी परशुराम के मन से क्रोध नही गया। १३७१ वह बोले कि इस राजा की समता का अन्य कोई नही है। सदाशिव के धनुष को इसके किसी पुत्र ने तोड़ दिया है। ७२ इसके किसी पुत्र ने एक लाख राजाओं को जीत लिया, चलो उसी पुत्र को देखे। उन्होने इस प्रकार कहा। ७३ उन्ही के बल पर तू वीरतूर्य वजा रहा है। तेरा पुत्र कहाँ है उसे बुलाओ। ७४ इतना कहकर परशुराम भीतर घुस गये। वह जिधर जाते थे, सेना भागने लगती थी। ७५

बीर तुर बजाइ तु बुलु अछु महि। रबितळे तोते केहि सरि सम नाहिँ ४७
आज सिना परीक्ष करिबि तोर बळ। पर्शु घाते मुण्डकु करिबि बेनि फाळ ४८
तेबे सिना प्रकाशिबा उत्तम नृपति। एहाकु समान आउ नाहिँ केहि पृथि ४९
जेतेक राजा माने थिले सात पुरे। समस्ते साध्य हेले मोहर हस्तरे१३५०
जेते बेळे नाराय़ण प्रसन्न मोते हेले। धनु गोटिए मोते सेहि सर्मापिले१३५१
बोइले सपत पुरे जेते दुष्टगण। समस्तंकु मारि जे निशोध कर पुण ५२
एते बोलि श्रीहरि कहिण गले मोते। बोइले दुष्ट दैत्य नमरे मोर हस्ते ५३
जाउँळि अवतार होइबे नरहरि। तेबे से असुरंकु निशोधन करि ५४
जेते बेळे भेट तुहि हेबु भृगुपति।
मुहिँ जन्म हेला काळे तु निश्चे हेबु तपि ५५
एते कहि श्रीहरि जे निजस्थाने गले। सेहि दिनु धनु धरि बुलइ महिरे ५६
जशोबन्ति पुरकु गलि मुहिँ एक दिन। बिधातांकु जिणिण देलि मुं कषण ५७
स्वयं नारायणंक पुररे मिळिलि। चेता करि गदा गोटि छड़ाइ आणिलि ५८
कपिळास पुररे मिळिलि जाइ पुण। ड़रि कुठार मोते देले पञ्चानन ५९
स्वर्गपुर देवतांकु मुहिँ साध्य कलि। मञ्चरे राजा रुधिरे तर्पण सारिलि१३६०
सते एक उत्तर फेरिलि सप्तपुर। दुष्टजन मारिण सन्थकु पाळिबार१३६१

भ्रमण कर रहा है। इस सूर्य मण्डल के नीचे तेरी समता करनेवाला और कोई नही है। ४६-४७ आज मै तेरे बल की परीक्षा करूँगा और परशु के आघात से तेरे सिर के दो खण्ड कर दूंगा। ४८ तब तो यह प्रकाशित हो जाएगा कि इसके समान उत्तम राजा अन्य कोई इस पृथ्वी पर नही है। ४९ सातों लोको में जितने भी राजागण थे वह सभी मेरे हाथो से पराजित हुए। १३५० जिस समय नारायण मुझसे प्रसन्न हुए तब उन्होने मुझे एक धनुष समर्पित किया। १३५१ उन्होने कहा कि सातो लोको में जितने दुष्ट जन है उन सबको खोज-खोजकर सहार करो। ५२ श्रीभगवान मुझसे ऐसा कहकर चले गए। उन्होने यह भी कहा कि दुष्ट दैत्य तुम्हारे हाथो से नही मरेंगे। ५३ अस्तु नरहरि जुड़वाँ अवतार धारण करेंगे तब वह असुरो का सहार करेंगे। ५४ हे भृगुपति तब तुम्हारी भेट होगी। हमारे जन्म लेने पर तुम्हें निश्चित ही तप में लीन होना पड़ेगा। ५५ ऐसा कहकर श्रीनारायण अपने स्थान को चले गए। मैं उसी दिन से धनुष धारण करके पृथ्वी पर घूम रहा हूँ। ५६ मै एक दिन यशोवन्ती पुर को गया। मैंने विधाता को जीतकर उन्हे त्रास दिया। ५७ मै स्वयं नारायण के सदन मे पहुँचा और उन्हे सचेत करके एक गदा छुड़ा लाया। ५८ फिर मै कैलाश मे जा पहुँचा। भयभीत होकर पंचानन शिव ने मुझे कुठार प्रदान किया। ५९ स्वर्गलोक में मैंने देवताओ को परास्त किया। मृत्युलोक में मैंने राजाओ के रक्त से तर्पण किया। १३६० एक सौ एक बार मैंने

सूर्ज्यबंशरे तोते केहि नुहँ दोषी । किम्पाइ मो बाळक पुत्र जिबु तु नाशि१३९०
मो पुत्रकु माइले मोर बंशहिँ सरइ । एते कहि राजन पर्शु चरणे नमइ१३९१
दन्तरे तिरण धरि बिनयी कहे पुणि । बिनति होइण जे कहे नृपमणि ९२
ए थरक रक्षा मोते कर हे ब्रह्म मुनि । सूर्ज्यबंशे राजा हुअन्ति तोर जोगु पुणि ९३
पुत्रंकु रक्षा करि जाअ हे मोते मारि । मोर दोष तोते न कला तपचारी ९४
राजार प्रबोध न शुणि जान्ते ऋष । जाइण श्रीरामर पाशरे मिळे तपि ९५
श्रीराम बसिछन्ति बसन्त बर्ण रथे । तिनि भाइ अछन्ति श्रीरामर पछे ९६
सेहि तिनि रथे अछन्ति पुण बसि । रथंकर तेजरे बनस्त फिटि दिशि ९७
डाहाण करे कोदण्ड चारि भाइंकर । ललाटरे मुकुट कुण्डळ शोभाकर ९८
देखिण पर्शुराम मनरे बिचारइ । नारायण जनम कि होइछन्ति महि ९९
पर्शुराम बोइले तुम्भे शुण रघुनाथ । ईश्वरंकर धनु तुम्भे कल पराहत१४००
जेउँ धनुकु इन्द्र बिधाता न तोलिले । सामान्यर बळि कि बोलिबा तोहरे१४०१
मेरुरु गरु पुण बजरु अटे टाण । तुम्भर कर लागन्ते तुटिला शरासन २
से धनु भांगिल तुम्भे बेनि खण्ड करि । तोहर बळिकि सामान्य कहि पारि ३
शुणिण रघुनाथ बोइले तुम्भे किए । आम्भे त बाळुत दशरथंकर पुए ४

मुख से आपको निन्दा ही प्राप्त होगी । ८९ सूर्यवंश में किसी ने भी तुम्हारा अपराध नही किया है । आप किसलिये मेरे पुत्र को नष्ट करके जायेगे । १३९० मेरे पुत्रों का वध करने पर मेरा वंश ही समाप्त हो जायेगा । ऐसा कहकर राजा परशुराम के चरणो में प्रणाम करने लगे । १३९१ वह दाँत में तिनका रखकर आर्त विनय करने लगे फिर राजाओ में श्रेष्ठ दशरथ विनीत होकर बोले हे ब्रह्मर्षि ! इस बार आप मेरी रक्षा कीजिये । आपके कारण सूर्य वंश मे राजा होते रहे । ९२-९३ आप पुत्रों की रक्षा करके मेरा वध करके चले जाये । हे तपस्वी ! मैंने तो आपका कोई अपराध नही किया । ९४ वह ऋषि राजा की सात्वना को नही सुन रहे थे और वह तपस्वी श्रीराम के निकट जा पहुँचे । ९५ श्रीराम बसन्ती रंग के रथ पर बैठे थे और तीनो भाई श्रीराम के पीछे थे । ९६ वह तीनों रथों में बैठे हुये थे । रथो के तेज से वन प्रदेश प्रकाशित हो रहा था । ९७ चारों भाइयों के दाहिने हाथो में कोदण्ड धनुष थे । उनके सिर पर मुकुट तथा कुण्डल शोभा दे रहे थे । ९८ यह देखकर परशुराम ने मन में विचार किया, क्या पृथ्वी पर भगवान का जन्म हो चुका है । ९९ परशुराम बोले हे रघुनाथ ! आप सुनिये । आपने शिव का धनुष नष्ट कर दिया । १४०० जिस धनुष को इन्द्र तथा ब्रह्मा भी नही उठा पाये । तब तुम्हे साधारण पराक्रमी कैसे कहा जाये । १४०१ जो मेरु से गरु तथा बज्र से भी कठोर था । वह धनुष तुम्हारे हाथ लगते ही टूट गया । २ उस धनुष को तुमने दो खण्डो में तोड़ डाला, क्या तुम्हारे बल को सामान्य कहा जा सकता है । ३ यह सुनकर रघुनाथ जी

रथ गज अश्व जे सैन्य पळाबन्ति । दुष्टपण देखि तार केहि न रहन्ति ७६
के बोलइ कुठार पिटेटि पुण आणि । के बोले शिर एहु पकाएकि हाणि ७७
के बोलइ पादे निकि करे मसिगुण्ड । के बोलइ नयनरे दहइ अबा पिण्ड ७८
के बोलइ पुत्रंकर ए अबा नेव प्राण । भेट पड़िला आसि दुति नारायण ७९
पळाइ गले सैन्य पछकु न चाहिँ । बनर भितरे अलगे रहे जाइ१३८०
बशिष्ठ बिश्वामित्र दशरथ राये । जेणे जाए तेणे जे पछरे गोडाए१३८१
देखिण राजामाने बिचार कले मने । एते सैन्य डरिले एका भृगुजणे ८२
के बोले से नारायण गोलेख ठाकुर । के बोले से सातपुर साध्य कला बीर ८३
केहु बोले बिधातारे भल जन्त्र देला ।दुइ हस्त तुछा तार सैन्य नाहिँ परा ८४
एमन्त क्षत्रीकि जे क्षत्री बोलि मानि ।आम्भे माने समस्ते निलजरे देह घेनि ८५
एमन्त कुहाकुहि हेले राजागण । चळइ पर्शुराम खर होइ जे पुण ८६
श्रीरामर सन्निधिरे मिळिलाक जाइँ । पर्शुराम उभा हेले कोपमुख होइ ८७
दशरथ जाइण मिळिले तार आगे । क्षत्रींकर शिरोमणी राग छाड़ एबे ८८
अपुत्रिक थिलि मुहिँ मो पुत्रकु मारिबु कि तुहि ।
निन्दा पाइबु ना लोकंक मुखे रहि ८९

रथ, हाथी, घोडे तथा सेना भाग रही थी। उनकी उग्रता देखकर कोई भी ठहर नही रहा था। ७६ कोई कहता कि कही कुठार लाकर मार न दे। कोई कहता कि यह सिर काटकर गिरा देगा। ७७ कोई कहता था कि कही यह पैरो से रौंद न डाले, कोई बोला कि इसकी आँखो से ही शरीर जला जा रहा है। ७८ कोई कहने लगा कि यह पुत्रो के प्राण ले लेगा। यह तो दूसरे नारायण से भेंट हो गई। ७९ भागी हुई सेना पीछे मुड़कर नही ताकती थी और जंगल के भीतर अलग जाकर ठहर गई थी। १३८० वह जिधर भी जाते थे, वशिष्ठ विश्वामित्र तथा राजा दशरथ वहाँ-वहाँ उनके पीछे दौड़ते थे। १३८१ यह देखकर राजाओ ने मन मे विचार किया कि एकाकी भृगुवीर से इतनी सेना डर गयी। ८२ कोई कहने लगा कि यह गोलोक के स्वामी नारायण हैं। कोई कहता कि इस वीर ने सातो लोको को परास्त किया है। ८३ कोई बोला यह भाग्य ने अच्छी यत्नणा दी है। उसके मात्र दो तुच्छ भुजाएँ हैं और सेना भी साथ नही है। ८४ ऐसे क्षत्री को क्षत्री समझा जाता है। हम सब तो निर्लज्जतावश शरीर को धारण किये हुये है। ८५ राजागणों ने इस प्रकार आपस मे वार्ता की। परशुराम प्रखरता के साथ चल रहे थे। ८६ वह जाकर श्रीराम के पास पहुँचे। परशुराम कुपित आनन सहित खड़े हो गये। ८७ दशरथ उनके सामने पहुँचे और बोले हे वीर शिरोमणि ! अब क्रोध का परित्याग कर दीजिये। ८८ मैं निःसन्तान था, क्या आप मेरे पुत्र को मारेंगे तब तो लोगो के

दशरथ बोइले शुण हे रघुनाथ। एहि से पर्शुराम ऋषि कुळरे जात१४२०
एहांकर चरणे एबे कर नमस्कार।ऋषिक प्रसन्ने सिना बिभुति आम्भर१४२१
शुणिले श्रीराम जे पितांक ठारु बाणी। रथपरु ओह्लाइ आसिले रघुमणि २२
आर तिनि भाइ रथरु ओह्लाइले। पर्शुराम आगरे चारि भाइ मिळिले २३
चारि भाइ चारि कोदण्ड धरि पुण। जेसने ब्रह्मा बिष्णु अनन्त शिब जाण २४
श्रीराम चाहिँण मुनिंकि पचारन्ति। तुम्भे परा गोलोक अंशरे उत्पत्ति २५
अनेक काळर तुम्भे पुरातन ऋषि। पिता कहु थिले जाहा नेत्रर आम्भे देखि २६
केबण कारणे बिजये मुनिबर। कह किना एबे मोते शुणिबा उत्तर २७
पर्शुराम बोइले तुरे जनकर पुरे। शिबधनु भांगिलु त स्वयम्बर काळे २८
सेहि धनु गुण न जाण रघु सुते। मोह ठारु शुण एबे कहुछि मुँ तोते २९
स्वर्गरे बिश्वकर्मा दुइ धनु गढ़ि। बेनि जुगे बेनि धनु तिआर जे करि१४३०
जेउँ धनु द्वापर जुगरे निर्भ हेला। से धनुगोटि आगे गोलोक कृष्ण नेला१४३१
जेउँ धनु कळिजुगे हेला अवतार। से धनुंकु शिबंकु जे देला चित्रकार ३२
द्वापर जुगरे जेउँ धनु जात हेला। से धनुकु गोलोक नारायणे नेला ३३
सदाशिब जेउँ धनु देइ थिले पुण। प्रसन्नर जनक बंशरे देले जाण ३४

पर जय प्राप्त करूंगा। १९ दशरथ ने कहा हे रघुनाथ ! सुनो। यह परशुराम ऋषिकुल में उत्पन्न हुये है। १४२० अब इनके चरणो मे नमस्कार करो। ऋषि के प्रसन्न होने पर ही हमारी समृद्धि होगी। १४२१ श्रीराम ने पिता की वाणी सुनी और रघुश्रेष्ठ राम रथ से उतर आये। २२ अन्य तीनो भाई भी रथ से उतर पड़े और चारो भाई परशुराम के समक्ष जा पहुँचे। २३ चारों भाई चार कोदण्ड लिये थे, वह ब्रह्मा, विष्णु, अनन्त तथा शिव के समान दिख रहे थे। २४ श्रीराम ने मुनि की ओर देखते हुये कहा कि आपका जन्म तो गोलोक विहारी विष्णु के अश से हुआ है। आप चिरकाल के पुराने ऋषि है जो पिताजी कहते थे उसे हम नेत्रों से देख रहे है। २५-२६ हे मुनिश्रेष्ठ ! आप किस कारण से पधारे है, आप इसका उत्तर हमें दीजिये जिसे हम सुन सके। २७ परशुराम ने कहा तूने जनकपुर में स्वयवर के समय शिव धनुष को तोड़ दिया। २८ हे रघुनन्दन ! तू उस धर्नुष के गुणो को नही जानता। मैं जो कहता हूँ उसे तू मुझसे सुन। २९ स्वर्ग में विश्वकर्मा ने दो धनुष बनाये थे। उन्होने दोनो धनुष दो युगो में तैयार किये थे। १४३० जिस धनुष का प्रयोग द्वापर युग में होगा उसे गोलोक बिहारी कृष्ण ले गये। १४३१ जिस धनुष का अवतार उस (कलह) युग में हुआ था। वह धनुष रचनाकार ने शिव को प्रदान किया। ३२ द्वापर युग में जो धनुष उत्पन्न हुआ उसे गोलोक विहारी नारायण ने लिया। ३३ सदाशिव को जो धनुष दिया था, उसे उन्होंने प्रसन्न होकर जनक के वंश को दे दिया था। ३४

तोते आम्भे न चिन्हु केवण कुळे जात। रण करिबाकु कि होइछु उपगत ५
जेउँ से मेरु भारि कहुछु तुण्डरे। से मेरु बासुदेव धरे सागर मन्थनरे ६
जेउँ शिबधनुकु प्रशंसा तु जे करु। से शिव वासुदेव चरणे चिन्तिबारु ७
तेणु से बासुदेव सुदयारे पुण। से धनुकु पाइण जिणिले देवगण ८
जेउँ बेदबरकु कहु तु बड़करि। से बेदवरकु बासुदेव जे जन्म करि ९
जेउँ शुर राजाकु तु टेकिण कहिलु। ऋषिपुत्र से जे पाइला बळ जेणु१४१०
जेउँ देवताए तो तोड़रे पुण। बासुदेब चरणे सेबि अमरगण१४११
तोहर बड़ पण जणा गला एबे। वासुदेब गदा मागि आणिलु जाइ भावे १२
शते वरष पश्चिम द्वारे रोदन तु कलु। शे कथा एबे मनरु पाशोरिलु १३
पर्शुराम बोइले से कथा अछिमने। बासुदेव कहिथिले मोते जे प्रसन्ने १४
बोइले पाञ्च लक्ष बरष क्षत्री पुण। सातपुर साधिण तु करिबु रणभण १५
केते दिन उत्तारु आम्भे जे जात हेबु। सेते बेळे तु जे निश्चिन्ते होइबु १६
एबेत तेते दिन होइला सम्पूर्ण। तोते किम्पा निश्चिन्त न कर नारायण १७
श्रीराम बोइले रे कहिलु जेते बेळे। संप्रते नगलु कि ब्रह्माण्ड ठाकुर कहिवारे १८
पर्शुराम कहिले बोइले केवळ। तोते जिणिले जाणिबु जन्म मोर १९

बोले आप कौन है ? हम तो बालक है और दशरथ के पुत्र है। ४ हम तुम्हे पहचान नही पाये। किस कुल मे आप उत्पन्न हुये है। क्या आप युद्ध करने के लिये पधारे है। ५ जो आप मेरु को अपने मुख से भारी बता रहे है। उस मेरु को नारायण ने सागर मन्थन के समय धारण किया था। ६ जिस शिव धनुष की तुम प्रशसा कर रहे हो, वह शिव वासुदेव के चरणो का चिन्तन करते रहते है। ७ तब उन वासुदेव की कृपा से वह धनुष पाकर तुमने देवताओ को पराजित किया। ८ जिस ब्रह्मा को तुम बड़ा बताते हो उस ब्रह्मा को वासुदेव ने उत्पन्न किया है। ९ जिस सुर राजा की तुमने प्रशसा की है, उसने ऋषि पुत्र से पराभव प्राप्त किया है। १४१० जिन देवताओ का नाम तुम्हारे मुख पर है, वह अमरगण वासुदेव के चरण सेवक है। १४११ अब तुम्हारा बड़प्पन समझ मे आया। तुम जाकर भावना के साथ वासुदेव से गदा माँग लाये। १२ सौ वर्षों तक तुम पश्चिम द्वार पर रोदन करते रहे, क्या वह बात मन से भूल गये। १३ परशुराम ने कहा वह बात मेरे मन में है। वासुदेव ने मुझसे प्रसन्न होकर कहा था कि तुम पाँच लाख वर्ष तक पराक्रमी रहोगे और सातो लोको को रण में नष्ट-भ्रष्ट कर डालोगे। १४-१५ कुछ दिनो के पश्चात् हम अवतरित होगे, तब तुम निश्चिन्त हो जाओगें। १६ अब तो उतने दिन पूरे हो गये, भगवान मुझे निश्चिन्त क्यो नही करता। १७ श्रीराम ने पुन: कहा कि जब तुमसे कहा गया तो तुम्हे ब्रह्माण्ड नायक की बातो का भी विश्वास नही आया। १८ परशुराम ने कहा कि तू केवल बोलता है। तुम्हे पराजित करने पर मै जन्म

पछे जुद्ध करिबा आगे करिबा परीक्षा । डरिले कि तोते मुं छाडिबि रघुनाथ१४५०
जनकर झिअकु आणिलु बिभा होइ । ए महि मण्डळे प्रतिज्ञा तु जे बहि१४५१
से नारीकि नेइण करिबु आलिंगन । से जानकि तोर हृदे होइब भुषण ५२
अष्ट रत्न माळा जे तो कण्ठे हार होइ। एणु तो गळाकु अमुल्य शोभा पाइ ५३
आज दुइ कथारु होइब पुण एक । पशुर प्राये तोर छिण्डाइब बेक ५४
जेबे तु जिणिबु सीता भोगकर । नब जउबन आबर रत्न हार ५५
श्रीराम बोइले एबे शुण हे भृगुपति ।
जुद्ध करिबाकु बोइले किम्पा एते कोप मति ५६
हारिबा जिणिबा पुण संसारे सिना अछि। बडिमा पण गोटि नुहइ पुण किछि ५७
क्षत्री होइ जेबे नकरे पुण रण । ब्राह्मण होइ जेबे न घेनन्ति दान ५८
राजा होइ जेबे दयाशीळ नोहे । ऋषि होइ जेबे घृत अनले न दिए ५९
बणिजार होइ जेबे सकळ न बिकइ । स्तिरी होइ जेबे शीतळ भाव नोहि१४६०
राउतर माहुन्तर जेबे नुहइ रिपु । ए संसारे थिबार अकारण बाबु१४६१
शिबधनु भांगिलाकु जानकि बिभा हेलि । तोह ठारु मुहिँ एबे एमन्त शुणिलि ६२
जनक ऋषि मोते जानकि जाचि देले । मोर बळ प्राकर्म सेहि त जाणिले ६३
तोहर धनु जेबे धरिबि निश्चये । किस देबु मोते कह हे भृगुराये ६४

तब मैं तेरे बल को समझूँगा । ४९ पहले परीक्षा ले लूँ फिर युद्ध करूँगा । हे रघुनाथ ! क्या डरने से मै तुझे छोड़ दूँगा । १४५० इस भूमण्डल पर तू जनक की प्रतिज्ञा पूर्ण करके उसकी कन्या को विवाह करके ले आया है । १४५१ तू उस नारी को लेकर आलिंगन करेगा । वह जानकी तेरे हृदय का भूषण बनेगी । ५२ अष्ट रत्नो की माला तेरे कण्ठ का हार बन गई है । इससे तेरा कण्ठ अमूल्य शोभा पा रहा है । ५३ आज दो बातो मे से एक हो जाएगी । पशु के समान तेरी गर्दन छिन्न कर दूँगा । ५४ यदि तू जीत जाएगा तो फिर नवयौवना रत्नहार का उपभोग कर सकेगा । ५५ श्रीराम ने कहा हे भृगुपति ! अब सुनिये । आप इतना कुपित होकर युद्ध करने के लिये क्यों कह रहे है ? । ५६ संसार में हार-जीत तो होती ही रहती है, बड़प्पन की भी कोई बात नही है । ५७ क्षत्री होकर यदि युद्ध न करे, ब्राह्मण होकर यदि दान ग्रहण न करे । ५८ राजा होकर यदि दया शील न हो, ऋषि होकर यदि अग्नि में घृताहुति न दे । ५९ वणिज होकर यदि सारे पदार्थ विक्रय न करे । यदि स्त्री होकर शान्तभाव वहन न करे । १४६० योद्धा तथा महावत यदि शत्रुता का भाव प्रतिपादित न करे तो हे तात ! उसका इस संसार मे रहना व्यर्थ है । १४६१ शिव धनुष तोड़ कर मैंने जानकी से विवाह किया और अब आपसे ऐसा सुन रहा हूँ । ६२ महर्षि जनक ने मुझे जॉचकर जानकी प्रदान की है । उन्होने मेरे बल-पराक्रम को समझलिया । ६३ हे भृगुराज ! यदि मै आपके धनुष को निश्चय ही धारण करूँगा तो बताइये आप

सेहि धनु गोटिकि जे तुम्भे आमञ्चिल । बेनिखण्ड करिण जे भांगि पकाइल ३५
गोलोक कृष्ण जेउँ धनुकु नेइ थिले । से धनु प्रसन्नरे मोते समर्पिले ३६
बिचारि बुझिले शिब धनु जे निर्बळ । गोलोक धनु गोटि अटइ मेरुतुल ३७
से धनु गोटिकि मुँ आयत्ते रखिलि । सत शान्ति पणकरि तपरे मन देलि ३८
पिता मोर तपरे अटन्ति गरिष्ठ । सहस्रा अर्ज्जुन मो पिताकु कले नाश ३९
सेहि कोपरे मुँ कृष्णंकु सुमरिलि । कष्ट साध्य करिण बहुत तप कलि१४४०
प्रसन्न होइण बोइले जे कृष्ण । पिता शत्रु अर्ज्जुनकु बेगे कर नाश१४४१
मुँ बोइलि सहस्रर मन्त्र मो ठारे नाहिँ । शुणिण दया कले राधिकार साइँ ४२
अनेक शर देइण मन्त्र कहि देले । सेहि काळे सहस्राज्जुनंकु मारे बेळे ४३
सेहि कोपे सप्तपुर दुष्टंकु माइलि । बाळ बृद्ध थोइण समस्त नाश कलि ४४
अनेक राजांकर काटिलि मुँ जे शिर । एका बेळे नुहइ सते एक बार ४५
तेणु राजा गले मोते नुहइ सामर्थ ।आण्ठु कुडा बोलि मुँ जे नमरे दशरथ ४६
आबर अपुत्रिक राजा होइथिला । तेणु करि मोर दया जे ताकु हेला ४७
ताहार पुत्र एबे ईश्वर धनु भांगि । बीर तुर बजाइण मोहर दर्प गञ्जि ४८
मोहर धनु एबे धर जे तुहि कर । तेबे तोर बळ जाणिबा रघुबर ४९

उसी धनुष को तुमने कर्षित किया और दो खण्डों में तोडकर फेंक दिया । ३५ गोलोक बिहारी कृष्ण जो धनुष ले गये थे, उस धनुष को प्रसन्नतापूर्वक उन्होने मुझे समर्पित किया । ३६ विचार करके देखा गया कि शिव का धनुष निर्बल है और गोलोक विहारी का धनुष मेरु के समान है । ३७ मैंने उस धनुष को सचमुच शाति के साथ तपस्या मे लीन होकर सँभालकर रखा है । ३८ मेरे पिता महान तपस्वी थे । सहस्रार्जुन ने मेरे पिता का वध कर दिया है । ३९ उससे क्रुद्ध होकर मैने कृष्ण का स्मरण किया । कष्ट सहन करके मैंने बहुत तपस्या की, तब कृष्ण ने प्रसन्न होकर कहा कि पिता के शत्रु सहस्रार्जुन का शीघ्र ही विनाश करो । १४४०-१४४१ मैंने कहा कि शास्त्रों के मत्र मेरे पास नही है, यह सुनकर राधा के स्वामी ने मुझ पर कृपा की । ४२ उन्होने मुझे अनेक बाण देकर मत्र बता दिये । उसी समय मैंने सहस्रार्जुन को मार दिया । ४३ उसी क्रोध मे मैंने सातों लोको के दुष्टों का संहार किया । बालको और वृद्धो को छोड़कर सबका विनाश किया । ४४ मैंने अनेक राजाओ के सिर काट डाले । एक बार नही, एक सौ एक वार यह कार्य किया । ४५ इससे राजागण मुझसे सामर्थ्यवान नही हुए । नपुंसक समझकर मैंने दशरथ को नही मारा । ४६ फिर नि:सन्तान होने से मुझे उस पर दया आ गई । ४७ उसके पुत्र ने अब शिवधनुष को तोड़कर वीर तूर्य बजाकर मेरे दर्प की गंजना की है । ४८ अब तुम मेरा धनुष हाथों में धारण करो । हे रघुश्रेष्ठ !

शान्ति होइ पर्शुधर कहइ बचन। मोहर बचन तुम्भे शुण हे रघुराण१४८०
मोर कोदण्डरे जेबे देइ पारु गुण। सउमित्री बोलन्ति हे शुण पर्शुराम१४८१
तु पछे आम्भकु जिण करिण संग्राम। तोर संगे बाद आम्भर नोहे जाण ८२
ब्राह्मणंकु क्षत्रीपणे आम्भे से न गणु। तोर भाषामान सहि अछु तेणु ८३
शुणिण पर्शुराम कहइ कोप करि। ब्राह्मणकु क्षत्रीय़ नुहन्ति जे बेसरि ८४
तप बळे आम्भे जुद्ध करिण मारिबु। नोहिलेक श्यापेक देइण संहारिबु ८५
आगहुँ दशरथंकु मारि थिले मुहिँ। ए कथा मानंकु मुहिँ सहन्तिटि कि काहिँ ८६
शत्रुतारे कृपा करिबा अनुचित। ए बचन शुणिण कहन्ति रघुनाथ ८७
लक्ष्मण क्षीर कण्ठ ठारे जे हुअ कोप। पर्शुराम कहइ जे बिष कण्ठरूप ८८
लक्ष्मण कहन्ति जे नोहिलु महादेव। आम्भ संगे जुद्धरे त जश न दिशिब ८९
रघुनाथ कहन्ति शुण हे पर्शुराम। लक्ष्मण बचनरे नुह तुम्भे तम१४९०
मोते कह किस तु करिअछु आज्ञा। से कथाकु करिबि मुँ न करि अबज्ञा१४९१
श्रीरामचन्द्र बचन पर्शुराम शुणि। धनुकु बढ़ाइण देला भृगुमणि ९२
कोदण्डे जेबे राम देइ पारु गुण। तेबे सिना जाणिबा तोर बीर पण ९३
शराशन धरिथिला पर्शुराम हस्त। दक्षिण करेता हा धरिल रघुनाथ ९४
गुण देबाकु तहुँ लदिलेक पाद। देखिकरि पर्शुराम मनरे बिषाद ९५

मैं तुम्हारे दोषों को क्षमा कर रहा हूँ। ७९ तब परशुधर ने शान्त होकर कहा हे रघुराज! आप मेरी बात सुनिए। १४८० यदि आप मेरे धनुष पर प्रत्यञ्चा चढा सके ·· ! तभी लक्ष्मण ने कहा हे परशुराम ! सुनो। १४८१ तेरे साथ हमारा विवाद नही है, भले ही तू बाद मे हमें युद्ध में जीत ले। ८२ मै ब्राह्मणों की गणना वीरता मे नही करता, इसी से तेरी बाते सहन कर रहा हूँ। ८३ यह सुनकर परशुराम ने क्रुद्ध होकर कहा। ब्राह्मणो की समता क्षत्री नही कर सकते। ८४ हम तप बल से युद्ध करके मार देगे। नहीं तो श्राप देकर सहार कर दूँगा। ८५ मै दशरथ को पहले ही यदि मार देता तो यह बाते मुझे सहन न करनी पड़ती। ८६ शत्रु पर कृपा करना अनुचित है। यह बात सुनकर रघुनाथ जी बोले। ८७ तुम दुधमुहे लक्ष्मण से कोप कर रहे हो। परशुराम ने कहा कि उसका रूप तो विषकण्ठ सा है। ८८ लक्ष्मण ने कहा कि मै महादेव नही हूँ। हमारे साथ युद्ध करने से यश नही दिखाई देगा। ८९ रघुनाथ जी ने कहा हे परशुराम ! सुनो। लक्ष्मण की बातो से तुम क्रुद्ध मत हो। १४९० तुम मुझसे कहो। क्या आज्ञा है ? मै उसका पालन करूँगा। अवज्ञा नही करूँगा। १४९१ श्रीरामचन्द्र के वचन सुनकर भृगुशिरोमणि परशुराम ने धनुष को बढ़ा दिया। ९२ उन्होने कहा यदि तुम धनुष पर प्रत्यचा चढ़ा दोगे तो मै तुम्हे वीर समझूंगा। ९३ परशुराम हाथ में धनुष लिए थे। रघुनाथ जी ने उसे दाहिने हाथ से ले लिया। ९४ प्रत्यचा चढ़ाने के लिये उन्होंने उस पर पैर

एते बोलि श्रीराम क्रोधरे जरजर । जणागला एबे चण्डाळ बुद्धि तोर ६५
सीतया तोहर जे दुहिता संगे सरि । किम्भूत बचन जे बोइलु पर्शुधारी ६६
बिचारिछु कि मने मुहिँ अटे बड़ । राजा होइ छेदिला तोहर पिता शिर ६७
एहि ठारे तोर निअन्ति निश्चे प्राण । गो ब्राह्मण केबे मुँ नमारइ पुण ६८
जातिरे जति तुरे राजार आश्रित । तप करिबा लोक धरिछ क्षत्री बृत ६९
तोहर धनु धरि करिबा आज जुद्ध । केउँ गोलोक कृष्ण रखिब तोते आज१४७०
मति भोळ होइकि न पारु कथा चेति । पूर्बर कथामान पाशोरि कि पर्शुपति१४७१
शुणिकरि पर्शुराम क्रोधरे अनाइला । धृब मण्डळरे शिर लागुछि देखिला ७२
श्रीराम बोइले बेक छेदिबि तोहरे । नोहिले कि ऋषि आज जिबु तु सजरे ७३
आज ठारु क्षत्रीपण तोर जे सरिब । बनस्तरे तप करि दिन न सरिब ७४
पर्शुराम बोइले शुणरे रघुनाथ ।चारि भाइ किम्पा नोहिल मान्य कृत्य ७५
श्रीराम बोइले पर्शु तपिगण नोहु । क्रोधकु देखि आम्भे ओळग त नोहु ७६
तोते ओळग हेले हुअन्ता परमादानाम शिरि सम्पत्ति तोर के हरन्ता आज ७७
तोते क्रोध नाहिँरे पर्शुधारी ।नोहिले कि एते कथा कहन्तु मोते बळि ७८
गो ब्राह्मण केबे न करइ नाश । तेणु जे तोहर मुँ जे क्षमा कलि दोष ७९

मुझे क्या प्रदान करेगे । ६४ ऐसा कहकर श्रीराम क्रोध मे भर गए। उन्होने कहा अब तुम्हारी चाण्डाल बुद्धि का ज्ञान मुझे हो गया । ६५ सीता तेरी कन्या के समान है, फिर तुमने ऐसी बात कैसे कही । ६६ तुम अपने मन में अपने को बड़ा समझते हो । राजा होकर उसने तेरे पिता का सिर काट डाला । ६७ मैं यही पर तुम्हारे प्राण ले लेता परन्तु मै कभी भी गऊ तथा ब्राह्मण को नही मारता । ६८ जाति से तू यती है, तप करने वाले व्यक्ति ने राजा के आश्रित क्षत्री-वृत्ति को धारण किया है । ६९ तुम्हारा धनुष उठाकर आज मैं युद्ध करूँगा। आज कौन से गोलोक का कृष्ण तेरी रक्षा करेगा। १४७० बुद्धि की उन्मत्तता से तू बात नही समझ पा रहा। अरे परशुधर ! क्या तू पूर्वकाल की कथित बातों को भूल गया । १४७१ यह सुनकर परशुराम ने कोपदृष्टि से देखा। उन्होने उनके शिर को ध्रुवमण्डल से लगा देखा । ७२ श्रीराम ने कहा कि मै तेरी गर्दन काटदूंगा । अरे ऋषि क्या आज तू यहाँ से बचकर जा सकेगा । ७३ आज से तेरी वीरता समाप्त हो जाएगी । वनप्रान्त में तपस्या करते तेरे दिन नही बीतेंगे । ७४ परशुराम ने कहा अरे रघुनाथ ! सुन । तुम चारों भाइयों ने मान्यधर्म क्यों नही किया । ७५ श्रीराम ने कहा अरे परशुधर ! तुम्हारी गणना तपस्वियों मे नही है । हम क्रोध को देखकर प्रणाम नही करते । ७६ तुम्हे प्रणाम करने से प्रमाद हो जाता, फिर तुम्हारे नाम, श्री सम्पत्ति का आज हरण कौन करता ? । ७७ अरे परशुधर ! मै तुझसे क्रुद्ध नही हूँ नही तो क्या तुम मुझसे इतनी बड़ी-बड़ी बाते करते । ७८ मैं गो, ब्राह्मणो का नाश कभी नही करता इससे

पर्शुराम गारिमा भांगिबे एहि क्षणि ।
एथि पाइँ किम्पा चिन्ता करन्ति ठाकुराणी१५१०
एजेउँ कथा मनरे बिचार करुछन्ति ।एठारे मोते सपतणी करिबे बिचारन्ति१५११
से कथा आउ केबे नुहइ जे पुण ।मोर कहिबा बाणी जानकीरे कहिब पुण १२
एहा शुणि मनमाया बेगे चळि गले । जानकीर आगरे जाइण कहिले १३
बोइले तुम्भ भग्नींकि पचारिलु जाइ । से बोइले पर्शुराम ओगाळि अछइँ १४
आज तार गारिमा भांगिबे जे ज्येष्ठ स्वामी पुणि ।
अजोध्या देशकु बिजे करिबे एहि क्षणि १५
जेउँ कथा जनित बिचारन्ति मने । से कथा केबे नोहिब शुण गो साबधाने १६
शुणि करि जानकि हरष मन हेले ।तु कार भाषा स्वामींकि बोइलि बोइले १७
एथु अनन्तरे जे श्रीरामचन्द्र धनु धरि।दक्षिण कर्ण परिजन्ते आणिले ओटारि १८
पर्शुराम नाराच देलेक बढ़ाइ । ताहा नेइण गुणरे बसाए रघुसाइँ १९
हसि आज्ञा दिअन्ते बिन्धिबा काहिँकि । इहलोक परलोक बोलिब जहिँकि१५२०
पर्शुराम बोइले श्रीराम परलोक भेद । ए मोहर पाप भारा बेग करि छेद१५२१
ब्राह्मण होइण मुं क्षत्री बृत्ति कलि । अहन्ता करि अनेक जीब मुं मरिलि २२
स्वर्ग गमनरे पाप लभिब अवश्य । तुम्भे रघुनाथ ताहा बेग करि नाश २३

वह इसी क्षण परशुराम के घमण्ड को चूर्ण करेंगे। स्वामिनी इसके लिये चिन्ता क्यों कर रही है। १५१० वह जो बात मनमें सोच रही है कि वह यहाँ मेरे लिये सौत कर रहे है, वह बात कभी भी नही होगी। मेरी बात तुम जानकी से कह दो। १५११-१२ यह सुनकर मनमाया शीघ्र ही चली गई और उसने जानकी के समक्ष जाकर कहा। १३ उसने कहा कि मैंने आपकी बहन से जाकर पूँछा, उन्होंने कहा कि परशुराम ने उन्हें ललकारा है। १४ आज बड़े भाई उनके दर्प का दलन करेंगे और इसी समय अयोध्या देश को प्रस्थान करेंगे। १५ जो बात आप मन मे सोच रही है, वह बात कभी नही होगी। इसे आप सावधानी से सुन ले। १६ यह सुनकर जानकी का मन प्रसन्न हो गया और वह कहने लगी कि मैंने स्वामी की व्यर्थ ही निन्दा की। १७ इसके पश्चात् श्रीराम ने धनुष धारण करके उसे दाहिने कर्ण पर्यन्त खीच लिया। १८ परशुराम ने तब उन्हें बाण दिया। रघुनाथ जी ने उसे लेकर प्रत्यञ्चा पर चढा दिया। १९ फिर उन्होने हँसते हुए पूँछा कि अब हम किसका बेधन करे। आप इस लोक या परलोक मे कही भी कुछ बताइये। १५२० परशुराम ने कहा हे श्रीराम परलोक का भेदन करो। मेरे इस पाप के भार का छेदन कर दो। १५२१ ब्राह्मण होकर मैंने क्षत्रीवृत्ति का पालन किया, अभिमान करके मैंने बहुत जीवों का संहार किया है। २२ स्वर्ग गमन में पाप अवश्य लगेगा। हे रघुनाथ ! आप

एथु अनन्तरे तुम्भे शुण गो शाकम्बरी ।जानकि आगरे दासी कहिले जाइ करि ९६
देख गो सीता तो स्वामी कोदण्ड धरे जाइ करि ।
तो संगकु सपतणी निश्चे हेला सहि ९७
शुणि करि सीतय़ा विचारे मने पुण ।किछि दिन जाइ नाहिँ निकटे हेला जाण ९८
मोहर पिता जे धनुकु समर्पिले । शिव धनु भांगिबारु मोते से बिभा हेले ९९
एबे सेहि कथा बाटरे हेला पुण । धनु जेबे धरिबे कन्याकु बिभा जाण१५००
मासे पक्षे मोते बिहि देला नाहिँ सुस्थ । पुणि संगे संगे कष्ट देले दइबत१५०१
एहि राम सत्य कले कुळदीप छुइँ । ए जे धनु धरिछन्ति आगुसार होइ २
विटप पुरुषंकर ए रूपे बिधान । कि रूपे श्रीरामंकु बोलन्ति भल जन ३
एमन्त बोलिण मने सीतय़ा बिचारि । दासी बोइले चळ गो बेगकरि ४
उर्मिळा भउणीकि पचारि मोर आस । आज धनु धरिबार किस जे भबिष्य ५
शुणिण मनमाय़ा रथरु ओह्लाइला । लक्ष्मणंक रथरे बेगे से चढिला ६
उर्मिळा आगरे से प्रबेश हेले जाइ । बोइले ज्येष्ठ भग्नी देले पठिआइ ७
आज जे श्रीरामचन्द्र धरिले धनु पुण । केवण कथा एत नजाइ बारण ८
उर्मिळा बोइले न जाणन्ति सती निकि ।
पर्शुराम ओगाळि जे अछन्ति स्वामीकि ९

रख दिया। यह देखकर परशुराम के मन में विषाद हो गया। ९५ हे शाकम्बरी ! सुनो। इसके पश्चात् दासी ने जाकर जानकी से कहा, अरी सीता ! देखो। तुम्हारे स्वामी ने जाकर कोदण्ड उठा लिया है। अरी सखी ! तेरे साथ के लिये सौत निश्चित हो गई। ९६-९७ यह सुनकर सीता ने मन मे विचार किया। कुछ दिन भी नही बीते और यह शीघ्र ही हो गया। ९८ मेरे पिता ने धनुष समर्पित किया था। शिव धनुष को तोड़कर उन्होने मुझसे विवाह किया। ९९ अब मार्ग में वही बात हो गई। यदि धनुष धारण किया तो निश्चय ही विवाह होगा। १५०० एक माह तथा एक पक्ष भी भाग्य ने मुझे स्वस्थ नही रक्खा। उसने पुनः मुझे कष्ट दिया है। १५०१ इन्ही राम ने कुल दीपक का स्पर्श करके प्रतिज्ञा की थी और वहाँ आगे बढ़कर धनुष उठा रहे है। २ यह तो जार पुरुषो का लक्षण है। लोग श्रीराम को अच्छा कैसे कहते है। ३ ऐसा कहती हुई सीता मन मे विचार करने लगी। दासी ने उनसे शीघ्र ही चलने को कहा। ४ वह बोली कि मेरी बहन उर्मिला से पूंछ आओ। आज धनुष धारण करने का भविष्य क्या है। ५ यह सुनकर मनमाया रथ से उतरी और शीघ्र ही लक्ष्मण के रथ पर जाकर चढ़ गई। ६ वह उर्मिला के पास जा पहुँची और बोली कि तुम्हारी बड़ी बहन ने मुझे भेजा है। ७ आज श्रीराम ने पुनः धनुष धारण किया है, यह क्या बात है। कुछ समझ मे नही आ रहा। ८ उर्मिला ने कहा क्या सती नही जानती है कि परशुराम ने स्वामी को ललकारा है। ९

बेदमती झरामती नाम बोलि देइ । कमळा अंशरे बेदमती जात होइ ३६
राधिका अंशरे जात हेले झरामती । बासुदेव श्रीकृष्ण भाबिले बेनि सती१५४०
तेणु बेदमती हेले जनक घरे जात । ज्येष्ठ भएणीकि बिभा हेल रघुनाथ१५४१
श्रीराम बोइले ज्येष्ठ जेबे सेहि । बिडम्बण कथा किम्बा कहु भृगुसाइँ ४२
पर्शुराम बोइले द्वितीय़ जन्म हेले । तेणु से कनिष्ठ शाळि मोहर होइले ४३
श्रीराम बोइले झरामती नुहे जन्म ।किम्पाइँ बिभा तांकु नोहिल तुम्भे पुण ४४
पर्शुराम बोइले सेथिर कथा अछि । जेते बेळे गदा मोते देळेक श्रीबत्सि ४५
मोते बोइले पाताळ मध्यपुर दैत्य । ए माने मोहर भागे शुण दुति कृष्ण ४६
मुहिँ अवतार होइबि मञ्चे जाइ ।शिब धनुकु भांगि जानकि बिभा होइ ४७
अजोध्याकु आसिबार बेळे मोते पुण । बाटरे भेट हेबु कोदण्ड देबु पुण ४८
कोदण्डकु धरन्ते चिन्हिबु तु मोते । बतिश बर्षे पाताळे जिबु मो संगते ४९
जेते बेळे दुति राधिकाकु बिभा हेबु । से दिन ठारु निश्चिन्ते तप तु करिबु१५५०
श्रीराम शुणिकरि परम तोष हेले । एक अंग जणा गला बोलिण बोइले१५५१
एते कहि रामचन्द्र बिन्धिले जे शर । छेदि पकाइले पर्शुराम पाप भार ५२
उछुडिबा घातरे जे भाजिला कोदण्ड । मध्य ठावरु से जे होइला बेनि खण्ड ५३

झरामती रक्खा था। कमला के अंश से वेदमती उत्पन्न हुई थी। ३८-३९ राधिका के अश से झरामती उत्पन्न हुई थी। दोनों सतियो का प्रेम वासुदेव श्रीकृष्ण पर था। १५४० इसलिये वेदमती जनक के घर में उत्पन्न हुई, वड़ी बहन से रघुनाथ ने विवाह किया। १५४१ श्रीराम ने कहा कि यदि वह बड़ी थी तो हे भृगुनाथ ! यह विडम्बना की बात क्यो कह रहे हो। ४२ परशुराम ने कहा कि दूसरा जन्म होने पर तब वह छोटी साली मेरी होगी। ४३ श्रीराम ने कहा कि झरामती का जन्म भी नही हुआ फिर आपने उससे विवाह क्यों नहीं किया। ४४ परशुराम ने कहा उसमें एक बात है। जिस समय श्रीवत्स नारायण ने मुझे गदा प्रदान की, तव उन्होने कहा हे द्वितीय कृष्ण ! सुनो। पाताल तथा मृत्युलोक के दैत्य यह मेरे भाग में हैं। ४५-५६ मैं मृत्युलोक में जाकर अवतार ग्रहण करूँगा। शिवधनुष को तोड़कर जानकी से विवाह करूँगा। ४७ अयोध्या आते समय तुम मुझसे मार्ग में भेट करके मुझे कोदण्ड प्रदान करना। ४८ कोदण्ड के धारण करने पर तुम मुझे पहचान लेना। बत्तिस वर्ष में मेरे साथ पाताल चलोगे। ४९ जिस दिन दूसरी राधिका से विवाह करोगे। उस दिन से तुम निश्चिन्त होकर तप करोगे। १५५० यह सुनकर श्रीराम अत्यन्त सन्तुष्ट हो गए। उन्होने कहा कि अब एक अंग की बात समझ में आ गई। १५५१ ऐसा कहकर श्रीराम ने बाण छोड़ दिया और परशुराम के पापभार को काट गिराया। ५२ तीव्रतर आघात से वह कोदण्ड मध्यभाग से

परलोक पथ मोर भेद रघुसाइँ। जेमन्ते पातक कुळ मोर नाश होइ २४
स्वर्गपुर गले मोते ओगाळिब पाप। तुम्भे श्रीराम सहिल केते कोप २५
रघुनाथ बोइले तुम्भे गोलोक नारायण। तुम्भर देहे किस पाप जे भिआण २६
जेउँ रूप देखिले देवता निस्तरन्ति शयन।बिष्णु देखिवाकु लागइ तांकु भ्रान्ति २७
अरेक शयन जे नारायण कले। सहस्र बरषरे दर्शन तांकु देले २८
सेहि दिनु जन्मिण तुम्बे हेल बड़। रिपुवन्त पुरुष नुहन्ति शान्त शीळ २९
पर्शुराम बोइले तुम्भे शुण दाशरथि। तामस पण न थिले साध्य नोहे पृथ्वी१५३०
शान्तशीळ हेले जाण पड़े परमाद। सेथिर सम्पाद शुण तुम्भे रघुनाथ१५३१
दुष्ट पण करि मुं सपत पुर साधि। दुष्ट देखिले मुहिँ गो ब्राह्मण छेदि ३२
देवताए दुष्टपण मोह ठारे कले। एहि गदा घातरे अनेक एबे मले ३३
मुहिँ एका मो संगे नाहान्ति केहि पुण। ब्रह्मा शिब बासब नोहिले भाजन ३४
तु जेबे शान्त शीळ होइबु दाशरथि। अनेक लोकंकु पुण निउन हेबुटि ३५
एहि कथा मने रखि थिबु दाशरथि।पाताळ दिगबिजे काळे हेबि मुहिँ साथी ३६
तोर असमय काळे जगिबि तोर पुर। आहुरि बतिश बरष हिंसा राग मोर ३७
तोहर बिचारे जे कहिलु मोते मन्द। मेरुर बेनि झिअ शुण हे रघुराज ३८

उसे शीघ्र ही नष्ट कर दीजिए। २३ हे रघुनाथ! मेरे परलोक पथ का भेदन कर दीजिए। जिससे मेरे समस्त पाप नष्ट हो जाँय। २४ स्वर्गलोक जाने पर पाप मुझे रोकेगा। हे राम! आपने कितना कोप सहन किया है। २५ रघुनाथ जी ने कहा कि आप गोलोकनाथ भगवान हैं। आपके शरीर में पाप कैसा ?। २६ जिस रूप को देखने पर देवताओं को निरन्तर शयन करने वाले विष्णु की भ्रांति होती है। २७ नारायण ने एक वार शयन किया तव उन्हें हजार वर्ष मे दर्शन प्राप्त हुए। २८ उसी दिन आप जन्म लेकर वड़े हो गए। शत्रुता वाले पुरुष शान्तशील नही होते। २९ परशुराम ने कहा हे दशरथनंदन! आप सुनिए। विना तामसी वने पृथ्वी पर युद्ध न हो पाता। १५३० शांतशील होने से प्रमाद वढ जाता है। हे रघुराज! आप यह वात सुनिए। १५३१ दुष्टता करके मैंने सातों लोकों पर विजय प्राप्त की। दुष्ट देखकर मैंने गऊ ब्राह्मणों का भी विनाश किया। ३२ देवताओ ने मुझसे दुष्टता की। उनमें से अनेक इस गदा के आघात से मारे गए। ३३ मैं अकेला हूं, मेरे साथ अन्य कोई नही है। ब्रह्मा,शिव तथा इन्द्र भी पात्रता मे नही आए। ३४ हे दशरथनंदन! यदि तुम शान्तशील होगे तो अनेक लोगो से न्यून हो जाओगे। ३५ हे दशरथ-नन्दन! अपने मन मे इस वात का ध्यान रखना। पाताल दिग्विजय के समय मैं तुम्हारा साथी वनूंगा। ३६ तुम्हारे असमय मे तुम्हारे पुर की रक्षा करूँगा। मेरी हिंसा क्रोध के वत्तिस वर्ष और शेष हैं। ३७ अपने विचार से आपने मुझे मन्द कहा। हे रघुराज! सुनो मेरु की दो कन्याएँ जिनका नाम वेदमती तथा

तुम्भे ब्रह्ममुनि जमदग्नि ऋषि सुत । पुण पुण प्रशंसा करन्ति रघुसुत ६९
सन्तोषे सुकल्याण करन्ति भृगुपति । देखिकरि नमिले जे सकळ नृपति१५७०
बिश्वामित्र सहिते जेतेक ऋषि थिले । पर्शुराम पादे सर्बे नमस्कार कले१५७१
सैन्य बळ सहिते दशरथ लोमपाद । नमिबारु सन्तोष होइले भृगुराज ७२
श्रीराम बोइले शुण हे ब्रह्मचारी । मातागणे मोसर नमस्कार करि ७३
जनक चारि दुहिता कले धन्य पुण । शुणिण पर्शुराम हरष हेले मन ७४
सुकल्याण समस्तकु पर्शुराम कले । पूर्बर कथामान मनरे चेताइले ७५
बइष्णबा धनु जाहा बिष्णु देइ थिले । रुचिक मुनि ठारे ता जत्नरे थोइले ७६
से धनुकु पर्शुराम श्रीरामंकु देइ । दिब्य अस्त्र अक्षय्र त्रोण समर्पइ ७७
देवशर ब्रह्मशर नाराय्रण शर । शिवशर सहिते देलेक सकळ ७८
बोइले शिव धनुकु धरिले श्रीराम । दुहिता देइ जनक पशिले शरण ७९
मोहर कोदण्डकु धरिले एबे आसि । धनु शस्त्र त्रोण मुं देलि दारशथि१५८०
ए धनु धरि तुम्भे करिब देबकार्य्य । ए शरे समस्तंकु जिणिब रामराज१५८१
केबळ गदा कुठार मो ठारे रहिला ।जनक देले दुहिता मुं देलि शस्त्र चारा ८२

मण्डन ! अब हम पर दया कीजिए। पूर्व पुण्य के बल पर आपके दर्शन हुए है। ६८ हे ब्रह्मर्षि ! आप महर्षि यमदग्निनन्दन है। रघुनन्दन उनकी बारम्बार प्रशसा करने लगे। ६९ भृगुपति परशुराम उन्हे सन्तुष्ट होकर आशीर्वाद देने लगे। यह देखकर समस्त राजाओं ने उन्हे प्रणाम किया। १५७० विश्वामित्र के साथ जितने भी ऋषि थे, उन सबने परशुराम के चरणो में नमस्कार किया। १५७१ सैन्यबल के साथ दशरथ तथा लोमपाद के प्रणाम करने से भृगुराज परशुराम सन्तुष्ट हो गए। ७२ श्रीराम ने कहा हे ब्रह्मचारी ! सुनिए। मेरी माताएँ आपको नमस्कार कर रही है। ७३ जनक की चार पुत्रियाँ आपको धन्य-धन्य कह रही है। यह सुनकर परशुराम का मन प्रसन्न हो गया। ७४ परशुराम ने सबको आशीर्वाद दिया तथा पूर्वकाल की बाते मन में चेत करा दी। ७५ विष्णु ने जो वैष्णव धनुष दिया था, उसे ऋचीक मुनि के यहाँ यत्नपूर्वक रखा गया था। ७६ उस धनुष को परशुराम ने श्रीराम को दिया और अन्य दिव्य अस्त्र तथा अक्षय तूणीर समर्पित किये। ७७ देवशर, ब्रह्मशर, नारायणशर, शिवशर के साथ सब कुछ प्रदान किया। ७८ उन्होने कहा कि श्रीराम ने शिव का धनुष धारण किया। कन्या देकर जनक उनके शरणापन्न हुये। ७९ अब उन्होने आकर मेरे कोदण्ड को धारण किया। मैंने दशरथनन्दन को धनुष, शस्त्र और तूणीर प्रदान किये। १५८० इस धनुष को धारण करके आप देवताओ का कार्य कीजियेगा। हे रामराज ! इस बाण से अब आप सब पर विजय प्राप्त करेंगे। १५८१ केवल गदा और कुठार मेरे पास रह गया है। जनक ने कन्या समर्पित की और मैंने चार शस्त्र समर्पित

स्वर्गपुरे देवताए होइले अनळ। हुळहुळि विअन्ति अपसरा कुळ ५४
पुष्प बृष्टि कले नेइ दुइ राम शिरे। दुन्दुभि बजाइले अनेक प्रकारे ५५
देखिकरि आनन्द होइले पर्शुधर। श्रीरामंकु प्रशंसा कलेक अपार ५६
तुम्भे स्वयं नाराय़ण होइ अछ जात। विष्णु कळा आन केहु हेब सामरथ ५७
ताड़कि मारिबार जाणिलु जेउँ दिन। विचारिलु अवतार हेले भगवान ५८
जहुँ रक्षा कला विश्वामित्र मुनि होए। बिचारिलु रामचन्द्र स्वयं पद्म नेत्र ५९
चरण लागि अहल्य़ा होइला मुकत। बिचारिलु अवतार होइले रघुनाथ१५६०
शिब धनु जेउँ दिन कल आमञ्चन। बिचारिलु श्रीराम साक्षाते जनार्द्दन१५६१
तुम्भ दरशन हेला पितृ भकित बळे। ए मोहर पाप नाश एते काळे ६२
निश्चय़े जाणिलु तुम्भे विष्णु अबतार। एबे सिना नाश हेब अबनिर भार ६३
चळ तुम्भे अजोध्याकु बोले पर्शुधर। एहा शुणि श्रीराम जे करन्ति बिचार ६४
गोलोक कृष्ण ए होइछन्ति जात। मोते जिणि सामरथ अटन्ति एहुत ६५
एते भाळि आनन्द होइले रघुमणि। संगते भरथ लक्ष्मण शतृघन घेनि ६६
भृगुपति चरणरे कले नमस्कार। जाणिले अंगरु क्रोध गलाणि एहार ६७
भो भृगुकुळ मण्डन कर मोते दय़ा। पूर्ब पुण्य बळे देखिलि तोर काय़ा ६८

दो खण्डो में होकर टूट गया। ५३ स्वर्गलोक मे देवता उल्लसित हो गए अप्सराये मांगलिक ध्वनि करने लगी। ५४ उन्होने फूल लेकर दोनो रामो के सिरों पर पुष्प वर्षा की तथा नाना प्रकार से दुन्दुभी वजाने लगे। ५५ यह देखकर परशुधारी प्रसन्न हो गए। उन्होने श्रीराम की भूरि-भूरि प्रशसा की। ५६ वह बोले आप स्वयं नारायण अवतरित हुए हैं। विष्णु की कला के समक्ष अन्य कौन समर्थ हो सकता है। ५७ जिस दिन ताड़का का वध हुआ, तभी मैंने समझ लिया था कि भगवान का अवतार हो गया है। ५८ जव आपने महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की, तभी मैं समझ गया कि श्रीरामचन्द्र स्वय कमल लोचन भगवान है। ५९ चरण लगने से अहिल्या मुक्त हो गई, तभी मैंने विचार किया कि रघुनाथ अवतरित हो गए है। १५६० जिस दिन शिव का धनुष आपने कर्षित किया, मैं तभी समझ गया कि श्रीराम साक्षात्‌जनार्दन है। १५६१ पितृभक्ति के बल से आपके दर्शन हुए। इस समय हमारे पापों का नाश हो गया। ६२ निश्चितरूप से मैं समझ गया कि आप विष्णु के अवतार हैं। अब पृथ्वी का भार निश्चय ही नष्ट हो जाएगा। ६३ परशुधर ने कहा कि अब आप अयोध्या को प्रस्थान कीजिये। यह सुनकर श्रीराम विचार करने लगे। ६४ यह गोलोक के कृष्ण अवतरित हुए हैं, इनमे मुझे भी जीतने की सामर्थ्य है। ६५ ऐसा सोचकर रघुमणि श्रीराम प्रसन्न हो गए। उन्होने भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को साथ लेकर भृगुपति के चरणो मे नमस्कार किया। वह समझ गए कि अब इनके शरीर से क्रोध चला गया है। ६६-६७ उन्होने कहा हे भृगुकुल-

पर्शुराम क्षत्रीक जिणिले तोर स्वामी। तेणु से पर्शुराम प्रसन्न हेले पुणि ९८
श्रीराम धनु भांगिबारु निज स्थाने गला। हरषे बहुत शस्त्र श्रीरामंकु देला ९९
तुम्भे चिन्ता करुथिल दुहिता देब बोलि।
एबे तोर मन तोष हेला गो सुन्दरी१६००

बरजात्रीकं अजोध्यारे प्रबेश ओ बन्धुजनंक बिदा करिबा

समस्ते मनरे जे सन्तोष पुण हेले। बीरतुर बजाइण सेठारु चळिगले१६०१
सैन्यंकर हरष जे के करिब अन्त। तेणु श्रीराम जिणिले जमदग्नि सुत २
से दिन रहिले जे बळि बनरे जाइ। आर दिन गले जे गंगा पारि होइ ३
गोमती नदी कूळरे से दिन रहिले। रजनी प्रभातरु सेठारु चळि गले ४
अजोध्या राज्यर लोक बाटरे जे थिले।
श्रीराम लक्ष्मण सीता आसिबार शुणिले ५
अजोध्या राज्यरे जाइ दूतहिँ कहिले। घरे घरे सुबर्ण कळस बसाइले ६
नेतर चिराळ जे उड़इ फरहर। प्रजानने चाहुँ छन्ति श्रीराम देखिबार ७
द्वारे द्वारे कदळी दुइ दुइ बृक्ष। पूर्णकुम्भ नटिकाळ आदि रोहि माछ ८
बिबिध बसन जे मण्डिळे सर्बघरे। नाना पुष्पमाळ जे लम्बाइ सर्ब ठारे ९

सुनो। ९७ तुम्हारे स्वामी ने पराक्रमी परशुराम को जीत लिया है। उस पर वह परशुराम प्रसन्न हो गये। ९८ श्रीराम के धनुष तोड़ने पर वह अपने स्थान को चले गये और उन्होने प्रसन्नता से श्रीराम को बहुत शस्त्र समर्पित किये। ९९ आप चिन्ता कर रही थीं कि वह कन्या प्रदान करेंगे। अरी सुन्दरी! अब तो तुम्हारा मन सन्तुष्ट हो गया। १६००

बारात का अयोध्या में प्रवेश तथा बन्धु-बान्धवों की विदाई

सभी लोग मन मे संतुष्ट हो गये और वीरतूर्य बजाकर वहाँ से चल दिये। १६०१ सेना के हर्ष को कौन समाप्त कर सकता था। तभी श्रीराम ने यमदग्नि नन्दन को जीत लिया। २ वह उस दिन जाकर वलि वन मे रुके और अगले दिन गगा के पार होकर उस दिन गोमती नदी के तट पर रुके। रात्रि व्यतीत होने पर प्रातःकाल वहाँ से चल दिये। ३-४ अयोध्याराज्य के लोग जो मार्ग में थे, उन्होने श्रीराम, लक्ष्मण तथा जानकी के आने की बात सुनी। ५ दूतों ने अयोध्याराज्य मे जाकर कहा। घर-घर में कलश स्थापित किये गये। ६ रेशमी पताकाएँ फर-फर फहरा रही थी। श्रीराम के दर्शन के लिये प्रजाजन प्रतीक्षा कर रहे थे। ७ द्वार-द्वार पर केले तथा दो-दो पूर्णकुम्भ, नारियल तथा रेहु मछली आदि रख दिये गये। ८ सब घरो को विविध प्रकार के वस्त्रों से सजाया गया। सभी स्थानों पर अनेक प्रकार की पुष्प मालाएँ लटका दी गईं। ९

दुइ कथा समानरे हेला रघुनाथ। शुणि करि श्रीराम होइले हरष ८३
पर्शुराम बोइले मुं जाउछि तप स्थान।वीर वाजा बजाइ चळ अजोध्या भुवन ८४
आज ठारु भय तेज्या कले देवताए। दुष्ट असुरंकु नष्ट कर राम राये ८५
एते बोलि पर्शुराम तपस्थाने गले। निज आश्रमरे जाइ प्रवेश होइले ८६
बळरामदास जे नवररे थिला। सामान्य जीब गोटिए होइण देखिला ८७
पर्शुराम श्रीरामंक चरणे नमिला। मानबे जन्म दिअ बोलिण बोइला ८८
पर्शुराम श्रीराम भेट हेवार कथा। बळराम दासकु रख हे चउमया ८९
एथु अनन्तरे शुण गो भगवती।पर्शुराम जिबारु जाहा कले दाशरथि१५९०
पर्शुराम श्रीरामंकु क्षत्री वृत्ति देइ सेथि।
निश्चिन्तरे बने जाइ तपस्या करन्ति१५९१
देखिण दशरथ होइले आनन्द। राजागण सहिते सकळ ऋषि वृन्द ९२
पदाति सैन्यबळ जेते सेथि थिले।पर्शुरामंकु जिणिबारु आनन्द सर्बे हेले ९३
एथु अनन्तरे जे श्रीरामचन्द्र गले। वसन्त वर्ण रथरे जाइण बिजे कले ९४
भरथ शत्रुघन आवर लक्ष्मण। जे जाहा रथरे जाइ बसिले बहन ९५
ऋषि विप्र पदाति जेतेक सैन्यबळ। समस्ते आरोहिले जान सुकाशन पर ९६
एथु अनन्तरे सीतया पाशे बेगे जाइ। सखीमाने कहिले शुण गो प्राण सहि ९७

किये है। ८२ हे रघुनाथ! दोनों बातें समान हो गईं। यह सुनकर श्रीराम प्रसन्न हो गये। ८३ परशुराम ने कहा मैं तपस्थान को जा रहा हूँ, आप वीर-वाद्य बजाकर अयोध्या देश को प्रस्थान करें। ८४ आज से देवताओं ने भय त्याग दिया है। हे रामराय! अब दुष्ट असुरों का विनाश करो। ८५ इतना कहकर परशुराम तपस्थान को चले गये और अपने आश्रम में जा पहुँचे। ८६ वलरामदास ने सामान्य जीव होकर भी वहाँ यह देखा। ८७ परशुराम ने श्रीराम के चरणों में नमस्कार करते हुये मानव जन्म देने की याचना की। ८८ परशुराम और श्रीराम के मिलन की कथा समाप्त हो गई। हे चतुर्मुख! आप वलरामदास की रक्षा कीजिये। ८९ हे भगवती! इसके पश्चात् परशुराम के जाने पर दशरथनन्दन ने जो कुछ किया, उसे सुनो। १५९० परशुराम वहाँ पर श्रीराम को क्षत्रीवृत्ति देकर निश्चिन्त होकर वन में जाकर तपस्या करने लगे। १५९१ यह देखकर दशरथ प्रसन्न हो गये। राजाओं के सहित समस्त ऋषि मंडल, पैदल सिपाही, सेना जो भी वहाँ थे, परशुराम को विजित करने पर सभी प्रसन्न हो गये। ९२-९३ इसके पश्चात् श्रीरामचन्द्र वसन्ती रंग वाले रथ पर जाकर विराजमान हो गये। ९४ भरत, लक्ष्मण और शत्रुघन भी शीघ्र ही जाकर अपने-अपने रथों पर विराजमान हो गये। ९५ ऋषि, ब्राह्मण, पैदल सिपाही तथा जितनी भी सेना थी, सब यान तथा सुखासनों पर चढ़ गये। ९६ इसके पश्चात् सीता के पास शीघ्र ही सखियों ने जाकर कहा हे प्राणसगिनी!

दशरथंक पछरे आसन्ति चारि पुए। आगरे श्रीराम पछे शतृघन आए २५
चारि रथ शोभावन दिशे बड तोरा। हस्ती अश्व रथि संगरे होइ मेळा २६
जाबाळि बामदेव बाटरे भेट हेले। मंगळ आरति राजाकु से कले २७
बशिष्ठ बिश्वामित्र कश्यपादि मुनि।
राजा गहण घेनिण आगरे चळन्ति पुणि २८
तांक पछरे जे पुत्र बधू चळि। जानकींक पछरे तिनि भग्नि घेरि २९
दशरथ सुमन्त्र मन्त्रींकि भेदि देले। चारि पुत्र चारि बधू बन्दाण जे कले१६३०
तदअन्ते राजार जेते नरनारी। बिभार काळरे लज्जा नाहिँ जे काहारि१६३१
शुणि करि सुमन्त बेगे चळि गले। चारि भाइंकर रथ जे रुहाइले ३२
बोइले राजन आज्ञा देले पुण। बधूमाने तुम्भर कोळरे बसिबे जाण ३३
रथ घेनि आसिब सारथि धीर धीर। नग्रर नरनारी देखिबे सकळ ३४
शुणिण चारि भाइ दासींकि आज्ञा देले।
जनक दुहिता सीता आगरे जान्तु धीरे ३५
श्रीराम कोळे सीता जाइण बसिले। लक्ष्मी नाराय़णंक प्राय़े शोभा भले ३६
मंगळ आरति बशिष्ठ जाइ कले। अभिषेक जळ देले श्रीराम सीता शिरे ३७
भरत कोळे माळिनी कन्या बसे। साबित्री बेदबर पराए से दिशे ३८

नरनाथ बराबर समारोह के साथ नगर मे प्रविष्ट हुये। २४ दशरथ के पीछे चारो पुत्र आ रहे थे। आगे श्रीराम और पीछे शत्रुघ्न थे। २५ चारो रथ बड़े सुन्दर दिखाई दे रहे थे। हाथी, घोडे, रथ सब एक साथ मिलेजुले थे। २६ जावालि तथा बामदेव से मार्ग मे भेट हो गई। उन्होने राजा की मगला आरती की। २७ वशिष्ठ, विश्वामित्र, कश्यप आदि मुनियो के दल को साथ लिये राजा आगे-आगे चल रहे थे। २८ उनके पीछे पुत्रवधुएँ चल रही थी। जानकी के पीछे तीनो बहने घेरे हुए थी। २९ दशरथ ने सुमन्त मत्री को भेज दिया। उन्होंने चारो पुत्रो तथा चारों बधुओ की पूजा की। १६३० इसके उपरान्त राजा के जितने नर-नारी थे विवाह के समय में किसी को लज्जा नही थी। १६३१ आदेश सुनकर मत्री सुमन्त शीघ्र ही चले गए और उन्होने चारो भाइयों के रथो को रुकवाया। ३२ उन्होने कहा कि राजा ने वधुओ को आप लोगो की गोद में बैठने की आज्ञा दी है। ३३ सारथी धीरे-धीरे रथ लेकर आएगा। नगर के समस्त नर-नारी दर्शन करेगे। ३४ यह सुनकर चारों भाइयों ने दासियों को आज्ञा दी कि जनक तनया सीता आगे प्रस्थान करे। ३५ सीता जाकर श्रीराम की गोद में बैठ गई, वह लक्ष्मीनारायण की भाँति शोभायमान थे। ३६ वशिष्ठ ने जाकर मगला आरती की। उन्होने श्रीराम और सीता के सिर पर अभिषेक का जल डाला। ३७ भरत की गोद मे मालिनी कन्या बैठी। वह सावित्री तथा ब्रह्मा के समान दिखाई दे रहे थे। ३८

मुकुता द्रोणमान दर्पण चामर। चन्द्र किरणकु जिणिण जे पटान्तर१६१०
वड़ दाण्ड बिचित्र दिशइ शोभावन। दाण्ड पहँराइण जे पवित्र सिञ्चिण१६११
कर्पूर धूळि संगे दिअन्ति गन्ध पुष्प। खाल डिंगर समतुल कलेक बिशेष १२
एसन समय़रे शुभिला टमक। हरष होइले जे अजोध्या सर्बलोक १३
के बोलइ निकटरे बाजिला निशाण।
सीता घेनि श्रीराम जे आसिबे एहिक्षण १४
एहि समय़रे दिशिले बळ पुण। अश्व गज पदाति रथ रथि जाण १५
लोमपाद संगतरे जेतेक राजन। समस्ते हरषरे आसन्ते रथरेण १६
शते हस्ती चढिण लोमपाद पोए आसि।ऋषिगण समस्ते चढिण छन्ति हस्ती १७
आगदण्ड पदातिरे कोदण्ड काण्ड घेनि। एथु अनन्तरे शुण गो काहाणी १८
सरजु नदीकि पारि होइले सैन्यबळ। कटकरे पशन्ते अतिहिँ चहळ १९
नग्ररे नरनारी देखिण आसन्ति। एहि से लोमपाद बोलिण बोलन्ति१६२०
थोकाए दूररे दिशिले सर्ब ऋषि। ताहांक संगे गहणे समस्ते आसन्ति१६२१
ताहांकर पछरे बिजय़े दशरथ। शते छत्र धराइ आसइ नरनाथ २२
पाट छत्र टेकान्ते अदृश्य छाय़ापति। देखिण नरलोके प्रशंसा करन्ति २३
रथ गज अश्व पदाति निरन्तर। सम्भर्बर नबरे पशिले नृपबर २४

मुक्ताओ के तोरण, दर्पण, चामर चन्द्रमा की किरणो को भी जीत रहे थे। अर्थात् चन्द्रकिरण भी उनकी समता नही कर पा रही थी। १६१० राजमार्ग विचित्र प्रकार से शोभायमान दिख रहा था। मार्ग को झाडकर पवित्र सिंचन कर दिया गया था। १६११ कर्पूर चूर्ण के साथ गन्ध-पुष्प दिये जा रहे थे। ऊँची नीची भूमि को समतल कर दिया गया था। १२ इसी समय टमक का घोष सुनाई पड़ा। अयोध्या के सभी लोग प्रसन्न हो गए। १३ कोई कहता था कि निशान पास ही मे बजा है, श्रीराम इसी क्षण जानकी को लेकर आएँगे। १४ इसी समय सेना दिखाई देने लगी। अश्व, हाथी, पैदल सिपाही तथा रथी सभी थे। १५ लोमपाद के साथ जितने भी राजा थे सब रथ से आ रहे थे। १६ सौ हाथियों पर चढकर लोमपाद के पुत्र आ रहे थे। सारा ऋषि समुदाय हाथियो पर बैठा था। १७ आगे की पक्ति मे पैदल सिपाही धनुष बाण लिये थे। हे भगवती ! इसके पश्चात् की कहानी सुनो। १८ सरयू नदी को सेना पार कर गई। दुर्ग मे घुसते ही अत्यन्त चहल-पहल मच गई। १९ नगर के नर-नारी देखने को आ गए तथा कहने लगे कि यह तो लोमपाद हैं। १६२० थोड़ी दूर पर ही उन्होने समस्त ऋषियो को देखा, उनके साथ सारा दल-बल आ रहा था। १६२१ उनके पीछे दशरथ आ रहे थे। नरनाथ सौ छत्रों को लगाकर आ रहे थे। २२ पाट छत्र लग जाने से सूर्य नही दिखाई दे रहा था। उन्हे देखकर लोग प्रशसा करने लगे। २३ रथ, रथी घोड़ों तथा पैदल सिपाहियो के साथ

दूर्बाक्षत नेइण बन्दान्ति नारीगण। सीतय़ांकु प्रशंसा करन्ति सर्बे पुण ५५
भलारे शुभ सुन्दरी तु जनक कुमारी। श्रीरामर पाइँकि बिधाता थिला गढि ५६
भाइ भउणी प्राय़े देखिण प्रशंसन्ति। पूर्बर भाग्ये बिधातार घटणा एहुटि ५७
नग्रर दाण्डरे बाजे बीर बाजा। सिंह द्वार निकटरे प्रबेश हेले राजा ५८
दशरथ राजन पाटराणीमाने। रथरु उतुरि भितरे चळे तेणे ५९
आगरे कैकय़ा पछरे कउशल्या। तांक पछे सुमित्रा सकळ राणी त्वरा१६६०
सकळ राणी पछे चळन्ति दासीगण। बिजय़ कले जाइ अन्तःपुरे पुण१६६१
ताहांकर पछरे चळिले चारि बधू। रथरु ओहलाइ चळन्ति बिधि मते सबु ६२
आगरे जानकी मध्यरे माळिनी। तांक पछे उर्मिला शुकीर्त्ति चळे पुणि ६३
अन्तःपुर मध्यरे होइले प्रबेश। नग्र देखि जानकी चारि भग्नी तोष ६४
हुळहुळि शबद लुभइ घन घन। चारि भाइ गले आग पछे एबे पुण ६५
भितरपुरे जाइ कनक मण्डपरे। बिजय़ कले राम भाइंक संगरे ६६
सेठारु दासीमाने मणाइँ घेनि गले। प्रबाळ घररे नेइण बसाइले ६७
एथु अनन्तरे दशरथ राए। बशिष्ठ बिश्वामित्रंकु घेनिण बिजय़े ६८
कनक मण्डपरे बसिले से जाइ। सुमन्त मन्त्रीकि ड़काइ राजा कहि ६९

देखकर प्रशंसा कर रहे थे और नारियों का समुदाय आनन्द से मागलिक ध्वनि कर रहा था। ५४ नारियाँ दूर्वाक्षत लेकर पूजा कर रही थी और सब सीता की प्रशंसा कर रही थी। ५५ हे सुन्दरी ! जनक कुमारी तुम्हारा कल्याण हो। विधाता ने तुम्हे श्रीराम के लिये गढ़ा था। ५६ भाई बहनो के समान देखकर सब प्रशसा कर रहे थे और कह रहे थे कि पूर्व भाग्य से विधाता ने यह घटना घटी। ५७ नगर के मार्ग में वीर वाद्य बज रहा था। राजा सिहद्वार के निकट प्रविष्ट हुये। ५८ तब पटरानियो के साथ राजा दशरथ रथ से उतर कर अतःपुर में चले गये। ५९ आगे-आगे कैकेयी पीछे कौशल्या और उनके पीछे सुमित्रा के साथ समस्त रानियाँ शीघ्रता के साथ चली। १६६० समस्त रानियों के पीछे दासियाँ चलती हुई अतःपुर में जा पहुँची। १६६१ उनके पीछे चारों बधुएँ तथा रथ से उतरकर सभी विधान के अनुसार चलने लगी। ६२ आगे जानकी मध्य में मालिनी और उनके पीछे उर्मिला तथा सुकीर्ति चल रहीं थी। ६३ वह अतःपुर के मध्य में प्रविष्ट हुईं। नगर देखकर जानकी आदि चारों बहने संतुष्ट थी। ६४ मागलिक ध्वनि तीव्र गति से सुनायी दे रही थी। आगे-पीछे होकर चारों भाई भी गये। ६५ श्रीराम भाइयो के साथ अतःपुर मे जाकर स्वर्ण मण्डप मे विराजमान हो गये। ६६ वहाँ से दासियाँ उन्हे मनाकर ले गई और उन्हे प्रबाल गृह में लेकर बैठा दिया। ६७ इसके पश्चात् राजा दशरथ वशिष्ठ तथा विश्वामित्र को लेकर उपस्थित हुये। ६८ वह कनक

बशिष्ठ मंगळ आरति पुण कले । अभिषेक जळ बर कन्यांक शिरे देले ३९
लक्ष्मणंक रथरे होइले प्रबेश । उर्मिळा लक्ष्मण कोळरे बसेत१६४०
ईश्वर पार्वती प्रायेक शोभा पाइ । देखिण बशिष्ठ सेठारे हेले जाइ१६४१
मंगळ आरति मुनि बेगे कले । अभिषेक जळ तांक शिरे देले ४२
शतृघन रथरे मिळिले जाइ पुण । सुकीर्त्ति शतृघन बसिबा देखिण ४३
मंगळ आरति बशिष्ठ सेथि कले । अभिषेक जळ शिररे नेइ देले ४४
मंगळ आरति सारिले अभिषेक । तदन्ते बशिष्ठ चळिले राजा पाश ४५
दशरथ आगे कहिले सर्व बिधि । शुणिण सन्तोष हेले नृपनिधि ४६
रामलक्ष्मण भरत शतृघन चारि । रहुबरे बसिण गले नग्र फेरि ४७
श्रीरामंक कोळे अछन्ति देबी सीता । बिष्णुंकर कोळे जथा बरुण दुहिता ४८
लक्ष्मण कोळरे उर्मिळा छन्ति बसि । हर गउरी पराए बेनि जने दिशि ४९
भरत कोळरे माळिनी कन्या बसि । वेदबर साबित्री पराए से दिशि१६५०
लक्ष्मणंक कोळरे सुकीर्त्ति जे पुण । जे सनेक अनन्त अतुट नारी जाण१६५१
श्रीरामंक पछरे चळन्ति तिनि भाइ । स्वर्ग मर्त्य तिनिपुर सुन्दर दिशइ ५२
चतुर्द्धा मूरति जेसने नारायण । हरषरे चारि दाण्डरे बिजे पुण ५३
नग्रर नरनारी देखिण प्रशंसन्ति । आनन्दरे नारीगण हुळहुळि द्यन्ति ५४

वशिष्ठ ने उनकी मंगला आरती की और वर-कन्या के सिर पर अभिषेक का जल डाला । ३९ फिर वह लक्ष्मण के रथ पर प्रविष्ट हुये । उर्मिला लक्ष्मण की गोद मे बैठी थी । १६४० वह शकर पार्वती के समान शोभा पा रहे थे । यह देखकर वशिष्ठ वहाँ पहुँच गये । १६४१ मुनि ने शीघ्र ही उनकी मगला आरती की और उनके सिर पर अभिषेक का जल डाला । ४२ फिर वह शत्रुघन के रथ पर पहुँच गये । उन्होने सुकीर्ति और शत्रुघन को बैठे देखा । ४३ उन्होने वहाँ उनकी मगला आरती की और सिर पर अभिषेक का जल डाला । ४४ मगला आरती और अभिषेक समाप्त करके वशिष्ठ राजा के पास चले गये । ४५ उन्होने सारी विधियो के विषय में राजा दशरथ को सूचित किया । श्रेष्ठ राजा उसे सुनकर सतुष्ट हो गये । ४६ राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन चारो रथ पर बैठकर नगर भ्रमण के लिये गये । ४७ श्रीराम की गोद मे देवी सीता, विष्णु की गोद मे बैठी वरुण पुत्री लक्ष्मी के समान लग रही थी । ४८ लक्ष्मण की गोद मे उर्मिला बैठी थी । वह दोनो शिव पार्वती के समान दिखाई दे रहे थे । ४९ भरत की गोद में बैठी मालिनी कन्या ब्रह्मा और सावित्री के समान दिखाई दे रहे थे । १६५० शत्रुघन की गोद मे बैठी सुकीर्ति अनन्त देव की अक्षय नारी के समान थी । १६५१ श्रीराम के पीछे तीनो भाई चल रहे थे जो स्वर्ग मृत्यु, पाताल तीनो लोको से सुन्दर दिख रहे थे । ५२ लगता था मानो भगवान के चार रूप हर्षपूर्वक चारो मार्ग पर विराजमान थे । ५३ नगर के नर-नारी

असुर मारिबा पाइँ जाए मधुहारी। अबतार होइले मानव तनु धरि ८५
सीता परम लक्ष्मी कमळा अटइ। अन्तर बाहारे सम दयाभाव बहि ८६
लक्ष्मण अनन्त जे उर्मिला पार्बती। एहा बिश्वामित्र दशरथंकु कहन्ति ८७
भरत शत्रुघनंकु नेबाकु नाहिँ मोर। सुदयारे बिद्या देबे अगस्ति मुनिवर ८८
शुणिण दशरथ आनन्द मनरे।बोइले निज स्थाने कि जिब मुनिबरे ८९
समस्त मुनिंकि पुणि बोइले दशरथ। स्नाहान भोजन बेगे कर हे तपोबन्त१६९०
शुणिण सकळ मुनि स्नाहान जाइ कले। राजनहिँ स्नाहान बेगेण सारिले१६९१
नित्यकर्म सारि सर्ब मुनि भुञ्जि बसि। सुपक्व पदार्थमान भुञ्जि हेले तोषि ९२
बिड़िआ लागि होइण शयन मुनि कले। राजन भुञ्जिण पल्यंके पहुडिले ९३
शाळकगण सर्बे भउणी पुरे भुञ्जि। हाती रथि पदाति सकळ सम्पादि ९४
प्रभातु सकळ राजा चळिलेक पुणि। जाहार जेउँरूपे उपहार घेनि ९५
सुमित्रा पिअर कौशल्यार तात। एगार शत राजा चळिले त्वरित ९६
उपहार घेनिण चळिले मुनिगण।सकळ मुनि मिळिले जे जाहा तपस्थान ९७
पदाति बाजन्तरी सकळ गले घर। धन बस्त्र तांकु राजा देलेक अपार ९८
सरदार सेनापति सामन्त पात्रगण। माहुन्त सिपाइ जेतेक थिले पुण ९९

है। ८४ मधुसूदन, असुरो का सहार करने के लिये जाते है। वह मनुष्य शरीर धारण करके अवतरित हुये है। ८५ सीता महालक्ष्मी कमला है, उसके बाहर और भीतर समान भाव से दया है। ८६ लक्ष्मण अनन्त देव तथा उर्मिला पार्वती है। विश्वामित्र ने दशरथ से इस प्रकार कहा। ८७ भरत और शत्रुघन को मुझसे कुछ नही लेना है, उन्हे मुनि श्रेष्ठ अगस्त दया करके विद्या प्रदान करेंगे। ८८ यह सुनकर दशरथ ने प्रसन्न मन से कहा, हे मुनि श्रेष्ठ ! क्या आप अपने स्थान को जायेंगे। ८९ फिर दशरथ ने समस्त मुनियो से कहा, हे तपोनिधि ! आप सब शीघ्र ही स्नान तथा भोजन करें। १६९० यह सुनकर समस्त मुनियो ने जाकर स्नान किया। राजा भी शीघ्र ही स्नान से निवृत्त हो गये। १६९१ नित्यकर्म समाप्त करके सभी भोजन करने के लिये बैठ गये और सुपक्व पदार्थों को ग्रहण करके सतुष्ट हुये। ९२ फिर मुनि लोग ताम्बूल खाकर शयन करने लगे। राजा भी भोजन करके पलग पर लेट गए। ९३ सभी सालों ने बहनो के महल में भोजन किया। हाथी, रथी, पैदल, सैनिकों आदि सबको वस्तुएँ सम्पादित की गईं। ९४ प्रात:काल सभी राजा लोग अपने-अपने अनुरूप उपहार लेकर चल दिए। ९५ सुमित्रा के पिता, कौशल्या के भाई तथा ग्यारह सौ राजागण शीघ्र ही चल दिये। ९६ उपहार लेकर मुनिगण चल दिये और सब अपने-अपने तप स्थानों पर जा पहुँचे। ९७ पैदल सिपाही तथा बाजा बजाने वाले सभी लोग घर चले गये। राजा ने उन्हें अपार धन तथा वस्त्र प्रदान किये। ९८ सरदार, सेनापति, सामन्त, पात्रगण, महावत

बोइले मन्त्री तुम्भे बेग होइ चळ। सकळ सैन्य मानंकु पडि देइ चाल१६७०
ब्राह्मणंकु भोजन बेगे दिअ जाइ। सर्द्दार सेनापतिकि हरषे धन देइ१६७१
राजागण मानंकु माजणा बिधि कर। शुणि करि मन्त्रीवर चळिले सत्वर ७२
देखणा हारी लोकंकु सनमान करि। माहुन्त सिपाहि सबुंकु बोधकरि ७३
राजा मानंकु माजणा कराए ठावे ठावे। बिप्रगणंकु भोजन देले सदभावे ७४
भाट कए बार नृत्यकारी जन। समस्तंकु चर्च्चा करि देलेक भोजन ७५
राजांक आगरे जाइ जणाएँ सुमन्त। मेलाणि होइण गला आपणा पुरेत ७६
सकळ मुनिगण अणाइँ राजन। कश्यप सत्यानन्द बामदेव पुण ७७
बिश्वामित्र बशिष्ठंकु बसाइ पाशरे। प्रणमित कले राजा ऋषिक पाद तळे ७८
बिश्वामित्र मुनिंकि बहुत पूजा कले। चरण धरि बिनयी होइण कहिले ७९
भो मुनि तुम्भरे मुँ जे होइलि कृतार्थ। तुम्भर दयारे सकळ मोर सुस्थ१६८०
ब्रह्मऋषि होइण ब्रह्म बिद्याकु आकर्षिल। जगत मन्त्र बिद्या तुम्भे सर्ब कल१६८१
श्रीराम लक्ष्मणे दया कले मन्त्रधारी। एणु सर्ब मोहर होइला उद्धारि ८२
एबे भरत शतृघनरे दयाकर। तेबे से बेनि होइबे परिवार ८३
बिश्वामित्र बोइले शुण हे दशरथ। श्रीराम अटन्ति साक्षाते बिष्णुनाथ ८४

मण्डप में जाकर बैठ गये। राजा ने मंत्री सुमन्त को बुलाकर कहा। ६९ हे मंत्री! आप शीघ्र ही जाकर समस्त सैनिकों को सरोपे प्रदान करो। १६७० तुम शीघ्र ही जाकर ब्राह्मणों को भोजन दो। सरदार और सेनापतियों को धन देकर प्रसन्न करो। १६७१ राजागणों की मार्जन विधि सम्पन्न करो। यह सुनकर श्रेष्ठ मंत्री शीघ्र ही चल दिया। ७२ दर्शक लोगों का सम्मान करते हुये उसने महावत तथा सिपाही आदि सब लोगों को संतुष्ट किया। ७३ राजागणों को स्थान-स्थान पर मार्जन कराया गया। ब्राह्मणों को सद्भाव से भोजन दिया गया। ७४ भाट, बिदूषक तथा नृत्यकार आदि सबकी चर्चा करके उन्हें भोजन दिया गया। ७५ फिर सुमन्त ने जाकर राजा के समक्ष निवेदन किया और विदा होकर वह अपने घर चले गये। ७६ फिर राजा ने कश्यप, सतानन्द, बामदेव, विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि समस्त ऋषियों को बुलाकर समीप ही बैठाया और ऋषियों के चरणों में प्रणाम किया। ७७-७८ उन्होंने महर्षि विश्वामित्र की बहुत पूजा की और चरण पकड़कर विनीत भाव से बोले। ७९ हे महर्षि! आपके लिये मैं कृतार्थ हुआ हूँ। आपकी कृपा से मेरी सम्पूर्ण कुशलता है। १६८० ब्रह्मर्षि होकर आपने ब्रह्म विद्या को आकर्षित किया; संसार में आपने सारी मंत्र विद्याओं को प्रकाशित किया। १६८१ हे मंत्रधारी! आपने श्रीराम और लक्ष्मण के ऊपर कृपा की, इससे हम सबका उद्धार हो गया। ८२ अब भरत और शत्रुघन पर दया कीजिये। तब वह दोनों भी पार हो जायेंगे। ८३ विश्वामित्र ने कहा हे दशरथ! सुनिए। श्रीराम तो साक्षात् विष्णु भगवान

श्रीराम चारि भाइ कलेक नमस्कार ।सुकल्याण करिण मेलाणि हेले मुनिवर १५
खण्डेदूर दशरथ गलेक पाछोटि । सत्यानन्दंकु छाड़ि अइले लेउटि १६
कश्यप बामदेब जाबाळिंकि पुण । अइभ्रते लेखाएँ देलेक सुवर्ण १७
मन्त्रींकि अइभ्रते राजा आणि देले । बशिष्ठंकु लक्षे सुबर्ण देइण बोधिले १८
जे बिधि बिधान मान सारिले सकळ । पुत्र बधू देखि राजा मनरे कुशळ १९
बिभा विधि बिधान जेतेक पुणि थिला । ब्राह्मणंकु प्राशिचत धन दिआ गला१७२०
दुःखि दरिद्र मानंकु देले अन्न वस्त्र । समस्ते चळि गले होइण हरष१७२१
समस्तंकु मेलाणि देइण राजन ।निश्चिन्त होइण निज मन्दिरे गले पुण २२
अन्तःपुरे जाइण हेले परबेश ।कैकय़ा कउशल्या सुमित्रांकु ड़ाकि पाश २३
आज बधूमाने करिबे रन्धन । सन्तोष हेब मन करिले भोजन २४
एते कहि राजन माजणा होइले । राणीमाने जानकींकि डाकिण कहिले २५
बोइले पाक आजि कर जा ततपर ।श्वशुर बोइले बधू पाके मणोहिँ मोहर २६
शुणिकरि बइदेही पाक सम्पादिले । षड़रसे रन्धन जतनरे कले २७
समस्तंकु घेनिण भुञ्जिले दशरथ । आचमन सारि बिड़िआ भुञ्जिले त २८
चारि बधू भुञ्जिले शाशु मानंक संगे । भुञ्जित तृपुति होइले जे सर्बे २९

करते रहे। १४ श्रीराम आदि चारो भाइयो ने उन्हे नमस्कार किया। आशीर्वाद देकर मुनिश्रेष्ठ सतानन्द विदा हुये। १५ थोड़ी दूर दशरथ उन्हे विदा करने गये, और सतानन्द को छोडकर वह लौट आये। १६ फिर उन्होने कश्यप बामदेव तथा जाबालि को प्रचुर सुवर्ण प्रदान किया। १७ मंत्री को भी राजा ने प्रचुर धन लाकर दिया। उन्होने वशिष्ठ को एक-लाख स्वर्णमुद्राएँ देकर संतुष्ट किया। उन्होने समस्त विधि-विधान सम्पादित किये फिर राजा पुत्रवधुओ को देखकर मन मे प्रसन्न हो गये। १८-१९ विवाह के विधि-विधान का जो भी कुछ था, वह धन ब्राह्मणो तथा पडितो को दिया गया। उन्होने दु.खी-दरिद्रो को अन्न व वस्त्र प्रदान किये। सभी प्रसन्न होकर चले गये। सवको विदा करके राजा निश्चिन्त होकर अपने महल में चले गये। १७२०-१७२१-२२ फिर वह अतःपुर मे जाकर प्रविष्ट हुये और उन्होने कैकेयी, कौशल्या तथा सुमित्ता को पास बुलाकर कहा कि आज वहुएँ रसोई वनाएँगी। वह भोजन करने से हमारा मन सतुष्ट होगा। २३-२४ इतना कहकर राजा ने मार्जन किया। रानियो ने जानकी को बुलाकर कहा। २५ आज तुम तत्परता से रसोई तैयार करो। श्वसुर ने कहा है कि आज हम वहुओं की रसोई ग्रहण करेगे। २६ यह सुनकर वैदेही ने रसोई तैयार की। उन्होने षड़रस भोजन पकाये। २७ सवको लेकर दशरथ ने भोजन किया और आचमन करके पान खाया। २८ चारो वहुओं ने सासों के साथ मे भोजन किया और

समस्तंकु अन्न बस्त्र शाढ़ी बिळोहिले। भाट नृत्यकारोंकि मेलाणि बेगे देले१७००
बिश्वामित्र बोइले जिबु आम्भे बेगे। कुशळे सर्ब शुभे बञ्चि थाअ तुम्भे१७०१
शुणि राजा मुनिंकि भितरकु नेले। राणीहंस आसिण समस्ते ओळगिले २
कौशल्या कैकयादि कहन्ति सर्ब राणी। चारि पुत्ररे सुदया करि थिब पुणि ३
तुम्भर चरणरे शरण आम्भर। शुणिकरि सन्तोष होइले मुनिबर ४
जानकी चारि भग्नी घेनिण अइले। मुनिंकर चरणरे ओळगि होइले ५
बोइले सुदया आम्भंकु करि जाअ। आम्भे तुम्भ दुहिता तुम्भे पितामह ६
श्रीराम संगे भाइमानंकु घेनि आसि। मुनिंक चरण तळरे जाइ लुटि ७
समस्तंकु कल्याण करि होइले बाहार। बेनि लक्ष सुनिआँ घेनिण उपहार ८
सुकाशने चढिण बहन चळि गले। दशरथ राजन संगरे गोडाइले ९
अजोध्या छाडि मुनि मेलाणि होइगले। मुनिंकि छाड़ि राजा बाहुड़ि अइले१७१०
सत्यानन्दकु ड़ाकि लक्षेक सुबर्ण। भण्डाररु अणाइँ देलेक राजन१७११
बोइले समुन्धिकि कहिब तिआरि। सन्तोष होइथिबे मोते जनक तपचारी १२
एते बोलि मुनि घेनि भितरकु गले। जानकी भग्नी सहिते आसि ओळगिले १३
बोइले पितांकु कहिब तपचारी। सुदया करिथिबे आम्भंकु न पासोरि १४

सिपाही आदि जितने भी थे। उन्हे अन्न-वस्त्र तथा सरोपे वितरित किये गये। भाट, नृत्यकारियो को शीघ्र ही विदाई दी गई। ९९-१७०० विश्वामित्र ने कहा कि अब हम शीघ्र ही जाएँगे। तुम सब लोग कुशल मंगल समेत रहो। १७०१ यह सुनकर राजा महर्षि को भीतर ले गये। समस्त रानियो ने आकर उनके चरण स्पर्श किये। २ कौशल्या, कैकेयी तथा समस्त रानियाँ उनसे चारो पुत्रो पर दया रखने के लिये विनती करने लगी। ३ वह बोली हम सबके शरण स्थल आपके चरण है। यह सुनकर मुनि श्रेष्ठ संतुष्ट हो गये। ४ जानकी ने चारों बहनो के साथ आकर मुनि के चरणो में प्रणाम किया। ५ उन्होने कहा कि आप हम पर कृपा करके जाइये। हम आपकी पुत्री है। आप महान् पिता है। ६ श्रीराम भाइयो को साथ लेकर आये और मुनि के चरण तल पर जाकर लोट गये। ७ सबको आशीर्वाद देकर उपहार मे दो लाख स्वर्ण मुद्राएँ लेकर विश्वामित्र बाहर निकले। ८ वह सुखासन पर बैठकर शीघ्रता से चल दिये। राजा दशरथ पीछे से साथ-साथ दौड़ने लगे। ९ अयोध्या को छोड़कर मुनि विदा हो गये और मुनि को विदा करके राजा लौट आये। १७१० राजा ने सतानन्द को बुलाकर भण्डार से मँगाकर उन्हे एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान की। १७११ उन्होने कहा कि समधी जी को समझा देना कि तपस्वी जनक हमसे संतुष्ट रहे। १२ ऐसा कहकर मुनि को लेकर वह भीतर गये। वहनो के साथ जानकी ने आकर उन्हे प्रणाम किया। १३ वह बोली हे तपस्वी ! आप पिताजी से कह दीजियेगा कि वह हमें न भूलकर हम पर दया

श्रीरामंकु कहिण नमस्कार करि। बिनय भगती होइ सीतांकु जुहारि ४४
रहुबर चढिण अजोध्यारु गले। ताहांकर संगरे मउळा चळिगले ४५
कैकया राजन बारता पाइले। भरत आसिबा शुणि नग्र मण्डाइले ४६
सात दिने जाइण होइले परबेश। मन्त्री अमनात्य पाछोटि आसिले त ४७
रथरु ओहलाइ बेनि भाइ चळि गले। नबरे प्रबेश जाइण बेगे हेले ४८
नृपतिकि नमस्कार कले बेनि भाइ। भरत शतृघनकु कोळे धरिले नरसाइँ ४६
तुम्भे दुइभाइ मोते देखित अइल। तुम्भंकु देखि मुँ जे होइलि तोष भल१७५०
आज देखि तुम्भंकु दुःख मोर गला। दुहितार तनय देखिलि आज परा१७५१
श्रीराम लक्ष्मणंकर पुछन्ति बारता। शुभरे अछन्तिटिकि कुमर बळबन्ता ५२
पुत्र जोद्धाकुर कहिबा कथामान। शुणिण कैकया राजा आनन्द मने मन ५३
एथु अनन्तरे शुण हेमबन्तो। अपूर्ब रस ए गो कर्णरे शुणन्ति ५४
अजोध्या राजा जे दशरथ राये। अनेक सुस्थरे जे परजा तार रहे ५५
श्रीराम सीतांकु घेनिण भोग करि। ईश्वर कहिबारु शुणिले शाकम्बरी ५६
ए जे आद्यकाण्ड शामबेदरु सम्भूत। संसार निस्तारण निमन्ते प्रकाशित ५७
बालमिक मुनि जे प्रसन्ने एहा कले। से महामुनि पुण ग्रन्थ बखाणिले ५८

हुए कहा। ४३ उन्होने श्रीराम से बताकर उन्हे नमस्कार किया और विनय भक्ति के साथ सीता को नमन् किया। ४४ फिर वह रथ पर चढकर अयोध्या से चले गये। उनके साथ मामा भी चले गये। ४५ महाराज कैकय ने समाचार पाया और भरत के आगमन को सुनकर उन्होने नगर को सजवाया। ४६ यह लोग सात दिन में वहाँ जा पहुँचे। मंत्री तथा सामन्त उनकी अगवानी के लिये आये। ४७ रथ से उतरकर दोनों भाई चल दिये और शीघ्र ही महल में जा पहुँचे। दोनो भाइयों ने राजा को नमस्कार किया। नरनाथ ने भरत तथा शत्रुघन को अंक में भर लिया। ४८-४६ वह बोले कि तुम दोनों भाई मुझे देखने आये हो। तुम्हे देखकर मै सन्तुष्ट हो गया। १७५० तुम्हे देखकर आज मेरा दुःख दूर हो गया। मैंने आज कन्या के पुत्रों को देख लिया। १७५१ उन्होने श्रीराम तथा लक्ष्मण के समाचार पूँछते हुये कहा कि वह दोनो बलवान कुमार कुशल मंगल से तो है। ५२ पुत्रों की वीरता की कथाये कही गयी जिसे सुनकर राजा कैकय का मन प्रसन्न हो गया। ५३ हे हिमाचल पुत्री ! सुनो। इसके पश्चात् कानों में सुनने से यह रस अपूर्व है। ५४ अयोध्या के राजा दशरथ थे और उनकी प्रजा सब प्रकार से स्वस्थ और सम्पन्न रह रही थी। ५५ श्रीराम सीता को लेकर बिहार करते थे। शिव के कहने पर इसे पार्वती ने सुना। ५६ यह आदिकाण्ड सामवेद से उत्पन्न हुआ है, और संसार से उद्धार होने के लिये प्रकाशित हुआ है। ५७ प्रसन्न होकर महर्षि वाल्मीकि ने इसकी रचना की, फिर

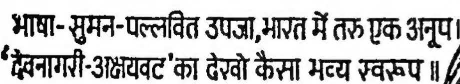
लोमपाद बोइले राज्यकु जिब एबे। शुणिण दशरथ आनन्द हेले भावे१७३०
शतेक कुमरंकु अळंकार देले। शते हस्ती चढिण शते पुत्र गले१७३१
उपहार घेनिण चळिले लोमपाद। किछिदूर पाछोटि गलेक मित्रभाव ३२
भ्रतर मउळा कहिले राजांकु। पिता मो देखिबे पठा भ्रत शतृघ्नकु ३३
दशरथ बोइले तुम्भे जाअ चळि। वरष पूर्ण हेले जिबे से तुम्भ पुरि ३४
शुणिकरि कएकय़ा भाइ चळि गले। उपहार पदार्थ राजा तांकु देले ३५
भाजिला गहळ समस्ते गले पुण। महासुखे परजा राजा पाळे जाण ३६
एमन्ते बरषेक सेथिरे बहिगला। ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष एकादशी हेला ३७
से दिन उत्सव राजन तहिँ कले। वन्धुजन मानंकु निमन्त्रि अणाइले ३८
चारि पुत्र चारि बधू बसाइ स्थाने स्थाने। गण्ठिआळ फेडि बन्दापना सुखमने ३९
आरदिन मेलाणि बन्धु माने हेले। कैकय़ा भाइ भ्रत शतृघनंकु नेबाकु बोइले१७४०
शुणिण दशरथ भ्रत शतृघनकु कोळे धरि।
अजाघर जिव बोलि मउळा श्रद्धा करि१७४१
पिता ठारु शुणि भरत हेले सज। संगरे शतृघन होइले बेश बेग ४२
दुइ भाइ अत्यन्त हरष पुण होइ। पिता मातामानकु ओळगिण कहि ४३

भोजन करके सब तृप्त हो गये। २९ लोमपाद ने तब अपने राज्य जाने के लिए कहा। यह सुनकर राजा दशरथ प्रसन्न हो गये। १७३० उन्होने सौ पुत्रो को अलंकार प्रदान किये फिर वह सौ पुत्र सौ हाथियो पर चढकर चले गये। १७३१ उपहार लेकर लोमपाद भी चल दिये। मित्र भाव से राजा दशरथ कुछ दूर तक उन्हे छोड़ने गये। ३२ तब भरत के मामा ने राजा से कहा कि आप भरत, शत्रुघन को भेज दे। हमारे पिता उन्हे देखेंगे। ३३ दशरथ ने कहा कि आप लोग चले जाइये। वर्ष पूर्ण होने पर यह आपके नगर जायेंगे। ३४ यह सुनकर कैकेयी के भाई चले गये। राजा ने उन्हे उपहार पदार्थ प्रदान किये। ३५ सबके चले जाने पर चहल-पहल समाप्त हो गयी। राजा अत्यन्त सुख के साथ प्रजा का पालन करने लगे। ३६ इस प्रकार वहाँ एक वर्ष व्यतीत हो गया और ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी आ गई। ३७ राजा ने उस दिन वहाँ उत्सव किया। उन्होने बन्धु-बान्धओ को आमन्त्रित करके बुला लिया। ३८ स्थान-स्थान पर उन्होने चारो पुत्र तथा चारो बहुओं को बैठा दिया तथा गाँठ खोलकर प्रसन्न मन से उनकी पूजा की। ३९ अगले दिन बन्धु-जन विदा हो गये। कैकेयी के भाई ने भरत और शत्रुघन को ले जाने के लिये कहा। १७४० यह सुनकर दशरथ ने भरत और शत्रुघन को आलिंगन करते हुये कहा कि तुम्हारे मामा तुम्हे नाना के घर ले जाने के इच्छुक है। १७४१ पिता से ऐसा सुनकर भरत तैयार हो गये। साथ मे शत्रुघन भी सुसज्जित होकर शीघ्र ही तैयार हो गये। ४२ दोनो भाइयो ने अत्यन्त प्रसन्न होकर माता-पिता को प्रणाम करते

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

भुवन ग्रन्थ-गाथा भुवन सन्त-वाणी

देवनागरी अक्षयवट


भाषा-सुमन-पल्लवित उपजा, भारत में तरु एक अनूप।
'देवनागरी-अक्षयवट' का देखो कैसा भव्य स्वरूप ॥

विश्व-वाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा ।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल भ्रमण विचारा॥

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

प्रतिष्ठाता — पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

एणु ए संसार होइबा पाइँ सुस्थ। बळरामदास मुं सुमरे सर धारेत ५९
चर्मर नयने मुं देखिलि जगन्नाथ। एणु से वखाणिले आद्यकाण्ड ग्रन्थ१७६०
शुणिण सुज्ञजने नधर मोर दोष। एणु मुं ए ग्रन्थ जे कलइँ परकाश१७६१
संसार सागर ए जे दुर्गम माया पुणि। तरिबाकु भेळा जे रामनाम बाणी ६२
बासुदेव नाम जे अटइ महारस। शरण गला लोकंकु उद्धर पीतबास ६३
ए जे आद्यकाण्ड होइला संपूर्ण। श्रवणरे शुणन्ते पाप विमोचन ६४
जगत मोहन नाम अटइ ताहार। से पादे सुज्ञजने निरते सेबाकर ६५
रामायण ग्रन्थ जे अमृतमय रस। श्रीराम पादे शरण बळरामदास ६६
श्रीरामायण आद्यकाण्ड ग्रन्थसारि। नव सहस्र पदरे एहा मुं सम्पूर्ण करि१७६७

॥ आद्यकाण्ड सम्पूर्ण ॥

उन महर्षि ने इस ग्रन्थ का वर्णन किया। ५८ इसलिये इस संसार से स्वस्थ होने के लिये मैं बलरामदास श्रद्धा से इसका स्मरण करता हूँ। ५९ मैंने चर्मचक्षुओ से जगन्नाथ को देखा। इसलिये इस ग्रन्थ के आद्यकाण्ड का वर्णन किया है। १७६० यह सुनकर हे विद्वान सज्जन पुरुषो ! मेरे दोष को मत लेना। इसी से मैंने इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया है। १७६१ यह संसार सागर की दुर्गम माया है। इसे पार करने के लिये रामनाम वेडे के समान है। ६२ वासुदेव का नाम महारस है। हे पीताम्वरधारी ! आप शरणागत लोगो का उद्धार कीजिये। ६३ यह जो आदिकाण्ड सम्पूर्ण हुआ, इसे कानों से सुनने पर पाप नष्ट हो जाते हैं। ६४ उनका नाम जगत्-मोहन है। हे सज्जनपुरुषो ! उनके चरणो की सदा सेवा करो। ६५ यह रामायण ग्रन्थ अमृतमय रस है। बलरामदास श्रीराम के चरणो की शरण मे है। ६६ आद्यकाण्ड श्रीरामायण ग्रन्थ का सार है। इसे मैने नौ हजार पदो में पूर्ण किया। १७६७

॥ इति आद्यकाण्ड सम्पूर्ण ॥

